

મળવાનું ઠેકાણું
શ્રી અ. સા. ઋવે. સ્થાનકવાસી
જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ,
ઠે. ગરેડિયા કુવા રોડ, ઓન લોન્
પાસે, રાજકોટ, (સૌરાષ્ટ્ર)

Published by •
Shri Akhil Bharat S S
Jain Shastroddhara Samiti,
Garedia Kuva Road, RAJKOT,
(Saurashtra), W Ry, India

×

પ્રથમ આવૃત્તિ પ્રત ૧૦૦૦
વીર સવત્ ૨૪૮૮
વિક્રમ સવત્ ૨૦૧૮
ઈસવી સન ૧૯૬૨

×

મુદ્રક
મણિલાલ છગનલાલ શાહ
નવપ્રભાત પ્રિન્ટિંગ પ્રેસ,
ધીકાદા રોડ . અમદાવાદ

प्रश्नव्याकरणसूत्रकी विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमांक	विषय	पृष्ठांक
१	मङ्गलाचरण	१—२
२	अवतरणिका	३—१३
प्रथम अध्ययन-प्रथम भाग		
३	आस्रव और स्रव के लक्षणों का निरूपण	१३—१८
४	पहला अधर्मद्वार का निरूपण	१९—२६
५	“मृषानादरूप” दूसरा अधर्मद्वार का निरूपण	२७—३५
६	“यथाकृत्” नामके तीसरा अधर्मद्वार का निरूपण	३६—३९
७	स्थलचर चतुष्पद प्राणीयों का निरूपण	४०—४२
८	“उरः परिसर्प” के भेदों का निरूपण	४३—४४
९	भुजपरिसर्प के भेदों का निरूपण	४५—४६
१०	खेचर जीवों का निरूपण	४७—५०
११	प्राणियों के वधके प्रकार का निरूपण	४१—५३
१२	चतुरिन्द्रिय जीवोंकी हिंसा करने वालोंके प्रयोजनका निरूपण	५४—६२
१३	पृथिवीकाय जीवों के हिंसा के कारण का निरूपण	६३—६७
१४	अपकाय जीवों की हिंसा करने के प्रयोजन का निरूपण	६८—
१५	‘वायुकाय’ जीवों की हिंसा करनेके प्रयोजनका निरूपण	६९—७०
१६	‘वनस्पतिकाय’ जीवोंकी हिंसा करनेके प्रयोजनका निरूपण	७०—७४
१७	स्थावरादि जीवों को कैसे २ भावों से युक्त होकर हिंसक जन मारते हैं उनका निरूपण	७४—८४
१८	जातिनिर्देशपूर्वक मदबुद्धि वाले लोक कौन २ जीवों को मारते हैं उनका निरूपण	८५—८६
१९	कौन २ जीव पाप करते हैं उनका निरूपण	८७—९०
२०	जैसे २ कर्म करते हैं वैसा ही फल प्राप्त होनेका निरूपण	९१—९६
२१	नरक में उत्पत्ति के अनन्तर वहा के दुःखाजुभवका निरूपण	९७—१०४
२२	पापि जीव नरकों में कैसी २ वेदना को कितने काल भोगते हैं उनका निरूपण	१०५—१०६

२३ नारकीय जीव क्या २ कहते हैं वह वर्णन	१०६-१०८
२४ परमाधार्मिक नारकीय जीवों के प्रति क्या करते हैं उनका कथन	१०९-११०
२५ वेदनाओं से पीड़ित नारक जीवों के आक्रंद का निरूपण	१११-११७
२६ परमाधार्मिकों के द्वारा की गई यातनाओं के प्रकार का निरूपण	११७-११८
२७ यातना के विषय में आयुधों (शस्त्रों) के प्रकारों का निरूपण	११९-१२१
२८ परस्पर में वेदना को उत्पन्न करते हुए नारकीयों कि दशा का वर्णन	१२१-१२७
२९ नारक जीवों के पश्चात्ताप का निरूपण	१२८-१३०
३० तिर्यग्माति जीवों के दुःखों का निरूपण	१३१-१३६
३१ चतुरिन्द्रिय जीवों के दुःख का निरूपण	१३७-१३८
३२ त्रिन्द्रिय जीवों के दुःख का निरूपण	१३८-१३९
३३ द्विन्द्रिय जीवों के दुःख का वर्णन	१४०-
३४ एकेन्द्रिय जीव के दुःख का वर्णन	१४१-१४४
३५ दुःखों के प्रकार का वर्णन	१४५-१५१
३६ मनुष्यभवं में दुःखों के प्रकार का निरूपण	१५२-१६३

दूसरा अध्याय

३७ अलीकवचन का निरूपण	१६४-१६८
३८ अलीकवचन के नाम का निरूपण	१६८-१७४
३९ जिस भाव से अलीक वचन कहा जाता है उसका निरूपण	१७४-१७९
४० नास्तिकवादियों के मत का निरूपण	१८०-२०५
४१ अन्य मनुष्यों के मृषामाषण का निरूपण	२०६-२१४
४२ मृषावादियों के जीव प्रातक वचन का निरूपण	२१५-२४१
४३ मृषावादियों को नरक प्राप्तिरूप फलप्राप्ति का वर्णन	२४२-२५२
४४ अलीक वचन का फलितार्थ निरूपण	२५३-२५६

तीसरा अध्याय

४५ अदत्तादान के स्वरूप का निरूपण	२५७-२६१
----------------------------------	---------

४६ अदत्तादान के तीस नामों का निरूपण	२६४-२६९
४७ पञ्चम अन्तर्द्वारगत तस्करों (चोरों) का वर्णन	२७०-२७५
४८ परधनलुब्ध राजाओं के स्वरूप का निरूपण	२७६-२८२
४९ परधन में लुब्ध राजाओं के संग्राम का वर्णन	२८३-२९६
५० अदत्तादान (चोरी) के प्रकार का निरूपण	२९७-३०१
५१ सागर के स्वरूप का निरूपण	३०२-३०६
५२ तस्कर के कार्य का निरूपण	३०७-३१७
५३ अदत्तादान के फल का निरूपण	३१७-३२२
५४ चोर लोक क्या फल पाते हैं उनका निरूपण	३२२-३३०
५५ अदत्तग्राही चोर कैसे होकर कैसे फल को पाते हैं उनका निरूपण	३३०-३४६
५६ अदत्तग्राही चोर जिस फल को पाते हैं उसका निरूपण	३४७-३५४
५७ अदत्तग्राही चोर की परलोक में कौन गति होती है उनका निरूपण	३५४-३६०
५८ जीव ज्ञानावरण आदि अष्टविध कर्मों से बधदशाको प्राप्तकर ससारसागर में रहते हैं इस प्रकार का ससारसागर के स्वरूप का निरूपण	३६०-३७७
५९ किस प्रकार के अदत्तग्राही चोरों को किस प्रकार का फल मिलते हैं उनका निरूपण	३७८-३८६
६० तीसरे अध्ययन का उपसंहार	३८७-३९०

चौथा अध्ययन

६१ अब्रह्म के स्वरूप का निरूपण	३९१-३९५
६२ अब्रह्म के नामों का और उसके लक्षणों का निरूपण	३९५-४००
६३ मोह से मोहित बुद्धिवालों से अब्रह्म के सेवन के प्रकारों का निरूपण	४००-४०३
६४ चक्रवर्त्यादिकों का और उनके लक्षणों का वर्णन	४०३-४१९
६५ बलदेव और बासुदेव के स्वरूप का निरूपण	४१९-४४३
६६ अब्रह्म सेवी कौन होते हैं ? उनका निरूपण	४४३-४४४

६७ युगलियों के स्वरूप का निरूपण	४४५-४६७
६८ युगलिनीयों के स्वरूप का निरूपण	४६७-४८६
६९ चौथे अन्तर्द्वार का निरूपण	४८६-४९४
७० चौथा अध्ययन का उपसंहार	४९४-४९८

पाँचवा अध्ययन

७१ परिग्रह के स्वरूप का निरूपण	४९९-५०६
७२ परिग्रह के तीस नामों का निरूपण	५०७-५१२
७३ जिस प्रकार से जो जीव परिग्रह करते हैं उनका निरूपण	५१२-५२७
७४ मनुष्य के परिग्रह का निरूपण	५२८-५३९
७५ परिग्रह से जीव को किस फल की प्राप्ति होती है उनका निरूपण	५४०-५४६
७६ पाँचवा अध्ययन का उपसंहार	५४७-५५०

दूसरा भाग-पहला अध्ययन

७७ पाँचसवर द्वारों के नाम और उनके लक्षणों का निरूपण	५५१-५५८
७८ प्रथमसवरद्वार का निरूपण	५५९-५६९
७९ अहिंसा के महात्म्य का निरूपण	५७०-५७२
८० अहिंसा धारण करने वाले महापुरुष के स्वरूप का निरूपण	५७३-६०१
८१ अहिंसा को पालन करने को उद्यत होने वालों के कर्त्तव्य का निरूपण	६०२-६१६
८२ अहिंसाव्रत की 'ईर्ष्यासमिति' नाम की प्रथम भावना का निरूपण	६१७-६२२
८३ 'मनोगुप्ति' नाम की दूसरी भावना का निरूपण	६२३-६२५
८४ 'वचनसमिति' नाम की तीसरी भावना के स्वरूप का निरूपण	६२६-६२८
८५ 'एषणासमिति' नाम की चौथी भावना के स्वरूप का निरूपण	६२९-६३९
८६ 'निक्षेप' नाम की पाँचवी भावना का निरूपण	६४०-६४२
८७ प्रथम अध्ययन का उपसंहार	६४३-६४८

दूसरा अध्ययन

८८ सत्य के स्वरूप का निरूपण	६४९-६८४
८९ 'अनुवचिन्त्य समिति' नाम की प्रथम भावना के	

स्वरूप का निरूपण	६८५-६८८
९० ' क्रोधनिग्रहरूप ' दूसरी भावना का निरूपण	६८९-६९२
९१ ' लोभनिग्रहरूप ' तीसरी भावना का निरूपण	६९३-६९६
९२ ' धैर्य ' नाम की चौथी भावना के स्वरूप का निरूपण	६९७-७००
९३ पांचवी ' मौन ' भावना के स्वरूप का निरूपण	७००-७०४
९४ अध्ययन का उपसंहार	७०५-७१०

तीसरा अध्ययन

९५ अदत्तदानविरमण के स्वरूप का निरूपण	७११-७२१
९६ कैसा मुनि अदत्तादानादि व्रत का आराधन नहीं करते उसका निरूपण	७२२-७२७
९७ कैसा मुनि इस व्रत का पालन कर सके है उसका निरूपण	७२७-७४०
९८ ' विविक्षवसतिवास ' नाम की प्रथम भावना का निरूपण	७४१-७४७
९९ ' अनुज्ञावसस्तारु ' नामकी दूसरी भावना का निरूपण	७४८-७५१
१०० ' शय्यापरिकर्म वर्जन ' रूप तीसरी भावना का निरूपण	७५२-७५६
१०१ ' अनुज्ञावभक्त ' नामकी चौथी भावना का निरूपण	७५७-७६०
१०२ ' विनय ' नामकी पांचवी भावना का निरूपण	७६१-७६४
१०३ अध्ययन का उपसंहार	७६५-७७०

चौथा अध्ययन

१०४ ब्रह्मचर्यके स्वरूप का निरूपण	७७१-७८८
१०५ ब्रह्मचर्य आराधन का फल	७८९-७९५
१०६ ब्रह्मचारी को आचरणीय और अनाचणीय आदिका निरूपण	७९६-८०३
१०७ ' अससक्त वासवसति ' नामकी प्रथम भावना का निरूपण	८०४-८०८
१०८ ' स्त्रीकथा विरति ' नामकी दूसरी भावना का निरूपण	८०९-८१५
१०९ ' स्त्रीरूप निरीक्षण ' वर्जन नामकी तीसरी भावना का निरूपण	८१६-८१८
११० ' पूर्वव्रत पूर्वक्रीडितादि ' विरति नामकी चौथी भावना का निरूपण	८१९-८२५
१११ ' मणीतभोजनवर्जन ' नामकी पांचवी भावना का निरूपण	८२६-८२९
११२ चतुर्थ अध्ययन का उपसंहार	८३०-८३४

पाँचवा अध्याय

११३ परिग्रहविरमण का निरूपण	८३५-८४५
११४ असंस्थावर विषयक अपरिग्रह का वर्णन	८४६-८५२
११५ अकल्पनीय वस्तु का निरूपण	८५३-८६०
११६ कल्पनीय अशनादिक का निरूपण	८६०-८७०
११७ सयताचार पालक की स्थिति का निरूपण	८७१-८८९
११८ ' निस्पृहा ' नामकी पहली भावना का निरूपण	८९०-९००
११९ चक्षुरिन्द्रिय सवर ' नामकी दूसरी भावना का निरूपण	९०२-९१५
१२० ' घ्राणेन्द्रियसवर ' नामकी तीसरी भावना का निरूपण	९१६-९२२
१२१ जिह्वेन्द्रियसवर ' नामकी चौथी भावना का निरूपण	९२३-९२९
१२२ ' स्पर्शेन्द्रियसवर ' नामकी पाचवी भावना का निरूपण	९३०-९४१
१२३ अध्ययन का उपसंहार	९४२-९४८
१२४ दशमाङ्ग में श्रुतस्फधादि का निरूपण	९४९-
१२५ शास्त्रप्रशस्ति	९५०-९६३

૩૧. ૫૦૮૧) આપનાર આદ્ય મુગ્ધજીશ્રી



સ્વ. રોઠ મુકુન્દચંદ્ર બાલીયા (પાલીવાળા)
અમદાવાદ.

श्रीमान् सेठसाहेब श्री मुकनचन्दजी वालियाजका

संक्षेपमें जीवनचरित्र

श्रीमान् सेठ साहब श्री मुकनचन्दजी साहब पाली (मारवाड़) के निवासी थे । आपका शुभ जन्म सन् १९४० फाल्गुन कृष्ण पक्ष ६ रविवारको हुआ था । आपका पवित्र वंश सदा धर्मशील, विद्याप्रेमी और उदारचरित रहा है । आपके परम पूज्य पितामह श्रीमान् सेठ सा श्रीपूनमचन्दजी साहब वालिया थे । सेठ सा. श्रीपूनमचन्दजी साहब वालिया के दो पुत्र थे, एक श्री राजारामजी साहब और दूसरे श्रीअगरचन्दजी साहब । आगे चलकर श्रीमान् सेठसा. श्री राजारामजी सा के श्री ताराचन्दजी साहब और श्रीमुकनचन्दजी साहब करके दो पुत्र थे, किंतु अगरचन्दजी सा के पुत्र नहीं था । इसी लिए श्रीमान् अगरचन्दजीसाहबने अपने भाईके ही पुत्र श्रीमुकनचन्दजी साहबको दत्तक (गोद) ले लिया । श्रीमान् सेठ साहब श्री मुकनचन्दजी शुरू से ही बड़े होनहार, धर्मशील और उदार थे । सौभाग्य से आपकी धर्मपत्नी श्रीमती श्री सुगनकुवर घाईजी भी धर्मशीलता एवं उदार व्यवहार में आपके ही समान थी श्रीमती श्री सुगनकुवर घाईजी की धर्मश्रद्धा का सु प्रभाव आज भी आपके छुट्टे पर अच्छी तरह दिखाई देता है । आप दोनों ने धर्म के दीपक से न केवल अपने परिवार को ही प्रकाशित किया है, किंतु जीवन में अपने मर्क में आनेवाले सभी धर्म प्रेमी जिज्ञासुओं को धर्म श्रद्धालु बना ने का पवित्रकार्य किया है । यों सेठ साहब श्री मुकनचन्दजी सा बड़ी सरल प्रकृतिके मज्जन थे । व्यापार आपका समुद्रपार अनेक देशों में फैला हुआ था । आपकी जमींदारी भी खूब थी । आपके रहन-सहन और व्यवहार से सदा सादगी टपकती थी । जितने आप



જોડ શામલ દેવલ વીગણી
રાજકોટ.



જોડ નામલ નામલ વીગણી
રાજકોટ.



જો. મીશ્રીવાલ અને જો. તંગલ લુણીયા
અમદાવાદ



(૨૧.) ગેડ હરખચદ કાલીદાસ વાગીઆ
ભાણુ-૧૭.

શ્રી કાઠારી હરગોવિંદભાઈ જેયદ
ગાજોર.



ચેડ શ્રી ગાતિવાલ મગળદાસભાઈ
અમદાવાદ.



(૨૫) ગે. શ્રી ધારગીભાઈ હવણભાઈ
સોલાપુર

(૨૧.) ચેડ આત્માગમ માણેકલાલ
અમદાવાદ.

उदार-चरित थे, उतने ही आप ज्ञानियों के ज्ञाता भी थे। राम करके धर्मशास्त्रमे आपका अच्छा प्रवेश था। ज्योतिषशास्त्र के भी आप मर्मज्ञ थे कहने का तात्पर्य यह है कि मोने में सुगम ही तरह आप पर भगवती, सरस्वती और देवी लक्ष्मी दोनों का समान रूपसे आशीर्वाद का हाथ रहा। पाली के आगलवृद्ध सभी आपके गुणों की आज भी भूले नहीं हैं। आपकी तरफ से पालीमें कन्याशाला, हाईस्कूल आदि शैक्षणिक संस्थाएँ चल रही हैं, जिनमें प्रति वर्ष कई विद्यार्थी विद्यालय प्राप्त कर रहे हैं। गरीब, अपंग और अनाथों के लिए भी आपकी तरफ से सदाव्रत अनायालय और प्याऊ चल रही हैं। आयबिल खाता भी आपकी तरफ से पाली में चल रहा है आपका स्वर्गवास सन् २०१८ कार्तिक शुद्ध द्वितीया शुरुवार को हुआ।

श्रीमात् सेठ श्री मुकुनचन्दजी सा. के श्री हस्तिमलजी श्री मोहनराजजी श्री माणिकलालजी श्री मदनलालजी ये चार पुत्र और एक पुत्री श्री वसंतकुवर मौजूद है, एवं सबसे बड़े पुत्र श्री सोहनराजजी सा. एवं सबसे छोटी पुत्री श्री सजनकुवरसाई स्वर्गस्थ हुए हैं। सेठ साहब के पांच पौत्र हैं, तीन पौत्रियाँ हैं और एक प्रपौत्र है इस तरह सेठ साहबने अपने सामने चार पीढ़ियों को फलते फुलते देखा है।

पूज्य आचार्य श्री जैनधर्मदिवाकर आगमोद्धारक श्री महाराज साहब श्रीघासीलालजीकी देखरेखमें वर्षों से कई शास्त्र ग्रन्थोंका लेखन, प्रकाशन और संपादन हो रहा है। समस्त जैनागमोंका आप भारतकी अद्यतन भाषा में संस्कृत-प्राकृत हिन्दी गुजरातीमें-सरल व्याख्या करके जैन धर्मकी अभिवृद्धि कर रहे हैं। श्रीमान् सेठसाहब के सुपुत्रोंने अपने पिताश्रीके पुण्यस्मरणार्थ शास्त्र प्रकाशनमें उदार सहायता की है।

श्रीमान् सेठ सा की पाली-जोधपुर-व्यावर-अहमदाबाद-मुंबई में अनेक पेढ़ियाँ हैं। इश्वर कृपा से बालियाजीके परिवार सुखसंपत्ति का सदा अनुभव करते रहे।

सेठ श्री पूनमचन्दजी गालिया

श्री रामारामजी

श्री अमरचन्दजी

श्री ताराचन्द जी

श्री मुकनचन्दजी

अपने भाईके लड़के श्री मुकनचन्दजी को गोद लिया

श्री सोहनराजजी

श्री हस्तीमलजी

श्री वसन्तकुमारबाई

श्री मोहनराजजी

श्री माणिकलालजी

श्री मदनलालजी

(१) पाच पोत्र

श्री सज्जनकुमारबाई

(२) तिन पात्रीयां

(३) एक प्रपौत्र



(૨૫.) શ્રી દિનેશભાઈ કાન્તિલાલ શાહ
અમદાવાદ.

(૨૬.) શ્રી હજનલાલ શામળદાસ ભાવસ
અમદાવાદ



શ્રી ખિનોદકુમાર વીરાણી-રાજકોટ
(દીક્ષા લીના પહેલા સાર્વજનિક કરતા)



શ્રી જીગિ ગભાઈ પોત્તાલાલભાઈ
અમદાવાદ

(૨૮) શ્રી રાજભાઈ મોહનલાલ શાહ
અમદાવાદ

શ્રી અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી
જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ

*

ગરેડીયાકુવા રોડ—શ્રીન લોજ પાસે,
રાજકોટ

*

દાતાઓની નામાવલી

*

ગરુડાત તા. ૧૮-૧૦-૪૪થી તા ૩૧-૧૨-૬૧ સુધીના
દાખલ થયેલ મેમ્બરોના સુખારક નામો.

*

લાઈફ મેમ્બરોનું ગામવાર કકાવારી લિસ્ટ

*

(નાની લેટની રકમો આપનારનું, તથા રૂ ૨૫૦થી
ઓછી રકમ ભરનારનું નામ આ યાદીમાં સામેલ કરેલ નથી)



૧૬ શેઠ મીશ્રીલાલજી જેવતરાજજી લૂણીયા ચડાવતવાળા અમદાવાદ ૫૫૦૨

૧૭ શેઠ રામજીભાઈ ગામજી વિરાણી એન્ડ સમરતળેન

રામજી વિરાણી ટ્રસ્ટ

રાજકોટ ૫૦૦૧

૧૮ એક જૈન ગૃહસ્થ

અમદાવાદ ૫૪૦૫

નોટ - ઘાટકોપરવાળા શેઠ માણેકલાલ એ મહેતા તરફથી અમદાવાદમાં પાલડી બગ સ્ટેન્ડ પામે પ્લોટ નં ૨૫૦ વાળી ૬૬૮ ચો. વાર જમીન મમિતિને લેટ મળેલ છે અને જેનું રજીસ્ટ્ર તા ૨૩-૩-૧૦ ના રોજ થઈ ગયેલ છે

મુરખીશ્રીઓ-૨૫

(ઓછામાં ઓછી રૂ. ૧૦૦૦ ની રકમ આપનાર)

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	વકીલ જીવરાજભાઈ વર્ધમાન કોઠારી હા કહાનદાસભાઈ તથા વેણીલાલભાઈ કોઠારી	જેતપુર	૩૬૦૫
૨	દોશી પ્રભુદાસ ગુણજીભાઈ	રાજકોટ	૩૫૦૪
૩	મહેતા ગુલાબચંદ પાનાચંદ	રાજકોટ	૩૨૮૬૧૧-૧૧
૪	મહેતા માણેકલાલ અમુલખરાય	ઘાટકોપર	૩૨૫૦
૫	સઘવી પીતાબરદાસ ગુલાબચંદ	ભામનગર	૩૧૦૧
૬	લક્ષ્મીભાઈ ગોરધનદાસ ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ હા શેઠ વાડીલાલ લક્ષ્મીભાઈ	અમદાવાદ	૨૫૦૦
૭	નામદાર ઠાકોર સાહેબ લખધીરસિંહજી બહાદુર	મોરબી	૨૦૦૦
૮	શેઠ ડહોરચંદ કુવરજી હા શેઠ ન્યાલચંદ દહોરચંદ	સિદ્ધપુર	૨૦૦૦
૯	શાહ છગનલાલ હેમચંદ વસા હા મોહનલાલભાઈ તથા મોતીલાલભાઈ	મુળધ	૨૦૦૦
૧૦	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સઘ હા શેઠ ચન્દ્રકાંત વીકમચંદ	મોરબી	૧૯૬૩
૧૧	મહેતા સોમચંદ તુલસીદાસ તથા તેમના ધર્મપત્ની અ. સૌ મણીગૌરી મગનલાલ	રતલામ	૨૦૦૦
૧૨	મહેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ	ભામજોધપુર	૧૫૦૨
૧૩	દોશી કપુરચંદ અમરશી હા દલપતરામભાઈ	ભામજોધપુર	૧૦૦૨
૧૪	બગડીયા જગજીવનદાસ રતનશી	ભામનગર	૧૦૦૨
૧૫	શેઠ માણેકલાલ લાલજીભાઈ	પોરબંદર	૧૦૦૧
૧૬	શ્રીમાન ચંદ્રસિંહજી સાહેબ મહેતા (રેલ્વે એન્જીનર)	કલકત્તા	૧૦૦૧

આઘમુરખીશ્રીઓ-૧૮

(ઓછામા ઓછી રૂા ૫૦૦૦ની ગ્રમ આપનાર)

નંબર	નામ	ગ્રામ	રૂપિયા
૧	શેઠ શાતીલાલ મગજદાસભાઈ જાણીતા મીવમાલીક	અમદાવાદ	૧૫૦૦૦
૨	શેઠ હરખચંદ કાળીદાસભાઈ વારીયા હા શેઠ લાલચંદભાઈ, નગીનભાઈ વૃન્દલાલભાઈ તથા વલ્લભદાસભાઈ	ભાણવડ	૬૦૦૦
૩	કેઠારી જેચંદ અજરામર હા હરગોવિંદભાઈ જેચંદભાઈ	ગજકેડ	૫૨૫૧
૪	શેઠ ધારશીભાઈ જીવનભાઈ	બારમી	૫૦૦૧
૫	સ્વ પિતાશ્રી છગનલાલ શામલદાસના સ્મરણાર્થે હા શ્રી ભોગીલાલ છગનલાલભાઈ ભાવસાર	અમદાવાદ	૫૨૫૧
૬	સ્વ શેઠ દિનેશભાઈના સ્મરણાર્થે હા શેઠ કાતિલાલ મણીલાલ જેશીગભાઈ	અમદાવાદ	૫૦૦૦
૭	શેઠ આત્મારામ માણેકલાલ હે શેઠ ચીમનલાલભાઈ શાતીલાલભાઈ તથા પ્રમુખભાઈ	અમદાવાદ	૬૦૦૧
૮	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીખાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શેઠ શામજી વેલજી વીરાણી	રાજકેડ	૫૦૦૦
૯	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીખાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા માતુશ્રી કડવીખાઈ વીરાણી	રાજકેડ	૫૦૦૦
૧૦	શેઠ પોઆલાલ પીતાબરદાસ	અમદાવાદ	૫૨૫૧
૧૧	શાહ રગજીભાઈ મોહનલાલ	અમદાવાદ	૫૦૦૧
૧૨	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીખાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શેઠ દુલ્લંબજી વીરાણી	રાજકેડ	૫૦૦૦
૧૩	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીખાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા શ્રીમતિ મણીકુ વરબેનદુલ્લંબજી વીરાણી	રાજકેડ	૫૦૦૦
૧૪	શ્રી શામજી વેલજી વીરાણી અને શ્રી કડવીખાઈ વીરાણી સ્મારક ટ્રસ્ટ હા છોટાલાલ શામજી વીરાણી	રાજકેડ	૫૦૦૦
૧૫	સ્વ માતુશ્રીના સ્મરણાર્થે હે ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ અને કુટુંબજનો	અમદાવાદ	૫૦૦૦

૧૫ શેઠ ગોવિંદજીભાઈ પોપટભાઈ	,,	૫૦૦
૧૬ શેઠ રામજી શામજી વીરાણી	,,	૫૦૧
૧૭ સ્વ પિતાશ્રી નદાજીના સ્મરણાર્થે હા વેણીચંદ શાંતિલાલ (જાનખાવાળા) મેઘનગર		૫૦૧
૧૮ શ્રી જૈનસ્થા સઘ હા શેઠ ઠાકરગી કરગનજી	યાનગઢ	૫૦૦
૧૯ શેઠ તારાચંદ પુખગજી	ઝોરગાળાદ	૫૦૦
૨૦ શ્રી સ્થા જૈન સઘ	,	૫૦૦
૨૧ મહેતા મુળચંદ રાઘવજી હા મગનલાલભાઈ તથા દુર્લાલજીભાઈ દ્રાક્ષા		૭૫૦
૨૨ શેઠ હરખચંદ પુરૂષોત્તમ હા ઇન્દુકુમાર	ચોરવાડ	૫૦૦
૨૩ ,, કેશગીમલજી વસ્તીમલજી શુગલીયા	મલાડ	૫૦૧
૨૪ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા, બાટવીયા અમીચંદ ગીરધરભાઈ બાખીનગીયા		૫૦૧
૨૫ શ્રી ખીમજીભાઈ બાવાભાઈ કુલચંદભાઈ શુલાખચંદભાઈ, નાગરદાસભાઈ જમનાદામભાઈ મુબઈ		૫૦૧
૨૬ શેઠ મણીલાલ મોહનલાલ ડગલી હા મુળજીભાઈ મણીલાલભાઈ મુબઈ		૫૦૧
૨૭ સ્વ કાતીલાલભાઈના સ્મરણાર્થે હા શેઠ બાલચંદ માકરચંદ	,,	૫૦૧
૨૮ કામદાર-રતીલાલ દુર્લાલજી (જેતપુરવાળા)	,,	૫૦૧
૨૯ શાહ જયતીલાલ અમૃતલાલ	શીવ	૫૦૧
૩૦ વોરા મણીલાલ લક્ષ્મીચંદ	,,	૫૦૧
૩૧ શેઠ શુલાખચંદ જુહરભાઈ તથા ઇસ્તુરજેન હા ભાઈ અનોપચંદ ખારરોડ		૫૦૧
૩૨ મહાન ત્યાગી જેન ધીરજીકુવર ચુનીલાલ મહેતા	દ્રાક્ષા	૫૦૧
૩૩ શ્રી સ્થા જૈન સઘ	દ્રાક્ષા	૫૦૧
૩૪ શ્રી મગનલાલ છગનલાલ શેઠ	રાજકોટ	૫૦૧
૩૫ શેઠ ચતુરદાસ ઠાકરશી તથા અ સૌ નંદકુવરજેન	જામનગર	૫૦૩
૩૬ શેઠ દેવચંદ અમરગી (જેન ધીરજીકુવરની દીક્ષા પ્રસંગે લેટ) ભાણવડ		૫૦૧
૩૭ શ્રી સ્થા જૈન સઘ (જેન ધીરજીકુવરની દીક્ષા પ્રસંગે લેટ) ભાણવડ		૫૦૧
૩૮ વકીલ વાડીલાલ નેમચંદ ચાહ	વીરમગામ	૫૦૧
૩૯ મહેતા શાંતિલાલ મણીલાલ હા કમળાજેન મહેતા	અમદાવાદ	૫૫૬
૪૦ શ્રીચુત લાલચંદજી તથા અ સૌ ધીસાજેન	,,	૫૦૧
૪૧ શેઠ મોહનરાજજી મુકુનચંદજી બાલીયા	,,	૫૦૧
૪૨ સ્વ શેઠ ઉકાભાઈ ત્રીભોવનદાસના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્નીલક્ષ્મીબાઈ ગીરધર તરફથી હા મરઘાજેન તથા મણીજેન		અમદાવાદ ૫૦૧

૧૭ મહેતા સોમચંદ નેણીભાઈ (કરાચીવાળા)	ગોશળી	૧૦૦૧
૧૮ શાહ હરિલાલ અનોપચંદ	ખભાત	૧૦૦૧
૧૯ મોદી કેશવલાલ હરીચંદ્ર	અમદાવાદ	૧૦૦૧
૨૦ કોઠારી છબીલદાસ હરખચંદ	સુબઈ	૧૦૦૦
૨૧ કોઠારી રંગીલદાસ હરખચંદ	બાવનગર	૧૦૦૦
૨૨ શાહ પ્રેમચંદ માલોકચંદ તથા અ. ગૌ અમગનગેન	અમદાવાદ	૧૦૦૩
૨૩ શેઠ કરમશી બેઠાભાઈ સોમયા હા. અ. સૌ માકરબેન	સુબઈ	૧૦૦૦
૨૪ શેઠ પોપટલાલ ચત્રભૂજ કોઠારી	સુરેન્દ્રનગર	૧૦૦૧
૨૫ શ્રી સ્થા. જૈન લીમડી મ. પ્રદાયના દામાગુણ નીધી પુન્ય શ્રી લાધાણ સ્વામીના શીષ્ય પ્રખર પડીત રત્ન શ્રી ઉત્તમચંદ મહારાજના સ્મરણાર્થે પુન્ય લાધાણ સ્વામી પુસ્તકાલય તરફથી હ શેઠ જેશીગભાઈ પોચાલાલ	અમદાવાદ	૧૦૦૦

સહાયક મેમ્બરો-૧૨૫

(ઓછામાં ઓછી રૂ. ૫૦૦ની રકમ આપનાર)

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	શ્રી સ્થા. જૈન સઘ હા. શેઠ જીજ્ઞાભાઈ વેલશીભાઈ વઢવાણશહેર		૭૫૦
૨	શેઠ નરોત્તમદાસ ઓઘડભાઈ	જોરાવરનગર	૭૦૦
૩	શેઠ રતનશી હીરજીભાઈ હા. ગોરધનભાઈ	ભામજેધપુર	૫૫૫
૪	ખાટવીયા ગીરધર પરમાણુ હા. અમીચંદભાઈ	ખાખીભાળીયા	૫૨૭
૫	ભોરખીવાળા સઘવી દેવચંદ નેણીભાઈ તથા તેમના ધર્મપત્ની અ. સૌ મણીભાઈ તરફથી હા. સુખચંદ દેવચંદ સઘવી	મલાડ	૫૧૧
૬	વેરા મણીલાલ પોપટલાલ	અમદાવાદ	૫૦૨
૭	ગોસલીયા હરીલાલ લાલચંદ તથા ચ. પાળેન ગોસલીયા	,,	૫૦૨
૮	શાહ મનહરલાલ પ્રાણીવનદાસ	સુબઈ	૫૦૧
૯	શેઠ ઇશ્વરલાલ પુરુષોત્તમદાસ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૦	શેઠ ચંદુલાલ છગનલાલ	,,	૫૦૧
૧૧	શાહ શાંતિલાલ માલોકલાલ	=	૫૦૧
૧૨	શેઠ શીવલાલ ડમગભાઈ (કરાચીવાળા)	લીમડી	૫૦૧
૧૩	કામદાર તારાચંદ પોપટલાલ ધોરાજીવાળા	રાજકોટ	૫૦૦
૧૪	મહેતા મોહનલાલ કપુરચંદ	,,	૫૦૦

- ૬૨ અ સૌ લીલાવતીબેન ઇન્દિરલાલ , ૫૦૨
- ૬૩ હેમાણી પ્રભુદાસ ભાણુજી કલકત્તા ૫૫૧
- ૬૪ શેઠ લક્ષ્મણદાસ મેજરામ અમદાવાદ ૫૦૧
- ૬૫ શ્રી સ્વા નૈન મોટા સઘ રાજકોટ ૫૦૧
- ૬૬ શેઠ ચાદમલ જીરધીચંદ નામિક મીટી ૫૦૧
- ૬૭ ઝવેરી માણેકચંદજી પત્તાલાલ છજલાણી
- હ ધનવતીબેન તથા કિરણબેન દિલ્હી ૫૦૧
- ૬૮ શેઠ હ સરાજજી પૂર્ણમલજી ઠાકરીયા ગોગોળાવ ૫૦૧
- ૬૯ શ્રી મે સ્વા નૈન મલા કલકત્તા ૫૦૧
- ૭૦ શેઠ તેજમિહજી કૃતેલાલજી છાજેઠ ઉદેપુર ૫૦૧
- ૭૧ શેઠ રતનચંદ લક્ષ્મીચંદ મુબઈ ૫૦૦
- ૭૨ શાહ ઉમરગી બીમગીભાઈ (સ્વ પિતાશ્રી બીમશીભાઈ તથા માતૃશ્રી પાલાખાઈ તથા ધર્મપત્ની પાનખાઈના સ્મરણાર્થે) મુબઈ ૫૫૨
- ૭૩ શાહ શામલભાઈ અમરસીભાઈ અમદાવાદ ૫૦૨
- ૭૪ મહેતા ચન્દ્રકાન્ત નૌતમલાલ મુબઈ ૫૦૧
- ૭૫ શેઠ બીખચંદ્ર લાલચંદ પીપલગામ ૫૦૧
- ૭૬ બેન મોહનીબેન મહેતા મુબઈ ૫૦૧
- ૭૭ શ્રીમતી મોધીબેન નવલચંદ શાહ લીમડી (સૌરાષ્ટ્ર) ૫૦૧
- હ મોતીબેન
- ૭૮ શ્રીમતી વિમલાજી સૂરજમલ મહેતા બેલગામ ૫૦૧
- ૭૯ ઉદાણી નિહાલચંદ્ર હાકેમચન્દ્ર વકીલ
- બી એ એલ એલ બી, રાજકોટ ૫૦૧
- ૮૦ સ્વ કોઠારી મગનલાલજી કુન્દનમલજીના સ્મરણાર્થે હ તેમના ધર્મપત્ની રાજકુવરબેન સતારા ૭૫૧
- ૮૧ શેઠ મોહનલાલજી મછાલાલજી હ રમણીકલાલ (પૂ મુનિશ્રી કૃતેચંદ મ ના શિષ્ય પ મુનિશ્રી કનૈયાલાલજી મ ના ઉપદેશથી) જયપુર ૫૦૧
- ૮૨ શેઠ કનૈયાલાલજી સોહનલાલજી કાવેડિયા ધારડી ૫૦૧
- ૮૩ શેઠ પ્રતાપમલજી કપુરચંદજી સાદરાવવાળા (પૂજ્ય કૃતેચંદ મ ના શિષ્ય મિશ્રીલાલજી મ ના શિષ્ય ચાદમલજી મ ના ઉપદેશથી) અમદાવાદ ૫૦૧

- ૪૩ પારેખ જ્યંતીલાલ મનમુખલાલ રાજકોટવાળા હા વિનુભાઈ ,, ૫૦૧
 ૪૪ શ્રી સ્થા નૈન સઘ વાકાનેર ૫૦૧
 ૪૫ શ્રી સ્થા નૈન સઘ ઘોટાદ ૫૦૧
 ૪૬ શેઠ ગુદડમલજી શેવમલજી જોવર (બરાર) ખીપજગાંવ ૫૦૧
 ૪૭ સ્વ તુરખીયા લહેરચંદ માણેકચંદના સ્મરણાર્થે તેમના
 ધર્મપત્ની જીવતીબાઈ તરફથી હા બાઈ
 જ્યંતીલાલ તથા પૂનમચંદલાઈ વડોદરા ૫૦૧
 ૪૮ શાહ અચલુજીદાસ ગુકનરાજજી હા ગુકનરાજજી અમદાવાદ ૫૦૧
 ૪૯ ભાવસાર ખોડીદાસ ગણેશભાઈ ધંધુકા ૫૦૧
 ૫૦ અ સૌ હીરાબેન માણેકલાલ મહેતા ધાટકોપર ૫૦૧
 ૫૧ મહેતા શાંતીલાલ મગનલાલ તથા અ સૌ પદમાવતી
 શાંતીલાલ મહેતા અમદાવાદ ૫૦૦
 ૫૨ શેઠ હીરાચંદજી વનેચંદજી કગરીયા દુબલી ૫૦૧
 ૫૩ શેઠ છોટુભાઈ હરગોવિંદદાસ કટોરીવાળા મુબઈ ૫૦૧
 ૫૪ પારેખ રતિલાલ નાનચંદ મોરખીવાળા તરફથી તેમના
 પિતાશ્રી નાનચંદ ગોવિંદજીના સ્મરણાર્થે તથા તેમના
 ધર્મપત્ની અ સૌ વસંત બહેનના આઠાઈતપ નિમિત્તે
 હા ભુપતલાલ રતિલાલ અમદાવાદ ૫૫૨
 ૫૫ સ્વ શાહ ત્રીલોચનદાસ મગનલાલના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
 શીવકુવરબાઈ તરફથી હા રતીલાલ ત્રીલોચનદાસ શાહ અમદાવાદ ૫૧૧
 ૫૬ શ્રીમાન નાથાલાલ માણેકચંદ પારેખ મુબઈ (માટુગા) ૫૦૧
 ૫૭ શ્રી લીમડી સ પ્રદાયના ગચ્છાધીપતિ પૂ આચાર્ય
 મહેરાજ શ્રી લાધાજી સ્વામીના સ્મરણાર્થે હા
 શેઠ જેશીગભાઈ પોચાલાલ (મહેરાજ શ્રી
 ઘોટાલાલજી સદાનદીના ઉપદેશથી) અમદાવાદ ૫૦૧
 ૫૮ સ્વ શ્રી વિનયમૂર્તિ શ્રી લક્ષ્મીચંદજી મહાસજના સ્મરણાર્થે
 હા શેઠ જેશીગભાઈ પોચાલાલ (મહેરાજશ્રી ઘોટાલાલજી
 સદાનદીના ઉપદેશથી) અમદાવાદ ૫૦૧
 ૫૯ બા ધ્ર પ્રભાવતીબેન કેશવલાલ ઉજ્જવેનવાલા તરફથી
 તેમની દીક્ષા પ્રસંગે વીરમગામ ૫૫૧
 ૬૦ શેઠ શ્રીયુત હરજીવનદાસ રાયગંદ હા છખીલદાસ હરજીવન અમદાવાદ ૫૦૧
 ૬૧ શેઠ પોપટલાલ હંસરાજ તથા દિવાળીબેનના સ્મરણાર્થે
 હા શેઠ બાણુલાલ પોપટલાલ અમદાવાદ ૫૦૨

નંબર	નામ	જામ	રૂપિયા
૯૮	શ્રી વર્ધમાન સ્થા નૈન શ્રાવડ મઘ હ		
	પ્રમુખ બીલાલ કટારીયા	હિજલુધાટ	૫૦૧
૯૯	લાલાજી ગમલાલજી રોગનલાલજી અનેક શુણ્ણકૃત મહામતીજી મોહનદેવીના ઉપદેશથી)	દીંહી	૫૦૧
૧૦૦	સ્વ મહેતા મગજી મણીલાલજીના ન્મરણાર્થે હ તેમના ધર્મપત્ની શુભવતીબહેન મહેતા	પોટેચેરી	૫૦૧
૧૦૧	ખાટવીયા વનેચદ અમીચદ (મહાવીર ટેક્સટાઇલ નેટર્સ) બેગલોર	પપ્પ	૫૫૩
૧૦૨	શ્રીયુત તાગચદ ગેલડા ટ્રસ્ટ	મદ્રાસ	૫૦૧
૧૦૩	ગે. ગુલરાજજી પુનમચદજી મહેતા	કીમનગઢ	૫૫૧
૧૦૪	ગે. અગમ્મલજી ત્રીકમચદજી	ઇદોગ મીટી	૫૫૧
૧૦૫	ઠાનુગા ધીગડમલજી મુલતાનમલજી		
	૮વાડ ગઢમીયાણા વાળા	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૦૬	લાલાજી નવગતનચદજી ચોગડીયાના ધર્મપત્ની શ્રીમતી રાજકુમારીબેન	દીંહી	૫૦૧
૧૦૭	ગેઠ ચીમનલાલ રૂપલચદ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૦૮	ગેઠ ઠાનજી પાનાચદ લીમાણી ટ્રસ્ટ	ઢલકત્તા	૫૦૧
૧૦૯	ગેઠ ગીરધરલાલ હ મગજ કામાણી	"	૫૦૧
૧૧૦	અનેક શુણ્ણકૃત મહાસતી મોહનદેવીજીના ઉપદેશથી ન્વધર્મા બધુઓ તરફથી	દીંહી	૫૦૧
૧૧૧	સ્વ વિનયચદજી પારેખના ન્મરણાર્થે લાલા ખૂણ્ણચદજી રતનચદજી પારેખની વતી હ શ્રીમતી પ્રેમાદેવી (શાત ન્વલાવી મહામતીજી કુલકુવળાઈના ઉપદેશથી)	દીંહી	૫૦૧
૧૧૨	શ્રીમતી બદામળાઈ મીશ્રીલાલજી લૂણીયા ચડાવતવાળા	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૧૩	શેઠ લગ્તકુમાર મણીલાલ દલાલ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૧૪	ચાહ હેરખચદ અમરચદ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૧૫	ચાહ જગજીવનદાસ વન્દાવનદાસ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૧૬	ગેઠ હ મરાજ લક્ષ્મીચદ કામાણી નૈનબૂવન	કલકત્તા	૫૦૧

- ૮૪ શ્રીમાન લાલાજી રોશનલાલજી મમન્દરલાલજી
હ મોતીલાલજી
જાડોત ૫૦૧
- ૮૫ શ્રીમાન બૂરમલજી દલીયદજી સાકરિયા (પૂ મ શ્રી
સ્વામીદાસજીના સપ્રદાય પૂમ શ્રી કૃતેયદજી મ ના
શિષ્ય પ મુની શ્રી કનૈયાલાલજી મ ના ઉપદેશથી
સાદરાવ ૫૦૧
- ૮૬ સ્વ ગોરીશકર કાળીદાસ દેમાઈના સ્મરણાર્થે હ
બૂપતલાલ ગોરીશકર
ઈદાર ૫૦૧
- ૮૭ શેઠ સાહેબ શ્રી નર્સોરામભાઈ હ સરાજભાઈ કમાળી
જગશેઠપુર ૫૦૧
- ૮૮ સ્વ મહાસજી શ્રી ધનદેવીજી મ મા ના સ્મરણાર્થે
સ્વ ખૂબચંદજી સખલાલના ધર્મપત્ની શ્રીમતી જય-
દેવી તરફથી (મહાસતીજી શ્રી સુદર્શનામતિજી તથા
કુલમતીજીના ઉપદેશથી
દિલ્હી ૫૦૧
- ૮૯ શ્રીમાન લાલાજી કપૂરચંદજી બોધરાના ધર્મપત્ની
શ્રીમતી , વસતદેવી હા લાલા રાજમલજી હેમચંદજી
તરફથી (મહાસતી શ્રી સુદર્શનામતિજી તથા કુલમ
તિજી મહાદેવીના ઉપદેશથી)
દિલ્હી ૫૦૧
- ૯૦ સ્વ મહાસતીજી શ્રી દ્રૌપતાદેવીજી મ સા ના સ્મરણાર્થે
શ્રી અસ એસ જૈન મહિલા સઘ તરફથી (અનેક ગુણાલકૃત
મહાસતીજી શ્રી મોહનદેવીજી મ સા ની પ્રેરણાથી)
દિલ્હી ૫૦૧
- ૯૧ સ્વ લક્ષ્મીચંદજીના સ્મરણાર્થે નગિનાદેવી સુજતીના તરફથી હસ્તે
સઘવી હેમતકુમાર જૈન
દિલ્હી ૫૦૧
- ૯૨ સ્વ પિતાશ્રી લાલા ઝવેરી ઘનોમલજી સુજતી ના સ્મરણાર્થે
હસ્તે શ્રીમતી નગીના દેવી
દિલ્હી ૫૦૧
- ૯૩ લાલાજી કરતુરચંદજી ખુશાલચંદજી સચેતી હ જ્ઞાનચંદજી અલવર ૫૦૧
- ૯૪ સ્વ પૂજ્ય પિતાશ્રી દુર્લભજી સોમચંદ દક્ષતરી
હ ગોરીશકર દુર્લભજી દક્ષતરી
મુખઈ ૫૦૦
- ૯૫ શેઠ સોમચંદ જેઠાલાલ ઘોલાણી હ
મુનીલાલભાઈ બેડીયાવાળા
મુખઈ ૫૦૬
- ૯૬ શેઠ દ્રોજમલજી સુલતાનગીહજી બોરદીયા
અમદાવાદ ૫૦૧
- ૯૭ શેઠ છગનલાલ શામજીવિરાણી તથા
શ્રીમતી વૃજકુવરબેન છગનલાલ વિરાણી દૂસ્તદ્દ
તરફથી શેઠ છગનલાલ ભાઈના સ્મરણાર્થે
રાજકોટ ૫૦૧

૧૩ શ્રી છીપાપોળ ફરીયાપુરી આઠકોટી સ્થા નૈન સઘ	
હા શેઠ ચંદુલાલ અચરતલાલ	૨૫૧
૧૪ ગાહ ચીનુભાઈ બાલાભાઈ C/O ગાહ બાલાભાઈ મહામુશલાલ	૨૫૧
૧૫ શાહ ભાઈલાલ ઉન્નમશી	૨૫૧
૧૬ શ્રી મુખલાલ ડી શેઠ હા ડો કુ સગ્ગવતીબેન શેઠ	૨૫૧
૧૭ શ્રી મૌરાપ્ત સ્થા નૈન સઘ હા શેઠ ક્રતિલાલ છવણલાલ	૨૫૧
૧૮ મોદી નાથાલાલ મહાદેવદામ	૨૫૧
૧૯ શાહ મોહનલાલ ત્રીકમલાલ	૨૫૧
૨૦ શ્રી છકોટી મ્થા નૈન મઘ હા શેઠ પોચાલાલ પિતાળગદામ	૨૫૧
૨૧ દેગાઈ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે હા ભાઈલાલ અમૃતલાલ	૨૫૧
૨૨ શાહ નવનીતરાય અમુલખગય	૨૫૧
૨૩ શાહ મણીલાલ આચારામ	૨૫૧
૨૪ શેઠ ચીનુભાઈ માકરચંદ	૨૫૧
૨૫ ગાહ વરછવનદામ ઉમેદચંદ	૨૫૧
૨૬ શાહ રજનીકાંત કસ્તુરચંદ	૨૫૧
૨૭ સઘવી છવણલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૨૮ શાહ શાંતિલાલ મોહનલાલ પ્રાગપ્રાવાળા	૨૫૨
૨૯ અ સો બેન ગનબેન નાદેચા હા શેઠ ધુલજી ચપાલાલજી	૨૫૧
૩૦ શાહ હરિલાલ જેઠાલાલ ભાડલાવાળા	૨૫૧
૩૧ શ્રી મરસપુર ફરીયાપુરી આઠ કોટી મ્થા નૈન ઉપાશ્રય	
હા ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૩૨ શેઠ પુષ્પરાજજી સમતીરામજી પુનમિયા માદડીવાળા	૨૫૧
૩૩ સ્વ પિતાશ્રી જવાહરલાલજી તથા પૂજ્ય આચારજી હંજરીમલજી	
બરડીયાના સ્મરણાર્થે હા મુળચંદ જવાહરલાલજી બરડીયા	૨૫૧
૩૪ સ્વ ભાવસાર બબાભાઈ (મગજદાસ) પાનાચંદના સ્મરણાર્થે	
હા તેમના ધર્મપત્ની પુરીબેન	૨૫૧
૩૫ સ્વ પિતાશ્રી રવજીભાઈ તથા સ્વ માતૃશ્રી મુળીબાઈના સ્મરણાર્થે	
હા કકલભાઈ કોઠારી	૩૦૧
૩૬ ભાવસાર કેશવલાલ મગનલાલ	૨૫૧
૩૭ ગાહ કેશવલાલ નાનચંદ બખડાવાળા હા. પાવતીબેન	૨૫૧

૧૧૭ પૂ. દાદાજી સ્વ. કપુરચંદ્રજી તથા દાદીજી કેસરબેન ચોરડીયાના સ્મરણાર્થે હ. લાલા ફલચંદ્ર અને શ્રીમતી વીમલકુવરી જવેરી નીવતી શ્રીમતી નગીનાદેવી (મહાસતીજી કુલમતીજીના ઉપદેશથી)	દીઠહી ૫૦૧
૧૧૮ શેઠ નગીનદાસ છોટાલાલ	અમદાવાદ ૫૦૧
૧૧૯ શ્રી સ્થા. જૈન સઘ હ. શેઠ ગણેશમલ્લ ગુલાબચંદ	બરોડા ૫૦૧
૧૨૦ શ્રી સ્થા. જૈન સઘ	ભદ્રેસર ૫૦૧
૧૨૧ શ્રી સરાક જૈન વિદ્યાલય	કુમારડી ૫૦૧
૧૨૨ ગાધી ભુરાલાલ નાનચંદ	મુબઈ ૫૦૧
૧૨૩ શ્રીમાન હિમતસિંહજી સાહેબ ગલ્લૂડીયા એડીસનલ કમીશનર અજમેર ડીવીઝનવાળાના ધર્મપત્ની અ. સૌ. માણેકકુવરબેન તરફથી હ. ખશાલસિંહજી ગલ્લૂડીયા	જયપુર ૫૫૧

૫૮૪-લાઈફ મેમ્બરો

અમદાવાદ તથા પરાઓ

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	શેઠ ગીરધરલાલ કરમચંદ		૨૫૧
૨	શેઠ છોટાલાલ વખતચંદ હા. ફકીરચંદભાઈ		૨૫૧
૩	શાહ કાતિલાલ ત્રીલોચનદાસ		૨૫૧
૪	શાહ પોપ્પલાલ મોહનલાલ		૨૫૧
૫	શેઠ પ્રેમચંદ સાકરચંદ		૨૫૦
૬	શાહ રતીલાલ વાડીલાલ		૨૫૧
૭	શેઠ લાલભાઈ મગજદાસ		૨૫૧
૮	સ્વ. અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે હા. કાનજીભાઈ અમૃતલાલ દેશાધરિપ૧		
૯	શાહ નટવરલાલ ચંદુલાલ		૨૫૧
૧૦	શાહ નરસિંહદાસ ત્રીલોચનદાસ		૨૫૧
૧૧	શાહ બીપીનચંદ તથા ઉમાકાંત ચુનીલાલ ગોપાણી		૩૦૧
૧૨	શ્રી શાહપુર દરિયાપુરી આઠકોટી ચા. જૈન ઉપાશ્રય હા. વહીવટ કર્તા શેઠ ઇન્દિરલાલ પુરુષોત્તમદાસ		૨૫૧

- ૬૩ અ સૌ બેન લાબુબેન મગનલાલ હ શાહ અમૃતલાલ ધનજીભાઈ
વઢવાણ શહેરવાળા ૩૦૧
- ૬૪ અ સૌ બેન કાન્તાબેન ગોરધનદાસ (આદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૬૫ દોગી કુલચંદ મુખલાલભાઈ બોટાદવાળાના અમરણાર્થે
હ દોગી છબીલદાસ કુલચંદભાઈ ૨૫૧
- ૬૬ લાલાજી ગમધુવરજી જૈન ૨૫૧
- ૬૭ શેઠ છોટાલાલ ગુલાબચંદ પાલનપુરવાળા ૨૫૧
- ૬૮ શાહ ધીરજલાલ મોતીલાલ ૨૫૧
- ૬૯ સઘવી સૂર્યકાંત ગુનીલાલના અમરણાર્થે
હ સઘવી જીવણલાલ ગુનીલાલ ૨૫૧
- ૭૦ ભાવસાર મોહનલાલ અમુલખરાય ૨૫૧
- ૭૧ મહેતા મૂળચંદ મગનલાલ ૨૫૧
- ૭૨ વૈદ્ય નરસિંહદાસ માકરચંદના ધર્મપત્ની રેવાબાઈના અમરણાર્થે
હ હરીલાલ નરસિંહદાસ ૨૫૧
- ૭૩ શાહ કુલચંદભાઈ મુલચંદ હ હંસમુખભાઈ કુલચંદભાઈ ૨૫૧
- ૭૪ શેઠશ્રી મિશ્રીલાલજી જવાહીરલાલજી ગરડીયા ૨૫૧
- ૭૫ શાહ લલ્લુભાઈ મગનભાઈ ગુડાવાળા હ જશવંતલાલ લલ્લુભાઈ ૩૦૧
- ૭૬ કુમારી પુષ્પાબેન હીંગલાલ (આદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૭૭ શાહ મણીલાલ ઠાકરશી હ કમળાબેન મણીલાલ લખતરવાળા
(આદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૭૮ કુમારી નલીનીબેન જયતીલાલ ૨૫૧
- ૭૯ અ ઉમેદરામ ત્રીભુવનદાસના ધર્મપત્ની કાશીબાઈના અમરણાર્થે
હા ચાતિલાલ ઉમેદરામ (આદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૮૦ અ ભાવસાર મોહનલાલ છગનલાલના ધર્મપત્ની દિવાળીબાઈના
અમરણાર્થે હ રતીલાલ માણેકલાલ (આદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૮૧ મહેતા દેવીચંદજી મુખચંદજી ધોક્કા ગઢસીયાણાવાળાના અમરણાર્થે
હ મહેતા ગુનીલાલ હરમાનચંદ ૨૫૧
- ૮૨ ઘાસીલાલજી મોહનલાલજી કોઠારી ઠેઠ લક્ષ્મી પુસ્તક લઢાર ૨૫૧
- ૮૩ સ્વ૦ શેઠ નાથાલાલ રતનાભાઈ માફતીયાના અમરણાર્થે
પુનાબેન તરફથી હ ઝરશનભાઈ (આદમુનિના ઉપદેશથી) ૨૫૧

૩૮ શાહ જીતેન્દ્રકુમાર પાડીલાલ માણેકચંદ રાજસીતાપુરવાળા	૨૫૧
૩૯ શ્રી સાબરમતી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ મણીલાલભાઈ	૨૫૦
૪૦ ભાવસાર દોડાલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૪૧ ભાવસાર શકરાભાઈ છગનલાલ	૨૫૧
૪૨ અ સૌ બેન જીવીબેન રતિલાલ હા ભાવસાર રતિલાલ હરગોવિંદદાસ	૨૫૧
૪૩ ભાવસાર લોગીલાલ જમનાદાસ પાટણવાળા	૨૫૧
૪૪ સઘવી જાલુભાઈ કમળશી તથા તેમના ધર્મપત્નીઓ અ સૌ અ પાબેન તથા વસંતબેન તરફથી	૨૫૧
૪૫ અ સૌ વિદ્યાબેન વનેચંદ દેસાઈ વર્ધીતપ તથા અઠાઈ પ્રસંગે હા જીતેન્દ્રકુમાર વનેચંદ દેસાઈ	૪૧૭
૪૬ શાહ નટવરલાલ ગોકળદાસ	૨૫૧
૪૭ અ સૌ મરસ્વતીબેન મણીલાલ છગનલાલ	૩૫૧
૪૮ અ સૌ કકુબેન (ભાવસાર લોગીલાલ છગનલાલના ધર્મપત્ની)	૩૦૬
૪૯ અ સૌ સવિતાબેન (જયતીલાલ લોગીલાલના ધર્મપત્ની)	૨૫૧
૫૦ અ સૌ શાતાબેન (દીનુભાઈ લોગીલાલના ધર્મપત્ની)	૨૫૧
૫૧ અ સૌ સુનદાબેન (રમણલાલ લોગીલાલના ધર્મપત્ની)	૨૫૧
૫૨ શેઠ હીરાજી રૂગનાથજીના સ્મરણાર્થે હ વાગમલજી રૂગનાથજી	૩૦૧
૫૩ શેઠ મણીલાલ ખાંધાભાઈ	૨૫૧
૫૪ પટવા સુમેરમલજી અનોપચંદજી જોધપુરવાળા	૩૦૧
૫૫ સ્વ માણેકલાલ વનમાળીદાસ શેઠના સ્મરણાર્થે હા રમણલાલ માણેકલાલ	૨૫૧
૫૬ સ્વ શાહ ધનરાજજી ખેમરાજજીના સ્મરણાર્થે હા કનૈયાલાલ ધનરાજજી	૩૦૧
૫૭ શ્રી સારંગપુર દ આ કે સ્થા જૈન સઘ હા શાહ રમણલાલ લગુભાઈ	૨૫૧
૫૮ દોશી હરજીવનદાસ જીવરાજ તથા લક્ષ્મીભાઈ લહેરચંદના સ્મરણાર્થે હ દોશી મનહરલાલ કરશનદાસ મુળીવાળા	૨૫૧
૫૯ શાહ પુનમચંદ કૃતેહચંદ	૨૫૧
૬૦ શ્રીયુત ચતુરભાઈ નંદલાલ	૨૫૧
૬૧ શ્રીયુત અમૃતલાલ ધંધરલાલ મહેતા	૨૫૧
૬૨ શાહ જીવજી જોડનલાલ તથા શાહ ચીમનલાલ અમલખભાઈ	૨૫૧

૧૦૫ શાહ મહામુખલાલ ભાઈલાલ (મદાનદી પડિત મુનિશ્રી છોટાલ મહારાજના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૧૦૬ અ સૌ કાતાબેન ઝાળીદામ ઠે કુમાર બુક બાઈડીંગ વર્કસ	૨૫૧
૧૦૭ અ હીમતલાલ મગનલાલના સ્મરણાર્થે તેમના મુપુત્રો મેગર્મ દ્વારકાદાસ એન્ડ પ્રધર્મ તરફથી	૩૦૧
૧૦૮ અ સૌ કાન્તાબેનના સ્મરણાર્થે હા ભાવમાર નાગરદામ હરજીવનદાસ	૨૫૧
૧૦૯ શ્રી ઉમેશચંદ દાકરશી ઠે યુ ટી ગોપાલી એન્ડ સન્સ	૩૫૧
૧૧૦ પૂ માતુશ્રીના સ્મરણાર્થે હા ભાવમાર ભોગીલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૧૧૧ શાહ શાતીલાલ મોહનલાલ	૨૫૧
૧૧૨ મરસ્વતી પુસ્તકભંડાર હા પ્રભુદામ મહેતા	૨૫૧
૧૧૩ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર હા ગહ ભુતલાલ કાળીદાસ	૨૫૧
૧૧૪ સ્વ, પિતાશ્રી મોતીલાલના સ્મરણાર્થે હા મહેતા રણજીતલાલજી મોતીલાલજી ઉદેપુરવાળા	૨૫૧
૧૧૫ શેઠ પરસોત્તમદાસ અમરમીના ધર્મપત્ની સ્વ કુસુમબેનના સ્મરણાર્થે તથા અ મૌ મવીતાબેનના માસખમણના નિમિત્તે હા શેઠ મોમચંદ પરસોત્તમદાસ (પોર્ટ મુદાનવાળા)	૩૦૧
૧૧૬ શ્રીમાન ભોરાવરમલજી ધર્મચંદ્રજી હુગરવાલ રાતજી કાંઠેરડાવાળા (મુનિશ્રી માગીલાલજીના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૧૧૭ ડૉ ધનજીભાઈ પુરસોત્તમદાસ	૨૫૧
૧૧૮ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર	૩૫૧
૧૧૯ સરસ્વતી પુસ્તક ભંડાર	૩૫૧
૧૨૦ સરસ્વતી ભંડાર	૩૫૧
૧૨૧ શેઠ ગેરિલાલજી મુગનલાલજી ઉદેપુરવાળા	૨૫૧
૧૨૨ શેઠ કનૈયાલાલજી સુરાણા પીપલોદાવાળા	૨૫૨
૧૨૩ ગમદાર વાડીલાલ દત્તીલાલ (સાબરમતી)	૨૫૨
૧૨૪ કુમારી ચ પાબેન ભોગીલાલ ભાવસાર	૨૮૦
૧૨૫ કુમારી ઉપાબેન જયતીલાલ ભાવસાર	૨૫૧
૧૨૬ કુમારી ચ દ્રાબેન જયતીલાલ ભાવસાર	૨૪૧
૧૨૭ કુમારી જયશ્રી રમણલાલ ભાવસાર	૨૫૧
૧૨૮ શાહ ડાહ્યાભાઈ અ બાલાલ	૩૫૧

૮૪ શાહ મણીલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૮૫ ભાવસાર જ્યતીલાલ ભોગીલાલ	૨૫૧
૮૬ ભાવસાર દિનુભાઈ ભોગીલાલ	૨૫૧
૮૭ ભાવસાર રમણુલાલ ભોગીલાલ	૨૫૧
૮૮ ભાવસાર કનુભાઈ સાકરચંદ	૨૫૧
૮૯ શેઠ લેફ્ટનન્ટ સાહેબ ભેદપુરવાળા	૨૫૧
૯૦ સ્વ ઘેનાણી વર્ધમાન રામભાઈ કુદરુવાળાના સ્મરણાર્થે હ શાંતિલાલ વર્ધમાન	૨૫૧
૯૧ સ્વ કચરાભાઈ લહેરાભાઈના સ્મરણાર્થે હ શાંતિભાઈ કચરાભાઈ	૨૫૧
૯૨ એક સ્વધર્મી બધુ હ શાહ રીખલદાસજી જ્યતિલાલજી	૨૫૧
૯૩ અ સૌ સરસ્વતીબેન મણીલાલ ચતુરભાઈ શાહ (સદાનદી છોટાલાલ મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી)	૨૫૧
૯૪ ચીમનલાલ મણીલાલ શાહ (રરીયાપુરી સમ્રાટના પૂઠ તપસ્વી મહારાજશ્રી માણેકચંદ્રજીના શિષ્ય મુનિશ્રી મગનલાલજી મહારાજશ્રીના સ્મરણાર્થે)	૨૫૧
૯૫ બેન જેકુવર ઝજલાલ પારેખ	૨૫૧
૯૬ શેઠ પુનમચંદજી જવાહીરલાલજી ખરડીયા	૨૫૧
૯૭ અ સૌ લીલાવતી ધીરજલાલ મહેતા હે ડા. ધીરજલાલ ત્રીકમલાલ મહેતા	૩૦૧
૯૮ શેઠ રાજમલજી ઘાસીલાલજી કેઠારી કેશીધલવાળા	૨૫૧
૯૯ શેઠ ચુનીલાલ ભગવાનજી કે સતીલાલ ચુનીલાલ	૨૫૧
૧૦૦ ભાગ્યવતી અરવીદકુમાર કે અરવીદકુમાર સકરાભાઈ ભાવસાર	૨૫૧
૧૦૧ અ સૌ ચચળબેન મનસુખલાલ હા મનસુખલાલ જેઠાલાલ રૂપેરા	૨૫૧
૧૦૨ સ્વ આસીભાઈ તથા વસ્તીમલજી ભોમાજીના સ્મરણાર્થે હા શેક મીશ્રીમલજી દેવચંદજી ઓમવાલ કેરુવાળા	૨૫૧
૧૦૩ સ્વ શેઠ કીશનમલજી માડોતના સ્મરણાર્થે હા શીરમલજી કીશનમલજી સોજતવાલા	૨૫૧
૧૦૪ સ્વ શેઠ વકતાવરમલજીના સ્મરણાર્થે હા શેઠ ધીપ્રાલાલજી મુન્નરાજજી શીનારીયા (ભેદપુરવાળા)	૨૫૧

- ૧૦૫ શાહ મહામુખલાલ લાઈલાલ (મદાનદી પદિત મુનિશ્રી
છોટાલ મહાગજના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૧૦૬ અ મૌ કાતાબેન કાળીદામ ઠે કુમાર બુક બાઈડીંગ વર્કસ ૨૫૧
- ૧૦૭ સ્વ હર્મિતલાલ મગનલાલના સ્મરણાર્થે તેમના
સુપુત્રો મેમર્મ દ્વારકાદાસ એન્ડ પ્રધર્મ તરફથી ૩૦૧
- ૧૦૮ અ સૌ કાન્તાબેનના સ્મરણાર્થે
હા ભાવમાર નાગરદામ હરજીવનદાસ ૨૫૧
- ૧૦૯ શ્રી ઉમેશ્વર ઠાકરશી ઠે યુ ટી ગોપાલી એન્ડ મન્સ ૩૫૧
- ૧૧૦ પૂ માતુશ્રીના સ્મરણાર્થે હા ભાવમાર બોગીલાલ છગનલાલ ૨૫૧
- ૧૧૧ શાહ શાતીલાલ મોહનલાલ ૨૫૧
- ૧૧૨ સરસ્વતી પુસ્તકબઝાર હા પ્રભુદામ મહેતા ૨૫૧
- ૧૧૩ સરસ્વતી પુસ્તક બઝાર હા ગહ ભુરાલાલ કાળીદાસ ૨૫૧
- ૧૧૪ સ્વ, પિતાશ્રી મોતીલાલના સ્મરણાર્થે
હા મહેતા રણજીતલાલજી મોતીલાલજી ઉદેપુરવાળા ૨૫૧
- ૧૧૫ શેઠ પરસોત્તમદાસ અમરમીના ધર્મપત્ની સ્વ કુમુમબેનના
સ્મરણાર્થે તથા અ મૌ મવીતાબેનના માસખમણના નિમિત્તે
હા શેઠ મોમચંદ પરસોત્તમદાસ (પોર્ટ મુદાનવાળા) ૩૦૧
- ૧૧૬ શ્રીમાન જ્ઞેશવમલજી ધર્મચંદ્રજી કુગરવાલ
રાજજી કાઢેરકાવાળા (મુનિશ્રી માગીલાલજીના ઉપદેશથી) ૨૫૧
- ૧૧૭ ડા. ધનજીભાઈ પુરસોત્તમદાસ ૨૫૧
- ૧૧૮ સરસ્વતી પુસ્તક બઝાર ૩૫૧
- ૧૧૯ સરસ્વતી પુસ્તક બઝાર ૩૫૧
- ૧૨૦ સરસ્વતી બઝાર ૩૫૧
- ૧૨૧ શેઠ ગેરિલાલજી મુગનલાલજી ઉદેપુરવાળા ૨૫૧
- ૧૨૨ શેઠ કનૈયાલાલજી સુરાણા પીપલોદાવાળા ૨૫૨
- ૧૨૩ કામદાર વાડીલાલ દત્તીલાલ (સાળરમતી) ૨૫૨
- ૧૨૪ કુમારી ચ પાબેન ભોગીલાલ ભાવસાર ૨૮૦
- ૧૨૫ કુમારી ઉપાબેન જયતીલાલ ભાવસાર ૨૫૧
- ૧૨૬ કુમારી ચંદ્રાબેન જયતીલાલ ભાવસાર ૨૪૧
- ૧૨૭ કુમારી જયશ્રી રમણલાલ ભાવસાર ૨૫૧
- ૧૨૮ શાહ ડાહ્યાભાઈ અબાલાલ ૩૫૧

૧૨૯ ખરડિયા આહમદલલ અવાહીર લાલલ	૫૧
૧૩૦ શ્રી વીજયદાન સુરેશ્વરલ જ્ઞાનમદીર પોષધશાળા	૩૫૧
૧૩૧ શેઠ પાનાચંદ અવેરચંદ સારંગપુર ઉપાશ્રય દ્રુસ્ટ હ વકીલ બાબુભાઈ હીંમતલાલ	૩૫૧

અમલનેર

૧ શાહ નાગરદાસ વાઘજીભાઈ	૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા ગાડાલાલ બીખાલાલ	૨૫૧

અજમેર

૧ શેઠ ભુરાલાલ મોહનલાલ હુગરવાલ	૨૫૧
-------------------------------	-----

અંતર

૧ શ્રીમતી ચપાદેવી ઠે બુદ્ધામલલ રતનમલલ સચેતી	૨૫૧
૨ શેઠ આહમદલલ મહાવીર પ્રસાદ પાલાવત	૨૫૧
૩ શ્રીચુત રૂપલકુમાર સુમતિકુમાર નૈન	૨૫૧

આસનસોલ

૧ બાવીશી મણીલાલ અત્રભુજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની મણીબાઈ તરફથી હા રસિકલાલ, અનિલકાત, તથા વીનોદરાય	૨૫૧
--	-----

આટકોટ

૧ મહેતા ચુનીલાલ નારણદાસ	૩૦૧
-------------------------	-----

આણંદ

શેઠ રમણીકલાલ એ કપાસી હા મનસુખલાલભાઈ	૨૫૧
-------------------------------------	-----

આકોલા

શેઠ કચનલાલ રાઘવજી અજમેરા ડે મેસર્સ અજમેરા બ્રપર્સ એન્ડ કુા (પૂ સદાનદી મુનિશ્રી છોટાલાલજી મહારાજના ઉપદેશથી)	૨૫૧
---	-----

છંગતપુરી

૧ શેઠ પન્નાલાલ લખીચંદ નૈન	૨૫૧
---------------------------	-----

ઈન્દોર

૧ અ સૌ બેન દયાબેન મોહનલાલ દેસાઈ જેતપુરવાળા (અ સૌ બેન વિદ્યાબેનના વર્ષોત્તપ નિમિત્તે) હા અરવિંદકુમાર તથા જીતેન્દ્રકુમાર	૨૫૧
૨ શ્રીચુત ભાઈલાલ છંગનલાલ તુરખીયા	૩૫૧

ઉદયપુર

- ૧ શેઠ રણુજીતલાલજી મોતીલાલજી હિંગડ ૨૫૧
- ૨ શ્રીમતી મોહીનીબાઈ ઠે રણુજીતલાલજી મોતીલાલજી હિંગડ ૨૫૧
- ૩ અ મૌ બેન ચન્દ્રાવતી તે શ્રીમાન બહોતલાલજી નાહંગના
ધર્મપત્ની, હા શેઠ રણુજીતલાલજી મોતીલાલજી હિંગડ ૨૫૧
- ૪ શેઠ હગનલાલજી બાગેચા ૨૫૧
- ૫ શેઠ મગનલાલજી બાગેચા ૨૫૧
- ૬ ૨૧ શેઠ ઝાળુલાલજી લોહાના મ્મરણાર્થે
હા શેઠ દોલતમિહજી લોહા ૨૫૧
- ૭ ૨૧ શેઠ પ્રતાપભલજી માખલાના મ્મરણાર્થે
હા પ્રાણુલાલ હીરાલાલ માખલા ૨૫૧
- ૮ શેઠ ભીમરાજજી ચાવચ્ચદજી બાફણા ૨૫૧
- ૯ શ્રીચુત માહેજલાલજી મહેતા ૨૫૧
- ૧૦ શેઠ પન્નાલાલજી ગણેરાલાલજી હીંગડ ૨૫૧
- ૧૧ શેઠ દીપચદજી પન્નાલાલજી લોહા ૨૫૧
- ૧૨ શે. ડન્તૂરચદજી નાડમલજી ૨૫૧
- ૧૩ શ્રી ચૂ એલ ડોલગી ૩૦૧
- ૧૪ બાળૂ પશુરામ હગનલાલજી શેઠ ૨૫૦
- ૧૫ શેઠ ડોંચાલાલજી ડાડલાલજી નેન ૨૫૧
- ૧૬ શ્રી વર્ધમાન સ્થા નેન શ્રાવક સઘ આમડ ૩૫૧

ઉપલેટા

- ૧ શેઠ જોઠાલાલ ગોરધનદાસ ૨૫૧
- ૨ ૨૧ બેન સતોડબેન કચરા હા જોતમચદલાઈ, છોટાલાલભાઈ
મથા અમૃતલાલભાઈ વાલજી (કલ્યાણવાળા) ૨૫૧
- ૩ શેઠ ખુશાલચદ કાનજીભાઈ હા પ્રતાપભાઈ ૨૫૧
- ૪ દોશી વીકુંભજી હુગ્ગચદ ૨૫૧
- ૫ મ ઘાણી મુળશંકર હરજીવનભાઈના મ્મરણાર્થે હા તેમના પુત્રો
જયતીલાલ રમણીડલાલ ૨૫૧

૧૨૯ ખરડિયા આઠમલ્લજી ઝવાહીર લાલજી	૫૧
૧૩૦ શ્રી વીજયદાન સુરેશ્વરજી જ્ઞાનમદીર પોષધશાળા	૩૫૧
૧૩૧ શેઠ પાનાચંદ અવેરચંદ સારંગપુર ઉપાશ્રય દ્રુષ્ટ હ વકીલ બાબુભાઈ હીમતલાલ	૩૫૧

અમલનેર

૧ શાહ નાગરદાસ વાઘજીભાઈ	૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા ગાડાલાલ બીખાલાલ	૨૫૧

અજમેર

૧ શેઠ ભુરાલાલ મોહનલાલ ડુંગરવાલ	૨૫૧
--------------------------------	-----

અટવર

૧ શ્રીમતી ચપાદેવી ઠે બુદ્ધામલજી રતનમલજી સચેતી	૨૫૧
૨ શેઠ આઠમલ્લજી મહાવીર પ્રસાદ પાલાવત	૨૫૧
૩ શ્રીયુત રૂપભકુમાર સુમતિકુમાર નૈન	૨૫૧

આસનસોલ

૧ બાવીશી મણીલાલ ચત્રભુજના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની મણીભાઈ તરફથી હા રસિકલાલ, અનિલકાત, તથા વીનોદરાય	૨૫૧
--	-----

આટકોટ

૧ મહેતા ચુનીલાલ નારણદાસ	૩૦૧
-------------------------	-----

આણંદ

શેઠ રમણીકલાલ એ કપાસી હા મનસુખલાલભાઈ	૨૫૧
-------------------------------------	-----

આકોલા

શેઠ કચનલાલ રાઘવજી અજમેરા કે એસર્સ અજમેરા પ્રપર્સ એન્ડ હા (પૂ સદાનદી મુનિશ્રી છોટાલાલજી મહારાજના ઉપદેશથી)	૨૫૧
---	-----

ધંગતપુરી

૧ શેઠ પન્નાલાલ લખીચંદ નૈન	૨૫૧
---------------------------	-----

ઈન્દોર

૧ અ સૌ બેન દયાબેન મોહનલાલ દેસાઈ જેતપુરવાળા (અ સૌ બેન વિદ્યાબેનના વર્ષોત્તમ નિમિત્તે) હા અરવિંદકુમાર તથા જીતેન્દ્રકુમાર	૨૫૧
૨ શ્રીયુત બાઈલાલ છગનલાલ તુરખીયા	૩૫૧

કચ્છામગદ

૧ શ્રી સ્વે ચ્યા લીન મધ હ શેઠ દેવચંદ અમુલખભાઈ ૨૫૧

કચ્છાણુ

૧ સધવી ઠાકરજીભાઈ મધજીના સ્મરણાર્થે
હ શાહ હીમતવાલ હરખચંદ ૨૫૧

કાનપુર

૧ શાહ રમણીકલાલ પ્રેમચંદ ૩૦૦

કુદણી-(આટકોટ)

૧ દોશી રતીલાલ ટોકરજી ૨૫૧

કોલકી

૧ પટેલ ગોવિંદલાલ ભગવાનજી ૨૫૧

૨ પટેલ ખીમજી જેઠાભાઈ વાઘાણી
(તેમના સ્વ સુપુત્ર રામજીભાઈના સ્મરણાર્થે) ૩૦૨

કચ્છાણા

૧ સ્વ શેઠ નાનચંદ મોતીચંદ પ્રાક્ષવાળાના સ્મરણાર્થે
હ તેમના સુપુત્ર જમનાદાસ નાનચંદ શેઠ ૨૫૧

૨ શ્રીમતી હીરાબેન, ગ્તીલાલ નાનચંદ શેઠ પ્રાક્ષવાળા ૨૫૧

કુગાળગઢ

૧ શેઠ ચ પાલાલજી દેવચંદજી ૨૫૧

ખાખીજીયા

૧ ખાટવીયા ગુલાબચંદ લીલાધર ૪૦૧

ખારાધોડા

૧ સ્વ પિતાશ્રી હરજીવનદાસ લાલચંદ ચાહડ તથા
સ્વ અ સૌ બેન જમકુખાઈ તથા લીલાબાઈના
સ્મરણાર્થે હ નરસિંહદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧

૨ સ્વ શેઠ ઓઘડલાલ લક્ષ્મીચંદના સ્મરણાર્થે હ ભાઈચંદ ઓઘડલાઈ ૨૫૧

' ઉમરગાવ રોડ

૧ શાહ મોહનલાલ પોપટલાલ પાનેલીવાળા ૨૫૧

ઝોડન કેમ્પ

- ૧ મહેતા પ્રેમચંદ માણેકચંદના અમરણાર્થે
હા રામચંદલાઈ, પોપટલાલભાઈ તથા રમીકલાલભાઈ ૨૫૧
- ૨ શાહ જગજીવનદાસ પુરપોત્તમદાસ ૨૫૧
- ૩ શાહ ગોવિંદદાસ શામજી ઉદાણી ૨૫૧

કલકત્તા

૧ શ્રી કલકત્તા જૈન શ્રવે સ્થા (ગુજરાતી) સઘ ૨૫૧

કલોલ

- ૧ શેઠ મોહનલાલ જોઠાભાઈના અમરણાર્થે
હા શેઠ આત્મારામ મોહનલાલ ૨૫૧
- ૨ ડૉ મયાચંદ મગનલાલ શેઠ હા ડૉ રતનચંદ મયાચંદ ૨૫૧
- ૩ સ્વ નાથાલાલ ઉમેદચંદના અમરણાર્થે હા શાહ રતીલાલ નાથાલાલ ૨૫૧
- ૪ શેઠ મણીલાલ તલકચંદના અમરણાર્થે
હા મારફતીયા ચંદુલાલ મણીલાલ ૨૫૧
- ૫ સ્વ શ્રીયુત વાડીલાલ પરપોત્તમદાસના અમરણાર્થે
હા ઘેલાભાઈ તથા આત્મારામભાઈ ૨૫૧
- ૬ શીહ નાગરદાસ કેશવલાલ ૨૫૧
- ૭ શ્રી-સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ આત્મારામભાઈ મોહનલાલભાઈ ૨૫૧

કડી

- ૧ શ્રી સ્થા દરિયાપુરી જૈન સઘ
હા ભાવસાર દામોદરદાસભાઈ ઇન્દરલાલભાઈ ૨૫૧
- ૨ પાર્વતીબેન ઠે જેસીગભાઈ ઇન્દરલાલભાઈ ૨૫૧

કરજણુ

૧ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સઘ મીયાયામ કરજણુ ૨૫૧

કઠોર

- ૧ સ્થા જૈન સઘ હ જેસીગભાઈ પોત્યાલાલ તરફથી
(માધવસિંહજી મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી)
હ કઠોરભાઈ રામચંદ્ર ૨૫૧

કન્યામગ્દ

૧ શ્રી શ્વે સ્વા લીન મધ હ ગેઠ દેવચંદ અમુલખલાઈ ૨૫૧

કંથ્યાણુ

૧ સઘવી ઠાકરગીલાઈ મધણના નમરણારે
હ શાહ હીમતલાલ હરખચંદ ૨૫૧

કાનપુર

૧ શાહ રમણીકલાલ પ્રેમચંદ ૩૦૦

કુદણી-(આટકોટ)

૧ દોચી ગતીલાલ ટાકરશી ૨૫૧

કોલકી

૧ પટેલ ગોવિંદલાલ ભગવાનજી ૨૫૧

૨ પટેલ ખીમજી જેઠાભાઈ વાઘાણી
(તેમના નવ સુપુત્ર રામજીભાઈના અમરણાર્થે) ૩૦૨

કેમ્પાલા

૧ સ્વ શેઠ નાનચંદ મોતીચંદ પ્રાક્ષવાળાના સ્મરણાર્થે
હ તેમના સુપુત્ર જમનાદાસ નાનચંદ શેઠ ૨૫૧

૨ શ્રીમતી હીરાબેન, ગતીલાલ નાનચંદ શેઠ પ્રાક્ષવાળા ૨૫૧

કુંગાજગદ

૧ શેઠ ચંપાલાલજી દેવચંદજી ૨૫૧

ખાખીજળીયા

૧ ખાટવીયા ગુલાબચંદ લીલાધર ૪૦૧

ખારાધોડા

૧ સ્વ પિતાશ્રી હરજીવનદાસ લાલચંદ શાહ તથા
સ્વ અ સૌ બેન જમકુભાઈ તથા લીલાબાઈના
સ્મરણાર્થે હ નરસિંહદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧

૨ નવ શેઠ જોષાભાઈ વક્ત્રીચંદના સ્મરણાર્થે હ ભાઈચંદ જોષાભાઈ ૨૫૧

ઉમરગાંવ' રોડ

૧ શાહ મોહનલાલ પોપટલાલ પાનેલીવાળા ૨૫૧

ઝેડન કેમ્પ

- ૧ મહેતા પ્રેમચંદ માણેકચંદના અમરણાર્થે
હા રાયચંદભાઈ, પોપટલાલભાઈ તથા રમીકલાલભાઈ ૨૫૧
- ૨ શાહ જગજીવનદાસ પુરપોત્તમદાસ ૨૫૧
- ૩ શાહ ગોકળદાસ શામજી ઉદાણી ૨૫૧

કલકત્તા

૧ શ્રી કલકત્તા જૈન ઝવે સ્થા (ગુજરાતી) સઘ ૨૫૧

કલોલ

- ૧ શેઠ મોહનલાલ જોઠાભાઈના અમરણાર્થે
હા શેઠ આત્મારામ મોહનલાલ ૨૫૧
- ૨ ડો મયાચંદ મગનલાલ શેઠ હા ડો રતનચંદ મયાચંદ ૨૫૧
- ૩ સ્વ નાથાલાલ ઉમેદચંદના અમરણાર્થે હા શાહ રતીલાલ નાથાલાલ ૨૫૧
- ૪ શેઠ મણીલાલ તલકચંદના અમરણાર્થે
હા મારફતીયા ચંદુલાલ મણીલાલ ૨૫૧
- ૫ સ્વ શ્રીયુત વાડીલાલ પરચોત્તમદાસના અમરણાર્થે
હા ઘેલાભાઈ તથા આત્મારામભાઈ ૨૫૧
- ૬ શાહ નાગરદાસ કેશવલાલ ૨૫૧
- ૭ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શેઠ આત્મારામભાઈ મોહનલોલભાઈ ૨૫૧

કડી

- ૧ શ્રી સ્થા દરિયાપુરી જૈન સઘ
હા ભાવસાર દામોદરદાસભાઈ ઇશ્વરલાલભાઈ ૨૫૧
- ૨ પાવૈત્તીબેન ઠે જેસીગભાઈ ઇશ્વરલાલભાઈ ૨૫૧

કરજણ

૧ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સઘ મીયાયામ કરજણ ૨૫૧

કઠોર

- ૧ સ્થા જૈન સઘ હ જેસીગભાઈ પોચાલાલ તરફથી
(માધવસિંહજી મહારાજશ્રીના ઉપદેશથી)
હ ઠાકોરભાઈ રામચંદ્ર ૨૫૧

૩ કામદાઁ જુઠાલાલ કેશવજીના સ્મરણાર્થે હા	
હુનીલાલ જુઠાલાલ કામદાઁ	૩૦૧
૪ સ્વ કોઠાની દૃષ્ટાશક્તિ માણેદ્રવ્યદના સ્મરણાર્થે	
હા તેમના ધર્મપત્ની પ્રભાકુવરજેન	૨૫૧
૫ કોઠાની શુભાખચદ રાયચદ ઁશુનવાળા	૨૫૧
૬ જમાલી પ્રગનાથભાઈ નાનજી હા ચુનીલાલભાઈ	૨૫૧
૭ માન્તર હુદ્રીમચદ દીપચદ શેઠ	૨૫૧

ગોદીયા

૧ સ્વા જૈન મધ હા ગાહ પ્રેમચદ દોટાલાલ (શેઠ પોપટલાલભાઈ તગ્ધી)	૨૫૧
---	-----

ગોધરા

૧ શાહ ત્રીલોચનદાસ દગનલાલ	૩૦૧
૨ સ્વ પ્રેમચદ લાડગીના સ્મરણાર્થે હા ગાહ ચુનીલાલ પ્રેમચદ	૩૦૧

ઘટકણુ

૧ ગાહ ચદુલાલ કેશવલાલ	૨૫૧
----------------------	-----

ઘોલવડ (થાણા)

૧ મહેતા શુભાખચદ ગણીરમલજી	૩૦૦
--------------------------	-----

ઘોડનદી

૧ શેઠ ચટલાણુ ચોલાચદ ગોદીયા	૨૫૧
----------------------------	-----

ચુડા

૧ શ્રી સ્વા જૈન મધ હા ગ્વીલાલ મગનલાલ ગાધી	૨૫૧
---	-----

ચોટીલા

૧ શાહ વનેચદ જોઠાલાલ શ્રી સ્વા, જૈન મધને લેટ	૩૦૧
---	-----

ચારભુજરોડ

૧ શેઠ માગીલાલજી હીરાચદજી ખાખેલ	૩૦૧
--------------------------------	-----

જમજોદપુર

૧ દોશી ઝવેરચદ વલભજી	૨૫૧
---------------------	-----

જલેસર (ખાલામોર)

૧ સઘવી નાનચદ પોપટભાઈ ચાનગઢવાળા	૨૫૧
--------------------------------	-----

ખીચન

૧ શેઠ કીશનલાલ પૃથ્વીરાજ માલુ	૩૫૨
------------------------------	-----

ખુરદારોડ

૧ શેઠ ગીરધારીલાલજી સીતારામજી ખેડપવાળા	૩૦૦
૨ શેઠ નરમિહદાસ શાતિલાલજી લોગલાવાળા (મુનિશ્રી ચાદમલજીના ઉપદેશથી)	૨૫૧

ખ ભાત

૧ શેઠ માણેકલાલ ભગવાનદાસ	૨૫૧
૨ શેઠ ત્રીલોચનદાસ મગળદાસ	૨૫૧
૩ શ્રી સ્થા જૈન સઘ	૨૫૧
૪ શાહ ચંદુલાલ હરીલાલ	૨૫૧
૫ શાહ સાકરચંદ મોહનલાલ	૨૫૧
૬ શાહ શકરાભાઈ દેવચંદ	૨૫૧
૭ શાહ સુખલાલ દોલતચંદ	૨૫૧
૮ ગાધી બાપુલાલ મોહનલાલ	૨૫૧
૯ બેન લલિતા માણેકલાલ	૨૫૧

ગાધીગામ

૧ શાહ મોરારજી નગજી એન્ડ કંપની	૨૫૧
-------------------------------	-----

ગુદાલા

૧ શાહ માલશી ઘેલાભાઈ	૨૫૧
---------------------	-----

ગુલાબપુરા-

૧ શ્રી સ્થા જૈન વર્ધમાન સઘ હ માગીલાલજી ઉકાશમલજી ધનોપવાળા	૨૫૧
૨ શ્રી એસવાલ પચાયત હ ગુલાબચંદજી ચોરડીયા	૨૫૧

ગોહલ

૧ સ્વ ભાખડા વચ્છરાજ તુલસીદાસના ધર્મપત્ની ડમલબાઈ તરફથી હા માણેકચંદભાઈ તથા કપુરચંદભાઈ	૨૫૧
૨ પીપગીયા લીલાધર દામોદર તરફથી તેમના ધર્મપત્ની અ મૌ લીલાવતી ચાન્દચંદ દેઠાનીના મીલ વર્ધાતપત્ની ખજાલીગા	૨૦૦

- ૩ ગેઠ અમૃતલાલ હીંગ્લભાઈ હે નગ્મેગમભાઈ (નસાયુગ્વાળા) ૨૫૧
 ૪ દોશી દોટ્ટાલાલ વનેચદ ૨૫૧

જેતલમ

- ૧ શાહ લક્ષ્મીચંદ કપુરચંદ ૨૫૧
 ૨ કાદાગ લીલાધર ભવગઝના મમગણાર્યે તેમના ધર્મપત્ની
 જળકબેન તરફવી હે શાતિલાલભાઈ ગોરલવાળા ૨૫૧

જોધપુર

- ૧ શેઠ નવરતમલલ ધનવત્તમિહુલ ૨૫૦
 ૨ ગેઠ હુત્તીમલલ મનરૂપલલ મામંમુખા ૨૫૧
 ૩ શેઠ પુખરાજલ પદમરાજલ લડાગી ૨૫૧
 ૪ ગેઠ વન્તીમલલ આનંદમલલ મામમુખા ૨૫૧

જેરાવરનગર

- ૧ શ્રી મ્થા જૈન સઘ હે શેઠ ચપકલાલ ધનલભાઈ ૨૫૧

ઝૂંઝીયા

- ૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હે ગેઠ કનેયાલાલ બી મોદી ૨૫૧

ડોઠાયચા

- ૧ શ્રી મ્થા જૈન મઘ ૨૫૦

દસા

- ૧ દસાગામ સ્થા જૈન સઘ હે એક સદ્ગૃહસ્થ તરફથી ૨૫૧
 ૨ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હે બગડિયા નરસેરામ જેઠાલાલ (દસા જકશન) ૨૫૧

તાસગાવ

- ૧ સ્વ યુનીલાલલ દુગડના સ્મરણાર્યે તેમના ધર્મપત્ની
 ઢાહુભાઈના તરફથી હા શેઠ રામચંદલ ૩૫૧

થાનગઢ

- ૧ શાહ ઠાકરશીભાઈ કરશનલ ૨૫૧
 ૨ શેઠ જેઠાલાલ ત્રીભોવનદાસ ૨૫૧
 ૩ શાહ ધારશીભાઈ પાશવીરભાઈ હા સુખલાલભાઈ ૨૫૧
 ૪ હેસાબેન અરવીદ હા ભાઈ રવીચંદ માણેકચંદ ૩૦૧

જયપુર

૧ શ્રીમાન શેઠ શીરેમલાજી નવલખાના ધર્મપત્ની અ મૌ ગ્રેમલાતાદેવી ૨૫૧

જસવન્તગઢ

૧ શ્રીમાન સુન્દરલાલજી તેગીચદજી તકેસગ ૩૫૧

જામખ ભાળીયા

૧ શેઠ વસનજી નારજી ૨૫૧

૨ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા મહેતા રણુછોડદાસ પરમાણુનદ ૨૫૧

૩ સઘવી પ્રાણુલાલ લવજીભાઈ ૨૫૧

જામન ૨

૧ શાહ છોટાલાલ કેશવજી ૨૫૧

૨ વોરા ચીમનલાલ દેવજીભાઈ ૨૫૧

૩ હા સાહેબ પી પી શેઠ ૨૫૦

૪ શાહ રંગીલદાસ પોપટલાલ ૨૫૧

૫ વકીલ મણીલાલ ખેગારભાઈ પુનાતર ૨૫૧

જુનારદેવ

૧ ઘેલાણી ત્રીકમજી લાધાભાઈ ૨૫૧

જુનાગઢ

૧ શેઠ મણીલાલ મીઠાભાઈ હ હરિલાલભાઈ (હાટીનામાળીયાવાળા) ૨૫૧

જામજોધપુર

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા મહેતા પોપટલાલ માવજીભાઈ ૩૮૭

૨ શાહ ત્રીભોવનદાસ ભગવાનજી પાનેલીવાળા ૨૫૧

૩ દોશી માણિકચદ લવાન ૨૫૧

૪ પટેલ લાલજી જીઠાભાઈ ૨૫૧

૫ શેઠ બાવનજી જોઠાભાઈ ૨૫૧

૬ શેઠ વજલાલ ચુનીલાલ ૨૫૧

જેત ૨

૧ કોઠારી ડાલરકુમાર વેણીલાલ ૨૫૧

૨ અ સૌ જૈન સુજકુવજી વેણીલાલ કોઠારી ૨૫૧

- ૩ શેઠ અમૃતલાલ હીંગુભાઈ હે નગ્નેગમભાઈ (જસાપુતવાળા) ૨૫૧
 ૪ દોશી દોટલાલ વનેચદ ૨૫૧

જેતલમગ

- ૧ શાહે લક્ષ્મીચંદ કપુચંદ ૨૫૧
 ૨ કાદાજ લીલાધર જીવગજના નમગ્વાર્યો તેમના ધર્મપત્ની
 જળકબેન તરફથી હે શાંતિલાલભાઈ ગોરલવાળા ૨૫૧

જેધપુર

- ૧ શેઠ નવગતમલજી ધનવતમિહજી ૨૫૦
 ૨ શેઠ હંતીમલજી મનફૂલજી મામસુખા ૨૫૧
 ૩ શેઠ પુષ્પરાજજી પદ્મરાજજી ભડાગી ૨૫૧
 ૪ શેઠ વન્તીમલજી આનંદમલજી મામસુખા ૨૫૧

જેરાવરનગર

- ૧ શ્રી સ્વા જૈન સઘ હે શેઠ ચપકલાલ ધનજીભાઈ ૨૫૧

ઝરીયા

- ૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હે શેઠ કનેયાલાલ બી મોદી ૨૫૧

ડોહાયયા

- ૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ ૨૫૦

દંભા

- ૧ દસાગામ સ્થા જૈન સઘ હે એક સદ્ગૃહસ્થ તરફથી ૨૫૧
 ૨ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હે બગડિયા નગ્નેરામ જેઠાલાલ (દસા જકશન) ૨૫૧

તાસગાવ

- ૧ સ્વ સુનીલાલજી દુગડના સ્મગ્વાર્યો તેમના ધર્મપત્ની
 ઢોઢુબાઈના તરફથી હે શેઠ રામચંદજી ૩૫૧

થાનગઢ

- ૧ શાહે ઠાઠરશીભાઈ કરશનજી ૨૫૧
 ૨ શેઠ જેઠાલાલ ત્રીભોવનદાસ ૨૫૧
 ૩ શાહે ધારશીભાઈ પાશવીરભાઈ હે સુખલાલભાઈ ૨૫૧
 ૪ હંસાબેન અરવીદ હે ભાઈ રવીચંદ માણેકચંદ ૩૦૧

દહાણુરોડ

૧ શાહ હરજીવનદાસ ઝોઘડ ખંધાર (કગચીવાળા) ૨૫૧

દાહોદ

૧ શેઠ માણેકલાલભાઈ ખેગારજી ૨૫૧

દિલ્હી

૧ લાલાજી પૂર્ણચંદજી જૈન (સેન્ટ્રલ બેંકવાળા) ૩૫૧

૨ શ્રીયુત ક્રીશનચંદજી મહેતાબચંદજી ચોરડીયા

હા શ્રીમતી નગીનાદેવી તથા શ્રીયુત મહેતાબચંદ જૈન ૨૫૧

૩ અ સૌ સજ્જનજેન ઇંદરમલજી પારેખ ૨૫૧

૪ લાલાજી મીઠનલાલજી જૈન એન્ડ સન્સ ૩૦૧

૫ લાલાજી ગુલશનલાલજી જૈન એન્ડ સન્સ ૩૦૧

૬ જેન વિજયાકુમારી જૈન ઠે મહેતાબચંદ જૈન

(વયોવૃદ્ધ સરલ સ્વભાવી કુલમતીજી મહાસતિજીની પ્રેરણાથી) ૨૫૧

૭ શ્રીમાન લાલાજી રતનચંદજી જૈન ઠે આઈ સી હોઝીયરી ૨૫૧

૮ રૂ લાલાશ્રીચંદજી હુગરીયાના અમરણાર્થે રાજસ્થાન ન્યાયાધિકારી

હુકમચંદજી જૈનના સુપુત્ર જીતેન્દ્રકુમાર વકીલના સુપુત્ર અનિલકુમાર

તરફથી લેટ હે વિનયકુમારી ૩૫૧

૯ સ્વ લાલા અપાલાલજી ચોરડીયાના સ્મરણાર્થે લાભચંદજી

તથા હીરાલાલજી તરફથી હે ચાતાદેવી ૩૫૧

૧૦ એક સદૃઘહસ્થ તરફથી હે મહેતાબચંદજી જૈન ૩૦૧

૧૧ એક સ્વધર્મી બધુ તરફથી હસ્તે વિજિથાકુમારી જેન ૩૦૧

૧૨ બાણુ નિરજન સિંહજી જૈન ૨૫૧

ઢાકું

૧ શેઠ મણીલાલ જ્યેદલાઈ ૨૫૧

ધાર

૧ શેઠ સાગરમલજી ખનાલાલજી ૨૫૧

ધાગઢા

૧ ભાવદીક્ષિત અ સૌ રૂપાળીજેન હિમતલાલ સઘવીની તપશ્ચર્યાથી

સઘવી ચીમનલાલ પુરસોતમદાસ સઘવી તરફથી ૩૦૫

૨ મઘવી નરમિહદામ વખતચદ	૩૦૧
૩ શ્રી સ્થા જૈન મોગ મઘ હ મગજીણ હવરાજ	૨૫૧
૪ ઠકકર નારણદામ હરગોવિદદામ	૨૫૧
૫ ઠોઠારી કપુચચદ મગજીણ	૨૫૧

ધોગજી

૧ મહેતા પ્રભુદાસ મુજીણભાઈ	૩૫૧
૨ અ સી બચીજેન બાણુભાઈ	૨૫૧
૩ ધી નવસીગઢ્ઠ ઓઈલ મીલ પ્રા લીમીટેડ	૨૫૧
૪ સ્વ ગચચદ પાનાચદના સ્મગ્ણાર્થે હ ચીમનલાલ રાયચદ શાહ	૩૦૧
૫ ગાધી પોપટલાલ જેચદભાઈ	૨૫૦
૬ દેસાઈ હગનલાલ ડાહ્યાભાઈ લાહવાળાના ધર્મપત્ની દિવાળીજેન તરફથી હ કુમારી હંમુમતી	૨૫૧
૭ એક મદ્રગ્રહુચ હ મહેતા પ્રભુદાસ મુજીણભાઈ	૨૫૧
૮ શેઠ દલપતરામ વમનજી મહેતા	૨૫૧
૯ સ્વ પિતાશ્રી ભગવાન કચરાભાઈના તથા ચિ હસાના સ્મરણાર્થે હ પટેલ દલીચદ ભગવાનજી	૩૦૧
૧૦ મહેતા હેમચદ કાળીદાસ જામખ ભાળીયાવાળા	૨૫૧

ધુ ધુકા

૧ શેઠ પોપટલાલ ધારશીભાઈ	૨૫૧
૨ સ્વ શુભાખચદભાઈના સ્મરણાર્થે હ વેરા પોપટલાલ નાનચદ	૨૫૧
૩ શ્રી ચત્રભુજ વાઘજીભાઈ વસાણી	૨૫૧

ધુલીયા

૧ શ્રી અમોલ જૈન જ્ઞાનાલય હ શેઠ કનેયાલાલ છાજેડ	૨૫૧
---	-----

નડીયાદ

૧ શાહ મોહનલાલ ભુરાભાઈ	૨૫૧
-----------------------	-----

નારાયણ ગામ

૧ શેઠ મોતીલાલજી હીરાચદજી ચોરડીયા બોરીવાળા	૨૫૧
---	-----

ન દુરબાર

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હ શેઠ પ્રેમચદ ભગવાનલાલ	૨૫૧
---	-----

નાગોર

- ૧ શ્રીપાલભાઈ એન્ડ કુ સાગરમલ્લ લુકક ડેરવાળા તરફથી ૨૫૧

પાલનપુર

- ૧ બેન લક્ષ્મીભાઈ હ મહેતા હરીવાલ પીતાબરદાસ ૨૫૧
૨ લોકાગચ્છ સ્થા જૈન પુસ્તકાલય હ દેશવલાલ છ શાહ ૨૫૧

પાણમણા

- ૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હ શાહ છોટલાલ પૂનભાઈ ૨૫૧

પાલેજ

- ૧ સ્વ. મનસુખલાલ મોહનલાલ સઘવીના સ્મરણાર્થે
હ ભાઈ ધીરજલાલ મનસુખલાલ ૩૦૧

પ્રાતીજ

- ૧ સ્થા જૈન સઘ હ શ્રીચુત અભાલાલ મહાસુખરામ ૨૫૦

પૂના

- ૧ શેઠ ઉત્તમચંદ્ર કેવળચંદ્ર ધોડા ૨૫૧

ફેલના

- ૧ મહેતા પુખરાજલ્લ હસ્તીમલ્લ સાદડીવાલા ૩૦૧
૨ મહેતા કુદનમલ્લ અમરચંદ્ર સાદડીવાલા ૨૫૧

ખગસરા

- ૧ શેઠ પોપટલાલ રાઘવલ્લ રાયડીવાળા
હ નાનચંદ્ર પ્રેમચંદ્ર શાહ ૨૫૧
૨ સ્વ માતુશ્રી જખકળાઈના સ્મરણાર્થે
હ દેશાઈ વૃજલાલ કાળીદાસ ૨૫૧

બરવાળા-ઘેલાશા

- ૧ સ્વ મોહનલાલ નરસિંહદાસના સ્મરણાર્થે
હ તેમના ધર્મપત્ની સુરજબેન મોરારલ્લ
બદનાવર ૨૫૧

- ૧ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જૈન શ્રાવક સઘ હ મિત્રીલાલ જૈન વકીલ ૨૫૧

બાલોતરા

૧ શાહ જેઠમલજી હસ્તીમલજી ભગવાનદામજી લણુમારી ૨૫૧
બીદડા

૧ શાહ કાનજી શામજીભાઈ ૨૫૧

બીકાનેર

૧ શેઠ ભેડદાનજી શેઠીયા ૨૫૪

બેંગલ

૧ શેઠ ગાગજી દેશવજી (જ્ઞાનભગર માટે) ૨૫૧

બેલાઠી

૧ શ્રી ન્યા નૈન સઘ હ શેઠ હનગીમલજી હસ્તીમલજી રાકા ૨૫૧

બેરમો

૧ શ્રી બેરમો ન્યા નૈન સઘ હ મહેતા નવલચંદ હાકેમચંદ ૨૫૧

બેગલોર

૧ શેઠ કીંગનલાલજી કુલચંદજી માહેમ ૨૫૧

૨ અજમેરા છોટાલાલ માનસિંગ ૩૫૧

બોટાદ

૧ સ્વ વસાણી હરગોવિંદદામ છગનલાલના સ્મરણાર્થે
હા તેમના ધર્મપત્ની છળલબેન ૨૫૧

બોડેલી

૧ શાહ પ્રવીણચન્દ્ર નરસિંહદાસ સાણુદવાળા ૨૫૧

૨ શાહ ગીરધરલાલ સાકરચંદ ૨૫૧

ભાણુવડ

૧ શેઠ જેચંદભાઈ માણેકચંદભાઈ ૩૫૨

૨ સઘવી માણેકચંદ માધવજી ૨૫૧

૩ શેઠ લાલજી માણેકચંદ લાલપુરવાળા ૨૫૧

૪ શેઠ રામજી જીણુભાઈ ૨૫૧

૫ શેઠ પદમશી ભીમજી ફાફરીયા ૨૫૧

૬ ફાફરીયા ગાડાલાલ કાનજીભાઈ હા અ ચૌ ચાતાબેન વસનજી ૨૫૧

૭ સ્વ મહેતા પૂનમચંદ લવાનના સ્મરણાર્થે હા તેમના

ધર્મપત્ની દિવાળીબેન લીલાધર (ગુદાવાળા) ૨૫૧

ભાવનગર

૧ સ્વ કુવરજી બાવાભાઈના સ્મરણાર્થે હા શાહ લહેરચદ કુવરજી ૩૦૧

ભાદરજી

૧ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા પટેલ ધુલાભાઈ ઝવેરભાઈ ૨૫૧

લીલવાહા

૧ શ્રી શાંતિ જૈન પુસ્તકાલય હા ચાદમલજી માનમલજી સઘવી ૨૫૧

૨ શેઠ ભીમરાજજી મીશ્રીલાલજી ૩૦૧

લીમ

૧ ચપકલાલજી જૈન પુસ્તકાલય હા શેઠ છોગામલજી માગીવાલજી ૨૫૧

ભુસાવડ

૧ શેઠ રાજમલજી નદલાલજી ચેરીટેબલટ્રસ્ટ ૨૫૧

ભોળચ

૧ જ્ઞાન મદિરના સેક્રેટરી શાહ કુવરજી જીવરાજ ૨૫૧

મદ્રાસ

૧ શેઠ મેઘરાજજી દેવીચદજી મહેતા ૨૫૧

૨ મહેતા મણીલાલ ભાઈચિદ ૨૫૧

૩ મહેતા સુરજમલ ભાઈચિદ ૨૫૧

૪ મહેતા બાપાલાલ ભાઈચિદ ૨૫૧

મનફેરા

૧ સ્થા છકોટી સ્થા જૈન સઘ ૨૫૧

મનોર

૧ શાહ શેરમલજી દેવીચદજી જશવતગઢવાળા
હા. પૂનમચદજી શેરમલજી બોલ્યા ૨૫૧

માનકુશ

૧ સ્વ મહેતા કુવરજી નાથાલાલના સ્મરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્ની
કુવરબાઈ હરખચદ (માનકુશ સ્થા જૈન સઘ માટે) ૨૫૧

માડવી

૧ શ્રી સ્થા છકોટી જૈન સઘ હા મહેતા ચુનીવાલ વેલજી ૨૭૭

માંડવા

- ૧ શ્રી માડવા સ્થા નૈન સઘ
હા અ ત્રી કચનગૌરી સ્તીલાલ ગોમલીયા (ગઢડાવાળા) ૨૫૧

માલેગાવ

- ૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા ક્ષેલાલ માલુ નૈન ૨૫૧

માગરોલ

- ૧ ગાહ ત્રીભોવનદાસ નાનછ ૨૫૦
૨ દોશી ગીરવરલાલ જેઠલાલ ૨૫૦

સુખર્ષ તથા પરાઓ

- ૧ નવ શ્રી પિતાશ્રી કુદનમલછ મોતીલાલછ મુયાના સ્મરણાર્થે
હા શેઠ મોતીલાલછ જુળગલછ (અડમદનગઢવાળા) ૨૫૧
- ૨ વર્ધમાન ન્યા નૈન સઘ હા કામદાર ઉપચદ ગીવલાલ (અ ધેરી) ૨૫૧
- ૩ અ ત્રી કમળાબેન કામદાર હા કામદાર ઉપચદ ગીવલાલ (અ ધેરી) ૨૫૧
- ૪ સ્વ માતૃશ્રી ડહવીબાઈના સ્મરણાર્થે હા તેમના પૌત્ર
હડમીચદ તારાચદ દોશી (અ ધેરી) ૨૫૧
- ૫ શાહ હડલવન ડેગવછ ૨૫૧
- ૬ ગાહ રમણીકલાલ કાળીદાસ તથા અ સૌ કાન્તાબેન રમણીકલાલ ૨૫૧
- ૭ મધવી હિમતલાલ હરજીવનદાસ ૨૫૧
- ૮ વોગ પાનાચદ સઘછના સ્મરણાર્થે
હા ત્રણકલાલ પાનાચદ એન્ડ બ્રધર્સ ૨૫૧
- ૯ શાહ રામછ કરગનછ ચાનગઢવાળા ૨૫૧
- ૧૦ સ્વ જટાગકર દેવજીભાઈ દોશીના સ્મરણાર્થે
હા રણછોડદાસ (બાણુલાલ) જટાગકર દોશી ૩૦૧
- ૧૧ ઘેલાણી વલલછ નરસેરામ હા નરસીંહદાસ વલલછ ૨૫૧
- ૧૨ ડપામી મોહનલાલ શીવલાલ ૨૫૧
- ૧૩ ત્રીભોવનદાસ માનસિંયભાઈ દોઢીવાળાના સ્મરણાર્થે
હા ગાહ હરખચદ ત્રીભોવનદાસ ૨૫૧
- ૧૪ ખેતાણી મણીલાલ ડેગવછ (વડીયાવાળા) ઘાટકોપર ૨૫૧
- ૧૫ નવ પિતાશ્રી શામળછ ડયાણુછ ગોડલવાળાના સ્મરણાર્થે
હા વૃજલાલ શામળછ બાવીસી ૩૦૧
- ૧૬ શાહ રવિચદ સુખલાલભાઈ (દાદર) ૩૫૧

૧૭ સ્વ આશારામ ગીરધરલાલનાં સ્મરણાર્થે હા શાંતિલાલ	
આશારામ વતી જશવતલાલ શાંતિલાલ	૨૫૧
૧૮ ગાંધી કાતીલાલ માણેકચંદ	૨૫૧
૧૯ શાહ રવજીભાઈ તથા ભાઈલાલભાઈની કુ (ઝઘીવલી)	૨૫૧
૨૦ અ સૌ લાછુખેન હ રલજીભાઈ ગામજી	૨૫૧
૨૧ સ્વ માતુશ્રી માણેકજીભાઈના સ્મરણાર્થે હ શેઠ વલ્લભદાસ નાનજી	૩૦૧
૨૨ એક સદ્ગૃહસ્થ હ શેઠ સુદરલાલ માણેકલાલ	૨૫૧
૨૩ શેઠ ખુશાલભાઈ ખેગારભાઈ	૨૫૦
૨૪ શેઠ ચુનીલાલ નરસેરામ વેકરીવાળા	૨૫૧
૨૫ સ્વ માતુશ્રી ગોમતીજીભાઈના સ્મરણાર્થે હ શાહ પોપટલાલ પાનાચંદ	૨૫૧
૨૬ ઢોટેચા જયતીલાલ રણુછોડદામ મૈભાગ્યચંદ જુનાગઢવાળા	૨૫૧
૨૭ વેરા ઠાકરશી જસરાજ	૨૫૧
૨૮ કોઠારી સુખલાલજી પુનમચંદજી	(ખારેડ) ૨૫૧
૨૯ અ સૌ ખેન કુદનગૌરી મનહરલાલ સઘવી	૨૫૧
૩૦ કોઠારી રમણીજીલાલ કસ્તુરચંદભાઈ	૨૫૧
૩૧ દેશાઈ અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે	
હ દલીચંદ અમૃતલાલ દેસાઈ	૨૫૧
૩૨ સ્વ ત્રિલોચનદાસ મજપાળ વીછીયાવાળાના સ્મરણાર્થે	
હા હરગોવિંદદાસ ત્રિલોચનદાસ અજમેરા	૨૫૧
૩૩ તેજાણી કુખેરદાસ પાનાચંદ	૨૫૧
૩૪ શેઠ સરદારમલજી દેવીચંદજી કાંવેડીયા (સાદડીવાળા)	૨૫૧
૩૫ શેઠ નેમચંદ સ્વરૂપચંદ ખભાતવાળા હ ભાઈ જોઠાલાલ નેમચંદ	૨૫૧
૩૬ શાહ કૈરશીભાઈ હીરજીભાઈ	૩૦૧
૩૭ શ્રીમતી મણીમાઈ વૃજલાલ પારેખ ચેરીટેજલ ટ્રસ્ટ ફંડ	
હ વૃજલાલ હર્લંભજી પારેખ	૨૫૧
૩૮ દડિયા અમૃતલાલ મોતીચંદ	(ઘાટકોપર) ૨૫૧
૩૯ દોશી ચત્રભુજ સુદરજી	૪૦૧
૪૦ દોશી જુગલજિશોર ચત્રભુજ	૪૦૧
૪૧ દોશી પ્રવિણચંદ ચત્રભુજ	૩૮૧
૪૨ શેઠ મનુભાઈ માણેજીચંદ હા આટકાયા નરસેરામ મોશારજી	૨૫૧
૪૩ શાહ કાતિલાલ મગનલાલ	૨૫૧

૪૪ શેઠ મણીલાલ શુલાભચંદ	ઘાટકોપર ૨૫૯
૪૫ શેઠ હગનલાલ નાનજીભાઈ	૨૫૧
૪૬ શાહ શીવજી માલેકભાઈ	૨૫૧
૪૭ મેસર્સ મવાલી દ્રા-મપાર્ટ કુ હા શેઠ માણેકલાલ વાડીલાલ	૨૫૧
૪૮ શાહ નગીનદાસ કલ્લાજી (વેરાવળવાળા)	૨૫૧
૪૯ મહેતા ગ્તીલાલ ભાઈચંદ	૨૫૧
૫૦ શાહ પ્રેમજી હીજી ગાલા	૨૫૧
૫૧ બેન કેરાગ્નાઈ ચંદુલાલ જેર્ગિભાઈ શાહ	૨૫૧
૫૨ પારેજી ચીમનલાલ લાલચંદ સાયલાવાળાના ધર્મપત્ની અ ચી ચયળગાઈના અમરણાર્થે હા માગલાઈ ચીમનલાલ	૨૫૧
૫૩ ધી મગીના મોડન હાઈ-કુલ ટ્રસ્ટ ફંડ હા શાહ મણીલાલ હાગગી	૨૫૧
૫૪ મહેતા મોટર સ્ટોર્મ હા અનોપચંદ ડી મહેતા	૨૫૧
૫૫ શેઠ ગ્મીકલાલ પ્રભાગકર મોગળીવાળા તરફવી તેમના માતૃશ્રી મણીબેનના અમરણાર્થે	૩૦૧
૫૬ શ્રીયુત જમવતલાલ ચુનીલાલ વોરા	૨૫૦
૫૭ શાહ કુવજી હમરાજ	૨૫૧
૫૮ દડીયા જેમીગલાલ ત્રીકમજી	૨૫૧
૫૯ મોદી અલેચંદ સુરચંદ રાજદોગવાળા હા ડોમાલાલ અલેચંદ	૨૫૧
૬૦ શાહ જેઠાલાલ હાગગી પ્રાગપ્રાવાળા હા શાહ વાડીલાલ જેઠાલાલ	૨૫૦
૬૧ સ્વ પિતાશ્રી લગવાનજી હીરાચંદ જમાણીના અમરણાર્થે હા લક્ષ્મીચંદભાઈ તવા કેશવલાલભાઈ	૩૫૧
૬૨ સ્વ પિતાશ્રી શાહ અબાલાલ પુરુષોત્તમદાસના અમરણાર્થે હા શાહ બાપાલાલ અબાલાલ	૨૫૧
૬૩ સ્વ કમ્તુરચંદ અમરગીના અમરણાર્થે હા તેમના ધર્મપત્ની ઝવેરબેન મગનલાલ વતી જયતીલાલ કમ્તુરચંદ મરજાગીયા (ચુડાવાળા)	૨૫૧
૬૪ શેઠ હુગરગી હમરાજ વીસરીયા	૨૫૧
૬૫ શાહ રતનશી મોણશીની કુ	૧૫૧
૬૬ શેઠ શીવલાલ શુલાભચંદ મેવાવાળા	૨૫૧
૬૭ શાહ ચંદુલાલ કેશવલાલ	૨૫૧
૬૮ સ્વ પિતાશ્રી વીરચંદ જેમીગ શેઠ લખતરવાળાના અમરણાર્થે હા કેશવલાલ વીરચંદ	૨૫૧
૬૯ ચંદુલાલ જાનજી મહેતા	૨૫૧

- ૭૦ શ્રી વર્ધમાન સ્થા જેન સંધ
હા કેશરીમલ્લ અનોપચદ્દલ ગુગલીયા (મલાદ) ૨૫૧
- ૭૧ અ પિતાશ્રી પતુભાઈ મોનાભાઈના અમરણાર્થે
હા શાહ કાનલ પતુભાઈ „ ૨૫૧
- ૭૨ અ સૌ પાનભાઈ હા, શેઠ પદમગી નરમિહલાઈ „ ૨૫૧
- ૭૩ અ નાગશીભાઈ સેજપાલના અમરણાર્થે રામલ નાગશી „ ૩૦૧
- ૭૪ અ ગોડા વણારશી ત્રીલોવનદામ સરસઈવાળાના અમરણાર્થે
હા જગલવન વણારશી ગોડા „ ૨૫૧
- ૭૫ અ કાનલ મુળના અમરણાર્થે તથા માતુશ્રી દિવાળીખાઈના
૧૬ ઉપકાસના પારણા પ્રસંગે હા ન્યતિલાલ કાનલ ૨૫૧
- ૭૬ શાહ પ્રેમલ માલશી ગગર „ ૨૫૧
- ૭૭ શાહ વેલશી જેસીંગભાઈ છાસરાવાળા તરફથી તેમના ધર્મપત્ની
અ નાનખાઈના અમરણાર્થે „ ૩૦૧
- ૭૮ અ પિતાશ્રી રાયશી વેલશીના અમરણાર્થે
હા શાહ દામલ રાયશીભાઈ „ ૩૦૧
- ૭૯ શાહ વરજગલાઈ શીવલભાઈ „ ૨૫૧
- ૮૦ શાહ ખીમલ મુળલ પુજ „ ૨૫૧
- ૮૧ અ સૌ સમતાએન શાતિલ લ ઠે શાતીલાલ ઉજમશી શાહ „ ૨૫૧
- ૮૨ અ કેશવલાલ વછરાજ કાઠારીના અમરણાર્થે સૂરજએન તરફથી
હા તનમુખલાલભાઈ „ ૨૫૧
- ૮૩ અ પિતાશ્રી હસરાજ હીરાના અમરણાર્થે
હા દેવશી હસરાજ અંછ ખીદડાવાળા „ ૨૫૧
- ૮૪ ઘેલાણી પ્રભુલાલ ત્રીકમલ (બોરીવલી) ૨૫૨
- ૮૫ શેઠ ત્રણકલાલ કસ્તુરચંદ લીમડી અજરામર શામળડાગને લેટ (માટુ ગા) ૨૫૧
- ૮૬ અ સૌ એન રજનગૌરી ઠે શાહ ચંદુલાલ લક્ષ્મીચંદ „ ૨૫૧
- ૮૭ શાહ નટવરલાર દીપચંદ તરફથી તેમના ધર્મપત્ની અ સૌ
મુશીલાએનના વર્ષીતપની ખુશાલીમા , ૨૫૧
- ૮૮ દોશી ભીખાલાલ વૃજલાલ પાળીયાદવાળા „ ૨૫૧
- ૮૯ શાહ ગોપાળલ માનમગ „ ૨૫૧

- ૯૦ દોશી કુલચંદ માલોકચંદ " ૨૫૦
- ૯૧ ગેડ ચંપકલાલ ચુનીલાલ દાદાવાળા " ૨૫૧
- ૯૨ શ્રી વર્ધમાન ચા નૈન શ્રાવક મધ
હ ગાદ ગવિચંદ મુખલાલ (દાદર) ૨૫૧
- ૯૩ ગાતિલાલ હુગગી અદાગી " ૨૫૧
- ૯૪ શાહ કરગન લધુભાઈ " ૨૫૧
- ૯૫ કીસનલાલ સી મહેતા ગીવ ૨૫૧
- ૯૬ માતુશ્રી છવીભાઈના સ્મરણાર્થે
હ ગામજી ગીવજી કચ્છ શુદાળાવાળા ગોઝેગાવ ૨૫૧
- ૯૭ નવ શાહ ગયગી કચ્છગલાઈના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
નેણુભાઈ વતી હ જેઠાલાલ રાયગી " ૨૫૧
- ૯૮ શુશીલાબેન શકરાભાઈ ઠે નવીનચંદ વસતલાલ ગાહ વિલેપાર્લે ૨૫૧
- ૯૯ બેન ચંદનબેન અમૃતલાલ વારિવા ૨૫૧
- ૧૦૦ નવ કાળીદાસ જેઠાલાલ શાહના સ્મરણાર્થે
હ સુમનલાલ કાળીદાસ (કાનપુરવાળા) ૩૦૧
- ૧૦૧ શાહ ત્રીભોવન ગોપાળજી તથા અ સી. બેન કસુબા
ત્રીભોવન (થાનગઢવાળા) શીવ ૨૫૧

મુળી

- ૧ શેઠ ઉત્તમગી વીરપાળ હ. શેઠ દેશવલાલ ઉત્તમગી ૩૦૧

ભોરખી

- ૧ દોશી માલોકચંદ સુદરજી ૩૫૧

ભોરખાત્રા

- ૧ શ્રીચુત નાથાલાલ હી મહેતા ૨૫૧
- ૨ શાહ દેવરાજ પેથરાજ ૨૫૦

મહેસાણા

- ૧ શાહ પદમશી સુરચંદના સ્મરણાર્થે હ શીવલાલ પદમશી ૨૫૧

યાદગીરી

- ૧ શેઠ બાદરમલજી સુરજમલજી બેકસં ૨૫૦

રતલામ

- ૧ અનેક લકતજનો તરફથી હ શ્રીમાન કેશરીમલજી કંક
(શ્રી કેવળચંદ્ર યુનિશ્રીના ઉપદેશથી) ૨૫૧

રાણપુર

- ૧ શ્રીમતી માતુશ્રી સમરતળાઈના સ્મરણાર્થે
હ ઠે નરોત્તમદાસ યુનીલાલ દાપડીયા ૨૫૧
- ૨ સ્વ પિતાશ્રી લહેરાલાઈ ખીમજીના સ્મરણાર્થે
હ શેઠ કાળીદાસ લહેરાલાઈ વસાણી ૩૦૧

રાણાવાસ

- ૧ શેઠ જવાનમલજી નેમીચંદજી હા બાબુ રીખળચંદજી ૩૦૧

રાયચુર

- ૧ સ્વ માતુશ્રી મોઘીબાઈના સ્મરણાર્થે
હ શાહ શીવલાલ ગુલાબચંદ વઢવાણવાળા ૨૫૧
- ૨ કાશુરામજી ચાદમલજી સચેતી ૨૫૧

રાજકોટ

- ૧ વાડીલાલ કાદગિ પ્રિન્ટીંગ વર્ક્સ ૪૦૦
- ૨ શેઠ રતીલાલ ન્યાલચંદ ચીતલીયા ૨૫૧
- ૩ શેઠ મનુભાઈ યુગચંદ (એન્જનીયર સાહેબ) ૨૫૧
- ૪ શેઠ શાંતિલાલ પ્રેમચંદ તેમના ધર્મપત્નીના વર્ષોત્તમ પ્રસંગે ૨૫૧
- ૫ શેઠ પ્રભારામ વીઠ્ઠલજી ૨૫૧
- ૬ જેન સચુખાળા નૌતમલાલ જસાણી (વર્ષોત્તમની ખુશાલી) ૨૫૧
- ૭ મોદી સૌભાગ્યચંદ મોતીચંદ ૨૫૧
- ૮ બદાણી ભીમજી વેલજી તરફથી તેમના ધર્મપત્ની આ સૌ
સમરતળેનના વર્ષોત્તમ નિમિત્તે ૨૫૧

- ૯ દોશી મોતીચંદ ધારશીભાઈ (રીટાયર્ડ એકઝીક્યુટીવ એન્જનીયર) ૨૫૧
 ૧૦ કામદાર ચંદુલાલ દવરાજ (ધાગધાવાળા) ૨૫૦
 ૧૧ હેમાણી વેલાભાઈ મનચંદ ૨૫૧
 ૧૨ દક્ષતરી પ્રભુલાલ ન્યાલચંદ ૨૫૨
 ૧૩ સ્વ મહેતા દેવચંદ પુરુષોત્તમના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની
 હેમકુવરભાઈ તરફથી હ જયતીલાલ દેવચંદ મહેતા ૨૫૧
 ૧૪ પારેખ શીવલાલ જુઝાભાઈ મોમ્નામાવાળા હ. અ. મી. કચનબેન ૨૫૨

૨૫૨

- ૧ પૂન્ય વાલદભાઈ ન્યાલચંદભાઈ ૨૫૧

ગમપુગ

- ૧ શેઠ તેન્નભલભ મનોહરલાલભ બેકર ૩૫૧

રાવટી

- ૧ શેઠ મિયાચંદભ ભુહાગમભલભ કટારિયા ૩૫૧

લખતર

- ૧ શાહ રાયચંદ ઠાગશીના સ્મરણાર્થે હ શાંતિલાલ રાયચંદ શાહ ૨૫૧

- ૨ ભાવમાર હરદવનદાસના સ્મરણાર્થે

હ ત્રીલોચનદાસ હરદવનદાસ ૨૫૧

- ૩ શાહ તલકશી હીગચંદના સ્મરણાર્થે

હ ભાઈ અમૃતલાલ તલકશી ૨૫૧

- ૪ શાહ ચુનીલાલ માણેકચંદ ૨૫૧

- ૫ શાહ જદવભ આદ્યકભાઈના સ્મરણાર્થે હ શાંતિલાલ જદવભ ૨૫૧

- ૬ દોશી ઠાકરશી શુભાળચંદના સ્મરણાર્થે તેમના ધર્મપત્ની

સમરત બહેન તરફથી હ, જયતિલાલ ઠાકરશી ૨૫૧

લાલપુર

- ૧ નેમચંદ સવભ મોદી હ ભાઈ મગનલાલ ૨૫૧

- ૨ શેઠ મુલચંદ પોપટલાલ હા મણીલાલ તથા જેડીગભાઈ ૨૫૧

લાખેડી

- ૧ માસ્તર જેઠાલાલ મોનભાઈ હ અમૃતલાલ જેઠાલાલ
 (સીવીલ એન્જનીયર સાહેબ) ૨૫૧

લાકડીયા

- ૧ શ્રી લાકડીલા સ્થા જૈન સઘ હ શાહ રતનશી કરમણ ૨૫૧

લીબડી (સૌરાષ્ટ્ર)

૧ શાહ ચક્રભાઈ વખતચંદ

૨૫૧

લીમડી (પચમહાલ)

૧ શાહ કુવરજી ગુલાબચંદ

૨૫૧

૨ છાજેડ ઘાસીરામ ગુલાબચંદ

૨૫૧ા

૩ શેઠ વીરચંદ પન્નાલાલજી કરણાવટ

૨૫૧

૪ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હે શાહ શાતીલાલ ગુલાબચંદ

૩૫૧

લોનાવાલા

૧ શેઠ ધનરાજજી મુલચંદજી મુથા

૨૫૧

લુધયાના

૧ બાબુ રાજેન્દ્રકુમાર નૈન દિલ્હીવાળા

૨૫૧

વઢવાણુ શહેર

૧ શેઠ દીલીપકુમાર સવાઇલાલ ઠેંગ શાહ સવાઇલાલ ત્રબકલાલ

૨૫૧

૨ કામદાર મગનલાલ ગોકલદાસ હે રતીલાલ મગનલાલ

૨૫૧

૩ સઘવી મુળચંદ બેચરભાઈ હે જીવણલાલ ગફલદાસ

૨૫૧

૧ શેઠ કાતિલાલ નાગરદાસ

૨૫૧

૫ વોરા ચત્રભુજ મગનલાલ

૨૫૧

૬ સઘવી શીવલાલ હીમજીભાઈ

૨૫૧

૭ શાહ દેવશીભાઈ દેવકરણુ

૨૫૧

૮ વોરા ડોસાભાઈ લાલચંદ સ્થા નૈન સઘ

હે વોરા નાનચંદ શીવલાલ

૨૫૧

૯ વોરા ધનજીભાઈ લાલચંદ સ્થા નૈન સઘ

હે વોરા પાનાચંદ ગોખરદાસ

૨૫૧

૧૦ દોશી વીરચંદ સુરચંદ હા. દોશી નાનચંદ ઉજ્જમશી

૨૫૧

૧૧ સ્વ વોરા મણીલાલ મગનલાલ તથા વોરા ચત્રભુજ મણીલાલ

૨૫૧

૧૨ શાહ વાહીલાલ દેવજીભાઈ

૨૫૧

૧૩ કામદાર ગોરધનદાસ મગનલાલના ધર્મપત્ની

અ સૌ કમળાબેન રગુનવાલા

૨૫૧

૧૫ શ્રી વૃજલાલ સુખલાલ

૨૫૧

વડોદરા

૧ કામદાર દેશવલાલ હિમતરામ ગ્રેફેમર

૨૫૧

- ૨ વકીલ મણીલાલ કેળવલાલ શાહ ૨૫૧
- ૩ સ્વ પિતાશ્રી કૃષ્ણચંદ્ર પુલ્તભાઈના સ્મરણાર્થે ૨૫૧
- હા શાહ સમણલાલ કૃષ્ણચંદ્ર ૨૫૧
- વડીયા
- ૪ શેઠ ભવાનભાઈ ઢાંગાભાઈ પચમીયા ૨૫૧
- વલ્લભાઈ
- ૧ શાહ ખીમચંદ મુલજીભાઈ ૨૫૧
- વણી
- ૧ મહેતા નાનાલાલ હગનલાલના ધર્મપત્ની સ્વ ચચાગણેન તથા પુરીબેનના સ્મરણાર્થે હા મનહરલાલ નાનાલાલ મહેતા ૨૫૧
- વટામણુ
- ૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા પટેલ ડાયાભાઈ હલુભાઈ ૨૫૧
- વડિંગાવ
- ૧ શેઠ માણેકચંદ જી રાજમલજી બાફળા ૨૫૧
- વાકાનેર
- ૧ ખટારીયા કાતીલાલ ત્રબકલાલ ૨૫૧
- ૨ દક્તરી ચુનીલાલ પોપટભાઈ મોરખીવાળા ૨૫૧
- હા પ્રાણુલાલ ચુનીલાલ દક્તરી ૨૫૧
- વીછીયા
- ૧ શ્રી સ્થા નૈન સઘ હા અજમેરા રાયચંદ મજપાળ ૨૫૧
- વીરમગામ
- ૧ માન્તર વીઠલભાઈ મોદી ૨૫૧
- ૨ શાહ નાગરદાસ માણેકચંદ ૨૫૧
- ૩ શાહ મણીલાલ જીધણલાલ શાહપુરવાળા ૨૫૧
- ૪ શાહ અમુલખ નાગરદાસના ધર્મપત્ની અ સૌ બેન લીલાવતીના વર્ષોત્પ નિમિત્તે હા શાહ કાતિલાલ નાગરદાસ ૩૦૦
- ૫ સ્વ શેઠ ઉજ્જમશી નાનચંદના સ્મરણાર્થે હા ચુનીલાલ નાનચંદ ૨૫૧
- ૬ સ્વ શેઠ મણિલાલ લક્ષ્મીચંદ ખારાઘોડાવાળાના સ્મરણાર્થે તેમના પુત્રો તરફથી હ ખીમચંદભાઈ ૨૫૧
- ૭ સ્વ શેઠ હરિલાલ પ્રભુદાસના સ્મરણાર્થે હા અનુભાઈ ૨૫૧

૩ સ્વ કૈશવલાલ મુળજીભાઈના ધર્મપત્ની અમરતબાઈના

સ્મરણાર્થે હા ભાઈલાલ કૈશવલાલ શાહ

૪ શાહ ન્યાલચંદ હરખચંદ

૨૫૧

૫ શાહ વાડીલાલ હરખચંદ

૨૫૧

૬ શ્રી સ્થા જૈન સઘ

૩૦૧

સુવર્ધ

૧ સાવળા શામજી હીરજી તરફથી સદાનદી જૈન મુનિશ્રી છોટાલાલજી

મહારાજના ઉપદેશથી સુવર્ધ સ્થા જૈન સઘ જ્ઞાનભારને લે

૨૫૧

સનેલી

૧ શાહ લુણાજી શુલાખચંદભાઈ

૨૫૧

૨ શ્રી સ્થા જૈન સઘ હા શાહ પ્રેમચંદ દલીચંદ

૨૫૧

સોજત

૧ અ સૌ ધીસીજેન લાલચંદજી મહેતા (ફતેહનગર સચને લેટ)

૩૫૧

હારીજ

૧ શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ હા પ્રકાગચંદ્ર અમુલખભાઈ

૩૦૧

૨ સ્વ જૈન ચન્દ્રકાતાના સ્મરણાર્થે હા શાહ અમુલખ મુળજીભાઈ

૩૦૧

હાટીના માળીયા

૧ શેઠ ગોપાલજી મીઠાભાઈ

૨૫૦

૨ શ્રીમતી આનંદગૌરી ભગવાનદાસના સ્મરણાર્થે

હા તેમના નાનાજેન અ સૌ મજુલાજેન ભગવાનદાસ ગાધી

૨૫૧

*

તા. ૩૧-૧૨-૬૧ સુધીના મેમ્બરોની સંખ્યા

૧૭ આદ્ય મુરબીશ્રી

૨૫ મુરબીશ્રી

૧૨૩ સહાયક મેમ્બરો

૫૮૪ લાઇફ મેમ્બરો

૫૪ બીજા કલાસના જુનો મેમ્બરો

૮૦૩

દરેક દાતાઓનો સમિતિ તરફથી આભાર માનુ છું

લી સેવક,

રાજકોટ તા ૩૧-૧૨-૬૧

સાકરચંદ ભાઈચંદ શેઠ

મંત્રી,

॥ श्रीगीतरागाय नमः ॥

जैनाचार्य-जैनधर्मद्विचार-पूज्यश्री-धामीलाल-प्रति-विरचितया
सुदर्शन्यायया व्याख्या ममलङ्कित

श्री-प्रश्नव्याकरणसूत्रम्

(मङ्गलाचरणम्)

(इन्द्रप्रज्ञामेद-पुद्गिचूत्तम्)

श्रीसिद्धराज म्भिरसिद्धिगज्य-

प्रद गत सिद्धिगतिं विशुद्धम् ।

निरञ्जन शाश्वतमोघमध्ये,

पिगजमान गतत नमामि ॥१॥

(शार्दूलचित्रीडितवृत्तम्)

नानालङ्घिधर सुरासुरनुत सन्देहमोहचिह्न-

दीप्त शासनभास्कर गणधर शुद्ध विपद्धारकम् ।

ज्ञाताशेषविशेषस्तुनिचय तेजस्विन मुक्तिग,

वन्दे त सतत विशुद्धचरितं श्री गौतम सर्वथा ॥२॥

“ प्रश्नव्याकरणसूत्रका हिन्दी अनुवाद ”

मङ्गलाचरण—

मैं उन सिद्ध भगवन्तको नित्य नमस्कार करता हूँ कि जो निरञ्जन-
अष्टकर्ममल रूप अजन से सर्वथा विहीन-हो चुके हैं और इसी कारण
जो मुक्तिरूप सोधके मध्य में विराजमान हो रहे हैं । जिनके सन्मार्गेपर
चलने से जीवोंको स्थिर सिद्धरूपी राज्यकी प्राप्ति हो जाती है । जो स्वयं
अत्यन्त विशुद्ध बन चुके हैं । और सिद्धि नामक गति प्राप्तकर चुके हैं ॥१॥

प्रश्नव्याकरणसूत्रना शुद्धराती अनुवाद

भगणायरण—

હું તે સિદ્ધ ભગવાનોને હંમેશા નમસ્કાર કરતો છું કે જે નિરંજન અષ્ટ
કર્મભણરૂપ અજનથી તદ્દન રહિત થઈ ગયા છે, અને એ જ કારણે જે મુક્તિરૂપ
ભવનની મધ્યમા વિરાજમાન થયેલ છે, જેમને ખતાવેલ સન્માર્ગે ચાલવાથી
શુભોને સ્થિર સિદ્ધિરૂપી શબ્દની પ્રાપ્તિ થાય છે જેઓ પોતે અત્યંત વિશુદ્ધ
બની ગયેલ છે, અને સિદ્ધિ નામની ગતિને પ્રાપ્ત કરી ચૂક્યા છે ॥ ૧ ॥

(દ્રુતચિલમ્બિતવૃત્તામ્)

કમલકોમલમઠ્ઠુપદામ્બુજ-

વિમલવોધિદવોધિવોધકમ્ ।

મુખમુશોમિસદોરકમ્બલિક

ગુરુવર સદય પ્રણામ્યહમ્ ॥૩॥

(અનુદ્વિવૃત્તામ્)

જૈનીં સરસ્વતીં નત્વા, વૃત્તિરેષા મુદર્શિની ।

પ્રશ્નવ્યાકરણે સૂત્રે, ઘાસિલાલેન તન્યતે ॥૪॥

મૈં ઉન ગૌતમ ગણધર કો મન, વચન ઔર કાય સે નિત્ય નમસ્કાર કરતા હૂં કિ જિન્હો ને તપસ્યા કે પ્રભાવ સે અનેક લઙ્ઘિયો કો પ્રાપ્ત કર લિયા હૈ । જિન્હેં સુર ઔર અસુર આકર નમસ્કાર કરતે હૈ, જીવોં કેસદેહ ઔર મોહ જિનકે પ્રભાવ સે નષ્ટ હો જાતે હૈં, જો શરીર કી કાન્તિ સે દીપ્ત બને રહતે હૈં, જો શાસન કે ખાસ્કર હૈં ભગવાન મહાવીર પ્રભુ કે જો અન્તિમ ગણધર હુએ હૈ, રાગાદિક દોષોં સે સર્વથા વિશુદ્ધ થન ચુકે હૈં, જીવોં કી વિપત્તિ કો જો નાશ કરને વાલે હૈ, કેવલજ્ઞાન કે પ્રભાવ સે જિન્હોં ને સમસ્ત જીવાદિક વસ્તુઓં કો અચ્છી તરહ સે જાન લિયા હૈ, જો તેજસ્વી હૈ તથા જો મુક્તિ કો પ્રાપ્ત કર ચુકે હૈ ॥૨॥

મૈં ઉન દયાળુ ગુરુવર કો નમસ્કાર કરતા હૂં કિ જિનકે મનોહર ચરણકમલ કમલ કે જૈસે કોમલ હૈ ઔર જો વિમલ વોધિકો દેને વાલે વોધ કે દાતા હૈ તથા જિનકા મુખ સદા મદોરકમુખવલ્લિકા સે વિરાજિત રહતા હૈ ॥૩॥

હું તે ગૌતમ ગણધરને મન, વચન અને કાયાથી નમસ્કાર કરૂં છું કે જેમણે તપસ્યાના પ્રભાવથી અનેક લઙ્ઘિયોને પ્રાપ્ત કરી છે, સુર અને અસુરો આવીને જેમને નમન કરે છે, જેમના પ્રભાવથી જીવોના મોહ તથા મોહનો નાશ થઈ જાય છે, જે શરીરની કાન્તિથી બાજબીમાં રહે છે, જે શાસનના દિવાકર સમાન છે, જે ભગવાન મહાવીરના અન્તિમ ગણધર છે, રાગાદિ દોષોથી જે તદ્દન વિશુદ્ધ બની ચૂક્યા છે, જીવોની મુશ્કેલીઓને જે દૂર કરનારા છે, કેવળજ્ઞાનના પ્રભાવથી જેમણે સમસ્ત જીવાદિ વસ્તુઓને સારી રીતે જાણી લીધી છે, જે તેજસ્વી છે તથા જેમણે મુક્તિ પ્રાપ્ત કરી લીધેલ છે ॥ ૨ ॥

હું તે દયાળુ ગુરુવરને નમસ્કાર કરૂં કે જેમના મનોહર ચરણ, કમળના સમાન કોમળ છે, અને જે વિમળજ્ઞાન દેનાર વોધના દાતા છે, તથા જેમનું મુખ મદા દોરા મહિતની મુદપત્તિથી ગોળે છે ॥ ૩ ॥

इह खल्वतिविचित्राकारेऽपारेऽसारे समारे धनादिभिर्विविगोपायैः सुखार्थं
प्रयत्तमाना अपि जना न केऽपि गाम्भिर्यं सुखमनुभवन्ति किमत्र परिहारनिदा-
नमिति, सति विचारसनारे मां व एव निरतिशयरूपसाधनमिति सिद्ध्यति ।
आमृत्सैकेन्द्रियः समलोऽपि लोभः सुखाभिग्रापी दुःखमिमुखश्च दृष्टोऽस्तस्य

तीर्थकर प्रभुकी चाणीको नमन कर में घासीलाल इस प्रश्नव्याकरण
सूत्र पर यह सुदर्शिनी नाम की टीका बनाता हूँ ॥४॥

इस अतिविचित्रताकार अनियत स्वभाववाले अपार असार ससार
में धन आदि विविध उपायों से सुखપ્રાસિ કે નિમિત્ત સમસ્ત સસારી
જીવ પ્રયત્ન કરતે રહતે હું ફિર મીં યહા સસાર મે કોઈ મીં જીવ વાસ્ત-
વિક સુખ કા અનુભવ નહીં કર પાતા હૈ તો ડસકા કારણ કયા હૈ જય
યહ વિચાર કિયા જાતા હૈ તો માલૂમ દેતા હૈ કિ યહાં પર જિતના મીં
સુખ હૈ વહ વાસ્તવિક સુખ નહીં હૈ-ગુવામાસ હૈ કારણ વહ ઇન્દ્રિય
ઔર મનસે ઉત્પન્ન હોતા હૈ । વાસ્તવિક સુખ તો મોક્ષમે હી હૈ, કયોં કિ
વહ સુખ નિરતિશયરૂપ આત્મિક હૈ । ત્રૈકાલિક દુઃખકે અત્યન્તાભાવસે
વિશિષ્ટ જો પરમાનન્દ સદ્ભાવપતા હૈ વહી નિરતિશયતા હૈ । ઇસ પ્રકાર
કા નિરતિશયરૂપ જો સુખ હૈ વહ સસાર મે નહીં હૈ । કયોં કિ સાસા-
રિક સુખ દુઃખાનુપક્ત હૈ । ઔર મોક્ષ કા સુખ ઇસા નહીં હૈ । ઇસલિયે
સૂક્ષ્મ ઇન્દ્રિય સે લેકર સમસ્ત પચેન્દ્રિયતક કે પ્રાણી સુખ કે અમિ-

તીર્થ કર પ્રભુની વાણીને નમન કરીને હું, 'ધાસિલાલમુનિ' આ પ્રશ્નવ્યાકરણ
સૂત્ર પર આ 'સુદર્શિની' નામની ટીકા બનાવુ છું ॥ ૪ ॥

આ અતિ વિચિત્રાકાર, અનિયત સ્વભાવવાળા, અપાર, અમાર સસારમા
ધન આદિ વિવિધ ઉપાયોથી સુખ પ્રાપ્ત કરવા માટે સમન્ત સસારી જીવો
પ્રયત્ન કરતા રહે છે, છતાં પણ આ નમાગમા ગ્રંથપિણુ જીવ વાસ્તવિક સુખનો
અનુભવ કરી શકતા નથી તેવું જુ ગરણુ છે, એવો વિચાર બ્યારે કરવામા
આવે છે ત્યારે એવું લાગે છે કે આ સસારના જેટલા સુખ છે તે વાસ્તવિક
સુખ નથી, પણ સુખનો આભાસ જ છે ગણુકે તે ઇન્દ્રિય અને મનથી ઉત્પન્ન
થાય છે વાસ્તવિક સુખ તો મોક્ષમા જ છે કારણકે તે સુખ નિરતિશયરૂપ છે
ત્રૈકાલિક હોખના અત્યંત અભાવવાળી જે પરમાનન્દ સદ્ભાવપતતા છે, તેને જ
નિરતિશયતા કહે છે એવા પ્રકારનું નિરતિશયરૂપ જે સુખ છે તે સસારમા
મળતું નથી ગણુકે નાસારિક સુખ હોખાનુપક્ત છે મોક્ષનું સુખ તેવું નથી
તેથી જ સૂક્ષ્મ એકેન્દ્રિયથી લઈને પચેન્દ્રિય સુધીના સમન્ત પ્રાણી સુખની

નિરતિશયસુખસાધન નિર્ણેતવ્યમ્ । નિરતિશય ચ સુખ ત્રૈકાલિકદુઃસાત્પન્તાભાવ-
વિશિષ્ટપરમાનન્દસદ્ભાવરૂપ પારમાર્થિકમેવ ન ત્વૈદિક, તસ્યેન્દ્રિયનોદ્દિન્યસયો-
ગજન્યતયોત્પત્તિવિનાશયોરવિનાભાવનિયમાદુઃસ્વાનુપક્તતાત્, મરુમરીચિચયો-
ઘાવચજલતરંગમદ્ભ્રમવદસારત્વાચ્ચેતિ મોક્ષસ્યૈવ પ્રાધાન્યમામનન્તિ મહાશ્વ-
નયઃ, તસ્માદાત્યન્તિક્સુખમધિજિગમિપુણા મોક્ષાર્થે યતિતવ્યમ્ । મોક્ષશ્ચ જ્ઞાન-
ક્રિયાસેવનેનૈવ ભવતીતિ જ્ઞાનક્રિયે એવ તત્કારણ સિપાધયિપિતવ્યમ્, અન્યથા

લાપિ ઔર દુઃખ સે ચિમુખ હોતે હુપ દિખલાઈ પઢતે હૈ । અતઃ યહ
નિર્ણય કરના આવશ્યક હો જાતા હૈ કિ ઉસ નિરતિશય સુખ કા
સાધન ક્યા હૈ ? જન હસ પ્રકાર કા વિચાર ગહરાઈ કે સાથ કિયા
જાતા હૈ તો યહી નિશ્ચિત હોતા હૈ કિ ઉસ સુખ કા સાધન કેવલ એક
મોક્ષ હી હૈ । સસાર નહીં હૈ—ક્યોં કિ સસાર જન્ય જો સુખ હોતા હૈ
વહ હન્દ્રિય ઔર મન કે સયોગ સે જન્ય હોને કે કારણ ઉત્પત્તિ ઔર
વિનાશ કા અવિનાભાવી હોતા હૈ ઔર હસલિયે વહ દુઃખ સે થીચ ૨
મેં મિશ્રિત રહા કરતા હૈ । અતઃ મૃગતૃણા મેં ડુંચી નીચી જલ તરંગોં
કે વિભ્રમકી તરહ યહ અસાર હોતા હૈ । હસલિયે નિરતિશય સુખ કા
સાધન સસાર નહીં હો સકતા હૈ—કેવલ એક મોક્ષ હી હો સકતા હૈ ।
એસી હી મહાશુનિયોકી માન્યતા હૈ । હસલિયે જો પ્રાણી હસ નિરતિશય
સુખકો પ્રાપ્ત કરનેકે અમિલાષી હં ડુંદેં મોક્ષ પ્રાપ્તિમેં હી પ્રયત્ન કરના
ચાહિયે, મોક્ષ કી પ્રાપ્તિ જીવોંકો જ્ઞાન ઔર ક્રિયા કે સેવન કરનેસે હી
હોતી હૈ । અતઃ જ્ઞાન ઔર ક્રિયાયે દોનો હી ઉસકે કારણરૂપસે સાધનકે

ધન્ધાવાળા અને દુ ખથી વિમુખ થતા હેખાય છે તેથી તે નિર્ણય કરવો જરૂરી
થઈ પડે છે કે તે નિરતિશય સુખનુ સાધન કયુ છે? જનારે તે પ્રકારનો જાડો
વિચાર કરવામા આવે છે ત્યારે એ જ નિશ્ચય પર અવાય છે કે તે સુખનુ
સાધન કેવળ મોક્ષ જ છે, સસાર નથી જારણુડે જે સુખ સસારજન્ય હોય છે
તે ધન્દ્રિય અને મનના સયોગથી પેદા થયેલ હોવાથી ઉત્પત્તિ અને નાશને
પ્રાપ્ત કરનાર હોય છે, અને તેથી તે વચ્ચે વચ્ચે દુ ખથી મિશ્રિત રહ્યા કરે છે
તેથી તે મૃગજળના જીયા નીચા જળતરંગોના વિભ્રમના જેવુ અસાર હોય છે
તે કારણે નિરતિશય સુખનુ સાધન નસાર થઈ રાડતો નથી પણ એક માત્ર
મોક્ષ જ તેનુ સાધન બની શકે છે એવી જ મહાશુનિયોની માન્યતા છે તેથી
જે પ્રાણીને તે નિરતિશય સુખ પ્રાપ્ત કરવાની અભિલાષા હોય તેમણે મોક્ષ
પ્રાપ્તિ માટે જ પ્રયત્ન કરવા જોઈએ છવોને મોક્ષની પ્રાપ્તિ જ્ઞાન અને ક્રિયાના
સેવનથી જ થાય છે તેથી જ્ઞાન અને ક્રિયા એ બન્ને તેના જારણુડપ હોવાથી

મોક્ષસ્યાપ્યભાવાત્ મુગ્ધાપાત્તેર્દૂરપ્રમાણ સ્થાત્ । સત્યેન हि ज्ञाने इष्टानिष्टोपादान
 हानोपायविचारसञ्चारो भवति । तदभावे प्राणिनामासवेऽप्येव नित्य प्रवृत्तिः
 स्यात् तस्मात् ज्ञान परमादरणीयम् । तच्चात्र श्रुतस्य गृह्यते स्वपरोपकारित्वात् ।
 तदत्र प्रश्नव्याकरणमेव ।

નનુ શાસ્ત્રસ્યાદો મ ચેડન્તે ચ કૃત મદ્ગલ નિર્વિનપરિમમાપ્ત્યથં ભવતિ,
 અધ્યેતારશ્ચ શાસ્ત્રધારણાવન્તઃ મથન્તે, શાસ્ત્રચ શિષ્યોપશિષ્યપરમ્પરાગામિ જાયતે-
 શિષ્ટાચારનિપયત્યાન્ચ મગલ કુનો ન કૃતમિતિ ચેદુન્યતે-

અત્ર મગદુક્તમાદાન્ટ્રેયોભૂતશાસ્ત્રસ્ય ચ મદ્ગલરૂપત્યાત્ મદ્ગલમાચરિતમેવ
 તથાપિ શ્રુણુ-જમ્મિન્ શામે આદિમદ્ગલ “જવૂ ઇણમો” ઇતિ મગદામન્યજેન,
 લિપે દ્રષ્ટ છે । અન્યથા મોક્ષકા અભાવનો જાહેગા ઓર હસ તરહ સે ફિર સુલ
 ફી પ્રાપ્તિ હોના વહુત કઠિન જ્ઞાન તો જાહેગી । જ્ઞાનકે હોને પર હી દ્રષ્ટ
 ઓર અનિષ્ટ પદાર્થોંકે ઉપાદાન (ગ્રહણ) ઓર ત્યાગ કરનેમે જીવોંકી બુદ્ધિ
 લગતી હૈ । જ્ઞાન કે અભાવમે નહીં ઉસ રામય તો કેવલ આસ્ત્રવોંમેં હી વે
 રોકડોંક પ્રવૃત્તિ હોતી રહતી હૈ । હસીલિયે જ્ઞાનકો પરમ આદરણીય કહા
 ગયા હૈ । તેમા વહ જ્ઞાન સ્વ ઓર પર કા ઉપકારક હોનેકે કારણ યહા
 શ્રુતરૂપ ગ્રહણ ક્રિયા ગયા હૈ । વહ શ્રુતરૂપ જ્ઞાન યહા પ્રશ્ન વ્યાકરણ હી હૈ ।

શકા—શાસ્ત્રની આદિ મેં, મધ્ય મેં, ઓર અંત મેં ક્રિયા ગયા
 મગલાચરણ નિર્વિઘ્નરૂપ સે ડસકી પરિસમાપ્તિ કે લિયે હોતા હૈ—તથા
 જો ડસ શાસ્ત્ર કે અધ્યેતા હોતે હૈં વે ડસ શાસ્ત્રની ધારણા સે સુશોભિત
 રહા કરતે હ ઓર હસ તરહ સે વહ શાસ્ત્ર શિષ્યોપશિષ્ય પરપરાગામી
 બન જાતા હૈ । તથા શાસ્ત્રની આદિ મેં, મધ્ય મેં ંવ અન્ત મેં મગલા-

આધન તરીકે યોગ્ય છે નહીં તો મોક્ષની પ્રાપ્તિ થશે નહીં અને એમ થવાથી
 મુગ્ધની પ્રાપ્તિ ઘણી મુશ્કેલ બની જશે જ્ઞાન હોય તો જ દ્રષ્ટિ અને અનિષ્ટ
 પદાર્થોના ઉપાદાન-(ગ્રહણ) અને ત્યાગ કરવા બાબતમાં જીવોની બુદ્ધિ કામ કરી
 ગકે છે, જ્ઞાન ન હોય તો નહીં ત્યાગે તો (તે જ્ઞાનના અભાવે) દ્રષ્ટા આસ્ત્ર-
 વોમાં જ ગેડટોડ વિના પ્રવૃત્તિ આપ્યા કરે છે તે કારણે જ્ઞાનને અત્યંત
 આદરણીય બતાવ્યું છે એવું તે જ્ઞાન સ્વ અને પરનું ઉપકારક હોવાથી અહીં
 શ્રુતરૂપે ગ્રહણ કરવામાં આવેલ છે અહીં પ્રશ્નવ્યાકરણ જ તે શ્રુતજ્ઞાન છે

ગતિ—શાસ્ત્રની શરૂઆતમાં, મધ્યમાં, અને અન્તે કરવામાં આવેલ મગલાચરણ
 નિર્વિઘ્ને તેની પરિસમાપ્તિને માટે હોય છે તથા જેઓ તે શાસ્ત્રનું અધ્યયન કરનાર
 હોય છે તેઓ તે શાસ્ત્રની ધારણાથી મુશોભિત રહ્યા કરે છે, અને એ રીતે તે
 શાસ્ત્ર શિષ્યોપશિષ્યની પરપરા સુધી પહોંચે છે તથા શાસ્ત્રના આરભમાં,

મધ્યમગ્નલ પ્રથમસવરદ્વારે અર્હિસા મગવતીવર્ણનેન અન્ત્યમગ્નલ ચ “નાયપુત્તેણ વીરેણ મગવયા પયાસિય” ઇત્યાલાપકેન ચ વિજ્ઞેયમ્, ઇત્યલ વિસ્તરેણ ।

અથ પ્રશ્નવ્યાકરણમિત્યસ્ય કઃ શબ્દાર્થઃ ? ઉચ્યતે પ્રશ્ના = અટ્ટગુણ્ટાદિવિધાઃ, તે વ્યાક્રિયન્તે = પ્રતિપાદ્યન્તે યસ્મિન્નિતિ પ્રશ્નવ્યાકરણમ્, અટ્ટ-અષ્ટોત્તર પ્રશ્નશતમ્ । અષ્ટોત્તરમપ્રશ્નશતમ્ । અષ્ટોત્તર પ્રશ્નાઽપ્રશ્નશતમ્ । યા વિધાઃ, મન્ત્રા યા પૃષ્ઠા એવ

ચરણ કરના એસા શિષ્ટ પુરુષો કા આચાર મી હૈ-તો ફિર શાસ્ત્રકાર ને હસ સૂત્ર મે મગલાચરણ ક્યોં નહીં ક્રિયા હૈ ?

ઉત્તર—હસ પ્રકાર કી આશકા ઠીક નહીં હૈ, ક્યોં કિ મગવાન્ દ્વારા કહા ગયા યહ શાસ્ત્ર સાક્ષાત્ મગલ સ્વરૂપ હૈ અતઃ ચત્ સ્વય હી મગલરૂપ હૈ અતઃ સ્વય મગલરૂપ ગ્ને હુણ શાસ્ત્ર મેં મગલરૂપતા હોને સે શાસ્ત્રકાર ને ઉસે નિબદ્ધ કરને કી અપેક્ષા મગલાચરણ ક્રિયા હી હૈ । ફિર મી સુનો-શાસ્ત્રકાર ને હસ શાસ્ત્ર મે “જન્નુ ઇગમો” હસ મગવાન્ કે આમત્રણ સે આદિ મગલ, પ્રથમ સવર દ્વાર મે મગવતી અર્હિસા કા વર્ણન રૂપ મધ્યમગલ, ઓર “નાયપુત્તેણ વીરેણ મગવયા પયાસિય” અન્તમેં હસ પ્રકાર કે કથન સે અન્ત્યમગલ ક્રિયા હૈ, એસા જાનના વ્હાલિયે । અથ હસ વિષય મે ઓર અધિક કહનેસે કયા લાભ ।

શકા—“પ્રશ્નવ્યાકરણ” હસકા શબ્દાર્થ કયા હૈ ?

ઉત્તર—અગુઠ આદિ વિધાઓં કા નામ પ્રશ્ન હૈ । યે પ્રશ્ન હસમેં વિસ્તાર પૂર્વક પ્રતિપાદિત કિયે ગયે હે । હસલિયે હસસૂત્રકા નામ

મધ્યમા અને અન્તે મગવાચરણ કરણુ તેવો શિષ્ટ પુરુષોનો આચાર પણ છે છતાં પણ સૂત્રકારે આ સૂત્રમા મગવાચરણ કેમ કર્યું નથી ?

ઉત્તર—આ પ્રકારની આચારકા ચોગ્ય નથી, કારણકે લગવાન દ્વાગ કહેવામા આવેલ આ શાસ્ત્ર જ સાક્ષાત્ મગલસ્વરૂપ છે, તેથી તે ચોતે જ મગણરૂપ છે તેથી સ્વય મગણરૂપ બનેલ શાસ્ત્રમા મગણરૂપતા હોવાથી શાસ્ત્રકારે તેને સૂત્રરૂપે બાધવાની અપેક્ષાએ મગવાચરણ કર્યું જ છે વળી સાલજો શાસ્ત્રકારે આ શાસ્ત્રમા “જન્નુ ઇગમો” આ પ્રમાણે ભગવાનના આમત્રણથી આદિ મગણ, પ્રથમ સવરદ્વારમા લગવતી અર્હિસાના વર્ણનરૂપ મધ્યમગણ, અને “નાયપુત્તેણ વીરેણ મગવયા પયાસિય” અન્તમા એ પ્રકારના યથનથી અત્યમગણ કર્યું છે, એમ સમજી લેવું હવે આ વિષયમા વધુ કહેવાથી શો લાભ ?

શકા—“પ્રશ્નવ્યાકરણ”નો શબ્દાર્થ શું છે ?

ઉત્તર—અગુઠ આદિ વિધાઓના નામ પ્રશ્ન છે તે પ્રશ્નોના આ સૂત્રમા વિસ્તારથી પ્રતિપાદન કરવામા આવ્યું છે તેથી તેના નામ પ્રશ્ન-નાકરણ પડ્યું છે

શુભાશુભ પ્રતિપાદયન્તિ તે પ્રશ્નાઃ । એવં ચે અપૃષ્ઠા એવં શુભાશુભ વદન્તિ તે
અપ્રશ્નાઃ । ચે પૃષ્ઠા અપૃષ્ઠાશ્ચ કથયન્તિ તે પ્રશ્નાઃપ્રશ્નાઃ । તત્ત્વા અન્યેઽપિ અતિ
શયાઃ, નાગકુમારેઃ મૃષર્ણકુમારેઃ અન્યૈશ્ચ ભવનપતિભિ મહ સાધૂનાં સત્તાદાઃ,
સ્ત્યાદયઃ સન્તિ ।

નન્દીમૃગચાચનામાલે પ્રશ્નવ્યાકરણે પશ્ચચત્વારિંશદધ્યયનનિગ્નયઃ સમુપલબ્ધ
આસીત્ । તદુક્ત નન્દીનૃત્રે—“સે કિં ત વ્ણદ્વાગારગ્નાઃ? વ્ણદ્વાગારગ્નેષુ ણ અર્દ્ધ
ત્તર પસિણમય, અર્દ્ધત્તર અપસિગમય, અર્દ્ધત્તર પસિણાપસિણસય । ત જહા—અમુદ્ધ-
પમિણાઃ, વાહુપમિણાઃ, અદાગપમિણાઃ, અન્નેપિ વિચિત્તા ટિવ્વા વિજ્ઞાઃમયા, નાગ-
સુવર્ણેહિં સદ્ધિ ટિવ્વા સમાયા જાપવિજ્જતિપ્ । વ્ણદ્વાગારગ્નાણ પરિત્તા વાયણા,
સલ્લિજ્ઞા અણુઓગદારા સલ્લિજ્ઞા વેદા, સલ્લિજ્ઞા મિલ્લેગા મલ્લિજ્ઞાઓ નિજ્જુ-
ત્તીઓ, સલ્લિજ્ઞાઓ સગદ્ધીઓ, સલ્લિજ્ઞાઓ પડિવત્તીઓ, સે ણ જગદ્ધ્યાપ દસમે અગે
પગે સુયવગ્ધે, પળયાલીસ અસયણા, પળયાલીસ ઉસયણા, પળયાલીસ સમુદ્દે-
સયણા, સલ્લિજ્ઞાઃ પયસહસ્સાઃ પયગ્ગેણ, સલ્લિજ્ઞા અવગ્ગરા, અણતાગમા,
અણતા પલ્લવા, પરિત્તા તસા, અણતા વાગરા, સાસયકડનિગ્ધનિકાદયા જિણપન્નત્તા
માવા આપવિજ્જતિ, પન્નવિજ્જતિ, પલ્લવિજ્જતિ, દસિજ્ઞતિ નિદસિજ્જતિ, ઉવદ-
સિજ્જતિ, સે એવં આયા, એવ નાયા, એવ વિનાયા, એવ ચરણરુણપલ્લવા સે
ત આઘવિજ્જતિ । વ્ણદ્વાગારગ્નાઃ” ॥

પ્રશ્નવ્યાકરણ છુટા છે । ફ્રનમેં ૧૦૮પ્રશ્ન, ૧૦૮ અપ્રશ્ન, ઓર ૧૦૮હી પ્રશ્ના-
પ્રશ્ન હે । જો વિનાઈ અથવા મત્ર, પૃષ્ઠને પર શુભ ઓર અશુભ કા કથન
કરતે હેં વે પ્રશ્ન હે । જો વિના પૂછે હી શુભ ઓર અશુભ કહતે હેં વે
અપ્રશ્ન હે । તથા જો મિશ્રરૂપ મેં પૃષ્ઠને પર-શુભ ઓર અશુભ દોનોં કા
પ્રગટ કરતે હે । વે પ્રશ્નાપ્રશ્ન હે । હસી તરહ ઓર ખી અનિશય એવ નાગ-
કુમાર, સુવર્ણકુમાર તથા અન્ય ભવનપતિયોં કે સાથ, સાધુઓં કે સગદ
હસમેં પ્રદર્શિત કિયે ગયે હે ।

નદીસૂત્ર કે વાચનાકાલ મેં પ્રશ્નવ્યાકરણ મેં પૈતાલીસ અધ્યયનરૂપ

તેમા ૧૦૮ પ્રશ્ન, ૧૦૮ અપ્રશ્ન, અને ૧૦૮ પ્રશ્નાપ્રશ્ન છે જે વિદ્યાઓ અથવા
મત્ર, પૂછવામા આવતા શુભ અને અશુભનુ કથન કરે છે, તેમને પ્રશ્ન કહે છે
પૂછ્યા વિના જ શુભ અને અશુભ જતાવનારને અપ્રશ્ન કહે છે તથા
જે મિશ્રરૂપે-પૂછવામા આવતા શુભ અને અશુભ જાન્નેને પ્રગટ કરે છે તે
પ્રશ્નાપ્રશ્ન કહેવાય છે એજ રીતે ખીજા પણ નાગકુમાર, સુવર્ણકુમાર તથા અન્ય
ભવનપતિઓની આવે, સાધુઓના ઘણા સવાદ આ સૂત્રમા જતાવવામા આવ્યા છે
નદીસૂત્રના વાચનકાળમા પ્રશ્નવ્યાકરણમા પિસ્તાળીશ અધ્યયન સમુપલબ્ધ

તદનન્તર સ્થાનાઙ્ગસૂત્રવાચનાવેલાયા પશ્ચન્નારિશદધ્યયનેપુ દશા યયનાન્યે-
વોપલબ્ધાન્યાસન્-તદુક્ત સ્થાનાઙ્ગે—

“પળ્હા યાગરણદસાણ દસઅઙ્ગયણા પળ્ણત્તા । ત જહા—ઉપમા , સહ્યા ,
ઈસિભાસિયાઈ^૧, આપરિયભાસિયા^૨, મહાવીરભાસિયાઈ^૩, સોમગપસિનાડ , કોમ-
લપસિનાઈ^૪, અદાગપસિનાઈ^૫, અગુટ્ટપમિનાડ^૬, મારુપસિનાડ^૭” ॥ સ્થા ૦ ૧૦ઠા ।

ઈદાની તુ પૂર્વોક્તાનિ અધ્યયનાનિ વિચ્છેદ ગતાનીતિ હેતો—પશ્ચાન્નવપશ્ચસવ
રાત્મકદશાધ્યયનાનિ સમુપલબ્ધ્યન્તે ।

તપઃ સયમારાધકાઃ સૌધર્માદિદેવલોકેષુ સમુત્પદ્યન્તે, ઉત્કૃષ્ટતપઃસયમારા
ધકાસ્તરિમન્નેવ ભવે મોક્ષમાપ્નુવન્તિ કિન્તુ યેપામાયુષ્ય સસન્નપરિમિત હીન તે
કર્મક્ષયાઽભાવાત્ વિજયાદિ વિમાનેષુ સમુત્પદ્યન્તે, इति નમઃઙ્ગે અનુત્તરોપપાતિ-
કસૂત્રે વર્ણિતમ્ ।

નિષદ્ધ સમુપલબ્ધ થા । યહ વાન “સે કિં ત પળ્હાવાગરણાઈ ? સે લેકર
“સે ત પળ્હાવાગરણાઈ” તક કે હસ નદીસૂત્ર કે પાઠ સે પુટ્તહોતી હૈ ।
હસકે વાદ સ્થાનાઙ્ગસૂત્ર કે વાચનાકાલ મેં પૈતાલીસ અધ્યયનોં મે સે
કેવલ ૧૦ હી અધ્યયન ઉપલબ્ધ રહ ગયે । જૈસા કિ સ્થાનાઙ્ગસૂત્ર કે હસ
પાઠ સે પ્રમાણિત હોતા હૈ કિ “પળ્હાવાગરણદસાણ દસ અઙ્ગયણા
પળ્ણત્તા તજહા” ઇત્યાદિ । પર અત્ર તો હસ સમય વે ઉપમા, સહ્યા,
ઋષિભાસિત આચાર્યભાસિત, મહાવીરભાસિત આદિ દશ અધ્યયન ભી
ઉપલબ્ધ નહી હૈ, કયોં કિ હનકા વિચ્છેદ હો ચુકા હૈ । હસલિયે પાંચ
આત્તવ ઓર પાંચ સવર સવધી યે દશ અધ્યયન હી ઉપલબ્ધ હૈ ।

નોમા અગ જો અનુત્તરોપપાતિક સૂત્ર હૈ હસમેં ંસા વર્ણન કિયા
કિ તપ સયમકે આરાધક જીવ સૌધર્મ આદિ દેવલોકોં મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈ ।

(પ્રાપ્ત) હતા તે વાત ‘સે કિં ત પળ્હાવાગરણાઈ? થી લધને “સે ત પળ્હાવાગરણાઈ”
સુધીના આ નદીસૂત્રના પાઠથી સિદ્ધ થાય છે ત્યારબાદ સ્થાનાઙ્ગસૂત્રના વાચન-
કાળમા પિસ્તાળીશ અવ્યયનોમાથી રૂકત હસ જ ઉપલબ્ધ હતા તે વાતનુ
સ્થાનાઙ્ગસૂત્રના આ પાઠથી પ્રતિપાદન થાય છે—“પળ્હાવાગરણદસાણ દસ અઙ્ગયણા
પળ્ણત્તા તજહા” ઇત્યાદિ પણ અત્યારે તો ઉપમા, સહ્યા, ઋષિભાસિત, આચાર્ય
ભાસિત, મહાવીરભાસિત આદિ દશ અધ્યયન પણ ઉપલબ્ધ નથી, કારણકે તેનો
વિચ્છેદ થઈ ગયો છે તેથી પાંચ આત્તવ અને પાંચ સવર સવધી આ દશ
અધ્યયનો જ ઉપલબ્ધ છે

અનુત્તરોપપાતિકસૂત્ર નામનુ જે નવમુ અગ છે તેમા એવુ વર્ણન
કરવામા આવેલ છે કે તપ સયમની આરાધના કરનાર જીવ સૌધર્મ આદિ—

ઉત્કૃષ્ટતપઃસયમારાગનેન સયમતામકુષ્ઠર્પણવિદ્યાદિસસિદ્ધય સમુત્પદ્યન્તે, તામિસ્તે પ્રતિપાદિપ્રશ્નાનુચરન્તિ । તદ્વપગ્નિઃ સમ્પ્રપ્તિ નાન્તિ, પિચ્છેદ ગતસ્વાત્ । ઇદાની તુ પચ્ચાસ્રપચ્ચસવરપ્રતિપાદનપર પ્રશ્નવ્યાકરણમુપલભ્યતે ।

ઉત્કૃષ્ટતપઃસયમારાગન હિ પચ્ચાસ્રપચ્ચસવરજ્ઞાન વિના ન ભવતિ-ઇતિ-આસ્રસંવરસ્વરૂપનિરૂપકમિદ પ્રશ્નવ્યાકરણ નિરૂપ્યત ઇતિ નમઃાદ્રેન સદાસ્ય સમય ।

અસ્મિન્ પ્રશ્નવ્યાકરણે પચ્ચાસ્રપચ્ચસવરાત્મકાનિ દશાગ્નયનાનિ નન્તિ, તસ્યાસ્રસવરભેદાભ્યા ટ્વી ભાગો તયોરાસ્રસ્ય ચન્દ્રકારણત્વેન પૂર્વ નિરૂપણ,

તથા જો ઉત્કૃષ્ટ તપ સયમ કી આરાગના કરતે હૈં વે उसी भव में मोक्ष को प्राप्त कर लेते हैं, किन्तु जिनकी आयु सातलव परिमित है हीन है वे कर्मभय नहीं कर सकते हैं इसलिये कर्मक्षय के अभाव से वे विजयादिक विमानों में उत्पन्न हो जाते हैं ।

ઉત્કૃષ્ટ તપ સયમ કે આરાગના સે સયમશાલી જીવોં કો અગુષ્ઠ-વિગ્રા દર્પણવિગ્રા આદિ વિગ્રાઈં મિદ્ધ હો જાની હૈં । ઇનસે વે પ્રતિવાદિયોં કે પ્રશ્નોં કા ઉત્તર દેતે રહતે હૈં । ઇનકી ઉપલબ્ધિ ઇમ સમય ઇનકે વિચ્છેદ હો જાને કે કારણ નહીં હોતી હૈં । ઇસ સમય તો પાંચ આસ્રવ ઔર પાચ સવર કે પ્રતિપાદન કરને મૈં તત્પર માત્ર યહ પ્રશ્નવ્યાકરણ ઉપલબ્ધ હો રહા હૈં । ઉત્કૃષ્ટ તપ સયમ કી આરાગના પાચ આસ્રવ ઔર પાચ સવર ઇનકે જ્ઞાન હ્રા વિના નહીં હો સકતી હૈં । ઇસલિયે આસ્રવ ઔર સવર કે સ્વરૂપ કો નિરૂપણ કરને ચાલા યહ પ્રશ્નવ્યાકરણ નિરૂપિત કિયા જાતા હૈં । યહી નૌવૈં અગ કે સાથ ઇસ્કા સમય હૈં ।

તેવલોહોમા ઉત્પન્ન થાય છે તથા જે ઉત્કૃષ્ટ તપ મયમની આગધના કરે છે તેઓ એ જ ભવમા મોક્ષને પ્રાપ્ત કરે છે, પણ જેનુ આયુષ્ય સાતલવ પરિમિત છે, હીન છે, તેઓ ડોનોના ક્ષય કરી ગડતા નવી તેથી કર્મક્ષયને અભાવે તેઓ વિજયાદિક વિમાનોમા ઉત્પન્ન થાય છે

ઉત્કૃષ્ટ તપ સયમની આગધનાથી સયમગાળી છોડોને અગુષ્ઠ વિદ્યા, દર્પણ વિગ્રા આદિ વિગ્રાઓ પ્રાપ્ત થાય છે તેમની મદદથી તે પ્રતિવાદીઓના પ્રશ્નોના ઉત્તરો આપે છે તેમની ઉપલબ્ધિ (પ્રાપ્તિ) આ સમયમા તેમનો વિચ્છેદ થઈ જવાથી યઈ શક્તી નથી હાલમા તો પાચ આસ્રવ અને પાચ સવરનુ પ્રતિપાદન કરનાર ક્ષુદ્રા આ પ્રશ્નવ્યાકરણુ ૪ ઉપલબ્ધ થઈ શકે છે પાચ આસ્રવ અને પાચ સવરનુ જ્ઞાન થયા વિના ઉત્કૃષ્ટ તપ સયમની આગધના થઈ શક્તી નથી તેકારણુ આસ્રવ અને સવરના ચ્ચરણનુ નિરૂપણુ કરનાર આ પ્રશ્નવ્યાકરણુનુ નિરૂપણુ કરવામા આવે છે એ જ ભવમા અગ સાથે તેનો સબધ છે

તતસ્તત્પરિહારોપાયભૂતસમર્પણન ભગવતા કૃતમ્ । નહિ કોઽપિ મેધાગ્રી દુઃસ્વરૂ-
પસ્યાઽપરિજ્ઞાને તત્પરિહારોપાયપરિમાર્ગણ ત્રિધત્તે, નાસસિદ્ધે જ્વરાદિરોગે
તત્ચિકિત્સાઽઽવશ્યકૃત્યમુપપદ્યતે, અતઃ પૂર્વમાસવપશ્ચન્નુદેશક્રમપ્રાપ્ત નામત પ્રદ-
શ્યતિ । આસ્રવેષ્વપિ પૂર્વે હિંસાનિરૂપણ કૃતમ્, અસત્યાદિભિરપિ હિંસાયા એવ
જાયમાનત્વેન હિંસાયાઃ પ્રધાનભૂતત્વાત્, અતઃ પ્રથમમાસ્રવદ્વારમાહ—“જન્-
હણમો” इत्यादि ।

इस प्रश्नव्याकरण में पाच आस्रव और पाच सवर के सवध को
लेकर दस अध्ययन हैं इसलिये इसे दो भागों में विभक्त किया गया है।
आस्रव का वर्णन वध का कारण होने से प्रथम भाग में किया गया है
और सवर का वर्णन आस्रव के परिहार का उपायभूत होने के कारण
उसके बाद में द्वितीय भाग में किया गया है । कैसा भी बुद्धिमान् पुरुष
क्यों न हो जबतक वह दुःख के स्वरूप से अपरिज्ञात रहता है तो
वह उसके परिहार करने के उपायभूत मार्ग की गवेषणा नहीं करता है,
तथा जैसे ज्वरादिरोग की ससिद्धि के अभाव में अर्थात् उसके पूर्ण
निदान के अभाव में उसके शमन के उपाय की गवेषणा नहीं होती है,
उसी तरह जबतक आस्रवतत्त्व का परिज्ञान जीव को नहीं हो जाता है,
तबतक संवररूप उसके निरोधकभूत मार्ग को जानने की भी जिज्ञासा
उसको उत्पन्न नहीं हो सकती है । इसलिये सत्र से पहिले उद्देशकप्राप्त
पांच आस्रवों को उनके स्वरूप को आगे विशेष स्पष्ट करने के अमिप्राय
से सूत्रकार नाम लेकर प्रदर्शित करते हैं । इन पाच आस्रवों में भी सूत्र-

આ પ્રશ્નવ્યાકરણમા પાચ આસ્રવ અને પાચ સવર વિષેના દસ અધ્યયન
છે, તેથી તેના બે ભાગ પાડવામા આવ્યા છે આસ્રવો યા ધના ગણવૃત્તપ હોવાથી
આસ્રવોનુ વર્ણન પહેલા ભાગમા કરવામા આવ્યું છે, અને સવર આસ્રવના
પરિત્યાગને માટે ઉપાયરૂપ હોવાથી તેમનુ વર્ણન આશ્રવન વર્ણન પછી બીજા
ભાગમા કરેલ છે ગમે તેવો બુદ્ધિશાળી માણસ હોય પણ જો તે દુઃખના
સ્વરૂપથી અજાણુ રહે તો તેના પરિહાર કરવાના ઉપાયરૂપ માર્ગની પ્રાપ્તિ તે
કરી શકતો નથી તથા જેમ બ્વર આદિ રોગોમા તેનુ પૂર્ણ નિદાન કર્યા વિના
તેનુ શમન કરવાનો ઉપાય જડતો નથી તેમ આસ્રવતત્ત્વનુ પરિજ્ઞાન બ્યાસુધા
જીવને થાય નહી, ત્યાસુધી તેમને રોકનાર-તેમના નિગ્રહ-સવરરૂપ માર્ગને
જાણવાની જિજ્ઞાસા તેનામા ઉત્પન્ન થઈ શકતી નથી તેથી સૌથી પહેલા ઉદ્દેશ
પ્રાપ્ત પાચ આસ્રવોના નામ સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે તેમનુ સ્વરૂપ આગળ જતા
વિસ્તારથી સ્પષ્ટ કરવામા આવશે તે પાચ આસ્રવોમા પણ સૂત્રકારે સૌથી

અત્ર “તેણ કાલેણ” ઇત્યાદિ ઉક્તેષ્વામ્ય ગ્રાચ્યમ્ । ચમ્પાનગર્યા સુધર્મ-
સ્વામિનઃ સમસરણ, તત્ર કોણિમે નામ રાજા, ધારિણી નામ દેવી ત્યાદિ વર્ણન
મૌપપાતિકમૂળાદવસેયમ્ । સુધર્મસ્વામિનો જમ્મુસ્વામિનશ્ચ વર્ણન જ્ઞાતામૂલસ્ય
પ્રથમાધ્યયનતો વિદેયમ્ । જમ્મુસ્વામિનઃ મુર્મસ્વામિનશ્ચ પ્રશ્નોત્તરગ્રાચ્ય પ્રદર્શયતે-
કાર ને પહિલે હિંસારૂપ આત્મવ કા જો નિરૂપણ ક્રિયા છે એવકા કારણ
યહ છે કિ હિંસા સે અતિરિક્ત જો મૂળાવાદ, અદત્તાદાન, મૈથુન, પરિગ્રહ
યે આત્મવ દાર હેં ઉનસે હિંસા હી ઉત્પન્ન હોતી હેં । હમલિયે ઉમ્મ હિંસા
મેં પ્રધાનતા આને સે અત્ર સૂત્રકાર સર્વ પ્રથમ ઉસી હિંસા રૂપ આત્મવ
દાર કા નિરૂપણ કરતે હેં-“જન્મુ ઇળમો” ઇત્યાદિ ।

હસ સૂત્ર કી સગતિ કે લિયે હમ મેં “તેણ કાલેણ” ઇત્યાદિ ઉક્તે-
ષ્ક વાચ્ય સંપ્રધિત કરલેના ચાહિયે-અર્થાત્ ઉસકાલ મેં ઔર ઉસ
સમય મેં ચમ્પા નામ કી નગરી થી । ઉસકે શાસક કોણિક રાજા થે ।
ઉનકી રાની કા નામ ધારિણી દેવી થા । તીર્થકર પરમ્પરાનુસાર
વિહાર કરતે હુવ વહા સુધર્માસ્વામી કા આગમન હુઆ-ઇત્યાદિ પ્રકાર
કા સમસ્ત વર્ણન જૈસા ઔપપાતિક સૂત્ર મેં ક્રિયા ગયા હેં વૈસા હી જાન
લેના ચાહિયે ઔર ઉસે “જન્મુ ઇળ મો” હસ સૂત્ર કી સગતિ નિમિત્ત
યહ લગા લેના ચાહિયે । સુધર્માસ્વામી ઔર જન્મુ સ્વામી કા વર્ણન જ્ઞાતા
સૂત્ર કે પ્રથમ અધ્યયન મેં ક્રિયા હુઆ હેં । સો ય’ મી વહા સે હી જાન
લેના ચાહિયે । અત્ર જન્મુસ્વામી ઔર સુધર્માસ્વામી કી હસ પ્રત્યક્ષાકરણ

પહેલા હિંનારૂપ આત્મવનુ નિરૂપણ કર્યું છે તેનું કારણ એ છે કે હિંના મિવાય
મૂળાવાદ, અદત્તાદાન, મૈથુન અને પરિગ્રહ, એ જે આત્મવ દાર છે, તેમના વડે
હિંના જ ઉત્પન્ન થાય છે તે કારણે તે હિંનામા પ્રધાનતા આવવાથી, સૂત્રકાર
સૌથી પહેલા એજ હિંસારૂપ આત્મવદ્વાનુ નિરૂપણ કરે છે-“જન્મુ ઇળમો” ઇત્યાદિ

આ મૂત્રના મળધને માટે તેમા “તેણ કાલેણ” ઇત્યાદિ ઉક્તેષ્ક વાક્યને
મળધ ભેડી દેવો ભેઠએ એટલે કે તે કાળે અને તે સમયે ચપા નામની
એક નગરી હતી એણિંક રાજા ત્યાના રાજા હતા તેમની ગણીનું નામ ધારિણી
દેવી હતું તીર્થ કર પંચગતુઆગ વિહાર કરતા કરતા ત્યા સુધર્માસ્વામીનું આગમન
થયું ઇત્યાદિ પ્રકારનું આખું વર્ણન જેમ ઔપપાતિક સૂત્રમા કરાયું છે તે
પ્રમાણે સમજી લેવું અને તેને “જન્મુ ઇળમો” આ મૂત્રના મળધને માટે
અહીં ભેડી દેવું ભેઠએ સુધર્માસ્વામી અને જન્મુસ્વામીનું વર્ણન જ્ઞાતામૂત્રના
પહેલા અધ્યયનમા કરેલ છે તો તે પણ ત્યાથી સમજી લેવું ભેઠએ હરે
જન્મુસ્વામી અને સુધર્માસ્વામી વચ્ચે આ પ્રશ્નઆકરણમૂત્રને વિષે જે પ્રશ્નોત્તરરૂપે

મૂલમ્—“જહ્ણ મતે ! સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણ જાત સપત્તેણ નવમસ્સ અગસ્સ અણુત્તરોવવાહ્યદસાણ અયમદ્દે પત્તે । દસમસ્સ ણ મતે અગસ્સ પઠ્ઠા વાગરણાણ સમણેણ ૩ જાત સપત્તેણ કે અદ્દે પળ્લત્તે ? જનૂ ! દસમસ્સ અગસ્સ સમણેણ જાત સપત્તેણ દો દારા પળ્લતા । આસવદારા ય સમરદારા ય । પદ્દમસ્સ ણ મતે ! દારસ્સ સમણેણ ૩ જાત સપત્તેણ કદ્દ અઙ્ગયણા પળ્લતા ? જનૂ ! પદ્દમસ્સ ણ દારસ્સ સમણેણ જાત સપત્તેણ પચ્ચ અઙ્ગયણા પળ્લતા । દોચ્ચસ્સ ણ મતે ! એવ ચેવ ! એસિ ણ મતે ! અઙ્ગયણાણ અપ્પહય સમરાણ સમણેણ ૩ જાત સપત્તેણ કે અદ્દે પળ્લત્તે ? । તણ્ણ અઙ્ગસુહમ્મે યેરે જનૂ નામેણ અણગારેણ એવ વુત્તે સમાણે જનૂ અણગાર એવ વયાસી ”—

છાયા—યદિ સ્વલ્પ ભદન્ત ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાતસ્સપ્રાપ્તેન નવમસ્યાઙ્ગસ્ય અનુત્તરોપપાતિરુદ્દશાનામયમર્થ પ્રજ્ઞસઃ । દશમસ્ય સ્વલ્પ ભદન્ત ! ઙ્ગસ્ય પ્રશ્નવ્યાકરણનાં શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાતસ્સપ્રાપ્તેન કોડ્ધર્થ પ્રજ્ઞસઃ ? જમ્નૂ ! દશમસ્ય—ઙ્ગસ્ય શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાતસ્સપ્રાપ્તેન દ્વે દ્વારે પ્રજ્ઞપ્તે—આસ-સૂત્ર કે સવધ મે જો પ્રશ્નોત્તર રૂપ ચાતર્ચીત હુઈ હૈં ઉસકો પ્રકટ કરતે હૈં—‘ જહ્ણ મતે ’ ઇત્યાદિ ।

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો યાવત્ સિદ્ધિ-ગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હો વુકે હૈં અનુત્તરોપપાતિક દશાઙ્ગ નામકે નવમે અગ કા જય હસ પ્રકાર સે અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈં—તો ઉન્હી યાવત સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુણ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને પ્રશ્નવ્યાકરણ નામક દશવૈં અગ કા વ્યા અર્થ નિરૂપિત કિયો હૈં ? હમ પ્રશ્ન કે ઉત્તર મે સુધર્માસ્વામી ને ઉનસે હસ પ્રકાર કહા—હે જનૂ ! તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર સે હૈં—યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુણ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને હસ પ્રશ્નવ્યાકરણરૂપ દશવૈં અગ કે દો દ્વાર પ્રરૂપિત કિયે હૈં ઉસમે પહિલા આસવ દ્વાર હૈં ઔર

વાતર્ચીત ધર્મ છે તેને સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે—“ જહ્ણ મતે ! ” ઇત્યાદિ

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર, કે જેમણે સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને પ્રાપ્ત કરી લીધું છે, તેમણે અનુત્તરોપપાતિક દશાઙ્ગ નામના નવમા અગનો જે આ પ્રમાણે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે, તે તે સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે પ્રશ્નવ્યાકરણ નામના હસમા અગનો કયો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ? તે પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા સુધર્માસ્વામીએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું—હે જનૂ ! તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે—સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે આ પ્રશ્નવ્યાકરણરૂપ હસમા અગનો જે દ્વાર પ્રરૂપિત કર્યો છે, તેમા પહેલું

વદ્વાર ચ સપરદ્વાર ચ । પ્રથમસ્ય ચલુ મદન્ત ! દ્વારસ્ય શ્રમણેન મગયતા મહાવીરેણ
યાત્સપ્રાપ્તેન કતિ અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞાનિ ? । જમ્બૂ ! પ્રથમસ્ય ચલુ દ્વારસ્ય
શ્રમણેન મગયતા મહાવીરેણ યાત્સમ્પ્રાપ્તેન પશ્ચ-અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞાનિ । દ્વિતી-
યસ્ય ચલુ મદન્ત ! ૦ એવમેવ । એતેષા ચલુ મદન્ત ! અ યયનાતામ્ આસ્રવસયરાણા
શ્રમણેન મગયતા મહાવીરેણ યાત્સમ્પ્રાપ્તેન કોડર્યઃ પ્રજ્ઞાનઃ ? । તતઃ ચલુ આર્ય
સુધર્મા સ્થવિર' જમ્બૂનામ્ના અનગારેણ એવમુક્તઃ સન્ જમ્બૂમનગારમેવમવાદીત્—
'જન્ન ઇણમો' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—“જન્ન ઇણમો અપહ્ય સંવર, —વિણિચ્છિય પવયણસ્સ-
ણિસ્સદ । વોચ્છામિ નિચ્છયત્થ ચુમાસિયત્થ મહેસીહિ ॥સૂ૦૧॥

ટીકા—‘હે જન્ન !’ ઇત્યામન્ત્રણેન જમ્બૂસ્વામિન પ્રતિ સુધર્માસ્વામી માઠ—
‘હે જન્ન ! ઇણમો’ ઇદમ્—અનુપદ વસ્યમાણ મત્રવ્યાકરણશાસ્ત્ર ‘વોચ્છામિ’

દ્વિતીય દ્વાર છે । હે મદન્ત ! પ્રથમ દ્વાર કે શ્રમણ મગવાન્ મહાવીર
ને કિ જો યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત કર ચુકે હ કિતને
અધ્યયન પ્રરૂપિત કિયે હ ? હસ પ્રકાર જન્નસ્વામી કે પૂછને પર શ્રી સુધ
ર્માસ્વામી ને ઉનસે કહા—હે જન્ન ! યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનકો પ્રાપ્ત
હુવ શ્રમણ મગવાન્ મહાવીરને પ્રથમ દ્વારકે પાચ અધ્યયન પ્રરૂપિત કિયે હ ।

પ્રશ્ન—દ્વિતીય દ્વાર કે હે મદન્ત ! કિતને અધ્યયન પ્રરૂપિત કિયે હ ।

ઉત્તર—જન્ન ! હિતને હી અધ્યયન દ્વિતીય દ્વાર કે પ્રરૂપિત કિયે હ ।
જન્નસ્વામી ને પુનઃ સુધર્માસ્વામી સે પૂછા કિ—હે મદન્ત ! હન આસ્રવ
એવ સવર સવધી અધ્યયનો કા અર્થ યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનો કો
પ્રાપ્ત હુવ શ્રમણ મગવાન્ મહાવીર ને કેમા પ્રરૂપિત કિયા હ ? હસ પ્રકાર
અનગાર જન્ન સ્વામી સે પૂછે ગયે સ્થવિર આર્ય સુધર્માને ઉન જન્ન અનગાર

આસ્રવ દ્વાર છે અને બીજી મવગ દ્વાર છે “હે મદન્ત ! સિદ્ધિગતિને પ્રાપ્ત
કરેલ શ્રમણ લગવાન મહાવીરે કેટલા અધ્યયન પ્રરૂપિત કર્યા છે ?” આ પ્રમાણે
જન્નસ્વામી વડે પૂછવામા આવતા સુધર્માસ્વામીએ તેમને કહ્યું—‘હે જન્ન !
સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને પામેલ શ્રમણ લગવાન મહાવીરે પ્રથમ દ્વારના પાચ
અધ્યયન પ્રરૂપિત કર્યા છે ”

પ્રશ્ન—“બીજા દ્વારના કેટલા અધ્યયન પ્રરૂપિત કર્યા છે ?”

ઉત્તર—“કેટલા જ અધ્યયન બીજા દ્વારના પણ પ્રરૂપિત કર્યા છે ”
જન્નસ્વામીએ ત્રીથી સુધર્માસ્વામીને પૂછ્યું કે—હે મદન્ત ! સિદ્ધિગતિ નામના
સ્થાનને પામેલ શ્રમણ લગવાન મહાવીરે તે આવેલો અને સવર સવધી
અધ્યયનોનો અર્થ કેવો પ્રરૂપિત કર્યો છે ? આ પ્રમાણે અનુગાર જન્નસ્વામી

વક્ષ્યામિ=ત્વા પ્રતિ પ્રરૂપયિષ્યામિ । તત્ કીદૃશમિત્યાહ—‘અણ્દ્યે’ત્યાદિ—
 ‘અણ્દ્યસવરવિણિચ્છિય’ આસ્રવસંસ્પર્ગવિનિશ્ચિત, આસ્રવન્તિ=આગच्छन्ति
 કર્મજલાનિ આત્મસરસિ યૈસ્તે આસ્રવાઃ=કર્મવન્ધહેતુભૂતાઃ પ્રાણાતિપાતાદયઃ,
 યદ્વા-આસ્રવણમ્-આસ્રવઃ-આગમનમ્ । સ દ્વિવિધઃ-દ્રવ્યતો ભાવતથ, તત્ દ્રવ્યતો
 યજ્જલान्तर्गतनावादौ ઊદ્ગૈર્જલાગમનમ્ । ભાવતસ્તુ-પ્રાણાતિપાતાદિભિરાત્મનિ
 કર્માગમનમ્ । સસારસાગરાન્તર્ગતાત્મનૌક્ત્યા પ્રાણાતિપાતાદિચ્છિદ્રે, કર્મજલાગ
 મનમિતિ ભાવઃ । સ પ્રાણાતિપાતાદિરૂપઃ પञ्चविधः । સત્રિયન્તે=પ્રતિન્દુહ્યન્તે
 સે એસા કહા—‘જબૂ ઇણમો’ હત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—હસ સૂત્રમેં “જબૂ” યહ પદ સયોધોન અર્થમેં પ્રયુક્ત હુઆ હૈ । હસસે
 યહ લક્ષિત હોતા હૈ કિ સુધર્માસ્વામી જબૂ સ્વામી સે કહતે હૈ કિ (જબૂ
 ઇણમો) હે જબૂ ! મૈં અનુપદ વક્ષ્યમાણ પ્રશ્ન વ્યાકરણરૂપ શાસ્ત્ર (વોચ્છામિ)
 તુમકો કહૂંગા । (અણ્દ્યસવરવિણિચ્છિય) હસ શાસ્ત્ર મૈં આસ્રવ
 એવ સવર કા નિર્ણય ઉનકે લક્ષણો એવ ભેદાદિકોં કે કથન પૂર્વક કિયા
 ગયા હૈ । “વિણિચ્છિય” પદ કા અર્થ હે વિશેષરૂપ સે નિર્ધારિત કરના ।
 તથા આસ્રવકા અર્થ હૈ કર્મવધકે હેતુભૂત પ્રાણાતિપાતાદિક । હનકે દ્વારા
 હી આત્મરૂપી તાલાવમે જલતુલ્ય કર્મોં કા આગમન હોતા રહતાહૈ । જિસ
 પ્રકાર તડાગ મે જલ કે આને કે લિયે નાલે હુઆ કરતે હે ઉસી પ્રકાર
 આત્મા મૈં ભી પ્રાણાતિપાત આદિ રૂપ નાલા દ્વારા જ્ઞાનાવરણીય આદિ
 કર્મરૂપ જલ કા આના હોતા રહતા હૈ । અથવા-આના યહ-આસ્રવ હૈ
 યહ આસ્રવ દ્રવ્ય ઓર ભાવ કે ભેદ સે દો પ્રકાર કા કહા ગયા હૈ ।

વડે પૂછાતા સ્થવિર આર્યસુધર્માએ તે જ બૂ આણુગારને કહ્યું—“જબૂ ઇણમો” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—આ સૂત્રમા “જબૂ” પદ સયોધન અર્થમા વપરાયુ છે તેથી
 એ લક્ષિત થાય છે કે સુધર્માસ્વામી જબૂસ્વામીને કહે છે કે “જબૂ
 ઇણમો” હે જબૂ ! હું આ નીચે પ્રમાણેનું પ્રશ્નવ્યાકરણરૂપ શાસ્ત્ર
 “વોચ્છામિ” તમને કહોશ “અણ્દ્યસવરવિણિચ્છિય” આ શાસ્ત્રમા આસ્રવ
 અને સવરદ્વારનો નિર્ણય તેમના લક્ષણો અને ભેદાદિના ધ્યનપૂર્વક કરવામા
 આવ્યો છે “વિણિચ્છિય” પદનો અર્થ વિશેષરૂપે નિર્ણિત કરવો, તથા આસ્ર
 વનો અર્થ કર્મબંધના કારણરૂપ પ્રાણાતિપાતાદિકે થાય છે તેમના દ્વારા જ
 આત્મારૂપી તળાવમા જળ સમાન કર્મોંનું આગમન થયા કરે છે જેમ તળાવમા
 પાણી આવવા માટે નાળા હોય છે, તે જ પ્રમાણે આત્મામા પણ પ્રાણાતિપાત
 આદિરૂપ નાળા દ્વારા જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મરૂપ જળનું આગમન થતું રહે છે
 અથવા આવવું તે આસ્રવ છે તે આસ્રવ દ્રવ્ય અને લાવના ભેદથી બે પ્રકારનો

પ્રવિશત્કર્મજલાનિ આત્મસરસિ યસ્તે સવરા -કર્મનિરોધેતુભૂતાઃ પ્રાણાતિપાત
વિરમણાદયઃ । યદ્વા-સવરણ સવર-સ્થગનમ્ । અયમપિ દ્વિવિધઃ દ્રવ્યતો ભાવતથ્ ।
તત્ર દ્રવ્યતસ્તથાવિધિચિક્ષણમૃત્તિકાદિભિઃ સલિગ્રોપરિ તરત્તરણ્યાદેરનારતપ્રવિશત્કર્મ-
રાણા વિરમણા પિધાનમ્ । ભાવત પ્રાણાતિપાતવિરમણાદિભિરાત્મનિ પ્રવિશત્કર્મણાં
નિરોધઃ । અસાપિ પ્રાણાતિપાતવિરમણાદિરૂપઃ પન્નવિધઃ । તે વિનિશ્ચીયન્તે=

જલ કે ખીતર પટી હુઈ નૌકા મેં છિદ્રોં દ્વારા જો જલ કા આના હોતા
હેં વહ દ્રવ્યાશ્રવ હેં । પ્રાણાતિપાત આદિ અશુભ ક્રિયાઓં દ્વારા આત્મા
મેં જો કર્મોં કા આના હોતા હેં વહ ભાવાશ્રવ હેં । તાત્પર્ય કેવલ ઇસ્કા
યહ હેં કિ સસાર રૂપ સાગર કે અન્તર્ગત ઇમ આત્મ રૂપ નાવ મેં પ્રાણા-
તિપાત આદિ છિદ્રોં દ્વારા કર્મરૂપ જલ કા આગમન હોતા રહતા હેં વહ
આશ્રવ હેં । કર્માગમન હેતુભૂત યહ પ્રાણાતિપાતરૂપ આશ્રવ પાંચ પ્રકાર
કા હેં । આત્મારૂપ સરોવર મેં પ્રવેશ હોને સે કર્મરૂપ જલ જિન ક્રિયાઓં
સે રુક્તા હેં ડનકા નામ સવર હેં । પ્રાણાતિપાત આદિ રૂપ ક્રિયાઓં સે
વિરમણ હોના યહી કર્મોં કે રોકુને કા ઉપાય ભૂત સવર હેં । અથવા
રુક્તા ઇસ્કા નામ સવર હેં, યહ સવર ખી દ્રવ્ય ઔર ભાવ કી અપેક્ષા
દો પ્રકાર ા હે-ચિક્ષની મૃત્તિકા આદિ સે જલ કે ડપર તૈરતી હુઈ
નૌકા આદિ કા છેદોં કે કિ જિનસે નિરન્તર ડસમેં જલ આ રહા હો
પડ કર દેના યહ દ્રવ્ય હી અપેક્ષા સવર હેં, તથા પ્રાણાતિપાતવિરમણ
આદિ ઉપાયોં સે આત્મા મેં પ્રવિષ્ટ હોતે હુઈ કર્મોં કા રોકદેના યહ ભાવ
કી અપેક્ષા સવર હેં । યહ સવર ખી પ્રાણાતિપાત આદિકોં કે વિરમણ

ખતાવ્યો છે પાણીમા પડેલી નૌકામા છિદ્રો દ્વારા જે જળનુ આગમન થાય છે
તે દ્રવ્યાશ્રવ છે પ્રાણાતિપાત આદિ અશુભ ક્રિયાઓ દ્વારા આત્મામા જે કર્મોનુ
આગમન થાય છે તે ભાવાશ્રવ છે તેનુ તાત્પર્ય એટલુ જ છે કે મમાગરૂપી
માગરની અદર આ આત્માગરૂપી નાવમા પ્રાણાતિપાત આદિ છિદ્રો દ્વારા કર્મગરૂપી
જળનુ જે આગમન થયા કરે છે તેને આશ્રવ કહે છે કર્માગમનના દારણરૂપ
તે પ્રાણાતિપાત આદિ પાંચ પ્રકારના આશ્રવ છે કર્મરૂપ જળ જે ક્રિયાઓથી
આત્મારૂપ મગરમા પ્રવેશ પામતુ અટકે છે તે ક્રિયાઓને સવર કહે છે
પ્રાણાતિપાત આદિ ક્રિયાઓનુ વિરમણ થયુ એ જ કર્મોને રોકવાના ઉપાયભૂત
સવર છે, અથવા સવર એટલે રોકવું તે સવર પણ દ્રવ્ય અને ભાવની અપે-
ક્ષાએ જે પ્રકારનો છે પાણીમા તરતી નૌકાના જે છિદ્રોમાથી પાણી પ્રવેશ કરતુ
હોય તે છિદ્રોને ચીજણી માટિ આદિથી બંધ કરી દેવા તે દ્રવ્યની અપેક્ષાએ
સવર છે, તથા પ્રાણાતિપાત વિરમણ આદિ ઉપાયોથી આત્મામા પ્રવેશ કરતા
કર્મોને રોકી દેવા તે ભાવની અપેક્ષાએ સવર છે તે સવર પણ પ્રાણાતિપાત

હૈં કિં યહ પ્રશ્નવ્યાકરણશાસ્ત્ર પ્રવચનરૂપ પ્રફુલ્લિત પુષ્પ કે રસ જૈસા સાર ભૂત હૈં । હસમે આસ્રવ ઓર સવર તત્ત્વતા સુન્દર નિર્દોષ વિવેચન હુઆ હૈં । ઓર યહ વિવેચન તીર્થકર પરપરા કે અનુમાર જૈમા હોતા આયા હૈં વૈસા હી હુઆ હૈં ।

ભાવાર્થ—ટીકાકાર ને “આસ્રવતિ-આગચ્છતિ, કર્મજલାନિ યૈસ્તે આસ્રવાઃ, યદ્વા-આસ્રવણમ્ આસ્રવઃ । સત્રિયન્તે-પ્રતિરુદ્ધયન્તે પ્રવિશત્કર્મ-જલାନિ યૈસ્તે સવરા, યદ્વા સવરણ સવરઃ” હસ પ્રકાર સે આસ્રવ ઓર સવર કી વ્યુત્પત્તિ કી હૈં, ડસસે પ્રથમ વ્યુત્પત્તિ કે અનુસાર કર્મ-બધ કે કારણભૂત પ્રાણાતિપાત આદિ ક્રિયાઓં મી આન્નવ કહા ગયા હૈં કારણ કિં હન્હી કે દ્વારા જીવ નવીનર કર્મોં કા બધ કરતા રહતા હૈં । દૂસરી વ્યુત્પત્તિ કે અનુસાર આને માત્ર કા નામ આન્નવ કહા ગયા હૈં સો યહ, દ્રવ્ય ઓર ભાવ કે ભેદ સે દો પ્રકાર કા કહા ગયા હૈં । દ્રવ્યાસ્રવ કર્મ-બધ કા કારણ નહીં હૈં । કર્મબધ કા કારણ તો ભાવાસ્રવ હી હૈં, કયોં કિં પ્રાણાતિપાત આદિરૂપ ભાવોં સે હી કર્મોં કા આગમન હોતા હૈં । હસી તરહ સવર કે વિષય મેં મી જાનનાં ચાહિયે । સવર, આસ્રવ કા નિરોધક હોતા હૈં । છિદ્રોં કે દ્વારા નૌકા મેં જલ કા આના યહ આસ્રવ કે સ્થાનાપન્ન હૈં ઓર ડન છિદ્રોં કો બદ કર દેના યહ સવરકે સ્થાનાપન્ન હૈં ।

અર્થ છે કે આ પ્રશ્નવ્યાકરણ શાસ્ત્ર પ્રવચનરૂપ વિફલિત પુષ્પતા રસ જેવું સારભૂત છે અને આ વિવેચન તીર્થકર પરપરા પ્રમાણે જે પ્રમાણે થતું આવ્યું છે તે પ્રમાણે જ થયું છે

ભાવાર્થ—ટીકાકારે આ રીતે આસ્રવ અને સવરની વ્યુત્પત્તિ કહી છે—
 “આસ્રવતિ-આગચ્છતિ, કર્મજલોનિ યૈસ્તે આસ્રવાઃ” (જેના દ્વારા કર્મજળ આવે છે તે આસ્રવો કહેવાય છે) અથવા “આસ્રવણમ્ આસ્રવઃ” (આવણુ એટલે આસ્રવ) “સત્રિયન્તે-પ્રતિરુદ્ધયન્તે પ્રવિશત્કર્મજલોનિ યૈસ્તે સવરા” (જેના વડે કર્મજળ પ્રવેશ પામતું અટકે છે તે સવર છે) અથવા “સવરણ સવર” (સવર એટલે જણ) તેમાથી પહેલી વ્યુત્પત્તિ પ્રમાણે કર્મજળના કારણરૂપ પ્રાણાતિપાત આદિ ક્રિયાઓને આસ્રવ બતાવ્યા છે બીજી વ્યુત્પત્તિ પ્રમાણે આગમન માત્રનું નામ આસ્રવ બતાવ્યું છે તો તે દ્રવ્ય અને ભાવના ભેદથી જે પ્રકારના કહેલ છે દ્રવ્યાસ્રવ કર્મજળનું કારણ નથી કર્મજળનું કારણ તો ભાવાસ્રવ જ છે, કારણકે પ્રાણાતિપાત આદિરૂપ ભાવોથી જ કર્મનું આગમન થાય છે એ જ પ્રમાણે સવરને વિષે પણ સમજવું સવર આસ્રવનો નિરોધક (રોકનાર) હોય છે, છિદ્રો દ્વારા નૌકામા જળનું પ્રવેશવું તે આસ્રવના સ્થાન મમાન છે અને તે છિદ્રોને બંધ કરી દેવા તે સવરના સ્થાન

‘યથોદ્દેશ નિર્દેશ, ઇતિ ન્યાયેન ફલતો નામતત્ત્વાસવપ્રકારાનાહ—
‘પચવિહો’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—પંચવિહો પણ્ણત્તો જિણેહિં ઇહ અણ્હઓ અણાદીઓ ।

હિસા ૧ મોસ ૨ મદત્ત ૩ અવમ ૪ પરિગ્ગહ ૫ ચેવ ॥સૂ૦૨॥

ટીકા—‘જિણેહિં’ જિનેન્દ્ર=રાગાદ્યન્તરૂપરિપુવિજેતૃભિરર્હઃ ઇહ=જિન
શાસને સસારે વા, ‘અણ્હઓ’ આસ્રવ ‘અણાદીઓ’ અનાદિક—નાસ્ત્યાદિઃ
પ્રથમોત્પત્તિર્નિયતે કલ્પનાદિકઃ । ઉપલ્ભવત્પ્રાપ્તસ્ય ‘અપર્યવસિતઃ’ ઇત્યપિ દૃશ્યમ્,

પ્રાણાતિપાતાદિરૂપ ભાવ, પ્રાણાતિપાત આદિ ચિરમ્ભવરૂપ ભાવસવર સે
પ્રતિનિદ્ધ હોતે હૈ । ઓર જેસા હોને સે હી કર્મો ના આગમન રુકના હૈ ।
“નિશ્ચયાર્થ”મેં “નિઃ” શબ્દકા અર્થ દૂર હોના હૈ । તથા ચયકા અર્થ જ્ઞાના-
વરણીયાદિ કર્મપુજ હૈ । વહ કર્મપુજ જિમ સ્થાનસે દૂર હો ચુકા હૈ જેસા વહ
સ્થાન મોક્ષ હૈ, ઓર વહ મોક્ષ જિમકા પ્રયોજન હૈ વહ નિશ્ચયાર્થ શાસ્ત્ર
હૈ । અથવા નિશ્ચય કા અર્થ મોક્ષ હૈ । ઇસ મોક્ષ કી પ્રાપ્તિ કે લિયે હી
ઇસ શાસ્ત્ર કા પ્રણયન હુઆ હૈ ॥સૂ૦૧॥

ઉદ્દેશકે અનુસાર હી નિર્દેશ હુઆ કરતા હૈ ઇસ ન્યાય કો લેકર
સૂત્રકાર ફલ ઓર નામ કી અપેક્ષા અવ આસ્રવ કે પ્રકારોં કો પ્રકટ
કરતે હૈ—‘પચવિહો પણ્ણત્તો’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(જિણેહિં) જિનેન્દ્ર દેવને (ઇહ) અર્હન્ત પ્રભુકે શાસનમે અથવા
ઇસ સસારમેં (અણ્હઓ) આસ્રવ (અણાદીઓ) અનાદિ (પણ્ણત્તો)

સમાન છે પ્રાણાતિપાતાદિરૂપ ભાવ, પ્રાણાતિપાત આદિ ચિરમ્ભવરૂપ ભાવસવરથી
અટકે છે અને એમ થવાથી જ નવીન ડોહોનું આગમન સંભવ્ય છે
“નિશ્ચયાર્થ” માં “નિ” શબ્દનો અર્થ ‘દૂર થવું’ થાય છે તથા ‘ચય’નો
અર્થ જ્ઞાનાવરણાદિ કર્મપુજ છે તે કર્મપુજ જે સ્થાનથી દૂર થઈ ગયો છે
તેવું સ્થાન મોક્ષ છે અને તે મોક્ષ જેવું પ્રયોજન છે તે નિશ્ચયાર્થ શાસ્ત્ર
છે અથવા નિશ્ચયનો અર્થ મોક્ષ પણ થાય છે એ મોક્ષની પ્રાપ્તિને માટે જ
આ શાસ્ત્રની રચના કરવામાં આવી છે ॥ સૂ. ૧ ॥

ઉદ્દેશ પ્રમાણે જ નિર્દેશ થયા કરે છે તે ન્યાયે સૂત્રકાર કૃષ્ણ અને નામની
અપેક્ષાએ હવે આસ્રવોના પ્રકારોને પ્રગટ કરે છે—‘પચવિહો પણ્ણત્તો’ ઇત્યાદિ
ટીકાર્થ—“જિણેહિં” જિનેન્દ્ર દેવે “ઇહ” અર્હન્ત પ્રભુના શાસનમાં, એટલે કે અ
સસારમાં “અણ્હઓ” આસ્રવોને “અણાદીઓ” અનાદિ “પણ્ણત્તો” પ્રજ્ઞ

પ્રવાહાપેક્ષયા નાનાજીવાપેક્ષયા ચ સસારસ્યાનાત્પર્યવસિતત્વાત્ । આસ્રવસ્ય સાદિત્વે સપર્યવસિતત્વે ચ સ્વતઃપ્રવ વિરમણે સિદ્ધાનામિત્ત સસારિણામપિ કર્મવન્ધા-ભાવ પ્રસન્નઃ સ્યાત્ । કે તે પ-ગાસ્રવાઃ ? इत्याह—‘हिंसा’ इत्यादि, हिंसा=जीव-

પ્રજ્ઞસ ક્રિયા હૈ । (हिंसामोसमदत्त अवम परिग्रह पचवितो चैव) यह हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह, इस प्रकार से पांच तरह का ही है । रागादिक अन्तरंग रिपुओं को जो पिजित कर लेते हैं उनका नाम जिन है । जिन प्रभु ने जो आस्रव को अनादि कहा है उसका कारण यह है कि यह ससार अनादि और अपर्यवसित है । यद्यपि भव्य-जीवों की अपेक्षा ससार में अनादिता होने पर भी अपर्यवसिता नहीं बनती है फिर भी नाना जीवों की अपेक्षा यह बन जाती है । आस्रव ससारी जीवों के ही होता है, मुक्त जीवों के नहीं । ससार में रहने वाले जीव ही ससारी जीव है । यह ससार प्रवाह एव नानाजीवों की अपेक्षा जय अनादि अनन्त है तो यह बात यन जाती है कि आस्रव भी अनादि अनन्त है । अथवा यदि यों भी कह दिया जावे कि आस्रव ही ससार है और ससार ही आस्रव है । तो इस पक्षमें भी आस्रवमें अनादि अनन्तता सुघटित हो जाती है । कारण इसकी प्रथमोत्पत्ति तो बनती नहीं है । यदि आस्रवको एकान्ततः सादि और सपर्यवसित ही माना जावे तो इस स्थिति में यह आस्रव जयतः ससारी जीवमें नहीं हुआ-तदन्तक वह जीव सिद्धों

(ખતાવ્યા) કર્યા છે “हिंसામોસમદત્ત અવમ” પરિગ્રહ પચવિતો ચૈવ” તે હિંસા, અસત્ય, ચોરી, કુશીલ અને પરિગ્રહ એમ પાંચ પ્રકારના છે રાગાદિ આત્મિક દુઃશ્મનોને જે છોડે છે તેને જિન કહે છે જિન પ્રભુએ આસ્રવોને અનાદિ ખતાવ્યા છે તેનું કારણ એ છે કે આ સસાર અનાદિ અને અપર્યવસિત અનન્ત છે ભે કે ભવ્યજીવોની અપેક્ષાએ સસારમાં અનાદિતા હોવા છતાં પણ અપર્યવસિતા બનતી નથી, છતાં પણ નાના જીવોની અપેક્ષાએ તે બને છે આસ્રવ સસારી જીવોને જ થાય છે, મુક્ત જીવોને થતા નથી સસારમાં રહેનાર જીવો જ સસારી જીવ છે આ સસાર પ્રવાહ અને નાના જીવોની અપેક્ષાએ ભે અનાદિ અનન્ત છે તો એ વાત પણ નક્કી થઈ જાય છે કે આસ્રવ પણ અનાદિ અનન્ત છે અથવા ભે એમ પણ કહેવામાં આવે કે આસ્રવ જ સસાર છે અને સસાર જ આસ્રવ છે, તો એ રીતે પણ આસ્રવમાં અનાદિ અનન્તતા સુઘટિત થઈ જાય છે કારણકે તેની પ્રથમ ઉત્પત્તિ તો સંભવી શકતી નથી ભે આસ્રવને એકાન્તતઃ સાદિ અને સપર્યવસિત (સાન્ત) જ માનવામાં આવે તો તે પરિસ્થિતિમાં તે આસ્રવ જ્યાં સુધી સસારીજીવમાં

ઘાતઃ ૧ । ‘મોસ’ મૃણ-અસત્યભાષણમ્ ૨ । ‘અદત્ત’ નદત્તમદત્ત=પરદ્રવ્યગ્રહણમ્
૩ । ‘અપ્રમ’ અબ્રહ્મ-બ્રહ્મ=કામસેવનત્યાગ’ ન બ્રહ્મ અબ્રહ્મ-અકુશલાનુષ્ઠાન
સ્ત્રી પુત્ર સન્નો મૈથુનમિત્યર્થઃ ૪ । ‘પરિગ્રહ’ પરિગ્રહઃ-પરિગ્રહ્યતે=આદીયતે इति
પરિગ્રહઃ સ ચ નવવિધઃ—‘ધન૧, ધાન્ય૨, ક્ષેત્ર૩, વાસ્તુક૪, રૂપ્ય૫, સુવર્ણ ૬,
કુપ્ય૭, દ્વિપદઃ૮, ચતુષ્પદ૨૯ । ‘ચેવ’ ચૈવ ચેતિ સમુન્વયાર્થઃ, एव શબ્દોऽ-

કી તરહ કર્મવધનસે મુક્ત હી રહેગા । તથા સપર્યવસિત માનનેમેં મી યહી
આપત્તિ રહેગી । ઇસ તરહ સસારી જીવો કે મી કર્મવધન કે અભાવ કા
પ્રસંગ આકર પ્રાપ્ત હોગા । ઇસલિયે યહી માનના ચોલિયે કિ યહ આસ્રવ-
પ્રવાહ નાના જીવોં લી અપેક્ષા અનાદિ અનત હૈ । અપર્યવસિત યહ
પદ મૂલ ગાથા મેં નહીં હૈ । ફિર મી અનાદિ પદ સે ઉસકા ઉપલક્ષણ
ક્રિયા ગયા હૈ । પ્રમાદ કે યોગ સે જીવ કા ઘાત હોના યહ હિંસા હૈ ।
પ્રમાદ કે યોગ સે અસત્ય ભાષણ કરના ઇમકા નામ શૂઠ-મોસ હૈ ।
પ્રમાદ કે યોગ સે પર કે દ્રવ્ય કા ગ્રહણ કરના અદત્તાદાન ચોરી હૈ ।
કામ સેવન કરને કા પરિત્યાગ કરના ઇસકા નામ બ્રહ્મ હૈ । ઇસ બ્રહ્મકા
નહીં હોના અબ્રહ્મ હૈ । અર્થાત્ મૈથુન સેવન કરને રૂપ અકુશલાનુષ્ઠાનમેં
પ્રવૃત્ત રહના સો અબ્રહ્મ હૈ । જો ગ્રહણ ક્રિયા જાવે ઉસકા નામ પરિગ્રહ હૈ,
યહ પરિગ્રહ નૌ પ્રકારકા હૈ-ધન૧, ધાન્ય૨, ક્ષેત્ર ૩, વાસ્તુ ૪, રૂપ્ય ૫,
સુવર્ણ ૬, કુપ્ય ૭, દ્વિપદ ૮ ઓર ચતુષ્પદ ૯ । “ચ” યહ શબ્દ યહાં

ન થાય ત્યા મુખી તે જીવ સિદ્ધોની જેમ કર્મવધનથી મુક્ત જ રહેશે તથા
સપર્યવસિત માનવામાં પણ તે જ મુશ્કેલી નહીં જો રીતે સસારી જીવોમાં
પણ કર્મવધનના અભાવની નિયતિ આવી જશે તેથી જેમ જ માનવુ જોઈએ
કે તે આસ્રવ પ્રવાહ નાના જીવોની અપેક્ષાએ અનાદિ અનત છે ‘અપર્ય’
વસિત’ પદ મૂળ ગાથામાં નથી છતાં પણ અનાદિ પદથી તેનું ઉપલક્ષણ
કરવામાં આવ્યું છે પ્રમાદના યોગથી જીવની હત્યા થવી તે હિંસા ગણાય છે
પ્રમાદના યોગથી અમય જોવાનું તેનું નામ શૂઠ-મોસ છે પ્રમાદના યોગથી
પારકાનું દ્રવ્ય ગ્રહણ કરવું તેને અદત્તાદાન-ચોરી કહેવાય છે કામ સેવન
કરવાનો પરિત્યાગ કરવો તેનું નામ બ્રહ્મ છે આ બ્રહ્મનો અભાવ હોવો તે
અબ્રહ્મ છે એટલે કે મૈથુન સેવન કરવા રૂપ અશુભ અનુષ્ઠાનમાં પ્રવૃત્ત રહેવું
તે અબ્રહ્મ કહેવાય છે પરિગ્રહ એટલે ગ્રહણ કરવું તે પરિગ્રહ નવ પ્રકારનો
છે—(૧) ધન, (૨) ધાન્ય, (૩) ક્ષેત્ર, (૪) વાસ્તુ, (૫) ચાલી, (૬) સુવર્ણ,
(૭) કુપ્ય, (૮) દ્વિપદ અને (૯) ચતુષ્પદ “ચ” શબ્દ અહીં સમુન્વયાર્થક છે

વધારણાર્થઃ । હિંસાદિભેદતઃ પञ्चविधा एव आस्रयाः सन्तीत्यर्थः॥ अनेन दशाध्ययनस्य प्रश्नव्याकरणसूत्रस्याद्यानि पञ्चाध्ययनानि सूचितानि ॥सू० २॥

અથ પ્રથમાધ્યયને કતિદ્વારાણિ ? इति द्वारनिरूपणार्थं श्री सुधर्मास्वामी जम्बूस्वामिन प्रत्याह—‘जारिसओ’ इत्यादि ।

મૂલમ્—જારિસઓ૧, જનામા૨, જહયકઓ૩, જારિસં ફલ દેહ૪ ।

जेवि य करेंति पाव ५, पाणवह त निसामेह ॥सू० ३॥

टीका—स प्राणिवधरूप आस्रय ‘जारिसओ’ यादशकः=यत्स्वरूपः, यादशं तस्य स्वरूपमस्ति, ‘ज नामा’ यन्नामा यानि=यत्सख्यकानि नामानि सन्ति यस्येति स यन्नामा भवति । ‘जहयकओ’ यथा च कृतः=प्राणिभिः यथा येन मन्दतीव्रादिपरिणामेन कृतः=समाचरित-आचरणविषयीकृतः । आचरितः सन् ‘जारिस’ यादशनरकगमनादिक फल ‘देह’ ददाति । ‘जेवि य’ येऽपि च ‘पावा’

સમુચ્ચયાર્થક છે ઓર “ એવ ” શબ્દ અવધારણાર્થક છે । ઇસસે યહ પુષ્ટ હોતા છે ફિ આસ્રય, હિંસા આદિ કે ભેદ સે પાચ હી પ્રકાર કા છે । કમતી વઢતી નહીં છે । ઇસ કથન સે સૂત્રકાર ને દસ અધ્યયનાત્મક ઇસ પ્રશ્નવ્યાકરણ શાસ્ત્ર કે ઓદિ કે પાચ અ યયન સૂચિત કિયે હૈં ॥સૂ ૨॥

અવ સુધર્માસ્વામી “ પ્રથમ અધ્યયન મે કિતને દ્વાર હૈં ” ઇસ જબૂ સ્વામી કે પ્રશ્ન કા ઉત્તર દેને કે લિયે દ્વાર નિરૂપણ કે નિમિત્ત કહતે હૈં ‘ જારિસઓ જ નામા ’ ઇત્યાદિ ।

टीकार्थ—यह प्राणिवधरूप आस्रय (जारिसओ) जैसा है (ज नामा) जितने इसके नाम है (जहयकओ) प्राणियोद्वारा यह जिन मन्द तीव्र आदि परिणामो से किया जाने पर (जारिस फल देह) जिस प्रकार का उन्हें

છે, અને “ એવ ” શબ્દ અવધારણાર્થક છે તેનાથી એ વાતને પુષ્ટિ મળે છે કે આસ્રય, હિંસા આદિના ભેદથી પાચ જ પ્રકારના છે વધારે કે ઓછા નથી આ કથનથી સૂત્રકારે દસ અધ્યયનવાળા આ પ્રશ્નવ્યાકરણ શાસ્ત્રના ગણ્યાતના પાચ અધ્યયન સૂચિત થયાં છે ॥ સૂ ૨ ॥

હવે સુધર્માસ્વામી “ પ્રથમ અધ્યયનમા જેટલા દ્વાર છે ” એ પ્રકારના જબૂસ્વામીના પ્રશ્નનો ઉત્તર દેવાને માટે ક્ષાગ્નિરૂપણને નિમિત્તે કહે છે— “ જારિસઓ જ નામા ” ઇત્યાદિ

टीकार्थ—आ प्राणीवधरूप आस्रय “जारिसओ” जैसा है, “ज नामा” जेटला तेना नाम है, “जहयकओ” प्राणीओ द्वारा ते मंद, तीव्र आदि परिणामोથી કરાતા “ जારિસ ફલ દેહ ” જે પ્રકારનુ તેમને નરકાદિરૂપ ફળ આપે છે, તથા

પાપા:-પાપકર્મશીલા: 'પાણવદ્' પ્રાણવધ-પ્રાણા: નન્તિ ચેપામિતિ તે પ્રાણા: = પ્રાણિન: 'અર્શ આદિત્યાદ ચ, તેષા ઋગો=દિસા પ્રાણમયસ્ત જીવ્યાત 'કરંતિ' કુર્વન્તિ 'ત' તત્=પ્રથમાશ્રયદ્વાર વક્ષ્યમાણ 'નિસામેહ' નિશામયત=શૃણુત । હે જન્મૂ: ! મમ કવચત: શ્રુણુ इत्यर्थः, અનાર્પત્યાદ્ ગદ્યુચનમ્ ॥મૂ૦૩॥

સમ્પ્રતિ 'જારિસઓ' યાદ્યઃ, ઇતિ દ્વાર વિઠ્ઠલ્ન પ્રાણવધસ્વરૂપમાદ— 'પાણવદ્' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-પાણનહો નામ एसो जिणेहिं भणिओ-पावो१, चंडो२, रुदो३, खुदो४, साहसिओ५, अणारिओ६, णिग्घिणो७, णिस्संसो८, महम्मओ९, पइमओ१० अइमओ११, व्रीहणओ १२, तासणओ१३, अणज्जओ१४, उव्वेयणओ य, णिरवयक्खो १६, णिद्धमो१७, णिप्पिवासो१८, णिक्कल्लुणो१९, निरयवास निधणगमणो२०, मोहमहम्मयपयट्ठओ२१, सरणक्केमणस्सो२२, पढम अहम्मं अव्वयस्स ॥ सू०४ ॥

નરકાદિરૂપ ફલ દેતા હૈ, તથા (જે વિ ચ પાણવદ્ કરેતિ) જો પાપી હસ પ્રાણવધ કો કરતે હું, યહ સન વિષય હસ પ્રથમ આસ્રવદ્વાર મેં કહા જાવેગા । સો (ત નિસામેહ) હે જન્મૂ ! તુમ ડસકો સુનો ।

ભાવર્થ—સુધર્મા સ્વામી હસ ગાથા દ્વારા યહ સમજા રહે હૈં કિ હે જન્મૂ ! અન હમ દિસારૂપ પ્રથમ આસ્રવદ્વાર કા સ્વરૂપ, નામ ઔર ફલ હન ત્રીન દ્વારાસે હસ દિસારૂપ પ્રથમ આસ્રવદ્વારકા નિરૂપણ ક્રિયા જાયગા । તથા સાથ ૨ મેં યહ ભી સ્પષ્ટ કહા જાયગા કિ હસ પ્રાણિવધ કો કૌન જીવ કરતે હૈં । હસ ગાથા મેં “પાણવદ્” હસ પદ સે પ્રાણ જિનકે હોતે હૈં એસે પ્રાણી એકેન્દ્રિયાદિક ગૃહીત હુઅ હૈં । ડનકા જો વધ હૈ વદ્ પ્રાણવધ હૈ ॥ સૂ ૩ ॥

“જે વિચ પાપા પાણવદ્ કરંતિ” જે પાપી આ પ્રાણવધ કરે છે, તે મમસ્ત વિષય આ પહેલા આસ્રવદ્વારમા કહેવામા આવશે તો “સો ત નિસામેહ” હે જન્મૂ ! તુ તે સાણ

ભાવાર્થ—સુધર્માસ્વામી આ ગાથા દ્વારા એ સમજાવે છે કે હે જન્મૂ ! આ હિસારૂપ પ્રથમ આસ્રવદ્વારનું સ્વરૂપ, નામ અને ફળ એ ત્રણેનું દ્વારો પડે નિરૂપણ કરવામા આવશે તથા તેની સાથે એ પણ સ્પષ્ટ કરવામા આવશે કે એ પ્રાણવધ ક્યો (પાપી) જીવ કરે છે આ ગાથામા “પાણવદ્” એ પદથી જેને પ્રાણ હોય છે તેવા એકેન્દ્રિયાદિક પ્રાણી ગ્રહણ કરાયેલ છે તેમનો જે વધ છે તેને પ્રાણવધ કહે છે ॥ સૂ ૩ ॥

टीका—‘पाणवहो’ प्राणवधो नाम ‘एसो’ एषः=प्रक्षयमाणः ‘जिणेहिं’ जिनेः ‘भणिओ’ भणितः=कथितः। स चायम्—‘पावो’ पाप-पापप्रकृतीना बन्धकारणत्वात्। ‘चडो’ चण्डः—क्रोधजनकत्वात् ‘रुहो’ रौद्रः—रौद्ररसप्रवर्तितत्वात्, ‘खुहो’ क्षुद्रः—क्षुद्रजनाचरितत्वात्, ‘साहसिओ’ साहसिकः—अममीक्ष्यकारि जनप्रवर्तितत्वात्। ‘अणारिओ’ अनार्य—अनार्यपुरुषैराचरितत्वात्। ‘णिग्धिणो’ निर्घृणः—न विधत्ते घृणा=पापजुगुप्सा येषां ते निर्घृणाः=निर्दयाः, तैराचरितत्वात्। ‘णिस्ससो’ नृशसः—क्रूरकर्माचरितत्वात्, ‘महम्मओ’ महाभयः—महाभयजनकत्वात्, ‘पइमओ’ प्रतिभयः—सकलप्राणिनां भयहेतुत्वात्,

अब सूत्रकार ‘जारिसओ’ इस द्वार का विवरण करते हुए प्राणवध के स्वरूप को कहते हैं—‘पाणवहो नाम एसो’ इत्यादि।

टीका—(एसो पाणवहो नाम) यह प्राणवध (जिणेहिं) जिनेन्द्र देवने (पावो) पाप प्रकृतियों के बध का कारण होने से पापरूप १, (चडो) क्रोध का जनक होने से, चण्डरूप २, (रुहो) रौद्र रस से प्रवर्तित होने के कारण रौद्ररूप ६, (खुहो) क्षुद्र जनों द्वारा आचरित होने के कारण क्षुद्ररूप ४, (साहसिओ) अविचार शील मनुष्यों द्वारा किया हुआ होने के कारण साहसिक रूप ५, (अणारिओ) अनार्य जनों द्वारा विहित होने के कारण अनार्यरूप ५, (णिग्धिणो) दया विहीन हृदयवाले मनुष्यों द्वारा सेवित होने के कारण निर्घृणरूप ७, (णिस्ससो) क्रूर कर्मवाले जनों द्वारा किया हुआ होने के कारण नृशसरूप ८, (महम्मओ) महान् भयका जनक होने के कारण महा भय रूप ९, (पइमओ) समस्त प्राणियोंको भयका हेतु—

इसे सूत्रकार “जारिसओ” आ द्वारनु वर्णन करता प्राणवधनु स्वरूप बडे छे—“पाणवहो नाम एसो” इत्यादि

टीका—“एसो पाणवहो नाम” आ प्राणवध “जिणेहिं” जिनेन्द्र देवे (१) “पावो” पाप प्रकृतियोंना अधनु कारण होवाथी पापरूप, (२) “चडो” क्रोधने पैदा करनार होवाथी चण्डरूप, (३) “रुहो” रौद्र रसथी प्रवर्तित होवाने कारणे रौद्ररूप, (४) “खुहो” क्षुद्रजनों द्वारा आचरित होवाथी क्षुद्ररूप, (५) “साहसिओ” अविचार्यी मनुष्यों द्वारा करातो होवाने कारणे साहसिकरूप, (६) “अणारिओ” अनार्य होके द्वारा करातो होवाने कारणे अनार्यरूप, (७) “णिग्धिणो” दयारहित हृदयवाला होके द्वारा करातो होवाथी निर्घृणरूप, (८) “णिस्ससो” क्रूर कर्मवाला होके द्वारा करातो होवाने कारणे नृशसरूप, (९) “महम्मओ” महान् लयने जनक होवाथी महाभयरूप, (१०) “पइमओ” समस्त प्राणीओने लयने हेतुभूत होवाने कारणे प्रतिभयरूप, (११) “अइमओ”

‘अडभओ’ अतिभयः—मरणान्तभयजनकत्वात्, ‘वीहणओ’ भयानकः भयोत्पादकत्वात् ‘तामणओ’ त्रामनक अकस्मात्क्षोभजनकत्वात्, ‘अणज्जओ’ अन्याय्य—न्यायादनपेत=युक्त न्याय्य, न न्याय्यः—अन्याय्यः न्यायार्जितत्वात्। ‘उन्वेयणओ’ उन्वेयण=उद्देगसर—हृदयोद्देगजनकत्वात्। चकारः समुच्चयार्थः। ‘निरययस्यो’ निरपेक्षः—निर्गता अपेक्षा परद्विनिषया यस्य स तथा परमाणवाणवाञ्छावर्जितत्वात्, ‘णिद्धम्मो’ निर्धर्म—श्रुतचारित्रधर्मवर्जितत्वात्, ‘णिप्पिवासो’ निष्पिपासः—प्राणिस्नेहरहितत्वात्, ‘णिक्कलुणो’ निष्करुणः—दयाभाववर्जितत्वात्, ‘निरयवासनिधनगमणो’ निरयवासनिधनगमनः, निरयवासः=नरकावासः, तत्र गमनमेव निधन=पर्यवमान अन्तिमफल यस्य स निरयवासनिधनगमनः नरकप्राप्तत्वात्।

भूत होने के कारण प्रतिभयरूप १०, (अडभओ) मरणान्तभयजनक होने से प्रतिभयरूप ११, (वीहणओ) भय के उत्पादक होने से भयकारकरूप १२, (तामणओ) अकस्मात् क्षोभ का कारण होने से त्रासनकरूप १३, (अणज्जओ) अवैध होने के कारण—अनीति रूप होने के कारण अन्यायरूप १४, (उन्वेयणओ) हृदयमें उद्देग का जनक होने से उद्देगकर्तृरूप १५, (निरययस्यो) परप्राणी के प्राणों की रक्षा करने की वाञ्छा से रहित होने के कारण निरपेक्षरूप १६ (णिद्धम्मो) श्रुतचारित्र रूप धर्म से वर्जित होने के कारण निर्धर्मरूप १७, (णिप्पिवासो) प्राणियों के प्राणों के प्रति ममता भाव से रहित होने के कारण निष्पिपासारूप १८, (णिक्कलुणो) दयाभाव से रहित होने के कारण निष्करुणारूप १९, (निरयवासनिधनगमणो) तथा नरकगमन ही जिसका अन्तिम फल है ऐसा होने के कारण निरयवास-निधनगमनरूप २०, (मोहमहब्भयपयट्ठओ) यह

जनना लोभभय डोवाथी अतिभयइय, (१०) “वीहणओ” भयने उत्पन्न करना डोवाथी भयकारइय, (११) “तामणओ” अचानक क्षोभना कारणइय डोवाथी त्रासनइय, (१२) “अणज्जओ” अवैध डोवाथी—अनीतिइय डोवाने कारणे अन्यायइय, (१३) “उन्वेयणओ” हृदयभा उद्देग पैदा करना डोवाथी उद्देगकारइ, (१४) “निरययस्यो” यः प्राणीना प्राणोनी रक्षा करवानी धरवानी रहित डोवाने कारणे निरपेक्षइय, (१५) “णिद्धम्मो” श्रुत—चारित्रइय धर्मथी रहित डोवाने कारणे निर्धर्मइय, (१६) “णिप्पिवासो” प्राणीआना प्राणो तरक्ष ममता भावथी रहित डोवाने कारणे निष्पिपासाइय, (१७) “णिक्कलुणो” दयाभावथी रहित डोवाथी निष्करुणाइय, (१८) “निरयवासनिधनगमणो” तथा नरक गमनइय नेनु अतिभयइय छे, ओयो डोवाने कारणे निरयवास निधनगमनइय,

‘મોહમહાભયપયદ્વઓ’ મોહમહાભયપર્વતક, મોહઃ=અજ્ઞાનમ્ સ एव महाभयहेतुत्वात् महाभय तस्य पर्वतको य स मोहमहाभयपर्वतकः । ‘मरणवेमणस्सो’ मरणवैमनस्यः-मरणेन=मृत्युरूपकारणेन प्राणिना वैमनस्य=दैन्य यस्मात् स मरणवैमनस्य दीनमनः कारित्वात् । ‘पदम अहम्म’=प्रथममधर्मम् अधर्मद्वारम् ‘अव्वयस्स’ अत्रतस्य=अत्ररहितस्य ॥ सू० ४ ॥

પ્રાણવધ મોહ-અજ્ઞાન રૂપ મહાભય કા પ્રવર્તક છે ૨૧, ઓર (મરણવેમ-
ણસ્સો) ઇસ સે પ્રાણિયોં મે મૃત્યુરૂપ કારણ કો લેકર કે દીનતા આતી
અતઃ યહ મરણ વૈમનસ્યરૂપ હૈ ૨૨, તેસા (મણિઓ) ભગવાન ને કહા હૈ ।

ભાવાર્થ—ઇસ સૂત્ર દ્વારા પ્રાણિહિંસારૂપ આત્મવ કેસા હૈ યહ જાત
સૂત્રકાર ને સ્પષ્ટ કી હૈ, વે કહતે હે કિ યહ પ્રાણિહિંસારૂપ આત્મવ પાપ-
પ્રકૃતિયોં કે ઘઘ કા કારણ હૈ । કારણ હિંસા કરનેવાલા જીવ પ્રમાદ કે
યોગ સે પ્રાણોં કા વ્યપરોપણ કર્તા હોને સે પાપપ્રકૃતિયોં કા હી ઘઘક
હોતા હૈ. અતઃ યહ પ્રાણિહિંસા પાપરૂપ હૈ । પર કી હિંસા કરતે સમય
આત્મા મેં ક્રોધ પરિણતિ તીવ્રરૂપ સે રહતી હૈ, કર્યા કિ હિંસક જીવ
હિંસ્ય જીવ જૈસી ૨ અપની રક્ષા આદિ કે કારણકલાપ જુટાતા હૈ
ઉન્હેં ક્રોધ કે આવેશ મેં તન્મય હોકર નષ્ટ કરતા હૈ—ઇસલિયે યહ
પ્રાણિહિંસા ચઢરૂપ પ્રકટ કિયા ગયા હૈ । ઇસી તરહ રૌદ્ર આદિ રૂપતા મી
ઇસ મે અપને ૨ ઊન ૨ ભિન્ન ૨ કારણોં કો લેકર ઘટિત કર લેના
ચાહિયે । ઇસ પ્રકાર સે યે પ્રથમ આત્મવરૂપ અધર્મ દ્વાર હૈ । ઇસમેં
પ્રાણિહિંસા કા કયા સ્વરૂપ હૈ યહ સ્પષ્ટ કિયા ગયા હૈ ॥સૂ० ૪॥

(૨૧) “મોહમહાભયપયદ્વઓ” તે પ્રાણુવધ, મોહ-અજ્ઞાનરૂપ મહાભયને પ્રવર્તક છે,
અને (૨૨) “મરણવેમણસ્સો” તેનાથી પ્રાણીઓમાં મૃત્યુરૂપ ઝરણુને લીધે દીનતા
આવે છે, તેથી તે મરણવૈમનસ્યરૂપ છે, એવું “મણિઓ” ભગવાને બોળેલ છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્રદ્વારા પ્રાણીવધરૂપ આત્મવ કેવો છે તે વાતનું સૂત્રકારે
સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તેઓ જણે છે કે તે પ્રાણીવધરૂપ આત્મવ પાપ પ્રકૃતિયોના
બધનું ઝરણુ છે કારણ કે હિંસા ઝરનાર જીવ પ્રમાદના યોગથી પ્રાણીનો
નાશ કર્તા હોવાથી પાપપ્રકૃતિયોનો બધક હોય છે, તેથી તે પ્રાણુવધ પાપરૂપ
છે પરની હિંસા કરતી વખતે આત્મામાં ક્રોધપરિણતિ તીવ્રરૂપે રહે છે, કારણ
કે હિંસ્યજીવ જેમ જેમ પોતાના રક્ષણ માટે પ્રયત્ન કરે છે તેમ તેમ હિંસક
જીવ ક્રોધના આવેશમાં તલ્લીન થઈને તેનો નાશ કરે છે, તે કારણે પ્રાણુવધને
ચડરૂપ કહેલ છે એ જ રીતે રૌદ્રરૂપતા આદિ તેના લક્ષણો પણ ભિન્ન ભિન્ન
કારણોને લઈને ઘટાવી શકાય છે આ રીતે તે પ્રથમ આત્મવરૂપ અધર્મદ્વાર
છે તેમાં પ્રાણીવધનું જેવું સ્વરૂપ છે તે સમજાવવામાં આવ્યું છે ॥ સૂ ૪ ॥

પૂર્વે પ્રાણિવધસ્ય સ્વરૂપમુક્તમ્, ડદાર્ની યન્નામેતિ પ્રતિવાતાનિ તસ્ય નામા-
ન્યાદ—‘તસ્સે’ત્યાદિ ।

મૂલમ્—તસ્સ ય ઇમાણિ નામાણિ ગોણાણિ હુતિ ત જહા—
પાણવહ૨, ઉન્મૂલના સરીરઓ૨, અત્રીસમો૩, હિસવિહિસા૪,
તહા અકિચ્ચં ચ૫, ઘાયણાય૬, મારણાય૭, વહણા૮, ઉદ્વણા૯,
નિવાયણા ય૧૦, આરભસમારમો૧૧, આઝયકમ્મસસુવદ્વો મેયાણિ-
દ્વવણગાલના ય સવદ્વગસલ્લેવો૧૨, મચ્ચૂ૧૩, અસજમો૧૪, કહ
ગમદ્વણ૧૫, વોરમણ૧૬, પરમવસકામકારઓ૧૭, દુગ્ગતિપ્પવાઓ
૧૮, પાવકોવો ય૧૯, પાવલોમો ય૨૦, છવિછેઓ૨૧, જીવિયતકરણો
૨૨, મયકરો૨૩, અણકરો૨૪, વજ્જો૨૫, પરિતાવણ અપ્પહઓ૨૬,
વિણાસો૨૭, નિજ્જવણો૨૮, છુપણા૨૯, ગુણાણ વિરાહણ૩૦ ત્તિ
વિ ય તસ્સ એવમાદીણિ પામધેજ્ઞાણિ હુતિ તીસ પાણવહસ્સ
કહુસસ્સ કહુયફલદેસગાઈ ॥ સૂ૦ ૫ ॥

ટીકા—‘તસ્મ ય’ તસ્ય ચ પ્રાણવધસ્ય ‘ઇમાણિ’ ઇમાણિ અનુપદ વધ્ય-
માણાણિ ‘નામાણિ’ નામાણિ ‘ગોણાણિ’ ગોણાણિ-ગુણનિપ્પન્નાણિ ‘હુતિ’
મયન્તિ ‘તીસ’ ત્રિશત્, ‘ત જહા’ તદ્વયા—‘પાણવહ’ પ્રાણવધ = જીવવાત.૧,
‘ઉન્મૂલના સરીરઓ’ ઉન્મૂલના શરીરતઃ—વૃક્ષોત્પાટનમિય ઉન્મૂલના જીવસ્ય

પ્રાણિહિંસાકા હસ પ્રકાર સ્વરૂપ કહકર અમ સૂત્રકાર હસકે કિતને
નામ હૈ યહ પ્રકટ કરતે હૈ—‘તસ્સ ય ઇમાણિ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તસ્સ ગોણાણિ ઇમાણિ નામાણિ તીસ હુતી) ઉસ પ્રાણિહિંસાકે
યે ગુણનિપ્પન્નતીસ નામ હૈ (ત જહા) વે હસ પ્રકારસેહૈ (પાણવહ) જીવવાત૧,
(ઉન્મૂલના સરીરઓ) શરીરસે વૃક્ષકો ઉગ્વાડનેકી તરહ જીવકી ઉન્મૂલના૨,

પ્રાણીવધનુ આ પ્રગટનુ સ્વરૂપ સમજાવીને હવે સૂત્રકાર તેના કેટલા
નામ છે તે પ્રગટ કરે છે—“તસ્સ ય ઇમાણિ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“તસ્સ ગોણાણિ ઇમાણિ નામાણિ તીસ હુતિ” તે પ્રાણીવધના ગુણ પ્રમાણે
ત્રીસ નામ છે “તજહા” તે લેહ આ પ્રમાણે છે—(૧) “પાણવહ” એવહત્યા,
(૨) “ઉન્મૂલના સરીરઓ” વૃક્ષને ઉખાડવાની જેમ ગરીરમાથા એવની ઉન્મૂલના, (૩)

शरीरादिति २ । 'अवीसमो' अविश्रम्भः—अविश्वास—प्राणप्रकारकेषु जीवानां विश्वासो नैव भवति इति हिंसाया अविश्रम्भकारणत्वादविश्रम्भव्यवहारः ३, 'हिंसविहिंसा' हिंस्यविहिंसा हिंस्याना=जीवानां विहिंसा प्राणप्रयोगः अजीवानां हिंसाया अभावात् 'हिंस्याना' मितिकथितम् ४ । ननु अरुपिणः हिंसेय न सम्भवति इति हिंसविहिंसेत्युक्तापि क्रियायातमिति चेन्न स्वरूपत एव प्राणप्रयोगरूपहिंसायागृह्यमाणत्वात् । उक्तञ्च—

“पञ्चेन्द्रियाणि त्रिविधं बलं च उन्त्यासनिच्छ्वासमवान्यदायुः ।

प्राणादशैते भगवद्भिरुक्तास्तेषां वियोजीकरणं तु हिंसा ॥ १ ॥”

'तथा अकिञ्च च' तथा अकृत्य च—तथा तेन प्रकारेण अकृत्यम्—अकरणीयं भगवता निषिद्धत्वात् ५ । 'घायणा य' घातना च—हननं ६ । 'मारणा य' मारणा च प्राणपीडनम् ७ । 'वाहणा' हननम् ८ । 'उद्वहणा' उपद्रवणम् ९, 'निवायणा' निपातना—यस्य यावन्त प्राणाः सन्ति तस्य तेभ्यः निपातना=दूरीकरणम्, यद्वा—'निवायणा' इति पाठे त्रिपातना—त्रयाणां मनोयाकायानां पातना=वसना १०, 'आरभसमारभो' आरभ्यन्ते=विनाश्यन्ते इति आरम्भाः=प्राणिनः तेषां समारम्भ=परिताप—“परितापकरो भवे समारभो” इति वचनात् । आरम्भो वा कृष्यादिव्यापारः तेन समारम्भः=प्राणिपीडनम् ११ । 'आउयकम्मस्सुवद्वो भेयनिट्ठवणं गालणा य सवट्ठगसखेवोत्ति' आयुःकर्मण उपद्रवः भेद निष्ठापनं गालना च सप्रवर्तकं सक्षेप, आयुः कर्मण उपद्रवः=समुच्छेद, भेद=विनाश, निष्ठापनं=समापनम्, गालना=निस्सारणम् । सवर्तकं—सर्वयत्नसामर्थ्यादीनां सकोचनम्, सक्षेपः—अभावकरणम् १२ । 'मच्चू' मृत्युः=भरणम् १३, 'असजमो' असयम—न

(अवीसमो) अविश्रम्भः, (हिंसविहिंसा) हिंस्यविहिंसा ४, तथा (अकिञ्च) अकृत्य ५, (घायणा) घातना ६, (मारणा) मारण ७, (वाहणा) हनन ८, (उद्वहणा) उपद्रवण ९, (निवायणा) निपातना १०, (आरभसमारभो) आरभसमारम्भ ११, (आउयकम्मस्सुवद्वो भेयनिट्ठवणं गालणा य सवट्ठगसखेवो) आयुःकर्म का उपद्रव, भेद, निष्ठापन, गालना, सप्रवर्तक, सक्षेप १२, (मच्चू) मृत्यु १३, (असजमो) असयम १४, (कडगमहण)

“अवीसमो” अविश्रम्भ, (४) “हिंसविहिंसा” हिंस्यविहिंसा, (५) “अकिञ्च” अकृत्य, (६) “घायणा” घातना, (७) “मारणा” मारण, (८) “वाहणा” हनन, (९) “उद्वहणा” उपद्रवण, (१०) “निवायणा” निपातना, (११) “आरभसमारभो” आरभसमारम्भ, (१२) “आउयकम्मस्सुवद्वो भेयनिट्ठवणं गालणा य सवट्ठगसखेवो” आयुःकर्म का उपद्रव, भेद, निष्ठापन, गालना, सप्रवर्तक, सक्षेप, (१३) “मच्चू” मृत्यु, (१४) “असजमो” असयम, (१५) “कडगमहण” ४८३

सयमोऽसयमः सावधानुष्ठानम् १४ । 'ऋडगमण' ऋडमर्दन-ऋडकेन=सैन्येन
 किलिञ्जेन वा आक्रम्य मर्दनं, प्राणयधकारणत्वादोपचारिकः प्राणयधे ऋडमर्दन
 व्यवहारः १५ । 'वोरमण' व्युपरमण चीरस्य प्राणतो वियोजीकरणम् १६ । 'पर
 भवसकामकारओ' परभवसकामकारक=नरनिगोदादि चतुर्गतिससार पुनः पुन
 परिभ्रमणहेतुत्वात् १७ । 'दुग्गडप्पवाओ' दुर्गतिप्रपातः-दुर्गती नरकादि दुष्टगती
 प्रपातयतीति दुर्गतिप्रपातः=नरनिगोदादि कुगति दायकः १८ । 'पायकोयो य'
 पापकोपश्च=पाप कोपयति=प्रवर्धयति इति पापकोप, मरुत्पापोत्पादकत्वात्,
 यद्वा-पापस्य कोपकार्यत्वात्पापकोपः क्रोधस्वरूप इत्यर्थः १९, 'पावलोमो य'
 पापलोभश्च=पाप लुभयति=धातुनामनेकार्थत्वात् सश्लिष्यति यस्मात् स पापलोभः=
 पापागमनद्वारलक्षणः २० । 'उविच्छेओ' उविच्छेदः-उवि=शरीर तस्य छेदः=
 कर्तनमिति छविच्छेदः=शरीरवर्तनम् । यद्वा-शरीराययच्छेदनम् २१ ।

'जीवियतकरणो' जीवितान्तकरण=प्राणोच्छेदकर २२ । 'भयकरो=भयदा
 यकः २३ । 'अणकरो' ऋणकर'-ऋण=अनेकेषु भवेषु नानाविधदुःखभोगैरपि
 दुरपनेयस्वरूप करोतीति ऋणकरः २४ । 'वज्जो' वज्र्य=त्याज्यः । अथवा वज्र-
 मिव गुरुत्वात्, तत्कारि प्राणिनामयःपातकत्वाद् वा वज्रम् २५ । 'परितावण
 अण्हओ' परितापनाश्रवः=परितापनारूप आश्रयः । भय भव सन्तापकत्वात् २६,
 'विणासो' विनाशः-प्राणविभ्रमनरूप २७ । 'निज्जवणो' निर्यापना=निर्यापयति=
 निर्गमयति प्राणिनः-प्राणानिति निर्यापना=प्राणनिससारणम् २८ । 'लुपणा'
 लोपना-प्राणिप्राणविगमनम् २९ । 'गुणाण विराहणा' गुणाना विराधना=श्रुत-

ऋडमर्दन १५, (वोरमण) व्युपरमण १६, (पर भवसकामकारओ) पराभव-
 सकामकारक १७, (दुग्गडप्पवाओ) दुर्गतिप्रपात १८, (पायकोयो) पापकोप १९,
 (पावलोमो) पापलोभ २०, (उविच्छेओ) शरीरका नाश २१, (जीवियतकरणो)
 जीवितान्तकरण २२, (भयकरो) भयकर २३, (अणकरो) ऋणकर २४, (वज्जो)
 वज्र्य २५, (परितावण अण्हओ) परितापनाश्रव २६, (विणासो) विनाश २७,
 (निज्जवणो) निर्यापना २८, (लुपणा) लोपना २९, (गुणाण विराहणा)

मर्दन, (१५) "वोरमण" व्युपरमण, (१७) " परभवसकामकारओ " पराभव
 सकामकारक, (१८) " दुग्गडप्पवाओ " दुर्गति प्रपात, (१९) " पायकोयो " पापकोप,
 (२०) " पावलोमो " पापलोभ, (२१) "उविच्छेओ " उविच्छेद, (२२) " जीवि
 यतकरणो " जीवितान्तकरण, (२३) " भयकरो " भयकर, (२४) "अणकरो" ऋणकर,
 (२५) " वज्जो " वज्र्य, (२६) " परितावण अण्हओ " परितापनाश्रव, (२७)
 "विणासो" विनाश, (२८) "निज्जवणो" निर्यापना, (२९) "लुपणा" लोपना,

ચારિત્રગુણાનાં મંજના ૩૦ । ‘તિ ત્રિ ય’ ઇત્યપિ ચ= ‘ઈતિ’ શબ્દઃ સમાસિમૂલકઃ
અપિ ચેતિ સમુચ્ચયાર્થઃ । ‘તસ્સ’ તસ્ય-પ્રાણિવધસ્ય ‘એવમાદીણિ’ એવમાદીનિ=
ઉક્તરૂપાણિ ‘ત્રીસ’ ત્રિશત્ ‘નામધેજ્ઞાણિ’ નામધેયાનિ ‘પાણરહસ્સ’ પ્રાણવધસ્ય,
‘કલુસસ્સ’ કલુપસ્ય=પાપરૂપસ્ય ‘કહુયફલદેસગાઈ’ કદુરુફલદેશકાનિ=અશોભન
પરિણામરોધકાનિ ‘હુતિ’ ભવન્તિ । એતાવતા ‘જ નામા’ યન્નામેતિ, દ્વિતીય
પ્રાણવધનામદ્વારમુક્તમ્ ॥૨૦૫॥

ગુણોંકી વિરાધના ૩૦, । (એવમાદીણિ) ઇત્યાદિક યે (ત્રીસ) ત્રીસ, (નામધે-
જ્ઞાઈ) નામ પ્રાણિર્હિસાકે (હુતિ) હૈ । યહ પ્રાણિર્હિસા (કલુસસ્સ) પાપરૂપ હૈ ।
ઉસકે યે ત્રીસ નામ (કહુયફલદેસગાઈ) અશુભ પરિણામ કે હી ચોધક
હૈ । હસ તરહ યહ ‘જ નામા’ હસ નામકા દ્વિતીય પ્રાણિર્હિસા દ્વાર કહા હૈ ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને હસ સૂત્રદ્વારા પ્રાણિર્હિસાકે ગુણાનુસાર કિતને
નામ હૈ અથવા હો સકતે હૈ યહ કહા હૈ । હસ પ્રાણિર્હિસાકા પ્રથમ નામ
પ્રાણિર્હિસા હૈ, પ્રાણિર્હિસા કા અર્થ પાંચ ઇન્દ્રિય, ત્રીનઅલ, આયુ ઓર
શ્વાસોચ્છ્વાસ હન સંભવિત દશ પ્રાણો કા વિયોગ કરના । એકેન્દ્રિય
જીવકે ૪ ચાર પ્રાણ, દો ઇન્દ્રિય જીવકે ૬ છ પ્રાણ, ત્રીન ઇન્દ્રિયવાલે જીવકે ૭
સાત પ્રાણ, ચૌ ઇન્દ્રિય જીવકે ૮ આઠ પ્રાણ, અસંજીવચેન્દ્રિય જીવકે ૯ નવ
પ્રાણ ઓર સંજીવચેન્દ્રિય જીવકે ૧૦ દસ પ્રાણ હોતે હૈ । હસ તરહ ભિન્ન ૨
જીવોંમેં સંભવિત હન પ્રાણોંકા પ્રમાદકે યોગસે વિયોગ કરના હસકા નામ
પ્રાણિર્હિસા હૈ, યહ પ્રથમ ભેદ હુઆ ૧ । પ્રાણિર્હિસાકા યહ પર્યાયવાચી શબ્દ હૈ ।

અને (૩૦) “ગુણાણ વિરાહના” ગુણોની વિરાધના, “એવમાદીણિ” ઇત્યાદિ,
“ત્રીસ” ત્રીસ “નામધેજ્ઞાઈ” નામ પ્રાણવધના “હુતિ” છે તે પ્રાણવધ “કલુ
સસ્સ” પાપરૂપ છે તેના આ ત્રીસ નામ “કહુયફલદેસગાઈ” અશુભ પરિણા
મના ૪ ધોધક છે આ પ્રકારનું આ “જનામા” એ નામનું દ્વિતીય પ્રાણવધ
દ્વાર ભાખેલ છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા પ્રાણવધના ગુણાનુસાર કેટલા નામ છે
અથવા હોઈ શકે છે તે બતાવ્યું છે તે પ્રાણવધનું પહેલું નામ પ્રાણવધ છે
પ્રાણવધનો અર્થ આ પ્રમાણે છે—પાંચ ઇન્દ્રિય, ત્રણ બળ, આયુ અને શ્વાસો
ચ્છ્વાસ એ સંભવિત દશ પ્રાણોનો વિયોગ કરવો તેને પ્રાણવધ કહે છે એકે
ન્દ્રિય જીવને ચાર પ્રાણ, દ્વિઇન્દ્રિય જીવને છ પ્રાણ, ત્રિઇન્દ્રિય જીવને સાત
પ્રાણ, ચતુરિન્દ્રિય જીવને આઠ પ્રાણ, અસંજીવચેન્દ્રિય જીવને નવ પ્રાણ અને
સંજીવચેન્દ્રિય જીવને દસ પ્રાણ હોય છે આ રીતે જુદા જુદા જીવોમાં
સંભવિત એ પ્રાણોનો પ્રમાદના યોગથી વિયોગ કરવો તેને પ્રાણવધ કહે છે
આ પહેલો ભેદ થયો પ્રાણવધનો તે પર્યાયવાચી શબ્દ છે પ્રથમ પ્રાણવધ તે

પ્રથમ પ્રાણિહિંસા, યદ સામાન્ય અર્થકા યોધક હોનેસે સામાન્ય શબ્દ હૈં ઓર હસકા પર્યાયવાચીરૂપ પ્રાણિહિંસા વિશેષ અર્થકા યોધકહોને સે વિશેષ શબ્દ હૈં । હસ તરફ સે ગુણ નિપવ્રત્તા હન મન નામોં મેં જાનના ચાહિયે । હસકા છુલાસા હસ પ્રકાર સે હૈં-જમીન સે જૈસા વૃક્ષ ઉગ્વાદ દેતે હૈં ડસી તરફસે શરીર સે જીવકા નિકાલ દેના યદ જીવકી શરીરસે ઉન્મૂલના (ઉગાડના)હૈં । હસ ઉન્મૂલનામે જીવકી પર્યાયકા વિનાશ હોના હૈં, ઓર જીવ કો કષ્ટ હોતા હૈં અતઃ યદ પ્રાણિહિંસા હૈં । યદ દૂસરા મેદ ૨ । જો જીવ હિંસક, નિર્દયી, હત્યારે હોતે હૈં ડનમેં જીવો કા વિશ્વાસ નહોં હોના હૈં હસલિયે હિંસાકો અવિશ્વાસ કા કારણ હોને સે ડસમેં અવિશ્વાસ કા વ્યવહાર કરદિયા ગયા હૈં । યદ તૈસરા મેદ ૩ । હિંસ્ય વિહિંસા-અજીવોં કી હિંસા નહોં હોતી હૈં-હિંસા તો જીવોંકી હોતી હૈં હસલિયે યદ્દાં પર હિંસ્ય પદ સે જિન જીવોં કી હિંસા હોતી હૈં વે ગ્રહણ કિયે ગયે હૈં । ડન હિંસ્ય જીવોં કે પ્રાણોંકા વિયોગ હસ પ્રાણિહિંસા મેં હોતા હૈં હસલિયે હસે હિંસ્યવિહિંસા કહા ગયા હૈં । યદ ચૌથા મેદ ૪ ।

પ્રશ્ન—જીવ તો અરૂપી હૈં-જો અરૂપી હોતા હૈં ડસકો હિંસા હોતી નહોં હૈં ફિર હિંસ્યવિહિંસાકા વ્યપદેશ પ્રાણિ હિંસામેં કર્યોં કિયા ?

સામાન્ય અર્થનો યોધક હોવાથી સામાન્ય શબ્દ છે અને તેનો પર્યાયવાચી પ્રાણુવધ શબ્દ વિશેષ અર્થનો યોધક હોવાથી વિશેષ શબ્દ છે આ રીતે એ બધા નામોમા ગુણયુક્તતા સમજી લેવી તેનું અપીકરણ આ પ્રમાણે છે—જમીનમાથી જેમ વૃક્ષને ઉગાડી નાખવામા આવે છે એ જ પ્રમાણે શરીરમાથી જીવને કાઢી નાખવો તે જીવની શરીરથી ઉન્મૂલના કરી ડહેવાય છે તે ઉન્મૂલનામા જીવની પર્યાયનો વિનાશ થાય છે, અને જીવને કષ્ટ થાય છે, તેથી તે પ્રાણુવધ ગણાય છે આ બીજો ભેદ થયો જે જીવ હિંસક, નિર્દય, હત્યારા હોય છે, તેમનામા જીવોને વિશ્વાસ હોતો નથી, તે ડારણે હિંસાને અવિશ્વાસનું કારણ ગણીને તેમા અવિશ્વાસનો વ્યવહાર કર્યો છે આ ત્રીજો ભેદ થયો હિંસ્ય-વિહિંસા-અજીવોની હિંસા થતી નથી હિંસા તો જીવોની જ થાય છે, તેથી અહીં હિંસ્ય એટલે જે જીવોની હિંસા થાય છે તે જીવો એ પ્રમાણેનો અર્થ અહણુ કરવામા આવ્યો છે તે હિંસ્ય જીવોના પ્રાણોનો વિયોગ તે પ્રાણુવધમા થાય છે તેથી તેને હિંસ્યવિહિંસા ડહેવામા આવેલ છે આ ચોથો ભેદ થયો

પ્રશ્ન—જીવ તો અરૂપી છે-જે અરૂપી હોય છે તેની હિંસા થતી નથી તો પછી હિંસ્યવિહિંસાનું આરોપણ પ્રાણુવધમા કેમ કર્યું છે ?

ઉત્તર—શંકા ઠીક છે. પણ તો હમ મી કહતે હૈં કિ જીવરૂપ અરૂપી પદાર્થ કી હિંસા નહીં હોતી હૈ, પરંતુ યદા હિંસા સે તાત્પર્ય સમવિત પ્રાણોં કા વિયોગ કરના લિયા ગયા હૈ. પાચ ઇન્દ્રિય—કર્ણ, ચક્ષુ, ગ્રાણ, રસના, સ્પર્શન, રૂચલ—મનવલ, વચનવલ, કાયવલ, આયુ ંચ શ્વાસો—ચ્છ્વાસ, ઇન પ્રાણો કા જિસ પ્રવૃત્તિ સે વિયોગ હોતા હો ઉસકા નામ હિંસા હૈ ૪। તથા—અકૃત્ય—સિદ્ધાન્તોં મે જીવો કી હિંસા કરને કા પ્રભુ ને નિષેધ કિયા હૈ, ક્યોં કિ યહ કૃત્ય, અકૃત્ય—અકરુણીય હૈ, ઇસલિયે ઉસ રૂપ સે યહ અકૃત્ય હોને કે કારક પ્રાણિહિંસાકો અકૃત્ય કહા હૈ યહ પાચવા ભેદ હૈ ૫। ઘાતના—અર્થાત્—ઘાત કરના ડહા ભેદ હૈ ૬। પ્રાણોં કા વિયોગ કરના કેવલ યહી હિંસા નહીં હૈ કિન્તુ જિન કૃત્યો સે પ્રાણિયોં કે પ્રાણોંકો પીડા પહુંચતી હો તેસે કૃત્ય મી હિંસા હી હૈ, ‘યહ ઘાત મારણા પદ સે સૂત્રકાર ને પ્રદર્શિત કી હૈ। સાતમા ભેદ ૭। હનન—વધ કરના, યહ આઠવા ભેદ ૮। ઉપદ્રવણ—વિનાશ કરના, યહ નૌવા ભેદ ૯। નિપાતના—જિસ જીવ કે જિતને પ્રાણ હોતે હૈં ઉન જીવ કે ઉતને પ્રાણોં કા વિનાશ ઇસ પ્રાણવધ દ્વારા હોતા હૈં ઇસલિયે ઇસે નિપાતના શબ્દ સે વ્યવહૃત કિયા ગયા હૈ। અથવા ઇસ પદ કી જગહ

ઉત્તર—શંકા બરાબર છે એ તો અમે પણ ઠીકથી છીએ કે અરૂપ અરૂપ પદાર્થની હિંસા થતી નથી પણ અહીં સંભવિત પ્રાણોના વિયોગ કરવો, એવું હિંસાનું તાત્પર્ય લેવામાં આવ્યું છે. પાચ ઇન્દ્રિય—ઝાન, નેત્ર, નાસિકા, રસના અને સ્પર્શ-ઇન્દ્રિય, ત્રણ બળ—મનબળ, વચનબળ, કાયબળ આયુ અને શ્વાસોચ્છ્વાસ એ પ્રાણોના જે પ્રવૃત્તિઓથી વિયોગ થાય તેનું નામ હિંસા છે.

તથા અકૃત્ય—સિદ્ધાન્તોમાં પ્રભુએ જીવોની હિંસા કરવાનો નિષેધ કર્યો છે, કારણ કે તે કૃત્ય ન કરવા યોગ્ય છે, તેથી તે રીતે તે અકૃત્ય હોવાથી પ્રાણવધને અકૃત્ય ઠહો છે આ પાચમો ભેદ થયો.

ઘાતના એટલે કે ઘાત કરવો તે છટકો ભેદ છે. પ્રાણોના વિયોગ કરવો તે જ કેવળ હિંસા નથી, પણ જે કૃત્યોથી પ્રાણીઓના પ્રાણોને પીડા પહોંચે છે એવા કૃત્યો પણ હિંસા જ છે તે વાત ‘મારણ’ પદથી સૂત્રકારે પ્રગટ કરી છે આ સાતમો ભેદ થયો. હનન—વધ કરવો તે આઠમો ભેદ છે ઉપદ્રવણ વિનાશ કરવો તે નવમો ભેદ છે નિપાતના—જે જીવોને જેટલા પ્રાણ હોય છે તેટલા પ્રાણોના વિનાશ આ પ્રાણવધ દ્વારા થાય છે તેને નિપાતના શબ્દથી ગૃહીત કરાયેલ છે અથવા આ પદની જગ્યાએ “તિવાચના” પદ

“ત્રિપાતના” એમા પદ જય માના જાવેગા તથા દસકી ડાયા ત્રિપાતના હોગી ઓર દસકા અર્થ તથા મન વચન ઓર કાય, દનકા ધસ કરના એમા હોગા, દશમા ભેદ ૧૦ । આરમ સમારમ-આરમ શબ્દ સે જિનકા વિનાશ ક્રિયા જાવે એસે, અર્થાન્ વિનાશ ક્રિયા જાતા હૈ જિનકા વે હૈ આરમ અર્થાત પ્રાણી ડનકા જો સમારમ-પરિતાપ વહ હૈ આરમ સમારમ । પ્રાણિર્હિમામેં જીવોંકો પરિતાપ હોતા હૈ યહ વાત સ્પષ્ટ ઓર અનુભવગમ્ય હૈ । અથવા-કૃષ્ણાદિ કર્મ કા નામ આરમ હૈ, દસ આરમ સે જીવોંકે પ્રાણોંકા પીડન હોતાહૈ । યહ ગ્યારહવા ભેદ ૧૧ । ઇસી તરહ જીવકી આયુકા ઉપદ્રવ સમુચ્છેદ, ભેદ વિનાશ, નિષ્ઠાપન-સમાપ્તકરના, ગાલના-નિકાલના, સર્વતર્ક-સમસ્તગલ, સામર્થ્ય આદિ કા સકોચ કરના, સક્ષેપ દનકા અભાવ કરના, યહ ગ્યારહવા ભેદ ૧૨ । મૃત્યુ-મરણ તેરહવા ભેદ હૈ ૧૩ । ઇન્દ્રિયમયમ ઓર પ્રાણસયમ ધારણ કરને સે પ્રાણીયોં કી રક્ષા હોતી રહતી હૈ । અમયમી જીવ સે યહ રક્ષા વનતી નહીં હૈ, અતઃ અસયમ કો પ્રાણિર્હિમાકા અગ કહા ગયા હૈ । ઇસી અભિપ્રાય સે યહાં ઉસે ઉસકા પર્યાયવાચી નામ કહા હૈ । સાવન્ય અનુષ્ઠાન કા નામ હી તો અસયમ હૈ । યહ ચૌદહવાં ભેદ ૧૪ । કટક મર્દન કા અર્થ હૈ-કટક-

માની હેવોંગા આવે તો તેની છાયા “ત્રિપાતના” થશે અને ત્યારે તેનો અર્થ મન, વચન અને કાયનો ધનન કવો, એ પ્રમાણે થશે આ દસમો ભેદ છે આગલમમારલ-આરલ ગણવાં જેમનો વિનાશ કરાય એવા અથવા વિનાશ ગય છે જેમનો તેવા પ્રાણી એવો અર્થ થાય છે તેમનો જે મમારલ પરિતાપ તેને આરલ મમારલ ઠહે છે પ્રાણવધમા એવાને પરિતાપ થાય છે, તે વાત સ્પષ્ટ તથા અનુભવગમ્ય છે અથવા ખેતી આદિ કર્મનુ નામ પણ આરલ છે તે આરલથી એવાના પ્રાણોને પીડા પડોચે છે આ અગિયારમો ભેદ છે એજ પ્રમાણે એવા આયુનો ઉપદ્રવ-સમુચ્છેદ, ભેદ-વિનાશ, નિષ્ઠાપન-અતઃ, ગાલના-નિકાલવુ, સર્વતર્ક-સમસ્ત ગળ સામર્થ્ય આદિનો સકોચ કરવો, સક્ષેપ તેમનો અભાવ કરવો, તે ગાગ્રમો ભેદ છે મૃત્યુ-મરણ તેરમો ભેદ છે ઇન્દ્રિયમયમ અને પ્રાણમયમ ધારણ કરવાથી પ્રાણીઓની રક્ષા થયા કરે છે અમયમી એવાથી તે રક્ષા થઈ શકતી નથી, તેથી અમયમને પ્રાણવધનુ અગ કહેલ છે તે કારણે જ તેને અહીં પર્યાય-વાચી નામ ગણેલ છે નાવધઅનુષ્ઠાનનુ નામ જ અમયમ છે આ ચૌદમો ભેદ છે કટકમર્દન ગણેનો અર્થ આ પ્રમાણે છે-કટક-નૈન્ય દ્વારા હિંસાના

ઉત્તર—શકા ઠીક હૈં યહ તો હમ મી કહતે હૈં કિ જીવરૂપ અરૂપી પદાર્થ કી હિંસા નહીં હોતી હૈ, પરંતુ યહા હિંસા સે તાત્પર્ય સમવિત પ્રાણોં કા વિયોગ કરના લિયા ગયા હૈં । પાચ ઇન્દ્રિય—ઋણ, ચક્ષુ, ઘ્રાણ, રસના, સ્પર્શન, ૩ ચલ-મનગલ, વચનગલ, કાયગલ, આયુ ગલ શ્વામો-ચ્છ્વામ, इन प्राणो कौ जिस प्रवृत्ति से वियोग होता हो उसका नाम हिंसा है ४ । तथा-अकृत्य-सिद्धान्तो में जीवों की हिंसा करने का प्रभु ने निषेध किया है, क्योंकि यह कृत्य, अकृत्य-अकरणीय है, इसलिये उस रूप से यह अकृत्य होने के कारक प्राणिहिंसाको अकृत्य कहा है यह पाचवा भेद है ५ । घातना-अर्थात्-घात करना उठा भेद है ६ । प्राणों का वियोग करना केवल यही हिंसा नहीं है किन्तु जिन कृत्यो से प्राणियों के प्राणोंको पीडा पहुँचती हो ऐसे कृत्य भी हिंसा ही है, 'यह घात मारणा पद से सूत्रकार ने प्रदर्शित की है । सातमा भेद ७ । हनन-वध करना, यह आठवा भेद ८ । उपद्रवण-विनाश करना, यह नौवा भेद ९ । निपातना-जिस जीव के जितने प्राण होते हैं उन जीव के उतने प्राणों का विनाश इस प्राणवध द्वारा होता है इसलिये इसे निपातना शब्द से व्यवहृत किया गया है । अथवा इस पद की जगह

ઉત્તર—શકા બરાબર છે એ તો અમે પણ ઠીકથી છીએ કે અવરૂપ અરૂપ પદાર્થની હિંસા થતી નથી પણ અહીં સમવિત પ્રાણોના વિયોગ કરવો, એવું હિંસાનું તાત્પર્ય લેવામા આવ્યું છે પાચ ઇન્દ્રિય—ઘન, નેત્ર, નામિકા, રસના અને સ્પર્શેન્દ્રિય, ગ્રાણ બળ-મનબળ, વચનબળ, કાયબળ આયુ અને શ્વાસોચ્છ્વાસ એ પ્રાણોના જે પ્રવૃત્તિઓથી વિયોગ થાય તેનું નામ હિંસા છે

તથા અકૃત્ય-સિદ્ધાંતોમા પ્રભુએ જીવોની હિંસા કરવાનો નિષેધ કર્યો છે, કારણ કે તે કૃત્ય ન કરના યોગ્ય છે, તેથી તે રીતે તે અકૃત્ય હોવાથી પ્રાણુવધને અકૃત્ય કહ્યો છે આ પાચમો ભેદ થયો

ઘાતના એટલે કે ઘાત કરવો તે છટકો ભેદ છે પ્રાણોના વિયોગ કરવો તે ૪ કેવળ હિંસા નથી, પણ જે કૃત્યોથી પ્રાણીઓના પ્રાણોને પીડા પહોંચે છે એવા કૃત્યો પણ હિંસા જ છે ત વાત 'મારણ' પદથી સ્પષ્ટકારે પ્રગટ કરી છે આ સાતમો ભેદ થયો હનન-વધ કરવો તે આઠમો ભેદ છે ઉપ દ્રવણ વિનાશ કરવો તે નવમો ભેદ છે નિપાતના-જે જીવોને જેટલા પ્રાણુ હોય છે તેટલા પ્રાણોનો વિનાશ આ પ્રાણુવધ દ્વારા થાય છે તેને નિપાતના શબ્દથી ગૃહીત કરાયેલ છે અથવા આ પદની જગ્યાએ " સિદ્ધાવણા " પદ

અવિચ્છેદરૂપ ક્રતા છે । યદ દષ્ટીસવા ભેદ ૨૧ । પ્રાણવધ જીવન કા અત-
 કર-વિનાશક હોને સે જીવિતાન્તકરણરૂપ ક્રતા ગયા છે । યદ-પાવીસવા
 ભેદ ૨૨ । પ્રાણવધ કે અવસર ઉપસ્થિત હોને પર જીવોં કો ભય
 હોના છે અત હસ ભય કા કારક હોને સે પ્રાણવધ ભયકર છે, જેસા કહા
 ગયા છે । યદ તેવીસવાં ભેદ ૨૩ । હસ પ્રાણવધ કો કરને વાલા પ્રાણી
 અનેક મર્ચોં મેં ભી નાના પ્રકાર કે ડુઃખો સો મોગતા રહતા છે ફિર ભી
 હસ સે ઉદ્ધન પાપરૂપ ક્રણ કા વધ જોધન નહીં કર પાના છે, હસલિયે
 હસે ક્રણકરૂપ ક્રતા ગયા છે । યદ ચૌવીસવાં ભેદ ૨૪ । વિવેકી જો
 ન્યક્તિ હોતે છે વે હસ પ્રાણવધ સે મદા દૂર રહતે છે હસલિયે હસે વર્જ્ય-
 છોડને યોગ્ય-ક્રતા છે । અથવા 'વજ્ર' કી નસ્કૃત ત્રાયા 'વજ્ર' ભી હો
 સકતી છે । વજ્ર તિમ પ્રકાર ગુરુ (મારી) હોના છે ડસી પ્રકાર યદ પ્રાણવધ
 ભી અપન કો-આનન્તિ કરને વાલે પ્રાણી કો અધઃપાત નરક નિગોદ
 આદિ મેં પતન કા કારણ હોને સે વજ્ર કે જેસા મારી હોતા છે । યદ
 પચ્ચીસવાં ભેદ ૨૫ । અન ભવમેં પ્રાણી હસકે કરને સે સન્તાપરૂપ
 પરિતાપના કો પાના છે હસલિયે હસે પરિતાપનારૂપ આસવ ક્રતા ગયા છે ।
 યદ અઘીસવાં ભેદ ૨૬ । વિનાશ પ્રાણ કા વિચસન કરના । યદ સત્તા-
 હસવાં ભેદ ૨૭ । નિર્યાપના પ્રાણિયોં કે પ્રાણોં કો નિકાલના । યદ અઘાઈ-
 સવાં ભેદ ૨૮ । લોપના-પ્રાણિયોં કે પ્રાણોં કા લોપ કરના-દૂર કરના ।

અતઃ-વિનાશક હોવાથી અવિતાન્તકરણરૂપ બતાવ્યો છે આ પાવીસમે ભેદ
 છે પ્રાણવધનો પ્રમગ ઉપસ્થિત થતા હોવાને લય થાય છે, તેથી તે લયકારક
 હોવાથી તેને લયકર કહેલ છે આ તેવીસમે ભેદ છે એ પ્રાણવધ કરનાર
 પ્રાણી અનેક લયોમા અનેક પ્રકારના દુઃખો ભોગવ્યા કરે છે, છતાં પણ તેના
 કારણે ઉત્પાદિત પાપરૂપ કણુને તે દેડી શકતુ નથી તે કારણે તેને અણકર
 નામ આપ્યું છે આ ચોવીસમે ભેદ છે વિવેકી વ્યક્તિ એ પ્રાણવધથી મદા
 દૂર રહે છે, તેવી તેને વર્જ્ય-છોડવા લાયક કહેલ છે અથવા 'વજ્ર'ની
 સંસ્કૃત ધ્યા 'વજ્ર' પણ થઈ શકે છે વજ્ર જે ગીતે મોટું હોય છે તે
 પ્રકારે પ્રાણવધ પણ, તે ડરનાર પ્રાણીને અધઃપાત-નરક નિગોદ આદિમા પતન
 થવાનું કારણ હોવાથી વજ્રના જેવો ભારે હોય છે આ પચીસમે ભેદ થયો
 જે કરવાથી વ્યક્તિને દરેક લવમા મતાપરૂપ પરિતાપના-પીડા સહન કરવી પડે
 છે, તેથી તેને પરિતાપનારૂપ આસવ કહેલ છે આ છવીસમે ભેદ છે વિનાશ-
 પ્રાણનો વિધ્નસ ડરવો, તે મત્યાવીસમે ભેદ છે નિર્યાપના-પ્રાણીઓના પ્રાણોને
 નિકાલવા, તે અઘાવીસમે ભેદ છે લોપના-પ્રાણીઓના પ્રાણોને લોપવા-દૂર

સૈન્ય દ્વારા દુસરોં પર હિંસા કે અભિપ્રાય સે આક્રમણ કાના । યહ સૈન્યમર્દન પ્રાણિહિંસાકા કારણ હોતા હૈ ફિર મી હસે જો પ્રાણિહિંસા રૂપ કહા હૈ વહ ઉપચાર સે હી કહા ગયા જાનના ચાહિયે, યહ પન્દ્રહવાં ભેદ ૧૫ । જીવ કા પ્રાણ સે વિયુક્ત કરના યહ વ્યુપરમણ હૈ । યહ સોલહવાં ભેદ ૧૬ । પ્રાણિહિંસાકો જો પરમમ સક્રમ કારક કહા હૈ ઉસકા ભાવ યહ હૈ કિ યહ પ્રાણિહિંસા નરકનિગોદાદિ ચતુર્ગનિરૂપ મસારમે પરિભ્રમણ કા કારણ બનતા હૈ । યહ સત્તરહવાં ભેદ હુઆ ૧૭ । હસ પ્રાણિહિંસા કે પ્રભાવ સે જીવ નરકાદિ દુર્ગતિયોં મેં હી જાકર જન્મ લેના હૈ હસલિયે યહ દુર્ગતિ પ્રપાતરૂપ કહા હૈ, યહ અઠારનાં ભેદ ૧૮ । સકલ પાપોંકા યહ કોપક-ઉત્પાદક હૈ, હસલિયે હસે પાપકોપ કહા ગયા હૈ । અથવા પાપ, કોપ કા કાર્ય હોતા હૈ હસ અભિપ્રાય સે યહ પ્રાણિહિંસા ક્રોધ સ્વરૂપ હૈ એસા મી કહા જા સકતા હૈ । યહ ત્રીમવાં ભેદ ૧૯ । હસ પ્રાણિહિંસા કો કરને ચાલા વ્યક્તિ કેવલ પાપ કા હી આલિંગન કરતા હૈ—પાપકર્મ કો બાંધતા હૈ, હસલિયે પ્રાણવધ પાપલોભરૂપ હૈ । યહ વીસવાં ભેદ ૨૦ । છવિચ્છેદ—છવિ કા અર્થ શરીર હૈ, હસકા છેદના છવિચ્છેદ હૈ । પ્રાણવધ મેં શરીર અથવા શરીર કે અવયવો કા છેદન હોતા હી હૈ, હસલિયે હસે

ઉદ્દેશથી ખીજા ઉપર આક્રમણ કરવું આ સૈન્યમર્દન પ્રાણિવધના કારણરૂપ હોય છે છતાં પણ તેને જે પ્રાણવધરૂપ કહેલ છે તે ઔપચારિક રીતે જ કહેલ છે એમ મમજી લેવું આ પરમો ભેદ થયો

જીવને પ્રાણથી વિયુક્ત—રહિત કરવો તેને વ્યુપરમણ કહે છે, આ સોળમો ભેદ છે પ્રાણવધને જે પરમ સક્રમકારક કહેલ છે તેનું તાત્પર્ય એ છે કે તે પ્રાણવધ નરકનિગોદાદિ ચાર ગતિરૂપ સમારમ પરિભ્રમણ વરાવનાર છે આ સત્તરમો ભેદ છે આ પ્રાણવધના પ્રભાવથી જીવ નરકાદિ દુર્ગતિયોમા જન્મને જન્મ લે છે, તેથી તેને દુર્ગતિ પ્રપાતરૂપ કહેલ છે આ અઠારમો ભેદ છે સકળ પાપોના તે કોપક-ઉત્પાદક છે, તે કારણે તેને પાપકોપરૂપે દર્શાવ્યો છે અથવા પાપ, ગોષ્ઠનું કાર્ય હોય છે તે કારણે આ પ્રાણવધ કોપસ્વરૂપ છે, એમ પણ કહી શકાય છે આ ઝોગણીસમો ભેદ છે એ પ્રાણવધ કરનાર વ્યક્તિ કેવળ પાપનું જ આલિંગન કરે છે—પાપકર્મો બાંધે છે, તે કારણે તે પ્રાણવધ પાપલોભરૂપ છે આ વીસમો ભેદ છે છવિચ્છેદ—છવિ એટલે શરીર, તેનું છેદન તે છવિચ્છેદ કહેવાય છે પ્રાણવધમા શરીર અથવા શરીરના અવયવોનું છેદન થાય છે તેથી તેને છવિચ્છેદરૂપ કહેલ છે આ એવીસમો ભેદ છે પ્રાણવધ જીવનનો

દુઃસ્વોત્પાદનમમક્તા = પરપીડા કરણપરાયણા. 'હમેદિ' એતેપુ = પ્રત્યક્ષ લક્ષ્યમાણેપુ
'તસયાવરેદિ' ત્રયસ્થાવરેપુ 'ત્રીવેદિ' જીવેપુ 'પદિણિવિદ્વા' પ્રતિનિવિદ્યા = તેપા
રક્ષણાદ્ દ્વેષયુક્તાઃ 'વહુવિહ' વહુવિધ 'વહુપ્પગાર' વહુપ્રકારમ્ = અનેકભેદમભેદ-
સહિત, 'મયકર' મયજનક 'પાણવહ' પ્રાણવય = જીવહિંસા 'કરેતિ' કુર્વન્તિ । 'કિ
તે' તે = ત્રયસ્થાવરેપુ દ્વેષવન્તઃ 'કિ' કિ કુર્વન્તિ ? પાઠીનાદિ જીવાન્ 'દણતિ'
જ્ઞન્તિ, ઇતિ લક્ષ્યમાણેન સમ્યગ્ન્ય । તાનેવ દર્શયન્તિ - 'પાઠીણે'ત્યાદિ । 'પાઠીણ-
તિમિ-તિમિગિલ-અણેગ-ચમચિવિદ્વાજાદમદુક્ક-દુવિહકચ્છમ-ગક્ક-મગર-દુવિહ-
ગાહ-દિલિવેદય-મદુય-સીમાગારપુલય-સુમુમાર વહુપ્પગારા' પાઠીન-તિમિ-
તિમિગિલા-ડનેરક્ષપ-ચિચિજાતિમદ્દક-દિવિધ-ચ્છપ-નક-મગર-દિવિધ-
ગ્રાહ-દિલિવેદય-મદુરુ-સીમાગાર-પુલક-સુમુમાર-મકારા, તત્ર-પાઠીનાઃ =
તન્નામકા મત્સ્યવિશેષા, તિમય મત્સ્યવિશેષા, તિમિગિરતિ ઇતિ તિમિગિલાશ્ચ,
મહામત્સ્યાઃ ।

“ અસ્તિમત્સ્યમ્તિમિર્નામ શતયોજનવિસ્તર' ।

તિમિદ્વિલગિલોડપ્યમ્તિ તદ્વિલોડપ્યસ્તિ રાગઃ ॥૧॥ ” ઇતિચનાત્ ।

અનેકજ્ઞપાઃ = ચિચિયાઃ ક્ષુદ્રમત્સ્યાઃ, ચિચિજાતયો મળ્હકાઃ = નાનાજા-

એસે જીવ (ત ચ પુણ) ઇસ (મયકર) મયપ્રદ, (વહુવિહ) વહુવિધ
ઔર (વહુપ્પગાર) અનેક ભેદ પ્રભેદ સહિત (પાણવહ) પ્રાણવધ કો
(કરેતિ) કરતે હૈ । (હમેદિ તસયાવરેદિ જીવેદિ) इन प्रत्यक्षीभूत
त्रय और स्थावर जीवा की रक्षा करने के विषय में (पदिणिविद्वान्)
द्वेषयुक्त होते हुए प्राणवध करते हैं, (कि ते) वे क्या २ करते हैं इस
बात को अत्र सूत्रकार “ पाठीण ” इत्यादि पदों द्वारा प्रकट करते हैं-
(पाठीण-तिमि-तिमि-गिल-अणोगत्रस-चिविहजादमदुक्क-दुविहक-
च्छम गक्क-मगर-दुविहगाह-दिलिवेदय मदुय-सीमागार पुलय सुसुमार-

આ “મયકર” મયપ્રદ, “વહુવિહ” વહુ વિધ અને “વહુપ્પગાર” અનેક ભેદ
પ્રભેદ સહિત, “પાણવહ” પ્રાણવધ કરે છે, “હમેદિ તસયાવરેદિ જીવેદિ”
એ પ્રત્યક્ષીભૂત ત્રય અને સ્થાવર જીવોની રક્ષા કરવાની બાબતમાં “પદિણિવિદ્વા”
દ્વેષયુક્ત થઈને પ્રાણવધ કરે છે, “કિતે” તેઓ શુ શુ કરે છે એ વાતને હવે
સૂત્રકાર “પાઠીણ” ઇત્યાદિ પદો દ્વારા પ્રગટ કરે છે-“પાઠીણ-તિમિ-તિમિગિલ-
અણેગજ્ઞસચિવિહજાહ-મદુક-દુવિહકચ્છમ-ગક્ક-મગર-દુવિહગાહ-દિલિવેદય-મદુય-
સીમાગાર-પુલય-સુમુમાર-વહુપ્પગારા” એવા જીવો નીચે પ્રમાણે છે-પાઠીન,
તિમિ, તિમિગલ, અનેડણ, અનેડ જાતિના દેડકા, બન્ને પ્રકારના કાચબા, નક,

અધેદાની 'જહયકઓ' યથાકૃતઃ ઇતિ તૃતીય દ્વારમાચષ્ટે 'ત ચ પુને'ત્યાદિ ।

મૂલમ્—ત ચ પુન કરેતિ કેદ્ પાવા અસજયા અવિરયા અણિહુયપરિણામદુષ્પઓગા પાણવહં ભયકરં વહુવિહં વહુષ્પગારં પરદુક્ષુપ્પાયણપસત્તા ઇમેહિ તસથાવરેહિ જીવેહિ પઢિણિવિટ્ઠા કિ તે? પાઠીણ-તિમિ-તિમિગિલ-અણેગણસ-વિવિહજાઈમહુક્ક-દુવિહ-કચ્છભ-ળક્ક-મગરદુવિહ-ગાહ-દિલિ વેઢય-મદુય-સીમાગાર-પુલ્લય-સુંસુમાર વહુષ્પગારા જલયરવિહાણા કણ્ય એવમાઈ ॥સૂ૦૬॥

ટીકા—ત ચ=માણિરથ 'પુન' પુનઃ 'કેદ્' કેડપિ કેચિદેવેત્યાશયઃ 'પાવા' પાપાઃ=પાપપ્રકૃતયઃ 'અસજયા' અસયતાઃ=અસમાહિતેન્દ્રિયા 'અવિરયા' અવિરતા =પાપકર્મનિવૃત્તિરહિતા, 'અણિહુયપરિણામદુષ્પઓગા' અનિશ્રુતપરિણામદુષ્પઓગા =અનિશ્રુતઃ=ઉપશમવર્જિતઃ પરિણામઃ=અવસાયો યેષાં તે અનિશ્રુતપરિણામાઃ, દુષ્ટા પ્રયોગાઃ=ઇન્દ્રિયનોન્દ્રિયવ્યાપારાઃ યેષાં તે દુષ્પ્રયોગાઃ, અનિશ્રુતપરિણામાશ્ચ તે દુષ્પ્રયોગા ઇતિ અનિશ્રુત પરિણામદુષ્પ્રયોગાઃ, 'પરદુક્ષુપ્પાયણપસત્તા' પર-યહ ઉન્તીસવા ભેદ હૈ ૨૯ ઔર ગુણવિરાધના-શ્રતચારિત્રગુણોં કા મજ્ઞ કરના યહ તીસવા ભેદ હૈ ૩૦ ઇસ તરહ યે પ્રાણવધ કે ૩૦ પર્યાયવાચી શબ્દ ગુણનિષ્પન્ન પ્રકટ કિયે ગયે હૈ ॥સૂ૦-૫॥

અથ સૂત્રકાર "જહ ય કઓ" ઇસ તૃતીય દ્વાર કે વિષય મેં કહતે હૈ—'ત ચ પુન' ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(કેદ્ પાવા) કિતનેક પાપપ્રકૃતિવાલે (અસજયા) અસમાહિત ઇન્દ્રિયવાલે, (અવિરયા) અવિરતિસપન્ન, (અણિહુયપરિણામદુષ્પઓગા) ઉપશમ રહિત પરિણામો વાલે, ઔર ઇન્દ્રિય ણ્વ મન કે દુષ્ટવ્યાપાર વાલે (પરદુક્ષુપ્પાયણપસત્તા) પર પ્રાણી કે લિયે દુઃસ્વોત્પાદન મેં પરાયણ

કરવા, તે ઓગણત્રીસમે ભેદ છે અને ગુણવિરાધના-શ્રુતચારિત્ર ગુણોનો ભગ કરવો, તે ત્રીસમે ભેદ છે આ રીતે પ્રાણવધના ૩૦ પર્યાયવાચી શબ્દ તેમના ગુણ સહિત પ્રગટ કરવામા આવ્યા છે ॥ સૂ. ૫ ॥

હવે સૂત્રકાર "જહ ય કઓ" એ તૃતીય દ્વારનું વર્ણન કરે છે—“ત ચ પુન” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“કેદ્ પાવા” કેટલાક પાપપ્રકૃતિવાળા “અસજયા” અસમાહિત ઇન્દ્રિય-વાળા, “અવિરયા” અવિરતિ યુક્ત, “અણિહુયપરિણામદુષ્પઓગા” ઉપશમ રહિત પરિણામોવાળા, અને ઇન્દ્રિય અને મનના દુષ્ટ વ્યાપારવાળા “પરદુક્ષુ પ્પાયણપસત્તા” પર પ્રાણીને મારે દુઃસ્વોત્પાદનમા પરાયણ એવા એવા “ત ચ પુન”

શગકાઃ પ્રસિદ્ધાઃ । ‘પસર’ પ્રગરા’ ઢિસુરા વન્યપશુવિશેષાઃ, ‘ગોળા’ ગાવઃ
 ‘રોહિય’ રોહિતા’=ચતુષ્પદપશુવિશેષા’, ‘હયગયવર’ હયા ગજાઃ સ્વરાશ્ર
 પ્રસિદ્ધા । કરભા’=ઉપ્દ્રા’ ‘ચગ્ગ’ ગડગા’=પન્નશઙ્ગા આટવ્યાશ્રતુષ્પદવિશેષાઃ
 ‘ગેંડા’ ઇતિ લોકે રચાતાઃ ચેષા ગમનકાલે ઉભયોરપિ પાર્શ્વયો પક્ષતુલ્યાનિ
 ચર્માણિ ભ્રમ્યન્તે, ‘વાનર’ વાનરાઃ=પ્રમિદ્ધા’, ગવયાઃ=પ્રત્યક્ષરૂપા ગો સદશા
 ‘રોહ’ ઇતિ પ્રસિદ્ધાઃ । ‘વિગ’ વૃક્ષાઃ=શ્વાપદજન્તુવિશેષા’ ‘મેઢિયા’ ઇતિ પ્રસિદ્ધા’,
 ‘સિયાલ’ શૃંગાગા’ પ્રસિદ્ધા, ‘કોલા’ શૂકરાઃ ‘મજાર’ માર્જારાઃ=પિઢાલા
 ‘કોલપુનહ’ કોલપુનરા’=આટવ્યમહાશૂકરાઃ ‘સિરિક્કલગાવત્ત’ શ્રીકન્દલકા-

અનેક ઓરશૃંગજેસી જાગ્યાને ફટતી છે । અનેક સીંગોંની જો મસ્મ બનતી
 હૈ ઉસે વિશાળ મસ્મ કહતે છે । અનેક દો સુર હોતે છે । ઓર યે જગલ
 મેં હી રહતે છે । (ઉરભ) ઉરભ્ર નામ મેંદે કા હૈ । (સસય) શશક નામ
 ભરગોશ કા હૈ । (પસર) પ્રગર ંક જાનિ કા જાનવર હોતા હૈ, હસકે
 દો સુર છુઆ કરતે છે । યહ જગલ મેં હી રહતા હૈ । (રોહિય) “રોહિત”
 યહ ભી ચાર પેરોંવાલા ંક જાનવર વિશેષ હોતા હૈ । (હય) હય-નામ
 ઘોડે કા હૈ, (ગય) ગય-ગજ નામ હાથી કા હૈ । (સ્વર) સ્વર નામ ગધે કા
 હૈ । (કરભ) કરભ ંક્રકા નામ હૈ । (ચગ) ચગ્ગીકો હિન્દી ભાષા મેં ગેંડા
 કહતે હૈ । હસકે ંક હી સીંગ હોતા હૈ, યહ જગલ મેં હી રહતા હૈ, હસ
 કે પેર ચાર હોતે હૈ, જય યહ ચલતા હૈ તો ઉસ સમય હસકી દોનોં
 તરફ પલોં જેસા ચમઢા લટકને લગતા હૈ । (વાનર) વાનર નામ ષદર
 કા હૈ । (ગવય) ગવય રોહકા નામ હૈ, યહ ગાયકે જેસા હોતા હૈ । ઓર
 હસકા કઠ ગોલ હોતા હૈ । (વિગ) વૃક્ષ યહ હિંસક જતુ હોતા હૈ ઓર
 હસે હિન્દી ભાષામેં મેઢિયા કહતે હૈ । (સિયાલ) “શૃંગાલ” યહ જગલી

અનેક ઉપરાખાઓ ફૂટે છે તેમના શીંગડાઓની જે ભસ્મ બને છે તેને વિપાણ
 ભસ્મ કહે છે તેમને બે ખરી હોય છે, અને તેઓ જ ગલમા જ રહે છે
 “સરભ” ઉરભ્ર નામ ઘેટાનુ છે “સસય” શશક નામ સસલાનુ છે “પસર”
 પ્રગર એક બતનુ બાનવર છે, તેને બે ખરી હોય છે અને તે જ ગલમા રહે છે
 “રોહિય” ‘રોહિત’ પણ એક ચોપશુ પ્રાણી છે “હય” હય એટલે ઘોડા,
 “ગય” ગય એટલે હાથી, “સ્વર” ખર એટલે ગધેડા, “કરમ” કરભ એટલે ઊટ,
 “ચગ” ખગી એટલે ગેડા, તેને એક જ શીંગડુ હોય છે, તે જ ગલમા જ
 રહે છે, તેને ચાર પગ હોય છે ત્યારે તે ચાલે છે ત્યારે તેની બને તરફ
 પાળો જેવી આમડી લટકતી રહે છે “વાનર” વાનર કપીને કહે છે “ગવય”
 ગવય એટલે રોહ, તે ગાયના જેવુ હોય છે અને તેની એક ગોળ હોય છે
 “વિગ” વૃક્ષ એક જ ગલી પ્રાણી છે તેને રીછ કહેવામા આવે છે “સિયાલ”

અથ સ્થલચરેષુ ચતુષ્પદપ્રકારાનાહ—‘કુરગ૦’ ઇત્યાદિ ।

મૂલ્ય—કુરંગ રુરુ સરભ ચમર સવર ડરબ્ધ સસય-પસર-ગોણ
રોહિય-હય-ગય સ્વર-કરમ-સ્વગ્ગ વાનર, ગવય-વિગ-સિયાલ કોલ-
મઝ્જાર-કોલસુણહ-સિરિકદલગાવત્ત-કોકતિય--ગોકળ્લ-મિય-
મહિસ વિયગ્ધ-છગલ-દીવિય-સાળ-તરચ્છ અચ્છમહ્લ-સૂલ-સીહ-
-ચિલ્લ-ચઉપ્પય-વિહાણાકણ ય એવમાઈ ॥સૂ૦૭ ॥

ટીકા—કુરગા = હરિણા; રુરુ = મૃગવિશેષા; સરભા = વન્યપશુવિશેષા. વિશા
લકાયા; અષ્ટાપદાઃ ‘પરાસરે’તિ ટ્યાતાઃ યે મહાગજાનપિ પૃષ્ઠે સ્થાપયન્તિ,
ચમરાઃ = વન્યગાવઃ યેપા કેશાના ચામરાણિ મગ્નન્તિ, સવરાઃ અનેકશાલ્વશૃંગાઃ
દ્વિચુરા આરણ્યપક્ષવઃ ‘સામર’ ઇતિ પ્રસિદ્ધાઃ ‘ડરબ્ધ’ ડરબ્ધા = મેપા; ‘સસય’

ક્રિયા કરતે હૈં, તથા इनके सिवाय और भी जो जलचर जीव होते हैं—
उन्हें भी मार कर ये आनंद मग्न बनते हैं ॥ सू. ६ ॥

અથ સૂત્રકાર સ્થલચર તિર્યચો મે જો ચતુષ્પદોં કે પ્રકાર હૈં ઉન્હેં
इस सूत्र द्वारा प्रकट करते हैं—‘कुरगरुह’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(કુરગ) કુરગ હિરણકો કહતે હૈં. (રુરુ) રુરુ નામ મીં મૃગકા હૈં,
परन्तु यह सामान्य मृगसे विशेष प्रकार का होता है । (सरभ) सरभ
નામ અષ્ટાપદ કા હૈં । यह शरीर में विशाल होता है । परासर भी इस
का दूसरा नाम है । ये महागजों को भी अपनी पीठ पर बैठा लेता है ।
(चमर) चमरी गायों का नाम चमर है । इनके बालों के चामर बनते हैं ।
(सवर) सवर को हिन्दी भाषा में सांभर कहते हैं । इनके सींगों में

હિંસા ઈર્થા કરે છે, અને તે નિવાસના બીજા જે જળચર જીવો હોય છે, તેમની
પણ હાથા કરવામા તેમને મળ આવે છે ॥ સૂ. ૬॥

હવે સૂત્રકાર સ્થળચર તિર્યચોમા જે જાનવરોના પ્રકારો છે તેમને આ
સૂત્ર દ્વારા પ્રગટ કરે છે—“કુરગરુહ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“કુરગ” હરણને કુરગ કહે છે, “રુરુ” રુરુ પણ મૃગનો એક ખાસ પ્રકાર
છે “સરભ” સરભ અષ્ટાપદ નામના પ્રાણીને કહે છે તે શરીરે વિશાળ હોય છે
તેનું બીજું નામ પરાસર પણ છે તે મોટા હાથીઓને પણ ચોત ની પીઠ પર
બેસાડી શેઠે છે “ચમર” ચમરી ગાયોને ચમર કહે છે તેમના વાળમાથી
ચામર બને છે “સવર” સખરને ચાખર કહે છે તેના શીંગડામાથી બીજી

સામ્પ્રતપુર:પરિસર્પપ્રકારાનાહ—‘અયગર’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—અયગર—ગોણસ—વરાહિ—માઝલિ—કાકોદર—દઘમ
પુપ્ફા—આસાલિય—મહોરગા ઊરગ વિહાણા ફણ ય ઇવમાઈ ॥સૂ૦૮॥

ટીકા—અજગર—ગોણસ વરાહિ મુકુલિ—કાકોદર—દર્મપુષ્પ—આશાલિક મહો-
રગોરગવિધાના કૃતાશ્ર ણ્વમાદીન્ । અજગરા:=મસિદ્દા:, ગોણસ:=ફણરહિત-
દ્વિમુલસર્પવિશેષા: ‘વરાહય.’ દષ્ટિવિપમર્ષા: યેષા દૃષ્ટ્યા ત્રિપાવેશો ભવતિ । મુકુ-
લ્લિન:=ઈપત્તફળકારકા:, કાકોદરા =મામાન્યસર્પા:, દર્મપુષ્પા:=સામાન્યફળ-

નામ હૈ । (સદ્દલ) શાર્દૂલ, (સીહ) સિંહ ણ્વ (ચિહ્નલ) ચિત્રક યે સય
માસમક્ષી જગલી જાનચર હૈં ઔર સ્થલચર હૈં ॥ સૂ ૭ ॥

અય સૂત્રકાર ઊર:પરિસર્પકે મેઢોં કો પ્રકટ કરતે હૈં—‘અયગર
ગોણસ’ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(અયગર) અજગર યહ યહુત અધિક મોટા સર્પ હોતા હૈ, ધીરે
સરકતા હૈ, જિસ પ્રકાર સામાન્ય સર્પ આહટ પાતે હી યહુત શીઘ્ર ભગ
જાતા હૈં વૈસે યહ નહીં ભગ સકતા હૈ । (ગોણસ) ગોણસ યહ બી એક
પ્રકાર કા સર્પ હી હોતા હૈ, પરન્તુ ઇસકે ફળા નહીં હોતી હૈ, વ્યવહાર
મેં લોગ એસા કહતે હૈં કિ ઇસકે દો મુખ હોતે હૈં, ઇસકા દૂસરા નામ
દુમુહી બી હોતા હૈ । (વરાહી) વરાહિ—યહ વહ સર્પ હૈં કિ જિસકી દૃષ્ટિ
મેં વિપ રહતા હૈ, જિસે યહ દેખ લેતા હૈં ડસકે વિપ કા આવેશ હો
જાતા હૈ, ઇસકા દૂસરા નામ દૃષ્ટિવિપ સર્પ બી હૈ । (માઝલિ) મુકુલી-
યહ વહ સર્પ હૈં જો અપને ફળ કો થોડા હી વિસ્તારતા હૈં, જ્યાદા નહી,

મહ” તરફ, અર્થ લક્ષ, તે રીછોના જ નામ છે “સદ્દલ” શાર્દૂલ, “સીહ” સિંહ
અને “ચિહ્નલ” ચિત્રક એ સઘળા મામલક્ષી જનનવરો છે, અને સ્થળચર છે ॥સૂ ૭॥

હવે સૂત્રકાર “અય:પરિસર્પ” પેટે ચાલનારા સર્પોના લેહ બતાવે છે—
“અયગર—ગોણસ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“અયગર” અજગર—તે ખહુજ વધારે મોટો સાપ છે, તે ધીમે
ધીમે સરકે છે જે રીતે મામાન્ય સાપો મહેજ પશુ આવાજ થતા તરતજ
લાગી જાય છે તેમ તેઓ લાગી શકતા નથી “ગોણસ” ગોણુસ—તે પશુ એક
પ્રકારનો સાપ જ હોય છે, પણ તેને દેખ હોતી નથી વ્યવહારમા લોકો એવું
કહે છે કે તેને બે મુખ હોય છે, તેનું બીજું નામ ‘દુમુહી’ પણ છે “વરાહિ”
વરાહિ—તે એવો સર્પ છે કે જેની દૃષ્ટિમા જ વિપ રહે છે, જેને તે જુવે છે
તેને તેનું ઝેર ચહે છે, તેનું બીજું નામ દૃષ્ટિવિપ સર્પ પણ છે “માઝલી” મુકુલી
તે એવી જાતનો સર્પ છે કે જે પોતાની ફેણને થોડા પ્રમાણમા જ ફેલાવે છે,

વર્ત્તા: = શ્રીકન્દલકા: આવર્તશ્ચ ઉભે સજાતીયા પરસ્પરજીવનિશેષા:; 'કોકતિય' કોકતિકા: = લોમટકા: 'લોમટી' ઇતિ ભાષાયામ્, 'ગોકર્ણ' ગોકર્ણા: = દ્વિચુર ચતુષ્પદજન્તુવિશેષા:; 'મિય' મૃગા:; 'મહિસ' મહિષા, 'વિયગ્ધ' વ્યાગ્રા:; 'છગલ' અજા 'દીવિય' દ્વીપિકા: 'દીપટા' ઇતિ ભાષાયામ્, 'સાળ' શ્વાન = આટવ્યા. કુવકુરા: 'તરચ્છ' તરક્ષા:; અચ્છમલ્લા: = મલ્લકુજાતિવિશેષા: 'સદૂલ શાર્દૂલા: = 'સીહ' સિંહા:; 'ચિલ્લા' ચિત્રકા: = શ્વાપદજન્તુવિશેષા: । એવાં દ્વન્દ્વ સમાસ: । 'ચતુષ્પદવિદાનારૂપ ય એવાઈ' ચતુષ્પદવિદાના: કૃતા: તાંશ્ચ એવા-દીન = ચતુષ્પદવિશેષાન્ કુરદ્વાદીન્ ન્નન્તીતિ પરેણ યોજના ॥૫૦૭॥

જાનવર હૈ—જો રાત કો “ હુઆ હુઆ ” ઘોલા કરતા હૈ । (કોલ) કોલ-શૂકર એવ (મજ્જાર) માર્જાર યે હિંસક જાનવર હૈ । (કોલસુળહ) “ કોલ શૂકર ” યે શૂકર કે હી ભેદ હૈ ઓર સામાન્ય શૂકર કી અપેક્ષા શરીર મેં વિશાલ હોતા હૈ । (સિરિકદલગાવત્) શ્રીકન્દલક ઓર આવર્ત યે બી જાનવર હૈ ઓર इनके एक खुर होता हॆ । इन दोनों की जाति समान होती है । (કોકતિય) કોકતિકા નામ લોમટી કા હૈ, યહી ઘટ્ટી ચાલાક હોતી હૈ । (ગોકર્ણ) ગોકર્ણ એક પ્રકાર કા જાનવર હોતા હૈ, હસકે દો ચુર હોતે હૈ, ઓર પૈર ચાર હોતે હૈ । (મિય) મૃગ, (મહિસ) મહિષ, (વિયગ્ધ) વ્યાગ્ર યહ હિંસક જીવ હૈ ઓર સિંહ જૈસા હી હોતા હૈ । (છગલ) ઘકરા ઘકરી કા નામ અજ હૈ । (દીવિય) દ્વીપિકા યહ બી માંસ ભક્ષી શિકારી જાનવર હૈ, હસે તેંદુઆ કહતે હૈ । (સાળ) જગલી જો કુત્તે હૈ જિન્હેં શુની-કુત્તા કહા જાતા હૈ યે યહા “ સાળ ” શબ્દ સે ગૃહીત હુય હૈ । (તરચ્છ) તરક્ષ, (અચ્છમલ્લ) અચ્છમલ્લ, યહ રીછોં કા હી

‘ શૃગાલ ’ એક જ ગલી પ્રાણી છે, જે રાત્રે “ હુઆ હુઆ ” બોલે છે તેને શુનરાત્રીમા શિયાળ કહે છે “ કોલસુળહ ” કોલ-શૂકર અને “ મજ્જાર ” માનર્જ હિંસક જાનવરો છે “ કોલ શૂકર ” તે શૂકરનો જ ભેદ છે, અને તે સામાન્ય શૂકર કરતા શરીરે મોટું હોય છે, “ સિરિકદલગાવત્ ” શ્રીકન્દલક અને આવર્ત એ પણ જાનવરો છે અને તેમને એક ખરી હોય છે તે બંને સમાન જાતિના છે “ કોકતિય ” લોકડીને કોકતિક કહે છે, તે ઘણી ચાલાક હોય છે “ ગોકર્ણ ” ગોકર્ણ એક પ્રકારનું પશુ છે “ મિય ” મૃગ “ મહિસ ” મહિષ અને “ વિયગ્ધ, ” વ્યાગ્ર હિંસક પ્રાણીઓ છે અને તે સિંહ જેવા જ હોય છે “ છગલ ” ઘકરા ઘકરીને અજ કહે છે “ દીવિય ” દ્વીપિકા માંસાહારી શિકારી પશુ છે તેને તેંદુઆ કહે છે તે ચિત્તા જેવું હોય છે જ ગલી કૃતરાઓને શુની-કુત્તા કહે છે, “ સાળ ” શબ્દથી અહીં તે જ ગલી કૃતરાઓ સમજવાના છે “ તરચ્છ અચ્છ

પ્રમાણગરીરા મનુપક્ષેત્રાદિર્માત્રિનરઃપરિમર્પવિશેષા, एषां द्वन्द्वः । उरगविधानाः=उरगप्रकारा कृताः । तान् च एवमादीन् 'घ्नन्ति' इत्यनेन सम्बन्धः ॥सू० ८॥
અથ ભુજપરિસર્પમેદાનાહ—'ઝીરલ૦' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—છીરલ—સરવ—સેહ—સેહગ—ગોધા—ઉંદુર—ળઝલ—
સરહ—જાહક—મંગુસ—ઝાહહિલા—ચાઝપ્પહય—ઘરોલિયા—સરી-
સિવ ગળે ય એવમાઈ ॥ સૂ૦ ૯ ॥

ટીકા—ક્ષીરલાઃ, શરમ્ભાઃ, 'સેદા.' તીક્ષ્ણકણ્ઠકાકુલ્કાયા, શૈલ્યકાઃ, एते सर्वे भुजपरिसर्पविशेषाः । गोधाः=मसिद्धाः, उन्दुरा =मृपकाः, नकुलाः मसिद्धाः
હૈ । (મહોરગા) મહોરગ એ વે સર્પ હૈં કિ જિનકા શરીર ઇક હજાર યોજન
કા હોતા હૈ, તથા એ મનુપ્ય ક્ષેત્ર સે ત્રાહિરી ક્ષેત્રોં મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈ ।
(ડરગવિહાણાકણ્ય) એ સવ ભેદ ડર.પરિસર્પોં કૈ હૈ પાપી જીવ ઇન્હે
મારતે હૈ ॥ સૂ. ૮ ॥

અથ ભુજપરિસર્પ કૈ ભેદોં કો સૂત્રકાર પ્રકટ કરતે હૈ—'છીરલ-
સરવ' ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(ઝીરલ—સરવ—સેહ ગોધા—ઉંદુર—ળઝલ સરહ—જાહક મંગુસ ઝાહ-
હિલા—ચાઝપ્પહય—ઘરોલિયા—સરીમિવ ગળે ય'એવમાઈ) ક્ષીરલ, શરમ્ભ
સેહ એ વે જીવ હૈ કિ જિનકા શરીર ક,ટોં સે યુક્ત રહતા હૈ । સેહ કો
હિન્દી ભાષા મે " સેહી " કહતે હૈ, ઇસ્કા આકાર શૃગાલ જૈસા હોતા
હૈ, ઇસ્કે શરીર પર તીલે નુકીલે કાલે ઓર સફેદ રંગ વાલે કાટે હોતે
હૈ । એ ભેદ ભુજપરિસર્પોં કૈ હૈ । ગોધા—ગુહેરેકી માકો કહતે હૈ ઘટભિત્તિ
પર ઇતની મજબૂતી કૈ સાથ ચિપક જાતી હૈ કિ ઇસે પકડ કર ચોર

મહોરગ, તે એવા સર્પ હોય છે કે જેમનું શરીર એક હજાર યોજનનું હોય
છે, તથા તે મનુપ્ય ક્ષેત્રથી બહારના ક્ષેત્રોમાં ઉત્પન્ન થાય છે "ઉરગવિહાણાકણ્ય"
આ ગોધા ઉર પર્ણિર્પોના લેદ છે પાપી એવો તેમની હત્યા કરે છે ॥સૂ. ૮॥

હવે ભુજપરિસર્પના લેદોને સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે—“છીરલસરવ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“છીરલ, સરવ, સેહ, સેહગ ગોધા ઉંદુર, ળઝલ, સરહ, જાહક, મંગુસ,
ઝાહહિલા, ચાઝપ્પહય, ઘરોલિયા, સરીમિવ, ગળે ય એવમાઈ” ક્ષીરલ, શરમ્ભ,
સેહ, તે એવા જાટા થી યુક્ત શરીરવાળા હોય છે સેહને શૂજશતી ભાષામાં
સાહુડી કહે છે તેના દેખાવ શિયાળ જેવો હોય છે, તેના ગળે પર તીક્ષ્ણ,
અણીદાર, ઝાળા અને સફેદ રંગના જાટા હોય છે તે ભુજપરિસર્પોના લેદ છે
" ગોધા " પાટલા થોને કહે છે તે દિવાલ પર એટલી સજ્જડ ચોટી બંધ છે,

ધારિણઃ । આશાલિકાઃ, ઊરઃપરિસર્પવિશેષા । એતે ચ ચક્રવર્તિયાસુદેવલદેવા
 દીનાં સ્કન્ધાવારમધ્યે ગ્રામનગરાદિપુ યા एतेषા વિનાશકાલે સામુદાનિક
 કર્મોદયાત્-અસજ્જિનો મિથ્યાદૃષ્ટયઃ સમૂર્ઞિમપબ્ધેન્દ્રિયા અન્તર્મુહૂર્તાયુષ્કાઃ જઘ-
 ન્યેનાઽઙ્ગુલસ્યાસરયેયભાગપરિમિતયાઽવગાહનયા, ઉત્કર્ષેણ દ્વાદશયોજનપરિમિતયા
 ઽવગાહનયા વિષ્કમ્ભવાહલ્યેન તથાનુરૂપા ભૂમિમિદાર્યં સમુત્પન્નન્તે । અન્તર્મુહૂર્તા-
 નન્તર તન્મરણે-સ્કન્ધાચારાદીના સહસ્રા વિનાશો ભવતિ । ‘મહોરગા’ યોજનસહસ્ર-

કયો કિ ફળ કો અધિક વિસ્તાર કરને કી इसमें शक्ति नहीं होती है ।
 (काकोदर) काकोदर सामान्य सर्पका नाम है । इसी तरह (दन्धपुष्प) दर्भपुष्प
 भी वह सर्प होता है जो सामान्य रूपसे फणा से युक्त होता है, परन्तु
 यह अपने फणा को तानता नहीं है, चीन बजाने पर भी यह प्रकृतिस्थ
 बना रहता है । (आसालिय) आशालिक भी सर्पों की एक विशेष जाती
 है । ये चक्रवर्ती, वासुदेव, बलदेव, आदिकों के सैन्य के निवासस्थानमें
 अथवा ग्राम नगर आदिकों में भूमि के नीचे उत्पन्न होते हैं, इनके विना-
 शकालमें सामुदानिक कर्मका उदय होता है, स्कन्धावार-छावनों तथा ग्राम
 नगरादि जमीन में उतर जाते हैं प्रायः मर जाते हैं ये असजी मिथ्या
 दृष्टि होते हैं, इनका जन्म समूर्च्छिम होता है, इनके पांचो इन्द्रिया होती
 हैं । इनकी आयु अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होती है इनके शरीर की अवगाहना
 जघन्य से अंगुल के असख्यातवें भाग प्रमाण होती है तथा उत्कृष्ट से
 द्वादश योजनप्रमाण होती है, अन्तर्मुहूर्त के बाद इनका मरण हो जाता

કારણકે વધારે પ્રમાણમાં દેવાવવાની શક્તિ તેનામાં હોતી નથી “કાકોદર” કાકોદર
 સામાન્ય સર્પનું નામ છે એજ પ્રમાણે “દન્ધપુષ્પ” દર્ભપુષ્પ પણ એક એવા
 પ્રકારનો સર્પ છે કે જે સામાન્ય રીતે ક્ષણથી યુક્ત હોય છે, પણ તે પોતાની
 ક્ષણને ફેલાવતો નથી, મોરલી બબલવામાં આવે તો પણ તે ક્ષણને વિસ્તાર્યા
 વિના મૂળ સ્થિતિમાં જ રહે છે “આસાલિય” આશાલિક, પણ સર્પોની એક
 ખાસ જાતિ છે તે ચક્રવર્તી, વાસુદેવ, બલદેવ આદિના સૈન્યના નિવાસસ્થાનમાં
 અથવા ગામ નગર આદિમાં ભૂમિની નીચે ઉત્પન્ન થાય છે, તેમના વિનાશ કાળે
 સામુદાયિક કર્મનો ઉદય થાય છે સ્કન્ધાવાર-છાવણી તથા ગામ નગર આદિ
 જમીનમાં ઉતરી જાય છે સામાન્ય રીતે મરી જાય છે તેઓ અસજી મિથ્યા-
 દૃષ્ટિ હોય છે તેમનો જન્મ સમૂર્ચ્છિમ થાય છે, તેમને પાંચે ઇન્દ્રિયો હોય
 છે તેમનું આયુષ્ય અન્તર્મુહૂર્ત પ્રમાણ છે, તેમના શરીરની અવગાહના જઘન્યથી
 અંગુલના અસખ્યાતમાં ભાગ પ્રમાણ હોય છે, તથા ઉત્કૃષ્ટે ખાર ચોજન
 પ્રમાણ હોય છે અન્તર્મુહૂર્ત પછી તેમનું મરણ થઈ જાય છે “મહોરગા”

कोस-कुच-दगनुड-ढेणियालग-सूईमुह-कविल-पिगलक्खग-
कारंड-वक्कवाग-उक्कोस-गरुल-पिंगल-सुय-वरहिण-मयण-
साल-नदीमुह-नंदमाणग-कोरंग-भिगारग-कोणालग-जीवं
जीवक-तित्तिर-वट्टग-लावग-कपिजलग-कवोतग-पारेवग-चडग
ढिक-कुक्कुड-मेसर-मऊर-चओरग-हयपोंडरीय-करक-चीरह
-सेण-वायसविहाण-सियचास-वग्गुलि-चम्मट्टिल-विततपक्खि
समुग्गपक्खि-खहयर विहाणाकए य एवमाई जल थल खचा-
रिणो य पच्चिदिए पसुगणे वियति य चउरिदिए य विविहे
जीवे पिय जीविए मरणदुक्खपडिकूले वराए हणंति बहुसकि-
लिह कम्मा ॥ सू० १० ॥

टीका—कादम्बाः=कलहसाः, कक्काः=पक्षिविशेषा वलाकाः='वगला' इति
भाषा प्रसिद्धाः, सारसाः=प्रसिद्धाः 'आडा' जलचर पक्षिविशेषाः 'आडा' इति
भाषायाम् । 'सेडी' सेटी, कुल्लाः, वज्जुलाः, 'पारिप्पव' पारिप्पवाः=पक्षि-
विशेषाः कीराः=शुक्राः, 'सउण' शकुना 'शकुनपक्षिविशेषाः, 'दीविया' दीपिका

अब खेचर जो तिर्यच हैं उनके भेदों को सूत्रकार स्पष्ट करते हैं—
'कादय कक वलाका' इत्यादि० ।

टीकार्थ—(कादय) कादम्ब-कलहस (कक) कक-पक्षिविशेष
(वलाका) वलाका-वज्जुला (सारस) सारस-इसी नामका प्रसिद्ध पक्षी
है (आडा) आडा-जल में तैरने वाला पक्षी जिसे भाषामें 'आडा' कहते
हैं (सेडी) सेटी (कुलल) कुलल (वज्जुल) वज्जुल (पारिप्पव) पारि-
प्पव पक्षिविशेष (कीर) कीर-तोता (सउण) शकुन-पक्षिविशेष,

इवे ने जेयर-नलयर तिर्यंथे छे तेभना बेहोने सूत्रकार अगत करे छे-
"कादय, ककवलाका" इत्यादि

टीकार्थ—“कादय” कादम्ब-कलहस “कक” कक-ऐक जलतनु पक्षी,
“वलाका” वलाका-वज्जुल “सारस” सारस-ऐ नामनु प्रसिद्ध पक्षी “आडा”
आडा-जलमा तरनाइ ऐक पक्षी जेने संस्कृतमा “आडा” कह्ये छे “सेडी”
सेटी “कुलल” कुलल “वज्जुल” वज्जुल “पारिप्पव” पारिप्पव ऐ पक्षीआनी
भास जतो छे “कीर” कीर-चोपट “सउण” शकुन-पक्षीनी ऐक जल “दीविय”

શરટા=કૃકલાશા, જાહકા=રુષ્ટકન્યાપ્તાઙ્ગાઃ, મણસા=ભુજપરિસર્પવિશેષાઃ,
 खाडहिलाः=श्वेतकृष्णरेखाऽङ्कितवेहाः भुजपरिस्पर्शविशेषाः । चातुष्पदिकाः=चतुष्-
 रणा भुजपरिस्पर्शविशेषा । ‘घरोलिया’ गृहगोधिकाः ‘छिपकली-घरोली’ इति
 प्रसिद्धाः । एतेषा द्वन्द्वः । एवमादीन् सरीसृपगणान् ‘घ्नन्ती’ति सम्यन्धः ॥सू० ९॥

अथ खेचरभेदानाह—‘कादव’ इत्यादि ।

मूलम्—कादव—कक—बलाका—सारस आडा—सेडी—कुलल-
 वजुल—पारिप्व—कीर—सउण—दीविय—हंस—धत्तरट्ट—भास—कुली-

રાશ્ત્રિ મે ચોરી કરને કો ડપર ડુમજિલે આદિ મકાન પર ચઢ જાતે હૈં યહ
 કમન્દ કી તરહ ભિસ્તી પર લટક જાતી હૈં । ઉન્દુર નામ મૂપક કા હૈં ।
 નકુલ નૌલા કો કહતે હૈં । શરટ નામ કૃકલાશ કા હૈં, યહ ગલે મેં
 લાલ હોતા હૈં ઓર વૈઠા હુઆ અપના મસ્તક હિલાયા કરતા હૈં, છિપ-
 કલી જૈસા હિસ્કા આકાર હોતા હૈં, મારવાડ આદિ રાજસ્થાન મેં “કર
 મેટયા” કહતે હૈં । જાહક વે ભુજપરિસર્પવિશેષ હૈં કિં જિનકે શરીર પર
 કાટે રહતે હૈં । મણસ મો હિસ્કા પ્રકાર કે ભુજપરિસર્પ વિશેષ હૈં । ઝાડ-
 હિલ કો હિન્દી મેં ગિલહરી કહતે હૈં, હિસ્કે શરીર પર જો રોમરાજી
 હોતી હૈં વહ સફેદ ઓર કાલી રેખા સે યુક્ત હોતી હૈં, યહ ઘૂર્ષો પર
 રહતી હૈં । ચાતુષ્પદિક ચાર પૈરોં વાલા ભુજપરિસર્પ વિશેષ હોતા હૈં ।
 ઘરોલિયા કો હિન્દી મેં છિપકલી કહતે હૈં, યહ મકાનોં કે ખીતર ખીત
 પર છત પર ચિપકી રહતી હૈં । નિર્દયી હિંસક જીવ હિન્દી તથા હિન્દી
 ભિન્ન જો ઓર મો ભુજપરિસર્પ વિશેષ હૈં હિન્દી મારતે હૈં ॥સૂ ૯ ॥

કે તેને પકડીને રાત્રે ચોર ચોરી કરવાને માટે જે ગ્રથ માળના મકાનપર ચડી
 બધ છે, તે કબન્ધની જેમ ભીંતપર લટકી બધ છે “ઉદુર” એટલે ઉદર “ગવ્ઠ”
 એટલે નાળીયો, “સરહ” એટલે ગચ્છિડો તેનું ગળું લાલ હોય છે અને તે બેઠો
 બેઠો પોતાનું શિર હલાવ્યા કરે છે, ગરોળી જેવો તેનો આકાર હોય છે માર-
 વાડ આદિ રાજસ્થાનમાં તેને “કરમેટયા” કહે છે, બહક, એ એક બાતના
 ભુજપરિસર્પનો લેહ છે તેમના શરીર પર કાટા હોય છે મણસ પણ એજ પ્રકારે
 ભુજપરિસર્પ છે, “ઝાડહિલ” એટલે ખિસકોલી તેના શરીરપર જે રૂવાટી હોય
 છે તે સફેદ અને કાળી રેખાથી યુક્ત હોય છે, તે વૃક્ષો પર રહે છે તે ચાતુ-
 ષ્પદિક, ચાર પગ વાળું ભુજપરિસર્પ વિશેષ છે ‘ઘરોલિયા’ તેમને ગૂજ-
 રાત્રીમાં ગરોળી કહે છે તે મકાનોની અદર ભીંત તથા છત પર ચોટી રહે
 છે નિર્દય હિંસક લોકો તેમની તથા તેમના સિવાયના ખીબા પણ જે ભુજપ
 રિસર્પ વિશેષ છે તેમની હત્યા કરે છે ॥ સૂ-૯ ॥

‘भिगोडी’ इति प्रसिद्धाः, ‘कोणालग’ कोणालकाः=जलचरपक्षिविशेषा, जीवजीवकाः=चातकाः, तित्तिरा.=‘तीतर’ इति लोके प्रसिद्धा, ‘वट्टग’ वर्तकाः=पक्षिविशेषाः ‘वटेर’ इति भाषायाम् । ‘लावग’ लावकाः=प्रसिद्धाः, ‘कर्पिजलग’ कर्पिजलकाः=तन्नामरूपक्षिणः ‘कपोतग’ कपोतकाः=‘कनूतर’ इति प्रसिद्धाः, ‘पारेवग’ पारावतकाः=तज्जातीया एव ‘चडग’ चटकाः=‘चिडी’ इति प्रसिद्धाः, ‘ढिंक’ ढिङ्काः=ढिङ्गपक्षिणः, ‘कुम्कुड’ कुम्कुटाः=प्रसिद्धाः, मेसरा=पक्षिविशेषाः, ‘मऊर’ मयूराः=प्रसिद्धाः, ‘चओरग’ चओरकाः=प्रसिद्धा एव ‘हय-पोंडरीय’ हृदपुण्डरीकाः=जलचरपक्षिविशेषा, ‘करग’ करकाः ‘चीरछ’ चीरछाश्च पक्षिविशेषाः ‘चील’ इति प्रसिद्धाः ‘सेण’ श्येनाः ‘वाज’ इति भाषाया ‘वायसवि-हाण’ वायसविमानाः कारूपक्षिभेदाः, ‘सियाचास’ सितचापाः=श्वेतचापपक्षिणः, ‘वग्गुलि’ वलगुल्य –‘वागठ’ इति प्रसिद्धा, ‘चम्मट्टिल’ चर्मास्थिलाः चर्मचटका इति भाषाया, ‘विततपक्खि’ विततपक्षिणः ‘समुग्गपक्खि’ समुद्रपक्षिणः, एते

पक्षी (भिगारग) भृङ्गारक-भिगोडी (कोणालग) कोणालक-जलचर पक्षि-विशेष (जीवजीवक) जीवजीवक-चातक (तित्तिर) तित्तिर-तीतर (वट्टग) वर्तक-वटेर (लावग) लावक-लावा (कर्पिजलग) कर्पिजलक इस नाम का पक्षी (कपोतग) कपोतक-कनूतर (पारेवग) पारावतक कनूतर के जातिविशेष (चडग) चटक-चिड़िया (ढिंक) ढिंकपक्षी (कुम्कुड) कुम्कुट-मुर्गा (मेसर) मेसर (मऊर) मयूर और (चओरग) चओर ये सब पक्षिविशेष हैं (हयपोंडरीय) हृदपुण्डरीक-जलपक्षि-विशेष (करक) करक-पक्षिविशेष (चीरछ) चीरछ-चील, (सेण) श्येन वाज (वायसविहाण) वायसविधान-कौवा पक्षी के भेद (सियाचास) श्वेतचाप पक्षी (वग्गुलि) वलगुली-वागल (चम्मट्टिल) चर्मास्थिल-चम-गादड (विततपक्खि) विततपक्षी (समुग्गपक्खि) समुद्रपक्षी, खरहर-

भिगोडी “कोणालग” कोणालक ओके जातनु जलचर पक्षी “जीवजीवक” जीव-जीवक-चातक “तित्तिर” तित्तिर-तेतरपक्षी “वट्टग” वर्तक-वटेर “लावग” लावक-लावा “कर्पिजलग” कर्पिजलक-ओ नामनु पक्षी “कपोतग” कपोतक-कनूतर “पारेवग” पारावतक-पारेव कनूतरनी जातनु पक्षी “चडग” चटक-चिड़िया “ढिंक” ढिङ्क पक्षी “कुम्कुड” कुम्कुट-कुङ्को “मेसर” मेसर “मऊर” मयूर अने “चओरग” चओर ओ जाधा गुदी गुदी जातना पक्षीओ छे “हय पोंडरीय” हृदपुण्डरीक-ते नामनु जलचर पक्षी “करक” करक-पक्षिविशेष “चीरछ” चीरछ-समडी “सेण” श्येन-जाज “वायसविहाण” वायस विधान जागडानी ओके जात “सियाचास” श्वेतचाप पक्षी “वग्गुलि” वलगुली-वागल “चम्मट्टिल” चर्मास्थिल-चमगादड “विततपक्खि” विततपक्षी “समुग्गपक्खि” समुद्रपक्षी

=કૃષ્ણચટકાઃ, હસાઃ=નીરક્ષીરવિવેચકા પક્ષિણઃ 'ધત્તરદ્ધ' ધાર્તરાષ્ટ્રઃ=શ્યા
 મચરણચન્નુ હંસાઃ, 'ભાસ' ભાસાઃ 'કુલીકોસ' કુલીકોશ=પક્ષિવિશેષા 'કુચ'
 ક્રૌંચાઃ=ક્રૌંચપક્ષિણઃ યે શરદિ ઋતૌ માઘન્તિ મધુર ધ્વનિં ચ કરુન્તિ, 'દગતુડ'
 દઋતુણ્ડાઃ, 'દેણિયાલગ' દેણિકાલકાઃ, 'સૂર્દમુહ' સૂચીમુખા 'રુવિલ' રુપિલા=
 પક્ષિવિશેષાઃ, 'વિંગલક્ષગ' વિંગલાક્ષાઃ=વિંગલે અદિષ્ણી યેપા તે વિંગલાક્ષાઃ=
 પીતલોચનપક્ષિણઃ 'કારદ' કારણડકાઃ=વતકુલ્લુકાંકુલેષુ લોકે પ્રસિદ્ધાઃ, 'ચક્ષ્માગ'
 ચક્રવાકાઃ=પ્રસિદ્ધાઃ, 'ઉક્કોસ' ઉક્કોશાઃ=કુરરાઃ કુરજ પક્ષિવિશેષાઃ, 'ગરુલ'
 ગરુડાઃ=પ્રસિદ્ધાઃ 'વિંગલ' વિંગલાઃ=રક્તશુકા 'સુય' શુકાઃ=રક્તમુખશુકાઃ,
 'વરહિણ' વર્હિણઃ=પિન્ડધારિમયૂરાઃ 'મયણસાલ' મદનશલાકાઃ='મેના'
 નંદીમુહ, 'નંદીમુહ' નંદીમુખાઃ, 'નદમાણગ' નન્દમાનકાશ્વ
 પક્ષિવિશેષા, 'કોરગ' કોરકાઃ=તન્નામકાઃ પક્ષિણઃ 'મિગારગ' મૃગારિકાઃ

(દીવિય) દીપિકા-કાલીચિદ્ધિયા (હસ) હસ-નીરક્ષીર કો જુદા કરને
 ચાલા પક્ષી (ધત્તરદ્ધ) ધાર્તરાષ્ટ્ર-જનકે ચરણ ઓર ચોંચ દોનોં કાઠે
 હોતે હૈં એસે હસ (ભાસ) ભાસ ઓર (કુલી-કોસ) કુલીકોશ પક્ષિ-
 વિશેષ હૈં (કુચ) ક્રૌંચપક્ષી-જો શરદ ઋતુ મેં મદોન્મત્ત હોતે હૈં એવ
 મધુર ધ્વનિ કિયા કરતે હૈં (દગતુડ) દગતુડ (દેણિયાલગ) દેણિકાલક
 (સૂર્દમુહ) સૂચીમુખ (રુવિલ) રુપિલ, યે બી પક્ષિ વિશેષ હૈં । (વિંગલ
 લક્ષગ) વિંગલાક્ષ-પીલેનેત્રવાલા એક જાન કા પક્ષી (કારદ) કારણડક-
 વતક (ચક્ષ્માગ) ચક્રવાક-ચકવા (ઉક્કોસ) ઉક્કોશ-કુરર, (ગરુલ)
 ગરુડ (વિંગલસૂય) વિંગલનોતે, (સૂય) શુક-લાલચાંચ વાઠે તોતે (વર-
 હિણ) વર્હિ-પિંડોવાળે મયૂર (મયણસાલ) મદનશાલ-મૈના (નદીમુહ)
 નદીમુખ (નદમાણગ) નન્દમાનક, ઓર (કોરગ) કોરક इन नाम के

દીપિકા-દેવચકલી "હસ" હસ-નીરક્ષીરને જુદા કરનાર પક્ષી "ધત્તરદ્ધ" ધાર્ત
 રાષ્ટ્ર-એમના ચરણ અને ચાચ કાળા હોય છે તેવા હસ "ભાસ" ભાસ અને
 "કુલીકોસ" કુલીકોશ-પક્ષીની ખાસ બાતો "કુચ" ક્રૌંચપક્ષી-એ શરદઋતુમાં
 મદોન્મત્ત થાય છે અને મધુર ધ્વનિ કર્યા કરે છે "દગતુડ" દગતુડ, "દેણિયાલગ"
 દેણિકાલક "સૂર્દમુહ" સૂચીમુખ "રુવિલ" રુપિલ એ પક્ષીની ખાસ બાતો છે
 "વિંગલક્ષગ" વિંગલાક્ષ-પીળા નેત્રવાળુ એક બાતનુ પક્ષી "કારદ" કારણડ-
 વતક "ચક્ષ્માગ" ચક્રવાક-ચકવા "ઉક્કોસ" ઉક્કોશ-કુરર "ગરુલ" ગરુડ "વિંગલ"
 વિંગલ-લાલ પોપટ "સૂય" શુક-લાલ ચાચવાળા પોપટ "વરહિણ" વર્હિ-
 પિંડા વાળો ઓર "મયણસાલ" મદનશાલ-મૈના "નદીમુહ" નદીમુખ "નદ
 માણગ" નન્દમાનક અને "કોરગ" કોરક નામના પક્ષીઓ "મિગારગ" મૃગારિક-

ટીકા—‘इमेहि’ एभिः वक्ष्यमाणैः ‘विविहेहि’ विविधैः=नानाप्रकारैः ‘कारणेहि’ कारणैः=वक्ष्यमाणप्रयोजनैः प्रमान् प्राणान् न्नन्ति अनुधा जनाः इत्यग्रेण सम्बन्धः । ‘किं ते’ कानि तानि प्रयोजनानि ? इत्याह—‘चम्मे’ त्यादि । ‘चम्म’ चर्म=शरीरत्वचा, तदर्थं यथा ‘चर्मणि द्वीपिन इन्ति’ इत्यादि । ‘वसा’ वसा=शरीरस्थधातुशेषः, ‘चर्वी’ इति भाषा, ‘मम’ मास, मेदो=देहस्थ चतुर्थधातु-

इस प्रकार प्राणिवध के प्रकारों को कहकर अब सूत्रकार उसके प्रयोजन के प्रकारों को कहते हैं—इमेहि विविहेहि’ इत्यादि ।

टीकार्थ—जो अशुध-अज्ञानी मनुष्य है वे (इमेहि) इन वक्ष्यमाण (विविहेहि) नानाप्रकार के (कारणेहि) प्रयोजनों के वञ्चवर्ती होकर (हिसति तसे पाणे) घस जीवों की घात करते हैं । इस प्रकार का सवध १३वें सूत्र में कथित “अनुदा इह हिंसति तसे पाणे” उन पदों को लेकर यहाँ लगा लेना चाहिये । (किं ते) जिन प्रयोजनों को लेकर अज्ञानी-प्राणी घस जीवों की हिंसा करते हैं वे प्रयोजन क्या २ हैं—इसी विषय को सूत्रकार “चम्म-वसा-मस-मेय” इत्यादि पदों द्वारा स्पष्ट करते हैं, वे कहते हैं कि (चम्म-वसा-मस-मेय-सोणिय-जग-फिप्फिस-मत्थुलिंग-हिय-अंत-पित्त-फोफस-दतद्वा) अशुधजन जो इन प्राणियों की घात करते हैं उसमें कितनेक प्राणियों का उनकी (चम्म) त्वचा प्राप्त करने का प्रयोजन रहता है इसलिये वे उनका घात करते हैं, कितनेक प्राणियों का उनकी (वसा) चर्बी प्राप्त करने का उद्देश्य होता है, कितनेक

આ પ્રમાણે પ્રાણીવધના પ્રકારો વિષે વાત કરીને હવે સૂત્રકાર તેના કયા કયા હેતુઓ હોય છે તે બતાવે છે—“इमेहि विविहेहि” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—જે અશુધ-અજ્ઞાની મનુષ્યો છે તેઓ “इमेहि” આ પ્રમાણે “विविहेहि” વિવિધ પ્રકારના “कारणेहि” પ્રયોજનને વશ થઈને “हिंसति तसे पाणे” ઘસ જીવોનો ઘાત કરે છે આ પ્રકારનો મળધ ૧૩ માં સૂત્રમાં કહેલ “अनुदा इह हिंसति तसे पाणे” આ પદોની સાથે ત્યાં લેડવો જોઈએ “फिंते” જે હેતુને ખાતર અજ્ઞાની-જીવ ઘસ જીવોની હિંસા કરે છે તે હેતુઓ કયા કયા છે—એ વિષયને સૂત્રકાર “चम्म-वसा-मस-मेय” ઇત્યાદિ પદો દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે તેઓ કહે છે કે “चम्म, वसा, मस, मेय, सोणिय, जग, फिप्फिस, मत्थुलिंग हिय, अंत, पित्तफोफस, दतद्वा” અશુધ લોકો તે પ્રાણીઓની જે હિંસા કરે છે તેનો હેતુ કેટલાક પ્રાણીઓની બાબતમાં તેમનું “चम्म” આમરું પ્રાપ્ત કરવાનો હોય છે, કેટલાક પ્રાણીઓની “वसा” ચરબી પ્રાપ્ત કરવા માટે તેમનો વધ કરાય છે,

મનુષ્યક્ષેત્રવદિર્માવિપક્ષિણ = 'સ્વયંહરવિદ્યાનકૃણ ય એવાઈ' સ્વચર વિધાના કૃતાઃ, તાનેવમાદીનુક્તપ્રકારાનં । તથા 'જલથલસ્વચારિણો ય-પચિદિણ પશુગણે' જલસ્થલસ્વચારિણશ્ચ પચેન્દ્રિયાનં પશુગણાનં 'ત્રિયતિય ચતુરિદિણ' દ્વિત્રિચતુરિન્દ્રિયાનં 'વિવિદે જીવે' વિવિધાનં જીવાનં 'પિયજીવિણ' પ્રિયજીવિતાનં 'મરણદુઃખપડિકૂલે' મરણદુઃખપ્રતિકૂલાનં 'વરાણ' વરાકાનં=દીનાનં 'બહુસકિલિટ્ઠકમ્મા' બહુસકિલિટ્ઠકર્મણઃ=સમધિકુદુષ્ટાચરણાઃ જનાઃ 'હણંતિ' જ્ઞાન્તિ=મારયન્તિ॥સૂ૦ ૧૦॥

એવ પ્રાણિવધસ્ય પ્રકારાણ્યભિધાય સમ્પ્રતિ તત્પ્રયોજનપ્રકારાણ્યાઈ— 'એમેહિ' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—એમેહિ વિવિદેહિં કારણેહિં, કિં તે ? ચમ્મ-વસા-મંસ-મેય-સોણિય જગ-ફિપ્પિસ -મત્થુલિગ હિય -અત્ત-પિત્ત ફોફસ-દંતઢા અઢિ-મિજ-નહ-નયણ-કણ્ણ પહારુણિ- નક્ક-ધમણિ-સિગ-દાહિ-પિચ્છ વિસ-વિસાણ-વાલહેડ ॥ સૂ૦ ૧૧ ॥

વિદ્યાનાકૃણ ય) એ મનુષ્ય સે ઘાહિર રહને વાલે પક્ષી । એ સઘ લેચર જાતિકે પ્રકાર હૈ । ઇન્ને તથા (એવાઈ) ઓર મો ઇનસે મિત્ત જો (જલથલ સ્વચારિણો ય પચિદિણ પશુગણે) જલ-ચર, સ્થલચર, એવ લેચર પચેન્દ્રિય પશુ હૈ ઊનકો ડસી પ્રકાર (ત્રિયતિ ય ચતુરિદિણ ય) દ્વીન્દ્રિય, તેન્દ્રિય, ઓર ચતુરિન્દ્રિય એસે (વિવિદે જીવે) નાનાપ્રકાર કે જીવો કો કિ જિન્હે (પિયજીવિણ) અપને પ્રાણ પ્રિય હૈ ઓર (મરણ દુઃખપડિકૂલે) મરણ જન્ય દુઃખો સે જો સદા ડરતે રહે હૈ, એ દુઃખ જિન્હે પ્રતિકૂલ હૈ, એવ જો (વરાણ) દીન હૈ ઊન્હે (બહુસકિલિટ્ઠકમ્મા) અત્યન્ત દુષ્ટ ઓચરણ વાલે મનુષ્ય (જ્ઞાનિ) મારતે હૈ ॥સૂ ૧૦॥

સ્વયંહર, વિદ્યાનાકૃણ ય" તે મનુષ્યથી દૂર રહેનાર પક્ષી છે એ બધા એચર જાતિના પ્રજારો છે તેમને તથા "એવાઈ" તે સિવાયના ખીબા પશુને "જલ થલ સ્વચારિણો ય પચિદિણ પશુગણે" જળચર, સ્થળચર અને એચર પચેન્દ્રિય પશુઓ છે તેમને તથા એજ પ્રમાણે "ત્રિયતિય ચતુરિદિણ ય" દ્વીન્દ્રિય, ત્રિ-ન્દ્રિય, ચતુરિન્દ્રિય એવા "વિવિદે જીવે" વિવિધ પ્રકારના છવે કે જેમને "પિયજીવિણ" પોતાના પ્રાણ પ્રિય છે અને 'મરણ દુઃખપડિકૂલે' મરણજન્ય દુઃખોથી જે સદા ડરતા રહે છે, તે દુઃખો જેમને પ્રતિકૂલ છે, અને જે "વરાણ" દીન છે તેમને "બહુસકિલિટ્ઠકમ્મા" અત્યંત દુષ્ટ આચરણ વાળા મનુષ્યો "જ્ઞાનિ" હશે છે ॥ સૂ-૧૦॥

“रसाष्टमासमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणि धातरः” इति ‘नह’ नखाः, ‘नयण’ नयनानि=नेत्राणि ‘कण्ण’ कर्णाः ‘ण्हाक’ स्नायुः=भक्ष्यप्रत्यङ्गमन्धननाडीविशेषः ‘नक्क’ नासिका=‘धमणि’ धमन्यो=नाड्यः, ‘सिंग’ शृङ्गाणि प्रसिद्धानि, ‘दादि’ दंष्ट्रा ‘पिच्छ’ पिच्छ=मयूरादिपिच्छ, ‘विस’ विपं=कालकूटादि ‘विपाण’ विपाणानि=गजदन्ता, ‘बाल’=केशाः, अपा ‘हेउ’ हेतु हेतुमाश्रित्य अस्थिमज्जादि-हेतोरित्यर्थः, ‘हिमंति’ इति पूर्वण सम्बन्धः ॥सू०११॥

मज्जा नामरु छठवीं धातु विशेष को प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (नह) नखों का प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (नयण) नयन-नेत्रों को प्राप्त करने का, कितनेक का (कण्ण) कान प्राप्त करने का कितनेक का (ण्हाकणि) स्नायुओं को अग प्रत्यगों को पाधने वाली नाडि विशेषों को प्राप्त करने का, कितनेक का उनकी (नक्क) नासिका प्राप्त करनेका, कितनेक का उनकी (धमणि) धमनियों-नाडिया प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (सिंग) शृंगों को प्राप्त करने का, कितनेक का उनकी (दादि) दाढ़ों को प्राप्त करनेका, कितनेक का उनकी (पिच्छ) पिच्छों को प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (विस) कालकूट आदि विप प्राप्त करने का, कितनेक का उनके विपाण-गज दन्तों को प्राप्त करने का और कितनेक का उनके (बाल) बालों को प्राप्त करने का, उद्देश्य होता है। इन उद्देश्यों प्रयोजनों को लेकर अवधजन इनकी हिसा करते हैं ॥ सू-११ ॥

वध तेमनी “मिंज” मज्जा नामनी छठी धातुने प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने।
वध तेमना “नह” नखोंने प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमना “नयण” नेत्र प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमना “कण्ण” कान प्राप्त करवाने भाटे डेटलाकने। वध “ण्हाकणि” स्नायुओंने अग प्रत्यगोंने पाधनारी कौर्ध वस प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमनु “नक्क” नाक प्राप्त करवाने भाटे डेटलाकने। वध तेमनी “धमणि” धमनीओं-नाडीओं, प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमना “सिंग” शिंशु प्राप्त करवा भाटे, डेटलाकने। वध तेमनी “दादि” दाढ़ों प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमना “पिच्छ” पीछा प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमनु “विस” कालकूट आदि विप प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमना विपाणु हाथी हातने प्राप्त करवा भाटे, अने डेटलाकने। वध तेमना “बाल” बाल प्राप्त करवाने भाटे बराथ छे ने डेटेगो-अधे।

વિશેષ, 'સોણિય' શોણિત=દ્વિતીયધાતુવિશેષ; 'જગ' યજૃત્-ઉદરદક્ષિણભાગ સ્થ માસગ્રંથિ, 'ફિફ્ફિસ' ફિફ્ફિસ-અન્નસ્થિતમાસવિશેષ; 'ફેફઢા' રૂતિ માપાયા, 'મત્થુલિંગ' મસ્તુલિંગ=મસ્તક મેજક 'હિય' હૃદય=હૃદયમાસપિંડ 'કલેજા' રૂતિ પ્રસિદ્ધ, 'અત' અન્ન 'આત' રૂતિ માપા, 'પિસ' પિત્ત=પિત્તાશય; ફોફસ=શરીરાવયવવિશેષ; 'દત્તઢા' દન્તાર્થ=દન્તા;=પ્રસિદ્ધા; ણ્તેપામર્થાય । પુનઃ-અઢિ અસ્થિ પ્રસિદ્ધ, 'મિંજ' મજ્જા=વીર્યજનકપૃષ્ઠધાતુવિશેષ । ઉક્તચ્ચ—

પ્રાણિયોં કા ઉનકે (મસ) મોસ પ્રાસ કરને કા, કિતનેક પ્રાણિયો કા ઉનકી (મેય) મેદ જો દેહ કી ચતુર્થ ધાતુ હૈ ઉસકે પ્રાસ કરને કા, કિત નેક પ્રાણિયોં કા ઉનકે (સોણિય) શોણિત પ્રાસ કરને કા, કિતનેક પ્રાણિયો કા ઉનકે (જગ) યજૃત્ કો-ઉદર કે દક્ષિણભાગ મેં રહી હૈઈ માંસગ્રંથિ કો પ્રાસ કરને કા, કિતનેક પ્રાણિયોં કા ઉન કે "ફિફ્ફિસ" ફિફ્ફિસ કો આતો મે સ્થિતિ માસ વિશેષ કો પ્રાસ કરને કા, કિતનેક પ્રાણિયોં કા ઉનકે (મત્થુલિંગ) મસ્તક કે મેજે કો પ્રાસ કરને કા, કિતનેક કા ઉનકે (હિય) હૃદયમાસપિંડ કો જિસે કલેજા કહતે હૈ પ્રાસ કરને કા (અત) આંતોં કો પ્રાસ કરને કા (પિસ) પિત્તાશય પ્રાસ કરને કા, કિતનેક કા ફોફસ શરીરાવયવ વિશેષ-પ્રાસ કરનેકા, કિતનેક કા ઉનકે દાંતો કો પ્રાસ કરને કા પ્રયોજન હોતા હૈ તથા (અઢિ-મિંજનહ-નયણ-કણ-ણ્હારણિ-નક્ક-ધમણિ-સિંગ-દાઢિ-પિચ્છ-વિસાળ-વાલ હેડ) કિતને કા ઉનકી (અઢિ) અસ્થિ હઢી પ્રાસ કરનેકા કિતનેક કા ઉનકી (મિંજ)

કેટલાક પ્રાણિયોનુ "મસ" માસ પ્રાપ્ત કરવાના ઉદ્દેશથી તેમને વધ કરાય છે કેટલાક પ્રાણીઓનો વધ તેમની "મેય" મેદ બે દેહની ચતુર્થ ધાતુ છે તેને પ્રાસ કરવા માટે કરાય છે, કેટલાક પ્રાણીઓનો વધ તેમના "જગ" યજૃતને-પેટના જમણા ભાગમા આવેલાં માસ ગ્રંથિને પ્રાસ કરવા માટે કરાય છે, કેટલાક પ્રાણીઓનો વધ તેમના આંતરડામા રહેલ માસ વિશેષને પ્રાસ કરવા માટે કરાય છે, કેટલાક પ્રાણીઓનો વધ તેમના "મત્થુલિંગ" માથામાના મગજને પ્રાસ કરવા માટે કરાય છે, કેટલાક પ્રાણિયોનો વધ તેમના "હિય" હૃદય માસ પિંડ કે બેને કાળજી કહે છે તેને પ્રાસ કરવાને માટે કરાય છે, કેટલાક પ્રાણીઓનો વધ તેમના "અત" આંતરડા પ્રાસ કરવા માટે કરાય છે, કેટલાક પ્રાણીઓનો વધ તેમનાં "પિત્ત" પિત્તાશય પ્રાસ કરવાને માટે કેટલાક પ્રાણીઓનો વધ તેમના "ફોફસ" શરીરનુ એક પ્રાસ અવયવ પ્રાસ કરવાને માટે, અને કેટલાક પ્રાણીઓનો વધ તેમના દાંત પ્રાસ કરવાને માટે થાય છે તથા "અઢિ, મિંજનહ નયણ, કણ, ણ્હારણિ, નક્ક, ધમણિ, સિંગ, દાઢિ, પિચ્છ, વિસાળ, વાલહેડ" કેટલાકનો વધ તેમના "અઢિ" અસ્થિ-હાડકા પ્રાસ કરવાને માટે કેટલાકનો

“रमाष्ट्रमासमेदोऽस्थिमज्जाशुकाणि धातवः” इति ‘नह’ नखाः, ‘नयण’ नयनानि=नेत्राणि ‘कण्ण’ कर्णाः ‘ण्हारु’ स्नायुः=अङ्गप्रत्यङ्गान्धननाडीविशेषः ‘नक्क’ नासिका=‘धमणि’ धमन्यो=नाड्यः, ‘सिंग’ शृङ्गाणि प्रसिद्धानि, ‘दादि’ दण्डा ‘पिच्छ’ पिच्छ=मयूरादिपिच्छ, ‘चिस’ चिपं=कालकूटादि ‘चिसाण’ विपाणानि=गजदन्ता, ‘वाल’=केशाः, एषा ‘हेउ’ हेतु हेतुमाश्रित्य अस्थिमज्जादि-हेतोरित्यर्थः, ‘दिगंति’ इति पूर्वेण सम्बन्धः ॥सू०११॥

मज्जा नामक छठवीं धातु विशेष को प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (नह) नखों का प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (नयण) नयन-नेत्रों को प्राप्त करने का, कितनेक का (कण्ण) कान प्राप्त करने का कितनेक का (ण्हारुणि) स्नायुयों को अंग प्रत्यंगों को बाधने वाली नाडि विशेषों को प्राप्त करने का, कितनेक का उनकी (नक्क) नासिका प्राप्त करने का, कितनेक का उनकी (धमणि) धमनिर्या-नाडिया प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (सिंग) शृंगों को प्राप्त करने का, कितनेक का उनकी (दादि) दाढ़ों को प्राप्त करने का, कितनेक का उनकी (पिच्छ) पिच्छों को प्राप्त करने का, कितनेक का उनके (चिस) कालकूट आदि विप प्राप्त करने का, कितनेक का उनके विपाण-गज दन्तों को प्राप्त करने का और कितनेक का उनके (वाल) बालों को प्राप्त करने का, उद्देश्य होता है। इन उद्देश्यों प्रयोजनों को लेकर अवुधजन इनकी हिंसा करते हैं ॥ सू-११ ॥

वध तेमनी “मिज” मज्जा नामनी छठी धातुने प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने।
वध तेमना “नह” नखोने प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमना “नयण” नेत्र प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमना “कण्ण” कान प्राप्त करवाने भाटे डेटलाकने। वध “ण्हारुणि” स्नायुज्जोने अंग प्रत्यंगोने बाधनारी कोष्ठ नस प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमनु “नक्क” नाक प्राप्त करवाने भाटे डेटलाकने। वध तेमनी “धमणि” धमनीज्जा-नाडीज्जा प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमना “सिंग” सिंगडा प्राप्त करवा भाटे, डेटलाकने। वध तेमनी “दादि” दाढ़ो प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमना “पिच्छ” पीछा प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमनु “चिस” कालकूट आदि विप प्राप्त करवाने भाटे, डेटलाकने। वध तेमना विपाणु छाथी हातने प्राप्त करवा भाटे, अने डेटलाकने। वध तेमना “वाल” बाण प्राप्त करवाने भाटे कराय छे ते उद्देशो-अथो ननोने भाटे अवुधज्जो तेमनी हिंसा करे छे ॥ सू-११॥

અથ ચતુરિન્દ્રિયાદીના હિંસામયોજનમાહ—‘હિંસંતિ ય’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—હિંસંતિ ય ભમરમહુકરિગણે રસેસુ ગિદ્ધા, તદેવ તેઈંદિષ સરીરોવકરણદ્વ્યાપ કિવણે, વેઈંદિષ વહેવે વત્થોહર પરિમંડણદ્વા ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

ટીકા—‘યે’ ચ-પુનઃ ‘રસેસુ’ રસેપુ=મધ્વાદિપુ ‘ગિદ્ધા’=ગૃદ્ધા=તદ્રસ લોલુપાઃ હિંસકાઃ જના મધ્વાદિ ગ્રહણાર્થ ‘ભમરમહુકરિગણે’ ભ્રમરમધુકરીગણાન્ ભ્રમરાઃ=કૃષ્ણવર્ણાઃ હોરુભાપયા પુસ્ત્રવિશિષ્ટાઃ, મધુકર્યઃ=ઋધુમધુમક્ષિકાઃ લોરુ ભાપયા સ્ત્રીત્વવિશિષ્ટાઃ, તેષા ગણાન્=સમૂહાન્ હિંસન્તિ । ‘તદેવ’ તથૈવ ‘તેઈંદિષ’ ત્રીન્દ્રિયાન્=પૂરુષામત્કુળાદીન્ ‘સરીરોવકરણદ્વ્યાપ’ શરીરોપકરણાર્થ=શરીરસ્યોપ કારાર્થ શયનકાલે મત્કુળાદિકૃતદુઃખનિવારણાર્થ હિંસન્તિ । તથા ‘કિવણે’ કૃપ

અથ સૂત્રકાર ચતુરિન્દ્રિય આદિ જીવોં કી હિંસા કરને ચાલોં કા વ્યા પ્રયોજન હોતા હૈ—ઇસ ઘાત કો પ્રકટ કરતે હૈ—‘હિંસંતિ ય ભમરમહુકરિગણે’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(રસેસુ ગિદ્ધા) જો અધુધ-અજ્ઞાની જન મધુ (શહદ) આદિ રસોં મે લોલુપ હોતે હૈં વે ડન મધુ આદિ રસોં કો પ્રાપ્ત કરને કે અભિપ્રાય સે (ભમરમહુકરિગણે હિંસંતિ) ભ્રમર ભ્રમરિયોં કે સમૂહ મારતે હૈં । ભ્રમરિયોં સે, મધુકો એકત્રિત કરને ચાલી મધુ મન્ત્રિયોં કા યદા ગ્રહણ કરના ઇચ્છિયે । (તદેવ) ઇસી તરહ (કિવણે) દીન એસે (તેઈંદિષ) જૂં સ્વદમલ આદિ તેઈંદ્રિય જીવોં કી (સરીરોવકરણદ્વ્યાપ) અપને શરીર કે ઉપકાર કે લિયે અર્થાત્ શયનકાલ મેં જો સ્વદમલ આદિ દ્વારા ડનકે શરીર મેં કાટને જન્ય દુઃખ હોતા હૈં ડસ દુઃખ કો નિવારણ કરને

હવે ચતુરિન્દ્રિય આદિ જીવોની હિંસા કરનારનુ શુ પ્રયોજન હોય છે, તે સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે—‘હિંસંતિ ય ભમરમહુકરિગણે’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘રસેસુ ગિદ્ધે’ જે અધુધ-અજ્ઞાની લોકો મધુ-મધ આદિ રસોમા લોલુપ થાય છે તેઓ તે મધ આદિ રસોને પ્રાપ્ત કરવાને માટે ‘ભમરમહુકરિગણે હિંસંતિ’ ભ્રમરો તથા ભ્રમરીઓના સમૂહની હત્યા કરે છે ભ્રમરીઓ એટલે અહીં મધ એકત્ર કરનારી મધમાખીઓ સમજવી ‘તદેવ’ એજ પ્રમાણે ‘કિવણે’ બિચારા ‘તેઈંદિષ’ જૂ, માકડ આદિ તેઈંદ્રિય જીવોની હત્યા ‘સરીરોવકરણદ્વ્યાપ’ પોતાના શરીરના ઉપકારને માટે એટલે કે સૂતી વળતે માકડ આદિ જે જીવો કરડે છે અને ઉધમા ખલેલ પડેલા છે

પાન્=દીનાન્ 'વહવે' ગહન્ 'વેહદિપ' દ્વીન્દ્રિયાન્ 'વત્યોહરપરિમહ્ણદ્વા' વસ્ત્રોપગૃ-
હપરિમહ્ણનાર્થમ્, 'વત્ય' વસ્ત્રાણિ 'ઓહર' ઉપગૃહાઃ=લઘુગૃહા' તેષા 'પરિમહ્ણદ્વા'
પરિમહ્ણનાર્થ=શોભાર્થમ્, તત્ર વસ્ત્રાણા પરિમહ્ણન કૃમિરાગેણ રક્તનમ્, ઉપગૃહાણા
પરિમહ્ણન શક્ત્યુક્તિચૂર્ણનાવલેપનમ્ । યદ્વા-અર્થશબ્દસ્ય પ્રત્યેકમભિસમ્બન્ધે-
વસ્ત્રાર્થમ્, ઉપગૃહાર્થ, મહ્ણનાર્થ ચેતિ । તત્ર પટ્સૂત્રાદિ વસ્ત્રનિર્માણે કૃમ્યાદ્યુપ-
ધાતઃ, ઉપગૃહનિર્માણે મૃજ્જલાદિપુ પુતરકાદ્યુપમર્દનમ્, હારાદિપરિમહ્ણનનિર્માણે
શુક્ત્યાદ્યુપહનન મત્યેવ ॥સુ૦ ૧૨॥

કે અભિપ્રાય સે વે ઉનકી હિંસા કરતે હૈ । હસી તરહ (વેહદિપ) શંખ
શુક્તિકા આદિ જો ચિત્તારે દો ઇન્દ્રિય જીવ હૈ ઉન વહુત સે દીન જીવો
કી ભી (વત્યોહર પરિમહ્ણદ્વા) વસ્ત્ર, ઉપગૃહ-લઘુગૃહ કી શોભાનિમિત્ત
હિંસા કરતે હૈ । કૃમિરાગ સે વસ્ત્રો કા રગનો યહ વસ્ત્રો કા પરિમહ્ણન હૈ ।
શક્ત, શુક્તિકા કે ચૂને સે છોટે ૨ ઘરો કા પોતના યહ ઉપગૃહો કા
પરિમહ્ણન હૈ । અથવા અર્થ શબ્દ કા પ્રત્યેક કે સાથ સવધ કરને પર એસા
ભી હસ પદ કો અર્થ હોતા હૈ કિ વસ્ત્ર કે નિમિત્ત, ઉપગૃહ કે નિમિત્ત
ઔર મહ્ણન-હાર આદિ ભૂષણ કે નિમિત્ત પટ્સૂત્ર આદિ વસ્ત્ર કે નિર્માણ
મેં કૃમ્યાદિ જીવો કા ઉપધાત હોતા હૈ, ઉપગૃહો કે નિર્માણ મેં મિટ્ટી
જલ આદિ મે રહે છુપ લટ આદિ દો ઇન્દ્રિય જીવો કા ઉપમર્દન હોતા હૈ,
તથા હાર આદિ આભૂષણો કે નિર્માણ કરને મે શુક્તિ આદિ જીવો કા
હનન હોતા હૈ ।

ભાવાર્થ—ખમર, મધુકરી આદિ જો ચાર ઇન્દ્રિય વાલે જીવ હૈ, તથા

૧૫ માટે તેઓ તેમની હિંમ્મા કરે છે એ ૧૪ ગીતે “વેહદિપ” શબ્દ શુક્તિકા
આદિ જે બિચારા ઇન્દ્રિય હોવાની પણ “વત્યોહરપરિમહ્ણદ્વા” વસ્ત્ર ઉપગૃહ
લઘુગૃહની શોભાને નિમિત્તે હિંસા કરે છે કૃમિરાગથી વસ્ત્રોને રગવા તે વસ્ત્રોનું
પરિમહ્ણન કહેવાય છે તથા, શુક્તિકાના ચૂનાથી નાના નાના ઘરોને લીપવા તે
ઉપગૃહ પરિમહ્ણન કહેવાય છે અથવા ‘અર્થ’ શબ્દનો દરેકની સાથે
સબધ બેડવાથી આ પદનો એવો પણ અર્થ થઈ શકે છે કે વસ્ત્રને માટે,
ઉપગૃહને માટે અને મહ્ણન-હાર આદિ ભૂષણને માટે પટ્સૂત્ર આદિ વસ્ત્ર
ખનાવવામાં કૃમ્યાદિ હોવાનો ઉપધાત થાય છે, ઉપગૃહોની રચનામાં માટી, જળ
આદિમાં રહેલ લટ આદિ દ્વિઇન્દ્રિય હોવાને ધાત થાય છે, તથા હાર આદિ
આભૂષણો ખનાવવામાં શુક્તિ આદિ હોવાની હત્યા થાય છે

ભાવાર્થ—ખમર, મધુકરી આદિ જે ચાર ઇન્દ્રિય વાળા હોવા છે, તથા

પુનરપ્યાહ—‘અળેહિય’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—અળેહિ ય એવમાદ્યહિ વદુર્હિ કારણેર્હિ અબુહા
 ઇહ હિસાતિ તસે પાળે, ઇમે ય—એર્ગિંદિએ વહવે વરાએ, તસે ય
 અળે તદસિસએ ચેવ તણુસરીરે સમારભંતિ । અત્તાળે, અસરળે,
 અળાહે, અવધવે, કમ્મનિગડવદ્ધે, અકુસલ-પરિણામ મદબુદ્ધિ-
 જળદુઠ્ઠિજાળએ, પુઢવિમએ, પુઢવિસંસિએ, જલમએ, જલગએ,
 અળાળિલતળવળસસઙ્ગળનિસિસએ ય, તમ્મય તર્જીએ ચેવ,
 તદાહારે તપ્પરિણયવળ્લગંધરસફાસવોંદિરુવે અચક્ખુસે ય
 ચક્ખુસે ય તસકાદ્યએ અસંખે થાવરકાએ ય સુદુમવાયરપત્તે
 ય સરીરનામસાધારણે અળંતે હળંતિ અવિજાળઓ ય પરિજા-
 ણઓ ય જાવ ઇમેહિ વિવિહેહિ કારણેહિ કિ તે ? ॥સૂ૦ ૧૩॥

જૂં જાડમલ આદિ જો ત્રીન ઇન્દ્રિય વાલે જીવ હૈ, એજ શાજ શુક્તિ આદિ
 જો દો ઇન્દ્રિયવાલે જીવ હૈ, ઇનકી હિંસા કરને કા ઉદેશ્ય જીવોં કા કયા
 હોતા હૈ યહ ઘાત સૂત્રકાર ને ઇસ સૂત્ર દ્વારા પ્રકટ કી હૈ । જો પ્રાણી રસ
 મે ગૃહ બને હુએ હૈ વે બ્રમર મધુકરી આદિ જો રસ કો એકત્રિત કરને
 વાલે જીવ હૈ ઇનકી તથા જો પ્રાણી અપને શરીર આદિ કે ઉપકાર-કરને
 કે અભિલાષી હૈ વે લોક જૂં જાડમલ આદિ જીવોં કી એજ જો વસ્ત્ર ઉપ-
 ગૃહ આદિ કે નિર્માણ કરને કે અભિલાષી હૈ વે શાજ શુક્તિ આદિ દો
 ઇન્દ્રિય જીવોં કી હિંસા કરતે હુએ બિલકુલ વિચાર નહી કરતે હૈ ॥સૂ ૧૨॥

જૂં, માકડ આદિ જે ત્રણ ઇન્દ્રિયવાળા જીવો છે, અને શાખ છીપ આદિ જે
 બે ઇન્દ્રિયવાળા જીવો છે, તેમની હિંસા કરવા પાછળ લોકોનો શો હેતુ હોય
 છે તે સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા પ્રગટ કર્યું છે જે માણસ રસમા ગૃહ-લોકોપ
 યનેલ છે તેઓ બ્રમર આદિ રસ એકત્ર કરનારા જે જીવો છે તેમની તથા જે
 લોકો પોતાના શરીર આદિના સુખનો જ વિચાર કરનારા છે તેઓ જૂં, માકડ
 આદિ જીવોની અને જે લોકો વસ્ત્ર, ઉપગૃહ આદિના નિર્માણની અભિલાષાવાળા
 છે તેઓ શાખ, છીપ આદિ દ્વિન્દ્રિય જીવોની હિંસા કરતા બિલકુલ વિચાર
 કરતા નથી ॥ સૂ. ૧૨ ॥

ટીકા — ‘અણેહિ ય’ અન્યૈશ્ચ ‘અવમાહર્ણિ’ અવમાદિકૈઃ=પૂર્વોક્તસદૃશૈઃ
 ‘વહુર્હિ’ વહુભિઃ=નાનાવિધૈઃ ‘કારણસર્ણિ’ કારણશૈઃ ‘અનુહા’ અનુધાઃ=અજ્ઞા
 નિનો જનાઃ इह=અસ્મિન્ જીવલોકે ‘તસે પાણે’ ત્રસાન્ પ્રાણાન્=દ્વીન્દ્રિયાદીન્
 ‘હિંસતિ’ હિંસન્તિ=ન્નન્તિ । તવા-‘इमेय’ इमाश्च=અગ્રે રક્ષ્યમાણાન્ ‘અર્ણિદિ’
 એકેન્દ્રિયાન્ પૃથિવ્યપ્તેજોવાયુવનસ્પતિલક્ષણાન્ ‘વહવે’ વહૂન્=અનેકાન્ ‘વરાણ’
 વરાકાન્=દીનાન્ , તવા-‘तदस्मिन् चैव’ તદાશ્રિતાન્ ચૈવ=પૃથિવ્યા કેન્દ્રિયા-
 થયસ્થિતાનપિ ‘અણે’ અન્યાન્ ‘તણુસરીરે’ તણુશરીરાન્=સૂક્ષ્મશરીરાન્ ‘તસે ય’
 પ્રસાશ્ચ ‘સમારભતિ’ સમારભન્તે=ઉપમર્દયન્તિ । કીદશાન્ તાન્ ? इत्याह-‘अत्ताणे’
 અત્રાણાન્=ત્રાણરહિતાન્ રક્ષકાભાવાત્ , ‘અસરણે’ અશરણાન્=શરણદાતુરભાવાત્ ,

ફિર મી કહતે હે—‘અણેહિ ય’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(અણેહિ ય અવમાહર્ણિ વહુર્હિ કારણસર્ણિ અનુહા इह હિંસતિ
 પાણે) इत्यादि और भी नानाविध इसी प्रकार के सैकड़ों कारणों से
 अज्ञानी जीव इस लोक में द्वीन्द्रियादिक त्रस जीवों की हिंसा करते हैं ।
 तथा (इमेय) रक्ष्यमाण इन (वहवे) अनेक प्रकार के (वराण) दीन (अर्णि-
 दि) पृथिवीकाय, अपूकाय तेजःकाय, वायुकाय, वनस्पति काय रूप एके-
 न्द्रिय जीवों को और (तदस्मिन् चैव) इनके आश्रित रहे हुए (अण्णे)
 दूसरे पूर्वोक्त त्रस जीवों से अतिरिक्त (तणुसरीरे) छोटे शरीर वाले
 (तसे य) त्रस जीवों की (समारभति) हिंसा करते हैं । इनकी हिंसा
 करते हुए जो इन अज्ञानी प्राणियों को सकोच नहीं होता है उसाक
 कारण यह है कि ये (अत्ताणे) इन एकेन्द्रियादिक जीवों का कोई रक्षक
 नहीं है इसलिये रक्षक के अभाव से ये सब त्राण रहित हैं । (असरणे)

હજી પણ સૂત્રગર કહે છે—“અણેહિય” इत्यादि

‘અણેહિય અવમાહર્ણિ વહુર્હિ કારણસર્ણિ અનુહા इह હિંસતિ તસે પાણે’
 इत्यादि जीवों પણ એવા જ પ્રકારના સેકડો વિવિધ ઢારણોથી અજ્ઞાની જીવ
 આલોડમા દ્વીન્દ્રિયાદિક ત્રસ જીવોની હિંસા કરે છે તથા “इमेय” આ પ્રમાણે
 તે “વહવે” અનેક પ્રકારના “વરાણ” ગિચારા “અર્ણિદિ” પૃથિવીકાય,
 અપૂકાય, તેજ કાય, વાયુકાય, વનસ્પતિકાયરૂપ એકેન્દ્રિય જીવોની અને “तदस्मिन्-
 चैव” તેમના આશ્રયે રહેલા “अण्णे” જીવો પૂર્વોક્ત ત્રસજીવો ઉપરાંતના
 “तणुसरीरे” નાના શરીરવાળા “तसेय” ત્રસજીવોની “समारभति” હિંસા
 કરે છે તેમની હત્યા કરતા તે અજ્ઞાની જીવોને સડોચ થતો નથી કારણ કે
 “अत्ताणे” તે એકેન્દ્રિયાદિક જીવોનું રક્ષક કોઈ નથી તેથી રક્ષકને અભાવે તે
 બધા ત્રાણહીન—(નિરાધાર) છે “असरणे” તે પૃથિવ્યાદિ જીવો ભાગી જઈ

‘અળાહે’ અનાથાન્=સામ્યમાનાત્, ‘અવધવે’ અગ્રાન્ગ્રાન્-સહાયકામાનાત્, ‘કમ્મનિગહવદ્ધે’ કર્મનિગહવદ્ધાન્-કર્માપ્યેય નિગહાનિ વન્ધસ્ત્વાત્ તૈર્વદાન્ કર્મરાહિત્યામાનાત્, ‘અકુસલપરિણામમદબુદ્ધિજનદુઃખિજાણણ’ અકુશલપરિણામમન્દબુદ્ધિજનદુર્વિજ્ઞેયાન્-કુશલઃ=તત્ત્વાતત્ત્વવિવેકસમ્પન્નઃ, પરિણામઃ=અન્તકરણ યેવા તે કુશલપરિણામાઃ, ન કુશલપરિણામા = અગ્રાન્ગ્રાન્પરિણામાઃ= આત્મૌપમ્યદૃષ્ટિવિરુદ્ધા इत्यर्थः मन्दा=हिंसाजनितनरकनिगोदाद्यनन्तभवभ्रमण-कटुकफलविवेचनशून्या-बुद्धिर्येषां ते मन्दबुद्धयस्ते च जना इति अकुशलपरि-

ચે પૃથિવ્યાદિ જીવ ભગકર જા નહીં સકતે, इनके आश्रित ब्रम जीव यदि भगकर कही जायें भी तो कोई ऐसा नहीं है जो इन्हें शरण प्रदान करे अतः शरणदाता के अभाव से ये अशरण हैं। (अणाहे) कोई इनका स्वामी नहीं है इसलिये अपने स्वामी के अभाव से ये विचारे अनाथ हैं। (अवधवे) इनकी कष्ट में कोई सहायता करने वाला नहीं है इसलिये सहायक के अभाव से ये अग्रान्धव हैं। (कम्मनिगहवधे) उस प्रकार के कर्मों का सञ्जाव होने के कारण कर्मरूप निगह-वेडी से ये बधे हुए हैं। (अकुसल-परिणाम-मदबुद्धिजनदुःखिजाणण) अकुशल परिणाम वाले मदबुद्धि जनों द्वारा ये दुर्विज्ञेय हैं। तत्त्व और अतत्त्व का विवेक जिनके अन्तःकरण में जगता है वे कुशल परिणाम वाले जीव हैं। इस तरह का कुशल परिणाम जिनका नहीं है अर्थात् सब जीवों के ऊपर जिनकी दृष्टि आत्मौपम्यवाली नहीं है और जो इस बात को भी नहीं जानते हैं कि हिंसा करने से नरक निगोद आदि अनन भवो में भ्रमण करने रूप कटुकफल को

શકતા નથી, તેમને આશ્રિત બ્રહ્મજીવ બે લાગીને કોઈપણ જગ્યાએ જાય તે પણ કોઈ એવું નથી કે જે તેને શરણ આપે, તેથી શરણદાતાને અભાવે તેઓ અશરણ છે “અળાહે” કોઈ તેમનો સ્વામી નથી, તેથી સ્વામીને અભાવે તેઓ બિચારા અનાથ છે “અવધવે” કદમા તેમને સહાય કરનાર કોઈ નથી, તેથી સહાયકને અભાવે તેઓ અગ્રાન્ધવ છે “કમ્મનિગહવધે” તે પ્રકારના કર્મોના સજાવ થવાને કારણે ડમરૂપી બેડી વડે તેઓ બધાયેલ છે “અકુસલ-પરિણામ-મદબુદ્ધિજનદુઃખિજાણણ” અકુશલ પરિણામવાળા મદબુદ્ધિયુક્ત લોકો દ્વારા તે દુર્વિજ્ઞેય-સમજવું-ચુરકેલ છે જેમના અત કરણમા તત્ત્વ અને અતત્ત્વનો વિવેક નગૃત થાય છે તે કુશલ પરિણામવાળા જીવ છે આ પ્રકારનું કુશલ પરિણામ જેમનું હોતું નથી, એટલે કે મધણા જીવો ઉપર જેમની દૃષ્ટિ આત્મ વત નથી, અને જે એ વાતને પણ જાણતા નથી કે હિંસા કરવાથી નરક, નિગોદ આદિ અનંત ભવોમા ભ્રમણ કરવા રૂપ કટવા ક્ષણે લોભવવા પડે છે,

જામમન્દબુદ્ધિજનાઃ તૈ મિથ્યાત્વોદયેન 'દુર્વિજ્ઞેયા' 'એતે હીનદીનાઃ પ્રાણિનો રક્ષ-
નીયાઃ', ઇતિ જ્ઞાતમશ્યામ્તાન્, 'પુઢવિમણ' પૃથ્વીમયાન્=પૃથ્વીકાયાિકાન્,
'પુઢવિ સસિણ' પૃથ્વીસથિતાન્=અન્તરમૃતિ દ્વીન્દ્રિયાન્ 'જલમણ' જલમયાન્-
અપ્કાયાિકાન્ 'જલમણ' જલગતાન્ પૂતરકાદિ ત્રસાન્, અણલાણિલતણવણસ્મઢ
ગણનિસ્સિણ ય 'અનલાઽનિલતૂણવનસ્પતિગણનિથિતાશ્ચ=અનલઃ=અગ્નિઃ, અનિલો
=વાયુઃ, તૂણાનિ = દર્ભાદીનિ વનસ્પતયઃ=વનસ્પતિકાયામેદા અગ્નીજાદયઃ,-
તૂણ વનસ્પતિકાયાિકયેન પુનર્વનસ્પતિગ્રહણ મ્યગત મ્દમાદિસકલમેદરૂપાપનાર્યમ્,
તેષાં ગણ = સમૂહસ્તરૂપ નિથિતાન્ અનલાદ્યાથિતાન્ ચ શબ્દાત્-તેજસ્કાયાિકાદીંશ્ચ,
તથા-'તમ્મયતજ્જીણ' તમ્મય તજ્જીયાન્=તત્ત્વ તમ્મયાન્ પૃથ્વી કાયાિકાદીન્

મોગના પદ્ધતા છે, ટસ તરફ કે જ્ઞાન કે અભાવ વાલે મદબુદ્ધિ છે, ઉન જનોં
દ્વારા મિથ્યાત્વ કે ઉદય સે "ચે હીન દીન પ્રાણી રક્ષા કરને યોગ્ય હે હિંસા
કરને યોગ્ય નહીં હે" યહ વાત જાની નહીં જા સકતી હે હસલિયે એસે
પ્રાણિયોં દ્વારા ચે જીવ નહીં જાને જા સકતે અતઃ ચે અજ્ઞાની જીવ (પુઢ-
વિમણ) પૃથ્વીકાયાિક જીવોં કો તથા (પુઢવિસસિણ) પૃથ્વી કે આશ્રય
રહે હુણ અલસ આદિ દ્વીન્દ્રિય જીવોં કો હસી તરફ (જલમણ) જલ
કાયાિક જીવોં કો તથા (જલમણ) જલકાયાિક જીવોં કે સહારે રહે હુણ
પૂતરકાદિ ત્રસ જીવોં કો, તથા (અણલાણિલતણ વણસ્મઢગણનિસ્સિણ)
અગ્નિકાયાિક જીવોં કો ઓર અગ્નિકાયા કે સહારે રહે હુણ ત્રસ જીવોં
કો ઓર વાયુકાયાિક જીવોં કે સહારે રહે હુણ ત્રસ જીવોં કો, તૂણરૂપ-
વનસ્પતિકાયાિક જીવોં કો, ગવ વનસ્પતિકાયા કે મેદ પ્રમેદો કે સહારે
રહે હુણ ત્રસ જીવોં કો ખી મારતે હે । યહી વાત "તમ્મયતજ્જીવણ"

આ પ્રકારના જ્ઞાન વિનાના જીવો મદબુદ્ધિ છે તે લોહો દ્વારા મિથ્યાત્વના
ઉદયથી "આ હીન દીન પ્રાણીઓ રક્ષા કરવાને યોગ્ય છે હિંસાને યોગ્ય નથી"
એ વાત પણ મમજી ગડાતી નથી તે ગળે એવા જીવો દ્વારા તે જીવોને
જાણી શકાતા નથી, તેથી તે અજ્ઞાની જીવ "પુઢવિમણ" પૃથ્વીકાયા જીવોની
તથા "પુઢવિસસિણ" પૃથ્વીને આશ્રયે રહેલ અણમિયા આદિ દ્વીન્દ્રિય જીવોની,
એ જ પ્રમાણે "જલમણ" જલકાયાિક જીવોની તથા "જલમણ" જલકાયાિક
જીવોને આશ્રયે રહેલ પૂતરકાદિ ત્રસજીવોની, તથા "અણલાણિલ તણવણસ્મઢગણ
નિસ્સિણ" અગ્નિકાયા જીવોની અને અગ્નિકાયાને આશ્રયે રહેલ ત્રસ જીવોની,
વાયુકાયા જીવોની અને તેમને આશ્રયે રહેલ ત્રસ જીવોની, તૂણરૂપ વનસ્પતિકાયા
જીવોની અને વનસ્પતિકાયાના ભેદ પ્રમેદોના આશ્રયે રહેલ ત્રસજીવોની હિંસા
કરે છે એ જ વાત "તમ્મય તજ્જીવણ" ઇત્યાદિ પદો દ્વારા કહેવામા આવે

તજ્જીમાન્ પૃથિવ્યાદિ નિશ્ચિતાથૈવ, 'તદાહારે' તદાધારાન્=તે પૃથિવ્યાદયઃ
 આધારો યેષા તે તાન્ તદાધારાન્=પૃથિવ્યાદ્યાશ્રયાન્ અથવા 'તદાહારે'
 તદાહારાન્ તે પૃથિવ્યપ્તેજોમાયગ્રાદય ણ્ય આધારો યેષા તે તાન્ તદાહારાન્
 'તત્પરિણયવર્ણગધરસફાસર્ગોદિરુવે' તત્પરિણતર્ણગન્ધરસસ્પર્શર્ગોદિ (શરીર)
 રૂપાન્=તેષામેવ પૃથિવ્યાદીના પરિણતા વર્ણગન્ધરસસ્પર્શ યાં વૌદિઃ=શરીર સૈવ
 રૂપ=સ્વભાવો યેષા તે તથા તાન્, 'અચક્ષુસે ચ' અચાક્ષુપાન્=ચક્ષુરગોચરાન્
 'ચક્ષુસે ચ' ચાક્ષુપાશ્ચ ચક્ષુરિન્દ્રિયવિષયાન્ 'તમકાણ' ત્રસકાયિકાન્ ત્રસન્તિ
 ઉષ્ણાદ્યભિતસાઃ સન્તઃ વિવક્ષિતસ્થાનાદુદ્વિજન્તે=ગન્ઠન્તિ છાયાદ્યાસેવનાર્થ
 સ્થાનાન્તરમિતિ ત્રસાઃ, યદ્વા-ત્રસ નામકર્મોદગ્રાત્ ત્રસ્યન્તિ इति ત્રસાઃ=ત્રસનામ-
 કર્મોદયવર્તિનિહત્યર્થઃ, તેષાં કાયોરાશિસ્ત્ર મવાલ્લસકાયિકા, તાન્, ક્રિયતઃ ?
 इत्याह-'असखे' इत्यादि-'असखे' असख्यान् 'थावरकाण' स्थावरकायान्, तिष्ठ-

इत्यादि पदों द्वारा कही जाती है-(तन्मयतज्जीवण) पृथिवी कायिक
 आदि जीवों को तथा पृथिवी आदि के सहारे रहे हुए जीवों को, (तदा-
 हारे) जिन जीवों के वे पृथिवी आदिक आधारभूत हैं ऐसे जीवों को
 अथवा पृथिवी आदिक ही जिनका आहार है ऐसे जीवों को (तत्परिणय
 वर्णगधरसफासर्गोदिरुवे) तथा पृथिव्यादिकों के वर्ण, गंध, रस, स्पर्शों
 से जिनका शरीररूप स्वभाव परणित हो रहा है, तथा (अचक्षुसे च)
 जो चक्षु इन्द्रिय विषयभूत नहीं है, और (चक्षुसे च) जो चक्षु इन्द्रिय
 के विषयभूत भी हैं ऐसे त्रस जीवों को-उष्णादिक से सतप्त होकर जो
 छाया आदि के सेवन के लिये एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं,
 अथवा त्रस नामकर्म के उदय से जो युक्त है वे त्रस हैं, ऐसे त्रस जीवों
 को, तथा-(असखण थावरकाण च) असख्यात स्थावर कार्यों को, स्था-

છે—“તન્મયતજ્જીવણ” પૃથિવી યાદિક જીવોને તથા પૃથિવી આદિને આશ્રયે
 રહેલ જીવોને ‘તદાહારે’ જે જીવોને તે પૃથિવી આદિ આધારભૂત છે એવા
 જીવોને અથવા પૃથિવી આદિ જ જેમનો આહાર છે એવા જીવોને “તત્પરિણય
 વર્ણગધરસફાસર્ગોદિરુવે” તથા પૃથિવી આદિકોના વર્ણ ગંધ, રસ, સ્પર્શોથી
 જેમનો શરીરરૂપ સ્વભાવ પરિણત થઈ રહ્યો છે, તથા “અચક્ષુસે ચ” જે ચક્ષુ
 ઇન્દ્રિયના વિષયરૂપ નથી, અને “ચક્ષુસે ચ” જે ચક્ષુ ઇન્દ્રિયના વિષયરૂપ પણ
 છે એવા ત્રસ જીવોને ઉષ્ણતા આદિથી દુષ્પ પામીને જે છાયા આદિના સેવન
 માટે એક જગ્યાએથી બીજી જગ્યાએ જાય છે, અથવા ત્રસ નામકર્મના ઉદયથી
 જે યુક્ત છે, તેઓ ત્રસ ગણાય છે એવા ત્રસ જીવોને, તથા “અસખણ થાવર
 કાય” અસખ્યાત સ્થાવરજીવોને—થાવર નામકર્મનો ઉદય જેમને છે તે સ્થાવર

તીતિ સ્થાવરઃ, સ એવ કાય=શરીર ચેષાં તે સ્થાવરક્રોધાઃ=પ્રસૂતગીતાડતપ
સન્તાપાદ્યુપેતત્ત્વેઽપિ અન્યત્ર ગન્તુમશક્તાઃ સ્થાવરનામકર્મોદયમર્ત્તિનઃ પૃથિવ્યપ્તેજો-
વાયુવનસ્પતય, તાન્ ' સુદુમ-વાયર-પત્તેય-સરીરનામસાહારણે ' સૂક્ષ્મ-વાદર-
પ્રત્યેકશરીરનામસાધારણાન્, સૂક્ષ્મ ચ વાદર ચ પ્રત્યેકશરીર ચ-સૂક્ષ્મવાદર-
પ્રત્યેકશરીરાણિ, તાનિ નામાનિ=નામકર્માણિ ચેષા તે સૂક્ષ્મવાદરપ્રત્યેકશરીર-
નામાનઃ, તે ચ તે સાધારણાશ્ચ સૂક્ષ્મવાદરપ્રત્યેકશરીરનામમાધારણાઃ, તાન્ ।
તત્ર સૂક્ષ્માઃ=ચર્મચસુગ્રાઘાઃ પૃથિવ્યાપ્રેકેન્દ્રિયાઃ, વાદરા =તત્ત્વ ચર્મચક્ષુગ્રાંઘાઃ,
પ્રત્યેકશરીરાઃ=ચેષામેકમેક જીવ પ્રતિભિન્ન ભિન્ન શરીરમુપજાયતે તે પૃથિવ્યાદયઃ ।
સાધારણાઃ=ચેષામનન્તાના જીવાના સાધારણમેક શરીર ભવતિ તે કન્દમૂલાદય ,

ચર નામ કર્મ કા ઉદય જિનકે હૈં વે સ્થાવર હૈં અથવા જો શીત આતપ
આદિ વાધા કો સહતે હુણ મી અન્યત્ર ગમન કરને મેં અશક્ત હૈં અપની
ઠ્ઠાડા સે ચલ ફિર નહીં સકતે હૈં-યે સ્થાવર હૈં તેસે યે સ્થાવર પૃથિવી, અપૂ,
તેજ વાયુ વનસ્પતિ જીવ હૈં, इन जीवों को तथा (सुदुम-वायर-पत्तैय-सरीर
नाम साधारणे) सूक्ष्म, वादर, प्रत्येक शरीररूप नाम कर्म के उदय वाले जीवों
को, तथा साधारण शरीर नामकर्म के उदयवाले जीवों को, चर्मचक्षुओं
से जो देखने में नहीं आते हॆं वे सूक्ष्म जीव हॆं, तथा जो धर्मचक्षुओं
द्वारा देखे जाते हॆं वे वादर हॆं, ये सूक्ष्म और वादर भेद पृथिवी आदि
एकेन्द्रिय जीवों के होते हॆं, प्रत्येक वे जीव हॆं कि जिनका भिन्न २ शरीर
होता है, ऐसे पृथिव्यादिक जीव होते हॆं क्योंकि इनका अपना २ भिन्न
२ शरीर होता है इन जीवों को, तथा साधारण वे जीव हॆं कि जिन
अनंत जीवों का एक ही शरीर होता है, ऐसे वे जीव कन्दमूल आदि वन-

કહેવાય છે અથવા જે ગીત, તાપ આદિની મુશ્કેલીઓ પડવા છતાં પણ
અન્યત્ર ગમન કરવાને અશક્ત છે, પોતાની ઈચ્છાથી હલનચલન કરી શકતા
નથી તે સ્થાવર છે એવા જે સ્થાવર પૃથિવી, અપૂ, તેજ, વાયુ અને વનસ્પતિ
જીવો છે તે જીવોને, તથા “ સુદુમ, વાયર, પત્તેય, સરીર નામસાહારણે ” સૂક્ષ્મ,
વાદર, પ્રત્યેક શરીરરૂપ નામકર્મના ઉદયવાળા જીવોને, તથા સાધારણ શરીર
નામકર્મના ઉદયવાળા જીવોને, ચર્મચક્ષુઓ વડે જે દેખી શકતા નથી તે સૂક્ષ્મ
જીવો છે, તથા જે ચર્મચક્ષુઓ દ્વારા જોઈ શકાય છે તે વાદર જીવો છે તે
સૂક્ષ્મ અને વાદર પૃથિવી આદિ એકેન્દ્રિય જીવોના હોય છે ‘ પ્રત્યેક જીવ ’
એ જીવો છે કે જેમના અલગ અલગ શરીર હોય છે, પૃથિવ્યાદિક જીવ એવા
હોય છે ઝરણુડે તેમને પોત પોતાનું ભિન્ન ભિન્ન શરીર હોય છે તે જીવોને,
તથા સાધારણ જીવો એ છે કે જે અનંત જીવોનું એક જ શરીર હોય છે,
એવા જીવો કદમળ આદિ વનસ્પતિકાચિડ હોય છે તે જીવો તે પ્રકારના કર્મો-

તે અનન્તા અપિ જીવાસ્તથાવિધકર્મોદયસામર્થ્યાત્ સમક્રમેયોત્પત્તિદેશમધિવસન્તિ, સમક્રમેય તચ્છરીરમાશ્રિતાઃ પર્યાપ્તિ સમારમન્તે, સમક્રમેય પર્યાપ્તાઃ ભવન્તિ । સમ-ક્રમેવ ચ પ્રાણાપાનાદિ યોગ્યપુદ્ગલાન્ ગૃહ્ણન્તિ । યચ્ચ-એકસ્ય જીવસ્યાહારયોગ્ય-પુદ્ગલોપાદાન તદેવાન્યેપામનન્તાનામપિ ભવતીતિ । ‘અણતે’ અનન્તાન્ ‘અવિજાણઓ’ અવિજાનન્તઃ=‘એતે ઘાતકા અસ્માન્ હનિષ્યન્તિ’ इति જ્ઞાનવિકલોન્ એકેન્દ્રિયાન્ ‘પરિજાણઓ ય’ પરિજાનન્તથ સ્વવધદુઃસ્વમનુભવતથ દ્વીન્દ્રિયાદીન્ ‘જીવે’ જીવાન્ ‘હમેહિં’ એમિઃ=અનુપદ વક્ષ્યમાણૈઃ ‘વિવિહેહિં’ વિવિધૈઃ=નાનાપ્રકારૈઃ ‘કારણેહિં’ કારણૈઃ=પ્રયોજનૈઃ ‘હણતિ’ ઘ્નન્તિ=યેષાં ઘાત કુર્વન્તીત્યર્થઃ । કિં તે ? કાનિ તાનિ પૃથિવ્યાદિ-હિંસાયાઃ કારણાનિ ? इत्याह-‘કરિસણે’ત્યાદિના ॥મૂ૦૧૩॥

સ્પતિ કાયિક હોતે હૈ । યે જીવ તથાવિધ કર્મોદયો કે વશ સે એક સાથ હી ઉત્પત્તિ દેશ મે રહતે હ, એકસાથ હી હનકી શરીર પર્યાપ્તિ પૂર્ણ હોતી હૈ । હસ તરહ એક હી સાથ પર્યાપ્તિ હોકર અનન્ત જીવ એક હી સાથ પ્રાણાપાનાદિ યોગ્ય પુદ્ગલોં કો ગ્રહણ કરતે હૈ । હનમે જો એક જીવ કા આહાર હોતા હૈ વહી અન્ય અનન્ત જીવોં કા મી હોતા હૈ । હસ તરહ કે (અણતે) અનન્ત સાધારણ જીવોં કો કિ-(અવિજાણઓ) “જો યહ નહીં જાનતે હૈ કિ યે ઘાતક જન હમે મારે ગે” હસ પ્રકાર કે જ્ઞાન સે વિકલ હો રહે હૈ એસે એકેન્દ્રિય જીવો કો, તથા (પરિજાણઓ ય જીવે) જો અપને વધાદિ સવધી દુઃસ્વોં કો જાનતે હૈ, એસે દ્વીન્દ્રિયાદિક જીવોં કો, (હમેહિં) હન અનુપદ વક્ષ્યમાણ (વિવિહેહિં) નાના પ્રકાર કે (કારણેહિં) પ્રયોજનો સે (હણતિ) મારતે હૈ । (કિંતે) વે પૃથિવ્યાદિ કો હિંસા કે કારણ કોનર હૈ ? વહ ‘કરિસણ’ इत्यादि અગલે સૂત્ર સે કહતે હ ॥

હયને કારણે એક સાથે જ ઉત્પત્તિ દેશમા રહે છે, એક સાથે જ તેમની શરીર-પર્યાપ્તિ પૂર્ણ થાય છે એ રીતે એક સાથે જ પર્યાપ્તિ થઇને તે અનન્ત જીવ એક સાથે જ પ્રાણાપાનાદિ પુદ્ગલોને ગ્રહણ કરે છે તેઓમા એક જીવોને આહાર હોય છે તે જ આહાર અન્ય અનન્ત જીવોના પણ હોય છે આ પ્રકારના “અણતે” અનન્ત સાધારણ જીવોને કે-“અવિજાણઓ” “જે તે નથી જાણતા કે એ ઘાતક લોકો અમને મારી નાખશે” એ પ્રકારના જ્ઞાનથી જે રહિત છે એવા એકેન્દ્રિય જીવોને, તથા “પરિજાણઓ ય જીવે” જે પોતાના વધાદિ સળધી દુઃખોને જાણે છે એવા દ્વીન્દ્રિય આદિક જીવોને, “હમેહિં” આ હવે પછીના પદોમા દર્શાવેલ “વિવિહેહિં” વિવિધ પ્રકારના “કારણેહિં” પ્રયોજનોથી “હણતિ” મારે છે “કિંતે ?” તે પૃથ્વીકાય આદિની હિંસાના કયા કયા કારણો છે, તે “કરિસણ” इत्यादि હવે પછીના સૂત્ર દ્વારા કહેવામા આવે છે

અથ પૂર્વે પૃથ્વીકાયહિંસાકારણાન્યાદ—‘કરિસણ’ इत्यादि० ।

મૂલ્પ—કરિસણ પોક્કલરણી વાવિ-વેપ્પિણ કૂવ સર-તલાગ-ચિઙ્
 વેઙ્ચ-ચાઙ્ચ-આરામ-વિહાર-થૂમ પાગાર-દાર- ગોડર અટ્ટાલંગ-
 ચરિયા સેડ-સંકમ પાસાય-વિકપ્પ-ભવણ-ઘર સરણ લયણ આવણ-
 વેઙ્ચ-દેવકુલ-ચિત્ત સમા પવા-આયયણ આવસહ-ભૂમિઘર-મંડવા-
 ણરુપ-ભાયણમહોવગરણસ્સ ય વિવિહસ્સ ય અટ્ટાપ પુઢવિ
 હિંસતિ મંદબુદ્ધિયા ॥ સૂં ૧૪ ॥

ટીકા—‘કરિસણ’ इत्यादि । ‘કરિસણ’ કર્પણ=કૃપિઃ ‘પોક્કલરણી’ પુક્કરિણી
 =સમચતુષ્કોણા કમલકાનનકાન્તિકમનિયા પય.પૂરપૂરિતપાતાલકુક્ષિતજા
 નાનાપિષ્ચિત્રવિચિત્રપતત્તિકુલરૂજિતપુઞ્જિતપૃલિનમણ્ડલમણ્ડનસુરમ્યા, ‘વાવિ’

૧ ‘કેયારો વપ્પિણ વપ્પો’ इति ‘પાઙ્ગલચ્છીનામમાલા’ ।

ભાવાર્થ—જો આત્મવોધ સે ચિકલ પ્રાણી હું વે સ્થાવર ઔર ઘસ
 જીવોં ફી નાના પ્રકાર કે પ્રયોજનોં કે વશચર્તી હોકર ચિરાયના કરતે
 હું । પૃથ્વીકાય આદિ સ્થાવર જીવ હું, ક્યોં ફિ इनके સ્થાવર નામકર્મ
 ફા ઉદય હું । દ્વીન્દ્રિયાદિક ઘસ જીવ હું, ક્યોં ફિ इनके ઘસ નામકર્મ
 ફા ઉદય હું । હમ્ની કારણ સે સ્થાવર જીવ અપની ઇચ્છાનુસાર એક સ્થાન
 સે ઘસરે સ્થાન પર ચલ ફિર નહીં સકતે હું । ઘસ જીવ અપની ઇચ્છા-
 નુસાર ચલ ફિર સકતે હું ॥ સૂં ૧૩ ॥

અથ સૂત્રકાર ઉન કારણોં કો કહતે હુપ પ્રથમ પૃથ્વીકાય કી
 હિંસા કે કારણોં કો કહતે હું—‘ કરિસણપોક્કલરણી ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(કરિસણ) કૃપિ-ચેતી કે નિમિત્ત, (પોક્કલરણી) પોક્કલ

ભાવાર્થ—જે પ્રાણીઓ આત્મબોધથી રહિત છે તેઓ સ્થાવર અને ઘસ
 જીવોની અનેક પ્રકારના પ્રયોજનથી દોશધને હિંસા કરે છે - પૃથ્વીકાય આદિ
 સ્થાવર જીવ છે, કારણકે તેમના સ્થાવર નામકર્મનો ઉદય થયો હોય છે
 દ્વીન્દ્રિયાદિઙ્ ઘસ જીવ છે, કારણકે તેમના ઘસ નામકર્મનો ઉદય થયો હોય
 છે એ જ પ્રમાણે સ્થાવર જીવ પોતાની ઇચ્છા પ્રમાણે એક જગ્યાએથી બીજી
 જગ્યાએ જઈ શકતા નથી તસજીવ પોતાની ઇચ્છા પ્રમાણે હરીફરી રાઢે છે ॥સૂ ૧૩॥

હવે સૂત્રકાર તે કારણોને બતાવતા પ્રથમ પૃથ્વીકાયની હિંસાના કારણો
 આપે છે—‘ કરિસણપોક્કલરણી ’ इत्यादि

ટીકાર્થ—“કરિસણ” કૃપિ-ચેતીને નિમિત્તે “પોક્કલરણિ” પોક્કલરણી-

वापी = दीर्घायामा 'वप्पिण' वप्पाणि = क्षेत्राणि, 'कूव' कूपा 'सर' सरः-
 कृत्रिमजलाशयः 'तलाग' तडागस्तदितरः प्रसिद्ध एव, 'चिह' चिति, मृतरुदह-
 नार्थे काष्ठचयनम्, 'चेइय' चैत्यम्-मृतकोपरिस्मारकचिह्नम्, 'खाइय' खातिका=
 परिखा, आरामः गृहसमीपोपवनम्, विहारः=विह्रियतेऽत्रेति विहारः क्रीडास्थान-
 विशेषः, 'यूम' स्तूपः=स्मारकस्तम्भः 'पागार' प्राकारः 'गढ़' इति भाषाप्रसिद्धः,
 'दार' द्वारं प्रसिद्धम्, 'गोउर' गोपुर=गुह्यारम्, 'अटालग' अटालकः=छत' अटारी'
 इति प्रसिद्धः, 'चरिया' चरिका=दुर्गनगरयोर्मध्यस्थितः अष्टस्तम्भमाणः हस्त्यादि
 सचारमार्गः, 'सेउ' सेतु = 'पुल' इति प्रसिद्ध, 'सक्रम' सक्रमः=सक्रम्यते येन स
 सक्रम = जलगर्तपारकरणाय पापाण काष्ठरचित मार्गं, 'पासाय' प्रासाद = नृपगृहम्
 विकल्प' विकल्पाः=तद्भेदाः 'भवण' भवनानि, भवनमायामापेक्षया किञ्चिदल्पमु-
 च्छ्रायमान भवति, प्रासादस्तु आयामद्विगुणोच्छ्रायः, इति प्रासादभवनयोर्विशेषः,

रिणी-पुष्करिणी के निमित्त (वाचि) वापी-वाव के निमित्त (वप्पिण)
 वावडी के निमित्त (कूव) कूप कुवा-के निमित्त (सर) सर-कृत्रिम
 जलाशय के निमित्त (तलाग) तलाग-तडाग के निमित्त (चिह) चिति
 के निमित्त (चेइय) चैत्य के निमित्त (खाइय) खातिका के निमित्त
 (आराम) आराम का निमित्त (विहार) विहार के निमित्त (यूम)
 स्तूप के निमित्त (पागार) प्राकार के निमित्त (दार) द्वार के निमित्त
 (गोउर) गोपुर के निमित्त (अटालग) अटालिका अटारी के निमित्त
 (चरिया) चरिका के निमित्त (सेउ) सेतु-पुल के निमित्त (सक्रम)
 सक्रम के निमित्त (पासाय) प्रासाद-राजमहल के निमित्त (विकल्प)
 विकल्प-विकल्प के निमित्त (भवण) राजमहल विशेष-उनके लिये

पुष्करिणीने निमित्ते "वाचि" वापी-वावने निमित्ते "वप्पिण" वावडीने
 निमित्ते "कूव" कूप-कुवाने निमित्ते "सर" सर-कृत्रिम जलाशयने निमित्ते
 "तलाग" तलाग-तडागने निमित्ते "चिह" चितिने निमित्ते "चेइय" चैत्यने
 निमित्ते "खाइय" खातिका-पाधने निमित्ते "आराम" आराम-भगीयाना
 निमित्ते "विहार" विहारने निमित्ते "यूम" स्तूपने निमित्ते "पागार" प्राकार
 किलाने निमित्ते "दार" द्वारने निमित्ते "गोउर" गोपुरने निमित्ते "अटालग"
 अटालिकाने निमित्ते "चरिया" चरिकाने निमित्ते "सेउ" सेतु-पुलने निमित्ते
 "सक्रम" सक्रमने निमित्ते "पासाय" प्रासाद-राजमहलने निमित्ते "विकल्प"
 विकल्प-विकल्पने निमित्ते "भवण" भवने के एक प्रकारना राजमहल भाटे,

‘ઘર’ ગૃહા = પ્રસિદ્ધા, ‘સરણ’ શરણાનિ = સામાન્યગૃહાણિ, ‘લયણ’ લયનાનિ પર્વતવર્તિ પાપાણગૃહાણિ, ‘આવણ’ આપણાઃ = દૃષ્ટાઃ, ‘વેદ્ય’ વેદિકા = પરિપ્લુતા ભૂમિઃ, ‘દેવકુલાનિ’ = યજ્ઞગૃહાણિ, ‘ચિત્તસભા’ ચિત્રસભા-ચિત્રયુક્તસમાસ્થાનમ્, ‘પવા’ પ્રપા = પાનીયશોભા ‘પ્યાઝ’ ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા, ‘આયયણ’ આયતન = યજ્ઞ-શાલા, ‘આવસહ’ આવસથઃ = તાપસાશ્રમઃ, ‘ભૂમિઘર’ ભૂમિગૃહ = ગૃહારૂપ પૃથ્વીગૃહમ્, ‘મહવાણ’ મહડપાઃ = પટનિર્મિતગૃહાસ્તેષા, ‘કળ’ કૃતે = એતન્નિમિત્તમિત્યર્થઃ । તથા ‘ભાયણ મહોવગરણસ્સ’ ભાજનભાણ્ડોપકરણસ્ય ભાજનાનિ = સૌવર્ણરાજતાદીનિ, ભાણ્ડાનિ = મૃષ્મયાનિ શરાગ્રાદીનિ, ઉપકરણાનિ = ઉદ્ગલ મુસલાદીનિ એતેષાં સમા-હારદ્વન્દ્વે-ભાજનભાણ્ડોપકરણમ્, તસ્ય ચ ‘વિવિહસ્સ ય’ વિવિધસ્ય ચ = અનેક પ્રકારસ્ય ‘અદ્વાણ’ અર્ધાય = પ્રયોજનાય ‘મદ્બુદ્ધિયા’ મન્દ્બુદ્ધિકાઃ = સ્વપરહિતા-હિતવિવેકપ્રિયભાજનાઃ, ‘પુઢવી’ પૃથ્વી ‘હિસતિ’ ઘ્નન્તિ ॥મૂ૦૧૪॥

(ઘર) ઘર કે નિમિત્ત (સરણ) શરણ-સામાન્યગૃહ કે નિમિત્ત (લયણ) લયન-પર્વતવર્તિ પાપાણ ઘર કે નિમિત્ત (આવણ)આપણ-દ્રાઢ કે નિમિત્ત (વેદ્ય) વેદિકા-ચોતરે કે નિમિત્ત (દેવકુલ) દેવકુલ-યજ્ઞાયતન કે નિમિત્ત (ચિત્તસભા) ચિત્રસભા-ચિત્રયુક્ત સભા કે નિમિત્ત (પવા) પ્રપા-પ્યાઝ કે નિમિત્ત “આયયણ” આયતન-યજ્ઞશાલા કે નિમિત્ત (આવસહ) અવસથ-તાપસોં કે આશ્રમ કે નિમિત્ત (ભૂમિઘર) ભૂમિગૃહ કે નિમિત્ત (મહવાણકળ) મહપ કે નિમિત્ત તથા (ભાયણ મહોવગરણસ્સ-ય-વિવિહસ્સ ચ અદ્વાણ પુઢવિં હિંસતિ મદ્બુદ્ધિયા) નાના પ્રકારકે ભાજન ભાણ્ડોપકરણકે નિમિત્ત મન્દ્બુદ્ધિજન પૃથ્વીકાય જીવોકી હિંસા કરતેહૈં ।

ભાવાર્થ—પૃથ્વી કાયિક એકેન્દ્રિય જીવ હૈં । હસ એકેન્દ્રિય જીવ કી હિંસા કરને કા નિમિત્ત-પ્રયોજન કયા હોતા હૈં-હસ વિષય કો સૂત્ર

“ઘર” ઘરને નિમિત્તે “શરણ” શરણુ સામાન્ય ગૃહને નિમિત્તે “લયણ” લયન પર્વતવર્તિ પાપણુ ઘરને નિમિત્તે “આવણ” આપણુ-દુકાનને નિમિત્તે “વેદ્ય” વેદિકા-ચોતરાને નિમિત્તે “દેવકુલ” દેવકુલ-યજ્ઞાયતનને નિમિત્તે “ચિત્તસભા” ચિત્રસભા-ચિત્રયુક્ત સભાને નિમિત્તે “પવા” પ્રપા-પરખ નિમિત્તે “આયયણ” આયતન યજ્ઞશાલાને નિમિત્તે “આવસહ” આવસથ-તાપસોના આશ્રમોને નિમિત્તે “ભૂમિઘર” ભૂમિગૃહને નિમિત્તે “મહવાણકળ” મહપને નિમિત્તે, તથા “ભાયણ મહોવગરણસ્સ ય વિવિહસ્સ ય અદ્વાણ પુઢવિં હિંસતિ મદ્બુદ્ધિયા” અનેક પ્રકારના ભાજન, ભાણ્ડોપકરણને નિમિત્તે મદ્બુદ્ધિવાળા લોકો પૃથ્વીકાય જીવોનીહિંસા કરે છે

ભાવાર્થ—પૃથ્વીકાયિક જીવો એક એકેન્દ્રિયવાળા હોય છે, એ એકેન્દ્રિય જીવની હિંસા કરવાના નિમિત્તો પ્રયોજનો ત્યા કયા હોય છે, તે વિષે સૂત્ર

કાર ને યહા નિર્દિષ્ટ કિયા હૈ । મદધુદ્ધિજનોં સે યહા તાત્પર્ય સ્વપર હિત
કે વિવેક સે વિરુલ જનોં સે હૈ । જિન્હે સ્વ ઓર પર કા વિવેક નહોં હૈ
એસે પ્રાણી હી કૃષી આદિ હન ઉપર્યુક્ત કારણોં કે ઘશવર્તી હોકર પૃથિવી
કાથિક જીવ કી હિંસા કિયા કરતે હૈ । કૃષીકર્મ પ્રસિદ્ધ હૈ । જિસકે
ચારો કોણ સમાન હોં, કમલ જિસમેં વિકસિત હો રહે હોં, અગાધ-
જલ જિસમેં ભરા હો, નાના પ્રકાર કે કલરવ સે જિમકે તટ મણિષ્ઠત હો
એસે સુરમ્ય જલાશય કા નામ પુષ્કરિણી હૈ । જિસકા વિસ્તાર દીર્ઘ હો
ઉસકા નામ વાપી હૈ । હિન્દી મેં ઇસે વાવડી કહતે હૈ । અનાજ કે બોને
કા જો સ્થાન હોતા હૈ ઉસે ક્ષેત્ર-લેન કહતે હૈ । કૃત્રિમ જલાશય કા નામ
સર હૈ । સ્વાભાવિક જલાશય કા નામ તઢાગ હૈ, ઇસે હિન્દી મેં તાલાવ
કહતે હૈ । ચિતા કા નામ ચિતિ હૈ, જો મૃતક કે દાહ સસ્કાર કે નિમિત્ત
શ્મશાન મેં લકડિયોં કે ઢેર કે રૂપ મેં ચિની જાતી હૈ । કિસી મૃતક કી
યાદગાર મેં જો ઉસકા સ્મૃતિ ચિહ્ન સ્વરૂપ ભવન આદિ ઘના દિયા જાતા
હૈ ઉસકા નામ ચૈત્ય હૈ । કિલે કે પરકોટે કે ચારોં ઓર જો ગહરી લ્વાઈ
હોતી હૈ કિ જિસમેં જલ ભી ભરા રહ્તા હૈ ઉસકા નામ લ્વાતિકા-લ્વાઈ
હૈ । ઘર કે પાસ કે ઘગીચે કા નામ આરામ હૈ, નગર સે કુછ દૂર પર
જો જનોં કા ક્રીડા સ્થાન હોતા હૈ ઉસકા નામ વિહાર હૈ । જો સ્મારક

કાર આ સૂત્રમા સ્પષ્ટીકરણ કરે છે અહીં મદધુદ્ધિજનોના અર્થ, પોતાનું
અને પારકાનું હિત ન બાણનાર લોકો થાય છે જેમને સ્વ અને પરનો વિવેક
હોતો નથી એવા જીવોને કૃષિ આદિ ઉપર કહેલ કારણોને વશ થઈને પૃથિવી
કાથિક જીવની હિંસા કરી કરે છે કૃષિકર્મ પ્રસિદ્ધ છે એટલે તેને વિષે સ્પ
ષ્ટીકરણની જરૂર નથી જેના ચારે ખૂણા સમાન હોય, જેમા કમળો વિકસ્યા
હોય, જેણા ઊંડુ ખાણી ભરેલું હોય વિવિધ પ્રકારના કલરવથી જેનો તટ મણિષ્ઠ
હોય એવા સુંદર જળાશયને પુષ્કરિણી કહે છે જેનો વિસ્તાર લાંબો હોય
તેવી વાવને વાપી કહે છે હિંદીમા તેને વાવડી કહે છે, અનાજ વાવવાનું જે
સ્થાન હોય છે તેને ક્ષેત્ર ખેતર કહે છે કૃત્રિમ જળાશયને સર કહે છે ચિતાને
ચિતિ કહે છે, જે મૃત શરીરને અગ્નિદાહ દેવાને માટે લાકડાના ઢગલા રૂપે
ખડકવામા આવે છે કોઈ મૃત વ્યક્તિના સ્મરણાર્થે જે ભવન આદિ બનાવાય
છે તેને ચૈત્ય કહે છે કિલ્લાની દિવાલની ચારે તરફ જે જાડી ખાઈ હોય છે, અને
જેમા ખાણી પણ ભરેલું રહે છે તે ખાઈને ખાતિકા ખાઈ કહે છે ઘર પાસેના
ખાગને આરામ કહે છે નગરથી દૂર જે લોકોનું ક્રીડા સ્થાન હોય છે

સત્તમ ઘનાયા જાતા હૈ વહ સ્તૂપ હૈ । પ્રાકાર-જિસે હિન્દી ભાષા મે ગદ્ કહતે હૈ । નગર મેં પ્રવેશ કરને કા જો પ્રધાન દ્વાર હોતા હૈ ઉસકા નામ ગોપુર હૈ । દુર્ગજિલે આદિ મકાનોં કે છત કો અટારી કરતે હૈ । દુર્ગ ઓર નગર કે ચીચ મેં જો આઠ ફાવ પ્રમાણ કા માર્ગ હોતા હૈ કિ જિસસે હોકર હાથી આદિ આતે જાતે રહતે હૈ ઉસકા નામ ચરિકા હૈ । જલ કી ધારા પ્રવાહ કો પાર કરને કે લિયે જો પાપાણ અથવા કાઠ કા ઉસ પર માર્ગ ઘના દિયા જાતા હૈ ઉસકા નામ સક્રમ હૈ । એસે સ્થાન નદી નાલોં આદિ જલાશય પ્રદેશોં પર ઘને હુણ રહતે હૈ । રાજમહલ પ્રસિદ્ધ હૈ, હસે સસ્કૃત ભાષા મેં પ્રાસાદ કહતે હૈ । ભવન-લમ્બાઈ કી અપેક્ષા કુછ થોડી કમ ડુંચાઈ નાલા હોતા હૈ । તથા જો પ્રાસાદ હોતા હૈ વહ ભવન કી અપેક્ષા ત્રિગુણિત ડુંચાઈ ચાલા હોતા હૈ । સામાન્યઘર કા નામ શરણ હૈ । પર્વત કે પાસ જો પથરોં કે ઘર ઘને હુણ હોતે હૈ ઉનકા નામ લયન હૈ । દુકાન કા નામ દટ્ટ યા હાટ હૈ । પરિપ્કુન ભૂમિ કા નામ વેદિકા હૈ । દેવકુલ-યક્ષાયતન-યક્ષ કે સ્થાન કો કહતે હૈ । જિસ સભા-સ્થાન મેં ચિત્ર હોતે હૈ ઉસકા નામ ચિત્રસભા હૈ । જરા લોગોં કો પાની પિલાયા જાતા હૈ ઉસકા નામ પ્યાઝ હૈ । યજ્ઞશાલા કા નામ આયતન, તાપસાશ્રમ કા નામ આવસય, પૃથિવી કે નીચે ઘને હુણ ઘર કા નામ

વિહાર કહે છે સ્મારક ન્તાલને સ્તૂપ કહે છે કિલ્લાને પ્રાકાર કહે છે નગરમા પ્રવેશ કરવાનુ જે મુખ્યદ્વાર હોય છે તેને ગોપુર કહે છે જે માળના આદિ મકાનોની અગાળીને અટારી કહે છે દુર્ગ અને નગરની વચ્ચે જે આઠ હાથ પહોળા માર્ગ હોય છે, કે ન્યા થઈ હાથી આદિ આવે જાય છે, તે માર્ગને ચરિકા કહે છે પાણીના પ્રવાહને ઓળંગવાને માટે તેના પર પથ્થર અથવા લાકડાનો જે માર્ગ બનાવવામા આવે છે તેને સક્રમ (પુલ) કહે છે એવા સ્થાનો નદી, નાળા, આદિ જગ્યાઓ પર બનાવેલા હોય છે રાજમહેલ શબ્દ બહુીતો છે તેને સસ્કૃત ભાષામા પ્રાસાદ કહે છે લવનની જિથાઈ પ્રાસાદ કરતા ઓછી હોય છે લવન કરતા પ્રાસાદની જિથાઈ બમણી હોય છે સામાન્ય ઘરને શરણ કહે છે પર્વતની પાસે પથ્થરોના જે ઘર હોય છે તેમને લયન કહે છે દુકાનને હટ્ટ અથવા હાટ કહે છે ચાતરાને વેદિગ કહે છે દેવકુલ યક્ષાતન યક્ષના સ્થાનને કહે છે જે સભાસ્થાનમા ચિત્રા હોય છે, તે સભાસ્થાનને ચિત્રસભા કહે છે ન્યા લોકોને પાણી પાવામા આવે છે તે જગ્યાને પ્યાજિ-પરણ કહે છે યજ્ઞશાળાને આયતન, તાપસના આશ્રમને આવસય, જમીનની અદર બનાવેલ

અથાઅપ્કાયહિંસાકારણાન્યાહ—‘જલ ચ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્— જલં ચ મજ્જણય-પાણ-ભોયણ-વત્થ ધોવણ-
સોયમાહ્મહિં ॥સૂ૦૧૫॥

ટીકા—‘મજ્જણય’ મજ્જનક્ર=સ્નાન ‘પાણ’ પાન ‘ભોયણ’ ભોજન ‘વત્થધોવ-
ણ’ વસ્ત્રધોવન=વસ્ત્રપ્રક્ષાલનં ‘સોય’ શૌચમ્ ‘આહ્મહિં’ આદિભિઃ=મજ્જનાધનેક
કારણૈઃ ‘જલ ચ’=અપ્કાય હિંસન્તિ ॥સૂ૦૧૫॥

અથાગ્નિકાયહિંસાકારણાન્યાહ—‘પયણ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—પયણ-પયાવણ-જલણ-જલાવણ-વિદસગેહિં અ-
ગ્નિં ॥સૂ૦૧૬॥

ટીકા—‘પયણ’ પચન-સ્વય, ‘પયાવણ’ પાચનમન્યૈઃ ‘જલણ’ ઉત્કલન=સ્વહ
સ્તેન પ્રદીપનમ્, ‘જલાવણ’ ઉત્કલનમ્=અન્યૈઃ, ‘વિદસણ’ વિદર્શન=પ્રકાશકરણમ્,
પ્રભિઃ કારણૈઃ=પ્રયોજનૈઃ ‘અગ્નિં’ અર્ગ્ગિં હિંસન્તિ ॥સૂ૦૧૬॥

ભૂમિઘર યા તલઘર, તથા કા નામ પટઘર, અથવા મડપ છે । ચાદી સોને
કે ઘને હુપ વર્તનો કા નામ યહા ભાજન એવ મિટ્ટી કે ઘને હુપ વર્તનો કા
નામ માઢ છે । ઉદ્ધલ (ઓલ્લી) તથા મુસલ આદિ કો યહા ઉપકરણ
સે ગ્રહણ કિયા છે ॥સૂ૦ ૧૪॥

અથ અપ્કાય કી હિંસા કરને કે પ્રયોજન કો સૂત્રકાર સ્પષ્ટ કરતે હૈ—
‘જલ ચ મજ્જણ ય’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(મજ્જણય) સ્નાન, (પાણ) પાન, (ભોયણ) ભોજન,
(વત્થધોવણ) વસ્ત્રપ્રક્ષાલન, (સોય) શૌચ, ઇત્યાદિ કારણો કો લેકર
(જલ ચ) અપ્કાય-જલકાય કી હિંસા કરતે હૈ ॥ સૂ૦૧૫ ॥

અથ અગ્નિકાય કી હિંસા કરને કે પ્રયોજન કો સૂત્રકાર કહતે

ઘરને ભૂમિઘર અથવા તલઘર અને તળૂને પટઘર અથવા મડપ કહે છે આદી
સોનામાથી બનાવેલ વાસણોને લાજન અને માટીમાથી બનાવેલા વાસણોનેલાઠ કહે
છે આહુતિયો તથા સાબેલા આદિને અહી ઉપકરણથી ગ્રહણ કરેલ છે ॥ સૂ ૧૪ ॥

હવે અપ્કાય (જળકાય)ની હિંસા કરવાના પ્રયોજનને સૂત્રકાર સ્પષ્ટ કરે
“જલ ચ મજ્જણ ય” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ મજ્જણય ” સ્નાન, “ પાણ ” પાન “ ભોયણ ” ભોજન,
“ વત્થધોવણ ” વસ્ત્રધોવા, “ સોયા ” શૌચ ઇત્યાદિ કારણોને લીધે અપ્કાય
જળકાયની હિંસા થાય છે ॥સૂ૦ ૧૫॥

હવે અગ્નિકાયની હિંસા કરવાના પ્રયોજનને સૂત્રકાર બતાવે છે—

અથ વાયુકાયદિસાકારણાન્યાદ—‘સુષ્પ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલ્મ—સુષ્પ-વિયણ-તાલિયંટ-પેદુળ-મુહ-કરયલ સગપત્ત-વત્થ પવમાઇર્ણિ અણિલં ॥ સૂ ૧૭ ॥

ટીકા—‘સુષ્પ’ શૂર્પઃ=અશ્વશોધનોપકરણવિશેષ, ‘છાજ’ ‘સૂપડા’ ઇતિ માપાપ્રમિદ્ધઃ ‘વિયણ’ વ્યજન=વશશલાકાદિનિર્મિતમ્, ‘તાલિયંટ’ તાલવૃન્ત ‘તાલપત્તા’ ઇતિ પ્રસિદ્ધમ્, ‘પેદુળગ’ પેદુળક=મયૂરપિચ્છકૃતવ્યજનં ‘મુહ’ મુલ્લ

હૈ—‘પયણપયાવણ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(પયણ-પયાવણ-જલણ-જલાવણ-વિદસણેદિ અગ્નિ) સ્વયં ભોજનપનાના, દૂસરોંસે ભોજન વનવાના, સ્વયં અગ્નિ જલાના, દૂસરોંસે અગ્નિ જલવાના, તથા દીપક જલાકર પ્રકાશ કરના, ઇત્યાદિ પ્રયોજનોં કો લેકર અગ્નિકાય કી હિંસા કરતે હૈ ॥ સૂ ૧૬ ॥

વાયુકાય કી હિંસા કરને કે પ્રયોજન કો સૂત્રકાર કહતે હૈ—
‘સુષ્પવિયણ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(સુષ્પ વિયણ-તાલીયંટ પેદુળ મુહ-કરયલ સગપત્તવત્થપવમાઇર્ણિ અણિલ) સૂપસે જથ પછાડર કર અન્ન આદિ શોધન કરતે હૈં તથ, વશશલાકા આદિ સે નિર્મિત પલ્લે સે જય હવા કી જાતી હે તથ, તાલ-વૃક્ષ કે પત્તે સે ચને છુપ પલ્લે સે જય હવા કી જાતી હૈં તથ, મયૂર કે પિચ્છોં સે નિર્મિત પલ્લે સે જય હવા કી જાતી હૈં તથ, મુલ્લ

“પયણપયાવણ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“પયણ, પયાવણ, જલણ, જલાવણ, વિદસણેદિ અગ્નિ” ભતે ભોજન ખનાવવાને, ખીજ પામે ભોજન ખનાવરાવવાને, પોતે અગ્નિ સળગાવવાને, અન્ય પામે અગ્નિ સળગાવરાવવાને, તથા દીવો સળગાવીને પ્રકાશ કરવા, ઇત્યાદિ પ્રયોજનોને માટે અગ્નિકાયની હિંસા કરે છે ॥ સૂ ૧૬ ॥

હવે વાયુકાયની હિંસા કરવાના પ્રયોજનોને સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે—

“સુષ્પ વિયણ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“સુષ્પ, વિયણ, તાલિયંટ, પેદુળ, મુહ, કરયલ સગપત્ત વત્થ પવમાઇર્ણિ અણિલ” ન્યારે સૂપડા વડે ઝાટકીને અનાજ સાફ કરાય છે ત્યારે, પાસની સળીઓ આદિમાથી ખનાવેલા પખા વડે ન્યારે હવા ખવાય છે ત્યારે, તાડના પાનામાથી ખનાવેલ પખા વડે ન્યારે પવન નખાય છે ત્યારે, મોરના પીછામાથી ખનાવેલ પખા વડે ન્યારે પવન નખાય છે ત્યારે, ન્યારે કોઈ નિર્મિત મુખથી

‘કરયલ’ કરતલ=હસ્તતલ ‘સગપત્ત’ સાગપત્ર=ઘૃસવિશેષપત્ર ‘વત્થ’ પત્રમ્, ‘એવ-
માઈપહિ’ એવમાદિભિઃ=ઇત્યાદિમિર્ચયદીરકપિચુદ્ધજનાદિસાધનૈઃ ‘અણિલ’
અનિલ=વાયુ હિંસન્તિ ॥સૂ૦ ૧૭॥

અથ વનસ્પતિકાયહિંસાકારણાન્યાહ—‘અગારે’ત્યાદિ ।

મૂલમ્—અગાર- પરિયાર-ભક્ત-ભોયણ--સયણાસણ-ફલગ-
મુસલ-ઝલ-તત-વિતતાતોજ-વહણ-વાહણ-મંડગ-વિવિહભવણ-
તોરણ-વિટંગ-દેવકુલ-જાલયદ્ધચદ-નિજ્જૂહગ-ચંદ-સાલિય-વેડ્ય-
ણિસ્સે-ણિદોણિ-ચંગેરી-સ્વીલ-મંડવ સમા-પવા-ડડવસહ-ગધમહાણુ
લેવણ-વર-જુય-નગલ-મેડ્ય-કુલિય-સદણસીયા રહ-સગડ-જાણ-
જોગ-અટ્ટાલગ-ચરિઅદાર-ગોપુર-ફલિહા-જંત-સૂલિયા લડ-
મુસંઢિ-સયગ્ધી-ઘહુપહરણા-વરણુવક્ષરાણ કણ અણેહિ એવમા-
ઈપહિ વહુહિ કારણસણહિ હિસતિ તરુગણે મણિણ અમણિણ
ય એવમાઈ ॥ સૂ૦ ૧૮ ॥

સે જબ કિસી નિમિત્ત ફૂક મારી જાતી હૈ તબ, ઓર છુલે મુહ બોલતે
હૈં તબ, જન હાથોં સે તાલી બજાઈ જાતી હૈ તબ. જબ પત્ર શાક કે પત્તોં
કો સાફ કરને કે લિયે ઉન્હેં હાથ પર ઘટકારા જાતા હૈ તબ, ઓર જબ
ઘસ્ટ કે અચલ સે હવા કી જાતી હૈ તબ, તથા વિજલી આદિ કે પર્લોં
સે જબ હવા કી જાતી હૈ તબ વાયુકાય કે જીવોં કી હિંસા હોતી હૈ ।
તાત્પર્ય હસકા ઘહ હૈ કિ જિતને મી વાયુદીરક સાધન હૈ ઉન સે વાયુ
કાય કે જીવોં કી હિંસા હોતી હૈ ॥સૂ-૧૭॥

અવ વનસ્પતિ કી હિંસા કરને કે પ્રયોજન કો સૂત્રકાર કહતે હૈ—

કુક મારવામા આવે છે ત્યારે, ન્યારે ખુદ્ધે મોઢે ખોલવામા આવે છે ત્યારે
ન્યારે હાથો વડે તાળી વગાડવામા આવે છે ત્યારે, ન્યારે શાંઠના પાનને સાફ
કરવાને માટે હાથથી ઝાટકવામા આવે છે ત્યારે તથા વીજળી આદિના પખા
વડે ન્યારે હવા ખાવામા આવે છે ત્યારે વાયુકાય જીવોની હિંસા થાય છે તેતુ
તાત્પર્ય એ છે કે હવા ખાવાના જેટલા સાધનો છે તેમનાથી વાયુકાય જીવોની
હિંસા થાય છે ॥સૂ ૧૭॥

હવે વનસ્પતિકાયની હિંસા કરવાના પ્રયોજનોને સૂત્રકાર પ્રગટ કરે છે.

टीका—‘अगार’ अगार=गृह ‘परियार’ परिचारः=जीविकाः, खट्वादि कोशो वा ‘भक्ख’ भक्ष्याणि=मोदकादीनि ‘भोयण’ भोजनानि=ओदनादीनि, ‘सयणासण’ शयनासनानि=शयनानि=मञ्च पर्यङ्कादिशय्याः; आसनानि=भद्रासनादीनि ‘फलग’ ‘फलकानि=काष्ठनिर्मितवस्तुविशेषाः ‘तख्ता’ इति भाषा प्रसिद्धानि ‘मुसलमुदूखल च प्रसिद्धम्, ततानि=वीणादीनि-विततानि=मुरजभेर्यादीनि, ‘आतोज्ज’ आतोधानि=वाद्यविशेषाः, ‘वहण’ वहनानि=पोतनौकादीनि यानपात्राणि ‘वाहण’ वाहनानि=शिविकादीनि ‘भडग’ भाण्डानि=गृहोपकरणानि, ‘विचिहभवण’ विविध भवनानि=सर्वतोभद्रादिभवनानि, तोरणानि=द्वारशोभाकारिवन्दनमालादीनि, ‘विटग’ विटङ्काः=रूपोतपालेयः ‘छज्जा’ इति भाषा प्रसिद्धाः, देवकुलानि=यक्षगृहाः, ‘जालय’ जालकानि=गवाक्षविशेषाः, ‘अद्धचंद’ अर्धचन्द्राः=अर्धचन्द्राकार-
‘अगार-परियार-भक्ख’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(अगार) अगार-गृह, (परियार) परिचार-जीविका अथवा खट्वादि कोश-भ्यान, (भक्ख) भक्ष्य-मोदक आदि खाने योग्य द्रव्य, (भोयण) भोजन-ओदनादि द्रव्य, (सायणासण) शयनासन-मञ्च पर्यङ्क आदि शय्या, भद्रासन आदि आसन, (फलग) फलक-काष्ठनिर्मित वस्तुविशेष-तख्ता, (मुसल) मुसल, उदूखल-ओखली (तत) तत-वीणा आदि वाद्य (वितत) वितत-मुरज भेरी आदि वाजे, (आतोज्ज) आतोद्य वाद्यविशेष, (वहण) वहन-पोत, नौका आदि यान पात्र, (वाहण) वाहण शिविका आदि, (भडग) भडक-गृहके उपकरण, (विचिहभवण) विविध भवन-सर्वतोभद्र आदि मकान, (तोरण) तोरण-द्वार की शोभा वर्धक वदन-माला आदि, (विटग) विटक-कपोतपाली-छज्जा, (देवकुल) देवकुल यक्षगृह, (जालय) जालकगवाक्ष-खिडकी, (अद्धचंद) अर्धचन्द्राकार

“अगार, परियार-भक्ख” इत्यादि

टीकार्थ—“अगार” अगार-गृह “परियार” परिचार-जीविका अथवा तलवार आदिनु भ्यान “भक्ख” लक्ष्य-लाडु आदि भावा लायक द्रव्य “भोयण” भोजन-लात आदिद्रव्य “सयणासण” शयनासन-पाटलो पलंग आदि शय्याना साधनो, भद्रासन आदि आसन “फलग” फलक लाकडानी पाट, पाटियु “मुसल” साधेनु, छद्मफल-पाडण्डियो “तत” तत वीण्य आदि वाद्य “वितत” वितत-मुरज भेरी आदि वाद्य त्री “आतोज्ज” आतोद्य-अेक प्रकारनु वाद्य विशेष “वहण” वहन पोत नौका आदि, वाहन-पालणी आदि “भडग” लडक गृहना उपकरणो, “विचिहभवण” विविध भवन-सर्वतोभद्र आदि मकान “तोरण” द्वारनी शोभा वर्धनार वदनमाला आदि “विटग” विटक-छण्ड “देवकुल” यक्षगृह “जालय” जालक-गवाक्ष पाली “निज्जहण” पाली “अद्धचंद” अर्धचन्द्र अर्धचन्द्राकार सोपान

सोपानविशेषा, 'निज्जूहग' निर्यूहकाणि=द्वारोर्ध्वभागनिर्निर्गताः घोटकाया-
काराः काष्ठविशेषाः, 'चदसालिय' चन्द्रशालिकाः=प्रासादोपरितनशालाः 'वेइय'
वेदिका=माङ्गणे कृतोपवेशनस्थानम्, 'णिस्सेणि' निश्रेणिः 'सीदी' इति मसिद्धा
'दोणि' द्रोणिः=लघुनौका, 'चगेरी' तृणादिनिर्मितपात्रविशेषः 'टोफरी' इति
भाषा प्रसिद्धा देशीशब्दोऽयम्, 'खील' कीला=मसिद्धा, 'मडव' मण्डपाः=पट-
गृहाः, द्राक्षादिमण्डपा वा, समाः=जनोपवेशनस्थानानि, 'पवा' प्रपाः पानीय-
शालाः, 'आवसह' आवसथाः=तापसाश्रमाः 'गघ' गन्धाः=गन्धद्रव्याणि, 'मल्ल'
माल्यानि=कुसुमानि=माल्य=कुसुमस्रग् या, 'अणुलेण' अनुलेपनं=चन्दन,
'अवर' अम्बराणि=वस्त्राणि, 'जुय' युगानि 'झसरा' इति भाषा मसिद्धानि,
'नगल' लागलानि हलानि, 'मेइय' मेतिकानि यैः कृष्टक्षेत्र मृद्यते, 'कुलिय' कुलि-
कानि हलभेदा 'सदण' स्यन्दनो रथविशेषाः, 'सीया' शिविकाः- 'पालखी' इति

सोपानविशेष, (निज्जूहग) निर्यूहक-द्वारके उर्ध्वभागमें गहर की ओर
लगे हुए घोड़ा आदि के आकार वाले काष्ठ विशेष, (चदसालिय) च-
द्रशालिका-प्रासाद के ऊपरकी शाला, (वेइय) वेदिका-आगनमें बैठने
के लिये बना हुआ स्थान, (णिस्सेणि) निःश्रेणी-नसेनी-सीदी, (दोणि)
द्रोणी-लघुनौका होडी, (चगेरी) चगेरी-तृणादिसे बना हुआ पात्र विशेष,
जिसे चगेर भी कहते हैं, (खील) कीला, (मडव) मण्डप-पटगृह अथवा
द्राक्षादि मण्डप, (समा) सभा-मनुष्योंके बैठने का स्थान, (पवा) प्रपा-
प्याऊ, (आवसह) आवसथ-तापसाश्रम, (गघ) गघ-सुगन्धि द्रव्य,
(मल्ल) माल्यकुसुम आदि माला-कुसुमों की गुथी हुई पुष्पमाला, (अनु-
लेवण) अनुलेपन-चन्दन, अम्बर-वस्त्र, (वरयुग) युग-झसरा-जुवारी,
(नगल) लागल-हल, (मेइय) मेतिक-वस्त्र, जिससे जुता हुआ खेत

विशेष, निर्यूहक-आरण्यानी ऊपर गहरनी आबुजे लगाडेल घोड़ा आदिना
आधारना काष्ठ विशेष "चदसालिय" चन्द्रशालिका-प्रासादना ऊपरनी शाला
"वेइय" वेदिका-आगणुभा जेसवा भाटेना चोतरा, "णिस्सेणि" निश्रेणी
निसरणी, "दोणि" द्रोणी नानी नौका "चगेरी" चगेरी तृणादिभाथी जनावेला पान
विशेष जेने चगेर पणु डहे छे "खील" खूटो "मडव" मण्डप-पटगृह अथवा
द्राक्षादिना मण्डप "समा" सभा-माणुसेने जेसवानु स्थान "पवा" प्रपा परण
"आवसह" आवसथ-तापसेना आश्रम "गघ" गघ-सुगन्धि द्रव्य "मल्ल" मल्लानुलेवण,
मल्ल-माल्य कुसुम आदिनी भाणा, अनुलेपन चन्दन, अम्बर वस्त्र "युग" झसरा
पूसरी "नगल" लागल हल "मेइय" मेतिक वस्त्र जेनाथी जेडेलु जेतर जेक

પ્રસિદ્ધાઃ, 'રહ' રયાઃ-પ્રસિદ્ધાઃ, 'સગડ' શકટાનિ=પ્રસિદ્ધાનિ, 'જાણ' યાનાનિ=શકટવિશેષાઃ, 'જોગ' યુગ્યાનિ=જમ્પાનવિશેષાઃ, 'અટ્ટાલગ' અટ્ટાલકા=પ્રાકારોપરિવર્તિ સ્થાનવિશેષાઃ 'ચરિઅ' ચરિકા=નગરપ્રાકારમન્થસ્થાપ્તપ્રમાણમાર્ગાઃ 'દાર' દ્વારાણિ=પ્રસિદ્ધાનિ, 'ગોપુર' પુરદ્વારાણિ, 'ફલિહ' પરિઘા અર્ગલાઃ 'યત' યન્ત્રાણિ=પ્રસિદ્ધાનિ 'સૂલિયા' શૂલિકાઃ=શૂલારોપણકાષ્ઠાનિ, 'લુડ' લકુટાઃ=યદ્યઃ, 'મુસદિ' શસ્ત્રવિશેષાઃ, 'સયમ્ધી' શતઘ્ન્ય=શસ્ત્ર વિશેષા, મહાશિલાસુ યા ઉપરિષ્ઠાત્ પાતિતા સત્યઃ શતાનિ ધ્વન્તિ, એવ 'વહુ' ગહ્વીનિ=અનેકાનિ 'પહરણ' મહરણાનિ=શસ્ત્રાણિ સ્વદ્ધતોમરતીરાદીનિ 'આવરણ' આવરણાનિ=સ્ફુરકાણિ 'છરપલા' ઇતિ પ્રસિદ્ધાનિ ઉચ્ચસ્ત્રાણ 'ઉપસ્કરાણિ=ગૃહોપકરણાનિ, કપાટાદીનિ, તેષા 'કપ' કૃતે=એતદર્થે, તથા 'અળેહિય' અન્યેથ, 'એમમાઈઈ' એમમાદિકૈઃ

એકસા ક્રિયા જાતા હૈ, (કુલિય) કૂલિક-હલવિશેષ, સ્પદન-રથવિશેષ, (સીયા) શિખિકા-પાલખી, (રહ) રથ-સામન્ય રથ (સગડ) શકટ-ગાડા, (જાણ) યાન-વાહન વિશેષ, (જોગ) યુગ્ય-જમ્પાન વિશેષ, (અટ્ટાલગ) અટ્ટાલક-પ્રાકાર કે ઉપર કા સ્થાન વિશેષ (ચરિકા) ચરિકા-નગર ઓર કોટ કે મધ્ય કા આઠ હાથ પ્રમાણ કા માર્ગવિશેષ, (દાર) દ્વાર, (ગોપુર) ગોપુર-પુરદ્વાર (ફલિહા) પરિઘા-અર્ગલા બેંડા, (યત) યત્ર, (સૂલિયા) શૂલિકા - શૂલારોપણ કાષ્ઠ (લુડ) લકુટ-ચટ્ટિ-ઝડી, (મુસદિ) મુસદી શસ્ત્રવિશેષ, (સયમ્ધી) શતઘ્ની-શસ્ત્રવિશેષ જિસસે એક હી ચારમે સૌ મનુષ્ય માર દિસ જાતે હૈ તથા (વહુપહરણ) અનેક પ્રહરણ-શસ્ત્રસ્વદ્ધ,તોમર,તીર આદિ, આવરણ-છરપલા,(ઘરણુસ્ત્રાણકપ) ઉપસ્કર-કપાટ આદિ ગૃહકે ઉપકરણ હન સન્નકે લિયે તથા (અળેહિં એવમાઈઈ)

સરખુ કરવામા આવે છે "કુલિય" કુલિક એક પ્રકારનુ હળ "સદ્ધન" સ્પદન એક જાતનો રથ "સીયા" શિખિકા પાલખી "રહ" રથ "સગડ, શકટ ગાડુ 'જાણ" યાન વાહન વિશેષ "જોગ" યુગ્ય જે પ્રાણીથી જે ચાતા વાહનો "અટ્ટાલગ" અટ્ટાલક કિલ્લાની ઉપરનુ ખાસ પ્રકારનુ સ્થાન "ચરિય" ચરિકા નગર ડોટની વચ્ચેનો આઠ હાથની પહોળાઈનો માર્ગ વિશેષ "દાર" દ્વાર "ગોપુર" ગોપુર શહેરનુ મુખ્ય દ્વાર "ફલિહા" પરિઘા આગળિયો "યત" યત્ર શૂલિકા "સૂલિયા" શૂળીએ ચડાવવા માટેનુ કાષ્ઠ "લુડ" લકુટ ચટ્ટિ છડી "મુસદિ" મુસદી શસ્ત્રવિશેષ "સયમ્ધી" શતઘ્ની એકજાતનુ શસ્ત્ર જેનાથી એક જ વારમા સો માણુઓ મારી શકાય છે, તથા "વહુપહરણ" અનેક પ્રહરણુ શસ્ત્ર ખડગ તોમર તીર આદિ "ઘરણુસ્ત્રાણકપ" આવરણુ ઉપસ્કર કપાટ આદિ ઘરમાના ઉપકરણો એ બધાને માટે તથા

एव प्रकारैः 'बहुहि' बहुभिः 'कारणसएहिं' कारणगतैः=प्रयोजनगतैः 'भणिए' भणितान् उक्तान् 'अभणिए य' अभणिताश्च=अनुक्ताश्च, एवमादीनुक्तप्रकारान् 'तरुगणे' तरुगणान्=वनस्पतिसमूहान् 'हिंसति'=विनाशयन्ति ॥ सू० १८ ॥

કોદશાન્ જીવાન્ કોદશા હિંસકાઃ કિમર્થ ધનન્તિ ? इत्याह—'सत्ते' इत्यादि।

मूलम्—सत्ते सत्तपरिवज्जिए उवहणंति ददमूढा दारुण-
मई कोहा माणा माया लोभा हासा रती अरती सोय वेदत्थ
जीय धम्मत्थ कामहेऊ सवसा अवसा अट्टाए अणट्टाए य तस-
पाणे थावरे य हिंसति ॥ सू० १९ ॥

टीका—'ददमूढा' ददमूढाः=सातिशयविवेकविकलाः, 'दारुणमई' दारु-
णमतयः=क्रूराशयाः जना, 'सत्तपरिवज्जिए' सत्तपरिवर्जितान्=मलहीनान्

और भी इनसे अतिरिक्त (बहुहिं कारणसएहिं) अनेक प्रयोजनों के
लिये (भणिए अभणिए य) जो यहाँ पर कहे गये और जो नहीं कहे गये
हैं, (एवमाई) उन सब तरुगण वनस्पति समूहकी हिंसा करते हैं। ससारी
अधुधजन इन पूर्वोक्त वस्तुओं के निर्माण के लिये वृक्षों को काटते हैं।
वृक्षों को काटना ही वनस्पति जीवों की हिंसा करना है। इन उपर्युक्त
वस्तुओं का निर्माण वृक्षों के काष्ठ से होता है। ॥ सू० १८ ॥

પ્રસ સ્થાવર જીવોં કો કૈસે ૨ ભાવોં સે યુક્ત હોકર હિંસક જન
મારતે હૈં સૂત્રકાર હસ સૂત્ર દ્વારા સ્પષ્ટ કરતે હૈં—'સત્તે સત્તપરિ-
વજ્જિએ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(ददमूला) जो सातिशय विवेक से विरल हैं—जिनके विवेक

"अण्णेहि एवमाइएहिं" ते सिवायना "बहुहिं कारणसएहिं" पीण पणु
अनेक प्रयोजनोने भाटे "भणिए अभणिए य" के ने अही कहेवाया छे के
नथी कहेवाया "एवमाई" ते अथा तरुगण वनस्पति समूहनी लोको हिंसा
करे छे ससारी अधुध लोको पूर्वोक्त वस्तुओ जनाववाने निमित्त वृक्षोने कापे
छे वृक्षोने कापवा ओ व वनस्पति ओवोनी हिंसा छे उपर कहेली वस्तुओ
वृक्षोना काष्ठभाथी थाय छे ॥ सू १८ ॥

પ્રસ સ્થાવર જીવોને કેવા કેવા ભાવોથી યુક્ત થઈને હિંસક જન મારે છે
તેનુ આ સૂત્રદ્વારા સૂત્રકાર સ્પષ્ટીકરણ કરે છે—“સત્તે સત્તપરિવજ્જિએ” इत्यादि

टीकार्थ—“ददमूला” ने अतिशय विवेकशी विरल छे जेभना विवेकअप यमओ

દીનાન્ ‘સત્તે’ સત્તાન્=પૃથિવ્યાદીન્ ‘ઉવહ્ણતિ’ ઉપહ્નન્તિ=મારયન્તિ, કસ્માદિ-
 ત્યાહ—‘ક્રોહા’ ક્રોધાત્, ‘માણા’ માનાત્ ‘માયા’ માયાયા=રૂપટાત્ ‘લોભા’
 લોભાત્ ‘હાસા’ હાસ્યાત્ ‘રહ’ રત્તે=રાગાત્ ‘અરહ’ અરત્તે=દ્વેષાત્ ‘સોય’ શોકાત્
 ‘ઉપહ્નન્તિ’ इति सम्मन्धः । विमर्थम् ? इत्याह—‘वेयत्य’ जीयधम्मत्य’ कामहेऊ
 वेदार्थ’ जीवधर्मा’ विमर्थ’ कामहेतोः, अत्र हेतुशब्दस्य प्रत्येकमभिसम्मन्धः । ‘वेयत्य’
 वेदोक्तानुष्ठान, ‘जीयः’ जीवः=जीवन, ‘धम्म’ धर्मः=कुलजात्यादिलक्षणः,
 ‘अत्य’ अर्थः=धन, ‘काम’ कामाः=शब्दादयः इत्येतेषा हेतोः=कारणात् ‘सवसा’
 स्ववशाः=स्वाधीनाः सन्तः, ‘अवसा’ अवशाः=पराधीनाः-परनिर्देशवर्तिनः,
 ‘अद्वाए’ अर्थाय=प्रयोजनाय ‘अणद्वाए’ अनर्थाय-अप्रयोजनाय-निरर्थकमित्यर्थः

રૂપ ચક્ષુઓ પર અજ્ઞાન કા પર્દા પડ્યા હતા હૈ । ઓર (દારુણમર્હ) જિનકે
 પરિણામ અત્યત ક્રૂર ધન ચુકે હુ એસે પ્રાણી (સત્તપરિવર્જિણ) થલ
 હીન દીન (સત્તે) પૃથિવ્યાદિક જીવોં કી (ઉવહ્ણતિ) વિરાધના કરતે
 હૈ-વહ વિરાધના કિમ્ કારણ સે કરતે હૈ સો કહતે હૈ (ક્રોહા, માણા,
 માયા, લોભા, હાસા, રતિ, અરતિ, સોય) ક્રોધ, માન, માયા, લોભ,
 હાસ્ય, રતિ, અરતિ, શોક સે કરતે હૈ । અર્થાત્ ઇન પરિણામો સે
 યુક્ત હોકર હિંસક પૃથિવી આદિક જીવોં કી હિંસા કરતે હૈ ।
 કિસલિયે કરતે હૈ ? (વેયત્ય જીયધમ્મત્યકામહેऊ) વેદાર્થ, જીવન, ધર્મા-
 ર્થકામ કે લિયે કરતે હૈ, ત્યાં હેતુ શબ્દ કા સમ્બ પ્રત્યેક કે સાથ મેં
 કર લેના ચાહિયે-વેદાર્થ વેદોક્ત અનુષ્ઠાન કે લિયે, જીવન કે લિયે, ધર્મ
 કે લિયે, અર્થ-ધન-કે લિયે, કામ-શબ્દાદિક પાવોં ઇન્દ્રિયોં કે વિષયોં
 કે લિયે, ઇન્હી સમ્ કારણ કલાર્પોં કો લેકર (સવસા) સ્વાધીન અથવા
 (અવસા) પરાધીન હોકર (અદ્વાણ) પ્રયોજન કે લિયે અથવા (અણદ્વાણ ય)

પર અજ્ઞાનનો પર્દો પડેલ છે, અને “દારુણમર્હ” ભેમની વૃત્તિઓ અત્યત ક્રૂર
 બની ગઈ છે એવા છલો “સત્તપરિવર્જિણ” બલહીન, દીન “સત્તે” પૃથ્વીકાય
 આદિ છલોની “ઉવહ્ણતિ” હત્યા કરે છે તે હિંસા કયા કયા કારણે કરે છે તે સૂત્ર-
 કારકહે છે—“ક્રોહા, માણા, માયા, લોભા, હાસા, રતિ, અરતિ, સોય” ક્રોધ, માન,
 માયા, હોભ, હાસ્ય, રતિ, અરતિ, શોક આદિ વૃત્તિઓથી યુક્ત થઈને હિંસક
 છલો પૃથિવીકાય આદિ છલોની હિંસા કરે છે ત્યા માટે તેમ કરે છે? “વેયત્ય
 જીય ધમ્મત્યકામહેऊ” વેદાર્થ, જીવન, ધર્માર્થકામને માટે તેમ કરે છે વેદાર્થ-
 વેદોક્ત ધર્મ ક્રિયાઓને માટે, જીવનને માટે, ધર્મને માટે, અર્થ-ધનને માટે,
 કામ-પાત્રે ઇન્દ્રિયોના વિષયને માટે, એ બધા કારણ સમૂહોને લીધે “સવસા”
 સ્વાધીન અથવા “અવસા” પરાધીન બગામા હોવાથી “અદ્વાણ” પ્રયોજનને

‘તસપાણે’ ત્રસપ્રાણાન્=દ્વીન્દ્રિયાદીન્ જીવાન્ ‘થાવરે ચ’ સ્થાવરાંશ્ચ પૃથિવીકાયા-
દીન્ હિંસન્તિ=ઘનન્તિ ॥ સૂ. ૧૯ ॥

ઉત્તાર્થમેવ વિશદયન્નાહ—‘મદબુદ્ધિયા’ इत्यादि ।

મૂલમ્—મદબુદ્ધિયા સહસા હળંતિ, અવસા હળંતિ, સવસા
અવસાદુહઓ હળંતિ, અઢ્ઢા હળંતિ, અળઢ્ઢા હળંતિ, અઢ્ઢા અળઢ્ઢા-
દુહઓ હળંતિ, હસ્સા હળંતિ, વેરા હળંતિ, રતી હળંતિ હસ્સા
વેરા રતી હળંતિ । કુઢ્ઢા હળંતિ, લુઢ્ઢા હળંતિ, મુઢ્ઢા હળંતિ, કુઢ્ઢા-
લુઢ્ઢા મુઢ્ઢા હળંતિ, અત્થા હળંતિ, ધમ્મા હળંતિ, કામા હળંતિ,
અત્થા ધમ્મા કામા હળંતિ ॥ સૂ. ૨૦ ॥

ટીકા—‘મદબુદ્ધિયા’ મન્દબુદ્ધિઃ=મિથ્યાત્વોદયાત્તત્ત્વાસ્તત્ત્વવિવેકરહિ-
તમતયઃ, ‘સવસા’ સ્વગ્ઞાઃ=સ્વતન્ત્રાઃ સન્તઃ, સ્વેચ્છયા ‘હળંતિ’ ઘનન્તિ, ‘અવસા’
અવગ્ઞાઃ=પરાધીના સન્તઃ ઘનન્તિ, ‘સવસા અવસા’ સ્વગ્ઞા અવગ્ઞા ‘દુહઓ’ ઉભયગો

અનર્થ—વિના પ્રયોજન કે લિયે (તસપાણે) દ્વીન્દ્રિયાદિક ત્રસ પ્રાણિયોં કી ંવ (થાવરે ચ) પૃથિવીકાયાદિક ંકેન્દ્રિય સ્થાવર-પ્રાણિયોં
કી (હિંસતિ) હિંસા કરતે હૈં ॥ સૂ. ૧૯ ॥

इसी उक्त अर्थ को विस्तार से समजाने के लिये पुनः सूत्रकार
कहते हैं—‘मद बुद्धिया सवसा हणति’ इत्यादि ।

ટીકર્થ—(મદબુદ્ધિયા) મિથ્યાત્વ કે ઉદય સે તત્ત્વ ંર અતત્ત્વ કે
વિવેક સે જિનકી બુદ્ધિ શૂન્ય હો રહી હૈં ંસે પ્રાણી (સવસા) સ્વતન્ત્ર બનકર
અપની ંચ્છાનુસાર ત્રસ સ્થાવર જીવોં કી (હળંતિ) હિંસા કરતે હૈં ।
इसी तरह जो प्राणी (अवसा हणति) नौकरी आदि के कारण पराधीन

‘આતર અથવા “અળઢ્ઢા” વિના પ્રયોજને “તસપાણે” દ્વીન્દ્રિય આદિ ત્રસ ંવોની
અને “થાવરે ચ” પૃથિવીકાય આદિ ંકેન્દ્રિય સ્થાવર ંવોની “હિંસતિ”
હિંસા કરે છે ॥ સૂ. ૧૯ ॥

એ જ ઉપરોક્ત અર્થને સવિસ્તર સમર્થવવાને માટે સૂત્રકાર કહે છે—
“મદબુદ્ધિયા સવસા હળંતિ” ંત્યાદિ

ટીકર્થ—“મદબુદ્ધિયા” મિથ્યાત્વના ઉદયથી જેમની બુદ્ધિ તત્ત્વ અને અતત્ત્વના
વિવેકથી રહિત થઈ ગઈ છે એવા ંવો “સવસા” સ્વતન્ત્ર હોવા છતાં પણ
પોતાની ંચ્છાનુસાર ત્રસ સ્થાવર ંવોની “હળંતિ” હિંસા કરે છે એ જ
પ્રમાણે જે માણસ “અવસા હળંતિ” નોકરી વગેરેને કારણે પરાધીન તે તેના

મન્તિ, અર્થાય, અનર્થાય, તદુમયતો મ્તિ । હાસ્યાત્ વૈરાત્ રતિર્મન્તિ, હાસ્યવૈર-
રતિભ્યો મ્તિ । ક્રિભૂતાઃ સન્તો મ્તન્તી? ત્યાહ 'ક્રુદ્ધા' इत्यादि । 'ક્રુદ્ધા' ક્રુદ્ધાઃ
=ક્રોધયુક્તાઃ, 'લુદ્ધાઃ' લુગ્મન્=નિપયગ્મદ્ધાઃ । 'મુદ્ધા' મુગ્ધા =મોહનશાઃ મ્તિ ।

હે-વે મી ઇન પ્રસ સ્થાવર જીવોં કી હિંસા કરતે હે । (સવસા અવસા
દુહઓ હ્ણન્તિ) તથા સ્વતત્ર ઓર પરતત્ર દોનોં પ્રકાર સે હોકર મી ઇન
જીવોં કી હિંસા કરતે હે । તથા (અટ્ટા હ્ણન્તિ) યે જીવ જીવોં
કી હિંસા પ્રયોજન સે કરતે હે ઓર (અણટ્ટા હ્ણન્તિ) અનર્થ-વિના પ્રયોજન
કે નિર્રર્થક મી કરતે હે (અટ્ટા અણટ્ટા દુહઓ હ્ણન્તિ) કોઈ ૨ નેસે મી
જીવ હે । જો ક્રુડ જીવોં કી હિંસા અપને સ્વાર્થ સે કરતે હે । ઓર
કિતનેક જીવોં કી હિંસા સ્વાર્થ ન મી હો તો મી કરતે હે । (હસ્સા
હ્ણન્તિ) સસાર મેં નેસે મી હિંસક જીવ હે જો જીવોં કી હિંસા હાસ્ય
કે કારણ હી કર હાલતે હે, (વૈરા હ્ણન્તિ) કિતનેક નેસે મી હે જો
જીવોં કી હિંસા વૈર કે નિમિત્ત કો લેકર કરતે હે । (રહ્ હ્ણન્તિ)
કિતનેક નેસે મી હે જો રતિ-આમોદ પ્રમોદકે નિમિત્ત કો લેકર જીવોં
કી હિંસા કરતે હે । (હસ્સા વૈરા રતિ હ્ણન્તિ) કિતનેક જીવ નેસે મી
હે જો એક હી સાથ હાસ્ય વૈર ઓર રતિ-આમોદ પ્રમોદ કે નિમિત્ત કો
લેકર જીવોં કી હિંસા કરતે હે । વે કૈસે હોકર હિંસા કરતે હે- (ક્રુદ્ધા-
હ્ણન્તિ) કિતનેક જીવ નેસે મી હે જો ક્રોધી હોકર જીવોં કી હિંસા

પણ એ પ્રસ સ્થાવર જીવોની હિંસા કરે છે "સવસા અવસા દુહઓ હ્ણન્તિ"
તથા સ્વતત્ર અને પરતત્ર, બન્ને પ્રકારથી યુક્ત થઈને પણ જીવોની હિંસા કરે
છે તથા "અટ્ટાહ્ણન્તિ" તે જીવોની હિંસા તેઓ અર્થ સંકારણ કરે છે અને
"અણટ્ટાહ્ણન્તિ" અનર્થ-અકારણ-નિર્રર્થક પણ કરે છે "અટ્ટા અણટ્ટા દુહઓ
હ્ણન્તિ" કેઈ એવા પણ જીવો હોય છે કે જેઓ કેટલાક જીવોની હિંસા પોતાના
સ્વાર્થને કારણે કરે છે અને કેટલાક જીવોની હિંસા સ્વાર્થ ન હોવા છતાં પણ
કરે છે "હસ્સા હ્ણન્તિ" સસારમાં એવા કેટલાક હિંસક જીવો પણ છે કે
જેઓ જીવોની હિંસા હાન્ય-આનંદને ખાતર જ કરે છે "વૈરા હ્ણન્તિ" કેટ-
લાક એવા પણ જીવો છે કે જે જીવોની હિંસા વેરને નિમિત્તે કરે છે "રહ્
હ્ણન્તિ" કેટલાક એવા પણ જીવો છે કે જે રતિ-આમોદ પ્રમોદને ખાતર જીવોના
હિંસા કરે છે "હસ્સા વૈરા રતિ હ્ણન્તિ" કેટલાક જીવો એવા પણ છે કે જેઓ
એક સાથે હાસ્ય, વૈર અને રતિ-આમોદ પ્રમોદને નિમિત્તે જીવોની હિંસા કરે
છે તેઓ કેવી વૃત્તિથી જીવોની હિંસા કરે છે? "ક્રુદ્ધા હ્ણન્તિ" કેટલાક જીવો

‘તસપાણે’ ત્રસપ્રાણાન્=દ્વીન્દ્રિયાદીન્ જીવાન્ ‘થાવરે ય’ સ્થાવરાંશ્ચ પૃથિવીકાયા
દીન્ હિંસન્તિ=ઘનન્તિ ॥ સૂ. ૧૯ ॥

ઉક્તાર્થમેવ વિશદયન્નાહ—‘મદબુદ્ધિયા’ इत्यादि ।

મૂલમ્-મદબુદ્ધિયા સહસા હળંતિ, અવસા હળંતિ, સવસા
અવસા દુહઓ હળંતિ, અઢા હળતિ, અણઢા હળતિ, અઢા અણઢા-
દુહઓ હળંતિ, હસ્સા હળંતિ, વેરા હળતિ, રતી હળતિ હસ્સા
વેરા રતી હળતિ । કુદ્ધા હળતિ, લુદ્ધા હળંતિ, મુદ્ધા હળંતિ, કુદ્ધા-
લુદ્ધા મુદ્ધા હળતિ, અત્થા હળતિ, ધમ્મા હળંતિ, કામા હળંતિ,
અત્થા ધમ્મા કામા હળંતિ ॥ સૂ. ૨૦ ॥

ટીકા—‘મદબુદ્ધિયા’ મન્દબુદ્ધિકાઃ=મિથ્યાત્વોદયાત્તત્ત્વાઽત્તત્ત્વવિવેકરહિ-
તમતયઃ, ‘સવસા’ સ્વવશાઃ=સ્વતન્ત્રાઃ સન્તઃ, સ્વેચ્છયા ‘હળતિ’ ઘનન્તિ, ‘અવસા’
અવશાઃ=પરાધીના સન્તઃ પ્રન્તિ, ‘સવસા અવસા’ સ્વવશા અવશા ‘દુહઓ’ ઉભયતો

અનર્થ—વિના પ્રયોજન કે લિયે (તસપાણે) દ્વીન્દ્રિયાદિક ત્રસ
પ્રાણિયોં કી એવ (થાવરે ય) પૃથિવીકાયાદિક એકેન્દ્રિય સ્થાવર-પ્રાણિયોં
કી (હિંસતિ) હિંસા કરતે હૈં ॥ સૂ. ૧૯ ॥

इसी उक्त अर्थ को विस्तार से समजाने के लिये पुनः सूत्रकार
कहते हैं—‘मद बुद्धिया सवसा हणति’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(મદબુદ્ધિયા) મિથ્યાત્વ કે ઉદય સે તત્ત્વ ઓર અતત્ત્વ કે
‘વિવેક સે જિનકી બુદ્ધિ શૂન્ય હો રહી હૈ એસે પ્રાણી (સવસા) સ્વતન્ત્ર બનકર
અપની ઇચ્છાનુસાર ત્રસ સ્થાવર જીવોં કી (હળતિ) હિંસા કરતે હૈં ।
इसी तरह जो प्राणी (अवसा हणति) नौकरी आदि के कारण पराधीन

આતર અથવા “અણઢા” વિના પ્રયોજને “તસપાણે” દ્વિન્દ્રિય આદિ ત્રસ જીવોની
અને “થાવરે ય” પૃથિવીકાયા આદિ એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોની “હિંસતિ”
હિંસા કરે છે ॥ સૂ. ૧૯ ॥

એ જ ઉપરોક્ત અર્થને સવિસ્તર સમજાવવાને માટે સૂત્રકાર કહે છે—
“મદબુદ્ધિયા સવસા હળતિ” इत्यादि

ટીકાર્થ—“મદબુદ્ધિયા” મિથ્યાત્વના ઉદયથી જેમની બુદ્ધિ તત્ત્વ અને અતત્ત્વના
વિવેકથી રહિત થઈ ગઈ છે એવા જીવો “સવસા” સ્વતન્ત્ર હોવા છતાં પણ
જોતાની ઇચ્છાનુસાર ત્રસ સ્થાવર જીવોની “હળતિ” હિંસા કરે છે એ જ
પ્રમાણે જે માણસ “અવસા હળતિ” નોકરી વગેરેને કારણે પરાધીન છે તેઓ

અથ યદ્યપિ—ઉદ્દેશકમાનુસારેણ 'જારિસ ફલ દેડ' ઇતિ ચતુર્થ ફલદ્વાર પૂર્વ વક્તવ્ય, તથાપિ ફલસ્ય કર્ત્રધીનત્વેન કર્તુ પ્રાધાન્યાત્, અલપવક્તવ્યત્વેન મૂલી-કટાહન્યાયાચ પૂર્વ 'જેવિય કરેતિ પાયા પાણમહ' ઇતિ પ્રથમપ્રાણમધદ્વારસ્ય

કરતે હૈ જો સ્વાધીન હોને પર હિંસા કર્મ મેં રત હો જાતે હૈં । કિતનેક જીવ એસે ભી હોતે હૈ કિ જો હિંસક જીવોં કી સગતિ આદિ કે પરાધિન હોકર હિંસા કરને લગ જાતે હૈં । યદ્યુત સે એસે ભી પ્રાણી હૈ જો અપને લિયે હિંસા કરતે હૈં ઓર યદ્યુત સે જીવ એસે ભી હોતે હૈં કિ ડઠતે બેઠતે ચલતે ફિરતે રિના કિસી પ્રયોજન કે ભી જીવોં કી હિંસા કરતે હૈં । યદ્યુત સે જીવ એસે ભી હૈં કિ વે ચાહે સ્વતત્ર રહે યા પરતત્ર રહે કિસી ભી સ્થિતિ મેં રહે પર ફિર ભી હિંસા કરને સે નહીં ચૂકતે હૈં । કોઈ જીવ કિસી દૂસરે જીવ કો વેર કે કારણ માર ઢાલતે હૈં, કોઈ અપની હંસી કરને કે કારણ માર ઢાલતે હૈં । ઓર કોઈ ૨ એસે ભી પ્રાણી હૈં જો રતિ કે કારણ-ચિત્ત સુશી મેં રહને કે કારણ-જીવોં કી હિંસા-શિકાર કરતે હૈં । ઇત્યાદિ ઓર ભી ઇસી તરહ કે કારણ સૂત્રકાર ને ઇસ સૂત્ર દ્વારા પ્રકટ કિયે હૈં જો ઉપર અર્થ મેં કહદિયે હૈં । इनके सिवाय दूसरे कारणों से भी हिंसा करते हैं ॥सू०२०॥

અથ સૂત્રકાર યદ્ય પ્રકટ કરતે હૈં કિ ઉદ્દેશક્રમ કે અનુસાર યદ્યપિ "જારિસ ફલ દેડ" યદ્ય ચતુર્થ ફલદ્વાર પહિલે કહના ચાહિયે થા તો

હોવા છતાં પણ હિંસા કર્મમાં લીન રહે છે કેટલાક જીવો એવા પણ હોય છે કે જે હિંસક જીવોની સગતિ આદિ વડે પરાધીન હોવાને કારણે હિંસા કરવા લાગે છે કેટલાક એવા પણ જીવો છે કે જે સ્વાર્થને ખાતર હિંસા કરે છે, અને ઘણા જીવો એવા પણ હોય છે કે જે ઉઠતા, બેમતા, હાલતા, ચાલતા, કોઈપણ પ્રયોજન વિના જીવોની હિંસા કરે છે ઘણા જીવો એવા પણ હોય છે કે તેઓ સ્વતત્ર હોય કે પરતત્ર હોય કોઈપણ સ્થિતિમાં હોવા છતાં પણ હિંસા કરતા અટકતા નથી કોઈ જીવ બીજા જીવોને વેરને કારણે મારી નાખે છે, કોઈ હસી-મનકને ખાતર મારી નાખે છે, અને કોઈ કોઈ જીવો એવા પણ હોય છે કે જે રતિને કારણે-મનના આનંદને ખાતર જીવોની હિંસા (શિકાર) કરે છે ઇત્યાદિ બીજા પણ એ જ પ્રકારના કારણો સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા પ્રગટ કર્યા છે, જે ઉપર બતાવી દેવામાં આવ્યા છે તે સિવાય બીજા કારણોથી પણ તેઓ હિંસા કરે છે ॥ સૂ. ૨૦ ॥

હવે સૂત્રકાર એ નિષ્કર કરે છે કે ઉદ્દેશોના ક્રમ પ્રમાણે બેકે 'જારિસ

एव 'कुद्धा लुद्धा मुद्धा' कुद्धाः लुब्धाः मृग्धाः—क्रोधलोभमोहयन्तः घ्नन्ति ।
 'अत्या' अर्थाः=धनार्थिनः, 'धम्मा' धर्माः=धर्मार्थिनः—जाति कुलधर्माभिमानवन्तः
 'कामा' कामाः=कामार्थिनो घ्नन्ति । एव 'अत्या धम्मा कामा' अर्थे धर्मकामा
 र्थिनो घ्नन्ति ॥सू० २०॥

करते हैं, (लुद्धा हणति) कितनेक ऐसे हैं जो केवल लोभ के वशवर्ती होकर जीवों की हिंसा करते हैं, और (मुद्धा हणति) कितनेक ऐसे भी हैं जो केवल मोहाधीन वृत्ति होकर जीवों की हिंसा करते हैं । (कुद्धा लुद्धा मुद्धा हणति) कितनेक ऐसे भी हैं जो क्रोध, लोभ, मोह इन तीनों के वशवर्ती बनकर जीवों की हिंसा करते हैं । (अत्या हणति) कितनेक ऐसे भी जीव हैं जो केवल धन के अर्थी होकर ही जीवों की हिंसा करते हैं, (धम्मा हणति) कितनेक ऐसे भी हैं जो धर्मार्थी—जाति धर्म और कुलधर्म के अभिमानी होकर जीवों की हिंसा करते हैं । (कामा हणति कितनेक ऐसे भी हैं जो कामार्थी इन्द्रियों के विषयों को भोगने की लालसा के वशवर्ती होकर जीवों की हिंसा करते हैं और (अत्या धम्मा कामा हणति) कितनेक ऐसे भी हैं जो अर्थ, धर्म और काम, इन तीनों के वशवर्ती होकर जीवों की हिंसा करते हैं ।

भावार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने हिंसा करने की विचारधारा वाले जीवों को कहा है, वे कहते हैं कि कितनेक जीव ऐसे भी हुआ

ક્રોધમા આવીને લુબ્ધાની હિંસા કરે છે 'લુદ્ધા હણતિ' કેટલાક કેવળ લોભને વશ થઈને લુબ્ધાની હિંસા કરે છે, 'મુદ્ધા હણતિ' કેટલાક એવા પણ લોકો હોય છે કે જે કેવળ મોહાધીન થઈને લુબ્ધાની હિંસા કરે છે "કુદ્ધા લુદ્ધા મુદ્ધા હણતિ" કેટલાક લોકો એવા પણ છે કે જેઓ ક્રોધ લોભ, મોહ એ ત્રણને વશ થઈને લુબ્ધાની હિંસા કરે છે "અત્યા હણતિ" કેટલાક એવા પણ લુબ્ધા છે કે જે ધનને માટે જ લુબ્ધાની હિંસા કરે છે "ધમ્મા હણતિ" કેટલાક એવા પણ લુબ્ધા છે કે જે ધર્માર્થી—જાતિધર્મ અને કુળધર્મના અભિમાનને કારણે લુબ્ધાની હિંસા કરે છે "કામા હણતિ" કેટલાક એવા પણ લુબ્ધા હોય છે કે જે કામાર્થી—ઇન્દ્રિયોની વિષય લાલસાને વશ થઈને લુબ્ધાની હિંસા કરે છે, અને "અત્યા ધમ્મા કામા હણતિ" કેટલાક એવા પણ લુબ્ધા હોય છે કે જે અર્થ, ધર્મ અને કામ, એ ત્રણને વશ થઈને લુબ્ધાની હિંસા કરે છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્રમા સૂત્રગરે હિંસા કરવાની વિચારધારાવાળા લુબ્ધા બતાવ્યા છે તેઓ કહે છે કે કેટલાક લુબ્ધા એવા પણ હોય છે કે જે વીન

‘વાહા’ વ્યાધા=મૃગપ્રાતકાઃ, ‘કૂરકમ્મા’ કૂરકર્માણિ - દુષ્ટકર્મકારિણઃ,
 ‘વાઝરિયા’ વાગુરિકાઃ=વાગુરા=મૃગમન્યન તથા ચન્તિ યે તે વાગુરિકાઃ=
 જાલેન મૃગમન્યકાઃ, ‘દીવિય-વઘણપ્પઓગ-તપ્પગલજાલ-ચીરહ્લગાયસદન્મ
 ચગુરા-કૂડ હલિયા હત્થા’ દ્વીપિકા મન્યનપ્રયોગતત્પ્રગલજાલ-ચીરહ્લગાયસીદર્મવા
 ઘરા કૂટહેલિસાહસ્તા - ‘દીવિય’ દ્વીપિકા=વ્યાધમ્ય કૃત્રિમા હરિણી યા મૃગાક-
 ર્પણાર્થે રધાપ્યતે ‘વઘણપ્પઓગ’ મન્યનપ્રયોગઃ=મૃગાદિ વન્ધનોપકરણ, ‘તપ્પ’ તપ્તઃ
 =મત્સ્યગ્રહણીન્ધુનોકા, ‘ગલ’ ગલિશ=મત્સ્યવેધન કષ્ટક ઇત્યર્થઃ, ‘જાલ’ પ્રસિદ્ધ,

વાલે મનુષ્ય, (મન્દુક્યધા) મત્સ્યધ-મઝલીઓં કો મારને વાલે ધીવર
 (સાઝણિયા) શાકુનિક-પક્ષિયોંની શિકાર કરને વાલે ચીઢીમાર,
 (વાહા) વ્યાધ-મૃગ કી શિકાર કરને વાલે વહેલિયાજન, (કૂરકમ્મા)
 કૂર કર્મા-દુષ્ટકર્મ કરને વાલે મનુષ્ય, (વાઝરિયા) વાગુરિકા-જાલ સે
 મૃગ કો વાધને વાલે વાધરી લોગ, (દીવિય-વઘણપ્પઓગતપ્પ-ગલ-જાલ
 ચીરહ્લગાયસ દન્મ-વગુરા-કૂડહલિયા હત્થા) દ્વીપિકા-વ્યાધ ઘરા
 મૃગોં કો લુભાને કે લિયે વનાઈ ગઈ કૃત્રિમ હરિણી, વધન પ્રયોગ-
 મૃગાદિ જીવોં કો વાધને કે ઉપકરણ, તપ્ર મઝલી પકડકર જિસમેં
 ધીવર રખતે જાતે હે એસી ટોકરી, અથવા મઝલી જિસ પર વૈઠકર
 પકડી જાતી હે તેસી લઘુ નૌકા, ગલ-ગલિશ, વશી જિસકે અગ્રભાગ
 મેં આઠા યા જીર કા કલેવર આદિ લગાકર મઝીમાર ઉસે પાની મેં
 ઢાલ દેતે હે મઝલી જૈસે હી ઉસે ળાંતી હે તો ઉસકા વહ નુકીલા અગ્ર-
 ભાગ ઉસકે કઠ મેં વિંધ જાતા હે, વસ મઝીમાર ફિર ઢોરે સે વંધી

કૂરકમ્માવાઝરિયા” “સોયરિયા” સૌન્દરિક-મુવરને ગિઝાર કરનારા મનુષ્યો, “મન્દુક્યધા”
 મત્સ્યધ-માછલિયોને માગનાર માછીમારો, “સાઝણિયા” શકુનિક-પક્ષીઓને
 શિકાર કરનાર પારધિઓ “વાહા” વ્યાધ-મૃગનો શિકાર કરનાર શિકારીઓ,
 “કૂરકમ્મા” કૂરકર્મા-દુષ્ટ કર્મ કરનારા મનુષ્યો, “વાઝરિયા” વાગુરિકા-
 જાળમા મૃગને ક્રમાવનારા વાધગી લોકો, “દીવિય, વઘણપ્પઓગે તપ્પ, ઢાલ,
 જાલ, ચીરહ્લગાયસ, દન્મ” વગુરા, કૂડહલિયા હત્થા” દ્વીપિકા-વ્યાધ દ્વારા
 મૃગોને લલચાવવાને માટે બનાવેલી કૃત્રિમ હિંચી, બધનપ્રયોગ-મૃગાદિ
 છવોને બાધવાના સાધનો, તપ્ર-મઝલીને પડીને માછીમાર જેમા મૂકે
 છે તે ટોપલી, અથવા જેમા જેમીને માછલા પડવામા આવે છે તે નાની
 નોકા, ગલ-ગલિશ, મારી-જેના અગ્રભાગ પર લોટની ઢોલકે કે અળમિયા આદિ
 છવોના કલેવર લગાડીને માછીમાર તેને પાણીમા નાખે છે, માછલી જેવું તે ખાવા
 બધ છે કે તપ્ર તેના અણીદાર અગ્રભાગ તેના કઠમા પડેવાઈ બધ છે

પશ્ચમમુખદ્વારમાહ—‘કયરેતે’ इत्यादि ।

મૂલમ્—કયરે તે ? જે તે સોયરિયા મચ્છવંધા સાડણિય વાહા કૂરકમ્મા વાડરિયા દીવિય-વધણપ્પઓગ-તપ્પગલ-જાલ-વીરહ્લ-ગાયસદવ્ભ વગુરા-કૂડછલિયાહત્થા હરિણસા ડાણિયા યવિદંસ મપાસહત્થા વળચરગા લુદ્ધગા મહુઘાયા પોયઘાયા ણીયારા પણીયારા સરદહ-દીહિય-તલાગ-પહ્લગ-પરિગાલણ-મલણ સોતવં-ધણ સલિલાસય સોસગા વિસગરસ્સ ય દાયગા ઉત્તણવહ્લરદવ-ગિગિહિયપલીવકા કૂરકમ્મકારી ॥ સૂ. ૨૧ ॥

ટીકા—‘કયરે તે’ કયરે તે પ્રાણવધકર્તા : ? इति प्रश्ने सत्युत्तरमाह—‘सोयरिया’ इत्यादि—‘जे ते’ ये ते ‘सोयरिया’ सौकरिकाः=सुकरघातकाः ‘मच्छवंधा’ मत्स्य-वन्धा =मत्स्यघातका वीवरा इत्यर्थ , ‘साडणिया’ शाकुनिकाः=पक्षिग्रोहणीविनः,

भी फलद्वार न कह कर जो प्रथमप्राणवध द्वार का पचम उपद्वार कहा जा रहा है उसका कारण यह है कि फल, कर्त्ता के आधीन होने से पहिले कर्त्ता को प्रधानता रहती है, दूसरे कर्त्ता के विषय में वक्तव्य भी अल्प है तो सूची कटाहन्याय से पहिले “ स वि य करेंति पावा पाणा-वह ” इस प्रथमप्राणवध द्वार का यह पचम उपद्वार ही कहा जा रहा है ‘ कयरे ते ’ इत्यादि ।

ટ કાર્ય—પ્રશ્ન (કયરે તે) પ્રાણવધ કરનેવાલે કે કૌન ૨ સે પ્રાણી હૈં ? ઉત્તર—(જે તે) કે ય ૨ હૈ—(સોયરિયા, મચ્છવંધા, સાડણિયા વાહાકૂર કમ્મા વાડરિયા) (સોયરિયા) સૌકારિક-સુઅર કો શિકાર કરને

ફલ દેહ ” એ ચોથુ ફલ દ્વાર પહેલા કહેવું બોધતું હતું, છતાં પણ ફલ દ્વારનું વર્ણન ન કરતા પહેલા પ્રાણવધદ્વારનું પાંચમું ઉપદ્વાર વર્ણવવામાં આવ્યું છે, તેનું કારણ એ છે કે ક્ષણ, કર્તાને અધીન હોવાથી પહેલા કર્તાની પ્રધાનતા રહે છે અને બીજું કારણ એ છે કે કર્તાની આબતમાં વક્તવ્ય—કહેવાનું પણ થોડું છે, તેથી સૂચી કટાહન્યાયે પહેલા “ જે વિય કરેંતિ પાવા પાણવહ ” આ પ્રથમ પ્રાણવધ દ્વારનું આ પાંચમું ઉપદ્વાર જ વર્ણવવામાં આવી રહ્યું છે—

“ કયરે તે ” इत्यादि

ટીકાર્થ—પ્રશ્ન—“ કયરે તે ? ” પ્રાણવધ કરનારા તે કયા કયા પ્રાણીઓ છે ?

ઉત્તર—“ જે તે ” તેઓ નીચે પ્રમાણે છે—“ સોયરિયા, મચ્છવંધા સાડણિયા

મધુઘાતા:='મધુ' ગ્રહણેન તન્મક્ષિકા ઘાતકાઃ 'પોયઘાયા' પોતઘાતા=પક્ષિશિશુ-
 હિંસકાઃ 'एणीयारा' एणीचारा-एणी=हरिणीं चारयन्ति=पालयन्ति अन्यान्
 मृगान् गृहीतु चे ते एणीचाराः, 'पएणीयारा' प्रैणीचारश्च व्याधविशेषा एव ।
 'सरद्दहदीहियतलागपल्लपरिगालणमलणसोत्तवधणसलिलासयसोसगा' 'सरोद्रह
 दीर्घिका तडाग पल्ल परिगालन मलन स्रोतोमन्थन सलिलाशयशोपका, तत्र-
 सरः=सामान्यजलाशयः, द्रहः=अगाधजलाशयः, दीर्घिका=वापी, तडाग =प्रसिद्धः,
 पल्ल=अल्पसरः, एतेषा परिगालनेन=मत्स्यादि ग्रहणात् जलनिस्सारणेन, मल-
 नेन=मन्यनेन, स्रोतोमन्थनेन=जलप्रवाहनिरोधेन च 'सलिलाशयान्=जलाशयान्
 शोपयन्ति ये ते तथाभूता, विसगरस्तय' विपगरस्तय च-विप=प्रसिद्ध, गरः=
 सयोगजनित विप, तयोः समाहारे तस्य 'दायगा' दायकाः जीवोपघातार्थं विप-

મધુ-શહદ કો લેને કે લિયે જો મધુમન્ત્રિયોં કા ઘાત કર દેતે હૈં વે,
 (પોયઘાયા) પોતઘાતક-પક્ષિયોં કે પચ્ચોં કો મારને વાલે, તથા (એણી-
 યારા) જો મૃગોં કો પકડને કે અભિપ્રાય સે મૃગી-હરિણી કો પાલતે હૈં
 વે, તથા (પએણીયારા) જો પ્રૈણીચાર-વ્યાધવિશેષ હોતે હૈં વે, તથા-
 (સર-દહ-દીહિય-તલાગ-પલ્લ-પરિગાલણ-મલણ-સોત્તવધણ-સલિ-
 લાસયસોસગા) જો સર સામાન્ય જલાશય, દ્રહ-અગાધજલાશય,
 દીર્ઘિકા-વાપી, તડાગ, પલ્લ-ઝોટાજલાશય, इनके जल को मत्स्यादि
 ग्रहण करने के अभिप्राय से जो निकाल देते हैं, तथा इनके जल का जो
 मन्थन-चिलोडन करते हैं, अथवा इनमे जिन स्रोतों से जल आता है
 उन्हें बंद कर देते हैं, इस तरह से जो सलिलाशयों को सुखा देते हैं व,
 तथा (विसगरस्त य दायगा) विप-हलाहल जहर, गर-सयोग जनित

મધમાળીઓની હિંસા કરે છે તે, “ પોયઘાયા ” પોત ઘાતક-પક્ષીઓના બચ્ચાને
 મારનારા તથા- “ એણીયારા ” જે મૃગોને પકડવાને માટે મૃગી-હરિણીને પાળે
 છે તે લોકો, તથા “ પએણીયારા ” જે પૈણીચાર-એડ પ્રકારના વ્યાધ-હોય છે
 તે, તથા “ સર, દહ, દીહિય, તલાગ, પલ્લ, પરિગાલણ, મલણ, સોતવધણ,
 સલિલાસયસોસગા ” જે સર-સામાન્ય જળાશય દહ-અગાધ જળાશય, દીર્ઘિકા-
 વાવ, તલાવ, પલ્લ-નાનું જળાશય, વગેરેના પાણીને માછલા વગેરે ગ્રહણ
 કરવાના હેતુથી બહાર ઝાલી નાખે છે તથા તેના જળનું ને મન્થન કરે છે
 અથવા તેમા જે સ્રોતો દ્વારા પાણી આવતું હોય તે સ્રોતોને બંધ કરી દે છે
 આ રીતે જે લોકો જળાશયોને સૂકવી નાખે છે તે લોકો તથા “ વિસગરસ્ત ય
 દાયગા ” વિપ-હળાહળ એર, ગર-સયોગ-જનિત વિષ આદિ છવોને મારી

‘ચીરહ્લગ’ ચીરહ્લકઃ-ચેનામિધો હિંસકપક્ષિવિશેષ:-યોઽન્યપક્ષિપ્રધાય પાલયતે,
 ‘આયસ’ લોહનિર્મિતવન્ધનવિશેષ:, ‘દંભ’ દર્ભઃ=દર્ભમયવન્ધનવિશેષ:, ‘વાગુરા’
 વાગુરા=પાશ:, કૂટછેલિકા=કૂટાજા, સિંહાદિ પ્રલોભનાથ ચિત્રલેપ્યાદિમયી
 છગલિકા एते हस्ते येषां ते तथाभूताः । ‘हरिणसा’ हरिकेशः=માત્રાશ્ચાણ્ડલા
 इत्यर्थः, ‘उणिया य’ कुणिकाश्च तत्सेवकाः ‘वीदसगपासहत्था’ वीतसरूपाशहस्ताः
 =વીતસકાઃ=મૃગપક્ષિવન્ધનસાધનાનિ, પાશાશ્ચ, ते हस्ते येषां ते वीतसरूपाशह-
 स्ताः, ‘वणचरगा’ वनचरकाः=કિરાતા:, ‘लुद्रगा’ लुब्धकाः=व्याधा:, ‘मधुघाया’

હુઈ હસ વશી કો તાન છેતે હે, વિંધી હુઈ મઝલી હસી કે સાથ બાહર
 નિકલ આતી હૈ ઓર મઝીનાર હસે પકડ છેતે હે। જાલ-મઝલી આદિ
 પકડને કી ઇક પ્રકાર કી જાલ, ચીરહ્લક-હિંસકપક્ષિવિશેષ યહ પક્ષી
 અન્ય પક્ષિયોં કો મારને કે લિયે શિકારિયો દ્વારા પાલા જાતા હૈ, આયસ
 લોહ કા બના હુઆ વધન વિશેષ, દંભ-દર્ભમય વધન વિશેષ, વાગુરા-
 પાશ, કૂટ છલિકા-બનાવટી વકરી જો સિંહાદિ જાનવરો કો લુભાને કે
 લિયે બનાકર રક્ષી જાતી હૈ, યે સબ જિનકે હાથો મેં હૈ એસે પ્રાણી ।
 હસ સબ પ્રાણીવધ કે કર્તા જાનના ચાહિયે । તથા (હરિણસા) હરિ-
 કેશ-ચાણ્ડાલ, (ડુણિયા) કુણિક-ચાણ્ડાલ કે સેવકજન, (વીદગપાસ-
 હત્થા) વીતસક-મૃગ એવ પક્ષિયોં કે બાંધને કા સાધન ઓર પાશ
 જિનકે હાથ મેં હૈ એસે (વણચરગા) કિરાત । યે બી પ્રાણવધ કે કરને
 વાલે માને ગયે હૈ । (લુદ્રગા) લુબ્ધક-ગ્રાધ, (મધુઘાયા) મધુઘાતક-

ત્યાજાદ માછીમાર દોરીથી બાંધેલી તે બળને ખેંચી લે છે, તેમા થોટી ગયેલી
 માછલીઓ તેની સાથે જ બહાર નીકળી આવે છે અને માછીમાર તેને પકડી
 લે છે બળ-માછલા આદિ પકડવાની એક પ્રકારની બળ, ચીરહ્લક-એક
 હિંસક પક્ષીનું નામ, તે પક્ષી બીજા પક્ષીઓને મારવાને માટે શિકારીઓ વડે
 પળાય છે આયસ-લોહાનું બનાવેલું એક બાંધનું બધન, “દંભ” દર્ભનું એક બાંધનું
 બધન, વાગુરા-પાશ, કૂટછલિકા-નકલી બઝરી કે જે મિંહ આદિ જાનવરોને
 લલચાવવા માટે બનાવીને રાખવામા આવે છે, એ સઘળી ચીજો જેમના
 હાથમા છે તેવા સઘળા છવો પ્રાણવધ કરનારા હોય છે તથા “ હરિણસા ”
 હરિકેશ-ચાણ, “ ડુણિયા ” કુણિક-ચાણના સેવકો, “ વીદસગપાસહત્થા ”
 વીતસક-મૃગ અને પક્ષીઓને બાંધવાનું એક સાધન અને પાશ જેના
 હાથમા છે એવા “ વણચરગા ” કિરાત વગેરે પ્રાણવધ કરનારા મનાય છે
 “ લુદ્રગા ” લુબ્ધક-ગ્રાધ, “ મધુઘાયા ” મધુ ઘાતક-મધ લેવાને

‘सक’ शकाः=शकदेशोत्पन्नाः, ‘जवण’ यवनाः=प्रसिद्धाः, ‘सर’ शवराः=शवर-
देशोत्पन्ना भिन्नाः ‘ववर’ वरराः=वररोऽनार्यदेशविशेषस्तत्र भवन्ति ‘काय’
कायाः=कायदेशविशेषोद्भवाः ‘मरुड’ मुरुण्डाः=मुरुण्डदेशीयाः, ‘उदाः’ अना-
र्यविशेषाः ‘भडग’ भटकाः=भटकदेशवासिनः ‘तिचिय’ तिचिकाः=तिचिक-
देशजाताः, ‘पक्कणिय’ पक्कणिकाः=तद्देशजाताः, ‘कुलख’ कुलक्षाः=अनार्य-
देशोद्भवाः, ‘गोट’ गौडाः=गौडदेशोत्पन्नाः, ‘सिंहल’ सिंहलाः=सिंहलद्वीपो-
त्पन्नाः, ‘पारम’ पारसाः=पारसदेशजाता, ‘कौच’ कौञ्चाः=कौञ्चदेशोद्भवाः, ‘अध’
आध्या=अध्रदेशोत्पन्नाः, ‘दविल’ द्राविडाः=द्रविडदेशजाताः, ‘मिछल’ विल्वलाः

‘इमे य वहवे मिलस्सुजाईया’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(इमे य) अनुपद वक्ष्यमाण ये (वहवे) उद्धृत से (मिलस्सु
जाईया) म्लेच्छ-जातीय-अनार्य हैं । (किं ते ?) वे कौन २ हैं

उत्तर—(सक) शक-शक देशवासी, (जवण) यवन-प्रसिद्ध है,
(सर) शवर-शवर देशोत्पन्न भील, (ववर) ववर-वरर नाम के
अनार्यदेश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (काय) काय-इस नाम के देश विशेष
में जन्मे मनुष्य, (मरुड) मुरुण्ड-मुरुण्डदेश में पैदा हुए मनुष्य, (उद)
उद-इस जाति के अनार्य मनुष्य, (भडग) भटक-भटक देशनिवासी
मनुष्य, (तिचिय) तिचिय-तिचिक देश के मनुष्य, (पक्कणिय) पक्कणिक-
देश के मनुष्य, (कुलख) कुलख-कुलक्षनाम के अनार्यदेश में उत्पन्न
हुए मनुष्य, (गोट) गौड-इस जाति के मनुष्य, (सिंहल) सिंहल-सिंहल
द्वीप में उत्पन्न हुए मनुष्य, (पारस) पारस-पारस देश में उत्पन्न हुए

वहवे मिलस्सुजाईया ” इत्यादि

टीकार्थ—“इमेय” नीचे प्रभाषेनी “वहवे” धृष्टीयगी “मिलस्सु जाईया”
म्लेच्छ जातो-अनार्य छे “किं ते ?” ते अनार्य जाति कथी कथी छे ?

उत्तर—“सक” शक-शकदेशना रहवासी “जवण” यवन, “सर” शवर
-शवरदेशना वतनी लील, “ववर” वरर नामना अनार्य देशना वतनीओ,
“काय” ओ नामना देशमा ज-मेला मनुष्य, “मरुड” मुरुड-देशमा ज-मेला
लोको, “उद” ओ जातिना अनार्य लोको, “भडग” भटक देशना रहवासी,
“तिचिय” तिचिक देशना वतनी, “पक्कणिक” पक्कणिक देशना लोको, “कुलख”
कुलक्ष नामना अनार्य देशना लोको, “गोट” गौड जातिना लोको, “सिंहल”
सिंहल-सिंहलद्वीपना लोको, “पारस” पारस-पारस (धरान)मा ज-मेला लोको,

પ્રયોગકર્તાર્થઃ । ‘ઉત્તણચલ્લરદગ્ગિણિદ્યપલીવગા’ ઉત્તણચલ્લરદગ્ગિ-
નિર્દયપ્રદીપકાઃ-ઉત્તણાના=વર્ધિતતૃણાના પનાના, ચલ્લરાણા=ગહનપનાનામરણ્યક્ષે-
ત્રાણા વા, દગ્ગિના=દાગ્ગાનલેન નિર્દય=દયારહિત યથાસ્યાત્તથા પ્રદીપકાઃ=
પ્રજ્વાલકાઃ, ‘કૂરકર્મકારી’ કૂરકર્મકારિણિઃ=કઠોરકર્મકર્તાર્થઃ ઘાતકાઃ ધનન્તિ=
પ્રાણવધ કુર્વન્તીતિ પૂર્વેણ સમ્યન્ધઃ ॥ સૂ. ૨૧ ॥

તાનેન જાતિનિર્દેશપૂર્વક વર્ણયતિ-‘ઇમેય વહવે’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-ઇમેય વહવે મિલક્ષુજાઈયા, કે તે ? , સક-જવળ-
સવર-વઢવર-કાય મરુડો-દ-મહગ-તિત્તિય પક્કણિય-કુલક્ષ-ગોડ-
સિહલ-પારસ કોચંધ-દવિલ-વિહ્લલ-પુલિદ-અરોસ-હોંવ-પક્કળ-ગંધ
હારગ-વહલિય-જહ્લ-રોમ-માસ-વડસ-મલયા-ચુંચુયા-ય ચૂલિયગ-
કોકળગ-કળગ-સેય-મેયા-પળહવ માલવ-મહુર-આભાસિય-અળક્ષ
ચીળ-લાસિય-લ્લસ-લ્લાસિયા-નેહુર-મરહટ્ટુ-મુટ્ટિઅ-આરવ-હોવિલગ
કુહળ-કેકય-હૂળ-રોમગ-રુ-મરુયા-ચિલાયવિસયવાસી ય
પાવમડળો ॥ સૂ. ૨૨ ॥

ટીકા—‘ઇમેય’ ઇમે ચ-અનુપદ વક્ષ્યમાણાઃ ‘વહવે’ વહવઃ ‘મિલક્ષુજાઈયા’
મ્લેચ્છજાતીયાઃ=અનાર્યાઃ સન્તિ । ‘કિં તે ?’ કે તે ? ઇત્યાદિ-‘સકે’ ત્યાદિ ।

વિષ, इन्हें जो जीवो को मारने के अभिप्राय देते हैं वे, तथा (उत्तण-
चल्लर-दवग्गि-णिदय-पलीवगा) जो निर्दय होकर उत्तणो को-वर्धित-
तृणवाले वनों को चल्लरों को गहनवनों को अथवा अरण्य के खेतों को
दावानल से जला देते हैं वे मय (कूरकर्मकारी) कूरकर्मकारी माने
गये हैं और ऐसे प्राणी ही प्राणवध के करनेवाले होते हैं ॥सू. २१॥

સૂત્રકાર ઇન્હી પ્રાણિયોં કો જાતિ નિર્દેશ પૂર્વક વર્ણન કરતે હૈ—

નાખવાને માટે જેઓ તેમને ખવરાવે છે તેઓ તથા ‘ઉત્તણ-ચલ્લર, દવગ્ગિ,
ણિદય પલીવગા’ જે નિર્દય થઈને ઉત્તણોને વર્ધિત તૃણવાળા વનોને, વલ્લ-
રોને, ગહન વનોને, અથવા વનના ક્ષેત્રોને દાવાનળ લગાડીને સળગાવે છે તે
ખધાને “કૂરકર્મકારી” કૂરકર્મ કરનારા માનવામા આવે છે અને તેવા છયોજ
પ્રાણવધ કરનાર છે ॥ સૂ. ૨૧ ॥

સૂત્રકાર જેજ પ્રાણીઓનુ જાતિના નિર્દેશ સહિત વર્ણન કરે છે “ઇમેય

નિસયવાસી ય ' ચિદ્રાત વિપયવાસિનશ્ચ, ચિલાતદેશવાસિનોઽનાર્યાઃ, ' પાવમ-
ઇણો ' પાપમતયઃ=પાપબુદ્ધયઃ સન્તિ ॥ સૂ૦ ૨૨ ॥

પુનરપિ કેકે જીવાઃ પાપ કુર્વન્તીતિ તાન્ દર્શયિતુમાહ—'જલચર' इत्यादि।

મૂલ્મ—જલચર—થલચર—સળખ્ફચ—ઓરગ—ખહચર—સંડાસ-
તોડ—જીવોવધાયજીવી સળખી ય અસળિણણો પજ્જત્તે અપજ્જત્તે
ય—અસુભલેસ્સ પરિણમે એ અળ્લે ય એવમાઈ કરેતિ પાણા-
દેવાયકરણં । પાવાપાવાભિગમાઃ પાવમઈ પાવરૂઈ પાણવહકચરૂઈ
પાણવહરૂવાણુદ્દાણા પાણવહકહાસુ અભિરમતા તુદ્દા પાવ
કરેતુ હુતિય વહુપ્પગારં ॥ સૂ૦ ૨૩ ॥

ટીકા—' જલચર—થલચર—સળખ્ફઓરગ—ખહચર—સંડાસતોડ જીવોવધાય-
જીવી ' જલચર સ્થલચર સનખપદોરગ—ખચગ સંદંશતુણ્ડ જીવોવધાતજીવિનઃ=
જલચરા =ગ્રાહાદય, સ્થલચરા =ચતુષ્પદાઃ, સનખપદા =નખયુક્તચરણાઃ=વ્યા-

નિસયવાસી ય) ચિલાત દેશવાસી મનુષ્ય, યે સઽ અનાર્ય હૈં (પાવમ-
ઇણો) ઇનકી બુદ્ધિ પાપકર્મ મે રત રહતી હૈં । યે જિતને મી નામ કે
કહે હૈં વે સઽ પાપકર્મ મેં રતમતિવાલે હે ઓર યે પ્રાણવધ કે
કરને વાલે હૈં ॥ સૂ૦ ૨૨ ॥

અથ સૂત્રકાર ફિર યહ કહતે હૈં કિ કૌનર સે જીવ પાપ કરતેહૈં—
' જલચર થલચર ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(જલચર) ગ્રાહ આદિ જલચર જીવ, (થલચર) ચતુષ્પદ—ગાય,
મૈસ, આદિ ચાર પદ વાલે સ્થલચર જીવ, (સળખ્ફચ) નખયુક્ત પૈરોવાલે

દેશવાસી મનુષ્ય, એ સઘળી અનાર્ય પ્રજાઓ છે અને " પાવમઇણો "
તેમની બુદ્ધિ પાપકર્મમા લીન રહે છે આ જે જે ભતિઓ બતાવી છે
તે ભતિઓના ઢોકો પાપકર્મમા રત—લીન મતિવાળા હોય છે અને તેઓ
પ્રાણુવધ કરનારા હોય છે ॥ સૂ ૨૨ ॥

હવે સૂત્રકાર ફરીથી એ બતાવે છે કે કયા યથા ભવે પાપ કરે છે
" જલચર થલચર " इत्यादि

ટીકાર્થ—"જલચર" ગ્રાહ આદિ જલચર ભવ, "થલચર" ચતુષ્પદ—ગાય, મૈસ
આદિ ચોપગા સ્થળચર ભવે, " સળખ્ફચ " નહોર યુક્ત પગવાળા વાધ આદિ

चिल्वलदेशोद्भवाः, 'पुलिंद' पुलिन्दाः-पुलिन्ददेशोत्पन्नाः, 'अरोस' अरोषा = अरोषदेशजा, 'डोंय' डोंयाः=डोम्पदेशोद्भवाः, 'पोक्कण' पोक्कणा पोक्कणदेश भवाः, 'गंधहारग' गन्धहारका=गन्धारदेशजाताः, 'वहलिय' वहलिकाः =वहलीदेशोद्भवाः, जल्लाः-रोमा मासाः 'उरुस' उरुशाः मलयाः 'चुचुयाय' चुञ्चुकाश्च, 'चूलियग' चूलिकाः 'कौक्कणग' कौक्कणकाः 'कणग' कनका 'सेय' सयाः 'मेया' मेदाः, 'पण्डव' पण्डवाः, 'मालय' मालवाः 'मधुरा' मधुराः, 'आमासिय' आमापिकाः, 'अणक्क' अनक्षाः 'चीण' चीनाः 'लासिय' लासिकाः खसाः 'खासिय' खासिकाः 'नेट्टुर' निट्टुरा 'मरहट्ट' महाराष्ट्राः 'मुट्टिअ' मौष्टिकाः, 'आरयाः' 'डोविलग' 'डोविलका', कुण्हा केकया, हूणाः, 'रोमग' 'रोमकाः' 'रुरु' रुरुवः 'मरुया' मरुकाः, 'जल्लाः' इत्यारभ्य मरुकपर्यन्ताः, एतेऽपि तत्त्वनामक स्लेच्छदेशविशेषोद्भवाः, 'चिलाय

मनुष्य, (कोंच) कौच-कौच देशमें उत्पन्न हुए मनुष्य, (अध) आध्र-आध्रदेश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (दविल) द्राविड-द्राविडदेश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (चिल्लल) चिल्वल-इस नाम के देशमें उत्पन्न हुए मनुष्य, (पुलिंद) पुलिंद-पुलिंददेश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (अरोस) अरोष-अरोषदेशज (डोंय) डोंय-डोम्प देशोद्भव मनुष्य, (पोक्कण) पोक्कण-पोक्कण नाम के देश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (गध) गन्धहारक-गन्धार देश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (वहलिय) वहलिय-वहली नाम के देश में उत्पन्न हुए मनुष्य, इसी तरह (जल्ला) रोम, मास बकुश, मलय, चुञ्चुक, चूलिक, कौक्कणक, कनक, सेय, मेद, पण्डव, मालव, मधुर, आभिषक, अनक्ष, चीन, लासिक, खस, खासिक, निट्टुर, महाराष्ट्र, मौष्टिक, आरव, डोविलक, कुणह, केकय, हूण, रोमक, रुरु, और मरुक, ये सब उस उस नाम के स्लेच्छ देशविदेश में उत्पन्न हुए मनुष्य हैं। तथा (चिलाय-

"कौच" कौच-कौच देशमा जन्मेला लोको, "अध" आध्र-आध्र देशमा जन्मेला लोको, "दविल" द्राविड-द्राविड देशमा जन्मेला लोको, "चिल्लल" चिल्वल ते नामना देशमा जन्मेला लोको, "पुलिंद" पुलिंद-पुलिंद देशना लोको, "अरोस" आरोष-आरोष देशमा जन्मेला, "डोंय" डोम्प-डोम्प देशमा जन्मेला, "पोक्कण" पोक्कण- देशना लोको, "गध" -गन्धार देशमा जन्मेला लोको, "वहलिय" वहलिक-वहली देशमा उत्पन्न थयेल लोको, जेज रीते "जल्ला" रोम, मास, बकुश, मलय, चुचुक, कौक्कणक, कनक, सेय, मेद, पण्डव, मालव, मधुर, आमापिक, अनक्ष, चीन, लासिक, खस, खासिक, निट्टुर, महाराष्ट्र, मौष्टिक, आरव, डोविलक, कुणह, केकय, हूण, रोमक, रुरु, अने मरुक ते गधा ते ते देशमा जन्मेला लोको छे तथा, "चिलाय वि सयवासो य" चिलाय

વિસયવાસી ય ' ચિન્ચાત વિષયવાસિનશ્ચ, ચિન્ચાતદેશવાસિનોઽનાર્યાઃ, ' પાપમ-
હ્ણો ' પાપમતયઃ=પાપબુદ્ધયઃ સન્તિ ॥ સૂ૦ ૨૨ ॥

પુનરપિ કેકે જીવાઃ પાપ કુર્વન્તીતિ તાન્ દર્શયિતુમાહ—'જલચર' ઇત્યાદિ।

મૂલમ્—જલચર—થલચર—સળપ્ફચર—ઓરગ—ચ્વહચર—સંડાસ-
તોંડ—જીવોવધાયજીવી સળ્ણી ચ અસળ્ણિણો પજ્જત્તે અપજ્જત્તે
ચ—અસુમલેસ્સ પરિણમે ઇણ અળ્ણે ચ ઇવમાઈ કરોતિ પાણા-
ઈવાચકરણં । પાવા પાવાભિગમા પાવમઈ પાવરૂઈ પાણવહકચરઈ
પાણવહરૂવાણુદ્ધાણા પાણવહકહાસુ અભિરમંતા લુટ્ટા પાવ
કરેત્તુ હુતિય વહુપ્પગારં ॥ સૂ૦ ૨૩ ॥

ટીકા—' જલચર—થલચર—સળપ્ફઓરગ—ચ્વહચર—સંડાસતોંડ જીવોવધાય-
જીવી ' જલચર સ્થલચર સનયપદોરગ—ચ્વચર સંદશતુળ્લ જીવોવધાતજીવિનઃ=
જલચરા =ગ્રાહાદય, સ્થલચરા =ચતુષ્પદાઃ, સનયપદા =નયયુક્તચરણાઃ=વ્યા-

વિસયવાસી ય) ચિન્ચાત દેશવાસી મનુષ્ય, જે સવ અનાર્ય હૈ (પાવમ-
હ્ણો) इनकी बुद्धि पापकर्म में रत रहती है । ये जितने भी नाम के
कहे हैं वे सव पापकर्म में रतमतिचाले हे और ये प्राणवध के
करने वाले हैं ॥ सू० २२ ॥

અથ સૂત્રકાર ફિર યહ કહતે હૈં કિ કૌનર સે જીવ પાપ કરતેહૈં—
'જલચર થલચર' ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(જલચર) ગ્રાહ આદિ જલચર જીવ, (થલચર) ચતુષ્પદ—ગાય,
મૈસ, આદિ ચાર પદ વાળે સ્થલચર જીવ, (સળપ્ફચર) નયયુક્ત પૈરોંવાળે

દેશવાસી મનુષ્ય, એ સધળી અનાર્ય પ્રજાઓ છે અને " પાવમહ્ણો "
તેમની બુદ્ધિ પાપકર્મમાં લીન રહે છે આ જે જે ભતિઓ બતાવી છે
તે ભતિઓના લોગે પાપકર્મમાં રત-લીન ભતિવાળા હોય છે અને તેઓ
પ્રાણવધ કરનારા હોય છે ॥ સૂ ૨૨ ॥

હવે સૂત્રકાર ફરીથી એ બતાવે છે કે કયા કયા જીવો પાપ કરે છે
"જલચર થલચર" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"જલચર" ગ્રાહ આદિ જલચર જીવ, "થલચર" ચતુષ્પદ—ગાય, મૈસ
આદિ ચાર પદ વાળે સ્થળચર જીવો, " સળપ્ફચર " નહોર યુક્ત પગવાળા વાધ આદિ

पिल्वलदेशोद्भवाः, 'पुलिंद' पुलिन्दाः—पुलिन्ददेशोत्पन्नाः, 'अरोस' अरोषा = अरोषदेशजा, 'डोंय' डोंयाः=डोम्पदेशोद्भवाः, 'पोक्कण' पोक्कणा पोक्कणदेश भवाः, 'गंधहारग' गन्धहारकाः=गन्धारदेशजाताः, 'वहलिय' वहलिकाः =वहलीदेशोद्भवाः, जल्लाः—रोमा मासाः 'उउस' उकुशाः मलयाः 'चुचुयाय' चुञ्चुकाश्च, 'चूलियग' चूलिकाः 'कोंरुणग' कोंरुणकाः 'कणग' कनका 'सेय' सयाः 'मेया' मेदाः, 'पण्डव' पण्डवाः, 'मालय' मानवाः 'मधुरा' मधुराः, 'आमासिय' आमाषिकाः, 'अणक्क' अनक्षाः 'चीण' चीनाः 'लासिय' लासिकाः खसाः 'खामिय' खासिकाः 'नेहुर' निष्टुरा 'मरहट्ट' महाराष्ट्राः 'मुट्टिअ' मौष्टिकाः, 'आरवाः' 'डोविलग' 'डोविलका', कुण्हा केकया, हणाः, 'रोमग' 'रोमकाः' 'रु' रुवः 'मरुया' मरुकाः, 'जल्लाः' इत्यारभ्य मरुकरपर्यन्ताः, एतेऽपि तत्तन्नामक म्लेच्छदेशनिशेपोद्भवाः, 'चिलाय

मनुष्य, (कोंच) कौच-कौच देशमें उत्पन्न हुए मनुष्य, (अध) आध्र-आध्रदेश मे उत्पन्न हुए मनुष्य, (दविल) द्राविड-द्राविडदेश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (विल्लल) पिल्वल-इस नाम के देशमें उत्पन्न हुए मनुष्य, (पुलिंद) पुलिंद-पुलिंददेश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (अरोस) अरोष-अरोषदेशज (डोय) डोंय-डोम्प देशोद्भव मनुष्य, (पोक्कण) पोक्कण-पोक्कण नाम के देश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (गध) गन्धहारक-गन्धार देश में उत्पन्न हुए मनुष्य, (वहलिय) वहलिय-वहली नाम के देश में उत्पन्न हुए मनुष्य, इसी तरह (जल्ल) रोम, मास बकुश, मलय, चुञ्चुक, चूलिक, कोंकणक, कनक, सेय, मेद, पण्डव, मालव, मधुर, आभिषक, अनक्ष, चीन, लासिक, खस, खासिक, निष्टुर, महाराष्ट्र, मौष्टिक, आरव, डोविलक, कुणह, केकय, हण, रोमक, रु, और मरुक, ये सब उस उस नाम के म्लेच्छ देशविदेश में उत्पन्न हुए मनुष्य हैं । तथा (चिलाय-

“कोंच” कौच-कौच देशभा जन्मेला लोको, “अध” आध्र-आध्र देशभा जन्मेला लोको, “दविल” द्राविड-द्राविड देशभा जन्मेला लोको, “विल्लल” पिल्वल ते नामना देशभा जन्मेला लोको, “पुलिंद” पुलिंद-पुलिंद देशना लोको, “अरोस” आरोष-आरोष देशभा जन्मेला, “डोंय” डोण-डोण देशभा जन्मेला, “पोक्कण” पोक्कण- देशना लोको, “गध” गन्धार देशभा जन्मेला लोको, “वहलिय” वहलिक-वहली देशभा उत्पन्न थयेल लोको, जेज् रीते “जल्ल” रोम, मास, बकुश, मलय, चुञ्चुक, कोंकणक, कनक, सेय, मेद, पण्डव, मालव, मधुर, आभाषिक, अनक्ष, चीन, लासिक, खस, खासिक, निष्टुर, महाराष्ट्र, मौष्टिक, आरव, डोविलक, कुण्हा, केकय, हण, रोमक, रु, अने मरुक ते गधा ते ते देशभा जन्मेला लोको छे तथा, “चिलाय वि सयवासी य” चिलाय

વિસયવામી ય ' ચિત્રાત વિપયસિનશ્ચ, ચિલાત્દેશવાસિનોઽનાર્યાઃ, ' પાવમ-
ઇણો ' પાવમતયઃ=પાપપુદ્ગલઃ સન્તિ ॥ સૂ ૨૨ ॥

પુનરપિ કેકે જીવાઃ પાપ કુર્વન્તીતિ તાન્ દર્શયિતુમાહ-‘જલચર’ इत्यादि।

મૂલ્મ-જલચર-થલચર-સળખ્ફચ-ઓરગ-સ્વહચર-સંડાસ-
તોડ-જીવોવધાયજીવી સળ્ળી ય અસળ્ળિણો પજ્જત્તે અપજ્જત્તે
ય-અસુમલેસ્સ પરિણમે એ અળ્ળે ય એવમાઈ કરોતિ પાણા-
ઈવાચકરણં । પાવાપાવાભિગમા પાવમઈ પાવરુઈ પાણવહકચરઈ
પાણવહરુવાણુટ્ટાણા પાણવહકહાસુ અભિરમતા તુટ્ટા પાવ
કોરેત્તુ હુતિય વહુપ્પગાર ॥ સૂ ૨૩ ॥

ટીકા—‘ જલચર-થલચર-સળખ્ફઓરગ-સ્વહચર-સંડાસતોડ જીવોવધાય-
જીવી ’ જલચર સ્થલચર સનમ્વપદોરગ-સ્વચર સદશતુણ્ડ જીવોવધાત્તજીવિનઃ=
જલચરા =ગ્રાહાદય, સ્થલચરા =ચતુષ્પદાઃ, સનમ્વપદા =નલયુક્તચરણાઃ=વ્યા-

વિસયવાસી ય) ચિલાત્ દેશવાસી મનુષ્ય, જે સવ અનાર્ય હૈ (પાવમ-
ઇણો) ઇનકી બુદ્ધિ પાપકર્મ મેં રત રહતી હૈ । જે જિતને મી નામ કે
કહે હૈં જે સવ પાપકર્મ મેં રતમતિવાલે હૈં ઓર જે પ્રાણવધ કે
કરને વાલે હૈં ॥ સૂ ૨૨ ॥

અવ સૂત્રકાર ફિર યહ કહતે હૈં કિ કૌનર સે જીવ પાપ કરતેહૈં—
‘ જલચર થલચર ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(જલચર) ગ્રાહ આદિ જલચર જીવ, (થલચર) ચતુષ્પદ-ગાય,
મૈસ, આદિ ચાર પદ વાલે સ્થલચર જીવ, (સળખ્ફચ) નલયુક્ત પૈરોવાલે

દેશવાસી મનુષ્ય, જે સળ્ળી અનાર્ય પ્રજાઓ છે અને “ પાવમઇણો ”
તેમની બુદ્ધિ પાપકર્મમા લીન રહે છે આ જે જે જાતિઓ બતાવી છે
તે જાતિઓના લોકો પાપકર્મમા રત-લીન મતિવાળા હોય છે અને તેઓ
પ્રાણવધ કરનારા હોય છે ॥ સૂ ૨૨ ॥

હવે સૂત્રકાર ફરીથી એ બતાવે છે કે કયા કયા જીવો પાપ કરે છે
“ જલચર થલચર ” इत्यादि

ટીકાર્થ—“ જલચર ” ગ્રાહ આદિ જલચર જીવ, “ થલચર ” ચતુષ્પદ-ગાય, મૈસ
આદિ ચોપગા સ્થળચર જીવો, “ સળખ્ફચ ” નહોર યુક્ત પગવાળા વાઘ આદિ

પ્રાદયઃ, ઊરગાઃ=સર્પા, સ્વચરાઃ-પક્ષિણઃ ઇયેનાદય, સદશતુણ્ડાઃ=સદશમિવ તુણ્ડો યેષા તે સદશતુણ્ડાઃ=ઢકકઢાદિ પક્ષિણ, એવા દ્વન્દ્વસ્તતઃ તે ચ તે 'જીવો વધાતેન=જીવહિંસયા જીવન્તિ - ઇતિ, જીવોવધાતત્તીગ્નિથેતિ તથોક્તાઃ। 'સપ્તનીય' સન્નિનથ 'અસપ્તિણ્ણો' અસપ્તિન 'પજ્જત્ત અપજ્જત્તે ય' પર્યાપ્તા અપર્યાપ્તાથ=સર્વે જીવા-પર્યાપ્તા અપર્યાપ્તાથેતિ દ્વિવિધા ભવન્તિ તત્ર પર્યાપ્તિયો વિદ્યન્તે યેષા તે પર્યાપ્તાઃ પર્યાપ્તનામકર્મોદયાત્ પર્યાપ્તિયુક્તા જીવાઃ, તે દ્વિવિધા લઘ્વિપર્યાપ્તાઃ, કરણપર્યાપ્તાથ। યે સર્ગા અપિ પર્યાપ્તીઃ પૂરપિત્વા ત્રિયન્તે ન તતઃ પ્રોક્તે લઘ્વિપર્યાપ્તાઃ, યે પુનઃ શરીરેન્દ્રિયાદોનિ કરણાનિ

વ્યાધ આદિ જીવ (ઓરગ) ઊરગ-છાતી કે સહારે ચલને વાળે સાંપ, (સ્વહર) ઇયન આદિ પક્ષી સ્વચર જીવ (સદસતોંડ) સદશ-સડાસી કે જેસે મુલગાલે ઢક કઠુ આદિ પક્ષી (જીવોવધાયજીવી) યે સબ જીવોં કી હિંસા કરકે અપના જીવન નિર્વાહ કરને વાળે હૈં। તથા (સપ્તનીય) જિનકે મન હૈં એસે સહી પચેન્દ્રિય જીવ ઓર (અસપ્તિણ્ણો) જિનકે મન નહીં હૈં એસે અસહી પચેન્દ્રિય જીવ, યે સય પાપ કરકે પ્રસન્ન હોતે હૈં। જલચર સે લેકર અસહી પર્યન્ત કે જિનને ભી જીવ હૈં સય (પજ્જત્તે અપજ્જત્તે ય) પર્યાપ્ત ઓર અપર્યાપ્ત હોતે હૈં। પર્યાપ્ત નામકર્મ કે ઉદય સે જિનકી અપનીર યોગ્ય પર્યાપ્તિર્વા પૂર્ણ હો જાતી હૈં વે પર્યાપ્ત જીવ હૈં, ઓર જિનકી પર્યાપ્તિયા પૂર્ણ નહીં હોતી હૈં વે અપર્યાપ્ત જીવ હૈં। યે પર્યાપ્ત જીવ લઘ્વિપર્યાપ્ત ઓર કરણપર્યાપ્ત કે ભેદ સે દો પ્રાકાર કે હોતે હૈં। જો સમસ્ત પર્યાપ્તિયોં કો પૂરણ કરકે હી મરતે હૈં

જીવો, "ઓરગ" ઊરગ-પેટે ચાલનાર સાપ, "સ્વહર" બાજ આદિ નલ ચર પક્ષી, "સદસતોંડ" સદશ-સાણસીના જેવા મુખવાળા ઢક, ઢક આદિ પક્ષીઓ. "જીવોવધાયજીવી" એ બધા જીવોની હિંસા કરીને ચોતાનો જીવન નિર્વાહ કરનાર જીવો છે તથા "સપ્તનીય" જેમને મન છે એવા સહી પચેન્દ્રિય જીવ, અને "અસપ્તિણ્ણો" જેમને મન નથી એવા અસહી પચેન્દ્રિય જીવ, એ બધા પાપ કરીને પ્રસન્ન થાય છે જળચરથી લઈને અસહી મુધીના આ જેટલા જીવ છે તે બધા "પજ્જત્તે અપજ્જત્તે ય" પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત હોય છે પર્યાપ્ત નામકર્મના ઉદયથી જેમની ચોત ચોતાની યોગ્ય પર્યાપ્તિયો પૂર્ણ થઈ જાય છે તેમને પર્યાપ્ત જીવો કહે છે અને જેમની પર્યાપ્તિયો પૂર્ણ થતી નથી તે જીવોને અપર્યાપ્ત જીવો કહે છે પર્યાપ્ત જીવોના બે ભેદ છે (૧) લઘ્વિ પ્રર્યાપ્ત (૨) કરણપર્યાપ્ત જે જીવો સમસ્ત પર્યાપ્તિયો પૂરી કરીને

નિર્વર્તિત્વન્તસ્તે કરુણપર્યાપ્તાઃ । તદિતરે-અપર્યાપ્તાઃ । ‘અસુમલેસ્સપરિણામે’
અસુમલેશ્ય પરિણામાઃ=અધુમલેશ્યાઃ=સક્લિષ્ટલેશ્યાયુક્તાઃ પરિણામાઃ=અધ્યવસાય
યેપાં તે, એતે પૂર્વોક્તાઃ ‘અળ્લે ય’ અન્યે ચ=અન્યેઽપિ ‘એવમાઈ’ એવમાદયઃ=
એતાદશા પ્રાણિનઃ, ‘પાણાડયાય કરુણ’ પ્રાણાતિપાત કરુણ=પ્રાણાતિપાતાનુષ્ઠાન
‘કરેતિ’ કર્યન્તિ, પુનરપિ તદેવાહ-‘પાવા’ इत्यादि-‘પાવા’ પાપાઃ=પાપકર્મ-
તત્પરાઃ, ‘પાવાભિગમા’ પાપાભિગમાઃ=પાપમેય અભિગમઃ=સ્વીકારો યેપા તે તથા
‘પાવમઈ’ પાપમતયઃ=પાપબુદ્ધયઃ, ‘પાવરુઈ’ પાપરુચયઃ=પાપે એવ રુચિ=રત્ન-
રાગો યેપા તે તથા, ‘પાણવહકયરુઈ’ પ્રાણવધકૃતરતયઃ=પ્રાણવધે કૃતા-રતિઃ=
પ્રીતિર્યસ્તે તથા, ‘પાણવહરૂવાણુદ્વાણા’ પ્રાણવધરૂપાનુષ્ઠાના=પ્રાણવધરૂપમનુષ્ઠાન

इसके पहिले नहींवे लब्धिपर्याप्त जीव हैं । तथा जो जीव शरीर इन्द्रिय
आदि करणों की रचना को पूर्ण कर चुकते हैं ये करणपर्याप्त है ।
इनसे भिन्न जो जीव हैं वे अपर्याप्त हैं तथा (असुमलेस्सपरिणामे)
जिन जीवों के अध्यवसाय-परिणाम-सक्लिष्ट लेश्यायुक्त हैं (एए’
ये तथा (अण्णे य एवमाई) इनसे भिन्न और भी ऐसे ही प्राणी
(करेतिपाणाइवाय करण) प्राणातिपातरूप पाप के करने वाले होते हैं ।
इसी बात को सूत्रकार “ पावा ” इत्यादि पदों द्वारा प्रकट करते हैं (पावा)
जो पापकर्म करने में तत्पर है, (पावाभिगमा) पाप प्रवृत्ति ही जिन्हें
स्वीकृत है, (पावमई) जिनकी बुद्धि पापमय हो रही है, (पावरुई)
पापकर्म में जिनकी रुचि अधिक से अधिक रूप में सजग रहती है,
(पाणावहकयरुई) प्राणवध में जिन्हें आनंद आता है (पाणावहरूवाणु-

મરે છે-તે પહેલા મરતા નથી, તેમને લબ્ધિ પર્યાપ્ત હોયો કહે છે તથા જે
હોયો શરીર ઇન્દ્રિય આદિ કરણોની રચના પૂર્ણ કરી નાખે છે, તે હોવાને
કરણ પર્યાપ્ત કહે છે તેમનાથી જે ભિન્ન પ્રકારના હોયો છે તેઓ અપર્યાપ્ત છે,
તથા “ અસુમલેસ્સપરિણામે ” જે હોવાના અધ્યવસાય-પરિણામ-સક્લિષ્ટ
લેશ્યા યુક્ત હોય છે “ એ એ ” તેઓ તથા “ અળ્લેય એવમાઈ ” તે સિવાયના
બીજા પણ એવા જ પ્રાણીઓ “ કરેતિ પાણાઈ વાયકરુણ ” પ્રાણાતિપાત રૂપ
પાપ કરનારા હોય છે એજ વાતને સૂત્રકાર “ પાવા ” ઇત્યાદિ પદો દ્વારા
પ્રગટ કરે છે “ પાવા ” જે પાપકર્મ કરવાને તત્પર હોય છે, “ પાવાભિગમા ”
પાપ પ્રવૃત્તિ જ જમણે સ્વીકારેલી છે “ પાવમઈ ” જેમની બુદ્ધિ પાપમય થઈ
ગઈ છે, “ પાવરુઈ ” પાપકર્મમા જ જેમની વૃત્તિ વધારેમા વધારે જાગૃત રહે
છે, “ પાણવહકયરુઈ ” પ્રાણવધમા જેમને મન આવે છે, “ પાણવહરૂવાણુ

પ્રાદયઃ, ઊરગાઃ=સર્પા, સ્વચરાઃ-પક્ષિણઃ શ્યેનાદય, સદશતુણ્ડાઃ=સદશમિવ-
તુણ્ડો યેવા તે સદશતુણ્ડાઃ=ઢલ્લકઢાદિ પક્ષિણ, ઇવા દ્વન્દ્વસ્તતઃ તે ચ તે 'જીવો
પથાતેન=જીવહિંસયા જીવન્તિ - ઇતિ, જીવોપઘાતજીવિનથેતિ તયોક્તાઃ ।
'સળ્ળીય' સન્નિનથ 'અસળ્ળિણો' અસળ્ળિન 'પજ્જત્તે અપજ્જત્તે ય' પર્યાપ્તા
અપર્યાપ્તાશ્ચ=સર્વે જીવા-પર્યાપ્તા અપર્યાપ્તાશ્ચેતિ દ્વિવિધા ભવન્તિ તત્ર પર્યાપ્તયો
વિદ્યન્તે યેવા તે પર્યાપ્તાઃ પર્યાપ્તનામકર્મોદયાત્ પર્યાપ્તિયુક્તા જીવાઃ, તે
દ્વિવિધા લઘ્વિપર્યાપ્તાઃ, કરણપર્યાપ્તાશ્ચ । યે સર્વા અપિ પર્યાપ્તીઃ પૂરયિત્વા
ચ્ચિન્ત્યન્તે ન તત્ત. પ્રોક્તે તે લઘ્વિપર્યાપ્તાઃ, યે પુનઃ શરીરેન્દ્રિયાદોનિ કરણાનિ

વ્યાઘ્ર આદિ જીવ (ઓરગ) ઊરગ-ઢાતી કે સહારે ચલને વાલે સાંપ,
(સ્વહયર) શ્યેન આદિ પક્ષી સ્વચર જીવ (સદસર્તોડ) સદશ-સઢાસી
કે જસે મુલ્લગાલે ઢલ્લ કલ્લ આદિ પક્ષી (જીવોપઘાયજીવી) યે સ્વ
જીવોં કી હિંસા કરકે અપના જીવન નિર્વાહ કરને વાલે હું । તથા
(સળ્ળીય) જિનકે મન હૈ ંસે સઢી પચેન્દ્રિય જીવ ઓર (અસળ્ળિણો)
જિનકે મન નહીં હૈ ંસે અસઢી પચેન્દ્રિય જીવ, યે સ્વ પાપ કરકે
પ્રસન્ન હોતે હું । જલચર સે લેકર અસઢી પર્યન્ત કે જિનને ભી જીવ
હૈ સત્ર (પજ્જત્તે અપજ્જત્તે ય) પર્યાપ્ત ઓર અપર્યાપ્ત હોતે હું । પર્યાપ્ત
નામકર્મ કે ઉદય સે જિનકી અપનીર યોગ્ય પર્યાપ્તિયા પૂર્ણ હો જાતી
હું ઘે પર્યાપ્ત જીવ હૈ, ઓર જિનકી પર્યાપ્તિયા પૂર્ણ નહીં હોતી હું ઘે અપર્યાપ્ત
જીવ હૈ । યે પર્યાપ્ત જીવ લઘ્વિપર્યાપ્ત ઓર કરણપર્યાપ્ત કે ભેદ સે ઢો
પ્રાકાર કે હોતે હૈ । જો સમસ્ત પર્યાપ્તિયોં કો પૂરણ કરકે હી મરતે હું

જીવો, "ઓરગ" ઊરગ-પેટે ચાલનારા સાંપ, "સ્વહયર" બાજ આદિ નલ
ચર પક્ષી, "સદસર્તોડ" સદશ-સાણસીના જેવા ઝુખવાળા ઢલ્લ, ઢલ્લ આદિ
પક્ષીઓ "જીવોપઘાયજીવી" એ બધા જીવોની હિંસા કરીને ચોતાનો જીવન
નિર્વાહ કરનાર જીવો છે તથા "સળ્ળીય" જેમને મન છે એવા સર્પી પચે
ન્દ્રિય જીવ, અને "અસળ્ળિણો" જેમને મન નથી એવા અસર્પી પચેન્દ્રિય
જીવ, એ બધા પાપ કરીને પ્રસન્ન થાય છે જળચરથી લઈને અસર્પી ઝુધીના
આ બેટલા જીવ છે તે બધા "પજ્જત્તે અપજ્જત્તે ય" પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત
હોય છે પર્યાપ્ત નામકર્મના ઉદયથી જેમની ચોત ચોતાની યોગ્ય પર્યાપ્તિયો
પૂર્ણ થઈ જાય છે તેમને પર્યાપ્ત જીવો કહે છે અને જેમની પર્યાપ્તિયો પૂર્ણ
થતી નથી તે જીવોને અપર્યાપ્ત જીવો કહે છે પર્યાપ્ત જીવોના બે ભેદ છે
(૧) લઘ્વિ પ્ર્યાપ્ત (૨) કરણપર્યાપ્ત જે જીવો સમસ્ત પર્યાપ્તિયો પૂરી કરીને

महोसिण सयापतत्त-दुग्गधविस्स-उब्बेयजणगेसु वीभच्छदरि-
सणिज्जेसु य निच्चं हिमपडलसीयलेसु कालोभासेसु य भीम
गंभीर लोसहरिसणेसु णिरभिरामेसु निप्पडियार वाहिरोगजरा-
पालिएसु अईव निच्चधयारतमिस्सेसु पइभएसु ववगयगह-
चंद-सूर-णक्खत्त-जोइसेसु मेयवसामसपडल-पोच्चड-पूय-
रुहिरुक्किण्ण विलीण-चिक्कणरसिया वावण्णकुहिय चिक्खल्लक-
वमेसु कुकूलानल-पलित्तजालमुम्मुर असिक्खुरकरवत्तधारसु
निसिय विच्छुयडक निवातोवम-फरिस अतिदुस्सहेसु य अत्ताणा
असरणा कडुयदुक्खपरितावणेसु अणुवद्ध निरतरवेयणेसु
जमपुरिससकुलेसु ॥ सू० २४ ॥

टीका—‘तस्स य पावस्स’ तस्य च पापस्य=प्राणवधस्वरूपस्य पाप
वृक्षस्य ‘फलविवाग’ फलविपाक=“प्राणातिपातस्य नररुनिगोदादि दुःखरूप
कडुफल भविष्यती”ति पापपरिणाम, ‘अयाणमाणा’ अजानन्त पापकर्माणि
‘नरयतिरिक्खजोणिं वर्धयन्ति’ इत्यग्रेण सम्बन्ध, वेदनामेव वर्णयति—‘महन्मय’

इस प्रकार “जे वि य करेंति पावा पाणवह” यह प्रतिज्ञात पांचवां
प्राणवधकर्तृद्वारा कह दिया—अब सूत्रकार “जह य कओ जारिस फल
देइ” यह चतुर्थ फल द्वार कहते हैं—‘तस्स य पावस्स’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तस्स य पावस्स) इस प्राणवधरूप पाप वृक्षका (फलविवाग)
नरक निगोद आदि दुःखरूप कडु फल भोगना होगा इस बात को
(अयाण माणा) नहीं जानते हुए पापीष्ट जीव (नरयतिरिक्खजोणिं

आ शीते “जे वि य करेंति पावा पाणवह” ते प्रतिज्ञात पापमा
प्राणवधकर्तृद्वारानु विवेचन स पूर्णं यथु डवे सूत्रकार “जह य कओ जारिस
फल देइ” आ चतुर्थं श्लोकादनु विवेचन अरे छे “तस्स य पावस्स” इत्यादि

टीकार्थ—“तस्स य पावस्स” आ प्राणवधश्च पापवृक्षानु “फलविवाग” नरक
निगोद आदि दुःखश्च उक्तु इण लोणवर्षु पडथे, ते वातने “अयाणमाणा”

કાર્ય ચેપા તે તથા, 'પાણવહકહાસુ' પ્રાણવધકયાનુ=પ્રાણિહિસાવાર્તાસુ= અભિરમતા । અભિરમતઃ પ્રસીદન્ત સન્તસ્તે 'ગ્રહુષ્પગાર' ગ્રહુષ્પગાર નાનાવિધ 'પાવ' પાપ 'કરેતુ' કૃત્યા 'તુદ્ધા' તુદ્ધાઃ =પ્રવ્રજા 'હુતિ' મયન્તિ ॥ સૂ. ૨૩ ॥

પૂર્વે 'જેવિય કરેતિ પાપાપાણવહ' એટલે પ્રતિજ્ઞાત પશ્ચમ પ્રાણવધકૃત્ત્વદ્વારે નિરૂપિત, સમ્પતિ 'જહ્યક્રઓ જારિસ-ફલ દેઈ' યથા ચ કૃતઃ પ્રાણવધો યાદશ ફલ દદાતિ એટલે ચતુર્થ ફલદ્વાર પ્રતિપાદ્યમાહ-'તસ્સે' એટલે ।

મૂલમ્-તસ્સ ય પાવસ્સ ફલવિવાગ અયાણમાણાવઙ્ગંતિ મહાબયં અવિસ્સામવેયણ દીહકાલગ્રહુદુક્ખસંકડ નરયતિરિ-ક્ખજોણિં । ઇઓ આઠક્ખણ ચુયા અસુભકમ્મવહુલા ડવવજ્જંતિ નરણસુ હુલિય મહાલણસુ વયરામય કુદ્ધુ-રુદનિસ્સધિ-દાર વિરહિય-નિમ્મદ્ધવ-ભૂમિતલ-ઘરામરિસ-વિસમણિ રયઘર ચારણસું

ટ્ટાણા) પ્રાણવધરૂપ કાર્ય કરના હી જિનકા એક અનુષ્ઠાન હૈ ઓર (પાણાવહ કહાસુ અભિરમતા) પ્રાણિયોં કી હિંસાત્મક વાર્તાઓં મેં જિન્હેં રસ મિલતા હૈ, એસે જીવ (ગ્રહુષ્પગાર) નાનાવિધ (પાવ કરેતુ) પાપ કરકે (તુદ્ધા) સતુદ્ધ (હુતિ) હોતે હૈં ।

ભાવાર્થ—જલચર, થલચર આદિ જિતને મી તિર્યચ હૈં, એવ પક્ષી આદિ જિતને મી સેચર જીવ હૈ—ચાહે વે સજી હો ચાહે અસજી હો પર્યાસ હો ચાહે અપર્યાસ હો ચદિ યે જીવ ઘાત કરકે અપના નિર્વાહ કરતે હૈં તો પાપી હૈ—પાપકર્મ મે રત હૈ । જિન જીવોં કે પરિણામોં મેં અશુભલેશ્યા વર્તતી રહતી હૈ, જો પાપમય કૃત્યોં મે આનન્દ માનતે હૈં એટલે પ્રકાર કે જીવ મી પાપી ઓર પાપકર્મ રત હૈ ॥ સૂ. ૨૩ ॥

ટ્ટાણા ” પ્રાણવધનુ કાર્ય જ જેમનુ એક અનુષ્ઠાન છે, અને “ પાણવહકહાસુ અભિરમતા ” પ્રાણીઓની હિંસાત્મક વાર્તાઓમા જેમને રસ પડે છે, એવા છેવે “ ગ્રહુષ્પગાર ” વિવિધ ‘ પાવકરેતુ ’ પાપો કરીને ‘ તુદ્ધા ’ સતોષ “ હુતિ ” પામે છે

ભાવાર્થ—જળચર, સ્થળચર આદિ જે જે તિર્યચ છે, અને પક્ષી આદિ જેટલા ખેચર (નલચર) છેવે છે તેઓ સજી હોય કે અસજી હોય, પર્યાસ હોય કે અપર્યાસ હોય પણ જો તેઓ છેવેની હિંસા કરીને પોતાને નિર્વાહ ચલાવતા હોય તો તેઓ પાપી છે—પાપકર્મમા રત છે જે છેવેના પરિણા-મોમા અશુભલેશ્યા પ્રવર્તતિ હોય છે જેઓ પાપમય કૃત્યોમા આનન્દ માનતા હોય તે, ઇત્યાદિ પ્રકારના છેવે પણ પાપી અને પાપકર્મમા રત હોય છે ॥ સૂ. ૨૩ ॥

રત્નપ્રભાદિપુ 'હુલિય' શીઘ્રમ્ 'ઉવચ્ચજતિ' ઉત્પન્નન્તે । કથમ્ભૂતેષુ નરકેષુ ?—
 इत्याह—'महालयेषु' महालयेषु=क्षेत्रस्थितिभ्या महत्सु 'वयरामयकुङ्कुरुद
 निस्संधिदारविरहियनिम्मइवभूमितलखरामरिसविसमणिरयघरचारणसु' उच्चमयकु-
 ङ्कुर-रुन्द-निस्सन्धिदारविरहितनिर्मादभूमितलखराऽमर्शविपमनरकघरचारकेषु
 =उच्चमयकुङ्कुरानि=उच्चभित्तयः, रुन्दाः=विस्तीर्णाः, देशी-शब्दोऽयम्, विस्तीर्ण-
 वाचकः निस्सन्ध्यः=सन्धिरहिताः, दारविरहिताः=गमनागमनद्वारवर्जिता, निर्माद-
 वभूमितलाः=कठोरतरभूमिभागाः, तथा खरामर्गा =कठिनस्पर्शा, पिपमाः=उच्चा
 उचा, नरकगृहा =नरकावासा एव चारका =चन्दिगृहाः येषु नरकेषु ते तथा तेषु,
 'महोसिण-सयापतत्त-दुग्गन्ध-विस्स-उब्बेयजणगेसु' महोष्णसदाप्रतप्त-दुर्गन्ध

(અસુખ કમ્મવહુલા) પ્રાણીવધજન્ય પાપકર્મ કે ખાર સે અત્યંત દુઃખ
 હૂણે શેકર (નરકસુ) રત્નપ્રભા આદિ પૃથિવ્યોં મેં (હુલિય) શીઘ્ર હી
 (ઉવચ્ચજતિ) ઉત્પન્ન હો જાતે હૈ । યે નરક (મહાલયેસુ) ક્ષેત્ર તથા
 સ્થિતિ કી અપેક્ષા મહાન હૈં તથા (વયરામયકુકુરુદનિસ્સધિદારવિરહિય
 નિમ્મદ્વ વભૂમિતલ લ્હરામરિસવિસમણિરયઘરચારણસુ) (નિરયઘર-
 ચારણસુ) નરકાવાસરૂપચન્દિગૃહ (વયરામયકુકુરુ) વજ્રભિત્તિવાલે હૈ ।
 (રુદ) અત્યંત વિસ્તૃત હૈ (નિસ્સધિ) સન્ધિ રહિત હૈ । (દારવિરહિય)
 ગમનાગમન કે સાધનભૂત દ્વાર સે હીન ઓર (નિમ્મદ્વ) મૃદુતા રહિત
 (લ્હરામરિસ) કઠોરતર (વિસમ) ઝંચે નીચે ભૂમિભાગવાલે હૈ । (મહો-
 સિણ સયાપતત્ત-દુગ્ગન્ધવિસ્સ-ઉબ્બેયજણગેસુ) (મહોસિણ) હનમેં સદા
 ઉષ્ણજન્ય વેદના રહા કરતી હૈ । (સયાપતત્ત) યે નિરન્તર તાપસે વ્યાપ્ત

છવ મનુષ્ય લવભાથી મરીને “અસુખ કમ્મવહુલા” પ્રાણીવધને કારણે ઉત્પન્ન થયેલા પાપકર્મના ભારથી અત્યંત દુઃખાયેલ જોવા તે છવે “નરકસુ” રત્ન પ્રભા આદિ પૃથ્વીઓમા “હુલિય” તરત જ “ઉવચ્ચજતિ” ઉત્પન્ન થઈ જાય છે તે નરક “મહાલયેસુ” ક્ષેત્ર અને સ્થિતિની અપેક્ષાએ મહાન છે તથા “વયરામય કુકુરુ રુદ નિસ્સધિદાર વિરહિય નિમ્મદ્વ ભૂમિતલ લ્હરામરિસવિસમ ણિરયઘર ચારણસુ” “નિરયઘરચારણસુ” નરકાવાસરૂપ અન્ધિગૃહ “વયરામય કુકુરુ” વજ્રની દિવાલોવાળા છે, “રુદ” અત્યંત વિસ્તૃત છે, “નિસ્સધિ” સન્ધિરહિત છે “દારવિરહિય” અવગ જવર માટેના દ્વારોથી ગહિત છે, અને “નિમ્મદ્વ” મૃદુતાથી રહિત “લ્હરામરિસ” કઠોરમા કઠોર “વિસમ” ઊંચા નીચા ભૂમિ ભાગવાળા છે “મહોસિણ સયાપતત્ત-દુગ્ગન્ધવિસ્સ-ઉબ્બેયજણગેસુ” “મહોસિણ” તેમા સદા ઉષ્ણતા જન્ય વેદના રહ્યા કરે છે, “સયાપતત્ત”

इत्यादि-‘महम्भय’ महाभया ‘अविस्सामवेयण’ अधिश्रामवेदनां=प्रतिसमयम-
नुभूयमानाऽशातवेदना, ‘दीहकालवहुदुक्खसकड’ दीर्घकालवहुदुःखसकटां=
दीर्घकालमभिव्याप्यवर्तमानैः बहुभिर्नानात्रिधै शारीरमानसैर्दुःखैः समटा=सकुलां,
तादृशीं ‘नरयतिरक्खजोणि’ नरकतिर्यग्योनिं=नरकेषु तिर्यक्षु च या योनि=
उत्पत्तिस्थान ता ‘वड्ढति’ वर्धयन्ति=तासु तासु नानात्रिधासु योनित्पूत्य च
महावेदनामनुभवन्तीत्यर्थः । ते प्राणवधकारकाः नरकतिर्यगादि कुयोनिषु परि-
भ्रमण कुर्वन्तो जन्म मरणाद्यविच्छिन्नपरम्परया यथा घोरातिघोरदुःखमनु-
भवन्ति तथोच्यते-‘इओ’ इत्यादि-ते प्राणवधकारकाः ‘आउक्खए’ आयुः
क्षये ‘इओ’ इतः=मनुष्य भवात् ‘चुया’ च्युताः-गृताः सन्तः ‘असुभकम्मव-
हुला’ अशुभकर्मवहुलाः=प्राणिवधपापकर्मपञ्चुरा सन्तः ‘नरएसु’ नरकेषु=

वड्ढति) मरक तिर्यच योनि को बढाते हैं जो योनि (महम्भय) अत्यत-
भयप्रमद, एव (अविस्सामवेयण) प्रतिसमय अनुभूयमान अशातवेदना
सम्पन्न है-तथा (दीहकाल वहुदुक्खसकड) जिसमें दीर्घकालतक जीव
नाना प्रकार के शारीरिक एव मानसिक दुःखों को भोगा करता है ।
ऐसी उस विविध शारीरिक मानसिक दुःखों से सकुल नरक तिर्यच
योनि को बढाते हैं । तात्पर्य इसका यह है कि जो प्राणवध करनेवाले
जीव हैं वे उन २ नाना प्रकार की योनियों में उत्पन्न होकर महान् वेदना
ओंका अनुभव करते रहते हैं । इस प्रकार नरक तिर्यच आदि कुयोनियों
में परिभ्रमण करते हुए वे प्राणवधकारी जीव जन्म मरण आदि की
अविच्छिन्न परम्परा से जिस प्रकार घोरातिघोर दुःखों को भोगते हैं,
अब सूत्रकार इसी विषय को यहा स्पष्ट करते हैं (इओ आउक्खए चुया)
आयु के क्षय होने पर मनुष्यभव से मरकर प्राणवध कारक जीव

યોનિને વધારે છે, જે યોનિ “મહમ્ભય” અત્યંત ભયપ્રદ, અને “અવિસ્સામ
વેયણ” પ્રતિકાળે અનુભવાતી આશાના વેદનાથી યુક્ત છે, તથા “દીહકાલ
વહુદુક્ખસકડ” જેમા દીર્ઘકાળ સુધી જીવ વિવિધ પ્રકારના શારીરિક અને
માનસિક દુઝોને ભોગવ્યા કરે છે એવી વિવિધ શારીરિક અને માનસિક
દુઝોથી યુક્ત, તે નરક તિર્યચ યોનિને તેઓ વધારે છે તેનું તાત્પર્ય એ છે
કે પ્રાણુવધ કરનાર જીવો ઉપરોક્ત વિવિધ યોનિયોમા ઉત્પન્ન થઈને મહાન
વેદનાઓ અનુભવે છે આ રીતે નરક તિર્યચ આદિ કુયોનિયોમા પરિભ્રમણ
કરતા તે પ્રાણુવધ કરનારા જીવો જન્મ મરણ આદિની અતૂટ પરંપરા પૂર્વક
જે જે પ્રકારના ભયકરમા ભયકર દુઝો ભોગવે છે, તે વિષયનું હવે સૂત્રકાર
સ્પષ્ટીકરણ કરે છે “ઇઓ આઉક્ખણ ચુયા” આયુષ્યના ક્ષય થતા પ્રાણુવધકારી

મસ્તશૂલાદય, જરા=વાર્ધક્ય ચ, તૈઃ પીડિતેષુ=વ્યાપ્તેષુ, 'અર્દ્યનિચ્ચયાર-
તમિસ્સેસુ' અતીવનિત્યાન્યકારતમિસ્સેષુ=અતીવ=અત્યન્ત નિત્યાન્વકારેણ તમિ-
સ્સેષુ=ધોરાન્ધકારસ્વરૂપ-પ્રાપ્તેષુ, અતएव 'પડમણ્ણુ' પ્રતિભયેષુ=પ્રતિવસ્તુમય-
યુક્તેષુ, 'વવગયગહચદસૂરણવલ્લજોડસેસુ' વ્યપગતગ્રહચન્દ્રસૂરણસત્રજ્યોતિષ્કેષુ
=ગ્રહચન્દ્રસૂર્યનક્ષત્રજ્યોતિષ્કર્ણજિતેષુ, 'મેયવસામસપટલ પોચ્ચડપૂયરુહિરુક્ષિણ-
વિલીણચિક્ષણરસિયાવાવળ્ણકુહિયચિચ્ચલ્લકદમેસુ' મેદોવસામાસપટલપોચ્ચ-
ડપૂયરુધિરોત્કીર્ણવિલીનચિક્ષણરસિચ્ચાપન્નકુહિતચિક્ષલર્દમેષુ=મેદઃ=શરીર-
સ્નેહવિશેષ, વસા=ચર્વીં ઇતિ ભાષા, માસ=પ્રસિદ્ધ તેષાં યત્પટલ=રાશિઃ
'પોચ્ચડ' ગિલગિલાયમાન પૂય= 'પીપ' 'પરુ' ઇતિ પ્રસિદ્ધ, રુધિર=શોણિત
તેન ઉત્કીર્ણ=વ્યાપ્ત વિલીન=સમૃત, ચિક્ષણ=ગુન્દ્રવત્, 'રસિકા' વિકૃતરુધિર
વ્યાપન્ન=વિનષ્ટસ્વરૂપમ્ અતएव-કુહિત=દુર્ગન્ધિત 'ચિચ્ચલ' શિથિલર્દમઃ,
ર્દમઃ=વનર્દમશ્ચ યેષુ તે તથા તેષુ । 'કુકૂલાનલપલિત્તજાલમ્મુર-અસિક્કુર

અવસ્થા હૈં इनकी पीडा यहा प्रतिकार-उपाय रहित होती है । (अर्द्व
णिचधयारतमिस्सेसु) यहां पर सर्वदा घोरान्तिगोर अधिकार रहता है ।
(पडमण्णु) यहां भी प्रत्येक वस्तु भय से भरपूर रहती है । (ववगय
गहचदसूरणवल्लजोडसु) न यहां पर कोई ग्रह हैं न कोई चन्द्र हैं,
न सूर्य है, न नक्षत्र हैं । (मेयवसामसपटल-पोचड-पूय-रुहिरुक्षिण
विलीण-चिक्खण-रसिया वावण्णकुहियचिचल्लकदमेसु) मेद, वसा-
चर्वीं और मास का ढेर इन स्थानों में सदा लगा रहता है । तथा पोचड
गिलगिलायमान पूय-पीप, एव रुधिर से व्याप्त, गोंद के समान चिकने
भरे हुए व्यापन्न दुर्गन्धित ऐसे विकृत खून, से तथा चिकने घनकर्दम
से ये स्थान सदा व्याप्त रहते हैं । (कुकूलानल-पलित्तजाल-मम्मुर-

માથાનો હુ ખાવો આદિ જે રોગો છે વૃદ્ધાવસ્થા આદિ જે અવસ્થા છે,
તેમની પીડાનો ત્યા કોઈ પણ ઇલાજ હોતો નથી તે પ્રતિકાર રહિત હોય
છે, "અર્દ્વ નિચ્ચયારતમિસ્સેસુ" અહીં ઝાયમ ધોરમા ધોર અધકાર રહે છે
"પડમણ્ણુ" અહીંની દરેડ વસ્તુ ભયજનક હોય છે "વવગયગહચદસૂરણમ્
જોડસેસુ" અહીં કોઈ ગ્રહ નથી, ચન્દ્ર નથી, સૂર્ય નથી કે નક્ષત્ર પણ નથી
"મેયવસા મસપટલ-પોચ્ચડ-પૂય-રુહિ રુક્ષિણ-વિલીણ-ચિક્ષણ, રસિયાવાવળ્ણકુહિય
ચિચ્ચલ્લકદમેસુ" મેદ, વસા ચર્મી અને માસના ઢગલા તે સ્થાનોમાં સદા
પડેલા હોય છે તથા પોચ્ચડ-પૂય અને પૂય પીળ તથા રક્તથી વ્યાપ્ત,
ગુદરના જેવા ચીકણા, ભરેલા દુર્ગન્ધમય વિકૃત લોહીથી, તથા ચીકણા કાદવથી
તે સ્થાનો સદા છવાયેલા રહે છે "કુકૂલાનલ-પલિત્તજાલ-મમ્મુર-અસિક્કુર

-વિશ્રોદ્ધેગજનકેષુ તત્ર મહોષ્ણાઃ=અત્યન્તોષ્ણાઃ, સદા પ્રતપ્તાઃ=નિરન્તરતાપયુક્તાઃ, દુર્ગન્ધા=અનિષ્ટગન્ધયુક્તાઃ, ત્રિશ્વા=અપવમાસત્પ્રતિગન્ધાઃ, અતૈવ-ઉદ્દેગ-જનકા=ઉદ્દેગોત્પાદકાઃ, તેષુ 'વીમચ્છદરિસણિજ્જેસુ' વીમત્સદર્શનીયેષુ=ઘૃણિ-તદર્શનેષુ 'નિચ્ચ' નિત્ય 'હિમપટલસીયલેસુ' હિમપટલશીતલેષુ=હિમપટલ મિવ શીતલા યે તે તથા તેષુ 'કાલોમાસેસુ' કાલાવમાસેષુ, કાલ.=શ્યામલોઽવ-ભાસઃ=કાન્તિર્યેષા તે તથા તેષુ કૃષ્ણગર્ણેષુ 'ભીમગમ્भीરલોમહરિસણેસુ' ભીમગ મ્भीરલોમહર્ષણેષુ-તત્ર, ભીમાઃ=ભયજનકા ગમ્भीરાઃ-અતલસ્પર્શા અતૈવ ક્રોમહર્ષણા =રોમાશ્ચકારિણસ્તેષુ=તત્સ્વરૂપશ્રવણમાત્રેણ-રોમાશ્ચોત્પાદકેષુ 'ણિરભિરામેસુ' નિરભિરામેષુ = અશોભનેષુ 'નિષ્પટિયારવાહિરોગજરાપીલિણસુ' નિષ્પત્તિકાર વ્યાધિરોગજરાપીડિતેષુ=નિષ્પત્તિકારાઃ=પ્રતિકારરહિતા વ્યાધયઃ=કુષ્ઠાદયઃ રોગા

રહતે હૈં । (દુર્ગંધ વિસ્તરુચ્ચેયજનગેસુ) અનિષ્ટતર દુર્ગંધ સે ખરપૂર રહતે હૈં । વિસ્ત્ર-કચ્ચેમાસ કે જૈસી યહા સદા દુર્ગંધ આતી રહતી હૈં, હસલિયે નારકિયો કો યે સદા ઉદ્દેગ કે ઉત્પાદક હોતે રહતે હૈં । (વીમ ચ્છદરિસણિજ્જેસુ ય) દેખને મેં યે વડે અસુહાવને ઘૃણિત પ્રતીત હોતે હૈં । (નિચ્ચ હિમપટલસીયલેસુ) સદા યે હીમપટલ કે જૈસે શીતલ હોતે હૈં (કાલોમાસેસુ) इनकी काति काली होती है । (ભીમગમ્भीરલોમહરિ-સણેસુ) इन नरकावासों में जीव को सदा भय ही भय रहता है । યે આવાસ કિંતને ગહરે હૈં इनका पता नहीं पड़ता है । इनके स्वरूप श्रवण मात्र से ही जीवों के शरीर में रोमाच खड़े हो आते हैं । (ણિરભિરામેસુ) ये सब अशोभन हैं । (નિષ્પટિયાર વાહિરોગજરાપીલિણસુ) यहा की जो कुष्ठ आदि व्याधिया है, मस्तकशूल आदि जो रोग हैं, बाधक्य जो

તેઓ નિરન્તર તાપથી વ્યાપ્ત કરે છે, “દુર્ગંધવિસ્તરુચ્ચેયજનગેસુ” સીધી ખરાબ દુર્ગંધથી ભરપૂર રહે છે વિસ્ત્ર-કાચ્ચા માસના જેવી દુર્ગંધ ત્યા સદા આવ્યા કરે છે, તેથી નારકીઓને તેઓ સદા સતોષ પેદા કરનારા હોય છે વીમચ્છદરિસણિજ્જેસુ ય” જેવામા તે ઘણા જ બેડોળ-ઘૂણા થાય તેવા હોય છે “નિચ્ચ હિમપટલસીયલેસુ” તેઓ સદા હિમના થરો જેવા શીતળ હોય છે ‘કાલો માસેસુ” તેઓ દેખાવે કાળા હોય છે “ભીમગમ્भीરલોમહરિસણેસુ” તે નરકવાસોમા જીવોને સદા ભય જ રહે છે તે આવાસો કેટલા ભડા છે તેની ખબર પડતી નથી તેના સ્પર્શનુ વર્ણન સાલળતાજી જીવોના શરીરના શમાય ઉભા થઈ બાથ છે “ણિરભિરામેસુ” તે બધા શેલા વિનાના છે “નિષ્પટિયારવાહિરોગજરાપીલિણસુ” અહીંની કુષ્ઠ આદિ જે વ્યાધિયો

કરવત્તધારસુનિસિયવિચ્છુયઢકનિગાતોમફરિસઅતિદુસ્સહેસુ ' કુકૂઝાનલ
 પ્રદીપ્તજ્વાલમર્મુરાસિધુરકરપત્રધારસુનિશિતવૃશ્ચિન્દશનિપાતોપમાતિદુસ્સહેપુ, કુકૂ
 લાનલ=કુરિપાગ્નિઃ, લલિરાગ્નિર્ગા, પ્રદીપ્તા ચ જ્વાલેતિ પ્રદીપ્તજ્વાલા=પ્રવૃદ્ધ-
 વહ્નિશિલા ચ, મુર્મુર=મસ્મમિશ્રોઽગ્નિમ્બઃ, અસિઃ=લઙ્ગઃ, ધુરઃ=નાપિતોપકરણ,
 કરપત્ર=કાષ્ઠભેદશ્ચત્રવિશેષઃ તેષા ધારેતિ અસિધુરકરપત્રધારા, સુનિશિતવૃશ્ચિ-
 ન્દશનિપાતઃ=સુનિશિતાસ્તીક્ષ્ણા યે વૃશ્ચિન્દશા =નત્પુન્ઠશ્ચકાસ્તેષા નિપાત-
 શ્ચેતિ દ્વદ્વ એમિરુપમા=સાદૃશ્ય યસ્ય સ તથાગ્નિઃ સ્પર્શ યેષા તે તથા અતપ્ત
 તે ચ તે અતિ દુસ્સહાઃ=અત્યન્ત-લેન સહનયોગ્યાસ્તેષુ, 'કહુયદુક્લપરિતા-
 વણેસુ ' કહુકહુઃલપરિતાપનેષુ = કહુકૈઃ =દારુણૈર્દુ લૈર્દશનિધક્ષેત્રવેદનારૂપૈઃ
 પરિતાપન યેષુ તેષુ ' અણુવદ્ધનિરન્તરવેયણેસુ ' અણુવદ્ધનિરન્તરવેદનેષુ=અણુ
 વદ્ધા=અણુક્ષણ વ્યાપ્તા નિરન્તરા=અવિચ્છિન્નવેદના=પીડા યેષુ તથા તેષુ ' જમ-
 પુરિસસકુલેષુ ' યમપુરુષસકુલેષુ, યમસ્ય-દક્ષિણદિર્લુ લોરુપાલસ્ય પુરુષાઃ-

અસિક્કુર-કરવત્તધાર સુનિસિયવિચ્છુયઢકનિગાતોમ-ફરિસઅતિદુ-
 સ્સહેસુ) હનકા સ્પર્શકુકૂલાનલ-કરીપાગ્નિ અથવા લલિરાગ્નિ કે જેસા,
 પ્રવૃદ્ધ-વહ્નિ કી જ્વાલા કે જેસા, મુર્મુર-મસ્મમિશ્રિત અગ્નિકળ કે જેસા
 અસિ-તલવાર કી ધાર કે જેસા, ધુર-ધુરા કી ધાર કે જેસા, કરવત-
 કરોળિ કી ધાર જેસા, એવ અત્યત તીક્ષ્ણવૃશ્ચિક કે ઢક કે દ્વારા કાઢને
 જેસા હૈ, હસી કારણ યે સ્થાન અત્યત દુસ્સહ બન રહે હૈ (કહુયદુક્લ
 પરિતાવણેસુ) દશવિધક્ષેત્ર વેદનારૂપ દારુણ દુ.ર્ગા દ્વારા જહાં જીર્ગો
 કો સદા સતાપ હી સતાપ ભોગના પઢતા હૈ તથા (અણુવદ્ધ નિરન્તરવેય
 ણેસુ) યદા પ્રતિક્ષણ અવિચ્છિન્ન અસહ્ય પીડા હોતી હૈ । એવ (જમપુરિસ
 સકુલેસુ) યમ-દક્ષિણ દિશાસબધી લોરુપાલ કે અમ્બ અમ્બરીવાદિક

કરવત-ધારસુનિસિયવિચ્છુયઢકનિગાતોમ-ફરિસ અતિદુસ્સહેસુ " તેમનેા સ્પર્શ
 કુકૂલાનલ-કરિપાગ્નિ અથવા અલિરાગ્નિ જેવો, પ્રવૃદ્ધ-અગ્નિની જ્વાળા જેવો,
 મુર્મુર-ભસ્મ-મિશ્રિત અગ્નિકણો જેવો, અસિ-તલવારની ધારના જેવો ધુર-
 ખરીની ધાર જેવો, કરવતની ધાર જેવો, અને અત્યત તીક્ષ્ણ વીછીના ડખ
 જેવો છે તે કારણ તે સ્થાનો અત્યત દુખદાયી હોય છે " કહુયદુક્લ
 પારતાવણેસુ " દસ પ્રકારના ક્ષેત્ર વેદનારૂપ દારુણ દુખો દ્વારા બધા જીવોને
 સદા સતાપ જ લોગવવો પડે છે, તથા અણુવદ્ધનિરન્તરવેયણેસુ " ત્યા દરેક
 ક્ષણે અવિચ્છિન્ન અસહ્ય પીડા લોગવવી પડે છે અને " જમપુરિસસકુલેસુ "
 યમ દેવોથી તે મદા ઘેરાયેલા હોય છે યમ-દક્ષિણ દિશાના લોકપાલના અમ્બ,

અમ્યામરીપાદયઃ પરમાધાર્મિકા અસુરકુમારદેવાસ્તૈ સકુલેષુ=વ્યાપ્તેષુ-પતા-
દશેષુ નરકેષુ તે પ્રાણવધકર્તાર 'અત્તાણા' જાણા=પ્રાણરહિતાઃ દુઃસ્વનિવારકા
ભાવાત્, અતएव 'અસરણા' અશરણા=અશરણરહિતાઃ રક્ષકાભાવાત્, 'ઉવવજ્જતિ
ઉત્પદ્યન્તે' इति सम्बन्धः ॥મૂ.૨૪॥

મૂલમ્—તત્થ ચ અંતોમુહુત્તલદ્ધિભવપચ્ચણં નિવ્વત્તેતિ
उ ते सरीर हुडं वीभच्छदरिसणिज्ज वीहणगं अट्टिणहारुणह
रोमवज्जिय असुभगं दुक्खविसय, तओ य पजात्तिमुवगया
इदिएहि पचहि वेदोति वेदणं असुहाए वेयणाए उज्जलवल
विउल-कम्खडखरफरुसपगाढपयंडघोरवीहणगदारुणाए, किंते २५॥

ટીકા—'તત્થ ચ' તત્ર ચ નરકેષુ ઉત્પત્ત્યનન્તર તે પાપકર્માણઃ 'અતો
મુહુત્તલદ્ધિભવપચ્ચણ' અન્તર્મુહૂર્તજ્ઞિભવપત્યયેન=અન્તર્મુહૂર્તસ્ય વૈક્રિયલઙ્ઘ્યા
પરમાધાર્મિક અસુરકુમાર જાતિ કે દેવોં સે યે સદા સકુલ રહતે હૈં ।
ऐसे इन नरकोमा प्राणवध के करने वाले जीव (अत्ताणा) दुःस्वनिवा-
रक के अभाव से प्राण रहित एव (असरणा) रक्षक कोई न होने से
अशरण बन (उववज्जति) उत्पन्न होते हैं ।

ભાવાર્થ—પ્રાણવધ કરનેવાલે જીવ જો પાપપુજ કા સચય કરતે હૈં ।
उसके प्रभाव से वे यहां से मरकर शीघ्र ही नरक में जन्म लेते हैं ।
नरकों में जीव की कैसी हालत होती है एव वहां की क्या स्थिति है यही
बात सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा समझाई है ॥ सू. २४ ॥

“ટીકાર્થ—(તત્થ ચ) उन नरकों में उत्पत्ति के अनन्तर (ते) वे पापकर्म
वाले जीव, (अतोमुहूत्तलद्धि भवपचक्षण) अन्तर्मुहूर्त में प्राप्त वैक्रियल-

અમ્યામરીપ આદિ પરમ અધાર્મિક અસુર કુમાર જાતિના દેવો છે પ્રાણવધ
કરનારા તે જીવો એથી તે નરકોમા “અત્તાણા” દુઃખ નિવારકને અભાવે પ્રાણ
રહિત અને “અસરણા” કોઈ રક્ષક નહીં હોવાથી અશરણુ દશામા “ઉવવ-
જ્જતિ” ઉત્પન્ન થાય છે

ભાવાર્થ—પ્રાણવધ કરનારા જીવ જે પાપપુજનો મચય કરે છે તેના
પ્રભાવે અહીંથી મરીને તરત જ નરકમા ઉત્પન્ન થાય છે નરકોમા જીવોની
કેવી હાલત થાય છે અને ત્યાંની કેવી પરિસ્થિતિ છે, એ વાત સૂત્રકારે આ
સૂત્રદ્વારા સમજાવી છે ॥સૂ.૨૪॥

ટીકાર્થ—“તત્થ ચ” ઇત્યાદિ, “તત્થ ચ”તે નરકોમા ઉત્પત્તિ થયા પછી “ત્વે”
તે પાપકર્મ કરનારા જીવ “અતોમુહુત્તલદ્ધિભવપચ્ચણ” અન્તર્મુહૂર્તમા પ્રાપ્ત વૈક્રિય
પ્ર૦ ૧૩

ભવપ્રત્યયેન ચ, = ભવપ્રત્યયઃ = ભવન્તિ કર્મવશાઃ જીવાઃ અસ્મિન્નિતિ ભવઃ = નરકાદિજન્મ, ભવ એ પ્રત્યયઃ=કારણ યસ્ય તત્ ભવપ્રત્યય=તેન-નરકજન્મકારણેન 'સરીર=શરીર નરકભવસમ્પન્નિદેહ, 'નિવત્તિ' નિર્વર્તયન્તિ=રચયન્તિ । કોદશ શરીરમ્ ? इत्याह—'हुड' अस्फुटायय, बीमच्छदरिसणिज्ज 'बीमत्स दर्शनीय=विकृतस्वरूप 'वीहणग' भापक भयजनकम्, 'अट्टिण्हारुणहरोमवज्जिय' अस्थिस्नायुनखरोमवर्जित=स्पष्ट, असुभगम्=असुन्दरम्, दुक्खविसय 'दु खवि-पय=क्लेशयुहुल शरीर निर्वर्तयन्तीति सम्बन्धः । 'तओ य' ततश्च=शरीरनिर्वर्तनानन्तर 'पज्जत्ति' पर्याप्ति = आहारशरीरेन्द्रिय-प्राणापानभाषामनःपर्याप्ति

બિંધુ સે ઔર ભવપ્રત્યય સે-નરક જન્મ કે કારણ સે વે (સરીર) શરીર કો નરકભવ સબધી શરીર કો (નિવત્તિ) બના લેતે હૈ । તાત્પર્ય કરને કા યહ હૈ કિ નરકો મે જો જીવ નારકી જીવ કી પર્યાય સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ઉસકા અન્તર્મુદ્ગર્ત મે હી નારકી કા શરીર બન જાતા હૈ, ક્યોં કિ હિસ શરીર કે બનને કા કારણ વરા પર જન્મ લેના હૈ । હિસ શરીર કે અવયવ અસ્ફુટ રહતે હૈં હિસલિયે હિસે (હુડ) હુડ કહા હૈ ઔર (બીમ છદરિસણિજ્જ) યહ શરીર-વિકૃત સ્વરૂપવાલા હોતા હૈ હિસલિયે બીમત્સ દર્શનીય કહા હૈ । (વીહણગ) યહ શરીર ભયજનક હોતા હૈ ઔર (અટ્ટિણ્હારુણહરોમવજ્જિય) અસ્થિ-હૃદિયોં સે, સ્નાયુ-નસોં સે તથા નખ ઔર રોમ સે રહિત (અસુભગ) અસુન્દર ઔર (દુક્ખવિસય) ક્લેશ યુક્ત હોતા હૈ । (તઓ ય) હિસ પ્રકાર શરીર કી રચના

લબ્ધિથી અને ભવપ્રત્યયથી-નરકમા જન્મ થવાને કારણે તેઓ " સરીર " શરીરને-નરકભવ સબધી શરીરને " નિવત્તિ " બનાવી લે છે કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે નરકમા જે જીવ નારકી જીવની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે, તેમણે અન્તર્મુદ્ગર્તમા જે નારકીનું શરીર બની જાય છે, કારણ કે ત્યાં જન્મ લેવો એજ તે શરીર બનવાનું કારણ છે તે શરીરના અવયવો અસ્ફુટ હોય છે તેથી તેને " હુડ " હુડ કહ્યા છે અને " બીમછદરિસણિજ્જ " તે શરીર વિકૃત સ્વરૂપ વાળું હોય છે તેથી તેને બીમત્સ દર્શનીય કહેલ છે " વીહણગ " તે શરીર ભયજનક હોય છે, અને " અટ્ટિણ્હારુણહરોમવજ્જિય " અસ્થિ-હાડકાઓથી સ્નાયુ-નસોથી તથા નખ અને રુવાટીથી રહિત, " અસુભગ " અસુન્દર અને " દુક્ખવિસય " ક્લેશ યુક્ત હોય છે, " તઓ ય " આ પ્રકારની શરીરની

‘उवगया’ उपगताः=माप्ताः-सन्तः ‘पचहि’ पञ्चभिः ‘इदिएहि’ इन्द्रियैः=श्रोत्रादिभिः ‘अमुहाए’ अशुभया=अशातरूपया, ‘वेयणाए’ वेदनया-अशात-वेदनीयकर्मोदयजनितया ‘वेयणं’ वेदन=कुम्भीपचनानि दुःख ‘वेदेति’ वेद-यन्ति=अनुभवन्ति । कीदृशया वेदनया ? इत्याह—‘उज्जलप्रलधिउलरुखडखर फरुसपगाढपयडघोरवीहणगदारुणाए’ उज्जलप्रलधिपुलरुर्कशखरपरुपप्रचण्डघोर मीषणदारुणया=उज्जला=तीव्रानुभावात्प्रकर्षत्वात्, बला=बलवती अनियार्यत्वात्, विपुला=विशाला परिमाणरहितत्वात्, रुर्कशा = रुठोरा प्रत्यङ्गदुःखजनकत्वात्, खरा=तीक्ष्णा-अन्तःकरणभेदकत्वात्, परुपा=निष्ठुरा-सुखलेशरहितत्वात् प्रगाढा-प्रतिक्षणमसमाधिजनकत्वात्, प्रचण्डा=भयानका-आत्मनः-प्रतिप्रदेशव्यापित्वात्

हो जाने के अनन्तर (पञ्जस्तिमुवगया) आहार, शरीर, इन्द्रिय, प्राणा-पान, भाषा और मन, इन पर्याप्तियों को प्राप्त हुए वे नारकी जीव (इदिष्टि पचति) श्रोत्रादिक पाच इन्द्रियों द्वारा (असुहाण वेयणा) असाता वेदनीय कर्म के उदय से जनित अशुभ अशातरूपवेदना से (वेयण) कुभी पचनादि दुःखों का (वेदति) अनुभव करते हैं। यह अशातरूपवेदना उन नारकी जीवों की (उज्जलल विउल-कक्खड खरफरुसपगाढपयडघोरधीहणगदारुणा) उज्ज्वल-तीव्रानुभावशाली होती है, बल-अनिवार्य होने से चलिष्ठ होती है, विपुल परिमाण रहित होने से विशाल होती है, (कक्खड) प्रत्येक अंग दुःख जनक होने से कक्कश-कठोर होती है। खर अतरग की भेदक होने से तीक्ष्ण होती है। (फरुस) सुख के लेश से रहित होने के कारण निष्ठुर होती है। (पगाढ) प्रतिक्षण असमाधि की उत्पादक होने से प्रगाढ है (पयड) आत्मा के

રચના થઈ ગયા પછી “ પજ્જતિમુવગયા ” આહાર, શરીર, ઈન્દ્રિય, પ્રાણાપાન, ભાષા અને મન એ પર્યાપ્તિઓને પ્રાપ્ત કરીને નાગકી જીવ “ હિદિર્હિં પચર્હિં ” શ્રોત્રાદિક પાત્ર ઈન્દ્રિયો દ્વારા “ અસુહાણ વેયણાણ ” અસાતા વેદનીય કર્મના ઉદયથી જનિત અશુભ અશાતારૂપ વેદનાથી “ વેયણ ” કુલમા રધાવા આદિ દુષ્ક્રિયાઓ “ વેદેતિ ” અનુભવ કરે છે તે નારકી જીવોની તે આશાતારૂપ વેદના “ સ્વજ્જલ્લલ્લવિસવ-વસ્સહ-સર-ફહસપગાદ પયહ્ધોરવીહળગદારુણાણ ” ઉન્નવળ-તીક્ષ્ણ અનુભવવાળી હોય છે. બલ-અનિવાર્ય હોવાથી પ્રબળ હોય છે, ત્રિપુલ-પરિભાણ રહિત હોવાથી વિરાગ હોય છે “ કક્કલ્લ ” પ્રત્યેક અગમા દુષ્ક્રિયા જનક હોવાથી ક્રોધ હોય છે, સર-હૃદય લેદક હોવાથી તીક્ષ્ણ હોય છે, ફહસ-સહેજ પણ સુખથી રહિત હોવાને કારણે નિષ્કુર હોય છે, પગાદ-દરેક પણે અસમાધિની ઉત્પાદક હોવાથી પ્રગાદ હોય છે, પયહ

ભવપ્રત્યયેન ચ, = ભવપ્રત્યયઃ = ભવન્તિ કર્મવશાઃ જીવાઃ અસ્મિન્નિતિ ભવઃ = નરકાદિજન્મ, ભવ એ પ્રત્યયઃ=કારણ યસ્ય તત્ ભવપ્રત્યય=તેન-નરકજન્મકારણેન 'સરીર=શરીર નરકભવસમ્પ્રધિદેહ, 'નિ-વત્તતિ' નિર્વત્તયન્તિ=રચયન્તિ । ફોદશ શરીરમ્ ? ઇત્યાહ—'હુહ' અસ્ફુટાવય, વીમચ્છદરિસણિજ્જ 'વીમત્સ દર્શનીય=વિકૃતસ્વરૂપ 'વીહળગ' ભાષક ભયજનકમ્, 'અટ્ટિણ્હારુગહરોમવજ્જિય' અસ્થિસ્નાયુનત્તરોમવર્જિત=સ્પષ્ટ, અસુભગમ્=અસુન્દરમ્, દુક્ખવિસય 'દુ સ્ખવિ-પય=વલેશવહુલ શરીર નિર્વત્તયન્તીતિ સમ્પ્રત્યઃ । 'તઓ ય' તત્તથ્થ=શરીરનિર્વર્તનાનન્તર 'પજ્જતિ' પર્યાપ્તિ = આહારશરીરેદ્રિય-પ્રાણાપાનભાપામનઃપર્યાપ્તિ

ગિંધ સે ઔર ભવપ્રત્યય સે-નરક જન્મ કે કારણ સે વે (સરીર) શરીર કો-નરકભવ સવધી શરીર કો (નિવત્તતિ) બના લેતે હું । તાત્પર્ય કહને કા યહ હૈ કિ નરકો મે જો જીવ નારકી જીવ કી પર્યાય સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ ઉત્કા અન્તર્મુહૂર્ત્ત મે હી નારકી કા શરીર બન જાતા હૈ, ક્યોં કિ હસ શરીર કે બનને કા કારણ વહા પર જન્મ લેના હૈ । હસ શરીર કે અવયવ અસ્ફુટ રહતે હૈં હસલિયે હસે (હુહ) હુહ કહા હૈ ઔર (વીમ ચ્છદરિસણિજ્જ) યહ શરીર-વિકૃત સ્વરૂપવાલા હોતા હૈ હસલિયે વીમત્સ દર્શનીય કહા હૈ । (વીહળગ) યહ શરીર ભયજનક હોતા હૈ ઔર (અટ્ટિણ્હારુગહરોમવજ્જિય) અસ્થિ-હૃદિયોં સે, સ્નાયુ-નસોં સે તથા નઘ ઔર રોમ સે રહિત (અસુભગ) અસુન્દર ઔર (દુક્ખવિસય) વલેશ વહુલ હોતા હૈ । (તઓ ય) હસ પ્રકાર શરીર કી રચના

લગ્નિધી અને ભવપ્રત્યયથી-નરકમા જન્મ થવાને કારણે તેઓ "સરીર" શરીરને-નરકભવ સવધી શરીરને "નિવત્તતિ" બનાવી લે છે કહેવાતુ તાત્પર્ય એ છે કે નરકમા જે જીવ નારકી જીવની પર્યાયથી ઉત્પન્ન થાય છે, તેમનુ અન્તર્મુહૂર્ત્તમા જ નારકીનુ શરીર બની જાય છે, કારણ કે ત્યા જન્મ લેવો એજ તે શરીર બનવાતુ કારણ છે તે શરીરના અવયવો અસ્ફુટ હોય છે તેથી તેને "હુહ" હુહ કહ્યા છે અને "વીમચ્છદરિસણિજ્જ" તે શરીર વિકૃત સ્વરૂપ વાળુ હોય છે તેથી તેને વીમત્સ દર્શનીય કહેલ છે "વીહળગ" તે શરીર ભયજનક હોય છે, અને "અટ્ટિણ્હારુગહરોમવજ્જિય" અસ્થિ-હાડકાઓથી સ્નાયુ-નસોથી તથા નખ અને રુવાટીથી રહિત, "અસુભગ" અસુન્દર અને "દુક્ખવિસય" કલેશ યુક્ત હોય છે, "તઓ ય" આ પ્રકારની શરીરની

વિશેષઃ, મહાકુમ્ભી=પટાકૃતિપાત્રવિશેષસ્તયોર્મય્યે, સૂત્રે જાતિત્વાદેઋચનમ્ ।
 'પયણ' પચન-મોદનાદેરિય 'પડલગ' પ્રકુલનમ્=સીસઋવદ્વાલનમ્, 'તવગ
 તલળ'તપકતલન=નપકો લોહપાત્રવિશેષ 'તવા' ઇતિ માપાપ્રસિદ્ધઃ, તસ્મિન્ તૈલા-
 દિભિરપૂપવત્તલનમ્, 'મટ્ટમજ્જગ' આપ્ટ્મર્જન ચ-આપ્ટ્મર્જનપાત્ર-'માઢ' ઇતિ
 પ્રસિદ્ધઃ, તત્ર મર્જન ચળકાદેરિય, હત્યેષા દ્વન્દ્વસ્તાનિ ચ 'લોહકઢાહુકઢૂણાણિ ય'
 લોહકઢાહોત્કચનાનિ ચ=લોહકઢાહઃ='કઢાઈ' ઇતિ માપાપ્રસિદ્ધઃ, તત્ર ઉત્કચ
 નાનિ=ઔપધિયદુત્કાલનાનિ 'કોટ્વલિકરણકોટ્વણાણિ' કોટ્વલિકરણકોટ્વનાનિ=
 કુદેત્=ક્રીડયા ચલિકરણાય, કુટ્વનાનિ=કરચરણાચવયત્રોટનાનિ-શરીર 'સ્વઢ્ઢાઃ'
 કૃત્વા કાકાદિશ્ચોર્ષણાનીત્યર્થઃ, 'સામલિતિકાચગલોહકટગભિમારણાપસાર-
 'કદુમહાકુમ્ભી' ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ-નારકીજીવ નરકોંમે (કદુમહાકુમ્ભી) કદુ-લોહમય વિશાલ
 પાત્રાવિશેષ મેં તથા ઘટાકૃતિ જૈસે મહાકુમ્ભી મેં ઓદનાદિક કી તરહ,
 (પયણ-પડલગ-તવગ-તલળ-મટ્ટમજ્જગાણિ ય) (પયણ) પકાચે જાને
 કે (પડલગ) સીમક-રાગ કી તરહ ગલાયે જાને કે, (તવગતલળ)
 ગર્મ લોહ કે તવા પર તૈલાદિક મેં તલે ગયે પૂઆ આદિ કી તરહ તલે
 જાને કે (મટ્ટમજ્જગાણિ ય) માઢ મેં ઘુજે ગયે ચના આદિ કી તરહ
 ઘુજે જાને કે દુઃખોં કો પ્રાપ્ત કરતે હૈ । તથા (લોહકઢાહુકઢૂણાણિ ય)
 જૈસે લોહે કી કઢાઈ મેં ઔપધિયાં ઉવાલી જાતી હૈ ઉસી તરહ વહા પર
 વે મી વઢે ૨ કઢાહોં મેં ઉવાલે જાતે હૈ । (કોટ્વલિકરણકોટ્વણાણિ ય)
 ષલિ દેને કે લિયે અનાયાસ હી ઉનકે કર, ચરણ આદિ અવયવોં કો વહા
 તોડ દિયા જાતા હૈ-શરીર કો સ્વઢ ૨ કરકે વહા કાકાદિકોં કે ચિયે

મહાકુમ્ભી " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-નરકી જીવ નરકોંમા "કદુમહાકુમ્ભી" "કદુ" લોહના વિશાળ
 પાત્ર-વિશેષમા, તથા ઘડાના આકારના મરાકુલીમા ઓદનાદિકની જેમ "પયણ-
 પડલગ, તવગ, તલળ, મટ્ટમજ્જગાણિ ય" "પયણ" રધાવાના, "પડલગ"
 સીસાની જેમ ઓગળવાના, "તવગતલળ" લોહના ગરમ તેલના તાવડામા
 તેલના માલપૂવા આદિની જેમ તળાવના, "મટ્ટમજ્જગાણિ ય" તાવડામા
 શેકાતા યજ્ઞ આદિની જેમ શેકવાના હુ જો અનુભવે છે તથા "લોહકઢા
 હુકઢૂણાણિ ય" જેવી રીતે લોહની તવીઓમા ઔપધિયો ઉડાળાય છે એજ
 રીતે ત્યા તેમને પણ મોટા તાવડાઓમા ઉડાળવામા આવે છે, "કોટ્વલિ
 કરણકોટ્વણાણિ ય" ષલિ દેવાને માટે અથાનડ તેમના હાથ પગ આદિ અવયવોના
 ત્યા છેદન કરવામા આવે છે શરીરના ઢૂંકડે ઢૂંકડા કરી ત્યા ડાગડા આદિને

घोरा=विकटा-श्रयणेऽपि दुःखजनकत्वात्, भीषणा=भयोत्पादिका-प्रतिमाणि-
भयजनकत्वात् दारुणा=हृदयसंक्षोभकारिणी प्रतिकाररहितत्वात्, तथा-भूतया
वेदनया पापिनो दुःखमनुभवन्तीति सम्बन्धः ' किं ते ' कानि तानि दुःखानि?
तान्यग्रेऽनुपदे वर्णयिष्यते ॥ सू० २५ ॥

अथ तान्येव दुःखानि वर्णयति-कदु महाकुम्भीए' इत्यादि ।

मूलम्-कदुमहाकुम्भीए पयण-पउलण-तवग-तलण-भट्ठ भं-
जणाणि य लोहकडाहुक्कवूणाणि य कोटवलिकरणकोट्टणाणि य
सामलि तिक्खग्ग-लोहकटग-अभिसारणा पसारणाणि, फालण
विदारणाणि य अवकोडकवधणाणि, लट्ठिसयतालणाणि य, गलग
वल्लुह्वणाणियसूलग्गभेयणाणि य, आएसपवचणाणि य खिस-
णावमाणणाणि य विघुट्ठपणिज्जणाणियवज्जसयमाइयाणि य॥ २६॥

टीका—' कदुमहाकुम्भीए ' कन्दुमहाकुम्भ्योः=कन्दुः=लोहमयविशालपात्र

प्रति प्रदेश में व्यापक होने से प्रचण्ड-भयानक होती है, घोर-सुनने में
भी दुःखजनक होने से विकट होती है, (बीहणग) हरणक प्राणी में भय
की संचारक होने से भीषण-भयोत्पादिका होती है, (दारुणाए) इसको
वहा कोई इलाज नही होता है इसलिये यह हृदय को संक्षोभकारिणी
होने से दारुण होती है । इस प्रकारकी वेदना से पापी जीव नरकों में
दुःखों का अनुभव करते हैं । (किंते) वे दुःख कौन कौन से हैं वह इसी
के अगले सूत्र में कहेंगे ॥ सू. २५॥

अथ सूत्रकार " किंते " इन पदों द्वारा सूचित दुःखों को कहते हैं—

આત્માના દરેક પ્રદેશોમા વ્યાપેલી હોવાથી પ્રચંડ ભયાનક હોય છે, ઘોર-
સાહજતા પણ દુઃખજનક હોવાથી વિકટ હોય છે, " બીહણગ " દરેક પ્રાણીમા
ભયનો સચાર કરનાર હોવાથી ભીષણ-ભયકર હોય છે, " દારુણાએ " તેનો
ત્યા કોઈ ઇલાજ હોતો નથી, તેથી તે હૃદયમા ક્ષોભ ઉત્પન્ન કરનાર હોવાથી
દારુણ હોય છે આ પ્રકારની વેદનાથી પાપી જીવ નરકોમા દુઃખોનો અનુભવ
કરે છે " કિંતે " તે દુઃખો કયા કયા છે તે હવે પછીના સૂત્રમા ખતા-
વવામા આવશે ॥ સૂ. ૨૫ ॥

હવે સૂત્રકાર " કિંતે " દ્વારા સૂચિત દુઃખોનું વર્ણન કરે,

પ્રવચ્ચનાનિ=પ્રતારણાનિ પ્રલ્લોપ્તસન્તપ્તચાલુકા નિકરાનેઋક્ષણપરિક્રમણોપતાપ
પ્રદીપિતપાનીય પાનાતિવૃષ્ણસ્ય સમુદચ્ચજ્જલત્રીવિરુચિમરીચિનિચય જલાશ્વ
દિશ્ય તત્ર પાનાય પ્રેષણ, 'ગચ્છ તત્ર તે પિતા 'સમાગતઃ' 'ઇત્યાદ્યનેઋવિધઃ
પ્રવચ્ચના ઇતિ ભાવ', 'લ્લિસણ વિમાણણાણિ ' લ્લિસનપ્રિમાનનાનિ=લ્લિસનાનિ=
જાતિકુળાદિનામનિર્દેશપૂર્વક નિન્દનાનિ, અત એવ વિમાનનાનિ તિરસ્કરણાનિ
' વિષુદ્ધપણિજ્જણાણિ ' વિષુદ્ધ પ્રણયનાનિ=વિષુદ્ધાના="સ્વકૃતપાપકર્મણા ફલ્યાનિ
શુદ્ધ" ' ઇત્યાદિભિર્નિષ્કુલચોર્નિર્ભત્સિતાના પ્રણયનાનિ=મધ્યસ્થાનનયનાનિ ।
પ્રતાનિ કિં હેતુકાનિ ? ઇત્યાદિ—' વજ્જસયમાહ્યાણિ ' અવધગતમાતૃકાણિ—
અવધગતમાતૃકાણિ—અવધગતાનિ=મન્દતીત્રાદિપરિણામેન કૃતાનિ પાપશતાનિ,

સપવચ્ચણાણિ ય અસત્ય વસ્તુવિષયક આદેશરૂપ આજ્ઞા સે ઝન્હે પ્રતારિત
(ઠગના) કિયા જાતા હૈ—વહા પર નારકીજન પહિલે ડસ નવીન નારકી
કો પ્રલ્લર ડણ્ણ સે સન્તપ્ત ચાલુકા પુજ કી ડપર અનેકવાર ઘૂમાતે હૈં ।
હસસે ડસકી ગર્મી સે ડસકી પ્યાસ અધિક સે અધિક માત્રા મૈં જવ
પ્રદીપિત હો જાતો હૈ તત્ર ડસે ઘનાવટી જલાશય દિલ્લાકર વહા લે ભેજ
લેતે હૈં હમ તરહ ડસે વહાં વાર ૨ પ્રતારિત કિયા જાના હૈ "જાઓ વહાં
તુમ્હારા પિતા આયા હૈ " ઇત્યાદિ અનેકવિધ વચ્ચનોં દ્વારા લે ડસકી
પ્રવચ્ચના કિયા કરતે હૈં । (લ્લિસણવિમાણાણિ ય) જાતિ, કુલ આદિકે
નામનિર્દેશપૂર્વક ડસકી વહા નિંદા કી જાતો હૈ । તિરસ્કાર કિયા જાતા
હૈં । (વિષુદ્ધપણિજ્જણાણિ ય) " અપને કિયે હુપ પાપકર્મોં કા તુમ ફલ
ભોગો " ઇત્યાદિ નિષ્કુલ વચ્ચનોં સે ડસે નિર્ભત્સિતકરકે મધ્ય સ્થાનોં પર
લાપા જાતા હૈં । (વજ્જસયમાહ્યાણિ ય) હસ તરહ નાના પ્રકાર કે
હન દુ'લોં કો નરકોં મૈં મન્દ, તીવ્ર આદિ પરિણામો દ્વારા કિયે ગયે

શૂળી પર તેમને લટકાવવામા આવે છે " આપસપવચ્ચણાણિ ય " અસત્ય વસ્તુ
વિશેના આદેશ વડે તેમને ત્યા ઠગવામા આવે છે ત્યા નારકીજન પહેલા તે
નવીન નારકી જીવેને પ્રથમ ઉચ્છ્વાસથી સાગી રીતે તપેલી રેતી પર અનેક વાર
ચલાવે છે, તેથી તેની ગરમીથી તેમની તૃપ્તિ ન્યારે વધારેમા વધારે પ્રમાણમા
પ્રદીપ્ત થાય છે ત્યારે તેઓ તેમને બનાવટી જલાશય બતાવીને ત્યા મોકલી દે
છે, આ રીતે ત્યા તેને વારવાર પ્રતારિત કરાય છે—ઠગવામા આવે છે ' બાબો,
ત્યા તમારા પિતા આવ્યા છે " ઇત્યાદિ અનેક પ્રકારના વચ્ચનો દ્વારા તેઓ તેની
હાસી ડર્યા કરે છે " લ્લિસણવિમાણાણિ ય " બાતિ, કુળ આદિના નામનો
નિર્દેશ કરીને તેની ત્યા નિંદા કરાય છે તિરસ્કાર કરાય છે " વિષુદ્ધપણિજ્જણાણિ
ય " " તે કરેલા કર્મોંનુ ફળ તુ ભોગવ " એવા નિષ્કુલ વચ્ચનોથી તેમને ધમ-
કાવીને વધસ્થાનો પર લઈ જવામા આવે છે " વજ્જસયમાહ્યાણિ ય " આ
રીતે પાપી જીવ મદ, તીવ્ર આદિ પરિણામો દ્વારા કરાયેલ સેકડો પાપોને કારણે

પાણિ ' શાલ્મલિ તોદ્ગાગ્રલોહકુટકામિસારણાપસારણાનિ=શાલ્મલિઃ=' સેમલ'
 इति खयातो वृक्षविशेषस्तस्य ये तोदगाया लोहकूटका इय कूटकाः,
 तेषु अभिसारणापसारणानि च = कर्षणापकर्षणानि ' फालगविदारणाणि '
 फालनानि=वस्त्रयत्स्नादनानि, विदारणानि=क्रुचादिना काष्ठयद् द्वेधीकरणानि
 ' अवकोडगवधणाणि' अवकोटकान्धनानि=ગ્રીવાયા હસ્તયોથ પશ્ચાદ્ગાગાનયનેન
 વન્ધનનિ, ' લઢ્ઢિસયતાડનાણિ ' યદ્વિશતતાડનાનિ=યદ્વિશતૈસ્તાડનાનિ, ' ગલ
 ગચલુલ્લવનાણિ ' ગલકગ્રલોલ્લમ્બનાનિ=ગલ એ ગલકઃ=કુટઃ, તસ્મિન્ વલાત્
 =વલપૂર્વકમ્ ઉલ્લમ્બનાનિ=વૃક્ષશાખાદૌ ઉદ્ગ્રન્થનાનિ, ' સૂલગ્ગ મેયનાણિ ય '
 શૂલાગ્રમેદનાનિ ચ=શૂલાગ્રેગ=શૂલાગ્રમાગેન મેદનાનિ, શૂલારોપનાનિ વા,
 ' આપસ પવચનાણિ ' આદેશપવચ્ચનાનિ=આદેશેન=આગ્નયા અસત્યવસ્તુ વિપયયા

उनका वह शरीर अर्पित किया जाता है, (सामलितिरुखगा-लोहकूटग
 अभिसारणा-पसारणाणि) सेमर वृक्ष के लोहकूटक के समान जुकीले
 काटा के ऊपर उनका कर्षणापकर्षण किया जाता है उन्हें आगे पीछे
 खेंचा जाता है, (फालग विदारणाणि य) फालन-वस्त्र के समान फाड़ना
 और करोंति आदि के द्वारा काष्ठ को तरह चीरना भी उनका वहा
 किया जाता है । (अवकोडगवधणाणि) उनकी ग्रीवा और दोनों हाथ
 पीछे के भाग की तरफ करके बांधे जाते हैं । (लड्डिसयताडणाणि य)
 सैकड़ों लाठियों की उन पर वहा मार पड़ती है । (गलगवल्लुवणाणि य)
 जबर्दस्ती उनके गलों को वृक्ष की शाखा पर बांधकर लटकाया जाता है ।
 (सूलग्गमेयणाणि य) शूल के अग्रभाग से उनके शरीर का भेदन
 किया जाता है । अथवा शूली के ऊपर उन्हें लटकाया जाता है । (आप

તેમના તે શરીર અર્પણ કરાય છે “ સામલિતિરુખગાલોહકૂટગ-અભિસારણા
 -પસારણાણિ ય ” સેમર વૃક્ષના લોહકૂટકના સમાન અણીદાર કાટાઓ ઉપર
 તેમનું કર્ષણાપર્ષણ કરાય છે-તેમને આગળ પાછળ ખેંચવામા આવે છે
 “ ફાલગવિદારણાણિ ય ” ત્યા તેમને વસ્ત્રની જેમ ફાડવામા આવે છે અને
 કુશલતા આદિ દ્વારા જેમ લાકડાને ચીરવામા આવે છે તેમ તેમને પણ ચીર-
 વામા આવે છે “ અવકોડગવધનાણિ ” તેમની ડાડ અને બને હાથ પાછળના
 ભાગમા રખાવીને બાંધવામા આવે છે “ લઢ્ઢિસયતાડનાણિ ય ” ત્યા તેમને
 સેકડો લાડીઓને માર પડે છે “ ગલગવલ્લુવનાણિ ય ” જોર બુલમથી
 તેમના ગળા બાધીને વૃક્ષની ડાળિયો પર તેમને લટકાવવામા આવે છે, “ સૂલગ્ગ
 મેયનાણિ ય ” શૂળની અણીથી તેમના શરીરનું ભેદન કરવામા આવે

પ્રવચ્ચનાનિ=પ્રતારણાનિ પ્રવરોષ્ણસન્તપ્તચાલુકા નિકરાનેચ્છણપરિક્રમણોપતાપ
પ્રદીપિતપાનીય પાનાતિવૃષ્ણસ્ય સમુદચ્ચજ્જલચીચિરુચિમરીચિનિચય જલાશ્વ-
દિશ્ય તત્ર પાનાય પ્રેષણ, 'ગચ્છ તત્ર તે પિતા 'સમાગતઃ' ઇત્યાદ્યનેકવિધઃ
પ્રવચ્ચના ઇતિ ભાવઃ, 'લિસણ વિમાણાણિ' લિસનવિમાનનાનિ=લિસનાનિ=
જાતિકુલોદિનામનિર્દેશપૂર્વક નિન્દનાનિ, અત એવ વિમાનનાનિ તિરસ્કરણાનિ
'વિષુદ્ધપણિજ્જનાણિ' વિષુદ્ધ પ્રણયનાનિ=વિષુદ્ધાના="સ્વકૃતપાપકર્મણા ફલ્યાનિ
શુદ્ધ" ઇત્યાદિભિર્નિપ્તુરવચોર્નિર્ભર્તિસતાના પ્રણયનાનિ=વ્યવસ્થાનનયનાનિ ।
એતાનિ કિં દેતુકાનિ ? ઇત્યાદિ—'વજ્જસયમાહ્યાણિ' અવ્યથતમાતૃકાણિ-
અવ્યથતમાતૃકાણિ-અવ્યથગતાનિ=મન્દતીત્રાદિપરિણામેન કૃતાનિ પાપશતાનિ,

સપવંચણાણિ ય અસત્ય વસ્તુવિષયક આદેશરૂપ આજ્ઞા સે ડન્હે પ્રતારિત
(ઠગના) કિયા જાતા હૈ-વહા પર નારકીજન પહિલે ડસ નવીન નારકી
કો પ્રસ્તર ડણ સે સન્તસ ચાલુકા પુજ કી ડપર અનેકવાર ધૂમાતે હૈ ।
ઇસસે ડસકી ગર્મી સે ડસકી પ્યાસ અધિક સે અધિક માત્રા મેં જવ
પ્રદીપિત હો જાતી હૈ તવ ડસે વનાવટી જલાશય દિલ્લાકર વહા વે મેજ
વેતે હૈ ઇમ તરહ ડસે વહાં ઘાર ૨ પ્રતારિત કિયા જાના હૈ "જાઓ વહાં
તુમ્હારા પિતા આયા હૈ" ઇત્યાદિ અનેકવિધ વચનોં દ્વારા વે ડસકી
પ્રવચ્ચના કિયા કરતે હૈ । (લિસણવિમાણાણિ ય) જાતિ, કુલ આદિકે
નામનિર્દેષપૂર્વક ડસકી વહા નિંદા કી જાતી હૈ । તિરસ્કાર કિયા જાતા
હૈ । (વિષુદ્ધપણિજ્જનાણિ ય) "અપને કિયે હુણ પાપકર્મોં કા તુમ ફલ
ભોગો" ઇત્યાદિ નિપ્તુર વચનોં સે ડસે નિર્ભર્તિસતકરકે વ્યવસ્થાનોં પર
લાયા જાતા હૈ । (વજ્જસયમાહ્યાણિ ય) ઇસ તરહ નાના પ્રકાર કે
ઇન દુઃખોં કો નરકોં મેં મન્દ, તીવ્ર આદિ પરિણામો દ્વારા કિયે ગયે

શૂળી પર તેમને લટકાવવામા આવે છે "આપસપવચણાણિ ય" અસત્ય વસ્તુ
વિશેના આદેશ વડે તેમને ત્યા ઠગવામા આવે છે ત્યા નારકીજન પહેલા તે
નવીન નારકી જીવોને પ્રચ્છ ડબ્બુતાથી સાગી રીતે તપેલી રેતી પર અનેકવાર
ચલાવે છે, તેથી તેની ગરમીથી તેમની તૃષ્ણા બ્યારે વધારેમા વધારે પ્રમાણમા
મદીપ્ત થાય છે ત્યારે તેઓ તેમને બનાવટી જળાશય બતાવીને ત્યા મોકલી દે
છે, આ રીતે ત્યા તેને વારવાર પ્રતારિત કરાય છે-ઠગવામા આવે છે 'બચ્ચો,
ત્યા તમારા પિતા આવ્યા છે" ઇત્યાદિ અનેક પ્રકારના વચનો દ્વારા તેઓ તેની
હાસી કર્યા કરે છે "લિસણવિમાણાણિ ય" જાતિ, કુલ આદિના નામોને
નિર્દેષ કરીને તેની ત્યા નિંદા કરાય છે તિરસ્કાર કરાય છે "વિષુદ્ધપણિજ્જનાણિ
ય" "તે કરેલા કર્મોંનુ ફળ તુ ભોગવ" એવા નિપ્તુર વચનોથી તેમને ધમ-
કાવીને વધસ્થાનો પર લઈ જવામા આવે છે "વજ્જસયમાહ્યાણિ ય" આ
રીતે પાપી જીવ મદ, તીવ્ર આદિ પરિણામો દ્વારા કરાયેલા સેકડો પાપોને કારણે

તાન્યેવ માતૃકાણિ=ઉત્પત્તિસ્થાનાનિ યેષા તાનિ તથા-પાપશતહેતુકાનીત્યર્થ. ।
 દુઃસ્વાનિ વેદયન્તીતિ પૂર્વેણ સમ્મન્યઃ 'વય' ઇત્યન પ્રાકૃતત્ત્વદ્વારકારણોપઃ ॥૨૬॥

एते पापकारिणः 'कीदृशीं' वेदना क्रियत्कालमनुभवन्ति ? इत्याह—
 'एवं ते' इत्यादि ।

मूलम्—एव ते पुंस्त्वकम्मकयंसंचओवतत्ता निरयग्गि-
 महग्गि सपलित्ता गाढदुःखमहव्भयं ककसं अत्ताय सारीर
 माणस च दुविह तिंव वेदेति वेयणं पावकम्मकारी । वहूणि
 पलिओवमसागरोवमाणि कल्लुणं पालेति ॥ सू० २७ ॥

સૈકડોં પાપોં કે કારણ પાપી જીવ ઉત્પન્ન હોઈ ભોગા કરતે હેં “માતૃક”
 પદ યહા પર ઉત્પત્તિ સ્થાન કા વાચક હૈ । અર્થાત્ હન દુઃખોં કે ઉત્પત્તિ-
 સ્થાન અવધશત મેકડો ઘોર પાપ કરનેવાલે પાપી હો જાતે હૈ ।

ભાવાર્થ-પાપી જીવ નરકો મે જન્મ લેઈ નાના પ્રકાર કી વેદના
 ભોગા કરતે હેં યહી વાત સૂત્રકાર ને હસ સૂત્ર દ્વારા પ્રદર્શિત કી હૈ । વહા
 પર ઉન્હેં પકાવા જાતા હૈ, ડાલા જાતા હૈ, ગલાયા જાતા હૈ, તલા
 જાતા હૈ, સુજા જાતા હૈ અનેક શરીર કે તિલ ૨ કે વરાવર, લખડ ૨ ભો
 કરદિયા જાતા હૈ । સેમર જાતિ કે વૃક્ષોં કે તુક્તીલે કાટોં પર ઉન્હેં ઘસીટાં
 સી જાતા હેં ઇત્યાદિ અચકર સે ભી અચકર કષ્ટ વહા દિયે જાતે હેં,
 તાત્પર્ય યહ હૈ કિ વેદના કે જિતને ભી પ્રકાર હો સકતે હેં વે સવ પ્રકાર
 નરકોં મે હોતે હેં ઔર અન સવ પ્રકારોં સે હોને વાલે દુઃખોં કો મન્દ તીવ્ર
 આદિ પરિણામોં સે કિયે ગયે પાપોં કે કારણ પાપી જીવ ભોગા કરતે હેં ॥

નરકમા ઉત્પન્ન થઈને વિવિધ દુઃખોને ભોગવે છે “માતૃક” પદ અહીં ઉત્પત્તિસ્થાનનું
 વાચક છે એટલે કે તે દુઃખોનું ઉત્પત્તિસ્થાન સેકડો પાપો અવધશત છે

ભાવાર્થ—પાપી જીવો નરકોમાં જન્મ લઈને અનેક પ્રકારની વેદના ભોગ
 વ્યા કરે છે એજ વાત સૂત્રકારે સૂત્ર દ્વારા પ્રગટ કરી છે ત્યાં તેને પકાવવામાં
 આવે છે, ઉકાળવામાં આવે છે, ઓગાળવામાં આવે છે, તળવામાં આવે છે,
 શેકવામાં આવે છે તેમના શરીરના રાઈ રાઈ બેવડા દૂકડા કરવામાં આવે છે
 સેમર વૃક્ષોના અણીદાર કાટા ઉપર તેમને ઘસડવામાં પણ આવે છે, વગેરે
 લય કરમાં લય કર કથી તેમને ત્યાં આપવામાં આવે છે તેનું તાત્પર્ય એ છે કે
 વેદનાના બેટલા પ્રકારો હોઈ શકે તે બધા પ્રકારો નરકોમાં હોય છે અને તે
 બધા પ્રકારોથી થતા દુઃખોને મદ, તીવ્ર આદિ પરિણામોથી અસહેલ પાપોને
 કારણે પાપી જીવ ભોગવ્યા કરે છે ॥ સૂ. ૨૬ ॥

ટીકા—પ્રમ્=ઉક્તરીત્યા તે=પાપકારિણઃ, ‘પુવ્વકમ્મકયસચઓવત્તા’
 પૂર્વકર્મકૃતસચઓવત્તાઃ=પૂર્વકૃતાનાં કર્મણા સચ્ચેન=સમુપાર્જનેન ઉપત્તપ્તા=
 સન્તાપ પ્રાપ્તાઃ ‘નિરયગ્ગિમહગ્ગિસપલિત્તા’ નરકાગ્નિમહાગ્નિસપ્રદીપ્તાઃ=
 નરકાગ્નિઃ સન્તાપકારસ્ત્વાદ્ નરકાગ્નિ, સ મહાગ્નિરિવ અત્યુત્કટત્વાત્ તેન
 સપ્રદીપ્તાઃ=સતપ્તા ‘પાવકમ્મકારી’ પાપકર્મકારિણઃ, ‘ગાઢદુક્ખમહબ્બય’
 ગાઢદુઃખમહાભયા=ગાઢેન=નિવિઢેન દુઃખેન મહાભયા=ત્રિશાલભયયુક્તા ‘કક્કસ’
 કક્કસાં=કઠોરામ્ ‘અસાય’ અમાતામ્=અસાતનામવેદનીયકર્મોદ્ભવા, ‘સારીર’
 શારીરિં ‘માનસ’ માનસીં ચ દુવિહ=દ્વિવિધા ‘તિવ્વ’ તીત્રામ્=અતિશયા
 ‘વેયણ’ વેદના=પીડા વેદયન્તિ=અનુભવન્તિ । ક્રિયત્કાલમ્ ? इत्याह—‘वहूणि’
 वहूनि ‘પલિઓવમસાગરોવમાણિ’ પલ્યોપમસાગરોપમાણિ=પલ્યોપમાણા કાલ,

અથ સૂત્રકાર યહ પ્રકટ કરતે હૈં કિ પાપી જીવ નરકોં મેં કેસી ૨
 વેદના કો કિનને કાલતક ભોગતે હૈં—‘एव ते’ इत्यादि

ટીકાર્થ—(एव) इस प्रकार (ते पावकम्मकारी) वे पापकारी जीव (पुव्व-
 कम्मकयसचओवतत्ता) पूर्वकर्म के लिये हुए सचय से अत्यंत सतप्त
 होकर तथा सतापकारी होने से महाग्नि जैसी नरकरूप अग्नि से सप्र-
 दीप्त होकर (पावकारी) पापकारी जीव (गाढ दुक्खमहब्बय) निविड-
 दुःख से अतिशय दुखवाली ऐसी (कक्कस) कठोरातिकठोर (सरीर)
 शारिरीक, एव (माणस) मानसिक, (दुविह) दोनों प्रकार की
 (असाय वेषण) अमाता वेदनीय कर्म के उदय से जनित (तिव्व वेषण)
 तीव्र वेदना को (वेदेति) भोगते हैं ऐसी वेदना को वे किनने काल तक
 भोगते हैं वह कहते हैं (वहूणि पलिओवमसागरोवमाणि) इस तरह

હવે સૂત્રકાર એ પ્રગટ કરે છે કે પાપી જીવ નરકોમાં કેવી કેવી વેદનાને
 કેટલા સમય સુધી ભોગવે છે “एव ते” इत्यादि

ટીકાર્થ—“एव” આ પ્રમાણે “ते पावकम्मकारी” ते पापकारी जैव “पुव्वकम्मक-
 यसचओवतत्ता” पूर्वे કરેલા ઝોના સચયથી અતિશય સતપ્ત થઈને તથા
 સતાપકારી હોવાથી મહા અગ્નિથી સપ્રદીપ્ત થઈને, “पावकारी” पापी जैव
 “गाढदुक्खमहब्बय” लयदर दु जोથી अतिशय दुःखवाणी, “कक्कस”
 अतिशय कठोर, “सारीर” शारीरिक અને “माणस” मानसिक “दुविह”
 અને પ્રકારની “असाय वेषण” असाता वेदनीय कर्मના उदयથી उत्पन्न થયેલ
 “तिव्वं वेषण” तीव्र वेदनाને “वेदेति” ભોગવે છે એવી વેદનાને તેઓ કેટલા
 સમય સુધી ભોગવે છે તે સૂત્રકાર બતાવે છે “वहूणि पलिओवमसागरोवमाणि”
 એ રીતે અનેક પ્રકારની વેદનાને તેઓ ઘણા જ પલ્યોપમ તથા સાગરોપમ

‘કલુણ’ કરુણ-યથાસ્થાત્થા દીનદશમાશ્રિત્યેત્યર્થઃ, ‘પાલેતિ’ પાલયન્તિ=પ્રતીક્ષન્તે ‘કદા મમાય દુઃખકાલઃ પૂર્ણો મગ્નિયતી’તિ પ્રતીક્ષમાણા નરકજીવાઃ કાલ યાપયન્તીત્યર્થઃ ॥ સૂ. ૨૭ ॥

તે પુનઃ કિં કુર્વન્તી ? ત્યાહ—

મૂલમ્—તે અહાઉય જમકાઙ્યતાસિયા યસદ્ કરેતિ ભીયા, કિંતે ? અવિ-ભાય । સામિ । ભાય । વપ્પ । તાવ । જિતવ । મુય મે મરામિ દુવ્વલો વાહિપીલિઓ હ કિં ઇદાણિ અસિ, एवं દારુણો ણિદ્વઓ ય મા દેહિ મે પહારે, અસ્સાસેઝ મુહુત્ત મે દેહિ, પસાયં કરેહ, મા રુસહ વીસમામિ ગેવિજ્ઞ મુયહ મે, મરામિ, ગાઢં તણ્હાઙ્ગઓ અહ, દેહિ પાણિય ॥ સૂ. ૨૮ ॥

ટીકા—તે પૂર્વોક્તાઃ પાપકર્માણ ‘અહાઉય’ યથાયુષ્ઠ=યથાવદ્વાયુષ્ઠ=પૂર્વભવ યાવત્કાલપરિમિતમાયુર્વદ્દમાસીત્વાત્પરિમિત ન તુ ન્યુનાધિક દેવનારકા-

કી વેદના વે વહુત સે પલ્લોપમ તથા સાગરોપમપ્રમાણ કાલનક (કલુણ) કરુણદશા સે, (પાલેતિ) ભોગતે હૈ । ઉસ સમય ઉનકી યઙ્ગી દીનદશા રહતી હૈ । ઓર વે હસ ઘાત કી પ્રતીક્ષા મેં ઉસ અસહ્ય પીડા કો ભોગતે હુપ કહા કરતે હૈ કિ “કવ યહ હમારા દુઃખકાલ સમાપ્ત હો” । હસ તરહ વિચારે વે પાપી જીવ વહા સે નિકલને કે સમય કી પ્રતીક્ષા કરતે હુપ કાલ કો વ્યતીત કરતે રહતે હૈ ॥ સૂ. ૨૭ ॥

ઓર વે કયા કરતે હૈ ? સો સૂત્રકાર કહતે હે—‘તે અહાઉય’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—દેવ ઓર નારકીયોં આદિકી આયુ નિરુપક્રમ હોતી હૈ—બીચમેં છિદતી મિદતી નહીં હૈ, તીવ્ર શસ્ત્ર, તીવ્ર વિષ, તીવ્ર અગ્નિ આદિ જિન

પ્રમાણ કાળ સુધી “કલુણ” કરુણાન્નક દશામા “પાલેતિ” લોગવે છે તે સમયે તેમની ઘણી દીનદશા હોય છે અને “ક્યારે અમારો આ હુ અને સમય પૂરો થાય” એ વાતની શંકા એ અસહ્ય પીડા લોગવતા લોગવતા તેઓ ભેગા કરે છે આ રીતે બિચારા પાપી જીવો ત્યાથી નીકળવાના સમયની શંકા ભેગા ભેગા સમય પસાર કરે છે ॥ સૂ. ૨૭ ॥

અને તેઓ શું કરે છે ? તે સૂત્રકાર બતાવે છે—‘તે અહાઉય’ ઇત્યાદિ દેવ અને નારકીઓ આદિનુ આયુષ્ય નિરુપક્રમ હોય છે—તે વચ્ચે અકસ્માતોથી છેદાતું ભેદાતું નથી, તીવ્ર શસ્ત્ર, તીવ્ર વિષ, તીવ્ર અગ્નિ આદિ જે કારણોથી

દીના નિરુપક્રમાયુઃ કૃત્વાત્, ઉક્તચ્ચ—

“ દેવા નેરહ્યા વિ ય, અસલ્લવાસાડયા તિરિયમણ્યા ।

ઉત્તમપુરિસા ય તદા, ચરમસરીરા નિરુલ્લમતી ॥ ૧ ”

નિમિત્તોંસે અકાલમૃત્યુ હોતી હૈં ઉન નિમિત્તોંકા પ્રાપ્ત હોના ઉપક્રમ હૈં। યહ ઉપક્રમ દેવ ઔર નારકિયોં કે તથા ચરમદેહધારી ણવ ઉત્તમ દેહવાલોં કે પ્રાપ્ત નહીં હોતા હૈં । ચરમદેહ ઔર ઉત્તમપુરુષોં કે યહ ઉપક્રમ કદાચ પ્રાપ્ત હો ખી જાવે તો વહ ઉન કી આયુ અનપવર્તનીય હી હોતી હૈં, હિસં નિયમ કે અનુસાર (તે) વે પાપકારી જીવ (અહાડય) કૃતને પ્રકાર કી પ્રાણાન્તક વેદના કો મોગને પર ઝીંચ મે મરતે નહીં હૈં—અર્થાત્—ઉનકી અકાલ મેં મૃત્યુ નહીં હોતી હૈં ક્યોં કિ પૂર્વભવ મેં જિતની આયુ યહાં કી ઉન્હેં ને વાધલી થી ઉતની આયુતક વે વહા રહતે હૈં કમ યા જ્યાદા સમય તક નહીં રહતે । કહા ખી હૈં—

“ દેવા નેરહ્યા વિ ય, અસલ્લવામાડયા તિરિયમણ્યા ।

ઉત્તમપુરિસા ય તદા, ચરમસરીરા નિરુલ્લમતી ” ॥૧॥

હિસ ગાથા કે અર્થકી સૂચના યદ્યપિ કુઝ રૂપ મેં ઝપર કર દી ગઈ હૈં ફિર ખી સ્પષ્ટરૂપ મેં હિસ પ્રકાર હૈં—દેવ, નારકી, અસલ્લવાતવર્ષ કી આયુવાળે, તિર્યંચ ઔર મનુષ્ય—ત્રીસ અકર્મ ભૂમિયોં, છપ્પન અન્તઢીપોં ઔર ભરતાદિક્ષેત્ર મેં ઉત્પન્ન યુગલિક તથા ઢાઈઢીપ કે વાહર કે ઢીપ

અકાળ મૃત્યુ થાય છે તે કારણાતુ પ્રાપ્ત થતુ તે ઉપક્રમ કહેવાય છે તે ઉપક્રમ દેવ અને નારકીઓને તથા અગ્નિ દેહધારી અને ઉત્તમદેહધારીને પ્રાપ્ત થતો નથી ચરમ દેહધારી અને ઉત્તમપુરુષોને કહાય તે ઉપક્રમ પ્રાપ્ત થાય તો પણ તેતુ આયુષ્ય અનપવર્તનીય—નિશ્ચિત જાણતુ જ હોય છે તે નિયમ પ્રમાણે ‘તે’ તે પાપકારી જીવો “અહાડય” આટલા, પ્રકારની પ્રાણાત્ક વેદના ભોગવવા છતાં પણ વચ્ચે મૃત્યુ પામતા નથી, કોટલે કે તેમનુ અકાળ મૃત્યુ થતુ નથી કારણ કે પૂર્વભવમા તેમણે અહીંનુ જેટલુ આયુષ્ય ખાધ્યુ છે તેટલુ આયુષ્ય પૂર થાય ત્યાં સુધી તેઓ અહીં જ નરકાદિમા—રહે છે, વધારે કે ઓછો સમય રહેતો નથી કહ્યુ પણ છે—

“ દેવા નેરહ્યા વિ ય, અસલ્લવાસાડયા તિરિયમણ્યા ।

ઉત્તમપુરિસા ય તદા, ચરમસરીરા નિરુલ્લમતી ” ॥ ૧ ॥

આ ગાથાના અર્થનુ સૂચન યોડા પ્રમાણમા કહેવામા આવ્યુ છે તેનો સ્પષ્ટ અર્થ આ પ્રમાણે છે દેવ, નારકી, અગ્નિ આત વર્ષના આયુષ્યવાળા તિર્યંચ અને મનુષ્ય—ત્રીસ અકર્મ ભૂમિયો, છપ્પન અન્તઢીપો અને ભરતાદિ ક્ષેત્રમા ઉત્પન્ન થયેલ યુગલિક તથા અઢી ઢીપની ગહારના ઢીપ સમૂહોમા રહેતા

‘જમકાઢ્ય તાસિયા’ યમકાયિક ગ્રાસિતા:-યમકાયિકૈઃ પન્દ્રશવિધૈઃ
 પરમાધાર્મિકૈઃ અમ્યામ્બરીપાદિભિર્ગ્રાસિતા = ગ્રાસ ગ્રાપિતાઃ ‘મીયા’ મીતાઃ =
 મયવ્યાકુલાઃ સન્તઃ ‘સદ્’ શબ્દ = પ્રદક્ષ્યમાણમકારમાર્તનાદ ‘કરેતિ’ કુર્વન્તિ ।
 ‘કિં તે’ કે તે આર્તશબ્દાઃ ? इत्याह-‘અવિભાયે’ત્યાદિ ‘અવિ’ અપિ-
 વાક્યાલક્ષ્ણે ‘ભાય’ ભાગ-હે મહાભાગ = સામર્થ્યવત્ત્વાત્, ‘સામિ’ હે સ્વા-
 મિન્ ! અધિપતિત્વાત્, ‘માય’ હે ભ્રાત ! - સહાયકૃત્વાત્, ‘વપ્પ’ હે
 પિતઃ ! - પાલકૃત્વાત્, ‘તાય’ હે તાત ! - ગ્રાયકૃત્વાત્, ‘જિતવ’ હે
 જિતવન્ ! = હે વિજયિન્ ! - વિજયશાલિત્વાત્, ‘મુય મે’ મુચ્ચ મા ‘મરામિ’
 મ્રિયે, અહ ‘દુચ્ચલો’ દુર્યલઃ = બલહીનઃ ‘ગાહિ પીલિઓ’ વ્યાધિ પીઢિતઃ, ‘કિં’
 કિમર્થ ત્વમ્ ‘હદાણિ’ હદાનીમ્ = અસ્મિન્-સમયે ‘દારુણો’ કટોર, ‘નિહઓ’

સમુદ્રોં મે મી પાયે જાને વાલે તિર્યંચ-ઉત્તમપુરુષ-તીર્થંકર, ચક્રવર્તી,
 બલદેવ, વાસુદેવ, આદિ, એવ ચરમશરીરી-ઉસી ભવ સે મોક્ષ જાને
 વાલે જીવ, યે સબ નિરુપક્રમ આયુવાલે હોતે હૈં ॥૧॥

પાપી જીવ વહા (જમકાઢ્યતાસિયા) યમકાયિક-પન્દ્રહ પ્રકાર કે
 પરમાધાર્મિક અમ્ય ઓર અમ્બરીપ આદિ દેવો કે દ્વારા ગ્રાસ કો પ્રાસ
 કરાયે જાતે હૈં । (મીયા) ઇસલિયે મય સે સદા વ્યાકુલ બને હુપ વે વહા
 પર (સદ્) આર્તનાદ (કરેતિ) ક્રિયા કરતે હૈં (કિં તે ?) વે કૌન ૨ શબ્દ
 કરતે હૈં ? વહી કહતે હૈં-(અવિભાય) હેમહાભાગ । (સામિ) હે સ્વામિન્ !
 (માય) હે માઈ ! (વપ્પ) હે પિતા । (તાય) હે તાત । (જિતવ) હે વિજયન્ !
 (મુય મે) તૂ મુચ્ચે છોડ દે, (મરામિ) મૈં મર રહા હૂ, (દુચ્ચલો) મે બલહીન
 હૂ, (વાહિપીલિઓહ) વ્યાધિ સે પીઢિત હો રહા હૂ, (કિં હદાણિ) ક્યોં
 ઇસ સમય તુમ મેરે ઉપર (એવ) ઇસ પ્રકાર સે (દારુણો નિહઓ ય અસિ)

તિર્યંચ, ઉત્તમ પુરુષ-તીર્થંકર, ચક્રવર્તી, બળદેવ, વાસુદેવ આદિ, અને ચરમ
 શરીરી-એજ ભવમા મોક્ષે જનારા જીવો, એ સઘળા નિરુપક્રમ આયુષ્યવાળા
 હોય છે ॥૧॥ ત્યા પાપી જીવો “જમકાઢ્ય તાસિય” યમકાયિક-પન્દ્ર પ્રકારના
 પરમાધાર્મિક અમ્ય અને અમ્બરીપ આદિ જીવો દ્વારા ગ્રાસ પામે છે, “મીયા”
 તેથી ભયથી વ્યાકુળ બનેલા તે જીવો ત્યા “સદ્” આર્તનાદ “કરેતિ” કરે
 છે “કિં તે ?” તેઓ કેવા ડેવા શબ્દો બોલે છે ? તે હવે કહેવામા આવે છે
 “અવિભાય” હે મહાભાગ ! “સામિ” હે સ્વામિન્ ! “માય” હે ભાઈ !
 “વપ્પ” હે પિતાજી ! “હે તાય” હે તાત ! “જિતવ” હે વિજયી ! “મુય મે”
 તુ મને છોડી દે, “મરામિ” હું મરી રહ્યો છું, “દુચ્ચલો” હું નિર્બળ છું,
 “વાહિપીલિઓહ” વ્યાધિથી પીડાઈ રહ્યો છું, “કિં હદાણિ” અત્યારે તમે
 મારા પ્રત્યે “એવ” આ રીતે “દારુણો નિહઓ ય અસિ” કઠોર

निर्दयः—दयारहित, 'असि' भवसि ?, मा देहि 'मे' मद्य 'पहारे' प्रहारान् मा
मा ताडयेत्यर्थः । 'अस्सासेउ' उ-इसितु=वासमात्र ग्रहीतु 'मे' मद्य 'मुहुत्त'
मुहुत्त=क्षणमात्र देहि, येन श्वासमात्रमपि मृतमनुभवामीति भावः, 'पसाय'
पसादम्-अनुग्रह 'करेह' कुरुत 'मा रुसह' मा रूप्यत=क्रोध मा कुरुत । 'वीस-
मामि' विश्रमामि=किञ्चित्काल विश्राम करोमि अतः 'मे' मम 'गेविज्ज'
ग्रेवैयक=ग्रीवापन्धन 'मुयह' मुञ्चत=त्यजत यतो हि-अह 'मरामि' म्रिये,
गाढ=अत्यधिक 'तण्हाइओ' तृष्णादितः पिपासाकुलितोऽस्मि मे=मद्य 'पाणिय'
पानीय=जल देहि ॥ सू० २८ ॥

एव नारकैः रुयिते सति यमपुरुषाः यत् कुर्वन्ति तदाह—'ताहे त' इत्यादि ।

मूलम्—ताहे त पिय इम जलं विमल सीयलति घेत्तूण य
नरयपाला तवियं तउयं से दिति कलसेण अंजलीसु दट्टूण य
त पवेवियगोवगा अंसुपगल तपप्पुयच्छा छिण्णा तण्हा इयम्ह
कल्लुणाणि जपमाणा विप्पेक्खता दिसोदिसि अत्ताणा असरणा
अणाहा अवंधवा वधुविप्पहीणा विपलायति य मियविववेगेण
भउन्विग्गा, घेत्तण वला पलायमाणाणं निरणुकपामुह विहाडेउं
लोहदंडेहि कलकलण्हवयणंसि लुभति केइ जमकाइया हसता ॥ २९

कठोर और निर्दय हो रहे हो, (मा देहि मे पहारे) मुझ पर प्रहार मत
करो (अस्सासेउ मुहुत्त मे देहि) मुझे कम से कम मुहुत्त-क्षण मात्र
श्वास तो लेने दो, (पसाय करेह) मेरे ऊपर दया करो, (मा रुसह) मुझ
पर क्रोध मत करो, (वीसमामि) मैं कुछ कालतक विश्राम करना चाहता
हूँ-अतः (गेविज्ज मुयह मे) मेरी ग्रीवा के बधन को तुम छोड़ दो,
देखो (गाढ तण्हाइओ अह) गहरी प्यास से व्याकुल होकर मैं मर रहा
हूँ अतः मेरे लिये (देहि पाणिय) पीने को जल दो ॥ सू० २८ ॥

उभे जनी रह्या छे ? 'मा देहि मे पहारे' भारा पण प्रहार न करे "अस्सा-
सेउ मुहुत्त मे देहि" भने ओछाभा ओछी ओके क्षण भाटे तो श्वास लेवा हो
"पसाय करेह" भारा उपर दया करे, "मा रुसह" भारा उपर क्रोध न करे,
"वीसमामि" हु थोडा समय विश्राम करवा भागु छु तो "गेविज्ज मुयह मे"
भारी डोकभानु बधन तमे छोडी हो, जुवा "गाढ तण्हाइओ अह" भारे
तृषाथी व्याकुल थधने हु भगी रह्यो छु तो भने "देहि पाणिय" पीवाने
भाटे जल आये ॥ सू० २८ ॥

ટીકા—યદિ ત્વ પિપાસિતઃ ‘તાદે’ તદા ‘ત’ ત્વ ‘ઇમ’ ઇદં ‘વિમલ’
 નિર્મલ ‘સીયલ’ શીતલ જલ ‘પિય’ પિય, ઇતિ કથયિતા ‘નરયપાલા’
 નરકપાલાઃ=પરમાધાર્મિકા ‘તવિય’ તાપિતમ્=ઉત્કાલિત ‘તડય’ ત્રપુરુ=‘કથીર’
 ઇતિ પ્રસિદ્ધ સીસરુ યા, ‘કલસેણ’ કલશેન=ઘટેન ‘સે’ તસ્મૈ નારકાય ‘અ
 જલીસુ ય’ અજલિષુ ચ ‘દિતિ’ દદતિ । ‘ત’ તત્=તાપિત ત્રપુ ‘દદ્દૂણ
 દદ્વા=અવલોક્ય ‘પવેવિયગોવગા’ પ્રવેપિતાદ્રોપાદ્વા=પ્રકરુપેણ વેપિતાનિ=રુમ્પિ
 તાનિ અદ્વાનિ ઉપાદ્વાનિ ચ યેષા તે તથા=રુમ્પિતસર્વશરીરાઃ ‘અમુ-પગલ-ત-
 પપ્પુયચ્છા’ પ્રગલ્દશુપ્પ્લુતાક્ષાઃ=મગલદ્વિઃ અશ્રુભિઃ પ્રપ્લુતે=વ્યાપ્તે અક્ષિણી=
 નયને યેષા તે તથા, પ્રક્ષરત્પ્રચલાશ્રુધારાઃ સન્ત ‘અમ્હ’ અસ્માક ‘તળ્હા’
 તૃણા ‘છિણ્ણા’ છિન્ના=નષ્ટા ‘ઇય’ ઇતિ=એવમુચ્ચત્તા ‘કલુણાણિ’ કરુણાનિ

इस प्रकार नारक जीवों के कहने पर परमाधार्मिक जो कुछ उनके
 साथ करते हैं वह सूत्रकार प्रदर्शित करते हैं—‘ताहे’ इत्यादि ।

टीકાર્થ—(તાહે ત) યદિ તુમ પિપાસિત હો તો (ઇમ) હસ (વિમલ)
 નિર્મલ (સીયલ) શીતલ (જલ) જલ કો (પિય) પિયો એસા કહ
 કર (નરયપાલા) વે નરકપાલ પરમાધાર્મિક દેવ (તવિય) ડચાલે હુપ
 કથીર કો અથવા સીસે કો (કલસેણ) કલશ મે ખરકર (સે) હસ
 નારકી કે લિયે (અજલીસુ) અજલિ મેં (દિતિ) દેતે હું । (ત) હસ
 તપે-હુપ-ત્રપુ-સીસે-કો (દદ્દૂણ ય) દેલ્લકર (પવેવિયગોવગા-) હન-
 નારકિયો કા સમસ્ત શરીર-અગ-ઉપાગ વહુત અધિક રૂપ મે કપને
 લગતે હું । ઓર (અમુપગલતપ્પુયચ્છા) હસી સ્થિતિ મે વે નિકલતે
 હુપ આસુઓં સે અપની આંખો કો વ્યાપ્ત કરકે હનસે કહતે હૈ કિ
 (છિણ્ણા તળ્હા અમ્હ) અન હમારી વ્યાપ્ત શાત હો ગઈ હૈ (ઈય)-હસ

નારકી જીવોના એ પ્રકારના શબ્દો સાંભળીને પરમાધર્મી તેમની સાથે
 કેવો વર્તાવ કરે છે તે સૂત્રકાર બતાવે છે—‘તાહે’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“તાહે ત” એ તમને તરમ લાગી હોય તો “ઇમ” આ “વિમલ”
 નિર્મળ, “સીયલ” શીતળ “જલ” પાણી “પિય” પીવો એમ કહીને “નર-
 યપાલા” તે નરકપાલ પરમાધર્મિક હોવો “તવિય” ઓગાળેલ ગરમ કથીર
 અથવા સીસાને “કલસેણ” કળશમાં ભરીને “સે” તે નારકીને “અજલીસુ” અજ
 લિમાં “દિતિ” આપે છે “ત” તે ગરમ ગરમ ત્રપુ-સીસાને “દદ્દૂણ ય”
 લેઈને “પવેવિયગોવગા” તે નારકીઓના અગ ઉપાગ અત્યંત કપવા લાગે
 છે “અમુપગલત પપ્પુયચ્છા” તે સ્થિતિમાં આસુભરી આંખે તેઓ તેમને કહે
 છે કે “છિણ્ણા તળ્હા અમ્હ” હવે હમારી વૃષા શાત થઈ ગઈ છે

वचनानि 'जपमाणा' जल्पमानाः=प्रत्यन्तः 'दिसोदिसि' दिशोदिश=परस्परं
 दिशोऽन्यां दिशमितस्तत् इत्यर्थः 'विपेक्षता' विप्रेक्षमाणाः=समन्तात् पश्यन्तः
 'अत्ताणा' अत्राणाः=रक्षाहीना, अतएव 'असरणा' अशरणाः=शरणरहिताः,
 अतएव 'अणाहा' अनाथाः=दीनाः, 'अधवा' अग्रन्धवाः=ग्रन्धरहिताः,
 'बधुविपहीणा' बन्धुविप्रहीणाः=विधमानसम्बन्धिविप्रयुक्ताः, 'मियविन'
 मृगा इव 'भउळ्विग्गा' भयोद्विग्नाः=भयव्याकुलाः 'वेगेण' वेगेन 'विपला-
 यति' विपलायन्ते=प्रधावन्ति, ततः प्रधायमानान् तान् नारकान् 'बला'
 बलात् 'घेतूण' गृहीत्वा 'निरणुकपा' निरनुकम्पाः=दयारहिताः 'केइ' केऽपि
 'जमकाइया' यमकायिकाः=परमाधार्मिकाः, हसता 'हसन्त' पलायमाणाण'
 पलायमानानां च तेषां 'मुह' मुख 'लोहदडेहि' लोहदण्डैः, 'विहाडेउ'
 विघाटय=उद्धाटय 'कलकल' अतितप्तत्वात् कल-कल शब्दयुक्त पूर्वोक्त व्रपुरु

प्रकार कहकर वे (कलुणाणि जपमाणा) कम्पा वचनोंका उच्चारण करते
 हुए (दिसोदिसि विपेक्षता) वहा से दूसरी दिशा में इधर उधर
 देखते हुए (अत्ताणा) रक्षक रहित (असरणा) शरण रहित (अणाहा)
 विनानाथ के (अधवा) दीनदशा सपन्न (बधुविपहीणा) बांधवों से
 रहित-रक्षक जनों से रहित, अतः (भउळ्विग्गा) भय से व्याकुल बन
 कर वे (मियविन) मृगों की तरह वहा से (वेगेण) वेगपूर्वक (विप-
 लायति) भागते हैं । इसके बाद भागते हुए उन नारकियों को (बला-
 घेतूण) जबरदस्ती से पकड़कर (निरणुकपा) दयारहित बने हुए (केइ)
 कितनेक (जमकाइया) यमकायिक परमाधार्मिक देव (हसता) हँस
 हँसकर (पलायमाणाण) पलायन करते हुए उनके (मुह) मुख को
 (लोहदडेहि) लोहदण्डों से (विहाडेउ) फाड़कर फिर उसमें (कलक-

प्रमाणे ंहीने "कलुणाणि जपमाणा" कङ्क्षुाञ्जनके वचनेन ज्ञोवता, "दिसो दिसि
 विपेक्षता" त्याधी णीए दिशाभा आभ तेभ ज्ञेता, "अत्ताणा" रक्षक विनाना
 "असरणा", शरण विनाना, "अणाहा" अनाथ, "अधवा" दीनदशाभा भूझयेला,
 "बधुविपहीणा" बाधवो विनाना-रक्षक ऽरनार विनाना, अवा ते नारकी एवो
 "भउळ्विग्गा" लयथी व्याकुण णनीने "मियविन" मृगोनी जेम त्याधी 'वेगेण'
 वेगथी "विपलायति" लागे छे त्यारणोद लागता अवा ते नारकी एवोने
 "बलाघेतूण" जेर बुद्धमथी पड्डीने "निरणुकपा" दया रहित णनेला "केइ"
 डेटलाड "जमकाइया" यमकायिक, परमाधार्मिक देवो "हसता" हसी हसीने
 "पलायमाणाण" नासता अवा तेभना "मुह" मुणने "लोहदडेहि" दोढाना

સ કીદશો નિર્ગોપઃ ? इत्याह—‘ रसिये ’ त्यादि ।

મૂલમ્—રસિય—ભણિય—કુવિય—ઉક્કૂહય—નિરયપાલતજિયં—
ગેળહ કમ પહર છિદ ભિદ ઉપાડેહુક્ષણાહિ કત્તાહિ વિકત્તાહિ
ય મંજહણ વિહણ વિચ્છુભોચ્છુભ આકટ્ટ વિકટ્ટ કિં ણજપસિ?
સરાહિ પાવકમ્માઈ કિયાઈ દુક્કયાઈ એવ વયણમહપ્પગમ્મો
સપડિ સુયસદસકુલો ઉત્તાસઓ સયા નિરયગોયરાણ મહાણ-
ગરહજ્ઞમાણસરિસો નિગ્ધોસો સુવ્વણ અણિટ્ટો તહિયં નેરહ-
યાણ જાહુજતાણં જાયાણાહિ ॥ સૂ. ૩૧ ॥

ટીકા—‘ રસિય-ભણિય - કૂહય - ઉક્કૂહયનિરયપાલતજિય ’ રસિત-
ભણિત-કુપિતોત્કૂજિત-નરકપાલ-તર્જિત-તત્ર-‘ રસિય ’ રસિતા = યરુરવદ્ ધોર-
શબ્દકારકાઃ, ‘ ભણિય ’ ‘ ભણિતા = ઉચ્ચૈઃ શબ્દમારકાઃ, ‘ કૂહય ’ કૂજિતા = અવ્યક્ત-
ધ્વનિકારકાઃ, ‘ ઉક્કૂહય ’ ઉત્કૂજિતાઃ = ભયજનકાવ્યક્તશબ્દકારકાઃ યે ‘ નિરય
(ણીસિટ્ટો) પ્રબલ દુઃખજનિત મહા શબ્દ વદા ‘ સુના જાતા હૈ ’ (યહ
આગે સે સમ્બન્ધ હૈ) ॥ સૂ. ૩૦ ॥

उस समय परमाधार्मिक परस्पर में किस प्रकार की बातचीत करते हैं ? यह सूत्रकार कहते हैं—‘ रसिय-भणिय ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—નરકો મેં નારકિયોં કો હરણ્ક પ્રકારસે વ્યથા પહુંચાનેવાળે
બે પરમાધાર્મિક નારકિયોં કો ફિર અધિક કષ્ટ પહુંચાને કે અભિપ્રાયસે
(રસિય ભણિય-કૂહય ઉક્કૂહય-નિરયપાલતજિય) (રસિય) સૂઅરકે જૈસે
ભયકર ધોર શબ્દોં કો (ભણિય) ઉચ્ચસ્વર સે કરતે હૈ । ઉસ મે બે
(કૂહય) અવ્યક્ત ધ્વનિ કરતે હૈ (ઉક્કૂહય) હસ સે નારકિયોં કો ઔર

વામા આવે છે અને તેના શબ્દોથી વ્યાપ્ત એવો ‘ ણીસિટ્ટો ’ પ્રબળ દુઃખ-
જનિત ચિત્કાર ત્યા સંભળાય છે ’ (આ પ્રમાણે આગળના શબ્દો સાથે
સંબધ છે) ॥ સૂ. ૩૦ ॥

તે સમયે પરમાધાર્મિકો પરસ્પર કેવી વાતો કરે છે તે સૂત્રકાર બતાવે
છે— ‘ રસિય-મણિય ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—નરકોમા નારકીઓને દરેકરીતે વ્યથા પહોંચાડનાર તે પરમાધાર્મિકો,
નારકીઓને હજી પણ વધારે કષ્ટ આપવાને માટે “ રસિય-ભણિય-કૂહય, ઉક્કૂહય
-નિરયપાલતજિય ” “ રસિય ” સૂઅરના જેવા ભયકર ધોર ધ્વનિ “ મણિય ”
ઉચ્ચે સ્વરે કરે છે તેઓ “ કૂહય ” અવ્યક્ત ધ્વનિ કરે છે “ ઉક્કૂહય ” તે

પાલ' નિરયપાલાઃ=પરમાધાર્મિકાઃ, તેપા 'તર્જિય' તર્જિત=નારકજીવાન્ લક્ષી-
કૃત્ય પરસ્પર તર્જનાજ્ઞાવાક્ય વક્ષ્યમાણપ્રકારમસ્તિ, તથાહિ-અમ્બામિથ પરમાધા-
ર્મિકોઽમ્બરીપ કથયતિ-હે અમ્બરીપ ! એન પલાયમાન પાપિન નારક 'ગેળ'
ગૃહાણ । એવ પરસ્પરમેક પરમાધાર્મિકો દ્વિતીય કથયતિ-એન નારક 'કમ' ક્રમ=
પાદમહારૈઃ પીડય 'પહર' પ્રહર-એન નારક દણ્ડાદિમિસ્તાદય 'હિંદ' હિન્ધિ
=લવ્ઘાદિભિઃ સ્વણ્ડશઃ કુરુ 'મિંદ' મિન્ધિ-મહાકાદિભિર્ભેદય 'ઉપ્પાઢેહ'
ઉત્પાટય=શરીરાત્વવાદિક પૃથક્કુરુ 'ઉત્ત્વણાહિ' ઉત્ત્વન=નિષ્કાસય અશ્વિગો-
લાદિકમ્ 'કત્તાહિ' કૃન્ત=ઘેદય-શુરિકાદિભિર્નાસિકાદિક, તથા-'નિરુત્તાહિ'
વિકૃન્ત=ર્ષ્ણનાસિકાદિક મૂલતરહેદય, 'મજ' મજ્ઞ=દસ્તપાદાદિક ત્રોટય, 'હણ'
જહિ=શતઘ્ન્યાદિભિર્મરિય, 'વિહણ' વિજહિ-મહાશિલાદિ પાતનાદિભિરનેકપ્રકારૈઃ

અધિક ભય ઉત્પન્ન હો જાતા હૈ । ઇસ પ્રકાર રસિત, મળિત, કૂજિત
એવ ઉત્કૂજિત શબ્દ કરને વાલે ડન પરમાધાર્મિકોં કી તર્જિત-નારકિયોં
કો લક્ષ્ય કરકે જો પરસ્પર મે કષ્ટાદિ પહુંચાનેવાલી વાતચીત હોતી હૈ
વહ ઇસ પ્રકાર હૈ-(ગેળ) અમ્બ નામ કા પરમાધાર્મિક અમ્બરીપ સે
કહતા હૈ-હે અમ્બરીપ ! તુ ઇસ ભાગતે હુએ પાપી નારકી કો પકડ લો
ઔર (કમ) ઇસ કો લાતોં સે મારોં । વાદ મેં (પહર) ઇસેદડોં સે સૂચ
પીટો । (હિંદ) જ્યાદા ઔર ક્યા કહ-તલવાર આદિ સે ઇસકે શરીર
કે સ્વડ ૨ કર ઢાલો । (મિંદ) મારા આદિ સે ઇસકે શરીર કો મેદ
ઢાલો (ઉપ્પાઢેહ) ઇસકી સ્વાલ ઉતારલો, (ઉત્ત્વણાહિ) ઇસકી આંસે
નિકાલ લો, (કત્તાહિ) ઇસકા નાક કાટ ઢાલો (વિકત્તાહિ) કર્ણ
નાસિક આદિ ઇન્દ્રિયોં કો મૂલ સે ચિલકુલ સાફ કર ઢાલો । (મજ)
હાથ પૈર આદિ કો મરોડ ઢાલો । (હણ) શતઘ્ની આદિ સે ઇસકો
ધુરી તરહ સે મારો । (વિહણ) મહાશિલા આદિ કે ઉપર ઇસે
પછાર ઢાલો । (વિચ્છુમ) કુએ આદિ મેં ઇસે પટક દો । (ઉચ્છુમ)

કારણે નારકીઓને વળી વધારે ભય લાગે છે એ ગીતે રસીત, લખિત, કૂજિત,
અને ઉત્કૂજિત શબ્દ કરનારા તે પરમાધાર્મિકોથી તર્જિત-નારકીઓને ચીધીને,
તેમને કષ્ટ દેનારી પરસ્પરમા જે વાતચીત થાય છે તે આ પ્રકારની હોય છે-
“ગેળ” અમ્બ નામનો પરમાધાર્મિક અમ્બરીપને કહે છે-“ હે અમ્બરીપ !
તું આ નાસી જતા પાપી નારકીને પકડી લે અને “કમ” તેને લાતો માર
પછી “પહર” તેને દડા વડે ખૂણ ફેટકાર “હિંદ” વધારે શુ કહું ! તલવાર
આદિથી તેના શરીરના ટૂકડે ટૂકડા કરી નાખ “મિંદ” ભાલા આદિ વડે તેના
શરીરને વીધી નાખ “ઉપ્પાઢેહ” તેની ચામડી ઉતારી નાખ, “વિકત્તાહિ” ડાન,
નાડ આદિ ઇન્દ્રિયોને મૂળમાથી કાપી નાખો, “મજ” હાથ પગ આદિને મરડી
નાખ, “હણ” શતઘ્ની આદિ વડે તેને ખરાબમા ખરાબ રીતે મારો, “વિહણ”

સ કીદશો નિર્ગોષઃ ? इत्याह—‘ रसिये ’ त्यादि ।

મૂલમ—રસિય—ભણિય—કુવિય—ઉક્કૂહય—નિરયપાલતજિય—
ગેળહ કમ પહર હિંદ ભિદ ઉપાડેહુક્ષણાહિ કત્તાહિ વિકત્તાહિ
ય મંજહણ વિહણ વિચ્છુભોચ્છુભ આકઢ્ઢ વિકઢ્ઢ કિં ણ જપસિ?
સરાહિ પાવકમ્માઈં કિયાઈં દુકયાઈં એવ વયણમહપ્પગમ્મો
સંપડિ સુયસદસંકુલો ઉત્તાસઓ સયા નિરયગોયરાણં મહાણ-
ગરહજ્ઞમાણસરિસો નિગ્ધોસો સુવ્વણ અણિટ્ટો તહિય નેરહ-
યાણ જાહ્વજતાણં જાણનાહિં ॥ સૂ. ૩૧ ॥

ટીકા—‘ રસિય—ભણિય — કૂહય — ઉક્કૂહયનિરયપાલતજિય ’ રસિત-
ભણિત—કુપિતોત્ક્રજિત—નરુપાલ—તર્જિત—તત્ર—‘ રસિય ’ રસિતા = ગૂરુવદ્ ધોર-
શબ્દકારકાઃ, ‘ ભણિય ’ ‘ ભણિતા = ઉચ્ચૈઃ શબ્દકારકાઃ, ‘ કૂહય ’ કૂજિતા = અવ્યક્ત-
ધ્વનિકારકાઃ, ‘ ઉક્કૂહય ’ ઉત્ક્રજિતાઃ = ભયજનકાવ્યક્તશબ્દકારકાઃ યે ‘ નિરય
(ણીસિટ્ટો) પ્રબલ દુઃસ્વજનિત મહા શબ્દ વહાં ‘ સુના જાતા હૈ ’ (યહ
આગે સે સમ્બન્ધ હૈ) ॥ સૂ. ૩૦ ॥

ઉસ સમય પરમાધાર્મિક પરસ્પર મેં કિસ પ્રકાર કી યાતચીત કરતે
હૈ ? યહ સૂત્રકાર કહતે હૈ—‘ રસિય—ભણિય ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—નરકોં મેં નારકિયોં કો હરણક પ્રકારસે વ્યથા પહુંચાનેવાલે
બે પરમાધાર્મિક નારકિયોં કો ફિર અધિક કષ્ટ પહુંચાને કે અભિપ્રાયસે
(રસિય ભણિય—કૂહય ઉક્કૂહય—નિરયપાલતજિય) (રસિય) સૂઅરકે જૈસે
ભયકર ધોર શબ્દોં કો (ભણિય) ઉચ્ચસ્વર સે કરતે હૈ । ઉસ મેં બે
(કૂહય) અવ્યક્ત ધ્વનિ કરતે હૈ (ઉક્કૂહય) હસ સે નારકિયોં કો ઔર

વામા આવે છે અને તેના શબ્દોથી વ્યાપ્ત એવો ‘ ણીસિટ્ટો ’ પ્રબળ દુઃખ-
જનિત ચિત્કાર તથા સંભળાય છે ’ (આ પ્રમાણે આગળના શબ્દો સાથે
સંબંધ છે) ॥ સૂ. ૩૦ ॥

તે સમયે પરમાધાર્મિકો પરસ્પર કેવી વાતો કરે છે તે સૂત્રકાર બતાવે
છે— ‘ રસિય—મણિય ’ इत्यादि

ટીકાર્થ—નરકોંમા નારકીઓને દરેડરીતે વ્યથા પહોંચાડનાર તે પરમાધાર્મિકો,
નારકીઓને હજી પણ વધારે કષ્ટ આપવાને માટે ‘ રસિય—મણિય—કૂહય, ઉક્કૂહય
—નિરયપાલતજિય ’ ‘ રસિય ’ સૂઅરના જેવા ભયકર ધોર ધ્વનિ ‘ મણિય ’
હવે સ્વરે કરે છે તેઓ ‘ કૂહય ’ અવ્યક્ત ધ્વનિ કરે છે ‘ ઉક્કૂહય ’ તે

‘जायणार्हि’ यातनाभि=रुदर्यनाभिः ‘जाडज्जताण’ यात्यमानाना=दण्डय-
मानाना ‘नेरइयाण’ नैरयिकाणा=नारकजीवानां च उभयेपामित्यर्थः, ‘अणिट्ठो’
अनिष्टः-अपीतिकारकः ‘णिग्घोसो’ निर्घोषः-महानादः ‘सुव्वए’ द्रव्यते॥सू० ३१॥

कास्ता यातना ? इति यातना प्रकारमाह—‘किं ते’ इत्यादि—

मूळम्—किं ते ? असिवण-दम्भवण-जतपत्थर-सूइतलक्खा-
रवावि-कलकलतवेयरणि-कलववालुया-जलियगुहनिरुम्भणं
उसिणोसिण--कटइल्ल-दुग्गमरहजोयण-तत्तलोहमग्गमण
वाहणाणि ॥ सू० ३२॥

टीका—‘किं ते’ कास्ता यातनाः ? उच्यते—‘असिवण’ असिवनं=
खट्वाकारपत्रयन, ‘दम्भवण’ दर्भयन=दर्भाः-तीक्ष्णमुग्धातृणविशेषास्तेषां वन,
यगोयराण) परमाधार्मिकों का तथा (तहिय) वहा (जायणार्हि) यात-
नाओं द्वारा (जाडज्जताण) दण्डयमान (नेरइयाण) नारकियों का
(अणिट्ठो) अनिष्ट (णिग्घोसो) निर्घोष-शब्द उन नरकों में (सुव्वए)
सुना जाता है ॥ सू० ३१॥

अब सूत्रकार पूर्वोक्त यातनाओं के प्रकारों को प्रकट करते हैं—
‘किं ते’ इत्यादि ।

टीकार्य—प्रश्न—(किं ते) वे यातनाएँ कौन २ हैं ?

उत्तर—वे यातनाएँ इस प्रकार हैं (असिवण-दम्भवण-जतपत्थर
सूइतल-क्खारवावि-कलकलतवेयरणि-कलव वालुया - जलियगुह-
निरुम्भण) अन्ध और अन्धरोप परमाधार्मिक उन नारकियों को (असि-
वण) तलवार की धार के आकार वाले पत्रों के वन में (दम्भवण)

जैसे, “निरयगोयराण” परमाधार्मिकोंने तथा “तहिय” तथा “जायणार्हि”
यातनाओं वडे “जाडज्जताण” शिक्षा सहन करता “नेरइयाण” नारकीओंने
“अणिट्ठो” अनिष्ट निर्घोष-शब्द, ते नरकोंमा “सुव्वए” सलगाय छे ॥सू० ३१॥

इसे सूत्रकार पूर्वोक्त यातनाओंना प्रकार बतावे छे—“किं ते ?” इत्यादि
टीकार्य—प्रश्न “ किं ते ? ” ते यातनाओं कथी कथी छे ?

उत्तर—ते यातनाओं आ प्रमाणे डाय छे

“ असिवण, दम्भवण, जतपत्थर, सूइतल, क्खारवावि, कलकलतवेयरणि,
कलव वालुया, जलियगुह, निरुम्भण ” अन्ध अने अन्धरीय नाभना परमा-
धार्मिके ते नारकी जेवने “असिवण” तलवारनी धार जेवा आकारना पत्रोना
वनमा, “दम्भवण” तीक्ष्ण अखीवाणा दल विधेयाना वनमा “जत पत्थर” यत्र

मारय, 'विच्छुभ' प्रसिप=रूपादौ प्रसिप, 'उच्छुभ' उन् प्रसिप=उच्छिप
 'आकड्ड' आकर्ष=रूचादिक गृहीत्वार्कर्षय=कण्टकाकीर्ण भूमा धर्षयेत्यर्थ, 'प्रिच्छु'
 विकर्ष=अधो मुख कृत्वा धर्षय । एतादृशीं वेदना दत्त्वा नारकान् प्रति वदति,
 'किं ण जपसि' किं न जल्पसि=कथं न वदसि हे पापिन् 'सराहि' स्मर स्मरण
 कुरु 'कियाइ' कृतानि = पूर्वभवसमाचरितानि, 'दुक्कयाइ' दुष्कृतानि=
 प्राणातिपातादीनि 'पापकम्माइ' पापकर्मणि । एव=अनेन प्रकारेण 'वयणमह-
 प्पगम्भो' वचनमहाप्रगल्भः=वचनैः=नरकपालाग्निः महाप्रगल्भः=अतिदुर्धर्षः
 भयावह-इत्यर्थ 'सपडिसुयसइसकुलो' सप्रतिश्रुतशब्दसकुलः=सप्रतिश्रुतः=
 प्रतिध्वनितः यः शब्दः, तेन सकुलः=व्याप्तः । 'सया' सदा=सर्वदा 'उत्तासओ'
 उत्त्रासकः=परमत्रासजनकः 'महाणगरडज्जमाणसरिसो' महानगरदहमानसदृशः
 =दहमानस्य=प्रज्वल्यमानस्य महानगरस्य यः शब्दस्तेन तुल्यः, एतादृशः 'तहिय'
 तत्र नरके- 'निरयगोयराण' निरयगोचराणा-निरयगोः=नरकभूमिः, तत्र चरन्ति
 =नारकनासां विचरन्ति ये ते निरयगोचराः=परमाधार्मिकास्तेषाम्, तथा-

ऊपर इसकी उछाल दो । (आकड्ड) चाल आदि पकड़ कर इसे कण्टका-
 कीर्ण भूमि में खूब खेंचो । (चिकड्ड) इसे ओंघा मुख करके जमीन
 पर खूब रगड़ो । इस प्रकार की वेदना देने की बात कहकर फिर वह उन
 नारकियों से कहता है- (किं ण जपसि) हे पापी । तू धोलता क्यों नहीं
 है (सराहि पावकम्माइ कियाइ दुक्कयाइ) पूर्वभव में समाचरित प्राणा-
 तिपात आदि अपने पापकर्मों को अब तू याद कर ले । (एव) इस
 प्रकार का (वयणमहप्पगम्भो नरकपाल की वाणियों द्वारा अतिदुर्धर्ष
 भयकर बना हुआ, (सपडिसुयसइसकुलो) प्रतिध्वनि से व्याप्त हुआ,
 (सया उत्तासओ) सर्वदा दूसरो को त्रास जनक एव (महाणगरडज्ज
 माणसरिसो) दहमान महानगर के शब्द के जैसा उद्भूत हुआ (निर-

महाशिला आदि पर तेने पछाडो "विच्छुभ" कृपा वगेरभा तेने ईडो,
 "उच्छुभ" तेने उधे उछाणो, "आकड्ड" तेने वाण आदिने पकडीने काटाणी
 जमीनमा धसडो, "चिकड्ड" तेने उधा मोढे जमीन पर खूण रगड़ोणो आ
 प्रभाण्णे वेदना पछायाडवानी वात करीने ते नारकी लोवोने उडे छे "किं ण
 जपसि" हे पापी ! तू धोलतो केम नथी ? "सराहि पावकम्माइ कियाइ दुक्कयाइ"
 पूर्वभवमा आचरेल प्राणातिपात आदि पापकर्मोने तु याद करी ले "एव" आ
 प्रकारेण "वयणमहप्पगम्भो" नरकपालणी वाणी वडे अतिदुर्धर्ष-लय कर लागतो,
 "सपडिसुयसइसकुलो" पड्याथी व्याप्त थेतो, "सया उत्तासओ" सर्वदा पीवोने
 त्रासजनक, अने "महाणगरडज्जमाणसरिसो" गणता महानगरमाथी ८

યાતનાવિષયે આયુષ્યપ્રકારાદ—‘ હમેહિ ’ इत्यादि—

મૂલમ્—હમેહિં વિવિહેહિ આઝહેહિ કિં તે ? મુગ્ગરમુસુંદિ-
કરકય-સત્તિ-હલ-ગય મુસલ-ચક્ક-કોંત તોમર સૂલ-લઝલ ભિહિ-
પાલ સઘલ પટિસ-ચમ્મેટ્ટ-દુહણ મુટ્ટિય-અસિં ખેટગ યગ્ગ -ચાવ-
નારાય કળક-કપ્પિણિ વાસિપરસુ-ટક-તિક્ક-નિમ્મલેહિ અણ્ણેહિ
ય એવમાઇણહિ અસુહેહિં વેઝવિણહિ પહરણસણહિ અણ્ણવદ્ધતિ-
વ્વવેરા પરોપ્પરં વેયણ ડર્ઠિરતિ અભિહણંતા ॥ સૂ. ૩૩ ॥

ટીકા—‘ હમેહિં ’ એમિઃ વક્ષ્યમાણેઃ ‘ વિવિહેહિં ’ વિવિધૈઃ=અનેકપ્રકારૈઃ
‘ આઝહેહિં ’ આયુષ્યૈઃ=શસ્ત્રૈઃ પરસ્પર યાતનામ્ ડરીરયન્તીત્યગ્રેણ સમ્યગ્નયઃ । ‘ કિં તે ’
કાનિ તાનિ આયુધાનિ ? इत्याह—‘ મુગ્ગર ’ મુદ્ગરઃ પ્રસિદ્ધઃ ‘ મુસુદિ ’ શસ્ત્ર

લોહમય માર્ગ કે ઉપર ઉન્હેં ચલાતે હૈં ઓર ફિર (વાહનાણિ) ઉનસે
શક્તિ સે ખી અધિક ભાર કો વહન કરાતે હૈં ॥સૂ. ૩૨ ॥

અવ સૂત્રકાર યાતના કે વિષય મેં આયુધોં કે પ્રકારોં કો કહતે
હૈં—‘ હમેહિં વિવિહેહિં ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(હમેહિં) ઇન વક્ષ્યમાણ (વિવિહેહિં) અનેક પ્રકારકે (આઝહેહિં)
આયુધોં—શસ્ત્રોં સે વે નારકી પરસ્પર મેં યાતના (વેદના) કો ઉત્પન્ન
કરતે હૈં । હસ પ્રકર સે યહાં સવધ ઘટિત કર લેના ચાહિયે—(કિં તે) ,
વે આયુધ કોન ૨ સે હે ? સો ઉન્હેં પ્રકટ કરતે હૈં—(મુગ્ગર) મુદ્ગર
(મુસુદિ) મુસુદિ—શસ્ત્ર વિશેષ (કરકય) ક્રકચ—કરોંત (સત્તિ)

તપાવેલા લોહના ભાગ ઉપર તેમને ચલાવે છે અને વળી “વાહનાણિ” તેમની
શક્તિ કરતા પણ વધારે બોલે તેમની પાસે ઉપડાવે છે ॥ સૂ. ૩૨ ॥

હવે સૂત્રકાર યાતનાઓ આપવા માટે ઉપયોગમાં લેવાતા આયુધોનું
વર્ણન કરે છે—“હમેહિં વિવિહેહિં” इत्यादि

“હમેહિં વિવિહેહિં” નીચે દર્શાવવામાં આવેલા અનેક પ્રકારના “આઝહેહિં”
આયુધો—શસ્ત્રો વડે તે નારકીઓ પરસ્પરમાં યાતના “વેદના” ઉત્પન્ન કરે છે,
એ પ્રકારનો સળધ અહીં સમજી લેવાનો છે

“કિં તે ? ” તે આયુધો કયા કયા છે ? તે સૂત્રકાર તે આયુધો બતાવે છે—
“મુગ્ગર” મુદ્ગળ, “મુસુદિ” મુસલ નામનું શસ્ત્ર, “કરકય” કંડય—કંડવત,

‘જત પથર’ યન્ત્ર પ્રસ્તરા = ઘરદાદયઃ ‘સૂઢતલ’ મુચીતલ = ઝૂર્નમુગમુચીમય
 ભૂમિભાગઃ, ‘ચ્વારવાયિ’ ક્ષારાપ્ય = ક્ષારજલસમૃતચાપિકાઃ, ‘કલ્કલતવેય-
 રણિ’ કલ્કલ્લોપમાનવૈતરણી = કલ્કલ્લશદ્વાયમાનપત્તપ્તપુસીસદિપ્શ્ના
 વૈતરણી નામધેયા નદી, ‘કલચવાલુયા’ કદમ્બવાલુકા = અસિસન્તપ્તચાત્કદમ્બ-
 પુષ્પચ્છ રક્તવાલુકામયી નદી, ‘જલિયગુહ’ જ્વલિતગુહા = પ્રજ્વલિતાગ્નિમયી-
 કન્દરા, ઇત્યેતેષા દ્વન્દ્વઃ, તેષુ અસિવનાદિષુ ‘નિરુમળ’ નિરોધનમ્, તથા—
 ‘ઉસિણોસિણકટકટ્કલ્લદુગ્ગમરહજોયણતત્તલોહમગ્ગમણચાહ્ણાણિ’ ઉષ્ણોષ્ણકણ્ઠકા-
 કીર્ણદુર્ગમરથયોજન તત્તલોહમાર્ગગમનચાહ્ણાણિ = ઉષ્ણાદપ્યુષ્ણ ઇત્યુષ્ણોષ્ણઃ = અત્યુષ્ણ
 કણ્ઠકૈઃ = સુતીક્ષ્ણકીલકૈરાકીર્ણો = વ્યાપ્તો દુર્ગમઃ = દુઃચ્ચેણ ગમઃ = ગમન યસ્ય સ
 તથા, દુર્ગમશ્ચ યો રથઃ તસ્મિન્ યોજન = સયોજન ચલીચ્ચર્દાનામેવૈતિ તત્તથા,
 તત્ત્વ, તત્તલોહમયમાર્ગે ગમન = નયન ચાહ્ણન = મારોદ્વાહન ચૈતિ તથા તાનિ ॥મૂ. ૩૨॥

તીક્ષ્ણ અગ્નિભાગવાલે દર્મ વિશેષોં કે વન મેં (જતપથર) યત્ર પ્રસ્તરોં મેં
 (સૂઢતલ) ઉર્ધ્વં મુખવાલી સૂઢયોં સે યુક્ત ભૂમિભાગમેં, (ચ્વારવાયિ)
 ચ્વારે જલ સે પરિપૂર્ણ હુઈ વાવડિયોં મેં, (કલ્કલતવેયરણિ) કલ્કલ
 શબ્દ સે યુક્ત ઁસે દ્રવીભૂત હુષ્ રાંગ ઔર સીસે આદિ સે ભરી હુઈ વૈત-
 રણી નામ કી નદી મે, (કલચવાલુયા) અત્યતતસ હોને કે કારણ કદ-
 મ્બપુષ્પ કે સમાન રક્ત વર્ણવાલી વાલુકા સે યુક્ત નદી મેં, (જલિયગુહ)
 પ્રજ્વલિત અગ્નિમયી કન્દરાઓં મેં, (નિરુમળ) રોક દેતે હૈં । (ઉસિ-
 ણોસિણકટકટ્કલ્લદુગ્ગમરહજોયણતત્તલોહમગ્ગમણચાહ્ણાણિ) (ઉસિ-
 ણોસિણ) અત્યત ઉષ્ણ, (કટકટ્કલ્લ) સુતીક્ષ્ણકટકોં સે આકીર્ણ, તથા
 (દુગ્ગમ) દુર્ગમ—મુઢિકલ ચીચા જા સકે ઁસે (રહજોયણ) રથ મેં ડન
 નારકિયોં કો ચૈલોં કી તરહ જોત દેતે હૈ । (તત્તલોહમગ્ગમણ) તસ

પ્રસ્તરૈમા, “સૂઢતલ” અણીવાળો લાગ ઉર્ધ્વ’ સ્થિતિમા હોય એવી સેયેથી
 યુક્ત ભૂમિ પર, “ચ્વારવાયિ” ખારા જળથી ભરેલી વાવેમા, “કલ્કલતવેયરણિ”
 ખળ ખળ અવાજથી યુક્ત ઓગાળેલા ડહીર, સીસુ આદિના રસથી ભરેલ
 વૈતરણી નામની નદીમા, “કલચવાલુયા” અતિશય તપેલી હોવાથી ડહા પુષ્પના
 સમાન રક્તવર્ણી રેતીથી યુક્ત નદીમા, “જલિયગુહ” પ્રજ્વલિત અગ્નિવાળી કદ-
 શઓમા “નિરુમળ” શેકી દે છે “ઉસિણોસિણકટકટ્કલ્લદુગ્ગમરહજોયણતત્તલોહ
 મગ્ગમણચાહ્ણાણિ” “ઉસિણોસિણ” અતિશય ઉષ્ણ “કટકટ્કલ્લ” અતિ તીક્ષ્ણ
 કાટાથી ઢવાયેલ, તથા “દુગ્ગમ” દુર્ગમ—મુઢકેલીથી ખેચી ચડાયેલ તેવા “રહજો
 યણ” રથ સાથે તે નારકીઓને ખળદોની જેમ બેડે છે “તત્તલોહમગ્ગમણ”

યાતનાવિષયે આયુષ્યપ્રકારાદ—‘ હમેહિ ’ इत्यादि—

મૂલમ્—હમેહિં વિવિહેહિં આઝહેહિ કિં તે ? મુગ્ગરમુસુંદિ-
કરકચ-સત્તિં-હલ-ગચ મુસલ-ચક્ક-કોંત તોમર સૂલ-લઝલ-ભિહિ-
પાલ સઘલ પદિસ-ચમ્મેટ્ટ-દુહણ મુટ્ટિય-અસિં ખેટગ ચ્ચગ્ગ-ચાવ-
નારાય કણક-કપ્પિણિ વાસિપરસુ-ટંક તિક્ક-નિમ્મલેહિ અણ્ણેહિ
ય એવમાણ્ણહિ અસુહેહિ વેઝઘ્ઘિણ્ણિં પહરણસણ્ણિં અણ્ણવદ્ધતિ-
વ્વવેરા પરોપ્પરં વેચણ ઝર્ઝરંતિ અભિહણંતા ॥ સૂ ૩૩ ॥

ટીકા—‘ હમેહિં ’ એમિઃ વક્ષ્યમાણૈઃ ‘ વિવિહેહિં ’ વિવિધૈઃ=અનેકપ્રકારૈઃ
‘ આઝહેહિં ’ આયુષ્યૈઃ=શસ્ત્રૈઃ પરસ્પર યાતનામ્ ડરીયન્તીત્યગ્રેણ સમ્બન્ધઃ । ‘ કિં તે ’
કાનિ તાનિ આયુધાનિ ? इत्याह—‘ મુગ્ગર ’ મુદ્ગરઃ મસિદ્ધઃ ‘ મુસુદિ ’ શસ્ત્ર
લોહમય માર્ગ કે ઉપર ઉન્હેં ચલાતે હૈં ઓર ફિર (વાહનાણિ) ઉનસે
શક્તિ સે ખી અધિક ભાર કો વહન કરાતે હૈં ॥સૂ. ૩૨ ॥

અય સૂત્રકાર યાતના કે વિષય મેં આયુધોં કે પ્રકારોં કો કહતે
હૈં—‘ હમેહિં વિવિહેહિં ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(હમેહિં)इन वक्ष्यमाण (विविहेहिं) अनेक प्रकारके (आउहेहिं)
आयुधों-शस्त्रों से वे नारकी परस्पर में यातना (वेदना) को उत्पन्न
करते हैं । इस प्रकार से यहां संबंध घटित कर लेना चाहिये—(किं ते)
वे आयुध कौन २ से हैं ? सो उन्हें प्रकट करते हैं—(मुग्गर) मुद्गर
(मुसुदि) मुसुदि-शस्त्र विशेष (करकच) क्रकच-करोंत (सत्ति)

તપાવેલા લોહના માર્ગ ઉપર તેમને ચલાવે છે અને વળી “વાહનાણિ” તેમની
શક્તિ કરતા પણ વધારે બોલે તેમની પાસે ઉપડાવે છે ॥ સૂ ૩૨ ॥

હવે સૂત્રકાર યાતનાઓ આપવા માટે ઉપયોગમાં લેવાતા આયુધોનું
વર્ણન કરે છે—“હમેહિં વિવિહેહિં” इत्यादि

“હમેહિં વિવિહેહિં” નીચે દર્શાવવામાં આવેલા અનેક પ્રકારના “આઝહેહિં”
આયુધો-શસ્ત્રો વડે તે નારકીઓ પરસ્પરમાં યાતના “વેદના” ઉત્પન્ન કરે છે,
એ પ્રકારનો સંબંધ અહીં સમજી લેવાનો છે

“કિં તે ? ” તે આયુધો કયા કયા છે ? તે સૂત્રકાર તે આયુધો બતાવે છે—
“મગ્ગર” મગદળ, “મુસુદિ” મુસદ્દી નામનું શસ્ત્ર, “કરકચ” કંઠ્ય-કંરવત,

‘જત પત્થર’ યન્ત્ર પ્રસ્તરા = ધરદ્વાદયઃ ‘સૂહતલ’ સુચીતલ = ઝર્ગમુસપ્તચીમય
 ભૂમિભાગઃ, ‘ચારવાચિ’ ચારવાચ્ય = ચારજલસમૃતચાપિકાઃ, ‘કલકલતવેય-
 રણિ’ કલકલાયમાનવૈતરણી = કલકલશદાયમાનપ્રવત્સપ્તપુસીસકાદિપૂર્ણ
 વૈતરણી નામધેયા નદી, ‘કલપચાલુયા’ કદમ્બચાલુકા = અસિસન્તપ્તચાત્કદમ્બ
 પુષ્પચદ્ રક્તચાલુકામયી નદી, ‘જલિયગુહ’ જ્વલિતગુહા = પ્રજ્વલિતાગ્નિમયી
 કન્દરા, इत्येतेषा द्वन्द्वः, તેપુ અસિવનાદિપુ ‘નિરુમ્બ’ નિરોધનમ્, તથા—
 ‘ઉસિણોસિણકટફલ્લુદુગ્ગમરહજોયણતત્તલોહમગ્ગમણવાહનાણિ’ ઉપ્પાણકષ્ટકા-
 કીર્ણદુર્ગમરથયોજન તત્તલોહમાર્ગગમનવાહનાણિ = ઉપ્પાદપ્યુષ્ણ ઇત્યુષ્ણોષ્ણઃ = અત્યુષ્ણ
 કષ્ટકૈઃ = સુતીક્ષ્ણકીલકૈરાકીર્ણો = વ્યાપ્તો દુર્ગમઃ = દુઃસ્થેણ ગમઃ = ગમન યસ્ય સ
 તથા, દુર્ગમથ ચો રથઃ તસ્મિન્ યોજન = સયોજન ઘલીપર્દાનામેવેતિ તત્તથા,
 તત્ત્વ, તત્તલોહમયમાર્ગે ગમન = નયન વાહન = ભારોદ્વાહન ચેતિ તથા તાનિ ॥મૂં ૩૨॥

તીક્ષ્ણ અગ્રભાગવાલે દર્શ્ય વિશેષોં કે વન મેં (જતપત્થર) યન્ત્ર પ્રસ્તરોં મેં
 (સૂહતલ) ઉર્ધ્વ મુખવાલી સૂહર્યોં સે યુક્ત ભૂમિભાગ મેં, (ચારવાચિ)
 ચારે જલ સે પરિપૂર્ણ હુઈ વાવડિયોં મે, (કલકલતવેયરણિ) કલકલ
 શબ્દ સે યુક્ત એસે દ્રવીભૂત હુપ રાગ ઓર સીસે આદિ સે ભરી હુઈ વૈત-
 રણી નામ કી નદી મે, (કલપચાલુયા) અત્યતત્ત્વ હોને કે કારણ કદ-
 મ્બપુષ્પ કે સમાન રક્ત વર્ણવાલી ચાલુકા સે યુક્ત નદી મેં, (જલિયગુહ)
 પ્રજ્વલિત અગ્નિમયી કન્દરાઓં મે, (નિરુમ્બ) રોક દેતે હેં । (ઉસિ-
 ણોસિણકટફલ્લુદુગ્ગમરહજોયણતત્તલોહમગ્ગમણવાહનાણિ) (ઉસિ-
 ણોસિણ) અત્યત ઉષ્ણ, (કટફલ્લુ) સુતીક્ષ્ણકટકોં સે આકીર્ણ, તથા
 (દુગ્ગમ) દુર્ગમ-મુશ્કિલ સ્વીચા જા સકે એસે (રહજોયણ) રથ મેં ઉન
 નારકિયોં કોં બૈલોં કી તરહ જોત દેતે હૈ । (તત્તલોહમગ્ગમણ) તત્ત

પ્રસ્તરોંમા, “સૂહતલ” અણીવાળો ભાગ ઉર્ધ્વ સ્થિતિમા હોય એવી સોચોથી
 યુક્ત ભૂમિ પર, “ચારવાચિ” ચારા જળથી ભરેલી વાવોંમા, “કલકલતવેયરણિ”
 ખળ ખળ અવાજથી યુક્ત ઓગાળેલા કથીર, સીસુ આદિના રસથી ભરેલ
 વૈતરણી નામની નદીમા, “કલપચાલુયા” અતિશય તપેલી હોવાથી કદમ્બ પુષ્પના
 સમાન રક્તવર્ણી રેતીથી યુક્ત નદીમા, “જલિયગુહ” પ્રજ્વલિત અગ્નિવાળી કદ-
 શાઓંમા “નિરુમ્બ” શેકી દે છે “ઉસિણોસિણકટફલ્લુદુગ્ગમરહજોયણતત્તલોહ
 મગ્ગમણવાહનાણિ” “ઉસિણોસિણ” અતિશય ઉષ્ણ, “કટફલ્લુ” અતિ તીક્ષ્ણ
 કાટાથી છવાયેલ, તથા “દુગ્ગમ” દુર્ગમ-મુશ્કેલીથી જેથી શકાય તેવા “રહજો
 યણ” રથ સાથે તે નારકીઓંને ખળદોંની જેમ બોડે છે “તત્તલોહમગ્ગમણ”

ટક્કતીક્ષ્ણાઃ=અગ્રતીક્ષ્ણાઃ લાળોત્તેજિતત્વાન્, 'નિમ્મલ' નિર્મલાશ્ર-જાજ્વલ્ય-
માનઃ, इत्येभिः । 'अणोहि य' अन्यथ 'एवमाहर्हि' एवमादिभिः 'अमु-
हेहि' अमुखैः=परमदुःखोत्पादकैः 'वेउच्चिहर्हि' वैक्रियकैः=वैक्रियशक्तिमम्पा-
दितैः 'पहरणसर्हि' प्रहरणशक्तैः=अनेकशक्तैः 'परोप्पर' परस्परम्=अन्योन्यम्,
'अभिहणता' अभि-नन्तः 'अणुबद्धतिव्वेरा' अनुबद्धतीव्रैरा=पूर्वभवे हिंसा-
दिभिरनुबद्ध तीव्र वैरैस्ते तथा=उद्धरैરાનુबन्धि-कर्माण नारकाः, 'वेयण' वेदना
=पीडाम् 'उईरति' उदीरयन्ति=समुत्पादयन्ति ॥ सू० ૩૩ ॥

પરસ્પરં વેદનામુદીરયન્તો નારકાઃ કીડશા ભવન્તિ ? इत्याह—'तत्थय
मोगार' इत्यादि ।

મૂલ્પ-તત્થ ય મોગર પહારચુણિય-મુસઢિ સંભગ્ગસહિત-
દેહા જંતોવપીલણફુરત્તકપ્પિયા કેહત્થ સચમ્મગા વિગત્તા
ણિમ્મૂલ્લહ્ણણિયકણ્ણોટ્ટ ણાસિયા છિણ્ણહત્થપાયા ॥સૂ૦૩૪॥

ટીકા—'તત્થ ય' તત્ત્વ ચ નરકે 'મોગરપહારચુણિય મુસઢિ-સંભગ્ગ-
મહિયવેહા' મુદ્રપ્રહારચૂર્ણિત-મુમણ્ઠિ સમગ્નમયિત-દેહાઃ = મુદ્રારાણા પ્રહારૈઃ=

કુઠાર-કુલ્હાડી (ટકતિક્ષ્ણ) જે નવ શાળ પર ઉત્તેજિત ક્રિયે હુણ
હોને સે ઘટુત અધિક અગ્રભાગ મેં તીક્ષ્ણ હોતે હું, ઔર (નિમ્મલા)
ચરચમાતે હું સો ઢન શસ્ત્રોં સે, તયા (અણોહિં એવમાહર્હિં) હનસે
મિત્ર ઔર ખી (અમુહેહિં) પર હુ સ્વોત્પાદક તયા (વેઉચ્ચિહર્હિં) વૈક્રિય
શક્તિ સે સમ્પાદિત (પહરણસર્હિં) સૈફડોં શસ્ત્રોં સે (પરોપ્પર) પર-
સ્પર મેં એક દૂસરે કો (અભિહણતા) મારતે હુણ વે (અણુબદ્ધતિવ્વેરા)
પૂર્વભવ મેં હિંસાદિ પાપો દ્વારા અણુબદ્ધ તીવ્ર વૈર ચાલે નારકી (વેયણ)
વેદના-પીડા કો (ઉઈરતિ) ઉત્પન્ન કરતે હૈ ॥ સૂ ૩૩ ॥

પરસ્પર મેં તીવ્ર વેદના કો ઉત્પન્ન કરતે હુણ વે નારકી કૈસે હોજાતે

“પરસુ” કુહાડી, “ટકતિક્ષ્ણ” એ બધા શસ્ત્રો સરાણુ પર સળવેલા હોવાને
કારણે તેમની ધાર તથા અણુ ઘણી તીક્ષ્ણ હોય છે, અને તે “નિમ્મલા”
ચળકતા હોય છે એ પ્રકારના શસ્ત્રોથી તથા “અણોહિં એવ માહર્હા” તે
ઉપરાત ધીબ પણુ “અમુહેહિં” અન્યને હુ બદાયડ તથા “વેઉચ્ચિહા”
વૈક્રિય શક્તિથી યુક્ત “પહરણસર્હિં” સડો ગત્રોથી “પરોપ્પર” એક બીજાને
“અભિહણતા” મારતા, “અણુબદ્ધતિવ્વેરા” પૂર્વભવમા હિંસાદી પાપો દ્વારા તીવ્ર
વેરથી યુક્ત, નારકી હોવો “વેયણ,, પરસ્પરમા વેદના “ઉઈરતિ” ઉત્પન્ન કરે છે
પરસ્પર વેદના તીવ્ર વેદના ઉત્પન્ન કરતા કરતા તે નારકી હોવો કેવા થઈ

विशेषः 'करकय' करकचं=परपत्र 'करयत' इति भाषा प्रसिद्ध, 'सत्ति' शक्तिः
 =त्रिशूल 'हल' प्रसिद्ध, 'गय' गदा=प्रसिद्धा, 'मुसल' प्रसिद्धमेव 'चक्र'
 चक्र=शस्त्रविशेषो रथाङ्गकारः 'कोत' कुन्तः 'भाला' इति भाषाप्रसिद्धः,
 'तोमर' तोमरः 'गुरजर' इति प्रसिद्धः 'सूल' शूल सुतीक्ष्णलोहकण्टकमय
 शस्त्रविशेष प्रसिद्धः, 'लउल' लकुटः - यष्टिः, 'भिडिपाल' भिण्डिपालः
 'गोफण' इति प्रसिद्धः, 'सव्वल' शर्वलः- 'वरडी' इति प्रसिद्धः, 'पट्टिस'
 पट्टिश शस्त्रविशेषः, 'चम्मेट्ट' चर्मेट्टः=चर्मवेष्टितपाषाणमयशस्त्रविशेष, 'दुहण'
 द्रुघणः=मुद्गरविशेषः 'मुट्टिय' मुष्टिकः- 'घण' इति प्रसिद्धः, 'असि' लघु-
 खड्गः, 'खेटक' खेटकः=शस्त्रमहारोधशस्त्रविशेषः, 'ढाल' इति भाषा
 प्रसिद्धः, 'खड्ग' खड्गः=सुतीक्ष्णदीर्घाकारोऽसिरेव 'चाव' चापः=धनुः 'नाराय'
 नाराचः=लोहमयबाणः, 'कणक' कणकः=बाणविशेषः 'कप्पिणि' कल्पनी=कर्त्तरिका
 'कैची' इति भाषा प्रसिद्धा, 'वासि' वासी=तक्षणशस्त्रविशेषः 'वसुला' इति
 भाषा प्रसिद्धा, 'परसु' परशुः=कुठारः, एषा द्वन्द्वः, ते च ते 'टक तिवल'
 शक्ति-त्रिशूल, (हल) हल (गय) गदा (मुसल) मुसल, (चक्र)
 चक्र-रथाङ्ग के आकार शस्त्र विशेष, (कोत) भाला, (तोमर) तोमर-
 गुरजर, (सूल) अत्यततीक्ष्ण धारवाले लोहे के कांटो वाला शस्त्रविशेष,
 (लउल) लकड़ी-लाठी (भिडिपाल) गोफण, (सव्वल) वरडी,
 (पट्टिस) पट्टिश, इस नाम का शस्त्रविशेष, (चम्मेट्ट) चर्मवेष्टितपाषा-
 णमयशस्त्रविशेष, (दुहण) द्रुघण-एक जाति का मुद्गरविशेष, (मुट्टिय)
 मुष्टिक-घण-जिस पर रखकर लोहार लोहे को कूटते हैं, (असि) तल-
 वार (खेटक) ढाल, (खड्ग) सुतीक्ष्ण एव दीर्घ आकार युक्त तलवार
 बड़ी तलवार, (चाव) धनुष, (नाराय) लोहमय बाण, (कणक) एक
 प्रकार का बाण, (कप्पिणि) कर्त्तरिका-कैची, (वासि) वसुला (परसु)

"सत्ति" शक्ति-त्रिशूल, "हल" हल, "गय" गदा, "मुसल" मुसल-सांकेतिक,
 "चक्र" चक्र-रथना चैडाना आकारनु ओके शस्त्र, "कोत" भाला, "तोमर"
 तोमर-गुरजर, "सूल" अत्यत तीक्ष्ण धारवाला ढोढाना डाटा वाला ओके शस्त्र
 "लउल" लाकडी-लाठी "भिडिपाल" गोफण, "सव्वल" वरडी, "पट्टिस" पट्टिश
 नाभनु ओके शस्त्र, "चम्मेट्ट" चर्मवेष्टित पाषाणमय शस्त्र, "दुहण" द्रुघण-ओके जातिनु भगदण, "मुट्टिय" मुष्टिक-घण, जेना पर भूडीने
 ढोढार ढोढाने टीचे छे, "असि" तलवार, "खेटक" ढाल, "खड्ग" अत्यत
 तीक्ष्ण अते लाणी तलवार-भोटी तलवार, "चाव" धनुष, "नाराय" ढोढानु
 बाण, "कणक" ओके विशिष्ट प्रकारनु बाण "कप्पिणि" कर्त्तरिका "वासि" वसुला

હજ્જન્તગત્તકુંતગ્ગભિણ્ણ-જજ્જરિયસન્વદેહા વિલોલંતિ મહીતલે
વિસૂણિયંગમંગા ॥ સૂ૦ ૩૫ ॥

ટીકા—‘તત્થ ય’ તત્ત્વ ચ ‘અભિરુચયતિક્વકોતપરસુપ્પહારફાલિય-
વાસીતચ્છિયગમગા’ અસિરુચતીક્ષ્ણકુન્ત પરશુપ્રહારપાટિત-વાસીસન્તક્ષિતાદ્ધો-
પાજ્ઞા=તત્ત્વ-અસિ:=સ્વદ્ધા, રુચ્ચ:=રુચિ ‘કરવત’ ઇતિ પ્રસિદ્ધઃ, તીક્ષ્ણકુન્ત:=
તીક્ષ્ણમહ્ત, પરશુ-કુઠારઃ, એતેષા પ્રહારૈ પાટિતાનિ = વિદારિતાનિ, તથા
વાસીભિ સન્તક્ષિતાનિ=તત્ત્વકુતાન્યદ્ધોપાજ્ઞાનિ યેષાં તે તથા, ‘કલકલમાણસ્વાર-
પરિસિત્તગાદહજ્જન્તગત્ત-કુતગ્ગભિણ્ણજજ્જરિયસન્વદેહા’ કલકલાયમાનસ્વાર-
પરિપિત્તગાદહ્યમાનગાત્રકુન્તાગ્રભિન્નજર્જરિતસર્વદેહાઃ = અત્યુત્કાલિતત્ત્વાત્કલ-
કલાયમાનેન=ક્ષારેણ=મર્જિક્ષારાદિજલેન પરિપિત્તમ્, અત્થેવ-ગાદમ્-અત્યન્ત
દહ્યમાન ગાત્ર યેષાં તે, તથા કુન્તાનામગ્રૈઃ-નિશિતગારાભિર્ભિન્નોઽત્થ એવ જર્જરિતો

ઔર भी—‘तत्थय असि इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(તત્થ ય) ડન નરકોં મેં (અસિ-રુચય-તિક્વકોત-પરસુ-
પ્પહારફાલિય વાસીતચ્છિયગમગા) અસિ-તલવાર, રુચય-રુચિ, તીક્ષ્ણ
કુન્ત-તીક્ષ્ણધાર વાલે ખાલે ઔર પરશુ-કુઠાર ડનકે પ્રહારોં સે વિદા-
રિત કિયે ગયે તથા વાદ મેં વાસી-વમૂલોં સે ડોલ ૨ કર પતલે કિયે
ગયે હેં અગ ઉપાગ જિન્હોં કે એસે (કલકલમાણસ્વારપરિસિત્તગાદ
હજ્જન્ત ગત્ત-કુતગ્ગભિણ્ણજજ્જરિયસન્વદેહા) તથા અત્યત ઉકલા
હુઆ હોને સે કલકલાયમાન મર્જિક્ષાર આદિ કે જલ સે સિચ્ચિત કિયે
ગયે હોને સે જિનકા શરીર અત્યત દહ્યમાન હો રહા હેં એસે, ખાલોં કે
અપ્રમાગ સે ભિન્ન હોને કે કારણ જિનકા સકલ શરીર ચિલકુલ જર્જ-

બળી સૂત્રકાર કહે છે કે—“તત્થ ય અસિ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“તત્થ ય” તે નરકોમાં “અસિ, રુચય, તિક્વકોત, પરસુ, પ્પહાર
ફાલિય વાસી તચ્છિયગમગા” અભિ-તલવાર, કુચય-કરવત, તીક્ષ્ણકુન્ત-તીક્ષ્ણ
આણીવાળા ભાલા અને પરશુ-કુશીના પ્રહારોથી ચીરવામાં આવેલ અને ત્યાર-
બાદ વાસલા વડે છોલી છોલીને જેમના અગ ઉપાગો પાતળા કરવામાં આવ્યા
છે તેવા, તથા “કલકલમાણસ્વારપરિસિત્તગાદ હજ્જન્ત ગત્ત-કુતગ્ગભિણ્ણજર્જરિય-
સન્વદેહા” અત્યત ઉકળેલ હોવાને કારણે ડગડગતા સાથેના આદિના પાણીનું
સિંચન કરવાના કારણે જેમના શરીર અત્યત બળી રહ્યા છે તેવા, અને
ભાલાની આણીથી વીધવાને કારણે જેમના શરીર જિલકુલ જર્જરિત થઈ ગયા છે
એવા “વિસુણિયગમગા” તથા વિવિધ પ્રકારના પ્રહારોથી જેના શરીર સૂકી ગયા

પ્રપાતૈઃ ચૂર્ણિતઃ=કુટ્ટિતઃ, મુસન્દિભિઃ=શસ્ત્રવિશેષૈઃ સમગ્નઃ=નર્જરીકૃતઃ, મથિ-
તથ્થ=કુમ્ભ્યાદૌ-દધિવદ્ ચિલોદિતઃ દેહો યેષાં તે તથા, ' જતોવપીલળફુરત-
કપ્પિયા ' યન્ત્રોપવીડન સ્ફુરત્કલ્પિતાઃ=યન્ત્રેષુ ઉપવીડનેન=સમ્મર્દનેન સ્ફુરન્તઃ
ષેપમાના કલ્પિતાઃ=કર્ત્તિતા યે તે તથા ' કેદૃથ ' કેચિદન-કેચિત્ નારકાઃ
અન્ન=નરકેષુ ' સચમ્મગા ' સર્વમન્ના=વર્મસહિતાઃ ' વિગ્તા ' વિકૃતાઃ=હેદિતાઃ
મૃત-પશુવદ્ ઉત્પાદિતર્વમશરીરાઃ, ણિમ્મૂલ્લૂણિયકળ્ણોટ્ટણાસિયા ' નિર્મૂલ્લ-
નરુર્ણોષ્ઠનાસિકાઃ=નિર્મૂલ=મૂલતઃ ઉલ્લૂનાઃ=કર્ત્તિતાઃ કર્ણો ઓષ્ઠો નાસિકા ચ
યેષાં તે તથા, ' છિન્નદૃત્યપાયા ' છિન્નદૃત્યપાદાઃ=છિન્ના દૃત્યાઃ પાદા યેષાં તે
તથા ભૂતા નારકા ભવન્તિ ॥ સૂ. ૩૪ ॥

અપિ ચ—' તથ ય અસિ ' इत्यादि—

મૂલમ્—તત્થ ય અસિ કરકય તિવ્વસ્વકોત-પરસ્સુપ્પહાર
પાલિય-વાસીસતચ્છિયગમગા કલકલમાણખારપરિસિત્તગાઢ-

हैं ? इस बात को सूत्रकार कहते हैं—' तथ य मोग्गर इत्यादि । '

टीकार्थ—(મોગ્ગરપહારચુણિય-મુસન્દિ સમગ્ન-મહિય દેહા) ઉન નરકોર્મે
સુદૂરોં કે પ્રહારોં સે ચૂર્ણિત, મુસન્દિ જાતિ કે શસ્ત્રવિશેષોં સે જર્જરીકૃત
અવ કુમ્ભી આદિ મેં દહીં કી તરહ મથિત હૈં દેહ જિન્હોં કી એસે (કેદૃથ)
કિતનેક નારકી નરકો મે (જતોવપીલળ ફુરતકપ્પિયા) યન્ત્રોં મેં સમ-
ર્દન સે કપિત હોતે હુએ કાઢ દિયે જાતે હૈં । (સચમ્મનાવિગત્તા) इनके
शरीर के उपर की चमड़ी मृतपशु की चमड़ी की तरह उसाड़ ली जाती है ।
(णिम्मूल्लूणियकण्णोट्टणासिया) मूलतः इनके ओष्ठ और नाक
काट ली जाती हैं । (छिन्न दृत्यपाया) हाथ पैर छिन्न भिन्न कर दिये
जाते हैं ॥ सू. ३४ ॥

જાત્ય છે, તે વાત સૂત્રકાર હવે બતાવે છે— “તથ મોગ્ગર ” इत्यादि
“ મોગ્ગર પહાર ચુણિય, મુસન્દિ સમગ્ન-મહિય દેહા ” તે નરકોમા મગદળોના
પ્રહારોથી ચૂર્ણિત, મુસન્દિ નામના શસ્ત્રથી જર્જરિત કરેલ અને કુલી આદિમા
દહીંની જેમ જેમના શરીર વલોવાય છે તેવા “ કેદૃથ ” ડેટલાક નારકીઓને
નરકોમા “ જતોવપીલળફુરતકપ્પિયા ” યન્ત્રોમા પીલવાની બીકે કપતા હોય
તેવી હાલતમા કાપી નાખવામા આવે છે “ સચમ્મના વિગત્તા ” તેમના શરીર
ઉપરની ચામડી મૃતપશુની ચામડીની જેમ ઉતારી લેવામા આવે છે “ ણિમ્મૂલ્લ
સ્તૂણિય કળ્ણોટ્ટણાસિયા ” તેમના હોઠ, નાક અને કાન મૂળમાથી કાપી લેવામા
આવે છે “ છિન્નદૃત્યપાયા ” હાથ અને પગ છિન્નભિન્ન કરવામા આવે છે ॥સૂ. ૩૪॥

‘સુણગ’ શ્વાનઃ ‘સિયાલ’ શૃગાલાઃ, કાકાઃ=પ્રસિદ્ધા ‘મજાર’ માર્જારા =
 વિહાલાઃ, શરમાઃ=અષ્ટાપદા ‘દીવિય’ દ્વીપિકાઃ=ચિત્રકાઃ ‘વિયગ્ધ’ વ્યાગ્રઃ
 પ્રસિદ્ધાઃ, ‘સદૂલ’ શાર્દૂલાઃ=વ્યાઘ્રવિશેષાઃ, ‘સીહ’ સિંહાઃ=કેસરિણઃ, તે ચ
 વૃકાદયઃ કીદૃશાઃ? ‘દપ્પિય’ દર્પિતા=ગર્વિતાઃ, તથા ‘સુહાભિભૂયા’ શુધા-
 ભિભૂતા=શુધાપિપાસાવ્યાકુલાસ્તૈઃ ‘ણિચ્ચકાલ’ નિત્યકાલ=સર્વદા ‘અણમિ-
 ણહિ’ અનગિતૈઃ=અમુક્તઃ ‘ઘોરાસમાણ ભીમરૂવેહિં ઘોરાઽઽરમમાનભીમરૂપૈઃ=
 ઘોરા=ભયરૂરકર્માણ પારસમાનાઃ=અતીવાક્રોશન્તોભીમરૂપાઃ=ભયાનકાકૃતયથ
 યે તે તથા તૈઃ ‘અકમિત્તા’ આક્રમ્ય=આક્રમણ કૃત્વા ‘દદદાદાગાદદક-કઢિય-
 સુતિકલનહફાલિય ઉદ્દદેહા’ દદદપ્ટ્રા ગાદદપ્ટ્રકર્પિત-સુતીક્ષ્ણનલપાટિતોર્ધ્વ

સરભ-દીવિય-વિયગ્ધ-મદૂલ-સીહ-દપ્પિય-સુહાભિભૂણહિં) (દપ્પિય)
 દર્પિત-ગર્વિત તથા (સુહાભિભૂણહિં) ભૂખ પ્યાસ સે અત્યંત વ્યાકુલ તથા
 (ણિચકાલમણસિણહિં) ઉસ સમય જિન્ટાં ને ત્રિલકુલ કુલ્લ મી નહીં
 જાયા હોતા હૈં જેસે, ઓર હસી કારણ જો (ઘોરાસમાણભીમરૂવેહિં)
 ઘોર-કૂર કર્મ કરને કે લિયે તત્પર બન ચુકે હૈં, અતઃ ચીત્કાર કરને સે
 ભીમરૂપ જિનકા રૂપ ભયરૂર બન રહા હૈં જેસે (વિગ) વૃક-ભેડિયા,
 (સુણગ) શ્વાન-કુત્તે, (સિયાલ) શૃગાલ-ગીદડ (કાક) કૌવે,
 (મજ્જાર) માર્જાર-વિલાન, (સરભ) અષ્ટાપદ, (દીવિય) દ્વીપિક-ચિત્તા,
 (વિયગ્ધ) વ્યાઘ્ર, (સદૂલ) શાર્દૂલ-વ્યાઘ્ર વિશેષ, ઓર, સિંહ इनके
 દ્વારા (અકમિત્તા) આક્રમણ કરકે (દદદાદા-ગાદદક-કઢિય-સુતિકલ
 નહફાલિય ઉદ્દદેહા) પહિલે દદદંપ્ટ્રાઓં સે હસે જાતે હૈં, પશ્ચાત્ પૃથ્વી-

વિયગ્ધ-સદૂલ-સીહ-દપ્પિય-સુહાભિભૂણહિં ” “ દપ્પિય ” દર્પિત-ગર્વિય તથા
 “ સુહાભિભૂણહિં ” ભૂખ પ્યાસથી-અત્યંત વ્યાકુળ તથા “ ણિચ્ચકાલમણસિ-
 ણહિં ” તે ઝાળે જેમને બિલકુલ ધોરાક મળ્યો હોતો નથી એવા અને એજ
 કાળે જે “ ઘોરાસમાણભીમરૂવેહિં ” ઘોર-કૂર કર્મ કરવાને માટે આતુર થયેલ
 છે, તે ઝાળે ચિત્કાર કરવાથી જેમનો દેખાવ અતિ ભયરૂર બની ગયો છે
 એવા “ વિગ ” વૃક-વરુ, ‘સુણગ’ શ્વાન-દૂતરા, ‘સિયાલ’ શિયાળ, “ કાક ”
 કાગડા, “ મજ્જાર ” માર્જાર બિલાડા, સરભ અષ્ટાપદ, “ દીવિય ” દ્વીપિક-
 ચિત્તા, “ વિયગ્ધ ” વાઘ, “ સદૂલ ” શાર્દૂલ-વિગિષ્ટ પ્રજાના વાઘ અને સિંહ
 વગેરે પ્રાણિઓ “ અકમિત્તા ” આક્રમણ કરીને “ દદદાદા-ગાદદક-કઢિય-સુતિ
 કલ-નહફાલિય ઉદ્દદેહા ” પહેલા મળ્યૂત ઝાઢે વડે તેમને બટકા ભરે છે,

સર્વદેહઃ=સકલશરીર એવા તે તથા, 'વિમૃણિયગમગા' વિશૂનિતાદ્રોષાક્ષા = વિશૂનિતાનિ=નાનાવિધપ્રદારૈઃ સજાતશોથાનિ, કલ્પકલાયમાનજલસેચનેન સમુત્પન્નસ્ફોટકાનિ વા અદ્રોષાદ્વાનિ એવા તે તથા, એવ પરમાધાર્મિકૈઃ કદર્થિતાઃ સન્તો નરકજીવા મહીતલે=ઠોરનરકભૂમીં વિલોલતિ' વિલુલન્તિ=વિલુલન્તિ ॥૨૦૩૫॥

તતઃ કિં ભવતી ? ત્યાહ—'તત્થ ય વિગ' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—તત્થ ય વિગ સુણગ-સિયાલ-કાક-મજ્જાર-સરભ-
દોવિય-વિયગ્ધ સૂલ-સીહ-દપ્પિય-સુહાભિમૂણ્ણહિ ણિચ્ચકાલમ-
ણસિણ્ણહિ ઘોરારસમાળભીમરૂંઘેહિ અક્કમિત્તા દઢદાઢા'ગાઢ-
ઢક્ક-કઢ્ઢિય સુતિક્કલ્લનહફાલિયઉદ્ધદેહા વિચ્છિપ્પ તે સમંતઓ
વિમુક્કસધિવધળા વિયંગમગા કકકુરરગિહ્ધઘોરકઢ્ઢવાયસગળેહિ
ય પુળો સ્વરથિરદઢળક્કલ-લોહતુડેહિ ઓવહ્ણિત્તા પક્કલાહયતિ-
ક્કલ્લળક્કલ્લવિકિલ્લજિલ્લભલ્લિયનયળનિલ્લઓલુગ્ગવિગતવયળા ઉક્કો-
સતા ય ઉપ્પયતા નિયડંતા ભવતા ॥ સૂ. ૩૬॥

ટીકા—તત્ર ચ 'વિગ' વૃક્ષાઃ=ઈદામૃગા 'ભેડિયા' ઇતિ પ્રસિદ્ધાઃ

રિત હો વૃક્ષા હૈ એસે (વિસૂણિયગમગા) તથા નાના પ્રકાર કે પ્રહારો
સે જિનમે સૂજન આગઈ હૈ, અથવા કલ્પકલાયમાન ક્ષાર જલ કે સિંચન
સે જિન પર ફફોલે પડ ગયે હૈ એસે અગ ઉપાગ વાલે વે નારકી જીવ
પરમાધાર્મિકોં દ્વારા કદર્થિત હોકર (મહીતલે) નરક કી કઠોર ભૂમિ
પર (વિલોલતિ) લોટતે હૈ ॥ સૂ. ૩૫ ॥

इसके बाद क्या होता है ? इस बात को सूत्रकार प्रदर्शित करते
हैं—'तत्थ य विग-सुणग' इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(તત્થ ય) ડન નરકોંમેં (વિગ-સુણગ-સિયાલ-કાક-મજ્જાર-

છે તેવા, અથવા કળાજળતા ક્ષારયુક્ત જળના સિંચનથી બેભના અગ ઉપાગો
પર ફેલાવા પડી ગયા છે એવા નારકી જીવો પરમાધાર્મિકોં દ્વારા યાતનાઓ
પામીને "મહીતલે" નરકની કઠોર ભૂમિ પર "વિલોલતિ" પડી જાય છે ॥ સૂ. ૩૫ ॥

ત્યારબાદ શું બાંધ છે તે વાત સૂત્રકાર બતાવે છે—"તત્થ ય વિગ-
સુણગ" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"તત્થ ય" તે નરકોંમા "વિગ-સુણગ-સિયાલ-કાક-મજ્જાર-સર"

‘સુળગ’ શ્વાન: ‘સિયાલ’ શૃગાલા:, કાકા:=પ્રસિદ્ધા ‘મજ્જાર’ માર્જારા =
 મિઢાલા:, ગરમા:=અષ્ટાપદા ‘દીવિય’ દ્વીપિકા:=ચિત્તા: ‘વિયગ્ધ’ વ્યાગ્રા:
 પ્રસિદ્ધા:, ‘સદૂલ’ શાર્દૂલા:=વ્યાગ્રવિશેષા:, ‘સીહ’ મિહા:=કેસરિણ:, તે ચ
 વૃકાદય: કીદશા: ? ‘દપ્પિય’ દર્પિતા =ગર્વિતા:, તથા ‘સુહાભિભૂયા’ ક્ષુધા
 ભિભૂતા =ક્ષુધાપિપાસાવ્યાકુલસ્તૈ: ‘ગિચ્ચકાલ’ નિત્યકાલ=સર્વદા ‘અણમિ-
 ણ્હિ’ અનગિતૈ:=અમુક્તૈ: ‘ઘોરાસમાણ ભીમરૂવેહિ’ ઘોરાSSરસમાનભીમરૂપૈ:=
 ઘોરા =મયરુરુર્માણ આરસમાના:=અતીવાક્રોગન્તોભીમરૂપા:=મયાનમકૃતયથ
 યે તે તથા તૈ: ‘અકમિત્તા’ આક્રમ્ય=આક્રમણ કૃત્વા ‘દદદાદાગાઢડક-કઢિય-
 સુતિવલ્લનહફાલિય ઉદ્વદેહા’ દદદપ્ટ્રા ગાઢદંપ્ટ્રરૂપિત-સુતીક્ષ્ણનલપાટિતોર્ધ્વ

સરભ-દીવિય-વિયગ્ધ-સદૂલ-સીહ-દપ્પિય-સુહાભિભૂણ્હિ) (દપ્પિય)
 દર્પિત-ગર્વિત તથા (સુહાભિભૂણ્હિ) ભૂખ પ્યાસ સે અત્યંત વ્યાકુલ તથા
 (ગિચ્ચકાલમણસિણ્હિ) ઉસ સમય જિન્હાં ને ત્રિલકુલ કુઝ મી નહીં
 જાયા હોતા હૈં એસે, ઓર હસી કારણ જો (ઘોરાસમાણભીમરૂવેહિ)
 ઘોર-કૂર કર્મ કરને કે લિયે તત્પર ઝન જુકે હૈં, અતઃ ચીત્કાર કરને સે
 ભીમરૂપ જિનકા રૂપ મયકર ઘન રહા હૈં એસે (વિગ) વૃક-ભેડિયા,
 (સુળગ) શ્વાન-કુત્તે, (સિયાલ) શૃગાલ-ગીદઢ (કાક) કૌબે,
 (મજ્જાર) માર્જાર-વિલાન, (સરભ) અષ્ટાપદ, (દીવિય) દ્વીપિક-ચિત્તા,
 (વિયગ્ધ) વ્યાગ્ર, (સદૂલ) શાર્દૂલ-વ્યાગ્ર વિશેષ, ઓર, સિંહ इनके
 દ્વારા (અકમિત્તા) આક્રમણ કરકે (દદદાદા-ગાઢડક-કઢિય-સુતિવલ્લ-
 નહફાલિય ઉદ્વદેહા) પહિલે દદદપ્ટ્રાઓ સે હસે જાતે હેં, પશ્ચાત્ પૃથ્વી-

વિયગ્ધ-સદૂલ-સીહ-દપ્પિય-સુહાભિભૂણ્હિ ” “ દપ્પિય ” દર્પિત-ગર્વિત તથા
 “ સુહાભિભૂણ્હિ ” ભૂખ પ્યાસથી-અત્યંત વ્યાકુલ તથા “ગિચ્ચકાલમણસિ-
 ણ્હિ” તે કાળે જેમને ત્રિલકુલ ધોરાડ મળ્યો હોતો નથી એવા અને એજ
 કારણે જે “ઘોરાસમાણભીમરૂવેહિ” ઘોર-કૂર કર્મ કરવાને માટે આતુર થયેલ
 છે, તે કારણે ચિત્કાર કરવાથી જેમનો દેખાવ અતિ ભયકર બની ગયો છે
 એવા “વિગ” વૃક-વરુ, “સુળગ” શ્વાન-હૂતગ, “સિયાલ” શિયાળ, “કાક”
 કાગડા, “મજ્જાર” માર્જાર તિલાડા, સરભ અષ્ટાપદ, “દીવિય” દ્વીપિક-
 ચિત્તા, “વિયગ્ધ” વાઘ, “સદૂલ” શાર્દૂલ-વિગિષ્ટ પ્રકારના વાઘ, અને સિંહ
 વગેરે પ્રાણિઓ “અકમિત્તા” આક્રમણ કરીને “દદદાદા-ગાઢડક-કઢિય-સુતિ
 વલ્લ-નહફાલિય ઉદ્વદેહા” પડેલા મળખૂત કાઢો વડે તેમને ખટકા ભરે છે,

દેહાઃ=દૃઢાભિર્દંટ્રાભિઃ ગાઢમ્=અત્યન્ત ' ડક ' દટાઃ, કર્પિતા =પૃથ્વીતલે સ્તતઃ સમાકૃષ્ટાથ યે તે, તથા સુતીક્ષ્ણનચૈઃ પાટિતાઃ=દ્વિધા કૃતાઃ ઝર્વદેહાઃ ઊર્ધ્વશરીરાણિ યેષા તે તથા, અત એવ- ' વિમુક્તસધિવધના ' વિમુક્તસન્ધિવન્ધનાઃ =વિમુક્તાનિ=શિથિલીકૃતાનિ સન્ધીના=અદ્રસધાનસ્થાનાનાં વન્ધનાનિ યેષા તે તથા, ' વિયગમગા ' વ્યગ્નાદ્વાઃ=વ્યગ્નાનિ=લ્પિડતાનિ અગ્નાનિ=કુરચરણકર્ણનાસિકાદીનિ યેષા તે તથા, એવમ્ભૂતા નરકજીનાઃ પરમાધાર્મિકૈઃ ' સમતઓ ' સમન્તતઃ=ચતુર્દિશુ ગગને ' વિચ્છિપ્પતે ' વિસ્થિપ્યન્તે = કાકબલિત્પ્રસ્થિપ્યન્તે, ' પુણો ય ' પુનશ્ચ-પ્રસેપણાનન્તર તે નારકાઃ ' કક-કુર-ગિદ્ધયોરકટ્ઢવાયસ ગણેર્હિ ' કકકુરરગિદ્ધયોરકટ્ઢવાયસગણૈઃ = કકઢાઃ-કુરરાઃ પક્ષિવિશેષાઃ ગૃધ્રાઃ= પ્રસિદ્ધાઃ, યોરકટ્ઢવાયસા =યોરકટ્ઢા =અસહ્યવલેશકારકા યે વાયસાઃ=કાકાસ્તે તથા તેષા ગણૈઃ=સમૂહૈઃ, કીદ્ઢૈસ્તૈઃ ? इत्याह—' खरथिरदढणक्खलोहत्तुडेहि ' खरस्थिरदढनखलोहत्तुण्डैः=खराः=तीक्ष्णाः स्थिराः-निश्चलाः दढाः=कठोरवस्तु-

તલપર ઇધર સે ઉધર રેંચે જાતે હૈ-ઘસીટે જાતે હૈ, તથા સુતીક્ષ્ણ નચૌં કે પ્રહારોંસે ડનકે ઉર્ધ્વ શરીર કો દો ટુકડેં કર દિયે જાતે હૈં । ઇસ કારણ (વિમુક્તસધિવધના) ડનકે સધિયોં કે વધન ઘિલકુલ ઢીલે હો જાતે હૈં । (વિયગમગા) વહા નારકિયોં કે કર, ચરણ, કર્ણ, નાસિકા આદિ અગોં કો લ્પિત કર દિયા જાતા હૈં ઓર (સમતઓ વિચ્છિપ્પતે) જિસ પ્રકાર કાકબલિ દિશાઓં મે ફેંક દી જાતી હૈં વે વિચારે નારકી ઓ ઇસી તરહ સે આકાશ મે ઇધર ઉધર દિશાઓં મે ફેંક દિયે જાતે હૈં । (પુણોય) ફિર પશ્ચાત્ (કકકુરરગિદ્ધયોરકટ્ઢવાયસગણેર્હિ) કક, કુરર, ગૃધ્ર ઓર અસહ્ય વલેશ કારક વાયસોં-કોઓ કા સમૂહ કિ (ખરથિરદઢ ણક્ખલોહત્તુડેર્હિ) જિનકે નચતીક્ષ્ણ, સ્થિર કઠોર વસ્તુ કે વિદારણ

પછી જમીન ઉપર તેમને આમ તેમ ખેંચે છે-ઘસડે છે, તથા અતિશય તીક્ષ્ણ નખ લાશવીને તેમના ઉર્ધ્વ શરીરના બે ટુકડા ડરી નાખે છે તે કારણે " વિમુક્તસધિવધના " તેમના સાધાઓના બધન તદ્દન ઢીલા થઈ જાય છે " વિયગમગા " ત્યાં નારકીઓના હાથ, પગ, કાન, નાક આદિ અંગોનું બંડન કરવામાં આવે છે અને " સમતઓ વિચ્છિપ્પતે " જેમ કાકબલિને ચારે દિશામાં ફેંકવામાં આવે છે તેમ તે બિચારા નારકીઓને પણ આકાશમાં આમ તેમ ફેંકવામાં આવે છે " પુણોય " ત્યાર બાદ ' કકકુરરગિદ્ધયોરકટ્ઢવાયસગણેર્હિ ' કક, કુરર ગીધ, અને અસહ્ય યાતનાઓ ઢેનારા કાકડાઓના સમૂહ, " ખરથિરદઢ ણક્ખલોહત્તુડેર્હિ " કે જેમના તીક્ષ્ણ નખ કઠણ વસ્તુઓને

ષ્ટેદનેऽપિ અમ્ભનાઃ નચા ચેપા તે તથા તે ચ તે લોહતુણ્ડાઃ=લોહવત્કઠોરચન્ચુ-
કાથ, તૈઃ ‘ઓવૃત્તા’ અપત્ય=અન્તરાલ એ આક્રમ્ય ‘પક્ષ્વાહ્યતિક્ષણક્ષ
વિકિન્ન જિવ્મચ્છિત્તનયણનિદ્ઓલુગ્ગવિગયવયણા’ પક્ષાદતતીક્ષ્ણનચવિક્ષિપ્ત
જિહ્વાક્ષિપ્તનયનનિર્દયામગ્નવિકૃતવદનાઃ=‘પક્ષ્વાહ્ય’ પક્ષાહતાઃ=પક્ષૈરાહતાઃ=
તાહિતાઃ તીર્ણોર્નેત્રવિક્ષિપ્તાઃ=આકૃષ્ટા મુલાદ્દર્શિર્નિષ્કાશિતા જિહ્વાઃ ચેપા તે તથા,
આક્ષિપ્તે=અદિષ્ઠતે નયને ચેપા તે તથા, અતએવ નિર્દય યથાસ્પાત્તથા અવરગ્ન=મગ્ન
વિકૃત વિરુપી કૃત ચ વદન ચેપા તે તથા, તતઃ સર્વેપાં કર્મધારયઃ, ઉક્ષોસતા ‘
ઉત્કોશન્તઃ=હા હા શબ્દૈરાક્રુન્દ કુર્વન્ત ‘ઉપ્પયતા’ ઉત્પતન્તઃ=પરમવેદનાભિર્ટ-
શ્ચિરદદ્ધરુપિયદ્ ગગને ઉચ્છલન્તઃ ‘નિવડતા’ નિપતન્તઃ=પૃથિવ્યા લુઠન્તઃ,
‘મમતા’ મ્રમન્ત =ઉત્તસ્તતઃ પલાયમાનાઃ દુઃખમનુભવન્તિ ॥ ૩૬ ॥

કરને પર મી-વૈસે હી ઘને રહતે હૈં-નહી દૂટતે હૈં તથા ચોંચે જિનકી
લોહ કે જૈસી કઠોર હોતી હૈં, વે ઉન્હૈં (ઓવૃત્તા) નીચ હી મૈં પકડકર
(પક્ષ્વાહ્ય - તિક્ષ્ણસ્ત્રવિકિન્નજિવ્મચ્છિયનયણનિદ્ઓલુગ્ગવિગત-
વયણા) અપની પાલ્લોં સે આહત કરતે હૈં, તીક્ષ્ણ નલ્લોં સે ડનકી જીમ
કો ડનકે મુલ્લ સે બાહિર નિકાલ લેતે હૈં ઓર ડોનોં આલ્લોં કો મી બાહિર
કાઢ લેતે હૈં । હસ તરહ નિર્દયતાપૂર્વક વિરુપરુપ વાલે યનાયે ગયે વે પાપ-
કારી નારકજીવ (ઉક્ષોસતા ય) હાય હાય શબ્દ કરતે હુએ (ઉપ્પયતો)
વિચ્છુ સે કાટે ગયે વદર કી તરહ અત્યત વેદનાઓં સે આકાશ મે ડપર
કો ઉછલતે હૈં ઓર ફિર (નિવડતા) નીચે ગિરતે હૈં । (મમતા) ગિર
કર ફિર હધર ડધર માગતે હુએ દુઃલ્લોં કા અનુભવ કરતે હૈં ॥સૂ. ૩૬ ॥

પણુ એવાને એવા જ રહે છે-તૂટતા નથી તથા જેમની આથ લોહના જેવી
કઠણ હોય છે, એવા તે પક્ષીઓ તેમને “ઓવૃત્તા” વચ્ચે જ પકડીને
“પક્ષ્વાહ્ય-તિક્ષ્ણસ્ત્રવિકિન્નજિવ્મચ્છિયનયણનિદ્ઓલુગ્ગવિગતવયણા” પોતાની
પાખો વરે મારે છે, તીક્ષ્ણ નજોની મદદથી તેમની જીભને તેમના
મુખમાથી બહાર ખેંચી કાઢે છે અને બન્ને આખોને પણ બહાર કાઢી નાખે છે આ
રીતે નિર્દયતાથી બેડાળ બનાવવામા આવેલા તે પાપકારી નારકી જીવો “ઉક્ષો-
સતા ય” હાય ! હાય ! કરતા “ઉપ્પયતો” વીંછીએ ડખ માર્યો હોય ત્યારે
ફૂદાફૂદ કરતા વાનરાની જેમ, અત્યત વેદનાથી બ્યાકુળ થઈને આકાશમા ઉંપ
રની બાબુ ઉછળે છે, અને “નિવડતા” વળી પાછા નીચે પડે છે “મમેતા”
નીચે પડીને વળી આમ તેમ નાસ-લાગ કરતા તેઓ દુ ખો અનુભવે છે ॥સૂ. ૩૬॥

‘આઠકલ્પણ’ ‘આયુઃ ક્ષયેણ=નરકભયાયુષ્યક્ષયેણ ‘ઉઠ્ઠિયા સમાણા’ ઉદ્ઘૃતા નિસ્સૃતાઃ સન્તઃ ‘વહ્વે’ વહ્વઃ કતિપયા નરકજીયાઃ ‘તિરિયવસર્હિ’ તિર્ય-
ગ્વસર્તિ=તિર્યગ્યોનિ ગચ્છન્તિ=પ્રાપ્નુન્તિ, યતો નરમાન્નિઃસૃતા અત્પા એવ મનુ-
ષ્યેષ્ટપદ્યન્તે । કીદશી તિર્યગ્યોનિમ્ ? ક્ત્યાદ્—‘દુક્ષુત્તર’ દુઃસ્વોત્તરાં=દુઃસ્વ-
પ્રકર્ષામ્ અનન્તોત્સર્પિણ્યવસર્પિણી કાયસ્થિતિમ્ત્વાત્તસ્યાઃ, અત એ ‘સુદારુણ’
સુદારુણા=મીપણા નાનાદુઃસ્વનિધાનત્વાત્, ‘જન્મણમરણજરાવાહિપરિયટ્ટનારહટ્ટ’
જન્મમરણજરાવ્યાધિપરિવર્તનારઘટ્ટા=જન્મ-મરણ જરા વ્યાધીના પરિવર્તનૈઃ=પુનઃ
પ્રાપ્તૈ અરઘટ્ટ ઇવ=જલચન્દ્ર વિશેષ ઇતિ યા સા તથા તા ‘જલથલગ્વહયરપરો-
પ્પરવિહિસણપવચ’ જલ સ્થલ ચલચર પરસ્પર વિહિસનપવચ્ચા=જલચર-સ્થલચર

અશાતાવેદનીયરૂપ દુઃસ્વોં કો (અણુભવિત્તા) ભોગકર (તઓ ચ) જણ
ઉસ નરક સે (આઠકલ્પણ) નરકભવસયધી આયુ કે ક્ષય હોને પર
(ઉઠ્ઠિયાસમાણા) બાહર નિકલતે હૈ તય (વહ્વે) ઉન મેં સે વહુત
સે નારક જીવ (તિરિયવસર્હિ) તિર્યચ્ચ યોનિ કો (ગચ્છતિ) પ્રાપ્ત કરતે
હૈ, ક્યોં કિ નરકો સે નિકલે હુવ વહુત થોડે જીવ હી મનુષ્યગતિ મેં
ઉત્પન્ન હોતે હૈ । વહ તિર્યચ્ચ યોનિ કૈસી હૈ ક્સ યાત કો સૂત્રકાર કહતે
હૈ કિ વહ યોનિ (દુક્ષુત્તર) અનન્ત ઉત્સર્પિણી પ્રમાણ કાય-
સ્થિતિવાલી હોને સે દુઃસ્વોં કે પ્રકર્પ સે યુક્ત હૈ । (સુદારુણ) નાના દુઃસ્વોં
જી નિધાન હોને સે સુદારુણ-ભયકર હૈ । (જન્મણ-મરણ-જરા-વાહિ
પરિયટ્ટનારહટ્ટ) જન્મ, મરણ, જરા એવ વ્યાધિયોં કી પુનઃપુનઃ પ્રાપ્તિ
હોને સે અરઘટ્ટ જૈસી હૈ । તથા (જલથલ ચલચર પરસ્પર વિહિસણપવચ)

“દુક્ષ્વાદ” અશાતા વેદનીય રૂપ દુ યો “અણુભવિત્તા” ભોગવીને “તઓ ચ”
બ્યારે તે નરકમાથી “આઠકલ્પણ” આયુષ્યનેા ક્ષય થાય છે ત્યારે “ઉઠ્ઠ
દિયાસમાણા” બહાર નીકળે છે ત્યારબાદ “વહ્વે” તેમનામાથી ઘણા ખરા
નારકી એવ “તિરિયવસર્હિ” તિર્યચ્ચ યોનિમા “ગચ્છતિ” ગતય છે, કારણ
કે નરકોમાથી નીકળેલા બહુ થોડા એવા જ મનુષ્ય ગતિ પ્રાપ્ત કરે છે તે
તિર્યચ્ચયોનિ કેવી છે તે વાત સૂત્રકાર દર્શાવે છે-તે યોનિ “દુક્ષુત્તર” અન-
ન્ત ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણી પ્રમાણ કાળ સ્થિતિવાળી હોવાને લીધે દુ યોના
પ્રકર્ષવાળી છે “સુદારુણ” વિવિધ દુ યોનુ ધામ હોવાથી ઘણી જ દારૂ-
ભય કર છે “જન્મણ-મરણ-જરા-વાહિ પરિયટ્ટનારહટ્ટ” જન્મ, મરણ, જરા
અને વ્યાધિઓની ફરી ફરીને પ્રાપ્તિ થવાને કારણે રહેટ જેવી છે તથા
“જલથલચલચર પરસ્પર વિહિસણપવચ” જેમા પરસ્પર જળચર, સ્થળ

સ્વચરાણાં પરસ્પરં પ્રિહિસનસ્ય=અનેકપ્રકારવધસ્ય પ્રપચ્ચો=વિસ્તારો યસ્યા સા
તા તથા, સમ્ભૂતા તિર્યગ્યોર્નિ ગન્ઠન્તીતિ પૂર્વેણ સમ્વન્ધ ॥ સૂ ૩૭ ॥

અય તિર્યગ્ગતિ દુઃખ વર્ણયન્નાહ—‘ ઇમ ચ ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-ઇમ ચ જગપાગડ વરાગા દુઃખ પાવેતિ દીહકાલ ।

કિં તે ? સીડણ્હ-તણ્હા खुह-વેયળ - અપ્પઈયાર-અઢવિ-
જમ્મણ-ણિચ્ચમહાઉવિગ્ગવાસ-જગ્ગણ-વહ-વધણ-તાઢણ-

કળ નિવાયળ-અઢિ ભજળ-નાસા-મેય-પ્પહાર દમળ-છવિચ્છયળ
અભિઓગપાવળ-કસકુસારાનિવાય-દમળાણિ વાહળાણિ ય ॥ સૂ ૩૮ ॥

ટીકા—‘ ઇમ ચ ’ ઇદ ચ = અનુપદવક્ષ્યમાણ ‘ જગપાગડ ’ જગત્પકટ =
સરલ્લોરુપત્યક્ષ, દુઃખમ્ = અશતવેદનીય - લક્ષણ ‘ દીહકાલ ’ દીર્ઘકાલમ્ =
અસંખ્યાતકાશ્વર્યન્ત ‘ પાવેતિ ’ પ્રાપ્નુવન્તિ, ‘ કિં તે ’ કાનિ તાનિ દુઃખાનિ,
તદાહ—‘ સીડણ્હ ’ ઇત્યાદિ—‘ સીડણ્હતણ્હાસુહવેયળ ’ શીતોષ્ણતૃષ્ણા ક્ષુધા
વેદના = શીતોષ્ણતૃષ્ણા ક્ષુધાજનિત દુઃખ, તથા ‘ અપ્પઈયારઅઢવિજમ્મણ ’

જિસ મેં પરસ્પર જલચર, સ્થલચર ઓર સ્વેચરોં કે વિવિધ પ્રકાર કે વધ
કા પ્રપચ્ચ-વિસ્તાર હૈ, એમી તિર્યગ્યોનિ કો પ્રાપ્ત કરતે હૈ ॥ સૂ ૩૭ ॥
અય સૂત્રકાર તિર્યગ્ગતિકે દુઃખોંકા વર્ણન કરતે હૈ—‘ ઇમચજગપાગડ ’ ઇત્યા.

ટીકાર્થ—(ઇમ ચ જગપાગડ) (ઇમ) અનુપદ વક્ષ્યમાણ યહ (જગપાગડ)
સકલ લોકોં કે પ્રત્યક્ષ એસે (દુઃખ) દુઃખ કો (વરાગા) વે તિર્યચ-
ગતિ કે જીવ (દીહકાલ) અનતકાલપર્યન્ત (પાવેતિ) ભોગતે હૈ
(કિં તે) વે દુઃખોં કે પ્રકાર કૌન ૨ સે હૈ ? સો કહતે હૈ-ઉસ ગતિ મેં
દુઃખોં કે યે ૨ પ્રકાર હે—(સીડણ્હ) શીત-જનિત દુઃખ, ઉષ્ણજનિત
દુઃખ, (તણ્હા) પિપાસાજનિતદુઃખ ઓર (खुह) ક્ષુધાજનિતદુઃખ, તથા

અર, અને નલચરોના વિવિધ પ્રકારના વધના પ્રપચ્ચ-વિસ્તાર છે એવી તિર્યચ
યોનિને તેઓ પ્રાપ્ત કરે છે ॥ સૂ-૩૭ ॥

હવે સૂત્રકાર તિર્યચ ગતિના હુ ખોનુ વર્ણન કરે છે “ ઇમ ચ જગપાગડ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ ઇમ ચ જગપાગડ ” “ ઇમ ” નીચે પ્રમાણેના “ જગપાગડ ” સઘળા
લોકોની નજરે પડે તેવા “ દુઃખ ” હુ ખો “ વરાગા ” તે બિચારા તિર્યચ
ગતિના હવે “ દીહકાલ ” અનતકાળ સુધી “ પાવેતિ ” ભોગવે છે “ કિં તે ? ”,
તે હુ ખોના પ્રકાર કયા કયા છે ? સૂત્રકાર તેનો જવાબ આપતા કહે છે તે
ગતિમા નીચે પ્રમાણે હુ ખો કોય છે “ સીડણ્હ ” શીત જનિત દુઃખ, ઉષ્ણ-
જનિત દુઃખ — “ પિપાસાજનિત દુઃખ અને “ खुह ” ક્ષુધાજનિત

अप्रतीकार=प्रतीकाररहित-उद्धायुष्मत्वात् यद् अटव्या=महारण्ये जन्म तत् तथा,
 तत्र 'णिच्चभउच्चिगवास' नित्यभयोद्धिगवासः = नित्य = प्रतिक्षण भयेन=
 व्याधादिकर्तृबन्धनिग्रहादिरूपेण उद्धिगः=उद्धेगसहित वासः=निवासः अतएव
 'जगण' जागरण=निद्राक्षय 'वह' वध=मारण, 'वधण' वन्धन=रज्ज्वादिना
 नियमन, 'ताडण' ताडन=दण्डादिना हननम्, 'अकण' अकन=प्रतप्तशूलादिना
 शरीरे चिन्हविशेषकरणं, 'निवायण' निपातनम्=उत्थाप्य गर्तादौ प्रक्षेपणम्
 'अट्टिभजण' अस्थिभञ्जनम्=मुद्गरादिनाऽस्थ्ना श्रोतन 'नासाभेय' नासामेदः=
 नासिकायां रज्जुयोजनार्थं छिद्रकरण 'प्पहारदमण' प्रहारदमन=प्रहारैः=यष्टया
 दिताडनैः दमन = स्वायत्तीकरण, 'छविच्छेयण' छविच्छेदन = अवयवकर्तन
 'अभिओगपावण' अभियोगप्रापणम् = अनिच्छतोऽपि शम्भुदादौ नियोजन,

(वेयण अप्पडियार) प्रतिकार रहित दुःख, (अडविजम्मण) अटवी
 मे जन्म होने का दुःख, (णिच्चभउच्चिगवास) प्रतिक्षण व्याध आदि
 के वध-निग्रह आदि के भय से उद्धिग चित्त होकर निवास करने का
 दुःख, (जगण) इच्छानुसार निद्रा नहीं ले सकने का दुःख, (वह)
 वधजन्य दुःख, (वधण) रस्सी आदि द्वारा बांधे जाने का दुःख (ताडण)
 दण्ड आदि से मर्मस्थानों में ताड़ित किये जाने का दुःख, (कण) प्रतप्त
 शूल आदि द्वारा शरीर में दाग दिये जाने का दुःख, (निवायण) उठा
 कर गर्त आदि में पटक दिये जाने का दुःख, (अट्टिभजण) मुद्गर आदि
 से हड्डियों को तोड़ दिये जाने का दुःख, (नासाभेय) नासिका के
 छेदन करने का दुःख, (प्पहारदमण) लकड़ी चाबुक आदि के प्रहारों से
 वशीभूत होने का दुःख (छवि-च्छेयण) शारीरिक अवयव काट दिये
 जाने का दुःख, (अभिओगपावण) नहीं इच्छा होनेपर भी जब गाड़ी आदि

हुं भू अने "वेयण अप्पडियार" प्रतिकाररहित हुं भू "अडविजम्मण" जनम
 जन्म थावानु हुं भू, "णिच्चभउच्चिगवास" प्रत्येक क्षण व्याध आदि द्वारा
 वध, निग्रह आदिना भयभीत उद्धिग चित्त रहैवानु हुं भू "जगण" छच्छा
 भ्रमाद्ये निद्रा न लब्ध शकैवानु हुं भू "वह" वध जन्य हुं भू, "वधण"
 होरडा आदि वडे बाधवानु हुं भू, "ताडण" लाठडी आदिथी भर्मस्थानो पर
 भार पडवानु हुं भू "कण" तपावेस शूल आदि द्वारा शरीर उभ देवावानु
 हुं भू "निवायण" उपाडीने भाडा आदिभा डेकवानु हुं भू "अट्टिभजण" भग
 दण आदिथी डाडडा तोडावानु हुं भू, "नासाभेय" नाक छेदावानु हुं भू "प्पहा
 रदमण" लाठडी आधुत आदिना प्रहारोथी ताणे थावानु हुं भू, "छविच्छेयण"
 शरीरना अवयवो कपावानु हुं भू "अभिओगपावण" छच्छा न डे।

‘કસકુસારનિવાય’ કશાકુશાઽઽરનિપાતઃ = કશા = ચર્મયષ્ટિઃ ‘ચાચુક’ ઇતિ પ્રસિદ્ધા, અકુશઃ=પ્રસિદ્ધઃ, આરા=દણ્ડાન્તર્વર્તિનોતીક્ષ્ણલોહશલાકા ‘પરાણી’ ઇતિ પ્રસિદ્ધા, તેષા નિપાતઃ=શરીરોપરિગ્રહારઃ ‘દમણ’ દમન=શિક્ષાગ્રાહણમ્, एतेषा द्वन्द्वः, तानि तथा, ‘વાહનાણિ ય’ વાહનાનિ ચ=મારોદ્વાહનાનિ, इत्येव रूपाणि दुःखानि प्राप्नुवन्तीति सम्बन्धः ॥ સૂ૦ ૩૮ ॥

પુનરપિ તાન્યેશદ—‘માયાપિઙ્’ ઇત્યાદિ ।

મૂઢમ્—માયા-પિઙ્-વિષ્પઓગ-સોયપરિપીલણાણિ ય સત્થ-ગ્ગિ-વિસામ્ભિઘાય ગલગવલાવલણમારણાણિ ય ગલજાલુચ્છિ-પ્પણાણિ ય-પડલણ વિકપ્પણાણિ ય—જાયઙ્ગીવગવધણાણિ ય પંજરનિરોહણાણિ ય સજૂહ નિદ્ધાઙ્ગણાણિ ય ધમણાણિ ય દોહણાણિ ય કુદ્ધગલવધણાણિ ય વાઙ્ગ પરિવારણાણિ ય પંકજલનિમજ્જણાણિ ય વારિપ્પવેસણાણિ ય ઓવાય નિભંગવિસ-માણિ ય વડણ દવગ્ગિજાલ દહણાઙ્ગયાઙ્ગ ય ॥ ૩૯ ॥

ટીકા—‘માયાપિઙ્ વિષ્પયોગ’ માતાપિતૃવિષ્પયોગ = માતા ચ પિતા ચ મેં જોત દિયે જાનેકા દુઃખ, (કસકુસારનિવા ય) કશા-ચાચુક અકુશ એવ આરા-દહે કે અગ્રભાગમે લગી હુઈ લોહ કી કીલ-સે પીટે જાને કા તથા ચુમો દેને કા દુઃખ, (દમણાણિ) દમન-અન્ઝી ચાલ આદિ કો ચલાને કે લિયે શિક્ષા કા દુઃખ, તથા (વાહનાણિ ય) મારો કો વહન કરને કા દુઃખ, એ સઘ દુઃખ હૈ ઓર ઉન્હેં તિર્યંગગતિ મે રહે હુએ જીવ પ્રાપ્ત કરતે હૈ ॥ સૂ. ૩૮ ॥

તિર્યંગગતિ કે ઓર મો યે દુઃખ હૈ—‘માયા-પિય-વિષ્પઓગ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(માયા-પિય-વિષ્પઓગ સોયપરિપીલણાણિ ય) માતા પિતાકા

માલિક ચાહે ત્યારે ગાડી ચાલિએ બેઠાવાનુ ડુંખ, “કસકુસારનિવાય” કશા ચાચુક, અકુશ અને આ-લાડીને છેડે ચોડેલી અણીદાર ખીલી વડે માર ખાવાનુ ડુંખ, તથા તે ચીજોની અણી શરીરમા લેઝાવાથી ડુંખ થતુ “દમણાણિ” દમન-સારી ચાલ ચાલાવવા ડે ગતિ વધારાવવા માટે થતી નિશ્ચાનુ ડુંખ તથા “વાહનાણિ ય” ભાર ઉપાડવાનુ ડુંખ, એ બધા ડુંખના વિવિધ પ્રકાર છે, અને તિર્યંગ ગતિમા જન્મેલા જીવો તે ડુંખો લેગવે છે ॥ સૂ-૩૮ ॥

તિર્યંગ ગતિના ખીલુ ડુંખો આ પ્રમાણે છે—“માયા-પિય-વિષ્પઓગ” ઇત્યાદિ ટીકાર્થ—“માયા-પિય-વિષ્પઓગસોયપરિપીલણાણિ ય” માતા પિતાનો જન્મતા

તયોર્વિપ્રયોગ = વિયોગ; તયોર્જન્મતો મરણે વધે વ્યાધાદિમિનિર્ગ્રહે વા સ્વસ્ય નિર્ગ્રહે વેતિ ભાવઃ ‘સોષપરિપીલનાણિ ય’ શોકપરિપીડનાનિ=માતાપિતૃવિયોગજનિતશોકદુઃખાનિ, અથવા-સ્રોતઃ પરિપીડનાનિ=સ્રોતસાંનામિકોદિહિટ્ટાગારજ્જુવન્ધનાદિભિઃ પરિપીડનાનિ=સ્વેદોત્પાદનાનિ। ‘સત્થગ્ગિવિસામિધાયગલગવલાવલણમારણાણિ ય’ શક્ત્વાગ્નિવિષામિધાતગલગવલાવલણમારણાણિ ચ, તત્ર-શસ્ત્ર ચ અગ્નિશ્ચ વિષ ચ તૈરમિધાતઃ=નાશ, તથા ગલસ્ય = કઠ્ઠસ્ય ગવલસ્ય=શુદ્ધસ્ય ચ આવલનેન=મોટનેન મારણાણિ ‘ગલ્જાલુચ્છિટ્પ્પણાણિ’ ગલજાલો ત્ક્ષેપણાણિ=ગલેન=ચડિશેન જાહેન ચ ઉત્ક્ષેપણાણિ = મસ્ત્યાદીના જલાદ્યહિર્નિસ્સારણાણિ। પડલ્લણ-વિકૃપ્પણાણિ’ પવ્વન ત્રિકુલ્પનાનિ=‘પડલ્લણ’ પવન વિકલ્પન ચ=અદ્ભુતર્તન તાનિ। જાવજ્જીવગચ્છણાણિ’ જાવજ્જીવગચ્છણનાનિ=ખાજીવન રજ્જુશૂઘ્ણાદિ વન્ધનાનિ। ‘પજરનિરોહણાણિ’ પજરનિરોધનાનિ પજ્જર=લોહપશશલાકાદિનિર્મિત પક્ષિનિયન્ત્રણગૃહ, તત્ર નિરોધનાનિ પ્રતિરોધનાનિ ‘સજ્જહનિદ્ધાહણાણિ’ સ્વયૂથ નિસ્સારણાણિ=સ્વયૂથાત્=સ્વસાર્થાત્=નિસ્સારણાણિ-પુનઃ પુનઃ પરિવારતઃ

જન્મતે હી વિયોગ હો જાને સે દુઃખ સહન કરના, અથવા-નાસિકા આદિ કે છિદ્રો કા રજ્જુ આદિ કે દ્વારા વધન હોને પર ઉસકા કઠ્ઠ સહના, (સત્થગ્ગિવિસામિધાયગલગવલાવલણ મારણાણિ ય) શસ્ત્ર સે, અગ્નિ સે તથા વિષ સે મરણ હો જાના, ગલા ઓર સીંગ કે મુઢ જાના ઓર હસસે મરણ હો જાના, (ગલજાલુચ્છિટ્પ્પણાણિ ય) ચડિશ-મછલી મારને કા કાટા એવ જાલ સે અપને સ્થાન સે અલગ કિયા જાના, (પડલ્લણવિકૃપ્પણાણિ ય) અગ્નિ મે પકાયા જાના અગ અગ કા કાટા જાના (જાવજ્જીવગચ્છણાણિ ય) જીવનપર્યન્ત રજ્જુ અથવા સાકલ આદિ સે ઘાધા જાના, (પજરનિરોહણાણિ ય) પીજરે મે બદ કિયા જાના, (સજ્જહનિદ્ધાહણાણિ ય) વાર ૨ અપને કુહ મેં સે બાહર નિકાલ દિયા જાના

જ વિયોગ થવાથી દુઃખ સહન કરવું પડે છે નાક આદિના છિદ્રોનું દોરડા આદિ દ્વારા બધન થવાથી તેનું દુઃખ સહન કરવું પડે છે “સત્થગ્ગિવિસામિધાયગલગવલાવલણમારણાણિ ય” શસ્ત્રથી, અગ્નિથી તથા વિષથી મૃત્યુ થઈ જવાનું, ગળું અને સીંગડા મરડાઈ જવાને કારણે મરણ થવાનું, “ગલજાલુચ્છિટ્પ્પણાણિ ય” ગલ (માછલી મારવાનો કાટો) અને બળથી પોતાના સ્થાનેથી અલગ કરવાનું, “પડલ્લણવિકૃપ્પણાણિ ય” અગ્નિમાં રધાવાનું, દરેક અગની છેડાવાનું, “જાવજ્જીવગચ્છણાણિ ય” જીવે ત્યાં સુધી દોરડા કે સાકળ કડે બાધાવાનું, “પજરનિરોહણાણિ ય” પિંજરામાં પૂરાવાનું, “સજ્જહનિદ્ધાહણાણિ ય” વારવાર પોતાના સમૂહમાંથી બહાર નીકળવાનું, “

पृथक्करणानीत्यर्थः, 'नि' पूर्वस्य 'स' धातो 'घाट' आदेशेकृतेऽपि पुनर्नि-
रूपसर्गपूर्वकनिर्देशः पोनः पुन्यार्थसूचकः, 'धमणाणि' अग्नी प्रक्षिप्य भस्त्रादिभि
र्धनानि । दोहणाणि 'दोहनानि' 'कुदडगलप्रधणाणि' कुदण्डगलप्रन्धनानि=
कुदण्डस्य=चक्रकाष्ठस्य गले=कण्ठे प्रन्धनानि 'वाडगपरिवारणाणि य' वाटक
परिवारणानि=वाटके निरोधनानि 'पक्कजलनिमज्जणाणि' पक्कजलनिमज्जनानि=
पक्कमयजले निमज्जनानि घोडनानि 'वारिप्पवेसणाणि' वारिप्रवेशनानि=जल-
प्रक्षेपणानि 'ओवायनिभगविसमणिवटणदवग्गिजालदहणाइयाइ य' अवपातनिभ-
ग्विपमनिपतनदवाग्निज्वालादहनानि च-अवपातेन=गर्तादिषु निपातेन यो
निभगः=अग्नोपाद्गः भजनम्, अपि च-विपमेभ्यः=विपमप्रदेशेभ्यो गिरिवृक्षा
दिभ्यो निपतन, तथा दवाग्निज्वालाभिर्दहन चेति द्वन्द्वः, तानि आदिर्वेषा तानि
=स्वस्वजातियरोगान्नादानि तान्येषम्काराणि दुःखानि प्राप्नुवन्ति ॥सू० ३९॥

(धमणाणि य) अग्नि में प्रक्षिप्त करके भस्त्रा आदि से धोका जाना,
(दोहणाणि य) स्तनों का दोहन होना, (कुदड गलप्रधणाणि य) कोढ़े
वक्र-काष्ठ का गले में बाधा जाना-लटकाया जाना, (वाडगपरिवार-
णाणि य) फाटों आदि की बाड़ लगाकर किसी स्थानपर रोका जाना,
(पक्कजलनिमज्जणाणि य) पक्क युक्त जल में फँस जाना, (वारिप्पवेस
णाणि य) वारिप्रवेशन-घरसते हुए पानी में रखे रहना अथवा तलाय
घरैरह के पानी में हठात् प्रविष्ट कराया जाना, अथवा पानी में डूब कर
मर जाना, (ओवायणिभगविसमणिवटण-दवग्गिजाल दहणाइयाइ य)
किसी गर्त खड्डा आदि में गिर जाने से अग उपागों का दूट जाना, पर्वत
आदि के ऊँचे स्थानों से गिर जाना, दवाग्नि में जल जाना, इत्यादि
नाना प्रकार के दुःखों को तिर्यञ्च गति के जीव भोगते हैं ॥सू० ३९॥

अग्निमा नाभीने आलीदार सणिया आदि वडे वीधावानु, " दोहणाणि य "
आयजोभाथी दूध दोध लेवानु, " कुदडगलप्रधणाणि य " गजाना आडा
लटकाववानु, " वाडगपरिवारणाणि य " काहणवाणा जजमा थूथी जवानु " वारि-
प्पवेसणाणि य " वारि प्रवेशन-घरमता घरसाहमा उला रडेवानु अथवा तलाय
वगेरेना पाणीमा गज जजरीथी प्रवेश करवानु " ओवायणिभगविसमणिवटण
-दवग्गिजालदहणाइयाइ य " डोध आडा आदिमा पडी जवाथी अग उपागे
तुटी जवानु, पर्वत आदि उँचा स्थाने परथी पडी जवानु, दवाग्निमा गणी
जवानु, इत्यादि विविध प्रकारना दुःखे तिर्यञ्च गतिना लुवे भोगवे छेस उदा।

ઉપસહરણાહ—‘એવ તે’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—એવ તે દુઃખસયસંપલિતા નરગાઓ આગયા ઇહં
સાવસેસકમ્મા તિરિક્ખપંચિદિણ્ણુ પાવેતિ પાવકારી
કમ્માઈ, પમાયરાગદોસવહુસંચિયાઈ અઈવ અસાયક
કસાઈ ॥ સૂ. ૪૦ ॥

ટીકા—એવમ્=ઉક્તપ્રમારે: તે = જીવા પ્રાણાતિપાતકારકા: ‘દુઃખસય-
સપલિતા’ દુઃખશતસમ્પ્રદીપ્તા: = દુઃખશતૈ: સમ્પ્રદીપ્તા: સન્તપ્તા: ‘નરગાઓ’ નરકાત્
-ઈહ=તિર્યગ્લોકે ‘આગયા’ જાગતા: = ઉત્પન્ના: ‘સાવસેસકમ્મા’ સાવશેષક-
ર્માણ: = અવશિષ્ટપાપકર્માણ: ‘પાવકારી’ પાપકારિણ ‘તિરિક્ખપંચિદિણ્ણુ’
તિર્યક્ પઞ્ચેન્દ્રિયેષુ ‘પમાય-રાગદોસવહુસંચિયાઈ’ પ્રમાદરાગદ્વેષવહુસંચિતાનિ-
પ્રમાદ: = વિષયાદ્યભિષ્વદ્ગ્નલક્ષણ:, રાગ: = માયાલોભલક્ષણ:, દ્વેષ: ક્રોધમાનલક્ષણ:,
તૈ: વહુનિ સંચિતાનિ = ઉપાર્જિતાનિ ‘અઈવ’ અનીવ = અત્યન્તમ્ ‘અસાયકકસાઈ’
અશાતકર્કશાનિ = અશાતેષુ = અશાતવેદનીયકર્મોદયપ્રમથેષુ દુઃખેષુ કર્કશાનિ =
કઠોરાણિ ‘કમ્માણિ,’ કર્માણિ = કર્મજન્યાનિ દુઃખાનિ ‘પાવેતિ’ પ્રાપ્નુવન્તિ,

અથ ઉપસહાર કરતે હુણ સૂત્રકાર કહતે હૈં—‘એવ તે’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(એવ) ઇસ પ્રકાર સે (તે) વે પ્રાણાતિપાતકારક જીવ (દુઃખસ
યસપલિતા) સૈકઠોં દુઃખોં સે સન્તપ્ત હોકર (નરગાઓ) નરક સે
(ઈહ) ઇસ તિર્યગ્લોક મેં (આગયા) ઉત્પન્ન હોતે હૈં ઓર (સાવસેસ-
કમ્મા) પાપકર્મ ઉનકા અવશેષ રહને કે કારણ વે (તિરિક્ખ પંચિદિ-
ણ્ણુ) તિર્યક્ પંચેન્દ્રિયોં મે (પમાય - રાગદોસવહુસંચિયાઈ) વિષયા
દ્યભિષ્વદ્ગ્નરૂપ પ્રમાદ સે માયાલોભરૂપ રાગ સે ઓર ક્રોધમાનરૂપ દ્વેષ સે
ઉપાર્જિત કિયે ગયે (અઈવ અસાય કકસાઈ કમ્માઈ) અશાત કર્કશ કર્મોં

હવે ઉપસહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે—“એવ તે” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“એવ” આ પ્રમાણે “તે” તે પ્રાણવધ કરનાર જીવ “દુઃખસયસપ-
લિતા” સેકઠોં હુ ખોથી હુ ખી થઈને “નરગાઓ” નરકમાથી “ઈહ” આ
તિર્યગ્લોકમા “આગયા” ઉત્પન્ન થાય છે અને “સાવસેસકમ્મા” તેમના પાપકર્મ
ખાકી રહેલ હોવાથી તેઓ “તિરિક્ખપંચિદિણ્ણુ” તિર્યક પંચેન્દ્રિયોમા “પમાય
રાગદોસવહુસંચિયાઈ” વિષયાદિની અભિલાષા રૂપ પ્રમાદથી, માયા હોભ રૂપ
રાગથી, અને ક્રોધમાન રૂપ દ્વેષથી ઉપાર્જિત કરેલ “અઈવ અસાય કકસાઈ
કમ્માઈ” અશાતા કર્કશ કર્મોંને અશાતા વેદનીય કર્મોંદયને કારણે ઉપાર્જિત

પ્રાણિવધકારકાઃ નરકાત્પત્યાગતાસ્તિર્યરૂપચ્ચેન્દ્રિયયોનિષુ સમુત્પન્નાઃ કઠોરત-
રાણિ દુઃખાન્યનુભવન્તીતિ સદ્ગલિતોઽર્થઃ ॥ સૂ૦ ૪૦ ॥

તિર્યક્ પચ્ચેન્દ્રિયદુઃખાનિ ણર્ણયિત્યા સામ્પ્રત ચતુરિન્દ્રિયદુઃખાનિ વર્ણ-
યન્નાહ—‘મમર’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—મમર-મસગ-મચ્છિયાઇએસુ ય જાડકુલકોડિસય-
સહસ્સેહિં નવહિ ચઠરિદિયાણ તહિં તહિ ચેવ જમ્મણ
મરણાણિ અણુહવંતા કાલ સંખિજ્ઞં મમતિ નેરઇયસમાણ
તિવ્વદુક્ખાફરિસરસણઘાણચક્ખુસહિયા ॥ સૂ૦ ૪૧ ॥

ટીકા—‘મમર-મસગ-મચ્છિયાઇએસુ’ ભ્રમરમશકમક્ષિકાદિકેષુ =
પ્રસિદ્ધેષુ ‘ચઠરિદિયાણ’ ચતુરિન્દ્રિયાણા ‘નવહિં’ નવસુ=નવસરૂપકેષુ ‘જાડ-
કુલકોડિસયસહસ્સેહિં’ જાતિકુલકોટિગતસહસ્રેષુ = જાતી = ચતુરિન્દ્રિયજાતી
યાનિ કુલાનિ=ભ્રમરાદ્યનેકારાણિ, તેષાં કોટયઃ=વિભાગા =અન્તર્ભેદાઃ તેષા
શતસહસ્રેષુ=લક્ષેષુ=નવલક્ષચતુરિન્દ્રિયજાતિકુલકોટિષુ इत्यર્થઃ, ‘તહિં તહિં ચેવ’
કો અશાતવેદનીયકર્મોદયસે ઉદ્ભૂત દુઃખ દુઃખોં મેં મી કઠોતર કર્મજન્ય-
દુઃખોં કો (પાવેતિ) ભોગતે હું-અર્થાત્-વે પ્રાણિવધકારક જીવ નરકસે
નિકલકર તિર્યક્પચ્ચેન્દ્રિયોં મે ઉત્પન્ન હોતે હું ઓર વઠા કઠોર ,ખોં કો
પ્રાપ્ત કરતે હું ॥સૂ ૪૦ ॥

વે પાપી જીવ ચતુરિન્દ્રિય જીવોં મે ઉત્પન્ન હોકર કિસ પ્રકાર કે
દુઃખોં કો ભોગતે હું જિસકા વર્ણન કરતે હું-‘મમર-મસગ’ ઇત્યાદિ ।
ટીકાર્થ—(મમર-મસગ-મચ્છિયાઇએસુ ચઠરિદિયાણ નવહિં જાડકુલકો-
ડિસયસહસ્સેહિં) ભ્રમર, મશક, મક્ષિકા આદિ ચતુરિન્દ્રિય જીવોં કે નૌ
લાલ જાતિકુલ કોટિયોં મે (તહિં તહિં ચેવ જમ્મણમરણાણિ) વહી વહીં

હુ ખો કરતા પણ વધારે કઠોર કર્મજન્ય હુ ખોને “પાવેતિ” લોગવે છે એટલે
કે પ્રાણિવધ કરનાર હોવે નરકમાથી નીકળીને તિર્યક્ પચ્ચેન્દ્રિયેમા ઉત્પન્ન
થાય છે અને ત્યા વધારેમા વધારે આઠરા હુ ખો પ્રાપ્ત કરે છે ॥સૂ ૪૦॥

તે પાપી હોવે ચતુરિન્દ્રિય હોવેમા ઉત્પન્ન થઈને ડેવા પ્રકારના હુ ખો
લોગવે છે તેતુ વર્ણન કરતા સૂત્રકાર કહે છે—‘મમરમસગ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘મમર, મસગ, મચ્છિયાઇએસુ ચઠરિદિયાણ નવહિં જાડકુલકોડિસયસહ-
સ્સેહિં’ ભ્રમર, મશક, માખી આદિ ચૌદ્રિય હોવેની નવલાખ પ્રકારની જાતિ-
ઓમા “તહિં તહિં ચેવ જમ્મણમરણાણિ ” તે તે થોળિયેમા ચતુરિન્દ્રિય હોવેમા

તત્ર તત્રૈવ=ચતુરિન્દ્રિયેષ્વેવ 'જન્મમરણાણિ' જન્મમરણાણિ 'અણુહવતા' અણુ
 ભવન્તઃ=કુર્વન્તઃ, 'નેરઙ્ગસમાણતિવ્વદુક્ખા' નેરયિક્કસમાનતીઘદુઃખા:=નારકે!
 સમાનાનિ=નરકે નારકાઃ યાદૃશાનિ દુઃખાનિ અણુભવન્તિ તત્તુલ્યાન્યેવ
 તીવ્રાણિ=ઋઠોરાણિ અસહ્યાનીત્યર્થઃ દુઃખાનિ ચેષા તે તથા નારકદુઃખતુલ્યા
 સહ્યવેદનાવન્તઃ, 'ફરિસ-રસણ-ઘાણ-ચક્કુસહિયા' સ્પર્શ-રસન-ગ્રાણ-ચક્ષુઃ
 સહિતા =સ્પર્શાદીન્દ્રિયચતુષ્ટયયુક્તાઃ 'સલ્લિજ્જ કાલ' મર્યાત કાલ=સર્યાતવર્ષ
 સદસ્ર કાલ યાવત્ 'ભમતિ' ભ્રમન્તિ=પુનઃ પુનર્યોનિતો યોનિં પ્રાપ્નુવન્તીત્યર્થઃ॥૪૧॥

અથ ત્રીન્દ્રિયદુઃખાનિ વર્ણયતિ 'તદેવે' ત્યાદિ ।

મૂલમ્—તદેવ તેદિદિણ્ણુ કુથુ-પિવીલિયા-ઉદેહિયાદિણ્ણુ
 ય જાદ્ધકુલકોડિસયસહસ્સેહિ અદ્ધહિ અણૂળગેહિં તેદિદિ-
 દિયાણ તહિ તહિ ચેવ જન્મણ મરણાણિ અણુહવતા કાલં
 સંલ્લેજ્જગં ભમતિ નેરઙ્ગસમાણતિવ્વદુક્ખા ફરિસ-રસણ
 -ઘાણ-સંપઉત્તા ॥ સૂ. ૪૨ ॥

ટીકા—'તદેવ' તથૈવ=ચતુરિન્દ્રિયેષુ યથા દુઃખાન્યણુભવન્તિ તથૈવ 'તે
 દિદિણ્ણુ' ત્રીન્દ્રિયેષુ 'કુથુ-પિવીલિયા ઉદેહિયાદિણ્ણુ' કુન્થુ પિપીલિકોપદેહિ

પર-ચતુરિન્દ્રિય જીવોં મેં હી-જન્મ મરણોં કો (અણુહવતા) કરતે દુખ
 વે પાપી જીવ (નેરઙ્ગસમાણતિવ્વદુક્ખા) નરકગતિ જૈસે અસહ્ય
 દુઃખોં કો ભોગતે દુખ (ફરિસ-રસણ-ઘણચક્કુસહિયા) સ્પર્શન,
 રસના, ગ્રાણ ઓર ચક્ષુ હન ઇન્દ્રિયો સે યુક્ત દુખ ચે ચતુરિન્દ્રિય જીવ
 (સલ્લિજ્જ કાલ) સહ્યાતા હજાર વર્ષતક (ભમતિ) ઉસી યોનિ મેં જન્મ
 મરણ કરતે રહતે હૈં ॥ સૂ. ૪૧ ॥

અથ ત્રીન્દ્રિય જીવોં કે દુઃખોં કો વે ભોગતે હૈં એસા વર્ણન સૂત્રકાર

જ જન્મ મરણ "અણુહવતા" અણુહવતા તે પાપી હોવો "નેરઙ્ગસમાણતિવ્વ
 દુક્ખા" નરક ગતિ હોવા અસહ્ય દુખો ભોગવે છે અને "ફરિસ-રસણ-ઘાણ
 -ચક્કુસહિયા" સ્પર્શન, રસના, ગ્રાણ, અને ચક્ષુ એ ચાર ઇન્દ્રિયોથી યુક્ત
 તે ચતુરિન્દ્રિય હોવો "સલ્લિજ્જ કાલ" સહ્યાત હજાર વર્ષ સુધી "ભમતિ"
 તે યોનિમા જન્મ મરણ અણુહવતા કરે છે, ॥સૂ-૪૧॥

હવે તે ત્રીન્દ્રિય હોવો જે દુખો ભોગવે છે તેનું સૂત્રકાર વર્ણન કરે

કાદિકેપુ=કુન્ધુઃ=શુદ્રનન્તુવિશેષઃ, પિપીલિકા=પ્રસિદ્ધા, 'ઉદેહિયા' ઉપદેહિકા
 ='ઉદેહી' इति भाषा प्रसिद्धा, इत्यादिकेषु 'तेह्दियाण' त्रीन्द्रियाणा,
 'अणूणगेहिं' अन्यूनकेषु=पूर्णेणु 'अट्टहिं' अष्टम्यु 'जाइकुलकोडिसयसहस्सेहिं'
 जातिकुलकोटिशतसहस्रेषु-जातो=त्रीन्द्रियजातो यानि कुलानि = कुन्धुपिपीलि-
 काद्याकाराणि, तेषा कोटयः=विभागाः=अन्तर्भेदाः, तेषा शतसहस्रेषु लक्षेषु परि-
 पूर्णाष्टलक्षत्रीन्द्रियजातिकुलकोटिषु-इत्यर्थः, 'तहिं तहिं चेव' तत्र तत्रैव त्रीन्द्रि-
 येषु 'जम्ममरणणि' जन्ममरणानि 'अणुहवता' अनुभवंतः, 'नेरइयसमा
 णतिव्वदुक्खा' नैरयिकममानतीन्द्रदुःखा=नरकमदृशदुःखयुक्ताः 'फरिस-रसण-
 घाण-सपउत्ता' स्पर्श रसनघ्राणसम्प्रयुक्ता=स्पर्शादिभिस्त्रिभिर्निन्द्रियैर्युक्ताः 'सखे-
 ज्जग' सख्यातक=मल्यातवर्षसहस्र काल यावत् 'भमति' भ्रमन्ति ॥सू० ४२॥

करते हैं—' तहेव ' इत्यादि ।

टीકાર્થ—(તહેવ) જિસ તરહ પાપી જીવ ચતુરિન્દ્રિય જીવોં મેં જન્મ મરણ
 કરકે દુઃખોં કો ભોગતે હેં ઉસી તરહ વે (કુન્ધુ પિપીલિયા ઉદેહિયાઇએસુ)
 કુન્ધુ, પિપીલિકા, ઉદેહી આદિક ત્રીન્દ્રિય જીવોં મેં ફિ જિન (તેહદિ-
 યાણ) તેન્દ્રિય જીવોં કી (અણૂણગેહિં અટ્ટહિં જાહકુલકોડિસયસહ
 સ્સેહિં) ઉન પૂર્ણ આઠ લાખ જાતિકુલ કોટિયોં મેં (તહિં તહિં ચેવ
 જન્મમરણાણિ અણુહવતા) વાર વાર વહી પર જન્મ મરણોં કો કરતે હુએ
 (નેરહયસમાણતિવ્વદુક્ખા) નરકગતિ જૈસે અસહ્ય દુઃખોં કો ભોગતે
 હુએ इनके (फरिस-रसण-घाण सपउत्ता) स्पर्शन, रसना और घ्राण
 इन तीन इन्द्रिय युक्त हुए थे तेन्द्रिय जीव (सखेज्ज काल) सख्यात
 हजार वर्षों तक (भमति) उसी पर्याय में परिभ्रमण करते हैं ॥सू० ४२॥

છે—“તહેવ” ઇત્યાદિ

टीकार्थ—‘तहेव’ जेभ पापी एवे। अतुरिन्द्रि एवेभा जन्म मरण पाभीने
 हुओ लोगवे छे तेभ तेओ “कुन्धुपिपीलियाउदेहियाइएसु” कुन्धु, डीडी, उधर्ध आदिक
 त्रिन्द्रिय एवेभा जन्म ले छे अने ‘तेह्दियाण’ तेन्द्रिय एवेनी “अणूणगेहिं
 अट्टहिं जाइकुलकोडिसयसहस्सेहिं” आठलाख प्रकारनी जातियोनिभा “तहिं
 तहिं चेव जम्ममरणाणि अणुहवता” वारवार जन्म मरण अनुभवता “नेरइ-
 यसमाणतिव्वदुक्खा” नरक गति जेवा असह्य हुओ लोगवे छे जेभने
 “फरिस-रसण-घाण सपउत्ता” स्पर्शन, रसना अने घ्राण ओ त्रिषु इन्द्रियो
 डोय छे जेवा ते तेन्द्रिय एवे “सखेज्जकाल” मख्यात हजार वर्षो सुधी
 “भमति” ते जे योनिभा परिभ्रमण कर्या वदे छे ॥ सू-४२ ॥

તત્ર તત્રૈવ=ચતુરિન્દ્રિયેષ્વેત્ર 'જન્મમરણાણિ' જન્મમરણાણિ 'અણુહવતા' અણુ
 ભવન્તઃ=કુર્વન્તઃ 'નેરઙ્ગ્યસમાણતિવ્વદુક્ખા' નૈરયિકસમાનતીવ્રદુઃખાઃ=નારકૈઃ
 સમાનાનિ=નરકે નારકાઃ યાદૃશાણિ દુઃગ્ધાણિ અનુભવન્તિ તત્તુલ્યાન્યેવ
 તીવ્રાણિ=ઠોરાણિ અસહ્યાનીત્યર્થઃ દુઃખાણિ ચેપા તે તથા નારકદુઃખતુલ્યા
 સહ્યવેદનાવન્તઃ, 'ફરિસ-રસણ-ઘાણ-ચક્ષુસહિયા' સ્પર્શ-રસન-ઘ્રાણ-ચક્ષુઃ
 સહિતા =સ્પર્શાદીન્દ્રિયચતુષ્ટયયુક્તાઃ 'સંખિજ્ઞ કાલ' સરયાત કાલ=સરયાતવર્ષ
 સહસ્ર કાલ યાવત્ 'ભમતિ' ભ્રમન્તિ=પુનઃ પુનર્યોનિતો યોનિં પ્રાપ્નુવન્તીત્યર્થઃ॥૪૧॥

અથ ત્રીન્દ્રિયદુઃખાણિ વર્ણયતિ 'તદેવે' ત્યાદિ ।

મૂલમ્—તદેવ તેદિદિણસુ કુથુ-પિપીલિયા-ઉદેહિયાઈણસુ
 ય જાહ્કુલકોહિસયસહસ્સેહિ અટ્ટહિ અણૂળગેહિ તેદિદિ-
 દિયાણ તહિ તહિ ચેવ જન્મણ મરણાણિ અણુહવતા કાલં
 સંખેજ્ઞં ભમતિ નેરઙ્ગ્યસમાણતિવ્વદુક્ખા ફરિસ-રસણ
 -ઘાણ-સંપડતા ॥ સૂ૦ ૪૨ ॥

ટીકા—'તદેવ' તથૈવ=ચતુરિન્દ્રિયેષુ યથા દુઃખાન્યનુભવન્તિ તથૈવ 'તે
 દિદિણસુ' ત્રીન્દ્રિયેષુ 'કુથુ-પિપીલિયા ઉદેહિયાઈણસુ' કુન્થુ પિપીલિકોપદેહિ

પર-ચતુરિન્દ્રિય જીવોં મેં હી-જન્મ મરણોં કો (અણુહવતા) કરતે હુણ
 ચે પાપી જીવ (નેરઙ્ગ્યસમાણતિવ્વદુક્ખા) નરકગતિ જૈસે અસહ્ય
 દુઃખોં કો ભોગતે હુણ (ફરિસ-રસણ-ઘણચક્ષુસહિયા) સ્પર્શન,
 રસના, ઘ્રાણ ઓર ચક્ષુ હન ઈન્દ્રિયો સે યુક્ત હુણ ચે ચતુરિન્દ્રિય જીવ
 (સંખિજ્ઞ કાલ) સરયાતા હજાર વર્ષતક (ભમતિ) ડસી યોનિ મેં જન્મ
 મરણ કરતે રહતે હૈં ॥ સૂ ૪૧ ॥

અથ ત્રીન્દ્રિય જીવોં કે દુઃખોં કો વે ભોગતે હૈં એસા વર્ણન સૂત્રકાર

જ જન્મ મરણુ "અણુહવતા" અનુભવતા તે પાપી હોવો "નેરઙ્ગ્યસમાણતિવ્વ
 દુક્ખા" નરક ગતિ જેવા અસહ્ય દુઃખો ભોગવે છે અને "ફરિસ-રસણ-ઘાણ
 -ચક્ષુસહિયા" સ્પર્શન, રસના, ઘ્રાણ, અને ચક્ષુ એ ચાર ઈન્દ્રિયોથી યુક્ત
 તે ચતુરિન્દ્રિય હોવો "સંખિજ્ઞ કાલ" સરયાત હજાર વર્ષ સુધી "ભમતિ"
 તે યોનિમાં જન્મ મરણુ અનુભવ્યા કરે છે, ॥સૂ-૪૧॥

હવે તે ત્રીન્દ્રિય હોવો જે દુઃખો ભોગવે છે તેનું સૂત્રકાર વર્ણન કરે

एवमेव एकेन्द्रियत्वमपि ते प्राप्ताः यासु यासु योनिषु यथा भ्रमन्ति तदाह
—‘ पत्ता ’ इत्यादि ।

मूलम्—पत्ता एगिदियत्तणपि य पुढवि जल जलण मारुय
वणप्फइसुहुमवायर च पज्जत्तमपज्जत्त पत्तेय सरीरणाम
साहारण च पत्तेयसरीरजीवेसु य तत्थ वि कालमसखेज्जं
भमंति अणंतकालं च अणत्तकाए, फासिंदियभावसंप-
उत्ता दुस्खसमुदय इम अणिट्ठ पावंति पुणो पुणो तर्हि
तर्हि त्रेव परभवतरुणणगहणे ॥ सू० ४४ ॥

टीका—‘ एगिदियत्तणपि य ’ એકેન્દ્રિયત્વમપિ ચ=‘ અપિ ચે ’ તિ સમુ-
ચ્ચયાર્થઃ । એવ ચ ન કેવલ પચ્ચેન્દ્રિયચતુરિન્દ્રિયાદિત્વમેવ પ્રાપ્તા, અપિ તુ
એકેન્દ્રિયત્વમપિ ‘ પત્તા ’ પ્રાપ્તાઃ સન્તાઃ દુઃખસમુદય પ્રાપ્નુવન્તીત્યગ્રેણ સમ્બન્ધઃ ।

शून और रसना इन दो इन्द्रियों से युक्तवाले ये द्वीन्द्रिय जीव (सखेज्ज-
काल) सख्यात हजार वर्ष प्रमाण कालतक (भ्रमति) इसी द्विन्द्रिय की
पर्याय में भ्रमण करते हैं ॥ सू-४३ ॥

इसी तरह एकेन्द्रिय की पर्याय को भी प्राप्त हुए वे पापी जीव जिन २
योनिषों में जिस २ तरह से परिभ्रमण करते हैं अत्र सूत्रकार इस बात
को प्रकट करते हैं—‘ पत्ता एगिदियत्तणपि य ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(एगिदियत्तणपि य पत्ता) वे पापी जीव केवल पचेन्द्रिय,
चतुरिन्द्रिय आदि पर्यायोंको ही प्राप्त नहीं करते हैं किन्तु एकेन्द्रिय पर्यायको
प्राप्त करते हैं और वहां वे (दुस्खसमुदय पावति) दुःख समूह को भोगते

થોથી યુક્ત તે દ્વીન્દ્રિય જીવો “ સખેજ્જકાલ ” અર્થાત હજાર વર્ષ સુધી
“ ભ્રમતિ ” એ-૨ દ્વીન્દ્રિય યોનિમા ભ્રમણ કરે છે ॥ સૂ-૪૩ ॥

એજ પ્રમાણે એકેન્દ્રિયની પર્યાયમા ઉત્પન્ન થઈને તે પાપી જીવો જે
જે યોનિમા જે જે રીતે પરિભ્રમણ કરે છે, તે વાતનુ સૂત્રકાર હવે વર્ણન કરે
છે—“ એગિદિયત્તણપિ ચ ” ઇત્યાદિ

“ એગિદિયત્તણપિ ચ પત્તા ” તે પાપી જીવો ફક્ત પચેન્દ્રિય, ચતુરિન્દ્રિય
પર્યાયોને જ પ્રાપ્ત કરતા નથી પણ એકેન્દ્રિય પર્યાયને પણ પ્રાપ્ત કરે છે, અને
ત્યાં તેઓ “ દુસ્પ્પસમુદય પાવતિ ” દુઃખોના સમૂહને ભોગવ્યા કરે છે, તે

અથ દ્વીન્દ્રિયદુ સ્થાનિ વર્ણયન્નાહ—‘ગદૂલય’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—ગદૂલય—જલૂય—કિમિય—ચદળગ—માઇણસુ ય
જાઇકુલકોડિસયસહસ્સેહિ સત્તર્હિ અણૂળગેહિ વેઙ્ગદિયાણ
તહિ તહિ ચેવ જમ્મણમરણાણિ અણુહવતા કાલં સંઘિજ્જગં
ભમંતિ નેરહયસમાણતિવ્વ દુક્ખા ફરિસ-રસણ-સંપડત્તા ॥ સૂ. ૦૪૩ ॥

ટીકા—ત્રીન્દ્રિયાત્ મમાગતાઃ દ્વીન્દ્રિયેષ્વપિ ‘ગદૂલય-જલૂય કિમિય-
ચદળગમાઇણસુ’ ગણ્ડોલક-જલૂક-કૃમિ-ચન્દન-શાદિકેષુ-ગણ્ડોલાઃ=ગોમ
યાદિષુ સમુત્પન્નાઃ કીટયિશેષાઃ, જલૂકાઃ=જલજન્તુકાઃ ‘જોક’ ઇતિ પ્રસિદ્ધાઃ
કૃમયઃ=‘લટ’ ‘ચૂરણિયા’ ઇતિ પ્રસિદ્ધાઃ, ચન્દનકાઃ=શઙ્ગજાતિવિશેષાઃ, તે
આદિર્યેષા તે તથા તેષુ ‘વેઙ્ગદિયાણ’ દ્વીન્દ્રિયાણા ‘સત્તર્હિ’ ‘સપ્પસુ જાતિકુલ
કોટિશતસહસ્રેષુ અન્યૂનેષુ જન્મમરણાણિ અનુભવન્તો નારકસમાનતીવ્રદુઃખાઃ
સ્પર્શરસનેતીન્દ્રિયદ્વય સમ્પ્રયુક્તા સહ્યાતવર્પસહસ્રલક્ષણ કાલ યાવત્ ભ્રમન્તિ ॥ ૪૩ ॥

અવ દ્વીન્દ્રિય જીવોં મે ઉત્પન્ન હોકર કે વે કિન કિન દુઃખોં કો
ભોગતે હૈં ઇસકા મૂત્રકાર વર્ણન કરતે હૈં—‘ગદૂલ ય’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—તેન્દ્રિય યોનિસે નિકલ કર વે પાપી જીવ દ્વીન્દ્રિય જીવોં મેં (ગદૂ-
લય-જલૂય-કિમિય-ચદળગ-માઇણસુ) ગણ્ડોલક, જલોક, કૃમિ, ઔર
શાખ આદિકોં મેં ભી કિ જિનકી (સત્તર્હિ જાઇકુલકોડિ સયસસ્સેહિ)
સાતલાખ જાતિકુલ કોટિ હૈં (તર્હિ ૨) વહી વહી વાર ૨ (જમ્મમર-
ણાણિ અણુહવતા) જન્મ મરણ કરતે હુણ (નેરહય સમાણતિવ્વદુક્ખા)
નારકિયોં જૈસા તીવ્ર દુઃખ ભોગતે હુણ (ફરિસ-રસણ સપડત્તા) સ્પ-

હવે દ્વીન્દ્રિય જીવોંમા ઉત્પન્ન થઈને તેઓ કયા કયા દુઃખો ભોગવે છે,
તેનું સૂચકાર વર્ણન કરે છે—“ગદૂલય” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—તેન્દ્રિય યોનિમાની નીકળીને તે પાપી જીવો “ગદૂલય-જલૂય-
કિમિય-ચદળગ-માઇણસુ” ગણ્ડોલક, જલોક, કૃમિ, શાખ આદિ દ્વીન્દ્રિય જીવોંમા જન્મ
લે છે તે દ્વીન્દ્રિય જીવોંના પશુ “સત્તર્હિ જાઇકુલકોડિસયસહસ્સેહિ” બહુ પ્રમાણે સાત
લાખ પ્રકારે છે “તર્હિ તર્હિ” તે દરેક બહુમા વાર વાર “જમ્મમરણાણિ અણુહવતા”
જન્મ મરણ અનુભવતા “ નેરહયસમાણતિવ્વદુક્ખા ” તેઓ નારકીઓ જેવા
આકારા દુઃખો ભોગવે છે “ ફરિસરસણસપડત્તા ” સ્પર્શન અને રસના ઇન્દ્રિ-

પૃ ૧ અ ૨ તે ૩ વા ૪ વ ૫

છાયા—એકેન્દ્રિયેષુ પચ્ચમ્, દ્વાદશ-મસ-ત્રિક-સપ્ત-અષ્ટવિંશતિશ્ચ ।

૨૬ ૩૬ ૪૬

વિસ્તેમુ સપ્ત-અષ્ટ-નવ, જઞ્-સ-ચતુષ્પદ-ઉરોગ-ભુજગેમુ ॥૧॥

અર્ધ્વત્રયોદશ [૧૨॥] દ્વાદશ, દશદશનવક નરામરયોર્નરકે ।

દ્વાદશ પદ્ધિશિતિઃ પચ્ચવિંશતિઃ, ભવન્તિ કુલકોટિલક્ષાણિ ॥૨॥” ॥૪૪॥

અથ દુઃસ્વપ્નમુદયમાહ—‘કોટાલે’ ત્યાદિ ।

મૂલમ્—કોદાલ-કુલિય દાલણ-સલિલ-મલણ-લુંભણ-રુંભણ-
અળાણિલ-વિહિસત્થઘટ્ટણ પરોપ્પરાભિહણણ-મારણ-વિરાહણાણિ
ય અકામગાઈ પરપ્પઓગોદીરણાહિય કજ્જપ્પઓયણેહિ ય પેસ્સ
પસુ નિમિત્ત ઓસહાહારમાઈણહિ ઉક્કલણણ-ઉક્કથણ-પયણ-
કોટ્ટણ પીસણ-પિટ્ટણ--ભજ્જણ-ગાલણ-આમોહણ- સહણ -ફુહણ-
ભજણ-છેયણ-તચ્છણ વિલુચણ -પતજ્જોહણ-અગ્ગિદહણાઈયાઈ,

દીન્દ્રિય જીવોં કે સાત લાખ, તેન્દ્રિય જીવોં કે આઠ લાખ, ચોદન્દ્રિય
જીવોં કે નૌ લાખ, જલચરોં કે સાઠા નારહલાખ, સ્થેચરોં કે વારહ લાખ,
ચતુષ્પદોં-ચલચરોં કે દશ લાખ, ઊરગોં કે દશલાખ, ભુજગોં કે નૌ લાખ,
મનુષ્યોં કે વારહ લાખ, દેવોં કે પચ્ચીસ લાખ ઓર નરકોં કે પચ્ચીસ
લાખ કુલ કોટિ હૈં । કુલકોટિ કી વ્યુત્પત્તિ “કુલાના કોટિઃ” હસ
પ્રકાર હૈં । હસકા તાત્પર્ય અપની ૨ જાતિ મે આકાર આદિ કો લેખ
વિભાગ સે હૈં, અર્થાત્-પૃથિવીકાય આદિ જીવોં કે જો આકાર હૈં ઊન
આકારોં કે જો ઓર અન્તર્ભેદ હૈં વે કુલકોટિ શબ્દ કે વાચ્યાર્થ હૈં ॥સૂ-૪૪॥

સાત લાખ, તેન્દ્રિય જીવોના આઠ લાખ, ચતુરિન્દ્રિય જીવોના નવ લાખ, જળ-
ચરોના સાઠા નાર લાખ, સ્થેચરોના બાર લાખ,, ચતુષ્પદોચ્ચજીવોના દશ
લાખ, ઉરગોના દશ લાખ ભુજગોના નવ લાખ, મનુષ્યોના બાર લાખ, દેવોના
પચ્ચીસ લાખ, અને નારદીઓના પચ્ચીસ લાખ કુલકોટિ (પ્રકાર) છે કુલ-
કોટિની વ્યુત્પત્તિ “કુલાના કોટિ” થાય છે તેનું તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે-પોત
પોતાની ભતિઆ આકાર આદિ પ્રમાણે પાડેલા વિભાગોને ‘કુલકોટિ’ કહે છે
એટલે કે પૃથિવીકાય આદિ જીવોના જે આકારો છે તે આકારોના બીજા જે
અન્તર્ભેદ છે તે કુલકોટિ શબ્દના વાચ્યાર્થ છે ॥ સૂ-૪૪॥

કીદશાઃ સન્તો ભ્રમન્તિ ? ઇત્યાહ—‘ફાર્સિદિયભાવમપચ્ચતા’ સ્
 ર્ષેન્દ્રિયભાવમમ્પયુક્તા=સ્પર્શમાત્રૈકેન્દ્રિયત્વ પ્રાપ્તાઃ, ‘તર્હિ તર્હિ ચેવ’ તત્ર તત્રૈવ
 =વત્તસ્પતિકાય એવ, કીદશો ? ઇત્યાહ—‘પરમવત્તરુગણગહણે’ પરમવત્તરુ-
 ગણગહણે=પરાઃ=પ્રકૃષ્ટાઃ, સર્વોત્કૃષ્ટકાયસ્થિતિમત્યાત્ મવાઃ=ઉત્પત્તિસ્થાનાનિ યેષુ
 તે તાદશા તરુગણાઃ=વૃક્ષગુચ્છગુલ્મઆદિસમૂહસ્તૈર્ગહણે=ગમ્भीરે ‘પુણો પુણો’
 પુનઃ પુનઃ=મુહુર્મુહુઃ ‘ઇમ’ વક્ષ્યમાણમ્ ‘અણિદ્ધ’ અનિદ્ધ=પ્રતિકૂલ દુઃસ્વસમુદય
 =દુઃસ્વસમૂહ=નાનાવિધમશાતવેદનીયરૂપ ‘પાવતિ’ પ્રાપ્નુવન્તિ । સર્વાસા જાતીનાં
 કુલકોટયો યથા —

“પર્ણિદિપ્તુ પચ્ચમુ, વારસ-સત્ત-તિગ-સત્ત-અઢ્ઢીસા ય ।

વિગલેસુ સત્ત અઢ નવ, જલ-સ્વહ-ચઉપ્પય-ઉગ-ભ્યયગેસુ ॥ ૧ ॥

અદ્ધત્તેરસ વારસ, દસ દસ નવગ નરામરે નરણ ।

વારસ છવીસ પળવીસ હુતિ કુલકોટિલસ્વાહ ॥ ૨ ॥ ” ઇતિ ।

(ફાર્સિદિય ભાવસંપચ્ચતા) યે સવ જીવ ઇક સ્પર્શન ઇન્દ્રિય બાલે

હી હોતે હૈં । ઓર (તર્હિ તર્હિ ચેવ) ડસી વનસ્પતિકાય મેં કિ જહાં
 (પરમવત્તરુગણગહણે) વૃક્ષ, ગુચ્છ, ગુલ્મ આદિ સમૂહરૂપ ભવ સર્વોત્કૃષ્ટ
 હૈં ઓર ડનસે જો ગહન વના હુઆ હૈ (પુણો પુણો) વાર ૨ (ઇમ) ડન
 વક્ષ્યમાણ (અણિદ્ધ) અનિદ્ધ-પ્રતિકૂલ (દુઃસ્વસમુદય) દુઃસ્વો કો-નાના
 વિધ અશાત વેદનીય રૂપ કષ્ટોં કો (પાવતિ) પાતે હૈં । સમસ્ત જાતિયોં
 કે કુલ કોટિયોં કી સંખ્યા ઇસ પ્રકાર હૈં—

પૃથ્વીકાય કે વારહ લાખ, અપ્કાય કે સાત લાખ, તેડકાય કે
 ત્રીન લાખ, વાયુકાય કે સાત લાખ, વનસ્પતિકાય કે અઢ્ઢાઈસ લાખ,

“ફાર્સિદિય ભાવસંપચ્ચતા” તે બધા ભવો એકલી સ્પર્શન ઇન્દ્રિયથી
 જ યુક્ત હોય છે, અને “તર્હિ તર્હિ ચેવ” તે જ વનસ્પતિકાયના કે બધા
 “પરમવ તરુગણ ગહણે” વૃક્ષ, ગુચ્છ, ગુલ્મ આદિ સમૂહરૂપ ભવ સર્વોત્કૃષ્ટ
 છે અને તેમનાથી જે ગહન બનેલ છે “પુણો પુણો” વારવાર “ઇમ” આ
 પ્રમાણે “અણિદ્ધ” અનિદ્ધ-પ્રતિકૂળ “દુઃસ્વસમુદય” હુ બોલે વિવિધ આશાતા
 વેદનીય રૂપ કષ્ટોને “પાવતિ” અનુભવે છે સઘળી જાતિયોની યોનિયોના
 પ્રકારોની સંખ્યા નીચે પ્રમાણે છે—

પૃથ્વીકાયના બાર લાખ, અપ્કાયના સાત લાખ, તેડકાયના ત્રણ લાખ,
 વાયુકાયના સાત લાખ, વનસ્પતિકાયના અઠ્ઠાવીસ લાખ, દ્વિઇન્દ્રિય ભવોના

अनलश्च अनिलश्चेत्यनलानिलौ तयोः=अग्निमात्रोः विविधैः शस्त्रैः स्वकायपरका-
योभयकायलक्षणैः घट्टनम्=उपहननम्, अनेन-अग्निमात्रोर्वेदना दर्शिता। तत्र-
अग्नेः स्वकायशस्त्रं वरीगग्नेः काष्ठाग्निः, परकायशस्त्रं धूलिजलादिकम्। उभय-
कायशस्त्रम्=प्रज्वलत्करीपादिभ्यम्। वायोः स्वकायशस्त्रं=पूर्वदिग्वायो पश्चिमदि-
ग्वायुः, इत्यादि रूपम्, परमायशस्त्रम् अग्न्यादिकम्, उभयमायशस्त्रम्=अग्निस-
न्तप्तवायु-द्विगत्वमिश्रवायुश्च, इत्यादिरूपम्। अचित्तमुखवातभृतः सन् दवरकेण
गाढवद्मुखो नद्यादिजले प्लाव्यमानो दृतिर्यावत् क्षेततः प्रथम इत्तशत गच्छति
तदधि तद्गतो वायुरचित एव, तत ऊर्ध्वं द्वितीयद्वस्तशतपर्यन्त मिश्रो भवति,

जो क्रिया है इसका नाम चलाना है। पानी को एकत्रित करके कुए, तडाग आदि में रोक देना इसका नाम रोधन है। ऐसी क्रियाओं से अप्काय को वेदना होती है। (अणलानिल विविह सत्थघट्टण) अग्नि-
काय और वायुकाय के वेदना के कारण स्वकाय, परकाय और उभयकाय विविधशस्त्र हैं। इनसे इनकी विरावना होती है। अग्नि का-करीप की अग्नि का काष्ठ की अग्नि स्वकायरूप शस्त्र है धूलि एव जल आदि पर-
कायरूप शस्त्र है, एव प्रज्वलित करीप आदिक उभयकायरूप शस्त्र हैं। वायुका-पूर्वदिशा सवधी वायु का पश्चिमदिशा सवधी वायु स्वकाय शस्त्र है, अग्नि आदिक परकायशस्त्र हैं तथा अग्नि सनस वायु और मशक के भीतर रही हुई वायु ये उभयकायशस्त्र हैं। अचित्त मुख की वायु से भरा हुआ तथा डोरे से जिसका मुखबद्ध कर दिया गया है ऐसी दृति (मशक) जिस स्थानसे नदी के जल में छोड़ी जाती है वहां से लेकर तैरती

छे पाण्डुने अत्र दरीने इवा, तणाव आदिमा दौडी लेवानी क्रियानु नाम 'रोधन' छे तेवी क्रियाअेयी अप्रजायने वेदना थाय छे "अणलानिल-विविह सत्थघट्टण" अग्निकाय अने वायुकायने वेदनाना दारणो स्वकाय, परकाय अने उलयकाय विविध शस्त्रो छे तेमना वडे तेमनी विराधना थाय छे अग्निनु-करीपनी अग्निनु दाष्टनी अग्नि स्वकायरूप शस्त्र छे, धूण अने जण आदि परकायरूप शस्त्र छे, अने प्रज्वलित करीप आदि उलयकायरूप शस्त्र छे वायुनु पूर्वदिशाना वायुनु पश्चिम दिशाना वायु स्वकाय शस्त्र छे, अग्नि आदि पर-काय शस्त्र छे, तथा अग्निथी मतप्त वयु अने मरादनी अहो रडेले डवा ते उलयकाय शस्त्र छे अचित्त वायुथी लरेले तथा दोगीथी नेनु मुण णध करी देवामा आण्यु छे अेवी मशक ने जग्गाअेयी नदीना पाण्डुमा छूटी भूक वामा आवे छे त्याथी शङ्क दरीने तरती तरती ब्यादे सो डाय आगण नीकणी

एव ते भवपरंपरादुक्खसमणुवद्धा अडतिससारवीहणकरे जीवा
पाणाइवायनिरया अणंतकालं ॥सू० ४५॥

टीका—‘कोद्याल-कुलिय-दालण-सलिल-मलण-खुभण-रुभण अणलाणिल
विविह सत्थघट्टण परोप्पराभिहणण मारण विराहणाणि’ कुद्यालकुलिन्दारण
सलिल मलन क्षोभण रोधनानलानिल त्रिथि शस्त्रघट्टनपरस्परामिहणनमारण-
विराधनानि, तत्र-‘कोद्याल’ कुद्याल=भूमिदारक शस्त्रविशेष; ‘कुलिय’ कुलिक
घ हलविशेषस्ताभ्या ‘दालण’ दारण-खननम्, एतद् द्वय पृथिवी वनस्पत्योर्वेदना
कारणम् सलिलस्य=जलस्य मलन क्षोभणरोधनानि, तत्र-मलन-मर्दन, क्षोभण=
सञ्चालन, ‘रुभण’ रोधन=निरोधन तडागादी, अनेनाप्कायवेदना व्यक्तीकृता,

पृथिवी आदि जीवों में वेदना के कारण क्या २ हैं ? सूत्रकार अब
इस विषय को स्पष्ट करते हैं—‘कोद्याल-कुलिय’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(कोद्याल-कुलिय दालण सलिलमलण-खुभण रुभण-अणला-
णिल विविह-सत्थघट्टण परोप्पराभिहणणमारणविराहणाणि य) (कोद्याल)
कुद्याल-कुदाली और (कुलिय) कुलिक-हल विशेष, (दालण) इनसे
भूमिका विदारण करना-खोदना, ये दो पृथिवी और वनस्पति जीवों के
वेदना के कारण हैं (सलिलमलण) पानी का मर्दन करना, (खुभण)
चलाना, और (रुभण) तडाग आदि में रोकना ये चार अणुकाय के
जीवों के लिये वेदना के कारण हैं । चुल्ली आदि में पानी डालता आदि
रूप जो क्रियाएँ की जाती हैं इसका नाम मर्दन है । क्षोभण शब्द का
अर्थ चलाना है । कहीं पर भरे हुए पानी को बाहिर निकालने आदिरूप

હવે સૂત્રકાર ને વિષયને સ્પષ્ટ કરે છે કે પૃથિવી આદિ જીવોમાં વેદ-
નાના કારણો કયા કયા છે—“કોદ્યાલ-કુલિય” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“કોદ્યાલ-કુલિય-દાલણ-સલિલ-મલણ-સુભણ-રુભણ-અણલાણિલ-
વિવિહ-સત્થ ઘટ્ટણ-પરોપ્પરાભિહણણમારણવિરાહણાણિ ય” “કોદ્યાલ” કોદ્યાળી અને
“કુલિય” કુલિક-હળ વિશેષ વડે, “દાલણ” ભૂમિને ખોદવી તે પૃથિવી અને વનસ્પતિ
જીવોને વેદનાના કારણો છે “સલિલ મલણ” પાણીનું મર્દન કરવું “સુભણ”
ચલાવવું અને “રુભણ” તથાવ આદિમાં રોકવું તે અપ્રકાયના જીવો માટે
વેદનાનું કારણ છે ચૂલ આદિમાં પાણી નાખવા વગેરેની જે ક્રિયાઓ થાય
છે તેને મર્દન કહે છે ક્ષોભણ નો અર્થ ચલાવવું થાય છે કોઈ જગ્યાએ
સરાઈ રહેલા પાણીને બહાર કાઢવાની જે ક્રિયા થાય છે તેને ચલાવવું કહે

વીજલતેજોવાયુમાયદુઃસ્વાનિ 'અકામગાહ' અકામકાનિ=અવાચ્છનીયાનિ ભવન્તિ ।
 પુનસ્તાન્યેવ વિશદયતિ- 'પરપ્પઓગોદીરણાહિ ચ' પરપ્રયોગોદીરણામિશ્વ=પરેષા
 =સ્વભિચાના જનાના ચ પ્રયોગઃ=વ્યાપારમ્તેન ઉદીરણા=દુઃસ્વોત્પાદનપ્રેરણા
 સ્તામિઃ-સ્વપ્રયોજનપ્રિદેડપિ પરકથનૈઃ નિપ્રયોજનૈરિત્યર્થઃ, તથા- 'કઙ્ગપ્પ-
 ઓયણેહિ ચ' કાર્યપ્રયોજનૈશ્વ=આવશ્યકપ્રયોજનૈશ્વ । કથમ્ભૂતૈરિત્યાહ- 'પેસ્સપ-
 સુનિમિત્તઓસહાહારમાહર્હિ' પ્રેપ્પપશુનિમિત્તોપધાદારાદિકૈઃ=પ્રેપ્પયા - ભૂત્યા
 પશ્વઃ=ગાયદયસ્તન્નિમિત્તાનિ રોગપુશુક્ષાદિ નિવૃત્તિ હેતુમાનિ યાનિ ઔપધાદારાદીનિ
 તૈ પૃથિવ્યાદીના દિમાપકારાનાહ-ઉક્ષણ-ઉક્તથણ-પયણ-કોટ્ટણ-પીસણ-
 પિટ્ટણ-મજ્જણ-ગાલણ-આમોહણ-સહણ-ફુહણ-મજ્જણ-હેયણ-તચ્છણ-વિલુચણ-
 પતજ્જોહણ - અગ્નિદહણાદ્યાહ' ઉત્ત્વનનોક્તવનપચનકુટ્ટનપેપણપિટ્ટનમર્જન
 ગાલના મોટનશટનસ્ફુટનમ્મજ્જનચ્છેદનતલ્લગવિલુચ્છનપાત્રઓટનાગ્નિદહનાદીનિ-તત્ર

જલ, તેજ, વાયુકાર્યો કો જો इस प्रकार के दुःस्वा होते हैं वे (अकाम-
 गाह) उन्हें अवाच्छनीय होते हैं । पाप जीव पाप क्यों करते हैं- (पर-
 प्पओगोदीरणाहि च) अपना प्रयोजन हो तो भी दूसरो से कहने से, तथा
 (कङ्गपपओयणेहि च) अपना आवश्यक कार्य से, वे कार्य कौन हैं ?
 सो कहते हैं (पेस्सपसुनिमित्तओसहाहारमाहर्हि) प्रेप्य-भृत्य, पशु-
 गाय भैंस आदि जानवरों के रोग, बुभुक्ष अ,दि की निवृत्ति के हेतु-
 भूत औपध, आहार आदि के निमित्त से करते हैं । हिंसा के प्रकारों
 को कहते हैं (उक्खणण-उक्कथण-पयण-कोट्टण-पीसण-पिट्टण-मज्जण
 गालण-आमोहण-सहण-कुहण-मज्जण=हेयण-तच्छण-विलुचण-पत-
 ज्जोहण-अग्निदहणादयाह) उत्त्वनन आदि दुस्स्वो को एकेन्द्रिय की
 पर्याय में प्राप्त होकर पृथिव्यादि जीव बनकर भोगते हैं । कुदाल आदि

તેજ અને વાયુકાર્યોને આ પ્રકારે જે દુઃસ્વો લોગવવા પડે છે તે 'અકામગાહ'
 તેમને અવાચ્છનીય-અપ્રિય હોય છે પાપી છવ પાપ શા માટે કરે છે ? "પરપ્પ
 ઓગોદીરણાહિ ચ" પોતાને માટે કાંઈ પણ પ્રયોજન ન હોય તો પણ બીજાના
 કહેવાથી, તથા "કઙ્ગપ્પઓયણેહિ ચ" પોતાના આવશ્યક કાર્યોને કરણે તેઓ
 પાપ કરે છે તે કાર્યો કયા કયા છે ? તો સૂત્રકાર કહે છે- "પેસ્સપસુનિમિત્ત
 ઓસહાહારમાહર્હિ" પ્રેથ-નોડર, પશુ-ગાય, ભેસ આદિ જાનવરોના રોગ,
 ભૂખ આદિના નિવારણને માટે, ઔપધ, આહાર આદિ ને નિમિત્તે તે કાર્ય કરે
 છે હવે હિંસાના પ્રકારો કહે છે- "ઉક્ષણ-ઉક્કથણ-પયણ-કોટ્ટણ-પીસણ-
 પિટ્ટણ-મજ્જણ-ગાલણ-આમોહણ-સહણ-ફુહણ-મજ્જણ-હેયણ-તચ્છણ-વિલુચણ-પ-
 તજ્જોહણ-અગ્નિદહણાદ્યાહ" તે પાપી છવો એકેન્દ્રિયની પર્યાયમા પૃથિવ્યાદિ

અસૌ મિશ્રવાયુરુભયકાયશસ્ત્ર સમરતિ । જા દસ્તગતગમનકાલ પરિમાદ્યૈકસ્મિ
 ન્નપિ સ્થાને જલમધ્યગતસ્યોક્ત ક્રમેણાચિત્તત્વાદિક સૂક્ષ્મેક્ષિકયા પ્રિભાવનીયમ્ ।
 તથા પરસ્પરાભિદ્વનનમ્=તેજસા જલતાપન જલેનાગ્નિપાપનમિત્યેવ રૂપઃ સર્વેષા
 પૃથિવ્યાદીના પરસ્પરમભિગ્રાતઃ, મારણ=વિહિસન, વિરાધન=પીડન, તાનિ પૃથિ

હુઈ જવ વહ સૌ હાથ આગે નિકલ જાતિ હૈ વહાતક તદ્વત પ્રાયુ અચિત્ત
 હી રહતી હૈ, ઘાદ મેં ઇસકે જવ વહ દૂસરે સૌ હાથ ક્ષેત્ર પર્યન્ત વહા સે
 આગે કો વહતી હુઈ જાતી હૈ તથ વહાં તક વહી વાયુ મિશ્રવાયુ રૂપ હોતી
 હૈ । યહી મિશ્રવાયુ ઉભયકાયરૂપ શસ્ત્ર મેં પરિગણિત હુઆ હૈ । યહા
 દ્વિતિગતિ (મશક મેં રહી હુઈ) વાયુ કો જો અચિત્ત, મિશ્ર આદિ રૂપ
 કહા ગયા હૈ વહ કાલ કી અપેક્ષા સમજ્ઞાના ચાહિયે, પ્રથમ સૌ હાથ
 ચલને મેં જિતના સમય લગતા હૈ ઉસ સમય કો લેકર વહ વાયુ જો દ્વિતિ
 (મશક) મેં મરી હુઈ અચિત્ત રહતી હૈ, ઘાદ મેં દૂસરે સૌ હાથ ચલને મેં
 જિતના સમય લગતા હૈ ઉસકો લેકર વહ વાયુ સચિત્તાચિત્તરૂપ મિશ્ર
 હો જાતી હૈ । ઇસ તરહ સૂક્ષ્મરીતિ સે વિચાર કરને પર વાયુમે અચિત્તાતા
 સચિત્તાચિત્તાતા સધ જાતી હૈ “ પરોપ્પરાભિદ્વનન ” કા તાત્પર્ય હૈ અગ્નિ
 સે જલ કા તપાના, જલ સે અગ્નિ કા બુદ્ધાના, ઇત્યાદિ રૂપ સે જો
 પૃથિવ્યાદિકાય કા પરસ્પર મેં અભિગ્રાત કરના હોતા હૈ વહ ‘ પરોપ્પરા-
 ભિદ્વનન ’ હૈ । (મારણ) મારણ શબ્દકા અર્થ હૈ ઇનકા વિહિસન કરના ।
 (વિરાદ્વનાણિ) વિરાધના કા અર્થ હૈ ઇન્હેં પીડા પહુંચાના । ઇન પૃથિવી

બાથ ત્યા સુધી તેની અદર રહેલી હવા અચિત્ત રહે છે, ત્યાર પછી ત્યાંથી
 પશુ તરતી તરતી સો હાથ આગળ નીકળી બાથ ત્યા સુધીમા તે હવા મિશ્ર
 વાયુરૂપ થઈ બાથ છે એજ મિશ્રવાયુ ઉભયકાયરૂપ શસ્ત્રમા ગણાયેલ છે અહીં
 મશકમા રહેલ હવાને અચિત્ત મિશ્ર આદિરૂપ બતાવવામા આવેલ છે, તે કાળની
 અપેક્ષાએ સમજવાનું છે, પહેલા સો હાથ ચાલવામા બેટલો સમય લાગે છે
 તે સમય સુધી તે મશકમા ભરેલ હવા અચિત્ત રહે છે ત્યાર
 બાદ બીજા સો હાથનું અંતર ચાલવામા બેટલો સમય લાગે છે તેટલા સમય
 સુધીમા તે વાયુ સચિત્તાચિત્ત રૂપ મિશ્ર થઈ બાથ છે આ રીત સૂક્ષ્મ રીતે
 વિચાર કરતા હવામા અચિત્તતા તથા સચિત્તાચિત્તતા ને સમજી શકાય છે
 “ પરોપ્પરાભિદ્વનન ” એટલે અગ્નિ વડે જળને ગરમ કરવું, જળથી અગ્નિને
 ઊગાવવી, ઇત્યાદિ રીતે પૃથિવ્યાદિ કાયનો પરસ્પરમા ઘાત થવાની જે ક્રિયા
 થાય છે તે “ પરોપ્પરાભિદ્વનન ” છે મારણ “મારણ” એટલે તેમની હત્યા કરવી
 “વિરાદ્વનાણિ” વિરાધના કરવી એટલે તેમને પીડા પહોંચાડવી તે પૃથિવી જળ,

વીજલતેજોવાયુ કાયદુ'સ્વાનિ 'અમમગાહ' અકામકાનિ=અવાઝ્ઞનીયાનિ ભવન્તિ ।
પુનસ્તાન્યેય વિશદયતિ- ' પરપ્પઓગોદીરણાદિ ચ ' પરપ્રયોગોદીરણામિથ્થ=પરેપા
=સ્વમિનાના જનાના ચ પ્રયોગઃ=વ્યાપારમ્તેન ઉદીરણા=દુઃસોત્પાદનપ્રેરણા
સ્તામિઃ-સ્વપ્રયોજનપરિદેડપિ પરકથનૈ. નિપ્રયોજનૈરિત્યર્થ, તથા- ' ક્વજ્જપ્પ-
ઓયણેહિ ચ ' કાર્યપ્રયોજનૈથ=આવશ્યકપ્રયોજનૈથ । કથમ્ભૂતૈરિત્યાહ- ' પેસ્સપ-
સુનિમિત્તઓસહાદારમાદ્દર્શિ ' પ્રેપ્પપશુનિમિત્તોપધાદારાદિકૈઃ=પ્રેપ્પયા - મૃત્યા
પશવઃ=ગવાદયસ્તન્નિમિત્તાનિ રોગપુશુક્ષાદિ નિવૃત્તિ હેતુસ્વાનિ યાનિ ઔપધાદારાદીનિ
તૈ પૃથિવ્યાદીના હિંમાપકારાનાદ-ઉત્તરણ-ઉત્કલ્પણ-પયણ-કોટ્ટણ-પીસણ-
પિટ્ટણ-મજ્જણ-ગાલણ-આમોહણ-સહણ-ફુહણ-મજ્જણ-ઢેયણ-તચ્છણ વિલુચ્છણ
પત્તજ્જોહણ - અગ્ગિદ્દહણાદ્યાહ ' ઉત્તરણનોત્કલ્પનપચનકુટ્ટનપેપણપિટ્ટનમર્જન
ગાલના મોટનગટનસ્ફુટનમજ્જન-ઉદનત્તજ્જણવિલુચ્છનપાત્તજ્જોટનાગ્નિદહનાદીનિ-તત્ર

જલ, તેજ, વાયુમાર્ગો કો જો હસ પ્રકાર કે દુઃસાં હોતે હિં (અકામ-
ગાહ) ઉન્હેં અવાઝ્ઞનીય હોતે હિં । પાપ જીવ પાપ કર્યો કરતે હિં- (પર-
પ્પઓગોદીરણાદિ ચ) અપના પ્રયોજન હો તો બી દૂસરો સે કહને સે, તથા
(ક્વજ્જપ્પઓયણેહિ ચ) અપના આવશ્યક કાર્ય સે, બે કાર્ય કૌન હિં ?
સો કહતે હિં (પેસ્મપસુનિમિત્તઓસહાદારમાદ્દર્શિ) પ્રેપ્પ-મૃત્ય, પશુ-
ગાય ભેંસ આદિ જાનવરોં કે રોગ, બુશુક્ષ અ,દિ કી નિવૃત્તિ કે હેતુ-
મૂત ઔપધ, આહાર આદિ કે નિમિત્ત સે કરતે હિં । હિંસા કે પ્રકારોં
કો કહતે હેં (ઉત્તરણ-ઉત્કલ્પણ-પયણ-કોટ્ટણ-પીસણ-પિટ્ટણ-મજ્જણ
ગાલણ-આમોહણ-સહણ-ફુહણ-મજ્જણ-ઢેયણ-તચ્છણ-વિલુચ્છણ-પત્ત
જ્જોહણ-અગ્ગિદ્દહણાદ્યાહ) ઉત્તરણ આદિ દુઃસ્વો કો એકેન્દ્રિય કી
પર્યાય મે પ્રાપ્ત હોકર પૃથિવ્યાદિ જીવ વનકર ભોગતે હિં । કુદાલ આદિ

તેજ અને વાયુઓને આ પ્રકારે જે દુઃસાં ભોગવવા પડે છે તે 'અમમગાહ'
તેમને અવાઝ્ઞનીય-અપ્રિય હોય છે પાપી છવ પાપ શા માટે કરે છે ? 'પરપ્પ
ઓગોદીરણાદિ ચ' પોતાને માટે ડોહ પણ પ્રયોજન ન હોય તો પણ ખીબના
કહેવાથી, તથા "ક્વજ્જપ્પઓયણેહિ ચ" પોતાના આવશ્યક કાર્યોને ડાગણે તેઓ
પાપ કરે છે તે કાર્યો કયા કયા છે ? તો સૂત્રકાર કહે છે- "પેસ્મપસુનિમિત્ત
ઓસહાદારમાદ્દર્શિ" પ્રેપ્પ-મૃત્ય, પશુ-ગાય, ભેંસ આદિ જાનવરોના રોગ,
ભૂખ આદિના નિવારણને માટે, ઔપધ, આહાર આદિને નિમિત્તે તે કાર્ય કરે
છે હવે હિંમાના પ્રકારો કહે છે- "ઉત્તરણ-ઉત્કલ્પણ-પયણ-કોટ્ટણ-પીસણ-
પિટ્ટણ-મજ્જણ-ગાલણ-આમોહણ-સહણ-ફુહણ-મજ્જણ-ઢેયણ-તચ્છણ-વિલુચ્છણ-પ-
ત્તજ્જોહણ-અગ્ગિદ્દહણાદ્યાહ" તે પાપી છવો એકેન્દ્રિયની પર્યાયમા પૃથિવ્યાદિ

‘ઉત્તલ્લખણ’ ઉત્તલ્લખન-કુદાલાદિમિ પૃથિવ્યાદીના વિદારણમ્, ‘ઉત્તલ્લયણ’ ઉત્તલ્લયન-વૃક્ષાદીના દયચાપનયન, ‘પયણ’ પચન ‘કોટ્ટણ’ કુટ્ટન=મસિદ્ધ, ‘પીસણ’ પેપણ=ઘરદાદી ચૂર્ણન, ‘પિટ્ટણ’ પિટ્ટન=તાડન, ‘મજ્જણ’ મર્જન=ખાણે પવન, ‘ગાલણ’ ગાલન=લતાગુલ્માદિ રસ નિગારણમ્, ‘આમોઢણ’ આમોટનમ્=શાખા દીના મોટન, ‘સઢણ’ શટન=સ્વયમેવ વિકૃતમયન, ‘ફુઢણ’ સ્ફુટન=સ્વય દિધા મયન, ‘મજ્જણ’ મજ્જન=નુટન-ચોટન યા, ‘છેયણ’ છેદન=કુઠારાદિના દિધા-કરણ, ‘તચ્છણ’ તક્ષણ=ગાસ્યાદિમિશ્રોચ્છન, ‘વિલુચણ’ વિલુચ્ચન=લોમાદેરિન

સે પૃથિવી આદિ કા વિદારણ કરના-ચોટના, હસકા નામ (ઉત્તલ્લખણ) ઉત્તલ્લખન છે. વૃક્ષાદિકોં કી ઝાલ નિકાલના હસકા નામ (ઉત્તલ્લયણ) ઉત્તલ્લયન છે. પચાનેકા નામ (પયણ) પચન છે. કૂટને કા નામ (કોટ્ટણ) કુટ્ટન છે. ઘરદ આદિ મેં ગેદ આદિ કા પીસના હસકા નામ (પીસણ) પેપણ છે. તાડક કરના હસકા નામ (પિટ્ટણ) પિટ્ટન છે. ખાડ મેં મૂજના હસકા નામ (મજ્જણ) મર્જન છે. લતા ગુલ્મ આદિ કા રસ નિકાલના હસકા નામ (ગાલણ) ગાલન છે. શાખાદિક કા મરોઢના હસકા નામ (આમોઢણ) આમોટન છે. અપને આપ વિઠૂન હો જાના હસકા નામ (સઢણ) શટન છે. સ્વતઃ દો ડુકડે હો જાના (ફુઢણ) સ્ફુટન છે. તૂટના યા કિસી સે તોડ લિયા જાના હસકા નામ (મજ્જણ) મજ્જન છે. કુઠાર આદિ સે કાટ દિયા જાના, હસકા નામ (છેયણ) છેદન છે. વસલા આદિ સે છોલના હસકા નામ (તચ્છણ) તક્ષણ છે. રોમ આદિ કી તરદ પત્રાદિક કા દૂર કરના હસકા નામ (વિલુચણ)

છવે તરીકે ઉત્પન્ન થઈને ઉત્પન્નન આદિ દુષ્ટો લોગવે છે કોદાળી આદિ વડે પૃથિવી આદિને ખોદવાની ક્રિયાને “ઉત્તલ્લખણ” ઉત્પન્નન કહે છે વૃક્ષાદિની ઝાલ ઉતારવી તે ક્રિયાને “ઉત્તલ્લયણ” ઉત્તલ્લયન કહે છે શાખવાની ક્રિયાને “પયણ” પચન કહે છે કૂટવાની-ખાડવાની ક્રિયાને “કોટ્ટણ” કુટ્ટન કહે છે ઘટી આદિમા ઘઉં આદિને દળવાની ક્રિયાને “પીસણ” પેપણ કહે છે માર મારવાની ક્રિયાને “પિટ્ટણ” પિટ્ટન કહે છે લઠીમા શેકવાની ક્રિયાને “મજ્જણ” મર્જન કહે છે લતા, ગુલ્મ આદિમાથી રસ કાઢવાની ક્રિયાને “ગાલણ” ગાલન કહે છે શાખા આદિને મરડવાની ક્રિયાને “આમોઢણ” આમોટન કહે છે આપોઆપ વિકૃત થઈ જવાની ક્રિયાને “સઢણ” શટન કહે છે બંતે જ બે ટુકડા થઈ જવાની ક્રિયાને “ફુઢણ” સ્ફુટન કહે છે બંતે તૂટવાની કે ખીન વડે તોડવાની ક્રિયાને “મજ્જણ” કહે છે કુહાડી આદિથી કાપવાની ક્રિયાને “છેયણ” છેદન કહે છે વાસલા આદિથી ~ ~ ~ ?

પત્રાદીનામપનયન, 'પતજ્ઞોદ્ધન' પ્રાન્તજ્ઞોદન=પત્રપુષ્પફળાદિપાતનમ્, 'અગ્નિ દહન' અગ્નિદહન=અગ્નિ પ્રજ્વાલન ચેતાન્યાદિર્યેષા તાનિ એવમ્પ્રકારાણિ દુઃસ્વાનિ એકેન્દ્રિયસમ્વન્તીનિ એકેન્દ્રિયત્વ પ્રાપ્તાઃ પૃથિવ્યાદિજીવાઃ પ્રાપ્નુવન્તીતિ પૂર્વેણ સમ્વન્ધઃ । તદેવ નિગમયતિ-એમ્=ઉક્તરીત્યા તે=નરકાત્ પ્રત્યાગતાઃ જીવાઃ 'ભવ પરપરાદુઃસ્વસમણુગદ્ધા' ભવપરમ્પરાદુઃસ્વસમણુગદ્ધા=પચ્ચેન્દ્રિયાદિ યોનિષુ જન્મપરમ્પરૈવ દુઃસ્વ તેન સમણુગદ્ધા=સયુક્તા 'પાળાઙ્વાય-નિરયા' પ્રાણાતિ-પાતનિરતોઃ=પ્રાણિવધપરોપનાઃ જીવાઃ સસારે=ચતુર્ગતિરૂપે કીદૃશે ? 'વીહણકરે' ભયકરે=ભયકારણે 'અણતકાલ' અનન્તકાલમ્ 'અહતિ' અટન્તિ=સતત ભ્રમન્તિ ॥ સુ૦ ૪૫ ॥

પૂર્વ નરકાત્પ્રત્યાગૃત્તાનાં તિર્યગ્યોનિષુ જન્મભયતીતિ ંર્ણિતમ્ । અથ યદિ તે કથ-
વિલુચ્ચન છે । પત્ર, પુષ્પ, ફલ આદિ કા ગિરાના ઇસકા નામ (પતજ્ઞો-
દ્ધન) પ્રાન્તજ્ઞાટન છે । અગ્નિ કા જલાના-ઇસકા નામ અગ્નિદહન છે ।
હત્યાદિ દુઃસ્વોં કો એકેન્દ્રિય પર્યાય કો પ્રાપ્ત હુણ પૃથિવ્યાદિ જીવ ભોગતે
હૈ । અથ ઇસકા ઉપસંહાર કરતે હુણ સૂત્રકાર કહતે હ-(એવ તે) ઇસ
પ્રકાર નરક સે નિકલે હુણ વે જીવ (ભવપરપરાદુઃસ્વ સમણુગદ્ધા) ઉક્ત
રીતિ સે પચ્ચેન્દ્રિય આદિ યોનિયોં મેં જન્મપરમ્પરામ્પ દુઃસ્વોં સે યુક્ત જીવ
(પાળાઙ્વાયનિરયા) પ્રાણિવધ કરને મે તત્પર હોકર (વીહણકરે) ભય-
કર ભય કે કારણભૂત ઇસ (સસારે) ચતુર્ગતિરૂપ સસાર મેં (અણત-
કાલ) અનન્ત કાલતક (અહતિ) ભ્રમણ કરતે હૈ ॥ સુ૦ ૪૫ ॥

ઇસ પ્રકાર યજ્ઞાનક ચત્ સમજાયા ગયા હૈ કિ નરક સે નિકલે હુણ
વે જીવ તિર્યચ યોનિ મેં જન્મ લેતે હૈ । યદિ વે કથચિત્ મનુષ્ય પર્યાય

“તચ્છણ” તક્ષણ કહે છે રુવાટી આદિ જે રીતે દૂર કરાય છે તે રીતે પત્રા-
દિકને દૂર કરવાની ક્રિયાને “વિલુચ્ચન” વિલુચ્ચન કહે છે પાન, ફળ, ફૂલ
આદિને પાડવાની ક્રિયાને “પતજ્ઞોદ્ધન” પ્રાન્તજ્ઞાટન કહે છે અગ્નિને સળગાવવાની
ક્રિયાને અગ્નિદહન કહે છે હત્યાદિ પ્રકારના દુઃખો એકેન્દ્રિય પર્યાયમા ઉત્પન્ન
થયેલ પૃથિવ્યાદિ જીવો ભોગવે છે હવે તેનો ઉપસંહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે
‘એવ તે’ આ રીતે નરકમાથી નીકળેલા જીવો “ભવપર પરાદુઃસ્વસમણુગદ્ધા”
ઉપરોક્ત પચ્ચેન્દ્રિય આદિ યોનિયોમા જન્મપરપરામ્પ દુઃખોમાં યુક્ત થાય છે,
અને “પાળાઙ્વાયનિરયા” પ્રાણિવધ કરવાને તત્પર થઈને “વીહણકરે”
ભયકર-ભયના કારણભૂત આ “સસારે” ચતુર્ગતિરૂપ સસારમા “અણતકાલ”
અનન્તકાળ સુધી “અહતિ” ભ્રમણ કરે છે ॥ સુ૦ ૪૫ ॥

આ રીતે અહીં સુધીમા સમજાવવામા આવ્યું છે કે નરકમાથી નીકળેલા
તે જીવો તિર્યચ યોનિમા જન્મ લે છે જે ડહાચ તેઓ મનુષ્ય યોનિમા ઉત્પન્ન

‘ઉત્કલ્પણ’ ઉત્કલ્પન-કુદાલાદિમિ પૃથિવ્યાદીનાં વિદારણમ્, ‘ઉત્પયણ’ ઉત્કલ્પન-વૃક્ષાદીના ત્વચાપનયન, ‘પયણ’ પચન ‘કોટ્ણ’ કુટ્નન=મસિદ્ધ, ‘વીસણ’ પેપણ=ઘરદાદો ચૂર્ણન, ‘પિટ્ણ’ પિટ્ન=તાડન, ‘મજ્જણ’ મર્જન=ભ્રાષ્ટ્રે પવન, ‘ગાલ્ણ’ ગાલન=લતાગુલ્મઆદિ રસ નિગારણમ્, ‘આમોહણ’ આમોટનમ્=શાલાદીના મોટન, ‘સહણ’ શટન=સ્વયમેવ વિકૃતમવન, ‘ફુહણ’ સ્ફુટન=સ્વય દ્વિધા મવન, ‘મજ્જણ’ મર્જન=ગુટન-ગ્રોટન યા, ‘છેયણ’ છેદન=કુઠારાદિના દ્વિધા કરણ, ‘તન્હણ’ તક્ષણ=ગાસ્યાદિમિશ્રોચ્છન, ‘વિલુચ્ણ’ વિલુચ્ચન=લોમાદેરિચ સે પૃથિવી આદિ કા વિદારણ કરના-રોડના, હસકા નામ (ઉત્કલ્પણ) ઉત્કલ્પનન હૈ । વૃક્ષાદિકોં કી છાલ નિકાલના હસકા નામ (ઉત્પયણ) ઉત્પયન હૈ । પકાનેકા નામ (પયણ) પચન હૈ । કૂટને કા નામ (કોટ્ણ) કુટ્ન હૈ । ઘરદ આદિ મેં ગેદ આદિ કા પીસના હસકા નામ (વીસણ) પેપણ હૈ । તાડક કરના હસકા નામ (પિટ્ણ) પિટ્ન હૈ । માડ મેં મૂજના હસકા નામ (મજ્જણ) મર્જન હૈ । લતા ગુલ્મ આદિ કા રસ નિકાલના હસકા નામ (ગાલ્ણ) ગાલન હૈ । શાલાદિકા કા મરોડના હસકા નામ (આમોહણ) આમોટન હૈ । અપને આપ વિઠૂન હો જાના હસકા નામ (સહણ) શટન હૈ । સ્વતઃ દો ટુકડે હો જાના (ફુહણ) સ્ફુટન હૈ । તૂટના યા કિસી સે તોડ લિયા જાના હસકા નામ (મજ્જણ) મર્જન હૈ । કુઠાર આદિ સે કાટ દિયા જાના, હસકા નામ (છેયણ) છેદન હૈ । વસૂલા આદિ સે છોલના હસકા નામ (તન્હણ) તક્ષણ હૈ । રોમ આદિ કી તરહ પત્રાદિકા કા દૂર કરના હસકા નામ (વિલુચ્ણ) વિલુચ્ચન હૈ ।

છવે તરીકે ઉત્પન્ન થઈને ઉત્પનન આદિ દુષ્ણે ભોગવે છે ગેદાળી આદિ વડે પૃથિવી આદિને ખોદવાની ક્રિયાને “ઉત્કલ્પણ” ઉત્કલ્પન કહે છે વૃક્ષાદિની છાલ ઉતારવી તે ક્રિયાને “ઉત્પયણ” ઉત્પયન કહે છે રાધવાની ક્રિયાને “પયણ” પચન કહે છે કૂટવાની-ખાડવાની ક્રિયાને “કોટ્ણ” કુટ્ન કહે છે ઘટી આદિમા ઘઉં આદિને દળવાની ક્રિયાને “વીસણ” પેપણ કહે છે માર મારવાની ક્રિયાને “પિટ્ણ” પિટ્ન કહે છે ભઠ્ઠીમા શેકવાની ક્રિયાને “મજ્જણ” મર્જન કહે છે લતા, ગુલ્મ આદિમાથી રસ ઝાડવાની ક્રિયાને “ગાલ્ણ” ગાલન કહે છે શાખા આદિને મરડવાની ક્રિયાને “આમોહણ” આમોટન કહે છે આપોઆપ વિકૃત થઈ જવાની ક્રિયાને “સહણ” શટન કહે છે જાતે જ બે ટુકડા થઈ જવાની ક્રિયાને “ફુહણ” સ્ફુટન કહે છે જાતે તૂટવાની કે ખીબા વડે તોડવાની ક્રિયાને “મજ્જણ” કહે છે કુઠાડી આદિથી ઠાપવાની ક્રિયાને “છેયણ” છેદન કહે છે વાસલા આદિથી છોલવાની ક્રિયાને

પત્રાદીનામપનયન, 'પતજ્ઞોહણ' પ્રાન્તજોટન=પત્રપુષ્પફળાદિપાતનમ્, 'અગ્નિ
દહણ' અગ્નિદહન=અગ્નિ પ્રજ્વાલન ચેતાન્યાદિર્યેષા તાનિ એવમ્પ્રકારાણિ દુઃખાનિ
એકેન્દ્રિયસમ્પન્નીનિ એકેન્દ્રિયત્વ પ્રાપ્તાઃ પૃથિવ્યાદિજીવાઃ પ્રાપ્નુવન્તીતિ પૂર્વેણ
સમ્બન્ધઃ । તદેવ નિગમયતિ-એમ્=ઉક્તરીત્યા તે=નરકાત્ પ્રત્યાગતાઃ જીવાઃ
'ભવ પરપરાદુઃખસમણુગદ્ધા' ભવપરમ્પરાદુઃખસમણુગદ્ધા=પચ્ચેન્દ્રિયાદિ યોનિષુ
જન્મપરમ્પરૈવ દુઃખ તેન સમણુગદ્ધા=સયુક્તા 'પાણાઙ્ગાય-નિરયા' પ્રાણાતિ-
પાતનિરતો=પ્રાણિવધપરોયણાઃ જીવાઃ સમારે=ચતુર્ગતિરુપે રીટશે ? 'વીહણકરે'
ભયકરે=ભયપ્રકારણે 'અણતકાલ' અનન્તકાલમ્ 'અહતિ' અટન્તિ=સતત
ભ્રમન્તિ ॥ સૂં ૪૫ ॥

પૂર્વ નરકાત્પ્રત્યાગતાના તિર્યગ્ચોનિષુ જન્મભયતીતિ ંર્ણિતમ્ । અથ યદિ તે કથ-
વિલુચ્ચન છે । પત્ર, પુષ્પ, ફળ આદિ કા ગિરાના હસકા નામ (પતજ્ઞો-
હણ) પ્રાન્તજોટન છે । અગ્નિ કા જલાના-હસકા નામ અગ્નિદહન છે ।
હત્યાદિ દુઃખોં કો એકેન્દ્રિય પર્યાય કો પ્રાપ્ત હુણ પૃથિવ્યાદિ જીવ ભોગતે
છે । અથ હસકા ઉપસંહાર કરતે હુણ સૂત્રકાર કહતે છે-(એવ તે) હસ
પ્રકાર નરક સે નિકલે હુણ વે જીવ (ભવપરપરાદુઃખ સમણુગદ્ધા) ઉક્ત
રીતિ સે પચ્ચેન્દ્રિય આદિ યોનિયોં મેં જન્મપરમ્પરામ્બ દુઃખોં સે યુક્ત જીવ
(પાણાઙ્ગાયનિરયા) પ્રાણિવધ કરને મેં તત્પર હોકર (વીહણકરે) ભય-
કાર ભય કે કારણભૂત હસ (સસારે) ચતુર્ગતિરુપ સસાર મેં (અણત-
કાલ) અનન્ત કાલતક (અહતિ) ભ્રમણ કરતે હેં ॥ સૂં ૪૫ ॥

હસ પ્રકાર યદાનક યદ સમઙ્ગાયા ગયા છે ત્રિ નરક સે નિકલે હુણ
વે જીવ તિર્યચ યોનિ મેં જન્મ લેતે હેં । યદિ વે કથચિત્ મનુષ્ય પર્યાય

“તચ્છણ” તક્ષણ કહે છે રુવાટી આદિ જે ગીતે દૂર કરાય છે તે ગીતે પત્રા-
દિકને દૂર કરવાના ક્રિયાને “વિલુચ્ચન” વિલુચ્ચન કહે છે પાન, ફળ, ફૂલ
આદિને પાડવાની ક્રિયાને “પતજ્ઞોહણ” પ્રાન્તજોટન કહે છે અગ્નિને સળગાવવાની
ક્રિયાને અગ્નિદહન કહે છે હત્યાદિ પ્રકારના દુઃખોં એકેન્દ્રિય પર્યાયમા ઉપપન્ન
થયેલ પૃથિવ્યાદિ છવો ભોગવે છે હવે તેનો ઉપસંહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે
‘એવ તે’ આ રીતે નરકમાથી નીકળેલા છવો “ભવપર પરાદુઃખસમણુગદ્ધા”
ઉપરોક્ત પચ્ચેન્દ્રિય આદિ યોનિયોમા જન્મપરપરામ્બ દુઃખોંથી યુક્ત થાય છે,
અને “પાણાઙ્ગાયનિરયા” પ્રાણિવધ કરવાને તત્પર થઈને “વીહણકરે”
ભય કર-ભયના કાણુભૂત આ “સસારે” ચતુર્ગતિરુપ સસારમા “અણતકાલ”
અનન્તકાળ સુધી “અહતિ” ભ્રમણ કરે છે ॥ સૂં ૪૫ ॥

આ ગીતે અહીં સુધીમા સમજાવવામા આવ્યું છે કે નરકમાથી નીકળેલા
તે છવો તિર્યચ યોનિમા જન્મ લે છે ભો કદાચ તેઓ મનુષ્ય યોનિમા ઉપપન્ન

શ્ચિન્મનુષ્યત્વમપિ ચેત્પ્રાપ્તુમ્વસ્તથાપ્યધન્યા एव जायन्ते इत्येतदाह—‘जे वि ये’त्यादि।

મૂલમ્—જે વિય ઇહ માણુસત્તણં આગયા કહ વિ નરગા ઉવ્વટ્ટિયા અધન્ના તે વિ ય દીસતિ પાયસો વિક્રયવિગલરૂવા खुज्जा बडभा य वामणा य वहिरा काणा कुटा पगुला विगल य मूया य मम्मणा य अधयगा य चमखुविणिहया संचिहया वाहिरोगपीलिय अप्पाउय-सत्थवज्झवाला कुलमखणुकिन्नदेहा दुब्बल कुसघयण-कुप्पमाण कुसંठिया कुरूवा किविणा य हीणा हीणसत्ता निच्चं सोवखपरिवज्जिया असुहदुम्वभागी णरगाओ इह सावसेसकम्मा उव्वट्टिया समाणा ॥ सू० ४६ ॥

ટીકા—‘જેવિ ય’ યેડપિ ચ-યે કેચિત્ત પ્રાણિન ‘નરગા’ નરકાત્ ‘ઉવ્વટ્ટિયા’ ઉદ્વર્તિતા=પ્રત્યાઘ્રતા: નિસ્સૃતા इत्यर्थ. ‘કહિં વિ’ કથમપિ=મહ-તારુદ્ધેન અનન્તજન્મમરણાનામનન્તદુ લ્લમનુભૂયેત્યર્થ., મનુષ્યલોકે ‘માણુસત્તણં’ મનુષ્યત્વ ‘આગયા’ આગતા=પ્રાપ્તા. ‘તેવિ ય’ તેડપિ ચ ‘અન્ના’ અન્યા: =નિન્દનીયા: ‘પાયસો’ પ્રાયશો=ગાહુન્યેન, પ્રાયશો ગ્રહણ તીર્થદ્ધરાદિ-વ્યાપ્ત્ય

કો ખી પ્રાપ્ત કર લેં તો વળા ખી વે સ્થાન અવસ્થા મે હી રહેતે હૈં, ઇસ વાત કો સમજાતે હ-(જે વિ ય) ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(જે વિ ય) જો કિતનેક પ્રાણી (નરગા) નરક સે (ઉવ્વટ્ટિયા) નિકલકર (કહિં વિ) કથમપિ—કુઝ, પુણ્ય કે ઉદય સે (ઇહ) ઇસ મનુષ્યલોક મે (માણુસત્તણ) મનુષ્ય પર્યાય કો (આગયા) પ્રાપ્ત કર લેતે હૈં (તે વિ પાયસો અધન્ના) પ્રાય: કરકે વે ચર્હા (પાયસો) શબ્દ તીર્થકર આદિ કો નિવૃત્તિ કે ઝિયે આયા હૈ । (અધન્ના) નિન્દનીય હોતે

થાય તો ત્યા તે પણ તેઓ ખરાબ હાલતમાં રહે છે, તે વાત હવે સ્પષ્ટ-કાર સમજાવે છે—“જે વિ ય” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘જે વિ ય’ જે કેટલાક પ્રાણીઓ “નરગા” નરકમાંથી “ઉવ્વટ્ટિયા” નીકળીને “કહિં વિ” થોડા પુન્યના ઉદયથી “ઇહ” આ મનુષ્ય લોકમાં “માણુસત્તણ” મનુષ્ય પર્યાય “આગયા” પ્રાપ્ત કરે છે “તે વિ પાયસો” પ્રાય કરીને તેઓ અહીંયા “અધન્ના” નિન્દનીય હોય છે “પાયસો” શબ્દ તીર્થકર આદિની નિવૃત્તિને માટે મૂક્યો છે “—વિક્રય

ધમ્, 'વિકૃયવિગલ્લસ્વા' વિકૃત વિકૃત્સ્વાઃ = વિકૃત-ગીમત્સ વિકલ્લ=હીન
 ચ રૂપમ્=આકારો યેષા તે તથા ભૂતા 'દીમતિ' દૃશ્યન્તે=દૃષ્ટિગોચરા ભવન્તિ ।
 તદેવ વર્ણયેતે—'સુજ્જા' કુન્નાઃ 'કુમ્બા' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધાઃ, 'ચડમા' એક
 પાર્શ્વહીનાઃ = પ્રકોપરિમાયાઃ, યદ્વા-વિકૃતરૂપેણ ગૃહિર્નિસ્સૃતહૃદયોદરમાગાઃ,
 'વામણા' વામનાઃ=સ્વસ્થાયાઃ 'વહિરા' ગિરિઃ=શ્રવણશક્તિહીનાઃ 'કાણા'
 કાણા=પ્રકાશાઃ 'કુટા' કુટ્ટાઃ=વિકૃતહસ્તાઃ 'ટૂટા' ઇતિ પ્રસિદ્ધાઃ 'પગુલા'
 'પદ્મયઃ'=જઘ્ઘાહીના 'પાગળા' ઇતિ પ્રસિદ્ધા, 'વિગલા' વિમલા = હીનાઙ્ગો-
 પાદ્માઃ 'મૂયા' મૂઠાઃ=ચચનશક્તિહીનાઃ, 'મમ્મણા' મમ્મનાઃ=સ્વલલ્લચનાઃ, 'અધ-
 યગા' અન્ધકાઃ=જન્માન્ધા, 'ચક્ષુવિગિહ્યા' ચક્ષુર્વિનિહતા =વિનિહતચક્ષુષઃ=

હૈં (વિકૃય વિગલ્લસ્વા ટીસતિ) ઉનકા રૂપ વિકૃત ઓર વિકલ-હીન
 હોતા હૈં । ઇસી વાત કો વિશેષરૂપ સે સૂત્રકાર સમજાતે હૈં (સુજ્જા)
 ઉનકે શરીર મેં પીઠ પર કુચડ નિકલી રહની હૈં । (ચડમા) વે એક
 પાર્શ્વસે હીન હોતે હૈં, અથવા ઉનકે હૃદય ઓર ઉદરકા ભાગ વિકૃતરૂપ
 સે બાહિર નિકલા ટુટા રહતા હૈં । (વામણા) શરીર ઉનકા યોના હોતા
 હૈં । (વહિરા) ઉનકી શ્રવણશક્તિ નષ્ટ હો જાતી હૈં (કાણા) વે આંખે
 સે કાને હોતે હૈં । (કુટા) હાથ ઉનકા એક ઠીક રહતા હૈં દૂસરા ટૂટ
 જાતા હૈં ઇસસે વે ટૂટા ફટલાતે હૈં, (પગુલા) પાગલે-જઘાહીન (વિગ-
 લા ચ) અંગ ઓર ઉપાંગો સે વે વિહીન હોતે હૈં, (મૂયા) મૂંગે હોતે હૈં-
 ચચનશક્તિ સે વીહીન હોતે હૈં, (મમ્મણા) મમ્મણ હોતે હૈં-બોલતે
 સમય વે અટકતે હૈં (અધયગા) જન્માન્ધ હોતે હૈં-ઉનકી જન્મતઃ દોનો
 આંખે ફટી રહતી હૈં, (ચક્ષુવિગિહ્યા) ચક્ષુવિનિહત હોતે હૈં-ઉનકી

વિગલ્લસ્વા ટીસતિ ” તેમનુ રૂપ વિકૃત અને વિકલ-હીન હોય છે એજ વાતને
 સૂત્રકાર વિન્તારથી મમલવે છે—“સુજ્જા” તેમના શરીરે પીઠ પર ખૂબ
 નીકળી હોય છે, “ચડમા” તેઓ એક પડખે જોડવાળા હોય છે, અથવા
 તેમના હૃદય અને પેટનો ભાગ વિકૃત રીતે બહાર પડતો હોય છે “વામણા”
 તેઓ વામનરૂપ ઠીંગણા હોય છે, “વહિરા” તેમની શ્રવણ શક્તિ નાશ પામે
 છે-તેઓ બહેરા થાય છે ‘કાણા’ તેઓ આંખે ઢાળા હોય છે “કુટા”
 તેમનો એક હાથ સારો હોય છે પણ બીજો હાથ તૂટી જવાને કારણે તેઓ
 ટૂટા ડહેવાય છે “પગુલા” પાગળા-પગે લૂલા “વિગલા ચ” અંગ અને ઉપા-
 ગોની જોડવાળા હોય છે, “મૂયા” મૂંગા હોય છે-બોલવાની શક્તિ વિનાના
 હોય છે “મમ્મણા” તોતડા હોય છે-બોલતા જાણ અટકે તેવા હોય છે

શ્ચિન્મનુષ્યત્તમપિ ચેત્પ્રાપ્નુયુસ્વથાપ્યધન્યા एष जायन्ते इत्येतद्वाद-‘जे त्रिये’त्यादि।

મૂલમ્—જે ત્રિયે ઇહ માણુસત્તણં આગયા કહ ત્રિ નરગા ઉવ્વટ્ટિયા અધન્ના તે ત્રિ ય દીસતિ પાયસો વિક્રયવિગલરૂપા યુજ્જા વડમા ય વામણા ય વહિરા કાળા કુટા પગુલા વિગલ ય મૂયા ય મમ્મણા ય અધયગા ય ચમ્મલુવિણિહયા સંચિલ્લયા વાહિરોગપીલિય અપ્પાઉય-સત્થવજ્જવાલા કુલક્કલણુકિન્નદેહા દુવ્વલ કુસલ્લયણ-કુપ્પમાણ કુસલ્લિયા કુરુવા કિવિણા ય હીણા હીણસત્તા નિચ્ચં સોમ્મલ્લપરિવલ્લિયા અસુહદુક્કલમાગી ધરગાઓ ઇહ સાવસેસકમ્મા ઉવ્વટ્ટિયા સમાણા ॥ સૂ. ૪૬ ॥

ટીકા—‘જે ત્રિય’ એટલે ચ-યે કેચિત્ પ્રાણિન ‘નરગા’ નરકાત્ ‘ઉવ્વટ્ટિયા’ ઉદ્વર્તિતા=પ્રત્યાઘ્રતા: નિસ્સૃતા इत्यर्थ: ‘કહિં ત્રિ’ કથમપિ=મહ-તારુષ્ટેન અનન્તજન્મમરણાનામનન્તદુલ્લભનુભૂયેત્યર્થ., મનુષ્યલોકે ‘માણુસત્તણ’ મનુષ્યત્વ ‘આગયા’ આગતા=પ્રાપ્તા: ‘તે ત્રિય’ તેટલે ચ ‘અન્ના’ અન્યા: =નિન્દનીયા: ‘પાયસો’ પ્રાયશો=ગાહુત્યેન, પ્રાયશો ગ્રહણ તીર્થદ્ધારાદિ-વ્યાવૃત્ત્ય

કો મી પ્રાપ્ત કર લે તો વહા મી વે ત્રાપ અવસ્થા મે હી રહેતે હૈં, હસ વાત કો સમજાતે હે—(જે ત્રિય) ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(જે ત્રિય) જો કિતનેક પ્રાણી (નરગા) નરક સે (ઉવ્વટ્ટિયા) નિકલકર (કહિં ત્રિ) કથમપિ—કુછ, પુણ્ય કે ઉદય સે (ઇહ) હસ મનુષ્યલોક મેં (માણુસત્તણ) મનુષ્ય પર્યાય કો (આગયા) પ્રાપ્ત કર છેતે હૈં (તે ત્રિ પાયસો અધન્ના) પ્રાય: કરકે વે યર્હા (પાયસો) શબ્દ તીર્થકર આદિ કો નિવૃત્તિ કે ત્રિયે આયા હૈ । (અધન્ના) નિન્દનીય હોતે

થાય તો ત્યા તે પણ તેઓ ખરાબ હાલતમા જ રહે છે, તે વાત હવે સૂત્ર કાર સમજાવે છે—“જે ત્રિય” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘જે ત્રિય’ જે કેટલાક પ્રાણીઓ “નરગા” નરકમાંથી “ઉવ્વ-ટ્ટિયા” નીડળીને “કહિં ત્રિ” થોડા પુન્યના ઉદયથી “ઇહ” આ મનુષ્ય લોકમાં “માણુસત્તણ” મનુષ્ય પર્યાય “આગયા” પ્રાપ્ત કરે છે “તે ત્રિ પાયસો” પ્રાય કરીને તેઓ અહીંયા “અધન્ના” નિન્દનીય હોય છે “પાયસો” શબ્દ તીર્થકર આદિની નિવૃત્તિને માટે મૂક્યો છે “વિક્રય

વર્જિતા વા, ' હીણા ' હીનાઃ=નીચજાતિકુલા ' હીણસત્તા ' હીનસત્ત્વાઃ=ઉત્સાહ
વર્જિતાઃ, ભીરવો વા, ' નિચ્ચ સોમ્વપરિવજ્જિયા ' નિત્યસૌખ્યપરિવર્જિતાઃ=
સતતદુઃખાકુલાઃ, ' અસુહદુઃસ્વભાગી ' અશુભદુઃસ્વભાગિનઃ=અશુભાનુવન્નિદુઃસ્વ
સમ્પન્નાઃ પ્રાન્તે દૃશ્યન્તે इति योग', એવમ્ભૂતા કે? इत्याह-ये 'नरगाओ' नरकात्
' इह ' इह-मर्त्यलोके ' उव्वट्ठ्या समाणा ' उद्भूताः=आगताः सन्तः ' सावसेस-
कम्मा ' सावशेषकर्माण =अवशिष्टाशुभकर्माणस्ते ॥ सू० ४६ ॥

અધોપસહરન્નાહ—' એવ ' इत्यादि ।

મૂલમ્—એવ ણરગ તિરક્કજોણિ કુમાણસત્ત ય હિહમાણા
પાવંતિ અણંતાઈં દુઃખાઈ પાવકારી । एसो सो पाणवहस्स
फलविवागो इहलोइयो पारलोइयो अप्पसुहो बहुदुक्खो मह-
वभयो वधुरयप्पगाढो दारुणो ककसो असाओ वाससहस्सेहिं
मुच्चई णय अवेदइत्ता अत्थिहु मोक्खोत्ति एवमाहसु नायकुल
नदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेजो कहेसीय पाणवहस्स

અભાવ રહતા હૈ । (હીણા) इनका कुल एव जाति ये दोनों ही हीन
होते हैं । (हीणसत्ता) उत्साह शक्ति से ये वर्जित होते हैं अथवा भीरु
-डरपोक-प्रकृति के होते हैं । (निच्य सोम्वपपरिवज्जिया) सुखों से
नित्य वर्जित-निरन्तर दुःखी रहते हैं । (असुहदुक्खभागी) इस प्रकार
इन अशुभानुबन्धी दुःखों से वे सम्पन्न (दीसति) देखे जाते हैं । जो
पापी जीव (नरगाओ) नरक से (उव्वट्ठिया समाणा) निकल कर (इहं)
इस मनुष्य लोक में (सावसेसकम्मा) पाप कर्मों के भोगने पर भी अव
शिष्ट अशुभ कर्म वाले हो कर आते हैं ॥ सू० ४६ ॥

હોય છે, અથવા તેમનામા દાન દેવાની શક્તિ હોતી નથી “ હીણા ” તેમનુ
કુળ અને જાતિ બન્ને હીન હોય છે “ હીણસત્તા ” તેઓ ઉત્સાહ વિનાના
હોય છે અથવા ભીરુ ડરપોક સ્વભાવના હોય છે ‘ નિચ્ચ સોમ્વપરિવજ્જિયા ’
હમેશા સુખથી રહિત હ બી હોય છે “ અસુહદુઃસ્વભાગી ” આ ગીતે તેઓ
અશુભાનુબંધી હ બોધી શુદ્ધ “ દીસતિ ” દેખાય છે પાપી એવ “ નરગાઓ ”
નરકમાંથી “ ઉવ્વટ્ઠિયા સમાણા ” નીકળીને “ ઇહ ” આ મનુષ્યલોકમાં “ સાવ-
સેસકમ્મા ” પાપ કર્મોના અશુભ ફળો ભોગવવા છતા પણ બાકી રહેલ અશુભ
કર્મ સાથે લઈને આવે છે ॥ સૂ૦ ૪૬ ॥

રોગાદિભિર્વિકૃતનેત્રાઃ, 'સચિહ્યા' સચિહ્યાઃ=વિર્પેટનેત્રાઃ 'વાહિરોગપીલિય' વ્યાધિરોગપીહિતાઃ=વ્યાધિભિઃ=કુષ્ઠાદિમિ, રોગૈશ્વ=કાસશ્વાસાદિભિઃ પીહિતાઃ 'અપ્પાડય' અલ્પાયુષ્કાઃ 'સત્થવજ્ઞ' શસ્ત્રવધ્યાઃ=શસ્ત્રપ્રયોગેણ મરણશીલાઃ, ઘાલાઃ=બુદ્ધિરહિતાઃ, 'કુલ્લક્ષણુકિન્નદેહા' કુલક્ષણોત્કીર્ણદેહાઃ=કુત્સિતલક્ષણૈર્વ્યાપ્તશરીરા.-શુભરેલાદિવર્જિતા इत्यर्थ, 'દુન્નલ' દુર્બલાઃ=ચલહીના. 'કુસઘયણકુપ્પમાણકુસઠિયા' કુસહનનકુપમાણકુસરિયતાઃ - કુસહનનાઃ = કુત્સિત સહનન=અસ્થિરચનાવિશેષો યેષાં તે તથા, કુપમાણા=કુત્સિત શરીરસ્ય પ્રમાણમતિહિન્નાતિહિન્નાદિલક્ષણ યેષાં તે તથા, કુસસ્થિતાશ્વ=કુત્સિતસસ્થાનાઃ एतेषा द्वन्द्वः 'કુરુવા' કુરુવા=રૂપવર્જિતાઃ 'કિવિણા' કૃપ્પણાઃ=દરિદ્રાઃ, દાનશક્તિ-

આંખોં મેં કોઈ ન કોઈ સ્વરામી રહતી હૈ, (સચિહ્યા) સચિહ્યાક હોતે હૈ ઉનકે નેત્ર ચપટે હોતે હૈ, (વાહિરોગપીલિય) વ્યાધિ ઓર રોગ સે પીહિત રહતે હૈ-વે કુષ્ઠ આદિ વ્યાધિયોં સે, કાસ શ્વાસ આદિ રોગોં સે સદા પીહિત રહતે હૈ, (અપ્પાડય) અલ્પાયુવાલે હોતે હૈ, (સત્થ-વજ્ઞ) શસ્ત્ર પ્રયોગ સે ઇનકી મૃત્યુ હોતી હૈ, (ઘાલા) બુદ્ધિ રહિત હોતે હૈ, (કુલલક્ષણુકિન્નદેહા) ઓટ્ટે ૨ લક્ષણોં વાલે હોતે હૈ, અર્થાત્-શુભ રેલાઓં સે વર્જિત હોતે હૈ, (દુન્નલ) દુર્બલ-ચલ હીન હોતે હૈ, (કુસઘયણ) ઇનકા સહનન-અસ્થિયોં કી રચના ઠીક ઠીક નહીં હોતા હૈ, (કુપ્પમાણ) શરીર કા પ્રમાણ મી યોગ્ય નહીં હોતા હૈ, યા તો વહ અત્યંત લઘા હોતા હૈ યા અતિ હ્રમ્વ હોતા હૈ. (કુસઠિયા) સસ્થાન-આકાર મી કુત્સિત હોતા હૈ. (કુરુવા) સુન્દર રૂપ સે રહિત હોતે હૈ. (કિવિણા) દરિદ્ર હોતે હૈ, અયવા-દાન દેને કી શક્તિ કા ઇનકે ઘર્હાં

"અધ્યયા" જન્માધ્ય હોય છે જન્મથી જ તેમની આખો કૂટી ગઈ હોય છે, "ચક્ષુવિણિહ્યા" ચક્ષુ વિનિહત હોય છે, તેમની આખોમા કોઈ ને કોઈ ખામી રહે છે, "સચિહ્યા" સચિહ્યા હોય છે તેમના નેત્ર ચપટા હોય છે, "વાહિરોગપીલિય" વ્યાધિ અને રોગથી પીડાયા કરે છે-તેઓ કોઈ આદિ વ્યાધિથી, ખાસી, દમ આદિ રોગોથી પીડાયા કરે છે "અપ્પાડય" ટૂંકા આયુષ્યવાળા હોય છે, "સત્થવજ્ઞ" શસ્ત્રપ્રયોગથી તેમનું મૃત્યુ થાય છે "ઘાલા" બુદ્ધિ વિનાના હોય છે, "કુલલક્ષણુકિન્નદેહા" ખરાબ લક્ષણોવાળા હોય છે, એટલે કે સારી રોગોથી રહિત હોય છે, "દુન્નલ" દુર્બલ-બળ હીન હોય છે, "કુસઘયણ" તેમનું સહનન-અસ્થિઓની રચના-ખરાબર હોતી નથી, "કુપ્પમાણ" શરીર પ્રમાણસરનું હોતું નથી-કા તો તે અતિશય લાંબા હોય છે કે અતિ નીચા હોય છે "કુસઠિયા" સસ્થાન-આકાર દેખાવ ખુબ ખોટો હોય છે "કુરુવા" સુન્દર રૂપથી રહિત હોય છે

સ કીદગ ? इत्याह-‘इहलोडओ’ ऐहलौकिकः=मनुष्यलोकमाश्रित्य, ‘पारलोडओ’ पारलौकिकः-नरकनिगोदादिकगत्याद्याश्रित्य ‘अप्पसुहो’ कुत्तिसतेन्द्रियभोगे सुखजनकत्वाद् अल्पसुखः, या ‘बहुदुक्खो’ बहुदुःखः=नरकादिदुःखकारणत्वाद् दुःखबहुलः, ‘महम्मयो’ महाभयः=महाभयस्वरूपः, तथा ‘बहुरयप्पगाढो’ बहु-रजः प्रगाढः=अशुभकर्मबहुलः, दारुणो’ दारुणः=भीषणः नरकादिभयजनकत्वात् ‘कक्खसो’ कर्कशः=कठोरः=दुर्मेधत्वात् ‘असाओ अमातः=असातवेदनीयरूपत्वात्, इत्येवविधः फलविपाकः, ‘वाससहस्सेहिं’ वर्षसहस्रैः=अनेक सहस्रवर्ष-भोगैः=पत्योपमसागरोपमादिलक्षणैः ‘मुच्चई’ मुच्यते=क्षीयते । तदेवव्यतिरेकमुखेनाह-‘ नये ’ ति-‘ अवेयइत्ता ’ अवेदयित्वा=त फलविपाकमनुपभुज्य ‘ नय ’

विपाक-परिणाम (इहलोडओ) ऐहलौकिक-मनुष्यलोकની અપેક્ષા સે (અપ્પસુહો) કુત્તિસત ઇન્દ્રિયોં કે ભોગ જનિત સુખ કા ઉત્પાદક હોને સે અલ્પસુખ વાલા, તથા (પારલોડઓ) પારલૌકિક-નરકાદિ ગતિ કી અપેક્ષાસે (બહુદુક્ખો) નરકાદિ ગતિ કારણ હોનેસે વહુત દુઃખ વાલા, (મહમ્મઓ) મહાભયવાલા, તથા (બહુરયપ્પગાઢો) વહુત અશુભકર્મોં વાલા હૈ । યહ (દારુણો) નરકાદિગતિ કા ભયજનક હોને સે ભયકર (કક્કસો) દુર્મેધ હોને સે કર્કશ-કઠોર હૈ । (અસાઓ) અશાતા વેદ-નીય રૂપ હોને સે સ્વય અશાતારૂપ હૈ । એસા યહ પ્રાણવધપરિણામ (વાસ-સહસ્સેહિં મુચ્ચઈ) પત્યોપમ તથા સાગરોપમાદિરૂપ વર્ષસહસ્ત્રોં મે ભોગતે ૨ યહ છૂટતા હૈ-નષ્ટ હોતા હૈ । ઇસી વાત કો અર વ્યતિરેક સે કહતે હૈ કિ-(અવેયઢત્તા ન ય ટ મોક્ષો અતિય) (અવેયઢત્તા) ઇસકા ફલ

ફળવિપાક પરિણામ “ इहलोडओ ” આ લોકની મનુષ્યલોકની અપેક્ષાએ “ અપ્પસુહો ” કુત્તિસત ઇન્દ્રિયોના ભોગજનિત સુખનું ઉત્પાદક હોવાથી અલ્પ સુખવાળું, તથા “ ‘પારલોડઓ’ ” પરલોકની-નરકાદિ ગતિની અપેક્ષાએ “ બહુ-દુક્ખો ” નરકાદિ ગતિના કારણરૂપ હોવાથી બહુ જ દુઃખદાયી, “ મહમ્મઓ ” મહા ભયવાળું તથા “ ‘બહુરયપ્પગાઢો’ ” અત્યંત અશુભ કર્મોવાળું છે તે “દારુણો” નરકાદિ ગતિનો ભય પેદા કરનાર હોવાથી ભયકર છે “ કક્કસો ” દુર્મેધ હોવાને કારણે કર્કશ કઠોર છે “ અસાઓ ” અશાતા-વેદનીય રૂપ હોવાથી પોતે અશાતારૂપ છે એવું તે પ્રાણવધ પરિણામ “ વાસસહસ્સેહિં મુચ્ચઈ ” પત્યોપમ તથા સાગરોપમ આદિરૂપ હજારો વર્ષ સુધી ભોગવતા ભોગવતા છૂટે છે-નષ્ટ થાય છે એ જ વાતને હવે બીજી રીતે પ્રગટ કરે :-“અવેયઢત્તા ન નો ફલવિપાક ભોગના વિના થવો

ફલવિવાગં । एसो सो पाणवहो चंडो रुदो खुदो साहसिओ
अणारिओ, निग्धिणो, निस्ससो महव्भओ, पइभओ अइभओ,
वीहणओ, तासणओ, अणज्जओ, उव्वेयणओ य-णिरवयक्खो,
णिद्धम्मो, णिप्पिवासो, निक्कलुणो निरयवासगमणनिधणो
मोहमहव्भयपवड्डओ मरणवेमणस्सो तिवेमि ॥ सू० ४७ ॥

॥ पढम अहम्मदारं समत्त ॥ १ ॥

टीका—‘ए’ उक्तप्रकारेण ‘णरग’ ‘नरक, मनुष्यलोके ‘तिरिक्ख
जोणि’ तिर्यग्गोनि=पञ्चेन्द्रियादिभ्य ‘कुमाणुसत्त’ कुमाणुपत्त=कुब्जयामनादि
विकृताङ्गोपाङ्गरूपा मनुष्ययोनिं च ‘हिंढमाणा’ हिंढमाना=भ्रमन्तः ‘पावकारी’
पापकारिणः=प्राणातिपातकारकाः जीवाः ‘अणताइ’ अनन्तानि ‘दुक्खाइ’
दुःखानि ‘पावति’ प्राप्नुवन्ति । ‘एसो सो’ एष सः प्रत्यक्ष दृश्यमानः ‘पाण
वहस्स’ प्राणवधस्य=प्राणातिपातस्य ‘फलविवागो’ फलविपाकः=परिणामः भवति ।

अब उपसहार करते हुए सूत्रकार कहते हैं—‘एव णरग तिरिक्ख
जोणि’ इत्यादि० ।

टीकार्थ—(एव) इस उक्त प्रकार से जो (णरग) नरक में, वहाँ
से मनुष्यलोक में आने पर (तिरिक्खजोणि) तिर्यञ्च योनि में एवं (कुमा-
णुसत्त) कुब्ज, वामन आदि रूप से विकृत अंगोपाङ्गवाली मनुष्ययोनिमें
(हिंढमाणा) भ्रमण करते हुए (पावकारी) प्राणातिपातरूप पाप को
करने वाले जीव (अणताइ दुक्खाइ) अनन्त दुःखों को (पावति) पाते
हैं । (एसो सो) प्रत्यक्ष में दृष्टिभूत बना हुआ यह (पाणवहस्स) प्राण
वधरूप हिंसा का (फलविवागो) परिणाम है । प्राणवध का यह (फल-

હવે ઉપસહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે—“ એવ ણરગ તિરિક્ખજોણિ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ એવ ” ઉપરોક્ત પ્રકારે “ ણરગ ” નરકમાં, ત્યાંથી મનુષ્યલોકમાં
આવતા “ તિરિક્ખજોણિ ” તિર્યંચ યોનિમાં અને “ કુમાણુસત્ત ” કુબ્જ, વામન
આદિ રૂપે વિકૃત અંગોપાંગવાળી મનુષ્ય યોનિમાં “ હિંદમાણા ” ભ્રમણ કરતા
“ પાવકારી ” પ્રાણાતિપાતરૂપ પાપ કરનાર જીવો “ અણતાઈ દુક્ખાઈ ” અનન્ત
દુઃખો “ પાવતિ ” લોગવે છે “ एसો સો ” પ્રત્યક્ષ દૃષ્ટિગોચર થતું “ પાણવ
વહસ્સ ” પ્રાણવધરૂપ હિંસાનું “ ફલવિવાગો ” તે પરિણામ છે પ્રાણવધનો આ

નિરૂપણેનૈવ તદન્તર્ગતફલ વિપાક્મ્યાપિ તદુક્તસિદ્ધો પુનઃ પૃથક્ તસ્ય મહા
વીરોક્તવાભિધાન પ્રાણિવધસ્યૈકાન્તિકા શુભફલદાયકત્વાત્તસ્થાત્યન્તહેયત્વઘોત-
નાર્થમ્ । ‘એસો સો’ એવ સ. = પૂર્વોપદર્શિત સ્વરૂપઃ ‘પાણવહો’ પ્રાણવધ. ‘ચઢો’
ચઢઃ = ક્રોધજનસ્ત્વાત્, ‘રુદો’ રોદ્ર = રોદ્રાસપ્રવર્તિતત્વાત્, ‘સુદ’ ક્ષુદ્રઃ =
અધમજનાચરિતત્વાત્ ‘સાહસિઓ’ સાહસિકઃ = અપમીક્ષ્યકારિજનપ્રવર્તિતત્વાત્,
અહમઓ ધીરુણઓ તાસણઓ અણજ્જઓ ગિરવચવરો, નિદ્વમ્મો,
નિપ્પિવાસો, નિક્કલુણો, નિરયવાસગમણનિધણો, મોહમહમ્મયપયદઓ
મરણવેમણસ્મો, સ્તિ વેમિ)

શ્લોક—જય સૂત્રકાર ને ઈસ અધ્યયન મેં મહાવિરોક્તતા નિરૂપિત
કી હૈ તય યહ વાત તો સ્વતઃ સિદ્ધ હો હી જાની હૈ કિ તદન્તર્ગત ફલ
વિપાક ભી ઉન્હીં દ્વારા કહા ગયા હૈ, ફિર કયા વાત હૈ જો ઇમમેં પૃથક્
રૂપ સે મહાવીરોક્તતા પ્રતિપાદિત કી જા રહી હૈ ?

ઉત્તર—શંકા ઠીક હૈ, પરંતુ ઇમકા અનિપ્રાય કેવલ ઇનના હી હૈ કિ
પુનઃ ઇસમેં જો તદુક્તતા પ્રતિપાદિત કી હૈ ઉસસે ઉસમેં—પ્રાણિવધ મેં—
એકાન્તિક અશુભફલદાયકતા હોને સે અત્યન્ત હેયતા પ્રકટ કી ગઈ હૈ ।
યહી વાત સૂત્રકાર ઇન આગે કે પદોં દ્વારા સ્પષ્ટ કાર્તે હૈ—(એસો સો)
પૂર્વોપદર્શિત સ્વરૂપ વાલા યહ (પાણવહો) પ્રાણવધ—(ચઢો) ક્રોધજનક
હોને સે ચઢ હૈ, (રુદો) રોદ્ર રસ દ્વારા પ્રવર્તિત હોને સે રોદ્ર હૈ,
(સુદો) અધમજનોં દ્વારા આવરિત હોને સે ક્ષુદ્ર હૈ. (સાહસિઓ)

ધીરુણઓ તાસણઓ અણજ્જઓ ગિરવચવરો, નિદ્વમ્મો, નિપ્પિવાસો, નિક્કલુણો નિર
યવાસગમણનિધણો, મોહમહમ્મયપયદઓ મરણવેમણઓ સ્તિવેમિ ”

શ્લોક—જ્યારે સૂત્રકારે આ અધ્યયનમા મહાવીરોક્તતાનું નિરૂપણ કર્યું
છે ત્યારે તે વાત તો આપોઆપ નિદ્ધ થઈ જ નાથ છે કે તેમા આવતો ફલ-
વિપાક પણ તેમના દ્વારા કહેવાયેલ છે, તો શા કારણે તેમા અલગ રીતે
મહાવીરોક્તતાનું પ્રતિપાદન કરવામા આવેલ છે ?

ઉત્તર—શ્લોક બરાબર છે પણ તેનો ઉદ્દેશ કેવળ એટલો જ છે કે ફરીથી
તેમા જે તેમના દ્વારા કથિત હોવાનું પ્રતિપાદન કર્યું છે તેથી તેમા પ્રાણી
વધમા એકાન્તિક અશુભ ફલદાયકતા હોવાથી અત્યંત હેયતા પ્રગટ કરાઈ છે
એ જ વાત સૂત્રકાર આગળ આવતા આ પદો દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે—‘એસો સો’
આગળ દર્શાવવામા આવેલ સ્વરૂપવાળો તે “પાણવહો” પ્રાણવધ “ચઢો”
ક્રોધજનક હોવાથી ચડ છે, “રુદો” રોદ્રરસ દ્વારા પ્રવર્તિત હોવાથી રોદ્ર છે,
“સુદો” અધમ લોકો દ્વારા આવરિત હોવાને કારણે ક્ષુદ્ર છે, “સાહસિઓ”

न च-नैव 'हु' निश्चयेन 'मोक्खो' मोक्ष 'अत्थि' अस्ति, 'त्ति' इति समाप्ति सूचकः । तस्य फलविपाकस्योपभोग विना जीवस्य मोक्षो न भवतीत्यर्थः ।

अथ न हि येन केनापि प्रतिपादितोऽर्थः श्रद्धेयमवचनो भवति प्रामाण्यसन्देहादित्याशङ्कानिर्वर्तियेतुमस्य साक्षात्प्रमाणभूतपरमात्मप्रतिपादितत्वेन प्रामाण्य निरूपणाय प्रमाणयन्नाह-“एवमाहसु” इत्यादि, एवम्=उक्तरीत्या ‘आहसु’ ऊचुः-अतीतार्थोद्धारगणधरादयः । तथा ‘नायकुलनदणो’ ज्ञातकुलनन्दनः=ज्ञातकुल=सिद्धार्थकुल, तस्य नन्दनः=आनन्दकारक ‘महप्पा’ महात्मा=परमात्मरूप, ‘जिणो’ जिनः=रागाद्यन्तरङ्गशत्रुजेता, वीरवरणामधेज्जो’ वीरवरणामधेयः=प्रशस्तनामा भगवान् महावीरः, ‘पाणवहस्स’ प्राणवधस्य ‘फलविवाग’ फलविपाक ‘कहेसीय’ कथितवान्=यथाऽतीता जिनाः कथितवन्तस्तथैवायं भगवान् महावीरोऽपि प्रतिपादयतिस्मेत्यर्थः । अस्याध्ययनस्य महावीरोक्तत्वं

विपाक भोगे विना जीवका (न य हु मोक्खोअत्थि) कभी भी छुटकारा नहीं हो सकता है । इस कथन को प्रमाणभूत सिद्ध करने के लिय सूत्रकार इसमें साक्षात् प्रमाणभूत परमात्मा द्वारा प्रतिपादितता सिद्ध करने के लिये कहते हैं कि ऐसा जो मैंने कहा है वह अपनी ओर से नहीं कहा है, किन्तु (एवमाहसु) अतीत तीर्थंकर एव गणधर आदि देवों ने ऐसा कहा है तथा (नायकुलनदणो महप्पा जिणो उ वीरवर णामधेज्जो पाणवहस्स फलविवाग कहेसीय) ज्ञातकुलनन्दन-सिद्धार्थ के कुल को आनन्द देने वाले-परमात्मरूप, जिन-रागादिक अन्तरंग शत्रु के विजेता प्रशस्तनाम वाले श्री भगवान् महावीर ने भी प्राणवध को फल ऐसा ही अतीत तीर्थंकरों के कथनानुसार कहा है । (एसो सो पाणवहो वडो रुहो खुहो साहसिओ अणारिओ निग्घिणो निस्ससो महम्मओ पडम्मओ

“ न य हु मोक्खो अत्थि ” कही પણ छुटकारा થઈ શકતો નથી, આ કથનને પ્રમાણભૂત સિદ્ધ કરવાને માટે સૂત્રકાર તેના સાક્ષાત્ પ્રમાણરૂપ પરમાત્માદ્વારા તેની પ્રતિપાદિતતા મિદ્ધ કરવાને માટે કહે છે કે—એવું મેં જે કહ્યું છે તે મારી તરફથી કહ્યું નથી પણ “ એવમાહસુ ” અતીત તીર્થંકર અને ગણધર આદિ દેવે એ એવું કહેલ છે, તથા “ નાયકુલનન્દણો મહપ્પા જિણો ઉ વીરવર ãામધેજ્જો પાણવહસ્સ ફલવિવાગ કહેસીય ” જ્ઞાતકુળનન્દન-સિદ્ધાર્થના કુળને આનંદ દેનાર પરમાત્મારૂપ, જિન-રાગ આદિ આંતરિક શત્રુઓ પર વિજય મેળવનાર પ્રશસ્ત નામવાળા શ્રી ભગવાન મહાવીરે પણ પ્રાણવધનું ફળ એવું જ અતીત તીર્થંકરોના કથનानુસાર જ કહેલ છે—“ एसो सो पाणवहो वडो रुहो खुहो साहसिओ अणारिओ निग्घिणो निस्ससो महम्मओ पडम्मओ

નિષ્પિપાસઃ=પરજીવનસ્નેહવર્જિતત્વાત્, 'નિઃકલુણો' નિષ્કલુણઃ=દયાભાવવર્જિતત્વાત્
'નિરયવાસગમનનિધનો' નિરયવાસગમનનિધનઃ=નિરયાવાસઃ=નરકાવાસઃ, તત્ર
ગમનમેવ નિધન=પર્યયાસાનમ્-અન્તિમફલ યસ્ય સ તથા, નરકપાપકૃત્વાત્, 'મોહ-
મહાભયપયદ્વઓ' મોહમહાભયપ્રવર્તક=મોહઃ=અજ્ઞાન સ એવ મહાભય=મહાભય-
हेतुत्वात्, તસ્ય પ્રવર્તકઃ, 'મરણવૈમનસ્યો' મરણવૈમનસ્યઃ = મરણેન=મૃત્યુરૂપ
કારણેન પ્રાણિનાં વૈમનસ્ય = દૈન્ય યસ્માત્સ તથા દીનમનઃ કારિત્વાત્, इत्येव
लक्षणः प्राणवधः=જપરિજ્ઞયા તત્સ્વરૂપ વિજ્ઞાય પ્રત્યાખ્યાનપરિજ્ઞયા સર્વથા પરિ-
ત્યાગ્ય इति भावः । श्री सुधर्मास्वामी जम्बूस्वामिन कथयति—'चित्तेमि'

સે રહિત હોને કે કારણ યહ નિરપેક્ષરૂપ હૈ । (નિઃકલુણો) શ્રુતાચારિત્ર
રૂપ ધર્મ સે રહિત હોને કે કારણ યહ નિર્ધર્મરૂપ હૈ । (નિષ્પિપાસો) હસ
મેં દૂસરોં કે જીવન કે પ્રતિ સ્નેહભાવ નહીં રહતા હૈ इसलिये यह निष्पि-
पासरूप है । (निःकलुणो) दयाभाव का सर्वथा इसमें अभाव रहता है
इसलिये यह निष्कलुणरूप है । (निरयवासगमननिधनो) नरक गमन ही
इसका अन्तिमफल है, इसलिये यह निरयवासगमननिधनरूप है । (मोह
महबभयपयद्वओ) मोहरूप-महाभय का यह प्रवर्तक है इसलिये यह
मोह महाभय प्रवर्तकरूप है । (मरणवैमनस्यो) मृत्युरूप कारण से
प्राणियों को इससे दैन्यभाव होता है इस लिये यह मरणवैमनस्यरूप है ।
इसलिये इस प्राणवध का ज्ञ परिज्ञा से स्वरूप जानकर प्रत्याख्यानपरिज्ञां
से सर्वथा परित्याग कर देना चाहिये । इस प्रकार कह कर अब सुधर्मा-

હોવાને કારણે તે નિરપેક્ષરૂપ છે “નિઃકલુણો” શ્રુતાચારિત્રરૂપ ધર્મથી રહિત હોવાને
કારણે નિર્ધર્મરૂપ છે “નિષ્પિપાસો” તેમા અન્યના ભવન પ્રત્યે સ્નેહભાવ
રહેતો નથી તેથી તે નિષ્પિપાસરૂપ છે “નિઃકલુણો” તેમા દયાભાવનો તદ્દન
અભાવ રહે છે તેથી તે નિષ્કલુણરૂપ છે “નિરયવાસગમનનિધનો” નરક ગમન
જ તેનું અતિમ ફળ હોય છે, તે કારણે તે નિરયવાસગમનનિધનરૂપ છે
“મોહમહાભયપયદ્વઓ” મોહરૂપ મહાભયનો તે પ્રવર્તક છે, તે કારણે તે મોહ
મહાભય પ્રવર્તક રૂપ છે “મરણવૈમનસ્યો” મરણરૂપ કારણથી પ્રાણિઓમા
તેનાથી દૈન્યભાવ ઉત્પન્ન થાય છે, તેથી તે મરણવૈમનસ્ય રૂપ છે તે કારણે તે
પ્રાણવધનું જ પરિજ્ઞાથી સ્વરૂપ જાણીને પ્રત્યાખ્યાન પરિજ્ઞાથી તેનો સર્વથા
પરિત્યાગ કરવો જોઈએ આ પ્રમાણે ડહીને હવે સુધર્માસ્વામી જ ખૂસ્વામીને

‘અણારિઓ’ અનાર્યઃ=મ્લેચ્છજનમમાચારિત્વાત્, ‘નિગ્ધિઓ’ નિર્ગ્ધઃ=અધિમાના ધૃણા=પાણુગુપ્તા યસ્મિન્ સ તથા વિધોજનમ્નદાચરિત્વાત્પ્રાણવધોઽપિ તથા, ‘નિસ્સસો’ નૃશમ=કૂરજનાચરિત્વાત્ ‘મહાભઓ’ મહાભયઃ=મહાભયોત્પાદકત્વાત્, ‘પદ્મઓ’ પ્રતિભયઃ=સમગ્રપ્રાણિના ભયહેતુત્વાત્, ‘અદ્મઓ’ અતિભયઃ=મરણાન્તભયજનકત્વાત્. ‘વીહણઓ’ ભાપનકઃ=ભયોત્પાદકત્વાત્, ‘તાસણઓ’ તાસનકઃ=અકસ્માત્-હૃદયોદ્વેગજનકત્વાન્, ‘અગજઓ’ અન્યાગ્યઃ=ન્યાયાદનપેતઃ=યુક્તઃ ન્યાયઃ, ન ન્યાયઃ અન્યાગ્યઃ, ન્યાયવર્જિતત્વાત્, ‘ઉવ્વેયણઓ’ ઉદ્વેગજનકઃ મર્મપીડાકારસ્ત્વાત્ ‘ગિરવયસ્ઓ’ નિરપેક્ષ=નિર્ગતા અપેક્ષા=પરપ્રાણરક્ષા વિષયા યત્ર સ તથા, ‘નિદ્મઓ’ નિર્ધર્મ=શ્રુતચારિત્ર ધર્મરહિતત્વાત્, ‘નિપ્પિયાસો’

અસમીક્ષ્યકારી જનો દ્વારા ક્રિયા ગયા હોને સે સાહસિક છે, (અણારિઓ) મ્લેચ્છજનો દ્વારા સમાચરિત હોને કે કારણ અનાર્ય છે. (નિગ્ધિઓ) હસે કરને વાલે મનુષ્ય કો પાપ કે પ્રતિ ધૃણા નહીં રહતી છે અતઃ યહ પ્રાણવધ ની નિર્ધેષરૂપ છે (નિસ્સસો) કૂરજન હસે કરતે રહતે છે હસ લિયે યહ નૃશમરૂપ છે. (મહાભઓ) હસે કરતે સમય કરનેવાલેકો મહાન્ ભયકા કારણ હોના છે હસલિયે યહ મહાભયરૂપ છે. (પદ્મઓ) સમસ્ત પ્રાણિયો કો ભય કા હેતુ હોને સે યહ પ્રતિભયરૂપ છે. (અદ્મઓ) મરણાન્તભય કા જનક હોને સે યહ અતિભયરૂપ છે. (વીહણઓ) ભયકા ઉત્પાદક હોને સે યહ ભયાનક છે. (તાસણઓ) અકસ્માત્ હૃદય મેં ઉદ્વેગ કા જનક હોને સે ત્રામનકરૂપ છે (અગજઓ) ન્યાયવર્જિત હોને સે યહ અન્યાગ્યરૂપ છે. (ઉવ્વેયણઓ) જીવો કો ઉદ્વેગ જનક હોને સે યહ ઉદ્વેગકરૂપ છે (ગિરવયસ્ઓ) પર પ્રાણિયો કી રક્ષા કરને કી અપેક્ષા

અસમીક્ષ્યકારી લોકો દ્વારા કરાતો હોવાથી સાહસિક છે, “અણારિઓ” મ્લેચ્છ લોકો દ્વારા આચરિત હોવાથી અનાર્ય છે “નિગ્ધિઓ” પ્રાણવધ કરનાર મનુષ્યને પાપ પ્રત્યે ધૃણા થતી નથી, તેથી તે પ્રાણવધ પણ નિર્ધેષરૂપ છે, “નિસ્સસો” કૂર લોકો તેનું સેવન કરે છે તેથી તે નૃશમ સરૂપ છે, “મહાભઓ” તે કરતી વખતે કરનારને મહાન્ ભયનું કારણ તે બને છે તેથી તે મહા ભયરૂપ છે “પદ્મઓ” સઘળા પ્રાણીઓને તે ભયના કારણરૂપ હોવાથી પ્રતિભયરૂપ છે ‘અદ્મઓ’ મૃત્યુના ભયનો જનક હોવાથી તે અતિ ભયરૂપ છે “વીહણઓ” ભયનો ઉત્પાદક હોવાથી તે ભયાનક છે “તાસણઓ” હૃદયમાં અકસ્માત ઉદ્વેગનો જનક હોવાથી તે ત્રામનકરૂપ છે, “અગજઓ” ન્યાયરહિત હોવાથી તે અન્યાયરૂપ છે, “ઉવ્વેયણઓ” જીવોમાં ઉદ્વેગ ઉત્પન્ન કરનાર હોવાથી તે ઉદ્વેગકરૂપ છે “ગિરવયસ્ઓ” પર પ્રાણીઓનું રક્ષણ કરવાની અપેક્ષાથી રહિત

“सुअणाणस्स अविणओ, परिहरणिज्जो सुहाहिलासीहिं ।

उउमत्थाण दिट्ठी, पुण्णाणत्थि-त्ति सुइय इइणा ॥१॥” इति ।

जो सुखाभिलाषी प्राणी हैं उनका कर्त्तव्य है कि वे श्रुतज्ञान का अविनय छोड़ें । छद्मस्थों की दृष्टि अपूर्ण रहती है यही बात यहा ‘इति’ इस पद से सूचित की है ॥१॥ ॥सू० ४७॥

॥ प्रथम आख्य—‘अधर्म’ द्वार समाप्त ॥

“सुअणाणस्स अविणओ, परिहरणिज्जो सुहाहिलासीहिं ।

उउमत्थाणं दिट्ठी, पुण्णाणत्थि-त्ति सुइय इइणा ॥१॥ इति ॥

सुआलिलापी एवेनु कर्त्तव्य छे के तेभले श्रुतज्ञानने अविनय करवानु छोडी देवु नेधखे छद्मस्थोनी दृष्टि अपूर्ण रहै छे, जेन् वात ‘इति’ यह द्वारा अर्द्ध सूचित करवाभा आवी छे ॥ सू ४७ ॥

आ शीते छिमादि पञ्चाश्रव द्वारभा आख्यवध नामनु

अथम द्वार समाप्त थयुं.

इति ब्रवीमि-हे जम्बू ! इति=पूर्वोक्तं प्राणिप्रधस्वरूपनिरूपण, तत्फलचतुर्गति-
भ्रमणलक्षणमर्थं चेति तीर्थङ्करस्य भगवतो महावीरस्य सकाशान्मया साक्षात् श्रुत
ब्रवीमि=कथयामि न तु स्वबुद्धिपरिकल्पितम् । यतः स्वबुद्ध्या कथने श्रुतज्ञान
स्याविनयो भवति, किञ्च-छद्मस्थाना दृष्टोऽप्यपूर्णा भवन्ति तस्माद् यथा भगव-
त्प्रतिपादितमेव त्वां ब्रवीमि=उपदिशामीत्यर्थः ॥ उक्तञ्च—

“सुअणाणस्स अविणओ, परिहरणिज्जो सुहादिलासीहि ।

છડમત્યાણ દિદ્ધી, પુણ્ણાણતિય-તિ સદ્ધય દ્ઢણા ॥૧॥ ” इति । सू ४९॥

इतिश्री-जैनाचार्य-जैनधर्मदिगम्बर-पूज्य श्री' घासीलालप्रतिविरचिताया

પ્રશ્નચક્રવર્તીસૂત્રસ્ય સુદર્શન્યાયાયા વ્યારયાયા

દિસાદિ પચ્ચાસવદ્ધારેણ પ્રાણવધાલ્ય પ્રથમમ્-

અધર્મદ્વાર સમાપ્તમ્ ॥ ૧ ॥

स्वामी श्री जम्बूस्वामी से कहते हैं- (त्विमेमि) हे जम्बू ! प्राणवध का यह
पूर्वोक्त स्वरूप निरूपण तथा चतुर्गति भ्रमणरूप उसका फल मैंने साक्षात्
तीर्थंकर भगवान् महावीर के पास सुना है सो उसी के अनुसार यह
तुमसे कहा है । इसमें मैंने अपनी ओर से कल्पित कर कुछ भी
नहीं कहा है, क्यों कि अपनी बुद्धिसे कल्पित कर कथन करने में
श्रुतज्ञान का अविनय होता है । तथा जबतक छद्मस्थावस्था रहती है
तबतक ज्ञानकी मात्रा भी अपूर्ण रहती है अतः अपनी ओर से प्रतिपा-
दित वस्तु का स्वरूप यथावत् प्रतिपादित नहीं हो सकता है, इसलिये मैंने
जो यह प्रवचन स्वरूप कहा है वह भगवान् द्वारा प्ररूपित ही
कहा है । कहा भी है—

કહે છે—“ ત્વિમેમિ ” છે જમ્બૂ ! પ્રાણવધનુ આ પૂર્વકથિત સ્વરૂપ નિરૂપણ
તથા ચાર ગતિમા ભ્રમણરૂપ તેનુ ફળ મેં સાક્ષાત્ તીર્થંકર ભગવાન મહાવીર
પાસે સાંભળેલ છે, અને તેમણે કહ્યા પ્રમાણે જ તે તમને કહ્યું છે તેની અદર
મેં મારી પોતાની કલ્પનાનુ કાંઈ પણ ઉમેરું નથી, ડારણ કે પોતાની બુદ્ધિથી
કલ્પના કરીને કહેવાથી શ્રુતજ્ઞાનનો અવિનય થાય છે તથા બીજા સુધી છદ્મસ્થ
રહે છે ત્યાં સુધી જ્ઞાનનુ પ્રમાણ પણ અપૂર્ણ હોય છે, તેથી પોતાનાથી પ્રતિ
પાદિત વસ્તુનુ સ્વરૂપ યથાવત્ (જેવુ હોય તેવુ જ) પ્રતિપાદિત થઈ શકતુ
નથી, તેથી મેં આ જે પ્રવચનસ્વરૂપ કહ્યું છે તે ભગવાનદ્વારા જે પ્રમાણે
પ્રરૂપિત છે તે પ્રમાણે જ કહ્યું છે કહ્યું પણ છે—

પરપીલાકારગં પરમકિણ્હલેસ્સસહિય દુગ્ગઈ વિણિવાયવિવઙ્ઘુણં
ભવપુણઞ્ભવકરં ચિરપરિચિયમણુગતં દુરત કિત્તિયં વિત્તિયં
અધમ્મદારં ॥ સૂ૦ ૧ ॥

ટીકા—હે જમ્બૂ ! ઇહ=અસ્મિન્ જિનશાસને ‘સ્વલ્લિતિ’ નિશ્ચયેન ‘વિદ્ય
ચ’ દ્વિતીય ચ આસ્રવદ્વારમ્ ‘અલિયવચણ’ અલીકવચનમ્=અસત્યભાષણ નામ ।
અસ્યાપિ “યાદશો ૧, યત્તામ ૨, યથાકૃતો ૩, યાદશ ફલ દ્દાતિ ૪, યેઽપિ
ચ કુર્વન્તિ પાપાઃ ૫,” ઇતિ યથ્ચભિરન્તર્દારૈઃ પૂર્વપૂર્વ નિરૂપણ ક્રિયતે । તત્ર ચ
યથાક્રમ ‘યાદશ’ ઇતિ દ્વારમાશ્રિત્યાલીકવચનસ્વરૂપમાહ—‘લહુ’ ઇત્યાદિ—
‘લહુસગ લહુચવલ ભણિય’ લઘુસ્વકલઘુચપલમણિત, લઘુઃ=લુચ્છો ગૌરવવર્જિત
સ્વઃ=સ્વભાવો યેપા તે લઘુસ્વકાઃ, તેભ્યોઽપિ લઘયથ્વપલાથ્વ=ચચ્ચલકાયા ચે તૈ

ટીકાર્થ—(જમ્બૂ) હે જમ્બૂ ! (ઈહ) હન જિન શાસનમે (સ્વલુ) નિશ્ચયસે
(વિદ્ય ચ અલિયવચણ) દ્વિતીયઆસ્રવ અલીક(અસત્ય)વચન અસત્યભાષણ
નામકા હૈ । ઇસકા મી યહ “અલીકવચનરૂપ આસ્રવદ્વાર જૈસા હૈ ૧, જિતને
ઈસકે નામહૈ ૨, પ્રાણિયોં દ્વારા યહ જિન મદ, તીવ્ર આદિ પરિણામોં સે
કિયા જાતા હૈ ૩, જિસ પ્રકાર કા ઉન્હે નરકાદિરૂપફલ દેતા હૈ ૪,
તથા જો પાપી જીવ ઇસ અસત્યભાષણ કો કરતે હૈ ૫” હન પાચ અન્ત-
ર્દારોં દ્વારા પૂર્વ કી તરહ નિરૂપણ કિયા જાવેગા । અવ સૂત્રકાર ક્રમા-
નુસાર “યાદશઃ” ઇસ દ્વાર કો આશ્રિત કરકે અલીક(અસત્ય)વચનકે
સ્વરૂપકો કહતે હૈ—(લહુસગલહુચવલભાણિય) જિનકા સ્વભાવ ગૌરવ
વર્જિત હૈ ંસે જીવોં સે મી જો હીન હૈ લઘુ હૈ, વે લઘુસ્વક લઘુ હૈ તથા

ટીકાર્થ—“જમ્બૂ” હે જમ્બૂ ! “ઈહ” આ જૈનશાસનમા “સ્વલુ”
ખરેખર, “વિદ્ય ચ અલિયવચણ” ખીજો આસ્રવ અલીક વચન=અસત્ય ભાષણ
નામનો છે તેનુ પણ નીચે પ્રમાણેના પાચ અતર્દારો દ્વારા, આગળના આસ્રવ
દ્વારની જેમ જ, નિરૂપણ કરવામા આવશે (૧) આ અસત્ય વચનરૂપ આસ્રવ-
દ્વાર કેણુ છે ? (૨) તેના કેટલા નામ છે ? (૩) પ્રાણીઓ દ્વારા તે કયા કયા
મદ, તીવ્ર આદિ પ્રશિષ્ટાભોથી સેવાય છે ? (૪) કેવા પ્રકારના નરકાદિરૂપ ફળ
તેને આપે છે ? (૫) તથા કયા કયા પાપી જીવ અસત્ય બોલે છે ?

હવે સૂત્રકાર અનુક્રમે “યાદશ” આ દ્વારનો આધાર લઈને અસત્ય
વચનનુ સ્વરૂપ દર્શાવે છે—“લહુસગલહુચવલભણિય” ગૌરવહીન સ્વભા-
વના જીવોથી પણ જે હીન છે—લઘુ છે, તેઓ ‘લઘુસ્વક લઘુ’ હીનમા હીન
ગણાય છે એવા લઘુસ્વતક લઘુ દ્વારા તથા ચચળ મનવાળા દ્વારા બોલવામા આવતું

અથ દ્વિતીયમધ્યયનમ્ ।

વ્યાख्याત પ્રથમમાસ્રવદ્વાર, સામ્પ્રત દ્વિતીયમારમ્બ્યતે, અસ્ય ચ પૂર્વેણ સદ્વા
યમમિસમ્બન્ધઃ પૂર્વં યાદશ નામ-કર્તુ-ફલાદિનિરૂપણપૂર્વક પ્રથમાસ્રવદ્વારરૂપ
પ્રાણવધસ્વરૂપમુક્તમ્ । તસ્ય હેતુત્વાત્ ‘યથોદેશ નિર્દેશઃ’ ઇતિ ન્યાયપ્રાપ્તવાન્વે-
ત્યસ્મિન્ દ્વિતીયાધ્યયનેડલીકવચન સ્વરૂપાદિનિરૂપણપૂર્વક પ્રદર્શયતે, તસ્યેદમાદિ
સૂત્રમ્-‘ઇહ સ્વલુ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-ઇહ સ્વલુ જવુ વિદ્ય ચ અલિયવયણં લહુસગ-લહુ
ચવલ ભણિયં, ભયકરં, દુહકર, અજસકર, વેરકારગં, રતિ-અરતિ
-રાગદોસમણસંકિલેસવિયરણં અલિય નિયહિસાતિ જોગવહુલં
નીયજનનિસેવિયં નિસ્સંસ અપ્પચ્ચયકારગ પરમસાહુગરહણિજ

દ્વિતીય દ્વાર પ્રારમ્બ

પ્રથમ આસ્રવ દ્વાર કા અર્થ કહ દિયા ગયા હૈ, અવ દ્વિતીય આસ્રવ
દ્વાર પ્રારમ્બ હોતા હૈ । અવ આસ્રવદ્વાર કા પૂર્વ આસ્રવદ્વાર કૈ સાથ હસ
પ્રકાર સૈ સવધ હૈ-પૂર્વ આસ્રવદ્વાર મૈ સ્વરૂપ, નામ કર્તા ઓર ફલ
આદિ કૈ નિરૂપણ પૂર્વક પ્રથમ આસ્રવદ્વારરૂપ પ્રાણવધ કા સ્વરૂપ કહા
હૈ અવ હસકા હૈતુ હોને સૈ તયા “યથોદેશ નિર્દેશઃ” ઉદેશ કૈ અનુ
સાર હી નિર્દેશ હોતા હૈ હસ નિયમ કૈ અનુસાર ન્યાયપ્રાપ્ત હોને સૈ હસ
દ્વિતીય આસ્રવદ્વાર મૈ અલીક વચન કા હસકૈ સ્વરૂપ આદિ કા નિરૂપણ
પૂર્વક કથન કિયા જાતા હૈ । હસ આસ્રવદ્વાર કા આદિમ સૂત્ર યહ હૈ-
‘ઇહ સ્વલુ જવુ’ ઇત્યાદિ ।

ખીજ દ્વારનો પ્રારમ્બ

પહેલા આસ્રવદ્વારનો અર્થ ઉઠેવાઈ ગયો, હવે ખીજા આસ્રવદ્વારનું
વિવેચન શરૂ થાય છે આ આસ્રવદ્વારનો આગળના આસ્રવદ્વાર સાથે આ પ્રકાર-
નો સબધ છે-આગળના આસ્રવદ્વારમા સ્વરૂપ, નામ, કર્તા, ફળ આદિનું
નિરૂપણ કરીને આસ્રવદ્વારરૂપ પ્રાણવધનું સ્વરૂપ બતાવ્યું છે હવે તેના હેતુરૂપ
હોવાથી, તથા “યથોદેશ નિર્દેશ” ઉદેશાનુસાર જ નિર્દેશ થાય છે તે નિય
માનુસાર ન્યાયયુક્ત હોવાથી આ ખીજા આસ્રવદ્વારમા અસત્ય વચનનું-તેના સ્વ
રૂપાદિના નિરૂપણ સહિત વિવેચન કરવામા આવે છે આ આસ્રવદ્વારનું પહેલું
સૂત્ર આ છે-“ઇહ સ્વલુ જવુ” ઇત્યાદિ

ટીકા—‘તસ્મ ય’ તસ્ય ચ મૃપાવાદસ્ય દ્વિતીયાસ્રવદ્વારસ્ય ‘ગોણાણિ’ ગોણાણિ=ગુણનિષ્પન્નાણિ ‘તીસ’ ત્રિંશત્ ‘જામાણિ’ નામાણિ ‘હુતિ’ ભવન્તિ ત જહા’ તદ્યથા—(૧) ‘અલિય’ અગ્રેક=નિષ્ફલ શુભફલવર્જિતત્વાત્, (૨) ‘સઢ’ ગઠ=રૂપટિજનસમાચરિતત્વાત્, (૩) ‘અણજ્જ’ અનાર્યમ્=અનાર્યજનોક્ત-

“જારિસઓ” ઇસે પ્રથમ દ્વાર મેં મૃપાવાદ કા સ્વરૂપ કહા ગયા હૈ, અથ સૂત્રકાર ‘જ નામા’ ઇસ દૂસરે દ્વાર મેં ઇમકે કૌન ૨ સે નામ હૈં વહ કહતે હૈ—‘તસ્મ ય જામાણિ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તસ્મ) ઇસ દ્વિતીય આસ્રવદ્વાર રૂપ મૃપાવાદ કે (ગોણાણિ) ગુણ નિષ્પન્ન (તીસ) ત્રીસ (જામાણિ) નામ (હુતિ) હૈં (તજહા) વે ઇમ પ્રકાર હૈં—(અલિય ૧, સઢ ૨, અણજ્જ ૩, માયામોસો ૪, અસત્ક ૫, કૂઢકવડમવત્યુગ ૬, ચ નિરત્યયમવત્યય ૭ ચ, વિદેસગરહણિજ્જ ૮, અણજ્જુક ૯, કફણા ૧૦ ચ, વચ્ચણા ૧૧ ચ, મિન્હાપચ્છાકૂઢ ૧૨ ચ, સાહ ૧૩, ઉસ્સુત્ત ૧૪, ઉચ્છૂલ ૧૫ ચ, અદ્દ ૧૬, અન્મચ્છણ ૧૭ ચ, કિન્વિસ ૧૮, વલય ૧૯, ગહણ ૨૦ ચ, મમ્મણ ૨૧ ચ, નૂમ ૨૨, નિયર્હ ૨૩, અપ્પચ્ચઓ ૨૪, અસયમઓ ૨૫, અસન્નચ્ચસઘત્તણ ૨૬, વિવિચ્છો ૨૭, ઉવહિય ૨૮, ઉવહિ અસુદ્ધ ૨૯, અવલો ૩૦ ત્તિ) યહ અસત્ય-ભાષણ શુભફલો સે રહિત હોને કે કારણ અલીકફલ રહિત હોતા હૈં ઇસલિયે ઇમકા નામ અલીક હૈ ૧। રૂપટીજનોં કે દ્વારા યહ અપના કામ

“જારિસઓ” આ પ્રથમ દ્વારમા મૃપાવાદ-અસત્ય વચન-તુ સ્વરૂપ કહે વામા આંધુ છે હવે સૂત્રગર “જનામા” એ પદોથી શરૂ થતા ખીળ દ્વારમા તેના કયા કયા નામો છે તે બતાવે છે—“તસ્મ ય જામાણિ” ઇત્યાદિ ટીકાર્થ—“તસ્મ” આ ખીળ આસ્રવદ્વારરૂપ મૃપાવાદના “ગોણાણિ” ગુણાનુમાર “તીસ” ત્રીસ “જામાણિ” નામ “હુતિ” છે “ત જહા” તે આ પ્રમાણે છે

“અલિય ૧ સઢ ૨, અણજ્જ ૩, માયામોમો ૪, અસત્ક ૫, કૂઢકવડમ-વત્યુગ ૬, ચ, નિરત્યયમવત્યય ૭, ચ વિદેસગરહણિજ્જ ૮, અણજ્જુક ૯, કફણા ૧૦ ચ, વચ્ચણા ૧૧ ચ, મિન્હાપચ્છાકૂઢ ૧૨ ચ, સાહ ૧૩, ઉસ્સુત્ત ૧૪, ઉચ્છૂલ ૧૫ ચ, અદ્દ ૧૬, અન્મચ્છણ ૧૭ ચ, કિન્વિસ ૧૮, વલય ૧૯, ગ હણ ૨૦ ચ, મમ્મણ ૨૧ ચ, નૂમ ૨૨, નિર્હ ૨૩, અપ્પચ્ચઓ ૨૪, અસયમઓ ૨૫, અસન્નચ્ચસઘણ ૨૬, વિવિચ્છો ૨૭, ઉવહિય ૨૮, ઉવહિ અસુદ્ધ ૨૯, અવલો વો ૩૦ ત્તિ” (૧) તે અસત્ય ભાષણ શુભ ફળોથી રહિત હોવાને કારણે “અલીક” ફળરહિત હોય છે તેથી તેનું નામ “અલીક” પડ્યું છે (૨)

મ્પરાનુગત સમ્યગ્જ્ઞાનાભાવાત્, દુરન્ત=વિપાકદામ્પ્નત્વાત્ 'વિદ્ય' દ્વિતીયમ્
'અધર્મદાર' અધર્મદ્વાર 'કિત્તિય' કીર્તિત=રુચિતમ્ ॥ સૂ. ૧ ॥

एतेन यादृश मृषावादस्वरूपमस्ति तत्प्रथमान्तद्वारे प्रोक्तम् । साम्प्रतं
'यन्नामे'ति द्वितीयान्तद्वारे वक्ष्यामन्याह—'तस्स' इत्यादिना—

મૂળમ્--તસ્સ ય ણામાણિ ગોણાણિ હુંતિ તીસં ત જહા-
અલિયં ૧, સઢં ૨, અણજ્જં ૩, માયામોસો ૪, અસંતકં ૫,
કૂડકવડમવત્થુગ ચ ૬, નિરત્થયમવત્થયં ચ ૭, વિદેસગરહણિજ્જં
૮, અણુજ્જુક ૯, કક્કણા ય ૧૦, વચ્ચના ય ૧૧, મિચ્છાપચ્છાકડ
ચ ૧૨, સાહ ૧૩, ઉસ્સુત્ત ૧૪, ઉવકૂલ ચ ૧૫, અટ્ટ ૧૬, અઘ્ઠ
વલાણં ચ ૧૭, કિઠ્ઠિવસ ૧૮, વલયં ૧૯, ગહણ ચ ૨૦ મમ્મણં
ચ ૨૧, નૂમ ૨૨, નિયઈ ૨૩, અપ્પચ્ચઓ ૨૪, અસમઓ ૨૫,
અસચ્ચસઘત્તણ ૨૬, વિવક્ખો ૨૭, ઉવહિયં ૨૮, ઉવહિ અસુદ્ધ
૨૯, અવલોવોત્તિ ૩૦, વિદ્યસ્સ ઇમાણિ ઇવમાદ્યાણિ નામ-
ધેજ્જાણિ હોતિ તીસ સાવજ્જસ્સ અલિયસ્સ વયજોગસ્સ
અણેગાહ ॥ સૂ. ૨ ॥

हुए मिथ्यात्व, अविरति के प्रवाह का विच्छेद नहीं होता है। (अणुगय)
सम्यग्ज्ञानका अभाव होने से यह जीव के साथ भवपरम्परानुगत होता
है। (दुरन्त) विपाक इसका बहुत ही अधिक दारुण होता है इसलिये
यह जीव के लिये दुरन्त कहा गया है। इस तरह से (विद्वय)
इस द्वितीय अधर्म द्वार का (कित्तिव) सूत्रकार ने तीर्थंकर परंपरा के
वर्णन अनुसार वर्णन किया है ॥सू. १॥

હોવાને કારણે અનાદિ કાળથી લાગેલ મિથ્યાત્વ અવિરતિ આદિનો પ્રવાહ
તૂટતો નથી “અણુગય” સમ્યગ્ જ્ઞાનનો અભાવ હોવાથી તે જીવની સાથે
ભવપરંપરાનુગત હોય છે “દુરન્ત” તેનો વિપાક “પરિણામ” ધણો જ દારુણ
હોય છે, તેથી તે જીવને માટે દુરન્ત દર્શાવાયુ છે આ રીતે “વિદ્ય” આ
બીજા અધર્મદ્વારનું ‘કિત્તિવ’ સૂત્રકારે તીર્થંકર પરંપરાએ કરેલ વર્ણન પ્રમા-
ણેનું વર્ણન કર્યું છે ॥ સૂ-૧ ॥

વિદ્વેષગર્હણીય=વિદ્વેષાત્=વિદ્વેષસમૃતત્વાદ્ દ્વંડમલીકવચન ગર્હણીય=નિન્ધ મહા-
પુરુષૈઃ, (૯) 'અણ્જુક' અનૃજુકમ્ = અમરત્-સરલભાગવર્જિતમિત્યર્થઃ, (૧૦)
'કલ્કના ય' કલ્કના ચ=પાપ પ્રાણાતિપાતાદિરૂપમ્, (૧૧) 'વચના ય' વચ્ચના
=પ્રતારણા, (૧૨) 'મિન્ધ્યાપચ્છાઙ્ક ચ' મિન્ધ્યાપચ્છાત્ કૃત=મિન્ધ્યેતિતુદ્ધ્યા
સાધુભિઃ પચ્છાત્ કૃત = પૃષ્ઠે કૃત તિરસ્કૃતમિત્યર્થ, (૧૩) 'સાતિ' સાતિ =
અવિશ્વાસ, (૧૪) 'ઉત્સુત્' ઉત્સુત્-તિરિદ્વાર્થ-નિરૂપણમ્, (૧૫) 'ઉત્કૂલ'
ઉત્કૂલ=સન્માર્ગતટાત્ પરિશ્રદ્ધકારકમ્, (૧૬) 'અર્ત' આર્તમ્, આર્તધ્યાનહેતુ-

લિયે इसका नाम अपार्थ है ७। यह विद्वेष से भरा रहने के कारण गर्ह-
णीय होता है-महापुरुषों द्वारा निन्ध होता है इसलिए इसका नाम
विद्वेष गर्हणीय है ८। इसमें भावों की सरलता नहीं होती है, अर्थात्-
यह सरल स्वभाव से वर्जित रहता है इसलिये इसका नाम अनृजुक
है ९। कल्कना शब्द का अर्थ पाप है, यह मृषावचन प्राणातिपातादिरूप
होता है इसलिये इसका नाम कल्कना है १०। इसमें दूसरों की प्रता
रणा होनी है इसलिये इसका नाम वचना है ११। मिन्ध्या समझकर
साधु पुरुष इसका तिरस्कार करते हैं इसलिये इसका नाम मिन्ध्यापच-
च्छातून है १२। साति शब्द का अर्थ अविश्वास है, मिन्ध्याभाषण विश्वास
रहित होता है। इसलिए इसका नाम साति है १३। विरुद्ध अर्थ वा
इसमें निरूपण होता है इसलिये इसका नाम उत्सुत है १४। जीव को
यह सन्मार्ग रूप तट से भ्रष्टकर देता है इसलिये इसका नाम उत्कूल
है १५। यह आर्तध्यान का हेतु होता है इसलिये इसका नाम आर्त है

નામ ' અપાર્થ " છે (૮) તે વિદ્વેષથી પૂર્ણ હોવાથી ગર્હણીય-મહાપુરુષો
દ્વારા નિન્ધ-હોય છે, તેથી તેનું નામ " વિદ્વેષ ગર્હણીય " છે (૯) તેમાં ભાવોની
સરલતા હોતી નથી, એટલે કે તે મરણ સ્વભાવથી રહિત હોય છે, તેથી તેનું
નામ " અનૃજુક " છે " કલ્કના " શબ્દનો અર્થ પાપ થાય છે (૧૦) તે
મૃષાવચન પ્રાણાતિપાતાદિરૂપ હોય છે, તેથી તેનું નામ " કલ્કના " છે (૧૧)
તે અસત્ય વચન વડે અન્યની પ્રતારણા થાય છે, તેથી તેનું નામ " વચના "
છે (૧૨) મિન્ધ્યા સમજીને સાધુ પુરુષ તેનો તિરસ્કાર કરે, તેથી તેનું
નામ " મિન્ધ્યાપચ્છાત્કૃત " છે (૧૩) " સાતિ " શબ્દનો અર્થ ' અવિશ્વાસ ' થાય
છે, તેથી તેનું નામ " સાતિ " છે (૧૪) વિરુદ્ધ અર્થનું તેમાં નિરૂપણ થાય
છે, તેથી તેનું નામ " ઉત્સુત " છે (૧૫) જીવને તે સન્માર્ગરૂપ ઊનારેથી
બ્રષ્ટ કરે છે માટે તેનું નામ " ઉત્કૂલ " છે (૧૬) તે આર્તધ્યાનના હેતુરૂપ
હોય છે, તેથી તેનું નામ " આર્ત " છે (૧૭) તેના દ્વારા અમત્-અવિદ્યમાન

ત્વાત્, (૪) 'માયામોસો' માયામૃષા=માયાપૂર્વકાદસત્યભાષણસ્ય માયામૃષેતિ
 નામ, (૫) 'અસંતક' અસત્ક=અવિદ્યમાન-સત્ યસ્મિન્સત્કદસત્કમ્=અમત્યમ્, (૬)
 'કૂટકપટાવસ્તુક' કૂટકપટાવસ્તુક=તત્ર કૂટં=પરવચ્ચનાર્થ ન્યૂનાધિકભાષણં કપટં
 ભાષાવિપર્યયકરણમ્ અવસ્તુ=અવિદ્યમાનવસ્તુ કથનમ્=યથા- 'જગતઃ કર્તા ઈશ્વરઃ'
 ઇત્યાદિ કથનમ્ કૃતાદીના ત્રયાણા સમાનાર્થસ્ત્યાદેકતમત્ત્વે નૈવ ગણનાદિદમેક
 નામ, (૭) નિરત્યયમવત્યય ચ 'નિરર્થકમપાર્યક ચ = નિર્ગતોડર્યોયસ્મિન્સત્ક =
 સત્યાર્થ હીનમ્, અપાર્યમ્=અપગતાર્યમસમ્પદાર્યમિત્યર્થઃ, (૮) 'ત્રિદેસગરહિજ્ઞં'

ધનાને કે લિયે પ્રયોગ સે લાયા જાતા હૈ ઇસલિયે ઇમકા દૂસરા નામ
 શઠ હૈ ૨ । અનાર્યજનો દ્વારા યહ બોલા જાતા હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ
 અનાર્ય હૈ ૩ । યહ અસત્યભાષણ માયા પૂર્વક હોતા હૈ ઇસલિયે ઇસકા
 નામ માયામૃષા હૈ ૪ । અસત્યભાષણ મેં જો વિષય કહા જાતા હૈ વહ
 ઉસરૂપ મેં નહીં હોતા હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ અસત્ય હૈ ૫ । પરવચન
 કે લિયે ઇસમેં ન્યૂનાધિક બોલના પડતા હૈ, તથા ઇસમેં બોલને કી ભાષા
 કી શૈલી ભી મિત્ર પ્રકાર કી હોતી હૈ, ઓર જો વસ્તુ ઇસમેં કહી જાતી
 હૈ વહ અવિદ્યમાન હોતી હૈ, જૈસે ચોં કહના કિ જગત કા કર્તા ઈશ્વર
 હૈ સો યહ કૂટકપટાવસ્તુક નામ કા અસત્ય હૈ । યહાં કૂટ કપટ અવ-
 સ્તુક, ઇન ત્રીનોં કી સમાનાર્થકતા હોને કે કારણ એક પદ રૂપ સે
 ગિનતી કરલી ગઈ હૈ ૬ । યહ ભાષણ સત્યાર્થ સે હીન હોતા હૈ ઇસલિયે
 ઇસકા નામ નિરર્થક હૈ । ઇસમેં વાચ્ય અર્થ, સવધ વિહીન રહતા હૈ ઇસ-

કપટી લોકો દ્વારા પોતાનુ કાર્ય સાધવા માટે તેનો પ્રયોગ કરાય છે, તેથી તેનુ
 ખીન્નુ નામ “શઠ” છે, (૩) અનાર્યજન દ્વારા તે બોલાય જે તેથી તેનુ
 ત્રીન્નુ નામ “અનાર્ય” છે (૪) તે અસત્ય ભાષણ માયા પૂર્વક થાય છે તેથી
 તેનુ ચોથુ નામ “માયામૃષા” છે (૫) અસત્ય ભાષણમા જે વિષયનુ કથન
 કરાય છે તે યથાર્થ-સાચા સ્વરૂપે-કરાતુ નથી તેથી તેનુ પાંચમુ નામ “અસત્ય”
 છે (૬) અન્યની વચનાને માટે તેમા ન્યૂનાધિક બોલણુ પડે છે, અને તે બોલ
 વાની શૈલી પણ જુદા જ પ્રકારની હોય છે, અને જે વસ્તુ તેમા કહેવાય છે
 તે અવિદ્યમાન હોય છે, જેમ કે “જગતનો કર્તા ઈશ્વર છે” તે પ્રમાણે કહેવુ
 તે આ પ્રકારના આ પ્રકારના અસત્યને “કૂટકપટાવસ્તુક અસત્ય” કહે છે
 અહીં કૂટ, કપટ અને અવસ્તુક એ ત્રણે પદોથી સમાનાર્થકતા હોવાથી એક જ
 પદ રૂપે ગણવામા આવેલ છે (૭) તે ભાષણુ સત્યાર્થ ગ્રહિત હોય છે તેથી
 તેનુ નામ નિરર્થક છે તેમા વાચ્ય અર્થ, સવધ રહિત હોય છે તેથી તેનુ

મજો ' અસમ્મતઃ=ન્યાયભેદનાચરિતઃ, (૨૬) ' અસન્નસપ્તત્તણ ' અસત્યસન્નધત્વમ્=અસત્ય-સન્નધાતિ=સમ્મિશ્રયતિ સતત ય' સોડસત્યસન્નસ્તસ્ય ભાવોડમત્યસન્નધત્વમ્=મૃષાભાપિ ધર્મઃ, (૨૭) ' વિપક્ષો ' વિપક્ષ=મત્ય પ્રતિકૂલત્વાત્ (૨૮) ઉપહિ ય ' ઔપધિક=માયામયમ્=રૂપટગૃહમિત્યર્થઃ, (૨૯) ઉપહિ યમુદ્ધ ' ઉપ'યથુદ્ધમ્=ઉપધિઃ=સાવધર્મ તેનાથુદ્ધમ્, (૩૦) ' અપ્લોક્તિ ' અપલોપ્તિ=કુર્ણોડપિ ' નાહ કુરોમિ કિઞ્ચિ 'દિત્યાદિભિર્વસ્તુ પ્રચ્છાદનમ્ ' ત્રિઙ્ગસ્સ ' દ્વિતીયસ્યાધર્મ દ્વારસ્ય ' ઇમાણિ ' ઇમાણિ=પૂર્વોક્તાણિ ' એવામાડયાણિ ' એવામાદિકાણિ-અલીકા-દીણિ ' સાવજ્જસ્સ ' સાવજ્જસ્ય પાપસન્નિત્થસ્ય ' અલિયસ્સ ' અલીકસ્ય=મૃષાવા-

ન્યાયજ્ઞ પુરુષો દ્વારા યદ્ અસમત હૈ-વે પુરુષ ઇસકા કમી ભી સેવન નહીં કરતે હૈં ફસલિયે યદ્ અસમત હે ૨૫ । યદ્ મૃષાભાપિયોં કા ધર્મ હૈં ફસલિયે ઇસકા નામ અમત્યસઘાત હૈ ૨૬ । સત્યભાષણ કા યદ્ વિપક્ષી હૈં ફસલિયે ઇસકા નામ વિપક્ષ હૈં । રૂપટોં કા યદ્ ઘર હૈં ફસલિયે ઇસકા નામ ઔપધિક હૈં ૨૮ । સાવધર્મોં સે યદ્ સતત અપ-વિત્ર ઘના રહતા હૈં ફસલિયે ઇસકા નામ ઉપધ્યથુદ્ધ હૈં ૨૯ । ઉપધિ શબ્દ કા અર્થ સાવધર્મ હૈં । કાર્ય કરતા હુઆ ભી વ્યક્તિ ફસકે પ્રભાવ સે પ્રભાવિત્ત હોકર કહડિયા કરતા હૈં કિ મે કુછ ભી નહીં કર રહા હૈં । ફસ તરહ ઇમકે દ્વારા વસ્તુ કા પ્રચ્છાદન હોતા હૈં-અતઃ ઇસકા નામ અપલોપ્તિ હૈં ૩૦ । (ત્રિઙ્ગસ્સ) ફસ તરહ દ્વિતીય અર્થદ્વાર કે (ઇમાણિ) વે પૂર્વોક્ત અલીક આદિ (ત્રીસ નામધેજ્ઞાણિ) ગુણનિષ્પન્ન ત્રીસ નામ હૈં । તથા (એવામાડયાણિ) ઇનસે અતિરિક્ત ઔર ભી ઇમી

તેને માન્ય કરતા નથી-તેઓ તેનું ઠી પથુ એવન ક્રૂતા નથી, તેનું નામ ' અસમત " (૨૬) તે અમત્ય વચન મૃષાવાદીઓનો ધર્મ છે, તેથી તેનું નામ " અસત્યસઘાત " ૨ (૨૭) સત્ય ભાષણનું તે વિપક્ષી-વિરુદ્ધનું છે, તેથી તેનું નામ " વિપક્ષ " છે (૨૮) રૂપટોનું તે ધામ છે, તેથી તેનું નામ " ઔપધિક " છે (૨૯) સાવધ કર્મોથી તે સતત અપવિત્ર રહે છે, તેથી તેનું નામ, ' ઉપધ્યથુદ્ધ " છે ' ઉપધિ ' ગ્રંથનો અર્થ સાવધ કર્મ છે, (૩૦) કાર્ય કરતી વ્યક્તિ પથુ તેના પ્રભાવની અમર નીચે આવી જઈને ઠી દે છે કે " હું કંઈ કરતો નથી " આ ગીતે તેના દ્વારા વસ્તુનું પ્રચ્છાદન થાય છે, તેથી તેનું નામ " અપલોપ " છે " ત્રિઙ્ગસ્સ " આ ગીતે બીજા અધર્મદ્વારના " ઇમાણિ " પૂર્વોક્ત અલીક આદિ " ત્રીસ નામ ધેજ્ઞાણિ " શુભાનુસાર ત્રીસ નામ છે તથા " એવામાડયાણિ " તે ઉપરાન્ત બીજા પથુ તે ૪ પ્રકારના " સાવજ્જસ " પાપ

ત્વાત્ (૧૭) 'અન્મક્ષણ' અભ્યાસ્યાનમ્=અસરોપારોપણમ્, (૧૮) 'કિલ્વિપ' કિલ્વિપ=પાપ-પ્રાણાતિપાતાદિદેતુત્વાત્, (૧૯) 'વલય' વલયમિવ વક્ત્વાદ્ કુટિલમિત્યર્થઃ, (૨૦) 'ગહન' ગહન=ગહનમિવ ગહન-વનમિવ દુરગગાદમિત્યર્થઃ, (૨૧) 'મમ્મણ' મન્મનમ્ = મન્મનમિવ મન્મનમ્ અસ્ફુટત્વાત્ । (૨૨) 'નૂમ' છાદન=પરગુણાચ્છાદને પિધાનમિવ, (૨૩) 'નિર્કૃતિ' નિર્કૃતિઃ=માયા-છાદનાર્થ વચન વિપ્રલમ્બન વા, (૨૪) 'અપ્ત્યયો' અપ્રત્યયઃ=અવિશ્વાસઃ (૨૫) 'અસ

૧૬ । इसके द्वारा असत्-अविद्यमान दोनों का आरोपण किया जाता है इसलिये इसका नाम अभ्याख्यान है १७ । यह प्राणातिपात आदि पापों का हेतु होता है इसलिये इसका नाम किल्बिष है १८ । वलय के जैसा यह कुटिल रहा करता है इसलिये इसका नाम वलय है १९ । वन के समान यह दुरा वगाह होता है इसलिए उसका नाम गहन है २० । जिस प्रकार तोतली बोली में शब्दस्फुट नहीं हों पाते हैं उसी प्रकार इसमें भी वस्तु का वास्तविक भान अस्फुट रहा करता है इसलिये इसका नाम मम्मण है २१ । जिस तरह ढक्कन वस्तु को ढाक देता है उसी प्रकार यह भी पर के गुणों को आच्छादन कर देता है इसलिए इसका नाम नूम है । नूम नाम छादनका है २२, इसमें घोलनेवाला अपनी मायाको ढकने का प्रयास करता है, अथवा दूसरों को ढकने का उपाय रचता है इसलिये इसका नाम निरुक्ति है २३ । कोई भी सज्जन पुरुष झूठ वचन का विश्वास नहीं करते हैं इसलिये इसका नाम अप्रत्यय-अविश्वास है २४ ।

દોષોનુ આરોપણ કરાય છે તેથી તેનુ નામ “અભ્યાસ્યાન” છે (૧૮) તે પ્રાણાતિપાત આદિ પાપોનુ કારણ હોય છે, તેથી તેનુ નામ “કિલ્વિપ” છે (૧૯) વલયના જેવુ તે કુટિલ હોય છે, તેથી તેનુ નામ “વલય” છે (૨૦) વનના જેવુ તે ગહન હોય છે, તેથી તેનુ નામ “ગહન” છે (૨૧) જેમ તોતડા વચનો ઘરાળર મમણ શકતા નથી એજ પ્રમાણે અસત્ય લાપણુમા પણ વાસ્તવિકલાવ અસ્ફુટ-અસ્પષ્ટ રહ્યા કરે છે, તેથી તેનુ નામ “મમ્મણ” છે (૨૨) જેમ ઢાકણા વડે વસ્તુને ઢાકી દેવાય છે, એ જ રીતે અસત્ય વચન પણ ગુણોને ઢાકી દેનાર હોવાથી તેનુ નામ ‘નૂમ’ છે ‘નૂમ’ એટલે આચ્છાદન-આવરણ (૨૩) અસત્ય લાપણુમા ઘોલનાર પોતાની માયાને ઢાકવાનો પ્રયાસ કરે છે, અથવા બીજાને ઢાકી દેવાના ઉપાય રચે છે, તેથી તેનુ નામ “નિરુક્તિ” છે (૨૪) ગોઠ પણ સંજ્ઞન પુરુષ અસત્ય વચન પર વિશ્વાસ મૂકતો નથી, તેથી તેનુ નામ અપ્રત્યય “અવિશ્વાસ” છે, (૨૫) ન્યાયજ્ઞ પુરુષો

‘ સ્વરક્ષા ’ સ્વરક્ષાઃ=શુભપાલાઃ-રાજગ્રાહ્યદ્રવ્યસગ્રાહકા इत्यर्थ, ‘ જિયજૂય-
કરા ’ જિતઘૂતકરા=તત્ર જિતાઃ=પ્રતિસ્પર્ધિઘૂતકરૈ પરાજય પ્રાપ્તાઃ, ઘૂતકરાઃ=
ઘૂતક્રીડકાઃ ‘ ગદિયગદ્ધના ’ ગદીતગ્રહણાઃ = ગદીતાનિ=સ્થાપિતાનિ ગ્રહણાનિ
= વન્ધક દ્રવ્યાણિ ચૈસ્તે ‘ કક્કગુરુગકારગા ’ કલ્કગુરુકારકા = કલ્કગુરુક
= માયા સમારસમૃત ગમ્ય તત્કારકાઃ=રૂપટિન इत्यर्थઃ, કુલિંગી ’ કુલિન્નિનઃ=
કૃત્સિતા લિન્નિનઃ કુલિન્નિનઃ=કુતીર્થિકાઃ ‘ ઉવદિયા ’ ઔપધિકાઃ=માયાચારિણઃ
કપટિન इत्यर्थઃ ‘ ગાણિયગા ’ ગાણિજકાઃ=વ્યાપારકારિણઃ, ‘ કૂડતુલકૂડમાળી ’
કૂટતુલાકૂટમાનિનઃ=કૂટા=રૂપટયુક્તા-ન્યૂનાધિકા તુલા યેષા તે કૂટતુલાઃ કૂટ-
માનિનઃ=કૂટ=ત્રૈપમ્યયુક્ત ચન્માન=તોલન તદસ્તિ યેષા તે તથા ‘ કૂડકાઠાવળોવ
જીવિયા ’ કૂટકાર્પાવળોવજીવિતાઃ=કૂટકાર્પાવળેન ઉપજીવન્તિ ચે તે તથા-કૂટ
મુદ્રોવજીવિન इत्यર્થ, ‘ પટકારગા ’ પટકારકાઃ=તન્તુવાયાઃ-વસ્ત્રનિર્માપકા इत्यર્થઃ,

इसी तरह (चारभडा) जो चार गुप्तचर-सी. आई. डी होते हैं, भट-
योधा होते हैं, (खडरक्सा) खडरक्ष-राजग्राह्यद्रव्य के संग्राहक होते
हैं, (जियजूयकरा) जितघूतकर-प्रतिस्पर्द्धा जुआरियों द्वारा पराजित
हुए जुआरी होते हैं, (गदियगदहणा) गदीतग्रहण-गदना रखकर जो
दूसरों को व्याज पर रूप्या देने वाले होते हैं (कक्कगुरुगकारगा) कलक
गुरुक कारक-मायाचारी से भरे हुए वचनों को बोलने वाले होते हैं,
अर्थात् कपटी होते हैं, (कुलिंगी) कुतूर्थिक होते हैं, (उवदिया) औप-
धिक-मायाचारी होते हैं, (गाणियगा) गाणिजनक-व्यापारी होते हैं,
असत्यभाषण करते हैं । (कूडतुलतुलमाणी) जो न्यूनाधिक तराजू
रखते हैं, नापने तौलने के बाट कमती बढ़ती रहते हैं (कूडकाठावणो-
वजीविया) बनावटी रूप्या पैसा बनाकर जो अपना निर्वाह करते हैं,

એજ પ્રમાણે “ચારમહા” જે ગુપ્તચરો-સી આઈ ડી હોય છે, ભટ-યોદ્ધા હોય છે,
જે “સરક્ષા” ખડરક્ષ-રાજ્ય ભાગના દ્રવ્યનો સંગ્રહ કરનાર હોય છે, જે
“જિયજૂયકરા” જિતઘૂતકર-પ્રતિસ્પર્ધિ જુગારી દ્વારા પરાજિત થયેલ જુગારી
હોય છે, “ગદિયગદ્ધના” ગદીત ગ્રહણ-ગદેણા રાખીને જે બીજા લોકોને
વ્યાજે નાણા ધીરનાર હોય છે, “કક્કગુરુગકારગા” કલ્ક ગુરુક કારક જે
માયાચારી વચનો બોલનારા હોય છે-કપટી હોય છે, “ગાણિયગા” જે વ્યા-
પારી હોય છે, જે “કુલિંગી” કુતીર્થિક હોય છે, “ઉવદિયા” જે ઔપધિક
માયાચારી હોય છે, તે અસત્ય બોલે છે “કૂડતુલતુલમાળી” જે ખોટા
નાળવા રાખે છે, માપવા તથા ભેખવાના માપ વધારે કે ઓછા રાખે છે,
“કૂડકાઠાવળોવજીવિયા” નકલી રૂપિયા, પૈસા આદિ બનાવીને જે લોકો

સપ્રાણાઃ । ‘ભયાય=અન્યેષા ભયોત્પાદનાય’ વ્યાઘ્ર સમાગતઃ’ ઇતિરીત્યા મૃષા-
વાદઃ અથવા ભયાન્ચ ‘હસ્તદ્વિયા ય’ દામ્યાર્થિકાઃ, અથવા દાસ્યાર્થાય ચ=
દાસ્ય કર્તુમપિ તથા વદન્તિ ‘સક્તી’ સાક્ષિણઃસાક્ષિભૂતાન્યાયાન્યાદો ‘ચોરા’
ચોરા-નિગ્રહાદૌ ‘ચારમટા’ ચારમટાઃ=તત્ર ચારાઃ ગૂઢપુરુષાઃ, મટાઃ=યોગાઃ,

પણ કરતે હે । ડસી તરફ મુગાદિક જો જીવ હોતે હે કિ જિन्हે પ્રાણ-
વધ કે પ્રકરણ મેં ૨૦ વેં મૂલ મેં કટા ગયા હૈ વે બી અસત્યભાષણ
કરતે હૈં । કોઈ ધન કે લિયે, કોઈ ધર્મ કે લિયે, કોઈ ઇન્દ્રિયોં કે ભોગોં
કે નિમિત્ત કામ કે લિયે, ઓર કોઈ ૨ અર્થ, ધર્મ ઓર કામ ઇન ત્રીનોં
કે લિયે અસત્યભાષણ કરતે હૈં । (ભયાય) કિતનેક કિતનેક જીવ
એસે બી હોતે હૈં જો દૂસરોં કો ભય ઉત્પન્ન કરને કે અભિપ્રાય સે અસ-
ત્યભાષણ કર દિયા કરતે હૈં । “ ભયાય ” કી સસ્કૃત ગયા “મયાચ”
એસી બી હોતી હૈં-ઇસકા તાત્પર્ય તબ એસા હોગા કિ કિતનેક જીવ ભય
સે બી અસત્યભાષણ કર દિયા કરતે હૈં । (હસ્તદ્વિયાય) કિતનેક જીવ
એસે બી હોતે હૈં જો હંસી મજાક મેં અસત્યભાષણ કર દેતે હૈં, અથવા
દૂસરો કી હંસી ઉડાને કે અભિપ્રાય સે અસત્યભાષણ કરને લગતે હૈં ।
(સક્તી) જો ન્યાયાલય-કચહરી આદિ મેં દૂસરોં કી સાક્ષી દેતે હૈં વે
બી અસત્યભાષણ કરતે હૈં । (ચોરા) ચોરી કરને વાલે જો પુરુષ હોતે
હૈં વે નિગ્રહ આદિ અવસ્થા કે ઉપસ્થિત હોને પર અસત્યભાષણ કરતે હૈં ।

જે જીવો હોય છે, જેમનું પ્રાણવધના ૨૦મા પ્રકરણમાં વર્ણન કરવામાં આવ્યું
છે, તે જીવો પણ અસત્ય બોલે છે એટલે કે કેટલાક મુઝ-મોહાધીન વૃત્તિ
વાળા અસત્ય બોલે છે કેટલાક ક્રોધ, લોભ અને મોહ એ ત્રણેને વશ થઈને
અસત્ય બોલે છે કેટલાક લોકો ધનને માટે, કેટલાક ધર્મને માટે, કોઈ ઇન્દ્રિ-
યાના ભોગોને નિમિત્ત, અને કોઈ કોઈ લોકો અર્થ, ધર્મ અને કામ, એ ત્રણેને
નિમિત્તે અસત્ય બોલે છે “ભયાય” કેટલાક એવા જીવો પણ હોય છે કે જે
બીજાને ભય પમાડવાને માટે અસત્ય બોલે છે “મયાય” ની સસ્કૃત છાયા
“મયાચ્ચ” પણ થાય છે ત્યારે તેનો અર્થ એવો થાય છે કે કેટલાક જીવો
ભયને કારણે પણ અસત્ય બોલે છે “હસ્તદ્વિયા ય” કેટલાક લોકો એવા
પણ હોય છે કે જેઓ મજાક-મશકરીમાં પણ અસત્ય બોલી નાખે છે, અથવા
બીજાની મજાક કરવાને નિમિત્તે અસત્ય બોલવા માટે છે “સક્તી” નાથા
ભય આદિમાં બીજાની સાક્ષી આપનારા લોકો પણ અસત્ય બોલે છે “ચોરા”
ચોરી કરનારા લોકો, જેવામાં જવાનો પ્રસંગ ઉપસ્થિત થતા અસત્ય બોલે છે

लघुस्वकाः=पुच्छात्मानः, 'असच्चा' असत्याः=सत्यविमुखा 'गारविया' गौर-
विकाः=ऋद्ध्यादि गौरयुक्ताः, 'असच्चद्वावणाहिचित्ता' असत्यस्थापनाधिचित्ताः=
असत्यानाम्=असदर्थानां स्थापनायां प्ररूपणायामधिचित्तं येषां ते तथा असत्यार्थ-
मण्डनपरा इत्यर्थः, 'उच्चच्छदा' उच्चो=महान् स्वात्माप्रशसापरः उन्दः=अभि-
प्रायो येषां ते तथा स्वात्मप्रशसापरायण इत्यर्थः, 'अणिग्गहा' अनिग्रहाः=
अवशेन्द्रियाः 'अणियता' अनियताः=अनियमन्तः उन्देन=स्वाभिप्रायेण 'मुक्क-
वाया' मुक्कवाचः=यथा तथा भाषिणः अयथा 'वयमेव सिद्धवादिन' इति
वदन्ति, के वदन्ति? 'जे' ये 'अलियाहि' अलीकेभ्योऽसत्येभ्यः 'अविरया'
अविरताः=अनिवृत्ताः भवन्ति ॥ सू-३ ॥

तथा—'अवरे नत्थिगवाइणो' इत्यादि—

मूलम्—अवरे नत्थिगवाइणो वामलोगवादी भणन्ति, नत्थि
जीवो, न जाइ इह परे वा लोए, नय किंचि वि फुसइ पुन्न-
पाव, नत्थिफलं सुकयदुक्कयाण । पंचमहामूइयं सरीर भासन्ति

आपको तुच्छ मानने वाले मनुष्य, (असच्चा) सत्य से विमुख रहने
वाले मनुष्य, (गारविया) ऋद्ध्यादि के गौरव से युक्त बने हुए मनुष्य,
(असच्चद्वावणाहिचित्ता) असत्यपदार्थ की प्ररूपणा करने वाले मनुष्य,
(उच्चच्छदा) अपने आपकी प्रशसा करने वाले मनुष्य, (अणिग्गहा)
जिनकी इन्द्रियां वश में नहीं हैं ऐसे मनुष्य, (अणिययाउन्देण) नियम
से रहित मनुष्य, (मुक्कवाया) यथातथा बोलने वाले मनुष्य, और (जे य)
जो मनुष्य (अलियाहि) असत्यभाषण से (अविरया) विरति रहित
(भवति) होते हैं वे जो मन में आता है सो बोल दिया करते हैं ।
इस प्रकार के बोलने में अलीक भाषण का दोष लगा करता है ॥ सू ३ ॥

मनुष्यो, "असच्चा" सत्यशी विमुख रहनेवाले मनुष्यो, "गारविया" ऋद्धि
आदिना अभिमानशी युक्त बनेले मनुष्यो, "असच्चद्वावणा हि चित्ता" अस-
त्य पदार्थनी व प्रशंसा करनेवाले मनुष्यो, "उच्चच्छदा" आप वश में करनेवाले
लोको, "अणिग्गहा" जेभनी इन्द्रियो बाधूमा नथी तेवा लोको, "अणियया-
उन्देण" नियम विनाना मनुष्यो-अनियमित लोको, "मुक्कवाया" जेभ तेभ
बोलनेवाले लोको, अने "जे य" जे मनुष्य "अलियाहि" असत्य भाषणशी
"अविरया" विरति रहित "भवति" होय छे, ते लोको मनमा आवे तेभ
बोली नाये छे ते रीते बोलवाशी असत्यभाषणो दोष लाग्या करे छे ॥ सू ३ ॥

‘કલાયા’ કલાદાઃ=સુવર્ણકારાઃ ‘કારુહજ્ઞા’ કારુકીયાઃ=શિલ્પિનઃ ‘વચનપરા’ વચ્ચનપરાઃ=પ્રતારણાપરા ‘ઠગ’ ઇતિ પ્રસિદ્ધાઃ ‘ચારિય’ ચાટુયારનગરગોત્તિય પરિયારગા, ચારિક્ષાટુયારનગર ગુપ્તિકપરિચારકાઃ=તત્ર-ચારિકા=ગુપ્તચરાઃ, ચાટુકારાઃ=સુલમાદ્રલિકાઃ, નગરગુપ્તિકાઃ=કોટપાલાઃ, ‘કોતવાલ’ ઇતિ પ્રસિદ્ધાઃ, પરિચારકાઃ=સેવકાઃ, ‘વિષયમોગતત્પરા’થ, ‘દુટ્ટવાઈ’દુષ્ટવચનમણિયા ‘દુષ્ટ-વાઈ’ સૂચકમણિયા, તત્ર દુષ્ટવાઈનઃ=અસત્પક્ષગ્રાહિણઃ સૂચકા-પિશુનાઃ, ક્રુણવલમણિયાઃ=ક્રુણે=ક્રુણગ્રહણે યલાઃ=અન્યન્તસ્તૈર્મણિયાઃ=ઉક્તાઃ ‘દેહિ મે ક્રુણ’ મિત્યુત્તમર્ણેનોક્તા અધમર્ણા ઇતિ માયઃ ‘પુઠ્ઠકાલિયવચનદક્ષા’ પૂર્વકાલિકવચનદક્ષાઃ=વસ્તુકામસ્યાભિમાયમાલક્ય પૂર્વમેય યુગ્મંતિ યે તે પૂર્વકાલિકવચનદક્ષાઃ, ‘સાહસિયા’ સહસા-અવિચાર્ય માપન્તે યે તે સાહસિકાઃ, ‘લહુસ્સગા’

(પટકારગા) જો તન્તુ વાય-જુલાઈ હોતે હૈં (કલાયા) કલાદ-સુવર્ણકાર-સુનાર હોતે હૈં, (કારુહજ્ઞા) કારુકીય-શિલ્પી-કારીગર હોતે હૈં, (વચનપરા) જો ઠગ હોતે હૈં, (ચારિય) ગુપ્તચર હોતે હૈં, (ચાટુયાર) ચાટુકાર-ચુશામદી હોતે હૈં, (નગરગોત્તિય) નગરગુપ્તિક-કોતવાલ હોતે હૈં, (પરિયારગ) પરિચારક-સેવક તથા વિષયભાગોં મે તત્પર હોતે હૈં, (દુટ્ટવાઈ) જો અસત્પક્ષ કો ગ્રહણ કરને વાલે હોતે હૈં, (સૂચક) સૂચક-ચુગલ ચોરહોતે હૈં, (અણવલમણિયા) મેરા ક્રુણ અદા કરો હસ પ્રકાર જિસ દેનદાર સે સાહકાર કહતા હૈં વે ક્રુણ વલમણિત કર્જ દાર વ્યક્તિ કહને વાલે કે અભિપ્રાય કો લક્ષિત કરકે પહિલે સે હી ઘોલને વાલે (પુઠ્ઠકાલિયવચનદક્ષા) પૂર્વકાલિક વચનદક્ષ મનુષ્ય, (સાહસિયા) વિના વિચારે ઘોલને વાલે મનુષ્ય, (લહુસ્સગા) અપને

પોતાનું શુભશન બતાવે છે, “પટકારગા” જે વધુતર હોય છે, “કલાયા” સોની હોય છે, “કારુહજ્ઞા” કારીગર હોય છે, “વચનપરા” ઠગ હોય છે, “ચારિય” ગુપ્તચર હોય છે “ચાટુયાર” ચાટુકાર-ચુશામતીયો હોય છે “નગરગોત્તિય” નગરગુપ્તિક-કોટવાળ હોય છે, “પરિયારગ” પરિચારક-સેવક તથા વિષય ભાગોના શુભામ હોય છે, જે અસત્ય પક્ષને ગ્રહણ કરનાર હોય છે, “દુટ્ટવાઈ” જે અસત્યપક્ષને ગ્રહણ કરનાર હોય છે, “સૂચક” સૂચક-ચુગલીખોર હોય છે, “અણવલમણિયા” ‘માત્ર ક્રુણ ભરપાઈ કરો’ તે પ્રમાણે જે દેણદારને શાહુકાર કહે છે તે ક્રુણવલ ભણિત દેણદાર વ્યક્તિ, કહે નારના અભિપ્રાયને લક્ષિત કરીને પહેલેથીજ ઘોલી જનાર હોય છે, “પુઠ્ઠકાલિય વચનદક્ષા” પૂર્વે આપેલ વચનથી બધાયેલી મનુષ્ય, “સાહસિયા” વિચાર્યા વિના ઘોલનાર મનુષ્ય, “લહુસ્સગા” પોતાની જાતને ગુચ્છ માનનાર

प्रत्यक्षाभावे व्याप्तिग्रहस्याप्यभावात् महानसादीं सत्येय पर्वतादीं वह्निर्नुमीयते । वह्निभूमयो प्रत्यक्षेण सादृश्यग्रहे प्रत्यक्षप्रमाणत्वादिभिर्नुमानम्यानदीकृतत्वान्च । नाप्यागमयावस्तस्य परस्परविरुद्धत्वेनाऽप्रामाण्यात् । नाप्युपमानमत्र प्रमज्यते, असत्पदार्थे केनोपमीयते । इति । एव च जीवस्याऽसिद्धत्वात् कोऽपि इह=मनुष्यलोके परे वा 'लोए' लोके=देवादिलोके वा 'न जाइ' न याति=न गच्छति, 'न य' न च 'किंचि' किञ्चिदपि 'पुणपाव', पुण्यपाप=पुण्यपापरूप कर्म 'फुसइ'

धर्मता आदि का ग्रहण होना आवश्यक ही होता है इसके बिना अनुमान नहीं होता है । जब उस विषय में प्रत्यक्षप्रमाण ही प्रवृत्त नहीं होता है तब साध्य साधन की व्याप्ति का ग्राहक वह वही कैसे हो सकता है । महानस आदि में साध्य साधन की व्याप्ति पहिले प्रत्यक्ष से ग्रहण कर लेने पर ही तो अनुमाता पर्वत आदि में वहि का अनुमान करता है । आगम प्रमाण से भी "जीव है" यह बात नहीं कही जाती है, कारण आगमों में एकमतता नहीं है । परस्पर विरुद्धार्थ का-एक दूसरे आगम से विरोधी तत्त्व का-ये प्रणयन करते हैं, इसलिये इनमें प्रमाणता ही नहीं है । उपमान प्रमाण की यहा प्रवृत्ति इसलिये नहीं हो सकती है कि जब 'जीव' पदार्थ ही असत् है तब वह उपमेय कैसे हो सकता है । इस तरह जीव नामक पदार्थ की असिद्धि होने पर (न जाइ इह परे वा लोए) कोई भी इस मनुष्यलोक में अथवा दूसरे देवादिलोक में नहीं जाता है, और (न य किंचि वि फुसइ पुणपाव) न वह पुण्य एव पापरूप कर्म को छूता है, अर्थात्-जब जीव नाम का कोई पदार्थ ही

माधननी व्याप्तिनु अने पक्षधर्मता आदिनु अहणु थहु आवश्यक होय छे, तेना वगर अनुमान थहु नथी ले ते विषयमा प्रत्यक्ष प्रमाण न प्रवृत्त होतु नथी तो साध्य माधननी व्याप्तिनो आहक त्या ते डेवी रीते थहु गडे । महा-नम आदिमा माध्य माधननी व्याप्ति पडेला प्रत्यक्ष रीते अहणु ङी लीधा पडी तो अनुमान उरना पर्वत आदिमा अग्निनु अनुमान डे छे आग-मेनु प्रमाण आपीने पण "एव छे" ते वात डी गडाय तेम नथी, जरणु डे आगमेमा ओड मतता नथी पण-पणथी विरुद्ध अर्थनु-ओक जीनथी विरोधी तत्त्वनु-तेओ वणुन-प्रतिपादन डे छे, ते जरणु तेमनामा प्रमाणभूतता नथी उपमान प्रमाणनी अही प्रवृत्ति ते जरणु थहु गडती नथी डे ले "जीव" पदार्थ न असत् होय तो ते उपमेय डेवी रीते थहु गडे । आ रीते एव नामना पदार्थनी असिद्धि थता "न जाइ इह परे वा लोए" डेड पणु आ भुनध्य होडमा अथवा जीन देवादि होडमा नतु नथी, अने "नय किंचि वि फुसइ पुणपाव" ते पुण्य अने पाप इय कर्मनि अपराधी नथी, ओटडे डे-

हे वायजोगजुत्तं, पच य खंधे भणंति केड, मणं मण जीविका
वदंति, वाऊजीवो त्ति एवमाहंसु सरीर साइयं सनिधणं इह
भवे एगभवे, तस्त विप्पणासंमि सब्वनासो त्ति एव जपंति
मुसावाई ॥ सू० ४ ॥

टीका — 'अपरे' अपरे=उक्तेभ्योऽन्ये 'नत्थि ग्राहणो' नास्ति ग्राहिनः= 'नास्ति परलोकः' इति मतिर्येषा ते नाम्तिका स्ते च ते ग्रादिनः प्रत्यक्षप्रमाण नादिनश्चावाकाः, तथा 'वामलोकवाइ' तथा 'वामलोकग्रादिनः, वाम=विरुद्ध लोक=वदन्ति ये ते तथा सत्तामपि लोकवस्तूनामसत्त्व प्रतिपादका अन्य ग्रादिनः इत्यर्थः, ते हि 'भगन्ति=वदन्ति यत् 'नत्थि जीवो' नास्ति जीवः सुखदुःखादि भोक्ता तत्साधक प्रमाणाभावात्, यतो हि न तत्र प्रत्यक्ष प्रमाणमुपक्रमते चक्षुरादीन्द्रियविषयत्वात्, नाप्यनुमान तत्र प्रमाणम्, तस्य व्याप्तिपक्षधर्मताज्ञानाद्यधीनतया

तथा—'अवरे नत्तिगवाइणो' इत्यादि

टीका—(अवरे) इन पूर्वोक्त व्यक्तियों से भिन्न (नत्थिगवाहणो) जो नास्तिकवादी हैं—‘परलोक नहीं है’ इस प्रकार की जिनकी बुद्धि है ऐसे केवल एक प्रत्यक्ष प्रमाण मानने वाले चार्वाक, तथा (वामलोगवाई) वामलोकवादी—शून्यवादी, ये लोक में रही हुई वस्तुओं को असत् रूप से प्रदिपादित करते हैं वे (भणति) कहते हैं कि (नत्थिजीव) सुख, दुःख आदि अवस्थाओं का भोक्ता जीव नाम का कोई पदार्थ नहीं है, कारण कि इसके साधक प्रमाणों का अभाव है प्रत्यक्षप्रमाण इसका साधक इसलिये नहीं होता है कि चक्षुरादिक जो इन्द्रिया है वे उसे अपना विषयभूत नहीं बनाती है। अनुमान से भी उसका ग्रहण नहीं होता है, क्यों कि अनुमान से साध्य और साधन की व्याप्ति का एव पक्ष

તથા—“ અવરે નતિગવાહ્ણો ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-“અવરે” તે પૂર્વોક્ત વ્યક્તિયોથી બુદ્ધાજ પ્રકારના ‘નત્યિગવાઈનો’ જે નાસ્તિકવાદી છે-“પરલોક નથી” એ પ્રકારની જેમની માન્યતા છે એવા, ફક્ત એક પ્રત્યક્ષ પ્રમાણને જ માનનાર ચાર્વાકવાદી, તથા “વામલોગવાઈ” વામલોકવાદી-વામમાર્ગી, તેઓ સ્પષ્ટિમા રહેલ વસ્તુઓને અસત રૂપે પ્રતિપાદિત કરે છે તેઓ ‘મળતિ” કહે છે કે “નત્યિ જીવો” સુખ હુખ આદિ અવસ્થાઓનો ભોક્તા જીવ નામનો કોઈ પદાર્થ નથી, જરણ કે તે સિદ્ધ કરવા માટેના પ્રમાણોનો અભાવ છે પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ તેનું સાધક તે કારણ હોતું નથી કે અક્ષુ આદિ જે ઈન્દ્રિયો છે તે તેને પોતાના વિષય રૂપ બનાવી શકતી નથી અનુમાનથી તેને ગ્રહણ કરી શકાતું નથી જરણ કે અનુમાનમા સાધ્ય

प्रत्यक्षाभावे व्याप्तिग्रहस्याप्यभावात् महानसादी सत्येय पर्वतादी वह्निस्तुमीयते । वह्निधूमयो प्रत्यक्षेण सादृश्यग्रहे प्रत्यक्षप्रमाणरादिभिरनुमानस्यानङ्गीकृतत्वान्च । नाप्यागमगावस्तस्य परस्परविरुद्धत्वेनाऽप्रामाण्यात् । नाप्युपमानमत्र प्रयोज्यते, अस-
त्पदार्थे केनोपमीयते । इति । एव च जीवस्याऽसिद्धत्वात् कोऽपि इह=मनुष्यलोके
परे वा ' लोए ' लोके=देवादिलोके वा ' न जाइ ' न याति=न गच्छति, ' न य '
न च ' किंचिदि ' किञ्चिदपि ' पुण्णपाव , पुण्यपाप=पुण्यपापरूप कर्म ' फुसइ '

धर्मता आदि का ग्रहण होना आवश्यक ही होता है इसके बिना अनु-
मान नहीं होता है । जय उस विषय में प्रत्यक्षप्रमाण ही प्रवृत्त नहीं
होता है तब साध्य साधन की व्याप्ति का ग्राहक वहा वह कैसे हो
सकता है । महानस आदि मे साय साधन की व्याप्ति पहिले प्रत्यक्ष से
ग्रहण कर लेने पर ही तो अनुमाता पर्वत आदि मे वहि का अनुमान
करता है । आगम प्रमाण से भी " जीव है " यह बात नहीं कही जाती
है, कारण आगमों मे एकमतता नहीं है । परस्पर विरुद्धार्थ का-एक
दूसरे आगम से विरोधी तत्त्व का-ये प्रणयन करते हैं, इसलिये इनमें
प्रमाणता ही नहीं है । उपमान प्रमाण की यहा प्रवृत्ति इसलिये नहीं हो
सकती है कि जय ' जीव ' पदार्थ ही असत् है तब वह उपमेय कैसे हो
सकता है । इस तरह जीव नामक पदार्थ की असिद्धि होने पर (न जाइ
इह परे वा लोए) कोई भी इस मनुष्यलोक में अथवा दूसरे देवादिलोक
में नहीं जाता है, और (न य किंचि वि फुसइ पुण्णपाव) न वह पुण्य
एव पापरूप कर्म को छूता है, अर्थात्-जय जीव नाम का कोई पदार्थ ही

साधननी व्याप्तिनु अने पक्षधर्मता आदिनु अडुणु थवु आवस्थक होय छे,
तेना वगर अनुमान थतु नथी ने ते विषयभा प्रत्यक्ष प्रमाणु न प्रवृत्त होतु
नथी तो साध्य साधननी व्याप्तिने आडक त्या ते डेवी गीते थइ गडे । भडा-
नम आदिभा नाध्य साधननी व्याप्ति पडेल्ल प्रत्यक्ष रीते अडुणु करी लीधा
पछी तो अनुमान ठरनार पर्वत आदिभा अग्निनु अनुमान कडे छे आग-
मेनु प्रमाणु आपीने पणु " एव छे " ते वात उडी शक्य तेम नथी, कारणु
डे आगमेभा अेक मतता नथी परस्परथी विरुद्ध अर्थनु-अेक भीलथी विरोधी
तत्त्वनु-तेअे वर्युन-प्रतिपादन ठरे छे, ते कारणु तेमनाभा प्रमाणुभूतता नथी
उपमान प्रमाणुनी अडी प्रवृत्ति ते कारणु थइ शकती नथी डे ने " जीव "
पदार्थ न असत् होय तो ते उपमेय डेवी रीते थइ गडे । आ रीते एव
नामना पदार्थनी असिद्धि थता " न जाइ इह परे वा लोए " डोड पणु आ
मनुष्य लोकभा अथवा भीअ देवादि लोकभा नतु नथी, अने " नय किंचि वि
फुसइ पुण्णपाव " ते पुण्य अने पाप इय कर्माने अर्थता नथी, अेरुडे डे-

હે વાયજોગજુત્તં, પંચ ય સ્વંધે મળંતિ કેદ્, મળં મળ જીવિકા
વદંતિ, વાઝજીવો તિ એવમાહસુ સરીર સાદ્યં સનિધર્ણં રૂહ
ભવે એગભવે, તસ્સ વિષ્ણુસંમિ સવ્વનાસો તિ એવ જપંતિ
મુસાવાઈ ॥ સૂ. ૪ ॥

ટીકા—‘અવરે’ અવરે=અવરે=અવરે=અવરે ‘નત્થિગવાહ્ણો’ નાસ્તિકવાદિનઃ=
‘નાસ્તિ પરલોકઃ’ इति मतिर्येषा ते नास्तिका स्ते च ते यादिनः प्रत्यक्षप्रमाण
વાદિનશ્ચાર્વાકાઃ, તથા ‘વામલોગવાઈ’ તથા-વામલોકવાદિનઃ, વામ=વિરુદ્ધ
લોક-વદન્તિ એ તે તથા સત્તામપિ લોકમસ્તૂનામસત્ત્વ પ્રતિપાદકા શૂન્ય યાદિનઃ
इत्यर्थः, તે હિ ‘મળન્તિ=વદન્તિ યત્ ‘નત્થિ જીવો’ નાસ્તિ જીવઃ સુખદુઃખાદિ
મોક્તા તત્સાધક પ્રમાણભાગાત્, યત્તો હિ ન તત્ત પ્રત્યક્ષ પ્રમાણમુપક્રમતે ચક્ષુરાદી
ન્દ્રિયવિષયત્વાત્, નાપ્યનુમાનં તત્ત પ્રમાણમ્, તસ્ય વ્યાપ્તિપક્ષધર્મતાજ્ઞાનાદધીનતયા

તથા—‘અવરે નત્થિગવાહ્ણો’ इत्यादि

ટીકાર્થ—(અવરે) હન પૂર્વોક્ત વ્યક્તિયોં સે ભિન્ન (નત્થિગવાહ્ણો) જો
નાસ્તિકવાદી હૈ—‘પરલોક નહીં હૈ’ હસ પ્રકાર કી જિનકી બુદ્ધિ હૈ એસે
કેવલ એક પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ માનને વાલે ચાર્વાક, તથા (વામલોગવાઈ)
વામલોકવાદી-શૂન્યવાદી, એ લોક મે રહી હુઈ વસ્તુઓં કો અસત્ત્વ સે
પ્રતિપાદિત કરતે હૈં વે (મળન્તિ) કહતે હૈં કિ (નત્થિજીવ) સુખ, દુઃખ
આદિ અવસ્થાઓં કા મોક્તા જીવ નામ કા કોઈ પદાર્થ નહીં હૈ, કારણ
કિ હસકે સાધક પ્રમાણોં કા અભાવ હૈ પ્રત્યક્ષપ્રમાણ હસકા સાધક
હસલિયે નહીં હોતા હૈ કિ ચક્ષુરાદિક જો હન્દ્રિયા હૈ વે ઉસે અપના
વિષયમૂત નહીં બનાતી હૈ। અનુમાન સે મી ઉસકા ગ્રહણ નહીં હોતા
હૈ, ક્યો કિ અનુમાન સે સાધ્ય ઓર સાધન કી વ્યાપ્તિ કા એવ પક્ષ

તથા—“અવરે નત્થિગવાહ્ણો” इत्यादि

ટીકાર્થ—“અવરે” તે પૂર્વોક્ત વ્યક્તિયોથી જુદાજ પ્રકારના ‘નત્થિગવાહ્ણો’
જે નાસ્તિકવાદી છે—“પરલોક નથી” જે પ્રકારની જેમની માન્યતા છે એવા,
ફક્ત એક પ્રત્યક્ષ પ્રમાણને જ માનનાર ચાર્વાકવાદી, તથા “વામલોગવાઈ”
વામલોકવાદી-વામભાગી, તેઓ સૃષ્ટિમાં રહેલ વસ્તુઓને અસત્ત્વ રૂપે પ્રતિપા
દિત કરે છે તેઓ “મળન્તિ” કહે છે કે “નત્થિ જીવો” સુખ, દુઃખ આદિ
અવસ્થાઓને ભોક્તા જીવ નામનો કોઈ પદાર્થ નથી, કારણ કે તે સિદ્ધ
કરવા માટેના પ્રમાણોનો અભાવ છે પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ તેનું સાધક તે બરણ હોતું
નથી કે ચક્ષુ આદિ જે હન્દ્રિયો છે તે તેને પોતાના વિષય રૂપ બનાવી શકતી
નથી અનુમાનથી તેને ગ્રહણ કરી શકાતું નથી બરણ કે અનુમાનમાં સાધ્ય

સુખા ૧ દુઃખા ૨ અદુ સ્વમુખા ૩ ચેતિ ત્રિવિધવેદનાસ્માવ ૨, વિજ્ઞાનસ્કન્ધઃ—
રૂપાદિવિજ્ઞાનલક્ષણઃ ૩, સજ્ઞાસ્કન્ધઃ—સાનિમિત્તોઽવગ્રહણાત્મકમત્યયઃ ૪,
સંસ્કારસ્કન્ધઃ—પુણ્યાપુણ્યાદિધર્મસમુદાયથેતિ ૫ઞ્ચ સ્કન્ધાઃ, એતે પૈચ્ચ સ્કન્ધાઃ
સન્તિ, નાન્યઃ કથિત્તદ્વચતિરિક્ત આત્માઽઽસ્ત્ય પદાર્થોઽસ્તિ, ઇતિ તેષા મતમ્ ।
નાન્ય આત્માભિધાનઇતિ ચોદ્ધાઃ, ‘મણચ’ મનશ્ચ મન એ જીવો એવા તે તથા
મનોજીવિકાઃ=મન આત્મવાદિનો વદન્તિ—ઇતિ મન આત્મવાદિનો મતમ્ । તથા
‘વાઝજીવોત્તિ’ વાયુર્જીવ ઇતિ ‘અહમુ’ આહુઃ=એવિત્, ઉચ્છ્વાસાદિરૂપ એવ
જીવ ઇતિ વદન્તિ । માણવાયુના સર્ગક્રિયાસુ પ્રવર્તન જાયતે, અતએ પ્રાણવાયુરેવ
જીવ ઇત્યર્થઃ । અથ તજ્જીવતન્તરીરગ્રાદિમતગ્રાહ, તથાહિ—‘સરીર સાહ્ય સનિધણ’

और सस्कार ५, ये पाच स्कंध हैं । पृथिव्यादिक एव रूपादिक ये रूप
स्कंध हैं १ । सुख १, दुःख, २ और सुख दुःख ३ इन त्रिविधरूप वेदना
स्कंध, हैं ० । रूपादिकों का विज्ञान स्वरूप, विज्ञानस्कंध है ३ । यह
अमुक है—यह देवदत्त है, इत्यादि—रूप से जो सज्ञाओं का ग्रहण होता
है वह सज्ञास्कंध है ४ । पुण्य अपुण्य आदि रूप जोसमुदाय
है वह सस्कार स्कंध है । ये पाच स्कंध ही हैं, इनसे भिन्न
आत्मा नाम का कोई स्वतंत्र पदार्थ नहीं है इस प्रकार का
मतव्य यौद्धों का है । (मण च मणजीविया वयति) जो मन को ही
आत्मा मानते हैं वे मनोजीविक हैं तथा (वाऊ जीवोत्ति एवमाहसु)
कोई २ उच्छ्वास आदि रूप वायु ही जीव है ऐसा मानते हैं, इनका
कहना है कि प्राण नामकवायु से ही समस्त क्रियाओं में प्रवर्तन होता है
इसके बिना नहीं, अतः प्राणवायु ही जीव है (सरीर साह्य सनिधण)

અને (૫) સંસ્કાર એ પાચ સ્કંધ છે (૧) પૃથિવ્યાદિક અને રૂપાદિક
તે ઉપસ્કંધ છે, (૨) સુખ, દુઃખ અને સુખદુઃખ એ ત્રણ પ્રકારનો વેદના
સ્કંધ છે (૩) ઉપાદિજોના વિજ્ઞાન સ્વરૂપ વિજ્ઞાનસ્કંધ ૦ (૪) આ અમુક
છે—આ દેવદત્ત છે, ઇત્યાદિ રીતે જે સજ્ઞાઓનું ગ્રહણ થાય છે તે સજ્ઞા સ્કંધ
છે (૫) પુણ્ય અપુણ્ય આદિ રૂપ જે ધર્મસમુદાય છે તે સંસ્કારસ્કંધ છે એ
પાચ સ્કંધ જ છે, તે ભિન્ન આત્મા નામનો કોઈ સ્વતંત્ર પદાર્થ જ નથી,
એ પ્રકારનું યૌદ્ધોનું મતવ્ય છે “મણ ચ મણજીવિયા વયતિ” જે મનને જ
આત્મા માને છે તે મનોજીવિક કહેવાય છે તથા “વાઝ જીવોત્તિ એવમાહસુ”
કોઈ કોઈ ઉચ્છ્વાસ આદિ રૂપ વાયુ જ એવ છે તેમ માને છે, તેમનું કહેવું
એવું છે કે પ્રાણવાયુથી જ સમસ્ત ક્રિયાઓ ચાલ્યા કરે છે, તેના બિના ચલતી
નથી, તેથી પ્રાણવાયુ જ એવે છે “સરીર સાહ્ય સનિધણ” ચીરને જ જે

સ્પૃશતિ । જીવસ્યાઽમદ્ભાગાદેવ ન શુભાશુભકર્મચન્નનમિતિ ભાવઃ । અત एव
 'સુકૃયદુક્કયાણ' સુકૃત દુઃકૃતાના=પુણ્યપાપાનાં ફલમપિ 'નત્થિ' નાસ્તિ
 જીવાસત્ત્વેન તત્કલસ્યાઽપ્યસત્ત્વાત્ । તથા 'સરીર' 'પચમહાભૂઘય' પચ્ચમહા
 ભૌતિક=પૃથિવ્યપ્તેજોગ્નાત્કાશમય, 'મામતિ' માપન્તે । તત્ કીદૃશ માપન્તે
 इत्याह- 'હેવાગજોગજુત્ત' હેવાકયોગયુક્તમ્, હેવાકઃ-સ્વભાગસ્તેન યોગઃ-પરસ્પર
 સયોગસ્તેન યુક્તમ્, પચ્ચભૂતાના પરસ્પર સયોગો ત્રિયોગશ્ચ સ્વભાગાદ્ ભવતિ, ન
 તત્ત્વ કિંચિદન્યત્ કર્માદિ આત્મા વા કારણમસ્તીતિ ભાવઃ । 'કેઈ' કેઽપિ બુદ્ધ
 મતાનુસારિણઃ 'પચલથે' પચ્ચસ્કન્ધાન્=રૂપવેદનાવિજ્ઞાનસજ્ઞામસ્કારરૂપાન્
 મળન્તિ=રુધયન્તિ, તત્-રૂપસ્કન્ધ, -પૃથિવ્યાદયો રૂપાદયશ્ચ ૧, વેદનાસ્કન્ધઃ-

નહી હૈ તો મર કર વહી પુનઃ અપને પુણ્ય પાપકર્મો કે અનુસાર મનુષ્ય
 લોક મે અથવા દેવાદિલોક મેં જન્મતા હૈ, યહ કારન અસત્ય હૈ । તાત્પર્ય
 હસકા યહી હૈ જીવ કા અસ્તિત્વ ન હોને સે ડસકે (નત્થિફલ
 સુકયદુક્કયાણ) શુભ ઓર અશુભ કર્મો કા વધ નહીં હોતા હૈ । જબ
 શુભ અશુભ કર્મો કા વધ હી નહીં હોતા હૈ તવ ડનકે ફલ કા મી
 અભાવ હી હૈ । તથા (પચમહાભૂઘય સરીર માસતિ) યહ જો શરીર હૈ
 વહ વૃથિવી, અપ્, તેજ વાયુ ઓર આકાશ, ઇન પાચભૂત સ્વરૂપ હૈ ।
 (હેવાગ જોગજુત્ત) પાચ ભૂતોં કા યહ પારસ્પરિક સયોગ અથવા વિયોગ
 સ્વભાવ સે હી હોતા રહતા હૈ । હસમે ન તો કોઈ કર્મ હી કારણ હૈ ઓર
 ન આત્મા હી । (કેઈ પચ ય લથે મળતિ) કિતનેક વાદી બાંદ્ધ-સિદ્ધા-
 ન્તમતાનુયાયી-એસા કહ્તે હૈ કિ રૂપ ૧, વેદના ૨, વિજ્ઞાન ૩, સજ્ઞા ૪,

જો એવ નામનો ડોઈ પદાર્થ જ ન હોય તો તે મરીને પોતાના પુન્ય પાપ
 કર્મો પ્રમાણે મનુષ્ય લોકમા અથવા દેવાદિ લોકમા જન્મે છે તે કથન અસત્ય
 કહે છે કહેવાનુ તાત્પર્ય એ છે કે જો એવનુ અસ્તિત્વ ન હોય તો તેના
 "નત્થિ ફલ સુકયદુક્કયાણ" શુભ અને અશુભ કર્મોના બધ બધાતો નથી
 જો શુભાશુભ કર્મોના બધ જ બધાતો ન હોય તો તેના ફળનો પણ અભાવ
 જ હોય તથા "પચમહાભૂઘય સરીર માસતિ" આ જે શરીર છે તે
 પૃથિવી, અપ્ (જળ), તેજ, વાયુ અને આકાશ, એ પાચ ભૂત સ્વરૂપ છે
 "હેવાગજોગજુત્ત" પાચ ભૂતોનો આ પારસ્પરિક સબધ અથવા વિયોગ
 સ્વભાવથી જ થયા કરે છે તેમા આત્મા કે ડર્મ ડાસ્થરૂપ નથી

"કેઈ પચેય લથે મળતિ" કેટલાક વાદમા માનનાશ-બૌદ્ધ સિદ્ધાન્ત
 મતાનુયાયી એવું કહે છે કે (૧) રૂપ, (૨) વેદના, (૩) વિજ્ઞાન, (૪) સજ્ઞા

नत्थि किं च न नेग्इयतिरिक्खमणुयजोणी, न देवलोगो वा
अत्थि सिद्धिगमणं, अम्मापियरो नत्थि, नविअत्थि पुरिसकारो,
पच्चक्खाणमवि नत्थि, नवि अत्थि कालमच्चू य, अरिहंता
चक्खवट्ठी वलदेवा वासुदेवा नत्थि, नेवत्थि केइरिसओ, धम्माध-
म्मफलं वि न अत्थि किं चि बहुय वा थोवं वा तम्हा एवं
जाणिऊणं जहा सुवहु इंदियाणुकूलेसु सव्वविसएसु वट्ठेह
नत्थिकाइ किरिया वा एवं भणंति नत्थिकवाइणो
वामलोगवाई ॥ सू० ॥५॥

टीका—यस्मात् आत्माऽपि नास्ति, शुभाशुभकर्माणि तत्फलान्यपि च न
सन्ति 'तम्हा' तस्मात् 'दाणवयपोसहाण' दानव्रतपोपधानां=तत्र दानम्=
अभयदानसुपात्रदानादिकम्, 'जय' व्रतानि = स्थूलप्राणातिपातविरमणादीनि
पोपधः=पोष=वर्मस्य पुष्टिं धत्ते=करोतीति पोपधः=अष्टमीचतुर्दशीपूर्णिमाश्मावा-
स्यापर्वदिनाऽनुष्ठेय आहारादिपरित्याग पूर्वकोत्रविशेषः, उक्तं च—

आहार तनुसत्काराऽब्रह्मसावधकर्मणाम् ।

त्यागः पर्वचतुष्टयां तद्विदुः पौषधव्रतम् ॥

फिर भी—'तम्हा दाणवयपोसहाण' इत्यादि ।

टीकार्थ—आत्मा शुभाशुभकर्म और इनके फल ये सब कुछ भी नहीं
हैं (तम्हा) इसलिये (दाणवयपोसहाण) दान-अभयदान, सुपात्रदान
आदि, व्रत-स्थूलप्राणातिपात विरमण आदि, (पोसह) पोषध-अष्टमी
चतुर्दशी, पूर्णिमा एवं अमावस्या इन पर्व दिनों में आहार आदि को
परित्याग पूर्वक अनुष्ठेयव्रत विशेष, कहा भी है—

यणी—“तम्हा दाणवयपोसहाण” इत्यादि

टीकार्थ—आत्मा शुभाशुभ कर्म अने तेमना इण ते णधुय नथी “तम्हा”
तेथी “दाणवयपोसहाण” दान-अलभ्यदान, सुपात्रादान आदि, व्रत-प्राणाति-
पात विरमण आदि “पोसह” पौषध-आठम, चौदश, पूनम, अमान आदि
आहार आदिना परित्याग पूर्व अनुष्ठेय अक अनुष्ठान कहु छे जे—

“आहार, तनुसत्कारा-ऽब्रह्म-सावधकर्मणाम् ।

त्यागः पर्वचतुष्टयां तद्विदुः पौषधव्रतम् ॥ १ ”

શરીર સાદિક સનિધનમ્, શરીરમ્ આદિસહિતમ્ ઉત્પત્તિમત્ચાત્, સનિધન-સવિ-
નાશમ્ અન્તરવચ્ચાત્, 'ઇદમ્ ભવે' અસ્મિન્ ભવે પ્રત્યક્ષ જન્મ, તસ્માત્ 'એગે ભવે'
એક એવ ભવઃ=જન્મ નાન્યો લોકઃ, 'તસ્સ વિપ્પણાસમ્મિ' તસ્ય વિપ્પણાગે સત્તિ=
તસ્ય શરીરસ્ય વિનાશે સત્તિ 'સત્ત્વનાસોત્તિ' સર્વનાશશ્ચિત્ નાજ્ઞમાઽવગિચ્ચતે નાઽ
પિ ચ શુભાશુભરૂપંકર્મ । એવ=ઉક્તગીત્યા 'જપતિ' જત્પન્તિ=કથયન્તિ તજ્જી-
વતચ્છરીરવાદિનઃ । નાસ્તિકાદારમ્થ તજ્જીવતચ્છરીરવાદિપર્યન્તાઃ સર્વે 'મુસા-
વાઈ' મૃપાવાદિનઃ સન્તિ ॥ સુ૦૪ ॥

પુનરપ્યાહ—'તમ્હા' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—તમ્હા દાળવયપોસહાણં તવસંજમવંભચેરકલ્લા-
ળમાઈયાળ નત્થિફલ, નવિ ચ પાળવહે અલિયવયણં ન ચેવ
ચોરક્કરણં પરદારસેવ્ણ વા સપરિગ્ગહપાવકમ્મકરણં પિ

શરીર કો હી જો જીવ માનને વાલે હૈં ડનકા એસા કહના હૈ કિ યહ
ઉત્પત્તિમાત્ હોને સે સાદિ હૈ ઓર અન્તવાલા હોને સે વિનાશસહિત હૈ ।
(ઇદમ્ ભવે એગે ભવે) ડસ ભવ મે જો હસકા જન્મ હૈ વહી હસકા ભવ
હૈ, હસકે અતિરિક્ત ઓર કોઈ દૂસરા હસકા ભવ-જન્મ નહીં હૈ, ક્યો
કિ (તસ્સ વિપ્પણાસમ્મિ સત્ત્વનાસોત્તિ) જવ હસ શરીર કા વિનાશ
હો જાતા હૈ તવ હસ જીવ કા સર્વનાશ હો જાતા હૈ ફિર હસકા અસ્તિ-
ત્વ હી નહી રહતા હૈ, શુભ ઓર અશુભ કર્મ કુછ મી નહીં રહતે હૈ,
(એવ) હસ તરહ નાસ્તિક વાદી સે લેકર શરીર કો હી જીવ માનને
વાલે યે સબ હી (મુસાવાઈ) મૃપાવાદી (જપતિ) કહતે હૈ । અર્થાત્ યે
સબ મૃપાવાદી હૈ ॥ સૂ-૪॥

જીવ માનનાર છે તેમનું એવું કહેવું છે કે તે ઉત્પત્તિવાળું હોવાથી સાદિ
(આદિ સહિતનું) છે અને અન્તવાળું હોવાથી વિનાશ યુક્ત (સાન્ત) છે
“ઇદમ્ ભવે એગે ભવે” આ જન્મમા જે તેનો જન્મ છે, તે જ તેનો
ભવ છે, તે ઉપરાત ધીબે કોઈ પણ તેનો ભવ—જન્મ નથી, કારણ કે
“તસ્સ વિપ્પણાસમ્મિ સત્ત્વનાસોત્તિ” જ્યારે આ શરીરનો નાશ થાય છે ત્યારે
આ જીવનો પણ સર્વનાશ થઈ જાય છે—પછી તેનું અસ્તિત્વ જ રહેતું નથી,
શુભ અને અશુભ કર્મ જેવું કંઈ પણ રહેતું નથી “એવ” આ રીતે નાસ્તિક
વાદીથી લઈને શરીરને જ જીવમાનનાર તે બધાને “મુસાવાઈ” મૃપાવાદી
“જપતિ” કહે છે એટલે કે તે બધા અસત્ય વદનાર છે ॥ સૂ-૪॥

યુક્તા । યતો हि स्वभावात् एव कुतोऽपि किञ्चिदुत्पद्यते, न तत्र कारणविशेष नियम
माहात्म्यमन्यथा कथं चेतनान्मनुष्यादेश्चेतनं यુक्तामत्कुणादिकं चेतनादचेतनं मूत्र-
पुरीषादिकम्, अचेतनात् काष्ठाचेतनं घुणकीटादिकम्, अचेतनात्काष्ठादचेतनं चूर्णा-
दिकं च जायते । नहि अचेतनस्य चेतनकारणता चेतनस्य चाचेतन कारणता युक्ता ।
तस्माज्जन्यजनक भावमात्रमेवोत्पद्यमाना नामर्थानामस्ति नान्यो मातापितृपुत्रादि
विशेष इति । मृपावादिता तु जन्यजनकभावस्य सर्वेषु तुल्यत्वेऽपि मातापित्रोरत्य-

સ્થાન મેં ગમન કરના નહીં હૈ, (અમ્મા પિયરો નત્થિ) માતા પિતા મી
નહીં હૈ-ઉત્પત્તિ માત્ર કારણતા કો લેકર માતૃત્વ પિતૃત્વ કી કલ્પના
યુક્ત નહીં હૈ ક્યોં કિ સ્વભાવ સે હી યાહે જિસસે યાહે જો ઉત્પન્ન હો
જાતા હસમેં કારણવિશેષ કે નિયમ કી કોઈ મદદ નહીં હૈ । યદિ ઈસી
વાત માની જાવે નો ફિર જો ચેતન મનુષ્યાદિ સે ચેતન યુક્તા મત્કુણ આદિ
ઉત્પન્ન હોતે દેખે જાતે હૈ ચેતન સે અચેતન મૂત્ર પુત્ર પુરિષ આદિ ઉત્પન્ન
હોતે દેખે જાતે હૈ, અચેતન ઘુણ કીટ આદિ ઉત્પન્ન હોતે દેખે જાતે હૈ,
અચેતન કાષ્ઠ સે અચેતન ચૂર્ણ આદિ હોતે દેખે જાતે હૈ સો યે સવ
કૈસે ઉત્પન્ન હો સકોંગે, ક્યોં કિ અચેતન ચેતન કો ચેતન કે પ્રતિકાર
ણતા નહીં હોતી હૈ ઓર ચેતન કો અચેતન કે પ્રતિકાણતા નહીં હોતી
હૈ. હસલિયે ઉત્પન્નમાન પદાર્થોં મેં કેવલ જન્ય જનક સબધ માત્ર હી
સાપેક્ષ હોતા હૈ-માતૃત્વ પિતૃત્વ આદિ સબધ વિશેષ નહીં । હસ પ્રકાર
કે કવન મેં મી મૃપાવાદિતા હસ પ્રકાર સે આતી હૈ યદ્યપિ જન્ય જનક

સિદ્ધિસ્થાનમા ગમન કરવાનુ નથી, “અમ્માપિયરો નત્થિ” માતા પિતા પણ
નથી,-ઉત્પત્તિમાત્ર કારણતાને લઈને માતૃત્વ પિતૃત્વની કલ્પના થોડી નથી
કારણ કે સ્વભાવથી જ જે ધ્વિષ્ટ છે તે ઉત્પન્ન થઈ જાય છે-તેમા કોઈ કારણ
વિશેષના નિયમનુ મહત્વ નથી જો એવી વાત માની લેવામા આવે તો પછી
ચેતન મનુષ્ય આદિથી ચેતન જૂ માડડ આદિ ઉત્પન્ન થતા જોવામા આવે છે,
ચેતનથી અચેતન મૂત્ર, મળ આદિ ઉત્પન્ન થતા જોવામા આવે છે, અચેતન
કાષ્ઠમાથી ચેતન કીડા આદિ ઉત્પન્ન થતા જોવામા આવે છે, અચેતન કાષ્ઠમાથી
અચેતન લાડડાનો વહેર આદિ થતા જોવામા આવે છે તે બધુ ડેરી રીતે
ઉત્પન્ન થાય ? કારણ કે અચેતનને ચેતનના પ્રત્યે કારણતા હોતી નથી અને
ચેતનને અચેતનના પ્રત્યે કારણતા હોતી નથી, તેથી ઉત્પન્ન થતા પદાર્થોમા
કેવળ જન્ય જનક સબધ જ સાપેક્ષ થાય છે-માતૃત્વ પિતૃત્વ આદિ વિશિષ્ટ
સબધ નહીં તે પ્રકારના કથનમા પણ મૃપાવાદિતા એ રીતે આવે છે જો કે જન્ય

રૂપત્વે જીવરૂપત્વમપિ સ્પષ્ટમેવ સ્થાત્, સ્વભાવત્ત્વેન સર્વથામેક-યાત્ તથા ચ
 એકસ્મિન્ કાર્યકારણભાવસ્ય નિરૂપણાઽસમ્ભવાન્નરકાદિવિચિત્રતા નિષ્કારણા
 સ્થાત્ ન ચ કિમપિ નિષ્કારણ ભવતિ, તથા સતિ ઘટપટાદેરપિ નિષ્કારણતા
 સ્યાદિત્યેતેષા મૃપાગાદિત્વ મુખ્યક્તમેવ। ‘ન દેવલોગો વા અત્યિ’ ન દેવલોકો
 વાઽસ્તિ। ‘નય અત્યિ સિદ્ધિગમણ’ ન ચાસ્તિ સિદ્ધિગમનમ્। ‘અમ્માપિયસો
 નત્યિ’ અમ્માપિતસો ન સ્તઃ, ઉત્પત્તિમાત્રકારણત્વેન માતાપિતૃત્વ કલ્પના ન

એક રૂપ હી હૈં, તથા પ્રાણાતિપાત આદિ સે જનિત કર્મ યે બી મલ્લ સ્વ
 ભાવરૂપ હૈં। હસ પ્રકાર સવ મેં એક સ્વભાવરૂપતા માનને પર હન પ્રાણા-
 તિપાત આદિર્કો મે જીવરૂપતા કી પ્રશક્તિ આ જાતી હૈ, ક્યોં કિ
 સવ મેં બી એક સ્વભાવરૂપતા કા સદ્ભાવ પાયા જાતા હૈ। હસ તરહ
 હોને પર કિસી એક મે બી કાર્યકારણ ભાવ કા નિરૂપણ અસમ્ભવ બન
 જાતા હૈ, અતઃ નરકાદિરૂપ વિચિત્રતા નિષ્કારણક ઠહરતી હૈ, પરન્તુ
 વિચાર કરને પર યહ વિચિત્રતા નિષ્કારણક તો હૈ નહીં। યદિ હસે
 નિષ્કારણક માના જાવે તો ઘટ પટ આદિ રૂપ જો યહ પદાર્થો મે વિવિ
 વ્રતા હૈ હસે બી અથવા ઘટ પટ આદિ જો પદાર્થ હૈ હનૈં બી નિષ્કાર
 ણક હી માનના પડેગા પરન્તુ યે સવ નિષ્કારણક નહીં હૈં, -સકારણક હૈં,
 હસ તરહ સકારણક હોને પર બી હનૈં નિષ્કારણક કહના, અસત્યમા
 પણ હી હૈ, ઓર યહ હનકા હસ રૂપ સે સ્પષ્ટ હી હૈ। હસી તરહ (ન
 દેવલોગો વા અત્યિ) દેવલોક નહીં હૈ, (ન ય અત્યિ સિદ્ધિગમણ) સિદ્ધિ

રૂપ જ છે, તથા પ્રાણાતિપાત આદિ અને પ્રાણાતિપાત આદિ વડે ઉપાર્જિત
 કર્મ એ બધુ સ્વભાવરૂપ છે આ રીતે બધામા સ્વભાવરૂપતા માની લેવામા
 આવે તો તે પ્રાણાતિપાત આદિમા શુભરૂપતાની પ્રસક્તિ આવી જાય છે, કારણ
 કે સૌમા એક સ્વભાવરૂપતાનો સદ્ભાવ જણાય છે આમ હોય તો કોઈ એકમા
 પણ કાર્યકારણ ભાવનું નિરૂપણ અસંભવિત - જની જાય છે, એ રીતે તો નરકા
 દિરૂપ વિચિત્રતા નકામી ઠરે છે, પણ વિચાર કરવામા આવે તો તે વિચિત્રતા
 નકામી તો નથી જો તેને નકામી માનવામા આવે તો પદાર્થમા ઘટ-પટ,
 પટ આદિરૂપ જે વિચિત્રતા છે તેને પણ અથવા ઘટ પટ આદિ જે પદાર્થો છે
 તેમને પણ નકામા માનવા પડશે, પણ તે બધા નિષ્કારણ-નકામા-નથી, સકા
 રણક છે આ રીતે સકારણક હોવા છતાં પણ તેને નિષ્કારણક કહેવી તે અસ
 ત્યભાવજુ જ છે અને તે વાત ઉપર સમજાવ્યા પ્રમાણે સ્પષ્ટ જ છે એ જ
 પ્રમાણે “ ન દેવલોગો વા અત્યિ ” દેવલોક નથી, “ ન ય અત્યિ સિદ્ધિગમણ ”

યુક્તા । યતો હિ સ્વભાવતઃ એવં કુતોઽપિ ક્ષિન્નિદુત્પદ્યતે, ન તત્ર કારણવિશેષ નિયમ માઠાત્મ્યમન્યથા કથં ચેતનાન્મનુષ્યાદેચેતન યુકામત્કુણાદિક ચેતનાદચેતન મૂત્ર-પુરોપાદિકમ્, અચેતનાત્ કાષ્ઠાચેતન ઘુણકોટાદિકમ્, અચેતનાત્કાષ્ઠાદચેતન ચૂર્ણાદિક ચ જાયતે । નહિ અચેતનસ્ય ચેતનકારણતા ચેતનસ્ય ચાચેતન કારણતા યુક્તા । તસ્માજ્જન્યજનક માત્રમાત્રમેવોત્પદ્યમાના નામર્યાનામસ્તિ નાન્યો માતાપિતૃપુત્રાદિ વિશેષ ઇતિ । મૃપાત્રાદિતા તુ જન્યજનકભાવસ્ય સર્વેષુ તુલ્યત્વેઽપિ માતાપિત્રોરત્ય-

સ્થાન મેં ગમન કરના નહીં હૈ, (અમ્મા પિયરો નતિય) માતા પિતા બી નહીં હૈ-ઉત્પત્તિ માત્ર કારણતા કો લેકાર માતૃત્વ પિતૃત્વ કી કલ્પના યુક્ત નહીં હૈ ક્યોં કિ સ્વભાવ સે હી ચાહે જિમસે ચાહે જો ઉત્પન્ન હો જાતા હસમેં કારણવિશેષ કે નિયમ કી કોઈ મદત્તા નહીં હૈ । યદિ એસી ઘાત માની જાવે નો ફિર જો ચેતન મનુષ્યાદિ સે ચેતન યુકા મત્કુણ આદિ ઉત્પન્ન હોતે દેખે જાતે હૈ ચેતન સે અચેતન મૂત્ર પુત્ર પુરિપ આદિ ઉત્પન્ન હોતે દેખે જાતે હૈ, અચેતન ઘુણ કોટ આદિ ઉત્પન્ન હોતે દેખે જાતે હૈ, અચેતન કાષ્ઠ સે અચેતન ચૂર્ણ આદિ હોતે દેખે જાતે હૈ સો યે સબ ફેસે ઉત્પન્ન હો સકેંગે, ક્યોં કિ અચેતન ચેતન કો ચેતન કે પ્રતિકાર ણતા નહીં હોતી હૈ ઓર ચેતન કો અચેતન કે પ્રતિકાણતા નહીં હોતી હૈ. હસલિયે ઉત્પન્નમાન પદાર્થોં મેં કેવલ જન્ય જનક સબધ માત્ર હી સાપેક્ષ હોતા હૈ-માતૃત્વ પિતૃત્વ આદિ સબધ વિશેષ નહીં । હસ પ્રકાર કે કલ્પન મેં બી મૃપાવાદિતા હસ પ્રકાર સે આતી હૈ યદ્યપિ જન્ય જનક

સિદ્ધિસ્થાનમા ગમન કરવાનુ નથી, “અમ્માપિયરો નતિય” માતા પિતા પણ નથી,-ઉત્પત્તિમાત્ર કારણતાને લઈને માતૃત્વ પિતૃત્વની ઠરપના થોડી નથી કારણ કે સ્વભાવથી જ બે છુટે છે તે ઉત્પન્ન થઈ બચ છે-તેમા કોઈ કારણ વિશેષના નિયમનુ મહત્વ નથી બે એવી વાત માની લેવામા આવે તો પછી ચેતન મનુષ્ય આદિથી ચેતન જૂ માડડ આદિ ઉત્પન્ન થતા બેવામા આવે છે, ચેતનથી અચેતન મૂત્ર, મળ આદિ ઉત્પન્ન થતા બેવામા આવે છે, અચેતન ઘાષ્ઠમાથી ચેતન કોટા આદિઉત્પન્ન થતા બેવામા આવે છે, અચેતન કાષ્ઠમાથી અચેતન લાઠડાનો વહેર આદિ થતા બેવામા આવે છે તે બધુ ડેની રીતે ઉત્પન્ન થાય ? કારણ કે અચેતનને ચેતનના પ્રત્યે કારણતા હોતી નથી અને ચેતનને અચેતનના પ્રત્યે કારણતા હોતી નથી, તેથી ઉત્પન્ન થતા પદાર્થોમા કેવળ જન્ય જનક સબધ જ સાપેક્ષ થાય છે-માતૃત્વ પિતૃત્વ આદિ વિશિષ્ટ સબધ નહીં તે પ્રકારના કથનમા પણ મૃપાવાદિના એ રીતે આવે છે બે કે જન્ય

कृत्वाणरवि नत्थि ’ प्रत्याख्यान साधनकर्मनिवृत्तिलक्षणमपि नास्ति धर्मस्याभावे
तत्साधनस्य प्रत्याख्यानस्याप्यभावः । अस्य मृपात्वं, सर्वज्ञ वचनविरोधात् । ‘ न
वि अत्थि ’ नापि च स्तः ‘ कालमच्चू ’ कालमृत्यु=काल=भूतभविष्यद् वर्तमान
लक्षणः कालः मृत्यु=मरण च । अथवा नापि चास्ति कालमृत्युः=काले=आयु-
प्यकर्मदलिरुक्षयाऽऽसरे मृत्युर्मरणम् । ‘अरिहता’ तथा अर्हन्तस्तीर्थकराः ‘चक्रवर्ती’
चक्रवर्तिनः=वलदेवा वासुदेवा या न सन्ति प्रमाणाभावात् । नापि सन्ति ‘ केइ ’
केऽपि-गौतमादयः, ‘ रिसओ ’ ऋषयः=शमदमसयमाधनुष्ठानपरायणाः ऋषयो

तरह कीटतक मे प्रसिद्ध पुरुषार्थ का अपलाप कर केवल प्रमाणातीत
नियतिवाद स्वीकारार्ह कैसे हो सकता है । पुरुषार्थ का त्यागरूप इसकी
स्वीकृति से तो मृपावादिता ही इसमें आती है । (पञ्चस्त्राणमवि
नत्थि) सावधकर्मों से निवृत्ति होनी इसका नाम प्रत्याख्यान है । यह
कहना कि धर्म के अभाव में धर्म के साधनभूत प्रत्याख्यान का भी
अभाव है । सो यह कथन भी मृपावादरूप इसलिये है कि इसमें सर्वज्ञ
के वचन से विरोध आता है । तथा (न वि अत्थि कालमच्चू य) इस
प्रकारकी मान्यता कि-भूत, भविष्यत् और वर्तमानकाल नहीं है, मरण
भी नहीं है, अथवा आयुकर्म के दलितों के क्षय होने के अवसर में
भी मरण नहीं होता है, (अरिहता चक्रवर्ती, वलदेवा वासुदेवा नत्थि)
अर्हन्त-तीर्थकर, चक्रवर्ती, वलदेव, वासुदेव ये सब प्रमाण के अभाव
से कोई भी नहीं हुए हैं और (नेवत्थि के इरिसओ) न गौतम आदि
ऋषि ही हुए हैं, क्यों कि-शम, दम, सयम आदि अनुष्ठानों में पराय-

पण प्रसिद्ध पुरुषार्थनु आरोपण उर्था पछी प्रमाणातीत नियतिवाद डेवी रीते
व्युत्पन्न गनी राके ? पुरुषार्थनो त्याग करीने तेनी व्युत्पत्ति उरवाभा तो भृपा
वादिता न रहेल छे “ पञ्चस्त्राणमवि नत्थि ” सावध उर्भो-पापउर्भोथी निवृत्त
थनु तेनु नाम प्रत्याख्यान छे जेभ उडेवु के धर्मना अलावे धर्मना साध
नरूप प्रत्याख्याननो पण अलाव छे जेवु कथन पण ते कारणे भृपावादरूप
छे जे तेभा सर्वज्ञना वचननो विरोध थाय छे तथा “ न वि अत्थि काल
मच्चू य ” आ प्रकारनी मान्यता के भूत, भविष्य अने वर्तमानकाल नथी, मरण
पण नथी, अथवा आयु कर्मना समूहना क्षय थवानो अवसर आवे तो पण
नरण थनु नथी, “ अरिहता चक्रवर्ती, वलदेवा वासुदेवा नत्थि ” प्रमाणा
अलावे, अर्हन्त-तीर्थकर, चक्रवर्ती जणदेव, वासुदेव वगैरे केई पण थया
नथी अने “ नेवत्थि के इरिसओ ” गौतम आदि ऋषि थया नथी, कारण के-
शम, दम सयम आदि अनुष्ठानोभा परायण छाय ते न व्यक्तित्वने ऋषि

વિપક્ષિતાઃ મિત્તુ શમદમાદેર્વસ્તુત્યામાગાત્ તસ્યાનુષ્ઠાનયતા ઋપિત્વમિદિઃ ।
 નેદ સત્ય, શાસ્ત્રાધ્યયનશિષ્યશિક્ષાપરમ્પરાઽનાદિપ્રગાહસ્યાર્દ્રાદ્યભાવે ઉચ્છેદ
 પ્રસદ્ધાત્ । ‘ધર્મમાધર્મફલ વિ’ ધર્માધર્મફલમપિ = દેવગ્રોરુનરકાદિપ્રાપ્તિલક્ષણં
 કિંચિત્ ‘બહુય’ ગદુસ્મ્=અધિક ‘થોવ વા’ સ્તોસ્મલ્પ નાસ્તિ, ધર્માધર્મયો
 અપ્રત્યક્ષત્વેન વસ્તુત્યામાગાત્ ‘તમ્હા’ તસ્માત્ ન કિમપિ મુઠ્ઠવાદિકમિતિ એવ
 ‘જાણિક્ષણ’ જ્ઞાત્વા ‘જહા’ યથા=યેન કેનાપિ પ્રકારેણ સુબહુ=અત્યન્તમ્ ‘ઈદિ-
 યાણકૂલેસુ’ ઇન્દ્રિયાનુકૂલેષુ=શ્રોત્રાદીન્દ્રિયમિયેષુ ‘સન્નમિણસુ’ સર્વવિષયેષુ=

જન્યુત વ્યક્તિ હી ઋપિ કહલાતે હિં, કિન્તુ શમ, દમ આદિ હી જય વસ્તુ
 ભૂત-વાસ્તવિક-નહીં હૈ તો ફિર હનકે અનુષ્ઠાન કરને વલો મેં ઋપિત્વ
 કી સિદ્ધિ કેસે હો સકતી હૈ-મૃપાવાદરૂપ હી હૈ-સત્ય નહીં હૈ, કારણ-
 શાસ્ત્રાધ્યયન, શિષ્યશિક્ષા આદિ કા જો યહ અનાદિકાલ સે પરમ્પરારૂપ
 સે પ્રગાહ ચલા આ રહા હૈ યહ યદિ તીર્થેરુર આદિ ન હુણ રોતે તો
 ઉચ્છેદ કો પ્રાપ્ત હો જાતા । હસી તરહ સે (ધર્મમાધર્મ ફલ વિ ન
 અત્થિ કિંચિત્ બહુય વા થોવ વા) જો ઓર યહ કિ-“ધર્મકા ફલ સ્વર્ગાદિ
 કી પ્રાપ્તિ ઓર અધર્મ કા ફલ નરક આદિ કી પ્રાપ્તિ હોના યહ ન થોડે
 રૂપ મેં હૈ ઓર ન બહુત રૂપ મેં હૈ, ક્યોં કિ ધર્મ ઓર અધર્મ યે અપ્રત્ય-
 ક્ષભૂત હૈ અતઃ હનમેં વસ્તુતઃ-અર્થ ક્રિયા કારિત્વ કા અભાવ હૈ । (તમ્હા)
 હસલિયે જય પુણ્યપાપ આદિ કોઈ વસ્તુભૂત પદાર્થ હૈ હી તય (એવ
 જાણિક્ષણ) એસા સમજકર (જહા) જિસ કિસી બી તરહ સે (સુબહુ
 ઇન્દિયાણકૂલેસુ) ઇન્દ્રિયો કો અત્યન્ત પ્રિય લગને વામે (સન્નવિસણસુ)

કહેવાય છે, પણ શમ, દમ આદિ જ ભો વાસ્તવિક ન હોય તો તેનું અનુ-
 ષ્ઠાન કરનારમા ઋપિત્વની સિદ્ધિ કેવી રીતે સંભવી શકે છે-એ તો મૃપાવાદ
 રૂપ જ છે-સત્ય નથી, કારણ કે શાસ્ત્રાધ્યયન, શિષ્યશિક્ષા આદિનો જે પ્રવાહ
 અનાદિકાળથી પરપરા રૂપે ચાલ્યો આવે છે તે ભો તીર્થંકર આદિ થયા ન
 હોત તો ઉચ્છેદ-નાશ પામ્યો હોત એ જ પ્રમાણે “ધર્મમાધર્મફલ વિ ન
 અત્થિ કિંચિ-બહુય વા થોવ વા” બીજી આ પ્રકારની માન્યતા કે “ધર્મનું
 રૂપ સ્વર્ગાદિની પ્રાપ્તિ અને અધર્મનું રૂપ નરકાદિથી પ્રાપ્તિ તે થોડા કે વધારે
 પ્રમાણમા અસ્તિત્વ ધરાવતું નથી, કારણ કે ધર્મ અને અધર્મ અપ્રત્યક્ષભૂત
 છે તેથી તેમનામા વસ્તુત્વ-અર્થ ક્રિયા કારિત્વનો અભાવ છે “તમ્હા” તેથી
 ભો પુન્યપાપ આદિ કોઈ વસ્તુભૂત પદાર્થ છે જ નહીં “એવ જાણિક્ષણ”
 એવું સમજીને “જહા” જે કોઈ પણ પ્રકારે “સુબહુ ઇન્દિયાણકૂલેસુ” ઇન્દ્રિ-
 યોને અત્યન્ત પ્રિય લાગે તેવા “સન્નવિસણસુ” શબ્દાદિ સંઘળા વિષયોમા

શબ્દાદિપુ 'વદ્દેહ' વર્તધ્વ શબ્દાદીન્ સર્વવિપયાન્ યથેન્દ્રિયપ્રમુદ્ધધ્વમ્, 'નત્થિ' નાસ્તિ 'કાઙ' કાચિદપિ 'કિરિયા અકિરિયા વા' ક્રિયા = તત્ર - સત્ક્રિયા શાસ્ત્રોક્તાનુષ્ઠાનરૂપા । અક્રિયા=અસત્ક્રિયા સાવચકર્માનુષ્ઠાનરૂપા, આસ્તિક કલ્પિતેનાપ્રમાણત્વાત્, એવ 'નત્થિ'વાદિણો 'નાસ્તિક'વાદિનઃ 'વામલોગવાદી' વામલોકવાદિનશ્ચ મ્હણન્તિ=કથયન્તિ ॥ સૂ૦ ૫ ॥

પુનરપિ તાનેવાદ—'ઇમપિ' ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—ઇમંપિ વિઙ્ગય કુદસર્ણ અસંભાવવાદિણો પળ્લવેતિ મૂઢા સંમૂઢો અડકાઓ લોગો સયમુળા સય ચ નિમ્મિત્તો એવં એય અલિય પય પતિ. ॥ સૂ૦ ૬ ॥

ટીકા—ઇદમનુપદવક્ષ્યમાણમપિ 'વિઙ્ગય' દ્વિતીય 'કુદસર્ણ' કુદર્શન = કુત્સિત દર્શન=અસત્યસિદ્ધાન્તમ્ 'અસંભાવવાદિણો' અસંભાવવાદિનઃ = અમન્તો ભાવાઃ=યેવા તે તથા તે ચ તે ગાદિનસ્તથા મૂઢા 'પળ્લવેતિ' પ્રજ્ઞાપયન્તિ યત્

શબ્દાદિ સય વિપર્યો મેં (વદ્દેહ) ઇન્દ્રિયાનુસાર પ્રવૃત્તિ કરતે રહના યાહિયે । (નત્થિ કાઙ કિરિયા અકિરિયા વા) શાસ્ત્રોક્તાનુષ્ઠાન રૂપ ન કોઈ ક્રિયા-સત્ક્રિયા હૈ ઓર ન સાવચકર્માનુષ્ઠાન રૂપ કોઈ અક્રિયા-અસત્ક્રિયા હૈ તો કેવલ આસ્તિકવાદિયોં ની કોરી કલ્પનાઈ હૈ । इनमें वास्तविकता कुछ भी नहीं है । (नत्थियवाइणो वामलोगवाई) नास्तिकवादी और वामलोकवादी (एव म्हणति) इस प्रकार कहते हैं वह सय कथन मृषावादरूप है ॥ मू. ५॥

ફિર કહતે હૈ—'ઇમ પિ વિઙ્ગય' ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—અનુપદ વક્ષ્યમાણ (ઇમપિ વિઙ્ગય) યહ દૂસરા કુદર્શન મો નિ જિસે (અસંભાવવાદિણો) અસંભાવવાદી તથા (મૂઢા) મૂઢજન

“વદ્દેહ” ઇન્દ્રિયાનુસાર પ્રવૃત્તિ યથા ઇન્દ્રિયે બેઠે “નત્થિ કાઙકિરિયા અકિરિયા વા” શાસ્ત્રોક્તા અનુષ્ઠાનરૂપ ડોઈ ક્રિયા મત્ ક્રિયા નથી, કે સાવચકર્માનુષ્ઠાન રૂપ ડોઈ અક્રિયા અસત્ક્રિયા નથી, તે તો કેવળ આસ્તિકવાદીઓની ખાલી કલ્પનાઓ જ છે તેમા ડોઈ પણ વાસ્તવિકતા નથી ” “નત્થિયવાઈણો વામ લોગવાઈ” નાસ્તિકવાદી અને વામલોકવાદી “એવ મ્હણતિ” તે આ પ્રમાણે કહે છે, તે તેમનું કથન મૃષાવાદ છે ॥ સૂ-૫ ॥

વળી કહે છે—“ઇમ પિ વિઙ્ગય” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—નીચે પ્રમાણેનું “ઇમ પિ વિઙ્ગય” બીજું કુદર્શન કે જે “અસંભાવવાદિણો” અસંભાવવાદી તથા “મૂઢા” મૂઢ લોકો “પળ્લવેતિ” પ્રજ્ઞાપિત કરે

‘લોગો’ લોકાઃ=પૃથિવ્યપ્તેજોવાયુવનસ્પતિતિર્યગ્નરામરનારકરૂપઃ, ‘અડકાઓ’ અણ્ડકાત્ ‘સમ્ભૂઓ’ સમ્ભૂતઃ=ઉત્પન્નઃ, તત્ર અણ્ડકોદ્ભૂતભ્રુવાદિના મતમિત્ય યત્ પૂર્વં પૃથિવ્યાદિપન્નભૂતરહિત જગત્ કેવલ જલમયમાસીત્ તત્ર મહદણ્ડ ચિરકાલવિકલેદિત સત્ સ્ફુટિત દ્વિધાજાત પૃથિવીરૂપમ્ આકાશસ્વ ચ, તત્ર મુરાઽમુરનારકતિર્યગ્ રૂપ જગત્ સર્વં સમુત્પન્નમિત્યેવમણ્ડકાત્ સૃષ્ટિઃ । ‘સયં ભૂણા’ સ્વયમ્ભુવા ચ=ત્રણ્ણા ‘સય’ સ્વયં ‘નિમ્મિઓ’ નિર્મિતઃ=નિષ્પાદિતઃ । હિતિ કેચિત્ બ્રુવન્તિ । તથાહિ દૃશ્યમાન-જગદુત્પત્તેઃ પૂર્વં પૃથિવ્યાદિ પન્નભૂતરહિત વિનષ્ટ સ્થાવરજદ્રુમામરનરગન્ધર્વયસરાસસત્કિન્નરગરુડમહોરગાદિ સકલનિવિષ

(પણ્ણવેતિ) પ્રરૂપિત કરતે હું, સૃષ્ટાવારૂપ વહ દર્શન યત્ હૈ—(લોગો અડકાઓ સમ્ભૂઓ) વહ પૃથિવી અપ્, તેજ, વાયુ વનસ્પતિ, તિર્યચ, મનુષ્ય, દેવ, નારકરૂપ લોક અહે સે ઉત્પન્ન હુઆ હૈ । અહે સે લોક કો ઉત્પન્ન હુઆ માનને વાલો કા મત્ત હસ પ્રકાર હૈ યત્ લોક પહલે પૃથિવી આદિ પાંચભૂતોં સે રહિત્ત થા, ઓર કેવલ જલમય હી યા । હસમેં એક ચિરકાલ સે ગીલા અડા પડા હુઆ થા, જવ વહ કદા તો હસકે દો ટુકડે હુપ્—એક ટુકડા પૃથિવીરૂપ હુઆ ઓર દૂસરા ટુકડા આકાશરૂપ હુઆ-પૃથિવી રૂપ ટુકડે મેં મનુષ્ય, તિર્યચ, નારક આદિરૂપ તથા આકાશરૂપ ટુકડે મેં સુર અસુર આદિરૂપ સમસ્ત જગત્ ઉત્પન્ન હો ગયા । હસ તરહ અહે સે યત્ સૃષ્ટિ હુઈ વે કહતેહૈ । (સયમ્ભૂણા સય ચ નિમ્મિઓ) કોઈ ૨ એસા મી કહતે હૈ કિ યત્ જો દૃશ્યમાન જગત્ હૈ વહ ઉત્પત્તિ સે પહિલે પહિલે પૃથિવી આદિ પન્નભૂતોં સે રહિત્ત થા । હસમેં સ્થાવર, જગમ, અમર,

છે તે મૃષાવાદરૂપ દર્શન આ પ્રમાણેનુ છે—“લોગો અડકાઓ સમ્ભૂઓ” આ પૃથ્વી, અપ્, તેજ વાયુ, વનસ્પતિ, તિર્યચ, મનુષ્ય, દેવ અને નારકરૂપ લોકો ઇડામાથી ઉત્પન્ન થયા છે ઇડામાથી સૃષ્ટિ ઉત્પન્ન થયેલ માનનાગ્ની આ પ્રજા રની માન્યતા છે—આ લોકો પહેલા, પૃથિવી આદિ પાચ ભૂતોથી રહિત હતા અને ક્ષત જળમય જ હતા તેમા એક ચિરકાળથી લીનુ ઇડુ પડેલુ હંતુ ન્યારે તે ક્ષત્યુ ત્યારે તેના બે ટુકડા થયા—એક ટુકડો તે પૃથિવીરૂપ થયો અને બીજો ટુકડો આકાશરૂપ થયો પૃથિવીરૂપ ટુકડામા મનુષ્ય, તિર્યચ, નારક આદિ રૂપ તથા આકાશ રૂપ ટુકડામા સુર અસુર આદિ રૂપ સમસ્ત સૃષ્ટિ ઉત્પન્ન થઈ ગઈ આ રીતે ઇડામાથી સૃષ્ટિ ઉત્પન્ન થયાનુ તેઓ દર્શાવે છે ‘સયમ્ભુણા સય ચ નિમ્મિઓ’ કોઈ કોઈ એવુ પણ કહે છે કે આ બે જગત નજરે પડે છે તે ઉત્પત્તિ પહેલા પૃથિવી આદિ પાચ ભૂતોથી રહિત હતા તેમા

भेद केवलमर्णवस्वरूप तमोभूतमासीत्, तत्र-तपस्तप्यमानस्य गयानस्य विभो-
र्भगवतो नामेः कमलमुदपद्यत, तत्र ब्रह्मा समुत्पन्नस्तस्मात् सुरासुरमनुजतिर्यक्
स्थावरजङ्गमभूतपभूतभेदविशेषमिश्रितं जगदुत्पन्नम् । इति एवमुक्तरीत्या
'अलिय' अलीकम्=असत्य 'पयपति' प्रजल्पन्ति । एतेषामलीकृत्य भ्रान्तज्ञा
निभिर्निरूपितत्वात् ॥ सू० ६ ॥

पुनरप्याह—'पयावडणा' इत्यादि ।

मूलम्—पयावडणा इस्सरेण य कयत्तिकेइ । एव विण्हुमयं
कसिणमेव य जगति केइ । एवमेके वदति मोस-एगो आया
अकारगो वेदगो य सुकयस्स य दुक्कयस्स य करणाणि कार-
णाणि य सव्वहा सव्वहि च णिच्चो य णिक्किओ निग्गुणो य
अणुवलेवओ त्ति ॥ सू० ७ ॥

टीका—'पयावडणा' प्रजापतिना=कृतमिदं जगदिति केचित् । एतदलीकृता
प्रमाणवादितत्वात् । तथा 'इस्सरेण' इश्वरेण च 'कयति' कृतमिति 'केइ'

नर, गधर्व, यक्ष, राक्षस, किन्नर, गरुड, महोरग आदि समस्त विविध
भेद नष्ट थे—यह तो केवल अधिकाराच्छादित अर्णव स्वरूप था ।
इसमें तपस्या करते हुए विष्णु भगवान् की नाभि से एक कमल उत्पन्न
हुआ । उस कमल में ब्रह्माजीने जन्म लिया । उनसे फिर सुर, असुर,
मनुज, तिर्यच, स्थावर आदि अनेक जीवों के भेद प्रभेद वाला यह जगत्
उत्पन्न हुआ । इस प्रकार असद्भाववादियों की ये दोनों प्रकारकी मान्यताएँ
भ्रान्त ज्ञानियों द्वारा निरूपित होने के कारण मृषावादरूप ही हैं ॥ सू० ५ ॥

फिरभी इन्हीं को कहते हैं—'पयावडणा' इत्यादि ।

टीकार्थ—(पयावडणा इस्सरेण य कयत्ति केइ) कितनेक व्यक्ति

जगत् अभर, नर, गधर्व, यक्ष, राक्षस, किन्नर गरुड, महोरग, आदि सम-
स्त विविध लोकेषु अस्तित्व न हेतु ते तो केवल अधिकारधी छवायेल भागर
स्वरूप हेतु तेमा तपस्या कृता विष्णु भगवाननी नाभिमाथी ओके कमल
पेदा धरु ते कमलमा ब्रह्मालोके जन्म लीधा, तेमछे सुर, असुर, मनुष्य,
तिर्यच, स्थावर आदि अनेक लोकोना लोके प्रलेदथी युक्त आ जगत रच्यु
आ प्रकारनी असद्भाववादीओनी ते जने प्रकारनी मान्यताओ भ्रान्तज्ञानीओ
द्वारा निरूपित धयेल छवाथी मृषावाद उप ज ठे ॥ सू-५ ॥

કેચિત્ નૈયાયિકા इत्यर्थः, तद् यथा क्षित्यद्वुरादिक कर्तृजन्य कार्यत्वात् घट-
वदिति । जलद्वुदादौ हेतौनैकान्तिरत्वेनास्यालीकता । एव 'कसिणमेव'
कृत्स्नमेव=सकलमेव 'जग' जगत् 'विष्णुमय' विष्णुमय = विष्णुस्वरूपमिति
'केइ' केचित् उदन्ति तन्मतानुयायिनः, यथा—

“जले विष्णु स्थले विष्णु, -विष्णुः पर्वतमस्तके ।

ज्वालामालाकुले विष्णु, सर्वं विष्णुमय जगत् ॥ १ ॥ ” इति ।

ऐसा मानते हैं कि यह जगत् प्रजापति-ब्रह्माने बनाया है । किन्तु
कहते हैं कि यह जगत् ईश्वरने बनाया है सो इस प्रकार की मान्यता में
अलीकता प्रमाणयुक्त होने के कारण आती है । तथा जो नैयायिक
जन ऐसा कहते हैं कि यह जगत् ईश्वर ने बनाया है, क्यों कि यह
घटादिकी तरह कार्य है “क्षित्यद्वुरादिक कर्तृजन्य कार्यत्वात् घटवत्”
सो कार्यत्वरूप हेतु में जल बुद्बुद आदि द्वारा अनैकान्तिक दोष आता है,
इसलिये यह उनका कथन असत्यरूप प्रमाणित हो जाता है । (एव विष्णु-
मय कसिणमेव य जगति केइ) इसी तरह यह सकल जगत् विष्णुमय
है ऐसा भी कोई २ कहते हैं, क्यों कि उनकी ऐसी मान्यता है कि—

“जले विष्णुः स्थले विष्णु-विष्णुः पर्वतमस्तके ।

ज्वालामाला कुले विष्णुः सर्वं विष्णुमय जगत् ॥ १ ॥ ”

जल में विष्णु हैं, थल में विष्णु हैं, पर्वत की चोटी ऊपर विष्णु हैं,

હજી પણ એ વિષે જે કહે છે — ‘પયાવરૂણા’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“પયાવરૂણા इत्यरेण य कयति केइ” કેટલાક લોકો એવું માને
છે કે આ જગત પ્રજાપતિ-બ્રહ્માએ બનાવ્યું છે કેટલાક કહે છે કે આ જગત ઈશ્વરે
બનાવ્યું છે, તો તે પ્રકારની માન્યતામાં મૂળાવાદ-અસત્ય દોષ પ્રમાણબાધિત
હોવાને કારણે આવે છે તથા જે નૈયાયિકો એવું કહે છે કે આ જગત ઈશ્વરે
બનાવ્યું છે કારણ કે તે ઘટાદિના જેવું કાર્ય છે, “ક્ષિત્યદ્વુરાદિક કર્તૃજન્ય
કાર્યત્વાત્ ઘટવત્” તો કાર્યત્વરૂપ હેતુમાં બુદ્બુદ આદિ દ્વારા અનૈકાન્તિક દોષ
આવે છે, તેથી તેમનું તે કથન અસત્ય રૂપ સિદ્ધ થાય છે “એવ વિષ્ણુમય
કસિણમેવ ય જગતિ કેઈ” એ જ પ્રમાણે આ સમસ્ત જગત વિષ્ણુમય છે
એવું પણ કેટલાક લોકો કહે છે, કારણ કે તેમની એવી માન્યતા છે કે—

“जले विष्णु स्थले विष्णु. विष्णु. पर्वतमस्तके ।

ज्वालामालाकुले विष्णु, सर्वं विष्णुमय जगत् ॥ १ ॥

જળમાં વિષ્ણુ છે, સ્થળમાં વિષ્ણુ છે, પર્વતના શિખરપર - વિષ્ણુ છે,

एतदलीकृता प्रमाणाभावात् मातापित्रादि सकलव्यवहारविच्छेदकत्वाच्च ।
अथ वेदान्तिमतमाह—एव=अमुना प्रकारेण एके=अद्वैतब्रह्मणादिन वदन्ति यत्
‘ एगो आया ’ एक एव आत्मा ‘ मोस ’ मृषा=जगत् मिथ्या तदुक्त “ ब्रह्मसत्य
जगन्मिथ्या ” इति, उक्तञ्च—

“ एक एव हि भूतात्मा, भूते भूते व्यवस्थित ।

एकधा बहुधा चैव, दृश्यते जलचन्द्रवत् ॥ ” इति ।

तदलीकृता च — सकललोकप्रत्यक्षभेदमूलरुमुखदुःस्वधर्माधर्मादिजगद्
व्यवहारोच्छेदप्रसङ्गात् । अथात्माऽऽर्तुत्वमतमाह—‘ अकारगो ’ अकारकः=

अग्नि में विष्णु है, तात्पर्य यह कि यह सब जगत् विष्णुमय है ॥१॥

यह मान्यता भी अलीकस्वरूप ही है, क्योंकि इस मान्यता को
सत्यरूप में प्रमाणित करने वाला कोई भी प्रमाण नहीं है । यदि सब
जगत् को केवल विष्णुमय ही माना जावे तो फिर यह जो उसमें माता
पिता आदि रूप समस्त व्यवहार है उसका उच्छेद प्राप्त होता है ।
(एवमेवे वदति मोस एगो आया) इसी तरह वेदान्तियों का जो यह
कथन है कि एक ही आत्मा है—जगत् मिथ्या है—“ ब्रह्म सत्य जगन्मि-
थ्या । ” कहा भी है—

“ एक एव हि भूतात्मा, भूते भूते व्यवस्थितः ।

एकधा बहुधा चैव, दृश्यते जलचन्द्रवत् ॥१॥ ” इति ।

प्रत्येक प्राणी में एक ही भूतात्मा व्यवस्थित है । वही जलचन्द्र की
तरह एकरूप व अनेकरूप दिखलाई देता है ॥१॥

અગ્નિમા વિષ્ણુ છે મતલબ એ કે આ સમસ્ત જગત વિષ્ણુમય ॥૧॥

આ માન્યતા પણ અસત્ય છે કારણ કે આ માન્યતાને સત્યરૂપે સિદ્ધ
કરવાને માટે કોઈ પણ પ્રમાણ નથી જે સમસ્ત જગતને કેવળ વિષ્ણુમય જ
માની લેવામાં આવે તો તેમાં માતા પિતા આદિ રૂપ જે વ્યવહાર છે તેનું
ખડન થાય છે “ એવમેવે વદતિ મોસ એગો આયા ” એ જ પ્રમાણે વેદાન્તી-
ઓનું આ પ્રકારનું જે કથન છે કે “ આત્મા એક જ જે-જગત મિથ્યા છે-
“ બ્રહ્મસત્ય જગન્મિથ્યા ” કહ્યું પણ છે-

“ एक एव हि भूतात्मा, भूते भूते व्यवस्थितः ।

एकधा बहुधा चैव, दृश्यते जलचन्द्रवत् ” ॥ १ ॥ इति ।

પ્રત્યેક પ્રાણીમાં એક જ ભૂતાત્મા રહેલ છે તે જ જલચન્દ્રની જેમ એક
રૂપે કે અનેકરૂપે દેખાય છે ॥૧॥

अयमात्मा अकर्ता-पुण्यपापादोनाम् । वेदकः=भोक्ता पुण्यपापकर्मफलस्य प्रति
विम्बोदयन्यायादिति भावः, तथा-‘सुक्यस्स’ सुकृतस्य-पुण्यस्य ‘दुक्यस्स’
दुष्कृतस्य पापस्य च ‘सव्वहा’ सर्वथा, ‘सव्वहिं’ सर्वत्र सर्वस्मिन् काष्ठे
‘कारणाणि’ कारणानि=निमित्तभूतानि ‘करणाणि’ करणानि=वक्षुरादीनीन्द्रियाणि,
नायमात्मा । अलीकृताचास्य ससार्यात्मनो मूर्तत्वेन परिणामित्वेन कर्तृत्वोपपत्तेः
तथा ‘णिच्चो’ नित्य इति=केचित्, तदपि न युक्तम्, एकातनित्यत्वे सुख

यह कथन भी मिथ्यारूप ही है, क्योंकि कि इसे मत्त मानने पर जो
सकललोक के प्रत्यक्षभूत भेदमूलक धर्म अवर्म आदिका व्यवहार होता
है उसके उच्छेद का प्रसंग प्राप्त होता है । इसी तरह जो आत्मा को
एकान्तरूप से अकर्ता मानते हैं ऐसे सात्विकों की यह मान्यता है कि
(अकारगो वेदगोय) यह आत्मा पुण्यपाप आदिका अकर्ता है, और
उनके फल भूत सुख दुःख आदिका (१) ‘प्रतिविम्बोदयन्याय’से भोक्ता
है । तथा कोई कहते हैं कि (सुक्यस्स दुक्यस्स य सव्वहा सव्वहिं
कारणाणि य करणाणि) पुण्य और पाप के सर्व प्रकार से सर्वकाल में
कर्ता निमित्तभूतवक्षुरादि इन्द्रिया हैं । आत्मा नहीं है, यह उनकी
मान्यता असत्य है, क्योंकि ससारी आत्मा कथंचित् मूर्तिक है और
परिणामी है इसलिये कर्तृत्व और भोक्तृत्व धन जाता है । सर्वथा अमू

ते कथन पणु मिथ्यारूप न्छे, कारणु ते तेने सत्य मानवामा आवे तो
समस्त जगतमा नजरे पडतो भूणभूत वेदवाणो धर्म अधर्म आदिने न्छे व्य
वहार थाय छे तेनु जडन थवानो प्रसंग उपस्थित थाय छे जे न्छे रीते
आत्माने जेकान्तइये अकर्ता माननार साध्य भतवाहीज्यानी जेवी मान्यता छे
के “ अकारगो वेदगोय ” आ आत्मा पुन्य पाप आदिने कर्ता नथी, अने
तेमना ज्ञणइय सुण दु ञ्छ आदिने “प्रतिविम्बोदय न्यायथी ” ज्ञोक्तता छे तथा
केछ केछ ज्ञोते केछे छे के “ सुक्यस्स दुक्यस्स य सव्वहा सव्वहिं कारणाणि य
करणाणि ” पुन्य अने पापना सर्व प्रकारने कर्ता सर्वज्ञाणे आत्मा नही पणु
अक्षु आदि इन्द्रियो छे तेमनी ते मान्यता असत्य छे, कारणु ते ससारी
आत्मा केटलाक प्रमाणमा भूर्तिक छे अने परिणामी छे, तेथी तेमा कर्तृत्व अने

१ प्रतिविम्बोदय न्याय का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार स्फटिकमणि के साथ जिस
वर्णका संयोग होगा स्फटिक मणि वैसा ही वर्णका देखने लग जाता है ।

१ प्रतिविम्बोदय न्यायनु तात्पर्य जे छे ते जेम स्फटिक मणिनी साथे न्छे
रंगने संयोग थये, जेवा न्छे रंगने स्फटिक मणि देखाये

દુઃસ્વબ્ધમોક્ષાદ્યભાવપસજ્ઞાત્ । નિવિક્કિઓ ' નિષ્ક્રિય' ગમનાગમનાદિક્રિયાવ-
ર્જિતઃ સર્વવ્યાપિત્વેનાવકાશાભાવાત્, एतदप्यसत्, દેહમાત્રોપલભ્યમાનત્વાત્ ।
' નિર્ગુણો ' નિર્ગુણઃ=સત્ત્વરજસ્તમોગુણરહિતઃ, ' અણુવલેવઓ ' અણુવલેપકઃ =
નિર્લેપઃ સદ્ગર્વર્જિતઃ આત્મેતિ કાપિલાઃ, ઉક્ત ચ—“ અર્કર્તા નિર્ગુણોભોક્તા, આત્મા
કપિલદર્શને ” ઇતિ । સત્ત્વરજસ્તમોગુણાનાં સામ્યાવસ્થા પ્રકૃતિઃ, સૈવ કર્ત્રી, પુરુ-
ષસ્તુ પુષ્કરપલાશવન્નિર્લેપથેતનોઽર્કર્તા, ઇતિ સાદ્રશ્યાના મતમ્ । કુદર્શનત્વ

તિક આત્મા મેં યે નહીં ઘનતે હૈં । (ગિચ્ચો) કોઈ ૨ આત્મા કો સર્વથા
નિત્ય માનતે હૈં, સો આત્મા કી યહ નિત્ય માન્યતા સત્ય નહીં હૈ, કયો
કિ આત્મા કો સર્વથા નિત્ય માનને પર સુખદુઃખ એવ વધ, મોક્ષ આદિ
કે અભાવ કા પ્રસંગ પ્રાપ્ત હોતા હૈ । (નિક્કિઓ) આત્મા કો નિષ્ક્રિય
માનના હસ અભિપ્રાય સે, કિ આત્મા વ્યાપક હૈ ઓર જો વ્યાપક હોતા
હૈ ઉસમેં અવકાશ કે અભાવ સે ગમનાગમન રૂપ ક્રિયાઈ ઘન નહીં
સકતી હૈ સો એસી માન્યતા બી મૃષાવાદરૂપ હી હૈ, કારણ કિ-આત્મા
શરીર મેં હી ઉપલબ્ધ હોતી હૈ અન્યત્ર નહી । (નિર્ગુણો) તથા એસા
કહના કિ “ યહ આત્મા સત્ત્વ, રજ ઓર તમોગુણ સે રહિત હૈ ઓર
(અણુવલેવઓ) પુષ્કરપલાશવત્ નિર્લેપ-સગર્વર્જિત હૈ । સાહ્યોં કા
યહી કહના હૈ કિ સત્ત્વ, રજ ઓર તમોગુણ કી સામ્યાવસ્થા કા નામ
પ્રકૃતિ હૈ । યહ પ્રકૃતિ હી કરનેવાલી હોનેસે કર્ત્રી હૈ, ચેતયિતા-પ્રકૃતિ
દ્વારા કિયે ગયે કાર્યોં કા જાનને વાલા પુરુષઆત્મા તો કમલપત્ર કે

લોકતૃત્વ આવી જાય છે સર્વથા અમૃત્તિઃ આત્મામા તે યનતુ નથી, “ગિચ્ચો” કોઈ
કોઈ મતવાળા આત્માને સર્વથા નિત્ય માને છે આત્માને એ રીતે નિત્ય માનવું તે
સત્ય નથી, ડારણ કે આત્માને સર્વથા નિત્ય માનવામા આવે તો સુખદુઃખ અને
બધ મોક્ષ આદિને અભાવ હોવાનો પ્રસંગ ઉપસ્થિત થશે- “ નિક્કિઓ ” કોઈ
કોઈ લોકો આત્માને એ ડારણે નિષ્ક્રિય માને છે કે આત્મા વ્યાપક છે અને
જે વ્યાપક હોય તેમા અવકાશનો અભાવ હોવાથી ગમનાગમનરૂપ ક્રિયાઓ
થઈ શકતી નથી તે માન્યતા પણ મૃષાવાદરૂપ જ છે ડારણ કે આત્મા શરી-
રમા જ હોય છે અન્યત્ર હોતો નથી “ નિર્ગુણો ” તથા “ આ આત્મા સત્ત્વ,
રજ અને તમોગુણથી રહિત છે ” એવી માન્યતા “ અણુવલેવઓ ” તથા કમળ
પત્ર પર રહેલા પાણીના બિંદુથી કમળ પત્ર જેમ અલિપ્ત રહે છે, તેમ આત્મા
પણ તે તત્ત્વોથી નિર્લેપ રહે છે તે માન્યતા પણ મૃષાવાદ છે સાખ્યોની એવી
માન્યતા છે કે સત્ત્વ, રજ અને તમોગુણની સામ્યાવસ્થાનું નામ પ્રકૃતિ છે એ
પ્રકૃતિ જ કરનાર હોવાથી કર્ત્રી છે-પ્રકૃતિ દ્વારા કરાયેલ કાર્યોને જાણનાર પુરુષ

અયમાત્મા અકર્તા-પુણ્યપાપાદોનામ્ । વેદકઃ=મોક્તા પુણ્યપાપકર્મફલસ્ય પ્રતિ
ત્રિમ્બોદયન્યાયાદિતિ માન, તથા-‘સુક્યસ્સ’ સ્મૃતમ્ય-પુણ્યસ્ય ‘દુક્યસ્મ’
દુષ્કૃતસ્ય પાપસ્ય ચ ‘સઞ્ઘહા’ સર્વથા ‘સઞ્ઘર્હિ’ સર્વત્ર સર્વસ્મિન્ કાઠે
‘કારણાણિ’ કારણાણિ=નિમિત્તભૂતાણિ ‘કરણાણિ’ કરણાણિ=ચતુરાદીનીન્દ્રિયાણિ,
નાયમાત્મા । અલીકૃતાચાસ્ય સસામ્યર્પાત્મનો મૂર્તત્વેન પરિણામિત્વેન કર્તૃત્વોપપત્તેઃ
તથા ‘ણિચ્ચો’ નિત્ય ઇતિ=કેચિત્, તદપિ ન યુક્તમ્, एकान्तनित्यत्वे मुख

यह कथन भी मिथ्यारूप ही है, क्योंकि कि इसे सत्य मानने पर जो
सकललोक के प्रत्यक्षभूत भेदमूलक धर्म अवर्म आदिका व्यवहार होता
है उसके उच्छेद का प्रसंग प्राप्त होता है । इसी तरह जो आत्मा को
एकान्तरूप से अकर्ता मानते हैं ऐसे सांख्यो की यह मान्यता है कि
(अकारगो वेदगोय) यह आत्मा पुण्यपाप आदिका अकर्ता है, और
उनके फल भूत सुख दुःख आदिका (१) ‘प्रतित्रिम्बोदयन्यायसे भोक्ता
है । तथा कोई कहते हैं कि (सुक्यस्स दुक्यस्स य सङ्घहा सङ्घर्हि
कारणाणि य करणाणि) पुण्य और पाप के सर्व प्रकार से सर्वकाल में
कर्ता निमित्तभूतचक्षुरादि इन्द्रिया हैं । आत्मा नहीं है, यह उनकी
मान्यता असत्य है, क्योंकि ससारी आत्मा कथंचित् मूर्तिक है और
परिणामी है इसलिये कर्तृत्व और भोक्तृत्व बन जाता है । सर्वथा अमू

તે કથન પણ મિથ્યારૂપ જ છે, કારણ કે તેને સત્ય માનવામા આવે તો
‘સમસ્ત જગતમા નજરે પડતો મૂળભૂત લેદવાળો ધર્મ અધર્મ આદિનો જે વ્ય
વહાર થાય છે તેનું ખડન થવાનો પ્રમગ ઉપસ્થિત થાય છે એ જ રીતે
આત્માને એકાન્તરૂપે અકર્તા માનનાર સાખ્ય મતવાદીઓની એવી માન્યતા છે
કે “અકારગો વેદગોય” આ આત્મા પુન્ય પાપ આદિનો કર્તા નથી, અને
તેમના ક્ષણરૂપ સુખ દુઃખ આદિનો “પ્રતિવિમ્બોદય ન્યાયથી” લોકતા છે તથા
કેઈ કેઈ લોકો કહે છે કે “સુક્યસ્સ દુક્યસ્સ ય સઞ્ઘહા સઞ્ઘર્હિ કારણાણિ ય
કરણાણિ” પુન્ય અને પાપના સર્વ પ્રકારનો કર્તા સર્વકાળે આત્મા નહીં પણ
ચક્ષુ આદિ ઇન્દ્રિયો છે તેમની તે માન્યતા અસત્ય છે, કારણ કે સસારી
આત્મા કેટલાક પ્રમાણમા મૂર્તિક છે અને પરિણામી છે, તેથી તેમા કર્તૃત્વ અને

૧ પ્રતિવિમ્બોદય ન્યાય का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार स्फटिकमणि क साथ जिस
वर्णका संयोग होगा स्फटिक मणि वैसा ही वर्णका देखने लग जाता है ।

૧ પ્રતિબિમ્બોદય ન્યાયનું તાત્પર્ય એ છે કે જેમ સ્ફટિક મણીની સાથે જે
રંગનો સંયોગ થશે, એવા જ રંગનો સ્ફટિક મણી દેખાશે

इह जीवलोके 'सुक्य वा' सुकृत वा=सुकृतफल-सुखमाप्तिरुपमतेन 'दुक्क्य वा' दुष्कृत=दुष्कर्मफल दुःख वा 'दीसई' दृश्यते 'जइच्छाए' यहच्छया=अकस्मात् काकतालीयन्यायेन अवितर्कितमेव सर्वं समुत्पद्यते । यथा काकागमनसमये अबुद्धिपूर्वक काकोपरिताल्पतन नहि काकस्यैव बुद्धिरस्तियन्मदुपरिताल निपतिष्यति, तथा तालस्यापि नायमभिप्रायो यदहं काकोपरि पतिष्यामि, एवमेव सर्वं सुख-दुःखादिजातमतर्कितोपस्थितमेव न कर्तृविशेषबुद्धिपूर्वकम् । तदसत् इदमस्य कारणमिदमस्य कार्यमिति सकललोकप्रसिद्ध व्यवस्था विच्छेदापत्तेः अन्यथा कथ

झाव कहा गया है कि (जपि किंचि एहिं जीव लोके सुक्य वा दुक्क्य वा दीसई) जो कुछ भी इस जीवलोके में सुकृत अथवा सुकृत का फलरूप सुख-दुष्कृत अथवा दुष्कृत का फलरूप दुःख दिग्वलाई देता है वह सब (जइच्छाए वा) अकस्मात् काकतालीय न्याय से अवितर्कित ही उत्पन्न हो जाता है, जिस प्रकार उड़ता हुआ कौवा तालवृक्ष के नीचे आया और आते ही उस पर ताड़ का फल गिर पड़ा तो उसके इस पतन में न तो काकने ही ऐसा विचार किया कि मेरे ऊपर ताड़ का फल गिर पड़े, और न ताड़फल ने ही ऐसा सोचा कि मैं काक के आते ही उस पर गिर पड़ूँ किन्तु यह उसका पतन अवितर्कित ही हुआ इसी तरह सुख दुःख आदि जो कुछ भी होता है वह सब अतर्कित ही उपस्थित होता रहता है इसमें कर्ता कि विशेष बुद्धि पूर्वकता नहीं है । सो ऐसी मान्यता भी असत्य ही है कारण कि लोक में जो यह व्यवस्था बन रही है कि " यह इसका कारण है यह इसका कार्य है " वह सब इस प्रकार की मान्यता में विच्छेद को प्राप्त हो जावेगा । देखो जो

छे के ' जपि किंचि एहिं जीवलोके सुक्य वा दुक्क्य वा दीसई " आ ७वलो०भा
 ने ठोई पणु सुकृत अथवा सुकृतना इणउप सुण, दुष्कृत अथवा दुष्कृतना
 इणउप दु ष नइ पडे छे ते णधा " जइच्छाए वा " अकस्मात् काकतालीय
 न्याये अवितर्कित न उत्पन्न थध नय छे जेभ उउतो जगडो ताडना आउनी
 नींथि आवे अने आवता न तेना उपर ताडनु इण पडथु, तो तेना ते पत
 नभा जगडाओ जेवो विचार ज्यो न छतो डे भारा उपर ताडनु इण पडे अने
 ताडना इणे पणु जेवो विचार ज्यो न छतो डे जगडो आवता न छु तेना
 उपर पडु पणु तेनु ते पतन अवितर्कित न थथु होय छे, जे न प्रडारे
 सुण दु ष आदि जे उध थय छे ते णधु अवितर्कित न थया करे छे तेभा
 कर्तानी विशेषबुद्धि जारणुप नथी तो जेवी मान्यता पणु असत्य न छे कारण
 डे सृष्टिभा जेवी जे अवन्या आली गही डे डे " ते आनु जारणु छे, ते
 आनु जय छे " जे णधानु ते मान्यताथी णउन थध नथे जेवो जेने तेव

चास्य तथाहि—न तावन्निर्गुणतः चेतनास्वरूपताभ्युपगमात् । अनुपलेपकत्वमपि न
मदमुक्तावस्था व्यवस्थानिच्छेदमसद्भात् ॥ सू० ७ ॥

પુનરપ્યાહ—‘ અવિ ય ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—અવિ ય એવમાહંસુ અસન્નિભાવ જપિ એહિં કિંચિ
જીવલોગે દોસઈ સુકય વા દુક્કયં વા, એવ જઈછાણ વા
સહાવેળ વાવિ દયિવયપ્પભાવઓ વાવિ ભવઈ, નતિથ તત્થ
કિંચિકયક તત્ત લક્ખણં વિહાણ નિયઈ કારિયા એવ કેઈ
જંપતિ ઇદ્દિરસસાયગારવપરાવહવે કરણાલસા પરૂવેતિ
ધમ્મવીમસણં મોસ ॥ સૂ૦ ૮ ॥

टीका—‘ अवि य ’ अपि च एव=रक्ष्यमाणरीत्या ‘ असन्भाव ’ असद्भाव
‘ आह सु ’ आहुः=कथयन्ति कथमित्याह—‘ जपि ’ यदपि किंचि ’ किञ्चित् ‘ एहिं ’

समान निर्लिप्त है । अतः कहा है “ अकर्त्ता निर्गुणो भोक्ता ” आत्मा
कपिल दर्शने ” यह भी युक्ति युक्त नहीं है कारण आत्माको सर्वथा
निर्गुण मानने पर उसमें चेतनत्व गुण का भी अभाव होने से अचेत
नत्व का प्रसंग प्राप्त होगा, परन्तु ऐसी बात तो कहा मानी नहीं गई है,
क्यों कि आत्मा को चेतना गुण स्वरूप स्वीकार किया गया है । तथा
पुष्कर पलाशवत् सर्वथा निर्लिप्त मानने पर उसकी जो बद्ध-ससारी-
और मुक्त ये जो दो अवस्थाएँ होती हैं उनकी व्यवस्था का विच्छेद प्राप्त
होता है ॥ सू-६ ॥

તથા—‘ અવિ ય ’ ઇત્યાદિ ।

टीकार्थ—(अवि य एव असन्भाव आहसु) इस प्रकार से जो अस

આત્માતો કમળપત્ર સમાન નિર્લિપ્ત છે તેથી જ કહ્યું છે કે “ અકર્તા નિર્ગુણો
ભોક્તા આત્મા કપિલદર્શને ” તે પણ યુક્તિયુક્ત નથી, કારણ કે આત્માને સર્વથા
નિર્ગુણ માનવામા આવે તો તેમા ચેતનત્વ ગુણનો પણ અભાવ હોવાથી અચે
તનત્વનો પ્રસંગ ઉપસ્થિત થશે, પણ એમ તો ત્યા માનેલ નથી, કારણ કે
આત્માને ચેતનગુણ સ્વરૂપ સ્વીકાર્યો છે તથા કમલપત્ર પર રહેલ જળગિન્દુથી
અલિપ્ત કમળ જેવો તેને માનવામા આવે તો તેની બદ્ધ-સસારી અને મુક્ત
એ બે અવસ્થાઓ જે હોય છે તેની વ્યાવસ્થાનુ જાડન થશે ॥ સૂ-૬ ॥

તથા—“ અવિ ય ” ઇત્યાદિ

टीकार्थ—“अवि य एव असन्भाव आहसु” या प्रमाणे ज

ये।

તથા દૈવ્યાદિનઃ—

“પ્રાપ્તવ્યમર્થ લભતે મનુષ્યઃ, કિં કારણ દૈવમલદ્વનીયમ્ ।

તસ્માન્ન શોચામિ ન વિસ્મયો મે, યદસ્મદીય નહિતત્પરેપામ્ ॥”

તથા ‘નત્યિ’ નાસ્તિ ‘તત્ય’ તત્ત્વ મર્ત્યલોકે ‘કિંચિ’ કિંચિત્ ‘કચક’ કૃતક=કર્મનિષ્પન્ન ‘તત્ત’ તત્ત્વ=વસ્તુ । તથા ‘લક્ષણવિહાણ’ લક્ષણવિધાના =પદાર્થસ્વરૂપપ્રકારાણા નિયતિઃ=ભાગ્યમેવ ‘કારિયા’ કારિકા=કર્ત્રી, તથા યન્ન કાર્યકારણભાવ કા ચિચ્છેદ પ્રાપ્ત હોતા હૈ ।

અય દૈવવાદિયોં કા સ્વરૂપ કહતે હૈ—‘દવિચ્છેદભાવઓ વાવિ ભવદ્’ ઇત્યાદિ । દૈવવાદિયોં કિ જેસી માન્યતા હૈ—

“પ્રાપ્તવ્યમર્થ લભતે મનુષ્યઃ, કિં કારણ દૈવમલદ્વનીયમ્ ।

તસ્માન્ન શોચામિ ન વિસ્મયો મે, યદસ્મદીય નહિ તત્ત્વ પરેપામ્ ॥૧૧॥”

જો કુઝ પ્રાપ્ત હોને યોગ્ય વસ્તુ હૈ વહ હમે ભાગ્ય કી કૃપા સે હી પ્રાપ્ત હોતી હૈ । યહ ભાગ્ય અલઘનીય હૈ । અતઃ જેસા સમઘ્નકર કિ જો હમારી હૈ વહ દુસરોં કી કમી નહીં હો સકતી હૈ કમી ખી કિસી પ્રાણી કો ઝોક ફિકર ઔર ઔશ્ચર્ય આદિ નહીં કરના ચાહિયે ॥૧૧॥

અતઃ હે ભાઈયો ! તુમ ઇક માત્ર દૈવ-ભાગ્ય પર હી ભરોસા રહો । (નત્યિ તસ્સ કિંચિ કચક તત્ત) લોકમેં કોઈ એસી વસ્તુ નહીં હૈ જો કૃતક હો પરુપાર્ય રૂપ કર્મ સે પ્રાપ્ત કી જા સકે-જેસી હો । ઇત્ની પ્રકાર (લક્ષણવિહાણ) પદાર્થોં કા જિતના ખી કુછ અપના રૂપ હૈ તથા ડનકે જિતને ખી પ્રકાર-ભેદ હૈ ડન સમકી (કારિયા) કારિકા કરને

હુવે દૈવવાદીઓનુ સ્વરૂપ ડહે છે—“દવિચ્છેદભાવઓનાચિ ભવદ્” ઇત્યાદિ દૈવવાદીઓની માન્યતા છે કે—

“પ્રાપ્તવ્યમર્થ લભતે મનુષ્યઃ, કિં કારણ દૈવમલદ્વનીયમ્ ।

તસ્માન્ન શોચામિ ન વિસ્મયો મે, યદસ્મદીય નહિ તત્ત્વ પરેપામ્” ॥૧૧॥

પ્રાપ્ત થવા લાયક જે ડોડ વસ્તુ હોય છે તે આપણને ભાગ્યની કૃપાથી જ મળે છે તે ભાગ્ય અલઘનીય-અશ્વ છે જે અમારી ચીજ છે તે ખીલની ડહી પણ થઈ જાડતી નથી, એવુ અમલને ડહીપણ ડોઢ પ્રાણીએ શોડ, ચિન્તા આશ્ચર્ય આદિ ડવા બેઠએ નહીં ॥૧૧॥

તો હે ભાઈઓ ! તમે એક માત્ર ભાગ્ય ઉપર જ વિશ્વાસ રાખો

“નત્યિ તસ્સ કિંચિ કચક તત્ત” જગતમા એવી ડોડ વસ્તુ નવી કે જે કૃતક હોય-પુરુષાર્થથી પ્રાપ્ત ડગી જાય તેવી હોય એ જ ગીતે “લક્ષણ-વિહાણ” પદાર્થોનુ જે ડોઢ પોતાનુ રૂપ છે તથા તેમના જેટલા પ્રકાર-ભેદ છે, તે ગણાની “કારિયા” ડગીડા-ડગનાગી “નિયદ્” આ નિયતિ-ભાગ્ય-જ

તૈલાર્થી તિલમેવોપાદદ્યાત્ દન્યર્થી ચ દુગ્ધ, દુગ્ધાર્થી ચ ગામ્ । અથ સ્વભાવવાદીમાહ-

“કઃ કણ્ઠકાના પ્રકરોતિ તૈક્ષ્ણ્ય,
વિચિત્રભાવ મૃગપક્ષિણા ચ ।

સ્વભાવતઃ સર્વમિદં પ્રવૃત્તં,

ન કામચારોઽસ્તિ કુતઃ પ્રયત્નઃ ॥ ૧ ॥”

તદપ્યસત્—અત્રાપિ કાર્યકારણવ્યવસ્થા મિચ્છેદાત્ ।

તૈલાર્થી હોતા હૈ વહ તિલોં કો હી તો ગ્રહણ કરતા હૈ, દધ્યર્થી દુગ્ધ કો ઓર દુગ્ધાર્થી ગામ કો । યહ એસા જ્યોં હોતા હૈ હસલિયે કિ યે તિલા દિક અપને ૨ કાર્ય કે કારણ હૈ ।

અથ સ્વભાવવાદી કા સ્વરૂપ કહતે હૈ—‘સહાવેણ વાવિ’ ઇત્યાદિ ।

સ્વભાવવાદી કા એસા કહના હૈ કિ જગત્ મેં જો કુછ હોતા હૈ વહ સ્વભાવ સે હી હોતા હૈ, કહાં બી હૈ—

“કઃ કણ્ઠકાના પ્રકરોતિ તૈક્ષ્ણ્ય, વિચિત્રભાવ મૃગપક્ષિણા ચ ।

સ્વભાવતઃ સર્વમિદં પ્રવૃત્તં, ન કામચારોઽસ્તિ કુતઃ પ્રયત્નઃ ॥ ૧ ॥”

કાટોં મેં તીક્ષ્ણતા કૌન કરતા હૈ ? મૃગોં મેં પક્ષિયોં મેં વિચિત્રતા કૌન ઉત્પન્ન કરતા હૈ ? તો હસકા કેવલ ઉત્તર યહી હૈ કિ સ્વભાવ સે હી યહ સબ કુછ હોતા હૈ, હસમેં કામચાર-ચદૃષ્ટા-કારણ નહીં હૈ ઓર ન કોઈ પ્રયત્ન હી કારણ હૈ ॥ ૧ ॥

યહ સ્વભાવવાદી કા કથન બી ઠીક નહોં હૈ । કારણ હસમેં બી

બેધતુ હોય તે તલને જ અહણુ કરશે, દહીની ઇચ્છાવાળો હૂધને અને હૂધની ઇચ્છાવાળો ગાયને અહણુ કરશે તે પ્રમાણે થવાનું કારણ શું છે ? કારણ એ જ છે કે તલ આદિ પોત પોતાના કાર્યને માટે કારણરૂપ-ઉપયોગી છે

હવે સ્વભાવવાદીનું સ્વરૂપ કહે છે—“સહાવેણ વાવિ” ઇત્યાદિ

સ્વભાવવાદીનું એવું કહેવું છે કે જગતમા જે કંઈ થાય છે તે સ્વભાવથી જ થાય છે, કંઈ પણ છે—

“કઃ કણ્ઠકાના પ્રકરોતિ તૈક્ષ્ણ્ય, વિચિત્રભાવ મૃગપક્ષિણા ચ ।

સ્વભાવતઃ સર્વમિદં પ્રવૃત્તં, ન કામચારોઽસ્તિ કુતઃ પ્રયત્નઃ” ॥ ૧ ॥

કાટામા તીક્ષ્ણતા બેળુ ડરે છે ? મૃગોમા તથા પક્ષીઓમા વિચિત્રતા કોણુ ઉત્પન્ન ડરે છે ? તેનો કેવળ એક જ ઉત્તર છે કે સ્વભાવથી જ તે બધું થાય છે, તેમા કામચાર-તેની ઇચ્છા-કારણરૂપ નથી કે કોઈ પ્રયત્ન કારણરૂપ નથી ॥ ૧ ॥

સ્વભાવવાદીનું તે કથન પણ બરાબર નથી કારણ કે તેમા પણ કાર્ય કારણ કે તેમા પણ કાર્ય-કારણભાવનું ખડન થાય છે

તદસત્-કાલમ્યૈવ કર્તૃત્વે કાલપ્રાપ્તો સ્ત્રીઝમશ્રુવન્ધ્યા પુત્રહસ્તતલ્લકેગાદીના-
મપિ મદ્ધાત્મ સ્યાત્, इत्यपि मतवादिनो मिथ्या जल्पन्ति । तथा 'इङ्घ्रिस-
सायगारचपरा' ऋद्धिससातगौरचपरा, 'उद्वे' वहयः=अनेके करणालसाः=
कर्तव्याचरणालसाः अनुयोगिनः 'वम्मवीमसण' वर्ममिर्मर्जनेन=वर्मविचारेण
'मोस' मृया-असत्य तन्तु अर्धमपि धर्ममेव 'परुवेति' प्रमथयन्ति=प्रतिपादयन्ति ॥७

अन्येऽपि जना यथा मृया भाषणपरा भवन्ति तत्परूपयति 'अवरे' इत्यादि-

मूलम्-अवरे अहम्माओ रायटुट्टु अवभक्खाण भणति
अलियचोरोत्ति अचोरिय करेत्त । डामरिओ त्ति वि य एमेव
उदासीण । दुस्सीलोत्ति य परदार गच्छइत्ति मइलित्ति
सीलकलिय । अयपि गुरुत्तप्पओ त्ति । अण्णे एमेव भणति

કાલવાદિયો કી યદ્ માન્યતા અસત્યરૂપ હસલિયે હૈ કિ કાલ કો
હી કર્તા માનને પર સ્ત્રી જન્મ તન્મળ અવસ્થા સપન્ન હો જાની હૈ તો પુરુષ
કી તરફ ઉસકે ભી દાઢી મૃત્ત કા આના, તથા વધ્યા કે પુત્ર હોના,
હયેલી મેં ચાલ ઉગના આદિ ભી હોના ચાહિયે-પરન્તુ યદ્ સત્ કુઠ
નહીં હોતા હૈ । હસલિયે યે પૂર્વોક્ત સત્ હી યાદ મિથ્યા પ્રરૂપણા કરતે
હૈ એસા જાનના ચાહિયે । (૧૪) હસ પ્રકાર (કેહ) કિતનેક (કર-
ણાલસા) અપને કર્તવ્ય કરને પર યોગ્ય આચરણ મેં આલસી ઘને હુણ,
ઔર (ઇઙ્ઘ્રિસસાયગારચપરા) ઋદ્ધિ, રમ, સાતગૌરવ મેં તત્પર રહે
હુણ, (વદ્ધવે) અનેક અનુયોગી વ્યક્તિ (ધમ્મ વીમસણ) વર્મ કે
વિચાર સે (મોસ) મૃયા-અસત્ય-અધર્મ કો ભી ધર્મરૂપ સે (પરુવેતિ)
પ્રરૂપિત કરતે હૈ ॥ સૂ-૭ ॥

શાશ્વત છે ઢાળવાદીઓની તે માન્યતા અસત્યરૂપ તે કાણે છે કે કાળને જ
જો કર્તા માનવામા આવે તો સ્ત્રી ત્યારે તરુણ અવસ્થાએ પહોંચે ત્યારે તેને
પણ પુરુષની જેમ દાઢી મૃત્ત આવવી જોઈએ, તથા વધ્યાને પુત્ર થવો જોઈએ,
હયેલીમા ખાલ ઉગવા જોઈએ, પણ તેમાનુ કઈ પણ બનતુ કથી તેથી પૂર્વોક્ત
એ બધા વાદ મિથ્યા પ્રકરણા કરે છે એમ માનવુ જોઈએ, “ ૧૪ ” એ જ
પ્રમાણે “ કેહ ” કેટલાક “ કરણાલસા ” ચોતાના કર્તવ્ય પાલનમા આજસુ
થડને અને “ ઇઙ્ઘ્રિસસાયગારચપરા ” ઋદ્ધિ, રમ અને માત અભિમાનમા રત
થડને “ વદ્ધવે ” અનેક અનુયોગી લોકો “ વમ્મવીમસણ ” વર્મના ખ્યાલથી
“ મોસ ” મૃયા-અસત્ય-અધર્મને પણ ધર્મરૂપે “ પ્રરૂવેતિ ” પ્રરૂપિત કરે છે ॥ સૂ-૭ ॥

માન્ય તત્ કોટિ યત્નૈરપિ ન ભવતિ યદ્ માન્ય તદ્ વિનાપિ યત્નેન ભવતિ, તદસત્-
-સકલપ્રત્યક્ષોદ્યમાદીના વ્યર્થતાપત્તેઃ । વા શબ્દેન-કાલવાદાદયોઽપિ વિવ્રેયાઃ ।

તથાહિ-“ કાલઃ સૃજતિ ભૂતાનિ, કાલઃ સહરતે પ્રજાઃ ।

કાલઃ સુપ્તેષુ જાગર્તિ કાલો દિ દુરતિક્રમઃ ॥ ૧ ॥ ”

ચાલી (નિયર્હ) યદ્ નિયતિ-માન્ય હી છે । તથા જો હોને યોગ્ય નહીં હૈ
ચદ્ કરોડ યત્નો સે ભી નહીં હો સકતા હૈ, ઓર જો હોને યોગ્ય હૈ વદ્
વિના યત્ન કે ભી હો જાતા હૈ । સો હસ પ્રકાર કી દૈવ (માન્ય)
વાદિયોં કી યદ્ માન્યતા કેવલ કલ્પનામાત્ર હૈ કારણ-હસકા હસ
પ્રકાર કી એકાન્તતઃ કલ્પના માનને પર સકલ પ્રાણીયોં કે પ્રત્યક્ષ
ભૂત ઉદ્યમાદિકોં મેં વ્યર્થતા કી આપત્તિ આતી હૈ ।

‘ વા ’ શબ્દ સે કાલવાદિયોં કા સ્વરૂપ કહતે હૈ-યહાં “ વા ”
શબ્દ સે કાલવાદ આદિ ભી સ્પારૂપ હૈ એસા જાનના ચાહિયે । કાલ-
વાદિયોં કી એસી માન્યતા હૈ કિ-

“ કાલઃ સૃજતિ ભૂતાનિ, કાલઃ સહરતે પ્રજાઃ ।

કાલઃ સુપ્તેષુ જાગર્તિ, કાલો દિ દુરતિક્રમઃ ॥ ૧ ॥ ”

કાલ હી ભૂતોં કો-જીવોં કો-બનાતા હૈ ઓર નષ્ટ કરતા હૈ । કાલ
હી સોયે હુઓં મે જગાતા હૈ હસલિયે કાલ દુરતિક્રમ-અલબનીય હૈ ।
અર્થાત્-યદ્ અવિનશ્વર હૈ ।

છે તથા જે થવા લાયક નથી તે કરોડ પ્રયત્નો કરવા છતાં પણ થઈ શકતું
નથી, તથા જે થવા લાયક છે તે વિના પ્રયત્ને પણ થાય છે તો આ પ્રકારની
દૈવ “ માન્ય ” વાદીઓની માન્યતા કેવળ કલ્પના જ છે, કારણ કે તેમની તે
પ્રકારની એકાન્તતઃ કલ્પનાને માની લેવામાં આવે તો સમગ્ર પ્રાણીઓના પ્રત્યક્ષ
ક્ષભૂત ઉદ્યમાદિમા વ્યર્થતા હોવાની આપત્તિ ઉપસ્થિત થાય છે

“ વા ” શબ્દથી કાણેવાદીઓનું સ્વરૂપ કહે છે—અહીં “ વા ” શબ્દથી
કાળવાદ આદિ પણ મૃષા-અસત્ય રૂપ છે, એમ સમજી લેવાનું છે કાળવાદી
ઓની એવી માન્યતા છે કે-

“ કાલ સૃજતિ ભૂતાનિ, કાલ સહરતે પ્રજા ।

કાલ સુપ્તેષુ જાગર્તિ, કાલો દિ દુરતિક્રમ ” ॥ ૧ ॥

કાળ જ ભૂતોને-જીવોને બનાવે છે અને તેમનો નાશ કરે છે કાળ જ
સૂતેલાઓમાં જાગૃત હોય છે તેથી કાળ દુરતિક્રમ-અલબનીય છે એટલે કે

તદસત્-કાલસ્યૈવ કર્તૃત્વે કાલપ્રાપ્તૌ સ્ત્રીશ્મયુવન્ધ્યા પુત્રહસ્તતલ્કેશાદીના-
મપિ સદ્ભાવ સ્યાત્, इत्यपि मतवादिनो मिथ्या जल्पन्ति । तथा 'इड्विरस-
सायगारवपरा' ऋद्धिरससातगौरवपरा, 'उहवे' वहवः=अनेके करणालसाः=
कर्तव्याचरणालसा. अनुयोगिनः 'धम्मवीमसएण' वर्मप्रिमर्शनेन=वर्मविचारेण
'मोस' मृषा-असत्य तस्तु अधर्ममपि धर्ममेव 'परुवेति' प्ररूपयन्ति=प्रतिपादयन्ति ॥७

अन्येऽपि जना यथा मृषा भाषणपरा भवन्ति तत्प्ररूपयति 'अवरे' इत्यादि-
मूलम्-अवरे अहम्माओ रायटुट्टु अव्वमक्खाण भणति
अलियंचोरोत्ति अचोरिय करेत्त । डामरिओ त्ति वि य एमेव
उदासीण । दुस्सीलोत्ति य परदार गच्छइत्ति मइलिति
सीलकलिय । अयपि गुरुत्तप्पओ त्ति । अण्णे एमेव भणंति

કાલવાદિયોં કી યહ માન્યતા અસત્યરૂપ ઇસલિયે હૈ કિ કાલ કો
હી કર્તા માનને પર સ્ત્રી જય તરુણ અવસ્થા સપન્ન હો જાની હૈ તો પુરુષ
કી તરહ ઉસકે ભી દાઢી મૂઝ કા આના, તથા વધ્યા કે પુત્ર હોના,
હથેલી મેં ચાલ ઊગના આદિ ભી હોના ચાહિયે-પરન્તુ યહ સબ કુઝ
નહોં હોતા હૈ । ઇસલિયે યે પૂર્વોક્ત સગ હી યાદ મિથ્યા પ્રરૂપણા કરતે
હૈં એસા જાનના ચાહિયે । (એવ) ઇસ પ્રકાર (કેહ) કિતનેક (કર-
ણાલસા) અપને કર્તવ્ય કરને પર યોગ્ય આચરણ મેં આલસી બને હુણ,
ઔર (ઇડ્વિરસસાયગારવપરા) ઋદ્ધિ, રસ, સાતગૌરવ મે તત્પર રહે
હુણ, (વહવે) અનેક અનુયોગી વ્યક્તિ (ધમ્મ વીમસણ) વર્મ કે
વિચાર સે (મોસ) મૃપા-અસત્ય-અધર્મ કો ભી ધર્મરૂપ સે (પરુવેતિ)
પ્રરૂપિત કરતે હૈં ॥ સુ-૭ ॥

શાશ્વત છે ઝાળવાદીઓની તે માન્યતા અસત્યરૂપ તે કારણે છે કે ઝાળને જ
ને કર્તા માનવામા આવે તો સ્ત્રી બ્યારે તરુણ અવસ્થાએ પહોંચે ત્યારે તેને
પણ પુરુષની જેમ દાઢી મૂઝ આવવી જોઈએ, તથા વધ્યાને પુત્ર થવો જોઈએ,
હથેલીમા ચાલ ઊગવા જોઈએ, પણ તેમાનુ કંઈ પણ બનતુ કથી તેથી પૂર્વોક્ત
એ બધા વાદ મિથ્યા પ્રરૂપણા કરે છે એમ માનવુ જોઈએ, “ એવ ” એ જ
પ્રમાણે “ કેહ ” કેટલાક “ કરણાલસા ” પોતાના કર્તવ્ય પાલનમા આગસુ
થઈને અને “ ઇડ્વિરસસાયગારવપરા ” ઋદ્ધિ, રસ અને સાત અભિમાનમા રત
થઈને “ વહવે ” અનેક અનુયોગી લોકો “ ધમ્મવીમસણ ” ધર્મના ખ્યાલથી
“ મોસ ’ મૃપા-અસત્ય-અધર્મને પણ ધર્મરૂપે “ પ્રરૂવેતિ ” પ્રરૂપિત કરે છે ॥ સુ-૭ ॥

उवहणंता—मित्तफलत्ताइ सेवइ । अयपि लुत्तधम्मो । इमो
वि वीसंभवायओ, पापकम्मकारी अगम्मगामी । अयं
दुरप्पा बहुएसु य पातगेषु जुत्तो त्ति । एव जंपंति मच्छरी
भदगे वा गुणाकित्तिनेहपरलोगनिप्पिवासा । एव एए अलि-
यवयणदक्खा परदोसुप्पायण संसत्ता वेढेति अमखइय वीएणं
अप्पाणं कम्मवधणेण मुहरी असमिक्खियप्पलावी ॥सू०॥८॥

टीका—अवरे=अपरे अन्ये केचित् ‘अहम्माओ’ अधर्मत =असत्यवचनरूपमधर्म
मेव स्वीकृत्य ‘ रायदुट्ठ ’ राजदुष्ट=नीतिविरुद्धम्, ‘ अन्मक्खाण ’ अभ्याख्या
नम्=असत्यदोषारोपण ‘ अलिय ’ अलीक ‘ भणति ’=अकृतमपि कार्यकल्पयित्वा
जनसमक्षे कथयन्ति । कथमित्याह—‘ चोरोत्ति ’ इत्यादिना—‘ अचोरियं करोत ’
औचार्यं कुर्वन्त=अचोरयन्त जन प्रति ‘ चोरोत्ति ’ चोर इति कथयन्ति । ‘ एमेव ’

और भी मनुष्य जिस प्रकार असत्य भाषण करते हैं उसीको दिख
लाते हैं—‘ अवरे अहम्माओ ’ इत्यादि ।

टीકાર્થ—(અવરે) કિનનેક મનુષ્ય (અહમ્માઓ) અસત્ય વચન-
રૂપ અધર્મ કો હી સ્વીકાર કરકે (રાયદુટ્ઠ) નીતિ વિરુદ્ધ (અન્મક્ખાણ)
અસત્ય દોષારોપણરૂપ (અલિય) અલીક વચન કો (ભણતિ) કહતે
હૈં, નહીં કિયે ગયે મી કાર્ય કો ડસમે કલ્પિત કરે જન સમક્ષ મેં કહ
દિયા કરતે હૈં કિ (અચોરિય કરેત ચોરોત્તિ) ચોરી નહીં કરને વાલે
કો મી ‘ યહ ચોર હૈ ’ એસા કહ દેતે હૈ, અર્થાત્ જિસને કમી મી ચોરી
નહીં કી હૈ—એસે પુરુષ કો મી ચોર દેતે હૈ, કહ તયા (એમેવ) હસી

ખીજા મનુષ્યો પણ જે પ્રકારે અસત્ય જોલે છે તે સૂત્રકાર જતાવે છે—
“ અવરે અહમ્માઓ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“અવરે” કેટલાક માણસો “અહમ્માઓ” અસત્ય વચનરૂપ અધર્મનો
જે સ્વીકાર કરીને “રાયદુટ્ઠ” નીતિવિરુદ્ધ “અન્મક્ખાણ” અસત્ય દોષારોપણ
રૂપ “અલિય” અલીક વચનો “ભણતિ” કહે છે, ન ડરાયેલ કાર્યની પણ
કલ્પના કરીને લોકોની સમક્ષ કહ્યા કરે છે એમકે—“અચોરિય કરેત ચોરોત્તિ”
ચોરી ન કરનારને પણ “આ ચોર છે” એવું કહે છે એટલે કે જેણે કદિ
પણ ચોરી કરી હોય તેવા પુરુષને પણ ચોર તરીકે જોખાવે છે, તથા “એમેવ”

एवमेव 'उदासीण' उदासीन=अविग्रहकारक तटस्थ प्रति 'डामरिउत्ति' यि य 'डामरिकः=विग्रहकारी=इत्यपि च भणन्ति । तथा-'दुस्सीलोत्ति' दुश्शील इति=दुष्टाचरणोऽयं जन इति, 'परदार गच्छति' परदारान् गच्छति=परस्त्रीगमन करोति, इति च असत्यदूषणवचनेन 'सीयकलिय' शीलकलित=सदाचारयुक्त जन 'मडलिति' मलिनयन्ति=लोके कलङ्कयन्ति, 'अयपि' अयमपि अपिना पूर्वोक्तोऽपि 'गुरुतप्पओ' गुरुतल्पगः कलाचार्यस्त्रीगामि इति भणन्ति । 'अण्णे' अन्ये मृपावादिनः 'उवाहणता' उपनन्तः=परस्य वृत्तिं कीर्त्तिं च नाशयन्तः 'एमेव' एवमेव भणन्ति-अयं 'मित्तकलत्ताइ' मित्रकलत्राणि=गृहदारान् 'सेवइ' सेवते । 'अयपि' अयमपि 'लुत्तधम्मा' लुप्तधर्मा=लुप्तो धर्मो यस्य स तथा=धर्मविहीनः अस्ति । तथा 'इमो वि' अयमपि 'विस्समपायओ' विम्रम्भयातकः=विश्वास-

तरह (उदासीण) उदासीन-तटस्थ होता है उसको (डामरिओत्तिवि य) अर्थात्-झगड़ा नहीं करने वाला 'यह डामरिक-विग्रहकारी-झगड़ा करने वाला है' ऐसा कह दिया करते हैं । (दुस्मीलोत्ति) यह दुःशील-दुष्ट आचरण वाला है' और (परदार गच्छइ) यह परस्त्री गामी है' इस तरह के असत्यदोषारोपक वचनों से (सीलकलिय) सदाचारी पुरुष को (मडलिति) कलङ्कित कर देते हैं । और (अयपि गुरुतप्पओ) यह और वह भी गुरुपत्नी के साथ सहवास करने वाला है । (अन्ने) कितनेक मृपावादीजन (उवाहणता) परकी आजीविका एवं कीर्त्ति का नाश करते हुए (एमेव) इसी तरह बोलते हैं कि यह (मित्तकलत्ताइ सेवेइ) अपने मित्र की स्त्री को सेवन करने वाला है तथा (अयपि) यह (लुत्तधम्मा) धर्म विहीन है । तथा (इमो वि)

એ બે ગીતે “ ઉદાસીણ ” ઉદાસીન-બે તટસ્થ હોય તેને “ ડામરિઓત્તિવિ ય ” એટલે કે ઝગડો ન કરનારને “ આ ઝગડો કરનાર છે ” એવું કહે છે તથા “ દુસ્સિલોત્તિ ” “ આ દુષ્ટ આચરણવાળો છે ” અને “ પરદાર ગચ્છઈ ” “ આ પરસ્ત્રીગામી છે ” આ પ્રકારના અસત્ય દોષારોપણ યુક્ત વચનોથી “ સીલકલિય ” સદાચારી પુરુષને “ મડલિતિ ” તે કલંકિત કરે છે અને અય પિ ગુરુતપ્પઓ ” “ તે પણ ગુરૂપત્ની સાથે સહવાસ કરનારો છે ” એવું ખોટું દોષારોપણ કરે છે “ અન્ને ” કેટલાક મૃપાવાદી લોકો “ ઉવાહણતા ” અન્યની આજીવિકા અને કીર્તિનો નાશ કરવાને માટે “ એમેવ ” આ પ્રમાણે બોલે છે- “ મિત્તકલત્તાઈ સેવઈ ” “ તે પોતાની મિત્રપત્નીનું સેવન કરનાર છે ” તથા “ અય પિ ” તે “ લુત્તધમ્મા ” ધર્મરહિત છે તથા ‘ ઇમો

उवहणंता—मित्तकलत्ताइ सेवइ । अयंपि लुत्तधम्मो । इमो
 वि वीसभघायओ, पापकम्मकारी अगम्मगामी । अय
 दुरप्पा बहुएसु य पातगेषु जुत्तो त्ति । एव जंपति मच्छरी
 भद्दगे वा गुणकित्तिनेहपरलोगनिप्पिवासा । एव एए अलि-
 यवयणदक्खा परदोसुप्पायण संसत्ता वेढेति अक्खइय वीएणं
 अप्पाण कम्मवधणेण मुहरी असमिक्खियप्पलावी ॥सूण॥८॥

टीका—अवरे=अपरे अन्ये केचित् ‘अहम्माओ’ अधर्मत =असत्यवचनरूपमधर्म
 मेव स्वीकृत्य ‘ रायदुट्ठ ’ राजदुष्ट=नीतिविरुद्धम्, ‘ अन्मस्खाण ’ अभ्याख्या
 नम्=असत्यदोपारोपण ‘ अलिय ’ अलीक ‘ मणति ’=अकृतमपि कार्यमल्पयित्वा
 जनसमक्षे कथयन्ति । कथमित्याह—‘ चोरोत्ति ’ इत्यादिना—‘ अचोरिय करेत ’
 औचार्य कुर्वन्त=अचोरयन्त जन प्रति ‘ चोरोत्ति ’ चोर इति कथयन्ति । ‘ एमेव’

और भी मनुष्य जिस प्रकार असत्य भाषण करते हैं उसीको दिख
 लाते हैं—‘ अवरे अहम्माओ ’ इत्यादि ।

टीકાર્થ—(અવરે) કિતનેક મનુષ્ય (અહમ્માઓ) અસત્ય વચન-
 રૂપ અધર્મ કો હી સ્વીકાર કરકે (રાયદુટ્ઠ) નીતિ વિરુદ્ધ (અન્મસ્ખાણ)
 અસત્ય દોપારોપણરૂપ (અલિય) અલીક વચન કો (મણતિ) કહતે
 હૈં, નહી કિયે ગયે ભી કાર્ય કો ઉસમેં કલ્પિત કરે જન સમક્ષ મેં કહ
 દિયા કરતે હૈં કિ (અચોરિય કરેત ચોરોત્તિ) ચોરી નહી કરને વાલે
 કો ભી ‘ યહ ચોર હૈ ’ જેસા કહ દેતે હૈ, અર્થાત્ જિસને કબી ભી ચોરી
 નહી કી હૈ—એસે પુરુષ કો ભી ચોર દેતે હૈં, કહ તથા (એમેવ) હસી

બીજા મનુષ્યો પણ જે પ્રકારે અસત્ય બોલે છે તે સૂત્રકાર બતાવે છે—
 “અવરે અહમ્માઓ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“અવરે” કેટલાક માણસો “અહમ્માઓ” અસત્ય વચનરૂપ અધર્મનો
 જ સ્વીકાર કરીને “રાયદુટ્ઠ” નીતિવિરુદ્ધ “અન્મસ્ખાણ” અસત્ય દોષારોપણ
 રૂપ “અલિય” અલીક વચનો “મણતિ” કહે છે, ન કરાયેલ કાર્યની પણ
 કલ્પના કરીને લોકોની સમક્ષ જણાવે છે જેમકે—“અચોરિય કરેત ચોરોત્તિ”
 ચોરી ન કરનારને પણ “આ ચોર છે” એવું કહે છે એટલે કે જેણે કદિ
 પણ ચોરી કરી હોય તેવા પુરુષને પણ ચોર તરીકે ઓળખાવે છે, તથા “એમેવ”

વૃદ્ધ ય યીણ ' અક્ષતિક્રીજેન = ઋષય દુઃસપ્તારણેન ' કમ્મવધણેન ' કર્મ-
જાત ' અપ્પાણ ' આત્માન ' વેદેતિ ' વેદ્યન્તિ, નરકાગિગોદાગ્રનન્તદુઃખદાયક
મે સમુપાર્જયન્તીત્યર્થઃ । કે તે ? इत्याह—'मुहरी' मुखारयः=मुखमेव अरि
—अश्रुत्वजनकरचनभाषित्वाद् येषां ते तथा । ' अमविषिखयप्पलावी '
क्षિતप्रलापिनः=अविचारितानर्थवक्तार इति ॥ सू० ८ ॥

પુનસ્તે કિં કર્ણન્તિ ? તદાહ—નિક્કલેવે ' ક્ષપાદિ ।

મૂળ—નિક્કલેવે અવહગતિ પરસ્સ અત્થમ્મિન ગઢિય ગિદ્ધા
ભિજુજંતિ ય પર અસત્તપ્પહિ લુદ્ધા ય કરેતિ કૂડ સક્કિલ-
ણ, અસચ્ચા અત્થાલિય ચ કન્નાલિય ચ, માંમાલિયં ચ
હા ગવાલિય ચ, ગરુય ભણતિ, અહરગઈ ગમ્મણં અપ્પણં
। ય જાહ્નુકુલરૂવસીલપચ્ચયમાયા નિગુણ ચવલા પિસુણં
રમદ્ધમેદગમસંતક ત્રિદેસમણત્થકારગ પાવકમ્મમૂલ
દિદ્ધ દુસ્સુય અમુણિય નિહ્જ્જ લોગગરહણિજ્જ વહવધ
રિકિલેસવહુલ જરામરણદુઃખસોગનેસ અસુદ્ધ પરિણામ
ફિલિદ્ધં ભણતિ ॥ સૂ. ૯ ॥

। મે હી લોગે દુપ્પ મૃપાવાદી પુરુષ (અશ્વઠય યીણ) અક્ષતિક યીજ
। ય દુઃસપ્તારણેન (કમ્મવધણેન) કર્મવધન સે (અપ્પાણ)
મે આપકો (વેદેતિ) પરિવેદિત કરતે હેં, અર્થાત્—નરકાગિગોદ
દે કે અનન્ત) દુઃખો કો દેનેવાલે કર્મો કો ઉપાર્જિત કરતે હેં । વૈસે
। હોતે હે ?—(મુહરી) જિનકા મુખ હી ઝટ્ટુ હોતા હે, (અસમિ-
ચયપ્પલાવી) જો વિના વિચાર કિયે હી અનર્થક પ્રલાપ કરનેવાલે
। હે । વે હી પૂર્વોક્ત પ્રકાર કા અસત્તામાપણ કરતે હે ॥ સૂ-૮ ॥

—૧. “ અક્ષયયવીર્ણ ” અક્ષતિક છવ-અશ્વ ડુ અને માટે તારણ કપ
ગ ” કર્મવધનથી “ અપ્પાણ ” પોતાની જાતને “ વેદેતિ ” પરિવેદિત
નરક નિગોદ આદિના અનન્ત દુઃખો દેનાર કર્મોનુ ઉપજાવ
તાય છે ।—“ મુહરી ” જેમનું મુખજ તેમનો શત્રુ હોય છે,
—લાવી ” જે વિના વિચારે અનર્થક પ્રલાપ કરનાર હોય
। એનું અસત્ય લાપણ કરે છે ॥ સૂ-૮ ॥

ઘાતી 'પાપકર્મકારી' પાપકર્મકારી=દુષ્કર્મચરણશીઃ 'અકર્મકારી' અકર્મકારી=અનુચિતકર્મકારી 'અગમ્યગામી' અગમ્યગામી=ભગિયાદિગમનકારી, ચાસ્તિ । અય 'દુરપ્પા' દુરાત્મા=દુષ્ટાત્મા 'વહુપ્પુ ય' વહુપ્પુઃ ચ = અનેકે 'પાતગેસુ' પાતકેષુ=પાપકર્મસુ 'જુત્તો' યુક્તઃ=સલ્ગન ઇતિ । અય 'મદ્દગે' મદ્દકે=નિર્દોષે 'મચ્છરી' મત્સરિણઃ = પરણુગદેષિણ. 'જપતિ' જલ્પન્તિ=વ્રુવન્તિ । કીદશાસ્તે મૃપાયાદિનઃ ? ઇત્યાદિ- 'ગુણકિત્તિનેહપરલોગનિષ્પિવાસા' ગુણાઃ = વિનયાર્જવાદયઃ, કીર્તિઃ=યશઃ સ્નેહ=ભૂતેષુ પ્રીતિઃ, પરલોક = જન્માન્તર તેષુ નિષ્પિવાસા = નિરાકારદક્ષાઃ એવમુક્તપ્રકારેણ ઇતે 'અલિયવયણદક્ષા' અલીકવચનદક્ષાઃ=મૃપામાપણનિપુણાઃ, 'પરદોસુપ્પાયણસસત્તા' પરદોષોત્પાદનસસત્તાઃ = પરદોષાનિષ્કરણતત્પરાઃ

યહ (વિસ્તમધાયઓ) વિશ્વાસઘાતી હૈ (પાપકર્મકારી) પાપકર્મકારી હૈ, (અકર્મકારી) અનુચિત કામોં કો કરતા રહતા હૈ, તથા (અગમ્યગામી) અગમ્યગામી હૈ-ભગિની આદિકા સેવન કરને ચાલા હૈ । (અય દુરપ્પા) યહ દુરાત્મા (વહુપ્પુ ય પાતગેસુ જુત્તો) અનેક પાપકર્મોં મે લગા રહતા હૈ । (મદ્દગે) નિર્દોષ પુસ્પ મે (મચ્છરી) દૂસરોં કે ગુણોં સે દેષ કરને ચાલે, તથા (ગુણકિત્તિનેહપરલોગનિષ્પિવાસા) વિનય આર્જવ આદિ ગુણોં મે, કીર્તિ મે તથા સ્નેહ-જીવોં કે ઉપર પ્રીતિ રખને મે ઓર પરલોક મેં આકાંક્ષા વિહીન પુરુષ (એવ જપતિ) હસ પ્રકાર બોલતે હૈ । ઇન્હેં અપને પરલોકકે સુધાર કી બી કોઈ ચિંતા નહીં હોતી હૈ । (એવ ઇત) હસ પ્રકાર યે (અલિયવયણદક્ષા) અસત્ય બોલને મેં બઢે ચતુર, તથા (પરદોસુપ્પાયણસસત્તા) દૂસરોં કે દોષો કો પ્રકટ

વિ વિસ્તમધાયઓ ” તે વિશ્વાસઘાતી છે, “ પાપકર્મકારી ” પાપકર્મકારી કરે છે, “ અકર્મકારી ” અનુચિત કર્મો કરનારો છે, “ અગમ્યગામી ” અગમ્યગામી છે-ભગિની આદિનું સેવન કરનાર છે, “ અય દુરપ્પા ” આ દુરાત્મા “ વહુપ્પુ ય પાતગેસુ જુત્તો ” અનેક પાપકર્મોમાં લીન રહે છે ” “ મદ્દગે ” નિર્દોષપુરુષોના “ મચ્છરી ” તથા અન્યના ગુણોના દેષ કરનાર, તથા “ ગુણકિત્તિ નેહ પરલોક નિષ્પિવાસા ” વિનય આર્જવ આદિ ગુણોથી રહિત, કીર્તિ તથા સ્નેહથી રહિત, અને પરલોકની આકાંક્ષા રહિત “ એવ જપતિ ” ઉપર પ્રમાણે બોલે છે તેને પોતાનો પરલોક સુધારવાની પણ ચિંતા હોતી નથી “ એવ ઇત ” આ રીતે તે “ અલિયવયણદક્ષા ” અસત્ય બોલવામાં ધણું નિપુણ, તથા “ પરદોસુપ્પાયણસસત્તા ” અન્યના દોષોને બહાર કરવામાં બ લીન એવો તે મુખ

‘અસ્તદ્ ય ત્રીણ’ અત્તતિક્રમીજેન=અધ્ય દુઃખમારણેન ‘કમ્મવગ્ગેણ’ કર્મ-
વન્ધનેન ‘અપ્પાણ’ આત્માન ‘વેદેતિ’ વેદ્યન્તિ, નરકનિગોદાગ્રનન્તદુઃખદાયક
કર્માણિ સમુપાર્જયન્તીત્યર્થ. । કે તે ? ક્ત્યાદ-‘મુદ્ધરી’ મુલારય’=મુલમેવ અરિ
=શત્રુ-ગતુત્વજનરૂપચનભાપિત્યાદ્ યેષા તે તથા । ‘અસમિલિલ્લપ્પલાવી’
અમમીક્ષિતપ્રત્યાપિનઃ=અવિચારિતાનર્થવત્કારકત્વેતિ ॥ સૂ. ૮ ॥

પુનસ્તે કિં કુર્વન્તિ ? તદાદ-નિક્કલેવે’ ક્ત્યાદિ ।

મૂર્ખ-નિક્કલેવે અવહરાંતિ પરસ્સ અત્થમ્મિન ગઢિય ગિદ્ધા
અભિજુજતિ ય પર અસત્તપ્પહિ લુદ્ધા ય કરેતિ કૂડ સક્કિલ-
ત્તણ, અસત્ત્વા અત્થાલિય ચ કન્નાલિયં ચ, મોમાલિયં ચ
તહા ગવાલિય ચ, ગરુય મળતિ, અહરગદ્ ગમ્મણ અપ્પણં
પિ ય જાદ્કુલરૂપસીલપચ્ચયમાયા નિગુણ ચવલા પિસુણં
પરમદુભેદગમસત્તક ત્રિદેસમણત્થકારણ પાવકમ્મમૂલં
દુદ્ધિદ્ધ દુસ્સુય અમુણિયં નિલ્લજ્જ લોગગરહણિજ્જં વહવથ
પરિકિલેસવહુલ જરામરણદુક્ખસોગનેસ અસુદ્ધ પરિણામ
સકિલિદ્ધ મળતિ ॥ સૂ. ૯ ॥

કરને મેં હી લગે દુષ્ટ મૃપાવાદી પુરુષ (અકલ્પવ્યવહાર) અત્તતિક્રમીજ
અલ્પ દુઃખ કે કારણભૂત (કમ્મવગ્ગેણ) કર્મવધન સે (અપ્પાણ)
અપને આપકો (વેદેતિ) પરિવેદિત કરતે હે, અર્થાત્-નરકનિગોદ
આદિ કે અનન્ત) દુઃખોં કો દેનેવાલે કર્મોં કો ઉપાર્જિત કરતે હૈં । વૈસે
કૌન હોતે હૈં ?—(મુદ્ધરી) જિનકા મુઝ હી ઝત્તુ હોતા હૈ, (અસમિ-
લિલ્લપ્પલાવી) જો વિના વિચાર કિયે હી અનર્થક પ્રલાપ કરનેવાલે
હોતે હૈ । વે હી પૂર્વોક્ત પ્રકાર કા અમત્તમાપણ કરતે હૈ ॥ સૂ-૮ ॥

વાદી પુરુષ “ અક્ષત્તદ્વયવીર્ણ ” અત્તતિક્રમીજ અલ્પ-અલ્પ દુઃખને માટે કારણ ઉપ
“ કમ્મવગ્ગેણ ” કર્મવધનથી “ અપ્પાણ ” પોતાની બાતને “ વેદેતિ ” પરિવેદિત
કરે છે, એટલે કે નરક નિગોદ આદિના અનન્ત દુઃખો દેનાર કર્મોનુ ઉપાર્જન
કરે છે એવા ડોણ હોય છે ?—“ મુદ્ધરી ” જેમનુ મુખજ તેમનો શત્રુ હોય છે,
અને “ અસમિલિલ્લપ્પલાવી ” જે વિના વિચારે અનર્થક પ્રલાપ કરનાર હોય
છે તેઓ ~ પૂર્વોક્ત પ્રકારનુ અસત્ત્વ લાપણુ કરે છે ॥ સૂ-૮ ॥

ટીકા-‘પરસ્સ’ પરસ્ય=અન્ય સમ્યગ્નિ ‘અત્યમ્મિ’ અર્થે=ધને ‘ગદિયગિદ્ધા’ ગ્રથિતગદ્ધા:=અત્યન્તલોભુપા: ‘નિસ્સેવે’ નિષ્કેપાન્=ન્યાસાન્ ‘ધરોહર’ તથા ‘થાપન’ इति भाषाप्रसिद्धम्, ‘અવહરતિ’ અવહરન્તિ ‘ન હિ તયા મત્વાર્થે સ્થાપિત’ મિત્યુક્તવા સર્વથા અવગ્રપન્તિ । ‘અભિજુજતિ ય’ અભિયોજયન્તિ ચ=પરમ્ ‘અમં તપહિ’ અસદ્ધિ:=અવિધમાનેદોષ: । તથા ‘લુદ્ધા ય’ લુદ્ધાશ્વ=પરધનલોભુપા ધનલોભેન ‘કૂડસચિત્તણ’ કૂટસાક્ષિત્ય ‘કરેતિ’ કુર્વન્તિ । ચરારાદ્ ગ્રન્થિમો-ચરુત્વપદ્યતો હસ્તવાદિકમપિ વિજ્ઞેયમ્ । ‘અસન્ચા’ અસત્યા: = અમત્યવાદિન: ‘અત્યાલિય’ અર્થાલીક=અર્થાધનનાદિ પ્રયોજનાય અલીક, તથા ‘કન્નાલિય’ કન્યાલીક-કુમારી વિષયકમલીક, યથા-સુશીલા કન્યા દુ:શીલા, દુશીલા ચ સુશીલા મિત્યાદિ કથયન્તિ । इदं लोकेऽतिगर्हिततयाऽप्यात्त तेन उपलक्षणमेव-मनुष्यजातिविषयकममस्तालोक्तस्य । ‘ભોમાલીય’ ભૂમ્યલીક=પૃથિવીનિમિત્ત-મસત્ય-’ તથા ‘ગવાલિય’ ગવાલીક=ગોસમ્બન્ધિકમસત્ય ‘ગરુય’ ગુરુક

फिर वे क्या करते हैं सो कहते हैं-‘ निस्सेवे ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(પરસ્સ અત્યમ્મિ ગદિયગિદ્ધા) દૂસરોં કે ધન મેં અત્યત્ લોભુપ બને હુપ યે (નિસ્સેવે અવહરતિ) ધરોહર કો-“ તુમને મેરે પાસ નહી રહી હૈ ” એસા કહકર દવા લેતે હૈં । તથા (અભિજુજતિ ય પર અસતપહિં) દૂસરોં કો અવિધમાન દોષોં સે દૂષિત કર દેતે હૈં । (લુદ્ધા ય કૂડસચિત્તણ કરેતિ) પરધન કે લોભ સે લુદ્ધ બને હુપ યે શૂઠી ગવાહી દેતે હૈં તથા (ચ) શબ્દ સે દૂસરોં કી ગાઠ કતર લેતે હૈં તથા દેખતે દેખતે ધન મી ચુરા લેતે હૈં । (અસન્ચા) ચે અસત્યવાદી (અત્યાલિય) અર્થાલીક, (કન્નાલિય) કન્યાલીક, (ભોમાલિય) ભૂમ્ય

વળી તેઓ શુ કરે છે તે સૂત્રકાર કહે છે-“ નિસ્સેવે ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-“પરસ્સ અત્યમ્મિ ગદિયગિદ્ધા” બીજાના ધનને માટે લોભુપ બનેલા તે “ નિસ્સેવે અવહરતિ ” ધરોહરને-અનામત થાપણને પચાવી પાડવા માટે આ પ્રમાણે કહે છે-“ તમે મારે ત્યા તમારી થાપણ મૂકી જ નથી ” તથા ‘ અભિ જુજતિ ય પર અસતપહિં ” બીજા લોભાભા-તેમનામા ન હોય તેવા દોષોનુ આરોપણ કરીને તેમને કલકિત કરે છે

“ લુદ્ધા ય કૂડસચિત્તણ, કરેતિ ” ખારકાના ધનને લોભે તેઓ ખોટી સાક્ષી આપે છે તથા “ ચ ” શબ્દથી બીજાના ખીસ્સા કાપે છે અને જોત જોતામા ધન પણ ચોરી લે છે “ અસન્ચા ” તે અસત્યવાદી લોકો ‘ અત્યા લિય ” અર્થાલીક, “ કન્નાલિય ” કન્યાલીક, “ ભોમાલિય ” ભૂમ્યલીક, “

=મહદસત્ય ભગન્તિ યેન જિહ્વાઝેદનાદિક ભવતીત્યર્થઃ । 'અહરગઈગમન=અધર-ગતિગમન=અધરગતૌ ગમન યેન તત્ તથા=નરકાદ્યધોગતિગમનકારણમ્ । 'અણપિય' અન્યદપિ ચ અસત્ય ધ્રુવન્તિ, તદેવાહ-' જાઙ્કુલરૂવસીલપચયમાયાનિગુણ જાતિકુલરૂપસીલપત્યપમાયાનિગુણ=તત્ર જાતિઃ=માતૃપક્ષઃ, કુલ=પિતૃપક્ષ, રૂપમ્=

લીક, (તદ્વા) તથા (ગવાલિય) ગવાલીક, (ગરુય) વહુત અધિકરૂપ મેં (ભગન્તિ) ચોલતે હૈં । ધનાદિ પ્રયોજન કે લિયે જો ઝૂઠ વચન ઘોલે જાતે હૈં । વહ અર્થાલીક હૈં, ધનાદિ પ્રયોજન કે લિયે જો ઝૂઠ કહના હોતા હૈં વહ કન્યાલીક હૈં-જૈસે-સુશીલા કહના, ઓર દુઃશીલા કો સુશીલા કહના આદિ । પૃથિવી નિમિત્ત જો ઝૂઠ ચોલા જાતા- વહ ભૂમ્યલીક હૈં જૈસે-અનુર્વરા ભૂમિકો ડર્વરા કહના આદિ । ગાય કે વિષય મેં જો અસત્ય ચોલા જાતા હૈં ઉસકા નામ ગવાલીક હૈં, જૈસે-નહીં દૂધ દેનેવાલી ગાય કો દૂધ દેનેવાલી કહના, કમ દૂધ દેનેવાલી ગાય કો વહુત દૂધ દેનેવાલી કહના આદિ । ઇસ અસત્ય મેં જિહ્વાઝેદ આદિ દડ હોતા હૈં ઇસલિયે ઉસકો ગુરુકવડા અસત્ય કહા હૈં, તથા (અહરગઈગમન) નરક આદિ અધોગતિયોં મેં ગમન કરાને વાલે ઇસે (અણપિ) ઓર ભી વિવિધ પ્રકાર કે (જાઙ્કુલરૂવસીલપચયમાયાનિગુણ) અપની જાતિ, કુલ, રૂપ, સ્વભાવ યે હૈં કારણ જિનકે ઇસે તથા માયાનિગુણ અપ્રશનીય કી પ્રશસા-પ્રશસનીયજન ત્રી નિન્દારૂપમાયા વાલા હોને સે નિગુણ-

તથા " ગવાલિય " ગવાલીક " ગુરુય " બહુ બ વધારે પ્રમાણુમા " ભગન્તિ " બોલે છે ધન આદિને ખાતર જેજૂઠા વચનો બોલાય છે તે અર્થાલીક કહેવાય છે કન્યાની ખાખતમા જે અસત્ય કહેવામા આવે છે તે કન્યાલીક કહેવાય છે, જેમ કે સુશીલ કન્યાને દુશીલ કહેવી અને દુશીલને સુશીલ કહેવી જમીન આદિને નિમિત્તે જે જૂઠા વચનો બોલાય છે તે ભૂમ્યલીક છે જેમ કે અનુપ-બહ જમીનને ઉપબહ ખતાવી આદિ ગાયને વિષે જે અસત્ય બોલાય છે તેને ગવા-લીક કહે છે, જેમ કે દૂધ ન દેનારી ગાયને દૂધ દેનારી કહેવી, ઓછુ દૂધ દેનારી ગાયને વધુ દૂધ દેનારી કહેવી આદિ ગવાલિકના દ્વણ્વો છે આ અસત્યમા જીહ્વાનુ ઘેદન આદિ શિક્ષા થાય છે તેથી તેને ગુરુક-મોટુ અસત્ય કહેલ છે તથા " અહરગઈગમન " નરક આદિ અધોગતિયોમા ગમન કરાવનાર એવા " અણપિ " ખીજા પણ વિવિધ પ્રકારના " જાઙ્કુલરૂવસીલપચયમાયા નિગુણ " પોતાની જાતિ, કુળ રૂપ, સ્વભાવ આદિ જેના કારણે છે એવા, તથા માયાનિગુણ-અપ્રશસનીયની પ્રશસા અને પ્રશસનીય જનની નિંદારૂપ-માયાવાળા હોવાથી નિગુણ-સ્વપરહિત, એવા વચનોને બોલ્યા કરે છે માતૃ

આકૃતિઃ, શીલ ચ=સ્વભાવ, એતાનિ પ્રત્યય =કારણ યસ્ય તત્ માયાનિગુણ ચ= નિન્દનીયસ્ય પ્રશસા પ્રશસનીયસ્ય નિન્દા માયા તત્સચ્ચાદેય નિગુણ=ગુણરહિતે સ્વપરહિતાદિર્જનિત 'ચચલા' ચપલાઃ=અસ્થિરાન્તઃકરુણા' મૃપાગ્રાદિનો ભળન્તિ । પુનઃ કથ ભૂતમલીકમિત્યાહ-' પિસુણ ' પિશુન=પરદોષાવિષ્કરણરૂપ 'પરમદ્વભેદગ' પરમાર્યભેદક=પરમાર્યો=મોક્ષઃ, તત્પ્રતિગ્રાતકમ્ 'અસતક' અસત્કમ્=પરમાર્ય વર્જિત 'વિદેસ' વિદ્રેષ્યમ્=અપ્રિયમ્ 'અણત્યકારગ' અનર્થકારક=વર્માદિપુરુષાર્થ વિઘાતેન નરકગમનજનનમરણાદ્યનર્થજનક 'પાવકમ્મમૂલ=પાપકર્મમૂલ પાપ જ્ઞાના ચરણાદિકર્મ તત્કારણ 'દુદ્ધિદ્ધ' દુર્દૃષ્ટ=દુષ્ટ દષ્ટ યત્ર તત્ દુર્દૃષ્ટ=કૃત્સિતદર્શન 'દુસ્સુચ' દુઃશ્રુત=દુષ્ટ શ્રુત યત્ર તત્તથા દુશ્રુત=દુષ્ટશ્રવણમ્ 'અમુણિય' અજ્ઞાન=અજ્ઞાનરૂપ

સ્વપરહિતવર્જિત એસે વચનોં કો યોલા કરતે હેં । માતૃ પક્ષ કા નામ જાતિ, પિતૃપક્ષ કા નામ કુલ, રૂપ કા નામ આકૃતિ ઓર શીલ કા નામ સ્વભાવ હૈં । તથા (ચચલા) જો અસ્થિર અન્તઃ કરણવાલે મૃપાવાદી જન હોતે હૈં વે પિશુનાદિ વિશેષણોં વાલે અસત્ય વચન યોલતે હૈં । વે હસ પ્રકાર જો વચન (પિસુણ) પર કે દોષોં કે પ્રકટ કરને વાલે હોતે હૈં । (પરમદ્વભેદગ) પરમાર્ય-મોક્ષ કે ભેદક હોતે હૈં । (અસતક) અસત્ક પરમાર્ય સે રહિત હોતે હૈં । (વિદેસ) વિદ્રેષ્ય-અપ્રિય હોતે હૈં । (અણત્યકારગ) અનર્થકારક-વર્માદિક પુરુષાર્થ કે વિઘાતક હોને સે નરક ગમન જનન મરણાદિરૂપ અનર્થ કે ઉત્પાદક હોતે હૈં । (પાવકમ્મમૂલ) પાપકર્મ કે મૂલ-જ્ઞાનાચરણાદિરૂપ કર્મ કે કારણ-હોતે હૈં । (દુદ્ધિદ્ધ) દુર્દૃષ્ટ-દુષ્ટ દર્શનવાલે હૈં-અર્થાત્-इन वचनों द्वारा जो दर्शन प्रतिपादित किया जाता है वह कृत्सित-सदोष होता है । (दुस्सुच) दुःश्रुत होते हैं-

પક્ષને જાતિ, પિતૃ પક્ષને કુળ, રૂપને આકૃતિ અને શીલને સ્વભાવ કહે છે તથા “ ચચલા ” અચળ મનવાળા મૃપાવાદી લોકો પિશુનાદિ વિશેષણોવાળા અસત્ય વચનો બોલે છે તે આ પ્રમાણે છે જે વચન “ પિસુણ ” અન્યના દોષોને પ્રગટ કરનારા હોય છે, “ પરમદ્વભેદગ ” પરમાર્થ-મોક્ષને ભેદનાર હોય છે “ અસતક ” અસત્ક-પરમાર્થ રહિત હોય છે, “ વિદેસ ” વિદ્રેષ્ય-અપ્રિય હોય છે, “ અણત્યકારગ ” અનર્થકારક-ધર્માદિ પુરુષાર્થના વિઘાતક હોવાથી નરક ગમન જનન મરણાદિરૂપ અનર્થના ઉત્પાદક હોય છે, “ પાવકમ્મમૂલ ” પાપ કર્મનું મૂળ-જ્ઞાનાચરણીય આદિ કર્મનું-ગ્રાણ હોય છે, “ દુદ્ધિદ્ધ ” દુર્દૃષ્ટ-દુષ્ટ-દર્શનવાળા છે, એટલે કે ને વચનો દ્વારા જે દર્શનનું પ્રતિપાદન કરવામા આવે છે તે કૃત્સિત-સદોષ હોય છે, “ દુસ્સુચ ” દુશ્રુત-જેને સાબળવાનું પણ કોઈ

‘નિલ્લજ્જ’ નિર્લજ્જ=જ્જાવર્જિત ‘લોગગરહણિજ્જ’ લોગગર્હણીય = સર્વજન નિન્દનીય ‘વહનપરિકિલેસવહુલ’ વધનપરિકલેસવહુલ=તત્ર વધઃ=મારણ વન્ધ =રજાદિના વન્ધન પરિકલેસઃ=દુઃસ્વસન્તાપસ્તે વહુલા વધિકાઃ યસ્મિન્નલીકે તત્તથા મૃપાભાષણેન હિ એતે મન્ત્યેય મૃપા માષિણા ‘જરામરણદુઃસ્વમોગનેમ’ જરામરણદુઃસ્વશોકાના નેમમ્=અવધિભૂતમ્ ‘અસુદ્ધપરિણામસકિલિટ્ઠ’ અશુદ્ધ પરિણામભવિલ્પ = અશુદ્ધેન=અશુભેન પરિણામેન સકિલ્પ=વ્યાપ્તમલીક ભળન્તિ ચપલા ઇતિ પૂર્વેણ સમ્યન્વઃ ॥ સૂ ૧ ॥

કીદશાસ્તે ? ઇત્યાહ—‘અલિપા હિ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલ્મ—અલિયાહિ સધિસંનિવિટ્ઠા અસતગુણુદીરગા ય સંતગુણ નાસકા ય હિસા ભૂઓવ ઘાઙ્ય અલિયં સપઉત્તાવયણ

इनका सुनना भी कोई भी सत्यवादी पसंद नहीं करता है । (अमुणिय) ये अमनोज होते हैं । अथवा अज्ञानरूप होते हैं—इनसे वास्तविक वस्तु का बोध नहीं होता है । (निल्लज्ज) निर्लज्ज-लज्जावर्जित होते हैं—अर्थात् ऐसे वचन बोलने वालों को किसी भी प्रकार की लज्जा नहीं आती है । (लोगगरहणिज्ज) जिन वचनों की समस्त जन निन्दा किया करते हैं । (वहवधपरिकिलेसवहुल) जो इन वचनों को बोलते हैं वे व्यक्ति इन वचनों के कारण बहुत अधिक वध, वधन और परिकलेश को पाते हैं । (जरामरणदुःस्वसागनेम) ये वचन जरा, मरण, दुःस्व एवं शोक के हेतुभूत होते हैं । (असुद्धपरिणामसकिलिट्ठ) इनके बोलने वालों के परिणाम अशुभ होते हैं । इस प्रकार के असत्य वचनों को चपल पुरुष बोलते हैं ॥ सू-१ ॥

સત્યવાદી પસંદ કરતા નથી। “અમુણ્ય” તે અમનોજ હોય છે—અજ્ઞાનરૂપ હોય છે—તેમનાથી વાન્તવિદ વસ્તુનો બોધ થતો નથી, “નિલ્લજ્જ” નિર્લજ્જ લલ્લજ્જરહિત હોય છે, એટલે કે એવા વચ્ચનો બોલનારને ડોષ પ્રકારની ચારમ આવતી નથી, “લોગગરહણિજ્જ” જે વચ્ચનોની મધળા લોકો નિંદા કરે છે, “વહવધપરિકિલેસવહુલ” એવા વચ્ચનો બોલનાર માણસ તે વચ્ચનોને કારણે ઘણો વધારે વધ, બધન અને પરિકલેસ પામે છે “જરામરણદુઃસ્વ સોગનેમ” તે વચ્ચનો જરા, મરણ, દુઃખ અને શોકના હેતુભૂત હોય છે “અસુદ્ધ પરિણામસકિલિટ્ઠ” તેવા વચ્ચનો બોલનારના પરિણામ—મનોભાવ—અશુભ હોય છે આ પ્રકારના અસત્ય વચ્ચનો અચળ વૃત્તિના માણસો બોલે છે ॥ સૂ-૬ ॥

સાવજ્ઞમકુસલ સાહુગરહણિજ્ઞં અધમ્મજણં મળતિ અણહિગય-
પુણ્ણવાવા પુણો વિ અહિકરણ કિરિયપાવત્તગા વહુવિહં અનત્થ
અવમદ્ અપ્પણો પરસ્સ કરેતિ ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

ટીકા—‘અલિયાહિ સધિ સનિવિદ્ધા’ અલીકામિ સન્નિસન્નિવિદ્ધા=અલી
કવાદે યોડમિસન્નિઃ=અભિપ્રાયસ્ત્ર સન્નિવિદ્ધાઃ=સંસ્થિતાઃ ‘અસતગુણુદીરગા’
અસદ્ગુણોદીરકાઃ=અવિદ્યમાનગુણરૂઢકાઃ ‘સતગુણનાસગા ય’ સદ્ગુણનાશકાશ્વ
=વિદ્યમાનગુણાપલાપકાઃ ‘અલિયસપડત્તા’ અલીકસમ્પયુક્તા = અસત્યભાષણત
ત્પરા ‘હિંસા મ્હોવઘાઈય’ હિંસામ્હોતોપગાતિક = યસ્ય કથનેન જાયમાનયા
હિંસયા મ્હોતાના=પ્રાણિનામ્=ઉપઘાતઃ=વિનાશો યેન મળતિ તત્તાદૃશ ‘સાવજ્ઞ’
સાવઘ=સપાપમ્ ‘અકુસલ’ અકુશલમ્=સર્વપ્રાણિનામહિતકર ‘સાહુગરહણિજ્ઞ’
સાધુગર્હણીયમ્=મહાપુરુષૈસ્તીર્થંકરગણધરૈર્નિન્દિત ‘અધમ્મજણ’ અધર્મજનનમ્=
પાપોત્પાદકમ્ एतादृશ ‘વયણ’ વચન મળન્તિ । પુનઃ કય મ્હોતાસ્તે ? इत्याह-

फिर वे कैसे होते हैं सो कहते हैं—‘अलियाहि’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(અલિયાહિ સધિસનિવિદ્ધા) અલીકવાદ કે અભિપ્રાય મેં
સંસ્થિત મૃપાવાદી (અસતગુણુદીરગા) અવિદ્યમાનગુણોં કે કહને વાલે
ઔર (સતગુણનાસગા ય) વિદ્યમાન ગુણોં કે લોપ કરને વાલે હોતે હૈં
(અલિય સપડત્તા) ઇસી તરહ અસત્યભાષણ કરને મેં તત્પર બને હુए
વે (હિંસામ્હોવઘાઈય) જિનવચનોં કે કહને સે પ્રાણિયોં કા હિંસા
દ્વારા વિનાશ હો જાતોં હૈં એસે (સાવજ્ઞ, સાવઘ, (અકુસલ) સર્વ-
પ્રાણિયોં કે અહિતકારક, (સાહુગરહણિજ્ઞ) સાધુ પુરુષોં દ્વારા ગર્હણીય,
एव (અધમ્મજણ) અધર્મજનક (વયણ) વચનોં કે કહને સે (મળતિ)

વળી તે કેવા હોય છે તે સૂત્રકાર કહે છે—“અલિયાહિ” इत्यादि

ટીકાર્થ—“અલિયાહિ સધિસનિવિદ્ધા” અલીકવાદના અભિપ્રાયના રહેલ મૃપાવાદી
“અસતગુણુદીરગા” અવિદ્યમાન-અસ્તિત્વ વિનાના ગુણોનું કથન કરનાર અને
“સતગુણનાસગા ય” વિદ્યમાન ગુણોને છુપાવનાર હોય છે, “અલિયસપડત્તા”
આ રીતે અસત્ય બોલવાને તત્પર થયેલ તેઓ “હિંસામ્હોવઘાઈય” પ્રાણી
ઓની હિંસા થાય તેવા “સાવજ્ઞ” સાવઘ, “અકુસલ” સમસ્ત પ્રાણીઓનું
અહિત કરનારા “સાહુગરહણિજ્ઞ” સાધુ પુરુષો દ્વારા નિંદા અને “અધમ્મજણ”
અધર્મજનક “વયણ” વચનો “મળતિ” બોલે છે “અણહિગયપુણ્ણવાવા”

‘અળહિગયપુણપાપાઃ’ અનધિગતપુણ્યપાપાઃ = પુણ્યપાપજનિતફલજ્ઞાનત્રિકલાઃ,
‘પુણો વિ’ પુનરપિ ‘અહિરુણકિરિયાપવત્તગા’ અધિરુણક્રિયાપ્રવર્ત્તકાઃ—અધિરુણ
પાપારમ્ભઃ તસ્ય ક્રિયા=વ્યાપારઃ તસ્ય પ્રવર્ત્તકાઃ, ‘અપ્પણો પરસ્સ ય’ આત્મન
પરસ્ય ચ ‘વહુવિહ’ વહુવિધમ્ ‘અળત્થ’ અનર્થ ‘અવમદ્’ અવમર્દ્દ = વિનાશ
‘કરેતિ’ કુર્વન્તિ ॥ સુ. ૧૦ ॥

પુનઃ કિં કુર્વન્તી ? ત્યાહ—‘એવમેવે’ ત્યાદિ ।

મૂલમ્—એવમેવ જંપમાણા મહિસે સૂચકે ય સાહેતિ ઘાય
ગાળં, સસપસયરોહિસે ય સાહેતિ વાગુરાણ, તિત્તિરવટ્ટકલાવે
ય કવિજલ—કવોયગે, ય સાહેતિ સડળીણં, ઇસમગરકચ્છમે
ય સાહેતિ મચ્છિયાણં, સંઘકે સુહુણ ય સાહેતિ મગરાણ, અય-
ગર—ગોણસ—મડલિ દઠ્ઠીકર મડલી ય સાહેતિ વાલિયાણ,
ગોહા સેહા ય સહુગ સરડણ ય સાહેતિ હુદ્ધગાણ, ગયકુલ
વાનરકુલે ય સાહેતિ પાસિયાણ, સુકવરહિણમયણસાલકોદ્દલ
હસકુલે સારસે ય સાહેતિ પોસગાણ, વ્રધવધજાયણ ચ સાહેતિ
ગોમ્મિયાણં, ધળધન્નગવેલણ ય સાહેતિ તક્કરાણ, ગામનગર
પટ્ટણે ય સાહેતિ ચારગાણ પારઘાયગ પથઘાયગે સાહેતિ ગથિ
મેયાણ, કય ચ ચોરિય ણગરગુત્તિયાણં સાહેતિ લહ્ણણનિહ્ણણ-

યોલતે હૈં । (અળહિગયપુણપાવા) તથા જો પુણ્ય ઓર પાપ કે ફલ
જ્ઞાન સે રહિત હોતે હૈં । તથા (પુણો વિ અહિરુણકિરિયાપવત્તગા)
ધાર ૨ પાપારમ્ભ કી ક્રિયાઓં કે પ્રવર્ત્તક હોતે હૈં વે (અપ્પણો પરસ્સ ય)
અપના ઓર પર કા (વહુવિહ) અનેકવિધ (અળત્થ) અનર્થ ઓર
(અવમદ્) વિનાશ (વિરાઘના) (કરેતિ) કરતે હૈં ॥ સુ. ૧૦ ॥

તથા જે પુનઃ અને પાપના રૂપજ્ઞાનથી રહિત હોય છે, તથા “ પુણો વિ
અહિરુણ કિરિયાપવત્તગા ” વારવાર પાપારભની ક્રિયાઓના પ્રવર્તક હોય છે,
તે “ અપ્પણો પરસ્સ ય ” પોતાનું અને પારકાનું “ વહુવિહ ” અનેક પ્રકારે
“ અળત્થ ” અહિત અને “ અવમદ્ ” વિનાશ “ વિરાઘના ” “ કરેતિ ” કરે છે ॥ સુ. ૧૦ ॥

સાવજ્ઞમકુસલ સાહુગરહણિજ્ઞ અધમ્મજણ મળંતિ અણહિગય-
પુણપાવા પુણો વિ અહિકરણ કિરિયપાવત્તગા વહુવિહં અનત્થ
અવમદં અપ્પણો પરસ્સ કરેતિ ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

ટીકા—‘ અલિયાહિ સધિ સનિવિદ્ધા ’ અલીકામિ સન્નિસન્નિવિદ્ધા: = અલી
કવાદે યોઽમિસન્નિ: = અમિપ્રાયસ્ત્ર સન્નિવિદ્ધા: = સન્નિવિદ્ધા: ‘ અસતગુણુદીરગા ’
અસદ્ગુણોદીરકા: = અવિદ્યમાનગુણરૂપકા: ‘ સતગુણનાસગા ય ’ સદ્ગુણનાશકાશ્વ
= વિદ્યમાનગુણાપલાપકા: ‘ અલિયમપડત્તા ’ અલીકસમ્પયુક્તા = અસત્યભાષણત
ત્પરા ‘ હિંસા ભૂઓવઘાહય ’ હિંસાભૂતોપઘાતિક = યસ્ય કથનેન જાયમાનયા
હિંસયા ભૂતાના = પ્રાણિનામ્ = ઉપઘાત: = વિનાશો યેન મળતિ તત્તાદૃશ ‘ સાવજ્ઞ ’
સાવધ = સપાપમ્ ‘ અકુસલ ’ અકુશલમ્ = સર્વપ્રાણિનામહિતકર ‘ સાહુગરહણિજ્ઞ ’
સાધુગર્હણીયમ્ = મહાપુરુષૈસ્તીર્યકરગણધરૈર્નિન્દિત ‘ અધમ્મજણ ’ અધર્મજનનમ્ =
પાપોત્પાદકમ્ एताદૃશ ‘ વયણ ’ વચન મળન્તિ । પુનઃ કય ભૂતાસ્તે ? इत्याह—

ફિર વે કૈસે હોતે હૈ સો કહતે હૈ—‘ અલિયાહિ ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(અલિયાહિ સધિસનિવિદ્ધા) અલીકવાદ કે અમિપ્રાય મેં
સન્નિવિદ્ધા મૃપાવાદી (અસતગુણુદીરગા) અવિદ્યમાનગુણોં કે કહને વાલે
ઔર (સતગુણનાસગા ય) વિદ્યમાન ગુણોં કે લોપ કરને વાલે હોતે હૈ
(અલિય સપડત્તા) હસી તરહ અસત્યભાષણ કરને મેં તત્પર બને હુए
વે (હિંસાભૂઓવઘાહય) જિનવચનોં કે કહને સે પ્રાણિયોં કા હિંસા
દ્વારા વિનાશ હો જાતો હૈ એસે (સાવજ્ઞ, સાવધ, (અકુસલ) સર્વ-
પ્રાણિયોં કે અહિતકારક, (સાહુગરહણિજ્ઞ) સાધુ પુરુષોં દ્વારા ગર્હણીય,
एव (અધમ્મજણગ) અધર્મજનક (વયણ) વચનોં કે કહને સે (મળન્તિ)

બળી તે કેવા હોય છે તે સૂત્રકાર કહે છે—“ અલિયાહિ ” इत्यादि

ટીકાર્થ—“ અલિયાહિ સધિસનિવિદ્ધા ” અલીકવાદના અલિપ્રાયમા રહેલ મૃપાવાદી
“ અસતગુણુદીરગા ” અવિદ્યમાન-અસ્તિત્વ વિનાના ગુણોંનુ કથન કરનાર અને
“ સતગુણનાસગા ય ” વિદ્યમાન ગુણોંને છુપાવનાર હોય છે, “ અલિયસપડત્તા ”
આ રીતે અસત્ય બોલવાને તત્પર થયેલ તેઓ “ હિંસાભૂઓવઘાહય ” પ્રાણી
ઓની હિંસા યાચ તેવા “ સાવજ્ઞ ” સાવધ, “ અકુસલ ” સમસ્ત પ્રાણીઓંનુ
અહિત કરનારા “ સાહુગરહણિજ્ઞ ” સાધુ પુરુષોં દ્વારા નિંદા અને “ અધમ્મજણગ ”
અધર્મજનક “ વયણ ” વચનો “ મળન્તિ ” બોલે છે “ અણહિગયપુણપાવા ”

કવોયળ્ ય સાહેતિ સડળીણ ' તિત્તિરવર્તરુગવમાથ્ રુપિજ્જલરુપોતકાથ્ સાધય
 ન્તિ શાકુનિકાના, તિત્તિરા:-પ્રસિદ્ધા, ' ર્તેરકા = ' ર્તેર ' હિતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા:
 લોપકા:=આરા ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા: રુપિજ્જલા'=તન્નામરુપસિવિગ્રેષા: ' કુરજ્જ '
 ઇતિ પ્રસિદ્ધા, રુપોતકા:=પારાપતકા: ' રુત્તર ' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા: एतान्
 શાકુનિકાના=પસિયાતકાન્ પ્રતિ દર્શયન્તિ ' હ્રમમગરકચ્છમે ય સાહેતિ મચ્છિ
 યાળ ' હ્રમમરુરુચ્છપાથ્ સાધયન્તિ મત્સિકાના=શ્વપા: મત્સ્યા: મરુરુચ્છપાથ્
 =પ્રસિદ્ધાસ્તાન્ હન્નુ મત્સિકાના=મત્સ્યા: પળ્ય યેષા તે માત્સિકા ધીરાસ્તાન્
 પ્રતિ જલ્પગ્રયાદિરુ દર્શયન્તિ ' સપ્તકેસુહ્રગે ય સાહેતિ મગરાળ ' શદ્ધદ્વાન્ શુદ્ધ
 કાથ્ સાધયન્તિ મરુરાળા શદ્ધા:=પ્રસિદ્ધા અદ્ધા:=તજ્જાતીયા: શુદ્ધકા: ' કોડી '
 ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા एतान् મરુરુતુલ્યજલગ્રિહારિ ધીરાન્ કથયન્તિ ' અયગર=
 ગોળસમહલિદ્વવીકરમહલીય સાહેતિ વાલિયાળ ' અજગર ગોળસમહલિ દર્શિ-
 કર મુકુલિનશ્ચ સાધયન્તિ વ્યાલપાના=તત્ર અજગરા =પ્રતીતા: સર્પવિશેષા:, ગોળસા:
 ફળરદિતા: દ્વિમુરસર્પા:, મહલિન'=સર્પવિશેષા, દર્શિકરા'=ફળકારકા: સર્પા:,
 મુકુલિન:=દૈપત્ ફળકારકાસ્તાન્ વ્યાલપાના=વ્યાગ્રાહમાન્ પ્રતિ સર્પસ્થલાનિ
 હં (તિત્તિર ચદ્વગ લાગ્રગે ય કવિંજલરુવોયળ્ ય સાહેતિ સડળીણ) તયા
 તીતરોં કો, વડેરોં કો લાવાપવિયોં કો, કવિંજલોં કો ઓર કવૂતરોં કો
 શાકુનિકોં-હનકે મારને વાલોં કે લિયે રતલા દેતે હં (હ્રસમગરકચ્છમે
 ય સાહેતિ મચ્છિયાળ) તયા ધીવરોં-મચ્છીમારોં કે લિયે મચ્છિયોં, મગરોં
 ણ્વ કચ્છપોં કે જલાશયોં કો દિગ્વલા દેતે હં । (સપ્તકે સુહ્રગે ય
 સાહેતિ મગરાળ) તયા (મગરાળ) જલ મેં ફિરને વાલે ધીવરોં કે
 લિયે યે શાલોં કે, અકોંકે-વિશેષ પ્રકાર કે શાગોં કે, શુદ્ધકોં કે-કોડિયોં
 કે સ્થાનોં કો રતલા દેતે હં । (અયગર-ગોળસ-મહલિ-દ્વવીકર-
 મહલી ય સાહેતિ વાલિયાળ) તયા જો વ્યાલિક મપેરે-સાપ પકડને
 વાલે હોતે હં હન્ને અજગર કે, ગોળસ દુમુદી કે, મહલી કે, દર્શિકર-
 ફળા ફેલાને વાલે સાપ કે, મુકુલી-વોડે રૂપ મેં ફળા તાનને વાલે

રવદ્વગલાવગે ય કવિંજલરુવોયળ્ ય સાહેતિ સડળીણ ” તથા તેતર, ખડેરપક્ષીઓ
 લાવા પક્ષીઓ, રુપિજ્જલા અને રુપૂતર આદિ પક્ષીઓ શાકુનિકા (પારધીઓ)
 ને બતાવી દે છે “ હ્રસમગરકચ્છમે ય સાહેતિ મચ્છિયાળ ” તથા માછીમારોને
 માછલીઓ, મગરો અને કાચળા જે જળાસયોમા હોય તે જળાસયો બતાવી દે છે
 “ સપ્તકે સુહ્રગે ય સાહેતિ મગરાળ ” તથા “ મગરાળ ” જળમા કન્નાગ ધીવરોને
 રાખોના, અડોના વિશેષ પ્રકારના રાખડા અને શુદ્ધકોના-કોડીઓના સ્થાનો બતાવી
 દે છે “ અયગર-ગોળસ-મહલિ-દ્વવીકર મહલીય સાહેતિ વાલિયાળ ” તથા વ્યાલિ-
 કને સાપ પકડનારને અજગરના, જે મુખવાળા ગોળમના, મહલીના, દર્શિકરના

ધમણદુહણપોસણવણણદુવણવાહણાદિયાઈં સાહેતિ વઢૂણિ
ગોમિયાણ, ધાડ-મણિ-સિલ-પ્પવાલ-ચયણાગરે ચ સાહેતિ
આગરીણ, પુષ્કવિહિ ચ ફલવિહિ ચ સાહેતિ માલિયાણ
અત્થમહુકોસણ ચ સાહેતિ વણચરાણં ॥ સૂ. ૧૧ ॥

ટીકા—‘એમેય જપમાણા’ એમેય જલ્પન્તઃ=પૂર્વોક્તરીત્યા સાવધમનુદિ
પૂર્વક વક્ષ્યમાણં ભાષમાણા, ‘મહિસે સૂકરે ચ સાહેતિ ઘાયગાણ’ મહિષાન્
સૂકરાશ્ચ સાધયન્તિ ઘાતકાના=‘તસ્મિન્ વને યદ્યો મહિષાસૂકરાશ્ચ સન્તિ ગચ્છ
તત્રે’ ત્યાદિ તેષા ઘાતકાન્ પ્રતિ ન્યયન્તિ તથા ‘સસપમયરોહિસે ચ સાહેતિ
વાણુરીણ’ શશપસયરોહિષાશ્ચ સાધયન્તિ વાણુરિણાં=તત્ર શ્વશ્વઃ=પ્રસિદ્ધાઃ પસય=
દેશી શ્વદોષ્ય મૃગચક્ર, રોહિષાઃ=મૃગપ્રિયેષા એવ, તાન્ જાલેન મૃગઘાતકાન્
પ્રતિ ‘તત્ર મૃગા-સન્તી’તિ સાધયતિ=ન્યયન્તિ, તિત્તિરવટ્ટગલાગે ચ કવિંજલ-

ફિર કયા કરતે હેં સો કહતે હેં-‘એવમેવ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(એવમેવ) પૂર્વોક્ત રીતિ સે અનુદ્વિપૂર્વક (જપમાણા) વક્ષ્ય
માણ આગે કહે જાને વાળે સાવચ વચનોં કો કહતે હુએ વે મહિષાદિ
પ્રાણિયોં કો શિકારી કે લિયે વતલા દેતે હુએ વે હસ પ્રકાર—(મહિસે સૂકરે
ચ ઘાયગાણ સાહેતિ) મહિષોં ઓર સૂકરોં કો મરવાને કે અભિપ્રાય
સે ઘાતકોં કે પ્રતિ “ઉસ વન મે જાઓ વહા અનેક મહિષ ઓર સૂકર
હે” હસ પ્રકાર કહતે હેં । તથા (સસપમયરોહિસે ચ સાહેતિ વાણુરીણ)
શશ-ચરમોશ, પસય-મૃગ એવ રોહિષ-મૃગ વિશેષ, હનેં વાણુરિકોં-
જાલ સે પકડને વાલે મૃગ ઘાતકોં સે અર્થાત્ અહેરિયોં સે-જાઓ ઉસ
વન મેં વઢૂત સે મૃગ આદિ જાનવર હેં ઉન્હે મારો” હસ પ્રકાર કહતે

વળી તે મૃષાવાદી શુ કહે છે તે કહે છે—“એવમેવ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“એવમેવ” પૂર્વોક્ત પ્રકારે અનુદ્વિપૂર્વક “જપમાણા” આગળ કહેવામા
આવનાર સાવધ (પાપયુક્ત) વચનો કહીને તેઓ મહિષાદિ પ્રાણીઓ શિકારીને
ખતાવી દે છે તે આ પ્રમાણે છે

“મહિસે સૂકરે ચ ઘાયગાણ સાહેતિ” પાડા અને સૂવરની હુત્યા કરવાને
માટે શિકારીઓને તે કહે છે કે “આ વનમા બહો ત્યા અનેક પાડા અને
સૂવર છે” તથા “સસપમયરોહિસે ચ સાહેતિ વાણુરીણ” તથા સસલા, મૃગ
અને રોહિષ-મૃગ વિશેષ-ને બાળથી પડનાર વાઘરી આદિ મૃગઘાતકોને તે
છે કે ‘બહો, આ વનમા બહો મૃગાદિ બનવરો છે, તેમને મારો’

સાધયન્તિ ગૌલ્મિકાના-વધયન્ત્યાતન-ચ-વધઃ=મારણ વન્ધઃ=વન્ધન રજ્જ્વાદિના
યાતન=દમન ક્રશાદિભિરિત્યેતાનિ ગૌલ્મિકાનાં=કોટપાલાન્ કથયન્તિ, અપરાધા-
દિક કથયિત્વા કોટપાલાદિભિઃ યથાદિક કારયન્તીત્યર્થઃ, ધનધન્યગવેલ્લ ય
સાહેતિ તક્કરાણ 'ધનધાન્યગવેલ્લકાશ્ચ સાધયન્તિ તસ્કરાણા=ધનધાન્યગવેલ્લકાશ્ચ=
ધન ચ ધાન્ય ચ ગામશ્ચ એલકા'=મેપાશ્ચ તાન્ ચોરયિતુ તસ્કરાન્ પ્રતિ કથયન્તિ,
'ગામનગરપટ્ટણે ય સાહેતિ ચારગાણં' ગ્રામનગરપત્તનાનિ સાગ્રયન્તિ ચારકાણા
=ગ્રામાદીનિ ગુપ્તપુરપાન્ પ્રતિ ભેદાઘર્થં કથયન્તિ, 'પારઘાડ્યપથઘાડ્યાઓ સાહે તિ
ગધિભેયાણં' પારઘાતિક પથઘાતકાન્ સાધયન્તિ ગ્રન્થિભેદકાના, પારઘાતિકા
પારે=ગ્રામનગરાદિ સીમાન્તે ઘાતકાઃ - પારઘાતિકાઃ, પથિ=માર્ગે ઘાતિકા =
માર્ગઘાતકાસ્તાન્ લુપ્તિતુ ગ્રન્થિભેદકાન્=ચોરવિશેષાન્ પ્રતિ કથયન્તિ । 'કય
ચોરિયં નગરગુપ્તિયાણ સાહે તિ' કૃતા ચ ચોરિકા ચોર્યં નગરગુપ્તિકાના=કોટપા-
લાન્ સાધયન્તિ । તથા 'લઙ્ગ નિલ્લઙ્ગ ધમણ દુહણ પોસણવળણદુવળયાહણાદિ-

અપરાધોં કો પ્રકાશિત કરકે જીવોં કા કોનચાલ સે વચનધન, યાતના
કરવાતે હૈં । (ધન યત્ન ગવેલ્લ ય સાહેતિ તક્કરાણ) જો ચોર હોતે હૈં
ઉનસે મિલકર ધન, ધાન્ય, ગાય ઓર એલક-મેપોં કી ચોરી કરને કો
કહતે હૈં (ગામનગરપટ્ટણે ય સાહેતિ ચારગાણં) જો ગુપ્તચર હોતે હૈં-
ઉન્હેં ગ્રામ આદિ કા ભેદ લાને કે લિયે પ્રેરિત કરતે હૈ, અથવા ઉન્હેં ગ્રામ
આદિ કા ભેદ કહતે હૈં । (પારઘાડ્યપથઘાડ્યાઓ સાહેતિ ગધિભેયાણં)
જો ગ્રન્થિભેદક ચોર વિશેષ-અર્થાત્-ચોરી કા સાલ સ્થાને વાલે હોતે
હૈં ઉનસે પારઘાતિકોં-ગામ કી સીમાપર ઘાત કરને વાલો કો માર્ગઘા-
તકો માર્ગમેં લૂટને વાલોં કો લૂટનેકે લિયે કહતે હૈં (કય ય ચોરિય
નગરગુપ્તિયાણ સાહેતિ) કોટપાલો કે લિયે નગર આદિ મેં હુઈ ચોરી
કા પતા કહતે હૈં (લઙ્ગ-નિલ્લઙ્ગ-ધમણ-દુહણ-પોસણ-વળણ-

ઠરીને કોટવાલ પાસે જીવોના વધ કરાવે છે, બધનમા નખાવે છે અને પીડા
પહોચાડે છે " ધનધન્યગવેલ્લ ય સાહેતિ તક્કરાણ " ચોરોને મળી તેમને
ધન, ધાન્ય, ગાય અને ઘેટાઓની ચોરી કરવાનું કહે છે " ગામનગરપટ્ટણે ય
સાહેતિ ચારગાણ " ગુપ્તચરોને ગ્રામ આદિનો ભેદ શોધી લાવવા પ્રેરે છે,
અથવા તેમને ગ્રામ આદિનો ભેદ બતાવે છે " પારઘાડ્યપથઘાડ્યાઓ-
સાહેતિ ગધિભેયાણ " જે ગ્રન્થિભેદક હોય--એટલે કે ચોરીનો માલ
ખાનાર હોય છે તેમને, તથા પારઘાતિકો-ગામની સીમા પર ઘાત કર-
નારોને તથા માર્ગમા લૂટી લેનારને " કય ય ચોરિય નગરગુપ્તિયાણ સાહેતિ "
કોટવાળોને નગર આદિમા થયેલ ચોરી કરનારને બતાવવામા મદદ કરે છે

કથયન્તિ, 'ગોદાસેદાયસલ્લગમરડગે ય સાહેતિ લુદ્ગાણ' ગોધાઃ સેદાંશ્ચ શલ્યક શરટકાશ્ચ સાધયન્તિ લુ-ધકાના ગોધાઃ=શુજપરિસર્પવિશેષાઃ 'ગોદાઃ' इति भाषा प्रसिद्धाः, सेदाश्व=शुजपरिસર્પવિશેષા एव 'सहसहेली' इति भाषा प्रसिद्धास्तान्, शल्यक शरटकाश्च=शल्यकाः 'सीसोलिया' इति प्रसिद्धाः, शरटकाश्च=कृकलासाश्च 'गिरगिट' करगेटिया इति भाषा प्रसिद्धास्तान्, लु-धकाना=पापधिकान् 'शिवरी' इति प्रसिद्धान् प्रति कथयन्ति । 'गयकुलवानरकुले य साहेति पासियाण' गजकुलवानरकुलानि च साधयन्ति पाशिकाना=गजकुलानि वानरकुलानि च पाशिकाना पाशेन=गजग्रन्थ विशेषेण चरन्ति ये ते पाशिकाः गजादिग्रन्थनशरकास्तान् कथयन्ति । 'सुकवरहिणमयणसालकोइलहसकुले सारसे य साहेति पोसगाण' शुकवर्हिमदनशालकोकिलहसकुलानि सारसाश्च साधयन्ति पोपगाणा=तत्र शुकाः प्रसिद्धा, वर्हिणो मयूराः मदनशाला=सारिका, कोकिला, हसाश्च प्रतीता तेषा यानि कुलानि=वृन्दानि तानि तथा सारसाश्च, पोपगाणा=पक्षिपालकान् प्रति कथयन्ति । 'वधवधजायण च साहेति गोम्मियाण' वधग्रन्थयातन च

સર્પ કે નિવાસસ્થાનોં કો વતલા દેતે હેં । (ગોદા સેદા ય સલ્લગ સર-
ડગે ય સાહેતિ લુદ્ગાણ) ગોધા-ગોદ-સેદ-સહેલી, શલ્યક-સીસોલિયા,
શરટક-કૃકલાસ ગિરગિટ-ગિરદીલા, ઇન જીવોં કો જો શિકારી હોતેહેં ।
ઉન્હેં વતલા દેતે (ગયકુલ વાનરકુલે ય સાહેતિ પાસિયાણ) તથા પાશિક
જો ગજ આદિકોં કો પકડને વાલે હોતેહેં ઉન્હેં રાધિયોં કો વદરો કો દિગ્વલા
દેતે હેં, અર્થાત્ ઇનકે રહેને કે સ્થાનોં કો કહ દેતે હેં । (સુક વરહિણ
મયણસાલકોઇલહસકુલે સારસે ય સાહેતિ પોસગાણ) તથા-જો
પક્ષિપોષક હોતે હેં ઇનસે તોતા, મયૂર, મૈના, કોકિલ, હૈસ ઇનકે વિષય
મેં “ ઇનકો તુમ પાલો ” એસા કહતે હેં ઓર “ સારસપક્ષિયોં કો મી
પાલો ” એસી સલાહ દેતે હેં । (વધવધજાયણ ચ સાહેતિ ગોમ્મિયાણ)

इष्टा इष्टावनार साधना, मुकुलीना-थोडा प्रमाणभा इष्टा इष्टावनारा साधना
निवास स्थानो अतावी दे छे “गोदा सेदा य सल्लग सरडगे य साहेति लुद
गाण” गोधा-घो, सेड-सहेली, शल्यक-सीसोलीया, शरटक-कृकलास गिरगिट-
काश ड वगेरे लोवे शिकारीओने अतावी दे छे “ गयकुलवानरकुलेय
साहेति पासियाण ” तथा पाशिकोने-गज आदिने पकडनाराने हाथीओ तथा
वानराना निवासस्थान अतावी दे छे “ सुकवरहिणमयणसालकोइलहसकुले
सारसे य साहेति पोसगाण ” तथा पक्षीओने पाणनारने ते पोपट, मोर, मैना
कोयल, हंस वगेरे पाणवानु कहे छे अने मारस पक्षीओने पक्ष पाणवानी
सलाह आपे छे “ वधवधजायण च साहेति गोम्मियाण ” अपरा

અનિપતીન્ કથયન્તિ । તથા ‘પુષ્પવિર્હિં ફલવિર્હિં ચ સાહેતિ માલિયાણ’
પુષ્પવિર્હિં ફલવિર્હિં ચ=પુષ્પજાતિં ફલજાતિં ચ સાધયન્તિ માલિકાના=વનપાલ
કાનામ્, ‘અગ્ધમદ્દુકોસણ ય સાહેતિ વણચરાણ’ અર્ધમધુકોશકાશ્ર સાધયન્તિ
વનચરાણા=અર્પથ=મૂલ્યપ્રમાણ મધુકોશકાશ્ર=મનુષ્યવૃત્તિસ્થાનાનીત્યર્થમધુકોશકા-
સ્તાન્ વનચરાણાં=મિહાન્ પ્રતિ કથયન્તિ ॥ સૂ. ૧૧ ॥

પુનરપ્યાહ—‘જતાહ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—જંતાઈ વિસાઈ, મૂલકમ્મ આહેવણ-આવિધણ આભિ-
ઓગ-સંતોસહિપ્પઓગે ચોરિય પરદારગમણવહુપાવકમ્મકરણં
અવક્કલદેગામધાયણં, વણદહણતટાગભેયણણ વુદ્ધિવિસય વસી-
કરણમાઈયાઈ મયમરણ ફિલેસુવ્વેગજણયાઈ ભાવવહુસકિલિટ્ઠ-

કે ઉત્પત્તિસ્થાનોં કો કહતે હૈં । તથા (પુષ્પવિર્હિં ફલવિર્હિં ચ સાહેતિ માલિયાણ) જો માલી હોતે હૈં ઉન્હેં યે પુષ્પજાતિ, ફલજાતિ સમજાતેહૈં-
અર્થાત્—‘વાગમેં અમુક જાતિકા ફુલ લગાઓ, અમુક જાતિ કે ફલ ઉત્પન્ન કરો’ હસ પ્રકાર સે કહા કરતે હૈં । (અગ્ધમદ્દુકોસણ ય સાહેતિ વણચરાણ) તથા જો વનચરભીલ હૈં ઉનસે યે હસ પ્રકાર કહતે હૈં કિ તુમ શહદ યા શહદ કા છાતા હી લે આયા કરો અમુક મૂલ્ય તુન્હેં મિલ જાવેગા—ચૈઠે ૨ કયા કરતે રહતે હો । મૃધાવાદ પાપ કરને વાલે જીવ જીવોં કો વાધા આદિ પહુંચે હમકા થોડા સાં મી ધ્યાન નહીં રખતે હૈં, તથા જો જીવોં કો કષ્ટ પહુંચાને વાલે મનુષ્ય હૈં ઉન્હેં હર ઈક પ્રકાર સે જીવોં કો કષ્ટ પહુંચાને મે ઉકમાયા કરતે હૈં ॥ સૂ. ૧૧ ॥

આદિના ઉત્પત્તિ સ્થાનો જતાવે છે તથા “પુષ્પવિર્હિં ફલવિર્હિં ચ સાહેતિ માલિ-
યાણ” માળીઓને પુષ્પજાતિ તથા ફળજાતિ જતાવે છે, એટલે કે “બાગમા
અમુક જાતિના ફૂલ લગાડો, અમુક જાતિના ફળ ઉત્પન્ન કરો” એ પ્રકારની
સલાહ આપે છે “અગ્ધમદ્દુકોસણ ય સાહેતિ વણચરાણ” તથા વનમા ફરનારા
ભીડોને તે આ પ્રમાણે કહે છે “તમે મેવ અથવા મેવપુડો લાવ્યા કરો
તમને અમુક ડિમત મળશે—અમસ્તા બેસી ગ્હે શુ વળશે ?” મૃધાવાદ પાપ
કરનાર વ્યક્તિ જીવોને કદ આદિ પહોંચશે તેનું સહેજ પણ ધ્યાન રાખતી
નથી, તથા જીવોને કદ પહોંચાડનાર જે માણસો હોય છે તેમને દરેક પ્રકારે
જીવોને પહોંચાડવા ને ઉશ્કેર્યા કરે છે ॥ સૂ-૧૧ ॥

याइ साहति बहूणि गोमियाण ' लाठउननिर्लाञ्छनध्मानदोहनपोषणवननदुवनवा-
हनादिकानि साधयति बहूनि गोमिना, लाञ्छन=गयादीना टेहे तस गेदादिभिश्चिन्ध
विशेषकरण, निर्लाञ्छन=वर्धित्करण ध्मान=गयादीना शरीरे वायुपूरण दोहन
=प्रसिद्धपोषण=वचनकादिदानेन पुष्टिकरण वनन=अन्यमातरि रत्तादि सयोजन
दावनम्=उपतापन=रज्ज्यादिनापादवन्धनम् । गहन=शरटादिषु योजनमित्यादि-
कानि ' बहूणि ' बहूनि गोमता=गोपालादीन प्रति वथयन्ति, ' धाउमणिसिलप्प
वाल रयणागरे य साहेति आगरीण ' धातुमणिजिलाप्रयाकरत्नाकरान् साधयन्ति
आकरिणा=धातवः=लौहादयो मणयः=चन्द्रकातादयः, शिलाः=पाषाणा, प्रवाला
=प्रसिद्धाः, रत्नानि=मरुतादीनि, तेषामाकरा=उत्पत्तिस्थानानि, आकरिणा=

दुवण-वाहणा-दियाइ साहेति बहूणि गोमियाण) जो गोपालकजन-
गवाले होते हैं-उनसे ये (लउण) गाय आदि जानवरों के शरीर में
डाँभ देने के लिये, (निहउण) उन्हें निर्लाञ्छन-वधिया करने के लिये,
(धमण) उनके शरीर में वायु भरने के लिये, (दुहण) दोहन के लिये,
(पोसण) पोषण करने के लिये, जव चना आदि देकर पुष्ट बनाने के
लिये, (वणण) वनन-मृतवत्सा गाय को दोहन करनेके अभिप्राय से
उसके साथ दूसरी गायका बच्चा चुखाने के लिये, (दुवण) दावन-
दुहते समय दोरी से पैर आदि को बाधने के लिये और (वाहण) गाड़ी
आदि में जोतने के लिये बार २ कहा करते हैं (धाउमणिसिलप्पवालर-
यणागरे य साहेति आगरीण) जो रत्ननिपति होते हैं उनके लिये लौहा
दिक धातुओं, चन्द्रकान्त आदि मणियों पत्थरों, प्रवालों एवं रत्नादिकों

“ लछण-निहछण-धम्मण-दुहण-पोसण-वणण-दुवण-वाहणादियाइ साहेति बहूणि
गोमियाण ” गोवाणोने तेओ गाय आदिना शरीर पर डाँभ देवाने, “ निहउण ”
तेभने निर्लाञ्छन-वध्या करवाने भाटे “ धमण ” तेभना शरीरमा डुवा भर-
वाने भाटे “ दुहण ” दोहवाने भाटे “ पोसण ” पोषण करवाने भाटे जव,
अण्णा आदि आपीने पुष्ट बनानेवाले भाटे “ वणण ” वनन-के गायनु बाध
रहु भरी गयु डोय ते गायने दोहवाने निमित्ते तेने भीउ गायनु पन्थु
धवराने भाटे, “ दुवण ” दावण-देवाने वणते दोरडा वडे पग आदि बाध
वाने भाटे अने “ वाहण ” गाडी आदि वाहने लोडवाने भाटे बार बार कडा
करे छे “ धाउ मणिसिलप्पवालरयणागरे य साहेति आगरीण ” आण्णाना भादि
केने दोण्ड आदि धातुओ, चन्द्रकान्त आदि मणीओ, पत्थरो, प्रवालो अने रत्न

સ્ત્રીપતીન્ કથયન્તિ । તથા ‘પુષ્પવિહિં ફલવિહિં ચ સાહેતિ માલિયાણ’
પુષ્પવિહિં ફલવિહિં ચ=પુષ્પજાતિ ફલજાતિ ચ સાધયન્તિ માલિકાના=વનપાલ-
કાનામ્, ‘અગ્ધમદુકોસણ ય સાહેતિ વણચરાણ’ અર્ધમધુકોશકાશ્ર સાધયન્તિ
વનચરાણા=અર્ધશ્ર=મૂલ્યપ્રમાણ મધુકોશકાશ્ર=મનુષ્યવૃત્તિસ્થાનાનીત્યર્થમધુકોશકા-
સ્તાન્ વનચરાણા=મિટ્ટાન્ પ્રતિ કથયન્તિ ॥ સૂ. ૧૧ ॥

પુનરપ્યાહ—‘જતાઈ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—જંતાઈ વિસાઈ, મૂલકમ્મ આહેવણ-આવિધણ આભિ-
ઓગ-મંતોસહિપ્પઓગે ચોરિય પરદારગમણવહુપાવકમ્મકરણ
અવક્કલદેગામધાયણં, વણદહણતટાગમેયણણ વુદ્ધિવિસય વસી-
કરણમાહ્યાઈ મયમરણ કિલેસુવ્વેગજણયાઈ ભાવવહુસકિલિટ્ઠ-

કે ઉત્પત્તિસ્થાનોં કો કહતે હૈં । તથા (પુષ્પવિહિં ફલવિહિં ચ સાહેતિ માલિયાણ) જો માલી હોતે હૈં ઉન્હેં યે પુષ્પજાતિ, ફલજાતિ સમજાતેહૈં-
અર્થાત્—‘ ધાગમેં અમુક જાતિકા ફુલ લગાઓ, અમુક જાતિ કે ફલ ઉત્પન્ન કરો ’ હસ પ્રકાર સે કહા કરતે હૈં । (અગ્ધમદુકોસણ ય સાહેતિ વણચરાણ) તથા જો વનચરમીલ હૈં ઉનસે યે હસ પ્રકાર કહતે હૈં કિ તુમ શહદ યા શહદ કા ડાતા હી લે આયા કરો અમુક મૂલ્ય તુમ્હેં મિલ જાવેગા—પૈઠે ૨ ઝયા કરતે રહતે હો । મૃપાવાદ પાપ કરને વાલે જીવ જીવોં કો વાધા આદિ પહુંચે હમકા થોડા સા મી ધ્યાન નહી રખતે હૈં, તથા જો જીવોં કો કષ્ટ પહુંચાને વાલે મનુષ્ય હૈં ઉન્હેં દર ઇક પ્રકાર સે જીવોં કો કષ્ટ પહુંચાને મેં ઉકમાયા કરતે હે ॥ સૂ. ૧૧ ॥

આદિના ઉત્પત્તિ સ્થાનો બતાવે છે તથા “ પુષ્પવિહિં ફલવિહિં ચ સાહેતિ માલિ-
યાણ ” માળીઓને પુષ્પજાતિ તથા ફળજાતિ બતાવે છે, એટલે કે “ બાગમા
અમુક જાતિમા ફૂલ ઉગાડો, અમુક જાતિના ફળ ઉત્પન્ન કરો ” એ પ્રકારની
મલાહ આપે છે “ અગ્ધમદુકોસણ ય સાહેતિ વણચરાણ ” તથા વનમા ફરનારા
ભીડોને તે આ પ્રમાણે કહે છે “ તમે મધ અથવા મધપુડો લાવ્યા કરો
તમને અમુક ડિંમત મળશે—અમન્તા બેસી ગ્ધે શુ વણશે ? ” મૃપાવાદ પાપ
કરનાર બુદ્ધિ હોવાને કષ્ટ આદિ પહોંચશે તેનું મહેલ પણુ ધ્યાન રાખતી
નથી, તથા હોવાને કષ્ટ પહોંચાડનાર ને માણસો હોય છે તેમને દરેક પ્રકારે
હોવાને કષ્ટ પહોંચાડવા ને ઉશ્કેર્યા કરે છે ॥ સૂ-૧૧ ॥

याइ साहति बहूणि गोमियाण ' लाठउननिर्लाठउनध्मानदोहनपोषणवननदुवनवा-
हनादिकानि साधयन्ति ऋणि गोमिना, लाठउन=गवादीना टेहे तप्तगोदादिभिश्चिन्त
विशेषकरण, निर्लाठउन=अर्धित्करण ध्मान=गवादीना शरीरे वायुपूर्णं दोहन
=प्रसिद्धपोषण=पचयणकादिदानेन पुष्टिकरण वनन=अन्यमातरि वृक्षादि सयोजन
दावनम्=उपतापन=रज्ज्वादिनापादय-धनम् । गहन=शरटादिषु योजनमित्यादि
कानि ' ऋणि ' बहूनि गोमिता=गोपालादीन् प्रति कथयन्ति, ' धाउमणिसिलप्प
वाल रयणागरे य साहेति आगरीण ' धातुमणिशिलाप्रशालरत्नाकरान् साधयन्ति
आकरिणा=धातयः=लौहादयो मणयः=चन्द्रका तादयः, शिवाः=पाषाणा, प्रवाला
=प्रसिद्धाः, रत्नानि=मरुतादीनि, तेषामाकरा=उत्पत्तिस्थानानि, आकरिणा=

दुवण-वाहणा-दियाड साहेति ऋणि गोमियाण) जो गोपालरुजन-
गवाले होते हैं-उनसे ये (लठउन) गाय आदि जानवरों के शरीर में
डाभ देने के लिये, (निळठउन) उन्हे निर्लाठउन-वधिया करने के लिये,
(धमण) उनके शरीर में वायु भरने के लिये, (दुहण) दोहन के लिये,
(पोसण) पोषण करने के लिये, जप चना आदि देकर पुष्ट बनाने के
लिये, (वणण) वनन-मृतवत्सा गाय को दोहन करनेके अभिप्राय से
उसके साथ दूसरी गायका घच्चा चुसाने के लिये, (दुवण) दावन-
दुहते समय दोरी से पैर आदि को बाधने के लिये और (वाहण) गाड़ी
आदि में जोतने के लिये वार २ कहा करते हैं (धाउमणिसिलप्पवालर-
यणागरे य साहेति आगरीण) जो खनिपति होते हैं उनके लिये लौहा
दिक धातुओं, चन्द्रकान्त आदि मणियों पत्थरों, प्रवालों एवं रत्नादिकों

“ लठउन-निळठउन-धम्मण-दुहण-पोसण-वणण-दुवन-वाहणादियाइ साहेति बहूणि
गोमियाण ” गोवाणोने तेओ गाय आदिना शरीर पर डाभ देवाने, “ निळठउन ”
तेभने निर्लाठउन-वध्या करवाने भाटे “ धमण ” तेभना शरीरमा डवा भर-
वाने भाटे “ दुहण ” दोहवाने भाटे “ पोसण ” पोषण करवाने भाटे जव,
अण्णा आदि आभीने पुष्ट बनानेवाले भाटे “ वणण ” वनन-के गायनु वाछ
रडु भरी गयु छाय ते गायने दोहवाने निमित्ते तेने णीण गायनु अन्त्यु
धवराववा भाटे, “ दुवण ” दावण-दोवाने वणते दोरडा वडे पण आदि बाध
वाने भाटे अने “ वाहण ” गाडी आदि वाडने ओडवाने भाटे वारवार कट्टा
करे छे “ धाउ मणिसिलप्पवालरयणागरे य साहेति आगरीण ” आण्णाना भादि
ओने लोण्ड आदि धातुओ, चन्द्रकान्त आदि मण्णो, पत्थरो, प्रवालो अने रत्न

पापकर्मसमाचरणम्, तथा 'अवस्वदे' अस्क्रन्दान्=सैन्यशिविरादिभिराक्रमणेन-
परमलमर्दनानि धाटीकर्मकरणानि या 'गामगायण' ग्रामघातन=ग्रामादिनाशन
'वणदहणतडागभेयण' वनदहन-तडाग-भेदनानि=वनज्वालनानि जलाशय
ध्वंसनानि च 'बुद्धिविसयवसीकरणाइयाइ' बुद्धिविषयवसीकरणानि परस्य
बुद्धेर्विषयस्य च शब्दादेः वसीकरणानि=मन्त्रादिप्रयोगेषु स्वायत्तीकरणानि 'भय
मरणकिलेसुव्वेगजणयाइ' भयमरणकिलेशोद्वेगजननानि भय च मरण च क्लेशश्च
शारीरिकउद्वेगश्च=हार्दिक दुःखमित्येतेषां जनकानि तथा 'भावबहुसकिल्लिद्ध-
भावमलिणाणि' भावबहुसकिल्लिष्टमलिनानि=भावेन=अध्यवसायेन बहुसन्निष्टेन=
अतिशयपरसन्तापजनकेन मलिनानि=क्लृपितानि तथा 'भूयघाओवघाइयाइ'
भूतघातोपघातकानि=भूतानां प्राणिनां घातः=साक्षात् हनन उपघातश्च=परम्परया-
हनन तौ येषु तानि भूतघातोपघातकानि पूर्वोक्तानि 'सच्चाणिवि' सत्या-

करने को, तथा (अवस्वदे) सैन्य शिविर आदिके द्वारा आक्रमण
करके पर के बलको मर्दन करने रूप कर्म को अथवा धाड़पाड़ने रूप
इकैतीकर्म को, (गामगायण) ग्रामघातकरूपकुहृत्य को, (वणदहणत-
डागभेयण) जंगलो मे आग लगाने रूप, तथा जलाशयों को ध्वंस
करने रूप कुहृत्यों को, (बुद्धिविसयवसीकरणमाइयाइ) मन्त्रादिकों के
प्रयोग से पर की बुद्धि को, एवं शब्दादिक पदों इन्द्रियों के विषयों को
स्ववश करने रूप अकृत्यों को कोई पूछे अथवा न पूछे तो भी बताया
करते हैं, तथा (भयमरणकिलेसुव्वेगजणयाइ) भय, मरण, क्लेश,
उद्वेग, इनके उत्पादक असत्यवचनों को, तथा (भावबहुसकिल्लिद्धमलि-
णाणि) अत्यन्त सकलित अतिशयरूपमे पर को सन्तापजनक, ऐसे अध्य-
वसाय से मलिन हुए तथा (भूयघाओवघाइयाइ) प्राणियों के साक्षात्

आदि द्वारा आक्रमण करीने अन्यथा गणनु मर्दन करवाइय उर्भ तथा धाड़
पाड़वाना उर्भने, "गामगायण" ग्राम लागवाइय कुहृत्यने, "वणदहणतडाग
भेयण" जंगलोमा आग लगाउवाना तथा जलाशयेने तोड़ी पाउवाना कुहृत्यने,
"बुद्धिविसयवसीकरणमाइयाइ" मन्त्रादिना प्रयोगशी पारकानी बुद्धिने, अने,
शब्दादिक पात्रे इन्द्रियोना विषयोने पोताने वश करी लेवा इय कुहृत्यने कोइ
पूछे अथवा न पूछे तो पण ते मृषावादी गताव्या उरे छे, तथा "भय मरण
किलेसुव्वेगजणयाइ" अथ मरण, क्लेश, उद्वेग आदि उत्पन्न करनार असत्य
वचनो, तथा "भावबहुसकिल्लिद्धमलिणाणि" अत्यन्त सकलित, अन्यने
अतिशय सन्तापजनक जेवा अध्यवसायशी मलिन थयेत तथा "भूयघाओव

मलिणाइं मूयघाओवघाइयाइ सच्चाणि वि ताइं हिंसगाइं
वयणाइ उयाहरति पुट्टा वा अपुट्टा वा ॥ सू० १२ ॥

टीका—‘जताइ’ यन्त्राणि तिलनिष्पीडनादि यन्त्राणि उदाहरन्तीति वक्ष्य-
माणेन सम्बन्धः । ‘विसाइ’ विपाणि=क्षणमात्रप्राणहारस्तापृष्टमर्पादीनि स्था-
वरजङ्गमभेदानि । मूलकम्मआहेवणआविषणआभिओगमतोसहिप्पओगे’ मूल
कर्माक्षेपणार्थनाभियोग्यमन्त्रोपधिप्रयोगान्=मूलकर्म=गर्भवातनादिकम्, अथवा
मूलनक्षत्रादि जातस्य तदोपशान्त्यर्थ स्नानकर्मादिकम्, आक्षेपण=नगरादि क्षो-
भोत्पादनम्, आवर्धन=धनादीना मन्त्रप्रयोगेण हरण आभियोग्य च=वशीकरणादि
तच्च द्रव्यतो द्रव्यसयोगजनित भावतो विद्यामन्त्रादिसजात वलात्कारजनित वा,
तथा मन्त्रोपधिप्रयोगान् मन्त्रप्रयोगान् औपधिप्रयोगाश्च, तथा ‘चोरियपरदार
गमणउहुपावकम्मकरण’ चौर्यपरदारगमनउहुपावकर्मकरण = चौर्यपरस्त्रीगमनादि

फिर भी कहते हैं—‘जताइ विसाइ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(जताइ) यन्त्रों को—तिल आदि के निष्पीडन कोल्ट आदि
पदार्थों को (विसाइ) क्षणमात्र में प्राणों को नष्ट करने वाले तालपुट,
सर्प आदि स्थावर जगम विषोंको (मूलकम्म—आहेवण—आविषण—
आभिओग—मतोसहिप्पओगे) गर्भवातन आदि रूप मूलकर्म को, अथवा
मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुए बालक के दोषशान्ति के लिये स्नान कर्म आदि
को, नगरादिक में क्षोभोत्पादनरूप आक्षेपण को, मन्त्र के प्रयोग से
धनादिकों के हरणरूप आवर्धन को, वशीकरणादिरूप आभियोग्य कर्म
को, तथा मन्त्र प्रयोगों को, औपधि के प्रयोगों को तथा (चोरियपरदार
गमणउहुपावकम्मकरण) चोरी, परदारगमन आदि रूप पापकर्मों के

६७ पञ्च सूत्रकार कहे छे—“जताइ विसाइ” इत्यादि

टीकार्थ—“जताइ” तेल आदि पीनवाना घाण्टी आदि पदार्थोंने “विसाइ”
ओक क्षणमात्र प्राण डरी लेनार तालपुट, सर्प आदि स्थावरजगम विषोंने,
“मूलकम्म—आहेवण आविषण—आभिओग—मतोसहिप्पओगे” गर्भवातन आदि
रूप मूलकर्मने, अथवा मूलनक्षत्रमा जन्मेला पाणज्जी दोषशान्ति भाटे स्नान
कर्म आदिने, नगरादिमा क्षोभ उत्पन्न करवाइए आक्षेपणने, मन्त्रप्रयोग वडे
धनादिना हरणरूप आवर्धनने, वशीकरणादिरूप आभियोग्यकर्मने, तथा मन्त्र
प्रयोगोंने, औपधि प्रयोगोंने तथा “चोरियपरदारगमणउहुपावकम्मकरण”
चोरी, परदारगमन, आदि पापकर्मों करवाने, तथा ‘अवक्खदे’ शिबिर

પુનરપ્યાહ—‘ પરતત્તિ ’ इत्यादि ।

મૂલ્ય—પરતત્તિવાવડાય અસમિત્તિસ્વયમાસિણો ઉવદિસંતિ
 સહસાઉદા—ગોળા—ગવયા દમતુ, પરિણયવયા અસ્તા હત્થીગ-
 વેલગકુઠ્ઠા ય કિજ્જતુ કિણાવેહ નિક્કેહય પચહ સયણસ્સ દેહ
 પીયહ દાત્તીદાસ—મયગ—માહલ્લગા ય સિસ્તા ય પેસકજણો
 કમ્મકરા કિકરા ય ઇય મયણપરિજણા ય કીસ અચ્છતિ
 મારિયા મે કરેતુ કમ્મ, ગહણાઈ વણાઈ ચિત્તચિલમૂમિવલ્લ-
 રાઈ ઉત્તણવણસકડાઈ ડઙ્ગતુ સૂઢિજ્જતુ ય રુમ્મા મિજ્જતુ
 જતાઈ મંડાઈયસ્સ ઉવહિસ્સ કારણાણ, વહુવિહસ્સ અટ્ટાણ
 ઉચ્છૂ દુજ્જતુ પીલિજ્જતુ ય તિલા, પયાવેહ ઇટ્ઠયાઓ મમ ઘરદ્ધ
 યાણ ચિત્તા ય કસહ કસાવેહ વા, લહુ ગામનગરખેડકવ્વડે
 સનિવેસેહ, અડવીદેસેસુ વિડલસીમે, પુણ્ણાણિ ફલાનિ ય કદ-
 મૂલાઈ કાલપત્તાઈ ગિણ્ણહ, કરેહ સચય પરિજણસ્સ અટ્ટાણ ॥ ૧૩ ॥

મી પૃથે તો સી ચતાગા કરતે હે । જિન વચનો સે મધ મરણ આદિ
 ઉપદ્રવ પડે હો જાવે, દુનરોંકો સુનકર ડિન સે વિત્ત મે મલિનતા આ
 જાવે, તેસે વચન મી વે વોલ દિયા કરતે હે । સત્ય હોને પર મી જો
 પ્રાણિયો કે પ્રાણો જો રાકટ મે જાલ વંતે હો—પ્રાણિયોની સાક્ષાત્ અથવા
 પરમ્પરા સે દિસા કે જો સામનશ્રુત વનને હો તેસે સબ હી વચન અસ-
 ત્ય હી હૈ, ઔર ઉન્હે ચે અસત્યવાદીજન વોલા કરતે હૈ ॥ સૂ. ૧૨ ॥

વિષે મૃપાવાદી માગમને ઝોઈ પૃથે કે ન પૃથે તો પણ તે બતાવ્યા કરે છે
 જે વચનોથી લય, મળુ આદિ ઉપદ્રવ પેદા થાય, જે વચનો ગાલગીને અન્યના
 મનમા મલિનતા ઉત્પન્ન થાય, એવા વગનો પણ તેઓ બોલ્યા કરે છે સત્ય
 હોવા છતાં પણ જે વચનોથી પ્રાણીઓના પ્રાણ લયમા મૂકાય—પ્રાણીઓની સાક્ષાત્
 હિંસાના અથવા પરપરાથી હિંસાના જે કાળવૃક્ષ બનતા હોય એવા બવા વચનો
 અસત્ય ન હે, અને તે અસત્યવાદી માણુમ તેવા વચનો બોલ્યા કરે છે ॥ સૂ. ૧૩ ॥

ન્યપિ=સ્વરૂપતસ્તથ્યાન્યપિ, કિન્તુ-અપિ-નિધયેન 'હિંસગાઢ' હિંસકાનિ=પરિ
ણામતઃ પ્રાણિપ્રાગોપઘાતકાનિ તમ્માદસત્યસ્વરૂપાણિ, 'વચનાઢ' વચનાનિ, 'પુઢા
વા અપુઢા વા' પૃઢા વા કેનાપિ, અપૃઢા વાઽપિ-અલીકયાદિનઃ 'ઉચાહરતિ'
ઉદાહરન્તિ=રૂથયન્તિ ॥ સૂ. ૧૨ ॥

અથવા પરમ્પરા રૂપ સે ઘાત કરને વાલે જેસે (સત્ચાણિ ત્રિ) સ્વરૂપ સે
સત્ય મી હો કિન્તુ નિઢ્યપ મેં (હિંસગાઢ) પરિણામતઃ પ્રાણિયોં કે
પ્રાણોં કે ઉપઘાતક હોને કે કારણ અસત્ય સ્વરૂપ તી હોતે હેં । જેસે
(વચનાઢ) વચનોં કો (પુઢા વા અપુઢા વા) અસત્યવાદી જન વાહે ઉનસે
કોઈ પૂછે અથવા ન પૂછે તો મી (ઉચાહરતિ) કહ દિયા કરતે હેં ।

ભોવાર્થ—મૃપાવાદીજન અનેકવિગ્ર પ્રાણિપીડક યત્રો કો બનાવે
લિયે, વિવિધ પ્રાકર કે વિષોં કા નિર્માણ કરને કે લિયે દૂસરોં કો
ઉપાય વતલાયા કરતે હેં । ગર્ભ કા પનન કેસે ક્રિયા જાના હે, નગરા
દિકોં મેં ક્ષોભ ઉત્પન્ન કેસે હો સકતા હે, દૂસરોં કો વશ મેં કેસે ક્રિયા
જા સકતા હે, ચોરી કરને કે ત્રયા ૨ સાધન હેં, પરસ્ત્રીગમન કરને કા
કયા ઉપાય હે, દૂસરોં કો સેના કો કેસે પરાસ્ત ક્રિયા જાતા હે, ગ્રામ
આદિ મેં ઉપદ્રવ કેસે ઉત્પન્ન ક્રિયા જાતા હે, જગલ આદિ મેં આગ
લગાના, તડાગ આદિ જલાશયોં કો શુષ્ક કરના-સૂચના, ઇત્યાદિ સર્વ
પ્રકાર કે ઇષ્ટ પ્રયોગોં કો મૃપાવાદી જન વાહે ઉનસે કોઈ પૂછે અથવા ન

વાહ્યાઢ " પ્રાણીઓના સાક્ષાત ઘાત કરનાર અથવા પરમ્પરા રૂપે ઘાત કરનાર
એવા " સત્ચાણિ ત્રિ " સ્વરૂપ સત્ય હોય તો પણ અવશ્ય " હિંસગાઢ " પરિ
ણામ લેતા પ્રાણીઓના પ્રાણોની હત્યા કરનાર હોવાથી અસત્ય સ્વરૂપ જ હોય
છે એવા " વચનાઢ " વચનો " પુઢા વા અપુઢા વા " અસત્યવાદી માણસ
તેને કોઈ પૂછે કે ન પૂછે છતાં પણ " ઉચાહરતિ " બોલ્યા કરે છે

ભાવાર્થ—મૃપાવાદી માણસ અનેક પ્રકારના પ્રાણીપીડક યત્રો બનાવવાને
માટે તથા વિવિધ પ્રકારના વિષ બનાવવાને માટે બીજા લોકોને ઉપાયો બતા
વ્યા કરે છે ગલખાત કેવી રીતે કરાવાય છે, નગર આદિમા કેવી રીતે શોભ
ઉત્પન્ન કરી શકાય છે, બીજાને કેવી રીતે વશ કરી શકાય છે, ચોરી કરવાના
કયા કયા સાધનો છે, પરસ્ત્રીગમન કરવાના કયા કયા ઉપાય છે અન્યના સૈન્યને
કેવી રીતે પરાસ્ત આપી શકાય છે, ગ્રામ આદિમા કેવી રીતે ઉપદ્રવ પેદા
કરી શકાય છે, જગલ આદિમા કેવી રીતે આગ લગાડાય છે, તળાવ આદિ
જલાશયોને કેવી રીતે સૂકવી નખાય છે, ઇત્યાદિ સર્વ પ્રકારના ગો

‘ પીયહ ’ પિયત=મદિરાદિક ‘ દાસીદાસભયગભાઈહા ’ દાસીદાસમૃતકમા
ગિકા:=દાસ્ય:=સેવિકા: દાસા:=પ્રસિદ્ધા:, મૃતમા:=મૃત્યા-મક્તદાનાદિના પો-
પિતા, માગિકા = યનાદેશ્વતુર્યાદિ ભાગગ્રાહકા. ‘ સિસ્મા ય ’ શિષ્યાશ્વ=પ્રસિદ્ધા:
‘ પેસકજનો ’ પ્રેપ્યકજન = કાર્યપ્રયોજનેષુ પ્રેષણીયો જન ‘ કમ્મકરા ’ કર્મકરા=
નિયતકાલ કર્મકુર્વન્તિ યે તે કર્મકરા:, ક્રિકરાશ્વ=પ્રત્યર્પકકાર્યકારિણ: ‘ એ ’
એતે ‘ સયણપરિજણે ’ વ્યજનપરિજનાશ્ચ સ્વજના માતાપિતૃભ્રાતાદય:, પરિજના:
=સમ્યન્ધિન: ‘ ક્રીસ ’ કસ્માત્ કારણાત્ ‘ અન્ઝતિ ’ આસતે=કાર્ય પરિત્યજ્યોપવિષ્ટા:
સન્તિ ‘ મે ’ મયતા ‘ મારિયા ’ મારિકા.=મારયાદિન ‘ કમ્મ ’ કર્મ ‘ કરેતુ ’
કુર્વન્તુ, તથા ‘ ગહણાઈ ણાઈ ’ ગહનાનિ યનાનિ ‘ રિત્તિલિલ્લમ્મિવલ્લરાઈ ’ ક્ષેત્ર

દેહ) માસાદિકો અપને સ્વજન સર્વગિયોંકે લિયે દિયા કરો, (પીયહ)
મદિરાદિ કા પાન ક્રિયા કરો, (દાસીદાસ ભયગભાઈહા ય સિસ્મા ય
પેસકજનો કમ્મકરા ક્રિકરા ય એ સયણપરિજણા ય ક્રીસ અન્ઝતિ)
ચે તુમ્હારે દાસી, દામ, મૃત્ય ભાગીદાર, શિષ્યજન, પ્રેપ્યકજન, કર્મકર
ઔર ક્રિકર તથા સ્વજન પરિજન ક્રિસ કારણ સે અપને ૨ કામ કો-
છોડ કર વૈઠે હુમ્ હૈ । ઇનમેં કઠિન શબ્દોકા અર્થ ઇસ પ્રકાર હૈ-અપને
ઘર પર હી જો મોજનાદિ સે પુષ્ટ ક્રિયે જાતે હે વે મૃત્ય હૈ । કોઈ પ્રયો-
જન વશ જો કામકે લિયે મેજે જાતે હે વે પ્રેપ્યકજન હૈ । નિયત કાલતક
જો મજૂરી કરતે હે વે કર્મકર હે । પ્રત્યર્પક પ્રકર કામ કરનેવાલે જન
ક્રિકર હે । માતા પિતા જાઈ આદિ સ્વજન સમ્યન્ધીજન આદિ પરિજન હૈ ।
(મે મારિયા કમ્મ કરેતુ) તુમ મારિક-અપને મારદોનેવાલે મનુષ્યો સે-

ખરીદ ડગલો, તથા “ ત્રિક્કેહ ” વેશો, અને “ પચહ ” ઓઢનાદિ (ભાત વિગેરે)
શબ્દો “ સયણસ્સ દેહ ” મામ આદિ તમારા મગા મળ ધીને ભોજનમા ખીરસો
“ પીયહ ” મદિકા (દાર) આદિ પાન કરો, “ દાસીદાસભયગભાઈહા ય સિસ્મા ય
પેસકજનો કમ્મકરા ક્રિકરા ય એ સયણપરિજણા ય ક્રીસ અન્ઝતિ ” એ તમારા
દાસી, દામ, મૃત્ય, ભાગીદાર, શિષ્યજન, પ્રેપ્યકજન, કર્મકર તરફ અને સ્વજન
પરિજન તથા ઘરણે પોત પોતાના કામો ડોડીને બોલ છે । ઉપરના સૂત્રમા
આવેલ કઠિન શબ્દના અર્થ આ પ્રમાણે છે-પોતાને ઘેર જ ભોજનાદિ આપીને
જેમનુ પોષણ કરાય છે, તે લોકોતે મૃત્ય કહે છે । કોઈ પ્રયોજનથી જેમને કોઈ
કામ મોડલાય છે તેમને પ્રેપ્યજન કહે છે । નક્કી કરેલા સમય સુધી જે મજૂરી કરે
છે તેમને કર્મકર-કામીગ કહે છે । પૂઠી પૂઠીને કામ કરનારા મેવડોને ક્રિકર કહે
છે । માતા પિતા ભાઈ આદિ સ્વજન ગણાય છે, સમઘીઓને પરિજન કહે છે
“ મે મારિયા કમ્મ કરેતુ ” તમે ભારિયા-આપણો ભાર વહન કરનારા પાસે

ટીકા—‘પરત્તિચાવડાય’ પરત્તિચિવાપૃતાથ = પરપસનતાકરણતત્પરાઃ
 અથવા પરત્તિચિવાપૃતાઃ=પરચિન્તાપરાયણા તા ‘અસમિચિવયમાસિણો’ અમમી
 સિતમાપિણઃ=અપર્યાલોચિતચક્રારઃ ‘ઉવદિસતિ’ ઉપગ્રિન્તિ=ગાપયન્તિ સહસા
 =અકસ્માત્ અકારણમેવેત્યર્થઃ તદેવાહ-યત્ ‘ઉદ્દા’ ઉદ્દાઃ=પ્રગિદ્ધાઃ ‘ગોણા’ ગાવઃ
 ગલીવર્દા, ગવયાઃ=ગોસદૃશા ગ્વયા ‘રોક્ષ’ રક્ષિત્તિ માપા પ્રસિદ્ધા પશુવિશેષા
 ‘દમતુ’ દમ્યતા=એતે શિક્ષ્યન્તામ્ । તથા ‘પરિણયવયા’ પરિણતવયમ=તરુણાઃ
 ‘અસ્તા’ અશ્વાઃ ‘હત્થી’ હસ્તિન=પ્રસિદ્ધા ગવેલકાઃ=મેવાઃ ‘કુમ્કુડા’
 કુવકુડાથ=પતીતાઃ ‘વિજ્જતુ’ ક્રોચન્તા=મૂલ્યેન ગૃહ્યન્તા ‘કિનાવેહય’ ક્રાપયત=
 પૂર્વોક્તાનામેવ ક્રયણ કારયત ‘નિસ્કેહ’ નિરીણીય=નિઘાય કુરુત ‘પચહ’
 પચત=પાકુ કુરુત તથા ‘મયણસ્સ’ સ્વજનાય ‘દેહ’ દત્ત=માસાદિકુ દીયતા

ફિર મી કહતે હૈ—‘પરત્તિ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(પરત્તિચાવડાય) જો દૂસરો કો પ્રસન્ન કરને મેં તત્પર
 રહતે હૈ, અથવા પર કો ચિન્તા મેં પરાયણ રહા કરતે હૈ વે (અસમિ
 ચિવયમાસિણો) વિના વિચારે હી ગોલ દિયા કરતે હૈ, ટસ ઘાત કા વે
 વિચાર નહી કરતે હૈ કિ હમારે હન વચનોં સે દૂસરે પ્રાણિયોં કો કષ્ટ
 હોગા, (મહસા ઉવદિસતિ) વિના કારણ કે હી યો દૂસરો સે રુહ દેતે
 હૈ કિ તુમ લોગ (ઉદ્દાગોણાગવયા દમતુ) ઝૂંટોં કો, વૈલોં કો તારોક્ષોં
 કો દમનકરો-અચ્છી ચાલ ચલના સિલ્લાઓ (પરિણયવયા અસ્તા
 હત્થી ગવેલકા કુવકુડા કિજ્જતુ) તરુણ, ઘોડે, હાથી, મેવ, કુકુટ, હન
 જાનવરોં કો સ્વય સ્વરીદોં ઓર (કિનાવેહ) દૂસરો કો પરીદવાઓ
 તથા (નિસ્કેહ) વેવો ઓર (પચહ) ઓડનાદિ પક્ષાઓ (મયણસ્સ

તે વિષે હજી પણ સૂત્રકાર કહે છે— “પરત્તિ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“પરત્તિ ચાવડાય” જે બીજા લોકોને ખુશ કરવાને આતુર
 હોય છે, અથવા પારજાની ચિન્તામા પરાયણ રહે છે, તેઓ ‘અસમિચિ
 વમાસિણો’ વિચાર કર્યા વિના બોલ્યા કરે છે તેઓ એવો વિચાર કરતા
 નથી કે અમાગ આ વચનોથી બીજા પ્રાણીઓને કષ્ટ પહોચશે “સહસા
 ઉવદિસતિ” તેઓ વિના કારણ બીજા લોકોને કહે છે કે તમે “ઉદ્દાગોણા
 ગવયા દમતુ” ઉટોનુ, બળદોનુ તથા રોજોનુ દમન કરો-માગી ચાલ ચાલતા
 શિખવો “પરિણયવયા અસ્તા હત્થી ગવેલકા કુમ્કુડા કિજ્જતુ” યુવાન, ઘોડા,
 હાથી ઘેટા કુકુટ, આદિ તમે જાતે ખરીદો અને “કિનાવેહ” બીજા પાસે

ચિત્તભૂમિવહરાણિ=ક્ષેત્રાણિ=પ્રસિદ્ધાણિ ચિત્તભૂમયઃ=હ્વાયક્રમયઃ વહરાણિ=
 ક્ષેત્રવિશેષાશ્ચ તાનિ 'ઉત્તણઘણસકડાહ' ઉત્તણઘણસમટાનિ=તત્રઉત્તણે=ઉદ્ગતઃ ધામૈઃ
 ઘનમ્=અતિશયં સમટાનિ=વ્યાપનિયાનિ તાનિ 'હજ્જતુ' ઘનન્તા=મસ્મીભૂતાનિ
 ક્રિયતામ્ । રુક્ષા 'વૃક્ષા' 'મહિજ્જતુ' મુગ્ગન્તા=મૂલત ઉન્મૂલ્યન્તામ્ ।
 'જતાહ' યન્ત્રાણિ = તિલેશુતાર્પણાદિપીડનયન્ત્રાણિ 'મિજ્જતુ' મિન્દન્તુ । કિમ
 ર્થમિત્યાહ—' માહાઇયસ્સ માણ્ડાપિસ્સ=માણ્ડપાત્રાદે 'ઉવહિસ્મ' ઉપધેઃ=
 ઉપકરણસ્ય 'કારણાણ' કારણાવ=પ્રયોજનાય । તથા 'વહુવિહસ્મ' વહુવિપસ્ય
 'અનેકપ્રકારસ્ય' અદ્દાણ અર્થાય=વ્યવહારપ્રયોજનમ્ય 'મિદ્દય' ઉચ્છ' ઇક્ષવ
 'દુજ્જતુ' દ્યન્તા=ઉધન્તા 'તિલાય' તિલાશ્ચ 'પીલિજ્જતુ' પીલ્યન્તા=નિષ્પી
 ડ્યન્તા યન્ત્રે । તથા મમ 'ઘરુણ' ગૃહાર્થાય=ગૃહનિર્માણપ્રયોજનાય 'ઇદ્દયાઓ'
 ઇષ્ટકાઃ='ઈટ' ઇતિ પ્રસિદ્ધા. 'પચાવેહ' પાચયત । 'સેત્તાય કસહ કસાવેહ'

નૌકર ચારુરોં સે કાસ કરાઓ વે (ગઠ્ઠાહ વળાહ) ગઠ્ઠન વનોં કો,
 (ચિત્તચિત્તભૂમિવહરાહ) ચેતોં કો, હ્વાયક્રમય-વહરોં-ચેતવિશેષોં
 કો (ઉત્તણઘણસકડાહ) ઘાસ આદિસે વ્યાસ દે, (હજ્જતુ) ઉનમેં
 આગ લગાકર વહાકી ભૂમિકો સાફ કરેં (રુક્ષા સૂહિજ્જતુ) વહા
 જિતને બી વૃક્ષ સ્વદે હો ઉન્નેં જડમૂલ સે ઉઠાહ ડાલેં (જતાહ મિજ્જતુ)
 તિલ ઇશુ આદિ કે પીલનેકે યન્ત્રોંકો ચે ચીર ફાડ ડાલેં કિ જિસસે
 (માહાઇયસ્સ ઉવહિસ્સ કારણાણ) માહ પાત્ર આદિ ઉપકરણ બનાયે જા
 સકેં । તથા (વહુવિહસ્મ અદ્દાણ ઉચ્છ દુજ્જતુ) અનેક વિધ પ્રયોજનોં
 કી સિદ્ધિ નિમિત્ત ચે ઇક્ષુ-ગણા કો કાદે, (તિલા ય પીલિજ્જતુ ઘરુણ
 યાણ) તિલો કો ઘાની મે પિલે તથા (ઇદ્દયાઓ પચાવેહ) ગૃહ નિર્માણ
 કે લિયે ચે ઈટોં કો પચાવે, (સેત્તા ય કસહ કસાવેહ) ચેતોં કો
 જોતે વ જુતવાવેં = જાકના ઔર જકવાના ચોકના ઔર ચોકવાના

નોકર ચારુરોં પાસે કામ કરાવો, " ગઠ્ઠાહ વળાહ " ગઠ્ઠન વનોં, " ચિત્તચિત્તભૂમિ
 વહરાહ " ચેતરો, વહરો (એક પ્રકારનું ચેતર) કે જે " ઉત્તણઘણસકડાહ "
 ઘાસ આદિથી છવાયેલ છે, " હજ્જતુ " તેમા આગ લગાડીને તે જમીનને
 સાફ કરાવો, " રુક્ષા સૂહિજ્જતુ " ત્યા જેટલા વૃક્ષો છે તેમને જડમૂળમાથી
 ઉખેડી નાખો, " જતાહ મિજ્જતુ " તલ, શેરડી આદિ પીલવાના યન્ત્રોને તેઓ
 તોડી ફેડી નાખે કે જેથી " માહાઇયસ્સ ઉવહિસ્સ કારણાણ " લાડ, પાત્ર
 આદિ સાધનો બનાવી યાગ તથા " વહુવિહસ્સ અદ્દાણ ઉચ્છ દુજ્જતુ " અનેક
 પ્રકારના પ્રયોજનની સહજતા માટે તેઓ શેરડીને કાપે " તિલાય પીલિજ્જતુ
 ઘરુણાણ " તલને ઘાણીમા પીલે, તથા " ઇદ્દયાઓ પચાવેહ " ઘર બનાવવાને
 માટે ઈટા પકાવે, " સેત્તા ય કસહ કસાવેહ " ચેતરો જેડે અને ખેડાવે, તથા

क्षेत्राणि च 'कस' कर्षत-कर्षयत या । तथा 'अटवीदेसेसु' अटवीदेशेषु=वन प्रदेशेषु 'गामनगरखेटकन्डे' ग्रामनगरखेटकर्षटानि=तत्र ग्रामश्च नगर च मसिद्ध खेट च=नद्यादिवेष्टित धूलिप्राकाररहित कर्षट च=कुत्तितजननिवासस्थानम्, तानि कीटशानीत्याह-विउलसीमे 'त्रिपुलसीमानि=त्रितीर्णसीमायुक्तानि' लहु 'लघु'=मृदुरीत्या शीघ्र या 'सनिवेसेह' सन्निवेशयत=निवासयत तथा 'पुष्पाणि फलाणि य' पुष्पाणि फलानि च 'कदमूलाइ' कन्दमूलानि तत्र कन्दाः=स्वर्णकन्द-शर्कराकन्दलघुनादय मूलानि=वृक्षमूलकानि 'कालपत्ताइ' कालप्राप्तानि=उचित-समयलब्धानि 'गिण्ह' गृहीत=ग्रहण कुरुत, तथा 'परिजणस्स' परिजनस्य=कुटुम्बस्य, 'अट्टाय' अर्थाय=प्रयोजनाय सञ्चय 'करेह' कुरुत ॥ सू० १३ ॥

तथा (अटवीदेसेसु गामनगरखेटकन्डे विउलसीमे लहु सनिवेसेह) ग्राम, नगर, खेट, कर्षट आदि स्थानोक्तो विस्तृत सीमायुक्त कर के अटवी देशोंमें सुन्दर गीति से शीघ्र चमाव, (पुष्पाणि फलाणि य कद-मूलाइ कालपत्ताइ गिण्ह) तुम लोग (कालपत्ताइ) कालप्राप्त फूले हुए (पुष्पाइ) फलों को (फलाणि) पके हुए फलों को तथा (कदमूलाइ) पके हुए स्वर्णकन्द, शर्कराकन्द, लहसुन आदि कदों को और पिप्पलीमूल आदि मूलों को (गिण्ह) ले आया करो, तथा (करेह सचय परिजणस्स अट्टाय) कुटुम्ब के लिये धन आदि का सचय कर रख जाओ ।

भावार्थ—ये असत्यवादीजन दूसरे व्यक्ति हमसे प्रसन्न रहें इसलिये सुहाती बातें उनसे कहते रहते हैं । इनका परिणाम क्या होगा ? इसका वै जरा सा भी ध्यान नहीं रखते । जो ऊँट पालते हैं अथवा ऊँटसे जो

“ अटवीदेसेसु गामनगरखेटकन्डे विउलसीमे लहु सनिवेसेह ” ग्राम, नगर, खेट, कर्षट, आदि स्थानोक्तो विस्तृत सीमावाला जमीने ऊँटों के प्रदेशोंभा सुन्दर गीति अङ्गुली बसाये, “ पुष्पाणि फलाणि य कदमूलाइ कालपत्ताइ गिण्ह ” तमो लोको “ कालपत्ताइ ” विउलसीमे अभय आपता विउलसीमे “ पुष्पाइ ” कूलोने “ फलाणि ” पाउला इणोने तथा “ कदमूलाइ ” पाउला मण्डुकन्द-लघुगीया लसणु आदि उदोने तथा पिप्पली मूल आदि मूलोने “ गिण्ह ” लघु आन्ध्या उदो, तथा “ करेह सचय परिजणस्स अट्टाय ” कुटुम्ब आदिने भाटे धन आदिने सचय कर्था उदो ” जो प्रजारनी सलाह आया उदो उ

भावार्थ—ते असत्यवादी लोको जीव लोकोने पुत्र करवाने भाटे तेमने गमे तेवी वातो तेमनी साथे कर्था करे छे पणु तेनु शु परिग्राम आवशे ? ते आणतनो तेओ जरा पणु विचार करता नथी छोट पाणनारने अथवा छोटनो

ચિલભૂમિવહરાણિ=ક્ષેત્રાણિ=પ્રસિદ્ધાણિ ચિલભૂમયઃ=અભ્યક્તભૂમયઃ ચલ્યાણિ=ક્ષેત્રવિશેષાશ્રયતાણિ 'ઉત્તણવનમસઢાઈ' ઉત્તણવનમસઢાણિ=તત્રઉત્તણે, 'અઢતૈઃ ઘામેઃ ઘનમ્=અતિશય સમઢાણિ=વ્યાપનિયાણિ તાણિ 'ડજ્જતુ' ઢગ્નન્તા=પ્રસમીકૃતાણિ ક્રિયતામ્ । રુઢ્ધા 'વૃક્ષા' 'ગઢિજ્જતુ' મઢ્ઢગ્નન્તા = મૂળત ઉન્મૂલ્યન્તામ્ । 'જતાઈ' યન્ત્રાણિ = તિલેશુતર્પણાદિપીડનયન્ત્રાણિ 'મિજ્જતુ' મિન્દન્તુ । ક્રિમ-ર્થમિત્યાહ—'માઢાઈયસઢ માણઢાઈયસઢ=માણઢપાત્રાઢે 'ઉવહિસમ્' ઉપધેઃ=ઉપકરણસ્ય 'કારણાઈ' કારણાય=પ્રયોજનાય । તથા 'વહુવિહસમ્' વહુવિયસ્ય 'અનેકપ્રકારસ્ય 'અઢ્ઢાઈ' અર્થાય=વસ્યમાણપ્રયોજનમ્ય 'મિઢ્ઢય' ઉચ્છૃ 'ઇક્ષવ' 'દુજ્જતુ' દ્યન્તા=ઉધન્તા 'તિલાય' તિલાશ્ર 'પીલિજ્જતુ' પીડ્યન્તા=નિષ્પીડ્યન્તા યન્ત્રે । તથા મમ 'ઘરઢુઈ' ગૃહાર્થાય=ગૃહનિર્માણપ્રયોજનાય 'ઇઢ્યાઓ' ઇઢ્ઢકાઃ='ઈટ' ઇતિ પ્રસિદ્ધા 'પચાવેહ' પાચયત । 'સેત્તાય કસઢ કસાવેહ'

નૌકર ચાકરોં સે કાસ કરાઓ વે (ગઢ્ઢાઈ વળાઈ) ગઢ્ઢન વનોં કો, (ચિત્તચિલભૂમિવહરાઈ) સેતોં કો, તલાકુઢ્ઢભૂમિકો-વહરોં-સેનવિશેષોં કો (ઉત્તણવનસઢઢાઈ) ઘાસ આદિસે વ્યાસ ઢૈ, (ડજ્જતુ) ડનમેં આગ લગાકર વહાકી ભૂમિકો સાફ કરેં (રુઢ્ઢયા સૂઢિજ્જતુ) વહા જિતને મી વૃક્ષ સઢે હો ડન્નેં જઢમૂલ સે ઉઢ્ઢાઈ ઢાલેં (જતાઈ મિજ્જતુ) તિલ ઇક્ષુ આદિ કે પીલનેકે યત્રોંકો વે ચીર ફાઢ ઢાલેં કિ જિસસે (માંઢાઈયસઢ ઉવહિસસ કારણાઈ) માંઢ પાત્ર આદિ ઉપકરણ બનાવે જા સકેં । તથા (વહુવિહસમ્ અઢ્ઢાઈ ઉચ્છૃ દુજ્જતુ) અનેક વિધ પ્રયોજનોં કો સિદ્ધિ નિનિસ્ટ વે ઇક્ષુ-ગઢ્ઢા કો કાઢે, (તિલા ય પીલિજ્જતુ ઘરઢુ ઘાઈ) તિલોં કો ઘાની મે પિલે ત ય (ઇઢ્યાઓ પચાવેહ) ગૃહ નિર્માણ કે લિવે વે ઈટોં કો પચાવે, (સેત્તા ય કસઢ કસાવેહ) સેતોં કો જોતેં વ જુતવાવે = ફાકના ઓર ફકવાના ચોકના ઓર ચોકવાના

નેઢર આઢરો પાસે કામ ડરાવો, 'ગઢ્ઢાઈ વળાઈ' ગઢ્ઢન વનોંને, "ચિત્તચિલભૂમિ વહરાઈ" ખેતરો, વહરો (એક પ્રકારતુ ખેતર) કે જે "ઉત્તણવનસઢઢાઈ" ઘાસ આદિથી છવાયેલ છે, "ડજ્જતુ" તેમા આગ લગાડીને તે જમીનને સાફ કરાવો, "રુઢ્ઢયા સૂઢિજ્જતુ" ત્યા જેટલા વૃક્ષો છે તેમને જડમૂળમાથી ઉખેડી નાખો, "જતાઈ મિજ્જતુ" તલ, શેરડી આદિ પીલવાના યત્રોને તેઓ તોડી ફેડી નાખે કે જેથી "માઢાઈયસઢ ઉવહિસસ કારણાઈ" લાડ, પાત્ર આદિ સાધનો બનાવી ગાચ તથા "વહુવિહસમ્ અઢ્ઢાઈ ઉચ્છૃ દુજ્જતુ" અનેક પ્રકારના પ્રયોજનની સફળતા માટે તેઓ શેરડીને ઢાપે "તિલાય પીલિજ્જતુ ઘરઢુઘાઈ" તલને ઘાણીમા પીલે, તથા "ઇઢ્યાઓ પચાવેહ" ઘર બધાવવાને માટે ઇટો પચાવે, "સેત્તા ય કસઢ કસાવેહ" ખેતરો ખેડે અને ખેડાવે, તથા

હે ? કમ સે કમ ચના હી ભૂજકર વેચા કરો । તુમ તો પૈસે ચાલે હો, તુમને હમ મનુષ્ય જન્મ કો પાકર કયા આનદ પાયા મદિરા આદિમેં જો આનદ હેં વહ ઓર કહા હો સકતા હૈ, હસલિયે ઈન્હેં સૂઝ સ્વાઓ પીઓ ઓર વચને પર અપને મિત્ર દોસ્તોં કો મી સ્થિલાયા પિલાયા કરો । દેસો-તુમ્હારે યે નૌકર ચાકર ઠાસી ઠાસ આદિ જન વૈટે ૨ કયા કરતે હૈ ? કમ સે કમ તુમ ઈનસે મન જગલોં કો હી સાફ કરાકર ઈન્હેં ચેત આદિ કે યોગ્ય બનવાલો । વૃક્ષ આદિ કટ જાને પર વહા વઢી અચ્છી તરહ સે ચેતી કે યોગ્ય ભૂમિ તૈયાર હો સકતી હૈ । તુમ્હારે પાસ જો યે યત્ર પડે હુએ હૈં વે અત તો કુઝ કામ મેં તો નહીં આ રહેં હેં પડે ૨ ઓર સરાય હો જાવેંગે, અતઃ ક્યોં નહીં ઈનકે ભાજન પાત્ર આદિ બનવા લેતે હો, તાકિ ઈનસે તુમ્હારા વહુત સા કામ સધ સકતા હૈં । ગુઢ કા વાજાર હસ સમય વહુત તેજ જા રહા હૈ, સ્વાંટ મી વહુત મેંદગી ચિક રહી હૈ, અતઃ ક્યોં નહીં તુમ સમઝ સે કામ લેતે હો ? જહાં તરુ હોસકે ઈન ઇધુઓ(સેલડી)કો જત્તીસે જલ્દી પિલવાલો, તાકિ ગુઢ આદિ તયાર હોકર તુમ્હેં વાજાર સે અચ્છા લાભ હો સકે । ત્રસોં કા તેલ મી વહુત તેજ ચિક રહા હૈં સો ઘાની મેં પિલવાકર હસના તેલ નિરૂલવાલો ઓર વેચ

વાધી શો લાલ ? બીજુ કઈ ન બની ગડે તો ચણા ગેડીને વેચ્યા ડરો યેમા દારોને અનત્યવાદી ડહે છે કે-‘તમે તો પૈમાદાર છો, તમે આ મનુષ્ય અવ તાર પામીને શો આનદ લૂટયો છે । મદિરા આદિમા જે આનદ મળે છે તે બીજે ત્યા મળે તેમ છે ? તો જુખ ખાઓ, પીઓ, તથા ખાતા પીતા વધે તો તમાગ મિત્રોને પણ ખવરાવ્યા કગે ખીવરાવ્યા ડરો બુઝો । તમારા આ નોકર ચાકર, દામ, દામી આદિલોટો બેઠા બેઠા શુ કામ કરે છે ? તો તેમની પાને ગહન જ ગહોને સાફ કગવીને તે સ્વાનને ખેતી કગવાને લાયક બનાવગવો વૃક્ષ આદિ ડપાવી નાખવામા આવે તો ત્યા સારામા સાગી ખેતી થાય એવી જમીન તૈયાર થઈ ગડે છે તમાગી પાસે જે ચત્રો છે તે હાલમા કોઈ ઉપયોગમા આવતા નથી, તો પડ્યા પડ્યા તે ખરાબ થઈ જશે, તો તેને તોડાવીને તેમાથી લાલન પાત્ર આદિ કેમ બનાવગવતા નથી ? તેમ કરવાથી તમારૂં ઘણું કામ મગ્ન થશે હાલમા ગોખના બજાર ઘણું ચડી ગયા છે ખાંડ પણ ઘણી મોટી વેચાય છે તો તમે બુદ્ધિ પૂર્વક કેમ કેમ લેતા નથી ? બની ગડે એટલી ઝડપથી આ શેરડીને પીલાવી નાખો જેથી ગોળ આદિ તૈયાર કરીને વેચવાથી તમને વેપારમા મારો લાભ મળે ચરમીયુ પણ ઘણું મોધુ વેચાય છે, તો અશ્વવને ઘાણીમા પીલાવીને તેનું તેલ ડહાવો અને તે તેલ વેચીને સારી એવી

અપના વ્યાપાર આદિ કરતે હેં, અને એ યો કહ દિયો કરતે હેં, કે તુમ્હારા
 યહ જંદ દેખને મેં તો વડા સુઝાવના લગના હેં, પરંતુ ઇસકી ચાલ તો કોઈ
 ઢગ કી હી નહીં હૈ, ઇસે જૈસે બી હો સુન્દર ચાલ ચલના મિગલાઓ !
 ઇસી તરહ જો વેલોં કે માલિક તોતે હેં, અને બી એ સમય પર હી ઉપ
 દેશ ખરી ત્રાતે વનાયા કરતે હેં, અને કરતે હેં-તુમ્હારે વેલોં કી યહ
 જોડી દેખને મેં તો વડી સુન્દર માલુમ પડની હૈ, પરંતુ દેગો ઇસકી ચાલ
 કુછ બી નહીં હૈ, અતઃ યહ ગાડી આદિ મેં જોતને પર છૂટતે જ ચાલ ચલે
 ઇસ તરહ કી ચાલ સીંગાઓ, જગલ મેં ઈક ગાય જેસા જાનવર હોતા હૈ
 જિસે રોક્ક રહતે હેં, યહ ચલને મેં વડા તેજ હોતા હૈ । સો તુમ જૈસે બી હો
 સકે ઇસકો પકડવા કર મગાઓ ઓર અપને ઘર પર રખ કર જસ રોક્કો
 જૈસે બી હો સકે પહિલે વશ મેં લાઓ, વાઢ મેં ઇસકો જગલ કી ચાલ
 છુટાકર અચ્છી ચાલ ચલને મેં ઢાલો, ઇસસે તુમ્હેં આને જાને મેં સમય કી
 વડી વચત હોતી રહેગી । ઇસી તરહ તુમ થેઢેર ચ્યા કરતે રહતે હો ? ઘોડોં
 કે ઘહેડોંકો, હાથિયોં કે વચ્ચોંકો, મેપોં (મેંદે)કો, કુમ્કુટોં (મુગોં)કો,
 પૈસે દેકર છરીદો, ઓર ચિલા પિલાકર જય એ છૂટ મસ્ત હો જાવે તબ
 ઇન્હેં વેચ દિયા કરો ઇસમે તુમ્હેં વહુત અધિક લાભ હોગા । તથા કુછ
 રજગાર કહી ચલતા હો તો ઇસ પ્રકાર થેઢે રહને મેં તુમ્હેં વધા લાભ

વ્યાપારની ચીજો લાવવા લઈ જવામા ઉપયોગ કરનારને તે કહે છે કે તમારો
 આ જીટ દેખાવમા તો ઘણો સુદર લાગે છે પણ તેની ચાલ કઢગી છે
 તેને ગમે તે પ્રકારે સાગી ચાલ ચાલતા શીખવાડો એ જ રીતે બળદોના
 માલિકોને પણ તે વારવાર ઉપદેશ સલાહ આપ્યા કરે છે કે તમારા બળદોની
 આ બેડી દેખાવમા તો ઘણી સુદર છે, પણ તેની ચાલ ઘણી ધીમી છે, તો તેને
 ગાડી બાદિની સાથે બેડવામા આવે તો ઝડપથી ચાલે એવી ચાલ શીખવાડો
 જ ગલમા ગાય જેવું એક પ્રાણી હોય છે, તેને રોક્ક કહે છે, તે ચાલવામા
 ઘણું ઝડપી હોય છે તમે ગમે તે રીતે તે રોક્કને પકડી મગાવો, અને
 તમારે ઘેર રાખીને તેને ગમે તે રીતે પહેલા વશ કરો પછી તેને જ ગલી
 ચાલ છોડાવીને સારી ચાલ ચાલતા શીખવો, તેમ કગવાથી તમને અવર જવ
 રમા સમયનો સારો બચાવ થશે એજ રીતે તે અમત્યવાદી લોકો બીજાને
 કહે છે કે-તમે બેઠા બેઠા શું કરો છો ? ઘોડાના વઢેરાને, હાથીઓના બચ્ચાને
 ઘેરાઓને, ફૂંડાઓને પૈસા આપીને બગીદ કરો, અને તેમને ખવરાવી પીવ
 રાવીને બચ્ચા તેઓ સારી રીતે હુદ પુદ થાય ત્યારે વેચી દો, તેથી તમને
 સારો લાભ થશે તથા એઈ ધધો ન ચાલતો હોય તો આ રીતે બેસી રહે-

मित्याह—मुदित=हर्षसहित ' बहुखज्जपेज्जकलिय ' बहुखाद्यपेयकलित=बहु=पचुर
खाद्य = भोज्य मोदकमामादिक पेय=मदिरादिक तेन कलित=युक्तम् । तथा
' कोउगविण्हावणसतिकम्माणि कुणह ससिरविगहोवरागविसमेसु सज्जणस्स परिजणस्स
य निययस्स य जीवियस्स य परिरक्खणट्ठाए ' तत्र कौतुकप्रिनापनशान्तिकर्माणि
=कौतुक=सौभाग्यवृद्धिर्घर्ष दृष्टिदोषनिवृत्त्यर्थं च रक्षापोटलिकादोरकादिवन्धन,
विस्नापन=मिश्रितजलसे स्नान करानेरूप विस्नापन को होमजपा
दिरूपशान्ति कर्मको तुम (सज्जणस्स परिजणस्स य निययस्स य जीवियस्स
परिरक्खणट्ठाए) सब पुत्रादिरूप आत्मीयजन की, दासीदास आदिरूप
परिजनों की, तथा अपने जीवनकी रक्षाके अर्थ तथा जब (ससिरवि
गहोवरागविसमेसु कुणह) चन्द्र और सूर्य जिन दिनों में राहु ग्रसित हो
रहे हों उन दिनों में करो' अथवा इन कौतुक विस्नापन, एवं शान्तिकर्मों

अथवा प्रसूतिदिने आज स्नान करावहु लेछछे " मुदिय बहुखज्जपेज्जकलिय " ते प्रसवे भूष आनंद मनाववे लेछछे—अनेक प्रकारना पाद्य-लाडु भाज आदि लेख्य, अने मदिरा आदि पेय पदार्थोनी व्यवस्था थपी लेछछे तथा " कोउग विण्हावणसतिकम्माणि " सौलाज्य वृद्धिने निमित्ते अने दृष्टिदोषना निवारणने भाटे रक्षापाटलिका, दोरी आदिना बंधनउप कौतुक, अने- प्रकारना भोज्य औषधो आदिथो मिश्रित जलथी स्नान कवाइय विस्नापन, होम जपादि रूप शान्ति कर्म, तमे " सज्जणस्स परिजणस्स य निययस्स य जीवियस्स परिरक्खणट्ठाए " पुत्रादि रूप आत्मीय जननी, दास दासी आदि रूप परिजनोंनी तथा पोतानी जवननी रक्षाने भाटे लेखाछे " ससिरविगहोवरागविसमेसु कुणह "

उपद्रवस्थानम् । 'घोरा सगामा वदतु' योग सगामा वर्तन्ता=भवन्तु 'जयतु' जयन्तु=विजय प्राप्नुयन्तु च । 'सगडवाहणाइ य पवहतु' शरदवाहनानि च प्रवहन्तु=शरद्वानि=गन्धर्वानि च=नौकादीनि प्रवहन्तु=प्रवायन्तु । उवणयण चोलग विवाहो जन्नो अमुगम्मिहोउ दिवसे सुकरणे सुमुहत्ते सुनम्बत्ते सुतिहिम्मिय' तत्र 'उवणयण' उपनयन=कलाग्रहण 'चोलग' चोलक मालकाना प्रथम शिरोमुण्डन, विवाह=पाणिग्रहण प्रसिद्ध 'जन्नो' यज्ञः एतत्परम् 'अमुगमि' अमुकस्मिन् दिवसे सुकरणे=करणानि एकादश तत्र-य-चालय-कालय-तैत्तिल-गर-वणिज विष्टयैतानि सप्त करणानि, शकुनि चतुष्पद नागरिभूतानि चत्वारि स्थिराणि, इत्येषामन्यतमकरणे शुभे 'सुमुहत्ते' सुमुहत्ते=शोभने रौद्रादित्रिशदन्यतमे 'सुन क्खत्ते' सुनक्षत्रे=अश्विन्यादिषु शोभने पुष्पादिके 'सुतिहिम्मिय' सुतिया नन्दादिषु अन्यतमे 'होउ' भवतु । तथा 'अज्ज' अत्र अस्मिन्नहनि 'होउण्हण' भवतु स्नपन=सौभाग्यसन्ततिमृत्पथं उच्चादे स्नान प्रवृत्तिरस्नान च । किंभूत ?

ही पक्षि समुदाय को नष्ट कर दो । (सेणाणिज्जाउ) सेना यहासे निकले और निकल कर उपद्रवग्रस्त स्थान पर जावे (घोरा सगामा वदतु जयंतु) वहा घोर सगाम वह करें और विजयश्री को पावें (सगडवाहणाइ य पवहतु) शरद-गाडी और वाहन-नौका आदि वे चलायें, (उवणयण चोलग विवाहो जन्नो अमुगम्मि होउ दिवसे सुकरणे सुमुहत्ते सुनम्बत्ते सुतिहिम्मिय) उपनयन(जनोद)-कलाग्रहण, चोलक-प्रथम शिरोमुण्डन, विवाह, यज्ञ ये सब अमुक दिवसमें, अमुक यवादि शुभकरण में, रौद्रादि तीस ३० मुहूर्तों में, अमुक अच्छे मुहूर्तमें अश्विनी आदि सत्तावीस नक्षत्रों में से किसी अमुक शुभ नक्षत्र में नदा आदि तिथियों में से किसी अच्छी तिथि में होना चाहिये । तथा (अज्ज होउण्हण) आज सौभाग्य एवं सन्तति समृद्धि के निमित्त वधू (वह) आदि का स्नान

नीउणे अने तोक्षानवाणा विन्तारमा जय "घोरा सगामा वदतु जयतु" तथा ते लयठरे सुद्ध करे अने विजय प्राप्त करे "सगडवाहणाइ य पवहतु" शरद-गाडी अने वाहन-नौका आदि ते चलावे, 'उवणयण चोलग विवाहो जन्नो अमुगम्मि होउ दिवसे सुकरणे सुमुहत्ते सुनम्बत्ते सुतिहिम्मिय' उपनयन कलाग्रहण, चोलक-प्रथम शिरोमुण्डन, विवाह, यज्ञ ये सधण अमुक दिवसे, अमुक यवादि शुभ करणमा, रौद्रादि तीस (३०) मुहूर्तोंमाणा अश्विनी आदि सत्तावीस नक्षत्रोंमाणा ठोछ शुभ नक्षत्रमा, नदा आदि तिथि योमाणी ठोछ शुभ तिथिअ थवु जेधअ तथा "अज्ज होउण्हण" आज सौभाग्य अने सन्तति समृद्धिने भाटे वधू (वह) आदिने स्नान कराव- ॥ ॥

सम्पन्ना ये धूपाः=गुग्गुलादयस्तेषामुपचार=मद्गारे प्रक्षेपण तथा पुष्पाणि च फलानि च तैः समृद्धान्=परिपूर्णान् दीर्घोषदाराश्च=पद्मादिभिरोपलीन् दत्त देवादिभ्यः । तथा 'पायच्छित्ते करेह पणाडवायकरणेण बहुविहेण विपरीतप्यायदुस्सुविणपावसउण असोम्पगहचरिय अमगलनिमित्तपडिघायहेउ ' प्रायश्चित्तानि कुरुत-विपरीतोत्पा तदु स्वप्नपापशकुनासौम्यग्रहचरितामगलनिमित्तप्रतिघातहेतु=तत्र विपरीता ये उत्पाताः=अशुभसूचका वृमकेतादयः दुस्स्वप्नाः=अस्थिसञ्चयगर्दभारोहणादि स्वप्नदर्शनरूपा पापशकुना=प्रसिद्धा जसाम्यग्रहचरित-रूरग्रहदशा, अमगलनिमित्तानि-अगस्फुरणादीनि तेषां प्रतिघातहेतु=निवारणनिमित्तं बहुविधेन=नानाप्रकारेण प्रागातिपातकरणेन=प्राणिहिंसाया प्रायश्चित्तानि कुरुत । ' वित्तिच्छेय करेह ' वृत्तिच्छेद कुरुत=जीविकाविनाश कुरुत, इति किमपि निमित्तादिकमुपादाय द्रुवन्ति 'मादेह किंचिदाण'मादत्त किञ्चिदान 'मुद्दहओ २' मुद्दहतः मुद्दहत-मुद्दह=शोभ

जलते हुए उज्ज्वल आरतीरूप दीपकों से, तथा शोभनगंध से सपन्न गुग्गुल आदि धूपों के उपचार से, एच पुष्पों और फलों से परिपूर्ण वह भेट होनी चाहिये । तथा (विपरीतप्यायदुस्सुविणपावसउण असोम्पगहचरिय अमगलनिमित्तपडिघायहेउ) अशुभसूचक वृमकेतु आदि विविध विपरीत उत्पात, अस्थिसञ्चय, गर्दभारोहण आदि दुस्स्वप्न, खोटे २ शकुन, रूरग्रहदशा रूप असौम्यग्रहचरित, अमगल के निमित्तभूत अगस्फुरण आदि इन सबके निवारणके लिये (बहुविहेण पाणाडवायकरणेण पायच्छित्ते करेह) अनेक प्रकार से प्राणिहिंसा करो, इसीसे इन सबका प्रायश्चित्त होगा । (वित्तिच्छेय करेह) हरेक व्यक्ति की जीविका का विनाश करो । (मा देह किंचिदाण) किसी को भी

अनुक्षेपनाथी, जलता तेजस्वी आग्नीना दीपदेथी तथा सुदृग्गंध वाणा गुग्गुल आदि धूपथी अने पुष्पो अने फलोथी परिपूर्ण ते पतिदान डोवु जेउअ तथा "विपरीतप्यायदुस्सुविणपावसउण असोम्पगहचरिय अमगलनिमित्त पडिघायहेउ" अशुभ सत्यध धूमकेतु आदि विविध विपरीत उत्पात, अस्थिसञ्चय, गर्दभारोहण आदि दुस्स्वप्न, अशुभ शकुन रूरग्रहदशा उप असौम्य ग्रहचरित अमगल थवाना निमित्तउप अगल इउवु आदि अमगल पना वेना निवाण्णुने भाटे " बहुविहेण पाणाडवायकरणेण पायच्छित्ते करेह " अनेक प्रकारे प्राणीहिंसा उरो, तेथी ते पद्मा अमगलानु निवाण्णु यशे " वित्ति छेय करेह " हेउ व्यक्तिनी आणुविजाने विनाज उरो " मादेह किंचिदाण "

સ્થિતિઃ, તથા વિપમાણિ ચ દુઃસ્વપ્નાદીનિ, તેષુ શાન્ત્યર્થ 'કરેહ' કુરત । તથા 'પડિસીસગાઈ ચ દેહ' પ્રીતિશીર્ષકાણિ ચ દત્ત=વિષ્ટનિર્મિતસ્ત્રિપ્રતિરૂપકાણિ ચ મહાકાલ્યાદિમ્યો દીયન્તા-યુષ્માભિરિતિ યદન્તિ । તથા 'દેહ ય સી સોવહારે વિવિહોસદિમજ્જમસમસ્વન્નપાણમહાણુલેવણપર્વજલિઝ્જલસુગન્ધધૂવો વ્યારપુષ્પફલસમિદ્ધે' દત્ત ચ શોર્ષોપહારાન્ પ્રિવિર્વોપધિમઘમાસમદ્યાન્નપાનમાલ્યાનુલેપનપ્રદોષજ્વલિતોજ્જ્વલસુગન્ધધૂવોપચારપુષ્પફલમમૃદ્ધાન્, તત્ર વિવિધાઃ ઔષધપથ મઘમાસાનિ ચ ભક્ષ્યાણિ ચ ઝનાનિ પાનાનિ ચ માલ્યાન્યનુલેપનાનિ ચ તાનિ, મદીપાશ્ર્વ જ્વલિતોજ્જ્વલાશ્ર્વ=આરાતિસ્યાદ્યા, તથા-સુગન્ધાઃ=શોભનગન્ધ

કો સ્વજનાદિ કો રક્ષા કે લિયે ઉસ સમય કરો જવ નવગ્રહોં મેં ચંદ્ર સૂર્ય ચે દો ગ્રહ તનુ ધન આદિ કષ્ટ કર સ્થાનોં મેં સ્થિતિ હોં, ઓર દુઃસ્વપ્ન આદિ વિપમ થીજોં કા અગ્લોરુન હુઆ હો । ત ગા (પડિસી સગાઈ ચ દેહ) તુમ લોગ પિષ્ટ નિર્મિત અપને ૨ પ્રતિનિધિરૂપ શિરોંકો મહાકાલી આદિ દેવિયોં કે લિયે ચલિ રૂપ મેં દો, અર્થાત્ શાંતિ આદિ કે નિમિત્ત અપને ઝિર કે જૈસા શિર આટે કા ઘનાકર કાલી આદિ દેવિયોં કે સમક્ષ ચલિરૂપ મેં ચઢાઓ, ઇસ પ્રકાર મૃયાગ્રાવીજન કહતે હૈં । તથા (દેહ ય સીસોવહારે) પશુ આદિ કે શિરોં કો ચઢાઓ, જબ તુમ લોગ પશુ આદિ કે શિરોં કો કાલી દેવી કે લિયે મેટ મેં પ્રદાન કરો ઉસ સમય (વિવિહોસદિમજ્જમસમસ્વન્નપાણમહાણુલેવણપર્વ જલિઝ્જલસુગન્ધધૂવોવ્યારપુષ્પફલસમિદ્ધે) વિવિધ પ્રકાર શ્રી ઔષધિયોં સે, મઘમાસરૂપ ભક્ષ્યાન્નપાન સે, માલ્યો સે, અનુલેપનોં સે,

ચન્દ્ર અને સૂર્ય જે દિવસોએ રાહુથી અસિત થાય તે દિવસોએ કરો અથવા તે કૈતુક, વિસ્નાપન, અને રાગ્નિઝમેને સ્વજનાદિની રક્ષાને માટે તે સમયે કરો કે બ્યારે નવગ્રહોમાના ચન્દ્ર અને સૂર્ય એ એ ગ્રહો તનુ, ધન આદિ કષ્ટકારી સ્થાનોમા રહેવ હોય અને દુસ્વપ્ન આદિ વિપમ થીને બેવામા આવતી હોય તથા ' પડિસીસગાઈ ચ દેહ ' તમે લોડો પિષ્ટ નિર્મિત પોત પોતાના પ્રતિનિધિ રૂપ મસ્તકોનુ મહાકાળી આદિ દેવીઓને બલિદાન દો, એટલે કે શાંતિ આદિ નિમિત્તે પોત ના મસ્તક જેવુ લોટનુ બનાવેલુ મસ્તક કાળીકા દેવીઓને બલિદાન રૂપે અર્પણ કરો એ પ્રમાણે મપાવાદી લોકો કહે છે " દેહ ય સીસોવહારે " પશુ આદિના મસ્તકો ચઢાવો બ્યારે પશુ આદિના મસ્તકો કાળીકા દેવીને માટે અર્પણ કરો ત્યારે " વિવિહોસદિમજ્જમસમસ્વન્નપાણમહાણુલેવણપર્વજલિઝ્જલસુગન્ધધૂવોવ્યારપુષ્પફલસમિદ્ધે " વિવિધ પ્રકારની ઔષધિયોથી, મઘમાસ રૂપ ભક્ષ્યાન્ન અને પીણાથી, માળાઓથી

सम्पन्ना ये धूपाः=गुग्गुलादयस्तेषामुपचार=भद्रारे प्रक्षेपण तथा पुष्पाणि च फलानि च तैः समृद्धान्=परिपूर्णानि शीर्षोपहाराश्च=पद्मादिभिरोपलीन दत्त देवादिभ्यः । तथा 'पायच्छित्ते करेह पणाइवायकरणेण बहुविहेण विवरीउप्पायदुस्सुविणपावसउण असोम्मगहचरिय अमगलनिमित्तपडिघायहेउ ' प्रायश्चित्तानि कुरुत-विपरीतोत्पातदु स्वप्नपापशकुनासौम्यग्रहचरितामगलनिमित्तप्रतिघातहेतु=तत्र विपरीता ये उत्पाताः=अशुभसूचका धूमकेतादयः दुस्स्वप्नाश्च=अस्थिसञ्चयगर्दभारोहणादि स्वप्नदर्शनरूपाः पापशकुना=प्रसिद्धा असौम्यग्रहचरित-क्रूरग्रहदशा, अमङ्गलनिमित्तानि-भद्रस्फुरणादीनि तेषां प्रतिघातहेतु=निवारणनिमित्तं बहुविधेन=नानाप्रकारेण प्राणातिपातकरणेन=प्राणिहिंसायां प्रायश्चित्तानि कुरुत । 'वित्तिच्छेय करेह' वृत्तिच्छेद कुरुत=जीविकाविनाश कुरुत, इति किमपि निमित्तादिकमुपादाय ब्रुवन्ति 'मादेह किंचिदाण' मादत्त किञ्चिदान 'मुट्टहओ २' मुट्टुत्तः सुट्टुहत्-सुट्टु=शोभ

जलते हुए उज्ज्वल आरतीरूप दीपकों से, तथा शोभनगंध से सपन्न गुग्गुल आदि धूपों के उपचार से, एव पुष्पों और फलों से परिपूर्ण वह भेट होनी चाहिये । तथा (विवरीउप्पायदुस्सुविणपावसउण असोम्मगहचरिय अमगलनिमित्तपडिघायहेउ) अशुभसूचक धूमकेतु आदि विविध विपरीत उत्पात, अस्थिसञ्चय, गर्दभारोहण आदि दुस्स्वप्न, खोटे २ शकुन, क्रूरग्रहदशा रूप असौम्यग्रहचरित, अमङ्गल के निमित्त-भूत अगस्फुरण आदि इन सबके निवारणके लिये (बहुविहेण पाणाइवायकरणेण पायच्छित्ते करेह) अनेक प्रकार से प्राणिहिंसा करो, इसीसे इन सबका प्रायश्चित्त होगा । (वित्तिच्छेय करेह) हरेक व्यक्ति की जीविका का विनाश करो । (मा देह किंचिदाण) किसी को भी

अनुलेपनेाथी, जलता तेजस्वी आग्नीना दीपदेाथी तथा सुदृग्ग व वाणा गुग्गुल आदि धूपथी अने पुष्पो अने द्रव्योथी परिपूर्ण ते पालिदान डोवु लेधअ तथा "विवरीउपायदुस्सुविणपावसउण असोम्मगहचरिय अमगलनिमित्त पडिघायहेउ" अगुल सूयउ धूमउतु आदि विविध विपरीत उत्पात, अस्थि सञ्चय, गर्दभारोहण आदि दु स्वप्न, अगुल शकुन क्रूरग्रहदशा रूप असौम्य ग्रहचरित अमगल यवाना निमित्तउप अगण इरउवु आदि अमगल पना-वेना निवागणुने आटे "बहुविहेण पाणाइवायकरणेण पायच्छित्ते करेह" अनेक प्रकारे प्राणीहिंसा करे, तेथी ते अधा अमगलानु निवागणु थरे "वित्ति छेय करेह" हरेउ व्यक्तिनी आलुविधाने विनाश करे "मादेह किंचिदाण"

સ્થિતિ; તથા વિપમાણિ ચ દુઃસ્વપ્નાદીનિ, તેષુ શાન્ત્યર્થ 'કરેહ' કુરુત । તથા 'પહિસીસગાઈ ચ દેહ' પ્રીતિશીર્ષકાણિ ચ દત્ત=પિષ્ટનિર્મિતમ્નશ્ચિરઃપ્રતિરૂપકાણિ ચ મહાકાલ્યાદિમ્બો દીયન્તા-યુષ્માભિરિતિ યદ્દન્તિ । તથા 'દેહ ય સી સોવહારે વિવિહોસહિમજ્જમસમસ્વત્રપાણમહાણુલેવણપર્દવનલિઝ્જલસુગધધૂવોવયારપુષ્પફલસમિદ્ધે' દત્ત ચ શોર્ષોપહારાન ત્રિવિધોષધિમદ્યમાસમદ્યાન્નપાનમાલ્યાનુલેપનપદીપજ્વલિતોજ્જ્વલસુગન્ધવૃષોપચારપુષ્પફલમમૃદ્ધાન્, તત્ર વિવિધાઃ ઔષધયશ્ચ મદ્યમાસાનિ ચ ભક્ષ્યાણિ ચ અન્નાનિ પાનાનિ ચ માલ્યાન્યનુલેપનાનિ ચ તાનિ, પદીપાશ્ચ જ્વલિતોજ્જ્વલાશ્ચ=આરાતિત્રયાદ્યાઃ, તથા-સુગન્ધાઃ=શોભનગન્ધ

કો સ્વજનોદિ કો રક્ષા કે લિયે ઉમ સમય કરો જય નવગ્રહોં મેં ચંદ્ર સૂર્ય ચે દો ગ્રહ તનુ ધન આદિ કષ્ટ કર સ્થાનોં મેં સ્થિતિ હોં, ઓર દુઃસ્વપ્ન આદિ વિપમ ચીજોં કા અપલોકન હુઆ હો । ત ગ (પહિસી સગાઈ ચ દેહ) તુમ લોગ પિષ્ટ નિર્મિત અપને ૨ પ્રતિનિધિરૂપ શિરોંકો મહાકાલી આદિ દેવિયોં કે લિયે ચલિ રૂપ મેં દો, અર્થાત્ શાંતિ આદિ કે નિમિત્ત અપને ઝિર કે જૈસા ઝિર આદે કા ઘનાકર કાલી આદિ દેવિયોં કે સમક્ષ ચલિરૂપ મેં ચઢાઓ, હસ પ્રકાર મૃવાવાદીજન કહતે હૈં । તથા (દેહ ય સીસોવહારે) પશુ આદિ કે શિરો કો ચઢાઓ, જબ તુમ લોગ પશુ આદિ કે શિરો કો કાલી દેવી કે લિયે મેટ મેં પ્રદાન કરો ઉસ સમય (વિવિહોસહિમજ્જમસમસ્વત્રપાણમહાણુલેવણપર્દવજલિઝ્જલસુગધધૂવોવયારપુષ્પફલસમિદ્ધે) વિવિધ પ્રકાર ક્ષી ઔષધિયો સે, મદ્યમાસરૂપ મદ્યાન્નપાન સે, માત્ર્યોં સે, અનુલેપનોં સે,

અન્દ્ર અને સૂર્ય જે દિવસોએ શકુથી અસિત થાય તે દિવસોએ કરો અથવા તે કૌતુક, વિસ્નાપન, અને શાન્તિઝમોને સ્વપ્નાદિની રક્ષાને માટે તે સમયે કરો કે બ્યારે નવગ્રહોમાના અન્દ્ર અને સૂર્ય એ બે ગ્રહો તનુ, ધન આદિ કષ્ટકારી થાનોમા રહેવ હોય અને હુ સ્વપ્ન આદિ વિપમ ચીજો જોવામા આવતી હોય તથા ' પહિસીસગાઈ ચ દેહ ' તમે લોકો પિષ્ટ નિર્મિત પોત પોતાના પ્રતિનિધિ રૂપ મસ્તકોતુ મહાકાળી આદિ દેવીઓને બલિદાન દો, એટલે કે શાંતિ આદિ નિમિત્તે પોતાના મસ્તક જેવુ લોકોતુ બનાવેલુ મસ્તક કાળીકા દેવીઓને બલિદાન રૂપે અર્પણ કરો એ પ્રમાણે સપાવાદી લોકો કહે છે " દેહ ય સીસોવહારે " પશુ આદિના મસ્તકો ચઢાવો બ્યારે પશુ આદિના મસ્તકો કાળીકા દેવીને માટે અર્પણ કરો ત્યારે " વિવિહોસહિમજ્જમસમસ્વત્રપાણમહાણુલેવણપર્દવજલિઝ્જલસુગધધૂવોવયારપુષ્પફલસમિદ્ધે " વિવિધ પ્રકારની ઔષધિયોથી, મદ્યમાસ રૂપ ભક્ષ્યાન્ન અને પીણુથી, માળાઓથી

‘અલિયાણા’ અલીકાણાઃ=અલીકા આજ્ઞા=આગમો યેષા તે તથા ‘અલિયધમ્મ-
નિરયા’ ઝત્તીધર્મનિરતાઃ=અસદ્ધર્મપરાયણા ‘અલિયાસુ કહાસુ’ અલીકાસુ આત્મ-
ગુણહાનિકરાસુ કથાસુ અભિરમન્તઃ=પ્રસીદન્તઃ ‘વહુપ્પગાર’ વહુપ્રકારમ્ ‘અલિયં
કરેડ’ અલીક કૃત્વા=ભાષિત્વા ‘તુટ્ટા’ તુટ્ટા=પ્રસન્ના ભવન્તિ ॥સુ ૧૪॥

માપા સમિતિ સે રહિત પ્રાણી હોતે હે તથા (અલિયાણા) જિનકા
આગમ મો અમત્ય હોના હૈ જો (અલિયધમ્મનિરયા) અસત્ય વર્મ મેં
નિરત રહતે હે, તથા (અલિયાસુ કહાસુ અભિરમતા) આત્મગુણ હાનિ
કરાને વાલી કથાઓં મેં જિનકા મન મોદ પાતા હૈ એસે અનાર્યજન (વહુ-
પ્પગાર અલિય) દન વિવિધ પ્રકારકે અલીક વચનોં જો (કરેડ તુટ્ટા)
ચોલકર વે ભવિષ્યમેં પશ્ચાત્તાપ નહીં કરતે હ પ્રત્યુત (ઝલદે) પ્રસન્ન હોતે હે ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકારને ઇસ સૂત્રદ્વારા યહ પ્રકટ કિયા હૈ કિ જો પ્રાણી
અસત્યભાષણ કરનેમ હી આનંદ માનતા હૈ વે કિસ પ્રકારસે વૈઠે વૈઠે
દૂસરે જનોંકો પ્રાણિહિંસા વર્ધક કાર્યોં મેં ડકસાયા કરતે હે, જન યે
કિસીકી શાલિકી ચેતીકો પકી હુડે દેખ લેતે હે તો ડસકે માલિકકો
ચાહે વહ માને યા ન માને સલાહ દેતે હે—તુમ્હારી યહ ચેતી પક ચુકી
હૈ, તુમ વૈઠે ૨ કયા કરતે હો ? કયોં નહીં જલ્દી સે જલ્દી ડસે કાટકર
ઑર દાચ (ગાહટા) કરકે સાફસૂફ કર અપને ઘરમે ભરકર રત્વ દેતે
હો ? ડસે તો મટાર મેં ભર કર રત્વનેમેં હી લાભ હૈ । યે વણિક જન
વઢે સ્વાર્થી હોતે હે—ઝાહર પરદેશમેં નૌકાઓં સે યાત્રા કર સૂધ કમાઈ

યાણા ” જેમના આગમ પણ અમત્ય હોય છે એ “અલિય ધમ્મનિરયા”
અસત્ય ધર્મમા લીન ગડે છે, જથા “અલિયાસુ કહાસુ અભિરમતા” આત્મગુણ
હાનિ કરાવનાર કથાઓમા જેમનુ મન આનંદ પામે છે એવા અનાર્યજન
“વહુપ્પગાર અલિય” એ વિવિધ પ્રકારના અલોક વચનો “કરેડ તુટ્ટા”
બોલીને ભવિષ્યમા પશ્ચાત્તાપ કરતા નથી પણ ગણ થાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા એ પ્રગટ કર્યું છે કે જે જીવો
અમત્ય બોલવામા જ આનંદ માને છે જેઓ બેઠા બેઠા કંઈ રીતે અન્ય જીવોને
પ્રાણિહિંસા વર્ધક કાર્યો કરવાને ઉશ્કેરે છે જ્યારે તે ડોઠના ખેતરમા શાલિ
ડાગને પાડ તૈયાર થયેલો જીવે છે ત્યારે તે તેના માલિકને તે માને કે ન
માને છતા પણ તે સલાહ આપે છે કે આ ડાગ પાડી ગઈ છે તમે બેઠી
કેમ રહ્યા છો ? તેને જલ્દી ડાખીને, ખજી કરીને, ઉપજીને ગા માટે ઘરમા
ભરી લેતા નથી ? તેને ઘરમા ડોઠારમા જ ભરી ગખવી હિતાવહ છે આ
વેપારીઓ ભાગે સ્વાર્થી હોય છે વહાણોમા પગ્દેશની સદર કરીને તેઓ

નતયા હતો દુષ્ટઃ, અત્ર સમ્રમે દ્વિત્યમ્' તથા 'સુદૃઢિજો મિત્રો' સુદૃઢ ડિજો મિત્રશ્ચ સ દુર્જનેન ઇતિ પૂર્વોક્તપ્રકારઃ 'ઉપદિસતા' ઉપદિગન્તઃ=કથયન્તઃ 'એવ વિહ' એવવિહ=સ્વરૂપતઃ સત્યમપિ માણિના હિંસાકારણત્વાત્ પરિણામતોડલીક 'મણેજ વાયાએ કમ્મુણા ય' મનસા-વચસા કર્મણા ચ ત્રિધા 'અલીય' અલીયમ્=અસત્ય 'કરેતિ' કુર્વન્તિ માપન્તે ઇત્યર્થ, કીદ્યાસ્તે અલીકમાપિજ ? ઇત્યાહ 'અકુસલા' અકુશલા=માપાસમિતિવિકલાઃ 'અણજ્ઞા' અનાર્યા=મ્હેઞ્ઞાઃ

કુછ મી દાન મત દો । (સુદૃહઓ સુદૃઢિજ્ઞો મિણ્ણોત્તિ) 'તુમને ઉસ દુષ્ટ કો અચ્છા મારા, વહુત અચ્છા ક્રિયા જો ઉસે છિન્ન મિન્ન કર ઢાલા । (ત્તિ)' હસ પૂર્વોક્ત પ્રકાર સે (ઉપદિસતા) દૂસરોં કે પ્રતિ કહતે હુએ મૃપાવાદી જન (એવ વિહ) યદ્યપિ સ્વરૂપ કી અપેક્ષા અપને વાચ્યાર્થ સે સમ્બંધિત હોને કે કારણ-સત્ય હોને પર મી પ્રાણિ હિંસા કે કારણ હોને સે અસત્યવાણી કો (મણેજ વાયાએ કમ્મુણા) મન સે, વચન સે ઓર કાય સે, (અલિય કરેતિ) અલોક-ઝૂઠ ગોલા કરતે હૈ । તાત્પર્ય હસકા યહ હૈ કિ અપને અભિધેય(વક્તવ્ય)સે અસંબંધિત વાણી હી મૃપા સ્વરૂપ નહી હૈ કિન્તુ જિસ સંબંધવાણીસે પર પ્રાણિયો કો કષ્ટ હો આપત્તિમેં પડ જાના પડે ઉનકે પ્રાણોં કી હિંસા આદિ હો જાવે વહ વાણી મી અસત્ય હી હૈ । એસી વાણી કેવલ વચનયોગ કી અપેક્ષા સે હી અસત્યરૂપ નહી માની જાતી હૈ કિન્તુ વહ મન ઓર કાય હન અગોકી અપેક્ષા મી અસત્ય માની જાતી હૈ । હસ તરહ કી અસત્યવાણી કા જો (અકુસલા)

કોઈ ને પણ કઈ પણ દાન ન આપો “ સુદૃહઓ સુદૃઢિજ્ઞો મિણ્ણોત્તિ ” તમે તે હુદને માર્યો તે ઠીક કહ્યું, તેને છિન્ન ભિન્ન ડરી નાખ્યો તે ઘણું સાફ કહ્યું ” “ ત્તિ ” આ પૂર્વોક્ત પ્રકારે “ ઉપદિસતા ” બીજાને કહેતા તે અસત્ય બોલનારા લોકો “ એવ વિહ ” એ કે સ્વરૂપની અપેક્ષાએ પોતાના વાચ્યાર્થ સાથે સાથે સંબંધિત હોવાને કારણે-સત્ય હોવા છતાં પણ પ્રાણી હિંસાના કારણે રૂપ હોવાથી અસત્યવાદીને “ મણેજ વાયાએ કમ્મુણા ” મનથી, વચનથી અને કાર્યથી “ અલિય કરેતિ ” અલીક-અસત્ય બોલના ડરે છે તેનું તાત્પર્ય એ છે કે પોતાના અભિધેયથી અસંબંધિત વાણી જે મૃપાવાદ રૂપ નથી પણ જે સત્ય વાણીથી બીજા પ્રાણીઓને ડબ્બ થાય આપત્તિમા મૂકાવું પડે, તેમના પ્રાણોની હિંસા આદી થાય, તે વાણી પણ અસત્ય જ છે એવી વાણી કેવળ વચનયોગની અપેક્ષાએ જ અસત્યરૂપ માનવામા આવતી નથી પણ તે મન યોગ અને કાર્યયોગની અપેક્ષાએ પણ અસત્ય મનાય છે આ પ્રકારની અસત્ય વાણી કે જે “ અકુસલા ” લાખા સમિતિથી રહિત જોડા હોય છે તથા “ અહિ

‘અલિયાણા’ અલીકાણાઃ=અલીકા આના=આગમો યેપા તે તથા ‘અલિયધમ્મ-નિરયા’ અલીધર્મનિરતાઃ=અસદ્ધર્મપરાયણા ‘અલિયાસુ મ્હાસુ’ અલીકાસુ આત્મ-ગુણહાનિકરાસુ કયાસુ અભિરમન્તઃ=પ્રસીદન્તઃ ‘વહુપ્પગાર’ વહુપ્રકારમ્ ‘અલિયં કરેડ’ અલીક કૃત્વા=ભાષિત્વા ‘તુટ્ટા’ તુટ્ટા=પ્રસન્ના ભવન્તિ ॥મૂં ૧૪॥

માયા સમિતિ સે રહિત પ્રાણી હોતે હેં તથા (અલિયાણા) જિનકા આગમ મો અસત્ય હોતા હૈ જો (અલિયધમ્મનિરયા) અસત્ય ધર્મ મેં નિરત રહતે હેં, તથા (અલિયાસુ મ્હાસુ અભિરમતા) આત્મગુણ હાનિ કરાને ચાલી કથાઓં મેં જિનમા મન મોદ પાતા હૈ એસે અનાર્યજન (વહુ-પ્પગાર અલિય) ઇન ત્રિવિધ પ્રકારકે અલીક વચનોં કો (કરેડ તુટ્ટા) યોલકર વે ભવિષ્યમેં પશ્ચાત્તાપ નહીં કરતે હ પ્રત્યુત (ઉલટે)પ્રસન્ન હોતે હેં ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકારને ઇસ સૂત્રદ્વારા યહ પ્રકટ કિયા હૈ કિ જો પ્રાણી અસત્યભાષણ કરનેમેં હી આનંદ માનતા હૈ વે કિસ પ્રકારસે વેઠે વેઠે દૂસરે જનોંકો પ્રાણિહિંસા વર્ધક કાર્યોં મેં ડકસાયા કરતે હૈ, જર વે કિસીકો શાલિકી ચેતીકો પકી હુઈ દેખ લેતે હ તો ડસકે માલિકકો વાહે વહ માને યા ન માને સલાહ દેતે હેં—તુમ્હારી યહ ચેતી પક ચુકી હૈ, તુમ વેઠે ૨ કયા કરતે હો ? કયોં નહીં જલ્દી સે જલ્દી ઇસે કાટકર ઔર દાઘ (ગાહટા) કરકે સાફમૂફ કર અપને ઘરમેં ભરકર રક્ષ દેતે હો ? । ઇસે તો મટાર મેં ભર કર રક્ષનેમેં હી લાભ હૈ । યે વણિક્ક જન ઘડે સ્વાર્થી હોતે હેં—ચાહર પરદેશમેં નૌકાઓં સે યાત્રા કર સૂચ કમાઈ

ચાણા ” જેમના આગમ પણ અસત્ય હોય છે એ “અલિય ધમ્મનિરયા” અસત્ય ધર્મમા લીન ગ્હે છે, જથા “અલિયાસુ મ્હાસુ અભિરમતા” આત્મગુણ હાનિ કરાવનાર કથાઓમા જેમતુ મન આનંદ પામે છે એવા અનાર્યજન “વહુપ્પગાર અલિય” એ વિવિધ પ્રકારના ચીલડ વચનો “કરેડ તુટ્ટા” બોલીને ભવિષ્યમા પશ્ચાત્તાપ કરતા નથી પણ ગણ થાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા એ પ્રગટ કર્યું છે કે જે જીવો અસત્ય બોલવામા જ આનંદ માને છે જેઓ બેઠા બેઠા કંઈકીતે અન્ય જીવોને પ્રાણિહિંસા વર્ધક કાર્યો કરવાને ઉશ્કેરે છે જ્યારે તે કોઈના ખેતરમા ચાલિ ડાંગરનો પાંડ તૈયાગ થયેલો જુવે છે ત્યારે તે તેના માલિકને તે માને કે ન માને છતાં પણ તે મલાહ આપે છે કે આ ડાંગર પાકી ગઈ છે તમે જેમી કેમ રહ્યા છો ? તેને જલ્દી ડાખીને, ખજી કરીને, ઉપજીને જા માટે ઘરમા ભરી લેતા નથી ? તેને ઘરમા કોઠારમા જ ભરી રાખવી હિતાવહ છે આ વેપારીઓ ભારે સ્વાર્થી હોય છે વહાણોમા પરદેશની મદદ કરીને તેઓ

નતયા હતો દુષ્ટ', અત્ર સમ્રમે દ્વિત્વમ્' તથા 'સુદુ ણિત્તો મિત્તો' સુદુ ણિત્તો મિ
ત્તથ સ દુર્જનેન ઇતિ પૂર્વોક્તપ્રકારઃ 'ઉપદિસતા' ઉપદિગન્તઃ=કથયન્તઃ 'એવ વિહ'
એવમિય=સ્વરૂપતઃ સત્યમપિ પ્રાણિના હિંસાકારણત્વાત્ પરિણામતોડલીક 'મણેણ
વાયાએ કમ્મુણા ય' મનસા-ચચમા કર્મણા ચ ત્રિથા 'અલીય' અલીમ્=
અસત્ય 'કરેતિ' કુર્વન્તિ માપન્તે ઇત્યર્થ, યીટ્યાસ્તે અત્રીકમાપિણ ? ઇત્યાહ
'અકુસલા' અકુસલાઃ=માપામમિતિપ્રિક્રા 'અણજા' અનાર્યા =મથેચ્છાઃ

કુછ મી દાન મત દો । (સુદુહઓ સુદુટ્ટિણ્ણો મિણ્ણોત્તિ) 'તુમને
ઉસ દુષ્ટ કો અચ્છા મારા, વહુત અચ્છા ક્રિયા જો ઉસે છિત્ત મિત્ત કર
હાલા । (ત્તિ) હસ પૂર્વોક્ત પ્રકાર સે (ઉપદિસતા) દૂસરોં કે પ્રતિ
કહતે દુષ્ટ મૃપાવાદી જન (એવ વિહ) યત્થપિ સ્વરૂપ કી અપેક્ષા અપને
વાચ્યાર્થ સે સબધિત હોને કે કારણ-સત્ય હોને પર મી પ્રાણિ હિંસા કે
કારણ હોને સે અસત્યવાણી કો (મણેણ વાયાએ કમ્મુણા) મન સે, વચન
સે ઓર કાય સે, (અલિય કરેતિ) અલીક-જૂઠ ગોલા કરતે હૈં । તાત્પર્ય
હસકા યહ હૈ કિ અપને અભિધેય(વત્કવ્ય)સે અસબધિત વાણી હી મૃપા
સ્વરૂપ નહી હૈ કિન્તુ જિસ સત્યવાણીસે પર પ્રાણિયોકો કષ્ટ હો આપત્તિમેં
પડ જાના પડે ઉનકે પ્રાણોં કી હિંસા આદિ હો જાવે વહ વાણી મી
અસત્ય હી હૈ । એસી વાણી કેવલ વચનયોગ કી અપેક્ષા સે હી અસત્યરૂપ
નહી માની જાતી હૈ કિન્તુ વહ મન ઓર કાય હન અગોકી અપેક્ષા મી
અસત્ય માની જાતી હૈ । હસ તરહ કી અસત્યવાણી કા જો (અકુસલા)

કોઈને પણ ઈ પણ દાન ન આપો " સુદુહઓ સુદુટ્ટિણ્ણો મિણ્ણોત્તિ " " તમે
તે દુષ્ટને માર્યો તે ઠીક થયું, તેને છિત્ત લિત્ત કરી નાખ્યો તે ઘણું માફ
થયું " " ત્તિ " આ પૂર્વોક્ત પ્રકારે " ઉપદિસતા " બીજાને કહેતા તે અસત્ય
બોલનારા બોલે " એવ વિહ " એ કે સ્વરૂપની અપેક્ષાએ પોતાના વાચ્યાર્થ
સાથે સાથે સબધિત હોવાને ગરજે-સત્ય હોવા છતા પણ પ્રાણી હિંસાના
કારણે રૂપ હોવાથી અસત્યવાદીને " મણેણ વાયાએ કમ્મુણા " મનથી, વચનથી
અને કાર્યથી " અલિય કરેતિ " અલીક-અસત્ય બોલના ડરે છે તેનું તાત્પર્ય
એ છે કે પોતાના અભિધેયથી અસબધિત વાણી જ મૃપાવાદ રૂપ નથી પણ
જે સત્ય વાણીથી બીજા પ્રાણીઓને કષ્ટ થાય, આપત્તિમા મૂકાય પડે, તેમના
પ્રાણોની હિંસા આદી થાય, તે વાણી પણ અસત્ય જ છે એવી વાણી કેવળ
વચનયોગની અપેક્ષાએ જ અસત્યરૂપ માનવામા આવતી નથી પણ તે મન
યોગ અને કાયયોગની અપેક્ષાએ પણ અનત્ય મનાય છે આ પ્રકારની અસત્ય
વાણી કે જે " અકુસલા " ભાષા સમિતિથી રહિત હોવો હોય તે તથા " અલિ

કરતે હોં ઓર ફિર વૈઠે = સ્વાતે હોં, એક અપનલોગ હોં જો રાત દિન પરિશ્રમ કરકે ખી ડરવર્તિ કે લાયક સાધન મામત્રી નહીં જુઠા પાતે હોં, અતઃ અચ્છા હોં ઇન સવકો જય યે નૌકાઓં ઠારા વાતર જાને લગે તય ઇનકો નષ્ટ કર દિયા જાવે । પક્ષિ સમૂહ ખી રેતી આદિકા યહુત નુકસાન કરતે હૈ અતઃ ઇન્હેં ખી માર ઢાલો । અમુક જગત પર ચઢા ખારી ઉપદ્રવ ઇસ સમય હો રહા હૈ, સેના વઘા જાવે ઓર ઉપદ્રવકા રિયોંકો નષ્ટ કર વઘાસે વિજયશ્રી પ્રાપ્તકર લીટ આવે તો વઘુત અચ્છી યાત હૈ । ઇસ તરફ ફિર ઇગઢા કરનેવાલે લોગ અપના માયા ભવિષ્યમેં ડુંચા નહીં ડઠા સકેગે । યદિ તુમ્હારે પાસ વ્યાપાર આદિસે ઇસ સમય કોઈ આય (આમદાની)કા સાધન નહીં હૈ તો ગાડી વાહન આદિકો ખાંડેપર ક્યોં નહીં ચલાતે હો ચલાઓ, ઇમસે હી તુમ્હેં લાભ હોગા દેવો ઉપનયન(જનોહ), ચોલક, વિવાહ યજ્ઞ આદિ જિનને ખી યે શુભ કૃત્ય હોં વે ણેસે હી યોડે કિયે જાતે હૈ, ઇન્હેં તો અમુક શુભ દિવસમેં, અમુક તિથિમેં, વવાદિ ગ્યારહ કરણોં સે અમુક શુભ કરણ મે ણવ અમુક શુભમુહૂર્ત આદિમેં કિયા જાતા હૈ, ઇમલિયે માઈ । તુમ્હે ણેસા મૌકા આવે તત તુમ ઇન કૃત્યોંકો શુભ દિવસ આદિમે કરના । દેવો ઘરમેં ચહ નવીન વહ

ખૂબ નાણા ઝમાય છે, અને પછી બેઠા બેઠા ખાય છે આપણે જ એવા છીએ કે જે રાત્રિનિપરિશ્રમ કરવા જતાં પણ ભરણપોષણને લાયક વસ્તુ પ્રાપ્ત કરી શકતા નથી, તો તે બધા બ્યારે નૌકાઓમા સફર કરતા હોય ત્યારે તેમને નાશ કરવામા આવે તો ઘણું સાફ થાય પક્ષિગણ પણ ખેતીના પાકને ઘણું જ નુકસાન કરે છે, તો તેમને પણ ખારી નાખો અત્યારે અમુક જગ્યાએ ભારે તોફાન ચાલે છે, ત્યાં લશ્કર બંધ અને તોફાનીઓની ડતલ ડરીને ત્યાથી વિજય પ્રાપ્ત કરીને પાછું આવે તે બહુ જ ઇચ્છનીય છે આમ કરવાથી તોફાની માણસો ભવિષ્યમા કદી પણ રાજ્ય સામે માથું ઊંચકશે નહીં એ તમારી પાસે વ્યાપાર આદિ આવડતું કેઈ પણ સાધન ન હોય તો ગાડી, વાહન આદિને ભાડે કેમ ચલાવતા નથી ? તે માધને ભાડે ચલાવશો તો તમને લાભ થશે ઉપનયન, ચોલક-મોવાળા ઉતરાવવાની ક્રિયા, વિવાહ, યજ્ઞ આદિ જે શુભ કૃત્યો છે તે એમને એમ થોડા થાય છે । એ શુભકૃત્યો તો અમુક શુભ દિવસોએ અમુક શુભ તિથિએ, બવાદિ ગ્યારહ કરણોમાથી અમુક શુભ કરણમા અને અમુક શુભ મુહૂર્ત આદિમા કરવા બેઠાએ તો ભાઈ ! તમારે ત્યાં પણ એવો અવસર આવે ત્યારે તમે પણ તે કૃત્યો શુભ દિવસ આદિમા કરો, બુવો !

આઈ છે—પ્રથમ સમય જયેં સ્નાન કરનેકા હો તય વહ શુભ
 ઘડી આદિમેં હી કરાના, હમસેં હસકા સૌભાગ્ય સન્તતિ ણવ સમૃદ્ધિકી
 વૃદ્ધિ હોગી । હસી તરહ પ્રમુતિકા કા જય સ્નાન કરાનાં હો તય ખી
 હન સય વાતો કા ગ્યાન રચના । શુભ કૃત્યોં કો કરતે સમય હસ વાત
 કા ખી પૂરા રહ્યાલ રચના ચાહિયે કિ હસ સમય ચિત્તમેં કિમી
 પ્રકારકી ગ્લાનિકા માવ ન જગને પાવે, હર્ષવિમોર (હર્ષમગ્ન) ઘન કર
 હી સય કામ કિયા કરો । સૂત્ર ઠાટનાટસે મન્ય, માસાદિકોં કા ઉપયોગ
 કરો । કૌતુક, વિસ્નાપન, તથા શાંતિકર્મ આદિ સત્કૃત્ય અપને જીવન આદિ
 કી રક્ષા કે લિયે જાશિ સૂર્યત્રયોં પર જય રાહુદારા આક્રમણ હો
 તય ર અવશ્ય કરો । કાલી આદિ દેવિયોં કી પ્રસન્નતા સપાદન કરનેકે
 લિયે વહે આનન્દકે સાથ પિષ્ટ સે અપને મસ્તકકી આકૃતિ ઘના કર
 હનકે સમક્ષ વલિ ચઢાયા કરો । તથા પશુવલિ ખી ચઢાઓ, વલિ ચઢાતે
 સમય રૂચ ઉત્સવ મનાઓ । હનકી આરતી ઉતારો, હસ ઉત્સવમેં
 હચ્છાનુસાર વિવિધ ઔપધિયોંકા, વાજીકરણ આદિ દવાઈયોંકા મધ્યા-
 નપાન માત્યાનુલેપન આદિ કા રૂચ ઉપયોગ કરો । માનવજીવનકા યહ

ધરમા નવવધૂ આવી છે, તેને ત્યારે મીઠી પહેલી વખત સ્નાન કરવાનું આવે
 ત્યારે તે ગુલ ઘડિ આદિમા ઠગવણુ જોઈએ તેમ ઠરવાથી તેનું મૌલાગ્ય મતતિ
 અને સમૃદ્ધિ વધશે-એ જ પ્રમાણે પ્રમુતિકાને પણ ત્યારે સ્નાન ઠગવવાનું
 હોય ત્યારે પણ આ બધી બાબતોનું ધ્યાન રાખવું જોઈએ શુભકૃત્યો ઠરતી
 વખતે તે વાતની પણ પૂરે પૂરી કાળજી રાખવી કે ત્યારે ચિત્તમા કોઈ પણ
 પ્રકારની ગ્લાનિનો ભાવ ન જાણે, હર્ષવિમોર થઈને જ સધળા કામે કર્યા કરે ।
 ખૂબ ઠાઠ માઠથી માન મદિરા આદિનો ઉપયોગ કરે ત્યારે ત્યારે સૂર્ય ચન્દ્ર
 પગ રાહુનું આક્રમણ વાય-ચન્દ્ર કે સૂર્ય ગ્રહણ વાય ત્યારે પોતાના જીવન
 આદિની રક્ષાને માટે કૌતુક, વિસ્નાપન, શાંતિકર્મ આદિ સત્કૃત્યો અવશ્ય કરે ।
 કાલીકા આદિ દેવીને પ્રમન્ન કરવા માટે ઘણા આનંદ પૂર્વક લોટથી
 પોતાના મસ્તક જેવો આઠાર બનાવાને તેમને બલિ આપ્યા કરે, તથા પશુ
 જોનું બલિદાન પણ આપે, અને આ બલિ અર્પતી વખતે જળ ઉત્સવ મનાવે ।
 તેમની આરતી ઉતારે, તે ઉત્સવમા ઇચ્છાનુચ્ચ વિવિધ ઔપધિયોનો, વાજક
 રણુ આદિ દવાઓનો, ભક્ષ્યાનપાનનો, ફૂલની માળાઓનો અને અનુલેપનોનો
 જળ ઉપયોગ કરે । માનવ જીવનનો આવો મમય વારવાર થોડો જ મહે છે ?
 ત્યારે અશુભસૂચક ધૂમડેતુ આદિ ગ્રહો દેખાય ખરાબ વર્ષના આવે, ખરાબ

કરતે હોં ઓર ફિર પૈઠે = સ્વાતે હોં, ઇક અપનલોગ હોં જો રાત દિન પરિશ્રમ કરકે મીં ઉદરપૂર્તિ કે લાયક સાધન મામત્રી નહીં જુટા પાતે હોં, અતઃ અચ્છા હોં ઇન સપ્તકો જન યે નૌકાઓં ઢારા ગાહર જાને લગે તય ઇનકો નષ્ટ કર દિયા જાવે । પક્ષિ સમૂહ મીં રેતી આદિકા ઘટ્ટ નુકસાન કરતે હોં અતઃ ઇન્હેં મીં માર ઢાલો । અમુક જગહ પર ઘડા ભારી ઉપદ્રવ ઇસ સમય હો રહા હોં, સેના ચલા જાવે ઓર ઉપદ્રવકારિયોંકો નષ્ટ કર ચલાસે ત્રિજયશ્રી પ્રાસકર લીટ આવે તો વૃત્ત અચ્છી ચાત હોં । ઇસ તરહ ફિર ઇગડા કરનેવાલે લોગ અપના માથા મલિષ્મમેં ઝૂંચા નહીંં ઉઠા સકેંગે । યદિ તુમ્હારે પાસ વ્યાપાર આદિસે ઇસ સમય કોઈ આવ (આમદાની)કા સાધન નહીં હોં તો ગાડી ચાલન આદિકો ભાંડેપર કયોં નહીંં ચલાતે હોં ચલાઓ, ઇમસે હીં તુમ્હેં લાભ હોગા દેવો ઉપનયન (જનોહ), ચોલક, વિવાહ યજ્ઞ આદિ જિનને મીં યે શુભ કૃત્ય હોં વે પેસે હીં યોડે કિયે જાતે હોં, ઇન્હેં તો અમુક શુભ દિવસમેં, અમુક તિથિમેં, વવાદિ ગ્યારહ કરણોં સે અમુક શુભ કરણ મેં ઇવ અમુક શુભમુહૂર્ત આદિમેં કિયા જાતા હોં, ઇસલિયે માર્હ । તુમ્હેં એસા મોકા આવે તવ તુમ ઇન કૃત્યોંકો શુભ દિવસ આદિમેં કરના । દેવો ઘરમેં યહ નવીન વહ

ખૂબ નાણા ઇમાય છે, અને પછી બેકા બેકા ખાય છે આપણે જ એવા છીએ કે જે રાત નિપરિશ્રમ કરવા જતાં પણ ભરણપોષણને લાયક વસ્તુ પ્રાપ્ત કરી શકતા નથી, તો તે બધા બ્યારે નોકાઓમા સફર કરતા હોય ત્યારે તેમને નાશ કરવામા આવે તો ઘણું માફ થાય પક્ષિગણ પણ ખેતીના પાકને ઘણું જ નુકશાન કરે છે, તો તેમને પણ મારી નાખો અત્યારે અમુક જગ્યાએ ભારે તોફાન ચાલે છે, ત્યાં લશ્કર બાય અને તોફાનીઓની કતલ કરીને ત્યાથી વિજય પ્રાપ્ત કરીને પાછું આવે તે બહુ જ ઇચ્છનીય છે આમ કરવાથી તોફાની માણસો ભવિષ્યમા કદી પણ સભ્ય સામે માથું ઊંચકશે નહીંં જે તમારી પાસે વ્યાપાર આદિ આવકનું સ્રોત પણ સાધન ન હોય તો ગાડી, વાહન આદિને ભાડે કેમ ચલાવતા નથી? તે સાધનો ભાડે ચલાવશો તો તમને લાભ થશે ઉપનયન, ચોલક-મેવાળા ઉતરાવવાની ક્રિયા, વિવાહ, યજ્ઞ આદિ જે શુભ કૃત્યો છે તે એમને એમ થોડા થાય છે । એ શુભકૃત્યો તો અમુક શુભ દિવસોએ અમુક શુભ તિથિએ, બવાદિ ગ્યારહ કરણોમાથી અમુક શુભ કરણમા અને અમુક શુભ મુહૂર્ત આદિમા કરવા બેઠાં હોં તો ભાઈ! તમારે ત્યાં પણ એવો અવસર આવે ત્યારે તમે પણ તે કૃત્યો શુભ દિવસ આદિમા કરો, જવો !

આઈ છે—પ્રથમ સમય જય इसका स्नान करनेका हो तब वह शुभ घड़ी आदिमें ही कराना, इससे इसका सौभाग्य सन्तति एव समृद्धि की वृद्धि होगी। इसी तरह प्रसूतिका का जय स्नान कराना हो तब भी इन सब बातों का यान रखना। शुभ कृत्यों को करते समय इस बात का भी पूरा खयाल रखना चाहिये कि उस समय चित्तमें किसी प्रकारकी ग्लानिका भाव न जगने पावे, हर्षविभोर (हर्षमग्न) घन कर ही सब काम किया करो। खून ठाटपाटसे मन्त्र, मासादिकों का उपयोग करो। कौतुक, विस्नापन, तथा शातिकर्म आदि सत्कृत्य अपने जीवन आदि की रक्षा के लिये शशि सूर्यग्रहों पर जय २ राहुद्वारा आक्रमण हो तब २ अवश्य करो। काली आदि देवियों की प्रसन्नता संपादन करनेके लिये बड़े आनन्दके साथ पिण्ड से अपने मस्तककी आकृति बना कर उनके समक्ष बलि चढ़ाया करो। तथा पशुबलि भी चढ़ाओ, बलि चढ़ाते समय खून उत्सव मनाओ। उनकी आरती उतारो, उस उत्सवमें इच्छानुसार विविध औषधियोंका, बाजीकरण आदि दवाईयोंका मक्ष्या-न्नपान माल्यानुलेपन आदि का सूष उपयोग करो। मानवजीवनका यह

ધરમા નવવધુ આવી છે, તેને ત્યારે સૌથી પહેલી વખત સ્નાન કરવાનું આવે ત્યારે તે શુભ ઘડિ આદિમા ડગવણુ જોડે તેમ કરવાથી તેનું સૌભાગ્ય સતતિ અને સમૃદ્ધિ વધશે-એ જ પ્રમાણે પ્રસૂતિકાને પણ ત્યારે સ્નાન કરાવવાનું હોય ત્યારે પણ આ બંધી બાળતોતું ધ્યાન રાખવું જોડે શુભકૃત્યો કરતી વખતે તે વાતની પણ પૂરે પૂરી કાળજી રાખવી કે ત્યારે ચિત્તમા કોઈ પણ પ્રકારની ગ્લાનિનો ભાવ ન જાગે, હર્ષવિભોર થઈને જ મધળા ઢામો કર્યા કરે ખૂબ ઠાઠ માઠથી મામ મહિરા આદિનો ઉપયોગ કરે ત્યારે ત્યારે સૂર્ય ચન્દ્ર પર રાહુનું આક્રમણ થાય-ચન્દ્ર કે સૂર્ય ગ્રહણ થાય ત્યારે પોતાના જીવન આદિની રક્ષાને માટે કૌતુક, વિસ્નાપન, શાતિકર્મ આદિ સત્કૃત્યો અવરય કરે કાલીકા આદિ દેવીને પ્રમન્ન કરવા માટે ઘણા આનંદ પૂર્વક લોટવી પોતાના મસ્તક જેવો આઢાર બનાવીને તેમને બલિ આપ્યા કરે, તથા પશુ જોતું બલિદાન પણ આપે, અને આ બલિ અર્પતી વખતે ખૂબ ઉત્સવ મનાવે તેમની આરતી ઉતારે, તે ઉત્સવમા ઇચ્છાનુસાર વિવિધ ઔષધિઓનો, વાજડ રણુ આદિ દવાઓનો, ભક્ષ્યાન્નપાનનો, ફૂલની માળાઓનો અને અનુલેપનોનો ખૂબ ઉપયોગ કરે માનવ જીવનનો આવો સમય વારંવાર યોડે જ મલે છે ? ત્યારે અશુભસૂચક ધૂમકેતુ આદિ ગ્રહો દેખાય ખરાબ વ્યવસ્થા આવે, ખરાબ

કરતે હોં ઓર ફિર વૈટે = સ્વાતે હોં, એક અપનલોગ હોં જો રાત્ર દિન પરિશ્રમ કરકે ખી ઉદરવર્તિ કે લાયક સાધન મામત્રી નહીં જુટા પાતે હોં, અતઃ અચ્છા હોં ઇન સપકો જય યે નૌકાઓં ઢારા યાહર જાને લગે તય ઇનકો નષ્ટ કર દિયા જાવે । પક્ષિ સમજ ખી રેતી આઢિકા યહુત નુકસાન કરતે હૈ અતઃ ઇન્હોં ખી માર ઢાલો । અમુક જગદ પર યહા ખારી ઉપદ્રવ ઇસ સમય હો રહા હૈ, સેના ચલા જાવે ઓર ઉપદ્રવકારિયોંકો નષ્ટ કર વહાંસે વિજયત્રી પ્રાપ્તકર લીટ આવે તો યહુત અચ્છી ઘાત હૈ । ઇસ તરહ ફિર ઇગડા કરનેવાલે લોગ અપના માયા ભવિષ્યમેં ઝૂંચા નહીં ઉઠા સકેંગે । યદિ તુમ્હારે પાસ વ્યાપાર આદિસે ઇસ સમય કોઈ આવ (આમદાની)કા સાધન નહીં હૈ તો ગાડી વાહન આદિકો ભાડેપર કયોં નહીં ચલાતે હો વચ્ચાઓ, ઇમસે હી તુમ્હેં લાભ હોગા દેવો ઉપનયન (જનોહ), ચોલક, વિવાહ યજ્ઞ આદિ જિનને ખી યે શુભ કૃત્ય હૈ વે પેસે હી બોડે કિયે જાતે હૈ, ઇન્હોં તો અમુક શુભ દિવસમેં, અમુક તિથિમેં, પવાદિ ગ્યારહ કરણોં સે અમુક શુભ કરણ મેં ણવ અમુક શુભમુહૂર્ત આદિમેં કિયા જાતા હૈ, ઇસલિયે ભાઈ ! તુમ્હે પેસા મૌકા આવે તત તુમ ઇન કૃત્યોંકો શુભ દિવસ આદિમેં કરના । દેવો ઘરમે યહ નવીન વહુ

ખૂબ નાણા ડમાય છે અને પછી બેઠા બેઠા ખાય છે આપણે જ એવા છીએ કે જે રાત્રિનિપશ્ચિમ કરવા જતાં પણ લશ્ચરપોષણને લાયક વસ્તુ પ્રાપ્ત કરી શકતા નથી, તો તે બધા બન્યા નૌકાઓમા સફર કરતા હોય ત્યારે તેમને નાશ કરવામા આવે તો ઘણું મારું થાય પક્ષિગણ પણ ખેતીના પાકને ઘણું જ નુકશાન કરે છે, તો તેમને પણ મારી નાખો અત્યારે અમુક જગ્યાએ ભારે તોફાન ચાલે છે, ત્યાં લશ્કર બંધ અને તોફાનીઓની કતલ કરીને ત્યાંથી વિજય પ્રાપ્ત કરીને પાછા આવે તે બહુ જ ઇષ્ટનીય છે આમ કરવાથી તોફાની માણસો ભવિષ્યમા ઠીક પણ રાત્રિ સામે મારું જીવડશે નહીં જે તમારી પાસે વ્યાપાર આદિ આવડતુ કેઈ પણ સાધન ન હોય તો ગાડી, વાહન આદિને ભાડે કેમ ચલાવતા નથી? તે માધને ભાડે ચલાવશે તો તમને લાભ થશે ઉપનયન, ચોલક-મેવાળા ઉતરાવવાની ક્રિયા, વિવાહ, યજ્ઞ આદિ જે શુભ કૃત્યો છે તે એમને એમ થોડા થાય છે । જે શુભકૃત્યો તો અમુક શુભ દિવસોએ અમુક શુભ તિથિએ, પવાદિ અગ્યાર ડરણોમાર્થી અમુક શુભ કરણમા અને અમુક શુભ મુહૂર્ત આદિમા કરવા જોઈએ તો ભાઈ ! તમારે ત્યાં પણ એવો અવસર આવે ત્યારે તમે પણ તે કૃત્યો શુભ દિવસ આદિમા કરો, જવો !

આઈ છે—પ્રથમ સમય જપ્ત હમકા સ્નાન કરનેકા હો તવ વત્ત શુભ ઘડી આદિમેં હી કરાના, હમસે હમકા સૌ ભાગ્ય સન્તતિ એવ સમૃદ્ધિકી વૃદ્ધિ હોગી । હસી તરત્ત પ્રમૃતિકા કા જપ્ત સ્નાન કરાનાં હો તવ મીં હન સપ્ત યાતૌં કા યાન રપના । શુભ કૃત્યોં પો કરતે સમય હસ યાત કા મીં પૂરા ૨ રચાલ રગ્વના ચાહિયે કિ હસ મમત્ત ચિત્તમેં કિમ્મી પ્રકારકી ગ્લાનિકા માવ ન જગને પાવે, હર્ષચિમ્બોર (હર્ષમગ્ન) વન કર હી સપ્ત કામ કિશ કરો । ગૃત્ત ઠાટગાટસે મન્ય, માસાદિકોં કા ઉપયોગ કરો । કૌતુક, વિસ્નાપન, તથા શાતિકર્મ આદિ સત્કૃત્ય અપને જીવન આદિ કી રક્ષા કે લિયે શશિ સૂર્યત્રયોં પર જપ્ત ૨ રાહુદ્વારા આક્રમણ હો તવ ૨ અવહય કરો । કાલી આદિ દેવિયોં કી પ્રસન્નતા સપાદન કરનેકે લિયે ઘડે આનન્દકે સાગ્ત પિષ્ટ સે અપને મસ્તકકી આકૃતિ વના કર હનકે સમક્ષ ચલિ ચઢાયા કરો । તથા પશુચલિ મીં ચઢાઓ, ચલિ ચઢાતે સમય સ્ત્રવ ઉત્સવ મનાઓ । હનકી આરતી ઉતારો, હસ ઉત્સવમેં હચ્છાનુસાર વિવિધ ઔષધિયોંકા, વાજીકરણ આદિ દવાઈયોંકા ભક્ષ્યાન્નપાન માલ્યાનુલેપન આદિ કા સુત્ર ઉપયોગ કરો । માનવજીવનકા યહ

ધરમા નવવધૂ આવી છે, તેને લ્યારે મીવી પહેલી વખત સ્નાન કરવાનુ આવે ત્યારે તે શુભ ઘડિ આદિમા ડગવણુ બેઠએ તેમ કરવાથી તેનુ મીભાગ્ય મતતિ અને સમૃદ્ધિ વધશે—એ જ પ્રમાણે પ્રમૃતિકા ને પણ ત્યારે સ્નાન ડગવવાનુ હોય ત્યારે પણ આ બધી બાબતોનુ ધ્યાન રાખણુ જોઈએ શુભકૃત્યો કરતી વખતે તે વાતની પણ પૂરે પૂરી ઢાળણુ રાખવી કે ત્યારે ચિત્તમા કોઈ પણ પ્રકારની ગ્લાનિનો ભાવ ન લાગે, હર્ષવિભોગ થઈને જ સઘળા કામો કર્યા કરે । ખૂબ ઠાંક માંચી માત્ર મદિગ આદિનો ઉપયોગ કરે । લ્યારે લ્યારે સૂર્ય ચન્દ્ર પર રાહુનુ આક્રમણ વાય—ચન્દ્ર કે સૂર્ય ગ્રહણ વાય ત્યારે પોતાના છત્રન આદિની રક્ષાને માટે કૌતુક, વિસ્નાપન, શાતિકર્મ આદિ સત્કૃત્યો અવશ્ય કરે । કાલીકા આદિ દેવીને પ્રસન્ન કરવા માટે ઘણા આનંદ પૂર્વક લોટવી પોતાના મન્ત્રક જેવો આકાર બનાવવો તેમને બલિ આપ્યા કરે, તથા પશુઓનુ બલિદાન પણ આપે, અને આ બલિ અર્પતી વખતે ખૂબ ઉત્સવ મનાવે । તેમની આગતી ઉતારે, તે ઉત્સવમા હચ્છાનુસાર વિવિધ ઔષધિયોનો, વાણક રણુ આદિ દવાઓનો, ભક્ષ્યાન્નપાનનો, ફૂલની માળાઓનો અને અનુલેપનોનો ખૂબ ઉપયોગ કરે । માનવ જીવનનો આવો મમય વારંવાર ચોડો જ મલે છે ? લ્યારે અશુભસૂચક ધૂમકેતુ આદિ ગ્રહો દેખાય ખરાબ સ્વપ્ના આવે, ખગળ

કરતે હૈં ઓર ફિર પૈઠે - સ્વાતે હૈં, એક અપનલોગ હૈં જો રાત દિન પરિશ્રમ કરકે મીં ડરપૂર્તિં કે લાયક સાધન મામત્રી નહીં જુટા પાતે હૈં, અતઃ અચ્છા હોં ઇન સત્રકો જય યે નૌકાઓં દ્વારા ત્રાપર જાને લગે તથા ઇનકો નષ્ટ કર દિયા જાવે । પશ્ચિ સમ્રાટ મીં રેતી આદિકા ઘટુત નુકસાન કરતે હૈં અતઃ ઇન્હેં મીં માર દાલો । અમુક જગત પર ઘડા મારી ઉપદ્રવ ઇસ સમય હો રહા હૈં, સેના ચર્તાં જાને ઓર ઉપદ્રવકારિયોંકો નષ્ટ કર વહાંસે વિજયત્રી પ્રાપ્તકર લીટ આવે તો વદ્યુત અચ્છી વાત હૈં । ઇસ તરફ ફિર ઇગડા કરનેવાલે લોગ અપના માયા ભવિષ્યમેં ડુંચા નહીં ઊઠા સકેંગે । યદિ તુમ્હારે પાસ વ્યાપાર આદિસે ઇસ સમય કોઈ આવ (આમદાની)કા સાધન નહીં હૈં તો ગાડી વાતન આદિકો મારેપર ક્યોં નહીં ચલાતે હોં ચલાઓ, ઇમસે હીં તુમ્હેં લાભ હોગા દેવો ઉપનયન (જનોઈ), ચોલક, વિવાહ યજ્ઞ આદિ જિનને મીં યે શુભ કૃત્ય હૈં વે પેસે હીં યોડે કિયે જાતે હૈં, ઇન્હેં તો અમુક શુભ દિવસમેં, અમુક તિથિમેં, યવાદિ ગ્રહાર્થ કરણોંસે અમુક શુભ કરણ મેં યવ અમુક શુભમુહૂર્ત આદિમેં કિયા જાતા હૈં, ઇસલિયે માર્ફ ! તુમ્હે પેસા મૌકા આવે તવ તુમ ઇન કૃત્યોંકો શુભ દિવસ આદિમે કરના । દેવો ઘરમે યદ નવીન ઘડ

ખૂબ નાણા કમાય છે અને પછી ખેડા ખેડા ખાય છે આપણે જ એવા છીએ કે જે રાત દિન પરિશ્રમ કરવા જતા પણ ભરણપોષણને લાયક વસ્તુ પ્રાપ્ત કરી શકતા નથી, તો તે બધા જ્યારે નૌકાઓમાં સફર કરતા હોય ત્યારે તેમને નાશ કરવામાં આવે તો ઘણું મારું થાય પશ્ચિમ પણ ખેતીના પાકને ઘણું જ નુક-શાન કરે છે, તો તેમને પણ મારી નાખો અત્યારે અમુક જગ્યાએ ભારે તોફાન આવે છે, ત્યાં લશ્કર બંધ અને તોફાનીઓની કતલ કરીને ત્યાંથી વિનય પ્રત્ન કરીને પાછું આવે તે બહુ જ ઇચ્છનીય છે આમ કરવાથી તોફાની માણસો ભવિષ્યમાં કદી પણ રાજ્ય સામે માથું ઊંચકશે નહીં જે તમારી પાસે વ્યાપાર આદિ આવડતુ કોઈ પણ સાધન ન હોય તો ગાડી, વાહન આદિને ભાડે ડેમ ચલાવતા નથી? તે સાધનો ભાડે ચલાવશો તો તમને લાભ થશે ઉપનયન, ચોલક-મેવાળા ઉત્તરાવવાની ક્રિયા, વિવાહ, યજ્ઞ આદિ જે શુભ કૃત્યો છે તે એમને એમ થોડા થાય છે ! જે શુભકૃત્યો તો અમુક શુભ દિવસોએ અમુક શુભ તિથિએ, બવાદિ ગ્રહાર્થ કરણોમાંથી અમુક શુભ કરણમાં અને અમુક શુભ મુહૂર્ત આદિમાં કરવા જોઈએ તો ભાઈ ! તમારે ત્યાં પણ એવો અવસર આવે ત્યારે તમે પણ તે કૃત્યો શુભ દિવસ આદિમાં કરો, જુઓ !

આઈ છે—પ્રથમ સમય જય इसका स्नान करनेका हो तब वह शुभ घड़ी आदिमें ही कराना, इससे इनका सांभाग्य सन्तति एव समृद्धि की वृद्धि होगी । इसी तरह प्रभुतिका का जय स्नान कराना हो तब भी इन सब बातों का ध्यान रखना । शुभ कृत्यों को करते समय इस बात का भी पूरा रखा रखना चाहिये कि उस समय चित्तमें किसी प्रकारकी ग्लानिका भाव न जगने पावे, हर्षविभोर (हर्षमग्न) बन कर ही सब काम किया करो । छत्र छाटनाटसे मग्न, मासादिकों का उपयोग करो । कौतुक, विस्मापन्न, तथा गतिर्भ्रम आदि सत्कृत्य अपने जीवन आदि की रक्षा के लिये शशि सूर्यत्रयों पर जय २ राहुद्वारा आक्रमण हो तब २ अवश्य करो । काली आदि देवियों की प्रसन्नता संपादन करनेके लिये बड़े आनन्दके साथ पिण्ड से अपने मस्तककी आकृति बना कर उनके समक्ष बलि चढ़ाया करो । तथा पशुबलि भी चढ़ाओ, बलि चढ़ाते समय छत्र उत्सव मनाओ । उनकी आरती उतारो, उस उत्सवमें इच्छानुसार विविध औषधियोंका, वाजीकरण आदि दवाइयोंका भक्ष्यान्नपान माल्यानुलेपन आदि का पूरा उपयोग करो । मानवजीवनका यह

ધરમા નવવધુ આવી છે, તેને ત્યારે સૌથી પહેલી વખત સ્નાન કરવાનું આવે ત્યારે તે શુભ ઘડિ આદિમા ડગવણુ જોઇએ તેમ ડરવાથી તેનું મૌભાગ્ય સન્તતિ અને સમૃદ્ધિ વધશે-એ જ પ્રમાણે પ્રભુતિકાને પણ ત્યારે સ્નાન ડગવવાનું હોય ત્યારે પણ આ બધી બાબતોનું ધ્યાન રાખણુ જોઈએ શુભકૃત્યો ડરતી વખતે તે વાતની પણ પૂરે પૂરી કાળજી રાખવી કે ત્યારે ચિત્તમા ડોષ પણ પ્રકારની ગ્લાનિનો ભાવ ન જાગે, હર્ષવિભોર થઈને જ સધળા કામો કર્યા ડરે ખૂબ ઠાક માઠથી માત્ર મદિરા આદિનો ઉપયોગ ડરે ત્યારે ત્યારે સૂર્ય ચન્દ્ર પર રાહુનું આક્રમણ વાય-ચન્દ્ર કે સૂર્ય ગ્રહણ વાય ત્યારે પોતાના જીવન આદિની રક્ષાને માટે કૌતુક, વિસ્માપન, ગાતિર્ભ્રમ આદિ સત્કૃત્યો અવશ્ય ડરે કાલીકા આદિ દેવીને પ્રસન્ન ડરવા માટે ઘણા આનંદ પૂર્વક લોટવી પોતાના મન્ત્ર જોવો આઢાર બનાવીને તેમને બલિ આપ્યા ડરે, તથા પશુ-જોનું બલિદાન પણ આપો, અને આ બલિ અર્પતી વખતે ખૂબ ઉત્સવ મનાવો તેમની આરતી ઉતારો, તે ઉત્સવમા ઇચ્છાનુસાર વિવિધ ઔષધિયોનો, વાજીક રણુ આદિ દવાઓનો, ભક્ષ્યાન્નપાનનો, ફૂલની માળાઓનો અને અનુલેપનોનો ખૂબ ઉપયોગ ડરે માનવ જીવનનો આવો સમય વારવાર થોડો જ મલે ે ? ત્યારે અશુભસંચય ધૂમકેતુ આદિ ગ્રહો દેખાય ખરાબ સ્વપ્ના આવે, ખગળ

નરકતિર્યગ્યોનિઃ સઙ્ખ્યાસઙ્ખ્યકાલપ્રમાણા, વનસ્પત્યપેક્ષયાનન્તકાલપ્રમાણા, તત્રોત્પત્તિરૂપા 'વૃદ્ધતિ' વર્ધયન્તિ, 'તેણ ય અલિણ' તેન ચાલીકેન=અસત્ય ભાષણકર્મણા 'સમણુવદ્ધા' સમણુવદ્ધાઃ=અન્ધ પ્રાપ્તા 'આરદ્ધા' આવિષ્ટાઃ=આશ્લિષ્ટાઃ 'પુણન્નમવધયારે' પૂર્વમગ્નઅધિકારે = પુનઃ પુનર્નિર્મગ્નઅધિકારસ્તસ્મિન્ ભીમે=ભયંકરે 'ભમતિ' ભ્રમન્તિ-મૃષાભાષિણો જીવા જન્મજરામરણચોરનિવૃદ્ધ દુઃસ્વાન્યકારકાન્તારે નિપત્તિતાઃ સન્તો વિનિધાનિ કષ્ટાન્યનુભવતીત્યર્થઃ । તથા કથયિત્વ ઇદં મનુષ્યલોકે સમુત્પન્ના અપિ 'દુર્ગદ્વસદ્વિમુવગયા' દુર્ગતિમસતિ મુપગતા=ચ્છેદનમુલસ્થિતિ પ્રાપ્તા 'દીમતિ' દૃશ્યન્તે । અથ ભાગ્ય-મૃષાભાષિણો નરકતિર્યગ્યોનિષુ સમુત્પન્નન્તે । અથ કવચિચ્ચિત્તરકાદિતો નિસ્સૃત્ય મનુષ્યશરીર

તથા તિર્યચ ચોનિકો (વૃદ્ધતિ) વદાતે હૈ । અર્થાત્ મૃષાવાદી જન મૃષા ભાષણસે ઉત્પન્ન પાપોં કે ઉદયસે પત્યપ્રમાણવાલી તિર્યચ ચોનિકો તથા ઉત્કૃષ્ટ તેતીસ સાગરોપમ પ્રમાણકાલવાલી નરકગતિકો અપની ઉત્પત્તિ સ્થાન બનાતે હૈ । વહા વે સઙ્ખ્યાન કાલ, અસઙ્ખ્યાત કાલ ઇવ વનસ્પતિ અપેક્ષા અનન્તકાલ તક રહતે હૈ । (તેણ ય અલિણ) ઉસ અલીક ભાષણકર્મસે (સમણુવદ્ધા) વધ કો પ્રાપ્ત હુએ (આરદ્ધા) ક્ષીર નીરકી તરહ પરસ્પર એક ક્ષેત્રાવગાહરૂપ સવધસે વિશિષ્ટ હુએ વે જીવ (પુણન્નમ વધયારે ભીમે) પુનઃ પુનઃ જન્મરૂપ ભયંકર અધિકાર મેં (ભમતિ) ભ્રમણ કરતે હૈ । અર્થાત્ જો મૃષાવાદી જન હોતે હૈ વે જન્મ, જરા, મરણ રૂપ ઘોર ગાઢ અધિકારમેં પતિત હો કર વિવિધ કષ્ટોં દો ભોગા કરતે હૈ । તથા (દુર્ગદ્વસદ્વિમુવગયા તેય દીસતિ) યદિ વે કદાચ કિસીં મી તરહસે ઇસ મનુષ્યલોકમે ઉત્પન્ન હો જાવે તો મી કહેશ વહુલ સ્થિતિ

વાણી "તિર્યગિરિયજોનિ" નરક તથા તિર્યચ ચોનિને "વૃદ્ધતિ" વધારે છે એટલે કે મૃષાવાદી લોકો અસત્ય વાણીથી જનિત પાપોના ઉદયથી પત્ય પ્રમાણવાળી તિર્યચ ચોનિને તથા ઉત્કૃષ્ટ તેતીસ સાગરોપમ પ્રમાણ વાળી નરકગતિને પોતાની ઉત્પત્તિનું સ્થાન બનાવે છે તથા તેઓ સંખ્યાતકાળ, અસંખ્યાતકાળ અને વનસ્પતિની અપેક્ષાએ અનન્તકાળ સુધી રહે છે "તેણ ય અલિણ" તે અસત્યભાષણ કરનારી "સમણુવદ્ધા" બધાયેલા "આરદ્ધા" દૂધ અને પાણીની જેમ પરસ્પર એક ક્ષેત્રાવગાહરૂપ સબની વિશિષ્ટ થયેલ તેઓ "પુણન્નમવધયારે ભીમે" ફરી ફરીને જન્મ લેવા કેમ કે અધિકારમાં "ભમતિ" ભ્રમણ કરે છે, એટલે કે મૃષાવાદી લોકો જન્મ, જરા, અને મરણરૂપ ગાઢ અધિકારમાં પડીને વિવિધ કષ્ટોને ભોગ માંડે છે તથા "દુર્ગદ્વસદ્વિમુવગયા તેય દીસતિ" એ કદાચ તેઓ કોઈ પણ કારણે મનુષ્ય લોકમાં

પાપુનન્યપિવેત તર્હિ હીનદીનતુચ્છજાતિકુલાદિભિઃ અધન્યા એવ વલ્યમાણરૂપેણ
 દુઃખમહુલશરીર પ્રાપ્તા દશ્યન્તે । કથમ્ભૂતાઃ ? ઇત્યાહ—‘ દુગ્ગયા ’ દુર્ગતાઃ=
 દુરવસ્થાં પ્રાપ્તા સર્વવા દરિદ્રા-રૂપર્થઃ, દુરન્તાઃ=દુઃખેન અતઃ=નીવનસ્યાત્
 સાન યેપા તે તથા ‘ પરવસા ’ પરવસાઃ=પરાગીના ‘ અત્યભોગપરિવર્જિયા ’ અર્થ
 ભોગપરિવર્જિતાઃ=અર્થા =ધનનિ ભોગાશ્ચ=શબ્દાદયો વિપયાસ્તૈ પરિવર્જિતા =
 રહિતાઃ । તથા ‘ અમુહિયા ’ અમુહિતાઃ=સુસરહિતા - નિરન્તરમાધિવ્યાધ્યાદિ

કો પ્રાપ્ત હુણ દૃષ્ટિમય હોતે હ । તાત્પર્ય ઇસકા યહી હૈ કિ મૃપાગાદી જન
 નરક તિર્થંચ યોનિમેં જન્મતે હે । યદિ વે કિસી તરહ નરકાદિસે નિકલ
 કર મનુષ્ય ભવ કો પ્રાપ્ત કર ભી લેવે તો ભી વહા વે હીન, દીન, તુચ્છ
 જાતિ કુલ આદિ મેં હી જન્મ ધારણ કરતે હે ઓર અધન્ય હોકર દુઃખ
 મહુલ શરીર કો ધારણ કરતે હુણ દિગ્વલાઈ દેતે હે । યહી બાત સૂત્રકાર
 (દુગ્ગયા) ઇત્યાદિ પદોં દ્વારા પ્રકટ કર રહે હે, વે કહતે હેં કિ યદિ
 વે કિસી પ્રકાર મનુષ્ય પર્યાય વારણ ભી કર લેવે તો ભી વહા ઉનકી
 પરિસ્થિતિ ટીક નહી રહતી હૈ-વે સદા (દુગ્ગયા) દારિદ્ર્યદુઃખ સે
 સન્તસ રહતે હેં (દુરતા) ઉનકે જીવન કા અન્ત દુઃખો સે હોતા હૈ
 (પરવસા) જીવન ભર વે પરાધીન બને રહતે હે । (અત્યભોગપરિવ
 ર્જિયા) અર્થ સપત્તિ ણ્વ શબ્દાદિક ભોગ પનસે, રહિત હોતે હેં ।
 (અમુહિયા) નિરન્તર આધિ, વ્યાધિ, ઉપાધિયોં સે પીડિત રહને કે
 કારણ ઉન્હેં સુખ કા અશ ભી પ્રાપ્ત નહી હોતા હૈ । અથવા “અમુહિયા”

ઉત્પન્ન થાય છે તો પણ અત્યંત દુઃખયુક્ત સ્થિતિમા નજરે પડે છે કહેવાનું
 તાત્પર્ય એ છે કે મૃપાગાદી લોકો નરક તિર્થંચ યોનિમા જન્મ લે છે, પણ
 તેઓ ડોહ પણ પ્રકારે નરકાદિમાથી બહાર નીકળીને મનુષ્યભવને પ્રાપ્ત કરે
 તો પણ ત્યાં તેઓ હીન, દીન, તુચ્છ જાતિ કુળ આદિમા જ જન્મ પામે છે
 અને અધન્ય-તિસ્કૃત યદને અત્યંત દુઃખયુક્ત દશામા મનુષ્ય જીવન વ્યતીત
 કરે છે એ જ વાત સૂત્રકાર “ દુગ્ગયા ” ઇત્યાદિ પદો દ્વારા પ્રગટ કરે છે
 તેઓ કહે છે કે તેઓ ડોહ પણ પ્રકારે મનુષ્ય યોનિમા જન્મ લે છે તો ત્યાં
 તેમની હાલત સાગી હોતી નથી—તેઓ સદા “ દુગ્ગયા ” દારિદ્ર્યના દુઃખોથી
 પીડાય છે, “ દુરતા ” તેમના જીવનનો અંત દુઃખોથી જ આવે છે, “ પર-
 વસા ” આજીવ જીવન તેઓ પરાધીન દશા ભોગવે છે, “ અત્યભોગપરિવર્જિયા ”
 અર્થ-સપત્તિ તથા શબ્દાદિ ભોગથી તેઓ રહિત હોય છે “ અમુહિયા ” નિર
 તર આધિ, વ્યાધિ અને ઉપાધિયોથી પીડાયા કરે છે અને તે કારણે તેમને સુખનો
 અશ પણ પ્રાપ્ત થતો નથી, અથવા “ અમુહિયા ” ની સંસ્કૃત છાયા “ અમુહ ”

નિસેવિણો ' નીચજનનિપેવિણઃ=જ્ઞાતિગુણર્મભિર્નોચા યે જનાસ્તેષા નિપેવિણઃ= ઉત્થાનોપવેશનશયનભોજનપાનાદિભિઃ સહનિરાસિન ' લોગગરહિણિજ્જા ' લોક ગર્હણીયા=સઠઠજનનિન્દનીયાઃ ' મિચ્ચા ' મૃત્યાઃ=મરણીયા ગ્વાન્યે તથા ' અસ- રિસજણસ્સ પેસ્સા ' અસદૃશનનસ્ય=અસમાનશીલમ્-મ્લેચ્છાચારલોકસ્ય ' પેસ્સા ' મૈવ્યાઃ=તદાજ્ઞાકારકાઃ ' દુમ્મેહા ' દુર્મેધાઃ=સદ્બુદ્ધિવર્જિતાઃ, ' લોગવેદઅજ્ઞપ્પસમયસુદ્ધવજ્જિયા ' લોકવેદા યાત્મસમયશ્રુતિવર્જિતાઃ શ્રુતિગ્રન્થસ્ય પ્રત્યક્ સમ્બન્ધાત્ લોકશ્રુતિઃ=લોકાભિમત શાસ્ત્રં ભારતાદિ, વેદશ્રુતિઃ=ઋગ્યજુ સામાર્થ્ય વેદશાસ્ત્રમ્, અધ્યાત્મશ્રુતિઃ=પ્રાત્મસ્વરૂપનિર્ણાયક શાસ્ત્ર, સમયશ્રુતિઃ=અર્હત્પ્રવચન તામિર્વર્જિતાઃ=રહિતા યે તે તથા, ' ધમ્મબુદ્ધિવિયલા ' ધર્મબુદ્ધિવિયલાઃ=શ્રુત ચારિત્રધર્મરહિતા નરાઃ=મનુષ્યાઃ ' દ્વડ્યન્તે ' ક્વચિત્ પૂર્વેણ સમ્બન્ધ. । તથા ' તેણ ય ' તેન ચ=પૂર્વોક્તપ્રકારેણ ' અલિણ ' અલીકેન=મૃષાગ્રાદેન ' અસતણ ' (ણીયજણનિસેવિણો) નીચ જનોં કે સાથ હી યે ડઠા વૈઠા કરતે હૈં

ઔર इन्हों के साथ ये खाते पीते हैं तथा उन्हीं के साथ रहते हैं । (लोग गरहणिज्जा) समस्त जन इनकी निंदा करते रहते हैं । (मिच्चा) दूसरों के दास होकर रहते हैं (असरिसजणस्स पेस्सा) असमानशील वाले-म्लेच्छाचार वाले-लोगों के ये दास होते हैं (दुम्मेहा) सद्बुद्धि से ये वर्जित होते हैं (लोगवेयअज्झप्पसमयसुद्धवज्जिયા) लोकश्रुति वेदश्रुति, अ यातमश्रुति और समयश्रुति से ये रहित होते हैं । लोकाभिमत भारत आदि शास्त्रों का नाम लोकश्रुति है । ऋग्वेद, यजुर्वेद, साम वेद, अथर्ववेद, इनका नाम वेदश्रुति है । आत्मा के स्वरूप के निर्णायक शास्त्र अध्यात्मशास्त्र हैं । अर्हत्प्रवचन का नाम समयश्रुति है । (धम्मबुद्धिवियला) श्रुतचारित्ररूप धर्म से विमुख रहते हैं । तथा (तेण

અને ગોત્ર અધમ હોય છે, “ ણીયજણનિસેવિણો ” નીચ લોકો સાથે જ તે ઉઠે બેસે છે, તેમની સાથે જ તેઓ ખાય પીવે છે તથા તેમની જ સાથે રહે છે, “ લોગગરહિણિજ્જા ” સઘળા લોકો તેમની નિંદા કરે છે “ મિચ્ચા ” અન્યની દામ થઈને રહે છે, “ અસરિસજણસ્સ પેસ્સા ” અસમાન શીલવાળા-મ્લેચ્છા ચાર વાળા લોકોના તેઓ દાસ થાય છે “ દુમ્મેહા ” તેઓ સદ્બુદ્ધિ રહિત હોય છે, “ લોગવેયઅજ્ઞપ્પસમયસુદ્ધવજ્જિયા ” લોકશ્રુતિ, વેદશ્રુતિ અધ્યાત્મશ્રુતિ અને સમયશ્રુતિથી તેઓ રહિત હોય છે લોકાભિમત ભારત આદિ શાસ્ત્રોને લોકશ્રુતિ કહે છે, ઋગ્વેદ, યજુર્વેદ, સામવેદ અને અથર્વવેદને વેદશ્રુતિ કહે છે આત્માના સ્વરૂપનું નિર્ણાયક શાસ્ત્ર અધ્યાત્મશાસ્ત્ર છે અર્હત પ્રવચનને સમયશ્રુતિ કહે છે “ ધમ્મબુદ્ધિવિયલા ” તેઓ શ્રુતચારિત્ર - - - થી

અસત્કેન-અસદ્રૂપેણ અથવા અશાન્તકેન=અનુપશાન્તેન ' ટઙ્ગમાણા ' દયમાનાઃ=મજ્જલ્યમાના ' અવમાણણા પિટ્થિમસાદિસ્ત્રેવપિસુણભેયણગુરુવધવસયણમિત્તાવ-કાવારણાદિયાઈ ' અપમાનનપુટ્ટિમાગાધિક્ષપપિશુનભેદનગુરુગ્ન્ય સ્વજનમિત્રાપક્ષા-રણાદિશનિ=તત્ર અપમાનનમ્=માનમદ્ગઃ, પૃટ્ટિમાસ=પરોક્ષે દોષભાષણ, અધિક્ષેપ.=ધિકારપૂર્વકનિન્દન, પિશુનભેદન=પિશુનૈ = સ્થલૈ. ભેદન=પ્રેમસમ્વન્ધવિચ્છેદન, ગુરુગ્ન્યવસ્વજનમિત્રાણામપક્ષારણ=સ્ત્રવચનૈસ્તર્જન, અથવા-મિત્રાદિભિર્વદ્ધિપ્રકરણ ચ એતાનિ આદિ યેષા તાનિ ત્રય મૂતાનિ, ' અબ્ભક્ષ્યાણાઈ ' અભ્યારચાનાનિ=અસત્યદોષારોપણવચનાનિ ' વહુવિદ્દાઈ ' વહુવિદ્દાનિ=નાનાપ્રકારાણિ ' અમણોર-માઈ ' અમનોરમાણિ=મનપ્રતિકૂલાનિ ' હિયયમણદૂમગાઈ ' હૃદયમનોદાવકાનિ

ય અલિણ અસતણ) મૃપાવાદીજન હસ અસદ્રૂપ અથવા અનુપશાન્ત મૃપાવાદ સે (ટઙ્ગમાણા) રાતદિન જલતે રહતે હૈં ઓર (અવમાણણ પિટ્થિમસાદિસ્ત્રેવપિસુણભેયણગુરુવધવસયણમિત્તાઽવસ્ત્રારણાદિયાઈ) (અવમાણણ) અપમાન સહન કરતે હૈં । (પિટ્થિમસ) હરેક કોઈ ઇનકી પીઠ પીછે નિંદા કરતે હ । (અદિસ્ત્રેવ) પ્રત્યેક વ્યક્તિ ઇન્હૈં ધિક્કારતા રહનાં હે । (પિસુણ ભેયણ) દુષ્ટ લોગ ઇનકે પ્રેમસયધ કો વિચ્છેદ કરા દેતે હૈં । ગુરુવધવસયણમિત્તા) ગુરુજન, વધુજન, સ્વજન એવ મિત્ર (અવસ્ત્રારણાઈયાઈ) સ્ત્ર વચનાં ઠારા ઇનકા અનાદર કરતે હૈં-હાલતે હપતે રહતે હૈં, અથવા યે સવ ઇન્હૈં અપને મે સે તાહર નિકાલ દેતે હૈં (અબ્ભક્ષ્યાણાઈ) વાહે જો મનુષ્ય ઇન પર અસત્ય દોષારોપણ કર દિયા કરતા હૈં । હસ પ્રકાર યે લોગ અસત્યદોષારોપણ વચનોં કો કિ જો (વહુવિદ્દાઈ) નાના પ્રકાર કે જોતે હૈં, (અમણોરમાઈ) મન કો

વિમુખ રહે છે તથા “ લેણ ય અલિણ અસતણ ” મૃપાવાદીજન આ અસદ્રૂપ અથવા અનુપશાન્ત મૃપાવાદથી “ ટઙ્ગમાણા ” રાતદિન જલતા રહે છે અને “ અવમાણણપિટ્થિમસાદિસ્ત્રેવપિસુણભેયણગુરુવધવસયણમિત્તાઽવસ્ત્રારણાદિયાઈ ” અવમાણણ ” અપમાન મહન કરે છે, “ પિટ્થિમસ ” દરેક વ્યક્તિ તેની પી. પાછળ નિંદા કરે છે, “ અદિસ્ત્રેવ ” દરેક વ્યક્તિ તેને ધિક્કારે છે “ પિસુણ ભેયણ ” દુષ્ટ લોકો તેમના પ્રેમ સંબંધમાં ભગણ પડાયે છે, “ ગુરુ વધવસયણમિત્ત ” ગુરુજન, વધુજન, સ્વજન અને મિત્ર “ અવસ્ત્રારણાઈ યાઈ ” ડોર વચનો દ્વારા તેમનો અનાદર કરે છે-ધાડ ધમકી આપતા રહે છે અથવા તે બધા તેમને પોતાની વચ્ચેથી બહાર ડાલી મૂકે છે “ અબ્ભક્ષ્યાણાઈ ” તેમના ઉપર લોકો ગમે તે પ્રકારનું દોષારોપણ કર્યા કરે છે આ રીતે તે લોકો અસત્ય દોષારોપણ કરત વચનો, જે જે “ વહુવિદ્દાઈ ” વિવિધપ્રકારના હોય છે, “ અમણોરમાઈ ” મનને ન ગમે તેવા હોય છે, તથા “ હિયયમણદૂમગાઈ ”

=હૃદયસ્ય મનમશ્વ દાપકાનિ=નાપજનકાનિ 'જાવજીવ' યાવન્નીવ=જીવન પર્યન્ત 'દુરુદ્ધરાઙ' દુરુદ્ધરાણિ=દુસ્તરાણિ 'પાવતિ' પ્રાપ્નુવન્તિ । પુનઃ કિ મિત્યાહ—'અણિદ્વવરફરુસયયણતજ્જણણિન્મન્ગડીણયયણવિમણા' અમિદ્વવર-ફરુપવચનતર્જનનિર્ભત્સનદીનયચનમિમનનઃ=તત્ર અનિપ્તેન=અપ્રિયેણ તરપરુપેણ=અતિક્રુઠોરેણ વચનેન યાનિ તર્જનાનિ='રે નીચ ! કયમેવ કરોપિ' इत्यादि लस-णानि निर्भर्त्सनानि='अरे दुष्टकर्मकारिन्=गृहान्निम्सर दष्टिपथाद्वा' इत्यादि रूपाणि, तैर्दीन वदन=मुख पित्रुत-पिपाक्तयुक्त च मनो येषा ते तथा 'कुभोयणा' कुभोजनाः=कुत्सितम्=भस्मनिरस भोजन येषा ते तथा तुच्छान्नाहारिणः 'कुवाससा' कुवाससः=कुचैलिनः 'कुवसहीसु' कुवसतिषु=कुत्सितस्थानेषु 'किलिस्सता'

નહી રુચને વાલે તથા (લિયયમણદૂમગાડ) હૃદય ઔર ચિત્ત કો સતા પજનક હોતે હૈં એસે વચન (જાવજીવ) જીવન પર્યંત (દુરુદ્ધરાઙ) જો ઇન્હે આગત પહુંચાને વાલે હોતે હૈં ઊનકો (પાવતિ) પ્રાપ્ત કરતે હૈં અર્થાત્ સુના કરતે હૈં । ફિર ક્યા સો કહતે હૈં—(અણિદ્વવરફરુસ વયણ તજ્જણણિન્મન્ગડીણયયણવિમણા) એસે ચે લોગ અપ્રિય, અતિક ઠોર વચનો સે તથા—“ રે નીચ ! એસા કયો કરતા હૈ ” इत्यादिरूप तर्जना से, “ ओ दुष्टकर्मकारिन् ! तू मेरे घर से बाहिर निकलजा-मेरे साम्हने मत आ-यहा से दूर हटजा ” इत्यादि हृदय विदारक निर्भर्त्सना से अनादृत हुए ये दीन वदन और विकृन्त मन वाले तथा (कुभोयणा) अपनी जिन्दगी भर कभी अच्छा भोजन नहीं पाने वाले तुच्छाहारी तथा (कुवाससा) भैले कुचैले वस्त्र पहनने वाले तथा (कुवसहीसु) गन्दी जगहों में रह कर (किलिस्सता) अनेक कष्टों को

હુદય અને ચિત્તમા સતાપ પેદા કરનાર હોય છે તથા “ દુરુદ્ધરાઙ ” જે તેમને આઘાત લગાડનાર હોય છે એવા વચનો “ જાવજીવ ” જીવે ત્યાં સુધી તેઓ “ પાવતિ ” પ્રાપ્ત કરે છે એટલે સાલબ્યા કરે છે વળી બીજી શુ બને છે તે કહે છે—“ અણિદ્વવરફરુસયયણતજ્જણણિન્મન્ગડીણયયણવિમણા ” તેવા એ લોકો અપ્રિય, અતિ કઠોર વચનોથી તથા “ અરે નીચ ! આણુ કેમ કરે છે ? ” इत्यादि प्रकारની તર્જનાથી, “ હે દુષ્ટકર્મકારિન્ ! તુ મારા ઘરમાંથી બહાર નીકળી જા-મારી સામે આવીશ મા-અહીંથી દૂર ચાલ્યો જા ” इत्यादि हृदय वेदक निर्भर्त्सनाથી અનાદર પામેલ તે દીન વદનવાળા તથા વિકૃત મન વાળા તથા “ કુભોયણા ” તથા જીવન પર્યન્ત સાડુ ભોજન પ્રાપ્ત નહીં કરનારા હલકા પ્રકારનું ભોજન પ્રાપ્ત કરનારા તથા “ કુવાસસા ” મેવા તથા ફાટેલા તૂટેલા વસ્ત્ર પહેરનારા તથા “ કુવસહીસુ ” ગદી જગ્યાઓમાં રહી

‘વિલશ્યન્ત = સન્તપ્યમાના ખતઅ ‘અન્વતવિલલદુઃસ્વસયસપલિત્તા’ અત્યન્ત વિપુલદુઃસ્વશતસપ્રદીપ્તા = અત્યન્ત વિપુલાનિ વિશાળાનિ યાનિ દુઃસ્વશતાનિ તૈઃ સમ્પ્રદીપ્તાઃ = પ્રતપ્તા = ‘ઉચ્ચભતિ’ ઉચ્ચભન્તે = પ્રાપ્નુવન્તિ ‘નેવસુહ’ નૈવસુખ ‘નેવનિવ્વુડ’ નૈવનિર્વૃત્તિ = મન સ્વાસ્થ્ય, મિન્દુ દુઃસ્વમેવાનુભવન્તીતિ ભાવઃ ।
 એવ મૃપાવાદફલમુક્તમ્ ॥ સુ ૦ ૧૫ ॥

ઉઠાતે હુણ (અન્વતવિલલદુઃસ્વસયસપલિત્તા) વટત અધિક કઠિન સે કઠિન સૈરુદ્ધો દુઃસ્વો સે સન્તસ યને હુણ યે લોગ (નેવસુહ) ન તો કમ્પી સુખ પાતે હ ઓર (નેવનિવ્વુડ) ન કમ્પી નિર્વૃત્તિ = મનઃ સ્વાસ્થ્ય = શાંતિ કો (ઉચ્ચભતિ) પાતે હ અર્થાન્ રાતદિન દુઃસ્વ ભોગા કરતે હૈં । ઇસ પ્રકાર યહ મૃપાવાદ કા ફલ કહા હૈં ।

ભાવા ૧—મૃપાવાદ કા ફલ સ્પષ્ટ કરતે હુણ સૂત્રકાર કહતે હૈં કિ-
 મૃપવાદીજન કમ્પી મ્પી અપને જીવન મેં સચ્ચી સુખશાંતિ નહીં પા
 સકતે હૈં । યે મૃપાવાદ સે ઉપાર્જિત પાપકર્મ કે ઉદય સે મરકર તિર્યચ
 ણવ નરકગતિકે અત્યત કઠિન દુઃસ્વોનો ભોગા કરતે હૈં । તિર્યચ યોનિમે
 રહને વાલે જીવો કી આયુ ઉત્કૃષ્ટ ત્રીન પત્ય કી વનસ્પતિ કી અપેક્ષા
 અનતકાલ ક્રી ઓર નરક મેં રહને વાલે જીવો કી ઉત્કૃષ્ટ તેત્રીસ સાગર
 પ્રમાણ હૈં । ઇતને કાલ તક વટા રહકર કષ્ટ પરમ્પરાઓ કા અનુભવ વે
 ફરતે રહતે હૈં । ફિર મ્પી જો પાપ કર્મ ભોગને સે અવશિષ્ટ રહતા હૈં
 ઉસે વે વહા સે નિઝલકર કિસી તરહ મ્પી મિલી હુઈ મનુષ્ય પર્યાય મેં
 ભોગતે હૈં । યહા જો ઇન્હેં મનુષ્ય પર્યાય પ્રાપ્ત હોની હૈં વહ ચિલકુલ જઘ-

સ્તતા ” અનેડ ડહો સહન કરતા “ અન્વતવિલલદુઃસ્વસયસપલિત્તા ”
 ઘણાજ વધારે આડરામા આકરા સે કડો હુ ખોથી હુ ખી અનેલા તે લોડો “ નેવ
 સુહ ” ડહી પણ સુખ પ્રાપ્ત કરતા નથી “ નેવ નિવ્વુડ ” ડે ડહી પણ નિવૃત્તિ
 મનની શાન્તિ “ ઉચ્ચભતિ ” અનુભવતા નથી એટલે ડે દિનરાત હુ ખ લોગ-
 વ્યા કરે છે, આ પ્રકારનુ મૃપાવાદનુ ક્ષણ કહેલ છે

ભાવાર્થ—મૃપાવાદનુ ક્ષણ ખતાવતા સૂત્રકાર કહે છે કે—મૃપાવાદી વ્યક્તિ
 પોતાના જીવનમા ડહી પણ માત્રા સુખ શાંતિ પામી શકતો નથી તેઓ મૃપા
 વાદથી ઉપાર્જિત પાપકર્મોના ઉદયથી મરીને તિર્યચ અને નરકગતિના અત્યત
 કઠિન હુ ખો લોગવ્યા કરે છે તિર્યચ યોનિમા જન્મ પામતા જીવોનુ આયુષ્ય
 ઉત્કૃષ્ટ ત્રણ પત્યનુ અને વનસ્પતિની અપેક્ષાએ અનતકાળનુ અને નરકની
 અપેક્ષાએ ઉત્કૃષ્ટ તેત્રીસ સાગર પ્રમાણનુ હોય છે એટલો સમય ત્યા રહીને
 તેઓ ડહા પરપરાઓને સહન કરે છે, ત્યાર પછી પણ જે પાપકર્મો લોગવવાના

ન્યસ્યિતિ ફી હોતી હૈ । ડસ સર્વથા જઘન્ય સ્થિતિ ફી મનુષ્ય પર્યાય મેં ઉત્પન્ન હોકર યે કમ્પી ઓ ઓઢા આનંદ ઓ નહીં પ્રાપ્ત કર સકતે હૈ । સદા પરાધીનતા ફી જર્જીરો મેં જકડા જાકર ઇનકા જીવન વ્યવહાર ચલતા હૈ । ઇનકી શારીરિક આકૃતિ દુર્દર્શનીય તથા ઉદ્દેગજનક રોતી હૈ । કોઈ ઓ ઇનસે મોહ મમતા નહીં રખતા હૈ । દરેક વ્યક્તિ ઇનકા તિરસ્કાર કરતા રહતા હૈ । ચેતનશક્તિ ઇનકી અવિકસિત રહા કરતી હૈ । લક્ષ્મી નહીં રહને સે યે સદા દુઃખો ધને રહતે હૈ । માગમૂગ કરકે યે જો ઓ લાતે હ વટ રસ ચિરમ હોતા હૈ । ખરપેટ ખોજન ઇન્હેં મિલતા નહીં હૈ । વાણી ઓ ઇનકી ઇતની અચ્છી નહીં હોતી જો દૂસરો કે ચિત્ત કો અપની ઓર આકૃષ્ટ કર નકે । કાક જૈરા કટોર ઇનકા સ્વર હોતા હૈ । ગર્દભ જૈસી ઇનકી ઘોલી હોતી હૈ । કોઈ ૨ તો જન્માધ્ય હોતે હૈ । કોઈ ૨ ત્રિરે ઓર ગૂગે હોતે હૈ । દુઃખ મેં ઓ ઇનકા સાથ દેને વાલા કોઈ નહીં હોતા હૈ । ઇનકી મિત્રતા અપને જૈસે નીચો સે હી હોતી હૈ । ડન્હોં કે પાસ યે ઉઢા થૈઢા કરતે હૈ । ગન્દે સ્થાનો મેં ઇન્હેં રહને કો મિલતા હૈ । સવ કોઈ ઇનકી નિંદા કરતે હૈ । દૂસરો કે હૃદય વિદારક શબ્દો કો સુનકર યે મનોમન દુઃખિત હોકર રહ જાતે હૈ । તાત્પર્ય યહ હૈ

ખાકી રહા હોય તેમને ત્યાધી નીકળીને ડોઈ પણ રીતે પ્રાપ્ત થયેલ મનુષ્ય થોનિમા તેઓ લોગવે છે તેને જે માનવ પર્યાય પ્રાપ્ત થાય છે તે બિલકુલ જઘન્ય સ્થિતિની હોય છે તે તદ્દન જઘન્ય સ્થિતિની મનુષ્ય પર્યાયમા ઉત્પન્ન થઈને તેઓ ડહી પણ થોડો મરજોએ આનંદ પ્રાપ્ત કરી શકતા નથી તેમનો જીવન વ્યવહાર સદા પરાધીનતાની બેડીમા જકડાઈને ચાલે છે તેમના ચારીરનો દેખાવ બેડોળ અને ઉદ્દેગજનક હોય છે તેમના પ્રત્યે કોઈ પણ મોહ અથવા મમતા રાખતુ નથી, દરેક વ્યક્તિ તેનો તિરસ્કાર કર્યા કરે છે તેમની ચેતના શક્તિ અવિકસિત રહે છે લક્ષ્મી નહીં રહેવાયી તે સદા દુઃખી રહે છે માગી કરીને તે જે ડહ લાવે છે તે વિરસ હોય છે તેને ધરાઈને ખાવા પણ મળતુ નથી બીજાના ચિત્તને પોતાની તરફ આકર્ષી શકે તેવી મીઠી વાણી પણ તેની હોતી નથી તેનો સ્વર કાગડા જેવો કડક હોય છે ગર્દભ જેવી તેની બોલી હોય છે, કોઈ કોઈ તો જન્માધ્ય હોય છે કોઈ બહેરા અને મૂંગા હોય છે દુઃખમા પણ તેને મદદ કરનાર કોઈ હોતુ નથી તેને પોતાના જેવા અધમ લોકો સાથે જ મિત્રતા થાય છે તેમની પાને જ તે ઉઠે બેસે છે તેમને ગદા સ્થાનોમા જ રહેવુ પડે છે ઓ તેમની નિંદા કરે છે બીજા લોકો હૃદયવિદારક શબ્દો સાલળીને તેઓ પોતાના મનમા જ હેળ અનુલવીને ચાલ રહે છે ન પર્યા

અથ પ્રકૃતદ્વાર સાલ્પ્યેન સકલ્પ્ય નિગમયતિ મૂત્રકાર 'એસો સો' ઇત્યાદિ ।

મૂલ્મ—પસો સો અલિયવચનસ્સ ફલવિવાઓ ઇહલોહઓ પરલોહઓ અપ્પનુહો વહુદુક્ખો મહવ્ભઓ વહુરયપ્પગાઠો દારુણો કક્કસો અસાઓ વાસસહસ્સેહિ મુચ્ચવ્વણય અવેદયિત્તા અત્થિ હુ મોક્ખોત્તિ, એવમાહસુ નાયકુલનદણો મહપ્પા જિણોઽ વીરવર નામધેજ્ઞો કહેસાંય અલિયવચનસ્સ ફલવિવાગ, એય ત ત્રિઇય પિ અલિયવચન લહુસ્સગ લહુચ્ચલભણિય ભયકર દુહકર અયસકર વેરકર અરતિરતિરાગદોસમણસકિલેસવિયરણ અલિય- નિયહિસાતિયાંગવહુલ નીયજણનિસેવિય નિસંસ અપ્પચ્ચયકારગ્ગ પરમસાહુગરહણિજ પરપીઠાકારગં પરમકિપ્પહલેસસહિય દુગ્ગહ- વિણિવાયવઢ્ઢણ ભવપુણ્ણભવકર ચિરપરિચિયમણ્ણય દુરત તિવેમિ ॥ સૂ૦ ૧૬ ॥

॥ વિહય અપ્પમદાર સમત્ત ॥ ૨ ॥

ટીકા—'એસો સો' એપ સ અલિયવચનસ્સ 'અલીકવચનસ્ય 'ફલવિ- વાઓ' ફલવિપાકઃ 'ઇહલોહઓ' 'એહલોકિકઃ' = મનુષ્યમયાપેક્ષયા 'પરલોહઓ'

કિ દુઃખો કે જિતને પ્રકાર હ વે સવ ભયકર સે અયકર ઇન્હેં ભોગના પડતા હ । એસ સ્થિતિ મેં ઇનકા કોઈ સારી નહીં હોના હૈ ॥ સૂ-૧૫ ॥

અથ સૂત્રકાર ઇસ અલિકવચન દ્વાર કા સપૂર્ણત્વ સે સકલન કરકે ફલિતાર્થ કહેતે હૈ—'એસો સો' ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(એસો સો અલિયવચનસ્સ ફલ વિવાઓ) અલીક વચનકા યદ્ જો મનુષ્યગતિ કી અપેક્ષા ઇહલોક સપદ્ધી તથા નરક નિગોઢગતિ કી

એ છે કે ઇ જોના ભય કરમા ભય કર ને પ્રજાને છે, તે તેમને ભોગવવા પડે છે એ સ્થિતિમા તેમનુ ડોષ આથીદાન હોતુ નથી ॥ સૂ-૧૫ ॥

હવે સૂત્રકાર આ દ્વારનુ સપૂર્ણ ગીતે સકલન કરીને ફલિતાર્થ બતાવે છે—'એસો સો' ઇત્યાદિ,

ટીકાર્થ—'એસો સો અલિયવચનસ્સ ફલવિવાઓ' અલોક વચનનો મનુષ્યગતિની અપેક્ષાએ આલોક સપદ્ધી તથા નરકગતિની અપેક્ષાએ પરલોક સપદ્ધી આ ને ફલ-

પારલૌકિકઃ=નરકાદ્યપેક્ષયા 'અપ્પસુહો' અલ્પસુહો=સુખવર્જિતઃ 'ચતુરુક્લો' દુઃખચતુરુક્લોઃ 'મહામયો' મહામયઃ=મહામયજનકઃ 'ચતુર્યપ્પગાદો' ચતુરજઃ પ્રગાદ=પ્રચુરકર્મરજોભિઃ સમ્પ્રૃત ધારુણ=ભીષણઃ 'અસાઓ' કર્મશઃ=કઠોર 'અસાઓ' અજાતઃ=અસાતાઽજાતકર્મવેદનીયસ્વરૂપઃ इत्येवमिदं ફલવિપાકઃ 'વાસસહસેહિ' ર્પસહસૈ=પલ્યોપમસાગરોપમપ્રમાણકાલેઃ 'મુચ્ચહ' મુચ્ચતે= સ્વીયતે । તદેવ્યતિરેકમુખેનાહ-'ળય' ન ચ ત ફલવિપાકમ્ 'અવેદયિતા' અવેદયિતા=અનુપમુજ્ય ઉપભોગ વિનેત્યર્થઃ, 'હુ' નિથયેન 'મોક્ષો' મોક્ષઃ 'અત્યિ' અત્યિ 'ત્તિ' ઇતિ શબ્દ . સમાપ્તિસૂચકઃ । એતસ્યાર્થસ્ય સાક્ષાત્પ્રમાણભૂતપરમાત્મપ્રતિપાદિતત્વેન પ્રમાણ્યનિરૂપણાય પ્રમાણ્યનાહ-'એવામહુ' ઇત્યાદિ, એવ=

અપેક્ષાસે પરલોક સુખી ફલરૂપ વિપાક કહા ગયા છે, ઉત્તસે યદ અચ્છી તરહ જ્ઞાત હો જાતા છે કિ યદ (અપ્પસુહો) સુખવર્જિત એવ (ચતુરુક્લો) દુઃખ ચતુરુક્લો છે । (મહામયો) મહામયજનક, ઓર (ચતુર્યપ્પગાદો) પ્રચુર કર્મરૂપી રજ સે ભરા હુઆ છે । (ધારુણો) ધારુણ તથા (કક્કસો) કઠોર છે । ઓર (અસાઓ) અસાતા વેદનીય કર્મ સ્વરૂપ છે । (વાસ સહસેહિ મુચ્ચહ) યદ ફલવિપાક જીવ પલ્યોપમ એવ સાગરોપમપ્રમાણ કાલતક ભોગા કરતા છે તમી જાકર ઉત્તસે યદ છૂટકારાપાતા છે, અર્થાત્ત વદ ફલરૂપ વિપાક નષ્ટ હો પાતા છે । (ળય અવેદયિતા હુ મોક્ષો અત્યિ ત્તિ) ભોગે વિના જીવ હસસે મુક્ત નહીં હોતા છે । યદા (ત્તિ) યદ સમાપ્તિ અર્થ કા સૂચક છે ।

અવ સૂત્રકાર હસ અર્થ મે સાક્ષાત્ પ્રમાણભૂત પરમાત્મા દ્વારા પ્રતિપાદિત હોનેકે કારણ પ્રમાણભૂતતા પ્રકટ કરને કે લિયે રહતે છે-(એવ-

ફલવિપાક ણતાવવામઆવ્યો છે તેનાથી તે સારી રીતે બાણુવા મળે છે તે 'અપ્પ સુહો' સુખવર્જિત અને "ચતુરુક્લો" અર્થત હુ ખમય છે "મહામયો" મહા ભયજનક, અને "ચતુર્યપ્પગાદો" પ્રચુર કર્મરૂપી રજથી ભરપૂર છે "ધારુણો" ધારુણ તથા "કક્કસો" કઠોર છે અને "અસાઓ" અસાતા વેદનીય કર્મ સ્વરૂપ છે "વાસસહસેહિ મુચ્ચહ" તે ફલવિપાક પલ્યોપમ અને સાગરોપમ પ્રમાણ ગણ સુધી એવ ભોગવ્યા કરે છે, ત્યારે જ તે તેમાંથી છૂટી શકે છે, એટલે કે તે ફલફલ વિપાક એટલા લાભા સમયે નષ્ટ વાય છે "ળય અવેદયિતા હુ મોક્ષો અત્યિ ત્તિ" તે ફલવિપાક ભોગવ્યા વિના એવ તેનાથી મુક્ત થઈ શકતો નથી અહીં "ત્તિ" તે સમાપ્તિ અર્થના સૂચક છે

હવે સૂત્રકાર આ અર્થમાં પ્રત્યક્ષ પ્રમાણભૂત પરમાત્મા દ્વારા પ્રતિપાદિત હોવાને કારણે, પ્રમાણભૂતતા દર્શાવવાને માટે કહે છે-"એવામહુ" આ પૂર્વોક્ત રીતે તીર્થ કં ગણધરાદિક દેવોએ તથા "નાયકુલનદળો મહાપ્પા જિણો વીરવર

ઉક્તરીત્યા ' આહમ્ ' ઝચુસ્તીર્થદ્વરગણધરાદયઃ । તથા તદનુસારેણ ' નાય
કુળનદનો ' જ્ઞાતકુલનન્દન = સિદ્ધાર્થકુલાનન્દનરઃ, ' મહપ્પા ' મહાત્મા=
પરમાત્મરૂપ. ' જિણો ' જિનઃ વીરવરનામધેજ્જો ' વીરવરનામધેય
પ્રત્યાતનામા મયજ્ઞાન મહાવીર ઇમમ્ ' અલિયવયણસ્સ ' અલીકવચનસ્ય ' ફલ-
વિવાગ ' ફલવિવાક ' કહેસી ' કથિતવાન્ । એવ ' ત ' તત્ પૂર્વોપદર્શિતસ્વરૂપમ્
' અલિયવયણ ' અલીકવચન ' લહુસ્મગ લહુ ચપલભણિય ' લઘુસ્વકલ્પચપલ
મણિત=લઘુસ્મગ:= તુચ્છાત્માનથ તે લઘવ યતિનીચાશ્વપલાશ્ચ તૈ મણિત=
જલ્પિત ' મયકર ' મયકર ' દુહકર ' દુઃખકર ' અજસકર ' વૈરકર ' અજસર
વૈરકરમ્, ' અરતિરતિરાગદોષમણસકિલેસવિચરણ ' અરતિરતિરાગદ્વેષમન
સન્લેશવિતરણમ્, ' અલિયનિયહિસાતિજોગબહુલ ' અલીકનિકૃતિમાતિયોગ
બહુલ ' નીવજ્ઞાનિસેતિય ' નીચજ્ઞાનિપેતિત ' નિસસ ' નૃશસમ્ ' અપચ્ચકારામ્

માહસુ) ઇમ પૂર્વોક્ત રીતિસે તિર્યકર ગણધરાદિક ટેવોને તથા (નાયકુલ
નદનો મહપ્પા જિણો વીરવરનામધેજ્જો) ઉન્હી કે અનુસાર જ્ઞાતકુલનદન
સિદ્ધાર્થકુલને આનંદકારક-પરમાત્મસ્વરૂપ, જિન મહાવીરને કિ જિનકા
“ વીર ” યદ્ ઉત્તમ નામ પ્રત્યાત છે ઉન્હોને (ઇમ અલિયવયણસ્સ ફલ-
વિવાગ કહેસી) યદ્ મૃષાવાદકા ફલ યતલાયા છે । અવ ઉપસહાર કરતે હ-
(એય ત યિતિય પિ અલિયવયણ) ઇમ દ્વિતીય અલીક વચન કો જો (લહુ-
સગલહુચલભણિય) લઘુસ્વક-તુચ્છાત્મા હોતે છે અતિનીચ એવ ચપલ
હોતે છે વે હી ઝોલતે છે । (મયકર) યદ્ અલીક વચન મયકર, (દુહ-
કર) દુઃખકર, (અજસકર) અજસકારક, (વૈરકર) વૈરકારક,
(અરતિરતિરાગદોષમણસકિલેસવિચરણ) અરતિ, રતિ, રાગ, દ્વેષ ઓર
મન સન્લેશ પ્રદાતા છે । (અલિયનિયહિસાજોગબહુલ) અલીક-

નામધેજ્જો ” તેમના પ્રમાણે જ જ્ઞાતકુલનદન સિદ્ધાર્થના કુળને આનંદદાયક
પરમાત્માસ્વરૂપ, જિન મહાવીરે કે જેમનું “ વીર ” એ ઉત્તમ નામ પ્રખ્યાત
છે, તેમણે “ ઇમ અલિયવયણસ્સ ફલવિવાગ કહેસી ” આ મૃષાવાદનું સ્વરૂપ
ખતાવ્યું છે હવે ચૂનકાર ઉપસહાર કરે છે—“ એય ત વિદ્ય પિ અલિય
વયણ ” આ દ્વિતીય દ્વાર રૂપ અર્થમ્ વચનને જે “ લહુસગલહુચલભણિય ”
લઘુસ્વક-તુચ્છાત્મા હોય છે, જે અતિ નીચ અને ચપલ હોય છે તેઓ જ
બોલે છે “ મયકર ” તે અસત્યવચન લયકારક, “ દુહકર ” દુઃખકર, “ અજ-
સકર ” અપકીર્તિકારક, “ વૈરકર ” વૈરકારક, “ અરતિરતિરાગદોષમણસકિલે
સવિચરણ ” અરતિ, રતિ, રાગ, દ્વેષ અને મનને ટલેલા કરનાર છે “ અલિય
નિયહિસાજોગબહુલ ” અલીક—નિષ્ફળ છે, નિકૃતિ, સાતિના પ્રયોગથી યુક્ત

અપ્રત્યયકારક, 'પરમસાદુગરહણિજ્ઞ પરમસાધુર્ગર્હણીય પરપીઢાકારક 'પરમકિષ્ણલેસસહિય' પરમકૃષ્ણલેડ્યાસદ્ધિતં 'દુર્ગાદિવિણિવાયવદ્ધુળ' દુર્ગતિવિનિપાતરદ્ધન 'ભવપુણભવકર' નિરપરિચય' ચિરપરિચિત્તમ્, 'અણુગય' અનુગતમ્, 'દુરત' દુરન્તમ્ । एतानि सर्वाणि पदानि पूर्वमस्यैव द्वारस्य प्रथमसूत्रे व्याख्यातानि ततो विज्ञेयम् । 'चित्तेमि' पूर्वम् ॥ सू० ૧૬ ॥

इति श्री-जैनाचार्य-जैनधर्मदिशार-पूज्य श्री घासीलान्त्रातिरिचिताया

प्रश्नव्याकरणसूत्रस्य सुदर्शिन्याख्याया व्याख्याया

हिंसादि पञ्चाश्वद्वारेषु मृषायादान्य द्वितीयम्-

आश्व (अधर्म) द्वार समाप्तम् ॥ १७ ॥

નિષ્કૃત છે નિઠૂતિ, સાતિ કે પ્રયોગ સે ચડુલ છે અર્થાત્ કપટ વટુલ છે । (ણીયજનનિસેવિય) જાતિ, કુલ આદિ સે અધમ વને જુગ વ્યક્તિઓ દ્વારા નિષેધિત છે । (નિસસ) કૂર-અટલે પ્રશસા સે રહિત છે । અપ્રત્યય-અવિશ્વાસ કા કારક છે । (પરમસાદુગરહણિજ્ઞ) પરમ સાધુ-તીર્થંકરો દ્વારા ગર્હણીય છે । (પરપીઢાકરણ) દૂસરોં કો પીઢા પહુચાને વાલા છે । (પરમકિષ્ણલેસસહિય) અત્યન્તમલિન આત્મ પરિણતિ સે યુક્ત છે (દુર્ગાદિવિણિવાયવદ્ધુળ) દુર્ગતિ કા વર્ધક છે । (ભવપુણભવકર) પુનઃ પુનઃ જન્મ પ્રદાતા છે । (ચિરપરિચય) ચિરપરિચિત્ત યજીવોં કે સાથ અનેક ભવોં કો પરમ્પરા તક રહનેવાલા છે । (અણુગય) ભવ ભવ મેં સાથ ચલને વાલા છે । (દુરત) ઇસકા ફલ દુરન્ત-કટુફલકા દેને વાલા છે "ચિત્તે મેમિ" ઇસકી વ્યાખ્યા કી જા ચુકી છે ॥ સૂ-૧૬ ॥

॥ द्वितीय आश्व—'अधर्म' द्वार समाप्त ॥

છે એટલે કે કપટ ભય છે " ણીયજનનિસેવિય " જાતિ, કુળ આદિથી અધમ એવી વ્યક્તિઓ દ્વારા સેવાયેલ છે " નિસસ " કૂર-એટલે કે પ્રશસાથી રહિત છે અપ્રત્યય-અવિશ્વાસ ઉત્પન્ન કરનાર છે " પરમસાદુગરહણિજ્ઞ " પરમસાધુ-તીર્થંકરો દ્વારા નિધ છે " પરપીઢાકરણ " ખીબને પીઢા પહોચાડનાર છે " પરમકિષ્ણલેસસહિય " અત્યંત મલિન આત્મ પરિણતિથી યુક્ત છે " દુર્ગાદિ વિણિવાયવદ્ધુળ " દુર્ગતીનું વધારનાર છે " ભવપુણભવકર " ફરી ફરીને જન્મ લેવડાવનાર છે " ચિરપરિચય " ચિરપરિચિત્ત એવું તે જીવોની સાથે અનેક જીવોની પરપરા સુધી રહેનાર છે " અણુગય " દરેક જીવમા સાથે ચાલનાર છે " દુરત " તેનું ફળ દુરન્ત છે-કટુ રસ દેનાર છે " ચિત્તેમિ " આ વાક્યનો અર્થ આવી ગયો છે (સૂ-૧૬)

આ રીતે હિંસાદિ પચાશ્વ દ્વારમા આશ્વવધ નામનું

ખીજુ આશ્વ (અધર્મ) દ્વાર સમાપ્ત થયું

અથ તૃતીયમધ્યયનમ્ ।

વ્યાખ્યાત દ્વિતીયમધર્મદ્વાર સાપ્રત તૃતીયમારભ્યતે-અસ્ય ચ પૂર્વેણ સહાયમભિ-
સમ્વન્યઃ । દ્વિતીયાધર્મદ્વારે યાદશનામાદિનિર્દેશપુરસ્સરમલીકચનસ્વરૂપમુક્તમ્ ।
અત્રીકચન ચ અદત્તાઽઽદાયિનો યન્ત્યેતેતિદેતો, સૂત્રક્રમનિર્દેશાનુમારાચ્ચ
મૃપાયાદાનન્તરમુચિતપ્રાપ્તમદત્તાદાન સ્વરૂપનામાદિનિર્દેપૂર્વક પ્રદર્શ્યતે, તત્ર
પૂર્વયોરધર્મદ્વારયોરિવાસ્યાપિ ' યાદશ્ચ ૧, યન્નામ ૨, યથા ચ કૃત ૩, યત્કલ
દદાતિ ૪, યે ચ કુર્વન્તિ ૫, ઇતિ પશ્ચભિરન્તર્ઘારૈર્નિરૂપણ ચિકીર્ષુરાદૌ ક્રમપ્રાપ્ત
' યાદશ ' ઇતિ દ્વાઘ્માશ્રિત્ય અદત્તાદાનસ્વરૂપ નિરૂપ્યતે-‘જનૂ તદ્ય ચ’ ઇત્યાદિ

તૃતીય આસ્રવ-(અધર્મ) દ્વાર પ્રારંભ-

દ્વિતીય આસ્રવ-(અધર્મ) દ્વાર કહા ગયા, અત્ર તૃતીય આસ્રવ
દ્વાર કી વ્યાખ્યા પ્રારંભ હોતી હૈ । ઇસ અધર્મદ્વાર કા પૂર્વ અધર્મદ્વાર કૈ
સાથ ઇસ પ્રકાર સે સંબંધ હૈ કિ-દ્વિતીય આસ્રવ-(અધર્મ) દ્વાર મૈ
(યાદશનામાદિ નિર્દેશ પૂર્વક) અલીક (ગ્રૂઠ) વચન કા સ્વરૂપ કહા હૈ સૌ
ઇસ અલીક વચન કો જો અદત્ત કો લેને વાલે વ્યક્તિ હોતે હૈ, વૈ હી
ઘોલતે હૈ તથા સૂત્રક્રમ નિર્દેશ મી ઇસા હી હૈ, ઇસલિયે મૃપાવાદ કૈ
અનન્તર ઉચિતરૂપ સે પ્રાપ્ત અદત્તાદાન કા સ્વરૂપ નામાદિ નિર્દેશપૂર્વક
ઇસ અધ્યયન મૈ કહા જાવેગા । ઇસ પ્રકાર પૂર્વ દો આસ્રવ (અધર્મ)
દ્વારો કા સૂત્રકાર ને (યાદશ યન્નામ) ઇત્યાદિ પાંચ અન્તર્ઘારો દ્વારા
નિરૂપણ કિયા હૈ ઊસી તરફ સે વૈ ઇસ તૃતીય આસ્રવ (અધર્મ) દ્વાર
કા મી નિરૂપણ કરના ચાહતે હૈ ઇસલિયે વૈ સર્વ પ્રથમ ઇસમૈ ક્રમ
પ્રાપ્ત અદત્તાદાન કા (યાદશ) ઇસ દ્વાર કો લેકર સ્વરૂપ કહતે હૈ—

ત્રીજા આસ્રવ-અધર્મ દ્વારનો પ્રારંભ

ત્રીજા આસ્રવ-(અધર્મ) દ્વારનું કથન પૂરું થયું, હવે ત્રીજા આસ્રવ
દ્વારનું વર્ણન શરૂ થાય છે આ અધર્મદ્વારનો આગળના અધર્મદ્વાર માથે
આ રીતે મળે છે—ત્રીજા આસ્રવ-(અધર્મ) દ્વારમાં “ યાદશનામાદિ નિર્દે-
શપૂર્વક ” અલીક વચનનું સ્વરૂપ પ્રગટ કરવામાં આવ્યું છે પણ તે અલીક
વચનનો અદત્ત દીધેલું લેનારી વ્યક્તિ જ બોલે છે, તથા સૂત્રક્રમ નિર્દેશ
પણ બોલે જ છે, તે દારણે મૃપાવાદનું નિરૂપણ થયું પછી ચોથા રીતે અદ-
ત્તાદાનનું સ્વરૂપ નામાદિ નિર્દેશ પૂર્વક આ અધ્યયનમાં બતાવવામાં આવશે
જેમ આગળના બે આસ્રવ-(અધર્મ) દ્વારોનું સૂત્રકારે “ યાદશ યન્નામ ” ઇત્યદિ
પાંચ અન્તર્ઘારો દ્વારા નિરૂપણ કર્યું છે, એજ પ્રમાણે તેઓ આ ત્રીજા આસ્રવ
(અધર્મ) દ્વારનું પણ નિરૂપણ કરવા માગે છે તેથી તેઓ સૌથી પહેલા ક્રમ પ્રમાણે

મૂલમ્-જંબુ તદયં ચ અદિષ્ણાદાણ હરદહમરણભયકલ્પેસ
તાસળપરસતગગિજ્ઞલોભમૂલ કાલવિસમસંસિય અહો
અચ્છિન્ત તપહપસ્થાણપરથોદ્દમદય અકિત્તિકરં અળજં
છિદ્ધમંતરવિધુરવસળમગળઝસ્સવમત્તપ્પમત્તપ્પમુત્તવચ્છાઽઽ-
લિવળધાયળપરાઽણિહુયપરિણામત્તજ્જળવહુમયં અકલ્પળં
રાયપુરિસરવિલ્લય સયાસાહુગરહણિઝ્જં પિયજળમિત્તજળ-
ભેદવિપ્પીહકારળ રાગદોસવહુલં પુણો ચ ઉપ્પૂરસમસ-
ગામડમરકલિકલહવહકરળ દુગ્ગઢવિણિવાયવદ્ધળં ભવપુળ
ઘભવકર ચિરપરિચિયં અણુગય દુરત તદય અધમ્મદારા||સૂ.૦૧||

ટીકા—હે જમ્બુ ! ‘ તદય ’ તૃતીયાસ્રયદ્વાર ‘ અદિષ્ણાદાણ ’ અદત્તાદા
નમ્=અદત્તસ્ય=દેવ-ગુરુ-રાજ-ગાથાપતિ-સાધર્મિભિરસમર્પિતસ્ય સચિત્તાચિત્ત-
મિશ્રવસ્તુવિશેષસ્ય આદાન=ગ્રહણમદત્તાદાન નામ ચૌર્યમિત્યર્થઃ । ક્ષીદ્ધા તદિત્યાહ

‘ જબ્બુ । તદય ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—જમ્બુસ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામી સે પૂછતે હૈં કિ-હે અદત્ત !
તૃતીય આસ્રવ દ્વાર કા સિદ્ધિગતિ કો પ્રાપ્ત હુળ શ્રી મહાવીર પ્રભુને
કયા સ્વરૂપ કહા હૈ ? ઇસકા ઉત્તર દેતે હુળ શ્રી સુધર્મા સ્વામી ડનસે
કહતે હૈં કિ (જબ્બુ) હે જબ્બુ ! (તદય ચ અદિષ્ણાદાણ) તૃતીય અદત્તા
દાન કા સ્વરૂપ સિદ્ધિગતિ સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુળ શ્રી મહાવીર ને ઇસ
પ્રકાર કહા હૈ । અદત્ત કા-દેવ, ગુરુ, રાજા, ગાથાપતિ ઔર સાધર્મી દ્વારા
નહી સમર્પિત કી ગઈ વસ્તુ કા-આદાન-ગ્રહણ કરના ઇસકા નામ અદ-

અદત્તાદાનનુ “યાદશ” એ દ્વારને લઈને સ્વરૂપ ઝહે છે ‘ જબ્બુ । તદય ” इत्यादि

ટીકાર્થ—જબ્બુ સ્વામી શ્રી સુધર્માસ્વામીને પૂછે છે કે હે ભદ્રન્ત ! સિદ્ધિ
ગતિ પામેલ શ્રી મહાવીર પ્રભુએ ત્રીજા આસ્રવદ્વારનુ કેવુ સ્વરૂપ કહેલ છે ?
તેનો ઉત્તર આપતા શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે-હે જમ્બુ ! ‘ તદય
ચ અદિષ્ણાદાણ ” સિદ્ધિગતિને પામેલ શ્રી મહાવીર પ્રભુએ અદત્તાદાનનુ આ
પ્રકારનુ સ્વરૂપ કહેલ છે-

અદત્તનુ-દેવ, ગુરુ, રાજા, ગાથાપતિ અને સાધર્મી દ્વારા અપણુ ન ડરા
યેલ વસ્તુનુ-આ દાન-ગ્રહણ કરવુ તેને અદત્તાદાન કહે છે તે કેવુ હોય છે ?

—‘હરદહે’ત્યાદિ—

‘હરદહમરણમયકલુસતાસગપરસતગગિજ્ઞલોભમૂલ’ હરદહમરણમયકલુપત્રાસન પરસત્કગૃદ્ધિલોભમૂલ, તા હર=હરણ ક્રુત, દહ=ગૃહાદિક પ્રજ્વાલય, ઇતિ વચન- દ્વય હરણદાઙ્ગિપયે ચોરાણા પ્રટ્ટિત્તારકમ્ । તથા મરણ મૃત્યુઃ મય=મીતિઃ કલુપ ચ=પાપ તૈદ્વમ-મયજનનમ્પરુપ યસ્ય તત્તથા, તત્ત્વ પરસત્કગૃદ્ધિલોભ મૂલ ચ=પરસત્કે=પરકીયધને ગૃદ્ધિઃ=ગામક્તિઃ તથા લોભશ્ચ-રૌદ્ર-યાનયુક્તા- મૂર્ચ્ઝા મૂલ=કારણ યસ્ય તત્તથા ‘કાલવિસમસસિય’ કાલવિપ્પમમશ્રિત ચ=કાલઃ અર્ધરાત્રાદિલક્ષણઃ, ત્રિપમાણિ પર્વતાદિદુર્ગમસ્થાનાનિ તૈઃ સશ્રિતમ્ = આશ્રિત યત્તત્તથા । एतादृशेषु निर्जनस्थानेषु चोराः प्रायो निवसन्ति । तथा ‘अहोजञ्छि

ત્તાદાન હૈ । यह कैसा होता है ? इस पर कहते हैं—यह अदत्तादान (हर- दहमरण मयकलुस तासणपरसगगिज्ज्ञलोभमूल) (हर) इसके द्रव्य का हरण करलो, (दह) दहके गृहादिक को जलाओ, (मरण) इसे मार डालो, इत्यादि रूपसे (मय) मय दिखाकर दूसरो के द्रव्यादि का हरण करना, (कलुस) एक दूसरो में कलुपभाव जगाकर उनके द्रव्यादिक को छे लेना, (तासण) इत्यादि अनेक प्रकारसे त्रास पहुँचाना, तथा (पर- सतग) दूसरो के वन म (गिज्ज्ञ) आराक्ति रखना तथा (लोभ) रौद्रध्यानसे युक्त इसमें मूर्छाभाव रखना, ये सब (मूल) अदत्तादान के मूल कारण हे । (कालविसमससिय) अर्धरात्र आदि काल तथा विपम-पर्वतादि दुर्गमस्थान, इनके द्वारा यह अदत्तादान सश्रित- आश्रित होता है—वनता है, तात्पर्य इसका यह है कि जो अदत्तादान- चोरी-किया करते हैं, वे चोर प्रायः अर्धरात्रि के समय में निकलते हैं, एव पर्वतादि दुर्गम स्थानों पर छिपे रहते हैं, इस अपेक्षा काल और

તો તેના વ્યાખ્યા કહે છે—તે અદત્તાદાન “હરદહમરણમયકલુસતાસગ પરસતગગિજ્ઞલોભમૂલ” “હર” “આ વ્યક્તિનું દ્રવ્ય પકાવી લે” “દહ” તેના ઘર આદિને ત્રાસ પાડી દે, “મરણ” તેને મારી નાખે” ઇત્યાદિ રીતે “મય” ભય બતાવીને અન્યનું દ્રવ્ય વસ્ત્ર આદિ હરી લેવું, “કલુસ” એક બીજા વચ્ચે કલેરા જગાડીને તેમના દ્રવ્ય આદિને લઈ લેવું, “તાસણ” ઇત્યાદિ રીતે ત્રાસ પહોંચાડવો, તથા “પરસતગ” બીજાના ધનમાં “ગિજ્ઞ” આમંત્રિ રાખવી તથા “લોભ” રૌદ્રધ્યાનથી યુક્ત મૂર્છાભાવ તેમાં રાખવો તે બધા “મૂલ” અદત્તાદાનના મૂળ કારણો છે “કાલવિસમસસિય” અર્ધરાત્રી આદિ કાળ તથા પર્વતાદિ દુર્ગમસ્થાન તે અદત્તાદાનના આશ્રય સ્થાનો છે, એટલે કે જે અદત્તાદાનચોરી કરે તે ચોર સામાન્ય રીતે મધ્યગત્રે ચોરી કરવા નીકળે છે, અને પર્વતાદિ દુર્ગમ સ્થાનોમાં છુપાઈ રહે છે, તે અપેક્ષાએ કાળ

અતઃપત્યાણપત્યોદમદ્ય ' અધોઽચ્છિન્નતુલ્યપ્રસ્થાન-પ્રમ્નોત્પત્તિક્ક = અયોગતી
 અચ્છિન્નતુલ્યાના = વિષયલોલુપાના યત્ પ્રસ્થાન = ગમન તત્ર પ્રસ્તોત્રી = પ્રવર્તિકા
 મતિઃ = બુદ્ધિરસ્તિ યસ્મિન્નદત્તાદાને તત્તથા નરકાગ્રયોગતિકારણમિત્યર્થઃ,
 'અકિત્તિકર' અકીર્ત્તિકરમ્ = અયવસ્સરમ્ ' અણજ્ઞ = અનાર્થમ્ = અનાર્થોચરિતત્વાત્
 અથવા અન્યાય = ન્યાયપ્રજિત ન્યાયરહિતમિત્યર્થઃ ' િત્તમતરત્રિપુરસગમગ્ગ-
 ડસસમત્તપ્પમત્ત-પમુત્તવચ્ચાત્રિપુરણ-ધાયણપરાણિદુય-પરિણામત્તવરજણપહુમય'
 છિદ્રાન્તરત્રિપુરગ્ગમનમાર્ગણોત્સમગ્ગપ્રમત્તપ્રમુત્તપ્પનાઽઽક્ષેપગ્ગાતનપરાનિમૃતપરિ-
 ણામત્તસ્કરજનપહુમત્ત = તત્ર િદ્ર = ' કેન માર્ગેણ ગન્તવ્ય ' મિત્પાદિકમ્,
 અન્તરમ્ = અવસર જનાના નિદ્રાદિલક્ષણઃ, વિધુર = અપાયઃ મૃદ્રાપ્ત્યાદિલક્ષણ',

વિષયમસ્થાનોં કો અદત્તાદાન યા કારણ કહા ગયા હૈ । (અહો
 અચ્છિન્નતુલ્યપત્યાણપત્યોદમદ્ય) જિન વ્યક્તિયોં કી વિષય તૃણા
 ઊભ નહીં હોતી હે એસે વ્યક્તિ હી અધોગતિ મેં પહુંચાને ચાલી અપની
 બુદ્ધિ કે દ્વારાં હસ અદત્તાદાન મેં પ્રવૃત્તિ કરતે હે, અતઃ અધોગતિ મેં
 ગમન કી કારણભૂત જો વિષય લોલુપોં કી મતિ હૈ વહ મીં હસ અદ
 ત્તાદાન કી ણક કારણભૂત હૈ । યહ અદત્તાદાન (અકિત્તિકર) અવશ
 કારક હૈ । (અણજ્ઞ) અનાર્થો દ્વારાં હી આચરિત ક્રિયા જાતા હૈ હસ
 લિયે અનાર્થરૂપ હૈ । અથવા નીતિમાર્ગ સે વિરુદ્ધ હોને કે કારણ અન્યાય્ય
 હૈ । (છિદ્ર) હસ અદત્તાદાનકો કરને વાલે વ્યક્તિ હસ વાતકી ગવેષણામેં
 રહતે હૈં કિં હમે હસ કામકો કરનેકે લિયે કિસ માર્ગસે હોજા જાના ચાહિયે
 તથા (અતર) અન્તર કી-કૌનસા અવસર હસ કામકો સિદ્ધ કરનેવાલા
 હોગા હસ તરહકે મનુષ્યોંકે નિદ્રાદિરૂપ સમયકી (વિધુર) વિધુરકી-કથ

અને હુર્ગમસ્થાનોને અદત્તાદાનના આશ્રયસ્થાનો બતાવ્યા છે ' અહો અચ્છિન્ન
 તુલ્યપત્યાણપત્યોદમદ્ય " જે લોકોની વિષય વાસના નષ્ટ થતી નથી એવા
 લોકો જ અધોગતિમા લઈ જનાર પોતાની બુદ્ધિ દ્વારા, આ અદત્તાદાનમા
 પ્રવૃત્ત રહે છે, તેથી અધોગતિમા ગમન કરવાના કારણરૂપ વિષય લોલુપોની જે
 મતિ છે તે પણ આ અદત્તાદાન માટે ડરણરૂપ છે, ને અદત્તાદાન " અકિત્તિ
 કર " અપ્રકીર્તિ અપાવનાર છે, " અણજ્ઞ " અનાર્થોદ્વારા સેવાતુ હોવાથી
 અનાર્થરૂપ છે, અથવા નીતિ માર્ગથી વિરુદ્ધ હોવાથી અન્યાયયુક્ત છે
 " છિદ્ર " આ અદત્તાદાન સેવનાર વ્યક્તિ એ વાતની શોધમા
 રહે છે કે આ કામ કરવા માટે આપણે કયા માર્ગે થઈને જવું જોઈએ
 તથા " અતર " અતરની-ઢોયો વખત આ કામને સિદ્ધ કરવા માટે અતુર
 થશે તેની શોધમા રહે છે આ રીતે માણસના નિદ્રાદિરૂપ સમયની શોધમા

વ્યસન=રાજાદિ કૃતોપદ્રવઃ, હ્યેતેષા માર્ગણમ્=ગવેષણમ્, તથા ઉત્સવેષુ=વિવા-
હાદિલક્ષણેષુ મત્તાના=મથપાનાદ્યાસક્તાના અત એ પ્રમત્તાનામ્=અસાધ્યાનાનાં
પ્રમુખાના=નિદ્રિતાના ચ વચ્ચન=વનાપહરણ, તથા આક્ષેપણ=મન્ત્રોપ-યાદિભિશ્ચિત્ત
વિશ્લેષકરણ, પાતન=ગાગવિગોજીકરણ યયમ્યાદિભિસ્તાડન વા તેષુ પરા=
તથા અનિમૃતઃ=અશાન્ત પરિણામ = અન્તઃકરણવૃત્તિવિશેષ. યેષા તે તથા, તે
ચ તે તસ્કરાજના. ચારણનામ્તૈર્વહુમત=માતિશયમાદૃત સ્વીકૃત યત્તતથાભૂતમદ-
ત્તાદાનમ્ 'અકલુગ' અકલુગ=અચારહિત નિર્દયજનપ્રવર્તિતત્વાત્ 'રાયપુરિસ

પ્રાપ્તિ આદિરૂપ આપત્તિ ક્ષી, (વચ્ચન) વ્યસન ક્ષી-રાજા આદિ દ્વારા
કૃત ઉપદ્રવ ક્ષી-ક્ષી (મગ્ગણ) ગવેષણા-તાક મેં તત્પર રહતે હૈં । તથા
(ઉત્સવ) વિવાહ આદિ ઉત્સવોં મેં (મત્તાપ્પમત્ત) મથપાન આદિ કે
કર લેને સે અમાવધાની મે પડે હુમ મસ્ત વ્યક્તિયોં કે તથા (પસુત્ત)
નિદ્રા મેં પડે હુમ વ્યક્તિયોં કે (વચ્ચન) વનાપહરણ કરને મે (આચિ-
વણ) આક્ષેપણમત્ર ઔપધિ આદિદ્વારા ચિત્ત કે વિશ્લેષ કરને મેં, તથા
(ઘાયણપર) પ્રાણોં કે અપહરણ કરને મે અથવા અપને મિત્રાદિકોં
દ્વારા તાડન કરવાને મેં તત્પર રહા કરતે હૈં । (અઙ્ગિણિહુયપરિણામ)
હસ્ત અદત્તાદાનરૂપ કુકૃત્ય ક્ષી કરને વાલેં જીવોં કે પરિણામ-અન્તઃ
કરણ ક્ષી વૃત્તિ-અશાન્ત રહતી હે । (તક્કરજણવહુમય) યહ અદત્તાદાન
ચોર વ્યક્તિયોં દ્વારા ક્ષી સાતિશયરૂપ મેં આદૃત હુઆ હે । અન્તઃ યહ
હુક્કર્મ (અકલુગ) નિર્દયજનો દ્વારા પ્રવર્તિત હોને કે કારણ સ્વયં દયા
રહિતરૂપ હૈં ઇમીલિયે (રાયપુરિસરચ્ચિત્ત) રાજપુરુષોં દ્વારા યહ નિપિદ્વ

રહે છે “ વિધુર ” વિધુરની-ઝઘ પ્રાપ્તિ આદિ રૂપ આપત્તિની, “ વચ્ચન ” વ્યસ-
નની રાજાદિ દ્વારા ડગથેલ ઉપદ્રવની-પણ “ મગ્ગણ ” ગવેષણા-તપાસને માટે
તૈયા રહે છે તથા “ ઉત્સવ ” વિવાહ આદિ ઉત્સવોના, “ મત્તાપ્પમત્ત ” મથ-
પાન આદિ કરીને અમાવધાનીમા રહેલ મસ્ત વ્યક્તિઓના તથા “ પસુત્ત ”
નિદ્રામા પડેલ વ્યક્તિઓના “ વચ્ચન ” ધનને હરી લેવાને “ આચિવણ ”
આક્ષેપણ-મત્ર ઔપધિ આદિ દ્વારા ચિત્તમા વિશ્લેષન કરવાને તથા “ ઘાયણ
પર ” પ્રાણો હરી લેવાને અથવા પોતાના મિત્રાદિ દ્વારા માર મગવવાને તત્પર
રહે છે “ અઙ્ગિણિહુયપરિણામ ” તે અદત્તાદાનરૂપ કુકૃત્ય કરનાર છવોની
મનોવૃત્તિ અશાન્ત રહે છે “ તક્કરજણવહુમય ” આ અદત્તાદાન ચોર લોકો
દ્વારા જ વધારે પ્રમાણમા સેવવામા આવે છે તેથી તે હુક્કર્મ “ અકલુગ ”
નિર્દય જનો દ્વારા આચરિત હોવાને કારણે દયારહિત હોય છે તેથી “ રાય

અથ યન્નામેતિદ્વાસ્માશ્રિત્યાદત્તાદાનમ્ય નામાન્યાઃ 'તસ્મ ય' ઇત્યાદિ—
 મૂલ્ય—તસ્મ ય નામાણિ ગોણાણિ હુતિ તીસ । તં જહા—
 ચોરિકં ૧, પરહડ ૨, અદત્ત ૩, કૂરિકડં ૪, પરલાભો ૫, અસ-
 જમો ૬, પરધણમ્મિ મેહી ૭, લોલિકં ૮, તક્કરત્તણં તિય ૯,
 અવહારો ૧૦, હત્થલહુત્તણં ૧૧, પાવકમ્મકરણં ૧૨, તેણિમ્મકં
 ૧૩, હરણવિપ્પણાસો ૧૪, આહ્યણા ૧૫, છુપણા ધણાણં ૧૬,
 અપચ્ચઓ ૧૭, ઓવીલો ૧૮, ઓમ્મેવો ૧૯, વલ્લેવો ૨૦,
 વિકલ્લેવો ૨૧, કૂડયા ૨૨, કુલમસી ય ૨૩, કલ્લા ૨૪, લાલ-
 પ્પણં પત્થણા ય ૨૫, આસસણા ય વસણં ૨૬, ઇચ્છામુચ્છાય
 ૨૭, તણ્ણામેહી ય ૨૮, નિયઢિકમ્મ ૨૯, અવરોચ્છ ત્તિ વિ ય
 ૩૦ । તસ્મ ય્યાણિ ઇવમાર્ઙ્ગિણિ નામધેજ્ઞાણિહુતિ તીસ અદિ-
 ણ્ણાદાણસ્સ પાવકલિકુલુસકમ્મવહુલસ્સ ॥ સૂ. ૨ ॥

ટીકા—'તસ્મ ય' તસ્ય ચ પૂર્વોપદર્શિતસ્વરૂપસ્પાદત્તાદાનસ્ય 'ગોણાણિ'
 ગોણાણિ=ગુણનિષ્પન્નાણિ નામાણિ વક્ષ્યમાણાણિ 'તીસ' ત્રિંશત્ 'હુતિ' ભવન્તિ

કરના સથ ચોરી છે । હસ ચોરી મેં જિતને મી નિમિત્ત કારણ પડતે હૈં
 વે મી કારણ મે કાર્ય કે ઉપચાર સે ચોરી રૂપ હી માને જાતે હૈં । દુસરે
 કી મૂલી હુઈ, વિસરી હુઈ, પઢી હુઈ, ઘરોદરરૂપ મેં રગ્વી હુઈ, વસ્તુ કા
 હરણ કરના ઓર દગા લેના, યે સવ અદત્તાદાન કે હી પ્રકાર હૈં । યહ
 અદત્તાદાન હિંસાદિ પાપોં કી તરહ ચોરો કે લિયે નરકાદિ દુર્ગતિયોં મેં
 ગમન કા કારણ હોતા હૈં ॥સૂ. ૧॥

અવ સૂત્રકાર "યન્નામ" હસ દ્વાર કો લેકર અદત્તાદાન કે નામોં

ચોરી કહેવાય છે તે ચોરીના જેટલા નિમિત્તો હોય છે તેમને પણ કારણમાં
 કાર્યના ઉપચારથી ચોરી રૂપ જ માનવામાં આવે છે બીજાની ભૂલથી પડી
 રહેલી, ભૂલાર્થ ગયેલી, પડી રહેલી, અને થાપણ રૂપે મૂકેલી વસ્તુનું હરણ કરવું
 કે તેમને પચાવી પાડવી તે બધા અદત્તાદાનના જ પ્રકાર છે તે અદત્તાદાન
 હિંસાદિ પાપોની જેમ ચોરને નરકાદિ દુર્ગતિઓમાં ગમન કરાવનાર હોય છે ॥સૂ. ૧॥

હવે સૂત્રકાર "યન્નામ" એ દ્વારને લઈને અદત્તાદાનના નામો પ્રગટ

‘तजहा’ तानि यथा—‘चौरिक्य’ चौरिक्य=चोरण चोरिमा सैवेति चौरिक्य१,
 ‘परहृड’ परहृत=परस्मात्=अन्यस्मात् हृतम्=अनुमतिं विनैव गृहीतम्२, ‘अदत्त’
 केनापि न दत्तमदत्त ३, ‘कूरिकड’ कूरिकृत-कूरिभिः=निर्दयैः कृत ४, ‘पर-
 लाभो’ परद्रव्यस्य लाभः ५, ‘असजमो’ असजयः=आसजानुष्ठान ६, ‘परधम्मि
 गेहो’ परधने गृह्णिः=परद्रव्याऽभिक्राड्क्षा ७, ‘लोलिक्’ लाल्य=लोलुपत्व ८,
 ‘तक्करत्तण’ तत्करत्तवमिति च ‘अवहारो अपहार’=अपहरण परगन्म्य १०, ‘हत्थलहुत्तण’
 हस्तलाघु=हस्तलाघव-हस्तचापल्यम्, अथवा हस्तयोः लघुन्व = परद्रव्यापह-
 रणकुत्सितत्वात् नोयत्व ११, ‘पावकम्मकरण’ पापकर्मकरण=पापानुष्ठान १२,
 ‘तेणिक्क’ स्तैन्य=स्तेनस्य=चोरस्य कर्म चौर्यमित्यर्थ १३, ‘हरणविप्पणासो’
 हरणविप्रणाश=हरणेन परद्रव्यहरणेन विप्रणाश=नाशइत्यर्थः १४, ‘आइयणा’
 आदानम्=अननुमतपरद्रव्यग्रहण १५, ‘लुपणा णाण’ अनाना लोपना=परद्रव्य

को प्रकट करते हैं—‘तस्स य नामाणि’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तस्स य) पूर्वमे उपदर्शित स्वरूपवाले उस अदत्तादान
 के (गोणाणि) गुणनिष्पन्न (नामाणि) नाम (तीस हुति) ३० तीस
 होते हैं (तजहा) वे इस प्रकार हैं—(चौरिक) चोरी १, (परहृड) पर-
 हृत-विना अनुमति से दूसरे से वस्तु लेना २, (अदत्त) अदत्त ३,
 (कूरिकड) कूरिकृत ४, (परलाभो) परलाभ ५, (असजमो) अस-
 जय ६, (परधम्मि गेहो) परगन्म्यगृह्णि ७ (लोलिक्) लोलुपता ८,
 (तक्करत्तण) तत्करता ९ (अवहारो) अपहार १०, (हत्थलहुत्तण)
 हस्तलाघव ११, (पावकम्मकरण) पापकर्मकरण १२, (तेणिक्क)
 स्तैन्य १३, (हरणविप्पणासो) हरणविप्रणाश १४, (आइयणा) आदान १५,

४३ छे—“ तस्स य नामाणि ” इत्यादि

टीकार्थ—“ तस्स य ” आगता यतावयवाभा आवेल २५३५ वाणा अहं
 तादानना ‘गोणाणि’ गुण प्रभावे ‘नामाणि’ नाम “तीस हुति” त्रीन्
 छे “तजहा” ते आ प्रभावे छे—(१) “चौरिक” चोरी (२) “परहृड”
 परहृत-अनुमति विना धीनानी वस्तु लेनी, (३) “अदत्त” अदत्त, (४) “कूरि-
 कड” कूरिकृत, (५) “परलाभो” परलाभ, (६) “असजमो” असजयम्,
 (७) “परधम्मि गेहो” परधनगृह्णि-धननी लालसा, (८) “लोलिक्क”
 लोलुपता, (९) “तक्करत्तण” तत्करता, (१०) “अवहारो” अपहार, (११)
 “हत्थलहुत्तण” हस्तलाघव, (१२) “पावकम्मकरण” पापकर्मकरण, (१३)
 “तेणिक्क” स्तैन्य, (१४) “हरणविप्पणासो” हरणविप्रणाश, (१५) “आइ

विच्छेदः १६, 'अप्पचओ' अप्रत्ययः=अविश्वासः-अविश्वासोत्पादकत्वात् १७,
 'ओवीलो' अवपीड=पीडाजनक १८, 'ओक्खेवो' अवक्षेपः=परद्रव्यविच्छेदः
 १९, 'उक्खेवो' उत्क्षेपः=परहस्तात् द्रव्यस्य निर्गमन २०, 'विक्खेवो' विक्षेपः=
 परधनस्य प्रक्षेपण २१, 'कूडया' कूटता=द्रव्यस्य कूट तुलादिभिरन्ययाकरण २२,
 'कुलमसी' कुलमपी=कुलकङ्कननक च २३, 'कखा' काक्षा=परद्रव्यवृष्णा २४,
 'लालप्पण पत्थणा य' लालपन प्रार्थना च=आशयन=गर्हितजल्पन, प्रार्थना च
 चौर्यकृते तदपलापकमचनविन्यास, प्रार्थनारूपाणि रचनानि जल्पन्ति चौराः २५,
 'आससणा य वसण' आशसनाच व्यसन-आशसना=प्रिनागः-प्रिनागहेतुत्वात्,
 व्यसन=सर्वापत्तिकारणम् २६, 'इच्छामुच्छा य' इच्छामूच्छा च=तत्रेच्छा पर
 धनाभिलाषः, मूच्छा च=तत्रैव गाढाभिप्यङ्गस्था २७, 'तण्हागेही य' तृष्णा
 गृद्धिश्च, तत्र तृष्णा=अप्राप्तद्रव्यस्य प्राप्तिरावृत्ता, गृद्धिश्च=प्राप्तस्याऽविनाशेच्छा अद
 तादानस्य हेतुकत्वात् तृष्णागृद्धित्युच्यते २८ 'नियडिकम्म' निकृतिर्कर्म=
 निकृति=रूपतत्कर्म=रूपटकार्यमित्यर्थः २९, 'अवरोच्छ त्ति वि य' अपरोक्ष
 मिति च=न विद्यन्ते परेषाम् अक्षीणि द्रष्टव्यतया यत्र चौरकर्मणि तदपरोक्षम्=
 अप्रत्यक्षसम्पाद्यमित्यर्थः ३० । तस्य 'पावकलिकलुसकम्मबहुलस्स' पापकलिकलुष

(घणाण लुपणा) धनकी लोपना १६, (अप्पचओ) अप्रत्यय(अविश्वास) १७,
 (ओवीलो) अवपीड-दुःखरूप १८, (ओक्खेवो) अवक्षेप १९, (उक्खेवो)
 उत्क्षेप २०, (विक्खेवो) विक्षेप २१, (कूडया) कूटता २२, (कुलमसी
 य) कुलमपी २३, (कखा) काक्षा २४, (लालप्पण पत्थणा य) लाल
 पन प्रार्थना २५, (आससणा य वसण) आशासना व्यसन २६, (इच्छा
 मुच्छा य) इच्छामूच्छा २७, (तण्हागेही य) तृष्णागृद्धी २८, (नियडिकम्म)
 निकृतिर्कर्म (कपटकरण) २९, (अवरोच्छत्तिवि य) तथा अपरोक्ष ३० ।
 (तस्स) इस तरह उस कि जिस मे (पावकलिकलुसकम्मबहुलस्स)

यणा " आधान, (१६) "घणाण लुपणा" धनकी लोपना, (१७) "अप्पचओ"
 अप्रत्यय, (१८) "ओवीलो" अवपीड, (१९) "ओक्खेवो" अवक्षेप (२०)
 "उक्खेवो" उत्क्षेप, (२१) "विक्खेवो" विक्षेप, (२२) "कूडया" कूटता (२३)
 "कुलमसी य" कुलमपी, (२४) "कखा" काक्षा (२५) "लालप्पण पत्थणा
 य" लालपन प्रार्थना (२६) "आससणा य वसण" आशसना व्यसन,
 (२७) "इच्छामुच्छाय" इच्छामूच्छा, (२८) "तण्हागेही य" तृष्णागृद्धि, (२९)
 "नियडिकम्म" निकृतिर्कर्म, अने (३०) "अवरोच्छत्ति वि य" अपरोक्ष
 "तस्स" आ प्रभाषे के नेमा "पावकलिकलुसकम्मबहुलस्स" प्राणुतिपातादि
 पाप, युद्ध भित्रद्रोह आदि३५ भविन ४३५ पधारे अभयुभा रहे छे

કર્મરહુલસ્ય=તત્ર પાપ=પાણાતિપાતાદિક કલિ=યુદ્ધ ઋણપાણિ=મલિનાનિ કર્મા
ણિ=મિત્રદ્રોહાદિવ્યાપારરૂપાણિ વહુલાનિ=વહૂનિ યત્ર તત્તથા તસ્ય ' આદિણા-
દાણસ્સ' અદત્તાદાનસ્ય 'પ્યાણિ' એતાનિ પૂર્વોક્તપ્રકારાણિ 'એવમાઈણિ' એવમાદીનિ
=ચૌરિક્યાદીનિ 'તીસ' ત્રિશત્ 'નામથેજ્જાણિ હુતિ' નામથેયાનિ ભવન્તિ ॥સૂ૦ ૨

પ્રાણાતિપાતાદિક પાપ, યુદ્ધ, મિત્રદ્રોહ આદિરૂપ મલિનકર્મ અધિકતા સે
રહતે હૈં (અદિણાદાણસ્સ) અદત્તાદાન કે (પ્યાણિ એવમાઈણિ) ચે
ચોરી આદિ (તીસ) તીસ (નામથેજ્જાણિ) નામ (હુતિ) હૈં ।

ભાવાર્થ—ચોરી ચોરોં કા કર્મ હૈં ઇસલિયે અદત્તાદાન કા નામ
ચૌરિક્ય હૈં ૧ । ચોરી કરને વાલા વિના પૂછે હી દસરોં કે દ્રવ્ય કા હરણ
કરતે હૈં ઇસલિયે ઇસકા નામ પરહત્ત હૈં ૨ । ચોરોં કો કોઈ બુલોંકર
અપના દ્રવ્ય નહીં દેતા હૈં ઇસલિયે ઇસકા નામ અદત્ત હૈં ૩ । નિર્દય બન-
કર હી યહ કર્મ ક્રિયા જાતા હૈં મદય હોકર નહીં, ઇસલિયે ઇસકા નામ
કૂરિકૃત હૈં ૪ । ઇસમેં દૂસરે કે દ્રવ્ય કા લાભ હોતા હૈં અતઃ યહ પર
લાભ રહા જાતા હૈં ૫ । ઇસ કૃત્ય મેં ન ઇન્દ્રિય સયમ રહતા હૈં ઔર ન
પ્રાણિ સયમ હી, અતઃ યહ અસયમ નામ સે કહા ગયા હૈં ૬ । ઇસમેં
પરધન મેં ગૃદ્ધિ હોતી હૈં અતઃ ઇસકા નામ પરધનગૃદ્ધિ હૈં ૭ । ઇસમેં પરિ-
ણામોં મેં લોલુપતા અધિક રહતી હૈં ઇસ લિયે ઇસકા નામ લૌલ્ય હૈં ૮ ।
તસ્કરો કા યહ ભાવ હૈં ઇસલિયે ઇમકા નામ તસ્કરતા હૈં ૯ । ઇસમેં

દાણસ્સ " અદત્તાદાનના " પ્યાણિ એવમાઈણિ " તે ચોરી આદિ " તીસ " ત્રીસ
" નામથેજ્જાણિ " નામ " હુતિ " છે,

ભાવર્થ—(૧) ચોરી ડરવી તે ચોર લોડોનુ કથં છે તેથી અદત્તાદાનનુ
"ચૌરિક્ય" નામ છે (૨) ચોરી કગનાશ પૂછ્યા વિના જ ખીજના દ્રવ્યનુ
હરણ કરે છે, તેથી તેનુ નામ "પરહત્ત" ં (૩) ચોરોને બોલાવીને ડોષ
પોતાનુ દ્રવ્ય દેતુ નથી, તેથી તેનુ નામ "અદત્ત" છે (૪) નિર્દય બનીને જ
ચોરી કરાય છે, સદય યધને નહીં, માટે જ તેનુ નામ "કૂરિકૃત" (૫) તેમા
ખીજના દ્રવ્યનો લાભ (પ્રાપ્તિ) થાય છે, તેથી તેને "લાભ" કહેવામા આવે છે
(૬) આ કૃત્ય ડરતી વખતે ઇન્દ્રિયોનો સયમ રહેતો નથી અને વાણી
સયમ પણુ રહેતો નથી તેથી તેનુ નામ ' અસયમ " છે (૭) તે ડરનારને
પરધનમા ગૃદ્ધિ-લાલચા થાય છે, તેથી તેનુ નામ " પરધનગૃદ્ધિ " છે (૮)
તેનાથી પશ્ચિમોમા-વૃત્તિમા લોલુપતા વધારે પ્રમાણમા રહે છે, તેથી તેનુ
નામ " લૌલ્ય " છે (૯) તન્નજોરોની તે વૃત્તિ લાવના હોય છે, તેથી તેનુ નામ

પરકે ધનકા અપહરણ હોતા હૈં इसलिये इसका नाम अपहरण है १० । પર દ્રવ્ય ચુરાનેમે હાથકી કુગલના કામ દેતી હૈ, અથવા પરદ્રવ્યકે ચુરાનેમે હાથમે લઘુતા-નીચતા આની હૈં इसलिये इसका नाम हललुत्व है ११ । यह कृत्य पापानुष्ठान स्वरूप है, इसलिये इसका नाम पापकर्मकरण है १२ । यह चोरों का कर्म है इसलिये इसका नाम स्तन्य है । १३ । પર દ્રવ્યકે હરણ સે દરને વાલે કા નાજ હી હો જાના હૈં । इसलिये इसका नाम हरण घिप्रणाश है १४ । दूसरों की अनुमति बिना ही धनादिक का इसमें ग्रहण होता है इसलिये इसका नाम आदान है १५ । दूसरों के द्रव्य का हरण करना ही द्रव्य का विनाश करना है, इसलिए इसका नाम परद्रव्यविच्छेद है १६ । कोई भी पुरुष चोरों का विश्वास नहीं करता है, अतः अविश्वास का उत्पादक होने से इसका नाम अप्रत्यय है १७ । द्रव्य का हरण हो जाने से दूसरों का पीड़ा होती है इसलिये पर को पीड़ा का कारण होने से इसका नाम अन्पीड है १८ । परद्रव्य का इस क्रिया से विच्छेद होता है, अर्थात्-चोरे गये द्रव्य को चोर यद्वा तद्वा सर्व कर डालते हैं, यही परके द्रव्य का विच्छेद है इसलिये इसका नाम परद्रव्यविच्छेद है १९ । स्वामी के हाथ से यह चुराया हुआ द्रव्य निकल जाता है-चोरों के हाथों में आ जाता है, इसलिये इसका

“તસ્કરતા” છે (૧૦) તેમા ધનનુ અપહરણ થાય છે, તેથી તેનુ નામ અપહરણ છે (૧૧) પરધન ચોગ્વામા હાથની કુશળતા ઝગ આવે છે, અથવા પરધનની ચોરીથી હાથમા લઘુતા-નીચતા પ્રવેશે એ તેથી તેનુ નામ હલલુત્વ છે (૧૨) તે કૃત્ય પાપકૃત્ય હોવાથી તેનુ નામ પાપકર્મકરણ છે (૧૩) પર ધનનુ અપહરણ કરવાથી હરનારનો નાશ થાય છે, તેથી તેનુ નામ હરણવિ પ્રણાશ છે (૧૪) બીજાની અનુમતિ વિના જ તેમા ધન આદિ ગ્રહણ કરાય છે, તેથી તેનુ નામ આદાન છે (૧૫) બીજાના દ્રવ્યનુ હરણ કરવુ એ જ દ્રવ્યનો વિનાશ ગણાય છે, તેથી તેનુ નામ પરદ્રવ્યવિચ્છેદ છે (૧૬) કોઈપણ માણસ ચોરાનો વિશ્વાસ કરતો નથી એ રીતે અવિશ્વાસ જનક હોવાથી તેનુ નામ “અપ્રત્યય” છે (૧૭) દ્રવ્યનુ અપહરણ થવાથી અન્યને પીડા થાય છે, તેથી ‘પીડાનુ કારણ હોવાથી તેનુ નામ “અન્પીડ” છે (૧૮) પરધનનો આ ક્રિયાથી નાશ થાય છે, એટલે કે ચોર લોકો ગમે તે પ્રકારે તેને વેંફી નાખે છે આ પ્રમાણે તે દ્રવ્યનો વિચ્છેદ કરાવનાર હોવાથી તેનુ નામ “પરદ્રવ્ય વિચ્છેદ” છે (૨૦) તે ચોરાયેલુ દ્રવ્ય તેના માલિકના હાથમાથી આડ્ય-અધને

નામ ઉત્કેષ છે ૨૦। ચોર હસ દ્રવ્ય કો લે જાકર અસુરક્ષિત અવસ્થા મે
 ઢધર ઢધર રમ્મ દેતે હે-હાલ દેતે હે, ઇસલિયે હમકા નામ વિક્ષેપ છે ૨૧।
 ચોર ચુરાકર જવ ઇમ દ્રવ્ય કો વિભાગ કરતે હ, તવ તુલાદિકસે કમતી
 વદતી તૌલતે હે-અક્રમા હિસ્સા નહી કરતે હે, ઇસલિયે હસકા નામ
 કૃટતા છે ૨૨। યદ્ કર્મ કરનેવાલોં કે કુલો કો કલક જગતા છે હસ-
 લિયે હસકા નામ કુલમપી છે ૨૩। અદત્તાદાનમે પરકે દ્રવ્યકો હરણ કરને
 મેં તૃષ્ણા ગ્રહતી હે ઇસલિયે હસકા નામ કાક્ષા છે ૨૪। ચોર ગર્હિત
 જલ્પના કરતે હ, અર્થાત્ ચોરી કરલેને પર મી “મૈને ચોરી કી હૈ” હસ
 વાત કો સ્વીકાર નહી કરતે પ્રત્યુત્તરે ઉસે છુપાને કી હી ચેષ્ટા કરતે હે,
 તથા જિસ સમય પે ચોરી કરને કે લિયે ચલતે હે તો કિસી અપને દષ્ટ
 કી પ્રાર્થના કરકે હી ચલતે હે, ઇસલિયે હસકા નામ લાલપન ઓર પ્રાર્થના
 છે ૨૫। યદ્ કૃત્ય વિનાશ કા હેતુ હોને સે વિનાશરૂપ એવ સમસ્ત
 આપત્તિયોં કા કારણ હોને સે વ્યસનરૂપ છે ઇસલિયે હસકા નામ આશ-
 સના એવ વ્યસન છે ૨૬। પરધન કે હરણ કરને કી અભિલાષા હસમે
 વની રહતી હૈ ઇસલિયે હસકા નામ ઇચ્છા, તથા પર કે વન કો હરણ
 કરને કે લિયે હસમે અત્યત મૂર્છામાવ હોતા હૈ ઇસલિયે હસકા નામ
 મૂર્છા છે ૨૭। અપ્રાપ્ત દ્રવ્ય કી પ્રાપ્તિ કી વાઙ્મતિ તથા પ્રાપ્ત દ્રવ્ય કી
 અધિનાશેચ્છા, પે દોનોં અદત્તાદાન કા હેતુ હ-ઇસલિયે હસકા નામ

ચોરીના હાથમા નય છે, તેથી તેનું નામ ચોરી છે (૨૧) ચોર તે દ્રવ્યને
 ચોરી જમને અસુરક્ષિત હાલતમા ગમે ત્યા મૂઢી દે છે તેથી તેનું નામ ચોરી
 છે (૨૨) ચોર ચોરી થયા પછી બ્યારે તેના ભાગ પાડે છે ત્યારે ત્રાજવા
 આદિથી વ્યારે કે જોશુ તોલે છે-એક મગ્ગા ભાગ પાડતા નથી, તેથી તેનું
 નામ કૃટતા છે (૨૩) આ કૃત્ય ડગ્ગારના કુળને ડલડ લાગે છે, તેથી તેનું
 નામ કુલમપી છે (૨૪) અદત્તાદાન ગ્રહણ કરવામા બીજાનું દ્રવ્ય હરી લેવાની
 વૃષ્ણા રહે છે, તેથી તેનું નામ કાક્ષા છે (૨૫) ચોર ગાહત જલ્પના કરે છે
 એટલે કે ચોરી થયા પછી પણ પોતે ચોરી કરી છે, તે વાતનો સ્વીકાર કરતો
 નથી, પણ તેને શપાવવાનો પ્રયત્ન કરે છે, તથા બ્યારે તેજો ચોરી કરવા
 ઉપડે છે ત્યારે પોતાના કોઈ ઇષ્ટ દેવની પ્રાર્થના કરીને જ નય છે તેથી તેનું
 નામ લાલપન અને પ્રાર્થના છે (૨૬) તે કૃત્ય વિનાશનું કારણ હોવાથી વિના-
 શનુરૂપ અને સઘળાં આપત્તિયોનું કારણ હોવાથી વ્યસનરૂપ છે, તેથી તેનું નામ
 આશસના અને વ્યસન છે (૨૭) તે કૃત્ય કરનારને પરધનનું હણ કરવાની
 અભિલાષા રહે છે, તેથી તેનું નામ ઇચ્છા તથા પારજનું ધન ગ્રહણ કરવાની

‘ અહિમરા ’ અભિમરા = ધનાદિભોજન મરણાભિગ્રવા, મરણમયરહિતા ઉત્પત્તિ,
અથવા ચૌર્યાભિમુગ્ધાઃ સન્ત. પરાન્ મારયન્તિ એ તે તથા દ્વાન્તર્ભાવિત્ત્વપર્ય,
‘ અણમજગા ’ ઋણમજ્જકા = નદુણ મજ્જન્તિ = ન દદતિ એ તે તથા ‘ મગ્ગસન્નિયા ’
મગ્ગસન્નિયાઃ = મગ્નઃ સન્નિયઃ = મિત્રાદિસ્નેહો યસ્મે તથા ડાટ્ઠજનપ્રેમવર્જિતા ‘ રાય
દુઢ્ઢગારો ’ રાજદુષ્ટકાગ્નિઃ = રાજનીતિચિન્હાચરણાઃ ‘ વિસયનિચ્છદલોગવજ્ઞા ’
વિસયનિસિસલોકમાણા = વિસયાત્ = જનપદાત્ નિસિપ્તા = નિઃકામિના અત એવ
લોકમાણાઃ = જનવર્હિર્ભૂતા ‘ ઉદ્દહગામઘાયગપુરઘાયગપથઘાયગઆદીવગતિત્વ
મેયગા ’ ઉદ્દોહક ગ્રામઘાયક-પુરઘાયક-પથઘાયક-ડડીપકતીર્થમેદકા = તત્ર
ઉદ્દોહકાશ્વ = દિસકા ગ્રામઘાયકા, = ગ્રામનાજ્ઞા, પુરઘાયકા = નગરવિશ્વસકાઃ પથિ

યે પરદ્રવ્ય મેં વિશેષ લોલુપ હોતે હૈં । (અહિમરા) ધનાદિક કે લોભ મેં
પડકર યે મરણ કે ભી અભિમુગ્ધ રહતે હૈં-અન્ને મરણ કા ભય નહીં હોતા
હૈં । અથવા ચૌર્ય કર્મ મેં પ્રવૃત્તિ કરને પર દુશ્મનોં કો ભી ઉમ્મ સમય
વાધા ઢાલને પર માર ઢાલતે હૈં । (અણમજગા) હનકે ડપર કિસી કા
કર્જા હો તો ભી યે ઉસે નહીં દેતે હૈં । (મગ્ગસન્નિયા) યે અપને ઇચ્છ
મિત્રાદિકોં સે ભી પ્રેમ નહીં કરતે હૈં । ઉન પર સ્નેહ કરને સે અથવા
ઉનકે સ્નેહ સે યે વર્જિત રહતે હૈં । (રાયદુઢ્ઢગારી) રાજનીતિ કે વિરુદ્ધ
હનકા સદા આચરણ રહતા હૈં । (વિસયનિચ્છદલોગવજ્ઞા) જનપદ સે યે
નિકાલ દિયે જાતે હૈં, ઉસલિયે યે લોકમાણ્ય હોતે હૈં । (ઉદ્દહગામઘાયગ
પુરઘાયગપથઘાયગઆદીવગતિત્વમેયગા) (ઉદ્દહગ) યે વઢે ભારી દ્રોહી
હોતે હૈં જિનપર હનકી વક્રદષ્ટિ પડ જાતી હૈં ઉસકી ફિર કુશલ નહીં ।
(ગામઘાયગ) ગાવોં કે ગાવ નષ્ટ કર ઢાલતે હૈં । (પુરઘાયગ) નગરોં

તેઓ પરદ્રવ્યમા અતિગ્રીય લોલુપ હોય છે “અહિમરા” ધનાદિના લોભમા પડીને
તેઓ મરણની પણ મનુષ્ય ગ્રહે છે-તેમને મોતની ધીક લાગતી નથી અથવા
ચોરી કરવા જતા તેમા આડખીલી રૂપ થનારને ભારી નાખે છે “ અણમજગા ”
તેમની પામે ડાડીનુ લેણુ હોય તો તેઓ તે સુવત્તા નથી “ મગ્ગસન્નિયા ” તેઓ
પોતાના ઇષ્ટ મિત્રાદિ તરફ પણ પ્રેમ રાખતા નથી, તેમના પર સ્નેહ રાખવાથી
અથવા તેમનો સ્નેહ પ્રાપ્ત કરવાથી તેઓ રહિત હોય છે “ રાયદુઢ્ઢગારી ” રાજનીતિથી
વિરુદ્ધ તો તે આચરણ હમેશા રહે છે “ વિસયનિચ્છદલોગવજ્ઞા ” સન્નિયાથી તેમને
હાડી કાઢવામા આવે છે તેથી તેઓ લોડખાણુ હોય છે “ ઉદ્દહગામઘાયગ
પુરઘાયગપથઘાયગઆદીવગતિત્વમેયગા ” “ ઉદ્દહગ ” તેઓ ભારે દ્રોહી હોય છે,
જેમના ઉપર તેમની વક્રદષ્ટિ પડે છે તેમની સલામતી રહેતી નથી “ ગામઘાય
ગા ” તેઓ ગામના ગામો નષ્ટ કરે નાખે છે “ પુરઘાયગ ” નગરોના નાશ

घातका = पयि = मार्गे जनानां घातकाः = द्रव्यलुण्ठनार्थं प्रहारकाः आदीपकाश्च =
गृहादिदाहकाः तीर्थभेदकाश्च = यात्रिजनानां प्रहारकाश्च 'लघुहृत्यसपउत्ता' लघु-
हस्तमग्नयुक्ता लघु = परद्रव्यहरणे निपुणो हस्त = हस्तव्यापारपरायणाः, 'जय-
गरा' घृतकराः, 'खडरग्न्यतीचोरपुरिमचोरसधिच्छेयया य' खण्डरक्षस्त्रीचौर-
पुरुषचौरसन्धिच्छेदकाः = तत्र खण्डरक्षा = शुल्कपालाः उत्कोचग्राहिताचौराः,
स्त्रीचौरा = स्त्रियथोरकाः स्त्रीसमाज्ञाचौरकाः = स्त्रियमेव चोरयतीति स्त्रीचोरकाः,
तथा स्त्री वेशेन चोरका या । तत्र पुरुषचौराश्च मन्धिच्छेदकाः = मन्त्रिय = भित्त्यादीं
विप्र 'सैध' 'सात्र' इति भाषा प्रसिद्धाऽन्विन्ति = तनन्ति ये ते सन्धिच्छेदका
'गठिभेयगा' ग्रन्थिभेदकाः = पसिद्धाः 'परगणहरणलोमाप्रहारअक्खेयी' पर-

को विध्वंस कर देते हैं । (पथयाग) द्रव्य हरण करने के अभिप्राय
से मार्ग में चलने वाले मनुष्यों को ये देखते २ मार डालते हैं । (आदी
वग) गृहादिको में जाग लगा देने हैं । (तित्वभेयगा) यात्रिजनों के
भी द्रव्य लूट लिया करते हैं । (लघुहृत्यसपउत्ता) हाथकी सफाई इनकी
इतनी जवर्दस्त होती है कि ये देखते २ ती दूसरों के वन को चुरा लेते
हैं । (खडरग्न्यतीचोरपुरिमचोरसधिच्छेयया य) इसी तरह जो खड-
रक्ष-शुल्कपाल होते हैं ये जो घूमखोरी करने वाले होते हैं वे चोर माने
जाते हैं वे पता लिये गये हैं स्त्रीचोर-स्त्रियों के पास से द्रव्यादि चुराने
वाले, अथवा स्त्रियों को उठाकर ले जाने वाले, अथवा स्त्री के वेश में
रहकर चोरी करने वाले होते हैं, इसी प्रकार पुरुषचोर भी होते हैं-
पुरुषों के पास से द्रव्यादिक चुराने वाले होते हैं, अथवा पुरुषों को
धोखा देकर डूधर उबर ले जाने वाले होते हैं अथवा पुरुष के वेश में

छपी नाणे ठे, " पथयाग " द्रव्य हरीखेवाने भाटे तेओ प्रचामीओने नेत
नेताभा भागी नाणे ठे " आनेग " धन वगेरेभा आग लगाडे ठे " तित्व-
भेयगा " यात्राणुना द्रव्यने पखु लूटी ले ठे, " लघुहृत्यसपउत्ता " ओरी उर
वाभा तेमने हाथ ओटवो कुराण होय ठे ठे तेओ नेत नेताभा अन्यनु
धन ओगी ले छे " खडरग्न्यतीचोरपुरिमचोरसधिच्छेयया य " ओ न
प्रभाणे ने न उरक्ष-शुल्कपाल होय छे-ने घूसणोनी उरनारा (लाय लेना)
होय छे तेमने ओ गणवाभा आवे छे ओओ-ओओनी पासोही द्रव्य ओगनारा,
अथवा ओओने टपाडी ननाग अथवा स्त्रीना वेराभा नधने ओनी उरनाग
होय छे, ओ न प्रभाणे पुरुषओर पखु होय छे- पुरुषोनी पानेथी द्रव्यादिने
ओरनारा, अथवा पुरुषोने हगे छेने गमे त्या वध ननाग, अथवा पुरुषना

ધનહરણોમાપદારાડક્ષેપિણઃ=તત્ર પરધનં હરન્તિ ये ते परधनहरणाः, ઓમાન્ય-
વહરન્તિ ये ते लोमावहगः=यधपूर्वमलुण्ठनकारिण जाक्षेपिणः=यशीमरणाग्निना
चौर्यकारिण ' हृदकारगनिम्मद्गगूढचोरगोचोरअस्सचोरदासीचोरा य ' हृदका
रकुनिर्मर्दकगૂढચોરગોચોરાશ્વગૌરદામીચૌગથ તત્ર હટ=ચલાત્કાર કુર્વન્તીતિ
हृदकारकाः, निर्मर्दकाश्च=निरनिशयेन मर्दनकारिणः युद्धेन धनापहारिण, गूढचोराः=
गुप्तचोरा, गौ चोरा अश्वचोरा दासीचोराश्च=मत्स्याताः=त पर ' एगचोरा ' एक
चोराः=एकाकिन एव चोरयन्ति ये ते ' ओकडूगमपदायगा ओळिपगसत्थवायग,
चिलकोलीकारगा य ' अवकर्षक मम्पदायगापञ्चिपक नार्थवातकचिलकोलीकार-

રહકર ચોરી કરતે હું, સથિચ્છેદક-મિત્યાદિક મેં મેંધ કરકે ચોરી
કરતે હૈ, (ગઠિમેયગા) ગ્રન્થિભેદક - ગાંઠ કનરતે હૈ (પરધન
હરણલોમાવહારઅસ્સેચી) પરધનહરણોમાપદારાક્ષેપી હોતે હૈ
પરકે ધન કો હરણ કરને વાલે, ઘથ કરકે ધનકો હરણ કરને વાલે વશી
કરણ મત્ર સે વશ કરકે ધન કો હરણ કરને વાલે હોતે હૈ (હૃદકારગ-
નિમ્મદ્ગગૂढચोरगोचोरअस्सचोरदासीचोरा य) (હૃદકારગ) ચલાત્કાર
સે ધન કો હરણ કરને વાલે, (નિમ્મદ્ગ) નિર્મર્દક-યુદ્ધ કરકે ધન કો
હરણ કરને વાલે, (ગૂढચोर) ગુપ્તરૂપ મેં રહકર પર કે ધન કો હરણ
કરને વાલે, (ગોચोर) ગાય કો હરણ કરને વાલે, (અસ્સચोर) અશ્વ
કો હરણ કરને વાલે, (દામીચोर) દાસી કો હરણ કરને વાલે,
(એગચોरा य) અકેલે રહકર પર કે ધન કો હરણ કરને વાલે, (ઓક
डूगसपदायगा ओळिपगसत्थवायगचिलकोलीकारगा य) (ઓકડૂગ)

વેરામા જઘને ચોરી કરનારા હોય છે, અધિચ્છેદક-દિવાત આદિમા કાણુ પાડીને
ચોરી કરનારા હોય છે, “ ગઠિમેયગા ” ગ્રન્થિભેદક-ખિસ્મા ઠાતરે છે, “ પર
ધનહરણલોમાવહારઅસ્સેચી ” પરધનહરણુ લોભાપદારાક્ષેપી હોય છે-પરધ
નનુ હરણુ કરનારા, હત્યાકરીને ધનનુ હરણુ કરનારા વસીકરણુ મ તથા વશ
કરીને ધનનુ અપહરણુ કરનારા હોય છે, “ હૃદકારગ નિમ્મદ્ગ ગૂढચोरगोचोर
अस्सचोरदासीचोरा य ” “ હૃદકારગ ” ળખાત્કારથી વનને હની લેનારા, ‘ નિમ્મ
દ્ગ ’ નિર્મર્દક-યુદ્ધ કરીને ધનને હની લેનારા “ ગૂढચोर ” ગુપ્તરીતે રહીને
પરનુ ધન હરી લેનારા, “ ગોચર ” ગાયનુ અપહરણુ કરનારા, “ અસ્સચોર ”
ઘોડાની ચોરી કરનાર, “ દાસીચોર ” દાસીની ચોરી કરનાર, “ એગચોરાય ”
એકલો જઘને પારકાના ધનનુ હરણુ કરનારા “ ઓકડૂગમપદાયગા ઓळिपग
सत्थवायगचिलकोलीकारगा य ” “ ઓકડૂગ ” આકર્ષક-ખીખના ઘરમથી

काश्च तत्र अपकर्षकाः=अपकर्षयन्ति परगृहेषु चोरयितुं चोरानाह्वयन्ति ये तेऽपकर्षका, यद्वा-चोरितं वनमपनीयाऽन्यस्थाने नभन्ति ये ते तथा, तथा गरीरादितो भूषणादि निष्कामका वा, सम्प्रदायकाः=चोरान् स्वगृहे संस्थाप्य भोजनादि दायका, अग्रिउपका=चोरशिष्या सार्थघातका=प्रसिद्धाः मिलकोलीकारकाश्च=परव्यामोहार्थं विश्वासपत्रादिना, देगीबन्दोऽयम् । 'निग्गहविप्पलुपगा' निग्गह-विप्पलुम्पकाः=तत्र निग्गहेण=वशीकरणेन शस्त्रादिभयप्रदर्शनपूर्वकं पर निरुपेत्यैर्य-विप्पलुम्पकाः=छुण्टनकारिणः, 'बहुविहतेणिकहरणबुद्धी' बहुविधस्तैन्यहरणबुद्धयः=बहुविधेन स्तेन्येन=चौर्येण हरणे=परद्रव्यापहरणे बुद्धिर्येषां ते तथा परद्रव्यहरणबुद्धिश्चाल्नि. एते=पूर्वोक्ताः 'अण्णे य' अन्ये च 'एवमादी जे' एवमादयो ये=एवम्प्रकाराः ये 'परस्स दब्बाहिं अवरिया' परस्स द्रव्येषु अविरताः, सूत्रे तृतीया सप्तम्यर्थे परस्स धनयान्यादि ग्रहणे अनिरुत्ता परद्रव्यग्रहणासक्ता इत्यर्थः सन्ति ते चौर्यं कुर्वन्तीति पूर्वेण सम्यग्य ॥सू०३॥

अपकर्षक-पर के घर से द्रव्यादिकों को चुराने के लिये साथ में दूसरे चोरों को बुलाकर चोरी करने वाले, अथवा चुराये हुए धन को दूसरे स्थान में ले जाने वाले, अथवा गरीर आदि से भूषण निकालने वाले, (संप्रदायक) सम्प्रदायक-चोरों को अपने घर में रखकर उन्हें भोजन आदि देने वाले, अग्रिउपक-ये भी चोर होते हैं सार्थघातक जनसमूहका घात करने वाले, मिलकोलीकारक-पर को व्यामोह करने के लिये विश्वास चवन धोलने वाले (निग्गहविप्पलुपगा) शस्त्रादिक का भय दिखला करके दूसरों को रोक कर लूट करने वाले (बहुविहतेणिकहरणबुद्धी) तथा अनेकविधचौर्यकर्म करने में निपुण बुद्धिवाले होते हैं ऐसे (एते अण्णे य एवमादी परस्स दब्बाहिं जे अविरिया) ये सब व्यक्ति तथा इनसे

द्रव्यादिनी चोरी करवाने भाटे भील चोराने भाय लाने चोरी कराना, अथवा चोराला धनने भील जग्याजे लई जनारा अथवा गरीर आदि परथी आ भूषणो लुटी लेनारा, 'संप्रदायक' सम्प्रदायक-चोराने पोताना घरभा आराधे आपीने लोचन आदि देनाग, अग्रिउपक-ते पणु चोर ज रोथ छे, सार्थघातक-जनसमूहनी छत्या करनाग, मिलकोलीकारक-भीलने दसावधाने भाटे विश्वास छिपन उरे तेवा पयने धोलनाग, 'निग्गहविप्पलुपगा' शस्त्रादिने भय पतावी भीलने अटगानीने लुटी लेनारा, 'बहुविहतेणिकहरणबुद्धी' तथा अनेक प्रकारनी चोरी करवामा कुशल बुद्धिवाणा छोथ छे जेरा "एते अण्णे य एवमादी परस्स दब्बाहिं जे अविरिया" जे भधा लोको तथा ते निवायना भील

एव 'येऽपि च कृन्त्यन्तदान' मिति पञ्चमान्तर्गार निरूप्य 'यथा च कृतम्' इत्यदत्तादानस्य तृतीयान्तर्गारमाह—'विउल्लले' इत्यादि

મૂળ—વિઝલવલપરિગ્ગહા ચ વહ્વો રાયાણો પરધણમ્મિ ગિદ્ધા સए दब्बे असत्तुट्ठा परविसए अहिहणाति लुट्ठा परधण स्स कए, चउरग समत्तवलसमग्गा निच्छिय वरजोहजुट्ठसट्ठा य अहमहमितिदप्पिएहि सेन्नेहि संपरिवुडा पउमसगडसूइ- चक्कसागरगरुलव्वहाटिएहि अणीएहि उच्चरता अहिमूय हरति परधणाइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—'विउल्लपरिग્गहा य' विपुल्लपरिग્गहा=ना विपुल्ल=विशाल वल=सामर्थ्य सैन्य या परिग્गहा =परिगारो येषां ते तथा, उहय =अनेके 'रायाणो' राजानः 'परधणम्मि गिद્धा' परधने गृद्धा='परद्व्यासक्ता' 'सए दब्बे' स्वके द्रव्ये =निजधने 'असत्तुट्ठा' असन्तुष्टाः 'लुट्ठा' लोभवन्त' सन्तः 'परविसए' परविषयान्

भिन्न इसी तरह से और भी व्यक्ति जो दूसरों के द्रव्यहरण करने रूप कार्य में चिरति भाव से रहित होते ह, इन सबको चोरो की श्रेणि में ही परिगणित जानना चाहिये ॥ सू० ३ ॥

इस तरह “ जो अदत्तादान को करते हैं ” इस रूप यह पचम अन्तर्द्वार कहकर अब सूत्रकार “ यथा च कृतम् ” इस तृतीय अन्तर्द्वार को कहते हैं—' विउल्लपरिगग्हा ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(विउल्लवलपरिगग्हा) विपुल्ल सैन्य एव परिवारवाले (बह्वो रायाणो) अनेक राजा लोग (परधणम्मि गिद्धा) परधन में आसक्त तथा (सए दब्बे असत्तुट्ठा) अपने पास के द्रव्य में असन्तुष्ट और

લોહો કે જે બીજાના દ્રવ્યનુ અપહરણ કરવાના કાર્યમાં ચિરતિભાવથી રહિત હોય છે—તે કાર્યમાં લીન હોય છે—તે બધાને ચોરાની શ્રેણીમાં જ મૂકવા જોઈએ ॥ સૂ० ૩ ॥

આ રીતે “ જે અદત્તાદાનનુ સેવન કરે છે ” તે પ્રકારના આ પાત્રમાં અન્તર્દ્વારનુ ધ્યન કરીને હવે સૂત્રકાર “ યથા ચ કૃતમ્ ” તે ત્રીજા અન્તર્દ્વારનુ ધ્યન કરે છે—“ વિઝલવલપરિગ્ગહા ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“વિઝલવલપરિગ્ગહા” વિપુલ સૈન્ય અને પરિવાર વાળા “ બહવો રાયાણો ” અનેક રાજાઓ “ પરધણમ્મિ ગિદ્ધા ” પરધનમાં આસક્ત તથા “ સए दब्बे असत्तुट्ठा ” પોતાની પાનેના દ્રવ્યથી અસન્તુષ્ટ અને “ લુટ્ठा ” લોભચુકત

=અન્યજનપદાન દેશાનિત્યર્થઃ 'પરવણસ્મ ક્ષણ' પરધનસ્ય કૃતે=પરદ્રવ્યગ્રહણાર્થમ્ 'અહિ-
 હ્ણતિ' અગ્નિન્નન્તિ=આક્રમન્તિ આક્રમણ કુર્વન્તિ ઇત્યર્થઃ । તથા 'ચાઝરગસમત્તવલ
 સમગ્ગા' ચતુરદ્રસમસાત્તલસમગ્રાઃ=ચતુર્ભિરદ્વૈ = ગજરથાગ્રપદાતિરૂપૈઃ સેનાડ-
 વયૈઃ મપસ્ત=સમ્પૂર્ણ ત્તલ=સૈન્ય તેન સમગ્રા=યુક્તાઃ ચતુરદ્રસેનાયુક્તાઃ 'નિચ્છિ-
 યવરજોહજુદ્ધમદ્ધા ય' નિયતવરયોગયુદ્ધશ્રદ્ધાશ્ચ=તત્ર નિશ્ચિતૈઃ=નિર્ધારિતૈઃ સ્થાયિ-
 રૂપેણ નિયુક્તૈર્નિશ્ચયમદ્ધિર્વા ડરૈઃ=પ્રગસ્તૈ યોગૈઃ=મટૈર્યદ્ યુદ્ધ તત્ર શ્રદ્ધા=પ્રેમાદરો
 ચેષા તે તથા 'અહમહ મિતિ દર્પિણિ' અહમહમિતિદર્પિતૈ= 'અહમેવકવીરઃ'
 ઇન્દ્રેવ દર્પિતૈ=ગણિત 'સેન્નેઈ' સૈન્યેઃ 'સપરિવુડા' સમ્પરિવૃતા=સન્નદ્ધાઃ
 સાઝ્જીભૂતા 'પડમસગડહચક્કસાગરગલ્લૂદાદિણિ' પદ્મશકટવૃક્ષચીચરકસોગર-
 ગરુડવ્યૂહાદિકૈ = પદ્માકારવ્યૂહશકટવ્યૂહવૃક્ષચીવ્યૂહચક્રવ્યૂહસાગરવ્યૂહગરુડવ્યૂહા-
 દિકા સૈન્યરચનાવિશેષાન્તે વિદ્યન્તે ચેષુ તૈસ્તથાભૂતૈ, 'અણીણિ' અનીકૈઃ=

(લુદ્ધા) લુદ્ધ તોરુર (પરવણસ્મ ક્ષણ) દૂસરોં કા યન લેને કે લિયે
 (પરવિસણ) દૂસરે રાજાઓં કે દેશોં કે ડપર (અહિહ્ણતિ) આક્રમણ
 કરતે હે, ત યા (ચાઝરગસમત્તવલસમગ્ગા) ગજ, રથ, અથ્થ ંવ પદાતિ
 રૂપ ચાર અગોં વાલી સેના સે યુક્ત ંવ (નિચ્છિયવરજોહજુદ્ધસદ્ધા
 ય) સ્થાયી રૂપ સે નિયુક્ત કિયે હુણ અથવા અટલ નિશ્ચય સે યુક્ત હુણ
 ંસે પ્રગસ્ત યોદ્ધાઓંકે સાથ યુદ્ધ કરને મે આદરભાવ વાલે ઔર
 (અહમહમિતિ દર્પિણિ) “ મ હી ંક વીર હ ” ંસ પ્રકાર કે ગર્વ
 વાલે (સેન્નેઈ) સૈન્ય સે (સપરિવુડા) પરિવૃત-યુક્ત હોકર (પડમ-
 સગડ/હચક્કસાગરગલ્લૂદાદિણિ) પદ્માકાર વ્યૂહવાલે, શકટવ્યૂહ-
 વાલે, સૂચીવ્યૂહવાલે, ચક્રવ્યૂહવાલે, માગરવ્યૂહવાલે, ંવ ગરુડવ્યૂહ
 આદિ વાલે (અણીણિ) સૈન્ય સે પ્રતિપક્ષી કે સૈન્ય કો (અચ્છરતા)

થધને “ પરધનલ્લ ક્ષણ ” બીજાનુ ધન પ્રાપ્ત ડરવાને માટે “પરવિસણ” બીજા
 રાજાના પ્રદેશો ઉપર “અહિહ્ણતિ” આક્રમણ ડરે છે, તથા ‘ચાઝરગ સમત્ત-
 વલસમગ્ગા’ હાથો, રથ, અથ્થ અને પાયદળ એ ચતુર્ગી મેના મહિત અને
 “ નિચ્છિયવરજોહજુદ્ધમદ્ધા ય ’ સ્થાયી ગીતે ડરેલ અથવા હૃદ નિશ્ચયવાળા
 અને યુદ્ધ ડવામા આદરભાવ રાખનાગ પ્રગન્ત યોદ્ધાઓની માથે અને
 “અહમહમિતિ દર્પિણિ” “ હુ જ એક વીર હ ” એ પ્રગન્ના ગર્વવાળા
 “સેન્નેઈ” સૈન્યથી “સપરિવુડા” પરિવૃત-યુક્ત થઈને “પડમસગડહચક્કસાગર-
 ગરુડલ્લહાદિણિ” પદ્માકાર વ્યૂહવાળા, શકટવ્યૂહવાળા, સૂચી-વ્યૂહવાળા, ચક્રવ્યૂહ
 વાળા, માગર વ્યૂહવાળા અને ગરુડ આદિ વ્યૂહવાળા, “અણીણિ” સૈન્યથી

સૈન્યે. 'ઉચ્છરતા' જાસ્તળ્યન્ત = પ્રતિપક્ષસેનામા ગ્રાન્થન્તઃ, 'અહિભૂય' અભિ
ભૂય = આક્રમણેન શત્રુમેન્ય પરાજિત્ય દટાન્ 'પરધનાઈ' પરવનાનિ હરન્તિ ॥ સૂ. ૪ ॥

તથા યે રાજાદયો યથા પરવનાદીન્યપરન્તિ તદાહ—'અવરે' इत्यादि—

મૂલમ્—અવરે રણસીસલદ્વલક્ષ્ણા સગામ અદ્વયતિ,
સપ્તણદ્વવલ્લપરિયરઉપ્પાડિયચિધપટ્ટગહિયાઉહપહરણા માઢી-
વરવમ્મગુડિયા, આવિદ્ધજાલિયા કવચકડગિયા, ઊર
સિરમુહવદ્ધકઠતોળા, પાસિચવરફલગરડયપહકરસરમસ
સ્વરચાવકરકરચિયસુનિસિયસરવરિમવડકરગમુયતઘણવ-
હવેગધારાનિવાચમગ્ગે, અળેગવળુમડલગ્ગસધિયઉચ્છલિય
સત્તિ—કળગ—વામકર—ગહિય—લેહગ—નિમ્મલ-
નિક્કિદ્ધ—લગ્ગ—પહરંત—કુત—તોમર—ચક્ક—ગયા—પરસુ—મુસલ
—લગલ—સૂલ—લડડ—ભિંડિપાલ—સવ્વલ—પટ્ઠિસ—ચમ્મેટ્ટ-
ઘણ—મોઢિય—મોગ્ગરવર—ફલિહ—જંત પત્થર—દુહણ—તોળ
કુવેળી—પીઢાકલિય ॥ સૂ. ૫ ॥

ટીકા—'અવરે' અવરે = કેચિત્ નૃપા 'રણસીસલદ્વલક્ષ્ણા' રણશીર્ષલવ્યલક્ષ્યા =
રણશીર્ષે = સપ્તમશિરસિ લવ્યલક્ષ્યા = વૈરીવેધને = સિદ્ધહસ્તા સન્તઃ સ્વયમેવ 'સગામ'
આચ્છાદિત કરતે હુણ (અહિભૂય) અપને આક્રમણોં સે ડસે પરાજિત
કરકે (પરધનાઈ) પરવન કો (હરતિ) હરણ કરતે હૈ ॥ સૂ. ૪ ॥

જો અન્ય રાજાદિક પર કે ધન આદિ હરણ કરતે હૈં ડનકો કહતે
હૈં—'અવરે' इत्यादि

ટીકાર્થ—(અવરે) કિતનેક રાજા (રણસીસલદ્વલક્ષ્ણા) જો રણ
શીર્ષલવ્ય લક્ષ્યવાલે હોતે હૈં—વૈરી કો મારને મેં સિદ્ધ હસ્તે હોતે હૈં

પ્રતિપક્ષીના સૈન્યને “ઉચ્છરતા” ઘેરી લાધને “અહિભૂય” પોતાના હુમલાથી
તેને હરાવીને “પરધનાઈ” પરધનનુ “હરતિ” હરણુ કરે છે ॥ સૂ. ૪ ॥

જે બીજા રાજાદિકો પરધન આદિનુ હરણુ કરે છે તેમનુ વર્ણન કરતા
સૂત્રકાર હે છે—“અવરે” इत्यादि

ટીકાર્થ—“અવરે” બીજા ડેટલાડ રાજાઓ “રણસીસલદ્વલક્ષ્ણા” જે રણશી
ર્ષલવ્યલક્ષ્યવાળા હોય છે હુશ્મનની હત્યા કરવામા નિપુણ હોય છે “સગામ-

સગ્રામે 'અદ્યયતિ' અતિપતન્તિ=યુદ્ધ કરતું પ્રવર્તન્તે । કય ભૂતાઃ ? ઇત્યાહ—
'સળ્લદ્ધવદ્ધપડિયર-ઉપ્પાડિયચિંધપટ્ટગહિયાઝહપહરણા' સન્નદ્ધવદ્ધપરિસ્સોત્પાટિ-
તચિન્હપટ્ટગૃહીતાયુધપ્રહરણા.=તત્ર મન્નદ્ધા=યુદ્ધસામગ્રીભિઃ સન્ગીભૂતાસ્તથા, વદ્ધ
પરિરૂર=કવચો યૈસ્તે વદ્ધપરિરૂરાઃ=વદ્ધકવચાઃ તયોત્પાટિતઃ=દૃઢ વદ્ધો મસ્તકે
ચિન્હપટ્ટઃ રક્તપટ્ટાદિ સ્વચિન્હપ્રિણેપો યૈસ્તે તથા, ગૃહીતાનિ=પરિધૃતાનિ રિપુહનના
ર્થમાયુધાનિ-વાળાદીનિ પ્રહરણાનિ=સજ્ઞાદીનિ યૈસ્તે ચ, તથા પદનયસ્ય ધર્મધા-
રયઃ । 'માઢીવરવમ્મગુડિયા' માઢીવરવર્મગુણ્ડિતાઃ=તત્ર-માઢી=શરીરત્રાણવિશેષાઃ
દેશીશસ્ત્રોણ્ય વરવર્માણિ=પાનનકચાનિ તૈર્ગુણ્ડિતાઃ=આન્ઝાદિતશરીરા, આચિ-
દ્ધજાલિકાઃ=નિવદ્ધલોહકચુકાઃ 'કવચકઢગિયા' કવચકઢક્રિતાઃ=સકઢક
કવચેન કઢક્રિતા, 'ઊરસિરમુહવદ્ધકઢતોળા' ઊર શિરોમુખવદ્ધકઢતોળાઃ=તત્ર

(સગામ અદ્યયનિ) જે સ્વયમેવ સગ્રામ મેં ઉતર આતે હું-યુદ્ધ કરને મેં
પ્રવૃત્તિ વાલે હો જાતે હું તેસે જે રાજા લોગ (સળ્લદ્ધવદ્ધપડિયર ઉપ્પા
ડિયચિંધપટ્ટગહિયાઝહપહરણા) (સળ્લદ્ધ) પહિઠે તો યુદ્ધસામગ્રી સે
મન્ગીભૂત હોતે હૈ, (વદ્ધપડિયર) કવચ સે વાનકર અપને શરીર કો
સુરક્ષિત રાખતે હૈ, (ઉપ્પાડિયચિંધપટ્ટ) મસ્તક પર રક્તપટ્ટાદિરૂપ ચિહ્ન-
વિશેષ કો દૃઢતરૂપ મેં વાંધતે હૈ, (ગહિયાઝહપહરણા) રિપુ કો નષ્ટ
કરને કૈ લિયે વાળ આદિ આયુધો કો ઓર સજ્ઞા આદિ પ્રહરણો કો
અપને પામમેં રાખતે હૈ (માઢીવરવમ્મગુડિયા) માઢી-શરીર ત્રાણવિ-
શેષ ણવ ઉત્તમ કવચ સે ઇનકા શરીર આન્ઝાદિત રહતા હૈ, (આચિદ્ધ-
જાલિકા) ઇનકે શરીર પર લોહનિર્મિત કવચ વધા રહતા હૈ (કવચ-
કઢગિયા) કાળંટે વાલે કવચ સે જે યુક્ત હોતે હૈ, (ઊરસિરમુહવદ્ધ

અદ્યયતિ ” તેઓ જાતે જ રણસ આમઆ ઉતરી પડે છે-યુદ્ધ કરવાને તૈયાર થઈ
જાય છે, એવા તે રાજાઓ “ સળ્લદ્ધવદ્ધપડિયરઉપ્પાડિય-ચિંધપટ્ટગહિયા
ઝહપહરણા ” “ સળ્લદ્ધા ” પહેલા તો યુદ્ધની સામગ્રી સજ્જ કરાવે છે,
“ વદ્ધપડિયર ” બખતર પહેરીને પોતાના શરીરને સુરક્ષિત બનાવે છે “ ઉપ્પા-
ડિય ચિંધપટ્ટ ” મસ્તક પર લાલ પટ્ટિ આદિ ખામ ચિહ્નને મજબૂત રીતે બાંધે
“ ગહિયાઝહપહરણા ” હુશ્મનનો નાશ કરવાને માટે બાણ આદિ આયુધો અને
તલવાર આદિ શસ્ત્રો પોતાની પાસે રાખે છે “ માઢીવરવમ્મગુડિયા ” માઢી-
શરીરના રક્ષણ માટેનું એક સાધન, અને ઉત્તમ બખતરથી પોતાના શરીરને
આન્ઝાદિત કરે છે, “ આચિદ્ધજાલિકા ” તેમના શરીર પર લોહનું બખતર
બાંધેલું હોય છે, “ કવચકઢગિયા ” તેઓ ઝાટાળા કવચથી યુક્ત હોય છે,

ઉરસા=પક્ષ:સ્થલેન સઠ શિરોમુખા:==ઉર્ધ્વમુખા વદ્ધાઃ કળ્પે=ગ્રીવાયા તોળા:==તૂળીરા:
 'તરકસ' ઇતિ 'તીરભાતા' ઇતિ વા માપાપતીતા ચૈન્તે તથા પતાદશા ત્વા:
 ગચ્છન્તિ સગ્રામે ઇત્યાદ — 'પાસિયવરફલગરહ્યપફરમરમસાવરચાપકર
 કરચિયમુનિસિયસરયરિસમટ્ટકરકમુયાગગચદવેગારાનિચાયમગ્ગે' પાશ્વિત
 વરફલકરચિતપ્રકરસરમસાવરચાપકરકગચિતમુનિશિતયરપર્પટ્ટકરકમુન્યમાનયન
 ચણ્ડવેગારાનિપાતમાર્ગે=તત્ર 'પાસિય' ઇતિ સ્પૃશ્ણાનિ = હસ્ત ધ્રતાનિ
 વરફલકાનિ=પરશસ્ત્રમહારપતિરોધશસ્ત્રાણિ 'ઢાલ' ઇતિપ્રસિદ્ધાનિ ચૈસ્તે,
 તથા રચિત:=કૃતો રિપુશસ્ત્રપ્રતિઘાતાર્થે 'પહર' ઇતિ પ્રર: = રચનાગ્નિવેગ
 સૈન્યસમૂહો યેસ્તે, તથા મરમમા=મહર્પા સંગેના ચાત્રચાપકરા:=નિપટુરધનુ

કઠતોળા) इनके वक्षस्थल पर तूलीर-तरकस-याधा जाना है, इनमें
 उर्ध्वमुख करके पाण्यग्रीवा के पास भरे रहते हैं। इस प्रकार से पहिछे
 सज्जित होकर किननेक राजा संग्रामभूमि में युद्ध करने के लिये (अव
 यति) उतरते ह। इस प्रकार से यहा सबब लगा लेना चाहिये। जिस
 युद्ध में राजा उतरते हैं वह युद्ध किस प्रकारका होना है? सो कहते हैं—
 जिस संग्रामभूमिमें (पासियवरफलग) निपटुर धनुर्धारीजन अपने ऊपरसे
 परके शस्त्रप्रहारोंको रोकनेके लिये ढालोंको हाथोंमें लिये होतेहैं, (रह्यप
 कर) शत्रु के शस्त्रों का प्रतिघात करने के लिये वे अपनी २ सेना को
 एक विशेष प्रकार की रचना में स्थापित किये हुए रहते हैं तथा (सर
 मस) परस्पर में युद्ध करने का चाव जहा आपसमें खूब बढ़ा बढ़ा होता
 है—हर्ष अववा वेग से जो युक्त होते हैं ऐसे (चावकर) धनुर्धारियों

“उરસિરમુદ્ધયદ્ધકઠતોળા” તેમના વક્ષસ્થળ પર તૂળીર—ભાથા બાધેલા હોય છે
 તે ભાથામા બાણો ઊર્ધ્વમુખ રહે તેમ, ડોકની પાસે ભરેલા રહે છે આ રીતે
 પહેલા સબબ યદને કેટલાક રાજાઓ યુદ્ધ કરવાને માટે રણુમેદાનમા “અવ
 યતિ” ઉતરી પડે છે, એ પ્રકારનો સબબ અહીં સમજી લેવાનો છે જે
 યુદ્ધમા રાજા ઉતરે છે તે યુદ્ધ કેવું હોય છે? તેના જવાબમા કહે છે—
 જે રણુમેદાનમા “પાસિયવરફલગ” નિદ્ધય ધનુર્ધારીઓ દુરમનોના શસ્ત્ર પ્રહારોને
 રોકવાને માટે પોતાના હાથમા ઢાલ રાખે છે, તથા “રહ્યપહર” શત્રુના શસ્ત્રોના
 મુકાબલો કરવાને માટે તેઓ પોતપોતાની સેનાને એક વિશિષ્ટ પ્રકારની બૃહદ્ રચ
 નામા ગોઠવે છે, તથા “સરમસ” અન્યોન્ય લડવાનો શોખ બધા ખૂબ રહે છે હર્ષ
 અથવા વેગથી જે યુક્ત હોય છે એવા “ચાવકર” ધનુર્ધારીઓ દ્વારા બધા “કરચિ

धारिणः तैः कराञ्चिताः=कराकृष्टा ये सुनिश्चिता=अतितीक्ष्णा शरा=शरास्तेषां
यो वर्षः=वर्षण स वृद्धकरकमुञ्चद् धनचण्डवेगधारानिपात इव यत्र. स तथा, यथा
मेघस्य प्रचण्डवेगयुक्तः स्थूलोपलधारानिपातो भवति तद्वत् शरवर्षण यत्रेत्यर्थः
तस्य मार्गद्वारभूतस्तस्मिन् सग्रामे पुनः कीदृशे ? इत्याह—‘अणेगधणुम-
डलम्गसधियउञ्जलियसत्तिङ्गणगवामकरगहियखेडगनिम्मलनिकिङ्खग्गपहरतकुत
तोमरचङ्गगयापरमुमुसलल्लगलसुललउडमिडिपालसन्नलपट्टिमचम्मेट्टवणमोद्धिमो-
ग्गरवरफलिङ्गजतपत्थरट्टुहणतोणकुवेणीपीढारुल्लि’ तत्र ‘अणेगधणुमडलम्ग’
अनेकधनुर्मण्डलाग्राः = अनेकानि धनुषि मण्डलाग्रानि = खड्गविशेषाश्च
तथा ‘सधियउञ्जलियसत्तिङ्गणग’ सन्धितोञ्जलितशक्तिरुनकाः = सन्धिताः=
सन्धानीकृताः=सज्जीकृता इत्यर्थः उञ्जलिताः=उपगताश्च शक्तयः=शस्त्रविशेषा
कनका=शराश्च तथा ‘वामकरगहियखेडगनिम्मलनिकिङ्खग्ग’ वामकरगृहीत
खेटकनिर्मलनिकुण्डलगद्गा=तत्र वामकरे गृहीतानि गेटकानि = परप्रहारप्रतिरोधक
शस्त्राणि ‘ढाल’ इति प्रसिद्धानि निर्मलाः=उज्ज्वलीकृता तीक्ष्णीकृता खड्गाः

द्वारा जहाँ पर (करविद्यसुनिसियसरवरिस) अति तीक्ष्ण चाणों की
वर्षा मेघों के द्वारा (वृद्धकरकमुञ्चतघणचण्डवेगधारानिवायमग्गे) प्रच-
ण्डवेगवाली स्थूल ओलों की वर्षा जैसी की जाती है। तथा जो सग्राम
(अणेगधणुमडलम्ग) अनेक धनुषों से एवं मण्डलाग्रों-तलवार विशेषों
से (सधियउञ्जलियसत्ति) सज्जीकृत उञ्जलित शक्तियों से-इस
नाम के शस्त्र विशेषों से, (कणग) कनकों से-चाणों से (वामकर
गहिय खेडग) वामकर में गृहीत ढालों से, (निम्मलनिकिङ्खग्ग)
तीक्ष्णीकृत खड्गों से, (पहरत) प्रहार करनेमें व्याप्रियमाण ऐसे (कुत)

यसुनिसियसरवरिस” अतिशय तीक्ष्ण आण्डोनी वृद्धि वादणाञ्चो द्वारा “ वृद्धकरकमु
चतघणचण्डवेगधारानिवायमग्गे” अत्र उ वेगवाणा भोटा करानी वृद्धिनी जेभ उगय छे
तथा जे स ग्राम “अणेगधणुमडलम्ग” अनेक धनुषोथी अने भ उलाथो (तलावारथी-
विशेषो)थी “सधिय-उञ्जलिय सत्ति” सज्ज करेल उञ्जलित शक्तियोथी
(जे नामना शस्त्र विशेषोथी) “कणग” कनकोथी आण्डोथी, “वामकरगहिय
खेडग” उणा छायभा गणेल ढालोथी, “निम्मल निकिङ्खग्ग” तीक्ष्ण जनावेल
ज्वाभा पहरता “कुत” लालाञ्चोथी “तोमर”

તથા 'પદ્ધત' પ્રતિયમાણાઃ=પદ્ધતે વ્યાપ્રિયમાણા યે ક્રુન્તાઃ=મન્ત્રા તોમરાશ્ચ= 'સુરજ' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધાઃ 'ચક્ર' ચક્રાણિ 'ગયા' ગદાઃ=પ્રસિદ્ધાઃ 'પરસુ' પરશ્વઃ =કુઠારા તથા મુસલાઃ=પ્રસિદ્ધા 'લગલ' લાઙ્ગલાનિ=શૂલાનિ શૂલાનિ= લીલાશ્વરિણેષા 'લુહ' લગુહા =ચપ્તયઃ 'મિદિપાલ' મિદિપાલાઃ=ગોફણ' ઇતિ રૂપાતાઃ 'સન્વલ' ઇતિશસ્ત્રવિશેષાઃ 'પદ્ધિમ' પદ્ધિશ્ચાઃ=મટપ્રમેદાઃ 'ચર્મેષ્ટ' ચર્મેષ્ટાઃ=ચર્મવદ્ધપાપાગમયાશ્વરિણેષાઃ 'ઘણ' ઘનાઃ=અયોગનાઃ 'ઘણ' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા 'મોદ્ધિયા' મૌદ્ધિયાઃ=મુદ્ધિપ્રમાણાશ્વરિણેષાઃ મોગર' મુદ્ધરાશ્ચ =પ્રતીતાઃ 'વરફલિહ' વરપરિધાઃ=લોહવદ્ધલગુહાઃ 'જતપત્થર' યન્ત્ર પ્રસ્તરા= ગોફણાદિ ચન્ત્રપાપાણાઃ 'દુહણ' દુઘણા મુદ્ધરવિશેષાઃ, તોણાઃ=તૂળીરા-

ક્રુન્તોં સે-ખાલોં સે, (તોમર) તોમરોં સે-સુરજોં સે (ચક્ર)ચક્રોંસે (ગયા) ગદાઓં સે, (પરસુ) પરશુઓં સે-કુઠારોં સે (મુમલ) મુસલોં સે, (હલ) હલોં સે, (સૂલ) શૂલોં સે, (લુહ) લકુદોં-(લાઠિયોં) સે (મિદિપાલ) મિદિપાલોં સે-ગોફણોં સે, (સન્વલ) સન્વલોં સે (સન્વલ) યહ શસ્ત્ર વિશેષ હૈ જો અગ્રભાગ મેં તીક્ષ્ણ ણેસા લોહે કા હઢા હોતા હૈ, (હિન્દી મેં ભી હસે સન્વલ હી કહતે હૈં) (પદ્ધિસ) પદ્ધિશોંસે-ખાલે કે આકાર જૈસે ણક પ્રકાર કે શસ્ત્રોં સે, ચર્મેષ્ટોં સે-ચર્મવદ્ધપાપાગમય અશ્ત્રવિશેષોં સે (ઘણ) ઘણ-લોહવિદ્, હસે ખાપા મેં ભી ઘણ કહતે હૈં ઘણોં સે, (મોદ્ધિય) મૌદ્ધિકોં સે-મુદ્ધિપ્રમાણ અશ્ત્રવિશેષોં સે, (મોગર) મુદ્ધરોં સે, (વરફલિહ) વરપરિધોં સે-લોહવદ્ધ લાઠિયોં સે, (જતપત્થર) યન્ત્ર પ્રસ્તરોં સે, ગોફણ આદિ યન્ત્રોં સે, ફેકે ગયે પત્થરોં સે, (દુઘણ) દુઘણોં સે ણક પ્રકાર કે મુદ્ધર વિશેષોં સે, (તોણ)

તોમરથી-ગુરખેથી, “ચક્ર” ચક્રોથી, “ગયા” ગદાઓથી, “પરસુ” પરશુ ઓથી, “મુસલ” મુસળોથી, “હલ” હળોથી, “સૂલ” ત્રિશૂળોથી, “લુહ” લાઠીઓથી, “મિદિપાલ” મિદિપાલો (ગોફણ)થી, “સન્વલ” ચપ્પલોથી, (તે એક શસ્ત્ર છે તે લોહના દડા જેવું હોય છે અને તીક્ષ્ણ અણીવાળું હોય છે તેને શુભશતીમા કોશ કહે છે) “પદ્ધિસ” પદ્ધિશોથી (પદ્ધિશ લાલના આઝારનું શસ્ત્ર હોય છે) ચર્મેષ્ટોથી (ચર્મ બદ્ધ પાપાણ મહા અશ્ત્ર વિશેષોથી) “ઘણ” ઘણથી, “મોદ્ધિય” મૌદ્ધિકોથી (મુદ્ધિ પ્રમાણ અશ્ત્ર વિશેષોથી) “મોગર” મગદળોથી, “વરફલિહ” વર પરિધોથી-(લોહબદ્ધ લાઠીઓથી) “જતપત્થર” યન્ત્ર પ્રસ્તરોથી (ગોફણ આદિ સાધનોથી ફેકાયેલા પથ્થરોથી) “દુઘણ” ઘણોથી (એક પ્રકારના મગદળોથી) “તોણ” તોળીરા-

‘भाता’ इति प्रसिद्धाः कुवेण्य = शस्त्रविशेषाः. पीठा’ पीठानि = यन्त्ररूपास्त्रविशेषाश्च, इत्येतैश्च शस्त्रविशेषैः ‘कलिय’ कलिते = युक्ते सग्रामे अतिपन-ती. य-प्रपः। मू० ५। पुनरपि सङ्ग्राम वर्णयति—‘इली’ इत्यादि ।

मूलम्—इलीपहरणमिलिमिलितं खिप्पंतविज्जुज्जलविरचिय-समप्पहनहतलकुडपहरणे, महारणसखभेरी वरतूरपउरपडुपडहा-हयनिनायगभीरणंदियपमखुभिय विउलघोसे, हयगयरहजोहतु-रियपसरियरयुद्धयतमधयारवहुले, कायरनरनयणहिययवाउलकरे, विलुलियउकडवरमउडकिरीडकुडलोडुदामाडोविण्ण, पडगपडाग उच्छियधयवेजयतीचामरचलंतछत्तंधयारगभीरे, हयहेसियहत्थि-गुलगुलाइयरहवणघणाइयपाइक्कहरहराइयअप्फोडियसीहनाय छिलियविधुट्टुविरुट्टकठकयसद्वभीमगजिण्ण सयराहहसतरुसत-कलकलरवे, आसूणिय वयणरुद्धभीमदसणाधरोट्टगाढदढसप्प-हारकरणुज्जयकरे, अमरिसवसतिव्वरत्तनिद्वारितच्छे, वेरदिट्ठि-कुद्धचेट्ठियतिवलीकुडिलभिउडीकयललाडे वह परिणयनरसहस्स-विक्रमवियभियवले ॥ सू० ६ ॥

टीका—‘इलीपहरणमिलिमिलितं खिप्पंतविज्जुज्जलविरचियसमप्पहनहतले’ इलीपहरणमिति मिलिन्तं खिप्पमाणं विज्जुज्जलविरचितं समप्रमनमस्तले

तृणीरों से—भाताओं से, (कुवेणी) कुवेणियों से—एक प्रकार के शस्त्रों से, (पीठ) पीठों से—यन्त्ररूप अस्त्रविशेषों से (आकलिय) युक्त रहते हैं। ऐसे उस भयङ्कर सग्राम में कितनेक राजा लोक परधन को हरण करने के लिये ही उतरते हैं ॥ सू० ५ ॥

ओ३यी) “कुवेणी” कुवेणीओ३यी (ओ३ प्रकारना शस्त्रो) “पीठ” पीठो३यी (—यन्त्ररूप अस्त्र विशेषो३यी) “आकलिय” युक्त रहते ७ ओ३या ते लयकर म आभमा डेट्लाड राजओ परधननु हुरषु उरवाने भाटे३ उतरे ७ ॥ सू० ५ ॥

=ત્ર ઈલીભી.=દ્વિધાસારે સ્વરૂપરિશેષેઃ મહરણે=મહોદધાનંકરિયેઃ 'મિલિમિલિત' ઇતિ ચારુચિક્ષ્યપુર્તઃસ્તિપ્પમાણેઃ મટૈર્નિપાત્યમાનૈઃ પ્રદ્વિયમાણૈસ્તિવર્યેઃ, પુન કીદૃશેઃ સ્વદ્વાદિશસ્ત્રે. ? વિચુદ્વજ્જલૈઃ=વિષુદ્વદ્વિદ્યોતમાનૈઃ. રિરચિત=રૂત સમપ્રભ=સ્વદશમકાશયુક્ત નમસ્તલ યત્ર સ તથા તસ્મિન્, તથા 'ફુડપહરણે' સ્ફુટપહરણે સ્ફુટાનિ=સ્પષ્ટાનિ પ્રહરણાનિ=શસ્ત્રાણિ યસ્મિન્ સ તથા તસ્મિન્. 'મહારણસમ્ભેરિવરતૂરપરપડુપટહાહપનિનાયગમીરણદિયપરપુભિયપિડગ્રોમે' મહારણશક્ત્યભેરિવરતૂર્યપચુરપડુપટહાહતનિનાદગમ્મીરણનન્દિતપદ્ધુમિતપિપુલ્લોપે = તત્ર મહારણે=મહાયુદ્ધે યે શસ્ત્રાઃ=પ્રતીતા મેર્યઃ=રણમેર્યઃ રતૂર્યાણિ=પ્રયાનશાદિત્રાણિ તાનિ ચ પ્રચુરાણિ=પ્રભૂતાનિ પટૂનિ=સ્પષ્ટધ્વનીનિ ચ પટહાધ= 'ઢોલ' ઇતિ પ્રસિદ્ધાસ્તેપામાહતાના=શાદિતાના નિનાદેન=શબ્દેન ગમ્મીરેણ નન્દિતાઃ=ઠર્પિતાઃ વીરાઃ

ફિર મી સગ્રામ કા ચર્ણન કરતે હૈ- 'ઈલી પહરણ' ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(ઈલી) દોનોં તરફ જિનપર ધાર નિકલ રહિ હૈ એસે ઢુધારે (પહરણ) સ્વદ્વાદિ અનેક શસ્ત્ર જો (મિલિમિલિત) અત્પન્ન ચમકીલે હૈં ઓર (સ્તિપ્પત) શત્રુઓં પર ફેંકે જાતે સમય (વિજ્ઞુજ્જલ) વિજલી જૈસે ચમકતે હૈં, તેસે શસ્ત્રોં ને (વિરદ્યસમપ્પહનહ તલે) નમસ્તલ કો અપને સામાન પ્રકાશ ચાલા બના દિયા હૈ અર્થાત્ જો લપલપાતે હુઅ અતિ તીક્ષ્ણ ચમકીલે શસ્ત્રોં સે આકાશમણ્ડલ ચમકીલા બન રહા હૈ એસે સગ્રામ મેં (ફુડપહરણે) તથા જિસમેં શસ્ત્ર દિખલાઈ દે રહે હૈં તથા જો (મહારણે) મહાસગ્રામ મેં બજને વાલે (સ્ત્ર) શસ્ત્રોં સે, (મેરી) રણભેરિયોં સે (વરતૂરપડરે) સ્પષ્ટ. ધ્વનિસપન્ન પ્રયાન ૨ તૂર્ય-વાદિત્રો સે, (પડુપટહાહપનિનાયગમીર) બજતે હુઅ ઢોલોં કે ગમીર શબ્દોં સે (ણદિય) ઠર્પિત બને હુઅ જોશીલે

હજી પણ સૂત્રકાર સગ્રામતુ વર્ણન કરે કે- " ઈલી પહરણ " ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—'ઈલી'બન્ને તરફ બેને ધાર છે તેવા બેધારા 'પહરણ' ખડગ વગેરે અનેક શસ્ત્રો બે " મિલિમિલિત " અતિશય ચળકતા છે, અને "સ્તિપ્પત" શત્રુઓ તરફ ફેંકવામા આવે ત્યારે " વિજ્ઞુજ્જલ " વિજળી બેવા અથગે છે, એવા શસ્ત્રોએ " વિરદ્યસમપ્પહનહતલે " આકાશને પોતાના બેવુ પ્રકાશિત બનાવી દીધુ છે, એટલે કે બે ચક્રચક્તિ અતિ તીક્ષ્ણ ચળકતા શસ્ત્રોથી આકાશ મડળ ચળકતુ બની રહ્યું છે એવા સગ્રામમા " ફુડપહરણે " તથા બેમા શસ્ત્રો નજરે પડે છે તથા બે " મહારણ " મહાસગ્રામમા વાગતા " સ્ત્ર " શબ્દોથી, " મેરી " રણભેરીઓથી " વરતૂરપડર " સ્પષ્ટ ધ્વનિવાળા મુખ્ય મુખ્ય તૂર્ય - વાદિત્રોથી, " પડુપટહાહપનિનાયગમીરે " વાગતા ઢોલોના ગલીર

પ્રભુમિતાઃ=ક્ષોભમાપન્નાશ્ચ યે કાતરા જનાસ્તેપા વિપુલઃ=ત્રિશલ ઘાપો -નિર્નયસ્મિન્
સ તથા તસ્મિન્ ‘ હ્યગયરહજોહ્તુરિયપસરિયરયુદ્ધયતમધયારબહુલે ’ હ્યગજ-
રથયોધત્વરિતપસ્રતરજઊદ્ધતતમાઽન્યકારબહુલે=તત્ર હ્યાઃ = અશ્વાઃ, ગજાઃ-
પ્રસિદ્ધા, રથાઃ-સ્યન્દનાઃ, યોધા-સુમટાસ્તેપા પાદામિઘાતેન ત્વરિત=શીઘ્ર
પ્રસ્રત-વિસ્તારમુપગત રજઃ-ધૂલી, તદ્ ઊદ્ધતતમમ્-નિશયેનોદ્ગૂતમુઢીયમાન
તેનાઽન્ધકારબહુલે । તથા “ કાયરનરનયણદિયયાઊલકરે ” કાતરનયન-
હૃદયવ્યાકુલકરે, તત્ર = કાતરાઃ-અધીરા. યુદ્ધે પલાયનસ્વભાવા યે નરાસ્તેપા
નયનહૃદયયોઃ વ્યાકુલકરે=ક્ષોભજનકે તથા ‘ વિલુલિયઊકડવરમઊડકિરિડ-
કુડલોહુદામાહોવિષ ’ વિલુલિતોત્કટવરમુકુટકિરિટકુણ્ડલોહુદામાટોપિતે=તત્ર
વિલુલિતાનિ=શ્વસ્તતશ્ચલિતાનિ ઉત્કટવરાણિ=ઉત્તમપ્રકૃષ્ટાનિ યાનિ મુકુટાનિ=
પ્રસિદ્ધાનિ કિરીટાનિ=ત્રિશિખરશિરોભૂષણાનિ કુણ્ડલાનિ=ચર્ણાભરણાનિ ઊહુદા-
માનિ=નક્ષત્રમાલાકારભૂષણાનિ ચ તૈરાટોપિત=વિસ્તારિતો ય’ સ તથા તસ્મિન્

ધોરોં કે પવ (પક્ષુભિય) ક્ષુભિત હુણ કાયર જનોં કે (વિલ્લગોસે)
વિપુલ ઘોપોં સે વ્યાસ હો રહા હૈ, તથા (હ્યગયરહજોહ્તુરિયપસ-
રિયરયુદ્ધયતમધયારબહુલે) (હ્ય) ઘોડોં કે, (ગય) ગજોં કે, (રહ)
રથોં કે, (જોહ) યોદ્ધાઓં કે, (ઊદ્ધયતમ) પૈરોં કે અત્યન્ત આઘાત સે
ઊડકર (તુરિયપસરિય) શીઘ્ર ફૈલી હુઈ (રય) ધૂલી સે જહા પર
(અધયારબહુલે) અધકાર હી અધકાર હો રહા હૈ (કાયરનરનયણદિયય
વાઊલકરે) કાયરજનોં કે નયન ઔર હૃદયકોં જો વ્યાકુલ બનારહા હૈ ।
(વિલુલિય) હધર ઢધર લટકતે હુણ (ઊકડવર) ઉત્તમોત્તમ તેસે
(મઊડ) મુકુટોં સે, (કિરીડ) કિરીટોં સે-ત્રીનશિખર વાલે શિરો
ભૂષણોં સે (કુડલ) કુણ્ડલોં સે, (ઊહુદામ) નક્ષત્ર માલાકાર ભૂષણોં

નાદથી, “ ણટીચ ” આનંદિત બનેલા બેગીલા વીરોના અને “ પક્ષુભિય ”
શ્વાભ પામેલ કાચ બેનોના “ વિલ્લગોસે ” વિપુલ આવાબથી વ્યાપ્ત થઈ ગયું
છે તથા ‘ હ્યગયરહજોહ્તુરિયપસરિયરયુદ્ધયતમધયારબહુલે ’ “ હ્ય ”
ઘોડાના, “ ગય ” હાથીઓના, “ રહ ” રથોના “ જોહ ” યોદ્ધાઓના “ ઊદ્ધય
તમ ” પગના અત્યંત આઘાતથી ઊડીને “ તુરિયપસરિય ” ઝડપથી ફેલાયલી “ રય ”
ધૂળથી બન્યા “ અધયારબહુલે ” અતિચય અધકાર થઈ ગયો છે, “ કાયરનરનયણ
દિયયવાઊલકરે ” કાયર લોડાના નયન અને હૃદયને જે વ્યાકુળ કરી ગયેલ છે,
‘ વિલુલિય ’ અહીં તહીં લટકતા “ ઊકટવર ” ઉત્તમોત્તમ ‘ મઊડ ’ મુગટોથી,
‘ કિરીડ ’ કિરીટોથી-ત્રણ શિખરવાળા શિરોભૂષણોથી, “ કુડલ ” કુડળોથી “ ઊહુદામ ”
નક્ષત્ર માલાકાર ભૂષણોથી, “ આહોવિષ ” જે આડખંડ યુક્ત બનેલ છે ‘ પગહ ’

‘ પગડપટાગઝિઝથયયેજયતીચામરચલતત્તચયારગમીરે ’ પ્રકટપતાકોન્ઠિત
 વજયેજયન્તીચામરચલત્તચાન્ધકારગમીરે=તત્ર પ્રકટાઃ=દૂરસ્થા અપિ દૃશ્યમાના
 યાઃ પતાકાઃ=વિશાલપતાકાઃ ઉન્ઠિતાઃ=અત્યુચ્ચિન્નતા યે ધ્વજાઃ=લઘુપતાકાઃ
 વેજયન્ત્યથ=વિજયપતાકા તથા ચામરાણિ ચરન્તિ ત્રાણિ ચ તે’ ક્રુતેનાપચારેણ
 ગમ્મીરે=ગદને તથા ‘ હ્યહેસિયહત્વિગુલગુલાઈયરહપગગાડયપાડયહરહરાઈય
 આફોડિયસીહનાયઝિલિય વિષુદ્ધોન્ઠિતકુચમમ્મોમગજિન ’ તત્ર ‘ હ્યહેસિય ’
 હ્યહેપિત=હયાનામ્=શ્વના હોપત=શન્તિ ‘ હત્વિગુલગુલાઈય ’ હસ્તિગુલગુલાયિત
 હસ્તિના=ગજાના ગુલગુલાયિત=ગુલગુલગુલઃ ‘ રહયગયગાડય ’ રયગયગાડયિત=
 ધાવતા રથાના ધનયનેતિ શબ્દ તથા ‘ પાડયહરહરાઈય ’ પદાતિ હરહરાયિત=
 પદાતીના સૈનિકાના હરહરેતિ ગઢિત ‘ આફોડિય ’ આમ્ફોડિત=વાહુપરિસ્ફોટન
 ‘ સીહનાય ’ સિંહનાદઃ=સિંહમ્વેય શબ્દકરણ ‘ ઝિલિય ’ સઙ્કિત=સીત્કારકરણ

સે (આઢોવિય) જો આડપર યુક્ત યના જુઆ હૈ । (પગડ) દૂર રહને પર
 મી દૃશ્યમાન એસી (પટાગ) વિશાલ પતાકાઓ સે, (ઉન્ઠિત) ઝંચી
 કી હુઈ એસી (ધય) લઘુપતાકાઓ સે, (વેજયતી) વેજયન્તી-વિજય
 સૂચક એસી ધ્વજાઓ સે, તથા (ચામર) ચામરોં સે ઓ (ચલતત્ત)
 ચલતઝત્રોંસે કિયે ગયે (અધયાર) અધકારસે જો (ગમીરે) ગદન હો રહાહૈ,
 તથા જહાં (હ્યહેસિય) ઘોડો કી હિનહિનાટકે શબ્દ હો રહે હૈ, (હત્વિગુ
 લગુલાઈય) હાથિયોં કી ગુલગુલાહટ હો રહી હૈ, (રહયગયગાડય) રથ
 ઉપર દોડતે હુય રથોં કા જહા ધનધનાટ શબ્દ હો રહા હૈ, (પાડયહર
 હરાઈય) પદાતિયોં કી જહા હર હરાટ-‘ હરહર ’ હસ પ્રકાર કો તુમુલ
 ધ્વનિ હો રહી હૈ, (આફોડિય) વીર અપનો ૨ સુજાઓં કા જહાં
 આસ્ફાલન-કર રહે હૈ-ફટકાર રહે હૈ, (સીહનાય) સિંહ કે જેસી જહા

દૂર દૂર હોવા છતા પણ નજરે પડતી એવી “ પટાગ ” વિશાળ પતાકાઓથી,
 “ ઉન્ઠિય ” ઉચી શાખેલી એવી “ ધય ” લઘુપતાકાઓથી, “ વેજયતી ”
 વિજય સૂચક ધ્વજાઓથી, તથા “ ચામર ” ચામરોથી અને “ ચલતત્ત ” ચલત ઝત્રોથી
 કરાયેલ “ અધયાર ” અધકારથી જે “ ગમીરે ” ગદન થઈ ગયું છે, તથા બધા
 “ હ્યહેસિય ” ઘોડાઓની હાથ હાટીનો આવાજ થઈ રહ્યા છે, “ હત્વિગુલગુલાઈય ”
 હાથિઓની ગુલગુલાહટ થઈ રહી છે, “ રહયગયગાડય ” આમ તેમ દોડતા
 રથોનો ધણધણાટ બધા ચાલી રહ્યો છે “ પાડયહરહરાઈય ” પદાતી-પાયદળનો
 બધા હર હરાટ “ હર હર ” એ પ્રકારનો ભયંકર ધ્વનિ ચાલી રહ્યો છે,
 “ આફોડિય ” બધા વીરો પોત પોતાની બુલ્લઓનું આસ્ફાલન કરી રહ્યા છે-
 ફટકારી રહ્યા છે “ સીહનાય ” સિંહના જેવી ગર્જના બધા થઈ રહી છે,

‘વિષુદ્ધ’ વિષુદ્ધ=વિરૂપઘોષકરણમ્ ‘ઉક્ષિટ્કઠકયસદ્’ ઉત્કૃષ્ટકઠકૃતશબ્દः=
 હર્ષાત્ ઉત્કૃષ્ટ - અતિશયિતઃ કઠ્ઠેન કૃતઃ શબ્દઃ ગલ્ગલાટરૂપઃ સ ઇવ ‘ભીમગ-
 જ્જિય’ ભીમગર્જિત-મેઘગનિથ્ય, इत्येतानि ह्यहेपितादीनि सन्ति यत्र स तथा
 તસ્મિન્ । પુનઃ ક્ષીદશે ? તદાહ—‘સયરાહસતરુસતકલકલરવે’ સયરાહસત્
 રુપ્યત્ કલકલરવે=‘મયરાહ’ ઇતિ યુગપત્ હમતા રુપ્યતા=કુદ્યતા સૈનિકાના
 કલ્કલરવઃ=કોલાહલો યત્ર સ તથા તત્ર । તથા—‘આસૂણિયવયણરુદ્ધીમદસળા-
 ધરોદ્દગાદદ્દમ્પદારકરણુજ્જયકરે’ આશૂનિતવદનરૌદ્રીમદશનાવરોદ્દગાદદ્દમ્પદાર-
 હારકરણોદ્યતકરે=તત્ર આશૂનિતેન=ઈપત્સ્થલીકૃતેન વદનેન=મુતેન યે રૌદ્રા =ક્રોધ-
 ચણ્ડાસ્તે તથા, તથા-ભીમ-ક્રોધાવેશાદ્ ભયદ્કૂર યયામ્યાત્તથા દશનૈ =દન્તૈર-
 ધરોણ્ઠ ગાદ દ્વષ્ટ યસ્તે તથા પરમુદ્ધતાસ્તેષા સત્પદારકરણૈ = શોભનતયા શસ્ત્ર

ગર્જના હો રહી છે (ઝિલિય) ‘સી સી’ હમ પ્રકાર કા જહા સીત્કાર
 શબ્દ હો રહા છે, (વિષુદ્ધ) યોદ્ધાઓ દ્વારા વિરૂપઘોષ જહા ક્રિયા જા
 રહા છે, (ઉક્ષિટ્કઠકયસદ્) હર્ષ સે ફાલે હુણ જહા અપને ૨ કઠો સે
 ઉત્કૃષ્ટ ગલ્ગલાટ રૂપ શબ્દ કર રહે છે (ભીમગજ્જિય) હસ કારણ
 ણેસા વહા જાત હોના છે કિ માનો મેઘ હી યહા ગર્જ રહા છે । (સય-
 રાહસતરુસતકલકલરવે) (હમત) હંમતે તથા (રુસત) ક્રોધ સે
 રુદ્ધ હુણ સૈનિક જનો કા (મયરાહ) ઇક માય જહા પર (કલકલરવે)
 કલકલ શબ્દ હો રહા છે, તથા જહા સૈનિકજન (આસૂણિયવયણ)
 અપનાર મુંદ યોદ્ધે સે રૂપમેં ફુલાકર (રુદ્ધ) ક્રોધ સે ચણ્ડ બન રહે છે
 તથા (ભીમ) ક્રોધ કે આવેશ સે ભયદ્કૂરરૂપ મેં જર્હા વે (દસળાધરો-
 દ્દગાદદ્દ) અપને ૨ અધરોણ્ઠો કો દ્દહના પૂર્વક હસ રહે છે, તથા (સમ્પ

“ઝિલિય” “સીસી” એવો જથ્થો મિલતો જાણો થઈ રહ્યા છે તથા “વિષુદ્ધ”
 યોદ્ધાઓ દ્વારા વિરૂપ ઘોષ બન્યા ડગાઈ રહ્યો છે, “ઉક્ષિટ્કઠકયસદ્” આનંદથી
 કુલાઈ ગયેલા મૈનિજો બન્યા પોત પોતાના ડઠંભાયા ઉત્કૃષ્ટ ગર્જના બેવા શબ્દો
 કાઢી રહ્યા છે, “ભીમગજ્જિય” તે કાણે ત્યા મેઘ જ ગર્જના કરી રહ્યો
 હોય તેવું લાગે છે “સયરાહસતરુસતકલ્કલરવે” “હસત” હમતા
 તથા “રુસત” ડેપાયમાન થયેલ મૈનિજોનો ‘મયરાહ’ એડ સાથે બન્યા
 “કલકલરવે” ડલ ડલ શબ્દ-બ્બનિ થઈ રહ્યો છે, તથા બન્યા મૈનિજો “આસૂણિ
 યવયણ” પોત પોતાનું મુખ થોડા પ્રમાણમાં કુલાવીને ‘રુદ્ધ’ ક્રોધથી ઉગ્ર
 બની ગયેલ છે તથા “ભીમ” ક્રોધના આવેશમાં લયકો ગીતે બન્યા તેઓ
 “દસળાધરોદ્દગાદદ્દ” પોતપોતાના અધરોઢોને દંડતાઈ ડગડા ગયેલ

‘ પગલપટાગઽન્નિઽયધયેજયતીચામરચલતઽત્તપયારગમીરે ’ પ્રસ્ટપતાકોન્ક્રૂત
 વજવૈજયન્તીચામરચલઽત્તપયારગમીરે=તત્ર પ્રસ્ટાઃ=દૂરસ્થા અપિ દૃશ્યમાના
 યાઃ પતાકાઃ=વિશાલપતાકાઃ ઉન્નિઽતાઃ=અત્યુન્નિઽમિતા યે ધ્વજાઃ=લઘુપતાકાઃ
 વૈજયન્ત્યશ્ર=વિજયપતાકા તથા ચામરાણિ ચરન્તિ ડગ્રાણિ ચ તેઃ ક્રતેનાપયારણ
 ગમ્મીરે=ગદને તથા ‘ હ્યહેસિયહત્વિગુલગુગ્રાઽયરહરગગ્રાઽયપાઽફરહરાઽય
 આફોડિયસીહનાયઽિલિય વિષુદ્ધિન્દુઽકટઽમ્યસ’મીમગઽનિન ’ તત્ર ‘ હ્યહેસિય ’
 હ્યહેપિત=હયાનામ્=અથાના દોપત=શબ્દિત ‘ હત્વિગુગ્રાઽય ’ હસ્તિગુલગુલાયિત
 હસ્તિના=ગજાના ગુલગુલાયિત=ગુલગુલગ્રાઽ ‘ રહઘગગ્રાઽય ’ રથગગ્રાનાયિત=
 ધાવતા રથાના ધનઘનેતિ શબ્દ. તથા ‘ પાઽયહરહરાઽય ’ પદાતિ હરહરાયિત=
 પદાતોના સૈનિકાના હરહરેતિ શબ્દિત ‘ આફોડિય ’ આફોટિત=વાહુપરિસ્ફોટન
 ‘ સીહનાય ’ સિંહનાદઃ=સિંહસ્યેવ શબ્દરૂપ ‘ ઽિલિય ’ સળિટિત=સીત્કારરૂપ

સે (આહોચિવ) જો આડપર યુક્ત ધ્વજા હુઆ હૈ । (પગલ) દૂર રહને પર
 ખી દૃશ્યમાન એસી (પટાગ) વિશાલ પતાકાઓ સે, (ઉન્નિઽત) ઝૂંઝી
 કી હુઈ એસી (ધય) લઘુપતાકાઓ સે, (વૈજયતી) વૈજયન્તી-વિજય
 સૂચક એસી ધ્વજાઓ સે, તથા (ચામર) ચામરો સે ણવ (ચલતઽત્ત)
 ચલતઽત્તોસે કિયે ગયે (અધયાર) અધકારસે જો (ગમીરે) ગદન હો રહાહૈ,
 તથા જહાં (હ્યહેસિય) ઘોડો કી હિનહિનાટકે શબ્દ હો રહે હૈ, (હત્વિગુ
 લગુલાઽય) હાથિયોં કી ગુરુગુલાટ હો રહી હૈ, (રહઘગગ્રાઽય) હથ
 ઊધર દોડતે હુણ રયોં કા જહા ધનઘનાટ શબ્દ હો રહા હૈ, (પાઽયહર
 હરાઽય) પદાતિયોં કી જહા હર હરાટ-‘ હરહર ’ હસ પ્રકાર કો તુમુલ
 ધ્વનિ હો રહી હૈ, (આફોડિય) વીર અપની ૨ ઝુજાઓં કા જહા
 આસ્ફાલન-કર રહે હૈ-ફટકાર રહે હૈ, (સીહનાય) સિંહ કે જૈસી જહા

હર હર હોવા છતાં પણ નજરે પડતી એવી “ પટાગ ” વિશાળ પતાકાઓથી,
 “ ઉન્નિઽય ” ઊંચી રાખેલી એવી “ ધય ” લઘુપતાકાઓથી, “ વૈજયતી ”
 વિજય સૂચક ધ્વજાઓથી, તથા “ ચામર ” ચામરોથી અને “ ચલતઽત્ત ” ચળણ છત્રોથી
 કરાયેલ “ અધયાર ” અધકારથી બે “ ગમીરે ” ગદન થઈ ગયું છે, તથા બીજા
 “ હ્યહેસિય ” ઘોડાઓની હાથે હાથાટીનો આવાજ થઈ રહ્યો છે, “ હત્વિગુલગુલાઽય ”
 હાથીઓની ગુલગુલાટ થઈ રહી છે, “ રહઘગગ્રાઽય ” આમ તેમ દોડતા
 રથોનો ધણધણાટ બીજા ચાલી રહ્યો છે “ પાઽયહરહરાઽય ” પદાતી-પાયદળનો
 બીજા હર હરાટ “ હર હર ” એ પ્રકારનો ભયંકર ધ્વનિ ચાલી રહ્યો છે,
 “ આફોડિય ” બીજા વારે પોત પોતાની ભુજાઓનું આસ્ફાલન કરી રહ્યા છે-
 ફટકારી રહ્યા છે “ સીહનાય ” સિંહના બેવી ગર્જના બીજા થઈ રહી છે,

પુનઃ કીદૃશે સગ્રામે ? ઇત્યાદિ ' વગંત ' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—વગ્ગતતુરગરહપહાવિયસમરમહે આવાડિયછેયલાઘવ-
પહારસાહિય સમૂસિયવાહુજુયલે મુક્કટ્ટહાસપુક્કતવોલવહુલે,
ફુરફલગાવરણગહિયગયવરપત્થતદરિયખલમહપરોપ્પરપલગ-
જુહગાવિયવિચ્છોસિયવરાસિરોસતુરિયઅભિમુહપહરંતછિણ્ણકરિ-
કરવિઅગિયકરે, અવ્વદ્ધનિસુદ્ધભિન્નફાલિયપગલિયરુહિરકયમૂ-
મિકદમચિલિચિહ્ણપહે કુચ્છિદાલિયગલિયનિબ્બેલિયંતફુરફુર-
તવિગલમમ્મહયવિગયગાઢદિણ્ણપ્પહારમુચ્છિયરુલંતવિબ્બલવિ-
લાવકલ્લુણે, હયજોહમમતતુરગઉદ્દામમત્તકુજરપરિસકિય જળ-
ણિવ્વુક્કછિણ્ણજ્ઞયમગ્ગરહવરનઠ્ઠસિરકરિકલેવરાકિણ્ણપડિયપ-
હરણવિકિન્નાભરણમૂમિભાગે નચ્ચતકવધપડે, મયકરવાયસપ-
રિલિત્તિગિહ્મંડલમંતછાયંધયારંગમીરે ॥ સૂ૦ ૭ ॥

ટીકા—“ વગ્ગતતુરગરહપહાવિયસમરમહે ’ વલાતુરગરથપ્રધાવિતસમરમહે
=તત્ર વલાન્તઃ=પ્રેપમાણા. યે તુરગાઃ=અશ્વાઃ રથાઃ તૈ પ્રધાવિતા = વેગેન નીતા

કિયા જા રહા હૈ એસે સગ્રામ મે કિતનેક રાજા ઉતરતે હૈ એસા સબધ
યહા લગા લેના ચાહિયે ॥ સૂ૦૬ ॥

ફિર કૈસે સગ્રામ મેં ઉતરતે હૈ સો કહતેહૈ—‘વગ્ગત તુરગ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ— (વગ્ગતતુરગરહપહાવિયસમરમહે) ઢળઢળાટ કરતે હુણ
ઘોડો સે એવ રથો સે જહા પર જલ્દી ૨ મઢ પહુંચાયે જા રહે હૈ, તથા

હીન ડરવામા આવી રહ્યુ છે, એવા સગ્રામમા ડેટલાડ રાબડો ઉતરે છે, એવો
સબધ મમલુ લેવાનો છે ॥સૂ૦૬॥

તેઓ તેવા સગ્રામમા ઉતરે છે તેનુ વધુ વર્ણન કરે છે— “ વગ્ગત
તુરગ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ વગ્ગતતુરગરહપહાવિયસમરમહે ” હણહણાટી કરતા ઘોડા
ઓથી અને રથોની મદદથી બધા બદલીથી ઐનિકોને મોડલાઈ રહ્યા છે, તથા

સશ્ચાલને, ઉઘતાઃ=મટ્ટાઃ કરાઃ=હસ્તાઃ સૈનિકાનાં યત્ર સ તથા તત્ર, અતિ
 ક્રોધશોભીકૃતાનના મયદ્ગ્રસ્વરૂપા યોધાઃ સતતમવ્યગ્રા અગ્રાન્તા અવિચ્છેદેન
 શસ્ત્રપ્રહરણસમાપ્તા યસ્મિન્ સગ્રામે મન્તીત્યર્થઃ । ‘અમરિસવસતિવ્વરત્તનિદારિ
 ત્ત્વે’ અમરપયશતીત્રરક્તનિર્દારિતાક્ષે=અમરપયશેન=ક્રોધયશેન તીત્રરક્તે=અત્યન્ત
 લોહિતે, નિર્દારિતે=સ્ફારિતે ચાક્ષિણી યોધાના યસ્મિન્, તત્ર । તથા ‘વેરદિદ્ધિ
 કુદ્ધચેદ્વિયતિવલીકુટિલમિઝડિકમયલગદે’ વૈરદ્દિદ્ધિનુદ્ધચેદ્વિત્રિવલીકુટિલમ્રુકુટી
 કૃતલગ્ગાદે=તત્ર વૈરદ્દિદ્ધ્યા=વૈરમાયનયા યે કુદ્ધા=કુપિતા મટ્ટામ્તૈશ્વેષ્ટિતા ત્રિવલી=
 લલાટસફ્લોચજનિતત્રિરેગ્વારૂપા તથા કુટિલા મ્રુકુટી કૃતા લલાટે=માલે યત્ર સ
 તથા તત્ર ‘વહપરિણયનરસહસ્મરિમવિયમિયવલે’ વહપરિણતનરસહસ્તવિક્રમ
 વિજૃમ્ભિતવલે=યથે=પ્રતિપક્ષિહનને પરિણતાનાં=તત્પરાણા નરસહસ્રાણામ્=અનેક-
 સહસ્રસુખદાના પરાક્રમેણ વિજૃમ્ભિત=વિશ્વોમિત વલ્=શત્રુસૈન્ય શત્રુમામર્થ્ય વા
 યત્ર સ તથા તસ્મિન્, एतादृशे सग्रामे अतिपतन्तीत्यनेनाऽन्य ॥ सू० ६ ॥

હારકરણુજ્જયકરે) દ્વિપક્ષી સુખદોં કે ડપર પ્રહાર કરને કે લિપે જહાં
 સુખદોં કે હાયો કા સચાલન હો રહા હૈ તથા (અમરિસવસતિવ્વરત્ત
 નિદારિતચ્છે) જહાં પર (અચ્છે) વીરો કે દોનો નેત્ર (અમરિસવસ)
 ક્રોધકે વશસે (નિદારિત) અપલક-નિર્નિમેષ હોકર (તિવ્વરત્તા) અત્યન્ત
 રક્તવર્ણ કે બન રહે હૈ, તથા (વેરદિદ્ધિ) વૈરકી ભાવનાસે (કુદ્ધ) કુપિત હુણ
 મટો દ્વારા (ચેદ્વિય) ચેષ્ટિત-કી ગઈ (તિવલી) અપની ૨ ત્રિવલી-
 ત્રીન રેખાળે, તથા (કુટિલમિઝડિકમય) કુટિલ- ટેઢી મ્રુકુટી લલાટ
 ડપર જહા કી ગઈ હૈ, તથા (વહપરિણયનસહસ્તવિક્રમવિયમિયવલે)
 પ્રતિપક્ષીમૃત સુખદોં કો મારને મેં તત્પર બને હુણ અનેક સહસ્ત્ર સુખદોં
 કે પ્રરાક્રમ સે જહા પર શત્રુ કા સૈન્ય-અથવા વલ-સામર્થ્ય વિશ્વોમિત

છે, તથા “ સપ્પ્રહારકરણુજ્જયકરે ” હુશમળના સેનિડો ડપર પ્રહાર કરવાને
 માટે ન્યા મુલટોના હાથો ચાલી રહ્યા છે, તથા “ અમરિસવસતિવ્વરત્તનિદારિતચ્છે ”
 ન્યા “ અચ્છે ” વીરોની બન્ને આંખો “ અમરિસવસ ” ક્રોધાવેશથી “ નિદારિત ” અપલક
 -પલકારા રહિત થઈને “ તિવ્વરત્તા ” અત્યંત લાલ બની રહેલ છે, તથા “ વેરદિદ્ધિ ”
 વૈરવૃત્તિથી “ કુદ્ધ ” ક્રોધાયમાન થયેલ સુખદોં દ્વારા “ ચોદ્વિય ” કરાતી “ તિવલી ”
 પોત પોતાની ત્રણ રેખાઓ “ ત્રિવલી ” (ક્રોધાયમાન થતા ક્રોધાળમા પડતી
 કરચલીઓ) તથા “ કુટિલમિઝડિકમય ” ન્યા ભમરો-મ્રુકુટી કપાળે ચડી ગઈ
 છે, તથા “ વહપરિણયનસહસ્તવિક્રમવિયમિયવલે ” હુશમનોના માવ્વાને
 આતુર બનેલા અનેક હંબર મુલટોના પરાક્રમથી ન્યા હુશમનના

‘ગયસ્પત્યત’ ગજવસ્પાર્થયમાના = ગજવસ્પાન્=શત્રુકુહરાન્ હન્તુમારોહુ વા
પાર્થયમાનાઃ=અભિલપમાણા યે તે તથા ‘દરિયલ્લમહ’ દક્ષલ્લમહાઃ=દક્ષાઃ
સ્વલ્લગર્વિતાઃ, લ્લમ્હાઃ=દુષ્ટા-મહાઃ=યોગાસ્તે, તથા ‘પરોપ્પરપલ્લગ’ પરસ્પર
પલ્લગાઃ=પરસ્પર શત્રુમભિહન્તુ પ્રવૃત્તાઃ ‘જુદ્ધગન્ધિય’ યુદ્ધગર્વિતાશ્ચ=યુદ્ધકૌશલા-
હક્કારપૂર્ણાઃ, ‘વિકોસિયવરાસિ’ વિકોશિન્નવગમયઃ-વિકોશિતાઃ=કોશાન્નિષ્કા
સિતાઃ અસયઃ=લ્લગ્નાઃ યૈસ્તે તથા, ‘રોસ’ રોપેગ=ક્રોધેન ‘તુરિય’ ત્વરિત=
શીઘ્રમ્, ‘અભિમુહ’ અભિમુલ્લ ‘પહરત’ પ્રહરન્નસ્તે ડિન્નકરિકરાઃ-ડિન્નાઃ
કરિકરાઃ=દક્ષિષ્ઠુણ્ડા યૈસ્તે તથા, વિયગિયકરે’ વ્યદ્ધિતાઃ=પિતૃર્તિતા. કરા’ યેપા
તે તથા, એતે વિધન્તે યસ્મિન્ સ તથા તસ્મિન્-પરસ્પરાભિહનનભેદનઞ્છેદનપ્રહરણ
તત્પરૈર્યોધૈષ્ઠિન્નમિન્નૈ.-‘હયગજરથપદાતીના પરિશ્રદ્ધુશ્ચુડમુહહસ્તપાદાદિભિ
વ્યાપ્ત સ્થલ યત્રૈવ ભૂતે સગ્રામે હત્યર્થઃ) અવશ્વદ્ધિનિસુદ્ધિમિન્નકાલિયપગલિયરુહિરકય-

અક યોધા દૂસરે યોધા કે હાથીકો મારનેકે લિયે અથવા ઉસ પર સવાર
હોનેકે લિયે ઉત્સુક રહતા હૈ, તથા જિસમેં (દરિયલ્લમહ) દુષ્ટ યોધા
ગણ અપને લલ સે અધિક ગર્વિત બને રહતે હૈ, (પરોપ્પરપલ્લગ) અક
દૂસરો કો મારને કે લિયે જહા વીર પ્રયત્નશીલ રહતે હૈ, અથવા પ્રવૃત્ત
હોતે હૈ, (જુદ્ધગન્ધિય) યુદ્ધ કરને કા કૌશલ યોદ્ધાઓ મેં વિશેષરૂપ સે
જગકર ડન્હેં જહા ગર્વિત બના દિયા હૈ, તથા (વિકોસિયવરાસિ) જહા
પર યોદ્ધા અપની ૨ શ્રેષ્ઠ તલવારો કો મ્યાન સે બાહિર કિયે હુળ હી રહતે
હૈ, ઓર જહા (રોસતુરિયઅભિમુહપહરતડિન્નકરિકર) ક્રોધ સે ભર-
કર અક યોધા દૂસરે યોધાકે ઉપર પ્રહાર કર ઉસકે હાથી કે શુણ્ડાદણ્ડ
કો ભગ્ન કર દેતા હૈ, તથા (વિયગિયકરે) પરસ્પરમે જહા યોદ્ધાઓદ્ધા-

સ્પત્યત” જેમા એક યોદ્ધો બીજા યોદ્ધાના હાથાને મારી નાખવાને માટે,
અથવા તેના પર સવાર થવાને માટે આતુર રહે છે, તથા જેમા “દરિયલ્લ-
મહ” દુષ્ટ યોદ્ધાઓ પોતાના બળને લીધે વધારે ગર્વિષ્ટ બનેલા રહે છે,
“પરોપ્પરપલ્લગ” બન્યા એક બીબાને મારવાને માટે વીર પુરુષો પ્રયત્નશીલ
રહે છે, અથવા પ્રવૃત્ત હોય છે, “જુદ્ધગન્ધિય” બન્યા યોદ્ધાઓનું યુદ્ધ કૌશલ્ય
વધારે પ્રમાણુમા બળુત થયું છે, અને તે કારણે તેઓ વધારે ગર્વિષ્ટ બન્યા
છે, તથા “વિકોસિયવરાસિ” બન્યા યોદ્ધાઓ પોતે પોતાના શ્રેષ્ઠ તલવારોને
મ્યાનમાથી બહાર કાઢીને લડવાને તૈયાર હોય છે, અને બન્યા “રોસતુરિય
અભિમુહપહરતડિન્નકરિકર” ક્રોધાચમાન થઈને એક યોદ્ધો બીજા યોદ્ધાના
ઉપર પ્રહાર કરીને તેના હાથીની સૂઢને કાપી નાખે છે, તથા “વિયગિયકરે” બન્યા

સમરે મટા યત ત તથા તત્ર “ આઢવિયઝેયલાઘવપહારમાહિ ” આપતિત્થે
 લાઘવપ્રહારસાધિતે=તત્ર આપતિતા:=યોગુઘ્રતા યે ‘ત્રેમા’=નિપુણાઃ મટાઃ, તેષાં
 તત્કર્તૃકા इत्यर्थः, યે લાઘવપહારાઃ=ચાતુર્યપૂર્ણપ્રહારાસ્તઃ સાધિતો=નિર્મિતઃ ય
 સ તથા તસ્મિન્ । તથા ‘ સમૂસિયગ્રાહુજુયલે ’ સમુચ્ચિત્તગ્રાહુયુગલે=સમુચ્ચિત્તાનિ
 =હર્ષાધિક્યાદ્યર્થોક્તાનિ ગ્રાહુયુગલાનિ મટૈર્યત્ર સ તથા તત્ર, તથા ‘ મુકટ્ટહાસપુક
 ત્થોલવહુલે ’ મુક્તાદ્દહાસપૂર્ત્યુદ્યોગ્યહુલે = મુક્તાદ્દહાસઃ=કૃતમદ્દહાસ યનયઃ,
 પૂર્ત્વુર્વન્તઃ=નામનિર્દેશપૂર્વક પરમાદ્યન્તો યે સુમટાસ્તેષા મોલા=કોલાહલઃ, સ
 વહુલો યસ્મિન્ સ તથા તસ્મિન્ । ‘ ફુરફલગ્નાયરણગહિયગયરપત્થતદરિયમહ
 રલપરોપ્પરપલગ્ગજુદ્ગગવિયત્રિકોસિયવરામિરોસતુરિયઞ્મિમુહપદરતલિષ્ણકરિક
 રિઅગિયરે ’ સ્ફુરફલગ્નાયરણગૃહીતગજયરમાર્યમાનદ્વસમટગ્નલ-પરસ્પરમગ્ન
 યુદ્ધગર્વિતત્રિકોશિતરાસિ-રોપત્તરિતામિમુખમદર-ચિઝન્-કરિકર-વ્યઙ્ગિત-કરે
 તત્ર ‘ ફુરફલગ્નાયરણગહિય ’ સ્ફુરફલગ્નાયરણા=સ્ફુરા=અશ્વપ્રતિઘાતનિવારક
 ચર્મમયપટ્ટવિશેષા, ફલકાનિ=‘ ઢાલ ’ ઇતિ માપા પ્રસિદ્ધાનિ આવરણાનિ ચ=
 કવચાનિ, તાનિ ગૃહીતાનિ=ધૃતાનિ યૈસ્તે તથા સ્ફુરકાદિ શસ્ત્રધારિણિ, તથા

(આઢવિયઝેયલાઘવપહારમાહિ) જો યુદ્ધ કરને કે લિયે ઉચ્ચંત હુ
 એસે નિપુણ મટો કે ચાતુર્ય પૂર્ણ પ્રહારો સે નિર્મિત કિયા ગયા હૈ, (સમૂ
 સિયગ્રાહુજુયલે) તથા જિસમે દર્પિત બને હુએ મટ દર્પે કી અધિકતા
 સે અપને ૨ ગ્રાહુયુગલો કો ડપર ડઠા રહે હૈ (મુકટ્ટહાસપુક્તથોલવહુલે)
 તથા જિસમે સુમટજનો કી મદ્દહાસ્યધ્વનિ દ્વારા એવ દુસરો કો નામ
 નિર્દેશપૂર્વક બુલાને કે શબ્દો દ્વારા વહુત કોલાહલ મચા રહતા હૈ
 તથા જિસમે યોદ્ધાગણ (ફુરફલગ્નાયરણગહિય) અશ્વપ્રતિઘાતકો નિવારણ
 કરનેવાલે ચર્મમય પટ્ટવિશેષોંકો, ફલકોંકો ઢાલોંકો લિયે રહતે હૈ, તથા
 કવચ આદિ આવરણોંસે સજ્જિત રહાકરતે હૈ, તથા (ગયવરપત્થત) જિસમે

“ આઢવિયઝેયલાઘવપહારમાહિ ” જે યુદ્ધ કરવાને તૈયાર થયેલા એવા
 નિપુણ મુલટોના ચાતુર્યપૂર્ણ પ્રહારોથી યુક્ત છે “ સમૂસિયગ્રાહુજુયલે ” તથા
 જેમા આનંદિત બનેલા મુલટો આનંદની અધિકતાથી પોત પોતાની બુલબુલો
 ઉચી કરી રહેલ છે “ મુકટ્ટહાસપુક્તથોલવહુલે ” તથા જેમા મુલટોના
 યુક્ત હાસ્યનો ધ્વનિ તથા ખીબને નામ ધ્વનિ બોલાવવાના શબ્દો દ્વારા બારે
 કોલાહલ મચી રહ્યો છે, તથા જેમા યોદ્ધાઓનો સમૂહ “ ફુરફલગ્નાયરણ
 ગહિય ” શસ્ત્રોના ધારે રોકવાને માટે ચર્મમય પટ્ટ વિશેષોને, ફલકોને-ઢાલોને
 ધારણ કરે છે તથા બખતર આદિ આવરણોથી સજ્જ રહે છે તથા “ ગયવ

વેકૃતઃ=ઝોધાવેશેન વિચિત્રરૂપઃ ગાઢઃ=મર્મભેદી દત્તઃ શત્રુભિઃ પ્રહારો યેષા તે
તથા, અત એવ મૂર્ચ્છિતાઃ=મૂર્છા પ્રાપ્તાઃ, લુઠન્તઃ=ભૂમૌ પિલુઠન્ત, વિદ્વલાઃ=
વ્યાકુલાથ તેષા વિલાપાઃ='હા હતાવયમિ'ત્યાધાઋન્દશબ્દાઃ, તૈઃ કરુણો=
દયાજનકો યઃ સ તથા તત્ર, પુનઃ કીદૃશે ? इत्याह-'हयजोह-भमत तुरग-
उदाममत्तकुजरपरिसक्रियजण-णिबुक्खिण्णज्झय-भग्ग-रहवर - नट्टसिररुक्खिले
वराकिण्ण-पडियपहरण-त्रिकिन्नाभरणभूमिभागे' हतयोधभ्रमतुरङ्गोदाममत्तकुजर-
परिशङ्कितजननिर्मूलछिन्न-वजभग्नरथवरनष्टगिरः रुक्खिलेवराकीर्णपतितप्रहरणवि-
कीर्णाभरणभूमिभागे' तत्र-'हयजोहभमततुरग'-हतयोधभ्राम्यत्तुरगः-हताः=मृता
योधाः=अश्वारोहा सवार इति भाषा प्रसिद्धाः येषा, तथाभूता भ्राम्यन्तः=इतस्ततो
धावन्तः तुरगाः=अश्वा यस्मिन् स तथा, 'उदाममत्तकुजरपरिसक्रियजण'-उदाम-
मत्तकुजरपरिशङ्कितजन.-उदाममत्तकुजरेभ्यो=निरङ्कुशमदोन्मत्तहस्तिभ्य. परिश-
ङ्किता=वयशङ्काकुला. जना यस्मिन् स तथा, 'णिबुक्खिण्णज्झयभग्गरहवर'-
निर्मूलछिन्न वजभग्नरथवराः-तत्र निर्मूला=मूलरहिताः=वजदण्डेभ्यो निस्सृताः

સે વિચિત્રરૂપ ગાઢ મર્મ ભેદી પ્રહાર શત્રુઓ દ્વારા દિયા ગયા હૈં ઓર
હસીસે જો (મુચ્છિય) મૂર્છા કો પ્રાપ્ત હોકર (લુઠત) ભૂમિ પર ઇધર
સે ઉધર લોટ રહે હૈં એવ (વિદ્વલ) વ્યાકુલ હોકર (વિલાવ) “ હા
મૈં મારા ગયા ” इत्यादिरूप से विलाप कर रहे हैं ऐसे योद्धाओं के
विलापो से जो (कलुणे) दयाजनक बना हुआ है तथा जो (हयजोह-
भमततुरग) अपने सवारों के मर जाने से इच्छानुसार इधर उधर
घूमते हुए घोड़ों से युक्त हो रहा है, तथा जहाँ (उदाममत्तकुजरपरि-
सक्रियजणे) उत्कट मदवाले हाथियों से, वध की शका के भय से मनु-
ष्य व्याकुल हो रहे हैं (णिबुक्खिण्णज्झयभग्गरहवरे) जहा निर्मूल
दंडा रहित और छिन्न-फटी हुई ध्वजाएँ और भग्न हुए श्रेष्ठ रथ पड़े हैं

આવેલા શત્રુઓ દ્વારા વિચિત્ર રીતે લયઠર મર્મભેદી પ્રહાર કરાયો છે અને તે
ઠારણે જેઓ “ મુચ્છિય ” મૂર્છાવળ થઈને “ લુઠત ” જમીન ઉપર આમ
તેમ આજોડે છે અને “ વિદ્વલ ” દયાજનક બનેલ છે, “ વિલાવ ” અરે !
મને મારી નાખ્યો ” इत्यादि प्रकारे विलाप करे છે, યોદ્ધાઓના વિલાપથી જે
“ કલુણે ” દયાજનક બનેલ છે, તથા જે “ હયજોહમતતુરગ ” પોતાના સવારો મરી
જવાથી ઇચ્છાનુસાર આમ તેમ ધૂમતા ઘોડાઓથી જે યુક્ત છે, તથા જ્યાં “ ઉદામમ
ત્તકુજરપરિસક્રિયજણ ” મદોન્મત્ત હાથીઓદ્વારા ડચરાઈ જવાના લયથી માણુનો
આકુળ બનેલા છે, “ ણિબુક્ખિણ્ણજ્ઝયભગ્ગરહવર ” જ્યાં નિર્મળ દંડા રહિત

વિકૃતઃ=ક્રોધાવેગેન વિચિત્રરૂપઃ ગાઢઃ=મર્મભેદી દત્તઃ શત્રુભિઃ પ્રહારો યેવા તે તથા, અત એ મૂર્ચ્છિતાઃ=મૂર્ઝા પ્રાપ્તા, લુઠન્ત = ભૂમો વિલુઠન્ત, વિઘ્નલાઃ= વ્યાકુલાશ્ચ તેવા વિલાપા= ' હા દતાવયમિ' -ત્યાધાક્રન્દશબ્દાઃ, તૈ. કરુણો= દયાજનકો યઃ સ તથા તત્ર, પુનઃ ક્રીદશે ? ઇત્યાહ- ' હયજોહ-ભમત તુરગ- ઉદામમત્તકુજરપરિસક્રિયજળ-ણિવ્વુક્કઞ્છિણ્ણજ્ઞય-મગ્ગ-રહવર - નટ્ટસિરમરિકલ્લે ચરાશિણ-પહિયપહરણ-વિકિન્નામરણભૂમિભાગે ' હતયોધમ્રમતુરજ્ઞોદામમત્તકુજર- પરિશક્કિતજનનિર્મૂલછિન્ન-વજ્રમગ્ગરથવરનપ્પટિગિરઃ કુરિમ્મલ્લેવરાત્તીર્ણપતિતપ્રહરણવિ- કીર્ણામરણભૂમિભાગે' તત્ર- 'હયજોહભમતતુરગ' -હતયોધમ્રામ્પતુરગઃ-હતાઃ=મૃતા યોધાઃ=અશ્વારોદા સવાર ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા યેવા, તથામૃતા ભ્રામ્યન્તઃ=ઇતસ્તતો ધાવન્તઃ તુરગાઃ=અથા યસ્મિન્ સ તથા, ' ઉદામમત્તકુજરપરિસક્રિયજળ' -ઉદામ- મત્તકુજરપરિશક્કિતજનન-ઉદામમત્તકુજરેભ્યો=નિરક્કુગમદોન્મત્તદસ્તિભ્ય. પરિશ ક્કિતા=વચગદ્ધાકુલા જના યસ્મિન્ સ તથા, ' ણિવ્વુક્કઞ્છિણ્ણજ્ઞયમગ્ગરહવર ' - નિર્મૂલછિન્ન-વજ્રમગ્ગરથવરા.-તત્ર નિર્મૂલા =મૂલરહિતાઃ=વજ્રદણ્ડેભ્યો નિસ્સૃતા

સે વિચિત્રરૂપ ગાઢ મર્મ ભેદી પ્રહાર શત્રુઓ દ્વારા દિયા ગયા હૈં ઓર ઇસીસે જો (મુર્ચ્છિય) મૂર્ઝાં કો પ્રાપ્ત હોકર (લુઠત) ભૂમિ પર હઘર સે ડધર લોટ રહે હૈં એવ (વિઘ્નલ) વ્યાકુલ હોકર (વિલાવ) “ હા મૈં મારા ગયા ” ઇત્યાદિરૂપ સે વિલાપ કર રહે હૈં એસે યોદ્ધાઓં કે વિલાપોં સે જો (કરુણે) દયાજનક બના હુઆ હૈં તથા જો (હયજોહ- ભમનતુરગ) અપને સવારોં કે મર જાને સે ઇચ્છાનુસાર ડધર ડધર ઘૂમતે હુએ ઘોડોં સે યુક્ત હો રહા હૈં, તથા જહાં (ઉદામમત્તકુજરપરિ- સક્રિયજળે) ઉત્કટ મદવાલે હાથિયોં સે, વધ કી શકા કે ભય સે મનુષ્ય વ્યાકુલ હો રહે હૈં (ણિવ્વુક્કઞ્છિણ્ણજ્ઞયમગ્ગરહવરે) જહા નિર્મૂલ દડા રહિત ઓર છિન્ન-કટી હુઈ ધ્વજાઈ ઓર ભગ્ન હુએ શ્રેષ્ઠ રથ પડે હૈં

આવેલા શત્રુઓ દ્વારા વિચિત્ર રીતે લયડર મર્મભેદી પ્રહાર કરાવે છે અને તે ઠારણે બેઝો “ મુર્ચ્છિય ” મૂર્ઝાવળ થઈને “ લુઠત ” જમીન ઉપર આમ તેમ આળોટે છે અને ‘ વિઘ્નલ ’ દયાજનક બનેલ છે, ‘ વિલાવ ’ અરે ! મને મારી નાખ્યો ” ઈત્યાદિ પ્રકારે વિલાપ કરે છે, યોદ્ધાઓના વિલાપથી બે “ કરુણે ” દયાજનક બનેલ છે, તથા બે “ હયજોહમત્તતુરગ ” પોતાના સવારો મરી જવાથી ઇચ્છાનુસાર આમ તેમ ઘૂમતા ઘોડાઓથી બે યુક્ત છે, તથા બન્થા “ ઉદામમત્તકુજરપરિસક્રિયજળ ” મદોન્મત્ત હાથીઓદ્વારા વ્યસાઈ જવાના લયથી માણુનો વ્યાકુળ બનેલા છે, “ ણિવ્વુક્કઞ્છિણ્ણજ્ઞયમગ્ગરહવર ” બન્થા નિર્મળ દડા રહિત

ભૂમિકદમચિચિલ્લપહે ' અપરિહનિમુદ્રમિત્તકાલિતપ્રગટિતરુપિરકૃતભૂમિકદમચિ
ચિલ્લપહે તત્ર અપરિદ્ધા = ગણાદિમિ, નિમુદ્રા = નિપાતિતાઃ ગઠસ્તાદિમિઃ, મિત્તઃ
ત્રિશૂલાદિમિઃ ફલિતાઃ = સ્ફાટિતા = વિદારિતાઃ કુટારાદિમિયે, તેમ્ચ. પ્રગલિતન
= ક્ષરિતેન રુધિરેજ કૃતઃ = જ્ઞાતો યો ભૂમો = પૃથિવ્યા વર્તમસ્તેન ચિલિચિટ્ઠાઃ = આદ્રાઃ
પન્થાનઃ = માર્ગાઃ યત્ર સ તથા તત્ર, ' કુચ્છિદાલિયગલિયનિમ્મેલિયતફુરફુર
તરિગલમમ્મહયગિગયગાઢદિણપ્પહારમુચ્છિત્રયગલતરિગલરિગરુલુણે ' કુચ્છિ
દારિતગલિતનિર્મલિતાન્ત્રફુરફુરાયમાણગિગરુમર્મહતરિકૃતગાઢદતપહારમ્ચિલ્લપહે
ઠદ્વિલ્લવિલાપરુણે = દારિતાત્ = વિદારિતાત્ કુરેઃ ઉદરાત્ ગલિત રુપિર
નિર્મલિતાનિ = ઉદરાદ્ઘર્ષિનિર્મલિતાનિ ચ અ-ગ્રાણિ = ' આંતરિયાં ' રિવિ
માપા પ્રસિદ્ધાનિ ચેપાં તે તથા, અતપ્પ-ફુરફુરાયમાણાઃ = કમ્પમાનાઃ
વિકલાઃ = નિરુદ્ધેન્દ્રિયવૃત્તિત્વેન વ્યાકુલાઃ, મર્મહતાઃ = ક્ષણાદિમર્મસ્થાને હતાસ્તથા

ઓંકે હાથોં કો કાટ દિયા કરતે હં તથા (અવહદ્વ) ઘાણા સે વેધે ગયે,
(નિમુદ્દ) ગલે મેં હાથ ઢાલકર હઠાત્ જમીન પર પટક દિયે ગયે, (મિત્ત) ત્રિશૂલ
આદિ કે દ્વારા ભેદે ગયે ઇય (ફાલિય) કુટાર આદિ દ્વારા ફાડ
દિયે ગયે-વિદારિત કિયે ગયે એસે યોદ્ધાઓં કે શરીર સે (પગલિય)
ક્ષરતે હુણ (રુહિર) રક્તસે (કયમૂમિકદમચિચિલ્લપહે) જહા સી મૂમિમેં
કીચડ મચ રહી હૈ ઓર હસી સે જહાકે માર્ગ ચિકને હો રહે હૈં તથા
(કુચ્છિદાલિય) વિદારિત હુણ ઉદરસે જિનકે (ગલિય) રૂન બહરહા હૈં ઓર
(નિમ્મેલિયત) આતેં સી જિનકી પેટસે બાહિર નિકલઆઈ હૈં, હસી કારણ
જો (ફુરફુરત) કપ રહે હૈં ઓર (વિગલ) વિકલ હો રહે હૈં એસે
યોધા કિ જિન પર (મમ્મહયગિગયગાઢદિણપ્પહાર) ક્રોધ કે આવેશ

યોદ્ધાઓ એક બાબના હાથ છેલી નાખે છે, તથા "અવહદ્વ" બાણોથી વીધાયેલા
"નિમુદ્દ" ગળામા હાથ ભરાવીને બળપૂર્વક જમીન પર પટકાયેલ, "મિત્ત" ત્રિશૂળ
આદિ દ્વારા ભેદાયેલા, અને "ફાલિય" ફરમી આદિ દ્વારા ચીરી નાખેલ, યોદ્ધાઓના
શરીરમા "પગલિય" વહેતા "રુહિર" લોહીથી 'કયમૂમિકદમચિચિલ્લપહે' બધા
જમીનમા કીચડ થઈ ગયો છે, અને તે કારણે બધા માર્ગ લપસણો થઈ ગયો છે, તથા
"કુચ્છિદાલિય" જેમના વિદારિત થયેલા ઉદરમાથી "ગલિય" લોહી વહી રહ્યું છે
અને "નિમ્મેલિયતે" જેમના આતરડા પણ પેટમાથી બહાર નીકળી પડ્યા છે
એ જ કારણે જો "ફુરફુરત" કપી રહ્યા છે, અને "વિગલ" બાકુડ થઈ
ગયા છે, જેમના પર "મમ્મહયગિગયગાઢદિણપ્પહાર" ક્રોધના આવેશમા

पूर्वोदितमेव सक्षेपेण प्रतिपादयन्नाह—‘ वसु ’ इत्यादि ।

मूलम्—वसुवसुहविक्रपियव्व-पच्चक्खपिउवणं परमरुद्ध-
वीहणगं दुप्पवेसतरग-अभिवडिति-सगामसंकडं, परधणं
महता । अवरे पाडक्कचोरसघा सेणावड्चोरवन्द-पागड्डियाय
अडविदेसदुग्गवासी काल-हरिय-रत्त पयि सुक्खि-अणेगसयचिध-
पट्टवधा परविसए अभिहणति लुट्ठा धणस्स कज्जे ॥ सू० ८॥

टीका—‘ वसुवसुहविक्रपियव्व ’ वसुवसुगविक्रम्पिता इव=तत्र वसव=देवा
वसुधा=पृथ्वी च विक्रम्पिताः-त्रासिता येस्ते तथा तथैवापरे राजानः ‘ परवण ’
परधनं ‘ महता ’ सादृशन्तः पट्टन्यलुब्धा सन्तः ‘ पच्चक्खपिउवण ’ प्रत्यक्षपि-
तृवन=साक्षात् इमशानमिव ‘ परमरुद्धवीहणग ’ परमरुद्रभयानक=अत्यन्तप्रचण्डभ-
यजनक ‘ दुप्पवेसतरग ’ दुप्पवेशतरङ्ग=अत्यन्तदुर्गम वीराणामपि, का कथा कात-
राणामित्येवप्रियमपि ‘ सगामसंकड ’ सग्रामसंकट=गहनयुद्ध ‘ अभिवडिति ’
अभिपतन्ति=प्रतिगन्ति । तथा ‘ अवरे ’ अपरे ‘ पाडक्कचोरसघा ’ पदातिक्रचौर

फिर इसी बात को संक्षेप से कहते हैं—‘ वसुवसुह ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(वसुवसुहविक्रपियव्व) जिन्होंने देवोंको एवं पृथ्वीमण्डलको
भी कपित जैसा करदिया है ऐसे और भी अनेक राजा (परधणमहता) दूसरों
के धनमें लुब्ध होकर (पच्चक्खपिउवण) साक्षात् पितृवन जैसे-प्रत्यक्ष
में इमशान सरीखे प्रतीत होने वाले तथा (परमरुद्धवीहणग) जो अत्यन्त
प्रचण्ड एवं भयजनक हो रहा हो, तथा (दुप्पवेसतरग) वीरों के लिये भी
जो अत्यन्त दुर्गम बना हुआ हो ऐसे (सगामसंकड) गहनयुद्ध में
(अभिवडिति) प्रवेश कर जाते हैं । तथा (अवरे) दूसरे भी (पाडक्क

हुवे ओ ४ वातने मक्षिमा उडे डे— “ वसुवसुह ” इत्यादि

टीकार्थ—“ वसुवसुहविक्रपियव्व ” जेभले देवाने तथा पृथ्वीमण्डलने पणु
लणु कपायमान उगी दीधा डे ओवा भीन पणु अनेउ गल्लओ “ परवण
महता ” भीनना धनमा लुब्ध यधने “ पच्चक्खपिउवण ” प्रत्यक्ष पितृवन जेवा-
प्रत्यक्ष रमशान जेवा लागता, तथा “ परमरुद्धवीहणग ” जे अत्यन्त प्रचण्ड
अने लयउ लागतु होय, तथा “ दुप्पवेसतरग ” वीरने माटे पणु जे
अतिगय दुर्गम होय ओवा “ सगामसंकट ” गहन युद्धमा “ अभिवडिति ”
प्रवेश उडे डे तया “ अवरे ” भीन पणु “ पाडक्कचोरसघा ” पदातिक्रच

છિન્ના ધ્વજાઃ, મળારથવરાશ્ર યસ્મિન્ સ તથા, 'નદ્વસિરકરિકલેવરાકિણ્ણ' - નદ્વસિરઃ
 કરિકલેવરાકીર્ણઃ - નદ્વાનિ શિરાસિ ચેપામેતાદૃશા યે કરિણઃ = દસ્તિનઃ, તેવા યાનિ
 કલેવરાણિ = શરીરાણિ તૈઃ આકીર્ણઃ = વ્યાપ્ત, 'પહિયપહરણ' - પતિતપહરણઃ -
 પતિતાનિ પ્રહરણાનિ = શસ્ત્રાસ્ત્રાણિ યસ્મિન્ સ તથા, 'વિક્કિણ્ણામરણ' - વિક્કીર્ણા-
 મરણઃ - વિક્કીર્ણાનિ = ઇતસ્તતો વિક્ષિપ્તાનિ આમરણાનિ = મૃતયોધાનામ્ અલક્ષરણાનિ
 યસ્મિન્ સ તથા, એતાદૃશો ભૂમિભાગો યસ્મિન્ સ તથા તસ્મિન્, 'નચ્ચતકવધ
 પડરે' નૃત્યત્કવધપ્રચુરે = વ્રત્યન્તઃ કવન્થાઃ = મસ્તકરહિતકલેવરાણિ, પ્રચુરા યત્ર
 સ તથા તત્ર, 'મયકરવાયસપરિલિત્તગિદ્ધમડલમમતઝાયચચારગમ્મીરે' મયક્રવા
 યસપરિલીયમાનવૃદ્ધમડલમ્ = ઝાયચચારગમ્મીરે = તત્ર ભ્રમતામ્ = આકાશે પર્ય
 ટતા મયક્રવાયસાના - મયક્રવાકાકાના તથા પરલીયમાનાના = ગતિવિશેષે પૈરુદ્ધીયમા
 નાના ટુટાના ચ યન્મળલ = મમૂઢઃ, તસ્ય છાયયા યોડન્યકારસ્તેન ગમ્મીરે = ગ્રનીભૂતે
 ઘનાન્ધકારયુક્તે સગ્રામે અતિપતન્તિ રાજાન પરધનલુન્થા ઇતિ પ્રવેળ સમ્પન્થઃ ॥૭૭॥

(નદ્વસિરકરિકલેવરાકિણ્ણે) તથા જો છિન્નમસ્તકવાલે હાથિયોં કે કલે
 વરોં સે વ્યાપ્ત હૈ, (પહિયપહરણ) જહા પ્રહરણ - અસ્ત્રશસ્ત્રાદિક હધર
 હધર પડે હુએ હૈ, તથા (વિક્કિણ્ણામરણ) મારેગયે દુસરે ક્રિતનેક
 યોધાઓં કે પડે હુએ આમરણોં સે વ્યાપ્ત એસે (ભૂમિભાગે) ભૂમિભાગ
 વાલે સગ્રામ મેં (નચ્ચતકવધપડરે) તથા જહાં પર યોદ્ધાઓં કે કવધ
 (ઘડ) પ્રચુરરૂપ મેં નૃત્ય કરરહે હૈ, (મયક્રવાયસપરિલિત્તગિદ્ધમડલ
 મમતઝાયચચારગમ્મીરે) તથા જો આકાશ મેં ઉડતે હુએ મયક્ર વૌવો
 કી, એવ પરિલીયમાન - ગતિવિશેષો સે ઉડીયમાન - ગિદ્ધોં કી છાયાજન્ય
 અધકાર સે ગમ્મીર ઘન રહા હૈ એસે સગ્રામ મે પરધનલુન્થ ઘને હુએ
 રાજા લોક ઉતરતે હૈ ॥ સૂ.૭ ॥

અને કુટેલી ધ્વજા તથા ભાગેલા શ્રેષ્ઠ રથો પડ્યા છે “ નદ્વસિરકરિકલેવરા
 કિણ્ણ ” તથા જે છેદાયેલા મસ્તકવાળા હાથીઓના કલેવરોથી છવાયેલ છે,
 “ પહિયપહરણ ” ન્યા અસ્ત્ર-શસ્ત્રાદિ અહી તહીં પડેલા છે, તથા “ વિક્કિણ્ણા
 મરણ ” મરી ગયેલા ડેટલાક યોદ્ધાઓના આલૂપણોથી જે છવાયેલ છે, “ ભૂમિ
 ભાગે ” એવા ભૂમિભાગ વાળા મગ્રામમાં “ નચ્ચતકવધપડરે ” તથા ન્યા
 યોદ્ધાઓના ધડ અતિચ નૃત્ય કરી રહેલ છે, “ મયક્રવાયસપરિલિત્ત ગિદ્ધ
 મડલમમતઝાયચચારગમ્મીરે ” તથા જે આકાશમાં ઉડતા ભયંકર કાગડાઓની
 તથા પગિલીયમાન-વિશિષ્ટ ગતિથી ઉડતા ગીધોની છાયાને કારણે ઉત્પન્ન થયેલ
 અધકારથી ગભીર દેખાય છે, એવા મગ્રામમાં પરધન પ્રાપ્ત કરવાની લાલચ
 વાળા રાજાઓ ઉતરે છે ॥ સૂ.૭ ॥

ઓહુભિયલુલિયલોહુમ્ભમાળપક્વલિયચલિયીવલજલચક્ક-
વાલમહાનદ્વેગતુરિયઆપૂરમાળગભીરવિલઆવત્તવંચલમમમા-
ળગુપ્પમાળુચ્છલતપચ્ચોણિયતપાણિય - પહાવિયલ્લરફલસપયંડ
વાલિયસલિલફુટ્ટતવીચિક્કલોલ સકુલ, મહામગરમચ્છકચ્છભો-
હારગાહિતિમિસુંસુમારસાવયસમાહય સમુદ્ધાયમાળયપૂઘોરપડરં॥૧॥

ટીકા—અપિ ચ પરદ્રવ્યહરાનરા: ‘ રચનાગરસાગર ચ ’ રત્નાકરસાગર ચ= રત્નાનામાકર:—નિધિભૂતો ય’ માગર મમુદ્રસ્ત પ્રવિશ્ય તન્મધ્યે ગત્વા પોતાન્ ઘનન્તિ, દ્રવ્યગ્રેણ સમ્બન્ધ, સીદ્ધ સાગરમ્ ? इत्याह—‘ ઉમ્મીસહસ્તમાલાકુલવિગય-પોયકલકલતકલિત ’ કર્મિસહસ્તમાલાકુલવિગતપોતકલકલકલિતમ્ = ઉર્મીનાં= તરજાળા સહસ્તમાલાભિ=સહસ્તસંખ્યકપક્તિશિરાકુલત્વાત્ વિગતા:— ભગ્ના: યે પોતા:—નોંકા: ‘ જહાજ—‘સ્ટીમર ’ इति प्रसिद्धा तेषां=તેનાં સ્થિતાના વ્યાપારિ

‘ અદત્તાદાન ત્રિસ પ્રકાર ક્રિયા જાતા હૈ ? ’ અવ સૂત્રકાર હસ ઘાત કો સમજાતે હૈ—‘ રચનાગર ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—પર કે દ્રવ્ય કો હરણ કરને મેં તત્પર બને હુએ મનુષ્ય ધોર (રચનાગરસાગર ચ) રત્નો કે નિધિભૂત સમુદ્ર મેં ઘુસ કર કે-લસકે મધ્ય મેં જાકર કે જહાજો કો નષ્ટ કર દેતે હૈ, હસ પ્રકાર કા સબધ યહા લગા લેના ચાહિયે । અવ સૂત્રકાર સમુદ્ર કા વર્ણન કરતે હૈ— (ઉમ્મીસહસ્તમાલાકુલવિગયપોયકલકલતકલિત) હજારોં લહરોં કે સમૂહ સે આકુલ હોને કે કારણ જહા પર વ્યાપારી આદિ જનો કે જહાજ નષ્ટ હો જાતે હૈ, ઓર હસી કારણ ડન જહાજોં પર ચેઠે હુએ વ્યક્તિયો

‘ અદત્તાદાન—ચોરી કથી રીતે કરાય છે ” એ વાતન સૂત્રકાર હવે સમ જાવે છે—“ રચનાગર ” इत्यादि

પરધનને હડી લેવાને આતુર બનેલો મનુષ્ય—ચોર “ રચનાગરસાગર ચ ” રત્નોના નિધિ એવા સમુદ્રની વચ્ચે જઈને જહાજોને ડૂબાવી દે છે, એવા સબધ અહીં જોડવાનો છે—હવે સૂત્રકાર સમુદ્રનું વર્ણન કરે છે—

“ ઉમ્મીસહસ્તમાલાકુલવિગયપોયકલકલતકલિત ” હજારો મોજાઓના મમૂહના આક્રમણને કાળે બધા વ્યાપારી આદિ લોકોના જહાજો નાશ પામે છે, અને તે કારણે તે જહાજોમા બેઠેલા લોકોના ડકળાટથી જે યુક્ત બનેલ છે,

સહ્યા: = પદાતિરૂપચૌરસમૂહા: , 'સેનાવહચોરવદપાગઢિયા ય' સેનાપતિચૌરવદ
પ્રત્યર્પકા = સેનાપતિચૌરસમૂહયુક્તાય 'અઢવીદેસદુર્ગવામી' અઢવીદેશદુર્ગવા
સિન: = અઢવીદેશે = અરણ્યદેશે યાનિ દુર્ગાણિ = જલસ્યલરૂપાણિ દુર્ગમસ્થાનાનિ તેષુ
નિવાસિન: કાલહરિયરત્તપીયમુક્ષિભ્રણેગસયચિધપટ્ટનધા 'કાલહરિતરક્તપીત
શુક્લનેકશતચિન્હપટ્ટનધા: = કૃષ્ણહરિતરક્તપીતશુક્લવર્ણાં અનેકશતસરયકા યે
ચિહ્નપટ્ટાસ્તેષા વધ = મસ્તકાદૌ વ્યવન યેષા તે તથા 'ઘગસ્સ' ધનસ્ય = પર
દ્રવ્યસ્ય 'કજ્જે' કાર્યે = અર્થાય 'લુદ્ધા' લુન્ધા: = લોલુપા: સન્ત: 'પરવિસણ'
પરવિપયાન્ = અન્યભૂપદેશાન્ 'અભિહણતિ' અમિન્નન્તિ = વિનાશયન્તિ ॥ સૂ. ૮॥

પુનરવત્તાદાન કથ કુર્વન્તિ ? તદાહ—'રયણાગર' ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—રયણાગરસાગર ચ ઉમ્મીસહસ્સમાલાઽઽકુલવિગયપો
ચકલકલતકલિતં, પાયાલકલસસહસ્સવાયવસવેગસલિલઉદ્ધ-
મમાણદગરયરયધયાર, વરફેણપરધવલપુલપુલસમુદ્રિયાદ્રહાસ,
મારુયવિક્ષુબ્ધમાણપાણિયજલમાલુપ્પલહુલિય અવિયસમત-

ચોરસઘા) પદાતિરૂપ ચૌરસમૂહ કિ જિસમેં (સેનાવહ ચોરવદપાગ
ઢિયા ય) સેનાપતિ એવ ચૌરોં કા જત્થા એકત્રિત રહ્તા હૈ, તથા (અઢ
વીદેસદુર્ગવામી) જો જગલ કે બીચમે જિતને મી પ્રાયઃ દુર્ગમસ્થાન
હોતે હૈ—ચાહે વે જલરૂપ હો યા થલરૂપ હો—અનમે રહ્તે હૈ તથા (કાલ
હરિયરત્તપીયમુક્ષિભ્રણેગસયચિધપટ્ટનધા) કૃષ્ણ, હરિત, રક્ત, પીત,
શુક્લ, વર્ણવાલે સૈકડોં ચિહ્નપટ્ટોં કો જો અપને મસ્તક ઉપર બાધા કરતે
હૈ એસે વે પદાતિરૂપ ચૌર સમુદાય (ઘગસ્સ કજ્જે) પર કે દ્રવ્યમેં
(લુદ્ધા) લોલુપ હોકર (પરવિસણ) અન્ય રાજાઓ કે દેશો કો (અભિ
હણતિ) વિનાશ કરતે હૈ ॥ સૂ. ૮॥

ચૌર સમૂહ કે જેમા “સેનાવહચોરવદપાગઢિયા ય” સેનાપતિ અને ચૌરાનો
સમૂહ એકત્ર રહે છે, તથા “અઢવીદેસદુર્ગવામી” જે જગલની વચ્ચે બેઠલા
દુર્ગમ સ્થાનો હોય છે—પછી તે જગડપ હોય કે સ્થળરૂપ—તેમા રહે છે, તથા
“કાલહરિયરત્તપીયમુક્ષિભ્રણેગસયચિધપટ્ટનધા” ગાળા, લીલા, લાલ,
પીળા, સફેદ આદિ રંગની સેકડો પટ્ટીઓને જે પોતાના મસ્તક ઉપર બાધે
છે, એવો પદાતિ—પગપાળો—ચૌર સમુદાય “ઘગસ્સ કજ્જે” પરધનમા ‘લુદ્ધા’
લોલુપ થઈને “પરવિસણ” અન્ય રાજાઓના દેશોનો “અભિહણતિ”
વિનાશ કરે છે ॥ સૂ. ૮॥

प्रखलिय - चलिय-त्रिपुलजलचक्रवाल-महानईवेग-तुरिय आपूरमाण-गभीर-
विपुल-आवत्त-चचल-भममाण-गुप्पमाणु-च्छलत-पच्चोणियत - पाणिय-पधा-
विय-खर-फरुस-पयड-वाउलिय-सलिल-फुट्ट-पीचि-फुल्लोल-सकुल ' सम-
न्ततः क्षुभितलुलितचोक्षुभ्यमाणप्रखलितचलितत्रिपुलजलचक्रवालमहानदीवेग-
त्वरितापूर्यमाणगभीरविपुलावर्त्तचञ्चलभ्रमद्रोप्यमानोच्छलत्पत्यवनिर्गतपानीयप्रधा-
वितखरपरुपप्रचण्डव्याकुलितसलिलस्फुटद्दीचिफुल्लोलसकुलम्, तत्र ' सम-
तओरुभिय ' समन्ततः क्षुभित=पपनाऽऽघातेन सर्गतो व्याकुलित ' लुलिय '
लुलित च तटप्रदेशप्राप्त तथा ' खोरुवभमाण ' चोक्षुभ्यमाणम्=अतिशयेन
पुन' पुनर्वा महामत्स्यादिभिर्व्याकुलीक्रियमाण ' प्रखलिय ' प्रखलित = पर्वा
तादीना महाशिलादिप्राघातेन स्खलित पश्चात् ' चलिय ' चलित=स्वस्थानाद्
गमन प्रवृत्त ' त्रिउल ' विपुल=विस्तीर्ण ' जलचक्रवाल ' जलचक्रवाल=जलसमूहः
यत्र ताः — क्षुभितलुलितचोक्षुभ्यमाणप्रखलितचलितविपुलजलचक्रवालास्तथा
विधाश्च या ' महानईवेग ' महानद्याः=गङ्गायमुनायास्तासा वेगैः ' तुरिय ' त्वरित
=शीघ्रम् ' आपूरमाण ' आपूर्यमाणो यः सागरः स तथा । गभीराः=अगाधाः
विपुलाः=विशालाः ये ' आवत्त ' आवर्त्ताः=चक्राकारजलभ्रमाः तथा चञ्चल
यथास्यात्तथा ' भममाण ' भ्रमन्ति ' गुप्पमाण ' गोप्यमानानि=व्याकुली भ्रमन्ति

से चारों तरफ क्षुब्ध हुआ (लुलिय) तट प्रदेश को प्राप्त हुआ-तटतक
पहुँचा हुआ (खोरुवभमाण) महामत्स्यादि जलचर जन्तुओं से व्या-
कुल किया गया (प्रखलिय) पर्वतादि की महाशिलाओं आदि के
आघात से स्खलित हुआ फिर (चलिय) चलित-स्वस्थान से चलित
हुआ (विउल) विस्तीर्ण (जलचक्रवाल) जलसमूह जहाँ है ऐसी
(महानईवेगो) गंगा यमुना आदि महानदी के वेगों से (तुरिय) त्व-
रित-शीघ्र (आपूरमाण) जो भरा जा रहा है । तथा जो (गभीर) अगाध
(विउल) विशाल (आवत्त) आवर्त्तों - (चक्राकार जलभ्रमणों) से
तथा (चचल) चपल (भममाण) घूमते हुए (गुप्पमाण) व्याकुल हुए

अथैर क्षुब्ध यधने " लुलिय " तटप्रदेश सुधी पडोयीने " खोरुवभमाण "
महामत्स्यादि जलचर जन्तु द्वारा व्याकुल करायेल " प्रखलिय " पर्वतादिनी
महाशिलाओं आदिना आघातथी स्खलित यधने पडी " चलिय " चलित-
स्वस्थानथी चलित यधने " विउल " विस्तीर्ण " जलचक्रवाल " जलसमूह
जना छे जेवी " महानईवेगो " गंगा यमुना आदि महानदीओंना वेगथी " तुरिय "
अधपथी " आपूरमाण " जे भरार्थ रहैल छे तथा जे " गभीर " अगाध " विउल "
विशाल " आवत्त " भ्रमणथी तथा " चचल " यपण " भममाण " घूमता

પ્રભૃતીનાં કલકલેન=કોલાહલેન કલિત=યુક્તમ્, 'પાયાલકલસસહસ્ર-
ગસલિલઉદ્ગમમાણદગરયરયધયાર' પાતાલકલશસહસ્રગાતયશ્વેગસલિલોદ્ગમમા-
નોદકરજોરયાઽન્યકાર = તત્ર 'પાયાલકલસસહસ્ર' પાતાલકલશાના યાનિ
સહસ્રાણિ તૈ 'વાયવસવેગ' ગાતયશાત્=ગાયુયશાદ્ વેગયુક્ત યત્ 'સલિલઉદ્ગમા-
ણદગરયરયધયારે' તત્ર સલિલ=સમુદ્રજલ તસ્માદુદ્ગમ્યમાનમ્=ઉચ્છલત્ યદુદકરજઃ=
જલચિન્દુસ્તસ્ય રયો વેગસ્તેનાઽન્યકારો યત્ર સ તથા તમ્, 'વરફેણપરધવલપુલ-
પુલસમુદ્વિપાટ્ઠાસ' વરફેણપરધવલપુલપુત્રસમુત્થિનાટ્ઠાસ = વરફેણઃ = વરઃ=
અતિસ્વચ્છઃ ફેણઃ 'સમુદ્ર ક્ષાગ' ઇતિ પ્રમિદ્ધ સ પ્રચુરો ધવલ = શ્વેતવર્ણઃ
'પુલપુલ' ઇતિ નિરન્તર સમુત્થિત = ઉદ્ગત સ ણ્ય અટ્ઠાસો યત્ર સ તથા ત ફેણ
હાસયોઃ શુક્લત્વેન સામ્યાદ્ રૂપકાન્તદ્વારેણ નિરૂપિતમ્ । 'મારુયવિક્ષુભમાણ-
પાણિયં' મારુતવિક્ષોભ્યમાણપાનીય મારુતેન=ગાયુના વિક્ષોભ્યમાણમ્=આલોબ્યમાન
પાનીય યત્ર સ તથા ત 'જલમાલુપ્પલહુલિય' જલમાલોત્પલહુલિય=જલમાલાના
=નીરતરદ્વાણામુત્પલઃ=સમૂહ 'હુલિય' શીઘ્ર=પુનઃ પુનસ્તરદ્વાન્તરમુત્પલમાન યત્ર સ
તથા ત 'અવિય' અપિ ચ 'સમતઓક્ષુભિય - હુલિય - શ્લોકપુમમાણ-

કે કલ કલ શબ્દ સે જો યુક્ત હો રહા હૈ, તથા (પાયાલકલસસહસ્ર)
સૈકડો પાતાલ કલશો કે (વાયુવસવેગ) ગાયુ કે સયોગ સે વેગયુક્ત
થને હુએ (સલિલ ઉદ્ગમમાણદગરયરયધયાર) જલ કી ઉચ્છલતી હુઈ
બૂન્દો કે સમુદાય સે જો અધકાર યુક્ત જૈસા થના હુઆ હૈ, (વરફેણ-
પર-ધવલ-પુલપુલ-સમુદ્વિપાટ્ઠાસ) જો અપને સ્વચ્છ પ્રચુર ધવલ વર્ણ
વાલે ફેણ સે માનોં નિરન્તર હૈંસ હી રહા હૈ, તથા (મારુયવિક્ષુભમા-
ણપાણિય) વાયુ સે જિસકા જલ આલોબ્યમાન હો રહા હૈ, તથા (જલ
માલુપ્પલહુલિય) જિસમેં પાની કા સમૂહ જલ્દી સે દૂસરી તરગ ઉત્પન્ન
કર રહા હૈ, (અવિય) તથા જો (સમતઓક્ષુભિય) પવન કે આઘાત

તથા “ પાયાલકલસસહસ્ર ” સૈકડો પાતાળ કળશોના “ વાયુવસવેગ ” વાયુના
સયોગથી વેગયુક્ત થનેલ “ સલિલઉદ્ગમમાણદગરયરયધયાર ” જળના ઉડતા
ચિન્દુઓના સમુદાયથી જે અધકાર યુક્ત થનેલ છે, “ વરફેણ-પર-ધવલ પુલ
પુલ-સમુદ્વિપાટ્ઠાસ ” જે પોતાના સ્વચ્છ અને અત્યંત સદૃશ રંગના ફીણ વડે
જાણે નિરંતર હંસી રહ્યો છે, તથા “ મારુયવિક્ષુભમાણપાણિય ” વાયુથી
જેનું પાણી કપી રહ્યું છે- ગતિમાન થયું છે તથા “ જલમાલુપ્પલહુલિય ”
જેમા પાણીને સમૂહ જલ્દીથી એક તરગમાંથી બીજી તરગ-(મોણ) ઉત્પન્ન
કરી રહેલ છે, “ અવિય ” તથા જે “ સમતઓક્ષુભિય ” પવનના આઘાતથી

ગર-મચ્છ-કચ્છ-મોહારગાહ-તિમિ-સુસુમાર-સાવય-સમાહય સમુદ્ધાયમાણય-
પૂર-ધોરપડર' મહામરુરમત્સ્યકચ્છપોહારગ્રાહતિમિશિશુમારશ્વાપદસમાહતસમુદ્ધા-
વત્પૂરધોરપ્રચુર મદાન્તો મરુરાઃ, તથા મત્સ્યાઃ કચ્છપાશ્વ 'ઉદાર' इति जलचर-
विशेषाः ग्राह्यस्तिमयः शिशुमारा' श्वापदकाश्च सर्वे जलचरविशेषा ते च ते
समाहताः=परस्पर सङ्घर्षं प्राप्ताः समुद्धावतः=अन्यान् स्वस्मान्निर्वलान् जन्तून्
हन्तु धावन्तो ये पूराः=समुदाया ते च ते घोराः=भयङ्कराः प्रचुराः यस्मिन् स तथा
तमेवविध महासागर धनार्थं गत्वा घ्नन्ति पोतानिति च पक्ष्यमाणेन सम्यन्ध ॥९॥

પુન કીદ્દજ સાગરમિત્યાહ—'કાયર' इत्यादि ।

મૂલમ્—કાયરજળહિયયકંપણ ધોરમારસંત મહાભયં ભયંકરં
પડિભય ઉત્તાસણગં અળોરપાર આગાસ ચેવ નિરવલવ ઉપ્પા-

ધૂમતે રહતે હું જિસસે વહ વ્યાકુલ જૈસા હોતા રહતા હૈ, આકાશ મેં
ઉછલતા રહતા હૈ, ઓર પુનઃ ડપર સે નીચે આ જાતા હૈ । તથા જો
શીઘ્ર ઉદ્ભૂત વેગાતિશય સે અતિકર્કશ, પ્રચંડ, વ્યાકુલિત-મયિત કિયા
હૈ પાની જિન્હોં ને ઇવ પરસ્પર સઘર્ષ કો પ્રાપ્ત હોકર વિચ્છેદ કો પ્રાપ્ત
હુઈ એસી લહરોં સે સકુલિત બના રહતા હૈ, (મહામગરમચ્છકચ્છમોહાર-
ગાહતિમિસુસુમારસાવયસમાહયસમુદ્ધાયમાણપૂરધોરપડર) તથા
ઘડે ૨ મરુર, મત્સ્ય, કચ્છપ, ઉદાર, ગ્રાહ, તિમિ, શિશુમાર, શ્વાપદ,
આદિ જલચર જાતુવિશેષ જિસમેં પરસ્પર સઘર્ષ કો પ્રાપ્ત હોતે રહતે હું
ઓર અપને સે નિર્વલોં કો મારને કે લિયે સદા જિસમેં દોડતે રહતે હું
એસે મહાસાગર મેં ધન કી લાલસા સે જાકર ચોર લોગ જહાજોં કો નષ્ટ
કર ઢાલતે હૈ ॥ સૂ०૯ ॥

થઈને વાર વાર આમ તેમ ર્થ્યા ડરે છે જેથી તે બાણે વ્યાકુળ રહે છે, આકા-
શમા ઉછળતુ રહે છે અને ફરી પાછુ નીચે આવીને પડે છે તથા જે શીઘ્ર
ઉત્પન્ન થયેલ અતિશય વેગને લીધે અતિ ડર્કશ, પ્રચંડ, વ્યાકુલિત, પાણીનુ મથન
કરનાર, અને એક બીજા સાથે અથડાઈને વિચ્છેદ પામેલ મોબા એથી વ્યાપ્ત રહે
છે “મહામગરમચ્છકચ્છમોહારગાહતિમિસુ સુમારસાવયસમાહયસમુદ્ધાયમાણપૂરધોરપ-
ડર ” તથા મોટા મગરો, મત્સ્ય, કાચળા, ઉદાર, ગ્રાહ, તિમિ, શિશુમાર, શ્વાપદ,
આદિ જળચર પ્રાણીઓ જેમા પરસ્પર અથડામણુમા આવ્યા ડરે છે, અને પોતાના
કરતા નિર્બળને મારવાને માટે સદા દોડતા હોય છે, એવા મહાસાગરમા
જઈને ચોરલોકો ધનની લાલચથી જહાજોનો નાશ કરે છે ॥ સૂ०૯ ॥

‘ ઉચ્છલત ’ ઉચ્છલન્તિ આકાશે ઉત્પતન્તિ પુનઃ ‘ પચોણિયત ’ મલ્યવનિવૃત્તાનિ= અધોગચ્છન્તિ ચ યાનિ ‘ પાણિય ’ પાનીયાનિ પ્રાણિનો ગા યત્ર સ તથા ‘ પથાવિય ’ પ્રથાવિતા=શીઘ્ર ગતાઃ ‘ સ્વરફરુસ ’ સ્વરપ્રક્ર્પાઃ=વેગાતિશયાદ અતિકર્ફણઃ ‘ પયહ ’ પ્રચણ્ડાઃ=દારુણા ‘ વાઝલિયસલિલ ’ વ્યાકુલિત સલિલાઃ=વ્યાકુલી-કૃતાનિ ઉન્મયિતાનિ સલિલાનિ=જળાનિ યૈસ્તે તથા ‘ ફુદ્દત ’ સ્ફુટન્ત =પરસ્પર સંઘર્ષે પ્રાપ્ય વિન્નદેદ ગચ્છન્તશ્ર ચે ‘ વીચિરુલ્લોલસકુલ ’ વીચયઃ=તરંગાઃ કલ્લોલાઃ=મહાતરંગાસ્તેઃ સકુલો ય સ તથેતિ પૂર્વેવા કર્મધારયસ્ત તથાવિધ ‘મહાસા

(ઉચ્છલત) આકાશ મેં ઉછલતે છુપ (પચોણિયત) ફિર નીચે ગિરતે છુપ (પાણિય) પાની અથવા પ્રાણી જિન મેં હૈ પેસી, તથા (પથાવિય) શીઘ્રતા સે ઊઠી છુઈ (સ્વરફરુસ) અતિવેગ સે અત્યન્ત કઠોર (પયહ) દારુણ-ભયકર અત્યેચ (વાઝલિયસલિલ) જલ કો મથિત જૈસા કર દિયા પેસી, તથા (ફુદ્દત) પરસ્પર કે સઘર્ષેસે વિન્નિદ્દન-જુદી જુદી છુઈ પેસી (વીચિરુલ્લોલ) ઊંઠી પડી તરંગોં સે (સંકુલ) વ્યાસ પેસે, સમુદ્ર કો, અર્ધાત્-જો ગંગા યમુના આદિ નદિયોં કે વેગોં સે કિ જિનકા વિપુલ જલ ચક્રવાલ-સમૂહ પવન કે આઘાત સે સર્વતઃ વ્યાકુલિત હોતા રહતા હૈ, ઔર તટપ્રદેશ તક આતા રહતા હૈ, તથા મહામત્સ્ય આદિ જલચર જાનવર જિસે અત્યત ચ્ચલ બનાતે રહતે હૈ, પર જો પર્વત આદિકોં કી મહાશિલાઓં પર આગમયુક્ત હોરુર અપને સ્થાન સે આગે કો ચડતા રહતા હૈ, તથા જો ગંભીર પ્વ વિપુલ આવર્તોં સે સદા વ્યાસ બના રહતા હૈ, તથા જિસમેં ચ્ચલ હોકર પાની અથવા પ્રાણી ઘાર ૨ ફધર સે ડહર

“ ગુપ્તમાણ ” વ્યાકુળ “ ઉચ્છલત ” આકાશમા ઉછળતા “ પચોણિયત ” અને ફરી પાછા નીચે પડતા “ પાણિય ” પાણી અથવા જેમા પ્રાણી છે, એવા તથા “ પથાવિય ” ઝડપથી ઉત્પન્ન થતા, “ સ્વરફરુસ ” અતિવેગને કારણે અતિ શય કઠોર અને “ પયહ ” દારુણ હોવાને કારણે “ વાઝલિયસલિલ ” પાણીનું મન્થન કરાતું હોય એવા, તથા “ ફુદ્દત ” એક બીજા સાથે અથડાવાથી વિન્નિદ્દન થતા “ વીચિરુલ્લોલ ” નાના મોટા મોજાઓથી “ સકુલ ” વ્યાસ એવા સમુદ્રને, એટલે કે જે ગંગા યમુના આદિ નદીઓના વેગથી કે જેમનું વિપુલ જળ ચક્રવાતના આઘાતથી સર્વતઃ વ્યાકુલિત થતું રહે છે, અને તટપ્રદેશ સુધી આવતું રહે છે તથા મહામત્સ્ય આદિ જાનવર પશુઓ જેને અતિશય બનાવતા રહે છે, અને જે પર્વત આદિનાં જે મહાશિલાઓ સાથે અથડાઈને પોતાના સ્થાનથી આગળ વધતું રહે છે, જટલી બરાતું રતે છે, તથા જે ગભીર અને વિશાળ વમજોથી હમેશા વ્યાસ રહે છે, તથા જેમા પાણી અને પ્રાણી અથગ

‘ ઉત્તાસણગ ’ ઉત્તાસનક્ર=ચિત્તક્ષોભકારક્રમ્ ‘ અણોરપાર ’ અનર્વાકપારમ્=અલ-
બ્યાપારપર્યન્તં ‘ આગાસ ચેવ નિરવલય ’ આકાશમિત્ર નિરવલમ્બમ્ આધાર-
રહિત તત્ર પતદ્ઘિર્ન કિચ્છિદાલમ્બનમુપલમ્બયતે ઇતિ ભાવઃ, ઉપ્પાદય પવણધણિય-
ણોલ્લિય ઉવરુવરિતરગદરિયઅહ્વેગ ’ તથા ઔત્પાતિકપવનઘનોદિતો
પર્યુપરિતરદ્ઘપ્પાતિવેગમ્=ઔત્પાતિકેન = ઉત્પાતજનિતેન પવનેન=વાયુના=
‘ ધણિય ’ ઇતિ અત્યન્ત નોદિતાઃ=પ્રેરિતાઃ પર્યુપરિ=ઉર્ધ્વોર્ધ્વં યે તરદ્ઘાસ્તે ચ
તે દ્ઘપ્પાઃ=ગર્વિતા ઇવ અતિવેગા =મહાવેગાઃ યત્ર સ તથા ત ઉત્પાતજનિતપવનેન
અતિવેગતરદ્ઘયુક્તમતપ્પવ ‘ ચક્કુપુપહમોચ્છરત ’ ચક્ષુષ્પથમવત્તુણત ચક્ષુષ્પથ=
દ્ઘિપ્પિથમ્ અવસ્તુણન્તમ્=આચ્છાદયન્ત દ્રઘ્ણુમપ્યશવ્ય કિં પુનસ્તર્તુમિત્યર્થઃ, તથા
‘ કત્થઈ ’ કુત્રચિત્ ક્વચિત્પ્રદેશે ગમ્भीર = અલન્ધ મધ્ય પુનઃ ‘ મિડલ-
ગઙ્ગિયગુજિયનિગ્ધાયગરુયનિવલ્લિયસુદીઢનીહારિદૂરસુચ્ચતગમીરધુગધુગતિસદ્ધ ’
મિપુલગર્જિતગુઙ્ગિતનિર્ઘાતગુરુકનિપતિતસુદીર્ઘનિર્ઘાદિદૂરશૂયમાણગમ્भीરદુગધુગિ-
તિશબ્દ = તત્ર વિપુલ = વિશાલ ગર્જિત = મેગવદ્ ધ્વનિ તથા ગુઙ્ગિત=

ભય કા પ્રતિસ્વરૂપ ઘના રહતા હૈ (ઉત્તાસણગ) ચિત્ત મૈં જિસે અવ-
લોકન કર ક્ષોભ હો જાતા હૈ, (અણોરપાર) જિસકા દૂસરા તટ અલબ્ધ
હોતા હૈ (આગાસ ચેવ નિરવલય) આકાશ કી તરફ જિસમે પ્રાણિયો
કો પડ જાને પર કોઈ મી આધાર પ્રાપ્ત નહી હોતા હૈ, (ઉપ્પાદયપવણ)
ઉત્પાત જનિત પવન સે (ધણિય ણોલ્લિય) અતિશય વેગશાલી હોકર
(ઉવરુવરિ) એક દૂસરે કે ઉપર પડતી હુઈ (તરગદરિય) ગર્વિત તરગોં
સે (અહ્વેગ) અત્યતવેગ હો રહા હૈ । (ચક્કુપુપહમોચ્છરત) જિસકા
દેખના મી અશક્ય હૈ તો ફિર વહા તૈરને કો તો યાત હી ક્યા હૈ
(કત્થઈગમ્भीર) કીસી ૨ પ્રદેશ મૈં જો વહુત હી અધિક ગમ્भीર

અને તેથી જ “ ભયકર ” લયની પ્રતિભૂતિ લાગે છે, “ ઉત્તાસણગ ” જેનું
અવલોકન કરીને ચિત્તમા ક્ષોભ થાય છે, “ અણોરપાર ” જેનો બીજો કિનારો
અપ્રાપ્ય હોય છે-જેનો પાર પામવો દુષ્કર છે, “ આગાસચેવ નિરવલય ”
આકાશની જેમ જેમા પ્રાણીઓને પકી જતા કોઈપણ આધાર મળતો નથી “ઉપ્પાદ-
ય પવણ ” ઉત્પાત જનિત પવનથી “ ધણિય ણોલ્લિય ” અતિશય વેગમા આવી
જઈને “ ઉવરુવરિ ” એક બીજાના ઉપર પડતા “ તરગદરિય ” ગર્વિત મોખા-
ઓથી “ અહ્વેગ ” જે અત્યત વેગયુક્ત બની રહેલ છે, “ ચક્કુપુપહમોચ્છરત ”
જેને કોઈ શકવો પણ અશક્ય છે તો ત્યા તરવાની તો વાત જ ક્યા છે ।
“ કત્થઈગમ્भीર ” કોઈ કોઈ પ્રદેશમા જે ઘણો વધારે ગભીર હોય છે,

इय पवणधणियणोल्लियउवरुवरितरगदरियअइवेगच्चखुपह-
 मोच्छरंत कत्थइगभीरविउलगज्जियगुंजियनिग्घायगरुय-
 निवडियसुदीह नीहारिदूरसुच्चतगभीरधुगधुगति सवंपडिपह-
 रुभंतजम्बरक्खसकुहडपिसायरुसियतज्जायउवसगसहस्ससं
 कुल बहुप्पाइयभूय 'विरइयवालिहोमध्वउवयागदिण्णरुहिर
 उच्चणाकरणपजयजोगपययचरियं परियतजुगंतकालकप्पोवमं
 दुरंतमहानईवइमहाभीमदरिसणिज्जं दुरणुचरं विसमप्पवेस
 दुक्खुत्तारं दुरासयलवणसलिल पुण्णं असियसिय समुच्छियगेहिं
 हत्थतरगेहि वाहणेहि अइवइत्तासमुदमज्जे हणति गतूण जणस्स
 पोरा परदव्वहरा नरा निरणुकपा णिरवेक्खा ॥सू० १०॥

टीका—‘कायरजणहिययकपण’ कातरजनहृदयकम्पन=कातरजनाना = भीरुपु
 पाणा हृदयस्य कम्पन=कम्पकारक घोर=भयङ्कर यथास्थात्तथा आरसन्त=शब्दाय
 मान=शब्द कुर्वन्त कोलाहलसङ्कुलमित्यर्थः । ‘महब्भय’ प्रतिभय महाभय=अत्य
 न्तभयजनकम्, अत एव भयङ्कर ‘पडिभय’ प्रतिभय=प्रतिप्राणिन भयोत्पादकम्

फिर यह समुद्र कैसा है सो कहते हैं—‘ कायरजण ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—जो समुद्र (कायरजणहिययकपण) कायरजनों के हृदय
 को कंपा देता है (घोर) भयकर होकर जो (आरसत) शब्दायमान
 होता है (महब्भय) देखते ही जिसे लोगों को भय का संचार होने
 लग जाता है (पडिभय) हर एक प्राणी का रोम २ जिसकी आकृति
 के समक्ष भय के मारे खड़ा हो जाता है, और इस लिये जो (भयकर)

તે મસુદ્ર કેવો હોય છે તેનું વધુ વર્ણન કરે છે—“કાયરજણ” ઇત્યાદિ

જે સમુદ્ર “કાયરજણહિયયકપણ” “ઘોર” કાયર લોકોના હૃદયને
 કંપાવી દે છે, “ઘોર” ભયકર રીતે જે “આરસત” ધ્રુવવાટ કરે છે, “મહ
 ભય” જેને ભેતા જ લોકોના દિલમાં ભય ઉત્પન્ન થાય છે, “પડિભય”
 જેને દેખાવ ભેતા જ ભયથી દરેક પ્રાણીઓના રુવાટા ખડા થઇ જાય છે,

‘ ઉત્તાસણગ ’ ઉત્તાસનક=ચિત્તક્ષોભકારકમ્ ‘ અણોરપાર ’ અનર્વાકપારમ્=અલ-
બ્યાપારપર્યન્તં ‘ આગામ ચેવ નિરવલગ ’ આકાશમિત્ર નિરવલમ્બમ્ આધાર-
રહિત તત્ર પતદ્વિર્ન કિંચિદાલમ્બનમુપલમ્બ્યતે ઇતિ ભાવઃ, ઉપ્પાદય પવણધણિય-
ણોલ્લિય ઉત્તરુવરિતરગદરિયઅહ્વેગ ’ તથા ઔત્પાતિકપવનયનોદિતો
પર્યુપરિતરદ્વદ્વસાતિવેગમ્=ઔત્પાતિકેન = ઉત્પાતજનિતેન પવનેન=વાયુના=
‘ ધણિય ’ ઇતિ અત્યન્ત નોદિતાઃ=પ્રેરિતાઃ પર્યુપરિ=ઉર્ધ્વોર્ધ્વં યે તરદ્વાસ્તે ચ
તે દ્વસાઃ=ગર્વિતા इय અતિવેગા =મહાવેગાઃ યત્ર સ તથા ત ઉત્પાતજનિતપવનેન
અતિવેગતરદ્વયુક્તમતપ્તવ ‘ ચક્ષુપહમોચ્છરત ’ ચક્ષુષ્પથમવતૃણત ચક્ષુષ્પથ=
દૃષ્ટિપથમ્ અવસ્તૂણન્તમ્=આચ્છાદયન્ત દ્રુપ્દમપ્પશક્ય કિં પુનસ્તર્તુમિત્યર્થઃ, તથા
‘ કત્થહ ’ કુત્રચિત્ કથચિત્પ્રદેશે ગમ્મીર = અલગ્ધ મધ્ય પુનઃ ‘ વિપુલ-
ગજ્જિયગુજિયનિગ્ધાયગરુયનિવહિયસુદીહનીહારિદૂરસુચ્ચતગમીરધુગધુગતિસદ્ધ ’
વિપુલગર્જિતગુજ્જિતનિર્ઘાતગુરુકનિપતિતસુદોર્ઘનિર્હાદિદૂરશ્રૂયમાણગમ્મીરદુગધુગિ-
તિશબ્દ = તત્ર વિપુલ = વિશાલ ગર્જિત = મેગ્નિધ્વનિ તથા ગુજ્જિત=

ભય કા પ્રતિસ્વરૂપ ધના રહતા હૈ (ઉત્તાસણગ) ચિત્ત મૈં જિસે અવ-
લોકન કર ક્ષોભ હો જાતા હૈ, (અણોરપાર) જિસકા દૂમરા તટ અલગ્ધ
હોતા હૈ (આગાસ ચેવ નિરવલગ) આકાશ કી તરહ જિસમે પ્રાણિયો
કો પડ જાને પર કોઈ મી આધાર પ્રાપ્ત નહી હોતા હૈ, (ઉપ્પાદયપવણ)
ઉત્પાત જનિત પવન સે (ધણિય ણોલ્લિય) અતિશય વેગશાલી હોકર
(ઉવરુવરિ) એક દૂસરે કે ઉપર પડતી હુઈ (તરગદરિય) ગર્વિત તરગો
સે (અહ્વેગ) અત્યતવેગ હો રહા હૈ । (ચક્ષુપહમોચ્છરત) જિસકા
દેખના મી અશક્ય હૈ તો ફિર વહા તૈરને કો તો ઘાત હી કયા હૈ
(કત્થહગમીર) કીસી ૨ પ્રદેશ મૈં જો બહુત હી અધિક ગમ્મીર

અને તેથી જ “ મયકર ” લયની પ્રતિભૂતિ લાગે છે, “ ઉત્તાસણગ ” જેનું
અવલોકન કરીને ચિત્તમા ક્ષોભ થાય છે, “ અણોરપાર ” જેનો ખીન્ને ડિનારો
અપ્રાપ્ત હોય છે-જેનો પાર પામવો દુષ્કર છે, “ આગાસચેવ નિરવલગ ”
આકાશની જેમ જેમા પ્રાણીઓને પડી જતા ઝોઈપણ આધાર મળતો નથી “ઉપ્પાદ-
ય પવણ ” ઉત્પાત જનિત પવનથી “ ધણિય ણોલ્લિય ” અતિશય વેગમા આવી
જઈને “ ઉવરુવરિ ” એક ખીબના ઉપર પડતા “ તરગદરિય ” ગર્વિત મોજા-
ઓથી “ અહ્વેગ ” જે અત્યંત વેગયુક્ત બની રહેલ છે, “ ચક્ષુપહમોચ્છરત ”
જેને ભેઈ રાખવો પણ અશક્ય છે તો ત્યાં તરવાની તો ઘાત જ કયા છે !
ભીર હોય છે,

અમરગુજિતમિત્ર ગુજિતં તથા નિર્ગન્ત વ્યન્તરકૃતો મહાગ્નિઃ ગુરુકનિ
 પતિત્વ=વિદ્યુદ્વિશેષાદિ સપાતેન ચ જાગમાનોગ્નિઃ સુદીર્ઘઃ=અત્યર્થ નિર્ઘાતી=
 પ્રતિધ્વનિયુક્તો નિર્ઘોષઃ દૂરસ્ત્રયમાણઃ=અતિદૂરદેશાદપિ સ્ત્રયમાણઃ ગમ્भीરો ધુગ્
 ધુગિતિ શબ્દશ્ચ યત્ર સ તથા ત ' પડિપદ્મમત-જકવરવસસ કુહડ-પિસાય-
 રુસિય - તજ્જાયત્વસગ્ગસદ્સસકુલ ' પ્રતિપથરુન્ગાનયત્તરાત્તસકૃષ્માણ્ડ
 પિશાચરુદ્રતજ્જાતોપસર્ગસદ્સસકુલ = તત્ર પ્રતિપથ=પ્રતિમાર્ગ રુન્ગાનાઃ=પથિ
 કાનાં માર્ગાવરોધ કુર્માણા યે યક્ષાઃ રાક્ષસાઃ કૃષ્માણ્ડાઃ પિશાચાશ્ચ સર્વે વ્યન્તર-
 વિશેષાસ્તે ચ તે રુદ્ધાઃ=રોપયુક્તા સ્તૈર્જાતાનિ યાન્યુપસર્ગસદ્સસાણિ=ઉપદ્રવસદ્
 સ્સાણિ તૈઃ સકુલઃ=વ્યાપ્તો યઃ સ તથા ત ' બહૂપ્પાદ્યભૂય ' વૈત્પાતિકભૂત=
 બહૂન્યૌત્પાતિકાનિ=ઉત્પાતભવાનિ દુઃખાનિ ભૂતાનિ યત્ર સ તથા ત ' વિરદ્ય

હોતા હૈ । તથા (વિઝલગઙ્ગિય ગુજિય) જિસના મેઘ કી તરફ
 વિશાલ ગર્જિત ણ્વ અમરોં કે જેસા વિશાલ ગુજિત, (નિઘાય)
 નિર્ઘાત-વ્યન્તરોં કી ધ્વનિ, તથા (ગરુનિવહિય) વિજલી આદિ કા
 જો હસમેં ગિરના હોતા હૈ ઉસ સમય નિલા હુઆ જો અત્યન્ત નિર્ઘાતી
 પ્રતિધ્વનિ યુક્ત વિશેષ નિર્ઘોષ (દૂરસુન્વત) દૂર સે સુનાઈ દેને વાલે
 (ગંભીર) ગમ્ભીર (ધુગધુગિત) ' ધુગ ધુગ ' જેસા શબ્દ, યે (સદ)
 શબ્દ હૈં જિસમેં, તથા (પડિપદ્મમત-જક્વ-રક્વસ-કુહડ-પિસાય-
 રુસિય-તજ્જાયત્વસગ્ગસદ્સસકુલ) જો રુદ્ધ હોકર પથિકોં કે માર્ગ
 કા અવરોધ કરને વાલે યક્ષ, રાક્ષસ, કૃષ્માણ્ડ (વ્યન્તરવિશેષદેવ)
 ણ્વ પિશાચોં કે હજારોં ઉપસર્ગોં સે સદા વ્યાપ્ત રહ્તા હૈ (બહૂપ્પાદ્ય
 ભૂય) તથા જિસમેં જીવોં કો અનેક ઉત્પાતજન્ય દુઃખોં કા સામ્હના

તથા “ વિઝલગઙ્ગિયગુજિય ” જે મેઘના જેવી મોટી ગળના કરે છે
 અને અમરો જેવો વિશાળ શુભરવ કરે છે, “ નિઘાય ” નિર્ઘાત-
 વ્યન્તરોનો મહાધ્વનિ તથા “ ગરુનિવહિય ” વીજળી આદિ તેમા પડે ત્યારે
 તેમાથી નીકળતો નિર્ઘાતી-પ્રતિધ્વનિ યુક્ત નિર્ઘોષ, “ દૂરસુન્વત ” દૂરથી સળ
 ગાતો “ ગમ્ભીર ” ગંભીર “ ધુગધુગિત ” “ ધુગ ધુગ ” જેવો આવાજ, આદિ
 “ સદ ” શબ્દો જેમા સળગાય છે તથા “ પડિપદ્મમત-જક્વ-રક્વસ-કુહડ-
 -પિસાય-રુસિય-તજ્જાયત્વસગ્ગસદ્સસકુલ ” જે રુદ્ધ થઇને સુસાદરોના
 માર્ગોનો અવરોધ કરનારા યક્ષ, રાક્ષસ, કૃષ્માણ્ડ, (વ્યન્તર વિશેષ દેવ) અને
 પિશાચોના હોયરો ઉપસર્ગોથી સદા વ્યાપ્ત રહે છે, “ બહૂપ્પાદ્યભૂય ” તથા
 જેમા જીવોને અનેક ઉત્પાત જન્ય દુઃખોનો સામનો કરવો પડે છે, “ વિરદ્ય

વલિહોમધૂવઝવચારદિણ્ણરુહિરન્ચનાકરણપયયજોગપયયચરિય ' વિરચિતવલિ
હોમધૂપોપચારદત્તરુધિરાચનાકરણપ્રયત્તયોગપ્રયત્તચરિત = તત્ર વિરચિત્ = કૃત
વલિના=દ્રવ્યોપહારેણ હોમેન=અર્ગ્ગો હવનેન રૂપેન-રૂપેનચોપચારો ચૈસ્તે તથા દત્ત
રુધિર=સમર્પિત શોણિત યત્ર તદેવભૂત યદ્વર્ચનાકરણ તત્ર પ્રયતાઃ=તત્પરા યે તે
તથા, યોગપ્રયતાશ્ચ=ચોતાદિભિર્વ્યાપારે નિરતા યે તે તથા તૈઃ તત્રસ્થિતૈ ચરિતઃ
સથિતો યઃ સ તથા તમેતાદૃશ સાગરમ્ । પુનઃ કીદૃશ ? મિત્યાહ—‘ પરિયતજુ-
ગતકાલરૂપોવમ ’ પર્યન્તયુગાન્તકાલરૂપોવમ=પર્યન્તયુગસ્ય=સકલેષુ યુગેષુ મધ્યે
ચરમયુગસ્ય ચોડન્તકાલઃ=પ્રલયકાલ સ એવ કલ્પસ્તેનોપમા=સાદૃશ્ય યસ્ય સ
તથા ત ‘ દુરતમહાનર્દ-નર્દવઃ-મહાભીમદરિસણિજ્જ ’ દુરતમહાનદી નદીપતિ-
મહાભીમદર્શનીય-દુરન્તાઃ=દુષ્પારા યા મહાનદ્યઃ=ગંગાયાનદ્યશ્ચ=અન્યાઃ સામાન્યા-

કરના પદ્ધતા હૈ (વિરહ્યવલિહોમ-ધૂવ-ઝવચાર-દિણ્ણ-રુહિર-ન્ચના-
કરણ-પયય-જોગપયયચરિય) તથા (વિરહ્યવલિહોમધૂવઝવચાર) નૌકા-
ઓંકે અટક જાને પર જહા જહાર્જોં સે વ્યાપાર કરને મેં લગે હુએ મનુ-
ષ્યોં દ્વારા-સાર્થવાહો દ્વારા-વિવિધ પ્રકાર કી ભેટે દી જાતી હૈ, અગ્નિમેં
ધૂપ જલાયા જાતા હૈ- તથા (દિણ્ણ રુહિરન્ચનાકરણપયય) રુધિર કા
સમર્પણ રૂપ પ્રજા મેં લગે હુએ એસે (જોગપયય) વ્યાપારી લોગોં સે
(ચરિય) સંચિત હૈ । તથા (પરિયત જુગતકાલરૂપોવમ) સમસ્ત યુગોં
કે મધ્ય મેં ચરમ યુગ કા પ્રલયકાલરૂપ કલ્પ કે જૈસા તુ (દુરતમહાનર્દ
નર્દવઃ-મહાભીમ દરિસણિજ્જ) (દુરત) જિનકા પાર કરના કઠિન હૈ
એસી (મહાનર્દ નર્દવઃ) ગંગા આદિ મહાનદિયોં કા તથા અન્યસાધારણ
નદિયોં કા જો પતિ હૈં, હસી કારણ યહ (મહાભીમદરિસણિજ્જ) દેખને

વલિહોમ-ધૂવ-ઝવચાર-દિણ્ણ-રુહિર-ન્ચનાકરણ-પયય-જોગપયયચરિય ” તથા
“ વિરહ્યવલિહોમધૂવઝવચાર ” નૌકાઓ અટકી જતા જ્યા વહાણો દ્વારા
વેપાર કરનાર લોકો દ્વારા (સાર્થવાહો દ્વારા) વિવિધ પ્રકારની ભેટો દેવાય છે,
અગ્નિમા ધૂપ ણાળવામા આવે છે, તથા “દિણ્ણરુહિરન્ચનાકરણપયય ” રુધિરના
સમર્પણ રૂપ પ્રજામા લાગેલા એવા ‘ જોગપયય ’ વ્યાપારી લોકોથી ‘ ચરિય ’
જે મેલિત છે, તથા “ પરિયતજુગતકાલરૂપોવમ ” જે સઘળા યુગોની વચ્ચે
છેલા યુગના પ્રલયકાળરૂપ કલ્પના જેવો છે, “ દુરતમહાનર્દનર્દવઃ-મહા
ભીમદરિસણિજ્જ ” “ દુરત ” જેને ઓળગવી મુશ્કેલ છે એવી “ મહાનર્દ-
નર્દવઃ ” ગંગા આદિ મહા નદીઓનો તથા બીજા સામાન્ય નદીઓનો જે
પતિ છે, અને તે કાણે જે “ મહાભીમદરિસણિજ્જ ” જે દેખાવમા ભયકર
પ્ર૦ ૩૯

સ્તાસા 'યદ' પતિઃ, સ ચ મહાભીમદર્શનીયઃ મ તથા ત 'દુરણુચર' દુઃસ્થિનાઃ
 નુચર્યતે इति दुर्नुचर 'विसमप्पवेस' विषमप्रवेश=विषमः=दुस्स्थान्य प्रवेशो
 यस्मिन् स तथा त 'दुक्खोत्तार' दुःखोत्तार=दुःखेनोत्तरण यस्य स तथा त
 'दुरासय' दुरासद=दुष्पाप दुराश्रय=दुःखस्थानम्प 'लवणसलिलपुण्ण' लवण
 सलिलपूष्ण = क्षारजलभृतम्, 'असियसियसमुच्छियगेहि' असितसितसमुच्छि-
 तैः=तत्र असिताः-कृष्णाः सिताः=शुभाश्च पटाः समुच्छ्रिताः=उपरि उदा ये
 प्रवहणेपु तानि तथा तैः 'हत्थतरगेहि' दक्षतरैः=अन्य यानपात्राद्यपेक्षयाऽतिशय
 वेगशीलैः 'वाहणेहि' वाहनैः=स्कन्धगणैः प्राद्वीः 'अइवइत्ता' अतिपत्य=
 आक्रम्य 'परदव्वहरा' परद्रव्यहरा=परपनापहरणशीलाः 'निरणुकपा' निरु-
 कम्पाः=कृपारहिताः 'णिरवयक्खा' निरपेक्षाः=प्रपेक्षारहिता परलोकमयरहिताः
 नराः=जना 'समुदमज्जे' समुद्रमये 'गतुण' गत्वा जणस्स 'पोत्ते' पोतान्=
 नौकान् 'हणति' मन्ति=विनाशयन्ति ॥ सू-१० ॥

મેં ખયકર હૈ (દુરણુચર) તથા જિસમેં અનુચરણ કરના-ફિરના ઘટુત
 હી આયાસ સાધ્ય-કઠિન હૈ । ઇસીલિયે (વિસમપ્પવેસ) જિસમેં પ્રવેશ
 કરના ઘટુત કઠિન હોતા હૈ । (દુક્ખોત્તાર) જિસકા પાર કરના ઘટુ
 મુશ્કિલ હોતા હૈ (દુરાસય) જો સદા દુઃખદસ્થાનરૂપ હૈ । (લવણમ-
 લિલપુણ્ણ) ક્ષાર જલ સે સદા ભરા રહતા હૈ એસે સમુદ્ર કો (અસિય
 સિય સમુચ્છિયગેહિ) કૃષ્ણ એવ શુભ્રવસ્ત્ર જિનકે ઉપર ઘાધા ગયા હૈ
 એસી (હત્થતરગેહિ) જો અન્ય યાન પાત્રોં કોં અપેક્ષા પાની કે ઉપર
 ઘટુત જલ્દી તૈરતી હૈ એસે (વાહણેહિ) નૌકાઓં દ્વારા (અઇવઇત્તા)
 આક્રમિત કરકે (પરદવ્વહરા) પરદ્રવ્ય કો હરણ કરને વાછે (નિરણુ
 કપા) નિર્દયી (ણિરવયક્ખા) જો અપને પરભવ કો સુધાર ને કી
 ભાવના સે રહિત હોતે હૈ એસે (નરા) ચોર મનુષ્ય (સમુદમજ્જે ગતુણ)

છે, “દુરણુચર” તથા જેમા ફરવુ અતિશય કઠિન છે, “વિસમપ્પવેસ”
 જેમા પ્રવેશ કરવો ઘણો મુશ્કેલ છે, “દુક્ખોત્તાર” જેને ઝાળાગવો અતિ
 શય મુશ્કેલ છે, “દુરાસય” જે સદા દુઃખદ સ્થાન રૂપ છે, “લવણસલિલ
 પુણ્ણ” જે ખારા પાણીથી સદા ભરપૂર રહે છે, એવા સમુદ્રને “અસિયસિય
 સમુચ્છિયગેહિ” જેમના ઉપર કાળા અને સફેદ વસ્ત્ર ધાવેલા છે એવી “હત્થ
 તરગેહિ” જે અન્ય વાહનો કરતા પાણી ઉપર વધારે ઝડપથી તરે છે એવી
 “વાહણેહિ” નૌકાઓ દ્વારા “અઇવઇત્તા” આક્રમણ કરીને “પરદવ્વહરા”
 પરધનનું હરણ કરનારા, “નિરણુકપા” નિર્દય અને “ણિરવયક્ખા” પોતાના
 પરભવને સુધારવાની ભાવનાથી રહિત એવા “નરા” ચોર લોકો “સમુદમજ્જે

पुन किं कुर्वन्तीत्याह—‘गामागर०’ इत्यादि

मूलम्—गामागर-नगर-खेड-कवड-मडव-दोणमुह-पट्टणा-
समणिगस—जणवए ते य धणसमिद्धे हणाति, यिर हियय-
च्छिन्नलज्जा वदिग्गह—गोग्गहा य गेणहति, दारुणमई निक्किवा
णिय हणाति छिदति गेहसधि निक्खित्ताणि य हरन्ति,
धणधणदव्वजायाणि जणवयकुलाण निग्घिणमई पर-
दव्वाहि जे अविरया, तहेव केइ अदिण्णादाणं गवेसमाण
कालाकालेसु सचरता चित्तगपज्जलिय—सरसदर—दड्ढकड्डिय-
कलेवरे रुहिरालित्तवयण—अक्खय—खादिय—पीतडाइणि-
भमतभयकरे जवुयखिक्खियते घूयकयघोरसहे वेयाल्लुट्टिय
विसुद्धकहकहेत पहसियवीहणग निरभिरामे अइदुव्विभगंधे,
वीभच्छदरिसणिज्जे सुसाणे वणे सुण्णघरलेणअतरावण
गिरिकंदरेसु विसमसावय समाउलासु वसहिसु किलिस्सन्ता
सीयायवसोसियसरीरा दड्ढच्छवीनिरय तिरिय भवसंकडदुक्ख
सभारवेयणिज्जाणि पावकम्माणि सचिणिता दुल्लभभक्खण
पाणभोयणापिवासिया झुञ्जिया किलन्तामसकुणिमकदमूलजं
किंचिकयाहारा उव्विगा उप्पुया असरणा अडवीवास उवेति
वालसयसकणीय ॥ सू० ११ ॥

समुद्र के बीच में जाकर (जणस्स) मनुष्यों की (पोते) नौकाओं को
(हणति) नष्ट कर डालते हैं ॥ सू० १० ॥

गत्तूण ” समुद्रनी प२थे जडने “ जणस्स ” भाषुओनी “ पोते ” नौकाओनी
“ हणति ” नाश करी नाथे छे ॥ सू-१० ॥

ટીકા—‘ તે ય ’ તે ચ=પૂર્વોક્તપયારાજના: ‘ ગામાગરનગરખેડકર્વટ-
મડવદોળમુહપટ્ટણાસમણિગમજળવણ ’ ગ્રામાગરનગરખેડકર્વટમડવદોળમુહપટ્ટ-
નાશ્રમણિગમજળવણપદાન્=તત્ર ગ્રામઃ, પ્રસતિ બુદ્ધ્યાદિગુણાનિતિગ્રામઃ, આકરઃ=
સુવર્ણરજતાદિ ધાતુના રવનિસ્થાન, નગર=શ્રદ્ધાદશકરવર્જિત, ખેડ=ધૂલિપ્રાકારમય,
કર્વટ=અલ્પજનનિવાસસ્થાન, મડવ સામકોશદ્વયગ્રામાન્તરગુન્યઃ, દ્રોણમુલ=
જલસ્થલમાર્ગો યત્ર ભવેત્ તદ્દ્રોણમુલ, પત્તન=સમગ્રવસ્તુપ્રાપ્તિસ્થાનમ્, આશ્રમઃ=

પરદ્રવ્ય હરણ કરને વાલે તસ્કરજન ફિર ક્યા કરતે હૈં ? સોઈસ
સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકાર પ્રદર્શિત કરતે હૈં—‘ ગામાગર૦ ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(ધનસમિદ્ધે ગામાગરનગર ખેડકર્વટમડવદોળમુહપટ્ટ
ણાસમણિગમજળવણ) ધનધાન્યાદિ સે સમૃદ્ધ હુણ ગ્રામ, આકર, નગર,
ખેડ, કર્વટ, મડવ, દ્રોણમુલ, પત્તન, આશ્રમ, નિગમ એવ જનપદ, इन
સય કો (તે ય) પરદ્રવ્ય હરણ કરને વાલે ચોર આદિક (હણતિ) નષ્ટ
કર દેતે હૈં । જહા બુદ્ધ્યાદિગુણોં કા હાસ હોતા હૈ વહ ગ્રામ હૈ । સુવર્ણ
રજત આદિ ધાતુઓં કી ઉત્પત્તિ કા જો સ્થાન હોતા હૈ ઉસકા નામ
આકર હૈ । અઠારહ પ્રકાર કા રાજકર જિસમેં નહીં લિયા જાતા હૈ ઉસકા
નામ નગર હૈ । ધૂલિકા પ્રાકાર જિસમેં હોતા હૈ ઉસકા નામ ખેડ હૈ । જિસમેં
થોડેસે મનુષ્ય નિવાસ કરતે હૈ ઉસકા નામ કર્વટ હૈ । ચારો દિશાઓંમેં
અઢાઈર કોસતક જિસકે આસપાસમેં ગાવ નહીં હોતે હૈ ઉસકા નામ મડવ
હૈ । જલમાર્ગ કે એવ સ્થલમાર્ગ દોનોં પ્રકારકે માર્ગસે હોકર જિસમેં જાયા
જાતા હૈ ઉસકા નામ દ્રોણમુલ હૈ । સકલ વસ્તુઓં કી પ્રાપ્તિ કા જો

પરદ્રવ્યનુ હરણ કરનારા ચોરો પછી શુ કરે છે ? સૂત્રકાર આ સૂત્રદ્વારા
તે પ્રગટ કરે છે—“ ગામાગર ” इत्यादि

ટીકાર્થ—“ ધનસમિદ્ધે ગામાગરનગરખેડકર્વટમડવદોળમુહપટ્ટણાસમણિગમ
જળવણ ” ધનધાન્યથી સમૃદ્ધ બનેલ ગામ, આકર, નગર, ખેડ, કર્વટ,
મડવ, દ્રોણમુલ, પત્તન, આશ્રમ, નિગમ અને જનપદ એ બધાનો “ તેય ”
પરધન હરી લેનાર ચોર આદિ લોકો નાશ કરે છે બધા બુદ્ધિ આદિ ગુણોનો
હાસ થાય છે તે ગામ છે સોનુ, આદી આદિ ધાતુઓના ઉત્પત્તિ સ્થાનને
આકર-ખાણુ કહે છે અઢાર પ્રકારનો રાજકર બધા લેવાતો નથી તેને નગર
કહે છે ધૂળનો કિંટલો બધા હોય છે તે સ્થાનને ખેડ કહે છે જેમા થોડા જ
ખાણુસો વસતા હોય તે સ્થાનને કર્વટ કહે છે જેની આસપાસમા અઢી ગાઉમા
ગામ હોતા નથી તેને મડવ કહે છે બધા જળમાર્ગે તથા સ્થળમાર્ગે જઈ
શકાય છે તે સ્થાનને દ્રોણમુખ કહે છે બધા બધી વસ્તુઓ મળી શકે છે તે

તાપસનિવાસઃ, નિગમઃ=વણિગ્જનનિવાસઃ જનપદોદેશસ્તાન ‘ ધનસમિદ્ધે ’ ધન-
સમૃદ્ધાન્=ધનધાન્યપસમ્પન્નાન્ ‘ હ્ણતિ ’ ઘ્નન્તિ=વિનાશયન્તિ તથા ‘ ધિરહિયયા ’
સ્થિરહૃદયા=અદત્તાદાને નિશ્ચલચિત્તાઃ છિન્નલજ્ઞાઃ=જાતિકુળાદિલજ્ઞાવર્જિતાઃ
‘ વંદિગ્ગહગોગ્ગહા ય ’ વન્દિગ્રહગોગ્રહાશ્ચ = વન્દિનઃ સ્તુતિપાઠોપજીવિનસ્તેષાં
ગ્રહ=ગ્રહણ ગત્વા ચ ગ્રહણ ચોરણમિત્યર્થ, ‘ ગેહ્ણતિ ’ ગૃહ્ણન્તિ=કુર્વન્તિ તથા
‘ દારુણમર્દ ’ દારુણમતયઃ=ધોરુર્માચરણબુદ્ધય ‘ નિક્ષિવા ’ નિષ્કૃપાઃ=નિર્દયાશ્ચ
‘ ણિય ’ નિજ = સ્વજનમપિ ‘ હ્ણતિ ’ ઘ્નન્તિ = નાશયન્તિ તથા ગેહ્ણસર્ધિ=
ગૃહભિત્તિ ‘ છિદતિ ’ છિન્દન્તિ । તતશ્ચ ‘ જળવયકુલાળ ’ જનપદકુલાનાં ‘ નિક્ષિવ

સ્થાન હોતા હૈં ઉસકા નામ પત્તાન હૈં । તાપસ લોગોં કા જો નિવાસ
સ્થાન હોતા હૈં ઉસકા નામ આશ્રમ હૈં । વણિગ્જન જિસમેં રહતે હો
ઉસકા નામ નિગમ, એવ દેશ કા નામ જનપદ હૈં । હન સ્થાનોં કો લૂટને
વાલે તથા-નષ્ટ બ્રષ્ટ કરને વાળે યે જન (ધિરહિયયા) અદત્તાદાન કરને
મેં નિશ્ચલચિત્ત રહતે હૈં (છિન્નલજ્ઞા) હન્હેં જાતિ, કુલ આદિકી લજ્ઞા
કુછ ભી નહોં હોતી હૈં । (વંદિગ્ગહગોગ્ગહા ય) યે સ્તુતિ પાઠકોં કો
લૂટ લિયા કરતે હૈં ઓર ગાયોં કો ભી ચુરા લિયા કરતે હૈં । (દારુણમર્દ)
હનકી મતિ ઘડીદારુણ (ભયકર) હોતી હૈં-ભયકરસે ભયકર કર્મ કરનેમેં
ભી ઉન્હે સકોચ નહોં હોતા હૈં । (નિક્ષિવા) યે સદા દયા સે રહિત હોતે
હૈં । (ણિય હ્ણતિ) અપને નિજજન કો ભી યે જાન સે માર ઢાલતે હૈં
(ગેહ્ણસર્ધિ) ઘરોં કી ભિત્તિયોં તક કો ભી યે (છિદતિ) તોડ ઢાલતે
હૈં । (જળવયકુલાળ) દૂસરોં કી રક્ષો હુઈ-ધરોહરરૂપ મે સ્થાપિત કી

સ્થાનને પત્તાન ઢહે છે તાપસ લોકના નિવાસસ્થાનને આશ્રમ ઢહે છે વણિક
લોકો બન્યા રહે છે તે નિગમ અને દેશને જનપદ ઢહે છે તે સ્થાનોને લૂટ-
નારા તથા નષ્ટબ્રષ્ટ કરનારા તે લોકો “ ધિરહિયયા ” અદત્તાદાન-થોરી કરવાને
માટે દૃઢ નિશ્ચયી હોય છે “ છિન્નલજ્ઞા ” તેમને બિતિ ડુળ આદિની સહેજ
પણ લાજ હોતી નથી “ વંદિગ્ગહગોગ્ગહાય ” તેઓ સ્તુતિ કરનારાને પણ
લૂટી લે છે, અને ગાયોને પણ થોડી બંધ છે “ દારુણમર્દ ” તેમની બિતિ
અતિ દારુણ હોય છે-ભયકરમા ભયકર કૃત્ય કરતા પણ તેમને સકોચ થતો
નથી “ નિક્ષિયા ” તેઓ મદદ દયાહીન હોય છે, “ ણિય હ્ણતિ ” પોતાના
સ્વજનોને પણ તેઓ મારી નાખે છે, ‘ ગેહ્ણસર્ધિ ’ ઘરની દિવાલોને પણ
તેઓ “ છિદતિ ” ઘરની દિવાલોને પણ તેઓ “ છિદતિ ” તોડી પાડે છે
“ જળવયકુલાળ ” બીજાએ અનામત થાપણ તરીકે મૂકેલ “ ધનધણ્ણદઘ્વ

ટીકા—‘ તે ય ’ તે ચ=પૂર્વોક્તપયારાજનાઃ ‘ ગામાગરનગરખેડકઞ્ચઢ-
મઢવદોળમુહપટ્ટણાસમણિગમજળવળ ’ ગ્રામાકરનગરખેડકર્વટમઢમ્વદોળમુહપત્ત-
નાશ્રમનિગમજનપદાન્=તત્ર ગ્રામઃ, ગ્રસતિ બુદ્ધ્યાદિગુણાનિતિપ્રામઃ, આકરઃ=
સુવર્ણરજતાદિ ધાતુના સ્થાનિસ્થાન, નગર=અણ્દશકરગર્મિત, ખેટ=ધૂલિપ્રાકાસમય,
કર્વટ=અલ્પજનનિવાસસ્થાન, મઢમ્ સાર્વક્રોશદ્યગ્રામાન્તરગૂન્યઃ, દોળમુહ=
જલસ્થલમાર્ગો યત્ર ભવેત્ તદ્દોળમુહ, પત્તન=સકલવસ્તુપ્રાપ્તિસ્થાનમ્, આશ્રમઃ=

પરદ્રવ્ય હરણ કરને વાલે તત્સ્કરજન ફિર કયા કરતે હૈં ? સોઈસ
સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકાર પ્રદર્શિત કરતે હૈં—‘ ગામાગર૦ ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(ધનસમિદ્ધે ગામાગરનગર ખેડકઞ્ચઢમઢવદોળમુહપટ્ટ-
ણાસમણિગમજળવળ) ધનધાન્યાદિ સે સમૃદ્ધ હુણ ગ્રામ, આકર, નગર,
ખેટ, કર્વટ, મઢવ, દોળમુહ, પત્તન, આશ્રમ, નિગમ એવ જનપદ, ઇન
સય કો (તે ય) પરદ્રવ્ય હરણ કરને વાલે ચોર આદિક (જ્ઞાતિ) નષ્ટ
કર દેતે હૈં । જહા બુદ્ધ્યાદિગુણોં કા દ્વાસ હોતા હૈ વહ ગ્રામ હૈ । સુવર્ણ
રજત આદિ ધાતુઓં કી ઉત્પત્તિ કા જો સ્થાન હોતા હૈ ઉસકા નામ
આકર હૈ । અઠાર પ્રકાર કા રાજકર જિસમેં નહીં લિયા જાતા હૈ ઉસકા
નામ નગર હૈ । ધૂલિકા પ્રાકાર જિસમેં હોતા હૈ ઉસકા નામ ખેટ હૈ । જિસમેં
થોડેસે મનુષ્ય નિવાસ કરતે હૈ ઉસકા નામ કર્વટ હૈ । ચારો દિશાઓંમેં
અઢાઈર કોસતક જિસકે આસપાસમેં ગાવ નહીં હોતે હે ઉસકા નામ મઢવ
હૈ । જલમાર્ગ કે એવ સ્થલમાર્ગ દોનોં પ્રકારકે માર્ગસે હોકર જિસમેં જાયા
જાતા હૈ ઉસકા નામ દોળમુહ હૈ । સકલ વસ્તુઓં કી પ્રાપ્તિ કા જો

પરદ્રવ્યનુ હરણ કરનારા ચોરો પછી શુ કરે છે ? સૂત્રકાર આ સૂત્રદ્વારા
તે પ્રગટ કરે છે—“ ગામાગર ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ ધનસમિદ્ધે ગામાગરનગરખેડકઞ્ચઢમઢવદોળમુહપટ્ટણાસમણિગ-
મજળવળ ” ધનધાન્યથી સમૃદ્ધ બનેલ ગામ, આકર, નગર, ખેટ, કર્વટ,
મઢવ, દોળમુહ, પત્તન, આશ્રમ, નિગમ અને જનપદ એ બધાનો “ તેય ”
પરધન હરી લેનાર ચોર આદિ લોકો નાશ કરે છે બધા બુદ્ધિ આદિ ગુણોનો
દ્વાસ થાય છે તે ગામ છે સોનુ, ચાંદી આદિ ધાતુઓના ઉત્પત્તિ સ્થાનને
આકાર-ખાણ કહે છે અઢાર પ્રકારનો રાજકર બધા લેવાતો નથી તેને નગર
કહે છે ધૂળનો કિલ્લો બધા હોય છે તે સ્થાનને ખેટ કહે છે જેમા થોડા જ
માણસો વસતા હોય તે સ્થાનને કર્વટ કહે છે જેની આસપાસમા અઢી ગાઉમા
ગામ હોતા નથી તેને મઢવ કહે છે બધા જળમાર્ગે તથા સ્થળમાર્ગે જઈ
શકાય છે તે સ્થાનને દોળમુહ કહે છે બધા બધી વસ્તુઓ મળી શકે છે તે

તેપુ=પ્રદીપ્તેપુ યાનિ સરમાનિ=રુધિરમાસાદિસહિતાનિ ખતવ્વ દગ્ધાનિ=ઈપદ્ધ-
સ્મીભૂતાનિ તાનિ કૃષ્ણાનિ=શ્વશૃગાલાદિભિશ્ચિતાતો નિષ્કાશિતાનિ કલેવરાણિ=
મૃતકશરીરાણિ યત્ર તત્તથા તત્ર ઇમશાતે । પુનઃ કીદ્દશે-‘ રુહિરલિત્તવયણઅમ્મલ્લ
લાદિયપીયડાઈણિમમતમયકરે ’ રુધિરલિત્તવદનાઽતલાદિતપીતઢાકિની ભ્રમદ્
મયકરે=તત્ર રુધિરેણ લિપ્તાનિ યદનાનિ = મુલ્લાનિ તથા ખસતાનિ=સમગ્રાણિ
લાદિતાનિ મૃતકાના શરીરાણિ તથા પીતાનિ રુધિરાણિ યામિસ્તાસ્તથા ભ્રમન્ત્યશ્ચ
યા ઢાકિન્યસ્તામિર્ભયકરે, ‘જવુયલ્લિલ્લિયતે’ જમ્મુકાના ‘લિલ્લિ’ ઇતિ શબ્દયુક્તે
તથા ‘ધૂયકયધોરસદ્દે’ ધૂમકૃત ધોરશબ્દે=ધૂમકૈઃ=ઉલ્લૂકૈઃ કૃત ધોરઃ=મયકરઃ
શબ્દસ્તેન યુક્તે તથા ‘વેયાલુલ્લિયવિસુદ્ધકહ્મહતપહસિયગીઈણગનિગમિરામે ’ વે
તાલોલ્લિયતવિશુદ્ધકહ્મહાયમાનપહસિતમીપણકનિરમિરામે = વેતાલેભ્યઃ = વિકૃત
પિશાચેભ્યઃ ઉલ્લિયત=સમુત્પન્ન વિશુદ્ધમ્=અન્યશબ્દાઽમિશ્રિત યત્ કહ્મહાયમાન=

(સરસ) રસ-રુધિર આદિસે લિપ્ત મુદ્દે (દરદહ્મ) પ્રેરે નહીં જલ સકનેકે કારણ
(કહ્મલ્લિયકલેવરે) કુત્તે એવ શૃગાલ આદિ દ્વારા ચિતાઓંસે બાહિર નિકાલ
લિયે જાતે હૈં (રુહિરલિત્તવયણ) જિનકે મુલ્લ રુધિરસે લિપ્ત હો રહે હૈં,
તથા (અમ્મલ્લલાદિયપીય) જિન્હોંને સમગ્રરૂપસે મૃતક કલેવરોંકો લાયા
હૈં ઓર ઉનકાલૂન પી લિયા હૈં એસી (ઢાઈણીમમત મયકરે) ધૂમતી હુઈ
ઢાકિનિયોંસે જો મયકર બને હુઈ હૈં (જવુયલ્લિલ્લિયતે) તથા જો ગીદ્દોં
કે ‘લિ-લિ’ શબ્દોંસે યુક્ત હો રહે હૈં (ધૂયકયધોરસદ્દે) ઉલ્લૂ જહા ધોર
શબ્દ કર રહે હૈં, તથા જહા (વેયાલુલ્લિય) વેતાલ વિકૃત બનકર જોરર સે
કહ્મ કહાય માર કર હૈંસા કરતે હૈં । (વિસુદ્ધકહ્મ કહેંત પહસિય) ઉનકા
યહ હૈંસના જહાં અન્ય ઓર શબ્દોં સે મિશ્રિત નહીં હો રહા હૈં-કેવલ
“ કહ્મ કહ્મ ” એસી હી ધ્વનિ જહા ઉનકે મુલ્લ સે નિકલ રહી હૈં, ઇસ-

રસ-રુધિર આદિથી ખરડાયેલા મુઠ્ઠા, “ દરદહ્મ ” પૂરા બળી શહેલા ન હોવાથી
“કહ્મલ્લિયકલેવરે” ઇતરા શિયાળ આદિ દ્વારા ચિતાઓમાથી બહાર ખેચી કઢાય
છે “ રુહિરલિત્તવયણઅમ્મલ્લલાદિયપીયડાઈણીમમતમયકરે ” “ રુહિરલિત્તવયણ ”
જેમના મુખ લોહીથી ખરડાયેલા છે તથા જેમણે સંપૂર્ણ રીતે મૃતશરીરે નુ
ભક્ષણકર્તુ છે અને તેમનું લોહી પીધું છે એવા “ ઢાઈણીમમતમયકરે ” ત્યા
ભમતી ડાહ્યોથી જે ભયકર લાગે તે, “ જવુયલ્લિલ્લિયતે ” તથા જે
શિયાળોના “ખિ-ખિ” શબ્દોથી યુક્ત છે, “ધૂયકયધોરસદ્દે” ધ્રુવડો બધા ભયકર
શબ્દો કરે છે, તથા બધા “ વેયાલુલ્લિય ” વેતાળકૃત બનીને બેર શોરથી ખડ
ખડાટ હસી રહ્યા છે, “ વિસુદ્ધકહ્મકહેંત પહસિય ” તેમનું તે હાસ્ય બધા બીજા
કોઈ શબ્દ સાથે મિશ્રિત થતું નથી-એવળ “ ઢહ ઢહ ” એવો ધ્વનિજ તેમના

તાણિ ' નિષિષ્ઠાનિ=સ્થાપિતાનિ ' ધણધણદ્વજાયાનિ ' ધનધાન્યદ્રવ્યજાતાનિ= ધનધાન્યસુવર્ણરજતાદીનિ હરન્તિ ' કે ક્રિયાદ-યે ' પરદગ્ધાદિ ' પરદગ્ધૈઃ ' અવિરયા ' અવિરતાઃ=અનિવૃત્તાઃ=' નિગ્ધિગમર્દ ' નિર્ગ્ધિગમતયઃ=રુણારદિતા ' તદેવ તથૈવ-પૂર્વોક્તપ્રકારેણ ' કેઈ ' કેડપિ ' અદિષ્ણાદાણ ' અદ્વિજાદાનં=સ્વામ્યાદિ ભિરવિતીર્ણ ધન ગવેષમાણા =અન્વેષમાણાઃ કાલ્યાકાલેષુ=કાલેષુ=સકલલોકવ્યવહારોચિતકાલેષુ દિનાદિલક્ષણેષુ તથા અકાલેષુ=અનુચિતકાલેષુ અર્ધરાત્રિાદિલક્ષણેષુ ચ સચ્ચરન્તઃ=ભ્રમન્તોડદત્તગ્રાહિણ , ' ચિતગપજ્જલિયમરસદરદહુકહ્વિયમરે ' ચિતકમજ્જલિતસરસદરદગ્ધકુટ્ટકાલેપરે=ચિતકેષુ=ચિતાસુ, કીદશેષુ ? પજ્જલિ

હુઈ (ધણધણદ્વજાયાણિ) ધન, ધાન્ય, સુવર્ણ રજત આદિ સપત્તિ કો (હરતિ) હર લિયા કરતે હૈં । (પરદગ્ધાદિ અવિરયા) ક્યોં કિં યે લોગ પરકે દ્રવ્ય કો ચુરાને રૂપ કૃત્ય સે વિરક્ત નહીં હોતે હૈં-“ દૂસરોં કા દ્રવ્ય વિના પૂઠે નહીં લૂગા ” હિસ પ્રકાર કા નિયમ હિન્હૈં નહીં હોતા હૈ । (નિગ્ધિગમર્દ) યે સર્વથા દયાભાવ સે રહિત મતિ વાલે હોતે હૈં । (તદેવ કેઈ) હિસી તરહ કિતનેક વ્યક્તિ (અદિષ્ણાદાણ) સ્વામી આદિ દ્વારા ચિતીર્ણ નહીં કિયે હુઈ ધન ધન્યાદિ ફી (ગવેષમાણા) ગવેષણા કરતે હુઈ (કાલાકાલેસુ) સમસ્ત લોક વ્યવહાર કે ડચિત દિન આદિ રૂપકાલ મૈં તથા અર્ધરાત્રિ આદિ રૂપ અકાલ-અનુચિત કાલ મૈં (સચરતા) હધર ડધર ધૂમતે હુઈ શ્મશાન શૂન્યગૃહ આદિ મૈં બઝકતે રહતે હૈં, યહ સમ્યન્ધ યહા જોડ લેના ચાહિયે । વહ શ્મશાન આદિ કૈસે હૈં સો વર્ણન કરતે હૈ-જહા (ચિતગપજ્જલિય) પ્રજ્વલિત ચિતાઓં મૈં

જાયાણિ” ધન, ધાન્ય, સોણ, રૂપ, આદિ સપત્તિને “ હરતિ ” પણ તેઓ હરી લે છે “ પરદગ્ધાદિ અવિરયા ” કારણ કે તે લોકો પરધનને ચોરવાના કૃત્યથી વિરક્ત હોતા નથી, “ ધીળાનુ દ્રવ્ય તેને પૂછ્યા વિના નહીં લઉં ” એવો તેમને નિયમ હોતો નથી “ નિગ્ધિગમર્દ ” તેઓ સદા દયાલાવથી રહિત મતિવાળા હોય છે “ તદેવ કેઈ ” એ જ પ્રમાણે ડેટલાક લોકો “ અદિષ્ણાદાણ ” માલિક આદિ દ્વારા અર્પણ ન કરવામા આવેલ ધન ધાન્યાદિનો “ ગવેષમાણા ” શોધ કરતા “ કાલાકાલેસુ ” બધા લોકો માથે વ્યવહાર માટેના દિવસ આદિ ચોખ્ખ સમય અથવા મધ્ય રાત્રિ આદિ અકાલે-અચોખ્ખ સમયે “ સચરતા ” આમ તેમ શ્મશાન, શૂન્યગૃહ-ખાલીઘર-આદિમા ભટક્યા કરે છે તે શ્મશાન આદિ કેવા હોય છે, તેનું વર્ણન કરે છે-“ચિતગપજ્જલિય” સળગતી ચિતાઓમા “સરસ”

દગ્ધચ્છવય = નદૃશાન્તય ' નિરયતિરિયમ્ભવસમ્પટ્ટકલ્પસમારવેદણિજ્જાણિ પાવક-
મ્માણિ સચિણતા ' નરકતિર્યગ્ ભવસદ્કટ્ટદુઃખસમ્મારવેદનીયાણિ પાપકર્માણિ
સચિન્નન્તઃ = તત્ર નરકતિર્યગ્ભવેષુ સદ્કટ્ટાણિ = વિપમાણિ દુઃખાણિ = પરમાધાર્મિક-
કૃત છેદનભેદનાદિરૂપાણિ - તેષા યઃ સમારઃ = ગુહલતા તેન વેદનીયાણિ = અનુભવની-
યાણિ ' પાવકમ્માણિ ' પાપકર્માણિ = પરદ્રવ્યાપહરણાદીણિ સચિન્નન્તઃ = સમુપાર્જ-
યન્તઃ ' દુહ્મભમજ્જણપાણભોયણા ' દુર્લભમજ્જણપાણભોજનાઃ - દુર્લભ = દુષ્પ્રાપ્ય
મજ્જણ = અન્નાદિક પાન = દુગ્ધજલાદિક ચ ભોજન = કલ્યાવર્ત પ્રાતરશનાદિક ' નાશતા '
' કલે વા ' इति प्रसिद्ध येषा ते तथा अतएव ' पिवासिया ' पिवासिताः =
तृपिताः ' झुझिया ' वृमुक्षिताः ' क्लिता ' क्लान्ताः = ग्लानियुक्ताः ' मसकुणि-
मकदमूलज किंचिकयाहारा ' मांसकणवक्रन्दमूलयत्किञ्चित् कृताहाराः = तत्र मास =
प्रसिद्ध कुणप = मृतकदेहः कन्दमूलानि तेषा यत् किञ्चित् = यथावसर यत्किञ्चि-

જીવી) શરીર કી કાતિ ઇનકી નષ્ટ હો જાતી હૈ । (નિરયતિરિયમ્ભવ-
સકટદુઃખસમારવેયણિજ્જાણિ) નરક તિર્યગ્ ભવોં મેં પરમાધાર્મિક
કૃત છેદન ભેદન આદિરૂપ વિપમ દુઃખો કે સમાર સે વેદનીય એસે પર-
દ્રવ્યાપહરણ આદિરૂપ (પાવકમ્માણિ) પાપકર્મોં કો (સચિણતા) ઉપા-
ર્જિત કરતે હુએ (દુહ્મભમજ્જણપાણભોયણા) યે જીવ દુર્લભ અન્નાદિ
સામગ્રી વાળે, દુર્લભદુગ્ધ જલાદિ વાળે, તથા દુર્લભ ભોજનાદિરૂપ કાળે-
વાળે હોતે હૈ । (પિવાસિયા) ઇન્હેં પાની તક પીને કો નહીં મિલતા
હૈ (ઝુઝિયા) સદા યે વૃમુક્ષિત-ખૂલે રહા કરતે હૈ । (કિલતા) ક્લાન્ત-
હરણક કોઈ ઇનસે ગ્લાનિ કિયા કરતા હૈ । (મસકુણિમ, કદમૂલ જ
કિંચિ કયાહારા) અસમય મે અથવા યયા અવસર જો કુઝ ઇન્હેં ખાને
કો મિલ જાતા હૈ-ચાહે વહ માસ હો, ચાહે કુણપ-મૃતકદેહ-મુર્દા હો,

ગાન્તિ નાશ પામે છે " નિરયતિરિયમ્ભવસકટદુઃખસમારવેયણિજ્જાણિ "
નરક તિર્યગ્ આદિ લેવોમા પરમાધાર્મિક દેવોદ્વારા કરાતા છેદન ભેદન આદિ
રૂપ વિપમ કુળેના સમૃદ્ધી વેદનીય (મહન કરવા પડતા) એવા પરધન
હરણ આદિરૂપ પાપકર્મોંનુ " સચિણતા " ઉપાર્જન તેઓ કરે છે ' દુહ્મભ
મજ્જણપાણભોયણા " તે એવોને અન્નાદિ સામગ્રી ઘણી મુશ્કેલીએ પ્રાપ્ત થાય
છે, પાણી દૂધ આદિ પીણા પણ તેમને માટે દુર્લભ હોય છે, અને નાર્સ્તો
લોજનાદિ પણ તેમના માટે દુર્લભ હોય છે " પિવાસિયા " તેમને પીવા માટે
પાણી પણ મળતુ નથી " ઝુઝિયા " તેઓ સદા ભૂખ્યા રહે છે, " કિલતા "
ક્લાન્ત-દરેક વ્યક્તિ તેમણે ગ્લાની પમાડ્યા કરે છે " મસકુણિમકદમૂલ જ-
કિંચિ કદ દારા " કાળે અથવા અકાળે તેમને જે કંઈ ખાવા મળે છે-પછી તે
માસ હોય, કુણપમૃતશરીર હોય, કદમૂળ હોય- તે તેઓ ખાય છે તે ચીજો

શબ્દાપમાન હસિત=હસન તેન મીપણ=મયાનક્રમતપ્ત નિરમિરામમ્=અસુન્દર
 યત્તત્તથા તત્, તથા 'અહ્દુન્નિમગધે' અતિદુરભિગન્ધે-શત્રિતમ્તકમ્લેત્રદુર્ગન્ધ
 યુક્તે, 'વીમચ્છદરિસણિજ્જે' વીમત્સાદર્શનીયે=વીમત્સં=અસ્થિમૃતકમ્લેવરાદિ
 યુક્તતાજ્જુગુપ્સોત્પાદક દર્શનીય=દર્શન યસ્ય તત્ તસ્મિન્ 'સુસાણે' શ્મશાને
 'વણે' વને=અરણ્યે ચ તથા 'સુણ્ણઘરલેણઅતરાવણગિરિકન્દરેસુ' શૂન્યગૃહલ્પ
 નાડન્તરાડડપણગિરિકન્દરેપુ=શૂન્યાનિ ગૃહાણિ અન્તરાવણાઃ=અન્તરા=ગ્રામાદીના
 મર્દપથે વિશ્રામાર્થે નિર્મિતા આપણાઃ=ગૃહાઃ=ગ્રામાદ્યાગાઃ ગિરિકન્દરાણિ ચ=
 ગિરિગહ્વરાણિ, તેષુ, તથા-'વિસમસાવયસમાડલાસુ' ત્રિપદૈઃ શ્વાપદૈઃ હિંસપ્રાણિ
 મિ સમાકુલાઃ=વ્યાપ્તાઃ તાસ્વેવ ત્રિધાસુ 'વસહિસુ' ત્રસતિપુ=વાસસ્થાનેષુ 'કિલિ'
 સ્સતા' કિલિશ્યન્તઃ=દુઃસ્વાનિ પ્રાપ્નુવન્તઃ, 'સીયાયવસોસિયસરીરા' શીતાતપ
 શોપિતશરીરા' = શીતૈરાતપૈશ્ચ શોપિતાનિ શરીરાણિ યેવાં તે તથા 'દહ્દહ્ચ્ચવી'

લિપે હસ વિશુદ્ધ કહ કહ ધ્વનિ સયુક્ત પિશાચોં કે હાસ્યસે જો (વીહ
 ણગ) ભયપ્રદ ઓર (નિરમિરામે) અસુન્દર બને હુએ હૈં (અહ્દુન્નિમગધે)
 અતિદુરભિગધ-સહે હુએ મૃતકોં કે કલેવરોં કી દુર્ગન્ધ સે જો યુક્ત હો
 રહા હૈં (વીમચ્છદરિસણિજ્જે) તથા જો હાડ મૃતક કલેવર આદિ સે
 યુક્ત હોને કે કારણ ધૃગોત્પાદક દિવ્વલાઈ પડ્ડતે હૈં એસે (સુસાણે) ઓન
 શ્મશાનોં મે (સુણ્ણઘર) શૂન્ય ગૃહોં મેં, (લેણ) લયનોં મેં-પર્વતોં કે
 નિકટવર્તી પાષાણગૃહોં મેં, (અતરાવણ) ગ્રામ આદિકોં કે આથે માર્ગ
 મેં વિશ્રામ નિમિત્ત બને હુએ ઘરોં મેં, (ગિરિકન્દરેસુ) પર્વત કી ગુફાઓં
 મેં, તથા (વિસમસાવયસમાડલાસુ) હિંસક પ્રાણિયોં સે યુક્ત (વસ-
 હિસુ) વસતિયોં મેં-વાસસ્થાનોં મે, (કિલિસ્સતા) નાના પ્રકાર કે
 દુઃસ્વોં કો સહન કિયા કરતે હે. તથા (સીયા ય વસોસિયસરીરા)
 શીત ઓર આતપ સે હનકે શરીર શોપિત-સૂકે હુએ રહતે હૈં. (દહ્દહ્-
 ચ્ચવી)

અુખભાથી નીકળતો હોય છે, તેથી પિશાચોના તે વિશુદ્ધ કહકહ ધ્વનિ યુક્ત
 હાસ્યથી જે "વીહણગ" લયકર અને "નિરમિરામે" અસુન્દર બનેલ છે,
 "અહ્દુન્નિમગધે" મહેલા મૃત કલેવરોની અતિશય દુર્ગન્ધથી જે યુક્ત છે,
 'વીમચ્છદરિસણિજ્જે' તથા જે હાડકા, યુઠકા આદિથી યુક્ત હોવાને કારણે
 ધૃણાજનક દેખાય છે, એવા "સુસાણે" શ્મશાનોમા, "વણે" વનોમા,
 "સુણ્ણઘર" શૂન્યઘરોમા, "લેણ" લયનોમા પહાડની સમીપના પાષાણગૃહોમા
 "ગિરિકન્દરેસુ" પર્વતની ગુફાઓમા, તથા "વિસમસાવયસમાડલાસુ" હિંસક
 પ્રાણીઓથી યુક્ત "વસહિસુ" નિવાસ સ્થાનોમા, "કિલિસ્સતા" વિવિધ
 પ્રકારના હુબો સહન કર્યા કરે છે તથા "સીયા ય વસોસિયસરીરા" શીત
 અને તાપથી તેમના શરીર સૂકા રહે છે "દહ્દહ્ચ્ચવી" તેમના શરીરની

ટીકા—‘અયસકરા’ અયસકરાઃ=અકીર્તિમન્તઃ ભયઢ્ઢરાઃ ‘તકરા’ તસ્કરાઃ=અદત્તગ્રાહિણઃ ચોરા ઇત્યર્થઃ, ‘અજ્જ’ અય=અસ્મિન્ દિવસે ‘કસ્સ’ કસ્ય ધનિનઃ ઇતિ=એવ વિધ યન્મનસિ ચિન્તિત તત્ ‘દવ્વ’ દ્રવ્ય=ધન હરામઃ=ચોરયામ ઇતિ=એવ પ્રસાર ‘ગુજ્ઞ’ ગુજ્ઞ=ગુપ્ત ‘સમામતણ’ સમામન્ત્રણ=વિચારણા ‘કરેતિ’ કુર્વન્તિ । તથા ‘બહુયસ્સ જણસ્સ’ વહુસ્ય જનસ્ય ‘કજ્જકરણેસુ’ કાર્યકારણેસુ=કર્માનુષ્ઠાનેષુ ‘વિગ્ધકરા’ વિઘ્નકરાઃ=વિઘ્નોત્પાદકાઃ ‘મત્તપ્પ-મત્તપ્પસુત્તવીસત્થઙ્ગિદ્ધાઈ’ મત્તપ્રમત્તપ્રસુત્તવિશ્વસ્તાઙ્ગિદ્ધવાતિનઃ=તત્ર મધ્યપાનાદિના મત્તાન્ પ્રમત્તાન્ પ્રરૂપેણ મત્તાન્ પ્રસુતાન્ વિશ્વસ્તાઙ્ગ ઙ્ગિદ્ધેણ=ઙ્ગિદ્ધ=પ્રાપ્ય ઘનન્તિ

ફિર વે કૈસે હોતે હૈં સો કહતે હૈં—‘અયસકરા’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(અયસ કરા) ઇનકી દુનિયા મેં અકીર્તિ ફેલ જાતી હૈં યે સય જગહ વુગઈ સે વિખ્યાત હો જાતે હૈં, (ભયકરા) ઇનકે નામ શ્રવણ સે બી લોગોં કે હૃદયોં મેં ભય કા સંચાર હો જાતા હૈં । હસ તરહ કે યે (તકરા) અદત્તગ્રાહી-ચોર (અજ્જ કસ્સ દવ્વ હરામો ત્તિ) “આજ કિસ ધની કા મન ધારા દ્રવ્ય હરણ કરના ચાહિયે” હસ પ્રકાર કી (ગુજ્ઞ) ગુપ્ત (સમામતણ) વિચારણા (કરેતિ) કિયા કરતે હૈં । તથા (વહુયસ્સ જણસ્સ) અનેક મનુષ્યોં કે (કજ્જકરણેસુ) કાર્યોં મેં યે (વિગ્ધકરા) વિઘ્નોત્પાદક બુઝા કરતે હૈં । (મત્ત-પ્પમત્ત-પસુત્ત વીસત્થઙ્ગિદ્ધાઈ) (મત્તપ્પમત્ત) મધ્યપાનાદિક સે મત્ત તથા પ્રમત્ત બને હુએ વ્યક્તિયોં કો (પસુત્ત) સોયે હુએ મનુષ્યોં કો, એવ (વીસત્થ) અપને ઉપર વિશ્વાસ કરને વાલે પ્રાણિયોં કો યે (ઙ્ગિદ્ધાઈ)

તેઓ ઠેવા હોય તે નુ વધુ વર્ણન કરે છે—“અયસકરા” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“અયસકરા” આખી દુનિયામા તેમની અપકીર્તિ ફેલાય છે તેઓ હુદ્દુત્યોથી હરેક સ્થળે પકાય છે, ‘ભયકરા’ તેમનુ નામ સાલળીને પંથુ લોડોના દિલમા ભય પેદા થાય છે એવા તે “તકરા” ચોર “અજ્જકસ્સ દવ્વ હરામો ત્તિ” “આજે કયા ધનિકેનુ ધન હરી લેવુ બોઈએ” એ પ્રકારની “ગુજ્ઞ” ગુપ્ત “સમામતણ” વિચારણા “કરેતિ” કર્યા કરે છે તથા “વહુયસ્સ જણસ્સ” અનેક માણસોના “કજ્જકરણેસુ” કાર્યોમા તેઓ વિગ્ધકરા” વિઘ્નકર્તા થયા કરે છે “મત્ત-પ્પમત્ત-પસુત્તવીસત્થઙ્ગિદ્ધાઈ” “મત્તપ્રમત્ત” ઠાડ

આદિ પીને મત્ત તથા પ્રમત્ત બનેલા લોડોને “પસુત્ત” ઊધતા લોડોને, અને “વીસત્થ” પોતાના ઉપર વિશ્વાસ મૂકનાર લોડોને તેઓ “ઙ્ગિદ્ધાઈ”

ત્પાપ્ત તદપિ સ્વલ્પમાત્ર કૃત આહારો યૈર્ગતં તથા 'ઉચ્ચિગ્મા' 'ઉદ્વિગ્મા' = ઉદ્વેગયુક્તા
 અશાન્તચિત્તા इत्यर्थः, 'ઉપ્પુયા' 'ઉત્પ્લુતા' = ચાપલઃ 'અસરણા' અગરણા =
 ગ્રાણરહિતાઃ ગૃહચર્જિતા યા 'અડવીવાસ' અટવીવાસ = અરણ્યવાસ 'વાલસય
 સકળીય' વ્યાલસયસકળીય = વ્યાલાના = મર્પાદિદુષ્ટભાષદાના શતૈઃ શઙ્કનીય
 શુજઙ્ગાદિભિર્ભયદ્વક્ષમ્ 'ઉવતિ' ઉપવન્તિ = પ્રાપ્નુવન્તિ ॥ સૂ. ૧૧ ॥

પુનસ્તે કીદૃશા ભયન્તિ ? इत्याह—'અયસકરા' દૃત્પાદિ—

મૂલમ્—અયસકરાતક્રરા ભયકરા કસ્મહરામોત્તિ અજ્ઞદંવ
 इति समामंतणं करेंति गुञ्ज्ञ, बहुयस्त जणस्त कज्जकरणेसु
 विग्घकरामत्तप्पमत्तपसुत्तवीसत्थछिद्घाती वसणव्मुदएसु
 हरणवुद्धी विगव्वरुहिरमहिया परेंति नरवईमज्जायમાतिकंता
 सज्जणजणदुगल्लिया सकम्मोहि पावकम्मकारी असुभपरिणया
 य दुक्खभागी निच्चाउलदुहमनिव्वुइमणा इहलोगે चैव
 किलिस्संता परदव्वहरा नरा वसणसयमावण्णा ॥સૂ. ૧૧॥

ચાહે કંદમૂલ આદિ હો સો મી વહ ભરપેટ નહી મિલતા સ્વલ્પમાત્રા મેં
 હી મિલતા હૈ, ઉસે યે ચાલિયા કરતે હૈ, (ઉચ્ચિગ્મા) ઇનકા ચિત્ત
 સદા અશાન્ત રહતા હે । (ઉપ્પુયા) યે વહે ભારી ચપલ હોતે હૈ । (અસ
 રણા) ઇનકા એક જગહ સ્થિર વાસ નહી હોતા ઇસલિયે યે ગ્રાણ રહિત
 હોકર ઇધર સે ઉધર ભાગતે રહતે હૈ ઓર (અડવીવાસ) જગલ મે હી
 વસેરા કરતે હૈ । (વાલસયસકળીય) સર્પાદિ સૈકડો દુષ્ટ જાનવરોં કે
 ભય સે શકા શીલ એસે સ્થાનોં કો યે (ઉવેતિ) પ્રાપ્ત કરતે હૈ ॥સૂ. ૧૧॥

যথ তেমনে ধরাধনে জায়া ভগতী নথী, খোড়া প্রমাণুমা ও মজে છે “ ઉચ્ચિગ્મા ”
 તેમનુ ચિત્ત સદા અશાન્ત રહે છે “ ઉપ્પુયા ” તેઓ ઘણા જ ચપલ હોય
 છે “ અસરણા ” તેમનુ રહેઠાણ કાયમ એક જ જગ્યાએ હોતુ નથી, તેથી
 તેઓ અશરણુની જેમ આમતેમ ભગ્યા કરે છે “ અડવીવાસ ” જગલમા જ
 “ વાલસયસકળીય ” સર્પાદિ સેકડો ભયકર જીવોના ભયથી બચાવ સ્થાનોએ
 “ ઉવેતિ ” તેઓ પ્રાપ્ત કરે છે ॥ સૂ. ૧૧ ॥

નરકનિગોદાદિદુઃખભાગિનઃ, 'નિચ્ચાલ્લદુહમનિવ્વુહમણા' નિત્યાકુલદુઃખાઽનિર્વૃત્તિકમનસ' = નિત્યમાકુલ = વ્યાકુલિત દુઃખયુક્તમ્, અનિર્વૃત્તિક = સ્વાસ્થ્યરહિત મનોયેષા તે તથા નિરન્તરમતાપસંકુલાઃ, ઇહલોકે ચૈવ, ચાત્ પરલોકેઽપિ 'કિલિસ્સતા' કિલિચ્યન્તઃ = કલેશમનુભવન્તઃ 'પરદવ્વહરા' પરદવ્વહરા = પરધનાપહરણશીલા' નરા = મનુષ્યાઃ 'વસણસય' વ્યસનશત = દુઃખપ્રચુરમ્ 'આવણ્ણા' આપઘ્નાઃ = પ્રાપ્તાઃ પરિચ્યન્તીત્યનેન સમ્યન્નયઃ ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

एव 'यथाकृत' इत्यन्तर्द्वारमुक्तम्, अथ 'यथाफलदेः' इति अदत्तादान फलप्रतिपादक चतुर्थद्वारं प्राह—'तद्देव केड इत्यादि—

मूलम्—तद्देव केड परस्सदव्वं गवेसमाणा गहिया य हया य वच्चा रुद्धा य तुरियं अइधाडिया पुरवर संमप्पिया चोरग्गाह चारभडचाडुकराण, तेहि य कप्पडप्पहारनिदयाऽऽरक्खिय खरफरुसवयणतज्जणगलत्थल्ल उत्थलणाहि विमणाचारगवसहि पवेसिया निरयवसहिसरिस तत्थ वि

સે યુક્ત હોતે હૈં । (દુઃખભાગી) શુભપરિણામો સે રહિત હોને કે કારણ યે પરમવ મે નરક નિગોદ આદિ કે દુઃખોં કો ભોગા કરતે હૈં । (નિચ્ચાલ્લદુહમણિવ્વુહમણા) इनका मन सदा व्याकुल बना रहता है, इसी से ये निरन्तर मानसिक स्वास्थ्य से रहित होकर सताप से संकुल होते रहते हैं । इस तरह (इहलोगे चैव) इस लोक में तथा 'च' शब्द से परलोक में भी (किलिस्सता) कलेशों का अनुभव करते हुए ये (परदव्वहारा) पर द्रव्यापहारी चोर (वसणसय) अनेक दुःखों को (आवण्णा) प्राप्त होकर (परेंति) भ्रमण करते हैं अर्थात् अपने समय को दुर्गतिर्यों के भ्रमण करने में ही व्यतीत करते रहते हैं ॥ १२ ॥

“दुक्खभागी” शुभ परिष्ठाभो-सावेधी रहित होवाने कारणे तेओ परलवभा नरक निगोद आदिना हु ओ भोगव्या करे छे “निचचाल्लदुहमणिव्वुहमणा” तेभनु मन सदा व्याकुल रहे छे, तेथी तेओ निरन्तर मानसिक स्वास्थ्यधी रहित भनीने अतापथी युक्त रहे छे आ रीते “इहलोगेचैव” आ लोअभा तथा ‘च’ शब्दधी परलोअभा पणु “किलिस्सता” हु ओने अनुभवता ते “परदव्वहारा” परधननु डरणु अन्नारा चोर लोअे “वसणसय” अनेक हु ओ “आवण्णा” अनुभवता “परेति” भ्रमण करे छे, अटले के दुर्गतीयोभा भ्रमण करवाभा न पोतानो नण व्यतीत करे छे ॥सू-१२॥

एव शीलाः 'वसणव्युदपसु' व्यसनाभ्युदयेषु हरणमुद्धय' = व्यमनेषु = रोगाद्य
 स्थाया राजादिकृतोपद्रवेषु च अभ्युदयेषु = विवाहादिमहोत्सवेषु 'हरणमुद्धी'
 हरणमुद्धय 'विगव' वृक्षा इव = 'भेडिया' इति प्रसिद्धा नखगारिणः श्वापद
 जन्तु विशेषा इव 'रुहिरमहिया' रुधिरमहिताः = रुधिरम्य = रुधिरपानस्य महः =
 उत्सवः रुधिरमह, स जातो येषां ते तथा - रुधिरचूषणे तत्पराः, 'परेति'
 परियन्ति = पर्यटन्ति सर्वत्र भ्रमन्ति । कथं भूतास्ते इत्याह - 'नरवद्भ्रमज्जा-य
 मङ्कता' नरपति मर्यादामतिक्रान्ताः = राजाणां गर्हिर्गतिनः 'सज्जनजणदुगुछिया'
 सज्जनजनजुगुप्सिताः = मत्पुरुषैर्निन्दिताः 'सकम्मेहि' स्वकर्मभिः = अदत्तादान
 रूपैः 'पावकम्मकारी' पापकर्मगारिणः = चौर्यादिपापकर्मकारका 'असुभपरि
 णयाय' अशुभपरिणताश्च = अशुभपरिणामवर्जिता 'दुक्खभागी' दुःखभागिनः =

છિદ્ર પ્રાસકર ઘાત કી ઘાત મેં માર ડાલતે હૈ (વસણવ્યુદપસુ) રોગા
 દિક અવસ્થારૂપ તથા રાજાદિકૃત ઉપદ્રવકૃત વ્યસન કે સમય પર, અથવા
 વિવાહ આદિ રૂપ મહોત્સવ કે અસર પર બી યે (હરણમુદ્ધી) અપના
 કાર્ય કર દિયા કરતે હૈં । (વિગવ) ભેડિયા કી રુધિર ચૂષને મેં તત્પ
 રતા રહતી હૈં ઈસી પ્રકાર યે ચોર જન બી (રુહિર મહિયા) પર કે
 રૂન ચૂસને મેં તત્પર રહતે હુએ (પરેતિ) સર્વત્ર ધૂમતે હૈં । (નરવદ્ભ્ર
 મજ્ઞતા) રાજા કી આજ્ઞા કા સદા યે ઉલ્લઘન ક્રિયા કરતે હૈં । (સજ્જ
 નજ્જણેદુગુછિયા) સજ્જન પુરુષો કી નિંદા કરને મેં ઇન્હેં આનંદ મિલતા
 હૈ, અથવા ઇનકે ઇસ કર્મ કી સજ્જન પુરુષ નિંદા કરતે હૈં । (સક
 મ્મેહિ) અદત્તાદાનરૂપ અપને કર્મો સે યે (પાવકમ્મકારી) પાપકર્મકારી
 પાપકર્મ કરને વાલે વે ચોર (અસુભપરિણયાય) અશુભ આત્મા પરિણતિ

ધનનુ રહસ્ય જાણીને જોતજોતામા મારી નાખે છે “વસણવ્યુદપસુ” રોગાદિક
 અવસ્થામા, તથા રાજાદિકૃત ઉપદ્રવ ઇપ સકટને સમયે, અથવા વિવાહ આદિ
 મહોત્સવને પ્રસંગે પણ તે “હરણમુદ્ધી” પોતાનુ પરધન હરણનુ કૃત્ય કર્યા
 કરે છે “વિગવ” વરુની જેમ-એટલે કે જેમ વરુ લોહી ચૂસવાને તત્પર
 હોય છે તેમ ચોર પણ “રુહિરમહિયા” અન્યનુ લોહી ચૂસવાને તત્પર થઈને
 “પરેતિ” સર્વત્ર ભ્રમણ કરે છે “નરવદ્ભ્રમજ્ઞાય મઠકતા” રાજાની આજ્ઞાનુ
 સદા ઉલ્લઘન કરે છે, “સજ્જનજ્ઞે દુગુછિયા” સજ્જનોની નિંદા કરવામા
 તેમને મળ આવે છે, અથવા તે દુષ્ટત્યોની સજ્જનો નિંદા કરે છે “સકમ્મેહિ”
 અદત્તાદાન-ચોરી ઇપ પોતાના કર્મેથી તે “પાવકમ્મકારી” પાપકૃત્યો કરનારા
 ચોરા “અસુભપરિણયાય” અશુભ આત્મપરિણતિ-ભાવથી યુક્ત બને છે

ઉપસ્થાપિતાઃ, કેભ્યઃ ? इत्याह—‘ चोरगाहचारभडचाडुकराण ’ चौरगाहचारभट-
चाडुकरेभ्य = तत्र चोरगाहिणः चारभटाः=गुप्तचराः, चाटुकरणाः=मुखप्रियामृदु-
भाषणेन चौरगाहका इत्यर्थः, तेभ्यः ‘ तेहि्य ’ तत्र चोरगाहादि पुरुषैः ‘ कप्प-
डप्पहारनिदया रक्खियखरफरुसवयणतज्जणगलत्थल्लउत्थलणाहिं ’ कर्पटग्रहार
निर्दयाऽऽरक्षिकखरपरूपचनतर्जनगलत्थल्लउत्थलणाभिः=तत्र कर्पटैः=यष्ट्याकार-
बलितवृक्षैः ‘ कोडा ’ इति भाषा प्रसिद्धेः प्रहाराः=ताडनानि तथा निर्दया ये
आरक्षिकाः=कोटपालपालास्तेषां खरपुरुषैः=अतिनिष्ठुरैर्वचनैस्तर्जनानि-गलत्थ-
ल्लोत्थलनाश्च=गलत्थल्लाः = गलहस्तदानानि उत्थलनाः=परिवर्तनाश्चेत्येताभिः
‘ विमणा ’ विमनसः=खिन्नचित्ता सन्तः ‘ निरयवसहिमरिस ’ नरकवासतिसदृशा
=नरकावासतुल्या ‘ चारगवसहिं ’ चारकवसति=कारागृह ‘ पवेसिया ’ प्रवेशिताः ।

(समप्पिया चोरगाहचारभडचाडुकराण) बाद में वे राजपुरुष उन चोरों
को चोरगाही-चोरों को पकड़ने वाले गुप्तचरो के (कि जो मधुर बोलकर
चोरोको पकड़ने में सिद्धहस्त होते हैं उनके) आधीन कर देते हैं (तेहि य)
वे चोरगाही चारभट आदि उन चोरों को पहिले तो (कप्पडप्पहार)
कोड़ो की मार मारते हैं, तथा (निदयारक्खिय) निर्दय होकर कोटपाल
उन्हें (खरपरुसवयणतज्जिय) अतिनिष्ठुर अत्यन्त कटु वचनों से तर्जित
करते हैं, तथा (गलत्थल्ल उत्थलणाहि य) गला पकड़कर दगोच देते हैं ।
(विमणा) इस तरह की क्रियाओं से अपमान जनक व्यवहारों से-
चोरों को ये बहुत अधिक खिन्नचित्त कर डालते हैं । जब ये उन्हुत बुरी
तरह खिन्नचित्त हो जाते हैं तो बाद में वे उन्हें (निरयवसहि सरिस)
नरकावास तुल्य (चारगवसहिं) कारागृह में (पवेसिया) बंद कर देते हैं ।

ફેરવાય છે “ સમપ્પિયા ચોરગાહચારભડચાડુકરાણ ” ત્યાર બાદ તે રાજપુરુષો
તે ચોરોને ચોરગાહી-ચોરોને પકડનારા ગુપ્તચરોને મોખી દે છે તે ગુપ્તચરો
મીઠા વચનો બોલીને ચોરોને પકડવામાં નિપુણ હોય છે “ તેહિ ય ” તે
ચોરગાહી-ગુપ્તચર આદિ પહેલાં તો તે ચોરોને “ કપ્પહપ્પહાર ” કોરડાઓ
પડે ફટકારે છે, તથા “ નિદયારક્ખિય ” નિર્દય થઈને કોટવાલ તેમને “ સર-
પરુસવયણતજ્જિય ” અતિશય નિષ્ઠુર તથા અતિશય કડવા વચનો સંભળાવે છે,
“ ગલત્થલ્લઉત્થલણાહિય ” ગળુ પકડીને દબાવે છે, “ વિમણા ” આ પ્રકારની
અપમાનજનક ક્રિયાઓ તથા વર્તનથી તેઓ તે ચોરના ચિત્તમાં અત્યંત
ખિન્નતા ઉત્પન્ન કરે છે ત્યારે તેઓ અત્યંત ખિન્ન થાય છે ત્યારે તેમને તે
લોકો ‘ નિરયવસહિ સરીર ’ નરકાગાર અમાન “ ચારગવસહિ ” કારાગૃહમાં

ગોમ્મિક પહારદુસ્મણા નિઘ્મચ્છળકડુયવયણભેસણાગમયા
 મિમૂયા અમિલ્લત્તણિવસણા મલિણડંડિલ્લંડવસણા ઉકોડાલં-
 ચનપાસુસ્મગણપરાયણેહિં ગોમ્મિયમહેહિં વિવિહેહિં વધણેહિં
 કિંતે-હડિનિયડવાલરજ્જુયકુડડગવરત્તલોહસંકલ હત્થદુ
 ય વજ્જપટ્ટદામકણિક્કોડેણેહિં અણેહિં ય એવમાઇપિં ગો-
 મ્મિયમંડોવગરણેહિં દુક્ખસમુદીરણેહિં સકોડણમોડેણેહિં
 વજ્જતિ મદપુણ્ણા ॥ સૂ. ૧૩ ॥

ટીકા—‘તહેવ’ તથેવ=પૂર્વોક્તમકારેણ ‘કેહ’ કેચિત્ ‘પરસ્સ’ પરસ્સ
 ‘દવ્વ’ દ્રવ્ય ચોરયિત્ ‘ગવેસમાણા’ ગવેપયન્તઃ=અન્વેષણ કુર્નન્તઃ ‘ગહિયા’
 ગૃહીતાઃ=રાજપુરુષૈર્નિગૃહીતા હતાથ=તાડિતાઃ દણ્ડાદિભિસ્તતોપદ્ધાઃ = રજ્જ્વાદિ
 ભિર્નિન્ધન પ્રાપિતાઃ તથા-રુદ્ધાઃ=કારાગારાદો નિરુદ્ધાથ ‘તુરિય’ ત્વરિત=ત્રીઘ્રમ્
 ‘અઈધાડિયા’ અતિધાટિતાઃ=રાજપુરુષૈર્ભ્રામિતા. કુત્ર ? इत्याह-पुरवर=सकल
 नगरम् । नागरिकजनान् प्रतिदर्शिता इत्यर्थः पुनश्च ‘समप्पिया’ समर्पिताः=

અથ સૂત્રકાર “જહા ફલ દેહ” હસ ચતુર્થ દ્વાર કા પ્રતિપાદન
 કરતે હૈ—‘તહેવકેહ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તહેવ) હસી પૂર્વોક્ત પ્રકાર સે (કેહ) કિતનેક વ્યક્તિ
 (પરસ્સ દવ્વ ગવેસમાણા) પર કે દ્રવ્ય કો ચુરાને કી રોજમેં રહતે હુપ
 (ગાહિયા ય) રાજપુરુષો દ્વારા નિગૃહીત હોકર (હયાય) દણ્ડાદિકોં
 દ્વારા તાડિત કિયે જાતે હૈ (વદ્ધા) રજ્જ્વાદિકો દ્વારા બાધ દિયે જાતે હૈ
 (રુદ્ધાય) કારાગાર આદિ મેં થદ કર દિયે જાતે હૈ । (તુરિય અઈધાડિયા
 પુરવર) ઔર નગર નિવાસિયો કે સમક્ષ નગરભર મેં ઘુમાયે જાતે હૈ ।

હવે સૂત્રકાર “જહા ફલ દેહ” એ એથા દ્વારનુ પ્રતિપાદન કરે છે—
 “તહેવ કેહ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“તહેવ” પૂર્વોક્ત પ્રકારે “કેહ” કેટલાક લોકો “પરસ્સ દવ્વ
 ગવેસમાણા” પાસના દ્રવ્યને ચોરવાની શોધમાં રહે છે “ગોહિયાય” તેઓ
 રાજપુરુષો દ્વારા પકડાઈને “હયાય” દડા વગેરે દ્વારા મરાય છે “વદ્ધા”
 દોરડા આદિ વડે બધાય છે, “રુદ્ધાય” અને જેલખાના આદિમાં કેદ કરાય
 છે, “તુરિય અઈધાડિયા પુરવર” અને શહેરીઓની સમક્ષ આખા શહેરમાં

વસન=પત્ર ચેપા તે ત ગામલિનમ્પાટિવસીચિત્તમ્પ્રસન્ન મારિણ ઇત્યર્થ; 'ઉત્કોટાલ
ચનપાસુમ્મગ્ગણપરાયણેહિ' ઉત્કોટાલચનપાશ્વોન્માર્ગણપરાયણે,=ઉત્કોટાલચને=
ઉત્કોટવિશેષે 'લાંચ-ચિન્થત' इति भाषाप्रसिद्धभेदविशिष्टे पार्श्वोन्मार्गण च=
ચૌરપાર્શ્વસ્થિતચૌરિતદ્રવ્યા પ્રેષણ, તેણુ પરાયણા =તત્પરાયે તે તથા તૈ 'ગોમ્મિ-
ગમહેહિ' ગોલ્મિકમઢૈ કોટપાલૈ. 'વિવિહેહિ યથણેહિ' વિવિધૈ યન્યૈઃ હેતુ
ભૂતૈસ્તે ચૌરપુરુષાઃ યન્યન્તે इति वक्ष्यमाणेन मन्मन्थ 'किं ते' आर्पत्वातृतीयार्थे
પ્રથમા તેન સિમ્ભૂતૈસ્તૈસ્તિત્યયઃ, તથા ચ સિમ્ભૂતૈ =ચય ભૂતૈસ્તૈરન્યનૈરિ-
ત્યાહ— 'હડિનિયડવાલરજ્જુયકુડડગવરત્તલોહસકલહત્યદુયયજ્ઞપટ્ટદામકણિ-
કોટણેહિ' હડિનિગટવાલરજ્જુચ્છુદણ્ડકવનાલોહગદ્ધરહસ્તાન્દુકવર્મપટ્ટદામકણિ-
પ્કોટનૈઃ=તત્ર 'હડિ' इति काष्ठनिर्मित निगडवन्नानां 'खोडा' इति भाषा-
પ્રસિદ્ધાનિ, નિગડાનિ= લોહમયવેડી' इति प्रसिद्धानि वालरज्जुकाः=गवादि-

चीच में सिले हुए पुराने जीर्ण चन्त्र का वाचक है। (उत्कोटालचणपासु-
म्मगणपरायणेहिं) उत्क.ट, लाच-चिन्थत-में त ग चोरो के पास में रहे
हुए चुराये द्रव्यकी तपास करने में परायण ऐसे (गोम्मियमडेहिं)
गौल्मिकमड-कोटपाल (विविहेहिं यथणेहिं) नाना प्रकार के यधनों से
उन चोरो को बाध देते हैं, (किंते) वे बंधन किस प्रकार के होते सो
कहते हैं-(हडिनियडवालरज्जुयकुडडगवरत्तलोह सकलहत्यदुययज्ज्ञ-
पट्टदामकणिकोटणेहिं) (हडि) काष्ठ निर्मित बाधने का यधन विशेष,
जिसमें चोर के पैर डाल दिये जाते हैं-सो वह वहीं पर खड़ा रहता है
उधर उधर चल फिर नहीं सकता। भाषामें इसे खोडा कहते हैं।
(नियडि) निगड-लोहे की बनी हुई वेडी, वालरज्जुक गाय आदि के
वालों से बनी हुई रस्सी, कुटण्डक-जिसके अन्तभाग में काष्ठ लगे हुए

ગોડ ગોડ મ્યણે કાટેલા હોય છે અહીં “હડિ” શબ્દ વચ્ચે વચ્ચે ખીવેલા
પુગણા છાણું વચ્ચેના મૂચક છે “ઉત્કોટાલચણપાસુમ્મગ્ગણપરાયણેહિ” ઉત્કોટ,
લાચ-ચિન્થત, તથા ચોગીની પાને ગહેલ ચોગયેલ દ્રવ્યની તપાસ કરવામા
પ્રવીણ એવા “ગોમ્મિય મઢેહિ” ગૌલ્મિક ભટ-કોટપાણ “વિવિહેહિ યથણેહિ”
વિવિધ પ્રકારના બધનોથી તે ચોરાને બાધે છે “કિં તે ?” તે બધનો
કયા કયા પ્રકારના હોય છે, તે કહે છે—“હડિનિયડવાલરજ્જુયકુડડગવરત્ત-
લોહમયલહત્યદુયયજ્ઞપટ્ટદામકણિકોટણેહિ” “હડિ” હેડ — લાડડાતુ એક
સાધન, જેમા ચોગના પગ ગબવામા આવે છે તેમા પગતુ હલનચલન થઇ
શકતુ નહીં ‘નિયડિ’ નિગડ લોડાની બનાવેલી બેડી, “વાલરજ્જુક” ગાય
આદિના વાળમાથી બનાવેલ દોડુ, “કુટણ્ડક” જેને છેડે લાકડુ હોય એવા

‘તત્થ વિ’ તત્તાપિ ‘ગોમ્મિકપહારદૂમણનિન્મચ્છણકઙ્કુયવચણભેસણમભયામિ-
 ભૂયા’ ગોલ્મિકપહારદૂમણનિર્ભર્ત્સનકઙ્કુવચન મીપણકમયામિભૂતાઃ=તત્ર ગોલ્મ
 કાના=કોટપાલાના યે પ્રદારાઃ=કશાઘાઘાતાઃ દૂમણનિ=મૃચતાપાદી ઉપતાપનાનિ
 નિર્ભર્ત્સનાનિ=જાતિકુલાદિનામોચ્ચારણપૂર્વકગાલીગલૌજાદિનાનિ કઙ્કુવચનાનિ ચ
 ‘રે નીચ ! રે દુષ્ટ !’ ઇત્યાદિ રૂપાણિ મીપણકાનિ=ભયજનકાનિ ‘જીવનપર્યન્ત
 કારાગૃહ એવ ત્રિયસ્વ’ ઇત્યેયમાદિરૂપાણિ તેર્ષા ભયેન અભિભૂતા યે તે તથા
 ‘અક્ષિત્તણિવસણા’ આક્ષિત્તણિવસનાઃ = કર્પણઘર્પણાદિભિરાકુષ્ટપરિધાનવસ્ત્રા
 નગ્નીકૃતા ઇત્યર્થઃ, ‘મલિગઢહિલ્લહવસણા’ મલ્લિનદ્રણિલ્લહવસના=તત્ર મલિન
 ‘હણિ’ સીધિત ‘હણિ’ ઇતિ સીધિતસ્રગચકો દેશીશ્વરઃ, લ્લહ=ફાટિત ચ

(તત્થ વિ) વહા પર મી વે (ગોમ્મિકપહાર) કોટપાલોંકે કશા(કોઢા)દિ-
 દ્વારા પ્રદત્ત આઘાતોં કો, (દૂમણ) દૂમણો કો-મૃચતાપ આદિ મે લહે
 કરને રૂપ ઉપતાપનો કો, (નિન્મચ્છણ) નિર્ભર્ત્સનો કો-જાતિકુલ આદિ
 કે નામોચ્ચારણપૂર્વક ગાલીગલૌજ આદિકો તથા (કઙ્કુવચણ) કઙ્કુ
 વચનો કો જો કિ “અરે નીચ ! ઓ દુષ્ટ ! જીવનપર્યન્ત તૂ હસ કારા
 ગાર મે હી સહ ૨ કર મર” ઇત્યાદિરૂપ સે (ભેસણ) મયપ્રદર્શક
 હોતે હૈં-સહતે રહતે હૈં (મયામિભૂયા) ઉનકે મય સે અભિભૂત હોતે
 હૈં, તથા (અક્ષિત્તણિવસણા) કર્પણ ઘર્પણ આદિ કે કરને સે इनका
 પરિધાન વસ્ત્ર લુલ જાતા હૈ, અર્થાત્-યે નગ્ન હો જાતે હૈં-નગે કર દિયે
 જાતે હૈં । (મલિગઢહિલ્લહવસણા) એસી સ્થિતિ મે હન્હેં જો વહા વસ્ત્ર
 લહ પરિરે કો મિલતા હૈ વહ ચિલકુલ મલિન હોતા હૈ । બીચ ૨ મેં સિલા
 હુયા રહતા હૈ । તથા કહીં ૨ ફટા મી રહતા હૈ । યહા “હણિ” શબ્દ

“પવેસિદ્ધા” પૂરી હે છે “તત્થ વિ” ત્યા પશુ તે લોકે “ગોમ્મિકપહાર”
 કોટવાલો દ્વારા કરવામા આવતા ચાબુકના પ્રહારો “દૂમણ” હલન-સૂચના
 તાપમા ઉભા સળીને ડરવામા આવતુ હલન, “નિન્મચ્છણ” નિર્ભર્ત્સના-
 નાતિ કુળ આદિના ઉલ્લેખ સહિત અપાતી ગાળોને, તથા “કઙ્કુવચણ” કઙ્કુ
 વચનોને, જેમ કે “હે નીચ ! હે દુષ્ટ ! તુ આપુ જીવન આ કારાગૃહમા જ
 સડીને સડીને મર !” “ભેસણ” સહન-કર્યા કરે છે, “મયામિભૂયા” તે
 પ્રકારના લયથી લયભીત રહે છે, તથા “અક્ષિત્તણિવસણા” જે આખે થી કર
 વાથી તથા ઘસડવાથી તેમના વસ્ત્રો ખમી જાય છે-તેઓ નગ્ન થઈ જાય છે
 તેમને નગ્ન કરાય છે “મલિગઢહિલ્લહવસણા” એવી હાલતમા તેમને ત્યા જે
 વસ્ત્રખંડો પહેરવાને મળ્યા હોય છે વચ્ચે વચ્ચે થિંગડા વાળા હોય છે, તથા

હુરતરકડગ-મોડળેહિ સવ્રઢાય નીસસતા સીમાવેઢ ઝરુ-
ચાલચપ્પડગસધિવધગ તત્તસલાગસૂડ આકોડળાણિ તચ્છળ
વિમાળળાણિ ચ સ્થારકડુચ તિત્તનાવળજાયળકારળ-સયાણિ
વહુયાણિ પાવિયંતા, ઝરઘોડીદિળગગાઢપેહ્ણ-અટ્ટિકસંભગ્ગ-
સપંસુલિયા-ગલકાલક-લોહઢંડ-ઝર-ઝદર-વત્થિ-પિઢ્ઢિ-પરિપી
લિયા મત્થંતહિયય-સચ્ચુણિયંગુવંગા આળત્તિ કિં કરેંહિ
કેઢઅવિરાહિ ચ વેરિણહિ જમપુરિસસનિભેહિં પહયા તે તત્થ
મદપુળ્ળા ચઢવેલાવઢ પઢપોરાચ્છિવા કસલત્તવરત્તવેત્તપહા-
રસયતાલિયંગુવગા કિચ્છળાલચતવમ્મવળવેયળત્રિમુહિય-
મળાઘળકોઢ્ઢળનિયલજુચલ-સકોડિયમોડિયા ચ કીરતિ
નિરુચારા અસચરળા ઇયા અળ્ળાય ઇવમાઈઓ વેયળાઓ
પાવા પાવંતિ ॥ સૂ. ૧૪ ॥

ટીકા-પૂર્વોક્તા. મન્દપુળ્ળા: 'સપુઢકવાઢ-લોહપજર-ભૂમિપરનિરોહકૂચચારગ
કીલગજૂચચકવિતતવળ્ળાસખાલળ-ઝઢચલગવળ્ળાવિહમ્મળાહિય વિહેહિયતા'
તત્ર 'સપુઢકવાઢ'—સમ્પુટકપાટ = પિઢ્ઢિતકપાટ લોહપજર તથા 'ભૂમિપર'
ભૂમિગૃહ=ભૂમેરન્તગૃહ 'મોચરા' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધ ચ તત્ર યો 'નિરોહ' નિગેષઃ=
પ્રવેશન, તથા 'કૂચ' કૂપ.=અન્નકૂપ, 'ચારગ' ચારક.=ચન્દ્રિગૃહ 'કીલગ'

ફિર વે કયા ફલ પાતે હેં? સો કહતે હેં—'સપુઢકવાઢ' ઢલ્યાદિ.

ટીકાર્થ—વે ચોરજન (સપુઢકવાઢ લોહપજર-ભૂમિપરનિરોહ-કૂચ ચારગ
કીલગ—જૂચચકવિતતવળ્ળાસખાલળ—ઝઢચલળાવળ્ળાવિહમ્મળાહિય
વિહેહિયતા) (સપુઢકવાઢલોહપજર) તઢ હેં કપાટ-યુગલ જિન્હોં કે પેસે
હોહ કે પિંજરોં મેં તગા (ભૂમિપરનિરોહ) તલપગોં મેં ચઢ કર દિયે જાતે
હેં, (કૂચ) અધકૂપ મેં પટક દિયે જાતે હેં, (ચારગકીલગ)

૧. બીજી યથુ રૂળ મળે છે તે મુત્રજા છે એ—'સપુઢકવાઢલોહપજર'

ટીકાર્થ—તે ચોરને "સપુઢકવાઢલોહપજર" ઝાડ આગળવાળા લોહના
શાખા, તથા "ભૂમિપરનિરોહ" લોચનમા પૂરી દેવામા આવે છે, "૧
અધારીયા દવામા પટવામા આવે છે, "ચારગકીલગ" ઝાગશૂલમા છે

ધાલમચ્ચોરજ્જુકા, કુદ્દાકાનિ=કાષ્ઠમયપ્રાન્તભાગારજ્જુપાશાઃ પદ્માઃ=ચર્મમચ્ચો
મહારજ્જવઃ લોહશત્રલાથ = પ્રસિદ્ધા' હસ્તાન્દુકાઃ=હસ્તનિયત્રકમચ્ચનવિશેષાઃ
'વર્ધપટ્ટ' ઇતિ માપાપ્રસિદ્ધા વર્ધપટ્ટા=વર્ધપટ્ટિકા' તામકાનિ=પાટવચ્ચનરજ્જુ
વિશેષાઃ નિષ્કોટનાનિ=ચ્ચનવિશેષા એ તૈઃ 'અણ્ણેહિં ય' અન્યેશ્ચાનુક્તૈઃ
'એવમાઇએહિં' એવમાટિકૈઃ=ઉક્તપ્રકારૈઃ 'ગોમ્મિયમહોવગરણેહિં' ગોલ્મિક-
માણ્ડોપકરણૈઃ=કોટપાલાના ચોરચ્ચક્રોપકરણૈઃ, 'દુલ્લસમુદીરણેહિં' દુલ્લસમુ-
દીરણૈઃ = દુઃલ્લસાયકૈઃ 'સકોઢણમોઢણેહિં' સકોટનમોટનૈઃ=સકોચનાનિ
હસ્તપાદાદીના મોટનાનિ ગલાદીનિ તૈઃ 'મદ્દપુણ્ણા' મન્દપુણ્ણાઃ=પાપિનોડ્દત્ત-
ગ્રાહિણઃ 'વજ્જતિ' વચ્ચન્તે=ચ્ચન પ્રાપ્તુર્યાન્ત ॥ મૂ ૧૩ ॥

પુનસ્તે કિં ફલ પ્રાપ્તુર્યાન્ત ? દૃષ્ટાદ— સપ્પ' ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—સપુડકવાડલોહપજર-ભૂમિધર-નિરોહકુવચારગ-
કીલગજૂવચક-વિતતવધળાખભાલણ-ઉદ્ધચલણ વધળ વિહ-
મણાહિ ય વિહેડિયતા અહકોડગગાઢરસિરવદ્ધુદ્ધપૂરિય-

હોં એસી દોરીકી ફાસી, ઘરત્રા-ચમદે સે ઘનાઈ ગઈ રસ્તી, (લોહસકલ)
લોહકી સાંકલ, (હત્થદુય) હસ્તાન્દુક-રચનરુઢી, (વજ્જપટ્ટ દામકણિકો
હોણેહિં) વર્ધપટ્ટ-ચમડેકી પટ્ટિકાઈં ઓર દામનક-પૈરોં કો વાંધને કે વધન
વિશેષ હૈ, નિષ્કોટન-વધનવિશેષ હૈ, इन धनो से (अण्णेहिं एवमा-
इहिं) तथा इन धनोसे अतिरिक्त जो और भी (गोम्मिय मडोवगरणेहिं)
उनकोतवालो के चोरों को बांधनेके लिये उपकरण विशेष है कि जो (दुल्ल-
समुदीरणेहिं) बहुत ही अधिक दुःखप्रद होते हैं उनसे, एव (सकोडणमो-
डणेहिं) हस्त पैर आदि सकोचन से तथा गले वगैरह के मोटन से (मदपु-
ण्णा) वे अभागें चोर (वज्जति) धननोंको प्राप्त होते हैं ॥ सू-१३ ॥

દોરડાને કાસો વરત્રા-ચામડાની દોરી, “લોહસકલ” લોહાની સાકળ, “હત્થ
દુય” હાથકડી, “વજ્જપટ્ટદામકણિકોહોણેહિં” વર્ધપટ્ટ ચામડાની પટ્ટીઓ, અને
દામનક-પગ બાંધવાનું ખાસ બધન, નિષ્કોટન-એક પ્રકારનું બધન-આદિ
બધનેાથી “અણ્ણેહિં એવમાઇએહિં” તથા તે સિવાયના બીજા બધનેા કે
“ગોમ્મિયમહોવગરણેહિં” જેમનેા ચોરને બાંધવાને માટે કોટવાળેા ઉપયોગ
કરે છે અને જે “દુલ્લસમુદીરણેહિં” બધનેા અત્યંત દુઃખદાયક હોય છે,
અને જેનાથી “સકોઢણમોઢણેહિં” હાથ પગ આદિનું સકોચન તથા ગળા
વગેરેનું મોટન (મરોડવાની ક્રિયા) તે “મદ્દપુણ્ણા” ઢમનસીબ ચોરો
“વજ્જતિ” અનુભવે છે ॥ સૂ-૧૩ ॥

ફુરતરકડગ-મોડળેહિ સવદ્રાય નીસસતા સીમાવેઢ ઝરુ-
ચાલચપ્પડગસધિવધળ તત્તસલાગસૂઝ આકોડળાણિ તચ્છળ
વિમાળળાણિ ય ચારકડુય તિત્તનાવળજાયળકારળ-સયાણિ
વહુયાણિ પાવિયંતા, ઝરઘોડીદિળગાઢપેછળ-અટ્ટિકસમગ્ગ-
સંપસુલિયા ગલકાલક-લોહદડ-ઝર-ઝદર-વરિય-પિટ્ટિ-પરિપી
લિયા મત્થંતહિયય-સચ્ચુણિયગુવંગા આળત્તિ કિ કરોહિ
કેઙ્ઁઅવિરાહિ ય વેરિણહિ જમપુરિસસંનિભેહિ પહયા તે તત્થ
મંદપુળ્લા ચડવેલાવઢ પટ્ટપોરાચ્છિવા કસલત્તવરત્તવેત્તપહા-
રસયતાલિયંગુવગા કિવળાલવતવમ્મવળવેયળવિમુહિય-
મળાઘળકોટ્ટળનિયલજુયલ-સંકોડિયમોડિયા ય કીરત્તિ
નિરુચ્ચારા અસચરળા ણયા અળ્લાય ણમાઙ્ઁઓ વેયળાઓ
પાવા પાવતિ ॥ સૂ ૧૪ ॥

ટીકા-પૂર્વોક્તાઃ મન્દપુળ્લાઃ ‘સપુઢકવાઢ-લોહપજર-ભૂમિઘરનિરોહકૂવચારગ
કીલગજૂવચકવિતતપળ-સ્વમાલળ-ઝદ્ધચલગવળ-વિહમ્મળાહિય વિહેડિયતા’
તત્ર ‘સપુઢકવાઢ’-સમ્પુટકપાટ = પિહિતરૂપાટ લોહપજર તથા ‘ભૂમિઘર’
ભૂમિગૃહ=ભૂમેરન્તગૃહ ‘મોવરા’ ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધ ચ તત્ર યો ‘નિરોહ’ નિરોધઃ=
પ્રવેશન, તથા ‘કૂવ’ કૂપઃ=અન્વકૂપ., ‘ચારગ’ ચારકઃ=ચન્દિગૃહ ‘કીલગ’

ફિર વે કયા ફલ પાતે હૈ ? સો કહતે હૈ-‘સપુઢકવાઢ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ-યે ચોરજન (સપુઢકવાઢ લોહપજર-ભૂમિઘરનિરોહ કૂવ ચારગ
કીલગ-જૂવચકવિતતપળ-સ્વમાલળ-ઝદ્ધચલળવળ-વિહમ્મળાહિય
વિહેડિયતા) (સપુઢકવાઢલોહપજર) વદ હ કપાટ-યુગલ જિન્હોં કે એસે
લોહ કે પિંજરોં મેં તથા (ભૂમિઘરનિરોહ) તલઘરોં મેં વદ કર દિયે જાતે
હૈ, (કૂવ) અધકૂપ મે પટક દિયે જાતે હૈ, (ચારગકીલગ) વદિગૃહ મેં

૧. ખીલુ કયુ ઇળ મળે છે તે સૂત્રકાર કહે છે-“સપુઢકવાઢલોહપજર” ઇત્યાદિ
ટીકાર્થ-તે ચોરને “સપુઢકવાઢલોહપજર” બધ બારણાવાળા લોઢાના પાત્ર
રામા, તથા “ભૂમિઘરનિરોહ” લોથરામા પૂરી દેવામા આવે છે, “કૂવ”
અધાગીમા પટવામા આવે છે, “ચારગકીલગ” ઝારાગૃહમા હાથડી

કીલકા: 'ચૂટા' इति प्रसिद्धा 'जूब' यूपा.=स्तम्भविशेषा: 'चक्क' चक्राणि
 रथाङ्गानि 'पहिया' इति भाषा प्रसिद्धानि तेषु पितृवन्धन=याहुजहादिविना-
 टनेन नियन्त्रण तथा 'खमालण' स्तम्भालन=स्तम्भैः-सह रज्ज्वादिमिरावेष्टनं
 गले रज्जु उद्ध्या स्तम्भेषु समालम्बन या तथा 'उद्धचलणवधण' ऊर्ध्वचरणन्यन
 च=पादयोरुपरिकृत्य वन्धनगित्यादिर्या 'विहम्मणाहि' विपर्ययाः=पीडास्ताभिः
 'विहेडियता' विहेड्यमाना=पीड्यमानाः सकोटिता मोटिताः क्रियन्त इत्यग्रेण
 सम्बन्धः । तथा—'अहकोडगगाढउरसिरबद्धउद्धपूरियफुरतउरकडगमोडणेहि'
 अथः कोटरगाढोरः शिरोउद्धोर्ध्वपूरितस्फुरदुरःफण्डकमोटनैः, तत्र--अथः
 कोटकेन=अथो नमयनेन गाढम्=अत्यर्थमुरसि=गस स्थले शिर'=मस्तकं बद्ध येषां
 ते तथा अतएव ऊर्ध्वपूरिताः=श्वासप्रश्वामैः पूरितशरीरोर्ध्वभागास्तथा स्फुरदुरः
 फण्डकाश्च=रुम्पमानवक्ष स्थलपृष्ठास्थिका ये चौरास्तेषां यानि मोटनानि=पुनः पुन

હથકડી આદિ મેં ઘાથ દિયે જાતે હૈં, ચૂટોં પર લટકા દિયે જાતે હૈં, (જૂબ)
 સ્તંભવિશેષોં સે જકફ કર ઘાથ દિયે જાતે હૈં, (ચક્ક) પહિયોં સે (વિત
 તત્તવધણ) હાથ પૈર યાદર નિકાલકર રક્ષિયોં સે વહુત બુરી રતહ સે
 જકફ દિયે જાતે હૈં, (ખમાલણ) વડે ૨ રખોં કે ઉપર ગલે મેં રજ્જુ
 આદિ ઘાથકર લટકા દિયે જાતે હૈં । તથા (ઉદ્ધચલણવધણ) પૈરોં મેં
 રસ્સી આદિ સે ઘાથકર મુંહ નીચા કરકે વૃક્ષાદિકો મેં લટકા દિયે જાતે
 હૈં । (વિહમ્મણાહિય) ઇસ પ્રકાર કી-વિવિધ પ્રકાર કી પીડાઓં સે બે
 (વિહેડિયતા) પીડિત કિયે જાતે હૈં । તથા (અહકોડગાઢઉરસિરબદ્ધ
 ઉદ્ધપૂરિયફુરતઉરકડગમોડણેહિ) (અહકોડગાઢઉરસિરબદ્ધપૂરિય)
 ઇનકા મસ્તક ઇતને અધિક રૂપ મેં નીચે ઝુકાયા જાતા હૈં કિં જિસસે
 વહ વક્ષસ્થલ પર આકર ચિપક જાતા હૈં, ઓર ઇસી કારણ શ્વાસ ઉચ્છ-
 વાસોં સે ઇનકા શરીર કા ઉર્ધ્વભાગ પૂરિત હોતા રહતા હૈં, (ફુરતઉર

આદિ) વડે બાધવામા આવે છે, ચૂટા ઉપર લટકાવવામા આવે છે, “જૂબ”
 સ્થભો સાથે બાધવામા આવે છે, “ચક્ક” ચક્રોથી બંધવામા આવે છે
 “વિતતવધણ” હાથ પગ દોરડા વડે ઘણી જ અરાજ રીતે બાધવામા
 આવે છે “ખમાલણ” મોટા મોટા થાલલાઓ ઉપર ગળે દોરડા
 બાધીને લટકાવવામા આવે છે, તથા “ઉદ્ધચલણવધણ” પગે દોરડા
 બાધીને વૃક્ષાદિ ઉપર બંધે માથે લટકાવવામા આવે છે, “વિહમ્મણાહિય” આ
 પ્રકારની વિવિધ યાતનાઓથી તેમને “વિહેડિયતા” પીડવામા આવે છે
 તથા “અહકોડગાઢઉરસિરબદ્ધપૂરિય” તેમના મસ્તકને એટલું બધું નીચે
 નમાવવામા આવે છે કે જેથી તે છાતી ઉપર ચોટી બાથ છે, અને તે કારણે
 શ્વાસોચ્છવાસથી તેમના શરીરનો ઉર્ધ્વભાગ પૂર્ણ રહે છે, “ફુર”

મર્દનપૂર્વકમુધ્વાધ' કરુણાદીનિ તૈર્વિદેહ્યમાના ઇતિ પૂર્વેણ સમ્યન્થ । તથા 'સવદ્ધા' સમદ્ધા:=રજ્જ્વાદિભિદ્ધવદ્ધાઃ સન્તઃ ' નીસસતા ' નિઃશ્વસન્તઃ=નિશ્વાસ યિમુશ્વત ' સીસાવેદઠુરુયાલ્-વપ્પડગસધિવધનતત્તસલાગમ્સૂહઆકોહણાણિ' શીર્ષાવેષ્ટનોરુદાર-વપ્પડસધિવન્થનતત્તગલાકામુચ્યાકુટ્તનાનિ=શીર્ષાવેષ્ટન=આર્દ્રચર્માદિભિઃ શિરોવ-ન્થનમૂરુદારઃ=જઙ્ઘાવિદારણ ચપ્પડગસન્ધિવન્થન=' ચપ્પડગ ' ઇતિકાષ્ઠ્યન્ત્રવિ-શેષસ્તેષાં કાષ્ઠ્યન્ત્રવિશેષાણા સન્ધિસ્થાનેષુ જાનુરૂપંરારાદિષુ વન્થન, તથા તપ્પાના શલાકાના=લોહકીલકાનાં મુચીનાં ચ=પ્રતીતાનામાકુટ્તનાનિ=શરીરે પ્રવેશનાનિ યાનિ તાન્યેતાનિ, તથા-' તચ્છણવિમાણણાણિ ' નક્ષણવિમાનનાનિ=વાસિભિસ્ત

કઢગ) इनके वक्षस्थल की तथा पृष्ठभाग हड्डियाँ कपित होने लग जाती हैं । (मोड़णेहिं) धार २ इन चोरो का वे कोतवाल लोग मर्दन करते हैं धार २ ऊँचे नीचे उठाते बैठते हैं, इस तरह से बहुत दुःखित करते रहते हैं । (समद्धा) रज्ज्वादिक से ईन्हें बहुत ही दृढ़ता के साथ हाथ पैर आदि अवयवों में बाध देते हैं (नीससता) इस कारण जोर २ से हाँफने लग जाते हैं । (सीसावेदठुरुयाल-वप्पडसधिवधनतत्तसलाग सूह आकोडणाणि) (सीसावेद) गोले चमड़े आदि से इनका शिर बाध दिया जाता है, (उरुयाल) ऊरुद्वार-जघाएँ इनकी इतनी अधिक चौड़ी करवाई जाती है कि जिससे उनका विदारण (तूट जाना) हो जाता है । (चप्पडग-सधिवधणा) जानुऊपर (कोणी) आदि सधि स्थानोंमें एक प्रकारके काष्ठयंत्र बाध दिये जाते हैं तथा (लोहसलाग) शरीरमें तसलोहे की शलाईयों से दाग दिये जाते हैं और (सूई आकोडणाणि) गरम लोहेकी सूईया उसमें प्रविष्ट की जाती हैं, तथा (तचछणविमाणणाणि) बमूला आदिसे

તેમની છાતી તથા પીઠના હાડકા ડપવા લાગે છે, “ માઢ્ઢેહિં ” તે ઓરોતુ તે કોટવાણો વારવાર મર્દન કરે છે તેમને વારવાર બેઠ બેસ કરાવે છે, અને એ રીતે તેને બહુ બ દુઃખ છે “ સમદ્ધા ” તેમના હાથ પગ આદિ અવયવોને દોરડા આદિ વડે મજબૂત રીતે બાંધી દેવામાં આવે છે, “ નીસસતા ” તે કારણે તે બિચારા હાફી બન્ય છે “ સીસાવેદ ” લીના આમડા આદિથી તેમના શિર બાંધી દે છે, “ ઉરુયાલ ” તેમની બધ એટલી બધી પહોળી કરવામાં આવે છે કે તે કારણે તેમનું વિદારણ થાય છે, ‘ ચપ્પડગસધિ વધણા ’ બહુ ફપર (ગુદા) આદિ માધાવાળી જગ્યાઓમાં એક પ્રકારના કાષ્ઠ્યત્ર બાંધી દેવામાં આવે છે, તથા “ લોહસલાગ ” તપાવેલા લોહાના સળિયાઓ વડે શરીર પર ડામ દેવામાં આવે છે, અને “ સૂહઆકોહણાણિ ” ગરમ કરેલી લોહાની સોયો શરીરમાં ભેકવામાં આવે છે, તથા “ તચ્છણ વિમા

કોલકા: 'લૂટા' હિત પ્રસિદ્ધા: 'જૂબ' યુવા. = સ્તમ્ભવિશેષા: 'ચક્ક' ચક્રાણિ
 સ્યાન્નાનિ 'પહિયા' હિત માપા પ્રસિદ્ધાનિ તેષુ પિત્તવચ્ચન = ગાદુનદ્વાદિવિચા-
 ટનેન નિયન્ત્રણ તથા 'સ્વમાલણ' સ્તમ્ભાલનન = સ્તમ્ભ: - સદ રજ્જગાદિમિરાવેષ્ટન
 ગલે રજ્જુ વદ્ધ્યા સ્તમ્ભેષુ સમાલમ્બન ચ તથા 'ઉદ્ધચલણવધન' ડર્વચરણવચ્ચન
 ચ = પાદયોરુપરિકૃત્ય વચ્ચનગિત્યાદિર્યા 'વિહમ્મણાહિં' વિચર્યાગા: = પીડાસ્તામિ:
 'વિહેડિયતા' વિહેડિયમાના = પીડ્યમાના: સકોટિતા મોટિતા: ક્રિયન્તે ઇત્યગ્રેણ
 સમ્બન્ધ: । તથા — 'અહકોડગગાઢરસિરવદ્ધપૂરિયફુરતરકડગમોડળેહિં'
 અથ: કોટકગાઢોર: શિરોવદ્ધોર્વપૂરિતસ્ફુરદુર: કાણ્ડકમોટનૈ', તત્ર — અથ:
 કોટકેન = અથો નમયનેન ગાઢમ્ = અત્યર્થમુરસિ = વક્ષ સ્થલે શિર' = મસ્તકં વદ્ધ યેષા
 તે તથા અતદ્વ ડર્વપૂરિતા: = શ્વાસપ્રથામૈ: પૂરિતશરીરોર્વમાગાસ્તથા સ્ફુરદુર:
 કાણ્ડકાશ્વ = કમ્પમાનવક્ષ સ્થલપૃષ્ઠાસ્થિકા યે ચૌરાસ્તેષાં યાનિ મોટનાનિ = પુન: પુન:

હથકડી આદિ મેં ઘાથ દિયે જાતે હેં, છૂટો પર લટકા દિયે જાતે હેં, (જૂબ)
 સ્તમ્ભવિશેષોં સે જકડ કર ઘાથ દિયે જાતે હેં, (ચક્ક) પહિયોં સે (વિત-
 તવધન) હાથ પૈર યાહર નિકાઠર રસિયોં સે વદ્ધત વુરી રતહ સે
 જકડ દિયે જાતે હેં, (સ્વમાલણ) વડે ૨ લખોં કે ઉપર ગલે મેં રજ્જુ
 આદિ ઘાથકર લટકા દિયે જાતે હેં । તથા (ઉદ્ધચલણવધન) પૈરોં મેં
 રસ્સી આદિ સે ઘાથકર મુંહ નીચા કરકે વૃક્ષાદિકો મેં લટકા દિયે જાતે
 હેં । (વિહમ્મણાહિં) ઇસ પ્રકાર કી-વિવિધ પ્રકાર કી પીડાઓં સે બે
 (વિહેડિયતા) પીડિત કિયે જાતે હેં । તથા (અહકોડગગાઢરસિરવદ્ધ
 ઉદ્ધપૂરિયફુરતરકડગમોડળેહિં) (અહકોડગગાઢરસિરવદ્ધપૂરિય)
 ઇનકા મસ્તક ઇતને અધિક રૂપ મે નીચે ડુકાયા જાતા હેં કિ જિસસે
 વહ વક્ષસ્થલ પર આકર ચિપક જાતા હે, ઓર ઇસી કારણ શ્વાસ ઉચ્છ-
 વાસોં સે ઇનકા શરીર કા ડર્વમાગ પૂરિત હોતા રહતા હે, (ફુરતર

આદિ વડે ઘાથવામા આવે છે, છૂટા ઉપર લટકાવવામા આવે છે, "જૂબ"
 સ્થલો સાથે ઘાથવામા આવે છે, "ચક્ક" ચક્રોથી જકડવામા આવે છે
 "વિતતવધન" હાથ પગ દોરડા વડે ઘણી જ ખરાબ રીતે ઘાથવામા
 આવે છે "સ્વમાલણ" મોટા મોટા થાલલાઓ ઉપર ગળે દોરડા
 બાંધીને લટકાવવામા આવે છે, તથા "ઉદ્ધચલણવધન" પગે દોરડા
 બાંધીને વૃક્ષાદિ ઉપર બંધે માથે લટકાવવામા આવે છે, "વિહમ્મણાહિં" આ
 પ્રકારની વિવિધ યાતનાઓથી તેમને "વિહેડિયતા" પીડવામા આવે છે
 તથા "અહકોડગગાઢરસિરવદ્ધપૂરિય" તેમના મસ્તકને એટલું બધું નીચે
 નમાવવામા આવે છે કે જેથી તે છાતી ઉપર ચોટી નીચે છે, અને તે કારણે
 શ્વાસોચ્છવાસથી તેમના શરીરનો ઉર્ધ્વભાગ ખૂણું રહે છે, "ફુરતરકડગ"

સપશુલિકાનિ=પાર્શ્વાસ્થિસહિતાન્યસ્થીનિ યેપા તે તથા ઊરસિ મહાકાષ્ઠસ્ય-
ચાલનેન ભગ્નપાર્શ્વાસ્થિકા इत्यर्थ , 'ગલકાલકલોહદટ્ઠરુરુદરવત્થિપિટ્ટપરિપીલિયા'
ગલકાલકલોહદટ્ઠરુરુદરવત્થિપિટ્ટપરિપીલિયા:=ગલ ઇવ=મત્સ્યભેદકકેટકપત્
કાલકલોહદટ્ઠ:=ક્યામલોહદટ્ઠસ્તેનોરસિ=વક્ષઃસ્થલે, ઉદરે વસ્તી=નાભ્યધોગુહ્ય-
પ્રદેશે પૃષ્ઠે ચ પરિપીલિયા:=આહતા યે તે તથા, 'મત્થતહિયયસચુણિયગુવગા '
મધ્યમાનહૃદયસચૂર્ણિતાદ્ગોપાદ્ગા:=તત્ર મધ્યમાન=મહાકાષ્ઠાદિભિર્વિલોત્યમાન
હૃદય=વક્ષઃસ્થલ યેપા તે મધ્યમાનહૃદયાઃ, તથા કઠોરભૂમ્યાદૌ ઘર્ષણાદિના સચૂ-
ર્ણિતાન્યદ્ગાનિ=શિર ઊર ઉદર પૃષ્ઠવાહુદ્વયચરણદ્વયલક્ષણાદ્ગાનિ ઊગાદ્ગાનિ ચ=
કર્ણનાસિકા કરચરણાશ્લુયાદીનિ યેપા તે સચૂર્ણિતાદ્ગોપાદ્ગાથ યે તે તથા, એતે પાપા
વેદનાઃ પ્રાપ્તુવન્તીત્યગ્રેણ સમ્બન્ધઃ । 'કેઈ' કેચિત્=કેચન 'અવિરાહિય-વેરિઈ'ઈ

ગપસુલિયા) उनकी पासली सहित हड्डियां पीस जानी है तब, तथा
(गलकालकलोहदट्ठरुउदरवत्थिपिट्ठपरीपीलिया) (गल) मत्स्य
भेदक केटक की तरह (कालकलोहदट्ठ) काठे लोहे के दण्ड से (उर
वक्षस्थल, (उदर) पेट, (वत्थि) वस्ति-नाभि के नीचे का गुह्यप्रदेश,
एव (पिट्ठ) पृष्ठ इन स्थानों पर जब वे (परिपीलिया) आहत होते हैं
तब, तथा (मत्थतहिययसचुण्णियगुवगा) (मत्थतहियय) जब उनका
हृदय महाकाष्ठ आदि से मथित किया जाता है तब, तथा (सचुण्णिय-
गुवगा) कठोर भूमि के ऊपर घर्षण आदि से जब उनके अंग और
उपांग अच्छी तरह चूर्णित हो जाते हैं तब, बहुत ही अधिक दुःखी
होते हैं । शिर, उर, उदर, पृष्ठ, बाहुद्वय और चरणद्वय, ये आठ अंग
हैं । तथा कर्ण, नासिका, कराशुली एव चरणगुली आदि उपांग हैं ।
इस प्रकार ये (केइ) कितनेक अदत्तग्राही चोर (अविराहियवेरिइहि)

તેમની છાતી ઉપર ઘણા ભારે વજનવાળી લાકડાની ઘોડી "દિણ્ણગાઢવેલ્લળ"
ખેચીને આમ તેમ ફેરવવામા આવે છે, ત્યારે "અટ્ઠિક સમગ્ગપસુલિયા"
તેમની પાસળીઆના હાકડા પીસાઈ બાથ છે, તથા "ગલ" માછલીને વીધનાર
ઝાટાની જેમ "કાલકલોહદટ્ઠ" લોઢાના કાળા દડા વડે "ઉર" છાતી
"ઉદર" પેટ, "વત્થિ" બસ્તિ-શુદ્ધ પ્રદેશ, અને "પિટ્ઠ" પીઠ વગેરે સ્થાનો
પર બ્યારે "પરિપીલિયા" તેમને માર પડે છે ત્યારે, તથા "મત્થત હિય
ય સચુણ્ણિયગુવગા" "મત્થત હિયય" બ્યારે તેમના હૃદયનુ મહાકાષ્ઠ આદિ
દ્વારા મથન કરવામા આવે છે ત્યારે, તથા "સચુણ્ણિયગુવગા" કઠણુ જમીન
ઉપર ઘસડવાને લીધે બ્યારે તેમના અંગ ઉપાગોનો સારી રીતે ચૂરો થાય
છે ત્યારે તેઓ ઘણા જ દુ ખી થાય છે શિર, ઉર, ઉદર પૃષ્ઠ, બે હાથ અને
બે પગ એ આઠ અંગો ગણાય છે તથા કાન, નાક, હાથ પગના આગળા
વગેરે ઉપાગો કહેવાય છે એ પ્રમાણે તે "કેઈ" કેટલાક અદત્તગ્રાહી-ચોર,

ક્ષણાનિ=રાસીભિ કાષ્ટસ્યેવ ગાત્રક્ષોભનાનિ, વિમાનાનિ=ગાત્રીપ્રદાનાદિભિર્વિ-
વિધરીત્યાપમાનકરણાનિ તથા ' સ્વારકઙ્કુયતિત્તનાવળજાયણકારણસયાણિ ' સ્વાર
કઙ્કુયતિત્તનાવળજાયણકારણશતાનિ = તત્ર સ્વારણિ=મર્જીસ્વારાદીનિ યદુકાનિ=
નિમ્બાદીનિ તિત્તકાનિ ચ=મરીચાદીનિ તેષાં ' નાવળ ' इति મુલનાસિકાદી
પ્રક્ષેપણ, તદાદીનિ યાનિ યાતનાકારણશતાનિ=વિવિધવેદનાકારણશતાનિ તાનિ
' વહુયાણિ ' વહુકાનિ ' પાવિયતા ' પ્રાપ્તુન્તઃ, ' ઉરઘોડીદિણ્ણગાઢપેલ્લણ-
અટ્ટિકમમગ્ગસપ્પસુલિયા ' ઉરઘોડીદત્તગાઢપ્રેરણસમગ્ગાસ્થિકમપથુલિકા' = તત્ર
ઉરસિ=વક્ષઃસ્થલે દત્તાઃ=સ્થાપિતાઃ યા ઘોડી ' ઘોડી ' इति પ્રસિદ્ધ મદાકાષ્ટ
તસ્યા ગાઢમ્=અત્યર્થે યત્પ્રેરણ=ઘર્ષણપૂર્વક સચ્ચાલન તેન સમગ્ગાનિ=પ્રુટિતાનિ

उनके शरीर को ठीलते हैं और विमानन गाली आदि से उनको अप-
मानित करते हैं । (स्वारकङ्कुयतित्तनावणजायणकारणसयाणि) (स्वार)
मुख नासिका आदि में सर्जी स्वार आदि स्वार पदार्थों का (कङ्कुय)
आदि कङ्क पदार्थों का एव (तित्त) मरीचि आदि तित्त पदार्थों का चूरण
(नावण) प्रक्षिप्त किया जाता है, (जायणकारणसयाणि) इत्यादि रूपसे
(कारणसयाणि) वेदना प्रदानके जितने भी सैकड़ों प्रकार हैं उन सबका
उन द्रव्य हरण करनेवाले चोरोपर प्रयोग किया जाता है । इस तरह (वहु
याणि) बहुत प्रकारकी घोरतिघोर वेदनाको (पावियता) प्राप्त हुए वे जीव
(उरघोडीदिण्ण गाढ पेल्लण अट्टिक सभग्गसप्पसुलिया) (उरघोडी) जब
उनके वक्षःस्थल पर बहुत अधिक चोखवाली काष्ठ की घोडी (दिण्णगा
ढपेल्लण) इधर से उधर खेंचकर फिराई जाती है इससे (अट्टिकसभ

ગણાણિ ” વાસલા આદિથી તેમના શરીરને ઢોલે છે, અને ગાળો આદિથી
તેમને અપમાનિત કરે છે “ સ્વારકઙ્કુયતિત્તનાવળજાયણકારણસયાણિ ” “ સ્વાર ”
મુખ, નાક આદિમા સાણખાર આદિ સ્વાર યુક્ત પદાર્થોની “ કઙ્કુય ”
લીઝોળી આદિ કડવા પદાર્થોની, અને “ તિત્ત ” મરચા આદિ તીખા પદાર્થોની
ભૂકી “ નાવળ ” નાખવામા આવે છે, “ જાયણકારણસયાણિ ” ઇત્યાદિ
પ્રકારની પીડા પહોચાડવાની જે સેકડો પદ્ધતિયો છે, તે બધીને તે દ્રવ્ય
હરણ કરનારા ચોરો ઉપર પ્રયોગ કરવામા આવે છે, આ રીતે “ વહુયાણિ ”
અનેક પ્રકારની ભયઝરમા ભયકર વેદનાઓ “ પાવિયતા ” તે લોકો અનુભવે
છે “ ઉરઘોડીદિણ્ણગાઢપેલ્લણઅટ્ટિકસમગ્ગસપ્પસુલિયા ” “ ઉરઘોડી ” ન્યારે

તથા 'લપ્તચમ્મવળયેયણવિમુહિયમગા' લમ્પમાનર્મગ્ગવેદનાધિમુશ્વિતમનસઃ=લમ્પમાનચર્માણિ=ગલ્લચર્માણિ યાનિ પ્રગાનિ=ત્તાનિ 'પ્રાગ' ઇતિ પસિદ્ધાનિ તેષા યા વેદનાઃ=પીડાઃ તાભિઃ વિમુશ્વિત=ચાર્યકરુણાદ્ વિરક્ત મનો યેષા તે તથા, 'ઘણકોટ્ટણનિપલજુયસંકોટિયમોટિયાય' પ્રજુટ્ટનનિગડયુગલમકોટિત-મોટિતાશ્ર=તત્ર ઘનકુટ્ટનેન=લોહમયમુદ્રતાડનેન નિગડયુગલેન=ગ્રન્થલાદ્યયન્ધને-નેત્યર્થઃ, સકોટિતા=મહોચિતા મોટિતા=ચક્રીકૃતાય ચે તે તથા 'કીરતિ' 'ક્રિયન્તે=રાજપુરુષેરિતિર્ગ્રેણ સમ્પન્નઃ। તથા નિરુચારાઃ=નિરુદ્ધમૂત્રપુરીષોત્તમર્ગાઃ, યદ્વા-નિરુચારા=અપીટામતીકારાર્થમેકશબ્દોચ્ચારણમાત્રમપિકર્તુમશક્તાઃ, અતઃ એવમચરણા=ગમનાગમનવર્જિના. ઈદમ્માનમતિવદ્વા એવ 'પાવા' પાપાઃ=પાપ-

પત્ર ઘને દુષ્ણ તથા (લપ્તચમ્મવળયેયણવિમુહિયમગા) (લપ્તચમ્મ) કોટ્ટો આદિ કી માર સે શરીર કી જ્વાલ વિંચ જાને કે કારણ લટકતે દુષ્ણ ચમડે સે યુક્ત (ઘણ) પ્રાગ્નો કી (વેયણ) વેદના સે (વિમુહિય-મગા) જિનકા મન ચાંગી કરને સે વિરક્ત હો જુકા હૈ એસે, તથા (ઘણકોટ્ટણનિપલજુયલસકોટિયમોટિયાય) (ઘણકોટ્ટણ) લોહમય મુદ્રાં કી ચોટ સે, એવ (નિપલજુય) ડો સાકલોં દ્વારા ક્રિયે ગયે યધનોં કે (સકોટિયમોટિયા) જિનકા શરીર સકુચિત્ત હોકર ચક્રીકૃત્ત હો જુકા હૈ તથા (નિરુચારા) અપની પીડા કો પ્રકટ કરને કે લિયે જો એક શબ્દ કે ઉચ્ચારણ કરને મેં મી અન્નમર્ગ પ્રત્યક્ષ હ, અથવા-વેદના માર કે કારણ મલ મુત્રકા ઉત્સર્ગ જિનકા થદ હો જુકા હૈ ઓર 'હસી' કારણ જો (અમચરણા) એક હી સ્થાન મેં પ્રતિબદ્ધ રહને કે કારણ જો ચલને ફિરને મેં અસમર્થ થન જુકે હૈ એસે ચે અદસત્રાહી (પાવા) પાપી

એવી દીનદનાઓમા મૂઠાયેલા તથા 'લપ્તચમ્મવળયેયણવિમુહિયમગા' 'લપ્તચમ્મ' ડોઝડા આદિના પ્રહાગ્થી રાગીગ્ની આમડી ઉતરી જવાથી લટકતી આમડી વાળા "વળ" વાવોની વેદનાગી 'વિમુહિયમગા' જેમના મન ઓગી જવાથી વિગ્ન થઈ ગયા છે, તથા "ઘણકોટ્ટણ નિપલજુયલ સકોટિય મોટિયાય" "ઘણકોટ્ટણ" લોહમય મુદ્રા-ઓની ચોટથી અને "નિપલજુયલ" જે આડળો ઠાગ જવાયેલા બધેનાથી 'સકોટિયમોટિયા' જેમના શરીર મજાથાધને ષળી ગયા છે તથા "નિરુચારા" પોતાની વેદનાને પ્રગટ કરવાને માટે એક ડાબડ પથ્થુ બોલવાને જે અમમય છે, અથવા બેહુદ મારને લીધે જેમની મળમુત્ર આદિના ઉત્સર્ગની ક્રિયા બંધ થઈ ગઈ છે અને "અમચરણા" એક જ સ્થાનમા પૂગયેલ ગડેવાને ડારણે જેવો હલન ચલન કરવાને

અવિરાધિતવૈરિકૈઃ=નિરપરાદ્વા એવૈરિણઃ શત્રુઃ=નિષ્કારણૈરિણ ઇત્યર્થઃ, તૈઃ
 'જમપુરિસસનિમેહિં' યમપુરુષસનિમે=પરમાધાર્મિકદેવમદશૈઃ ભયોત્પાદકત્વાત્તૈ
 રેવભૂતૈઃ 'આણત્તિકિરેહિં' આશ્ણિકિરૈઃ=રાજનિદેશકારિભિ પુરુષૈઃ 'પહ્યા'
 પ્રહતાસ્તે=અદત્તાઽઽદાયિનઃ 'તત્થ' તત્ર=કારાગારે 'મદપુણ્ણા' મન્દપુણ્યાઃ=
 ભાગ્યહીનાઃ 'ચઢવેલાયદ્ધપટ્ટપોરાચ્છિવાકસલત્તવરત્તવેત્તપહારસયતાલિયગુવગા'
 'ચઢવેલાયદ્ધપટ્ટપોરાચ્છિવાકસલત્તવરત્તવેત્તપહારસયતાલિયગુવગા', તત્ર-
 ચઢવેલા=ચપેટા 'યદ્ધપટ્ટ' વર્ધપટ્ટ 'યદ્ધપટ્ટ=ચર્મપટ્ટઃ 'પોરા' લૌહકીલકાઃ,
 દેશીશબ્દોડયમ્ 'ચ્છિવા' ચિક્ષણચર્મકશા 'ચાબુક' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા, દેશી
 શબ્દોડય, કશાઃ=અશ્વાદિતાડનચર્મયષ્ટિ, 'લયા' લતા=અમ્વાદરિતવૃક્ષશાખા-
 યષ્ટિ 'છઢી' 'કામડી' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા 'વરત્ત' વરત્ત=ચર્મમયીરજ્જુઃ
 'વેત્ત' વેત્ર=વેત્રયષ્ટિ, एतेषा 'પહારસય' પ્રહારશતૈ 'તાલિયગુવગા' તાડિ-
 તાક્ષોપાક્ષા=તાડિતાન્યક્ષોપાક્ષાનિ યેષા તે તથા, 'કિવિણા' કુપણા=દીનાઃ,

વિના અપરાધ કે હી વૈરી બને હુણ-નિષ્કારણ શત્રુ ભાવ કો પ્રાપ્ત હુણ
 એસે (આણત્તિ કિરેહિં) રાજનિદેશકારી પુરુષોં કે દ્વારા કિ જો
 (જમપુરિસસનિમેહિં) યમપુરુષ-પરમાધાર્મિક જેસે હોતે હૈં (તત્થ) ઉસ
 કારાગાર મે (પહ્યા) આહત-દુઃગ્વિ કિયે જાતે હૈં । વહાં પર વે (મદ-
 પુણ્ણા) અભાગે (ચઢવેલાયદ્ધપટ્ટપોરાચ્છિવાકસલત્તવરત્તવેત્તપહારસ
 યતાલિયગુવગા) (ચઢવેલા) યપ્પટ્ટોં કે, (યદ્ધપટ્ટ) ચર્મ પટ્ટોંકે, (પોરા) પોર-
 લોહે કે લીલોં કે, (ચ્છિવા) ચિક્ષણ ચમડા કે કોડો કે (કસ) ચાબુક
 કે, (લયા) લતા-હરે વૃક્ષકી શાખા કી છઢી કે, (વરત્ત) વરત્ત-
 ચમડે કી રસી કે, વેત્તોં કે (પહારસય) સૈકડો પ્રહારોં સે (તાલિયગુ
 વગા) અગ ઉપાગોં મેં તાડિત કિયે જાતે હૈં । (કિવિણા) દીનદશાસ

"અવિરાહિય વૈરીયહિં" વિના વાકે હુશ્મન બનેલા-વિના કારણ શત્રુ બની
 બેઠેલા, "જમપુરિસસનિમેહિં" યમ દેવ બેવા "આણત્તિ કિરેહિં" રાજ
 પુરુષ દ્વારા, તે કારાગારમા "પહ્યા" પ્રહારો વડે હુ ખી કરાય છે ત્યા તે
 "મદપુણ્ણા" અભાગી લોકો "ચઢવેલાયદ્ધપટ્ટપોરાચ્છિવાકસલત્તવરત્તવેત્ત-
 પહારસયતાલિયગુવગા" "ચઢવેલા" યપ્પટ્ટાના, "યદ્ધપટ્ટ" ચર્મપટ્ટાઓના
 "પોરા" લોહના ખીલાઓના, "ચ્છિવા" ચીકણા ચામડાના કોરડાના, "કસ"
 ચાબુકના, "લયા" લીલા વૃક્ષની ડાળીઓની સોટીઓના "વરત્ત" વરતના
 ચામડાના કોરડાના અને નેતરની સોટીઓના, "પહારસય" સૈકડો પ્રહારો
 "તાલિયગુવગા" તેમના અગ ઉપાગો પર મારવામા આવે છે "કિવિણા"

ટીકા—‘ અદર્તિદિયા ’ અદાન્તેન્દ્રિયાઃ=અગ્નેન્દ્રિયાઃ ‘ વસદ્વા ’ વગાર્તા શબ્દાદિવિષય સક્તિપીડિતાઃ ‘ વહુમોહમોહિયા ’ વહુમોહમોહિતા પ્રચુરજ્ઞાનમૂઢિતાઃ ‘ પરવણમ્મિ લુદ્ધા ’ પરવને લુદ્ધા =પદ્મવ્યવળાવન્ત ઇત્યર્થઃ, ‘ ફાસિંદિયવિસયતિવ્વગિદ્ધા ’ સ્પર્શેન્દ્રિયવિષયતીવ્રદ્ધા =સ્પર્શેન્દ્રિયવિષયે સ્વ્યાદૌ ગાઢામક્તાઃ ‘ ઇતિયગયસ્વસદ્વસગવદ્વરતિમહિયમોગતળ્હાડ્યા ય ’ સ્ત્રીગતરૂપગચ્છરસગન્વેષ્ટરતિમદિતભોગવૃણ્ણાદિતાશ્ર=તત્ર સ્ત્રીગતાઃ સ્ત્રીસમ્યન્વિનોયે રૂપગચ્છરમગન્વાસ્તેષુ ઇષ્ટા=અમોક્ષિતા યા રતિઃ=રમણ તથા સ્ત્રી ગત એવ મહિતઃ = ગાન્ઢિતો યો મોગઃ= વિલાસ. તયો યા વૃણ્ણા તથા અર્દિતાઃ=પીડિતાઃ ‘ વગતોસગા ’ ધનતો-

હે ? યહ કહતે હે—‘ અદર્તિદિયા ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(અદર્તિદિયા) યે અદત્તગ્રાહી ચોર (અદર્તિદિયા) જેસે હોતે હેં કિ ઇનકી ઇન્દ્રિયા ઇનકે વગમે નહો રહતી હેં, (વસદ્વા) શબ્દાદિક વિષયોં મેં યે અધિકરૂપ મેં આસક્તિવાલે હોતે હેં, (વહુમોહમોહિયા) અજ્ઞાનકી સત્તા ઇનમેં અધિકસે અગ્રિ રહતી હેં (પરવણમ્મિ-લુદ્ધા) પરકે દ્રવ્યમેં ઇન્હેં વહુત ભારી તૃણ્ણા રહતી હેં । (ફાસિંદિયવિસયતિવ્વગિદ્ધા) સ્પર્શન ઇન્દ્રિયકે વિષયભૂત સ્ત્રી આદિ પદાર્થ મેં ઇનકી ગાઢ આસક્તિ હોતી હેં । (ઇતિયગયસ્વસદ્વસગવદ્વરતિમહિયમોગતળ્હાડ્યા ય) (ઇતિયગય) સ્ત્રી સગચી (સ્વસદ્વસગવદ્વરતિ) રૂપ ગચ્છ, રસ, ગંધમેં ઇચ્છાનુસાર રમણ કરનેકી તથા (મહિય) સ્ત્રીકે મોગનેકી વાન્ઢા ઇનમેં અધિક રહતી હેં । પરન્તુ (મોગતળ્હાડ્યા) ઇન મોગોંકી પૂર્તિ નહોં હો સકને કે કારણ યે ઇનકી તૃણ્ણાસે રાતદિન

તે સૂત્રકાર બતાવે છે—‘ અદર્તિદિયા ’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—“ અદર્તિદિયા ” તે અદત્તાશ્રાહી ચોર એવા હોય છે કે તેમની ઇન્દ્રિયા ઉપર તેમનો કાબૂ હોતો નથી, “ વસદ્વા ” ગણદાદિ વિષયોમા તે વધારે પ્રમાણમા આગ્રહ હોય છે, “ વહુમોહમોહિયા ” તેમના પર અજ્ઞાનની મક્તા વધારેમા વધારે ચાલે છે, “ પરવણમ્મિ લુદ્ધા ” પરધનની તૃણ્ણા તેમનામા બહુ વધારે હોય છે, “ ફાસિંદિયવિસયતિવ્વગિદ્ધા ” સ્પર્શેન્દ્રિયને વિષયભૂત સ્ત્રી આદિ પદાર્થોમા તેમની તીવ્ર આસક્તિ હોય છે, “ ઇતિયગયસ્વસદ્વસગવદ્વરતિમહિયમોગતળ્હાડ્યા ય ” = “ ઇતિયગય ” સ્ત્રી અગ્રધી “ રૂપમદ્વસગવદ્વરતિ ” રૂપ, ગન્ધ, અને ગંધમા ઇચ્છાનુસાર રમણ “ મહિય ” કરવાની તથા સ્ત્રીઓ માથે રતિરમણ કરવાની વાસના તેમનામા વધારે હોય છે પણ “ મોગતળ્હાડ્યા ” તે લોભો પૂરા નહી થવાને કારણે, તેમની

કારકા અદત્તહારિણો જનાઃ ‘એયા અળ્લા ય એમાદીઓ વેયળાઓ’ એતા પૂર્વોક્તાઃ, અન્યાશ્ચ અન્યપ્રકારા એમાદિમા=એવ પ્રકારનાનાપિથા વેદનાઃ = દુ સ્થાનિ ‘પાવતિ’ પ્રાપ્નુવન્તિ ॥ સૂ. ૧૪ ॥

પુનસ્તે કીદશાઃ કીદશ ફલ લભન્તે ? તદાહ—‘અદત્તિદિયા’ ઇત્યાદિ ।

મૂલ્ય—અદત્તિદિયા વસદ્દા વહુમોહમોહિયા પરધનામ્મિ
લુદ્ધા ફાસિદિયવિસયતિવ્વગિહ્ધા ઇત્થિગયરૂપસદ્દસગધ-
ઇટ્ટરદ્દમહિયમોગત્તળહાઇયા ય ધળતોસગા મહિયા ય જે નર-
ગળા પુળરવિત્તેકમ્મદુવિયદ્ધા ઉવિળીયા રાયકિફરાણં તેસિં
વહ સત્થગ—પાઢયાળ વિલ ઉલીકારગાળ લંચસયગેળહયાણં
કૂઢવડમાયાણિયહિ-આયરળ-પણિહિવચળ-વિસારયાળ વહુવિહ-
અલિયસયજપગાળ પરલોગપરમ્મુહાળ નિરયગદ્દ ગામિયાળ
તેહિ ય આળત્તજીવદ્ધા તુરિય ઉગ્ધાહિયા પુરવરેહિ સિંઘાહ-
ગતિયચઉક્કચચ્ચરમહાપહપહેસુ વેત્તદ્ધલઉદકદ્ધલેટ્ટપત્થર—પ-
ળાલિય પળોલિમુદ્ધિલત્તપાદપણિહ જાણુકોપ્પરપ્પહરસભગ્ગમહિ-
યગત્તા અટ્ટારસકમ્મકારિણો પાઇયણુવગા કલ્લુળા સુઘોદ્ધકઠ-
ગલતાલ્લ જિવ્ધા જાયતા પાણિય વિગયજીવિયાસા તળહાઇયા
વરાળા તપિ ય ન લહતિ વજ્જપુરિસેહિ ધાહિયતા ॥ સૂ. ૧૫ ॥

જીવ (એયા) ફન પૂર્વોક્ત વેદનાઓં કે તથા (અળ્લાય એવમાઈઓ)
ફનસે અતિરિક્ત ઓર ઓ નાના પ્રકાર કી (વેદળાઓ) વેદનાઓં કે
(પાવતિ) પ્રાપ્ત હોતે હ ॥ સૂ-૧૪ ॥

અવ યે અદત્તાગ્રાહી ચોર કૈસે હોકર ફિસ પ્રકારકે ફલકો ભોગલે

અસમર્થ થઈ ગયા છે, એવા તે અદત્તગ્રાહી “ પાપા ” પાપી હોવો “ એયા ”
એ પૂર્વોક્ત વેદનાઓ તથા “ અળ્લાય એવમાઈઓ ” તે ત્રિવાચની બીજી પથ
અનેક પ્રકારની “ વેયળાઓ ” વેદનાઓ “ પાવતિ ” પામે છે ॥ સૂ-૧૪ ॥

હવે અદત્તાગ્રાહી—ચોર કેવા હોય છે અને કેવા પ્રકારના માં ભોગવે છે

ग्राहकाणां=नानाविधलब्धग्राहकाणा 'स्थित खोर' इति भाषा प्रसिद्धाना तथा
'कूडकवडमायाणियडि—आयरणपणिहिवचनाविसारयाण' कूटरुपटमायानिकृ-
त्याचरणप्रणिधिअनपिगारदाना—तत्र कूट=भ्रमोत्पादन, रुपट=वेशभाषानाना-
रूपधारण माया=पारादीन् निग्रहीतु भिक्षावृत्त्यादिभिश्चन्द्रमरण, भोजनादिभिरा-
दरसत्कारकरणैर्विज्ञान निकृतिः तथा प्रणिधिअन प्रणिधिना=उलेन एकाग्रचित्तेन
वा चञ्चन, यद्वा—प्रणिधीना=राजगुप्तपुरुषाणा यद्वञ्चन तत्र विशारदाः=मागल्भा ये
ते तथा तेषा 'बहुविहअलियसयजपगाण' बहुविधालीकृतजल्पकाना=चोरादीनां

आदि की शिक्षा से ये राजपुरुष शिक्षित होते हैं (विलउलीकारगाण)
दीन-हीन आदि वचनों को मोल कर चोर आदिको का निर्णय कराने
वाले होते हैं, अर्थात्—ये राजपुरुष ऐसे निपुण होते हैं कि चोरों का पता
बहु जल्दी लगा लेते हैं, इस प्रकार की उनकी बात चीत का ढग होता
है कि जिससे “ यही चोर है ” इस बात का उन्हें ज्ञान हो जाता है ।
(लचसयणेण्हयाण) ये रिश्वतखोर—घूस खाने वाले होते हैं । तथा (कूड-
कवडमायाणियडि आयरणपणिहि—वचणविमारयाण) (कूड) कूट में—
भ्रमोत्पादन में, (कवड) कपट में—वेश भाषा के नानारूप धारण करने
में, (माया) माया में चोरोको पकड़ने के लिये भिक्षावृत्ति आदिसे छल
करने में, (नियडि आयरण) निकृत्याचरण में—भोजनादि द्वारा आदर
सत्कार से प्रतारणा करने में, तथा (पणिहिवचना) प्रणिधि—वचनमें
कोई बहाने से ठगने में, अथवा राजा के गुप्तचर पुरुषों का ठगने में,
(विसारयाण) बड़े विशारद—चतुर होते हैं । (बहुविहअलियसयजप-

ते नानुसार होय छे “ विलउलीकारगाण ” दीन-हीन आदि वचनो ओली
शेओ आदिनो निरुध करनार होय छे, ओटवे के ते राजपुरुषो ओशेने नव्वी
शेओी ठाढवामा निपुण होय छे तेभनी वातचीतनी ठम ओवी होय छे के
ओथी “ आ माणुस न ओर छे, ” ओ वात तेभने समझई नय छे “ लच
सयणेण्हयाण ” तेवो वाचीया होय छे, तथा “ कूडकवडमायाणियडि-
आयरणपणिहिवचनाविसारयाण ” “ कूड ” कूड उरवामा भ्रमोत्पादनमा,
“ कवड ” कपटमा—विविध वेश लेवामा, “ माया ” माया ओशेने पकडवाने
माटे भिक्षावृत्ति आदि छण ओववामा, “ नियडिआयरण ” निकृत्याचरणमा
भोजनादि द्वारा आदरसत्कारची प्रतारणा उरवामा तथा “ पणिहिवचना ”
प्रणिधि वचनमा, ओर पणु भडाने ठगवामा अथवा राजनो गुप्तचरने
ठगवामा, “ विसारयाण ” ओरे निपुण होय छे “ बहुविहअलियसयजपगाण ” ।

પકા = પરધનચૌર્યેણ તુપ્યન્તિ એ તે તથા રાજપુરુષૈઃ 'ગહિયાય' ગૃહીતાશ્ચ એ નરગણાઃ = ચૌરજનસમૂહાઃ પૂર્વ કોટ્ટપાલાદિભિઃ પ્રાપ્તદણ્ડાઃ 'પુનરવિ તે' પુનરવિ તે 'કમ્મદુન્વિયદ્ધા' કર્મદુર્વિદગ્ધા = અદત્તાદાનાત્કિર્મજનિતકટુકફલજ્ઞાનરહિતા. ચૌર્યકર્માપરાધેન 'તેસિં રાયક્રિકરાણ' તેષા પ્રસિદ્ધાના નિર્દયાના રાજક્રિકરાણા = રાજપુરુષાણામગ્રે 'ઉચ્ચનીયા' ઉપનીતાઃ = સમીપ પ્રાપ્તાઃ કથ ભૂતાનાં રાજક્રિકરાણામિત્યાહ 'વધસત્યગપાઢયાણ' રમશાસ્રરૂપાઠકાના = રમન્યમારણયાતનમાત્રશિક્ષાશિસિતાના 'વિલઝલીઠારગાણ' વિલઝલી = હીનદીનાદિવચનૈશ્ચૌરાદીનાં નિર્ણયઃ દેશી શબ્દોઽય, તત્ કારકાણા 'લચસયગેઠ્યાણ' લચ્ચશત-

દુઃખી હોતે રહતે હૈ । (ધનતોસણા) યદિ હન્નેં સતોપ પ્રાપ્ત હોતા હૈ તો વહ એક પરકે ધનકે અપહરણ કાનેસે હી હોતા હૈ । પરન્તુ યહ સતોપ હનકા સ્થાયી નહીં રહતા હૈ કારણ જન (જનરગણા) યે અદત્ત ગ્રાહી ચૌર લોક (ગહિયા ય) રાજપુરુષોં દ્વારા ગૃહીત પકડ લિયે જાતે હૈ, તવ (પુનરવિ તે) ફિર ખીવે વિવિધ પ્રકારકે દડોં સે હન્હે વિશેષ દુઃખ ભોગના પડતા હૈ । તથા (કમ્મદુન્વિયદ્ધા) અદત્તાદાનાદિ કર્મજનિત કટુક ફલકે જ્ઞાનસે રહિત વને હુએ ચૌર્યકર્મરૂપ અપરાધકે કારણ (તેસિં) ઝન (રાયક્રિકરાણ) નિર્દય રાજપુરુષોં કે આગે જબ (ઉચ્ચનીયા) લે જાયે જાતે હૈ તવ વે હન્નેં પ્રાણદંડ કી આજ્ઞા દેતે હૈ, તથા ઔર ખી હનકે સાથ જવા ૨ વ્યવહાર કરતે હૈ યહ વાત સૂત્રકાર સ્પષ્ટ નીચેકે અવતરણોં દ્વારા કરતે હૈ - રાજપુરુષ કેસે હોતે હૈ ? પહેલે યહ વાત સૂત્રકાર કહતે હૈ - વધસત્યગપાઢયાણ) વધ, વધ, મારણ, ઘાતન,

તુષ્ણાને કારણે તેવો સતદિન હુ ખી થયા કરે છે ' ધનતોસણા ' તેને પરધનનું અપહરણ કરવા સિવાય ખીજા કોઈ કાર્યથી સતોષ થતો નથી, પણ તેને તે સતોષ સ્થાયી હોતો નથી કારણ કે જ્યારે "તે નરગણા" તે અદત્તાગ્રાહી ચોરો: "ગહિયાય" રાજપુરુષો દ્વારા પકડાઈ જાય છે ત્યારે "પુનરવિ તે" ફરીથી પણ તેમને અનેક પ્રકારની શિક્ષાઓ દ્વારા વધારે હુ ખો લોગવવા પડે છે, તથા "કમ્મ દુન્વિયદ્ધા" અદત્તાદાન આદિ કર્મના કટુ પરિણામ જ્ઞાનથી અજ્ઞાનથી એવા તે ચોરોને, ચોરીના ગુનાને કારણે "તેસિં" તે "રાયક્રિકરાણ" નિર્દય રાજપુરુષો પાસે જ્યારે "ઉચ્ચનીયા" લઈ જવામા આવે છે ત્યારે તેમને મૃત્યુદંડની સજા થાય છે, તથા તેમની સાથે ખીજા પણ કેવો વર્તાવ રાખવામા આવે છે, તે વાતને સૂત્રકાર નીચેના, વાક્યો દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે-પહેલા તે રાજપુરુષો કેવા હોય છે, તે વાત સૂત્રકાર ખતાવે છે "વધસત્યગપાઢયાણ" વધ, વધ, મારણ, ઘાતન, આદિ વિધાઓના

અનેકમાર્ગસમ્મેલનસ્થાન મહાપથઃ=રાજમાર્ગઃ પન્થાઃ=સામાન્યમાર્ગસ્તેષુ ત્વરિત=શીઘ્રમુદ્ધાટિનાઃ=જનમમક્ષે પ્રદર્શિતાઃ ' ડમે મહાચોરા : શીઘ્રમધૈવપન્થાઃ ' ઇતિ જનસમક્ષે પ્રદર્શિતાઃ, વ્ય ભૂતા. ? ઇત્યાદિ—' વેત્ત-દડ-લડડ-કટ્ટલેદ્દુ-પત્થર-પળાલિય-પળોલિયમુદ્દિઠતપાયપણિહ-જાણુકોપ્પરપ્પહારસમગ્ગમહિયગત્તા ' વેત્ત-દડ-લડડ-કાણ્ઠ-પ્રસ્તર-પળાલી-પળોદી મુદ્દિલત્તા-પાદપાણિ-જાણુ-કર્પર-પ્રહારસમગ્ગમયિતગત્તા, તત્ર ' વેત્તદડ ' વેત્તદડઃ ' લડડ ' લકુટઃ=યષ્ટિઃ ' કટ્ટ ' કાણ્ઠ ચ=પતીત ' લેદ્દુ ' લેદ્દુ =મૃત્તિકા સ્વણ ' પત્થર ' પ્રસ્તરથ્થ=પાપાણઃ ' પળાલિય ' પળાલીઃ=પ્રકુટ્ટા, નાલી પુરુપપ્રમાણદીર્ઘયષ્ટિઃ ' પળોલી ' પળોદી =તાડનદડ્ડો, ' મુદ્દો ' મુદ્દિ. ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધ ' લત્તા ' પાદ. ' લાત ' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધ, ' પાદપણિ ' પાદપાણિઃ=ચરણપથ્થાઙ્ગઃ ' એડી ' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધ, જાણુઃ=' ઘુટના ' ઇતિ પ્રસિદ્ધ ' કોપ્પર ' કર્પરથ્થ=મુજમ યગ્રન્યિઃ ' કૃણિ ' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધ, એતેષા પ્રદારૈ ' સમગ્ગ ' સમગ્ગનાનિ=ચુદિતાનિ, ' મહિય ' મયિતાનિ ચ=મમ્મર્દિતાનિ ' ગત્ત ' ગાત્રાણિ=ગ્રીરાણિ યેષા તે તથા

નામ ચતુષ્ક, જહા અનેક માર્ગ આકર મિલે હોં ઉસકા નામ ચત્વર, રાજમાર્ગ કા નામ મહાપથ એ સામાન્યમાર્ગ કા નામ પથ હૈ । (વેત્તદડ લડડ-કટ્ટ-લડ્ડુ-પત્થર-પળાલિય-પળોલિય મુદ્દિ-લત્ત-પાયૂ-પણિહ-જાણૂ કોપ્પરપ્પહારસમગ્ગમયિતગત્તા) રાજપુરુષ ઇન ચોરોં કો (વેત્તદડ) વેતોં કે ડડોં કી માર સે, (લડડ) લકડિયોં કી માર સે, (કટ્ટ) કાણોં કી માર સે, (લેદ્દુ) મૃત્તિકાકે સ્વણોં કી માર સે, (પત્થર) પત્થરોં કી માર સે, (પળાલિય) પુરુપપ્રમાણદીર્ઘ યષ્ટિયોં કી માર સે, (પળોલિય) પળોલી-તાડન દડોં કી માર સે, (મુદ્દિ) મુદ્દિયો-મુદ્દોં કી માર સે, (લત્ત) લાનોં કી માર સે, (પાયપણિહ) એડિયોં કી માર સે, (જાણુ) ઘુટનોં કી માર સે તથા કોહનિયોં કી માર સે હટ્ટી પસલી સત્ર એક કર દેતે હોં-મતલબ યે કિ વે ઇન્હેં જો ઇનકે હાથ મેં આ જાના હૈ ઉસી સે

છે રાજમાર્ગને મહાપથ અને સામાન્ય માર્ગને પથ ડહે છે " વેત્તદડ-લડડ-કટ્ટ લેદ્દુ-પત્થર-પળાલિય પળોલિય-મુદ્દિ-લત્ત-પાયૂ-પણિહ-જાણૂ-કોપ્પર પ્પહાર-સમગ્ગમયિતગત્તા " રાજપુરુષો ને ચોરોને નેતરની સોડીઓથી, લાડડીઓથી લાડડીથી માટીના ઢેકાથી પથ્થરોથી, " પળાલિય " પુરુષ માપની લાકડીથી, " પળોલિય " દડાઓથી, મુજ્જાઓથી, લાતોથી, એડીથી, ઘુટણથી તથા કોણીથી આગી ગીતે મારે છે, એટલે કે તેમના હાથમા જે માધન આવે તેનાથી તે લોડો તેમને બહુ જ ખરાબ ગીતે માર મારે છે " અદ્ધારસકમ્મકારિણો " તે

ભેદગ્રહણાય નાનાત્રિધ મિથ્યાભાષિણ, 'પરલોકપરમ્મુદ્ધાણ' પરલોક પરાદ્મુત્તાનાં = પરલોકભયરહિતાનામિત્યર્થઃ, 'નિરયગઙ્ગામિયાણ' નરમ્ગતિગામિકાનામેવશ્રુ-
તાના રાજપુરુષાણાં પુરત ઉપનીતાઃ 'તેહિ ચ' તૈશ્વ રાજપુત્ર્યૈઃ 'આણત્તજીવદડા'
આજ્ઞસ જીવદડ્ઢાઃ=આજ્ઞસઃ=આજ્ઞાપિતઃ ગીવદડ્ઢઃ=શૂલારોપણાદિકઃ યેમ્પસ્તે તથા
આજ્ઞસમૃત્યુદડ્ઢા इत्यर्थः, તથા 'તુરિય ડગ્ગાડિયા પુરવરેહિં સિંઘાડગતિયચઠકચ
ચ્ચરમહાપદ્મપદ્મસુ' શ્રુગાટકત્રિકચતુષ્કચત્વરમહાપથપથેપુ=ત્ર-શ્રુગાટકઃ=ત્રિકો
ળમાર્ગઃ ત્રિકઃ=યત્ર માર્ગત્રયસમ્મેલન મપતિ, ચતુષ્કઃ=ચતુર્માર્ગમ્થાન ચત્વર=

ગાળ) ચૌરાદિકૌં કા ભેદ લેને કે લિયે અનેક પ્રકાર કી સૈફઝોં ઘૂટીર
ચાતે ઘનાને મે બઢે ચતુર હોતે હૈ, (પરલોકપરમ્મુદ્ધાણ) પરલોકકા ભય
હન્હે બિલકુલ નહીં હોતા હૈ । જો મનમેં આતા હૈ વહી અન્ઝા માનકર
કરતે રહતે હૈ । (નિરયગઙ્ગામિયાણ) હસી કારણ મરને પર યે નરક-
ગતિ મેં જાતે હૈ । અથ યે રાજપુરુષ ડન્હે કયા ર દડ દેતે હૈ ? સો સૂત્ર-
કાર પ્રદર્શિત કરતે હૈ (તેહિં ચ) યે રાજપુરુષ (આણત્તજીવદડા) ડન
ચોરોં કો શૂલારોપણ આદિ મૃત્યુદડ દેતે હૈ । (પુરવરેહિં) નગર કે
(સિંઘાડગતિયચઠકચ્ચરમહાપદ્મપદ્મસુ) શ્રુગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક,
ચત્વર, મહાપથ એવ પથ ડન સત્ર માર્ગોં મેં (તુરિય ડગ્ગાડિયા) શીઘ્ર
ડન્હે દિલ્લા ર કર યહ ઘોપિત કરતે હૈ કિ " દેલ્લો ભાઈયોં ! યે મહાચોર
હૈં ઓર આજ હી ડનકોં મૃત્યુદડ દિયા જાયગા । સિંઘાડે જૈસા તિકાનોં
જો માર્ગ હોતા હૈં ડસકા નામ શ્રુગાટક, જહાં ત્રીન માર્ગોં કા સમેલન હૈં
વસકા નામ ત્રિક, જિસ રાસ્તે મેં ચાર રાસ્તા આકર મિલતે હૈં ડસ કા

ચોર આદિને ભેદ બાણુવાને માટે અનેક પ્રકારની સેકડો બુઢી વાતો બનાવી
ઢાઢવામા તે નિષુણ્ણ હોય છે, " પરલોકપરમ્મુદ્ધાણ " તેમને પરલોકને ડર
બિલકુલ હોતો નથી, તેમને મનમા આવે તે જ સારુ માનીને કરે છે " નિર-
યગઙ્ગામિયાણ " તે કારણે મરીને તેઓ નરમ્ગતિમા બંધ છે ડરે તે રાજ-
પુરુષો તેમને કેવી ડેવી સજા કરે છે, તે સૂત્રડાર બતાવે છે—“ તે હિં ચ ”
તે રાજપુરુષો “ આણત્તજીવદડા ” તે ચોરોને શૂલારોપણ આદિ મૃત્યુદડ દે
છે “ પુરવરેહિં ” નગરના “ સિંઘાડગતિયચઠકચ્ચરમહાપદ્મપદ્મસુ ”
શ્રુગાટક, ચતુષ્ક, ચત્વર, મહાપથ અને પથ એ બધા માર્ગોં પર “ તુરિય
ડગ્ગાડિયા ” તેમને ઝડપથી બતાવીને એવુ બાહરે કરે છે કે “ ભાઈઓ ! બુલો,
આ મહાન ચોર છે, અને આજે જ તેને મૃત્યુદડ આપવાનો છે ” શિંગોડા
જેવા ત્રિઢોણાડાર માર્ગને શ્રુગાટક ઢહે છે, બધા ત્રણ રસ્તા મળે તે ત્રિક,
બધા ચાર રસ્તા મળે તે ચતુષ્ક, બધા અનેક માર્ગોં મળે તે ચત્વર કહે

भलन १, कुशल २, तज्जर् ३, राजभागो ४, अवलोकनम् ५ ।

अमार्गदर्शन ६, शय्या ७, पदभङ्ग ८, स्तथैव च ॥ १ ॥

विश्रामः ९, पादपतन १०, मामन ११, गोपन १२ तथा ।

खण्डस्य खादन चैव १३, तथान्यन्मोहराजिकम् १४ ॥ २ ॥

पद्या १५, ग्न्यु १६, दक्र १७ रज्जुना १८, प्रदान ज्ञानपूर्वकम् ।

एताः प्रसूतयो ज्ञेया अष्टादश मनीषिभिः ॥ ३ ॥

तत्र भन्तं=‘न भेतव्य भयता तत्र पक्षेऽहमपि सम्मिलित्यामी’त्यादि वचनैः

चोरी अटारह प्रकार की इस तरह से है—

“भलन १ कुशल २ तज्जर् ३ । राजभागो ४ अवलोकनम् ५ ।

अमार्गदर्शन ६ शय्या ७ पदभङ्ग ८ स्तथैव च ॥ १ ॥

विश्राम ९ पादपतन १० । मामन ११ गोपन १२ तथा ।

खण्डस्य खादन चैव १३ । तथान्यन्मोहराजिकम् १४ ॥ २ ॥

पद्या १५ ग्न्यु १६ दक्र १७ रज्जुना १८ । प्रदान ज्ञानपूर्वकम् ।

एताः प्रसूतयो ज्ञेया । अष्टादश मनीषिभिः ॥ ३ ॥

भलन १, कुशल २, तज्जर् ३, राजभाग ४, अवलोकन ५, अमार्ग-
दर्शन ६, शय्या ७, पदभग ८ ॥ १ ॥ विश्राम ९, पादपतन १०, आसन ११,
गोपन १२, खडखादन १३, मोहराजिक १४ ॥ २ ॥ पद्यदान १५, अग्नि-
दान १६, उदकदान १७, रज्जुप्रदान १८ ॥ ३ ॥

“तुम डरो मत-में भी तुम्हारे पक्षमें मिल जाऊंगा” इत्यादि

योदीना अटार प्रकार नीचे प्रमाणे ७—

“भलन १, कुशल २, तज्जर् ३ राजभागो ४ अवलोकनम् ५ ।

अमार्गदर्शन ६ शय्या ७ पदभङ्ग ८ स्तथैव च ॥ १ ॥

विश्राम ९ पादपतन १० मामन ११ गोपन १२ तथा ।

खण्डस्य खादन चैव १३ तथान्यन्मोहराजिकम् १४ ॥ २ ॥

पद्या १५ ग्न्यु १६ दक्र १७ रज्जुना १८ प्रदान ज्ञानपूर्वकम् ।

एताः प्रसूतयो ज्ञेया अष्टादश मनीषिभिः ॥ ३ ॥

(१) भलन, (२) कुशल, (३) तज्जर् (४) राजभाग (५) अवलोकन, (६)
अमार्गदर्शन, (७) शय्या, (८) पदभग ॥ १ ॥ (९) विश्राम, (१०) पादपतन
(११) आसन, (१२) गोपन, (१३) अखादन, (१४) मोहराजिक ॥ २ ॥ (१५)
पद्यदान, (१६) अग्निदान, (१७) उदकदान अने (१८) रज्जुप्रदान ॥ ३ ॥

(१) ‘तुम डरें तो मैं भी तुम्हारे पक्ष में मिल जाऊंगा’ वगैरे

‘અઠારસકમ્પકારિણો’ અષ્ટાદશકર્મકારિણઃ=અષ્ટાદશચોરમયુતિકારકાઃ અષ્ટાદશમકારૈશ્ચૌયં ભવતિ તત્કારકા ઇત્યર્થઃ । અય ચોરસ્ય ચૌર્યકર્મણશ્ચ લક્ષણમુક્તે ગ્રન્થાન્તરે—

“ચૌરઃ ૧, ચૌરાપકો ૨, મન્ત્રી ૩, મેદજઃ ૪, કાણક્રુચી ૫ ।

અન્નદઃ ૬, સ્થાનદશ્ચૈવ ૭, ચૌરઃ સપ્તવિધઃ સ્મૃતઃ ॥ ૧ ॥ ”

ચૌરઃ=ચૌર્યકારકઃ ૧, ચૌરાપક=ચૌરાય સ્તુસમર્પકઃ ૨, મન્ત્રી=ચૌરાય સમ્પ્રતિદાયકઃ ૩, મેદજઃ=‘કુચકસ્ય ગૃહે કયારીત્યા કસ્મિન્ સમયે ચોરી કર્તવ્યે’—ત્યાદિ મેદજ્ઞાતાર’ ૪, કાણક્રુચી=ચૌરા નીત ગુહમૂલ્યસ્તુકાણક ઢીન, કૃત્વા ય’ ક્રીયાતિ સઃ ૫, અન્નદઃ=ચૌરાય-ગોચર્યમન્નદાયક, ૬, સ્થાનદઃ=ચૌરાય વિશ્રામાર્થે સ્વપૃથક્કાં સ્થાનદાયકઃ ૭, ઇતિ સપ્તવિધશ્ચૌર’ । અય ચૌર્યકર્મ યયા—

ચુરી તરહ મારતે હૈ । (અઠારસકમ્પકારિણો) યે ચૌર અઠારજ પ્રકાર સે જો ચૌર્યકર્મ ક્રિયા જાના હૈ ઉસમેં નિપુણ હોતે હૈ । ગ્રન્થાન્તર મેંચોર ઓર ચોરી કે લક્ષણ હસ પ્રકાર કહે હુણ હૈ—

“ચૌરઃ ૧ ચૌરાપકો ૨ મન્ત્રી ૩, મેદજઃ ૪, કાણક્રુચી ૫ ।

અન્નદઃ ૬ સ્થાનદશ્ચૈવ, ચૌરઃ, સપ્તવિધઃ સ્મૃતઃ ॥ ૧ ॥ ”

જો સ્વય ચોરી કરતા હૈ ૧, ચોરી કો વસ્તુ દેતા હૈ ૨, ચોરી કો સમતિ દેતા હૈ ૩, કિસ સમય કિસકે ઘર મે કિસ રીતિ સે કહા ચોરી કરની યાહિયે ઇત્યાદિ રૂપ સે જો ચોરી કો ચોરી કરને કા મેદ દેતા હૈ ૪, ચોરી કે દ્વારા લાઈ ગઈ વહુ મૂલ્ય વસ્તુ કો જો અલ્પમૂલ્ય દેકર લરીદતા હૈ ૫, જો ચોરી કે લિયે खाने पीने की व्यवस्था કરતા હૈ ૬, તથા ચોરી કે લિયે વિશ્રામનિમિત્ત જો અપને ઘર આદિ મેં સ્થાન દેતા હૈ ૭ યે સબ ચોર હૈ । હસ પ્રકાર યે સાત તરહકે ચોર કહે ગયે હૈ ॥ ૧ ॥

ચોર જે અઠાર પ્રકારે ચોરી કરવામા આવે છે તેમા નિપુણ હોય છે બીજા ગ્રન્થમા ચોર અને ચોરીના આ પ્રમાણે લક્ષણો બતાવ્યા છે

“ચૌરઃ ૧ ચૌરાપકો ૨ મન્ત્રી ૩ મેદજઃ ૪ કાણક્રુચી ૫ ।

અન્નદ ૬ સ્થાનદશ્ચૈવ, ચૌરઃ સપ્તવિધઃ સ્મૃતઃ ॥ ૧ ॥ ”

(૧) જે પોતે જ ચોરી કરે છે, (૨) જે ચોરીને વસ્તુઓ આપે છે, (૩) જે ચોરીને સમતિ આપે છે, (૪) ડ્યારે, કોના ઘરમા, કઈ રીતે ચોરી કરવી જોઈએ ઇત્યાદિ પ્રકારે જે ચોરીને ચોરી કરવાનું રહસ્ય બતાવે છે, (૫) ચોરી દ્વારા ચોરી લાવવામા આવેલી કીમતિ ચીજોને જે આછી કીમતે ખરીદે છે, (૬) જે ચોરીને માટે ખાવા પીવાની વ્યવસ્થા કરે છે તથા (૭) જે ચોરીને પોતાના ઘરમા આશ્રય આપે છે, તે બધા ચોર ગણાય છે, આ રીતે સાત પ્રકારના ચોર બતાવ્યા છે ॥ ૧ ॥

શયનીયસ્તુદાનમિત્યુભયોર્મેદ. પાદપતન=પ્રણામાદિના ચોરાણા સત્કારસમ્માન-
કરણમ્ ૧૦, આસનમ્=આમનદાન ૧૧, ગોપન=નાજ્ઞેન ચોર્ય કૃત સ્વગૃહે સ્થાપ-
યિત્વા નાસ્ત્યપ્રેતિ વા કથનેન ચોરસન્નોપન ૧૨, સ્વગૃહસ્ય સ્વાદન=ચારેભ્યો-
મિષ્ટાન્નાદિદાન ૧૩, તથાજ્ઞ્યન્મોહરાજિકમ્=ઝોરપસિદ્ધયા પરગણ્ટે ગત્વા વસ્તુ
વિક્રયઃ ૧૪, તથા જ્ઞાનપૂર્વકમ્='ચોરોડય' મિતિ ગુહિપૂર્વક પાધાગ્ન્યુદકરજ્જુના
પ્રદાન=માર્ગગમનવ્રમાપનોદાર્ય પાત્ર=પાદાય દિતમુષ્ણતૈલજલાદિ, તસ્ય દાન ૧૫,
પાકાગ્ન્યમગ્નિદાનમ્ ૧૬, ઉદકદાન=પાનાર્ય જલદાન ૧૭, તથા ચોરીતગોમ

ઠરરાના-વિશ્રામ દેના હસકા નામ વિશ્રામ હૈ ૯ । શઘ્યાદાન ઓર
વિશ્રામ મેં અન્તર કેવલ ઇતના હી હૈ કિ શઘ્યાદાન તો દૂસરી
જગહ ઠહરને પર ખી દિયાં જા સકના હૈ પરન્તુ વિશ્રામ અપને ઘર મેં
હી દિયા જાતા હૈ ૯ । ચોરોં કે ચરણોં પર ગિરકર ડનકા આદર સત્કાર
કરના હસકા નામ પાદપતન હૈ ૧૦ । ઘેઠને કો આસન દેના યહ આસ-
નદાન હૈ ૧૧ । “ હસને ચોરી નહીં કી હૈ, ઘર મેં હોને પર ખી ઘર મેં
ચોર નહીં હૈ ” હસ પ્રકાર કહ કર ચોર કી રક્ષા કરના હસકા નામ
ગોપન હૈ ૧૨ । ચોરોં કે લિયે ઘાને કોં મિષ્ટાન્ન આદિ દેના હસકા નામ
સ્વગૃહ સ્વાદન હૈ ૧૩ । નાકા ઘદી હોને પર દૂસરે સ્થાન મેં, અથવા લોક
પ્રસિદ્ધિ સે પરરાષ્ટ્ર મેં ઇકદેશસે લે જારુદ દૂમરે દેશમેં ઘેચના હસકા
નામ મોહરાજિક હૈ ૧૪ । “ યહ ચોર હૈ ” ઇસા જાનકર ખી ડસે પઘ,
અગ્નિ, ઉદક, રજ્જુ દેના, પૈરોં કી ધક્કાવટ મિટાને કે લિયે ગર્મ જલ
તૈલ આદિ કા દેના પઘ હૈ ૧૫ । ઓજન ઘનાને કે લિયે અગ્નિ દેના ૧૬ ।

ચોરોને પોતાના ઘરમા આગ્રય આપવો તેને વિશ્રામ કહે છે શઘ્યાદાન તથા
વિશ્રામમા તક્ષવત એટલો જ ડે કે ગયાદાન તો ખીજુ જગ્યાએ રહે તો
પણ આખી રાત્રય છે પણ વિશ્રામ પોતાના ઘરમા જ અપાય છે (૧૦)
ચોરોને ચરણે નખીને તેનો આદર સત્કાર કરવો, તેણે પાદપતન કહે છે, (૧૧)
ઐમવાને આસન આપવું, તેને આસનદાન કહે છે, (૧૨) “ આ માણુએ
ચોરી કરી નથી, ઘરમા ચોર છુપાવ્યો હોય છતા પણ ચોર ઘરમા નથી ”
એ પ્રમાણે કહીને ચોરની રક્ષા કરવી, તેને ગોપન કહે છે (૧૩) ચોરોને
ખાવાને માટે મિષ્ટાન્ન દેવું, તેને સ્વગૃહસ્વાદન કહે છે (૧૪) નાકાળ ધી હોવા
છતા ખીજુ જગ્યાએ અથવા એક દેગમાથી લઈ જઈને ખીજા દેશમા માલ
વેચવો, તેને મોહરાજિક કહે છે (૧૫) “ આ ચોર છે ” એવી ખબર હોવા
છતા પણ તેને પઘ, અગ્નિ, ઉદક (પાણી), રજ્જુ (દોરડું) દેવું તે પણ
ચોરીના જ પ્રકારો છે, પગને થાક દૂર કરવાને માટે ગરમ પાણી, તેલ આદિ

ચૌરાણામુત્સાહદાન ૧, કુશલ=મુલદુ ગ્યાદિ પૃચ્છા ૨, તર્જા=ચૌરસ્ય દસ્તાદિસક્રેત
 કરણ ૩, રાજભાગ:=રાજકરસ્યાડપદાનમ્ ૪, અવ્લોક્ષા=ચાર્ય કુર્યત-ઉપેક્ષાપૂર્વક
 પ્રેક્ષણ ૫, ચૌર્યમવ્લોક્ષ્યાડપિ સ્વામિન પ્રત્યક્ષધનમિત્યર્થઃ, અમાર્ગદર્શન=ચૌરાણા
 રક્ષાર્થમુન્માર્ગપ્રદર્શન, ચોરમાર્ગપચ્છન્નાનામન્યમાર્ગદર્શન યા ૬, શય્યા=ચૌરાય શ
 ય્યાદાન ૭, પદમદ્ગ=પશુના સન્ધાલનેન ચૌરાણા ગમનાડગમનમાર્ગાદ્વિતચરણચિહ્ન
 હ્રસ્તકરણ ૮, તથૈવ ચિત્રામઃ=સ્વગૃહે નિયાસદાન ૯, ગ્રય્યાદાનમન્યત્રાપ્યુપવેશનાદર્થ

ઉત્સાહ વર્ધક વચનોસે ચોરોક્તા ઉત્સાહ અધિકાઢાના ડસકા નામ મલન
 હૈ ૧ । ચોરોં કે સુર-દુઃખ આદિ કે સમાચાર પૃચ્છના ડસકા નામ કુશલ
 હૈ ૨, હાથ આદિ કે સક્રેત સે ચોરો કો ડશારા કરના ડસકા નામ તર્જા
 હૈ ૩ । નિર્ધારિત રાજડેક્સ કા નહોં દેના ડસકા નામ રાજભાગ હૈ ૪ ।
 ચોરી કરતે હુણ ચોર કો ઉપેક્ષાપૂર્વક દેખના, ડસકા નામ અવલોકન
 હૈ, અર્થાત્ ચોર કો ચોરી કરતે હુણ દેખકર કે ભી અપને માલિક સે
 નહોં કહના-યહ ભી ચોરી કા પ્રકાર હૈ ૫ । ચોરોં કી રક્ષા કે અભિપ્રાય
 સે અન્વેષણ કરને વાલોં કો ઉન્માર્ગ પ્રદર્શન કરના ડસકા નામ અમાર્ગ
 દર્શન હૈ ૬ । ચોરોં કે લિયે સોનેકો શય્યા દેના ડસકા નામ શય્યા
 હૈ ૭ । ચોરોં ને જહા ચોરી કી હો વહા ઉનકે માર્ગ મે ચરણચિહ્ન
 અકિત્ત હો ગયે હો તો ઉન ચિહ્નો કો નષ્ટ કરને કે લિયે ઉન પર સે
 પશુઓ કો નિકાલના કિ જિસસે વે નષ્ટ હો જાયેં ઓર પહિચાનને
 મેં ન આને પાવે, ડસકા નામ પદમદ્ગ હૈ ૮ । અપને ઘર મેં ચોરોં કો

ઉત્સાહ વર્ધક વચનો દ્વારા ચોરોનો ઉત્સાહ વધારવાની ક્રિયાને મલન કહે છે
 (૨) ચોરોને સુખ દુઃખ વગેરેના સમાચાર લાવનારને કુશલ કહે છે (૩) હાથ
 આદિના સંકેતથી ચોરોને ધરારા કરવા તેનું નામ તર્જા છે (૪) નક્કી
 થયેલ રાજભાગ-ગણ્યના કર ન દેવા તેનું નામ રાજભાગ છે, (૫) ચોરી
 કરતા ચોરને ઉપેક્ષાપૂર્વક જોવો તેને અવલોકન કહે છે, એટલે કે ચોરને ચોરી
 કરતો જોવા છતાં પણ પોતાના માલિકને નહીં કહેવું તે પણ ચોરીનો જ
 પ્રકાર છે (૬) ચોરોની રક્ષા કરવાને માટે તેમની ગોધ ડરનારને ખોટો માર્ગ
 બતાવવો તેને અમાર્ગદર્શન કહે છે (૭) ચોરોને સૂવાને માટે પથારી દેવી તેને
 શય્યા કહે છે (૮) ચોરોએ જ્યાં ચોરી કરી હોય ત્યાં તેના માર્ગમાં તેના
 પગલા પડ્યા હોય તો તે પગલાનો નાશ કરવાને માટે તેમના પર પશુ-
 ઓને દોડાવવા કે જેથી તે પગલા ભૂસાઈ જાય અને ઓળખી ન શકાય
 આ પ્રકારે પગલાના નિશાનોનો નાશ કરવાની ક્રિયાને પદમદ્ગ કહે છે (૯)

પ્રોટ્યમાના = પ્રત્યે = પ્રત્યસ્થાને = શૂંગારોપણસ્થાને પુરુષૈઃ = તત્ર નિયુક્તૈઃ રાજપુરુષૈઃ
ગ્રાહ્યમાનાઃ = પ્રેર્યમાનાઃ નીચમાના ક્તર્યઃ, 'ત પિ ય ન લહતિ' તદપિ ચ ન
લખન્તે = જલ્મમાત્રમપિ પાતુ ન માપ્નુરન્તિ, કિમન્ય ? દિત્યર્ય ॥ સૂ. ૧૬ ॥

અપિ ચ—'તત્ય ય' ઇત્યાદિ ।

મૂલ્મ—તત્ય ય સ્વરફરુસ-પડહ-ઘટ્ટિયા-કૂડગ્ગહગાઢરુઢ્ઠનિસિટ્ટ
પરામટ્ટા વજ્જનફરકુહિજુચનિવાસિયા સુરત્તકણવીરગઢિયવિમુકુલ
કંઠે ગુણવજ્જન-દૂય આવિદ્ધમહદામમરણ મથુપ્પણ્ણ સેયઆયત્તજે-
હુત્તપ્પિયકિલિપ્પણગત્તાચુપ્પણગુહિયસરીરયરેણુભરિયકેસા કુસંભ-
ગુક્કિપ્પણમુદ્ધયા છિપ્પણજીવિયાસા ઘુપ્પણતા વજ્જપાણપ્પિયા તિલ
—તિલ ચેવ છિજ્જમાણાસરીરવિકત્તલોહિઓ-લિત્તકાગણિમંસા-
ણિલાવિયતા પાવા સ્વરકરસપ્પહિ તાલિજ્જમાણદેહા વાતિગનર-
નારિસંપરિવુડા પિચ્છિજ્જતા ય નાગરજણેણ વજ્જનેવરિયયા
પણિજ્જતિ ણગરમજ્જેણ કિવણકલ્લુણા અત્તાણા અસરણા
અણાહા અવધવા વધુવિપ્પહીણા વિપિલ્લંતા દિસોદિસિમર-
ણમથુવિવિગ્ગા અઘાયણપહિદુવારસપાવિયા અવણ્ણા સૂલગ્ગ-
વિલગ્ગાભિપ્પણદેહા, તે ય તત્ય કીરતિ પરિકાપ્પિયગુવંગા ॥ સૂ. ૧૬ ॥

ટીકા—'તત્ય ય' તત્ર ચ પ્રત્યસ્થાને 'સ્વરફરુસપડહઘટ્ટિયા' સ્વરફરુપપડહઘટ્ટિતાઃ—
તત્ર સ્વરપરુપ = શૂંગારોપણાદિ સદ્કેતમ્ભવક્રત્યાદત્યન્તકઠોરો ય. પડહઃ = 'ઢોલ'

પુરિસેહિં) વધ્યસ્થાન પર નિયુક્ત હુએ પુરુષ જન (ઘાહિયતા) વધ્યસ્થાન
પર લેકર ચલતે હૈ તો ડન્હેં વહા (તપિ ય) એક ત્રિંદુ જલ ભી પીને કો
(ન લહતિ) નહી મિલતા હૈ । એસી હનકી દશા ઘન જાતી હૈ ॥ સૂ. ૧૫ ॥
ફિર ભી કહતે હૈ—'તત્ય ય' ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તત્ય ય સ્વરફરુસ પડહઘટ્ટિયા) વહા વધ્યસ્થાન પર એક ઢોલ

પ્રાનિયુક્ત થયેલ પુરુષો વ્યાપ્તે "ઘાહિયતા" વધ્યસ્થાન તરફ લઈ જાય છે, ત્યારે
તેમને ત્યાં "તપિ ય" પીવાને પાણીનું એક ટીપું પણ "ન લહતિ" મળતું
નથી તેમની એવી દશા થાય છે ॥ સૂ. ૧૫ ॥

વળી મૂલકાગ આગળ વર્ણન કરે છે—'તત્ય ય' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—"તત્યસ્વરફરુસપડહઘટ્ટિયા" ત્યાં વધ્યસ્થાને એક ઢોલ રહે છે,

દિપ્તિમાદિ વન્ધનાર્થે પ્રાસાદાદિપ્યારોહુ યા રજ્જુદાનમ્ ૧૮, इत्येतान्यष्टादशविधानि प्रसूतयः चौर्यकरणानि ।

પુનઃ કીદશાસ્તે પરદ્રવ્યાપહારિણ ? इत्याह—‘पाठ्यगुग्गा’ पतिताङ्गो-पाङ्गाः=पातितानि=पेटितान्यद्गानि=इस्तपादादीनि, उपाङ्गानि च=अङ्गलिकेश-श्मश्वदादीनि येषां ते तथा, कलुणा’ कम्प्याः=दीनाः-पापमलिना इत्यर्थः ‘सुको-ट्टकठगलतालुजिह्वा’ शुष्कोष्ठमण्डगलतालुजिह्वा =ओष्ठौ कण्ठः=अक्षरोच्चारणस्थान गल’-तदधो भागः तालु =मसिद्ध पतेषा समाहारः, जल विना शुष्कमोष्ठकण्ठगल-तालु जिह्व येषा ते तथा, ‘तण्हा इत्ता’ तण्णादिता’=पिपासाऽऽकुलिताः सन्तः ‘पाणिय जायता’ पानीय याचमानः, ‘विगयजीवियासा’ विगतजीविताशा =जीवनाशारहिताः ‘वरागाः=मन्दगुण्याः ‘वज्झपुरिसेहि घाडियता’ वध्यपुरुषै-पीने के लिये जल देना १७, પુરાઈ ગઈ ખેંસ આદિકો યાધને કે લિયે તથા મકાન આદિ કી છત પર ચઢાને કે લિયે રસ્ટી દેના ૧૮।યે ૧૮ પ્રકારકી કી ચોરિયા હૈ ॥ ૩ ॥

(પાઠ્યગુચગા) યે પરદ્રવ્યાપહારી ચોર હાથ પૈર આદિ અર્ગોમેં તથા અગુલી, કેશ, શ્મશ્રુ દાઢીમૂછ આદિ ઉપાગોમેં કમ્પી ખી અક્ષત નહીં રહતે હૈં ! (કલુણા) યે સદા પાપ સે મલિન બને રહતે હૈં । તથા (સુકોટ્ટ કઠગ લતાલુજિહ્વા) પાની કે વિના ઓષ્ઠ કઠ ગલા તાલ તથા જિહ્વા યે સબ હસકે શુષ્ક હોતે (સૂકતે) રહતે હૈં । (તણ્હાઈયા) પિપાસા સે આકુલિત હોકર યે (પાણિય જાયતા) “ પાની લાઓ પાની લાઓ ” હસ પ્રકાર યાચના કરતે હુએ (વિગયજીવિયાસા) કમ્પી ૨ અપને જીવન કી આશા સે ખી રહિત હો જાતે હૈં । (વરાગા) इन अभागों को (वज्झ

દેવા તે કિયાને પથ ઢહે છે, (૧૬) લોજન બનાવવાને અગ્નિ આપવો, (૧૭) પીવાને માટે પાણી આપવું અને (૧૮) ચોરેલી ગાય, ભેંસ આદિને બાંધવા માટે અને મકાન આદિના છાપરા પર ચઢવાને માટે દોરડું દેવું, એ ૧૮ (અઠાર) પ્રકારની ચોરી હોય છે ॥૩॥

टीका—“ पाठ्यगुग्गा ” ते परधननु अपहरणु करनासु चोर लोकोना हाथ पग आदि अंगो, तथा आगणीज्जा, केश, नास, ज्ञान आदि उपागो कटी पणु अक्षत (छेदाया विनाना) होता नथी “ कलुणा ” तेज्जा पापथी सदा मलिन रहे छे, तथा “ सुकोट्टकठगलतालुजिह्वा ” तेभना डोढं, कठं गणु, ताणवु तथा लल पाणी विना शुष्क (सूकायला) रहे छे “ तण्हाइया ” तर सथी व्याकुण थधने ते लोको “ पाणिय जायता ” “ पाणी लावो, पाणी, पाणी लावो ” जेवी याचना करता करता “विगयजीवियासा” कथारेक तो अवधानी आशा पणु छोडी दे छे “वरागा” ते भियाराज्जोने “वज्झपुरिसेहि” वधस्थान

ગુણવધ્યદૂતાવિદ્વમાત્પદામાનઃ, તત્ર સુરક્તૈ કણરીરૈઃ=પુષ્પત્રિશેષૈઃ પ્રથિત=
ગુન્ધિત વિમુકુલ=વિકાસિત મ્ળે ગુણ ઇવ=મ્ળમ્ળમિત તથા વત્ર મ્ળચક્ત્વાત
વધ્યદૂતઃ=વધચિન્દમ્, -આવિદ્વ=પરિહિત માલ્યદામ=પુષ્પમાલ્ય યેપા તે તથા,
'મરણમયુષ્પણસેયઆયતળેહુત્તપ્પિય કિલિણ્ણગત્તા' મરણમયોત્પન્નસ્વેદાયતસ્ને-
હોત્તપિતવિલગ્નગત્તાઃ, તત્ર મરણમયાદુત્પન્નેન સ્વેદેન=પસ્વેદેન આયતઃ=સર્વાન્ને
વ્યાપ્તો યઃ સ્નેહ.= આર્દ્રતા તેનોત્તપિતાનિ=સન્તપ્તાનિ વિઝ્ઞાનિ=આર્દ્રીકૃતાનિ
ચ ગાત્રાણિ=શરીરાણિ યેપા તે તથા, મરણમયોત્પન્નસ્વેદાર્દ્રીભૂતશરીરા इत्यर्थः,
'ચુણ્ણગુહિયસરીરા' ચૂર્ણગુહિતશરીરા = 'ચૂના' ઇતિ ભાષાપ્રસિદ્ધચૂર્ણદ્રવ્યા-
વગુહિતસર્વાન્નાઃ, 'રયરેણુમરિયકેસા' રજો રેણુમરિતકેસા =રજોરેણુભિઃ=
ધૂલિભિર્ભરિતાઃ=સમૃતાઃ કેસા યેપા તે તથા, 'કુમમગુક્ષિણ્ણમુદ્ધયા' કુમમ્મ-

મહ્લદામા) (સુરક્તકણવીરગહિય) કનેર કે લાલફૂલોં સે ગૃથી હુઈ
(વિમુકુલ) વિકાસિત કઠે ગુણકઠસૂત્ર તથા (વજ્ઞદૂય) વધમૂચક
હોને સે વધ્યદૂત-વધચિહ્ન સ્વરૂપ ણેસી (આવિદ્વમહ્લદામા) ફલમાલ
જિનકો પહિનાઈ જાતી હૈ (મરણમયુષ્પણસેયઆયતળેહુ ત્તપ્પિય કિલિ-
ણ્ણગત્તા) (મરણમયુષ્પણસેય) મરણ કે ભય સે ઉત્પન્ન હુઅ સ્વેદ-
પસીને સે (આયતળેહ) હનકે અગ ગીલે હો જાતે હૈ હસસે હનકા
શરીર (ઉત્તપ્પિય) જલને લગતા હૈ જિસસે (કિલિણ્ણગત્તા) હનકા
સવ શરીર પસીને સે ઝરતા રહતા હૈ (ચુણ્ણગુહિયસરીરા) હનકે શરીર
પર ચૂના લપેટ દિયા જાતા હૈ જિસસે અધિક જલન હોતી હૈ । તથા
(રયરેણુમરિયકેસા) હનકે કેશોં પર વાહર કી ધૂલિ ડઢકર ખર જાતી
હૈ । કારણ હનકે પાસ હસ સમય ણેસે સાધન નહી હોતે હૈ જિસસે

જ્ઞદૂયઆવિદ્વમહ્લદામા ” “ સુરક્તકણવીરગહિય ” ડરેણુના લાલ ફૂલોભાથી
ગૂથેલી “ વિમુકુલ ” ડઠમા રહેલા ડઠાભરણુ જેવી, “ વજ્ઞદૂય ” વધ સૂચક
હોવાથી-વધ્યદૂતવધચિહ્ન જેવી “ આવિદ્વ મહ્લદામા ” ફૂલમાળા તેમને પહેરા-
વવામા આવે છે “ મરણમયુષ્પણસેયઆયતળેહુત્તપ્પિયકિલિણ્ણગત્તા ”
“ મરણમયુષ્પણસેય ” મરણના ભયથી ઉત્પન્ન થયેલ પશ્મીનાથી “ આયતળેહ ”
તેમના અગ ભીના થાય છે, તે ભયથી તેમના શરીર “ ઉત્તપ્પિય ” બળવા
લાગે છે, અને તે ડરણુ “ કિલિણ્ણગત્તા ” તેમનુ આખુ શરીર તરબોળ થાય
છે “ ચુણ્ણગુહિય સરીરા ” તેમના શરીર પર ચૂનો ચોપડ્યો હોય છે, જેથી
શરીરમા વધારે બળતરા થાય છે, તથા “ રયરેણુમરિયકેસા ” તેમના વાળમા
બહારની ધૂળ ઉડીને ભરાય છે, ડરણુ કે તે સમયે વાળ ઓળવાના સાધનો
તેમની પાસે હોતા નથી :- “ કુસુમગુક્ષિણ્ણમુદ્ધયા ” “ કુસુમગ ” કીમુખી

इति भाषा प्रसिद्धस्तेन गद्यमानेन सह राजपुरुषैर्नीयमानाः सन्तो घटिताः =
 वेत्र यष्ट्यादिभिस्ताडिताः मार्यमाणान् इत्यर्थः, 'कूडगहगाढरुद्धनिसिद्धपरामद्धा'
 कूटग्रहगाढरुद्धनिसृष्टपरामृष्टा = तत्र कूटग्रहत्वात् = कूटेन = छलप्रपञ्चेन चौरस्य
 परधनप्राप्तित्वाद् गाढरुद्धैः = अतिक्रुद्धैः राजपुरुषैः निमृष्टाः = अपहृतानां,
 निर्धना इत्यर्थः, पुनः परामृष्टाश्च = गृहीता ये ते तथा 'वज्रकरकुडिजुय निवसिया'
 वध्यकरकुटीयुगनिसिताः = वध्यानां यत् करकुटीयुग = निन्द्यस्त्रनिशेपद्वय
 तन्निशित = परिश्रपित येषां ते तथा 'सुरक्तकणीरगहि
 यविमुकुलकठे गुणलज्जद्वय आविद्धमल्लदामा' सुरक्तकणीरग्रथितविमुकुलकठे

रहता है और जन जिसका शूलारोपण का होता है तब वह बजता है
 अतः शूलारोपण आदि सकेत का सूचक होने से वह स्वरूप-अत्यंत
 कठोर माना गया है, जैसे ही वह उजाता है कि राजपुरुष उस वध्य
 व्यक्ति को साथमें लेकर चल देते हैं। और रास्ते में वे उनचोरों को
 वेत्र-यष्ट्यादि से ताड़ित भी करते जाते हैं। (कूडगहगाढरुद्धनिसिद्ध
 परामद्धा) ये राजपुरुष उन चोरो पर (कूडगह) छलप्रपञ्च से परधन को
 अपहरण करने के कारण (गाढरुद्ध) अत्यंत रुष्ट हो जाते हैं, और इसीसे
 (निसिद्ध) अपहृत व्रव्य को छीन भी लेते हैं, और बाद में उन्हें (परा-
 मद्धा) पकड़ लेते हैं (वज्रकर कुडि जुयनिवसिया) जन वे शूली पर
 उन्हें चढ़ाने के लिये ले जाते हैं तो इसके पहिले उन्हें वे वध्यपुरुषों को
 (वज्रकरकुडिजुय) पहिराने के योग्य निन्द्य दो वस्त्र (निवसिया)
 पहिरा देते हैं (सुरक्तकणीरगहिय विमुकुलकठे गुणलज्ज द्वय आविद्ध-

જ્યારે કોઈને શૂળી પર ચડાવવાનો સમય થાય છે ત્યારે તે વગાડનામા આવે
 છે તેથી શૂલારોપણ આદિ સકેત દર્શાવનાર હોવાથી તેને સ્વરૂપ અત્યંત
 કઠોર ઢહેલ છે જેવો તે ઢોલ વાગે છે, ડે તે રાજપુરુષો તે વધ્ય વ્યક્તિને
 લઈને ઉપડે છે, અને રસ્તામા તે લોડો તે ચોરોને સોટી, લાડડી આદિથી
 ફટકારે છે “ કૂડગહગાઢરુદ્ધનિસિદ્ધપરામદ્ધા ” તે રાજપુરુષો તે ચોરો પર
 “ કૂડગહ ” છળકપટથી પરધનનું હરણ કરવાને લીધે “ ગાઢરુદ્ધ ” અત્યંત
 ક્રોધે ભરાય છે, અને તેમની પાસેથી તે લોડો “ નિસિદ્ધ ” ચોરેલા દ્રવ્યને
 છીનવી પણ લે છે અને પછી તેમને “ પરામદ્ધા ” પકડી લે છે “ વજ્રકરકુ
 ઢિજુયનિવસિયા ” જ્યારે તેઓ તેમને શૂળીએ ચડાવવા લાઈ જાય છે ત્યારે
 વધ્ય પુરુષોને પહેરાવવા “ વજ્રકરકુઢિજુય ” લાયક, બે નિંદ્ય વસ્ત્રો
 “ નિવસિયા ” તેમને પહેરાવે છે “ સુરક્તકણીરગહિયવિમુકુલકઠે ગુણ

पापिनः 'स्वरकरमर्हि तात्रिज्जमाणदेहा' 'स्वरकरगतेस्ताव्यमानदेहा' = अतिचि-
क्खणपापाणभृतचर्मकोजगतेः 'रुकरभरे चानुरु' इति भाषाप्रसिद्धैः ताड्यमानदेहा
= ताड्यमानशरीराः तथा 'वातिगनरनारिसपरिबुडा' वातिक नरनारीसम्परिवृताः
तत्र-वातिकैः = उच्छ्रितैः नरैर्नारीभिश्च सपरिवृताः = युक्ताः मर्यादावर्जितनरनारी-
वृन्दवेष्टिता इत्यर्थः, 'पिच्छिज्जता य नागरजणेण' नागरजनेन दृष्टु समागतेन
प्रेक्ष्यमानाः 'वज्झनेवत्थिया' वज्झनेपथ्यिकाः = उपयोग्य नेपथ्य येषां ते वध
नेपथ्यिकाः = परिधृतयातयन्त्रयेषां, 'णगरमज्झेण' नगरमध्येन = पुरमध्यभागमार्गेण
'पणिज्जति' प्रणीयन्ते = नीयन्ते 'क्खिणिक्खुणा' कृपणकरुणा = कृपणेष्वपि
करुणा अतिदीना इत्यर्थः, 'अत्ताणा' अत्राणा = त्राणवर्जिता अनर्थनिवारका-
भावात् 'असरणा' अशरणाः = शरणहीना - योगक्षेमकारिरहितत्वात् अतएव
'अणाहा' अनाथाः = नाथवर्जिता 'अवधवा' अवान्धवा = यान्धवरहिता तथा

ये बड़े अधिक पापी होते हैं। (स्वरकरमर्हि) अतिचिक्खण पापाण-
एवों से भरे हुए ऐसे मैकड़ों कोड़ों की (तालिज्जमाणदेहा) इनके शरीर
पर मारपड़नी है। तथा (वातिगनरनारिसपरिबुडा) मर्यादा वर्जित
नरनारि गण से ये वेष्टित रहते हैं। (पिच्छिज्जता य नागरजणेण) इन्हें
देखनेके लिये नागरिकजन आते हैं। (वज्झनेवत्थिया) इनकी वेश-
भूषा व चयोग्य होती है। (णगरमज्झेण पणिज्जति) राजपुरुष इन्हें नगर
के भीतर से होकर ही निकालते हैं। (क्खिणिक्खुणा) उस समय ये
दीनों से भी अतिदीन होते हैं (अत्ताणा) अनर्थ को निवारण करने
वाला कोई नहीं होने से इनकी कोई रक्षा करने वाला नहीं होता है, इस-
लिये ये अत्राण होते हैं, (असरणा) योग, क्षेमकारी पुरुष से रहित
होनेके कारण ये अशरण-शरण हीन होते हैं। (अणाहा) अनाथ रक्षकके
अभाव से ये अनाथ होते हैं, तथा (अवधवा) यधुओं के अभाव से

गये "पावा" ते धणा न पापी डाय छे "स्वरकरमर्हि" अतिगय जिउछो
पत्थरना दुउडाओवी भरेखा से कडा केरडाओने। "तालिज्जमाणदेहा" तेभना शरीर
पर मार पडे छे तथा "वातिगनरनारिसपरिबुडा" मर्याद गहित श्री पुरुषेना
अभूडवी तेओ वीटणायेखा रहे छे "पिच्छिज्जता य नागरजणेण" तेभने जेवाने
भाटे नागरिके आया करे छे "वज्झनेवत्थिया" तेना पोपाड वध्यने योग्य डायछे
"णगरमज्झेण पणिज्जति" राजपुरुषे तेभने नगर में वध्ये यधने लछ जाय छे
"क्खिणिक्खुणा" त्यारे ते दोडोने अतिगय दीनदया अनुसवे छे "अत्ताणा" ते
यातनामाथा तेभने अथावनार डोह न डोवावी ते दोडो अत्राणा रक्षाधुवगरना डाय
छे, "असरणा" तेभने गरु आपना केर पुरुष न डोवावी तेओ अशरण
डाय छे "अणाहा" रक्षकने अलावे तेओ अनाथ डाय छे, "अवधवा"

કોત્કીર્ણમૂર્ધજાઃ=કુસુમ્ભકેન=રાગવિશેષેણ ઉત્કીર્ણાઃ=ગ્યાપ્તા મૂર્ધજાઃ કેશા યેષાં
તે તથા સ્ત્રારાગરક્ષિતકેશધારિણ इत्यर्थः, ' ટિન્નજીવિયાસા ' ટિન્નજીવિયાસાઃ
=જીવનાશારહિતા ' ઘુણતા ' ઘૂર્ણમાનાઃ=મરણભયવ્યાકુલતાત્ ' વજ્રપાણપિયા
વધ્યપ્રાણપિયાઃ=વધ્યાઃ=હનન્ત્યા એ પ્રાણા પ્રિયાઃ યેષાં તે તથા, ' તિલ તિલ
ચેવ ટિજ્જમાણા ' તિલ તિલમિચ્છિદ્યમાનાઃ રાજપુરુષૈઃ મત્યદ્વોપાદ્ધ પ્રોટ્યમાના
इत्यर्थः, ' સરીર વિકૃત્તલોહિઓલિત્તકાગણિમસાણિ સ્વાવિયતા ' શરીરવિકૃત્તલો-
હિતાવલિપ્તકારુણી મામાણિ સ્વાદ્યમાના, તત્ર-ચૌરસ્યેવ શરીરાદ્ વિકૃત્તાનિ=
ગ્વણ્ડિતાનિ લોહિતારલિપ્તાનિ યાનિ કારુણી માસાનિ=માસલ્પાણાનિ તાનિ સ્વાદ્ય
માનાઃ રાજપુરુષૈઃ શસ્ત્રાદિકૃત્તિતસ્પ્રમાસલ્પાણાનિ સ્વાદ્યમાના इत्यर्थ, ' પાવા ' પવા

કેશ સસ્કારિત ક્રિયે જા સકે (કુસુમમુક્ષિણમુદ્ધયા) (કુસુમગ)
કુસુમ રંગ સે (ઉક્ષિણમુદ્ધયા) इनके केश रजित कर दिये जाते हैं ।
(ટિન્નજીવિયાસા) યે વિચારે અપને આપકો માનને લગતે હૈં કિ અબ
હમ થોડી દેર મેં હી મરને વાલે હૈં, અતઃ इनके जीवन की आशा टूट
जाती है । (ઘુણતા) મરણભય સે વ્યાકુલ હોને કે કારણ इनका दिमाग
चिक्कर खाने घूमने लग जाता है । (वज्रपाणपिया) इन्हें वध्य-मारे
जाने वाले अपने प्राण ही उड़े प्रिय होते हैं । अर्थात् उस समय इन्हें कोई
भी वस्तु प्रिय नहीं होती है, केवल अपने प्राण ही-जो कुछ देर बाद नष्ट
हो जानेवाले है-सबसे अधिक प्रिय लगते हैं । (तिल तिल चैव टिज्ज
माणा) રાજપુરુષ इनके अ गोंपागों को तिल तिल की तरह काट २ कर
अलग २ कर डालते है । (सरीरविकृत्तलोहिओलित्तकागणिमसाणि
स्वावियता) वे राजपुरुष (सरीराविकृत्त) काटे गये इनके शरीर से
निकले हुए (लोहिओवलिस्त) लोही से लिप्त ऐसे (कागणिमसाणि)
માસ કે છોટે છોટે ટુકડાં કો (સ્વાવિયતા) उन्हें खिलाते हैं (पावा)

૨૪થી “ ઉક્ષિણમુદ્ધયા ” તેમના વાળ ૨ગી નાખવામા આવે છે “ ટિન્નજી
વિયાસા ” તે ગિયાસા સમજી બીજી છે કે હવે અમે થોડા સમયના મહેમાન
છીએ, એટલે કે તેમની જીવવાની આશા તૂટી બીજી છે ઘુણતા ” મોતના લયથી
વ્યાકુળ થવાથી તેમના મગજ ચક્કર ચક્કર ધ્રુમવા લાગે છે “ વજ્રપાણપિયા ”
તેને વધ્ય-જેનો વધ થવાનો છે તેને પોતાના પ્રાણ જ સૌથી વહાલા લાગે
છે, એટલે કે તે સમયે તેને બીજી કશું પણ ચીજ ગમતી નથી, પણ થોડા
સમય પછી જેનો નાશ થવાનો છે તે પ્રાણ જ સૌથી વધારે પ્રિય લાગે છે
“ તિલતિલ ચેવ ટિજ્જમાણા ” રાજ પુરુષો તો તેમના અંગ ઉપાંગોના તલ
તલ જેવડા ટુકડા કરે છે “ સરીરવિકૃત્તલોહિઓલિત્તકાગણિમસાણિસ્વાવિયતા ”
તે રાજપુરુષો લોહીથી ખરડાયેલા માસના નાના ટુકડાઓ તેમને ખવ

પાપિનઃ ' સ્વરક્ષમર્હિં તાન્નિજ્જમાગદેહા ' સ્વરક્ષતૈસ્તાલ્યમાનદેહા = અતિચિ
ક્ષણપાપાણમૃતચર્મકોશગતૈઃ ' રુક્ષરમરે ચાતુરુ ' इति भाषाप्रसिद्धैः ताड्यमानदेहा
= તાડ્યમાનશરીરાઃ તથા ' ચાતિગનરનારિસપરિવુડા ' ચાતિરુ નરનારીસમ્પરિવૃતાઃ
તત્ર-ચાતિકૈઃ = ઉન્નતલૈઃ નરૈર્નારીમિથ સપરિવૃતાઃ = યુક્તાઃ મર્યાદાવર્જિતનરનારી-
વૃન્દવેષ્ટિતા इत्यर्थ , ' પિન્નિઝ્જતા ય નાગરજણેણ ' નાગરજનેન દૃષ્ટુ સમાગતેન
પ્રેક્ષ્યમાનાઃ ' વજ્જનેવત્થિયા ' વધ્યનેવધ્ધિયાઃ = વપયોગ્ય નેપથ્ય યેપા તે વધ
નેપથ્યિયાઃ = પરિવૃતઘાતપ્રસ્ત્રેપાઃ, ' જગરમજ્ઞેણ ' નગરમધ્યેન = પુરમધ્યભાગમાર્ગેણ
' પણિજ્જતિ ' પ્રણીયન્તે = નીયન્તે ' કિન્નિણકલુણા ' કૃપણકરુણા = કૃપણેષ્વપિ
કરુણા પતિદીના इत्यर्थ, ' અત્તાણા ' અત્રાણા = ત્રાણવર્જિતા અનર્થનિવારકા-
ભાવાત્ ' અસરણા ' અશરણાઃ = શરણહીનાઃ - યોગક્ષેમકારિરહિતત્વાત્ અતएव
' અગાહા ' અનાયાઃ = નાથવર્જિતા ' અવધવા ' અનાયવા = નાન્યવરહિતા તથા

યે વડે અધિક પાપી હોતે હૈં । (સ્વરક્ષમર્હિં) અતિચિક્ષણ પાપાણ-
ખડોં સે મરે દુए ऐसे सैकड़ों कोड़ों की (તાલિજ્જમાગદેહા) इनके शरीर
पर मारपड़नी है । तथा (चातिगनरनारिसपरिवुडा) मर्यादा वर्जित
नरनारि गण से ये वेष्टित रहते हैं । (पिन्निज्जता य नागरजणेण) इन्हें
देखनेके लिये नागरिकजन आते हैं । (वज्जनेवत्थिया) इनकी वेश-
भूषा वध्ययोग्य होती है । (जगरमज्ज्ञेण पणिज्जति) राजपुरुष इन्हें नगर
के भीतर से होकर ही निकालते हैं । (किन्निणकलुणा) उस समय ये
दीनों से भी अतिदीन होते हैं (अत्ताणा) अनर्थ को निवारण करने
वाला कोई नहीं होने से इनकी कोई रक्षा करने वाला नहीं होता है, इस-
लिये ये अत्राण होते ह, (असरणा) योग, क्षेमकारी पुरुष से रहित
होनेके कारण ये अशरण-शरण हीन होते हैं। (अणाहा) अनाय रक्षकके
अभाव से ये अनाय होते हैं, तथा (अवधवा) बहुओं के अभाव से

ગવે "પાવા" તે ઘણા જ પાપી હોય છે "સ્વરક્ષમર્હિં" અતિશય ચિહ્ન
પર્યવના દુઝડાઓથી ભરેલા સેકડો કોરડાઓનો "તાલિજ્જમાગદેહા" તેમના શરીર
પર માર પડે છે તથા "ચાતિગનરનારિસપરિવુડા" મર્યાદ રહિત સ્ત્રી પુરુષોના
મમ્મહથી તેઓ વી ટળ થેલા રહે છે "પિન્નિઝ્જતા ય નાગરજણેણ" તેમને જોવાને
માટે નાગરિકો આવ્યા ડરે છે "વજ્જનેવત્થિયા" તેનો પોપાક વધ્યને યોગ્ય હોય છે
"જગરમજ્ઞેણ પણિજ્જતિ" રાજપુરુષો તેમને નગરની વચ્ચે થઈને લઈ જાય છે
'કિન્નિણકલુણા' ત્યારે તે લોકોને અતિશય દીનદગ્ધા અનુભવે છે "અત્તાણા" તે
યાતનામાથા તેમને અથાવનાર ડોઈ ન હોવાથી તે લોકો અત્રાણા રક્ષણુવગરના હોય
છે, 'અસરણા' તેમને ગરુ આપનાર નાઈ પુરુષ ન હોવાથી તેઓ અશરણુ
તેઓ અનાય હોય છે, "અવધવા"

‘વધુવિષ્ણીના’ વન્ધુવિષ્ણીનાઃ=વન્ધુવિષ્ણીનાઃ, ‘દિસોદિસ વિવેચિત્તા’ દિસો
 દિશ વિવેચમાણાઃ=પરસ્પર દિગોડિગાં દિશ પશ્યન્તઃ ‘મરણમયુચ્ચિન્ના’ મરણ-
 મયોદ્વિન્નાઃ=મૃત્યુમયવ્યાકુલાઃ=‘આઘાયણપટિદુષ્કારસપાચિયા’ આઘાયણપ્રતિદાર
 સપાચિતા=આઘાતનપ્રતિદાર=વ ધૂમિદાર તત્ર સપાચિતાઃ=નીતા યે તે તથા,
 ‘અઘણા’ અઘન્યાઃ=ભાગ્યહીનાઃ અદત્તાદાયિત્વાત્, ‘સૂલગવિલગ્નમિષ્ણદેહા’
 શૂલાગ્રવિલગ્નમિષ્ણદેહા, તત્ર-શૂલાગ્રે વિલગ્ન=આરોપણેન સલગ્નઃ મિત્રા દેહો
 યેષાં તે તથા ‘તે ય’ તે ચ=અદત્તાદાયિન ‘તત્થ’ તત્ર=યાતનદ્વારે વધવન્ધ
 મારણનિર્મર્ત્સનશ્ચારોપણાદિ યાતનાસ્થાને ‘પરિકલ્પિયગુપ્તગા’ પરિકલ્પિતા
 જ્ઞોપાન્ના કર્ત્રીપ્રભૃતિશ્ચૈર્કર્ત્તવર્ત્તનાસિદ્ધાન્તમયઃ ‘કીરતિ’ ક્રિયન્તે,
 વળ્લવિધાયિરાજપુરુષૈરિતિ ॥ સૂ. ૧૬ ॥

યે ચિતા વધુ કે હોતે હું । (વધુવિષ્ણીના) વાધવજન હોને પર ખી વે
 હન્ને છોડ દેતે હું । ફસલિયે યે વન્ધુ હીન હોતે હું (દિસોદિસ વિવેચિત્તા)
 વિચારે યે એક દિશા સે દૂસરી દિશા કા હી અવલોકન કરતે રહતે હું
 ઓર (મરણમયુચ્ચિન્ના) મૃત્યુ કે મય સે વ્યાકુલ બને રહતે હું । ફસ
 તરહ કી સ્થિતિ સંવત્ત બને હુણ ફન અદત્તાદાયી જનો કો વે રાજપુરુષ
 લાકર (આઘાયણપટિદુષ્કાર સપાચિયા) વન્ધુમિત્ર કે દ્વાર પર ઉપસ્થિત
 કર દિયે જાતે હું । વયો કિ (અઘણા) યે અદત્તગ્રાહી જન અભાગે હોતે
 હું । (સૂલગવિલગ્નમિષ્ણદેહા) ફન ચોરો કા શરીર શૂલ કે અગ્રભાગ
 પર આરોપિત કર દેને કે કારણ છિન્ન મિત્ર હો જાતા હું । (તે ય તત્થ)
 વહા ઉસ વધ, વધ, માલગ, નિર્મર્ત્સન, શૂલારોપણ આદિ યાતના કે
 સ્થાનમેં ઉનકે (પરિકલ્પિયગુપ્તગા) અગ એવ ઉપાગ અર્થાત્ નાક કાન
 આદિકો કૈચી આદિ શસ્ત્રો સે કાટ દિયે જાતે હું ॥ સૂ-૧૬ ॥

‘વધુવિષ્ણીના’ અભાવે તેઓ અવધુ હોય છે “વધુવિષ્ણીના” અવધુને હોય
 તે વધુ તેમના દ્વારા તેમને ત્યાગ કરાય છે, “દિસોદિસ વિવેચિત્તા” એવી
 પરિસ્થિતિમાં તે બિચારા એક દિશા તરફથી બીજી દિશા તરફ જોયા કરે છે
 અને “મરણમયુચ્ચિન્ના” મરણના લયથી વ્યાકુલ બને છે આ પ્રકારની
 સ્થિતિમાં મૂકાયેલા તે ચોરને રાજપુરુષો લાવીને “આઘાયણપટિદુષ્કારસપા
 ચિયા” વધસ્થાનના દરવાજે હાજર કરે છે તરણ કે “અઘણા” તે અદત્ત-
 ગ્રાહી-ચોર લોકો કમનસીમ હોય છે “સૂલગવિલગ્નમિષ્ણદેહા” તે ચોરના
 શરીર શૂળીના અણીદાર ભાગો પર ચડાવવાને કારણે છિન્ન ભિન્ન થઈ જાય
 છે અને “તે ય તત્થ” ત્યાં તે વધ, વધ, મારણ, નિર્મર્ત્સન, શૂલારોપણ
 આદિ યાતના દેવાને સ્થાને તેમના ‘પરિકલ્પિયગુપ્તગા’ અગોઉપાગો, એટલે
 કે નાક, કાન આદિને કાતર આદિ શસ્ત્રો વડે કાપી નાખવામાં આવે છે ॥ સૂ. ૧૬ ॥

पुनरप्यदत्तादायिनो यथाफल प्राप्नुवन्ति तदाह—‘ केइ ’ इत्यादि ।

मृम्-केइ उल्ल विज्जति रुक्खसालेहि कलुणाइ विलव-
माणा । अवरे चउरंगधणि य वद्धा पव्वयकडगा पमुच्चंते
दूरपातवहुविसमपत्थरसहा । अण्णे य गयचलणामिलण नि-
म्मदिया कीरति । पावकारी अट्टारस खंडिया य कीरंति मुंड-
परसुहि । केइ उक्कित्तकण्णोठ्ठनासा उप्पाडियनयण - दत्तण
वसणा जिब्भदिय चिया छिण्णकण्णसिरा पणिज्जति । छिज्जंति य
असिणा निव्विसया छिण्णहत्थपाया य पमुच्चति । जाव जीवबंधणाय
कीरंति । केइ परदव्वहरणलुद्धा कारगलनियल-जुयलरुद्धा
चारगालये हयसारासयणाविप्पमुक्का मित्तजण निरक्किया निरासा
वहुजण धिक्कारसदलज्जाइया अलज्जा अणुवद्ध खुहापरद्धा सीउण्ह
तण्हवेयण दुघट्टघट्टिया विवण्णमुहविच्छिविया विहलमालिण
दुव्वला किलत्ता कासता वाहिया य आमाभिभूयगत्ता परूढ
नहकेसमंसुरोमामलमुत्तम्मि णियगम्मि खुत्ता तत्थेव मया
अकामना वधिउण पाएसु कट्टिया खाइयाए छूढा, तत्थ य
विग-सुणय-सियाल-कोलमज्जार-वद सडासतुडपक्खिगण-
विविहमुहसय-विगुत्तगत्ता कयविहगा । केई किमिजाय कुहिय
देहा अणिठ्ठ वयणेहि सप्पमाणा सुडुकयं ज मओ त्ति पावो
तुट्ठेण जणेण हयमाणा लज्जावणगा य हुति सयणस्स वि य
दीहकाल ॥ सू० १७ ॥

टीका—केइ ‘ केचित्=अदत्तादायिनः महाकष्टानुभवेन ‘ कलुणाइ विल-
वमाणा’ करुणानि वचनानि विलपन्तः ‘ रुक्खसालेहि’ वृक्षशाखासु ‘ उल्ल विज्जति ’
उल्लप्यन्ते=रज्ज्वादिभिर्गलन्यनेन वृक्षशाखासु आरोप्यन्ते इत्यर्थः । ‘ अवरे,
अपरे केचनाऽदत्तादायिनः ‘ चउरगधणियवद्धा ’ चतुरङ्गधणियवद्धा, = चतुर-

જ્ઞાનિ=હસ્તદ્વયપાદદ્વયરૂપાણિ ' ધણિય ' અત્યંત યદ્દાનિ પેવા તે તથા દૃઢવદ્દહ
સ્તપાદાઃ, ' પવ્યકડગાપમુચ્ચતે ' પર્વતઋટકાત્ પ્રમુચ્યન્તે=ગિરિશિખરાશ્ચિપાત્ય
ન્તેઽત એવ ' દૂરપાતમ્હુપિસમપત્યરસહા ' દૂરપાતમ્હુપિસમપ્રસ્તારમહાઃ=મ્હુવિ-
પમેષુ= અત્યન્તપિપમેષુ નિમ્નોઽતેષુ પ્રસ્તરેષુ=પાપાણેષુ ગો દૂરાત્ પાતઃ નિપતન
ત સઘન્તે યે તે તથા મરન્તિ । ' અણેય ' અન્યે ચ ' ગયચ્છળમલગનિમ્મદિયા
કીરતિ ' ગજચરણમલનનિર્મદિતાઃ, તત્ર - ગનચરણેન=ઢમ્ભિપાદેન યન્મર્ગન=
મર્દન તેન નિર્મદિતાઃ=સમ્મદિતશરીરા ક્રિયન્તે । તથા ' પાપકારી ' પાપકાણિ:

ફિર વે અદત્તગ્રાહી ચોર જિસ ફલ કો પાતે હૈ- ' કેહ ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(કેહ) કિતનેક અદત્તગ્રાહી મનુષ્ય (કલુણાઢ ચિલપમાણા)
મહાકર્ટોકો ભોગનેકે કારણ કરુગવચનો સે ચિલાપ કરતે હુએ (રુસ્ત્સા-
લેહિં) વૃક્ષોંકી શાખાઓં મેં (ઝહ બિજ્જતિ) રસ્તી આદિ સે ઘાયકર લટકા
દિયે જાતે હૈં । તથા (અવરે) કિતનેક અદત્તગ્રાહી મનુષ્ય (ચરગ
ધણિયવદ્દા) દોનો હાથ પૈર સૂય જરુદ્ધ કર ઘાયકર (પવ્યકડગા)
પર્વત કી ચોટી સે (પમુચ્ચતે) ગિરા દિયે જાતે હૈં, અતઃ વે (દૂરપાતવિ
સમપત્યરસહા) વહા સે ગિર કર નીચે ડુંચે પત્યરોં પર વહુત દૂરતક
ગુઢકતે આને કે કારણ શરીર મે વહુત વુરી તરહ છુલ જાતે હૈં । ઇસ
તરહ વે મહાભયકર વેદના કો સહન કરતે હૈં । (અણે ય) કિતનેક
અદત્તગ્રાહી ચોર (ગયચ્છળમલગનિમ્મદિયા) હાથી કે પૈરોં કે તલે
હાલ કર મદિત (કીરતિ) કરવાયે જાતે હૈં । ઇસ તરહ ડનકેં શરીર

તે અદત્તગ્રાહી ચોર જે ક્ષણ પામે છે તેવું વધુ વર્ણન કરે છે—
“ કેહ ” इत्यादि

ટીકાર્થ- “કેહ” કેટલાક અદત્તગ્રાહી માણસોને “કલુણાઢચિલવમાણા” મહા
કર્ટો ભોગવવાને કારણે કરુણ વચનોથી વિલાપ કરતા “રુસ્ત્સાલેહિં” વૃક્ષની
ડાળીઓ પર “ઝહ બિજ્જતિ” દોરડા આદિથી બાંધીને લટકાવી દેવામાં આવે
છે તથા “અવરે” કેટલાક અદત્તગ્રાહી માણસોને “ચરગધણિયવદ્દા”
ખંને હાથ પગને મળૂત બાંધીને “પવ્યકડગા” પર્વતની ટોચેથી “પમુચ્ચતે”
નીચે હડસેલી દેવામાં આવે છે, તેથી “દૂરપાતવિસમપત્યરસહા” ત્યાંથી જીયા
નીચા પથ્થર ગળાવાને કારણે તેમના શરીર ખરાબ રીતે દોલાઈ નાથ છે
અને તે રીતે તે લોકો અતિ ભયકર વેદના સહન કરે છે તથા “અણેય”
કેટલાક અદત્તગ્રાહી ચોરોને “ગયચ્છળમલગનિમ્મદિયા” હાથીના પગ નીચે
નાખીને “કીરતિ” કચડાવવામાં આવે છે એ રીતે હાથીના પગ નીચે કચ

‘મુદરસુહિ’ મુદરપરશુભિ = ભગનધારાકુઠારે : ‘અદ્વારસપડિયા’ અદ્વાદશ-
સ્થાનેષુ સ્પન્ડિતા ક્રિયન્તે કર્ણ = નયન-નાસિકો-ઘ-કર-ચરણાના દ્વય દ્વયમિતિ
દ્વાદશ, જિહ્વા-ગ્રીવા-ઠ્ઠ-પૃષ્ઠ-વક્ષ સ્થલ-ગુહોન્દ્રિયમિતિ પદ્મિલિત્ત્વાઽદ્વાદશ-
સ્થાનાનિ ભવન્તિ । તથા ‘કેહ’ કેચિત્ ‘ઉક્ત્તરુણોદ્વનાસા’ ઉક્ત્તરુણૌષ્ઠનાસા =
ઉક્ત્તાઃ = છિન્ના કર્ણઃ ઓષ્ઠઃ નાસા = નાસિકા ચ યેષા તે તથા ‘ઉપ્પાદિનયણ-
દસણવસણા’ ઉત્પાદિતનયનદશનટપણાઃ, તત્ર-ઉત્પાદિતાનિ = ઉન્મૂલિતાનિ નય-
નાનિ દશનાઃ = દન્તાઃ ટપણાઃ = ગ્રન્થકોશા યેષા તે તથા ‘જિઘ્મિદિયચિયા’
જિઘ્મેન્દ્રિયાશ્રિતાઃ જિઘ્મેન્દ્રિય = અશ્રિત = ગમિતમ્-આઠ્ઠ યેષાં તે તથા આઠ્ઠ-
જિઘ્મેન્દ્રિયાઃ ‘છિન્નકર્ણસિરા’ છિન્નકર્ણશિરાઃ = છિન્નકર્ણનાડ્યઃ, ‘પણિજ્જતિ’
પ્રણીયતે = રૂલાદ્યારોપણાય રૂપ્યભૂમૌ નીયન્તે । કેચિત્ ‘અસિણા છિજ્જતિ’

હાથી કે પૈરો સે મર્દિત હોને કે કારણ હટિપસલિયા ચૂર-ચૂર હો
જાતી હૈ ઓર વે વડે દુઃખી હોતે હૈ । તથા કિતનેક (પાવકારી) પાવ-
કારી અદત્તાગ્રાહી જન (મુદરસુહિ), ભગન ધાર વાલે કુઠારો સે અદ્વા
રહ સ્થાનો મે-કર્ણ ૨, નાસિકા ૨, નયન ૨, ઓષ્ઠ ૨, કર ૨, ચરણ ૨,
(૧૨) જિહ્વા ૧૩, ગ્રીવા ૧૪, કઠ ૧૫, પૃષ્ઠ ૧૬, વક્ષસ્થલ ૧૭, ઇય ગુહો-
ન્દ્રિય ૧૮, મેં-વઢી ઘુરી તરહ સે સ્પન્ડિત કર દિયે જાતે હૈ । તથા (કેહ)
કિતનેક ચોરોં કે (ઉક્ત્તરુણોદ્વનાસા) કાન નાક ઇવ ઓઠ કાટ દિયે
જાતે હૈ તથા (ઉપ્પાદિનયણદસણવસણા) નેત્ર ફોડ દિયે જાતે હૈ
દાંત ઓર અઢકોશ ઉપાઢ લિયે જાતે હૈ । (જિઘ્મિદિયચિયા) જીભ
લેંચ લી જાતી હૈ । (છિન્નકર્ણસિરા) કાન કી તસે તોડ દી જાતી
હૈ । ઇવ હસ તરહ કી સ્થિતિ મે કરકે ચોરો કો વે રાજપુરુષ (પણિજ્જતિ)

રાવાને કારણે તેમના શરીરના હાડકા અને પાસળીઓના ચૂરે ચૂરા થઈ જવાથી
તે લોકો ઘણી પીડા અનુભવે છે તથા કટલાક “પાવકારી” પાપી અદત્તાગ્રાહી
લોકોને “મુદરસુહિ” ધાર વગરની (બુઢી)કુહાડીઓથી “અદ્વારસપડિયા” અદ્વાર
જગ્યાએ ઘણીજ ખરાબ રીતે મારવામા આવે છે તે અદ્વાર અંગે આ
પ્રમાણે છે કાન ૨, નાસિકા ૨, નયન ૨, હોઠ ૨, હાથ ૨, પગ ૨, છલ,
ઝાવા, ઠઠ, પૃષ્ઠ, વક્ષસ્થલ, અને ગુહોન્દ્રિય, તથા “કેહ” કટલાક ચોરોના
“ઉક્ત્તરુણોદ્વનાસા” કાન, નાક અને હોઠ કાપી નાખવામા આવે છે તથા
“ઉપ્પાદિનયણદસણવસણા” આંખો ફેાડી નાખે છે, દાંત અને હુત અંગે
ઉખેડી નાખે છે, ‘જિઘ્મિદિયચિયા’ છલ ખેચી કાઢવામા આવે છે,
“છિન્નકર્ણસિરા” કાનની નસો તોડી નાખવામા આવે છે તેમની એવી
હાલત કરીને રાજપુરુષો તે ચોરોને “પણિજ્જતિ” શુળી પર મારવામા લઈ

અસિના=સ્વદ્વેન ડિગ્જન્તે=સ્વદ્વેન ક્રિયન્તે । તથા ‘ નિવિસિયા ’ નિવિસયાઃ= પ્રિયાત્ દેશાદિપ્રકાસિતાઃ ક્રિયન્તે । કેચિત્ ‘ છિણ્ણહત્થપાયાય ’ ડિગ્જન્તે પાદાથ ‘ પમુચ્ચતિ ’ પ્રમુચ્યન્તે, રાજકિદ્ધરૈર્દેસ્તપાદ ડિગ્જન્તે । ક્રિયન્તે=ક્રિયન્તે । કેચિત્ ‘ જાવજીવવધનાય કીરતિ ’ યાવજીવવધનાથ ક્રિયન્તે=જાવજીવવધનાથ કારાગારે વધન્તે । ‘ કેદ પરદ્વવ્વહરણલુદ્ધા ’ કેચિત્ પરદ્વવ્વહરણલુદ્ધા-પાપિનઃ ‘ ચરગાલયે ’ ચરગાલયે=કારાગારે ‘ કારગાલનિયલજુયલરુદ્ધા ’ કારાગાલનિગડયુગલરુદ્ધાઃ=કારાગાલયા=કારાગૃહગીચયા નિગડયુગલેન=કારાગૃહ વલાદ્વયેન રુદ્ધા=નિયન્ત્રિતાઃ ભવન્તિ । કથમૂચ્યઃ ૧ ઇત્યાદિ—‘ હ્યસારા ’ હ્યસારાઃ=અપહતદ્રવ્યાઃ । પુનઃ કીદશાઃ ‘ સયણવિપ્પમુક્કા ’ સ્વજનવિપ્રમુક્તાઃ=સ્વકીયજ્ઞાતિવિરહિતાઃ “ મિત્તજણનિરકિયા ” મિત્રજનનિરાકુળાઃ

શૂલી પર ચઢાને કે લિયે છે જાતે હૈં । કિતનેક ચોર ડન રાજપુરુષોદ્ધારા (અસિના ડિગ્જન્તિ) તલવારોં સે કાદે જાતે હૈં (નિવિસયા) કિતનેક દેશ સે બાહર નિકાલ દિયે જાતે હૈં । ઑર (છિણ્ણહત્થપાયાય) કિતનેક હાથ પેરોં કો કાટ કર યોં હી (પમુચ્ચતિ) છોડ દિયે જાતે હૈં । તથા કિતનેક (જાવજીવવધનાય કીરતિ) જીવન પયંત કારાવાસ મેં હી રલ્લ દિયે જાતે હૈં । (કેદ પરદ્વવ્વહરણલુદ્ધા) તથા પરદ્વવ્વહરણ કરને મેં લુબ્ધક બને હુણ કિતનેક ચોર (કારગાલનિયલજુયલ રુદ્ધા) કારાગાર કી અર્ગલા કે સાથ લોહ કી જાજીરોં સે જકડકર (ચરગાલયે) કારાગાર મેં હી બદ કર દિયે જાતે હૈં । (હ્યસારા) હ્યસારા દ્વ્ય સમસ્ત રૂપ સે અપહત કર લિયા જાતા હૈં । (સયણવિપ્પમુક્કા) હ્યકે કિસી મી સ્વજન સે હ્યેં નહીં મિલને દિયા જાતા હૈં । (મિત્તજણનિરકિયા) હ્યકે

બાથ છે કેટલાક ચોર તે રાજસેવકો દ્વારા “અસિના ડિગ્જન્તિ” તલવારોથી કપાઈ બાથ છે, “નિવિસયા” કેટલાક દેશમાંથી હાકી કાઢવામાં આવે છે, અને “છિણ્ણ હત્થપાયાય” કેટલાકને હાથપગ કાપી નાખીને “પમુચ્ચતિ” છોડી મૂકવામાં આવે છે તથા “જાવજીવવધનાય કીરતિ” કેટલાકને જીવે ત્યાં સુધી કારાગૃહમાં પૂરી રાખે છે “કેદ પરદ્વવ્વહરણલુદ્ધા” તથા પરદનનુ અપહરણ કરવાની લાલમાં વાળા કેટલાક ચોરોને “કારગાલનિયલજુયલરુદ્ધા” કારાગૃહના આગળીયા સાથે લોહની સાકળોથી બાંધીને “ચરગાલયે” કારાગારમાં જ કેદ રાખવામાં આવે છે “હ્યસારા” તેમનું સઘળું દ્રવ્ય જપ્ત કરવામાં આવે છે “સયણવિપ્પમુક્કા” તેમના ગોઈ પણ સ્વજનની મુલાકાત તેમની સાથે થવા દેતા નથી, “મિત્તજણનિરકિયા” તેમના મિત્રો પણ

मित्रैस्त्यक्ताः ' निरासा ' निराशाः = जीवनाप्राशारहिताः ' बहुजन-
धिवासदलज्जाइया ' बहुजनधिवारशब्दलज्जायिता = गहूना जनाना विकार-
वचनैः लज्जायिताः = लज्जा प्रापिता तथापि अलज्जाः = निर्लज्जाः धृष्ट-
त्वात् ' अणुः द्वयपरः ' अनुगदक्षुधापराद्धाः = अनुगदक्षुधया = सततपुष्पया
अपराद्धाः = पीडिताः ' सीउण्हतण्हवेयणदुघटघट्टिया ' शीतोष्णतृष्णावेदनादुर्घट्ट-
घट्टिताः , तत्र शीतेन उष्णेन तथा तृष्णया = पिपासया क्षुधयाच या दुर्घटाः =
असत्याः वेदना = पीडास्ताभिः - दुर्घट्ट = अतिप्रिकटम् - अतिशयेन घट्टिताः = पी-
डिताः ' विवर्णमुहविच्छ्रिया ' विवर्णमुखविच्छ्रिकाः = तत्र विवर्णं मुख = वि-
रूपयुक्तं मुखं येन ते तथा विच्छ्रिकाः = कान्तिरहिता निस्तेजसाः । ' वि-
हलमलिगदुबला ' विहलमल्लिनदुर्बलाः = तत्र विहला = कारागारे नियन्त्रितत्वा-
दनिष्टफला मारिताः = मारिता वेदना दुर्बलाश्च = शक्तिरहिता ये ते तथा ' किलता '

मित्रजन भी इन्हें छोड़ देते हैं। (निरासा) ये चोर बहा जीवत पर्यन्त रहने के कारण अपने जीवन की आशा छोड़ देते हैं। (घटुजणधिकार सदलज्जाइया) अनेक जनो द्वारा धिकार के शब्दों से ये लज्जित किये जाते हैं। फिर भी इन्हें जैसी लज्जा आनी चाहिये वैसी नहीं आती है। कारण ये बहुत अधिक धट धन जाते हैं। (अणुषद्वखुहापरद्धा) रातदिन ये क्षुधा से पीडित बने रहते हैं। (सीउण्हतण्हवेयणदुगद्वग्द्विया) शीत, उष्ण, तृष्णा, क्षुधा जन्य असह्यवेदनाओंसे ये सदा (दुघद्वग्द्विया) अत्यन्त दुःखित बने रहते हैं। (विचण्णसुहविच्छविद्या) इनका मुख सदा कुम्हलाया हुआ रहता है और कांति भी इनकी मलिन रहती है। (विहलमलिणदुब्बला) कारागार में बंद रहने के कारण ये (विहल) अनिष्ट फलवाले होते हैं—अर्थात् जो ये चाहते हैं वह इन्हें नहीं मिलता।

તેમનો ત્યાગ કરે છે “નિત્યા” ને ચોરો ત્યા જીવન સુધી રહેવાના કારણે પોતાના જીવનની આશા છોડી દે છે “વદુજ્ઞાનિ કારસહજ્ઞાદ્યા” અનેક લોકો ધિક્કારના શબ્દોથી તેમને શરમિદા કરે છે, છતાં પણ તેમને એવી શરમ થતી નથી, કારણ કે તેઓ પૂર્વ વર્તન ગણા હોય છે, “અણુવદ્ધુહાપરદા” રાત દિવસ તે ભૂખથી પીડાયા કરે છે “સીઝ્ઞતણ્ઞવેયણ્ઞુદ્ધુદ્ધિયા” દડી, ગરમી, ક્રુધા તૃષ્ણા આદિની અસહ્ય વેદનાથી તેઓ સદા “કુષ્ઠદ્ધિયા” અત્યંત દુઃખી રહે છે “વિવગ્ગમુરવિચ્છવિયા” તેમનું મુખ સદા રવાન-ઉદાસ રહે છે અને તેમની કાંતિ પણ ભલિન રહે છે “વિહલ્લમલ્લેણકુચ્છલ્લ” કારણકે તેઓ રહેવાને કારણે તેઓ “વિહલ” અનિષ્ટ ક્ષણવાળા હોય છે, એટલે કે તેઓ

વલ્લાન્તાઃ જ્ઞાનાઃ 'કાસતા' કાશમાનાઃ કાશરોગેણ 'મૂર્ચ્' इति शब्दाय
 માનાઃ 'વાહિયા ય' વ્યાધિતાશ્ર=કુષ્ઠાદિવિવિધરોગપીડોતાઃ, 'આમાભિભૂય
 ગતા' આમાભિભૂતગાત્રાઃ=અમૈ = કુષ્ઠાશ્વાસપરિપાકજનિતૈરતીસારાદી નાના
 રોગૈરભિભૂતાની ગાત્રાણિ=શરીરાણિ યેષા તે તથા । 'પરુદનહકેસમસુરોમા'
 પરુદનલ્લકેશશ્મશ્વરોમાગઃ, તત્ર પ્રસ્રવાઃ । અસન્કારાત્ પ્રસ્રવાઃ ન્તાઃ કેશાઃ શ્મ
 શ્રૂણિ=મુલજાતાનિ 'દાઢી' इति भाषा प्रसिद्धानि रोमाणि च येषा ते तथा 'मल
 મુત્તમ્મિ નિયગમ્મિ સુત્તા' નિજકે મલમૂત્રે સુત્તા=સ્વર્ક.યે પુરીપમૂત્રે 'સુત્તા'નિમગ્ના
 'સુત્તા' इति देशी शब्द, कारागारे वद्धाः अ यत्र गन्तुमशक्यत्वात् म्लकुत
 મલમૂત્રપુરીપપક્કણ નિમગ્નાસ્તિષ્ઠન્ત્યદત્તગ્રાહિણ इत्यर्थः । तथा 'अकामगा'
 અકામગાઃ = મરણે-કારહિતાઃ 'તત્થેવ મયા તત્થેવ કારાગૃહે મૃતાઃ સન્તાઃ

हैं । (मलिण) ये मलिन वदन एव (दुन्ल) शक्तिविहीन एते रहते
 हैं । (किलता) ग्लान रहते हैं । तथा (कासता) काशरोग से "खू-
 खू" इस प्रकार का शब्द इनके मुख से निकलने लगता है । और
 (वाहिया य) कुष्ठादि विविध रोगों से ये पीडित होते हैं (आमा
 भिभूयगता) इनका शरीर अतिमार आदि नाना प्रकार के रोगों का
 घर बन जाता है । (परुदनहकेसमसुरोमा) नख, केश, तथा श्मश्रु-दाढ़ी
 के बाल समारे नहीं जानेके कारण बहुत घट जाते हैं । और (नियगमि
 मलमुत्तमि) इनकी हालत अधिक गभीर बन जाती है कि जिससे
 कारागार में बद्ध ये विचारे अन्य जगह जाने में असमर्थ होने के कारण
 अपने ही मलमूत्र में (सुत्ता) भरे हुए पड़े रहते हैं । तथा (अकामगा)
 ज़ही इच्छा होने पर भी (तत्थेव) उसी में पड़े पड़े वही पर (मया)

જે વસ્તુની ઇચ્છા કરે તે વસ્તુ તેમને મળતી નથી " મલિણ " તે લોકો
 મલિન વદન વાળા તથા "દુન્લ" શક્તિ વિનાના થઈ જાય છે, " કિલતા "
 શ્વાનિયુક્ત રહે છે, તથા "કાસતા" ઉધરસને કારણે "ખૂ-ખૂ" કથી
 કરતા હોય છે અને "વાહિયાય" તે લોકો કોઈ આદિ અનેક રોગોથી
 પીડાતા હોય છે "આમાભિભૂયગતા" તેમના શરીર અતિસાર આદિ વિવિધ
 રોગોના ઘર બની જાય છે, "પરુદનહકેસમસુરોમા" નખ, કેશ તથા દાઢીના
 વાળ નહીં ઓપાતા હોવાથી ઘણાજ વધી જાય છે અને "નિયગમિ મલમુ-
 ત્તમિ" તેમની હાલત એવી ગંભીર થઈ જાય છે કે, કારાગૃહમાં પૂરાયેલા તે
 લોકો ખીણ જાય એ જવાને અસમર્થ હોવાથી પોતાના જ મળમૂત્રમાં
 "સુત્તા" લશઈ રહે છે તથા "અકામગા" ઇચ્છા ન હોવા છતાં પણ
 "તત્થેવ" ત્યાજ પડ્યા પડ્યા "મયા" મરી જાય છે ત્યાર બાદ "બધિ

‘वधिऊणपापमु कट्टिया’ पाठेषु उद्धृता ऋषाः=रज्ज्वादिगिर्हरतपादान्धनेन
 कृष्टाः = उद्दिनिर्मासिता ‘स्वाध्याय कृष्टा’ साक्षात् कृष्टाः क्षिप्ताः = गर्ते
 चाण्डालादिभिः प्रक्षिप्ता क्रियन्ते। ‘तत्त्वय’ तत्र च त्रिगुणयमियालकोलम-
 ज्जाखदमडासतुडपक्षिगणत्रिचिह्नमुहमयत्रिलुत्तगत्ता’ वृक - शुक्र - शृगाल-
 कोल-मार्जार वृन्द-सटासतुडपक्षिगणत्रिचिह्नमुहमयत्रिलुत्तगत्ता, तत्र ‘त्रिग’
 वृष्टाः = ‘वरगडा’ इति भाषा प्रसिद्धा, ‘मुणय’ शुनकाः = कुम्भराः ‘सि-
 याल’ शृगालाः कोला मुकता मार्जारा, तेषां वृन्द समूहस्तेन तथा सदृश
 तुण्डैः = सदृशचक्षुःशृङ्खलतुण्डैः-पक्षिगणानां=काकादीनां त्रिचिह्नमुहमयत्रिलु-
 त्तानि=निःशेषेण खादितत्वाद जलक्षितानि गात्राणि येषां ते तथा वृककुम्भर-
 शृगालादिभिः विविधपक्षिगणैश्च भक्षितशरीराः ‘कयत्रिह्मा’ क्रतुभिभङ्गाः=
 वृकादिभिरेव खण्डशः क्रता । तथा ‘केइ’ केचिन् गृतेभ्योऽन्ये ‘किमि-

मर जाते हैं। बाद में (वधिऊणपापमु) रज्जु आदि से पैर बांधकर
 (इहें चांडाल आदि जन (कट्टिया) घाटर निकाल कर (स्वाध्याय कृष्टा)
 किसी गड्ढे में ले जाकर पटक देते हैं। (तत्त्वय) वहा फिर उनके फले
 चरों को (त्रिगुणयमियालकोलमज्जाखदमडासतुडपक्षिगणत्रिचि-
 ह्मुहमयत्रिलुत्तगत्ता) (त्रिग) वृक-वगेरे, (मुणय) शुनक-कुत्ते,
 (सियाल) शृगाल, (कोल) सुअर, (मज्जारपद) मार्जार-वन
 विलाय आदि हिंसक जानवरों के (वृन्द-समूह) एवं (सटासतुडप-
 क्षिगण) सटामी के जैसे तीव्र तुण्डवाले गृह्य आदि पक्षियों के
 समूह (त्रिचिह्नमुहमय) नाना प्रकारके मैराजों मुहों से (त्रिलुत्तगत्ता)
 तहस नहस कर डालते हैं जिमसे ‘यह जगीर किस का है’ यह नहीं
 जाना जाता। (कयत्रिह्मा) हम प्रकार वृकादिक जानवरों एवं विविध प-
 क्षिगणों से कितनेक इन अभागों के शरीर खाया जाकर खट २ कर

कपाणपुत्र” हेरडा आदिवी पञ्च भाषांनी अशाच आदि दोघे तेमने “कट्टिया”
 गड्ढार काटीने “स्वाध्याय कृष्टा” काष्ठ भाषाभां लई लईने हे की हे छे
 “तत्त्वय” त्या तेमना भुदने त्रिगुणयमियाल कोलमज्जाखदमडासतुड-
 पक्षिगणत्रिचिह्नमुहमयत्रिलुत्तगत्ता” “त्रिग” वृक, “मुणय” शुनक-
 कुत्त, “सियाल” शृगाल, “कोल” सुअर, “मज्जारपद” मार्जार अथवा
 गिलाडा, आदि हिंसक पशुजीवोना समूह अने “सटासतुड पक्षिगण”
 साजुरी जेवा तीक्ष्ण व्याधवाणा गीध वगेरे पक्षीजीवोना समूह “त्रिचिह्नमुह-
 मय” विविध प्रचन्ना मेवडा मुहो द्वारा “त्रिलुत्तगत्ता” ठोली भाष छे,
 तेथो “आ वेतु गरीर ३” ते व्हाजी गड्डातु नथी “कयत्रिह्मा” आ गीते
 वर आदि व्हावरी तथा विविध पक्षीजीवो द्वारा ते कभवागीजीव शरीर

જાય કુહિયદેહા ' ઋમિજાતકુચિતદદાઃ ઋમિજાતેન = રોગાદિ કારણાત્
 સમૂત્પન્નકૃમિસમૂહેન કુચિતદદાઃ=દુર્ગંધયુક્તગરોરા 'અગિદ્વાયણેર્હિ' નિષ્ટવચ્ચૈઃ
 =અપ્રિયવચ્ચૈઃ. 'સુદ્દુકય જ મઓત્તિ પાવો' 'સુદ્દુકૃત = શોભન જાત યત્
 =યસ્માત્ મૃતોડય પાપ = પાપી કત્યેવ રૂપઃ 'સપ્પમાણા' કપ્પમાનાઃ=
 આક્રોશ્યમાનાઃ 'તુદ્દેજ જણેણ હપ્પમાણા' તુપ્પેન જનેન હપ્પમાનાઃ તેપા મારણેન
 પ્રસન્નો યો જનસ્તેન તાડયમાના સન્તઃ 'સયણસ્સ વિય' મ્વજનસ્થાપિ ચ
 કિં પુનરુપેપામ્ 'દીહકાલ' દીર્ઘકાલ યાત્ 'લજ્જાવગાય' લજ્જાપનકા =
 લજ્જાલજ્જારહિતા ક્ત્યર્થ 'હુતિ' ભવન્તિ ॥ સૂ. ૧૭ ॥

પરમિહ લોકે દુઃખમાપ્નુવન્તીત્યુક્ત્, અર પરશોકે કિં ભવતી ? ત્યાહ—
 'મયાસતા' ક્ત્યાદિ

મૂલમ્—મયાસતા પુણો પરલોગસમાવણ્ણા નરણ ગચ્છતિ
 નિરભિરામે અંગારપલિત્તગકપ્પઅચ્ચત્થસીયવેયણા અસાયણો

દિયે જાતે હૈ । તયા (કેહ) કિતનેક અદત્તગ્રાહી ચાર જો મરને સે યાકી
 બચે રહતે હૈં વે (કિમિજાયકુહિયદેહા) રોગાદિક કારણ કે વશ સે
 અપને શરીર મે ઉત્પન્ન હુણ કીઢોં સે દુર્ગંધિત શરીર ચાલે હોકર (અણિ-
 દ્વયણેર્હિ) લોગો કે હસ પ્રકાર કે અપ્રિયવચ્ચોં સે કિ—(સુદ્દુકય જ
 મઓત્તિ પાવો) બલા હુઆ જો યહ પાપી મર રહા હૈ " અથવા મરે હુણ
 સા હો રહા હૈ " હસ પ્રકાર (સપ્પમાણા) ગાલિયો સે અપમાનિત હોતે
 હૈ । તયા ઉનકી મૃત્યુ સે પ્રસન્ન હોને ચાલે મનુષ્યોં સે તાડિત હોકર
 (સયણસ્સ વિય) સ્વજનોંસે ખી ઓર દૂસરોંસે ખી (દીહકાલ) બહુત
 સમયનક (લજ્જાવગાય) લજ્જિત (હુતિ) હોતે હૈ ॥ સૂ-૧૭ ॥

ખવાય છે અને તેના ટુકડે ટુકડા કરાય છે તથા ' કેહ " બેટલાક અદત્ત-
 ગ્રાહી ચોરો જે ખાતખાથી બચે છે તે " કિમિજાયકુહિયદેહા " રોગાદિક
 કારણોથી તેમના શરીરમા ઉત્પન્ન થયેલ કીડાઓથી દુર્ગંધ યુક્ત શરીરવાળા
 થઈને " અણિદ્વયણેર્હિ " લોકોના આ પ્રકારના અપ્રિય વચ્ચેથી " સ પમાણા "
 અપમાનિત થાય છે— ' સુદ્દુકય જ મઓત્તિ પાવો " " સારુ થયુ કે આ પાપી
 આ રીતે મરી રહ્યો છે " અથવા " મરેલાના જેવી સ્થિતિ અનુભવે છે '
 તથા તેમના મૃત્યુથી ખુશી થનારા માણસો દ્વારા માર ખાઈને "સયણસ્સવિય"
 સ્વજનો તથા ખીજા લોકોથી " દીહકાલ ' લાગા સમય સુધી 'લજ્જાવગાય'
 લજ્જા ' હુતિ " પામે છે ॥ સૂ-૧૭ ॥

દિણ્ણસયય દુક્ખસયસમભિભૂણ । તઓ વિઝઘ્ઘટ્ટિયા સમાણા-
પુણો વિ પઘ્ઘજ્જનિ તિરિયજોણિ । તહિ પિ નિરઓઘમ-અણુભ-
વતિ વેયણં । તે અણતકાલેણ જહ્ણામ કહિ વિ મણુયભાવં
લહિંતિ ણેગેહિ ણિરચગહ્ઘમણ તિરિયભવસયસહસ્સપરિયટ્ઠણહિ
તત્થ વિ ય સવન ણારિયા નીયકુલસમુપ્પણ્ણાલોચવજ્જાતિરિ-
ક્ખ મૃયા ય અકુસલા કામભોગતિસિયા જહિ નિવધતિ નિર-
ચવત્તણી ભવપ્પવચ્ચકરણપણોહિ પુણો વિ સંસારાવત્તણેમિમૂલે
ધમ્મસુહ વિવજ્જિયા અણજ્ઞા કૂરા મિચ્છત્તસુહ પવણ્ણા ય હુતિ ।
એગતદંઢરુહણો વેઢેતિ કોસિગારકીઢેવ અપ્પગ અટ્ઠકમ્મ-
તત્તુઘણવધણેણ ॥ સૂ. ૧૮ ॥

ટીકા— ‘મયાસતા’ મૃતા; સન્તઃ ‘પુણો’ પુનર્મરણાનન્તર ‘પરલોગ-
સમાવણ્ણા’ પરલોકસમાપન્નાઃ પરલોક પ્રાપ્તાઃ ‘નરગે ગચ્છતિ’ નરકે
ગચ્છન્તિ । કીદશે નરકે ? इत्याह—निरभिरामे=असुन्दरे, तथा ‘अगारपलित्त
गकप्प, अन्वत्थ सीयवेयणा आसायणो दिण्णसययदुक्खसयसमभिभूण’

અવ સૂત્રકાર યદ્ કહતે હૈં કિ યે અદત્તગ્રાહી ચોર હસ લોક મે
તો હસ પ્રકાર કે અનેક દુઃખોં કો ભોગતે હે પરન્તુ પરલોક મેં બી
હનકી કેસી દુર્દશા હોતી હૈં સો કહતે હૈં—‘મયાસતા’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—યે અદત્તગ્રાહી ચોર જવ (મયાસતા) મર જાતે હૈં તવ (પુણો)
હસકે અનન્તર (પરલોગસમાવણ્ણા) પરલોકમે જાકર (નરગે ગચ્છતિ)
નરક મે ઉત્પન્ન હોતે હૈં । જો નરક (નિરભિરામે) સુન્દરતા સે રહિત
અર્થાત્ અસુહાવને હૈં, તયા (અગારપલિત્તગકપ્પ) અતિપ્રજ્વલિત અગાર

હવે સૂત્રગર એ જતાવે છે કે તે ચોરલોગે આ લોકમા તો ઉપરોક્ત
પ્રકારના હુ ણો અનુભવે છે પણ પરલોકમા પણ તેમનીકેવી દુર્દશા થાય છે—
“મયાસતા” इत्यादि

ટીકાર્થ—તે અદત્તગ્રાહી ચોર “મયાસતા” મરીને “પુણો” પછી “પરલોગ
સમાવણ્ણા” પરલોકમા જઈને “નરગે ગચ્છતિ” નરકગર્ભમા જીતપન્ન થાય
છે જે નરકાગર “નિરભિરામે” સુન્દરતાથી ગહિત છે, તથા “અગારપલિત્ત

અદ્વારપરીક્ષકસ્થાઽત્યર્થશીતવેદનાઽઽવ. નોન્નીર્જસનાદઃ. ગગનમપભિમૂતે, તપ
 ' અદ્વારપલિત્તગરૂપ ' પરીક્ષક = અનિપજ્યલિતો યોઽદ્વારઃ = ધૂમ
 રહિતપલિત્તેન રૂપ તત્સદશમ્-ઉષ્ણ, તથા ' અચ્ચત્થસીયરેયણા આસાયણો '
 અત્યર્થ શીત=અત્યર્થ હિમકાલોઽયશીત તથાવેદના તત્ત્યાઃ આપાદન-પ્રાપ્ત
 તેન ' ઉદિણ્ણસયયપુઞ્જસય ' ઉદીર્ણાનિ સમુદ્ધતાનિ યાનિ મતત દુઃખ
 શતાનિ=અને દશતસલ્પકનિરન્તરદુઃખાનિ, તૈ ' સમભિમૂળ ' સમભિમૂત =
 યુક્તઃ યઃ સ તથા તસ્મિન્, યદ્વા-ઉષ્ણશીતવેદના, સા કીદૃશી ? ઇત્યાહ આશ્વા
 તનેન=ચિરકાલાનુવન્નિકદુઃખ ફલદાયકાઽદત્તાઽઽદાનજનિતાઽગાતવેદનીયકર્મણા
 ઉદીર્ણા પ્રકટિભૂતા તત્ત્યાઃ સ્વજનિતાનિ યાનિ સત્તત્તુલ્લશતાનિ તૈઃ સમભિમૂતઃ
 =વ્યાપ્નો યઃ સ તથા તસ્મિન્નેવ ભૂતે નરકે અદત્તાઽઽદાપિનો મૃતાઃ સન્તો ગચ્છ
 ન્તીતિ પૂર્વેણ સમ્બન્ધઃ. । તત્ર નરકે ગત્વા સન્તત્તગ્રોહવાલુકા નિરુપગ્નરકઠોરસૂચી

કે જૈસી ઉષ્ણતા, ઔર (અચ્ચત્થસીય) હિમકાલ જૈસા અત્યત શીત
 હૈ । યદ્વા નારકિયોં કો હસ ઉષ્ણતા ઔર શીત કી (વેયણા આસાયણો
 ડિણ્ણ) વેદના કી પ્રાપ્તિ સે ઉદીર્ણ-ઉત્પન્ન (સયયદુઃખસય) નિરન્તર
 સૈકઢોં દુઃખ પ્રાપ્ત હોકર (સમભિમૂળ) દુઃખિત કરતે હૈં । " આસા
 દન " યદ્ પદ જો સૂત્ર મેં આપ્યા હૈં ઉસકા અર્થ એક તો પ્રાપ્ત હોના હૈં-
 જૈસા કિ અમી લિખ દિયા ગયા હૈં । તથા દૂસરા અર્થ હસકા હસ
 પ્રકાર સે હૈં-કિ વે અદત્તાગ્રાહી ચોર જો વદા મર કર નારકી કી પર્યાય
 સે ઉત્પન્ન હો ચુકે હૈં ચિરકાલાનુવધી-ભવ ભવ મેં કદુઃખ ફલ દાયક
 અદત્તાદાન કે પ્રભાવ સે ઉત્પન્ન હુએ અશાત વેદનીય કર્મ કે દ્વારા પ્રકટી
 ભૂત વેદના સે વ્યાપ્ત ઊન નરકો મેં નિરન્તર સૈકઢોં પ્રકાર કે દુઃખો કો

ગત્વ " અતિ પ્રબલિત અગારા જેવુ ઉષ્ણ અને " અચ્ચત્થસીય " હિમકાળ
 જેવુ અત્યત શીતળ છે તથા નારકી જીવોને તે ઉષ્ણતા અને શીતની " વેયણા
 આસાયણો ડિણ્ણ " વેદનાની પ્રાપ્તિથી ઉત્પન્ન થયેલ " સયયદુઃખસય " સેકઢો
 દુઃખો નિરન્તર " સમભિમૂળ " દુઃખી કરે છે " આસાદન " આ પદનો સૂત્રમાં
 ઉપયોગ થયો છે તેનો એક અર્થ તો ' પ્રાપ્ત થવું " છે, જે સૂત્રમાં હમણા
 જ અપાયો છે તથા તેનો બીજો અર્થ આ પ્રમાણે છે—તે અદત્તાગ્રાહી ચોર
 કે જે મરીને નારકીની પર્યાયમાં ઉત્પન્ન થઈ ચુક્યો છે, ચિરકાલાનુવધી-
 ભવભવમાં કડવા ફળ દેનાર અદત્તાદાનના પ્રભાવે ઉત્પન્ન થયેલ અશાતા વેદ-
 નીય કર્મ દ્વારા ઉત્પન્ન થયેલ વેદનાથી વ્યાપ્ત તે નરકોમાં નિરન્તર સેકઢો
 દુઃખો ભોગવ્યા કરે છે

સુખદુસ્તરમાર્ગસચ્ચરણવિવિધવસામાસપૂરશોગિન પૂર્જનદોનિમજ્જનપરમાધાર્મિકસત-
 ત્તગલાકાશીરપ્રવેગનવિવિધશસ્ત્રાસ્રભેદનચ્છેદનતાડનાપક્ષારણાદિકાનિ ત્રિપુલાનિ
 ઘોરાણિ દુઃખાનિ શુન્વયા 'તત્તોનિ ઉચ્ચદ્વિયા સમાણા, તત્તોઽપિ નરકાદુદ્વૃત્તાઃ
 સન્તઃ=નિસ્સૃતા. મન્તઃ 'પુણો વિ' પુનરપિ 'તિરિયજોણિ પવજ્જતિ' તિર્યગ્યોનિ પ્ર-
 પદ્યન્તે 'તદ્દિપિ' તત્તપિ 'નિરયોયમ અણુ ભવતિ વેયણ' નરકોપમામનુભવન્તિ વેદનાં
 =નરકમદશમેયદુ ર્થ પ્રાપ્નુવન્તિ। અ 'જહનામ' યદિનામ 'અણતકાલેન'અનન્ત-
 કાલેન=નિગોદ્દયા પેક્ષયા 'જેગેહિ' અનેકેપુ=વદ્દુપુ 'નિરયગતિગમનતિરિયમવસય-
 સહસ્સપરિયટ્ટદ્દહિ' નરયગતિગમનતિર્યગ્મવસયસહસ્સપરિવર્તેપુ=નરકગતો યાનિ પુનઃ
 પુનર્ગમનાનિ તેષા તયા તિર્યગ્મવાના=તિર્યગ્યોનીના ચ 'તે સત્સહસ્સપરિવર્તાઃ=અનેક-
 શતસહસ્સભ્રમણાનિ તેષુ અતિક્રાન્તેષુ સત્સુ 'કદ્દિ વિ મણુયમાવ લદ્દિતિ' કથ-
 મોગા કરતે હિં । ઇસ પ્રકાર ઇસ નરકો મે શીતઔર ઉપ્પ જન્ય અનેક
 પ્રકાર કી વેદનાઈ હિં જો નારકિયો કો વ્યથિત કરતી રહતી હિં । (તત્તો-
 વિ ઉચ્ચદ્વિયા સમાણા) નરકો મેં જાકર વહા કેવિવિધ પ્રકાર કેદુઃખો
 કો ભોગતે ૨ જય ઉન જીવો કી એક સાગર આદિ અનેક સાગર પ્રમાણ-
 વાલી મુજ્જમાન આયુ વહા કી જય સમાપ્ત હો જાતી હૈ તય વે વહા સે
 નિકલ કર પુનરપિ (તિરિયજોણિ પવજ્જતિ) તિર્યચયોનિ મેં જન્મ
 ધારણ કરતે હિં । (તદ્દિપિ) વહાં પર મી વે (નિરયાવમ) નરકોપમ
 (વેયણ) વેદના કો દુઃખો કો (અણુભવતિ) ભોગતે રહતે હૈ । (જહ-
 નામજેગેહિં) નિરયગતિગમનતિરિયમવસયસહસ્સપરિયટ્ટદ્દહિં) યદિ અનેક
 નરકગતિ તિર્યચગતિ કે લાખોં ભવોકો ધારણ કરતે ૨ વ્યતીત હુણ
 (અણતકાલેણ) નિગોદ કી અપેક્ષા અનતકાલ કે વાદ (કદ્દિ વિ)
 કિમી તરટ (મણુયમાવ) મનુષ્યયોનિ મી ઉન્હેં (લદ્દિતિ) પ્રાપ્ત હો ગઈ

આ પ્રમાણે તે નરકોમા શીત અને ઊષ્ણતા જન્ય અનેક પ્રકારની વેદ-
 નાઓ નારકી જીવોને પીડા પહોંચાડયા કરે છે “ તત્તો વિ ઉચ્ચદ્વિયા સમાણા ”
 નરકોમા જઈને ત્યાના વિવિધ પ્રકારના દુ જો ભોગવતા ભોગવતા તે જીવોનુ
 અનેક સાગર પ્રમાણ આયુષ્ય ત્યા પૂર થાય છે ત્યારે તેઓ ત્યાથી નીકળીને
 વળી પાછા “ તિરિયજોણિ પવજ્જતિ ” તિર્યચ યોનિમા જન્મ ધારણ કરે છે
 “ તદ્દિપિ ” ત્યા પણ તેઓ “ નિરયોયમ ” નરક મમાન “ વેયણ ” વેદનાઓ
 દુ જો “ અણુમવતિ ” ભોગવે છે “ જહનામજેગેહિં નિરયગતિગમનતિરિય
 મવસયસહસ્સપરિયટ્ટદ્દહિં ” એ અનેક નરક ગતિ, તિર્યચગતિના લાખો લખો
 ધારણ કરતા કરતા નિગોદની અપેક્ષાએ પસાર થયેલ “ અણતકાલેણ ” અનત
 કાળ પછી “ કદ્દિ વિ ” કોઈ પણ રીતે “ મણુયમાવ ” મનુષ્યગતિમા તેમને

મપિ મનુજભાવ=મનુષ્યોર્નિ લભન્તે=પ્રાપ્નુચ્ચપિ ચેત્તર્હિ 'તત્થવિ ય' તત્રાપિ ચ
 મયન્તિ=જાયન્તે, 'અગારિયા' અનાર્યાઃ=મ્લે-ચાઃ શકયવનાદયઃ ક્રોદ્ધા ?
 इत्याह-'नीचकुलसमुपपन्ना' नीचकुलममुत्पन्नाः 'आरियजणे वि लोयवज्जा'
 आर्यजनेऽपि लोकायाः=यदि कदाचिन्मगधाधार्यदेजे समुत्पन्ना अपि लोकवर्ज-
 नीयाः श्वपाकादिकुलसभूता भवन्ति जनैस्तिरस्कृता इत्यर्थः, पुनश्च 'तिरिक्त्वा
 भूया य' तिर्यग्भूताश्च पशु तुल्या विवेकशून्यत्वाद् 'अकुसला' अकुशलाः=
 वस्तुतत्वाऽनभिज्ञा 'कामभोगतिमिया' कामभोगवृषिताः=तत्र कामी=शब्दरूप
 लक्षणौ भोगाः=गन्धरसस्पर्शलक्षणास्तेषु वृषिताः=आसक्ताः 'जहिं' यत्र मनुष्य
 भवेऽपि लोकाग्रकुले 'निरयवत्तणी भवप्पवचकरणणोद्धि पुणो वि ससाराव-

તો (તત્થવિ ય) વહા પર ભી વે (અગારિયા) અનાર્યમનુષ્યો-મ્લે-ચો
 શક યવન આદિ પર્યાયો મેં હી (મયન્તિ) ઉત્પન્ન હોતે હૈ । (નીચકુલ-
 સમુપ્પન્ના) વે અનાર્યજન નીચકુલ કે હોતે હૈ । (આરિયજણેવિ) યદિ
 કદાચિત્ મગધ આદિ આર્યદેશ મેં ઉત્પન્ન છુન તો વે વહા (લોયવજ્ઞા)
 લોકવાહ્યજનો મેં-ચાળડાલ આદિ નિંદિત નીચકુલો મેં-ઉત્પન્નહોતે હૈ ।
 વહાં સદા વે તિરસ્કૃત હોતે રહતે હૈ । (તિરિયભૂયાય) વિવેક શૂન્ય
 હોને કે કારણ વે તિર્યચ જૈસે હી વહા બને રહતે હૈ (અકુસલા) વસ્તુ
 તત્ત્વ સે અનભિજ્ઞ રહતે હૈ । (કામભોગતિસયા) શબ્દ, રૂપ લક્ષણ કામ
 એવ ગંધ રસ, સ્પર્શ લક્ષણ ભોગો મે આસક્ત રહતે હે, (જહિં) લોક
 વાહ્ય કુલો મે મનુષ્ય ભવ પ્રાપ્ત કર લેને પર ભી (નિરિયવત્તણી) નરક-
 ગમન કે માર્ગભૂત, (ભવપ્પવચકરણણોદ્ધિ) ભવ પરપરારૂપ પ્રવાહ કે

“લહિતિ” જન્મ થાય તો પણ “તત્થવિ ય” તે લોકો “અગારિયા” અનાર્ય
 મ્લે-ચ, શક, યવન આદિ ભૂતિમા જ “મયન્તિ” ઉત્પન્ન થાય છે “નીચકુલ
 સમુપ્પન્ના” તે અનાર્ય લોકો નીચા કુળના હોય છે “આરિયજણેવિ” જો
 તેઓ કદાચ મગધ આદિ આર્યભૂમિમા જન્મ પામે છે તો તેઓ ત્યા “લોય
 વજ્ઞા” લોકવાહ્ય જનોમા-ચાળાળ આદિ નિંદિત નીચકુળોમા ઉત્પન્ન થાય છે
 ત્યા તેઓ સદા તિરસ્કૃત થયા કરે છે “તિરિય ભૂયાય” વિવેકહીન હોવાને
 કારણે તેઓ તે મનુષ્ય યોનિમા હોવા છતા પણ તિય ચ જેવા જ હોય છે,
 ‘અકુસલા’ વસ્તુ તત્ત્વથી તેઓ (અનભિજ્ઞ) અજાણ રહે છે, “કામભોગતિ
 સયા” શબ્દ, કામ, રસ, ગંધ, સ્પર્શ આદિ ભોગોમા અસક્ત રહે છે “જહિં”
 લોકવાહ્ય કુળોમા મનુષ્ય ભવ પામ્યા છતા પણ “નિરયવત્તણી” નરક ગમનના
 કારણભૂત “ભવપ્પવચકરણણોદ્ધિ” ભવ પરપરારૂપ પ્રવાહના પ્રવર્તન, તથા

યગા હત્યર્થઃ 'કોસિગારકીડે' કોશિકારકીટ इव 'अटुकम्मततुघणवधणेण' अष्टकर्मतन्तुघनव-धनेन=अष्टकर्मभि'=ज्ञानावरणादिरुक्षणैः तन्तुभिः ==सूत्रै रिर यद् घन=दृढं घन्येन तेन 'अप्पाण' आत्मान 'वेदेति' वेदयन्ति । यथा कोशिकारक्रीडाः सूत्राणि मृजन्तस्तीरे च घन्यनभूतै र्वेष्टिता भवन्ति तथैव अदत्तादायिन स्वेनैव क्रियमाणै र्ज्ञानावरणादि लक्षणैरष्टकर्मभि र्मूलस्थानीयै र्यन्धनैर्वध्यन्ते इति भावः ॥ सू० १८ ॥

अष्टत्रिधकर्मभिर्निर्द्धाः सन्तः सतारसागर उसन्तीति तमेव वर्णयन्नाह—
'एव नरग' इत्यादि ।

મૂલ—એવ નરગતિરિયનરઅમરગમણ — પેરંતચક્કવાલ
જન્મજરામરણકરણગંભીરદુક્ખપક્ખુભિયપડરસલિલ સજોગ
વિજોગવીચિ-ચિતાપસગપસારિય-વહવધમહલ્લવિડલકલ્લોલ--
કલ્હણવિલવિય-લોમકલકલતવોલવહુલં અવમાણણફેણં તિવ્વ-
ચિસણ-પુલપુલપ્પમૂય-રોગવેચણ-પરાભવવિણિવાય-ફરુસધરિસણ-

રહતી હૈ । અર્થાત્ એ સદા પરજીવોંકો સતાપ પહુવાને મેં હી પરાયણ બને રહતે હેં તથા (કોસિગારકીડેવ) કોશિકાર કીડે કી તરહ વે (અટુ-કમ્મતતુઘણવધણેણ) આઠકર્મ રૂપ તન્તુઓ કે ઘનિષ્ઠ વન્ધન સે (અપ્પાણ) અપને આપકો (વેદેતિ) વેષ્ટિત કરતે હેં અર્થાત્ જિસ પ્રકાર કોશિકાર કીટ સૂત્રો કા સર્જન કરતે હુએ વધનભૂત ઉન્હીં સૂત્રો સે વેષ્ટિત હો જાતે હૈં ઉસી તરહ અદત્તગ્રાહીજન અપને દ્વારા કિયે ગયે સૂત્રસ્થાનીય જ્ઞાના વરણ આદિ અષ્ટ કર્મોં સે જો કિ આત્મા કો દૃઢરૂપ વાધનેવાલે હેં વધદશા કો પ્રાપ્ત હો જાતે હૈં ॥ સૂ-૧૮ ॥

પાપકૃત્યમા જ તેમને વધારે શ્રદ્ધા હોય છે, એટલે કે અન્ય જીવોને કષ્ટ પહોંચાડવાને તેઓ સદા તત્પર રહે છે તથા “ કોસિગારકીડેવ ” કોશિકારની જેમ તેઓ “ અટુકમ્મતતુઘણવધણેણ ” આઠ કર્મરૂપી તતુઓના મજબૂત બંધનથી “ અપ્પાણ ” પોતાની જાતને “ વેદેતિ ” લેપેટી લે છે એટલે કે જેમ રેશમનો કીડો (કોશિકાર) તતુઓનું સર્જન કરીને તે તતુઓને પોતાના શરીર ફરતા તેમા લેપેટીને તેમા બધાઈ જાય છે, તેમ અદત્તાદાન લેનાર માણસ પોતે કદેલા જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મોં કે જે આત્માને મજબૂત રીતે બાધનારા છે, તે કર્મોંરૂપ તતુથી બંધનની સ્થિતિ પ્રાપ્ત કરે છે ॥ સૂ ૧૮ ॥

समावडिय-कठिणकम्मपत्थरतरंग-रिगंतनिच्चमच्चुभयतोयपट्टं
 कसायपायालकलससकुल भवसयसहस्सजलसंचय अणंतं उव्वेग-
 जणयं अणोरपार महव्वभय भयंकरं पइभय अपरिमियमहिच्छ
 कल्लुसमइ वा उव्वेग उद्धम्ममाणाऽऽसापिवासा पायालं कामरइ-
 रागदोसवधणवहुविहसकप्पविउलदगरयरयधयारं, मोहम-
 हावत्तभोगशप्तमाणगुप्पमाणुच्छलंतवहुगव्वभवासपच्चोणियत-
 पाणियं पधावियवसण-समावण्णरुण्णचडमारुय -समाहया-
 मणुण्णवीचिवाकुलियभगफुट्टतनिट्टरुल्लोलसंकुलजल पमाय-
 वहुचडदुट्टसावयसमाहयउद्धायमाणगपूरधोरविद्धंसणत्थवहुलं
 अण्णाणभमतमच्छपरिहत्थ अनिहुतिदिय-महामगरतुरियच-
 रियखोक्खुव्वभमाणसतावनिच्चयचलतचवलचंचलअत्ताणा-स-
 रणपुव्वकम्मसचयोदिण्णवज्जवेदिज्जमाणदुहसयविवागघुणंत-
 जलसमूह, इड्डिरससायगारवोहारगहिय — कम्मपडिवद्धसत्त-
 कड्डिज्जमाण-निरयतलहुत्तसण्णविसण्णवहुल, अरइरइभय-
 विसाय सोगमिच्छत्तसल्लसकड अणाइसताणकम्मवधणकिलेस
 चिक्खिल्लदुट्टत्तार अमरनरतिरियनिरयगइगमणकुडिलपरिवट्टवि-
 उलवेल-हिसालियअदत्तादाणमेहुणपरिग्गहारभकरणकारावणा-
 णुमोयण-अट्टविहअणिट्टकम्मपिडियगुरुभाराकृतदुग्गजलोघदूर-
 निव्वोलिज्जमाणउम्मगनिमग्गदुल्लहतल सरीरमणोमयाणिदुक्खा-
 णि उप्पियता सायासायपरितावणमय उव्वुड्डुनिव्वुड्डुयकरेताच-
 उरतमहतमणवयगं रुद्ध ससारसायरअट्ठिय अणालवणपइट्टाणम-
 प्पमेय चुलसीइजोणिसयसहस्सगुविल अणालोगमधया अणंत-
 काल जावणिच्च उत्तत्थसुण्णभयसण्णसपउत्ता वसति उव्वि-
 ग्गवासवसहि ॥ सू० १९॥

ટીકા-‘અમર’ અમુના પ્રકારેણ આત્મનઃ કર્મભિર્ન્યનેન ‘નરગતિરિયનરઅમર
ગમણ પેરતચક્કવાલ’ નરકતિર્યદ્નરાઅમરગમનપર્યન્તચક્કવાલ=તત્ર ‘નરક’, તિર્યચ્ચ,
નરઃ, અમર,’ इति चतुर्गतिषु गमन = तदेव पर्यन्तचक्रवाल=वातपरिधिमण्डल
યસ્ય સ તથા તમેચ્ચભૂત સમારસાગર વસન્તોતિ વદ્યમાણેન સમ્યન્ધઃ । પુનઃ
કથં ભૂતમિત્યાદ-‘જન્મજરામરણકરણગમીરદુઃખલપપરુભિયપડરસલિલ’ જન્મ-
જરામરણકરણગમ્મીરદુઃખપ્રભુમિનપ્રચુરસલિલ=તત્ર જન્મજરામરણાદિભિઃ વગ્ગૈઃ=
સાધનભૂતૈર્યદ્ગમ્મીરદુઃખમ્=અતિમહાકલેશસ્તદેવ પ્રભુભિત્ત = અતિમેગવ્યાકુલિત
પ્રચુર સલિલ=જલ યત્ર સ તથા તમ્, યથા સમુદ્રો વિષ્ટન્નજલરાશિષ્ણૌ ભવતિ
તથૈવ સમુદ્રરૂપ સમારોઽપિ જલસ્વરૂપત્રિવિધદુઃખવ્યાપ્ત इत्यर्थः, एवमेवाग्रेऽपि
સમુદ્રધર્માન્ રૂપકાઽન્કારેણ સસારેઽપિ પ્રદર્શયતિ પુનર્યથા-‘સનોગવિજોગ

ये जीव ज्ञानावरण आदि अष्टविध कर्मों से बंधदशा को प्राप्त
होकर ससार सागर में रहते हैं सूत्रकार अब वर्णन करते हैं—

‘एव नरग’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(અવ) હસ પ્રકાર અપની આત્માનો કર્મોને સાથે એક ક્ષેત્રાવ-
ગારૂપ બંધદશા સે બાંધનેકે કારણ યે અદત્તગ્રાહીજન (નરગતિરિયનર
અમરગમણપેરતચક્કવાલ) નરક, તિર્યચ્ચ, મનુષ્ય એવ દેવગતિયોં મેં
પરિભ્રમણ હવ વાહ્ય પરિધિમણ્ડલ વાલે, તથા (જન્મજરામરણકરણગમીર
દુઃખલપપ્રભુભિયપડરસલિલ) જન્મ, જરા, મરણજન્ય અતિ મહાકલેશ-
રૂપ પ્રભુભિત્ત એવ પ્રચુર જલવાલે સસાર સાગર મેં હી ચક્કર કાઢા કરતે
હેં-પરિભ્રમણ કિયા કરતે હૈ । સૂત્રકાર રૂપકાલકાર સે હસી સસાર

તે જીવો જ્ઞાનાવરણ આદિ આઠ પ્રકારના કર્મોથી બાંધનની દશા પ્રાપ્ત
કરીને સસાર સાગરમાં રહે છે હવે સૂત્રકાર તેનું વર્ણન કરે છે—

“एव नरग” इत्यादि

ટીકાર્થ-“એવ ” તે રીતે પોતાના આત્માને કર્મોની સાથે એક ક્ષેત્રાવગાહરૂપ
બંધદશાથી બાંધવાને કારણે તે અદત્તગ્રાહી માણુઓ “નરગતિરિયનરઅમર-
ગમણપેરતચક્કવાલ” નરક, તિર્યચ્ચ, મનુષ્ય અને દેવ ગતિયોમાં પરિ-
ભ્રમણરૂપ વાહ્ય પરિધિમણ્ડલવાળા, તથા “જન્મજરામરણકરણગમીરદુઃખલ-
પ્રભુભિયપડરસલિલ” જન્મ, જરા, મરણ જન્ય અતિશય મોટા કલેશરૂપ
પ્રભુભિત્ત અને પ્રચુર જળવાળા સસાર સાગરમાં જ ચક્કર લગાવતા કરે છે-
પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે, સૂત્રકાર રૂપક અલંકારથી આ સસારસાગરનું વર્ણન

વીચિ-ચિંતાપસગ પસારિય - વહવધમહલ્લવિડલકલ્લોલકલ્લુણવિલવિયલોભકલ્લકલ્લતગોલપહુલ ' તત્ર=' સજોગવિજોગવીચિ ' સયોગવિયોગા એવ વીચયઃ=તરદ્વાયત્ર સ તથા, સમુદ્રો યથા—જન્તરદ્વયુક્ત એવ સસારોઽપ્યનિષ્ઠસયોગેષ્ટવિયોગરૂપ-તરદ્વયુક્ત, તથા ' ચિંતાપસગપસારિય ' ચિન્તાપસદ્ગપસારિતઃ=ગોરુસમૂહવિસ્તૃતઃ ' વહવધમહલ્લવિડલકલ્લોલ ' વધવધમહાવિપુલકલ્લોલાઃ, તત્ર વધાઃ=યદ્યથાદિ તાડનાનિ, વન્યા=રજ્જ્વાદિ વન્યનાનિ તાન્યેત્ર મહાન્તઃ=સુદીર્ઘાઃ વિપુલા=પિશાલાશ્ચ કલ્લોલાઃ=મહાતરદ્વાયત્ર સ ત, તથા ' કલ્લુણવિલવિયલોભકલ્લતગોલપહુલ ' કરુણવિલપિતલોભકલ્લકલાયમાનગોલપહુલ.=કરુણવિલપિત=

સાગર કા વર્ણન કરતે દુષ્ક કહ રહે હું કિ-જિસ પ્રકાર સમુદ્ર કા વાહ્ય પરિધિમહલ્લ હોતા હૈ ઇસી તરહ્ ઇસ સસાર રૂપ સમુદ્ર કા વાહ્યમહલ્લ ચતુર્ગતિયો મેં પરિભ્રમણ કરના રૂપ હૈ । જિસ તરહ્ સમુદ્ર અપાર જલ-રાશિ સે મદા પરિપૂર્ણ રહતા હૈ, ઇસી તરહ્ યહ સસાર ભી જન્મ જરા એવ મરણ જન્ય ગમ્ભીર દુ સ્વરૂપ જલ સે પૂર્ણ ભરા દુજા હૈ । (સજોગ વિજોગ વીચિ-ચિંતા પસગ-પસારિય-વહ-વધ-મહલ્લ-વિડલ-કલ્લોલ કલ્લુણ-વિલવિય-લોભકલ્લકલ્લતગોલપહુલ) ઇસ સસાર મે (સજોગ વિજોગ વીચિ) અનિષ્ઠ સયોગ એવ ઇષ્ટવિયોગ જીવોં કો પ્રતિક્ષણ પ્રાપ્ત હોતે રહતે હં સો યે અનિષ્ઠસયોગ ઇષ્ટવિયોગ હી ઇસમે વીચિ-લહરોં જૈસે હૈં । ત ત્રા (ચિંતાપસગપસારિય) વિવિધ પ્રકાર કે શોક સમૂહ સે યહ વિસ્તૃત હો રહા હૈ । (વહવધ) વધ-યદ્યથાદિ દ્વારા વાધના યે હી જિસમે (મહલ્લ) વડી ૨ (વિડલ) વિશાલ (કલ્લોલ) કલ્લોલેં હૈ ।

ઠરતા કહે છે કે-જેમ સમુદ્રનું બાહ્ય પરિધિમહલ્લ હોય છે, એ જ પ્રમાણે આ સસાર રૂપી સમુદ્રનું ચતુર્ગતિયોમા ભ્રમણ કરવા રૂપ બાહ્યપરિધિમહલ્લ જે જેમ સમુદ્ર અપાર જળ રાશિથી મદા પરિપૂર્ણ રહે છે, તે જ પ્રમાણે આ સસાર પણ જન્મ, જરા અને મરણ જન્ય ગમ્ભીર દુખરૂપી જળથી પૂરેપૂરે ભરેલો છે “ સજોગવિજોગવીચિ-ચિંતા પસગ પસારિય-વહવધમહલ્લ વિલકલ્લોલકલ્લુણવિલવિયલોભકલ્લકલ્લતગોલપહુલ ” આ સસારમા “ સજોગવિજોગવીચિ ” અનિષ્ઠના વિયોગ છોડેને લાભે લાભે પ્રાપ્ત થયા કરે છે તે અનિષ્ઠ સયોગ અને ઇષ્ટવિયોગ જ તેમા વીચિ-લહેરો જેવો છે તથા “ ચિંતાપસગપસારિય ” વિવિધ પ્રકારના શોકસમૂહથી તે વિસ્તૃત થઈ રહેલ છે “ વહવધ ” વધ-યદ્યથાદિ દ્વારા વાધન જ જેમા “ મહલ્લ ” મોટા મોટા “ વિડલ ” વિશાળ “ કલ્લોલ ” મોળા સમાન છે “ કલ્લુણવિલવિય ”

રોગદુઃસ્વાદિજનિતદીનપિત્તાપણ્ડુ લોભધોન કમ્પલાયમાનઃ=કમ્પાનદયુક્તો
 ચો ઘોલઃ=ધ્વનિ સ યદુલો યત્ર સ તત્તેતિ સગોગાદોનાં પદાના કર્મપ્રારયસ્તં
 તથા 'અવમાણણફેણ' અપમાનનફેનમ્=અપમાનફેનયુક્ત 'તિવ્વલિસણપુલ્લં
 પુલ્લપ્પભૂયરોગવેયણપરાભવવિણિવાયફરુસધરિસણસમાવડિયકઠિણકમ્મપત્થરતરગ
 રિંગતનિચ્ચમચ્ચુભયતોયપદ્ધ' તત્ર 'તિવ્વલિસણ' તીવ્રલિસનમ્=તીવ્રનિન્દા તથા
 'પુલ્લપુલ' નિરન્તર પ્રભૂતા=ચઢ્યા જાયમાના યા 'રોગવેયણ' રોગવેદનાઃ=
 નાનાવિધાઽઽપિવ્યાધિ-પીડાસ્તાઃ, તથા 'પરાભવવિણિવાય' પરાભવઃ=અના-
 દરઃ, તસ્ય નિનિપાતઃ=વિશેષેણ પ્રાપ્તિ, તથા 'ફરુસધરિસણ' પહાર્વર્ણગાનિ=
 કઠોરવચનૈઃ ભર્ત્સનાનિ ચ તાનિ 'સમાવડિય' સમાપત્તિતાનિ=સમાપન્નાનિ યેભ્ય
 સ્તાન્યેવમ્ભૂતાનિ યાનિ 'કઠિણકમ્મ' કઠિનકર્માણિ=જ્ઞાનાવરણાદીનિ ક્લિષ્ટ

(કલ્હણવિલવિય) રોગ સે ણ્વ દુઃસ્વાદિ સે જન્ય કરુણ વિલાપ તથા
 (લોભ) લોભ એવ મોહ સે જન્ય જો (કલકલત) કલકલ શબ્દ, હન
 સે યુક્ત (ઘોલ) ધ્વનિયા હી જહાં (ચદુલ) ચદુલરૂપ મે વર્તમાન હૈં
 (અવમાણણફેણ) અપમાનરૂપ ફેન સે જો યુક્ત યના હુઆ હૈં, (તિવ્વ
 લિસણ પુલ્લપુલ ભૂયરોગ વેયણપરાભવ વિણિવાયફરુસધરિસણ સમાવડિ
 યકઠિણકમ્મ પત્થર તરગ રિંગતનિચ્ચમચ્ચુભયતોયપદ્ધ) (તિવ્વલિસણ)
 તીવ્ર નિંદાઈ તથા (પમૂયરોગવેયણ) નિરતર જાયમાન અનેક રોગ વેદ
 નાઈ-નાના પ્રકાર કી આધિ વ્યાધિ રૂપ પીડાઈ, (પરાભવવિણિવાય)
 અનાદર કી વિશેષ રૂપ સે પ્રાપ્તિ, તથા (ફરુસધરિસણસમાવડિય)
 કઠોર વચનોં દ્વારા નિર્ભર્ત્સન-પટકારના, યે સબ જિનકે ઉદય સે જીવોં
 કો પ્રાપ્ત હોતે રહતે હૈં, એસે (કઠિણકમ્મપત્થર) જ્ઞાનાવરણ આદિ ક્લિષ્ટ

રોગ તથા દુઃસ્વાદિથી ઉત્પન્ન થયેલ કરુણ વિલાપ તથા “લોભ” લોભ અને
 મોહથી જન્ય જે “કલકલત” “કલકલ” શબ્દથી યુક્ત “ઘોલ” અવાજો
 જે ન્યા “ચદુલ” વધારે પ્રમાણમાં વિદ્યમાન છે, “અવમાણણફેણ” અપ
 માનરૂપ ક્ષીણથી જે યુક્ત છે, “તિવ્વલિસણપુલ્લ પુલ્લભૂયરોગવેયણપરાભવ
 વિણિવાયફરુસધરિસણસમાવડિયકઠિણકમ્મપત્થરતરગરિંગતનિચ્ચમચ્ચુભયતોયપદ્ધ”
 “તિવ્વલિસણ” તીવ્ર નિંદાઓ તથા “પમૂયરોગવેયણ”
 નિરતર ઉત્પન્ન થતી અનેક રોગ વેદનાઓ-વિવિધ પ્રકારની આધિ વ્યાધિ રૂપ
 પીડાઓ “પરાભવવિણિવાય” મોટે ભાગે અનાદરની પ્રાપ્તિ, તથા “ફરુ
 સધરિસણસમાવડિય” કઠોર વચનો દ્વારા નિર્ભર્ત્સનપ્રધિકાર, એ બધું જેમના
 ઉદયથી શ્રવેને પ્રાપ્ત થયા કરે છે, એવા “કઠિણકમ્મપત્થર” જ્ઞાનાવરણ

કર્માણિ તાન્યેવ ચ પ્રસ્તરાઃ=સાગરપાપાણરૂપાસ્તૈઃ કૃત્વા 'તરગરિંગત' તરગરિંગત્
=તરગૈ=રુદ્ધોલૈઃ રિદ્ધત્=ચન્ત્ 'નિચ્ચમચ્ચુમયતોયપટ્ટ' નિત્યમૃત્યુમયતોયપૃષ્ઠ=
નિત્ય=૫ મૃત્યુમય=મરણમયમેષ તોયપૃષ્ઠ=જળોપરિતનભાગો યત્ સ તથા ત
મહાપાપાણાદ્યાપ્રાતોત્થિતમદ્વાતરગ્ગચ્ચજલીપમૃત્યુમયસકુલઃ સાગરો યથા મનતિ
તથા સમારોઽપે મર્ત્સનાપમાનનાદિ નાનાટ્.સકલપદજ્ઞાનાવરણાદિ ક્લિષ્ટકર્મ
પાપાણસમુત્થિત પુનઃ પુનર્જન્મજરામરણમયતરગ્ગચ્ચાપ્ત ઇત્યર્થ । 'કસાયપાયાલ-
કલસસકુલ' કસાયપાયાલકલસસકુલ=કસાય=ક્રોધાદ્યશ્ચત્વારસ્તૈ એવ પાતા-
લકલસાસ્તૈઃ સકુલો યઃ સ તથા ત, 'ભવમયસહસ્રજલસચય' ભવમયસહસ્રજ-
લસચય=મયગતસહસ્રાખ્યેજલસચયઃ = જલરાશિર્મય સ તથા તમ્, 'અણત'

કર્મરૂપ પાપાણોં સે ડઠી હુઈ, (તરગરિંગત) તરગોં સે જો ચચલ બના
હુઆ હૈ, તથા જો (નિચ્ચમચ્ચુમય) અવઠયભાવી મૃત્યુ કે મયરૂપ
(તોયપટ્ટ) જલકે ઉપરિતન ભાગ સે યુક્ત હો રહા હૈ, અર્થાત્-જિસ
પ્રકાર સમુદ્ર મહાપાપાણોં આદિ કે આઘાત સે ઉત્થિત મહાતરગોં સે
ચચલ તથા જલ સે ભરા હુઆ હોને કે કારણ મૃત્યુ કે મય સે સકુલ
હોતા હૈ ડસી તરહ સસાર મો મર્ત્સના અપમાન આદિ નનાદુઃખરૂપ
ફલકો દેને વાલે ક્લિષ્ટકર્મરૂપ પાપાણોં સે સમુત્થિત ચાર ચાર જન્મ,
જરા, મરણ, કે મયરૂપ તરગોં સે વ્યાપ્ત હો રહા હૈ । (કસાયપાયાલ-
કલસસકુલ) તથા યહ સસાર સાગર ક્રોધાદિક ચાર કપાયરૂપ પાતાલ
કલશોં સે યુક્ત હૈ (ભવમયસહસ્રજલસચય) લાખોં ભવરૂપ જલસચય
સે યહ યુક્ત હૈ । (અણત) અનન્ત સસારી જીવોં કી અપેક્ષા યહ અન્ત

આદિ કિલિષ્ટ કર્મરૂપ પાપાણોંથી પેદા થયેલ "તરગરિંગત" તરગોંથી જે ચચળ
બનેલ છે, તથા જે "નિચ્ચમચ્ચુમય" અવશ્ય ભાવી (જર થનારા)
મૃત્યુના ભયરૂપી "તોયપટ્ટ" જળના ઉપરિતન ભાગથી યુક્ત છે, એવા સસાર
સાગરમાં તે પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે- એટલે કે જેમ સમુદ્ર મહાપાપાણોં
આદિના આઘાતથી ઉત્પન્ન થયેલ તરગોંથી ચચળ બનેલ હોય છે તથા પાણીથી
ભરપૂર હોવાને કારણે તેમાં પડનારને માટે મોતનો ભય રહે છે તેમ સસાર
પણ મર્ત્સના અપમાન આદિ વિવિધ દુઃખરૂપ ફળ દેનારા કિલિષ્ટ કર્મરૂપ
પાપાણોંથી ઉત્પન્ન થતા, વારવાર અનુભવાતા જન્મ, જરા, મરણ આદિના
ભયરૂપ તરગોંથી વ્યાપ્ત છે "કસાયપાયાલકલસસકુલ" તથા આ સસાર
સાગર ક્રોધ આદિ વ્યાપરૂપ પાતાળ કળશોંથી યુક્ત છે "ભવમયસહસ્રજલ
સચય" લાખોં ભવરૂપ જળમયથી તે યુક્ત છે "અણત" અનન્ત સસારી

અનન્તમ્=સમારિ જીવાપેક્ષયા અન્તરહિતમ્ ‘ઉન્નેગજનય’ ઉન્નેગજનક=આધિ-
 વ્યાધિ પ્રભૃતિદુઃસ્વશતયુક્તત્વાત્ ‘અગોરપાર’ અનર્ગલ પારમ્=અનૃપાર ‘મહ
 વ્ભય’ મહાભય=મહાભયજનક દુસ્તરત્વાત્, મયદ્કર=નર્મપ્રકૃતિમહામત્સ્યમકરા
 દિભિઃ વ્યાપ્તત્વાત્, ‘પદ્મય’ પ્રતિમય=પ્રતિપ્રાણિન મયજનક મન્દ્રપ્રાણિમયો
 સ્પાદકત્વાત્ ‘અપરિમિય મહિચ્છકલુસમતિ ચાઝવેગ ઉદ્દમ્મમાણાસાપિવાસાપાયાલ’
 અપરિમિતમહેચ્છાકલુસમતિચાચુવેગોદ્દમ્મમાણાસાપિવાસાપાતાલમ્, તત્ર અપરિમિ
 તા=અપરિમાણા મહતી=વિશાળા ચેચ્છા=વિષયાભિલાષા, ‘કલુસ’ કલુસા=મલિના
 યા મતિ=વુદ્ધિઃ સા એવ ‘ચાચુવેગ’ ચાચુવેગસ્તેન ‘ઉદ્દમ્મમાણ’ ઉદ્દમ્મમાણા=
 =પ્રવર્દ્ધમાણા યા આશાઃ=અપ્રાપ્તાર્થસ્ય પ્રાપ્તિ સમ્ભાવનાઃ, પિવાસાઃ=પ્રાપ્તાર્થસ્યોપ
 ભોગવાઙ્ઙાઃ, એતા એવ પાતાલ યત્ર ત્ત તથા તમ્, અપરિમિતમહેચ્છામલિનવુદ્ધિ

રહિત છે । (ઉન્નેગજનય) આધિ વ્યાધિ આદિ સૈકરૂં દુઃખોં સે યુક્ત
 હોને કે કારણ યહ ઉદ્દેગજનક છે । તથા (અગોરપાર) યહ અદૃષ્ટ પાર-
 ચાલા છે-ઇસકા પાર અદૃષ્ટ છે । (મહવ્ભય) દુસ્તર હોને સે યહ જીવોં
 કો મહાભય કા જનક છે । કર્મોં કી ૧૪૮ ઉત્તર પ્રકૃતિરૂપ મહામત્સ્ય
 મકર આદિ જલચર જીવોં સે યહ વ્યાસ છે । સમસ્ત પ્રાણિયોં કે લિયે
 ભય કા ઉત્પાદક હોને કે કારણ યહ (પદ્મય) હરેક જીવ કે લિયે
 ભય કા જનક બના હુઆ છે । (અપરિમિયમહિચ્છકલુસમતિચાઝવેગ
 ઉદ્દમ્મમાણાસાપિવાસાપાયાલ) (અપરિમિય) અપરિમિત તથા (મહિચ્છ)
 મહતા વિષયાશારૂપ એવ (કલુસમતિ) મલિનવુદ્ધિરૂપ (ચાઝવેગ) વાયુ
 કે વેગ સે (ઉદ્દમ્મમાણ) પ્રવર્દ્ધમાણ એસી (આસા) આશા-અપ્રાપ્ત અર્થ
 કે પ્રાપ્ત કરને કી સમ્ભાવનારૂપ તથા (પિવાસા) પિવાસા-અર્થ કા ઉપ

જીવોની અપેક્ષાએ તે અન્તરહિત છે “ ઉન્નેગજનય ” આધિવ્યાધિ આદિ
 સેકરૂં હુ ખોથી યુક્ત હોવાથી તે ઉદ્દેગજનક છે તથા “ અગોરપાર ” તે
 અસીમ-અપાર છે “ મહવ્ભય ” દુસ્તર હોવાથી તે જીવોને માટે મહાભય
 પેદા કરનાર છે કર્મોની ૧૪૮ ઉત્તર પ્રકૃતિરૂપ મહામત્સ્ય, મકર આદિ જળ
 ચર જીવોથી તે વ્યાસ છે સમસ્ત પ્રાણીઓને માટે તે ભય પેદા કરનાર
 હોવાથી તે “ પદ્મય ” હરેક જીવને માટે ભયજન છે “ અપરિમિય મહિ
 ચ્છકલુસમતિચાઝવેગઉદ્દમ્મમાણાસાપિવાસાપાયાલ ” “ અપરિમિય ” અપરિ
 મિત તથા “ મહિચ્છ ” મોટી વિષય વાસના રૂપ અને “ કલુસમતિ ” મલિન
 મતિરૂપ, “ ચાઝવેગ ” વાયુના વેગથી “ ઉદ્દમ્મમાણ ” વધતી જતી એવી
 “ આસા ” આશા-અપ્રાપ્ત વસ્તુને પ્રાપ્ત કરવાની સંભાવના-તથા “ પિવાસા ”

વાયુપ્રવર્દમાનાશાતૃષ્ણાદિરૂપાઽસ્તાપતાલયુક્તમિત્યર્થઃ । તથા-‘ કામરહરાગદોસ
વધણવહુવિહસરૂપ્પિઝલદગરયરયધયાર ’ કામરતિ-રાગદેષ-વધન-વહુવિધસરૂ-
પ્પિઝલદગરયરયધયારમ્, તત્ - કામરતિઃ = અન્દાદિપ્પિરુચિ, રાગઃ =
અનુકૂલવિષયેષુ પ્રીતિઃ, દેષઃ = તેષ્વેવપ્રતિકૂલેષ્વપ્રીતિશ્ચેત્યેતાન્યેવ વન્યનાનિ=
વન્યકારણાનિ તથા વહુવિધાશ્ચ સરૂપાઃ=મનઃ સંકલ્પા इत्येतेषा इन्द्रः ते काम-
रत्यादय एव पिण्डदरु रजासि=विस्तीर्णजलरुणिकाः तेषा यो रयः=वेगस्तद्
રૂપોઽન્ધકારો યત્ર સ તથા તમ્ । કામરત્યાદિરૂપજલરુણિકા વેગ સમુત્પન્નાન્ધકાર
સ્યુક્તમિત્યર્થઃ । પુનઃ કીદશ ? મિત્યાહ-‘ મોહમહાવત્તમોગમમમાણગુપ્પમાણુચ્છ-
લતવહુગન્મવાસપન્ચોણિયત્પાણિય ’ મોહમહાવત્તમોગમમદ્ગુપ્પદુઃખદ્વહુગર્મ
વાસપત્યપનિવૃત્તપ્રાણિકમ્, તત્ર-‘ મોહમહાવત્ત ’ મોહમહાવત્ત =મોહ એવ મહાના-

ભોગ કરને કી વાઙ્ઞારૂપ (પાયાલ) પાતાલ સે યહ યુક્ત હૈ, તથા
(કામરહરાગદોસ વધણ વહુવિહસરૂપ્પિઝલદગરયરયધયાર) (કામરહ)
શબ્દાદિક વિષયોં મે અભિરુચિરૂપ કામરતિ, (રાગ) અનુકૂલ વિષયોં
મે પ્રીતિરૂપ રાગ, ંવ (દોસ) પ્રતિકૂલ શબ્દાદિવિષયોં મે અપ્રીતિ દેષ,
જો (વધણ) વધ કે કારણ હૈ, તથા (વહુવિહસરૂપ) વહુત પ્રકાર કે
જો મનઃ સંકલ્પ હૈ વે હી સવ ઇસ સસારસમુદ્ર મેં (વિઝલ દગરય)
વીસ્તીર્ણદકરજ-જલકળ હૈ । ઇનકા (રયધયાર) વેગરૂપ અધકાર ઇસમેં
સદા વ્યાપ્ત હો રહા હૈ અર્થાત્-કામરત્યાદિરૂપ જલકળોં કે વેગોં સે સમુ-
ત્પન્ન અધકાર સે યહ યુક્ત થના હુઆ હૈ (મોહ મહાવત્ત-મોગમમમા-
ણગુપ્પમાણુચ્છલતવહુગન્મવાસ પન્ચોણિયપાણિય) તથા (મોહમહાવત્ત)
મોહરૂપ મહાન્ આવર્ત્ત ઇસમેં ઉઠ રહે હૈ । ઓર ઇન આવર્ત્તોં મેં જહા

પિપાસા-પ્રાપ્ત ચીજનો ઉપલોગ કરવાની ઇચ્છા રૂપ “ પાયાલ ” પાતાળથી તે
યુક્ત છે, તથા “ કામરહરાગદોસવધણવહુવિહસરૂપ્પિઝલદગરયરયધયાર ”
“ કામરહ ” શબ્દાદિ વિષયોમા અભિરુચિરૂપ કામરતિ, “ રાગ ” અનુકૂળ
વિષયોમા પ્રીતિરૂપ રાગ, અને “ દોસ ” પ્રતિકૂળ શબ્દાદિ વિષયોમા અપ્રીતિરૂપ
દેષ, જે “ વધણ ” વધનના ડારણો છે, તથા “ વહુવિહસરૂપ ” અનેક
પ્રકારના જે મન સંકલ્પો છે એ બધા આ સસાર સાગરમા “ વિઝલદગરય ”
વિસ્તીર્ણ જળ બિન્દુઓ એ “ રયધયાર ” તેમના વેગરૂપ અધકારથી તે વ્યાપ્ત
છે એટલે કે કામરતિ આદિ રૂપ જળકલોના વેગથી ઉત્પન્ન થયેલ અધકારથી
તે યુક્ત છે “ મોહમહાવત્તમોગમમમાણગુપ્પમાણુચ્છલતવહુગન્મવાસપન્ચો
ણિયત્પાણિય ” તથા “ મોહમહાવત્ત ” મોહરૂપ મહા વમળો તેમા ઉત્પન્ન થયા
ઝરે છે અને તે આવર્તોમા-વમળમા લ્યા “ મોગ ” વિષય-લોગ જે “ મમ-

વતઃ=જલભ્રમસ્તત્ર મોગા:=વિષયા ણ્વ ' ભ્રમમાણ ' ભ્રમન્તઃ ' ગુપ્તમાણ ' ગુપ્તન્તઃ
 =વ્યાકુલી ભવન્તઃ, ઉચ્છલન્તઃ=ઉત્પાન્તઃ ' યદુગમ્ભવાસ ' યદુપુ = વદુવિષેષ
 ગર્ભવાસેષુ=પશુપક્ષ્યાદિલક્ષણેષુ ' પન્ચોણિયત્ ' મત્યનિવૃત્તાઃ=ઉત્પત્ત્ય નિપત્તિતાઃ
 ' પાણિય ' પ્રાણિનો=જીવાઃ સમુદ્રપક્ષે મકરાદય', સમારણ્યે સમારિણો યત્ર તત્ત્વા
 ભૂત, તથા-પદાવિયસણસમાવણ્ણરુણચંડમારુય સમાહયાઽમુણ્ણવીચિવાકુલિય
 ભગફુદ્ધતનિદ્વક્ષ્ણોન્સકુલજલ ' પ્રાવિતગ્યમનમમાપન્નરુદિતચંડમારુતસમાહ
 તામનોજ્ઞવીચિવ્યાકુલિતભદ્રસ્ફુટનિષ્ટકલ્લોલસકુલજલમ્, તત્ર - પદાવિય '
 પ્રધારિતાનિ=પ્રકર્પેતસ્તતોગતાનિ યાનિ ' વસણ ' વ્યસનાનિ=રુષ્ટાનિ ટાનિ
 ' સમારણ ' સમાપન્નાઃ=પાપ્તા યે પ્રાણિન તેષા ' રુણ ' રુદિતમેવ ' ચંડમારુય'
 ચંડમારુતઃ=પ્રચંડવાયુસ્તેન ' સમાહય ' સમાહતાઃ=પરસ્પર સવદિતા યાઃ ' અમ-
 નુણ ' અમનોજ્ઞા=ભયકરા' ધીચયઃ દુઃસ્વપરમ્પરારૂપ તરદ્વાસ્તૈ ' વાઙલિય ' વ્યા

(મોગ) વિષય-મોગ હી (ભ્રમમાણ) ભ્રમણ કર રહે છે, (ગુપ્તમાણ)
 વ્યાકુલ હો રહે છે તથા (ઉચ્છલત) ઉઝલ રહે છે । ણ્વ હસ સસાર
 સમુદ્ર મેં (યદુગમ્ભવાસ) મનુષ્ય, પશુ પક્ષી આદિ યોનિ રૂપ નાના
 પ્રકાર કે ગર્ભો મેં સસારી જીવ તથા સમુદ્રપક્ષ મે મગરમચ્છ આદિ
 જલચર જીવ આકર નિપતિત હો રહે હ । (પદાવિય-વસણ-સમાવણ
 રુણચંડમારુયસમાહયાઽમુણ્ણવીચિ વાકુલિયભગફુદ્ધતનિદ્વક્ષ્ણોલ-
 કુલજલ) તથા યહ સસાર સમુદ્ર (પદાવિય) ડહર ઉધર સે સપ્રાપ્ત
 (વસણસમાવણ) અનેક વ્યસનો-દુઃખોંસે પીડિત હુણ પ્રાણિયોંકે (રુણ)
 રુદનરૂપ (ચંડ મારુય) પ્રચંડ વાયુ સે (સમાહય) પરસ્પર સવર્ષ કો પ્રાપ્ત
 હુઈ (અમનુણ્ણવીચિ) અમનોજ્ઞ દુ ખોં કી પરપરારૂપ તરદ્વોં સે (વાકુલિય)

માણ " ભ્રમણ કરી રહ્યા છે, " ગુપ્તમાણ " વ્યાકુળ થઈ રહેલ છે, તથા
 " ઉચ્છલત " ઉછળી રહ્યા છે અને તે સસાર સાગરમા " યદુગમ્ભવાસ "
 મનુષ્ય, પશુ, પક્ષી આદિ યોનિરૂપ વિવિધ પ્રકારના ગર્ભોમા પ્રાણીઓ-સસા
 રની અપેક્ષાએ હવે તથા સમુદ્રની અપેક્ષાએ મગર મચ્છ આદિ જળચર
 હવે આવી આવીને નિપતિત થઈ રહેલ છે એટલે કે તેમા જન્મ લઈ રહેલ
 છે " પદાવિય-વસણ-રુણ-ચંડ-મારુય-સમાહયાઽમુણ્ણવીચિ-વાકુલિય-મા-
 ફુદ્ધત-નિદ્વક્ષ્ણોલ-સકુલજલ " તથા આ સસાર સમુદ્ર " પદાવિય " અહીં
 તહીથી પ્રાપ્ત " વસણસમારણ " અનેક (વ્યસનો) દુ ખોથી પીડાતા
 પ્રાણીઓના " રુણ " રુદનરૂપ " ચંડમારુય " પ્રચંડ વાયુથી " સમાહય "
 પરસ્પર અથડાતા " અમનુણ્ણવીચિ " અમનોજ્ઞ દુ ખોની પરપરા - ગોથી

કુલિત=વિક્ષોભિત તથા મઙ્ગૈ=તરઙ્ગૈઃ સહ સપ્તદેનેન 'ફુટ્ત' સ્ફુટન્ત=પૃથગ્
 મવન્તો યે 'નિટ્ટકલ્લોલ' અનિષ્ટકલ્લોલાઃ = દારુણ દુઃસ્વમહાતરંગાસ્તૈઃ સકુલ
 =વ્યાપ્ત જલ = જન્મજરામરણરૂપ યત્ર સ તથા તમ્ । મોહમહાવર્તનિષિતત્રિપ-
 યોપભોગભ્રમણનિમગ્નપ્રાણિયુક્ત પશુપક્ષિનરકનરાઽમરાદિવિપમોન્નતાવનતયોનિ
 વિભ્રમણતરંગમઙ્ગયુક્ત વિવિધદારુણદુઃસ્વદુઃસ્વિત પ્રાણિરોદનાઽઽકન્દનરૂપવાયુ
 સમાઘાતપટ્ટદ્વદુઃસ્વતરંગયુક્ત પુન પુનર્જન્મમરણરૂપજલ યત્ર સસારસાગર વસન્તીતિ
 સમ્યગ્નઃ પુન રીટગ ? મિત્યાહ — 'પમાદગ્નહચંડદુટ્ટમાનયસમાહયઽદ્વાયમા-
 ણગપૂરયોરવિદ્વસળત્યગ્નહુલ' 'પમાદગ્નહચંડદુટ્ટપદસમાહતોદ્વાનપૂરયોરવિજ્વ-
 સાનર્યગ્નહુલ' તત્ર-પમાદગ્નહચંડદુટ્ટપદાઃ=પમાદાઃ = મધવિપયકપાયનિદ્રા
 વિકૃતારૂપાસ્તે એવ ગ્નહચંડા=શ્રતિગયરોદ્રા 'દુટ્ટમાનય' દુટ્ટપદાઃ=હિસક
 ક્ષુભિત હો રહ્યા છે । ણ્ય (ભગફુટ્ત) તરંગોં કે સાથ સપ્તદેન સે પૃથક્
 દુર્ઘ જેસી (નિટ્ટકલ્લોલ) અનિષ્ટકલ્લોલોં-દારુણ દુઃસ્વરૂપ મહાતરંગોં
 સે (સંકુલ) સકુલ બના હુઆ જેસા (જલ) જન્મ, જરા, મરણરૂપ જલ
 હસમેં ભરા હુઆ છે । અર્થાત્ મોહરૂપ મહા આવર્ત મે જહાં વિપયોપભોગ
 કી વાગ્ગા સે ઇતસ્તતઃ ભ્રમણ કરતે હુણ જીવ નિમગ્ન હો રહે હૈં । તથા
 પશુ, પક્ષી, નરક, નર, અમર, આદિ ઝંચી નીચી યોનિયોં મેં પરિભ્રમણ
 રૂપ તરમેં હસ મેં ઉઠ રહી હૈં, ઓર વિવિધ દારુણ આદિ દુઃસ્વોં સે
 દુઃસ્વિત હુણ પ્રાણિયોં કે રોદન-આક્રંદન રૂપ વાયુ કે આઘાતોં સે જહા
 દુઃસ્વરૂપ મહા તરમેં જન્મ જરા મરણ રૂપ જલ કો આલોકિત કર રહી
 હૈં । (પમાદગ્નહચંડદુટ્ટ સાવય સમાહયઽદ્વાયમાણગપૂરયોરવિદ્વસળત્યગ-
 હુલ) તથા હસ સસારરૂપ સમુદ્ર મે (પમાદ) મધ, વિપય, કપાય,
 નિદ્રા, વિકૃત્યા, ઇન પાચ પ્રમાદરૂપ (ચંડ) અચકર (દુટ્ટસાવય) રૌદ્ર

“વાકુલિય” ખળલળી ગ્હો ડે અને “ભગફુટ્ત” તરંગોની સાથે અથડા
 વાધી બુદ્ધી પડેલી “નિટ્ટકલ્લોલ” અનિષ્ટ કલ્લોલો-દારુણ દુઃસ્વરૂપ મહાતર-
 ગોથી “સકુલ” વ્યાપ્ત એવું “જલ” જન્મ, જરા, મરણ રૂપ જળ તેમા
 ભરેલું છે એટલે ડે મોહરૂપી મહાવ્રમણમા વિપયલોગની ઈચ્છાથી આમ તેમ
 ભ્રમણ કરતા હોય ત્યા રૂબેલા છે તથા પશુ, પક્ષી નારડી, નર, દેવ આદિ
 ઝંચી નીચી યોનિયોમા પશ્ચિમભણરૂપ તરંગોમા તેમા ઉછળી રહ્યા છે, અને
 વિવિધ દારુણ દુઃસ્વોથી ખીડાતા હોયતા આક્રંદ રૂપ પવનના આઘાતથી
 ન્યા દુઃસ્વરૂપ મહાતરંગો જન્મ, જરા મરણ રૂપ જળને ખળલળાવી રહેલ
 છે “પમાદ-ગ્નહ-ચંડ-દુટ્ટસાનયસમાહયઽદ્વાયમાણગપૂરયોર વિદ્વસળત્યગ્નહુલ”
 આ સસાર રૂપી સાગરમા “પમાદ” મધ, વિપય કપાય નિદ્રા અને વિદ્યા,
 એ પાચ પ્રમાદરૂપી “ચંડ” લયર “દુટ્ટસાનય” રૌદ્ર દેખાવતા હિંમડ

જન્તવ, તૈઃ 'સમાહ્ય' સમાહતા = આગત પ્રાણાઃ પૈ જીગક્ષે 'ઉદાયમાણગ
પૂરગોર, ઉદ્દાયન્ત = અતિષ્ઠ તો પ્રિયિયે'દ્યાનુ, મમુદ્દાયો મત્સ્યાદયઃ મસારપક્ષે
પુરુષાદયઃ તેરા પૂરઃ = સમૂદ્રઃ તસ્ય ગે 'ગોરા' = ગરુણા 'વિદ્વસળત્ય' વિદ્વમા
નર્થા = વિનાશરૂપા અનર્થાસ્તે પદુઝા યત સ તગા તમ્ । 'અણ્ણાણમમતમચ્છપરિ-
હત્યઅનિહુતિંદિયમહામગરતુરિયચરિય' સ્વોક્ષુભમાણમતાવનિચ્ચયચલતચવચ્ચલ
અત્તાણાસરણપુવ્વકમ્મસચયોદિણ્ણવજ્જવેદિજ્જમાણદુહમયવિવાગધુણતજલસમૂદ્ધ' અ
જ્ઞાનભ્રમન્મત્સ્યપરિગ્રસ્તાનિભૃતેન્દ્રિયમહામકરત્પરિતચરિતચોબુધ્યમાણસન્તાપનિત્ય-
કચલચ્ચપલચચ્ચલાત્રાણાશરણપૂર્વરમમશ્ચયોર્ઘર્ણા વધવેધમાનદુઃપગતવિપાકધૂર્ણ
જ્જલસમૂદ્ધમ્, તત્ર-અણ્ણાણમમતમચ્છપરિહત્ય' અજ્ઞાનભ્રમન્મત્સ્યપરિગ્રસ્તમ્ =
અજ્ઞાનાન્યેય ભ્રમન્તો મત્સ્યાઃ = અજ્ઞાનરૂપમહામત્સ્યાસ્તઃ પરિગ્રસ્ત = વ્યાપ્તમ્, તથા
'અનિહુતિંદિયમહામગર' અનિભૃતેન્દ્રિયમહામકરઃ = અનિભૃતાનિ = અનુપશાન્તાનિ
યાનિ ઇન્દ્રિયાણિ તાન્યેય મહામકરાસ્તેપા યાનિ 'તુરિયચરિય' ત્વરિતચરિતાનિ
= શીઘ્રસચરણાનિ તૈઃ 'સ્વોક્ષુભમાણ' ચોક્ષુભ્યમાણઃ = અતિશયેન વ્યાકુલી

આકૃતિવાલે હિંસક જતુઓ દ્વારા (સમાહ્ય) આઘાત કો પ્રાપ્ત કરતે
(ઉદાયમાણગ) વિવિધચેષ્ટાઓ મેં ઉઠલતે હુણ સમુદ્રપક્ષ મેં મત્સ્યા
દિક, સસારપક્ષ મેં પુરુષાદિકે (પૂર) સમૂદ્ર સે જહા (ઘોર) ખયકર
એસે (વિદ્વસળત્યવહુલ) વિનાશરૂપ અનેક અનર્થ ઉત્પન્ન હોતે રહતે હૈં
(અણ્ણાણમમતમચ્છપરિહત્ય-અનિહુતિંદિયમહામગર-તુરિય-ચરિય સ્વો-
ક્ષુભમાણ-સતાવનિચ્ચય ચલત-ચવલ-ચવલ-અત્તાણાસરણપુવ્વકમ્મ
સચયો દિણ્ણવજ્જ વેદિજ્જમાણ-દુહમયવિવાગ-ધુણત-જલસમૂદ્ધ) તથા
યહા સસાર સમુદ્ર (અણ્ણાણમમતમચ્છપરિહત્ય) અજ્ઞાનરૂપ ધૂમતે હુણ
મહામત્સ્યો સે વ્યાપ્ત હો રહા હૈં ઔર (અનિહુતિંદિયમહામગર)
અનુપશાન્ત ઇન્દ્રિયરૂપ મહામકરો કે (તુરિયચરિય) શીઘ્ર સચરણો સે

જ તુઓ દ્વારા " સમાહ્ય " આઘાત પામીને " ઉદાયમાણગ " વિવિધ રીતે
ઉછળતા (સમુદ્રપક્ષે) મત્સ્યાદિક (સસારપક્ષે) પુરુષાદિના " પૂર " સમૂદ્ધથી
બધા " ઘોર " ભયકર એવા " વિદ્વસળત્યવહુલ " વિનાશરૂપ અનેક અનર્થો
ઉત્પન્ન કરતા રહે છે " અણ્ણાણ-મમત-મચ્છ પરિહત્ય-અનિહુતિંદિય-મહામગર
તુરિય-ચરિય-સ્વોક્ષુભમાણ-સતાવ-નિચ્ચય-ચલન-ચવલચવલ-અત્તાણાસરણપુવ્વક
મ્મ-સચયો-દિણ્ણવજ્જ-વેદિજ્જમાણ-દુહમય-વિવાગ-ધુણતજલસમૂદ્ધ " તથા
આ સસાર સાગર "અણ્ણાણમમત-મચ્છ-પરિહત્ય" અજ્ઞાનરૂપ ધૂમતા મહામ
ત્સ્યોથી વ્યાપ્ત છે, અને " અનિહુતિંદિય મહામગર " અનુપશાન્ત (ઉપશાન્ત
ન થયેલી) ઇન્દ્રિયો રૂપ મહામગરોના " તુરિયચરિય " ઝડપી હલનચલનથી

ક્રિયમાણો ય સઃ ' તથા ' સતાપણિચ્ચય ' સન્તાપનિત્યકઃ=સન્તાપઃ=વિવિધાધિ
વ્યાધિચ્ચુવિયોગાદિ જાતઃ સાગરસ્થવઢવાગ્નિસન્તાપરૂપો દુઃસ્વસન્તાપો નિત્ય
યત્ર સ સન્તાપનિત્યકઃ, એતદ્વ- ' ચલતચલચલ ' ચલચ્ચલચલચલ =અત્યન્ત-
મસ્થિરઃ, સતતપરિવર્તનશીલમિત્યર્થઃ તમ્, તથા ' અત્તાણાસરણ ' અત્તાણાઞ્ગર
ણાના, અત્તાણાનામશરણાના ' પુન્નકમ્મસચય ' પૂર્વકર્મસન્ધ્યાના પ્રાણિના ઉદીર્ણમ્
=ઉદયમાન યત્ ' વ્જ્જ ' અવજ્જ=પાપ તસ્ય યઃ ' વેદિજ્જમાણ ' વેદ્યમાનઃ=ઉપ
શુદ્ધમાન ' ' દુહસયવિવાગ ' દુઃસ્વશતરૂપો વિવાગઃ સ એ ધુર્ણન્=ભ્રમન્ જલ
સમૂહો અત્ર સ તથા તમ્, ઇદ્ધિરસસાયગારગોહારગહિયકમ્મપડિવદ્ધમત્તરુદ્ધિ-
જ્જમાણનિરયતલદુત્તસણ્ણવિસણ્ણવહુલ ' રુદ્ધિરસસાતગૌરવોપહારગૃહીતકર્મપ્રતિ-
વદ્ધસત્ત્વકુપ્પમાણનિરયતલદુત્તસણ્ણવિપણ્ણવહુલમ્, તત્ર ' ઇદ્ધિરસસાયગારગો-
હાર ' રુદ્ધિરસસાતગૌરવોપહારા =રુદ્ધિરસસાનલક્ષણાનિ ગૌરવણ્ણેવ ઉપહારા=
જલચરવિશેષાસ્તૈઃ ' ગહિય ' ગૃહીતાઃ ' કમ્મપડિવદ્ધ ' કર્મપ્રતિવદ્ધા=જ્ઞાનાવર

(સ્વોક્ષુદ્ધમાણ) યહ અત્યંત ક્ષુભિત યના હુઆ હૈ । (સતાવણિચ્ચય)
વિવિધ વ્યાધિ, બધુ વિયોગ આદિ જન્ય દુઃસ્વરૂપ વઢવાગ્નિ કા હસમે
નિત્ય સતાપ છાયા હુઆ હૈ । ઓર યહ (ચલતચલચલ) નિરન્તર
પરિવર્તન શીલ હૈ । એવ હસ સમુદ્ર મે (અત્તાણા સરણ) ત્રાણ એવ શરણ
રહિત ણેસે પ્રાણિયોં કે જિનકે પાસ (પુન્નકમ્મસચય) પૂર્વકૃત કર્મો
કા સચય મૌજૂદ હૈ (વેદિજ્જમાણ) ઉદય મેં આયા હુઆ જો પાપકર્મ કા
(વેદિજ્જમાણદુહસયવિવાગ) ઉપશુદ્ધમાન જો દુઃસ્વશત (સૈકઢોદુઃસ્વ)
રૂપ ફલ હૈ વહ ફલ હી વહા (ધુણતજલસમૂહ) ચલના હુઆ જલ ભરા
હુઆ હૈ (ઇદ્ધિરસસાયગારગોહારગહિયકમ્મપડિવદ્ધસત્તરુદ્ધિજ્જમાણનિ
રયતલદુત્તસણ્ણવિસણ્ણવહુલ) રુદ્ધિરસસાતરૂપ ગૌરવ હી હસ
સસાર સમુદ્ર મેં (ઉપહાર) ઉપહાર જલચર જન્તુ વિશેષ ભરે હુએ હૈ

“ સ્વોક્ષુદ્ધમાણ ” અત્યંત ખળભળી ઉઠેલ છે, “ સતાવણિચ્ચય ” વિવિધ આધિ
વ્યાધિ, બધુ વિયોગ આદિ જન્ય દુઃખરૂપ વડવાગ્નિના સતાપ તેમા નિત્ય
વ્યાપેલા હોય છે, અને તે “ ચલતચલચલ ” નિરંતર પરિવર્તન શીલ
છે, અને આ સસારમા “ અત્તાણાસરણ ” ત્રાણ અને શરણ રહિત એવા છુવે
છે કે જેમની પાને “ પુન્નકમ્મસચય ” પૂર્વે કરેલા કર્મોના સમૂહ રહેલા છે,
“ વેદિજ્જમાણ ” અને જે પાપકર્મોના ઉદય થયો છે તે પાપકર્મોને “ વેદિજ્જમાણ
દુહસયવિવાગ ” ભોગવવા રૂપ સેકઢો દુઃખ “ સૈકઢોદુઃસ્વ ” રૂપ જે દુઃખ
છે, તે દુઃખ જ ત્યા “ ધુણતજલસમૂહ ” વહેતા જળ સમાન છે “ ઇદ્ધિરસ-
સાયગારગોહાર-ગહિયકમ્મ-પડિવદ્ધ-સત્તરુદ્ધિજ્જમાણનિર-યતલદુત્તસણ્ણ-વિસણ્ણ
સાત રૂપ ગૌરવ જ આ સસાર સાગરમા “ ઉપહાર ”

નાદિલક્ષણૈઃ કર્મભિર્નિર્દ્યાથ ચે 'સત્ત' સત્તાઃ=પ્રાણિનસ્તથા 'કટ્ટિજ્જમાણ' કૃપ્યમાણાઃ=કૃપ્યકર્મવ્યવસ્થાનેન રજ્જુપદકાષ્ટમિત્ર નરકં પ્રત્યારુપ્યમાનાઃ 'નિરયતલ' નરકઃ તલ=પાતાલ 'દુત્ત' તદભિમુલ 'સણ્ણ' સનાઃ=નરકરૂપપાતાલગમનાભિમુલત્યાત્તુ ચિન્નાઃ તથા 'વિસણ્ણ' વિપણ્ણાથ 'શોકાતિશય પ્રાપ્તાઃ' ચે પ્રાણિનસ્તૈ વહુલો ય સ તથા તમ્ । તથા 'અરહરહમ્ભયવિસાયમોગમિચ્છત્તસેલસકક' અરતિરતિભયવિપાદશોકમિત્યાત્યશૈલસપ્પટ =તત્ર-અરતિઃ = ધર્મેષ્વરુચિ રતિઃ=વિપયેષુ રુચિઃ ભય=હલોકાદિ મત્તભયાનિ વિપાદઃ=અનિષ્ટસયોગજનિતદુઃખ શોકઃ=ઈષ્ટવિયોગજનિતદૈન્ય મિત્યાત્વ ચ કુદેવકુગુરુકુધર્મશ્રદ્ધાલક્ષણમિત્યેતાન્યેષ શૈલાઃ=પર્વતાસ્તૈઃ સકકટ.=વિપમો યઃ સ તથા તમ્, અરત્યાદિ

और इन उपहारों से इसमें (गह्विककम्मपडिबद्धसत्त) ज्ञानावरण आदि कर्मों से बद्ध प्राणी गृहीत बने हुए हैं । तथा (कट्टिज्जमाण) पूर्वकृत कर्मवधन के द्वारा रज्जु बद्ध काष्ठ की तरह यहाँ वह प्राणीवर्ग नरक की ओर खेचा जा रहा है और (निरयतलदुत्त) नरकतल की ओर गमन करने में सन्मुख होनेकी वजह से यहाँ वह प्राणीवर्ग (सण्ण विसण्णबहुल) सन्न-खिन्न, एव विपण्ण शोकातिशय को प्राप्त-हो रहा है । तथा (अरह्रहम्भयविसायसोगमिच्छत्तसेलसकक) (अरह) अरति धर्ममें अरुचि, (रह) रति-विषयों में रुचि, (भय) हल्लोकभय, परलोक भय आदि सात भय, (विसाय) विपाद-अनिष्ट सयोग जनित दुःख, (सोग) शोक-ईष्ट वियोग जनित दैन्यभाव, (मिच्छत्त) मिथ्यात्व-कुगुरु, कुदेव और कुधर्म की श्रद्धा, ये ही सब इस ससारसमुद्र में (सेल) पर्वत जैसे है सो इन पर्वतोंसे यह (सकक) विषम बना हुआ है ।

ઉપહાર બળચર બળતુ વિશેષ ભરેલ છે અને તે ઉપહારોથી તેમા “ ગહ્વિકકમ્મ પડિબદ્ધસત્ત ” જ્ઞાનાવરણ આદિ કર્મોથી બધાયેલ પ્રાણી સપડાયેલ છે તથા “ કટ્ટિજ્જમાણ ” પૂર્વે કરેલા કર્મો દ્વારા, દોરડાથી બાંધેલા કાષ્ઠની જેમ તે પ્રાણીઓ નરકની તરફ ખેંચાઈ રહ્યા છે, અને “ નિરયતલદુત્ત ” નરક તરફ ગમન કરવાને અભિમુખ હોવાને કારણે તે પ્રાણીઓ “ સણ્ણવિસણ્ણબહુલ ” ખિન્ન અને અતિશય શોક યુક્ત થઈ રહ્યા છે તથા “ અરહ-રહમ્ભય-વિસાય-સોગમિચ્છત્ત સેલસકક ” “ અરહ ” અરતિ-ધર્મમા અરુચિ, “ રહ ” રતિ-વિષયોમા રતિ, “ ભય ” આલોકનો ભય, પરલોકનો ભય આદિ સાત ભય, “ વિસાય ” વિપાદ-અનિષ્ટ સયોગ જનિત દુઃખ “ સોગ ” શોક-ઈષ્ટ વિયોગ જનિત દૈન્યભાવ, “ મિચ્છત્ત ” મિથ્યાત્વ કુગુરુ, કુદેવ અને કુધર્મની શ્રદ્ધા, એ બધું આ સસારસાગરમા “ સેલ ” પર્વત જેવું છે, એ પર્વતોથી તે “ સકક ” વિષમ

દુઃસ્વૈર્વ્યાપ્તમિત્યર્થઃ । તથા 'અણાસંતાણકમ્મવધણકિલેસચિક્ખિલ્લદુદ્દુત્તાર' અનાદિ
 સન્તાનવ્યવધનકલેશચિક્ખિલ્લદુદ્દુત્તારમ્ , તત્ર-અનાદિઃ=આદિ રહિતઃ સન્તાનઃ=
 વિસ્તારો यस્ય તત્તથાભૂત યત્ કર્મવ્યવધન તદ્વરૂપ એવ 'કિલેસ' કલેશઃ=દુઃસ્વ
 તદ્રૂપમેવ ચિક્ખિલ્લ=કર્મમત્તેન દુદ્દુત્તારઃ=દુસ્તર યઃ સ તથા તમ્ । તથા-અમર
 નરતિરિયનિરયગઙ્ગમણકુટિલપરિવટ્ઠવિઝલવેલ ' અમરનરતિર્યગ્નરગ્ગતિગમન-
 કુટિલપરિવટ્ઠવિપુલવેલ=તત્ર- અમરનરતિર્યગ્નરચતુર્ગતિપુ-યદ્ ગમન તદેવ
 કુટિલા વ્રત્તા પરિવર્ત્તા=ગોલાકારા એવ વિપુલા=વિસ્તીર્ણા વેલા=સમુદ્રજલવૃદ્ધિ-
 રૂપા યત્ર સ તથા ત, નરકાદિ ચતુર્ગતિચક્રભ્રમણપરમ્પરાભિઃ સમુદ્રજલવૃદ્ધિરૂપા-
 મિર્યુક્તમિત્યાશય । તથા ' હિંસાલિયઅદત્તાદાણમેટ્ટુણપરિગ્ગહારમકરણકરાવણા-
 ણુમોયણ-મટ્ટુપિહઅણિટ્ટકમ્મપિહિયગુરુમરકતદુગ્ગજલોચદૂરનિવોલિહ્જમાણઉમ્મગ્ગ-
 નિમ્મગ્ગદુલ્લહતલ ' હિંસાડલીઝાદત્તાદાણમૈયુનપરિગ્રહારમ્મકરણકારણાણુમોદના-
 ણવિધાનિપ્પમ્મપિહિત્તગુરુમારાકાન્તદુર્ગજલોચદૂરનિવોલ્યમાનોન્માર્ગનિમગ્નદુર્લભ-
 તલમ્ , તત્ર-' હિંસાલિયઅદત્તાદાણમેટ્ટુણપરિગ્ગહારમ ' હિંસાડલીકાડદત્તાદાણ-

તથા (અણાસંતાણકમ્મવધણ કિલેસચિક્ખિલ્લદુદ્દુત્તાર) જિસકા
 વિસ્તાર આદિ સે રહિત હૈ એસે કર્મવધન જન્ય કલેશરૂપ (ચિક્ખિલ્લ)
 કીચહ સે યહ (દુદ્દુત્તાર) દુસ્તર બના હુઆ હૈ તથા (અમરનરતિરિય-
 નિરયગઙ્ગમણકુટિલપરિવટ્ઠવિઝલવેલ) દેવ, નર, તિર્યંચ ઓર
 નરક, હન ચાર ગતિયોં મે જો જીવોકા ગમન હૈ વહી હસ સમુદ્ર કો
 કુટિલ ગોલાકાર વિસ્તરણ વેલા હૈ, અર્થાત્ નરકાદિ ચતુર્ગતિરૂપ યહ
 સંસાર હૈ । હસમેં જીવચક્ર કી તરહ પરિભ્રમણ કરતે રહતે હૈ । યહ
 પરિભ્રમણ કી જો પરપરા હૈ વહી હસ સમુદ્ર કી જલ વૃદ્ધિ રૂપ વેલા હૈ ।
 (હિંસાલિય અદત્તાદાણ મેટ્ટુણપરિગ્ગહારમકરણકરાવણાણુમોયણ)
 હિંસા, ઝૂઠ, અદત્તાદાણ, મૈયુન, પરિગ્રહરૂપ આરમ્મો કા કરના

ખનેલ છે તથા “ અણાસ-સંતાણ-કમ્મવધણ-કિલેસચિક્ખિલ્લ-દુદ્દુત્તાર ”
 અનાદિ કર્મવધન જન્ય કલેશરૂપ “ ચિક્ખિલ્લ ” કીચડથી તે “ દુદ્દુત્તાર ”
 દુસ્તર ખનેલ છે, તથા “ અમરનરતિરિયગઙ્ગમણકુટિલપરિવટ્ઠવિઝલવેલ ”
 દેવ, નર, તિર્યંચ અને નરક, એ ચાર ગતિયોમા ભવોતુ એ ગમન થાય છે
 એ જ આ સંસાર સમુદ્રની કુટિલ ગોળાકાર વિસ્તીર્ણ વેલા છે, એટલે કે
 નરકાદિ ચાર ગતિરૂપ આ સંસાર છે તેમા ચક્રની જેમ ભવો પરિભ્રમણ કરે
 છે આ પરિભ્રમણની જે પરપરા છે તેજ આ સમુદ્રની જળ વૃદ્ધિરૂપ વેલા
 છે “ હિંસાલિય-અદત્તાદાણ-મેટ્ટુણપરિગ્ગહારમકરણકરાવણાણુમોયણ ” હિંસા,
 ઝૂઠ, અદત્તાદાણ, મૈયુન, પરિગ્રહરૂપ આરભો કરવા, અને તેની અનુમોદના

મૈથુનપરિગ્રહરૂપા યે આરમ્ભાઃ=વ્યાપારાસ્તેષા યાનિ ક્ષયકારણાનુમોદનાનિ=
 કરણ સ્વય, કારણ=અન્યૈરનુઠાપનમ્, અનુમોદન ચ=ઠતરારિતાદેઃ પ્રશ્નસન
 મિત્યેતૈઃ પ્રકારૈઃ 'અટ્ઠવિહ' અષ્ટવિધ યત્ 'અનિદ્ઘગ્મ્મપિંડિય' અનિદ્ઘર્મપિ-
 ણ્ડિત=દુઃસ્વદર્મસત્રયઃ તદેવગુરુમારસ્તેન 'અક્ત' અક્રાન્તા યે જીવાસ્તેષા
 દુર્ગાણ્યેવ=દુઃસ્વાન્યેવ યો 'જલોષ' જલોષ=જલપૂર તત્ દૂર=અત્યર્થ 'નિવો
 લિજ્જમાણ' નિવોલ્યમાનાઃ=ચુલ્લમાનાઃ, 'ઉમ્મગ્ગનિમ્મગ્ગ' ઉમ્મગ્ગનિમ્મગ્ગ
 =દુઃસ્વરૂપજલે ઉર્ધ્વાઽધો ગમ્યમાના યે પ્રાણિનસ્તૈઃ 'દુલ્લહતલ' દુર્લભતલ=
 દુર્લભ=દુર્લભાપ્ય તલ યસ્ય સ તથા ત-હિંસાઽગ્રીકાટિપશ્ચાસ્રયજનિતાઽષ્ટવિધકર્મ
 મારાક્રાન્તૈઃ નાનાધિદુ સરૂપાગાધજલે નિમગ્ગનોન્મગ્ગન કુર્વાદ્ધિર્જીર્વદુષ્પારાઽ

કારાના અનુમોદન કરના, इन पूर्वोक्त प्रकारों से जो (अट्ठविह अणिठ
 कम्मपिंडिय) दुःस्वद आठ प्रकारके कर्मोंका सचय होता है, उस कर्म
 सचय रूप मार से (अक्त) आक्रान्त-भारी घने हुए तथा (दुग्गजलोष)
 दुःस्व रूप जलसमूह मे (दूरनिवोलिज्जमाण) अत्यंत दूचते हुए तथा
 (उमग्गनिमग्ग) ऊपर डूब करते हुए अर्थात् ऊँचे नीचे आते हुए ऐसे
 प्राणियों के लिये यह ससार समुद्र (दुल्लहतल) अलभ्य तलवाला है
 अर्थात् इस ससार समुद्र को पूर्वोक्त प्रकार के जीव पार नहीं कर
 सकते हैं। अर्थात् इस ससारसमुद्र का तल-याह ऐसे जीवोंसे अप्राप्त
 है जो हिंसा, झूठ, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रहरूप आरम्भो के करना,
 कराना, एवं उनकी अनुमोदना में लगे हुए हैं, क्योंकि कि इन पूर्वोक्त
 प्रकारों से वे जीव दुःस्वद अष्टविध कर्मों का सचय कर लेते हैं इस
 कारण उन पर इसका बहुत भारी भार हो जाता है। इससे वे दब जाते

કરવી, એ પૂર્વોક્ત પ્રકારે જે 'અટ્ઠવિહઅણિઠકમ્મપિંડિય' આઠ પ્રકારના,
 હું ખદ કર્મેના સચય થાય છે, તે કર્મસચયરૂપ ભારથી "અક્ત" આક્રાન્ત-
 ભારે અનેલ તથા દુગ્ગજલોષ "દુ ખરૂપ જળસમૂહમા દૂરનિવોલિજ્જમાણ"
 અત્યંત દૂરતા, તથા "ઉમ્મગ્ગનિમ્મગ્ગ" પાણીમા ડૂબ્યા ડૂબ કરતા-જે ચે નીચે
 આવતા એવા પ્રાણીઓને માટે આ સસાર સમુદ્ર "દુલ્લહતલ" અલભ્ય તલ
 વાળો છે એટલે કે આ સસારસાગરને પૂર્વોક્ત પ્રકારના જીવો
 તરીકે શકતા નથી એટલે કે હિંસા, જૂઠું, અદત્તાદાન, મૈથુન, પરિગ્રહરૂપ
 આરભો કરનાર, કરાવનાર અને તેમની અનુમોદના કરનાર જીવોને
 આ સસારસાગરનો કિનારો પ્રાપ્ત કરવો અશક્ય છે કારણ કે પૂર્વોક્ત પ્રકારે
 તે જીવો આઠ પ્રકારના હું ખદ કર્મેના સચય કરે છે તેથી તેમના પર તેમના
 ધણો ભારે બોલે હોય છે તેનાથી તેઓ દબાઈ બંધ છે, અને વિવિધ પ્રકારના

न्तस्तलमित्यर्थः तमेवभूत संसारसागर 'सरीरमणोमयाणि दुःखाणि उपिष्यतां'
 शरीरमणोमयानि दुःखानि उत्पिष्यन्तः=कायिकानि मानसिकानि च विप्रियाणि
 दुःखानि आस्रादयन्तः अनुभवन्त इत्यर्थः, 'सायासायपरितावणमय उवुडुनिवुडु
 इयं करेता ' माताऽसातपरितापनमयमुदुडुडननिवुडुडनरु कुर्वन्त='मुखदुःख-
 तापात्मरुमुन्मज्जननिमज्जनमनुभवन्त सात=मृत तदात्मरुमुन्मज्जनममातपरि-
 तापन दुःखसन्तापस्तदात्मरु निमज्जनमनुभवन्त 'चउरतमहत् ' चतुरन्तमहान्त
 =चतुरन्त=नरकादि चतुर्विभागयुक्त महान्तम् अनन्त जन्ममरणादिदुःखयुक्तत्वात्।
 तथा 'अणवयग ' अनन्तग्र=अनन्तम्-अन्तरहितमित्यर्थः, 'रुह' रुद्र=सकल

हैं और नाना प्रकार के दुःखोंको भोगा करते हैं. अतः यह दुःख समूह
 ही इस संसार समुद्र में अथाह जल भरा हुआ है। उसमें ही ये जीव
 बहुत अधिक रूप में दृश्यादि लेते रहते हैं, उन्मग्न, निमग्न होते रहते
 हैं। फिर वे इसके अन्तस्फल को कैसे प्राप्त कर सकते हैं? नहीं कर
 सकते। इसलिये सूत्रकार ने ऐसे जीवों के लिये इसका पार पाना याह
 प्राप्त करना-दुःखत्रय-अमभव कहा है। (सरीरमणोमयाणी) इन्म
 संसार सागर में पड़े हुए जीव शारीरिक एव मानसिक (दुःखाणि)
 दुःखोंका ही (उपिष्यता) अनुभव करते हैं। तथा (सायासायपरितावण-
 मय) सातासात परितापन रूप (उवुडुडनिवुडुडय) उन्मज्जन निमज्जन
 अर्थात् सातात्मक उन्मज्जन तथा असातात्मक एव परितापात्मक निम-
 ज्जन (करेता) करने में तल्लीन हुए ये जीव (चाउरतमहत्) नरकादि
 गति रूप चार विभागों से युक्त तथा जन्म मरणादि के अनन्त दुःखों
 से महान्, (अणवयग) अन्तरहित (रुह) समस्त प्राणियोंको भयजनक,

हु जो लोगव्या ठरे छे तेथी आ संसारसागरमा हु थ मभूडुडुप अपार
 वण भरवु छे तेमा व ते लये वरवार डुणकीओ भावा ठरे छे तो पजी
 तेओ तेना जितारे तो पडेथी जेवी रीते गडे? ते जरखे सूत्रजारे जेवा
 लयेने भाटे तेना पार पाववानु कार्य अगज्य भतावु छे "सरीरमणोमया
 णि" आ संसार सागरमा पडेला लये शागीडि मानसि "दुःखाणि"
 हु जोने व "उपिष्यता" अनुभव ठरे छे तथा "सायासायपरितावणमय"
 सातासात परितापन रूप "उवुडुडनिवुडुडय" उन्मज्जन निमज्जन अटले
 छे सातात्मक उन्मज्जन (पाणीनी उपर आववु ते) तथा असातात्मक अने
 गितापात्मक निमज्जन (डुणवु ते) "करेता" ज्वाभा लीन थयेल ते
 लये "चाउरतमहत्" नरकादि गतिरूप चार विभागवाणा तथा जन्म
 मरणादि हु जोथी मछान, "अणवयग" अन्तरहित, "रुह" अथा प्राणीओने

મૈથુનપરિગ્રહરૂપા યે આરમ્ભાઃ=ગ્યાપારાસ્તેષા યાનિ કરણકારણાનુમોદનાનિ=કરણ સ્વય, કારણ=અન્યૈરનુષ્ઠાપનમ્, અનુમોદન ચ=ઠુતકારિતાદેઃ પ્રથમન મિત્યેતૈઃ પ્રકારૈઃ 'અટ્ઠવિહ' અષ્ટવિધ યત્ 'અનિદ્દામ્મપિંડિય' અનિદ્દકર્મપિંડિત=દુઃસ્વદર્મસત્થયઃ તદેવગુરુમારસ્તેન 'અફત' અપ્રાપ્તા યે જીવાસ્તેષા દુર્ગાણ્યેવ=દુઃસ્વાન્યેવ યો 'જલોષ' જલોષઃ=જલપૂર તત્ત દૂર=અત્યંત 'નિવો લિજ્જમાણ' નિવોલ્યમાનાઃ=દ્રુત્યમાનાઃ, 'ઉમ્મગ્ગનિમ્મગ્ગ' ઉન્મગ્ગનિમગ્ગાથ =દુઃસ્વરૂપજલે ઉર્ધ્વાડધો ગમ્યમાના યે પ્રાણિનસૈઃ 'દુલ્લહતલ' દુર્લભતલ=દુર્લભ=દુષ્પ્રાપ્ય તલ યસ્ય સ તથા ત-હિંસાડગ્રીકાદ્રિપ્રાસવજનિતાડવિધકર્મ ભારાકાન્તૈઃ નાનાપિધદુ સ્વરૂપાગાધજલે નિમગ્ગનોન્મગ્ગન કુર્વદ્વિર્જીર્વદુષ્પારાડ

કારાના અનુમોદન કરના, ઇન પૂર્વોક્ત પ્રકારોં સે જો (અટ્ઠવિહ અણિદ્દ કમ્મપિંડિય) દુઃસ્વદ આઠ પ્રકારકે કર્મોંકા સચય હોતા હૈ, ડસ કર્મ સચય રૂપ ભાર સે (અફત) આપ્રાપ્તા-ભારી ઘને હુળ તથા (દુગ્ગજલોષ) દુઃસ્વ રૂપ જલસમૂહ મેં (દૂરનિવોલિજ્જમાણ) અત્યંત દૂરતે હુળ તથા (ઉમ્મગ્ગનિમ્મગ્ગ) ડૂબ દૂબ કરતે હુળ અર્થાત્ ડૂબે નીચે આતે હુળ એસે પ્રાણિયોં કે લિયે યહ સસાર સમુદ્ર (દુલ્લહતલ) અલભ્ય તલવાલા હૈ અર્થાત્ ઇસ સસાર સમુદ્ર કો પૂર્વોક્ત પ્રકાર કે જીવ પાર નહીં કર સકતે હૈં । અર્થાત્ ઇસ સસારસમુદ્ર કા તલ-યાહ એસે જીવોંસે અપ્રાપ્ત હૈ જો હિંસા, ધ્રુઠ, અદત્તાદાન, મૈથુન, પરિગ્રહરૂપ આરમ્ભો કે કરના, કરાના, એવ ડનકી અનુમોદના મેં લગે હુળ હૈં, કયોં કિ ઇન પૂર્વોક્ત પ્રકારોં સે વે જીવ દુઃસ્વદ અષ્ટવિધ કર્મોં કા સચય કર લેતે હૈં ઇસ કારણ ડન પર ઇસકા વહુત ભારી ભાર હો જાતા હૈ । ઇસસે વે દબ જાતે

કરવી, એ પૂર્વોક્ત પ્રકારે જે 'અટ્ઠવિહઅણિદ્દકમ્મપિંડિય' આઠ પ્રકારના, હુ ખદ ડમેંના સચય થાય છે, તે કર્મસચયરૂપ ભારથી "અફત" આપ્રાપ્તા-ભારે ખનેલ તથા દુગ્ગજલોષ "હુ ખરૂપ જળસમૂહમાં દૂરનિવોલિજ્જમાણ" અત્યંત દૂરતા, તથા "ઉમ્મગ્ગનિમ્મગ્ગ" પાણીમાં ડૂબ્યા ડૂબ કરતા-જીએ નીચે આવતા એવા પ્રાણીઓને માટે આ સસાર સમુદ્ર "દુલ્લહતલ" અલભ્ય તલ વાળો છે એટલે કે આ સસારસાગરને પૂર્વોક્ત પ્રકારના જીવો તરીકે શકતા નથી એટલે કે હિંસા, ધ્રુઠ, અદત્તાદાન, મૈથુન, પરિગ્રહરૂપ આરમ્ભો કરનાર, કરાવનાર અને તેમની અનુમોદના કરનાર જીવોને આ સસારસાગરનો કિનારો પ્રાપ્ત કરવો અશક્ય છે તારણ કે પૂર્વોક્ત પ્રકારે તે જીવો આઠ પ્રકારના હુ ખદ ડમેંના સચય કરે છે તેથી તેમના પર તેમનો ધણો ભારે બોલો હોય છે તેનાથી તેઓ દબાઈ જાય છે, અને વિવિધ પ્રકારના

ન્તસ્તલમિત્યર્થઃ તમેયમ્ભૂત સસારસાગર 'સરીરમણોમયાણિ દુઃખાણિ ઉપ્પિયતા' શરીરમનોમયાણિ દુઃરાણિ અત્પિયન્તઃ=કાયિકાણિ માનસિકાણિ ચ વિવિધાણિ દુઃખાણિ આસ્યાદયન્તઃ અનુભવન્ત ઇત્યર્થઃ, 'સાયાસાયપરિતાવણમય ઉબુડનિબુડયં કરેતા ' સાતાસાતપરિતાપનમયમુદ્બુડનનિબુડનક કુર્વન્ત='મુલ્લુ'લ્લુ-તાપાત્મકમુન્મજ્જનનિમજ્જનમનુભવન્ત સાત=મુલ્લુ તદાત્મકમુન્મજ્જનમસાતપરિ-તાપન દુઃખસન્તાપસ્તદાત્મક નિમજ્જનમનુભવન્ત 'ચરતમહત્' ચતુરન્તમહાન્ત =ચતુરન્ત=નરકાદિ ચતુર્વિભાગયુક્ત મહાન્તમ્ અનન્ત જન્મમરણાદિદુઃખયુક્તતાત્ । તથા 'અણવયગ્ગ' અનવદગ્ગ=અનન્તમ્-અન્તરહિતમિત્યર્થઃ, 'રુદ્ધ' રુદ્ધ=સકલ

હું ઓર નાના પ્રકાર કે દુઃખોંકો ભોગા કરતે હે. અતઃ યદ્દુઃખ સમ્મદ્દ હી ઇસ સસાર સમુદ્ર મેં અવાદ્દ જલ ભરા દુઆ હૈ । ઉસમેં હી યે જીવ ઘહુત અધિક રૂપ મેં દુઃખક્રિયા છેતે રહતે હેં, ઉન્મગ્ન, નિમગ્ન હોતે રહતે હેં । ફિર યે ઇમકે અન્તસ્તલ કો કેસે પ્રાપ્ત કર સકતે હેં ? નહીં કર સકતે । ઇસલિયે સૂત્રકાર ને એસે જીવોં કે લિયે ઇસકા પાર પાના વાદ્દ પ્રાપ્ત કરના-દુઃશમ્પ-અમમ્ભવ કહા હૈ । (સરીરમણોમયાણી) ઇસ સસાર સાગર મેં પડે દુપે જીવ જારીરિક એવ માનસિક (દુઃખાણિ) દુઃખોંકા હી (ઉપ્પિયતા) અનુભવ કરતે હૈ । તથા (સાયાસાયપરિતાવણ-મય) સાતાસાત પરિતાપન રૂપ (ઉબુડનિબુડય) ઉન્મજ્જન નિમજ્જન અર્થાત્ સાતાત્મક ઉન્મજ્જન તથા અસાતાત્મક એવ પરિતાપાત્મક નિમ-જ્જન (કરેતા) કરને મેં તછીન દુપ યે જીવ (ચાચરતમહત) નરકાદિ ગતિ રૂપ ચાર વિભાગોં સે યુક્ત તથા જન્મ મરણાદિ કે અનન્ત દુઃખોં સે મહાન્, (અણવયગ્ગ) અન્તરહિત (રુદ્ધ) સમસ્ત પ્રાણિયોકો ભયજનક,

દુ ખો ભોગવ્યા ડરે છે તેથી આ સસારસાગરમા દુ ખ સમૂહરૂપ અપાર જળ ભરેલું છે તેમા જ તે જીવો વરવાર ડૂબકીઓ ખાધા કરે છે તો પછી તેઓ તેના ડિતારે તો પહેલી ડેવી રીતે ગડે ? તે કારણે સૂત્રકારે એવા જીવોને માટે તેનો પાર પામવાનું કાર્ય અગત્ય બતાવ્યું છે “સરીરમણોમયા ણિ” આ સસાર સાગરમા પડેલા જીવો શારીરિક માનસિક “દુઃખાણિ” દુ ખોનો જ “ઉપ્પિયતા” અનુભવ કરે છે તથા “સાયાસાયપરિતાવણમય” સાતાસાત પરિતાપન રૂપ “ઉબુડનિબુડય” ઉન્મજ્જન નિમજ્જન એટલે કે સાતાત્મક ઉન્મજ્જન (પાણીની ઉપર આવવું તે) તથા અસાતાત્મક અને પરિતાપાત્મક નિમજ્જન (ડૂબવું તે) “કરેતા” કરવામા લીન થયેલા તે જીવો “ચાચરતમહત” નરકાદિ ગતિરૂપ ચાર વિભાગોવાળા તથા જન્મ મરણાદિ દુ ખોથી મહાન, “અણવયગ્ગ” અન્તરહિત, “રુદ્ધ” બધા પ્રાણીઓને

મૈથુનપરિગ્રહરૂપા યે આરમ્ભાઃ=ગ્વાપારામ્ભેષાં યાનિ ધરણકામ્પાનુમોદનાનિ=
 કરણ સ્વય, કારણ=અન્યૈરજ્ઞુષ્ટાપનમ્, અનુમોદન ચ=ઠતરારિતાદેઃ પ્રસન
 મિત્યેતૈઃ પ્રકારૈઃ 'અટ્ટવિદ્' અટ્ટવિધ યત્ 'અનિદ્દાકમ્પિડિય' અનિદ્દાકમ્પિ-
 ણ્ડિત=દુઃસ્વદર્શનસચયઃ તદેવગુરુમારસ્તેન 'અવકત' અવકાન્તા યે જીવાસ્તેષા
 દુર્ગાપ્થેય=દુઃસ્વાન્યેવ યો 'જલોષ' જલોષ=જલપૂર તત્ર દૂર=અત્યંત 'નિવો
 લિજ્જમાણ' નિવોલ્યમાના=ચુલ્યમાનાઃ, 'ઉન્મગ્ગનિમગ્ગ' ઉન્મગ્ગનિમગ્ગા
 =દુઃસ્વરૂપજલે ઉર્ધ્વાડયો ગમ્યમાના યે પ્રાણિનસૈઃ 'દુલ્લહતલ' દુલ્ભતલ=
 દુર્લભ=દુર્ગાપ્થ તલ યસ્ય સ તથા ત-દિસાડગ્રીકાદિપશ્ચાસ્રજનિતાઽટ્ટવિધકર્મ
 ભારાકાન્તૈઃ નાનાપિરદુ સ્વરૂપાગાધજલે નિમગ્ગનોન્મગ્ગન કુર્વદ્વિર્જોર્વદુષ્પારાડ

કરના અનુમોદન કરના, इन पूर्वोक्त प्रकारों से जो (अट्टविह अणिदु
 कम्पपिडिय) दुःस्वद आठ प्रकारके कर्मोंका सचय होता है, उस कर्म
 सचय रूप भार से (अवकत) आकांत-भारी बने हुए तथा (दुर्गजलोष)
 दुःस्व रूप जलसमूह मे (दूरनिवोलिज्जमाण) अत्यन्त दूरते हुए तथा
 (उन्मग्ननिमग्न) ऊन हुए करते हुए अर्थात् ऊँचे नीचे आते हुए ऐसे
 प्राणियों के लिये यह ससार समुद्र (दुल्लहतल) अलभ्य तलवाला है
 अर्थात् इस ससार समुद्र को पूर्वोक्त प्रकार के जीव पार नहीं कर
 सकते हैं। अर्थात् इस ससारसमुद्र का तल-याह ऐसे जीवोंसे अप्राप्त
 है जो हिंसा, झूठ, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रहरूप आरम्भो के करना,
 कराना, एवं उनकी अनुमोदना मे लगे हुए हैं, क्योंकि कि इन पूर्वोक्त
 प्रकारों से वे जीव दुःस्वद अष्टविध कर्मों का सचय कर लेते हैं इस
 कारण उन पर इसका बहुत भारी भार हो जाता है। इससे वे दब जाते

કરવી, એ પૂર્વોક્ત પ્રકારે જે 'અટ્ટવિહઅણિદુકમ્પિડિય' આઠ પ્રકારના,
 દુઃસ્વદ કર્મોના સચય થાય છે, તે કર્મસચયરૂપ ભારથી "અવકત" આકાંત-
 ભારે બનેલ તથા દુર્ગજલોષ " દુઃસ્વ રૂપ જળસમૂહમાં દૂરનિવોલિજ્જમાણ "
 અત્યંત દુરતા, નથા "ઉન્મગ્ગનિમગ્ગ" પાણીમાં ડૂબી ડૂબી કરતા-જે ચે નીચે
 આવતા એવા પ્રાણીઓને માટે આ સસાર સમુદ્ર "દુલ્લહતલ" અલભ્ય તલ
 વાળો છે એટલે કે આ સસારસાગરને પૂર્વોક્ત પ્રકારના જીવો
 તરી શકતા નથી એટલે કે હિંસા, જૂઠ, અદત્તાદાન, મૈથુન, પરિગ્રહરૂપ
 આરભો કરનાર, કરાવનાર અને તેમની અનુમોદના કરનાર જીવોને
 આ સસારસાગરનો કિનારો પ્રાપ્ત કરવો અશક્ય છે કારણ કે પૂર્વોક્ત પ્રકારે
 તે જીવો આઠ પ્રકારના દુઃસ્વદ કર્મોના સચય કરે છે તેથી તેમના પર તેમનો
 ઘણો ભારે જોખો હોય છે તેનાથી તેઓ ઘણાઈ બંધ છે, અને વિવિધ પ્રકારના

ન્તસ્તલમિત્યર્થ. તમેયમ્ભવ સંસારસાગર 'સરીરમણોમયાણિ દુઃખાણિ ઉપ્પિયતા' શરીરમનોમયાણિ દુઃગાણિ ઉત્પિવન્તઃ=કાયિકાણિ માનસિકાણિ ચ વિવિધાણિ દુઃખાણિ આસ્વાદયન્તઃ અનુભવન્ત ઇત્યર્થઃ, 'સાયાસાયપરિતાવળમય ઉબ્બુહનિબ્બુહયં કરેતા' માતાઽમાતાપરિતાપનમયમુદ્દુહનનિબ્બુહનકુર્મન્ત=મુખદુઃખ-તાપાત્મકમુન્મજ્જનનિમજ્જનમનુભવન્ત સાત=મુલ તદાત્મકમુન્મજ્જનમમાતપરિ-તાપન દુઃસસન્તાપસ્તદાત્મક નિમજ્જનમનુભવન્ત 'ચરતમહત્' ચતુરન્તમહાન્ત =ચતુરન્ત=નરકાદિ ચતુર્વિભાગયુક્ત મહાન્તમ્ અનન્ત જન્મમરણાદિદુઃખયુક્તતાત્. તથા 'અણવયગ્ગ' અનયદગ્ગ=અનન્તમ્-અન્તરહિતમિત્યર્થ, 'રુદ્ધ' રુદ્ધ=સકલ

હું ઓર નાના પ્રકાર કે દુઃખોંકો ભોગા કરતે હે. અતઃ યદ્દુઃખ સમૂહ હી હસ સસાર સમુદ્ર મેં અવાહ જલ મરા દુઃખા હૈ. ઉસમેં હી યે જીવ યદ્દુત અધિક રૂપ મેં દૃવક્રિયા લેતે રહતે હેં, ઉન્મગ્ન, નિમગ્ન હોતે રહતે હેં. ફિર વે હસકે અન્તસ્તલ કો કૈસે પ્રાપ્ત કર સકતે હેં? નહીં કર સકતે. હમલિયે સૂત્રકાર ને એસે જીવોં કે લિયે હમકા પાર પાના થાહ પ્રાપ્ત કરના-દુઃગમ્ય-અસમ્ભવ કહા હૈ. (સરીરમણોમયાણી) હસ સસાર સાગર મેં પડે હુપે જીવ શારીરિક ંવ માનસિક (દુઃખાણિ) દુઃખોંકા હી (ઉપ્પિયતા) અનુભવ કરતે હેં. તથા (સાયાસાયપરિતાવળ-મય) સાતાસાત પરિતાપન રૂપ (ઉબ્બુહનિબ્બુહય) ઉન્મજ્જન નિમજ્જન અર્થાત્ સાતાત્મક ઉન્મજ્જન તથા અસાતાત્મક ંવ પરિતાપાત્મક નિમ-જ્જન (કરેતા) કરને મેં તહીન હુપ યે જીવ (ચાચરતમહત્) નરકાદિ ગતિ રૂપ ચાર વિભાગોં સે યુક્ત તથા જન્મ મરણાદિ કે અનન્ત દુઃખોં સે મહાન્, (અણવયગ્ગ) અન્તરહિત (રુદ્ધ) સમસ્ત પ્રાણિયોંકો ભયજનક,

હુ ખો ભોગવ્યા ડરે છે તેથી આ સસારસાગરમા હુ ખ સમૂહરૂપ અપાર જળ ભરેલું છે તેમા જ તે જીવો વરવાર ડૂબકીઓ ખાધા ડરે છે તો પછી તેઓ તેના ડિનારે તો પહોંચી ડેવી રીતે યકે? તે કારણે સૂત્રકારે એવા જીવોને માટે તેનો પાર પામવાનું કાર્ય અગત્ય બતાવ્યું છે “સરીરમણોમયા ણિ” આ સમાગ્ર સાગરમા પડેલા જીવો શાગીગિડ માનગિડ “દુઃખાણિ” હુ ખોનો જ “ઉપ્પિયતા” અનુભવ ડરે છે તથા “સાયાસાયપરિતાવળમય” સાતાસાત પરિતાપન રૂપ “ઉબ્બુહનિબ્બુહય” ઉન્મજ્જન નિમજ્જન એટલે કે સાતાત્મક ઉન્મજ્જન (પાણીની ઉપર આવવું તે) તથા અમાતાત્મક અને પરિતાપાત્મક નિમજ્જન (ડૂબવું તે) “કરેતા” ડગવામા લીન થયેલ તે જીવો “ચાચરતમહત્” નરકાદિ ગતિરૂપ ચાર વિભાગોવાળા તથા જન્મ મરણાદિ હુ ખોથી મહાન, “અણવયગ્ગ” અન્તરહિત, “રુદ્ધ” બધા પ્રાણીઓને

પ્રાણિભયજનક, 'સસારસાગર' સસારસાગર, યમન્તીત્યગ્રેણ યમન્ત્યઃ કીદૃશં
 સંસારસાગરમિત્યાદિ—'અદ્વિય અગાલવળપદ્મણ' અસ્થિતાડનાલમ્બનપ્રતિષ્ઠાનમ્
 =અસ્થિતાનામ્=મયમાનુષ્ટાનરહિતાના ન પ્રિયને ગાલમ્બનમ્=અગમ્યઃ પ્રતિષ્ઠાન=
 રક્ષાકરણ યત્ર સ તથા ત અસયમિનામાધારર્જિત ત્રાણર્જિત ચેત્યર્થઃ, તથા
 'અપ્પમેય' અપ્રમેયમ્=અમર્ષવેનાડપરિન્દ્રેય 'ચુલ્લીયજોનિમયમહસ્મગુલિલ'
 ચતુરશીતિયોનિશતસહસ્રગુલિલ્=ચતુરશીતિલક્ષ્યોનિત્યાસ યોનિનામ સગ્ન્યાતત્ત્વેડપિ
 સમવર્ણગન્ધરસસ્પર્શનામેત્તરિવિભગાદુક્તમલ્યામાગજ્ઞમ્ય યોય તત્ર ગાયા યથા—

એસે (સસારમાયર) સમાર માગર મેં (વસતિ) વસતે હૈ, એમા સમ્બન્ધ
 કર લેના ચાહિયે । કિસ પ્રકાર કે સમારમાગર મેં વસતે હૈ મો કાહે
 હૈ—(અદ્વિય અગાલવળપદ્મણ) અસયમી જીરોં કે આલમ્બન એવ રક્ષા
 કરને કે સાધનસે રહિત (અપ્પમેય) કોલ્હકા વેલ ચારોં તરફ ફિરનેસે
 પાર નહી પાતા વૈસે હી ચતુર્ગતિમેં જન્મમરણસે પાર નહીં પાનેસે અપ્રમેય,
 (ચુલ્લીડજોનિનયસહસ્રગુલિલ) ચૌરામીલક્ષ જીવ યોનીયોં સે યુક્ત,
 (અગાલોગ) પ્રકાશર્જિત, એવ (અધયાર) અધકાર સે યુક્ત ઇસ સસાર
 મે (અગતકાલ જાવ) અનન્તકાલ તક (ગિન્ચ) સદા (ઉત્તથ સુણ્ણમય
 સણ્ણસપડ્ડા) ભયભીત બને હુવ તથા કિંકર્તવ્યતા સે વિમૂઢ હુવ
 ભય સે એવ સજ્ઞા-આહાર, પરિગ્રહ એવ મૈથુન સજ્ઞાઓં સે સમ્યદ્ધ બને
 હુવ જીવ (ઉન્નિગ્ગવાસવસહિ) ઉદ્ધિગ્નોં કે વાસસ્વરૂપ ઇસ સસાર મેં
 (વસતિ) વસતે હૈ । જો અદત્તગ્રાહી જીવ હૈ વે ચતુર્ગતિરૂપ તથા અનન્ત
 દુઃખો સે યુક્ત ઇસ સસારસાગર મેં અનન્ત કાલ તક પરિભ્રમણ કરતે
 રહતે હૈ । ચૌરાસી લાખ યોનિયા ઇસ પ્રકાર સે હૈ—

માટે ભયજનક, એવા " સસારસાગર " સસાર સાગરમા " વસતિ " વાસ
 કરે છે તેઓ કેવા પ્રકારના સસાર સાગરમા વસે છે ? " અદ્વિય અગાલવળ-
 પદ્મણ " અસયમી એવોને આધાર આપવાનો તથા તેમનું રક્ષણ કરવાનો
 સાધનોથી રહિત, " અપ્પમેય " અમર્ષજની અપેક્ષાએ અપ્રમેય, " ચુલ્લી-
 જોનિસયસહસ્રગુલિલ " ચૌરાશી લાખ એવ યોનિયોથી યુક્ત, " અગાલોગ "
 પ્રકાશ રહિત, અને " અધયાર " અધકારથી યુક્ત આ સસારમા " અગતકાલ
 જાવ " અનન્ત કાળ સુધી " ગિન્ચ " સદા " ઉત્તથસુણ્ણમયસણ્ણસપડ્ડા "
 ભયભીત બનેલ, તથા કિંકર્તવ્યતાથી વિમૂઢ બનેલ, ભય સજ્ઞા, આહાર સજ્ઞા,
 મૈથુન સજ્ઞા, અને પરિગ્રહ સજ્ઞાઓથી યુક્ત બનેલ એવો ઉન્નિગ્ગવાસવસહિ "
 ઉદ્ધિગ્નોના—(દુઃખીયારાના) વાસ એવા આ સસારમા " વસતિ " વસે છે અદત્તાદાન
 દેનાર એવો ચાર ગતિરૂપ તથા અનન્ત દુઃખોથી યુક્ત આ સસાર સાગરમા અનન્ત
 કાળ સુધી પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે ચૌરાશી લાખ યોનિયો આ ' ' છે

“पुढवि७ दग७ अगणि७ मारुय७, एम्केक सत्तजोणि लक्खाओ ।
वणपत्तेय अणते, दसचोदस जोणि लक्खाओ ॥ १ ॥
विगलिंदिण्णु दो दो, चउरो चउरो य नारय सुरेसु ।
तिरिएसु हुति चउरो, चोदसलक्खा य मणुएसु” ॥ २ ॥

तथा ‘अणालोम’ अनालोम=प्रकाशवर्जितम् अन्धकारम्=अन्धकारयुक्तमेव-
ससारसागरम् ‘अणतकाल जाय’ अनन्तकाल यायत् ‘णिच्च’ नित्य=सदा
‘उत्तत्थसुण्णभयमण्णसपउत्ता’ उत्तमत्तदुन्यभयसज्ञासप्रयुक्ताः=तत्र उत्तस्ताः=
भयभीताः शून्याः=किं कर्तव्यविमूढाः, तथा भयसज्ञासम्प्रयुक्ताः=भयेन सज्ञाभिश्च
=आहारमैद्युनपरिगहादिभिः सम्प्रयुक्ताः=सम्प्रद्धाः ‘उन्निग्गासवसहि’ उद्धि-
ग्गवासवसर्ति=उद्धिग्गाना वासो यत्र स तथा त ससार पसन्ति, अदत्तादायिनः
चतुर्गतिलक्षणमनन्तदुःख ससारसागरमनन्तकाल भ्रमन्तीत्यर्थः, इह वसेनिरूपसर्ग
स्यापि सकर्मकत्वमार्पत्वात् ॥ सू० १९ ॥

“पुढवि७ दग७ अगणि७ मारुय७ एम्केक सत्तजोणि लक्खाओ ।
वणपत्तेय अणते, दस चोदस जोणि लक्खाओ ॥१॥
विगलिंदिण्णु दो दो, चउरो चउरो य नारयसुरेसु ।
तिरिएसु हुति चउरो, चोदस लक्खाय मणुएसु ॥२॥” इति ।

(१) पृथिवीकाय, (२) अप्काय, (३) तेजःकाय, (४) वायुकाय (५)
इनकी सात सात लाख, प्रत्येक वनस्पति दस लाख, अनन्त (साधारण)
वनस्पति चौदह लाख, दो इन्द्रिय, ते इन्द्रिय, चौ इन्द्रिय इनकी दो दो
२-२ लाख, नारकी तथा देव इनकी चार चार ४-४ लाख तथा तिर्यञ्च
पञ्चेन्द्रिय की चार ४ लाख और मनुष्य की चौदह १४ लाख । इस
प्रकार ये सब मिल कर चोरासी ८४ लाख घोनीया होती हैं ॥सू. १९॥

“पुढवि ७ दग ७ अगणि ७ मारुय ७ एम्केक सत्तजोणि लक्खाओ ।
वणपत्ते य अणते, दस चोदस जोणि लक्खाओ ॥ १ ॥
विगलिंदिण्णु दो दो, चउरो चउरो य नारयसुरेसु ।
तिरिएसु हुति चउरो, चोदस लक्खाय मणुएसु ॥ २ ॥ इति ।

•(१) पृथिवीकाय (२) अप्काय (३) तेज काय (४) वायुकाय, ओ हरेकनी सात सात
लाख, प्रत्येक वनस्पतिनी दस लाख अनन्त (साधारण) वनस्पतिनी चौदह
लाख ओ इन्द्रिनी ओ लाख, त्रीन्द्रिनी ओ लाख, चतुर्गिन्द्रिनी ओ लाख,
नारकी तथा देवनी चार चार लाख तथा तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिनी चार लाख,
अने मनुष्यनी चौद लाख ओ प्रमाणे जधी भणीने चोरासी लाख घोनिघो
थाय छे ॥सू० १९॥

पुनरप्यदत्तादायिनः कीदृशाः सन्तः किं फलं प्राप्नुयन्तीत्याह - 'जहि' इत्यादि

मूलम्—जहि जहिं आउयं निवंधंति पावकम्मकारी वंध-
वजणसयणमित्तपरिवज्जिया अणिट्ठा भवंति अणादेजा दु-
विणीया कुट्टाणासण कुसेजा कुभोयणा असुइणो कुसधयण-
कुप्पमाणा कुसठिया कुरूवा बहुकोहमाणमायालोभा बहुमोहा-
धम्मसण्णसम्मत्तपवभट्ठा दारिदोवद्ववाभिभूया निच्चं पर-
कम्मकारिणो जीवणत्थरहिया किंविणा परपिडतक्कगा दुक्ख-
लद्धाहारा अरसविरसतुच्छकयकुक्खिपूरापरस्सपेच्छंता रि-
द्धिसक्कारभोयणविसेससमुदयविहि निदता अप्पयंकयं त
च परिवयता । इह य पुरेकडाइं कम्माइ पावगाइ विमणसो
सोएणु डज्झमाणा परिभूया हुति सत्तपरिवज्जिया य छोव्भा
सिप्पकलासमयसत्थपरिवज्जिया जहाजायपसुभूया अचि-
यत्ता निच्च नीयकम्मोवजीविणो लोयकुच्छणिज्जा मोह-
मणोरहा निरासबहुला आसापासपडिवद्धपाणा अत्थोप्पायण
कामसोक्खे य लोयसारेहुति अफलवत्तगा य सुट्ठुअवि
उज्जमता तद्विसुज्जुत्तकम्मकयदुक्खसठवियसित्थपिड-
सचयपराखीणदव्वसारा णिच्चं धणधण्णकोसपरिभोगविव-
ज्जिया रहियकामभोगपरिभोगसव्वसोक्खा परसिरि भोगोव
भोगनिस्साणमग्गणपरायणा वरागा अकामिकाए विणि-
यति दुक्ख, णेवसुह णेवणिव्वुइं उवलभति अच्चतविउल
दुक्खसयसपलित्ता परस्स दव्वेहि जे अविरया ॥सू० २०॥

ટીકા—‘પાવકર્મકારી’ પાપકર્મકારિણસ્તેઽદત્તાદાયિન ‘જહિં-જહિં આડય નિવધતિ’ યત્ર યત્ર આયુર્નિવધનન્તિ=યત્ર યત્ર ગ્રામકુળાદૌ આયુર્નિવધનન્તિ તત્ર તત્ર સમુત્પદ્યન્તે इत्यर्थः । તત્ર કીદશા ભવન્તી ? ત્યાહ-‘વધવજનસયણમિત્ત-પરિવજ્જિયા’ વાન્યસવજનમિત્તપરિવર્જિતા = તત્ર ગાન્ધવજનૈઃ=ભ્રાત્રાદિમિઃ, સ્વજનૈ =પુત્રાદિમિઃ, સ્નેહિજનરૂપમિત્રૈશ્ચ પરિવર્જિતાઃ=રહિતાસ્ત્યક્તા વા ભવન્તિ, પુનઃ ‘અણિદ્ધા’ અણિદ્ધાઃ=સત્તલ્લોકસ્યાઽમિયાઃ, તથા ‘અણાદેજ્જા’ અનાદેયાઃ =અનાદેયચરનામગોત્રાદિમન્ત । તથા ‘દુવ્વિણીયા’ દુર્વિનીતાઃ = ઉદ્ધતાઃ ‘કુદ્ધાણાસણકુસેજ્જા’ કુસ્થાનાસનકુશળ્યાઃ=કુત્સિત સ્થાન=કુગ્રામવાસાદિરૂપ-

ये अदत्ताग्राही और भी क्या फल प्राप्त करते हैं ? इसी विषय को सूत्रकार पुनः स्पष्ट करते हैं—‘जहिं जहिं’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(પાવકર્મકારી) અદત્તાદાનરૂપ પાપ કર્મકારી મનુષ્ય (જહિં-આડય નિવધતિ) જિસર પર્યાય કી આયુ વાધતે હૈં વે ઉસર પર્યાય મેં ઉત્પન્ન હોતે હૈં વહા પર ઉનકી સ્થિતિ કૈસી હોતી હૈં ? સૂત્રકાર હસી વાતકો આગે કે પદોં દ્વારા પ્રકટ કરતે હૈં, વે રૂઠતે હૈં કિ (વધવજન-સયણમિત્તપરિવજ્જિયા) વે વહા ભ્રાતૃ આદી વાધવજનોં સે, પુત્ર આદિ રૂપ સ્વજનોં સે એવ સ્નેહીજન રૂપ મિત્રોં સે સદા પરિવર્જિત હોતે હૈં । (અણિદ્ધા) કોઈ ખી લોગ ઇનસે પ્રીતિ નહીં કરતે હૈં, તથા (અણાદેજ્જા) વે એસે ગોત્રાદિ વાલે હોતે હૈં, કી જિનકા વચન કોઈ નહીં માનતે હૈં યહા તક કિ જિનકા નામ લેના ખી ભલે મનુષ્ય અન્ધા નહીં સંમક્ષતે હૈં । (દુવ્વિણીયા) દુર્વિનીત-ઉદ્ધત હોતે હૈં । (કુદ્ધાણાસણકુસેજ્જા)

તે અદત્તાગ્રાહી ખીણુ કયુ ક્ષણ પ્રાપ્ત કરે છે, તે વિષયનુ સૂત્રકાર હજી પણ વધારે સ્પષ્ટીકરણ કરે છે—“જહિં જહિં” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“પાવકર્મકારી” અદત્તાદાનરૂપ પાપકર્મ કરનાર મનુષ્ય ‘જહિં આડય-નિવધતિ’ જે જે પર્યાયની આયુ વાધે છે તે તે પર્યાયમા ઉત્પન્ન થાય છે ત્યા તેમની ડેવી હાલત થાય છે ? સૂત્રકાર એ જ વાતને હવેના પદો દ્વારા પ્રગટ કરે છે તેઓ ઠહે છે કે— “વધવજનસયણમિત્તપરિવજ્જિયા” તે લોકો ત્યા ભાઈ આદિ બન્ધુજનોથી, પુત્ર આદિ સ્વજનોથી, અને સ્નેહીજનરૂપ મિત્રોથી સદા ત્યજાયેલા રહે છે, “અણિદ્ધા” ગોઈ પણ લોકો તેમના પ્રત્યે પ્રીતિ ધરાવતા નથી, તથા “અણાદેજ્જા” તેઓ એવા ગોત્રાદિ વાળા હોય છે કે તેમની વાત ગોઈ માનતું નથી, એટલું જ નહીં પણ તેમનું નામ લેવું તે પણ સારા માણસોને યોગ્ય લાગતું નથી “દુવ્વિણીયા” દુર્વિનીત-ઉદ્ધત હોય છે, “કુદ્ધાણાસણકુસેજ્જા” કુઆયોમા તેમનું રહેકાણું હોય છે, અને તેમની રહેણી

માસન=નીચાસ્થાનાદિલક્ષણ તથા કુત્તિતા શય્યા વિપમભૂમ્યાદિરૂપાં યેપાં તે તથા, 'કુમોયણા' કુમોજના ક્રોધવાદિકદગ્ધાગ્નિઃ 'અસુહ્ણો' અશુચયઃ=શુચિવર્જિતાઃ, 'કુમઘયણકુપ્પમાણા' કુમહનન કુપ્રમાણાઃ=કુમહનનાઃ=સંગતાર્તાતિ સહનનયુક્તાઃ કુપ્રમાણાઃ=કુત્તિત શરીરસ્ય પ્રમાણ યેપા તે તથા અતિદીર્ઘા અતિ હ્રસ્વાવેત્યર્થ, તથા 'કુસઠિયા' કુસસ્થિતાઃ=કુત્તિતા હુણ્ડાદિ સસ્યાનયુક્તા 'કુરુવા' 'કુરુપાઃ' વહુકોહમાણમાયાલોભા 'વહુકોધમાણમાયાલોભાઃ' અતિ ક્રોધાદિયુક્તા વહુમોહાઃ=અતિક્રામાઃ 'ધમ્મસણ્ણાસમ્મત્તપગ્ગમ્મદ્ધા' ધર્મસજ્ઞાસમ્યક્ત્વપરિભ્રષ્ટાઃ=ધર્મસત્યાયાઃ=શ્રુતચરિત્રત્તણધર્મવુદ્ધેઃ સમ્યક્ત્વાન્વ=જિનવચનરુચેઃ પરિભ્રષ્ટાઃ=સ્વલિતા 'દારિદ્ધોવદ્વામિભૂયા' દારિદ્ર્યોપદ્રવામિભૂતાઃ=અત્યન્તદરિદ્રાઃ, અતएव 'ણિન્ચ' નિત્ય=સદા 'પરકમ્મકારિણ=પરપ્રદે

કુપ્રામોં મેં इनका चास होता है, अवस्थान=रहन सहन इनकी नीच होती है, विपमभूमि आदि रूप इनकी शय्या होती है। (कुमोयणा) को द्रव आदि कदल (कुत्तिसतअन्न) इनका भोजन होता है। (असुह्णो) शुचिता-शारिरिक एव आत्मिक पवित्रता इनमें होती नहीं हैं ये लोग पवित्रतासे सदा रहित रहते हैं। (कुसघयणकूप्यमाणा) इनका सहनन खराब होता है और शरीर इनका अतिदीर्घ या अति ह्रस्व होता है। (कुसठिया) सस्यान इनका हुण्डादि होता है। (कुरुवा) रूप भी इनका असुहावना होता है। (वहुकोहमाणमायालोभा) बहुत ये क्रोधी होते हैं। मान, माया एव लोभ की इनमे बहुत अधिकता रहती है। (वहुमोहा) ये बहुत कामी होते हैं। (धम्मसण्णासम्मत्तपग्गमद्धा) श्रुतचारित्र रूप धर्मवुद्धि से एव जिन वचनों में श्रद्धारूप सम्यक्त्व रुचि से ये सदा रहित होते हैं। (दारिद्रो वद्वामिभूया) दादिद्रव्य इनके घरों में सदा

કરણી નીચ હોય છે, વિપમ ભૂમિ આદિ જગ્યા તેમની શય્યા બને છે "કુમોયણા" કોદરા આદિ કદલ (ખરાબ અન્ન) તેમનું ભોજન બને છે "અસુહ્ણો" તેમનામાં શારીરિક અને માનસિક પવિત્રતા હોતી નથી, તે લોકો હંમેશા તેનાથી રહિત હોય છે "કુસઘયણ કુપ્પમાણા" તેમનું સહનન ખરાબ હોય છે, એટલે કે તેમના શરીર કાતો અતિશય ઊંચા અને કાતો અતિશય નીચા હોય છે "કુસઠિયા" તેમના અંગે અપ્રમાણસરના હોય છે, "કુરુવા" તેમનું રૂપ પણ સુંદર હોતું નથી "વહુકોહમાણામાયા લોભા" તેઓ ઘણા ક્રોધી હોય છે, અને માન, માયા અને લોભનું પ્રમાણ તેમનામાં વધારે હોય છે "વહુમોહા" તે ઘણા કામી હોય છે "ધમ્મસણ્ણાસમ્મત્તપગ્ગમ્મદ્ધા" શ્રુત ચારિત્રરૂપ ધર્મવુદ્ધિથી તથા જિન વચનોમાં શ્રદ્ધારૂપ સમ્યક્ત્વ રુચિથી તે લોકો સદા રહિત હોય છે 'દારિદ્રો વદ્વામિભૂયા' તેમના ઘરોમાં બધા દારિદ્ર્ય રહે છે અને તે દરિદ્ર્ય

નીચકર્મકારકા: 'જીવણત્થરહિયા' જીવનાર્થરહિતા = જીવનસ્ય = મનુષ્યજન્મન
અર્થ: = પ્રયોજન ધર્મધ્યાનાદિ સમાચરણ તદ્વહિતા:; જીવનયાપનહેતુદ્રવ્યહીના
વા, 'કિચિણા' કૃપણા = દીના: 'પરપિંડતક્કા' પરપિંડતર્કકા = પરદત્તભો-
જનગવેપકા: 'દુસ્સલદ્ધાહારા' દુ:સ્સલ્યાહારા: = દુ:સ્સાડુરપૂરકા: 'અરસવિરસતુ-
ચ્છકયકુચ્છિપૂરા' અરસવિરસતુચ્છકૃતકુચ્છિપૂરા = તત્ર અરસ = નીરસ-હિંગ્વાદિ
ભિરસસ્કૃત વિરસ = પુરાણ તત્રાપિ પુન્ન = કુલત્થાદિ યેન કનાપિ પ્રકારેણ પ્રાપ્ત
તેન કૃત: કુચ્છિપૂર: = અડરપૂરણ યૈસ્તૈ તયા 'પરસ્સ' પરસ્ય = અન્યસ્ય 'રિદ્ધિસકાર-
ભોયણવિસેસસમુદયવિહિ' ઋદ્ધિસત્કારભોજનવિશેષસમુદયવિહિ = તત્ર ઋદ્ધિ: =
સમ્પત્તિ: સત્કાર: = સમ્માન તયા ભોજન ચેત્યેતેષા યે વિશેષા: પ્રકારા: તેષા ય:
સમુદય: ઉદયવર્તિત્ય તસ્ય યો વિધિ: = વિધાન સ તયા ત 'પેચ્છતા' પ્રેક્ષમાણા: =

રહતા હૈ આર યહ દારિદ્ર્ય ઇનકા સદા તિરસ્કાર કરવાયા કરતા હૈ,
હસી લિયે યે (ણિચ) સર્વદા (પરકમ્મકારિણો) પર કર્મકારો હોતે
હૈ-દૂસરોંકે ઘરોંમેં નીચ કામોં કો કરને વાલે હોતે હૈ, (જીવણત્થરહિયા)
મનુષ્ય જન્મ કે પ્રયોજનમૂત ધર્મધ્યાનાદિ સદાચારોં સે રહિત હોતે હૈ,
(કિચિણા) દીન હોતે હૈ, (પરપિંડતક્કા) પરપિંડ કે ડપર આશ્રિત
રહા કરતે હૈ પરદત્ત ભોજન કી ડચ્છા મેં રહતે હૈ, (દુસ્સલદ્ધાહારા)
બડી મુશ્કિલ સે અપને ડદર કી પૂર્તિ કર પાતે હૈ, (અરસવિરસતુચ્છ-
કયકુચ્છિપૂરા) અરસ-હિંગ્વાદિ કે વવાર સે રહિત, વિરસ-પુરાના-
અતિ પુરાના, ડસમેં મી તુચ્છ-કુલત્થાદિ અન્ન જો ઇન્હે બડી કઠિનાઈસે
પ્રાપ્ત હોતા હૈ ડસસે હી યે અપને ડદર કી પૂર્તિ કરતે હૈ. (પરસ્સ-
રિદ્ધિસકારભોયણવિસેસસમુદયવિહિ પેચ્છતા) દૂસરોંકી ઋદ્ધિ-

તેમને સદા તિરસ્કાર કરાવે છે, તેથી તેઓ “ણિચ્ચ” મહા “પરકમ્મકારિણો”
પારણની નોઢરી ડનાર હોય છે, બીજાના ઘરેમા નીચ કામ કરનાર હોય
છે, “જીવણત્થરહિયા” મનુષ્ય જન્મના પ્રયોજન ડપ ધર્મધ્યાન આદિ
સદાચારોથી રહિત હોય છે, “કિચિણા” દીન હોય છે, “પરપિંડતક્કા”
પરપિંડ ડપર મહા આધાર રાખનાર હોય છે-પરદત્ત લોજનની ઇચ્છા રાખનાર
હોય છે, “દુસ્સલદ્ધાહારા” મહા મુશ્કેલીથી પોતાનુ પેટ ભરી શકે છે
“અરસવિરસતુચ્છકયકુચ્છિપૂરા” અરસ-હિંગ આદિના વધાર રહિત, વિરસ-
પુરાણ-અતિપુરાણ અને વળી તુચ્છ-કળથી આદિ અન્ન, ડે જે તેને ઘણી
મુશ્કેલીએ મળે છે, તેના વડે જ તેઓ પોતાનુ પેટ ભરે છે “પરસ્સ રિદ્ધિસકાર-
ભોયણવિસેસસમુદયવિહિ પેચ્છતા” બીજાની ઋદ્ધિ — સમ્પત્તિ, સત્કાર

ईर्ष्यानुदयापश्यन्तः, ततश्च 'अप्यय' आत्मान 'कयतं' कृतान्त=कर्तव्य च
 'निंदता' निन्दन्तः=निन्दा कर्तुन्तः, 'इह य पुरे कडाइ कम्माइ पावगाइ' इह=
 लोके पुरा=जन्मान्तरे च कृतानि पापकानि=पापानि कर्माणि 'परिवयता' परिव
 दन्तः=निन्दन्तः 'विमणसो' विमनम.=दीनाः सन्त. 'सोएण डज्झमाणा'
 शोकेन दह्यमाना.=अभीष्टस्तूनामप्राप्तिदुःखेन सन्तप्यमानाः सन्तः 'परिभूया
 हुति' परिभूताः=जनैरनादृतादुःखमाप्ताश्च भवन्ति । तथा 'सत्तपरिवज्जिया य'
 सत्त्वपरिवर्जिताश्च मनोबलहीनाः 'छोव्मा' सौम्याः=निस्सहायत्वात्परिवर्जिता,
 'सिप्प' कलासमयसत्त्वपरिवर्जिता 'शिल्प' कलासमयशास्त्रपरिवर्जिताः=तत्र शिल्प

સપત્તિ, સત્કાર, સન્માન, તથા ભોજન, इनके विशेष प्रकारों की समुद्रय
 विधिको ईर्ष्याभाव से देखते हैं और अपने भाग्यकी आत्माकी तथा
 अपने पापकारी कर्तव्य की निंदा करते हैं । हमने (इह य) इस
 ससार में (पुरे) पूर्वभव में (पावगाइ कडाइ) पापकर्म किये हैं उनका
 ही यह फल हमें भोगने को मिला है इस प्रकार (परिवयता) दूसरों से
 कहते हुए (विमणसो) स्वयं दीन होकर (सोएण डज्झमाणा) शोक
 से जलते हुए (परिभूया) दुःखी (हुति) होते हैं अर्थात् अभीष्ट वस्तु
 की अप्राप्ति के दुःख से निरन्तर सन्तप्यमान होते हुए भीतर ही भीतर
 खेद खीन्न बने हुए ये दूसरों के द्वारा अनादृत होते रहते हैं एवं
 दुःखों को भोगते रहते हैं । तथा (सत्तपरिवज्जिया य) मनोबल
 से रहित बने हुए ये (छोव्मा) निस्सहाय होनेके कारण हर एक व्यक्ति
 के द्वारा अनादरणीय होते रहते हैं । तथा (सिप्प) चित्रादिकों को

સન્માન, તથા ભોજન, તથા તેના સહભાગ્ય પ્રત્યે તેઓ ઇર્ષ્યા ભાવથી ભેવે
 છે, તથા પોતાના ભાગ્યની, આત્માની તથા પોતાના પાપકૃત્યોની નિંદા કરે
 છે 'અમે = ઇહય' આ સસારમાં 'પુરે' પૂર્વભવમાં 'પાવગાઈ કડાઈ'
 પાપકર્મો કર્યા છે, એનું જ આ ફળ અમારે ભોગવવું પડે છે, એ પ્રમાણે
 'પરિવયતા' બીજાને કહેતા 'વિમણસો' પોતે દીન થઈને 'સોણડજ્ઞમાણા'
 શોકથી જળતા 'પરિભૂયા' હુ ખી 'હુતિ' થાય છે એટલે કે ઇચ્છિત
 વસ્તુની પ્રાપ્તિ ન થવાના દુઃખથી નિરન્તર સતાપયુક્ત થઈને મનમાં ને મનમાં
 ઉદ્વિગ્ન બનીને તેઓ બીજા લોકો દ્વારા તિરસ્કૃત થયા કરે છે, અને હુ ખો
 ભોગવ્યા કરે છે તથા 'સત્તપરિવજ્જિયા ય' મનોબળથી રહિત એવા તે
 'છોવ્મા' અસહાય હોવાને કારણે દરેક વ્યક્તિ દ્વારા અનાદરણીય (તિરસ્કૃત)
 થયા કરે છે તથા 'સિ' ની રચના કરવાના વિજ્ઞાનથી, 'કલા'

ચિત્રાદિ વિજ્ઞાન કલા=ધનુર્વેદાદિકા સમયશાસ્ત્ર=અર્હતાદિકં, તૈઃ પરિવર્જિતાઃ=રહિતા ' જહાજાયપસુભૂયા ' યથાજાતપશુભૂતા=યથા જાતા=જન્મકાળે યાદશ ગુણવિશિષ્ટાસ્તથૈવ સ્થિતા નતુ શિક્ષાદિના વિશેષતા પ્રાપ્તાઃ એમ્ભૂતા યે પશવઃ=બલીવર્દાદયસ્તદ્વદ્ભૂતાઃ=તત્સદૃશાઃ ' અવિયત્તા ' અયં દેશીશબ્દઃ અપ્રીતિકાઃ=અપ્રીતિકારકાઃ ' નિચ્ચ નીયકમ્મોવજીવિણો ' નિત્ય નીચકર્મોપજીવિનઃ = સદા હિંસાદિવૃત્ત્યુપજીવિનઃ ' લોયકુચ્છણિજ્જા ' લોકકુત્સનીયાઃ = સર્વજનૈર્નિન્દનીયાઃ ' મોહમણોરહા ' મોઘમનોરથાઃ = નિષ્ફલમનોરથાઃ,

ઉત્કીર્ણ કરને રૂપ વિજ્ઞાન સે, (કલા) ધનુર્વેદ આદિ રૂપ કલાઓ સે એવ (સમય સત્થ) અર્હત પ્રણીત શાસ્ત્રો કે અભ્યાસ સે, (પરિવર્જિતયા) રહિત હોકર (જહા જાયપસુભૂયા) યથાજાત પશુ જૈસે બને હુણ યે (અવિયત્તા) કિસી કે ખી સાથ પ્રીતિ નહીં કરતે હૈં ક્યોં કિ યે (નિચ્ચ નીયકમ્મોવજીવિણો) નિત્ય હી નીચ કર્મોપજીવી હોતે હૈં । યથા જાત પશુભૂતકા વાચ્યાર્થે હસ પ્રકાર હૈં-ઉત્પન્ન હોતે સમય પશુ જિન ગુણો સે યુક્ત રહતા હૈં આગે ખી વહ વડા હોને પર ખી શિક્ષાદિક કી પ્રાપ્તિ સે અપની તરફી નહીં કર સકુને કે કારણ વૈસા હી ઘના રહતા હૈં, હસી તરહ યે અદત્તગ્રાહી વ્યક્તિ ખી હોતે હૈં હેય ઓર ઉપાદેય કે જ્ઞાન સે વિકલ જૈસે યે જન્મતે સમય મેં યે વૈસે હી યે વડે હોને પર ખી રહતે હૈં, અતઃહન્ને યથા જાત પશુભૂત કહા ગયા હૈં । (લોય કુચ્છ-ણિજ્જા) સમસ્તજન હનકી નિંદા કિયા કરતે હૈં । (મોહમણોરહા) હનકે જિતને ખી મનોરથ હોતે હૈં વે સવ મોઘ-અસફલ હી રહતે હૈં ।

ધનુર્વેદ આદિ ડલાઓથી, અને " સમયસત્થ " અર્હત પ્રણીત શાસ્ત્રોના અભ્યાસથી " પરિવર્જિતયા " રહિત હોવાને કારણે " જહા જાય પસુભૂયા " યથાજાત પશુના જેવા લાગતા તેઓ " અવિયત્તા " કોઈની પણ માથે પ્રીતિ રાખતા નથી, કારણ કે તેઓ " નિચ્ચ નીયકમ્મોવજીવિણો " હોવાથી નીચ કર્મોપજીવી હોય છે ' યથા જાત પશુભૂત ' નો વાચ્યાર્થ આ પ્રમાણે છે-ઉત્પન્ન થતી વખતે પશુ જે ગુણોથી યુક્ત હોય છે એ જ ગુણોથી યુક્ત મોટું થતા પણ રહે છે-તે મોટું થાય તો પણ શિક્ષાદિક ની પ્રાપ્તિ વડે પોતાની ઉન્નતિ કરી શકતું નથી એ જ રીતે અદત્તાદાન લેનાર વ્યક્તિ પણ જન્મ સમયે હેય અને ઉપાદેયના જ્ઞાનથી જેટલી રહિત હોય છે એટલી જ મોટી ઉમરે પણ તે જ્ઞાનથી રહિત રહે છે તેથી તેને " યથા જાત પશુભૂત " કહેલ છે " લોયકુચ્છણિજ્જા " સઘળા લોકો તેમની નિંદા કરે છે, " મોહમણોરહા " તેમના સઘળા મનોરથો અપૂર્ણ રહે છે " નિરાશવદ્વળા " ધર્મિયત વસ્તુ ન

ઈર્ષ્યાબુદ્ધ્યાપશ્યન્તઃ, તતથ 'અપ્પયં' આત્માન 'કયતં' કૃતાન્ત=કર્તવ્ય ચ
 'નિંદતા' નિન્દન્તઃ=નિન્દા કુર્વન્તઃ, 'ઈદ ય પુરે કડાઙ્ક કમ્માઙ્ક પાવગાઙ્ક' इह=
 લોકે પુરા=જન્માન્તરે ચ કૃતાનિ પાપકાનિ=પાપાનિ કર્માણિ 'પરિવયતા' પરિવ
 દન્તઃ=નિન્દન્તઃ 'વિમણસો' વિમનમઃ=દીનાઃ સન્તઃ 'સોણ્ણ ડજ્જમાણા'
 શોકેન દહમાના=અભીષ્ટસ્તૂનામપ્રાપ્તિદુઃખેન સન્તપ્તમાનાઃ સન્તઃ 'પરિભૂયા
 હુતિ' પરિભૂતાઃ=જનૈસ્નાદતાદુઃસમાપ્તાશ્ચ ભવન્તિ । તથા 'સત્તપરિવજ્જિયા ય'
 સત્તપરિવર્જિતાશ્ચ મનોબલહીનાઃ 'છોવ્મા' છોમ્યાઃ=નિસ્સહાયત્વાત્પરિભવનીપા,
 'સિપ્પકલાસમયસત્તપરિવજ્જિયા' શિલ્પકલાસમયશાસ્ત્રપરિવર્જિતાઃ=તત્ર શિલ્પ

સપત્તિ, સત્કાર, સન્માન, તથા ભોજન, इनके विशेष प्रकारों की समुदाय
 विधिको ईर्ष्याभाव से देखते हैं और अपने भाग्यकी आत्माकी तथा
 अपने पापकारी कर्तव्य की निंदा करते हैं । हमने (इह य) इस
 ससार में (पुरे) पूर्वभव में (पावगाङ्क कडाङ्क) पापकर्म किये हैं उनका
 ही यह फल हमें भोगने को मिला है इस प्रकार (परिवयता) दूसरों से
 कहते हुए (विमणसो) स्वयं दीन होकर (सोएण डज्जमाणा) शोक
 से जलते हुए (परिभूया) दुःखी (हुति) होते हैं अर्थात् अभीष्ट वस्तु
 की अप्राप्ति के दुःख से निरन्तर सन्तप्यमान होते हुए भीतर ही भीतर
 खेद स्वीन्न बने हुए ये दूसरों के द्वारा अनादृत होते रहते हैं एव
 दुःखों को भोगते रहते हैं । तथा (सत्तपरिवज्जिયા य) मनोबल
 से रहित बने हुए ये (छोव्मा) निस्सहाय होनेके कारण हरएक व्यक्ति
 के द्वारा अनादरणीय होते रहते हैं । तथा (सिप्प) चित्रादिकों को

સન્માન, તથા ભોજન, તથા તેના સહભાગ્ય પ્રત્યે તેઓ ઈર્ષ્યા ભાવથી બેઢે
 છે, તથા પોતાના ભાગ્યની, આત્માની તથા પોતાના પાપકૃત્યોની નિંદા કરે
 છે 'અમે "ઈહ્ય" આ સસારમાં "પુરે" પૂર્વભવમાં "પાવગાઙ્ક કડાઙ્ક"
 પાપકર્મો કર્યા છે, એવું જ આ કૃણ અમારે ભોગવણુ પડે છે,' એ પ્રમાણે
 "પરિવયતા" બીજાને કહેતા "વિમણસો" પોતે દીન થઈને "સોણ્ણ ડજ્જમાણા"
 શોકથી જળતા "પરિભૂયા" દુઃખી "હુતિ" થાય છે એટલે કે ઇચ્છિત
 વસ્તુની પ્રાપ્તિ ન થવાના દુઃખથી નિરંતર સતાપયુક્ત થઈને મનમાં ને મનમાં
 ઉદ્વિગ્ન બનીને તેઓ બીજા લોકો દ્વારા તિરસ્કૃત થયા કરે છે, અને હું ખો
 ભોગવ્યા કરે છે તથા "સત્તપરિવજ્જિયા ય" મનોબળથી રહિત એવા તે
 "છોવ્મા" અસહાય હોવાને કારણે દરેક વ્યક્તિ દ્વારા અનાદરણીય (તિરસ્કૃત)
 થયા કરે છે તથા "સિપ્પ" ચિત્રાદિની રચના કરનારો નિમિત્ત "કલા"

ચિત્રાદિ વિજ્ઞાન કલા=ધનુર્વેદાદિકા સમયશાસ્ત્ર=આર્હતાદિક, તૈઃ પરિવર્જિતાઃ=રહિતા 'જહાજાયપસુભૂયા' યથાજાતપશુભૂતા=યથા જાતા=જન્મકાલે યાદશ ગુણવિશિષ્ટાસ્તૈયૈવ સ્થિતા નતુ શિક્ષાદિના વિશેષતા પ્રાપ્તાઃ એનભૂતા યે પશવઃ=બલીવર્દાદિયસ્તદ્વદ્ભૂતાઃ=તત્સદૃશાઃ 'અવિયત્તા' અયં દેશીશબ્દઃ અપ્રીતિકાઃ=અપ્રીતિકારકાઃ 'નિચ્ચ નીયકમ્મોવજીવિણો' નિત્ય નીચકર્મોપજીવિનઃ = સદા હિંસાદિવૃત્ત્યુપજીવિનઃ 'લોયકુચ્છણિજ્ઞા' લોકુક્તસનીયાઃ = સર્વજનૈર્નિન્દનીયાઃ 'મોહમણોરહા' મોગ્રમનોરથાઃ = નિષ્ફલમનોરથાઃ,

ઉત્કીર્ણ કરને રૂપ વિજ્ઞાન સે, (કલા) ધનુર્વેદ આદિ રૂપ કલાઓ સે એક (સમય સત્થ) અર્હત પ્રણીત શાસ્ત્રો કે અભ્યાસ સે, (પરિવર્જિતયા) રહિત હોકર (જહા જાયપસુભૂયા) યથાજાત પશુ જૈસે બને હુણ ચે (અવિયત્તા) કિમ્મી કે મી સાથ પ્રીતિ નહીં કરતે હૈં ક્યોં ફિ ચે (નિચ્ચ નીયકમ્મોવજીવિણો) નિત્ય હી નીચ કર્મોપજીવી હોતે હૈં । યથા જાત પશુભૂતકા વાચ્યાર્થ હસ પ્રકાર હૈ—ઉત્પન્ન હોતે સમય પશુ જિન ગુણો સે યુક્ત રહતા હૈ આગે મી વહ વડા હોને પર મી શિક્ષાદિક કી પ્રાપ્તિ સે અપની તરફી નહીં કર સકને કે કારણ વૈસા હી બના રહતા હૈં, હસી તરહ ચે અદત્તગ્રાહી વ્યક્તિ મી હોતે હૈં હેય ઓર ઉપાદેય કે જ્ઞાન સે વિકલ જૈસે ચે જન્મતે સમય મેં ચે વૈસે હી ચે વહે હોને પર મી રહતે હૈં, અતઃહન્દે યથા જાત પશુભૂત કહા ગયા હૈં । (લોય કુચ્છ-ણિજ્ઞા) સમસ્તજન હનકી નિંદા કિયા કરતે હૈં । (મોહમણોરહા) હનકે જિતને મી મનોરથ હોતે હૈં વે સચ મોઘ-અસફલ હી રહતે હૈં ।

ધનુર્વેદ આદિ કલાઓથી, અને “સમયસત્થ” અર્હત પ્રણીત શાસ્ત્રોના અભ્યાસથી “પરિવર્જિતયા” રહિત હોવાને કારણે “જહા જાય પસુભૂયા” યથાજાત પશુના જેવા લાગતા તેઓ “અવિયત્તા” કોઈની પણ સાથે પ્રીતિ રાખતા નથી, કારણ કે તેઓ “નિચ્ચ નીયકમ્મોવજીવિણો” હોવાથી નીચ કર્મોપજીવી હોય છે ‘યથા જાત પશુભૂત’ નો વાચ્યાર્થ આ પ્રમાણે છે—ઉત્પન્ન થતી વખતે પશુ જે ગુણોથી યુક્ત હોય છે એ જ ગુણોથી યુક્ત મોટું થતા પણ રહે છે—તે મોટું થાય તો પણ શિક્ષાદિની પ્રાપ્તિ વડે પોતાની ઉન્નતિ કરી શકતું નથી એ જ રીતે અદત્તાદાન લેનાર વ્યક્તિ પણ જન્મ સમયે હેય અને ઉપાદેયના જ્ઞાનથી જેટલી રહિત હોય છે એટલી જ મોટી ઉમરે પણ તે જ્ઞાનથી રહિત રહે છે તેથી તેને “યથા જાત પશુભૂત” કહેલ છે “લોયકુચ્છણિજ્ઞા” સઘળા લોકો તેમની નિંદા કરે છે, “મોહમણોરહા” તેમના સઘળા મનોરથો અપૂર્ણ રહે છે “નિરાસવદુલ્લા” ઇચ્છિત વસ્તુ ન

ઈર્ષ્યાદુદ્ધયાવશ્યન્ત', તતથ 'અપ્યયં' આત્માન 'કયતં' કૃતાન્ત=કર્તવ્ય ચ
 'નિંદતા' નિન્દન્તઃ=નિન્દા કર્ન્તઃ, 'ઈદ ય પુરે કડાઈ કમ્માડ પાવગાઈ' ૩૬=
 લોકે પુરા=જન્માન્તરે ચ કૃતાનિ પાપકાનિ=પાપાનિ કર્માણિ 'પરિવયતા' પરિવ
 દન્તઃ=નિન્દન્તઃ 'વિમણસો' વિમનમ.=દીનાઃ સન્તઃ 'સોણ ઢજ્જમાણા'
 શોકેન દશમાનાઃ=અમીષ્ટસ્તૂનામપ્રાપ્તિદુ સેન સન્તપ્પમાનાઃ સન્તઃ 'પરિભૂયા
 હુતિ' પરિભૂતાઃ=જનૈરનાદવાદુઃસ્વમાપ્તાથ ભવન્તિ । તથા 'સત્તપરિવજ્જિયા ય'
 સત્તપરિવર્જિતાથ મનોબલહીનાઃ 'છોબ્મા' સૌમ્યાઃ=નિસ્મહાયત્વાત્પરિભવનીયા,
 'સિપ્પકલાસમયસત્થપરિવજ્જિયા' શિલ્પકલાસમયશાસ્ત્રપરિવર્જિતાઃ=તત્ર શિલ્પ

સપત્તિ, સત્કાર, સન્માન, તથા ભોજન, इनके विशेष प्रकारों की समुदय
 विधिको ईर्ष्याभाव से देखते हैं और अपने भाग्यकी आत्माकी तथा
 अपने पापकारी कर्तव्य की निंदा करते हैं । हमने (इह य) इस
 ससार में (पुरे) पूर्वभव में (पावगाइ कडाइ) पापकर्म किये हैं उनका
 ही यह फल हमें भोगने को मिला है इस प्रकार (परिवयता) दूसरों से
 कहते हुए (विमणसो) स्वयं दीन होकर (सोएण ढज्जमाणा) शोक
 से जलते हुए (परिभूया) दुःखी (हुति) होते हैं अर्थात् अभीष्ट वस्तु
 की अप्राप्ति के दुःख से निरन्तर सन्तप्यमान होते हुए भीतर ही भीतर
 खेद खीन्न बने हुए ये दूसरों के द्वारा अनादृत होते रहते हैं एव
 दुःखों को भोगते रहते हैं । तथा (सत्तपरिवज्जिયા य) मनोबल
 से रहित बने हुए ये (छोब्मा) निस्सहाय होनेके कारण हर एक व्यक्ति
 के द्वारा अनादरणीय होते रहते हैं । तथा (सिप्प) चित्रादिकों को

મનમાન, તથા ભોજન, તથા તેના સહભાગ્ય પ્રત્યે તેઓ ઇર્ષ્યા ભાવથી બેઢે
 છે, તથા પોતાના ભાગ્યની, આત્માની તથા પોતાના પાપકૃત્યોની નિંદા કરે
 છે 'અને "ઈહય" આ સસારમા "પુરે" પૂર્વભવમા "પાવગાઈ કડાઈ"
 પાપકર્મો કર્યા છે, એવુ જ આ રૂણ અમારે ભોગવવુ પડે છે,' એ પ્રમાણે
 "પરિવયતા" બીજાને કહેતા "વિમણસો" પોતે દીન થઈને "સોણઢજ્જમાણા"
 શોકથી જળતા "પરિભૂયા" હુ બી "હુતિ" થાય છે એટલે કે ઇચ્છિત
 વસ્તુની પ્રાપ્તિ ન થવાના દુઃખથી નિરન્તર સતાપયુક્ત થઈને મનમા ને મનમા
 ઉદ્વિગ્ન બનીને તેઓ બીજા લોકો દ્વારા તિરસ્કૃત થયા કરે છે, અને હુ ખો
 ભોગવ્યા કરે છે તથા "સત્તપરિવજ્જિયા ય" મનોબળથી રહિત એવા તે
 "છોબ્મા" અસહાય હોવાને કારણે દરેક વ્યક્તિ દ્વારા અનાદરણીય (તિરસ્કૃત)
 થયા કરે છે તથા "સિપ્પ" ચિત્રાદિની રચના કરવાના વિજ્ઞાનથી, "કલા"

કઠિનપરિશ્રમેણાપિ દિનમાત્રાહારયોગ્યમેવક્રયશ્ચિત્ અન્નાદિક પ્રાપ્તુવન્તીત્યર્થઃ,
 'સ્ત્રીણદ્વવસારા' ક્ષીણદ્રવ્યસારાઃ=દરિદ્રાઃ ણિચ્ચ ધનધણ્ણકોસપરિભોગવિવઙ્ગિજ્ઞ-
 યા' નિત્ય ધનધાન્યકોસપરિભોગવિવર્જિતા=તત્ર નિત્ય=સદા વન-ગણિમાદિક
 ધાન્ય શાલ્યાદિક કોશાઃ=ખાણ્ડાગારાસ્તેષા પરિભોગેન=ઉપભોગેન વિવર્જિતાઃ, રહિ-
 તાઃ, તથા 'રહિયકામભોગપરિભોગસવ્વસોક્ત્વા' રહિત કામભોગપરિભોગસર્વસૌરયાઃ
 =રહિત કામયોઃ=શબ્દરૂપયોઃ ભોગનાં=ગન્ધરૂપસ્પર્શના પરિભોગસૌર્ય-ઉપભોગ
 જનિત આનન્દઃ=યેષા તે તથા કામભોગમુગ્ધવર્જિતા इत्यर्थः, 'પરસિરિભોગોવ-
 ભોગનિસ્સાણમગ્ગણપરાયણા' પરશ્રી ભોગોપભોગનિશ્વાણમાર્ગણપરાયણાઃ, તત્ર-
 પેષામ્=અયેષા શ્રિયા =સમ્પત્તેઃ યૌ ભોગોપભોગો=ભોગઃ=સક્રત્ શુદ્ધયતે યઃ સઃ
 =આહાર પુષ્પાદિરૂપઃ, ઉપભોગશ્ચ=ટુઢવસ્રાદિલક્ષણઃ તયોર્યન્નિશ્રાણ તસ્ય માર્ગણ=

કર્ણો કે પિણ્ડ કે સચય કરને મેં હી લગે રહતે હૈ અર્થાત્ સમ્પૂર્ણ દિન
 ઉદ્યોગ મેં તત્પર રહને પર મી યે વડે કઠિન પરિશ્રમ સે કેવલ ઉસી
 દિન કે યોગ્ય અન્નાદિ સામગ્રી કો જિસ કિસી પ્રકાર સે અર્જિત કર
 પાતે હૈ । (સ્ત્રીણદ્વવસારા) દ્રવ્ય રૂપ સાગ સે રહિત ન હોને કે કારણ
 યે દરિદ્ર હોતે હૈ । (ણિચ્ચ ધનધણ્ણકોસપરિભોગવિવઙ્ગિજ્ઞયા) સર્વદા
 યે ગણિમાદિ રૂપ ધન, શાલી આદિ ધાન્ય એવ ખાણ્ડાગાર इनके परि-
 भोग-उपभोगसे रहित होते हैं । (रहियकामभोगपरिभोगसव्वसोक्त्वा)
 શબ્દ ણ્ય રૂપ સ્વરૂપ કામકે, ગન્ધ રસ ઔર સ્પર્શ સ્વરૂપ ભોગો કે
 પરિભોગ કે સુખોં સે રહિત હોતે હૈ, (પરસિરિભોગોવભોગનિસ્સાણમગ્ગ-
 ણપરાયણા) (પરસિરિ) દૂસરે વ્યક્તિયોજી લક્ષ્મી કે (ઓગોવભોગ)
 ભોગ ઔર ઉપભોગ કે (નિસ્સાણમગ્ગણપરાયણા) આશ્રય કી વાછા મેં
 હી સદા લગે રહતે હૈ । જો એક વાર ભોગને મે આતે હૈ એસે આહાર,

સમૂહનો સમૂહ ડરવામા જ લાગ્યા રહે છે એટલે કે આખો દિવસ મહેનત
 કરવા છતાં પણ તેઓ અતિ ભારે પરિશ્રમથી કૃષ્ટ એ એક દિવસ ચાલે એટલી
 અન્ન સામગ્રી માડ માડ પ્રાપ્ત કરી શકે છે “સ્ત્રીણ દ્વવસારા” દ્રવ્યરૂપ સારથી
 રહિત હોવાને કારણે તેઓ દરિદ્ર હોય છે ” ણિચ્ચ ધનધણ્ણકોસપરિભોગવિવઙ્ગિજ્ઞયા
 સર્વદા તેઓ સેનામહોરે આદિ વન, શાલી આદિ ધાન્ય અને વામણોના ભંડારની
 તેમના ઉપભોગથી રહિત રહે છે, “ રહિયકામભોગપરિભોગસવ્વસોક્ત્વા ” શબ્દ
 અને રૂપ સ્વરૂપ કામના ગંધ, રસ, અને સ્પર્શસ્વરૂપ રિભોગના સુખોથી તેઓ
 રહિત હોય છે “ પરસિરિભોગોવભોગનિસ્સાણમગ્ગણપરાયણા ” “ પરસિરિ ” તેઓ
 અન્ય વ્યક્તિઓની લક્ષ્મીના “ ભોગવભોગ ” ભોગ તથા ઉપભોગના “ નિસ્સાણ-
 મગ્ગણપરાયણા ” આશ્રયની વાસનામા જ સદા લીન રહે છે, જે

નિરાશનહુલાઃ = ઇષ્ટસ્તુમાત્યમાત્રાદતિનિરાશાઃ, ' આગ્રાસપદ્ધિવદ-
પાણા ' આશાપાશપતિરદ્ધમાગાઃ=આશીય પાશાઃ=અન્યન તેન પ્રતિવદ્ધાઃ=નિરુદ્ધાઃ
=પ્રાણા યેપાતે તથા આશામાત્રજીવિન., ' લોચસારે ' લોચમારે=લોચમારભૂતે
' અત્યોપ્પાયણકામસોચ્ચે ' અર્થોત્પાદનકામસોચ્ચે=તત્ર અર્થોત્પાદન=અર્થોપાર્જન
કામસોચ્ચે=ઇન્દ્રિયજનિત સોચ્ચે તત્ર ' મુદ્ધુઅવિ ઉજ્જમતા ' મુદ્ધુ અપિ ઉચ્ચમન્તઃ
=ઉદ્યોગ કુર્ન્તઃ ' અફલવતગા ' અફલવન્નશ્ચ=અભિલષિતસ્તુપાતિરહિતા ' હુતિ '
ભવન્તિ । પુનઃ કીદશા ભવન્તિ ? ત્યાહ ' તદ્દિવ મુજ્જુત્તકમ્મકયદુક્ખસઠવિય
સિત્થપિંડસચ્ચપરા ' તદ્દિવમોદુક્તકર્મકૃતદ્ધુ સ્વમસ્થાપિતસિત્થપિંડસચ્ચપરાઃ,
તત્ર તદ્દિવસેપુ=તત્તદિનેપુ ઉદ્યુક્તે=ઉદ્યોગવદ્ધિ સદ્ધિ. કર્મણા=વ્યાપારેણ કૃતે
નાપિ દુઃખેન=અતિવલેશેન સસ્થાપિત = પ્રાપ્તો ય સિત્થાના=ધાન્યકણાના
પિંડસ્તસ્ય સચ્ચયે પરાઃ=તત્પરા યે તે તથા-સમ્પૂર્ણદિનપ્રયોગપરાઃ સન્તોડપિ-

(નિરાસ વદુલા) ઇષ્ટવસ્તુની પ્રાપ્તિ નહીં હોને કે કારણ યે મદા નિરાસ
હી બને રહેતે હૈ । (આસાપાસપદ્ધિવદ્ધપાણા) ફિર મી યે જો જીતે હૈ
ઉસકા કારણ ઇનકી આશા હૈ । ઇસી આશાકી પાશ મે હી ઇનકે
પ્રાગ હી બધે હુણ રહેતે હૈ । (લોચસારે) યદ્યપિ યે લોક મેં
સારભૂત માને ગયે (અત્યોપ્પાયણકામસોચ્ચે) અર્થાર્જન એવ ઇન્દ્રિય
જનિત સુખ મેં (મુદ્ધુ અવિઉજ્જમતા) અચ્છી તરહ સે ઉચ્ચમ શીલ
રહેતે હૈ, પરન્તુ ફિર મી (અફલવતગા) ઇન્દે અભિલષિત વસ્તુકી
પ્રાપ્તિ નહીં હોતી હૈ । ઉસસે યે રહિત (હુતિ) બને રહેતે હૈ । (તદ્દિવ
મુજ્જુત્તકમ્મકયદુક્ખસઠવિયસિત્થપિંડસચ્ચપરા) (તદ્દિવમુજ્જસ)
પ્રતિદિન ઉદ્યોગ કરતે રહેને પર મી (કમ્મકય) કિયે ગયે કામ સે
(દુક્ખસઠવિય) મુશ્કિલ સે પ્રાપ્ત હુણ (સિત્થપિંડ સચ્ચપરા) ધાન્ય

મળવાને કારણે તેઓ સદા નિરાશ જ રહે છે “ આસપાસપદ્ધિવદ્ધપાણો ”
છતા પણ તેઓ જીવી શકે છે તેનું કારણ તેમની આશા છે તે આશાના
પાશમાં જ તેમના પ્રાણ બધાયેલા રહે છે “ લોચસારે ” જો કે તેઓ
લોકોમાં સારભૂત મનાતા “ અત્યોપ્પાયણકામસોચ્ચે ” અર્થાર્જન (ધન કમાવામાં)
તથા ઇન્દ્રિય જનિત સુખમાં “ મુદ્ધુઅવિઉજ્જમતા ” સારી રીતે પ્રયત્નશીલ રહે
છે, પણ “ અફલવતગા ” તેમને ઇચ્છિત વસ્તુ મળતી નથી તેનાથી તેઓ
રહિત “ હુતિ ” રહે છે ‘ તદ્દિવ મુજ્જુત્તકમ્મકયદુક્ખસઠવિય સિત્થપિંડસચ્ચપરા ’
“ તદ્દિવ મુજ્જુત્ત ” દરરોજ ઉદ્યોગ કરવા છતા પણ “ કમ્મકય ” કરેલા કામથી
“ દુક્ખસઠવિય ” મુશ્કેલીથી મળેલ “ સિત્થપિંડસચ્ચપરા ” ધાન્યકણોના

અમદત્તાદાનસ્ય ચતુર્થે ફલદ્વારં નિરૂપિતમ્ । સામ્પ્રતમધ્યયનાર્થમુપસહરન્નાહ
-‘ एसो सो ’ इत्यादि ।

મૂલમ્—एसो सो अदिण्णादाणस्स फलविवागो इहलो-
इयो परलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भओ वहुरयप्प-
गाढो दारुणो ककसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चइ, न
य अवेयइत्ता अत्थिहुं मोक्खोत्ति, एवमाहसु णायकुलनदणो
महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो कहेसी अदिण्णादाणस्स
फलविवागं एव त तइयपि अदिण्णादाण हर-दर-मरण-कल्लस
-तासण-परसति भेज्जलोभमूलं एव जाव चिरपरिचिय-
मणुगत दुरत त्तिवेमि ॥ सू० २१ ॥

॥ तइय अहम्मदार सम्मच ॥

ટીકા—‘ एसो सो ’ एपः स=दर्शितस्वरूपः ‘ अदिण्णादानस्य ’ अदत्ता-
दानस्य ‘ फलविवागो, फलविपाकः ‘ इहलोइओ ’ ऐहलौकिकः=मनुष्यभयापेक्षया
‘ परलोइओ ’ पारलौकिकः=नरकाद्यपेक्षया ‘ अप्पसुहो ’ अल्पसुख=आपातमात्र-

इस प्रकार यह अदत्तादान के चौथे फल द्वार का निरूपण किया
गया है, अब सूत्रकार इस अ-यन के अर्थका उपसहार करते हुए
कहते हैं — ‘ एसो सो ’ इत्यादि० ।

टीकार्थ-(एसोसो) जीसका इस प्रकारसे स्वरूप प्रदर्शित किया जा
चुका है ऐसा (अदिण्णादाणस्स फलविवागो) अदत्तादानका यह फलरूप
विपाक (इहलोइओ) मनुष्य भवकी अपेक्षा तथा (परलोइओ) नर-
कादि गतियोंकी अपेक्षासे प्रदर्शित किया गया है । इससे हम यह बात
भली भाँती जान सकते हैं कि यह फलरूप विपाक (अप्पसुहो)

આ પ્રમાણે અદત્તાદાનના ચોથા ફલદ્વારનું નિરૂપણ કરવામા આવ્યું, હવે
સૂત્રકાર આ અધ્યયનના અર્થનો ઉપસહાર કરતા કહે છે—“ एसो सो ” इत्यादि
ટીકાર્થ—“ एसो सो ” જેનું ઉપરોક્ત પ્રકારે સ્વરૂપ પ્રગટ કરવામા આવ્યું તે
“ अदिण्णादाणस्स फलविवागो ” અદત્તાદાનનો તે ફલરૂપ વિપાક “ इह-
लोइओ ” મનુષ્યભવની અપેક્ષાએ તથા “ परलोइओ ” નરકાદિ ગતિયોની
અપેક્ષાએ બતાવવામા આવ્યો છે તેની મદદથી આપણે તે વાત સારી રીતે
સમજી શકીએ છીએ

ગવેષણ તત્ર પરાયણા' પરસમ્પત્તિભોગાભિલાષકા इत्यर्थ, 'વરાગા' વરાકા.=
 દીનાઃ 'અકામિયાણ' અકામિયા=અનિચ્છ્યાડપિ 'વિણિહુતિદુઃખ' વિનય-
 ન્તિ દુઃખ=દુઃખ પ્રાપ્નુવન્તિ તથા 'જેન સુદ્ધ જેવ ણિવુડ ઉવલભતિ' નૈવમુખ
 નૈવ નિર્વૃત્તિ=મનઃ શાન્તિમુપલભન્તે=પ્રાપ્નુવન્તિ, તે કે ? इत्याह—'અચ્ચતવિડ
 લદુક્કસયસપલિત્તા' અત્યન્તત્રિપુલદુઃખાતમમ્પદીપ્તાઃ =અત્યન્તત્રિપુલમ્=ત્રિ
 પિસ્તીર્ણં યદ્ દુઃખશત તંન સમ્પદીપ્તા=સતસા. 'પરમ્મ દવ્વેહિ-જે અવિરયા'
 પરસ્ય દ્રવ્યેષુ યે અવિરતાઃ=નિવૃત્તિમાપરહિતામ્તેઽન પરમ ચ નૈવ મુખ નૈવ શાન્તિ
 ચોપલભન્તે इति सम्मन्त्रः सू० २० ॥

પુષ્પ આદિ પદાર્થ ભોગ ઓર જો વાર ૨ ભોગને મે આતે હે તેસે ગૃહ
 વસ્ત્ર આદિ પદાર્થ ઉપભોગ હૈ । (વરાગા) યે સદા દીનાવસ્થા સપન્ન
 હોતે હૈ । (અકામિયાણ) इनकी यह अभिलाषा नहीं होती है की
 हम दुःख भोगे परन्तु इन्हे चिन्ता इच्छा के भी (विणिहति दुःख)
 दुःख सहना पड़ता है । इन्हे (जेन सुह जेवणिवुड उवलभति)
 जीवनभर कभी भी सुख नहीं मिलता और न कभी निर्वृत्ति मनको
 शांति ही इन्हे प्राप्त होती है । कारण की ये (अचचत विडलदुक्ख-
 सयसपलित्ता) अत्यन्त त्रिपुल सैरुडो दुःखों से सतस होते रहते हैं ।
 इन दुःखों से भी सतस होने का कारण यह है कि ये (परस्स दव्वेहि-
 जे अविरया) परके द्रव्य को अपहरण करने रूप कुहृत्य से विरति-
 भाव धारण करने से रहित होते हैं । इसी कारण इन विचारों को न
 सुख मिलता है और न शांति ही मिलती है ॥ सू० २० ॥

એડ વાર લોગવવામા આવે છે એવા આહાર પુષ્પ આદિ પદાર્થ લોગ
 ગણાય છે, અને જે વરવાર લોગવાય છે એવા ઘર, વસ્ત્ર આદિ પદાર્થોને
 ઉપલોગ કહે છે 'વરાગા' તેઓ હ મેંશ દીન દશામા રહે છે, "અકામિયાણ"
 તેમને હુ ખ લોગવવાની ઇચ્છા હોતી નથી, પણ તેમને ઇચ્છ્યા વિના પણ
 "વિણિહુતિ દુઃખ" હુ જો સહન કરવા પડે છે તેમને "જેન સુદ્ધ જેવ ણિવુડ ઉવલ
 મતિ" આખુ જીવન કઠી પણ સુખ મળતુ નથી, અને તેમને કઠી નિવૃત્તિ-(મનની
 શાંતિ) પણ પ્રાપ્ત થતી નથી, કારણ કે તે લોકો "અચ્ચતવિડલદુક્કસય
 સપલિત્તા" અત્યંત ત્રિપુલ, સેકડો હુ જોથી હુ ખી થયા કરે છે, એ હુ જોથી
 પણ હુ ખી થવાનુ કારણ એ છે કે તેઓ "પરસ્ય દવ્વેહિ જે અવિરયા"
 પરધનનુ અપહરણ કરવા કે કુહૃત્યથી વિરક્ત થઈ શકતા નથી, તે કારણે
 તે ણિચાશઓને સુખ મળતુ નથી અને શાંતિ પણ મળતી નથી ॥ સૂ૦ ૨૦ ॥

અમદત્તાદાનસ્ય ચતુર્થે ફલદ્વારં નિરૂપિતમ્ । સામ્પ્રતમધ્યનાર્થમુપસહરન્નાહ
-‘ एसो सो ’ इत्यादि ।

મૂલમ્—एसो सो अदिण्णादाणस्स फलविवागो इहलो-
इयो परलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महव्भओ वहुरयप्प-
गाढो दारुणो ककसो असाओ वाससहस्सेहि मुच्चइ, न
य अवेयइत्ता अत्थिहु मोक्खोत्ति, एवमाहसु णायकुलनदणो
महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो कहेसी अदिण्णादाणस्स
फलविवाग एव त तइयपि अदिण्णादाण हर-दर-मरण-कलुस
-तासण-परसंति भेज्जलोभमूलं एव जाव चिरपरिचिय-
मणुगत दुरत त्तिवेमि ॥ सू० २१ ॥

॥ तइय अहम्मदार सम्मत्त ॥

ટીકા—‘ एसो सो ’ एषः स=दर्शितस्वरूपः ‘ अदिण्णादानस्य ’ अदत्ता-
दानस्य ‘ फलविवागो, फलविपाकः ‘ इहलोइओ ’ ऐहलौकिकः=मनुष्यभवापेक्षया
‘ परलोइओ ’ पारलौकिकः=नरकाद्यपेक्षया ‘ अप्पसुहो ’ अल्पसुख=आपातमान-

इस प्रकार यह अदत्तादान के चौथे फल द्वार का निरूपण किया
गया है, अब सूत्रकार इस अ उक्त के अर्थका उपसहार करते हुए
कहते हैं — ‘ एसो सो ’ इत्यादि० ।

टीकार्थ—(एसोसो) जीसका इस प्रकारसे स्वरूप प्रदर्शित किया जा
चुका है ऐसा (अदिण्णादाणस्स फलविवागो) अदत्तादानका यह फलरूप
विपाक (इहलोइओ) मनुष्य भवकी अपेक्षा तथा (परलोइओ) नर-
कादि गतियोंकी अपेक्षासे प्रदर्शित किया गया है । इससे हम यह बात
भली भाँती जान सकते हैं कि यह फलरूप विपाक (अप्पसुहो)

આ પ્રમાણે અદત્તાદાનના ચોથા ફલદ્વારનું નિરૂપણ કરવામાં આવ્યું, હવે
સૂત્રકાર આ અધ્યયનના અર્થનો ઉપસહાર કરતા કહે છે—“ एसो सो ” इत्यादि
टीकार्थ—“ एसो सो ” જેનું ઉપરોક્ત પ્રકારે સ્વરૂપ પ્રગટ કરવામાં આવ્યું તે
“ अदिण्णादाणस्स फलविवागो ” અદત્તાદાનનો તે ફલરૂપ વિપાક “ इह-
लोइओ ” મનુષ્યભવની અપેક્ષાએ તથા “ परलोइओ ” નરકાદિ ગતિઓની
અપેક્ષાએ યતાવવામાં આવ્યો છે તેની મદદથી આપણે તે વાત સારી રીતે
સમજી શકીએ છીએ

સુખજનકઃ, 'બહુદુઃખો' મહાદુઃખઃ=દુઃખવપ્તુલઃ 'મહાન્મત્તો' મહામત્તઃ=મહા
 મત્તજનકઃ 'બહુરયપ્પગાદો' બહુરજઃ પ્રગાદઃ=પ્રચુરકર્મરજોભિઃ સમ્મૃતઃ 'દારુણો'
 દારુણઃ=ભીષણઃ 'કક્કસો' કકકશઃ=કઠોરઃ 'અસાઓ' અશાતઃ=અમુખોઽશાત
 કર્મવેદનીયસ્વરૂપઃ इत्येवचिप्रफलविपाकः 'वाससहस्सेहि' વર્ષમહસેઃ=પલ્લો
 પમસાગરપ્રમાણકાલિઃ 'મુન્ચઈ' મુન્ચતે=પીયતે । તદય વ્યતિરેકમુલેનાહ- 'નય'
 ન ચ ત ફલ-વિપાકમ્, 'અવેયહત્તા' અવેદયિત્વા = અનુપમુચ્ય ઉપભોગ
 વિનેત્યર્થઃ 'હુ' નિશ્ચયેન 'મોક્ષો' મોક્ષઃ 'અત્થિ' અસ્તિ 'તિ' इति शब्द
 સમાપ્તિ સૂચકઃ ।

एतस्यार्थस्य साक्षात्प्रमाणभूतपरमात्मप्रतिपादितत्वेन प्रमाणयन्नाह—
 'एवमाहसु' इत्यादि ।

एवम्=उत्करीत्या 'आहसु' ऊचुः रूपभाटि तीर्थङ्करगणधरादय । तथा

केवल आपातमात्र सुख जनक है । (बहु दुःखो) जीवों के इससे
 वास्तविक सुख नहीं मिलता है किंतु भयकर से भयकर दुःखों का
 ही यह प्रदाता है । (बहुन्मओ) यह महा भयजनक है (बहुरयप-
 गादो) प्रचुर कर्म रूपी रज से यह भरा हुआ है । (दारुणो) बड़ा
 भीषण है । (कक्कसो) कठोर है । (असाओ) अशात कर्म वेदनीय
 स्वरूप है । इस तरह का यह फलविपाक (वाससहस्सेहि) हजारों
 वर्षों में अर्थात् पल्लोपम तथा सागरोपर प्रमाणकाल में (मुन्चइ)
 छूटता है ॥ (न य अवेयहत्ता ह माप्सो अत्थि ति) बिना इसका
 फल भोगे जीव इससे मुक्त नहीं होता है । इस अर्थ में प्रमाणता प्रति
 पादन करने के लिये सूत्रकारइसमें साक्षात्प्रमाणभूतपरमात्म के द्वारा
 प्रतिपादितता प्रकट करते हैं, वे कहते हैं- (एवमाहसु) ऋषभ आदि

તે ફલરૂપ વિપાક “ અપ્પસુહો ” કેવળ ક્ષણિક સુખજનક છે “ બહુદુઃખો ”
 જીવોને તેનાથી વાસ્તવિક સુખ મળતું નથી, પણ તે ભયકરમા ભયકર
 હુ જો દેનાર છે “ બહુન્મઓ ” તે મહા ભયજનક છે “ બહુરયપ્પગાદો ” વિપુલ
 કર્મરૂપી રજથી તે પૂર્ણ છે, “ દારુણો ” ઘણો ભીષણ છે, “ કક્કસો ” કઠોર
 છે, “ અસાઓ ” અશાતકર્મવેદનીય સ્વરૂપ છે આ પ્રકારનો આ ફળવિપાક
 “ વાસસહસ્સેહિ ” હજારો વર્ષો એટલે કે પલ્લોપમ તથા સાગરોપમ પ્રમાણ
 કાળે છૂટે છે “ નય અવેયહત્તા હુ મોક્ષો અત્થિ તિ ” તેનું ફળ ભોગવ્યા
 વિના જીવ તેનાથી મુક્ત થતા નથી તે અર્થમાં પ્રમાણ ભૂતના પ્રતિપાદિત
 કરવાને માટે સૂત્રકાર તેમાં સાક્ષાત્ પ્રમાણભૂત પરમાત્મા દ્વારા પ્રતિપાદિતતા
 પ્રગટ કરે છે તેઓ જાહે છે-

તદનુસારેણૈવ ' જ્ઞાતકુલનદનો ' જ્ઞાતકુલનન્દનઃ=સિદ્ધાર્થકુલાનન્દનકરઃ ' મહાપ્પા ' મહાત્મા=પરમાત્મરૂપઃ ' જિજ્ઞો ' જિજ્ઞો-રાગદ્વેષવિજેતા ' વીરચરનામધેજ્ઞો ' વીરચરનામધેયઃ=પ્રચર્યાતનામા ભગવાન્ મહાવીર. ' અદિષ્ણાદાણસ્મ ' અદત્તાદાનસ્ય ફલવિવાગ ' ફલવિવાક ' કહેસી ' કથિતવાન્ । એવ ' ત ' તત્ પૂર્વોપદર્શિત સ્વરૂપમ્ , ' તદ્યપિ અદિષ્ણાદાણ ' તૃતીયમપ્યદત્તાદાન- ' હર-દહ-મરણ-કલુષ-તાસણ-પરસતિગિજ્ઞલોભમૂલ ' હર-દહ-મરણ-કલુષ-ત્રાસનપરસત્કગ્રાહ્યલોભમૂલમ્ , તત્ર ' હર ' ઇતિ હરણ=પરદ્રવ્યપહરણ, ' દહ ' દહન=દાહ-હૃદયસન્તાપઃ, ' મરણ ' મૃત્યુ, ' કલુષ ' કલુષ=મનોમાલિન્ય, ' તાસણ ' ત્રાસન=ત્રાસઃ-અકસ્માદ્વયમ્ ' પરસતિગિજ્ઞલોભ ' પરસત્કગ્રાહ્યલોભઃ=પરસ્તુગ્રાહકો લોભ , એતેષામૂલ=મૂલકારણમિદમદત્તાદાનમ્ । એવ ' જાર ' યાત્-યાવ-ઝંઘ્નેન દ્વિતીયાલીક-

તીર્થંકરો ને હસ અદત્તાદાન કા એસા હી ફલ કહા હૈ તથા ડન્હી તીર્થ-કરોં કે અનુસાર (જ્ઞાતકુલનદનો) જ્ઞાતકુલનદન-સિદ્ધાર્થ કે કુલકો આનંદ કારક (મહાપ્પા) પરમાત્મરૂપ (જિજ્ઞો) રાગદ્વેષ વિજેતા (વીરચરનામધેજ્ઞો) શ્રી ભગવાન મહાવીર ને બી (અદિષ્ણા-દાણસ્મ) હસ અદત્તાદાન કા (ફલવિવાગ) એસા હી ફલ (કહેસી) કહા હૈ । (એવ) હસ પ્રકાર (ત) પૂર્વોપદર્શિત સ્વરૂપવાલા યહ (તદ્યપિ) ત્રીસરા અદત્તાદાન બી (હર-દહ-મરણ-કલુષ-પરસતિગિજ્ઞ-લોભમૂલ) (હર) પરદ્રવ્ય કા હરણ કરના, (દહ) હૃદય મે સતાપ પહુંચાના, (મરણ) મૃત્યુ (કલુષ) મનોમાલિન્ય (તાસણ) અકસ્માત્ ભય હોના, (પરસતિગિજ્ઞ લોભમૂલ) દૂસરે કી વસ્તુ કા હરણ કરાને વાલા લોભ, હન સબકા મૂલ-કારણ યહ અદત્તાદાન હૈ । યહા પર

“ એવમાહસુ ” અપભ્રંશ આદિ તીર્થંકરોએ આ અદત્તાદાનનુ આવુ જ ક્ષણ કહેલ છે તથા તે તીર્થંકરોના પ્રમાણે “ જ્ઞાતકુલનદનો ” જ્ઞાતકુલ નદન-સિદ્ધાર્થના કુળને આનંદ દાયક “ મહાપ્પા ” પરમાત્મરૂપ, “ જિજ્ઞો ” રાગદ્વેષ વિજેતા, “ વીરચરનામધેજ્ઞો ” શ્રી ભગવાન મહાવીરે પણ “ અદિષ્ણા-દાણસ્મ ” આ અદત્તાદાનનુ “ ફલવિવાગ ” એવુ જ ક્ષણ કહેલ છે “ એવ ” આ પ્રમાણે “ ત ” પૂર્વોપદર્શિત સ્વરૂપવાળુ તે “ તદ્યપિ ” ત્રીજુ અદત્તાદાન પણ “ હર-દહ-મરણ-કલુષ-તાસણ-પરસતિ ગિજ્ઞ લોભમૂલ ” “ હર ” પરદ્રવ્યનુ હરણ કરવુ “ દહ ” હૃદયમા સતાપ પહોચાડવો, “ મરણ ” મૃત્યુ, “ કલુષ ” મનની મલિનતા, “ તાસણ ” અકસ્માત ભય થવો, “ પરસતિગિજ્ઞ લોભમૂલ ”

વચનાધ્યયનોક્તવિશેષણાનિ યથાયોગ્યાનિ સગ્રાણાણિ । ચિરપરિચિય ' ચિરપરિ
ચિત્તમ્=અનાદિકાલાદનુભૂયમાનમ્, ' અણુગય ' અનુગતં=ગ્રાણિના પૃષ્ઠો લગ્નમ્,
' દુરત ' દુરન્તમ્=દુઃસ્વાવસાનમ્, ' તિબેમિ ' ઇતિ પ્રીમિ = એતદ્ જન્મસ્ત્રામિન
પ્રતિ સુધર્મસ્વામિવાસ્યમ્ ॥ સૂ. ૨૧ ॥

इति श्रीप्रश्नव्याकरणस्य सुदर्शन्याख्याया व्याख्याया हिंसादि पञ्चासवद्वारेषु
अदत्तादानारय तृतीयधर्मद्वार समाप्तम् ॥ ३ ॥

‘ યાવત્ ’ શબ્દ સે દ્વિતીય અલીક વચન સપથી અધ્યયન મેં જો વિશે
ષણ કહ ગયે હેં ઉનકા યહ યથાયોગ્યરૂપ મેં સગ્રહ કર લેના ચાહિયે ।
યહ અદત્તાદાન (ચિરપરિચિય) અનાદિકાલ સે જીવોં કે અનુભવ મેં
આ રહા હૈ (અણુગય (મિથ્યાત્વ) કે કારણ યહ આત્મા કે પીછે લગા
હુઆ હૈ । (દુરત) દુઃસ્વપદ હી હસકા પરિણામ-ફલ હૈ । (તિબેમિ)
એસા મેં કહ્તા હું । હસ પ્રકાર સે યહ જન્મ સ્વામી કે પ્રતિ સુધર્મ
સ્વામી ને કહા હૈ ॥ સૂ. ૦ ૨૧ ॥

॥ ત્રીસરા આસવ— ‘ અધર્મ ’ દ્વાર સમાપ્ત ॥

ખીજાની વસ્તુનું હરથું કરાવનાર લોભ, વગેરે મધળી બાબતોનું મૂળ કારણ
આ અદત્તાદાન છે, અહીં “ યાવત્ ” શબ્દથી અતીત વચન વિષેના ખીજા
અધ્યયનમાં જે વિશેષણોનો ઉપયોગ કરાયો છે, તેમનો સંગ્રહ અહીં થોડા
રીતે કરી લેવાનો છે, આ અદત્તાદાન “ ચિરપરિચિય ” અનાદિ કાળથી જીવોના
અનુભવમાંથી રહ્યું છે, (અણુગય) મિથ્યાત્વને કારણે તે આત્માની પાછળ
લાગેલું છે, (દુરત) તેનું કળ-પરિણામ હું બતાવી છે, (તિબેમિ) એવું હું જ
હું, આ પ્રમાણે સુધર્મસ્વામીએ જ ખૂસ્વામીને જોડ્યું, ॥ સૂ, ૨૧ ॥

॥ ત્રીજો આસવ — ‘ અધર્મ ’ દ્વાર સમાપ્ત ॥

અથ ચતુર્થમધ્યયનમ્ ।

વ્યાચાર્યાત તૃતીયમધ્યયન સામ્પત્ત ચતુર્થમારમ્બ્યતે અસ્ય ચ પૂર્વેણ સહાયમભિ-
સમ્બન્ધઃ । તૃતીયાધ્યયને યાદશ નામાદિનિર્દેશપુરસ્સરમદત્તાદાનસ્વરૂપમુક્તમ્ ।
અદત્તાદાન ચ પ્રાયોઽત્રત્ત્વાસક્તચિત્તાઃ કુર્વન્ત્યેતેતિ દ્વેતોઃ સૂત્રક્રમનિર્દેશાનુસારા-
ચ્ચાઽદત્તાદાનનિરૂપણાનન્તરમુચિતપ્રાપ્તમત્રહ્મસ્વરૂપ નામાદિનિર્દેશપૂર્વક પ્રદર્શ્યતે
તસ્યેદમાઘ સૂત્રમ્—‘ જન્મ અમમ ચ ચતુર્થ ’ ઇત્યાદિ—તત્ર પૂર્વેપામિવાસ્યાપિ
‘ યાદશ ૧ યજ્ઞામ ૨ યથા ચક્રુત ૩ યત્ ફલ દદાતિ ૪ યે ચ કુર્વન્તિ ૫ ઇતિ-
પશ્ચભિરન્તર્દ્વારૈર્નિરૂપણ ચિત્તીર્ષુ રાદો ક્રમપ્રાપ્ત ’ યાદશદ્વારમાશ્રિત્ય અત્રહ્મ-
સ્વરૂપ નિરૂપ્યતે—‘ જન્મ અમમ ’ ઇત્યાદિ ।

ચતુર્થ અધર્મદ્વાર પ્રારમ્—

તૃતીય અધર્મદ્વાર સમાપ્ત હો ચુકા । અત્ર ચતુર્થ અધર્મદ્વાર પ્રારમ્
હોતા હૈ । હસ અધર્મદ્વાર કે સાથ હમ પ્રકાર કા સમ્બ હૈ -તૃતીય-
અધર્મદ્વારમે યાદશનામાદિ નિર્દેશપૂર્વક જો અદત્તાદાનકા સ્વરૂપ કહા હૈ
સો હસ અદત્તાદાન કો જો અત્રહ્મમે આસક્ત ચિત્તવાલે પ્રાણી હોતે હૈ
પ્રાયઃ વે કરતે હી હૈ હસ કારણ સે, તથા સૂત્રક્રમ કે નિર્દેશ કે
અનુસાર સે અદત્તાદાન કે નિરૂપણ કે યાદ અત્રહ્મકા સ્વરૂપ નામાદિનિ-
ર્દેશક કહના યદ અવસર પ્રાપ્ત હૈ । અતઃ સૂત્રકાર ઉસે અધર્મદ્વાર મે
પ્રદર્શિત કરતે હૈ । જિસ તરહ પૂર્વ અ યગનો કા નિરૂપણ સૂત્રકાર ને
“ યાદશ, ૧ યજ્ઞામ ૨ યથા ચક્રુત, ૩ યત્ ફલ દદાતિ, ૪ યે ચ
કુર્વન્તિ ૫ ” હન પાચ અન્તર્દ્વારો સે કિયા હૈ ઉસી તરહ વે હસકા મી

ચોથા અધર્મદ્વારની શરૂઆત

ત્રીજી અધર્મદ્વાર પૂર થયુ, સવે ચોથા અધર્મદ્વારનુ વર્ણન શરૂ થાય
છે, આ અધર્મદ્વારને આગળના અધર્મદ્વાર સાથે આ પ્રકારેના સમ્બંધ છે

ત્રીજી અધર્મદ્વારમા પ્રકાર નામો આદિના નિર્દેશ પૂર્વક અદત્તાદાનનુ
સ્વરૂપ બતાવવામા આવ્યુ છે તે અદત્તાદાન જે અત્રહ્મમા આસક્ત પ્રાણીઓ
હોય તે સામાન્ય રીતે આચરે છે, એ કારણે તથા સૂત્રક્રમના નિર્દેશ પ્રમાણે
અદત્તાદાનના નિરૂપણ પછી અત્રહ્મનુ સ્વરૂપ નામાદિના નિર્દેશ પૂર્વક કહેવું
તે યોગ્ય જ છે તેથી સૂત્રકાર તેને આ અધર્મદ્વારમા પ્રગટ કરે છે જે રીતે
આગળના અધ્યયનોનુ નિરૂપણ સૂત્રકારે “ યાદશ ” ૧ (જેવા પ્રકારનુ) “ યજ્ઞામ ” ૨
(જ્યા ય્યા નામો) “ યથા ચક્રુત ” ૩ (જ્યારે કરાય છે) “ યત્ ફલ દદાતિ ” ૪
(કયુ ફળ આપે છે) “ યે ચ કુર્વન્તિ ” ૫ (જેણુ તે આચરે છે) આ પાંચ
અતર્દ્વારો દ્વારા થયું છે, એ જ પ્રમાણે આ અધર્મદ્વારનુ પણ નિરૂપણ ડગ્વા

વચનાયયનોક્તિશોષણાનિ યથાયોગ્યાનિ સગ્રાભાગિ । ચિરપરિચિય ' ચિરપરિ
ચિત્તમ્=અનાદિકાલાદનુભૂયમાનમ્, ' અણુગય ' અનુગત=પ્રાણિના પૃષ્ઠતો લગ્નમ્,
' દુરત ' દુરન્તમ્=દુઃસ્વાવસાનમ્, ' તિબેમિ ' इति व्रवीमि = एतद् जन्मन्मामिनि
પ્રતિ સુધર્મસ્વામિવાક્યમ્ ॥ સૂ. ૨૧ ॥

इति श्रीप्रश्नव्याकरणस्य सुदर्शन्याख्याया व्याख्याया हिंसादि पञ्चासवद्वारेण
अदत्तादानाख्य तृतीयधर्मद्वार समाप्तम् ॥ ३ ॥

‘ યાવત્ ’ શબ્દ સે ઢિતીય અલીક વચન સમધી અવ્યયન મેં જો વિશે
પણ કહ ગયે હેં ઉનકા યર્હા યથાયોગ્યરૂપ મેં સગ્રહ કર લેના ચાહિયે ।
યહ અદત્તાદાન (ચિરપરિચિય) અનાદિકાલ સે જીવોં કે અનુભવ મેં
આ રહા હૈ (અણુગય (મિથ્યાત્વ) કે કારણ યહ આત્મા કે પીછે લગા
હુઆ હૈ । (દુરત) દુઃસ્વપ્રદ હી હસકા પરિણામ-ફલ હૈ । (તિબેમિ)
એસા મેં કહતા હુ । હસ પ્રકાર સે યહ જન્મ સ્વામી કે પ્રતિ સુધર્મ
સ્વામી ને કહા હૈ ॥ સૂ. ૨૧ ॥

॥ तीसरा आस्रव— ‘ अधर्म ’ द्वार समाप्त ॥

ખીજતી વસ્તુ ડરણુ કરાવનાર હોલ, વગેરે મધળી ખાખતોનુ મૂળ કારણ
આ અદત્તાદાન છે, અહીં “ યાવત્ ” શબ્દથી અનીક વચન વિષેના ખીજ
અધ્યયનમા જે વિશેષણોનો ઉપયોગ કરાયો છે, તેમનો સમગ્ર અહીં યોગ્ય
રીતે કરી લેવાનો છે, આ અદત્તાદાન “ ચિરપરિચિય ” અનાદિ કાળથી જીવોના
અનુભવમા આવી રહ્યું છે, (અણુગય) મિથ્યાત્વને કારણે તે આત્માની પાછળ
લાગેલું છે, (દુરત) તેનું ક્ષણ-પરિણામ હું ખદાથી છે, (તિબેમિ) એવું હું જ
હું, આ પ્રમાણે સુધર્મસ્વામીએ જન્મસ્વામીને જણાવ્યું, ॥ સૂ. ૨૧ ॥

॥ ત્રીજો આસ્રવ - ‘ અધર્મ ’ દ્વાર સમાપ્ત ॥

અથ ચતુર્થમધ્યયનમ્ ।

વ્યાख्याત તૃતીયમધ્યયન સામ્પ્રત ચતુર્થમારમ્ભ્યતે અસ્ય ચ પૂર્વેણ સહાયમભિ-
સમ્યન્ધઃ । તૃતીયાધ્યયને યાદશ નામાદિનિર્દેશપુરસ્સરમદત્તાદાનસ્વરૂપમુક્તમ્ ।
અદત્તાદાન ચ પ્રાયોઽબ્રહ્માસક્તચિત્તાઃ કુર્વન્ત્યેતેતિ હેતોઃ સૂત્રક્રમનિર્દેશાનુસારા-
ન્ચાઽદત્તાદાનનિરૂપણાનન્તરમુચિતમાત્મમનઃસ્વરૂપ નામાદિનિર્દેશપૂર્વક પ્રદર્શ્યતે
તસ્યેદમાઘ મૂનમ્—‘જન્મ અમમ ચ ચત્થ’ ઇત્યાદિ—તત્ર પૂર્વેપામિવાસ્યાપિ
‘યાદશ ૧ યન્નામ ૨ યથા ચ કૃત ૩ યત્ફલ દદાતિ ૪ યે ચ કુર્વન્તિ ૫’ ઇતિ-
પञ્ચભિરન્તર્દ્વારૈર્નિરૂપણ ચિત્તીર્પુ રાદૌ ક્રમપ્રાપ્ત’ યાદશદ્વારમાશ્રિત્ય અબ્રહ્મ-
સ્વરૂપ નિરૂપ્યતે—‘જન્મ અમમ’ ઇત્યાદિ ।

ચતુર્થ અધર્મદ્વાર પ્રારમ્ભ—

તૃતીય અધર્મદ્વાર સમાપ્ત હો ચુકા । અતઃ ચતુર્થ અધર્મદ્વાર પ્રારમ્ભ
હોતા હૈ । હમ્ અધર્મદ્વાર કે સાથ હમ્ પ્રકાર કા સમ્બંધ હૈ—તૃતીય-
અધર્મદ્વારમેં યાદશનામાદિ નિર્દેશપૂર્વક જો અદત્તાદાનકા સ્વરૂપ કહા હૈ
સો હસ અદત્તાદાન કો જો અબ્રહ્મમેં આસક્ત ચિત્તવાલે પ્રાણી હોતે હૈ
પ્રાયઃ વે કરતે હી હૈ હસ કારણ સે, તથા સૂત્રક્રમ કે નિર્દેશ કે
અનુસાર સે અદત્તાદાન કે નિરૂપણ કે વાદ અબ્રહ્મકા સ્વરૂપ નામાદિનિ-
ર્દેશક કહના યહ અવસર પ્રાપ્ત હૈ । અતઃ સૂત્રકાર હસે અધર્મદ્વાર મેં
પ્રદર્શિત કરતે હૈ । જિસ તરહ પૂર્વ અધ્યયનોં કા નિરૂપણ સૂત્રકાર ને
“યાદશ, ૧ યન્નામ, ૨ યથા ચ કૃત, ૩ યત્ ફલ દદાતિ, ૪ યે ચ
કુર્વન્તિ ૫” હન પાચ અન્તર્દ્વારોં સે કિયા હૈ ઊસી તરહ વે હસકા મી

ચોથા અધર્મદ્વારની શરૂઆત

ત્રીજી અધર્મદ્વાર પૂરૂ થયુ, સવે ચોથા અધર્મદ્વારનુ વર્ણન શરૂ થાય
છે, આ અધર્મદ્વારનો આગળના અધર્મદ્વાર સાથે આ પ્રકારનો સંબંધ છે

ત્રીજા અધર્મદ્વારમા પ્રકાર નામો આદિના નિર્દેશ પૂર્વક અદત્તાદાનનુ
સ્વરૂપ બતાવવામા આવ્યુ છે તે અદત્તાદાન જે અબ્રહ્મમા આસક્ત પ્રાણીઓ
હોય તે સામાન્ય ગીતે આચરે છે, એ ઠારણે તથા સૂત્રક્રમના નિર્દેશ પ્રમાણે
અદત્તાદાનના નિરૂપણ પછી અબ્રહ્મનુ સ્વરૂપ નામાદિના નિર્દેશ પૂર્વક કહેવુ
તે યોગ્ય જ છે તેથી સૂત્રકાર તેને આ અધર્મદ્વારમા પ્રગટ કરે છે જે ગીતે
આગળના અધ્યયનોનુ નિરૂપણ સૂત્રકારે “યાદશ” ૧ (કેવા પ્રકારનુ) “યન્નામ” ૨
(ક્યા ક્યા નામો) “યથા ચ કૃત” ૩ (ક્યારે કરાય છે) “યત્ ફલ દદાતિ” ૪
(કયુ દળ આપે છે) “યે ચ કુર્વન્તિ” ૫ (કોણુ તે આચરે છે) આ પાચ
અતર્દ્વારો દ્વારા થયું છે, એ જ પ્રમાણે આ અધર્મદ્વારનુ પણ નિરૂપણ કરવા

મૂલમ્—જબૂ । અવમં ચ ચતુર્થં સદેવમણ્યામુરસ્સ
 લોયસ્સ પત્થણિજ્જ પકપણગપાસજાલમૂય ડટ્ઠીપુરિસન-
 પુંસગવેદચિહ્ન તવસજમવમચેરપિગ્ધ ભેદાયયણવહુપમાદ-
 મૂલં કાયરકાપુરિસસેવિય સુયણજણવજ્જણિજ્જ ઉટ્ઠ-નરય-
 તિરિય તિલોક્કપડ્ઢાણં જરાનરણરોગસોગવહુલ વધવંધ-
 વિધાયદુઢિવિધાય દસણચરિત્તમોહસ્સ હેઝમૂયં ચિરપરિ-
 ચિયં મણુગયં દુરંત ચતુર્થં અહમ્મદાર ॥ સૂ. ૧ ॥

ટીકા:—હે જન્મ ! ‘ ચતુર્થ ’ ચતુર્થ = હિંસામૃપાદ્દત્તાદાનાપેક્ષયા ચતુર્થ
 માસ્રવદ્વારમ્ ‘ અવમ ચ ’ અવ્રત્ત = અકુશલ કર્મ તન્નેહ મૈથુનમ્-અધર્મહેતુત્વેન
 સકલાનર્થજનકત્વાત્ । ચકાર: પુનર્થ: કીદશ તદિત્યાહ-‘ સદેવમણ્યામુરસ્સ
 લોયસ્સપત્થણિજ્જ’ સદેવમનુજામુરસ્ય લોરુસ્ય માર્થનીય = દેવમનુગ્યામુરલોરુસ્ય માર્થ

નિરૂપણ કરના चाहते हैं । अतः सर्व प्रथम वे क्रम प्राप्त “ यादृश ”
 इस द्वार को लेकर अव्रत के स्वरूप का निरूपण करते हैं— ‘ जबू-
 अवम ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ-શ્રીસુધર્મા સ્વામી જબૂસ્વામી સે કહતે હૈં કિ હે જબૂ ! (ચતુર્થ)
 હિંસા, મૃપા ંવ અદત્તાદાન ઇન ત્રીન ત્રી અપેક્ષા યહ ચતુર્થ આસ્રવ
 દ્વાર (અવમ ચ) અવ્રત્ત હૈં । યહ અવ્રત્ત અકુશલ કર્મ હૈં ંરુર વહ
 યહા સ્વરૂપ સે ગૃહિત હુઝા હૈં । વયોંકિ યહ અધર્મ કા હેતુ હોને સે
 સકલ અનર્થોં કા જનક હોતા હૈં ।

अथ सूत्रकार इसी अव्रतका आगेके विशेषणो द्वारा विशेष स्पष्टी
 करण करते हैं, वे कहते हैं कि-यह अव्रत-मैथुनसेवनरूप अकुशल कर्म

મળો છે તેથી સૌથી પહેલા તેઓ અનુક્રમે આવતા “ યાદૃશ ” અ નામના
 દ્વારને લઇને અગ્રદાના સ્વરૂપનુ નિરૂપણ કરે છે “ જબૂ અવમ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-શ્રી સુધર્મા સ્વામી જબૂ સ્વામીને કહે છે કે હે જબૂ ! “ ચતુર્થ ”
 હિંસા, મૃપા અને અદત્તાદાન એ ત્રણની અપેક્ષાએ યોથુ અધર્મદ્વાર
 “ અવમ ચ ” અગ્રદા છે તે અગ્રદા અયોગ્ય કૃત્ય છે અને તે અહીં મૈથુનરૂપે
 જે ગૃહિત થયેલ છે, કારણ કે તે અધર્મનુ કારણ હોવાથી સદ્રણા અનર્થનુ
 ઉત્પાદક છે હવે સૂત્રગર એ જ અગ્રદાનુ આગળ આવતા વિશેષણો દ્વારા
 વિશેષ સ્પષ્ટીકરણ કરે છે, તેઓ કહે છે કે-તે અગ્રદા-મૈથુન સેવનરૂપ પાપકર્મ

નીયમ્=અભિલપનીયમ્ । ‘પરુપણગપાસજાલભૂય’ પરુપણગપાસજાલભૂત=તત્ર પરુપ-
=કર્દમ-નિમજ્જનહેતુત્વાત્, પનકઃ=જૈવાલ-ચરણન્યાસમાત્રેણ સ્વલનહેતુત્વાત્,
પાગઃ=અન્નપ્રિયેષઃ, જાલ ચ=પ્રતીત તદ્ભૂત=તત્સદૃશમ્ । તથા ‘ઇત્થીપુરિસનપુસગ-
-વેદચિહ્ન’ સ્ત્રી પુરુપણગપાસજાલભૂય=સ્ત્રીપુરુપણગપાસજાલભૂત, તત્ર સ્ત્રી-વેદઃ=
પુરુપાભિલાપલક્ષણ’ પુરુપવેદઃ સ્ત્રીયોઽભિલાપલક્ષણઃ, નપુમકવેદઃ= ઉભયાભિલાપ-
લક્ષણઃ । ‘તવસજમમચેરવિગ્ન’ તપ સયમવ્રત્તચર્યવિગ્નઃ=તપઃ સયમ વ્રત્તચર્ય-
વિધાતરૂપમ્, ‘ભેદાયયણવહુપમાદમૂલ’ ભેદાયતનવહુપમાદમૂલ=ભેદઃ=ચારિત્ર-
વિનાશઃ તસ્ય આચારતનાનિ=સ્થાનાનિ યે વહયઃ=અનેકવિધા પ્રમાદાઃ=મઘવિકથા
દય, તેષા મૂલ=કારણ યત્તત્તથા । ‘કાયરકાપુરિસસેવિય’ કાતરકાપુરુપસેવિત=
કાતરાઃ=પરીપદ્ધતીરત્ર, અત્રેય કાપુરુપાઃ=ધૈર્યવર્જિતાસ્તૈઃ સેવિત યત્તત્તથા ।
‘સુયણજ્ઞાનજ્ઞાનિજ્ઞ’ સુજનજનવર્જનીય=સુજનવનાઃ=સાધુજનાસ્તૈઃ વર્જનિય

(સદેવ મણુગાસુરસ્મ લોયસ્મ પત્વણિજ્ઞ) દેવ, મનુષ્ય, એવ અસુર લોક
દ્વારા અભિલપનીય હૈ-ચાહે દેવ હો ચાહે મનુષ્ય હો યા અસુર હો કોઈ
મી કયો ન હો સવ હી ઇસે ચાહતે હૈ । યહ કર્મ (પરુપણગપાસજાલભૂય)
પકકર્દમ, પનકશૈવાલ-કાઈ, પાશ ઓર જાલ કે જૈસા હૈ । તથા (ઇત્થી-
પુરિસનપુસગવેદચિહ્ન) પુરુપ અભિલાપ રૂપ સ્ત્રીવેદ સ્ત્રીચાહનારૂપ-
પુરુપવેદઉભયતી વાગ્દારૂપ નપુસકવેદ, યે જિસકે ચિહ્ન હૈ । યહ (તવસ-
જમવમચેરવિગ્ન) તપ, સયમ, ઓર વ્રત્તચર્ય કા વિધાતક હૈ । (ભેદા-
યણવહુપમાદમૂલ) ચારિત્ર કો વિનાશ કરને વાલે જો મઘ વિકથાદિક
અનેક પ્રમાદ હે ઊનકા યહ મૂલ કારણ હે । (કાયરકાપુરિસસેવિય)
જો વ્યક્તિ કાતર પરીપદ્ધ સદ્ગુણ મે મીરુ હોતે હૈ, ઓર ઇસીસે જિનકા
ધૈર્ય નષ્ટ હો જાતા હૈ એસે વ્યક્તિ હી ઇસ કા સેવન કરતે હૈ । તથા (સુય-

“સદેવમણુયા સુરસ્મ પત્વણિજ્ઞ” દેવ, મનુષ્ય અને અસુર લોકો દ્વારા અભિલપનીય
છે એવે દેવ હોય, મનુષ્ય હોય કે અસુર હોય-દરેક તેને આહે છે તે કર્મ
“પરુપણગપાસજાલભૂય” પરુ-કર્દમ, પન-જૈવાલ, પાશ અને જાળ જેવું છે
તથા “ઇત્થીપુરિસનપુસગવેદચિહ્ન” પુરુષ અભિલાપાશ્રય સ્ત્રી વેદ સ્ત્રીચાહનાશ્રય પુરુષ
વેદ, અને અન્નેની ચાહનાશ્રય નપુમક વેદ જેના ચિહ્નો છે, તે “તવસજમવમચેર
વિગ્ન” તપ, સયમ અને વ્રત્તચર્યનું વિધાતક છે “ભેદાયણ વહુપમાદમૂલ” ચારિત્રનો
નાશ કરનાર જે મઘ, વિગ્ન આદિ અનેક પ્રમાદ છે, “કાયરકાપુરિસસેવિય”
જે વ્યક્તિ કાયર-પરીપદ્ધ સહન કરવામાં ભીરુ હોય છે, અને તેથી જ
જેમનું ધૈર્ય નષ્ટ થયું હોય છે એવી વ્યક્તિઓ જ તેનું સેવન કરે છે તથા

=ત્યાજ્યમ્, 'ઉદ્ધનરયતિરિયતિલોપહટ્ટાણ' ઝમ્ નમ્નિર્યમ્નિગોમતિ
 પ્થાનમ્=ઝર્વલોકો નરકગોકસ્તિર્યગોકશ્રેત્યેતદ્ધુ યન્ પ્રેતોમ્ય તત્ પ્રતિષ્ઠાનમ્
 =અસ્થિતિ યેન મૈથુનેન યત્તત્થા લોકાપે યગુર્ગતિભામમિત્યર્થ, તથા 'જરા
 મરણરોગસોગમૂલ' જન્મજરામરણરોગગોકાધનન્તદ્ધુઃગમ્મમ્મુતમ્, 'વધ
 વધવિધાયદુઃખિધાય' વધવન્નાપિયાતદ્ધિગાતમ્=તત્ત્વ યથ=દનન યન્ન=રજ્જ્વા-
 દિમિઃ સયમન, વિધાતઃ=મારણ ચેત્યેતેઃ દુર્ગિગાતઃ=દુઃસ્થાલો ગિગાતો=દુઃસં-
 યસ્મિન્ તત્તથા યથવન્નાદિગિગિધિદુઃગગનમિત્યર્થ, 'દમ્ભણચરિત્તમોહસ્સ-
 હેઝમૂય' દર્શનચારિત્રમોહસ્ય હેતુભૂત=દર્શનમોહસ્ય ચારિત્રમોહસ્ય ચ વન્નકાર-
 ãમ્=દ્વદમત્રલ્લજિનવચને શઙ્ગાકાઘ્વાદિદોષોદ્ધાવાત્તદ્ દર્શનમોહસ્ય કારણ,
 ચારિત્રમેદજનકત્તચારિત્રમોહસ્યેતિ ભાવ' । તથા 'ચિરપચિય' ચિરપરિચિત્ત=

ગજગવજ્જગિજ્જ) જો સાધુજન હૈં વે તો હસ કૃત્ય જો સદા ત્યાજ્ય હો
 માનતે હૈં (ઉદ્ધુ નરયતિરિયતિલોપહટ્ટાણ) હસ મૈથુન સેવન સે જીવકા
 પરિભ્રમણ ઉર્ધ્વલોક મધ્યલોક ંવ પાતાલલોક રૂપ ત્રલોચ્ય મૈં હોતા
 હૈં । (જરામરણ રોગસોગમૂલ) યહ કર્મ જન્મ, જરા, મરણ, શોક આદિ
 અનત દુઃખોસે ભરા હુઆ હૈં । (વધવધવિધાયદુઃખિધાય) હસમે વધ,
 વધન ંવ મરણ જન્ય દુઃસહ દુઃખ ભરે હું હૈં । (દમ્ભણચરિત્તમો
 હસ્સ હેઝમૂય) દર્શન મોહનીય તથા ચારિત્રમોહનીય કા યહ હેતુભૂત
 હૈં । અર્થાત-યહ અવ્રલ્લ જિનવચન મે શકા કાંક્ષા આદિ દોષોં કા
 જનક હોને કે કારણ દર્શન મોહકા ંર ચારિત્રકા વિનાશક હોને સે
 ચારિત્ર મોહનીય કર્મ કે વધ કો કારણ માના ગયા હૈં । (ચિરપરિચિય)
 જીવોં કે સાથ હસકા પરિચય ચિરકાલ સે જન્મ જન્માન્તરો મૈં આસે-
 વિત હોતે રહને કે કારણ ચલ્લા આ રહા હૈં । હસીલિયે (અણુગય) યહ

"સુચળજળવજ્જગિજ્જ" ધણુ સતપુરુષો તો એ કૃત્યને સદા ત્યાજ્યા યોગ્ય
 માને છે, 'ઉદ્ધનરયતિરિયતિલોપહટ્ટાણ' એ મૈથુનના સેવનથી જીવને
 ઉર્ધ્વલોક અને પાતાલલોક, એ રીતે ત્રણલોકમા પરિભ્રમણ કરવું પડે છે,
 "જરામરણરોગસોગમૂલ" તે ઝમ્ જન્મ જરા, મરણ, શોક આદિ અનંત
 દુઃખોથી ભરેલું છે, "વધવધવિધાયદુઃખિધાય" તેમા વધ, બધન અને
 મરણ જન્ય દુઃસહ દુઃખો ભરેલા છે, "દમ્ભણચરિત્ત મોહસ્સ હેઝમૂય" તે દર્શન
 મોહનીય તથા ચારિત્ર મોહનીયના કાણ્ણરૂપ છે, એટલે કે તે અવ્રલ્લ જિન-
 વચનોમા શકા કાંક્ષા આદિ દોષોતુ જનક હોવાથી દર્શનમોહનીય અને ચારિત્રતુ
 વિનાશક હોવાથી ચારિત્ર મોહનીય કર્મના બધનુ કારણ મનાયુ છે 'ચિરપરિ-
 ચિય" તે જન્મ જન્માન્તરોથી મેવાતુ હોવાને કાણ્ણે તેનો જીવોની સથો

જન્મજન્માન્તરાસેવિતમ્, ‘અણુગય’ અનુગતમ્ = અનાદિકાલતઃ સમનુ-
ગતમ્, ‘દુરત’ દુરન્તમ્=દુઃસ્વાસાનમ્, દુષ્ટફળમિત્યર્થઃ । ‘ચડત્ય અહમ્મ
દાર’ ચતુર્થમધર્મદ્વારમ્=ગાત્રદ્વારમબ્રહ્મેતિ નામમ્ ॥ ૧ ॥ સૂ. ॥

एवमत्रब्रह्मरूपमुक्त साम्प्रत ‘यन्नामे’ ति द्वितीयान्तर्द्वारमाश्रित्य तस्य
नामान्याह ‘तस्स य णामाणि’ इत्यादि—

મૂલમ્—તસ્સ ય ણામાણિ ગોણાણિ ઇમાણિ હ્રંતિ તીસં—
અવંભ ૧ મેહુણં ૨ ચરત ૩ સસગ્ગિ ૪ સેવણાહિગારો ૫
સંકપ્પો ૬ વાહણાપદાણ ૭ દપ્પો ૮ મોહો ૯ મળસલ્લોભો
૧૦ અણિગ્ગહો ૧૧ વિગ્ગહો ૧૨ વિઘાઓ ૧૩ વિભંગો ૧૪
વિલ્લભો ૧૫ અહમ્મો ૧૬ અસીલયા ૧૭ ગામધમ્મતત્તી ૧૮
રત્તી ૧૯ રાગચિતા ૨૦ કામભોગમારો ૨૧ વેરં ૨૨ રહસ્સ
૨૩ ગુજ્ઞ ૨૪ વહુમાણો ૨૫ વમ્મચેર વિગ્ધો ૨૬ વાવત્તી ૨૭
વિરાહણા ૨૮ પસગો ૨૯ કામગુણોત્તિ ૩૦ વિય । તસ્સ
એયાણિ એવમાઙ્ગણિ નામધેજ્ઞાણિ હ્રુતિ તીસ ॥ સૂ. ૨ ॥

ટીકા—‘તસ્સ ય’ તસ્ય ચ=અબ્રહ્મણો મૈથુનસ્યેત્યર્થઃ, ‘ગોણાણિ’
ગોણાણિ=ગુણનિષ્પન્નાનિ ‘ણામાણિ’ નામાણિ ‘ઇમાણિ ઇમાણિ=વક્ષ્યમાણાણિ
જીવોં કે પીછે અનાદિકાલ સે પડા હુઆ હૈ । (દુરત) ઇસકા અવસાન
(અત) વહુત હી અધીક કષ્ટપ્રદ હોતા હૈ । (ચડત્ય અહમ્મદાર) ઇસ પ્રકાર
યહ ચતુર્થ અબ્રહ્મ નામકા અવર્મદ્વાર હૈ ॥ સૂ. ૧ ॥

इस तरह सूत्रकार अब्रह्म के स्वरूप का प्रतिपादन कर अथ
“यन्नाम” नामक द्वितीय अन्तर्द्वार से उसका प्रतिपादन करते हैं—
‘तस्स य’ इत्यादि ० ।

ટીકાર્થ—(તસમ ય) ઉસ અબ્રહ્મ રૂપ મૈથુન કર્મકે (ગોણાણિ)

ચિરકાળથી પરિચય આપ્યો આવે છે તેથી “અણુગય” તે અનાદિકાળથી
હવેની પાછળ પડેલું છે “દુરત” તેનો નાગ વળે અતિરાથ હુબ્બ છે
“ચડત્ય અહમ્મદાર” આ પ્રકારે તે ચોથું અબ્રહ્મ નામનું અધર્મદ્વાર છે ॥ સૂ. ૧ ॥

ઉપરોક્ત ગીતે અબ્રહ્મના અરૂપનું પ્રતિપાદન કરીને હવે સૂત્રકાર “ય-
ન્નામ” નામના બીજા અન્તર્દ્વારથી તેનું પ્રતિપાદન કરે છે “તસ્સ ય” ઇત્યાદિ
ટીકાર્થ—“તસ્સ ય” તે અબ્રહ્મરૂપ મૈથુન કર્મના “ગોણાણિ” શુણ્ણાનુભાવ “ણામાણિ”

=ત્યાજ્યમ્, 'ઉદ્ધુનરયતિરિયતિલોપહટ્ટાણ' ઝર્પ નરયતિર્યઋત્તિઓકપતિ-
 પ્ઠાનમ્=ઋર્વઓકો નરઋઓકસ્તિર્યઋઓકશ્રેયંતરૂપ યન્ મૈથુન્ય તત્ર પ્રતિષ્ઠાનમ્
 =અવસ્થિતિ યેન મૈથુનેન યત્તત્તવા ઓકત્રયે ચતુર્ગતિભામકમિત્યર્થ, તથા 'જરા
 મરણરોગસોગમૂલ' જન્મજરામરણરોગશોકાધનન્તદુઃખમમ્મ્મુતમ્, 'વધ
 વધવિધાયદુઃખિધાય' વધવન્વિધાયતદર્શિધાયતમ્=તત્ર વધ=દનન વન્વ=રજ્જા-
 દિમિઃ સપમન, વિધાયત=મારણ ચેત્વેતેઃ દર્શિધાયત=દુઃખાલો વિધાયતો=દુઃખં
 યસ્મિન્ તત્તથા વધવન્વિધાયિધિધદુઃખજનકમિત્યર્થ, 'દસણચરિત્તમોહસ્ત-
 હેઝભૂય' દર્શનચારિત્રમોહસ્ય હેનુભૂત=દર્શનમોહમ્ય ચારિત્રમોહસ્ય ચ વન્વકાર-
 ણમ્=દમવ્રત્તજિનવચને શકાકાક્ષાદિદોષોદ્ઘાવાત્વાદ્ દર્શનમોહમ્ય કારણ,
 ચારિત્રમેદજનન્તચારિત્રમોહસ્યેતિ માત્ર' । તથા 'ચિરપચિય' ચિરપરિચિત=

ણજગવજ્જગિજ્જ) જો સાધુજન હેં વે તો ઇસ કૃત્ય કો સદા ત્યાજ્ય હી
 માનતે હેં (ઉદ્ધુ નરયતિરિયતિલોપહટ્ટાણ) ઇમ મૈથુન સેવન સે જીવકા
 પરિશ્રમણ ઉર્ધ્વલોક મધ્યલોક એવ પાતાલલોક રૂપ ત્રલોચ્ય મેં હોતા
 હૈ । (જરામરણ રોગસોગમૂલ) યહ કર્મ જન્મ, જરા, મરણ, શોક આદિ
 અનન્ત દુઃખોસે ભરા હુઆ હૈ । (વધવધવિધાયદુઃખિધાય) ઇસમે વધ,
 વધન એવ મરણ જન્ય દુઃ સહ દુઃખ ભરે હુએ હેં । (દસણચરિત્તમો
 હસ્ત હેઝભૂય) દર્શન મોહનીય તથા ચારિત્રમોહનીય કા યહ હેતુભૂત
 હૈ । અર્થાત-યહ અવ્રત્ત જિનવચન મે શકા કાક્ષા આદિ દોષોં કા
 જનક હોને કે કારણ દર્શન મોહકા ઓર ચારિત્રકા વિનાશક હોને સે
 ચારિત્ર મોહનીય કર્મ કે વધ કો કારણ માના ગયા હૈ । (ચિરપરિચિય)
 જીવોં કે સાથ ઇસકા પરિચય ચિરકાલ સે જન્મ જન્માન્તરોં મેં આસે
 વિત હોતે રહને કે કારણ ચલા આ રહા હૈ । ઇસીલિયે (અણુગય) યહ

“સુયણજગવજ્જગિજ્જ” પણ સતપુરુષો તો એ કૃત્યને સદા ત્યાજ્યા થોગ્ય
 માને છે, ‘ઉદ્ધુનરયતિરિયતિલોપહટ્ટાણ’ એ મૈથુનના સવનથી જીવને
 ઉર્ધ્વલોક અને પાતાળલોક, એ રીતે ત્રણલોકમા પરિશ્રમણ કરવું પડે છે,
 “જરામરણરોગસોગમૂલ” તે ઝર્પ જન્મ જરા, મરણ, શોક આદિ અનન્ત
 દુઃખોથી ભરેલું છે, “વધવધવિધાયદુઃખિધાય” તેમા વધ, બધન અને
 મરણ જન્ય દુઃસહ દુઃખો ભરેલા છે, “દસણચરિત્ત મોહસ્ત હેઝભૂય” તે દર્શન
 મોહનીય તથા ચારિત્ર મોહનીયના કારણુએ છે, એટલે કે તે અવ્રત્ત જિન-
 વચનોમા શકા કાક્ષા આદિ દોષોનુ જનક હોવાથી દર્શનમોહનીય અને ચારિત્રનુ
 વિનાશક હોવાથી ચારિત્ર મોહનીય કર્મના બધનુ કારણુ મનાયુ છે ‘ચિરપરિ-
 ચિય’ તે જન્મ જન્માન્તરોથી સેવાતુ હોવાને કારણુ તેનો જીવોની સથે

કામ ? જાનામિ તે રૂપ, સકલ્પાત્ કિઞ્ જાયસે ।

ન ત્વા સકલ્પયિષ્યામિ, તતો મે ન ભવિષ્યસિ ॥ ૧ ॥

‘વાહના પદાણ’ વાધના પદાના=પદાના=સયમસ્થાનાના વાધના વાધો-ત્પાદકત્વાત્ ૭ । ‘દર્પો’ દર્પઃ=દક્ષજનૈરાચરિત્ત્વાત્ ૮, મોહઃ=મોહજનનાત્-વેદમોહનીયકર્મોદયસમ્પાદ્યત્વાદ્વા મોહસ્વરૂપ’ ૧, ‘મણસલોમો’ મનઃ સક્ષોમઃ=ચિત્તવ્યાકુલતોત્પાદકત્વાત્ ૧૦, ‘અણિગ્ગહો’ અણિગ્રહ=વિપયેષુ પ્રવર્તમાનસ્ય-

નામ સેવનાધિકાર હૈ ૫ । સકલ્પ વિકલ્પોં સે યદ્ ઉત્પન્ન હોતા હૈ
 ફસલિયે ફસકા નામ સકલ્પ હૈ ૬ । કહા મો હૈ—

“કામ ! જાનામિ તે રૂપ, સકલ્પાત્ કિલ જાયસે ।

ન ત્વા સકલ્પયિષ્યામિ, તતો મે ન ભવિષ્યસિ ॥ ૧ ॥

હૈ કામ ! મૈં તેરે સ્વરૂપકો જાનતા હુ, તુ નિશ્ચયતઃમાનસિક સકલ્પ
 સે ઉદ્ભૂત હોતા હૈ । અતઃ મૈં જવ તેરા સકલ્પ હી નહીં કરૂંગા તો
 ફિર તૂ કૈસે ઉત્પન્ન હોગા ? ॥

યદ્ સયમ કે સ્થાનોં મે વાધા કા ઉત્પાદક હોતા હૈ ફસલિયે ફસકા
 નામ પદ વાધના હૈ ૭ । જો મનુષ્ય દસ-મદોન્મત્ત હોતે હૈ—અન્હીં કે
 દ્વારા યદ્ આચરિત ક્રિયા જાતા હૈ અતઃ ફસકા નામ દર્પ હૈ । યદ્
 વેદરૂપ મોહનીય કર્મ કે ઉદય સે ઉદ્ભૂત હોતા હૈ ફસલિયે ફસકા નામ
 મોહ હૈ ૧ । ફસકે નિમિત્ત સે ચિત્ત મૈં ંક પ્રકાર કી વ્યાકુલતા ઉત્પન્ન
 હોતી હૈ ફસલિયે ફસકા નામ મનઃસક્ષોમ હૈ ૧૦ । જિસ સમય ફસકા

લાગે છે, તેથી તેનું નામ “સેવનાધિકાર” છે, ‘૬’ સડ પવિકલ્પોથી તે ઉત્પન્ન
 થાય છે, તેથી તેનું નામ “સકલ્પ” છે, કહ્યું પણ છે—

“કામ ! જાનામિ તે રૂપ, સકલ્પાત્ કિલ જાયસે ।

ન ત્વા સકલ્પયિષ્યામિ, તતો મે ન ભવિષ્યસિ ॥ ૧ ॥”

હે કામ ! હું તારા સ્વરૂપને ઓળખું છું, તું અવશ્ય માનસિક સકલ્પોથી
 જ ઉત્પન્ન થાય છે, તો હું તારો સકલ્પ જ નહીં કરૂં તો તું કયાથી
 ઉત્પન્ન થઈશ ? ॥ ૨ ॥

‘૭’ તે સયમના સ્થાનોમા મુશ્કેલીઓ પેદા કરનાર છે, તેથી તેનું નામ
 “પદવાધના” છે, ‘૮’ મદોન્મત્ત મનુષ્ય દ્વારા જ તે સેવાય છે, તેથી તેનું
 “દર્પ” છે, ‘૯’ તે વેદરૂપ મોહનીય કર્મના ઉદયથી ઉત્પન્ન થાય છે, તેથી
 તેનું નામ “મોહ” છે, ‘૧૦’ તેને ઝરણે ચિત્તમા એક પ્રકારની વ્યાકુળતા ઉત્પન્ન
 થાય છે તેથી તેનું નામ “મન સક્ષોમ” છે ‘૧૧’ જ્યારે શરીરમા તેનો

‘ત્રીસ હુતિ’ ત્રિશદ્ ભવન્તિ ‘તજહા’ તાનિ યથા ‘અવમ’ અવમ્=અકુશલાનુષ્ઠાનમ્ ૧, ‘મેટુણ’ મૈયુન=મિયુનસ્ય=સ્ત્રીપુમયુગઠમ્ય કર્મ મૈયુનમ્ ૨, ‘ચરત’ ચરત્=સસારવ્યાપકમ્ ૩, ‘સસગિ’ સસર્ગિ=સ્ત્રીપુમગમ્યન્યસંજાતમ્ ૪, ‘સેવનાહિ ગારો’ સેવનાધિકારઃ=સેવનાયા=ચૌર્યાદિપ્રતિસેવનાયામધિકારઃ, મૈયુનસેવી પ્રાયશ્ચૌર્યાદિપુ પ્રટ્તો ભવતિ ૫. ‘સકપ્પો’ સકલ્પ = મદ્ભૂતપત્રિકૃત્પજાતત્વાત્ સકલ્પઃ ૬, ઉક્ત ચ—

ગુણનિષ્પન્ન (ણામાણિ) નામ (દ્માણિ) યે (ત્રીસ) ત્રીસ (હુતિ) હૈ । (તજહા) વે હસ પ્રકાર હૈ—(અવમ ૧, મેટુણ ૨, ચરત ૩, સસગિ ૪, સેવનાહિગારો ૫, સકપ્પો ૬, વાહ્ણાપદાણ ૭, દપ્પો ૮, મોહો ૯, મળસલ્લોમો ૧૦, અણિગ્ગહો ૧૧, વિગ્ગહો ૧૨ વિઘાઓ ૧૩, વિભગો ૧૪, વિઞ્મમો ૧૫, અહમ્મો ૧૬, અસીલયા ૧૭, ગામધમ્મતત્તી ૧૮, રત્તી ૧૯, રાગચિત્તા ૨૦, કામભોગમારો ૨૧, વેર ૨૨, રહસ્સ ૨૩, ગુજ્જ ૨૪, બહુમાણો ૨૫, વમ્મચેરવિગ્ધો ૨૬, વાવત્તી ૨૭, વિરાહ્ણા ૨૮, પસગો ૨૯, કામગુણો ૩૦ ત્તિ વિ ય । તસ્સ ણ્યાણિ એવમાહ્ણિ નામધેજ્જાણિ ત્રીસ હુતિ) યહ કર્મ અકુશલાનુષ્ઠાનરૂપ હૈ, હસલિયે હસકા નામ અબ્રહ્મ હૈ ૧ । સ્ત્રી ઓર પુરુષ રૂપ મિયુન પરસ્પર મિલકર હસે કરતે હૈ, હસલિયે હસકા નામ મૈયુન હૈ ૨ । યહ સમસ્ત સસાર મેં વ્યાપક હૈ હસલિયે હસકા નામ ચરત હૈ ૩ । સ્ત્રી ઓર પુરુષોં કે પારસ્પરિક સસર્ગ સે યહ ઉત્પન્ન હોતા હૈ હસલિયે હસકા નામ સસર્ગી હૈ ૪ । જો મૈયુન સેવી હોતા હૈ વહ પ્રાયઃચૌર્યાદિકુકર્મોં મે પ્રવૃત્ત હો જાતા હૈ હસલિયે હસકા

“દ્માણિ” આ “ત્રીસ” ત્રીસ નામ “હુતિ” છે “તજહા” તે આ પ્રમાણે છે “અવમ ૧, મેટુણ ૨, ચરત ૩, સસગિ ૪, સેવનાહિગારો ૫, સકપ્પો ૬, વાહ્ણાપદાણ ૭ દપ્પો ૮, મોહો ૯, મળસલ્લોમો ૧૦, અણિગ્ગહો ૧૧, વિગ્ગહો ૧૨, વિઘાઓ ૧૩, વિભગો ૧૪, વિઞ્મમો ૧૫, અહમ્મો ૧૬, અસીલયા ૧૭, ગામધમ્મતત્તી ૧૮, રત્તી ૧૯ રાગચિત્તા ૨૦, કામભોગમારો ૨૧, વેર ૨૨, રહસ્સ ૨૩ ગુજ્જ ૨૪, બહુમાણો ૨૫, વમ્મચેરવિગ્ધો ૨૬, વાવત્તી ૨૭, વિરાહ્ણા ૨૮, પસગો ૨૯, કામગુણો ૩૦ ત્તિ વિ ય । તસ્સ ણ્યાણિ એવમાહ્ણિ નામધેજ્જાણિ ત્રીસ હુતિ (૧) આ ડર્મ અકુશલ અનુષ્ઠાન હોવાથી તેનું નામ “અબ્રહ્મ” છે (૨) સ્ત્રી અને પુરુષનું “મિયુન” (જોડું) પરસ્પર મળીને તેનું સેવન કરે છે, તે કારણે તેનું નામ “મૈયુન” છે (૩) તે સમસ્ત સસારમા વ્યાપક હોવાથી તેનું નામ “ચરત” છે (૪) સ્ત્રી અને પુરુષના અરસ પરસના મસર્ગથી તે ઉત્પન્ન થતું હોવાથી તેનું નામ “સસર્ગી” છે, ૫) મૈયુન સેવનાર હોય છે તે સામાન્ય રીતે ચોરી આદિ કુકર્મો પશુ સેવવા

ચિન્તા-ચિન્તનમ્ ૨૦, કામભોગમારઃ=કામભોગમારૂપમ્-કામરૂપ, ભોગરૂપ, મારૂપ, ચેત્યર્થઃ ૨૧, 'વૈર' વૈર=પ્રત્યુત્પાદકત્વાત્ ૨૨, 'રહસ્ય' રહસ્યમ્ =એકાન્તસમ્પાદનીયત્વાત્ ૨૩, 'ગુહ્ય' ગુહ્ય=ગોપનીયત્વાત્ ૨૪, 'બહુમાણો' બહુમાનઃ=બહુ-અતિશયેન માનઃ=આદરો યસ્મિન્ પ્રાણિના સ ૨૫, 'વ્રહ્મચરચ્ચિદ્ધો' વ્રહ્મચર્યચ્ચિદ્ધન=વ્રહ્મચર્યમ્પ=વિધાતૃકત્વાદ્ વિદ્ધન=વિદ્ધનભૂતઃ ૨૬, 'વાચત્તી' વ્યાપત્તિઃ=વિનાશઃ આત્મગુણવિનાશકત્વાત્ ૨૭, 'વિરાઢ્ઢા' વિરાઢ્ઢા=ચારિત્ર ધર્મસ્ય વિરાધકત્વાત્ ૨૮, 'પ્રસગો' પ્રસગ્ગ=સ્ત્રીપુમસયોગઃ ૨૯, કામગુણઃ = શબ્દાદિવિષયભોગજનકત્વાત્ ૩૦ 'ત્તિ પ્રિય' ઇત્યપિ ચ ત્રિશત્તમ નામ ।

કા ઉનકે રૂપ લાવણ્ય આદિકા ચિન્તવન હોતા હૈં હસલિયે હસકા નામ રાગચિન્તા હૈં ૨૦ । યહ કામરૂપ, ભોગરૂપ ઓર મારૂપ હોતા હૈં હસલિયે હસકા નામ કામભોગમાર હૈં ૨૧ । હસકે નિમિત્ત સે જીવો મેં પરસ્પર શત્રુતા ઉસદ્ધ હો જાતી હૈં હસલિયે હસકા નામ વૈર હૈં ૨૨ । યહ કર્મ એકાન્ત મેં ક્રિયા જાતા હૈં હસલિયે હસકા નામ રહસ્ય હૈં ૨૩ । યહ સદા ગોપનીય હોતા હૈં હસલિયે હસકા નામ ગુહ્ય હૈં ૨૪ । હસમેં પ્રાણીયાં કો અતિશય આદર ભાવ-સેવન કરને મેં લાલસા-રહતા હૈં, હસલિયે હસકા નામ બહુમાન હૈં ૨૫ । યહ વ્રહ્મચર્ય વ્રતકા વિધાતક હોતા હૈં હસલિયે હસકા નામ વ્રહ્મચર્ય વિદ્ધન હૈં ૨૬ । આત્મગુણોં કા હસમેં વિનાશ હો જાતા હૈં હસલિયે હસકા નામ વ્યાપત્તિ હૈં ૨૭ । ચારિત્ર ધર્મકા યહ વિરાધક હોતા હૈં હસલિયે હસકા નામ વિરાઢ્ઢા-હૈં ૨૮ । હસમેં સ્ત્રી ઓર પુરુષ દોનોં કે શરીર કો સંયોગ હોતા હૈં હસલિયે હસકા નામ પ્રસગ હૈં ૨૯ । શબ્દાદિક વિષયો મેં યહ ભોગને કી રુચિકા જનક હોતા હૈં હસલિયે હસકા નામ કામગુણ હૈં ૩૦ । હસ

તેનુ નામ “ રાગચિન્તા ” છે, ‘૨૧’ તે કામરૂપ, ભોગરૂપ અને મારરૂપ હોય છે, તેથી તેનુ નામ “ કામભોગમાર ” છે ‘૨૨’ તેને કારણે જીવોમા પરસ્પર દુસ્ત્રનાવટ પેદા થાય છે, તેથી તેનુ નામ “ વૈર ” છે ‘૨૩’ તે કર્મ એકાન્તમા કરાતુ હોવાથી તેનુ નામ “ રહસ્ય ” છે, ‘૨૪’ તે સદા ગોપનીય હોય છે, તેથી તેનુ નામ “ ગુહ્ય ” છે, ‘૨૫’ તેના પ્રત્યે પ્રાણીઓને અત્યંત આદરભાવ-લાલમા રહે છે, તેથી તેનુ નામ “ બહુમાન ” છે, ‘૨૬’ તે બ્રહ્મચર્યવ્રતનુ વિધાતક હોવાથી તેનુ નામ “ વ્રહ્મચર્યવિદ્ધન ” છે ‘૨૭’ તેના સેવનથી આત્મગુણોના નાશ થાય છે, તેથી તેનુ નામ “ વ્યાપત્તિ ” છે (૨૮) તે ચારિત્રધર્મનુ વિરાધક હોવાથી તેનુ નામ “ વિરાઢ્ઢા ” છે (૨૯) તેમા સ્ત્રી તથા પુરુષના શરીરનો સંયોગ થાય છે, તેથી તેનુ નામ “ પ્રસગ ” છે ‘૩૦’ શબ્દાદિક વિષયોના ઉપભોગની રુચિ જનક હોવાથી તેનુ નામ “ કામગુણ ” છે, આ

મનસોઽનિપેધઃ ૧૧ । 'વિગ્રહો' વિગ્રહઃ=વિગ્રહકારિત્વાત્ ૧૨, 'વિઘાતો' વિઘાતઃ=ચારિત્રવિનાશરૂપઃ ૧૩, 'વિભગો' વિભગઃ=મયમાદિગુણાના વિગ્રહેણ મજ્જકૃત્યાત્ ૧૪, 'વિભ્રમો' વિભ્રમઃ=અનુપાદેયેષ્વપ્નુપાદયત્વેન નાનાવિષ્ ભ્રાન્તિજનકૃત્યાત્ ૧૫, 'અધર્મો' અધર્મઃ=શ્રુતચારિત્રવ્યક્ષણધર્મપ્રતિકૂલત્વાત્ ૧૬, 'અશીલયા' અશીલતા=ચારિત્ર વર્જિતત્વાત્ ૧૭, 'ગ્રામધર્મતત્ત્વો' ગ્રામધર્મ વૃત્તિઃ=ગ્રામધર્મો=શબ્દાદયઃ કામગુણાસ્તેષા વૃત્તિઃ=આસેવનમ્ ૧૮, 'રત્તી' રત્તિઃ=અશુભરાગઃ ૧૯, રાગચિન્તા=રાગઃ=રાગકારણત્વાત્ સ્ત્રીશૃદ્ધારરૂપલાભ્યાદિઃ તસ્ય

આવેગ શરીર મેં જાગૃત હોતા હૈં ઉસ સમય ઇન્દ્રિયા અવગ્રા મન વેકાવુ હો જાતા હૈં અતઃ ઇમકા નામ અનિગ્રહ હૈં ૧૧। ઇસકે પોછે હીં ભયકરસે ભયકર વિગ્રહ ઉત્પાત રહે હોતે હૈં ઇમલિયે ઇમકા નામ વિગ્રહ હૈં ૧૨। યહ ચારિત્રકા વિઘાતક હોતા હૈં । ઇસલિયે ઇસકા નામ વિઘાત હૈં ૧૩। સયમ આદિ ગુણોકા યહ વિશેષરૂપસે મજક હોતા હૈં ઇસલિયે ઇમકા નામ વિભગ હૈં ૧૪। જો અનુપાદેય પદાર્થ હોતે હૈં ઉનમેં ખીં યહ ઉપાદેયરૂપસે નાનાપ્રકાર કી ભ્રાન્તિ કા જનક હોતા હૈં ઇસલિયે ઇસકા નામ વિભ્રમ હૈં ૧૫। શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મ સે યહ પ્રતિકૂલ હૈં ઇસલિયે ઇસકા નામ અધર્મ હૈં ૧૬। ઇસમેં ચારિત્ર નહીં હોતા હૈં ઇસલિયે ઇસકા નામ અશીલતા હૈં ૧૭। ઇસમેં ગ્રામધર્મ જો શબ્દાદિક કામ ગુણ હૈં ઉનકા સેવન હોતા હૈં ઇસલિયે ઇસકા નામ ગ્રામધર્મ હૈં ૧૮। યહ અશુભ રામરૂપ હૈં ઇસલિયે ઇસકા નામ રત્તિ હૈં ૧૯। ઇસમેં સ્ત્રિયોં કે શૃંગાર

આવેગ જાગૃત થાય છે ત્યારે ઇન્દ્રિયો તથા મન કાળૂમા રહેતા નથી, તેથી તેનું નામ “અનિગ્રહ” છે ‘૧૨’ તેને કારણે જ ભયકરમા ભયકર વિગ્રહ-ઉત્પાત ઉત્પન્ન થાય છે, તેથી તેનું નામ “વિગ્રહ” છે, ‘૧૩’ તે ચારિત્રિક વિઘાતક હોવાથી તેનું નામ “વિઘાત” છે, ‘૧૪’ સયમ આદિ ગુણોનું ભજન ‘નાશ કરનાર’ હોવાથી તેનું નામ “વિભગ” છે, ‘૧૫’ જે અનુપાદેય પદાર્થો હોય છે તેમા પણ ઉપાદેયરૂપે વિવિધ પ્રકારની ભ્રાન્તિ ‘ભ્રમ’ નું જનક હોવાથી તેને “વિભ્રમ” કહે છે ‘૧૬’, શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મની વિરૂદ્ધ હોવાને કારણે તેને “અધર્મ” કહે છે ‘૧૭’ તેનું સેવન કરનારમા ચારિત્ર હોતું નથી, તેથી તેનું નામ “અશીલતા” છે, ‘૧૮’ તેમા ગ્રામધર્મ કે જે શબ્દાદિક કામગુણ છે તેમનું સેવન થાય છે તેથી તેનું નામ “ગ્રામધર્મવૃત્તિ” છે, ‘૧૯’ જે અશુભ રાગ રૂપ હોવાથી તેનું નામ “રત્તિ” છે ‘૨૦’ તેમા સ્ત્રીઓના શૃંગારનું તથા તેમના રૂપ લાવણ્ય આદિનું ચિન્તવન થાય છે, તેથી

के ? इत्याह—‘असुर-भुयग गरुल-विज्जु-जलण-दीव-उदहि-दिसि-पवण थणिय
अणपन्निय - पणपन्निय-इसिवाइय-भूयजाइय-कट्टिय-महाकट्टिय-कूहड- पयग
देवा’ तत्र असुराः=असुरकुमाराः, ‘भुयग’ भुजगाः=नागकुमाराः ‘गरुल’
गरुडाः=सुपर्णकुमारा, ‘विज्जु’ विद्युत् कुमाराः ‘जलण’ ज्वरनाः=अग्नि-
कुमाराः ‘दीव’ द्वीपाः=द्वीपकुमाराः ‘उदधिकुमारा’ ‘दिसि’ दिक्कुमारा
‘पवण’ वायुकुमारा ‘थणिय’ स्तनितकुमारा, दशैते भवनपतिदेवा । ‘अण
पन्निय पणपन्निय’ अणपन्निका पणपन्निकाः ‘इसिवाइय’ ऋषिवादिकाः ‘भूय-
वाइय’ भूतवादिकाः ‘कट्टिय’ ऋन्दिताः ‘महाकट्टिय’ महाऋन्दिताः ‘कूहड’
कुष्माण्डाः ‘पयग’ पतङ्गाश्च ते च ते देवाः, एतेऽष्टौ व्यन्तरनिकायोपरिवर्तिनः ।
व्यन्तरदेवजातिविशेषा । तथा ‘पिमाय-भूय-जम्ब-रक्खम-किन्नर-किंपुरिस
महोरग-गधव-तिरिय-जोइस-विमाणवासि-मणुयगणा’ तत्र ‘पिमाय’ पिशाचाः
१ । ‘भूय’ भूता २ । ‘जम्ब’ यक्षा ३, ‘रक्खस’ राक्षसा ४, ‘किन्नर’
किन्नरा ५, ‘किंपुरिस’ किम्पुर्षपा ६, ‘महोरग’ महीगंगाः ७, ‘गधव’ गन्धर्वाश्च

अप्पाओ के माय (निसेर्विति) सेवन करते हैं । तथा (असुर भुयग-
गरुल- विज्जु - जलण - दीव-उदहि-दिसि-पवण-थणिय-अणपन्निय-
पणपन्निय-इसिवाइय-भूयवाइय-कट्टिय-महाकट्टिय-कूहड पयग देवा)
असुरकुमार, नागकुमार, सुपर्णकुमार, विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, द्वीप-
कुमार, उदधिकुमार, दिक्कुमार, वायुकुमार, स्तनितकुमार, ये १० दस भवन-
पति देव, तथा-अणपन्निक, पणपन्निक, ऋषिवादिक, भूतवादिक, ऋन्दिता
महाऋन्दिता कुष्माण्ड, पतङ्ग, ये आठ व्यन्तर जातिके देव विशेष, (पिमाय
भूय-जम्ब रक्खस-किन्नर-किंपुरिस- महोरग-गधव-तिरिय- जोइस-
विमाणवासि-मणुयगणा) तथा पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर,

रा” अप्पगओ माये “ निसेर्विति ” नेवन करे छे तथा “ असुर, गरुल,
विज्जु, जलण, दीवउदहि, दिसि, पवण, थणिय, अणपन्निय, पणपन्निय, इसिवा-
इय, भूयवाइय, कट्टिय, महाकट्टिय, कूहड पयग-देवा ” असुरकुमार, नागकुमार
सुपर्णकुमार, विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, उदधिकुमार, दिक्कुमार,
वायुकुमार, अने स्तनितकुमार, ओ दस भवनपति देव, तथा अणपन्निक, पण
पन्निक ऋषिवादिक, भूतवादिक, ऋन्दिता, महाऋन्दिता, अने पतङ्ग, ते आठ व्यन्तर
जातिना देव, “ पिमाय, भूय, जम्ब, रक्खस, किन्नर, किंपुरिस, महोरग,
गधव, तिरिय, जोइस, विमाणवासि, मणुयगणा ” तथा पिशाच, भूत, यक्ष,
राक्षस, किन्नर, किंपुरिष, महीगंगा गधव ओ आठ व्यन्तर देव तथा तिर्यञ्च

‘પયાણિ’ પતાનિ = પૂર્વોક્તાનિ ‘પયમાર્ગિણિ’ પયમાર્ગીનિ = અવગ્રહેત્યાદીનિ
 ‘તસ્સ’ તસ્ય = અવગ્રાણઃ ‘નામપ્રેજ્ઞાણિ’ નામપ્રેજ્ઞાનિ = નામાનિ ‘તીસ’ ત્રિવિદ
 ‘કૃતિ’ ભવન્તિ ॥ સૂ. ૨ ॥

પરમવાગ્મયઃ ‘યન્નામે’ તિ દ્વિતીયમન્તર્દારમુક્તમ્ । અય તૃતીય ચતુર્થચાન્ત
 દ્વારમનુસ્તયા સામ્પ્રત યે ચ કુર્વન્તી’ ઇત્યેતત્પશ્ચમમન્તર્દારમાહ—‘ત ચ પુન’ ઇત્યાદિ

મૂલમ્—ત ચ પુન નિસેવિતિ સુરગણા સ અચ્છરા મોહ-
 મોહિયમર્દ-અસુર-ભુયગ-ગરુલ-વિજ્ઞુ-જલણ-દીવ-ઉદહિ-
 દિસિપવણ-થણિય અણપન્નિય-પણપન્નિય-ફિસિવાડય-ભૂય-
 વાદૂય-કંદિય મહાકંદિય-કૂહડ-પર્યંગદેવા, પિસાયમૂય-જક્ષ
 રક્ષસ-કિપળર-કિપુરિસ-મહોરગ — ગધઠ્ઠા, તિરિય-
 જોડસવિમાણવાસિ — મણુયગણા જલ — ચર — થલયર
 સ્વહયરા ય મોહપાડિવદ્ધચિત્તા અવિતળ્હા કામભોગતિસિ-
 યા તળ્હાણ વલવડ્ડે મહર્દે સમભિભૂયા ગઠિયા ય અતિ-
 મુચ્છિયા ય અવંભે ઓસણા તામસેણ ભાવેણ અણુમુક્કા દસણ
 ચરિત્તમોહસ્સ પજર પિવ કરેતિ અણમણ સેવમાણા ॥ સૂ. ૩ ॥

ટીકા—‘ત ચ પુન’ તત્ત્વપુનરવ્રત્ત ‘નિસેવિતિ’ નિપેક્ષન્તે । કે તે ?
 ઇત્યાહ-સુરગણાઃ = દેવસમૂહાઃ ‘સ અચ્છરા’ સાપ્સરસઃ = અપ્સરોભિઃ સહિતાઃ
 ‘મોહમોહિય’ મોહમોહિતમતય = મોહેન-મોહિતા મતિઃ = બુદ્ધિયેષા તે તથા । પુન’

પ્રકાર યે અવ્રત્ત આદિ પૂર્વોક્ત તીસ નામ હસ ચતુર્થદ્વારકે હૈ ॥ સૂ. ૨ ॥

અથ સૂત્રકાર તૃતીય ચતુર્થ દ્વાર કો ન કહ કર પચમ અન્તર્દારકો
 કહતે હૈ—‘ત ચ પુન’ ઇત્યાદિ ૦ ।

ટીકાર્થ—(ત ચ પુન) હસ ચતુર્થ દ્વાર અવ્રત્ત કા(સુરગણા) સુરગણ કી
 જિનકી (મોહ મોહિયમર્દ) મતિ મોહ સે મોહિત હો રહી હૈ (સ અચ્છરા)

પ્રમાણે ચોથા અધર્મ દ્વારના અગ્રહ આદિ ત્રીજા પૂર્વોક્તનામ છે ॥ સૂ. ૨ ॥
 હવે સૂત્રકાર ત્રીજા તથા ચોથા દ્વારનું વર્ણન ન કરતા પહેલા પાચમા
 અન્તર્દારનું વર્ણન કરે છે—“ત ચ પુન” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘ત ચ પુન’ તે ચોથા દ્વારરૂપ અગ્રહનું “સુરગણા” સુરગણ કે
 જેમની “મોહમોહિયમર્દ” મતિ મોહથી મોહિત થયેલ હોય છે “સઅચ્છ

ય' પ્રથિતાશ્વ=વિષયગુપ્તિમાનસા, તથા 'અદ્ભુચ્છિયાય' પતિમૃદ્ધિતાશ્વ= અતિમોહાતિશયગુપ્તગતાઃ 'અવમે ઓસણા' અબ્રહ્મણિ અમન્નાઃ=મૈથુને સમાસક્તાઃ, 'તામસેણ ભાવેણ અણુમુક્તા' તામસેન ભાવેન=અણુમુક્તાઃ, તામસેન ભાવેન= અજ્ઞાનપ્રવર્તિતેન પરિણામેન અણુમુક્તાઃ=આવદ્ધાઃ સન્ત, અત્ર-'અન્નોન્ન સેવ માણા' इत्यग्रेण सम्बन्ध. अन्योन्य=परस्पर पुरुषैः सह स्त्रियः, स्त्रीभिः सह पुरुषा इत्यर्थः सेवमानाः=अब्रह्मसमाचरन्तः, 'दसणचरित्तमोहस्स' दर्शनचारित्रमोह-स्य='अत्र कर्मणः सम्बन्धमात्रविज्ञाया पण्ठो, दर्शनमोहनीयचारित्रमोहनीयरूप द्वित्रिध कर्म 'पजर पि व' पञ्जरमिव 'करेति' कुर्वन्ति-अब्रह्मसेविनो देवादयः खलु दर्शनमोहनीय-चारित्रमोहनीयरूपपञ्जरे स्वात्मान नयन्तीति भावः ॥सू० ३॥

સામ્પત ચક્રવર્ત્યાદીન્ ઝર્ણયતિ 'મુજ્જો અસુરસુર' ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—મુજ્જો અસુર-સુર તિરિય-મણુય—ભોગરતિ—વિહાર

સપડત્તા ય ચક્કવટ્ટી-સુર-નરવાહ-સફુયા, સુરવરવ્વ દેવલોષ

સેવન કરને કી આજ્ઞા સે ગુપ્તિ મન હોકર (અદ્ભુચ્છિયા ય) ઉન વિષયાં મે અત્યત મોહકો પ્રાપ્ત હોતે રહતે હે ઓર (અવમે ઓસણા) અબ્રહ્મ કે સેવન કરને કે લિયે અત્યત આસક્ત હો જાતે હૈં। (તામસેણ-ભાવેણ અણુમુક્તા) તામસભાવ સે-અજ્ઞાનપ્રવર્તિત પરિણામ સે-આવદ્ધ હોકર પરસ્પર મે-એક દૂસરે કે સાથ પુરુષ કે સાથ સ્ત્રી, ઓર સ્ત્રી કે સાથ પુરુષ રમણ કરને લગ જાતે હે। ઇસ તરહ (અન્નોન્ન સેવમાણા) ઇસ અબ્રહ્મરૂપ પાપકર્મકો સેવન કરને વાલે યે દેવાદિક અપની આત્મા કો (દસણચરિત્તમોહસ્સ પજર પિ વ કરેતિ) પજર કે જૈસે દર્શન મોહ-નીય એવ ચારિત્ર મોહનીય કર્મ મે નિશ્ચિત્ત કર દેતે હૈં। અર્થાત્ ઇન કર્મોં કા વધ કરતે હ ॥ સૂં ૩ ॥

તેઓ વ્યાકુળ થાય છે તેથી “મદ્ધિયાય” વિષયોનું સેવન કરવાની આશામાં લીન થઈને “અદ્ભુચ્છિયાય,, તેમનું મન તે વિષયો પ્રત્યે અત્યંત મોહાત્મકત થયા કરે છે, અને “અવમેઓસણા” તેઓ મૈથુનનું સેવન કરવાને અત્યંત આસક્ત થાય છે માટે “અણુમુક્તા” તામસ ભાવથી-અજ્ઞાન પ્રવર્તિત પારણામથી-જકડાઈને પરસ્પરમાં-પુરુષની સાથે સ્ત્રી, અને સ્ત્રીની સાથે પુરુષ-રમણ કરવા લાગી બધ છે આ રીતે “અન્નોન્ન સેવમાણ” આ અબ્રહ્મચર્યરૂપ પાપકર્મનું સેવન કરનાર દેવાદિક પોતાના આત્માને “દસણચરિત્તમોહસ્સ પજર પિ વ કરેતિ”-પિજરા જેવા દર્શનમોહનીય અને ચારિત્ર મોહનીય કર્મમાં નાખી દે છે એટલે કે તે કર્મોના બધ બાધે છે ॥ સૂં ૩ ॥

૮, એતેઽષ્ટૌ વ્યન્તરભેદાઃ । તથા તિરિય-જોડસ-પ્રિમાગ-ગમિ' તિર્યગ્જ્યોતિર્વિ
 માનગાસિનઃ=તિરથિ=તિર્યગ્લોકે યાનિઝ્યોતિર્વિમાનાનિ તેષુ નિરાસિનોઽમરુયાતા
 જ્યોતિષ્કાઃ 'મણુય' મનુજા'=મનુષ્યાશ્ચ તેષા ગણાઃ=સમૂહાઃ । તથા 'જલચર
 થલચર સ્વહ-ચરાય' જલચર સ્થલચર ચેચરાશ્ચ, તત્ર જલચરા' = મત્સ્યાદયઃ,
 સ્થલચરાઃ=ગોમહિષ્યાદય' ચેચરાશ્ચ=પશિણસ્તે તથા, ણ્તે સર્વે મૈથુન નિપવન્ત
 ઇતિ પૂર્વેણ સમ્યગ્ન્યઃ । ક્રીદશાસ્ત્રે ઇત્યાદ- 'મોહપટિચિત્તા' મોહપ્રતિબદ્ધ
 ચિત્તાઃ=મોહેન=અજ્ઞાનેન પ્રતિનદ્વ=ગ્રસિત ચિત્ત યેષા તે તથા 'અચિત્તજ્ઞા'
 અચિત્તજ્ઞાઃ=પ્રિયલોલુપાઃ-પ્રાપ્તકામોપભોગેનાપ્યનુપશાન્તચિત્તા ઇત્યર્થઃ, 'કામ
 ભોગતિસિયા' કામભોગવૃત્તિતાઃ-અપ્રાપ્તકામભોગેષુ તત્પ્રાપ્તિચિન્તાપરાયણાઃ,
 એતાદશાસ્ત્રે 'બલવર્દૈ' વલવર્ત્યા=પ્રગાઢયા 'મહર્દૈ' મહત્ત્યા વિશાલયા
 'તજ્ઞા' વૃષ્ણયા=વિષયવાઙ્મયા 'અભિભૂયા' અભિભૂતા=અક્રાન્તા 'ગદિયા

કિં પુરુષ, મહોરગ, મધર્ચ, યે આઠ વ્યન્તર દેવ, તથા તિર્યગ્લોક મેં જિતને
 જ્યોતિષિયોં કે વિમાન હૈં ઉન વિમાનોં મેં રહને ઘાલે અસરયાત જ્યો
 તિષી દેવ, તથા મનુષ્યોં કા સમૂહ, (જલચરથલચરસ્વહચરા ય)
 મત્સ્ય આદિ જલચર જીવ, ગોમહિષી આદિ સ્થલચર જીવ, એવ આકાશ
 મેં ઉડને વાલે પક્ષી, સર્વ મૈથુન સેવન કરતે હૈં । ય્યોં કિં યે સર્વ
 (મોહપટિચિત્તા) અજ્ઞાન સે ગ્રસિત હે ચિત્ત જિન્હોં કા એસે હોંતે
 હૈં । એવ (અચિત્તજ્ઞા) પ્રાપ્તકામોપભોગ મેં મીં હનકા ચિત્ત જ્ઞાત નહીં
 હો પાતા હૈ । કારણ (કામ ભોગતિસિયા) જો કામભોગ હન્રેં પ્રાપ્ત
 નહીં હોતે હૈં ઉનમેં ઉનકી પ્રાપ્તિકી આજ્ઞાસે ચિન્તા સે હનકા ચિત્ત
 ચલાયમાન હોતા રહતા હૈ । એસા હસલિયે હોતા હૈ કિં યે (બલવર્દૈ)
 પ્રગાઢ એવ (મહર્દૈ) વિશાલ (તજ્ઞા) વિષયાભિલાષા સે (અભિ
 ભૂયા) આક્રાન્ત હો જાતે હૈ । હસીલિયે યે (ગદિયાય) વિષયોં કે

લોકમા જેટલા જ્યોતિષીઓના વિમાન છે તે વિમાનોમા રહેતા અસખ્યાત
 જ્યોતિષદેવ, તથા મનુષ્યોનો સમૂહ, તથા “જલચર, થલચર, સ્વહચરાય”
 મત્સ્ય આદિ જળચર જીવો, ગાય લેસ આદિ સ્થળચર જીવ, અને આકાશમા
 ઉડતા પક્ષીઓ, તે સૌ મૈથુનનુ સેવન કરે છે, કારણ કે તે સૌના ચિત્ત
 “મોહપટિચિત્તા” અજ્ઞાનથી જડાયેલા હોય છે, અને “અચિત્તજ્ઞા”
 કામભોગ ભોગવવા મળે તો પણ તેમના ચિત્તને શાંતિ મળતી નથી કારણ
 કે “કામભોગ તિસિયા” જે કામભોગ તેમને પ્રાપ્ત થતા નથી તેની લાલસાથી
 તેમના ચિત્ત ચલાયમાન રહે છે એમ થવાનું કારણ એ છે કે “બલવર્દૈ”
 પ્રગાઢ અને “મહર્દૈ” વિશાળ “તજ્ઞા” વિષયાભિલાષાથી “અભિભૂયા”

મનુજાઃ=મનુષ્યા-માડલિકાદયથ તેભ્યઃ-તત્સકારાદ્ યે ભોગાઃ=શબ્દાદયઃ,
તેષુ યા રતિઃ=અનુરાગસ્તેન યે વિહારાઃ=વિવિધપ્રકારચેષ્ઠારૂપાઃ ક્રીડાઃ, તૈઃ
સમ્પ્રયુક્તાઃ=સદ્વિતાઃ યે તે તથા કે તે ? इत्याह—‘ ચક્રવર્તી ’ ચક્રવર્તિનઃ,
ક્રીડશાસ્ત્રેચક્રવર્તિન ? इत्याह—‘ સુરનરવાઃ સખ્યા ’ સુરનરપતિસહુતાઃ=
સુરૈઃ=દેવૈઃ નરપતિભિઃ=નૃપૈશ્ચ, યદ્વા ‘ પતિ ’ શબ્દસ્ય પ્રત્યેક સમ્ય વાત્ સુરપ-
તિભિર્નરપતિભિશ્ચેત્યર્થઃ, સત્ક્રુતાઃ=સમ્માનિતાઃ, ‘ દેવલોષ ’ દેવલોકે ‘ સુરવર-
વ્વ ’ સુરવરા इव=મહદ્વિક દેવા इव । દેવલોકે યયા દેવા. સુખમનુમવન્તઃ ‘ ભર-
હનગણગર — નિગમજળવયપુરવરદોણમુદ્રસ્તેડકચ્ચડમહવસવાહપટ્ટણસહસ્ત્રમહિય ’
તત્ર ‘ ભરહ ’ ભરતસ્ય=ભારતવર્ષસ્ય સમ્યન્ધિનો યે નગાઃ=પર્વતાઃ ‘ ણગર ’ નગ-
રાણિ=અષ્ટાદશપર્વર્જિતાનિ, ‘ ણિગમ ’ નિગમા,=વણિગ્જનનિવાસાઃ ‘ જળવય ’
જનપદાઃ=દેશા, પુરવરાણિ=રાજધાનીરૂપાણિ, ‘ દોણમુદ્ર ’ દ્રોણમુલાનિ=જલ-
સ્થલમાર્ગયુક્તાનિ ‘ સ્તેડ ’ સ્તેડાનિ=ધૂલિપ્રાકારમયાનિ ‘ કચ્ચડ ’ કર્વટાનિ=

પ્રાણિયો મનુષ્યો-માડલિકા રાજા આદિ જનોં કે દ્વારા સપાદિત શબ્દાદિક
ભોગો મેં અનુરાગ જન્ય વિવિધ પ્રકારકી ચેષ્ઠારૂપ ક્રીડાઓં સે યુક્ત
એસે(ચક્રવર્તી)ચક્રવર્તીં બીં હન કામભોગોં સે તૃપ્ત નહીં હોતે હૈં (સુરનર-
વહસખ્યા) જો ચક્રવર્તીં સુરોં સે-દેવતાઓં સે, અથવા સુરપતિયોં-
હન્દ્રોં સે‘એવ નરપતિયોં-રાજાઓં સે વિશેષરૂપ મેં સદા સન્માનિત કિયે
જાતે હૈં તથા (દેવલોષ સુરવરવ્વ) જિસ પ્રકાર દેવલોક મેં મહદ્વિક
દેવ સુખોંકોં ભોગોં કરતે હેં ડસી પ્રકાર જો સુખોંકોં ભોગતે હૈં । તથા જો
(ભરહનગ ણગર-ણિગમ-જળવય-પુરવર-દોણમુદ્ર-સ્તેડકચ્ચડ-મહવ
સવાહપટ્ટણ સહસ્ત્ર મહિય) ભારતવર્ષ સઘીં હજારો ૧૮અઠારહપ્રકાર કે
કરોં સે રહિત નગરોં સે, વણિગ્જનનિવાસભૂત હજારો નિગમોં સે,
હજારોં દેશોં સે, રાજવાનિયારૂપ શ્રેષ્ઠ પુરોં સે, જલમાર્ગ સ્થલમાર્ગ

રાજા આદિ લોકો દ્વારા સપાદિત શબ્દાદિક ભોગોમા અનુરાગ જન્ય વિવિધ
પ્રકારની ચેષ્ઠાશ્ચ ક્રીડાઓથી યુક્ત એવા “ ચક્રવર્તી ” ચક્રવર્તીં પણ
કામભોગોથી તૃપ્ત થતા નથી “ સુરનરવહસખ્યા ” જે ચક્રવર્તીંઓનું દેવતાઓ
વડે, સુરપતિઓ ધન્દ્રો વડે અને નરપતિઓ વડે સદા વિશેષરૂપે સન્માન કરાય
છે, તથા “ દેવલોષ સુરવરવ્વ ” દેવલોકમા જેમ મહદ્વિક દેવો સુખો ભોગવ્યા
કરે છે, એજ પ્રમાણે જે સુખો ભોગવે છે, એવા ચક્રવર્તીંઓ પણ કામભોગોથી
તૃપ્તિ પામતા નથી, તથા જે “ ભરહ-નગ-ણગર-ણિગમ-જળવય-પુરવર-દોણમુદ્ર-
સ્તેડકચ્ચડ-મહવ-સવાહ-પટ્ટણ-સહસ્ત્ર-મહિય ” ભારતવર્ષના હજારો પર્વતોથી,
અઠાર પ્રકારના ક્ષેત્રો રહિત નગરોથી, વણિક લોકો રહેતા હોય એવા હજારો
નિગમોથી, હજારો દેશોથી, હજારો રાજધાનીશ્ચ શ્રેષ્ઠ શહેરોથી, જળમાર્ગ

ભરહ-નગ ળગર-નિગમજળવય-પુરવળદોળમુહ સેડ કઞ્ઞડ-
 મડવસવાહપટ્ટણસહસ્ત-મડિય-યિમિય-મેયણિયં એગચ્છત્ત
 સસાગર મુજિઝળવસુહ નરસીહા-નરવર્ડ-નરિંદા-નરવસહા
 મરુયવસમકપ્પા અઞ્ઞમહિય રાયતેયલચ્છીણદીપ્પમાણા સોમ્મા
 રાયવંસતિલગા રવિ-ત્તસિ-ત્તલ્લ-વરચક્ક સોરિયય પઢાગ-જવ-
 મચ્છકુમ્મરહવર-ભગ-ભવળ-વિમાળ-તુરગ-તોરળ-ગોપુર મણિ
 રળય-નાદિયાવત્ત-મુસલ-લગલ-સુરઙ્ગયવરકપ્પ સ્કલ મિગવઙ્ગ
 -મદ્દાસળ-સુરુઙ્ગ-થૂમ વરમડ-સરિય-કુડલ કુજર-વરવસમ-
 દીવ-મદર-ગરુલ્લજ્ઞય-ઙ્ગદકેડ-દપ્પળ-અટ્ટા-વય-ચાવ-વાળ-
 નક્કલ-મેહ-મેહલ-વીળા-જુગ-છત્ત-દામ-દામિણિ-કમલ-
 કમલ-ઘટા-તરપોત સૂચી-સાગર કુમુદાગર-મગર-હાર ગાગર-
 નેડર-ળગ-ળગર-વઙ્ગર-કિળ્લર-મયૂર-વરરાયહસ-સારસ-ચકોર
 ચક્કવાગ મિહુળ ગ્રામર-લેડગ-પઞ્ચસિગ-વિપચિ-વરતાલિયટ-
 સિરિયા-મિસેય-મેયણિ-લગ્ગ-કુસ-વિમલ-કલસ-મિગાર-વઙ્ગ-
 માળગપસત્થત્તમવિમલવરપુરિસલક્ષણધરા ॥ સૂ. ૪ ॥

ટીકા—‘મુજ્જો’ મૂય = પુનરપિ ‘અસુર-સુર-તિરિય મળુય મોગરઙ્ગ-વિહાર-
 સપડતાય’ અસુરસુરતિર્યઙ્ગમનુજમોગરતિવિહારસપડતાય તત્ર અસુરા. = વ્યન્તરાઃ
 અન-અસુરશબ્દેન વ્યન્તરા ગૃહ્યન્તે, સુરા. = યક્ષા, તિર્યઙ્ગઃ = અશ્વરત્નગજરત્નાદયઃ,

અન સૂત્રકાર ચક્રવર્તી આદિ કો કા વર્ણન કરતે હૈં—‘મુજ્જો
 અસુર’ ઇત્યાદિ.

ટીકાર્થ—(અસુર-સુર તિરિય મળુય મોગરઙ્ગ વિહારસપડતાય)
 અસુરોં - વ્યન્તરદેવો, સુરો - યક્ષોં તિર્યઙ્ગોં-અશ્વરત્ન ગજરત્ન આદિ

હવે સૂત્રકાર ચક્રવર્તી આદિનુ વર્ણન કરે છે—“મુજ્જો અસુર” ઇત્યાદિ
 “અસુર, સુર, તિરિય મળુય, મોગરઙ્ગવિહારસપડતાય” અસુરો-અતર દેવો,
 સુરો, યક્ષો, તિર્યઙ્ગો-અશ્વરત્ન, ગજરત્ન, આદિ પ્રાપ્તિઓ, મનુષ્યો માડલિક

माण्डलिकाऽस्थाऽपेक्षयोक्तम् । अग्रे तु 'हिमवतसागर त धीरा भोक्तृणभरहवास'
इत्युक्तं तत् चक्रवर्त्तिपदमाप्त्यनन्तरं समस्तभरतक्षेत्रभोक्तृत्वापेक्षया प्रोक्तमिति
बोध्यत् चक्रवर्त्तिन एव विशिनष्टि, 'नरसीहा' नरसिंहाः=नरेषु सिंहा इव शौर्या-
दिमत्त्वात् 'नरवई' नरपतय =नराणां स्वामिकृत्वात् 'नरिंदा' नरेन्द्राः=नरेषु
इन्द्रभूतत्वात् 'नरवसहा' नरवृषभाः=राज्यधुराधरणसामर्थ्यात् 'मरुजवसभकृष्णा'
मरुजवृषभकृष्णाः=मरुजाः=मरुदेशोत्पन्नाः वृषभाः=बलिबर्दाः, तत्कल्पाः=तत्स-
मानाः ये ते तथा मरुदेशवृषभादि शरीरसम्पत्त्या गृहभारवहनसमर्था भवन्तीति
तैः सहोपमानम् । 'अव्महि य' अव्यधियम्-अत्यधिक यथास्यात्तथा 'राय-
तेयलच्छीए दीप्यमाणा' राजतेजोलक्ष्म्या दीप्यमानाः=राजप्रतापश्रिया देदीप्य-
मानाः 'सोम्मा' सौम्याः=शान्तस्वरूपाः 'रायवसतिलगा' राजवशतिलकाः=
राजकुलमण्डनभूताः, तथा 'रविः=सूर्यः १, 'ससि' शशी=चन्द्रः २, 'सख'

विशिष्ट शौर्यादि संपन्न होने के कारण नरो में सिंह की तरह होकर
नरसिंह (नरवई) मनुष्यों के स्वामी होने के कारण नरो के पति (नरिंदा)
नरो में इन्द्र जैसे होने के कारण नरेन्द्र (नरवसहा) समस्त राज्य
धुराके धारण करने में सामर्थ्यशाली होने के कारण मरुज वृषभ जैसे-
मारवाड़ के बलीबर्द जैसे-मारवाड़ के बैल अपनी शरीररूपी संपत्ति
से बहुत अधिक भार को वहन करने वाले होते हैं-इसलिये उन के
साथ यह सादृश्य घटित किया है । तथा (अव्यधिय रायतेयलच्छीए
दीप्यमाणा) बहुत अधिकरूप में राजलक्ष्मी से देदीप्यमान, (सोम्मा)
शान्तस्वरूप और (रायवसतिलगा) राजकुल के मण्डनभूत होते हैं एवं
जो (रविससिसखवरचक्र) रवि शशि शख चक्र इत्यादि-लक्षणों
के धारण करनेवाले, अर्थात्-रवि-सूर्य शशि-चन्द्रमा तथा शख, श्रेष्ठचक्र

शौर्य आदिथी युक्त होवाने कारणे नरोभा सिद्ध होवा होवाथो नरसिद्ध,
" नरवई " मनुष्याणां स्वामी होवाने कारणे नृपति, " नरिंदा " नरोभा ईन्द्र
समान होवाथी नरेन्द्र, " नरवसहा " समस्त राज्यधुराधु वहन करवाने
समर्थ होवाने कारणे नरवृषभ अथवा मरुजवृषभ होवा,—मारवाड़ना गण्ड
होवा—" मारवाड़ना गण्ड मरुभूत होवाने कारणे वधारे बार उपाडी शडे छे
तेथो तेमनी साथे आ मरणाभङ्गी करवाभा आवी छे ' तथा ' अव्यधिय-
रायतेयलच्छीए दीप्यमाणा " राजलक्ष्मी वडे गहुं न वधारे देदीप्यमान,
" सोम्मा " शान्त स्वभावसौम्य, अने " रायवसतिलगा " राजवशोनी शङ्खात्
करनाश, अने न " रविससिसखवरचक्र " " सूर्य, चन्द्र, शख चक्र "
इत्यादि लक्षणोने धारण करना, ओटले के सूर्य चन्द्र, शख, श्रेष्ठ चक्र,

અલ્પજનનિવાસસ્થાનાનિ 'મટવ' મટવા=સાર્થકોગદ્યગ્રામાન્તરગ્ન્યાઃ, સવાહાઃ
 =ધાન્યાદિરક્ષણદુર્ગવિશેષા 'પટ્ટણ' પત્તનાનિ=મગ્ગલયસ્તુપ્રાપ્તિસ્થાનાનિ ચેત્યે
 તેષા યાનિ સદસાણિ તૈઃ 'મડિય' મણ્ડિતા યા મા તયા તા 'થિમિયમેયણિય'
 સ્તિમિતમેદનીકા = નિથલપ્રજા નિરસ્તસમસ્તશત્રુજનાદિભયરહિતજનપુત્રામ્,
 'એગચ્છત્ત' એગચ્છત્રામ્=હરભૂપતીના તદગ્રચર્ચિત્વાદેકમ્યૈય રાજઃ સ્વાતન્ત્ર્યેણ
 પ્રાધાન્યાદેકમેય છત્ર યત્ર સા તયા તા, તયા 'સસાગર' સસાગરા=સમુદ્રસહિત
 'વસુહ' વસુધા=પૃથિવી-ભરતાદ્વાદિરૂપા 'શુજિઝ્ઞ' શુક્ત્વાદ ચક્રવર્તિનો

વાહે હજારો દ્રોણમુલ્ખોસે સે, ધૂલિપ્રાકારમય હજારો રેટોં સે, અલ્પજન-
 નિવાસભૂત હજારોં કરંટો સે, અઢાઈકોશનક ગ્રામાન્તરોં સે ગૂન્ય
 હજારો મડયોં સે, હજારોં સવાહોં સે-વાન્યાદિકોંકી જિનકેઢારા રક્ષા
 કી જાતી હૈ એસે દુર્ગવિશેષોં સે એવ સકલ વસ્તુઓં કી પ્રાપ્તિ કે સ્થાન-
 ભૂત હજારોં પત્તનોં સે મડિત (થિમિય મેયણિય) તયા શત્રુ આદિ કે
 ભય સે રહિત હોકર પ્રજાજન જિસમેં આનંદ કે સાથ નિવાસ કર રહે
 હૈ (એગચ્છત્ત) ઓર જિસ મેં કિસી અન્ય રાજા કીસ્વતત્ર આજ્ઞા નહીં
 ચલતી હૈ-દુસરે રાજાઓં કે હોનેપર મો ડસી એક કે વશવર્તી હોને કે
 કારણ સ્વતત્રરૂપ સે અપની આજ્ઞા નહીં ચલા સકતે હૈ-કિન્તુ ડસી એક
 કી આજ્ઞા કે અનુસાર હી અપની આજ્ઞા ચલાતે હૈ, એસી સ્થિતિ વાલા
 સામ્રાજ્ય જહાં હોતા હૈ-ડસ સામ્રાજ્ય સપન્નભૂમિ કો એકચ્છત્રવાલી
 ભૂમિ કહી જાતી હૈ। એસી (સસાગરા) આસમુદ્રાન્ત-(વસુહ) પૃથિવી
 કો-ભરતાદ્વા રૂપ ભૂમિ કો (શુજિઝ્ઞ) ભોગરૂર કે (નરસીહા) જો

સ્થળભાગ વાલો હબરો દ્રોણમુખોથી, ધૂળના કિંટલાવાળા હબરો ખેટોથી, થોડી
 વસ્તીવાળા હબરો કળંટોથી, જ્યાથી અઢી ગાઉ સુધી ખીલ ગામે ન હોય
 તેવા હબરો મડખોથી, હબરો સવાહોથી-(ધાન્યાદિની જેનાથી રક્ષા કરાય
 છે એવા દુર્ગ વિશેષો) અને સઘળી વસ્તુના પ્રાપ્તિ સ્થાનરૂપ હબરો પત્તનોથી
 શુક્ત, તથા “થિમિયમેયણિય” શત્રુ આદિ ભયથી રહિત બનીને પ્રબળનો
 જેમા આનંદપૂર્વક રહે છે, “એગચ્છત્ત” અને જેમા ખીલ કોઈ રાજની
 સ્વતત્ર આજ્ઞા ચલાતી નથી-ખીલ રાજઓ હોવાછતા પણ તેઓ તે એકને જ
 “ચક્રવર્તી” રાજને” વશ હોવાને કારણે સ્વતત્ર રીતે પોતાની આજ્ઞા ચલાવી
 શકતા નથી પણ તે એકની આજ્ઞા પ્રમાણે તેમને વર્તવું પડે છે, એવી સ્થિતિવાળું
 સામ્રાજ્ય જ્યા હોય છે, એ પ્રકારના સામ્રાજ્યવાળી ભૂમિને એક છત્ર
 નીચેની ભૂમિ કહે છે એવી “સસાગર” સમુદ્રના અન્ત સુધીની “વસુહ”
 પૃથ્વીને-ભરતાદ્વારૂપ ભૂમિને “શુજિઝ્ઞ” ભોગવીને “નરસીહા” જે વિશિષ્ટ

प्रसिद्ध ४५, 'उत्त' उन्न=प्रसिद्ध ४५, दाम=माग ४७, 'दामिणि' दामनी=
रज्जुः ४८, 'कमडलु' कमण्डलु=जलपात्रविशेषः, प्रतीतः ४९, कमल=प्रतीत-
५०, घण्टा=प्रतीता ५१, 'वरपोय' वरपोतः=नौका ५२, 'सुई' सूची=वस्त्र-
सीवनसाधन ५३, 'सागर' सागरः=समुद्र ५४, 'कुमुदागर' कुमुदाकरः=
कुमुदवन ५५, 'मगर' मकरः ५६, हार=प्रतीत ५७, 'गागर' इति स्त्रिय
आभरणविशेषः, ५८, 'नेउर' नूपुर=पदभूषण ५९, 'णग' नगः=पर्वतः ६०,
'णगर' नगर=प्रसिद्ध ६१, 'वडर' वज्र ६२, 'किण्णर' किन्नर=व्यन्तरदेव
विशेषः ६३, मयूर=प्रसिद्ध ६४, 'वररायहम' वरराजहसः=प्रशस्तराजहसः ६५,
सारसः=प्रसिद्ध-पक्षिविशेष ६६, 'चकोर' चकोरः ६७, 'चक्रागमिहुण'
चक्रागमिधुन=चक्रवाक्युगल ६८, चामर=प्रतीत ६९, 'खेडग' खेटक=
'ढाल' इति भाषा प्रसिद्ध ७०, 'पव्वीसग' इति वाद्यविशेषः देशी शब्दोय ७१,
'विपंची' विपञ्ची=मत्तन्त्रीवीणा ७२, 'वरतालियट' वरतालवृन्त=प्रशस्त-
तालव्यजन ७३, 'सिरियाभिसेय' श्रीकाऽभिपेक=लक्ष्म्या अभिपेकः ७४,
'मेयणि' मेदिनी=पृथ्वी ७५, 'खग' खड्गः ७६ 'अकुस' अकुशः=प्रसिद्धः ७७,
'विमलकलम' विमलकलश-उज्ज्वलकलशः-७८, 'भिगार' भृङ्गारः-पात्रविशेषः
'झारी' इति भाषा प्रसिद्धः ७९, 'वद्धमानग' वर्धमानकः=शरावः ८०, चेत्ये-

कथो पर रखा जाता है, उत्त-उन्न, दाममाला, दामनी-रस्सी, कमडलु
कमल, घटा, नौका, सुई, समुद्र, कुमुदवन, मकर, हार, गागर, -स्त्रियोका
एक प्रकार का आभूषण, नूपुर-पदभूषण, पर्वत, नगर, वज्र, किन्नर जातिके
व्यन्तरदेव, मयूर, प्रशस्त राजहंस, सारसपक्षी, चकोर, चक्रवाक का
जोड़ा, चामर, खेटक-ढाल, पव्वीसग-इस नामका एक वाद्यविशेष,
विपञ्ची-सात तार वाली वीणा, सुन्दरताडवृक्ष का पत्ता, लक्ष्मी का
अभिपेक, पृथिवी, खड्ग-तलवार, अकुश, उज्ज्वलकलश भृङ्गार, वर्द्धमा-
नक-शराव, इन सब के चिन्हों को कि जो प्रशस्त चक्रवर्तित्व के सूचक

धूसरी, उन्न, दाममाला, दामनी-रस्सी, उन्न उन्न, उन्न, घटा, नौका साथ, समुद्र,
कुमुदवन, मगर, ढाल, गागर-स्त्रीजोनु ओके प्रशस्तरु आभूषण, नूपुर-आभर,
पर्वत, नगर, वज्र, किन्नर जातीना व्यतर देव, मयूर,, प्रशस्त राजहंस,
सारसपक्षी, चकोर, चक्रवाकनु ओडु, चामर, ढाल, पव्वीसग-ओड वाद्यविशेष,
विपञ्ची-सात तार वाला वीणा, सुन्दर ताडवृक्षना पत्रो, लक्ष्मीना अभिपेक,
पृथिवी तलवार, अकुश, उज्ज्वल कलश, भृङ्गार, वर्द्धमानक-शराव, ओ
पधा चिन्हा के ओ प्रशस्त चक्रवर्तित्वना सूचक अने ओड डोय छे तथा ओ

शङ्खः=प्रतीतः ३, 'चरचण' चरचक=श्रेष्ठचक्र ४, 'मोथिय' मथिक=चतुष्कविशेषः ५, 'पडाग' पताका=धजा ६, 'जय' ययः=मन्नामायातो धान्य-विशेषः ७, 'मन्ठ' मत्स्यः=प्रसिद्ध 'कृम्म' कर्मः=कन्द्यः ९, 'गयर' रयवर=विशिष्ट रथः १०, 'भग' योनिः ११ 'भयण' भयन=पामादः १२ 'विमाणा' विमान=प्रतीत १३, 'तुरग' तुरगः=श्वः १४, 'तोरण' तोरण=बहिर्द्वार १५, गोपुर=नगरद्वार १६, मणि=चन्द्रान्तादिकः १७, 'रयण' रत्न=रत्नानादिक १८, 'नदियायत्त' नन्द्यायत्तः=नवकोणस्वस्तीकविशेष १९, 'मुसल' मुसल=प्रसिद्ध २०, 'लागल' लादल हल २१, 'सुरदयपररूपमन्त्र' सुरचितपररूपवृक्ष=सुरचित=मुष्टु कृतो यो वर=श्रेष्ठ वन्धवृक्षः अथवा सुरतिद=सुखप्रदः कल्पवृक्षः २२, 'मिगय' मृगपति=सिंहः २३, 'भद्रासन' भद्रासन=सिंहासन २४, 'सुरुचि' सुरुचि=आभूषणविशेषः २५, 'धूम' स्तूपः=स्तम्भाविशेषः २६, 'वरमण्ड' वरमुकुट=श्रेष्ठमुकुट २७, 'सरिय' मुक्तावली देशी शन्दोऽय २८, 'कुडल' कुण्डल=कर्णामरण २९, 'कुजर' कुज्जर=दस्ती ३०, 'वर-वसभ' वरवृषभः ३१, 'दीव' द्वीप ३२, 'मदर' मन्दरः=मन्दराचलः ३३, 'गरुड' गरुड=प्रसिद्धः ३४, 'जय' ययः=प्रतीत ३५, 'डदकेऊ' इन्द्र-केतुः=इन्द्रश्वजः ३६, 'दपण' दर्पण=प्रसिद्धः ३७ 'अष्टाय' अष्टापद=श्रुतफलक ३८, 'चाव' चापः=धनुः ३९, 'वाण'=प्रतीतः ४०, 'नक्षत्र' नक्षत्र ४१, 'मेह' मेघः=प्रसिद्धः ४२, 'मेहल' मेखला=काञ्ची ४३, 'वीणा'=प्रतीता ४४, 'जुग' युग=वृषभस्कन्धे स्थाप्यमानः शरुटाङ्गविशेष, 'जुहाडा' इति भाषा

स्वस्तिक, पताका, यव मत्स्य, कूर्म, विशिष्ट रथ, योनि, भयन, विमान, तुरग, तोरण, गोपुर, चन्द्रान्तादिकमणि, कर्कतनादिरत्न, नवकोणवाले स्व-स्तिक, मुसल, लागल, सुरचित-सुन्दर श्रेष्ठकल्पवृक्ष, सिंह, भद्रासन, सिंहासन, सुरुचि इसनामको एक आभूषण विशेष, स्तूप, -स्तम्भविशेष, श्रेष्ठमुकुट, मुक्तावली, कुडल, कुजर हाथी, सुन्दरवैल, द्वीप, मरदाचल, गरुड, ध्वजा, इन्द्रश्वजा, दर्पण, अष्टापद-श्रुतफलक, चाप-धनुष, बाण, नक्षत्र, मेघ, मेखला-काञ्ची, वीणा, युग-गाड़ी का जुआ-जो बैलो के

स्वस्तिक, पताका, यव, मत्स्य, कूर्म, विशिष्ट रथ, योनि, भयन, विमान, तुरग, तोरण, गोपुर, चन्द्रान्ता आदि मणि, कर्कतनादि रत्न, नवकोण वाणा स्वस्तिक, मुसल, लागल, सुरचित सुन्दर श्रेष्ठ कल्पवृक्ष, सिंह, भद्रासन-सिंहासन, सुरुचि श्रेष्ठ आभूषण, स्तूप-स्तम्भ विशेष, श्रेष्ठ युगट, मुक्तावली, कुडल कुजर-हाथी, सुन्दर वृषभ, द्वीप, मरदाचल, गरुड, ध्वज, इन्द्रध्वज, दर्पण, अष्टापद-श्रुत इलक, धनुष्य बाण, नक्षत्र, मेघ, मेखला-काञ्ची, वीणा, युग-गाड़ीनी-

ઉરતાચાઉરાહિ સેનાહિ સમણુજાઇજમાણમગ્ગા તુરંગવર્ડ ગય-
વર્ડ રહવર્ડ નરવર્ડ વિઝલકુલા વીસુયજસા સારયસસિસકલ
સોમ્મવયણા, સૂરા, તિલોક નિગ્ગયપભાવા લઢ્ઢસદા સમત્ત
ભરહાહિવા નરિદા સસેલવળકાણણં ચ હિમવતસાગર ત્ત
ધીરા ભોત્તૂણ ભરહવાસ જિયસત્તપવરરાયસીહાપુવ્વકડતવ-
પ્પભાવા નિવિટ્ઠસચિયસુહા અણેગવાસસયમાડવ્વતો ભજ્જાહિ
ય જયવયપ્પહાણાહિ લાલિયતા અતુલ સદ્ધરિસરસરૂવગધે
ય અણુભવિત્તા તેવિ ઉવળમંતિ મરણધમ્મ અવિત્તિત્તા
કામાણં ॥ સૂ૦ ૫ ॥

ટીકા:—‘વત્તીસરાયવરસહસ્સાણુજાયમગ્ગા’ દ્વાત્રિશદ્ રાજવરસહસ્સા
નુયાતમાર્ગા:—દ્વાત્રિશદ્ યાનિ રાજવરાણા=રાજપ્રમુખાના સહસ્સાણિ તૈરનુયાત:—
અનુગતો માર્ગો યેષા તે તથા અનુગામિ દ્વાત્રિશત્સહસ્સરાજપ્રમુખાનામધિપતય
इत्यर्थः, ‘चउसट्ठिसहस्सपवरजुवतीनयणकता’ चतु:—पण्डिसहस्रप्रवरयुवति-
नयनकान्ता:—चतु:पण्डिसहस्रप्रौढतरुणीना नयनकान्ता:—नयनप्रिया: स्वामीन
इत्यर्थः ‘रत्ताभा’ रक्ताभा:—रक्ता=प्रिमलशोणीतग्राहुल्याद् रक्तवर्णा आभा=

ફિર વે ચક્રવર્તી કેસે હોતે હૈં સો કહતે હૈં—‘વત્તીસરાયવર૦’
इत्यादि०।

ટીકાર્થ:— (વત્તીસરાયવરસહસ્સાણુજાયમગ્ગા) જિનકે પીછે ૨
યત્તીસ હજાર મુકુટયદ્ધ રાજા ચલા કરતે હે, અર્થાત્—જો અપને અનુગામી
૩૨ હજાર નરેશોં કે અધિપતિ હોતે હૈં । (ચउसट्ठिसहस्सपवरजुवतीनय
णकता) તથા ૬૪ ચોસઠ હજાર સર્વશ્રેષ્ઠ યુવતી સ્ત્રિયોં કે નયનોં કો જો
આનદપ્રદ હોતે હૈં અર્થાત્—उनके स्वामी होते है, तथा (रत्ताभा) जिनके

તે ચક્રવર્તિઓ કેવા હોય છે તેનુ સૂત્રકાર વધુ વર્ણન કરે છે—“વત્તીસ
રાયવર” ઇત્યાદી

ટીકાર્થ—“વત્તીસરાયવરસહસ્સાણુજાયમગ્ગા” જેમની પાછળ બત્રીસ હજાર મુગટ-
ધારી રાજાઓ ચાલે છે—એટલે કે જેવો તેમના અનુગામી બત્રીસ હજાર નૃપ
તિથોના અધિપતિ હોય છે “चउसट्ठिसहस्सपवरजुवतीनयणकता” ચોસઠ
હજાર સર્વશ્રેષ્ઠ યુવતીઓના નયનોને જે આનદદાયી હોય છે, એટલે કે તેમના
સ્વામી હોય છે, તથા “रत्ताभा” જેમના શરીરની આભા વિભળ રક્તની

તાનિ, 'પસત્ય' પ્રશસ્તાનિ=પરવર્તિત્યમ્ચક્રાનિ ઉત્તમાનિ=સ્પષ્ટાનિ 'વિમત્ત'
 વિમત્તાનિ=સ્પષ્ટાનિ યાનિ 'અરપુરિસંગમણ' અરપુરુપલક્ષણાનિ-અરપુરુષાણા-
 મહાપુરુષાણા લક્ષણાનિ=હસ્તરેલાદિરૂપાણિ મત્ત્વસુપ્રકાનિ તાનિ ધારયન્તિ યે તે
 તથા સૂર્યચન્દ્રશદ્ધચક્રાદિરૂપત્રિગિષ્ટચત્રવર્તિલક્ષણયન્તઃ તેઽપિ કામભોગૈરવિ-
 ત્પ્તા એવ મરણધર્મં પ્રાપ્નુવન્તીતિ સમ્યન્ધઃ ॥ સૂ. ૪ ॥

પુનસ્તે ચક્રવર્તિનઃ કીદૃશાઃ? इत्याह—'अतीस' इत्यादि—

મૂલમ્—અતીસ—રાયવર—સહસ્તાણુજાયમગ્ગા અડસટ્ઠિસહસ્ત
 પવરજુવતીણયણકતા રત્તાભા પડમપમ્હકોરટગદામચપગસુ-
 તવિયવરકણક—નિઘસવળ્ળા સુજાય સઙ્ગસુદરગા મહગ્ધ-
 વરપટ્ટણુગયવિચિત્ત-રાગણી-પણી-નિમ્મિય-દુગુહ્લ-વરચી-
 ણપટ્ટકોસેજ્જ-સોળીસુત્તકવિભૂસિયગા-વરસુરભિગધ-વરચુળ્ળ-
 વાસવરકુસુમભરિય-સિરિયાકપ્પિયછેયા-યરિયસુકયરઇયમાલ-
 કડગંગયતુડિયવર-ભૂસણપિણદ્વદેહા ઇગાવલિકંઠસુરઇયવ-
 ળ્લા પાલવ પલવમાણસુકયપડઉત્તરિજ્ઞામુદિયા પિગલંગુલિયા
 ઉજ્જલ નેવત્થરઇયચિહ્નગવિરાયમાણા તેણ દિવાકરોઽવ-
 દિત્તા સારયનવત્થણિય—મહુર—ગંભીર—નિહ્વઘોસા ઉપ્પળ
 સમત્તરયણચક્કરયણપહાણા નવનિહિવહ્ણોસમિદ્ધકોસા આ-

एव उत्कृष्ट होते हैं तथा जो रेखा रूप में स्पष्ट झलकते थे—और जो
 महापुरुषों के हस्त आदिकों में रेखादि रूप में पाये जाते हैं इन सब को
 धारण करने वाले होते हैं । ऐसे महाभाग्य शाली चक्रवर्ती भी काम-
 भोगों से अतृप्त होकर ही मृत्यु को प्राप्त करते हैं । इस प्रकार का
 सबध इस सूत्र की व्याख्या करते समय लगा लेना चाहिये ॥ सू० ४ ॥

મહાપુરુષોના હાથ આદિમાં રેખાઓ રૂપે જોવા મળે છે, તે બધા ચિહ્નોને
 ધારણ કરનારા હોય છે એવા મહાભાગ્યશાળી ચક્રવર્તી રાજાઓ પણ કામ
 ભોગોથી અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુ પામે છે એ પ્રકારનો સબધ આ સૂત્રની
 વ્યાખ્યા કરતી વખતે સમજ લેવાનો છે ॥ સૂ. ૪ ॥

उरताचाउराहि सेणाहि समणुजाइज्जमाणमग्गा तुरंगवई गय-
वई रहवई नरवई विउलकुला वीसुयजसा सारयससिसकल
सोम्मवयणा, सूरा, तिलोक्क निग्गयपभावा लद्धसद्दा समत्त
भरहाहिवा नरिदा ससेलवणकाणणं च हिमवतसागर त
धीरा भोत्तूणं भरहवास जियसत्तपवररायसीहापुव्वकडतव-
प्पभावा निविट्ठसचियसुहा अणेगवाससयमाउव्वतो भज्जाहि
य जयवयप्पहाणाहि लालियता अतुल सदफरिसरसरूवगंधे
य अणुभवित्ता तेवि उवणमति मरणधम्म अवित्तिता
कामाणं ॥ सू० ५ ॥

टीका:—‘वत्तीसरायवरसहस्साणुजायमग्गा’ द्वात्रिंशद् राजवरसहस्रा-
नुयातमार्गाः=द्वात्रिंशद् यानि राजवराणां=राजप्रमुखानां सहस्राणि तैरनुयातः=
अनुगतो मार्गो येषां ते तथा अनुगामि द्वात्रिंशत्सहस्रराजप्रमुखानामधिपतय
इत्यर्थः, ‘चउसट्ठिसहस्सपवरजुवतीनयणकता’ चतुः—पट्टिसहस्रप्रवरयुवति-
नयनकान्ताः=चतुःपट्टिसहस्रप्रोढतरणीनां नयनकान्ताः=नयनप्रियाः स्वामीन
इत्यर्थः ‘रत्तामा’ रक्तामा=रक्ता=विमलशोणीतनाहुल्याद् रक्तवर्णा आभा=

फिर वे चक्रवर्ती कैसे होते हैं सो कहते हैं—‘वत्तीसरायवर०’
इत्यादि०।

टीકાર્થ:— (વત્તીસરાયવરસહસ્સાણુજાયમગ્ગા) જિનકે પીછે ૨
વત્તીસ હજાર મુકુટવદ્ધ રાજા ચલા કરતે હે, અર્થાત્—જો અપને અનુગામી
૩૨ હજાર નરેશોં કે અધિપતિ હોતે હૈં । (ચઉસટ્ઠિસહસ્સપવરજુવતીનય
-ણકતા) તથા ૬૪ ચોસઠ હજાર સર્વશ્રેષ્ઠ યુવતી સ્ત્રિયોં કે નયનોં કો જો
આનદપ્રદ હોતે હૈં અર્થાત્ ડનકે સ્વામી હોતે હે, તથા (રત્તામા) જિનકે

તે ચક્રવર્તિઓ ડેવા હોય છે તેનુ સૂત્રકાર વધુ વર્ણન કરે છે—“વત્તીસ
રાયવર” ઇત્યાદી

ટીકાર્થ—“વત્તીસરાયવરસહસ્સાણુજાયમગ્ગા” જેમની પાછળ બત્રીસ હજાર મુગટ-
ધારી રાજાઓ આવે છે—એટલે કે જેવો તેમના અનુગામી બત્રીસ હજાર નૃપ
તિથોના અધિપતિ હોય છે “ચઉસટ્ઠિસહસ્સપવરજુવતીનયણકતા” ચોસઠ
હજાર સર્વશ્રેષ્ઠ યુવતીઓના નયનોને જે આનંદદાયી હોય છે, એટલે કે તેમના
સ્વામી હોય છે, તથા “રત્તામા” જેમના શરીરની આભા વિમળ રક્તની

શરીરમભા યેપા તે તથા વિશિષ્ટદાણ્યમપના इत्यर्थः, 'पउमपम्हकोरटगदाम चपगसुतवियवरकणकनिघसवण्णा' पद्मपक्ष्म-कमलकेशर. कोरटकदाम=कोरटपुष्पमाला चम्पकः = पुष्पविशेषः तथा सुतावरकनकस्य=सुतसमुत्पन्नस्य यो निरूपः= रेखा चेत्येतेषा वर्ण इव वर्णो येषा ते तथा पद्मकेशरसुवर्णादिनाद् भास्वरका न्तय इत्यर्थः, 'सुजायसव्वगसुदरगा' सुजातमर्वाद्रसुन्दराद्वाः=सुजातानि= शोभन पुष्टानि सर्वाङ्गेण=सर्वप्रकारेण सुन्दराण्यङ्गानि=अयमत्र येषा ते तथा सुपुष्टशोभनाद्गोपाद्रसम्पन्नाः तथा 'महग्घवरपट्टणुग्गयविचित्तरागणीपणी- निम्मिय दुग्गुल्लवरचीणपट्टकोसेज्जसोणीमुत्तकविभूसियगा' महार्णवरपत्तनोद्भव- विचित्ररागैणीमैणीनिर्मितदुग्गुल्लवरचीनपट्टकोशेषश्रोणीसूत्रकविभूषिताद्वाः = तत्र महार्णाणि = बहुमूल्यानि वरपत्तनोद्भवानि=प्रधाननगरसमुत्पन्नानि तथा विचित्र- रागाणि=अनेकविधरत्नरञ्जितानि एणी मैणी निर्मितानि=एणी = मृगी प्रैणी

શરીર કી આભા ચિમલ શોણિત કી બહુલતા સે રક્તવર્ણ કી સી હોતી હૈં, અર્થાત્ જો વિશિષ્ટ લાવણ્ય સે યુક્ત હોતા હૈં । તથા (પડમપમ્હકોરટ ગદામચપગસુતવિયવરકણકનિઘસવવણ્ણા) પદ્મપક્ષ્મ-કમલકેશર, કોર- ણ્ટકદામ-કોરટપુષ્પોં કી માલા, ચમ્પક-પુષ્પવિશેષ, એવ તાપે હુણ સુવર્ણ કી રેખા હનકે વર્ણ કે સમાન જિનકા વર્ણ હોતા હૈં, અર્થાત્- પદ્મકેશર તસસુવર્ણ આદિ કે સમાન ભાસ્વર કાન્તિ સે જો યુક્ત હોતે હૈં, તથા (સુજાયસવ્વગ સુદરગા) જિનકે શારીરિક અવચવ અચ્છીતરહ સે પુષ્ટ એવ સવ પ્રકાર સે સુન્દર હોતે હૈં (મહગ્ઘવરપટ્ટગયવિચિત્તરાગ ણ્ણી પણ્ણી નિમ્મિયદુગુલ્લ વરચીણપટ્ટકોસેજ્જ સોણીમુત્તગવિભૂસિયગા) તથા જિનકા શરીર બહુમૂલ્ય વસ્ત્રોં સે કિ જો વસ્ત્ર પ્રધાન નગરોં કે જો બને હુણ હોતે હૈં, વિવિધ રંગો સે રંગે રહતે હૈં, ણ્ણી પ્રૈણી-મૃગી ઓર

અધિકતાને લીધે રતાશ પડતી હોય છે, તથા જે વિશિષ્ટ લાવણ્યથી યુક્ત હોય છે, તથા “પડમ-પમ્હકોરટ-ગદામ-ચપગ-સુતવિયવર-કણક-નિઘસવવણ્ણા” પદ્મપક્ષ્મ-કમળ કેશર, કોરટકદામ-કોરટ પુષ્પોની માલા, ચપાના ફૂલ, અને તપાવેલ સુવર્ણની રેખા જેવો જેમનો વર્ણ હોય છે એટલે કે જે પદ્મકેશર તથા સુવર્ણ આદિના જેવી સુદર કાતિવાળા હોય છે, તથા સુજાયસવ્વગસુદરગા” જેમના શરીરના અંગો સારી રીતે પુષ્ટ અને દરેક રીતે સુદર હોય છે, “મહગ્ઘવર-પટ્ટણુગય-વિચિત્તરાગ-ણ્ણી-પણ્ણી દુગ્ગુલ્લવરચીણ-પટ્ટકોસેજ્જ સોણીમુત્તગવિભૂસિયગા” તથા જેમના શરીર બહુ કીમતિ વસ્ત્રોથી સુશોભિત રહે છે જે સુખ્ય શહેરોમાં અનેલા હોય છે, વિવિધ રંગોથી રંગેલા હોય છે,

ચ= મૃગીવિશેષ એ તદ્રોમનિર્મિતાનિ યાનિ ઋત્તાણિ તાનિ, તથા દુક્કલાનિ= દુક્કલો વૃક્ષવિશેષ, તન્નિર્મિતાનિ વસ્ત્રાણિ, વલ્કલમુલ્યવલે જલેન સદ્ કુટ્ટયિત્વા ચૂર્ણીકૃત્ય સૂત્રાણિ નિર્માય ક્તાનિ દુક્કલાનીત્યુચ્યન્તે તાનિ । તથા વરચીનાનિ= ચીનદેશોત્પન્નાનિ ' પટ ' પટ સૂત્રમયાનિ-મલયદેશવિશેષાત્પન્નાનિ, કાશેયાનિ= કૃમિકોપસૂત્રનીર્મિતાનિ ' રેશમી ' ઇતિ પ્રસિદ્ધાનિ ઋત્તાણિ તથા શ્રોણીસૂત્રક= કટિસૂત્રક ' કણદોરા ' ઇતિ પ્રસિદ્ધ ચેત્યૈતૈઃ વિભૂષિતાનિ=અલકૃતાનિ અદ્ધાનિ યેષા તે તથા વહુમૂલ્યસુકોમલાઽતિસૂક્ષ્મતમરગ્ધવિરગ્ધવિવિધવસ્ત્રકટિસૂત્ર-સુશોભિતશરીરા इत्यर्थः, ' વરસુરભિગધવરચુણ્ણાસવરકુસુમભરિયસિરયા ' વરસુરભિગન્ધવરચૂર્ણવાસવરકુસુમમૃતશિરસઃ=વરસુરભિગન્ધઃ=ઉત્તમ સુગન્ધયુક્તગન્ધદ્રવ્ય, તથા વરચૂર્ણવાસા =વરાઃ=શ્રેષ્ઠાઃ=ચૂર્ણાસાઃ=ચૂર્ણરૂપાણિ ગન્ધદ્રવ્યાણિ, વરકુસુમાનિ ચ=ચમ્પક માલતી પ્રભૃતીનિ તૈ મૃતાનિ=વ્યાપ્તાનિ શિરાસિ=મસ્તકાની

મૃગીવિશેષ કે રોમોં સે નિર્મિત હોતે હૈં उनसे सुशोभित रहते हैं । ये वस्त्र धोती के स्थानापन्न होते हैं । तथा जिम्મ दुक्कल—दुपट्टे—को ये ओढ़ते हैं वह रेशमी होता है, एव चीन देशका बना हुआ होता है । दुक्कलवृक्ष के वल्कल को ओखली में जल के साथ पहिले मूसल से खूब कूटा जाता है, बाद में जब वह चूर्णरूप में हो जाता है तब उसके सूत्र तैयार किये जाते हैं और फिर उन्हें अच्छी तरह बुनकर यह दुक्कल बनाया जाता है । ऐसे दुक्कलो से एव कटिसूत्र से जिनका शरीर सदा अलंकृत रहा करता है, अर्थात् जो वहुमूल्य, सुकोमल, अतिसूक्ष्मतम-एव रगविरगे अनेकविधवस्त्रों से, तथा कटिसूत्र से विभूषित शरीर रहते हैं (वरसुरभिगधवरचुण्णवासवरकुसुमभरियसिरया) तथा उत्तम सुगन्ध युक्त गन्धद्रव्यों से, श्रेष्ठचूर्ण वासो से चम्पक, मालती आदि

એણી પ્રૈણી-મૃગલી અને વિશિષ્ટ પ્રજાતની મૃગલીની રૂવાટીમાથી બનાવેલા હોય છે તે વસ્ત્રો ધોતીની બગ્યાએ પહેરાય છે તથા તેમના દુપટ્ટા રેશમી હોય છે, અને તે ચીનમા બનેલા હોય છે હુંદલ-વૃક્ષની છાલને પાણી નાખીને પહેલા ખાડણીયામા સાબેલાથી ખૂબ ખાડવામા આવે છે, બ્યારે તેનો ભૂંડો થઈ જાય ત્યારે તેમાથી તાર ગાંઠવામા આવે છે, પછી તેને સારી રીતે વણીને તે હુંદલ-દુપટ્ટા બનાવવામા આવે છે એવા દુપટ્ટા અને કટિસૂત્રથી જેમના શરીર સદા આભૂષિત રહે છે, એટલે કે જેમના શરીર ખડુ મુલ્ય, સુકોમળ, અતિગંધ પ્રારીક અને રગબેરગી અનેક પ્રકરના વસ્ત્રોથી, તથા કટિસૂત્રથી વિભૂષિત રહે છે, " વરસુરભિ-ગધવર-ચુણ્ણાસવર-કુસુમ-ભરિયસિરયા " તથા ઉત્તમ સુગંધવાળા દ્રવ્યોથી, શ્રેષ્ઠચૂર્ણની સુગંધથી, ચમ્પક, માલતિ આદિ

યેપા તે તથા પરમસુગન્ધિદ્રવ્યચન્દનચૂર્ણચમ્પકાદિહુસુગમમ્ભારતમ્ભૂતમસ્તકા
 હત્યર્થઃ, ' કપ્પિયછેયાયરિયસુકયરઃયમાચ્ચડગગપતુડિયરભૂષણપિણ્દ્રદેહા '
 —કલ્પિતછેકાચાર્યસુકુતરતિદમાલાકટકાદ્વત્તિતરભૂષણપિણ્દ્ર દેહાઃ = તપ
 કાલ્પિતાનિ = પરિષ્કૃતાનિ છેકાચાર્યેણ = ચિન્પિયરેણ સુકૃતાનિ = સુષ્ટ
 રચિતાનિ રતિદાનિ = પ્રેમજનકાનિ યાનિ માગ્ય કટકાદ્વત્તિતરભૂષણાનિ=
 માલાઃ=સુવર્ણમાલાઃકટકાઃ=કઢ્ઢાણાનિ 'કડા' ઇતિ પ્રસિદ્ધાનિ, અકટકાનિ=
 કેયૂરાણિ ત્રુટિતાઃ=ગાહુરક્ષિકાઃ, તથા વરભૂષણાનિ=સુષ્ટકુણ્ડલાદિનિ ચ તૈઃ
 પિણ્દ્રઃ=વ્યાપ્તો દેહો યેપા તે તથા સુકૃટકેયૂરકઢ્ઢાણાદિવિવિધભૂષણભૂષિતદેહા
 હત્યર્થઃ, ' ઇકાવલિકઠમુરહ્યચ્ચપાલવપલવમાણસુકયપડઉત્તરિજ્જામુદિયાપિર્ગલ-
 ગુલિયા ' તત્ત—' ઇકાવલિકઠમુરહ્યચ્ચ ' ઇકાવલીચ્ચપાલવચિતવસસ્કાઃ=
 ઇકાવલી=વિવિધમણિગ્રથિતહાર કળે=કળપદેશે મુરચિતા=પરિષ્કૃતા વસસિ=વસ્ત્ર-
 સ્થલે યેપા તે તથા ' પાલવપલવમાણસુકયપડઉત્તરિજ્જા ' પ્રાલમ્બમલમ્બમાન-

કે પુષ્પો સે જિનકા મસ્તક સદા શોભિત રહતા હૈ, અર્થાત્ પરમસુગ
 ધિત દ્રવ્યો સે ચદન કે ચૂર્ણ સે ચમ્પકાદિ કુસુમોં કે સમ્ભાર સે જિનકા
 મસ્તક નિરન્તર ભરા રહતા હૈ । તથા (કપ્પિય હેયાયરિય-સુકય-રહ્ય
 માલ કઢગ ગય તુડિય વર ભૂષણપિણ્દ્ર દેહા) જિનકી દેહ અચ્છી તરહ
 સે પહિરે ગયે આભૂષણોં સે, સુવર્ણ કી માલાઓ સે, કટકોં કઢો સે,
 અગદો—(ભુજવધો) સે, ત્રુટિતોં સે ગાહુરક્ષિકો સે, એવ સુકૃટ કુણ્ડ
 આદિ ઉત્તમ અલકારો સે, કિ જો કારીગરોં કે દ્વારા યજ્ઞત હી અચ્છી
 તરહ ઘનાયે હુપ હોતે હૈ તથા પ્રેમોત્પાદક હોતે હૈ હનસે હનકી દેહ વ્યાપ્ત
 રહતી હૈ (ઇકાવલિકઠ મુરહ્ય ચ્ચપાલવપલવમાણસુકયપડઉત્તરિજ્જા

પુષ્પોથી જેમના મસ્તક સદા સુશોભિત રહે છે, એટલે કે અતિરાય સુગંધ-
 યુક્ત દ્રવ્યોથી, ચન્દનના ચૂર્ણથી, ચમ્પક આદિ પુષ્પોના સભારથી જેમના
 મસ્તક સદા યુક્ત રહે છે, તથા “ કપ્પિય હેયાયરિય,—સુકય,—રહ્ય,—માલ,
 કઢગ—ગય, તુડિય, વર ભૂષણપિણ્દ્રદેહા ” જેમના સારીર સારી રીતે પહેરેલ
 આભૂષણોથી, સુવર્ણની માળાઓથી કડાઓથી, “ અગદો ” ‘ ભૂજવધો ’
 થી, ત્રુટિતોથી—ગાહુરક્ષિકોથી, અને સુકૃટ કુણ્ડ આદિ ઉત્તમ અલકારોથી
 આભૂષિત રહે છે જે અલકારો સારા કારીગરોએ સારી રીતે બનાવેલા હોય
 છે તથા પ્રેમોત્પાદક હોય છે “ ઇકાવલિ—કઠ—મુરહ્યચ્ચ—પાલવ—પલવમાણ—સુકય
 પડઉત્તરિજ્જા—મુદિયા—પિર્ગલગુલિયા ” તથા વિવિધ મણીઓ જેડેલા હાર જેમની

સુકૃતપટોત્તરીયા = માલમ્પવત્ = આનામિલમ્પિતકઠિન્નાવત્ પ્રલમ્બમાન', તથા
 સુકૃતઃ = શોભનરચનાવિશેષયુક્ત પટઃ = શાટકઃ ઉત્તરીયમ્ = ઉત્તરીયપત્ત ચ યેપા તે
 તથા રચનાવિશેષેણ પરિધૃતશાટકોત્તરીયા इत्यर्थः, 'મુદિયાપિંગલગુલિયા'
 મુદિકાપિદ્મલામુલિકા' = મુદિકામિઃ = અદ્ભુલીયકેઃ પિદ્મલાઃ = સ્વર્ણાદિમયત્માત્ પીત-
 કાન્તયોડ્દુલ્યો યેપા તે તથા 'ઉજ્જલનેવત્થરડયચિહ્નગવિરાયમાણા' ઉજ્જ્વલ-
 નેપથ્યરતિદચિહ્નગવિરાજમાનાઃ = ઉજ્જ્વલ = નિર્મલ નેપથ્ય = વેષઃ 'પોશાક'
 इति प्रसिद्धः रतिद = આનન્દજનક 'ચિહ્નગ' इति वस्त्र चारुचिक्य, तेन विराज-
 માનાઃ = શોભમાનાઃ, તથા 'તેણ દિવાકરોવ્વદિત્તા' તેજસા દિવાકરરૂપ દીપ્તાઃ =
 પ્રતાપેન સૂર્યસદૃશઃ 'સારયનવત્થણિયમહુરગમ્બીરનિદ્ધઘોસા' શારદનપસ્તનિત-
 મધુરગમ્બીરસ્નિગ્ધઘોષાઃ = શારદ = શરત્કાલિક યન્નવસ્તનિત = નૂતનમેઘધ્વનિઃ તદ્ધ-
 ન્મધુરો ગમ્બીર' સ્નિગ્ધશ્રવ = હૃદયાહ્વાદકરો ઘોષઃ = શબ્દો યેપા તે તથા 'ઉપ્પણ
 સમત્તરયણચક્રરયણપદાણા' ઉત્પન્નસમસ્તરત્નચક્રરત્નપદાના' = ઉત્પન્નાનિ = પ્રાપ્તાનિ

મુદિયાપિંગલગુલિયા) તથા કઠ મેં વિવિધનળિયો સે ગ્રથિત પહિરા
 હુઆ હાર જિનકે વસ્ત્રસ્થલ પર લટકતા રહતા હૈ, તથા નાભિપ્રદેશ પર્યંત
 કઠી કે સમાન લટકતે હુએ ઉત્તરીયવસ્ત્રકો એવ શોભન રચના વિશેષ
 સે યુક્ત કરકે ધોતી કો જો ધારણ કરતે હૈ। સ્વર્ણ આદિકી બની હુઈ
 અગૂઠિયોં સે યુક્ત હોને કે કારણ જિનકી હાથો કી અગુલિયા સદા
 પીલી કાતિવાલી બની રહતી હૈ (ઉજ્જલનેવત્થ રડયચિહ્નગવિરાયમાણા)
 ઉજ્જ્વલ, આનદજનક એવ ચિલકતો હુઈ પોશાક સે જો સદા વિરાજમાન
 રહતે હૈ (તેણ-દિવાકરોવ્વ દિત્તા સારય-નવત્થણિય-મહુર-ગમ્બીર-
 નિદ્ધઘોસા) તથા જો અપને તેજ સે સૂર્ય કે જૈસે પ્રતાપશાલી હોતે હૈ।
 તથા જિનકા શબ્દ શરત્કાલ કે મેઘ કી નવીન ધ્વનિ કે જૈસા ગમ્બીર
 ઔર હૃદયાહ્વાદક હોતા હૈ (ઉપ્પણસમત્તરયણચક્રરયણપદાણા) તથા

ઠાકમા પહેરેલી હોય છે અને વક્ષસ્થળ પર લટકતો હોય છે તથા નાભિ-
 પ્રદેશ સુધી કઠીની જેમ લટકતા ઉત્તરીય વસ્ત્રોને તથા સુદૃઢ વિશિષ્ટ રચનાથી
 યુક્ત ધોતીને જેઓ ધારણ કરે છે, સુવર્ણ આદિમાથી બનાવેલી વીંટીઓથી
 યુક્ત હોવાને લીધે જેમના હાથની આગળીઓ સદા પીળા તેજથી યુક્ત
 રહે છે, “ઉજ્જલનેવત્થરડયચિહ્નગવિરાયમાણા” ઉત્પન્ન, આનદદાયક અને
 ચળકતા પોષાકથી જેઓ મદા શોભી રહ્યા હોય છે, “તેણ-દિવાકરોવ્વદિત્તા
 સારય-નવત્થણિય-મહુર-ગમ્બીર-નિદ્ધઘોસા” તથા જે પોતાના તેજથી સૂર્ય
 સમાન પ્રતાપશાળી હોય છે, તથા જેમના શબ્દો શરદઃઋતુના મેઘના નવીન
 ધ્વનિના જેવા ગમ્બીર અને હૃદયમા આનદ ઉત્પન્ન કરનાર હોય છે, “ઉપ્પણ

સમસ્તરત્નાનિ ચક્રરત્નાનિ ચ યસ્તે તથા, જન ણ્ય પ્રધાનાઃ=પ્રધાનભૂતાઃ ચતુર્દશ
રત્નાનિ યથા “સેનાયઃ ૧ ગાઢાયઃ ૨ પુરોહિયઃ ૩ તુરગ ૪ વર્ધકિ ૫ ગજ ૬ સ્ત્રી ૭ ।
ચક્ર ૮ છત્ર ૯ ચર્મ ૧૦, મણિ ૧૧ કાકિણી ૧૨ રાગ ૧૩ દહોય ૧૪ ॥”
છાયા-સેનાપતિ ૧ મહાપતિ ૨ પુરોહિત ૩ તુરગ ૪ વર્ધકિ ૫ ગજ ૬ સ્ત્રી ૭ ।
ચક્ર ૮ છત્ર ૯ ચર્મ ૧૦ મણિ ૧૧ કાકિણી ૧૨ સ્વદ્ગઃ ૧૩ દહોય ૧૪ ॥”
इति चतुर्दशरत्नानि । तथा ‘नवनिधिपद्मो’ नवनिधिपतयः=नवनिधिनां स्वा
मिनः । नवनिधयो यथा—

“ નૈસર્ગ્યે ૧ પડુક ૨ પિંગલે ૩ સર્વરત્ને ૪ તદામહાપદમે ૫ ।

કાલેય ૬ મહાકાલે ૭ માણવકમહાનિધિ ૮ સર્વે ૯ ॥ ૧ ॥ ” ઇતિ,

छाया-नैसर्ग्यः १ पण्डुक २ पिङ्गलश्च ३ सर्वरत्न ४ तथा महापद्म ५ ।

કાલથ ૬ મહાકાલ ૭ માણવકમહાનિધિ ૮ શાખ ૯ ॥ ૧ ॥ ”

‘સમિદ્ધકોસા’ સમૃદ્ધકોશાઃ=પરિપૂર્ણભાણ્ડાગારાઃ, ‘ચાઉરતા’ ચતુરતાઃ=
ત્રિપચ્ચન્તેષુ સમુદ્રઃ, ચતુર્થેઽન્તે ચ હિમવાન પર્વત, ણ્વ ચત્વારોઽન્તાઃ=ભૂવિભાગાઃ

જો પ્રાસ સમસ્ત રત્નોં સે ણ્વ ચક્રરત્ન સે પુરુષોં મેં પ્રધાનભૂત માને જાતે
હેં ચક્રવર્તી જિન ૧૪ ચૌદર રત્નોં કે અધિપતિ માને જાતે હેં-વે રત્ન યે
હેં—(૧) સેનાપતિ, (૨) ગાઢાપતિ, (૩) પુરોહિત (૪) તુરગ (૫) વર્ધકિ,
(૬) ગજ, (૭) સ્ત્રી, (૮) ચક્ર, (૯) છત્ર, (૧૦) ચર્મ, (૧૧) મણિ, (૧૨)
કાકિણી, (૧૩) સ્વદ્ગ (૧૪) દહ । (નવનિધિપદ્મો) તથા નવનિધિયો કે
જો ભોક્તા હોતે હેં, નવનિધિયા હસ પ્રકાર હેં—(૧) નૈસર્ગ્ય, (૨) પડુક,
(૩) પિંગલ, (૪) સર્વરત્ન, (૫) મહાપદ્મ, (૬) કાલ, (૭) મહાકાલ (૮)
માણવક ઓર (૯) શાખ । (સમિદ્ધ કોસા) ભાણ્ડાગાર સદા હરેક
વસ્તુ સે ભરપુર ઘના રહતા હૈ, તથા (ચાઉરતા) જો હિમવત્ પર્વત

સમસ્તરત્નચક્રરત્નપદ્માણા ” તથા જે પ્રાપ્ત થયેલા સમસ્ત રત્નોથી અને
ચક્રરત્નોથી પુરુષોમા શ્રેષ્ઠ ગણાય છે ચક્રવર્તિ જે ૧૪ ‘ચૌદ’ રત્નોના
અધિપતિ મનાય છે, તે ચૌદ રત્નો નીચે પ્રમાણે છે—(૧) સેનાપતિ, (૨)
ગાઢાપતિ, (૩) પુરોહિત, (૪) તુરગ, (૫) વર્ધકિ, (૬) ગજ, (૭) સ્ત્રી, (૮)
ચક્ર, (૯) છત્ર, (૧૦) ચર્મ, (૧૧) મણિ, (૧૨) કાકિણી, (૧૩) ખડ્ગ અને
(૧૪) દહ તથા તે ચક્રવર્તિ રાજાઓ નવનિધિયોને ભોગવે છે તે નવનિધિ
નીચે પ્રમાણે છે—(૧) નૈસર્ગ્ય, (૨) પડુક (૩) પિંગલ, (૪) સર્વરત્ન, ૫
મહાપદ્મ, (૬) કાલ, (૭) મહાકાલ, (૮) માણવક અને (૯) શાખ “સમિદ્ધ
કોસા” તેમના ભંડાર સદા દરેક વસ્તુથી ભરપૂર રહે છે, “ચાઉરતા”

યેષા તે તથા દિમત્તમગુરુપર્યન્તપૃથિવીશામકાઃ ‘ચાઝરાહિં સેનાહિં સમણુજાહજ્જમા-
ણમગ્ગા’ ચત્તસ્રિ સેનાભિ સમનુયાયમાનમાર્ગાઃ=દ્વસ્ત્યવરથપદાતિસ્પચતુરદ્વસે-
નાભિ સમનુયાયમાનઃ=અનુગમ્યમાનો માર્ગો યેષા તે તથા તદેવ દર્શયતિ ‘તુર-
ગવર્હ-ગયર્હ-રહર્હ-નરર્હ’ તત્ર ‘તુરગર્હ’ તુરગપતયઃ ‘ગયર્હ’ ગજપતયઃ
‘રહર્હ’ રથપતયઃ ‘નરર્હ’ નરપતયઃ=પદાતિ સેનાપતયઃ ‘વિઝલકુલા’
વિપુલકુલા = ઉચ્ચકુલા, વિશ્રુતયજસ = પ્રિયાતરીતય ‘સારયસસિસકલ-
સોમ્મવયણા’ શારદશગિસકલસોમ્મવયના = શારદા = શરત્કાલિકો શશી = ચન્દ્રઃ
ફીદગઃ સરુઠઃ = સમ્પૂર્ણકઠાયુક્તઃ શરત્પર્ણિમાચન્દ્ર હત્યર્યઃ, તદ્વત્ સોમ્ય = સુન્દર,
વદન = મુલ્લ યેષા તે તથા । ‘સૂરા’ સૂરાઃ = અનુમર્દકા ‘તિલોકનિગ્ગયપમાવા’
ત્રિલોક્યનિર્ગતપ્રમાવાઃ = ત્રિલોકવ્યાપિપ્રમાવસમ્પન્નાઃ, ‘લદ્ધસદ્દા’ લબ્ધશબ્દાઃ =

પર્યંત તક્ર સ્ત્રી ભૂમિ કે શાસક હોતે હૈ, (ચાઝરાહિં સેનાહિં સમણુજાહ-
જ્જમાણમગ્ગા) દસ્તી, અશ્વ, રથ ણ્ચ પૈદલ સૈન્ય, इन चार अर्गों वाली
सेना से जो सदा अनुगम्यमान मार्गवाले होते हैं, अर्थात् वे (तुरंगवर्ह-
गयवर्ह-रहवर्ह-नरवर्ह) अश्वपति, गजपति रथपति, और नरपति होते हैं।
(विजलकुला) तथा उनका कूल बहुत ऊंचा होता है, (विसुयजसा)
कीर्ति भी उनकी चारों दिशाओं में व्याप्त होती है. तथा (सारयससि
सकलसोम्वयणा) उनकी मुग्य शरत्काल की पूर्णिमा के चन्द्रमा जैसा
सौम्य होता है तथा वे (सूरा) अपने शत्रुओं के मर्दक होने से शूर-
वीर होते हैं, तथा (तिलोकनिग्वयपमावा) उनका प्रभाव तीनलोक
में व्याप्त रहता है, इसलिये वे (लद्धसद्दा) उनकी प्रसिद्धि तीनों लोको

તેઓનુ હિમાલય પરાંત મુધીના પ્રદેશ પર શાસન થાયે છે “ચાઝરાહિં-સેનાહિં
સમણુજાહજ્જમાણમગ્ગા” તથા તે ચક્રવર્તિ રાજાઓ ગજદળ, અશ્વદળ,
રથદળ, અને પાયદળ, એ ચતુરંગી સેના સહિત માર્ગપર ક્રમ ઝરનારા હોય
છે, એટલે કે “તુરગર્હ ગયર્હ રહર્હ નરર્હ” તેઓ અશ્વપતિ, ગજપતિ,
રથપતિ અને નરપતિ હોય છે “વિઝલકુલા” તથા તેઓ ઊંચા કુળના
હોય છે “વિસુયજસા” તેમની કીર્તિ ચારે દિશાઓમા ફેલાયેલી હોય છે
તથા “સારયસસિસકલસોમ્મવયણા” તેમના મુખ્ય શરદ ક્રાંતુની
પૂર્ણિમાના ચન્દ્ર સમાન સૌમ્ય હોય છે, તથા તેઓ “સૂરા” પોતાના
શત્રુઓનુ મર્દન ઝરનાર હોવાથી શૂરવીર હોય છે, “તિલોકનિગ્ગયપમાવા”
તેમનો પ્રભાવ ત્રણે લોકમા વ્યાપેલો હોય છે તેથી “લદ્ધસદ્દા” તેઓ ત્રણે

સમસ્તરત્નાનિ ચક્રરત્નાનિ ચ યસ્તે તથા, એન ણ પ્રધાનાઃ=પ્રધાનભૂતાઃ ચતુર્દશ
રત્નાનિ યથા “સેનાપતિ ૧ ગાથાપતિ ૨ પુરોહિત ૩ તુરગ ૪ વર્ધકિ ૫ ગજ ૬ સ્ત્રી ૭ ।
ચક્ર ૮ છત્ર ૯ ચર્મ ૧૦, મણિ ૧૧ કાકિણી ૧૨ રાગ ૧૩ દહોય ૧૪ ॥”
છાયા-સેનાપતિ ૧ ગૃહપતિ ૨ પુરોહિત ૩ તુરગ ૪ વર્ધકિ ૫ ગજ ૬ સ્ત્રી ૭ ।
ચક્ર ૮ છત્ર ૯ ચર્મ ૧૦ મણિ ૧૧ કાકિણી ૧૨ સ્વદ્વ ૧૩ દહ ૧૪ ॥”
इति चतुर्दशरत्नानि । तथा ‘नवनिधिपङ्क्तौ’ नवनिधिपतयः=नवनिधिनां स्वा-
मिनः । नवनिधयो यथा—

“ નૈસર્ગ્ય ૧ પટ્ટ ૨ પિંગલે ૩ સર્વરત્ન ૪ તદામહાપદ્મ ૫ ।

કાલેય ૬ મહાકાલે ૭ માણવગમદાનિધિ ૮ સર્વે ૯ ॥ ૧ ॥ ” इति,

छाया-नैसर्ग्यः १ पण्डुक २ पिङ्गलश्च ३ सर्वरत्न ४ तथा महापद्म ५ ।

કાલશ્ચ ૬ મહાકાલ ૭ માણવક્રમદાનિધિઃ ૮ શુદ્ધઃ ૯ ॥ ૧ ॥ ”

‘સમિદ્ધકોસા’ સમૃદ્ધકોશાઃ=પરિપૂર્ણભાણ્ડાગારાઃ, ‘ચાડરતા’ ચતુરતાઃ=
ત્રિષ્પન્તેષુ સમૃદ્ધઃ, ચતુર્ષ્પન્તે ચ હિમવાન પર્વત, ણ ચત્તારોઽન્તાઃ=ભૂવિભાગાઃ

જો પ્રાપ્ત સમસ્ત રત્નો સે એવ ચક્રરત્ન સે પુરુષોં મેં પ્રધાનભૂત માને જાતે
હેં ચક્રવર્તી જિન ૧૪ ચૌદ્દ રત્નોં કે અધિપતિ માને જાતે હેં—વે રત્ન યે
હેં—(૧) સેનાપતિ, (૨) ગાથાપતિ, (૩) પુરોહિત (૪) તુરગ (૫) વર્ધકિ,
(૬) ગજ, (૭) સ્ત્રી, (૮) ચક્ર, (૯) છત્ર, (૧૦) ચર્મ, (૧૧) મણિ, (૧૨)
કાકિણી, (૧૩) સ્વદ્વ (૧૪) દહ । (નવનિધિપદ્મો) તથા નવનિધિયોં કે
જો ભોક્તા હોતે હેં, નવનિધિયા હસ પ્રકાર હેં—(૧) નૈસર્ગ્ય, (૨) પટ્ટક,
(૩) પિંગલ, (૪) સર્વરત્ન, (૫) મહાપદ્મ, (૬) કાલ, (૭) મહાકાલ (૮)
માણવક્ર ઓર (૯) શશ્વ । (સમિદ્ધ કોસા) ભાણ્ડાગાર સદા હરેક
વસ્તુ સે ભરપૂર પના રહતા હૈ, તથા (ચાડરતા) જો હિમવત્ પર્વત

સમસ્તરત્નચક્રરત્નપદ્માણા ” તથા જે પ્રાપ્ત થયેલા સમસ્ત રત્નોથી અને
ચક્રરત્નોથી પુરુષોમા શ્રેષ્ઠ ગણાય છે ચક્રવર્તી જે ૧૪ ‘ચૌદ’ રત્નોના
અધિપતિ મનાય છે, તે ચૌદ રત્નો નીચે પ્રમાણે છે—(૧) સેનાપતિ, (૨)
ગાથાપતિ, (૩) પુરોહિત, (૪) તુરગ, (૫) વર્ધકિ, (૬) ગજ, (૭) સ્ત્રી, (૮)
ચક્ર, (૯) છત્ર, (૧૦) ચર્મ, (૧૧) મણિ, (૧૨) કાકિણી, (૧૩) અશ્વ અને
(૧૪) દહ તથા તે ચક્રવર્તી રાજાઓ નવનિધિઓને લોગવે છે તે નવનિધિ
નીચે પ્રમાણે છે—(૧) નૈસર્ગ્ય, (૨) પટ્ટક (૩) પિંગલ, (૪) સર્વરત્ન, ૫
મહાપદ્મ, (૬) કાલ, (૭) મહાકાલ, (૮) માણવક્ર અને (૯) શશ્વ “ સમિદ્ધ
કોસા ” તેમના ભંડાર સદા દરેક વસ્તુથી ભરપૂર રહે છે, “ ચાડરતા ”

‘જળવયપ્પહાણાદિ’ જનપન્નવાનાભિઃ=જનપદેષુ=દેશેષુ મધાનાભિઃ=સર્વોત્કૃષ્ટાભિ ‘મજ્જાદિ’ માર્યાભિ=શ્રીમિ ‘લાલિયતા’ લાલ્યમાના=ક્રીડયમાનાઃ ‘અતુલસદ્ધરિસરસરૂપગગેય ઞ્ણમવિત્તા’ અતુલશબ્દસ્પર્શરસરૂપગન્ધાશ્વાડ-નુમનન્તઃ=અનુપમશબ્દાદિ વિષયમુસાન્યાસ્વાદયન્તઃ ‘તે વિ’ તેડપિ=તાદૃશા અપિ ચક્રવર્તિનઃ, ‘કામાણ અવિતિત્તા’ કામાનામવિત્ત્તા=કામભોગેષુ તસિરહિતા એવ, ‘મરણધમ્મ’ મરણધર્મ=મૃત્યુ ‘ઉવ્વળમતિ’ ઉપનમન્તિ=પ્રાપ્નુવન્તિ ત્રિયન્તે इत्यर्थ ॥ સુ૦ ૫ ॥

પુનઃ કે ડત્યાહ— ‘શુજ્જો’ ડત્યાદિ—

મૂલમ્—શુજ્જો વલદેવા વાસુદેવા ય પવરપુરિસા મહાવલ-પરકમા મહાધણુવિયટ્ટગા મહાસત્તસાગરા દુહ્ધરા ધણુધરાનર-વસહા રામકેસવા ભાયરો સપરિસા સમુદ્ધવિજયમાઙ્ગયદસા-રાણં પજ્જુણ-પથિવસંવઅનિરુદ્ધા નિસદ્ધઉમ્મુય-સારણગય સુમુહદુમ્મુહાદીણં જાયવાણ અધ્ધુદ્ધાણવિકુમારકોડીણ હિય-યદ્ઙ્ગા દેવીણ રોહિણીણ દેવીણ દેવઙ્ગેય ય આણંદહિયમા-

સચિત સુખ્વ કી રાશિકો ભોગતે હૈ, તથા ઉનકી (અણેગવાસસયમાડ-વ્વતો) સૈકઙ્ગો વર્ષો કી આયુ હોતી હૈ (જળવયપ્પહાણાદિ મજ્જાદિ લાલિ-યતા) તથા વે સમસ્ત દેશો મે સર્વોત્કૃષ્ટ એસી ૬૪ ચૌમઠ હજાર સ્ત્રિયોં કે સાય ક્રીડા કિયા કરતે હૈ (અતુલસદ્ધરિસ રસરૂપગગ ય અણુ-મવિત્તા) ઔર ઉનકે સાય જો અનુપમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ, ગંધ આદિ પાચો ઇન્દ્રિયોં કે વિષયોં સે જન્ય સુખો કા આસ્વાદન કરતે રહતે હૈ એસે (તે વિ) વે ચક્રવર્તી આદી મી (કામાણ અવિતિત્તા મરણ-ધમ્મ ઉવ્વળમતિ) કામસુખોં સે અતુલ હી પને રહતે હૈ ઔર અન્ત મેં મરણ કો પ્રાપ્ત હો જાતે હૈ ॥ સુ૦ ૫ ॥

વથી પ્રાપ્ત ડરેલ સુખની ગણિને ઉપલોગ ડરે છે, તથા “અણેગવાસસયમા-વ્વતો” તેમનુ આયુષ્ય સેકડો વર્ષનુ હોય છે, તથા “જળવયપ્પહાણાદિ-લાલિયતા” સમસ્ત દેશોમા અનુપમ ઔવી ચોસઠ હજાર સ્ત્રીઓ માયે ક્રીડા ડરે છે, અને “અતુલસદ્ધરિસરસરૂપગગેયઅણુમવિત્તા” તેમની સાથે અનુપમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ, ગંધ આદિ પાચે ઇન્દ્રિયના વિષયોથી જનિત સુખો અનુભવે છે ઔવા તે “તે વિ” ચક્રવર્તિ આદિ પશુ “કામાણ” અવિતિત્તા મરણ ધમ્મ ઉવ્વળમતિ” કામલોગથી અતુલ રહે છે અને અતેમરણ પામે છે ॥ સુ. ૫ ॥

ત્રિજગત્પ્રસિદ્ધાઃ, 'મમત્તભરહાદિ ચા' સમસ્તભરતાધિપા = ત્રિજગોત્તરભરતાધિ-
 પતય 'નરિન્દા' નરેન્દ્રા, ધીરાઃ = સગ્રામાદિગ્રામનિહતશક્તિગમ્યન્ના' સસેલવળ-
 કાણ્ણ 'સસેલવળકાનન = શેલે' = પર્વતો, વનોઃ = નગરદૂરસ્થે, રાનનોઃ = નગરસમીપસ્થેઃ
 સહ = સહિત યત્તત્તવાપિ 'હિમવત્સાગરત' હિમવત્સાગરાન્ત = હિમવાન = મુદ્ધ-
 હિમવત્પર્વત સાગરત્થ = સમુદ્ર તદન્ત = તાત્પર્યન્ત 'મહવાસ' ભાગવત્પં 'મોતૂળ'
 શુક્ત્યા = ઉપશુદ્ધ્ય 'જિયસત્તૂ' જિતશત્રવ = પરાજિતસમસ્તશત્રવ, 'પવરાયસીહ'
 પવરરાજસિંહા = પવરેપુ = મહાપરાક્રમેગ્રપિ રાજસુ મયે સિંહાઃ = સિંહસદૃશાઃ, પ્રવ
 રાશ્વતે રાજસિંહા ઇતિ ચા ગિગ્ર = 'પુન્નકડતવપમાના' પૂર્વકૃતતપ પ્રમાવાત્ =
 પૂર્વજન્મકૃતતપો માહાત્મ્યાત્ 'નિવિદ્ધમચિયમુદ્ધા' નિવિદ્ધ સન્નિતસુવાઃ =
 ઉપશુક્તમન્નિતમુગરાશયઃ 'અનેગયાસસયમાઉચ્ચતો' અનેકવર્ષશતાયુષ્મન્તઃ,

મેં હો જાતી હૈ, ઓર વે (સમત્તભરહાદિ ચા) સમસ્ત ભરતખંડ કે
 અધિપતિ હોતે હૈ, અર્થાત્-૫ સ્થેચ્છગ્નઠ ઓર ૧ આર્યખંડ હસ
 પ્રકાર સપૂર્ણભરતક્ષેત્ર કે સ્વામી હોતે હૈ, (નરિન્દા) તથા વે મનુષ્યોં કે
 હન્દ્ર માને જાતે હૈ (ધીરા) તથા વે સગ્રામ આદિ મેં અપ્રતિહત શક્તિ
 સે સપન્ન હોતે હૈ (સસેલવળકાણ્ણ ચ હિમવત્સાગરત મોતૂળ ભર-
 હવાસ જિયસત્તૂ પવરરાયસીહા) તથા વે પર્વતોં, વનોં-નગર સે દૂર
 રહે હુણ જગલો, એવ કાનનોં-નગર સમીપસ્થ જગલોં સે યુક્ત તથા
 ક્ષુલ્લકહિમવાન્ પર્વત ઓર સમુદ્રપ્રયેત પ્રસૂત એસે ભારતવર્ષ કા ઉપભોગ
 કરકે સમસ્ત શત્રુઓં કો પરાજિત કરને કે કારણ મહાપરાક્રમ શાલી
 રાજાઓં કે બીચ મેં કેશરી કે સમાન ચમકતે હૈ, ઓર (પુન્નકડતવપ
 માવા નિવિદ્ધ સચિયસુદા) પૂર્વજન્મ મેં આચરિત તપ કે પ્રભાવ સે વે

લોકમા પ્રસિદ્ધ હોય છે, અને તેઓ "સમત્તભરહાદિવા" સમસ્ત ભરતખંડના
 અધિપતિ હોય છે, એટલે કે પાંચ સ્થેચ્છગ્નઠ અને એક આર્યખંડ, એ રીતે
 સંપૂર્ણ ભરતક્ષેત્રના અધિપતિ હોય છે "નરિન્દા" તથા તેમને મનુષ્યોના
 હન્દ્ર ગણવામા આવે છે, "ધીરા" તેઓ સગ્રામ આદિમા અત્યંત શક્તિ
 ધરાવનાર હોય છે, "સસેલવળકાણ્ણ ચ હિમવત્સાગરત મોતૂળભરહવાસ
 જિયસત્તૂ પવરરાયસીહા" તથા તેઓ પર્વતો, વનો-નગરથી દૂર આવેલા જંગલો,
 કાનનો-નગરની પાસેના જંગલોથી યુક્ત તથા હિમાલય પર્વતથી સમુદ્ર સુધી
 વિસ્તૃત એવા ભારત વર્ષના ઉપભોગ કરીને સઘળા શત્રુઓને માંહન કરવાને
 કારણે મહાપરાક્રમી રાજાઓની વચ્ચે કેશરી "સિંહ" સમાન ચમકે છે, અને
 "પુન્નકડતવપમાના નિવિદ્ધ સચિયસુદા" પૂર્વજન્મમા કરેલા તપના - ૧ લા

‘જળવયપ્પહાણાહિ’ જનપદપ્રધાનાભિઃ=જનપદેષુ=દેશેષુ પ્રધાનાભિઃ=સર્વોત્કૃષ્ટાભિ ‘ભજ્જાહિ’ માર્યાભિ=સ્ત્રીભિ ‘લાલિયતા’ લાલ્યમાનાઃ=ક્રીડયમાનાઃ ‘અતુલસદ્ધકરિસરસરૂપગમેય અણુભવિત્તા’ અતુલશબ્દમ્પર્શરસરૂપગન્ધાશ્વાડ-નુભવન્તઃ=અનુપમશબ્દાદિ વિષયમુતાન્યાસ્વાદયન્ત ‘તે વિ’ તેડપિ=તાદૃશા અપિ ચક્રવર્તિનઃ, ‘કામાણ અવિતિત્તા’ કામાનામવિતૃષ્ણા=કામભોગેષુ તસિરહિતા એવ, ‘મરણધમ્મ’ મરણધર્મ=મૃત્યુ ‘ઉવણમતિ’ ઉપનમન્તિ=પ્રાન્પુનન્તિ ત્રિયન્તે इत्यर्थ ॥ સૂ ૫ ॥

પુનઃ કે ઇત્યાહ— ‘શુજ્જો’ ઇત્યાદિ—

મૂલ્મ-શુજ્જો વલદેવા વાસુદેવા ય પવરપુરિસા મહાવલ-પરક્કમા મહાધણુવિયટ્ટગા મહાસત્તસાગરા દુહ્ધરા ધણુધરાનર-વસહા રામકેસવા ભાયરો સપરિસા સમુદ્ધવિજયમાઙ્ગ્યદસા-રાણં પજ્જુણ-પચિવસંવઅનિરુદ્ધા નિસદ્ધઉમ્મુય-સારણગય સુમુહદુમ્મુહાદીણં જાયવાણં અધુદ્ધાણવિકુમારકોડીણં હિય-યદઙ્ગયા દેવીણ રોહિણીણ દેવીણ દેવઙ્ગય આણંદહિયમા-

સચિત સુખ કી રાશિકો ભોગતે હેં, તથા ઉનકી (અણેગવાસસયમાડ-વ્વતો) સૈકડોં વર્ષોં કી આયુ હોતી હૈ (જળવયપ્પહાણાહિ ભજ્જાહિ લાલિ-યતા) તથા વે સમસ્ત દેશે મે સર્વોત્કૃષ્ટ એસી ૬૪ ચૌમઠ હજાર સ્ત્રિયોં કે સાય ક્રીડા ક્રિયા કરતે હેં (અતુલસદ્ધકરિસ રસરૂપગધ ય અણુ-ભવિત્તા) ઓર ઉનકે સાય જો અનુપમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ, ગધ આદિ પાચો ઇન્દ્રિયોં કે વિષયોં સે જન્ય સુખો કા આસ્વાદન કરતે રહતે હેં એસે (તે વિ) વે ચક્રવર્તી આદી ભી (કામાણ અવિતિત્તા મરણ-ધમ્મ ઉવણમતિ) કામસુખોં સે અતૃપ્ત હી બને રહતે હેં ઓર અન્ત મેં મરણ કો પ્રાપ્ત હો જાતે હૈ ॥ સૂ ૫ ॥

વથી પ્રાપ્ત ડરેલ સુખની રાશિનો ઉપભોગ ડરે છે, તથા “અણેગવાસસયમા-વ્વતો” તેમનુ આયુષ્ય સેકડો વર્ષનુ હોય છે, તથા “જળવયપ્પહાણાહિ-લાલિયતા” સમસ્ત દેશેમા અનુપમ એવી થોસઠ હજાર સ્ત્રીઓ સાથે ક્રીડા કરે છે, અને “અતુલસદ્ધકરિસરસરૂપગધેયઅણુભવિત્તા” તેમની સાથે અનુપમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ, ગધ આદિ પાચે ઇન્દ્રિયના વિષયોથી જનિત સુખો અનુભવે છે એવા તે “તે વિ” ચક્રવર્તિ આદિ પણ “કામાણ” અવિતિત્તા મરણ ધમ્મ ઉવણમતિ” કામભોગથી અતૃપ્ત રહે છે અને અતેમરણ પામે છે ॥ સૂ ૫ ॥

ત્રિજગત્પ્રસિદ્ધાઃ, 'મમત્તમરહાદિ ચા' મમન્તમરતાધિપા = દશિગોત્તરમરતાધિ-
 પતય 'નરિંદા' નરેન્દ્રાઃ, ધીરાઃ = સગ્રામાદિગ્વપતિહતશક્તિગમ્પન્નાઃ સસેલવળ-
 કાળણ 'સશૈલવનકાનન = શૈલૈઃ = પર્વતૈઃ વનૈઃ = નગરદૂરમ્થ, કાનનૈઃ = નગરસમીપસ્થઃ
 સહ = સહિત યત્તત્તયાધિ 'દિમવત્સાગરત' દિમવત્સાગરન્ત = દિમવાન = શુભ-
 દિમવત્પર્યંત સાગરથ = સમુદ્રઃ તદન્ત = નાવત્પર્યન્ત 'મરહવાસ' ભાગવર્ષ 'મોત્તૂળ'
 મુક્તયા = ઉપમુખ્ય 'જિયમત્તુ' જિતશત્રવ = પરાજિતસમન્તશત્રવ, 'પવરરાયસીદા'
 પવરરાજસિંહા = પવરેપુ = ગદાપરાક્રમેઽપિ રાજસુ મયે મિદાઃ = સિંહમદ્દશાઃ, પ્ર-
 રાશ્વતે રાજસિંહા ઇતિ ચા ચિગ્રા = 'પુવ્વકડતવ્પમાયા' પૂર્વકૃતતપ પ્રમાવાત્ =
 પૂર્વજન્મકૃતતપો માદાત્મ્યાત્ 'નિવિદ્વમચિયમુદ્ધા' નિર્વિદ્વ સન્નિતસુભાઃ =
 ઉપમુક્તમશ્વિતમુવરાશયઃ 'અણેગવાસસયમાઉચ્ચતો' અનેકવર્ષશતાયુષ્મન્તઃ,

મેં હો જાતી હૈ, ઓર વે (સમત્તમરહાદિ ચા) સમસ્ત ભરતખંડ કે
 અધિપતિ હોતે હ, અર્થાત્-૫ મ્લેચ્છગણ્ડ ઓર ૧ આર્યખંડ હસ
 પ્રકાર સપૂર્ણભરતક્ષેત્ર કે સ્વામી હોતે હ, (નરિંદા) તથા વે મનુષ્યોં કે
 હન્દ્ર માને જાતે હ (ધીરા) તથા વે સગ્રામ આદિ મેં અપ્રતિહત શક્તિ
 સે સપન્ન હોતે હ (સસેલવળકાળણ ચ દિમવત્સાગરત મોત્તૂળ મર-
 હવાસ જિયસત્તુ પવરરાયસીદા) તથા વે પર્વતોં, વનો-નગર સે દૂર
 રહે છુગ જગલો, ણવ કાનનો-નગર સમીપસ્થ જગલોં સે યુક્ત તથા
 શુભલકદિમવાન્ પર્વત ઓર સમુદ્રપર્યંત પ્રસૂત એસે ભારતવર્ષ કા ઉપભોગ
 કરકે સમસ્ત શત્રુઓં કો પરાજિત કરને કે કારણ મહાપરાક્રમ શાલી
 રાજાઓં કે ઘીચ મેં કેશરી કે સમાન ચમકતે હેં, ઓર (પુવ્વકડતવ્પ
 માવા નિવિદ્વ સચિયમુદ્ધા) પૂર્વજન્મ મેં આચરિત તપ કે પ્રભાવ સે વે

લોકમા પ્રસિદ્ધ હોય છે, અને તેઓ "સમત્તમરહાદિવા" સમસ્ત ભરતખંડના
 અધિપતિ હોય છે, એટલે કે પાંચ મ્લેચ્છ ખંડ અને એક આર્યખંડ, એ રીતે
 સપૂર્ણ ભરતક્ષેત્રના અધિપતિ હોય છે "નરિંદા" તથા તેમને મનુષ્યોના
 ઇન્દ્ર ગણવામા આવે છે, "ધીરા" તેઓ સગ્રામ આદિમા અત્યંત શક્તિ
 ધરાવનાર હોય છે, "સસેલવળકાળણ ચ દિમવત્સાગરત મોત્તૂળમરહવાસ
 જિયસત્તુ પવરરાયસીદા" તથા તેઓ પર્વતો, વનો-નગરથી દૂર આવેલા જંગલો,
 કાનનો-નગરની પાસેના જંગલોથી યુક્ત તથા હિમાલય પર્વતથી સમુદ્ર સુધી
 વિસ્તૃત એવા ભારત વર્ષના ઉપભોગ કરીને મધ્યના શત્રુઓને માર્દન કરવાને
 કારણે મહાપરાક્રમી રાજાઓની વચ્ચે કેસરી "સિંહ" સમાન ચમકે છે, અને
 "પુવ્વકડતવ્પમાયા નિવિદ્વ સચિયમુદ્ધા" પૂર્વજન્મમા કરેલા તપના પ્રભા

वालधणधणसचया ' नानामणिकनरत्नमोक्तिरुप्रवालधनधान्यसञ्चयाः, तत्र नानाविधा मणयः=चन्द्रकान्तादयः कनकानि=सुवर्णानि रत्नानि=कर्केतनादीनि मौक्तिकानि=मुक्ताफलानि प्रवालानि='मृगा' इति प्रसिद्धानि धनानि=गणिमादीनि, तत्र गणिम-गणयित्वा यदीयते तद्वस्तु गणिममित्युच्यते नालिकेरपूगी-फलादिकम्, एव धरिम-यत्तुलाया धृत्वा दीयते तत्, सुवर्णरजतादिकम्, मेय-कुडवेन-मानविशेषेण 'पायली' इति प्रसिद्धेन परिमीय यदीयते तत्, शालीगो-धूमादिकम्, परिच्छेद परीक्ष्य यदीयते तत्, रत्नवस्त्रादिकम्, धान्यानि शालियवादीनि तेषां सञ्चया=राशयो येषां ते तथा 'रिद्धसमिद्धकोशा' ऋद्धि समृद्धकोशाः=विविधसम्पत्तिपूर्णभाण्डागारा 'हयगयरहसहस्ससामी' हयगजरयसहस्सस्वामिनः=स्पष्टम् । 'गामागरणगरखेडकवडमडवदोणमुहपट्टणाऽऽसमसवाह सहस्स थिमियनिवुयप्पमुडयज्जणविविध-सम्पत्तिष्फज्जमाणमेदंणि सरसरियतला-

णिकणग-रयण-मोत्तिय पवालधणधणसचया) चन्द्रकान्त आदि नाना प्रकारके मणियों की, सुवर्ण की, कर्केतनादि रत्नों की, मुक्ताफलों की, मुगाओं की, तथा धन-गणिमादि, तथा गणिम-गिनकर दी जानेवाली नालिकेर पूगीफल आदि वस्तुओं की, तथा धरिम-तुला से तौल कर दी जानेयोग्य सुवर्ण रजत आदि द्रव्यों की, तथा मेय-कुडव 'पायली' नापके नामविशेष से नापकर दिये जानेयोग्य शालि गोधूम आदि अनाजों की, तथा परिच्छेद-परीक्षा करके दी जानेयोग्य रत्न वस्त्र आदि चीजों की तथा धान्य शालि यव आदि धान्यों की इनके यहां राशि रहा करती है । तथा—(रिद्धसमिद्धकोशा) विविध संपत्तिसे इनका भाण्डागार (भंडार) पूर्ण भरा रहता है । तथा (हयगयरहसहस्ससामी) हयों के घोड़ों के, हाथियों के एवं रथों के ये स्वामी होते हैं । (गामागरणगरखेडकवडमडवदोणमुहपट्टणाऽऽसम

कणगरयणमोत्तिय पवालधणधणसचया " चन्द्रकान्त आदि विविध भण्डानि-ओनो, सुवर्णानो, कर्केतनादि रत्नानो, साथी ओतीनो, मुगाओनो, तथा, धन-गणिमादिनो, (गणिम-गण्णीने अपाती नाणियेर पूगीक्षण आदि वस्तुओनो) धरिमनो (" धरिम-त्राज्वाथी जेणीने आपवा योग्य सुवर्ण आदी आदि द्रव्य) मेय-कुडवनो (" पायली " (भाण्ड) आदिथी लगीने आपवा योग्य ओणा, घड आदि अनाज) परिच्छेद-परीक्षा कगीने आपवा योग्य रत्न-वस्त्र आदि चीजनेनो, तथा धान्यनो (ओणा जव आदि अनाजनो) तेभने त्या लउर लरेल डोय छे तथा " रिद्धिसमिद्धकोसा " विविध संपत्तिथी तेभनो लउर मद्र लउपूर रहे छे तथा " हयगयरहसहस्ससामी " घोडा, डोधी अने रथाना तेओ अधिपति डोय छे " गामागरणगरखेडकवडमडव

મણુમ્ન — પ્રતિવસાગડનિન્દ્રનિપથોલ્લુક — સારણ — ગજ — છુમ્મુગ્નુર્મુસાદીના
 ' જાયગાળ ' યાદગાના = યદુગણિના ' અદ્ભુદ્રાણ વિ ' અદ્ભુતચતુર્થાનામપિ =
 સાર્થતિસૃણામપિ ' કુમારકોટીના ' કુમારકોટીનાં ' હિયયદ્વયા ' હૃદયદયિતા =
 હૃદયપ્રિયા : ' દેવી૯ રોહિણી૯ દેવી૯ દેવ૨૯ ય આણદહિયમાવનદળકરા ' દેવ્યા
 રોહિણ્યા : = ચલદેવમાતૃ : દેવ્યાદેવકયા : = કૃષ્ણમાતૃ૯ આનન્દરૂપો યો હૃદયમાવ
 સ્તસ્ય નન્દનકરા : = વૃદ્ધિકારકા : ' સોલસરાયવરસહસ્તાણુજાયમગ્ગા ' પોઢશ
 રાજવરસહસ્તાણુયાતમાર્ગા : = પોઢશસદસસરયકા રાજવરા અનુમતા ભવન્તિ
 માર્ગે યેપા તે તથા । તત્પ્રદર્શિતનીતિમાર્ગાનુવર્તિન ઇત્યર્થઃ તદ્ગાનામારિણ ઇતિ
 યાવત્ । સોલસદેવીસહસ્તવરણયણહિયયદ્વયા ' પોઢશદેવીસહસ્તવરનયનહૃદય-
 દયિતા = પોઢશસદસદેવીના વરનયનાના = ચાલ લોચનાના સુન્દરીના હૃદયદયિતા : =
 હૃદયવલ્લભા , વિશેષણમિદ્ વાસુદેવાપેક્ષયા । ' ણાણામણિકુળગરયણમોસિયપ

નિપથ, હલ્લુક, સારણ, ગજ, છુમ્મુગ, હુમ્મુગ આદિ સાઢાતીન ૩॥ કરોડ
 યાદવકુમારો કે લિયે યે હૃદય સે અધિક પ્યારે હોતે હે । (દેવી૯ રોહિ
 ણી૯ દેવી૯ દેવ૨૯ ય આણદહિય માવનદળકરા) દેવી રોહિણી કે તથા
 દેવી દેવકી કે આનદરૂપ હૃદયભાવ કી યે વૃદ્ધિ કરનેવાલે હોતે હે, દેવી
 રોહિણી યે ચલદેવ કી માતા તથા દેવી દેવકી યે કૃષ્ણકી માતા હે ।
 (સોલસરાયવરસહસ્તાણુજાયમગ્ગા) ૧૬ સોલ હજાર રાજા જિનકે પીઢે
 માર્ગ મેં ચલા કરતે હે, અર્થાત્ જિસ પ્રકાર યે કહે નીતિમાર્ગ કા પ્રદ
 ર્શન કરતે હે ડસી નીતિમાર્ગકા યે અનુસરણ કરતે હ, અથવા ડનકી
 આજ્ઞાનુસાર ચલતે હે । (સોલસ દેવીસહસ્તવરણયણહિયયદ્વયા) ૧૬ સોલ
 હજાર સ્ત્રિયોં કે નયનો કો ઓર હૃદયોંકો યે અત્યતપ્રિય હોતે હે, યહ
 વિશેષણ વાસુદેવકી અપેક્ષા સે કહા ગયા જાનના ચાહિયે । (ણાણામ

પ્રતિવસામ, અનિરુદ્ધ, નિપથ, હલ્લુક સારણ, ગજ, છુમ્મુગ, હુમ્મુગ આદિ
 સાડા ત્રણ કરોડ યાદવ કુમારોને તે પ્રાણથી પણ અધિક વહાલા હોય છે,
 “દેવી૯ રોહિણી૯ દેવી૯ દેવ૨૯ ય આણદહિયમાવનદળકરા” દેવી રોહિણી
 તથા દેવી દેવકીના હૃદયના આનદમા તેઓ વૃદ્ધિ કરનારા હોય છે દેવી
 રોહિણી બળદેવની માતા તથા દેવી દેવકી કૃષ્ણની માતા છે “સોલસરાયવર
 સહસ્તાણુજાયમગ્ગા” ૧૬ એણ હબર રાખઓ તેમને અનુસરે છે, એટલે કે તેમના
 દ્વારા જે નીતિમાર્ગ તેઓ બતાવે છે, એ જ નીતિમાર્ગનું તેઓ અનુસરણ
 કરે છે અથવા તેમની આજ્ઞા પ્રમાણે તે બધા ચાલે છે “સોલસ દેવીસહસ્તવર-
 ણયણહિયયદ્વયા” ૧૬ એણ હબર સ્ત્રીઓના નયનો તથા હૃદયને તેઓ અત્યત
 પ્રિય હોય છે આ વિશેષણ વાસુદેવને અનુલક્ષી આપાયેલું છે “ણાણામણિ-

પવનાનિ તાનિ ચ 'મગાભિરામ' મનોઽભિરામાણિ=મનોદ્દગાણિ તૈઞ્ચ 'પરિમહિયસ્ત'
પરિમહિતસ્ય=શોભિતસ્ય 'દાહિણઙ્કુવેયઙ્કુગિરિવિભત્તસ્ત' દક્ષિણાર્ધ વૈતાદય
ગિરિવિભત્તસ્ય=દક્ષિણાર્ધે યો વૈતાદય. = તન્નામકો ગિરિઃ = પર્વતવિશેષસ્તેન
વિભત્તસ્ય=કૃતપ્રિભાગસ્ય 'લવણજલપરિગયસ્મ' લવણજલપરિગતસ્ય=લવણ-
જલેન=લવણસમુદ્રેન પરિગતસ્ય=વેષ્ટિતસ્ય 'ઽઽવિહકાલગુણકમજુત્તસ્ત' પદવિધ-
કાલગુણક્રમયુક્તસ્ય=પદ્વિધસ્ય કાલસ્ય=ર્ષા શરદ્ હેમન્તશિશિરવસન્તગ્રીષ્માભિધ-
પદ્ક્રતુનમયસ્ય ચે ગુમા=કાર્યાણિ નગ્નહયકુસુમવિવિગ્નફલમમૃદયાદિ રૂપાણિ,
તેષા યઃ ક્રમઃ=યથોચિતરૂપેણ ભવન તેન યુક્તસ્ય=સમુપેતસ્ય એવમિત્યસ્ય 'અદ્ભર-
હસ્ત' અર્ધભરતસ્ય=દક્ષિણભરતસ્ય 'સામિયા' સ્વામિકાઃ=અધિપતયઃ 'ધીરા,
ધીરાઃ=શત્રુભિરપરિભવનીયાઃ 'કિત્તિ પુરિસા' કીર્તિપુરુષાઃકીર્તિપ્રધાનાઃપુરુષાઃ
'ઓહવલા' ઓગ્નવલાઃ=ઓધેન=પ્રવાહેનાચ્છિન્ન વલ યેષા તે તયા અવિચ્છિન્ન
વલા इत्यर्थः, 'અહવલા' અતિવલાઃ=અન્યવલાન્યતિક્રાન્તાઃ। 'અનિહયા'
અનિહતાઃ = શત્રુશસ્ત્રાઘાતવર્જિતા એવમ્ભૂતાઃપલદેવગાસુદેવઃ અપિ કામભોગદક્ષિ
રહિતા એવ મરણધર્મમુપનમન્તીતિ સમ્યગ્નયઃ ॥ ૬ ॥ સૂ૦ ॥

યદ્ગિરિવિભત્તસ્ત) દક્ષિણાર્ધ મેં વૈતાદય પર્વતસે વિભત્ત હુણ (લવણ-
જલપરિગયસ્ત) લવણ સમુદ્ર સે વેષ્ટિત હુણ તથા (ઽઽવિહકાલગુણકમ-
જુત્તસ્ત) ર્ષા, શરદ્ , હેમન્ત, શિશિર, વસન્ત, ગ્રીષ્મ, इन छह ऋतु-
ઓરૂપ સમય કે નવીન પત્તો, કુસુમો, એવ ફલો કે આગમનરૂપ કાર્યો
કે ક્રમ સે યુક્ત ઝને હુણ એસે (અદ્ભરહસ્ત) દક્ષિણ ભરતકે યે
(સામિયા) સ્વામી હોતે હૈ (ધીરા) ધીર હોતે હૈ અર્થાત્-શત્રુઓ દ્વારા
અપરિભવનીય હોતે હૈ। તયા (કિત્તિપુરિસા) કીર્તિ હી હૈ પ્રધાન
જિન્દગીની એસે યે કીર્તિ પુરુષ હોતે હૈ। (ઓહવલા) इनका वल कभी
नष्ट नहीं होता है अतः ये (अहवला) अविच्छिन्न बलवाले होते हैं,

“દાહિણઙ્કુવેયઙ્કુગિરિવિભત્તસ્ત” દક્ષિણાર્ધમા વૈતાદય પર્વતથી વિભક્ત થયેલ
“લવણજલપરિગયાસ” લવણસમુદ્રથી ઘેરાયેલા તથા “ઽઽવિહકાલગુણકમજુત્તસ્ત
”ર્ષા, શરદ, હેમન્ત શિશિર, વસન્ત અને ગ્રીષ્મ એ ઽઽવે ઋતુઓને અનુરૂપ
નવીન પાન, ફૂલો, અને ફળોના આગમનરૂપ ડાચોથી યુક્ત ઝનેલ એવા
“અદ્ભરહસ્ત” દક્ષિણ ભાગતના તેઓ ‘સામિયા’ સ્વામી હોય છે “ધીરા”
તેઓ ધીર હોય છે એટલે કે શત્રુઓ દ્વારા અપરાજિત હોય છે તથા “કિ
ત્તિપુરિસા” કીર્તિ જે પ્રધાન છે જેમની એવા કીર્તિપુરુષ હોય છે-કીર્તિશાળી
હોય છે “ઓહવલા” તેમનું બળ કદી નાશ પામતું નથી તેથી તેઓ “અ
હવલા”અવિચ્છિન્ન બળવાળા હોય છે, તથા “અનિહયા” શત્રુઓના શસ્ત્રોના

ગસેલકાગણઆરામુજ્જાગમણાભિરામપરિમહિયસ્મ ' તત્ર ગ્રામાઽઽગરનગર
સેટકર્પટમહાદ્રોણમુલપત્તાનાઽઽશ્રમમયાગાઃ = તત્ર ગ્રામઃ = ગ્રસતે વૃદ્ધ્યાદિ
ગુણાનિતિ ગ્રામઃપૃષ્ઠોદરાદિત્યાત્સત્કારમ્ય મકારઃ । અન્યે મયાપર્યન્તા પૂર્વસ્મિન્
ચકચર્ત્તિમૂલે વ્યારુપાતપૂર્ણઃ, તેર્ણ યાનિ મહસાણિ તૈઃ, ' ધિમિય ' સ્તિમિતાઃ=
સ્વચક્રપરચક્રમપરહિતાઃ ' નિન્નુય ' નિર્નૃતાઃ=મુજાન્તપિત્તાઃ તથા ' પમુહ્ય ' પ્રમુદિ-
તાશ્ચ=અતિપ્રમદા યે જનાસ્તૈઃ, તથા ' વિવિદમસ્સનિપ્પજ્ઞમાણમેહ્ણી ' વિવિધસસ્ય
નિપ્પધમાણમેદિની વિરિયાનિ મસ્યાનિ=ગન્યાનિ,તૈ.નિપ્પયમાના સમ્પધમાના યા
' મેહ્ણી ' મેદિનો=પૃથિગી તથા તથા ' સર ' સરાસિ=જલાગયગિરેપાઃ, ' સરિય'
સરિતઃ=નયઃ ' તલાગ ' તડાકાઃ=મહાજલાશયા ' સૈલ ' ઘૈલાઃ=પર્વતાઃ ' કાણ્ણ'
કાનનાનિ=સામાન્યવૃક્ષોપેતાનિ નગરાસન્નચર્ત્તિચનાનિ, આરામા =ગ્નામણ્ડપાધુપે
તાનિ,રાજ્યામન્તઃ પુરંધાનાનિ, ઉદ્યાનાનિ=વિવિધપાદપદ્મુમમમુહસિતસર્વજનવિહારો

સપાહસહસ્મયિમિયનિન્નુયપ્પમુહ્યજળ-વિવિદસસ્સનિપ્પજ્ઞમાણમેહ્ણિ
સર સરિયતલાગસેલકાગણ આરામુજ્જાગમણાભિરામપરિમહિયસ્મ) ગ્રામ
આકર, નગર, સેટ, કર્પટ, મહા, દ્રોણમુખ, પત્તા, આશ્રમ, સવાહ ૬૪
સયકી હજારોંકી મઘ્યાસે સ્વચક્ર એવ પરચક્રકે ભયસે રહિત એસે તથા
જિનકા ચિત્ત સદા સુરાન્ત ગ્ના હુઆ રહતા હૈ એસે અતિ પ્રમુદિત
મનુષ્યો સે તથા વિવિધ પ્રકારકી વાન્ય રાશિ જિસમેં ઉત્પન્ન હોતી હૈ
એસી મેદનીસે, તથા મનોહર જલાગય વિશેષોંસે, નદિયોસે, તલાવોં સે,
પર્વતો સે, સામાન્યવૃક્ષોંસે યુક્ત, એવ નગરકે પાસ રહે હુએ એસે કાનનોં(વનોં)
સે તથા લતામણ્ડપ આદિ સે યુક્ત એસે રાજાઓં કે અન્તઃપુરકે ઉદ્યાનોં
સે, તથા અનેક પ્રકાર કે વૃક્ષોંસે એવ કુસુમોં સે સમુદ્દસિત એવ સર્વ
જનોં કે વિહાર યોગ્ય એસે ઉપવનોં સે પરિમહિત હુએ, તથા (ડાણિદુબે

દોણમુહપટ્ટણાસમસવાહ-સહસ્સ-યિમિય-નિન્નુયપ્પમુહ્યજળવિવિદસસ્સ નિપ્પજ્ઞમાણ
મેહ્ણિસર—સરિય—તલાગ—સેલ—કાણ્ણ—આરામુજ્જાગમણાભિરામપરિમહિયસ્મ ”
ગામ, આકર નગર, સેટ, કર્પટ, મહા, દ્રોણમુખ, પત્તા, આશ્રમ, સવાહ,
વગેરે હુલારોની સખ્યામા તેઓની સત્તા નીચે હોય છે સ્વચક્ર અને પરચક્રના
ભયથી રહિત તથા સદા શાન્ત અને અતિ આનંદિત ચિત્તવાળા મનુષ્યોથી, તથા
વિવિધ પ્રકારના વાન્ય રાશિ (હાલ) જેમા ઉત્પન્ન થાય છે એવી ભૂમિથી, તથા
મનોહર જગારાથી, નદીઓથી, તળાવોથી, પર્વતોથી સામાન્ય વૃક્ષોથી
નગરની પાસે આવેલા કાનનોથી, તથા લતામણ્ડપ આદિથી યુક્ત એવા રાજાઓના
અન્ત પુરના ઉદ્યાનોથી, તથા અનેક પ્રકારના વૃક્ષોથી, અને વિકસિત કુસુમોથી
શોભતા અને સર્વે લોકોને દ્રશ્યને યોગ્ય એવા ઉપવનોથી વીરળાથેલા, તથા

पयनानि तानि च 'मगाभिराम' मनोऽभिरामाणि=मनोहराणि तैश्च 'परिमडियस्स' परिमण्डितस्य=शोभितस्य 'दाहिणहुवेयडुगिरिविभक्तस्स' दक्षिणार्धं वैताढ्य गिरिविभक्तस्य=दक्षिणार्धं यो वैताढ्यः=तन्नामको गिरिः=पर्वतविशेषस्तेन विभक्तस्य=कृतविभागस्य 'लवणजलपरिगयस्स' लवणजलपरिगतस्य=लवण-जलेन=लवणसमुद्रेन परिगतस्य=वेष्टितस्य 'छव्विहकालगुणकमजुत्तस्स' षड्विध-कालगुणक्रमयुक्तस्य=षड्विधस्य काव्यस्य=उर्पा शरद् हेमन्तशिशिरवसन्तग्रीष्माभि-षड्वक्तुमयस्य ये गुणा=कार्याणि नाष्टवक्तुसुमविभिन्नफलसमुदयादि रूपाणि, तेषां यः क्रमः=यथोचितरूपेण भवनं तेन युक्तस्य=समुपेतस्य णवविप्रस्य 'अद्धभर-हस्स' अर्द्धभरतस्य-दक्षिणभरतस्य 'सामिया' स्वामिकाः=अधिपतयः 'धीरा', धीराः=शत्रुभिरपरिभयनीयाः 'क्वित्ति पुरिस्ता' कीर्त्तिपुरुषाःकीर्त्तिप्रधानाःपुरुषाः 'ओहवला' ओषवलाः=ओषेन=प्रवाहेणाच्छिन्नं जलं येषां ते तथा अविच्छिन्नं जलं इत्यर्थः, 'अडवला' अतिवलाः=अन्यजलान्यतिक्रान्ताः। 'अनिहया' अनिहताः=शत्रुशस्त्राघातवर्जिता एवभूताःबलदेवगासुदेवा अपि कामभोगवृत्तिरहिता एव मरणधर्ममुपनमन्तीति सम्मन्यः ॥ ६ ॥ सू० ॥

यडुगिरिविभक्तस्स) दक्षिणार्धं में वैताढ्य पर्वतसे विभक्त हुए (लवण-जलपरिगयस्स) लवण समुद्र से वेष्टित हुए तथा (छव्विहकालगुणकम्म-जुत्तस्स) उर्पा, शरद्, हेमन्त, शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, इन छह ऋतु-औरूप समय के नवीन पत्तों, कुसुमों, एव फलों के आगमनरूप कार्यों के क्रम से युक्त गने हुए ऐसे (अद्धभरहस्स) दक्षिण भरतके ये (सामिया) स्वामी होते हैं (धीरा) धीर होते हैं अर्थात्-शत्रुओं द्वारा अपरिभवनीय होते हैं। तथा (क्वित्तिपुरिस्ता) कीर्ति ही है प्रधान जिन्होंने की ऐसे वे कीर्त्ति पुरुष होते हैं। (ओहवला) इनका बल कभी नष्ट नहीं होता है अतः ये (अडवला) अविच्छिन्न बलवाले होते हैं,

"दाहिणहुवेयडुगिरिविभक्तस्स" दक्षिणार्धभा वैताढ्य पर्वतथी विलक्ष्य थयेल
"लवणजलपरिगयस्स" लवणसमुद्री धरायेला तथा "छव्विहकालगुणकम्मजुत्तस्स-
"उर्पा, शरद्, हेमन्त शिशिर, वसन्त अने ग्रीष्म ओ छओ ऋतुओने अनुत्तप
नवीन पान, इत्ये, अने इत्येना आगमनउप ज्ञेयथी युक्ता णनेल ओवा
"अद्धभरहस्स" दक्षिण भागतना तेओ "सामिया" स्वामी होय ओ "धीरा"
तेओ धीर होय ओ ओले ओ शत्रुओ द्वारा अपराजित होय ओ तथा "क्वित्तिपुरिस्ता" कीर्ति ओ प्रधान ओ जेमनी ओवा कीर्त्तिपुरुष होय ओ-कीर्त्तिशाली
होय ओ "ओहवला" तेमनु णण उही नाश पावतु नथी तेथी तेओ "अडवला" अविच्छिन्न णणवाणा होय ओ, तथा "अनिहया" शत्रुओना शस्त्रेना

गसेलकागणआरामुज्जागमणाभिरामपरिमडियस्स ' तत्र ग्रामाऽऽगरनगर
 सेटकर्णटमडयद्रोणमुखपत्तनाऽऽश्रमसताहाः = तत्र ग्रामः = ग्रसते बुद्ध्यादि
 गुणानिति ग्रामः पृथोदरादित्यात्सकारस्य मकारः । अन्ये गराटपर्यन्ता पूर्वस्मिन्
 चक्रवर्त्तिभूये व्याख्यातपूर्वा, तेषां यानि महत्वाणि तैः, ' विमिय ' स्तिमिताः=
 स्वचक्रपरचक्रमपरहिताः ' नि'युय' निर्गृताः=मृगान्तपित्ताः तथा 'पमुडय' प्रमुदि
 ताश्च=अतिप्रमत्ता ये जनान्तैः, तथा 'विविहमस्मनिष्फज्जमाणमेइणी ' विविधमस्य
 निष्फज्जमाणमेदिनी विविधानि सस्यानि=धान्यानि, तैः निष्फज्जमाना सम्पद्यमाना या
 ' मेइणी ' मेदिनी=पृथिवी तथा तथा ' सर ' सरासि=जलाशयविशेषाः, ' सरिय'
 सरितः=नद्यः ' तलाग ' तडाकाः=महानजलाशया ' सैल ' शैलाः=पर्वताः ' काणण'
 काननानि=सामान्यवृक्षोपेतानि नगरासन्नवर्त्तिनानि, आरामाः=रामण्डपाद्युपे
 तानि, राहामन्तः पुरंधानानि, उद्यानानि=विविधपादपकुसुमममुल्लसितसंजनविहारो

सपाहसस्सधिमियनिब्बुयप्पमुडयजण-विविहसस्मनिष्फज्जमाणमेइणि
 सर सरियतलागसेलकागण आरामुज्जागमणाभिरामपरिमडियस्स) ग्राम
 आकर, नगर, सेट, कर्णट, मडय, द्रोणमुख, पत्तन, आश्रम, सबाह इन
 सयकी हजारोंकी सख्यासे स्वचक्र एव परचक्रके भयसे रहित ऐसे तथा
 जिनका वित्त सदा सुशान्त बना हुआ रहता है ऐसे अति प्रमुदित
 मनुष्यों से तथा विविध प्रकारकी वान्य राशि जिसमें उत्पन्न होती है
 ऐसी मेदनीसे, तथा मनोहर जलाशय विशेषोंसे, नदियोंसे, तलावों से,
 पर्वतों से, सामान्यवृक्षोंसे युक्त, एव नगरके पास रहे हुए ऐसे काननों(बनों)
 से तथा लतामण्डप आदि से युक्त ऐसे राजाओं के अन्तःपुरके उद्यानों
 से, तथा अनेक प्रकार के वृक्षोंसे एव कुसुमों से समुल्लसित एव सर्व
 जनों के विहार योग्य ऐसे उपवनों से परिमण्डित हुए, तथा (दानिडूबे

द्रोणमुहपट्टणासमस बाह-सहस-विमिय-निब्बुयप्पमुडयजणविविहसस्स निष्फज्जमाण
 मेइणिसर-सरिय-तलाग-सैल-काणण-आरामुज्जागमणाभिरामपरिमडियस्स "
 ग्राम, आकर नगर, सेट, कर्णट, मडय, द्रोणमुख, पत्तन, आश्रम, सबाह,
 वगेरे हजारोंकी सख्यासे स्वचक्र एव परचक्रके भयसे रहित तथा महा शांत अने अति आनंदित चित्तवाणा मनुष्योंकी, तथा
 विविध प्रकारना धान्य राशि (दण्डा) जेमा उत्पन्न थाय छे जेवी लूमिधी, तथा
 मनोहर नगरायेधी, नदीयेधी, तणावेधी, पर्वतायेधी सामान्य वृक्षोधी
 नगरनी पासे आवेला काननोधी, तथा लतामण्डप आदिधी युक्त जेवा रानजोना
 अन्तःपुरना उद्यानोधी, तथा अनेक प्रकारना वृक्षोधी, अने विकसित कुसुमोधी
 शोभता अने सर्वे लोकोंने इरवाने योग्य जेवा उपवनोधी वीटजायेला, तथा

‘રિઊસહસ્સમાણમદ્દના, રિપુસહસ્સમાણમથના:=રિપુસહસ્સાણા માન=ગર્વ મન્વન્તિ યે તે તથા શત્રુદર્પિનિવસકા ‘સાણુક્કોસા’ સાણુક્કોસા=આશ્રિતરક્ષકા: ‘અમચ્છરી’ અમત્સરિણ:—પરશુભસ્યાઽદ્વેષિણ:—પરમુખેન મુશ્વિન ઇત્યર્થ:; ‘અચવલા’ અચ-પલા:—મનોવાક્યાયત્પલતારહિતા, અચણ્ડા:=અકારણક્રોધમર્જિતા: ‘મિયમજુલ્પ્પલાવા’ મિતમજુલ્પ્પલાવા:=મિત:=પરિમિત: સાર્થક: મજુલ્પ્પ=મનોહર: પ્રલાપ=આલાપો યેપા તે તથા પરિમિતમત્પ્રમથુરભાપિણ: ‘હસિયગમ્भीરમધુરમણિયા’ હસિતગમ્भीરમધુરમણિતા:=હસિતમ્=હાસ્યયુક્ત ગમ્भीર=સારગર્ભ મધુર ચ મણિત=માપણ યેપા તે તથા ‘અમ્બુવગયવચ્છલા’ અમ્બુવગતપ્રત્સલા:=અમ્બુવગતેપુ-સમીપમાગતેપુ વત્સલા સ્નેહયુક્તા. ‘સરણ્ણા’ શરણ્યા:=શરણે સાધય ગરણાગત-રક્ષકા: ‘લક્ષણપ્રજ્ઞગુણોવવેયા’ લક્ષણવ્યજ્ઞનગુણોપેતા: = તત્ત્વ લક્ષણાનિ=

અપરાજિત શત્રુઓ કે માન કો ગલિત કર દેતે હૈં, અર્થાત્ પ્રવલ સે મી પ્રવલ વિરોધિયોં કે વે વિનાશક હોતે હૈં, તથા (રિઊસહસ્સમાણમદ્દના) હજારોં શત્રુઓ કે માન કો જો દેખતે ૨ લ્ષણમર મે નષ્ટ કર ઢાલતે હૈં। એવ (સાણુક્કોસા) અપને આશ્રિત વ્યક્તિયોં કી સદા રક્ષણ કરતે રહતે હૈં (અમચ્છરી) દૂસરોં કે શુભ સે જિનકે ચિત્ત મેં થોડા સા મી દ્રેષ નહીં જગતા હૈં, અર્થાત્ પરકે સુખસે સુખી હોતે હૈં (અચવલા) મન, વચન એવ કાયકી ચચલતાસે જો રહિત હોતે હૈં (અચણ્ડા) વિના કારણકે જિન્હેં ક્રોધ નહીં આતા હૈં (મિયમજુલ્પ્પલાવા) મિત-સાર્થક તથા મનોહર જિનકા આલાપ હોતા હૈં, અર્થાત્-જો પરિમિત સત્ય મધુરભાષી હોતે હૈં। (હસિયગમ્भीરમધુરમણિયા) જો હાસ્યયુક્ત, સારગર્ભિત ઓર મધુર ભાષણ કરતે હૈં (અમ્બુવગયવચ્છલા) જો અપને નિકટ આવે હુણ પ્રાણિયોંકે સાથ

શત્રુઓનુ માનમર્દન કરી નાખે છે, એટલે કે પ્રળામા પ્રળા શત્રુનો પણ તેઓ નાશ કરનાર હોય છે, તથા “રિઊસહસ્સમાણમદ્દના” હજારો શત્રુઓને જે ભેટ ભેટામા-ક્ષણવારમા મહાત ડરે છે, અને એ ગીતે તેમનુ માનમર્દન કરે છે, “સાણુક્કોસા” પોતાના આશ્રિતોનુ સદા રક્ષણ કરે છે, “અમચ્છરી” અન્યને લાલ થતો ભેદને જેમના ચિત્તમા સહેજ પણ દ્રેષ થતો નથી, એટલે કે તેઓ પરના મુખે મુખી થનાર હોય છે, “અચવલા” મન, વચન કાયાની ચ ચળતાથી જે રહિત હોય છે, “અચણ્ડા” વિના કાંઈ જેમને ક્રોધ થતો નથી, “મિયમજુલ્પ્પલાવા” મિત-સાર્થક તથા મનોહર જેમના વચન હોય છે, અથવા જે પરિમિત સત્ય મધુર વાણી વાળા હોય છે, “હસિયગમ્भीરમધુરમણિયા” જે હાસ્યયુક્ત સારગર્ભિત અને મધુર ભાષણ કરે છે “અમ્બુવગયવચ્છલા” જે પોતાની પાસે આવતા પ્રાણીઓ તરફ સ્નેહાળ હોય છે, “સરણ્ણા” શરણે આવેલની

પુનસ્તે કીદશાઃ ? इत्याह— ‘ अपराजिय ’ इत्यादि—

મૂળ—અપરાજિય સત્તુમદ્દના રિડસહસ્સમાળમદ્દના સાણ-
કોસા અમચ્છરી અચવલા અચંદામિયમંજુલપલાવા હસિય
ગંભીરમહુરભણિયા અવ્ભુવગયવચ્છલા મરણના લક્ષ્ણ
વજળગુણોવવેયા માણુમ્માળપમાળપડિપુણા મુજાયસવ્વંગ
સુંદરગા સસિસોમગારા કંતા પિયદસણા અમરિત્તણા પયંડ
દડપ્પયારગમ્મીરદરિસીણજા તાલજ્ઞયા ઉવ્વિજ્ઞગરૂલ
કેઝવલવગગજ્જત દરિય-દપ્પિયમુટ્ટિયચાણૂરચૂરગારિટ્ટવસમ
ઘાઙ્ગો કેસરિમુહવિપ્પાડગા દરિય નાગદપ્પમહણાજમલ-
જ્જુણમંજગા મહાસડિણિપૂયણરિપૂ કસમડમોડગા જરાસધ-
માળમહણા તેહિય અવિરલસમસંહિયચદમડલસમપ્પભેહિ-
સૂરમરીઙ્કવયં વિણિમુયંતેહિ સપ્પડિદ્દેહિ આયવત્તેહિ
ધરિજ્જંતેહિ વિરાયંતા ॥ સૂ. ૭ ॥

टीका:—‘ अपराजियसत्तुमददना अपराजितशत्रुमर्दना = अपराजितान् =
अन्यैरनिर्जितान् शत्रून् मर्दयन्ति ये ते तथा प्रमलशत्रुविनाशका इत्यर्थः, अतएव

दूसरों का बल इनके समक्ष टिक नहीं सकता है, इसलिये ये अतिबल
वाले होते हैं, तथा (अनिहया) शत्रुओं के शस्त्रके आघात से ये वर्जित
रहते हैं, ऐसे ये बलदेव और वासुदेव भी कामभोगों की तृप्तिसे विहीन
बनकर ही मरणधर्म को प्राप्त करते हैं ॥ सू. ६ ॥

फिर वे कैसे होते हैं सो कहते हैं—‘ अपराजिय ’ इत्यादि ।

टीकार્થ—(અપરાજિય સત્તુમદ્દના) જો બલભદ્ર ઓર નારાયણ

આઘાતથી તેઓ રહિત હોય છે એવા એ બળદેવ અને વાસુદેવ પણ કામભો
ગોની તૃપ્તિથી રહિત બનીને જ-અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુ પામે છે ॥ સૂ. ૬ ॥
તેઓ કેવા હોય છે તેનું વધુ વર્ણન કરતા કહે છે— “ અપરાજિય ” ઇત્યાદિ

टीकार्थ—“ अपराजिय सत्तुमददना ” ते बलभद्र અને नागयणु अपराजित

પ્રવચ્છ = દારુણોદ્ગ્રસ્તપ્રચારઃ = દુષ્ટદમનાઽઽવાનિશેષસ્તત્ર ગમ્भीરદર્શનીયા
 = ગમ્भीર = દુષ્ટજનચિત્તક્ષોભોત્પાદક દર્શનીય = સ્વરૂપ યેષા તે તથા
 સત્પુરુષાણા કૃતે ચન્દ્રત્ પ્રિયદર્શના, દુર્જનાનાં કૃતેષુ કાલસદૃશાં ઇતિ
 ભાવ 'તાલજ્ઞયા' તાલધ્વજાઃ=તાલઃ=તાલવૃત્તાદ્ધિતો ધ્વજો યેષા તે તથા તાલ-
 ધ્વજા ચલદેવાઃ, 'તાગ્રાહ્યો ગુસલીહલો' ઇત્યમર, તથા 'ઉચ્ચિજ્ઞગરુડકેઙ્ગ'
 ઉચ્ચિજ્ઞગરુડકેતવઃ=ઉચ્ચિજ્ઞઃ=શ્રત્યુચ્ચિત્તો ગરુડકેતુઃ=ગરુડાદ્ધિતો ધ્વજો યેષા તે
 તથા વાસુદેવાઃ 'વચ્ચગગજ્જતદરિયદપ્પિયમુદ્ધિચાણૂરચૂરમા' ચલદ્ ગર્જદ્
 દ્વસર્પિતમાપ્તિરુચાણૂરચૂરમાઃ = તત્ર ચલવત્ — મહાશક્તિમમ્પન્ન ગર્જન્તઃ=
 'કોઽન્યોઽસ્માદ્ગો મલ્લઃ, ઇતિ મદ્વાયોપ કુવેન્તઃ, તથા દ્વસર્પિતઃ=દ્વસર્પિત્વપિ
 દર્પિતઃ=અતિગર્વયુક્ત મૌલિક ચાણૂર ચ=તત્તન્નામક મલ્લ ચુરયન્તિ યે તે તથા

કર સકતે હૈં- (પચહ્-દહ્-પચાર-ગમ્भीર-દરિસણિજ્ઞા) દારુણ દહ કે
 પ્રચાર મેં જિનકી આકૃતિ વહુતભારી ગમ્भीર બન જાતી હૈ, અર્થાત્
 દુષ્ટો કો દમન કરને રૂપ આજ્ઞા મેં જિનકી આકૃતિ દુષ્ટજનોં કે લિયે
 ચિત્તમેં કાલકી તરહ ક્ષોભોત્પાદક બનતી હૈ ઓર સજ્જનોંકે લિયે ચન્દ્ર
 કી તરહ પ્રિયદર્શન ચાલી હોતી હૈ । (તાલજ્ઞયા ઉચ્ચિજ્ઞગરુડકેઙ્ગ-
 ગલગજ્જતદરિયદપ્પિયમુદ્ધિચાણૂરચૂરમા) તથા હનમે ચલદેવ કી ધ્વજા
 તાલવૃક્ષ કે ચિહ્ન સે અકિત્ત હોતી હૈ ઓર વાસુદેવ કી ધ્વજા ગરુડ કે
 ચિહ્ન સે અકિત્ત રહતી હૈ ઓર વહુત ઝૂંચી હોતી હૈ । ચલદેવ ને કૃષ્ણ
 કો મારેને કે લિયે કસ દ્વારા પ્રવર્તિત કિયે હુવ મહાયુદ્ધ મેં 'કૌન હમારે
 જૈસા પહલવાન હૈ' હસ અભીમાન સે જો મદોન્મત્ત બનકર ઘોષણા કર
 રહે-૯૫ અત્યત્ત મદ સે હનમત્ત બને હુવ થે-૯૬ સૌલિક નામકે મહા કો

નથી “ પચહ્-દહ્-પચાર-ગમ્भीર-દરિસણિજ્ઞા ” દા૩૫ ૬૩ પ્રહાન ઠરતી વખતે
 જેમનો દેખાવ ધણો ગભીર થઈ જાય છે એટલે કે દુષ્ટોને શિક્ષા કરવાની
 આજ્ઞા આપતી વખતે જેમનો દેખાવ દુષ્ટ લોકોને માટે યમદેવના જેવો ક્ષોભ
 ઉત્પાદક બની જાય છે અને સજ્જનો માટે તેમની યુગ્માકૃતિ ચન્દ્રની જેમ
 પ્રિયદર્શનવાળી હોય છે “ તાલજ્ઞયા ઉચ્ચિજ્ઞ ગરુડ કેઙ્ગચલગગજ્જતદરિયદપ્પિય
 મુદ્ધિચાણૂરચૂરમા ” તેઓમાના બળદેવની ધ્વજા તાલવૃક્ષની નિયાની વાળી હોય
 છે અને વાસુદેવની ધ્વજા ગરુડના નિયાનવાળી હોય છે અને ધણી ઊંચી,
 હોય છે કૃષ્ણને મારવા માટે ક્રમ દ્વારા કરવાયેલ મહાયુદ્ધમા બળદેવે “મારા
 જેવો પહેલવાન ઠોણ છે ” એવા અભિમાનથી જે મદોન્મત્ત બનીને ઘોષણા
 ફરી રહ્યો હતો એવા મૌલિક નામના મહાને મારી નાખ્યો અને વાસુદેવ

સ્તરેલાદીનિ સામુદ્રિકશામોક્તાનિ, તથા વ્યન્નનાનિ ચ=મપતિલસાદીનિ ગુણાઃ= શૌર્યાદયસ્તૈરુપેતાઃ યુક્તાઃ, ' માણુમ્માણપમાણપહિપુણા મુનાયમન્ગમુદરગા ' માનોન્માનપ્રમાણપ્રતિપૂર્ણમુજાતમર્ગાદ્મુન્દરાદ્ઘાઃ = માનોન્માનઃ પ્રમાણેઃ = તથા માન-શરીરભાર, ઉન્માન=શરીરોન્મૂળ, પ્રમાણ=સમુચિતશરીરાવયવચ્ચ, તૈઃ પ્રતિપૂર્ણાનિ=મુજાતાનિ=સુપુટાયા સમુપચ્ચાનિ સર્વોપચ્ચાનિ=અવયવા અમિન્ તદ્વ ચિધ મુન્દરમદ્ન=શરીર ચેપા તે તથા સરુલમુન્નમ્ન ઋક્ષિતમુપ્પમપમાણમુન્દરશરીરાત્પર્યઃ ' સસિમોમાગારા ' શશિસૌમ્યાકારા-ચન્દ્ર-ચત્તૌમ્યાકૃતિસમ્પન્નાઃ, ' કતા ' ' કાન્તા =રુમનીયાઃ ' પ્રિયદમ્પણ ' પ્રિયદર્શના =નનોજહ્વા ' અમરિસણા ' અમરપણ = અત્યાચારાસહિષ્ણવઃ ' પયહદ્વડપ્પયારગભીરદરિસણિજ્ઞા '

સ્નેહશીલ હોતે હૈં (સરણા) શરણાગતકી રક્ષા કરતે હૈં (લક્ષ્મણવ્રજગુણોવવેયા) જો સામુદ્રિક શાસ્ત્રોક્ત રેગા આદિ શુભચિન્હોસે, તથા મપા તિલક આદિ શુભ વ્યજનોસે એવ જૌર્યાદિક સદ્ગુણોસે યુક્ત હોતે હૈં માણુમ્માણપમાણપહિપુણા મુજાય મન્ગમુદરગા) શરીર ભારરૂપ માનસે, શરીરકી ઝંચાઈ રૂપ ઉન્માનસે તથા સમુચિત શરીરાવયવરૂપ પ્રમાણસે, પ્રતિપૂર્ણ, એવ સુન્દર રૂપવાળે સમસ્ત અવયવ જિસમે હૈં એસે સુઠાવને શરીર સે જો યુક્ત હોતે હૈં અર્થાત્ ઉનકા શરીર સમસ્ત સુલક્ષણોં સે યુક્ત, સુપુટ ઓર પ્રમાણોપેત હોને સે પૂર્ણ સુન્દર હોતા હૈ, (સસિ-સોમાગારા) જિનકી આકૃતી ચંદ્રમા કે જૈસી સૌમ્ય હોતી હૈ, (કના) જો સબકે લિયે વહે પ્રિય લગતે હૈં (પ્રિયદમ્પણ) ઉનકા દર્શન મન કો વહુત અધિક આહાદ જનક હોતા હૈ (અમરિસણા) જો અત્યાચાર કો સહના વહુત હી વુરા માનતે હૈ-અર્થાત્-જો અત્યાચાર કો સહન નહીં

જે રક્ષા કરનાર હોય છે, “ લક્ષ્મણવ્રજગુણોવવેયા ” જેવો સામુદ્રિક શાસ્ત્રોક્ત રેગા આદિ શુભ ચિન્હોથી તથા મપા તિલક આદિ શુભ વ્યજનોથી અને શૌર્યાદિક સદ્ગુણોથી યુક્ત હોય છે, “ માણુમ્માણપમાણપહિપુણામુજાયમન્ગમુદરગા ” શરીરભાર રૂપ માનથી, શરીરની ઉચાઈરૂપ ઉન્માનથી, તથા સપ્રમાણ શરીરાવયવરૂપ પ્રમાણથી, પ્રતિપૂર્ણ અને સુદર શરીરથી જે યુક્ત છે, એટલે કે તેમનું શરીર સમસ્ત સુલક્ષણો વાળું, સુપુટ અને સપ્રમાણ હોવાથી સંપૂર્ણ રીતે સુદર હોય છે, “ સસિસોમાગારા ” જેમની આકૃતિ ચંદ્રમાના જેવી સૌમ્ય હોય છે, “ કતા ” જે સૌને ઘણા જ પ્રિય લાગે છે “ પ્રિયદમ્પણ ” જેમના દર્શન મનને અત્યંત આનંદદાયક હોય છે “ અમરિસણા ” જે અત્યાચારને સહન કરવો તે બહુજ ખરાબ ગણે છે એટલે કે અત્યાચારને સહન ની ગતિ

મચ્છ = દારુણોદ્ધમચ્ચારઃ = દુષ્ટદમનાઽઽનામિશેષસ્ત્ર ગમ્भीરદર્શનીયા
 = ગમ્भीર = દુષ્ટજનચિત્તક્ષોભોત્પાદક દર્શનીય = સ્વરૂપ યેષા તે તથા
 સત્પુરુષાણા કૃતે ચન્દ્રગત્ પ્રિયદર્શના, દુર્જનાના કૃતેષુ કાલસદૃશા ઇતિ
 ભાવ 'તાલજ્ઞયા' તાઽધ્વજાઃ=નાઃ=તાઽઽધ્વજાઽધ્વજો યેષા તે તથા તાલ-
 ધ્વજા યલદેવાઃ, 'તાઽઽધ્વજો મુસલીદલી' ઇત્યમર, તથા 'ઉન્વિજ્ઞગરુડકેઙ્ક
 ઉદ્વિદ્વગરુડકેતવઃ-ઉદ્વિદ્વઃ=અત્યુચ્ચિત્તો ગરુડકેતુઃ=ગમ્હાઽધ્વજો યેષા તે
 તથા વાસુદેવાઃ 'વટગગજ્જતદરિયદપ્પિયમુદ્વિચાણૂરચૂરગા' યલગ્દ્ ગર્જદ્
 દ્વપ્તદર્પિતમાષ્ટિકાણૂરચૂરકાઃ = તત્ર યલવત — મહાશક્તિમમ્પન્ન ગર્જન્ત=
 'કોઽન્યોઽસ્માદ્ગો મલ્લઃ, ઇતિ મહાયોષ કુવેન્તઃ, તથા દ્વપ્તદર્પિત=દ્વપ્તેષ્વપિ
 દર્પિત=અતિગર્વયુક્ત મૌષ્ટિક ચાણૂર ચ=તત્તન્નામક મલ્લ ચુરયન્તિ યે તે તથા

કર સકતે હૈં- (પયહ-વટપ્પયારગમીર-દરિસણિજ્ઞા) દારુણ વટ કે
 પ્રચાર મેં જિનકી આકૃતિ ઘટતભારી ગમીર ઘન જાતી હૈ, અર્થાત્
 દુષ્ટોં કો દમન કરને રૂપ આજ્ઞા મેં જિનકી આકૃતિ દુષ્ટજનોં કે લિયે
 ચિત્તમેં કાલકી તરહ ક્ષોભોત્પાદક ઘનતી હૈ ઓર સજ્જનોંકે લિયે ચન્દ્ર
 કી તરહ પ્રિયદર્શન વાલી હોતી હૈ । (તાલજ્ઞયા ઉન્વિજ્ઞગરુડકેઙ્ક
 ગલગજ્જતદરિયદપ્પિઅમુદ્વિચાણૂરચૂરગા) તથા ઇનમે ઘલદેવ કી ધ્વજા
 તાલવૃક્ષ કે ચિહ્ન સે અકિત હોતી હૈ ઓર વાસુદેવ કી ધ્વજા ગરુડ કે
 ચિહ્ન સે અકિત રહતી હૈ ઓર ઘટત ઝૂંચી હોતી હૈ । ઘલદેવ ને કૃષ્ણ
 કો મારેને કે લિયે કસ દ્વારા પ્રવર્તિત કિયે દુષ્ટ મહાયુદ્ધ મેં 'કૌન હમારે
 જૈસા પહલવાન હૈ' હસ અભીમાન સે જો મદોન્મત્ત ઘનકર ઘોષણા કર
 રહે-ઘવ અત્યત મદ સે ઉન્મત્ત ઘને દુષ્ટ થે-એસે મૌષ્ટિક નામકે મહા કો

નથી “ પયહ-વટપ્પયાર-ગમીર-દરિસણિજ્ઞા ” દાઃષ્ણ દડ પ્રદાન કરતી વખતે
 જેમનો દેખાવ ઘણો ગભાર થઈ જાય છે એટલે કે દુષ્ટોને શિક્ષા કરવાની
 આજ્ઞા આપતી વખતે જેમનો દેખાવ દુષ્ટ લોકોને માટે યમદેવના જેવો ક્ષોભ
 ઉત્પાદક બની જાય છે અને મનુષ્યો માટે તેમની મુખાકૃતિ અન્દ્રની જેમ
 પ્રિયદર્શનવાળી હોય છે “ તાલજ્ઞયા ઉન્વિજ્ઞ ગરુડ કેઙ્કગલગજ્જતદરિયદપ્પિય
 મુદ્વિચાણૂરચૂરગા ” તેઓમાના બળદેવની વ્વળ તાલવૃક્ષની નિરાની વાળી હોય
 છે અને વાસુદેવની ધ્વજા ગરુડના નિરાનવાળી હોય છે અને ઘણી ઉંચી,
 હોય છે કૃષ્ણને માગવા માટે ડમ દ્વારા કરવાયેલ મહાયુદ્ધમા બળદેવે “મારા
 જેવો પહેલવાન ડોણ છે ” એવા અભિમાનથી જે મદોન્મત્ત બનીને ઘોષણા
 કરી રહ્યો હોતો એવા મૌષ્ટિક નામના મદલને મારી નાખ્યો અને વાસુદેવ

મહાસલમાષ્ટિકાચાણૂરાદિમત્તત્તિચમરાઃ કૃષ્ણચાર્ય કર્ત્તેન પ્રવર્તિતે મન્ત્ર-
 સુદે ચત્રામેળ મૌષ્ટિકામિથાના મત્તયે ચામુદ્રેચન ચ ચાણૂગમિથાનો મન્ત્રો નિહતઃ
 ઇતિ । ‘ રિદ્ધસમઘાદ્ગો ’ રિદ્ધપમઘાતિનઃ = રિદ્ધામિથાનકલપત્તીર્દઘાતકાઃ,
 ‘ કેસરિમુહવિષ્કાઢગા ’ કેસરિમુહવિસ્ત્રાટકાઃ = ૩૬ વિશેષણ ત્રિપૃષ્ઠામિથમ્મ
 ચામુદ્રેનાપેક્ષયા યોગ્યમ્ । મ હિ નગરોપદ્રવચારિ ઘનકાનનનિગામિ મહાસિંહ
 મુલ્લ વિદારિતયાન્ । ‘ દરિયનાગદપ્પમઠ્ઠના ’ દપ્પનાગદર્પમથના = યમુના નિવાસિ
 મહાવિપકાલનાગર્ગરિનાશકાઃ, ‘ જમલજ્જુગમજ્જના ’ યમગર્જુનમજ્જનાઃ =
 યમલર્જુનમ્મરિનાશકાઃ તો હિ પિતૃપૈરિણો વિચારરો યમગર્જુનનામકો વૃક્ષરૂપ
 વિકુર્ચ્ય પથિ સ્થિતો ચુર્ગિતચન્તઃ । ‘ મહાસઽણિપૂયણરિઝ ’ મહાશકુનિપૂતના-
 રિપવઃ = મહાશકુનિઃ પૂતના ચ વિદ્યાધરપત્ન્યો, તયો રિપવઃ । ચાલ્યાવસ્થાયા

મારા, તથા ચાસુદવ કૃષ્ણ ને ચાણૂર નામકે મહા કો મારા યહી શ્વાત
 “ ચલચગ ગજ્જત ” હસ પદ દ્વારા પ્રદર્શિત કી गई है । તયા (રિદ્ધ-
 સમઘાદ્ગો) જો કસ કે રિદ્ધ નામ કે માયાવી ચલીવર્દ કે ઘાતક યે
 તથા (કેસરિમુહવિષ્કાઢગા) કેસરી સિંહ કે મુલ્લ કો બી ફાડ દેતે યે,
 યહ વિશેષણ ત્રિપૃષ્ઠ નારાયણ કી અપેક્ષા કતા ગયા જાનના ચાહિયે,
 ક્યોં કિ ઉન્હી ને નગર મેં ઉપદ્રવ મચાને ચાલે જગલી સિંહ કે મુલ્લ કો
 વિદારિત ક્રિયા હૈ । (દરિયનાગદપ્પમઠ્ઠના) તથા જિસ નારાયણને
 યમુના નિવાસી મહાવિપૈલે કાલી નામકસર્પ કા વિનાશ ક્રિયા હૈ—તથા
 (જમલજ્જુગમજ્જના) નારાયણ ને પિતા કે વૈરી દો વિદ્યાધરોં કો કી
 જિનકા નામ યમલ ઓર અર્જુન યા ઓર જો માર્ગ મેં વૃક્ષ કા રૂપ
 અપની વિક્રિયા સે ઘનાકર સ્થે હો ગયે યે ડનકો મારા હૈ (મહાસઽ
 ણિ પૂયણરિઝ) તથા જો વિદ્યાધર કી મહાશકુનિ એવ પૂતના નામક દો

કૃષ્ણે ચાણૂર નામના મત્તલને માર્યો એ જ શ્વાત “ ચલચગગજ્જત ” પદ દ્વારા
 બતાવવામા આવી છે તથા ‘ રિદ્ધસમઘાદ્ગો ’ એ કસના રિદ્ધ નામના
 માયાવી ચલીવર્દના ઘાતક હતા તથા “ કેસરીમુહવિષ્કાઢગા ” સિંહના
 મુખને પણ ફાડી નાખતા હતા તે વિશેષણ ત્રિપૃષ્ઠ નારાયણને અનુલક્ષીને
 વપરાયુ છે, કારણ કે તેમણે નગરમા ઉપદ્રવ મચાવનાર જ ગદ્દી સિંહના મુખને
 ચીરી નાખ્યુ હતુ “ દરિયનાગદપ્પમઠ્ઠના ” તથા જે નારાયણે યમુનામા રહેતા
 અતિરાય ઝેરી કાળીનાગને વશ કર્યો છે, તથા “ જમલજ્જુગમજ્જના ” નારા
 યણે તેમના પિતા યમળ અને અર્જુન નામના બે દુરમન વિદ્યાધરો, કે જે
 માર્ગમા પોતાની વૈદિક્ય શક્તિથી વૃક્ષના રૂપ લઈ ઉભા થઈ ગયા હતા
 તેમને માર્યા હતા. “ મહાસઽણિપૂયણરિઝ ” તથા જે વિદ્યાધરની મહાશ નિ અને

कृष्णस्ते इतवानित्यर्थः 'कममउडमोडगा' कममुकुटमोटकाः=कसमुकुटसञ्चरकाः,
कृष्णो हि चाणूरग्रानन्तर कुपित कम युयुत्स मुकुटदेश गृहीत्वा सिंहासनादाकृष्य
भुविनिपात्य जयान् । तथा 'जरासधमाणमहणा' जरासन्धमानमथनाः=जरासन्धग
र्विनाशका, जरासन्धग्रानका इत्यर्थः, कसवधकुपित रावगृहनगरपति जरासन्धा-
मिथान युद्धायोग्यत इत्यन् । पुनः कीदृशाः ? इत्याह—'तेहि य अनिरलसम-
सहिय चदमडलममपभेहिं सूरमरीइ कय विणिम्यतेहिं सप्पडि दडेहिं आयवत्तेहिं
धरिज्जतेहिं विरायता ' तत्र 'तेहिं' तैश्चातिशयमद्भिश्चत्रैर्विराजमानाः, इति
सम्बन्धः कीदृशैश्चत्रैः ? इत्याह—अनिरलमममहितचन्द्रमण्डलसमप्रभैः=अनिरलानि
=यनानि-घनशयकास्तात्, समानि = तुल्यानि स्थूलत्वेन दीर्घत्वेन च शशका-

स्त्रियों के रिपु थे—क्यों कि बाल्यावस्था में कृष्ण ने इन दोनों को मारा
था, तथा (कसमउडमोडगा) कृष्ण ने कस के मुकुट को चूर २ कर
दिया था—अर्थात्—चाणूर मल्ल के वध करने के अनन्तर जब कस युद्ध
करनेकी इच्छावाला हो गया तो उसे मुकुट को पकड़ कर कृष्णने सिंहा-
सन से नीचे खेच लिया और जमीन पर पटक कर मार डाला, इसी तरह
(जरासधमाणमहणा) कृष्णने—राजगृह नगर के अधिपति जरासध
नाम के राजाओं को मारा हैं, कस के वध हो जाने के बाद जब
जरासध कुपित होकर युद्ध करने के लिये उद्यत हो गया था तो कृष्ण
ने उसे बात-ही-बात में संग्राम भूमि में नष्ट कर दिया था, तथा (तेहि-
य अनिरल समसहियचद मडलसमपभेहिं सूरमरीइकय विणिम्यते-
हिं सप्पडिदडेहिं आयवत्तेहिं धरिज्जतेहिं विरायता) जो अतिशय शाली
छत्रों से विराजमान होते हैं अर्थात्—जिन छत्रों से बलदेव और वासुदेव
सुशोभित होते हैं उन छत्रों की शलाईयां बहुत अधिक घनीभूत होती

पूतना नाम्नी जे श्रीगोना दुश्मन हुता अने ते कारखे भाणपणुभा तेमखे
जे भन्नेने भागी हुती, तथा “ कसमउडमोडगा ” कृष्णे उभना मुगटना थूरे
थूरा ठरी नाभ्या हुता आखुर भटलनो कृष्णे वध ठर्या पागी न्यारे उमे
कृष्णे माथे लडवानी धृष्टा भतापी त्यारे कृष्णे तेनो मुगट पडडीने तेने मिडा
सन उपगथी नीचे जेथीने जमीन उपर पछाडीने भागी नाभ्ये, आ रीते
“ जरासधमाण महणा ” कृष्णे राजगृह नगरना राजा जगमधनो वध ठर्यो
हुतो कसनो वध थया पछी न्यारे जरासध कोधे लगधने लडवाने तैथार
थयो त्यारे कृष्णे जेठ घडीमा तेनो रणुभेदानमा वध कय्यो हुतो तथा “ तेहि य
अनिरलसमसहियचदमडलसमपभेहिं सूरमरीइ कय विणिम्यतेहिं दडेहिं
आयवत्तेहिं धरिज्जतेहिं विरायता ” तेओ धण्डा सजिया वाणा छत्रोथी शोभता

ના સમત્યાત્ દ્વયોર્દયો ગતારૂપોસ્તગલમ્પાપિ સમત્યાચ, મહિ ॥નિ-શલાકાનાં
 નિમ્નોન્નતરદિવત્યાત્, તાનિ તથા-ચન્દ્રમણ્ડલસમપ્રમાણિ ત્રુત્તમ્યેન ચન્દ્રમણ્ડલ
 સમા પ્રમા યેવા તાનિ તથા તે-તથા 'ગરમરીકરમ િગિમ્નુયનેદિ' સૂરમી
 ચિ કચ ચિનિર્ગુચ્છદિ.-સૂરમરીચયઃ=પૂર્યશ્ચિરનામ્તદ્વા મરીચયઃ દેવીપ્યમાનમથૂત
 મણિરત્નૈઃ સર્વતઃ સ્વચિતત્યાત્, તેષાં કચમિત્ત કચ=પરિકરઃમણ્ડલ્યાકારપરિણ
 તત્યાત્, ત ચિનિર્ગુચ્છદિ.=વતામ્પદિઃ, તથા 'મણ્ડિદ્દેદિ' સપતિદ્દેદિ=અતિવિ-
 શાલત્યાદેકેન દણ્ડેન ધારણા શમ્યત્યા પતિન્નડમદિતઃ 'આવત્તેદિ' જાતપત્રૈઃ=

હૈં, સ્થૂલતા અઘ્ન દોર્યના મે સમાન હોતી હં તથા દો દો શલાકાઓં કા
 અન્તરાલ ભી સમ હોતા હૈ તથા યે સય શલાકાઁ ઝૂંચી નીચી નહીં
 હોને કે કારણ, અર્થાત્-અક સી હોને કે કારણ પરસ્પર મેં સહિત-
 મિલી હુઈ હોતી હૈ, હસલિયે યે છત્ર અવિરલ, સમ ઓર સહિત હોતે હૈ।
 તથા હન સય છત્રોં કી પ્રભાવૃત્ત-ગોલ-હોને કે કારણ પૂર્ણચંદ્ર મંડલ
 જૈસી હોતી હૈ। તથા-યે સમસ્ત ઝત્ર દેવીપ્યમાન અનેક મણિયોં એ
 રત્નોં સે જડે હુઈ હોને કે કારણ જિસ કિરણ જાલ કો ઝોડતે હૈ વહ
 એસા માલૂમ પડતા હૈ કિ વહ સૂર્ય કી કિરણોં કા હી જાલ હૈ, કયોં કિ
 વહ આસપાસ મેં મંડલાકાર સે પરિણત થના રહતા હૈ। તથા હન
 છત્રોં મેં વિશાલ આકારવાલે હોને કે કારણ ભિન્ન ૨ દડે લગે રહતે હૈ
 ઇક હી દડે કે સહારે યે નહી રહતે હૈ, કયોં કિ ઇક હી દડે સે હનકા
 અતિ વિશાલ હોને કે કારણ સમાલના અઘ્નક્ય હોતા હૈ। એસે ત્રિય

હોય છે એટલે કે જે છત્રો બળદેવ અને વાસુદેવ ઉપર ધગ્વામા આવે છે
 તે છત્રોના સળિયાઓ ઘણી જ પામે પાસે હોય છે, બડાઈ અને લબાઈમા
 સરખા હોય છે, તથા જે મળિયાઓ વચ્ચેનું અંતર પણ સરખું હોય છે તથા
 તે સળિયા લાખા દૂકા નહીં હોવાને કારણે, એક સરખા હોવાને કારણે પર-
 સ્પર બેઠાયેલ હોય છે, તેથી તે છત્ર અવિરલ, સમ અને સહિત હોય છે
 અને તે સઘળા છત્રોનો પરીઘ ગોળ હોવાને કારણે તે પૂર્ણચન્દ્ર જેવા લાગે
 છે તથા તે છત્રો પર અનેક તેજસ્વી મણીઓ અને રત્નો બેઠેલા હોય છે
 તેથી તેમાથી જે કિરણ બાળ નિંડળે છે તે સૂર્યની કિરણબાળ જેવી લાગે છે,
 કારણ કે તે આસપાસમા મંડલાકારે પથરાયા કરે છે તે છત્રો ઘણા વિશાળ
 હોવાથી તેને આધાર આપવાને અનેક દડા રાખ્યા હોય છે એક જ દડાને
 આધારે તે રહી શકતા નથી, કારણ કે તે છત્રો એટલા વિશાળ હોય છે કે
 એક જ દડા વડે તેને સલાળવા અશક્ય ગણાય છે એના મધ્યમાન છત્રોથી

महाछत्रैः ' धरिज्जतेहि ' आर्यमाणैः ' विरायता ' विगजमानाः । ये एतादृशा-
स्तेऽपि काम भोगानृप्ता एव मरणधर्मवृषणमन्तीति योगः ॥ सू० ७ ॥

पुनः कीदृशास्ते ? इत्याह— ' ताद्विय ' इत्यादि—

मूलम्—ताहिय पवरगिरिकुहर-विहरण-समुद्धियाहि निरु-
वहयचमरिपच्छिमसररिसजायाहि अमइल-भियकमल-
विमुकुलुज्जलियरययगिरि-निहरविमलसभिकिरण-सरिसक-
होयनिम्मलाहि पवणाहयचवलचलिय—सललियनच्चिय-
वीइपसरिय-खीरोदगपवर-सागरुप्पूर-चवलाहि माणससर-
पसर-परिचियावास-विसय-वसाहि कणगगिरि-सिहर संसि-
याहि ओवाउप्पाय-चवल-जविय-सिग्घवेगाहि हसवधूयाहि
चेव नानामणिकणग-महरिह-तवणिज्जुज्जल-विचित्तदडाहि
सललियाहि नरवइसिरिसमुदयप्पगासणकराहि वरपट्ठणु-
गयाहि समिद्धरायकुलसेवियाहि कालागुरुपवरकुदुरुक्कतुरुक्क
धूववासविसिद्धगंधुदूयाभिरामाहि चिल्लियाहि उभओ पासपि
चामराहि उक्खिप्पमाणाहि सुहसीयलवायवीयियंगाअजिया
अजियरहा हलमुसलकणगपाणी सखचक्कगयसत्तिणं दग-
धरा पवरुज्जलसुकय-विमलकोथुभ-किरीडघारी कुडल उज्जो-
इयाणणा पुडरीयणवणाएगावलिकठ राइयदच्छा सिरिवच्छ
सुलळणा वरजसा सव्वाउय सुरभि कुसुमरइयपलव-सोहत

माण छत्रों से ये विराजमान रहते हैं । ऐसे ये चलदेव और वासुदेव
भी काम भोगों से जतृप्त बने रहते हैं और इसी स्थिति में मरणधर्म
को प्राप्त करते हैं ॥ सू० ७ ॥

शैलता गणदेव अने वासुदेव पण कामभोगोथी अतृप्त रहे छे ओ स्थितिभा
भरथु पावे छे ॥ सू०-७ ॥

વિયસત વિચિત્રવળમાલ રહ્યવચ્છા અટ્સયવિભત્તલમ્ભવળ-
પસત્થસુંદર - વિરાઈયંગુવંગા મત્તગયવરિંદ-લલિય - વિક્રમ
વિલસિય-ગર્દકાડિસુત્તકનીલ પીય-કોસેજ્જવાસસા પવરદિ-
ત્તતેયા સારયળવથળિય-મહુરગંભીર-ગિદ્ધવોસા નરસીહા
સીહવિક્રમગર્દ અત્થમિય પવરરાયસીહા સોમ્મા વારવર્દિપુણ
ચંદા પુઠ્ઠવકયતવપ્પભાવા નિવિટ્ઠસચિયસુહા અળેગવાસ
સયમાઉન્વતો મજ્જાહિયજળવયપ્પહાણાહિં લાલિયતા
અડલ-સદ્ધફરિસ-રસરૂવગથે ય અણુભવિત્તા તે વિ ઉવળ
મંતિ મરણધમ્મં અવિતિત્તા કામાણં ॥ સૂ. ૮ ॥

ટીકા:— ‘તાહિય’ તામિશ્ર વ્યયમાળવિશેષણવિશિષ્ટામિશ્વામરામિશ્વરિત્તિ
પ્યમાનામિ: સુલ શીતલવાયવીજિતાદ્વાયલદેગમુદેયા, ઇતિ સમ્યન્ધ: । કથ-
મ્મૂતામિશ્વામરામિ: ? ઇત્યાદિ— ‘પવરગિરિકુહરવિહરણસમુદ્ધિયાહિં’ પવર-
ગિરિકુહરવિહરણસમુદ્ધિયામિ: = પવરગિરિણાં યાનિ કુહરાણિ = ગદ્ધરાણિ તેષુ યદ્

ફિર વે કૈસે હોતે હૈં સો કહતે હૈં—‘તાહિય’ ઇત્યાદિ. ।

ટીકાર્થ:— (તાહિય ઉક્તિવ્યવમાળાહિં ચામરાહિં સુહસીયલ-
વાય વીહયગા) જન વ્યયમાળવિશેષણો સે વિશિષ્ટ ઢોલે ગયે ચામરો
કી સુલપ્રદ શીતલ વાયુ સે જિનકા અગ વીજિત હોતા રહતા હૈં એસે
બલદેવ ઓર વાસુદેવ મી કામ સે અતૃપ્ત હી મરણ કો પ્રાપ્ત કરતે હૈં-
એસા સવધ યદા મી લગા લેના ચાહિયે । અવ સૂત્રકાર ચામરોં કૈ
વિશેષણો કો સ્પષ્ટ કરતે હૈં — (પવરગિરિકુહરવિહરણસમુદ્ધિયાહિં)
જબ ચમરી ગાય ઉત્તમ પર્વતોં કી શુષ્કાઓં મે વિચરણ કરતી હૈં તથ વહ

હલ્લ તેઓ કેવા હોય છે તેનુ વધુ વર્ણન કરે છે—“તાહિય” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“તાહિય ઉક્તિવ્યવમાળાહિં ચામરાહિં સુહસીયલવાયવીહયગા” આ
પ્રમાણેના વિશેષણોવાળા, ચામરોવાડે ઢોળવામા આવતા આનંદદાયક શીતળવાયુ
વડે જોમના આજો વાયુનુ સેવન કરી રહેલા છે એવા તે બળદેવે અને વાસુ
દેવ પણ કામલોગથી અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુને પથે પળે છે એવો સબધ
અહીં પણ સમજી લેવો હવે સૂત્રકાર ચામરોના વિશેષણોની સ્પષ્ટતા કરે છે
“પવરગિરિકુહરવિહરણસમુદ્ધિયાહિં” જ્યારે ચમરી ગાય ઉત્તમ પર્વતોની

વિહરણ ચમર્યાચ્યગવીના વિચરણ તસ્મિન્ કાલે સમુદ્વૃતાઃ કણ્ઠકટ્થક્ષ
સલગ્નમયાદ્ ઝ-ર્ગીકૃતા યાસ્તાસ્તથા, તાભિઃ, ' નિરુવહ્યચમરિપચ્છિમસરીર-
સજાયાર્હિ ' નિરુપહતચમરીપશ્ચિમશરીરસઙ્ગાતાભિઃ = નિરુપહતાના = નીરોગાણા
ચમરીણાં=ગો ત્રિશેપાણા પશ્ચિમશરીરે=પુચ્છપદેશે સઙ્ગાતાભિઃ = સમુત્પન્નાભિઃ
' અમઙ્લસિયકમલવિમુકુલુજ્જલિયરયયગિરિસિહરવિમલસમિકિરણસરિસ કલ્ધો
યનિમ્મલાર્હિ ' અમલિનસિતકમલવિમુકુલોજ્જ્વલિતરજતગિરિશિખર—વિમલ-
શશિકિરણસદૃશકલયૌતનિર્મલાભિઃ તત્ર ' અમઙ્લસિયકમલ ' અમલિનસિત-
કમલમ્=અમલિન=અમ્લાન શીતાતપાદિમિઃ યત્ સિતકમલ=શ્વેતકમલ ઘ્રુણ્ડરીક
તચ વિમુકુલ=પ્રિસિત તથા ' ઉજ્જલિયરયયગિરિસિહર ' ઉજ્જ્વલિતરજતગિરિ
શિખરમ્=ઉજ્જ્વલિત=ભાસ્વર યદ્ રજતગિરિશિખર તથા વિમલશશિકિરણાઃ =
વિમલાઃ=નિર્મલા યે શશિન =ચન્દ્રસ્ય કિરણાશ્ચ તત્સદૃશાઃ કલયૌતવત્=શુદ્ધરજત-
ર્નિર્મલાઃ=ધવલાયાસ્તાસ્તથા તાભિ-અમ્લાનવિકસિતશ્વેતકમલોજ્જ્વલરજતપર્વત-
શિખરવિમલચન્દ્રકિરણશુદ્ધરજતપદુજ્જ્વલાભિરિત્યર્થઃ । તથા ' પવણાહ્યચવ

વસ સમય કણ્ઠકમય વૃક્ષો મે લગ જાને કે મય સે અપની પૂઠ કો ડુંચા
ઉઠા લેતી હૈ—ઇસલિયે યહા પ્રકટ કિયા રહા હૈ કિ જો ચામર ચમરી
ગાયકી પૂઠ મેં ઉત્પન્ન હોને કે કારણ પ્રવરગિરિ કે કુહરોં મેં ભ્રમણ કાલ
કે સમય મેં ડુંચે ઉઠાયે ગયે યે તથા (નિરુવહ્યચમરીપચ્છિમસરીર-
સજાયાર્હિ) જો નિરુપહત-નિરોગ અવસ્થાવાલી ચમરી ગાયોં કી પૂઠ
મેં ઉત્પન્ન હુએ હૈં, તથા (અમઙ્લસિયકમલવિમુકુલુજ્જલિય રયયગિરિ
સિહરવિમલસસિકિરણસરિસકલધોયનિમ્મલાર્હિ) જો શીત આતપ
આદિસે મ્લાન નહી હુએ વિકસિત શ્વેત કમલ કે સમાન, ભાસ્વર,
રજત ગિરિ કે શિખર કે સમાન, નિર્મલચદ્ર કી કિરણોં કે સમાન, એવ
શુદ્ધ ચાદી કે સમાન નિર્મલ હોતે હૈં । તથા (પવણા હ્યચવલ ચલિય સલલિ-

શુક્લઓમા ક્વંતી હોય છે ત્યારે ઝટાળા વૃક્ષોમા ભરાઈ જવાની બીકે તે પોતાની
પૂછડીને ઊંચી રાખે છે તે ઢારણે અહીં ઓમ યતાવવામા આવ્યું છે કે જે
ચામર ચમરી ગાયની પૂછડીમા ઉત્પન્ન થવાને ઢારણે ઉત્તમ પર્વતની શુક્લ-
ઓમા ભ્રમણ કરતી વખતે ઊંચા ઉઠાવેલા હતા, તથા “ નિરુવહ્યચમરી-
પચ્છિમસરીરસજાયાર્હિ ” જે નીરોગી શરીર વાળી ચમરી ગાયની પૂછડીમા
ઉત્પન્ન થયેલ છે, તથા “ અમઙ્લ-સિયકમલ-વિમુકુલુજ્જાલિય-રયયગિરિસિહર-
વિમલસસિ-કિરણસરિસકલધોયનિમ્મલાર્હિ ” જે શીત, તાપ આદિના ઝાખા ન
પડેલ વિકસિત શ્વેત ડમળ સમાન, ભાસ્વર, રજતગિરિના શિખર સમાન,
નિર્મળ ચન્દ્રના કિરણો સમાન, અને શુદ્ધ ચાદીના જેવા નિર્મળ હોય છે,

વિયસત વિચિત્રવળામાલ રડયવચ્છા અદ્વૈતયત્રિભક્તલક્ષણ-
પસત્થસુંદર - વિરાડયંગુવળા મત્તગયવરિંદ-લલિય - વિક્રમ
વિલસિય-ગર્દકડિસુત્તકનીલ પીય-કોસેજ્જવાસસા પવરદિ-
ત્તતેયા સારયળવથળિય-મહુરગંભીર-ગિહ્વોસા નરસીહા
સીહવિક્રમગર્દ અત્થમિય પવરરાયસીહા સોમ્મા વારવર્ડ પુણ્ણ
ષંદા પુલ્લકયતવપ્પભાવા નિવિટ્ઠસંચિયસુહા અળેગવાસ
સયમાડવ્વતો ભજ્જાહિયજળવયપ્પહાળાહિં લાલિયતા
અડલ-સદ્ધફરિસ-રસરુવગધે ય અણુભવિત્તા તે વિ ઉવળ
મંતિ મરણધમ્મં અવિત્તિત્તા કામાણં ॥ સૂ. ૮ ॥

ટીકા:— ‘તાહિય’ તામિશ્વ વક્ષ્યમાણવિશેષણવિશિષ્ટામિશ્વમરામિકૃતિ
પ્યમાનામિ: સુલ્લ શીતલવાતરીજિતાદ્વાવલદેવગામુદેરા, ઇતિ સમ્યન્ધ: । કથ-
મ્ભૂતામિશ્વમરામિ: ? ઇત્યાહ— ‘પવરગિરિકુહરવિહરણસમુદિયાહિં’ પવર-
ગિરિકુહરવિહરણસમુદ્ધૃતામિ: = પવરગિરિણાં યાનિ કુહરાણિ = ગદરાણિ તેષુ યદ્

ફિર વે કૈસે હોતે હૈં સો ફરતે હૈં—‘તાહિય’ ઇત્યાદિ. ।

ટીકાર્થ:— (તાહિય ઉચ્ચિત્તપ્પમાણાહિં ચામરાહિં સુહસીયલ-
વાય વીહયગા) इन वक्ष्यमाण विशेषणों से विशिष्ट ढोले गये चामरों
की सुखप्रद शीतल वायु से जिनका अंग वीजित होता रहता है ऐसे
बलदेव और वासुदेव भी काम से अतृप्त ही मरण को प्राप्त करते हैं—
ऐसा सबध यहां भी लगा लेना चाहिये । अब सूत्रकार चामरों के
विशेषणों को स्पष्ट करते हैं — (पवरगिरिकुहरविहरणसमुदियाहिं)
जब चमरी गाय उत्तम पर्वतों की गुफाओं में विचरण करती है तब वह

હજી તેઓ કેવા હોય છે તેનું વધુ વર્ણન કરે છે—“તાહિય” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ:—“તાહિય ઉચ્ચિત્તપ્પ માણાહિં ચામરાહિં સુહસીયલવાયવીહ યગા” આ
પ્રમાણેના વિશેષણોવાળા, ચામરોવડે ઢોળવામાં આવતા આનંદદાયક શીતળવાયુ
વડે જોમના આગો વાયુનું સેવન કરી રહેલા છે એવા તે બળદેવે અને વાસુ
દેવ પણ કામલોગથી અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુને પથે પળે છે એવો સબધ
અહીં પણ સમજી લેવો હવે સૂત્રકાર ચામરોના વિશેષણોની સ્પષ્ટકા કરે છે
“પવરગિરિકુહરવિહરણસમુદિયાહિં” જ્યારે ચમરી ગાય ઉત્તમ પર્વતોની

પાતોત્પાત ચપલ જ્વિત શીઘ્રમેગાભિઃ=અવપાતઃ-ઝર્ચીભૂયાઃપતનમ્, ઉત્પાતઃ= અધોભૂતોર્જગમન, તયો. ચપલ =ચન્દ્રલઃ જ્વિતઃ=મેગયુક્ત ખતએવ શીઘ્ર મેગો= ગતિર્યાસાં તાસ્તથા તાભિઃ ' હસનમૂયાહિં ચેવ ' હસનમૂયમિરિવ=હસીમિરિવ- હસીપ્રતીતીયમાનામિરિત્યર્થ. । પુન. કથમ્ભૂતાભિશ્ચામરાભિઃ ? ક્ત્યાહ—' નાનામણિકગમહરિહ તવણિજ્જુજ્જલવિચિત્તદહાહિં ' નાનામણિ વનક મહાર્હતપની- યોજ્જ્વલવિચિત્તદણ્ડાભિઃ-તત્ર નાનાવિધામણય = ચન્દ્રકાન્તાદયઃ કનક=પીત- વર્ણ સુવર્ણ તથા મહાર્હ=વહુમૂલ્ય યત્ તપનીય ચ=રક્તવર્ણ સુવર્ણ તૈરેતૈરુજ્જ્વલા.= માસ્વરાઃ વિચિત્રા = મણિસુવર્ણાદોના સમ્મિશ્રિતકાન્તિભિશ્ચિત્રઃ વિચિત્રા દણ્ડા યાસા તાસ્તથા તાભિ. વિવિધમણિચિત્રરક્તપીતસુવર્ણદણ્ડયુક્તાભિઃ, યથા સુવર્ણ- ગિરિશિખરે સ્થિતા હસ્યઃ શોભમાના સમુદ્ભવતિ તથા સુવર્ણગિરિસ્થાનીય સુવર્ણ દણ્ડોપરિસ્થિતાભિ. ધવલત્વાત્ હસીમિરિતિભાવઃ । તથા ' સલલિયાહિં ' સલલિ

અવપાત-ઝંચે જાને મેં જિન કી ગતિ વહુત અધિક વેગ કો લિયે હો રહી હૈ ણેસી (હસવધૂપાહિં ચેવ) હસ વધૂઓ કે સમાન જો ચામર અપની શુષ્કતા કે કારણ જ્ઞાત હો રહે હૈ । તથા (નાનામણિકગમહરિહ તવણિજ્જુજ્જલવિચિત્તદહાહિં) જિન ચામરોં કે દહ ચંદ્રકાન્ત આદિ નાના પ્રકાર કી મણિયો કી કાતિ સે, પીતસુવર્ણ કી પ્રભા સે, એવ વહુમૂલ્ય તપે હુણ રક્તવર્ણ વાલે સુવર્ણકી આભાસે-ઇન સવકી પરસ્પર મિશ્રિત કાન્તિ નહટા સે-અધિક ઉજ્જલ ઓર રંગ વિરંગે માલૂમ દે રહેં હૈ, અર્થાત્ જિસ પ્રકાર સુમેરુપર્વત કે તટ પર સ્થિત હૈસ કામનિયાં સુહાવની લગતી હૈ ઉસી પ્રકાર યે ચામર ભી સુવર્ણગિરિ કે શિખર-તટ જૈસે દહોં પર સ્થિત હોને કે કારણ અપની ધવલતા કે કારણ હસનિયોં કે સમાન પ્રતીત હોતે હૈ (સલલિયાહિં) યે ચામર

ધેગાહિં ” ઊચેથી નીચે આવવામા અને નીચેથી ઊચે જવામા જેની ગતિ ઘણી ઝડપી હોય છે એવી “ હસનમૂયાહિં ચેવ ” હસવધૂઓ (હમલીઓ) જેવા જે આમરો પોતાની શ્વેતતાને ઝરણે લાગે છે તથા “ નાનામણિકગમહરિહ- તવણિજ્જુજ્જલવિચિત્તદહાહિં ” જે આમરોના દહો ચન્દ્રકાન્ત આદિ વિવિધ પ્રકારના મણીઓના કાતિથી, પીતસુવર્ણની પ્રભાથી, અને તપાવેલા બહુમૂલ્ય વાન રત્નવર્ણના સુવર્ણની આભાથીએ બધાની પરસ્પર મિશ્રિત કાન્તિથી-અધિક ઉજ્જ્વળ અને રંગ બે રંગી લાગે છે, એટલે કે જેમ સુમેરુ પર્વતના શિખરો પર રહેલી હમલીઓ સુદર લાગે છે એ જ પ્રમાણે તે આમરો પણ સુવર્ણ ગિરિના શિખર જેવા દહો ઉપર આવેલ હોવાથી પોતાની શ્વેતતાને ઝરણે હમલીઓ જેવા લાગે છે “ સલલિયાહિં ” તે આમરો લાલિત્ય વાળા હતા,

લચલિયસઠલિયનચિપરીપમરિય-લીરોદગપરમાગરુપૂરચલાહિ ' પવનાહત-
 ચપલચલિતસઠલિતનર્તિતગીનિમગ્નલીરોદગપરમાગરોત્પૂરનપગમિ. = તપ
 પયનેન = વાયુના જાહત = ઘટિતઃ, અતપન ચપલ યથાસ્યાસ્તયા
 ચલિતઃ સલલિત=સપ્લિગિત ચ નર્તિતઃ=ગતિચિગેય માત્ર, તથા ગીનિમિ=તરંગૈઃ
 પ્રસૃતઃ ક્ષીરોદગપરમાગરસ્ય = ક્ષીર માગરસ્ય ચ ઉત્પૂર=જલમપ્રસ્તાદન્ ચપ-
 લામિ =ચચલામિઃ યદુઞ્ચપલતરંગયુક્તક્ષીરમાગરનોરપ્રવાહસ્વતીયમાનામિઃ,
 અથ હસવધુભિરુપમયચ્છાહ ' માણમસરપસરપરિચિયાવાસવિસયવેસાહિ ' માનસ
 સરઃ પ્રસરપરિચિતાવાસવિગદ્વેવામિ.=માનમસરસઃ પ્રમરે=વિસ્તૃતપ્રદેશે પરિચિતઃ
 =અભ્યસ્ત આવાસઃ=નિરન્તરનિવાસ., અતગ્ચ વિગદઃ=ચલત્ર વેપો=વર્ણો યાસાં
 તાસ્તથાવિયામિઃ, ' કળગગિરિસિહરસસિયાહિ રુનકગિરિશિવરસશ્રિતામિઃ=
 સુમેરુતટવિહારિણીમિઃ, અતપ્ચ ' ઓવાડપ્પાયચવલજવિયસિગ્ધવેગાહિ ' અવ
 યનચ્ચિયહયપસરીયલીરોદગપરમાગરુપૂરચલાહિ) વાયુ સે આહત
 હોને કે કારણ અત્યત ચપલ ઘને હુળ ઓર ફસી સે જો માનો વિલાસ
 સહિત હોકર નૃત્ય કર રહા હે, તથા તરંગોને જિસે વિશેષ વિસ્તૃત કર
 દિયા હૈ એસે ક્ષીરસાગર કે પ્રવાહ કે સમાન જો ચચલ હૈ અર્થાત્
 અત્યત ધવલ તરંગોં સે યુક્ત ક્ષીરસાગર કે પ્રવાહ કે જૈસે જો દિહ્યાઈ
 દે રહે હૈં । તથા (માણસસરપસરપરિચિયાવાસવિસયવેસાહિ) જો
 હસવધુ કે સમાન પ્રતીત હો રહે હૈં, હસી માનમરોવર મેં રહતી હૈં ફસી
 વિષય કો લેકર સૂત્રકાર કહતે હૈં કિ માનસરોવર કે વિસ્તૃત પ્રદેશ મેં
 અભ્યસ્ત નિરન્તર નિવાસ કે વગ સે જિન હમવધુઓં કા વર્ણ ધવલ
 હો ગયા હૈ, ઓર (કળગગિરિસિહરસસિયાહિ) જો સુમેરુપર્વત કે
 તટો પર વિહાર કરતી હૈં, તથા (ઓવાડપ્પાયચવલજવિયસિગ્ધવેગાહિ)

તથા " પવનાહયચવલ-ચલિય-સઠલિય-નચ્ચિયલીર-પસરિય-લીરોદગપર-માગ
 રુપૂરચલાહિ " પવન આવવાને કારણે ચપલ બનેલ અને તે ઝારણે નાણે
 વિલાસી બનીને નૃત્ય કરતા હોય તેવા તથા તરંગોએ બેને વધારે વિસ્તૃત
 કરી નાખેલ છે એવા ક્ષિર સાગરના પૂર સમાન જે ચચળ છે—એટલે કે
 સફેદ તરંગોથી યુક્ત ક્ષીરસાગરના પ્રવાહ જેવા જે જોઈ દેખાઈ રહ્યા છે, તથા
 " માણસસર-પસર-પરિચિયાવાસવિસય-વેસાહિ " જે હસલીઓના જેવા લાગે
 છે, હસલી માનસરોવરમા રહે છે તે વિષયને અનુલક્ષીને સૂત્રકાર કહે છે કે
 માનસરોવરના વિસ્તૃત પ્રદેશમા હમેશા રહેવાને ઝારણે ને હસલીઓના રંગ
 શ્વેત થઈ ગયો હોય છે, અને—“ કળગગિરિસિહરસસિયાહિ ” જે સુમેરુ
 પર્વતના શિખરો પર વિહાર કરે છે, તથા “ ઓવાડપ્પાયચવલજવિયસિગ્ધ

‘उभओ पामपि’ उभयोरपि पार्श्वयोः, ‘उक्त्विप्पमाणाहिं’ उक्त्विप्पमाणाभिः= वीज्यमानाभिः-सञ्चाल्यमानाभिरित्यर्थः, ‘चामराहिं’ चामराभिः=वालव्यजनैः, चामरशब्द स्त्रीलिङ्गोऽपि ‘चामर चमराऽपि च’ इति भेदनी कोपात्, ‘सुहसीयलना-य’ सुख शीतलयाताभिः मृत्रे लुप्तविभक्तिक पदम्, सुखदः शीतलश्च वातः=वायुर्यासा तास्तथा ताभिः ‘वीड्यगा’ वीजीताङ्गाः=वीजीतान्यङ्गानि येषां ते तथा ‘अजिया’ अजिताः=अन्यैरपराजिता ‘अजियरहा’ अजितरथाः=अपराजितरथाः ‘हलमु-सलकणगपाणी’ हलमुसलकनकपाणयः= हल च मुसल च कनक=मनकाभरण बलय इत्यर्थः=हस्ते येषां ते तथा हलमुसल कनक पाणयो बलदेवाः । वासुदेवाश्च ‘सख चक्रगयसत्तिणदगधरा’ शङ्ख चक्रगदाशक्ति नन्दनधराः=शङ्ख=पाञ्चजन्या भिधचक्र=सुदर्शनारथ, गदा=कौमोदकी शक्तिः=शस्त्रविशेष, नन्दकश्च=खड्ग, एतान् धरन्ति ये ते तथा, वासुदेवविशेषणमिदं, ‘पवरुज्जलसुकयविमलकोथुभ किरीडधारी’ प्रवरोज्ज्वलसुकृतविमलकौस्तुभकिरीटधारिण = प्रवरोज्ज्वलः =

ये अपनी कान्ति से बहुत अधिक देदीप्यमान हो रहे थे। ऐसे ये (चामराहिं) चामर कृष्ण और बलदेव की (उभओ पासपि) आजू बाजू में-दोनों पार्श्वभागों में-ढोले जा रहे थे। (सुहसीयल वायवीड्यगा) इनसे निर्गत सुखद और शीतल वायु से इनका शरीर वीजा जाता था (अजिया) ये बलदेव और वासुदेव अन्य व्यक्तियों द्वारा अपराजित थे। (अजियरहा) इनके रथ को रोकने की किसी भी व्यक्ति में शक्ति नहीं थी, इसलिये ये अजित रथ थे। (हलमुसलकणगपाणी) बलदेव के हाथ में हल मुसल तथा सोने के आभरण अर्थात् कड़े रहते थे। पाञ्चजन्य नामका शङ्ख, सुदर्शन नामका चक्र, कौमोदकी नामकी गदा, शक्ति नामका शस्त्र और नदक नामकी तलवार, ये सब कृष्ण वासुदेव के पास रहते थे। अत्यन्त भास्वर, (पवरुज्जलसुकयविमलको-

“चिल्लियाहिं” तेजो तेमनी कान्तिथी द्रष्टु न तेजम्बी लागता होता येवा ते “चामराहिं” आभरो कृष्ण अने भणदेवनी “उभयो पासपि” आनुभा-
 लुये अने पडजे ढोणवामा आवता होता “सुहसीयलवायवीड्यगा”
 तेनाथी उत्पन्न थोता शीतल अने सुखद वायु तेमना शरीरपर वीजातो होता
 “अजिया” ते भणदेव अने वासुदेव जीन बोडो द्वारा अपराजित होता
 “अजियरहा” तेमना रथोने रोकवानी ताकात कोर्ष पण व्यक्तिमा न होती
 तेथी तेजो अजितरथ होता “हलमुसलकणगपाणी” भणदेवना हाथमा हल,
 मुसल अने सोनाना उडा रहेता होता पाञ्चजन्य नामको शङ्ख, सुदर्शनचक्र,
 कौमोदकी नामकी गदा, शक्ति नामको शस्त्र अने नदक नामकी तलवार ये अणु
 कण वासुदेव पात्रे गडेन रतु “पवरुज्जलसुकय-विमल-कोथुभ-किरीडधारी”

તામિઃ = લાલિત્યયુક્તામિઃ, 'નરવદ્ સિરિસમુદયપ્પગામણકરાહિં' નરપતિ શ્રી સમુદયમકાશકરામિ = રાજલક્ષ્મી પ્રકર્ય મૂલિકામિઃ, 'વરપટ્ટણ્ગયાહિં' વરપત્ત નોદ્ગતામિઃ = શિલ્પિપ્રધાનનગરનિમિત્તામિ, 'સમિદ્ધરાયકુલસેવિયાહિં' સમિદ્ધરાજકુલસેવિતામિઃ = પિતૃપિતામહાદિ પરમ્પરયા સમાગતામિ, તેઃ પરિષ્ઠતામિરિત્યર્થઃ, 'કાલાગુરુપવરકુદુરુકધૂવનામગમિદ્ધગધુદ્ધૂયામિરામાહિં' કાલાગુરુપવરકુન્દુરુકતુરુકધૂવનિદ્ધિગન્ધોદ્ધૂતામિરામામિઃ = તત્ર કાલા ગુરુઃ = કૃત્તિગાગુરુઃ પ્રવર = પ્રધાન - સર્વોત્તમં, કુન્દુરુક = ચીડારયગન્ધદ્રવ્ય, તુરુક = તુરુકદેશોદ્ધવ - સિદ્ધકામિધગન્ધદ્રવ્ય 'લોચાન' इति भाषा प्रसिद्धम्, इत्येतद्व્યક્ષણा यो धूपाः = धूपविशेषास्तेषा यो वासः = वासना तेन निशिष्टः = निस्पृष्टो गन्धः स उद्भूतः = परितो विमारी तेन अभिरामाः = मनोहा वास्वास्तथा तामिः, नाना विधधूपगन्धयुक्तामिरित्यर्थः 'चिल्लियाहિं' देदीप्यमानामि. देशीशब्दोऽयम्,

લાલિત્ય સે યુક્ત યે । તથા (નરવદ્ સિરિસમુદયપ્પગામણકરાહિં) જિનકે ઝપર યે ઢોરે જાતે હેં ઁનકી યે રાજલક્ષ્મી કે પ્રકર્ય કે સૂચક હોતે હેં । તથા (વરપટ્ટણ્ગયાહિં) સાધારણ સ્થાનોં મેં યે નહીં બનાયે જાતે હેં કિન્તુજો શિલ્પિપ્રધાન નગર હોતે હેં ઁનહીં મેં યે નિર્મિત હોતે હેં । તથા (સમિદ્ધરાયકુલસેવિયાહિં) થલદેવ ઓર વાસુદેવ પર જો ચામર ઢોરે જા રહે થે-ઢે ઁનકી વશપરપરા સે ચલે હુણ આ રહે થે । (કાલાગુરુપવરકુદુરુક તુરુકધૂવવાસવિસિદ્ધગધુદ્ધૂયામિરામાહિં) યે ચામર કાલાગુરુ ઉત્તમ ચીડા નામરુગધદ્રવ્ય તથા લોચાન કો જલાકર ઁનકી ગધ સે વાસિત કિયે હુણ થે, અતઃ. ઁનકી ચારોં ઓર સુગધ નિકલ કર ફેલ રહી થી ઁસસે યે વઢે મનોહર લગતે થે । તથા (ચિલ્લિયાહિં)

તથા " નરવદ્ સિરિસમુદયપ્પગામણકરાહિં " જેમની ઉપર તે ઢોળાય છે, તેમની રાજલક્ષ્મીની વિપુલતાના તે સૂચક હોય છે તથા " વરપટ્ટણ્ગયાહિં " સાધારણ સ્થાનોમા તે ઇનતા નથી પણ જે શિલ્પ પ્રધાન નગરો હોય છે, તેમા જ તે ચામરો ઇનાવવામા આવે છે તથા " સમિદ્ધરાયકુલસેવિયાહિં " ઇળદેવ ઁને વાસુદેવ પર જે ચામરો ઢોળવામા આવતા તે તેમની વશપરપરાથી ચાલ્યા આવતા હતા " કાલાગુરુ-પવરકુદુરુક-તુરુક-ધૂવવાસ-વિસિદ્ધ-ગધુદ્ધૂયામિરામાહિં " તે ચામરોને ઢાળા અગર, ઉત્તમ ચીડા નામનુ સુગંધીદાર દ્રવ્ય, તથા ઢોળાનનો ધૂપ ઢઈને તેમના ગધથી સુગધ યુક્ત ઇનાચા હતા, તેથી તેમની સુગધ ચામેર ફેલાઈ રહી હતી તેથી તે મનોહર લાગતા હતા તથા

‘ उभओ पासपि ’ उभयोरपि पार्श्वयोः, ‘ उक्त्विष्यमाणाहि ’ उत्तिष्यमाणाभिः= वीज्यमानाभिः-सञ्चाल्यमानाभिरित्यर्थः, ‘ चामराहि ’ चामराभिः=वालव्यजनैः, चामरशब्द स्त्रीलिङ्गोऽपि ‘ चामर चमराऽपि च ’ इति मेदनी कोपात्, ‘ सुहसीयलवाय ’ सुख शीतलवाताभिः सूत्रे लुप्तविभक्तिरु पदम्, सुखदः शीतलश्च वातः=वायुर्यासा तास्तथा ताभिः ‘ वीह्यगा ’ वीजीताद्वाः=वीजीतान्यद्वा नि येषां ते तथा ‘ अजिया ’ अजिताः=अन्यैरपराजिता ‘ अजियरहा ’ अजितरथाः=अपराजितरथाः ‘ हलमुसलकणगपाणी ’ हलमुसलकणरुपाणयः= हल च मुसल च कनक=कनकाभरण वलय इत्यर्थः=हस्ते येषां ते तथा हलमुसल कनक पाणयोऽलदेवाः । वासुदेवाश्च ‘ सख चक्रगयसत्तिणदगधरा ’ शङ्ख चक्रगदाशक्ति नन्दनधराः=शङ्ख=पाञ्चजन्या मिथःचक्र=सुदर्शनाख्य, गदा=कौमोदकी शक्तिः=शस्त्रविशेष, नन्दकथ=खड्ग, एतान् धरन्ति ये ते तथा, वासुदेवविशेषणमिदं, ‘ पवरुज्जलसुकयविमलकोथुमकिरीडधारी ’ प्रवरोज्ज्वलसुकृतविमलकौस्तुभकिरीटधारिण = प्रवरोज्ज्वलः =

ये अपनी कान्ति से बहुत अधिक देदीप्यमान हो रहे थे। ऐसे ये (चामराहि) चामर कृष्ण और बलदेव की (उभओ पासपि) आज्ञा बाजू में-दोनों पार्श्वभागों में-ढोले जा रहे थे। (सुहसीयल वायवीह्यगा) इनसे निर्गत सुखद और शीतल वायु से इनका शरीर वीजा जाता था (अजिया) ये बलदेव और वासुदेव अन्य व्यक्तियों द्वारा अपराजित थे। (अजियरहा) इनके रथ को रोकने की किसी भी व्यक्ति में शक्ति नहीं थी, इसलिये ये अजित रथ थे। (हलमुसलकणगपाणी) बलदेव के हाथ में हल मुसल तथा सोने के आभरण अर्थात् कड़े रहते थे। पाञ्चजन्य नामका शङ्ख, सुदर्शन नामका चक्र, कौमोदकी नामकी गदा, शक्ति नामका शस्त्र और नन्दक नामकी तलवार, ये सब कृष्ण वासुदेव के पास रहते थे। अत्यन्त भास्वर, (पवरुज्जलसुकयविमलको-

“ चिल्लियाहि ” तेजो तेमनी कान्तिथी धृष्टा न तेजस्वी लागता होता जेवा ते “ चामराहि ” आभरे कृष्ण अने भणदेवनी “ उभयो पासपि ” आज्ञाभा-
लुजे भन्ने पडजे ढाणवाभा आवता होता “ सुहसीयलवायवीह्यगा ” तेनाथी उत्पन्न थतो शीतल अने सुखद वायु तेमना शरीरपर वीजातो हुतो
“ अजिया ” ते भणदेव अने वासुदेव पीन दोडो द्वारा अपराजित हुता
“ अजियरहा ” तेमना रथाने शङ्खानी तागत कोर्ष पणु व्यक्तिमा न हुती
तेथी तेजो अनितरथ हुता “ हलमुसलकणगपाणी ” भणदेवना हाथमा हल, मुसल अने सोनाना उडा रहेता हुता पाञ्चजन्य नामको शङ्ख, सुदर्शनचक्र, कौमोदकी नामकी गदा, शक्ति नामको शस्त्र अने नन्दक नामकी तलवार जे भणु कृष्ण वासुदेव पावे रहेतु हुतु “ पवरुज्जलसुकय-विमल-कोथुम-किरीडधारी ”

અતિભાસ્વરઃ ગુરુતઃ=મુકુટ રચિતો વિમલઃ=સ્વલો યઃ કૌસ્તુભો મણિવિશેષસ્ત તથા
 ફિરીટ=મુકુટ ચ ધારયન્તિ યે તે તથા હ્રદમપિ ગામુદેવ વિશેષગમ્ । 'કુડ્ડલ ઉઝ્જો
 વિયાળના' કુડ્ડલોદ્યોતિતાનના = કુડ્ડલ = ર્ણભૂષણે - ઉદ્યોતિત = પ્રકાશિત
 માનન = મુલ્ય યેષા તે તથા, 'પુઢરીયણયણા' પુઢરીયનયના = રમત્રાયા 'ણા
 વલિકઠરહ્યવચ્છા' ણકાવગ્રીયઠરચિનયસસ = ણકાવગ્રીયઠરે રચિના = ણકાવ-
 લમ્બિની સતોકૃતા યસમિ = યસ મ્યન્તે યેષા તે તથા 'સિરિવચ્છસુલછણા' શ્રી-
 વત્સસુલાઠઠનાઃ = શ્રીવત્સ = શ્રીવત્સઃ સ્વસ્તિકવિશેષઃ ય એવ ગોમન લાગ્ન્ય યેષા
 તે તથા 'વરજસા' વરયજસ = વિશ્રુતકીર્તયઃ । 'સન્વોડયસુરમિકુસુમરહય-પલવ
 સોહત-વિયસત-વિચિત્તવળમાલરહય-વચ્છા' સર્વતુરુમુરમિકુસુમરચિત-પલવ
 શોભમાનવિકુસદ્ધિચિત્રયનમાઝા રચિતયસમ = સર્વતુરુઃ = મર્તુર્ભવ મુરમિકુસુમૈ =
 સુગન્ધિપુષ્પૈઃ રચિતાઃ = નિર્મિતા પ્રાગ્મ્યશોભમાના-પલવમાનત્વેન સુશોભના

ધુમકિરિટધારી) અત્યંત ભાસ્વર અચ્છી તરફ સે રચિત, તથા સ્વચ્છ
 એસા કૌસ્તુભ રત્ન તથા ફિરીટ-મુકુટ ઇન્દ્રે કુણ વાસુદેવ ધારણ કરતે
 થે । તથા (કુડલ ઉઝ્જોડયાળના) ઇન દોનોં ખાઈયોં કા મુગ્ધ કર્ણા-
 ભૂષણોં સે સદા પ્રકાશિત રહતા થા । (પુઢરીયણયણા) ઇનકે નયન
 પુઢરિક- (શ્વેતકમલ) જૈસે શોભાયમાન થે । (ણાવલિકઠરહ્યવચ્છા)
 કઠ મેં જો યે ણાવલી હાર પહિને હુણ યે વહ છાતી તક લટકના થા ।
 (સિરિવચ્છસુલછણા) શ્રીવત્સ નામક સ્વસ્તિક વિશેષ ચિહ્ન ઇનકે
 વક્ષસ્થલ મેં યા (વરજસા) ચારોં તરફ ઇનકી કીર્તિ ફેલી હુઈ થી,
 (સન્વોડયસુરમિકુસુમરહયપલવસોહતવિયસતવિચિત્તવળમાલરહ્યવચ્છા)
 ઇનકે વક્ષસ્થલ પર જો વનમાલા લટક રહી થી વહ સમસ્ત ઋતુ સર્વથી
 સુરભિતપુષ્પોં સે ગુચી હુઈ થી, એવ વહુત લયી થી, ઇસલીયે બઢી

અત્યંત ભાસ્વર-મુદર રીતે તૈયાર કરેલ, સ્વચ્છ કૌસ્તુભ રત્ન તથા ફિરીટમુ
 ગટ કુણવાસુદેવ ધારણ કરતા હતા તથા " કુડલઉઝ્જોડયાળના " તે બંને
 લાઠિઓના મુખ કર્ણભૂષણોથી સદા પ્રકાશિત રહેતા હતા, " પુઢરીયણયણા "
 તેમના નયન પુઢરી (સ્વેદ કમળ) જેવા મુદર હતા ' ણાવલીકઠરહ્યવચ્છા "
 ઠામા જે એક સરવાળો હાર પહેર્યો હતા તે છાતી સુધી લટકતા હતા
 " સિરિવચ્છસુલછણા " તેમના વક્ષસ્થળ ઉપર શ્રી વત્સ નામનું સ્વસ્તિક વિશેષ
 ચિહ્ન હતું, " વરજસા " તેમની કીર્તિ ચોમેર વ્યાપી હતી, " સન્વોડય-સુર
 મિકુસુમરહય-પલવ-સોહત-વિયસત વિચિત્તવળમાલ-રહ્યવચ્છા " તેમના વક્ષસ્થળ
 પર જે પુષ્પમાળા લટકતી હતી તે બધી ઋતુઓના મુગધિદાર ફૂલો વડે
 ગુથેલી હતી, અને બહુ લાગી હતી, તેથી તે ઘણી મુદર લાગતી હતી, તથા

વિકસન્તી-વિકસાયમાના વિચિત્રા=નાનારૂપકુમુદગ્રથિતત્વાચ્ચિત્રરૂપા યા વન-
માલા સા રચિતા વક્ષસિ=વક્ષઃસ્થલે યેપા તે તથા, 'અદ્વસયવિભક્ત-
લક્ષણપસત્યસુદરવિરાડયગુચ્ચગા' અદ્વસયવિભક્તલક્ષણપ્રશસ્તમુન્દરવિરાજિતાદ્વોપાદ્ધા = અદ્વ-
સયવિભક્તલક્ષણે-અદ્વોત્તરશતપ્રકારલક્ષણેઃ પ્રશસ્તૈઃ = શ્લાઘનીયૈઃ મુન્દરૈઃ=નય-
નાહ્વાદજનકૈઃ વિરાજિતાન્યદ્વોપાદ્ધાનિ યેપાં તે તથા અદ્વસયવિભક્તલક્ષણલક્ષિત
શરીરા इत्यर्थ, 'મત્તગયવરિંદલલિયવિક્રમવિલસિયગર્હ' મત્તગયવરેન્દ્રલલિત
વિક્રમવિલસિતગતયઃ=મત્તગયવરેન્દ્રસ્ય=પેરાવતસ્તેવ લલિત* સુવિલાસઃ યો વિક્રમ
ચક્રમણ-ગમન તદ્વત્, વિલસિતા=વિલાસયુક્તાઃ ગતિર્યેપા તે તથા 'કઠિસુત્તગ-
નીલપીયકોસેજ્જવાસમા' કઠિસૂત્રનીલપીતકૌશેયવાસસ = કઠિસૂત્રકાનિ =
કઠિસૂત્રપ્રધાનાનિ નીલપીતાનિ કૌશેય વાસાસિ=કૌશેયવસ્ત્રાણિ 'રેશમીવસ્ત્ર' इति
भाषा प्रसिद्धानि येषां ते तथानीलाम्बरा चलदेवाः, पीताम्बरा वासुदेवाः
इति घोष 'पवरदित्तेया' पवरदीप्ततेजसः = महात्तजस्विनः, 'सारयण

સુહાવની લગતી થી, તથા વિકસાયમાન યો, તથા વિવિધ પ્રકાર કે
પુષ્પોં સે ગ્રથિત હોને કે કારણ વહ રંગ વિરેંની યી, । (અદ્વસયવિભક્ત-
લક્ષણપસત્યસુદરવિરાડયગુચ્ચગા) પ્રશસ્ત-શ્લાઘનીય-એવ સુન્દર-નેત્રોં
કો આહ્વાદજનક એસે એક સૌ આઠ (૧૦૮) ભિન્નપ્રકાર કે લક્ષણોં સે
જિનકે અગ ઓર ઉપાગ સુશોભિત હોને એ, તથા (મત્તગયવરિંદ
લલિયવિક્રમવિલસિયગર્હ) પેરાવન કે વિલાસયુક્ત ગમન કે સમાન
જિનકો ગતિ વિલાસ સહિત હોતી યી, તથા (કઠિસુત્તગનીલપીયકો-
સેજ્જવાસસા) જિનકે પહિરે હુએ નીલે પોલે રેશમી વસ્ત્રોં (પીત અમ્બર
ધારી વાસુદેવ એવ નીલ અમ્બર ધારી ચલદેવ હોતે હૈં) પર કઠિસૂત્ર
બહુત હી અધિક સુહાવના પ્રતીત હોતા હૈં-અર્થાત્ જિન કે નીલે પોલે
રેશમી વસ્ત્ર ઓર કઠિસૂત્ર પ્રધાન હોતે હૈં । તથા (પવરદિત્તેયા) જો

વિકસિત હતી, તથા વિવિધ જાતના ફૂલોમાથી ગુચેલી હોવાથી ગંધેરગી હતી
“ અદ્વસયવિભક્ત-લક્ષણપસત્ય-સુદર-વિરાડયગુચ્ચગા ” પ્રશસ્ત-વખાણવાલાયક
અને સુદર નેત્રોને આનંદદાયક એવા એક મો આઠ (૧૦૮) ગુદા ગુદા
પ્રકારના લક્ષણોથી જેમના અગ ઉપાગો શોભતા હતા, તથા “ મત્તગયવરિ
ંદલલિયવિક્રમવિલસિયગર્હ ” એવાવતના વિલાસયુક્ત ગમન સમાન જેમની
ગતિ વિલાસયુક્ત હતી, તથા “ કઠિસુત્તગનીલપીયકોસેજ્જવાસસા ” જેમણે
પહેરેલા વાદળી અને પીળા વસ્ત્રો “ પીતામ્બર ધારી વાસુદેવ અને નીલામ્બર ધારી
અમ્બર ” પર કઠિસૂત્ર અત્યંત સુદર લાગતું હતું તથા “ પવરદિત્તેયા ”
જે મહોતેજસ્વી હતા તથા “ સારયણ-વણિય-મહુર-ગમીર-ગિદ્ધ ઘોડા ”

વધણિયમહુરગમીરણિદ્વયોસા ' શારદનસ્તનિતમધુરગમ્મીરસ્તિગ્ધ્યોપાઃ =
 શારદ=શરત્કાલિક યજ્ઞસ્તનિત = નૂતનો મેઘ યનિઃ તદ્દન્મધુરઃ-વર્ણસુખકરઃ
 ગમ્મીરઃ સ્તિગ્ધ્યઃ=સ્નેહજનકઃ ધ્યોપઃ=સદ્ગો યેપા તે તથા, 'નરસીહા' નરસિંહાઃ=
 નરેષુ સિંહાદય, એતત્સાધર્મ્યમાહ—' સીહવિક્રમગર્હ ' સિંહવિક્રમગતયઃ= સિંહસ્યેવ
 વિક્રમઃ=પરાક્રમઃ ગતિશ્ચ યેપા તે તથા ' અત્થમિયપવરરાયમીહા ' અસ્તમિત
 પ્રવરરાજસિંહાઃ=અસ્તમિતાઃ=અસ્ત પ્રાપિતાઃ પરાજિતાઃ પ્રસાઃ-પ્રિશ્ઠિયાઃ
 રાજસિંહાઃ=શૂરરાજાનો ચૈસ્તે તથા । ' સોમ્મા ' સૌમ્યાઃ=સૌમ્યરૂપાઃ ' વારવર્દ
 પુણ્ણચદા ' દ્વારાવતી પૂર્ણચન્દ્રાઃ=દ્વારકાપુર્યાઃ આઠાદકત્વાત્ પૂર્ણચન્દ્ર સ્વરૂપાઃ,
 ' પુન્વકયતવપ્પભાવા ' પૂર્વકૃતતપ પ્રભાવાત્ = પૂર્વભગવત્તત્પો માદાત્મ્યાત્ ' નિ
 વિદ્વસચિયસુહા ' નિષિષ્ટ સચ્ચિત્તમુલાઃ=નિષિષ્ટાનિ=લગ્નાનિ સચ્ચિતાનિ=પૂર્વ-
 ભગોપાર્જિતાનિ મુલ્લાનિ યેસ્તે તથા ' અળેગવાસસયમાડવ્વતો ' અનેક વર્ષશતા
 યુગ્મન્તઃવર્ષસહસ્રાધાયુષ્કાઃ, ' મજ્જાહિય જાળવયપ્પહાણાદિ ' માર્યામિથ જનપદ-

મહાતેજસ્વી હોતે હૈં તથા (સારયણવધણિયમહુરગમીરણિદ્વયોસા)
 જિનકા યોલના શરદકાલીન નવીનમેઘધ્વનિ કે જૈસા કર્ણસુખકર એવ
 સ્તિગ્ધ-સ્નેહજનક હોતા હૈં, તથા (નરસીહા) જો મનુષ્યોં કે ધીચ મૈં
 સિંહ કે જૈસે હોતે હૈં તથા (સીહવિક્રમગર્હ) જિનકા પરાક્રમ ઔર ગમન
 સિંહ કે સમાન હોતા હૈં, તથા (અત્થમિયપવરરાયમીહા) જો અપને પરાક્રમ
 સે-પ્રવર રાજસિંહોં કો અસ્તમિત-પરાજિત-કર દેતે હૈં । તથા જો
 (સોમ્મા) સૌમ્યરૂપ હોતે હૈં, એવ (વારવર્દપુણ્ણચદા) દ્વારકાપુરી કે
 આઠાદક હોનેકે કારણ જો પૂર્ણચન્દ્રસ્વરૂપ હોતે હૈં (પુન્વકયતવપ્પભાવા
 નિવિદ્વસચિયસુહા) તથા-જો પૂર્વકૃત તપ કે પ્રભાવ સે પરિલે ભવોં મૈં
 ઉપાર્જિત મુલ્લોં કો પ્રાપ્ત કરતે હૈં, તથા (અળેગવાસસયમાડવ્વતો) જો
 સૈકડો વર્ષોં કી આયુવાલે હોતે હૈં, તથા (મજ્જાહિય જાળવયપ્પહાણા-

જેમના શબ્દો શરદઋતુના મેઘધ્વનિ જેવા મધુર અને સ્તિગ્ધ-સ્નેહ જનક
 હતા, તેથી " નરસીહા " જે માણુઓની વચ્ચે સિંહ સમાન હતા તથા " સીહ
 વિક્રમગર્હ " જેમની ગતિ અને જેમનું પરાક્રમ સિંહ સમાન હતા, તથા
 " અત્થમિયપવરરાયસીહા " જે પોતાના પરાક્રમ વડે શ્રેષ્ઠ રાજામિહોને મહાત
 કરતા હતા તથા જે " સોમ્મા " સૌમ્ય હતા, અને " વારવર્દ પુણ્ણચદા "
 દ્વારિકાનગરીને આનંદ આપનાર હોવાને કારણે જે પૂર્ણચન્દ્ર હતા, " પુન્વકય
 તવપ્પભાવા નિવિદ્વસચિયસુહા " તથા જે પૂર્વે કરેલા તપના પ્રભાવથી આગ
 ળના ભવોમા ઉપાર્જિત મુળો પ્રાપ્ત કરે છે તથા " અળેગવાસસયમાડવ્વતો "
 જે સેકડો વર્ષના આયુષ્ય વાળા હોય છે, તથા " મજ્જાહિયજાળવયપ્પહાણાદિ

પ્રધાનાભિ = દેશ રત્ન રૂપાભિ. = 'લાલિયતા' લાલ્યમાનાઃ = પિલાસ્યમાનાઃ
'અતુલમદ્ધફરિસરમસ્ત્વગધેયઅણુમવિત્તા' અતુલશબ્દરમસ્ત્વગન્ધાશ્ચ અનુધૂય
'તે વિ' તેડપિ = તાદૃશાં અપિ 'અવિતિત્તા કામાણ' અવિત્તાઃ કામાના = કામભોગેષુ
ઠસિરદિતા એવ 'ઉવળમંતિ મરણધમ્મ' મરણધર્મમુપનમન્તિ ॥ સૂં ૮ ॥

પુનઃ કેડવ્રહ્મસેવિન ? ઇત્યાહ 'શુઙ્ગો મહલિય' ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—શુઙ્ગો મહલિયણરવરિદા સવલા સઅંતેઝરા સપ-
રિસા સપુરોહિયાડમચ્છંડંઞાયગસેણાવેઙ્ગ — મતિણીઙ્ગ — કુસલા
ણાણામણિ—રચણં-વિઙ્ગુલધણધણસચચ-નિહિસમિદ્ધકોસા, રજ્જ-
સિરિવિઙ્ગુલમણુમવિત્તા વિક્કોસંતા વલેણમત્તા તે વિ ઉવળ-
મંતિ મરણધમ્મ અવિત્તા કામાણં ॥ સૂં ૯ ॥

ટીકા—'શુઙ્ગો' શુદ્ધ = પુનરપિ 'મહલિય ણરવરિદા' માણ્ડલિકનર
વરેન્દ્રા. = મણ્ડલાધિપતય (સવલા) સવલાઃ = સેના સહિતાઃ 'સ અતેઝરા'

હિં લાલિયતા) જો જનપદપ્રધાનભૂત દેશો મેં રત્નરૂપ સે માની ગઈ
અર્થાત્—સર્વોત્કૃષ્ટ સ્ત્રિયોં કે સાથ આનંદ કરતે હૈં—વૈષયિક સુખોં, કો
ભોગતે હૈં (તેવિ) એસે વે ઘલદેવ ઓર વાસુદેવ મો (અતુલસદ્ધફરિસ-
રસસ્ત્વગધેય અણુમવિત્તા) અતુલ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ રૂપ, એવ ગધ રૂપ
વિષયોંકા અનુભવ કરકે મો (અવિત્તાકામાણ) કામભોગોં કી ઠસિસે
વિહીન હી (ઉવળમંતિમરણધમ્મ) મરણધર્મકો પ્રાપ્ત કરતે હૈં ॥ સૂં ૮ ॥

અવ સૂત્રકાર “ઓર કૌન અબ્રહ્મસેવી હોતે હૈં” ઇસ વાત કો
કહતે હૈં—'શુઙ્ગો મહલિયણરવરિદા' ઇત્યાદિં.

ટીકાર્થઃ—(શુઙ્ગો મહલિય ણરવરિદા) ફિર જો મહલાધિપતિ

લાલિયતા ॥ જે મુખ્ય મુખ્ય દેશોમા રત્નમમાન ગણાતી એટલે કે અનુપમ
શ્રીઓ માથે આનંદ કરે છે વેષયિક મુખોને લોગવે છે “સે વિ” એવા તે
ખળદેવ અને વાસુદેવ પણ “અતુલસદ્ધફરિસરસસ્ત્વગધેય અણુમવિત્તા”
અનુપમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગધ રૂપ વિષયોનો ઉપલોગ કરવા
હતા પણ “અવિત્તાકામાણ” કામલોગોથી અતૃપ્ત એવી હાલતમા જે “ઉવ-
ળમંતિ મરણધમ્મ” મૃત્યુ પામે છે ॥ સૂં ૮ ॥

હવે સૂત્રકાર ખતાવે છે કે બીજા અબ્રહ્મસેવી કોણ હોય છે? “શુઙ્ગો
મહલિયણરવરિદા” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“શુઙ્ગો મહલિયણરવરિદા” અને જે માણિકો હોય છે, તેઓ કેવાં

યથાનિયમહુરગમીરણિદ્વયોસા ' શારદનસ્તનિતમપુરગમ્મીરસ્તિગ્મ્યોપાઃ =
 શારદ=શરત્કાલિકં યદ્યસ્તનિત = નૂતનો મેઘ ધ્વનિઃ તદ્વન્મપુર-ગર્ગમુલકરઃ
 ગમ્મીર' સ્તિગ્મ્યઃ=સ્નેહજનકઃ ધોપઃ=શબ્દો યેપા તે તથા, 'નરસીહા' નરસિંહાઃ=
 નરેષુ સિંહાદય, एतत्साधर्म्यमाह—' સીહવિક્રમગર્હ ' સિંહવિક્રમગતયઃ= સિંહમ્યેવ
 વિક્રમઃ=પરાક્રમઃ ગતિશ્ચ યેપા તે તથા ' અત્થમિયપવરરાયમીદા ' અસ્તમિત
 પ્રવરરાજસિંહાઃ=અસ્તમિતાઃ=અસ્ત પ્રાપ્તિતાઃ પરાજિતાઃ પ્રવરાઃ-પ્રિશ્ઠિયાઃ
 રાજસિંહાઃ=શૂરરાજાનો ચેસ્તે તથા । ' સોમ્મા ' સૌમ્યાઃ=સૌમ્યરૂપાઃ ' વારવર્દ
 પુણ્ણચંદા ' દ્વારાવતી પૂર્ણચંદ્રાઃ=દ્વારકાપુર્યાઃ આહાદયત્વાત્ પૂર્ણચંદ્રસ્વરૂપાઃ,
 ' પુન્નકયતવપ્પમાયા ' પૂર્વકૃતતપ પ્રમાયાત્ = પૂર્વમકૃતતપો માહાત્મ્યાત્ ' નિ
 વિદ્વસચિયસુદા ' નિરિદ્ધ સચ્ચિત્તમુલાઃ=નિરિદ્ધાનિ=અગ્નિ સચ્ચિતાનિ=પૂર્વ-
 મયોપાર્જિતાનિ મુલાનિ ચેસ્તે તથા ' અણેગવાસસયમાઝ્ઞવતા ' અનેક વર્ષશતા
 યુગ્મન્તઃવર્ષસહસ્રાધાયુષ્કાઃ, 'મજ્ઞાહિય જાણવયપ્પહાણાદિ' માર્યામિથ જનપદ-

મહાતેજસ્વી હોતે હૈં તથા (સારયણવથાનિયમહુરગમીરણિદ્વયોમા)
 જિનકા ધોલના શરદકાલીન નવીનમેઘધ્વનિ કે જેસા કર્ણસુરનર ણ
 સ્તિગ્મ્ય-સ્નેહજનક હોતા હૈં, તથા (નરસીહા) જો મનુષ્યોં કે ઘીચ મેં
 સિંહ કે જેસે હોતે હૈં તથા (સીહવિક્રમગર્હ) જિનકા પરાક્રમ ઓર ગમન
 સિંહ કે સમાન હોતા હૈં, તથા (અત્થમિયપવરરાયમીદા) જો અપને પરાક્રમ
 સે-પ્રવર રાજસિંહોં કો અસ્તમિત-પરાજિત-કર દેતે હૈં । તથા જો
 (સોમ્મા) સૌમ્યરૂપ હોતે હૈં, ણવ (વારવર્દપુણ્ણચંદા) દ્વારકાપુરી કે
 આહાદક હોનેકે કારણ જો પૂર્ણચંદ્રસ્વરૂપ હોતે હૈં (પુન્નકયતવપ્પમાવા
 નિવિદ્વસચિયસુદા) તથા-જો પૂર્વકૃત તપ કે પ્રભાવ સે પહિલે ભવોં મેં
 ઉપાર્જિત મુગ્ધોં કો પ્રાપ્ત કરતે હૈં, તથા (અણેગવાસસયમાઝ્ઞવતા) જો
 સૈકડો વર્ષોં કી આયુવાલે હોતે હૈં, તથા (મજ્ઞાહિય જાણવયપ્પહાણા-

જેમના શબ્દો શરદઋતુના મેઘધ્વનિ જેવા મધુર અને સ્તિગ્મ્ય-સ્નેહ જનક
 હતા, તેથી “ નરસીહા ” જે માણુમેાની વચ્ચે સિંહ સમાન હતા તથા “ સીહ
 વિક્રમેર્ગ ” જેમની ગતિ અને જેમનું પરાક્રમ સિંહ સમાન હતા, તથા
 “ અત્થમિયપવરરાયસીહા ” જે પોતાના પરાક્રમ વડે શ્રેષ્ઠ રાજામિહોને મહાત
 કરતા હતા તથા જે “ સોમ્મા ” સૌમ્ય હતા, અને “ વારવર્દ પુણ્ણચંદા ”
 દ્વારિકાનગરીને આનંદ આપનાર હોવાને કારણે જે પૂર્ણચંદ્ર હતા, “ પુન્નકય
 તવપ્પમાવા નિવિદ્વસચિયસુદા ” તથા જે પૂર્વે કરેલા તપના પ્રભાવથી આગ
 ળના ભવોમા ઉપાર્જિત મુગ્ધો પ્રાપ્ત કરે છે તથા “ અણેગવાસસયમાઝ્ઞવતા ”
 જે સેકડો વર્ષના આયુષ વાળા હોય છે, તથા “ મજ્ઞાહિયજાણવયપ્પહાણાદિ

अथ युगलिकानामपि तदेव दर्शयति—' भुज्जो उत्तरकुरु ' इत्यादि—

मूलम्—भुज्जो उत्तरकुरु—देवकुरु—वणविवर—पायचारिणो नर-
गणा भोगुत्तमा भोगलक्ष्णधरा भोगसस्तिरीया पसत्थ सोम-
पडिपुण्णरूवदरिसणिजा सुजायसव्वगसुंदरंगा रत्तुप्पलपत्त-
कंतकरचरणकोमलतला सुपइट्ठियकुम्मचारुचलणा आणुपुव्व-
सुसहयगुलया उण्णय—तणु—तव—निद्ध—नखा सठियसुसिलि-
ट्ठगूढगोफा एणीकुरुविंदवत्तावट्टाणुपुव्वजंघा समुग्गनिसग्गगू-
ढजाणू गयससणसुजायसंनिभोरू वरवारणमत्ततुल्लविक्रम
विलासियगई वरतुरगसुजायगुज्झदेसा आइण्णहयोव्वनिरुव-
लेवा पमुइयवरतुरयसीहअइरेगवट्ठिय कडीगंगावत्तगदाहिणा—
वत्ततरगभगुररिविक्किरणवोहियविकोसायंत — पम्ह — गभीर-
वियडनाभी साहयसोणंदमुसलदप्पणनिगरियवरकणगळरू
सरिसवरवइरवलियमज्झा उज्जगसमसंहियजच्चतणुकसिणनिद्ध
आदिज्जलडहसुकुमाल मउयरोमराई, झसविहगसुजायपीणकु-
च्छी झसोदरा पम्ह वियडणाभी संनयपासा संगयपासा सुदर-
पासासुजायपासामितमाइय पीणरइयपासा अकरडुय कणगरुयग
निम्मलसुजायनिरुवहयदेहधारी कणगसिलातलपसत्थसम-
तलउवइयवित्थिण्णपिहुलवच्छा जुयसणिभ — पीणरइय

(अविनत्ता कामार्ण) कामभोगों में अतृप्त बने रहकर ही (मरणधम्म
उवणमति) मरणधर्म को प्राप्त करते हैं ॥ सू० ९ ॥

" ते वि ' ते भाउविउ आदि राज्ञो पणु " अवितत्ताकामाण " अभलो गोथी
अतृप्त रहीने व " मरण धम्म उवणमति " भूत्तु पाभे छे ॥ सू. ९ ॥

સાન્તઃ પુરા = સસ્ત્રીકા ' સપરિસા ' સપરિપદઃ = નપરિચારાઃ ' સપુરોહિયા મન્ચ
 હડનાયગસેનાવદ્મતિનીકુસલા ' સપુરોહિતામાત્ય-દૃઢનાયકસેનાપતિ મન્ત્રિ-
 નીતિકુશલાઃ = તત્ર પુરોહિતાઃ = શાન્તિકર્મકારિણઃ અમાત્યાઃ = મન્ત્રિણઃ દૃઢ
 નાયકાઃ = કોટવાલાદયઃ સેનાપતયઃ મન્ત્રિણશ્રી કીદશાસ્તે ? इत्याह-નીતિકુશલાઃ
 નીતૌ = સામદામાદિ રૂપાયા કુશલાઃ = નિપુણા, તૈઃ સહિતાઃ ' ણાણામણિરયણ
 વિઝલધણધણસચયનિહિસમિદ્ધકોમા ' નાનામણિરત્નવિપુલધનધાનસચય-નિધિ
 સમૃદ્ધકોશાઃ = ચક્રવર્તિર્ગણે કૃતવ્યાનુષાનમિદમ્ । ' વિઝલ ' વિપુલા =
 મહત્તા ' રજ્જસિરિં ' રાજ્યશ્રિય = રાજ્યલક્ષ્મીમ્ ' અણુમવિત્તા ' અણુભૂય = ઉપશ્રવ્ય
 ' વિક્કોસતા ' વિક્કોશન્તઃ = અન્યાન્ પીડયન્ત ' વલેગ મત્તા ' વલેન મતાઃ = વચ્ચ
 વિતાઃ, ' તે વિ ' તેડપિ-માંડલિકાદયઃ, ' અવિત્તા કામાણ ' કામાનામવિત્તાઃ =
 કામોપભોગેષુ વસિરહિતા ઇય, ' ઉચ્ચમતિ મરણધમ્મ ' મરણધર્મમુપનમન્તિ ॥ ૬૦ ॥

હોતે હું, વે કૈસે હોતે હું ? સો કહતે હું— (સવલા) સેના સહિત હોતે
 હું, (સઅતેડરા) અતઃપુરસે જો યુક્ત હોતે હું, (સપરિસા) પરિવાર
 સહિત હોતે હું, (સપુરોહિયામન્ચહડનાયગસેનાવદ્મતિનીકુસલા)
 જિનકે શાતિકર્મ કરાને વાલે પુરોહિત અમાત્ય, દૃઢનાયક ઓર સેના-
 પતિ સામ દાન આદિ રૂપ રાજનીતિ મેં કુશલ હુઆ કરતે હું । તથા—
 (ણાણામણિરયણવિઝલધણધણસચયનિહિસમિદ્ધકોસા) નાનામણિ
 યોં સે, રત્નોં સે, વિપુલ ધન ધાન્ય કે સચય સે ઓર નિધિયોં સે જિન
 કા કોશ સમૃદ્ધ રહતા હૈ, તથા જો (વિઝલ) વિપુલ (રજ્જસિરિં)
 રાજ્યશ્રી કો (અણુમવિત્તા) ભોગ કરકે (વિક્કોસતા) દૂસરે વ્યક્તિયોં
 કો રાતદિન પીડિત કિયા કરનેવાલે તથા (વલેગ મત્તા) અપને બલ સે
 ગર્વિત બને હુએ (તે વિ) હસ પ્રકાર કે વે બી માંડલિક આદિ રાજા

હોય છે, તે ડહે છે—“ સવલા ” તેઓ સેનાયુક્ત હોય છે, “ સ અતેડરા ”
 અતપુરથી યુક્ત હોય છે, “ સપરિવારા ” પરિવાર યુક્ત હોય છે, “ સપુરોહિયા
 મન્ચહડનાયગસેનાવદ્મતિનીકુસલા ” જેમના શાંતિ કર્મ કરાવનારા પુરોહિત
 અમાત્ય દૃઢનાયક અને સેનાપતિ સામ, દામ, આદિ રૂપ રાજનીતિ બાણકાર
 હોય છે તથા “ ણાણામણિરયણવિઝલધણધણસચયનિહિસમિદ્ધકોસા ” વિવિધ
 ભણિયો, રત્નો, વિપુલ ધન-ધાન્ય આદિના સચયથી તથા નિધિયોથી
 જેમના ખજાનો સદા સમૃદ્ધ રહે છે તથા જે “ વિઝલ ” વિપુલ “ રજ્જસિરિં ”
 રાજ્ય લક્ષ્મીનો “ અણુમવિત્તા ” ઉપભોગ કરે છે, “ વિક્કોસતા ” ખીબા લોડોને
 રાતદિવસ પીડનારા તથા “ વલેગ મત્તા ” પોતાના બળથી અવિષ્ટ અનેલા એવા

अथ युगलिकानामपि तदेव दर्शयति—‘ भुज्जो उत्तरकुरु ’ इत्यादि—

मूलम्—भुज्जो उत्तरकुरु—देवकुरु—व्रणविवर—पायचारिणो नर-
गणा भोगुत्तमा भोगलक्वणधरा भोगसस्तिरीया पसत्थ सोम-
पडिपुष्णरूवदरिसणिज्जा सुजायसव्वगसुदरंगा रत्तुप्पलपत्त-
कतकरचरणकोमलतला सुपइट्टियकुम्मचारुचलणा आणुपुव्व-
सुसहयगुलया उण्णय—तणु—तंव—निद्ध—नखा संठियसुसिलि-
ट्ठगूढगोपा एणीकुरुविंदवत्तावट्टाणुपुव्वजंघा समुग्गनिमग्गगू-
ढजाणू गयससणसुजायसंनिभोरू वरवारणमत्ततुल्लविक्रम
विलासियगई वरत्तुरगसुजायगुज्झदेसा आइण्णहयोव्वनिरुव-
लेवा पमुइयवरत्तुरयसीहअइरेगवट्टिय कडीगगावत्तगदाहिणा—
वत्ततरगभगुररविकिरणवोहिहयविकोसायंत — पम्ह — गभीर-
वियडनाभी साहयसोणदमुसलदप्पणनिगरियवरकणगच्छरू
सरिसवरवइरवलियमज्झा उज्जगसमसंहियजच्चतणुकसिणनिद्ध
आदिज्जलडहसुकुमाल मउयरोमराई, झसविहगसुजायपीणकु-
च्छी झसोदरा पम्ह वियडनाभी संनयपासा संगयपासा सुदर-
पासासुजायपासामितमाइय पीणरइयपासा अकरडुय कणगरुयग
निम्मलसुजायनिरुवहयदेहधारी कणगसिलातलपसत्थसम-
तलउवइयवित्थिण्णपिहुलवच्छा जुयसणिगभ — पीणरइय

(अद्वितत्ता कामार्ण) कामभोगों में अतृप्त बने रहकर ही (मरणधम्म
उवणमति) मरणधर्म को प्राप्त करते हैं ॥ सू०९ ॥

“ ते वि ” ते भावलिङ्ग आदि शब्दोंवा पक्ष “ अवितत्ताकामार्ण ” अभिलोकोपाधी
अतृप्त रहने वा “ मरण धम्म उवणमति ” भूत्यु पात्रे छे ॥ सू. ९ ॥

પીવર પડદસઠિય સુસિલિટ વિસિંદ્વલટસુણિચિય ધળધિરસુ
વિદ્ધસધીપુરવરફાલિહવદિય ભુજા ॥ સૂ. ૧૦ ॥

ટીકા:—‘ મુજ્જો ’ મૂય: = પુનરપિ ‘ ઉત્તરકુરુદેવકુરુવળવિવરપાયચારિણો ’
ઉત્તરકુરુ-દેવકુરુ - વનવિરપાદચારિણ: = ઉત્તરકુરુનાં દેવકુરુનાં વ શ્વેત
વિશેષાણાં યાનિ વનવિરાણિ = વનસ્થલી કન્દરાદિસ્થાનાનિ તત્ર વાહનાભાવાવ
પાદૈ: = ચરણેશ્વરન્તિ યે તે તથા, નરગણા: = યુગલિકા, ‘ મોગુત્તમા ’ મોગોત્તમા =
મોગપ્રધાના: ‘ મોગલક્ષણધરા ’ મોગલક્ષણધરા = સ્વસ્તિકાદિ મોગસૂચકલક્ષણ
વન્ત, ‘ મોગસસ્તિરીયા ’ મોગસશ્રીકા = મોગશોભાશાલિન: ‘ પસત્યસોમ્મપઢિ
પુણ્ણરૂવદરિસણિજ્ઞા ’ મશસ્તસૌમ્યપ્રતિપૂર્ણરૂપદર્શનીયા = મશસ્ત સૌમ્યમ્ = અતિ-
મનોહ્ર પ્રતિપૂર્ણ = સુપૂર્ણ રૂપમ્ = આકૃતિર્યેષા તે તથા ‘ સુજાયસવ્વગસુદરણા ’

અપ સૂત્રકાર “ મોગભૂમિયોં કે જીવોં કી મી યરી હાલત હોતી
હે ” યહ કહતે હે—‘ મુજ્જો ઉત્તરકુરુદેવકુરુ ’૦’ ઇત્યાદિ ૦ ।

ટીકાર્થ:—(ઉત્તરકુરુદેવકુરુવળવિવરપાયચારિણો) ઉત્તરકુરુ તથા
દેવકુરુ યે મોગભૂમિયા હે । इन भोगभूमियों में वाहन-सवारी-के
અભાવ સે પેરોં સે હી વહા કી વનસ્થલિયોં મેં-કન્દરા આદિ સ્થાનોં મેં
ધ્રમણ કિયા કરતે હે । (નરગણા) યે યુગલિક મનુષ્યગણ (મોગુત્તમા)
ઉત્તમ મોગવાલે હોતે હે । (મોગલક્ષણધરા) સ્વસ્તિક આદિ જો
મોગસૂચક ચિન્હ હેં ઉનસે યે વિશિષ્ટ હોતે હેં । અત: વે (મોગસસ્તિ
રીયા) મોગોં કો મોગના હસી મેં યે અપની શોભા માનતે હેં । (પસ
ત્યસોમ્મપઢિપુણ્ણરૂવદરિસણિજ્ઞા) અતિમનોહ્ર પૂર્ણરૂપ સે યે દર્શનીય

હવે સૂત્રકાર “ ભોગ ભૂમિયોના છવોની પણ એ જ હાલત હોય છે ”
તે જતાવે છે “ મુજ્જો ઉત્તરકુરુ દેવકુરુ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ:—“ ઉત્તરકુરુદેવકુરુવળવિવરપાયચારિણો ” ઉત્તર કુરુ તથા દેવકુરુ, એ
ભોગ ભૂમિયો છે તે ભોગ ભૂમિયોમા વાહનને અભાવે પગપાળા જ મુસાફરી
થઈ શકે છે, તે પ્રદેશમા રહેતા “ નરગણા ” યુગલિકો “ મોગુત્તમા ” ઉત્તમ
ભોગ વિકાસ સેવનાશ હોય છે “ મોગલક્ષણધરા ” સ્વસ્તિક આદિ જે ભોગ
સૂચક ચિહ્નો હોય છે તેમનાથી તેઓ યુક્ત હોય છે તેથી તેઓ “ મોગસ
સ્તિરીયા ” ભોગોનો ઉપભોગ કરવામા જ પોતાની શોભા માને છે “ પસત્ય
સોમ્મપઢિપુણ્ણરૂવદરિસણિજ્ઞા ” તેઓ અતિશય મનોહર અને મર્વાળ સુંદર
હોય છે. “ સુજાયસવ્વગસુદરણા ” તેમના હરેક શારીરિક અંગ અદર અને

सुजातसर्वाङ्गसुन्दराङ्गाः = सुपुष्टसुन्दराऽवयवाः ' रक्तपलपत्तकतकरचरणकोमल-
तला ' रक्तोत्पलपत्रकान्तकरचरणकोमलतलाः = रक्तोत्पलस्य पत्रमिव कान्तानि =
सुन्दराणि करचरणानां कोमलानि तलानि येषां ते तथा रक्तकमलदलतुल्य
सुकोमलसुरक्त हस्तपादतलाः ' सुपङ्क्तिवकुम्भचारुचरणा ' सुप्रतिष्ठितकर्म-
चारुचरणाः = सुप्रतिष्ठितौ = शोभनाकृतिकौ कर्मवत् = उन्नतत्वेन कच्छपपीठवत्
चारु = सुन्दरौ चरणौ येषां ते तथा, तथा ' अणुपुञ्जसुसह्यगुलिया ' अनुपूर्वसुसं-
हताङ्गुलिकाः = अनुपूर्व = अनुक्रमेण = गुरुलघुक्रमेण सुसंहताः = सुमङ्गविता अङ्गुल्यः =
हस्तपादाङ्गुलयो येषां ते तथा गुरुलघुन्यूनाधिकदोषरहिताङ्गुलिकाः ' उष्णय-
तणुतवननिद्वनखा ' उन्नततनुताम्रस्निग्धनखाः = तत्र उन्नता = मध्योन्नता
तनय = प्रतला स्ताम्राः = ताम्रवर्णा स्निग्धाः = सुकोमला कान्तियुक्ताश्च नखा येषां
ते तथा, ' सन्धियसुसिलिङ्गदुग्ढगोफा ' सस्थित सुश्लिष्टदुग्ढगुल्फाः = सस्थितौ =
सम्यक् सस्थानवन्तौ सुश्लिष्टौ = पुष्टत्वात् सुसह्यौ अतएव गूढौ = अलक्षितौ गुल्फौ =
घुटिके येषां ते तथा ' एणीकुरुर्विदवत्तावद्वाणुपुञ्जवा ' एणी कुरुविन्दयत्ता

बड़े सुन्दर होते हैं । (सुजायसव्वगसुदरगा) इनके प्रत्येक शारीरिक
अवयव सुन्दर एवं पुष्ट होते हैं । (रक्तपलपत्तकतकर चरणकोमलतला)
इनके हाथ और पैरों के तलिये रक्तकमल के पत्ते के समान लाल और
कोमल होते हैं । (सुपङ्क्तिवकुम्भचारुचरणा) इनके दोनों चरण
शोभन आकृतिवाले एवं कर्म की पीठ की तरह उन्नत होने से बड़े
सुहावने होते हैं (अणुपुञ्जसुसह्यगुलिया) हाथ और पैरों की अङ्गुलिया
इनकी गुरु लघु के क्रम से सुसंगठित रहती हैं, अर्थात् इनके हाथ
पैरों की अङ्गुलियां गुरु, लघु-तथा न्यूनाधिक दोष से रहित होती है ।
(उष्णयतणुतवननिद्वनखा) नख इन्हीं के मध्य में उन्नत, पतले और
ताम्रवर्ण के होते हैं । तथा कोमल और कान्ति सहित होते हैं ।
(सन्धियसुसिलिङ्गदुग्ढगोफा) इनके दोनों घुटने सुसंस्थान वाले, पुष्ट

पुष्ट होय छे " रक्तपलपत्तकतकरचरणकोमलतला " तेभनी डुथेणी तथा
पगना तणिया लाल कमल पत्र समान लाल रगना अने कोमल होय छे
" सुपङ्क्तिवकुम्भचारुचरणा " तेभना जने भग सुन्दर घाटपाणा, तथा आयुष्मानी
पीठ जेवा उन्नत होवाथी धणा शोभित होय छे " अणुपुञ्जसुसह्यगुलिया " तेभना
हाथपगनी आगणीओ सुसंगठित होय छे ओटवे के गुरुता लघुता आदि दोषोधी
रहित होय छे, सप्रभाणु होय छे " उष्णयतणुतवननिद्वनखा " तेभना नख
मध्यमा उन्नत, पातला, ताम्रवर्णा, कोमल अने कान्तियुक्त होय छे ' सन्धिय
सुसिलिङ्गदुग्ढगोफा " तेभनी जने घुटणो सप्रभाणु, पुष्ट अने सहित तथा

વૃત્તાનુપૂર્વજઙ્ઘાઃ=તત્ર-एणी=हरिणी, तस्याश्चेह जङ्घा ग्राणा, ते इय, तथा कुरु
 विन्दः=तृणविशेषः, 'वत्ता'-अय-देशीशब्दः स्त्रीलिङ्गः सूत्रायन्तक सूत्रायन्-
 यन्त्रमित्यर्थः 'तासला' 'तकली,' इति मापा ममिद्धा, ते इय वृत्ते=सर्पुले
 अनुपूर्व=आनुपूर्व्येण-अनुक्रमेण ऊर्ध्वोर्ध्वस्थूले जङ्घे येपा ते तथा । 'समुग्ग-
 निसग्गग्गज्जाणू' समुद्रनिमग्नगद्गजानवः=समुद्रः=सपिधानःपिटयस्तद्वत् निमग्ने=
 पुष्टत्वादन्तः सलीने अत एव गूढे-अलक्षिते जानुनी चेपा ते तथा सुपुष्टत्वादव
 पलक्ष्य जानुका इत्यर्थः, 'गयसमण सुजायसनिभोरू' गजश्वमनसुजातसनिभो
 रवः-गजश्वमन = इस्तिशुण्डादण्डः स सुजात=सुसस्थानयुक्तः तस्यसनिभ=
 सदृशे ऊरुगी=जानूपरिभागो येपा ते तथा । 'वरवारणमत्ततुल्लविक्रमविलासि
 यगई' वरवारणमत्ततुल्यविक्रमविलासितगतयः = गजेन्द्र स चासौ मत्त =

હોને સે સદૃશ તથા અલક્ષિત હોતે હૈ । અર્થાત્ દિગ્ગલાઈ નહીં પડતે હૈ
 (ણીકુરુવિંદવત્તાવટ્ટાણુ પુવ્વજઘા) इनकी दोनों जघाएँ हरिणी की
 जघाओं के समान तथा कुरुविंद तृणविशेष के समान एव वत्ता-तकली
 के समान घृत्त-गोलरहोती है । और क्रमशः वे ऊपरस्थूल रहती है ।
 (समुग्गनिसग्गग्गज्जाणू) इनके दोनों जानु पिधान-ढक्कन-महित
 पिटारे के समान पुष्ट होने के कारण भीतर ही भीतर छुपे हुए होते हैं
 अर्थात् गहरे होते हैं इसीलिये गूढ रहते हैं । (गय-ससण-सुजाय-
 सनिभोरू) सुसस्थानयुक्त इस्तिशुण्डादड के समान जिनकी दोनों ऊरु-
 साथलें होती हैं, अर्थात्-जानु के उपर का भाग जिनका सुसस्थान युक्त
 हाथी के शुण्डादड के समान होता है (वर-वारण-मत्त-तुल्ल-विक्रम-
 विलासिय-गई) मदमत्त गजेन्द्र के सदृश जिनका विक्रम-पराक्रम और

અલક્ષિત હોય છે, એટલે કે નજરે પડતી નથી “ ણીકુરુવિંદવત્તાવટ્ટાણુ
 વ્વજઘા ” તેમની બે જ ઘાઓ હરણીની બે જ ઘાઓ સમાન તથા કુરુવિંદ
 (તૃણવિશેષ) સમાન અને તકલી સમાન ગોળ ગોળ હોય છે, એને તે ઉપર
 જતા ધીમે ધીમે વધારે બહી થતી બાય છે “ સમુગ્ગનિસગ્ગગ્ગજ્જાણૂ ” તેમના
 બંને જાનુઓ ઠાકણાથી યુક્ત પટારાના જેવા પુષ્ટ હોવાને કારણે અદરને
 અદર છુપાયેલા રહે છે-એટલે કે જિડા હોવાને કારણે ગૂઢ રહે છે “ ગય-
 સસણ-સુજાયસ નિભોરૂ ” જેમના બે સાથળો સુષટિત હસ્તિશુણ્ડાદડ સમાન
 હોય છે, એટલે કે જાનુની ઉપરનો ભાગ સુવ્યવસ્થિત હસ્તિસૂદ જેવો હોય છે
 “ વર-વારણ-મત્ત-તુલ્લ-વિક્રમ-વિલાસિય-ગઈ ” મદોન્મત્ત ગજેન્દ્રના જેવો
 જેમનું પરાક્રમ હોય છે, અને તેને અનુરૂપ જ જેમની નિ ગતિ

મદાન્વિતસ્તેન તુલ્યઃ=મદશો વિક્રમઃ=પરાક્રમઃ, તદ્વદેવ વિલાસિતા=વિલાસ-
યુક્તા ગતિ રેખા તે તથા અત્ર ગજસ્ય પરાક્રમેણ ગત્યા ચ સાદૃશ્ય પ્રદર્શિતમ્,
તથા ' વરતુરગસુજાયગુજ્ઞદેસા ' વરતુરગસુજાતગુહ્યદેશાઃ = વરતુરગસ્યેવ =
પ્રગસ્તાઽશ્વસ્યેવ સુજાતઃ=સુસંસ્થિતઃ લઘુત્વેન ગુપ્ત ઇત્યર્થઃ, ગુહ્યદેશો વેપા તે તથા
' આઙ્ગહયોઽવ નિરુવલેવા ' આકીર્ણદયઙ્ગ = જાતિમાનશ્ચ ઇત્યર્થ નિરૂપલેપાઃ=
મલલેપવિવર્જિતા ' પમુહ્યવરતુરયસીઅઙ્ગેગવદ્વિયકટી ' પ્રમુદિતતુરગસિંહા-
તિરેકવર્તિતકટિયઃ=પ્રમુદિતા = પ્રદૃષ્ટા વરતુરગા = જાત્યશ્વાઃ સિંહાઃ = કેસ-
રિણસ્તેભ્યોઽતિરેકેગ = આધિભ્યેન વર્તિતા = વર્તુળા કટિ = કટિપ્રદેશો
વેપા તે તથા ' ગગાવત્તગદાદિણાવત્તરગમગુરરવિકિરણબોહિયવિકોસાયતપમ્હ-
ગમીરવિયઢનામી ' ગગ્નાઽઽર્તકદક્ષિણાઽર્વતરગ્નમ્હુરવિકિરણબોધિતવિકોશા-
યમાનપમ્હગમ્મીરવિકટનામયઃ, તત્ર — ગગ્નાવર્તકા = ગગ્ના નદી જલભ્રમ,
સ ચ દક્ષિણાવર્તઃ તરગ્નમ્હુર તરગ્ન મ્હુર = વત્રશ્ચ તદ્વત્, તથા રવિકિરણે =
સૂર્યકિરણે બોધિત-વિકાસિત વિકાસાવસ્થા પ્રાપ્નુવત્ ઇત્યર્થ, અત એવ-વિકોશા-

હસી અનુરૂપ હી જિનકી વિલાસયુક્ત ગતિ હોતી હૈ, તથા (વર-તુરગ-
સુજાય ગુજ્ઞદેસા) પ્રશસ્ત ઘોડેકે ગુહ્યભાગકે સમાન જિનકા ગુહ્યભાગ લઘુ
રોનેકે કારણ ગુપ્ત રહતા હૈ । (આઙ્ગહયોઽવનિરુવલેવા) તથા જાતિમાન
અશ્વકી તરહ વહ ગુહ્યભાગ જિનકા મલકે લેપસે વિવર્જિત રહતા હૈ ।
(પમુહ્યવરતુરયસીઅઙ્ગેગવદ્વિયકટી) અત્યંત સપત્ર જાત્યશ્વકી તથા
સિંહકી કટિસે ખી અધિક ગોલ જિનકી કટિ હોતી હૈ, તથા (ગગાવ-
ત્તગ દાદિણાવત્ત તરગમગુર રવિકિરણ બોહિયવિકોસાયતપમ્હગમીરવિય-
ઢનામી) દક્ષિણાવર્ત એવ તરગ્નોસે મગુર ગગા નદી કે જલભ્રમ-જલાવર્ત
કે સમાન, તથા—સૂર્યકિરણો સે મુકુલિત અવસ્થા કો છોઢકર વિકા-
સાવસ્થા કો પ્રાપ્ત હૂણ પદ્મ કે સમાન ગમીર ઓર વિકટ સુન્દર જિનકા

હોય છે, " વરતુરગ—સુજાયગુજ્ઞદેસા " તેમનો ગુહ્ય ભાગ પ્રશસ્ત ઘોડાના
ગુહ્યભાગ સમાન લઘુ હોવાને કારણે ગુપ્ત રહે છે, " આઙ્ગહયોઽવ નિરુવ-
લેવા " જાતવાન ઘોડાના ગુહ્યભાગની જેમ તેમનો ગુહ્ય ભાગ પણ મળના
લેપથી ગુહિત હોય છે " પમુહ્યવરતુરયસીઅઙ્ગેગવદ્વિયકટી " અતિશય
હર્ષસપત્ર જાતવાન ઘોડા તથા સિંહની કટિ કટ્ટા પણ જેમની કટિ વધારે
ગોળ હોય છે, તથા " ગગાવત્તગ-દાદિણાવત્ત તરગ-મગુર-રવિકિરણ-બોહિય-
વિકોસાયતપમ્હગમીરવિયઢનામી ' દક્ષિણના પવનોથી તથા તરગોથી ભગુર
ગગા નદીના જલભ્રમ-જળ વમળ સમાન, તથા ખીડાયેલી અવસ્થાનો ત્યાગ
કરીને સૂર્યના કિરણોને કારણે વિકાસાવસ્થાને પામેલ કમળા સમાન ગમીર

દુત્તાનુપૂર્વજઙ્ઘાઃ=તત્ર-एणी=हरिणी, तस्याधेह जङ्घा ग्राभा, ते इव, तथा कुरु-
विन्दः=तृणविशेषः, 'वत्ता'-अप-देशीशब्दः स्त्रीलिङ्गः मृत्रयन्त्रक मृत्रवेष्टन-
यन्त्रमित्यर्थः 'ताम्रा' 'तकरी,' इति भाषा मसिद्धा, ते इव दृत्ते=वस्तुछे
अनुपूर्वे=आनुपूर्व्येण-अनुक्रमेण ऊर्ध्वोर्ध्वस्थूछे जङ्घे येषां ते तथा । 'समुग्ग-
निसग्गग्गज्जाणू' समुद्रनिमग्नग्गज्जानवः=मसुद्रः=सपिधानःपिटरस्तद्वत् निमग्ने=
पुष्टत्वादन्तः सन्तीने अत एव गूढे अलसिते जानुनी येषां ते तथा सुपुष्टत्वादव
पलक्ष्य जानुका इत्यर्थः, 'गयससण सुजायसनिभोरू' गजध्वमनमुजातमनिभो-
रः-गजध्वमन = हस्तिशुण्डादण्डः स सुजात=सुसन्धानयुक्त. तस्यसनिभे=
सदृशे ऊरुणी=जानूपरिभागौ येषां ते तथा । 'परवारणमत्ततुल्लविक्रमविलासि-
यगई' परवारणमत्ततुल्यविक्रमविलासितगतयः = गजेन्द्रः स चासां मत्त =

हોને સે સજ્જત તથા અલક્ષિત હોતે હૈ । અર્થાત્ દિગ્ગલાઈ નહીં પડતે હૈ
(एणीकुरुविन्दवत्तावट्टाणु पुत्रजघा) इनको दोनों जघाएँ हरिणी की
जघाओं के समान तथा कुरुविन्द तृणविशेष के समान एव वत्ता-तकली
के समान घृत्त-गोलरहोती है । और क्रमशः वे ऊपरस्थूल रहती है ।
(समुग्गनिसग्गग्गज्जाणू) इनके दोनों जानु पिधान-ढक्कन-महित
पिटारे के समान पुष्ट होने के कारण भीतर ही भीतर छुपे हुए होते हैं
अर्थात् गहरे होते हैं इसीलिये गूढ रहते हैं । (गय-ससण-सुजाय-
सनिभोरू) सुसन्धानयुक्त हस्तिशुण्डादण्ड के समान जिनकी दोनों ऊरु-
साथलें होती हैं, अर्थात्-जानु के उपर का भाग जिनका सुसन्धान युक्त
हाथी के शुण्डादण्ड के समान होता है (वर-वारण-मत्त-तुल्ल-विक्रम-
विलासिय-गई) मदमत्त गजेन्द्र के सदृश जिनका विक्रम-पराक्रम और

અલક્ષિત હોય છે, એટલે કે નજરે પડતી નથી “ एणीकुरुविन्दवत्तावट्टाणु पु-
त्रजघा ” તેમની બંને જઘાઓ હરણીની બંને જઘાઓ સમાન તથા કુરુવિન્દ
(तृणविशेष) સમાન અને તકલી સમાન ગોળ ગોળ હોય છે, એને તે ઉપર
જતા ધીમે ધીમે વધારે બહી થતી બાય છે “ समुग्गनिसग्गग्गज्जाणू ” તેમના
બંને બાજુઓ ઠાકણાથી યુક્ત પટારાના જેવા પુષ્ટ હોવાને કારણે અદરને
અદર છુપાયેલા રહે છે-એટલે કે બહા હોવાને કારણે ચૂંક રહે છે “ गय-
ससण-सुजायसनिभोरू ” જેમના બંને સાથળો સુધટિત હસ્તિશુણ્ડાદણ સમાન
હોય છે, એટલે કે બાજુની ઉપરનો ભાગ સુવ્યવસ્થિત હસ્તિશૂંક જેવો હોય છે
“ वर-वारण-मत्त-तुल्ल-विक्रम-विलासिय-गई ” મદો-મત્ત ગજેન્દ્રના જેવું
જેમનું પરાક્રમ હોય છે, અને તેને અનુરૂપ જ જેમની વિલાસયુક્ત ગતિ

સુજાતઃ=સુન્દરઃ પીનઃ=પુષ્ટશ્ચ કુક્ષિઃ=ઉદરૈરુદેશો યેપા તે તથા । તથા ‘જ્ઞપોયરા’
જ્ઞપોદરાઃ-જ્ઞપસ્યોદરપ્રદુર=યેપા તે તથા કૃશોદરા इत्यर्थ, ‘પમ્હવિયડણામી’
પદાવિમ્દનામયઃ=પજાત્=કમલકોપત્ વિકટા=સુન્દરા નાભિ યેપા તે તથા,
‘સનયપાસા’ સન્નતપાર્શ્વા=પુષ્ટત્વાદધો નમત્પાર્શ્વમાગાઃ ‘સગયપાસા’ સન્નત-
પાર્શ્વા.=મૃમિલિતપાર્શ્વમાગાઃ, અતएव ‘સુદરપાસા’ સુન્દરપાર્શ્વાઃ ‘સુજાયપાસા’
સુજાતપાર્શ્વા = મૃમસ્થિતપાર્શ્વાઃ ‘મિયમાયપીનરૂપપાસા’ મિતમાત્રિકૃપીત-
રતિદપાર્શ્વાઃ=મિતૌ=માનોપેતૌ, માત્રિકો = માત્રાયુક્તૌ-પરિમાણસપન્નો પીનો=
સુપુટૌ રતિદૌ = રમણીયૌ પાર્શ્વમાગૌ યેપા તે તથા ‘અરુરુદુ-કળ-ગરુગ-
નિમ્મલસુજાયનિરુવહયદેહવારી’ અરુરુદુ-કળ-ગરુગ-નિર્મલસુજાતનિરુપ —
હતદેહધારિણઃ = તન અરુરુદુ-કળ = પુષ્ટત્વાદનુપલક્ષ્યપૃષ્ઠપાર્શ્વાદિસ્થિક તથા
કનકસ્ત્રવનિર્મલ, વનસ્ત્રવક=સુવર્ણાભરણ તદ્વત્ નિર્મલ સુજાત શોભન નિરુપહત
ચ=નીરોગ દેહ=શરીર ધારયન્તિ યે તે તથા । તથા ‘કળગસિલાતલ્પસત્થસમ

કી કુક્ષિ કે સમાન સુન્દર ઓર પુષ્ટ હોતી હૈ । તથા (જ્ઞસોયરા)
જિનકા ઉદર મત્સ્ય કે ઉદર કે સમાન કૃશ હોતા હૈ । તથા (પમ્હ-
વિયડણામી) જિનકી નાભિ કમલ કે કોપ કી તરફ ગમીર હોતી હૈ । ત ૧
(સનયપાસા) પુષ્ટ હોને કે કારણ જિનકે દોનો પાર્શ્વમાગ નીચે કી
ઓર જુકે રહતે હૈં હસીલિયે (સગયપાસા) જો પરસ્પરમૈં મિલે હુए જૈસે
પ્રતીત હોતે હૈં ઓર વહે મુહાવને લગતે, હૈં તથા (સુજાયપાસા) જિનકે દોનો
પોઠ્ઠા ભાગોંકા આકાર મી વડા મુહાવના લગતા હૈ, તથા (મિત્રનાઢ્ય
પીનરૂપ પાસા) વે દોનો પાર્શ્વમાગ માન ઓર પ્રમાણસે યુક્ત ઓર પીન
પુષ્ટ હોતે હૈં તથા રમણી હોતે હૈં । તથા (અરુરુદુ-કળ-ગરુગ નિમ્મલ સુજાય
-નિરુવહય-દેહવારી) પુષ્ટ હોને કે કારણ જિનકી રીઢકી ઓર પાર્શ્વ-
માગ કી અસ્થિયા દિખલાઈ નહીં દેતી હૈ, તથા જો સુવર્ણાભરણ કે

ભાગ) મત્સ્ય તથા પક્ષીની કુક્ષિ સમાન સુદર અને પુષ્ટ હોય ૨ તથા
“જ્ઞસોયરા” જેમનું ઉદર મત્સ્યના ઉદર સમાન કૃશ હોય છે તથા “પમ્હ-
વિયડણામી” જેમની નાભિ કમળના જેવી ગભીર હોય છે, તથા “સનય-
પાસા” પુષ્ટ હોવાને જેમના બંને પાર્શ્વ ભાગો નીચેની બાજુએ ઝુકેલા રહે
છે, અને તેથી “સગયપાસા” આપસમા મળી ગયા હોય એવા ભાગે છે તથા
ધણા સુદર ભાગે છે તથા “સુજાયપાસા” તેમના બંને પાર્શ્વ ભાગો પડખાને
આકાર પણ ધણા સુદર ભાગે છે, તથા “મિયમાયપીનરૂપપાસા” તે બંને
પાર્શ્વભાગો પ્રમાણ અને માનથી યુક્ત-પ્રમાણગરના, અને પીન-પુષ્ટ અને
રમણીય હોય છે “અરુરુદુ-કળ ગરુગ નિમ્મલ સુજાય નિરુવહય દેહવારી”
શરીરે પુષ્ટ હોવાને કારણે જેમનાં કંઠોડ તથા પાસળીના હાડકાં દેખાતા નથી

पुनस्ते कीदृशा ? इत्याह—‘भुयगीसर’ इत्यादि ।

मूलम्—भुयगीसर-विउल-भोग-आयाण-फलिह-उच्छूढदी-
हवाहू-रत्ततलोवइय-मउय-मसल-सुजाय लक्खणपसत्थ-अच्छि-
इजालपाणी पीवर सुजाय-कोमल-वरगुली तवतलिणसुइरुइल
निष्ठणखा निद्धपाणिलेहा चंदपाणिलेहा सूरपाणिलेहा सख-
पाणिलेहा चक्कपाणिलेहा दिसा सोवत्थियपाणिलेहा रवि
ससि-सख-वरचक्कदिसा सोवत्थिय-विभत्त-सुरइय--पाणिलेहा
वरमहिसवराहसीह-सइलरिसह नागवर-पडिपुण्ण-विउल-खधा
चउरगुलप्पमाणकबुवरसरिसगीवा अवट्ठिय-सुविभत्त-चित्त
समंसुउवचियमंसल -पसत्थ -सइल-विउल -हणुया ओयचिय
सिलप्पवालविवफलसुनिभाऽधरोट्टा पंडुर-ससि-सकल-विमल
संखगोखीर-फेणकुंददगरयमुणालिया धवल-दतसेढी अखड
दंता अफुडियदता अविरलदंता सुणिद्धदंता सुजायदंता
एगदंतसेढिंवा अणेगदंता हुयवहनिद्धत-धोयतत्ततवणिज्जर-
त्ततलतालुज्जिहा गरुलायय उज्जुतुगनासा अवदालियपुडरीय
णयणा विकोसियधवलपत्तलच्छा आणामिय - चावरुइल
किण्हवभराइ- सठिय-सगयाययं-सुजाय-भूमगा--अल्लीणपमाण-
जुत्तसवणा सुस्सवणा पीयमंसलकवोलदेसभागा अविरुग्गय
वालचदसठियमहानिलाडा उडुवइ-पडिपुण्ण-सोम्मवयणा
छत्तागारुत्तमगदेसा घणनिचिय सुवद्धलक्खणुण्णय-कूडागार
निभपिडियग्ग-सिराहुयवहनिद्धत - धोयतत्ततवणिज्जरत्तकेसत-

परिधा (भोगल) के समान गोलरहोते हैं । ऐसे ये भोगभूमिके मनुष्य
भी कामभोगोंसे अतृप्त होकर ही मरण धर्मको प्राप्त करते हैं ॥सू०१०॥

ते भोगभूमिना बोद्धे पणु काम भोगोथी अवृत्त रहीने न भृत्य पावे ॥सू१०॥

તત્કાલયદિવિત્થિણ પિદુલવચ્છા 'કનકશિલાતલ-પ્રશસ્ત મમતલોપચિત વિસ્તીર્ણ
 પૃથુલવચ્છા:=કનકશિલાતલ = સુવર્ણશિલાપટ્ટકમિત પ્રશસ્ત સમતલમ્=અવિષમ
 ઉપચિત=પુષ્ટ-વિસ્તીર્ણ=વિશાળ તથા પૃથુલ=સ્થૂળ વચ્છા=વચ્છા: સ્થૂળ યેષા તે તથા
 'જુયસણિમપીણરહ્ય-પીર-પડદ સઠિય-સુસિલિદ્વ વિસિદ્ધલદ્વ-સુણિચિય-ઘણ ધિર
 સુવધ, સધી ' તત્ર ' જુયસણિમ ' યુગસન્નિમી=યુગકાષ્ટનૃત્યો ' પીણ ' પીનો=સ્થૂળો
 ' રહ્ય ' રતિદો=રમણીયો પીરસો=પુષ્ટો ' પડદ ' પ્રકોષ્ઠો=હસ્તમણિવન્યપ્રદેશો-
 તથા ' સઠિય ' સસ્થિતા:=અસ્થાનવિશેષયુક્તા ' સુસિલિદ્વ ' સુશિષ્ટા:=સુમિલિતા:
 ' વિસિદ્ધલદ્વ ' વિશિષ્ટા:=સુમનોહરા: ' સુણિચિય ' સુનિચિતા: = સુભગઠિતા:
 ઘના ' ધિર ' સ્થિરા:=સુદૃઢા સુવન્યા: =શોભનાવયવસન્નિવેશયુક્તા: મન્ધવ: =
 અસ્થિ સન્ધાનાનિ યેષા તે તથા, ' પુરવરફલિદ્વ-વટિયમુયા ' પુરવરપરિવર્તિત
 મુજા:=પુરવરપરિવર્ત=નગરદ્વારકપાટરોધનકાષ્ટમદ્વ વર્તિતો=વર્તુલો મુજો=વાહ
 યેષા તે તથા । એતાદશાસ્તેડપિ કામમોગૈરવૃત્તા એ મરણધર્મમુપનમન્તીતિ-
 સમ્પન્ધ: ॥ સૂ. ૧૦ ॥

સમાન નિર્મલ, સુંદર રોગરહિત શરીર કે ધારી હોતે હૈ (કાગસિલા-
 તલપસત્થમમતલઝવડયવિત્થિણપિદુલવચ્છા) તથા જિનકા વક્ષ
 સ્થલ સુવર્ણશિલા કે પટ્ટક સમાન પ્રશસ્ત એવ સમતલ ચાલા હોતા હૈ
 ઉપચિત-પુષ્ટ હોતા હૈ, વિસ્તીર્ણ હોતા હૈ તથા પૃથુલ-સ્થૂળ-મોટા-
 હોતા હૈ (જુયસણિમપીણ-રહ્યપીરપડદસઠિયસુસિલિદ્વવિસિદ્ધલદ્વસુણિ-
 ચિયઘણધિરસુવધસધી) ઇનકા મણિવધ પ્રદેશ જુઆ કે સમાન સ્થૂળ,
 રમણીય ઓર પુષ્ટ હોતા હૈ । તથા ઇનકે હાઠોં કી સધિયા સસ્થાન
 વિશેષ સે યુક્ત, પરસ્પર અચ્છી તરહ મિલી હુઈ, મનોહર, સુસગઠિત,
 ઘનીભૂત, સુદૃઢ એવ અચ્છી અવયવોં કી રચના સે યુક્ત હોતી હૈ ।
 (પુરવરફલિદ્વવટિયમુયા) ઇનકે દોનો વાહુ નગર કે દ્વાર કે ઉત્તમ

“ જેઓ સૂવર્ણના આભૂષણો જેવું નિર્મળ, સુંદર અને નીરોગી શરીર ધરાવે
 છે, “ કનકશિલાતલપસત્થમમતલઝવડયવિત્થિણપિદુલવચ્છા ” તથા જેમની
 છાતીનો ભાગ સુવર્ણશિલા જેવો પ્રશસ્ત સમતલ, ઉપચિત-પુષ્ટ, વિસ્તીર્ણ
 વિશાળ તથા પૃથુલ-મોટો હોય છે, “ જુયસણિમ-પીણ-રહ્ય-પીર-પડદ-સઠિય
 સુસિલિદ્વ-વિસિદ્ધ-લદ્વ-સુણિચિય-ઘણધિર-સુવધસધી ” તેમના ખભા ધૂસરી જેવા
 સ્થૂળ, રમણીય અને પુષ્ટ હોય છે તથા તેમના અસ્થિઓના સાધા સુવ્યવસ્થિત
 અરસ્પરના સારી રીતે જોડાયેલ, મનોહર, સુસગઠિત, ઘનીભૂત, સુદૃઢ, અને
 અવયવોની સુંદર રચના વાળા હોય છે “ પુરવરફલિદ્વવટિયમુયા ” તેમની
 બંને બુદ્ધ નગરના દરવાજાના ઉત્તમ ભોગજો જેવી ગોળાકાં હોય છે એવા

શુજાસ્ત્યર્થઃ, ‘ રક્તતલોવડયમડયમસલ્સુજાયલક્ષણપસત્યઅન્નિઠ્ઠજાલપાણી ’
તત્ર- ‘ રક્તતલ ’ રક્તતલો=લોહિતમ્ રતલો ‘ ઉવડય ’ ઉવચિતો=પુટ્ટો ‘ મડય ’
મૃદુકો=કોમલો ‘ મસલ ’ માસલો=અદૃષ્ટ નાહી જાલો ‘ સુજાય ’ સુજાતો=
સુનિષ્પન્નો ‘ લક્ષણપસત્ય ’ લક્ષણ પ્રશસ્તો=અનેક શુભલક્ષણેઃ પ્રકૃષ્ટો ‘ અન્નિઠ્ઠજાલા-
અન્નિઠ્ઠજાલો = પરસ્પર મિલિતત્વાત્ ડિદ્રરહિતાદગુલિસમુદાયવન્તો પાણી =
હસ્તો યેપા તે તથા ‘ પીપરસુજાયકોમલવરગુલિ ’ પીપરસુજાતકોમલવરાણ્ગુ-
લયઃ = સુપુષ્ટમુન્દરકોમલાણ્ગુલિવન્ત ‘ તતલિણમુરુઠ્ઠલનિદ્વનગ્વા ’ તામ્રત-
લિનશુચિરુચિરસ્નિગ્ધ નચાઃ=તામ્રાઃ = રક્તાઃ તલિનાઃ=પતલાઃ શુચયઃ=નિર્મલાઃ
રુચિરા=શાન્તિમન્તઃ સ્નિગ્ધાશ્ચ=ચિક્ષણા નચા યેપા તે તથા, ‘ નિદ્વપાણિલેહા ’
સ્નિગ્ધપાણિરેચ્ચાઃ = ચિક્ષણહસ્તરેચ્ચાવન્તઃ ‘ ચદપાણિલેહા ’ ચન્દ્રપાણિરેચ્ચા=

હોતી હૈં તથા—(રક્તતલોવ ડયમડયમસલ્સુજાયલક્ષણપસત્ય અન્નિઠ્ઠ
જાલપાણી) જિનકે દોનોં જાય લોહિત તલિયો વાલે, પુષ્ટ અરે હુણ-
કોમલતાસે યુક્ત, મામલ-પુષ્ટઅદૃષ્ટનાહીજાલવાલે, અન્ને રૂપમે નિષ્પન્ન
હુણ, અનેક શુભલક્ષણોં સે પ્રશસ્ત ગ્વ ડિદ્રરહિત અગુલિયોં વાઠે હોતે
હૈં તથા—(પીપરસુજાયકોમલવરગુલી) ફનકી જો અગુલિયા હોતી હૈં
વે સુપુષ્ટ, મુન્દર ગ્વ કોમલ હોતી હૈં ! (તતલિણમુરુઠ્ઠલનિદ્વનગ્વા)
ફન અગુલિયોં કે જો નચ હોતે હૈં વે તામ્ર વર્ણવાલે હોતે હેં તલિન-
પતલે હોતે હૈં, નિર્મલ હોતે હૈં, શાન્તિમાન્ હોતે હૈં તથા સ્નિગ્ધ-ચિકને
હોતે હૈં । (નિદ્વપાણિલેહા) જાયોં મેં જો રેચ્ચાઈ હોતી હૈં વે શી ચિકની
હોતી હૈં । (ચદપાણિલેહા) તથા ફનકે જાયોં કી યે રેચ્ચાઈ કિતનીક નો
ચન્દ્રાકાર હોતી હૈં (સ્વપાણિલેહા) કિતનીક મૂર્ય કે આકાર કી હોતી

પરિધા (લોગણો) સમાન રીધ-લાગી હોય છે, તથા “ રક્તતલોવડયમડયમસલ્સુ
જાય-લક્ષણ-પસત્ય-અન્નિઠ્ઠ-જાલપાણી ” જેમના બને હાથ લાલ હુણીવાળા,
પુષ્ટ કોમળ મામલ-નસો તથા ડેગવાહિનીઓની બાજુ ન દેખી ગડાય તેવા
સુધટિત, અનેક ગુણ લક્ષણોથી પ્રશસ્ત, અને ડિદ્ર રહિત આગળીયો વાળા
હોય છે, તથા “ પીપર-સુજાય-કોમલ-વરગુલી ” તેમના હાથની આગળીયો
સુપુષ્ટ, સુદર અને કોમળ હોય છે “ તતલિણમુરુઠ્ઠલનિદ્વનગ્વા ” તે આગ-
ળીયોના નખ તામ્રવર્ણી હોય છે ‘ તલિન-પાતળા હોય છે નિર્મળ હોય છે
સુવાળા અને શાન્તિ યુક્ત હોય છે “ નિદ્વપાણિલેહા ” તેમના હાથમા જે
રેખાઓ હોય છે તે પણ સ્નિગ્ધ, સુવાળી હોય છે “ ચદપાણિલેહા ” તેમના
ઉપરની કેટલીક રેખાઓ ચન્દ્રાકાર, “ સ્વપાણિલેહા ” કેટલીક સૂર્યાકાર, કેટલીક

કેસભૂમી સામલિ-પોંડઘણ નિચિયચ્છોડિય-મિટવિસય પસ
 ત્થસુહુમલમ્લણસુગંધિસુદરભુયમોયગર્ભિગ-નીલકજ્જલપહિટ્ઠ
 ભમરગણ-નિદ્ધનિરવ-નિચિયકુચિય — પયાહિનાવત્તમુદ્ધસિ
 રયા સુજાય-સુવિભત્ત-સગયગા-લમ્પણવજ્જણગુણોવવેયા પસ-
 ત્થવત્તીસલક્ષણધરા હસસ્સરા કોચસ્સરા ટંદુહિસ્સરા સીહસ્સરા
 મેહસ્સરા ઓઘસ્સરા સુસ્સરા સુસ્સરનિગ્ધોસા વજ્જરિસહ
 નારાયસઘયણા સમચરુરંમસઠાણસઠિયા ઘાયડજ્જો
 વિયગમગાપસત્થછવી નિરાયકા કઠ્ઠગહણી કવોયપરિણામા
 સડણિપોસાપિટ્ઠનરોરુપરિણયા પડમુપ્પલ-સારસગધ-સાસસુર-
 ભિવયણા અણુલોમવાડવેગા અવદાયનિદ્ધકોસા વિગ્ગાહિય-
 ડણ્ણાય કુચ્છીઅમયરસફલાહારી તિગાડય સમુચ્છિયાતિપ
 લિઓવમદ્ધિતિયા તિણિય પલિઓવમાઈ પરમાડ પાલડ્ઢતા
 તેવિ ડવ્વણમતિ મરણધમ્મ અવિત્તિતા કામાણ ॥ સૂ ૧૧ ॥

ટીકા:—‘ભુયગી-સર-વિડલ-મોગ-આયાણ-ફલિહ-ઉચ્છદ્દીહવાહ’ તત્ર-
 ‘ભુયગીસર’ ભુજગેશ્વર = સર્પરાજસ્તસ્ય યો વિપુલો મોગ, = મહાન્ કાય, તદ્વત્
 તથા ‘આયાણ’ આન = આદીયત્ત ઇત્યાદાનમ્ = આદેયઃ = સુન્દરો ય ‘ફલિહ’
 પરિઘ, = રૂપાટરોધનકાષ્ઠ, સ ચ ‘ઉચ્છદ્’ ઉત્તિસ્ત, = સ્વસ્થાનાદ્ યદિર્નિઃકાસિતઃ,
 તદ્વત્ ‘દીહ’ દોર્ધો વાહ યેપા તે તથા ભુજગતુલ્યપરિઘતુલ્યલમ્બમાન

ફિર યે ‘મોગમૂમિ’ કે જીવ કૈસે હોતે હૈં ? હસી વિષયકો સૂત્રકાર
 પુનઃસ્પષ્ટ કરતે હૈ—‘ભુયગીસર ૦’ ઇત્યાદિ ૦ ।

ટીકાર્થ.— (ભુયગીસર-વિડલમોગ-આયાણ-ફલિહ-ઉચ્છદ્દીહ
 વાહ) સર્પરાજ કે વિપુલ શરીર કે સમાન તથા અગ્ને સ્થાન સે વહાર
 કિયે હુએ સુન્દર પરિઘા કે સમાન, જિનકી દોનો ભુજાયે દોર્ધ-લબી

તે લોગભૂમિના જીવો કેવા હોય છે, તેનું સૂત્રકાર હજી વધુ સ્પષ્ટીકરણ
 કરે છે “ભુયગીસર” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘ભુયગીસર-વિડલ-મોગ-આયાણ-ફલિહ-ઉચ્છદ્દીહ-વાહ’ એમની બન્ને
 ભુજાઓ સર્પરાજના વિશાળ શરીર જેવી, તથા તેના સ્થાનેથી બહાર આવવામાં

મુજાડત્યર્થઃ, ‘ રક્તતલોવડયમડયમસલ્સુજાયલક્ષણપસત્યઅન્નિદ્દજાલપાણી ’
તત્ર- ‘ રક્તતલ ’ રક્તતલો=લોહિતપ્રતલો ‘ ડયડય ’ ઉપચિતો=પુષ્ટો ‘ મડય ’
મૃદુકો=કોમલો ‘ મસલ ’ માસલો=અપ્પટ નાહી જાલો ‘ સુજાય ’ સુજાતો=
સુનિષ્પન્નો ‘ લક્ષણપસત્ય ’ લક્ષણ પ્રશસ્તો=અનેક શુભલક્ષણેઃ પ્રકૃષ્ઠો ‘ અન્નિદ્દજાલા-
અન્નિદ્દજાલો = પરસ્પર મિલિતત્વાત્ ડિદ્રહિતાદ્ગુલિસમુદાયવન્તી પાણી =
હસ્તો યેપા તે તથા ‘ પીવરસુજાયકોમલવરગુલી ’ પીવરસુજાતકોમલવરાદ્ગુ-
લયઃ = સુપુષ્ટસુન્દરકોમલાદ્ગુલિનિવન્ત ‘ તતલિણસુદ્ગુલનિદ્વગ્વા ’ તામ્રત-
લિનશુચિરુચિરસ્નિગ્ધ નત્વાઃ=તામ્રાઃ = રક્તાઃ તલિનાઃ=પ્રતલા શુચય=નિર્મલાઃ
રુચિરા=શાન્તિમન્તઃ સ્નિગ્ધાથ=ચિક્ષણા નત્વા યેપા તે તથા, ‘ નિદ્વપાણિલેહા ’
સ્નિગ્ધપાણિરેત્વાઃ = ચિક્ષણહસ્તરેત્વાવન્તઃ ‘ ચદપાણિલેહા ’ ચન્દ્રપાણિરેત્વા=
ચન્દ્ર =ચન્દ્રાકારા પાણી રેત્વા યેપા તે તથા ‘ સૂરપાણિલેહા ’ સૂરપાણિરેત્વા=

હોતી હૈં તથા—(રક્તતલોવ ડયમડયમસલસુજાયલક્ષણપસત્ય અન્નિદ્દ
જાલપાણી) જિનકે દોનોં જાય લોહિત તલિયો વાલે, પુષ્ટ ભરે હુણ-
કોમલનામે યુક્ત, માસલ-પુષ્ટઅદ્દટનાહીજાલવાલે, અન્ને રૂપમે નિષ્પન્ન
હુણ, અનેક શુભલક્ષણોં સે પ્રશસ્ત યર ડિદ્રહિત અગુલિયોં વાલે હોતે
હૈં તથા—(પીવરસુજાયકોમલવરગુલી) ઇનકી જો અગુલિયા હોતી હૈં
વે સુપુષ્ટ, સુન્દર યર કોમલ હોતી હૈં ! (તતલિણસુદ્ગુલનિદ્વગ્વા)
ઇન અગુલિયોં કે જો નલ્લ હોતે હૈં વે તામ્ર વર્ણવાલે હોતે હૈં તલિન-
પતલે હોતે હૈં, નિર્મલ હોતે હૈં, શાન્તિમાન્ હોતે હૈં તથા સ્નિગ્ધ-ચિકને
હોતે હૈં । (નિદ્વપાણિલેહા) જાયોં મેં જો રેત્વાળોં હોતી હૈં વે બી ચિકની
હોતી હૈં । (ચદપાણિલેહા) તથા ઇનકે જાયોં કી યે રેત્વાળોં કિતનીક નો
ચન્દ્રાકાર હોતી હૈં (સૂરપાણિલેહા) કિતનીક સૂર્ય કે આકાર કી હોતી

પરિધા (ભોગજો) સમાન લીર્ધ-લાગી હોય છે, તથા “ રક્તતલોવડયમડયમસલ
સુજાય-લક્ષણ-પસત્ય-અન્નિદ્દ-જાલપાણી ” જેમના બે ને હાથ લાલ હયેગીવાળા,
પુષ્ટ કોમળ મામલ-નસો તથા ડેગવાહિનીઓની બળ ન દેખી શકાય તેવા
સુધટિત, અનેક શુભ લક્ષણોથી પ્રશસ્ત, અને ડિદ્ર રહિત આગળીયો વાળા
હોય છે, તથા “ પીવર-સુજાય-કોમલ-વરગુલી ” તેમના હાથની આગળીયો
સુપુષ્ટ, સુદર અને કોમળ હોય છે “ તતલિણસુદ્ગુલનિદ્વગ્વા ” તે આગ-
ળીયોના નખ તામ્રવર્ણ હોય છે ‘ તલિન-પાતળા હોય છે નિર્મળ હોય છે
સુવાળા અને શાન્તિ યુક્ત હોય છે “ નિદ્વપાણિલેહા ” તેમના હાથમા જે
રેખાઓ હોય છે તે પણ સ્નિગ્ધ, સુવાળી હોય છે “ ચદપાણિલેહા ” તેમના
ઉપરની કેટલીક રેખાઓ ચન્દ્રાકાર, “ સૂરપાણિલેહા ” કેટલીક સૂર્યાકાર, કેટલીક

સૂર્યાકારદ્વસ્તરેલાનન્તઃ 'સપ્તપાણિલેહા' ગજપાણિરેવાઃ=ગજાકારદ્વસ્તરેલા-
નન્ત 'ચપ્તપાણિલેહા' ચક્રપાણિરેવા=ચક્રાકારદ્વસ્તરેલાનન્ત 'દિસાસોત્થિય
પાણિલેહા' દિશ્વસ્તિયપાણિરેવાઃ=દિશ્વસ્તિકઃ=દક્ષિણાર્તસ્તિકઃ=દક્ષિ
ણસ્તિકઃ તદાકારા પાણિરેવા યેષાં તે તથા 'રવિસસિમવચ્ચરચક્રદિસા
સોત્થિયપ્રિમત્તમુરહ્યપાણિલેહા' રવિશશિશ્વચ્ચરચક્રદિરસ્તિકપ્રિમત્તમુરચિત
પાણિરેવા=મૂર્યચ્ચગ્રહચક્રદક્ષિણાર્તસ્તિકલક્ષણાઃ પ્રિમત્તા=સ્પષ્ટાઃ સુરતિદાઃ
સુવદાઃ પાણિરેવાઃ=દ્વસ્તરેલા યેષાં તે તથા 'વરમહિસવરાહસિંહશાર્દૂલક્રમનાગવરપ્રતિપૂર્ણા પુલ
સ્કન્ધાઃ=તત્ર વરમહિપાઃ=પુષ્ટશરીરમહિપાઃ વરાહાઃ શ્કરાઃ સિંહા=મસિદ્વાઃ
શાર્દૂલાઃ=વ્યાઘ્રવિશેષાઃ ક્રમમાઃ=વલીવર્દાઃ નાગચરાઃ=પ્રધાનહસ્તિનઃ તેપામિષ
પ્રતિપૂર્ણ = પરિણદ્વો ત્રિપુલ=ત્રિશાલઃ સ્કન્ધો યેષા તે તથા 'ચતુરગુલ્પમાણ
કબુચરસરિસગીવા' ચતુરગુલિપ્રમાણકમ્બુચરમદ્યગ્રીવા - ચતુરગુલિપ્રમાણ
કમ્બુચરેણ=પ્રધાનગદ્ધેન સદશી=તુલ્યા ચ ગ્રીવા=યેષા તે તથા, 'અવદ્વિય મુવિષ

હૈ, તથા (સપ્તપાણિલેહા) કિતનિક શાલ્વ કે આકાર જેસી હોતી હૈ ।
(ચક્રપાણિલેહા) કિતનીક એસી હોતી હૈ કિ જિનકા આકાર ચક્ર કે
જેસા હોતો હૈ । તથા (દિસાસોત્થિયપાણિલેહા) કિતનીક એમી હોતી
હૈ જો દક્ષિણાવત સ્વતિક કે આકાર મેં રહતી હૈ । ઇસ તરહ ઇનકે
હાથોં કી સૂર્ય, ચંદ્ર, શાલ્વ, ચક્ર તથા દક્ષિણાવર્તસ્વતિક કે આકાર કી
યે રેવાઈ સ્પષ્ટ હોતો હૈ ઓર સુલ્લ દેનેવાલી હોતી હૈ । તથા-(વરમહિસ
વરાહ - સીંહસદ્ગુરિસહનાગવરપહિપુણવિઝલચ્ચા) ઇનકે જો સ્કંધ
હોતે હૈ વે પુષ્ટશરીરવાલે મહિષ, વરાહ, સિંહ, ચૈલ, પ્રધાન હાથી ઇનકે
સ્કંધો કે સમાન પરિણદ્વ-પુષ્ટ ઓર વિશાલ હોતે હૈ । તથા (ચતુરગુલ
પ્રમાણકબુચરસરિસગીવા) ચાર અગુલ પ્રમાણવાલે ઉત્તમ શાલ્વ કે
સમાન ઇનકી ગ્રીવા હોતી હૈ । (અવદ્વિયમુવિષત્તચિત્તસમસુ) તથા

“સપ્તપાણિલેહા” ૭ ખાકાર, “ચક્રપાણિલેહા” કેટલીક ચક્રાકાર અને “દિસા
સોત્થિયપાણિલેહા” કેટલીક દક્ષિણાવર્ત સ્વસ્તિકના આકારની હોય છે તેમના
હાથની તે ચન્દ્રાકાર આદિ રેખાઓ સ્પષ્ટ અને સુખદ હોય છે તથા “વર
મહિસ-વરાહ-સીંહ-સદ્ગુરિસહ-નાગવર-પહિપુણ-વિઝલચ્ચા” તેમના બધા
પુષ્ટ શરીર વાળા પાડા, વરાહ, સિંહ, બળદ અને ગજેન્દ્રના સ્કંધો જેવા
પુષ્ટ અને વિશાળ હોય છે તથા “ચતુરગુલપ્રમાણકબુચરસરિસગીવા” તેમની
ગ્રીવા ચાર અગુલ પ્રમાણ વાળા ઉત્તમ શાળ જેવી હોય છે “અવદ્વિય

चचित्तसमम् ' अस्मिन्मुनि रत्नचित्रज्ञानम् - आस्थितानि=सम्पत्तया यथा-
स्थान जातानि दुर्भिक्षानि=गोभक्त्या विभागेन स्थितानि चित्राणि=शोभया
विस्मयजनकानि इमंश्रुणि येषां ते तथा । 'उच्यियमगलपसत्य मद्भूत्रिउलहणुया'
उपचितमासलप्रशस्तागार्द्विपुलहनुका.=उपचित=पुष्टः अतएव मासल=मांस-
युक्तः प्रशस्तः तथा गार्द्वस्येव विपुलश्च हनु'='ओष्टाऽधोभागो येषां ते तथा
'ओयवियमिलप्पवालविंफलसनिभाधगेष्टा ' ओयवियमिलप्रवालविम्बफलस-
निभाधरोष्टा='ओयविय' इति विष्टिपरिक्लिप्त समस्क्रत यन्त्रिणप्रवाल=
विद्रुम', तथा विम्बफल च ताभ्यां मतिभ.=सदृशो रक्तोऽरीण्डो येषां ते तथा
'पटुरससिस्फुर-विमलसखगोखीर - फेणकुददगरयमुणालिया - धवलदत्तसेढी '
पाण्डुरशशिचरलविमलरङ्गोक्षीरफेनकुन्ददन्तरजोमृणात्रिणप्रवलदन्ताश्रेणयः=तत्र-
पाण्डुर=श्वेत यत् शशिशब्द=चन्द्रचण्ड तथा विमलशब्द' प्रतीत' गोक्षीर=गोदुग्ध
फेन'=नदीजलात्फेन कुन्द=श्वेतपुष्पविशेष दन्तरज'=जलविन्दु' मृणालिका=
इनकी दाढ़ी के जो बाल होते हैं वे अच्छी तरह से जटा जिन्हें उत्पन्न

होना चाहिये वहा उत्पन्न होते हैं, अच्छी तरह विभागरूप से स्थित
रहते हैं, और अपनी शोभा से विस्मयजनक होते हैं । तथा (उच्यिय-
मसत्पसत्यसदूलविउलहणुया) इनके होठों के नीचे का जो भाग होता
है वह पुष्ट होता है, मामल होता है, प्रशस्त-सुहावना होता है और
सिंह की दाढ़ी के समान विपुल-विस्तृत होता है । (ओयवियसिलप्प-
वालविंफलसनिभाधगेष्टा) तथा इनके जो अधरोष्ठ होते हैं वे अच्छी
तरह परिकर्मित किये हुए मूंगे के समान और विम्बफल-कुन्द के
समान रक्त होते हैं (पटुरससिस्फुरविमल सखगोखीरफेणकुददगर-
यमुणालियाप्रवलदन्तसेढी) तथा-इनका जो दांतों की पक्ति होती है
वह शुभ्रचंद्रमा के श्वेत जैसी, निर्मल शङ्ख जैसी, गाय के दूध जैसी,

सुविमचचित्तसमम् " तथा तेभनी दाढीना वाण न्या जेभने उगवु जेधये
त्या न उगेवा डोय छे, सागी रीते विलाजित डोय छे, अने तेभनी शोला
अभुत डोय छे, तथा " उच्यियमसल पसत्यसदूलविउल हणुया " तेभना
होठनी नीचेना भाग पुष्ट, मामल, शोबितो, अने मिडनी दाढीना जेवो
विपुलविस्तृत होय छे " ओयवियसिलप्पवालविंफलसनिभाधगेष्टा " तेभना
अधर-रीठो सागी रीते तैयार जेवेल पगवाणा जेवा तथा जिम्भाधुण-कुदरा जेवा
लाय छेय छे ' पटुरससि-मरुत-विमल-सख-गोखीर-फेन कुन्दगरयमुणालिया
धवलदत्तसेढी ' तेभनी दत्त पक्तिओ शुभ्र चंद्र भउ जेवी, निर्मल शङ्ख जेवी
गायना दूध जेवी, नदी जण आदिना डीण जेवी, श्वेत पुष्प जेवी, जणना

કમલનાલતન્તુ તદ્વદ્ધમગ દન્તશ્રેણી=દન્તપ્રત્યક્તિર્યેષાં ને તથા અવલદન્તા= પરિપૂર્ણદન્તા 'અફુડિયદતા' અફુટિતદન્તા=અનુપત્તદન્તાઃ અવિરલદન્તા= અચ્છિદ્રદન્તાઃ મુખનદન્તા इत्यर्थः 'મુગિ'દતા' મુખ્નિગદન્તા 'અરુનદન્તવન્તાઃ મુજાયદન્તા' મુજાતદન્તાઃ = મુનસ્થિતદન્તા 'અગદતસેદિવ્યઅણેગદતા' એકદન્તશ્રેણિરિતિ અનેકદન્તા યેષા દ્વાશ્રિયદન્ત અપિ મુશ્ચિષ્ટતાદેકદન્તવદ્ દશ્યન્તે इत्यर्थः । 'દુયવહનિ તથોયતત્તરણિજ્જરત્તલતાલુજીહા' દુતવહ નિર્ધાતધાતત્તત્તપનીયસ્પતત્તગાનુજિહા = તત્તરણેન = મલિના નિર્માત = તાપિત ધૌત=પિગોપિત તત્તનયત્તપનીય=સુવર્ણ નેન તુલ્ય રક્તનલ=રક્તર્ણ તાલ-

નદી જલ આદિ કે ફેન જેમી, મેનપુષ્પપ્રિયેષ જામી, જલ કી બિન્દુ જેસી, તથા મૃણાલિકા-કમલ નાલ કે તન્તુ જેસી થવલ હોતી હૈ (અવલદન્તા) તથા ડનકે દાંત પરિપૂર્ણ હાંતે હૈ-(અફુડિયદના) તથા યે અસ્ફુટિત દાંતોગાલે હોતે હૈ-ડયદ ગ્યામડ ડનકે દાંત નહોં હોતે હૈ । ઓર ન દૂટે ફૂટે હી હોતે હૈ (અવિરલદના) તથા ઇનકે દાંત અચ્છિદ્ર હોતે હૈ-દૂર ૨ નહોં હોતે હૈ । અર્થાત્-પરસ્પર મેં એક દૂસરે દાંત કે સાય મિઝે નુર રહતે હૈ । તથા (મુગિદ્વદના) યે દાંત ઇનકે રક્ષના સે વિહીન હોતે હૈ અર્થાત્ ચિકને હોતે હૈ (મુજાયદના) વહુત અચ્છી તરહસે યે સસ્થિત-મમ્મડોં મેં ગઢે જાગ રહતે હૈ (અગદતસેદિવ્યઅણેગદતા) યથાપિ યે દાંત ઇનકે યત્તીસ હી હોતે હૈ ફિર ની પરસ્પર મેં મુશ્ચિષ્ટ હોને કે કારણ એક દાંત કી તરહ હી દિશ્વતે હૈ તથા-(દુયવહનિદ્વતથોયતત્ત- તવણિજ્જ રક્તનલનાલુજીહા) જિનકી તાલુ એવ જિહ્વા વહિ સે તપાવે ગયે

ખિન્દુ જેવી, તથા કમળનાલના તત્તુ જેવી, ધનલ હોય છે “અવલદન્તા” તેમના દાંત પરિપૂર્ણ હોય છે ઓછા કે વધારે હોતા નથી “અફુડિયદતા” તેમના દાંત અસ્ફુટિત હોય છે—પોલાણુ વાળા હોતા નથી અને તૂટેલા પથ્થુ હોતા નથી “અવિરલદન્તા” તથા તે દાંત પાસે પાસે હોય છે દૂર દૂર હોતા નથી એટલે કે પરસ્પર એક બીજા સાથે અડકીને રહેવા હોય છે, તથા “મુગિદ્વદન્તા” તેમના બે દાંત રક્ષતાથી રહિત એટલે કે સુવાળા હોય છે “મુજાયદન્તા” તે ઘણી સાગી રીતે પેલામા રહેલા હોય છે “અગદતસેદિવ્ય અણેગદતા” બે કે તેમને બત્રીસ દાંત હોય છે, છતાં પથ્થુ પરસ્પર એવી રીતે અડોઅડ આવેલા હોય છે કે તે એક દાંત હોય તેવા દેખાય છે તથા “દુયવહનિદ્વતથોયતત્તરણિજ્જરત્તલતાલુજીહા” જેમનું તાળુ અને છલ આગમ તપાવેલ શુદ્ધ સુવર્ણના જેવા લાલ સપાટી વાળા હોય છે તથા

જિહ્વ યેપા તે તથા 'ગરુલાયયઝ્જુતુગનાસા' ગરુડાયતક્રજુતુગનાસાઃ=ગરુડસ્યેવ
 આયતા=દીર્ઘા રુઝ્ઝી=સરલા તુદ્ધા=મમુન્નતા નાસા યેપા તે તથા અવદાલિયપુડરીય
 ણયણા ' અવદાલિતપુડરીકનયનાઃ=વિકસિતસિતમ્લતુલ્યનેત્રાઃ ' વિકોસિય
 ધવલપત્તલચ્છા ' વિકોશિતયત્પત્તલાક્ષાઃ=વિકોસિતે=વિકસિતે પ્રસન્ને સદા
 પ્રમુદિતસ્માત્તેપા, ધવલે=શ્વેતે પત્રલે=પદ્મવતી ચ અક્ષીણિ=નેત્રે યેપા તે તથા ।
 ' આણામિય ચાવરુહલકિન્હવ્ભરાઈસઠિયસગયાયસુજાયભૂમગા ' આનામિત
 ચાપરુચિરકૃષ્ણાભ્રમરાજિસસ્થિતસદ્ગતાયતમુજાતમુવ = આનામિતૌ = વક્રીકૃતૌ
 ચાપૌ = ધનુષી તદ્વત્રુચિરે કૃષ્ણાભ્રરાજિસસ્થિતે=કૃષ્ણમેધરેલાસદૃશે સદ્ગતે=
 સમુચિતે આયતે=દીર્ઘ મુજાતે=સ્વભાવતઃસુન્દરાકારે ચ મુગૌ યેપા તે તથા ।
 ' અલીણપમાણજુત્તસવળા ' આલીનપમાણયુક્તશ્રવળાઃ = આલીનો=સ્તવ્યો પ્રમાણ-
 યુક્તૌ=સમુચિતપ્રમાણો શ્રવળો=ઋણો યેપા તે તથા एतापदेव न किन्तु ' सुस्सवणा'
 મુશ્રવળાઃ = શબ્દગ્રહણશક્તિસમ્પન્નર્ણયુક્તા', ' પીળમસલકગોલદેસમાગા ' પીન

શુદ્ધ તસ મુવર્ણ કે સમાનરક્ત તલચાલી होती है । तथा (गरुलायग
 ष्जुतुगनासा) जिनकी नासिका गरुड की नासिका के समान दीर्घ,
 सरलऔर समुन्न होती है । तथा (अवदालियपुडरीयणयणा) जिनके
 नेत्र विकसित शुभ्र कमल के समान होते हैं । तथा-(विकोसियधवल-
 पत्तलच्छा) जिनकी दोनों आखे विकसित धवलवर्णोपेत, एव पद्मवाली
 होती है । (आणामियचावरुहलकिण्हव्भराइ सठियसगयायसुजायभूमगा)
 तथा जिनकी भोहैं वक्रीकृत धनुष्य के समान रुचिर, कृष्णमेवप्रकित के
 जैसी अत्यंतकाली, सगत-लवी २ एव स्वभावतःआकार में सुन्दर होती
 है (अलीणयमाणजुत्तसवणा) तथा-जिनके दोनों कान स्तव्य और
 समुचित प्रमाणवाले होते हैं (सुस्सवणा) तथा-शब्दग्रहण करने की
 शक्तिसे सपन्न होनेके कारण जिनके दोनों कान सच्चे अर्थमें सुश्रवण

“ गरुलायगव્જ્જુતુગનાસા ” જેમની નાસિકા ગરુડની આંચ જેવી લાંબી, સરલ
 અને ઉન્નત હોય છે તથા “ અવદાલિયપુડરીયણયણા ” જેમના નયન વિકસિત
 શ્વેત કમળ જેવા હોય છે, તથા “ વિકોસિયધવલપત્તલચ્છા ” જેમની બંને
 આંખો વિકસિત, શ્વેતવર્ણની અને પદ્મવાળી હોય છે “ આણામિય ચાવરુહલ
 કિન્હવ્ભરાઈસઠિયસગયા યય મુજાયભૂમગા ” તથા તેમની ભ્રમરો વક્ર ધનુષ્યના
 જેવી મનોહર, કાળા વાદળોની પદ્ધિ સમાન અત્યંત ડાળી, સગત-લાંબી
 અને સ્વભાવિક રીતે જ દેખાવામા સુદર હોય છે “ અલીણપમાણજુત્તસવળા ”
 તથા જેમના બંને કાન સ્તવ્ય અને પ્રમાણુનરના હોય છે “ સુસ્સવળા ”
 શબ્દ સાંભળવાની શક્તિવાળા હોવાને કારણે જે ખરા અર્થમા સુશ્રવણ છે,

માસલકપોલદેશભાગાઃ=પીની = પીરરી-માંગલો = પુટ્ટી ચ કપોલદેશભાગો =
 કપોલો યેવાં તે તથા 'અચિરુગ્ગય-ચાલચદ-સઠિયમહાનિગટા' અચિરોદ્ગ
 ચાલચન્દ્રસંસ્થિતમહાલગટા = અચિરોદ્ગ = અપ્રતિગમમાપ્રોદિતઃ = અદ્યમીતિયિસ
 મ્યન્ધીત્યર્થઃ, અતએ ચાલચન્દ્રઃ અર્પણચન્દ્રઃ અર્દ્રચન્દ્ર ઇત્યર્થઃ, તત્સંસ્થિત =
 તત્સંસ્થાનયુક્ત તદાકારક મદન્ = વિગાચ્ પટ્ટાદગલપમાગ ત્લાટ યેવાં
 તે તથા અર્દ્રચન્દ્રાકારલગટા ઇત્યર્થઃ । 'ઉદ્ગહપડિપુણ્ણસોમ્મવયણા' ઉદ્ગ
 તિમતિપૂર્ણસોમ્મવદના = પૂર્ણચન્દ્રાદાહાકમુખ્યાઃ 'છત્તાગારુત્તમગદેસા' છત્તા
 કારોત્તમાદ્દેશઃ = છત્તચ્ચગ્ગોત્તમમસ્તકાઃ 'ઘગનિચિયમુવદ્ધલક્ષણગુણકૂઢા
 ગારનિમપિંડિયગસિરા' ઘનનિચિતમુવદ્ધલક્ષણોત્તમગટાકાનિમપિંડિકાપ્રશિસ
 = ઘનચત્ત = લોહમુદ્રરચ્ચિચિત્ત = સમ્મુત્ત ચુવદ્ધ = સ્નાયુમિ લક્ષણોત્તમ = ત્રિશિષ્ટ
 ણયુક્ત તથાકૂઢાકારનિમ = પ્રાસાદશિલ્પરમદ્ધ ચત્તુર્યાત્ પિંડિકેર અપ્રશિરઃ =
 મસ્તકાગ્રભાગો યેવા તે તથા સુન્દરલક્ષણયુક્તમુવિશાઠચત્તુર્યમન્તકાપ્રમાણ

હે તેસે કાનો સે જો યુક્ત હોતે હૈ । તથા-પીળમસલકપોલદેસભાગા)
 જિનકે દોનો કપોલ પીર, ઓર માસલ હોતે હૈ (અચિરુગ્ગચાલચદ
 સઠિયમહાનિલા) તથા-જિનકા મટાલલાટ અદ્યમી કે અર્ધચન્દ્ર કે
 સમાન આકાર કા હોના હૈ અર્થાત્ આઠ અગુલ પ્રમાણ આકાર ચાલા
 હોતા હૈ । (ઉદ્ગહપડિપુણ્ણસોમ્મવયણા) તથા જિનકા મુલ, પૂર્ણચન્દ્ર
 કે સમાન આલ્લાદકારક હોતા હૈ । (છત્તાગારુત્તમગદેસા) તથા-
 મસ્તક ઉત્તર કી તરફ ઘૂસ-ગોલ ઓર ઉત્તર હોતા હૈ (ઘગનિચિયમુવ
 દ્ધલક્ષણગુણયકૂઢાગારનિમપિંડિયગસિરા) તથા મસ્તક કા અગ્રભાગ
 લોહમુદ્રર કી તરફ નિચિત-ગાઢ-ભરા હુઆ-તથા સ્નાયુઓ સે અઢી
 તરફ જકડા હુઆ, તથા અનેક વિધ વિશિષ્ટ લક્ષણો સે યુક્ત તથા
 પ્રાસાદ કે શિલ્પર કે સમાન ઉત્તર તથા પિંડિકા-પિંડી કે જૈસા-ગોલ

એવા કાન વડે જે યુક્ત હોય છે “પીળમસલકપોલદેસભાગા” જેમના
 બને ગાલ પીર, અને માસલ હોય છે “અચિરુગ્ગયચાલચદસઠિયમહાનિ
 લાહા” તથા જેમના વિશાળ લલાટ આઠમના ચંદ્રના જેવા આકારના હોય છે
 એટલે કે આઠ આગળ પહોળા હોય છે “ઉદ્ગહપડિપુણ્ણસોમ્મવયણા”
 તથા જેમનું મુખ પૂર્ણચન્દ્રના જેવું આલ્લાદ કારક હોય છે “છત્તાગારુત્ત
 મગદેસા” તેમનું માથું છત્રના જેવું ગોળ અને ઉત્તર હોય છે “ઘગનિચિ
 યમુવદ્ધલક્ષણગુણયકૂઢાગારનિમપિંડિયગસિરા” તથા તેમના મસ્તકને અગ્ર ભાગ મગ
 ણના જેવો નિચિત-ગાઢ-ભરેલો તથા સ્નાયુઓ વડે સારી રીતે બધાયેલો, તથા
 અનેક પ્રકારના આસ લક્ષણોથી યુક્ત તથા પ્રાસાદની ટોચ જેવો ઉત્તર તથા પિંડીના

દ્વિતીય', 'હુતવદ્નિદ્વત્તયતત્તવગિજ્જરત્તકેસાકેસભૂમી' હુતવદ્નિર્માત
 ધૌતતપ્તપત્તીયરક્તકેશાન્તકેશભૂમયઃ=તત્ત હુતવદ્ન=વહ્નિના નિર્માત=તાપિ-
 તમ્ અતપ્ત-ધાત=વિશોધિત તપ્ત ચ યત્તપત્તીય=સુવર્ણ તદ્વદ્ રક્તાઃ=રક્તવર્ણાઃ
 કેશાન્તાઃ=કેશસમીપસ્થા કેશભૂમીઃ મસ્તકત્વચા યેપા તે તથા તપ્તસુવર્ણસદૃશ-
 રક્તવર્ણ શિરસ્ત્વરૂ સન્પન્નાઃ। 'સામલિપોઢવગનિચિયચ્છોડિયમિઝવિસયપસત્ય-
 સુદુમ્લક્ષણસુગધસુદરભુયમોયગભિગનીલકજ્જલપહિટ્ટભમરગણનિદ્વનિઝરવનિચિય
 કુચિયપયાહિણાવત્તમુદ્ધસિરયા' શાલ્મલીપોઢવનનિચિત્તધોટિતમૃદુવિશદપ્રશસ્ત
 સૂક્ષ્મલક્ષણસુગન્ધસુન્દરમોચકમૃદ્વનીલકજ્જલપટ્ટાટ્મમરગણસ્થિગ્નિકુરુમ્વનિ
 ચિત્તકુચિતપ્રદક્ષિગાવર્ત્તમૂર્ધશિરોજા, તત્ત-'સામલિ' શાલ્મલિ=વૃક્ષવિશેષતસ્ય યત્
 'પોઢ' ફલ તત્ત 'ઘનનિચિય' ઘનનિચિત્તમ્ = આભ્યન્તરભાગસમૃત્તતયાડતિ
 કઠિન તત્ત 'છોડિય' છોટિત=વિદારિત તદ્વત્ 'મિઝ' મૃદવઃ=સોમલઃ 'વિસય'
 નિશદાઃ=સુસ્પૃષ્ઠતા 'પસત્ય' પ્રશસ્તાઃ=શ્રેષ્ઠા 'સુદુમ' સૂક્ષ્માઃ=પ્રતલા
 'લક્ષણ' લક્ષણા=શુભ લક્ષણયુક્તાઃ સગન્ધય=સુરભિગન્ધવિગિષ્ટાઃ=મનોહરાઃ

૨ હોતા છે। (હુતવદ્નિદ્વત્તયતત્તવગિજ્જરત્તકેસતકેસભૂમી) તથા
 તથા જિનકી કેશાન્તભૂમિ-મસ્તક કી ત્વચા-અગ્નિ સે તપાયે હુએ શુદ્ધ
 તપ્ત સુવર્ણ જૈસી રક્તવર્ણવાલી હોતી છે (સામલિપોઢવગનિચિયચ્છોડિય-
 મિઝવિસયપસત્યસુદુમ્લક્ષણસુગધસુદરભુયમોયગભિગનીલકજ્જલપહિટ્ટ-
 ભમરગણનિદ્વનિઝરવનિચિયકુચિયપયાહિણાવત્તમુદ્ધસિરયા) તથા જિનકે
 કેશ, શાલ્મલિવૃક્ષ કે-રુઆ સે ખીતર સે ભરે હુએ તથા કઠિન બને હુએ
 વિદારિત ફલ કે સમાન મૃદુ હોતે હૈં, શાલ્મલી વૃક્ષ કા ફલ જથ પક
 જાતા છે તો વહ કઠિન હો જાતા છે, ઓર ડસકી ખીતર કી ભરી હુઈ
 રૂઈ વહુત્ત અધિક ચિકની હો જાતી છે। વહ વડી નરમ ઓર ચિકની
 રહતી છે। ઇમલિયે સૂત્રકાર ને ડસકે સાથ વાલોં કો ઉપમિત કિયા છે।

બેવા ગોળ ગોળ હોય છે "હુતવદ્નિદ્વત્તયતત્તવગિજ્જરત્તકેસતકેસભૂમી" તથા
 બેમની ડેશાન્તભૂતિ-માથાની ત્વચા-અગ્નિથી તપાવેલા શુદ્ધ સુવર્ણ બેવા લાલ
 વર્ણની હોય છે "સામલિપોઢવગનિચિયચ્છોડિયમિઝવિસયપસત્યસુદુમ્લક્ષણસુગધસુ
 દરભુયમોયગભિગનીલકજ્જલપહિટ્ટભમરગણનિદ્વનિઝરવનિચિયકુચિયપયાહિણાવત્તમુદ્ધસિરયા"
 તથા બેમના ડેશ ગાત્રમલિ વૃક્ષના, (શીમળા) અદરથી રૂવાટીથી ભરેલા
 તથા કંઠથી બનેલ ગળેલા રૂળ સમાન મૃદુ હોય છે શીમળાના રૂળ બ્યારે
 પાકે છે ત્યારે કંઠથી થઈ જાય છે, અને તેની અદર રહેલ રૂવાટી ઘણી સુલા-
 યમ થઈ જાય છે તે ઘણી નરમ અને સુવાળી રહે છે તેથી સૂત્રકારે તે
 રૂવાટી સાથે કેવળની સરખામણી કરે છે તેમના કેશ વિશદ-સુસ્પૃષ્ઠ, પ્રશસ્ત-

માંસલરુપોલદેશભાગા. = પીની = પીરો - મામલી = ગુટી ન રુપોલદેશભાગો =
 કપોલી યેપા તે તથા ' અચિરુગય-ચાલચદ-મઠિયમહાનિગટા ' અચિરોદ્ધ
 ચાલચન્દ્રસંસ્થિતમહાલગટા = અચિરોદ્ધ = અદ્યમમાત્રોદિતઃ = અદ્યમોતિયસ
 મ્યન્ધીત્યર્થઃ, અતएव ચાલચન્દ્રઃ અર્ણવન્દ્રઃ મર્દવન્દ્ર ઇત્યર્થઃ, તત્સંસ્થિતં =
 તત્સંસ્થાનયુક્ત તદાકારક મહન્ = વિભાગ્ય અદ્યમગુલપમાળ ગ્લાટ યાં
 તે તથા અર્દ્ધચન્દ્રાકારગટા ઇત્યર્થઃ । ' ઉદ્ધવહૃદિપુણ્ણસોમ્મવયણા ' ઉદ્ધ
 તિપતિપૂર્ણસોમ્મવદનાઃ = પૂર્ણવન્દ્રચાલચદકમુલ્યાઃ ' છત્તાગારુત્તમગદેમા ' છત્તા
 કારોત્તમાદ્દેશાઃ = છત્તાચ્છગ્ગોત્તમસ્તકા ' ઘનનિચિયમુવદ્ધલક્ષણુગ્ગકૂડા
 ગારનિમ્પિંડિયગ્ગસિરા ' ઘનનિચિત્તમુવદ્ધલક્ષણુગ્ગકૂડાકારનિમ્પિંડિયાગ્ગસિરા
 = ઘનચત્ત્વરોદ્ધવદ્ધરવચિચિત્ત = સમ્મુત્ત મુવદ્ધ = સ્નાયુમિ લક્ષણોત્તત = વિશિષ્ટલક્ષ
 ણયુક્ત તથાકૂડાકારનિમ્પિંડિયાગ્ગસિરા = પ્રાસાદશિખરમદ્યન ચતુર્ભુજાત્ પિંડિકા પ્રપ્રશિરઃ =
 મસ્તકાગ્રભાગો યેપા તે તથા સુન્દરલક્ષણયુક્તમુવિશિષ્ટચતુર્ભુજાત્તમસ્તકાગ્રભાગા

હૈ જેસે કાનો સે જો યુક્ત હોતે હૈ । નયા-પીળમસલરુપોલદેશભાગા)
 જિનકે દોનો કપોલ પીર, ઓર માસલ હોતે હૈ (અચિરુગયચાલચદ
 સઠિયમહાનિલા) તથા-જિનકા મહાલગટા અદ્યમી કે મર્દવન્દ્ર કે
 સમાન આકાર કા હોના હૈ અર્થાત્ આઠ અગુલ પ્રમાણ આકાર ચાલ
 હોતા હૈ । (ઉદ્ધવહૃદિપુણ્ણસોમ્મવયણા) તથા જિનકા મુલ, પૂર્ણવન્દ્ર
 કે સમાન આલ્હાદકારક હોના હૈ । (છત્તાગારુત્તમગદેમા) તથા-
 મસ્તક છત્ર કી તરહ ઘૃત્ત-ગોલ ઓર ઉત્તત હોતા હૈ (ઘનનિચિયમુવ
 દ્ધલક્ષણુગ્ગકૂડાગારનિમ્પિંડિયગ્ગસિરા) તથા મસ્તક કા અગ્રભાગ
 લોહમુદ્રર કી તરહ નિચિત-ગાદ-ભરા હુઆ-તથા સ્નાયુઓ સે અઝી
 તરહ જરૂડા હુઆ, તથા અનેક વિધ વિશિષ્ટ લક્ષણો સે યુક્ત તથા
 પ્રાસાદ કે શિખર કે સમાન ઉત્તત તથા પિંડિકા-પિંડી કે જૈસા-ગોલ

એવા કાન વડે જે યુક્ત હોય છે “ પીળમસલરુપોલદેશભાગા ” જેમના
 બને ગાલ પીર, અને માસલ હોય છે “ અચિરુગયચાલચદસઠિયમહાનિ
 લાહા ” તથા જેમના વિભાગ લલાટ આઠમના ચંદ્રના જેવા આકારના હોય છે
 એટલે કે આઠ આગળ પહોળા હોય છે “ ઉદ્ધવહૃદિપુણ્ણસોમ્મવયણા ”
 તથા જેમનું મુખ પૂર્ણચંદ્રના જેવું આલ્હાદ કારક હોય છે “ છત્તાગારુત્ત
 મગદેમા ” તેમનું માથું છત્રના જેવું ગોળ અને ઉત્તત હોય છે “ ઘનનિચિય
 મુવદ્ધલક્ષણુગ્ગકૂડાગારનિમ્પિંડિયગ્ગસિરા ” તથા તેમના મસ્તકને અથ્ર ભાગ મગદ
 ણના જેવો નિચિત-ગાદ-ભરેલો તથા સ્નાયુઓ વડે સારી રીતે બધાયેલો, તથા
 અનેક પ્રકારના આસ લક્ષણોથી યુક્ત તથા પ્રાસાદની ટોચ જેવો ઉત્તત તથા પિંડીના

“ छत्र १ तामरस २ धनु ३ रथारोह दम्भोलि ५ कूर्मा ६ ५ कुशाः ७ ।

वापी ८ स्वस्तिक ९ तोरणानि १० यमरः ११ पञ्चाननः १२ पादपः १३ ॥

चक्र १४ शङ्ख १५ गजा १६ समुद्र १७ कलशौ १८ ग्रामाद १९ मत्स्यौ २० यवौ २१

यूप २२ स्तूप २३ कमण्डलू २४ अवनिभृत् २५ मन्त्रामरो २६ दर्पणम् २७ ॥ १॥

उक्षा २८ पताका २९ कमलाभिपे ३० सुताम ३१ केकी ३२ घनपुष्पभाजाम् ॥

‘हसस्तरा’ ह्रस्वराः=ह्रस्वत्वरा-स्निग्धत्वान् ‘कोचस्मरा’ कौञ्चस्मराः=
कौञ्चपक्षित्वराः-सूक्ष्ममृदुत्वान्, ‘दुदुहिस्मरा’ दुन्दुभित्वराः-गम्भीरत्वात्

धारण करने वाले होते हैं। प्रशस्त चत्तीस लक्षणों के नाम इस प्रकार हैं—
(१) छत्र, (२) कमल, (३) धनुष, (४) उत्तमरथ, (५) दम्भोलि-वज्र,
(६) कूर्म-कच्छप, (७) कुश, (८) वापी, (९) स्वस्तिक, (१०) तोरण,
(११) तालाव, (१२) पञ्चानन-सिंह, (१३) पादप, (१४) चक्र, (१५) शङ्ख,
(१६) गज, (१७) समुद्र, (१८) ग्रामाद, (१९) मत्स्य, (२०) यव, (२१)
यूप-स्तम्भ (२२) स्तूप, (२३) कमण्डलु, (२४) अवनिभृत्-पहाड़-पर्वत,
(२५) सुन्दर चामर, (२६) दर्पण, (२७) उक्षा-चैल, (२८) पताका, (२९)
अभिप्रेकयुक्त लक्ष्मी (३०) सुताम-सुन्दरमाला (३१) केकी-मयूर और
(३२) पुष्प (हसस्तरा) इनका स्वर स्निग्ध होने से इस के स्वर के समान
होता है। (कोचस्मरा) सूक्ष्म और मृदु होने के कारण कौञ्चपक्षी के

श्रेष्ठ पञ्चीन लक्षणों धारण करनेवाले हैं। श्रेष्ठ पञ्चीन लक्षणों का
नाम आ प्रमाणों हैं—

(१) छत्र (२) कमल (३) धनुष (४) उत्तमरथ (५) दम्भोलि-वज्र (६)
कूर्म कच्छप (७) कुश (८) वापी (९) स्वस्तिक (१०) तोरण (११) तालाव
(१२) पञ्चाननसिंह (१३) पादप (वृक्ष) (१४) चक्र (१५) शङ्ख (१६) गज
(१७) समुद्र (१८) ग्रामाद (१९) मत्स्य (२०) यव (२१) यूप-स्तम्भ (२२)
स्तूप (२३) कमण्डलु (२४) अवनिभृत्पहाड़ (२५) सुन्दर चामर (२६) दर्पण
(२७) उक्षा-चैल (२८) पताका (२९) अभिप्रेकयुक्त लक्ष्मी (३०) सुताम-
सुन्दर माला (३१) केकी मयूर (३२) पुष्प “हसस्तरा” तेमनो स्वर मृदु
होवाथी होना जेवो होय छे, “कोचस्मरा” सूक्ष्म अने मृदु होवाथी होय
पक्षीना स्वर जेवो होय छे, “दुदुहिस्मरा” गलार होवाथी दुदुहिना अवा-

१, तामरस=कमलम् २। २ दम्भोलि=वज्रम् १। ३ पञ्चानन=सिंह १२।
४ यूप=स्तम्भ २२। ५ स्तूप=‘चोतरा’ इति भाषा प्रसिद्धा २३। ६ अवनिभृत्=
पर्वत २५। ७ उक्षा=चलीर्द्ध २८। ८ कमलाभिप्रेक-अभिप्रेकयुक्ता लक्ष्मी ३०।
९ सुताम=माला ३१। १० केकी=मयूर ३२।

તથા ' ધ્રુવમોયગ ' ધ્રુવમોચક્રઃ=કૃષ્ણચર્ણો રત્નચિરેષઃ મિગ ' ધ્રુદ્ધાઃ=ચૂર્ણિતાદ્વાર
 ' કોલસા ' इति भाषा प्रसिद्धः, नील=नीलमणिः, ' नील ' इति प्रसिद्धः,
 कज्जलम्=अञ्जन ' पद्मिद्वभमरगण ' प्रमुदितभ्रमरगण=प्रमुदित भ्रमरगण, इत्येतैः
 सदृशाः स्निग्धाः=कृष्णकान्तयः ' निउर ' निगुरम्याणि=ममृहस्था. निचिता=
 समद्धाः ' कुचिय ' कुञ्चिताः=कुट्टिता ' पयाहिणावत् ' मदक्षिणावर्त्ताश्च=दक्षि
 णावर्त्तयुक्ता ' मुदसिरया ' मूर्धशितोजा.=मस्तककेशा येषां ते तथा । ' सुजा
 यमुविभक्तसगयगा ' सुजातमुविभक्तमगताद्वा : = गुणिपद्मसुस्पष्टममुचितशरी
 रावयवाः, ' लखगवजणगुणोववेया ' लक्षणव्यञ्जनगुणोववेया = लक्षणानि =
 स्वस्तिकादीनि न्यञ्जनानि=मणितिलकादीनि गुणानि-सौभाग्यादीनि वैस्पेताः
 ' पसत्यवत्तीसलखणधरा ' प्रशस्तद्वानिशल्लक्षणरा ? =प्रशस्तानि यानि द्वानि
 शल्लक्षणानि उत्र कमलादिरूपाणि येषां ते तथा, द्वानिशल्लक्षणानि यथा—

તથા બનકે કેશ વિશદ-સુસ્પષ્ટ, પ્રશસ્ત-શ્રેષ્ઠ, સૂદૃઢ પતલે, શુભલક્ષણો
 સે યુક્ત, અચ્છી ગંધવાલે ઓર મનોહર હોતે હેં । તથા ઇનકા વર્ણ કૃષ્ણ
 વર્ણ નામક રત્નાવશેષ કે જૈસા, ધ્રુવ-ચૂર્ણિત કોલસા કે જૈસે, નીલ-
 નીલમણિ જૈસે, કજ્જલ-અજન કે જૈસે ઓર પ્રમુદિત ભ્રમરો કે સમૂહ
 જૈસે, કાલે હોતે હેં । યે કેશ મસ્તક મેં વિરલે નહીં હોતે હેં-કિન્તુ
 સમુદાય રૂપ મેં સઘન રહતે હેં । ઈક દૂમરે સે સવદ્ધ હોતે હે, કુટિલ-
 ઘુઘરાલે હોતે હેં ઓર દક્ષિણાવર્ત વાલે હોતે હ । (સુજાયસુવિભક્તસગ
 યગા) ઇનકે શારીરિક અવયવ સુનિષ્પન્ન, સુસ્પષ્ટ એવ સમુચિત સનિવે
 શવાલે હોતે હેં (લક્ષ્મણવજ્રણગુણોવવેયા) સ્વસ્તિકા આદિ લક્ષણો સે
 મપા, તિલક આદિ વ્યજનો સે એવ સૌભાગ્ય આદિ સદ્ગુણો સે યે યુક્ત
 હોતે હેં । (પસત્યવત્તીસલક્ષણધરા) પ્રશસ્ત વત્તીસ લક્ષણોં કો યે

શ્રેષ્ઠ, સૂદૃઢ-પાતળા, શુભલક્ષણો વાળા, સુદૃઢ ગંધવાળા અને મનોહર હોય
 છે. તથા તેમનો રંગ કૃષ્ણવર્ણ નામના રત્ન જેવો, કોલસાની રંગ જેવો, નીલ
 મણી જેવો, કાજળ જેવો, અને પ્રમુદિત ભ્રમરવૃન્દ જેવો કાળો હોય છે તે કેશ
 મસ્તક ઉપર વિખરાયેલા હોતા નથી પણ સમુદાય કે જે સઘન હોય છે, એક
 બીજા સાથે મળેલા હોય છે, શુચળા વાળા હોય છે, અને દક્ષિણાવર્ત વાળા
 (જમણી તરફ વળેલા) હોય છે ' સુજાયસુવિભક્તસગયગા ' તેમના શરી-
 રના અંગો સુડોળ, સુસ્પષ્ટ અને પ્રમાણસરના હોય છે " લક્ષ્મણવજ્રણ-
 ગુણોવવેયા " સ્વસ્તિકા આદિ લક્ષણોથી, મણ, તિલક આદિ વ્યજનોથી અને
 સૌભાગ્ય આદિ સદ્ગુણોથી તેઓ યુક્ત હોય છે, " પસત્યવત્તીસલક્ષણધરા "

“ छत्र १ तामरस २ धनु ३ रथपरोष्ठ दम्भोलि ५ कूर्मा ६ ५ कुशाः ७ ।

वापी ८ स्वस्तिक ९ तोरणानि १० यमरः ११ पञ्चाननः १२ पादपः १३ ॥
चक्र १४ शङ्ख १५ गजा १६ समुद्र १७ कलशौ १८ प्रासाद १९ मत्स्यौ २० यवौ २१
यूप २२ स्तूप २३ कमण्डलु २४ अवनिभृत् २५ मञ्जामरो २६ दर्पणम् २७ ॥ ११ ॥
उक्षा २८ पताका २९ कमलाभिषेक ३० सुदाम ३१ केकी ३२ घनपुष्पभाजाम् ॥

‘ हसस्सरा ’ हसस्वराः=हमवत्स्वरा-स्निग्धत्वान् ‘ नोचस्मरा ’ कौञ्चस्वराः=
कौञ्चपक्षिपत्स्वराः-मृक्षमष्टदुत्तात्, ‘ दुदुहिस्सरा ’ दुन्दुभित्स्वरा-गम्भीरत्वात्

धारण करने वाले होते हैं । प्रशस्त चत्तीस लक्षणों के नाम इस प्रकार हैं—
(१) छत्र, (२) कमल, (३) धनुष, (४) उत्तमरथ, (५) दम्भोलि-वज्र,
(६) कूर्म-कच्छप, (७) कुश, (८) वापी, (९) स्वस्तिक, (१०) तोरण,
(११) तालाव, (१२) पञ्चानन-सिंह, (१३) पादप, (१४) चक्र, (१५) शङ्ख,
(१६) गज, (१७) समुद्र, (१८) प्रासाद, (१९) मत्स्य, (२०) यव, (२१)
यूप-स्तम्भ (२२) स्तूप, (२३) कमण्डलु, (२४) अवनिभृत्-पहाड-पर्वत,
(२५) सुन्दर चामर, (२६) दर्पण, (२७) उक्षा-बैल, (२८) पताका, (२९)
अभिषेकयुक्त लक्ष्मी (३०) सुदाम-सुन्दरमाला (३१) केकी-मयूर और
(३२) पुष्प (हसस्सरा) इनका स्वर स्निग्ध होने से इस के स्वर के समान
होता है । (नोचस्मरा) सूक्ष्म और मृदु होने के कारण कौञ्चपक्षी के

श्रेष्ठ अत्रास लक्षणों धारण करनेवाले होय छे श्रेष्ठ अत्रास लक्षणोंना
नाम आ प्रमाण छे—

(१) छत्र (२) कमल (३) धनुष (४) उत्तमरथ (५) दम्भोलि-वज्र (६)
कूर्म कायजो (७) अकुश (८) वापी (९) स्वस्तिक (१०) तोरण (११) तालाव
(१२) पञ्चाननमिह (१३) पादप (वृक्ष) (१४) चक्र (१५) शङ्ख (१६) गज
(१७) समुद्र (१८) प्रासाद (१९) मत्स्य (२०) यव (२१) यूप-स्तम्भ (२२)
स्तूप (२३) कमण्डलु (२४) अवनिभृत्पहाड (२५) सुन्दर चामर (२६) दर्पण
(२७) उक्षा-जोड (२८) पताका (२९) अभिषेक युक्त लक्ष्मी (३०) सुदाम-
सुन्दर माला (३१) केकी मयूर (३२) पुष्प ‘ हसस्सरा ’ तेमने स्वर मृदु
होवाथी हुमना जेवो होय छे, “ नोचस्मरा ” सूक्ष्म अने मृदु होवाथी होय
पक्षीना स्वर जेवो होय छे, “ दुदुहिस्सरा ” गभीर होवाथी दुदुलिना अवाय

१, तामरस=कमलम् २ दम्भोलि=वज्रम् ३ पञ्चानन=मिह १२ ।
४ यूप=स्तम्भ २२ । ५ स्तूप=‘ चोतरा ’ इति भाषा प्रसिद्धा २३ । ६ अवनिभृत्=
पर्वत २५ । ७ उक्षा=जलोर्ध्व २८ । ८ कमलाभिषेक-अभिषेकयुक्ता लक्ष्मी ३० ।
९ सुदाम=माला ३१ । १० केकी=मयूर ३२ ।

‘સીહસ્તરા’, સિદસ્તરાઃ-મિદસ્તરાઃ-અગ્યાદત્તનરર્થમાનત્વાત્, ન તુ સ્વરદ્, હીનસ્તરાઃ, ‘મેઘસ્તરા’ મેઘસ્તરા=મેઘસ્તરા-દૂરદગ્ધ્યાપિત્વાત્ ‘ઓસ્તરા’ ઓસ્તરા, ગુણ્ણિતસ્તરાઃ, ‘સુમ્તરા’ મુસ્તરા-કર્ણમુગ્ધનનકત્વાત્ ‘સુસ્મરનિગોસા’ સુમ્તરનિર્ગોષા-સુમ્તરઃ=પ્રિયઃ નિર્ગોષઃ=શુદ્ધો યેષા તે તથા મધુરભાષિણ इत्यर्थ, ‘વજ્જરિસહનારાયસત્રયણા’ વજ્જ-ઋષભ-નારાચસહનના, તત્ર નારાયમ્=ઉભયતો મર્કટપત્ન્ય, ઋષભઃ=તદુપરિ વેષ્ટનપટ્ટ, વજ્જ-કીલિકા-ઉભયસ્યાપિ મેદકમસ્થિ ॥ ઉક્તઃ—

“રિસહો ઓ હોઈ પટ્ટો, વજ્જ પુણ કીલિયા યિયાણાદિ।

ઉમમ્મો મરદવગો નારાય ત યિયાણાદિ ॥ ૧ ॥” इति,

સ્વર કે જૈમા હોતા હૈ। (દુદ્ધહિસ્તરા) ગમ્ભિર ટોને સે દૂદ્ધમિ કે સ્વર જૈમા હોતા હૈ, (સીહસ્તરા) અગ્યાદત્તરૂપ સે પ્રવર્ધમાન ટોને કે કારણ મિદ્ધ કે સ્વર જૈમા, (મેઘસ્તરા) દૂર દેગ નક મેં મી વ્યાસ ટોને કે કારણ મેઘક્ષી ધ્વનિ જૈમા હોતા હૈ। (ઓસ્તરા) વજ્જ સ્વર ધીચ મેં દૂટતા નહીં હૈ, (સુમ્તરા) ત ગા કાનોં કો સુગ્ધકારી હોતા હૈ। ત ગા- (સુમ્તરનિગોસા) વે જો મી શબ્દ યોલ્તે હૈ વે મી વઢે પ્રિય હોતે હૈ, અર્થાત્ વે મધુરભાષી હોતે હૈ (વજ્જરિસહનારાયસત્રયણા) ઇનકા વજ્જ ઋષભ નારાચ સત્તનન હોતા હૈ આર (સમવચરસસઠાણસઠિયા) સમ-ચતુરસ્ર સસ્થાન હોતા હૈ। જો સહનન ઉભયનઃ મર્કટપત્ન્યસે, ઋષભ-ઉસકે ઉપર વેષ્ટનપટ્ટ સે ઇવ વજ્જ-કીલીકા સે યુક્ત હોતા હૈ ઉસકા નામ વજ્જ ઋષભનારાચ સહનન હૈ। યહી વાત ગાયા દ્વારા પ્રદર્શિત કી ગઈ હૈ।

જેવો હોય છે, “સીહસ્તરા” અવિસ્ત પ્રવર્ધમાન હોવાને કારણે સિહના સ્વર જેવો, અને “મેઘસ્તરા” દૂર દૂર સુધી ફેલાતો હોવાથી મેઘના ધ્વનિ જેવો લાગે છે “ઓસ્તરા” તે સ્વર વચ્ચે તૂટતો નથી અને “સુસ્તરા” કણ્ઠને સુખદ લાગે છે તથા “સુસ્તરનિગોસા” તેઓ જે શબ્દો બોલે છે તે પણ ઘણા મધુર હોય છે એટલે કે મીઠા બોલા હોય છે “વજ્જરિસહ નારાયસત્રયણા” તેમનું વજ્જ ઋષભ નારાય સહનન હોય છે અને “સમવચરસસઠાણ સઠિયા” સમચો સ સસ્થાન હોય છે જે સહનન અને તરફ મર્કટ બધી, ઋષભ-તેના ઉપર લપટાયેલા પટ્ટથી અને વજ્જ-કીલિકાથી યુક્ત હોય છે તેનું નામ વજ્જઋષભનારાચસહનન છે એ જ વાત ગાયા દ્વારા દર્શાવવામા આવી છે—

एव रूप सहननम्-अस्थिरचनाप्रियेयो चेपा ते तथा । ‘ समचतुरस्रसंस्थान सठिया ’ समचतुरस्रसंस्थानमस्थिताः = तत्र समा = अन्यूनानामिकाः चतस्रः अक्षयः चतुर्दिग्विभागोपलक्षिताः शरीरावयवा यत्र तत्, समचतुरस्रश्च च पर्यङ्कासनोपविष्टस्य दक्षिणस्कन्धाद् वामजानुपर्यन्त, तथा वामस्कन्धाद् दक्षिण जानुपर्यन्त समस्त्र, तदेव संस्थान = शरीररचनाप्रिये, तेन संस्थिताः = युक्ता स्ते तथा ‘ छायाउज्जोवियगमगा ’ छायोद्योतितान्नोपाङ्गाः - छायाया = शरीर कान्त्या उद्योतिनानि देदीप्यमानानि उज्जोपाङ्गानि येपा ते तथा देदीप्यमानशरीराः, ‘ पमत्तच्छवी ’ प्रशस्तोद्यय = सुन्दराकृतयः ‘ निरायका ’ निरातङ्काः = रोगरहिताः ‘ ककगहणी ’ कङ्कग्रहणा = स्कन्धस्य = पक्षिविदेशस्येव ग्रहण - गुदाशयो येपा ते तथा - नीरोगवर्चस्का ‘ कवोयपरिणामा ’ कपोतपरिणामाः = कपोततुल्या

जैसे—“ रिमहो उ होइ दोप, वज्र पुण कीलिया बियाणाहि ।

उभओ मक्खडवयो, नाराय त बियाणाहि ” ॥ १ ॥

जिस संस्थान में चतुर्दिग्विभागोपलक्षित शारीरिक अवयव न्यूनाधिकतारूप दोष से वर्जित होते हैं-अर्थात्-पर्यङ्कासन से उपविष्ट पुरुष के दक्षिणस्कंध से लेकर वामजानुपर्यन्त और वामस्कंध से लेकर दक्षिण जानु पर्यन्त जो समोन्नता रूप से शारीरिक अवयवों की रचना है उसका नास समचतुरस्रसंस्थान है । (छायाउज्जोवियगमगा) इनके शारीरिक अवयव अपने शरीर की कान्तिरूप छाया से सदा देदीप्यमान बने रहते हैं (पसत्तच्छवी) इनकी आकृति उड़ी मनोज्ञ सुन्दर होती है । (निरायका) इन्हें कोई भी रोग नहीं होता है । (ककगहणी) इनका गुदाशय-गुच्छप्रदेश पक्षी के गुच्छभाग की तरह लेप रहित मलवाला होता है । (कवोयपरिणामा) इनका आहार कवृत्तर के आहार के परिपाक जैसा

“ रिमहो उ होइ पटो वज्र पुण कीलिया बियाणाहि ।

उभओ मक्खडवयो, नाराय त बियाणाहि ” ॥ १ ॥

જે વ્યવસ્થામાં ચારે દિશાને અનુલક્ષીને શારીરિક અવયવો ન્યૂનતા અથવા અધિકતાના દોષથી રહિત હોય છે, એટલે કે પર્યંકાસને બેઠેલા પુરૂષના જમણા ખભાથી લઈને ડાબા હાથ સુધી અને ડાબા ખભાથી લઈને જમણા હાથ સુધી સુગ્રી નમાન રૂપે શારીરિક અવયવો ની જે રચના હોય છે તેને સમચતુરસ્રસંસ્થાન કહે છે “ છાયાઉજ્જોવિયગમગા ” તેમના શરીરના અંગો તેમના શરીરની ક્રાંતિરૂપ છાયાથી સંદેહીપ્યમાન બની રહે છે “ પસત્તચ્છવી ” તેમની આકૃતિ ઘણી મનોહર-સુદર હોય છે “ નિરાયકા ” તેમને કોઈ રોગ થતો નથી “ કકગહણી ” તેમનો ગુદાશય-ગુદાભાગ પક્ષીના ગુદાભાગની જેમ ગરહિત મળવાળો હોય છે “ કવોયપરિણામા ” તેમનો આહાર કબૂતરાના

55હારપરિપાકાઃ ' સઙ્ગિપોસા ' શ્વનિપોગાઃ-શ્વનેરિા=પક્ષિણ ડા પોસઃ= અપાનસ્થાન નિમ્પલેપતયા યેપા તે તયા, નિમ્પલેપમુશાપાઃ, ' પિટ્તરોમ્પરિ પયા ' પૃષ્ઠાન્તરોપારિગતાઃ = પૃષ્ઠ = પૃષ્ઠજઃ, અન્તરે = શ્ણોદરયો- સ્ત્વરાલે પાર્શ્વસ્થિત્યર્થઃ ઉરુ = જલ્દે ચ, ક્યેતે પરિપાનાઃ = મુટ્ઠા યેપા તે તયા ' પડમુપ્પલસરિસગમસુરમિચયા ' પર્માત્પલમટ્ઠગમન્વાસમુમિ વદનાઃ-તત્ત - પદ્મ = વમલમ્ ઉત્પન્ન = નીલમમ્ ચ તન્મટ્ઠો ગન્ધો यस્ય મ તથામ્ભુતો યઃ શ્વાસ તેન સુરમિ=મુગન્ધયુક્ત પન્ન=ગુચ યેપા તે તયા ' અણુ લોભવાઝવેગા ' અનુલોભવાયુગેગા = અનુકુલશરીરોદ્ગમવાયુગેગન્તઃ ' અવદાય નિદ્ધકોસા ' અવદાતસ્તિગ્ધકેશઃ = ગમ્મતાઃ કાન્તિયુક્તા ગિન્ધાઃ=ચિક્ષાઃ કેશઃ=રોમાણિ યેપા તે તયા, ' તિગ્ગરિયવળ્લયકુચ્છી ' ત્રિગ્ગરિયોઽન્તરકુચ્છપઃ= ત્રિગ્ગરિકો=શરીરાનુરૂપો ઉન્નતો=પુષ્ટો કુચ્છો=ઉદરદેહો યેપા તે તયા શરીરાનુરૂ પપુષ્ણોદરાઃ ' અમયરસફલાહારી ' અમૃતસફલાહારિણ' = અમૃતહૃલ્પસ

હોતા હૈ । (સઙ્ગિપોસા) પક્ષી કી તરફ ઇનકા અપાનસ્થાન મલ કે ઉપલેપ સે રહિત હોતા હૈ । (પિટ્તરોમ્પરિપાયા) ઇનકે પૃષ્ઠ ઓર ઉદર કે અતરાલ-પાર્શ્વભાગ મ્વ જઘાળું સુદૃઢ હોતી હૈ, (પડમુપ્પલસરિસગં ઘસાસસુરમિચયા) પાર્શ્વ-કમલ, ઉત્પલ-નીલ કમલ, ઇનકે જૈસે ગંધવાળા ઇનકા શ્વાસ હોતા હૈ । ડસ શ્વાસ સે મુગન્ધ યુક્ત ઇનકા મુખ હોતા હૈ । (અણુલોભવાઝવેગા) ઇનકી ગારીરિક વાયુ કા વેગ ઇનકે અનુકુલ હી રહતા હૈ-પ્રતિકુલ નહીં । (અવદાયનિદ્ધકોસા) ઇનકે કેશ-રોમ અવદાત કાન્તિયુક્ત ઇવ ચિક્ષુને હોતે હૈ (તિગ્ગરિય-વળ્લયકુચ્છી) ઇનકે પેટ કે દોનો આજુ બાજુ કે ભાગ શરીર કે અનુરૂપ હી પુષ્ટ રહતે હૈ । (અમયરસફલાહારી) યે અમૃત કે જૈસે રસ-

આહાર જેવો નિર્દોષ હોય છે " સઙ્ગિપોસા " પક્ષીની જેમ તેમનો શુભલાગ મળથી ખરડાયા બિનાનો હોય છે " પિટ્તરોમ્પરિપાયા " તેમની પીઠ અને ઉદરની અદરનો તથા પાસેનો ભાગ અને જઘાળો મજબૂત હોય છે " પડ મુપ્પલસરિસ ગધસાસ સુરમિચયા " પદ્મ-કમળ, અને ઉત્પલ-નીલકમળ જેવી ગંધવાળો તેમનો શ્વાસ હોય છે તે શ્વામથી તેમનું મુખ સુગંધયુક્ત થાય છે છે " અણુલોભવાઝવેગા " તેમના શરીરના વાયુનો વેગ તેમને અનુકુલ જ રહે છે-પ્રતિકુલ રહેતો નથી " અવદાયનિદ્ધકોસા " તેમના રોમ અવદાત-કાન્તિ યુક્ત અને સુલાયમ હોય છે " તિગ્ગરિયવળ્લય કુચ્છી " તેમના પેટની આજુ બાજુના અને ભાગ શરીરને અનુકુલ જ પુષ્ટ રહે " અમયરસફલાહારી "

યુક્તાનિ યાનિ ફલાનિ તેપામાહારિણિ, 'તિગાડય સમુચ્છિયા' ત્રિ ગવ્યૂત સમુચ્છિતાઃ=ત્રિ ગવ્યૂતિપરિમાણોન્નતશરીરાઃ, તિપલ્લિઓવમદ્વિહ્યા 'ત્રિપલ્લ્યોપમ સ્થિતિકાઃ=ત્રિપલ્લ્યોપમફાલસ્થિતિમન્તઃ' 'તિન્નિ ય પલિ ઓપમાહ પરમાડ પાલ-
હત્તા' ત્રીણિ ચ પલ્લ્યોપમાનિ પરમાયુપિ પરમાયુષ્યકાલ પાલયિત્વા-ઉપશ્ચય 'તે વિ' તેડપિ=ઉત્તરકુરુદેવકુરુનિવાસિનો યુગલિકા મનુષ્યા અપિ, 'કામાણ અવિ-
તિત્તા' કામાનામવિતૃષ્ણઃ - અવિતૃષ્ણકામભોગા એવ, 'ઉવળમતિ મરણધમ્મ' મરણધર્મમુપનમન્તિ-ઇતિ પૂર્વવત્ ॥ સૂ० ૧૧ ॥

સામ્પ્રતં તેપા સ્ત્રી ત્રિપલ્લ્યેપ્યાહ—'પમયા વિ' ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—પમયાવિચ તેસિ હુતિ સોમ્મા સુજાયસવ્વગ-
સુદરીઓ પહાણમહિલાગુણેહિ જુત્તા અઙ્કંત-વિસપ્પમાણ
મડયસુકુમાલ-કુમ્મસઠિય સિલિટ્ઠચલણા ઉડ્ડુમડયપાવિર
સુસહતગુલીઓ અવ્વમુણ્ણાય । રઙ્ગયતલિણ-તંવસુદ્ધ-નિદ્ધ-
નલા રોમરહિયવદ્ધસઠિય-અજહણ્ણ-પસત્થલક્કણ-અકોપ્પ

વાલે ફલોં કા આહાર કરતે હે । (તિગાડયસમુચ્છિયા) ત્રીન કોશકા
ઇનકા શરીર હોતા હૈ । (તિપલિઓવમાહ પરમાડ પાલહત્તા) ત્રીન
પલ્લ્ય કી ઇનકી ઉત્કૃષ્ટ આયુ હોતી હૈ । ઇસ પ્રકાર કી સ્થિતિ સે યુક્ત
યને હુએ યે ઉત્તરકુરુ ઓર દેવકુરુ કે નિવાસી મનુષ્ય મી ત્રીન પલ્લ્ય કી
ઉત્કૃષ્ટ અપની આયુ કા ભોગ કરકે મી (કામાણ અવિતત્તા) કામ-
સુખોં મેં અતૃપ્ત યને રહતે હૈ । અર્થાત્-ત્રીન પલ્લ્ય કાલતરુ કામસુખોં
કો ભોગતે રહતે હૈ ફિર મી ઇનકી કામસુખોં કો ભોગને કી લાલસા
શાત નહીં હો પાતી હૈ । અન્ત મેં (તે વિ) વે મી કામ સે અતૃપ્ત હી
મરણ ધર્મકો પ્રાપ્ત કરતે હૈ ॥ સૂ० ૧૧ ॥

તેઓ અમૃત જેવા રસવાળા ફળોના આહાર કરે છે “તિગાડયસમુચ્છિયા”
ત્રણ ગાવડુ તેમનું શરીર હોય છે “તિપલ્લિઓવમાહ પરમાડ પાલહત્તા” ત્રણ
પદ્મનુ તેમનું ઉત્કૃષ્ટ આયુષ્ય હોય છે આ પ્રકારની સ્થિતિ વાળા તે ઉત્તર
કુરુ અને દેવકુરુ નિવાસી લોકો પણ ત્રણ પદ્મનુ પોતાનું આયુષ્ય લોગવવા
છતાં પણ “કામાણા અવિતત્તા” કામ લોગોવાં અતૃપ્ત રહે છે એટલે કે
ત્રણ પદ્મ કાળ સુધી કામ લોગો લોગવ્યા છતાં પણ કામલોગો લોગવવાની
તેમની લાલસા શાત થઈ શકતી નથી છેવટે “તે વિ” તેઓ પણ કામલો
ગોથી અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુ પામે છે ॥ સૂ-૧૧ ॥

ऽऽहारपरिपात्राः 'सउगिपोता' शृङ्गनिपोमाः-शृङ्गोरिप=पक्षिण इति पांसः=
 अपानमथान निरूपलेपतया येषां ते तथा, निरूपलेपगुणययाः, 'पिष्टं तरोम्परि-
 णया' पृष्ठान्तरोन्नाहिताः = पृष्ठ = पृष्ठदेशः, अन्तरे = शृङ्गोदरयो-
 रन्तराले पार्श्वविर्यर्थः उरु = जट्टे च, इत्येते परिणताः = सुन्दरा येषां ते
 तथा 'पउम्पउमरिमगधमागमुरमिरयगा' पशोन्पउमन्शगन्पजाससुरमि-
 वदनाः-तत्र - पश = रमलम् उत्पन्नं = नीलरमलं च तत्पश्यो गन्तो यस्य स
 तथाभूतो यः श्वास तेन सुरमि=सुगन्धयुक्तं रदन=मृग्यं येषां ते तथा 'अणु-
 लोभमाउयेगा' अनुलोभमायुगेगा = अनुकृन्शरीरोद्भवायुगेगान्तः 'अयदाप-
 निद्वकेता' अयदातस्मिन्पकेताः = अयदाता सान्तिपुक्ता निग्याः=चिकणाः
 केशाः=रोमाणि येषां ते तथा, 'विगहियउण्णयकूली' वैग्रहिकोन्नतकूलयः=
 वैग्रहिको=शरीरानुरूपो उन्नतौ=पुष्टौ कूली=उदरदेशे येषां ते तथा शरीरानुरूप-
 पपुण्डोदराः 'अमयरसफलाहारी' अमृतमरसफलाहारिणः = अमृततुल्यरस-

होता है । (सडणिपोसा) पक्षी की तरह इनका अपानस्थान मल के उपलैप से रहित होता है । (पिष्टतरोरपरिणया) इनके पृष्ठ और उदर के अंतराल-पार्श्वभाग एवं जघाणं सुदृढ़ होती हैं, (पडम्मुप्पलसरिसर्ग धसाससुरभि-उगा) पार्श्व-कमल, उत्पल-नील कमल, इनके जैसे गंधवाला इनका श्वास होता है । उस श्वास से सुगंध युक्त इनका मुख होता है । (अणुलोभवाउवेगा) इनकी शारीरिक वायु का वेग इनके अनुकूल ही रहता है-प्रतिकूल नहीं । (अवदायनिद्धकोसा) इनके केश-रोम अवदात कान्तियुक्त एवं चिकने होते हैं (विग्गहिय-उण्णयक्कुळी) इनके पेट के दोनो आजु बाजु के भाग शरीर के अनुरूप ही पुष्ट रहते हैं । (अमयरसफलाहारी) ये अमृत के जैसे रस-

આહાર જેવો નિર્દોષ હોય છે “ સડળિપોસા ” પક્ષીની જેમ તેમનો ગુપ્તભાગ મળથી ખરડાયા વિનાનો હોય છે “ પિટ્ટવરોરુપરિણયો ” તેમની પીઠ અને ઉદરની અદરનો તથા પાસેનો ભાગ અને જઘાઓ મજબૂત હોય છે “ પઠ મ્મુપ્પહસરિસ ગધસાસ સુગમિવયણા ” પદ્મ-ક્રમળ, અને ઉત્પલ-નીલક્રમળ જેવી ગધવાળો તેમનો શ્વાસ હોય છે તે શ્વાસથી તેમનું સુખ સુગધયુક્ત થાય છે છે “ જ્ઞણ્લોમવાસવેગા ” તેમના શરીરના વાયુનો વેગ તેમને અનુકૂળ જ રહે છે-પ્રતિકૂળ રહેતો નથી “ અગ્દાયનિદ્ધોક્ષોસા ” તેમના શેષ અવદાત-કાન્તિ યુક્ત અને મુલાયમ હોય છે “ વિગાદિયડળ્ળય કુચ્છી ” તેમના પેટની આજુ બાજુના બંને ભાગ શરીરને અનુરૂપ જ પુષ્ટ રહે “ અમયગ્સફલોદારી ”

યુક્તાનિ યાનિ ફલાનિ તેપામાહારિણઃ, 'તિગયસમુચ્છિયા' ત્રિ ગવ્યૂત સમુચ્છિતાઃ=ત્રિ ગવ્યૂતિપરિમાણોન્નતશરીરાઃ, તિપલિઓવમદ્વિડયા 'ત્રિપલ્યોપમ સ્થિતિકાઃ=ત્રિપલ્યોપમમાલસ્થિતિમન્તઃ 'તિન્નિ ય પલિઓમાહ પરમાડ પાલ-
હતા' ત્રીણિ ચ પલ્યોપમાનિ પરમાયૂપિ પરમાયુષ્યકાલ પાલયિત્વા-ઉપશુડ્ય 'તે
ત્રિ' તેડપિ=ઉત્તરકુરુદેવકુરુનિવાસિનો યુગલિકા મનુષ્યા અપિ, 'કામાણ અવિ-
તિત્તા' કામાનામવિત્ત્વાઃ - અવિત્ત્મકામભોગા એવ, 'ઉવળમતિ મરણધમ્મ' મરણધર્મમુપનમન્તિ-ઇતિ પૂર્વવત્ ॥ સૂ. ૧૧ ॥

સામ્પ્રત તેપા સ્ત્રી ત્રિપયેષ્યાહ—'પમયા ત્રિ' ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—પમયાવિચ તેસિ હુતિ સોમ્મા સુજાયસવ્વગ-
સુદરીઓ પહાણમહિલાગુણેહિ જુત્તા અડકંત-વિસપ્પમાણ
મડયસુકુમાલ-કુમ્મસઠિય-સિલિટ્ઠવલણા ઉડ્ડુમડયપીવર
સુસહતગુલીઓ અવ્વુણ્ણાય । રડ્ડયતલિણ-તંવસુડ્-નિદ્ધ-
નલા રોમરહિયવટ્ઠસઠિય-અજહણ્ણ-પસત્થલક્ખણ-અકોપ્પ

વાલે ફલોં કા આહાર કરતે હ । (તિગયસમુચ્છિયા) ત્રીન કોશકા
ઇનકા શરીર હોતા હૈ । (તિપલિઓવમાહ પરમાડ પાલહતા) ત્રીન
પલ્ય કી ઇનકી ઉત્કૃષ્ટ આયુ હોતી હૈ । ઇસ પ્રકાર કી સ્થિતિ સે યુક્ત
યને હુએ યે ઉત્તરકુરુ ઓર દેવકુરુ કે નિવાસી મનુષ્ય મી ત્રીન પલ્ય કી
ઉત્કૃષ્ટ અપની આયુ કા ભોગ કરકે મી (કામાણ અવિતિત્તા) કામ-
સુખો મેં અતૃપ્ત યને રહતે હૈ । અર્થાત્-ત્રીન પલ્ય કાલતરુ કામસુખોં
કો ભોગતે રહતે હૈ ફિર મી ઇનકી કામસુખોં કો ભોગને કી લાલસા
શાત નહીં હો પાતી હૈ । અન્ત મેં (તે વિ) વે મી કામ સે અતૃપ્ત હી
મરણ ધર્મકો પ્રાપ્ત કરતે હૈ ॥ સૂ. ૧૧ ॥

તેઓ અમૃત જેવા સ્વવાળા જીવોનો આહાર કરે છે “તિગયસમુચ્છિયા” ત્રણ ગાયનું તેમનું શરીર હોય છે “તિપલિઓવમાહ પરમાડ પાલહતા” ત્રણ પદ્મનું તેમનું ઉત્કૃષ્ટ આયુષ્ય હોય છે આ પ્રકારની સ્થિતિ વાળા તે ઉત્તર કુરુ અને દેવકુરુ નિવાસી લોકો પણ ત્રણ પદ્મનું પોતાનું આયુષ્ય ભોગવવા છતાં પણ “કામાણા અવિતિત્તા” કામ ભોગોથી અતૃપ્ત ગેડે ગે એટલે કે ત્રણ પદ્મ કાળ સુધી કામ ભોગો ભોગવ્યા છતાં પણ કામભોગો ભોગવવાની તેમની લાલસા શાત થઈ જતી નથી એવટે “તે વિ” તેઓ પણ કામભો-
ગોથી અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુ પામે છે ॥ સૂ. ૧૧ ॥

મનોહારા: તલિના: = પતલા. તામ્રા = તામ્રવર્ણા: શુચ્ય = સ્વચ્છા: સ્નિગ્ધા: = ચિક્ષ્ણા
 નત્વા યાસા તાસ્તથા । ' રોમરહિયમટ્ટમટિયમજહણપમત્થલકરણઅકોપ્પજજુ
 યલા ' રોમરહિતટ્ટસમ્મિતઅજઘ્ણપમમ્મત્તજ્ઞણાકોપ્પજજુયુગલા: = રોમર
 રહિત = નિર્લોભક વૃતસસ્યિત = ચર્તુલાકારમ્ અજઘ્ણમ્ = ઉત્તમ પ્રાપ્તલક્ષણ = સૌભા
 ગ્યચિક્ષ્ણુક્તમ્, અકોપ્પ = સર્વપ્રિય ન જહાપુગલ યાસાં તામ્તથા, ' સુણિમ્મિય-
 સુણિગૂઢજાણુમસલપસત્થસુવદ્ધસધી ' સુનિર્મિતસુનિગૂઢજાણુમામલપસત્થસુ
 વ્ધસન્ધય: = તત્ર સુનિર્મિતો = શોભનસંસ્થાનવિશિષ્ટો સુનિગૂઢો = દુર્લભ્યો જાણુનો =
 જાણુદ્વયસ્ય મામર્ત્તો = પુષ્ટો પ્રશસ્તો = સુન્દરાકારો સુદર્શો = મુદ્દો સન્ધી = સન્ધાત
 સ્થાને યાસા તાસ્તથા ' કયલી-લખાડરેગ-સઠિય-નિવ્વણ-સુકુમાલ-મઝય કોમલ
 અવિરલ - સમસહિયમટ્ટપીયરનિરતરોરુ ' કદલીસ્તમ્માતિરેન્નસસ્યિતનિર્વ્વણસુકુમા
 મટ્ટુકકોમલાવિરલસમસહિયમટ્ટપીયરનિરતરોરુ: = તત્ર કદલી સ્તમ્માદ
 તિરેકેણ = અતિશયેન શોભનાઽઽરોહાઽરોહમુપેશલસુકોમલત્વાદિગુણમર્કપરૂપેણ
 સસ્યિતો-સુન્દરસંસ્થાનવન્તો નિર્વ્વણો = નિરુપહતો સુકુમારમટ્ટુકકોમલો-અપ્યન્ત

મનોહર, તલિન-પતલે, તામ્ર-લાલ, શુચિ-સ્વચ્છ એવ સ્નિગ્ધ-ચિક્ષ્ણે હોતે
 હૈ । (રોમરહિયમટ્ટસઠિય-અજઘ્ણપમત્થલકરણ-અકોપ્પજજુયલા)
 इनका जघा युगल रोगरहित, चर्तुलाकार वाला अजघ्न-उत्तम सौ-
 भाग्यचिह्नो से युक्त एवं अकोप्यसर्वप्रिय होता है (सुणिम्मियसु-
 णिगूढजाणु मसलपसत्थसुवदसधी) इनकी दोनों जानु की सधियां
 शोभन संस्थान विशिष्ट, तथा सुनिगूढ होती है । पुष्ट और सुदराकार
 से युक्त होती है । मजबूत होती है । (कयलीखभाडरेगसठियनिव्वण
 सुकुमाल मजय कोमल अविरल समसहियमट्टपीयरनिरतरोरु) इनकी
 दोनों जानु का उपरितन भाग कदली के स्तम्भ से भी अधिक सुन्दर
 संस्थानवाला होता है । निर्व्वण-धाव आदि की निशानी से विहीन

સુવાળા હોય છે “ રોમરહિયમટ્ટસઠિય-અજઘ્ણ-પમત્થ-લકરણ-અકોપ્પ-જજુ
 યુલ્લા ” તેમની બન્ને જ ધાઓ રોમ રહિત, ગોળાકાર, અજઘ્ણ-ઉત્તમ,
 સૌભાગ્ય ચિહ્નોથી યુક્ત અને અકોપ્પ સર્વપ્રિય હોય છે, “ સુણિમ્મિય-સુણિગૂઢ
 જાણુમસલપસત્થ સુવદ્ધસધી ” તેમની બન્ને જ ધાઓના સાધનો ભાગ સુઠાળ,
 વ્યવસ્થિત તથા સુનિગૂઢ હોય છે તે જ ધાઓ પુષ્ટ અને સુંદર આકારની
 હોય છે અને મજબૂત હોય છે “ કયલી સમાઈ રેગસઠિય-નિવ્વણ-સુકુમાલમ
 ઝય-કોમલ-અવિરલ-સમસહિયમટ્ટપીયરનિરતરોરુ ” તેમની બન્ને જ ધાઓની
 ઉપરનો ભાગ કદલીના સ્તંભથી પણ વધારે સુંદર આકારનો હોય છે, “ નિર્વ્વણ ”
 ધાવ આદિની નિશાની વિનાનો હોય છે, અત્યંત કોમળ હોય છે, અવિરલ

કૌમલા અવિરલો=પરસ્પરમિલિતો સમસહિતો=ઉચિતપ્રમાણયુક્તો વૃત્તો=વર્તુલો પીવ
રો=પીનો નિરન્તરો=પરસ્પરસમ્પદ્ધો ઋદ્ધ=જાનૂપરિતનભાગો યાસા તાસ્તથા
'અદ્વાવયવીઃ-પદ્મ-સઠિયપસત્થ વિત્થિણ્ણપિદ્ધલસોળી' અષ્ટાપદગીચિપૃષ્ઠસંસ્થિત-
પ્રગસ્ત્રિસ્તીર્ણપૃથુલશ્રોણ્યઃ=અષ્ટાપદસ્ય=તૂતવિશેષસ્ય ગીચય ઇવ વીચયઃ=તર
જ્ઞાકૃતિરેવા તદ્યુક્ત યત્ પદ્મ-ફલકઃ, તદ્વત્ સંસ્થિતા = તત્સંસ્થાનયુક્તા તદાકૃ-
તિકા પ્રશ્નતા વિસ્તીર્ણા પૃથુલા=વિશાલા શ્રોણિઃ=ઋટિભાગા યાસા તાસ્તથા
'વયણાયામપ્પમાણદુગુણિયવિસાલમસલસુવદ્ધજહ્ણવરધારિણીઓ' વદનાયામપ્પ-
માણાદ્વિગુણિતવિશાલમામલ્લસુવદ્ધજઘનવરધારિણ્યઃ = વદનસ્ય = મુલસ્ય યઃ
આયામઃ વિસ્તારસ્તસ્ય યત્ પ્રમાણ તસ્માદ્વિગુણિત ચતુર્વિગત્યદ્ગુલમિત્યર્થઃ,
વિશાલ=તથા મામલ્લ=પુષ્પ સુવદ્ધ=શૈથિલ્યવર્જિત જઘનવર=વરજઘન=ઋટયાઃ
પુરોભાગ ધારયતિ યાસ્તાસ્તથા 'વજ્જવિરાડયપસત્થલ્લહ્ણનિરોદરીઓ' વજ્જ

હોના હૈં । અત્યન કોમલ હોતા હૈં । અવિરલ-પરસ્પર મિલા હુઆ હોતા
હૈં । સમસહિત-ઉચિતપ્રમાણ સે યુક્ત હોતા હૈં । વૃત-વર્તુલ-ગોલ હોતા
હૈં । પીવર-પીન-પુષ્પ હોતા હૈં । નિરન્તર પરસ્પર સમ્પદ્ધ હોતા હૈં ।
(અદ્વાવયવીઃપદ્મસઠિયપસત્થવિત્થિણ્ણપિદ્ધલસોળી) इनका कटिभाग
वृत्तविशेष की वीचियों के समान तरङ्गाकृति रेखाओं से युक्त फलक
के जैसे आकार वाला होता है, प्रगस्त होता है, विस्तीर्ण होता है तथा
पृथुल विशाल होता है । (वयणायामप्यमाणदुगुणियविमालमसलसुव-
द्ध जह्णवरधारिणीओ) इनकी कटिका पुरोभाग-जघन प्रदेश-मुख के
विस्तार के प्रमाण से द्विगुणित होता है-अर्थात्-चौबीस अंगुलका
होता है, विशाल-पृथुल, एव मांसल-पुष्ट होता है । सुवद्ध-शैथिल्य
विहीन- होता है । (वज्जविराडयपसत्थल्लह्णनिरोदरिओ) इनका

પરસ્પર ભેડાયેલ હોય છે, સમસહિત-યોગ્ય પ્રમાણવાળો-પ્રમાણબરનો હોય છે,
ગોળ હોય છે, પીવર-પુષ્પ હોય છે, અને નિર-ન્તર-પરસ્પર સમ્પદ્ધ હોય છે
“ અદ્વાવયવીઃપદ્મ-સઠિય-પસત્થ-વિત્થિણ્ણ-પિદ્ધલસોળી ” તેમનો કટિભાગ વૃત્ત
વિશેષની વીચિયોના સમાન તરંગાકૃતિ રેખાઓથી યુક્ત ફલકના જેવા આકાર-
વાળો હોય છે, પ્રગસ્ત હોય છે, વિસ્તીર્ણ હોય છે તથા પૃથુલ-વિશાળ
હોય છે “ વયણાયામપ્પમાણદુગુણિય વિસાલમસલસુવદ્ધજહ્ણવરધારિણીઓ ”
તેમની કાટિનો આગળનો ભાગ જઘન પ્રદેશ-મુખના વિસ્તાર કરતા બે
ગણા માપનો હોય છે, એટલે કે ચોવીસ આગળનો હોય છે, વિશાળ અને
માસલ પુષ્પ હોય છે, સુવદ્ધ શૈથિલ્ય વિહીન હોય છે, “ વજ્જવિરાડય પસત્થ-
લ્લહ્ણનિરોદરીઓ ” તેમના ઉદરનો ભાગ વજ્જ જેવો સુદર, એટલે કે

મનોહા: તલિના: = પતલા: તામા = તામરળા: શુનય: = સ્વચ્છા: સ્નિગ્ધા: = ચિક્ષ્ણા:
 નત્વા યાસા તામ્તથા । ‘ રોમરહિયવટ્ઠસઠિય-અજહણ્ણપસત્થલક્કણ-અકોપ્પજઞ્ઞુ
 યલા ’ રોમરહિતવટ્ઠસમ્મિતઅનગ્ગ્યમગસ્તન્નશણાઽકોપ્પજઞ્ઞાઘુગલા: = રોમર
 રહિત = નિર્લોભક વૃત્તસંસ્થિત = ચતુર્ભુજાકારમ્ અજગ્ગ્યમ્ = ઉત્તમ પ્રાપ્તલક્ષણ = મૌખ
 ગ્યચિહ્નયુક્તમ્, અકોપ્પ = સર્વપ્રિય ન જઞ્ઞાઘુગલ યાસા તામ્તથા, ‘ સુણિમ્મિય-
 સુણિગૂઢજાણુમસલપસત્થસુચદ્ધસંધી ’ સુનિર્મિતસુનિગૂઢજાણુમાસલપસત્થસુચ
 દ્ધસંધય: = તત્ર સુનિર્મિતૌ = શોભનસંસ્થાનવિશિષ્ટૌ સુનિગૂઢૌ = દુર્લભૌ જાણુનો:
 જાણુદ્વયસ્વ માંસતૌ = પુષ્ટૌ મશસ્તૌ = સુન્દરાકારી સુચદ્ધૌ = મુદ્ધૌ સન્ની = સન્ધાન
 સ્થાને યાસા તામ્તથા ‘ કયલી-લભાડરેગ-સઠિય-નિવ્વણ-સુકુમાલ-મડય કોમલ
 અવિરલ - સમસહિયવટ્ઠપીરનિરતરોરુ ’ કદલીસ્તમ્માતિરેક્કસસિયતનિર્વ્રણસુકુમાર
 મટ્ઠુકકોમલાઽવિરલસમસહિતવટ્ઠપીરનિરતરોરય: = તત્ર કદલી સ્તમ્માદ
 તિરેકેણ = અતિશયેન શોભનાઽઽરોહાઽરોહમુપેગલસુરોમલત્વાદિગુણમર્કરૂપેણ
 સસિયતૌ-સુન્દરસંસ્થાનવન્તૌ નિર્વ્રણૌ = નિરુપદર્શી સુકુમારમટ્ઠુકકોમલૌ-અસ્યન્ત

મનોહર, તલિન-પતલે, તામ્ર-લાલ, શુચિ-સ્વચ્છ તથા સ્નિગ્ધ-ચિક્ષ્ણે હોતે
 હૈ । (રોમરહિતવટ્ઠસઠિય-અજહણ્ણપસત્થલક્કણ-અકોપ્પજઞ્ઞુયલા)
 इनका जघा युगल रोगरहित, चतुर्भुजाकार वाला अजग्न्य-उत्तम सौ-
 भाग्यचिह्नो से युक्त एवं अकोप्यसर्वप्रिय होता है । (सुणिम्मियसु
 णिगूढजाणु मसलपसत्थसुचद्धसंधी) इनकी दोनों जानु की संधिया
 शोभन संस्थान विशिष्ट, तथा सुनिगूढ होती हैं । पुष्ट और सुदराकार
 से युक्त होती हैं । मजबूत होती हैं । (कयलीलभआडरेगसठियनिव्वण
 सुकुमाल मडय कोमल अविरल समसहियवट्ठपीवरनिरतरोरु) इनकी
 दोनों जानु का उपरितन भाग कदली के स्तम्भ से भी अधिक सुन्दर
 संस्थानवाला होता है । निर्व्रण-धाव आदि की निशानी से विहीन

સુવાળા હોય છે “ રોમરહિયવટ્ઠસઠિય-અજહણ્ણ-પસત્થ-લક્કણ-અકોપ્પ-જઞ્ઞ
 જુયલા ” તેમની બન્ને જ ધાઓ રોમ રહિત, ગોળાકાર, અજગ્ગ્ય-ઉત્તમ,
 સૌભાગ્ય ચિહ્નોથી યુક્ત અને અકોપ્પ સર્વપ્રિય હોય છે, “ સુણિમ્મિય-સુણિગૂઢ
 જાણુમસલપસત્થ સુચદ્ધસંધી ” તેમની બન્ને જ ધાઓના સાધનો ભાગ સુડોળ,
 વ્યવસ્થિત તથા સુનિગૂઢ હોય છે તે જ ધાઓ પુષ્ટ અને સુંદર આકારની
 હોય છે અને મજબૂત હોય છે “ કયલી લભાડ રેગસઠિય-નિવ્વણ-સુકુમાલમ
 ડય-કોમલ-અવિરલ-સમસહિયવટ્ઠપીરનિરતરોરુ ” તેમની બન્ને જ ધાઓની
 ઉપરનો ભાગ કદલીના સ્તંભથી પણ વધારે સુંદર આકારનો હોય છે, “ નિર્વ્રણ ”
 ધાવ આદિની નિશાની વિનાનો હોય છે, અત્યંત કોમળ હોય છે, અવિરલ

અકોસાયતપડમગમીરવિગટનામીઓ ' ગદ્ગાવર્તમદક્ષિણાવર્તતરદ્વમહુર - રવિ -
કરણતરુણયોગિતવિક્રોશાયમાનપદ્મગમ્મીરવિકટનામિકાઃ, તત્ર ગદ્ગાવર્તકઃ
=ગદ્ગાનધાનલભ્રમઃ, સ ચ દક્ષિણાવર્ત તરદ્વમહુર- તરદ્વૈઃ મહુરઃ વક્રશ્ચ,
તદ્વત્, તથા રવિકિરણૈઃ=સૂર્યકિરણૈ રોધિત વિગ્રાસિત=વિગ્રાસાનસ્થાપ્રાપ્તુવદિ-
ત્યર્થઃ, અતएય વિક્રોશાયમાન મુકુટાનસ્થા વિમુચ્ચત્ યત્ પદ્મ તદ્વત્ ગમ્મીરા
વિગટા-સુન્દરા ચ નાભિર્યાસા તાન્નયા । ' અણુઽભડપસત્યસુજાયપીણકુચ્છી '
અનુદ્વટપગદાસુજાતપીનકુશ્ય.=અનુદ્વટ=અદ્વટરહિતો સમો, પ્રશસ્તા સુજાતો
સુસસ્થિતો પીનો સુપુષ્ટા કુક્ષી=ઉદરોભયભાગો યાસા તાસ્તગ ' સનયપાસા '
સનતપાર્થા. = પુષ્ટત્વાદયોનમત્પાર્થભાગાઃ, ' સગયપાસા ' સન્નતપાર્થાઃ=સુમિ-
લિતપાર્થભાગાઃ, અતएય ' સુદરપાસા ' સુન્દરપાર્થાઃ = મનોહરપાર્થભાગાઃ,
' સુજાયપાસા ' સુજાતપાર્થાઃ=સુસસ્થિતપાર્થા, ' મિયમાઇયપીણરૂપપાસા ' મિત-

કિરણ તરુગટોદિય અકોનાયતપડમગમીરવિગટનામીઓ) ઇનકી નાભિ
તરંગો સે વક્ર ગને હુણ એસે દક્ષિણાવર્તવાલે ગગાનદી કે જલભ્રમ-
ભંવર કે સમાન હોતી હૈ । તથા સૂર્ય કી કિરણોં કે સપર્ક સે અપની
મુકુલિત અવસ્થા કા પરિત્યાગ કરૂ પિરુન્નિત અવસ્થા કો પ્રાપ્ત હુણ પદ્મ
કે સપ્તાન ગમ્મીર હોતી હૈ ઓર વિકટ ઘડી સુન્દર હોતી હૈ । (અણુ-
અભડપસત્યસુજાયપીણકુચ્છી) ઇનકે ઉદર કે દોનોં પાર્થભાગ અનુદ્વટ-
અનુલ્વણ-ચરાચર-અક સે હોતે હૈ । પ્રશસ્ત-સુદાવને હોતે હૈ । સુજાત-
અચ્છે સમ્પ્રાપ્તવાલે હોતે હૈ । પીન-પુષ્ટ હોતે હૈ । (સનયપાસા) તથા
પુષ્ટ હોને કે કારણ ઇનકે દોનોં તરફ કે વે પાર્થભાગ નીચે કી ઓર
જુકે હુણ રહતે હૈ । (સગયપાસા) વે દોનોં ઇનકે પાર્થભાગ પરસ્પર મેં
સગત-મિલે રહતે હૈ । અતएય વે (સુદરપાસા) મહે સુન્દર હોતે હૈ ।
તથા (સુજાયપાસા) અચ્છે સસ્થાન સે યુક્ત કહે જાતે હૈ । (મિયમા

મીરવિગટનામીઓ " તેમની નાભિ તરંગોથી વક્ર બનેલા દક્ષિણાવર્ત વાળા
ગગા નદીના જલભ્રમ-વમળ જેવી હોય છે, અને સૂર્યના કિરણોના સપર્કથી
પોતાની ખીડાયેલી અવસ્થા છોડીને વિક્ષિપ્ત થયેલા કમળના જેવી ગભીર
અને વિકટા અત્યંત સુદર હોય છે " અણુઅભડપ સત્યસુજાયપાણકુચ્છી "
તેમના ઉદરની બાબુના બન્ને ભાગો (કુક્ષીઓ) એક સરખા હોય છે,
પ્રશસ્ત, પુષ્ટ અને સુડોળ હોય છે " સનયપાસા " તે બન્ને કુક્ષી પુષ્ટ
હોવાને કારણે નીચેની બાબુ જુડેલા રહે છે ' સગયપાસા ' તેમની તે
બન્ને કુક્ષીઓ પરસ્પરમા મગત- મળેલી હોય છે, તેથી તે " સુદરપાસા "
ઘણી સુદર હોય છે તથા " સુજાયપાસા " સુધટિત હોય છે " મિયમાઇયપીણ-

વિરાજિતપ્રજસ્તલક્ષણ નિરોદયઃ = રજ્જવદ્ વિરાજિતં = મધ્યમતલ પ્રજસ્તલક્ષણં =
 શુભલક્ષણવિશિષ્ટમ્ અતિ પ્રતલપ્રાગ્ગિર્ગતમિરોદર યામાં તાસ્તથા કુશોદર્ય ઇત્યર્થઃ
 તિવલિવલિયતણુનમિયમજ્ઞિયાઓ ' તિવલિવલિયતણુનમિતમધ્યકાઃ = ત્રિવ
 લિમ્બીઃ = ઉદરસ્થરેભાગ્યરૂપામિઃ પ્રગ્તિઃ ૧ = પ્રગ્નયુક્તઃ ૨ = તણુનમિતઃ ૪ =
 કિચ્ચિદનતા ૪, મધ્ય = મધ્યમાગઃ = કટિપ્રદેશો યામા તાસ્તથા ' ઉજ્જુયમમ
 સહિય જન્વતણુનમિણનિદ્વઆદેજ્જલહહસુકુમાલમઝયમુવિમત્તરોમરાઈઓ ' તપ્ર
 ' ઉજ્જુય ' ઋજુરૂપાનિ ' સમસહિય ' સમાનિ-તુલ્યાનિ સહિતાનિ = પ્રનાનિ
 ' જન્વ ' જાત્યાનિ-સ્વામારિપાનિ ' તણુ ' તણુનિ = સ્પર્શમાણિ ' કસિણ ' કણ્ણાનિ
 ' નિદ્ધ ' સ્તિગ્ધાનિ = અસ્થાણિ ' આદેજ્જ ' આદેયાનિ = લાઘનીયાનિ ' લહહ
 ઇતિ સુન્દારાણિ ' સુકુમાલમઝય ' સકુમારમૃદુરૂપાનિ = અત્યન્ત કોમલાનિ ' સુવિ
 મત્ત ' સુવિમત્તાનિ = યથાસ્થાનશોભિતાનિ ચ યાનિ રોમાણિ તેષા રાજ્યઃ =
 પક્કયો યાસા તાસ્તથા ' ગંગાવત્તગદાહિણાવત્તરગમગુરરવિકિરણતરુગવોદિત

ઉદરભાગ વજ્ર કે જેમા સુન્દર, અર્થાત્-મધ્ય મેં પતલા હોના છે । શુભ
 લક્ષણોં સે વિશિષ્ટ હોના છે । તથા અતિપતલા કુશ-હોને કે કારણ
 અનુદર-નિર્ગત ઉદર જેસા હોના છે — અર્થાત્ યે કુશોદરી હોતી
 હૈં । (તિવલિવલિયતણુનમિયમજ્ઞિયાઓ) હન કા મધ્યભાગ
 ઉદરપ્રદેશ ત્રિવલિયોં સે વલિત-યુગ્મ - હોતા છે । ઔર તણુનમિત -
 કુઠ ઝુકા હુઆ સા રહતા છે । (ઉજ્જુયસમસહિય જન્વતણુ કસિ-
 ણનિદ્વઆદેજ્જલહહસુકુમાલમઝયમુવિમત્તરોમરાઈઓ) હન કી
 રોમરાજિ ઋજુ-સરલ, સમ એકસી સહિત ઘનીભૂત, જાત્ય સ્વાભાવિક,
 તણુ-પતલી, કુણ્ણ-કાલી, નિદ્ધ-સ્તિગ્ધ, ચિકની-સ્પર્શતારહિત, આદેય-
 લાઘનીય, લહહ-સુન્દર સુકુમારમૃદુરૂ-અત્યન્ત કોમલ તથા સુવિમત્ત
 યથાસ્થાન શોભિત હોતી હૈં । (ગંગાવત્તગ-દાહિણાવત્ત-તરગ-મગુર-રવિ

મધ્યમા પાતળો હોય છે અને શુભ લક્ષણોવાળો હોય છે, તથા અતિશય
 પાતળો હોવાથી અનુદર-પેટ જ ન હોય તેવો હોય છે એટલે કે તે સ્ત્રીઓ
 કુશોદરી હોય છે " તિવલિવલિયતણુનમિયમજ્ઞિયાઓ " તેમના મધ્યભાગ-
 ઉદર પ્રદેશ ત્રિવલિયો વાળો હોય છે, અને સહેજ ઝુકેલો રહે છે " ઉજ્જુય
 સમસહિય-જન્વ-તણુ-કસિણ નિદ્ધ-આદેજ્જ-લહહ-સુકુમાલ-મઝય-સુવિમત્તરોમ-
 રાઈઓ " તેમની રોમરાજિ ઋજુ-સરલ, સમ-એક સરળી, સહિત-ઘનીભૂત,
 જાત્ય-સ્વાભાવિક, તણુ-પાતળી, કાળી, સુવાળી, આદેય-વળાણુવા યોગ્ય, લહહ
 સુદર સુકુમાર, મૃદુક-અતિ કોમળ તથા સુવિભક્ત-યથાસ્થાન શોભિત હોય
 છે, (" ગંગાવત્તગદાહિણાવત્ત તરગમગુરરવિકિરણતરુગવોદિત

અકોનાયતપડમગમીરવિગડનામીઓ ' ગદ્ગાવર્તન' ત્રિણાવર્તનરત્નમહુર - રવિ -
કરણતરુગમોષિતવિકોશાયમાનપદ્મગમ્મીરવિગડનામીઓ, તત્ર ગદ્ગાવર્તનઃ
ગદ્ગાનયાનલભ્રમઃ, સ ચ દક્ષિણાવર્ત. તરદ્ગમહુર - તરદ્ગૈઃ મહુરઃ વક્રશ્ચ,
તદ્ગત્, તથા રવિકિરણૈઃ=મૂર્યમિરણૈ મોષિત વિગમિત=વિગાસાનસ્થાપાપ્તુવદિ-
તર્યઃ, અતઃપ્ર ત્રિગોશાયમાન મુકુટામ્થા વિમુચ્ચત્ યન્ પદ્મ તદ્ગદ્ ગમ્મીરા
વિગડા-સુન્દરા ચ નામિર્યાસા તાસ્તયા । ' અણુમ્બડપમત્યસુજાયપીણકુચ્છી '
અનુદ્ગટપદ્મસુજાતપીનકુચ્છ =અનુદ્ગટ=અદ્ગટરદિતી સમૌ, પ્રશન્તો સુજાતૌ
સુસથિતા પીનો સુપુષ્ટા કુલી=અરોમયમાગૌ યાસા તારતયા ' સનયપાસા '
સનયપાર્શ્વઃ = પુષ્ટત્વાદરોનમત્પાર્શ્વમાગા, ' સગયપાસા ' સન્નતપાર્શ્વઃ=સુમિ-
લિતપાર્શ્વમાગા, આપ્ત ' સુદરપાસા ' સુન્દરપાર્શ્વઃ = મનોહરપાર્શ્વમાગાઃ,
' સુજાયપાસા ' સુજાતપાર્શ્વઃ=સુસથિતપાર્શ્વઃ, ' મિયમાડયપીણરડયપાસા ' મિત-

કિરણ તરુગમોષિત અકોનાયતપડમગમીરવિગડનામીઓ) અનેકી નામિ
તરંગો સે વક્ર ગને ના તેસે દક્ષિણાવર્તવાલે ગગાનદી કે જલભ્રમ-
મંચર કે સમાન હોતી હૈ । તથા મૂર્ય કી કિરણોં કે સપર્ક સે અપની
મુકુલિત અવસ્થા કા પરિત્યાગ કર વિકૃન્નિત અવસ્થા કો પ્રાપ્ત હુઈ પદ્મ
કે સપ્તાન ગમ્મીર હોતી હૈ ઓર ચિકટ ઘડી સુન્દર હોતી હૈ । (અણુ-
મ્બડપસત્યસુજાયપીણકુચ્છી) અનેકે ઉદર કે દોનો પાર્શ્વમાગ અનુદ્ગટ-
અનુલ્વણ-ચરાચર-પદ્મ સે હોતે હૈ । પ્રશન્ત-સુહાવને હોતે હૈ । સુજાત-
અચ્છે સન્ધાનવાલે હોતે હૈ । પીન-પુષ્ટ હોતે હૈ । (સનયપાસા) તથા
પુષ્ટ હોને કે કારણ અનેકે દોનો તરફ કે વે પાર્શ્વમાગ નીચે કી ઓર
અંકે હુઈ રહતે હૈ । (સગયપાસા) વે દોનો અનેકે પાર્શ્વમાગ પરસ્પર મેં
સગત-મિલે રહતે હૈ । અતઃપ્ર વે (સુદરપાસા) વહે સુન્દર હોતે હૈ ।
તથા (સુજાયપાસા) અચ્છે સન્ધાન સે યુક્ત કહે જાતે હૈ । (મિયમા

મીરવિગડનામીઓ " તેમની નાલિ તરંગોથી વક્ર અનેક દક્ષિણાવર્તવાળા
ગગા નદીના જલભ્રમ-વમણ જેવી હોય છે, અને સૂર્યના કિરણોના સપર્કથી
પોતાની ખીણયેલી અવસ્થા છોડીને વિકૃન્નિત થયેલા કમળના જેવી ગમ્મીર
અને વિકટા અત્યંત સુદર હોય છે " અણુમ્બડપ સત્યસુજાયપાણકુચ્છી "
તેમના ઉગ્ગની બાજુના બન્ને ભાગો (કુલીઓ) એક સરખા હોય છે,
પ્રશન્ત, પુષ્ટ અને સુહાળ હોય છે " સનયપાસા " તે બન્ને કુલી પુષ્ટ
હોવાને કારણે નીચેની બાજુ ઝુટેલા ગ્રહે છે ' સગયપાસા ' તેમની તે
બન્ને કુલીઓ પરસ્પરમા સગત-મળેલી હોય છે, તેથી તે " સુદરપાસા "
ઘણી સુદર હોય છે તથા " સુજાયપાસા " સુધટિત હોય છે " મિયમાડયપીણ-

માત્રિક પીનરતિદર્શનાઃ-મિત્રી-માનોપલો માત્રિકી પરિમાણમ્પદ્મી પીનો-સુપુ-
 ણ્ડી રતિદૌ - રમણીયૌ પાર્શ્વભાગા યાસા તાસ્તથા ' અરરઽયકળગરુયગનિ
 મ્મલ સુજાયનિરુદ્ધયગાયલ્લી ' અકરણ્ડકાનકચ્ચનિર્મલસુજાતનિરુપહત
 ગાત્રયદ્યયઃ તત્ર અકરણ્ડકા = પુષ્ટત્વાદનુપદ્યપુષ્ટપાર્શ્વોન્વરિથિસાઃ, તથા
 કનકચ્ચનિર્મલ્લા = સુવર્ણ સમાનકાતિમત્તીસુજાતા નિરુપહતા = રોગરહિતા
 ચ ગાત્રયદિ યાસાં તાસ્તથા ' કચ્ચનકલસપ્પમાણસમસહિતલ્લઘ્વચુચ આમેલગ
 જમલ જુયલ્લ યદિયપઓદરાઓ ' કાશ્ચનકલસપ્પમાણસમસત્તિત્ત્વચ્ચકાઽઽમેલક
 યમલયુગલર્તિતપયોધરાઃ=તા કાશ્ચનકલસપ્પમાણી=ઉન્નતત્વેન ધર્નુત્વેન ચ સુવર્ણ
 ઘટાકરી સમો=તુલ્યો સહિતો=અનિપતિત્ત્વેનાઽશિથિલો લ્લઘ્વચ્ચકામેલકો=મનોહ-
 રઽપ્પસ્તનમુગ્ધશિલ્લરે યમલો=સદોત્પન્નો યુગલ=યુગ્મો ર્તિતો=પુરુષ, પયોધરો=
 સ્તનો યાસા તાસ્તથા ' મુયગઅણુપુલ્લતણુયગોપુલ્લમ્મસહિયનામિય આદે-

હ્યપીળરઽયપાસા) હસીલિયે ઉનકે ઘે દોનોં પાર્શ્વભાગ મિત્ર-માન સે
 યુક્ત, માત્રિક-પ્રમાણસપન્ન, પીન-સુપુષ્ટ એવ રતિદ-રમણીય લગતે હૈં ।
 (અકરણ્ડયકળગરુયગનિમ્મલસુજાયનિરુદ્ધયગાયલ્લી) પુષ્ટ હોને કે
 કારણ ઉનકી ન તોં પીઠકી રદ્ધિયા દિગ્વતી હૈં ઓર ન દોનોં પાર્શ્વભાગોં
 કી । ઉનકા શરીર સુવર્ણ કે મમાન કાન્તિચાલા એવ રોગરહિત હોતા
 હૈં । (કચ્ચનકલસપ્પમાણ સમસહિતલ્લઘ્વચુચ આમેલગ જમલજુયલ્લવદિય
 પયોદરાઓ) ઉનકે દોનોં સ્તન ઉન્નત ઓર ગોલ હોને કે કારણ સુવર્ણ-
 નિર્મિત ઘટ કે આકાર જૈસે હોતે હૈં-કમતી ઘટતી નહીં । સહિત અશિ
 થિલ હોતે હૈં । નીચે કી ઓર છુકે છુપ નહીં રહતે સામ્મને ઉઠે છુપ
 રહતે હૈં । ઉનકે દોનોં ચ્ચુક મનોદર એવ અત્યત કાલે મુગ્ધચાલે હોતે
 હૈં । યે સાય ૨ ઉત્પન્ન હોતે હૈં । ગોલ રહતે હૈં, (મુયગ અણુપુલ્લતણુય-

રહ્યપાસા " તે કારણે તેમની બન્ને કુક્ષીઓ મિત્રમાત્રિક સપ્રમાણ, પીન-સુપુષ્ટ
 અને રતિદ-રમણીય હોય છે "અક હ્યકળગરુયગનિમ્મલ સુજાય નિરુદ્ધયગાયલ્લી"
 તે પુષ્ટ હોવાને કારણે તેમની પીઠના હાડકા દેખાતા નથી અને છાતીના
 હાડકા પણ દેખાતા નથી, તેમના શરીર સુવર્ણની જેવી કાતિવાળા અને નીરોગી
 હોય છે " કચ્ચન કલસપ્પમાણસમસહિતલ્લઘ્વચુચઆમેલગજમલજુયલ્લવદિય
 પયોદરાઓ ' તેમના બન્ને સ્તન ગોળ અને ઉન્નત હોવાને કારણે, સોનાના
 ઘડા જેવા હોય છે, બન્ને સ્તન બરાબર સરખા હોય છે-નાના મોટા હોતા
 નથી,, સહિત-અશિથિલ હોય છે નીચેની બાજુ નમેલા રહેતા નથી પણ
 ઉન્નત હોય છે તેમની બન્ને હીટીઓ મનોહર અને અત્યત શ્યામ મુખવાળી
 હોય છે તે બન્ને સાથે જ ઉત્પન્ન થાય છે અને ગોળાકારના ૨ છે

જલઉડવાહા ' મુજદ્વાનુપ્રસ્તનુક ગોપુચ્છવૃત્તસમસહિતનમિતાદેયલહવાહવઃ =
 મુજદ્વાનુ = સર્પવત્ જાનુપૂર્ણ તનુકા = ક્રમશઃ કૃશો તથા ગોપુચ્છવદ્ વૃત્તો =
 વર્તુલો સમસહિતા = સમત્વયુક્તા મુગુઠિના ચ નમિતૌ = મુદીર્ણલમ્પમાની આદેયો =
 શ્લાઘનીયો ' લહ' इति सुन्दरा ग्राह-शुभो यासा तास्तथा ' तवनहा ' ताम्र-
 नखाः-रक्तवर्णनखसम्पन्नाः ' मसलग्रहत्या ' मासलग्रहस्ता-मासलो-पुष्टौ
 अग्रहस्तौ-हस्ताग्रभागौ ' पोंचा ' इति प्रमिद्धो यासा तास्तथा, तथा ' कोमल-
 पीवरवरगुलीया ' कोमल पीवरवराद्गुलिकाः, तेऽपि मरणधर्ममुपनमन्तीति-
 क्षयमाणेन सम्बन्धः ॥ सू-१२ ॥

પુનસ્તાઃ કીદૃશ્યઃ ? इत्याह—' निद्धपाणि लेहा ' इत्यादि-

મૂલમ્—निद्धपाणिलेहा मसि-सूरसखचक्रवर सोत्थिय
 विभक्त - सुरइय-पाणिलेहा पीणुणय कखवत्थिप्पएस

ગોપુચ્છવૃત્તસમસહિયનામિય આદેજ્જલઉડવાહા) इनकी दोनो भुजाएँ
 सर्प की तरह क्रमशः कृशहुई होती है। तथा गाय की पूछ की तरह
 वर्तुल होती हैं। सम-एकसी तथा सहित-संगठित होती हैं। नमित-
 घुटनों तक लगी रहती हैं। आदेय-देखने में प्रशंसनीय एव वही सुहा-
 वनी लगती हैं। (तवनहा) इनकी अंगुलियों के नख लाल वर्ण वाले
 होते हैं। तथा (मसलग्रहत्या) इनका पोंचा मासल-पुष्ट होता है।
 तथा (कोमलपीवरवरगुलीया) इनकी हाथों की अंगुलिया कोमल
 पीवर-पुष्ट एव वर-उत्तम होती हैं। ऐसी ये स्त्रिया भी कामभोग से
 अतृप्त ही मरणधर्म को प्राप्त करती हैं। ऐसा सबध आगे के वाक्य से
 जोड़ लेना चाहिये ॥ सू० १२ ॥

“ મુયગ-અણુપુલ્લ-તલુય ગોપુચ્છવૃ-સમસહિય-નામિય-આદેજ્જલ-ઉડવાહા ”
 તેમની બન્ને હુબ્બો સર્પની જેમ ક્રમશઃ કૃશ થતી બાય છે, તે હુબ્બો
 ગાયની પૂછડી જેવી વર્તુળ સમ-એક સરખી, તથા સહિત-સુગઠિત, ઘુટણો
 સુધી લાખી, અને આદેય-પ્રશન્ત, અને શોભિતી લાગે એ “ તવનહા ” તેમની
 આગળીઓના નખ લાલ રંગના હોય છે, તથા “ મસલગ્રહત્યા ” તેમના
 પોચા માસલ-પુષ્ટ હોય છે, તથા “ કોમલપીરવરગુલીયા ” તેમના હાથની
 આગળિયો પીર-પુષ્ટ અને ઉત્તમ હોય છે એવી તે યુગલિક શ્રીઓ પણ
 કામભોગથી અતૃપ્ત રહીને જ મૃત્યુ પામે છે એવો સબધ આગળના વાક્યો
 સાથે સમજી લેવો ॥ સૂ. ૧૨ ॥

માત્રિક પીતરતિદપાર્શ્વઃ-મિતૌ-માનોપતૌ માત્રિકૌ પરિમાણસમ્પન્નાં પીની-સુપુ-
 પ્તૌ રતિદૌ - રમણીયૌ પાર્શ્વમાર્ગો યાસાં તાસ્તથા ' અરરદ્યકળગરુયગનિ
 મ્મલ સુજાયનિરુપહ્યગાયલટ્ટી ' અરરદ્યકળગરુચકનિર્મલસુજાતનિરુપહત
 ગાત્રયદ્યઃ તત્ર અરરદ્યકળ = પુષ્ટત્વાદનુપગ્નપટ્ટપાર્શ્વપરિથિત્ત્વા, તથા
 કનરુચકનિર્મલા = સુવર્ણ સમાનકાન્તિમતીસુજાતા નિરુપહતા = રોગરહિતા
 ચ ગાત્રયદ્યે યાસાં તાસ્તથા ' કચણકલસપ્પમાણસમસહિતલટ્ટચૂચુય આમેલગ
 જમલ જુયલ વદિયપઓદરાઓ ' કાશ્ચનકલસપ્પમાણસમસહિતલટ્ટચૂચુકાઽમેલક
 યમલયુગલર્વિતતપયોધરાઃ=તા કાશ્ચનકલસપ્પમાણસમસહિતલટ્ટચૂચુકાઽમેલક
 ઘટાકરૌ સમૌ=તુલ્યા સહિતૌ=અનિપતિતલ્લેનાઽશિયિલા લટ્ટચૂચુકામેલકૌ=મનોહ-
 રકૃષ્ણસ્તનમુખશિલ્પે ચમકો=સહોત્પન્નો યુગલો=યુગ્મૌ ર્વિતૌ=રુઢી, પયોધરૌ=
 સ્તનો યાસાં તાસ્તથા ' શુચગઅણુપુન્નવતણુયગોપુન્નવટ્ટસમસહિયનામિય આદે-
 હ્યપીળરદ્યપાસા) હસીલિયે ઉનકે યે દોનોં પાર્શ્વમાર્ગ મિત-માન સે
 યુક્ત, માત્રિક-પ્રમાણસપન્ન, પીન-સુપુષ્ટ ંચ રતિદ-રમણીય લગતે હૈં ।
 (અરરદ્યકળગરુયગનિમ્મલસુજાયનિરુપહ્યગાયલટ્ટી) પુષ્ટ હોને કે
 કારણ ઉનકી ન તોં પીઠકી રહિયા દિગ્વતી હૈં ઓર ન દોનોં પાર્શ્વમાર્ગો
 કી । ઉનકા શરીર સુવર્ણ કે સમાન કાન્તિયાલા ંચ રોગરહિત હોતા
 હૈં । (કચણકલસપ્પમાણ સમસહિતલટ્ટચૂચુય આમેલગ જમલજુયલવદિય
 પયોધરાઓ) ઉનકે દોનોં સ્તન ઉન્નત ઓર ગોલ હોને કે કારણ સુવર્ણ-
 નિર્મિત ઘટ કે આકાર જૈસે હોતે હૈં-કમતી બઢતી નહીં । સહિત અશિ
 થિલ હોતે હૈં । નીચે કી ઓર છુકે છુપ નહીં રહતે સામ્મને ઉઠે છુપ
 રહતે હૈં । ઉનકે દોનોં ચૂચુક મનોત્તર ંચ અત્યંત કાલે મુખવાલે હોતે
 હૈં । યે સાચ ૨ ઉત્પન્ન હોતે હૈં । ગોલ રહતે હૈં, (શુચગ અણુપુન્નવતણુય-

રદ્યપાસા " તે કારણે તેમની બન્ને કુક્ષીઓ મિતમાત્રિક સપ્રમાણ, પીન-સુપુષ્ટ
 અને રતિદ-રમણીય હોય છે "અક જુયકળગરુયગનિમ્મલ સુજાય નિરુપહ્યગાયલટ્ટી"
 તે પુષ્ટ હોવાને કારણે તેમની પીઠના હાડકા દેખાતા નથી અને છાતીના
 હાડકા પણ દેખાતા નથી, તેમના શરીર સુવર્ણની જેવી ઝલિવાળા અને નીરોગી
 હોય છે " કચણ કલસપ્પમાણસમસહિતલટ્ટચૂચુયઆમેલગજમલજુયલવદિય
 પયોધરાઓ ' તેમના બન્ને સ્તન ગોળ અને ઉન્નત હોવાને કારણે, મોનાના
 ઘડા જેવા હોય છે, બન્ને સ્તન બરાબર સરખા હોય છે-નાના મોટા હોતા
 નથી,, સહિત-અશિથિલ હોય છે નીચેની બાજુ નમેલા રહેતા નથી પણ
 ઉન્નત હોય છે તેમની બન્ને ડીઠીઓ મનોહર અને અત્યંત શ્યામ મુખવાળી
 હોય છે તે બન્ને સાથે જ ઉત્પન્ન થાય છે અને ગોળાકારના હોય છે

વેયા, ણંદણવણવિવરચારિણીઓ ઓઠ્ઠઅચ્છરાઓ ઉત્તર-
કુરુમાણસચ્છરાઓ આચ્છેર-ગયેચ્છણિજાઓ તિણિણપલિ
ઓવમાઈ પરમાડં પાલહિત્તા તાઓ વિ ઉવણનંતિ મરણધમ્મં
અતિત્તા કામાણં ॥ સૂ૦૧૩ ॥

ટીકા—‘ નિદ્ધપાણિલેહા ’ સ્નિગ્ધપાણિરેખાઃ = સુસ્પષ્ટહસ્તરેખાઃ ‘ સસિ-
સુરસલચક્રવરમોતિયયિમિત્તમુરિરૂપાણિલેહા ’ શશિ—સૂર્ય—શદ—ચક્ર-
વર સ્વસ્તિરવિમિત્તમુરિરૂપાણિરેખાઃ = ચન્દ્રસૂર્યશદ્વદક્ષિણાવર્તસ્વસ્તિક-
લક્ષણાઃ વિમિત્તાઃ=સુસ્પષ્ટા, રતિદા=સુમદાઃ પાણિરેખાઃ=હસ્તરેખા યાસા
તાસ્તથા । ‘ પીણુણયકમ્મલવત્તિપ્પદેસપહિપુણ્ણગલકવોલા ’ પીનોન્નતરક્ષસ્વસ્તિ-
પદેશમતિપૂર્ણગલકવોલાઃ = પીનાબુન્નતો ચ રક્ષી = ગાહુમૂલો વસ્તિઃ = નાભ્ય-
ધોમાગ સ્તથા પ્રતિપૂર્ણા ગલકવોલો યાસા તાસ્તથા ‘ ચરરુલ્લસપ્પમાણકવુવર
સરિસગીવા ’ ચતુરુલ્લસપ્પમાણકમ્મુનરસદશગ્રીવા. = ચતુરુલ્લસપ્પમાણા કમ્મુવર-

ફિર વે કૈસી હોતી હૈ સો કહતે હૈ—‘ નિદ્ધપાણિલેહા ’ इत्यादि० ।
ટીકાર્થઃ—(નિદ્ધપાણિલેહા) इनके दोनों हाथों की रेखाएँ स्निग्ध-
सुस्पष्ट होती हैं। (ससिसुरसलचक्रवरोत्तिययविमित्तसुविरूपाणिनेहा)
उनके हाथों में शशि—चंद्र रवि, शत, चक्र और दक्षिणावर्त स्वस्तिक,
इन आकार की रेखाएँ होती हैं। और ये सब रेखाएँ सुस्पष्ट रहती हैं,
सुगन्ध होती हैं। (पीणुणयकमलवत्तिप्पदेसपह्णिपुण्णगलकवोला)
इनकी दोनों कक्षाएँ—गाहूमूल—पीन—पुष्ट और उन्नत होता है। वस्ती
नाभि का अधोभाग भी ऐसा ही होती है। तथा गला और कपोल ये
दोनों इनके प्रतिपूर्ण—भरे हुए रहते हैं। (चररुल्लसप्पमाणकवुवर—

તે યુગલિક શ્રીઓનુ વધુ વર્ણન કરે છે—“ નિદ્ધપાણિલેહા ” इत्यादि
ટીકાર્થ—“ નિદ્ધપાણિલેહા ” તેમના બન્ને હાથની રેખાઓ સ્નિગ્ધ-સુસ્પષ્ટ
હોય છે “ સસિસુરસલચક્રવરોત્તિયયિમિત્તમુરિરૂપાણિલેહા ” તેમના હાથોમા
ચંદ્ર, સૂર્ય, શબ્દ, ચક્ર, દક્ષિણાવર્ત સ્વસ્તિક આદિના આકારની રેખાઓ હોય છે
તે બધી રેખાઓ સુસ્પષ્ટ અને સુગન્ધ હોય છે “ પીણુણયકમ્મલવત્તિપ્પ
દેસપહિપુણ્ણગલકવોલા ” તેમની બન્ને કપોલો પુષ્ટ અને ઉન્નત હોય છે વસ્તિ-
નાભિની નીચેનો ભાગ પણ એવો જ હોય છે, તથા તેમનુ ગણુ અને ગાલ પ્રતિ-
પૂર્ણ ભરાવદાર હોય છે “ ચરરુલ્લસપ્પમાણકમ્મુનરસરિસગીવા ” તેમની શ્રીધા

पडिपुण्णगल्लकवोल-चउरंगुल सुप्पमाण-अवुवरसरिस-गीवा
 मंसल - संठिय - पसत्थहणुया दालिमपुप्फप्पगासपीवर-
 पलंवकोचियवराधरा सुंदरोतरुद्धा दहिदगरय कुट्ठचदवासंति
 मउल-अछिद्द - विमलदसणा रत्तुप्पलरत्तपउमपत्तसुकुमाल
 ताल्लुजीहा कणवीरमउलकुडिल अब्भुण्णयउज्जुतुंगनासा
 सारयनवकमल -कुमुय--कुवल्लयदल--निगर--सरिस- लम्बण
 पसत्थ-निम्मल--कत्तनयणा--आनामिय-चावरुद्ध कण्हम्भ-
 राइसठिय--सगयायय--सुजाय- तणु- कसिण-- निद्धमूमगा
 अल्लीण- पमाण- जुत्तसवणा सुत्तसवणा पीणमट्ट-गडलेहा
 चउरगुल - विसाल - समनिडाला कोमुईरयणियर - विमल
 पडिपुण्णा सोम्मवयणा छत्तुण्णयउत्तमगा अविकल सुसि
 णिद्ध दीह-सिरया छत्त २ उज्जय २ जुव ३ थुभ ४ दामाणि ५
 कमडल्ल ६ कलस ७ वावि ८ सोत्थिय ९ पडाग १० जव ११
 मच्छ १२ कुम्म १३ रहवर १४ मयर १५ अक १६ थाल
 १७ अकुस १८ अट्टावय १९ सुपइठ २० अमर २१ सिरिया-
 भिसेय २२ तोरण २३ मेइणि २४ उदधिवर २५ पवरभवण
 २६ गिरिवर २७ वरायस २८ सुललियगय २९ वसभ ३०
 सीह ३१ चामर ३२ पसत्थ वत्तीसलम्बणधराओ हसस-
 रिच्छगईओ कोइलमहुरगिराओ कता सव्वस्स अणुमयाओ,
 ववगयवली-पलिय-वगदुवण - वाहि दोभग्ग-सोयमुक्काओ-
 उच्चत्तेण्य नरथोवूणमूसियाओ सिगारागारचारुवेसा सुदर-
 थणजहणवयणकरचलणयणा

વેયા, ણંદળવળવિવરચારિણીઓ ઓવ્વઅચ્છરાઓ ઉત્તર-
કુલમાણસચ્છરાઓ આચ્છેર ગયેચ્છણિજ્ઞાઓ તિણિપલિ
ઓવમાઈં પરમાડં પાલહત્તા તાઓ વિ ઉવળનંતિ મરણધમ્મં
અતિત્તા કામાણં ॥ સૂ ૦ ૧૩ ॥

ટીકા—‘નિદ્વપાણિલેહા’ સ્નિગ્ધપાણિરેલાઃ = સુસ્પષ્ટસ્તરેલાઃ ‘સસિ-
સૂરસત્ત્વચક્રવરમોત્થિયવિમત્તમુરિરૂપાણિલેહા’ શશિ—સૂર—ગદ્ગ—ચક્ર-
વર સ્વસ્તિવિમત્તમુરિરૂપાણિરેલાઃ = ચન્દ્રમૂર્યગદ્ગચક્રદક્ષિણાવર્તસ્વસ્તિક-
લક્ષણાઃ વિમત્તાઃ=સુસ્પષ્ટા રતિદાઃ=સુખદાઃ પાણિરેલાઃ=દ્વસ્તરેલા યાસા
તાસ્તથા । ‘પીણુણયકમ્પવત્થિપ્પદેસપહિપુણ્ણગલ્લકપોલા’ પીનોદ્ગતકક્ષવસ્તિ-
પ્રદેશપ્રતિપૂર્ણગલ્લકપોલાઃ = પીનાપુદ્ગતો ચ કક્ષી = ગાદુમૂલો વસ્તિઃ = નાભ્ય-
ધોમાગ સ્તથા પ્રતિપૂણા ગલ્લકપોલો યાસા તાસ્તથા ‘ચરુરુલ્લસપ્પમાણકવૂર-
સરિસમીયા’ ચરુરુલ્લસપ્પમાણકવૂરસદ્દશગ્રીયાઃ = ચરુરુલ્લસપ્પમાણા કમ્બુવર-

ફિર વે કૈસી હોતી હં સો રહતે હૈ—‘નિદ્વપાણિલેહા’ इत्यादि० ।
ટીકાર્થ—(નિદ્વપાણિલેહા) इनके दोनों हाथों की रेखाएँ स्निग्ध-
सुस्पष्ट होती है। (ससिसूरसत्त्वचक्रवरसोत्थियविमत्तमुरिइयपाणिलेहा)
उनके हाथों में शशि—चंद्र रवि, शख, चक्र और दक्षिणावर्त स्वस्तिक,
इन आकार की रेखाएँ होती हैं । और ये सब रेखाएँ सुस्पष्ट रहती हैं,
सुखद होती हैं । (पीणुणयकम्पवत्थिप्पदेसपह्णिपुण्णगल्लकपोला)
इनकी दोनों कक्षाएँ—गादुमूल—पीन—पुण्ड और उन्नत होता है । वस्ती
नाभि का अधोभाग भी ऐसा ही होती है । तथा गला और कपोल ये
दोनों इनके प्रतिपूर्ण—भरे हुए रहते हैं । (चरुगुलसप्पमाणकवूर-

તે યુગલિક શીઓનુ વધુ વર્ણન કરે છે—“નિદ્વપાણિલેહા” इत्यादि
ટીકાર્થ—“નિદ્વપાણિલેહા” તેમના બન્ને હાથની રેખાઓ સ્નિગ્ધ-સુસ્પષ્ટ
હોય છે “સસિસૂરસત્ત્વચક્રવરસોત્થિયવિમત્તમુરિરૂપાણિલેહા” તેમના હાથોમા
ચક્ર, સૂર્ય, રાખ, ચક્ર, દક્ષિણાવર્ત સ્વસ્તિક આદિના આકારની રેખાઓ હોય છે
તે બધી રેખાઓ સુસ્પષ્ટ અને સુખદ હોય છે “પીણુણયકમ્પવત્થિપ્પ-
દેસપહિપુણ્ણગલ્લકપોલા” તેમની બન્ને કુખો પુષ્ટ અને ઉન્નત હોય છે વસ્તિ-
નાભિની નીચેનો ભાગ પણ એવો જ હોય છે, તથા તેમનું ગળું અને ગાલ પ્રતિ-
પૂર્ણ ભરાવદાર હોય છે “ચરુરુલ્લસપ્પમાણકવૂરસરિસમીયા” તેમની શીયા

पडिपुण्णगल्लकचोल-चउरंगुल-सुप्पमाण-अंनुवरसरिस-गीवा
 मसल --संठिय - पसत्थहणया दालिमपुप्फप्पगासपीवर-
 पलंव कौचियवराधरा सुंदरोतरुद्धा दहिदगरय कुदचदवासति
 मउल-अछिद - विमलदसणा रत्तुप्पलरत्तपउमपत्तसुकुमाल
 तालुजीहा कणवीरमउलकुटिल अन्भुण्णयउज्जुतुगनासा
 सारयनवकमल कुमुय--कुवलयदल-निगर--सरिस- लक्खण
 पसत्थ-निम्मल--कतनयणा--आनामिय-चावरुद्धा कण्हम्भ-
 राइसठिय--सगयायय--सुजाय- तणु- कसिण-- निद्धभूमगा
 अल्लीण--पमाण- जुत्तसवणा सुस्सवणा पीणमट्ट-गंडलेहा
 चउरगुल - विसाल - समनिडाला कोमुईरयणियर - विमल
 पडिपुण्णा सोम्मवयणा छत्तुण्णयउत्तमगा अविकल सुसि
 णिद्धदीह-सिरया छत्त २ उज्जय २ जुव ३ थूभ ४ दामाणि ५
 कमडल्ल ६ कलस ७ वावि ८ सोत्थिय ९ पडाग १० जव ११
 मच्छ १२ कुम्म १३ रहवर १४ मयर १५ अंक १६ थाल
 १७ अंकुस १८ अट्ठावय १९ सुपइट्ट २० अमर २१ सिरिया-
 भिसेय २२ तोरण २३ मेइणि २४ उदधिवर २५ पवरभवण
 २६ गिरिवर २७ वरायस २८ सुललियगय २९ वसभ ३०
 सीह ३१ चामर ३२ पसत्थ वत्तीसलक्खणधराओ हसस-
 रिच्छगईओ कोइलमहुरागिराओ कता सव्वस्स अणुमयाओ,
 ववगयवली-पलिय-वगदुवण - वाहि दोभग्ग सोयमुक्काओ-
 उच्चत्तेणय नरथोवूणमूसियाओ सिगारागारचारुवेसा सुदर-
 थणजहणवयणकरचलणयणा लावण्णरूवजोव्वणगुणोव-

=ત્વ રક્તોત્પલ = રક્ત કમલ તદ્વત્ રક્તપદ્મપત્રચ સુકુમાર તાલુજિહ્વા યાસા તાસ્તથા, ' કળવીરમઝલકુઢિલ અઞ્ચુળય ઝજ્જુતુગનાસા ' કરવીરમુકુઠાઽ કુટિલાઽઞ્ચુલ્લતઞ્જુતુગનાસાઃ = કરવીરમુકુલ = કર્ણિકારકલિકા તદ્વત્ અકુટિલા=અપકા અઞ્ચુલ્લતા=અમિતઃઽલ્લતા ઋજ્વી=સરલા તુઙ્ગા-મધ્યોત્તતા ચ નાસા=નાસિકા યાસા તાસ્તથા ' સારયનવકમલકુમુયકુવલયદલનિગરસરિસલક્ષણપસત્થ નિમ્મલકતનયણા ' શારદનવકમલ કુમુદકુવલયદલનિકરસદૃશલક્ષણપ્રશસ્તનિર્મલકાન્તનયના = શારદ = શરત્કાલિક યત્ કમલ = સૂર્યવિકાસિપદ્મ, કુમુદ=ચન્દ્રવિકાસિપદ્મ કુવલયદલ=નીલકમલપત્ર ચ તેષા નિકરઃ=સમૂહઃ તેન સદૃશે લક્ષણપ્રશસ્તે=પ્રશસ્તલક્ષણોપેતે નિર્મલે=ઝજ્જલે કાન્તે=મનોહરે ચ નયને યાસા તાસ્તથા ' આનામિય ચાવરુઢલ કિણ્ઠઘ્મરાઈ સઠિય સગયા યય સુજાય-તણુકસિણનિદ્વભૂમગા ' આનામિતચાપરુચિરકૃષ્ણાભ્રરાજિસસ્થિતસગતસુજાતતત્તુ કૃષ્ણસ્નિગ્ધધ્રુવઃ-આનામિતૌ=વક્રીકૃતૌ ચાપૌ = ધનુષી તદ્વત્ રુચિરે કૃષ્ણા ભ્રરાજિસસ્થિતે=કૃષ્ણોઘ્રેસ્વાસદૃશે સગતે=સમુચિતે આયતે=દીર્ઘે સુનાતે સ્વપા-

તાલુ ઓર જિહ્વા જિનકા રક્ત કમલ કે સમાન, તથા રક્તપદ્મપત્ર કે સમાન સુકુમાર હોતી છે । (કળવીરમઝલકુઢિલ અઞ્ચુળયઝજ્જુતુગનાસા નાસિકા કર્ણિકાર કનેર-કી કલિકા-કલી-કે સમાન અકુટિલ તથા અઞ્ચુલ્લત, ઋજ્વી-સરલ, ઓર તુઙ્ગ-મધ્ય મે ઝલ્લત હોતી છે । (સારયનવકમલ કુમુયકુવલયદલનિગરસરિસલક્ષણપસત્થનિમ્મલકતનયણા । જિનકે દોનો નયન શરદકાલસથધિ સૂર્યવિકાસી કમલ કે તથા ચન્દ્ર વિકાસી પદ્મ કે, કુવલય દલ કે, નીલ કમલ કે પદ્મકે સમૂહ જૈસે હોતે છે । પ્રશસ્ત લક્ષણો સે યુક્ત, નિર્મલ-ઝજ્જલ, એવ કાન્ત-મનોહર હોતે છે । (આનામિયચાવરુઢલ કિણ્ઠઘ્મરાઈસઠિયસગયાયસુજાયતણુકસિણનિદ્વભૂમગા) જિનકી દોનો મોઢે વક્રીકૃત ધનુષ

કમળ જેવી તથા લાલ કમળ પત્ર જેવી સુકુમાર હોય છે, “ કળવીરમઝલ-કુઢિલઅઞ્ચુળયઝજ્જુતુગનાસા ” તેમની નાસિકા કરેણુની કળી જેવી અકુટિલ તથા ઊઘત, ઋજ્વી-સરળ અને તુઙ્ગ-મધ્યમા લાગી હોય છે, “ સારય નવકમલકુમુયકુવલય - દલનિગર-સરિમ - લક્ષણપસત્થ-નિમ્મલ-કતનયણા ” જેમના બન્ને નયન શરદકાલના સૂર્ય વિકસિત કમળ તથા ચન્દ્ર વિકસિત પદ્મની પાખડીઓ જેવા તથા નીલકમલના પત્રસમૂહ જેવા, પ્રશસ્ત લક્ષણો-વાળા, નિર્મળ-ઊજ્જ્વળ, અને મનોહર હોય છે “ આનામિયચાવરુઢલ-કિણ્ઠઘ્મરાઈ સઠિયસ ગયાયસુજાયતણુકસિણ નિદ્વભૂમગા ” જેમની બન્ને બ્રમરો વક્રીકૃત ધનુષ જેવી અને એવા આવા નાદોના આવા જેવી અસ્થિત

સદૃશી=મધાનશક્તિતુલ્યા ચ ગ્રીયા યાસા તાસ્તથા 'મસલસઠિયપસત્યદ્વણુયા' માસલસસ્થિતપશસ્તદ્વનુકાઃ = મામલ:-પુષ્ટ: સસ્થિત: = છુસમ્યાનયુક્ત: આમ્ર ફલાકાર પ્રશસ્ત:=સુન્દરો દ્વનુ:=ઓષ્ઠાધોભાગો યાસા તાસ્તથા । 'દાલ્મિપુ-પ્ફપ્પગાસપીરપલયકોચિય વરાધરા = દાલિમપુપ્પમજાગપીરમાલમ્બરા ધરા:=તત્ર-દાલિમપુપ્પમજાગ: = દાલિમપુપ્પમમમો રક્ત દ્વપર્વઃ, પીવર:= પુષ્ટ પ્રાલમ્બ: = રૂપલ્લમ્બમાન: કુચિત: = વલિત. રઃ = પ્રશસ્તોઽયરો યાસ તાસ્તથા 'સુદરોત્તરુદ્ધા' સુન્દરોત્તરોષ્ઠા=સન્દરુત્તરોષ્ઠુપરિતન ઓષ્ઠો યાસા તાસ્તથા 'દધિદગરયકુદચદવાસતિમઝલઅચ્છિદ્ધિમલ્લદસણા' દધિદકરજઃ કુન્દચન્દ્ર યાસન્તીમુકુલાછિદ્રિવિમલ્લદશના ત્તા-દધિદકરજઃ = જલવિન્દુઃ કુન્દ:= પુષ્પવિશેષઃ ચન્દ્ર = પ્રવીત યાસન્તીમુકુલઃ=વાસન્તીનામક પુષ્પ કુદ્મલથ્થ ઇત્યેતૈઃ સદૃશાઃ શુકલાઃ અઙિદ્રાઃ=અવિરલા નુમિલ્લિતા દશના=દન્તાઃ યાસા તાસ્તથા 'રત્તુપ્પલરત્તપઝમપત્તમુકુમાલતાલુજીહા' રત્તોત્પલરત્તપઝમપત્તમુકુમારતાલુજીહાઃ

સરિસગોવા) इनकी गर्दन चार अंगुल की तथा प्रधान-उत्तम शाख के जैसी होती है । (मसलसठियपसत्यद्वणुया) इनके ओष्ठ का अधोभाग रूप दाढ़ी मासल-मजबूत पुष्ट, सस्थित-आम्र फल के जैसी सुन्दर आकार वाली और प्रशस्त-सुहावनी होती है । (दालिमपुष्पग्रासपीवर-पलयकोचियवराधरा) इनका अधरोष्ठ दाडिम-अनार के पुष्प के समान लाल वर्ण वाला होता है । पीवर-मासादि से भरा हुआ होने के कारण पुष्ट होता है । तथा प्रालम्ब-कुत्र २ लम्बासा रहता है । कुञ्चित-वलिता एव प्रशस्त होता है । (सुदरोत्तरुद्धा) जिनके ऊपर का ओष्ठ सुन्दर होता है । (दधिदगरयकुदचदवासतिमजलअच्छिद्विमलदसणा) इनके निर्मल दात-दही, जलविन्दु, कुदपुष्प, चन्द्र, वासन्ती पुष्पकी कली, इनके जैसे शुभ्र होते हैं । विरले नहीं होते हैं किन्तु अविरल-परस्पर में निछे हुए रहते हैं । (रत्तुपलरत्तपजमपत्तमुकुमालतालुजीहा)

આર આગળની તથા ઉત્તમ શાખ જેવી હોય છે “મસલસઠિયપસત્યદ્વણુયા” તેમના હોઠના નીચેના ભાગરૂપ દાઢી માસલ મજબૂત, સસ્થિત-આમ્રફળના જેવા સુદર આકારવાળી અને પ્રશસ્ત સુદર હોય છે “દાલિમપુષ્પગ્રાસ પીવરપલયકોચિયવરાધરા” જેમનો અધરોષ્ઠ દાડમના ફૂલ જેવો લાલ રંગનો, પુષ્ટ, તથા મહેજ લખાયેલો રહે છે તે અધરોષ્ઠ કુચિત-વળેલો અને ઉત્તમ હોય છે “સુદરોત્તરુદ્ધા” તેમનો ઉપરનો હોઠ સુદર હોય છે “દધિ દગરયકુદચદવાસ તિમઝલઅચ્છિદ્ધિવિમલ્લદસણા” તેમના નિર્મળ દાત દહી, જળવિન્દુ, કુદપુષ્પ, ચન્દ્ર અને વાસન્તી પુષ્પની કળી, જેવા સદૃશ હોય છે તે દાત છૂટા છૂટા હોતા નથી પણ પરસ્પરમાં મળીને આવેલા હોય છે “રત્તુપલરત્તપઝમપત્ત મુકુમાલતાલુજીહા” તેમનું તાલુ અને જીભ લાલ

ઘઘ્નાઃ કૃષ્ણા इत्यर्थः सुस्निग्धाः=मुकोमलाः दीर्घाश्च शिरोजा=केशा यामां
तास्तथा ' छत्त १ ज्ञय २ जूव ३ धूम ४ दामणि ५ कमण्डलु ६ कलस ७ वावि
८ सोत्थिय ९ पढाग १० जव ११ मच्छ १२ कुम्भ १३ रहवर १४ मगर १५
अक १६ बाल १७ अकम १८ अट्टावय १९ सुपड्ड २० अमर २१ गिरियाभि
सेय २२ तोरण २३ मेडणि २४ उद्विवर २५ पवरभण २६ गिरिवर २७
वरायस २८ मुल्लियगय २९ वसभ ३० सीह ३१ चामर ३२ पसत्थ वत्तीस-
लम्बणधरा ३३ ' ज १ ध्वज २ धूप ३ स्तूप ४ दामनी ५ कमण्डलु ६ कलस ७
वापी ८ स्वरितक ९ पताका १० यव ११ मत्स्य १२ कूर्म १३ रथवर १४
मरुता १५ डू १६ स्थाल १७ शकुशा १८ उट्टापद १९ सुप्रतिष्ठा २०
अमर २१ श्रीलाभिपेक २२ तोरण २३ मेदिन्यु २४ दगिर २५ प्रवरभवन २६
गिरिवर २७ राट्ट २८ सुकलितगज २९ टाय ३० विह ३१ चामर ३२
प्रशस्त द्वात्रिंशलम्बणधरा', तत्र—' छत्त ' छत्रं १ ' ज्ञय ' ध्वजः २ ' जूव '
धूपः=नारूरतम्भविशेषः ३ ' धूम ' स्तूपः= ' चोतरा ' इति मापा प्रसिद्धः ४,
' दामिनि ' दामनी = रज्जुः-तदाकाररेखेत्यर्थः ५ कमण्डलुः = प्रसिद्धः ६,

दीર્ઘનિરઘા) હનકે મનઠક કે કેજા ચિલકૂલ કાલે હોતે હેં । સુસ્નિઘ-
મુકોમલ ણવ દીર્ઘ-લઘે હોતે હેં । (છત્ત ૧ જ્ઞય ૨ જૂવ ૩ ધૂમ ૪ દામ-
ણિ ૫ કમડલુ ૬ કલસ ૭ વાવિ ૮ સોત્થિય ૯ પડાગ ૧૦ જવ ૧૧ મચ્છ
૧૨ કુમ્ભ ૧૩ રહવર ૧૪ મગર ૧૫ અક ૧૬ થાલ ૧૭ અકુસ ૧૮ અટ્ટા-
વય ૧૯ સુપડ્ડ ૨૦ અમર ૨૧ સિરિયામિસેય ૨૨ તોરણ ૨૩ મેઢણિ
૨૪ ઉદવિવર ૨૫ પવરભણ ૨૬ ગિરિ વર ૨૭ વરાયસ ૨૮ મુલ્લિય-
ગય ૨૯ વસભ ૩૦ સીહ ૩૧ ચામર પસત્થ વત્તીસલમ્બણધરાઓ)
યે હન પ્રશસ્ત વત્તીસ ૩૨ લક્ષણો કો ધારણ કરતી હેં—છત્ર ૧-
ધ્વજા ૨, ધૂપ-સ્તભ ૨, સ્તૂપ-ચોતરા ૪, દામની-રસસી ૫, કમણ્ડલુ

વાળ તદન કાળા, મુકોમળ અને લાળા હોય છે “ છત્ત ૧ જ્ઞય ૨ જૂવ ૩ ધૂમ
૪ દામણિ ૫ કમડલુ ૬ કલસ ૭ વાવિ ૮ સોત્થિય ૯ પડાગ ૧૦ જવ ૧૧ મચ્છ
૧૨ કુમ્ભ ૧૩ રહવર ૧૪ મગર ૧૫ અક ૧૬ થાલ ૧૭ અકુસ ૧૮ અટ્ટાવય ૧૯-
સુપડ્ડ ૨૦ અમર ૨૧ સિરિયામિસેય ૨૨ તોરણ ૨૩ મેઢણિ ૨૪ ઉદવિવર ૨૫-
પવરભણ ૨૬ ગિરિવર ૨૭ વરાયસ ૨૮ મુલ્લિયગય ૨૯ વસભ ૩૦ સીહ
૩૧ ચામર ૩૨ પસત્થવત્તીસલમ્બણધરાઓ ” તે યુગલિક લલનાઓ આ
પ્રમાણે ૩૨ (જાત્રીમ) ઉત્તમ લક્ષણો ધારણ કરે છે—

(૧) છત્ર (૨) ધ્વજા (૩) ધૂપ-સ્તભ (૪) સ્તૂપ-ચળૃતરો (૫) દામની
દોરડ. (૬) ધ્વજા (૭) ધૂપ-સ્તભ (૮) સ્તૂપ-ચળૃતરો (૯) દામની (૧૦) પતાકા

પતઃ સુન્દરે તનૂ=પ્રતલે કૃષ્ણે=કૃષ્ણર્ણે સ્નિગ્ધે=ચિવ્રણે શ્રુતૌ યાસા તાસ્તથા ।
 ‘અલ્લીનપમાણજુત્તમવળા’ આલીનપમાણયુક્તશ્રવણાઃ = આલીનો=સ્તવ્યો
 પ્રમાણયુક્તો=સમુચિતપમાણો શ્રવણો=શ્રવણો યામા તાસ્તથા પતાવટેષુ ન ? કિન્તુ
 ‘સુસ્વવળા’ સુશ્રવણાઃ = શબ્દગ્રહણશક્તિસમ્પન્નયુક્તાઃ, ‘પીનમદ્ગુન્ડલેહા’
 પીનમૃદ્ધ ગુન્ડરેવાઃ=પીના=પુષ્ટામૃદ્ધા=મૃદુળા સુકુમારા ગુન્ડરેવાઃ=કપોલ પાલી
 યાસા તાસ્તથા ‘ચરગુલવિસાલસમનિડાલા’ ચતુરગુલવિશાલસમનિડાલા =
 ચતુરગુલ=ચતુરગુલપ્રમાણ વિશાલ=વિસ્તીર્ણ સમ=સમતલ લલાટ યાસા તાસ્તથા
 ‘કોમુર્દૈ રયનિયરવિમલપહિપુણસોમ્મવળા’ કૌમુદી રજનીકર વિમલપ્રતિપૂર્ણ
 સૌમ્યવદનાઃ=કૌમુદી=કાર્તિકી પૂર્ણિમા તસ્યા યો રજનીકર =ચન્દ્ર તદ્વત્
 વિમલ=નિર્મલ પ્રતિપૂર્ણ મામ્ય=સુભગ વદન યાસા તાસ્તથા કાર્તિકીપૂર્ણચન્દ્રવ-
 દનાઃ, ‘હતુણયુત્તમગા’ હતોત્તમોત્તમાઙ્ગા હત્રયત્મમૃદ્ધિતમસ્તકાઃ ‘અકવિલ
 હસુમિણિદ્વદીહસિરિયા’ અકવિલસુસિનિગ્ધીર્ઘશિરોજાઃ = અકવિલા = અપિ
 કેસમાન રુચિર, કૃષ્ણમેઘરાજિ કે સમાન, સસ્થિત, સગત-ઉચિત
 આકારયુક્ત, આયત-દીર્ઘ, સુજાત-સ્વભાવતઃ સુન્દર, તનુ-પતલી,
 કૃષ્ણ-કૃષ્ણવર્ણોપેત, ઔર સ્નિગ્ધ-ચિકની હોતી હૈ। (અલ્લીનપમાણ-
 જુત્તમવળા) આલીન-સ્તવ્ય એવ સમુચિત પ્રમાણ સે યુક્ત इनके
 દોનો કાન હોતે હૈ। (સુસ્વવળા) તથા યે દોનો હી કાન શબ્દગ્રહણ
 કરને કી શક્તિ સે યુક્ત હોતે હૈ। (પીનમદ્ગુન્ડલેહા) इनकी कपोल-
 पाली पीन-पुष्ट और मृष्ट—सकुमार होती है। (चरगुलविसाल सम-
 निडाला) इनका विस्तीर्ण ललाट चार अगुल प्रमाणवाला होता है तथा
 सम-समतल होता है। (કોમુર્દૈરયનિયર વિમલ પહિપુણ સોમ્મવળા)
 इनका मुख कार्तिकी पूर्णिमा के चद्रमण्डल के समान निर्मल तथा पूर्ण
 होता है। सुभग होता है। (हतुणयउत्तमगा) समुच्छिन्न विस्तारित
 छत्र के समान इनका मस्तक उन्नत होता है। (अकविल सुसिणिद्ध-

સગત-સુહૃદ, આયત-લાઘી, સુજાત-કુદરતી રીતે જ સુદર, તનુ-પતળી,
 કાળા રંગની અને સ્નિગ્ધ-મુલાયમ હોય છે “અલ્લીનપમાણજુત્તમવળા”
 તેમના અને કાન સ્તવ્ય અને સપ્રમાણ હોય છે “સુસ્વવળા” તે અને
 કાનની શ્રવણશક્તિ ઘણી સરસ હોય છે “પીનમદ્ગુન્ડલેહા” તેમના ગાલ
 પુષ્ટ અને સુકુમાર હોય છે “ચરગુલવિસાલસમનિડાલા” તેમનું વિશાળ
 લલાટ ચાર આગળ પહોળું અને સમતલ હોય છે “કોમુર્દૈ-રય-નિયરવિમલ
 પહિપુણસોમ્મવળા” તેમનું મુખ કાર્તિકી પૂર્ણિમા અન્દ્રમણ જેવું નિર્મળ
 તથા પૂર્ણ હોય છે “હતુણયુત્તમગા” વિસ્તીર્ણ છત્ર સમાન ઉન્નત
 તેમનું મસ્તક હોય છે “અકવિલસુસિનિદ્વદીહસિરિયા” તેમના માથા પરના

વગદુઘ્વગવાહિદોભગમોયમુક્તાઓ ' વ્યવગતવલીપલિત વ્યદ્ગદુર્વર્ણવ્યાધિ-
 દોર્ભાગ્યશોકપુક્તાઃ=વ્યવગતા=નષ્ટા યત્ની = ચર્મશિથિલતા તથા પલિત=કેશશુક્રત્વ
 વ્યદ્ગ=અદ્ગપિસ્લતા દુર્વર્ણ.=વૈરૂપ્ય વ્યાધિઃ શરીરવ્યથા, દોર્ભાગ્ય=વૈધન્ય શોક =
 લેદય એતૈર્મુક્તાઃ = રતિદા યાસ્તાસ્તથા ' ઉચ્ચત્તેણ ચ નરધોવૂળમૂસિયાઓ '
 ઉચ્ચત્વેન ચ નરસ્તોકેનોત્તિતાઃ=ઉચ્ચત્વેન શરીરોચ્ચત્વેન ચ નરેભ્યઃ=પુરુષેભ્યઃ
 સ્તોકોન=કિંચિન્ન્યૂન યથાસ્યાત્તથા ઉચ્ચિતાઃ=ઉચ્ચાયાસ્તાઃ તથા-પુરુષપ્રમા-
 નાત્ કિંચિદ્વ્યપ્રમાણોક્તતા', 'સિંગારાઽઽગારચારુવેસા ' શૃંગારાઽઽગારચારુ-
 વેસા, શૃંગારસ્ય=શૃંગારરસસ્ય આગારમિવ=ગૃહમિવ ચારુ =સુન્દરઃ વેપઃ=વત્ત્રાદિ-
 વિભૂષા યાસા તાસ્તથા ' સુન્દર યજહ્નયયજ્ઞકરચલણયજ્ઞા ' સુન્દરસ્તન-
 જયનવદનકરચરણનયનાઃ = સુન્દરાણિ સ્તન-જયન-વદન-કર-ચરણ - નયના
 નિ યામાં તાસ્તથા ' લાવણ્યરૂપજોઘ્વગુણોવેયા ' લાવણ્યરૂપયૌવનગુણોપેતાઃ=
 લાવણ્ય = શરીરમૌન્દર્યવૈશિષ્ટ્ય નિલિલાવ્યવાતિરેકિસ્વરૂપશોભાવિશેષઃ રૂપ

(વચગયવલીપલિયવગદુઘ્વગવાહિદોભગ સોયમુક્તાઓ) इनकी चमड़ीमें
 शिथिलता कहीं नहीं आती है । वालों में सफेदी नहीं आती है । इनका
 कोई भी अंग विकल नहीं होता है । विरूपता इनमें मिलकुल नहीं होती
 है । व्याधि का इनमें अभाव होता है । वैधन्य रूप दौर्भाग्य से रहित
 होती हैं । शोक और खेद से वर्जित होती हैं । (उच्चत्तेण च नरधोवूण-
 मूसियाओ) ऊँचाई में ये मनुष्यों से कुछ ही कम होती हैं । (सिंगारा
 गारचारुवेसा) शृंगाररस के घर जैसा इनका सुन्दर वेष-वत्त्रादि वेष-
 भूषा होता है । (सुन्दर यजह्णययज्ज्ञकरचलणयज्ज्ञा) इनके स्तन,
 जयन, वदन, कर, चरण, और नयन सुन्दर होते हैं । (लावण्यरूपजो-
 घ्णगुणोववेया) इनमें लावण्य, रूप, यौवन एवं गुण असारण होते हैं ।

दुघ्णगवाहिदोभगसोयमुक्ताओ " तेमની આમડીમા શિથિલતા આવતી
 નથી, વાળ સફેદ થતા નથી, તેમને કોઈ પણ અંગે ખોડ હોતી નથી,
 તેમનામા વિરૂપતા બિલકુલ હોતી નથી, વ્યાધિ તેમને પીડતી નથી કારણ કે
 તેઓ નીવેગી હોય છે, તેઓ વૈધન્ય રૂપ દુર્ભાગ્યથી રહિત હોય છે અને
 શોક અને ખેદથી રહિત હોય છે " ઉચ્ચત્તેણ ચ નરધોવૂળ મૂસિયાઓ "
 મનુષ્યો કરતા તેમની ઊંચાઈ થોડી હોય છે " સિંગારાગારચારુવેસા " તેમની
 વેષભૂષા શૃંગાર રમના ઘર જેવી હોય છે " સુન્દરયજહ્નયયજ્ઞકરચલણ-
 ણયજ્ઞા " તેમના સ્તન, જ ધા, વદન, કર, ચરણ, અને નયન સુન્દર હોય છે.
 " લાવણ્યરૂપજોઘ્વગુણોવવેયા " તેમનામા લાવણ્ય, રૂપ, યૌવન અને શુભ

‘ વલસ ’ કલશઃ= ઘટઃ ૭ ‘ ગાપિ ’ ગાપી ૮ ‘ સોલ્થિય ’ સ્વસ્તીકાઃ ૯ ‘ પટાગ ’
પતાકા ૧૦ ‘ જવ ’ યવઃ ૧૧ ‘ મન્ત્ર ’ મત્સ્યઃ ૧૨ ‘ કુમ્મ ’ કૂર્મઃ-કચ્છપઃ
૧૩, રથવરઃ પ્રધાનરથ ૧૪ ‘ મગર ’ મકરઃ ૧૫, અક્રુઃ=રત્નાકરચિહ્નવિશેષ
૧૬, ‘ થાલ ’ સ્થાલઃ=પાત્રવિશેષ ૧૭ અક્રુશઃ ૧૮ ‘ અષ્ટાવય ’ અષ્ટાપદ=
દ્યુતફલક ૧૯ ‘ સુપટ્ટ ’ સુપ્રતિષ્ઠક=સ્થાપનક પાત્રાગ્રવિશેષઃ ૨૦ અમરઃ=દેવ-
વિશેષઃ ૨૧ ‘ સિરિયાભિસેય ’ શ્રીકામિપેકઃ ૨૨ તોરણ ૨૩ ‘ મેદિની ’
મેદિની=પૃથ્વી ૨૪ ઉદધિવરઃ ૨૫ ‘ વસમભવન ’ વસમભવન ૨૬ ગિરિવરઃ ૨૭
‘ વરાયસ ’ વરાદર્શઃ=મણસ્તદર્પણ. ૨૮ મુલ્લિયગય ’ મુલ્લિતગજ ૨૯ ‘ વસમ ’
વૃષભ ૩૦, ‘ સિંહ ’ સિંહ ૩૧ ચામર ૩૨ ચ ક્ષયેતાનિ પ્રગ્લતાનિ દ્વાર્ત્રિગલ્લ
ક્ષણાનિ તેષા ધરા વાસ્તાન્તયાઃ, ‘ હસસરિચ્છગર્દઓ ’ હસમદશગતયઃ, ‘ કોઈલ-
મહુરગિરાઓ ’ કોફિઝમધુરગિરઃ=કોફિલમધુરસ્વરાઃ, ‘ કતા ’ કાન્તાઃ=મનોહારાઃ,
‘ સવ્વસ્સ અણુમયાઓ ’ સર્વસ્વાનુમતા - સર્વજનપ્રિયાઃ ‘ વગયવલીપલિય-

૬, કલશ ૭, વાપી ૮, સ્વસ્તિક ૯, પતાકા, ૧૦, યવ, ૧૧, મત્સ્ય ૧૨,
કૂર્મ-કચ્છપ ૧૩, રથવર-પ્રધાનરથ ૧૪, મકર ૧૫, અક-રત્ન કે આકાર
જેસા ચિહ્ન ૧૬, સ્થાલ-થાલ ૧૭, અક્રુશ ૧૮, અષ્ટાપદ-દ્યુતફલક ૧૯,
સુપ્રતિષ્ઠક-ઠોળા ૨૦, અમરદેવવિશેષ ૨૧, અભિષેક કરતી હુઈ લક્ષ્મી
૨૨, તોરણ ૨૩, મેદિની-પૃથ્વી ૨૪, ઉદધિવર-સમુદ્ર ૨૫, ઉત્તમભવન
૨૬, ઉત્તમપર્વત ૨૭, સુન્દર દર્પણ ૨૮, મુલ્લિતગજ ૨૯, વૃષભ-બૈલ
૩૦, સિંહ ૩૧, ઓર ચામર ૩૧ । (હસસરિચ્છગર્દ) इनकी गति-
चाल-हंस की गति जैसी होती है । (कौइलमहुरगिराओ) उनकी
वाणी-कोयल की वाणी जैसी मधुर होती है । (कता) ये अत्यंत मनोह
र होती हैं । (सव्वस्स अणुमयाओ) समस्त जनों को प्रिय लगती है ।

(૧૧) યવ (૧૨) મત્સ્ય, (૧૩) કૂર્મ-કચ્છપ, (૧૪) ઉત્તમ રથ (૧૫) મગર
(૧૬) અક-રત્નના આકારનું ચિહ્ન (૧૭) થાળ (૧૮) અક્રુશ (૧૯) અષ્ટાપદ-
દ્યુતફલક, (૨૦) સુપ્રતિષ્ઠક-ઠોળા (૨૧) અમર-દેવવિશેષ (૨૨) અભિષેક કરતી
લક્ષ્મી (૨૩) તોરણ (૨૪) મેદિની-પૃથ્વી, (૨૫) ઉદધિવર-સમુદ્ર (૨૬)
ઉત્તમ ભવન (૨૭) ઉત્તમ પર્વત (૨૮) સુન્દર દર્પણ (૨૯) સુન્દર ગજ
(૩૦) વૃષભ (૩૧) સિંહ અને (૩૨) ચામર “હસસરિચ્છગર્દ” તેમની ચાલ
હસની ચાલ જેવી હોય છે, “કોઈલમહુરગિરાઓ” તેમની વાણી કોયલની
વાણી જેવી મીઠી હોય છે, “કતા” તે અત્યંત મનોહર હોય છે, અને
“સવ્વસ્સ અણુમયાઓ” સઘળા લોકોને પ્રિય લાગે છે “વગયવલી પલિયવગ

અપિ, 'અતિતિત્તા કામાણ' અવૃત્તા કામાનામ્=કામોપભોગેષ્વૃત્તા એવ 'ઉચ્ચમતિ-
મરણમ્મ' ઉપનમન્તિ મરણમર્મ-મ્રિયન્ત ઇત્યર્થ. ॥ સૂં ૧૩ ॥

एतावताऽत्रह्यारयचतुर्थाधर्मद्वारस्य 'ये च कुर्वन्ति' इति पञ्चममन्तद्वार-
निरूपितम् । साम्प्रत पूर्वमनुक्त 'यथाकृतम्' इति तृतीयमन्तद्वार 'यत्फल
ददाति' इति चतुर्थमन्तद्वार च वर्णयन्नाह—'मेहुण' इत्यादि—

મૂલમ્—મેહુણસન્નાસ પગિદ્વાય મોહભરિયા સત્થેહિ
હણંતિ એકમેક વિસય—વિસ—ઉદીરણહિ અવરે પરદારેહિ
હમ્મતિ વિસુણિયા ધમનાસં સયણવિપ્પણાસં ચ પાડણતિ
પરસ્સ દારાઓ જે અવિરયા । મેહુણસણા સપગિદ્વાય
મોહભરિયા અસ્સાહત્થી ગવાય મહિસા મિગાય મારિતિ
એકમેક । મણુયગણા વાનરા ય પક્ખી ય વિરુઙ્ગતિ મિ-
ત્તાણિ લિપ્પ ભવતિ સત્તુ । સમયધમ્મે ગણે ય મિદાતિ
પારદારી ધમ્મગુણરયાય વમયાતી લ્ખણેગ ઉલ્લોદ્ધતિ ચરિ-
ત્તાઓ । જસમતા સુવ્વયા ય પાવતિ અજસકિત્તિ । રોગત્તા
વાહિયા વઙ્ગતિ રોયવાહી, દુવંચ લોણ દુરારાહગા ભવતિ
ઇહલોણ ચેવ પરલોણ પરસ્સ દારાઓ જે અવિરયા । તહેવ
કેઇ પરસ્સ દાર ગવેસમાણા ગહિયા ય હયાથવદ્ધારુદ્ધા ય
એવ જાવગચ્છતિ વિડલ મોહાભિભૂયસણા । મેહુણ મૂલા
ય સવ્વતિ તત્થ તત્થ વત્તપુઢ્વા સગામા જણક્ખયકરા

નિવાસિની દ્વિયા કામસુખોં કો ભોગતી રહની હૈં । પરન્તુ ફિર મી
उनसे ये तृप्त नहीं होती है । इस तरह कामभोगों में अनृप्त बनकर ही ये
अन्त में मृत्यु को प्राप्त हो जाती है ॥ सू० १३ ॥

નિવાસિની લલનાઓ કામલોગો લોગળ્યા કરે છે, છતા પણ તેમનાથી તેઓ
તૃપ્તિ અનુભવતિ નથી આ પ્રમાણે કામલોગથી અનૃત્ત રહીને જ તેઓ મૃત્યુ
પામે છે ॥ સૂ. ૧૩ ॥

= નાસિકા નયનાયાકારઃ યૌન = તરુણાસ્ત્યા, ગુણાઃ=ઔદાર્યમાધુર્યસૌકુમાર્યાદયસ્તૈરુપેનાઃ = યુસ્તા યા સ્તાસ્તથા, ' જદગવગમિરચારિણીઓવચ્છરાઓ ' નન્દનવનવિચરચારિણ્યદ્યાપ્તરસઃ = નન્દનવનવદેશતત્ત્વરણશીલા અપ્તરસ ઇવ, ઉત્તરકુરુમાણસચ્છરાઓ ' ઉત્તરકુરુમાણાપ્તરસઃ = ઉત્તરકુરુ માણુપ સ્વરૂપા અપ્તરસઃ 'અચ્છરગપેચ્છણિજ્ઞાઓ' આશ્ચર્ય પ્રેક્ષણીયાઃ=અદ્ભુતરૂપત્વાદાશ્ચર્યેણ પ્રેક્ષણીયાઃ, તિણિ પલિઓવમાઈ પરમાડ પાન્હતા ' ત્રીણિ પલ્યોપમાનિ પરમાયુ' પાલયિત્વા ' તા અપિ - ઉત્તરકુરુદેવકુરુવનવિચરનિરામી નરગણપ્રમદા

શારીરિક વિશિષ્ટ સૌન્દર્ય કા નામ લાવણ્ય છે । યદ લાવણ્ય સમસ્ત અવયવોં કે સૌન્દર્ય સે ખી પરે સ્વરૂપ કી શોભા વિશેષ રૂપ રોતા છે । નાસિકા, નયન, આદિ કી સમુચિત જો આકાર રચના છે વદ રૂપ છે । તરુણ અવસ્થા કા નામ યૌવન છે । ઔદાર્ય, માધુર્ય સૌકુમાર્ય આદિ કા નામ ગુણ છે । (જદગવગમિરચારિણીઓવચ્છરાઓ ઉત્તરકુરુમાણ સચ્છરાઓ) નદનવન મેં વિચરનેવાલી અપ્તરાઓં કે સમાન યે ઉત્તરકુરુ કી ભૂમિ મેં મનુષ્ય રૂપિણી અપ્તરાઈ છે । (અચ્છરગપેચ્છણિજ્ઞાઓ) અદ્ભુતરૂપ શાલિની રોને કે કારણ યે આશ્ચર્ય સે દેલને યોગ્ય રોતી છે, અર્થાત્—ઇનકો દેલને સે મનુષ્ય કો વહુન અધિક આશ્ચર્ય રોતા છે । કારણ ઇનકી રૂપ સપત્તિ ઇસી અદ્ભુત રોતી છે જો મનુષ્યો મેં ઔર જગદ નહીં પાઈ જાતી છે । (તિણિપલિઓવમાઈ પરમાડ પાન્હતા તાઓ વિ અવિતિતા કામાણ ઉવળમતિ મરણધમ્મ) ઇનકી ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ત્રીન પલ્ય કી રોતી છે । ઇતને કાલનક યે દેવકુરુ ઉત્તરકુરુ

અસાધારણ હોય છે શારિરિક વિશિષ્ટ સૌદર્યને લાવણ્ય કહે છે તે લાવણ્ય સમસ્ત અવયવોના સૌદર્ય ઉપરાત સ્વરૂપની વિશિષ્ટ શોભારૂપ હોય છે નાસિકા, નયન આદિની મુકોળ આકાર વાળી રચનાને રૂપ કહે છે તરુણ અવસ્થાને યૌવન કહે છે ઉદારતા, માધુર્ય, કોમળતા આદિ ગુણ ગણાય છે “ જદગવગમિરચારિણીઓવચ્છરાઓ ઉત્તરકુરુમાણસચ્છરાઓ ” નદનવનમા વિચરતી અપ્તરાઓ જેવી તે ઉત્તરકુરુની ભૂમિમા મનુષ્યરૂપિણી અપ્તરાઓ છે “ અચ્છરગપેચ્છણિજ્ઞાઓ ” અદ્ભુત સૌદર્યવાળી હોવાને કારણે તે સ્ત્રીઓ આશ્ચર્યથી જોવા જેવી હોય છે, એટલે કે તેમને જોઈને મનુષ્યોને અત્યંત આશ્ચર્ય થાય છે કારણ કે તેનનુ રૂપ એટલું બધું અપૂર્વ હોય છે કે તે રૂપ મનુષ્યોમા કોઈ પણ જગ્યાએ જોવા મળતું નથી “ તિણિપલિ-ઓવમાઈ પરમાડ પાન્હતા તાઓ વિ અવિતિતા કામાણ ઉવળમતિ મરણધમ્મ ” તેમની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ ત્રણ પલ્યની હોય છે એટલા સમય સુધી તે દેવકુરુ

શબ્દાદિ વિષયવિષયસ્ય પ્રવર્તકૈઃ 'સત્યેહિં' શસ્ત્રૈઃ 'एषमेवक' एकैक = પ્રત્યેક 'હણતિ' ધનન્તિ । 'અવરે' અવરે=કેચિત્ 'પરદારેહિં' પરદારૈ' = પરસ્ત્રીભિઃ 'હમ્મતિ' હન્યન્તે=માર્યન્તે, 'પરદારૈ' -સ્તિયત્ર કર્ત્તરિ તૃતીયા । યદ્વા હેતો તૃતીયા-પરદારા-નિમિત્તીકૃત્ય અન્યૈર્ધન્યદ્વિ પારદારિકૈર્હન્યન્તે । 'વિસુણિયા' વિશ્રુતાઃ=પાર-દારિકૃત્વેન પ્રમિદ્ધાઃ સન્તઃ કેચિત્ 'ધનનાસ' ધનનાશ = 'સયણવિષ્ણાસ' સ્વજનવિષ્ણાશ=સ્વજનવિયોગં 'પાઝણતિ' પ્રાપ્નુવન્તિ, અય ભાવ-રાજપુરુષા સ્ત્રાગત્ય પરદારિકાણાં ધન ગૃહ્ણન્તિ, પરદારિક વદ્વા દણ્ડનાર્થ દણ્ડસ્થાન નયન્તિ ચ । યદ્વા-પરદારપ્રસાદનાર્થ સ્વકીયં પિત્રાધુપાર્જિત ધન પરદારેભ્ય પ્રય-

(મોહભરિયા) હસ મૈથુરુપ કર્મ કે મોહસે ભરે હુણ હોને કે કારણ, અ યવા-વિવેક સે ચિરુલ ચને રહને કે કારણ (વિમયવિસ હદીરઈ-સત્યેહિં એકમેક હણતિ) શબ્દાદિ વિષયરૂપ વિષય કે પ્રવર્તક શસ્ત્રોં સે આપમ મેં એક દુસરે કો માર હાલતે હું । (અવરે) કિનનેક પ્રાણી (પર-દારેહિં હમ્મતિ) પરસ્ત્રીયો દ્વારા મારં દિયે જાતે હ । અથવા પરસ્ત્રી કો નિમિત્ત કરકે અન્ય ચલશાલી પારદારિક પુરુષોં દ્વારા મંથુનસજ્ઞા મે આસક્ત મતિચાલે વ્યક્તિ માર દિયે જાતે હ । (વિસુણિયા) પારદારિક પરસ્ત્રી-લમ્પટ રૂપ સે પ્રમિદ્ધ હુણ કિતનેક મનુષ્ય (ધનનાસ) અપને ધનકે ચિનાશ કો ઓર (સયણવિષ્ણાસ) આત્મીયજનો કે ચિનાશકો (પાઝણતિ) પ્રાપ્ત કરતે હું । તાત્પર્ય હસકા યહ હે કી પરસ્ત્રીલપટ વ્યક્તિ કે પાસ રાજપુરુષ આકર હસકે ધન કો છીન હેતે હું । ઓર વાધકર હસે દડ દેને કે નિમિત્ત કારાગાર મે હે જાતે હું । અથવા-પરસ્ત્રી કો પ્રસન્ન કરને કે લિયે પારદારિક મનુષ્ય અપને પિતા આદિ દ્વારા ઉપાર્જિત

હોવાને કારણે અથવા વિવેક રહિત બની જવાને કારણે 'વિમયવિસહદીર-ઈં સત્યેહિં એકમેક હણતિ' શબ્દાદિ વિષયરૂપ વિષયા પ્રત્યાર્થ શસ્ત્રો વડે અદરે અદર લડીને એક બીજાને મારી નાખે એ "અવરે" કેટલાક લોકો "પરદારેહિં હમ્મતિ" પરસ્ત્રીઓ દ્વારા હણાય છે અથવા પરસ્ત્રીને કારણે બીજા બળવાન પરસ્ત્રીગમન કરનારા પુરુષો દ્વારા મૈથુન સેવનમાં આસક્ત પુરુષોને મારી નાખવામાં આવે છે "વિસુણિયા" પરસ્ત્રી લપટ ગણાતા કેટલાક પુરુષો "ધનનાસ" પોતાના ધનનો નાશ અને "સયણ વિષ્ણાસ" આત્મીય જનોનો નાશ "પાઝણતિ" નોતરે છે તેનો ભાવાર્થ એ છે કે પરસ્ત્રીગામી પુરુષની પાસેથી રાજપુરુષો તેમનું ધન જપ્ત કરે છે, અને તેને ગાંધીને શિક્ષા કરવાને માટે કેદખાનામાં લઈ જાય છે અથવા પરસ્ત્રીને મીઝ વવા માટે પરસ્ત્રીગામી પુરુષ પોતાના પિતા આદિ દ્વારા ઉપાર્જિત ધન તે

सीयाए दोवईएयकए, रूपिणीए पउमावईए ताराए
 कंचणाए रत्तसुभदाए अहिन्निवाए सुवण्णगुलियाए
 किन्नरीए य सुरुव विज्जुमईए रोहिणीए य, अण्णे य
 एवमाइया वहवो महिलाकए सुव्वति अइकंतासंगामा गाम
 धम्ममूला । अवंभसेविणो इहलोए तावनट्ठा परलोए
 य नट्ठा महया मोहतिभिरधयारे घोरे तसथावरसुहुम
 वायरेसु पज्जत्तमपज्जत्तसाहारणसरीरपत्तेय सरीरेसु य अडय
 पोयय जराउय रसय ससेइम समुच्छिम उविभज्ज उववाइएसु,
 य नरग तिरियदेवमाणुसेसु जरामरणरोगसोगवहुलेसु
 पलिओवमसागरोवमाइ अणादीय अणवदग्गं दीहमद्व चाउ-
 रंतससारकंतरं अणुपरियट्ठंति जीवा महामोहवससनिविट्ठा॥१४

टीका—‘ मेहुणसण्णासपगिद्धाय ’ मैथुनसज्ञासम्पट्ठाश्व=मैथुनाऽऽसक्ताः
 ‘ मोहभरिया ’ मोहभृताः=अज्ञानपूर्णा, ‘ निसयसिउदीरण्हि वपयनिपोदीरकै =

इस तरह यहा तक सूत्रकार ने अब्रह्म नामके चतुर्थ द्वार का यह
 पाचवा अन्तर्द्वार कहा, अब वे पूर्व में अनुक्त “ यथा कृतम् ” इस तृतीय
 अन्तर्द्वार को और “ यत्फल ददाति ” इस चतुर्थ अन्तर्द्वार को प्ररूपित
 करते हैं—‘ मेहुणे सण्णा सपगिद्धाय ’ इत्यादि० ।

टीकार्थः—(मेहुणसण्णा सपगिद्धाय) जो प्राणी मैथुन सज्ञा में
 आसक्ति से युक्त होते हैं अर्थात् मैथुन में अत्यंत आसक्त रहते हैं वे

आ रीते अही सुधी सूत्रकारे अब्रह्म नामना याथा अधर्माद्वारु
 पाचयु अन्तर्द्वार वण्णुंथु डवे जेतु वण्णुन करवानु भाडी राण्णु डतु ते
 “ यथा कृतम् ” नामना त्रीण अन्तर्द्वारु तथा “ यत्फल ददाति ” ते याथा
 अन्तर्द्वारु प्ररूपणु करे छे—“ मेहुणसण्णा सपगिद्धाय ” इत्यादि

टीकार्थः—“ मेहुणसण्णा सपगिद्धाय ” जे जेवे मैथुनभा अत्यंत
 आसक्ता रहे छे तेओ “ मोहभरिया ” ते मैथुनइय कर्माना ओइथी भरपूर

ભિન્દન્તિ=સમયાન = મિદ્ધાન્તાન ધર્માન્=શ્રુતચારિત્રલ્પણાન્-શગાન્-સમમામા-
 ચારિજનસમૂહાન્ વિનાશયન્તિ 'પરદારી' પરદારિણિ:=પરસ્ત્રીસત્તાઃ। તથા 'ધમ્મ-
 ગુણરયાય' 'ધર્મગુણરતાથ = સદાચારપરાયણાઃ 'વમયારી' વ્રહ્મચારિણ
 'સ્વળેણ' ક્ષણેનૈવ = અલ્પકાલેનૈવ - વહુત્ત્વપ્રસિદ્ધતાદપિ 'ચરિત્તાઓ'
 ચારિત્રાત્ 'ઉલ્લોટ્તિ' ઉલ્લોટ્તયન્તિ=નિપતતિ। 'જસમન્તો' યશસ્વિનઃ
 'સુવ્વયાય' સુત્રાથ = વ્રતપરિપાલકાઃ અપિ 'અજસક્કિત્તિ' અવશઃકીર્ત્તિ=
 'પાવેતિ' પ્રાપ્નુવન્તિ। 'રોગતા' રોગાનાં=વ્યાધિગેગ્રસ્તાઃ 'વાહિયા'
 વ્યાધિતાઃ=કુટ્ટાદિરીડિતાઃ 'રોયરાહી' રોગન્યાધીન 'વહુત્તિ' વર્ધયન્તિ તેન
 'દુવેયલોણ દુરાસાદગા ભવન્તિ' દ્વયોથ લોકગોર્દુગરાધનાં = આત્મવિરાધકા
 અપને સ્તિદ્ધાન્તોં કો, (ધમ્મે) શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મકો, એવ (ગણે ચ)
 સમાન સામાચારી થાલે ગણ કો (ભિન્દતિ) નષ્ટ કર ઢાલતે હૈં। તથા-
 (ધમ્મગુણરયા ચ) જો ધર્મગુણ રત-સદાચારપરાયણ (વમયારી)
 વ્રહ્મચારી હોતે હૈં વે બી (સ્વળેણ) ક્ષણ भर में (ચરિત્તાઓ) યજ્ઞકાલ
 કે સુરક્ષિત અપને ચરિત્ર સે હમી ંકુર્દગુણ કે વશ સે (ઉલ્લોટ્તિ)
 નિપતિત હો જાતે હૈં। ત ગ (જસમતો) જો યશસ્વી ંવ (સુવ્વયા ચ)
 વ્રતોં કે આરાધક હોતે હૈં વે બી હસી કારણ (અજસક્કિત્તિ) અપકીર્ત્તિ
 કો (પાવેતિ) પ્રાપ્ત કરતે હૈં (પરમ્મ દારાઓ જે અવિરયા) હસ પરદાર
 સેવન સે જો પ્રાણી અવિરત હોતે હૈં વે (રોગતા) ક્ષયાદિ રોગોં સે
 ગ્રસ્ત હો જાતે હૈં ંર (વાહિયા) કુષ્ઠ આદિ વ્યાધિયો સે પીડિત હોતે
 રહતે હૈં, હતના હી નહીં ફિર આગે કે લિયે વે રોગોં કો ંર વ્યાધિ-
 યોં કો વઢા બી લેતે હૈં। હમ તરહ (દુવે ચ લોણ હ્લલોણ પરલોણ ચેવ)

“ધમ્મે” શ્રુત ચારિત્ર રૂપ ધર્મનો અને “ગણે ચ” સમાન સામાચારીવાળા
 સમૂહોનો “ભિન્દતિ” નાશ કરી નાખે છે તથા “ધમ્મગુણરયાય” જે લોકો
 ધર્મગુણ રતસદાચાર પરાયણ, “વમયારી” બ્રહ્મચારી હોય છે તેઓ પણ
 “સ્વળેણ” ક્ષણવારમા “ચરિત્તાઓ” લાખા સમયથી સુરક્ષિત રાખેલા પોતાના
 ચારિત્રથી એ એક જ દુર્ગુણને અધીન થઈને “ઉલ્લોટ્તિ” બ્રહ્મ થઈ બાથ
 છે, તથા “જસમતો” જે યશસ્વી અને “સુવ્વયાય” વ્રતોના આરાધક
 હોય છે, તેઓ પણ એજ કારણે “અજસક્કિત્તિ” અપકીર્તિ “પાવેતિ”
 પ્રાપ્ત કરે છે “પરમ્મદારાઓ જે અવિરયા” એ પરસ્ત્રીગમનમા જે છવો
 સતત આચક્ર રહે છે તેઓ “રોગતા” ક્ષયાદિ રોગોના પાતમા મપડાય
 છે અને “વાહિયા” કુષ્ઠ આદિ વ્યાધિઓથી પીડાયા કરે છે એટલુ જ નહીં
 પણ અવિધ્યમા તેમના તે રોગો અને વ્યાધિઓ વધતા બાથ છે આ રીતે
 તેઓ “દુવેય લોણ-પરલોણ ચેવ” બન્ને લોકમા આલોકમા અને પરલોકમા

જાણે, તત્ર પ્રતિબંધકાન સ્વજનાનપિ પારદારિયા નિબ્ધનતીતિ । કે ઇત્યાદ-
 'પરસ્પદારાઓ જે અવિરયા' પરમ્ય દારેશ્યો યેઽવિરતાઃ=પરસ્ત્રી પ્રદ્વાધ વિરતાઃ
 પરસ્ત્રીસદ્ગપરાચનાશ્ચર્યઃ । તથા 'મેહુણસળ્લાસપગિદ્વાય' મૈથુનસળ્લાસમ
 મૃદ્વાથ 'મોહભરિયા' મોહમૃતાઃ = મોહગ્રસ્તાઃ 'અસ્માદત્થીગવાય' અશ્વાઃ
 હસ્તિનો ગાવશ્ચ 'મહિસા' મહિષા 'મિગાય' મૃગાશ્ચ 'એકમેક' એક=
 પ્રત્યેક પરસ્પરમિત્યર્થ 'મારેતિ' મારયતિ । 'મણુયગળા' મનુજગળા 'વા-
 નરાય' વાનરાય 'પવસ્ત્રીય' પરિવશ્ચ 'વિરુજ્ઞતિ' વિરુજ્ઞતે=પરસ્પર વિરોધ
 પ્રાપ્તુવન્તિ । તથા મૈથુનસેવનાત્ 'મિત્તાણિ' મિત્રાણિ 'સ્વિપ્પ' ક્ષિપ્પ=શીઘ્ર
 'સત્તુ' શાસ્ત્રો ભવન્તિ, પુનશ્ચ 'સમયધર્મગળેયમિદંતિ' સમયધર્મગળાશ્ચ

ક્રિયે હુગ દ્રવ્ય કો ડસકે લિયે દે દેતે હૈ, ઓર જો હમ વિષય મેં ડનકે
 લિયે કોઈ આત્મીય ત્થ પ્રતિબંધક હોના હૈ હસે ચે માર ઢાલતે હૈ ।
 (પરસ્પદારાઓ જે અવિરયા) યત્ત મત્ત કુકૃત્ય ચે હી વ્યક્તિ મરતે હૈ ।
 જો પર મી સ્ત્રીયો કે સેવન કરને રૂપ અકૃત્ય સે વિરત નહીં હોતે હૈ ।
 તથા-હસી તરહ (મેહુણસળ્લાસપગિદ્વાય) મૈથુનસળ્લા મેં આસક્ત
 (મોહભરિયા) મૈથુનસળ્લા સે વિમોહિત મતિવાલે અજાની પ્રાણી
 (અસ્માદત્થી ગવા ચ મહિસા મિગા ચ) અશ્વ, હમ્ની, ગાય, મહિષ,
 મૃગ હૈં ચે મી (એકમેક મારેતિ) આપસ મેં એક દુસરે કો માર ઢાલતે
 હૈ । હસી તરહ (મણુયગળા) મનુષ્યગળ (વાનરાય) વદર એવ (પવસ્ત્રીય)
 પક્ષી મી (વિરુજ્ઞતિ) એક દુસરે કા વિરોધ કરતે હૈ તથા (મિત્તાણિ
 સ્વિપ્પ ભવતિ સત્તુ) હસી રૂર્મ કે સેવન સે મિત્રજન મી શીઘ્ર શત્રુ
 બન જાતે હૈ । ફિર જો પારદારિક પરસ્ત્રી મેં આસક્ત-હોતે હૈ ચે (સમય)

શ્રીને આપી હે છે, અને તેના એ પરસ્ત્રીગમનના કૃત્યમા જે કોઈ સખધીઓ
 આડખીલી રૂપ થાય છે તેમને મારી નાખે છે “પરસ્પદારાઓ જે અવિરયા”
 જે લોકો પરસ્ત્રીગમન રૂપ કુકૃત્યથી વિરક્ત થઈ શકતા નથી તે લોકો જ આ
 બધા કુકૃત્યો કરે છે તથા એ જ પ્રમાણે “મેહુણસળ્લા સપગિદ્વાય” મૈથુન
 સળ્લામા આસક્ત, “મોહભરિયા” મૈથુન સળ્લામા વિમોહિત મનવાળા અજાની
 “અસ્માદત્થી ગવા ચ મહિસા મિગા ચ” અશ્વ, હાથી, ગાય, હેસ મૃગ,
 આદિ પ્રાણીઓ પણ “એકમેક મારેતિ” આપસમા લડીને એક બીજાને
 મારી નાખે છે એ જ રીતે “મણુયગળા” મનુષ્યો, “વાનરા ચ” વાનરો,
 “પવસ્ત્રી ચ” અને પક્ષીઓ પણ એક બીજાને વિરોધ કરે છે “મિત્તાણિ
 સ્વિપ્પ ભવતિ સત્તુ” એ કર્મના સેવનથી મિત્રો પણ જલ્દી તેમના શત્રુ બની
 જાય છે વળી પરસ્ત્રીમા આસક્ત લોકો “સમય” પોતાના સિદ્ધાંતોને,

येपाते तथा । तथा 'मेहुणमूला य' मैथुनमूलाय स्त्री हेतव एवेत्यर्थः 'तत्त तत्त' तत्र तत्र लोके शास्त्रे च 'वत्तपुग्गा' वृत्तपूर्वाः=भूतपूर्वा 'जगत्त्रयकरा' जन क्षयकराः=जनसंहारकारकाः-रामरावगादीना 'सगामा' भग्नानाः 'सुव्वति' क्षयन्ते । कस्याः कस्याः स्रियो-निमित्त सगामा जाताः ? इत्याह—

'सीयाए दोवईए कए' सीतायाः द्रौपद्याश्चकृते-सीताद्रौपदीनिमित्तमित्यर्थः एव 'रुप्पिणीए पउमावई-ताराए कवणाए रत्तसुमदाए अहिन्नियाए सुवणगुलियाए किन्नरीए य' सुरुवविज्जुमईए रोहिणीए य' रक्किमणा', पञ्चायत्या', तारायाः, काञ्चनायाः, रक्तसुमद्रायाः, अहिर्निपायाः सुवर्णगुटिकायाः, किन्नरीश्च

जाता है । तदा (मेहुणमूला य तत्त तत्त वत्तपुग्गा'जगत्त्रयकरा सगामा सुव्वति) लोक और शास्त्र में जितने भी पहिले राम रावण आदि के जनक्षय कारक मग्नान हुए सुने जाते हैं वे मग्न मैथुनमूलक ही हुए हैं । इन सब लोक और शास्त्र प्रसिद्ध यत्र तत्र हुए सगामों का मूल कारण एक स्त्री हुई है ॥

अत्र सूत्रकार इसी बात को विशेष स्पष्ट करते हैं तिस २ स्त्री के निमित्त सगाम हुए हैं इस त्रिक को कहते हैं-'सीयाए' इत्यादि ।

टीकायः—(सीयाए, दोवईए य कए) सीता और द्रौपदी के निमित्त (रुप्पिणीए, पउमावईए, ताराए, कवणाए, रत्तसुमदाए अहिन्नियाए सुवणगुलियाए, किन्नरीए, सुरुव विज्जुमईए, रोहिणीए य) रक्किमणी के निमित्त, पञ्चायती के निमित्त, तारा के निमित्त, काञ्चना के निमित्त, रक्तसुमद्रा के निमित्त, सुवर्ण गुटिका के निमित्त, किन्नरी के निमित्त,

नाथ पाभ्यो डोय छे तथा " मेहुणमूला य तत्त तत्त वत्तपुग्गा जगत्त्रयकरा सगामा सुव्वति " आ सुष्टिभा राम रावण आदि वन्धेना भाणभोना लय करनारा जे मआभो यथा छे तथा शाओभा जे सआभो वणुवनाभा आन छे ते गंधानु भूग दाण्ण मैथुन न छे ते गंधा दोउअसिद्ध तथा शाअअसिद्ध स्थणे अथणे थयेला मआभोनु भूग कारणु डोई ने डोई अरी न छनी

हुवे सूत्रकार जे भाअतनु वधु अष्टिकरणु करे छे-कथी कथा -त्रोओने कारणु मआभो यथा ते गतावे छे—" सीयाए " छनदि

टीकायः—" सीयाए, दोवईए य कए " सीता अने द्रौपदीने कारणु " रुप्पिणीए, पउमावईए ताराए, कवणाए, रत्तसुमदाए, अहिन्नियाए सुवणगुलियाए, -किन्नरीए, सुरुवविज्जुमईए, रोहिणीए य " अकभण्णीने निमित्ते, पञ्चायतीने निमित्ते, ताराभतीने निमित्ते काञ्चनाने निमित्ते, रक्तसुमद्राने निमित्ते, अहिर्निपाने निमित्ते, सुवर्ण गुटिकाने निमित्ते, किन्नरीने निमित्ते, सौंदर्यवती

મન્વન્તિ । કયોદ્યયોર્લોકયોઃ ।ત્યાહ ડહલોપ ચેવ પરલોક ' ડહલોકે ચેવ=૩૬-
જન્મનિ પરલોકે ચ પરજન્મનિ । કે તે ? ત્યાહ—'પરસ્સ દારાઓ જે અનિર્યા'
પરસ્ય દારેયો યેડિરિતાઃ=પરત્વીપરાયણાઃ । 'તહેવ' તયેવ 'કેડ' કેચિત્
'પરસ્સ દાર ગવેસમાણા' પરસ્ય દારાન ગવેસમાણા' = પરત્ત્રિયમન્વેષયન્ત,
'ગહિયા ય' ગૃહીતાશ્ચ જનૈઃ 'હયાય' હતાશ્ચ=તાડિતાઃ 'વદ્ધરુદ્ધા ય' વદ્ધ
રુદ્ધાશ્ચ=ગજ્જ્યાઃભિર્નદ્વાઃ સ તઃ પજરાદી નિન્દાશ્ચ એવ 'જાવ ગચ્છન્તિ'
યાવત્-અધોગતિ પ્રાપ્નુવન્તિ 'અત્ર યાવત્પદગ્રહણેન તૃતીયાધ્યયનસ્થિત' 'ગહિ
યાય વદ્ધરુદ્ધા ય' ત્યાહ-અથ 'નરણ ગચ્છતિ ગિરમિરામે' ક્ત્યેતદન્ત' પાઠોત્ર
ધોધ્ય હિતિ સુચિતમ્ । કે તે ત્યાહ—યે 'મોહાભિભૂયસણ્ણા' મોહાભિભૂતસણ્ણાઃ=
મોહેન=અનાનેન તામાન્વતયા ગા અભિભૂતા-પરીભૂતા નણ મનાન્સદમદ્વિવેકપણ્ણ
દોનો લોકો મેં-હસ લોક ઓર પરલોક (દુરારાહગા) આત્મ વિરોધક
(મવતિ) બનતે હે । તથા (તહેવ) હસી પ્રકાર (કેડ પરસ્સદાર ગવે-
સમાણા) જો પરત્વી કી ગવેષણા કરને મેં રત રહતે હે વે યદિ ઉસ
કાર્ય કો કરતે સમય (ગહિયા ય) પકડ લિયે જાતે હે તો (હયાય)
વહુત ઘૂરી તરહ તાડિન કિયે જાતે હે । ઓર) (વદ્ધ રુદ્ધા ય) રસસી
આદિ સે બાધે જાકર પજર આદિ મેં બધ કર દિયે જાતે હે । (એવ)
હસ તરહ (જાવ) યાવત્ યત્તાં યાવત્ ગચ્છ સે તૃતીય અધ્યયન મેં
કથિત " ગહિયા ય વદ્ધરુદ્ધાય " હસ પાઠ સે લગાકર " નરણ ગચ્છતિ
ગિરમિરામે) ગર્હાતક કા પાઠ લિયા ગયા હે । જિસસે યહ સમજાયા
ગયા હે કિ અન્ત મેં એસે જીવોકી વડી દુર્દશા હોની હે ઓર વે મર કર
નરક મેં જાતે હે । ક્યોકિ (વિડલમોહાભૂયસણ્ણા) એસે મનુષ્યો કા
વિપુલ અજ્ઞાન સે અથવા કામાન્ધતા સે મદ મદ્વિવેક તિલકૂલ નણ હોના

' દુરારાહગા ' આત્મવિરોધક " મવતિ " બને છે " તહેવ " એ જ પ્રમાણે
" કેડ પરસ્સદાર ગવેસમાણા " એ પરત્વીની શોધમા લીન રહે છે, તેઓ
એ તે કાર્ય કવ્વી વખતે " ગહિયા ય " પકડાઈ બાથ તે " હયાય " ઘણી
જ ખરાબ રીતે તેમને મારવામા આવે છે, અને " વદ્ધરુદ્ધાય " દોરડા
આદિથી જકડીને પાંજરા આદિમા પૂરી દેવામા આવે છે " એવ " આ રીતે
" જાવ " યાવત્-અહીં યાવત્ શબ્દ વડે ત્રીજા અધ્યયનમા કહેલ " ગહિયા-
ય વદ્ધરુદ્ધાય " થી લઈને " નરણ ગચ્છતિ ગિરમિરામે " સુધીનો પાઠ લેવામા
આવેલ છે તેમા એ સમજાવવામા આવ્યું છે કે છેવટે તે જીવોની દશા ખૂરી
થાય છે અને તેઓ મરીને નરકમા બાથ છે, કારણ કે " વિડલમોહા ભૂયસણ્ણા "
એવા મનુષ્યોમા મદસદ્વિવેક, અજ્ઞાનથી અથવા કામાન્ધતા ને લીધે તિલકૂલ

સાહારણસરીરપત્તેયમરીરેસુ ' પર્યાસાપર્યાસકસાધારણશરીરપત્તેયકશરીરેપુ ચ જન્મમરણ કુર્વન્તિ । તતોપિ નિઃસૃત્ય ' અહ ય પોયય જરાઉય રસ ય-સસેહમ સમુચ્છિમ ઉચ્છિમજ્જ ઉપવાહસુ ય ' તત્ર અણ્ઞજાઃ=પક્ષી મત્સ્યાદયઃ ' પોયજ ' પોતજા =હસ્ત્યાદય ' જરાઉય ' જરાયુજાઃ=મનુષ્યાદયઃ, ' રસ ય ' રમજાઃ=વિકૃતરસેપુ સમુત્પન્નાઃ ' સસેહમ ' સમ્બેદિમા=સસ્વેદાત્ જાતા યુક્તા મત્કુળાદયઃ ' સમુચ્છિમ ' સમૂચ્છિમાઃ=સમૂચ્છિન જાતાઃ દર્દુરાદયઃ ' ઉચ્છિમજ્જ ' ઉચ્છિમજ્જાઃ=પૃથિગ્મુદ્ધિજ્ઞ જાતાઃ=શલભાદયઃ ' ઉપવાહય ' ઔપપાતિકા=દેવ નારકાદયશ્ચ, ક્ષેત્રેષુ ચ ' નરગતિરિયદેવમાણુસેસુ ' નરકતિર્યગ્દેવમાણુસેષુ ક્ષેત્રેષુ ? ક્ષેત્રેષુ ? ક્ષેત્રેષુ—' જરામરણરોગસોગગ્રહુલેસુ ' જરામરણરોગશોકગ્રહુલેષુ-

(તસવાચરમુદ્ગમાચારેસુ) વ્રસ, સ્વાચર, સૂક્ષ્મ, ચાદર ઇતિ કાર્યોમે, તથા (પજ્જત્તમપજ્જત્તસાહારણપત્તેય મરીરેસુ ય) પર્યાસક અપર્યાસક, સાધારણ-શરીર, પ્રત્યેક શરીર ઇતિ પર્યાયોમે જન્મ મરણ કરતે હૈ । વહા સે મી નિકલ કર વે (અહ ય પોયય જરાઉય રસ ય સસેહમ સમુચ્છિમઉચ્છિમ-જ્જઉપવાહસુ ય) અહ જ જીવોમે-પક્ષી મત્સ્ય આદિકોમે, પોતજજીવોમે-હસ્તી આદિકોમે, જરાયુજ મે-જરા સે પૈદા હોને વાલે મનુષ્ય આદિકોમે, રસજ જીવોમે-વિકૃત રસોમે ઉત્પન્ન હોને વાલે કૃમિ આદિ જીવોમે, સસ્વેદિમામે પમીનેસે હોનેવાલે યુક્તા, મત્કુળ આદિ જીવોમે, સમૂચ્છિમ જન્મવાલે દર્દુર (મેઢક) આદિ જીવોમે, ઉચ્છિમજ્જ જીવોમે-પૃથિવિ કો મેદકા ઉત્પન્ન હોને વાલે શલભ આદિ જીવોમે ઔપપાતિક જન્મ ધારી દેવ ઔર નારકીયોમે ઉત્પન્ન હોતે હૈ । તથા વે (જરામરણરોગસોગ ગ્રહુલેસુ નરગતિરિયદેવમાણુસેસુ) જરા, મરણ, રોગ, શોક ગ્રહુલ, નરક,

“ તસવાચરમુદ્ગમાચારેસુ ” વ્રસકાય, સ્વાચરકાય, સૂક્ષ્મકાય અને પાદરકાયોમા તથા “ પજ્જત્તમપજ્જત્તસાહારણસરીરપત્તેયસરીરેસુ ય ” પર્યાસક, અપર્યાસક, સાધારણ શરીર, પ્રત્યેક શરીર આદિ પર્યાયોમા જન્મ મરણ અનુભવે છે તથા પશુ નીકળાને તેઓ “ અહય-પોયય-જરાઉય-રસય સસેહમ-સમુચ્છિમ ઉચ્છિમજ્જઉપવાહસુ ય ” અહ જ જીવોમા-પક્ષી મત્સ્ય આદિમા, પોતજ જીવોમા હાથી આદિમા જરાયુજમા મનુષ્ય આદિમા રસજ જીવોમા વિકૃત રસોમા ઉત્પન્ન થનાર કૃમિ આદિ જીવોમા, સસ્વેદિમા મા પરસેવાથી ઉત્પન્ન થનાર જૂ, માડડ આદિ જીવોમા, સમૂચ્છિમ જન્મવાળા દેડડા આદિ જીવોમા, ઉચ્છિમજ્જ જીવોમા-પૃથ્વીને લેદીને ઉત્પન્ન થનાર તીડ આદિ જીવોમા, ઔપપાતિક દેવ અને નારકીઓમા ઉત્પન્ન થાય છે તથા તેઓ “ જરામરણ-રોગસોગગ્રહુલેસુ નરગતિરિયદેવમાણુસેસુ ” જરા, મરણ, રોગ અને વિપુલ

સુતપરિવૃન્મત્યાઃ, રોઢિણ્યાન, તત્તત્થાનપમિદ્વાયાઃ કૃતે મગ્રામા અમૃત્ન ।
 આતા ચરિત તુ તત્તદ્ગ્રવમ્યાડયતેયમ્ । ‘ અળ્લે ય ઇમાહ્યા વહ્નો મહિલા-
 કણ ’ અન્યે ચૈવમાદિકાઃ = એ પ્રકારાઃ=અહઃ-અનેકે મહિલાકૃતે=સ્ત્રીનિમિત્ત
 ‘ અતિવતા ’ અતિક્રાન્તાઃ=મૃતપૂર્વાઃ ‘ ગામધર્મમૂલા ’ ગ્રામધર્મમૂલાઃ= મૈથુન
 મૂલકાઃ ‘ સગામા ’ સગ્રામા જાતા ઇતિ, ‘ સુવતિ ’ વ્યવતે=જોકે શાસ્ત્રે ચ ।
 તે ચાત્રલ્લસેવિનઃ ‘ ઇહલોણ તાવનદ્વા ’ ઇહલોકે તાવનદ્વાઃ = પરસ્ત્રીગમનેનાડ-
 ત્મવિરાધકા જાતાઃ, ‘ પરલોણ ય નદ્વા ’ પરલોકે ચ નદ્વાઃ અમદ્વતિ પ્રાપ્તાઃ
 કેન કેન પ્રકારેણ પરલોકો નદ્વામગ્નીત્યાહ—ઇતો મૃત્યા ‘ મહ્યામોહતિમિર-
 ધવારે ’ મહ્યામોહતિમિરાન્ધકારે-મહ્યામોહ એ તિમિરાન્ધકાર=ગાઢાન્ધકારો
 યત્ર સ તયા તસ્મિન્ ઘોરે=ભયહરે એતાદૃશે નરકે ગચ્છન્તિ । તતો નિઃસૃત્ય
 ‘ તસ્યાવરમુદુમયાયરેમુ ’ તસ્યાવરમુદુમયાદરેમુ ’ તયા ‘ પદ્મતમપદ્મતમ

સરૂપ વિદ્યુન્મતી કે નિમિત્ત ઓર રોહિણી કે નિમિત્ત સગ્રામ હુણ હૈ
 (અળ્લે ય ઇમાહ્યા વહ્નો) તયા હસી તરહ કે ઓર મી અનેક
 (અહકતા) મૃતપૂર્વ સગ્રામ (મહિલાકણ) ડસો મૈથુન સેવન નિમિત્તક
 હુણ (સુવતિ) લોક ઓર શાસ્ત્ર મે સુને ગયે હૈ । (અમસેવિણો ઇહ-
 લોણ તાવનદ્વા પરલોણ ય નદ્વા) યે અવલ્લસેવીજન ડસલોક મે તો નદ્વા
 હોતે હી હૈ, સાથ ૨ મે પરલોક મે મી નદ્વા હોતે હૈ, અર્થાત્ પરસ્ત્રી
 સેવન સે જીવ હસલોક મે આત્મવિરાધક હોકર પરલોક મે મી અસ
 જ્ઞતિ કો પ્રાપ્ત કરતે હૈ । જય વે યહા સે મરતે હૈ તય (મહ્યા મોહ
 તિમિરવવારે) મહ્યામોહરૂપ ગાઢ અધકાર સે આચ્છાદિત હુણ (ઘોરે)
 ભયકર નરક મે જાકર ઉત્પન્ન હોતે હૈ । વહા સે જય વે નિકલતે હૈ તય

વિદ્યુન્મતીને નિમિત્તે, અને રોહિણીને નિમિત્તે સગ્રામો થયા હતા, “ અળ્લેય
 ઇમાહ્યા વહ્નો ” તથા તે પ્રકારના બીજા પણ અનેક “ અહકતા ” મૃત
 કાળના સગ્રામો “ મહિલાકણ ” એ જ મૈથુન સેવનને નિમિત્તે થયાવું
 “ સુવતિ ” લોકોમાં તથા શાસ્ત્રોમાં સાલળવામાં આવે છે

“ અમસેવિણો ઇહલોણ તાવનદ્વા પરલોણ ય નદ્વા ” તે મૈથુન
 સેવી લોકો આ લોકમાં તો નાશ દુર્દશા પામે જ છે પણ પરલોકમાં
 પણ નદ્વા થાય છે, એટલે કે પરમસેવનથી લોકો આ લોકમાં આત્મવિરાધક
 થઈને પરલોકમાં પણ દુર્ગતિ પ્રાપ્ત કરે છે, જ્યારે તેઓ અહીંથી મરણ પામે
 છે ત્યારે “ મહ્યા મોહતિમિરવવારે ” મહ્યામોહરૂપ ગાઢ અધકારથી છવાયેલા
 “ ઘોરે ” ભયકર નરકમાં જઈને ઉત્પન્ન થાય છે ત્યાંથી નીકળીને તેઓ

एय त अवभपि चउत्थ सदेव मणुयासुरस्स लोगस्स
पत्थणिज्ज एव चिरपरिचियमणुगय दुरतं तिवेमि ॥सू० ૧૫॥

॥ चउत्थ अहम्मदार समत्तं ॥

ટીકા—‘ एसो सो ’ एय स’ पूर्वोक्तः ‘ अवभस्स फलविवागो ’ अवलम्बः
फलविपाक ‘ इह लोडओ ’ ऐहलोकिक -मनुष्यभयापेक्षया, ‘ परलोडओ य ’
पारलौकिकश्च नरकाद्यपेक्षया ‘ अप्पसुहो ’ अल्पसुखा - क्षणमात्रसुखजनकत्वात्
‘ वहुदुक्खो ’ बहुदुःखः—प्रचुरदुःखहेतुत्वात् ‘ महम्मओ ’ महाभय -वधवन्धन
जन्ममरणादिभयोत्पादकत्वात् ‘ उहुरयप्पगाढो ’ उहुरजः प्रगाढः—कर्मदलिकउहु-
त्वात् ‘ दाहणो ’ दाहणः—चतुर्गतिसत्तारभ्रामकत्वात् ‘ रक्कमो ’ रक्कशः दशविध-

અન ઇસ પ્રવૃત્તિ અવલમ્બ વિષય કા ઉપસંહાર કરતે હુણ સૂત્રકાર
કરતે છે —‘ एसो सो ’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(एसो सो) यह पूर्वोक्त (अवभस्स) अवलम्ब-कुशील
સેવન કા (ફલવિવાગો) ફલરૂપવિપાક (इह लोडओ य)
મનુષ્ય ભય કી અપેક્ષા તથા નરકાદિ ગતિ કી અપેક્ષા (अप्पसुहो)
ક્ષણમાત્ર સુખ કા જનક હોને સે અલ્પસુખરૂપ છે તથા (वहुदुक्खो)
પ્રચુર દુઃખ કા હેતુ હોને સે મહાદુઃખપ્રદ છે, (महम्मओ) વધ, વધન,
જન્મ, મરણાદિ કે ભય કા ઉત્પાદક હોને સે મહાભય સ્વરૂપ છે ।
(उहुरयप्पगाढो) એસે કર્મ કરને વાલો કો કર્મો કી સ્થિતિ ઓર અનુ-
ભાગ વહુત અધિક માત્રામાં વધાતા છે ઇમલિયે વહુ ઉહરજઃપ્રગાઢરૂપ છે ।
(दाहणो) ચતુર્ગતિ રૂપ સત્તારમે એસે જીવોકા હો ભ્રમણ હોતા છે—અતઃ

હવે આ પૂર્વોક્ત અબ્રહ્મ વિષયનો ઉપસંહાર કરતા સૂત્રજાલ બહે છે—

“ एसो सो ” इत्यादि

ટીકાર્થ —“ एसो सो ” આ પૂર્વોક્ત “ अवभस्स ” અબ્રહ્મ-કુચારિત્ર
સેવનનો “ फलविवागो ” ફલવિપાક “ इह लोडओ य ” મનુષ્ય ભયની
અપેક્ષાએ “ अप्पसुहो ” ક્ષણમાત્ર સુખનો જનક હોવાને કારણે અલ્પસુખ
રૂપ છે, તથા “ वहुदुक्खो ” અત્યંત દુઃખનો હેતુ હોવાથી મહાદુઃખપ્રદ છે
“ महम्मओ ” વધ, વધન, જન્મ, મરણ આદિ ભયનો ઉત્પાદક હોવાથી
મહાભય સ્વરૂપ છે, “ उहुरयप्पगाढो ” એવા કર્મો કરનારને કર્મોની સ્થિતિ
અને અનુભાગ બહુ જ વધારે પ્રમાણમાં વધાય છે તેથી તે બહુ રજ પ્રગાઢ-
રૂપ છે “ दाहणो ” એવા જીવોને ૪ ચાર ગતિ રૂપ સત્તારમાં ભ્રમણ કરવું

ચોત્પન્તે, તત્ર ' પલિઓવમસાગરોવમાઙ્ ' પલ્યોપસાગરોપમાનિ = પલ્યોપમ
સાગરોવમકાલ યાત્ કેચિત્પરિભ્રમન્તિ ' યે તુ ' અણાદિય ' અનાદિક =
આદિર્વર્તિત ' અણવદગ્મ ' અનવદગ્મ = અનન્ત ' દીર્ઘમદ્ધ ' દીર્ઘાઽન્તાન = દીર્ઘ
માર્ગ ' ચાઽરતસસારકતાર ' ચતુસ્તસમારકાન્તાર = દેવમનુષ્યનારકતિર્ય
ગ્લક્ષગચતુર્ગતિરુપસારમદારણ્ય, ' મહામોહવસસનિવિદ્ધા જના ' મહામોહવશ-
સનિશિષ્ટાજનાઃ = મહામોહવશગતા અપ્રભસેપિના જનાઃ ' અણુપરિયદૃત્તિ ' અનુ-
પર્યટન્તિ = અનન્તકાલપર્યન્તપરિભ્રમન્તિ ॥ સૂ. ૧૪ ॥

પૂર્વોક્ત નિગમયન્નાહ—' एसो सो ' इत्यादि—

મૂલ્ય—एसो सो अवभस्स फलविवागो इहलोइओ पर-
लोइओ य अप्सुहो बहुदुक्खो महम्मओ वहुरयप्पगाढो
दारुणो कक्खसो असाओ वाससहस्सेहि मुच्चइ, नय अवेद-
इत्ता अतिहुमोक्खो त्ति। एवमाहसु नायकुलनदणो नहप्पा
जिणो उ वीरवरनाम धेज्जा कहेमि य अवभस्स-फलविवागं।

તિયંચ દેવ એવ મનુષ્યોં મેં જન્મતેહૈં । इनमें (पलिओवमसागरोवमाइ)
કિતનેક જીવ પલ્યોપમપ્રમાગ કાલતક ઓર કિતનેક સાગરોપમ પ્રમાણ
કાલ તક ધૂમતે રહતે હૈ । और कितनेक ऐसे भी होते हैं जो (महा-
મોહવસસનિવિદ્ધા) મહામોહ કે વશવર્તી હોકર (અણાદિય અણવદર્ગ)
અનાદિ અનન્ત (દીર્ઘમદ્ધ) ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણીરૂપ દીર્ઘમાર્ગ યુક્ત
(ચાઽરતસસારકતાર) દેવ-મનુષ્ય નરક એવ તિર્યશ્ચગતિરૂપ ચારગતિ-
વાલે સમાર કાતાર મેં અનન્તકાલતક (અણુપરિયદૃત્તિ), પરિભ્રમણ કરતે
રહતે હૈ ॥ સૂ. ૧૪ ॥

શોઽમય નરક, તિર્યંચ, દેવ અને મનુષ્ય યોનિમા જન્મ પામે છે, તેમાના
" પલિઓવમસાગરોવમાઙ્ " કેટલાક જીવો પલ્યોપમ પ્રમાણકાલ સુધી અને
કેટલાક સાગરોપમ પ્રમાણ કાળ સુધી તે યોનિયોમા ભ્રમણ કર્યા કરે છે અને
કેટલાક જીવો એવા પણ હોય છે કે જે " મહામોહવસસનિવિદ્ધા " મહામોહને
અધીન થઈને " અણાદિય અણવદગ્મ " અનાદિ અનન્ત " દીર્ઘમદ્ધ " ઉત્સર્પિણી
અવસર્પિણી રૂપ દીર્ઘમાર્ગ યુક્ત " ચાઽરતસસારકતાર " દેવ મનુષ્ય, નરક
અને તિર્યંચ એ ચાર ગતિવાળા સસાર કાતારમા અનન્તકાળ સુધી " અણુપરિ-
યદૃત્તિ " પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે. ॥ સૂ. ૧૪ ॥

જિનઃ વીરવરનામધેયઃ—પ્રગ્યાતનામા ભગવાન્ શ્રીમહાવીરોઽપિ ‘અવમસ્સ’
અપ્રહ્મણઃ ‘ફલવિવાગ’ ફલવિપાક ‘કહેસિય’ કથિતયાશ્ર ‘એય ત’ એત
તત્=ઉપદર્શિત સ્વરૂપમ્ ‘અવમ’ અવ્રહ્મ—અવ્રહ્મનામક ‘ચત્તય’ ચતુર્થમર્મ-
દ્વાર ‘સદેવમણુયાસુરસ્સ લોગસ્સ’ સદેવમનુજાસુરસ્ય લોકસ્ય ‘પત્થણિજ્જ’
પ્રાર્થનીયમ્। એવ ‘ચિરપરિચિય’ ચિરપરિચિતમ્, અનાદિ કાલાદનુભૂયમાનમ્
‘અણુગય’ અનુગત=પ્રાણિના પૃષ્ઠતોભગ્ન, દુરન્ત—દુઃસ્વાસાન ચ । ‘તિ વેમિ’
ઈતિ પ્રીમિ, એતદ્ અમ્સૂસ્વામિન પ્રતિ સુમર્મસ્ત્રામિ વાક્યમ્ ॥ સૂ ૧૫ ॥

ઈતિ શ્રીપ્રશ્નવ્યાકરણસ્ય સુદર્શન્યાત્યાયા વ્યાત્યાયા હિસાદિ પશ્ચાત્ત્વદ્વારેષુ
અદત્તાદાનામ્ય ચતુર્થમર્મદ્વાર સમાપ્તમ્ ॥ ૩ ॥

(એવ) હમ પ્રકાર કા કથન (આહસુ) ભૂતપૂર્વ તીર્થકર ગણધરાદિક
દેવોં કા હૈ। ઓર ઇસી પ્રકાર સે અવ્રહ્મ કે ફલવિપાક ડન્હી
તીર્થકરોં કે કહે અનુમાર (નાયકુલનદ્વણો) સિદ્ધાર્થકુલકો આનદ દેનેવાલે
(મહપ્પા જિણો ૩) મહાત્મા જિનેન્દ્ર (વીરવરનામધેજ્ઞા) વીરવરને-
શ્રી વર્ધમાનસ્વામી ને મી (અવમસ્સ) અવ્રહ્મ કે (ફલવિવાગ) ફલવિપાક
કો (કહેસિય) કહા હૈ (એયતં) યહ વહ (અવમ) અવ્રહ્મ નામ કા
(ચતુત્થ) ચતુર્થ અધર્મદ્વાર (દેવમણુયાસુરસ્સ લોગસ્સ) દેવ મનુપ્ય
ઑર અસુર લોક ઇન સગ્ર કે યહ (પત્થણિજ્જ) પ્રાર્થનીય હૈ, અર્થાત્
ઈસ અવ્રહ્મ કા યે દેવાદિ સેવન કરતે હૈ। (એવ) હમ પ્રકાર યહ (ચિર-
પરિચિય) જીવોં કે પીઠે અનાદિકાલ સે લગા હુઆ ચલા આને કે કારણ
(અણુગય) અનુભૂયમાન હૈ ઑર (દુરત) ઇસકા અવસાન (અન્ત) સે દુરન્ત

આ પ્રકારનુ ઇત્ય “આહસુ” ભૂતપૂર્વ તીર્થકર ગણધરાદિક દેવોનુ છે અને
તે રીતેજ અપ્રહ્મના ફલવિપાકનુ કથન તે તીર્થ કરોના કહેવા પ્રમાણે “નાયકુલ
નદ્વણો” સિદ્ધાર્થના કુળને આનદ દેનાર “મહપ્પાજિણો ૩” મહાત્મા જિનેન્દ્ર
“વીરવરનામધેજ્ઞા” વીરવર શ્રી વર્ધમાન સ્વામીએ પણ “અવમસ્સ” અપ્રહ્મને।
“ફલવિવાગ” ફલવિપાક “કહેસિય” કહેલ છે “એયત” આ તે “અવમ”
અપ્રહ્મ નામનુ “ચત્તય” ચોથુ અધર્મદ્વાર “દેવમણુયાસુરસ્સ લોગસ્સ”
દેવ મનુપ્ય, અને અમુક તે બધાને તે “પત્થણિજ્જ” પ્રાર્થનીય છે, એટલે
કે દેવાદિ તે અપ્રહ્મનુ સેવન કરે છે “એવ” આ રીતે તે “ચિરપરિચય”
જીવોની પાછળ અનાદિ ગળથી આદ્યુ આવે છે તેથી “અણુગય” અનુભૂય-

ક્ષેત્રવેદના જનકતાત્ 'અમાઓ' અમાતઃ=અસાતવેદનીયઃ-અર્થાત્પાદનત્વાત્
 'વાસસદસેર્હિ' વર્ષસહસ્રૈઃ = અનેકપલયોપમસાગરોપમાદિવાચોપમોગેન
 'મુચ્ચદ્' મુચ્યતે । તદેવ વ્યતિરેશ્મુસેનાહ-નયઅવેદહતા નયાવેદયિત્વા=
 ઉપભોગ વિના ન 'મોક્ષોતિ' મોક્ષોઽસ્તિ । 'અં' ઉક્તીત્યા 'આત્મ' ઋનુઃ=
 કથિતવન્ત ભૂતપૂર્વાસ્તોર્થકૂરમણઘરાદયઃ । તથા-તદનુમારેણેવ 'નાયકુચનગો'
 જ્ઞાતકુલનન્દનઃ-મિદ્યાર્થકુચાનન્દન' 'મહાપ્પા' મહાત્મા=પરમાત્મન્યઃ 'જિણો'

ચતુર્ગનિરૂપ સસારમેં ભ્રમગ કરવાનેકા કારણ હોનેસે યહ દારુણ હૈ ।
 (કપત્તો) દશ પ્રકાર નો ક્ષેત્રવેદના કા જનક હોને સે યહ ફલવિપાક
 કર્કશ હૈ । (અસાઓ) અસાતવેદનીયરૂપ હોને સે યહ અસાત હૈ-અર્થાત્
 અસાતા વેદનીય કર્મ કે ઉદય સે યહ ઉત્પન્ન હોના હૈ ઇસલિયે અસાતા-
 વેદનીયકર્મ કે દ્વારા ઉત્પાદ્ય હોને કે કારણ યહ સ્વય અસાતસ્વરૂપ હૈ ।
 અથવા ઇસ પ્રકાર કે કર્મ કરને વાલે જીવ જો ફલવિપાક ભોગતે હૈ ।
 ઉસ સમય વે અસાતાવેદનીય કર્મ કા થથ કરતે હૈ,-કારણ ફલવિપાક
 ભોગતે સમય ઉનકી આત્મા મે દુઃખ શોક-તાપ આદિ ભાવ હોતે હૈ
 ઇન ભાવોં સે જીવ અસાતાવેદનીય કર્મ કા આસ્ત્રવ કરતા હૈ । ઇસ
 અપેક્ષા સે અસાતાવેદનીય કર્મ કા ઉત્પાદક હોને સે યહ ફલવિપાક
 અસાતરૂપ મોના ગયા હૈ । (વાસસદસેર્હિ) યહ ફલવિપાક જીવ પલયો
 પમકાલતક ભોગને સે (મુચ્ચદ્) છૂટતા હૈ । (નયઅવેદહતા અતિય હુ
 મોક્ષોતિ) ઇસ ફલવિપાક કા ઉપભોગ કિપે વિના યહ નહીં છૂટના હૈ ।

પડે છે, તેથી ચાર ગતિગણા સસારમા ભ્રમણ કરાવનાર હોવાથી તે દારુણ છે
 “કપત્તો” ઇસ પ્રકારની ક્ષેત્ર વેદનાનો જનક હોવાથી તે ફલવિપાક કર્કશ-
 કઠોર છે “અસાઓ” અસાત વેદનીય રૂપ હોવાથી તે અસાત છે-એટલે કે
 અસાતાવેદનીય કર્મના ઉદયથી તે ઉત્પન્ન થાય છે, તેથી અસાતા વેદનીય
 કર્મદ્વારા ઉત્પાદ્ય હોવાને કારણે તે પોતે અસાતસ્વરૂપ છે અથવા આ પ્રકારના
 કર્મ કરનારા જીવો જે ફલવિપાક ભોગવે છે, તે ભોગવતી વખતે અસાતા-
 વેદનીય કર્મનો અથ બાધે છે, કારણ કે ફલવિપાક ભોગવતી વખતે તેમના
 આત્મામા દુઃખ શોક તાપ આદિ લાવ હોય છે, તે લાવેથી જીવ અસાતા
 વેદનીય કર્મનો આસ્ત્રવ કરે છે આ અપેક્ષાએ અસાતાવેદનીય કર્મનો ઉત્પાદક
 હોવાથી આ ફલવિપાક અસાતરૂપ માન્યો છે “વાસમહસેર્હિ” આ ફલવિપાક
 પલયોપમ કાળ સુધી અથવા સાગરોપમ કાળ સુધી ભોગવ્યા પછી જ જીવ
 “મુચ્ચદ્” તેનાથી મુક્ત થાય છે ‘નય અવેદહતા અતિય ॥ મોક્ષોતિ’
 આ ફલવિપાકનો ઉપભોગ કર્યા વિના તે મુક્ત થઈ શકતો નથી “અવ”

अथ पञ्चमाध्ययनम् ।

अथ चतुर्थास्तवद्वारसमाप्त्यनन्तर पञ्चममास्तवद्वार प्रारभ्यते, अस्य पूर्वेण सहायमभिसन्धः । अनन्तराध्ययनेऽब्रह्मस्वरूपं प्रोक्तं, तच्च परिग्रहे सत्येव भवतीति परिग्रहस्वरूपं निरूप्यते—‘जम्बू’ इत्यादि ।

मूलम्—जम्बू । एतौ परिग्रहो पंचमो उ नियमा णाणाम-
णिकणगरयण महरिह परिमल-सुपुत्तदार-परिजण-दासीदास-
भयग-पेस्त-हय-गय-गो-महिस-उट्ट-खर अय-गवेलग-सीया-
सगड-रह-जाण-जुग्ग-सदण-सयणासण-चाहण-कुविय-धण-धन्न-
पाणभोयणाच्छायण-गधमल्ल-भायण-भवणविहि चेव बहुविहियं
भरह णगणगर-णियम-जणवय-पुरवर-दोणमुह-खेड-कव्वड-
मंडव-संवाह-पट्टण-सहस्सपरिमंडिय थिमियमेणीय एगच्छत्तं
ससागर भुंजिऊण वसुह अपरिमियमेणंततण्हमणुगयमहिच्छ-
सारनिरयमूलो, लोभकलिकसायमहक्खंधो, चितासयनिचिय
विडलसालो, गारवपविरल्लियग्गविडवो, नियडितया पत्तपल्लवधरो,
पुप्फफल जस्स कामभोगा आयासविसूरणाकलहपकंपियग्ग-
सिहरो नरवइसपूजिओ, बहुजणस्स हिययदइओ, इमस्स
मोक्खवरमुत्तिमग्गस्स फलिहभूओ चरिम अहम्मदार ॥सू०१॥

पाचवा आस्तवद्वार प्रारभ—

चतुर्थ आस्तवद्वार की समाप्ति के बाद अब पाचवा आस्तव द्वार प्रारभ होता है । इसका पूर्व आस्तव द्वार के साथ इस प्रकार से संबध है—चतुर्थ द्वार में जो अब्रह्म का स्वरूप कहा है वह अब्रह्म, परिग्रह के होने पर ही होता है इसलिये सूत्रकार इस द्वार में परिग्रह का स्वरूप

पाचमा आस्तव-द्वारना प्रारभ

ચોથુ આસ્તવ દ્વાર પૂરૂ કર્યા પછી હવે પાચમા આસ્તવ દ્વારનુ વર્ણન શરૂ થાય છે તેનો આગળના આસ્તવદ્વાર સાથે આ પ્રકારનો સંબંધ છે—

ચોથા દ્વારમા અબ્રહ્મનુ બે સ્વરૂપ કહ્યું છે તે અબ્રહ્મ, પરિગ્રહ હોય તો જ થાય છે તેથી સૂત્રકાર આ દ્વારમા પરિગ્રહના સ્વરૂપનુ નિરૂપણ કરે છે—



હે નાના પ્રકાર કે દુઃખો કે દાતા હૈ । (તિ બેમિ) જેસા હે જન્મ । મેં
કહતા હ । હસ પ્રકાર સુધર્માસ્વામીને જન્મસ્વામી કો હસકે વિષય
મેં સમજાયા હૈ ॥ સૂ૦૧૫ ॥

॥ ચતુર્થ અધર્મદ્વાર સમાપ્ત ॥

માન છે, અને “ દુસ્ત ” તેનું અવસાન હૌત છે—નાના પ્રકારના હુ ખો દેનાડ
છે “ તિબેમિ ” એવું છે જન્મ । હું કહું છું આ જન્મસ્વામીને સુધર્મસ્વામીએ
અપ્રકારના વિષે સમજાવ્યું છે. ॥ સ ૧૫ ॥

એથી આસવ (અધર્મ) દ્વાર સમાપ્ત થયું.

अय-गवेलग-सीयासगड-रह-जाण-जुग-सदण-सयणा-सण-वाहण-कुविय-
 धण-धन्न-पाण-भोयण-ञ्छायण-गध-मल्ल-भायण-भवणविहिं ' नानामणि—
 कनक-रत्न-महार्ह-परिमल-सपुत्रदार-परिजन-दासी-दास-भृतक-प्रेष्य-हय-
 गज-गो-महिषो-ष्ट्र-खर-अज-गवेलक - शिविका - शकट-रथ-यान-युग्य-
 स्पन्दन-शयनाऽऽसन-वाहन-कुप्य-धन-धान्य-पान-भोजना-ऽऽच्छादन-गन्ध-
 माल्य-भाजन-भजनविधिम् । तत्र- ' णाणामणि ' नानामणयः-नाना=अनेक
 प्रकारा ये मणय=चन्द्रकान्तादयः, ' कणग ' कनक=सुवर्ण ' रयण ' रत्नानि=
 कर्केतनादीनि, ' महारिह परिमल ' महार्ह परिमलाः - बहुमूल्यसुगन्धिपदार्थाः,
 तथा ' सपुत्रदार ' सपुत्रदाराः-पुत्रसहिताः स्त्रियः, तथा ' परिण ' परिजन-
 परिवारः=पौत्रादिरूप, ' दासीदास ' दासीदास=दास्यो दास्यश्च ' भयग '
 भृतकाः=कर्मकराः, ' पेस ' प्रेष्या -प्रयोजनेषु प्रेषणीयाः, ' हय ' हया-अश्वः
 ' गय ' गजाः ' गो ' गावः ' महिस ' महिषाः ' उट्ट ' उष्ट्राः, ' खर ' खराः
 गर्दभाः ' अय ' अजाः ' गवेलग ' गवेलका=मेघा, ' सीया ' शिविकाः, ' सगड ' शक-
 टानि=गन्धः, ' रह ' रथाः ' जाण ' यानानि यानपात्राणि ' जुग ' युग्यानि गोल-
 देश प्रसिद्ध जम्पानविशेषाः ' सदण ' स्पन्दनाः-रथविशेषा, ' सयणासण '
 शयनासनानि=शय्या आसनानि च ' वाहण ' वाहनानि-' तामजाम ' इति देशी

-महिस-उट्ट-खर-अय-गवेलग-सीया-सगड रह-जाण-जुग-सदण-
 सयणा-ऽऽसण-वाहण-कुविय-धण-धण-पाण-भोयण-ञ्छायण-गध-
 मल्ल-भायण-भवण-विहिं) चन्द्र कान्त आदि विविध प्रकार के मणि,
 कनक-सुवर्ण, कर्केतनादि रत्न, बहुमूल्य परिमल-सुगन्धित पदार्थ,
 पुत्रसहित स्त्रीजन, पौत्रादिरूप परिजन, दामी दास, भृतक-कर्मकर,
 प्रयोजन के अवसर पर भेजने योग्य प्रेष्य, हय-अश्व, गज-हाथी, गाय,
 महिष, ऊँट, खर-गधा, अज-धकराजकरी, गवेलक-मेघ-मेढा, शिविका-
 पालखी, शकट-गाड़ी, रथ, यानपात्र, युग्य-गोलदेश प्रसिद्ध जम्पाविशेष
 स्पन्दन-रथ, शय्या, आसन, वाहन-तामजान, कुप्य-गृह के उपकरण

महिस-उट्ट-खर-अय-गवेलग-सीया-सगड-रह-जाण-जुग-सदण-सयणा-ऽऽसण-
 वाहण-कुविय-धण-धण-पाण-भोयण-ञ्छायण-गध-मल्ल-भायण-भवण-विहिं "
 चन्द्रकान्त आदि विविध प्रकारना मणि, कनक-सुवर्ण उर्केतन आदि रत्न,
 बहुमूल्य परिमल-सुगन्धित पदार्थ, अपुत्र स्त्रीजन, पौत्रादिस्त्री परिजन, दास-
 दासी, भृतक-कर्मकर, प्रयोजनने भाटे भेजलवाभा आपनार प्रेष्य (इति)
 हय-अश्व, गज-हाथी, गाय, बेल छिट, अज-धकरा, अज-धकरा अजरी,
 गवेलक मेढा, शिविका-पालखी, शकट-गाड़ी रथ, यानपात्र, युग्य, स्पन्दन-रथ

ટીકા—‘ જન્મ ’ इत्यादि—

સુધર્મા સ્વામી પञ्चमाखाદારસ્વરૂપ જિજ્ઞાસમાન જન્મૂત્થાપિન પ્રતિ પ્રાઢ-
‘ જન્મ ’ હે જન્મૂઃ । ‘ एत्तो ’ इतश्चतुर्थ्यास्त्रनद्वारादनन्तरं ‘ परिग्रहो ’ परिग्रह-
परिग्रहण परिग्रह्यते मूर्च्छारूपेण मूर्च्छापरिग्रहोऽप्युक्तो इति पचनात् धर्मोपकरण
विनेत्यर्थ इति वा परिग्रहः = परिग्रहतत्त्वानाम रक्ष्यमाणविशेषणानुरोधात्
परिग्रहशब्दोऽत्र परिग्रहतत्त्वपरको द्रष्टव्यः । ‘ पचमो ’ पञ्चमआस्रयो ‘ नियमा ’
नियमात् निश्चयेन भवति, नान्यःकश्चनातः परः आस्रय । अय परिग्रहःकथम्भूतः?
इत्याह—‘ णाणामणि ’ इत्यादि । ‘ णाणामणि-कणग-रयण-महरिह-परिमल-
सपुत्तदार-परिजण-दासी-दास-भयग-पेस्स-हय-गय-गो-महिस-उट्ट-खर-

निरूपित करते हैं—‘ जन्म एत्तो ’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—શ્રી સુધર્મા સ્વામી પાંચવે આસ્રવ દ્વાર કે સ્વરૂપ કો
જાનને કી હચ્છવાલે શ્રી જન્મસ્વામી સે કહતે હૈ—(જન્મ) હે જન્મૂ !
(एत्तो) ચતુર્થ આસ્રવ દ્વાર કે વાદ (परिग्रहो पचमो आस्रवो नियमा)
परिग्रह पाचवा आस्रव द्वार नियम से है । इसके बाद और कोई-
आस्रव द्वार नहीं है यह बात “ नियम ” शब्द से सूत्रकार ने प्रदर्शित
की है ‘ ग्रहण करना ’ अथवा ‘ जो मूर्च्छाबुद्धि से ग्रहण किया
जावे ’ वह परिग्रह है क्योंकि कि शास्त्र में मूर्च्छाको परिग्रह कहा है
ऐसी इस परिग्रह शब्द की व्युत्पत्ति है । इस व्युत्पत्ति के अनुसार यह
परिग्रह शब्द यहाँ परिग्रह रूप वृक्ष के अर्थ वाला जानना चाहिये क्योंकि
कि इसे स्पष्ट करने के लिये जो सूत्रकार विशेषण इसी सूत्र में कह
रहे हैं वे इसी बात की पुष्टि करते हैं । (णाणामणि-कणग-रयण-
महरिय-परिमल-सपुत्तदार-परिजण-दासी-दास-भयग-पेस्स-हय गो

“ જન્મ એત્તો ” इत्यादि

પાચમા આસ્રવનુ સ્વરૂપ બાણવાની ઇચ્છિવાળા જન્મસ્વામીને શ્રી સુધર્મા
સ્વામી ઠહે છે—“ જન્મ ” હે જન્મૂ ! “ एत्तो ” એથા આસ્રવ દ્વાર પછી “ પરિ-
ગ્રહો પચમો આસ્રવો નિયમા ” નિયમ પ્રમાણે જ પાચમુ આસ્રવ દ્વાર પરિ-
ગ્રહ આવે છે ત્યાર પછી બીજુ કોઈ પણ આસ્રવદ્વાર નથી તે ખાખત
“ નિયમ ” શબ્દથી સૂત્રકારે બતાવેલ છે “ ગ્રહણ કરવુ ” અથવા ‘ જે
ગ્રહણ કરાય તે પરિગ્રહ છે, એવી આ પરિગ્રહ ગણદની વ્યુત્પત્તિ છે તે
વ્યુત્પત્તિ પ્રમાણે આ પરિગ્રહ શબ્દ ગ્રહી પરિગ્રહરૂપ વૃક્ષના અર્થવાળો
સમજવાનો છે કારણ કે તે વાતને સ્પષ્ટ કરવાને માટે સૂત્રકાર જે વિશેષણો
આ સૂત્રમા કહી રહ્યા છે તે જ એ વાતને ટેકો આપે છે “ ણાણામણિ-
કજય-રયણ-મહરિહ-પરિમલ-સપુત્તદાર-પરિજણ-દાસી-દાસ-ભયગ-પેસ્સ-હય-ગો

द्रोणमुत्त्वानि= जलपथ स्थलपथगम्याः पुरविशेषाः, 'खेड' खेडानि-धूलीप्राकार युक्तानि, 'कर्मड' कर्मटानि=कुत्तिसतनगराणि 'मडन' मडम्बानि-दूर दूर वसति युक्ता प्रदेशाः, 'सगाह' सगाहाः=यत्र कृपका धान्यादिक्रमानीय स्थापयन्ति ते 'पट्टण' पत्तनानि-जलस्थल पथान्यतरपथयुक्तानि निवासस्थलानि, एतेषां द्वन्द्वः, एषा यत्सदृश तेन मण्डित-शोभित यत्तत्तादृश, तथा 'थिमियमेयणीय' स्तिमितमेदिनीक-स्तिमिता = स्वचक्रपरचक्रमयवर्जिता, मेदिनी-भूमि र्यस्मिन् तत्तादृशम्, तथा 'एगच्छत्त' एकच्छत्रम्-एकराजकमित्यर्थः, चक्रवर्त्तिपदप्राप्तेः प्राक् माण्डलिकत्वे एतादृश भरतक्षेत्र परिभुज्येत्यर्थः, तथा 'ससागर' सागरसहिताम् 'वसुह' वसुधा-समग्रा पृथ्वीं च चक्रवर्त्तिपदप्राप्त्यनन्तरं भुक्त्वा, एतद्भोगेऽपीत्यर्थः, 'अपरिमियमणततण्हमणुगयमहिच्छसारनि-

धेष्ठनगर, जलपथ, स्थलपथ इन दोनों से गम्य स्थान रूप पुरविशेष धूली प्राकार से युक्त खेड, कुत्तिसतनगररूप कर्मट, दूर दूर वसति से युक्त प्रदेशरूप मडन, सगाह-जहाँ पर कृपकजन धान्यादि लाकर रखते हैं ऐसे प्रदेश, जल पथ तथा स्थलपथ इन दोनों में किसी एक पथ से युक्त पत्तन, इन सब की हजारों की सख्या से मण्डित, तथा (थिमिय-मेयणीय) स्वचक्र और परचक्र के भय से वर्जित भूमि से युक्त तथा (एगच्छत्त) एक राजा वाले, चक्रवर्त्ति पद की प्राप्ति के पहिले माण्डलिकपनेमें नगनगरादि सहित (भरह) भरतक्षेत्र को भोग करके, तथा (ससागर वसुह भुजि ऊण) चक्रवर्त्ति पद की प्राप्ति के अनन्तर समुद्र-सहित ममस्त पृथ्वीनो पटखड मण्डित भरतक्षेत्र को भी भोग करके (अपरिमियमणततण्हमणुगयमहिच्छारनिरयमूलो) अपरिमित-प्रमाण

आदि श्रेष्ठ नगर, जलमार्ग तथा जमीनमार्गों प्रवेश करी रात्राय जेवु गडेर धूणना दिहला वाणु जेड, कुत्तित नगर रूप कर्मट जेनी आसपास धेवु हर सुधी गामो न डोय जेवु मडन, मण्डल-ज्या जेहूतो धान्यादि लावीने राजे जेवा प्रदेशो, जलमार्ग तथा स्थलमार्ग जे जन्नेमाथी जेड मार्ग वाणु पत्तन, जे गधानी हन्तरेनी मध्याथी युक्त, तथा " थिमिय मेयणीय " स्वयंके अने परयंकेना लायथी रहित भूमिवाणा तथा " एगच्छत्त " जेड राजवाणा, चक्रवर्त्ति पद प्राप्त ज्यो पहिला मांडलिक गन्त तरीके पर्वतो तथा नगरो सहित " भरह " भरतक्षेत्र पत्र सत्ता लोगवीने, तथा " ससागर वसुह भुजिऊण " चक्रवर्त्ति पद प्राप्त ज्यो पछी समुद्र सहित आभी पृथ्वीने-छ जड वाणा भरत क्षेत्रने पणु लोगवीने " अपरि-मियमणत-तण्ह-मणुगय-महिच्छार-निरयमूलो " अपरि-

भाषा प्रसिद्धानि, 'कुपिय' कुप्यानि-गृहोपकरणानि आसन्दीपन्यद्रकादीनि 'धन'
धनानि-गणिमादीनि 'धन' धान्यानि-शाल्यादीनि, 'पाण' पानानि=दुग्धादीनि,
'भोग' भोजनानि-अशनादीनि 'आन्ठा' यग 'आन्ठा'दनानि-वस्त्रक
म्बलादीनि, 'गध' गन्धा-कोष्ठपुटादि सुगन्धिद्रव्यविशेषाः, 'मल्ल'
माल्यानि=पुष्पदीनि 'गध' गन्धा-कोष्ठपुटादि सुगन्धिद्रव्यविशेषाः,
'मल्ल' माल्यानि=पुष्पादीनि, 'मायण' भाजनानि-मथलीकटोरादीनि, 'भवन'
भवनानि-प्रासादगृहादीनि, एतेषा द्वन्द्वः, तेषां यो 'विहि' विधि-विधानम्-
उपार्जनं लक्षणं, त 'चे' एव=अपि, एव शब्दोऽप्यर्थः, तमपि 'बहुविधिय'
बहुविधिकम्-अनेकरूपकारम् 'भुजिऊण' भुज्या=उपभुज्य इत्यग्रेण सन्त्य, तथा
'भरह' भरत = भरतक्षेत्रं च भुजता = कोटश भरतक्षेत्रमित्याह ? — 'नग'
नगर' इत्यादि । 'नगनगरनिगमजण' यपुरवरदोणमुहखेडकब्बडमडवसवाहण
पट्टणसहस्सपरिमडिय 'नग-नगर-निगम-जनपद-पुरवर-दोणमुहखेड-कब्बट-
मडव-सवाह-पत्तन सहस्सपरिमण्डितम्, तत्र- 'णग' नगाः-पर्वता. 'गगर'
नगराणि करवर्जितपुराणि, 'निगम' निगमाः=वणिग्निवासस्थानानि, 'जणवय'
जनपदा=देशा 'पुरवर' पुरवराणि=नगरश्रेष्ठानि राजधान्यादीनि, 'दोणमुह'

कुरसी पलग आदि, गणिमादिक धन, शाल्यादिक धान्य, दुग्धादिरूप
पान, भोजन, वस्त्र, कम्बल आदि आच्छादन, कोष्ठपुट आदि सुगन्धित
द्रव्यविशेष, पुष्प, स्थाली कटोरा आदि भाजन, प्रासाद गृह आदि भवन,
इन सब पदार्थों को उपार्जन आदि करने रूप (बहुविधिय चेव) अनेक
प्रकार की विधि को भी (भुजिऊण) भोग करके, तथा (नगनगर-
निगमजणवय पुरवर-दोणमुह-खेड-कब्बड-मडव-सवाह पट्टणसहस्स
परिमडिय) नग-पर्वत, नगर-अष्टादश प्रकार के कर से रहित पुर,
वणिग्जनों के निवास स्थानरूप निगम, जनपद-देश, राजधानी आदि

शय्या, आसन, वाहन, कुप्य-पुरसी पलग आदि घरनु राख रथीलु, सोना
भंडार आदि धन, शोभा आदि धान्य, दूध आदि पेय द्रव्यो, लोहन, वस्त्र,
क्रमण आदि ओढवाना साधनो, कोष्ठपुट आदि सुगन्धित द्रव्यो, पुष्प, थाणी
वाटेका आदिवासणो, प्रासाद गृह अने भवन, ओ सधणा पदार्थोनु उपार्जन
करवाइप " बहुविधिय चेव " अनेक प्रकारे तेनो " भुजिऊण " उपभोग
करीने, तथा " नगनगरनिगमजणवय - पुरवर - दोणमुह - खेड- कब्बडमडव-
सवाह-पट्टण-सहस्स-परिमडिय " नग-पर्वत, नगर अठार प्रकारना कुथी
रहित शहर, वेपारीओना निवासस्थानइप निगम, जनपद- देश राजधानी

द्रोणमुखानि= जलपथ स्थलपथगम्याः पुरविशेषाः, 'खेड' खेडानि-धूलीप्राकार
युक्तानि, 'कर्वड' कर्कटानि=कृत्स्नतनगराणि 'मडन' मडम्बानि-दूर दूर
वसति युक्ता प्रदेशाः, 'सवाह' सवाहाः=यत्र कृषका धान्यादिक्रमानीय स्था-
पयन्ति ते 'पट्टण' पत्तनानि-जलस्थल पथान्यतरपथयुक्तानि निवासस्थलानि,
एतेषां द्रव्यः, एषा यत्सदृश तेन मण्डित-शोभित यत्तत्तादृश, तथा 'धिमियमेय-
णीय' म्तिमितमेदिनीक-म्तिमिता = स्वचक्रपरचक्रमयवर्जिता, मेदिनी-भूमि
र्यस्मिन् तत्तादृशम्, तथा 'एगच्छत्त' एगच्छन्म्-एकराजकमित्यर्थः, चक्र-
वर्त्तिपदप्राप्तेः प्राक् माण्डलिकत्वे एतादृशं भरतक्षेत्रं परिभुज्येत्यर्थः, तथा
'ससागर' सागरसहिताम् 'वसुह' वसुधा-समग्रा पृथ्वीं च चक्रवर्त्तिपदप्राप्त्य-
नन्तरं भुक्त्वा, एतद्भोगेऽपीत्यर्थः, 'अपरिमियमणततण्हमणुगयमहिच्छसारनि-

धेष्टनगर, जलपथ, स्थलपथ इन दोनों से गम्य स्थान रूप पुरविशेष धूली
प्राकार से युक्त खेड, कृत्स्नतनगररूप कर्वड, दूर दूर वसति से युक्त
प्रदेशरूप मडन, सवाह-जहां पर कृषकजन धान्यादि लाकर रखते हैं
ऐसे प्रदेश, जल पथ तथा स्थलपथ इन दोनों में किसी एक पथ से
युक्त पत्तन, इन सब की हजारों की संख्या से मण्डित, तथा (धिमिय-
मेयणीय) स्वचक्र और परचक्र के भय से वर्जित भूमि से युक्त तथा
(एगच्छत्त) एक राजा वाले, चक्रवर्त्ति पद की प्राप्ति के पहिले माण्डलिक-
पनेमें नगनगरादि सहित (भरह) भरतक्षेत्र को भोग करके, तथा
(ससागर वसुह भुजि ऊण) चक्रवर्त्ति पद की प्राप्ति के अनन्तर समुद्र-
सहित समस्त पृथ्वीको पटखड मण्डित भरतक्षेत्र को भी भोग करके
(अपरिमियमणततण्हमणुगयमहिसारनिरयमूलो) अपरिमित-प्रमाण

आदि श्रेष्ठ नगर, जलमार्ग तथा जमीनमार्ग प्रवेश करी शक्य ऐसे शहर
धूनी जिला वाणु जेड, कृत्स्न नगर रूप कर्वट जेनी आसपास धेरे हर
सुधी गांवो न होय ऐसे मडन, सवाह-ज्या जेइतो धान्यादि लावीने राखे
ऐसा प्रदेशो, जलमार्ग तथा स्थलमार्ग ऐ जन्नेभाथी जेड मार्ग वाणु पत्तन,
ऐ अधानी डलरोनी मज्याथी युक्त, तथा " धिमिय मेयणीय " स्वयंके अने
परयकेना साथी रहित भूमिवाणा तथा " एगच्छत्त " जेड राजवाणा, चक्रवर्त्ति
पद प्राप्त कर्या पडेला मांडलिक गल्ल तरीजे पर्वतो तथा नगरो सहित " भरह "
भरतक्षेत्र पर सत्ता लोगवीने, तथा " ससागर वसुह भुजिऊण " चक्रवर्त्ति पद
प्राप्त कर्या पछी समुद्र सहित आभी पृथ्वीने-छ भंड वाणा भरत क्षेत्रने
पछु लोगवीने " अपरि-मियमणत-तण्ह-मणुगय-महिसार-निरयमूलो " अपरि-

ખાયા પ્રસિદ્ધાનિ, 'કુપિય' કુપ્યાનિ-ગૃહોપકરણાનિ આસન્દીપત્યદ્વાદીનિ 'ધન' ધનાનિ-ગણિમાદીનિ 'ધન' ધાન્યાનિ-શાલ્યાદીનિ, 'પાણ' પાનાનિ=દુગ્ધાદીનિ, 'ભોગ' ભોજનાનિ-અન્નાદીનિ 'આન્ઝાયગ' આન્ઝાદનાનિ-વસ્ત્રકમ્બલાદીનિ, 'ગધ' ગન્ધા-કોષ્ઠપુટાદિ સુગન્ધિદ્રવ્યવિશેષાઃ, 'મલ્લ' માલ્યાનિ=પુષ્પદીનિ 'ગધ' ગન્ધા-કોષ્ઠપુટાદિ સુગન્ધિદ્રવ્યવિશેષાઃ, 'મલ્લ' માલ્યાનિ=પુષ્પાદીનિ, 'માયણ' માજનાનિ-સ્થલીકટોરાદીનિ, 'ભવજ' ભવનાનિ-પ્રાસાદગૃહાદીનિ, एतेषा द्वन्द्वः, तेषां यो 'त्रिहि' त्रिधि-विधानम्-उपार्जनानि लक्षण, त 'चेर' एव=अपि, एव शब्दोऽप्यर्थकः, तमपि 'बहुविधिय' बहुविधिरूप-अनेकरूपकारम् 'भुजिऊण' भुज्या=उपभुज्य इत्यग्रेण सन्त्य, तथा 'भरह' भरत = भरतक्षेत्र च भुक्ता = कोटश्च भरतक्षेत्रमित्याह ? — 'नग' नगर 'इत्यादि । 'नगनगरनिगमजणयपुरवरदोणमुहखेडकम्बडमडवसवाह' पट्टणसहस्सपरिमडिय ' नग-नगर-निगम-जनपद-पुरवर-दोणमुखखेट-कर्बट-मडव-सवाह-पत्तन सहस्सपरिमण्डितम्, तत्र- 'नग' नगाः-पर्वताः 'नगर' नगराणि करवर्जितपुराणि, 'निगम' निगमाः=गणिग्न्यासस्थानानि, 'जणवय' जनपदा=देशा 'पुरवर' पुरवराणि=नगरश्रेष्ठानि राजधान्यादीनि, 'दोणमुह'

કુરસી પલગ આદિ, ગણિમાદિક ધન, શાલ્યાદિક ધાન્ય, દુગ્ધાદિરૂપ પાન, ભોજન, વસ્ત્ર, કમ્બલ આદિ આન્ઝાદન, કોષ્ઠપુટ આદિ સુગન્ધિત દ્રવ્યવિશેષ, પુષ્પ, સ્થાલી કટોરા આદિ માજન, પ્રાસાદ ગૃહ આદિ ભવન, इन सप्त पदार्थों को उपार्जन आदि करने रूप (बहुविधिय चेव) अनेक प्रकार की विधि को भी (भुजिऊण) भोग करके, तथा (नगनगर-निगमजणवय पुरवर-दोणमुह-खेड-कम्बड-मडव-सवाह पट्टणसहस्सपरिमडिय) नग-पर्वत, नगर-अष्टादश प्रकार के कर से रहित पुर, 'गणिगजनों' के निवास स्थानरूप निगम, जनपद-देश, राजधानी आदि

શાલ્યા, આસન, વાહન, કુપ્ય-પુરસી પલગ આદિ ધરતુ રાગ રચીલુ, સોના મહેર આદિ ધન, ચોખા આદિ ધાન્ય, દૂધ આદિ પેય દ્રવ્યો, લોળન, વસ્ત્ર, કામળ આદિ ઓઢવાના સાધનો, કોષ્ઠપુટ આદિ સુગન્ધિત દ્રવ્યો, પુષ્પ, થાળી વાટકા આદિવાસણો, પ્રાસાદ ગૃહ અને ભવન, એ સઘળા પદાર્થોતુ ઉપાર્જન કરવારૂપ " બહુવિધિય ચેવ " અનેક પ્રકારે તેનો " ભુજિऊण " ઉપભોગ કરીને, તથા " નગનગરનિગમજણવય - પુરવર - દોણમુહ - ખેડ - કમ્બડમડવ-સવાહ-પટ્ટણ-સહસ્સ-પરિમડિય " નગ-પર્વત, નગર અઠાર પ્રકારના કરથી રહિત શહેર, વેપારીઓના નિવાસસ્થાનરૂપ નિગમ, જનપદ = ની

त्वक्पत्रपल्लवाः, तेषां धर-धारकः । तत्रा 'जस्त' यन् परिग्रहतरः 'काम-
भोगा' कामाभोगा एव 'पुष्पफल' पुष्पफलानि । तत्रा- 'आयासविस्रणा-
कलहपकपियगसिहरो' 'आयामविस्रणाकलहप्रकम्पिताग्रशिखरः-आयासः=
शरीरश्रमः, विस्रणा=मानसी पीडा, कलहः=चनभण्डनम्, एत एव प्रकम्पित-
मग्रशिखरम्=अग्रभागो यस्व सः, तथा 'नरवहसपूजिओ' नरपतिसपूजितः=
भूततिपरिसेवितः, तथा - 'बहुजनस्स हिययदइओ' बहुजनस्य हृदयदयितः-
अनेकजनपल्लभः इत्यर्थः, तत्रा-अय परिग्रह तरुः-'इमस्स' अस्य-प्रत्यक्षस्य
'मोक्खवरमुत्तिमग्गस्स' मोक्षवरमुक्तिमार्गस्य-मोक्षस्य क-श्रेष्ठो यो मुक्तिरूपो
निर्लोभतारूपो मार्गः=उपायस्तस्य 'फलहभूओ' अर्गलाभूतः-मोक्षस्यावरोधक-
फाद्यभूतो वर्त्तने, इत्येव स्वरूप 'चरिम अहम्मद्वार' चरिमधर्मद्वारम्=अन्तिम-
मधर्मद्वारम् । एतत्कवनेन यादृशेति प्रथममन्तरद्वारमुक्तम् ॥ सू० १ ॥

मायाचारी ही जिसकी माल है, पत्र हैं और पल्लव हैं । (जस्त पुष्पफल
कामभोगा) कामभोग ही जिसके पुष्प और फल हैं । (आयासविस्र-
णाकलहपकपियगसिहरी) आयास शारीरिकश्रम विस्रणा-मानसिक
पीडा, और कलह, ये ही जिस के प्रकपित अग्रभाग हैं (नरवहसपूजिओ)
तथा यह परिग्रहरूप वृक्ष भूपतियों द्वारा परिसेवित है, -और (बहुजन-
स्सहिययदइओ) अनेक जनों को अत्यंत प्यारा है, (इमस्स मोक्खवर
मुत्तिमग्गस्स फलहभूओ) तथा यह परिग्रहरूप वृक्ष मोक्ष के श्रेष्ठ
मुक्तिरूप-निर्लोभतारूप-मार्ग का अर्गला रूप है । (चरिम अहम्मद्वार)
ऐसा यह पांचवा अन्तिम अधर्मद्वार है ।

भावार्थ—परिग्रह नाम ममत्वभाव का है । इसकी दूसरी सजा
मूर्च्छा भी है । इस मूर्च्छारूप तृष्णा का अन्त नहीं है । परिग्रह के

मायाचारी ५ तेनी छल पान अने पल्लव छे " जस्त पुष्पफल कामभोगा "
कामभोग ५ तेना पुष्प अने फल छे " आयास विस्रणाकलहपकपियग
सिहरो " आयास-शारीरिकश्रम, विस्रणा-मानसिक पीडा अने कलह, ये ५
तेना डोलायमान अग्रभाग छे " नरवह सपूजिओ " तथा आ परिग्रहइय
वृक्षनु नृपो सेवन करे छे अने " बहुजनस्स हिययदइओ " ते अनेक लोकाने
अत्यंत प्रिय लागे छे, " इमस्स मोक्खवरमुत्तिमग्गस्स फलहभूओ " तथा आ
परिग्रह इय वृक्ष मोक्षना श्रेष्ठ मुक्तिइय-निर्लोभताइय मार्गना आडे आग-
गीया जेवु छे " चरिम अहम्मद्वार " जेवु आ पायनु अधर्म द्वार छे

भावार्थ—ममत्व लावने परिग्रह कहै छे तेनु नाम मूर्च्छा पणु छे आ
मूर्च्छाइय तृष्णाने पार ५ होता नथी परिग्रहना पल्लव इमायेव एव

રમ્યમૂલો ' અપરિમિતાનન્તતૃષ્ણાનુગતમહેચ્છાસારનિરમ્યમૂલઃ, અપરિમિતા=પ્રમાણ-
રહિતા યાઽનન્તતૃષ્ણા તયાઽનુગતા યા મહેચ્છા = અપ્રાપ્તાર્યામિતિપરુપા તસ્યાઃ
સાર=સ્થિરાંશરૂપો યો નિરમ્યો દુર્ગતિ રા ણ્વ મૂલ યમ્ય પરિગ્રહતરો યઃ સઃ
તથોક્ત, પુનઃ કીદશ પરિગ્રહતરુસ્તિયાહ—'લોભકલિક્ષાયમદહ્મકવધો' લોભ-
કલિક્રુપાયમદાસ્કન્ધઃ=લોભઃ, કલિઃ=યુદ્ધમ્, ક્રુપાય - ક્રોધમાનમાયારૂપચ
મહાન્ સ્કન્ધો યસ્ય સ, યદપિ ક્રુપાય ગ્રહણેનૈવ લોભો ગતાર્થ, તથાપિ તસ્ય પ્રાધા
ન્ય રૂપાપનાર્થે પૃથગુપાદાનમ્ । તથા 'ચિંતામયનિચિય વિઝલસાલો' ચિન્તાશ્રત
નિચિતવિપુલશાલઃ—ચિન્તાશ્રતાનિ નિચિતાનિ—એકત્રીકૃતાન્યેવ વિપુલા—વિશાલા
શાલાઃ—શાલા યસ્ય સ 'ચિન્તાશ્રતરૂપવિપુલશાલાસમન્વિતઃ । તથા—'ગારવ
પવિરલ્લિયગ્ગ વિહવો' ગૌરવપવિરલ્લિયાગ્રવિટપ - 'ગારવ' ગૌરવાણિ=
ઋદ્ધિરસસાતરૂપાણ્યેવ 'પવિરલ્લિય' વિસ્તારયન્ત, અગ્ર દેશીશબ્દઃ 'અગ્ર-
વિહવ' અગ્ર વિટપાઃ=શાલામધ્યભાગાગ્રાણિ યસ્ય સઃ, તથા 'નિયઢિતયા પત્ત
પલ્લવધરો' નિકૃતિત્વરૂપપલ્લવધરઃ—નિકૃતિ—માયા, સૈવ 'તયાપત્તપલ્લવ'

રહિત-એસી અનન્તતૃષ્ણા સે અનુગત અપ્રાપ્ત અર્થ કી અમિલાષ રૂપ
મહેચ્છા કા સાર-સ્થિરાંશરૂપ જો નિરમ્ય-દુર્ગતિ હૈ વહ દુર્ગતિ હી જિસ
પરિગ્રહરૂપ તરુ કા મૂલ હૈ (લોભકલિક્ષાયમદહ્મકવધો) તથા જિસકે
મહાન્ સ્કન્ધ, લોભ-લાલચ, કલિ-યુદ્ધ એવ ક્રોધ, માન, માયા, કષાય
ચે હૈ । યદપિ ક્રુપાય કે ગ્રહણ સે લોભ કા ગ્રહણ હો જાતા હૈ ફિર બી
ઉસકા જો યહા પૃથક્ રૂપ સે ગ્રહણ કિયા ગયા હૈ ઉસકા તાત્પર્ય ઉસકી
પ્રધાનતા દિખલાને કા હૈ । તથા (ચિંતામયનિચિયવિઝલસાલો) જિસકી
વિશાલ શાલાઈ એકત્રીભૂત સેંકડો ચિન્તઈ હૈ । તથા (ગારવપવિરલ્લિયગ્ગ-
વિહવો) ઋદ્ધિ રસસાતરૂપ ગૌરવ હી જિસકે વિસ્તાર યુક્ત અગ્રવિટપ હૈ-
શાલા કે મધ્યભાગ એવ અગ્રભાગ હૈ । (નિયઢિતયાપત્તપલ્લવધરો) નિકૃતિ-

મિત-પ્રમાણ રહિત તૃષ્ણાથી અપ્રાપ્ત વસ્તુ પ્રાપ્ત કરવાની અભિલાષા રૂપ મહે
ચ્છાને સાર-સ્થિરાંશરૂપ જે દુર્ગતિ છે તે દુર્ગતિ જ તે પરિગ્રહરૂપી વૃક્ષવ
મૂળ છે, “લોભકલિક્ષાયમદહ્મકવધો” લોભ, -લાલચ, કલિ-યુદ્ધ અને ક્રોધ,
માન, માયા, કષાય આદિ તે વૃક્ષના મહાન સ્કન્ધો છે જે કે કષાયમા લોભને
સમાવેશ થઈ જાય છે છતાં પણ તેને અહીં અલગ રીતે ગ્રહણ કરવામા
આવેલ છે તેનો હેતુ તેની પ્રધાનતા બતાવવાનો તથા “ચિંતામય નિચિય વિઝલ
સાલો” સેંકડો એકત્રિત ચિંતાઓ તેની શાખાઓ છે તથા “ગારવ પવિરલ્લિ
યગ્ગવિહવો” ઋદ્ધિરસ સાતરૂપ ગૌરવ જ તેના વિસ્તાર યુક્ત અગ્રવિટપ છે-
શાખાના મધ્ય ભાગ અને અગ્રભાગ છે “નિયઢિતયાપત્તપલ્લવધરો” નિકૃતિ-

अधुना यन्नामेति द्वितियमन्तरद्वारमाह—

मूलम्—तस्स नामाणि गोणाणि हुंति तीस, त जहा-
परिग्रहो १, सचयो २, चयो ३, उवचयो ४, निहाणं ५,
संभारो ६, संकरो ७ एवं आचारो ८, पिडो ९ दव्वसारो
१०, तहा महिच्छा ११, पडिवंधो १२, लोहप्पा १३, महट्ठी
१४, उवगरण १५, सरक्खणाय १६, भारो १७, संपायुपायको
१८, कलिकरडी १९, पवित्तरो २०, अणत्थो २१, सथवो २२
अगुत्ती २३, आयासो २४, अविओगो २५, अमुत्ती २६, तण्हा
२७, अणत्थगो २८, असत्थी २९ असतोसे ३०, त्तिविय,
तस्स एयाणि एवमादी नामधेजाणि हुंतितीसं ॥ सू० २॥

टीका—‘ तस्य य ’ इत्यादि—

‘ तस्स ’ तस्य—परिग्रह नामक पञ्चमार्धमद्वारस्य च ‘ नामाणि ’ नामानि
‘ इमानि—अनुपद वक्ष्यमाणानि ‘ गोणाणि ’ गौणानि—गुणनिष्पन्नानि ‘ हुति ’
भजन्ति, क्रियत्स्वरयकानि भजन्ति ? इत्याह—‘ तीस ’ त्रिंशत्संख्यकानीति,
‘ तजहा ’ तजया—‘ परिग्रहो ’ परिग्रहः—परिशुद्धते इति परिग्रहः—हिरण्य
सुवर्ण धनधान्यादि, १ ‘ सचयो ’ सचयः—ग्रन्थान्यादि राशीना समूही करणम् २
‘ चयो ’ चय—एकैकमिति कृत्वाऽऽदानम् ३, ‘ उवचयो ’ उपचयः—एकैकमिति-
कृत्वाऽऽदाना धनग्रन्थादिना राशिकरणम् ४, ‘ निहाण ’ निगान श्रम्यादी

अथ “ यन्नाम ” इति द्वितीय अन्तर्द्वार को सूत्रकार कहते हैं—
‘ तस्स नामाणि ’ इत्यादि० ।

टीकार्थ—(तस्स) इस परिग्रह के (गोणाणि नामाणि तीस हुति)
गुण निष्पन्न तीस नाम ह । (तजहा) वे इस प्रकार हैं—(परिग्रहो १,
सचयो २, चयो ३, उवचयो ४, निहाण ५, संभारो ६, संकरो ७, एवं

हुवे “ यन्नाम ” ओ चीन्हा अन्तर्द्वारिनु सूत्रकार वर्णन करे थे—

“ तस्स नामाणि ” इत्यादि

टीकार्थ—“ तस्स ” आ परिग्रहना “ गोणाणि नामाणि तीस हुति ” शुष्पा-
नुभार तीस नामो छे “ तजहा ” ते तीस नामो आ प्रभाण्णे थे—“ परि-
ग्रहो १ सचयो २ चयो ३ उपचयो ४ निहाण ५ संभारो ६ संकरो ७ एवं आचारो ८

પદે મેં પાંચા જુઆ પ્રાણી અપની અનન તૃણામ્રો ની પૂર્તિ કરને મેં હી લગા રહના હૈ । ઉસકી કોઈ મી તૃણા જ્ઞાન નહીં હોતી હૈ । યદિ કદા-
ચિત્ કોઈ તૃણા જ્ઞાંત મી હો જાવે તો દૂમરી તૃણા ઉમરે સમશ્ર
મુંહ ફાઢકર આ જાતી હૈ, ઓર ઉસકી પૂર્તિ કરને મેં યહ લગ
જાતે હૈ । હમ તરહ કરતે ૨ યહ પ્રાણી ઉનકી પૂર્તિ કરને મેં આસ-
ક્તિ સે વધ હોતા જાતા હૈ ઓર અપના ત્રિવેક ગો વંટતા હૈ ।
વિવેક કા હો પૈઠના પરિગ્રહ હૈ । યદા પર સૂત્રકાર ને હમ પરિગ્રહરૂપ
પંચમ આસ્રવ દ્વાર કા વર્ણન વૃક્ષ કે રૂપક સે ક્રિયા હૈ । પરિગ્રહી જીવ
છોટી, વડી, જહ, ચેનન, ચાલ યા આન્તરિક્ષ ચાહે જો યસ્તુ હો, ઓર
કદાચિત્ ન મી હો તો મી ઉસમેં વધ જાતા હૈ । નાના પ્રકાર કે મણિ
આદિ પદાર્થો કો ભરતણ્ડ કી પૂર્ણ ત્રિભૂતિ કો ભોગ કરકે મી પરિગ્રહી
જીવ કી તૃણા અનવરત અજ્ઞાત હી રહતી હૈ । હમ વૃક્ષ કી જહ,
સ્કંધ, વિશાલ શાખાળે, અગ્રવિટપ, છાલ પત્ર, પલ્લવ, પુષ્પ, ફલ, આદિ
વ્યા ૨ હૈં યહ સવ વિષય હી હસ સૂત્ર મેં વિવેચિત્ ક્રિયા ગયા હૈ ।
હસ તરહ કે કથન સે સૂત્રકાર ને પરિગ્રહ કા ચાદશ નામના જો પ્રથમ
અન્તર્દ્વાર હૈ ઉસકા વર્ણન ક્રિયાહૈં, વ્યો કિ હસ દ્વાર મેં સ્વરૂપ કા કથન
હોતા હૈ, વહ યહા પર અઝી તરહ સે દિવલા દિવા ગયા હૈ ॥ સૂ. ૧ ॥

પોતાની અનન તૃણાઓ પૂરી ડરવામા જ મડ્યા રહે છે તેની કોઈ પણ તૃણા
જ્ઞાત પડતી નથી જો કોઈ તૃણા જ્ઞાત પડી તો તેની જગ્યાએ બીજી તૃણા
મોહુ કાઢીને તૈયાર થઈ જાય છે, અને તે સંતોષવાને તે જીવ પ્રવૃત્ત થાય
છે આમ કરતા કરતા તેની પૂર્તિ કરવામા આસક્તિથી બધાઈ જાય છે અને
પોતાની વિવેક બુદ્ધિ શુભાવી કે છે વિવેકને જોઈ નાખવો તે પરિગ્રહ છે
અહીં સૂત્રકારે પરિગ્રહ નામના પાંચમા આસ્રવ દ્વારનું વર્ણન પરિગ્રહને વૃક્ષનું
રૂપક રૂઢિને કર્યું છે પરિગ્રહી જીવ, નાની, મોટી, જડ, ચેતન, બાહ્ય કે
આંતરિક ગમે તે પ્રકારની ચીજમા આસક્ત બની જાય છે વિવિધ પ્રકારના
મણિ આદિ પદાર્થોના તથા ભરતણ્ડની સંપૂર્ણ સમૃદ્ધિનો ઉપભોગ કરીને
પણ પરિગ્રહી જીવની તૃણા સતત અજ્ઞાત જ રહે છે આ પરિગ્રહરૂપ વૃક્ષના
મૂળ, થડ, વિશાળ શાખાઓ, અગ્રવિટપ, છાલ, પાન, પલ્લવ, પુષ્પ, ફળ
વગેરે શુ શુ છે, તે બધાનું વિવેચન આ સૂત્રમા ડરવામા આવ્યું છે આ
પ્રમાણેના ડયન વડે સૂત્રકારે પરિગ્રહના ચાદશ (ડેવા પ્રકારનું) નામના પહેલા
અંતર્દ્વારનું વર્ણન કર્યું છે, કારણ કે આ દ્વારમા સ્વરૂપનું કથન થાય છે તે
સ્વરૂપનું વર્ણન અહીં સુદર રીતે ડરવામા આવ્યું છે ॥ સૂ. ૧ ॥

एवम्-यथा धनप्राप्तिर्भवेदेवम्, आचारः-आचरणम् ८, ' पिण्डो ' पिण्ड = जन-
धान्यादीना समुदायः ९, ' द्रव्यसरो ' द्रव्यसार.-द्रव्याणामेव सर्वोत्कृष्टपदार्थ
त्वेन परिज्ञानम् १०, ' तदा ' तया ' महिच्छा ' महेच्छा-अपरिमितमाच्छा ११,
' पडिवधो ' प्रतिबन्धः-आमक्तिकारकः १२, ' लोहृष्पा ' लोभात्मा-लोभ-

ધતઃ હસકા નામ સભાર હૈ । પરિગ્રહી જીવ ધાન્ય આદિ પદાર્થોં કો
કોષ્ઠ આદિ મેં ખરકર રાખ દેતા હૈ-તાકિ આવશ્યકતા પડને પર વે કામ
મેં લાવે જા સકે-હસલિયે હસકા છઠા નામ સભાર હૈ ૬ । પરિગ્રહી
જીવ સુવર્ણ આદિ દ્રવ્યકે અધિક હો જાને પર ડનકા અગ્નિ મેં ગલવા-
કર પાશા કરવા લેતા હૈ, હસલિયે હસકા સાતવા નામ સકર હૈ ૭ । ધન
કમાને કી લાલસા સે પરિગ્રહી જીવ ણેસા આચરણ કરતા હૈ કિ જિસસે ધન
કા લાભ અધિક માત્રા મેં હોતાર હૈ, હસલિયે હસકા આઠવા નામ એવમાચાર
હૈ ૮ । પિણ્ડ હસકા નામ હસલિયે હૈ કિ હસ મેં ધન ધાન્યાદિ પદાર્થોં કા
સમુદાય પિણ્ડરૂપ સે ઘર મે રહા કરતા હૈ ૯ । પરિગ્રહી જીવ ધનાદિ
પદાર્થોં કો હી સર્વોત્તમ માનતા હૈ હસલિયે ઇનકા નૌવા નામ દ્રવ્યસાર
હૈ ૧૦ । પરિગ્રહી જીવ કી હચ્છાઈ આકાશ કી તરહ અનત હુઆ
કરતી હૈ હસલિયે હસ કા નામ મહેચ્છા હૈ ૧૧ । મણુપ્યોં મેં હસ પરિ-
ગ્રહ સે હી પર કે દ્રવ્યોં મેં આસક્તિ જગતી હૈ હસલિયે હસકા નામ
પ્રતિબધ હૈ ૧૨ । પરિગ્રહી જીવ મે લોભ કી માત્રા વહુત અધિક હોતી

ધાન્ય આદિ પદાર્થોં ભરીને રાખી મુકાય છે, તેથી તેનું નામ ' સભાર ' છે
પરિગ્રહી જીવ ધાન્યાદિ પદાર્થોંને કોઈ આદિમા ભરી રાખે છે કે જેથી જરૂર
પડે ત્યારે તેના ઉપયોગ કરી શકાય, તેથી તેનું છઠું નામ ' સકર ' છે
(૭) પરિગ્રહી જીવ સુવર્ણ આદિ દ્રવ્ય વધી જાય છે ત્યારે તેને અગ્નિમા
ગળાવીને તેના પાશા પકાવી લે છે, તેથી તેનું સાતમું નામ ' સડર ' છે
(૮) ધન કમાવાની લાલસાથી પરિગ્રહી જીવ એવું આચરણ કરે છે કે જે
આચરણથી ધન પ્રાપ્તિ વધુ પ્રમાણમાં થતી રહે, તેથી તેનું આઠમું નામ એ-
વમાચાર છે (૯) તેનું નવમું નામ ' પિંડ ' એ કારણ છે કે પરિગ્રહી જીવ
ધન ધાન્યાદિ પદાર્થોંના જથ્થો પિંડરૂપે ઘરમાં રાખ્યા કરે છે (૧૦) પરિ-
ગ્રહી જીવ ધનાદિ પદાર્થોંને જ સર્વોત્તમ માને છે, તેથી તેનું દસમું નામ
' દ્રવ્યસાર ' છે (૧૧) પરિગ્રહી જીવોની ઇચ્છાઓ આકાશની જેમ અનંત
હોય છે, તેથી તેનું નામ " મહેચ્છા " છે (૧૨) આ પરિગ્રહને કારણે જ
પર દ્રવ્યમાં માણુઓને આસક્તિ પેદા થાય છે તેથી તેનું નામ ' પ્રતિબધ ' છે
(૧૩) પરિગ્રહી જીવમાં લોભની માત્રા ઘણી જ વધારે હોય છે, તેથી તે

નિધાનરૂપેણ સ્થાપનમ્ ૫, 'સમારો' સમાર:-સન્નિયતે મમરણ યા સંમાર:-કોષ્ટાગ્રી
મરણમિત્યર્થઃ ૬, 'સંકરો' સકર-સકીર્યતે=સપિન્ડધને ઇતિ, સક્રર:-સુવર્ણ
રજતાદીન્ યદ્વો પરિદ્રવ્ય પાત્રકાદિસ્વરૂપમ્ ૭, 'એવ આયારો' ણમાચાર:-

આયારો ૮, પિંડો ૯, દન્વસારો ૧૦, તદા મહિચ્છા ૧૧, પઢિવધો ૧૨,
લોહપ્પા ૧૩, મહદ્દી ૧૪, ઉચ્ચગરણ ૧૫, સરક્ષણા ૧૬, મારો ૧૭,
સપાયુપાયકો, ૧૮, કલિકરહી ૧૯, પવિત્રરો ૨૦, અણત્યો ૨૧, સથવો
૨૨, અમુત્તી ૨૩, આયાસો ૨૪, અવિઓગો ૨૫, અમુત્તી ૨૬, તણ્હા ૨૭,
અણત્યગો ૨૮, આસત્યી ૨૯, અસતોસે ૩૦, ત્તિ વિય, તસ્સ ણ્યાણિ
એવમાઈ નામધેજ્જાણિ હૂતિ તીમ) હિરણ્ય, સુવર્ણ, ધન, ધાન્ય આદિ,
પદાર્થ ગ્રહણ કિયે જાતે છે હમલિયે એ પરિગ્રહ છે અતઃ હસકા પ્રથમ
નામ પરિગ્રહ છે ૧ । ધન ધાન્ય આદિકી રાગિયા હમમેં એકત્રિત કી
જાતી છે અતઃ હસ અપેક્ષા હસકા દ્વસરા નામ સચય છે ૨ । પરીગ્રહી
જીવ એક એક કરકે વસ્તુઓં કા સગ્રહ યા ગ્રહણ કરતા છે, હસ અપેક્ષા
હસકા તીસરા નામ વય છે ૩ । ઉપચય શબ્દ કા અર્થ વૃદ્ધિ છે, ક્રમ ક્રમ
કરકે કમાયે ગયે ધન ધાન્ય આદિ પદાર્થોં કા હસ ઉપચય મેં વર્ધન
હોતા છે હસલિયે હસકા ચૌથા નામ ઉપચય છે ૪ । જમીન આદિ મેં
ધનાદિદ્રવ્ય કો પરિગ્રહિ જીવ ગાડ દિયા કરતે છે, તાકિ ચૌર આદિ
સે હસકો રક્ષા હોતી રહે, હસલિયે હસકા પાંચવા નામ નિધાન છે ૫,
કોષ્ટ આદિ મેં જો વર્દિત ધાન્ય આદિ પદાર્થ ભરકર રચ દિયે જાતે છે,

પિંડો ૯ દન્વસારો ૧૦ તદા-મહિચ્છા ૧૧ પઢિવધો ૧૨ લોહપ્પા ૧૩ મહદ્દી ૧૪
ઉચ્ચગરણ ૧૫ સરક્ષણાય ૧૬ મારો ૧૭ સપાયુપાયકો ૧૮ કલિકરહી ૧૯
પવિત્રરો ૨૦ અણત્યો ૨૧ સથવો ૨૨ અમુત્તી ૨૩ આયાસો ૨૪ અવિઓગો ૨૫
અમુત્તી ૨૬ તણ્હા ૨૭ અણત્યગો ૨૮ આસત્યી ૨૯ અસતોસે ૩૦ ત્તિ વિ ય
તસ્સ ણ્યાણિ એવમાઈ નામધેજ્જાણિ હૂતિ તીસ " (૧) હિરણ્ય, સુવર્ણ, ધન,
ધાન્ય આદિ પદાર્થોં ગ્રહણ કરવામા આવે છે તેથી તે પરિગ્રહ છે તેથી તેનું
નામ 'પરિગ્રહ' છે (૨) ધન ધાન્ય આદિના ઢગલા તેમા એકત્ર કરાતા
હોવાથી તેનું બીજું નામ 'સચય' છે (૩) પરિગ્રહી જીવ એકે એકે વસ્તુ
ઓનો સગ્રહ કરે છે અથવા તેને ગ્રહણ કરે છે તેથી તેનું ત્રીજું નામ 'ચય'
છે (૪) ઉપચય શબ્દનો અર્થ વૃદ્ધિ થાય છે ક્રમે ક્રમે કમાયેલ ધન ધાન્ય
આદિ પદાર્થોંમા ઉપચયમા વર્ધન થાય છે, તેથી તેનું ચોથું નામ 'ઉપ
ચય' (૫) ચૌર આદિથી રક્ષણ કરવા માટે ધન આદિ દ્રવ્યને પરિગ્રહી લોકો
દાદી દે છે તેથી તેનું પાંચમું નામ 'નિધાન' છે (૬) કોષ્ટી આદિમા વધેલ

સસ્તવઃ=પરિચયઃ-પરિચયકારણત્વાત્ ૨૨, 'અગુત્તી' અગુત્તિઃ=તુષ્ણાયા અગોપનમ્ ૨૩, 'આયાસો' આયાસઃ=દુઃસ્વમ્, આયામહેતુત્વાત્પરિગ્રહોઽ પ્યાયાસઃ-ઉક્ત ૨૪, 'અવિઓગો' અવિયોગઃ-પ્રનાદરપરિત્યાગઃ ૨૫ 'અમુત્તી' અમુક્તિઃ-અનિર્લેખતા ૨૬, 'તળ્હા' તૃષ્ણા-ધનાદેરાકાદૃક્ષા ૨૭, 'અનર્થકો' અનર્થકઃ-અનર્થકારણત્વાત્ ૨૮, 'આસત્થી' આસક્તિઃ-મૂર્છા, તત્કારણત્વાત્ ૨૯,

મે લગા રહતા હૈં इसलिये इसका नाम प्रविस्तर है २० । परिग्रह अनेक अनर्थों का कारण रहता है इसलिये इसका नाम अनर्थ है २१ । परिग्रही जीवको अनेक जीवों के साथ सस्तवपरिचय रहता है। इसलिये परिचय का कारण होने से इसका नाम सस्तव है २२ । इसमें तृष्णाका गोपन नहीं होता है-अत इसका नाम अगुप्ति है २३ । परिग्रह की ज्वाला में जलते हुए जीव को बहुत अधिक आयासों दुःखों को भोगना पड़ता है इसलिये उनका हेतु होने से परिग्रह का नाम भी आयास है २४ । परिग्रही जीव में लीभ की अधिक से अधिक मात्रा होने के कारण वह धनादिक का परित्याग दान आदि सत्कृत्यों में भी नहीं कर सकता है इसलिये इसका नाम अवियोग है २५ । इस परिग्रही जीव में निर्लोभता नहीं होती है इसलिये इसका नाम अमुक्ति है २६ । धनादिक के आगमन-आय की आकांक्षा परिग्रही जीव के सदाकाल रहती है इस लिये इसका नाम तृष्णा है २७ । परिग्रह अनेक अनर्थों का कारण है इसलिये इसका नाम अनर्थक है २८ । मूर्च्छा का कारण होने से इसका

વિસ્તાર કરવામા લાગ્યો રહે છે, છેથી તેનુ નામ 'પ્રવિસ્તાર' છે (૨૧) પરિ ગ્રહ અનેક અર્થોનુ ધારણ અને છે, તેથી તેનુ નામ 'અનર્થ' છે (૨૨) પરિગ્રહી જીવને અનેક જીવની સાથે 'સસ્તવ' પરિચય થતો રહે છે, તેથી પરિચયનુ કારણ હોવાથી તેનુ નામ 'સસ્તવ' છે (૨૩) તેમા તૃષ્ણાનુ ગોપન થતુ નથી, તેથી તેનુ નામ 'અગુત્તિ' છે (૨૪) પરિગ્રહની જવાબામા જળતા જીવને ઘણા વધારે આયાસો-દુઃખો ભોગવવા પડે છે તેથી તે આયાસોના કારણરૂપ હોવાથી પરિગ્રહનુ નામ પણ "આયાસ" છે (૨૫) પરિગ્રહી જીવમા લોભની માત્રા વધારેમા વધારે હોવાને કારણે તેઓ દાન આદિ સત્કૃત્યોમા ધનને પરિત્યાગ કરી શકતા નથી તેથી તેનુ નામ 'અવિયોગ' છે (૨૬) તે પરિગ્રહી જીવમા નિર્લેખતા હોતી નથી, તેથી તેનુ નામ 'અમુક્તિ' છે (૨૭) ધનાદિ પદાર્થો મેળવવાની આકાંક્ષા પરિગ્રહી જીવને સદાકાળ રહે છે, તેથી તેનુ નામ 'તૃષ્ણા' છે (૨૮) પરિગ્રહ અનેક અનર્થોને માટે કારણરૂપ હોય છે, તેથી તેનુ નામ 'અનર્થક' છે (૨૯) મૂર્ચ્છા 'આસક્તિ' નુ કારણ

સ્વભાવ: ૧૩, 'મહત્તી' મહાર્તિ:; મહાર્તિ:કારણત્વાત્ ૧૪, 'ઉપકરણ' ઉપકરણ= સામગ્રી ૧૫, 'સરક્ષણ' સરક્ષણ ચ-ગ્રસીરાદીના સરક્ષણમિત્યર્થ: ૧૬, 'મારો' માર-અષ્ટ કર્મમારકારણમ્ ૧૭, 'મપાયુપાયમો' સપાતોપાયક:-સપાતાનાં-દુર્ગતી પ્રસ્થિતાનામ્ ઉપાયકો માર્ગભૂત: ૧૮, 'કલિકરણ્ડો' કલિકરણ્ડ-કર્મીનાં-કલહાનાં કરણ્ડ કારણપાત્રવિશેષ इव કલિકરણ્ડ ૧૯, 'પરિગ્રહો' પરિસ્તર:-ધનધાન્યાદિવિસ્તાર: ૨૦, 'અણત્યો' અનર્થ:-અનર્થકારણત્વાત્ ૨૧, 'સયવો'

હૈ, હસલિયે યહ પરિગ્રહ લોભાત્મા લોભ સ્વભાવ છે ૧૩। હસ પરિગ્રહ સે જીવ કો પઢી સે પઢી આર્તિયોં કા મામના કરના પઢતા હૈ અતઃ ઊન આર્તિયોં કા કરણ લાને સે યહ પરિગ્રહ મહાર્તિરૂપ હૈ ૧૪। હસ પરિગ્રહ કે પ્રભાવ સે હી વિવિધ પ્રકાર કી મામગ્રી જીવ ઇકત્રિત કરતા હૈ અતઃ હસકા નામ ઉપકરણ હૈ ૧૫। પરિગ્રહી જીવ અપને શરીર આદિ પદાર્થોં કી રક્ષા કરને મેં વિશેષ સાચાન રહતા હૈ। હસલિયે હસકા નામ સરક્ષણ હૈ ૧૬। પરિગ્રહી જીવ કે પરિણામોં કી સમ્મેશ-તા કે કારણ અષ્ટવિધ કર્મોં કા વધ યદ્યુત તીવ્ર હોતા હૈ હસલિયે હસકા નામ માર હૈ ૧૭। પરિગ્રહી જીવ કા પતન દુર્ગતિ મેં હોતા હૈ અતઃ દુર્ગતિ મેં પતન હોને કા યહ માર્ગભૂત હૈ હસલિયે હસકા નામ સંપાતોપાયક હૈ ૧૮। પરિગ્રહી જીવ કે અનેક શત્રુ ઉત્પન્ન હો જાતે હૈ હર એક કે સાથ કલહ આદિ હોને લગતે હૈ હસલિયે યહ પરિગ્રહ કલહોં કા એક પ્રકાર કા કરણ્ડપિટારા હૈ-હસલિયે હસકા નામ કલહકરણ્ડ હૈ ૧૯। પરિગ્રહી જીવ અપને ધન ધાન્ય આદિ પદાર્થોં કા વિસ્તાર કરને

પરિગ્રહ લોભાત્મા લોભ સ્વભાવ છે (૧૪) આ પરિગ્રહને લીધે જીવને મોટામા મોટી આશ્તોના સામનો કરવો પડે છે, તેથી એ આર્તિયો (આશ્તો) નું કારણ હોવાથી તે પરિગ્રહ મહાર્તિરૂપ છે (૧૫) તે પરિગ્રહના પ્રભાવથી જ વિવિધ પ્રકારની સામગ્રી જીવ એકત્રિત કરે છે, તેથી તેનું નામ 'ઉપકરણ' છે (૧૬) પરિગ્રહી જીવ પોતાના શરીર આદિ પદાર્થોના રક્ષણને માટે વધારે સાવચેત રહે છે, તેથી તેનું નામ 'સરક્ષણ' છે (૧૭) પરિગ્રહી જીવની વૃત્તિઓની સંકુચિત તાને કારણે અષ્ટવિધ કર્મોના બધ ઘણા જ તીવ્ર હોય છે, તેથી તેનું નામ 'માર' છે પરિગ્રહી જીવ દુર્ગતિમા પડે છે દુર્ગતિમા પતન કરાવવાના શક્ય હોવાને કારણે તેનું નામ 'સંપાતોપાયક' છે (૧૮) પરિગ્રહી જીવના અનેક શત્રુઓ પેદા થાય છે દરેકની સાથે તેને કલહ આદિ થયા કરે છે તે કારણે ને પરિગ્રહ કલહોના એક પ્રકારના ડરડિયા જેવો હોવાથી તેનું નામ 'કલહકરણ્ડ' છે (૨૦) પરિગ્રહ જીવ પોતાના ધન ધાન્ય આદિ પદાર્થોના

विहा जोडसिया ये देवा वहस्सइ चदेसर सुकसणिज्जरा
 राहुधम्मकेउ गुहा य अगासुका य तत्तवणिज्जरागवप्पुस
 जेयगहा जोडसियम्मि चारं चरंति केउयागइरइया अट्टावी
 सति विहा य नक्खत्त देवगणा णाणां संठाणं सठ्ठियाओ
 तारगाओ, ठियल्लेसां चारिणो य आविस्साममडलगइ
 उच्चरिचरा उड्डलोगवासी दुविहा वेमाणिया ये देवा सोहस्मी
 रिसाणं सणकुंसार माहिदं वमलोगलंतकं महांसुक्कसहस्सारं
 आणियपाणिय आणुच्चुर्या कप्पवरं विमाणवांसिणी
 वासुगणा ये वेज्जा अणुत्तरा य दुविहा कप्पातीया विमाण
 वासी महिद्धिया उत्तमा सुखरा एव चेते चिउड्विहासपरिसा
 वि देवा मंभार्थति भवणं वाहणजाणविमाणे सयणासणाणि
 ये णाणां विहंरथभूतणाणि ये पवरं पहरणाणि ये णाणा
 मणि पत्ताण्णोद्वं ये भायुणाविहं नाणां विहकामरुववेद
 विवयं अचलरगणसंघाए हीवसमुहे दिसाओ विदिसाओ
 लवेइअणि य वणसडे पक्खं गामनयसणि य आसमुंजाण
 क्कणणंणि य कूवसस्तलोयवाविद्धोहि ये देवकुलं संपेववि
 सहिमाइयाडं किंतेणाणि य पणिहिंता परिग्गह विउल्लद्वं
 सार देवा वि सइदगा न तित्ति न लुट्टि उवल्लभंति अचत्त
 विउल्लोभाभिभूयसन्ना

वासहर इक्खुगारवट्टपव्वयकुडलरुयगवरं माणुसुत्तरं कौ
 लीदहिलवणसलिलदहपतिरतिकस्थजणकसेलदेहिभुह ओवी
 सुप्पायकवणकविंत्तजसकवसुद्धिरिकूडवासी ॥ ५० ॥ ३॥

‘અસતોસેતિ યિ ય’ અસતોપઃ ૩૦, ક્ત્યપિ ચ ‘તસ્મ’ તસ્ય-પરિગ્રહ્ય
 ‘એયાણિ’ એતાનિ ‘અમાદિ’ અમાદીનિ-ઉક્તપ્રકારાણિ ‘નામોઽજ્ઞાણિ’
 નામધેયાનિ=નામાનિ’ હ્રુતિ, ભવન્તિ ‘તોસ’ ત્રિગત્ । પરિગ્રહસ્ય પરિગ્રહાય-
 સતોપાન્તાનિ ત્રિશબ્દનામધેયાનિ ભવન્તીત્યર્થઃ । અનેન ‘યન્નામેતી’ દ્વિતીયમન્તર-
 દ્વારસુક્તમ્ ॥ સૂ. ૨ ॥

અથ યથા યે પરિગ્રહં કુર્વન્તિ તાનાદ—‘ત ચપુણે’ ક્ત્યાદિ—

મૂલમ્—ત ચં પુણ પરિગ્રહં મમાયતિ લોભઘત્થા ભવણવર
 વિમાણવાસિણો પરિગ્રહ રૂઢી પરિગ્રહે વિવિહકરણબુદ્ધી
 દેવનિકાયા ય અસુરભુયગસુવન્નવિજ્જુજલણ-દીવ-ઉદહિ
 દિસિ-પવણ-થાણિય-અણપન્નિયપણપન્નિય ઇસિયાડય ભૂયવા-
 ઇય કંદિય મહાકદિયકુહળડ પતગ દેવાપિસાય-ભૂય-જલ્લ-
 રક્ષર-કિનર કિપુરિસ મહોરગગધ્વાય તિરિયવાસી । પચ-

નામ આસક્તિ હૈ ૨૯ । પરિગ્રહી લીવ કો જીવનભર સુખપ્રદ સતોષ
 નહીં હોતા હૈ અતઃ અસતોષકા હેતુ હોને સે ઇસકા નામ બી અસતોષ
 હૈ ૩૦ । ઇસ પ્રકાર ઇસ પરિગ્રહ કે યે પૂર્વોક્ત પ્રકાર સે ત્રીસ નામ હૈ ।
 ઇસ તરહ ઇસ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકાર ને “યન્નામ” યહ દ્વિતીય અન્તર-
 દ્વાર કહા હૈ ।

ભાવાર્થ—પરિગ્રહ નામકે પચમ આસ્રવ દ્વાર કે કિતને નામ ગુણ
 નિષ્પન્ન હો સકતે હૈ યદ્ વાત સૂત્રકાર ને ઇસ સૂત્ર દ્વારા પ્રદર્શિત કી
 હૈ । પરિગ્રહ સે હેઠર અસતોષ પર્યન્ત જો યે ત્રીસ નામ પ્રગટ કિયે હૈ
 વે કહીં તો કારણ મેં કાર્ય કે ઉપચાર સે ઓર કહીં કાર્ય મેં ૨ કારણ
 કે ઉપચાર સે બનાયે ગયે હૈ, એસા જાનના ચાહિયે ॥ સૂ. ૨ ॥

હોવાથી તેનું નામ ‘આસક્તિ’ છે (૩૦) પરીગ્રહી જીવને જીવનભર સુખપ્રદ
 સતોષ થતો નથી, તેથી અસતોષના કારણરૂપ હોવાથી તેનું નામ ‘અસતોષ’
 છે આ પ્રમાણે પરિગ્રહના પૂર્વોક્ત ત્રીસ નામ છે આ રીતે આ સૂત્રદ્વારા
 સૂત્રકારે ‘યન્નામ’ નામના બીજા અન્તર દ્વારનું કથન કર્યું છે

ભાવાર્થ—પરિગ્રહ નામના પાચમા આસ્રવ દ્વારના ગુણ પ્રમાણે કેટલા
 નામ હોઈ શકે છે તે બાબત સૂત્રકારે આ સૂત્રમાં દર્શાવી છે પરિગ્રહથી લઈને
 અસતોષ સુધીના જે ત્રીસ નામો પ્રગટ કર્યા છે તેમાંના કેટલાક કારણમાં
 કાર્યના ઉપચારથી અને કેટલાક કાર્યમાં કારણના ઉપચારથી બનાવવામાં
 આવેલ છે, એમ સમજવાનું છે ॥ સૂ. ૧ ॥

परिग्रहऋचयः-परिग्रहे रचि-आसक्तिर्येषां ते तथोक्ताः, तथा 'परिग्रहो' परिग्रहे-परिग्रहप्रिये 'त्रिविधकरणपुद्गी' त्रिविधकरणपुद्गयः-त्रिविधानि करणानि क्रिया' बुद्धिश्च येषां ते तथोक्ताः, परिग्रहोपार्जनमतय इत्यर्थः, एतादृशा इन्द्रसहिता देवा परिग्रह परिग्रह न ठसि, न तृप्तिमुपलभन्ते, इत्यत्रेण सम्बन्ध, तत्र 'देवनिष्ठाया य देवनिष्ठायाश्च प्रक्ष्यमाणा ता नेन भवनपत्यादीन् नामनिर्देशपुरस्सर माह- 'असुर' असुराः=असुरकुमाराः 'भुयग' भुजगाः=नागकुमाराः 'सुवन्न' सुपर्णाः-सुपर्णकुमाराः, 'विज्जु' विद्युतः-विद्युत्कुमाराः 'जलण' ज्वलना-अग्निकुमाराः 'द्वीप' द्वीपाः-द्वीपकुमाराः 'उदहि' उदधिकुमाराः 'दिसि' दिशाकुमाराः 'पवण' पवनाः=वायुकुमाराः 'अणिय' स्तनितकुमाराः, एते भवनपत्यः, तत्रा- 'अणपन्नि य' अनपन्नि काः 'अणपन्नि य' पणपन्नि य' पणपन्नि काः (पञ्चमणपन्नि का) 'इमिवाड य' ऋषिवाटिका 'भूयनाइय' भूत वाटिकाः 'कदि य' क्रन्दिताः 'महारुदिय' महारुन्दिता 'कुहड' कुम्भाण्डाः 'पतगदेव' पतङ्गदेवाः, एतेऽष्टौ व्यन्तरनिकायदेवा २, असुराधारभ्य पतङ्ग-देवपर्यन्तानामितरेतरयोगद्वन्द्वः । तथा 'पिसाय' पिशाचाः 'भूय' भूताः 'जक्ख' यक्षा 'रक्खस' राक्षसाः 'किन्नर' किन्नरा 'किंपुरिस' किम्पुरुषाः

निकायों का बोध स्वयं हो जाता है। इसलिये यहाँ चारों प्रकार के देव ग्रहीत हुए हैं। क्योंकि कि ये देव (परिग्रहें विविध करणबुद्धी) परिग्रह के विषय में इनकी विविध प्रकार की क्रियाएँ होती हैं, तथा उसमें इनकी बुद्धि भी सदा सचेष्ट रहती है। अर्थात् परिग्रह के उपाजन करने में इनकी मति खूब निपुण होती है। इस तरह इन्द्रसहित ये चारों प्रकार के देवनिकाय परिग्रह को प्राप्त करके भी उसमें तृप्ति से विह्वले ही बने रहते हैं। (देवनिकाया य-असुर-भुवग-सुवन्न-विज्जु-जलण-दीव उदहि-दिसि-पवण-थणिय-अणपन्निय-पणपन्निय-हसिवाहय-भूयवाहय-कदिय-महाकदिय-कुहण्ड-पयग-देवा पिसायभूय-जक्ख-

નો બોધ આપો આપ થઈ જાય છે તે કારણે અહીં ચારે પ્રકારના દેવો
અહણુ ઠરેલ છે, ગણુ કે તે દેવો “ પરિગ્મ હરુઈ” પરિઅહમા રુચિ-આસક્તિ
વાળા હોય છે, અને “ પરિગ્મહે વિવિહકરણ વુદ્ધી” પરિઅહના વિષયમા તેમની
વિવિધ પ્રકારની ક્રિયાઓ થાય છે, અને તેમા તેમની બુદ્ધિ પણ સદા સચેત
રહે છે એટલે તે પરિઅહને પ્રાપ્ત કરવામા તેમની બુદ્ધિ ઘણી જ નિપુણ હોય
છે આ રીતે ઈન્દ્ર સહિત તે ચારે પ્રકારના દેવનિકાય પરિઅહને પ્રાપ્ત કરીને
પણુ તેનાથી અતૃપ્ત રહે છે “ દેવનિકાયા ચ-અમુર-મુયગ-મુવન્ન-વિઙ્ગુ-જલળ-
વીવડદહિ-દિસિ-પવળ-થળિય-અળપન્નિય-પળપન્નિય-ઇસિવાહ્ય-મૂયવાહ્ય-કદિય-

વાક્યાલ્લહારે, ઉપર્યુક્ત ત્રિગ્વિધ પરિગ્રહ 'મમાયતિ' મમાયન્તે=પરિગ્રહમત્ત્વં કુર્વન્તિ, મમત્વ કુર્વન્તીત્યાદ — 'લોભયત્ય', લોભયન્તાઃ, કે કે ચ તે ? इत्याह—' भवणवरविमाणवासिणो ' भवनवरविमाणवासिनः=' भवन ' इत्यत्र ' वामिनः ' इत्यस्य सम्बन्धाद् भवनवासिनः=भवनपतयः, अत आरभ्य यावद् वरविमाणवासिनः=अनुत्तरविमाणवासिनः, भवनपतिमानव्यन्तर - ज्योतिष्क-वैमानिकाश्चतुर्विधा अपि देवा इत्यर्थः, कीदृशास्ते ? इत्याह—' परिग्रहर्हः '

અવ સૂત્રકાર જિસ પ્રકાર સે જો જીવ હસ પરિગ્રહ કો કરતે હૈં
उनका कथन करते हैं—' त च पुन ' इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(ત ચ પુન પરિગ્રહ લોભયત્યા મમાયતિ) હસ ઉપર્યુક્ત ત્રીસ પ્રકાર કે નામ વાલે પરિગ્રહ મેં લોભ સે ગ્રસ્ત હુળ જીવ મમત્વ કરતે હૈં । વે જીવ કૌન ૨ સે હૈં ? સૂત્રકાર અન હસ વાત કો પ્રદર્શિત કરતે હૈં—(ભવણવરવિમાણવાસિણો) ભવનવાસી દેવ, વાનવ્યન્તરદેવ, જ્યોતિષ્કદેવ ઓર વૈમાનિક દેવ ચે ચારોં પ્રકાર કે દેવ પરિગ્રહ મેં મમત્વ કરતે હૈં—અ ગત્-પરિગ્રહ પ્રાપ્ત કરકે ઓ ઇન્હેં સતોષ નહીં હોતા હૈં । (ભવણવરવિમાણવાસિણો) ઘટા પર હસ પદ સે ભવનવાસી ઓર વરવિમાણવાસી એસા શાબ્દબોધ હોતા હૈં । ભવનવાસી શબ્દ સે અસુ-રકુમાર આદિ દેવ તથા વરવિમાણવાસી શબ્દ સે અનુત્તરવિમાણવાસી દેવ અભિહિત હુણ હૈં । હસ તરહ દેવો કે ઇન દો નિકાયોં કા વર્ણન-કથન-આને સે ઇનકે બીચ કે વાનવ્યન્તર ઓર જ્યોતિષ્ક ઇન દો

હવે સૂત્રકાર એ પ્રગટ કરે છે કે કયા જીવ કઈ ગીતે પરિગ્રહ કરે છે—“ ત ચ પુન ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ત ચ પુન પરિગ્રહલોભયત્યા મમાયતિ” ઉપર જોઈએ ત્રીસ નામ વાળા પરિગ્રહમા લોભને વશ થયેલ જીવો મમત્વ કરે છે તે જીવો કયા કયા છે ? હવે સૂત્રકાર તે દર્શાવે છે “ ભવણવરવિમાણવાસિણો ” ભવનવાસી દેવ, વાનવ્યન્તર દેવ, જ્યોતિષ્ક દેવ, અને વૈમાનિક દેવ, એ ચારે પ્રકારના દેવ પરિગ્રહમા મમત્વ કરે છે—જોટલે કે પરિગ્રહમા પ્રાપ્ત કરવા છતાં પણ તેમને સતોષ થતો નથી “ ભવણવરવિમાણવાસિણો ” આહી આ પદથી ભવનવાસી અને ઉત્તમવિમાણવાસી એવો અર્થ સમજાય છે ભવનવાસી શબ્દથી અસુરકુમાર દેવ આદિ તથા ‘ ઉત્તમવિમાણવાસી ’ શબ્દથી અનુત્તરવિમાણવાસી દેવ ગ્રહણ થાય છે આ પ્રમાણે દેવોના તે બે નિકાયોનું (પ્રકારનું) વર્ણન આવવાથી તેમની વચ્ચેના વાનવ્યન્તર અને જ્યોતિષ્ક એ બે નિકાયો (જાતો)

पत्नीयते कर्णः = तस्य यत्पत्नीयकमकृतं तपनीयमुत्तमं तस्य चर्पणं इत्यर्थः स्यः स्यः
 तयोक्तः अगतीं परितोपनेन सुवर्णस्य यादृशो वर्णो भवति, तादृश-वर्ण-युक्तं इत्यर्थः
 आर्षत्वात्सुवे यद्वचनम् । तथा ग्रन्थे अतरे 'जे गद्ग' ये प्रदा-सम्पत्तिकाल-
 मसिद्धा जे पंचुलहार्ग्यादयः, 'जोइसम्मि' ज्योतिषि-ज्योतिष्ये 'चार चरति' -
 पस्त्रिभाम्पत्ति, ते ग्रहाः, तथा 'शेकेय' केतवश्च-ज्योतिष्यमिषेया ते जगत्-
 शुभाशुभतिमितमवलम्ब्योदय, प्राप्नुवति 'पूछडियातारा' 'चोटीवाला तारा' -
 इत्यादि जन्मा भावामसिद्धाः, कीदृशाः एतेः इत्यादि 'गद्गहमा' गतिरति-
 गमनशील एक राशितो अन्यराशाः गमनसम्भवाः । एते चन्द्रमस्य ग्रहास्त्रिविधा ज्यो-
 तिकदेवा उक्ताः । तथा 'अट्टावीमडविहा य' अष्टाविंशतिविधाश्च 'नखत्तदेव-
 गण' नक्षत्रदेवता 'सीदशीः' इत्यादि - तथा 'नाणासठाणसठियाओ' -

और अगरीक मंगल ये भेद हैं । ये अगरीक (नित्ततरेणिर्जजकणगर्वणं) तस्यैतपनीय-तपाये 'हु' सुवर्ण के वर्ण के जैसा वर्ण वाला है । अर्थात्-
 अग्नि में तपाने से सुवर्ण का जैसा रंग होता है वैसा ही इसका रंग
 है तैसा (जै य गद्ग जोइसम्मि चार चरति) इनसे अतिरिक्त जो
 इस समय में प्रसिद्ध नेपच्युल हर्षल आदि ग्रह हैं कि जो ज्योतिष्य में
 परिश्रम करतें हैं वे ग्रह तथा- (कैज य) केतु ग्रह जो जगत के शुभ
 अशुभ निमित्त को लेकर उदित होता है और जिसे 'पूछडिया-
 तारा' 'चोटीवाला तारा' इत्यादि नाम से लोग कहते हैं ये सब-
 ही (गद्गहमा) गमनशील हैं एक राशि से अन्यराशि पर गमन
 करने के स्वभाववाले हैं । ये उक्त (निविहा) तीन प्रकार के
 चंद्र, सूर्य ग्रहरूप ज्योतिषी देव तथा (अट्टावीमडविही) अष्टाईस
 प्रकार के (नखत्तदेवगणा) नक्षत्र (नाणासठाणसठियाओ) नाना

राशयः " राहु, धूमकेतु, बुध, अने अगारुक-भगण को प्रकाशे छे ते अगारुक-
 रक-भगण " तत्ततवणिज्जकणगवण्णा " तथावेला सुवर्णना रंग जेवा पार्श्व
 वाजो छे, तथा " जे स, गद्ग जोइसम्मि चार चरति " ते सिवायता-डाकेना
 समथमा प्रसिद्ध नेपच्युल, हर्षल आदि अडे छे जे ज्योतिष्यकमा प्रसिद्ध
 छे ते अडे तथा " कैजय " केतुअडे जे जगतना शुभ अशुभ निमित्त
 दशविंशति उगे छे अने जेने पूछडिया ताराने नामे जोणो छे, जे भर्धा
 " गद्गहमा " गमनशील छे जे राशिभार्थी अन्य राशिभाभाभेद करवाना
 स्वभाववाला छे ते उरोक्त " निविहा " त्रिषु प्रकारना अन्द्र, सूर्य अने
 अडक्ष ज्योतिषी देव, तथा " अट्टावीमडविहा " अष्टावीसप्रकारना नखत्तदेव
 देवगणा " नक्षत्र, " नाणासठाणसठियाओ " निविध प्रकारना सत्थानेभणि

નાનાસથાનસસિયતાશ્ચ ' તારાઓ ' તારકાઃ, કથં ભૂતાસ્તારકાઃ ? इत्याह—
' ठियलेस्सा ' स्थितलेइयाः—स्थिताः स्थिराः लेइयाः—दीप्तयः यासा ताः, नक्षत्र-
तारकाणामेकस्थानस्थितिमत्त्वात्, यद्वा — मनुष्यक्षेत्राद् ग्रहिव्यवस्थितत्वात्
स्थितलेइयावच्च ताताम्, ' चारिणो य ' चारिश्च यः=सचरणशीलाःचन्द्रमूर्यग्र-
हाश्च, ' अविस्सतमडलगई ' अपिश्रान्तमण्डलगतयः—अपिश्रान्ता-पिश्रामर्जिता
मण्डलेन-चक्रगलेन गति र्येषां ते तथा=सततपरिभ्रमणशीलाः सन्तीत्यर्थः, एते

प्रकार के सस्थान से सस्थित ऐसे तारागण कि जिनकी (ठियलेस्सा)
लेइया-दाप्ति-स्थिर है। ये नक्षत्र और तारागण एक स्थान में स्थित हैं,
अथवा मनुष्यलोक से बाहर ये अवस्थित हैं-गति रहित हैं-इसलिये
यहां इन्हें स्थिर दीप्ति वाला कहा गया है। तथा (चारिणो य अवि-
स्साममडलगई) सचरणशील चंद्र, सूर्य, ग्रह ये सन सतत परिभ्रमण
शील हैं। तात्पर्य इसका यह है कि ये पांच प्रकार के ज्योतिषी देव
मानुषोत्तर नामक पर्वत रूप जो मनुष्य लोक है उस मनुष्यलोक में
सदा भ्रमण कीया करते हैं। उनका भ्रमण मेरुपर्वत के चारो ओर
होता है। मेरु के समतलभूभाग से सातसौ नब्बे योजन नी ऊंचाई पर
ज्योतिश्चक्र क्षेत्र का आरंभ होता है। जो वहां से ऊंचाई में एक सौ
दश योजन परिमाण है और तिरछा असख्यात द्वीप समुद्र परिमाण
है। उस में दश योजन की ऊंचाई पर अर्थात् उक्त समतल से आठ
सौ योजन की ऊंचाई पर सूर्य के विमान हैं, वहां से अस्सी योजन की
ऊंचाई पर अर्थात् समतल से आठ सौ अस्सी योजन की ऊंचाई पर

રહેલા “ ઠિયલેસ્સા ” સ્થિર તેજવાળા તારાગણો છે, તે નક્ષત્રો અને તારા-
ગણ એક જ સ્થાને રહેલા છે, અથવા તેઓ મનુષ્યલોકની બહાર
આવેલા છે-ગતિરહિત છે તે કારણે અહીં તેમને સ્થિર દીપ્તિ (તેજ) વાળા
ખતાવ્યા છે તથા “ ચારિણો ય અવિસ્સામમડલગઈ ” સચરણશીલ ચંદ્ર સૂર્ય
અહીં એ બધા સતત પરિભ્રમણશીલ છે તેનું તાત્પર્ય એ છે કે એ પાંચ પ્રકારના
જ્યોતિષીદેવ માનુષોત્તર નામના પર્વતરૂપ જે મનુષ્યલોક છે, તે મનુષ્ય
લોકમાં સદા પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે તેમનું ભ્રમણ મેરુ પર્વતની ચારે તરફ
થાય છે મેરુના સમતલ ભૂભાગથી સાતસો નેવું જોજનની ઊંચાઈ પર જ્યો-
તિશ્ચક્રના ક્ષેત્રનો આરંભ થાય છે જે ત્યાંથી ઊંચાઈમાં એકસો દસ યોજન
પરિમાણ છે અને તિરકસ ઊંચાઈ અસખ્યાત દ્વીપ સમુદ્ર પરિમાણ છે તેમાં
દસ યોજનની ઊંચાઈએ એટલે કે ઉપરોક્ત સમતલ ભૂમિથી આઠસો યોજનની
ઊંચાઈ પર સૂર્યના વિમાન છે, ત્યાંથી એ સો યોજનની ઊંચાઈ પર અથવા
સમતલથી આઠસો એ સો યોજનની ઊંચાઈ પર ચન્દ્રના વિમાન થી

ચંદ્ર કે વિમાન હૈં । વહા સે વીસ યોજન પર કી ઊંચાઈ તરુ મૈં અર્ધાત્ સમતલ સે નવસૌ યોજન કી ઊંચાઈ તરુ મૈં ગ્રહ, નક્ષત્ર ઔર તારે હૈં । ચંદ્ર કે ઉપર વીસ યોજન કી ઊંચાઈ મૈં પહિલે ચાર યોજન કી ઊંચાઈ પર નક્ષત્ર હૈં, ઇસકે બાદ ચાર ચાર યોજન કી ઊંચાઈ પર બુધગ્રહ, બુધગ્રહ સે ત્રીન યોજન કી ઊંચાઈ પર શુક્ર, શુક્ર સે ત્રીન યોજન ઊંચે ગુરુ, ગુરુ સે ત્રીન યોજન ઊંચે મંગલ ઔર મંગલ સે ત્રીન યોજન ઊંચે શનૈશ્વર હૈં । ઇસ પ્રકાર યહ ચંદ્ર કે ઉપર કા વીસ યોજન કા ક્ષેત્ર નક્ષત્ર આદિકૌ દ્વારા ઘિરા હુઆ રહતા હૈં । ઇસ તરહ ઇસસે હમૈં યહ વાત જાનને મૈં દેરી નહીં લગતી હૈં કિ મનુષ્ય ક્ષેત્ર મૈં જો કાલ કા-મુહૂર્ત-અહોરાત્ર-પક્ષ, માસ આદિ કા જિતના મી વ્યવહાર હોના હૈં વહ સમઘસ જ્યોતિશ્ચક્ર કી ચાલ સે હી હોતા હૈં । યહ જ્યોતિશ્ચક્ર કી ચાલ ડસ ઢાઁદ્રીપરૂપ મનુષ્યક્ષેત્ર મૈં અગ્નિશ્રાન્ત રૂપ સે હી હોતી રહતી હૈં । મનુષ્ય ક્ષેત્ર કે બાહર કે જ્યોતિષ્ક વિમા નસ્થિર હૈં । યે વહા સ્વભાવતઃ ડધર ડધર ભ્રમણ નહો કરતે । ઇસી કારણ સે ડનકી લેહ્યા ઔર ડનકા પ્રકાશ મી ઁક રૂપ-સ્થિર હૈં । અર્ધાત્ વહાં રાહુ આદિ કી, છાયા પડ્ઢને સે જ્યોતિષ્કૌ કા સ્વાભાવિક પીતલ્વર્ણ જ્યો કા ત્યૌ ઘના રહતા હૈં । ઔર ડદ્ય અસ્તન હોને કે કારણ

વીસ યોજનની ઊંચાઈ પર એટલે કે સમતલથી નવસૌ યોજનની ઊંચાઈ મુધીમા ગ્રહો, નક્ષત્રો અને તારા છે ચંદ્રથી ઉપરની વીસ યોજનની ઊંચાઈમા પહેલા ચાર યોજનની ઊંચાઈ પર નક્ષત્રો છે, ત્યાર બાદ ચાર યોજનની ઊંચાઈ પર બુધ નામનો ગ્રહ છે બુધ ગ્રહથી ત્રણ યોજનની ઊંચાઈ પર શુક્ર છે શુક્રથી ત્રણ યોજન બાંધે શુરુ છે શુરુથી ત્રણ યોજન બાંધે મંગળ છે, મંગળથી ત્રણ યોજન બાંધે શનિ છે આ પ્રમાણે ચંદ્રની ઉપરનું વીસ યોજનનું ક્ષેત્ર નક્ષત્ર આદિ દ્વારા ઘેરાયેલું રહે છે આ રીતે આપણને એ વાત સમજતા વાગ લાગે તેમ નથી કે મનુષ્યક્ષેત્રમા જે કાળનો મુહૂર્ત, વિવસ રાત, પળવાડિયા, માસ આદિનો-જે વ્યવહાર થાય છે તે સઘળો આ જ્યોતિશ્ચક્રની ચાલથી જ થાય છે તે જ્યોતિશ્ચક્રની ચાલ આ અઢીદ્રીપરૂપ મનુષ્ય ક્ષેત્રમા અવિગ્ત ચાલ્યા ડરે છે મનુષ્ય ક્ષેત્રની બહારના જ્યોતિષ્ક વિમાન સ્થિર છે તેઓ ત્યા સ્વભાવિક રીતે જ આમ તેમ ભ્રમણ કરતા નથી એ જ કારણે તેમની લેશ્યા અને તેમનો પ્રકાશ પણ સ્થિર છે એટલે કે ત્યા રાહુ આદિની છાયા પડવાથી જ્યોતિષ્કોનો સાધારણ પીળો રંગ એવોને આવે રહે છે અને ઉદય અસ્ત ન થવાને કારણે તેમનો પ્રકાશ પણ એક સરખો

अथ चरित्राऽज्योतिषिक देवोक्तम् । अथ वैमानिकानां हन्- 'उत्तरिचरा' उपरिचराः-
 तिर्यग्लोकस्योपरिचरिणः, उड्डोलोमवाणिनां चरित्रं लोकासिनः । वैमानिकं य-
 त् 'देवा' धर्मोक्तिकादिना 'दुविहा' द्विविधाः-द्विमकाराः, कल्पोपपन्न कल्पातीत
 भेदात् । ता-कल्पोपपन्ना द्वादशधा, तानाह- "सोहम्मी-साण-सणकुमार-माहिद-
 बमलोग-लतंग-महाशुक-सहस्रार-आणय-पाणय-आरण-अचुया" सौधर्मेशान
 सनत्कुमारमोहेन्द्र, ब्रह्मलोकान्तक, महाशुक-सहस्रारानंतप्राणतारणाच्युताः, एते
 कल्पवरविमानवासिणी । कल्पवरविमानवासिनः-कल्पोपपन्नाः । 'सुरगणा'
 'सुरमणा' । अथ कल्पातीतानाह- 'मेवेज्जा' गेधेयकाः 'अणुत्तरा' 'अमृत्तरा'-
 ५२५२० ५२५२० ५२५२० ५२५२० ५२५२० ५२५२० ५२५२० ५२५२० ५२५२० ५२५२०

मनुमेकाप्रकाशं भी-एकसां स्थिर ही रहंतो है । 'इस प्रकार यह मपाच
 प्रकार के ज्योतिषिक देवों के विषय में भावार्थ रूप से यत् किञ्चित् कथन
 किया है । अत्र सूत्रकार वैमानिक देवों के विषय में कहते हैं- (उपरि-
 चरा उड्डोलोमवासी वैमाणिया देवा दुविहा) तिर्यग्लोक हैं । ये वैमानिक
 के ऊपर जो ऊर्ध्वलोक है उसमें ये देव रहते हैं । इनका नाम वैमानिक
 देव, कल्पोपपन्न और कल्पातीत के भेद से दो प्रकार के होते हैं । इनमें
 कल्पोपपन्न बाहर प्रकार के हैं, ये ये हैं- (सोहम्मी-साण-सणकुमार-
 माहिद-बमलोग-लतंग-महाशुक-सहस्रार-आणय-पाणय-आरण-अ-
 च्युया) सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, मोहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लान्तक, महा
 शुक, सहस्रार, आनंत, प्राणत, आरण और अच्युत । इन (कल्पवरवि
 विमाणवासिणी सुरगणा) कल्पवरविमानों में रहनेवाले सुरगण कल्पा-
 पपन्न कहलाते हैं । (मेवेज्जा अणुत्तरा य दुविहा कल्पातीया विमाण-

५२५२० स्थिर रहे छे आ प्रमाण पाथ प्रकारना ज्योतिषिक देवाने विषे भावार्थ
 कथे थाहुं । अर्थन करवाभा आच्युं छे, इवे सूत्रकार वैमानिक देवाने विषे कथे छे-
 ५२५२० उपरिचरा, उड्डोलोमवासी वैमाणिया देवा दुविहा । तिर्यग्लोकनी उपरि छे उड्डो-
 लोम छे तेमा, ते देवा रहे छे, अने तेभने वैमानिक कहे छे । ते वैमानिक
 देवाने जे लोक छे-कल्पातीत अने कल्पोपपन्न तेमाना कल्पोपपन्न नीचे प्रमाण आर
 प्रकारना छे- "सोहम्मी-साण-सणकुमार-माहिद-बमलोग-लतंग-महाशुक-सहस्रार
 आणय-पाणय-आरण-अच्युया" सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, मोहेन्द्र, ब्रह्मलोक
 लान्तक, महाशुक, सहस्रार, आनंत, प्राणत, आरण अच्युत ये "कल्पवर
 विमाणवासिणी" सुरगणा । कल्पवर विमाणमा भेदनाथ सुरगणने कल्पोपपन्न
 कहे छे । "मेवेज्जा अणुत्तरा" य दुविहा कल्पातीया विमाणवासी महाद्विद्या जंतमा

થેતિ 'કુચિહા' દ્વિવિધાઃ 'રૂપાતીયા' કરાતીતા. 'વિમાણવાસી' વિમાણવાસીનઃ-અનુત્તરવિમાણવાસીન 'મહાહુયા' મહર્દિકા 'ઉત્તમા' ઉત્તમાઃ શ્રેષ્ઠાઃ સુવરાઃ=સર્વદેવેષુ પ્રધાનાઃ, 'અથ ચ' ઇત્યુક્તગ્રંથકારેણ 'ચઙ્ગિહા' ચતુર્વિધાઃ-ભવનવાતિગાનવ્યન્તરજ્યોતિષ્કરૈર્માનિરૂપા, સપરિસાવિ' સપરિપદોઽપિ-ન કેવલપ્રેતે સ્થિતુ ગ્ણા પરિપદોઽપીત્યર્થ, દેવાઃ 'મમાયતિ' મમાયન્તે=મમત્વ કુર્વન્તિ । કસ્મિન્ વિગ્રહે મમત્વ કુર્વન્તીતિ તાન્નાહ- 'ભવણવાહન-જાણવિમાણસયણાસણાણિ ચ' ભવનવાહનયાનવિમાણશયનાસનાનિ ચ, તથા 'નાગાવિદિત્યભૂસણાણિ ચ' નાનાવિદિત્યભૂસણાણિ ચ 'પરપદરૂપાણિ ચ'

વાસીમહાહુયા ઉત્તમા સુવરા એવ ચિતે ચઙ્ગિહા સપરિસા ચિ દેવા મમાયતિ) રૂપાતીત કે દો ભેદ છે (૧) ગ્રૈવેયક વિમાણવાસી ઓર (૨) અનુત્તર વિમાણવાસી ઇનમેં જો પાચ અનુત્તર વિમાણાં મેં-વિજય, વૈજયન્ત, અપરાજિત ઓર સર્વાર્થ મિદ્ધ ઇનમેં-રહનેવાલે દેવ હૈં વે મહર્દિક કહલાતે હૈં ઓર સવ દેવોં મેં ઉત્તમ-શ્રેષ્ઠ-એવ પ્રધાન માને જાતે હૈં । કલ્પોપપન્ન દેવોં મેં સ્વામિસેવક ભાવ હોતા હૈં । કર્પાતીત મેં નહીં । યે તો સભી ઇન્દ્રવત્ હોને સે અહમિન્દ્ર કહલાતે હૈં । મનુષ્યલોક મેં કિસી નિમિત્ત પર કલ્પોપપન્ન દેવ હી આવે હૈં-રૂપાતીત નહીં । ઇસ પ્રકાર ભવનપતિ, વાનવ્યન્તર, જ્યોતિષ્ક ઓર વૈમાનિકરૂપ ચારોં પ્રકાર કે દેવ અપની ૨ પરિપદાસરિત ઇન ભવન આદિ પદાર્થોં મેં મમત્વ કરતે હૈં । સૂત્રકાર અથ ઇન્દ્રી મમત્વ કે વિષયભૂત પદાર્થોં કો કહતે હૈં — (ભવણ-વાહન-જાણવિમાણ-સયણાસણાણિ) ભવન, વાહન, યાન, વિમાન, શયન, આસન તથા- (નાગાવિદિત્યભૂસણાણિ ચ)

સુવરા એવ ચઙ્ગિહા સપરિસા ચિ દેવા મમાયતિ ” કૃષ્ણાતીતના બે ભેદ છે (૧) ગ્રૈવેયક વિમાણવાસી અને (૨) અનુત્તર વિમાણવાસી તેમાના વિજય, વૈજયન્ત વ્યન્ત અપરાજિત અને સર્વાર્થ મિદ્ધ એ પાચ અનુત્તર વિમાણવાસી સહેનાર બે દેવો છે તેમને મહર્દિક કહે છે, તે દેવો બધા દેવોમા શ્રેષ્ઠ ગણાય છે મનુષ્યલોકમા કોઈ પણ નિમિત્તે કલ્પોપપન્ન દેવો જ આવે છે, કૃષ્ણાતીત આવતા નથી આ રીતે ભવનપતિ, વાનવ્યન્તર, જ્યોતિષ્ક અને વૈમાનિક, એ ચાર પ્રમાણના દેવો પોત પોતાની પરિપદ સાથે તે ભવન આદિ પદાર્થોમા મમત્વ રાખે છે સૂત્રકાર હવે તે મમત્વના વિષય રૂપ પદાર્થો દર્શાવે છે— 'ભવણ-વાહન-જાણ-વિમાણ-સયણા-સણાણિ' ભવન વાહન, યાન, વિમાન, શયન, આસન, તથા “નાગાવિદિત્યભૂસણાણિ ચ” વિવિધ વસ્ત્રો, આભૂષણો

વસત્યાદિકાનિ, તત્ર-રૂપ-પ્રમિદ્ધ, સર:-પ્રમિદ્ધમ્, તડાગ:-સપદ્માડગાધ-
જલાશય:, વાપી - આયતજજાશયવિશેષ - દીર્ઘિકા-ચતુષ્કોણજલાગયરૂપા-
' દેવકુલાનિ ' દેવગૃહા-નમાપ્રસિદ્ધા, પ્રમા:-પાનીયશાલા:, વસતય =સામાન્ય
ગૃહાણિ, ઇત્યાદિ એવા તાનિ તથોક્તાનિ, ' વડુલાડ' વડુલાનિ વડુનિ ' કિત્ત-
ણાનિ ચ ' કીર્તનાનિ ચ " અય દેવો દિવ્યદેવઋદ્ધિ સમ્પન્નઃ " ઇત્યેવ પ્રશસા
વાક્યાનિ ચ પરિગ્રહત્વેન મમાન્તે। તત્તથ પ્રકૃત ' પરિગ્રહ ' પરિગ્રહ, કીદશ
પરિગ્રહમ્ ? ' વિડલદ્વ્યસાર ' વિપુલદ્વ્યસાર=વિપુલાનિ દ્વ્યાણ્યેવ સારો
યસ્મિન્ન તથોક્ત, ' પરિગિહિત્તા ' પરિગૃહ ' સડદગા ' સેન્દ્રકા:-સેન્દ્રમહિતા:
' દેવાનિ ' દેવા અપિ ' ન તિત્તિ ' ન તુષ્ઠિ-નૈવેચ્છાવિનિવૃત્તિ ' ન તુષ્ઠિ ' ન
તુષ્ઠિમ્=નાપિ સન્તોષમ્ ' ઉપલભતિ ' ઉપલભન્તે=પ્રાપ્નુન્તિ, આકાદક્ષાયા નિરા-
વાયત્વાત્। અય માન.-દેવા દિ મહર્દ્યો ગાઞ્ઞિતાર્થલાભે સમર્થા:દીર્ઘાયુષશ્ચ
મયન્તિ પરન્તુ તેડપિ પરિગ્રહવિષયે ન સતોષ પ્રાપ્નુન્તિ ઇતરેવા પુન' કા કથા ? ॥

માહ્યાઈ) કુવા મર, તડાગ-પદ્મસહિત અગાધ જલાશય, વાપી,
દીર્ઘિકા-ચતુષ્કોણવાલી વાવડી, દેવકુલ-દેવગૃહ, સભા, પ્રમા-પ્વાઝ,
વસતિ-સામાન્યઘર, ઇત્યાદિ ધૌર મી વહુત સી વસ્તુ છે જિનમેં હન
દેવોં કા મમત્વ હોતા હૈ। તથા (વહુયાઈ કિત્તણાણિ ય) અનેક વિધ
કીર્તનોં મેં " યહ દેવ દિવ્ય ઋદ્ધિ સપન્ન હૈ " ઇત્યાદિ રૂપ પ્રશસા વાક્યો
મેં હનકા પરિગ્રહરૂપ સે મમત્વ હોતા હૈ। (વિડલદ્વ્યસારપરિગ્રહ પરિગ-
હિત્તા સડદગા દેવા વિ ન તિત્તિ ન તુષ્ઠિ અચ્ચત વિડલલોભાભિમૂયસન્ના
ઉપલભતિ) હમ પ્રકાર વિપુલ સાર વાલે પરિગ્રહ કો ગ્રહણ કરકે ઇન્દ્ર-
સહિત દેવ મી ઇચ્છાવિનિવૃત્તિરૂપ તુષ્ઠિ કો તથા સતોષ રૂપ તુષ્ઠિ કો
આકાક્ષા કી નિરાવાયતા કે કારણ પ્રાપ્ત નહીં કર પાતે હૈં। તાત્પર્ય હસકા
યહ હૈ કિ મહર્દ્ધિક દેવ યપિ ઇચ્છિત અર્થ કે લાભ કરને મેં સમર્થ

ચોખ્ખણ વાવડી, દેવકુલ-દેવગૃહ, સભા, પ્રમા-હવાડા, વસતિ-સામાન્ય ઘર,
વગેરે વસ્તુઓમા તથા એ સિવાયની બીજી પણ અનેક વસ્તુઓમા દેવો મમ
ત્વ શબ્દે છે તથા " વહુયાઈ કિત્તણાણિ ય " અનેક પ્રકારની પ્રશસામા " આ
દેવ દિવ્ય ઋદ્ધિ વાળા છે " ઇત્યાદિપ્રે પ્રશસાના શબ્દોમા તેમનુ પત્રિગ્રહરૂપે
મમત્વ હોય છે ' વિડલદ્વ્યસાર પરિગ્રહ પર્ગિહિત્તા સડદગા દેવા વિ ન
તિત્તિ ન તુષ્ઠિ અચ્ચતવિડલલોભાભિમૂયસન્ના ઉપલભતિ " આ પ્રમાણે વિપુલ
સારવાળા પત્રિગ્રહને ગ્રહણ કરવા ઇત્યાદિ પળ ઇન્દ્ર સહિત દેવો પણ ઇન્દ્રામાથી
નિવૃત્તિ રૂપ તુષ્ઠિને તથા સતોષ રૂપ તુષ્ઠિને આકાક્ષાની અપરિમિતતાને કારણે
પ્રાપ્ત કરી શકતા નથી કહેવાનુ તાત્પર્ય એ છે કે મહર્દ્ધિક દેવો જે કે ઇચ્છિત
વસ્તુ પ્રાપ્ત કરવાને મમર્થ તથા લાભ આશુખ્ય વાળા હોય છે તેો પણ તેઓ

परपरहरणानि च=परराणि-श्रेष्ठानि यानि प्रहरणानि-आयुधानि तानि च, तथा-
 'नाणामणिपचवर्णदिव्य च भायणविहिं' नानामणिपचवर्णदिव्य च भायन-
 विधिम्-नानामणीना-चन्द्रकान्तमूर्यकान्तादिमणीना ये परराणि सै दिव्य श्रेष्ठ
 विविधभाजनसमूहम्, तथा-'नाणाविहकामरूपवेडविय अञ्जरगणसघाए य'
 नानाविधकामरूपत्रिकुर्विताप्सरोगणमघाताय - नानाविधानि-अनेकप्रकाराणि
 यानि कामरूपाणि स्वेच्छारूपाणि तानि त्रिकुर्वितानि येस्ते तथाभूता येऽप्सरो-
 गणास्तेषा सघातास्तान्=अप्सरः समूहानित्यर्थः, तथा 'दीवसमुदे' द्वीपसमुद्रान्,
 'दिसाओ विदिसाओ' दिशाविदिशा 'चेइयाणि' चैत्यानि=वृक्षान् कल्पवृक्ष
 रूपान् 'वनसडे' वनपण्डानि-अनेकविधवृक्षसमूहान् 'पव्वते' पर्वतान् 'गाम-
 नगराणि य' ग्रामनगराणि च, तथा 'आरामुज्जाणकाणणाणि य' आरामो-
 धानकाननानि च-आरामाः-उपवनानि, उद्यानानि=पुष्पप्रधानवनानि, काननानि
 अरण्यानि, एतेषामितरेतरयोगद्वन्द्व, तथा - 'कूवसरतलागवावीदीहिद्य
 देवकुलसमप्पवावसहिमाइयाइ' कूपसरस्तलागवावीदीर्घिकादेवकुलसमप्पवाव

नानाविध वृक्ष, आभूषण, (परपरहरणाणि य) श्रेष्ठ आयुध, (नाना-
 मणि पचवर्णदिव्य य) चन्द्रकान्त, सूर्यकान्त आदि नानामणियों के
 पचवर्णवाले श्रेष्ठ भाजन, तथा (नाणाविहकामरूपवेडवियअञ्जरग
 णसघाए य) नाना प्रकार के स्वेछानुसार जिन्हों ने रूपों को बनाया है
 ऐसी अप्सराओ का समूह (दीवसमुदे) द्वीप, समुद्र (दिसाओ-
 विदिसाओ) दिशा, विदिशा, (चेइयाणि) कल्पवृक्षरूप चैत्यवृक्ष, (वन
 सडे) अनेक विध वृक्षसमूह (पव्वण) पर्वत (गामनगराणि य) ग्राम,
 नगर, (आरामुज्जाणकाणणाणि य) आराम-उपवन, उद्यान-पुष्पप्रधान
 वन, कानन-अरण्य, (कूवसरतलागवावीदीहिद्यदेवकुलसमप्पवावसहि

" परपरहरणाणि य " श्रेष्ठ आयुधो, " नानामणि पचवर्णदिव्य य " चन्द्रकान्त,
 सूर्यकान्त आदि विविध मणियोना भाय वलुवाणा भायो, तथा " नाणाविह
 कामरूप-वेडविय-अञ्जरगणसघाए य " जेभने छेअनुसार विविध रूपो धारण
 कर्था छे ओवी अप्सराओनो समूह, " दीवसमुदे " द्वीप समुद्र दिसाओ
 विदिसाओ " दिशाओ विदिशाओ, " चेइयाणि " क पवृक्षरूप चैत्यवृक्ष, " वन
 सडे " अनेक विध वृक्ष समूह, " पव्वण " पर्वतो, " गामनगराणि य " गाओ
 नगरो, " आरामुज्जाणकाणणाणि य " आराम स्थानो-उपवन, उद्यान, पुष्प,
 प्रधान वन, कानन-अरण्य, " कूवसरतलागवावीदीहिद्यदेवकुलसमप्पवावसहि
 माइयाइ " कूवा, सरावर, तलाओ, -कमलायुक्त अगाव जलाशय, नाव, दीर्घिका

કાદશકુण्डलनामकद्वीपान्तर्गतः कुण्डलाकारः पर्वतः, रुचकरा = जम्बू-
द्वीपात्त्रयोदश रुचक पर नामक द्वीपान्तर्गत मण्डलाकार पर्वतः, मानुपोत्तराः =
मनुष्यक्षेत्रमीमाकारणोमण्डलाकारिपर्वतः, कालोदधिः = द्वितीयः समुद्रः, लवणः -
लवणसमुद्रः, सल्लिग = सल्लिगानि सन्त्यासु मल्लिगः, गङ्गादिमहानद्यः, नदपतयः -
नदप्रधानाः पद्ममहापद्मादि महापद्माः, रतिकरा = नन्दीश्वरनामकाष्टमद्वीपचक्राल
विदिरूचतुष्टयव्यवस्थिताः सहस्रयोजनोच्छ्रिताः दशशतगव्यूतभूमिगतमूलभागाः,
सर्वत्र समाश्रित्वारो झट्टरी मस्थानन्तः पर्वताः, अजनक शैलाः = अजन-
पर्वताः = नन्दीश्वरचक्रालमयभागवर्तिनो दिरू चतुष्टयसस्थिता अजनरत्नमया-
श्रित्वारः पर्वताः, सर्वे कृष्णवर्णाः सन्ति । तथा - दधिमुखः = अजनरूचतुष्टय पार्श्व-
वर्ति पुष्करिणीपोडशमध्यभागवर्तिन पोडशश्वेतपर्वताः, तथा - अवपातोत्पाताः =

દીપ સે વે કુण्डलनामक द्वीप के अन्तर्गती कुण्डलाकारवाले पर्व-
तो में, रुचकरपर्वतो में - जम्बूद्वीप से तेरहवा रुचकर नामका जो -
द्वीप है उसके अन्तर्गत मण्डलाकार पर्वतो में, मानुपोत्तर पर्वतो में -
मनुष्य क्षेत्र की सीमा करने वाले मण्डलाकार पर्वतो में, कालोदधि
नामके द्वितीयसमुद्र में, लवणसमुद्र, में गंगा आदि महानदियों में, नद
प्रधानों में पद्म, महापद्म आदि महा नदों में, रतिकरों में - जो नदीश्वर
नाम के आठवें द्वीप की चार विदिशाओं में स्थित है एक हजार योजन
ऊँचे है तथा एक हजार कोशतरु जिनका मूलभाग पृथ्वी में है - अदृश्य
है, और जो सर्वत्र सम हैं ऐसे झल्लरी के आकारवाले चार पर्वतों में,
अजनक गिरियों में नदीश्वर द्वीप के मध्यभाग में रहे हुए, चार पर्वतों
में कि जो अजन रत्नमय होने से काले हैं और चारों दिशाओं में स्थित
हैं दधिमुखों में - चारों अजनगिरियों के पासमें रही हुई सोलह पुष्करि-

કાર પર્વતોમા, રુચકવર પર્વતોમા - જમ્બૂદ્વીપથી તેરમો જે રુચકવર નામનો
દ્વીપ છે તેની અદર મહાકર પર્વતોમા, માનુપોત્તર પર્વતોમા, મનુષ્ય ક્ષેત્રની
સીમા કરનારા માહાકાર પર્વતોમા, કાલોદધિ નામના બીજા સમુદ્રમા, લવણ
સમુદ્રમા, ગંગા આદિ મહા નદીઓમા, નદ પ્રધાનોમા - પદ્મ, મહાપદ્મ આદિ
મહા હોમા, રતિકરોમા - નદીશ્વર નામના આઠમા દ્વીપની ચાર વિદિશાઓમા
રહેલ, એક હજાર યોજન ઊંચા તથા એક હજાર ઝોગ સુધીનો જેનો મૂળ
ભાગ પૃથ્વીમા છે - અદૃશ્ય છે, અને જે સર્વત્ર સમાન છે, એવા આલરના
આકારના ચાર પર્વતોમા, અજનગિરિઓમા - નદીશ્વર દ્વીપના મધ્ય ભાગમા
આવેલ ચાર પર્વતોમા જે જે અજન રત્નમય હોવાથી કાળા છે અને ચારે
દિશાઓમા ઉભેલા છે, દધિમુખોમા - ચારે અજનગિરિઓની પાસે આવેલ

पुर्वोक्ता देवाः कथम्भूता ? इत्याह- 'अन्तर्निष्ठलोभाभिभूयमणा'
अत्यन्तनिष्ठलोभाभिभूतसज्ञाः - अत्यन्तः-अतिशय निष्ठो यो लोभस्तेन
अभिभूता सज्ञा=सज्ञान=मनो चेपा ते तथोक्ताः=संग्रहेकगीला इत्यर्थः, के ते
देवा ? इत्याह- 'यासहरइन्पुगार वृत्पञ्चयकुडल-रुचग वरमाणुसोत्तर-फालो
दधि छरण-सलिल-दहपति-रतिरु अजणरु-सल-दग्निमुह-वपातुप्पाय-रुचण
क-चित्तविचित्त-जमरु-परगिहरकुडयासी ' वर्षधरेपुकारवृत्तपर्वतकुण्डल
रुचक वरमानुपोत्तरफालोदधिलवणमलिलदपतिरतिरुग-अनर्शलदधिमुखापा-
तोत्पात - काञ्चनरु - चित्रविचित्र - यमरुवरनिखरकूटयासिनः=तत्र - वर्ष
धरा-हिमवदादि पर्वताः, इपुकाराः=धातुकीखण्डपुष्करवरद्वीपार्धयोः पूर्वाप
रार्द्धयोर्मर्यादाकारिणो दक्षिणोत्तरायताः पर्वतत्रिशेपाः, वृत्तपर्वताः=गन्दापाति
बिरुटापातिगन्धापातिमाल्ययन्नामका वर्तुलनैद्वयपर्वताः, कुण्डला-जम्बूद्वीपादे

एव दीर्घायुष्क होते हैं, परन्तु वे भी परिग्रह के विषय में सतोष से रहित ही रहते हैं। अतः जय इन देवों की यह दशा है तो फिर अन्य देवों की घात ही क्या कही जा सकती है। ये सब देव अत्यन्त बहुत बड़े लोभ से अभिभूत-युक्त सज्ञा-मनोवृत्ति वाले होते हैं, अर्थात्-सग्रहशील होते हैं। (वासुदेवसखुगार चट्ट पञ्चयकुडलरूपगवरमाणुसुत्तरकालोदहीलवणसलिलदहपतिरतिकर अजणकसेलदहिमुह-ओवा युष्पायकचणकविचित्तजमकवरसिहरिकूडवासी) तथा हिमवत् आदि वर्षधरों में, इण्डोकारो में-घातकीखड तथा जाधे पुष्करधरद्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध रूप दो भागों की मर्यादाकारी तथा दक्षिणोत्तर तक लंबे ऐसे पर्वतों में, वृत्तपर्वतों में शब्दापाति, विकटापाति, गन्धापाति तथा माल्यवान् इन नामके वर्तुल वैताड्य पर्वतों में, कुडलो में ग्यारह जम्बू

પરિચ્છેદના વિષયમાં સતોપ રહિત જ રહે છે તો જ્યારે એ દેવોની એવી હાલત છે તો બીજા દેવોની તો વાત જ શી કરવી ! એ બધા દેવો અત્યંત લોભી વૃત્તિના હોય છે, એટલે કે તેઓ સગ્રહશીલ હોય છે “વાસહર-દ્વક્ષુગારવટ્ટ-પન્થવ-કુદલ-રુચમવર-માણુસુત્તર-કાલોદદિ-લવણસલિલ-દદ્દહપતિ રતિકર-અજ્ઞાનરુસેલદદિમુહોવાયુપ્પાયરુચ્ચનકવિચિત્ત જમકવરસિહરિ કૂદવાસી” તથા હિમવત્ આદિ વર્ષધરોમાં ઇષુકારોમાં, વાતકી ખડ તથા અર્ધા પુષ્કવરવર દ્વાપના પૂર્વાર્ધ અને પશ્ચિમાર્ધરૂપ એ ભાગોની મર્યાદા દર્શાવતા તથા દક્ષિણથી ઉત્તર સુધી લાળા એવા પર્વતોમાં, વૃતપર્વતોમાં-શબ્દાપાતિ, વિકટાપાતિ, ગદ્યાપાતિ, તથા માત્યવાન એ નામના વર્તુલ વૈતાલ્ય પર્વતોમાં કુડલોમાં-અગિયાર જ બૂદ્ધીપથી કુડલા નામના દ્વીપની અદર આવેલ કુડલા-

तथा चन्दनवनकूट आदिकों में इनके बसने का स्वभाव होता है। ऐसे ये चारों प्रकार के देव परिग्रह में तृप्ति धारण नहीं करते हैं।

भावार्थ—भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी एवं कल्पवासी, इस प्रकार से ये दोनों के मूल चार भेद हैं इनमें भवनपति देवों के असुर-कुमार आदि दश भेद, व्यन्तरनिकाय के-पिशाच, भूत आदि सोलह भेद, ज्योतिष्क निकाय के सूर्य, चन्द्र आदि पाचभेद, तथा कल्पवासियों के उल्पोपपन्न और कल्पातीत ऐसे दो भेद हैं। सौधर्म ईशान आदि बारह कल्पों में रहने वाले कल्पोपपन्न, और नवत्रैवेयक तथा पच अनुत्तर विमानों में रहने वाले कल्पातीत हैं। मनुष्यक्षेत्र में रहने वाले ज्योतिषी देव भ्रमणशील हैं तथा मनुष्यक्षेत्र से बाहिर के ज्योतिषी देव अचस्थित हैं। इन सब देवों के भवन, वाहन आदि विशिष्ट प्रकार का परिग्रह रहता है। उसके रहने पर भी इनकी भावना फिर अधिक परिग्रह की ओर सग्रहशील रहती है। इन सब देवों का हिमवन् आदि पर्वतों में रहने का होता है। सब प्रकार की इन्हें सुख-सामग्री प्राप्त रहती है फिर भी इनकी वाञ्छा परिग्रह की ओर से तृप्ति नहीं होती है। सतोषवृत्ति इनके चित्त में नहीं जगती है ॥ सू० ३ ॥

पर्वतोभा चन्दनवनकूट आदिभा वसवानो जेमनो स्वभाव छे ओ आरे प्रका-
रना देवो पणु परिग्रहथी तृप्त थता नथी

भावार्थ—लवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी अने कल्पवासी, ओ गीते देवाना भूण आर लेह छे तेभा लवनपति देवाना अमुरकुमार आदि दश लेह, व्यन्तर देवाना पिशाच, भूत आदि सोण लेह, ज्योतिषी देवाना सूर्य, चन्द्र आदि पाच लेह, तथा कल्पवासीआना कल्पोपपन्न, अने कल्पातीत ओवा ओ लेह, सौधर्म, ईशान आदि बारह कल्पोभा रहेंनार उल्पोपपन्न, अने नवत्रैवेयक तथा पाच अनुत्तर विमानोभा रहेंनार कल्पातीत देवो छे मनुष्य क्षेत्रभा रहेंनारा ज्योतिषीदेवो भ्रमणशील छे तथा मनुष्य क्षेत्रनी ण्डारना ज्योतिषी देवो स्थिर छे ओ गधा देवानो लवन, वाहन आदि विशिष्ट प्रजारनो परिग्रह रह छे ते गधी वस्तुओ छोवा छता पणु तेमनी वृत्ति अधिउ परिग्रहने भाटे सग्रह-शील रह्ना करे छे, ते गधा देवानु निवासस्थान डिमवान आदि पर्वतो छे तेमने गधा प्रजारनी सुखसामग्रीओ मणे छे छता पणु परिग्रह भाटेनी तेमनी वासना तृप्त थती नथी तेमना चित्तभा सतोष वृत्ति जगती नथी ॥ सू० ३ ॥

અવપતન્તિ વૈમાનિકા દેવા યેષુ તેઽપાતાઃ, યત્રાવપત્ય વૈમાનિકા દેવા મનુષ્ય-
ક્ષેત્રેષુ સમાગચ્છન્તિ, ઉત્પતન્તિ ચેભ્યસ્તે ઉપાતાઃ, ચેભ્ય ઉત્પત્ય મનપતયો
મનુષ્યક્ષેત્રે સમાગચ્છન્તિ, અપાતાથોત્પાતાથેતિ ડ્વન્દ્વઃ, તિગિ-ઝડ્ઝાદય
પર્વતા इत्यर्थः, તથા-કાશ્ચનકા = ઉત્તરકુરુમ યે દેવકુરુમ યે ચ પ્રત્યેક પશ્ચાના
મહાહ્વાદીના પ્રત્યેકમુખયોઃ પાર્શ્વયોઃ દશદશ કાશ્ચનકપર્વતા સન્તિ, इति सर्व
સંકલનયા દ્વિશતસંખ્યકાઃ કાશ્ચનકપર્વતા મગન્તિ । તત્ત ચિત્રવિચિત્રો = નિપથ
નામક વર્ષધર સમીપવર્તિનો શીતોદાભિધાનમહાનદ્યુમયતટવર્તિનો ચિત્રવિચિત્રકૂ
ટાભિધાનપર્વતો, યમકરનો = નીલવદ્ વર્ષધર પ્રત્યારાત્રો શીતાભિધાનમહાનદ્યુમયત-
ટવર્તિનો યમકરનામકો પર્વતો, શિશ્વરિણઃ = સમુદ્રમ-વર્તિનો ગોસ્ત્રુભાદિ-
પર્વતાઃ, કૂટા = વન્દનચનકૂટાદય, ગતેષા દ્વન્દ્વઃ, એપુ યસ્તુ શીલ યેષા તે તથોક્તા,
દેવાઃ પરિગ્રહે તૃપ્તિ ન લમન્તે ॥ સૂ. ૩ ॥

ળિયો કે મધ્યભાગ મે જો સોલહ સોલહ શ્વેત પર્વત હૈં ડનમૈં, અપાત-
પર્વતો મૈં-જહાં ઉત્તરકર વૈમાનિક દેવ મનુષ્ય ક્ષેત્ર મૈં આતે હૈં ડન સ્થાનો
મૈં (ચે સ્થાન તિગિઝડ્ઝાદિ નામ ચાલે પર્વત કહલાતે હૈં) કાશ-
નપર્વતો મૈં-ચે પર્વત ઉત્તરકુરુ તથા દેવકુરુ કે ઝીચ મૈં હર ઇક પાંચ
મહાહ્વાદોં કે પ્રત્યેક કે ડોનોં કોનોં પર દશ દશ હૈં । હસ તરહ સે ચે
ડોનોં ડોસોં કી સંખ્યા મૈં હૈં ડન પર્વતોં મૈં, ચિત્રવિચિત્ર કૂટ નામ કે
પર્વતોં મૈં-ચે ડોનો પર્વત નિપથ નામકે વર્ષધર કે સમીપ મૈં હૈં, તથા
શીતોદા નામકી મહાનદી કે ડાનો તટ પર વર્તમાન નીલ વર્ષધર કે
પાસ રહે હુવ તથા શીતા મહા નદી કે ડોનોં તટ પર વર્તમાન ઇસે યમ
કર નામ કે પર્વતોં મૈં, શિશ્વરી-સમુદ્રમ-વર્તો ગોસ્ત્રુભ આદિ પર્વતોં મૈં,

સોળ પુષ્કરણિયોના મધ્ય ભાગમા જે સોળ સોળ શ્વેત પર્વત છે તેમા, અવ
પાત પર્વતોમા-અથા ઉતરીને વૈમાનિક દેવો મનુષ્ય ક્ષેત્રમા આવે છે એ સ્થા
નોમા, ઉપાત પર્વતોમા-અથા ઉતરીને ભવનપતિ મનુષ્યક્ષેત્રમા આવે છે તે
સ્થાનેમા (તે સ્થાને તિગિઝડ્ઝાદિ નામના પર્વતો ડહેવાય છે) કાશનક
પર્વતોમા-તે પર્વતો ઉત્તરકુરુ તથા દેવકુરુની વચ્ચેમા દરેક પાંચ મહાહ્વાદોમાના
પ્રત્યેકના બે બૂણા પર દશ દશ છે, અને એ ગીતે તે બે બેસોની સંખ્યામા
છે, તે પર્વતોમા, ચિત્રવિચિત્રકૂટ નામના પર્વતોમા-એ બે પર્વતો નિપથ
નામના વર્ષધરની પાસે છે, તથા શીતોદા નામની મોટી નદીના બે કિનારા
પર આવેલા છે, નીલ વર્ષધરની પાસે આવેલ તથા શીતા મહાનદીના કિનારા
પર આવેલ યમકર નામના પર્વતોમા શિશ્વરી-સમુદ્રની વચ્ચેના ગોસ્ત્રુભ આદિ

हुति, नियमा सल्ला दडा य गारवा य कमाया य सन्ना य-
कामगुणअणहगा य इदियलेसाओ, सयणसपओगा सचि-
त्ताचित्तमीसगाइ दव्वाइ अणंतगाइ इच्छति परिघेत्तु ।
सदेवमणुयासुरम्मि लोए । लोभपरिग्गहो जिणवरेहि
भणिओ, नत्थि एरिसो पासो पडिवधो अत्थि सव्वे जीवाण
सव्वलोए ॥ सू० ४ ॥

टीका—‘वक्खार अकम्मभूमीसु’ वक्खारारुक्मभूमिसु वक्खारारुक्मभूमिसु = चित्रकूट-
दादयो विजयविभागकारिणश्च, अकम्मभूमय = हैमवतिक भोगभूमयश्च तासु तथो-
क्तासु ये वर्तन्ते, तथा ‘सुविभक्तभागदेशासु’ सुविभक्तभागदेशासु सुविभक्ता
भागदेशा ननपदा यासु तान्तथोक्तासु ‘कम्मभूमिसु’ कर्मभूमीसु—कृप्यादि
कर्मस्थानभूतेषु भारतादिषु ‘जे वि य’ येषां च नराः ‘चाउरतचक्कवट्ठी’ चा-
तुरन्तचक्रवर्तिनो वासुदेवाः पल्लदेवा मडलिया माण्डलिका इस्सरा ईश्वराः
‘तलवरा’ तलवराः, ‘सेणावई’ सेनापतय, ‘इब्बा’ इब्बाः ‘सेट्ठी’ श्रेष्ठिनः

अथ सूत्रकार मनुष्य के परिग्रह का वर्णन करते हैं—‘वक्खार-’
इत्यादि (वक्खार अकम्मभूमीसु) विजय विभागकारी चित्रकूट आदि,
वक्खारों में, अकर्मभूमियो में—हैमवतिक आदि युगलिक धर्मवाले
क्षेत्रों में, तथा (सुविभक्तभागदेशासु कम्मभूमीसु) सुविभक्त भाग
देशवाली कर्म भूमियों में—कृप्यादि कर्म के स्थानभूत भरत आदि क्षेत्रों
में (जे वि य नरा चाउरत चक्कवट्ठी वासुदेवाः पल्लदेवा मडलिया इस्सरा
तलवरा सेणानईइब्बा सेट्ठिया रट्ठिया पुरोहियाकुमारा दडणायगा
गणणायगा माडविया सत्थवाहा कोडुयिगा अमच्चो एए अण्णे य एव-
मादी परिग्ग सच्चिगति) जो भी मनुष्य हैं, चातुरन्तचक्रवर्ती हैं,

इसे सूत्रकार मनुष्याना परिग्रहण वरुण करे छे—“वक्खार” इत्यादि

“वक्खार-अकम्म भूमीसु” विजय विभागकारी चित्रकूट आदि वक्खार
शेमा, अकर्मभूमियोमा—हैमवतिक आदि युगलिक धर्मवाणा क्षेत्रमा, तथा
“सुविभक्तभागदेशासु कम्मभूमीसु” सुविभक्त भाग देशवाणी कर्मभूमियोमा—
भेती आदि कर्मना स्थानइप लभत आदि क्षेत्रमा “जेविय नरा चाउरतचक्कवट्ठी
वासुदेवाः पल्लदेवा मडलिया इस्सरा तलवरा सेणावई इब्बा सेट्ठिया रट्ठिया पुरोहिया
कुमारा दडणायगा गणणायगा माडविया सत्थवाहा कोडुयिगा अमच्चो ए ए
अण्णे य एवमादी परिग्गह सच्चिगति ” २ मनुष्यो छे, चातुरन्त चक्रवर्ति छे

अथ मनुष्यपरिग्रहं प्रणयति—‘यस्त्वार’ इत्यादि—

मूलम्—चक्रवार अकम्मभूमीसु सुविभक्तभागद्वेसासु क-
म्मभूमीसु । जे त्रि य नरा चाउरंतचक्रवट्टी वासुदेवा बल-
देवा मंडलिया इस्सरा तलवरा मेणावई इट्ठभा सेट्ठिया
रट्ठिया पुरोहिया कुमारा दडणायगा गणणावगा माडंविया
सत्थवाहा कोडुविया अमच्च एए अण्णे य एवमादी
परिग्गह संचिणंति—अणत्तमत्तरणं दुरतं अधुवमणिच्च
असासय पावकम्मनेम अचकिरियत्त विणासमूल वहवध
परिकिलेसवहुलमणंतसकिलेसकरणं । ते त धणकणगरय-
णनिचियपडिया चेव लोभघत्था सत्तार अतिवयंति सच्च-
दुक्खसन्निलयण । परिग्गहस्सेव य अट्टाएसिप्पसय सिक्खए
वहुजणो कलाओ य वावत्तरिसुनिउणाओ लेहादियाओ
सउणरुआवसाणाओ गणियप्पहाणाओ चउसट्ठिं च महि-
लागुणे रइजणणे सिप्पसेव असिमसि किसिवाणिज्ज ववहार
अत्थसत्थ इसुसत्थ च्छरुप्पगय विविहाओ य जोगजुज-
णाओ । अन्नेसु य एवमाइएसु बहुकारणसएसु जावजीव
नडिज्जए सचिणंति मदबुद्धी परिग्गहस्सेव य अट्टाए करेति
पाणाणवहकरण, अलियनियडि साइसपओगे परदव्व
अभिज्झ सपरदार-गमणासेवणाए आयासविसूरण कलह-
भडणवेराणि य अवमाणविमाणणाओ । इच्छमहिच्छपिवा-
ससत्त तिसिया तण्हगेहिलोभघत्था अत्ताण अनिग्गहिया
करेति कोहमाणमायालोभे अकित्तणिज्जे । परिग्गहे चवे

પાપકર્મણાં=વિનષ્ટજ્ઞાનાવરણીયાદિકર્મણાં મૂલમિત્યર્થઃ, તથા ‘અવકિરિયન્વ’
અવકરિતવ્યમ્, -ત્યાજ્યમ્, ‘વિનાસમૂલમ્’ વિનાશમૂલમ્=જ્ઞાનાદિગુણનાશકાર-
કમ્, ‘વદ્યવધપરિકિલેસવદ્દુલ’ વધવ્યવધપરિકલેશવદ્દુલમ્=યથો-ર્હિસન, વન્ધો-
વન્ધનમ્, તજ્જનિતા પરિકલેશાસ્તાપા વદ્દુલા =મચુરા યસ્મિન્સ્ત તથોક્તમ્, તથા
-‘અણતસકિલેસકારણ’ અનન્તમવલેશકારણમ્-અનન્તા યે સવલેશાઃ=દુઃસ્વાનિ-
તેષા કારણમ્ । એનાદશ પરિગ્રહ ચક્રવર્ત્યાદયસ્તદ્વિન્નાશ્ચ નરાઃ સચિન્વન્તિ । તે-
પૂર્વોક્તાઃ ‘લોભવત્થા’ લોભવત્થાઃ ‘ત ધનક્રુગગ રયણનિચય’ ત ધનકનક
રત્નનિચય ‘પહિયાચેવ’ પિન્ડયન્તથૈવ સસાર=ચતુર્ગતિલક્ષણમ્, ‘અતિવચયિતિ’

ભાવ વાલા હોને કે કારણ યહ અશાશ્વત હૈ । (પાવકર્મનેમ) જ્ઞાનાવર-
ણીય આદિ કર્મોં કા કારણ નૂલ હોને સે યહ પાપકર્મ કા નેમભૂત હૈ ।
(અવકિરિયન્વ) મુમુક્ષુઓ કો છોડને યોગ્ય હોને કે કારણ યહ અવ-
કરિતવ્ય-ત્યાજ્ય હૈ । (વિનાસમૂલ) જ્ઞાનાદિગુણોં કે નાશ કા હેતુ
હોને સે યહ વિનાશમૂલ હૈ । (વદ્યવધપરિકિલેસવદ્દુલ) ઇસકે ખીતર
વધ-ર્હિસા, વધ-વધન, ઓર પરિકલેશ-સતાપ યે સમ વહુત અધિકરૂપ
મેં હુણ હૈ । (અણતકિલેસકારણ) ઇસીલિયે યહ જીવો કો અનતસ-
વલેશ કારણ હોતા હૈ । એસે ઇસ પરિગ્રહ કો ચક્રવર્તીં જન આદિ તથા
ઇનસે ભિન્ન જો ઓર મનુષ્ય હૈ વે સચિત કરતે રહતે હૈ । કયોં કિ યે
સમસ્ત હી જન (લોભવત્થા) લોભરૂપ કપાય સે ગ્રસિત હોતે હૈ । (તં
ધનકનકગરયણનિચય) ઇસી કારણ ઉસ ધન, કનક એવ રત્ન કે નિચય
કો (પહિયાચેવ) સગ્રહ કરને મેં હી લગા રહા કરતે હૈ । ઇસી કારણ

“ પાવકર્મનેમ ” જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મોંનુ મૂળ કારણ હોવાથી તે પાપકર્મોના
નિમિત્ત રૂપ છે, “ અવકિરિયન્વ ” મુમુક્ષુને તે છોડવા યોગ્ય હોવાથી તે
“ અવકરિતવ્ય ” ત્યાજ્ય છે, “ વિનાસમૂલ ” જ્ઞાનાદિ શુદ્ધિના નાશ ને માટે
કારણ રૂપ હોવાથી તે વિનાશમૂળ છે “ વદ્યવધપરિકિલેસકારણ ” તેની
અદર વધ-ર્હિસા, વધ-વધન, અને પરિકલેશ-સતાપ એ બધું વધારે
પ્રમાણુમા રહેલ છે “ લોભવત્થા ” તે કારણે તે જીવોને અનત સકલેશ—
સતાપનુ કારણ અને છે એવા તે પરિગ્રહનો ચક્રવર્તિ આદિ તથા તે સિવા-
યના બીજા જે માણુસો હોય છે, તેઓ સચ્ચ ડરતા રહે છે, કારણ કે તે
સઘળા લોકો “ ત ધનકનકગરયણનિચય ” તે કારણે તેઓ ધન, કનક, અને
રત્નના સમૂહના “ પહિયાચેવ ” સગ્રહ કરવામા જ લીન રહે છે એ જ

‘રઘ્વિયા’ રાષ્ટ્રિયા: ‘પુરોહિયા’ પુરોહિતા ‘કુમારા’ કુમારા: દડનાયગા ‘
 દણ્ડનાયકા: ‘ગણનાયગા’ ગણનાયકા: ‘માઢમિયા’ માઢમ્મિકા: ‘સત્યવાહા’
 સાર્થવાહા: ‘કુઢમિયા’ કૌઢમ્મિકા: ‘અમચા’ અમાત્યા: ‘એ’ એતે ચાતુ
 રન્તચક્રવર્ત્યાધમાત્યાન્તા: તથા ‘અન્ને ય એવાઈ’ અન્યે ચ એમાદય: = પૂર્વો-
 ક્તેભ્ય: હતરે ચ તત્સદૃશા યે નરા: ‘પરિગ્રહ’ પરિગ્રહ ‘સચિળતિ’ સચિન્વન્તિ
 -પરિગ્રહસ્ય સચપ કુર્વન્તીત્યર્થ કીદૃશ પરિગ્રહમ્ ? ક્ત્યાહ-‘અણત’ અનન્તમ્-
 અપરિમાણત્વાત્, ‘અમરણ’ અશરણ-રક્ષણાસમર્થત્વાત્, ‘દુરત’ દુરન્ત = પર્યવ-
 સાનદારુણમ્ ‘અધુવ’ અધુવ-વિનશ્વરમ્, ‘અનિચ્ચ’ અનિત્યમ્, = અસ્થિરમ્,
 ‘અસાસય’ અશાશ્વત = પ્રતિક્ષણ વિશરણશીલમ્, ‘પાવકમ્મણેમ’ પાપકર્મણેમ-

વાસુદેવ હૈં, વલદેવ હૈં, માણ્ડલિક હૈં, ર્હશ્વર હૈં, તલવર હૈં, સેનાપતિ હૈં,
 ર્હમ્ય હૈં, શ્રેષ્ઠી હૈં, રાષ્ટ્રિય હૈં, પુરોહિત હૈં, કુમાર હૈં, દડનાયક હૈં, ગણ-
 નાયક હૈં, માઢમ્મિક હૈં, સાર્થવાહ હૈં, કૌઢમ્મિક હૈં, અમાત્ય હૈં, તથા
 હનસે ભિન્ન જો ઓર ભી ર્હન્હી જૈસે મનુષ્ય હૈં વે સચ પરિગ્રહ કા સચપ
 કરતે હૈં । અવ સૂત્રકાર વિશેષણો દ્વારા પરિગ્રહ મે વિશેષતા પ્રકટ કરતે
 હૈં વે કહતે હૈં કિ યહ પરિગ્રહ (અણત) અપરિમિત હોને સે અનન્ત હૈં ।
 (અસરણ) રક્ષા કરને મેં અસમર્થ હોને સે અશરણરૂપ હૈં । (દુરત)
 અન્ત મેં ર્હસકા વિપાક જીવોં કો વહુત હી ભયકર રૂપ મેં ભોગના પડતા
 હૈં-ર્હસલિયે દુરન્તવિપાક ચાલા હોને કે કારણ યહ દુરન્ત હૈં । (અધુવ)
 વિનશ્વર સ્વભાવ ચાલા હોને કે કારણ યહ અધુવ હૈં । (અનિચ્ચ)
 અસ્થિર હોને સે યહ અનિત્ય હૈં । (અસાસય) પ્રતિક્ષણ ચિરને કા સ્વ

વાસુદેવ છે, વળદેવ છે, માણ્ડલિક છે, ર્હશ્વર છે, તલવર છે, સેનાપતિ છે, ર્હમ્ય
 છે, શ્રેષ્ઠી છે, રાષ્ટ્રિય છે, પુરોહિત છે, કુમાર છે, દડનાયક છે, ગણનાયક છે,
 માઢમ્મિક છે, સાર્થવાહ છે, કૌઢમ્મિક છે, અમાત્ય છે, તથા તે
 સિવાયના બીજા પણ તેમના જેવા જે લોકો છે તે બધા પરિગ્રહનો સચપ
 કરે છે હવે સૂત્રકાર વિશેષણો દ્વારા પરિગ્રહના વિશેષતા પ્રકટ કરવાને માટે
 કહે છે કે-આ પરિગ્રહ “અણત” બેહદ હોવાથી અનન્ત છે “અસરણ”
 રક્ષા કરવાને અસમર્થ હોવાથી અશરણરૂપ છે, “દુરત” હોવાને તેનો
 વિપાક (ફળ) બહુ જ ભયકર રીતે ભોગવવું પડે છે-તેથી દુરન્ત વિપાક
 વાળો હોવાને કારણે તે દુરન્ત છે “અધુવ” નાશવત સ્વભાવનો હોવાથી
 તે અધુવ છે, “અનિચ્ચ” અસ્થિર હોવાથી તે અનિત્ય છે, “અસાસય”
 પ્રતિક્ષણ હાથમાથી ખરી પડવાના સ્વભાવવાળો હોવાથી તે અશાશ્વત છે,

અવસરો લભ્યતે તત્ શિલ્પ 'શિલ્પસેવા' इत्युच्यते, तथा 'असिमसिकिसिवा-
णिज्ज' असिमपीकृपिवाणिज्यम्=असिःखट्वाभ्यासः, मसि.=ममिकृत्यमक्षरलेख-
नादि, कृपिः=रूपणम्, 'वाणिज्ज' वाणिज्यम्=वणिक्कर्म, एतेषा समाहारद्वन्द्वः,
तत् 'व्यवहार' व्यवहार=व्यवहारशास्त्रम्, तथा 'अत्थसत्थ' अर्थशास्त्रम्, अर्थो-
पायप्रतिपादक कौटिल्यवार्हस्पत्याद्यशास्त्रम्, 'इमुसत्थ' इषुगशास्त्रम्-अनुवेद
'छरुप्पगय' त्सरुप्पगत=खट्वमुष्टिग्रहणोपाय, तथा 'विविहाओ' विविधाः
'जोगजुजणाओ य' योगयोजनाश्च=वशीकरणदिप्रयोगाश्च शिक्षते । तथा

દુષ્ટ હે સીખતે હે । તથા (સિલ્પસેવ) એસી શિલ્પ વિદ્યા કો સીખતે હે
કિ જિસ્કે ચલ પર ઉર્ને રાજા કો સેવા કરને કા અવસર પ્રાપ્ત હો જાતા
હે । તથા અસિ, મપી, કૃપિ ંવ વાણિજ્યવ્યાપાર, (વ્યવહાર) વ્યવહાર
શાસ્ત્ર ઇન કર્મો કો સીખતે હે । તલવાર વગેરહ અસ્ત્ર શસ્ત્રાદિ સે
આજીવિકા ચલાના હસકા નામ અસિકર્મ હે । લેખન આદિ કરકે જીવન
નિર્વાહ કરના હસકા નામ મપીકર્મ હે । લેખી કિસાની કરકે જીવિકા
ચલાના હસકા નામ કૃપિકર્મ હે । વ્યાપાર ધંદા કરના હસકા નામ વાણિ-
જ્ય કર્મ હે । જિસસે લોક વ્યવહાર ચલતા હે વહ વ્યવહારશાસ્ત્ર હે ।
પરિગ્રહી જીવ (અત્થસત્થ) અર્થશાસ્ત્ર કા બી અધ્યયન કરતે હે । હસ
અર્થ શાસ્ત્ર કે પ્રણેતા કૌટિલ્ય, વૃહસ્પતિ આદિ દુષ્ટ હે । હસકે અધ્યયન
સે વ્યાપારિક ક્ષેત્ર મેં વ્યાપારિયોં કો પૈસેકી આયકે સાધન કેસેર ક્યાર
હોતે હે હસ સ્વ વિષય કા બોધ હો જાતા હે । હસી પરિગ્રહ કી મમતા
સે જીવ (હસુસત્થ) ધનવેંદ કો (છરુપ્પગય) તલવાર આદિ કે ચલાને
કી કલા કો તથા (વિવિહાઓ જોગજુજનાઓ) વશીકરણ આદિ

તેમને રાજાની મેવા કરવાની તક મળે તથા અસિ, મપી, કૃપિ અને વાણિજ્ય
વ્યાપાર, 'વ્યવહાર' વ્યવહાર નામ વગેરે કાર્યો શીખે છે તલવાર આદિ
અસ્ત્ર શસ્ત્રાદિથી નિર્વાહ ચલાવવો તેનું નામ અસિકર્મ છે, લેખન આદિ
કરીને જીવન નિર્વાહ ચલાવવો તેનું નામ મપીકર્મ છે જેથી જીને નિર્વાહ
ચલાવવો તેનું નામ કૃપિકર્મ છે વ્યાપાર રાજગાર કરવો તેનું નામ વાણિજ્ય
કર્મ છે જેનાથી લોકવ્યવહાર ચાલે છે તે વ્યવહારશાસ્ત્ર છે પરિગ્રહી જીવ
“અત્થસત્થ” અર્થશાસ્ત્રનું પણ અધ્યયન કરે છે તે અર્થશાસ્ત્રના પ્રણેતા
કૌટિલ્ય, વૃહસ્પતિ આદિ થયા છે તેના અભ્યાસ કરવાથી વ્યાપારના ક્ષેત્રમાં
પૈસા ઝાપવાના સાધનો કેવા કેવા હોય છે, અને કયા કયા હોય છે એ
બધી બાબત વેપારીઓને જાણવા મળે છે એ જ પરિગ્રહની મમતાથી જીવ
“હસુસત્થ” ધનવેંદ, “છરુપ્પગય” તલવાર આદિ વાપરવાની કળા, તથા

‘અતિવ્રજન્તિ-પ્રાપ્તુવન્તોત્તર્ય, કીટશ સસારમ્ ?’ इत्याह—‘सव्यदुक्खसमनिलयण’
 सर्वदुःखसमनिलयनम्=सर्वदुःखानां संनिलयनम्=आश्रयभूतम्। तथा-‘परिग्गहस्स
 य अट्ठाए’ परिग्रहस्य च अर्थाय=परिग्रह लक्षिकृत्येत्यर्थः,, ‘वट्टजणो’ बहुजनः=
 जनसमुदायः ‘सिप्पसयं’ शिल्पगत=आचार्योपदेशगम्यमनेकविध शिल्प ‘सि
 क्खते’ शिक्षते। तथा ‘मुनिउणाओ’ मुनिपुणाः=शिक्षार्थिना मुनैपुण्याधायकाः
 ‘लेहाइयाओ’ लेखादिकाः=लेख आदौ यासां तास्तथोक्ता, ‘सउणरूयाअसा
 णाओ’ शकुनरूपासानाः=शकुनानां पक्षिणा रूपा जल्पितमरसानेऽन्ते यासां
 तास्तथोक्ताः, ‘गणियप्पहाणाओ’ गणितप्रधानः=गणित प्रधान यासु तास्तथोक्ताः,
 ‘वावत्तरिं’ द्विसप्ततिं ‘कलाओव’ कलाश्च शिक्षते। तथा-‘रतिजणणे’
 रतिजननान्=रति=राग जनयन्ति ये ते रतिजननास्तास्तथोक्तान् ‘चउसट्ठिं च
 महिला गुणे’ चतुः पण्डि च महिलागुणान्=वात्स्यायन प्रोक्तान् नृत्यगीतादीन्,
 तथा ‘सिप्पसेव’ शिल्पसेवा=शिल्पेन सेवा ता तथोक्ताम्, येन शिल्पेन राजसेवा

૧ પરિગ્રહી જીવ (સવ્યદુઃખસમનિલયણ) સમસ્ત દુઃખો કે આશ્રયભૂત હસ
 (સસાર) ચતુર્ગતિરૂપ સસાર મેં (અતિવ્રજતિ) ભટકતે રહતે હૈં । તથા
 (પરિગ્રહસ્સય અટ્ટાએ વટ્ટજણો સિપ્પસય સિક્કણ) હસ પરિગ્રહ કે
 નિમિત્ત કો લેકર હી વહુત સે લીગ કલાચાર્ય કે ઉપદેશ સે પ્રાપ્ત હોતે
 ૨ વાલે અનેક શિલ્પો કો સીખતે હૈં તથા (મુનિઉણાઓ લેહાઇયાઓ સઉ
 ૩ ણરૂયાવસાયાઓ ગણિયપ્પહાણાઓ વાવત્તરિકલાઓ) અપને મેં અઠ્ઠી
 ૪ તરહ સે નિપુણતા વઢાને વાલી લેખકલા સે લેકર શકુનરૂપ પર્યય ૭૨ બહતર
 ૫ કલાઓ કો જિને કિમે ગણિતપ્રધાન હોતા હૈં સીખતે હૈં તથા (રહજણે
 ૬ ચઉસટ્ઠિં ચ મહિલાગુણે) રાગજનક નૃત્ય, ગીત આદિ સ્ત્રીયો સે સબધ
 ૭ રાખને વાલી ચૌસઠ કલાઓ કો કિ જિનકે પ્રદર્શક વાત્સ્યાયન ઋષિ

કરશે પરિશ્લેષી ૯૪ “ સવ્યદુઃખસમનિલયણ ” સમસ્ત દુઃખોના આશ્રયભૂત આ
 “ સસાર ” આર ગતિવાળા સસારમા “ અતિવ્રજતિ ” ભટકતા કરે છે, તથા
 “ પરિગ્રહસ્સય અટ્ટાએ વટ્ટ જણો સિપ્પસય સિક્કણ ” આ પરિગ્રહને નિમિત્તે જ
 ધણા લોકો ડલાચાર્યના ઉપદેશથી પ્રાપ્ત થતી અનેક કળાઓ શીખે છે, તથા
 “ મુનિઉણાઓ લેહાઇયાઓ સ ઋણરૂયાવસાયાઓ ગણિયપ્પહાણાઓ વાવત્તરિકલાઓ ”
 પોતાની નિપુણતા સારી રીતે વધારનારી લેખન કળાથી લઈને શકુનરૂપ સુધીની
 ૭૨ એતેર કલાઓ કે જેમા ગણિત મુખ્ય હોય છે તે બધી કળાઓ શીખે છે,
 ૮ તથા “ રહજણે ચઉસટ્ઠિં ચ મહિલાગુણે ” રાગ જનક નૃત્ય, ગીત આદિ સ્ત્રીઓ સાથે
 ૯ સબધ રાખનારી ચૌસઠ કલાઓ શીખે છે એ કલાઓના પ્રદર્શક વાત્સ્યાયન
 ઋષિ હતા તથા “ સિપ્પસેવ ” એવી શિલ્પ વિદ્યાઓ શીખે છે કે જેને પ્રભાવે

‘ અભિજ્ઞા ’ અભિધ્યા-આસક્તિસ્તાં તથોક્તામ્, તથા ‘ સપરદારગમણાસેવણા’ સ્વદારગમનસેવનાયામ્ ‘ આયાસવિસૂરણ ’ આયાસચેદ, સ્વદારગમને આયાસ-શારીર માનસ ચ શ્રમમ્, પરદારાસેવને ચેદમ્=પરદારાપ્રાપ્તો મનઃ ચેદ ચ કુપ-ન્તીત્યર્થઃ, તથા ‘ કલહમહળવેરાણિ ચ ’ કલહમહળનવૈરાણિ ચ તત્ર-કલહો-વાચિક યુદ્ધમ્, મહળનમ્-પરદોષોદ્ઘાટન ગાલીપ્રદાન વા, વૈર=ચિત્તેષ્મર્ષાનુવન્ધઃ, તથા ‘ અવમાણવિમાણનાઓ ’ અપમાનવિમાનને, અપમાન વિનયધ્વસઃ, વિમાનના=તિરસ્કરણમ્, એતાનિ સર્ગાણિ પરિગ્રહસ્યેવાર્થાય કુર્વન્તિ । તથા ‘ ઈન્ડમહિન્ડ પિવાસસયતિસિયા ’ ઈન્ડામહેન્ડાપિવાસાસતતતૃપિતા, તત્ર ઈન્ડા=અભિલાપમા-ત્રમ્, મહેન્ડા=મહાભિલાપશ્રવત્યર્થાદિપદાના પિવાસા=પિપયસુલ્લખાનેન્ડા, તામ્યઃ તૃપિતા ઇત તૃપિતાઃ તથા ‘ તળાગેહિલોભચત્થા ’ તૃણાગૃહિલોભગ્રન્તાઃ, તૃણા=અપ્રાપ્તદ્રવ્યસ્ય લાભેન્ડા’ ગૃહિઃ=પ્રાપ્તદ્રવ્યાસક્તિ, લોભઃ=ચિત્તપ્રિમોહનમ્, તૈર્ગ્ર-

કરતે હૈ । (પરદન્વઅભિજ્ઞા) દુસરોં કે દ્રવ્ય મેં આસક્તિ ભાવ કરતે હૈ । (સપરદારગમણા સેવણા’ આયાસ વિસૂરણ) અપની સ્ત્રી કે સેવન મેં શારીરિક એવ માનસિક પરિશ્રમ કરતે હૈ, પરસ્ત્રી કે અપ્રાપ્તિ મેં મનચેદ કિયા કરતે હૈ । તથા (કલહમહળવેરાણિય) કલહ-વાચિક યુદ્ધ, મહળ-અસમ્ય શબ્દો કા પ્રયોગ-ગાલી દેના આદિ, વૈર-ચિત્ત મેં ક્રોધ કરના તથા (અવમાણવિમાણનાઓ) દુસરોં કા અપમાન કરના, તિરસ્કાર કરના એ સવ ઘાતેં હમ એક પરિગ્રહ કે નિમિત્ત હી પાપિયો દ્વારા કી જાતી હૈ । તથા (ઈન્ડમહિન્ડ પિવાસસયતિસિયા) પરિગ્રહી જીવ ઈન્ડાઓ સે, ઘડી ૨ અભિલાપાઓ સે, એવ પિપય સુલ્લખાન કી કામનાઓસે સદા તૃપિત વ્યક્તિ કી તરહ તૃપિત હી બને રહતે હૈ । તથા (તળાગેહિ લોભ-ચત્થા) તૃણા-અપ્રાપ્ત-દ્રવ્ય કો પ્રાપ્ત કરને કી ભાવના, ગૃહિ-પ્રાપ્તદ્રવ્ય મેં

અભિજ્ઞા ” બીજાના દ્રવ્યમા આસક્તિ રાખે છે “ સપરદારગમણાસેવણા’ આયાસવિસૂરણ ” પોતાની સ્ત્રીને સેવવાનો શારીરિક અને માનસિક પરિશ્રમ કરે છે, એને પરસ્ત્રીની અપ્રાપ્તિથી મનમા ખેદ અનુભવે છે તથા “ કલહ મહળવેરાણિય ” કલહ-વાચુદ્ધ, લડન-ગાણો આદિ અસમ્ય શબ્દોનો ઉપયોગ વૈર-મનમા ક્રોધ ડાલે તથા “ અવમાણવિમાણનાઓ ” બીજાનું અપમાન, તિરસ્કાર વગેરે બધી બાબતો એક પરિશ્રદને ઝરણે જ લોકો દ્વારા કરાય છે, તથા “ ઈન્ડમહિન્ડ પિવાસસયતિસિયા ” પરિશ્રદી એવ ઇન્ડાઓથી, મોટી મોટી અભિલાષાઓથી, અને વિપય સુખપાનની ઝમનાઓથી સદા તૃપિત માણુ સની જેમ તૃપિત જ રહ્યા કરે છે તથા “ તળાગેહિ લોભચત્થા ” તૃણા-અપ્રાપ્ત દ્રવ્યને પ્રાપ્ત કરવાની ભાવના, ગૃહિ-પ્રાપ્ત દ્રવ્યમા વધારે પડતી આસક્તિ અને

‘અન્નેસુ ઇવામાદૈસુ’ ‘વહુસુકારણસપસુ’ અન્યેસુ ઇવામાદિકેષુ વહુસુ
કારણશ તેષુ=શિલ્પાદિભિન્નેષુ પરિગ્રહોપાદાનશતેષુ ‘જાવજીવ’ યાવજ્જીવં
‘નહિજ્જા’ નિમજ્જતે=નિમગ્ની ભવતિ । તથા ‘સચિણતિ મદયુદ્ધી’ સચિ-
ન્વન્તિ મન્દયુદ્ધય પરિગ્રહમ્ । તથા ‘પરિગ્રહસ્સેવ ય અદ્વાઇ કરેતિ’ પરિગ્રહસ્ત્યેષ
ચ અર્થાય કુર્વન્તિ, ‘પાણાણવહકરણ’ પ્રાણાના વધકરમ્=પરિગ્રહ કર્તુ પ્રાણિના
વધ કુર્વન્તીત્યર્થઃ, તથા—‘અલિયનિયદિસાહસપઓગે’ અલીકનિકૃતિસાતિ
સપ્રયોગાન્, અધિકમ્-અસત્યમ્, નિકૃતિઃ-મધુરપચનાદિભિરાશ્વાસ્ય વચ્ચનમ્,
સાતિસપ્રયોગઃ-ત્રિગુણદ્રવ્યેષુ દ્રવ્યાન્તર સયોજ્ય મશસ્તગુણભ્રમોત્પાદનમ્, એતેષા
દ્વન્ધ, તાસ્તથોક્તાન્, ‘પરદન્ધ અમિજ્ઞ’ પરદ્રવ્યાભિધ્યામ્-પરદ્રવ્યેષુ=પરધનેષુ

અનેકવિધ પ્રયોગોં કોં બી (સિચ્ચા) સીચતે હે । (અન્નેસુ ય ઇવા-
માદૈસુ) તથા ઇસી તરહ કે ઓર બી હન શિલ્પાદિકોં સે ભિન્ન અનેક
(વહુકારણસપસુ) પરિગ્રહ કે સંકડોં કારણોં મેં પરિગ્રહ કોં ! અર્જન કરને
કી લાલસાવાલા પ્રાણી (જાવજીવ) જીવન પર્યંત (નહિજ્જા) મગ્ન હોતા
રહતા હે । (સચિણતિ મદયુદ્ધી) હસલિયે હસ કથન સે યહી નિષ્કર્ષ
નિકલતા હે કિ જો મદયુદ્ધિ હોતે હેં વે હી ઉત્કટ પરિગ્રહ કા સચય
કરતે હેં । તથા (પરિગ્રહસ્સેવ ય અદ્વાઇ પાણાણવહકરણ કરેતિ) પરિ-
ગ્રહ કે નિમિત્ત હી પ્રાણી પ્રાણિયોં કે પ્રાણોંકોં વધ કરતે હેં તથા (અલિ-
યનિયદિ-સાહ સપઓગે) હસ પરિગ્રહ કોં લક્ષ્ય કરકે, હી વે (અલિય)
અસત્યભાષણ કરતે હેં (નિયદિ) મધુર ૨ ભાષણોં સે દુસરોં કોં વિશ્વાસ
દિલાકર ફિર ઉન્હે ઠગતે હે, (સાહસપઓગે) ઓછી કીમત કી વસ્તુ
મેં વહુમૂલ્યવાલી વસ્તુ કોં મિલાકર ઉસે અધિક મૂલ્યવાલી બનાવિયા

“વિવિદ્ધાઓ જોગજુજનાઓ” વશીકરણ આદિ અનેક વિધ પ્રયોગો પશુ શીખે
“અન્નેસુ ય ઇવામાદૈસુ” તથા તે કળાઓ સિવાયના એ જ પ્રકારના બીજા
અનેક “વહુકારણસપસુ” પરિગ્રહોના સેકડો કારણોમા પરિગ્રહને પ્રાપ્ત કર
વાની લાલસા વાળા હોવે. “જાવજીવ” આપુ હોવન “નહિજ્જા” લીન રહે
છે “સચિણતિ મદયુદ્ધી” તેથી આ કથનથી એ જ ક્ષતિ થાય છે તથા
કે જે લોકો મદહુદ્ધિવાળા હોય છે તેઓ જ ઉત્કટ પરિગ્રહને સચય કરે છે
તથા “પરિગ્રહસ્સેવ ય અદ્વાઇ પાણાણવહકરણ કરેતિ” પરિગ્રહને નિમિત્તે જ
પ્રાણી અથવા પ્રાણીઓના પ્રાણોનો વધ કરે છે, તથા “અલિય-નિયદિ-સાહ
સપઓગે” આ પરિગ્રહને લક્ષ્ય કરીને જ તેઓ “અલિય” અસત્ય બોલે
છે, “નિયદિ” મીઠા મીઠા વચનોથી બીજામા પોતાના પ્રત્યે વિશ્વાસ જમા
વીને પાછળથી તેને ઠગે છે “સાહસપઓગે” ઓછી કીમતની વસ્તુ ભારે
કીમતની વસ્તુ સાથે મિશ્રણ કરીને તેનો વધારે ભાવ ઉપજાવે છે, “પરદન્ધ

લેશ્યાશ્ચ ભવન્તિ । તથા - ' સયણસપયોગા ' સ્વજનસપયોગાઃ=સ્વજનૈઃ=પુત્રદારાદિભિઃ સહ સપયોગ=સપયોગાશ્ચ ભવન્તિ । તે ચક્રવર્ત્યાદયઃ ' અણતગાઢ ' અનન્તકાનિ=પર્યમાનરહિતાનિ ' સચિત્તાચિત્તમીસગાઢ ' સચિત્તાચિત્તમિશ્રકાણિ =તત્ત્વ સચિત્તાનિ સજીયાનિ=પુગદીનિ અચિત્તાનિ=અજીવાનિ=હિરણ્યમુવર્ણરત્નાદીનિ, મિશ્રકાણિ=સચિત્તાચિત્તસ્થાણિ હિરણ્યમુવર્ણાદ્યાભરણસહિતાનિ પુત્રકલ્યાણાન્દાદિ વિષયરૂપ આશ્રય, ઇન્દ્રિયો કી અનર્ગલ પ્રવૃત્તિયા, કૃષ્ણ, નીલ આદિ અપ્રશસ્ત લેશ્યાઈ રહતી હૈં । અર્થાત્ પરિગ્રહ પાપ કે સન્નાવ મેં હી નિયમતઃ માયાદિ શલ્યોં કા સન્નાવ જીવોં મેં પાયા જાતા હૈં । મન વચન આદિ યોગોં કી પ્રવૃત્તિ ઇત્તી કે હોને પર અશુભ રૂપ મે રહતી હૈં । ગૌરવોં કા અસ્તિત્વ તથા કપાયોં કી સત્તા ણવ આહાર આદિ ચાર પ્રકાર કી સન્નાઓ કા સન્નાવ ઇસ ણક પરિગ્રહ કી મૌજૂદગી મેં હી જીવોં મેં પાચે જાતે હ । ઇન્દ્રિયો કી સ્વચ્છદ પ્રવૃત્તિ ણવ કૃષ્ણ આદિ અશુભ લેશ્યાઓં કા સન્નધ ઇસી પરિગ્રહ સે જીવોં મેં પાયા જાતા ટૈં । તથા સ્વજન આદિ કે સાથ કા સન્નધ મી ઇસી પરિગ્રહ કે ડપર નિર્ભર હૈં । ચત્ત્વર્તી આદિ સમી મનુષ્ય યહી ચાહતે હૈં કિ હમારે પાસ અનત સચિત્ત, અચિત્ત ઓર મિશ્ર પરિગ્રહરૂપ દ્રવ્ય વના રહે । પુત્ર આદિ સચિત્ત પરિગ્રહ, હિરણ્ય, સુવર્ણ, રત્ન આદિ અચિત્ત પરિગ્રહ, ણવ હિરણ્ય, સુવર્ણ, રત્ન આદિ કે આભરણ સહિત પુત્રાદિ મિશ્ર પરિગ્રહ હૈં । તાત્પર્ય ઇસકા યહી હૈં કિ ચક્રવર્તી સે લેકર છોટે સે છોટો પ્રાણી યહી ચાહતા રહતા હૈં કિ

ઇન્દ્રિયોની અનર્ગલ પ્રવૃત્તિયો, તથા કૃષ્ણ, નીલ આદિ અપ્રશસ્ત લેશ્યાઓ રહે છે એટલે કે પરિગ્રહ પાપની હાજરીમા નિયમથી માયાદિ શલ્યોના મદ્દ ભાવ જીવોમા આવે છે તે હોય તો મન વચન આદિ યોગોની પ્રવૃત્તિયો અશુભ રૂપે રહે છે ગૌરવોનુ અસ્તિત્વ તથા કપાયોની સત્તા, તથા આહાર આદિ ચાર પ્રકારની સન્નાઓ આદિનો સન્નાવ એક પરિગ્રહની હાજરી હોય તો જ જીવોમા જોવા મળે છે ઇન્દ્રિયોની સ્વચ્છદી પ્રવૃત્તિ અને કૃષ્ણ આદિ અશુભ લેશ્યાઓનુ અસ્તિત્વ આ પરિગ્રહને કારણે જ જીવોમા હોય છે તથા સ્વજન આદિ સાથેનો સન્નધ પણ આ પરિગ્રહ પર આધાર રાખે છે ચક્રવર્તી આદિ મધળા લોકો એ જ ચાહે છે કે અમારી પાસે અનત સચિત્ત, અચિત્ત અને મિશ્ર પરિગ્રહરૂપ દ્રવ્ય કાયમ રહે પુત્ર આદિ સચિત્ત પરિગ્રહ છે હિરણ્ય, સુવર્ણ રત્ન આદિ અચિત્ત પરિગ્રહ છે અને સુવર્ણ, રત્ન આદિના આભૂષણો સહિત પુત્રાદિ, તે મિશ્ર પરિગ્રહ છે તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે ચક્ર-

સ્તાઃ=વ્યાપ્તાઃ, તથા 'અત્તાણ અણિગ્ગહિયા' આત્મનાઽનિગૃહીતાઃ=અચીકૃતા-
ત્માનઃ 'કરેતિ' કુર્વેતિ । કિં કુર્વન્તિ ? इत्याह—'કોદમાણમાયાલોભે'
ક્રોધમાનમાયાલોભાન્, ક્રોદશાન્ ? 'અકિત્તણિજ્જે' અકીર્તનિયાન્-અચાચ્યાન્ ।
તથા 'પરિગ્ગહે ચેવ' પરિગ્રહે એવ 'હુતિ' મયન્તિ, 'નિયમા' નિયમાત્-
નિથયતઃ, કાનિ કાનિ ભવન્તિ ? ત્યાહ 'સહ્યા' શલ્યાનિ = માયાનિદાનમિત્યા-
દર્શનરૂપાણિ ત્રીણિ, 'દણ્ડા ય' દણ્ડાશ્ચ-દુષ્પણિદિતમનોગાધાયરૂપાઃ, 'ગાર-
વાય' ગૌરવાણિ ચ=ઋદ્ધિરમસાતરૂપાણિ ચ 'કસાયસણ્ણા ય' કપાયસણ્ણાશ્ચ,
કપાયાઃ=પતિતાઃ, સજ્ઞાઃ=આહાર મૈથુનમયપરિગ્રહાદયઃ, તથા- 'કામગુણ-
અણ્હગા ય' કામગુણાશ્ચાથ કામગુણાઃ=શબ્દાદયસ્ત ય આશ્રનાઃ=આશ્રવદ્વારાણિ
'ઇદિય' ઇન્દ્રિયાણિ=અનુવૃત્તાનિ ઇન્દ્રિયાણિ, 'લેસાઓ' લેહ્યાઃ=અપ્રશસ્તા

અધિક આસક્તિ, લોભ-લાલચ, इन सब से घिरे रहते हैं (अत्ताणा
अणिग्हिया) इन की आत्मा इनके चक्ष में नहीं हो पाती है । और इस
तरह ये परिग्रह की ममता में फँसकर (कोदमाणमायालोभे) क्रोध, मान
माया और लोभ जैसी कपायो को कि जो (अकित्तिणिज्जे) शब्दों से
प्रकट नहीं की जा सकती हैं (करेति) करते रहते हैं । (परिगहे चैव
हुति नियमा सहा, दंडा य गार वा य कसायसण्णा य कामगुणअण्हगा
य इदिय लेसाओ सयणसपओगा सचित्ताचित्तमीसगाइ दब्बाइ अणत
गाइ परिघेतु इच्छति) इस परिग्रह में ही नियम से माया, मिथ्यादर्शन
और निदान, ये तीन शल्य रहते हैं । मन, वचन और काय की दुष्ट-
त्तरूप व्यापार रहता है । ऋद्धि रस सातरूप गौरव रहता है । अनेता-
नुबंधी आदि कपायें, आहार, भय, मैथुन, और परिग्रह ये चार सज्ञाएँ,

લોભ, એ બધાથી ઘેરાયેલ રહે છે "અત્તાણ અણિગ્ગહિયા" તેમનુ મન તેમના
કર્ણભૂમા હોતુ નથી, અને આ રીતે પરિગ્રહની મમતામા ફસાધને "કોદમાણ
માયાલોભે" ક્રોધ, માન, માયા અને લોભ જેવા કપાયો કે જે "અકિત્તણિજ્જે"
શબ્દો દ્વારા પ્રગટ કરી શકાતા નથી "કરેતિ" તેમનુ સેવન કરે છે "પરિ
ગ્રહે ચેવ હુતિ નિયમા સણ્ણા, દંડાય ગારવા ય કસાય સણ્ણાય કામગુણઅણ્હ
ગાય ઇદિયલેસાઓ સયણસપઓગા સચિત્તાચિત્તમીસગાઈ દબ્બાઈ અણતગાઈ
પરિઘેતુ ઇચ્છતિ" આ પરિગ્રહમા જ નિયમથી જ માયા, મિથ્યાદર્શન અને
નિદાન, એ ત્રણ શલ્ય રહે છે મન, વચન અને કાયની દુષ્ટતારૂપ પ્રવૃત્તિ
રહે છે ઋદ્ધિ રસ સાતરૂપ ગૌરવ રહે છે અનેતાનુબંધી આદિકપાયો, આહાર
ભય, મૈથુન અને પરિગ્રહ એ ચાર સજ્ઞાઓ, શબ્દાદિ વિષયરૂપ આશ્રવ,

લેશ્યાશ્ચ ભવન્તિ । તથા - ' સયણસપઓગા ' સ્વજનસપયોગાઃ=સ્વજનૈ=પુત્રદારાદિભિઃ સદ્ મપયોગઃ=સયોગાશ્ચ ભવન્તિ । તે ચક્રવર્ત્યાદય ' અણતગાઢ ' અનન્તાનિ=પર્યવમાનસહિતાનિ ' સચિત્તાચિત્તમીસગાઢ ' સચિત્તાચિત્તમિશ્રકાણિ =તચ સચિત્તાનિ સજીયાનિ=પુત્રાદીનિ અચિત્તાનિ=અજીવાનિ=હિરણ્યસુવર્ણરત્નાદીનિ, મિશ્રકાણિ=સચિત્તાચિત્તસ્થાણિ હિરણ્યસુવર્ણાધામરણસહિતાનિ પુત્રકલત્રા

શબ્દાદિ વિષયરૂપ આશ્રય, ઇન્દ્રિયો કી અનર્ગલ પ્રવૃત્તિયાં, કૃષ્ણ, નીલ આદિ અપ્રગત્ લેહ્યાઈ રહતી હેં । અર્થાત પરિગ્રહ પાપ કે સદ્ભાવ મેં હી નિયમતઃ માયાદિ જાલ્યોં કા સદ્ભાવ જીવોં મેં પાયા જાતા હૈ । મન વચન આદિ યોગોં કી પ્રવૃત્તિ હતી કે હોને પર અશુભ રૂપ મે રહતી હેં । ગૌરવોં કા અસ્તિત્વ તથા કપાયોં કી સત્તા એવ આહાર આદિ ચાર પ્રકાર કી સજ્જાઓ કા સદ્ભાવ હસ એક પરિગ્રહ કી મૌજૂદગી મે હી જીવો મેં પાયા જાતે હે । ઇન્દ્રિયો કી સ્વચ્છદ પ્રવૃત્તિ એવ કૃષ્ણ આદિ અશુભ લેહ્યાઓં કા નવધ હસી પરિગ્રહ સે જીવોં મે પાયા જાતા હૈ । તથા સ્વજન આદિ કે સાથ કા સંપર્ક મી હસી પરિગ્રહ કે ઉપર નિર્ભર હૈ । ચક્રવર્તી આદિ સમી મનુષ્ય યહી યાહતે હેં કિ હમારે પાસ અનત સચિત્ત, અચિત્ત ઔર મિશ્ર પરિગ્રહરૂપ દ્રવ્ય વના રહે । પુત્ર આદિ સચિત્ત પરિગ્રહ, હિરણ્ય, સુવર્ણ, રત્ન આદિ અચિત્ત પરિગ્રહ, એવ હિરણ્ય, સુવર્ણ, રત્ન આદિ કે આમરણ સહિત પુત્રાદિ મિશ્ર પરિગ્રહ હૈ । તાત્પર્ય હસકા યહી હૈ કિ ચક્રવર્તી સે લેકર છોટ સે છોટા પ્રાણી યહી યાહતા રહતા હૈ કિ

ઇન્દ્રિયોની અનર્ગલ પ્રવૃત્તિયો, તથા કૃષ્ણ, નીલ આદિ અપ્રગત્ લેશ્યાઓ રહે છે એટલે કે પરિગ્રહ પાપની હાજરીમા નિયમથી માયાદિ રા-યોનો મદ્ભાવ જીવોમા આવે છે તે હોય તો મન વચન આદિ યોગોની પ્રવૃત્તિયો અશુભ રૂપે રહે છે ગૌરવોનુ અસ્તિત્વ તથા વધાયોની સત્તા, તથા આહાર આદિ ચાર પ્રકારની સજ્જાઓ આદિનો સદ્ભાવ એક પરિગ્રહની હાજરી હોય તો જ જીવોમા જોવા મળે છે ઇન્દ્રિયોની સ્વચ્છદ પ્રવૃત્તિ અને કૃષ્ણ આદિ અશુભ લેશ્યાઓનુ અસ્તિત્વ આ પરિગ્રહને કારણે જ જીવોમા હોય છે તથા સ્વજન આદિ સાથેનો સંપર્ક પણ આ પરિગ્રહ પર આધાર રાખે છે ચક્રવર્તી આદિ મધળા લોકો એ જ ચાહે છે કે અમારી પાસે અનત સચિત્ત, અચિત્ત અને મિશ્ર પરિગ્રહરૂપ દ્રવ્ય કાયમ રહે પુત્ર આદિ સચિત્ત પરિગ્રહ છે હિરણ્ય, સુવર્ણ, રત્ન આદિ અચિત્ત પરિગ્રહ છે અને સુવર્ણ, રત્ન આદિના આભૂષણો સહિત પુત્રાદિ, તે મિશ્ર પરિગ્રહ છે તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે ચક્ર-

દોનિ, 'દબ્બાહ' દ્રવ્યાણિ 'પરિધેતુ' પરિગ્રહીતુમ્ ઇચ્છન્તિ । 'સદેવમણુયા-
સુરમ્મિ લોગે' સદેવમનુજાગુરે લોકે 'લોભપરિગ્રહો' લોભપરિગ્રહઃ=લોભાત્પરિ-
ગ્રહો લોભરૂપો વા પરિગ્રહી ભવતિ, 'જિણવરેહિં' જિનવરં 'મણિઓ' મણિતઃ=
પ્રોક્તઃ 'નત્થિ' નાસ્તિ 'ઈરિસો' ઈદ્દશઃ=પરિગ્રહસદૃશોઽન્યઃ કથિદપિ 'પાસો'
પાશઃ=વન્ધનમ્, 'પહિયધો' પ્રતિવન્ધઃ=પ્રતિરોધઃ । અય પરિગ્રહઃ 'સન્નલોપ'
સર્વલોકે=ત્રિપુ લોકેષુ 'સન્ન જીવાણ' સર્વજીવાનામ્=સર્વપ્રાણિનામ્ 'અત્થિ'
'અસ્તિ=વિદ્યતે । સૂક્ષ્મજીવાનામપિ પરિગ્રહસજ્ઞા ભવતીતિ સર્વશબ્દગ્રહણમ્ ॥૬૪॥

જો भी પરિગ્રહરૂપવસ્તુ જિતની भी मात्रा में हमारे पास है वह ज्यों कि
ह्यो बनी रहे—नष्ट न हो, और उतनी मात्रा से भी फिर अधिक मात्रा
में वृद्धिगत होती रहे तो अच्छी बात है (सदेवमनुयासुरम्मि लोगे)
देवलोक में, मनुष्यलोक में, तथा असुर लोक में (लोभपरिग्राहो)
लोभ परिग्रह—लोभ से परिग्रह अथवा लोभरूप परिग्रह—र होता है ।
(जिणवरेहिं मणिओ) ऐसा जिनेन्द्र देवोंने कहा है । (नत्थि एरिसोपासो
—पहियधो सन्नलोप सन्नजीवाण अत्थि) इस परिग्रह के जैसा दूसरा
और कोई भी पास—बधन, तथा प्रतिबध—प्रतिरोध—आत्मकल्याण रोधक
पदार्थ नहीं है । यह परिग्रह तीनों लोकों में समस्त जीवों के है । प्रश्न—
सूक्ष्म जीवों के यह परिग्रह किस रूप में है ? उत्तर—यह परिग्रह उनमें
परिग्रह सज्ञा रूप में है । इसी बात को कहने के लिये सूत्र में 'सर्व'
शब्द का ग्रहण किया है ।

વર્તિથી લાઇને નાનામાં નાનો જીવ એ જ ચાહે છે કે જે કોઇ પરિગ્રહરૂપ
જેટલા પ્રમાણમાં અમારી પાસે છે તે તેમને તેમ રહે—નાશ ન પામે, અને
છે તે કરતા પણ તેમાં વધારો થતો રહે તો ખુબ જ સારૂ “સદેવમનુયા
સુરમ્મિલોગે” દેવલોકમાં, મનુષ્યલોકમાં તથા અસુરલોકમાં “લોભ પરિગ્રાહો”
લોભ પરિગ્રહ—લોભથી પરિગ્રહ અથવા લોભરૂપ પરિગ્રહ હોય છે, “જિણવરેહિં
મણિઓ” એવું જિનેન્દ્ર દેવોએ કહેલ છે “નત્થિ ઈરિસો પાસો પહિયધો સન્ન
લોપ સન્નજીવાણ અત્થિ” આ પરિગ્રહ જેવું બીજું કોઇ પણ બધન નથી,
તથા પ્રતિરોધક—આત્મક—ચાલુ રોધક પદાર્થ નથી આ પરિગ્રહ નહીં લોકમાં
સઘળા જીવોને હોય છે

પ્રશ્ન—સૂક્ષ્મ જીવોમાં આ પરિગ્રહ કેવી રીતે છે ?

ઉત્તર—આ પરિગ્રહ તેમનામાં પરિગ્રહ સજ્ઞારૂપે છે એ વાત દર્શાવવાને
માટે સૂત્રમાં ‘સર્વ’ શબ્દનો પ્રયોગ કર્યો છે

માવાર્થ—અહાં ઈપ કે ખીતર હી મનુષ્યો કા નિવાસ હૈ, અતઃ સમી મનુષ્ય ચાહે વે ચક્રવર્તી આદી વિગિષ્ટ વ્યક્તિ મી કયો ન હૌં હસ પરિગ્રહ સચય કી તૃણા સે રહિત નહીં હૈં । સમી અપની ૨ યોગ્યતા ઔર પદ કે અનુસાર હસકે સચય મે લગે રહતે હૈં । કોઈ મી જીવ હસ ઘાત કા વિચાર નહીં કરતા કિ હસ પરિગ્રહ કે સચય કા યતિમ પરિણામ કૈસા હોતા હૈ । જીવ જીતને મી રુષ્ટોં કો મોગતા હૈં વહ હસ પરિગ્રહ કે સચય નિમિત્ત હી મોગતા હૈ, કયો કિ યહ પરિગ્રહ સ્વય અનંતકલેશો કા ઘર હૈ । હમ પરિગ્રહ કો લોભરૂપાય કે આવેશ મે હી જીવ સચિત કીયા કરતે હૈ । યહ મહાન્ સે મહાન્ અનર્થોં કી જહ કહી ગઈ હૈ । પુરુષ સમધી ૭૨ વહતર કલાઈં તયા સ્ત્રી સમધી ૬૪ ચૌસઠ કલાઓં કો પ્રાણી હસી પરિગ્રહ કે નિમિત્ત સીંહતા હૈ । અસિ, મપી, કૃષિ, આદિ કર્મ હસી કે લિધે મનુષ્યોં કો કરને પડતે હૈ । ઁક રાષ્ટ્ર દુસરે રાષ્ટ્ર કો હમી કી લાલસા સે વદ્ધ હોકર હડપના ચાહતા હૈ । મનુષ્યોં મેં દાનવતા કા રૂપ હસી કી રૂપા સે આતા હૈ । આદનીયત્વ કો ઝુલાનેવાલી વહી ઁક ચીજ હૈ । માયા મિથ્યા આદિ શલ્કોં કા ઘર યહી ઁક પરિગ્રહ હૈ । હસકી ઝલાલ મેં જ્વલના હુઆ પ્રાણો સદા હેય ઔર ઉપાદેય કે વિવેકસે વિહીન ચના રહતા હૈ । મન વચન ઔર કાય

ભાવાર્થ—અહીં ઈપની અહર જ માણુમોનો વચવાટ છે, સધળા મનુષ્યો ભલે ચક્રવર્તિ આદિ વિશિષ્ટ નિરૂપિત હોય તો પણ તેઓ પરિગ્રહ સચયની તૃણા વિનાના હોતા નથી બધા પોત પોતાની યોગ્યતા અને પદ પ્રમાણે તેના સચય, પ્રયત્નગીલ રહે છે કોઈ પણ જીવ એ વાતનો વિચાર કરતો નથી કે આ પરિગ્રહના સચયનું આખરી પગિણામ કેવું હોય છે જીવ જોડલા કદો ભોગવે છે તે આ પરિગ્રહના સચયને માટે જ ભોગવે છે, કારણ કે આ પરિગ્રહ પોતે જ અનંત કલેશોનું ધામ છે આ પરિગ્રહનો લોભ (ક્રપા) ના આવેગમાજ જીવ સચય કર્યા કરે છે તે મોટામા મોટા અનર્થોનું મૂળ ગણાય છે પુરુષ સમધી ૭૨ મોતેરકલાઓ તયા સ્ત્રી વિષયક ૬૪ચોસઠ કલાઓ માણુસો આ ચપરિહને નિમિત્તેજ શીજે છે અસી, મપી, કૃષિ આદિ કર્મો પણ તેનેજ માટે હોડોને કરવા પડે છે તેની લાલસાએ જ એક રાષ્ટ્ર બીજા રાષ્ટ્રને ગળી જવા માગે છે મનુષ્યમા દાનવતા તે પરિગ્રહને કારણે જ આવે છે માનવતાને ભુલાવનારી તે એક ચીજ છે તે પરિગ્રહ જ માયા મિથ્યા આદિ શલ્કોનું ધામ છે તેની જ્વાળામા ફસાયેલ જીવો સદા હેય અને ઉપાદેયના વિવેકથી રહિત બની જાય છે આ પરિગ્રહને કારણે જ મન, વચન અને કાયના કુટિલ

‘યે યથા કુર્વન્તીતિ દ્વાર મુક્તમ્’ અથ પરિગ્રહો યાદશ ફલ દદાતિ તદુચ્યતે—
‘પરલોગમ્મિ’ इत्यादि—

મૂલમ્—પરલોગમ્મિ ય નદ્વા તમપવિદ્વા મહ્યામોહમોહિય મર્દ તમોસંધયોર તસથાવર સુહુમવાયરેસુ પજ્જતમપજ્જતગ એવ જાવ પરિયદંતિ જીવા લોભવસસનિવિદ્વા । એતો સો પરિગ્ગ-
હસ્સ ફલવિવાગો ઇહલોઙ્ઘો પરલોઙ્ઘો અપ્પસુહો વહુદુલ્લો

કી કુટિલ પ્રવૃત્તિ ઇસી પરીગ્રહ કે પ્રભાવ સે જીવન કો તરસ નહસ કરતી રહતી હૈ । રૂપાયોં કી ઉત્કટતા ઇસીકે કારણ જીવન મેં ઉતરતી હૈ । આહાર આદિ સજ્ઞાએ ઇસી કે પ્રભાવ સે જીવન કે પીછે પડી રહતી હૈ । ગારવ ઔર ઇન્દ્રિયોં કી સ્વચ્છદ પ્રવૃત્તિ કા કારણ ઇસી પરિગ્રહ કી કામના હૈ । કર્મોં કા અધિકરૂપ મેં આત્મવ ઔર કૃષ્ણાદિ અશુભલેશ્યાઓં કા સબધ ઇસી પરિગ્રહ કે વલ પર હોતા હૈ । સસારકા કોઈ બી પ્રાણી યહ નહીં જાનતા હૈ કિ મેરે પાસ જિતના બી પરિગ્રહ હૈ ઉસકા વિયોગ હો । ભલે હી મુનિજન ઇસકી કામના ન કરે-
ફિર બી પ્રત્યેક સચેતન વ્યક્તિ સચિત્ત આદિ પરીગ્રહ કી પોટ સે બધા હી રહતા હૈ । સમસ્તલોક મેં ઇસ પરિગ્રહ કા અલ્પાધિકરૂપ મે સામ્રાજ્ય છાયા હુઆ હૈ । યહી આત્મરૂપાણ કા નિરોધક હૈ । ઇસીલિયે શ્રાવક જન ઇસકા પ્રમાણ ઔર મુનિજનસકલ સયમી જીવ-ઇસકા સર્વથા પરિહાર કર દેતે હૈ ॥ સૂ. ૪ ॥

પ્રવૃત્તિયો જીવનને ગરબાદ કરે છે તેને જ કારણે જીવનમા કષાયોની ઉત્પત્તિ ઉતરે છે તેના જ પ્રભાવથી આહાર આદિ મજ્ઞાઓ જીવનમા પીડા પકડયા કરે છે ગારવ (અભિમાન) અને ઇન્દ્રિયોની મગ્નચ્છદી પ્રવૃત્તિયોનુ કારણ આ પરિગ્રહની કામના જ ॥ આ પરિગ્રહને કારણેજ કષોનો અધિક પ્રમાણમા આત્મવ અને કૃષ્ણાદિ અશુભ લેશ્યાઓનો સબધ થાય છે સસારમા કોઈ પણ જીવ એ નથી ચાહતો કે તેની પાસે જેટલો પરિગ્રહ હોય તેના વિયોગ થાય કદાચ મુનિજન તેની કામના ન કરે, તો પણ પ્રત્યેક સચેતન વ્યક્તિ સચિત્ત આદિ પરિગ્રહના મગ્નચ્છદી બધાયેલ રહે છે સમગ્ર લોકમા આ પરિગ્રહનુ થોડા કે વધુ પ્રમાણમા સામ્રાજ્ય બનેલુ છે તે જ આત્મકર્યાણુનુ નિરોધક છે તેથી શ્રાવકોએ તેની મર્યાદા બાધવી બોધએ અને મુનિજનોએ- સકલ સયમી જીવે-તેનો તદ્દન ત્યાગ કરવો બોધએ ॥ સૂ. ૪ ॥

મહાબઓ વહુરયપ્પગાઢો દારુણો કક્કસો, અસાઓ વાસસ-
હસ્સેહિ મુચ્ચઈ, ન ય અવેદઈત્તા અત્થિ હુ મોક્કલોત્તિ એવમા-
હસુ નાયકુલનદણો મહપ્પા જિણો વીરવરનામધેજ્ઞો કહેસિ
ય પરિગ્ગહસ્સ ફલવિવાગં। એસો સો પરિગ્ગહો પંચમો નિયસા
નાણામણિકળગરયણમહરિહં જીવ ઇમસ્સ મોક્કલવરમુ-
ત્તિમગ્ગસ્સ ફલિહમ્મૂઓ ॥ સૂ. ૫ ॥

॥ ચરિમ અહમ્મદાર સમત્ત ॥

‘ ટીકા—‘ પરલોગમ્મિ ’ ઇત્યાદિ—

જીવાઃ=પ્રાણિનઃ લોભવસસનિવિદ્ધા’ લોભવશસનિવિદ્ધાઃ=લોભવશેન પરિગ્રહે
સનિવિદ્ધા=અભિનિવિદ્ધાઃ=લોભવશપરિગ્રહગ્રહિલાઃ ‘પરલોગમ્મિ’ પરલોકે=જન્મા-
ન્તરવિપયે ચકારાત્ ઇહલોકે ચ ‘ નદ્ધા ’ નદ્ધાઃ-પિનદ્ધાઃ સુગતિનાશાત્ મત્પથ-
અશાચ, તથા ‘ તમ ’ તમ=અજ્ઞાનાન્યકાર ‘ પવિદ્ધા ’ પ્રવિદ્ધા ‘મહયા મોહમોહિ-

પૂર્વ મેં ‘ યે યથા કુર્વન્તિ ’ યદ્ દ્વાર કહા અત્ સૂત્રકાર પરિગ્રહ
જિસ પ્રકાર કા ફલ દેતા હૈ ઇસ વિષય કો કહતે હૈ—‘ પરલોગમ્મિ
ય ’ ઇત્યાદિ ૦ ।

ટીકાર્થ—(લોભવસસનિવિદ્ધા જીવા) લોભ કે વશ સે પરિગ્રહ
કે વશવતી બને હુણ જીવ (પરલોગમ્મિ ય નદ્ધા) અપને પરભવ કો બી
નષ્ટ કર ઢાલતે હૈ । અર્થાત્ ઉનકા ગ્રહ લોક તો નષ્ટ હો હી જાતા હૈ,
સાથ મે પરભવ બી ઉનકા વીગડ જાતા હૈ । કયો કિ એસે જીવોં કો
સુગતિ કી પ્રાપ્તિ નહોં હોતી હૈ, તથા ઇસભવ મેં લે મત્પથ સે વિહીન
બને રહતે હૈ । તથા (તમપવિદ્ધા) અજ્ઞાનરૂપ અધકાર મેં પ્રવિષ્ટ હીકર

આગળ “ યે યથા કુર્વન્તિ ” તે અન્તર્દ્વાર વર્ણવ્યુ હવે સૂત્રકાર પરિગ્રહ
હેતુ ક્ષણ આપે છે, તે બતાવે છે—“ પરલોગમ્મિય ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ લોભવસસનિવિદ્ધા જાના ” લોભને અધીન થઇને પગિગ્રહને
તાબે થયેલા છેવે “ પરલોગમ્મિ ય નદ્ધા ” પોતાના પરભવને પણ નષ્ટ કરી
નાબે છે, એટલે કે તેમનો આ લોક ખરબાદ થાય છે જ, પણ આથે આથે
તેમનો પરભવ પણ બગડે છે કારણ કે એવા છેવેને સુગતિ પ્રાપ્ત થતી નથી,
અને આ ભવમા તેઓ અન્માર્ગથી દૂર જ રહે તથા “ તમપવિદ્ધા ” અજ્ઞાન

યમર્હ' મહામોહમોહિતમતયઃ-મહામોહેન-પ્રકૃષ્ટોદયચારિત્રમોહનીયન મોહિતા મતિર્યેષા તે તથોક્તા', 'તમોસધયારે' તમિસ્રાન્ધકારે, તમિસ્રાન્ગની તદ્વદ યોજ્ઞકારો આજ્ઞાનાન્ધકારસ્તસ્મિન્ 'તસ યાવત્સુદૃમવાયરેસુ' તસસ્થાવરસૂક્ષ્મ-વાદરેષુ તથા 'પજ્જત્તમપજ્જત્તગ એવ જાવ' પર્યાપ્તાપર્યાપ્તક એવ જાવત્ અત્ર-યાવન્નદાદિદ્ સપ્રાહ્ય-પર્યાપ્તાપર્યાપ્તસાધારણપ્રત્યેકઋગરીરેષુ તથા અબ્હજ પોતજ-રસજ-જરાયુજ-સસ્વેદજોદ્ધિજોપપાતિકેષુ નારકતિર્યગ્દેવમનુષ્યેષુ યવાસમ્ભવ જરામરણરોગગ્રહલેષુ પલ્યોપમસાગરોપમાણિ યાવત્ આનાદિકમનપદગ્ર દીર્ઘમ-ધ્વાન ચાતુરન્તસસારકાન્નાર 'પરિચદ્ધતિ' પર્યટન્તિ । 'એસો સો' એવ સઃ

(મહ્યામોહમોહિયમર્હ) ડનકો મતિ પ્રકૃષ્ટ ચારિત્ર મોહનીય કર્મ કે ઉદય સે મોહિત ધની રહતી હૈ । હમસે યે ન તો ંકદેશરૂપ ચારિત્ર અગીકાર કર સકતે હૈ ંર ન સકલરૂપ ચારિત્ર હી । અતઃ ંસે પ્રાણી (તમોસધયારે) રાત્રિ કે ગાઢ અધકાર જૈસે અજાનાન્ધકાર મૈ હી પડે રહતે હે । (તસયાવરસુદૃમવાયરેસુ) ંર ત્રસ, સ્થાવર, સૂક્ષ્મ, વાદર ડનમૈ તથા (પજ્જત્તમપજ્જત્તગ) પર્યાપ્તક અપર્યાપ્તક (એવ જાવ) ડસી પ્રકાર યાવત્ શબ્દ સે સાધારણ પ્રત્યેક શરીર ડન જીવો મૈ તથા અબ્હજ, પોતજ, રસજ, જરાયુજ, સસ્વેદજ, ઉદ્ધિજ્જ જીવો મૈ એવ ંપ પાતિક દેવ ંર નારકિયો મૈ (પરિચદ્ધતિ) જન્મ મરણ કરતે હૈ । સ્પર્શન, રસના, ઘ્રાણ, ચક્ષુ ંર કર્ણ યે પાચ ડન્દ્રિયા જિન જીવો મૈ હોની હૈ યે ત્રસ હૈ । ત્રસ નામકર્મ કે ઉદય સે યહ પર્યાવ જીવો કો પ્રાસ હોતી હૈ । સિર્ફ ંક સ્પર્શન ડન્દ્રિય જિન જીવો મૈ હોતી હૈ યે

રૂપી અધકારમા પ્રવેશ કરીને "મહ્યા મોહમોહિયમર્હ" તેમની મતિ પ્રકૃષ્ટ ચારિત્ર મોહનીય કર્મના ઉદયથી મોહિત થયેલી રહે છે તેથી તેઓ અશત ચારિત્ર અગીકાર કરી શકતા નથી અને સકલરૂપ (સર્વર્થ) ચારિત્ર પણ અગીકાર કરી શકતા નથી તેથી એવા જીવો "તમોસધયારે" રાત્રિના ગાઢ અધકાર જેવા અજાનાન્ધકારમા જ પડ્યા રહે છે, "તસયાવરસુદૃમવાયરેસુ" અને ત્રસ, સ્થાવર સૂક્ષ્મ, અરે ખાદ્યમા, તથા 'પજ્જત્તમપજ્જત્તગ' પર્યાપ્તક, અપર્યાપ્તક, "એવ જાવ" એ જ પ્રમાણે યાવત્ શબ્દથી સાધારણ પ્રત્યેક શરીર જીવોમા, તથા અબ્હજ, પોતજ, રસજ, જરાયુજ, સસ્વેદજ, ઉદ્ધિજ્જ જીવોમા અને ઔપપાતિક દેવ અને નારકોઓમા "પરિચદ્ધતિ" પવિત્રભણ કર્યા કરે છે જન્મ મરણ કર્યા કરે છે જે જીવોને સ્પર્શન, રસના, ઘ્રાણ, ચક્ષુ અને કર્ણ, એ પાચ ઇન્દ્રિયો હોય છે તેમને ત્રસ કહે છે ત્રસ નામ કર્મના

સ્થાવર છે. સ્થાવર નામ કર્મ કે ઉદય સે હિં યહ પર્યાય જીવો કો પ્રાપ્ત
 હોતી છે. ઈન્દ્રિય સે લેકર પચેન્દ્રિયતરુ કે જીવ હી ગ્રસ માને ગયે છે.
 સૂક્ષ્મ નામ કર્મ કે ઉદય સે જીવ સૂક્ષ્મ હોતા છે. સૂક્ષ્મ ઓર વાદર યે
 દો ભેદ ઈન્દ્રિય જીવો કે હોતે છે. વાદર નામકર્મ કે ઉદય સે જીવ
 વાદર પર્યાયવાલા હોતા છે. વાદર નામકર્મ કે ઉદય સે જીવો કો એસે
 શરીર કી પ્રાપ્તિ હોતી છે કિ જો શરીર ચર્મ ચક્ષુઓં કા વિપયભૂત
 યનતા છે. હસકે વિપરીત સૂક્ષ્મ નામ કર્મ હોતા છે. જિન જીવોં કી
 અપની યોગ્ય પર્યાસિયા પૂર્ણ હો ગઈ હોતી છે વે પર્યાસક જીવ છે. તથા
 જિનકી યે પર્યાસિયા પૂર્ણ જન તક નહીં હોતી છે વે અપર્યાસક જીવ છે.
 જિન યનત જીવો કા એક હી સાધારણ શરીર હોતા છે વે સાધારણ જીવ
 છે ઓર જિન જીવોં કા ભિન્ન ૨ શરીર હોતા છે વે વે પ્રત્યેક જીવ છે.
 સાધારણ નામકર્મકે ઉદયસે જીવ સાધારણ ઓર પ્રત્યેક નામકર્મકે ઉદય
 સે જીવ પ્રત્યેક શરીર હોતા છે. અહેસે જો જીવ ઉત્પન્ન હોતે છે વે અઢજ
 કહલાતે છે. જૈસે મનૂર, કનૂતર, આદિ જીવ. જો કિમી પ્રકારકે આચરણ
 સે વેદિત ન હોકર હી પૈદા હોતે છે વે પોતજ છે જૈસે દાથી ગશક, નેચલા,
 ચૂના ઓર વગેરે જીવ. આસવ અરિષ્ટ તથા વિગઢે હુણ આચાર, મુરચ્ચા

ઉદયથી જીવોને તે પર્યાય (યોગી) પ્રાપ્ત થાય છે જે જીવોને ક્રમ્પત એક
 સ્પર્શન ઈન્દ્રિય જ હોય છે, તેમને સ્થાવર કહે છે સ્થાવર નામ કર્મના
 ઉદયથી જ તે પર્યાય જીવોને પ્રાપ્ત થાય છે ઈન્દ્રિયથી લઈને પચેન્દ્રિય
 સુધીના જીવોને જ 'ગ્રસ' માનવામા આવે છે સૂક્ષ્મ નામ કર્મના ઉદયથી
 જ સૂક્ષ્મ થાય છે સૂક્ષ્મ અને બાદર એ એ લેદ એન્દ્રિય જીવોના હોય છે
 બાદર નામકર્મના ઉદયથી જ બાદર પર્યાયવાળા થાય છે બાદર નામ કર્મના
 ઉદયથી જીવોને જોવા શરીરની પ્રાપ્તિ થાય છે કે તે શરીરે ચર્મચક્ષુઓ વડે
 બેઈગડાય છે તેનાથી ઉદ્ભુ સૂક્ષ્મ નામકર્મ કે જે જીવોની યોગ્ય પર્યાસિયો પૂરી
 થઈ ગઈ હોય છે તે જીવો પર્યાસક કહેવાય છે તથા તેમની તે પર્યાસિયો બ્યાસુધી
 પૂરી થતી નથી ત્યાસુધી તેઓ અપર્યાસક જીવો છે જે અનત જીવોનુ એક
 સાધારણ શરીર હોય છે, તે સાધારણ જીવો છે, અને જે જીવોના ભિન્ન ભિન્ન
 શરીર હોય છે, તે પ્રત્યેક જીવ કહેવાય છે સાધારણ નામ કર્મના ઉદયથી
 જ સાધારણ શરીર થાય છે અને પ્રત્યેક નામકર્મના ઉદયથી જ પ્રત્યેક
 શરીર થાય છે ગડામાંથી ઉત્પન્ન થતા જીવોને અઢજ કહે છે, જેવા કે મોર
 કનૂતર આદિ જીવ જે જીવો કોઈ પણ પ્રકારના આવરણથી ઢાંકાયા વિના જ
 જન્મે છે-એટલે કે બચ્ચા રૂપે જન્મે છે તેમને પોત જ કહે છે, જેમકે
 હાથી, સસલુ, નાળિયો, ઉદર, સિંહ વગેરે જીવો આસવો, અરિષ્ટો, બગડેલા

યમર્હ' મહામોહમોહિતમતયઃ-મહામોહેન-મહુષ્ટોદયચારિત્રમોહનીયન મોહિતા મતિર્યેષા તે તથોક્તાઃ, 'તમોસધયારે' તમિસાન્ન્યકારે, તમિસાન્નગની તદ્વદ્યોન્ધકારો આજ્ઞાનાન્ધકારસ્તસ્મિન્ 'તસ થાવરમુદ્દમયાયરેસુ' તસમ્થાવરમુદ્દમવાદરેપુ તથા 'પજ્જત્તમપજ્જત્તગ એ જાવ' પર્યાપ્તાપર્યાપ્તક એવ યાવન્ અત્ર-યાવન્નદ્વાદિદ સગ્રાહ્યમ્-પર્યાપ્તાપર્યાપ્તસાધારણમત્યેકશરીરેપુ તથા અણ્ડજ પોતજ-રસજ-જરાયુજ-સસ્વેદજોદ્વિજીવપાતિકેપુ નારકતિર્યગદેવમનુષ્યેપુ ય શસમ્ભવ જરામરણરોગપદ્મલેપુ પલ્યોપમસાગરોપમાણિ યાવત્ આનાદિકમનરદત્ર દીર્ઘમધ્યાન ચાતુરન્તસસારકાન્નાર 'પરિચટ્ટતિ' પર્યટન્તિ । 'એસો સો' એવ સઃ

(મહ્યામોહમોહિયમર્હ) ડનકો મતિ પ્રકૃષ્ટ ચારિત્ર મોહનીય કર્મ કે ઉદય સે મોહિત થની રહતી હૈ । ઇસસે વે ન તો ંકુદેશરૂપ ચારિત્ર અગીકાર કર સકતે હૈં ંર ં સકલરૂપ ચારિત્ર હી । અત એસે પ્રાણી (તમોસધયારે) રાત્રિ કે ગાઢ અધકાર જૈસે અજ્ઞાનાન્ધકાર મેં હી પડે રહતે હે । (તસથાવરમુદ્દમયાયરેસુ) ંર ત્રસ, સ્થાવર, સૂક્ષ્મ, વાદર ડનમેં તથા (પજ્જત્તમપજ્જત્તગ) પર્યાપ્તક અપર્યાપ્તક (એવજાવ) ઇસી પ્રકાર યાવત્ શબ્દ સે સાધારણ પ્રત્યેક શરીર ડન જીવોં મેં તથા અણ્ડજ, પોતજ, રસજ, જરાયુજ, સસ્વેદજ, ઉદ્વિજ્જ જીવોં મેં એવ ંર પાતિક દેવ ંર નારકિયોં મેં (પરિચટ્ટતિ) જન્મ મરણ કરતે હૈ । સ્પર્શન, રસના, ઘ્રાણ, ચક્ષુ ંર ંર્ણ ંે પાચ ઇન્દ્રિયા જિન જીવોં મેં હોતી હૈં વે ત્રસ હૈં । ત્રસ નામકર્મ કે ઉદય સે ંહ પર્યાવ જીવોં કો પ્રાસ હોતી હૈ । સિર્ફ ંક સ્પર્શન ઇન્દ્રિય જિન જીવોં મેં હોતી હૈ વે

રૂપી અધકારમા પ્રવેશ કરીને “મહ્યા મોહમોહિયમર્હ” તેમની મતિ પ્રકૃષ્ટ ચારિત્ર મોહનીય કર્મના ઉદયથી મોહિત થયેલી રહે છે તેથી તેઓ અશત ચારિત્ર અગીકાર કરી શકતા નથી અને સકલરૂપ (સર્વર્ણ) ચારિત્ર પણ અગીકાર કરી શકતા નથી તેથી એવા જીવો “તમોસધયારે” રાત્રિના ગાઢ અધકાર જેવા અજ્ઞાનાન્ધકારમા જ પડ્યા રહે છે, “તસથાવરમુદ્દમયાયરેસુ” અને ત્રસ, સ્થાવર સૂક્ષ્મ, અરે બાહરમા, તથા ‘પજ્જત્તમપજ્જત્તગ’ પર્યાપ્તક, અપર્યાપ્તક, “એવ જાવ” એ જ પ્રમાણે યાવત્ શબ્દથી સાધારણ પ્રત્યેક શરીર જીવોમા, તથા અણ્ડજ, પોતજ, રસજ, જરાયુજ, સસ્વેદજ, ઉદ્વિજ્જ જીવોમા અને ઔપપતિક દેવ અને નારકીઓમા “પરિચટ્ટતિ” પન્નિભમણ કર્યા કરે છે જન્મ મરણ કર્યા કરે છે જે જીવોને સ્પર્શન, રસના, ઘ્રાણ, ચક્ષુ અને ંર્ણ, એ પાચ ઇન્દ્રિયો હોય છે તેમને ત્રસ કહે છે ત્રસ નામ કર્મના

‘ પરિગ્રહસ્ત ’ પરિગ્રહસ્ત ‘ ફલવિવાગો ’ ફલવિવાક ‘ ફલોહો ’ ફલોહો; મનુષ્યભવાપેક્ષયા, ‘ પરલોહો ’ પારલૌકિક, નરકતિર્યગત્યાધપેક્ષયા ‘ અપ્પ-સુહો ’ અલ્પસુખ:-અલ્પમુગ્ધ યસ્મિન્ સ તથોક્ત, ‘ વહુદુક્ષો ’ વહુદુ:ખ:-વહુનિ દુ:ખાનિ યસ્મિન્ સ તથોક્ત, ‘ મહાભઓ ’ મહાભય: ‘ વહુરયપ્પગાહો ’ વહુ-રજ: પ્રગાહ:-વહુરજ: -પ્રભૂતકર્મ પ્રગાહ=દુર્મોચ યસ્મિન્ સ તથોક્ત, દારુણો=રૌદ્ર:, ‘ વક્કમો ’ વર્કશ=કઠિન, ‘ અમાઓ ’ અશાત -અશાતવેદનીયરૂપ અસ્તિ, અપ્પ પરિગ્રહ ‘ વાસમહસ્સેહિ ’ યસંસહસૈ: = અનૈરુપલ્યોપમસાગરોપમ-કાલૈરૂપભોગેન ‘ મુચ્છડ ’ મુચ્ચતે । ‘ ન અવેયજ્ઞા અત્થિહુ મોક્ષોતિ ’ ન અવે દયિત્વા ઽસ્તિ ચલુ મોક્ષ: = પરિગ્રહક્રમનુપમ્બુજય નાસ્તિ મોક્ષ: ‘ તિ એવમાહુસુ ’

સાગરોપમ પ્રમાણકાલતક ધૂમતા રહતા હૈ । (એસો સો પરિગ્રહસ્ત-ફલવિવાગો) પરિગ્રહ કા યહ ફલવિવાક (ફલોહો) મનુષ્યભવ કી અપેક્ષા ત યા (પરલોહો) પરલોક-નરક-તિર્યવ ગતિ કી અપેક્ષા (અપ્પસુહો) અલ્પસુખ વાલા તથા (વહુદુક્ષો) વહુ દુ:ખવાલા હૈ । (મહાભઓ) મહાભયકર હૈ । (વહુરયપ્પગાહો) ઇસમેં જો પ્રભૂત કર્મરૂપ રજ કા વધ હોતા હૈ વહ પ્રગાહ-વહી મુઝિકલ સે દૂર ક્રિયા જાય, એસે હોતા હૈ । તથા (દારુણો) યહ ફલરૂપ વિવાક દારુણ મયાનક (કક્કસો) કર્કશ કઠિન અવ(અસાઓ)અશાત અશાતવેદનીયરૂપ હોતા હૈ । (વાસસ-હસ્સેહિ) ઇસી પરિગ્રહ રૂપ પાપ કા ફલ અનૈરુપલ્યોપમ અવ સાગરોપમ પ્રમા-ણ કાલતક ભોગને સે (મુચ્છડ) છૂટતા હૈ । (અવેજ્ઞા) વિના ઇસકા ફલ ભોગે ડન જીવોં કો (ન અત્થિ મોક્ષો) મોક્ષ કી પ્રાપ્તિ નહીં હોતી

ભગ્યા કરે છે “ એસો સો પરિગ્રહસ્ત ફલવિવાગો ” પરિગ્રહનો આ ફલવિ-વાક “ ફલોહો ” મનુષ્ય ભવની અવેક્ષાએ તથા “ પરલોહો ” પરલોક નરગતિ અને તિર્યગતિની અવેક્ષાએ “ અપ્પસુહો ” અલ્પસુખ વાળો તથા “ વહુદુક્ષો ” વધારે દુઃખવાળો છે, “ મહાભઓ ” મહા ભયકર છે, “ વહુ-રયપ્પગાહો ” તેમ જ વિપુલ કર્મરૂપ રજનો વધ દુઃખ છે તે પ્રગાહ-મહા મુશ્કેલીએ નિવારી શકાય તેવો-હોય છે, તથા “ દારુણો ” તે ફલરૂપ વિવાક દારુણ-ભયકર “ કક્કસો ” કર્કશ-કઠિન, અને “ અસાઓ ” અશાત-અશાત વેદનીયરૂપ હોય છે “ વાસસહસ્સેહિ ” તે પરિગ્રહરૂપ પાપનુ ફળ અને પલ્લો-પમ અને સાગરોપમ પ્રમાણ કાળ સુધી ભોગવવાથી જ “ મુચ્છડ ” છૂટો તેમથી છટી શકે છે “ અવેજ્ઞા ” તેનું ફળ ભોગવ્યા વિના છૂટોને “ ન અત્થિ મોક્ષો ” મોક્ષની પ્રાપ્તિ થતી નથી “ તિ એવમાહુસુ ” તે પ્રકારનું કથન

આદિમેં જો જીવ ફુલ ન આદિ ઉત્પન્ન હોતે રહતે હેં વે રમજ જીવં । જો જીવ જરાયુસે વેટિન હોકર ઉત્પન્ન હોતે હેં વે જરાયુજ હ જેસે મનુષ્ય બંદર આદિ જીવ । જરાયુ એક પ્રકારકા જાલ જેસા આવરણ હોતા હૈ, જો રક્ત ઓર માંસ સે ભરા રહતા હૈ । ઇસ મેં પૈદા હોને ચાલા ઘચ્ચા લિપટા રહતા હૈ । જરાયુજ, અડજ ઓર પોતજ ઇન જીવોં કે ગર્ભ જન્મ હોતા હૈ । જો જીવ પમીનેસે ઉત્પન્ન હોતે હૈ વે સસ્વેદજ હ જેસે જૂ આદિ જીવા જો જમીનકો ફોડકર ઉત્પન્ન હોતે હૈ વે ઉદ્ધિજ્જજીવ હેં । જેસે ઝાલમ (પતંગી યા તીડ) આદિ જીવ । દેવ ઓર નારકી વે ઉપપાત જન્મસે ઉત્પન્ન હોતે હેં । ઈસ કથનસે તિર્યચગતિ, મનુષ્ય ગતિ, દેવગતિ ઓર નરક ગતિ ઇન ચારો ગતિયોં કે જીવોંકા ગ્રહણ હો જાતા હૈ । ઇન ગતિયોં કે જીવોં મેં યથા સભવ જરા, મરણ ઓર રોગ કી બહુલતા રહતી હૈ । ઇન ગતિયોં મેં જીવ પલ્યોપમ પ્રમાણ યવ સાગરોપમ પ્રમાણ કાલ તક પરિભ્રમણ ક્રિયા કરતે હૈ । પરિભ્રમણકા નામ હી સસાર હૈ । યહ સસાર કાન્તાર (અટવી) અનાદિ અનત સ્વભાવવાલા હૈ । ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણી રૂપકાલ હી ઇસ મેં બડે લમ્બે ચૌડે માર્ગ હેં । તથા યહ ચતુર્ગતિ રૂપ હૈ । જેસે ઇસ સસાર રૂપ ગહન વન મેં યહ જીવ પરિગ્રહ કે ઉપાર્જન જનિત પાપસે પલ્યોપમ તથા

અથાણા મુરખા આદિમા જે કૂગ આદિ ઉત્પન્ન થાય છે તે રમજ હોય કહે વાય છે જે હોય જગાયુથી વીટળાઈને પેદા થાય તે તેમને જગાયુજ કહે છે, જેમકે મનુષ્ય વાદર આદિ હોય જરાયુ એક પ્રકારનું જાળ જેણે આવ રણ હોય છે, જે રક્ત અને માંસથી ભરેલા રહે છે, તેમા જન્મનારૂં જાલક વીટળાઈ રહે છે જરાયુજ, અને પોતજ હોયના જન્મ ગર્ભમા થાય છે, જે હોય પરસેવાથી પેદા થાય છે તેમને સસ્વેદજ કહે છે, જેમકે જૂ આદિ હોય જે હોય જમીનને ખોદીને ઉત્પન્ન થાય છે તેમને ઉદ્ધિજ હોય કહે છે જેમ કે તીડ આદિ હોય દેવ અને નારકી એ બંને ઉપપાત જન્મથી ઉત્પન્ન થાય છે આ કથનથી તિર્યચગતિ, મનુષ્યગતિ દેવગતિ, અને નરકગતિ એ ચારે ગતિયોના હોય ગ્રહણ થઈ જાય છે, તે ગતિયોના હોયમા યથા સભવ જરા, રોગ અને મરણની અધિકતા રહે છે, તે ગતિયોમા હવ પલ્યોપમ પ્રમાણ અને સાગરોપમ પ્રમાણ કાળ સુધી પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે પરિભ્રમણ એટલે જ સસાર, તે સસારકાન્તાર અનાદિ અનત સ્વભાવવાળો છે ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણી રૂપ જાળ જ જેમા ઘણા લાંબા પહોળા માર્ગો છે તથા તે ચારગતિરૂપ છે એવા આ સસાર રૂપ ગહન વનમા આ હવ પરિ ગ્રહને કારણે ઉપાર્જિત પાપથી પલ્યોપમ તથા સાગરોપમ પ્રમાણ કાળ સુધી

उक्तोत्पत्त्यश्चरु निगमनाय गाथापञ्चक्रमाद् 'एएहि' इत्यादि—

मूलम्—एएहि पंचहि आसवेहि रयमाचिणित्तु अणुसमयं ।

चउविहगइ पेरत, अणुपरियट्ठन्ति ससारं ॥ १ ॥

सव्वगइ पक्खदे, काहिति अणतगे अकयपुण्णा ।

जेय न सुणाति धम्म, सोऊण य जे पमारयन्ति ॥ २ ॥

अणुसिट्ठन्ति बहुविह, मिच्छदिट्ठी य जे नरा अनुद्धीया ।

वद्धनिकाडयकम्मा, सुणाति धम्म न य करेति ॥ ३ ॥

कि सक्का काउ जे, ज नेच्छइ ओसह मुहा पाउं ।

जिणवयण गुणमहुर, विरेयण सव्वदुक्खाणं ॥ ४ ॥

पंचेव य उज्झिऊणं, पंचेव य रक्खिऊण भावेणं ।

कम्मरयविप्पमुक्का, सिद्धिवरमणुत्तर जन्ति ॥ ५ ॥ सू० ६ ॥

॥ इय पच आसवदारा समत्ता ॥

उाया—एतैः पञ्चभिरासवै रज आचित्यानुसमयम् ।

चतुर्विंशतिपर्यन्तमनुपर्यटन्ति ससारम् ॥ १ ॥

सर्वगतिमस्कन्दात्, करिष्यन्ति अनन्तकालं अकृतपुण्याः ।

ये च न शृण्वन्ति धर्मं, श्रुत्या च ये प्रमाद्यन्ति ॥ २ ॥

अनुशिष्टमपि बहुविधं, मिच्छादृष्टिना ये च नरा अनुद्धिनाः ।

वद्धनिकावितकर्माणः, शृण्वन्ति धर्मं न च कुर्वन्ति ॥ ३ ॥

किं शक्ताः कर्तुं ये, यन्नेच्छन्ति औपधं मृधा पातुम् ।

जिनवचनं गुणमहुर, विरेचनं सर्वदुःखानाम् मे ४ ॥

पञ्चैव च उज्झित्वा, पञ्चैव च रक्षित्वा भावेन ।

कर्मरजो विप्रमुक्ताः, सिद्धिवरमनुत्तरा यान्ति ॥ ५ ॥

टीका—एतैः = अनन्तरोपर्यणितस्वरूपैः पञ्चभिः = पञ्चसग्न्यकैरासवैः =

प्राणातिपातदिरूपैः 'रय' रजः = ज्ञानापरणीयादि कर्ममलम्, आत्मनो मलिन-

कारकत्वात् 'अणुसमय' अनुसमय = प्रतिक्षणम् 'आचिणित्तु' आचित्य-

अत्र सूत्रकार उक्तं इति पाच आसवो के विषय में पाच गाथाओं द्वारा सक्षिप्तरूप से उपसंहार करते हुए अपने विचार प्रदर्शित करते

हुए सूत्रकार उपरोक्त पाच आसवो विषे पाच गाथाओं द्वारा सक्षिप्

ત્યેવમૂચુસ્તીર્થકુલનગધરાદયઃ, તથા 'કહેસિય' કથિતયાથ્ર 'નાયકુલનંદણો'
જ્ઞાતકુલનનદનઃ 'મહાપ્પા' મહાત્મા 'જિણો' જિનઃ 'વીરવરનામવેજ્જો' વીર-
વરનામધેયઃ । 'પરિગ્રહસ્સ' પરિગ્રહસ્ય 'ફલવિવાગ' ફલવિવાગમ્ । 'એસો
સો પરિગ્રહો પચમો' એપ સઃ પૂર્વોક્તપ્રકારઃ પરિગ્રહઃ પચ્ચમઃ 'નિયમા' નિયમાદ્
વિજ્ઞેયઃ, કથય્મૂતો વિજ્ઞેયઃ' ઇત્યાદિ—'નાણામગિક્કણગરયણમહરિહં' નાનામણિ-
કનકરત્નમહાર્હં, 'જાવ' યાવત્, અત્ર યાચન્નઙ્ગાદધ્યયનપ્રારંભપાઠઃ, 'હિયય-
દહઓ' ઇત્યન્ત યાવત્સપ્રાહ્ય, 'ઇમસ્સ' અસ્ય પ્રત્યક્ષીભૂતમ્ય 'મોક્ષવરમુક્તિમ-
ગ્ગસ્સ' મોક્ષવરમુક્તિમાર્ગસ્ય 'ફલિહમૂઓ' પરિગ્રહભૂતોઽર્ગલાસદ્દશોઽસ્તિ ॥૬૧॥

॥ ચરમમ્ અર્પેઢાર સમાપ્તમ્ ॥

હૈ । (તિ એવમાહસુ) એસા ઇસ પ્રકાર કા કથન તીર્થકુલ ગવ ગણધ-
રાદિક દેવો કા હૈ । તથા ઉન્હીં કૈ કથનાનુસાર (નાયકુલનદણો)
જ્ઞાતકુલનદન (મહાપુરુષ) (જિણો વીર વર નામધેજ્જો) પ્રભુ
જિનેન્દ્ર દેવને ભી (પરિગ્રહસ્સ) પરિગ્રહ કા (ફલવિવાગ) એસા હી
ફલરૂપ વિવાગ (કહેસિય) કહા હૈ । (એસો સો) ઇસ તરહ યહ (પરિ-
ગ્રહપચમો) પચમ પરિગ્રહ (નિયમા) નિયમ સે (નાણામગિક્કણગ
રયણમહરિહંજાવ) નાનામણિ કનક રત્ન આદિરૂપ હૈ । યહા પર યાવત્
શબ્દ સે ઇસ ઘાર કો પ્રારંભ કરતે સમય જો પાઠ 'હિયયદહઓ' તક
ઇસ પરિગ્રહરૂપ વૃક્ષ કૈ વિષય મેં કહા હૈ વહ સય ગૃહીત કિયા ગયા હૈ ।
યહ પરિગ્રહ (ઇમસ્સ મોક્ષવરમુક્તિમગ્ગસ્સ) ઇસ મોક્ષ કા જો નિર્ણ
ભતારૂપ શ્રેષ્ઠ માર્ગ હૈ ઉસકા (ફલિહમૂઓ) અર્ગલા રૂપ હૈ ॥ ૬૦૫॥

॥ પરિગ્રહ નામકા યહ અન્તિમદ્વાર સમાપ્ત હુઆ ॥

તીર્થકરો અને ગણધર આદિ દેવોનુ છે તથા તેમના ડથન પ્રમાણે જ “નાય
કુલનદણો” જ્ઞાતકુલ નદન “મહાપુરુષ” મહાપુરુષ, “જીણો-વીરવરનામવેજ્જો”
પ્રભુ જિનેન્દ્ર દેવે પણ “પરિગ્રહસ્સ” પરિગ્રહને “ફલવિવાગ” એવો જ
ફલવિવાગ “કહેસિય” કહેલ છે “એસો સો” આ રીતે તે “પરિગ્રહો
પચમો” પાચમો પરિગ્રહ આસવ “નિયમા” નિયમથી “નાણામગિક્કણગ-
રયણ મહરિહંજાવ” વિવિધ મણિ, કનક, રત્ન આદિ રૂપ છે અહીં યાવત્
શબ્દથી આ દ્વારના પ્રારંભે “હિયયદહઓ” સુધીના જે પાઠ પરિગ્રહરૂપ વૃક્ષના
વિષયમાં ઠહેવામાં આવેલ છે તે આખો પાઠ ગ્રહણ કરાયેલ છે આ પરિગ્રહ
“ઇમસ્સ મોક્ષવરમુક્તિમગ્ગસ્સ” મોક્ષને જે નિર્વૈભવતા શ્રેષ્ઠ માર્ગ છે તેના
“ફલિહ મૂઓ” આગળિયા સમાન છે ॥ સુ-૫ ॥

॥ પરિગ્રહ નામનુ આ છેવટનુ દ્વાર સ પૂર્ણ થયુ ॥

વદ્ધ=સ્વાત્મમદેશેષુ સ^અલેપિત, નિકાચિત=દૃઢત્તર પદ્ધત્=ઉપશમનાદિકરણાનામ-
પિપયીકૃત ઈર્મ યૈસ્તે તયોક્તાઃ, નરા. ગુણા વદુવિષ્મ=અનેકપ્રકારમ્=વિવિધ-
હેતુદૃષ્ટાન્તપૂર્વકમ્ અનુશિષ્ટમપિ=ઉપદિષ્ટમપિધર્મ=શ્રુતચારિત્રલક્ષણ શ્રુત્વન્તિ
કિન્તુ ન ચ કુર્વન્તિ=ન ચ સમાચરન્તિ ॥ ૩ ॥

‘ જે ’ એ મનુષ્ય સર્વદુઃખાના=જન્મજરામરણાદિરૂપાણા ‘ વિરેયણ ’ વિરે-
ચન=કોષ્ઠશુદ્ધિરૂપવિરેચનમિત્રવિરેચન નિવારક ‘ ગુણમહુર ’ ગુણમધુર ગુણે.=
આત્મવિકાસિગુણૈર્મધુર=મિષ્ટમ્, એતાદૃશ ‘ જિણયણ ’ જિનવચન=વચન=જિન-
વચનરૂપમ્ ‘ આસહ ’ ઓપધ ‘ મુઠા ’ મુઠા=ઉપકારપુદ્ધયા ‘ જ ’ યત્ ‘ નેચ્છડ ’
નેચ્છન્તિ=નપિયન્તિ તે ‘ કિં કાઝ ’ કિં કર્તુ ‘ સકા ’ શક્તા=સમર્થા ભવન્તિ

વ્યમિશ્યાદૃષ્ટિ હોતે હૈં વિવેક બુદ્ધિસે વિહીન હોતે હૈં તથા (વદ્ધનિકાઙ્કમ્
કમ્મા) નિકાચિત કર્મો કા વચ કિંદુ હુત હોતે હૈં, એસે મનુષ્ય વદુવિહ
(અણુદિદૃષ્ટિ) ગુરુઓ દ્વારા વિવિધહેતુ તથા દૃષ્ટાન્ત આદિસે વદુત પ્રકારસે
સામઘ્યાયે ગયે ખી શ્રુત ચારિત્રરૂપ (ધમ્મ) ધર્મકો (સુણતિ) સુન તો લેતે હૈં
પરન્તુ (ન ચ કરેતિ) ઉસે અપને આચરણ મે નહીં લાતે હૈં ॥૩॥ રોગી
હોતર ખી જો રોગ નિવારણાર્થ ઓપધિ કા પાન નહીં કરતે હૈં તો જૈસે
વે અપને રોગ કો દૂર કરને મેં સમર્થ નહીં હો સકતે હૈં ઇસી તરહ (યે)
જો સસારી પ્રાણી (સવ્વ દુઃખવાળ વિરેયણ (જરા, મરણ આદિ સમસ્ત
દુઃખો કો જડમૂલ સે ઉઠાડ દેને વાલે તથા (ગુણમહુર) આત્મવિકાસી
ગુણો સે મીઠે ટેસે (જિણવયણ) જિનેન્દ્ર પ્રભુ કે વચન રૂપ (ઓસહ)
ઓપધ કો (મુઠા) ઉપકાર બુદ્ધિ સે (પાઝ નેચ્છડ) નહીં પાતે હૈં વે
(કિં કાઝ સકા) કુઝ ખી કરને કે લિયે સમર્થ નહીં હો સકતે હૈં ।

“ જે નરા મિચ્છાદિદ્વી અણુદીયા ” એ મનુષ્યો મિશ્યાદૃષ્ટિ વાળા
હોય છે, વિરેકબુદ્ધિ વિનાના હોય છે તથા “ વદ્ધનિકાઙ્કમ્મા ” નિકાચિત
કર્મોના બધ વાળા હોય છે, એવા મનુષ્યો “ વદુવિહ અણુદિદૃષ્ટિ ” ગુરુઓ
દ્વારા વિવિધ હેતુ તથા દૃષ્ટાન્તો આદિ દ્વારા બહુજ સમજાવવામા આવે છે
છતા પણ શ્રુતચારિત્રરૂપ “ ધમ્મ ” ધર્મનું “ સુણતિ ” શ્રવણ તો કરે છે, પણ
“ ન ચ કરેતિ ” પણ તેને યોતાના આચરણમા ઉતરતા નથી ॥૩॥

જેમ રોગી માણસ રોગના નિવારણ માટે ઓપધિ ન પીવે તો તેનો
રોગ દૂર કરવાને શક્તિમાન થતો નથી, એ જ પ્રમાણે “ જે ” એ સસારી
“ સવ્વદુઃખાળવિરેયણ ” જરા, મરણ આદિ સગળા દુઃખોને નિમૂળે કરનાર
તથા “ ગુણમહુર ” આત્મવિકાસી શુભોચી મધુર એવા “ જિણયણ ” જિનેન્દ્ર
લગવાનના વચનરૂપ “ ઓમહ ” ઓપધને “ મુઠા ” ઉપકાર બુદ્ધિથી “ પાઝ
નેચ્છડ ” પ્રાપ્ત કરતા નથી, તેઓ “ કિં કાઝસકા ” કંઈ પણ કરવાને સમર્થ

આત્મપ્રદેશૈ સહોપચિત્ય 'ચતુર્વિહગર્હપેરત' ચતુર્વિધગતિપર્યન્તમ્, ચતુર્વિધા=ચતુઃપ્રકારા ગતિ =નરકાદિરૂપા પર્યન્તો=પ્રમાણો यस્ય સ ત્તથોક્ત સંસારમ્ 'અણુપરિયટ્ટતિ' અનુપર્યટન્તિ=પરિભ્રમન્તિ ॥ ૧ ॥

યે ચ પ્રાણિનોધર્મ નશ્રુણન્તિ, તથા યે ચ શ્રુત્યાપિ પ્રમાયન્તિ=પ્રમાદ કુર્વન્તિ તે ઉભયેઽપિ 'અકયપુણ્ણા' અકૃતપુણ્યાઃ=પ્રાણાતિપાતાદિપાપપરાયણત્યાત્ હીનપુણ્યા 'અનતણ' અનન્તકાન્=અનન્તાન્ 'સન્નગર્હપમ્ખલદે' સર્ગગતિપસ્કન્દાન્=નરકનિગોદાદિ ચતુર્ગતિભ્રમણાનિ 'કાર્હિતિ' કરિપ્યન્તિ ॥ ૨ ॥

યે ચ મિત્યાદિન્ટિકાઃઅબુદ્ધિકાઃ=મિથેકબુદ્ધિવિમલા વદ્ધનિકાચિત્કર્માણઃ

હૈ- 'एएहिं , इत्यादि ।

(एणहिं) इन हिंसा आदिरूप (पचहिं) पाच (आसवेहिं) आसवों के आचरण करने से जीव (अणुसमय) प्रतिक्षण (रय आचिणिज्जु) ज्ञानावरणीय आदि कर्ममल का बंद करके-आत्मप्रदेशों के साथ एक क्षेत्रावगारूप संध करके (चतुर्विहगर्हपेरत) नरकादिरूप चार प्रकारकी गतिवाले (संसार) संसार में (अणुपरियट्टति) परिभ्रमण किया करते हैं ॥ १ ॥ (जे य न सुणति धम्म) जो प्राणी श्रुतचोरित्ररूप धर्म का श्रवण नहीं करते हैं तथा (सोऊण य जे पमायति) जो सुनकर के भी प्रमाद पतित होते रहते हैं, ये दोनों (अकयपुण्णा) प्राणातिपात आदिको मे परायण रहने के कारण हीन पुण्यवाले हैं । (अनतण सन्नगर्हपम્खलदे कार्हिति) अतः अनतरूप में नरकनिगोद आदि चारोगतियों में परिभ्रमण करते रहेंगे ॥ २ ॥ (जे नरा मिच्छादिही अबुद्धीया मनु-

ઉપસહાર કરીને પોતાના વિચારે દર્શાવે છે—“ ए ए हिं ” ઈત્યાદિ—

“ एएहि ” હિંસા આદિ રૂપ “ पचहिं ” તે પાચ “ आसवेहिं ” આસવોને આચરવાથી જીવો “ अणुसमय ” પ્રત્યેક ક્ષણે “ रय आचिणिज्जु ” જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મમલને બંધ બાંધીને-આત્મ પ્રદેશોની સાથે એક ક્ષેત્રાવગારૂપ સંબંધ કરીને “ चतुर्विहगर्हपेर ” નરકાદિ રૂપ ચાર ગતિ વાળા “ संसार ” સંસારમાં “ अणुपरियट्टति ” પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે ॥ ૧ ॥

“ जेय न सुणति धम्म ” જે જીવે શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનું શ્રવણ કરતા નથી, તથા “ सोऊण य जे पमायति ” સાલણીને પણ જે પ્રમાદમાં દૂભેલા રહે છે, તે બંને “ अकयपुण्णा ” પ્રાણાતિપાત આદિમાં હીન રહેવાને કારણે પુન્યહીન હોય છે, “ अनतण सन्नगर्ह पमखलदेकार्हिति ” તેથી અનન્તરૂપે નરકનિગોદ આદિ આરે ગતિઓમાં પરિભ્રમણ કર્યા કરશે ॥૨॥

વદ્ધ=સ્વાત્મપ્રદેશેષુ મન્હેષિત, નિકાચિત=દ્વષ્ટર વદ્ધમ્=ઉપગમનાદિકરણાનામ-
પિપયીકૃત ઋષ્યેસ્તે તયોક્તા., નગ. ગુરુણા વદ્ધુવિમ્=અનેકપ્રકારમ્=વિવિધ-
હેતુદૃષ્ટાન્તપૂર્વકમ્ અનુગિષ્ટમપિ=ઉપદિષ્ટમપિધર્મ=શ્રુતચારિત્રલક્ષણ શ્રુત્વન્તિ
ક્લિન્તુ ન ચ કુર્વન્તિ=ન ચ સમાચરન્તિ ॥ ૩ ॥

‘ જે ’ એ મનુષ્યા સર્વદુઃખાના=જન્મજરામરણાદિરૂપાગા ‘ વિરેયણ ’ વિરે-
ચન=કોષ્ટશુદ્ધિરૂપવિરેચનમિવવિરેચન નિવારક ‘ ગુણમહુર ’ ગુણમધુર ગુણે.=
આત્મવિકાસિગુણૈર્મધુર=મિષ્ટમ્, એતાદૃશ ‘ જિણવયણ ’ જિનેન્દ્ર વચન=વચન=જિન-
વચનરૂપમ્ ‘ ઓસહ ’ ઔપધ ‘ મુઢા ’ મુધા=ઉપકારબુદ્ધિયા ‘ જ ’ યત્ ‘ નેચ્છહ ’
નેચ્છન્તિ=નપિવન્તિ તે ‘ કિં કાઝ ’ કિં કરું ‘ સક્કા ’ શક્તા:=સમર્થા ભવન્તિ

અર્થમિત્યાદિષ્ટિ હોતે હેં વિવેક બુદ્ધિ સે વિહીન હોતે હેં તથા (વદ્ધનિકાઢ્ય
કમ્મા) નિકાચિત કર્મોં કા ચ કિં હુણ હોતે હેં, એસે મનુષ્ય વદ્ધુવિહ
(અણુદિદૃષિ) ગુરુઓં દ્વારા વિવિધહેતુ તથા દૃષ્ટાન્ત આદિસે બ્રહ્મ પ્રકારસે
સામઘ્યાયે ગયેં મી શ્રુત ચારિત્રરૂપ (ધમ્મ) ધર્મકો (સુણતિ) સુન તો લેતે હેં
પરન્તુ (ન ચ કરેતિ) ઉસેં અપને આચરણ મેં નહીં લાતે હેં ॥૩॥ રોગી
હોતર મી જો રોગ નિવારણાર્થ ઔપધિ કા પાન નહીં કરતે હેં તો જૈસે
વેં અપને રોગ કો દૂર કરને મેં સમર્થ નહીં હો સકતે હેં હસીં તરહ (યે)
જો સસારી પ્રાણી (સવ્વ દુઃખવાણ વિરેયણ (જરા, મરણ આદિ સમસ્ત
દુઃખો કો જઢમૂલ સે ઉઘાડ દેને વાલે તથા (ગુણમહુર) આત્મવિકાસી
ગુણો સે મીઠેં એસે (જિણવયણ) જિનેન્દ્ર પ્રમુ કો વચન રૂપ (ઓસહ)
ઔપધ કો (મુઢા) ઉપકાર બુદ્ધિ સે (પાઝ નેચ્છહ) નહીં પાતે હેં વે
(કિં કાઝ સક્કા) કુઝ મી કરને કો લિયે સમર્થ નહીં હો સકતે હેં ।

“ જે નરા મિચ્છાદિદ્વી અનુદીયા ” એ મનુષ્યો મિચ્છાદિષ્ટિ વાળા
હોય છે, વિરેચબુદ્ધિ વિનાના હોય છે તથા “ વદ્ધનિકાઢ્યકમ્મા ” નિકાચિત
કર્મોના બધ વાળા હોય છે, એવા મનુષ્યો “ વદ્ધુવિહ અણુદિદૃષિ ” ગુરુઓ
દ્વારા વિવિધ હેતુ તથા દૃષ્ટાન્તો આદિ દ્વારા બહુજ સમજાવવામા આવે છે
છતાં પણ શ્રુતચારિત્રરૂપ “ ધમ્મ ” ધર્મનું “ સુણતિ ” શ્રવણ તો કરે છે, પણ
“ ન ચ કરેતિ ” પણ તેને પોતાના આચરણમા ઉતરતા નથી ॥૩॥

જેમ રોગી માણસ રોગના નિવારણ માટે ઔપધિ ન પીવે તો તેનો
રોગ દૂર કરવાને શક્તિમાન થતો નથી, એ જ પ્રમાણે “ જે ” એ સસારી
“ સવ્વદુઃખસાણવિરેયણ ” જરા, મરણ આદિ સગળાં હું જોને નિર્મૂળ કરનાર
તથા “ ગુણમહુર ” આત્મવિકાસી શુણ્ણોથી મધુર એવા “ જિણવયણ ” જિનેન્દ્ર
ભગવાનના વચનરૂપ “ ઓસહ ” ઔપધને “ મુઢા ” ઉપકાર બુદ્ધિથી “ પાઝ
નેચ્છહ ” પ્રાપ્ત કરતા નથી, તેઓ “ કિં કાઝસક્કા ” કંઈ પણ કરવાને સમર્થ

આત્મપ્રદેશે સહોપચિત્ય 'ચત્તવિહગઈપેરત' ચતુર્વિધગતિપર્યન્તમ્, ચતુર્વિધા=ચતુઃપ્રકારા ગતિ=નરકાદિરૂપા પર્યન્તો=પ્રમાણો यस્ય સ ત તથોક્ત સંસારમ્ 'અણુપરિયટ્ટતિ' અતુપર્યટન્તિ=પરિભ્રમન્તિ ॥ ૧ ॥

યે ચ પ્રાણિનોધર્મ નશ્રુણન્તિ, તથા યે ચ શ્રુત્યાપિ પ્રમાયન્તિ=પ્રમાદં કુર્વન્તિ તે ઉભયેડપિ 'અકુયપુણ્ણા' અકુતપુણ્યાઃ=પ્રાણાતિપાતાદિપાપપરાયણત્યાત્ હીનપુણ્યા 'અનત્ત' અનન્તકાન્=અનન્તાન્ 'સન્નગઈપક્કલદે' સર્વગતિપ્રસ્ફુન્દાન્=નરકનિગોદાદિ ચતુર્ગતિભ્રમણાનિ 'કાઠિતિ' રુરિપ્યન્તિ ॥ ૨ ॥

યે ચ મિચ્છાદિદ્ધાઃઅબુદ્ધિકાઃ=વિવેકબુદ્ધિચિત્તલા મદ્ધનિકાચિત્તકર્માણઃ

હે- 'એઈ', 'ઇત્યાદિ' ।

(એઈ) હિંસા આદિરૂપ (પચઈ) પાચ (આસવેઈ) આસ્ર વૉં કે આચરણ કરને સે જીવ (અણુસમય) પ્રતિક્ષણ (ચ આચિણિત્તુ) જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મમલ્લ કા બદ્ધ કરકે-આત્મપ્રદેશોં કે સાથે એક ક્ષેત્રાવગાહરૂપ સબ્ધ કરકે (ચત્તવિહગઈપેરત) નરકાદિરૂપ ચાર પ્રકારકી ગતિવાલે (સસાર) સસાર મેં (અણુપરિયટ્ટતિ) પરિભ્રમણ કિયા કરતે હૈં ॥ ૧ ॥ (જે ય ન સુણતિ ધમ્મ) જો પ્રાણી શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મ કા શ્રવણ નહીં કરતે હૈ તથા (સોઝ્ઞ ય જે પમાયતિ) જો સુનકર કે ખી પ્રમાદ પતિત હોતે રહતે હૈં, યે દોનોં (અકુયપુણ્ણા) પ્રાણાતિપાત આદિકો મેં પરાયણ રહને કે કારણ હીન પુણ્યવાલે હૈં । (અનત્ત સન્નગઈપક્કલદે કાઠિતિ) અતઃ અનન્તરૂપ મેં નરકનિગોદ આદિ ચારોગતિયોં મેં પરિભ્રમણ કરતે રહેંગે ॥ ૨ ॥ (જે નરા મિચ્છાદિદ્ધી અબુદ્ધીયા મનુ-

ઉપસહાર કરીને પોતાના વિચારે દર્શાવે છે—“એઈ” ઇત્યાદિ—

“એઈ” હિંસા આદિ રૂપ “પચઈ” તે પાચ “આસવેઈ” આસ્ર વૉને આચરવાથી જીવો “અણુસમય” પ્રત્યેક ક્ષણે “ચ આચિણિત્તુ” જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મમલ્લને બધા બાધીને-આત્મ પ્રદેશોની સાથે એક ક્ષેત્રાવગાહરૂપ સબ્ધ કરીને “ચત્તવિહગઈપેર” નરકાદિ રૂપ ચાર ગતિ વાળા “સસાર” સસારમા “અણુપરિયટ્ટતિ” પરિભ્રમણ કર્યા કરે છે ॥ ૧ ॥

“જે ય ન સુણતિ ધમ્મ” જે જીવો શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનું શ્રવણ કરતા નથી, તથા “સોઝ્ઞ ય જે પમાયતિ” સાલણીને પણ જે પ્રમાદમા ડૂબેલા રહે છે, તે બન્ને “અકુયપુણ્ણા” પ્રાણાતિપાત આદિમા હીન રહેવાને કારણે પુન્યહીન હોય છે, “અનત્ત સન્નગઈ પક્કલદેકાઠિતિ” તેથી અનન્તરૂપે નરકનિગોદ આદિ ચારે ગતિયોમા પરિભ્રમણ કર્યા કરશે ॥૨॥

વદ્ધ=સ્વાત્મપ્રવેગેષુ સંલેપિત, નિકાચિત=દ્વૃત્તર પદ્ધત્=ઉપગમનાદિચરણાનામ-
નિપયીકૃત ર્થ યૈસ્તે તયોક્તાઃ, નગ. ગુણા વદ્ધવિગ્મ=અનેકપ્રકારમ્=વિવિધ-
હેતુદૃષ્ટાન્તપૂર્વકમ્ અનુગિષ્ટમપિ=અપદિષ્ટમપિધર્મ=શ્રુતચારિત્રલક્ષણ શ્રુન્વન્તિ
ક્વિન્તુ ન ચ કુર્વન્તિ=ન ચ સમાચરન્તિ ॥ ૩ ॥

‘ જે ’ એ મનુષ્યા સર્વદુઃખાના=નન્મજરામરણાદિરૂપાણા ‘ વિરેયણ ’ વિરે-
ચન=કોષ્ટશુદ્ધિરૂપવિરેચનમિયવિરેચન નિવારક ‘ ગુણમહુર ’ ગુણમધુર ગુણે.=
આત્મવિકાસિગુણૈર્મધુર=મિષ્ટમ્, એતાદૃશ ‘ જિજ્ઞાસયણ ’ જિજ્ઞાસચન=ચન=જિજ્ઞા-
સચનરૂપમ્ ‘ આમહ ’ ઓપધ ‘ મુઠ્ઠા ’ મુઠ્ઠા=ઉપકારબુદ્ધિયા ‘ જ ’ યત્ ‘ નેચ્છડ ’
નેચ્છન્તિ=નપિચન્તિ તે ‘ કિં કાઝ ’ કિં કર્તુ ‘ સમા ’ શક્તાઃ=સમર્થા ભવન્તિ
પ્યમિષ્ઠાદિષ્ટિ હોતે હેં ચિવેક બુદ્ધિસે વિહીન હોતે હેં તથા (વદ્ધનિકાઙ્ક-
કમ્મા) નિકાચિત કર્મોં કા ચર કિણ દુણ હોતે હેં, એસે મનુષ્ય વદુવિદ્
(અણુદિદ્વપિ) ગુરુઓં દ્વારા વિવિધહેતુ તથા દૃષ્ટાન્ત આદિસે વદ્ધત પ્રકારસે
સામઘાવે ગયેં મી શ્રુત ચારિત્રરૂપ (ધમ્મ) ધર્મકો (સુણતિ) સુન તો હેતે હેં
પરન્તુ (ન ચ કરેતિ) ઉસેં અપને આચરણ મેં નહીં લાતે હેં ॥૩॥ રોગી
હોકર મી જો રોગ નિવારણાર્થ ઓપધિ કા પાન નહીં કરતે હેં તો જૈસે
વેં અપને રોગ કો દૂર કરને મેં સમર્થ નહીં હો સકતે હેં ઇસી તરહ (યે)
જો સસારી પ્રાણી (સન્ન દુક્ખાણ વિરેયણ (જરા, મરણ આદિ સમસ્ત
દુઃખોં કો જડમૂલ સે ઉઘાડ દેને વાલે તથા (ગુણમહુર) આત્મવિકાસી
ગુણો સે મીઠે એસે (જિજ્ઞાસયણ) જિજ્ઞાસ પ્રશ્ન કો વચન રૂપ (ઓસહ)
ઓપધ કો (મુઠ્ઠા) ઉપકાર બુદ્ધિ સે (પાઝ નેચ્છડ) નહીં પાતે હેં વે
(કિં કાઝ સક્કા) કુછ મી કરને કો લિયે સમર્થ નહીં હો સકતે હેં ।

“ જે નરા મિચ્છાદિદ્વી અગ્રીયા ” એ મનુષ્યો મિચ્છાદિષ્ટિ વાળા
હોય છે, વિનેચ્છુદ્ધિ વિનાના હોય છે તથા “ વદ્ધનિકાઙ્કકમ્મા ” નિકાચિત
કર્મોના બધ વાળા હોય છે, એવા મનુષ્યો “ વદુવિદ્ અણુદિદ્વપિ ” ગુરુઓ
દ્વારા વિવિધ હેતુ તથા દૃષ્ટાન્તો આદિ દ્વારા બહુજ સમજાવવામા આવે છે
છતાં પણ શ્રુતચારિત્રરૂપ “ ધમ્મ ” ધર્મનું “ સુણતિ ” શ્રવણ તો કરે છે, પણ
“ ન ચ કરેતિ ” પણ તેને પોતાના આચરણમા ઉતરતા નથી ॥૩॥

જેમ રોગી માણસ રોગના નિવારણ માટે ઓપધિ ન પીવે તો તેનો
રોગ દૂર કરવાને શક્તિમાન થતો નથી, એ જ પ્રમાણે “ જે ” જે સસારી
“ સન્નદુક્ખાણવિરેયણ ” જરા, મરણ આદિ સગળાં દુઃખોને નિમૂળ કરનાર
તથા “ ગુણમહુર ” આત્મવિકાસી ગુણોથી મધુર એવા “ જિજ્ઞાસયણ ” જિજ્ઞાસ-
ભગવાનના વચનરૂપ “ ઓસહ ” ઓપધને “ મુઠ્ઠા ” ઉપકાર બુદ્ધિથી “ પાઝ
નેચ્છડ ” પ્રાપ્ત કરતા નથી, તેઓ “ કિં કાઝસક્કા ” કંઈ પણ કરવાને સમર્થ

અપિ તુ નૈવ ક્રિમપિ । યે ઔપધ ન પિગન્તિ તે રોગનિવારણે કથમપિ સમર્થા ન
મન્વન્તીતિ ભારઃ । સુત્રે ‘ નેચ્છઙ્ગ ’ ઇત્યત્રૈકવચનમાર્પત્વાત્ ॥ ૪ ॥

ભાવેન=અન્તઃકરણેન પચૈવ ચ પ્રાણાતિપાતાદ્યાસ્રવદ્વારાણિ ‘ ઉચ્છિન્નઙ્ગ ’
ઉચ્છિન્નત્વા=ત્યક્તયા તથા પચૈવ ચ પ્રાણાતિપાતાદિવિરમણભળાનિ સસ્રદ્વારાણિ
‘ રક્તિઙ્ગઙ્ગ ’ રક્તિત્વા=પાલયિત્વા=કર્મરજોવિપ્રમુક્તાઃ સન્ત સિદ્ધિવરા=સિદ્ધીના
મધ્યે વરા શ્રેષ્ઠા સકલકર્મક્ષયલભ્યા ભાવસિદ્ધિસ્તા તથોક્તામ્, અતएન અનુત્તરા
સર્વોત્તમા ‘ જતિ ’ યાન્તિ-અપુનરાવૃત્તિ સિદ્ધિગતિ ગન્ઠન્તીત્યર્થઃ ॥ ૫ ॥

इति श्रीविश्वप्रख्यात-जगद्गुरु-प्रसिद्धनाचरूपश्चदशभाषाकलितकलितक
लापालापक-प्रविशुद्धगद्यगद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-आदिमानमर्देक-श्रीगार्हपतिको-
ल्हापुर राजप्रदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-गालगद्गचारि-
-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-गालीलान्न - प्रतिप्रिचिताया दशमाङ्गस्य
श्री प्रश्नव्याकरणसूत्रस्य सुदर्शन्याख्याया व्याख्याया हिमाद्रिपञ्चास्रवद्वाररूप
प्रथमो विभागः समाप्तः ॥ १ ॥

વિરેચન ઔપધિ જિસ પ્રકાર કોષ્ઠ કી શુદ્ધિ કર દેતાં હૈં उसी प्रकार
प्रभु के वचनरूप औपध भी कोष्ठरूप आत्मों की शुद्धि विधायक होती
है, इसलिये इन्हें विरेचक चूर्ण के जैसा कहा है ॥ ४ ॥ जी भव्य जीव
(भावेण पचेव उच्छिन्नङ्ग) भावपूर्वक इन पूर्वोक्त प्राणातिपात आदि
पाच आस्रव द्वारों को छोड़ करके और (पचेव रक्त्तिङ्ग) प्राणाति-
पातादिविरमणरूप पाच सवरद्वारों पाल करके (कम्मरयविप्पमुक्का)
कर्मरूप रज से सर्वथा रहित हो जाते हैं, वे (अनुत्तर सिद्धवर जति)
अपुनरावृत्तिरूप सर्वोत्तम भावसिद्धि सिद्धिगति-को प्राप्त करते हैं ॥ ५ ॥

॥ ये पाच आस्रव- ‘ अधर्म ’ द्वार समाप्त हुए ॥

॥ प्रश्नव्याकरण सूत्र का प्रथम विभाग समाप्त ॥

થઈ શકતા નથી જેમ વિરેચન ઔપધિ કોઠો સાફ કરી નાખે છે તેમ પ્રભુના
વચનરૂપી ઔપધ પણ આત્મ રૂપી કોઠાની શુદ્ધિ કરનાર છે, તેથી તેને વિરેચન
ચૂર્ણ સમાન કહેલ છે ॥ ૪ ॥

જે ભવ્ય જીવો “ ભાવેણ પચેવ ઉચ્છિન્નઙ્ગ ” ભાવ પૂર્વક તે પૂર્વોક્ત
પ્રાણાતિપાત આદિ પાત્ર આસ્રવ દ્વારોને છોડીને, “ પચેવ રક્તિઙ્ગ ” પ્રાણા-
તિપાતાદિ વિરમણરૂપ પાત્ર સવરદ્વારોનું પાલન કરીને “ કમ્મરયવિપ્પમુક્કા ”
કર્મરૂપ રજથી તદ્દન રહિત થઈ ભવ્ય છે તેઓ “ અનુત્તર સિદ્ધિવર જતિ ”
ન્યાયી આ સસારમા પાછા આવવું પડતું નથી એવું સર્વોત્તમ ભાવસિદ્ધિ-
સિદ્ધિગતિ-મોક્ષ-પ્રાપ્ત કરે છે, ॥ ૫ ॥

॥ પાત્ર આસ્રવદ્વાર સમાપ્ત ॥

॥ પ્રશ્નવ્યાકરણ સૂત્રનો પહેલો વિભાગ સમાપ્ત ॥

—द्वितीयो भागः—

अत्र प्रथमभागे पञ्चासरा दर्जिताः, द्वितीयभागे तु तत्प्रतिपक्षभूतान् पञ्च सवरानभिधितुः। श्रीसुधर्मास्वामी तेषु प्रथममहिंसालक्षणसवरद्वार विवृण्वन् शिष्यमामन्येदमाह—‘जम्बू’ इत्यादि—

मूलम्—जम्बू । एतो सवरदाराडं पंच वोच्छामि आणुपुठ्ठीए ।

जह भणियाणि भगवया, सव्वदुक्खविमोक्खणट्ठाए ॥१॥

पढम होड अहिंमा १, वितिय सच्चवयणं इति पणत्त ।

दत्तमणुन्नाय ३ संवरो य वभचेर ५ मपरिग्गहत्तं ५ च ॥२॥

तत्थ पढमं अहिंसा, तसथावरसव्वभूयखेमकरी ।

तीसे सभावणाए । कच्चिवोच्छ गुणुदेसं ॥ ३ ॥

ताणि उइमाणि सुव्वय । महव्वयाइ लोगहियसव्वयाइ
सुयसागरदेसियाइं तवसजममहव्वयाइ सीलगुणवरव्वयाइ
सच्चवज्जव्वयाइ नरगतिरियमणुयदेवगइविवज्जगाइं सव्व
जणसासणगाइ कम्मरयविदारगाइ भवसयविणासगाइ
दुहसयविमोयगाइं सुहसयपव्वत्तगाइ कापुरिसदुरुत्तराइ
सप्पुरिसनिसेवियाइ निव्वाणगमणमग्गसग्गप्पणायगाइ सव्व-
रदाराइ पंच कहियाणि भगवया ॥ सू० १ ॥

द्वितीय विभाग प्रारम्भ—

प्रथम विभाग में पांच आस्रवों का वर्णन किया गया है। अब इस द्वितीय विभाग में इन पांच आस्रवों के प्रतिपक्षभूत पांच सवरों को कहने की कामनावाले श्री सुधर्मास्वामी सन से पहिले उनमें से अहिंसालक्षण सवरद्वार का विवेचन करने के निमित्त जम्बूस्वामी को

शीलेलाग—

पडेला विलागमा पाय आस्रवोनु वणुंन उरायु छे डवे आ शीले
विलागमा ते पाय आस्रवोथी विइद्धता पाय सवरो विये वणुंन उरवानी
ध्विजवाणा श्री सुधर्मास्वामी सौथी पडेला तेओमाना अडि सालक्षणु सवरद्वारनु

ટીકા—‘જન્મ’ ઇત્યાદિ—

હે જન્મુ ! — ઇતઃ મસદ્ધારાણિ પચ્ચ વક્ષ્યામિ આનુપૂર્વ્યાં યથા મણિતાનિ મગવતા સર્વદુઃસ્વપિમોક્ષણાર્થાય ॥ ૧ ॥

પ્રથમ મસત્ત્વહિંસા, દ્વિતીય સત્યવચનમિતિ પ્રજ્ઞપ્તમ્ ।

દત્તાનુજ્ઞાતસવરથ, વ્રણવર્ચપરિગ્રહત્વં ચ ॥ ૨ ॥

તત્ર પ્રથમમહિંસા, તસસ્થાપરસર્વભૂતક્ષેમકરી ।

તસ્યા સમાનાયાઃ, કિંચિદ્ વક્ષ્યામિ ગુણોદ્દેશમ્ ॥ ૩ ॥ ઇતિ ઝાયા ।

તત્ર હે જન્મુઃ । ઇતઃ=આસ્રવદ્ધારરુચનાનન્તર ‘આણુપુર્વીણ’ આનુપૂર્વ્યા-અનુક્રમેણ પચ્ચ ‘સંસરદારાઈ’ સસરદ્ધારાણિ, મગ્નિયતે=નિરુચ્યતે ર્મ કારણ પ્રાણાતિપાતાદિક ચેનાત્મપરિણામેન સ સવરસ્તસ્ય દ્ધારાણિ=ઉપાયમૂતાનિ=અહિંસાદીનિ ‘વોચ્છામિ’ વક્ષ્યામિ=રુચયિગ્મામિ । નાહ સ્વનુદ્ધવા વક્ષ્યામિ, કિન્તુ મગવતા મહાવીરેણ સર્વપ્રાણિના ‘સવ્વદુઃસ્વપિમોક્ષણદ્ધાણ’ સર્વદુઃસ્વ-

સવોધન કરકે પ્રથમસૂત્ર કહતે હૈ—‘જન્મ’ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(જન્મ) હે જન્મ ! (ણ્તો) આસ્રવદ્ધાર રુચને કે ગદ મૈ અચ (આણુપુર્વીણ) અનુક્રમ સે (પચ સવરદારાઈ) પાચ સવાદારોં કો (વોચ્છામિ) રુદ્ધગા । જિસ આત્મપરિણામ સે કર્મોં કે આસ્રવ કે કારણભૂત પ્રાણાતિપાતાદિક પરિણામ રોરુ દિયે જાતે હૈં ઉસકા નામ સવર હૈં । ઉસકે ઉપાયભૂત દ્ધાર અહિંસાદિક પરિણામ હૈં । ઇન્હી પરિ-ણામોં કા નામ સવર દ્ધાર હૈં । મૈં હન સવરદારોં કા કથન અપની બુદ્ધિ કે અનુસાર નહોં કરુંગા-કિન્તુ (મગવયા) મગવાન્ મહાવીર ને (સવ્વદુઃસ્વપિમોક્ષણદ્ધાણ) સમસ્ત પ્રાણિયોં કે દુઃસ્વો કો દૂર કરને કે

વિવેચન કરવાને માટે જન્મસ્વામીને સંબોધીને પહેલુ સૂત્ર કહે છે—

‘જન્મ’ ઇત્યાદિ

“જન્મ” હે જન્મ ! “ણ્તો” આસ્રવદ્ધાર વિષે વર્ણન કર્યા પછી હવે હું “આણુપુર્વીણ” અનુક્રમે ‘પચસવરદારાઈ’ પાચસવરદારોં “વોચ્છામિ” કહીશ જે આત્મપરિણામથી કર્મોના આસ્રવના કારણભૂત પ્રાણાતિપાતાદિક પરિણામને રોડવામા આવે છે તેનું નામ સવર છે તેના ઉપાયરૂપ દારો અહિંમા વગેરે પરિણામ છે એ જ પરિણામોને સવરદાર કહે છે હું તે સવરદારોનું વર્ણન મારી બુદ્ધિ પ્રમાણે કઠીશ નહીં—પણ “મગવયા” ભગવાન મહાવીરે “સવ્વ દુઃસ્વપિમોક્ષણદ્ધાણ” સમસ્ત પ્રાણીઓના દુઃસ્વો દૂર કરવાને

વિમોક્ષણાર્થાય 'જહ' યથા-યદ્વાપિ મણિતાનિ, તથૈવ વક્ષ્યામિ ॥ ૧ ॥
પચ સવર દ્વારાણિ વક્ષ્યામીતિ પ્રતિજ્ઞાય તન્નામાન્યાહ-'પદમ હોહ અહિંસા' ઇત્યાદિ ।
પચ્ચસવર દ્વારેષુ 'પદમ' પ્રથમમહિંસા સવરદ્વાર ભવતિ, દ્વિતીય સત્યવચનનામક,
તૃતીય દત્તાનુજ્ઞાતગ્રહણલક્ષણ, ચતુર્થ વ્રત્તચર્યં, ચ=પુનઃ પચ્ચમમપરિગ્રહત્વ સવર-
દ્વારસ્મ ॥૨॥ પચ્ચ સવરદ્વારનામાન્યુક્તાનિ, સપ્રતિ પ્રથમમહિંસાસવરદ્વાર વર્ણયિતુ-
માહ-'તત્થ પદમ અહિંસા' ઇત્યાદિ-

'તત્થ' તત્ત સવરપચ્ચક્રમધ્યે પ્રથમ સવરદ્વારમહિંસા ભવતિ, સા ઠિ
'તસથાવરસન્નભૂયસ્સેમમ્મરી' તસસ્થાવરસર્વભૂતક્ષેમમ્મરી=તસસ્થાવરાદિ સર્વ
લિયે (જહ) જિસ રૂપ સે ઇનકા (માણિયાણી) પ્રરૂપણ કિયા હૈ ડસી
તરહ સે મૈં ઇનકા પ્રરૂપણ-વર્ણન કરુંગા ॥ ૧ ॥

અવ વે પાચ સવર દ્વાર કૌન ૨ સે હૈ ? સૂત્રકાર ડનકા ક્રમશઃ
નામનિર્દેશ કરને કે લિયે કહતે હૈં-'પદમ હોહ અહિંસા' ઇત્યાદિ ।

ડન પાંચ સવર દ્વારોં મૈં સે (પદમ) સય સે પહિલા સવર
દ્વાર (અહિંસા હોહ) અહિંસા હૈ । (વિંતિય) દસરા સવર દ્વાર
(સચ્ચવયણ) સત્યવચન હૈ (દત્તમણુજ્ઞાય) તીસરા સવર દ્વાર દત્તાનુ
જ્ઞાતગ્રહણ હૈ । ચૌથા સવર દ્વાર (વમચેર) વ્રત્તચર્ય હૈ । ઔર પાંચવા
સવર દ્વાર (અપરિગ્ગહત્ત) અપરિગ્રહત્વ હૈ ॥ ૨ ॥ ઇસ પ્રકાર પાચ
સવર દ્વારોં કે નામ રહ કર અવ સૂત્રકાર સર્વપ્રથમ અહિંસા રૂપ સવર
દ્વાર કો વર્ણન કરને કે વિયે તીસરી ગાથા કહતે હૈં-(તત્થ) ઇન પાચ
સવર દ્વારોં કે ધીચ મૈં (પદમ) પહિલા સવરદ્વાર (અહિંસા) અહિંસા

માટે "જહ" જે રીતે તેનું "માણિયાણિ" પ્રરૂપણ થયું છે એજ રીતે હું
તેનું પ્રરૂપણ-વર્ણન કરીશ ॥ ૧ ॥

હવે તે પાચ સવરદ્વાર કયા કયા છે ? તેના અનુક્રમે નામ નિર્દેશ
કરવાને માટે સૂત્રકાર કહે છે-"પદમ હોહ અહિંસા" ઇત્યાદિ ।

તે પાચ સવરદ્વારોમા "પદમ" સૌથી પહેલું સવરદ્વાર "અહિંસા
હોહ અહિંસા" છે, "વિંતિય" બીજું સવરદ્વાર "સચ્ચવયણ" સત્ય વચન
"દત્તમણુજ્ઞાય" ત્રીજું સવરદ્વાર દત્તાનુગ્રહણ છે, ચોથું સવરદ્વાર "વમચેર"
વ્રત્તચર્ય છે, અને પાચમું સવરદ્વાર "અપરિગ્ગહત્ત" અપરિગ્રહત્વ છે ॥૨॥

આ પ્રમાણે પાચ સવરદ્વારોના નામ કહીને હવે સૂત્રકાર સૌથી પહેલા
સવરદ્વાર અહિંસાનું વર્ણન કરવાને માટે ત્રીજી ગાથા કહે છે "તત્થ" એ
પાચ સવરદ્વારોમા "પદમ" પહેલું સવરદ્વાર "અહિંસા" અહિંસા છે

દારકાણિ=કર્મ=જ્ઞાનાવરણાદ્યપ્રકારક, તદેવ જીવસ્ય ગુણનેન માલિન્યાપાદ-
કત્વેન રજઃ=ધૂલિ, તદ્ વિદારયન્તિ=નિવારયન્તિ યાનિ તાનિ તથોક્તાનિ,
તથા-મયપવિગાસગાઢ ' મયશતવિનાશકાનિ = મયશતાનિ=જન્મશતાનિ
વિનાશયન્તિ યાનિ તાનિ તથોક્તાનિ, મયપરમ્પરાચિઠ્ઠેદકાનીત્યર્થઃ, અત એવ
' દુઃસ્વસયવિમોચગાઢ ' દુઃસ્વશતવિમોચકાનિ=દુઃસ્વશતાનિ વિમોચયન્તિ યાનિ
તાનિ તથોક્તાનિ, તથા - ' સુદસયપવત્તગાઢ ' સુદસ્યશતવર્તકાનિ=સુદસ્યશતાનિ
પ્રવર્તયન્તિ યાનિ તાનિ તથોક્તાનિ, તથા- ' કાપુરિસદુરુત્તરાઢ ' કાપુરુપ

ચુકે હૈં ડન મયને દીયા હૈં। (કમ્પરયચિદારગાઢ) યે સવરદ્વારકર્મરજ કે
ચિદારક હૈં-જ્ઞાનાવરણ આદિ આઠ પ્રકાર કી કર્મરૂપ ધૂલિ કો યે ડડાને
નષ્ટ કરને વાલે હૈં। જ્ઞાનાવરણ આદિ કર્મો કો ધૂલિ કી ડપમા ડસ-
લિયે દી હૈં કિ ધૂલિ જિસ પ્રકાર મલિનતા આદિ કરતી હૈં ડસી પ્રકાર
યે કર્મ મી જીવ મૈં વ્યવહાર નય કી અપેક્ષા સે મલિનતા કરતે હૈં,
અર્થાત્ જ્ઞાનાદિક ગુણો કા આવરણ આદિ કર દેને સે જીવ મે અજ્ઞાન
આદિ વિભાવ માર્વો કે વર્ધક હોતે હૈં। (મયસયવિગાસગાઢ) યે
સવરદ્વાર મયશતવિનાશક હૈં-અર્થાત્-ઇનકી આરાધના કરને મે આરા
ધક, જીવો કે જો ઇનકી આરાધના કે વિના સૈકડો મય-જન્મ-હોને
વાલે થે વે સય નષ્ટ હો જાતે હૈં। (દુઃસ્વસયવિમોચગાઢ) મયપર-
પરા ઇનકે પ્રભાવ સે વિચ્છિન્ન હો જાતી હૈં, ઇસીલિયે ઇન્હેં દુઃસ્વશત
વિમોચક કહા હૈં। (સુદસયપવત્તગાઢ) જય સૈકડો દુઃસ્વ ઇનકી

“સવ્વ જિણસાસણગાઢ” આજ સુધીમા જેટલા ત્રિનેશ્વરો વડ ગયા
તે બધાએ તે મયરદ્વારેનો ઉપદેશ આપ્યો છે “કમ્પરયચિદારગાઢ” તે
સવરદ્વાર કર્મરજનો નાશ કરનાર જે-જ્ઞાનાવરણ આદિ આઠ પ્રકારના કર્મરૂપી
ગુણો નાશ કરે જે જ્ઞાનાવરણ આદિ કર્મોને ધૂળ-રજની ઉપમા દેવાતુ કાણુ
એ જે જે ધૂળ જેમ મલિનતા આદિ કરે છે તેમ એ કર્મો પણ એવમા
વ્યવહાર નયની અપેક્ષાએ મલિનતા કરે છે, એટલે જે જ્ઞાનાદિ આદિ ગુણોતુ
આવરણ કરી નાખનારો એવમા અજ્ઞાન આદિ ઉલટા ભાવોના વર્ધક થાય જે
“મયસયવિગાસગાઢ” તે મયરદ્વાર લયગત વિનાશક છે-એટલે જે તેમની
આરાધના કરવાથી આગધત ભવોના તેમની આગધના કર્યા વિના જે મેકડો
ભવ થવાના હતા તે બધા નષ્ટ થઈ જાય જે “દુઃસ્વસયવિમોચગાઢ” તેમના
પ્રભાવથી ભવોની પરપરા છેલડ જાય છે, તે ડરણે તેમને દુઃસ્વગત વિભા-
વક દર્શાવ્યા છે “સુદસયપવત્તગાઢ” જે તેમના આગધનાથી મેકડો

દુરુત્તરાણિ=કાપુરુપૈઃ=કાતરૈઃ દુઃશેન ઉચોર્યન્તે યાનિ તાનિ તથોક્તાનિ=કાપુરુપૈઃ પ્રતિપ તુમશસ્થાનોત્તર્ય, તથા- ' સત્પુરિમનિસેવિયાઈ ' સત્પુરુપૈર્નિવે-વિતાનિ=આશ્રિતાનિ, તથા- ' નિવ્યાણગમનમગ્ગસગ્ગપ્પયાણગાઈ ' નિર્વાણગમન માર્ગસ્વર્ગપ્રણાયકાનિ=નિર્વાણ=મોક્ષસ્તસ્ય ગમને માર્ગેઽય માર્ગા યાનિ તાનિ નિર્વાણગમનમાર્ગાણિ, તથા-સ્વર્ગે પ્રકર્ષેણ નયન્તિ જીવાન્ યાનિ તાનિ સ્વર્ગપ્ર-ણાયકાનિ, ઉભયોઃ કર્મધારયસ્તાનિ તથોક્તાનિ, પશ્ચસપરદારાણિ ' ભગવયા ' ભગવતા મહાવીરેણ ' ઉ ' તુ-નિશ્ચયેન ' કહિયાણિ ' કથિતાનિ=પ્રોક્તાનિ, અત્ત ઇમાન્યવશ્ય શ્રદ્ધેયાનોત્તિ માયઃ ॥ સૂ. ૧ ॥

इति प्रथमसारद्वार प्रस्तावना ।

આરાધના સે ચિન્ટ હો જાતે હૈ તોં યહ યાત મી નિશ્ચિત હો જાતી હૈ કિ યે સૈકઢોં સુઘોં કે પ્રવર્તક હોતે હૈં । જય હનકા હતના વિશિષ્ટ પ્રભાવ હૈ તો કિર કયા હૈ હરણક પ્રાણી ડનકી આરાધના કરને લોગા હસકે લિયે સૂત્રકાર કહતે હૈ કિ યે સવરદ્વાર (કાપુરિસદુરુત્તરાઈ) કા પુરુપ દુરુત્તર હૈ-જો કાયરપુરુપ હૈ-ડનકે દ્વારા તો ધારણ કરને કે લિયે અશક્ય હૈ । પરન્તુ (સત્પુરિસનિસેવિયાઈ) સત્પુરુપોં સે યે સેવિત-આચરિત હોતે હૈં, અર્થાત્ જો સત્પુરુપ હૈં-અન્ત રાત્મા જીવ હૈ-વે હી ડન્હે ધારણ કરતે હૈં । અધિક કયા કહા જાય યે સવરદ્વાર (નિવ્યાણગમનમગ્ગ-મગ્ગપ્પયાણગાઈ) મોક્ષ કે ગમન મેં માર્ગરુપ હૈ, અગર જીવ મે હતની યોગ્યતા નહીં હોં તો સ્વર્ગ મેં પ્રયાણ કરાને વાલા જહર હોતા હૈ । હમ પ્રકાર કે (યેપચ સવરદારાઈ કહિયાણિ) પાંચ સવર દ્વાર ભગવાન મહાવીર ને કહે હૈ । હસલિયે પ્રત્યેક અવ્ય જીવ કો ડન્હે અપનોં શ્રદ્ધા કા વિષય અવશ્ય ઘનોના ચાહિયે । ॥સૂ. ૧॥

હુ ખ નષ્ટ થઈ જાય છે તો એ વાત પણ નહીં થઈ જાય છે કે તે સેકડો મુખના પ્રવર્તક થાય છે બ્યારે તેમનો આટલો બધો વધારે પ્રભાવ છે તો દરેક પ્રાણી તેની આરાધના કરવા માડશે તેથી સૂત્રકાર બતાવે છે તે તે સવરદ્વાર “ કા પુરિસદુરુત્તરાઈ ” કાપુરુપદુરુત્તર છે-જે કાયર પુરુષો છે-મહિ સાત્મા જીવ છે, તેમના દ્વારા તે ધારણ કરવાને માટે અશક્ય છે પણ “ સત્પુરિસનિસેવિયાઈ ” પણ સત્પુરુષો વડે તેનું સેવન-આચરણ કરાય છે વધુ શું કહું ! તે સવરદ્વાર “ નિવ્યાણગમનમગ્ગ મગ્ગપ્પયાણગાઈ ” મોક્ષગમનના માર્ગે ઇપ છે, જો જીવમા એટલી યોગ્યતા હોય તો તે તેને માટે અવશ્ય સ્વર્ગ પ્રાપ્તિ કરાવનારા નિવડે છે આ પ્રકારના તે “ પચસવરદારાઈ કહિયાણિ ” પાંચ સવરદ્વાર ભગવાન મહાવીરે ડહેલ છે તો દરેક અવ્યજીવે તેમને અવશ્ય પોતાની શ્રદ્ધાનો વિષય બનાવવો જોઈએ ॥ સૂ. ૧ ॥

અથ પ્રથમસવરનિરૂપણાયાદ-‘તત્ત્વ પદમ’ ઇત્યાદિ--

મૂલમ્-તત્ત્વ પદમં અહિસા જા સા સદેવ મણુયાસુરસ્સ
લોગસ્સ ભવઈ દીવો તાણં સરણં ગઈ પડટ્ટા, નિઠ્ઠાણં ૧,
નિઠ્ઠુઈ ૨, સમાહી ૩, સંતી ૪, કિત્તી ૫, કંતી ૬, રઙ્ગ ૭, વિરઙ્ગ ૮,
સુયંગ ૯, તિત્તી ૧૦, દયા ૧૧, વિમુત્તી ૧૨, સ્વંતી ૧૩, સમ્મત્તારાહણા ૧૪,
મહત્તી ૧૫, વોહી ૧૬, વુદ્ધી ૧૭, ધિત્તી ૧૮, સમિઠ્ઠી ૧૯, રિઠ્ઠી ૨૦,
વિઠ્ઠી ૨૧, ઠિઈ ૨૨, પુટ્ટી ૨૩, નદા ૨૪, ભદ્દા ૨૫, વિસુદ્ધી ૨૬,
લઠ્ઠી ૨૭, વિસિટ્ઠિદિટ્ઠી ૨૮, કલ્હાણં ૨૯, મગલ ૩૦, પમાઓ ૩૧,
વિમૂઈ ૩૨, રક્ષા ૩૩, સિઙ્ગવાસો ૩૪, અણાસવો ૩૫, કેવલીણ-
ઠાણ ૩૬, સિવ ૩૭, સમિઈ ૩૮, સીલ ૩૯, સજમો ૪૦, તિ ય,
સીલઘરો ૪૧, સવરોચ ૪૨, ગુત્તી ૪૩, વવસાઓ ૪૪, ઉસ્સઓ ૪૫,
જન્નો ૪૬, આયતણ ૪૭, જતણ ૪૮, મપ્પમાઓ ૪૯, અસ્સાઓ ૫૦,
વીસાસો ૫૧, અમઓ ૫૨ સવ્વસ્સ ૫૩, વિ અમઘાઓ ચોક્ક
૫૪, પવિત્તો ૫૫, સુઈ ૫૬ પૂયા ૫૭, વિમલ ૫૮, પમાસા ૫૯,
ય, નિમ્મલ ૬૦ તરત્તિ। એવમાદીણિ નિયગુણનિમ્મિયાઈ પજ્જવ-
નામાણિ હોતિ અહિસાણ ભગવઈણ ॥ સૂ૦ ૨ ॥

ટીકા-‘ તત્ત્વ ’ ઇત્યાદિ-

‘ તત્ત્વ ’ તત્ત્વ=તેષુ પશ્ચસુ સવરદ્વારેષુ મધ્યે ‘ પદમ ’ પ્રથમમ્=આદ્યમ્
‘ અહિસા ’ અહિસાલક્ષણ સવરદ્વાર ભવતિ । અહિસા કીદશી ? ઇત્યાદ-‘ જા મા ’
યા સા સુપ્રસિદ્ધા-અહિસા ‘ સદેવમણુયાસુરસ્સ લોગસ્સ ’ સદેવમણુયાસુરસ્ય

હસ પ્રકાર યદ્ પ્રથમ સવર દ્વાર કી પ્રસ્તાવના હૈ । અથ સૂત્રકાર

આ પ્રમાણે આ પ્રથમ સવરદ્વારની પ્રસ્તાવના છે હવે સૂત્રકાર પ્રથમ

લોકસ્ય 'દીવો' દ્વીપો ભવતિ, અથ ભાવ-સયોગવિયોગચિન્તાસન્તાનવિતાન
તરજ્ઞાયમાણમોહમહાર્ત્તપર્ત કપાયથાપદકર્થિતમધ્યમાનગાત્રાણામત્રાણાના પ્રાણા-
નામિયમર્હિસાઽઽશ્વાસસ્થાનરૂપો દ્વીપો ભવતિ, તથા- 'તાણ' ત્રાણમ્, આપદમ્યો
રક્ષણાત્રાણસ્વરૂપાઽસ્તિ । તથા- 'સરણ' શરણમ્-વિપિદવિપદવ્યાકુળાનામાશ્રય

પ્રથમ સવરઢ્ઢ દ્વાર કે નિરૂપણ કે લિયે સૂત્ર કહતે હૈ- 'તત્થ પદમ'
હત્પાદિ૦ ।

ટીકાર્થ- (તત્થ) ઉન પાચ સવરઢ્ઢારોં મેં સે (પદમ અર્હિમા)
પહિલા સવરઢ્ઢાર અર્હિમા હૈ । (જા સા સદેવમણુયામુરસ્મ લોગસ્સ-
દીવો ભવઃ) યહ સુપ્રસિદ્ધ અર્હિસા દેવલોક, મનુષ્યલોક ઓર અસુર-
લોક કે લિયે ંક દ્વીપ જેસી હૈ । ઈસકા તાત્પર્ય યહ હૈ કિ સયોગ ઓર
વિયોગ કી સન્તાનપરપરારૂપ તરજ્ઞો સે યહ મોહમહાર્ત્તરૂપ ગર્ત કિ
જિસમે સમસ્ત સસારી જીવ સર્વથા મગ્ન હો રહે હૈં, વ્યાપ્ત હો રહા હૈ
ઉસમે પડે હુણ ઇન સસારી જીવોં કો કપાયરૂપ શ્વાપદ-ર્હિસક જાનવર
રાતદિન દુઃખિત કરતે રહતે હૈં ઓર ઉનકે શરીર કો મથતે રહતે હૈં ।
વહા ઉનકી રક્ષા કરને વાલા કોઈ નહીં હૈ । ઈસ તરહ અશરણભૂત હુણ
ઇન પ્રાણીયોં કી રક્ષા કરને વાલી યહ ંક અર્હિસા હી હૈ । અતઃ યહ
અર્હિસા ઉનકે લિયે આશ્વાસન કે સ્થાનરૂપ ંક દ્વીપ કે જેસી હૈ । તથા
(તાણ) જીવોં કી યહ આપત્તિ વિપત્તિ સે રક્ષા કરતી હૈ ઈસલિયે
યહ ત્રાણરૂપ હૈ । તથા (સરણ) ંનેક વિપદાઓ સે ઘિરે હુણ જીવોં

સવરઢ્ઢારના નિરૂપણને માટે સૂત્ર કહે છે- "તત્થ પદમ" ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ- "તત્થ" તે પાચ સવરઢ્ઢારોમાંથી પદમ અર્હિસા " પહેલું સવરઢ્ઢાર
અર્હિસા છે " જા સા સદેવમણુયામુરસ્મ લોગસ્સ દીવો ભવઃ " તે સુપ્રસિદ્ધ
અર્હિસા દેવલોક, મનુષ્યલોક, અને અસુરલોકને માટે એક દ્વીપ જેવી છે તેનો
ભાવાર્થ એ છે કે સયોગ અને વિયોગરૂપ સત્તાન પરપરા રૂપ મોહનો વડે
આ મોહ મહાવર્તરૂપ આઈ ડે જેમા સર્વે સસારી જીવો સપૂર્ણ રીતે મગ્ન
થઈ ગયેલા છે, રૂખી ગયા છે, તે સસારી જીવોને કપાયરૂપ શ્વાપદ ર્હિસક
પશુ નિશાદિન દુખી કરે છે અને તેમના શરીરને વલોવ્યા કરે છે ત્યાં તેમનું
રક્ષણ કરનાર કોઈ નથી આ રીતે નિરાધાર એવા તે પ્રાણીઓની રક્ષા કર
નાર આ એક અર્હિસા જ છે તેથી આ અર્હિસા તેમને માટે આશ્રય સ્થાનરૂપ
એક દ્વીપ સમાન છે તથા "તાણ" તે જીવોનું આપત્તિ-વિપત્તિ સામે રક્ષણ
કરે છે તેથી તે ત્રાણરૂપ છે તથા "સરણ" અનેક વિપદોથી ઘેરાયેલા જીવોને

સ્થાનમ્, ' ગઈ ' ગતિઃ=ગમ્યતે=મોક્ષાર્થિભિરાશ્રીયતે ડતિ ગતિઃ= પ્રાપ્યમ્થાન તથા- ' પડદા ' પ્રતિષ્ઠા પ્રતિષ્ઠન્તે-આસતે યસ્યા સર્વે ગુણા સા પ્રતિષ્ઠા=સર્વગુણા નામાધારસ્વરૂપા । સામ્પ્રતમર્હિસાયાઃ ગુણનિષ્પન્નાનિ પટ્ટિનામાન્યાહ ' નિવ્વાણ ' ઇત્યાદિ- ' નિવ્વાણ ' નિર્વાણ=મોક્ષઃ, તદ્દેતુત્વાત્ ૧, ' નિવ્બુઈ ' નિવૃત્તિ=સ્વાસ્થ્ય- મ્-કર્મવ્યાધિવર્જિતત્વાત્ ૨, ' સમાદી ' સમાપ્તિ=સમતા, સમભાવદેતુત્વાત્ ૩, ' સતી ' શાન્તિઃ=દ્રોહવર્જિતત્વાત્ ૪, ' કિત્તી ' કીર્ત્તિઃ=યશઃ તદ્દેતુત્વાત્ ૫,

કો યહ ઇક ઉત્તમ આશ્રય સ્થાન રૂપ હૈ । તયા (ગઈ) જો મોક્ષ કે અભિલાશી જીવ હૈ વે ડમ્કા આશ્રય કરતે હૈ ટસલિયે ડનકી અપેક્ષા યહ ગતિરૂપ હૈ । તથા (પડદા) સમાર મૈં જિતને ખી સદ્ગુણ હૈ ડન સપ કી પ્રતિષ્ઠા-આધારભૂત યહી ઇક અર્હિસા હૈ, ડસકે અભાવ મૈં અન્ય ચિદ્ધમાન સદ્ગુણો કી પ્રતિષ્ઠા-સીમત-નહીં હોતી હૈ । અવ સૂત્રકાર ડસ અર્હિસા ભગવતી કે ગુણ-નિષ્પન્ન સાઠ નામો કો કહતે હૈ । ડનમૈં પહિલા નામ (નિવ્વાણ) નિર્વાણ-મોક્ષ હૈ । ડયોં કિ યહ ડમ્કી હેતુભૂત હોતી હૈ ૧ । ડૂમરા નામ ડસકા (નિવ્બુઈ) નિવૃત્તિ હૈ, નિવૃત્તિ શબ્દ કા અર્થ સ્વાસ્થ્ય હૈ- કર્મોં કે આત્મતિક અભાવ હોને સે હી જીવોં કો પ્રાપ્ત હોતા હૈ ૨ । અર્હિસા કા તીસરા નામ (સમાદી) સમાધિ હૈ, સમાધિ કા અર્થ સમતા હૈ, યહ અર્હિસા મમ ભાવ કી કારણ હોતી હૈ ડસલિયે કારણ મૈં કાર્ય કે ઉપચાર સે ડસે સ્વય સમાધિરૂપ કહ દિયા હૈ ૩ । અર્હિસા કા ચોથા નામ (સતિ) શાન્તિ હૈ, -કયોં કિ જહાં દ્રોહ

ભાટે તે એક આશ્રયસ્થાનરૂપ છે તથા “ ગઈ ” મોક્ષના અભિલાષી જે જીવો છે તેઓ તેના આશ્રય લે છે, તેથી તેમની અપેક્ષાએ તે ગતિરૂપ છે, તથા “ પડદા ” સમારમા જેટલા સદ્ગુણ છે તે બધાના આધાર રૂપ આ એક અર્હિસા જ છે, તેના અભાવે બીજા વિદ્યમાન સદ્ગુણોની કોઈ પ્રતિષ્ઠા-કિંમત થતી નથી હવે સૂત્રકાર આ અર્હિસા ભગવતીના ગુણ પ્રતિપાદિત સાઠ નામો બતાવે છે તેમા પહેલુ નામ “ નિવ્વાણ ” નિર્વાણ-મોક્ષ છે કારણ કે તે તેના કારણરૂપ હોય છે (૧) તેનુ બીજુ નામ “ નિવ્બુઈ ” નિવૃત્તિ છે, નિવૃત્તિ શબ્દનો અર્થ સ્વાસ્થ્ય થાય છે-કર્મોના અત્યંત અભાવ હોવાથી તે જીવોને થાય છે (૨) અર્હિસાનુ ત્રીજુ નામ “ સમાદી ” સમાધિ છે, સમાધિનો અર્થ સમતા છે, આ અર્હિસા સમભાવનુ કારણ હોય છે તેથી કારણમા કાર્યના ઉપચારથી તેને સ્વય સમાધિરૂપ કહેવામા આવેલ છે (૩) અર્હિસાનુ ચોથુ નામ “ સતી ” શાન્તિ છે, કારણ કે બીજા દ્રોહનો અભાવ હોય છે ત્યાજ શાંત હોય છે અર્હિ

‘કંતી’ કાન્તિઃ=પ્રસન્નતા તદ્દેતુત્વાત્ ૬, ‘રઈ ય’ રતિઃ=આનન્દસ્તજ્જનકત્વાત્ ૭,
 ‘ચિરઈ ય’ ચિરતિઃ=ચિરાગઃ સાવચકર્મચર્જિતત્વાત્,=‘સુયગ’ શ્રુતાગ્ના=શ્રુત=
 શ્રુતજ્ઞાનાન્ન કારણ યસ્માઃ સા તથોક્તા, વક્તમપિ-“પદમ નાણ તઓ દયા”
 इति ९, ‘તિત્તી’ તૃપ્તિઃ=સતોષઃ સર્વપ્રાણિસતોષજનકત્વાત્ ૧૦, દયા=પ્રાણિરક્ષા-
 ઉપમર્દનચર્જિતત્વાત્ ૧૧, ‘ત્રિમુત્તી’ ત્રિમુક્તિ-નિરુચ્યન્તે પ્રાણિનઃ સર્વવધ-

કા અભાવ હોતા હૈ વહીં શાન્તિ હોતી હૈ, અહિંસા મેં દ્રોહ કા લેશ
 ખી નહીં હોતા હૈ, ફસલિયે ફસે શાન્તિ શબ્દ સે વ્યવહૃત કિયા ગયા
 હૈ ૪ । (કિત્તી) યશકી હેતુભૂત હોને સે ફસકા પાંચવાં નામ કીર્તિ હૈ ।
 અહિંસક જીવ કી કીર્તિ કા સર્વત્ર વિસ્તાર હોતા હૈ યહ યાત સુપ્રસિદ્ધ
 હી હૈ ૫ । (કન્તી) પ્રસન્નતા કી હેતુભૂત હોને સે ફસકા નામ કાન્તિ
 ખી હૈ ૬ । (રઈ ય) આનન્દ કી ઉત્પાદક હોને સે ફસકા નામ રતિ
 હૈ ૭ । (ચિરઈ ય) સાવચકર્મો સે વર્જિત હોને કે કારણ ફસકા નામ
 ચિરતિ ખી હૈ ૮ । (સુયગ) ફસ અહિંસા કા કારણ શ્રુતજ્ઞાન હોતા હૈ
 ફસલિયે ફસકા નામ શ્રુતાગ્ન હૈ । ક્યોકિ એસા કહા હૈકિ પહિલે જ્ઞાન
 હોતા હૈ ઘાદ મેં દયા ૯ । (તિત્તી) સમસ્ત પ્રાણિયોં કે લિયે યહ સતોષ
 જનક હોતી હૈ ફસલિયે ફસકા નામ તૃપ્તિ હૈ ૧૦ । ફસ અહિંસા મેં
 પ્રાણિયોં કી રક્ષા હોતી હૈ ફસલિયે પ્રાણિયોં કે પ્રાણોં કે ઉપમર્દન
 કૃત્ય સે રહિત હોને કે કારણ યહ (દયા) દયારૂપ હૈ ૧૧ । ફસકે
 પ્રભાવ સે પ્રાણી સમસ્ત પ્રકાર કે વધ એવ વધનો સે છૂટ જાતા હૈ

સામા દ્રોહુ નામ માત્ર પશુ હોતુ નથી તેથી તેને શાન્તિ શબ્દથી વર્ણવેલ છે
 (૪) “કિત્તી” યશના ધારણ રૂપ હોવાથી તેનુ પાચમુ નામ કીર્તિ છે અહિંસક
 જીવની કીર્તિ સર્વત્ર ફેલાય છે તે વાત સુપ્રસિદ્ધ છે (૫) “કન્તી” પ્રસન્નતાના
 કારણરૂપ હોવાથી તેનુ નામ કાન્તિ પશુ છે (૬) “રઈય” આનન્દ ઉત્પન્ન કરનાર
 હોવાથી તેનુનામ રતિ છે (૭) “ચિરઈય” સાવધ કર્મોથી રહિત હોવાથી તેનુ નામ
 ચિરતિ પશુ છે (૮) “સુયગ” આ હિંસાને કારણે શ્રુતજ્ઞાન થાય છે, તેથી તેનુ
 નામ શ્રુતાગ છે, કારણ કે પહેલા જ્ઞાન થાય છે, અને ત્યાર પછી દયા એવુ
 લાગેલ છે (૯) “તિત્તી” સમસ્ત પ્રાણીઓને માટે તે સતોષ જનક હોય
 છે તેથી તેનુ નામ તૃપ્તિ છે (૧૦) આ અહિંસાથી પ્રાણીઓની રક્ષા થાય છે,
 તેથી પ્રાણીઓના પ્રાણસંહારના કૃત્યથી તે રહિત હોવાથી તે “દયા” દયારૂપ
 છે (૧૧) તેના પ્રભાવથી પ્રાણીઓ સમસ્ત પ્રકારના વધ અને બધનોમાથી
 મુક્ત થાય છે, તેથી સકળ વધબધનોથી પ્રાણીઓને મુક્ત કરાવનાર હોવાથી

બન્ધનેભ્યો યયા સા તથોક્તા, -સકલવધવન્ધનવિમોચકૃત્વાત્ ૧૨, 'સ્વત્તી' ક્ષાન્તિઃ=ક્રોધાદિનિગ્રહકારકૃત્વાત્ ૧૩, 'સમ્મત્તારાહણા' સમ્યક્ત્વારાધના=સમ્યક્-સમ્યગ્ગોધરૂપમારાધ્યતે યયા સા તથોક્તા, જિનશાસનારાધનકારણત્વાત્ ૧૪, 'મહત્તી' મહત્તી=સર્વધર્માનુષ્ઠાનશ્રેષ્ઠત્વાત્ ૧૫, 'ગોહી' બોધિઃ=સર્વજ્ઞી-કર્મધર્માપ્તિરૂપત્વાત્ ૧૬, 'બુદ્ધી' બુદ્ધિઃ, પરદુઃસ્વાપગોચકૃત્વાત્ ૧૭, 'ધિર્હી' ધૃતિઃ, ત્રિયમાણજીવસ્યાભયપ્રદાયન્ત્વાત્, યદ્વા-ધૃતિશ્ચિત્તદાર્ઢ્યમ્, અર્હિસયા ચિત્તે દાર્ઢ્યસ્ય સમુત્પન્નમાનત્વાત્ ૧૮, 'સમિદ્ધી' સમૃદ્ધિઃ, આનન્દજનકૃત્વાત્

હસલિયે પ્રાણીયો કી સકલ વધ વન્ધનોં સે વિમોચ કા હોને કે કારણ હસકા નામ (વિમુક્તી) વિમુક્તી હૈ ૧૨ । યહ સમસ્ત ક્રોધાદિ કષાયોં કી નિગ્રહ કારિકા હૈ હસલિયે હસકા નામ (સ્વત્તી) ક્ષાન્તિ હૈ ૧૩ । સમ્યક્ બોધરૂપ સમ્યક્ત્વ હસકે હોને પર હી આરાધિત હોતા હૈ, અર્થાત્ યહ જિનશાસન કી કારણ હોતી હૈ હસલિયે હસકા નામ (સમ્મત્તારાહણા) સમ્યક્ત્વારાધના હૈ ૧૪ । ધર્મકે સમસ્ત અનુષ્ઠાનોં મેં યહ શ્રેષ્ઠ હૈ હસલિયે હસકા નામ (મહત્તી) મહત્તી હૈ ૧૫ । સર્વજ્ઞપ્રતિપાદિત ધર્મકી પ્રાપ્તિરૂપ હોને સે હસકા નામ (ગોહી) બોધિ હૈ ૧૬ । પરદુઃસ્વો કી અવગોચિકા હોને સે, અર્થાત્ પરકીય દુઃસ્વો કો ચતલાને વાલી હોને સે હસકા નામ (બુદ્ધી) બુદ્ધિ હૈ ૧૭ । મરતે હુણ જીવોં કો હસકે પ્રભાવ સે અભય કી પ્રાપ્તિ હોતી હૈ હસલિયે હસકા નામ (ધિર્હી) ધૃતિ હૈ । અથવા-ધૃતિ શબ્દ કા અર્થ ચિત્ત કી દૃઢતા હૈ, સો અર્હિસા સે ચિત્ત મે દૃઢતા ઉત્પન્ન હોતી હૈ યહ વાત નિર્વિવાદ હૈ ૧૮ । આનન્દ

તેનુ નામ “ વિમુક્તી ” વિમુક્તિ છે, (૧૨) તે સમસ્ત ક્રોધાદિક કષાયોના નિગ્રહ કરનારી છે, તથા તેનુ નામ “ સ્વત્તી ” ક્ષાન્તિ છે (૧૩) સમ્યક્બોધ રૂપ સમ્યક્ત્વ તે વિષમાન હોય તો જ આરાધાય છે, એટલે કે તે જિનશાસનની આરાધનાના કારણરૂપ હોય છે તેથી તેનુ નામ “ સમ્મત્તારાહણા ” સમ્યક્ત્વારાધના છે (૧૪) ધર્મના સમસ્ત અનુષ્ઠાનોમા તે શ્રેષ્ઠ છે તેથી તેનુ નામ “ મહત્તી ” મહત્તી છે (૧૫) સર્વજ્ઞ પ્રતિપાદિત ધર્મની પ્રાપ્તિરૂપ હોવાથી તેનુ નામ “ ગોહી ” બોધિ છે (૧૬) પરદુઃખોની અવગોચિકા હોવાથી એટલે કે પારકાના દુઃખો ખતાવનારી હોવાથી તેનુ નામ “ બુદ્ધી ” બુદ્ધિ છે (૧૭) મરતા જીવોને તેના પ્રભાવથી અભયની પ્રાપ્તિ થાય છે, તેથી તેનુ નામ “ ધિર્હી ” ધૃતિ છે અથવા ધૃતિ શબ્દનો અર્થ ચિત્તની દૃઢતા છે તો અર્હિસાથી ચિત્તમા દૃઢતા ઉત્પન્ન થાય છે તે વાત નિર્વિવાદ છે (૧૮) આનન્દની જનક હોવાથી

૧૯, 'ચિદ્ધી' ઋદ્ધિ, ઋક્ષમીહેતુત્વાત્ ૨૦, 'ચિદ્ધી' ઋદ્ધિ, તીર્થદ્વારદિપુણ્યપ્રકૃતિપુણ્યસપાદકત્વાત્ ૨૧, 'ઠિઈ' સ્થિતિ - સાધ્યપર્યવસિતમોક્ષસ્થિતિસમ્પાદકત્વાત્ ૨૨, 'પુઢી' પુઠિઃ-પુણ્યપુઠિફારકત્વાત્ ૨૩, 'નદા' નન્દા=નન્દયતિ આનન્દયતીતિ નન્દા, સ્વર્ગાપર્ગમુલપ્રાપ્તકત્વાત્ ૨૪, 'મદા' મદ્રા=મન્દતે=કલ્યાણકરોતીતિ મદ્રા ૨૫, 'ચિમુદ્ધી' ચિમુદ્ધિઃ-પાપમલચિશોધકત્વાત્ ૨૬, 'લદ્ધી' લબ્ધિ=કેવલજ્ઞાનકેવલદર્શનાદિ લબ્ધિહેતુત્વાત્ ૨૭, 'ચિમિદ્ધિદ્ધી' વિશિષ્ટદષ્ટિ=પ્રમાણદર્શનમતમિત્યર્થઃ, ઉક્ત ચ—

કી જનક હોને સે હસકા નામ (સમિદ્ધી) સમૃદ્ધિ હૈ ૧૯। લક્ષ્મી કી હેતુબૂત હોને સે હસકા નામ (ચિદ્ધી) ઋદ્ધિ હૈ ૨૦। હસકે પ્રભાવ સે તીર્થકર આદિ પુણ્ય પ્રકૃતિયોં કા જીવોં કો યથા હોતા હૈ હસલિયે હસકા નામ (ચિદ્ધિ) ઋદ્ધિ હૈ ૨૧। હસકે આચરણ કરને સે મોક્ષ મેં પ્રાપ્ત હુણ જીવોં કી સ્થિતિ આદિ અનન્ત હોતી હૈ હસલિયે હસકા નામ (ઠિઈ) સ્થિતિ હૈ ૨૨। પુણ્ય કી પુઠિઃ કા કારણ હોને સે હસકા નામ (પુઢી) પુઠિઃ હૈ ૨૩। સ્વર્ગ ઓર મોક્ષકે સુખ જીવોં કો હસકી કૃપા સે પ્રાપ્ત હોતે હૈ અતઃ વે ઊન સુખોં કી પ્રાપ્તિ સે વહા આનન્દ કરતે હૈ હસલિયે હસકા નામ (નદા) નન્દા હૈ ૨૪। યહ જીવોં કા કલ્યાણ કરાતી હૈ હસલિયે હસકા નામ (મદા) હૈ ૨૫। પાપમલ કા હસસે વિશોધન હોતા હૈ હસલિયે હસકા નામ (ચિમુદ્ધી) ચિમુદ્ધિ હૈ ૨૬। કેવલજ્ઞાન, કેવલદર્શન, આદિ લબ્ધિયા હસકે હી પ્રભાવ સે હોતી હૈ, હસલિયે હસકા નામ (લદ્ધી) લબ્ધિ હૈ ૨૭। (ચિસિદ્ધિદ્ધી) અહિંસા

તેનુ નામ “સમિદ્ધી” સમૃદ્ધિ છે (૧૯) લક્ષ્મીના ડારણરૂપ હોવાથી તેનુ નામ “ચિદ્ધી” ઋદ્ધિ છે (૨૦) તેના પ્રભાવથી તીર્થદ્વાર આદિ પુણ્યપ્રકૃતિ થોનાં જીવોને યથા થાય છે તેથી તેનુ નામ “ચિદ્ધી” (૨૧) તેના આચરણથી મોક્ષ પ્રાપ્ત કરેલ જીવોની સ્થિતિ આદિ અનન્ત થાય છે, તેથી તેનુ નામ “ઠિઈ” સ્થિતિ છે (૨૨) પુણ્યની પુઠિનુ તે ડારણ હોવાથી તેનુ નામ “પુઢી” પુઠિ છે (૨૩) તેની કૃપાથી જીવોને સ્વર્ગ અને મોક્ષના સુખો પ્રાપ્ત થાય છે, તેથી તે સુખોની પ્રાપ્તિથી તેઓ ત્યાં આનન્દ કરે છે તે ડારણે તેનુ નામ “નદા” છે (૨૪) તે જીવોનુ કલ્યાણ કરાવે છે તેથી તેનુ નામ “મદા” મદા છે (૨૫) પાપમળની તેનાથી વિશુદ્ધિ થાય છે, તેથી તેનુ નામ “ચિમુદ્ધી” વિશુદ્ધિ છે (૨૬) કેવલજ્ઞાન, કેવલદર્શન આદિ લબ્ધિઓ તેના પ્રભાવથી જ જીવોને પ્રાપ્ત થાય છે, તેથી તેનુ નામ “લદ્ધી” લબ્ધિ છે (૨૭) “ચિસિદ્ધિદ્ધી” અહિંસા જ પ્રમાણ દર્શન છે તેથી તેનુ નામ

“ કિં તયા પઠિતયા, પદકોટયા પલ્લભૂતયા ।

યત્ર યત્ ન જ્ઞાત, પરસ્ય પીઢા ન કર્તવ્યા ” ॥ ૧ ॥ ઇતિ ॥

પદકોટિમિત્તાનેકશાસ્ત્રાભ્યયનૈ કિમ્ ? યત્ર દયા ન વર્તતે । દયાવર્જિતાનિ સકલ્લાન્યપિ શાસ્ત્રાણિ પલ્લભૂતાનીત્યર્થઃ ૨૮, ‘ કલ્લાણ ’ કલ્યાણમ્, કલ્ય મોક્ષસ્તત્પ્રાપ્કત્વાત્ ૨૯, મગલમ્ દુરિતોપશમનકારકત્વાત્ ૩૦, ‘ પમોઓ ’ પ્રમોદઃ=હર્ષજનકત્વાત્ ૩૧, ‘ વિમૂર્દૈ વિમૂર્તિઃ=સકલસપત્તિહેતુત્વાત્ ૩૨, ‘ રક્ષા ’ રક્ષા જીવરક્ષણસ્વભાવાત્ ૩૩, ‘ સિદ્ધાવાસો ’ સિદ્ધાવાસ=સાધપર્થ

હી પ્રધાન દર્શન હૈં ઇસલિયે ઇસકા નામ વિશિષ્ટ દૃષ્ટિ હૈં ૨૮ ।

કહાં મીં હૈં—

“ કિં તયા પઠિતયા, પદકોટયા પલ્લભૂતયા ।

યત્ર યત્ ન જ્ઞાત, પરસ્ય પીઢા ન કર્તવ્યા ॥ ૧ ॥

“ પદ કોટિ પરિમિત અનેક શાસ્ત્રો કે અધ્યયન સે કયા લાભ હો સકતા હૈં જય કિં જીવ કો ઇતના હી જ્ઞાન ન હો પાવેકિ પર પ્રાણી કો પીઢા નહીં કરના ચાહિયે ॥ ૧ ॥

દયોપદેશ વિહીન શાસ્ત્ર પલ્લભૂત જૈસે નિઃસાર હૈં ૨૮ । મોક્ષ-પ્રદાન કરાને વાલી હોને સે ઇસકા નામ (કલ્લાણ) કલ્યાણ હૈં ૨૯ । પાપો કા-ઇસસે ઉપશમન હોતા હૈં ઇસલિયે યહ (મગલ) મગલરૂપ હૈં ૩૦ । હર્ષ કી જનક હોનેસે યહ (પમાઓ) પ્રમાદરૂપ હૈં ૩૧ । સકલ સપત્તિયોં કી હેતુભૂત હોનેસે ઇસકા નામ (વિમૂર્દૈ) વિમૂર્તિ હૈં ૩૨ । (રક્ષા) જીવોં

વિશિષ્ટ દૃષ્ટિ છે ડહુ પહુ ડે—

“ કિં તયા પઠિતયા, પદકોટયા પલ્લભૂતયા ।

યત્ર યત્ ન જ્ઞાત, પરસ્ય પીઢા ન કર્તવ્યા ॥ ૧ ॥

‘ કોટિ પદો વાણા અનેક શાસ્ત્રોનો અભ્યાસ કરવા છતાં પણ જો જીવને એટલું પણ જ્ઞાન ન પ્રાપ્ત થાય કે જીવન પ્રાણીઓને પીડવા ભેદ જો નહીં, તો તેના અધ્યયનથી શો લાભ ? ॥ ૧ ॥

દયાના ઉપદેશ વિનાના શાસ્ત્રો પલ્લભૂત જેવા નિઃસાર છે (૨૮) મોક્ષ પ્રાપ્ત કરાવનાર હોવાથી તેનું નામ “ કલ્લાણ ” કલ્યાણ છે (૨૯) તેના વડે પાપોનો ક્ષય થાય છે તેથી તે “ મગલ ” મગળરૂપ છે (૩૦) હર્ષની જનક હોવાથી તે “ પમોઓ ” પ્રમોદરૂપ છે (૩૧) સકળ સપત્તિઓના કારણરૂપ હોવાથી તેનું નામ “ વિમૂર્દૈ ” વિમૂર્તિ છે (૩૨) “ રક્ષા ” જીવોની રક્ષા કરવાનો તેનો સ્વભાવ હોવાથી તેનું નામ રક્ષા છે (૩૩) તેની આરાધના

વસિતમોક્ષગતિનિવાસદેહત્વાત્ ૩૪, 'અણાસવો' અનાસ્રવઃ-કર્માગમનનિરાધર-
ત્વાત્ ૩૫, 'કેવલીણ ઠાણ' કેવલિના સ્થાનમ્-તેષામાશ્રયમૂત્તત્વાત્, અહિમરુસ્યં
વકેવલજ્ઞાન સમુત્પદ્યતે इत्यर्थः ૩૬, 'સિવ' શિવમ્-ઉપદ્રવવર્જિતત્વાત્ ૩૭,
'સમિર્દ' સમિતિઃ-સમ્યવપ્રવૃત્તિઃ, તદ્દૂપત્વાત્ ૩૮, 'સીલ' શીલ=સમાધિઃ,
તદ્દેહત્વાત્ ૩૯, 'સજમોત્તિય' સયમર્હતિ ચ-સયમ-હિંસા નિવૃત્તિસ્તદ્દેહત્વાત્
૪૦, 'સીલવરો' શીલવૃદ્ધમ્-શીલ=સદાચારો, યદ્વા બ્રહ્મચર્યં, તમ્ય ગૃહ=

કી રક્ષા કરને કા હી ઇસકા સ્વભાવ છે ઇસલિયે ઇસકા નામ રક્ષા હૈ
૩૩ । ઇસકી આરાધના કરતેર હી જીવસિદ્ધોં કૈ આવાસ મૈ સિદ્ધિગતિ
નામક સ્થાન વિશેષ મૈ નિવાસ કરને લગ જાતા હૈ ઇસલિયે ઇસકા
નામ (સિદ્ધાવાસો) સિદ્ધાવાસ હૈ ૩૪ । (અણાસવો) કર્મોં કૈ
આગમન દ્વાર કી યહ નિરોધિકા હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ અનાસ્રવ હૈ
૩૫ । (કેવલીણ ઠાણ) કેવલજ્ઞાની-ઇસકા આશ્રય કરતે હૈ ઇસલિયે
ઇસકા નામ કેવલિ સ્થાન હૈ । અર્થાત્ જો અહિંસક હોતા હૈ ઉસે હી કેવલ
જ્ઞાન ઉત્પન્ન હોતા હૈ ૩૬ । અહિંસક જીવ કો કર્મ સે બી કિસી બી
પ્રકાર કૈ ઉપદ્રવ પ્રાપ્ત નહી હો સકતે હૈ ઇસલિયે ઉપદ્રવવર્જિત હોને સે
ઇમકા નામ (સીવ) શિવ હૈ ૩૭ । સમ્યક્ પ્રવૃત્તિ કા નામ સમિતિ હૈ,
યહ અહિંસા સમિનિરૂપ હોતી હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ '(સમિર્દ)
સમિતિ હૈ ૩૮ । શીલ-સમાધિ-કા યહ કારણ હોતી હૈ ઇસલિયે ઇસકા
નામ (સીલ) શીલ હૈ ૩૯ । (સજમોત્તિય) સયમ-હિંસા કી નિવૃત્તિ
હોનારૂપ સયમ કી યહ સાધક હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ સયમ હૈ ।
૪૦ । શીલ-સદાચાર અથવા બ્રહ્મચર્યકી યહ સ્થાન હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ

કરતા કરતા જ છવ સિદ્ધોના આવાસમા સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનમા નિવાસ
કરવા લાગે છે તેથી તેનુ નામ “ સિદ્ધાવાસો ” સિદ્ધાવાસ છે (૩૪) “ અણા
સવો ” ડર્મોના આગમન દ્વારની તે નિરોધક છે, તેથી તેનુ નામ અનાસ્રવ છે
(૩૫) “ કેવલીણ ઠાણ ” કેવલજ્ઞાની તેના આશ્રય છે તેથી તેનુ નામ કેવળી
સ્થાન છે એટલે કે જે અહિંસક હોય છે તેને જ કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્ત થાય છે
(૩૬) અહિંસક છવને કોઈ પણ સ્થળેથી કોઈ પણ પ્રકારના ઉપદ્રવ થઈ
શકતા નથી તેથી ઉપદ્રવ રહિત હોવાથી તેનુ નામ “ સિવ ” શિવ છે (૩૭)
સમ્યક્ પ્રવૃત્તિને સમિતિ કહે છે આ અહિંસા સમિતિય હોય છે તેથી તેને
“ સમિર્દ ” સમિતિ કહે છે (૩૮) શીલ-સમાધિના તે કારણરૂપ હોય છે
તેથી તેનુ નામ “ સીલ ” શીલ છે (૩૯) ‘ સજમોત્તિય ’ સયમ-હિંસાથી
નિવૃત્ત થવા રૂપ સયમની તે સાધક છે, તેથી તેનુ નામ સયમ છે (૪૦)
શીલ સદાચાર અથવા બ્રહ્મચર્યનુ તે સ્થાન છે તેથી તેનુ નામ “ સીલવરો ”

સ્થાનમ્ ૪૧, ' સવરો ય ' સંવરથ=કર્માગમકારણસંવરણાત્ ૪૨, ' ગુત્તી ' ગુપ્તિઃ
=જીવસ્યાશુભપ્રવૃત્તિનિરોધકત્વાત્ ૪૪, ' વવસાઓ ' વ્યવસાયઃ-વિ=વિશિષ્ટો-
વસાયઃ=અન્યવસાયઃ-આત્મપરિણામઃ ૪૪, 'ઉસ્સઓય' ઉચ્ચદ્રવ્યથ-દ્રવ્યભાવો-
વ્રતિહેતુત્વાત્ ૪૫, ' જણ્ણો ' યજ્ઞઃ-સ્વર્ગાદિસદ્ગતિદાયકતાત્ ૪૬, ' આયત્તળ '
આયતનમ્-ગુણાનામાશ્રયઃ ૪૭, ' જયણ ' યત્નઃ-નિરવધાનુષ્ઠાનત્વાત્ ૪૮,
' અપ્પમાઓ ' અપ્રમાદઃ=પ્રમાદવર્જનમ્ ૪૯, ' અસ્સાઓ ' આશ્વાસઃ-પરતૃપ્તિહેતુ-

(સીલચરો) શીલગૃહ હૈ ૪૧। કર્મોંકે આગમન ભૂત કારણોં કા વહ નિરોધ
ફર દેતી હૈ ઇસલિયે ઇસકા કામ (સવરો) સવર હૈ ૪૨। ઇસકે આચરણ
કરને સે જીવોં કી અશુભ પ્રવૃત્તિ સ્ક જાતી હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ (ગુપ્તિ)
ગુપ્તિ હૈ ૪૩। યહ આત્મા કા વિશિષ્ટ પ્રકાર કા એક પરિણામ હૈ ઇસ-
લિયે ઇસકા નામ (વવસાઓ) વ્યવસાય વિ-અવસાય અધ્યવસાય હૈ
૪૪। યહ દ્રવ્ય ઔર ભાવ ઇન દોનો કી ઉન્નતિ કરાને ચાલી હોતી હૈ
ઇસલિયે ઇસકા નામ (ઉસ્સઓ ય) ઉચ્ચ હૈ ૪૫। સ્વર્ગ આદિ સદ્ગતિ
કી પ્રાપ્તિ જીવોં કો ઇસકે સેવન કરને સે હોતી હૈ ઇસલિયે ઇસકા
નામ (જણ્ણો) યજ્ઞ હૈ ૪૬। સમી સદ્ગુણોં કા યહી એક આશ્રયસ્થાન-
ભૂત હૈ ઇમલિયે ઇસકા નામ (આયતળ) આયતન હૈ ૪૭। યહ નિરવધ
અનુષ્ઠાનરૂપ હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ (જયણ) યત્ન હૈ ૪૮। ઇસ પ્રમાદ
અસાવધાનતાકા પરિત્યાગ હો જાતા હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ(અપ્પમાઓ)અ

શીલગૃહ ૮ (૪૧) કર્મના આગમન રૂપ દ્વારોના તે નિરોધ કરી નાખે છે
તેથી તેનું નામ “ સવરો ” સવર છે (૪૨) તેને આશ્રયવાથી જીવોની અશુભ
પ્રવૃત્તિ અટકી જાય છે તેથી તેનું નામ “ ગુપ્તિ ” ગુપ્તિ છે (૪૩) તે આત્માનું
વિશિષ્ટ પ્રકારનું એક પરિણામ છે, તેથી તેનું નામ “ વવસાઓ ” વ્યવસાય-
વિ અવસાય-અધ્યવસાય છે (૪૪) તે દ્રવ્ય અને ભાવ, એ બંનેની ઉન્નતિ
કરનારી છે તેથી તેનું નામ “ ઉસ્સઓય ” ઉચ્ચ છે (૪૫) તેના સેવનથી
જીવોને સ્વર્ગ આદિ સદ્ગતિની પ્રાપ્તિ થાય છે, તેથી તેનું નામ “ જણ્ણો ”
યજ્ઞ છે (૪૬) સવળા સદ્ગુણોનું તેજ એક આશ્રયસ્થાન છે, તેથી તેનું નામ
“ આયતળ ” આયતન છે (૪૭) તે નિરવધ અનુષ્ઠાનરૂપ છે તેથી તેનું નામ
“ જયણ ” યત્ન છે (૪૮) તેમા પ્રમાદ-અસાવધાનતાનો પરિત્યાગ થઈ જાય
છે, તેથી તેનું નામ “ અપ્પમાઓ ” અપ્રમાદ છે (૪૯) પર પ્રાણીઓને તે
તૃપ્તિના કારણરૂપ હોય છે, તેથી તેનું નામ “ અસ્સાઓ ” આશ્વાસ છે (૫૦)

ત્વાત્ ૫૦, 'વીસાઓ' વિશ્વાસઃપ્રાણિના પ્રતીતિજનકત્વાત્, યદ્વા-પ્રાણિપ્રાણ
 સ્યારિરુદ્ધસમાચરણલક્ષણઃ ૫૧, 'અમઓ' અમયઃ-નિર્મયહેતુત્વાત્ ૫૦, 'મન્વમ્મત્રિ-
 અમાઘાઓ' સર્વસ્યાપિ સકલપ્રાણિગણસ્ય અમાઘાતઃ-મા=મ.મીઃ, સા ચ દ્વેષા
 ધનલક્ષ્મીઃ પ્રાણલક્ષ્મીશ્ચ, તસ્યા ઘાતો દનન માઘાતો, ન માઘાત અમાઘાતઃ-
 અમારિઃ સ્વપદદ્વારા પ્રાણિના પ્રાણત્રાણકરણાત્ ૫૪, 'ચોક્ષ્વા' ચોક્ષા=પવિત્રાદપિ
 પવિત્રા-કર્મમલાપહારકત્વાત્ ૫૪, 'પવિત્તા' પવિત્રા=આત્મનેર્મહેતુત્વાત્ ૫૫,
 પ્રમાદ હૈ ૪૯। પર પ્રાણિયો કો યદ્ તૃપ્તિ કા કારણ હોતી હૈ ઇમલિયે ઇસકાનામ
 (અસ્સાઓ) આશ્વાસ હૈ ૫૦। પ્રાણિયોં મે યદ્ પ્રતીતિ ઉત્પન્ન કરા દેતી
 હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ (વીમાઓ) વિશ્વાસ હૈ। અયવા પ્રાણિયોં કે
 પ્રાણોં કે વિરુદ્ધ આચરણ ઇસમે નહોં હોતા હૈ ઇસલિયે ખી ઇસકા નામ
 વિશ્વાસ હૈ ૫૧। પ્રાણિયો કો યદ્ ભયરહિત યનાં દેતી હૈ। ઇસલિયે
 નિર્ભય કી હેતુ હોને સે ઇસકા નામ અમય હૈ ૫૨। દૂસરે જીવો કી
 મા-ધન-લક્ષ્મી ઓર પ્રાણરૂપલક્ષ્મી કા ઇસમેં ઘાત નહોં હોતા હૈ ઇસ
 લિયે ઇસકા નામ (અમાઘાય) અમાઘાત હૈ। મા શબ્દ કા અર્થ લક્ષ્મી
 હોના હૈ-ધન રૂપ લક્ષ્મી ઓર પ્રાગરૂપ લક્ષ્મી કે ભેદ સે યદ્ લક્ષ્મી દો
 પ્રકાર કી હોતી હૈ। અર્દિમા સે ઇન દોનોં કા સરક્ષણ હોતા હૈ યદ્
 ઘાત પ્રત્યક્ષ હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ અમાઘાત હૈ ૫૩। યદ્ અર્દિસા પવિત્ર
 વસ્તુઓં સે ખી હૈ અતિપવિત્ર હૈ ઇસલિયે ઇસકા નામ (ચોક્ષ્વા) ચોક્ષા
 હૈ ૫૪। ઇસસે આત્મા કે ઉપર જમા છુઆ અનાદિકાલ કા મૈલ-વિભાવ
 પરિણતિ દૂર હો જાતી હૈ। અતઃઆત્મા નિર્મલ-અપને સ્વરૂપ મેં મગ્ન-હો

પ્રાણીઓમા તે પ્રતીતિ ઉત્પન્ન કરે છે તેથી તેનું નામ “વીસાઓ” વિશ્વાસ
 છે અથવા પ્રાણીઓના પ્રાણોના વિરુદ્ધનું આચરણ તેમા થતું નથી, તેથી પણ
 તેનું નામ વિશ્વાસ છે (૫૧) પ્રાણીઓને તે ભય રહિત કરે તેથી નિર્ભય
 થતાને માટે કારણભૂત હોવાથી તેનું નામ “અમય” છે (૫૨) ખીન્ન જીવોની
 મા-ધન-લક્ષ્મી અને પ્રાણરૂપ લક્ષ્મીના તેમા ઘાત થતો નથી, તેથી તેનું નામ
 “અમાઘાય” અમાઘાત છે ‘મા’ શબ્દનો અર્થ લક્ષ્મી થાય છે-ધનરૂપ
 લક્ષ્મી અને પ્રાણરૂપ લક્ષ્મી, એ રીતે તેના બે પ્રકાર પડે છે અર્દિસાને એ
 બંનેનું સરક્ષણ થાય છે તે વાત પ્રત્યક્ષ છે (૫૩) તે અર્દિસા પવિત્ર વસ્તુઓ
 કરતા પણ વધારે પવિત્ર છે, તેથી તેનું નામ “ચોક્ષ્વા” ચોક્ષા છે (૫૪)
 તેનાથી આત્મા ઉપર બનેલો અનાદિકાળનો મૈલ-વિભાવ પરિણતિ-દૂર થઈ
 જાય છે, તેથી આત્મા પોતાના નિર્મળ સ્વરૂપમા મગ્ન થઈ જાય છે તે કારણે

‘ સુર્દ ’ શુચિ = ભાવગોચરેતુત્યાન્ ૫૬, ‘ પ્રયા ’ પૂજા = ભાગ્યાર્ચના-પ્રાણ્યુપમર્દન-રહિતત્વાત્ ૫૭ ‘ વિમલ ’ વિમલા-મિથ્યાત્વાવિરત્યાદિગભર્જિતત્વાત્, ૫૮, ‘ પ્રભાસા ય ’ પ્રભાસા ચ-પ્રકાશરૂપા કેવલજ્ઞાનજ્યોતીરૂપત્વાત્, સર્વપ્રાણિના સુખપ્રકાશકત્વાચ ૫૯, ‘ નિમ્મલતરા ’ નિર્મલતરા-સકલકર્મમલ્પર્જિતત્વાત્ ૬૦, ‘ તિ એવમાદીણિ ’ इत्येवमादीनि ‘ નિયગુણનિમ્મિયાઈ ’ निजगुणनिर्मितानि = ગુણલક્ષિનાનિ ‘ પજ્જવનામાણિ ’ पर्यायनामानि = તત્તત્તદ્વર્માશ્રિતામિધાનાનિ, ‘ હુતિ ’ ભવન્તિ ‘ અહિસાએ ભગવર્દેએ ’ अहिंसाया भगवर्दये ॥ સુ૦ ૨ ॥

જાતી હૈ-इसलिये इस आत्मा की निर्मलता का कारण होने से इस अहिंसा का नाम (पवित्रता) पवित्र है ५५। भाव शुचिता का कारण होने से इसका नाम (सुर्द) शुचि है ५६। इस अहिंसा में प्राणियों के प्राणों का उपमर्दन नहीं होता है अतः यह भावपूजारूप होने से इसका नाम (पूया) पूजा-भावपूजा है ॥ ५७। इसकी जो आराधना करते हैं वे मिथ्यात्व अविरति आदि मलों से वर्जित हो जाते हैं इसलिये इसका नाम (विमल) विमला है ५८। यह अहिंसा केवलज्ञानरूप ज्योति स्वरूप होने से (प्रभासा य) एक प्रकाशरूपा है। इसलिये इसका नाम प्रभास है ५९। इसकी प्रादुर्भूत होते ही आत्मा से सकल कर्मों का अभाव हो जाता है अतः इसका नाम (निम्ललतरा) निर्मलतरा है ६०। (एव-मादीणि नियगुणनिम्लियाइ पज्जवनामाणि होंति अहिंसाए भगवर्दये) इस प्रकार इस अहिंसा भगवती के ये साठ नाम गुणानुसार हैं। ये नाम इस अहिंसा भगवती के पर्यायवाची-तत्तद्वर्म की अपेक्षा को लेकर-शब्द हैं ॥ सू० २ ॥

આત્માની નિર્મળતા માટે કારણભૂત હોવાથી તે અહિંસાનું નામ “ પવિત્રતા ” પવિત્રતા છે (૫૫) ભાવ શુચિતાના કારણરૂપ હોવાથી તેનું “ સુર્દ ” શુચિ છે (૫૬) આ અહિંસામાં પ્રાણીઓના પ્રાણોનું ઉપમર્દન થતું નથી તેથી તે ભાવપૂજારૂપ હોવાથી તેનું નામ “ પૂયા ” પૂજા ભાવપૂજા છે (૫૭) જે તેની આરાધના કરે છે તેઓ મિથ્યાત્વ, અવિરતિ આદિ મળેથી ગંદિત થઈ જાય છે, તેથી તેનું નામ “ વિમલ ” વિમલા છે (૫૮) આ અહિંસા કેવળ જ્ઞાન રૂપ જ્યોતિસ્વરૂપ હોવાથી “ પ્રભાસાય ” એક પ્રકાશરૂપ છે, તેથી તેનું નામ પ્રભાસ ૨, (૫૯) તેના પ્રાદુર્ભાવ થતા જ આત્મામાંથી ધીરે ધીરે સઘળા કર્મોના અભાવ થઈ જાય છે, તેથી તેનું નામ “ નિમ્મલતરા ” નિર્મલતરા છે (૬૦) ‘ એવમાદીણિ નિયગુણનિમ્મિયાઈ પજ્જવનામાણિ હોતિ અહિંસાએ ભગવર્દેએ ’ આ પ્રમાણે આ અહિંસા ભગવતીના ગુણ પ્રમાણે સાઠ નામ છે તે નામો આ અહિંસા ભગવતીના પર્યાયવાચી-તે તે ધર્મની અપેક્ષાએ શબ્દ છે ॥ સુ. ૨ ॥

સમતિ અહિંસામાહાત્મ્યમાદ—

મૂલમ્—એસા ભગવર્ડ અહિંસા, જા સા ભીયાણ પિવ સરણં
પક્ષીણ પિવ ગયણં, તિસિયાણ પિવ સલિલં, છુહિયાણં
પિવ અસણં, સમુદમજ્ઞેવ પોપવહણ, ચડપ્પયાણ ચ આસ-
મપય, દુહટ્ટિયાણં ચ ઓસહિવલ, અડવીમજ્ઞે ચ સત્થ-
ગમણ, એત્તો વિસિટ્ટુતરિયા અહિંસા જા સા પુઢવીજલ
અગણિ મારુયવણસ્સઙ્ગ - વીય — હરિય — જલચર—
થલચર—ઘહયર તસ—થાવર—સઘ્વભૂયસેમકરી ॥ સૂ. ૩ ॥

ટીકા—‘ એસા ભગવર્ડ ’ ઇત્યાદિ—

એસા=જિનશાસનપ્રસિદ્ધા-અહિંસા ભગવતી યા સા ‘ ભીયાણ પિવ સરણ ’
ભીતાનામિવ શરણમ્=ભય ભીતાના પ્રાણિના પ્રાણાથ ગૃહમિયાસ્તિ, ‘ પક્ષીણ-
પિવ ગયણ ’ પક્ષિણામિત્ર ગગનમ્=પક્ષિણા ગગનમિત્ર, યથા પક્ષિણા ગમને ગગન-
માધારો ભવતિ, તથૈવ સર્વધર્માણામિયમર્હિંસાઽધાર । ‘ તિસિયાણ પિવ સલિલમ્=

અવ સૂત્રકાર હસ અહિંસા કે માહાત્મ્ય કો પ્રદર્શિત કરતે હૈ—
‘ એસા ભગવર્ડ ’ ઇત્યાદિ. ।

ટીકાર્થ—(એસા) જિનશાસન મે પ્રસિદ્ધ યહ (અહિંસા ભગવર્ડ)
અહિંસા ભગવતી (જા સા) જો વહ અહિંસા (ભીયાણ પિવ સરણ)
ભયભીત હુએ પ્રાણિયોં કી રક્ષા કરને કે લિયે ઘર જૈસી હૈ । (પક્ષીણ
પિવ ગયણ) તથા જિસ પ્રકાર પક્ષિયોં કો ગમન કરને મે આધારભૂત
આકાશ હોતા હૈ ડસી તરહ સમસ્ત ધર્મોં કી આધારભૂત યહ અહિંસા
હી હૈ । (તિસિયાણ પિવ સલિલ) જિસ પ્રકાર તૃપિત વ્યક્તિયોં કી

હવે સૂત્રકાર આ અહિંસાનુ મહાત્મ્ય દર્શાવે છે—“ એસા ભગવર્ડ ” ઇત્યાદિ

“ એસા ” જિનશાસનમા પ્રસિદ્ધ તે “ અહિંસા ભગવર્ડ ” અહિંસા ભગવતી,
“ જા સા ” જે “ ભીયાણ પિવ સરણ ” ભયભીત જાનેલ પ્રાણીઓની રક્ષા કર
વાને માટે ધર સમાન છે, “ પક્ષીણ પિવ ગયણ ” તથા જેમ પક્ષીઓને
ગમન કરવામા આકાશ આધારભૂત થાય છે, એજ પ્રમાણે સમસ્ત ધર્મોને
માટે આધારભૂત આ અહિંસા જ છે, “ તિસિયાણ પિવ સલિલ ” જેમ તર

તૃપિતામિવ સલિલમ્=જલમ્, પ્રાણરક્ષકત્વાન્, ‘સ્વહિયાણ પિવ અમણ’ ક્ષુપિત
નામિપ્રાણનમ્=ક્ષુધાર્તપ્રાણિના કૃતેઽશન મોજનમિવ, અન્નગ્રાણાઃ ઇતિ વચનાત
તથા-‘સમુદ્રમઙ્ગે વ પોયવહ્ણ’ સમુદ્રમધ્યે ઇવ પોતપ્રહનમ્-યથા સમુદ્રમધ્યે
પ્રાણિના ત્રાણાય ભવતિ, તથૈવ સસારસમુદ્રમધ્યે ઇયમહિંસા પ્રાણિના ત્રાણ
પોતાયતે ઇતિ ભાવઃ । તથા-‘ચતુષ્પયાણ ચ આસમપય’ ચતુષ્પદાનાં ચ આશ્ર
પદમ્-યથા ચતુષ્પદપ્રાણિના કૃતે ગોષ્ઠ વિશ્રામસ્થાન તથૈવાહિંસાપિ સર્વપ્રાણિ

પ્રાણરક્ષા કા સાધનભૂત જલ હોતા હૈં ઉસી પ્રકાર યહ અહિંસા પ્રાણિયોં
કે પ્રાણોં કી રક્ષા કા એક સાધન હૈં । (સ્વહિયાણ પિવ અસપ
“અન્ન હી પ્રાણ હૈ” ઇસ ઉક્તિ કે અનુસાર જિસ પ્રકાર ખૂલ
પીડિત હુવ પ્રાણિયોં કે લિયે મોજન એક માત્ર આધારભૂત હોતા
ઉસી પ્રકાર યહ અહિંસા મી જીવોં કી રક્ષા કરને કા એક સર્વોત્ત
સાધન હૈં । (સમુદ્રમઙ્ગેવ પોયવહ્ણ) સમુદ્ર કે બીજ મેં નૌકા જિ
પ્રકાર પ્રાણિયોં કી રક્ષા કરને વાલી હોતી હૈં ઉસી પ્રકાર સસાર સમુ
કે બીચ મેં પતિત હુવ પ્રાણિયોં કી રક્ષા કરને કે લિયે યહ અહિંસ
હી એક સર્વોત્તમ દ્રઢ નૌકા જેસી હૈં । (ચતુષ્પયાણ ચ આસમપય
ચતુષ્પદ-જાનવરોં કે લિયે જિસ પ્રકાર વિશ્રામસ્થલ ગોષ્ઠ હોતા હૈં ઉસ
પ્રકાર યહ ભગવતી અહિંસા મી સર્વપ્રાણિયોં કે લિયે સર્વોત્તમ વિશ્રામસ્થ
હૈં । (દુહઢિયાણ ચ ઓસહિવલ) રોગગ્રસ્ત વ્યક્તિયોં કો જિસ પ્રકાર
ઓપધિ કા સહારા હોતા હૈં ઉસી પ્રકાર કર્મરોગગ્રસ્ત ભવ્ય જીવોં

ન્યાઓની પ્રાણરક્ષા માટે પ્રાણી સાધનરૂપ બને છે, એ જ પ્રમાણે આ અહિંસા
પણ પ્રાણીઓના પ્રાણ બચાવવાનું એક સાધન છે “સ્વહિયાણ પિવ અસપ
“અન્ન જ પ્રાણ છે” તે કથન પ્રમાણે જેમ ક્ષુધાર્થી પીડાતા પ્રાણીઓ માટે
ભોજન જ એક માત્ર આધાર હોય છે એ જ પ્રમાણે આ અહિંસા પણ
જીવોનું રક્ષણ કરવાનું એક સર્વોત્તમ સાધન છે “સમુદ્રમઙ્ગેવ પોય વહ્ણ”
સમુદ્રની વચ્ચે જેમ નૌકા પ્રાણીઓનું રક્ષણ કરે છે તેમ સસાર આગરમા
હોબેલા પ્રાણીઓની રક્ષા કરવાને માટે આ અહિંસા જ મજબૂત નૌકા જેવી
છે “ચતુષ્પયાણ ચ આસમપય” ચતુષ્પદ-જાનવરોને માટે જેમ ગોષ્ઠ (વાડો)
વિશ્રામસ્થાન હોય છે એ જ પ્રમાણે આ ભગવતી અહિંસા પણ મમસ્ત
પ્રાણીઓને માટે સર્વોત્તમ વિશ્રામસ્થાન છે “દુહઢિયાણ ચ ઓસહિ વલ”
રોગીને જેમ ઔષધિનો મહારો હોય છે તેમ કર્મરોગગ્રસ્ત ભવ્ય જીવોને

સંપતિ અહિંસામાહાત્મ્યમાદ—

મૂલમ્—એસા ભગવર્ડ અહિંસા, જા સા ભીયાણં પિવ સરણં
પક્ષીણં પિવ ગયણ, તિસિયાણં પિવ સલિલ, સુહિયાણં
પિવ અસણં, સમુદ્દમઙ્ગેવ પોપવહણ, ચડપ્પયાણ ચ આસ-
મપય, દુહટ્ટિયાણ ચ ઓસહિવલ, અડવીમઙ્ગે ચ સત્થ-
ગમણ, એત્તો વિસિટ્ટતરિયા અહિંસા જા સા પુઢવીજલ
અગણિ મારુયવણસ્સઇ - વીય - હરિય - - જલચર—
થલચર—સહયર તસ—થાવર—સઘ્વમ્મયસેમકરી ॥ સૂ. ૩ ॥

ટીકા—‘ એસા ભગવર્ડ ’ इत्यादि—

એસા=જિનશાસનપ્રસિદ્ધા—અહિંસા ભગવતી યા સા ‘ ભીયાણ પિવ સરણ ’
ભીતાનામિવ શરણમ્=ભય ભીતાના પ્રાણિના ગ્રાણાથ ગૃહમિવાસ્તિ, ‘ પક્ષીણ-
પિવ ગયણ ’ પક્ષિણામિવ ગગનમ્=પક્ષિણા ગગનમિવ, યથા પક્ષિણા ગમને ગગન-
માધારો ભવતિ, તથૈવ સર્વધર્માણામિયમહિંસાઽધાર । ‘ તિસિયાણ પિવ સલિલમ્=

અવ સૂત્રકાર હસ અહિંસા કે માહાત્મ્ય કો પ્રદર્શિત કરતે હૈ—
‘ એસા ભગવર્ડ ’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(એસા) જિનશાસન મે પ્રસિદ્ધ યહ (અહિંસા ભગવર્ડ)
અહિંસા ભગવતી (જા સા) જો વહ અહિંસા (ભીયાણ પિવ સરણ)
ભયભીત હુણ પ્રાણિયોં કી રક્ષા કરને કેલિયે ઘર જૈસી હૈ । (પક્ષીણ
પિવ ગગણ) તથા જિસ પ્રકાર પક્ષિયો કો ગમન કરને મે આધારભૂત
આકાશ હોતા હૈ ડસી તરહ સમસ્ત ધર્મોં કી આધારભૂત યહ અહિંસા
હી હૈ । (તિસિયાણ પિવ સલિલ) જિસ પ્રકાર તુલિત વ્યક્તિયોં કી

હવે સૂત્રકાર આ અહિંસાનુ મહાત્મ્ય દર્શાવે છે—“ એસા ભગવર્ડ ” इत्यादि

“ એસા ” જિનશાસનમા પ્રસિદ્ધ તે “ અહિંસા ભગવર્ડ ” અહિંસા ભગવતી,
“ જા સા ” જે “ મિયાણ પિવ સરણ ” અવલોકીત બનેલ પ્રાણીઓની રક્ષા કર
વાને માટે ધર સમાન છે, “ પક્ષીણ પિવ ગગણ ” તથા જેમ પક્ષીઓને
ગમન કરવામા આકાશ આધારભૂત થાય છે, એજ પ્રમાણે સમસ્ત ધર્મોને
માટે આધારભૂત આ અહિંસા જ છે, “ તિમિયાણ પિવ સલિલ ” જેમ તર

अथ यैर्महापुरुषैरियमहिंसोपलब्धा सेविता च तानाह—‘एसा भगवई’
इत्यादि—

मूलम्—एसा भगवई अहिंसा जा सा अपरिमिय नाण
दसणधरोहि सीलगुण—विणय—तव—संजम नायगेहि तित्थक-
रेहि सव्वजगजीववच्छेहि तिलोगमहिणहि जिणचदेहि
सुट्ठु दिट्ठा, ओहि जिणेहि विण्णाया, उज्जुमईहि विदिट्ठा
विउलमईहि विदिता, पुव्वधरोहि अधीया, वेउव्वीहि पइ-
ण्णा, आभिणिबोहियनाणीहि सुयनार्णीहि मणपज्जवनाणी-
हि केवलणाणीहि आमोसहिपत्तेहि खेलोसहिपत्तेहि विप्पो-
सहिपत्तेहि जल्लोसहिपत्तेहि सव्वोसहिपत्तेहि वीयवुद्धिणहि
कोट्टवुद्धीहि पयाणुसारीहि सभिण्णसोएहि सुयधरोहि मण-
वलिणहि वयवलिणहि कायवलिणहि नाणवलिणहि दंसण-
वलिणहि चरित्तवलिणहि खीरासवेहि महुआसवेहि सप्पि-
यासवेहि अखीण महाणसिणहि चारणेहि विज्जाहरेहि च-
उत्थभत्तिणहि छट्ठभत्तिणहि दसमभत्तिणहि एव दुवालस-
चउदससोलस-अद्धमास-मास-दोमास तिमास-चउमास-
पचमास छम्मासभत्तिणहि उक्खित्तचरणहि एवं निक्खित्त-
चरणहि अतचरणहि पतचरणहि ल्हचरणहि समुदाणि-

होती है। यदि यथार्यरूप मे जीवो की रक्षा करने वाली—अभयप्रदान
करने वाली यदि कोई सर्वोत्तम वस्तु है तो वह एक अहिंसा ही है ॥सू० ३॥

अत्र सूत्रकार जिन महा पुरुषो ने इस भगवती अहिंसा की प्राप्ति

यथार्थ गीते श्रुते गीते ॥ अहिंसा—अभयप्रदान करने वाली कोश यणु सर्वोत्तम
वस्तु होय तो ते ओउ मात्र अहिंसा न छे ॥ सू-३ ॥

इवे सूत्रकार ने महापुरुषोने आ भगवती अहिंसानी प्राप्ति तथा सेवा

ત્રિશામસ્થાનમ્ । તથા-‘ દુઃકલ્યાણ ચ ગોસદિચલ ’ દુઃસ્થિતાના ચ ઓષધિ-
વલમ્-રોગગ્રસ્તાના પ્રાણિના કૃતં થયોપધમ્ । યૈઃ કર્મરોગગ્રસ્તાના કૃતેઽર્હિમૌષ-
ધમ્, તથા-‘ અડગીમજ્જે ચ સત્ત્વગમણ’ અડગીમધ્યે ઇત્થ સાધ્યગમનમ્-યયા-અડ-
ગીમધ્યે સાર્થેન સદ્ ગમન સુલભમ્ ભવતિ, તર્થેત્ત માત્રમાર્ગમસ્થિતાનામર્હિસા, કિમ
ધિકમ્ ? ‘એત્તો’ ઇત્તઃ-પ્રત્યઃ પૂર્વેકેત્તોઽપિ અર્હિસા ‘ ત્રિસિદ્ધતરિયા ’ ત્રિસિદ્ધ
તરિકારિસિદ્ધતરા । ‘ જા સા’ યા સા અર્હિસા ‘ પુદ્ગલો-જલ અગ્નિ-મારુત વગસ્સહ-
વીય-હરિય-જલચર-યલચર-સ્વહર-તસ-ચાવર-સવ્વભૂય-સેમકરી ’ પૃથિવી-
જલાગ્નિ મારુત-વનસ્પતિ-ગીજ-હરિત-જલચર-સ્વચર-સેવર તસ સ્થાવરસર્વભૂ
તક્ષેમકરી । પૃથિવ્યાદિપદ્ધત્કાયજીવના કલ્યાણકારી રક્ષા કરતી દયામગતી ॥૬૪॥

અર્હિસા હી એક પરમ ઓષધીરૂપ છે । (અડગીમજ્જે વસ્ત્થગમણ)
જગલ કે વીચ મેં જિસ પ્રકાર સાર્થ-સમુદાય-કે સાથ ચલના સુલભ
હોતા હૈં ઉસી પ્રકાર મોક્ષમાર્ગ મેં પ્રસ્થિત હુણ મનુષ્ય કો યહ અર્હિસા
હૈં અર્થાત્-સાર્થ કા કામ દેતી હૈં । ઓર અગ્નિ કયા કહે- (એત્તો)
હસ પૂર્વોક્ત ઉપમાનોં સે બી (ત્રિસિદ્ધતરિયા) અર્હિસા વિશિષ્ટતર હૈં ।
કયોં કી (જા સા અર્હિસા) યહ જો અર્હિસા હૈં વહ (પુદ્ગલો જલ-
અગ્નિ-મારુત-વગસ્સહ-વીય-હરિય-જલચર-યલચર-સ્વહર-તસ-ચાવર-
સવ્વભૂયસેમકરી) પૃથિવી, જલ, અગ્નિ, વાયુ, વનસ્પતિ, ગીજ, હરિત,
જલચર, યલચર, સેવર, તસ ઓર સ્થાવર હન સબ ભૂતોં કી-પૃથિવ્યાદિ
છહ કાય કે જીવોં કી-કલ્યાણકારી-રક્ષા કરને વાલી હૈં ।

ભાવાર્થ-હસ અર્હિસા ભગવતી કે સમક્ષ સસાર કે સબી વિશિષ્ટ
જડ પદાર્થ તુચ્છ હૈં । કયોં કિં ઉનસે જીવોં કી યથાર્થરૂપ મેં રક્ષા નહીં

માટે અર્હિસા જ એક મોટા ઔષધરૂપ છે “ અડગીમજ્જે વસ્ત્થ ગમણ ” એમ
જ ગલની વચ્ચે સાર્થ-સમુદાયની સાથે જવાનું સુખજારી હોય છે તે જ પ્રમાણે
મોક્ષ માર્ગે પ્રયાણ કરતા મનુષ્યોને સાટે અર્હિસા સાર્થની ગરજ સારે છે
વધારે શું કહું । ‘ એત્તો ’ પૂર્વે કથિત ઉપમાનો ઉરતા પણ ‘ ત્રિસિદ્ધતરિયા’
અર્હિસા અધિકતર છે કારણ કે “ જા સા અર્હિસા ” આ જ અર્હિસા છે તે
“ પુદ્ગલો-જલ-અગ્નિ-મારુત-વગસ્સહ-વીય-હરિય-જલચર-સ્વહર-તસ-ચાવર-
સવ્વભૂય-સેમકરી ’ પૃથિવી, જલ, અગ્નિ વાયુ વનસ્પતિ, ગીજ, હરિત,
જલચર, યલચર, અચર, તસ, અને સ્થાવર તે બધા ભૂતોની પૃથિવ્યાદિ છ
કાયના જીવોની કલ્યાણકારી-રક્ષા કરનારી છે

ભાવાર્થ-આ ભગવતી અર્હિસાની આગળ સસારના સઘળા વિશિષ્ટ જડ
પદાર્થો તુચ્છ છે કારણ કે તેમનાથી યથાર્થ રીતે જીવોની રક્ષા થતી નથી એ

અથ યૈ મહાપુરુષૈરિયમહિસોપલ્બ્યા સેવિતા ચ તાનાહ—‘ એસા ભગવર્દૈ ’
 ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—એસા ભગવર્દૈ અહિસા જા સા અપરિમિય નાણ
 દસણધરેહિ સીલગુણ—વિળય—તવ—સજમ નાયગેહિં તિત્થક-
 રેહિ સન્નજગજીવવચ્છહેહિ તિલોગમહિણહિ જિણચદેહિ
 સુદુ દિટ્ઠા, ઓહિ જિણેહિ વિળ્ળાયા, ઉજ્જુમર્દ્દહિ વિદિટ્ઠા
 વિઝલમર્દ્દહિ વિદિતા, પુન્નધરેહિ અધીયા, વેઝઘ્વીહિ પઙ્-
 ણ્ણા, આભિણિવોહિયનાળીહિ સુયનાળીહિ મળપજ્જવનાળી-
 હિ કેવલનાળીહિ આમોસહિપત્તેહિ ચેલોસહિપત્તેહિ વિપ્પો-
 સહિપત્તેહિ જહ્લોસહિપત્તેહિ સન્નોસહિપત્તેહિ વીયવુદ્ધિણહિ
 કોટ્ટવુદ્ધીહિ પયાણુસારીહિ સભિળ્ળસોણહિ સુયધરેહિ મળ-
 વલિણહિ વયવલિણહિ કાયવલિણહિ નાળવલિણહિ દંસળ-
 વલિણહિ ચરિત્તવલિણહિ ચીરાસવેહિ મહુઆસવેહિ સપ્પિ-
 યાસવેહિ અચ્ચીળ મહાળસિણહિ ચારણેહિ વિજ્જાહરેહિ ચ-
 ઉત્થભત્તિણહિ છટ્ટભત્તિણહિ દંસમભત્તિણહિ એવ દુવાલસ-
 ચડદસસોલસ-અઢ્ઢમાસ- માસ-દોમાસ તિમાસ-ચડમાસ-
 પચમાસ છમ્માસભત્તિણહિ ઉક્ખિત્તચરણહિ એવં નિક્ખિત્ત-
 ચરણહિ અત્તચરણહિ પત્તચરણહિ લૂહચરણહિ સમુદાણિ-

હોતી હૈ । યદિ યથાર્થરૂપ મે જીવો કી રક્ષા કરને વાલી—અભયપ્રદાન
 કરને વાલી યદિ કોઈ સર્વોત્તમ વસ્તુ હૈ તો વહ ંક અહિંસા હી હૈ ॥સૂ.૦૩॥

અમ સૂત્રકાર જિન મહા પુરુષો ને ઇસ ભગવતી અહિંસા કી પ્રાપ્તિ

યથાર્થ રીતે જીવોની રક્ષા કરનારી—અભયપ્રદાન કરનારી કોઈ પણ સર્વોત્તમ
 વસ્તુ હોય તો તે એક માત્ર અહિંસા જ છે ॥ સૂ-૩ ॥

હવે સૂત્રકાર જે મહાપુરુષોએ આ ભગવતી અહિંસાની પ્રાપ્તિ તથા સેવા

ચરણહિ અણગિલાઈણહિ માંણચરણહિ સંમટ્ટકાપ્પિણહિ
 તજ્ઞાયસંસટ્ટકપ્પિણહિ ઉવનિહિણહિ સુઘેસણિણહિ સસાદ-
 ત્તિણહિ દિટ્ટલાભિણહિ અદિટ્ટલાભિણહિ આયવિલિણહિ
 પુટ્ટલાભિણહિ આયવિલિણહિ પુરિમટ્ટિણહિ એકાસણિણહિ
 નિવ્વિઙ્ગણહિ ભિન્નપિઢવાઈણહિ પરિમિયપિઢવાઈણહિ અંતહા-
 રેહિ પતાહારેહિ અરસાહારેહિ વિરસાહારેહિ લૂહાહારેહિ તુચ્છા-
 હારેહિ અતત્તજીવિહિ પત્તજીવિણહિ લૂહજીવિહિ ઉવસતત્તજી-
 વિણહિ પસતત્તજીવિહિ વિવિત્તજીવિહિ અસીરમહુસપ્પિણહિ
 અમજ્જમસાસિણહિ પઢિમટ્ટાઈણહિ ઠાણુઘાઈણહિ વીરાસણિ-
 ણહિ ણેસજ્જિણહિ ડહાયઈણહિ લગહસાઈહિ એગપસિણહિ
 આયાવણહિ અવાઉહણહિ અણિટ્ટુયણહિ અકહુયણહિ ધુય-
 કેસમસુલોમનહેહિ સઠ્ઠગાયપઢિકમ્મવિપ્પમુક્કેહિ સમણ-
 ચિન્ના, સુયધરવિદિયત્થકાયવુદ્ધિણો ધીરમહુવુદ્ધિણો ય જે
 તે આસીવિસત્તગ્ગતેયકપ્પા નિચ્છયવવસાય પજ્જત્તકયમહયા
 ણિચ્ચ સજ્ઞાયજ્ઞાણા અણુવદ્ધધમ્મજ્ઞાણપચ્ચમહવ્વયચ્ચ.
 રિત્તજુત્તા, સમિયા સમિઈસુ, સમિયપાવા, છત્તિહ જગવચ્છલા,
 નિચ્ચમપ્પમત્તા, એણહિ અન્નેહિ ય જા સા અણુપાલિયા
 ભગવઈ ॥ સૂ. ૪ ॥

ટીકા—‘ એસા ભગવઈ ’ ઇત્યાદિ—

‘ એસા ભગવઈ અહિંસા ’ એવા ભગવતી અહિંસા=એવા પૂર્વોક્તા ભગવતી=
 પૂજનીયા સર્વજ્ઞપરુષિતાઽહિંસૈય સમ્યગહિંસાઽસ્તિ, ન તુ સર્વજ્ઞેતરકલ્પિતા । ‘ જા’
 કી હૈ, તથા સેવા કી હૈ ઉન મહાપુરુષોં કો પ્રકટ કરતે હૈ—‘ એસા ભગ
 વઈ ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(એસા ભગવઈ અહિંસા) યત્ પૂર્વોક્ત ભગવતિ અહિંસા
 સર્વજ્ઞ દ્વારા પ્રરુપિત અહિંસા—તી સચી અહિંમાહૈ, સર્વજ્ઞ સે ભિન્ન ઇતર

કરી છે તે મહાપુરુષોના નામ પ્રગટ કરે છે—“ એસા ભગવઈ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘ એસા ભગવઈ અહિંસા ’ આ પૂર્વોક્ત ભગવતી અહિંસા—સર્વજ્ઞ દ્વારા
 પ્રરુપિત અહિંસા જ સાચી અહિંસા છે, સર્વજ્ઞ નિવાયના બીજા કશુંક નથી

યા=જિનસિદ્ધાન્તોક્તા અહિંસા 'સા' સા 'અપરિમિયનાણદસણધરેહિં' અપરિમિ-
તજ્ઞાનદર્શનધારકૈઃ 'સીલગુણવિનયતવસજમનાયગેહિં', શીલગુણવિનયતપઃ
સયમનાયકૈઃ, શીલ=ચિત્તસમાધાન તદેવગુણસ્ત, તથા વિનયતપ સયમાશ્વ સ્વસ્ય
પરેણ ચ નયન્તિ=પ્રાપયન્તિ યે તે તૈસ્તયોક્તૈઃ 'તિત્થકરેહિં' તીર્થકરૈઃ=
ચતુર્વિધસઘનાયકૈઃ 'સવ્વજગજીવવચ્છલેહિં' સર્વજગજ્જીવત્સલૈઃ-સકલપ્રાણિ
કારુણ્યોપેતૈઃ,=યોગક્ષેમકારિકૃત્વાત્, 'તિલોગમહિં' ત્રિલોકમહિતૈઃ=ત્રિલો
કપૂજિતૈઃ=તીર્થકરનામકર્મણો જગત્પૂજનીયત્વાત્, 'જિણચદેહિં' જિનચન્દ્રૈઃ=
જિનાના સામાન્યજિનાના મયે ચન્દ્રા ઇવ તૈઃ, કારુણિકનિશ્ચારૈરિત્યર્થ, 'સુદ્દુ-
દિદ્ધા' સુદ્દુ દૃષ્ટા=કેવલાલોકૈઃ કારણતઃ સ્વરૂપતઃ કાર્યતશ્ચ સમ્યગ્ વિનિશ્ચિતા,

છદ્ધસ્ય પ્રાણિયો દ્વારા કથિત અહિંસા સચ્ચી અહિંસા નહીં હૈ- ઇસ તરહ
(જા ૬ જિન સિદ્ધાન્તોક્તજો અહિંસા હૈ (સા) વહ (અપરિમિથનાણ-
દસણધરેહિં) અપરિમિત-અનત-જ્ઞાન ઓર દર્શન કે ધારણ કરને
વાલે (સીલગુણવિનયતવસજમનાયગેહિં) શીલ રૂપગુણ વિનય એવ
તપ, ઇનકા સ્વય આચરણ કરને વાલે ઓર પરકો આચરણ કરાને વાલે
(તિત્થકરેહિં) તીર્થકર-ચતુર્વિધ સઘ કા નેતૃત્વ કરનેવાલે (સવ્વજગજી-
વવચ્છલેહિં) સમસ્ત જગત કે જીવોં કે પ્રતિવાત્સલ્યભાવ રાખને વાલે
ઓર (તિલોગમહિં) તીર્થકર નામકર્મ જગત્પૂજ્ય હોને કે કારણ
તીનોં લોકો દ્વારા પૂજે જાને વાલે, એસે (જિણચદેહિં) જિન ચન્દ્રોને
સામાન્ય જિનોં કી વીચ મેં ચન્દ્રના કે તુલ્ય તીર્થકર મહાપ્રભુઓ ને વહ
અહિંસા ભગવની કો પૂર્વોક્ત પ્રકાર સે (સુદ્દુદિદ્ધા) અપને કેવલા-
લોક સે કારણ સ્વરૂપ કો, એવ કાર્ય કી અપેક્ષા કો લેકર અચ્છી

જીવો દ્વારા કથિત અહિંસા માથી અહિંસા નથી આ રીતે “ જા ” જિન-
સિદ્ધાન્તોક્ત જે અહિંસા છે “ સા ” તે “ અપરિમિયનાણદસણધરેહિં ” અપ
રિમિત-અનત-જ્ઞાન અને દર્શનના ધારક “ સીલગુણવિનયતવસજમનાયગેહિં ”
શીલરૂપગુણ, વિનય અને તપનું બંધે આચરણ કરનારા અને બીજાને તેનું
આચરણ કરાવનારા “ તિત્થકરેહિં ” તીર્થકર-ચતુર્વિધ સઘનું નેતૃત્વ કરનારા
“ સવ્વજગજીવવચ્છલેહિં ” જગતના સમસ્ત જીવો પ્રત્યે વાત્સલ્યભાવ રાખ
નારા અને “ તિલોગમહિં ” તીર્થકર નામકર્મ જગત્પૂજ્ય હોવાને કારણે
ત્રણે લોક દ્વારા પૂજાનારા, એવા “ જિણચદેહિં ” જિનચન્દ્રો-સામાન્ય જિનેની
અદર અદ્રમા સમાન તીર્થકર મહાપ્રભુઓએ આ ભગવતી અહિંસાને પૂર્વોક્ત
રીતે “ સુદ્દુદિદ્ધા ” પોતાના કેવલાલોકથી કારણ સ્વરૂપે, અને કાર્યની અપે
ક્ષાએ સારી રીતે દેખી છે-નિશ્ચિત કરી છે તેમણે તેના બાહ્ય અને અભ્ય

તત્ત્વ ગુરુપદેશઃ, કર્મક્ષયોપશમાદિ ગાહ્યાભ્યન્તર કારણમસ્યાઃ પ્રમત્ત ઓગાત્રાણવ્યપ
 રોપગલક્ષણહિંસાપ્રતિપક્ષરૂપ સ્વરૂપમ્, સ્વર્ગાપવર્ગપ્રાપ્તિતિલબ્ધિ ચ કાર્યમ્, ડતિ ।
 તથા-‘ઓહિજિનેહિ’ અધિજિનેઃ=વિશિષ્ટાધિજ્ઞાનિભિઃ ‘વિણ્ણાયા’ વિજ્ઞાતા=
 ભેદપ્રભેદૈર્વિદિતા, તથા ‘ઉજ્જુમર્હિંપિ’ ઋજુમતિભિરપિ=મનન મતિઃ-સવેદન
 મિત્યર્થઃ, ઋજ્વીસામાન્યગ્રાહિણી મતિર્નુદિર્યેપા તે ઋજુમતયઃ=અર્ધતૃતીયાઢગુલ
 ન્યૂનમનુષ્યક્ષેત્રવર્તિ સહિ પચ્ચેન્દ્રિયમનોદ્રવ્યપ્રત્યક્ષીકરણહેતુમનઃપર્યાયજ્ઞાનભેદ
 વન્તસ્તૈરપિ, ‘વિદિદ્વા’ દૃષ્ટા, તથા-‘વિપુલમર્હિં’ વિપુલમતિભિઃ=પર્યાયજ્ઞાનોપેતા
 ચિન્તનીય ઘટાદિકસ્તુતિશેષગ્રાહિણી મતિર્નુદિર્યેપા તે વિપુલમતયમ્તૈઃ વિદિતા=

તરહ દેખી હૈ-નિશ્ચિન કી હૈ । ઉન્હો ને ડમકે ચાલ ઓર આભ્યન્તર
 કારણ ગુરુપદેશ, કર્મક્ષયોપશમ આદિ કહે હૈ । ડસકા સ્વરૂપ-
 પ્રમત્તયોગ સે જો પ્રાણવ્યપરોપગરૂપ હિંસા કા સ્વરૂપ હૈ ડસસે વિપરીત
 સ્વરૂપ પ્રકટ કિયા હૈ । તથા સ્વર્ગ ઓર અપવર્ગ કી પ્રાપ્તિ હોના ડસકા
 કાર્ય કરા હૈ । (ઓહિજિનેહિ વિણ્ણાયા) વિશિષ્ટ અધિ જ્ઞાનિયો
 દ્વારા યહ અહિંસા ભગવતી ભેદ પ્રભેદો સહિત વિદિત હૈ હૈ । તથા
 (ઉજ્જુમર્હિં વિદિદ્વા) ઋજુમતિ મન. પર્યાય જ્ઞાનિયો દ્વારા યહ પ્રત્યક્ષ
 રૂપ મે દેખી ગઈ હૈ । જો વિષય કો સામાન્યરૂપ સે જાનતા હૈ વહ
 ઋજુમતિમન. પર્યાય હૈ । યહા પર ંસી આશકા નહો કરના ચાહિયે કિ
 “ જય ઋજુમતિ સામાન્યગ્રાહી હૈ તય તો વહ દર્શન હી જુઆ ડસે જાન
 કયો કહા કયો કિ યહ સામાન્યગ્રાહી હૈ” ડસકા તાત્પર્ય ડતના હી હૈ કિ
 વહ વિશેષોકો જાનતા હૈ પર વિપુલમતિ જિતને વિશેષો કો નહો જાનતા ।
 અર્ધતૃતીયઢગુલ ન્યૂન-અર્થાત્ ઢાઈ અંગુલ કમ મનુષ્ય ક્ષેત્ર મે રહે

ન્તર કારણ શુરૂપદેશ, કર્મક્ષયોપશમ આદિ બતાવેલ છે તેનુ સ્વરૂપ-પ્રમત્ત
 યોગથી જે પ્રાણ હરનાર હિંસાનુ સ્વરૂપ છે તેના કરતા ઉલટુ સ્વરૂપ પ્રગટ
 કરેલ છે તથા સ્વર્ગ અને અપવર્ગની પ્રાપ્તિ થવી તે તેનુ કાર્ય કહેલ છે
 “ ઓહિજિનેહિ વિણ્ણાયા ” વિશિષ્ટ અધિજ્ઞાનીઓ દ્વારા તે ભગવતી
 અહિંસા ભેદ, પ્રભેદો સહિત સમજવામા આવેલ છે તથા “ ઉજ્જુમર્હિં વિ
 દિદ્વા ” ઋજુમતિ મન પર્યાયજ્ઞાનીઓ દ્વારા તે પ્રત્યક્ષ રૂપે ભવામા આવેલ
 છે જે વિષયને સામાન્ય રીતે બાલ છે તે ઋજુમતિ મન પર્યાય છે અહી
 એવી શકા ન કરવી બેઈએ કે “ જે ઋજુમતિ સામાન્યગ્રાહી છે તો તે
 “ દર્શન ” જે ગણાય તેને જાન કેમ કહ્યુ ? જરૂર છે તે સામાન્યગ્રાહી છે ”
 તેના ભાવાર્થ એટલો જ છે કે તે વિશેષોને બાલ છે પણ વિપુલમતિ જેટલા
 વિશેષોને બાલુતો નથી “ અર્ધતૃતીયઢગુલન્યૂન ” એટલે કે અહી આગળ

વિશેષતો દૃષ્ટા, एते उभयेऽपि मन पर्ययज्ञानिनः । तथा—‘ पुञ्चमरेहि ’
 पूर्वधरैः=उत्पादाग्रायणीयत्रीयादि चतुर्दश पूर्वधरै (अभीया) अधीता=श्रुतनिबद्धा
 पठिता, तथा ‘ वेङ्गવીहि ’ वैकुर्विकै=वैक्रियलब्धिधारिभि, ‘ पङ्गणा ’ प्रतीर्णा=
 निस्तीर्णा=आजन्मपरिपालितेत्यर्थः, तथा—‘ आभिणित्रोहियनाणीहि ’ आभि-
 निरोधिकज्ञानिभि, अभि=अर्थाभिमुख-अविपर्ययरूपत्वात्, नि=नियतोऽसशय-
 रूपत्वात्, योय=यवेदनम्=अभिनिरोध, स एव आभिनिरोधिकम्, ज्ञायतेऽ-
 नेनेति ज्ञानम्, आभिनिरोधिकं च तज्ज्ञानम्-आभिनिरोधिकज्ञानम्-इन्द्रिय नो-
 इन्द्रिय निमित्तो योय इत्यर्थ, मोऽस्ति येषा तैस्तथोक्तैः, मतिज्ञानवृद्धिरित्यर्थः,

હુણસજી પચેન્દ્રિય જીવોં કે મનોદ્રવ્યોં કો યહ ઋજુમતિ સાક્ષાત્ જાનતા
 હૈ । યહ જ્ઞાન ક મનઃપર્યયળ્લ મેદ હૈ । (વિઝલમહિં વિદિયા) મનઃ
 પર્યય જ્ઞાનકા દ્વન્નરા મેદવિપુલમતિ હૈ । ઇસ વિપુલમતિ મનઃ પર્ય-
 યજ્ઞાનવાલા પદાર્થોં કો ઋજુમતિ કો અપેક્ષા વિશુદ્ધતર આદિ
 રૂપ સે જાનતા હૈ । કયોં કિ યહ મતિ પર્યાયજ્ઞાનોપેત હોતી હૈ, તથા
 ચિન્તનીય ઘટાદિ વસ્તુઓં મેં સૂક્ષ્મતર આદિ રૂપ સે વર્તમાનધર્મોં કો
 જાનતી હૈ । ઊન જેસે વિપુલમતિ મન પર્યય જ્ઞાનિયોં દ્વારા યહ ભગવતી
 અહિંસા ઋજુમતિ કો અપેક્ષા અધિક ઓર વિશેષરૂપ સે વિદિત-જ્ઞાત-
 દૃષ્ટ હૈ હૈ । તથા (પુઞ્વધરેહિ અધીયા) ઉત્પદપૂર્વ, અગ્રાયણીપૂર્વ,
 વીર્યપ્રવાદ આદિ ચતુર્દશધર્મ કે ધારી મહાત્માઓં ને-શ્રુતજ્ઞાનિયોં ને-
 શ્રુત મે નિબદ્ધ હૈ ઇસ અહિંસા ભગવતી કો પઢા હૈ । (વેઙ્ગવીહિ-
 વેઙ્ગણા) વૈક્રિયલબ્ધિધારી મુનિજનોં ને ઇસે આજન્મ પાલા હૈ ।
 (આભિણિત્રોહિયનાણીહિ, સુયનાણીહિ, મળપજ્જવનાણીહિ કેવલનાણીહિ)

ઓઝા મનુષ્યક્ષેત્રમા ગ્હેલ મની પચેન્દ્રિય છોના મનોદ્રવ્યોને તે ઋજુમતિ
 માલાત બાણે છે મન પર્યયજ્ઞાનનો આ એ-લેદ એ “ વિઝલમહિં વિદિયા”
 મન પર્યય જ્ઞાનનો બીજો લેદ વિપુલમતિ એ આ વિપુલમતિ મન પર્યય
 જ્ઞાનવાળો પદાર્થોને ઋજુમતિના ડરતા વધારે વિશુદ્ધ રૂપે બાણે છે ડારણ કે
 મતિપર્યાય રતોપેત હોય એ, તથા કટપનીય ઘટાદિ વસ્તુઓમા સૂક્ષ્મતર આદિ
 રૂપે વર્તમાન ધર્મોને બાણે છે એવા તે વિપુલમતિ મન પર્યયજ્ઞાનીઓ
 દ્વારા આ ભગવતી અહિંસા ઋજુમતિના ડરતા અધિક અને વિશેષ રૂપે વિદિત
 -જ્ઞાત-દૃષ્ટ થઈ એ તથા “ પુઞ્વધરેહિ અધીયા ” ઉત્પદપૂર્વ, અગ્રાયણીપૂર્વ,
 વીર્યપ્રવાદ આદિ ચૌદ પૂર્વના વારડ મહાત્માઓએ-શ્રુતજ્ઞાનીઓએ-શ્રુતમા
 ગૂથાયેલ આ ભગવતી અહિંસાનુ અવ્યયન કર્યું છે, “ વેઙ્ગવીહિ વેઙ્ગણા ”
 વૈક્રિયલબ્ધિધારી મુનિજનોએ તેનુ આજન્મ પાલન કર્યું છે ‘ આભિણિત્રો-
 હિયનાણીહિ સુયનાણીહિ, મળપજ્જવનાણીહિ કેવલનાણીહિ ’ ઈન્દ્રિય અને નોઈ

તથા-‘મુચનાણીદિ’ શ્રુતાનિમિ’=શ્રુતમ્-આચારાદિ, તદેદિમિરિત્યર્થ,
 તથા-‘મળપજ્જયનાણીદિ’ મન પર્યગનાનિમિઃ-મનસો મન્યમાનમનોદ્રવ્યાનાં
 પર્યયઃ=પરિન્દ્રેદો મન-પર્યયઃ, ણ પચ જ્ઞાનમ્, મનઃપર્યયજ્ઞાનમ્, તદસ્તિ યેષાં
 તે તથોક્તાસ્તૈઃ, તથા-‘કેવલનાણીદિ’ કેવલજ્ઞાનિમિઃ=કેવલમેકમસદાચમનન્ત
 પરિપૂર્ણ યદ્ જ્ઞાન તત્કેવલજ્ઞાન, તદસ્થાસ્તિ યેષાં તે તથોક્તાઃ, તથા-‘આમોસ-
 દિપત્તેદિ’ આમર્શોપધિપ્રાપ્તૈઃ, -આમર્શ’=શરીરમર્મ્પર્ગઃ, સ ગર્વોપધિઃ-સર્વરોગાપ-
 હારિત્યાત્-તપશ્ચરણપ્રભાગો લઘિવિશેષસ્તા પ્રાપ્તા યે તે તથોક્તાસ્તૈઃ, તથા-
 ‘શેલોસદિપત્તેદિ’ શ્લેષ્મોપધિપ્રાપ્તૈઃ-શ્લેષ્મા ગચ્છતિ ઓપધિર્મચતિ યત્ર કચ્છી સા

ઇન્દ્રિય ઓર નો ઇન્દ્રિય ડનસે ઉત્પન્ન જો જ્ઞાન હોતા હૈં ઉસકા નામ
 આભિનિયોધક જ્ઞાન હૈં । ‘અમિ’ ઓર ‘નિ’ યે દો ઉપસર્ગ યદ્
 પ્રકટ કરતે હૈં કિ યદ્ જ્ઞાન સન્નુગ્વ રહે હુદ્ નિયમિત્ત ક્ષેત્રવર્તી પદાર્થ
 કો હી જ્ઞાન સકતા હૈં । હસ આભિનિયોધિક જ્ઞાનિયો દ્વારા મતિજ્ઞાન-
 ધારિયો દ્વારા, તથા આચારાગ આદિ શ્રુત કે જ્ઞાનને ચાલો દ્વારા, તથા
 મનઃપર્યવજ્ઞાનિયો દ્વારા, -મનવાલે-સજ્ઞિ પ્રાણી-કિસી મી વસ્તુ કા
 ચિન્તવન મનસે કરતે હૈં । ચિન્તવન કે સમય ચિન્તનીય વસ્તુ કે ભેદ
 કે અનુસાર ચિન્તવનકાર્ય મે પ્રવૃત્તમન મિત્ર ૨ આકૃતિયો કો ધારણ
 કરતા રહતા હૈં વે આકૃતિયા હી મન કો પર્યાયે હૈં, ઓર ડન માનસિક
 આકૃતિયો કો સાક્ષાન્ જ્ઞાનને ચાલા જ્ઞાન મન પર્યય જ્ઞાન હૈં, હસ મનઃ
 પર્યવ જ્ઞાન કો ધારણ કરને ચાલે મુનિજનો દ્વારા, તથા કેવલ જ્ઞાનિયો
 દ્વારા-અસહાય, એક, અનન્ત, પરિપૂર્ણ યદ્ કેવલ શબ્દ કા અર્થ હૈં,
 એસા જો જ્ઞાન હોતા હૈં વહ કેવલ જ્ઞાન હૈં, યદ્ જ્ઞાન જિસ આત્મા મેં
 હોતા હૈં ઉસકા નામ કેવલજ્ઞાનિ હૈં એસે કેવલ જ્ઞાનિ આત્માઓ દ્વારા

ન્દ્રિય વડે ઉત્પન્ન થયેલ જે જ્ઞાન છે તેનું નામ આભિનિયોધક જ્ઞાન છે “અમિ”
 અને “નિ” એ બંને ઉપસર્ગો એ પ્રગટ કરે છે કે તે જ્ઞાન સન્નુગ્વ રાખેલ
 નિયમિત ક્ષેત્રવર્તી પદાર્થને જ જાણી શકે છે તે અભિનિયોધિક જ્ઞાનીઓ
 દ્વારા, મતિજ્ઞાનધારીઓ દ્વારા તથા આચારાગ આદિ સૂત્રોના જાણકાર દ્વારા
 તથા મન પર્યય જ્ઞાનીઓ દ્વારા-મનવાળા-સજ્ઞિ પ્રાણી-કોઈ પણ વસ્તુનું મન
 વડે ચિન્તવન કરે છે ચિન્તવનને વખતે જેનું ચિન્તવન કરવામા આવે છે તે
 વસ્તુના લેહ પ્રમાણે ચિન્તનકાર્યમા પ્રવૃત્ત થયેલ મન જુદી જુદી આકૃતિયોને
 ધારણ કરતું રહે છે, તે આકૃતિયો જ મનની પર્યાયો છે અને તે માનસિક
 આકૃતિયોને પ્રત્યક્ષ જાણનાર જ્ઞાન મન પર્યય જ્ઞાન છે, તે મન પર્યય જ્ઞાનને
 ધારણ કરનાર મુનિઓ દ્વારા, તથા કેવળજ્ઞાનીઓ દ્વારા-અસહાય, એક અને
 ન્ત, પરિપૂર્ણ તે “કેવલ” શબ્દના અર્થો છે, એવું જે જ્ઞાન છે તેને કેવળ

શ્લેષ્મૌપધિસ્તા પ્રાપ્તા અધિગતા યે તે તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા 'જલ્લોસહિપત્તેર્હિ' જલ્લૌપધિપ્રાપ્તૈ જલ્લ' = શરીરસમુદ્ભવશ્ચમઝ, સઘાપધિસ્તા પ્રાપ્તા યે તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા 'વિપ્પોસહિપત્તેર્હિ' વિપ્પુડોપધિપ્રાપ્તૈઃ, વિપ્પુપ્પ = મુલવિન્દ્ર, ત એવ ઓપધિર્વિપ્પુડોપધિસ્તા પ્રાપ્તાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા- 'સવ્વોસહિપત્તેર્હિ' સર્વમ્ = ઋગ્વદનનાસિકાનયનજિહ્વાસમુદ્ભવ મલ તદેવ ઓપધિસ્તામ્પ્રાપ્તાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા- 'વીય-બુદ્ધિર્હિ' વીજબુદ્ધિર્હિ, વીજમિત્ર વિધિગાર્યાધિગમરૂપમહાતરુજનનાદ્ બુદ્ધિર્વેપા તે વીજબુદ્ધયસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, અય ભાવઃ-ઉત્પાદવ્યયગ્રીવ્યયુક્ત સદિત્યાદિવદ્યપ્રધાન પદમર્થપદ, તેનૈકેનાપિ વીજભૂતેનાધિગતેન યેઽન્ય પ્રભૂતમપ્યર્થમનુસરન્તિ તે વીજબુદ્ધય ઉચ્યન્તે, તથા 'કોઠ્ઠુબુદ્ધિર્હિ' કોઠ્ઠુબુદ્ધિર્હિ-કોઠ્ઠપ્રક્ષિપ્તધાન્યમિવ યેપા મૂત્રાયૌ સુચિરમપિ તિષ્ઠતસ્તે કોઠ્ઠ બુદ્ધયસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, 'પયાણુસારીર્હિ' પદાનુસારિભિઃ = પદેન મૂત્રાવયવેન એકેનોપલ્લવેન તદનુકૂલાનિ પદશતાન્યનુસરન્તિ યે તે પદાનુસારિગસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા 'સમિન્નસોર્હિ' સમિન્નશ્રોતોભિઃ-સમિન્નાનિ સમાનાર્થગ્રાહીણિ શ્રોતાસિ-ઇન્દ્રિયાણિ યેપા તે સમિન્નશ્રોતસસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, 'યે એકતરેણાપીન્દ્રિયેણ સર્વેન્દ્રિય ગમ્યાન્ વિપયાન્ અવગચ્છન્તિ તે સમિ

(સમણુચિન્ના) સેવિત હુઈ હૈ, તેસા સમન્થ આગે સે જોડ લેના વાહિયે । તથા (આમોસહિપત્તેર્હિ, ચેલોસહિપત્તેર્હિ, જલ્લોસહિપત્તેર્હિ, વિપ્પોસહિપત્તેર્હિ, સવ્વોસહિપત્તેર્હિ, વીયબુદ્ધિર્હિ, કોઠ્ઠુબુદ્ધિર્હિ, પયાણુસારીર્હિ, સમિન્નસોર્હિ) આમગૌપધિલલ્લિ જિન્હે પ્રાપ્ત હો ચુકી હૈ, શ્લેષ્મૌપધિ લલ્લિ જિન્હે પ્રાપ્ત હો ચુકી હૈ, જલ્લૌપધિ લલ્લિ જિન્હે પ્રાપ્ત હો ચુકી હૈ, વિપ્પુડોપધિ લલ્લિ જિન્હે પ્રાપ્ત હો ચુકી હૈ, સર્વોપધિ લલ્લિ જિન્હે પ્રાપ્ત હો ચુકી હૈ, તથા વીજબુદ્ધિ લલ્લિ-વીજ સમાન બુદ્ધિ વાલી લલ્લિ જિન્હે પ્રાપ્ત હો ચુકી હૈ, કોઠ્ઠુબુદ્ધિલલ્લિ જિન્હે પ્રાપ્ત હો ચુકી હૈ, પદાનુસારી લલ્લિ જિન્હે પ્રાપ્ત હો ચુકી હૈ, સમિન્ન-શ્રોતસ લલ્લિ જિન્હે પ્રાપ્ત હો ચુકી હૈ, અનેક દ્વારા સેવિત હુઈ હૈ, તથા

જ્ઞાની કહે છે એવા ડેવળજ્ઞાની આત્માઓ દ્વારા "સમણુચિન્ના" સેવાયેલી છે એવો મળધ આગળના વાઙ્મય માથે ભેડી લેવાનો છે તથા 'આમોમહિ પત્તેર્હિ, ચેલોમહિપત્તેર્હિ, જલ્લોમહિપત્તેર્હિ વિપ્પોમહિપત્તેર્હિ, સવ્વોમહિપત્તેર્હિ, વીય-બુદ્ધિર્હિ, કોઠ્ઠુબુદ્ધિર્હિ, પયાણુસારીર્હિ, સમિન્નસોર્હિ" આમગૌપધિલલ્લિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ગઈ છે બલ્લોપધિલલ્લિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ગઈ છે, વિપ્પુડો પધિલલ્લિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ગઈ છે, તથા વીજબુદ્ધિ લલ્લિ-વીજના સમાન બુદ્ધિવાળી લલ્લિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ગઈ છે ડોળબુદ્ધિ લલ્લિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ગઈ છે પદાનુસારી લલ્લિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ગઈ છે, સમિન્નશ્રોતસ લલ્લિ જેમને પ્રાપ્ત થઈ ચુકી છે, તેઓ વડે (અર્હિસા સેવાયેલ છે તથા

જશ્રોતસ ઉચ્યન્તે, તથા-સુયધરેહિં શ્રુત મૈ = આચારાદિગ્રન્થધારકઃ, તથા-
 'મળવલિણિં' મનોવલિકૈઃ-દૃઢમનસ્કૈઃ-નાનાવિધપરીપત્તેષામર્ગમપાતેઽપિ યેવા
 મનો ધર્માત્મિકશિમાવમપિ ન ચલતિ તૈરિત્યર્થઃ, 'વયવલિણિં' વચોવલિકૈઃ=
 વાગ્મયુક્તૈઃ દુર્ગાદિમાર્ગાપદાર્થનિરાકરણસમર્થગાળોગ્રપેતૈરિત્યર્થઃ, 'કાયવલિ
 ણિં' કાયવલિકૈઃ=પરીગોચરસર્ગમનસમર્થકાયવલ્યુક્તૈરિત્યર્થઃ 'નાળવલિણિં'
 જ્ઞાનવલિકૈઃ-જ્ઞાનેન મત્યાદિના વલ્લિનસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ-દૃઢજ્ઞાનવૃક્તૈરિત્યર્થઃ, 'દસ
 ણવલિણિં' દર્શનવલિકૈઃ-દર્શન-નિગદ્ધિતાદિતત્ત્વશ્રદ્ધાનરૂપ, તેન વટવતસ્તૈસ્ત
 થોક્તૈઃ, 'ચરિત્તવલિણિં' ચારિત્રવલિકૈઃ, ચારિત્ર=મદ્રુકાયમયમ, તદ્રૂપ યદ્વ
 લમ્, તદ્વદ્ધિરિત્યર્થઃ, તથા 'સીરાસવેહિં' ક્ષીરાસ્રવૈઃ=ક્ષીરાસ્રવલ્લિધારૈઃ, યેવા
 વચનમાકર્ણ્યમાન મનઃ શરીરગુણોત્પાદનાય પ્રમગ્નતિ તે ક્ષીરાસ્રવા ઉચ્યન્તે, તથા
 'મહુઆસવેહિં' મન્વાસ્રવૈઃ=શર્કરાઘપેક્ષયાપિ મધુર દ્રવ્ય મધુ 'શઠદ' ઇતિ માપાપ્રસિદ્ધ,
 તદિવ વચનમ્ આસ્રવન્તિ=નિસ્સરયન્તિ યે તે મધ્યાસ્રવાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા 'સપ્પિ
 આસવેહિં' સર્પિરાસ્રવૈઃ=સર્પિઃ=અન્યન્તસુરભિયુક્ત સ્નેહયુગ્મ ચ ઘૃતમિત્ર વચનમાસ્ર
 વન્તિ=નિસ્સરયન્તિ યે સર્પિરાસ્રવાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા 'અક્ષીણમહાણસિણિં' અ
 ક્ષીણમહાનસિકૈઃ=મહાનસમ્=અન્નપાકસ્થાન, તદાથિતત્ત્વાદન્નમપિ મહાનસમુચ્યતે
 અક્ષીણ મહાનસ યેવા તે અક્ષીણમહાનસિકાસ્તૈન્તથોક્તૈઃ, યેવામસાધારણાન્તરાયક્ષયો
 પશમાદલ્પમાત્રમપિ પાત્રપતિતમન્ન ગૌતમાદીનામિત્ર લક્ષસરૂપકેભ્યોઽપિ દીયમાન

(સુયધરેહિં) જો આચારાગ આદિ શ્રુત કે ધારક હોં અનેક દ્વારા સેવિત
 હુઈ હૈ તથા (મળવલિણિં, વયવલિણિં, કાયવલિણિં) જો મનબલ
 સે યુક્ત હૈ, વાગ્મલ સે યુક્ત હૈ, કાયબલ સે યુક્ત હૈ અનેક દ્વારા સેવિત
 હુઈ હૈ । તથા (નાળવલિણિં, દસણવલિણિં ચરિત્તવલિણિં) મત્યા-
 દિક જ્ઞાન સે જો વલિષ્ઠ હૈ, દર્શનવલિક હૈ, ચારિત્રવલિક હૈ અનેક દ્વારા
 સેવિત હુઈ હૈ, તથા (ક્ષીરાસવેહિં, મહુઆસવેહિં, સપ્પિઆસવેહિં, અ
 ક્ષીણમહાણસિણિં) ક્ષીરાસ્રવલ્લિધારી હૈ, મન્વાસ્રવલ્લિધારી હૈ
 અક્ષીણમહાનસ શ્રદ્ધિધારી હૈ, અનેક દ્વારા સેવિત હુઈ હૈ, તથા (ચાર-

“ સુયધરેહિં ” આચારાગ આદિ સૂત્રના જેઓ ધારક છે તેમના દ્વારા તે સેવા
 થેલ છે, તથા “ મળવલિણિં, વયવલિણિં, કાયવલિણિં ” જે મનોબળવાળા
 છે, વાગ્મળ વાળા છે, અને કાયમળવાળા છે તેમના દ્વારા તે સેવાથેલ છે, તથા
 “ નાળવલિણિં, દસણવલિણિં, ચરિત્તવલિણિં ” મત્યાદિક જ્ઞાન વડે જે બલિષ્ઠ
 છે, જે દર્શનબળયુક્ત તથા ચારિત્રબળયુક્ત છે તેમના વડે તે સેવાથેલ છે,
 તથા “ ક્ષીરાસવેહિં, મહુઆસવેહિં, સપ્પિઆસવેહિં, અક્ષીણમહાણસિણિં ” ક્ષીરાસ્રવ
 લ્લિધારી, મન્વાસ્રવલ્લિધારી, સર્પિરાસ્રવલ્લિધારી અક્ષીણમહાનસશ્રદ્ધિ
 ધારી દ્વારા જે સેવાથેલ છે, તથા “ ચારણેહિં વિજ્ઞાહેરેહિં ” ચરણશ્રદ્ધિ ધારી

સ્વયમેવાશુક્ત ન ક્ષીયતે તે અક્ષીણમદ્વાનસા ઉચ્યન્તે । તથા ‘ચારણેર્હિ’ ચારણૈઃ= ચરણ-ગમન તદ્વિન્યતે યેપા તે ચારણાં ચરણમિદ્વિનિશિષ્ટમાકાશગમનાગમન- ગૃહ્યતે, તે દ્વિવિધા. વિદ્યાચારણા જહ્વાચારણાશ્ચ, તત્ર-વિદ્યાપત્રેન સમુપ્તનાકાશ ગમનાગમનલ્બ્ધિમન્તો વિદ્યાચારણા । ઇય લ્બ્ધિર્નિરન્તરપટ્ટપટ્ટતપશ્ચરણ કૃતુર્જાયતે । તથા યે મુનયશ્ચારિત્રતપોવિશેષમભાવેણ જહ્વોપરિ હસ્તસ્થાપનમાત્રેણ ગગનગમ- નાગમનલ્બ્ધિસપન્ના ભવન્તિ તે જહ્વાચારણા ઉચ્યન્તે । ઇય લ્બ્ધિર્નિરન્તરાટ્ટમાટ્ટ- મતપશ્ચરણકૃતુર્જાયતે । તત્ર-વિદ્યાચારણા જમ્બૂદ્વીપાપેક્ષયાઽટ્ટમ નન્દીશ્વરનામ- દ્વીપ જહ્વાચારણાશ્ચ ત્રયોદશ રુચ્કરુચ્કરદ્વીપ ગન્તુ સમર્થાઃ । વિદ્યાચારણા પ્રથમો- સ્તાતેન માનુષોત્તર પર્યંત ગચ્છન્તિ, દ્વિતીયેનોત્પાતેન નન્દીશ્વરમ્, પ્રતિનિર્વર્તમાન એકેનૈવોત્પાતેન સ્વસ્થાનમાગચ્છન્તિ । તથા-મેરુ ગચ્છન્તઃ પ્રથમેનોત્પાતેન નન્દન- વન ગચ્છન્તિ, દ્વિતીયેનોત્પાતેન પન્ડરુવનમ્, તતઃ પ્રતિનિર્વર્તમાના એકેનોત્પાતેન સ્વસ્થાનમાગચ્છન્તિ । જહ્વાચારણા હિ એકેનોત્પાતેન જમ્બૂદ્વીપાપેક્ષયા ત્રયોદશ- રુચ્કરુચ્કરદ્વીપ ગચ્છન્તિ । પ્રતિનિર્વર્તમાના એકેનોત્પાતેન નન્દીશ્વરમાયાન્તિ દ્વિતી- યેન સ્વસ્થાનમ્ । યદિ પુનર્મેરુશિખર જિગમિપયસ્તદા પ્રથમેનોત્પાતેન પન્ડકવ- નમધિરોહન્તિ । પ્રતિનિર્વર્તમાનાશ્ચ એકેનોત્પાતેન નન્દનવનમાગચ્છન્તિ, દ્વિતીયેન સ્વસ્થાનમ્ । તથા ‘વિજ્ઞાહરેર્હિ’ વિદ્યાધરૈ, રોહિણીપ્રજ્ઞપ્ત્યાદિવિદ્યાધારકૈઃ= તથા ‘ચતુર્થમભિર્ણિ’ ચતુર્થમભિક્તિકૈઃ=एकोपवासकारकै, ‘છટ્થમભિર્ણિ’ પષ્ઠમભિક્તિકૈઃ, ઉપવાસદ્વયકારકૈઃ, ‘અટ્થમભિર્ણિ’ અષ્ટમભિક્તિકૈઃ=उपवासत्रय- कारकै, તથા-‘દસમભિર્ણિ’ દશમભિક્તિકૈઃ=उपवासचतुष्टयकारकै, ‘એવં

નેર્હિવિજ્ઞાહરેર્હિ) ચારણકૃદ્વિધારી હૈ, રોહિણીપ્રજ્ઞસ આદિ વિદ્યા કેધારી હૈં ઉનકે દ્વારા સેવિત હુઈ હૈ । તથા (ચતુર્થમભિર્ણિ, છટ્થમભિર્ણિ, અટ્થ- મભિર્ણિ, દસમભિર્ણિ) એવં દુવાલસ-ચત્વસ-સોલસ-અઢમાસ-માસ-દોમાસ-તિમાસ-ચત્વમાસ-પચમાસ-છમ્માસ મભિર્ણિ) ચતુર્થમભિક્તિક- જો એક ઉપવાસ કરને વાલે હૈ, પષ્ઠમભિક્તિક-દો ઉપવાસ કે કરને વાલે હૈ, અટ્થમભિક્તિક-ત્રીન ઉપવાસ કરને વાલે હૈ, દસમભિક્તિક-ચાર ઉપવાસ

રોહિણીપ્રજ્ઞપ્તિ આદિ વિદ્યાના વારડ દ્વારા જે સેવાયેલ છે, તથા “ ચતુર્થમ- ભિર્ણિ, છટ્થમભિર્ણિ, અટ્થમભિર્ણિ, દસમભિર્ણિ એવં દુવાલસ-ચત્વસ-સોલસ- અઢમાસ-માસ-દોમાસ-તિમાસ-ચત્વમાસ-પચમાસ-છમ્માસ મભિર્ણિ ” ચતુર્થ- ભક્તિ-જે એક ઉપવાસ કરનાર છે, પષ્ઠભક્તિ-જે બે ઉપવાસ કરનાર છે, અટ્થભક્તિ-ત્રણ ઉપવાસ કરનારા, દસભક્તિ-ચાર ઉપવાસ કરનારા, એજ પ્રમાણે દ્વાદશ-પાચ ઉપવાસ, ચતુર્દશ-છ ઉપવાસ, પોદશ-સાત ઉપવાસ, અને

દુઃશાસ-ચૌદસ-સોઠસ-અઢમાસ-માસ-દોમાસ-તિમાસ-ચૌમાસ - પચમાસ
 છમ્માસભક્તિર્ણિ' ૯૧ દ્વાદશચતુર્દશ પોડશા-માસ માસડિમાસત્રિમાસચતુર્માસપચ-
 માસપચમાસભક્તિર્ણિ:= દ્વાદશાદિ પચ્ચમાસાન્તમક્તતપશ્ચરણયુક્તૈ, તથા-' ઉક્લિ-
 ચચરણિ' ઉક્લિષ્તચરકૈ:=ઉક્લિષ્ત=ગૃહસ્થેન સ્વપ્રયોજનાય પારુપાત્રાદુદ્ધૃતમન્ય
 પાત્રાસ્થાપિતમેવાન્નાદિક ચરન્તિ+અભિગ્રહશિષેપાત્રાદુદ્ધૃતપણાય ગન્તુન્તીતિ ઉક્લિ-
 સ્તચરકાસ્તૈ:=દાયકેન પૂર્વમેવપાકભાજનાદુદ્ધૃતસ્ય ગોપકૈરિત્યર્થ', તથા 'નિક્લી-
 ચચરણિ' નિક્લિષ્તચરકૈ:-નિક્લિષ્ત=ગૃહસ્થેન સ્વાર્થે પારુપાત્રાદુદ્ધૃત્યાન્યપાત્રે
 સ્થાપિતમન્નાદિક ચરન્તિ=તથાવિધાભિગ્રહશાત્રદુદ્ધૃતપણાય ગન્તુન્તીતિ નિક્લિષ્ત
 ચરકાસ્તૈ=પારુપાત્રોદ્ધૃતાન્યપાત્રસ્થાપિતાદારગ્રહણાભિગ્રહવદ્ધિરિત્યર્થ'. તથા-
 'અતચરણિ' અન્તચરકૈ=અન્ત=નીરમ તક્રમિત્રિત પર્યુપિત ચ ચલ્લચળકાઘન્ન
 ચરન્તિ=ગવેપયન્તિ, યે તે તથા તૈસ્તથોક્તૈઃ અન્તાદારગ્રહણાભિગ્રહવદ્ધિરિત્યર્થ'. તથા-
 'પતચરણિ' પ્રાન્તચરકૈ:=પ્રાન્ત=પુરાણકુલત્વચલ્લગકાઘન્ન ચરન્તિ=
 ગવેપયન્તિ યે તે તથા તૈસ્તથોક્તૈઃ=પ્રાન્તાદારગ્રહણાભિગ્રહવદ્ધિરિત્યર્થ'. તથા-
 'લૂહચરણિ' રૂક્ષચરકૈ:=રૂક્ષભોજનગ્રહણાભિગ્રહવદ્ધિઃ, તથા- 'સમુદાણચરણિ'
 સમુદાનચરકૈ:=ઉચ્ચાવચકુલેષુ સામાન્યરૂપેણ ભિક્ષાગ્રહણશીલૈઃ, તથા-'અણગિ-
 લાઈણિ' અન્નગ્લાયકૈઃ-અન્નેન=અભિ યદ્ વિશેષાત્ પર્યુપિતાન્નભોજનેન ગ્વાય
 ક=ગ્લાનિમાપન્ન કુશ્વ ઇત્યર્થસ્તૈઃ. તથા-'મોળચરણિ' મૌનચરકૈઃ=મૌન-
 મૌનવ્રત તેન ચરન્તિ યે તે મૌનવ્રતકા, તથાવિધાભિગ્રહશાદ્ ભિક્ષાવિશુદ્ધિપ્રશ્ના-

કે કરને વાળે હૈં, હસી તરહ દ્વાદશ-પાચ ઉપવાસ, ચતુર્દશ-છહ ઉપ
 વાસ, પોડશ-સાત ઉપવાસ, એવ અઢ્ઢમાસ, માસ, ઢિમાસ, ત્રિમાસ,
 ચતુર્માસ, પચમાસ, પચ્ચમાસભક્તિ-છ મહીને કે ઉપવાસ કરનેવાળે હૈં
 ઉનકે દ્વારા યહ સેવિત હુઈ હૈ, તથા (ઉક્લિચચરણિ, એવ નિક્લિચચર-
 ણિ, અતચરણિ, પતચરણિ, લૂહચરણિ, સમુદાણિચરણિ, અણગિ
 લાઈણિ, મોળચરણિ) ઉક્લિષ્તચરક હૈ, નિક્લિષ્તચરક, અતચરક હૈ, પ્રાન્ત
 ચરક હૈ, રૂક્ષચરક હૈ, સમુદાનચરક હૈ, અન્નગ્લાયક હૈ, મૌનચરક હૈ,

અર્ધમાસ, માસ, બે માસ, ત્રણ માસ, ચાર માસ, પાચ માસ, અને પચ્ચમા
 સમક્તિક-છ માસના ઉપવાસ કરનારા દ્વારા તે સેવાયેલ છે તથા 'ઉક્લિચ
 ચરણિ, એવ નિક્લિચચરણિ, અતચરણિ, પતચરણિ, લૂહચરણિ, સમુદાયચર
 ણિ, અણગિલાઈણિ, મોળચરણિ" જે ઉક્લિષ્તચરક છે, જે નિક્લિષ્તચરક છે,
 જે અતચરક છે, જે પ્રાન્તચરક છે, જે રૂક્ષચરક છે, જે સમુદાનચરક છે, જે
 અન્નગ્લાયક છે, જે મૌનચરક છે તેઓના દ્વારા તે સેવાયેલ છે તથા "સસ-

તિરિક્ત મૌનમાધ્યાય સચરણશીલા., તથા-‘ સસટ્કપિણ્દિ ’ સસૃષ્ટકલ્પિકૈઃ-
 ‘ સમૃષ્ટેન હસ્તેન ભાજનેન ચ દીયમાનમન્નાદિ ગ્રાહ્ય ’ મિત્યેવરૂપઃ કલ્પ આચારો
 યેષા તે સસૃષ્ટકલ્પિકાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા-‘ તજ્જાયસસટ્કપિણ્દિ ’ તજ્જાતસસૃ
 ષ્ટકલ્પિકૈઃ=યત્પ્રકાર દેયદ્રવ્ય તજ્જાતેન-તત્પ્રકારેણ દ્રવ્યેણ સસૃષ્ટે હસ્તભાજને
 તાભ્યા દીયમાન ગ્રાહ્યમિત્યેવરૂપઃકલ્પઃ=સમાચારો યેષા તે તજ્જાતસસૃષ્ટકલ્પિ-
 કાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા ‘ ઉવનિહિયણ્દિ ’ ઉપનિહિતકૈઃ=ઉપનિહિત=દાયકેન સ્વય
 મોક્તુ સમીપે સ્થાપિતમ્, તેન ચરન્તિ ચે તે ઉપનિહિતકાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ તથા=
 ‘ સુદ્વેસણિણ્દિ ’ શુદ્વૈપણિકૈઃ-શઙ્કાદિદોષપરિહારતઃ પિણ્ડગ્રહણ શુદ્વૈપણા તદ્વન્તઃ
 શુદ્વૈપણિકાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા ‘ સસ્વાદત્તિણ્દિ ’ સસ્વાદત્તિકૈઃ=સસ્વાદપ્રધાનામિઃ
 પન્નપાદિપરિણામવ્રતીમિઃ દત્તિમિઃ સઙ્ક્રદ્મક્તાદિપાત્રપાતલક્ષણાભિશ્ચરન્તિ ચે તે
 સસ્વાદત્તિકાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા=‘ દિટ્ઠલામિણ્દિ ’ દિટ્ઠલામિકૈઃ=દૃષ્ટસ્ય=દૃષ્ટિ-
 ગોચરીભૂતસ્યૈવાન્નપાનાદે. લાભો યેષા તે દિટ્ઠલામિકાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા-
 ‘ અદિટ્ઠલામિણ્દિ ’ અદિટ્ઠલામિકૈઃ=અદૃષ્ટસ્યાપિ પારુગૃહમ-યાન્નિર્ગતસ્ય કર્ણાત્
 શ્રુતસ્ય ભક્તાદેરદૃષ્ટાદ્વા પૂર્વમનુપલબ્ધાદ્ દાયકાદ્ લાભો યેષામસ્તિ તેઽદિટ્ઠલા-
 મિકાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા=‘ પુટ્ટલામિણ્દિ ’ પૃષ્ઠલામિકૈઃ=પૃષ્ઠસ્ય=હે સાધો ! કિં
 તે દીયતે इत्यादि रूपेण प्रश्नविषयी कृतस्य यो भिक्षाप्राप्तिरूपी लाभस्तदाग्रह-
 ग्रहितैः, तथा-‘ आयविलिण्दि ’ आचामाम्लिकैः=आचामाम्लव्रतयुक्तैः, तथा—
 ‘ पुरिमट्टिण्दि ’ पूर्वार्द्धिकैः=पारणायामपि पूर्वार्द्धदिनेऽशनपानादि प्रत्याख्यान-
 शीलैः, तथा-‘ एकासणिण्दि ’ एकाशनिकैः, पारणायामपि एकाशनव्रतधारिभिः,

उनके द्वारा सेवित है । तथा (ससट्कपिण्दि, तज्जायससट्कपिण्दि, उवनिहिण्दि, सुद्वेसणिण्दि, सस्वादत्तिण्दि, दिट्ठलामिण्दि, अदिट्ठला-
 मिण्दि, पुट्टलामिण्दि, आयविलिण्दि, पुरिमट्टिण्दि) ससृष्टकल्पिक हैं,
 तज्ज्यातससृष्टकल्पिक है, उपनिहितक है, शुद्वैपणिक है, सस्वादत्तिक
 है, दृष्टिलाभिक है, अदृष्टिलाभिक है, पृष्ठलाभिक हैं, आचामाम्लव्रत-
 युक्त हैं, पूर्वार्द्धिक है, उनके द्वारा यह अहिंसा पाली गई है । तथा
 (एकामणिण्दि, निव्विण्दि, भिन्नपिंडवाइण्दि, परिमियपिंडवाइण्दि-

ટુકથિણ્દિ, તજ્જાયસસટ્ક કપિણ્દિ, ઉવનિહિણ્દિ, સુદ્વેસણિણ્દિ, સસ્વાદત્તિણ્દિ
 દિટ્ઠલામિણ્દિ, અદિટ્ઠલામિણ્દિ, પુટ્ટલામિણ્દિ, આયવિલિણ્દિ પુરિમટ્ટિણ્દિ ” એ
 સસૃષ્ટ કલ્પિક છે તજ્જાત સસૃષ્ટ કલ્પિક છે, ઉપનિહિતક છે, શુદ્વૈપણિક
 સસ્વાદત્તિક છે દિટ્ઠલામિક છે, અદિટ્ઠલામિક છે, પૃષ્ઠલામિક છે, આચામામ્લ
 વ્રત યુક્ત છે પૂર્વાર્દ્ધિક છે, તેમના દ્વારા આ અહિંસા પાળવામા આવે છે તથા
 " એકાસણિણ્દિ, નિવ્વિણ્દિ, ભિન્નપિંડવાઈણ્દિ, પરિમિયપિંડવાઈણ્દિ, અતાહરેદિ,

તથા-‘ નિવિષ્ણુર્હિ ’ નિર્વિષ્ણુત્ત્વે-નિર્વિષ્ણુત્ત્વો ધૃતાદિપદાર્થે-ન્યો નિર્ગતા યે તે નિર્વિષ્ણુત્ત્વસ્તથોક્તૈઃ-નિર્વિષ્ણુત્ત્વપ્રત્યાખ્યાનશીલૈરિત્યર્થઃ, તથા ‘ મિન્નપિન્ડવાદ-ર્હિ ’ મિન્નપિન્ડપાતિકૈઃ-મિન્નસ્ય=નુદિતસ્ય પિન્ડસ્ય=સત્કૃત્વાદિરપ્યસ્ય મોદ-કસ્ય સ્વતો મિન્નાત્ પિન્ડાત્ યઃ પાતઃ-પાત્રે પતન યેષા તે મિન્નપિન્ડપાતિકા સ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા ‘ પરિમિતપિન્ડવાદર્હિ ’ પરિમિતપિન્ડપાતિકૈઃ-પરિમિતો દ્રવ્યાદિઃ પિન્ડપાતો મત્કાદિલાભો યેષામસ્તિ, તે પરિમિતપિન્ડપાતિકાસ્તૈસ્તથો-ક્તૈઃ, તથા-‘ અન્તાહારેહિ ’ અન્તાહારૈઃ=અન્ત=નીરસ તત્ક્રમિતપર્યુપિત ચ વલ્લ-ચળકાચનપ્રાહરન્તિ યે તે તૈઃ, તથા-‘ પતાહારેહિ ’ પ્રાન્તાહારૈઃ=પ્રાન્ત=પુરાતન કુલ્થચલ્લચગ્નચન્નમ્ આહરન્તિ યે તે તૈઃ, તથા-‘ અરસાહારેહિ ’ અરસાહારૈઃ=અરસો રસવર્જિત આહારો યેષા તેડરસાહારાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ-દિગ્ગાદિ સસ્કાર-વર્જિતાહારગ્રહણયદ્ધિઃ, તથા-‘ વિરસાહારેહિ ’ વિરસાહારૈઃ-વિરસ=વિગતરસ પુરાણધાન્યૌદનાદિ આહરન્તીતિ વિરસાહારાસ્તૈઃ, ‘ લૂહાહારેહિ ’ લૂહાહારૈઃ=લૂહ-ધૃતાદિવર્જિતમાહરન્તીતિ લૂહાહારાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ, તથા ‘ તુચ્છાહારેહિ ’ તુચ્છાહારૈઃ=તુચ્છ=ચૂર્ણાદિક કુલ્થકોદ્રાદિક ચ આહરન્તિ યે તે તુચ્છાહારાસ્તૈઃ, તથા-‘ અતજીવીર્હિ ’ અન્તજીવિમિ-અન્તેન જીવન્તિ યે તેડન્તજીવિનસ્તૈઃ, ‘ પતજીવિર્હિ ’ પ્રાન્તજીવિમિ. ‘ લૂહજીવિર્હિ ’ લૂહજીવિમિઃ=‘ તુચ્છજીવિર્હિ ’ તુચ્છજીવિમિ, તથા ‘ ઉપશન્તજીવિર્હિ ’ ઉપશન્તજીવિમિ.-અજ્ઞાતીના પ્રાપ્તાવ-અન્તાહારેહિ, પતાહારેહિ, અરસાહારેહિ, વિરસાહારેહિ, લૂહાહારેહિ, તુચ્છા-હારેહિ, અતજીવિર્હિ, પતજીવિર્હિ, લૂહજીવિર્હિ, તુચ્છજીવિર્હિ, ઉપશન્ત-જીવિર્હિ, પશ્ચન્તજીવિર્હિ, વિવિક્તજીવિર્હિ, અક્ષીરમધુસપ્િર્હિ, અમજ્જ-મસાસિર્હિ) ણકાશનિક હૈ, વિકૃતિપ્રત્યાખ્યાનશીલ હૈ, મિન્નપિન્ડપાતિક-હૈ, પરિમિતપિન્ડપાતિક હૈ, અન્તાહાર વાલે હૈ, પ્રાન્તાહાર વાલે હૈ, અર-સાહાર વાલે હૈ, વિરસાહાર વાલે હૈ, લૂહ આહાર કરને વાલે હૈ તુચ્છા-હાર વાલે હૈ, અતજીવી હૈ, પ્રાન્તજીવી હૈ, લૂહજીવી હૈ, તુચ્છ જીવી હૈ, ઉપશન્ત જીવી હૈ પ્રશન્ત જીવી હૈ, વિવિક્ત જીવી હૈ, અક્ષીર મધુસ-

પતાહારેહિ અરસાહારેહિ, વિરસાહારેહિ, લૂહાહારેહિ, તુચ્છાહારેહિ, અતજીવિર્હિ, પતજીવિર્હિ, લૂહજીવિર્હિ, તુચ્છજીવિર્હિ, ઉપશન્તજીવિર્હિ, પશ્ચન્તજીવિર્હિ, વિવિક્ત-જીવિર્હિ, અક્ષીરમધુસપ્િર્હિ, અમજ્જ-મસાસિર્હિ ” એ એકાશનિક છે, વિકૃતિ પ્રત્યાખ્યાનશીલ છે, મિન્નપિન્ડ પાતિક છે, પરિમિતપિન્ડ પાતિક છે, અન્ત-હાર વાળા છે, પ્રાન્તાહાર વાળા છે, અરસાહારવાળા છે વિરસાહાર વાળા છે, લૂહ આહાર કરનારા છે, તુચ્છ આહાર કરવા વાળા છે, અન્તજીવી છે, પ્રાન્તજીવી છે, લૂહજીવી છે, તુચ્છજીવી છે, ઉપશન્તજીવી છે, પ્રશન્તજીવી છે.

પ્રાપ્તૌ ચ સત્યાપુપશા નતયા જીવનિ યે તે ઉપગાન્તજીવિનસ્તૈસ્તયોક્તૈ રહિ-
 ધૃત્યાપ્દનચમુરુરાત્નીનામગ્ન્યનત્વમુપશાન્તમ્ । તયા ' પમતજીવિર્હિ ' પ્રશાન્ત-
 જીવિભિઃ-અન્તર્દૃશ્યા ક્રોધાદીનામુપગમન પ્રશાન્તત્વમ્ । તયા-' વિપ્રિત્તજીવિર્હિ '
 વિવિક્તજીવિભિઃ=વિપ્રિક્તે દોષરર્પિતૈસ્થાદિભિર્નીયન્તિ યે તે વિવિક્તજીવિનસ્તૈ-
 સ્તથોક્તૈઃ, તયા-' અચીરમધુસર્પિર્ણિ ' અચીરમધુસર્પિકૈ-ધ્નઃકીર=કુચ, મધુ-
 ગર્જરાદિમધુસ્રવ્યમ્, મર્પિ=ઘૃતમ્, एतानि न सन्ति अशनतया येपा तेऽचीरमधुस
 र्पिष्मस्तेस्तथोक्तः, તયા-' અમઙ્ગમસાસિર્ણિ ' અમઘમાસાગિકૈઃ-મઘમાસ ચ
 યેપાસાહારો નાસીતિ ભાવ, મામાહારર્પિકૈનયા 'ઠાણાઙ્ગર્ણિ' સ્થાનાતિગેઃ=સ્થાન=
 કાયોત્સર્ગાદિસ્મતિશયેન ગન્ઙન્તિ=પ્રાપ્નુવન્તિ યે તે સ્થાનાતિગાઃ કાયોત્સર્ગકા-
 રિણસ્તૈ ' પઙ્કિમટ્ટાઙ્ગર્ણિ ' પ્રતિમાસ્થાયિકૈ-પ્રતિમયા = એકરાત્રિકયાદિકયા
 કાયોત્સર્ગવિશેષેણ તિષ્ઠન્તીત્યેવ શીલ્યા યે તે પ્રતિમાસ્થાયિનસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ,
 તયા ' ઠાણુકકુટ્ટિર્ણિ ' સ્થાનુત્કુટ્ટિકૈ=સ્થાનમુત્કુટ્ટુક વેપા તે સ્થાનોત્કુટ્ટુકાસ્તૈસ્ત-
 થોક્તૈ, તયા-' વીરાસણિર્ણિ ' વીરાસનિકૈ=સિંહારાનોપરિષ્ઠસ્ય ધ્રુવિન્યસ્તપા-
 દસ્ય અપનોતર્પિહાસનસ્યેવ યદ્વચ્ચાન તદ્ વીરાસન, તદસ્તિ યેપા તે વીરાસ-
 નિકાસ્તૈ, તયા-' જેસઙ્ગિજ્ઞર્ણિ ' નૈપધિકૈ, નિપધા=સમપુતતયાડવસ્થાન, તયા
 ચરન્તિ યે તે નૈપધિશસ્તૈસ્તથોક્તૈ તયા-હટ્ટાઙ્ગર્ણિ ' દળ્ઘાયતિકૈઃ=દળ્ઘા ઇવ
 ધ્રુવસ્તતયા આયત ગરીર દળ્ઘાયત તદસ્તિ યેપા તે દળ્ઘાયતિકાસ્તૈસ્તથોક્તૈઃ,
 દળ્ઘાસનકારિભિસ્તિયર્થ, તયા-' લગળ્ઘસાઙ્ગર્ણિ ' લગળ્ઘસાઙ્ગિકૈ=લગળ્ઘ=વક્ત્ર-
 ણાળ, તદ્ગત્ મસ્તકસ્ય પાપ્ગીના ' ઇટ્ટી ' ઇતિ લોકપ્રસિદ્ધાના ચ ધ્રુવિલગ્નેન

પિંક હૈ અમઘમાસાશિક (મઘમાસાદિક કા સેવન નહી કરનેવાલે)
 હૈ હન્નેને ઉનકા સેવન ક્રિયા હૈ । તથા જો (ઠાણાઙ્ગર્ણિ, પઙ્કિમટ્ટાઙ્ગર્ણિ,
 ઠાણુકકુટ્ટિર્ણિ વીરાસણિર્ણિ, જેસઙ્ગિજ્ઞર્ણિ હટ્ટાઙ્ગર્ણિ, લગળ્ઘસાઙ્ગર્ણિ,
 ણગપાસગોર્ણિ, આયાવર્ણિ, અપ્પાવર્ણિ, અણિટ્ટમર્ણિ અકુટ્ટુયર્ણિ, ધ્રુય
 કેસમંસલોમનહેર્ણિ, મન્વગાયપઙ્કિકમ્મવિપ્પમુલ્લકેર્ણિ સમણુચિન્ના) સ્થાના-
 તિગ હૈ, પ્રતિમાસ્થાયિક હૈ, સ્થાનોત્કુટ્ટિક હૈ, વીરાસનિક હૈ, નૈપધિક
 હૈ, દળ્ઘાયતિક હૈ, લગળ્ઘસાઙ્ગિક હૈ, એપાર્થક હૈ, આતાપક હૈ, અપ્રાવૃત

છવી છે, અક્ષીઃ મધુ સર્પિઃ ૭ અમઘમાનાગિઃ ૭, તેમણે તેનુ સેવન કર્યું
 છે તથા ૭ ' ઠાણાઙ્ગર્ણિ, પઙ્કિમટ્ટાઙ્ગર્ણિ ઠાણુકકુટ્ટિર્ણિ, વીરાસણિર્ણિ, જેસઙ્ગિજ્ઞર્ણિ,
 હટ્ટાઙ્ગર્ણિ, લગળ્ઘસાઙ્ગર્ણિ ણગપાસગોર્ણિ આયાવર્ણિ, અપ્પાવર્ણિ અણિટ્ટમર્ણિ અકુટ્ટુ-
 યર્ણિ, ધ્રુયકેસમસલોમનહેર્ણિ, મન્વગાયપઙ્કિકમ્મવિપ્પમુલ્લકેર્ણિ સમણુચિન્ના " સ્થાના-
 તિગ છે, પ્રતિમાસ્થાયિક છે સ્થાનોત્કુટ્ટિક છે, વીરાસનિક છે, નૈપધિક છે,
 છે, દળ્ઘાયતિક છે, લગળ્ઘસાઙ્ગિક છે, એપાર્થક છે, આતાપક છે, અપ્રાવૃત

પ્રકાર કોષ્ઠ-ગ્રોઠી મે પ્રશ્નિત અનાજ ઘટત સમયતક મુરશ્ચિત રહા કરતા હૈં ઉમી પ્રકાર પ્રાપ્ત ઉમ લગ્નિ કે પ્રભાવ સે અવગત મુચ્ચ ઓર અર્થ યે દોનો ઘટત સમય તક મુનિજનો કો ગરણાસ્થ મે મ્થિર રહતે હૈં-વે ઉન્હેં વિસ્મૃત નહોં હોતે । યહ બુદ્ધિ જિન મુનિજનો કો પ્રાપ્ત હો જાતી હૈં વે કોષ્ઠબુદ્ધિ કે ગમી મુનિજન હૈં । મુદ્રાવચ્ચ રુપ ણક હી પદ કે ઉપલબ્ધ હોને પર જો સૈકહોં પદોં કા અનુનરણ કર લેતે હૈં વે મુનિ જન પદાનુસારી લબ્ધિ કે ધારી રહે જાતે હૈં । જિત લગ્નિ સે ણક હી કિસી ઇન્દ્રિય સે મુનિજન સર્વેન્દ્રિયગમ્ય વિષયો કો જ્ઞાન હેતે હૈં ઉસ લબ્ધિ કા નામ સમિન્નશ્રોતસૂ હૈં । યહ લગ્નિ જિન મુનિજનો કો પ્રાપ્ત હોતી હૈં વે મુનિજન સમિન્નશ્રોતા હૈં । આચારાંગ આદિ મુદ્રો કે પાઠી જો મુનિજન હોતે હૈં વે શ્રુતધર કહે જાતે હૈં । અનેક પ્રકાર કે પરીપહ ઓર ઉપસર્ગોં કે આત્મે પર મી જિન મુનિજનોં કા મન ધર્મ સે યોદ્ધા સા મી વિચલિત નહીં હોતા હૈં ઉનકા નામ મનોવલ્લિક હૈં । જો મુનિ જન અપની વાણી કે દ્વારા દુર્ગદિયોં દ્વારા પ્રરૂપિત મિથ્યાપ્રરૂપણાઓં કો ધ્વસ્ત કરને મેં સમર્થ થનતે હૈં ઉન મુનિયો કો વચોવલ્લિક કહા જાતા હૈં । જો મુનિજન કઠિન સે કઠિન પરીપહ ઓર ઉપસર્ગોં કો સહન કર-નેમેં શક્તિ શાલી હોતે હૈં વે કાયવલ્લિક હૈં । મત્યાદિ જ્ઞાન સે જિનકા

મુરશ્ચિત રહે છે તેમ પ્રાપ્ત થયેલી આ લબ્ધિના પ્રભાવથી અવગતસૂત્ર અને અર્થ તે બંને ઘણા અમય મુધી મુનિજનોને ધારણા ઉપે મ્થિર રહે છે-તેમને તે ભૂલતો નથી આ બુદ્ધિ જે મુનિજનોને પ્રાપ્ત થાય છે તેઓ કોષ્ઠબુદ્ધિના ધારક મુનિવરો છે સૂત્રના અવયવરૂપ એક જ પદ ઉપલબ્ધ થતા જેઓ સેકડો પદોનુ અનુસરણ કરી લે છે, તેવા મુનિજનોને પદાનુસારીલબ્ધિના ધારક કહેવાય છે જે લબ્ધિના પ્રભાવથી કોઈ એક જ ઇન્દ્રિય વડે મુનિજન સર્વેન્દ્રિયગમ્ય વિષયોને બાણી લે છે તે લબ્ધિનુ નામ સમિન્નશ્રોતસૂ છે આ લબ્ધિ જે મુનિજનોને પ્રાપ્ત થાય છે તે મુનિજન સમિન્નશ્રોતા કહેવાય છે, આચારાંગ આદિ સૂત્રોનુ પઠન કરનારા જે મુનિજન હોય છે તેમને શ્રુતધર કહે છે અનેક પ્રપરના પરીપહ અને ઉપસર્ગોં નડવા છતાં પણ જે મુનિજ નોનુ મન ધર્મમાથી તલભાર પાપુ વિચલિત થતુ નથી તેમને મનોવલ્લિક કહે જે મુનિજનો દુર્ગદીઓ દ્વારા પ્રરૂપિત મિથ્યા પ્રરૂપણાઓનુ ખડન કરવાને સમર્થ થાય છે તે મુનિવરોને વચોવલ્લિક કહે છે જે મુનિજનો આક્રમમા આક્રમ પરીપહોને ઉપસર્ગોંને સહન કરવાને શક્તિમાન હોય છે તેઓ

આત્મવલ્લ ચઢાવદા હોતા હૈં વે જ્ઞાનવલિક હૈં । નિઃશક્તિ આદિ અપને અર્ગોં સે યુક્ત જિનકા તત્ત્વશ્રદ્ધાનરૂપ દર્શન હોતા હેં ઓર ઇસ દર્શન સે જિનકી આત્મા ચલિઠ બની રહતી હૈં વે દર્શનવલિક હેં । પદ્મનાય કે જીવોં કા સરક્ષણ કરના ઇસકા નામ સયમ હૈં, ઇસ સયમરૂપચારિત્ર કે વલ સે જિનકી આત્મા વલશાલી હોતી હેં વે ચારિત્રવલિક હ । જિનકે મુખ સે નિકલા હુઆ વચન સુનતે હી મન ઓર શરીર કો સુખોત્પાદક હોતા હૈં વે ક્ષીરાસ્રવલઘ્નિ કે ધારી મુનિજન હૈં । મિસરી આદિ મિષ્ટ દ્રવ્ય સે भी અધિક મિષ્ટ-મધુ શરદ હોતા હૈં, શરદ જેસા મીઠા જો વચન નિકાલતે હેં ઘોલતે હૈં વે મધ્વાસ્રવ લઘ્નિ કે ધારી મુનિજન કહલાતે હૈં । સર્પિરાસ્રવલઘ્નિ કે પ્રભાવ સે મુનિજનો કા વચન અત્યતસુરભિ-યુક્ત એવ સ્નેહયુક્ત ઘૂત કે જેસા ઘોલને પર સુનને વાગોં કો લગતો હૈં । મહાનસ શબ્દ કા અર્થ ભોજન બનાને કા સ્થાન હૈં, ડસકે આશ્રિત હોને સે ભોજન કો भी મહાનસ કહતે હૈં । જિનમુનિજનો કો યહ અક્ષીણ-મહાનસ નામકી લઘ્નિ ઉત્પન્ન હો જાતી હૈં ડનકે અસાધારણ, અન્તરાય કે ક્ષયોપશમ સે અલ્પમાત્ર भी પાત્રપતિત અન્ન ગૌતમાદિક ઋપિયોં કી તરહ એક લાખ વ્યક્તિયોં કો દે દેને પર भी જ્ય તક યહ સ્યય ન લાલેવે

કાયવલિક કહેવાય છે મત્યાદિ જ્ઞાનથી જેનુ આત્મભળ વૃદ્ધિ પામ્યુ હોય છે તેમને જ્ઞાનવલિક કહે છે, નિશક્તિ આદિ અર્ગો વડે યુક્ત જેમનુ તત્ત્વ શ્રદ્ધાનરૂપ દર્શન હોય છે અને એ દર્શનથી જેમનો આત્મા યજ્ઞવાન બનેલા હોય છે તેવા મુનિવરને દર્શનવલિક કહે છે છઠાંયના છવેનુ રક્ષણ કરવુ તે સયમ કહેવાય છે તે સયમરૂપ ચારિત્રના યજ્ઞથી જેમનો આત્મા યજ્ઞવાન હોય છે તેમને ચારિત્રવલિક કહે છે જેમના મુખમાથી નીકળેલ વચન સાભ-ળતા જ મન અને શરીરને સુખ થાય છે તેમને ક્ષીરાસ્રવલઘ્નિ ધારી મુનિ કહેવાય છે માકર વગેરે મિષ્ટ દ્રવ્યો કરતા પણ વધારે મિષ્ટ મધ હોય છે મધ જેવા મીઠા વચન જે બોલે છે તેવા મુનિજનોને મધ્વાસ્રવલઘ્નિ ધારક કહેવાય છે સર્પિરાસ્રવલઘ્નિના પ્રભાવથી મુનિજનોના વચન અત્યત સુરભિ વાળા તથા સ્નિગ્ધ ધીના જેવા શ્રોતાજનોને લાગે છે મહાનસ શબ્દનો અર્થ ભોજન બનાવવાનુ સ્થાન છે, તેનુ આશ્રિત હોવાથી ભોજનને પણ મહાનસ કહે છે જે મુનિજનોને આ અક્ષીણમહાનસ નામની લઘ્નિ ઉત્પન્ન થાય છે તેમના અસાધારણ અન્તરાયના ક્ષયોપશમથી સહેજ પણ પાત્રમા પડેલુ અન્ન ગૌતમાદિ ઋપિયોની જેમ એક લાખ વ્યક્તિઓને આપી દેવા છતા પણ ન્યા સુધી તેઓ પોતે ખાઈ લેતા નથી ત્યા સુધી પૂરૂ થતુ નથી તેનો ભાવાર્થ

તપત્તક સમાપ્ત નહીં હોતા છે । તાત્પર્યે ઉસકા યદ્દ છે કિ હમ લલ્લિધારી મુનિજનોં કે પાત્ર મેં દિયા ધોદા મી અન્ન લાગ્યોં મુનિજન મી ઉસસે આહાર કર લે વેં પરન્તુ યદ્દ તપત્તક સમાપ્ત નહીં હોતા છે કિ જયતક વદ્દ લલ્લિધારી ઉસે રખય નહીં ચા લેતા છે । હમી પ્રકાર હસકે દાતા કે વિષય મેં મી સમક્ષ લેના ધ્વાલિયે । યદ્દ લલ્લિ ગૌતમાદિ ઋષિ જનોં કો ધી । ચારણલલ્લિ કા યદ્દ મતલબ છે કિ જિસ લલ્લિ કે પ્રભાવ સે આકાશ મેં મુનિજનોં કા આના જાના હોતા છે । ચરણ-ગમન-યદ્દ ગમન જિનકે હોતા છે ઉનકા નામ ચારણ છે । હમ લલ્લિ કે ધારી મુનિજન દો પ્રકાર કે હોતે હેં-(૧) વિગ્રાચારણ (૨) જગાચરણ । જિન્હેં વિગ્રા કે ઘલ સે યદ્દ આકાશ મેં ગમનાગમનરૂપલલ્લિ ઉત્પન્ન હોતી છે વે વિગ્રાચારણ મુનિજન છે । યદ્દ લલ્લિ ઉન મુનિરાજોં કો ઉત્પન્ન હોતી છે જો નિરન્તર પઠ્ઠ પઠ્ઠ કી તપશ્ચર્યા કરતે રહતે હેં । તથા જો મુનિ ચારિત્રરૂપ તપવિશેષ કે પ્રભાવ સે એમી લલ્લિ સપન્ન થન જાતે હેં કિ વે જગા કે ઉપર દાથ રખતે હી આકાશ મેં ઉડ જાતે હેં, હસી લલ્લિ કા નામ જગા ચારણ છે । યદ્દ લલ્લિ ઉન મુનિરાજોં કો પ્રાપ્ત હોતી હેં જો નિરન્તર અષ્ટમ અષ્ટમ કી તપસ્યા કરતે હેં । હનમેં જો વિગ્રાચારણ મુનિજન હોતે હેં વે હસકે ઘલ પર જમૂદીપ કી અપેક્ષા સે આઠવાં

એ છે કે આ લલ્લિધારી મુનિવરોના પાત્રમા પડેલ અન્ન, તેમાથી લાખો મુનિજનો આહાર લે તો પણ બધા મુધી તે લલ્લિધારી મુનિ પોતે જ તે ખાઈ જતા નથી ત્યા મુધી તે સમાપ્ત થતુ નથી આ પ્રમાણે તેના દાતાને વિષે પણ સમજ લેવુ આ લલ્લિ ગૌતમાદિ ઋષિજનોને પ્રાપ્ત થયેલ હતી “ચરણલલ્લિ” એવા પ્રકારની લલ્લિ છે કે જેના પ્રભાવથી મુનિજનો આકાશમા અવર જવર કરી શકે છે, ચરણ-ગમન-તે ગમન- તે જેમણે હોય છે તેમને ચારણ કહે છે આ લલ્લિધારી જે પ્રકારના મુનિજન છે (૧) વિગ્રાચરણ (૨) જગાચરણ જેમને વિદ્યાના પ્રભાવથી આકાશમા ગમનાગમતરૂપ લલ્લિ પ્રાપ્ત થાય છે તેઓ “વિગ્રાચારણ” મુનિજન કહેવાય છે આ લલ્લિ નિરન્તર છંદ, છંદની તપસ્યા કરનાર મુનિજનોને પ્રાપ્ત થાય છે તથા જે મુનિયો ચારિત્રરૂપ તપ વિશેષના પ્રભાવથી એવી લલ્લિચુક્ત થઈ જાય છે કે તેઓ જગા પર હોય મૂકતા જ આકાશમા ઉડી જાય છે, એ લલ્લિનુ નામ જગા ચારણ છે નિરન્તર આઠમ આઠમની તપસ્યા કરનાર મુનિજનોને આ લલ્લિ પ્રાપ્ત થાય છે તેઓમા જેઓ વિગ્રાચારણ મુનિજન છે તેઓ તેના પ્રભાવથી જ જમૂદીપની અપેક્ષાએ આઠમા જે નદીશ્વર નામનો દીપ છે ત્યા મુધી જઈ

જો નદીશ્વર નામ કી દ્વીપ હૈ વહા તક આ જા સકતે હૈ । તથા જો-
જઘાચારણ મુનિજન હૈ વે તેરહવા દ્વીપ જો રુચકવર દ્વીપ હૈ વહા તક
આ જા સકતે હૈ । વિદ્યાચરણ પ્રથમ ઉડાન મૈ માનુષોત્તરપર્વત તક ચલે
જાતે હૈ, ઔર દૂસરી ઉડાન મે નદીશ્વર દ્વીપ તક, ફિર વે જગ્ર વહા સે
હોતે હૈ તો ંક હી ઉડાન મૈ અપને સ્થાન પર વાપિસ આજાતે હૈ । તથા
મેરુ પર જાતે દુષ વે પ્રથમ ઉત્પાત સે નદનવન તક જાતે હૈ ઔર દ્વિતીય
ઉત્પાત સે પળ્લરુ વનતક જાતે હૈ, ફિર વે જગ્ર વહાં સે વાપિસ હોતે હૈ
તો ંક હી ઉત્પાત મે અપને સ્થાન પર આ જાતે હૈ । જઘાચારણ જો મુનિ-
જન હોતે હૈ વૈ જગ્રદ્વીપ કી અપેક્ષા ંક હી ઉડાન મૈ તેરહવૈ રુચકવર
દ્વીપ મૈ પહુચ જાતે હૈ, ઔર વહા સે વાપિસ હોતે સમય ંક હી ઉડાન
મૈ નદીશ્વરદ્વીપ મૈ આ જાતે હૈ । ઔર દૂસરી ઉડાન મૈ અપને સ્થાન પર
આ પહુચતે હૈ । યદિ વે સુમેરુપર્વત પર જાને કે અભિલાષી હોતે હૈ તથ
પ્રથમ ઉત્પાતમે પલ્લરુવન મૈ જાતે હૈ । ફિર વાપિસ હોતે સમય ંક હી
ઉત્પાત સે નદનવન મૈ ઔર દ્વિતીય ઉત્પાતમૈ અપને સ્થાન પર આ જાતે
હૈ । રોહિણી પ્રજ્ઞસિ આદિ વિદ્યાંકે કે જો ધારણ કરને વાલે હોતે હૈ વે
વિદ્યાધારક હૈ । ંક ઉપવાસ કા નામ ચતુર્થભક્ત, દો ઉપવાસ કા નામ
પળ્લભક્ત, ત્રીન ઉપવાસકા નામ અળ્લભક્ત, ચાર ઉપવાસ કા નામ દશ-

આવી શકે છે, તથા જે જઘાચરણ મુનિજનો છે તેઓ તેરમો રુચકવર નામનો
દ્વીપ છે ત્યાં સુધી જઈ ગાવે શકે છે વિદ્યાચરણ પહેલા ઉડ્યનમા માનુષોત્તર પર્વત
સુધી આવ્યા બાદ છે, બીજા ઉડ્યનમા નદીશ્વર દ્વીપ સુધી બાંધ છે પછી ત્યારે
તેઓ ત્યાંથી પાછા ફરે છે ત્યારે એક જ ઉડ્યનમા પોતાના સ્થાને આવી બાંધ
કરે તથા મેરુ જતા તેઓ પહેલા ઉડ્યનમા નદનવન સુધી બાંધ છે અને
બીજા ઉડ્યને પડક વન સુધી બાંધ છે પછી ત્યારે તેઓ ત્યાંથી પાછા આવે
છે ત્યારે એક જ ઉડ્યનમા પોતાના સ્થાને આવી બાંધ છે જઘા
ચરણ મુનિજન જગ્રદ્વીપની અપેક્ષાએ એક જ ઉડ્યનમા તેરમા રુચકવર
દ્વીપમા પહોંચી બાંધ છે, અને ત્યાંથી પાછા ફરતા એક જ ઉડ્યને તેઓ
નદીશ્વર દ્વીપમા આવી બાંધ છે અને બીજા ઉડ્યને પોતાને સ્થાને પહોંચી
બાંધ છે જે તેઓ સુમેરુ પર્વત પર જવાની ઈચ્છા કરે તો પહેલા ઉત્પાતથી
પડક વનમા બાંધ છે, પછી પાછા ફરતી વખતે એક જ ઉત્પાતે નદનવનમા
અને બીજે ઉત્પાતે પોતાના સ્થાનમા આવી બાંધ છે રોહિણી પ્રજ્ઞસિ આદિ
વિદ્યાઓ ધારણ કરનારને વિદ્યાધારક કહે છે એક ઉપવાસને ચતુર્થભક્ત, જે
ઉપવાસને પળ્લભક્ત, ત્રણ ઉપવાસને અળ્લભક્ત, ચાર ઉપવાસને દશભક્ત,

મમ્ભક્ત, પાંચઉપવાસ કા નામ દ્વાદશ મમ્ભક્ત, ૬૪ ઉપવાસ કા નામ ચતુર્દશ મમ્ભક્ત, સાત ઉપવાસ કા નામ પોઠગ મમ્ભક્ત, હૈ। इन उपवासों को जो मुनिजन करते हैं वे चतुर्थ भक्तिक आदि मुनिजन हैं। इसी तरह जो अर्धमास आदिके उपवासों को करते हैं वे अर्धमास आदि भक्तिक हैं। जो मुनिजन इस प्रकार का अभिग्रह विशेष धारण कर लेते हैं कि हम उसी आहार को लेंगे कि जो आहार गृहस्थ ने अपने प्रयोजन के लिये पाकपात्र से उठाकर दूसरे पात्र में नहीं रखा होगा। इस प्रकार का अभिग्रह पढ़ होकर जो आहार की गवेषणा करने के लिये अपने स्थान से वृत्ति रमन करते हैं वे उत्क्षिप्त चरक मुनिराज हैं। तथा जो इस प्रकार का अभिग्रह करके आहार लेने के लिये अपने स्थान से जाते हैं कि मैं वही आहार ग्रहण करूंगा जो गृहस्थ ने अपने लिये पाक पात्र से निकाल कर दूसरे पात्र में रखा होगा। इस प्रकार के अभिग्रह को धारण कर जो आहार की गवेषणा करने के लिये अपने स्थान से बाहर भ्रमण करते हैं वे निक्षिप्तचरक हैं। तथा जो मुनिजन अन्त-नीरस, तक्रडाठमिश्रित और पर्युपित (वासी) बह्म, चणक-चना आदि

પાચ ઉપવાસને દ્વાદશભક્ત, ૬૪ ઉપવાસને ચતુર્દશભક્ત, સાત ઉપવાસને પોઠ પલક્ત, કહે છે એ ઉપવાસો કરનાર જે મુનિજનો છે તે ચતુર્ભક્તિ આદિ મુનિજનો કહેવાય છે એ જ પ્રમાણે જે અર્ધમાસ આદિ સમયના ઉપવાસો કરે છે તેમને અર્ધમાસમક્તિક આદિ કહે છે જે મુનિજન એવા પ્રકારનો અભિગ્રહ ધારણ કરે છે કે અમે એવો જ આહાર લઈશું કે જે ગૃહ-થે-પોતાના ઉપયોગને માટે રાધવાના વાસણમાંથી લઈ ને બીજા પાત્રમાં નહીં રાખ્યો હોય આ પ્રમાણે અભિગ્રહ બાધીને જે આહારની શોધમાં પોતાને સ્થાનેથી બહાર નીકળે છે તેમને વક્ષિસ્તચરક મુનિરાજ કહે છે તથા જે મુનિ રાજ એવા પ્રકારનો અભિગ્રહ ધારણ કરીને પોતાને સ્થાનેથી આહાર લેવા નીકળે છે કે “હું એવો જ આહાર વહોરીશ કે જે ગૃહસ્થે રાધવાના પાત્ર માંથી પોતાના ઉપયોગ માટે બીજા પાત્રમાં કાઢી રાખ્યો હોય આ પ્રકારનો અભિગ્રહ કરીને જે આહારની શોધ કરવાને માટે પોતાને સ્થાનેથી બહાર નીકળે છે તે મુનિજન નિક્ષિપ્તચરક કહેવાય છે તથા જે મુનિરાજ અન્ત-નીરસ છાશમિશ્રિત અ... સી વ.લ, ચણક-ચણા આદિ આહાર

આહાર લેને કા અભિગ્રહ ધારણ કર ઉમકી ગવેપગા કરતે હૈં વે અન્ત-
ચરક હૈં । ત ગ પ્રાન્તચરક વે મુનિરાજ હૈં જો પુરાને વલ્લ, ચળક ંવ
કુલત્થી આદિ અન્ન કો લેને કા અભિગ્રહ વદ્દ હોકર ગોચરી કરતે હૈં ।
તથા જો રુક્ષ ભોજન હી મૈં લૂગા, ડસ પ્રકાર કી પ્રતિષ્ઠા ધારણ કરતે
હૈં । જો ઝંચે નીચે કુલોં મે સામાન્ય રૂપ સે મિક્ષા પ્રવ્ણ કરને કે
સ્વભાવવાલે હોતે હૈં વે સમુદાનચરક હૈં અન્નગ્લાયક-અન્નસે, અર્થાત્
અભિગ્રહ વિગોપ કે કારણ વાસી અન્ન રવાને સે ગ્લાન અર્થાત્ કૃશ-
દુનઠે જો હૈં વે અન્નગ્લાયક હૈં । મિક્ષા વિશુદ્ધિ કે સિવાય જો મૌન
વ્રત કો ધારણ કર આહાર કે લિયે જાતે હૈં વે મૌનચરક સાધુ હૈં । તથા
જિનકા ંમા કલ્પ હોતા હૈં કિ જો આહાર હમૈં સસૃષ્ટ-ભરે હુપ હાથ
ઔર ભાજન-પાત્ર સે દિયા જાવેગા વહી મૈં લૂગા વે સસૃષ્ટ કલ્પિક હૈં ।
તથા-તજ્ઞાતસસૃષ્ટ કલ્પિક વે મુનિજન હૈં જો હસપ્રકાર કા નિયમ લેતે હૈં
કિ જિસ પ્રકાર કા દેયદ્રવ્ય દેને યોગ્ય હૈં વહ ઉસી પ્રકાર કે દ્રવ્ય સે સસૃષ્ટ
હસ્ત ભાજન સે દિયા જાવેગા તો હી લેગે । જો ડસ પ્રકાર કા નિયમ
ધારણ કરતે હૈં કિ દાતા ને જિસ આહાર કો અપને આપ અપને પાસ
રવાને કે લિયે રક્ષા હોગા વહી હમ લેગે । હસ પ્રકાર કે અભિગ્રહ વાલે

પ્રાન્તચરક મુનિગજ તેમને કહે છે કે એઓ જૂના વાલ, ચણા, કળથી આદિ
અન્ન લેવાને અભિગ્રહ કરીને ગોચરી કરે છે તથા જે એવી પ્રતિષ્ઠા ધારણ
કરે છે કે હું કલ (લૂપુ) ભોજન જ લઈશ તેમને રુક્ષચરક કહે છે જે
એક સરખી ગીતે બંધા તથા નીચા કુળમાં મિક્ષા મળણ કરવાના સ્વભાવવાળા
છે તેઓ સમુદાનચરક છે અન્નગ્લાયક-ખાસ અભિગ્રહને કારણે વાસી અન્ન
ખાવાથી ગ્લાન એટલે કે કૃશ-હબળા પડી ગયેલા હોય તેમને અન્નગ્લાયક
કહે છે મિક્ષા વિશુદ્ધિના સિવાય, જે સાધુ મૌનવ્રત ધારણ કરીને આહારને
માટે બંધ છે તેમને મૌનચરક કહે છે તથા જેમનો એવો નિશ્ચય-ધારણા
હોય છે કે “જે આહાર અમને સસૃષ્ટ-ભરેલા હાથ તથા ભાજન પાત્રમાંથી
વહેરાવાશે તેજ અમે લઈશું” એવા મુનિઓને સસૃષ્ટકલ્પિક કહે છે તથા
જે મુનિઓને એવા પ્રકારનો નિયમ કરે છે કે વહેરાવવાનું જે દ્રવ્ય હોય તે
એજ પ્રકારના દ્રવ્યથી ભરેલ પાત્રમાંથી વહેરાવવામાં આવશે તો જ લઈશ,
તે મુનિઓને તજ્ઞાતસસૃષ્ટકલ્પિક કહે છે જે મુનિઓને એવો નિયમ ધારણ
કરે છે કે દાતાએ પોતે જ પોતાને ખાવા માટે જે આહાર પોતાની પાસે
રાખ્યો હોય તે જ હું લઈશ આ પ્રકારના અભિગ્રહ ધારી મુનિઓ રૂપનિ-

ઉપનિર્હિતક છે। ઝાંકા આદિ દોષોં કે પગિહાર સે શુદ્ધ આહાર કા ગ્રહણ કરના હસકા નામ શુદ્ધેષણા છે। હમ શુદ્ધેષણા સે જો સંપન્ન હોતે હૈં વે શુદ્ધેષણિક છે। અર્થાત ઝાંકા આદિ દોષોં સે રહિત શુદ્ધ આહાર કો ગ્રહણ કરને કા જિનકા અભિગ્રહ હોતા હૈં વે શુદ્ધેષણિક છે। સહ્યાપ્રધાનવાલી દત્તિયોં સે જો ગોચરી કે લિયે જાતે હૈં અર્થાત્ દાતા કે હાથ સે દેતે સમય સાધુ કે પાત્ર મેં મત્કપાન આદિ કા જો ઁક બાર અવિચ્છિન્નરૂપ સે ગિરના ઉસે દત્તિ કઠ્ઠે હૈં, હમ પ્રકાર કો પાંચ છ આદિ દત્તિયોં કે લેને કા અભિગ્રહ જિન્નેં હોતા હૈં વે સમ્યાદત્તિક છે। જિન સાધુઓ કો ઁસા નિયમ હોતા હૈં કિ હમ ઉસી આહાર કો લેમે જો હમારે દૃષ્ટિ ગોચર હોગા। હસ પ્રકાર કે નિયમવાલે સાધુ દૃષ્ટિલાભિક કહે જાતે હૈં। તથા અદૃષ્ટિલાભિક વે સાધુજન હૈં જો પાકગૃહ કે મીતર સે નિકલે છુપ ઁસે ભોજન કો કિ જો દૃષ્ટિ મેં તો આયા નહીં હૈં કેવલ કાન સે હી ઉસકા નામ સુન લિયા હૈં ઉસે લેને કા નિયમ ધારણ કરતે હૈં। અથવા—‘પૂર્વ મેં અનુપલબ્ધ દાતા સે હી મેં મિક્ષા લૂગા’ હસ પ્રકાર કા જો નિયમવિશેષ રખતે હૈં વે અદૃષ્ટિલાભિક મુનિ હૈં। ‘હે-સાધો! મેં આપ કે લિયે કપા દ્ અર્થાત્ આપકે લિયે કિસ વસ્તુ કી હસ સમય વાહના હૈં’ હસ પ્રકાર દાતા કે દ્વારા પ્રશ્નવિષયીકૃત વસ્તુ

હિતક ઠહેવાય છે શુદ્ધેષણા ઁટલે શકા આદિ દોષો રહિત શુદ્ધ આહાર અહણ કરવો તે આ શુદ્ધેષણાયુક્ત મુનિજનોને શુદ્ધેષણિક કહે છે ઁટલે કે શકા આદિ દોષોથી રહિત શુદ્ધ આહાર અહણ કરવાનો જેમનો અભિગ્રહ છે તેઓ શુદ્ધેષણિક છે, સમ્યા પ્રધાનવાળી દત્તિયોથી જે ગોચરીને માટે જાય છે ઁટલે કે દાતાના હાથથી આપતી વખતે સાધુના પાત્રમાં ભક્ત પાન આદિનું ધારાવળી તૂટ્યા વિના ઁક વખતમાં જેટલું પ્રવાહી રેડાય તેને દત્તિ કહે છે આ પ્રકારની પાય, છ આદિ દત્તિયો લેવાનો જેમનો અભિગ્રહ હોય છે તેમને સમ્યાદત્તિક કહે છે જે સાધુઓને ઁવો નિયમ હોય છે કે જે આહાર અમારી નજરે પડ્યો તે જ આહાર અમે લઈશું, ઁવા નિયમ વાળા સાધુઓને દૃષ્ટિલાભિક કહે છે તથા અદૃષ્ટિલાભિક મુનિજનો તેમને કહે છે કે જેઓ રસોડામાંથી બહારઠાઠવામાં આવેલ ઁવું ભોજન સ્વીકારે છે કે જે નજરે પડ્યું હોતું નથી પણ તેનું નામ જ કહ્યું પડ્યું હોય છે અથવા “અગાઉ જેની પાસેથી દાન અહણ ન કર્યું હોય ઁવા દાતા પાસેથી જ દાન અહણ કરીશ” ઁવા મુનિને અદૃષ્ટિલાભિક કહે છે “હે મુનિરાજ! હું આપને માટે શુ આપુ” ઁટલે કે “આપ અત્યારે શી વસ્તુ લેવા માગો છો” આ

કોલેને કા જિનકે અભિગ્રહ હોતા હૈ વે પૃષ્ઠલામ્બિક મુનિ હૈ જો આચામા મ્લવ્રત (આયચિલ) સે યુક્ત હોતે હૈ વે આચામ્લિક મુનિ હૈ । પારણા કે દિવસ મી જો પૂર્વાદ્ધિ કે સમય ખાને પીને કા ત્યાગ કર દેતે હૈ વે પુરિમદ્ધુ-પૂર્વાદ્ધિક મુનિ હૈ । તથા જો પારણા કે દિન મી ઇકાશનવ્રત કે વારી હોતે હૈ વે ઇકાશનિક હૈ । જો ઘૃત આદિ પદાર્થરૂપ વિઠ્ઠલિયો સે વિહીન હી મોજન લેતે હૈ વે નિર્વિઠ્ઠલિક મુનિ હૈ । ‘પાત્ર મેં ગિરને પહિલે જો ભિક્ષા કી વસ્તુ સસ્તુકાદિ રૂપ મોદક આદિ પિંડ અર્પિત કરતે સમય ઘીચ મેં હી ફટકર પાત્ર મે પડેગી ડસે હી મૈ લગા ’ ઇસ પ્રકાર જો નિયમ ધારણ કરતે હૈ વે મિત્રપિંડપાતિક મુનિ હૈ । ‘ઇતની હી વસ્તુ-મધ્યપદાર્થ-ખાને યોગ્ય હમ મોજન મેં ટાવેંગે ’ એસા નિયમ જિન સાધુઓ કે હોતા હૈ વે પરિમિતપિંડપાતિક મુનિ હૈ । નીરસ, તક્ર (ઝાછ)-મિશ્રિત ઔર પર્યુપિત વલ્લ ચળક આદિ અન્ન કા જો આહાર કરતે હૈ વે અન્નાહારી મુનિ હૈ । પુરાની કુલથી, વલ્લ, ચના આદિ અન્ન કા જો આહાર કરતે હૈ વે પ્રાન્તાહારી મુનિ હૈ । જો રસવર્જિત આહાર લેતે હૈ-અર્થાત્ જો મુનિ હિંગ આદિ કે વધાર સે વર્જિત આહાર કો લેને કે નિયમવાલે હોતે હૈ વે અરસાહારી હૈ । જિનમેં રસ નહી હોતા એસે

પ્રમાણે દાતા દ્વારા પ્રશ્નવિપયીકૃત વસ્તુ લેવાનો જેમને અભિગ્રહ હોય છે તેમને પૃષ્ઠલામ્બિક મુનિ કહે છે જે મુનિ આચામામ્લવ્રત યુક્ત હોય છે તેમને આચામામ્લિક મુનિ કહે છે પારણાને દિવને પણ જે પૂર્વાદ્ધ મધ્યાહ્ન પહેલા ખાવાપીવાનો ત્યાગ કરે છે તેમને પરિમદ્ધુ-પૂર્વાદ્ધિક મુનિ કહે છે તથા જે પારણાને દિવસે પણ એકામન વ્રત ધારી હોય છે તેમને ઇકાશનિક કહે છે જે ઘી આદિ પદાર્થરૂપ વિઠ્ઠલિયો રહિત ભોજન લે છે તેમને નિર્વિઠ્ઠલિક મુનિ કહે છે “ પાત્રમાં પડ્યા પહેલા જે ભિક્ષાની વસ્તુ-સસ્તુ ગદિશ્ચ મોદક આદિ પિંડ અર્પણ કરતી વખતે વચ્ચેજ લાગી જઈને પાત્રમાં પડશે તેને જ હું લઈશ ” આ પ્રકારનો નિયમ ધારણ કરનાર મુનિને મિત્રપિંડપાતિક મુનિ કહે છે “ આટલી જ વસ્તુ ખાધ પદાર્થ-હું ભોજનમાં ખાઈશ ” એવો નિયમ ધારણ કરનાર મુનિજનોને પરિમિતપિંડપાતિક કહે છે નીરસ, ઘાશ-મિશ્રિત, અને પર્યુપિત વાસી વાલ, ચણા આદિ અન્નનો આહાર કરનાર મુનિજનોને અન્નાહારી કહે છે જૂની ઝળથી, વાલ ચણા આદિ અન્નનો આહાર કરનાર મુનિજોને પ્રાન્તાહારી કહે છે જે રસરહિત આહાર લે છે એટલે કે જે મુનિ હિંગ આદિના વધારથી રહિત આહાર લેવાના નિયમવાળા હોય છે

ઉપનિરિત્તક હૈં । ઝંકા આદિ દોષોં કે પરિહાર સે શુદ્ધ આહાર કા ગ્રહણ કરના હસકા નામ શુદ્ધેપણા હૈ । હમ શુદ્ધેપણા સે જો સંપન્ન હોતે હૈં વે શુદ્ધેપણિક હૈં । અર્થાત્ ઝંકા આદિ દોષોં સે રહિત શુદ્ધ આહાર કો ગ્રહણ કરને કા જિનકા અભિગ્રંહ હોતા હૈ વે શુદ્ધેપણિક હૈં । સહ્યાપ્રવાનવાલી દત્તિયોં સે જો ગોચરી કે લિયે જાતે હૈં અર્થાત્ દાતા કે હાથ સે દેતે સમય સાધુ કે પાત્ર મેં મત્તપાન આદિ કા જો ઁક બાર અવિચ્છિન્નરૂપ સે ગિરના ઉસે દત્તિ કહતે હૈં, હમ પ્રકાર કી પાંચ છ આદિ દત્તિયોં કે લેને કા અભિગ્રંહ જિન્નેં હોતા હૈં વે સગ્યાદત્તિક હૈં । જિન સાધુઓ કો ઁસા નિયમ હોતા હૈં કિ હમ ઉસી આહાર કો લેમે જો હમારે દૃષ્ટિ ગોચર હોગા । હમ પ્રકાર કે નિયમવાલે સાધુ દૃષ્ટિલાભિક કહે જાતે હૈં । તથા અદૃષ્ટલાભિક વે સાધુજન હૈં જો પાકગૃહ કે ખીતર સે નિકલે છુપ ઁસે ભોજન કો કિ જો દૃષ્ટિ મેં તોં આયા નહીં હૈં કેવલ કાન સે હી ઉસકા નામ સુન લિયા હૈં ઉસે લેનેકા નિયમ ધારણ કરતે હૈં । અથવા—‘ પૂર્વ મેં અનુપલબ્ધ દાતા સે હી મેં મિક્ષા લૂગા ’ હસ પ્રકાર કા જો નિયમવિગ્રોપ રખતે હૈં વે અદૃષ્ટલાભિક મુનિ હૈં । ‘ હે-સાધો ! મૈં આપ કે લિયે કયા દૂ અર્થાત્ આપકે લિયે કિસ વસ્તુ કી હસ સમય ઘાહના હૈં ’ હસ પ્રકાર દાતા કે દ્વારા પ્રશ્નવિષયીકૃત વસ્તુ

હિતક ઠહેવાય છે શુદ્ધેપણા ઁટલે શકા આદિ દોષોં રહિત શુદ્ધ આહાર ગ્રહણ કરવો તે આ શુદ્ધેપણાધુક્તા મુનિજનોને શુદ્ધેપણિક ઠહે છે ઁટલે કે શકા આદિ દોષોથી રહિત શુદ્ધ આહાર ગ્રહણ કરવાનો જેમનો અભિગ્રહ છે તેઓ શુદ્ધેપણિક છે, સખ્યા પ્રધાનવાળી દત્તિયોથી જે ગોચરીને માટે જાય છે ઁટલે કે દાતાના હાથથી આપતી વખતે સાધુના પાત્રમાં ભક્ત પાન આદિનું ધારાવળી તૃપ્તિ વિના ઁક વખતમાં જેટલું પ્રવાહી રેડાય તેને દત્તિ કહે છે આ પ્રકારની પાત્ર, છ આદિ દત્તિયો લેવાનો જેમનો અભિગ્રહ હોય છે તેમને સહ્યાદત્તિક કહે છે જે સાધુઓને ઁવો નિયમ હોય છે કે જે આહાર અમારી નજરે પડશે તે જ આહાર અમે લઈશું, ઁવા નિયમ વાળા સાધુઓને દૃષ્ટિલાભિક કહે છે તથા અદૃષ્ટિલાભિક મુનિજનો તેમને કહે છે કે જેઓ રસોડામાંથી ખંદારગાઢવામાં આવેલ ઁવું ભોજન સ્વીકારે છે કે જે નજરે પડ્યું હોતું નથી પણ તેનું નામ જ કહ્યું પડ્યું હોય છે અથવા “અગાઉ જેની પાસેથી દાન ગ્રહણ ન કર્યું હોય ઁવા દાતા પાસેથી જ દાન ગ્રહણ કરીશ” ઁવા મુનિને અદૃષ્ટલાભિક કહે છે “ હે મુનિરાજ ! હું આપને માટે શું આપુ “ ઁટલે કે ” આપ અત્યારે શી વસ્તુ લેવા માગો છો ” આ

મેં કાર્યોત્સર્ગ આદિ તપશ્ચરણ કરતે હું વેસ્થાનાતિગ મુનિ હું । એક રાત્રિકી આદિ પ્રતિમાધારણ કર કાર્યોત્સર્ગ વિશેષરૂપ મેં હી રહતે હું વે પ્રતિમા સ્થાયી મુનિ હું । જિનકા સ્થાન ઉત્કુટુક હોતા હૈ, અર્થાત્ જો ઉત્કુટ આસન સે વેઠતે હું વે સ્થાનોત્કુટુક હું । સિંહાસન પર વેઠે હુએ વ્યક્તિ કા કિ જિસકે દોનોં પૈર નીચે ટિકે હુએ હોં જવ વે સિંહાસન નીચે સે હટા લિયા જાતા હૈ તો વહ ઉસ સમય ઉસી સ્થિતિ મેં-અર્થાત્-અપની પૂર્વ કી સ્થિતિ મેં હી રહે તો ઉસ આસન કા નામ વીરાસન હૈ । ઇસ આસન કો જો આચરિત કરતે હું વે વીરાસનિક મુનિ હું । જિસ આસન મેં દોનોં પુત સમાનરૂપ સે જમે રહતે હું ઉસ આસન કા નામ નિપચા હૈ । ઇસ નિપચા સે જો વેઠતે હૈ વે નૈપચિક હૈ । દડ કી તરહ જિનકા શરીર ભૂમિપર આયત-લગા-જિસ આસન મેં રહતા હૈ-ઉસકા નામ દંડાયત આસન હૈ । ઇસ આસન કો જો આચરિત કરતે હું વે દંડાયતિક હૈ । અર્થાત્-જિસ મેં જમીન પર દડ કી તરહ લગા હોકર સોયા જાતા હૈ ઉસ આસન કો જો મુનિ કરતે હૈ વે દંડાયતિક મુનિ કહલાતે હૈ । જિસ આસન મેં દોનોં પૈરો કી ણડી ઓર મસ્તક કા પૃષ્ઠભાગ જમીન પર લગા રહતા હૈ, તથા પીઠ કા ભાગ જમીન સે ઊઠા

કહે છે જે અતિશય પ્રમાણુમા કાર્યોત્સર્ગ આદિ તપશ્ચરણ કરે છે તેમને સ્થાનાતિગ મુનિ કહે છે જે એક રાત્રિની આદિ પ્રતિમા ધારણ કરીને કાર્યોત્સર્ગના વિશેષરૂપમા રહે છે તેમને પ્રતિમાસ્થાયી મુનિ કહે છે જેમનુ સ્થાન ઉત્કુટુક હોય છે, એટલે કે જે ઉત્કુટુક આસને બેસે છે તેમને સ્થાનોત્કુટુક મુનિ કહે છે સિંહાસન પર બેઠેલ વ્યક્તિ કે જેના બન્ને પગ નીચે ટેકવેલા હોય, તેની નીચેથી સિંહાસન ખસેડી લેવામા આવે છતાં પણ તેને પોતાની એજ સ્થિતિમા-એટલે કે પોતાની અગાઉની સ્થિતિમા રહે તો તે આસનને વીરાસન કહે છે આ આસનનુ સેવન કરનાર મુનિને વીરાસનિક કહે છે જે આસનમા બને પુત સમાન રીતે દડ રહે છે તે આસનનુ નાથ નિપચા છે આ નિપચાથી જે બેસે છે તેને નૈપચિક કહે છે દડની જેમ જેમનુ શરીર જમીન પર આયત-લગાયેલ સ્થિતિમા જે આસનમા રહે છે તે આસનને દંડાયત આસન કહે છે આ આસન કરનારને દંડાયતિક મુનિ કહે છે એટલે કે જેમા જમીન પર દડની જેમ લાખા થઈને સૂઈ જવાય છે, તે આસન જે મુનિ કરે છે તેમને દંડાયતિક મુનિ કહે છે જે આસનમા બન્ને પગની એડી તથા મસ્તકનો પાછળનો ભાગ જમીન પર લાગી રહે છે તથા પીઠને

પુરાને ધાન્ય ઓદન આદિ અન્ન સે નિષ્પન્ન દુગ્ધ આહાર કો લેનેકા જિનકા નિયમ હોતા હૈ વે ત્રિરન્નાહારી મુનિ હૈ । વૃતાદિ કે મધ્ય સે વર્જિત દુગ્ધ રુચે લૂચે આહાર કો લેનેકા જિનકા નિયમ હોતા હૈ વે રુક્ષાહારી મુનિ હૈ । વદરી ફલ ઘોર કે પિસે દુગ્ધ ચૂર્ણ આદિ કા, તથા કુલ્છી કોદ્રવ આદિ સે ઘને દુગ્ધ આહાર કા જો સેવન કરતે હૈ વે તુચ્છાહારી મુનિ હૈ । હસી તરહ અન્ત આહાર સે જો જીતે હૈ વે અન્તજીવી, પ્રાન્ત આહાર સે જો જીતે હૈ વે પ્રાન્તજીવી, રુક્ષાહાર સે જો જીતે હૈ વે રુક્ષજીવી, તુચ્છાહાર સે જો જીતે હૈ વે તુચ્છજીવી મુનિ હૈ । અગ્ન આદિ કી પ્રાપ્તિ હોને પર અથવા નહીં હોને પર જિનકી વાહિરી વેષ્ટા મેં-મુલ્ક મેં ચક્ષુરાદિ ઇન્દ્રિયોં મેં સ્થાનતા નહીં આતી હૈ વે ઉપશાન્તજીવી મુનિ હૈ । તથા અન્તરગ મેં જિન સાધુઓં કે આહાર આદિ કી અપ્રાપ્તિ મેં ક્રોધાદિ કપાયો કા ઉપશમન રહતા હૈ વે પ્રશાન્તજીવી મુનિ હૈ । દોષવર્જિત અન્નાદિ કે खानે સે હી જો અપના જીવન નિર્વાહ કરતે હૈ વે વિવિક્તજીવી મુનિ હૈ । ક્ષીર-દુગ્ધ, મધુ શર્કરા આદિ મધુરદ્રવ્ય ઔર સર્પિ ધૃત, ઢનપદાર્થોંકા જો આહાર નહીં કરતે હૈ વે અક્ષીરમધુસર્પિષ્ક મુનિ હૈ । મધ ઔર માસ કા આહાર નહીં કરને અમચર્માસાશિક મુનિ કહલાતે હૈ । જો અતિશયરૂપ

તેમને અરણ્યાહારી કહે છે જેમા રસ હોતો નથી એવા જૂના ધાન્ય, ચોખા આદિ અન્નમાથી તૈયાર થયેલ આહાર લેવાના નિયમવાળા મુનિઓને વિરસાહારી કહે છે થી વિનાનો લૂખો આહાર લેવાનો જેમનો નિયમ છે તેમને રુક્ષાહારી મુનિ કહે છે ઘોર આદિ ફળોતુ ચૂર્ણ આદિ તથા કળથી, કોદરશ વગેરેમાથી અનેલા આહારતુ જે સેવન કરે છે તેમને તુચ્છાહારી કહે છે, એજ પ્રમાણે અન્ત આહારથી જે જીવે છે તેમને અન્તજીવી, પ્રાન્ત આહારથી જે જીવે છે તેમને પ્રાન્તજીવી, રુક્ષ આહારથી જે જીવે છે તેમને રુક્ષજીવી અને તુચ્છ આહારથી જે જીવે છે તેમને તુચ્છજીવી મુનિ કહે છે લોજન આદિ પ્રાપ્ત થાય કે ન થાય છતા પણ જેમની મુખમુદ્રામા, ચક્ષુરાદિ ઇન્દ્રિયોમા સ્થાનતા દેખાતી નથી તેમને ઉપશાન્તજીવી મુનિ કહે છે તથા અન્તરગમા જે સાધુઓને આહારાદિની અપ્રાપ્તિમા ક્રોધાદિ કપાયોતુ ઉપશમન રહે છે તેઓ પ્રશાન્તજીવી મુનિ છે, દોષા રહિત અન્નાદિ ખાઈને જ જે પોતાનો જીવન નિર્વાહ ચલાવે છે તેમને વિવિક્તજીવી મુનિ કહે છે ક્ષીર-દુધ, મધુ-સાકર આદિ મધુર દ્રવ્ય તથા સર્પિ-ત એ પદાર્થોના જે આહાર નથી કરતા તેમને અક્ષીરમધુસર્પિષ્ક મુનિ કહે છે મધ અને માસનો જે આહાર કરતા નથી તેમને અમચર્મા

ય ' ધીરમતિબુદ્ધયશ્ચ=ધીરા-સ્થિરામતિઃ અગ્રગ્રહાદિકા, બુદ્ધિઃ=ઔત્પત્તિક્યા-
યેપા તે તથોક્તાઃ, તથા ' જે તે ' એ તે, ' આસીવિસત્તગતેયકપ્પા ' આશીવિપો-
ગ્રતેજઃ કલ્પા =આશીવિપાઃ=સર્પાસ્તે ચ તે ઉગ્રતેજસ ધોરવિપયરાશ્ચ આશીવિ
પોગ્રતેજસસ્તત્તલ્પાઃ એ તે-આશીવિપોગ્રતેજઃ કલ્પા ' તથા ' નિચ્છયવવસાયપ જ્ઞ
ત્તકયમઈયા ' નિશ્ચયવ્યવસાયપર્યાપ્તકૃતમતયઃ=નિશ્ચયઃ=સ્તુતિર્નિર્ણયો, વ્યવસાયઃ=
ઉદ્યમઃ પુરુષકારહતિ યાવત્ તદ્નિપયે પર્યાપ્તા=પરિપૂર્ણા કૃતા=વિદિતા મતિર્બુદ્ધિર્યે-
સ્તે તથોક્તાઃ=સકલવસ્તુનિર્ણાયકા इत्यर्थः તથા- ' ણિચ્ચ સજ્ઞાયજ્ઞાણા ' નિત્ય
સ્વાધ્યાયધ્યાનાઃ-નિત્ય-સર્વદા સ્વાધ્યાયો-વાચનાદિકમ્, ધ્યાન=દુધ્યાનતશ્ચિ-
ત્તનિરોદ્ધરૂપ યેપા તથોક્તાઃ, અતેવ ' અણુવદ્ધધ્મજ્ઞાણા ' અણુવદ્ધધર્મધ્યાનાઃ=
અણુવદ્ધ-ધારાપ્રવાહન્યાયેન નિરન્તર ધૃત ધર્મધ્યાનમ્-આજ્ઞાવિચયાપાયવિચયવિપા-
કવિચયસમ્પ્રાપ્તિવિચયરૂપ યૈસ્તે, તથા- ' પચમહવ્વયચરિત્તજુત્તા ' પચ્ચમહાવ્રતચારિત્ર-
યુક્તા =પચ્ચમહાવ્રતાનિ=પ્રાણાતિપાતાદિવિરમણલક્ષણાનિ તદ્રૂપ યચ્ચારિત્ર તેન

एव औत्पत्तिकी आदि बुद्धि जिनकी धीर-स्थिर है, तथा (जे ते आसी
विसउगगतेयकप्पा) जो सर्प के समान उग्रतेज वाले है, (निच्छयव-
सायपज्जत्तकयमइया) निश्चयवस्तुनिर्णय करने में एव उद्यम-पुरुषार्थ
करनेमें जिन्होंने अपनी बुद्धि को परिपूर्ण बना लिया है, अर्थात् जो अच्छी
तरह से समस्त वस्तुओं का निर्णय करने वाले है तथा (निच्च सज्झा
यज्झाणा) जो नित्य ही वाचनादिरूप स्वाध्याय में एव आर्त्तरौद्ररूप
दुध्यान से चित्त निरोधरूप ध्यान में मग्न रहते हैं, इसीलिये (अणुवद-
धम्मज्झाणा) धारा प्रवाह न्याय से जिनका निरन्तर आज्ञाविचय,
अपायविचय, सस्थानविचय रूप धर्मध्यान होता रहता है, तथा (पच-
महव्वय चरित्तजुत्ता) जो प्राणातिपातादि विरमणरूप पचमहाव्रतों से

અવગ્રાહાદિરૂપ મતિ અને ઔત્પત્તિકી આદિ બુદ્ધિ ધીર-સ્થિર છે, તથા “ જે
તે આસી વિસત્તગતેયકપ્પા ” જે સર્પના સમાન ઉગ્ર તેજવાળા છે, “ નિચ્છય
વવસાય પજ્જત્તકયમઈયા ” નિશ્ચયવસ્તુ નિર્ણય કરવામાં અને ઉદ્યમ-પુરુષાર્થ
કરવામાં જેમણે પોતાની બુદ્ધિને પરિપૂર્ણ બનાવી લીધી છે, એટલે કે જે
સારી રીતે સમસ્ત વસ્તુઓનો નિર્ણય કરનાર છે, તથા “ નિચ્ચ સજ્ઞાય-
જ્ઞાણા ” જે નિત્યવાચનાદિરૂપ સ્વાધ્યાયમાં અને આર્ત્તરૌદ્રરૂપ દુધ્યાનમાંથી
ચિત્તનિરોધરૂપ જ્ઞાનમાં લીન રહે છે, તેથી “ અણુવદ્ધધ્મજ્ઞાણા ” ધારા પ્રવાહ
ન્યાયથી જેમણે નિરન્તર આજ્ઞાવિચય, અપાય વિચય, સસ્થાન વિચયરૂપ ધર્મ
ધ્યાન રહ્યા કરે છે, તથા “ પચમહવ્વયચરિત્તજુત્તા ” જે પ્રાણાતિપાતાદિ વિર-

તથા-‘ સુયધરવિદિતત્વકાયવુદ્ધિણો ’ શ્રુતધરવિદિતાર્થકાયવુદ્ધય. = શ્રુતધરા:-
શ્રુતજ્ઞાનિનસ્તર્વિદિતો જ્ઞાતોડયંકઃ યઃ = તત્ત્વજ્ઞાનરાશિઃ શ્રુતસમૂહો યયા સા
શ્રુતધરવિદિતાર્થકાયા, તાદશી વુદ્ધિયેષા તે તથોક્તા, તથા-‘ ધીરમહવુદ્ધિણો

રહતા હૈ-ઉસ આસન કો લગઢાસન કહતે હૈ । ઇસ આમન સે જો મુનિ
શયન કરતે હૈં વે લગઢશાયી મુનિ હૈ । સોતે સમય જો ણક હી કરચટ
સે સોતે હૈ-કરચટ નહીં ઘડલતે હૈ-એસે મુનિ ણક પાર્શ્વિક હૈ । જો
સાધુજન, શીત, ઉષ્ણ આદિ કી આતાપના લેતે હૈં વે આતાપક મુનિ હૈં ।
હેમન્ત ઋતુ મેં જો પ્રાવરણ સે રહિત હોતે હૈં વે અપ્રાવૃત મુનિ હૈ । જો મુનિ
અપને મુલ્ક કે શ્લેષ્મા કે અપરિણાપક હોતે હૈં વે અનિષ્ઠીવક મુનિ હૈ ।
જો મુનિ શરીર મેં જુજલી ચલને પર મીં ઉસે નહીં યુજાતે હૈં વે મુનિ અકળ્હ-
યક હૈ । તથા જો અપને કેશોંકા મૂછ દાઢી આદિ કે ચાલોંકા-તથા નલોં
કા સસ્કાર નહીં કરતે હૈ-જૈસે હૈં વૈસા હી ઉન્હેં રચે રહતે હૈં એસે મુનિ ધૃત-
કેશશ્મશ્રુલોમનચલાલે કહલાતે હૈં યહ જિન કલ્પિક મુનિયોંકા તથા
જો મુનિ અપને સમસ્ત શરીર કા સસ્કાર નહીં કરતે હૈં વે મુનિ સર્વ,
ગાત્રપ્રતિકર્મવિમુક્ત હૈં । તથા (સુયધરવિદિતત્વકાયવુદ્ધિણો) શ્રુતજ્ઞા-
નિયોં દ્વારા તત્ત્વજ્ઞાનરાશિરૂપ શ્રુતસમૂહ જિસકે પ્રભાવ સે વિદિત હોતા
હૈં એસા જિન્હી કી વુદ્ધિ હૈં તથા (ધીરમહવુદ્ધિણો) અવગ્રહાદિરૂપમતિ

ભાગ જમીનથી અદ્ધર રહે છે, તે આસનને લગુડાસન કહે છે તે આસને
જે મુનિ શયન કરે છે તેમને લગઢશાયી મુનિ કહે કહે છે સૂતી વખતે જે
એકજ પડખે શયન કરે છે-પડખુ ફેરવતા નથી-તેવા મુનિઓ એકપાર્શ્વિક કહે
વાય છે જે મુનિજનો શીત, ગરમી આદિની આતાપના લે છે તેમને આતા-
પક મુનિ કહે છે, હેમન્ત ઋતુમાં જે પ્રાવરણથી રહિત હોય છે તેમને
અપ્રાવૃત મુનિ કહે છે જે મુનિ પોતાના મુખના શ્લેષ્માના
અપરિણાપક હોય છે તેમને અનિષ્ઠીવક કહે છે જે મુનિ શરીરમાં ખુબ્બી
ચળ આવવા છતાં પણ તેને ખબવાળતા નથી તેમને અકળ્હયક મુનિ કહે છે
જે મુનિ પોતાના કેશના-મૂછ, દાઢી આદિના વાળના તથા નખના સસ્કાર
(છેદન) કરતા નથી, જેવા હોય તેવાજ તેને રહેવા દે છે, એવા મુનિઓને
ધૃતકેશશ્મશ્રુલોમનસા કહે છે તથા જે મુનિ પોતાના નિસ્ત શરીરના સસ્કાર
કરતા નથી તે મુનિઓને સર્વગાત્રપ્રતિકર્મવિમુક્ત ” કહે છે તથા “ સુયધર
વિદિતત્વકાયવુદ્ધિણો ” શ્રુતજ્ઞાનીઓ દ્વારા તત્ત્વજ્ઞાનરાશિ શ્રુતસમૂહ જેના પ્રભા-
વથી વિદિત થાય છે એવી જેમની બુદ્ધિ છે તથા ‘ ધીરમહવુદ્ધિ ’

में नहीं आया। इसका कारण केवल यही हुआ कि उनकी अन्तरंग दृष्टि इस महनीय तत्त्व तक गहराई के साथ नहीं पहुँच पाई। इसके वास्तविक अन्तरंग स्वरूप का विवेचन यदि हमें कहीं मिलता है तो वह एक वीतराग परपरा में ही मिलता है। इसका कारण यहाँ यह हुआ कि जिन तीर्थंकर गगनर आदिकों ने इस तत्त्व का विवेचन किया वे बहुत ही बड़ी सूक्ष्मदृष्टिवाले थे। ज्ञान के पूर्ण विकास से वे इतने अधिक विज्ञानी बन चुके थे कि प्रत्येक पदार्थ अपनी समस्त अवस्थाओं के साथ उनके उस विशिष्ट ज्ञान में दर्पण में प्रतिबिम्ब की तरह स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित झलकता रहता था। अतः इस प्रकार के ज्ञान से उन्होंने अहिंसा भगवती के वास्तविक स्वरूप का दर्शन किया है तभी जाकर उन्होंने अपने सिद्धान्तों में इसका सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचन किया है। यह विवेचन उग्रस्यों से नहीं हो सका। यही बात सूत्रकारने अपने इस सूत्र द्वारा प्रदर्शित की है वे कहते हैं कि इस अहिंसा भगवती के दर्शन उन महापुरुषों ने किये हैं कि जो अपरिमित केवल ज्ञान और दर्शन के अधिपति थे। शील, विनय, तप और सयम से जिन्होंने अपनी आत्मा को पिलकुल 'सौटची के' सोने जैसा बना लिया था। जिनके पास राग द्वेष जैसे विशाल बोधा पछाड़ खाकर सर्वथा विनष्ट हो चुके

शुभ केवल ओ न आव्यु के तेमनी अन्तरंग दृष्टि आ महान तत्त्वमा उहावृथी प्रेमी नहीं तेना वान्तविद अन्तरंग स्वइषु विवेचन आपवुने वीतराग परपरा निवाय अन्य सिन्धातोमा गणतु नहीं तेनु वारवु ओ छे के के तीर्थंकर, गणधर आदिओ आ तत्त्वतु विवेचन उथुं छे तेओ भहु न दीर्घदृष्टिवाला छता ज्ञानना पूर्ण विकासथी तेओ ओटला अधा विज्ञानी भनी गया छता के प्रत्येक पदार्थ तेनी समस्त अवस्थाओ महित तेमना ओ विशिष्ट ज्ञानथी केम दर्पणमा प्रतिबिम्ब देणाय तेम अप्रपञ्चे देणाता छता, तेथी ओ प्रकारना ज्ञानथी तेमणे लगवती अहिंसाना वान्तविद स्वइषु दर्शन उथुं छतु, तेथी न तेओओ पोताना सिद्धान्तोमा तेनु सूक्ष्ममा सूक्ष्म विवेचन उथुं छे, आविवेचन उग्रस्यो वडे वर शत्रु नहीं ओ न वात सूत्रकारे पोताना आ सूत्र द्वारा प्रदर्शित करी छे तेओ उछे छे के आ लगवती अहिंसाना दर्शन ते महापुरुषोओ कर्या के के तेओ अनन्त ज्ञान अने दर्शनना अधिपति छता, केमणे शील, विनय, तप अने सयम द्वारा पोताना आत्माने " सो टथना " माना केवा विजुद्ध बनान्छे छता केमनी पाने रागद्वेषभी समर्थ थोदा लो लेगा थरने तदन नष्ट थया छता त्रैलोक्य केमनी

યુક્તા એતે તથા-‘ સમિયાસમિદ્ધસુ ’ સમિતાઃ સમિતિપુ=ઈર્યાદિપાવસમિતિમિપુક્તા
 इत्यर्थः, तथा-‘ સમિયપાવા ’ ગમિતપાવાઃ=ગમિત=ગાન્તં પાપ=પ્રાણાતિપાતાદિ-
 રૂપ એવા તે તથોક્તાઃ, તથા ‘ છન્નિહજગવન્છલા ’ પટ્ટિયજગદ્વત્સલાઃ=જહ
 जीविकायहिता इत्यर्थः, तथा-એતે ‘ ણિચ્ચમપ્પમત્તા ’ નિત્યમપ્રમત્તાઃ=સર્વદા
 प्रमादरहिता सन्ति, ‘ एण्हिय ’ एतैश्च पूर्वोक्तगुणविशिष्टैः, तथा-‘ અણેહિય ’
 अन्यैश्च-અનુકૂલલક્ષણેશુગુણવદ્ધિયાં સા=જગત્પ્રસિદ્ધા ણ્યા ભગવતી અહિંસા
 ‘ અણુપાલિયા ’ અનુપાલિતા-રાદ્ધમનઃકાયયોગૈરાગધિતેત્યર્થઃ ॥ સુ-૪ ॥

યુક્ત અને હુણ હૈં, તથા (સમિદ્ધસુસમિયા (જો ઈર્યા આદિ પાવ સમિ-
 તિયોં સે યુક્ત હૈં ઓર દસી કારણ સે (સમિદ્ધપાવા) જિન્હોં કે
 प्राणातिपातादिरूप पाप जात हो चुके हैं, तथा (छन्निह जगवच्छला)
 જો સદા છદ્ધકાય કે જીવોં કી રક્ષા કરને મેં વત્સલ ભાવવાલે હોતે હૈં
 तथा (णिच्चमप्पमत्ता) जो पांच प्रमादों से नित्य रहित होते हैं (एण्हि)
 ऐसे इन पूर्वोक्त गुणों से विशिष्ट महात्माजनों द्वारा तथा (अण्णेहिय)
 इस प्रकार के लक्षणों से युक्त अन्य गुणवालों द्वारा (जा सा भगवई)
 यह जगत्प्रसिद्ध भगवती अहिंसा (अणुपालिया) मन, वचन, और
 काय, इन तीन योगों की एकाग्रता से अच्छी तरह आराधित की गई है।

ભાવાર્થ—અહિંસા તત્વ કો વચપિ પ્રત્યેક સિદ્ધાન્તકારોંને અપને ૨
 सिद्धान्तानुसार अपनाया है। परन्तु इस तत्व का बाहिरी स्वरूप
 વિવેચન કરતે હી વે રહ ગયે હેં । અન્તરગ સ્વરૂપ વિવેચન ઉનકી દષ્ટિ

મણુરૂપ પાપ મહાવતોથી યુક્ત થયેલ છે, તથા “ સમિદ્ધસુસમિયા ” જે ઈર્યા
 આદિ પાપ સમિતિયોથી યુક્ત છે અને એ જ કારણથી “ સમિદ્ધપાવા ”
 જેમના પ્રાણાતિપાતાદિરૂપ પાપ શાન્ત થઈ ગયા છે, તથા “ છન્નિહજગવ
 छला ” જે સદા છદ્ધકાયના જીવોની રક્ષા કરવામા વત્સલ ભાવ વાળા હોય
 છે, તથા “ ણિચ્ચમપ્પમત્તા ” જે સદા પાપ પ્રમાદોથી રહિત હોય છે “ એણિ ”
 એવા એ પૂર્વોક્ત ગુણોથી યુક્ત મહાત્માઓનો દ્વારા તથા “ અણેહિય ” આ
 પ્રકારના ગુણોથી યુક્ત અન્ય ગુણવાળો દ્વારા “ જા સા ભગવઈ ” આ જગતિ-
 આત ભગવતી અહિંસા “ અણુપાલિયા ” મન, વચન, અને કાય, એ ત્રણે
 યોગોની એકાગ્રતાથી સારી રીતે આરાધવામા આવી છે

ભાવાર્થ—અહિંસા તત્વને જે કે દરેક સિદ્ધાન્તકારોએ પોત પોતાના
 सिद्धान्तानुसार अपनावेले છે, પણ આ તત્વના બાહ્ય સ્વરૂપનું જ વિવેચન
 તેમણે કર્યું છે અન્તરગ સ્વરૂપ વિવેચન તેમની નજરે ન પડ્યું તેનું પરિ

न वि गरिहणाए नवि हल्लिणानिदणा गरिहणाए भिक्खं
गवेसियव्व, न वि भेसणाए न वि तज्जणाए न वि ताल-
णाए न वि भेसणतज्जणतालणाए भिक्खं गवेसियव्वं, न
वि गारवेणं न वि कुहणाए न वि वणीमगयाए न वि
गारवकुहणवणीमगयाए भिक्खं गवेसियव्वं, न वि मित्तयाए
न वि पत्थणाए न वि सेवणाए न वि मित्तयपत्थणसेवणाए
भिक्खं गवेसियव्वं, अण्णाए अगड्ढिए अदुट्ठे अदीणे-
अविमणे अकल्लुणे अविसाई अपरिततजोगी जयणघडण-
करणचरियविनयगुणजोगसपउत्ते भिक्खू भिक्खेसणाए
गिरए । इमं च ण सव्वजगज्जीवरक्खणदयट्ठणाए पाव्वयणं
भगवया सुकहिय अत्तहिय पेच्चा भविय आगमेसिभइ सुद्धं
नेयाउय अकुडिलं अणुत्तर सव्वदुक्खपावाण विउसमणं ॥५॥

टीका—‘ इमं च पुढी ’ इत्यादि—

‘ पुढीदगअगणिमारुयतरुगणतसथावरसव्वभूयसजमदयट्ठयाए ’ पृथ्वीद-
काग्निमारुततरुगणतसस्थावरसर्वभूतसयमदयार्थं, तत्र-पृथिवी-प्रसिद्धा, दक=
पानीयम्, अग्निः, मारुतो-वायुः, तरुगणः=वनस्पतिसमूहः, त्रमाः=द्वीन्द्रियादयः,
स्थावराः=पृथिव्यादिपञ्चकम्, एतेषा सर्वभूतानां=सर्वप्राणिनां सयमो रक्षण

जो इस अहिसारूपप्रथमसवरद्वार को पालन करने के लिये उद्यत
हैं उन्हें क्या करना चाहिये सो कहते हैं—‘ इमं च ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(पुढी-दग-अगणि-मारुय-तरुगण-तस-थावर-सव्वभूय-
सजम दयट्ठयाए) पृथिवी, दक-जल, अग्नि, वायु, वनस्पति समूह,
द्वीन्द्रियादिक पाच स्थावर, इन सब प्राणियों की रक्षा निमित्त दयारूप

જો એ આ અહિસારૂપ પ્રથમ સવરદ્વારનું પાલન કરવાને માટે તૈયાર
થયા છે તેમણે શું કરવું જોઈએ તે કહે છે— “ इमं च ” इत्यादि

टीकार्थ—(पुढी, दग, अगणि, मारुय, तरुगण, तस, थावर, सव्वभूय, सजमदयट्ठयाए)
पृथिवी, दक, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति समूह, द्वीन्द्रियादिक तस, पृथि-
व्यादिक पाच स्थावर, जो जहां प्राणीजोनी रक्षा निमित्त दयारूप प्रयोजनने

अथ ये—अहिंसारपप्रयमसागार पात्रयितुमृतास्तथा यद्विभेयं तदाह—

मूलम्—इमं च पुटवी-दग-अगणि-मारुत-तरुगण-तसथावर-
सव्वभूयसंजयदयट्टयाए सुद्ध उल्लंगेसियव्व अकयमकारिय-
मणाहुयमणुद्धिअकीयकडनवकोडिहिं परिसुद्धदसहि यटो-
सेहि विपमुक्क उग्गम उप्पायणेसणासुद्धववगयचुय चडयचत्त-
देह च फासुयं च न निसिज्जकहापयोयणम्खासु ओवणियं न
तिगिच्छामत्तमूलभेसज्जकज्जेउं न लक्खणुप्पाय सुमिणजोइ-
सानिमित्त कहकुहकप्पउत्त न विडभणाए न विरक्खणाए न
वि सासणाए न विडभणरक्खणसासणाए भिक्खगवेसियव्वं,
न वि वदणाए न विमाणणाए न वि पूयणाए न वि वदणमाण
णपूयणाए भिक्ख गवेसियव्व, न वि हीलणाए न वि निंदणाए

ये । तीन लोक जिनकी चरण सेवा कर अपने आपको धन्य मानता
था । उन्हीं के आदेशानुसार उनकी शिष्यप्रशिष्य परंपरा में हुए मनः
पर्यय और अविधिज्ञानधारियों ने इस अहिंसा भगवती को भेद
प्रभेदों से जाना, और उसे विशेषरूप से देखा । पूर्वधरों ने इसे श्रुत-
निषद् किया । वैक्रियलब्धिधारियों ने इस भगवती का आजन्म पालन
किया । एव आभिनिबोधिक ज्ञानियों से लेकर सर्वगात्रप्रतिकर्म विमु-
क्तादि अनेक महापुरुषों ने इस अहिंसा भगवती को अपनी २ शक्ति
के अनुसार बहुतही अच्छी तरह से पाला है ॥ सू० ४

सेवा करीने पोतानी जतने धन्य मानता होता जेमना ज आदेश प्रभावे
तेमनी शिष्य-प्रशिष्य परंपरा थई गयेल मन पर्ययजने अवधिज्ञानीजोअजे
आ भगवती अहिंसाने बेद-प्रभेदो सद्धित जाली अने तेनु विशेषरूपे दर्शन
कथुं वैक्रिय लब्धिधारीजोअजे आ भगवतीनु एवमपर्यंत पालन कथुं अने
आभिनिबोधिक ज्ञानीजोअधी लधने सर्वगात्र प्रतिकर्म विमुक्ता आदि अनेक
महापुरुषोअजे आ भगवती अहिंसानु पोत पोतानी शक्ति प्रभावे धली ज
सारी रीते पालन कथुं छे ॥ सू ४ ॥

नानुजानाति ३, न पचति ४, न पाचयति ५, पचन्त नानुजानाति ६, न क्रीणाति ७, न क्रापयति ७, क्रीणन्त नानुजानाति ९, इत्येता नवमोटयः. आभिः 'परिशुद्ध' परिशुद्ध, तथा—'दसहिं य दोसेहिं' दशभिश्च दोषैः—शङ्कितादिदश—दोषैः 'विष्णुक्क' विष्णुक्कम्, 'उग्गमउप्पायणेसणासुद्ध' उद्गमोत्पादनै-पणाशुद्ध=आधारकर्मादयः षोडश उद्गमदोषाः, धान्यादयश्च षोडश उत्पादना-दोषाः, तद्रूपाया एपणा=गवेपणा, तथा शुद्धम्, तथा—'ववगयचुयचइय-चत्तदेह च' व्यपगतच्युतत्याजितत्यक्तदेह च=तत्र व्यपगताः=स्वय पृथग्भूता आगन्तुका पिपीलिकादयः, च्युताः=मृताः स्वत परतोऽग दातव्यनस्त्वाश्रिता

उसने साधु के निमित्त दूसरों से हिंसा कराई हो २, और न साधु के निमित्त हिंसा करने वाले की अनुमोदना की गई हो ३। तथा साधु के निमित्त जो स्वयं न पकाया हो १, दूसरों से नहीं पकाया गया हो २ और न जिसमें पकाने वाले की अनुमोदना की गई हो ३, तथा साधु के निमित्त जो पैसा देकर न खरीदा गया हो १, न दूसरों से खरीदवाया गया हो २ और न जिसमें खरीदने वाले की अनुमोदना की गई हो ३। इस प्रकार की इन नव कोटियों से विशुद्ध आहार आदि की गवेपणा साधु को करनी चाहिये। (दसहिं य दोसेहिं विष्णुक्क) जो आहार शङ्किन आदि दश दोषों से परि वर्जित हो (उग्गम उप्पायणेसणासुद्ध) उद्गम, उत्पादनरूप एपणा-गवेपणा से शुद्ध हो-आधारकर्म आदि सोलह उद्गमदोष हैं, धात्री आदि सोलह उत्पादना दोषो हे। इन बत्तीस दोषों से जो रहित हो तथा (ववगयचुयचइयचत्तदेह) (व्यपगत) जिस

करावी न होय, के साधुने निमित्ते हिंसा करवानी अनुमोदना यर्ध न होय, तथा साधुने निमित्ते के तेण्ण जते जनाब्धु न होय, भीन पासे जनावराब्धु न होय, के जेने पजववानी अनुमोदना अपार्ध न होय तथा साधुने निमित्ते के पैसा आपीने जरीद करुं न होय, के भीन पासे जरीद करावायु न होय, के जरीदनारने जरीदवानी अनुमोदना करार्ध न होय, जे रीते नव प्रकारे विशुद्ध आहार आदिनी साधुजे गवेपणुका रणी जेधजे (दसहिं य दोसेहिं विष्णुक्क) के आहार शङ्किता आदि दस दोषोथी रहित होय, (उग्गमउप्पायणे सणा सुद्ध) उद्गम, उत्पादनाउप-जेषणा-गवेपणाथी शुद्ध होय,—आधारकर्म आदि सोलह उद्गम दोष छे, धात्री आदि सोलह उत्पादना दोष छे—जेवनीस दोषोथी के रहित होय, तथा (ववगयचुयचइयचत्तदेह) (व्यपगत) के आहारमाथी झीझी आदि जेवा जते जे अलग यर्ध गया होय, तथा (चुय) जेवा व्यय चव गया

તિન્નિમિત્તા યા દસ્યા તસ્યા અર્થ=પયોજન તર્કે, ' ઇમ ચ ' ઇત ચ-વક્ષ્યમાણ
 ' સુદ્ધ ' શુદ્ધ=નિર્દોષ ' ઉઠ ' ઉઠ્ઠ=સ્તોક સ્તોક ગ્રહણપ્રગથનાદિક ' ગવેસય
 વ્વ ' ગવેપિતવ્યમ્, યવા-લૂનાનજ્ઞેનાત્કણાદાન તર્કેન સાધુનાઽપિ ગૃહસ્થાર્થે
 નિષ્પાદિતમન્નાદિકસ્તોક સ્તોક ગવેપનીયમિતિ ભાર । કીદ્દમ્-ઉઠ્ઠ ગવેપિ
 તવ્યમ્ ? इत्याह—' अक्य ' अकृत=साधु निमित्तमनिष्पादितम्, ' अकारिय '
 अकारितम्=अन्यद्वारा न कारितम्, तथा-' अणाह्य ' अनाहृतम्=गृहस्थेन साधो
 रनिमन्त्रणपूर्वक दीयमानम्, ' अणुद्दिष्ट ' अनुद्दिष्टम्=औद्देशिकादि दोषवर्जितम्,
 तथा-' अकीयकड ' अकीतकृत=साधूना कृते मूत्पेनातिष्पादितम् । एतदेव
 वर्णयन्नाह—' नवकोडोहि ' नवकोटिभिः, न हन्ति १, न घातयति २, घ्नन्त

પ્રયોજન કે લિયે (ઇમ ચ) ઇત વક્ષ્યમાણ (સુદ્ધ ઉઠ ગવેસિયવ્વ)
 શુદ્ધ-નિર્દોષ, આહાર આદિ કી ઉઠ મોઢે ૨ રૂપ મેં ગવેષણા કરના
 યાહિયે, અર્થાત્ જિસ પ્રકાર કાટે ગવે છેત સે કળોં કા આદાન કિયા
 જાતા હૈં ઉસી પ્રકાર સાધુ કો ગૃહસ્થ ને અપને લિયે બનાયે કૃપ
 ભોજન આદિ મેં સે થોડી થોડી માત્રા મેં ઉસકે યજ્ઞ સે આહાર આદિ
 છેના યાહિયે । આહારાદિ (અક્ય) સાધુ કે નિમિત્ત ઉસને નહીં બનાયા
 હોં ઓર (અકારિય) ન દૂસરોં સે ઉસને બનવાયા હોં (અણાહ્ય)
 બુલાકર-અર્થાત્-નિમન્ત્રણ કરકે જો ન દિયા જાય, (અણુદ્દિષ્ટ) ઓદે-
 શિક આદિ દોષોં સે જો વર્જિત હો, તથા (અકીયકડ) સાધુઓં કે
 નિમિત્ત મૂલ્ય દેકર જો નહીં યરીદા ગયા હો તથા (નવ કોડિહિ-
 પરિશુદ્ધ) નવકોટિયોં સે અર્થાત્ નૌ પ્રકાર સે જો પરિશુદ્ધ હો, અર્થાત્
 જિસ આહાર મેં સાધુ કે નિમિત્ત જીવો કી હિંસા નહીં હુરૂં હો, ન

માટે (ઇમ ચ) ઇસવક્ષ્યમાણ, (સુદ્ધ ઉઠ ગવેસિયવ્વ) શુદ્ધ, નિર્દોષ આહાર
 આદિની થોડા થોડા પ્રમાણમા ગવેષણા કરવી જોઈએ, એટલે કે જેમ લણાયેલ
 ખેતરનાથી કણોતુ આદાન કરાય છે, એ જ પ્રમાણે સાધુએ, ગૃહસ્થ દ્વારા
 પોતાને માટે બનાવાયેલ ભોજન આદિમાથી થોડા થોડા પ્રમાણમા આહાર
 આદિ લેવો જોઈએ તેણે તે આહારાદિ (અક્ય) સાધુને માટે બનાવ્યા હોવા
 જોઈએ નહીં, અને (અકારિય) બીજાની પાસે બનાવરાવ્યા હોવા એમએ નહીં
 (અણાહ્ય) બોલાવીને એટલે તે નિમન્ત્રીને જે ન અપાય, (અણુદ્દિષ્ટ)
 ઔદેશિક આદિ દોષોથી જે રહિત હોય, તથા (અકીયકડ) સાધુને માટે
 મૂલ્ય આપીને તે ખરીદાયેલ ન હોય, તથા (નવકોડિહિ પરિશુદ્ધ) નવ કોટીઓ
 વડે-નવ પ્રકારે જે પરિશુદ્ધ હોય, એટલે કે તેણે સાધુને નિમિત્તે બીજા પાસે હિંસા

ભૂતાદિનિગ્રહલક્ષણઃ, મૂલમ્ વૃક્ષવલ્લ્યાદીનાં, ભૈષજ્ય=ડ્રવ્યસયોગરૂપમ્, એતચ્ચ-
તુષ્ટ્યરૂપ કાર્યમેવ હેતુર્યત્ તત્તથો ભૈષ ન ગમેપિતત્ત્યમિત્યગ્રંથે સમ્યન્ધઃ ।
તથા-‘ ન લક્ષણુપ્પાયસુમિણ જોડસ નિમિત્તકહકુહકપ્પત્ત ’ ન લક્ષણોત્પાત
સ્વપ્નજ્યોતિષ નિમિત્તકયાકુહક પ્રયુક્ત=તત્ર લક્ષણ=સ્ત્રીપુરુષાદિ લક્ષણ, ઉત્પાતાઃ
=મુક્ત્યાદિશાસ્ત્રાણિ, સ્વપ્નઃ-સ્વપ્નશાસ્ત્રમ્, જ્યોતિષ-નક્ષત્રાદિ શુભાશુભમૂલક
શાસ્ત્રમ્ નિમિત્ત=મૂતમગ્નિપદાદિ સૂચક શાસ્ત્રમ્, કયા=કામકથા સૂચક શાસ્ત્રમ્,
કુહક=પરેપા વિસ્મયોત્પાદકપ્રયોગઃ, એમિ પ્રયોગૈર્વિસ્મિતેન દાયકેન પ્રયુક્ત

હજાજ, મત્ર-ભૂતાદિ ગ્રહ કે નિગ્રહ નિમિત્ત ઉપાયભૂત મત્ર કા પ્રયોગ,
મૂલ-વનૌપધિ, એવ ભૈષજ્ય-અનેક ઔષધિ મિશ્રિત દવા, એસી ભિક્ષા
મુનિજનોં કો કલ્પ્ય નહીં હોતી હૈ । તથા ન લક્ષણુપ્પાયસુમિણજો-
ડસનિનિત્તકહકુહકપ્પત્ત) જિસ ભિક્ષા કી પ્રાપ્તિ મુનિ કો લક્ષણો
કે સ્ત્રી પુરુષ આદિ કે ચિહ્નાદિકો કે-દિશાને કા પ્રદર્શન કરના પડે,
મૂલક આદિ કે શાસ્ત્ર કા કથન કરના પડે, સ્વપ્નશાસ્ત્ર કા, જ્યોતિષ-
શાસ્ત્ર કા, નિમિત્ત શાસ્ત્ર કા, કામ કથા સૂચક શાસ્ત્ર કા, તથા દૂસરોં
કે લિપે આશ્ચર્યોત્પાદક પ્રયોગો કા સહારા લેના પડે, એસી ભિક્ષા
મુનિજન કે લિપે કલ્પ્ય નહીં હૈ । તાત્પર્ય ઇસકા યહ હૈ કિ દાતા કો
ઉનકે હસ્ત આદિ કી રેખાઓ સે પ્રસન્ન કરકે, મૂલક આદિ કા શુભા-
શુભફલ કથન કરકે, કામ વર્દક કથાઓ કો કહ કરકે, સ્વપ્ન શાસ્ત્ર
કા પ્રરૂપણ કરકે, જ્યોતિષશાસ્ત્ર મેં અપની વિદ્વત્તા કા પ્રદર્શન કરકે
તથા આશ્ચર્યકારી પ્રયોગોં કો દિશા કરકે યહ કહના કિ મેં બહુત

ભૂતાદિચ્છેદના નિગ્રહને માટે ઉપાયભૂત મત્રનો પ્રયોગ, મૂળ-વનૌપધિ, અને
ભૈષજ્ય-અનેક ઔષધિ મિશ્રિત દવા, આદિ બતાવવું પડે એવો આહાર મુનિ-
જનોને કલ્પે નહીં તથા (નલક્ષણુપ્પાય સુમિણજોડસનિમિત્ત કહ કુહકપ્પત્ત)
જે ભિક્ષાની પ્રાપ્તિને માટે મુનિને સ્ત્રી-પુરુષ આદિના ચિહ્નાદિકોને બતાવવાનું
પ્રદર્શન કરવું પડે મૂલક આદિના શાસ્ત્રોનું કથન કરવું પડે, સ્વપ્ન શાસ્ત્ર,
જ્યોતિષશાસ્ત્ર, નિમિત્ત શાસ્ત્ર, કામકથા સૂચક શાસ્ત્ર, તથા બીજાને માટે
આશ્ચર્યોત્પાદક પ્રયોગો વગેરેની મદદ લેવી પડે એવી ભિક્ષા મુનિજનોને કલ્પે
નહીં તેનું તાત્પર્ય એ છે કે દાતાને તેમના હસ્ત આદિની રેખાઓ વડે ખુશ
કરીને, મૂલક આદિનું શુભાશુભ ફળ કહીને, કામવર્ધન કથાઓ કહીને, સ્વપ્ન
શાસ્ત્રનું પ્રરૂપણ કરીને, જ્યોતિષશાસ્ત્રમાં પોતાની વિદ્વત્તા બતાવીને, તથા
આશ્ચર્યકારક પ્રયોગો બતાવીને પોતાને બહુ જ મહાન વિદ્વાન છે એવી છાપ

पृथिवीकायिकादयः 'चइय' त्याजिताः=दातव्यपदार्थान् दायकेन भृत्यादि
 द्वारा पृथकारिता, अथवा 'चत्ता' स्वयमेव दायकेन त्यक्ताः=पृथक्कृता देहाः=
 जीवशरीराणि यस्मादाहारात्तन् तथोक्तम्, अतएव 'फासुय च' प्रामुक् च=
 व्यपगतजीव च, एतादृशम्-माहात्म्यनादिक गवेपितव्यम्। तथा कीदृश भेष
 न गवेपितव्यम्? इत्याह—'न निसिज्ज रुहापभोगणस्सामु ओवणीय' न
 निषय रुहापयोजनागयाश्रुतोपनीत, तत्र-निषय आसने उपविश्य यत् रुहा-
 पयोजन=धर्मकथानिमित्तम् आग्वा=शुभम्=प्राग्वापन प्रतिपदशास्त्र, तेन तथा-
 विधकथाकरणेन, यत् उपनीतम्=धर्मकथाकर्त्रे दायकेन दातुमानीतमशनादिक,
 तत्र गवेपितव्यमित्यग्रेण सम्बन्धः। तथा—'न तिगिच्छामतमूलमेसज्जकज्जहेउ'
 न चिकित्सा मन्त्रमूलमप्यकार्यहेतु = चिकित्सा=रोगनिवारणलक्षणा, मन्त्रः=

आहार से पिपीलिकादिक जीव स्वयं अलग हो गए हों तथा (चुय)
 जीव स्वयं चव गये हों अथवा अग्न्यादि के संयोग से चवगये हों,
 (चइय) दाता ने भृत्यादि द्वारा पृथक् करा दिये हों, (चत्ता) स्वयं दाता
 ने पृथक् कर दिये हों, (फासुय च) प्रामुक् केसा अशन आदि मुनिजनों को
 कल्प्य है और ऐसे ही आहार की उन्हें गवेपणा करनी चाहिये। तथा
 जो ऐसा न हो उसकी उन्हें गवेपणा नहीं करनी चाहिये, इसी विषयको
 अब सूत्रकार "न निसिज्ज" इत्यादि पदों द्वारा प्रकट करते हैं, वे
 कहते हैं कि (न निसिज्ज रुहापभोगणस्सामु ओवणीय) आसन
 पर बैठ कर धर्म कथा सुनाते समय यदि कोई दाता उन मुनिजनों के
 पास देने के लिये अशनादि देय द्रव्य लाया हो तो वह उन मुनिजनों
 को कल्पता नहीं लेना है। तथा—(न तिगिच्छामतमूलमेसज्जकज्जहेउ)
 जिस भैक्ष्य की प्राप्ति में मुनि को चिकित्सा-रोगनिवारण के निमित्त

डोय अथवा अग्नि आदिना संयोगशील नाश पाभ्या डोय, (चइय) दाताओं
 ने अशनादि द्वारा अलग कराभ्या डोय, (चत्ता) दाताओं ने तो तेमने अलग कर्त्ता
 डोय, (फासुय च) प्रामुक् जैसे आहार आदि मुनिजनों ने कहे छे अने जैसे
 न आहारनी तेमछे गवेपणा करवी नेछे, तथा ने आहार जैसे न डोय
 तेनी गवेपणा तेमछे करवी नेछे नहीं छे न विषयने हवे सूत्रकार "न
 निसिज्ज" इत्यादि पदों द्वारा प्रकट करे छे तेजो यथावे छे के (न निसिज्ज
 रुहापभोगणस्सामुओवणीय) आसने जेसीने धर्मकथा संलग्नापत्तो वज्जते ने
 डोय दाता ते मुनिने आपवान् माटे अशनादि देयद्रव्य लाये डोय तो ते
 निज्जनोने कल्पता नहीं, तथा (न तिगिच्छामतमूलमेसज्जकज्जहेउ) ने
 आहारनी प्राप्ति माटे मुनिने चिकित्सा-रोग निवारणने माटे धिया, मन्त्र-

भूतादिनिग्रहलक्षण', मूलम् वृक्षल्लयादीनां, भैषज्य=व्यसयोगरूपम्, एतच्च-
तृप्यरूप कार्यमेव हेतु र्गत् तत्तथो भैक्ष न गपेपितव्यमित्यत्रेण सम्बन्धः ।
तथा—' न लङ्खणुप्पायमुमिण जोडस निमित्तकहकुहकप्पउत्त ' न लक्षणोत्पात
स्वप्नज्योतिष निमित्तकयाकुहक प्रयुक्त=तत्र लक्षण=स्त्रीपुरुषादि लक्षण, उत्पाताः
=भूकम्पादिशास्त्राणि, स्वप्नः=स्वप्नशास्त्रम्, ज्योतिष=नक्षत्रादि शुभाशुभसूचक
शास्त्रम् निमित्त=भूतभविष्यदादि सूचक शास्त्रम्, कथा=कामकथा सूचक शास्त्रम्,
कुहक=परेषा विस्मयोत्पादकप्रयोगः, एभि प्रयोगैर्विस्मितेन दायकेन प्रयुक्त

इलाज, मत्र-भूतादि ग्रह के निग्रह निमित्त उपायभूत मत्र का प्रयोग,
मूल-वनौषधि, एव भैषज्य-अनेक औषधि मिश्रित दवा, ऐसी भिक्षा
मुनिजनों को कल्प्य नहीं होती है । तथा न लङ्खणुप्पायमुमिणजो-
इसनिमित्तकहकुहकप्पउत्त) जिस भिक्षा की प्राप्ति मुनि को लक्षणो
के स्त्री पुरुष आदि के चिह्नादिको के-दिखाने का प्रदर्शन करना पड़े,
भूकप आदि के शास्त्र का कथन करना पड़े, स्वप्नशास्त्र का, जोतिष-
शास्त्र का, निमित्त शास्त्र का, काम कथा सूचक शास्त्र का, तथा दूसरों
के लिये आश्चर्योत्पादक प्रयोगों का सहारा लेना पड़े, ऐसी भिक्षा
मुनिजन के लिये कल्प्य नहीं है । तात्पर्य इसका यह है कि दाता को
उनके हस्त आदि की रेखाओं से प्रसन्न करके, भूकप आदि का शुभा-
शुभफल कथन करके, काम वर्द्धक कथाओं को कह करके, स्वप्न शास्त्र
का प्ररूपण करके, ज्योतिषशास्त्र में अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करके
तथा आश्चर्यकारी प्रयोगों को दिखा करके यह कहना कि मैं बहुत

भूतादिग्रहना निग्रहने भाटे उपायभूत मत्रने प्रयोग, मूल-वनौषधि, अने
भैषज्य-अनेक औषधि मिश्रित दवा, आदिभतावबु पडे जेवो आहार मुनि-
जनने उच्ये नही तथा (नलङ्खणुप्पायमुमिणजोइसनिमित्त कह कुहकप्पउ
के भिक्षानी प्राप्तिने भाटे मुनिने स्त्री-पुरुष आदिना चिह्नादिडोने भताववातु
प्रदर्शन करवु पडे भूकप आदिना सास्रोतु कथन करवु पडे, स्वप्न शास्त्र,
ज्योतिषशास्त्र, निमित्त शास्त्र, कामकथा सूचक शास्त्र, तथा भीजने भाटे
आश्चर्योत्पादक प्रयोगो वगेरेनी महद लेवी पडे जेवी भिक्षा मुनिजनने उच्ये
नही तेतु तात्पर्य जे छे डे दाताने तेमना हस्त आदिनि रेखाओ वडे पुश
जरीने, भूकप आदिनु शुभाशुभ क्षण जहीने, कामवर्धन कथाओ जहीने, स्वप्न
शास्त्रनु प्ररूपण जरीने, ज्योतिषशास्त्रभा पोतानी विद्वत्ता भतावीने, तथा
आश्चर्यकारी प्रयोगो भतावीने पोते बहुत न महान विद्वान छे जेवी छाय

पृथिवीकायिकादयः 'चइय' त्याजिताः=दातव्यपदार्थात् दायकेन भृत्यादि द्वारा पृथवारिताः, अथवा 'चत्ता' स्वयमेव दायकेन त्यक्ताः=पृथक् कृता देहाः=जीवशरीराणि यस्मादाहारात् तथोक्तम्, अथवा 'फासुय च' प्रासुक च=व्यपगतजीव च, एतादृशम्-माहात्मशनादिकं गवेपितम्। तथा कीदृशं भक्षं न गवेपितव्यम्? इत्याह—'न निसिज्जकृत्तापयोगणखासु ओवणीय' न निषद्य कथाप्रयोजनात्प्राश्रुतोपनीत, तत्र-निषद्य आसने उपविश्य यत् कथा-प्रयोजन=धर्मकथानिमित्तम् आख्या=श्रुतम्=आख्यानं प्रतिपदशब्द, तेन तथा-विधकथाकरणेन, यत् उपनीतम्=धर्मकथाकर्यं दायकेन दातुमानीतमशनादिकं, तत्र गवेपितव्यमित्यग्रेण सम्बन्धः। तथा—'न तिमिञ्छामनमूलभेसज्जकज्जहेउ' न चिकित्साभ्यन्तमूलभेसज्जकार्यहेतु = चिकित्सा=रोगनिवारणलक्षणा, मन्त्रः=

आहार से पिपीलिकादिक जीव स्वयं अलग हो गए हों तथा (चुय) जीव स्वयं चव गये हों अथवा अग्न्यादि के संयोग से चवगये हों, (चइय) दाता ने भृत्यादि द्वारा पृथक् करा दिये हों, (चत्ता) स्वयं दाता ने पृथक् कर दिये हों, (फासुय च) प्रासुक ऐसा अशन आदि मुनिजनों को कल्प्य है और ऐसे ही आहार की उन्हें गवेपणा करनी चाहिये। तथा जो ऐसा न हो उसकी उन्हें गवेपणा नहीं करनी चाहिये, इसी विषयको अब सूत्रकार "न निसिज्ज" इत्यादि पदों द्वारा प्रकट करते हैं, वे कहते हैं कि (न निसिज्जकृत्तापयोगणखासु ओवणीय) आसन पर बैठ कर धर्म कथा सुनाते समय यदि कोई दाता उन मुनिजनों के पास देने के लिये अशनादि देय द्रव्य लाया हो तो वह उन मुनिजनों को कल्पता नहीं लेना है। तथा—(न तिमिञ्छामनमूलभेसज्जकज्जहेउ) जिस भैद्य की प्राप्ति में मुनि को चिकित्सा-रोगनिवारण के निमित्त

होय अथवा अग्नि आदिना संयोगशील नाश पाभ्यां होय, (चइय) दाताओं ने अशनादि द्वारा अलग कराव्या होय, (चत्ता) दाताओं ने तो तेमने अलग कर्या होय, (फासुय च) प्रासुक ओयो आहार आदि मुनिओने कट्ये छे अने ओयो न आहारनी तेमछे गवेपणा करवी जेधओ, तथा जे आहार ओयो न होय तेनी गवेपणा तेमछे करवी जेधओ नहीं ओ न विषयने हवे सूत्रकार "न निसिज्ज" इत्यादि पदों द्वारा प्रकट करे छे तेओ अथावे छे के (न निसिज्ज कथाप्रयोगणखासुओवणीय) आसने जेसीने धर्मकथा सलणावती वपते जे ठोह दाता ते मुनिने आपवाने भाटे अशनादि देयद्रव्य लाओ होय तो ते निजनेने कल्पता नहीं, तथा (न तिमिञ्छामनमूलभेसज्जकज्जहेउ) जे आहारनी प्राप्ति भाटे मुनिने चिकित्सा-रोग निवारणने भाटे छेला, मन्त्र-

रक्षणशासनेन ' भिक्ष ' भैक्ष ' गवेसियञ्च ' गवेपितव्यम् । तथा- ' न वि वदणाए ' नापि वन्दनया=नापि प्रशंसया " दिग्व्यापिनो भवद्गुणाः पूर्वश्रुताः, परमद्यभवानस्माभिः प्रत्यक्षीकृतः " इत्येव रूपया, वन्दनशब्दोऽत्र प्रशंसावाचकः, ' न वि माणण्या ' नापि माननया आसनादि प्रदानेन ' न वि पूयणाए ' नापि पूजनया-दायकाय किंचिद्वस्तुप्रदानरूपया एतदेव समुदायेनाह- ' न वि वदण-माणणपूयणाए ' नापि वन्दनमाननपूजनया ' भिक्ष्व गवेसियञ्च ' भैक्ष गवेपित-

आदि को पढ़ा दूंगा तो मुझे इसके यहाँ से भिक्षा मिलती रहेगी " ऐसे विचार से जो भिक्षा प्राप्त हो तो वह भिक्षा भी मुनि को नहीं लेनी चाहिये । इसी तरह जिस भिक्षा की प्राप्ति में युगपत् दम्भन, रक्षण और शासन इनका प्रयोग करना पड़ता हो उस तरह से भी मुनि को भिक्षा की गवेपना नहीं करनी चाहिये । तथा (न वि वदणाए, न वि माणणाए, न वि पूयणाए, न वि वदणमाणणपूयणाए, न वि हीलणाए, न वि निंदणाए, न वि गरिहणाए, न वि हीलणा निंदणा गरिहणाए भिक्ष्व गवेसियञ्च) जिस भिक्षा की गवेपना करने में साधु को दाता की " आप की गुणराजि दिगन्ततक फैली हुई है- आपकी प्रशंसा मैं ने पहिले से ही सुन रखी है परन्तु साक्षात्कार आप का आज ही हुआ है " इस प्रकार से वदना-प्रशंसा करनी पड़े ऐसी भिक्षा साधु को कल्प्य नहीं है । यहा वदन शब्द प्रशंसार्थक है । जिस भिक्षा की प्राप्ति में दाता को आमन आदि का प्रदान पूर्वक सन्मान करके अर्थात् आसनादि प्रदान द्वारा दाता को प्रसन्न करके भिक्षा की प्राप्ति करनी पड़े-ऐसी भिक्षा भी साधु को लेना उचित नहीं है । इसी तरह दाता

तेने त्याही भिक्षा मळ्या करथे," अशा विचारशील भिक्षा प्राप्तथाय ते भिक्षा पणु साधुने कट्ये नही वणील भिक्षानी प्राप्तिमा युगपत्, दल, रक्षण अने शासनने प्रयोग करये पडे अे प्रकारनी भिक्षानी प्राप्ति मुनिने कट्ये नही तथा (न वि वदणाए, न वि माणणाए, न वि पूयणाए, न वदणमाणणपूयणाए, न वि हीलणाए, न वि निंदणाए, न वि गरिहणाए, न वि हिलणा निंदणा गरिहणाए भिक्ष्व गवेसियञ्च) ल भिक्षानी प्राप्ति माटे साधुने दातानी ' आपनी गुणराशि दिगन्त सुधी व्यापेल छे, मे आपनी प्रशंसा पडेलेली न सालणी छती पणु आपनो साक्षात्कार तो आले न थये " अे गीते वदण-प्रशंसा करवी पडे अेवी भिक्षा साधुने कट्ये नही अही वदन शब्द प्रशंसा अर्थमा वपराये छे आसनादि आपीने दातानु सन्मान करवु पडे अथवा ते गीते तेअने प्रसन्न करवा पडे ते प्रकारनी भिक्षा पणु साधुने कट्ये नही वणी दाताने पातानी तरक्षी

भैक्ष न गवेपितव्यम् । तथा-‘ न वि ढमणाए ’ नापि दम्भनया=मायाप्रयोगेन
 भैक्ष गवेपितव्यम्, एव ‘ न वि रक्खणाए ’ नापि रक्षणया=दायकस्तुरक्षणेन,
 ‘ न वि सासणाए ’ नापि शासनया=शिक्षणेन=तत्र पुत्रपौत्रादिक शिक्षापित्वा-
 मीति कथनेन समुदायेनाह—‘ न वि ढमणरक्खणसासणाए ’ नापि दम्भन-

घड़ा भारी विद्वान् ह अतः मुझे यह अच्छी तरह अच्छी भिक्षा देना,
 इस प्रकार के उपायों का जिस भिक्षा की प्राप्ति में सहारा लेना पड़े
 वह भिक्षा मुनि को कल्प्य नहीं कहें गई है, अर्थात् इस प्रकार की
 क्रिया से मुनि को भिक्षा देने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये । तथा
 (न वि ढमणाए) मायाचारी का सहारा लेकर भी भिक्षा वृत्ति मुनि
 को नहीं करनी चाहिये, अर्थात् जिस भिक्षा की गवेपणा करने में
 माया का प्रयोग करना पड़े ऐसी भिक्षा भी मुनिजन को कल्प्य नहीं
 है । (न वि रक्खणाए, न वि सासणाए, न वि ढमण रक्खणसासणाए
 भिक्ष गवेसियव्व) इसी तरह जिस भिक्षा की गवेपणा करने में—प्राप्ति
 करने में—दायक की वस्तु के संरक्षण का भार अपने ऊपर आया हो,
 अर्थात्—दाता यदि कहे कि “ महाराज ! आप इस वस्तु को देखे रहना
 मैं अभी आकर आपको भिक्षा देता हूँ—इस प्रकार दाता अपनी वस्तु के
 संरक्षण करने का भार मुनि को सौंपता हो और पीछे आकर भिक्षा
 देता हो तो वह भिक्षा मुनि को कल्प्य नहीं है । इसी तरह जिस भिक्षा
 की प्राप्ति में मुनि को वह भाव जगे कि “ मैं इस दाता के पुत्र पौत्र

पाडीने दाता पासेधी सारा प्रमाणभा सारी शिक्षानी आशा राखवी, वगेरे
 उपायेना ने शिक्षाभा सहारे लेवे पडे तेवी शिक्षा साधुओने कहे नहीं
 ओटले के ओ प्रकारना उपायेधी साधुओओ शिक्षा लेवाना प्रयत्न करवा
 ओधओ नही तथा (न वि ढमणाए) मायाचारीनी भट्ट लधने पण मुनिओ
 शिक्षावृत्ति करवी ओधओ नही ओटले के ने शिक्षानी प्राप्ति भाटे मायाने
 प्रयोग करवे पडे ओवी शिक्षा मुनिओने कहे नही (न वि रक्खणाए,
 न वि सासणाए, न वि ढमण रक्खण सासणाए भिक्ष गवेसियव्व) ओ न प्रमाणे
 ने शिक्षानी प्राप्तिभा, दातानी वस्तुना संरक्षणुने लार पोताना पर आब्यो
 होय, ओटले के दाता ओम कहे के “ महाराज ! आप आ वस्तुनु ध्यान
 राखओ हु आपने शिक्षा आपु छु ” आ रीते दाता पोतानी वस्तुना
 संरक्षणुनी जवाणदारी मुनिने ओपे अने पछी आवीने शिक्षा अपणु करे
 तो ते शिक्षा मुनिने कहे नही ओ न प्रमाणे ने शिक्षानी प्राप्तिभा मुनिना मनभा
 ओवे लाव जगे के “ हु आ दाताना पुत्र, पौत्र आदिने ” अने

गवेसियञ्च ' भैक्ष गवेपितव्यम् । तथा ' न वि भेसणाए ' नापि भीषणया=
दायकभयोत्पादनया, ' न वि तज्जणाए ' नापि तर्जनया—" ज्ञास्यसि रे दुष्ट !
इत्यादि तिरस्काररूपया ' न वि तालणाए ' नापि ताडनया=बपेटादिदान-
रूपया, समुदायेनोन्मते—" न वि भेसणतज्जणतालणाए ' नापि भीषणतर्जन
ताडनया भैक्ष गवेपितव्यम् । तथा ' न वि गारवेण ' नापि गौरवेण ' अह क्षत्रि-
योऽस्मीत्याद्यभिमानेन, ' न वि कुहणाए ' नापि कुहनया क्रोधेन, ' न वि व
णिमगयाए ' नापि वनीपकृतया-याचकवृत्त्या, समुदायेनाह—" न वि गारव-
कुहणवणिमगयाए ' नापि गौरवक्रोधवनीपकृतया भैक्ष गवेपितव्यम् । तथा-
' न वि मित्तयाए ' नापि मित्रतया=दायकेन सह मैत्रीभावोत्पादनेन, ' न वि प-
त्थणाए ' नापि प्रार्थनया, " यूय दायका, याचकरक्षकाः वय याचका,

करना साधु को योग्य नहीं है । इसी तरह (न वि भेसणाए, न वि-
तज्जणाए, न वि तालणाए, न वि भेसण-तज्जण-तालणाए भिक्खु गवे-
सियञ्च) दायक (दाता) को भय का उत्पादन करके, " रे दुष्ट मैं
तुझे घतलाऊँगा " इस प्रकार दाता का तिरस्कार करके, दायक (दाता)
को मोरपीट करके, तथा एक ही साथ एक ही दायक (दाता) के
साथ भीषण, तर्जन और ताडना करके भिक्षा की गवेपणा नहीं
करनी चाहिये । तथा- (न वि गारवेण न वि कुहणाए, न वि वणीमग-
याए न वि गारवकुहणवणीमगयाए भिक्खु गवेसियञ्च) ' मैं क्षत्रिय
हूँ " इत्यादि अभिमान रूप गौरव से, क्रोध से, एव याचक वृत्ति से,
तथा एक ही साथ गौरव क्रोध एव याचक वृत्ति से भी भिक्षा की
गवेपणा नहीं करनी चाहिये । (न वि मित्तयाए न वि पत्थणाए न वि
सेवणाए न वि मित्तय-पत्थण-सेवणाए भिक्खु गवेसियञ्च) तथा

न वि तज्जणाए, न वि तालणाए, न वि भेसण-तज्जण-तालणाए भिक्खु
गवेसियञ्च " दाताने लथ भतापीने " रे दुष्ट हूँ तने भतापी दुष्ट " अ
रीते दाताने तिरस्कार करीने, दाताने भार भागीने तथा अके साथे दाता
प्रत्ये भीषण तर्जना अने ताडना करीने भिक्षानी गवेपणा करवी न्नेधअे नही
तथा " न वि गारवेण, न वि कुहणाए, न वि वणीमगयाए न वि गारवकुहण-
वणीमगयाए भिक्खु गवेसियञ्च " " हूँ क्षत्रीय छु " आदि अभिमानरूप
गौरवधी, क्रोधधी, अने याचक वृत्तिधी तथा अके साथे गौरव, क्रोध अने
याचक वृत्तिधी पणु भिक्षानी गवेपणा करवी न्नेधअे नही " न वि मित्तयाए,
न वि पत्थणाए, न वि सेवणाए, न वि मित्तय-पत्थण-सेवणाए भिक्खु गवे
सियञ्च " तथा दातानी साथे मित्रता करीने, " आप दाता छे, याचकेना

व्यम् । तथा- 'न वि हीरणाए' नापि हीरनया=" त्व जात्या नीनोऽसि क्व
 श्वया भिक्षादीयते" इत्यादि दायक जात्युद्घाटनरूपमाननया 'न रि निदणाए'
 नापि निन्दनया=" त्व कृपणोऽसि, वनीपकोऽसि " इति दायक दोषोद्घाटनया,
 'न रि गरिहणाए' नापि गर्हणया= जनममज्ञ दायक निन्दया, समुदायेनाह-
 'न रि हीलगर्निधणगरिहणाए' नापि हीलगर्निन्दनगर्हणया 'मित्रस-

को अपनी और से कुछ वस्तु देकर उनसे भिक्षा की चाहना रख भिक्षा
 की गवेषणा करने का तरीका उचित नहीं है । अर्थात् इस तरीके से
 भिक्षा की चाहना करना योग्य नहीं है । इसी तरह युगपत्-एक ही
 दाता के प्रति चन्दन, मानन और पूजन का प्रयोग कर के साधु को भिक्षा
 की गवेषणा करना योग्य नहीं है । तथा दाता की जातिका उद्घाटनरूप
 अवमानना करके कि "तुम तो जाति में नीच हो भिक्षा कैसे दोगे"
 इस प्रकार से कहकर के उसे भिक्षा देने के लिये कञ्ज करना और
 फिर भिक्षा कि गवेषणा निमित्त उसके यहाँ जाना यह भी साधु का
 भिक्षा प्राप्ति का तरीका साधु समाचारी के योग्य नहीं है । इसी तरह
 "तुम कृपण हो वनीपक हो" इस प्रकार से दाता के दोषों को उद्घाटन
 करना और फिर उसे भिक्षा देने के लिये कञ्ज करना यह भी साधु के
 लिये भिक्षा की गवेषणा करने का तरीका कल्प्य नहीं है । जनता के
 समक्ष दायक की निन्दा करके, तथा एक ही साथ, एक ही (दाता)
 दायक के प्रति हीलना, निन्दना तथा गर्हणा करके भिक्षा की गवेषणा

कोई वस्तु आपीने तेनी पासेथी भिक्षा भेजवानी आशा राखीने भिक्षानी
 गवेषणा करवी ते युक्ति पण साधुने भाटे योग्य नथी ओटले के आ युक्तिथी
 भिक्षा भेजवानी छिछा राखवी ते योग्य नथी वणी युगपत्-ओक ज दाता
 प्रति चन्दन, मानन, पूजन, आदिने प्रयोग करीने भिक्षानी गवेषणा करवी ते
 साधुने भाटे उचित नथी तथा दातानी जातिना उल्लेखरूप तिरस्कार करीने
 दाता "तु तो नीच छे, भिक्षा केवी रीते दइसि" आ रीते कहीने ते
 भिक्षा अर्पण करवाने भाटे कञ्ज करवे अने पछी भिक्षानी प्राप्ति भाटे तेने
 त्या जणु, ओ भिक्षा प्राप्तिने उपाय सास आचार वाणा साधुने भाटे उचित
 नथी ओ ज प्रमाणे "तमे कणुस छे वनीपक छे" ओ रीते दाताना दोषो
 जहेर करीने पछी तेने भिक्षा देवा भाटे कञ्ज करवे ओ उपाय पण साधुने
 भिक्षाप्राप्ति भाटे कल्पते नथी, दोषोनी समक्ष दातानी निन्दा करीने तथा
 ओक साथे दातानी हिलना (तिरस्कार) निन्दा, तथा गर्हणा करीने भिक्षानी
 गवेषणा करवी ते साधुने

‘भिक्षालाभो भविष्याति न वे’त्यादि विपादरहितः, तथा—‘अपरिततजोगी’ अपरितान्तयोगी=अलाभादिषु तन्तनाटादि शब्दवर्जितः, तथा—‘जयण-घडणकरणचरियणियगुणजोगसपउत्ते’ यतनघटनकरणचरितविनयगुणयोग-सप्रयुक्तः, तत्र-यतन प्राप्तेषु समययोगेषु उद्यमः, घटनम्=अप्राप्तसमययोगप्राप्ति चेष्टनम्, एतद् द्वय कुरुते यः स यतनघटनकरणः, तथा—‘चरितविनयः=सेवितो येन स चरितविनयः, तथा-गुणयोगेन=समाधिगुणयोगेन सप्रयुक्तो यः स-गुण योगसप्रयुक्तः, एतेषा कर्मधारयः, एतादृशो ‘भिक्षू’ भिक्षुः=साधु भिक्षु-सणानिरए’ भिक्षौपणानिरतः=भिक्षागवेपणाया निरतो भवेदिति सम्बन्धः, एवम्भूतेन भिक्षुणा भैक्ष गवेपितव्यमिति भावः । अथोपसहरन्नाह—‘इम च’ इत्यादि—‘इम च ण सव्वजगज्जीवरक्खणदयट्ठयाए पावयण’ इदं च खलु ‘पावयण’ प्रवचनं ‘सव्वजगज्जीवरक्खणदयट्ठयाए’ सर्वे ये जगज्जीवाः=पट्ट-जीवनिकायाः, तेषा रक्षणरूपा या दया=अनुकम्पा तदर्थं-सर्वजगज्जीवरक्षणदयार्थम् ‘भगवया’ भगवता महावीरेण ‘सुकहिय’ सुकथितं न्यायानाधितत्वात्,

रहित होकर, अरुण-अपने दुःख को किसी के पास किसी भी रूप में प्रकट नहीं करके, अविपादी—“भिक्षा का लाभ मुझे होगा या नहीं होगा” इस प्रकार के विपाद भाव को छोड़ करके अपरिततजोगी-भिक्षावृत्ति नहीं मिलने पर तनतनाने की वृत्ति का परित्याग करके, तथा-यतनघटनकरण-प्राप्त समय में उद्यमशील तथा अप्राप्त समय की प्राप्ति करने में निरन्तर चेष्टाशील, ऐसा साधु कि जो चरित विनय-विनय से युक्त बना हुआ है, तथा गुणयोगसप्रयुक्त-समाधिगुण के योग से जो युक्त हो रहा है ऐसा होकर भिक्षु-मुनि भिक्षौपणा में-भिक्षा की गवेपणा करने में निरत होवे । (इम च ण पावयण) यह प्रवचन (सव्वजगज्जीवरक्खणदयट्ठयाए) पट्ट निकायरूप जगत के जीवों की रक्षणरूप दया के निमित्त (भगवया सुकहिय) भगवान्

अविपादी—“मने भिक्षानो लाभ भग्गे के नहीं भग्गे” ये प्रकारना विपाद लाभने छोड़ने, अपरिततजोगी-भिक्षा नहीं भगता तनतनावनी वृत्तिने परित्याग करीने, तथा यतनघटनकरण-प्राप्त समयमा उद्यमशील तथा अप्राप्त समयमा प्राप्ति करवामा निरन्तर प्रयत्नशील, ओवे साधु के वे चरितविनय विनयथी युक्त थयेल छे, तथा गुणयोगसप्रयुक्त-समाधि गुणना योगथी वे युक्त थयेल-छे, ओवा थधने भिक्षु-मुनि भिक्षानी गवेपणा करवाने प्रयत्नशील थाय “इमच ण पावयण” आ प्रवचन “सव्वजगज्जीव रक्खणदयट्ठयाए” जगतना छकायना ओवेनी रक्षाइए द्याने निमित्त “भगवया सुकहिय”

દીયતામસ્મય ' મિત્યાદિરૂપયા, ' નરિ સેવણયા ' નાપિ સેવનયા=નાપિ સેવાવૃત્તયા, સમુદાયેનાદ-' ન ત્રિ મિતયપત્તય સેવણા ' નાપિ મિત્રતા પ્રાર્થના સેવનયા ભક્ષ ગવેપિતવ્યમ્ । તર્હિ યથ ગવેપિતવ્યમ્ ? ઇત્યાદ-' અણા ' અજ્ઞાતઃ=' ધનિકોડય પ્રવર્જિતઃ' ઇતિ દાયકજનૈરજ્ઞાતઃ, ' અગદ્ધિ ' અગદ્ધઃ= આહારાદિયુ ગૃદ્ધમાવર્જિતઃ, ' અદુદ્ધે ' અદ્વિષ્ટઃ-આહારેષુ દાયકેષુ ચ દ્વેષમાવર્જિતઃ, ' અદીણે ' અદીન=દીનતાવર્જિતઃ, ' અવિમણે ' અવિમનાઃ=અગમાદિપ્રયુક્તમાન-સિદ્ધિવિકારરહિતઃ, ' અક્લુણે ' અક્લુણ=અદુઃશ્યામદર્શક ' અવિસાર્દ ' અવિષાદી=

દાયક-દાતા કે સાથ મિત્રતા કરકે, " આપ દાતા હું—ચાચકોં કે સરક્ષક હું, હમ ચાચક હું અતઃઆપ હમં ભિક્ષા દીજિયે " એવી દાતા સે પ્રાર્થના કરકે, તથા દાતા કી સેવા વૃત્તિ કરકે ભિક્ષા કી ગવેવણા નહીં કરની ચાહિયે । ઇસી તરફ ઇન ત્રીનોં વાતોં કો ણક માય કિસી દાતા કે સાથ પ્રયુક્ત કરકે ભિક્ષા કી ગવેવણા સાધુ કો નહીં કરની ચાહિયે । કિન્તુ (અણા અગદ્ધિ અદુદ્ધે અદીણે અવિમણે અક્લુણે અવિસાર્દ અપરિતતજોગી-જયણ ઘટણ કરણચરિય વિનય ગુણજોગ સપડતે મિત્ર ભિક્ષેસણા ણિર) અજ્ઞાત-દાયક (દાતા) જનોં સે " યહ સાધુ ધનિક થે ઓર ધનિક અવસ્થા સે દીક્ષિત હુવે " ઇસ રૂપ સે અજ્ઞાત બનકર અગદ્ધ-આહાર આદિ મે ગૃદ્ધભાવ સે વર્જિત હોકર, અદ્વિષ્ટ-આહાર અથવા દાતા મેં દ્વેષભાવ સે વિહીન હોકર, અદીન-દીનતા કે ભાવ સે રહિત હોકર, અવિમના-ભિક્ષા કે નહીં મિલને પર માનસિક વિકાર સે

સ રક્ષક છો, અમે ચાચક છીએ, તો આપ અમને ભિક્ષા આપો " એવી દાતાને પ્રાર્થના કરીને તથા દાતાની સેવાવૃત્તિ કરીને ભિક્ષા માત્ર કરવી જોઈએ નહીં એ જ રીતે એ ત્રણે બાબતોના દાતા પાસે એક સાથે પ્રયોગ કરીને સાધુએ ભિક્ષાની ગવેવણા કરવી જોઈએ નહીં પણ " અણા અગદ્ધિ અદુદ્ધે અદીણે અવિમણે અક્લુણે અવિસાર્દ અપરિતતજોગી જયણઘટણકરણચરિયવિનયગુણ જોગસપડતે મિત્ર-ભિક્ષેસણા ણિર " અજ્ઞાત—" આ સાધુ ધનિક હતા અટલે કે ધનિક સ્થિતિમાંથી દીક્ષિત થયેલ છે " એ વિષે દાતાઓથી અજ્ઞાત રહીને અગદ્ધ-આહાર આદિમા ગૃદ્ધ ભાવથી રહિત બનીને, અદ્વિષ્ટ-આહાર અથવા દાતા પ્રત્યે દ્વેષ ભાવ રહિત થઈને, અદીન-દીનતાના ભાવથી રહિત થઈને, અવિમના-ભિક્ષા ન માગના છતાં પણ માનસિક વિકારથી રહિત થઈને અક્લુણ-કોઈ પણ પ્રકારે પોતાના હાથને કોઈ પણ રીતે પ્રગટ " કરીને,

કર્તવ્ય છે કે છત્કાય કે જીવોની રક્ષા કરે । જ્યો કે યહ લોક
 હન્નો જીવોં સે ભરા હુઆ છે અતઃ અપની પ્રત્યેક પ્રવૃત્તિ સયમિત રખવે
 સે છત્કાય કે જીવોંની રક્ષા હોતી છે । મુનિજન ઇસ અહિંસા મહા-
 વ્રત કે પાલક હોતે હેં અતઃ ઉને લિયે પ્રભુ કા આદેશ છે કે વે
 એસે ઉઠઝ આહાર આદિ કી ગવેષણા કરને મેં નિરત રહેં કિ જો શુદ્ધ
 હો, અકૃત, અકારિત, અનનુમોદિત, અનાહુત, અનુદિષ્ટ, અક્રીતકૃત,
 કયમોદિવિશુદ્ધ, શક્તિાદિદોષવર્જિત, આધારમાદિ દોષોં સે વિહીન
 એવ જીવજન્તુ રહિત હો । એના હી આહારાદિ ઉન્હેં ઉની સામાચારી કે
 અનુસાર કલ્પિત કહા ગયા છે । ઇસસે વિપરીત ઉને અહિંસામહાવ્રત
 કે પ્રતિકૂલ કહા ગયા છે । ઇમલિયે ઉને ઉપાશ્રય મેં દાતા દ્વારા
 દેને કે લિયે લાયે ગયે આહાર કો કમી નહીં ઊના ચાહિયે । ચિકિત્સા
 આદિ કરકે જિસમિશ્કા કી પ્રાપ્તિ હો વહ મી ઉન્હ વર્જનીય કહી
 ગઈ છે । કારણ મુનિજન સિંહવૃત્તિ કે ચારક હોતે હેં ઔર અયાચક-
 વૃત્તિ વાલે હોતે હેં, ઇસ પ્રકાર કે વ્યવહાર સે પ્રાપ્ત મિશ્કા મેં સિંહવૃત્તિ
 કા સરક્ષણ નહીં હોતા છે । મિશ્કા કી ગવેષણા મેં દમ કા આચરણ નહીં
 હોના ચાહિયે, દાયક (દાતા) કી ચરતુ કે રક્ષણ કા પ્રશ્ન નહીં હોના
 ચાહિયે ઔર ન કોઈ ઈસી વાત હી હોના ચાહિયે કિ જિમસે મુનિ કે

જીવોની રક્ષા કરે કાણુ કે આ લોક એ જ જીવોથી ભરેલ છે, તેથી પોતાની
 દરેક પ્રવૃત્તિ સયમિત રાખવાથી છઠાયના જીવોની રક્ષા થાય છે મુનિજન
 આ અહિંસા મહાવ્રતના પાલક હોય છે, તેથી તેમને માટે ભગવાનનો આદેશ
 છે કે તેઓ એવા ઉચ્છ આહાર આદિની ગવેષણા કરે કે જે શુદ્ધ હોય,
 અકૃત, અકારિત, અનનુમોદિત,, અનાહુત, અનુદિષ્ટ, અક્રીતકૃત, નવકોટિ વિશુદ્ધ
 શક્તિ આદિ દોષ રહિત, આવાકર્માદિ દોષોથી રહિત અને જીવજન્તુ રહિત
 હોય એવો આહાર જ તેમની સામાચારી અનુસાર તેમને માટે ઠીકે તેવો
 ઠીક છે તેનાથી ઉલટો આહાર અહિંસા મહાવ્રતને પ્રતિકૂળ ગણાયો છે
 તેથી તેમણે ઉપાશ્રયમા દાતા દ્વારા અર્પણ કરવા માટે લેવાયેલ આહાર ઠીક
 લેવો જોઈએ નહીં ચિકિત્સા આદિ ઈંગેને જે લિશ્કાની પ્રાપ્તિ થાય તે પણ
 તેમને માટે ત્યાજ્ય ગણેલ છે, કારણ કે મુનિજન સિંહવૃત્તિના ધારક હોય
 છે તથા અયાચક વૃત્તિ વાળા હોય છે આ રીતે મેળવેલ આહારમા સિંહવૃત્તિ
 તથા અયાચકવૃત્તિનું મગ્ધણ થતું નથી લિશ્કાની ગવેષણામા ફલનુ આચરણ
 થતું જોઈએ નહીં, દાતાની વસ્તુના નિલણનો પ્રશ્ન તો એવો જોઈએ નહીં
 કે કોઈ વાત ન બનવી જોઈએ કે જેથી મુનિના આચારવિચારમા અન્તર પડે

‘અત્તહિય’ આત્મહિતમ્=આત્મના જીવાના હિત-હિતકારણાત્, ‘પેચ્ચામાવિય’ પ્રેત્યમાવિક-પ્રેત્ય = જન્માતરે મરતિ=શુભફળતયા પરિણમતીત્યેવ શીલમ્, તથા-‘આગમેસિ મહ’ આગમિત્યદ્ મટમ્=માત્રિફલ્યાણજનનમ્ ‘મુદ્ધ’ શુદ્ધ=નિર્દોષમ્ ‘નેયાઝય’ ન્યાયિક-ન્યાયયુક્તમ્ ‘અકુટિલ’ અકુટિલમ્ ઋજુમોક્ષપ્રાપકત્વાત્, ‘અણુતર’ અનુત્તરમ્-સર્વપ્રધાનત્વાત્, તથા-‘સન્નવ-દુક્ખપાવાણ’ સર્વદુઃખપાપાના ‘વિઝસમણ’ વ્યુપશનમ્=ઉપશમકારકમિદ પ્રવચનમિદ પ્રવચનમિતિ પૂર્વેણ સમ્યન્થ ॥ ૪૦૫ ॥

મહાવીર ને કહા છે-હજ્જ કથન મે કિસી મી તરહ સે યુક્તિ ઓર શાસ્ત્ર સે ઘાધા નહીં આતી છે. (અત્તહિય) યહ જીવોં કા હિતકારક છે ઓર (પેચ્ચામાવિય) પરમ્ મેં શુભ ફળરૂપ સે યહ પરિણમતા છે. હસીલિયે (આગમેસિમહ) ભવિષ્યકાલ મેં યહ કલ્યાણજનક છે. (મુદ્ધ) ભગવાન દ્વારા પ્રતિપાદિત હોને કે કારણ હસમેં કિસી મી તરહ સે કોઈ પૂર્વાપરવિરોધરૂપ દોષ નહીં આતા છે-હસલિયે શુદ્ધ-નિર્દોષ છે, તથા (નેયાઝય) ન્યાયયુક્ત છે. (અકુટિલ) હસકી આરાધના કરને સે જીવ મોક્ષ કો પ્રાપ્ત કરલેતે છે હસલિયે યહ અકુટિલ-ઋજુ છે. (અણુતર) સમસ્ત સિદ્ધા તોં મેં હસકી પ્રધાનતા હોને સે યહ અનુત્તર છે. તથા (સન્નવદુક્ખપાવાણવિઝસમણ) સમસ્ત દુઃખોં કા ઓર પાપોં કા યહ ઉપશમકારક છે.

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર હસ સૂત્ર દ્વારા યહ પ્રકટ કર રહે છે કિ જો અહિંસારૂપ સવરદાર કો પાલન કરને કે લિયે ઉચિત છે ઉનકા યહ

ભગવાન મહાવીરે કહેલ છે-આ કથનમા કોઈ પણ પ્રકારે-યુક્તિ અને શાસ્ત્રથી વાધો આવતો નથી “અત્તહિય” તે જીવોનું હિતકર્તા છે અને “પેચ્ચામાવિય” પરભવમા શુભ ફળરૂપે તે પરિણમે છે તેથી “આગમેસિમહ” ભવિષ્યકાળમા તે કલ્યાણજનક છે “મુદ્ધ” ભગવાન દ્વારા પ્રતિપાદિત હોવાથી તેમા કોઈ પણ પ્રકારે કોઈ પૂર્વાપર વિરોધરૂપ દોષ આવતો નથી તેથી શુદ્ધ-નિર્દોષ છે, તથા “નેયાઝય” ન્યાયયુક્ત છે “અકુટિલ” તેની આરાધના કરવાથી જીવ મોક્ષને પ્રાપ્ત કરે છે તે કારણે તે અકુટિલ-ઋજુ છે, (અણુતર) સમસ્ત સિદ્ધાન્તોમા તે મુખ્ય હોવાથી તે અણુતર-સર્વોત્તમ છે તથા “સન્નવદુક્ખપાવાણ વિઝસમણ” સમસ્ત દુઃખો તથા પાપોનું તે ઉપશમન કરનાર છે.

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર આ સૂત્ર દ્વારા એ પ્રકટ કરે છે કે જેઓ અહિંસા રૂપ સવરદારનું પાલન કરવાને તત્પર છે, તેમનું એ કર્તવ્ય છે કે-જીવના

अद्विषाया पञ्च भावना भवन्तीति ताः प्रतिपादयन् प्रथमामीर्यासमितिरूपां भावनामाह—‘तस्त इमा’ इत्यादि—

मूलम्—तस्मा इमा पञ्च भावणाओ पढमस्स वयस्स हुंति, पाणाइवायवेरमाणं परिरक्खणट्ठयाए । पढमं-ठाण-गमण गुणजोगजुंजणजुगतर-निवइयाए दिट्ठीए इरियव्व कीड-पयंगतसथावरदयावेरेण निच्च पुप्फफलतयपवालकदमूल-दगमट्ठियवीयहरिय परिवज्जणए सम्म, एव खु सव्वे पाणा ण हीलियव्वा न निदियव्वा, न गरहियव्वा, न हिसियव्वा न छिदियव्वा न भिदियव्वा न वहेयव्वा न भय दुक्खं च किंचिलव्वा पावेउ’जे एव इरियासमियजोगेण भाविओ भवइ अतरप्पा असवलमसकिलिट्ठनिव्वणचरित्तभावणाए अहिंसए सजए सुसाहू ॥ सू० ६ ॥

पहँचाकर उससे मुनिजन मात्रा में भिक्षा लेते हैं। उन्हीं तरह और भी कौन २ सी प्रवृत्तियाँ भिक्षा की गवेपणा करने में बाधक होती हैं— वे सब इस सूत्र में प्रदर्शित की गई हैं। मुनि को भिक्षा की गवेपणा करते समय अज्ञात, अगृह्य, अद्विष्ट, अदीन, अविमन, अकरुण, अविषादी और अपरितानयोगी आदि स्थिति वाला रहना चाहिये। तभी जाकर पूर्णरूप से अहिंसा महाव्रतरूप सवरद्वारपलता है ॥—॥ सू० ५ ॥

पासेधी मुनिजन परिमित प्रमाणमा भिक्षा अडणु ढरे ठे ओ ५ प्रकारे भील्ल कथं कथं प्रवृत्तियो भिक्षानी गवेपणा कवामा बाधक थाय ठे ते अधु आ सूत्रमा गतावुं ठे, भिक्षानी गवेपणा करती वप्पते मुनिओ अज्ञात, अगृह्य, अद्विष्ट, अदीन, अविमन, अकरुण, अविषादी, अने अपरितातयोगी आदि स्थिति वाणा रडेवु जेधंओ त्यागे ५ पूर्ण रीते अहिंसा महाव्रतइय मवद्वारनु पावन थाय ठे ॥ सू-५ ॥

આચાર વિચાર મેં અન્તર પઢના હો । મેં તુમ્હારે પુત્ર કો પઢાડુંગા, આપ
 કે ગુણ દિગન્તતરુ વ્યાપરુ હો રહે હે આપ થડે દાની હે, મેં ને આપ કો
 આજ હી દેગ્યા હે તૈસે તો આપકી કીર્તિ કઠં ધાર સુન ચુકાજ, યે સબ
 ઘાતે એસી હેં જો મુનિ કી આત્મા કો હીન યનાની હેં ઉસે અપને
 કર્તવ્ય સે ગિરાતા હેં । ઇન સબ ઘાતોં સે જો આત્મા કા પતન હોતા હે
 વહ સઘસે ઘડી હિંમા હે । ઇમીલિયે મુનિ કો ઇમ પ્રકાર કે વ્યવહાર
 સે પ્રાપ્ત હોને ચાલી ભિક્ષા કી ગવેષણા કરને કા નિષેધ કિયા ગયા હે ।
 તથા દાતા કે પ્રતિ મુનિ કો એસા બી વ્યવહાર નહીં કરના ચાહિયે કિ
 જિસસે ઉસકી આત્મા મેં સ્પેશ ભાવ જગે, જૈસે—‘તુ કૃપણ હૈ, વનીપક-
 યાચક હૈ તુ કયા ભિક્ષા દેગા, નીચ વ્યક્તિ જો હોતે હેં વે ભિક્ષા નહીં
 દેતે હે’ ” ઇત્યાદિ અપમાન જનક શબ્દોં મેં એક તો ભાષા સમિતિ નહીં
 પલતી હે, તથા એસે વ્યક્તિયો મેં જિસ કિસી પ્રકારસે ભિક્ષા દેને કા જોશ
 જાગતા હે જો ઉસ ભિક્ષા મેં શુદ્ધિ કા વાચક હોના હે, ભિક્ષા દેતે
 સમય જિસ આત્મા મેં સ્પેશ જગે વહ ભિક્ષા મુનિજનોં કો અપ્રાણ
 કહી ગઈ હે । જિસ પ્રકાર ફૂલ કો ઘાઘા ન પહુંચાકર ઉસસે અમર
 રસ પી લેતા હે ઉસી પ્રકાર દાતા કો કિસી બી પ્રકાર કા સ્પેશિયન ન

“હુ તમારા પુત્રને લાણવીરા આપના શુભો દિગન્ત મુખી ફેલાયેલ છે, આપ
 મોટા દાતા છો, આપની કીર્તિ તો મેં ઘણીવાર માલણી છે પણ આપને
 જોવાનો લાલ તો આજ જ મળ્યો ” આ બધી વાતો એવી છે કે જે મુનિના
 આત્માને હીન બનાવે છે તેને પોતાની ફરજ ચૂકાવે છે આ બધી વાતોથી
 આત્માનુ જે પતન થાય છે તે સૌથી મોટી હિંસા છે, તે કારણે એવા પ્રકાર
 રના વ્યવહારની પ્રાપ્ત થતી ભિક્ષા શ્રદ્ધા કરવાનો મુનિને માટે નિષેધ છે—
 તથા મુનિએ દાતા પ્રત્યે એવો વ્યવહાર પણ ન કરવો જોઈએ કે જેથી તેના
 આત્મામાં કલેશ થાય, હા ત ‘તુ કૃપણ છે, વનીપક યાચક છે, તુ શુ
 ભિક્ષા આપી શકવાનો છે, જે નીચ વ્યક્તિ હોય છે તે ભિક્ષા દેતી નથી’ ઇત્યાદિ
 અપમાન જનક શબ્દોમા એક તો ભાષા સમિતિનું પાલન થતું નથી, તથા
 એવી વ્યક્તિઓમાં ગમે તે રીતે ભિક્ષા આપવાનો ભુલ્સો પેદા થાય છે, જે
 તે ભિક્ષાની શુદ્ધિમાં બાધક થાય છે ભિક્ષા દેતી વખતે દાતાના આત્માને
 કલેશ થતો હોય તો એવી ભિક્ષા મુનિજનોને માટે અપ્રાણ—(ન સ્વિકારવાને
 યોગ્ય) દર્શાયેલ છે જેમ ફૂલને તુકરાન પહોંચાડ્યા વિના લમરા તેમથી
 રસપાન કરે છે તેમ દાતાને કોઈ પણ પ્રકારનો કલેશ પહોંચાડ્યા વિના તેમની

‘પદમ’ પ્રથમમ્=ઈર્યાસમિતિ ભાવનામાહ—‘ઠાળગમનગુણજોગજુજળજુગતરનિ-
ચઢ્યા’ સ્થાનગમનગુણયોગયોજનયુગાન્તર-નિપાતિક્રયા—‘ઠાળ’ સ્થાનમ્ =
ઉપવેશનમિત્યર્થઃ, ‘ગમન’ ગમન=ચલનમ્, તત્ર ગુણઃ=ત્રસસ્થાવરોપધાતવર્જન-
રૂપઃ, તસ્ય યોગઃ=સમ્યગ્વ્રત યોજયતિ=ઠગેતિ યા સા સ્થાનગમનગુણયોગયો-
જના, તથા-યુગાન્તરે=યુગપ્રમાણભૂમિભાગે નિપતતિ યા સા યુગાન્તરનિપાતિક્રા,

અનુકૂલ પઢનેવાલી થોડી વઝૂત પ્રવૃત્તિયા સ્થૂલ દૃષ્ટિ સે વિશેષ રૂપ મેં
ગિનાઈ ગઈ હૈં । જો ભાવના કે નામ સે પ્રસિદ્ધ હૈં । યદિ હન ભાવ-
નાઓં કે અનુસાર ચરાચર વર્તાવ કિયા જાય તો ગૃહીત વ્રત ઉત્તમ
ઔપધિ કે સમાન પ્રયત્નશીલ કે લિયે સુદર પરિણામ કારક સિદ્ધ
હોતે હૈં । યહી વાત “પરિરક્ષણદ્વાર” હસ પદ દ્વારા યહાં ધ્વનિત કી
ગઈ હૈં । હન પાંચ ભાવનાઓં મેં જો (પદમ) પહિલી ઈર્યાસમિતિ
નામકી જો ભાવના હૈં વહ હસ પ્રકાર હૈં (ઠાળગમનગુણજોગજુજળ-
જુગતર નિચઢ્યા) સ્વ પર કો કલેશ ન હો હસ પ્રકાર યત્ન પૂર્વક
ગમન કરના હસકા નામ ઈર્યાસમિતિ હૈં । હસી કા વિશેષ મુલાશા
સૂત્રકાર હસપદ દ્વારા કર રહે હ-સ્થાન-ઘેઠના ઔર ગમન-ચલના
હનમેં જિસકે દ્વારા હસ પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિ હોની વાહિયે કિ જિસસે
ત્રસ ઔર સ્થાવર જીવોંકા ઉપગાતક ન હો, હસ ગુણરૂપ સમધ કો જો
જોહને ને વાલી હો તયા જિસસે યુગપ્રમાણ ભૂમિભાગ કા અવલોકન
હો રહા હો, અર્થાત્ ચલતે ૨ સાધુ અપને આગે કી યુગપ્રમાણ ભૂમિ કા

આવનારી થોડી ઘણી પ્રવૃત્તિયો સ્થૂલ દૃષ્ટિથી વિશેષ રૂપે ગણાવવામા આવેલ
છે, જે ભાવનાને નામે પ્રસિદ્ધ છે જે તે ભાવનાઓ પ્રમાણે બરાબર વર્તન
કરાય તો શ્રદ્ધા ધરાયેન મન પ્રયત્નશીલ વ્યક્તિને માટે ઉત્તમ ઔપધિ સમાન
ઘર્થ સાધક સિદ્ધ થાય છે એ જ વાત “પરિરક્ષણદ્વાર” પદ દ્વારા આહી
દર્શાવવામા આવી છે એ પાંચ ભાવન ઔમા જે “પદમ” પહેલી ઈર્યાસમિતિ
નામની જે ભાવના છે તે આ પ્રમાણે છે “ઠાળગમનજોગજુજળજુગતરનિચઢ-
્યા” પોતાને કે પરને કલેશ ન થાય તે પ્રમાણે જતન પૂર્વક ગમન કરવું
તેનુ નામ ઈર્યાસમિતિ છે તેનુ વધારે સ્પષ્ટીકરણ સૂત્રકાર આ પદ દ્વારા કરે
છે-સ્થાન-મેસવુ અને ગમન-ચાલવાની ક્રિયામા તેમના દ્વારા એ રીતની પ્રવૃત્તિ
થવી જોઈ એ કે જેથી ત્રસ અને સ્થાવર જીવોની હત્યા ન થાય, આ ગુણ
રૂપ સમધને જે જોહનારી હોય તયા જેવી યુગ પ્રમાણ ભૂમિભાગનુ અવલો-
કન થતુ હોય એટલે કે ચાલતી વખતે પોતાની આગળથી યુગ પ્રમાણ ભૂમિનુ

ટીકા—‘તસ્મ’ इत्यादि ।

‘તસ્મ’ તસ્ય પ્રસિદ્ધસ્ય ‘પદમસ્મ વયસ્મ’ પ્રથમસ્ય વ્રતસ્ય = અહિંસા વ્રતસ્ય ‘ઇમા પચ’ ઇમાઃ પચ ‘ભાવનાઓ’ ભાવનાઃ=માન્યતે ગમ્યતે આત્મા યામિસ્તાઃ ઈર્યાસમિત્યાદય’ ‘હુતિ’ મગ્નિતિ । કિમયં પન્ન ભાવના ભવન્તી ? —ત્યાદ — ‘પાણાદિવાયવેરમણપરિરક્ષણદ્વય’ પ્રાણાતિપાત-વિરમણપરિરક્ષણાર્થીય = પ્રાણાતિપાતવિરમણલભણરય પ્રથમમહાવ્રતમ્ય પરિરક્ષણાર્થીય । તથા

इन व्रतों को स्थिर रखने के लिये प्रत्येक व्रत की पांच २ भावनाएँ हैं सो अत्र सूत्रकार अहिंसाव्रत की जो पांच भावनाएँ होती हैं उनमें सब से पहिली ईर्ष्या समितिरूप पहिली भावना को प्रकट करते हैं— ‘तस्म इमा’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(તસ્મ) ઉસ પ્રસિદ્ધ (પદમસ્મ વયસ્મ) પ્રથમવ્રત કી (ઇમા પચ ભાવનાઓ હુતિ) ચે ઈર્યાસમિતિ આદિ પાંચ ભાવનાઈ હોતી હૈ । કયોં કિ इन भावनाओं से (पाणादवायवेरमणपरिरक्षणद्वय) प्राणातिपातविरमण रूप जो अहिंसा व्रत है उसकी अच्छी तरह रक्षा होती है । तात्पर्य कहने का यह है कि अत्यन्त सावधानी के साथ विशेष २ प्रकार की अनुकूल प्रवृत्तियों का सेवन न किया जाय तो स्वीकार करने मात्र से ही व्रत आत्माको अपने रूप नहीं बना सकते हैं, अर्थात् वे आत्मा में चिरस्थायी नहीं रह सकते हैं, निर्दोषरूप से सावधानी के साथ उनका पालन नहीं हो सकता है—वे यथार्थरूप में आत्मा में नहीं उतर सकते । ग्रहण किये हुए व्रत जीवन को यथार्थरूप से अपने रूप में रग सके—अपनी अटल छाप आत्मा पर जमा सके इसलिये प्रत्येक व्रत के

એ પાચ વ્રતોને સ્થિર રાખવા માટે પ્રત્યેક વ્રતની પાચ પાચ ભાવના છે હવે સૂત્રકાર અહિંસાવ્રતની જે પાચ ભાવના છે તેમાની સૌથી પહેલી ઈર્ષ્યા સમિતિ આદિ આ પાચ ભાવના પ્રગટ કરે છે—“ તસ્મ ઇમા ” ઇત્યાદિ

“ તસ્મ ” તે પ્રસિદ્ધ “પદમસ્મ વયસ્મ” પ્રથમ વ્રતની “ઇમા પચ ભાવના હુતિ” ઈર્ષ્યાસમિતિ આદિ આ પાચ ભાવનાઓ હોય છે કારણ કે તે ભાવનાઓથી “પાણાદિવાયવેરમણપરિરક્ષણદ્વય” પ્રાણાતિપાત વિરમણરૂપ જે અહિંસાવ્રત છે તેની સારી રીતે રક્ષા થાય છે કહેવાને ભાવ એ છે કે અત્યંત સાવધાનીથી ખાસ ખાસ પ્રકારની અનુકૂળ પ્રવૃત્તિઓનું સેવન ન કરાય તો સ્વીકાર કરવા માત્રથી જ વ્રત આત્મામાં ચિરસ્થાયી રહી શકતું નથી—નિર્દોષ રીતે સાવધાનીથી તેનું પાલન થઈ શકતું નથી તે યથાર્થ રૂપે આત્મામાં ઉતરી શકતા નથી અહીં કમચેલ વ્રતો જીવનને યથાર્થ રીતે પોતાના રંગે રંગી શકી-પોતાની અટલ છાપ આત્મા પર જમાવી શકે-આત્મામાં ઉઘાણથી પ્રવેશી શકે, તે માટે પ્રત્યેક

નાવજ્ઞાતવ્યા ભવન્તિ, મુનિઃ પ્રાણિ પ્રાણસરખણપરત્વાત્તાન્નાયજ્ઞા વિપયીકરો-
તીતિ ભાવઃ, યવમગ્રેષ્ઠિ સર્વત્ર વાક્યરચના કાર્યા । “ ન નિંદિયન્વા ” ન નિન્દિ-
તવ્યા ભવન્તિ-પરપીઢાપર્જનપરત્વાત્, “ ન ગરહિયન્વા ” ન ગર્હિતવ્યાઃ ભવન્તિ-
લોચસમક્ષ દોષોદ્ગ્રાટનપૂર્વક ગર્હાવિપયભૂતા ન ભવન્તીત્યર્થઃ, તથા-“ ન હિંસિ-
યન્વા ” ન હિંસિતવ્યા-“ પાદારમ્ભનાદિના ન હન્તવ્યા ”, ભવન્તિ, એવ “ ન ટિંદિ-
યન્વા ” ન ટેત્તવ્યાઃ સ્વજ્ઞાદિના, “ ન મિંદિયન્વા ” ન મેત્તવ્યાઃ - કુન્તાદિના,
“ ન વહેયન્વા ” ન વ્યથનીયા પીઢોત્પાદનાદિના ભવન્તિ । તથા - “ ન ભય
દુઃખ ચ લઙ્કમા પાવેડ ” ન ભય દુઃખ ચ લઙ્કમા પ્રાપયિતુમ્, “ દુઃખ ભય ચ પ્રાપ-
યિતુ યોગ્યા ન ભવન્તીતિ ભાવ ” । એવમ્=અનેન પ્રમાણે “ ઈરિયા સમિજોગેન ”
ઈર્યાસમિતિયોગેન “ ભાવિઓ ” ભાવિતો=વાસિતો ભવતિ “ અતરપ્પા ” અન્તરાત્મા
=જીવ, સ ભાવિતાત્મા-ભવતીત્યર્થઃ, કીદ્દઓ ભવતિ ? इत्याह-“ અસવલમસકિલિ-
ટ્ઠિનિવ્વણચરિત્તભાવણા ” અણ્ણલાસન્નિષ્ઠ નિર્ગચારિયભાવનયાઃ, અણ્ણલા=

યન્વા) નિંદા કે વિષયભૂત નહીં બનતે હો । (ન ગરહિયન્વા) લોગોં કે
સમક્ષ દોષોદ્ગ્રાટન પૂર્વક ગર્હાં કે વિષયભૂત નહીં બનતે હો । (ન હિંસિયન્વા)
પાદાદિ દ્વારા આક્રમિક હોતર હિંસા કે વિષયભૂત નહીં બનતે હો, (ન
ટિંદિયન્વા) છેડન કરને કે વિષયભૂત નહીં બનતે હો, (ન મિંદિય-
ન્વા) મેડન કરને કે વિષયભૂત નહીં બનતે હો । (ન-વહેયન્વા)
પીઢો ત્પાદનાદિ દ્વારા વ્યથા કષ્ટ પહોંચાને કે યોગ્ય નહીં બનતે, હો । (ન
ભય દુઃખ ચ કિંચિ લઙ્કમા પાવેડ) ઓર ન કિસી મી તરહ સે
ભય ઓર દુઃખ કો પ્રાપ્ત કરાને કે યોગ્ય બનતે હો । (એ) ઇસ મકાર
(ઈરિયાસમિયજોગેન) ઈર્યા સમિતિ કે યોગ સે (ભાવિઓ અતરપ્પા)
વાસિત હુઆ અન્તરાત્મા-જીવ-ભાવિતાત્મા કહલાતા હો ઓર યહ—
(અસવલમસકિલિટ્ઠિનિવ્વણ ચરિત્ત ભાવણા) અણ્ણલા-મલિન્ના રહિત

સમન્ત પ્રાણી “ જ હીલયન્વા ” અવજ્ઞાના વિષયભૂત બનતા નથી “ ન નિંદિ-
યન્વા ” નિંદાના વિષયભૂત બનતા નથી, “ ન ગરહિયન્વા ” લોગોની અમલ
દોષોદ્ગ્રાટનપૂર્વક ગર્હાના વિષયભૂત બનતા નથી “ ન હિંસિયન્વા ” પાદાદિ વડે
આક્રમિત થઈને હિંસાના વિષયભૂત બનતા નથી, “ ન ટિંદિયન્વા ” છેડન
કરવાના વિષયભૂત બનતા નથી, “ ન મિંદિયન્વા ” મેડન કરવાના વિષયભૂત
બનતા નથી, “ ન વહેયન્વા ” પીડા ઉત્પાદન આદિ દ્વારા વ્યથા પહોંચાડવાને
યોગ્ય બનતા નથી “ ન ભય દુઃખ ચ કિંચિલઙ્કમા પાવેડ ” અને ડોષ પણ
પ્રકારે ભય અને દુઃખ પ્રાપ્ત કરવાને યોગ્ય બનતા નથી “ એ ” આ પ્રકારે
“ ઈરિયાસમિયજોગેન ” ઈર્યાસમિતિના યોગથી “ ભાવિઓ અતરપ્પા ” શુદ્ધ
આત્મા-જીવ-ભાવિતાત્મા ડહેવાય છે અને તે “ અસવલમસકિલિટ્ઠિનિવ્વણચરિત

अनयो धर्मधाम्य', तथा, 'दिट्ठीण' दृष्ट्या, 'कीटपयगतमथापरदयावरेण'
 कीटपयगतसस्यापरदयावरेण, तत्र-कीटा' = युद्धजन्तवो नीलक्षु 'लट' शब्दादयः,
 पतङ्गाः = मसिद्धाः, इत्यादयः, असस्यास्यैकेन्द्रियाः, तेषु दयापरस्तेन, तथा-
 'पुष्पफलतयपवालकदमूलदगमद्विषयीयहरियपरिवर्जिण' पुष्पफलत्वक्-प्रवाल
 कन्दमूलदकमृत्तिकाजीजहरितपरिवर्जितेन-तत्र-पुष्प फल च मसिद्धम्, त्वक्=
 पुष्पफलादीना त्वचा, प्रवालः = पत्राङ्कुरः, कन्दः, मूलादिकः, मूलम् = मूलक
 'दग' दक = जलम्, मृत्तिका, जीजम्, हरितः = हरितकायः, एते परिनिर्गता
 येन स तेन, मुनिना 'निच्च' नित्य 'सम्म' सम्पद् = यतनापूर्वम्, ईरियच्च
 ईरितव्य-मार्गे गन्तव्यम्। 'एव-सु' एव = अमुना प्रकारेण प्रवर्तनेन खलु तस्य
 मुनेः 'सव्वे' सर्वे 'पाणा' माणाः = प्राणिनः, 'न हीलियव्वा न हीलियितव्याः

जिससे अच्छी तरह अवलोकन कर चल रहा हो ऐसी (दिट्ठीण)
 दृष्टि से (कीटपयगतसस्यापरदयावरेण पुष्पफलतयपवालकदमूलदगम-
 द्विषयीयहरियपरिवर्जिण निच्च सम्म ईरियच्च) लट शब्द आदि क्षुद्र
 जन्तुरूप कीटों के ऊपर तथा पतंगों आदि जानवरों के ऊपर, एवं एके-
 न्द्रिय स्थावर जीवों के ऊपर दया रखने में तत्पर बने हुए, तथा पुष्प,
 फल' त्वक्-छाल, प्रवाल, -कोपल-पत्राङ्कुर, मूल आदि कद मूल दक-
 सचित्त जल, मृत्तिका-सचित्तमिट्टी, बीज और हरितकाय, इन सब
 सचित्तपदार्थों को अपने और पर के उपयोग में लाने का जीवनपर्यंत
 परित्याग कर चुकने वाले ऐसे मुनिजनों को देख २ कर सदा यतना
 पूर्वक मार्ग में गमन करना चाहिये। (एव सु) इस तरह यतनापूर्वक
 दृष्टि से देख देव कर चलने वाले मुनिजन के (सव्वेपाणा) समस्त
 प्राणी (न हीलियव्वा) अवज्ञा के विषयभूत नहीं बनते हैं। (न निदि-

लेथी सारी रीते अवलोक करीने साथु थालता होय ओवी "दिट्ठेण" दृष्टिथी
 "कीटपयगतसस्यापरदयावरेण पुष्पफलतयपवालकदमूलदगमद्विषयीयहरियपरिवर्जिण
 निच्च सम्म ईरियच्च" लट शब्द आदि क्षुद्र जन्तुइय कीडाओ ऊपर
 तथा पतंगिया आदि जन्तुओ ऊपर, अने ओकेन्द्रिय स्थावर जिवोनी ऊपर
 दया राखवाने तत्पर बनेल, तथा पुष्प, इण, त्वक्-छाल, प्रवाल-कोपण-पत्रा
 ङ्कुर, मूला आदि कदमूल, आ जथा सचेत पदार्थोने पोताना उणीजना उप
 योगमा लेवाना आलवन परित्याग करी नाह्यो होय ओवा मुनिजोने
 उभेशा नेध नेधने यतना पूर्वक रस्ता पर थालवु नेधओ "एव सु" आ
 रीते यतनापूर्वक नजर बडे नेध नेधने थालनार मुनिजनने "

=नायज्ञातव्या भवन्ति, मुनिः प्राणि प्राणसरक्षणपरत्वात्तान्नायज्ञा विषयीकरो-
तीति भावः, एतन्मयेऽपि सर्वत्र वाक्यरचना कार्या । ' न निन्दियव्वा ' न निन्दि-
तव्या भवन्ति-परपीडावर्जनपरत्वात्, ' न गरहियव्वा ' न गर्हितव्याः भवन्ति-
लोकसमक्ष दोषोद्घाटनपूर्वक गर्हाविषयभूता न भवन्तीत्यर्थः, तथा-' न हिंसि-
यव्वा ' न हिंसितव्याः-पादाक्रमणादिना न हन्तव्याः, भवन्ति, एव ' न छिदि-
यव्वा ' न छेत्तव्याः खट्वादिना, ' न भिदियव्वा ' न भेत्तव्याः - कुन्तादिना,
' न वहेयव्वा ' न व्यथनीयाः पीडोत्पादनादिना भवन्ति । तथा - ' न भय-
दुक्ख च लब्भा पावेउ ' न भय दुक्ख च लभ्याः प्रापयितुम्, दुःख भय च प्राप-
यितु योग्या न भवन्तीति भावः । एवम्=अनेन प्रकारेण ' ईरिया समिजोगेण '
ईर्यासमितियोगेन ' भाविओ ' भावितो=वासितो भवति ' अतरप्पा ' अन्तरात्मा
=जीव, स भावितात्मा-भवतीत्यर्थ, कीदृशो भवति ? इत्याह-'असवलमसकिलि-
ट्ठनिव्वणचरित्तभावणाण ' अश्रयलासन्नि-ष्ट निर्णयचारित्रभावनयाः, अश्रयला=

यव्वा) निंदा के विषयभूत नहीं बनते हैं । (न गरहियव्वा) लोगों के
समक्ष दोषोद्घाटन पूर्वक गर्हा के विषयभूत नहीं बनते हैं । (न हिंसियव्वा)
पादादि द्वारा आक्रमिक होकर हिंसा के विषयभूत नहीं बनते हैं, (न
छिदियव्वा) छेदन करने के विषयभूत नहीं बनते हैं, (न भिदिय-
व्वा) भेदन करने के विषयभूत नहीं बनते हैं । (न-वहेयव्वा)
पीडोत्पादनादि द्वारा व्यथा कष्ट पहुँचाने के योग्य नहीं बनते हैं । (न
भय दुक्ख च किञ्चि लब्भा पावेउ) और न किसी भी तरह से
भय और दुःख को प्राप्त कराने के योग्य बनते हैं । (एव) इस प्रकार
(ईरियासमितियोगेण) ईर्या समिति के योग से (भाविओ अतरप्पा)
वासित हुआ अन्तरात्मा-जीव-भावित्वात्मा कहलाता है और यह—
(असवलमसकिलिट्ठनिव्वण चरित्त भावणाण) अश्रयल-मलिनता रहित

सम्भूत प्राणी " न हीलयव्वा " अवज्ञाना विषयभूत बनता नहीं ' न निन्दि-
यव्वा ' निन्दाना विषयभूत बनता नहीं, " न गरहियव्वा " लोकोनी समक्ष
दोषोद्घाटनपूर्वक गर्हाना विषयभूत बनता नहीं " न हिंसियव्वा " पादादि पडे
आक्रमित करने के लिये साना विषयभूत बनता नहीं, " न छिदियव्वा " छेदन
करवाना विषयभूत बनता नहीं, " न भिदियव्वा " भेदन करवाना विषयभूत
बनता नहीं, " न वहेयव्वा " पीडा उत्पादन आदि द्वारा व्यथा पीडोत्पादने
योग्य बनता नहीं " न भय दुक्ख च किञ्चिल्लब्भा पावेउ " अने दोष पाप
प्रकारे लय अने दुःख प्राप्त करवाने योग्य बनता नहीं ' एव " आ प्रकारे
" ईरियासमितियोगेण " ईर्यासमितिना योग्यी " भाविओ अतरप्पा " युक्ता
आत्मा-जीव-भावित्वात्मा उद्देवाय छे अने ते "असवलमसकिलिट्ठनिव्वणचरित्त

માલિન્યરહિતા, અસંવિલણા=વિશુદ્ધમાનમન. પરિણામયુક્તા, નિર્વ્રણા=શક્તિ યા
 ચારિત્રભાવના તથા હેતુભૂતયા 'અહિંસા' અહિંસકઃ - સમાધનાયા અહિંસાયાઃ
 પરિપાલકત્વાત્, 'સજળ' સયતઃ=મમ્યગ્જીવરક્ષાયતનોઘતત્વાત્, 'સુસાદ્'
 સુસાધુ=મોક્ષસાધકો મુનિર્ભવતિ ॥ મૃ ૬ ॥

તથા વિશુદ્ધમાન મનઃપરિણામ સે યુક્ત એસી હેતુભૂત અગ્વડ ચારિત્ર
 ભાવના કે પ્રભાવ સે (અહિંસા, અહિંસક હોતા હે, અર્થાત્ ભાવના-
 મહિત અહિંસા કા પરિપાલક હોને કે કારણ વહ હિંમાગુત્તિ સે રહિત
 હોતા હે । ત ય (સજળ) અન્યી તરફ સે જીવ રક્ષા કી યતના મેં ડગત
 હોને કે કારણ સજત હોતા હે । જોર (સુસાદ્) તેમા હોને કે કારણ
 હી વહ સાધુ-સચ્ચા સાધુ-મોક્ષ સાધક મુનિ-હોતા હે ।

ભાવાર્થ—હમ સૂત્ર ઘાતે સૂત્રકાર ને અહિંસાવ્રત કી રક્ષા ઓર
 સ્થિરતા કે નિમિત્ત પાંચ ભાવના-જોં મેં સે ઈર્ષ્યા સમિતિ નામકી પ્રથમ
 ભાવના કહી હે, । હમ ભાવના મેં ડન્હોં ને વહ પ્રગટ ક્રિયા હે કિ
 અહિંસાવ્રત કા આરાધક પ્રાણી યદિ ભાવના કા નિમિત્ત નહીં મિલતા હે
 તો ડસ વ્રત કા ગહરાઈ કે સાથ પરિપાલન નહીં હો સકતા હે । અહિંસા
 આદિ વ્રતોં કે રગ મેં આત્મા કો રગ ડેનેવાલી યે ભાવના હી હે ।
 હસલિયે સચ્ચે અર્થ મેં અહિંસક ડનને કે લિયે મુનિ કો સયસે પહિલે, ઈર્ષ્યા
 સમિતિ કા પાલન કરના ચાહિયે । હસ સમિતિ કે પાલન કરને સે

ભાવના હ " અગ્રવ્રત-મલિતા રહિત તથા વિશુદ્ધ મન પરિણામથી યુક્ત એવી
 હેતુભૂત અક્ષત-ચારિત્રભાવના ના પ્રભાવથી ' અહિંસા ' અહિંસક થાય છે,
 એટલે કે ભાવનાપૂર્વક અહિંસાના પરિપાલક હોવાથી તે હિંસાવૃત્તિથી રહિત
 બને છે તથા " સજળ " સારી રીતે જીવ રક્ષાની યતનામાં તત્પર હોવાને
 કારણે સયત થાય છે અને " સુસાદ્ " એવા થવાને કારણે તે સુસાધુ-સાચો
 સાધુ-મોક્ષ સાધક મુનિ-થાય છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે અહિંસા વ્રતની રક્ષા અને સ્થિરતાને
 માટે જે પાંચ ભાવના છે તેમાની ઈર્ષ્યાસમિતિ નામની પહેલી ભાવના બતાવી
 છે આ ભાવનામાં તેમણે એ પ્રગટ કયું છે કે અહિંસા વ્રતના આરાધક
 પ્રાણીને જે ભાવનાનું નિમિત્ત ન મળે તે તે વ્રતનું સૂક્ષ્મ રીતે પાલન થઈ
 શકતું નથી અહિંસા આદિ વ્રતોના રગમાં આત્માને રગી દેનારી આ ભાવ
 નાઓ જ છે તેથી માત્રા અર્થમાં અહિંસક બનવાને માટે મુનિએ સૌથી
 પહેલા ઈર્ષ્યાસમિતિનું પાલન કરવું જોઈએ, આ સમિતિનું પાલન કરવાથી ત્રસ

દ્વિતીયાં મનોભાવનામાહ—

મૂલમ્—વીર્યં ચ મળેણ પાવણ પાવગં આહમ્મિયં દારુણં
નિસંસ વહવધપરિકિલેસવહુલ જરામરણપરિકિલેસસંકિ-
લિટ્ટ, ન કયાવિ મળેણ પાવણં પાવગં કિચિ વિઝાયવ્વ
એવ મળસમિદ્ધજોગેણ ભાવિઓ ભવઙ અતરપ્પા અસવલમસ-
કિલિટ્ટનિવ્વણચરિત્ત ભાવણાએ અહિસએસંજએ સુસાહૂ ॥ સૂ૦૭ ॥

ટીકા—‘ વીર્ય ચ ’ હત્યાદિ ।

‘ વીર્ય ચ ’ દ્વિતીયા ચ પુનર્ભાવના મનઃ સમિતિરૂપમાહ—‘ પાવણ ’

પ્રસન્ન અને સ્થાવર જીવોંની રક્ષા થતી રહતી હૈ । ઉઠને બેઠને મેં ગમન કરને મેં સાધુ ‘ જીવોંની રક્ષા થતી ન હો ’ ઇસ વાત કી વિશેષ સાવધાની રાખતા હૈ । યુગપ્રમાણ ભૂમિકા અવલોકન કરતા હુઆ આગે ૨ કે માર્ગ મેં વધતા રહતા હૈ । ઇસ તરફ ઉસકે દ્વારા ન કોઈ પ્રાણી હીલયિતવ્ય હોતા હૈ ન નિન્દિતવ્ય હોતા હૈ ન ગર્હિતવ્ય હોતા હૈ, ઓર ન હિંસિતવ્ય હોતા હૈ । ન હેતવ્ય હોતા હૈ, ન વ્યયિતવ્ય હોતા હૈ ઓર ન દુઃખ કો પ્રાપ્ત કરાને કે યોગ્ય હી હોતા હૈ । ઇસ પ્રકાર ઈર્યાસમિતિ કે યોગ સે ભાવિતાત્મા બના હુઆ મુનિજન અપને અહિંસાપ્રત કો નિર્દોષ રીતિ સે પાલન કરતા હુઆ સન્નિવ્વ અહિંસક બન જાતા હૈ । તથા ઇસ પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિશાલી હોને કે કારણ વર સુસાધુ-મોક્ષ કો સાધન કરને વાલા મુનિ ઇસ અર્થ કો ચરિતાર્થ કરતા હૈ ॥ સૂ૦૬ ॥

અતઃ સૂત્રકાર ઇસવ્રત કી દૂસરી ભાવના જો મનોગુપ્તિ હૈ ઉસે પ્રકટ

અને સ્થાવર જીવોંની રક્ષા થાય છે ઉઠવા બેઠવામા તથા ગમન કરવામા ‘ વધારે જીવોંની રક્ષા થાય ’ તેનું મુનિ વધારે વ્યાન રાખે છે યુગ પ્રમાણ ભૂમિકા અવલોકન કરતા કરતા સાધુ માર્ગે આગળ વધે છે આમ થવાથી તેના દ્વારા કોઈ પ્રાણી હીલયિતવ્ય, નિન્દિતવ્ય, ગર્હિતવ્ય, અને હિંસિતવ્ય થતું નથી તેનું દેહન થતું નથી કે તેને વ્યથા પહોંચતી નથી, તથા હું અને પામતું નથી આ રીતે ઈર્યાસમિતિના યોગથી ભાવિતાત્મા બનેલ મુનિ જન પોતાના અહિંસાપ્રતનું નિર્દોષ રીતે પાલન કરતા કરતા માત્રા અહિંસક થઈ જાય છે તથા આ રીતે પ્રયત્નશીલ હોવાને કારણે તે સુસાધુ-મોક્ષને સાધનારા મુનિ, એ અર્થને ચિંતાર્થ કહે છે ॥ સૂ-૬ ॥

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતના મનોગુપ્તિ નામની બીજી ભાવના છે તેનું ૨૫

પાપકેન=અશુભેન 'મળમા' મનમા 'પાપમ' પાપકમ્=અશુભ માતિ, 'અહમ્મિય' અધાર્મિક દર્શનિજનકત્વાન્, દારુણ=વિપમમ, તીવ્રદુઃખજનકત્વાન્, 'નિસસ' નૃશસમ્ આત્મહિતઘાતકત્વાન્, તથા—'વહ્નયપરિકલેસમગ્નુલ' વધ ઘન્યપરિકલેસમગ્નુલમ્, તત્ર-વધો-મારણમ્, વધઃ=નિગડાદિવધઃ, તજ્જનિત પરિકલેશઃ=પરિતાપસ્તેન વહ્નુલ=પાપ-સમ્પ્રત્તમ્, પ્રતિગમયમસત્સતાપજનકત્વાન્, તથા—'મરણમયપરિકલેસમગ્નિલિટ્ટ' મરણમયપરિકલેસસકિલિટ્ટમ્-મરણ=માણરિયોગસ્તમ્ય યદ્ ભય તજ્જનિતો ય પરિકલેશઃ=પરમમન્તાપસ્તેન મંચિલિટ્ટ=સગ્યાસમ્, નરકનિગોદાધનન્તુ'ત્વજનકત્વાન્, પતાપશ-નિગેષણવિશિષ્ટ

કરતે હું—'વીય ચ' इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(વીય) દસરી મનોગુણ નામકી ભાવના હમ પ્રકાર સે હૈ (પાવણ મળેણ) અશુભ મન સે અશુભ હોના હૈ—અર્થાત્—અશુભ મન સે જીવ પાપ કા ઉપાર્જન કરતા હૈ । યહ પાપ (અહમ્મિય) દુર્ગતિ કા જનક હોને સે અધર્મ મ્પ હૈ । (દારુણ) તીવ્ર દુઃખો કા ઉત્પદક હોને સે દારુણ-વિપમ અર્થાત્-રુષ્ટકારક-હોતા હૈ । તથા (નિસસ) હસમે આત્મા કે હિતકા ઘાત હોના હૈ હસલિયે નૃશસ હૈ । (વહ્નય-પરિકલેસમગ્નુલ) વધ, ઘઘન ઓર ઇનસે ઉત્પન્ન પર્વિકલેશ-પરિતાપ-સે યહ સદા મરા રહતા હૈ । અર્થાત્ પ્રતિ સમય યહ અસત્ય સતાપ કા જનક હોતા હૈ । (મરણમયપરિકલેસસકિલિટ્ટ) મરણ કે ભય સે જનિત પરમ સતાપ સે યહ વ્યાસ રહા કરતા હૈ । અર્થાત્-પાપ સે જીવ નરક નિગોદ આદિ કે અનત દુઃખો કો મોગા કરતા હૈ । હસલિયે યહ

ધીરશુ કરે છે—“વીય ચ” इत्यादि

ટીકાર્થ—“વીય” બીજી મનોગુણ નામની ભાવના આ પ્રકારની છે—“પાવણ મળેણ = અશુભ મનથી અશુભ થાય છે—એટલું કે અશુભ મનથી જીવ પાપનું ઉપાર્જન કરે છે આ પાપ “અહમ્મિય” દુર્ગતિનું જનક હોવાથી અધર્મમ્પ છે “દારુણ” તીવ્ર દુઃખોનું ઉત્પાદક હોવાથી દારુણ-વિપમ એટલે કે કષ્ટકારક હોય છે તથા “નિસસ” તેમા આત્માના હિતનો ઘાત થાય છે તેથી તે નૃશસ છે “વહ્નય પરિકલેસમગ્નુલ” વધ, ઘઘન અને તેમના કારણે ઉદ્ભવેલ પરિકલેશ-પરિતાપથી તે સદા ભરેલ રહે છે, એટલે કે પ્રતિસમય તે અસત્ય સતાપ પેદા કરનાર હોય છે “મરણમયપરિકલેસસકિલિટ્ટ” મરણના ભયથી ઉત્પન્ન થયેલ પરમ સતાપથી તે વ્યાસ રહ્યા જાય છે એટલે કે પાપથી જીવ નરક નિગોદ આદિનાં અનંત દુઃખોને ભોગવા કરે છે તે

पाप-पापेन मनसा भवति, अतएव-तत् 'क्यावि' रुदापि=कस्मिन्नपि काले
'किंचि वि' किंचिदपि=स्वल्पमपि 'पावग' पापम्=अशुभ न 'झायव्वं'
ध्यातव्य=न चिंतनीयमित्यर्थः । एवम्=अमुना प्रकारेण 'अतरप्पा' अन्तरात्मा
जीवः 'मणसमिद्धजोगेण' मनः समितियोगेन भावितो भवति । भावितात्मा
कीदृशो भवति ? इत्याह — अगालसक्लिष्टनिर्गणचारित्रभावनाया हेतुभूतया
अहिंसकः सयतः सुसाधु भवति । एवमर्थो द्वितीयभाषना व्याख्याया द्रष्टव्यः ॥ सू० ७ ॥

पाप नरक निगोद आदि दुर्गतियों के अनन्त दुःखों का जनक होने से
उनसे सदा भरा रहता है ऐसा कहा गया है । इस प्रकार के विशेषणों
से विज्ञाष्ट पाप यह जीव पापयुक्त मन से करता है । ऐसा समझ कर
(क्यावि किंचि वि) किसी भी काल में कुछ भी थोड़ा सा भी
(पावण मणेण) पापकारी मन से (पावग) पाप-अशुभ (न झायव्व)
नहीं विचरना चाहिये । (एव मणसमिद्धजोगेण अतरप्पा भाविओ
भवइ) इस प्रकार से अन्तरात्मा-जीव मन-समिति के योग से भावित
होता है । (असवलमसक्लिष्टनिव्वणचरित्तभावणाए अहिंसए सजए-
सुसाह) यह भावित आत्मा मलिनता से रहित तथा विशुद्धमान
मन-परिणाम से युक्त ऐसी हेतुभूत चारित्र भावना के प्रभाव से
अहिंसक होता है । और सयत होता है । और ऐसा होने के कारण
ही वह सच्चा साधु-मोक्ष साधक मुनि-कहलाता है ॥—

भावार्थ—मन को अशुभ ध्यान से बचाकर शुभ ध्यान में लगाना

કારણે તે પાપ નરક નિગોદ આદિ દુર્ગતિયોના અનન્ત દુઃખોનું જનક હોવાથી
તેનાથી સદા ભરેલ રહે છે એમ કહેવામા આવ્યું છે આ પ્રકારના વિશેષ-
ણથી યુક્ત પાપ આ જીવ પાપયુક્ત મનથી કરે છે એવું સમજીને “ક્યાવિ
કિંચિ વિ” કોઈ પણ કાળે મહેજ પણ “પાવણ મણેણ” પાપકારી મનથી
“પાવગ” પાપ-અશુભ “ન જ્ઞાયવ્વ” વિચારવું જોઈએ નહીં “એવ મણ
સમિદ્ધજોગેણ અતરપ્પા ભાવિઓ ભવઈ” આ પ્રકારે અતરાત્મા-જીવ મન સમિ-
તિના યોગથી ભાવિત થાય છે “અસવલમસક્કિલિટ્ઠનિવ્વણચરિત્તભાવણાએ
અહિંસએ સજએ સુસાહ” તે ભાવિત આત્મા મલિનતાથી રહિત તથા વિશુદ્ધ
મન પરિણામથી યુક્ત એવી હેતુભૂત ચારિત્ર ભાવનાના પ્રભાવથી અહિંસક
થાય છે અને સયત બને છે અને એવું થવાથી જ તે માથો માધુ-મોક્ષ
સાધક મુનિ કહેવાય છે

। ભાવાર્થ—મનને અશુભ ધ્યાનથી બચાવીને શુભ ધ્યાનમાં લગાડવું તેને

ત્રીયાં વચનસમિતિન્પાં માયનામાદ—'તદ્ય ચ ' ઇ યાદિ ।

મૂલમ્—તદ્ય ચ—વર્ણ પાવિયાસાપ પાવગં અહમ્મિયં દારુણં
નિસંસં વહવધપરિકિલેસવહુલ જરામગ્નપરિકિલેસસંકિલિદ્ધં
ન કયાત્રિ વર્ણ પાવિયાપ પાવગં કિંચિ વિ ભાસિયવ્વં,
એવં વહસમિદ્ધજોગેણ ભાવિઓ ભવડ અતરપ્પા અસવલમસં
કિલિદ્ધનિવ્વણચરિત્તભાવણાપ અહિસઓ સજઓ સુસાદુ ॥૮॥

મનોગુપ્તિ છે । શુભ ધ્યાન મેં લગાને કા ઉપદેશ હમ લિપે દિયા જાતા હૈ
અથવા મન કો શુભ ધ્યાન મેં હમલિપે લગાયા જાતા હૈ કિ મન સ્વયં
અશુભ બનને ન પાવે । અશુભ ધ્યાન કે મપર્કસમય સે મન અશુભ બન
જાતા હૈ । ઓર અશુભ મન સે પાપ કા હી ઉપાર્જન હોતા હૈ । પાપ સે જીવો
કો નાના પ્રકાર કે કષ્ટો કો ભોગના પડતા હૈ । ક્યોં કિ પાપ સ્વયં
એક અધર્મ હૈ । અધર્મ હોને સે હી જહ આત્મા કે હિન કા ઘાતક
બનતા હૈ । ઓર હસી કારણ સે જીવો કો નાના પ્રકાર કે દુઃખો કો
દેતા હૈ । હસ પ્રકાર વિચાર કર જો મુનિજન અપને મન કો અશુભ
ધ્યાન મેં કિસી મી સમય નહોં લગતા હૈ ઉસસે રચતા રહતા હૈ
એસા વહ મુનિ ઉસ મન સમિતિ સે ભાવિત બનકર અપને અહિંસા
વ્રત કો નિર્દોષ રૂપ સે પાલન કરતા હુઆ આદર્શ અહિંસક બન જાતા
હૈ । ઓર હસ પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિ કરને કે રગ મેં રગા હુઆ વહ-
સચ્ચે અર્થ મેં સાધુપદ કો સાર્થક કરતા હૈ ॥ સૂ ૭ ॥

મનોગુપ્તિ ડહે છે શુભ ધ્યાનમા લગાડવાનો ઉપદેશ એ માટે અપાય છે
અથવા મનને શુભ ધ્યાનમા તે કારણે લગાડાય છે કે મન પોતે જ અશુભ
બનવા પામે નહીં અશુભ ધ્યાનના સપર્શથી મન અશુભ બની જાય છે, અને
અશુભ મનથી પાપનું જ ઉપાર્જન થાય છે પાપથી જીવોને વિવિધ પ્રકારના
કષ્ટો ભોગવવા પડે છે કારણ કે પાપ પોતે જ એક અધર્મ છે અધર્મ
હોવાથી જ તે આત્માના હિતનું ઘાતક બને છે, એને એજ કારણથી જીવોને
વિવિધ પ્રકારના દુઃખો દે છે આ પ્રમાણે વિચાર કરીને જે મુનિજન પોતાના
મનને કદી પણ અશુભ ધ્યાનમા લગાડતા નથી, તેનાથી બચતા રહે છે, એવા
તે મુનિ તે મન સમિતિથી ભાવિત બનીને પોતામા અહિંસાવ્રતનું નિર્દોષ
પાલન કરીને અહિંસક બની જાય છે, અને તે ગીતની પ્રવૃત્તિ કરવાના રંગે
રંગાયેલ તે મુનિ આચાર્યના સાધુના પદને સાર્થક કરે છે ॥ સૂ ૭ ॥

ટીકા—' તદ્ય ચ ' ઇત્યાદિ ।

' તદ્ય ચ ' તૃતીયા ચ ભાવના વચનસમિતિરૂપામાદ—' વર્ડે પાવિયા ' વાચા પાપિક્યા=પાપ્યભાષણરૂપયેત્યર્થઃ પાપક્રમાધાર્મિક દારુણ નૃશસ વધ

અથ સૂત્રકાર ઇસ અર્હિસાત્રત કી તીસરી વચન સમિતિરૂપ ભાવના કા પ્રતિપાદન કરને કે લિયે સૂત્ર કહતે હૈ—' તદ્ય ચ ' ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(તદ્ય) વચનસમિતિરૂપ તૃતીય ભાવના ઇસ પ્રકાર સે હૈ—(પાવિયા વર્ડે) સાવચ્છભાષણરૂપ વાણી સે (પાવગ) જીવ પાપ કા વધ કરતા હૈ । યદ પાપ (અહમ્મિય દારુણ નિસસવદ વધપરિકિલેસવદુલ જરામરણપરિકિલેસસકિલિદ્ ભગ્ન) અર્થમરૂપ હૈ ક્યોં કિ ઇસસે જીવોં કો દુર્ગતિ કી પ્રાપ્તિ ટેતી હૈ તથા ઇસસે તીવ્રદુઃખો કો જીવ ભોગતે હૈ ઇસલિયે યદ દારુણ-વિપમ હૈ । આત્માકે હિતકા ઇસસે ઘાત હોતા હૈ ઇસલિયે યદ નૃશસ હૈ । વચ, વચન ઓર ઇનસે જન્ય પરિકલેશ-પરિતાપ સે યદ પાપ સદા ભરા રહતા હૈ । જરા ઓર મરણ કે ભય સે જનિત સતાપ સે યદ સદા વ્યાપ્ત રહતા હૈ । એસા વિચાર કર જો મુનિ (ન કયાવિ વર્ડે પાવિયા કિંચિવિ પાવગભામિયવ્વ) ઇસ પાપ વાણી કો સાવચ્છ-ભાષણરૂપ વચન કો-કિસી ભી મમય થોડા સા ભી નહીં ચોલતે હૈ વે ઇસ વચનસમિતિ કે યોગ સે ભાવિતાત્મા વન જાતે હૈ । (એવ વચ-

હવે સૂત્રકાર આ અહિસાત્રતની વચન સમિતિ નામની ત્રીજી ભાવનાનું પ્રતિપાદન કરવાને માટે સૂત્ર કહે છે—“ તદ્ય ચ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ તદ્ય ” વચનસમિતિરૂપ ત્રીજી ભાવના આ પ્રમાણે છે—“ પાવિયા વર્ડે ” આવચ્છ ભાષણરૂપ વાણીથી “ પાવગ ” એવ પાપનો વધ આવે છે તે પાપ “ અહમ્મિય દારુણ નિસસ વદ્યપરિકિલેસવદુલ જરામરણ પરિકિલેસસકિલિદ્ ભગ્ન ” અર્થમરૂપ છે તેનાથી જીવોને દુર્ગતિની પ્રાપ્તિ થાય છે તથા તેનાથી એવ તીવ્ર દુઃખો ભોગવે છે તેથી તે દારુણ-વિપમ છે તેનાથી આત્માના હિતનો ઘાત થાય છે તેથી તે નૃશસ છે વધ, બધન અને તેના વડે ઉત્પન્ન થયેલ પરિકલેશ-પરિતાપથી તે પાપ સદા ભરેલ ગ્રંથે છે જરા અને મરણના ભયથી જનિત સતાપ વડે તે સદા વ્યાપ્ત રહે છે એવો વિચાર કરીને જે મુનિ “ ન કયાવિ વર્ડે પાવિયા કિંચિવિ પાવગ ભામિયવ્વ ” આ પાપવાણીને આવચ્છ ભાષણરૂપ વચનને—કોઈ પણ કાળે થોડું પણ બોલતા નથી, તેઓ આ વચનસમિતિના યોગથી ભાવિતાત્મા બની નાથ છે, “ એવ

વન્ધપરિકલેશમ્બુલ જરામરણપરિકલેશ સમિલ્પ્ત મરતિ, અતઃપ્ર ન વદાપિ
 ધાવા પાપેક્યા પાપક કિંચિદપિ મારિતન્યમ્ । એવ યામસમિતિયોગેન મારિતો
 મરતિ અન્તરાત્મા । મારિતાત્મા કીટશો મરતિ ? ઇત્યાહ—અપ્રવલામક્ષિઃ
 નિર્મળચરિત્રમાપનાયા દેતુભૂતયા-અર્હિસકઃ સંયતઃ સુમાધુર્ભરતિ । એવામયો
 દ્વિતીયમાપનાવ્યાખ્યાયા દ્રષ્ટવ્યઃ ॥ મૃ૦ ૮ ॥

સમિદ્વિજોગેન મારિતોઅતરપ્પા અસવલમસકિલિટ્નિચ્ચવરિત્ત-
 માવળાણ અર્હિસઓ સજઓ સુમાહ મવદ્) ઇમ પ્રકાર વચન સમિતિ
 કે યોગ સે મારિતાત્મા યના દુઆ અતરાત્મા-જીવ-અણબલ, અસકિલિટ્
 એવ નિર્વળ નિરતિચાર ચારિત્ર કી માપના સે અર્હિસક ઓર સયતબન
 જાતા હૈ । ઓર સચ્ચે રૂપ મેં સાધુ-મોક્ષ કો સાધન કરને વાલે-
 હસ નામ કો ચરિતાર્થ કર લેના હૈ ।

માવાર્થ—સાવધ માપણ નહીં કરના ઇમકા નામ વચન સમિતિ હૈ ।
 સાવધ માપણ કરને સે પાપ કા વધ હોતા હૈ । પાપ અવર્મ હોને સે
 વિવિધ પ્રકાર કે દુઃખોં કા દાતા હોતા હૈ । વધ વચન આદિ વિવિધકષ્ટ
 જીવ કો હસી કે ઉદય સે ભોગને પડતે હ । ઇસલિળ સાધુ કા કર્તવ્ય
 હૈ કિ વહ કમી મી કહી પર મી કિશ્ચિત્ રૂપ મેં મી અસત્યમાવળ નહીં
 કરે । એસા વિચાર કર જો મુનિ હસ પાપવાળી સે નિવૃત્ત હો જાતે હૈ
 વે હી અપને અર્હિસાવ્રત કો નિર્દોષ રૂપ મેં પાલતે હૈ । ઇસ પ્રકાર અપને
 અર્હિસાવ્રત કો પાલન કરને વાલે સાધુ હી સચ્ચે સાધુ-મોક્ષકો સાધન
 કરને વાલે કહલાતે હૈ ॥ મૃ૦ ૮ ॥

વયસમિદ્વિજોગેન મારિતો અતરપ્પા અસવલમસકિલિટ્નિચ્ચવરિત્તમાવળાણ અર્હિસઓ
 સજઓ સુમાહ મવદ્ ” આ પ્રકારે વચન સમિતિના યોગથી લવિ-
 તાત્મા અનેક અતરાત્મા-જીવ-અણબલ, અસકિલિટ્ અને નિર્વળચારિત્રની
 લાવનાથી અર્હિસક અને સયત બની જાય છે અને સાચા અર્થમા સાધુ-
 મોક્ષને સાધનારા-એ નામને ચરિતાર્થ કરી લે છે

ભાવાર્થ—સાવધમાપણ ન કરવું તેનું નામ વચન સમિતિ છે સાવધ
 ભાષણ કરવાથી માપના બધ બધાય છે પાપ અધર્મ હોવાથી વિવિધ પ્રકારના
 દુઃખનું જન્મ છે તેના ઉદયથી વધ બધન આદિ વિવિધ કષ્ટ જીવને લોગ
 વવા પડે છે તેથી સાધુનું કર્તવ્ય છે કે તે કંઈ પણ, કયાય પણ, થોડા પ્રમા
 ણમા પણ અસત્ય ભાષણ ન કરે એવો વિચાર કરીને જે મુનિ આ પાપવા
 છીથી નિવૃત્ત થઈ જાય છે તેઓ જ પોતાના અર્હિસાવ્રતનું નિર્દોષ રીતે
 પાલન કરે છે આ પ્રમાણે પોતાના અર્હિસાવ્રતનું પાલન કરનાર સાધુ જ
 સાચા સાધુ-મોક્ષને સાધન કરનાર સાધુ-કહેવાય છે ॥ મૃ૦ ૮ ॥

चतुर्थमेषणा भावनामाह—' चउत्थ ' इत्यादि ।

मूलम्—चउत्थ आहारएसणाए सुद्ध उछ गवेसियव्व
अण्णाए अकंहिए आसिद्धे अदीणे अकल्लणे अविसाई
अपरिततजोगी ' जयणघडणकरणचरियविनयगुणजोगसप-
उत्ते भिम्बू भिम्बेसणाए जुत्ते समुदाणेऊण भिक्खायरिय
उछ घेत्तूण आगए गुरुजणस्स पास गमणागमणाइ चार-
पडिकमणपडिकते आलोयण दायण च दाऊण गुरुजणस्स
गुरुसदिट्ठस्स वा जहोवएस निरइयार च अप्पमत्ते पुण-
रवि अणेसणाए पयते पडिकमिक्का पसते । आसीणिसुह
निसण्णे मुहुत्तमेत्त च झाणसुहजोगनाणसज्जायगोवियमणे
धम्ममणे अविमणे सुहमणे अविग्गहमणे समाहियमणे
सद्धासंवेगनिज्जरमणे पवयणवच्छल्लभावियमणे उट्ठेऊण
य पहट्ठे तुट्ठे जहराइणियं निसतइत्ता य साहवे भावओ य
विइण्णे गुरुजणेण उवविट्ठे सपमज्जिऊण ससीस काय तहा
करयल अमुच्छिण्ण अगिद्धे अगरहिए अणज्झोववण्णे अणा-
इले अलुद्धे अणत्तट्ठिण्ण असुरसुर अचवचव अट्टयसविल-
वियमपरिसाडिय आलोयभायणे जयमप्पमत्तेण ववगयस-
जोगमणिगाल विगयधूम अक्खोवजणवणाणुलेवणभूयस-
जमजायामायानिमित्त सजमभारवहणट्टयाए भुजेज्जा पाण-
धारणट्टयाए सजण्णं समिय । एवमाहारसमिइ जोगेण
भावओ अतरप्पा असवलमसकिलिट्ठनिव्वणचरित्तभाव-
णाए अहिसए सजए सुसाहू ॥ सू०९ ॥

ટીકા — ‘ચત્વ’ ચતુર્મી માત્રનામેષણારૂપામાદ — ‘આહારણ્મણા’ આહારેષણા ‘શુદ્ધ’ શુદ્ધ=નિર્દોષ ‘ઉઞ્’ ઉઞ્ઞ=ભેદ ‘ગવેસિયન્વ’ ગવેષિત વ્યમ્ । યવા-લૂનાન્નક્ષેપાત્પાદાન, તથેવ સાધુનાપિ શુદ્ધસ્થાવં નિષ્પાદિતમન્ન સ્તોક સ્તોક એવેષણીયમિતિ માત્ર । રીટઃ સન ગંગયેન્ ? ઇત્યાદ-‘અણા’ અજ્ઞાતઃ—‘ધનિકોડય પ્રગ્નિત’ ઇત્યાદિરુપેણ દાયકેશ્વરનાન; ‘અકુદિ’ અકથિતઃ—‘ધનિકોડય પ્રગ્નિત’ ઇત્યાદિપ્રગ્નિતઃ; ‘અસિદ્ધ’ અશિષ્ટાઃ—‘ઉગ્રવ શીયોડય ભોગવશીયોડય’ મિતિ દાયકાયામતિરોધિત, તથા—‘અશીળે’ અડીનઃ

અવ સૂત્રકાર ચૌથી વ્યવસ્થા સમિતિરૂપ માત્રના કો કરતે હૈં — ‘ચત્વ’ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(આહારણ્મણા શુદ્ધ ઉઞ્ ગવેસિયન્વ) સાધુ આહારણ્મણા સે શુદ્ધ-નિર્દોષ ઉઞ્-યોડા યોડા લેને રૂપ ભિક્ષા કી ગવેષણા કરે । તાત્પર્ય હમકા યદ્દ હૈં કિ જેસે-લૂને ગયે ક્ષેત્ર સે કુળો કા આદાન હોતા હૈં ઉસી તરફ માનુ કો બી શુદ્ધસ્થ કે લિપે નિષ્પાદિત અન્ન કી સ્તોક ૨ અલ્પ ૨ રૂપ મેં ગવેષણા કરની, ચાહિયે । જયચ હ ભિક્ષા કી ગવેષણા કરે તવ ઉસે (અણા) અજ્ઞાત હોના ચાહિયે-દાતા ઉસે યોં ન સમજે કિ યદ્દ ધનિક હોકર પ્રગ્નિત હુઆ હૈ, ઇત્યાદિરૂપ સે દાતા સે ઉન્હેં અપરિચિત રહના ચાહિયે । (અકુદિ) અકથિત હોના ચાહિયે-મેં ધનિક યા ગરીબ નહીં યા ફિર બી દીક્ષિત હુઆ હૈં, હસ પ્રકાર કા અપના પરિચય ઉસે દાતા કો નહીં દેના ચાહિયે । (અસિદ્ધ) અશિષ્ટ રહના ચાહિયે-યદ્દ સાધુ ઉગ્રવશીય હૈ, ભોગવશીય હૈ, હસ રૂપ સે દાતા કે

હવે સૂત્રગો એવણા સમિતિ નામની ચૌથી ભાવના બતાવે છે “ચત્વ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ આહારણ્મણા શુદ્ધ ઉઞ્ ગવેસિયન્વ ” સાધુ આહારેષણાથી શુદ્ધ-નિર્દોષ ઉઞ્ થોડી થોડી માત્રામાં ભિક્ષાની ગવેષણા કરે તેનામાં (વાર્થ) એ છે કે જેમ લણાયેલ ખેતરમાંથી બહુતુ આદાન થાય છે, એ જ રીતે સાધુએ પણ શુદ્ધસ્થને માટે તૈયાર કરેલ અગ્નિ થોડી થોડી માત્રામાં ગવેષણા કરવી જોઈએ જ્યારે તે ભિક્ષાની ગવેષણા કરે ત્યારે તેણે “અણા” અજ્ઞાત રહેલું જોઈએ દાતાને તે વાતની ખબર ન પડવી જોઈએ કે તે ધનિક સ્થિતિમાંથી દીક્ષિત થયેલ છે આ પ્રકારે તેણે દાતાથી અપરિચિત રહેલું જોઈએ “અકુદિ” અકથિત રહેલું જોઈએ—“હું ધનિક હતો” ગરીબ ન હતો છતાં પણ મેં દીક્ષા લીધેલ છે ” એ પ્રકારનો પોતાનો પરિચય તેણે દાતાને દેવો જોઈએ નહીં “અસિદ્ધ” અશિષ્ટ રહેલું જોઈએ “આ સાધુ ઉગ્રવશીય છે, ભોગવશીય છે,” તે પ્રકારે દાતા આગળ તેણે પ્રગટ થવું

= दीनतावर्जितः 'अकलुणे' अकरुण = न्यगृत्तिरहितः, 'अविसाई' विपादी =
 'भिक्षाश्रमो भविष्यति न वे' त्यादि विपादवर्जित, तथा- 'अपरिततजोगी'
 अपरितान्तयोगी-अलाभादिषु तन्तनादि शब्दवर्जित, तथा- 'जयणघडण करण
 चरिय विनयगुणजोगसपउत्ते' यत्तन घटनकरणचरितविनयगुणयोगसप्रयुक्तः, तत्र
 यत्तन-प्राप्तेषु समययोगेषु उद्यमः, घटन अप्राप्ति सजम-योगप्राप्तिवेष्टनम्,
 एतद्द्वयं कुन्ते यः स यत्तनघटनकरणः, तथा-चरित = मेरितो विनयो येन स
 चरितविनयः, तथा गुणयोगेन = समाधिगुणयोगेन सप्रयुक्तो यः सः-गुणयोग
 सप्रयुक्तः, एतेषा र्मधारयः, एतादृशो 'भिक्षु' मिश्रु = साधु 'भिक्षुसंगाए'

प्रति उसे प्रकटित नहीं होना चाहिये। (अदीणे) अदीन होना चाहिये
 दीनता के भाव से रहित रहना चाहिये अपने व्यवहार से दाता के
 प्रति उसे दीनता का भाव प्रकट नहीं करना चाहिये। (अकलुणे)
 अकरुण-ओड़ीवृत्ति से रहित होना चाहिये। उमकी वृत्ति ऐसी
 न हो कि जिस से वह दाता के दृष्टि में ओड़ी प्रतीत हो।
 (अविसाई) विपाद से उसे रहित होना चाहिये-भिक्षा का लाभ होगा
 या नहीं होगा इस प्रकार का विपाद उसे नहीं करना चाहिये। (अप
 रिततजोगी) अपरितातयोगी-अलाभ आदि की अवस्था में उसे तन-
 तनाद नहीं करना चाहिये। (जयण-घडण-करण-चरिय विनयगुण-
 जोगसपउत्ते) प्राप्त समययोग में उद्यम करना इसका नाम यत्तन है
 इस यत्तन को तथा अप्राप्त समययोग की प्राप्ति में चेष्टा करना इसका
 नाम घटन है, इस घटन को जो करने वाला है वह यत्तन घटन करण
 है तथा विनयगुण को पहिले से जिम्मे आचरित किया है एवं समाधि

नेउत्ते नहीं "अदीणे" अदीन रहेषु नेउत्ते-दीनताना लावथी रहित रहेषु
 नेउत्ते-पाताना व्यवहारथी दाता आगण तेने दीनताना लाव प्रगट करेवे
 नेधत्ते नहीं "अकलुणे" अकरुण-ओड़ी वृत्ति-री रहित थेषु नेधत्ते, तेनी
 वृत्ति ओपी न होपी नेउत्ते तेने दातानी दृष्टिओ ओळी जलुप, 'अविसाई'
 तेने विपाद रहित रहेषु नेधत्ते भिक्षालाभ भणथे ते नहीं ओरे विपाद
 तेने करेवे नेउत्ते नहीं "अपरिततजोगी" अपरिततयोगी-अलाभ आदि
 अप्रस्थाभा पणु तेने तनतनाद न करेवे नेधत्ते "जयण, घडण-करण-चरिय
 -विनयजोगसपउत्ते" प्राप्त समय योगभा उद्यम करेवे तेने 'यत्तन' कहे
 छे आ यत्तनने तथा अप्राप्त समय योगनी प्राप्तिनी चेष्टा करेपी तेने घटन
 कहे छे आ घटनने ने करेवे छे ते यत्तनघटनकरण छे तथा विनयगुणने
 पहिलेथी न नेमले आचर्यो छे तथा समाधिगुणना योगथी ने युक्त भनेल

ભિક્ષેપણાર્યા 'જુતે' યુક્ત = મંત્રાનઃ 'સમુદાણેઝ્ઞ' મમુદાનોય = ભિક્ષાર્યમનેઃ
 ગ્રહેષુ ભ્રમિત્યા 'ભિક્ષાચરિય ડંઢ' ભિક્ષાચર્યામુઝ્ઞામ્ = અપાન્વપ્રદગરૂપા ભિક્ષા
 'ઘેતૂણ' ગૃહીત્વા ગુરુજનસ્ય 'પાસ' પાર્થ-મધીપ 'આગણ' મમાગતઃ 'ગમ
 ણાગમણાહ્યારપડિક્કમણપટિક્કતે' ગમનાગમનાતિનારપતિક્કમણપતિક્કન્તઃ =
 ગમનાગમનાતિચારાણા પ્રતિક્રમણેન = ઈર્યાપથિકીપ્રાયશ્ચિત્તેન પ્રતિક્રાન્તઃ = નિવર્તિ-
 તપાપઃ, 'ગુરુજણસ્સ' ગુરુજનસ્ય 'ગુરુસદિટ્ઠસ્મ' ગુરુસન્દિષ્ટસ્મ = ગુરુના નિ-
 ર્દિષ્ટસ્ય રત્નાધિક્કમ્યાન્યમુનેરન્તિક્કે વા 'જહોવણ્ણ' યથોપદેશમ્ = ઉપદેશાનવિ-
 ક્રમેણ 'નિરહ્યાર' નિરતિચાર ચ 'આગેયણા દાયણ ચ દાઝણ' આલોચના
 દાન ચ દત્ત્યા = યથા યથા ભિક્ષા ગૃહીતા તથા તથા મર્ત્ત સમાતોન્વ 'અપ્પમત્તે'
 અપમત્તઃ = પ્રમાદવર્જિતઃ 'પુનરપિ' પુનરપિ ચાગામિકાલે 'અણેસણા' અણે

ગુણ કે યોગ સે જો યુક્ત ગના હુઆ હૈ વહ વિનયગુણ સપ્રયુક્ત કહ-
 લાતા હૈ તેસા (ભિક્ષુ) સાધુ (ભિક્ષુમણાણ જુત્તે) ભિક્ષેપણા મેં
 સલગ્ન હોકર વહ (સમુદાણેઝ્ઞ) ભિક્ષાર્ય અનેક ઘરોં મેં ઘૂમેં, ઓર
 વહા સે (ભિક્ષાચરિય ડંઢ) અલ્પ અલ્પ રૂપ મેં ભિક્ષા (ઘેતૂણ)
 ગ્રહણ કરકે ફિર વહ (ગુરુજણસ્સ પાસ આગણ) અપને ગુરુજન કે
 પાસ મેં આવે. (ગમણાગમણાહ્યારપડિક્કમણપટિક્કતે આલોચણ દાયણ
 ચ દાઝણ) ઓર વહ ગમનાગમન કે અતિચારોં કે પ્રતિક્રમણ સે ઈર્યા-
 પથિકી પ્રાયશ્ચિત્ત સે પ્રતિક્રાન્ત ગને ડમ તરહ નિવર્તિતપાપ હોકર વહ
 (ગુરુજણસ્સ) ગુરુજન કે (વા) અથવા (ગુરુસદિટ્ઠસ્સ) ગુરુ સે સદિષ્ટ
 અન્ય રત્ન ત્રયાધિક મુનિ કે (જહોવણ્ણ) ઉપદેશ કે અનુસાર જહા ૨ સે
 ભિક્ષા ઉસને લી હૈ ઉસ ઉસ પ્રકાર સે સવકી (નિરહ્યાર) નિરતિચાર
 આલોચના કરે આલોચના કરકે (અપ્પમત્તે) પ્રમાદ વર્જિત, ગના હુઆ તથા

છે તે 'વિનયગુણ પ્રયુક્ત' ગ્રહેણાય છે એવા "ભિક્ષુ" સાધુ "ભિક્ષે
 સણાણ જુત્તે" ભિક્ષાની એપણામા "સમુદાણેઝ્ઞ" ભિક્ષાને માટે અનેક ઘરે
 ફરે, અને ત્યાંથી "ભિક્ષાચરિય ડંઢ" અલ્પ અલ્પ માત્રામા ભિક્ષા 'ઘેતૂણ'
 ગ્રહેણુ કરીને તે "ગુરુજણસ્સ પાસ આગણ" પોતાના ગુરુજનની પાસે આવે,
 "ગમણાગમણાહ્યારપડિક્કમણપટિક્કતઆલોચણદાયણ ચ દાઝણ" અને તે
 ગમનાગમનના અતિચારોના પ્રતિક્રમણ વડે ઈર્યાપથિકી પ્રાયશ્ચિત્તથી પ્રતિક્રાન્ત
 થાય અને એ રીતે પાપની નિવૃત્ત થઈને તે "ગુરુજણસ્સ" ગુરુજનને "વા"
 અથવા "ગુરુસદિટ્ઠસ્મ" ગુરુથી નિર્દિષ્ટ અન્ય રત્નત્રયધારી મુનિની "જહોવણ્ણ"
 ઉપદેશ પ્રમાણે બધા બધાવાં તેણે ભિક્ષા મેળવીહોય તે તે પ્રકારે તે સૌની
 "નિરહ્યાર" નિરતિચાર આલોચના કરે આલોચના કરીને "

णायाम्=उद्गमादिदोषरूपायाम्, 'पयए' प्रयत=प्रयत्नवान्-तद्गतदोषपरिहारे
उद्यमवानित्यर्थ, 'पडिक्कमित्ता' प्रतिक्रम्य=आयोत्सर्गं कृत्वा 'पसते' प्रशान्तः=
आहारेऽनातुरः तथा-'जामीणसुहृन्सिण्णे' आसीनसुहृन्सिण्णः, तत्र-आसीन=
उपविष्टः, सुहृन्सिण्णः=गमनागमनजनितपरिश्रममवेद्यन् सुखपूर्वक स्थितः, पुनः
कीदृशः ? 'सुहृत्तमेत्त च' सुहृत्तमात्र च, 'ज्ञाणसुभजोगनाणसज्जायगोविज्जमणे'
भ्यानशुभयोग ज्ञानस्याभावाद्यगोपितमनाः, तत्र यान=यमभ्यानादिलक्षणम्, शुभ-
योगः=सयमव्यापार, ज्ञानम्=भगवदुपदिष्टमोक्षहेतुनिरवयवसाधुवृत्तिपरिचिन्तनम्,
तथा-स्वाध्यायः=मूलसूत्रपरिगुणनम्, एतैर्गोपित=विषयान्तरगमनेन निरुद्ध
मनो येन सः, अतएव 'धम्ममणे' धर्ममना=श्रुतचारित्र्यलक्षणधर्मयुक्ताः, तथा-
'अविमणे' अविमना=अरमयिरसान्निभावेऽपि विषादवर्जितचित्त, तथा 'सुहृ'

(पुणरवि अणेसणाए पयए) आगामी जाल में उद्गमादि दोष रूप अने-
पणा में प्रयत्नशील बना हुआ-अर्थात्-एपणागत दोषों के परिहार में
मदा सावधान बना हुआ वह मुनि (पडिक्कमित्ता) कायोत्सर्ग करके
(पसते) प्रशान्त होने-आहार में आतुर न बने (आसीणसुहृन्सिण्णे)
बैठ जावे और भिक्षा के निमित्त गमनागमन में होने वाले परिश्रम
का कुछ भी खयाल न करे प्रत्युत सुखपूर्वक-अच्छी तरह से बैठे ।
(सुहृत्तमेत्त च ज्ञाणसुभजोगनाणसज्जाय गोविज्जमणे) उस समय वह
एक सुहृत्ततक धर्म यानादिरूप ध्यान से, शुभयोग से, भगवान के द्वारा
कथित मोक्ष की हेतुभूत निरवयव साधुवृत्ति के विचार से, तथा मूल-
सूत्र के परिगुणन से विषयान्तर में जाते हुए अपने मन को रोकें और
श्रुतचारित्र्यरूप धर्म से युक्त अपने मन को रखे । इस तरह (धम्ममणे)
धर्म मार्ग वाला तथा (अविमणे) अविमन-अरस चिरस आदि आहार

प्रमाण रहित होनेल तथा " पुणरवि अणेसणाए पयए" लविषयज्ञानमा उद्गमादि
दोषरूप अनेपणाभा प्रयत्नशील बानीने-अर्थात् उ ओषणागत दोषाना त्यागमा
सावधान बानीने ते मुनि " पडिक्कमित्ता " कायोत्सर्ग करीने 'पसत' प्रशान्त
होने-आहारने माटे आतुर न बने " आसीणसुहृन्सिण्णे " भेरी साथ अने
लिखाने निमित्त गमनागमनमा अला परिश्रमना नरेण पण विचार न करे
प्रत्युत सुख पूर्वक-भगवत् रीते भेने 'सुहृत्तमेत्त च ज्ञाण सुभजोगनाणसज्जाय
गोविज्जमणे " ते समये ते ओड सुहृत्त मुनी वम ध्यानादिउप ध्यानमा, शुभ
योगशी भगवान द्वारा कथित मोक्षनी हेतुभूत निरवयव साधु वृत्तिना विद्या-
यी, तथा मूलसूत्रना परिगुणननी गहाणा विषयमा पोताना मनने जाता
रहे अने पोताना मनने श्रुतचारित्र्यरूप धर्ममा परोवे आ गीते 'धम्ममणे'
धर्मभनवाणा तथा " अविमणे " अविमन-अरस, नीरस आदि आहार प्राप्तिमा

मणे ' सुखमनाः=सयमानुरक्तचित्तः, तथा-' अविग्रहमणे ' अविग्रहमनाः-सं-
 प्लुप्तमनोभाववर्जितचित्त, तथा-' समाह्वयमणे' समाहितमनाः=समाहित=रागद्वेष
 राहित्येन आत्मनि सम्पगुणनोत मनो येन सः, उपशान्तचित्त इत्यर्थ, तथा—
 ' सद्भासवेगनिज्जरमणे ' श्रद्धासंवेगनिर्जरमना, तत्र-श्रद्धा=जिनमताभिरुचिः,
 सवेग=मोक्षाभिलाषः, निर्जरा=कर्मक्षपण च मनसि यस्य स, तत्त्वार्थश्रद्धानामो-
 सरुचिस्ततो निर्जरा, तद्वानित्यर्थः, तथा-' पवयणवच्छद्भासवियमणे ' प्रवचनवा-
 त्सल्पभावितमनाः=प्रवचनानुरागरजितचित्तः, ' उद्वेज्ज य ' उत्था य च ' पहट्टे'
 महट्टः-अतिशयप्रमुदितः, अतएव-' तुट्टे ' तुष्टः ' जहाराणिय' यथारातिन=
 यथापर्याय लघु पर्यायानुसारेण ' साहवे ' साधून्=समानसमाचारिकान् मुनीन्
 ' भागओ ' भागतः-अन्त करणेन ननुपर्युपरितया ' निमतइत्ता य ' निमन्त्य=
 आहारग्रहणार्थं समार्थ्य अनन्तर ' गुरुज्जेण ' गुरुजनेन ' विइण्णे य ' प्रितीर्णच=

के लाभ में भी विषाद से चिढ़ीन चित्त वाला, (सुहमणे) सुखमन-
 सयम में अनुरक्त चित्त वाला, तथा (अविग्रहमणे) संप्लुप्त मनोभाव
 से वर्जित हृदयवाला, और (समाह्वयमणे) रागद्वेष से रहित होने के
 कारण उपशान्त मनवाला तथा (सद्भासवेगनिज्जरमणे) श्रद्धा-
 तत्त्वार्थ-श्रद्धान, सवेग-मोक्ष में रुचि और निर्जराकर्मक्षपण इनमें मन
 रखनेवाला, (पवयणवच्छद्भासवियमणे) प्रवचनानुराग से जिसका
 चित्त अनुरजित बना हुआ है ऐसा वह साधु (उद्वेज्ज य) अपने
 स्थान से उठकर (पहट्टे) अतिशय प्रमुदित एवं (तुट्टे) सतुष्ट होता
 हुआ (जहाराणिय साहवे) यथापर्याय-बड़े छोटे के क्रमानुसार
 साधुओं से भावपूर्वक (निमतइत्ता य) आहार ग्रहण करने के लिये
 प्रार्थना करे। इसके बाद (गुरुज्जेण विइण्णे य) गुरुजनो बड़ों का

पण विषाद रहित चित्तवाला, " सुहमणे " सुखमन-सयमभा अनुरक्त चित्त
 वाला, तथा " अविग्रहमणे " संप्लुप्त मनोभाव रहित हृदयवाला, अने
 " समाह्वयमणे " रागद्वेष रहित होवाने कीधे उपशान्त मनवाला, तथा " सद्भा
 सवेगनिज्जरमणे " श्रद्धा-तत्त्वार्थभा श्रद्धा, सवेग-मोक्षानी रुचि अने निर्जरा
 कर्मक्षपणभा मन रागनार " पवयणवच्छद्भासवियमणे " प्रवचनानुरागधी नेतु
 चित्त अनुरजित मन्यु छे जेवा ते माधु ' उद्वेज्जय ' पोताना स्थानेथी छीनीने
 " पहट्टे " अतिशय आनंदित अने " तुट्टे " सतुष्ट अर्थने " जहाराणिय
 साहवे " यथा पर्याय-नाना भोटाना कम प्रमाणे साधुजोने लावपूर्वक " निम
 तइत्ताय " आहार अर्द्धु करवाने भाटे विनति करे त्यार भाद " गुरुज्जेण
 विइण्णेय " गुरुजनो बड़े अपायेत आहार " तमे लोअन करे " ~

दत्ते सति 'शुद्धश्च त्वमशनादिक' मित्यनुज्ञाते वा सति, 'उपविष्टे' उचितासने उपविष्टः सन् 'समीस काय' 'सशीर्षं काय' = सपूर्णं शरीर, तथा = 'करयल' 'कर तल च' 'सपमज्जिऊण' 'सपमाज्यं' 'अमुच्छिष्टे' 'अमूर्च्छितः' = आहारविषये मूर्च्छा-रहितः 'अगिधे' 'अगृधः' = अप्राप्तसेऽप्याहंकाररहितः, 'अगद्विष्टे' 'अग्रथितः' = रसानुगताकाङ्क्षारूपतन्तुजालैरनामदः, तथा - 'अगरहिष्टे' 'अगर्हितः' = आहारविषये अकृताहारगर्ह, अकृतदातृगर्हश्चेत्यर्थः, तथा - 'अणज्ज्ञोववण्णे' 'अनध्युपपन्नः' = रसविषये लोलुपतापजितः, तथा - 'अणाइले' 'अनाविल' = अकलुषः 'अलुद्धे' 'अलुब्धो' - लोभरहितः, तथा 'अणतद्विष्टे' 'अनात्मार्थिकः' = न केवलमात्मस्वार्थी - परमार्थकारीत्यर्थः, असुरसुर' 'सुरसुरशब्दरहितम्', 'अचवचम्' 'चपड चपड

दिया हुआ आहार "तुम भोजन करो" इस प्रकार आज्ञा मिलने पर वह साधु (उपविष्टे) उचित आसन पर बैठ कर (समीस काय कर-यल सपमज्जिऊण) मस्तक से लेकर अपने समस्त शरीर को और करतल को अच्छी तरह प्रमाजित करे। प्रमाजित करके (अमु-च्छिष्टे) आहार के विषय में अमूर्च्छित बना हुआ वह साधु (अगिधे) अप्राप्त रस में आकाक्षा से रहित, तथा (अगद्विष्टे) रसानुगत आका-क्षा रूप तन्तुजाल से, अनामद तथा (अगरहिष्टे) - आहार के विषय में अथवा दाता के विषय में गर्हा करने से रहित और (अणज्ज्ञोववण्णे) रस के विषय में लोलुपता से विहीन बन कर आहार करे। उस समय वह (अणाइले) अनाविल - अकलुष और (अलुद्धे) अलुब्ध - लोभरहित होकर (अणतद्विष्टे) अनात्मार्थिक - केवल आत्म-स्वार्थी न बनता हुआ आहार करते समय वह (असुरसुर) सुर सुर

भगता ते साधु "उपविष्टे" योग्य आसन पर जैसीने "समीस कायकरयल सपमज्जिऊण" शिरशी लधने पोताना आभा शरीरने तथा ढथेणीने सागी रीते प्रमाजित करीने "अमुच्छिष्टे" आहारना विषयमा अभूर्च्छित भनीने ते साधु "अगिधे" अप्राप्त रसनी आकाक्षार्थी रहित तथा "अगद्विष्टे" रसानुगत आकाक्षाक्षी तन्तुजालथी अनामद-मुक्त तथा "अगरहिष्टे" आका-क्षना विषयमा के दाताना विषयमा गर्हा करवानी कियाथा रहित तथा "अण ज्ञोववण्णे" रसनी भागतमा लोलुपता रहित भनीने आकाङ्क्ष करवे। नेधये ते समये ते "अणाइले" अनाविल-कलेण रहित अने "अलुद्धे" अलुब्ध-लोभरहित भउने "अणतद्विष्टे" अनात्मार्थिक-केवल आत्मस्वार्थी न भने आहार करती वभते ते "असुरसुर" "सुर सुर" शब्द न करे, "अचवचम्"

श-रहितम्. 'अदुय' । दुतम्-नाति तीव्रम् 'अवित्रिय' अवित्रियम्=ना
 तिमन्दम् 'अपरिसाडिय' अपरिसाडियम्-परिसाटापरितम्, सिन्हापातयमित्यर्थः,
 तथा-'आलोयभायणे' आलोयभायणे=प्रकाशयुक्तपात्रे 'जय' यत=यतनापूर्व
 कम् 'अप्पमत्तेण' अपमत्तेन-सावधानेन 'वगयसजोग' व्यवगतमयोगम्=
 सयोजनादोपरहितम् अधिकरूपणादियुक्तवस्तुनोऽल्यत्रगादियुक्तवस्तुनि समञ्जन
 सयोगस्तद्वद्विहितमित्यर्थः, 'अणिगालम्' अण्डारम्=अण्डारदोषपरितम् रागरहित
 मित्यर्थः, तथा-'विगयधूम' विगतधूम-धूमदोषपरितम् द्वेपरहितमित्यर्थः, तदुक्तम्
 'रागेण सङ्गाल दोसेण सधूमग प्रियाणादि' इति, तथा-'अक्खोवज्जणवणाणुलेवण
 भूय' अक्षोपाञ्जनवणानुलेपनभूतम्=तत्र जस्य=शरुटधुरः, उपाञ्जनम्=तैलाभ्यञ्ज
 नम् तथा-'वणाणुलेवण' वणानुलेपन=वणस्य=स्फोटकस्य अनुलेपनम्=भोषणलेप
 नम्, तयोर्भूत=मदश यत्तत्, तथा-सजमजायामायानिमित्त=सययाना मात्रा निमित्त

शब्द न करे (अचवचल) चपट चपट शब्द न करे। (अदुय) न
 बहुत जल्दी जल्दी (अविलिय) न बहुत धीरातथा (अपरिसाडिय)
 ताते समय आहार के साथ को जमीन पर नहीं गिराता हुआ (आलो
 यभायणे) प्रकाशयुक्त पात्र में (जय) यतना पूर्वक (अप्पमत्तेण) बड़ी
 सावधानी के साथ (वगय सजोग) सयोजनादि दोपरहित-अर्थात्-
 अधिक लवण आदि से युक्त वस्तु को अल्प लवण आदि से युक्त वस्तु
 के साथ न मिलाकर (अणिगाल च) अण्डार दोष रहित, आहारसामग्री
 में राग रहित तथा (विगयधूम) धूमदोषरहित-द्वेपरहित (अक्खोव-
 जणवणाणु लेवणभूय) जिस प्रकार शरुट की धुरा में तैल का लगाना
 भारवहन के निमित्त ही किया जाता है और दूसरे किसी प्रयोजन के
 लिये नहीं किया जाता है तथा वण-घाव-पर मरहमपट्टी आदि का

“अपठ अपठ” गण न करे “अदुय” वधारे अडपथी भाय नहीं, “अवि
 लिय” वधारे धीमेथी भाय नहीं तथा “अपरिसाडिय” भाती वधारे
 आहारना पदार्थने जमीन पर पडवा दीधा विना “आलोयभायणे” प्रकाश
 वाणा पात्रमा “जय” यतना पूर्वक “अप्पमत्तेण” धली सावधानीथी “वग-
 ययसजोग” सयोजनादि दोष रहित-ओटवे ठे वधारे भी आदि वाणी
 वस्तुने बोडा भी आदि वाणी वस्तु साथे ओकत्र कथा विना “अणिगाल च”
 अण्डार दोष रहित आहार सामग्रीमा राग रहित तथा “विगयधूम” धूम
 दोष रहित द्वेपरहित “अक्खोवज्जणवणाणुलेवणभूय” जेम गाडानी धरीमा
 तेलसु सिथन बारवहनने भाटे ज कराथ छे पथु भी आ ओर काओ करातु

સયમયાત્રા-સયમપરિપાલન સૈવ માત્રા-આલમ્બન તન્નિમિત્ત=તદ્વેતોઃ સયમયા-
ત્રાનિર્વાહાર્યમેવેત્યર્થ, તથા-‘ સજમભારવહ્નદ્વ્યાઈ’ સયમભારવહ્નાર્થતયા=પય-
મભારવહ્નાર્થમ્, તથા-‘ પાણચારણદ્વ્યાઈ’ પ્રાણધારણાર્થતયા=પ્રાણધારણાર્થ ચ
‘ સજઈ ણ ’ સયતઃ સત્તુ ‘ સમિય ’ સમ્યક્-યતનાપૂર્વક-સમિક્ત વા=સમભા-
વેન, ‘ ભુજેજ્જા’ ભુજ્ઞીત । યથા અક્ષસ્પોષાદ્વન ભારવહ્નાર્થમેવ ત્રિધીયતે, નાન્ય-
પ્રયોજનાર્થમ્, યથા ચ ણાનુલેપન તન્નિદૃષ્ટ્યર્થમેવ ત્રિધીયતે, તથૈવ-સયમયાત્રાનિ
ર્વાહાર્ય-સયમભારવહ્નાર્થ પ્રાણધારણાર્થ ચ સાધુર્ભુજ્ઞીત, ન તુ શરીરચલદૃષ્ટ્યર્થ
રૂપલાવણ્યવૃદ્ધર્થ ચેત્યાસયઃ । એવમ્-અમુના પ્રકારેણ આહારસમિતિયોગેન ભાવિતો
ભવતિ અન્તરાત્મા । ભાવિતાત્મા કીદૃશો ભવતિ ? इत्याह-अशयलसक्लिष्टनिर्व्रण-
चरित्रभावनया हेतुभूतया अहिंसकःसयतःसुसाधुर्भवति । एषा पदानामर्थो द्वितीय-
भावनाया व्याख्यातस्ततोऽवगन्तव्यः ॥ सू ९ ॥

પ્રયોગ ઉસકી નિવૃત્તિ કે લિયે ક્રિયા જાતા હૈ ઉસી તરહ (સજમજા-
યામાયા નિમિત્ત) સયમયાત્રા કે નિર્વાહ કે લિયે (સજમભાર વહ્ન-
દ્વાઈ) સયમ રૂપ ભાર કો ઢોને કે લિયે ઓર (પાણચારણદ્વ્યાઈ) પ્રાણ
ધારણ કે લિયે (સજઈ ણ) સયત-મુનિ (સમિય) યતના પૂર્વક સમ-
ભાવ સે (ભુજેજ્જા) આહાર કરે । કિન્તુ શારીરિક વલવૃદ્ધિ કે લિયે
તથા રૂપલાવણ્ય કી વૃદ્ધિ કે લિયે નહી કરે । (એવમાહારસમિદ્વિજોગેન
ભાવિઓઅતરપ્પા અસવલમસકિલિદ્ધ નિવ્વણચરિત્ત ભાવણાઈ અહિંસઈ
સજઈ સુસાઈ) હિસ પ્રકાર કા આહાર સમિતિ કે યોગ સે અતરાત્મા
ભાવિત હો જાતા હૈ । ભાવિત હુઆ વહ અન્તરાત્મા અશયલ, અસક્લિષ્ટ
એવ નિર્વ્રણ (નિરતિચાર)ચરિત્રકી ભાવના કે કારણ અહિંસક ઓર સયન
બન જાતા હૈ, ઓર મન્ચે રૂપ મે સાધુ-મોક્ષ કો સાધન કરને વાલે-હિસ
નામ કો ચરિતાર્ય કર લેતા હૈ ।

નથા એજ પ્રમાણે “ સજમજાયામાયાનિમિત્ત ” અયમયાત્રાના નિર્વાહને માટે
“ સજમભારવહ્નદ્વ્યાઈ ” સયમરૂપી ભારતુ વહન કરવાને માટે અને “પ્રાણધા-
રણદ્વ્યાઈ” પ્રાણધારણને માટે “ સજઈ ણ ” સયત-મુનિ “ સમિય ” યતના
પૂર્વક સમભાવથી “ ભુજેજ્જા ” આહાર કરે પણ શારીરિક ણા વધારવાને
માટે તથા રૂપલાવણ્યની વૃદ્ધિને માટે ન કરે “ એવમાહારસમિદ્વિજોગેન ભાવેન
અતરપ્પા અસવલમસકિલિદ્ધનિવ્વણચરિત્તભાવણાઈ અહિંસઈ સજઈ સુસાઈ ”
આ રીતે આહાર અમિતિના યોગથી અતરાત્મા ભાવિત થયે બીજા છે ભાવિત
થયેલ તે અન્તરાત્મા અશયલ અસક્લિષ્ટ અને નિર્વ્રણ ચરિત્રની ભાવનાને
કારણે અહિંસક તથા સયન બની બીજા છે, અને સાથા અર્થમાં સાધુ મોક્ષને
સાધન કરનાર-તે નામને ચરિતાર્ય કરે છે.

ભાવાર્થ—હસ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકાર ને ણ્ણના સમિતિ નામની ચતુર્થ ભાવનાના સ્પષ્ટીકરણ કર્યા છે। હસમેં વસ્તુના ગવેષણ, ઉપકાર, ઉપયોગ, તથા ઉપયોગ, હવે ત્રણ વાતોના વિચાર કરાયા છે। ઉપ આહારની ગવેષણા કરતે સમય સાધુને અજ્ઞાત, અકથિત આદિ રૂપ મેં રહ કર હી વિચરના ચાહિયે। આહાર પ્રાપ્ત થોગા યા નહીં થોગા ' હસ પ્રકાર કે સંદેહયુક્ત વિચાર સે ઉસે વિપાદ ભાગ્યમપત્ર નહીં હોના ચાહિયે। અપને દ્વારા ગૃહીત સયમની જિમ પ્રકાર રક્ષા થો ગેસા હી પ્રયત્ન ઉસકો કરતે રહના ચાહિયે તથા જો સયમ ભાગ્ય પ્રાપ્ત નહીં હુઆ હે ઉસકી પ્રાપ્તિ મેં ઉમકા સતત ઉગ્રોગી રહના ચાહિયે। ભિક્ષાના લાભ ન હોને પર ઉસકે ચિત્ત મેં ગ્લાનિના કા ભાગ્ય નહીં જગના ચાહિયે। ઓર ન ક્રોધાદિ કે આવેશ મેં આકર તનતનાટ કરના ચાહિયે। ભિક્ષા પ્રાપ્તિ કે નિમિત્ત ઉસે અનેક ગૃહસ્થો કે ઘર પર જાના અનિવાર્ય હે। વહા સે વહ અલ્પરૂપ મેં પ્રત્યેક ઘર સે ભિક્ષા લે। જરૂર દેસે કો ભિક્ષાની વૃત્તિ થો ગઈ હે તો વહ વાપિસ ઉપાશ્રય મેં આવે ઓર ગુરુ કે સમક્ષ પ્રાપ્ત ભિક્ષાનો રાખકર ગમનાગમનજન્ય અતિચારોની પ્રતિક્રમણ કરકે શુદ્ધિ કરે। ફિર ગુરુ કે પાસ અથવા ગુરુનિર્દિષ્ટ અન્ય ઓર રત્નાધિક મુનિ કે સમીપ જિસ ૨ પ્રકાર સે ઉસને ગોચરી-

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે ણ્ણના સમિતિ નામની સાથે ચોથી ભાવનાના સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તેમાં વસ્તુના ગવેષણ, તેના ઉપકાર, તથા ઉપયોગ, એ ત્રણ વાતોના વિચાર કરાયા છે। ઉપ આહારની ગવેષણા કરતી વખતે સાધુને અજ્ઞાત, અકથિત, આદિ રૂપમાં રહીને જ વિચરવું જોઈએ “આહાર પ્રાપ્ત થશે કે નહીં થાય” એવા સંદેહ વિચારથી તેણે વિપાદ કરવો જોઈએ નહીં। પોતે ઉપકાર કરેલ સયમની જે પ્રકારે રક્ષા થાય એવા જ પ્રયત્ન તેણે કરતા રહેવું જોઈએ તથા જે સયમ ભાગ્ય પ્રાપ્ત થયો નથી તેની પ્રાપ્તિ માટે પ્રયત્નશીલ રહેવું જોઈએ, ભિક્ષા પ્રાપ્ત ન થતા તેના મનમાં ગ્લાનિનો ભાગ્ય ઉત્પન્ન થવો જોઈએ નહીં। અને ક્રોધાદિના આવેશમાં આવીને તનતનાટ કરવો જોઈએ નહીં। ભિક્ષા પ્રાપ્તિને માટે અનેક ગૃહસ્થોને ઘેર જવું તે તેને માટે અનિવાર્ય ગણાય છે। ત્યાંથી-પ્રત્યેક ઘરેથી તે થોડી થોડી ભિક્ષા ઉપકાર કરે। જ્યારે ભિક્ષાની પ્રાપ્તિ પૂર્ણ થઈ ગયેલી હોય ત્યારે તે ઉપાશ્રયમાં આવીને ગુરુની સમક્ષ પ્રાપ્ત થયેલ ભિક્ષાને મૂકીને ગમનાગમન જન્ય અતિચારોની પ્રતિક્રમણ કરીને શુદ્ધિ કરે। પછી ગુરુની પાસે અથવા ગુરુનિર્દિષ્ટ બીજા કોઈ ત્રિસરનાધારી સાધુની પાસે તેણે જે જે પ્રકારે ગોચરી પ્રાપ્ત કરી

भिक्षा प्राप्त की है उसकी आलोचना करें। इस तरह प्रमाद वर्जित बनकर वह आगामी काल में इस बातकी विशेष सावधानी रखे की जिससे उद्दमादि दोषों का आहार में परिहार (निवारण) होता रहे। कायोत्सर्गकरके वह आहार में अनातुर बनकर शांति-सुखपूर्वक बैठ जावे। और जयतऋआहार करने का समय न आवे इसके पहिले अपने मन को ध्यान, शुभयोग, ज्ञान, और स्वाध्याय में लगावे। किसी भी प्रकार का सक्रिष्ट भाव अपने मन में न आने देवे। बाद में-जब आहार का समय आ जावे तब उठकर यथापर्याय अर्थात् बड़े छोटी के क्रम से समस्त साधुजनों को योग की अवकृतापूर्वक आहार के लिये आमन्त्रित करे। गुरुजन जब भोजन करने की आज्ञा प्रदान करे तब अपने सशीर्ष शरीर आदिका प्रमार्जन कर, अमूर्च्छित आदि भाव सपन्न बनकर यतनापूर्वक आगमोक्त विधि के अनुसार आहार करे। आहार करते समय इस बात का वह ध्यान रखे कि यह आहार में शरीर में बलवृद्धि के निमित्त अथवा कांति आदि बढ़ाने के निमित्त नहीं कर रहा है किन्तु सयमयात्रा के निर्वाह के निमित्त सयमभार वहन करने के निमित्त, और प्राणधारण के निमित्त ही कर रहा है। इस प्रकार आहारसमितिके योग से यह जीव वासित हो जाता है-तो वह अपने गृहीन व्रत के अहिंसा अतिचार आदि दोषों से रक्षित करता हुआ सच्चा अहिंसक सयत

छोय तेनी आदोयना ठरे आ रीते प्रमाद गदित जनीने ते लविध्यमा ते वातनी वधारे गणल राणे के जेथी उद्दमादि दोषोने आहारमा त्याग थतो रहे कायोत्सर्ग करीने आहार भाटे आतुर जन्था विना ते शांतिथी जेसी जय अने आहार करवानो समय न थाय त्या सुधी पोताना मनने ध्यान, शुभयोग, ज्ञान अने स्वाध्यायमा लीन करे, कोछ पणु प्रकारने सजिल्लभाव पोताना मनमा थवा हे नही पछी ज्यारे आहार करवानो समय थाय त्यारे उहीने पर्याय प्रमाणे ओटले डे मोटा-नानाना कुममा समस्त साधुजोने विनय पूर्वक आहारने भाटे आमने, गुरुजन ज्यारे बोजन लेवानी आज्ञा आये त्यारे पोताना शिर शरीर आदिनु प्रमाणन करीने, अमूर्च्छित आदि लावयुक्त जनीने यतना पूर्वक आगमोक्त विधि प्रमाणे आहार ठरे आहार करती वधते तेले ते वातनु ध्यान राखणु के हु आ आहार शरीरमा गण वधारवा भाटे डे इय वधारवा भाटे करतो नथी पणु सयमयात्राना निर्वाडने भाटे सयमभार वडेवाने भाटे, अने प्राणधारणने भाटे न कइ छु आ प्रमाणे आहार समितिना योगथी ते लव वासित थई जय छे तो ते पोते

અથ પશ્ચમી નિક્ષેપમાનામાહ—‘ પચમ ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—પંચમ પીઠફલગ સેઝા સંથારગવત્પત્તકંચલદંડગરય-
હરણ ચોલપટ્ટગમુહપત્તિગપાયપુઢળાદિ, એયપિ સંજમસ્સ
ઉવવૂહણદ્વયાએ વાયાતવદસમસગસીયપરિસ્ત્રવણદ્વયાએ ઉવ-
ગરણ રાગદોસરાહિય પરિહરિયવ્વં, સજણં નિચ્ચ પઢિલેહણ
પપ્પોડણાપમજ્જણાએ અહો ચ રાઓ ચ અપ્પમત્તેણ હોંઈ સત્તયં
નિક્ષિયવ્વં ચ ગિણિહયવ્વ ચ ભાયણ મહોવહિ ઉવગરણં ।
એવં આયણમંડણિસ્સેવણાસમિદ્ધજોગેણ ભાવિઓ ભવઈ
અતરપ્પા અસલમસંકિલિટ્ઠનિવ્વણચરિત્ત ભાવણાએ અર્હિ-
સએ સજએ સુસાહુ ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

ટકા—‘ પચમ ’ ઇત્યાદિ—

‘ પચમ ’ પશ્ચમીમાદાનનિક્ષેપસમિતિરૂપાં માનામાહ—‘ પીઠફલગસેઝા
સંથારગવત્પત્તકંચલદંડગરયહરણચોલપટ્ટગમુહપોત્તિયપાયપુઢળાઈ ’ પીઠફલક
શ્યાસસ્વારકચ્છપાનકમ્બલદ્વંડ કરજોઢરણચોલપટ્ટકમુખવપોત્તિરૂપાદમોઞ્છનાદિ,
તત્ર-પીઠ=કાઠમય ‘ પાટ ’ ઇતિ પ્રસિદ્ધમાસનમ્—‘ ફલક = ‘ ગાજોટ ’

બન જાતા હૈ । ઔર સુસાધુ નામને સફલ કરતા હૈ । ॥ સૂ૦ ૧ ॥

અથ સૂત્રકાર પાચવી જો નિક્ષેપભાવના હૈ ઉસે પ્રકટ કરને કે લિપે
સૂત્ર કહતે હૈ—‘ પચમ ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(પચમ) પાચવી ભાવના આદાન નિક્ષેપસમિતિરૂપ હૈ વહ
હસ પ્રકાર હૈ (પીઠફલગસેઝાસંથારગવત્પત્તકંચલદંડગરયહરણચોલ-

અહિયુ ડરેલ અહિસામતનુ અતિચાર આદિ દોષોથી રક્ષાયુ ડરતો થએ
સાથો અહિ સકે સત બની જાય છે અને સુસાધુ નામને સફળ ડરે છે ॥ સૂ. ૬ ॥

હવે સૂત્રકાર પાચવી જે નિક્ષેપ ભાવના છે તેનુ વર્ણન કરવાને માટે
કહે છે—‘ પચમ ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—‘ પચમ ’ પાચવી ભાવના આદાનનિક્ષેપસમિતિ નામની છે તે
આ પ્રમાણે છે—પીઠ ફલગ સેઝાસંથારગવત્પત્તકંચલ દંડગરયહરણચોલપટ્ટગમુહપત્તિ

ઈતિ પ્રમિદ્ધ', શ્ચ્યા=શરીરપ્રમાણલક્ષણા, મસ્તારકઃ=સાર્દ્ધદસ્તદ્વયપ્રમાણઆસન-
વિશેષઃ, વસ્ત્ર, પાત્ર, કમ્બલ્થ પ્રસિદ્ધાઃ, દણ્ડકઃ=રોગિભિર્વૃદ્ધૈશ્ચ ગમનાગમાનર્થ
રક્ષિતા યદિ', રજોદરણ, ચોલપટકઃ, તથા-મુખપોતિકા=મદોરમુખવલ્લિકા,
પાદપ્રોઞ્છન=પ્રમાર્જિકા, एतान्याદૌ यस्य તત્, ઇત્યાદિકમ્, 'ઉવગરણ' ઉપકરણ
સાધોરસ્તિ । 'એયપિ' આહારવદેતદપિ પીઠફલકાદિક 'સજમસ્સ' સયમ-
સ્ય-સપ્તદશવિધસ્ય 'ઉવગૃહ્ણદ્વયા' ઉપગૃહ્ણાર્થમ્-પોષણાર્થમ્-ભવતિ । અતઃ
'વાયાતવદસમસગસીયપરિરક્ષણદ્વયા' વાતાતપદશમશકીતપરિરક્ષણાર્થ 'સ-
જણ' સયતેન=નુનિના 'રાગદોસરહિય' રાગદ્વેપરહિત યથા સ્યાત્તથેદમ્ ઉપક-
રણ 'પરિહરિયન્વ' પરિધર્તવ્યમ્ ધારણીયમિત્યર્થઃ । તથા 'નિચ્ચ' નિત્ય તેષા
યથાયોગ્ય 'પહિલેહ્ણા પપ્ફોહ્ણાપમજ્જણા' પ્રતિલેખના પ્રસ્ફોટના પ્રમાર્જનામુ-
ત્ર-પ્રતિલેખના-ઉભયકાલ પ્રત્યુપેક્ષણા, પ્રસ્ફોટના=ચતનયા પ્રિધ્નનમ્, પ્રમાર્જના

પદ્યમુહપત્તિગવાયપુટ્ટણાઈ) પીઠ પાટ, ફલક-રાજોટ શ્ચ્યા શરીરપ્રમાણ-
ચિહ્નૌના, સસ્તારક-અઢાઈદ્વાયપ્રમાણઆસનવિશેષ, વસ્ત્ર, પાત્ર, કમ્બલ,
દણ્ડ-રોગી અથવા વૃદ્ધ માનુષો દ્વારા અપને પાસ ગમનાગમનાર્થ રક્તી
હુઈ લકડી, રજો દરણ, ચોલપટક, મુખપોતિકા-સદોરકમુખવલ્લિકા
ઔર પાદપ્રોઞ્છન-પ્રમાર્જિકા ઇત્યાદિ ઉપકરણ સાધુ કે હૈ । (એયપિ-
સજમસ્સ ઉવગૃહ્ણદ્વયા) આહાર કી તરહ ચે ખી સતરહ પ્રકાર કે
સયમ કા પોષણ કે લિયે હૈ । હસલિયે હનકા (વાયાતવદસમસગ સીય-
પરિરક્ષણદ્વયા સજણ રાગદોસરહિય પરિહરિયન્વ) વાત-(પવન)
આતપ-ધૂપ, ઢશ, મશક એવ શીત સે રક્ષિત હોને કે લિયે મુનિ કો
રાગદ્વેપરહિત હોકર ધારણ કરના ચાહિયે । તથા (નિચ્ચ) નિત્ય હી
(પહિલેહ્ણા પપ્ફોહ્ણા પમજ્જણા) હન ઉપકરણો મેં સે ખાજન ખાણ

વાયપુટ્ટણાઈ " પીઠ-પાટ, ફલક-ખાલેક, શ્ચ્યા-શરીરના પ્રમાણુન પાથરણુ
સસ્તારક-અઢી હાથના માપનુ આમનવિશેષ, વસ્ત્ર, પાત્ર, કમ્બલ, દણ્ડ-રોગી
અથવા વૃદ્ધ સાધુઓ દ્વારા પોતાની પાને આવવા બધા (ટેકા માટે) રાખેલી
લાકડી, રજોદરણ, ચોલપટક, મુખપોતિકા દોરા સહિતમુહપત્તિ, અને પાદપ્રોઞ્છન
પ્રમાર્જિકા ઇત્યાદિ સાધુના ઉપકરણો છે 'એયપિ સજમસ્સ ઉવગૃહ્ણદ્વયા'
આહારની જેમ એ પણ સત્તર પ્રકારના સયમના પોષણ માટે છે તેવી તેમને
"વાયાતવદસમસગસીયપરિરક્ષણદ્વયા સજણ રાગદોસરહિય પરિહરિયન્વ"
વાત-પવન, આતપ, તડકો, દગ, મશક અને શીતથી વ્દાણ ખામવાને માટે
મુનિએ રાગદ્વેપ રહિત થઇને તેમને ધારણ કરવા બોધએ તથા "નિચ્ચ" હમેગા
"પહિલેહ્ણાપમજ્જણા" એ ઉપકરણોમાથી ભાજન ભાડ અને ઉપવિની પ્રતિ

—રજોહરણાદિભિઃ સમાર્જના, તામુ ઋતામુ-પ્રતિલેખનાદિકરણાનન્તરમિત્યર્થ-
 ‘અહો ય રાઓ ય’ ઇદ્વશ્ચ રોત્રા ચ ‘ભાયણમંડોવહિઊગરણ’ ભાજનભાણ્ડો
 પદ્યુપકરણં-તા-ભાજન=પાત્રમ્, ભાણ્ડમ્=ઉન્દરમ્, ઉપધિઃ=વસ્ત્રમ્, ણતસ્ત્રિત
 યરૂપ યદુપકરણ તત્, ‘અપ્પમત્તેણ’ અપ્રમત્તેન સતા ‘સયય’ સતત=નિરન્તર
 ‘નિક્કિલયવ્વ’ નિક્કેલ્લવ્વ-સ્થાપનીય ‘ગિણ્ઠિયન્ત’ ગત્તિતન્ત ચ ‘દોઢ’ ભવતિ
 ઇવમાદાનભાણ્ડનિક્ષેપણાસમિત્તિયોગેન ભારિતો ભવતિ અન્તરાત્મા=જીવઃ । ભાવિ-
 તાડન્તરત્મા કીદશો ભવતિ ? इत्याह-अश्वत्थामस्मिन्निर्णयचारित्र भावनया हेतु-
 भूतया अहिंसकः सपतः मृसाधुर्भवति, एतेषामर्थः पूर्वमुक्तः, तत एवागन्तव्यः॥५॥

और उपधि की प्रतिलेखना प्रस्फोटना प्रमार्जना कर लेने पर-प्रतिलेखना
 दोनों समय प्रत्युपेक्षणा प्रस्फोटना, प्रमार्जना-रजोहरणादि से पुजना
 करके (अहोय राओ-य) दिन में और रात्रि में (भायण भंडोवही-
 ऊवगरण) भाजन-पात्र, भाण्ड उन्दर, और उपधि-वस्त्र । इन उप-
 करणों को जमीन पर रखना पड़ता है, उठाना पड़ता है । सो ऐसी
 स्थिति में साधु का यह कर्तव्य है कि यह इन सबको धरते उठावे
 (सयय) निरन्तर (अप्पमत्तेण) अप्रमत्त रहे । (निक्किलयव्व गिण्ठि-
 यव्व होइ) इन उपकरणों को जब भूमि पर धरे तब उसकी प्रमार्जना
 करे फिर धरे, उठावे तब उन उपकरणों की प्रमार्जना करके उठावे । इस
 तरह करने से जीवों की विराधना नहीं हो सकती है । यही साधु की
 अप्रमत्त अवस्था है । (एव) इस तरह (आयाण भण्डनिक्खवणासमिद्ध-
 जोगेण) आदान भाण्डनिक्खवणासमिति के योग से (अतरप्पा) जीव

લેખના પ્રસ્ફોટના પ્રમાર્જના કરી લીધા પછી-પ્રતિલેખના-ખ-ને સમય પ્રત્યુપે
 ક્ષણા, પ્રસ્ફોટના-યતના આચરણુ, પ્રમાર્જના-રજોહરણુ આદિથી પૂજણુ વગેરે
 કર્યા પછી “અહોય રાઓય” દિવસે તથા રાત્રે “ભાયણ મંડોવહિઊવગરણ”
 ભાજન-પાત્ર, ભાણ્ડ-ઉન્દર અને ઉપધિ-વસ્ત્ર, એ ઉપકરણોને જમીન ઉપર
 રાખવા પડે છે, તથા ઉપાડવા પડે છે તો એવી પરિસ્થિતિમાં સાધુનું એ
 કર્તવ્ય છે કે તે એ બધાને લેતા, મૂકતા “સયય” નિરન્તર “અપ્પમ ગ”
 અપ્રમાદી રહે “નિક્કિલયવ્વ ગિણ્ઠિયવ્વ હોઈ” એ ઉપકરણોને બ્યારે જમીન
 પર મૂકે ત્યારે તેની પ્રમાર્જના કરે અને ફરીથી ત્યાંથી ઉઠાવે ત્યારે તે ઉપ
 કરણોની પ્રમાર્જના કરીને ઉઠાવે, આ પ્રમાણે કરવાથી જીવોની વિરાધના થઈ
 શકતી નથી એ જ સાધુની અપ્રમત્ત અવસ્થા છે “एव” આ રીતે “आयाणा
 भण्डनिक्खवणासमिद्धजोगेण” આદાન ભાડ નિક્ષેપણા સમિતિના યોગથી “અ

સમ્પત સૂત્રકારઃ પ્રથમસવરદારપ્રસહરનાહ—‘ એવ ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—એવમિણં સવરદાર સમ્મ સંવરિય હોઈ, સુપ્પણિહિયં, ઇમેહિ પચહિ વિ કારણેહિ મળવયળકાયપરિરત્તિલ્લેહિં, ણિચ્ચં આમરણત ચ એસ જોગો ણેયવ્વો ધિહ્મયા મહ્મયા અણાસવો અકલ્લસો અચ્છિદ્ધો અપરિસાહ અસકિલિદ્ધો સુદ્ધો સવ્વજિણ-મણુણ્ણાઓ । એવ પઢમ સવરદાર ફાસિય પાલિય સોહિયં તીરિય કિટ્ઠિય આરાહિય આણાણ અણુપાલિયં ભવઢ । એવ ણાયમુંણિણા ભગવચા પળાવિયં પરૂવિયં પસિદ્ધ સિદ્ધ સિદ્ધ-વરસાસનામિણ આઘવિયં સુદેસિય પસત્થ પઢમ સવરદારં સમત્તં ત્તિ વેમિ ॥ સૂ-૧૧ ॥

ટીકા—‘ એવમિણ ’ ઇત્યાદિ—

‘ એમિણ ’ એવમ્—ઉક્તરૂપેણ ઇદમ્—અહિંસાલક્ષણ ‘સવરદાર’ સવરદારમ્= સવરસ્ય=અનાથ્રવસ્ય દ્વારમ્=ઉપાયઃ ‘ સમ્મ ’ સમ્યક્ ‘ સવરિય ’ સવૃતમ્—સંસે-

(ભાવિઓ નવઢ) વાવિત વના દુઆ વહ જીવ હેતુભૂત અશબલ, અસક્લિ-ષ્ઠ, નિર્વ્રજ (નિરતિચાર) ચારીત્ર કી ભાવના સે અહિંસક સયત વન જાતા હૈ । ઓર સચ્ચેરૂપ મેં અપને સાધુપદ કો સાર્થક કર લેતા હૈ । નિર્જન્તુ ભૂમિ પર ઉપકરણો કા ધરના ઓર ઉઠાના ઇસકા નામ આદાનભાણ્ડ-નિક્ષેપણા સમિતિ હૈ । ઇસ સમિતિ કે યોગ સે આત્મા-મુનિ અપને અહિંસા મહાવ્રત કી રક્ષા ઓર સ્થિરતા કરતા રહતા હૈ ॥ ॥ સૂ. ૧૦ ॥

અવ સૂત્રકાર પ્રથમ સવર દ્વાર કા ઉપસહાર કરતે હુએ કહતે હેં—

તરપ્પા ” એવ ” ભાવિઓ મગઈ ” લાપિત બની બય છે લાપિત બનેલ તે એવ હેતુભૂત અગણલ, અમઝિલ્લ, નિર્વળ ચારિત્રની લાવનાથી અહિંસક સયત બની બય છે અને સાચા અર્થમાં પોતાના સાધુ પદને સાર્થક કરે છે ભૂમિ પર ઉપકરણોને મૂકવા તથા ઉપાડવા તેનું નામ આદાન ભાણ્ડ-પણા સમિતિ છે આ સમિતિના યોગથી આત્મા મુનિ-પોતાના અહિંસા મહાવ્રતની રક્ષા તથા સ્થિરતા કરતા રહે છે ॥ સૂ-૧૦ ॥

હવે સૂત્રકાર પ્રથમ સવરદારનો ઉપસહાર કરતા કહે છે—“એવમિણ” ઇત્યાદિ

=રજોહરણાદિભિઃ સમાર્જના, તામુ જ્ઞામુ-પ્રતિલેખનાદિકરણાનન્તરમિત્યર્થ-
 'અહો ય રાઓ ય' અદ્ય રોત્રો ચ 'ભાગળભટ્ટોવહિઉગરણ' ભાજનભાણ્ડો
 પદ્યુપકરણ-તા-ભાજન=પાત્રમ્, માણ્ડમ્=ઉન્દરમ્, ઉપધિઃ=ચમ્, જ્ઞાત્મિત
 યરૂપ યદુપકરણ તત્, 'અપ્પમત્તેણ' અપ્રમત્તેન સતા 'સયય' સતત=નિરન્તર
 'નિક્કલ્લયવ્વ' નિક્કલ્લેખ્ય-સ્થાપનીય 'ગિણ્હિયન્ન' ગતિતન્ન ચ 'દોઢ' મત્તિ
 જ્ઞામાદાનમાણ્ડનિક્કલ્લેખનાસમિતિયોગેન માયિતો ભવતિ અન્તરાત્મા=જીવઃ । માયિ-
 ત્તાન્તરાત્મા કીદશો ભવતિ ? ઉત્પાદ-અગ્નિમાયિત્તિનિર્ણયચારિત્ર માત્રનયા હેતુ-
 ભૂતયા અર્હિસકઃ સપત્ત' મુસાધુર્ભવતિ, પતેપામર્થઃ પૂર્વમુક્તઃ, તત્તજ્ઞાગન્તરુપઃ ॥૬૧॥

और उपधि की प्रतिलेखना प्रस्फोटना प्रमार्जना कर लेने पर-प्रतिलेखना
 दोनों समय प्रत्युपेक्षणा प्रस्फोटना, प्रमार्जना-रजोहरणादि से पुजना
 करके (अहोय राओय) दिन में और रात्रि में (भायण भंडोवही-
 ऊवगरण) भाजन-पात्र, भाण्ड उन्दर, और उपधि-चम । इन उप-
 करणों को जमीन पर रखना पड़ता है, उठाना पड़ता है । सो ऐसी
 स्थिति में साधु का यह कर्तव्य है कि वह इन सबको धरते उठाते
 (सयय) निरन्तर (अप्पमत्तेण) अप्रमत्त रहे । (निकल्लयव्व गिण्हि-
 यव्व होइ) इन उपकरणों को जब भूमि पर धरे तब उसकी प्रमार्जना
 करे फिर धरे, उठावे तब उन उपकरणों की प्रमार्जना करके उठावे । इस
 तरह करने से जीवों की विराधना नहीं हो सकती है । यही साधु की
 अप्रमत्त अवस्था है । (एव) इस तरह (आयाण भडनिल्लव्वणासमिद्ध-
 जोगेण) आदान भाण्डनिल्लेखणासमिति के योग से (अतरप्पा) जीव

લેખના પ્રસ્ફોટના પ્રમાર્જના કરી લીધા પછી-પ્રતિલેખના-ગ-ને મમય પ્રત્યુપે
 ક્ષણા, પ્રસ્ફોટના-ચતના આચરણુ, પ્રમાર્જના-રજોહરણુ આદિથી પૂજણુ વગેરે
 કર્યા પછી “અહોય રાઓય” દિવસે તથા રાત્રે “ભાયણ ભડોવહિઉવગરણ”
 ભાજન-પાત્ર, માણ્ડ-ઉન્દર અને ઉપધિ-ચમ, એ ઉપકરણોને જમીન ઉપર
 રાખવા પડે છે, તથા ઉઠાડવા પડે છે તેા એવી પગિચ્છિતિમા સાધુનુ એ
 કર્તવ્ય છે કે તે એ બધાને લેતા, મૂકતા “સયય” નિરન્તર “અપ્પમ ગ”
 અપ્રમાદી રહે “નિક્કલ્લયવ્વ ગિણ્હિયવ્વ હોઈ” એ ઉપકરણોને જ્યારે જમીન
 પર મૂકે ત્યારે તેની પ્રમાર્જના કરે અને ફરીથી ત્યાથી ઉઠાવે ત્યારે તે ઉપ
 કરણોની પ્રમાર્જના કરીને ઉઠાવે, આ પ્રમાણે કરવાથી જીવોની વિરાધના થઈ
 શકતી નથી એ જ સાધુની અપ્રમત્ત અવસ્થા છે “એવ” આ રીતે “આયાણા
 મહ નિક્કલ્લેખનાસમિદ્ધજોગેણ” આદાન લાડ નિક્કલ્લેખના સમિતિના યોગથી “અ

સમ્પત સૂત્રકાર. પ્રથમસરદારપ્રપસહરનાહ-‘ એવ ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—એવમિણં સંવરદારં સમ્મ સંવરિય હોઙ્ગ, સુપ્પણિહિયં, ઇમેહિ પચહિ વિ કારણેહિ મળવયળકાયપરિરત્તિલ્લપ્પહિ, ણિચ્ચં આમરણત ચ એસ જોગો ણેયવ્વો ધિઙ્ગમયા મઙ્ગમયા અણાસવો અકલ્લસો અચ્છિદ્ધો અપરિસાઙ્ગ અસકિલિદ્ધો સુદ્ધો સવ્વજિણ-મણુણ્ણાઓ । એવ પઢમ સવ્વરદાર ફાસિય પાલિય સોહિયં તીરિયં કિટ્ઠિય આરાહિય આણાણ અણુપાલિયં ભવઙ્ગ । એવં ણાયમુંણિણા ભગવચા પળ્લવિયં પરુવિયં પસિદ્ધ સિદ્ધ સિદ્ધ-વરસાસણમિણ આઘવિય સુદેસિય પસત્થ પઢમં સંવરદારં સમત્તં ત્તિ વેમિ ॥ સૂ-૧૧ ॥

ટીકા—‘ એવમિણ ’ ઇત્યાદિ—

‘ એમિણ ’ એવમ્—ઉક્તક્રમેણ ઉદમ્—અહિંસાલક્ષણ ‘ સવરદાર ’ સરદારમ્= સવરણ્ય=અનાથવસ્ય દ્વારમ્=ઉપાયઃ ‘ સમ્મ ’ સમ્યક્ ‘ સંવરિય ’ સવૃતમ્—સંસે-

(ભાવિઓ નવઙ્ગ) વાવિત વના દુઆ વહ જીવ હેતુભૂત અશબલ, અસક્લિ-ષ્ઠ, નિર્વ્રજ (નિરતિચાર) ચારીત્ર કી ભાવના સે અહિંસક સચત વન જાતા હૈ । ઓર સચ્ચેરૂપ મેં અપને સાધુવદ્ કો સાર્થક કર લેતા હૈ । નિર્જન્તુ ભૂમિ પર ઉપકરણો કા ધરના ઓર ઉઠાના ઇસકા નામ આદાનભાણ્ડ-નિક્ષેપણા સમિતિ હૈ । ઇસ સમિતિ કે યોગ સે આત્મા-મુનિ અપને અહિંસા મહાવ્રત કી રક્ષા ઓર સ્થિરતા કરતા રહતા હૈ ॥ ॥ સૂ. ૧૦ ॥

અવ સૂત્રકાર પ્રથમ સવર દ્વાર કા ઉપસહાર કરતે હુએ કહતે હ—

સરણ્યા ” એવ “ ભાવિઓ મળઈ ” લાવિત ણની બંધ છે લાવિત બનેલ તે એવ હેતુભૂત અશબલ, અસક્લિષ્ઠ, નિર્વ્રજ ચારિત્રની લાવનાથી અહિંસક સચત ણની બંધ છે અને સાચા અર્થમાં પોતાના સાધુ પદને સાર્થક કરે છે ભૂમિ પર ઉપકરણોને મૂકવા તથા ઉપાડવા તેનું નામ આદાન ભાડ નિક્ષેપણા સમિતિ છે આ સમિતિના યોગથી આત્મા મુનિ-પોતાના અહિંસા મહાવ્રતની રક્ષા તથા સ્થિરતા કરતા રહે છે ॥ સૂ-૧૦ ॥

— હવે સૂત્રકાર પ્રથમ સવરદારનો ઉપસહાર કરતા કહે છે—“ એવમિણ ” ઇત્યાદિ

રિત મત્ 'સુપણિહિય' સુપણિહિત=સુરક્ષિત 'હોઈ' ભવતિ । 'મળવયળકાયપ
રિરિતિપર્ણિ' મનોચ્ચનકાયપરિરિતિ -યોગવયપરિરિતિ: 'ઈમેર્હિ પચર્હિ વિ કાર
ણેર્હિ' એમિ: પચ્ચમિરપિ કારણૈ: =પૂર્વોક્તામિ પચ્ચમિર્માયાનામિ: 'ણિન્ચ' નિત્યમ્
'આમરણત' આમરણાન્ત=મરણપર્યન્ત ચ 'એસજોગો' એસ યોગ: =અહિંસારૂપ
ણસવરરૂપવ્યાપાર: 'ધિદ્મયા' ધૃતિમતા=સ્વસ્થચિત્તેન 'મદ્મયા' મતિમતા=
દેવોપાદેયમેધાસુક્તેન 'નેયવ્વો' નેતવ્ય: =ચોદવ્ય. પરિપાલનોય ઇત્યર્થ: । કીદ
શોડય યોગ: ? ઇત્યાહ-અથ યોગ.-'અણાસવો' અનાશ્રવ: -નૂતનકર્માગમનરહિત-
ત્વાત્ 'અકલુસો' અકલુપ: =અશુભાધ્યવસાયરહિતત્વાત્, 'અચ્છિદ્ધો' અચ્છિદ્ર: -
છિન્નપાપસ્રોતત્વાત્, અપરિસ્સાઈ' અપરિસ્સારીન્નિદુરૂપેનાપિ કર્મજલપ્રવંશરહિ-
'એવમિણ' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ | (એવમિણ સવરદાર મમ્મ સવરિય સુપણિહિય હોઈ)
ઉક્ત ક્રમસે યહ અહિંસારૂપ પ્રથમ સવરદ્વાર સેવિત ક્રિયે જાને પર
સુરક્ષિત હો જાતા હૈ । (મળવયળકાયપરિરિક્તિપર્ણિ) જ્ઞાનલિયે મન
વચ્ચન ઓર કાય ઇન ત્રીનો યોગોં સે અન્ત્રી તરફ સુરક્ષિત ક્રિયે ગયે
(ઈમેર્હિ પચર્હિ વિ કારણેર્હિ) ઇન પૂર્વાક્ત પાચ ભાવનારૂપ કારણોં સે
(ણિન્ચ) નિત્ય (આમરણત) મરણપર્યન્ત-જીવન ભરતક (એસ જોગો)
હસ અહિંસારૂપ સવરદ્વાર કા (ધિદ્મયા) સ્વસ્થચિત્ત સે યુક્ત એવ
(મદ્મયા) દેવોપાદેય કી બુદ્ધિ સે સપન્ન હોકર મુનિ કો (નેયવ્વો)
પરિપાલન કરના ચાલિયે । ય્યો કિ યહ અહિંસારૂપ સવર યોગ (અણા
સવો) નૂતન કર્માગમન કો રોકને કા કારણ હોને સે અનાશ્રવરૂપ હૈ ।
(અકલુસો) અશુભ અવ્યવસાય સે રહિત હોને કે કારણ અકલુપ રૂપ
હૈ । (અચ્છિદ્ધો) ઇસસે પાપકા સ્રોત નષ્ટ હો જાતા હૈ ઇસ કારણ સે યહ

ટીકાર્થ-“એવમિણ સવરદાર મમ્મ સવરિય સુપણિહિય હોઈ” કહ્યા પ્રમાણેના
ક્રમથી આ અહિંસારૂપ પ્રથમ સવરદ્વારનું સેવન કરવાથી તે સુરક્ષિત થઈ જાય
છે “મળવયળકાયપરિરિક્તિપર્ણિ” તેથી મન, વચ્ચન અને કાય એ ત્રણે યોગોથી
સારી રીતે સુરક્ષિત કરાયેલ “ઈમેર્હિ પચર્હિ વિકારણેર્હિ” એ પૂર્વોક્ત પાચ
ભાવનારૂપ કરણોથી “ણિન્ચ” હમેશા “આમરણત” મરણપર્યન્ત-આજીવન,
“એસજોગો” આ અહિંસારૂપ સવરદ્વારનું “ધિદ્મયા” સ્વસ્થ ચિત્તથી અને
“મદ્મયા” દેવોપાદેયની બુદ્ધિથી યુક્ત થઈને મુનિએ “નેયવ્વો” પરિપા
લન કરવું ભેદ એ કારણ કે આ અહિંસારૂપ સવરયોગ “અણાસવો” નવા
કર્માગમનને રોકવાને કરણબૂત હોવાથી ને અનાશ્રવ રૂપ છે “અકલુસો”
અશુભ અવ્યવસાયથી રહિત હોવાને કારણે અકલુપરૂપ છે “અચ્છિદ્ધો” તેનાથી
પાપનો પ્રવાહ નાશ પામે છે તે કારણે તે અચ્છિદ્રરૂપ છે “જ”

તત્વાત્, 'અસક્તિદ્વો' અસક્તિદ્વ -અનમાધિભાવનિતત્વાત્ 'સુદ્ધો' શુદ્ધઃ=
કર્મમલવર્જિતત્વાત્ 'સન્નજિનમણુણાઓ' સર્વજિનાનુજ્ઞાત -સકલપ્રાણિદિતકાર-
કત્વાત્ સર્વેપામર્દતામનુમતત્વાસ્તિ । એવમ્-ઉક્તપ્રકારેણ 'પદમ સવરદ્વાર'
પ્રથમ સવરદ્વાર, , ફાસિય' સ્પૃષ્ટ કાયેન, 'પાલિય પાલિત સતતપ્રયોગેન સે-
વિતમ્, 'સોદિય' શોધિતમ્-અતિચારવર્જનેન, 'તીરિય' તીરિત=તીર પ્રાપિત
પૂર્ણરૂપેણ સેવિતમ્, 'કિદિય' કીર્તિતમ્=અન્યેપામુપદિષ્ટમ્, તથા 'આરાહિય'
આરાધિત-ત્રિસ્ત્રણત્રિયોગે સમ્યગાચરિતમ્, 'આણા' આજ્ઞાયા=સર્વત્રવચનેન,
'અણુપાલિય' અણુપાલિત ચ ભવતિ । એવમ્=ઉક્તરૂપ સવરદ્વાર કેન કથિતમ્ ?

અન્નિદ્વરૂપ છે । (અપરિસ્સાઈ) એક ચિન્દુ માત્ર મ્હી કર્મરૂપ જલ કા
હસ મેં પ્રવેશ નહીં હો સકુના છે અતઃ, ઉસસે રહિત હોને કે કારણ યહ
અપરિસ્સાઈ છે । (અસક્તિદ્વો) અસમાધિરૂપ ભાવ સે યહ વર્જિત હોતા
છે હસલિયે અસક્તિદ્વો છે । તથા (સુદ્ધો) કર્મમલ સે સર્વથા વિહીન
હોને કે કારણ યહ શુદ્ધ છે । હસીલિયે યહ (સન્નજિનમણુણાઓ)
સમસ્ત અર્હત ભગવતોં કો અનુમત-માન્ય હુઆ છે કયોં કિ હસીસે
સકલ પ્રાણિયોં કા હિત હુઆ છે । (એવ પદમ સવરદ્વાર) ઉક્ત પ્રકાર
સે પ્રથમ સવરદ્વાર કો (ફાસિય) જો અપને કાય સે સ્પર્શ કરતે હૈં
(પાલિય) નિરન્તર ધ્યાન પૂર્વક હસકા સેવન કરતે હૈં (સોદિય)
અતિચારોં સે હસે રહિત ઘનાતે હે (તીરિય) પૂર્ણરૂપ સે હસે અપને
જીવન મેં ઉતારતે હે (કિદિય) દૂસરો કો હસે વારણ કરને કા ઉપદેશ
દેતે હે તથા (આરાહિય) ત્રીન કરણ ત્રીન યોગોં સે જો હસે અચ્છી
તરહ આચરિત કરતે હે (આણાઅણુપાલિય ભવદ્) સર્વજ્ઞ કે વચન

એવ ચિન્દુ જેટલા પણ ડહુંડપી જળને તેમા પ્રવેશ થા જડતો નથી, તેથી
તેનાથી ગ્રહિત હોવાને કારણે તે અપરિસ્સાઈ છે, “અસક્તિદ્વો” અનમાધિ-
રૂપ ભાવથી તે રહિત હોય છે તેથી તે અસક્તિદ્વ છે તથા “સુદ્ધો” કર્મ-
મળથી સર્વથા રહિત હોવાને કારણે તે શુદ્ધ છે તેથી તે “સન્નજનમણુ-
ણાઓ” સમસ્ત અર્હત લગવાનોને માન્ય થયેલ છે, કણુ કે તેનાથી
મધળા પ્રાણીઓનુ હિત થયુ છે “એવ પદમ સવરદ્વાર” ઉક્ત પ્રકારે પ્રથમ
અવસ્થાને “ફાસિય” જે પોતાના ગરીથી સ્પર્શ કરે છે ‘પાલિય’
નિરન્તર ધ્યાનપૂર્વક તેનુ પાલન કરે છે “સોદિય” અતિચારથી તેને ગ્રહિત
ખનાવે છે “તીરિય” પૂર્ણ ગીતે તેને પોતાના અવનમા ઉતારે છે, ‘કિદિય’
ખીલને તે પાળવાનો ઉપદેશ આપે છે, તથા ‘આરાહિય’ ત્રણ કરણ ત્રણ
યોગથી જે તેને સારી રીતે આચરે છે “આણાઅણુપાલિય ભવદ્” સર્વજ્ઞના

इत्याह—‘णायमुणिगा’ ज्ञातमुनिना-प्रसिद्धक्षत्रियवशोद्भवेन मुनिना भगवता
महावीरेण ‘पणविय’ प्रज्ञापितम्=ज्ञाप्यम् सामान्यतया कथितम्, ‘परुविय
प्ररूपितम्=भेदानुभेदप्रदर्शनपूर्वक कथितम्, ‘पसिद्ध’ प्रसिद्धम्-प्रख्यातम्, सिद्ध
-प्रमाणप्रतिष्ठितम्, ‘सिद्धवरसासण’ सिद्धवरसासनम्-सिद्धाना-निष्ठिनार्याणां
वरशासनम्=प्रधानाज्ञानास्त्वम्, ‘इण’ इदम् ‘आघविय’ आघव्यातम्=परंतो भावेन
कथितम्, ‘सुदेसिय’ सुदेसितम्=सदेवमनुजानुराया परिपदि सुहृदादिषु ‘पसत्थं

के अनुसार ही पालते हैं। (एव) इस प्रकार उक्त रूप यह सवर द्वार
(णायमुणिगा) प्रसिद्ध क्षत्रिय वश में उत्पन्न हुए मुनि (भगवता)
भगवान् महावीर ने (पणविय) प्रज्ञापित किया है-ज्ञाप्यों के लिये
सामान्यरूप से कहा है। (परुविय) प्ररूपित किया है-भेदानुभेद
प्रदर्शन पूर्वक कथित किया है। इसलिये यह (पसिद्ध) प्रसिद्ध है-आवा
याँदिकी परपरा से इसका पालन करना इसीरूप में चला आ रहा है।
तथा (सिद्ध) सिद्ध है-इसमें किसी भी प्रमाण से बाधा नहीं आती है
अतः प्रमाणप्रतिष्ठित है। तथा (सिद्धवरसासणमिण) जो सिद्ध हो चुके
हैं-कृतकृत्य बन चुके हैं-उनका यह वर शासन रूप है सो इसी को
(आघविय) प्रभु महावीर ने कहा है। और (सुदेसिय) इसका उप-
देश उन्होंने देव, मनुज एवं असुरों सहित परिपदा में अच्छी तरह
दिया है। (पसत्थ) यह प्रथम सवर द्वार समस्त प्राणियों का हित-
कारक होने से मंगलमय है। (पदम सवरदार समन्त) इस तरह का

વચન પ્રમાણે જ પાળે છે, “એવ” આ પ્રમાણે કહ્યા પ્રમાણેના સ્વરૂપનું તે
સવરદ્વાર “ણાયમુણિગા” પ્રસિદ્ધ ક્ષત્રિય વશમાં ઉત્પન્ન થયેલ મુનિ “ભગવતા”
ભગવાન મહાવીરે “પણવિય” પ્રજ્ઞાપિત કરેલ છે-જિજ્ઞેષાને માટે સામાન્ય
રૂપે કહ્યું છે “પરુવિય” પ્રરૂપિત કરેલ છે-લેદાનુભેદ જતાવીને જોડેલ છે તેથી
તે “પસિદ્ધ” પ્રસિદ્ધ છે-આચાર્યાદિની પરપરા દ્વારા આ જ ગીતે તેનું પાલન
કરવાનું ચાલ્યું આવે છે એવું “સિદ્ધ” નિદ્ધ થયેલ છે-તેમાં ગર્થ પણ
પ્રમાણથી બાધા (મુશ્કેલી) આવતી નથી તેથી તે પ્રમાણપ્રતિષ્ઠિત છે તથા
“સિદ્ધવરસાસણમિણ” જે સિદ્ધ થઈ ગયા છે, કૃતકૃત્ય બની ગયા છે-તેમનું
તે શ્રેષ્ઠ શાસન રૂપ છે તરણુ કે તે “આઘવિય” મહાવીર પ્રભુએ કહેલ છે
“સુદેસિય” તેનો ઉપદેશ તેમણે દેવ, માનવ અને અસુરો સહિતની પરિપ-
દ્ધામાં સાગી રીતે આપેલ છે “પસત્થ” આ પ્રથમ સવરદ્વાર સમન્ત પ્રાણી
ઓને માટે હિતસાધક હોવાથી મંગળમય છે “પદમ સવરદાર” આ

‘प्रसस्त’ प्रशस्त—सर्वप्राणिहितकृत्वान्मङ्गुलमयम्, पदम् मरदार’ प्रथमसवरद्वार
‘समत्त’ समाप्तम्, ‘त्तिवेमि’ इति व्रजीमि—अस्यार्थः पूर्णमुक्तः ॥ सू० ११ ॥

॥ इति प्रथम सवरद्वार समाप्तम् ॥

॥ इति श्री त्रिविख्यात-जगद्गुरु — प्रसिद्धवाचरूपश्चदशभाषाकलि-
तललितकलापालापक-प्रतिशुद्धगद्यपद्यनेकग्रन्थनिर्मापक- वादिमानमर्दक-
श्रीशाह छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त ‘जनशास्त्राचार्य’ पदभूषित-
कोल्हापुरराजगुरु-पालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिनाकरपूज्यश्री
घासीलालप्रतिविरचिता श्री प्रशस्तव्याकरणमुत्रसुदर्शन्या
न्याया व्याख्याया सरात्माके द्वितीये-भागेऽद्विसानामक
प्रथम सवरद्वार समाप्तम् ॥ १ ॥

यह प्रथम सवर द्वार समाप्त हुआ। (त्ति वेमि) हे जबू। जैसा मैं ने
भगवान् महावीर के मुख से इसे सुना है वैसा ही यह मैंने तुम से
कहा है—अपना कल्पना से इसमें कुछ भी नहीं कहा है ॥

भावार्थ—प्रथम सवरद्वार का उपसंहार करते हुए सूत्रकार कहते
हैं कि हम सवरद्वार को प्रत्येक मुनिजन के लिये अच्छी तरह उपयोग
पूर्वक पानभावनाओं सहित प्रायजीव पालन करना चाहिये। इसके
पालन करने में यदि कोई परीपह और उपसर्ग आवे तो उन्हें धैर्यपूर्वक
सहलेना चाहिये, क्योंकि यह सवर द्वार नवीन कर्मों के आस्रव
को रोकता है। इसके पालन करने से अशुभ अश्वसाय उत्पन्न नहीं
होने पाते हैं। पापों का स्रोत इसके प्रभाव से बंध हो जाता है। यह

प्रकारनु आ प्रथम सवरद्वार संपूर्ण थयु “त्तिवेमि” हे जबू। जेवु मे
लगवान भडावीरना भुजेथी सालज्यु हे जेवु ज ते मे तमने डल्लु छे—
भागी उद्वनाथी तेभा मे उध पल्लु डल्लु नथी

भावार्थ—प्रथम सवरद्वारने उपसंहार करता सूत्रकार उहे छे के आ
मवरद्वारनु प्रत्येक मुनिजे मारी रीते उपयोग पूर्वक पाय भावनाजे सहित
एवनपर्यंत पालन करवु जेधजे तेनु पालन करता जे ठोड परीपह तथा
उपसर्ग नउ ते धैर्यथी तेने मडन करी लेवा जेधजे, डारणु के आ सवरद्वार
नवीन उमेनि आश्रव थतो रेडे छे तेनु पालन करवाथी अशुभ अध्यवसाय
उत्पन्न थवा पाभतो नथी तेना प्रभावथी पापोना प्रवादथी बंध थध जय छे

અપરિચ્છાત્રી આદિ ત્રિજોષણો ચાલ્યા છે । અર્હત મગવનો ને હસે અપને જીવન મે ઉતાર કર હી સમસ્ત જીવો કો હમે ધારણ-સેવન કરને કા આદેશ દિયા છે । ભગવાન્ મહાવીર ને ખી જેસી હી હસ પ્રથમ સર-દ્વાર કી પ્રજ્ઞાસા કી છે । ઓર તીર્થંકર પરપરા કે અનુસાર હી અન્તે ને હસે પાલન કરને આદિ કા આદેશ દિયા છે । તથા હમકા દેવમનુષાદિ સહિત પરિપદા મે ઉપદેશ દિયા છે, અતઃ ચત્ પ્રમાણપ્રતિષ્ઠિત છે । જોર મગલમય છે ॥ સુ૦ ૧૧ ॥

॥ હસ પ્રકાર ચત્ પ્રથમ સરદ્વાર સમાપ્ત હુઆ ॥

તે અપરિચ્છાત્રી આદિ ત્રિજોષણો વાળુ છે અર્હત વાગવાને તેને પોતાના જીવનમા ઉતારીને જ મમન્ત જીવોને તેને ધારણ કરવાનો-તેનુ નેવન કરવાનો આદેશ આપ્યો છે ભગવાન મહાવીરે પણ આ પ્રથમ મવગદ્વાત્ની જોવી જ પ્રદામા કરી છે અને તીર્થંકર પરપરા અનુસાર જ તેમણે તેનુ પાલન કરવા આદિનો આદેશ દીધો છે તથા તેનો દેવ, મનુષ્યાદિ મહિતની પગ્ગિદોમા ઉપદેશ આપ્યો છે, તેથી તે પ્રમાણભૂત છે અને મગલમય છે ॥ મૂ-૧૧ ॥

આ રીતે આ પ્રથમ મવરદ્વાર સમાપ્ત થાય છે

॥ सत्यवचन नाम द्वितीय सवरद्वारम् ॥

गत प्राणातिपातविरमण, सम्प्रति सत्यवचन प्रारम्भ्यते । अस्य पूर्वाध्ययनेन सहाय सम्बन्ध-पूर्व प्राणातिपातविरतिरभिहिता, सा तु अलीकवचनविरत्यैव सम्भवति, इत्येनेन सयन्वेनायात सत्यवचनाख्य द्वितीयमध्ययन प्रारम्भ्यते, तस्येदमादिम सूत्रम्-‘ जवू एत्तो वितिय च ’ इत्यादि—

मूलम्—जवू । एत्तो विइय च सच्चवयणं सुद्ध सुइयं सिवं सुजाय सुभासिय सुकहिय सुव्वयं सुदिट्ठ सुपड्ढियं सुपड्ढियजस सुसजमियवयणहुइय सुरवरनरवसभपवर—वलवग सुविहिय-जण बहुमय परमसाहुधम्मचरणतवनियम-परिगहिय सुगइ-पहदेसग च लोयुत्तम च वयमिण विजाहरगगणगमणविजाणसाहग सग्गमग्गसिद्धिपहदेसग अवितहं तं सच्च उच्चुय अकुडिल भूयत्थ अत्थओ विसुद्ध उज्जोयग पभासग भवइ, सव्वभावाण-जीवलोगे अविसंवाइजहत्थमहुर पच्चक्खं

सत्यवचन नामक द्वितीय सवरद्वार प्रारम्भ—

प्राणातिपातविरमण नाम का सवरद्वार कहा जो चुका है । अब सत्यवचन नामका द्वितीय सवरद्वार प्रारम्भ होता है । इसका पूर्व अध्ययन के साथ संबन्ध इस प्रकार से है—जयतक अलीकवचनों से जीव की विरति नहीं होगी—तयतक प्राणातिपात का विरमण सम्भव नहीं हो सकता । इसी संबन्ध को लेकर सूत्रकार ने इस द्वितीय सत्यवचन नामक अध्ययन को प्रारम्भ करते हैं । इसका यह प्रथमसूत्र है—

सत्य वचन नामनु णीळ सवरद्वारनो प्रारब्ध

प्राणातिपात विरमण नामनु पडेला सवरद्वारनु वणुंन पूर्ण थयु डवे सत्यवचन नामना णीळ सवरद्वारना वणुंनगी शङ्कात थाय छे तेनो आ प्रकारे आगणना अध्ययन साथे सणध छे ब्या सुधी अमत्य वचनोथी एवनी विरति थती नथी त्या सुधी प्राणातिपातनु विरमण सलवी शङ्कतु नथी अ सणधने दयावीने सूत्रकारे आ द्वितीय सत्यवचन नामना अध्ययननो प्रारब्ध करे छे तेनु पडेले सूत्र आ प्रभावे छे—“जवू ! एत्तो विइय च” ४०

દેવય ચ જંત અચ્છેરકારગં અવતંતરેસુ વદુપસુ માણુસાણં
 સચ્ચેણં મહાસમુદ્ધમજ્ઞે વિ ચિટ્તિ, ન નિમજ્જતિ મૂઢાણિયા
 વિ પોયા સચ્ચેણ ય ઉદગસંભમમિ વિ ન વુટ્ઠંતિ, ન ય મરતિ
 યાહં ચ તે લઘ્ભતિ, સચ્ચેણ ય અગાણિ સભમમિ વિ ન ડઙ્ગંતિ
 ડઙ્ગુગા મણુસ્સા । સચ્ચેણ ય તત્તતેહ્હતત્તલોહસીસકાઈ
 છિવ્વતિ, ધરેંતિ ન ડઙ્ગંતિ મણુસ્સા । પવ્વયકડગાહિં મુચ્છંતે
 ન ય મરતિ સચ્ચેણ ય પરિગ્ગહિયા અસિપજરગયા સમરાઓ
 વિ ણિઈતિ અણહાય સચ્ચવાઈ, વહવધાભિઓગવેરધોરેહિં
 પમુચ્છતિ ય, અમિત્તમજ્ઞાહિં નિઈતિ અણહાય સચ્ચવાઈ ।
 સા દેવ્વાણિ ય દેવયાઓ કરેંતિ સચ્ચવયણે રયાણં ॥સૂ.૦૧॥

ટીકા—‘ જબૂ ’ इत्यादि—

સુધર્મા સ્વામી જબૂ સ્વામિન પ્રત્યાહ—હે જમ્બૂ ! ‘ ઇત્તો ’ इत-પ્રથમસવર-
 દ્વારાનન્તરમ્ ‘ વિહય ચ ’ द्वितीय खलु सवरद्वार ‘ સચ્ચવયણ ’ सत्यवचनम्=
 सद्भ्यो-मुनिभ्यो गुणेभ्यः पदार्थेभ्यो या हितम्=उपकारक सत्यम्, उक्तव—

‘ જબૂ ! ઇત્તો વિહય ચ ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—શ્રી સુધર્મા સ્વામી જબૂસ્વામી સે વર્તે હું (જબૂ!) હે
 જબૂ ! (ઇત્તો) इस प्रथमसवरद्वार के बाद यह (विहय च) दूसरा सवर
 द्वार सत्य नामका है सो मैं इसे कहता हूँ, तুম सुनो—(सच्च वयण)
 “ सद्भ्यो हित ” सत्य अर्थात् सत् का मुनिजन का अथवा गुणो का या
 पदार्थो का जो वचन हित-उपकारक होता है वह सत्य वचन है ।
 कहा भी है—

ટીકાર્થ—શ્રી સુધર્માસ્વામી જબૂ સ્વામીને કહે છે ‘ જબૂ ! ’ હે જબૂ ! ‘ ઇત્તો ’
 આ પહેલા સવરદ્વાર પછી ‘ વિહય ચ ’ બીજું સત્ય નામનું જે સવરદ્વાર
 છે તેનું હું વર્ણન કરું છું તે તમે સાંભળો “ સચ્ચવયણ ” “ સદ્ભ્યો હિત ”
 સત્ય એટલે કે સત્નું મુનિજનનું અથવા ગુણનું અથવા પદાર્થનું જે [વચન]
 હિત-ઉપકારક હોય છે તે સત્યવચન ગણાય છે કહ્યું પણ છે—

“ સત્ત્વ દિય સયામિદ સતો મુગડ ગુણા પયત્યા વા ” ડાયા—સત્ય હિત સતા-મિદ, સન્તો મુનયો ગુણાઃ પદાર્થો વા ” ઇતિ, સત્સુ તિષ્ઠતીતિ વા, સત્યમ્, સત્ય ચ તદ્વચન ચ સત્યવચનમ્, પરપ્રાણનાગપરાયણ હિતકર સુખાવહમનુદ્વેગજનક સુધાવત્સ્વાદીય વચન સત્યવચનમિત્યર્થઃ । કીદશ સત્યવચનમ્ ? તદાહ—‘ સુદ્વ ’ શુદ્ધ-નિર્દોષતાત્, ‘ મુચિવ ’ શુચિરૂપવિત્ત્વાત્, ‘ સિવ ’ શિવ=મોક્ષજનક ત્વામ્, ‘ મુજાય ’ મુજાત-શુભવિપક્ષયા સમુત્પન્નત્વાત્, ‘ મુમાસિય ’ મુમાપિતમ્—

“ સત્ત્વ દિય સયામિદ, સતો મુગડ ગુણા પયત્યા વા ” ।

સતોં કા હિત જિસસે હોતા હૈ વહ સત્ય મુનિ હોતે હૈં યા ગુણ અથવા પદાર્થ હોતે હૈં । સત્ય કી દૂમરી વ્યુત્પત્તિ હસ પ્રકાર સે બી હૈ “ સત્સુ તિષ્ઠતીતિ સત્ય, સત્ય ચ તદ્વચન ચ સત્યવચન ” જો વચન સજ્જન પુરુષોં મેં રહતા હૈં વહ નત્યવચન હૈ । યહ સત્યવચન પર કે પ્રાણો કે વ્રાણ કરને મેં પરાયણ હોતા હૈ, સય કે હિતકારી હોતા હૈ, સુખદાયક હોતા હૈ, ઉદ્વેગજનક નહીં હોતા હૈ, ઓર સુધા કે જૈસે સ્વાદીય-અત્યત મધુર હોતા હૈ । (સુદ્વ) સત્યવચન મેં કિસી બી પ્રકાર કા દોષ નહીં હોતા હૈ—અતઃ નિર્દોષ હોને સે યહ શુદ્ધ હૈ (સુદ્ય) હસમેં કિસી બી પ્રકાર કી અપવિત્રતા નહીં હોતી હૈ અતઃ યહ પવિત્ર હોને સે શુચિરૂપ હૈ । (સિવ) હસ વચન સે જીવોં કો મોક્ષ કી પ્રાપ્તિ હોતી હૈ—હસલિપે મોક્ષજનક હોને સે યહ શિવરૂપ હૈ । (મુજાય) હાર્દિક શુભ ભાવના સે પ્રેરિત હોકર હી એસા વચન બોલા જાતા હૈ

“ સત્ત્વ દિ ય સયામિદ, સતો મુગડ ગુણા પયત્યા વા ”

મતોનુ હિત જેનાથી થાય છે તે સત્ય છે, મુનિ અથવા ગુણ અથવા પદાર્થ એ પ્રકારના સત્ય છે સત્યની બીજી વ્યુત્પત્તિ આ પ્રમાણે પણ છે—“ સત્સુ તિષ્ઠતીતિ સત્ય, સત્ય ચ તદ્વચન ચ સત્યવચન ” સત્સુ જન પુરુષોમા જે વચન રહે છે તે સત્યવચન છે તે સત્યવચન અન્યના પ્રાણોનુ રક્ષણ કરવાને સમર્થ હોય છે, બધાને માટે હિતકારી હોય છે, સુખદાયક હોય છે, ઉદ્વેગજનક હોતુ નથી, અમૃત જેવુ અતિશય મીઠુ હોય છે “ સુદ્વ ” સત્યવચનમા ડોઠું પણ પ્રકારનો દોષ હોતો નથી, તેથી નિર્દોષ હોવાથી તે શુદ્ધ છે “ સુદ્ય ” તેમા ડોઠુંપણ પ્રકારની અપવિત્રતા હોતી નથી તેથી તે પવિત્ર હોવાથી શુચિરૂપ છે “ સિવ ” તે વચનથી જીવોને મોક્ષની પ્રાપ્તિ થાય છે, તેથી મોક્ષજનક હોવાથી તે શિવરૂપ છે “ મુજાય ” હાર્દિક શુભ ભાવનાથી પ્રેરાઈને જે એવું વચન બોલાય છે તેથી શુભ ભાવનામાથી ઉદ્ભવેલ હોવાથી તે સુખાત છે.

દેવય ચ જંતં અચ્છેરકારણં અવતંતરેસુ વદુણસુ માણસાણં
 સચ્ચેણં મહાસમુદ્દમઙ્ગે વિ ચિદ્ધતિ, ન નિમજ્જતિ મૂઢાણિયા
 વિ પોયા સચ્ચેણ ચ ઉદગસમમમિ વિ ન વુટ્ઠતિ, ન ચ મરતિ
 યાહં ચ તે લબ્ભંતિ, સચ્ચેણ ચ અગાણિ સંભમમિ વિન ડઙ્ગંતિ
 ઉજ્જુગા મણુસ્સા । સચ્ચેણ ચ તત્તતેહ્હતત્તલોહસીસકાઙ્ક
 છિવ્વતિ, ધરેંતિ ન ડઙ્ગતિ મણુસ્સા । પવ્વયકડગાહિં મુચ્છંતે
 ન ચ મરતિ સચ્ચેણ ચ પરિગ્ગાહિયા અસિપંજરગયા સમગાઓ
 વિ ણિઙ્કતિ અણહાય સચ્ચવાઈ, વહવધાભિઓગવેરધોરેહિં
 પમુચ્છતિ ચ, અમિત્તમઙ્ગાહિં નિઙ્કતિ અણહાય સચ્ચવાઈ ।
 સા દેવવાણિ ચ દેવયાઓ કરેંતિ સચ્ચવચણે રયાણં ॥સૂ.૦૧॥

ટીકા—‘જબૂ’ इत्यादि—

સુધર્મા સ્વામી જબૂ સ્વામિન પ્રત્યાહ—હે જમ્બૂ ! ‘એત્તો’ इतः—પ્રથમ સવર-
 દ્વારાનન્તરમ્ ‘વિહય ચ’ द्वितीय खलु सगरद्वार ‘સચ્ચવચણ’ सत्यवचनम्=
 સદ્ભ્યો—મુનિભ્યો ગુણેભ્યઃ પદાર્થેભ્યો વા હિતમ્=ઉપકારક સત્યમ્, ઉક્તવ—

‘જબૂ ! એત્તો વિહય ચ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—શ્રી સુધર્મા સ્વામી જબૂસ્વામી સે વર્તે છે (જબૂ !) છે
 જબૂ ! (એત્તો) इस प्रथमसवरद्वार के बाद यह (विहय च) दूसरा सवर
 द्वार सत्य नामका है मो मैं इसे कहता ह, तुम सुनो—(सच्च वचण)
 “सद्भ्यो रित” सत्य अर्थात् सत् का मुनिजन का अथवा गुणों का या
 पदार्थों का जो वचन हित-उपकारक होता है वह सत्य वचन है ।
 कहा भी है—

ટીકાર્થ—શ્રી સુધર્માસ્વામી જબૂ સ્વામીને કહે છે ‘જબૂ !’ છે જબૂ ! “એત્તો”
 આ પહેલા સવરદ્વાર પછી ‘વિહય ચ’ બીજું સત્ય નામનું જે સવરદ્વાર
 છે તેનું હું વર્ણન કરું છું તે તમે સાંભળો “સચ્ચવચણ” “સદ્ભ્યો હિત,”
 સત્ય એટલે કે સત્નું મુનિજનનું અથવા ગુણોનું અથવા પદાર્થોનું જે ‘વચન’
 હિત-ઉપકારક હોય છે તે સત્યવચન ગણાય છે કહ્યું પણ છે—

દોના, પ્રવરણતામ્-વાસુદેવમતિવાસુદેવાદિ યોદ્ધૃપુરુષાણા, તથા-મુવિહિતજ-
નાના=મહાપુરુષાણા ચ યદુમત સમત યત્તત્, તથા-‘ પરમસાદુધમ્મચરણ ’ પરમ-
સાધુધર્મચરણમ્=પરમસાધૂના = ઉત્કૃષ્ટક્રિયાવર્તા મુનીના ધમચરણ=ધર્માનુષ્ઠાન
યત્તત્, તથા-‘ તવનિયમપરિગ્રહિય ’ તપો નિયમપરિગ્રહીતમ્=તપો નિયમાભ્યા
પરિગ્રહીતમ્=અદ્વીકૃત યત્તત્થા, તપોનિયમૌ દિ સત્યવાદિનામેવ ભવતો નેતરેપામ્,
તથા-‘ સુગઙ્ગપદ્મસગ ’ સુગતિપથદેશક=સુગતેઃ પન્થા. સુગતિપથ, તસ્ય દેશ-
કમ્, પ્રજાપકમ્, ચ=પુન. ‘ ઇણ ’ ઇદ ‘ લોગુત્તમ ’ લોકોત્તમ=લોકેષુ=લોક-
ત્રયેષુ ઉત્તમ=શ્રેષ્ઠમ્ ‘ વય ’ વ્રતમ્ અસ્તિ । તથા-ઉદ સત્યવચન ‘ વિજ્ઞાહરગગ-
ણગમણવિજ્ઞાણ ’ વિદ્યાધરગગનગમનવિદ્યાના=વિદ્યાધરાણા યા ગગનગમનવિદ્યા-
સ્તાસા ‘ સાહગ ’ સાયક-સત્યવાદિનામેવ ! વિદ્યાઃ સિધ્યન્તીત્યાશય, તથા—
‘ સગ્ગમગ્ગસિદ્ધિપદ્મસગ ’ સ્વર્ગમાર્ગસિદ્ધિપથદેશક=સ્વર્ગમાર્ગસિદ્ધિપથયોર્દેશક=
નિર્દેશક યત્તત્થા, તથા-‘ અવિતહ ’ અવિતથ=મિથ્યાભાવરહિત યત્ ‘ ત ’ તત્

ચક્રવર્તી આદિ શ્રેષ્ઠ પુરુષો કો, ચલદેવ, પ્રતિવાસુદેવ આદિ સુખદ-
યોદ્ધાઓ કો ઓર મહાપુરુષરૂપ મુવિહિતજનો કો વહુમાન્ય હુઆ હૈ ।
(, પરસાદુધમ્મચરણતવનિયમપરિગ્રહિયસુગઙ્ગપદ્મસગ ચ ઇણ લોગુ-
ત્તમ ચ વય) ઉત્કૃષ્ટ ક્રિયા શાલી મુનિજનો કા યહ ધર્માચરણ-ધર્મા-
નુષ્ઠાન હૈ । તથા-તપ ઓર નિયમોં સે યે પરિગ્રહીત હોના હૈ-અર્થાત્-
તપ ઓર નિયમ સત્યવાદી કે હી હોતે હૈ । ઇતર જીવોં કે નહીં । સુગતિ
કે પથ કા યહ પ્રજાપક-નિર્દેશક હોતા હૈ । ઓર તીનો લોકોં મેં યહ
સત્યવચન શ્રેષ્ઠ વ્રત હૈ । તથા-યહ સત્યવચન (વિજ્ઞાહરગગણ-ગમણ-
વિજ્ઞાણસાહગ) વિદ્યાધરોં કી ગગન મેં ગમન કરને વાલી જો વિદ્યાઈ
હૈ ડનકા સાધક હૈ । (સગ્ગમગ્ગસિદ્ધિપદ્મસગ) સ્વર્ગ કે માર્ગ કા
ઓર સિદ્ધિ કે પથ કા પ્રદર્શક હૈ । (અવિતહ) અવિતથ-મિથ્યાભાવ

ચક્રવર્તી આદિ શ્રેષ્ઠ પુરુષોને વાસુદેવ, પ્રતિવાસુદેવ આદિ સુખદોને અને મહા-
પુરુષ મુવિહિત જનોને બહુ માન્ય છે “ પરસાદુધમ્મચરણતવનિયમપરિ-
ગ્રહિયસુગઙ્ગપદ્મસગ ચ ઇણ લોગુત્તમ ચ વય ” શ્રેષ્ઠ વિદ્યાગાળી મુનિજનોનું
તે ધર્માચરણ-ધર્માનુષ્ઠાન છે તથા તપ અને નિયમોથી તેઓ પરિગ્રહીત થાય
છે-એટલે કે તપ અને નિયમ સત્યવાદીઓ માટે જ શક્ય હોય છે અન્યને
માટે નહીં સુગતિના માર્ગનું તે પ્રજાપક-નિર્દેશક હોય છે, અને ત્રણે લોકના
આ સત્ય વચન શ્રેષ્ઠ વ્રત છે તથા આ સત્યવચન “ વિજ્ઞાહરગગણગમણ
વિજ્ઞાણસાહગ ” વિદ્યાધરોની આકાશમા ગમન કરવાની જે વિધિઓ છે,
તેમનું સાધક છે “ સગ્ગમગ્ગસિદ્ધિપદ્મસગ ” સ્વર્ગના માર્ગનું પ્રદર્શક છે.

પ્રમોદજન્મતાત્, તથા ' સુકૃદિય ' સુકૃષિતમ્-ગોતરાગપ્રતિપાદિતતાત્, ' સુઘ્વય ' સુઘ્વત-સર્વગતપ્રધાનતાત્, તથા- ' સુદિદ્ધ ' સુદૃષ્ટમ્-અતીન્દ્રિયાર્થદર્શિમિરપર્ણા દિદેહુતયા દૃષ્ટતાત્, ' સુપૃદ્ધિય ' સુપ્રતિષ્ઠિતમ્-સમસ્તપ્રમાણરૂપપાદિતતાત્, ' સુપૃદ્ધિયજસ ' સુપ્રતિષ્ઠિતયજસઃ-સુપ્રતિષ્ઠિત યજો યસ્ય તત્, લોકૃત્યપ્રસિદ્ધતાત્, તથા- ' સુસજમિયવચનગુહ્ય ' સુમંયમિતચનોદિત-સુસયમિત-સમ્યગ્નિયત્રિત યદ્યચન તેનોદિત-કથિતમ્, નિર્દોષચનૈઃ કથિતમિત્યર્થ, તથા ' સુરવર નરવસમપવરવલવગસુવિદિય જનબહુમય ' ' સુરવરનરવસમપવરવલવસુવિદિ-તજનગદ્ગમતમ્ -- સુરવરાણામ્ -- ઇન્દ્રાદીનાં, નરૂપમાણાં = ચક્રવર્તી

અતઃ શુભ વિચક્ષા સે સમુત્પન્ન હોને કે કારણ યદ્ સુજાત છે । (સુભા સિય) યદ્ પ્રમોદ કા જનક હોતા હૈં ફસલિયે યદ્ સુભાષિત હૈં (સુકૃદિય) ફસકા પ્રતિપાદન ચીતરાગ આત્માઓં ને કિયા હૈં ફસલિયે યદ્ સુકૃષિત હૈં (સુઘ્વય) સર્વવર્તોં મેં ફસકી પ્રધાનતા માની ગઈ હૈં ફસલિયે યદ્ સુઘ્વતરૂપ હૈં । (સુદિદ્ધ) અતીન્દ્રિય અર્થોં કો જાનને વાલે સર્વેશ પ્રશ્નોં ને ફસે અપવર્ગ (મોક્ષ) આદિ કે હેતુ રૂપ સે દગ્વા હૈં ફસલિયે યદ્ સુદૃષ્ટ હૈં । (સુપૃદ્ધિય) સમસ્ત પ્રમાણો દ્વારા ઉપપાદિત હોને સે યદ્ સુપ્રતિષ્ઠિત હૈં । (સુપૃદ્ધિયજસ) ત્રીનોં લોકોં મેં ફસ વચન કા યજ સુપ્રસિદ્ધ હૈં ફસ-લિયે યદ્ સુપ્રતિષ્ઠિત યજવાલા હૈં । (સુસજમિયવચનગુહ્ય) ફસે સત્ય વચન કો વે હી મનુષ્ય થોલ સકતે હૈં કિ જિનકા વચન સુસયમિત હોતા હૈં અચ્છી તરફ સે નિયત્રિત હોતા હૈં । (સુરવરનરવસમપવર-વલવગસુવિદિયજનબહુમય) ' યદ્ વચન ઇન્દ્રાદિક ઉત્તમ દેવોં કો,

“ સુભાસિય ” તે પ્રમોદ ઉત્પન્ન કરનાર હોવાથી સુભાષિત છે “ સુકૃદિય ” ચીતરાગ આત્માઓએ તેનું પ્રતિપાદન કર્યું છે, તેથી તે સુકૃષિત છે “ સુઘ્વય ” સર્વે મતોમાં તે મુખ્ય મનાયું છે તેથી તે સુઘ્વત છે “ સુદિદ્ધ ” અતીન્દ્રિય અર્થોને જાણનારા સર્વેશ પ્રશ્નોઓએ તે અપવર્ગ આદિના ઉત્તરપથી જોયું છે, તેથી તે સુદૃષ્ટ છે “ સુપૃદ્ધિય ” સમસ્ત પ્રમાણો દ્વારા તેનું પ્રતિપાદન થયેલું હોવાથી તે પ્રમાણભૂત-સુપ્રતિષ્ઠિત છે “ સુપૃદ્ધિયજસ ” ત્રણે લોકમાં આ વચનનો યજ સુપ્રસિદ્ધ છે તેથી તે સુપ્રતિષ્ઠિત યજવાળું છે “ સુસજમિયવચનગુહ્ય ” આ સત્ય વચન એ જ માણસો બોલી શકે છે કે જોમના વચન સુસયમિત હોય છે-સારી ગીતે નિયત્રિત હોય છે “ સુરવર નરવસમપવરવલવગસુવિદિયજનબહુમય ” આ વચન ઇન્દ્ર આદિ ઉત્તમ દેવોને

દોના, પ્રવરણતામ્-વાસુદેવપ્રતિવાસુદેવાદિ યોદ્ધાપુરુષાણા, તથા-સુવિહિતજ-
 નાના=મહાપુરુષાણા ચ પ્રહુમત મમત યત્ત, તથા-‘ પરમસાદુધમ્મચરણ ’ પરમ-
 સાધુધર્મચરણમ્=પરમસાધૂના = ઉત્કૃષ્ટક્રિયાવર્તા મુનીના ધર્મચરણ=ધર્માનુષ્ઠાન
 યત્ત, તથા-‘તવનિયમપરિગ્રહિય ’ તપો નિયમપરિગ્રહીતમ્=તપો નિયમાભ્યા
 પરિગ્રહીતમ્=અદ્વોરૂત યત્તતથા, તપોનિયમો દિ સત્યવાદિનામેવ ભવતો નેતરેષામ્,
 તથા-‘ સુગહપદેસગ ’ સુગતિપથદેશક=સુગતે. પન્થાઃ સુગતિપથ, તસ્ય દેશ-
 કમ્, પ્રજાપકમ્, ચ=પુનઃ ‘ ઇણ ’ ઇદ ‘ લોગુત્તમ ’ લોકોત્તમ=લોકેષુ=લોક-
 ત્રયેષુ ઉત્તમ=શ્રેષ્ઠમ્ ‘ વય ’ વ્રતમ્ અસ્તિ । તથા-ઉદ સત્યવચન ‘ વિજ્ઞાહરગગ-
 નગમણવિજ્ઞાણ ’ વિદ્યાધરગગનગમનવિદ્યાના=વિદ્યાધરાણા યા ગગનગમનવિદ્યા-
 સ્તાસા ‘ સાહગ ’ સાધક-સત્યવાદિનામેવ ‘ વિગ્રા ’ સિધ્યન્તીત્યાશયઃ, તથા—
 ‘ સગમગગસિદ્ધિપદેસગ ’ સ્વર્ગમાર્ગસિદ્ધિપદેશક=સ્વર્ગમાર્ગસિદ્ધિપદ્યોદેશક=
 નિર્દેશક યત્તતથા, તમા-‘ અવિતહ ’ અવિતથ=મિથ્યાભાવરહિત યત્ ‘ ત ’ તત્
 ચક્રવર્તી આદિ શ્રેષ્ઠ પુરુષો કો, બલદેવ, પ્રતિવાસુદેવ આદિ સુખદ-
 યોદ્ધાઓ મો ઓર મહાપુરુષરૂપ સુવિહિતજનો કો વહુમાન્ય હુઆ હૈ ।
 (પરસાદુધમ્મચરણતવનિયમપરિગ્રહિયસુગહપદેસગ ચ ઇણ લોગુ-
 ત્તમ ચ વય) ઉત્કૃષ્ટ ક્રિયા શાલી મુનિજનો કા યહ ધર્માચરણ-ધર્મા-
 નુષ્ઠાન હૈ । તથા-તપ ઓર નિયમોં સે ચે પરિગ્રહીત હોના હૈ-અર્થાત્-
 તપ ઓર નિયમ સત્યવાદી કે હી હોતે હૈ । ઇતર જીવોં કે નહીં । સુગતિ
 કે પથ કા યહ પ્રજાપક-નિર્દેશક હોતા હૈ । ઓર તીનો લોકોં મેં યહ
 સત્યવચન શ્રેષ્ઠ વ્રત હૈ । તથા-યહ સત્યવચન (વિજ્ઞાહરગગન-ગમણ
 વિજ્ઞાણસાહગ) વિદ્યાધરોં કી ગગન મેં ગમન કરને વાલી જો વિદ્યાર્થ
 હૈ ઉનકા સાધક હૈ । (સગમગગસિદ્ધિપદેસગ) સ્વર્ગ કે માર્ગ કા
 ઓર સિદ્ધિ કે પથ કા પ્રદર્શક હૈ । (અવિતહ) અવિતથ-મિથ્યાભાવ

અવર્તી આદિ શ્રેષ્ઠ પુરુષોને વાસુદેવ, પ્રતિવાસુદેવ આદિ સુખદોને અને મહા-
 પુરુષ સુવિહિત જનોને બહુ જ માન્ય છે “ પરસાદુધમ્મચરણતવનિયમપરિ-
 ગ્રહિયસુગહપદેસગ ચ ઇણ લોગુત્તમ ચ વય ” શ્રેષ્ઠ ક્રિયાશાળી મુનિજનોનું
 તે ધર્માચરણ-ધર્માનુષ્ઠાન છે તથા તપ અને નિયમોથી તેઓ પરિગ્રહીત થાય
 છે-એટલે કે તપ અને નિયમ સત્યવાદીઓ માટે જ શક્ય હોય છે અન્યને
 માટે નહીં સુગતિના માર્ગનું તે પ્રજાપક-નિર્દેશક હોય છે, અને ત્રણે લોકમાં
 આ સત્ય વચન શ્રેષ્ઠ વ્રત છે તથા આ સત્યવચન “ વિજ્ઞાહરગગનગમણ
 વિજ્ઞાણસાહગ ” વિદ્યાધરોની આકાશમાં ગમન કરવાની જે વિધિઓ છે,
 તેમનું સાધક છે “ સગમગગસિદ્ધિપદેસગ ” સ્વર્ગના માર્ગનું પ્રદર્શક છે.

‘સત્ત્વ’ સત્યમ્=સત્યવચનનામક દ્વિતીય સારદ્વારમ્ । પુનઃ કોટ્યમ્ ? ડર્યાહ-
 ‘ઉજ્જુય’ ઋજુકમ્-સરલભાવપ્રવર્તનત્વાત્, તથા ‘અકુટિલ’ અકુટિલ=કુટિ-
 લભાવવર્જિતત્વાત્, તથા-‘ભૂયત્ય’ ભૂતાર્થમ્=વાસ્તવિકમ્, તથા ‘અત્યઓ’
 અર્થતઃ-પરમાર્થતઃ વિશુદ્ધમ્, તથા-જીવગોકે ‘સન્નમાવાણ’ સર્વમાવાનાં-
 જીવાદિસન્નપદાર્થોનામ્ ‘ઉજ્જોયગ’ ઉદ્યોતકમ્=પ્રકાશમ્, અનપ્ત ‘પમાસગ’
 પ્રમાણક=પ્રતિપાદક ભવતિ, પુનઃ ‘અવિસવાઈ’ અવિસવાઈ=અવિદ્વાદિ, તથા
 ‘જહત્યમધુર’ યથાર્થમધુરમ્, યથાર્થમિતિ ઋત્વા મધુર યથાર્થમધુર વાસ્તવિકમ્-
 ધુરમિત્યર્થઃ, તથા-‘પન્ચક્ષ દેવય ચ’ પ્રત્યક્ષ દેવત ચ, સત્ય પ્રત્યક્ષો દેવ ઇત્યર્થઃ ।
 एतादृशं ‘ज’ यत् सत्यम्, ‘त’ तत् ‘अच्छेरकारग’ आश्रयकारक भवति,

સે રહિત છે । (ત સત્ત્વ) જેસા સત્યવચન નામકા દ્વિતીય સારદ્વાર
 (ઉજ્જુય) સરલ ભાવ કા પ્રવર્તક હોને સે ઋજુક છે । તથા (અકુટિલ)
 હસમેં ભાવોં કી કુટિલતા નહીં હોતી છે । સલિયે કુટિલભાવોં સે વર્જિત
 હોને કે કારણ યહ અકુટિલ છે (ભૂયત્ય) યથાર્થ અર્થ કા હસકે દ્વારા
 પ્રતિપાદન હોતા છે । સલિયે યહ ભૂતાર્થ છે । (અત્યઓ વિશુદ્ધ) પરમાર્થ
 દષ્ટિ સે યહ વિશુદ્ધ છે । સલિયે યહ અર્થનો વિશુદ્ધ છે । તથા- (સન્નમા
 વાણ ઉજ્જોયગ) જીવલોકમેં યહ સમસ્ત જીવાદિપદાર્થોં કા પ્રકાશક છે
 । સલિયે યહ (પમાસગ ભવહ) ડનકા પ્રતિપાદક (પ્રમાણક) બી છે । યહ
 સત્યવચન (અવિસવાઈ) અવિરુદ્ધ રૂપસે, અપને સ્વરૂપકો કહને વાલા છે
 । સલિયે (જહત્યમધુર) વાસ્તવોકરૂપ મેં મધુર છે । ઓર (પન્ચક્ષ દેવ
 ય ચ) પ્રત્યક્ષદેવ છે-સાક્ષાત્ દેવ જેસા છે (જ ત) જો યહ સત્યવચન

“અવિતહ” અવિતથ-મિથ્યાભાવથી રહિત છે “ત સત્ત્વ” આવું સત્ય
 નામનું બીજું સારદ્વાર “ઉજ્જુય” સરલ ભાવનું પ્રવર્તક હોવાથી ઋજુક
 છે તથા “અકુટિલ” તેમા ભાવોની કુટિલતા હોતી નથી તેથી કુટિલ ભાવોથી
 રહિત હોવાને કારણે તે અકુટિલ છે “ભૂયત્ય” યથાર્થ અર્થનું તેના દ્વારા
 પ્રતિપાદન થાય છે તેથી તે ભૂતાર્થ છે “અત્યઓ વિશુદ્ધ” પરમાર્થ દષ્ટિથી તે
 વિશુદ્ધ છે તેથી તે “અર્થતોવિશુદ્ધ” છે તથા “સન્નમાવાણ ઉજ્જોયગ”
 જીવલોકમા તે સમસ્ત જીવાદિ પદાર્થોનું તે પ્રકાશક છે તેથી તે “પમાસગ
 ભવહ” તેમનું પ્રતિપાદક પણ છે આ સત્યવચન “અવિસવાઈ”
 અવિરુદ્ધરૂપે પોતાના સ્વરૂપને કહેનાર છે તેથી “જહત્યમધુર” વાસ્તવિક
 રીતે મધુર છે, અને “પન્ચક્ષદેવય ચ” પ્રત્યક્ષ દેવ છે-સાક્ષાત્
 દેવ જેવું છે “જ ત” આ જે સત્યવચન છે તે “અછેરકારગ અવત્ય

‘ માણુસ્સાણ ’ મનુષ્યાણા કુત્ર ? ‘ વહુણ્ણુ ’ વહુકેપુ-અનેકેપુ ‘ અવત્યંતરેસુ ’
અવસ્થાન્તરેપુ = અવસ્થાવિશેષેપુ । તદેવાશ્ચર્યકારિત્વમાહ—‘ સચ્ચેણ ’ સત્યેન
‘ મહાસમુદ્દમજ્ઞે વિ ’ મહાસમુદ્રમધ્યેઽપિ ‘ ચિદ્વતિ ’ તિષ્ઠન્તિ, ન નિમ—
જ્જન્તિ=ન બુદ્ધન્તિ, ‘ મૂઢાણિયા વિ ’ મૂઢાનીકા અપિ=મૂઢા=નિયતદિગ્ગમન
પતિ મૂઢતા પ્રાપ્તા-બનીકાઃ=નાપિકાઃ યેપાં તે તયોક્તાઃ અપિ ‘ પોયા’ પોતા =
નાવ. ‘ સચ્ચેણ ય ’ સત્યેન ચ ‘ ઉદગસમમમિ ’ વિ ‘ ઉદકસમ્રમેઽપિ=આ-
ધર્તેઽપિ ‘ ન બુદ્ધતિ ’ ન બુદ્ધન્તિ, તથા-તત્રસ્થા જના અપિ ‘ નય મરતિ ’ ન ચ
મ્રિયતે, ‘ થાહ ’ સ્તાગ્ગ=તલ ચ તે ‘ લમ્મતિ ’ લમન્તે । તથા—‘ સચ્ચેણ ય
સત્યેન ચ ‘ અગણિસમમમિ વિ અગ્નિસમ્રમેઽપિ=જ્વાલામાઝાસકુલેઽપ્યનરે ‘ ઉ-
જ્જુગા ’ ઋજુકાઃ=સત્યવાદિનો ‘ મણુસ્સા ’ મનુષ્યા ‘ ન હજ્જતિ ’ ન દગ્ધન્તે=
ન દગ્ધા ભવન્તિ । તથા-‘ મણુસ્મા ’ સત્યવાદિનો મનુષ્યાઃ ‘ સચ્ચેણ ય ’

હૈ વહ (અચ્છેરકારગ અવત્યતરેસુ વહુણ્ણુ માણુમાણ) અનેક અવસ્થાઓ
મેં મનુષ્યોં કે લિયે આશ્ચર્ય પૈદા કરને ચાલા હૈ, જૈસે-(સચ્ચેણ મહા-
સમુદ્દમજ્ઞે વિ ચિદ્વતિ ન નિમજ્જતિ મૂઢા ણિયાવિપોયા) જિનનૌકાઓં
કે નાં કિ જન જય નિયત દિશાઓ મેં જાને કે જ્ઞાન સે વિકલ હો
જાતે હૈં તય ઉનકી વે નૌકાઈ મહાસમુદ્ર કે વીચ મેં મીં ઇસ સત્ય કે
વલ પર હી તૈર જાતી હૈં દૂવતી નહીં હૈં । (સચ્ચેણ ય ઉદગસમમમિ
વિ ન બુદ્ધતિ ન ય મરતિ, થાહ ચ તે લમ્મતિ) સત્ય કે પ્રભાવ સે, જલ
કી ભમર મેં ફંસે હુઈ મી મનુષ્ય ન દૂવતે હૈં ઓર ન મરતે હૈં પ્રત્યુત
ઉન્હેં વહા મી થાહ મિલ જાતી હૈં । (સચ્ચેણ ય અગણિ સમમમિ વિ
ન હજ્જતિ ઉજ્જુગા મણુસ્સા) સત્ય કા હી ઈસા પ્રભાવ હૈં કિ જિસસે
જ્વાલાઓં સે ધધકતી હુઈ અગ્નિ મેં મી ઋજુક સત્યવાદો-મનુષ્ય જલતા

તરેસુ વહુણ્ણુ માણુસાણ ” અનેક અવસ્થામા મનુષ્યોને માટે આશ્ચર્ય પૈદા
કરનાર છે, જેમકે “ સચ્ચેણ મહાસમુદ્દમજ્ઞે વિ ચિદ્વતિ ન નિમજ્જતિ મૂઢા
ણિયાવિ પોયા ” જે નૌકાઓના નાવિકો બ્યારે નિયત દિશામા જવાના જ્ઞાનથી
રહિત થાય છે ત્યારે તેમની તે નૌકાઓ મહાસમુદ્રની વચ્ચે પણ આ તત્યના
પ્રભાવથી ડૂબતી જ અટકે છે “ સચ્ચેણ ય ઉદગસમમમિ વિ ન બુદ્ધતિ ન ય
મરતિ, થાહ ચ તે લમ્મતિ ” સત્યના પ્રભાવથી પાણીના વમળમા ફસાયેલ
મનુષ્ય પણ ડૂબતા નથી કે મરતા નથી એટલે કે ત્યાં પણ તેને વક્ષણ મળી
બચે છે “ સચ્ચેણ ય અગણિસમમમિ વિ ન હજ્જતિ ઉજ્જુગા મણુસ્સા ” સત્યનો
જ એવો પ્રભાવ છે કે જ્વાળાઓ વડે પ્રબલિત અગ્નિમા ઋજુક-સત્યવાદી

વૈરઘોર - યથો=વાત યન્ધ=નિગડાદિ વન્ધ:, 'અભિઓગો' અભિયોગ:-અપ-
રાધારોપ:, વૈરઘોર:=ચોરશત્રુતા, एतेषामितरेतरयोगद्वन्द्व:, एभ्य: 'પમુચ્ચતિ'
પ્રમુચ્યન્તે, ચ=પુન: 'અમિત્તમજ્જાર્હિ' અમિત્રમધ્યાત્=શત્રુમધ્યાત્='અણહા ય'
અનવાશ્ર=અક્ષતશરીરાશ્ર, 'નિઙતિ' નિર્યાન્તિ=નિર્ગચ્છન્તિ । ઉક્તમપિ—

“સત્યેનાગ્નિર્ભવેચ્છીતોઽગાધામ્બુધિરપિ સ્થલમ્ ।

નાસિચ્છિનત્તિ સત્યેન સત્યાન્ન દશતે ફળી ॥

તથા 'દેવયાઓય' દેવતાશ્ર 'સચ્ચયણે રયાણ' સત્યલવને રતાનાં=
સત્યવાદિના મણુપ્યાણા 'સાદિઘ્વાણિ' સાદિઘ્વાણિ=માનિઘ્વાણિ 'કરેતિ' કૃર્વન્તિ ।

વધ ઘાત, વધ નિગડ (બેડી)આદિ વધન અભિયોગ અપરાધારોપ, એવ ઘોર
શત્રુતા દ્વન્ડ્વેસે ભી વચ્ચ જાતે હ । (અમિત્તમજ્જાર્હિણિહિતિ અણહા ય
સચ્ચવાઈ) યદિ કદાચિત્ યે શત્રુઓ કે વીચ મેં આ ભી જાવે તો ભી
શત્રુ ડનકા છુટ્ત ભી ઘિગાડ નહીં કા પાતે હું-ડનકે વીચ સે વે અન-
અક્ષત શરીર હી નિકલ આતે હું । કતા ભી હૈ—

“સત્યેનાગ્નિર્ભવેચ્છીતોઽગાધામ્બુધિરપિ સ્થલમ્ ।

નાસિચ્છિનત્તિ સત્યેન, સત્યાન્ન દશતે ફળી ॥”

સત્યવાદી પુરુષો કે મમક્ષ અગ્નિ શીતલ હો જાતી હૈ, અગાધ-
સમુદ્ર ભી સ્થલ જૈસા હો જાતા હૈ, તલવાર ત્રી ધાર ખોયરી હો જાતી
હૈ ઓર ફળી-સર્પ ડસે ડસ નહીં પાતા હૈ ।

અધિક કયા કહા જાય (સચ્ચવયણે રયાણ) જો સત્યવચન મેં
રત હોતે હું ડન સત્યવાદી મનુષ્યોં કા (દેવયાઓ ય) દેવતા (સાદિ-

‘વદ્ધ વધામિઓગવેરઘોરેહિ પમુચ્ચતિ ય’ વધ-ઘાત, બધ-નિગડ આદિ બધન,
અભિયોગ-અપરાધારોપ, અને ઘોર શત્રુતા એ બધાવી પણ બધી બાય છે
“અમિત્તમજ્જાર્હિણિહિતિ અણહાય સચ્ચવાઈ” જે કહાય તે શત્રુઓની વચ્ચે આવી
બાય તો પણ શત્રુ તેને કાઈ ધબ્બ કરી શકતા નથી-તેમની વચ્ચેથી તે અક્ષત
શરીરે જ બહાર નીકળી બાય છે ડહુ પણ છે—

“સત્યેનાગ્નિર્ભવેચ્છીતોઽગાધામ્બુધિરપિ સ્થલમ્ ।

નાસિચ્છિનત્તિ સત્યેન સત્યાન્ન દશતે ફળી ॥”

સત્યવાદી પુરુષો પાસે અગ્નિ શીતળ થઈ બાય છે, અગાધ સમુદ્ર પણ
સ્થળ સમાન થઈ બાય છે, તલવારની ધાર ખૂટી થઈ બાય છે અને અર્ધ તેને
ડમ્બ ધઈ શકતો નથી

વધુ શુ ડહુ “મચ્ચયણે રયાણ” અત્ય વચનમા જે લીન રહે છે તે
સત્યવાદી મનુષ્યોંનુ “દેવયાઓય” દેવતા “સાદિઘ્વાણિ કરેતિ” સાનિધ્ય

સત્યવાદીના વચનમનન્યથાકર્તુ દેગાસ્તરસાચિર્થો વિષ્ટીતીતિ ભાવ । ઉત્તમપિ—
પ્રિય સત્ય વાચ્ય દરતિ હૃદય કસ્ય ન જને ।

ગિર સત્યા લોકઃ પ્રતિપદમિમામર્થયતિ ચ ॥

સુરા સત્યાદ વાક્યાદ દદતિ મુદિતા કામિતફલમ્ ।

અતઃ સત્યાદ વાક્યાદ વ્રતમભિમત નાસ્તિ મુચને ॥ ૧ ॥ ” ઇતિ ॥ મૃ૦૧ ॥

જ્વાળિ કરેતિ) સાબિધ્ય કરતે છે, અર્થાત્ સત્યવાદી કે વચનોં કો અનન્યથા સત્ય કરને કે લિપે દેવ અનેકે નિરુદ્ધ રહતે હૈં । કદા ખી હૈ—

“ પ્રિય સત્ય વાચ્ય દરતિ હૃદય કસ્ય ન જને,

ગિર સત્યા લોકઃ પ્રતિપદમિમામર્થયતિ ચ ।

સુરાઃસત્યાદ વાક્યાદ દદતિ મુદિતાઃકામિતફલમ્,

અતઃસત્યાદ વાક્યાદ વ્રતમભિમત નાસ્તિ મુચને ॥ ૧ ॥

પ્રિય સત્ય વચન કિમ સહૃદય વ્યક્તિ કે હૃદય કો દરણ નહીં કર લેતા હૈં । અર્થાત્ સત્યકે હૃદય કો દરણ કર લેતા હૈં । લોક દર દર સમય દર દર વાત મેં હસ સત્ય વચન કે હી અભિલાષી હોતે હૈં । સત્યવચન સે દેવતા ખી પ્રસન્ન રહતે હૈં, ઓર વે સત્યવાદી કે ઇચ્છિત મનોરથ કી પૂર્તિ કરતે રહતે હૈં । ઇસલિપે સત્યવચન કે સમાન અભિ મતવ્રત લોક મે ઓર કોઈ નહીં હૈં ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને ઇસ ઢિતીય સવર દ્વાર મેં સત્યવચન રૂપ મહાવ્રત કે સ્વરૂપ કા કથન કિયા હૈં । કયો કિ પ્રથમ સવરદ્વાર કે સાથ

સેવે છે, એટલે કે સત્યવાદીના વચનોને અનન્યથા—માથા પાડવાને માટે દેવો તેમની પાસે રહે છે એવું પણ છે—

“ પ્રિય સત્ય વાચ્ય દરતિ હૃદય કસ્ય ન જને,

ગિર સત્યાલોકઃ પ્રતિપદમિમામર્થયતિ ચ ।

સુરા સત્યાદ વાક્યાદ દદતિ મુદિતા કામિતફલમ્,

અતઃ સત્યાદ વાક્યાદ વ્રતમભિમત નાસ્તિ મુચને ॥ ૧ ॥ ”

પ્રિય સત્યવચન કઈ મહદૃથી વ્યક્તિતુ મન હરતુ નથી । એટલે કે સૌના મનને હરી લે છે લોહો દરેક વખતે દરેક વાતમા આ સત્ય વચનના જ અભિલાષી હોય છે સત્ય વચનથી દેવતા પણ પ્રસન્ન રહે છે અને તેઓ સત્યવાદીના ઇચ્છિત મનોરથો પૂરા કરે છે તે કારણે સત્ય વચન જેવું શ્રેષ્ઠ વચન જગતમા ખીજી કોઈ પણ નથી

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ બીજા સવરદ્વારમા સત્ય વચન નામના મહાવ્રતના સ્વરૂપતુ વર્ણન કર્યું છે તરણ કે પ્રથમ સવરદ્વાર સાથે તેના ઘાડ

इसका धनिष्ट सचय है आर वह इस प्रकार से है कि जब तक जीव अलीक (अमत्य) वचनों से निवृत्त नहीं होता तब तक वह प्राणातिपात विरमण रूप प्रथमस्वरद्वार का आराधक नहीं बन सकता है। यह सत्यवचन शुद्ध, शुचिक, शिव, सुजात आदि अनेक विशेषणों से संपन्न होता है। सत्यवादी की सर्वत्र प्रतिष्ठा होती है। इन्द्रादिक देवों को, तथा चक्रवर्ती आदि श्रेष्ठ पुरुषों को सत्यवचन बहुमान्य होते हैं। समस्त विद्याओं की सिद्धि इन्हीं सत्यवचनों से होती है। स्वर्ग, मोक्ष की सिद्धि के यह पथ प्रदर्शक होता है। सत्य होकर भी जो अप्रिय होते हैं वे वचन सत्यवादि को बोलने योग्य नहीं होते हैं। किन्तु प्रिय सत्यवचन ही सत्यवादी बोलते हैं। सत्यवादियों के समक्ष ससार की समस्त शक्तियां नतमस्तक हो जाया करती हैं अर्थात्-गिरा हुआ होता है। मनसा वाचा कर्मणा जो इस सत्य की आराधना में लीन होते हैं वे इस भव में तो सुखी होते ही हैं परन्तु परभव में भी उन्हें सुखों की प्राप्ति होती है। तप नियम से सत्य सत्यवचन से ही शोभित और फलप्रद होते हैं। परिणामों में जिनके जितनी अधिक सरलता होगी उनके वचनों में उतनी अधिक सत्यता होगी। सत्यवादियों के देवता तक सेवक होते हैं। सत्य में सावधभाषण का सर्वथा परित्याग हो जाता है। इन वचनों

મળધ છે તે આ પ્રકારે છે બધા સુધી જીવ અમત્ય વચનોથી મુક્ત થતો નથી ત્યાં સુધી તે પ્રાણાતિપાત વિરમણરૂપ પ્રથમ સ્વરદ્વારનો આરાધક બની શકતો નથી આ સત્ય વચન શુદ્ધ, શુચિ, શિવ, સુજાત આદિ અનેક વિશેષણોથી મુક્ત હોય તે સત્યવાદીની હંમેશા પ્રતિષ્ઠા થાય છે ઇન્દ્રાદિક દેવોને તથા ચક્રવર્તી આદિ શ્રેષ્ઠ પુરુષોને સત્યવચન બહુ માનને યોગ્ય લાગે છે એ સત્ય વચનથી જ સઘળી વિદ્યાઓ મિદ્ધ થાય છે સ્વર્ગ, મોક્ષની પ્રાપ્તિમાં તે માર્ગદર્શક હોય છે મત્ય હોવા છતાં પણ અપ્રિય લાગે તેવા વચનો સત્યવાદીઓએ બોલવા બોધ્યો નહીં, પણ સત્યવાદી પ્રિય સત્ય વચન જ બોલે છે સત્યવાદીઓ આગળ મસારની સમસ્ત ગતિઓ માથુ નમાવે છે મન, વચન અને ક્રિયાથી જે આ સત્યની આરાધનામાં લીન રહે છે તેઓ આ ભવમાં તો સુખી થાય છે પણ પરભવમાં પણ તેમને સુખની પ્રાપ્તિ થાય છે તપ નિયમ એ સૌ મત્ય વચનથી જ શોભે છે અને ફળદાયી નિવડે છે પરિણામોમાં જેમની જેટલી વધારે સરળતા હશે તેટલી તેમના વચનોમાં વધારે સત્યતા હશે દેવતા પણ સત્યવાદીઓની સેવા કરે છે મત્યમાં સાવધ ભાષણનો સર્વથા પરિત્યાગ થઈ જાય છે આ વચનોથી જીવને સૌથી મોટો આધ્યાત્મિક

શતમ્, ચિન્દુત્રયસ્થાપનેન સહસ્ર મતિ ॥ ૩ ॥ ઇતિ સ્થાપનામત્યમ્ ॥ નામસત્યમ્
 યથા-કુલમત્તર્દયન્નપિ કુલવર્ધન ઇત્યાદિ ॥ ૪ ॥ રૂપસત્યમ્-યથા-સાગુરૂપ-
 ધારणेન સાધુરિતિ ॥ ૫ ॥ પ્રતીત્યસત્યમ્-યથા મન્યમા પ્રતીત્ય=શ્રિત્ય અના-
 મિકા ઇત્યા, કનિષ્ઠિકામાશ્રિત્ય તુ દીર્ઘા । ઇતિ પ્રતીત્યસત્યમ્ ॥ ૬ ॥ વ્યવહાર

સત્યહં ૨ । મિત્ર વસ્તુમેં મિત્ર વસ્તુકે આગેષ કરનેવાલે વચનકો સ્થાપના
 સત્ય કહતે હેં, જૈસે ણક કે આગે દો ચિન્દુઓ કી સ્થાપના કરકે ઉસે
 ૧૦૦ કહના, તથા ચિન્દુત્રય કી સ્થાપના કરકે ઉસે ણક હજાર કહના ૩ ।
 દૂસરીકોઈ અપેક્ષાન રમ્પકર કેવલ વ્યવહાર કે લિયે કિસી કા સજાકર્મ
 કરના હસકા નામ નામસત્યહેં-જૈસે કિસી લઢકે કો કુલવર્ધન રલ્લઠેના ।
 કુલ વર્ધન કા તાત્પર્યહોતા હૈ-કુલ કો વઢાને વાલા, પરન્તુ વ્યવહાર
 ચલાને કેં લિયે જો સજાકર્મ કિયા જાતા હૈ-નામ રમ્વા જાતા હૈ-ઉસમેં
 હસકી અપેક્ષા સાપેક્ષ નહીં હુઆ કરતી હૈ, ડમી કા નામ નામસત્ય હૈ
 ૪ । પુદ્ગલ કે રૂપાદિક અનેક ગુણો મે સે રૂપ કી પ્રધાનતા કો લેકર જો
 વચન કહા જાતા હૈ ઉસે રૂપ સત્ય કહતે હૈં-જૈસે કેશોંકો કાલા કરના,
 અથવા રૂપ સ્વરૂપ ધારણ કી મુખ્યતા કો લેકર જો વચન કહા જાતા
 હૈ વહ ભી રૂપસત્ય હૈ- જૈસે-સાધુ કે સ્વરૂપ કો ધારણ કરને વાલે
 વ્યક્તિ કો સાધુ કહના ૫ । કિસી વિવક્ષિત પદાર્થ કી અપેક્ષા સે દૂસરે
 પદાર્થ કે સ્વરૂપ કા ઋથન કરના હસે પ્રતીત્યસત્ય યા આપેક્ષિકસત્ય

૫૦૪ માનવુ તે સમત સત્ય છે (૩) લિંગ વસ્તુમા લિંગ વસ્તુને આરોપ
 કરનાર વચનને સ્થાપના સત્ય કહે છે જેમકે એકની સામે બે જિન્દુઓની સ્થા-
 પના કરીને તેને સો (૧૦૦) કહેવા તથા ત્રણ જિન્દુઓની સ્થાપના કરીને હજાર
 (૧૦૦૦) કહેવા (૪) બીજી કોઈ પણ અપેક્ષા રાખ્યા વિના ફક્ત વ્યવહારને
 માટે જ કોઈને કોઈ સજા આપવી તેને નામ સત્ય કહે છે જેમકે કુળને
 વધારે નહીં છતાં પણ કોઈનું નામ કુળવર્ધન રાખવું કુળવર્ધનનો અર્થ થાય
 છે કુળને વધારનાર, પણ વ્યવહાર ચલાવવાને માટે જે નામ રાખવામા આવે
 છે તેમા કોઈ અપેક્ષા સાપેક્ષ થતી નથી, તેનું જ નામ નામસત્ય છે (૫)
 પુદ્ગલના રૂપાદિ અનેક ગુણોમાથી રૂપની પ્રધાનતાને લીધે જે વચન કહેવાય
 તેને રૂપસત્ય કહે છે જેમકે વાળને કાળા કહેવા, અથવા રૂપ-સ્વરૂપ ધારણની
 મુખ્યતાને લઈને જે વચન કહેવામા આવે છે તે પણ રૂપસત્ય છે જેમ કે
 સાધુના સ્વરૂપને ધારણ કરનાર વ્યક્તિને સાધુ કહેવા તે રૂપસત્ય છે
 (૬) કોઈ વિવક્ષિત પદાર્થની અપેક્ષાએ બીજા પદાર્થના સ્વરૂપનું ઋથન કરવું તેને
 પ્રતીત્ય સત્ય અથવા આપેક્ષિક સત્ય કહે છે જેમકે વચલી

સત્યમ્ - યથા ગિરિગતરુણાદર્દહનેઽપિ ઘટગત - જલસ્ય ગલનેઽપિ ગિરિર્દહ્યતે
ઘટો ગલ્લતીતિ વ્યવહારો ભવતિ ॥ ૭ ॥ માત્રસત્યમ્-યસ્મિન્ વસ્તુનિ યસ્ય
ધર્મસ્યાધિક્યમ્, તદપેક્ષયા સત્યમ્=માત્રસત્યમ્, યથા અવહાર-પશ્ચવર્ણસમભવેઽપિ
ચક્ર. શુદ્ધઃ શુદ્ધો દરિતિ ઇત્યાદિ॥૮॥ યોગમત્યમ્=યોગેન=ચતુસયોગેન સત્ય-યોગ-
સત્યમ્ યથા-ઉત્તરયોગાચ્છત્રી દણ્ડયોગાદ્ દણ્ડીતિ ॥ ૯ ॥ ઔપમ્યસત્યમ્=ઉપમા
સત્યમ્-યથા-ચન્દ્રાન્મુખમ્, સમુદ્રમત્તટાગ ઇત્યાદિ ॥ ૧૦ ॥ ઇતિ । તથા 'ચોદ-

કહતે હૈં જૈસે મધ્યમા વ્હી અપેક્ષા અનામિકા અગુલી કો ફસ્વકહના ઓર
ફનિષ્ટિકા અગુલી કી અપેક્ષા દીર્ઘ કહના ૬ । નૈગમ આદિ નયો કી
પ્રધાનતા સે જો વચન બોલા જાતા હૈં ઉસે વ્યવહાર મત્ય કહતે હૈં, જૈસે
પર્વત કે ડુપર કી ઘાસ આદિ કે જલને પર એમા કહના કિ પર્વતજલ રહા હૈં,
ઘટસે જલ કે નિકલને પર એમા કહના કિ ઘડા ગલ રહા હૈં, યહ સવ
વ્યવહાર સત્ય હૈં, કયોં કિ વ્યવહાર મેં એસે વચનોં કો સત્ય માના ગયા,
હૈં ૭ । જિસ વસ્તુ મેં જિસ ધર્મ કી અધિકતા હો ઉસકો લેકર જો
વચન કહા જાય વહ માવસત્ય હૈં, જૈસે પાચો વર્ણોં કી સમભવતા
હોને પર મી વગલે કો શુદ્ધલ કહના, તોતે કો દરા કહના । વસ્તુ કે
સયોગ સે જો વચન બોલા જાતા હૈં વહ યોગસત્ય હૈં, જૈસે છત્તા કે
સવધ સે પુરુષ કો ડ્છત્રી કહના, દણ્ડ કે સવધ સે દણ્ડી કહના ૯ ।
દસરે પ્રસિદ્ધ સદૃશ પદાર્થ કો ઉપમા કહતે હૈં, હસકે આશ્રય સે જો
વચન બોલા જાતા હૈં વહ ઉપમાસત્ય હૈં, જૈસે ચન્દ્ર કે સમાન મુખ,
સમુદ્ર કે સમાન તટાગ હોતા હૈં, એમા વચન કહના । (ચોદસ પુઁવ્વીર્હિ

અનામિકા આગળીને નાની કહેવી અને ટચલી આગળીની અપેક્ષાએ તેને મોટી
કહેવી (૭) નૈગમ આદિ નયોની પ્રધાનતાથી જે વચન બોલાવામા આવે છે
તે વચનને વ્યવહાર મત્ય કહે છે જેમ કે પર્વત ઉપરના ઘાસ આદિને આગ
લાગે તો પર્વત મળગી રહ્યો છે તેમ કહેવું, ઘડામાથી પાણી ટપડતું હોય તો
ઘડો ટપડે છે તેમ કહેવું, એ બધા વ્યવહાર મત્ય ઉદાહરણ છે, કારણ કે
વ્યવહારમા એવા વચનોને મત્ય માનવામા આવે છે (૮) જે વસ્તુમા જે
ધર્મની વિશેષતા હોય તેને લઈને જે વચન કહેવાય તે ભાવ સત્ય છે જેમ
કે પાચે વર્ણોની સભવિતતા હોવા છતાં પણ બગલાને સદેહ કહેવા, પોપટને
લીલા કહેવા તે ભાવમત્ય છે (૯) વસ્તુના સયોગથી જે વચન બોલાય છે તે
યોગમત્ય છે જેમકે છત્રીના સબધથી પુરુષને છત્રી કહેવું, દડના સબધથી
દડી કહેવું (૧૦) જીભ પ્રસિદ્ધ સદૃશ પદાર્થને ઉપમા કહે છે, તેનો આશ્રય
લઈને જે વચન બોલાય છે તે ઉપમા સત્ય છે જેમ કે ચન્દ્રમાના સમાન મુખ,
સમુદ્રના જેવું તળાવ હોય છે, એવા વચન કહેવા તે ઉપમા સત્ય છે “ ચોદસ

સપુત્રીર્દિ' ચતુર્દશશ્રીર્મિતિઃ ' પાહુડત્યચિડય ' પ્રાભૂતાર્થવિદિતમ્-ત્રિગતાંત્રવિ-
 શેષાભિધેયતયા સત્યવાદપૂર્વનામ્ના ગ્રાતમ્, તથા-'મહરિસીણ ચ' મહર્ષીણાં
 ચ 'સમયપદ્ધણ' સમપદત્ત સમયેન-મિદ્વાન્તેન પ્રદત્ત=વિતીર્ણ, મહર્ષિમિ સિદ્ધા
 ન્તરૂપતયા ટૂઠીતમિત્યર્થ, તથા 'દેવિરિદનસ્તિમાસિયત્ય' દેવનરેન્દ્રમાધિતાર્થમ્ દેવા
 નામ્=ઇન્દ્રાદીના નરેન્દ્રાણા=ચક્રવર્તિપ્રભૂતીના માપિતઃ=પ્રતિમાપિતોઽર્થઃ=પ્રયોજન
 યસ્ય તત્, તથા-'વેમાણિયસાહિય' વેમાનિકમાધિત વેમાનિકૈ=વેમાનિકૃદૈઃ
 સાધિત=માપનાવિપયીકૃત, સેવિતમિત્યર્થઃ, ત ગા-'મહત્ય' મહાર્થમ્=મહાન્ અર્થઃ
 =પ્રયોજન યસ્ય તત્, ત ગા 'મતોનસહિવિજ્ઞાસાહણત્ય' મન્ત્રોપધિવિદ્યાસાધનાર્થમ્=
 મન્ત્રોપધિવિદ્યાના સાધનમર્થ =પ્રયોજન યસ્ય તત્, તેન વિના તત્સિદ્ધયમાત્રાત્,
 તથા-'ચારણગણસમણસિદ્ધવિજ્ઞ' ચારણગણશ્રમણસિદ્ધવિદ્યમ્=ચારણગણના=

પાહુડત્યચિડય) એ સત્ય કો ચતુર્દશ પૂર્વધારિયો ને પ્રાભૂતાર્થ રૂપ સે
 વિદિત ક્રિયા છે અર્થાત્ પૂર્વગત અશ્વવિશેષ કી અભિધેયતા સે સત્ય-
 વાદપૂર્વે હસ નામ સે જાના છે, (મહરિસીણ ચ સમયપદ્ધણ) મહર્ષીયો
 ને હસે સિદ્ધાન્તરૂપ સે સ્વીકાર ક્રિયા છે, (દેવનરિંદ માસિયત્ય) ઇન્દ્રાદિકો
 કે લિયે તયા ચક્રવર્તી આદિ (રાજાઓ) કે લિયે હસકા
 પ્રયોજન ઉપાદેયરૂપ સે કરા ગયા છે, (વેમાણિયસાહિય) વૈમાનિક
 દેવો ને હમ સત્ય કો અપની સાધના કા વિષયમત્ત વનાગા છે અર્થાત્
 હસકા સેવન ક્રિયા છે (મહત્ય) એ મહાન્ અર્થ-પ્રયોજન વાગા છે
 (મતોનસહિવિજ્ઞાસાહણત્ય) મન્ત્રઔપધિ યેવ વિદ્યાઓ કા સાધન હસકા
 પ્રયોજન છે ક્યોંકિ સત્યકે વિનામત્રાદિ સિદ્ધ નહીં હોતેહ, (ચારણગણ-
 સમણસિદ્ધવિજ્ઞ) ઇમી કે પ્રભાવ સે હસી ચારણગણો કો આકાશગા-

પુત્રીર્દિ પાહુડત્યચિડય" આ સત્યને ચૌદ પૂર્વધારીઓએ પ્રાભૂતાર્થરૂપે વિદિત
 થયું છે એટલે કે પૂર્વગત અશ્વવિશેષની અભિધેયતાથી સત્યવાદ પૂર્વે એ
 નામથી જાણ્યું છે "મહરિસીણ ચ સમયપદ્ધણ" મહર્ષિઓએ તેને સિદ્ધાન્ત
 રૂપે સ્વીકાર્યું છે "દેવનરિંદ માસિયત્ય" ઇન્દ્રાદિએ તે તથા ચક્રવર્તી આદિ
 નરેન્દ્રોને માટે તેનું પ્રયોજન ઉપાદેયરૂપે કહેવાયું છે, "વેમાણિયસાહિય"
 વૈમાનિક દેવોએ આ સત્યને પોતાની સાધનાનો વિષય બનાવ્યો છે એટલે કે
 તેનું સેવન થયું છે, "મહત્ય" તે મહાન અર્થ-પ્રયોજનવાળું છે "મતો
 સહિવિજ્ઞાસાહણત્ય" તે મન્ત્ર-ઔપધિ અને વિદ્યાઓનું સાધન તેનું પ્રયોજન
 છે કારણ કે સત્ય વિના મત્રાદિ સિદ્ધ થતા નથી, "ચારણગણસમણસિદ્ધ
 વિજ્ઞ" તેના પ્રભાવથી ચારણ ગણે અને આઝગગામિનો વિદ્યાની ન મણેને

વિદ્યાચારણાદીના શ્રમણાના ચ સિદ્ધિવિદ્યા=આકાશગામિની વૈક્રિયાદિ રૂપા ચ
યસ્માત્તત્તથોક્તમ્, તથા-‘મણુયગણાણ’ મનુજગણાના ‘વદણિજ્જ’ વન્દનીય=
સ્તવનીયમ્, તથા-‘અમરગણાણ’ અમરગણાના=દેવાનામ્ ‘અચ્ચણિજ્જ’
અર્ચનીયમ્=સત્કારયોગ્યમ્, તથા-‘અસુરગણાણ ચ’ અસુરગણાના ચ ‘પૂયણીય’
પૂજનીય=પ્રશસનીયમ્, તથા ‘અણેગપાલહિપરિગ્ગહિય’ અનેકપાલહિ-
પરિગ્રહીતમ્=અનેકધર્માનુયાયીભિરપિ સ્વીકૃત ‘જ’ યત્સત્ય ‘ત’ તત્ ‘લોક-
મ્મિ’ લોકે ‘સારભૂય’ સારભૂત=સારભૂત=સર્વપ્રધાનત્વાત્ પુનસ્તત્સત્ય કીદ-
શમ્? ઇત્યાહ-‘ગમ્भीરયર મહાસમુદ્દાઓ’ ગમ્भीરતર મહાસમુદ્રાત્, અક્ષોભ્યત્વાત્,
તથા-‘થિરયર મેરુપવ્વયાઓ’ સ્થિરતરક મેરુપર્વતાત્=નિશ્ચલત્વાત્, તથા-
‘સોમ્મયરગ ચદમહલાઓ’ સૌમ્યતરક ચન્દ્રમણ્ડલાત્-સતાપશમનહેતુત્વાત્,
તથા-‘દિત્તયર સૂરમહલાઓ’ દીપ્તતર મૂરમણ્ડલાત્=યથાગદ્વસ્તુ પ્રકાશકત્વાત્,

મિની વિદ્યા કી તથા શ્રમણો ઝો વૈક્રિયાદિરૂપ વિદ્યાઓ-લબ્ધિયો કીસિદ્ધિ
હોતી હૈ। (મણુયગણાણ વદણિજ્જ) મનુષ્યોં કે લિયે યહ સત્ય વદનીય
હૈ, (અમરગણાણ અચ્ચણિજ્જ) અમરગણોં કે લિયે યહ અર્ચનીય હૈ,
તથા (અસુરગણાણ પૂયણિજ્જ) અસુરગણોં કે લિયે યહ પૂજનીય પ્રશ-
સનીય હૈ (અણેગપાલહિપરિગ્ગહિય) અનેક ધર્માનુયાયિયોં ને બી
ઇસકો સ્વીકાર કિયા હૈ। (જ ત લોગમ્મિ સારભૂય) ંસા યહ સત્યવ્રત
લોકમ્ સર્વપ્રધાન હોને સે સારભૂત હૈ। (ગમ્भीરયર મહાસમુદ્દાઓ)
યહ સત્ય અક્ષોભ્ય હોને સે મહાસમુદ્ર કી અપેક્ષા અત્યત્ત ગમ્भीર હૈ।
(થિરયર મેરુપવ્વયાઓ) નિશ્ચલ હોનેસે મેરુપર્વત કી અપેક્ષા અત્યત્ત
સ્થિર હૈ (સોમ્મયરગ ચદમહલાઓ) મતાપ કે શમન કા હેતુ હોને સે
ચદ્રમહલ કી અપેક્ષા અત્યત્ત સૌમ્ય હૈ। (દિત્તયર સૂરમહલાઓ) યથા-
વત્ વસ્તુ કા પ્રકાશક હોને સે યહ સત્ય સૂર્ય મહલ કી અપેક્ષા અધિક

વૈક્રિયાદિરૂપ વિદ્યાઓ-લબ્ધિઓની પ્રાપ્તિ થાય છે “મણુયગણાણ વદણિજ્જ”
મનુષ્યોને માટે આ સત્ય વદનીય છે તથા “અસુરગણાણ પૂયણિજ્જ” અસુર
ગણોને માટે તે પૂજનીય-પ્રશસનીય છે “અણેગપાલહિ પરિગ્ગહિય” અનેક
ધર્મોના અનુયાયીઓએ પણ તેનો સ્વીકાર કર્યો છે, “જ ત લોગમ્મિ સારભૂય”
એવું આ સત્યવ્રત લોકમાં સર્વ પ્રધાન હોવાથી સારભૂત છે “ગમ્भीરયર
મહાસમુદ્દાઓ” આ સત્ય અક્ષોભ્ય હોવાથી સમુદ્ર કરતા પણ વધારે ગમ્भीર
છે “થિરયર મેરુપવ્વયાઓ” નિશ્ચલ હોવાથી તે મેરુપર્વત કરતા પણ વધારે
સ્થિર છે “સોમ્મયરગ ચદમહલાઓ” સતાપનું શમન કરનાર હોવાથી ચન્દ્ર
મહળ કરતા પણ વધારે સૌમ્ય છે “દિત્તયર સૂરમહલાઓ” વસ્તુના સાચા
સ્વરૂપનું પ્રકાશક હોવાથી આ સત્ય સૂર્યમહળ કરતા પણ વધારે સ્થિર છે

તથા-‘વિમલયરં સરયનહયલાઓ’ વિમલતરં શરપ્પમસ્તલાત્=ગન્ધકાલિક ગગન-
તલાદપ્યધિક નિર્મલ, માલિન્યરહિતત્વાત્, તથા-‘સુરમિયર ગધમાયણાઓ’
સુરમિતર ગન્ધમાદનાત્=ગન્ધમાદનપર્વતાત્ અપ દિ-નીલવદ્ વર્ષપરપર્વતમ્ય
દક્ષિણદિશિ, મેરોર્વાયવ્યકોણે, શીતોદાનદ્યુત્તરફલ્પર્તિનો ગધિલાવતીનામ્નોઽ-
ષ્ટમવિજયસ્ય પૂર્વદિશિ, તથા-ઉત્તરવૃક્ષ્ણા સર્વોત્કૃષ્ટભોગભૂમિક્ષેત્રાત્ પશ્ચિમ-
દિશિ મહાવિદેહક્ષેત્રસ્યો ગજદન્તમસ્થાનસમ્પ્રિયતો ગન્ધમાદનનામા વક્ષસ્કાર-
પર્વતોઽસ્તિ । ગધેન સ્વય માચતિ મદયતિ યા સ્વનિગ્રાસિદેવદેવીના મનામીતિ
ગન્ધમાદન’ । યથા પિષ્ટમાણાના સચ્ચૂર્ણમાણાનામ્-ઉત્કોર્યમાણાના પિકીર્યમા-

દીપ્ત છે । (વિમલયર સરયનહયલાઓ) મલિનતા સે વિહીન હોને કે
કારણ શરત્કાલિક આકાશતલ કી અપેક્ષા અધિક નિર્મલ છે । તથા
(સુરમિયર ગધમાયણાઓ) જનોં કે હૃદયોં કો આરુપ્ણ કરને વાલા
હોનેકે કારણ યહ સત્ત્વ ગન્ધમાદન નામક પર્વત કી અપેક્ષા અત્યન્ત સુગ-
ન્ધિત છે । યહ ગધમાદન નામ કા વક્ષસ્કાર પર્વત નીલવર્ષધર પર્વત કી
દક્ષિણદિશા મેં, મેરુ કે વાયવ્યકોણ મે, શીતોદાનદી’કે ઉત્તર તટ પર
રહે હુણ ગન્ધિલાવતી નામક અષ્ટમવિજય કી પૂર્વદિશા મેં, તથા ઉત્તર
કુરુ કે સર્વોત્કૃષ્ટ ભોગભૂમિક્ષેત્ર રો પશ્ચિમદિશા મેં મહાવિદેહક્ષેત્ર મેં
છે । ઉસકા નસ્થાન આકાર-ગજદન્ત જૈસા છે અર્થાત્—ગજદન્ત
કે આકાર મેં યહ સ્થિત છે । અપની ગૈધ સે સ્વય કો સુગન્ધિત
કરતા છે તથા અપને ઉપર રહને વાલે દેવદેવિયોં કે મન કો મદો-
ન્મત્ત બના દેતા છે ઉસકા નામ ગધમાદક છે એસા યહ પર્વત છે ।
જૈસે પિસતે હુણ, ફેલે હુણ, અથવા એક વર્તન સે દુસરે વર્તન

“ વિમલયર સરયનહયલાઓ ” મલિનતાથી રહિત હોવાથી તે શરદ્ઋતુના
આકાશતળ કરતા પણ વધારે નિર્મળ છે “ સુરમિયર ગધમાયણાઓ ” માણ
સોના ચિત્તનું આઠર્પણ કરનાર હોવાથી આ સત્ય ગધમાદન નામના પર્વત
કરતા પણ અધિક સુગન્ધિત છે તે ગન્ધમાદન નામના વક્ષસ્કાર પર્વત નીલ
વર્ષધર પર્વતની દક્ષિણ દિશામાં, મેરુ, વાયવ્ય કોણમાં, શીતોદા નદીના ઉત્તર
કિનારે રહેલ ગન્ધિલાવતી નામના અષ્ટમવિજયની પૂર્વ દિશામાં, તથા ઉત્તર
કુરુના સર્વોત્કૃષ્ટ ભોગભૂમિક્ષેત્રની પશ્ચિમ દિશામાં મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં છે
તેનો આકાર ગજદન્ત જેવો છે એટલે કે તે ગજદન્તના આકારે ઉભો છે
પોતાની ગધવટે જે પોતે વાસયુક્ત બને છે અને પોતાની ઉપર વાસ કરતા
દેવદેવીઓના મનને જે મદોન્મત્ત કરી નાખે છે, તેનું નામ ગધમાદન છે

પાના માળાદ્ માળાન્તર યા સંશ્લિષ્ટમાણાના ક્ષોસ્તપુટાના યાત્રત્તગરપુટાનીનાં
મનોજ્ઞા ઉદારા ગન્યા અભિનિઃમરન્તિ, તદપેક્ષયાઽપ્યુદારગન્યયુક્તોઽય પર્વતઃ ।
તતોઽપ્યધિકૃતરસુરમિમત્મત્યમિતિ ભાવઃ, જનાના હૃદયાયર્જકત્વાત્ । તથા-
'જે ત્રિ ય' યેઽપિ ચ 'લોગમ્મિ' લોકે 'અપરિસેસા' અપરિશેષાઃ=સકલાઃ
'મત્તજોગ', મન્ત્રયોગા'-મન્ત્રાઃ-હરિણૈગમેપિદેરાદિ મન્ત્રા.-યોગા વશીકરણાદિ-
પ્રયોજના દ્રવ્યસયોગા, 'જગા ય' જપાશ્ર-મન્ત્રવિદ્યાજપનાનિ 'ચિજ્ઞા ય'
વિદ્યાશ્ર=રોહિણીપ્રજ્ઞાપ્ત્યાદય., 'જમન્ના ય' જન્મકાશ્ર=તિર્યગ્લોકવાસિનોઽન્ન
જન્મકાદિ મેદેન દશગ્રિયા દેવગ્રિયેષા. 'અત્યાણિય' અસ્ત્રાણિ ચ-ગાનાદીનિ
'સત્યાણિય' શસ્ત્રાણિ ચ સ્વદ્ધાનિ 'સિન્ધુજાઓ ય' ગિજ્ઞાશ્ર-કલાગ્રહણાદીનિ
'આગમા ય' આગમાશ્ર મન્તિ । 'સઘ્વાઙ્ગ મિ તાઙ્ગ' સર્ગાણ્યપિ તાનિ 'સચ્ચે'
સત્યે 'પઙ્કટ્ટિયાઙ્ગ' પ્રતિષ્ઠિતાનિ, નત્યમાશ્રિત્યૈય સર્ગાણિ તિષ્ઠન્તીતિ ભાવ. ॥૨॥

મે રસે જાતે હુળ સુગંધિત તગર આદિ દ્રવ્યોં સ્ત્રીમનોઙ્ગ ઉદાર ગંધ ચારોં
ઓર ફેલાતિ હૈં વસસે સ્ત્રી અધિક ઉદાર ગંધ સે યુક્ત યહ પર્વત હૈં ।
હસ પર્વત સે સ્ત્રી અધિકૃતર સુગંધિ ન્પન્ન યહ મત્ય હૈં । (જે ત્રિ ય લો-
ગમ્મિ અપરિસેસા મત્તજોગા જવા ય ચિજ્ઞા ય જમન્ના ય અત્યાણિ
ય સત્યાણિ ય સિન્ધુજાઓ આગમા ય સઘ્વાઙ્ગ વિતાઙ્ગ સચ્ચે પઙ્કટ્ટિયાઙ્ગ)
તથા લોક મેં જો મ્હી સમસ્ત મન્ત્ર-હરિણૈગમેપિદેરાદિમન્ત્ર, ઓર યોગ
વશીકરણ આદિ પ્રયોજનવાલે દ્રવ્યસયોગ હૈં, મન્ત્રવિદ્યા કે જાપ હૈં,
રોહિણીપ્રજ્ઞાસિ આદિ વિદ્યાઈ હૈં, તિર્યગ્લોકવાસી અન્નજૃમ્બક પાનજૃમ્બક
આદિ દશપ્રકાર કે દેવવિશેષ હે, ગાણાદિક અસ્ત્ર, સ્વદ્ધા આદિ શસ્ત્ર,
કલાગ્રહણ આદિ શિક્ષાઈ ઓર આગમ હૈં વે સચ્ચે હસ સત્ય કે હી
આશ્રય સે હૈં ।

એવો તે પર્વત છે જેમ ધમાતા ફેલાતા અથવા એક પાત્રમાથી બીજા પાત્રમા
ફેલાતા સુગંધિત તગર આદિ દ્રવ્યોની મનોજ્ઞા ઉદાર ગંધ આગે તગ્ધ ફેલાય
છે, તે ડરતા પણ વધારે ઉદાર ગંધવાળો આ પર્વત છે તે પર્વત કળતા પણ
ધણુજ વધારે સુગંધિયુક્ત આ મત્ય છે “જે ત્રિય લોગમ્મિ અપરિસેસા મત્ત-
જોગા જવાય ચિજ્ઞા ય જગમાય અત્યાણિય સત્યાણિય સિન્ધુજાઓ આગમા ય
સઘ્વાઙ્ગ વિતાઙ્ગ સચ્ચે પઙ્કટ્ટિયાઙ્ગ” તથા લોકમા જે જોઈ મન્ત્ર-હરિણૈગમેપિ-
દેવાદિ મન્ત્ર, અને યોગ-વળીડરણુ આદિ પ્રયોજનવાળા દ્રવ્યસયોગ છે, મન્ત્ર
વિદ્યાના જાપ છે, રોહિણીપ્રજ્ઞાસિ આદિ વિદ્યાઓ છે, તિર્યગ્લોકવાસી અન્નજૃમ્બક,
પાનજૃમ્બક, આદિ દશ પ્રકારના દેવવિશેષ છે, ગાણાદિ અસ્ત્ર, તલવાર આદિ શસ્ત્ર,
કલાગ્રહણુ આદિ શિક્ષાઓ અને આગમ છે, તે ધણુ આ સત્યને જ આશ્રયે છે

સત્યમપિ કીદશ ન વક્તવ્ય, કીદશ વક્તવ્ય ? મિત્યાહ—‘ સન્વપિય ’
 इत्यादि—

મૂલમ્—સચ્ચ પિય સજમસ્ત ઉવરોહકારગ કિંવિ ન
 વત્તવ્વ, હિસાસાવજ્જસપઉત્ત, મેયવિકહકારગ, અણતથવાય
 કલહકારગ, અણજ્જં, અવવાયવિવાયસંપઉત્તં વેલવ,
 ઓજધેજ્જવહુલં નિહ્ણજ્જ, લોયગરહણિજ્જં, દુદિટ્ઠ, દુસ્સુય,

ભાગ્યર્થ—યહ સત્ય તીર્થકરો કા સુભાપિત હૈ । ઇસે વ્યવહાર દષ્ટિ
 સે જનપદ સત્ય આદિ કે ભેદ સે યહ દશ પ્રકાર કા કહા હૈ ।
 પૂર્વધરો ને હસ સત્ય કો સત્યપ્રવાદપૂર્વ કે નામ સે અભિહિત કિયા હૈ ।
 ઋષિયો ને ઇસે સિદ્ધાન્ત કા રૂપ દિયા હૈ । દેવેન્દ્ર નરેન્દ્ર આદિ કોં કે
 ભાષણ કા મહત્ત્વ ઇસી મત્ય કે સહારે માના ગયા હૈ । મત્ર ઔપધિ
 આદિ વિદ્યાઓં કી સાધના સત્ય કે પ્રભાવ સે સફલિત હોતી હૈ ।
 આકાશગોમિની વિદ્યા ચારણઋદ્ધિ-एव वैक्रियलब्धि ये, सब इसी सत्य
 કે પ્રભાવ સે જીવોં કો પ્રાપ્ત હોતી હૈ । મનુષ્ય, દેવ एव असुर, सब के
 लिये यह वदनीय है । अनेकधर्मानुयायियों ने भी इसे मान्य किया है ।
 સમસ્ત વસ્તુઓં મે યહ એક સારભૂત-એષ-વસ્તુ હૈ । ઇસકા પ્રભાવ અનિ-
 ર્વચનીય હૈ । મહાસમુદ્ર આદિ કી અપેક્ષા મી યહ ગમીરતર આદિ
 ધર્મોં વાલા હૈ । લોક મેં જિતને મી મત્ર યોગ આદિ હૈં વે સબ ઇસી
 સત્ય કે સહારે ટિકે હુણ હૈં ॥ સૂ. ૨ ॥

ભાવાર્થ—આ સત્ય તીર્થકરોનું સુભાપિત છે વ્યવહાર દષ્ટિએ જન
 પદ સત્ય આદિના લેદથી તે દશ પ્રકારનું બતાવ્યું છે, પૂર્વધરોએ આ સત્યને
 સત્યપ્રવાહ પૂર્વના નામથી ઓળખાવ્યું છે ઋષિઓએ તેને સિદ્ધાન્તનું રૂપ
 આપ્યું છે દેવેન્દ્ર નરેન્દ્ર વગેરેના ભાષણની મહત્તા આ સત્યની મહદથી જ
 મનાયેલ છે મત્ર ઔપધિ આદિ વિદ્યાઓની સાધના આ સત્યના પ્રભાવથીજ
 સફળ થાય છે આકાશગામિની વિદ્યા-ચારણઋદ્ધિ અને વૈક્રિયલબ્ધિ એ બધું
 આ સત્યના પ્રભાવથી જ શુભોને પ્રાપ્ત થાય છે માનવ, દેવ અને અસુર મીને
 માટે તે વદનીય છે અનેક ધર્મના અનુયાયીઓએ પણ તેને માન્ય ય્યું છે
 સમસ્ત વસ્તુઓમા તે એક સારભૂત-એષ વસ્તુ છે તેનો પ્રભાવ અવર્ણનીય
 છે મહાસાગર આદિના કરતા પણ તે વધારે ગભીરતા આદિ ગુણોવાળું છે
 જગતમા જેટલા મત્ર યોગ આદિ છે તે બધા આ સત્યને આધારે જ ટકેલા છે ॥૨॥

असुणिय । अप्पणो थवणा परेसि निदा-न तंसि मेहावी,
 ण तमि धण्णो न तसि पियधम्मो, न तंसि कुलीणो, न
 तसि दाणवई, न तंसि सूरु, न तसि पडिरूवो, न तसि
 लट्ठो, न पडिओ, न बहुस्सुओ, न वि य तसि तवस्सो,
 ण यावि परलोगणिच्छियमईऽसि, सव्वकाल जाइकुलरूव-
 वाहिरोगेण वावि ज होइ वज्जणिज्जदुहओ उवयारमइकत
 एवविह सच्चपि न वत्तव्वं । अह केरिसय पुणाइ सच्चं तु
 भासियव्व ? ज त दव्वेहि पज्जवेहि य गुणेहि कम्मेहि
 वहुविहेहि सिप्पेहि आगमेहि य नामक्खाय निवाय उवसग्ग-
 तद्वियसमाससधिपयहेउ-जोगिय-उणाइ-किरिया-विहाण
 धाउसरविभत्तिवन्नजुत्ततिकल्ल दसविहपि सच्चं जह भणिय
 तह य कम्मुणा होइ । दुवालसविहा होइ, भासा वयणं
 पि य होइ सोलसविह । एव अरहतमणुन्नायं समिक्खिय
 सजएण य कालम्मि वत्तव्वं । इमं च अलिय-पिसुण-
 फरुस-कडुय-चवल-वयणपरिरम्खणट्टयाए पावयण भगवय
 सुकहिय, अत्तहिय, पेच्च भावियं, आगमेसिभद, सुद्ध नेयाउय,
 अकुडिल, अणुत्तर, सव्वदुक्खपावाणविउ समणं ॥सू० ३॥

टीका—‘सच्च पि य’ सत्यमपि च तत् ‘सजमस्स’ सयमस्य ‘उवरोह-
 कारग’ उपरोधकारक-बाधक भवेत्, तत् ‘किं वि’ किमपि ‘न वत्तत्व’ न
 वक्तव्यम् । किं भूत तत्-सत्य यन्न वक्तव्यम् ? इत्याह—‘हिंसा सावज्जसपउत्त’

किस प्रकार का सत्य नहीं बोलना चाहिये और किस प्रकार का

देवा प्रकारनु सत्य बोलवु न लोभये आने देवा प्रकारनु बोलवु लोभये ?

બોલના ધાહિયે ? હસ ઘાત કો સુઘ્રકાર કહતે હૈ—‘ સન્નપિ ય ’
 હત્યાદિ ૦ ।

ટીકાર્થ—(સન્ન પિ ય સજમસ્ત ઉરોહકારગ કિંચિ ન વત્તન્વ)
 સત્ય હોને પર ની જો વચન સયમ કા ગાધકરો વર મુનિજન કો થોડા
 સા ની નહીં બોલના ધાહિયે । સત્ય હોને પર ની જો વચન મયમ કે
 ધારક હોતે હૈ વે હસ પ્રકાર સે હૈ—(હિંસાસાવજ્જસપવત્ત) હિંસા ઓર
 સાવધ જો વચન હૈ વે સત્ય હોને પર ની સયમ કે ગાધકર હાને કે કારણ
 નહીં બોલના ધાહિયે । હિંસા કા તાત્પર્ય યદા પ્રાણિવ્ય સે ઓર સાવધ
 કા તાત્પર્ય પાપયુક્ત મલાપ સે હૈ । ઇન સહિત જો વચન હોતે હૈ વે
 હિંસાસાવધ સપ્રયુક્ત વચન હૈ । જિન સત્યવચનો સે પ્રાણિયો કે પ્રાણો કા
 વધ હોતા હો, તથા જિનસે પાપ મેં જીવોં કી પ્રવૃત્તિ હોની હો તેસે વચન
 સત્યમહાત્મી કે લિયે કમી ની ભાષણ કરને યોગ્ય નહીં હૈ । (મેઘવિ-
 કહકારગ) હસી તરફ જો સત્યવચન ચારિત્ર કે ધ્વનકર હો, રાજકથા
 આદિ સે સમય રચતે હૈ, તથા (અણત્યવાયકલહકારગ) જિન સત્ય
 વચનો કા કોઈ પ્રયોજન સિદ્ધ નહીં હોતા હો અર્થાત્ જો નિરર્થક હો,
 જિન સત્ય વચનો સે પરસ્પર મેં વાદ વિવાદ ઓર કલહ વધતા હો, તથા

તે વાત સઘ્રકાર બતાવે છે—“ સન્ન પિ ય ” ઇત્યાદિ

“ સન્ન પિ ય સજમસ્ત ઉરોહકારગ કિંચિ ન વત્તન્વ ” સત્ય હોવા
 છતાં પણ જે વચન સયમના બાધક હોય તે મુનિજને જરા પણ બોલવું
 નેહએ નહીં સત્ય હોવા છતાં પણ જે વચન સયમના બાધક હોય છે તે
 આ પ્રમાણે છે—“ હિંસા સાવજ્જસવત્ત ” હિંસા અને સાવધ જે વચન છે
 તે સત્ય હોવા છતાં પણ સયમના બાધક હોવાથી બોલવા નેહએ નહીં
 હિંસા એટલે આ જગ્યાએ પ્રાણિવધ સમજવો અને સાવધનો અર્થ પાપયુક્ત
 મલાપ છે હિંસા અને સાવધયુક્ત જે વચનો છે તે હિંસાસાવધ સપ્રયુક્ત
 વચન કહેવાય છે જે સત્ય વચનોથી પ્રાણીઓના પ્રાણોનો વધ થતો હોય
 તથા જે વચનોથી પાપના જીવોની પ્રવૃત્તિ થતી હોય એવા વચન સત્યમહા-
 ત્મીને માટે કદી પણ બોલવાને યોગ્ય હોતા નથી, “ મેઘવિકહકારગ ”
 એ જ પ્રમાણે જે સત્ય વચન ચારિત્રના ધાતક હોય, રાજકથા આદિ સાથે
 સંબધ રાખતા હોય, તથા “ અણત્યવાયકલહકારગ ” જે સત્ય વચનોનું
 કોઈ પ્રયોજન સિદ્ધ થતું ન હોય એટલે કે જે નિરર્થક હોય, જે સત્ય
 વચનોથી પરસ્પરના વાદવિવાદ અને કલહ વધતો હોય તથા “ અણજ્ઞ ” જે

हिंसासारथ्य समयुक्त, तत्र-हिंसा=माणिरथ, सारथ्यम्=पापयुक्तसलापादि, ताभ्या
समयुक्त=सहित यत्तन्, पुनः किंभूतम् ? 'भेदप्रतिष्ठाकारक' भेदप्रिकयाकारकम्,
भेदः = चाग्निभेद', प्रिया = राजकयादि', तत्कारक यत् तत्, तथा-
'अणत्ययायकल'कारक' अनर्थवादकलकारकम् = तत्र - अनर्थो = निरर्थको
यो वादः सोऽनर्थवादः=निष्प्रयोजनो जल्प, कलहो=विग्रहः, तत्कारक यत्तत्,
तथा-'अणज्ज' अन्त्यायम्=न्याययजितम्, तथा 'अववायविवायसपउत्त'
अपवाद प्रवादसमयुक्तम्, अपवाद=परदूषणरुधन, विवाद=वाक्लह', ताभ्या
समयुक्त यत्तत्, तथा 'वेलव' विडम्बरक=परविडम्बनाकारकम्, तथा-'ओज-
वेज्ज बहुल' ओजो धैर्यरहस्यम्-ओजः=अहकार', आवेशो वा, धैर्य=वृष्टता, ताभ्यां
गदहणज्ज' लोमगर्दणीयम्=साधुजननिन्दितम्, येन सत्येन परस्य हिंसा मर्मो-
द्घाटनादिक या मनेत्तत् 'दुद्धि' दुर्दृष्टम्=असम्यग्दृष्टम्, 'दुस्तुय' दुश्चतुष्टम्=

(अणज्ज) जो न्यायानुक्रम न हो, (अववायविवाय सपउत्त) अपवाद,
विवाद से युक्त हो वे भी नहीं बोलना चाहिये। पर के दूषणों का
कहना यह अपवाद है, वाक्लह का नाम विवाद है। इसी तरह (वेलव)
जो पर की विडम्बना के कारक हों तथा (ओजवेज्जबहुल) जिन सत्य
वचनों के बोलने से बोलने वाले का अहकार भावजान होना हो अथवा
आवेश प्रकट होता हो, वृष्टता जात होती हो ऐसे वचन भी नहीं
बोलना चाहिये। तथा (निहज्ज) जिन सत्यवचनों के बोलने में लज्जा
जाती हो और (लोमगर्दणज्ज) साधुजन जिन वचनों की निंदा
करते हो ऐसे वचन सत्य होने पर भी नहीं बोलना चाहिये। तथा
(दुद्धि) जिन सत्य वचनों से परप्राणी की हिंसा अथवा मर्मका उद्घा

न्यायानुक्रम न होय, "अवायविवायसपउत्त" अपवाद, विवादही युक्त होय
ते पणु बोलवा नेहंओ नहि पारज द्रष्टुओने होवा ते अपवाद ते अने
वाणुना लहने विवाद कहे छे, ओ न प्रमाणे "वेलव" के पानी विडम्बना
करना होय तथा "ओजवेज्जबहुल" के सत्य वचनो बोलवाथी बोलनारने।
अहंकार बाध नष्टतो होय अथवा आवेश प्रकटथतो होय, वृष्टता नष्टतो
होय, ओवा वचन पणु न बोलवा नेहंओ तथा "निहज्ज" के सत्य वचन
बोलवामा लज्जा जाती होय अने "लोमगर्दणज्ज" साधुजन के वचनोनी
निंदा करता होय ओवा वचन सत्य होय तो पणु बोलवा नेहंओ नही,
तथा "दुद्धि" के सत्य वचनथी पर प्राणीनी हिंसा थती होय, अथवा

અસમ્યક્ શ્રુતમ્, તથા-‘અમુણિય’ અજ્ઞાતમ્=અપ્રમ્યગ્જ્ઞાતમ્, ણ્તાદશ સત્યમ
પિ ન વક્તવ્યમિતિ ભાવઃ । પુનઃ ક્રીદશ સત્ય ન વક્તવ્યમ્ ? इत्याह—‘अप्पणो
धवणा’ आत्मनः स्तयना=प्रशंसा यत्र भवेत्तत्, स्वस्तुतिरूप यस्तस्य तत्र वक्तव्य-
मित्यर्थः । तथा-‘परेसि निंदा’ परेषा निन्दा- अन्येषा रिपये सत्याऽपि नि-
न्दा यस्मिन् भवेत्तत्र वक्तव्यमिति भावः, कथम् ? इत्याह-‘न तमि मेहावि’
न त्वमसि मेधावी=अपूर्वश्रुतदृष्टग्रहणशक्तियुक्तः प्राप्तो मेधावीत्युच्यते, एतादृश
स्व नासि तया-‘ण तसि धण्णो’ न त्वमसि धन्यः=धनवान्, धन्यवादपात्रं
वा, ‘ण तसि पियधम्मो’ न त्वमसि प्रियधर्मा=धर्मपरायणाः, तया-‘न तसि
कुलीनो’ न त्वमसि कुलीनः=उच्चकुलीनः=उच्चकूटजातः, ‘न तमि दाणवई’

દન હોતા હો વે દુર્દૃષ્ટ વચન હેં ઓર (દુસ્સુય) જો અછ્છી તરહ સે સુને
ગયે હો વે દુઃશ્રુત વચન હેં, તથા (અમુણિય) જો અછ્છી તરહ સે જાનને
મેં નહીં આપે હો વે અસમ્યક્ જ્ઞાત વચન હેં, ઇન દુર્દૃષ્ટાદિ વચનોં કો
ચાહે વે વચન સત્ય મી હોં તો મી નહોં બોલના ચાહિયે । (અપ્પણો
ધવણા પરેસિ નિંદા) ઇસી તરહ જિન સત્યવચનોં મેં આત્મપ્રશંસા-
આત્મશ્લાઘા ખરી હોવે, ઓર જિન સત્યવચનોં મેં પર કી નિંદા હોતી
હો વે સત્યવચન મી નહીં બોલના ચાહિયે, ફિલ પ્રકાર નહીં બોલના
ચાહિયે સો કહતે હેં-(ન તસી મેહાવી) તુમ મેધાવી નહીં હો, અર્થાત્
જો વ્યક્તિ અપૂર્વ, અશ્રુત એવ અદૃષ્ટ પદાર્થ કો ગ્રહણ કરને કી શક્તિ
સે યુક્ત હોતા હૈં ડસકા નામ મેધાવી હૈં એસે મેધાવી તુમ નહીં હો,
તથા (ણ તસિ ધણ્ણો) તુમ ધનવાન યા ધન્યવાદ કે પાત્ર નહીં હો,
(ન તસિ પિયધમ્મો) તુમ પ્રિયધર્માધર્મપરાયણ-નહોં હો, (ન તસિ-

ભર્મ ખૂલ્લો પડતો હોય તેવા વચનો દુર્દૃષ્ટ વચન છે અને “દુસ્સુય” જે
ખરાબર સલાખાયુ ન હોય તે દુશ્રુતવચન ડહેવાય છે, તથા “અમુણિય”
જે ખરાબર જાણવામા આવ્યુ ન હોય તેના વિષે વચન બોલવા તે અસમ્યક્
જ્ઞાત વચન છે, એ દુર્દૃષ્ટ આદિ વચનો સત્ય હોય તો પણ બોલવા નોંધએ
નહીં “અપ્પણો ધવણા પરેસિનિંદા” એ જ પ્રમાણે સત્ય વચનોમા આત્મપ્રશંસા
આત્મશ્લાઘા-ભરી હોય તથા જે સત્ય વચનોમા બીજાની નિંદા થતી હોય તે
સત્ય વચન પણ બોલવા નોંધ એ નહીં કઈ રીતે બોલવા ન નોંધએ તે હવે
કહે છે-“ન તસિ મેહાવી” તમે મેધાવી નથી જે વ્યક્તિ અપૂર્વ, અશ્રુત અને
અદૃષ્ટ પદાર્થને ગ્રહણ કરવાની શક્તિવાળી હોય છે તેને મેધાવી કહે છે તથા
“ણ ત સિ ધણ્ણો” તમે ધનવાન યા ધન્યવાદને પાત્ર નથી “ન ત સિ
પિયધમ્મો” તમે ધર્મપરાયણ નથી, “ન ત સિ કુલીનો” તમે નથી

न त्वमसि दानपति = दाता, 'न तसि मरो' न त्वमसि मरु = पराक्रमशाली,
 'न तसि पटिरुवो' न त्वमसि प्रतिरूप = सुन्दरः, 'न तसि लट्टो' न त्वमसि
 लट्टः = सौभाग्यवान्, 'न पडिओ' न पण्डितः = विद्वान् त्वमसि, न च त्व 'बहु-
 स्सुओ' बहुश्रुतः = बहुविद्योऽसि, 'न वि य तसि तवस्सी' नापी च त्वमसि तपस्वी
 'ण यावि परलोपणिच्छिमईसि' परलोके निश्चिता सज्जरहिता मतिर्यस्य सः =
 परलोके निश्चिनमस्तिश्रापि त्व नामि । मेधादिर्ज्ञतान् प्रत्यपि एवरुसा निन्दा न
 कर्तव्येति भावः । किं बहुना, 'जाइकुलरुववाहिरोगेण या वि' जातिकुलरूप व्या-
 ग्रिरोगेण याऽपि-या = अथवा जातिः = मातृवशः, कुल = पितृवशः, रूप = सौन्दर्य,
 व्याधि = चिरस्थायी कुष्ठादिः, रोग = शीघ्रघातो ज्वरादि, एतेषामितरेतरयोग-
 द्वन्द्वः, तेन कारणेनापि जात्यापि कारणमलम्बापि 'ज' तत् 'सर्वकाल'

कुलीणो) तुम कुलिन नहीं हो, (न तसि दानवई) तुम दानपति-दाता
 नहीं हो, (न तसि मरो) तुम पराक्रमशाली नहीं हो, (न तसि-
 पटिरुवो) तुमप्रतिरूप-सुन्दर-नहीं हो, (न तसि लट्टो) तुम लट्ट-
 सौभाग्यसपन्न नहीं हो, (न पडिओ) तुम पण्डित नहीं हो (न बहुस्सुओ)
 तुम बहुश्रुत-अनेक विद्याओं के वेत्ता नहीं हो, और (न वि य तसि
 तवस्सी) न तुम तपस्वी हो । और (न यावि परलोपणिच्छिमई सि)
 न तुम परलोक में सशय रहित मतिवाले ही हो, " इस प्रकार के वचन
 अचिवेकी व्यक्तियों से नहीं कहना चाहिये, क्योंकि इस प्रकार
 के वचनों से उनकी निन्दा होती है । (सर्व काल जाइकुलरुववाहिरोगेण
 ज होइ वज्जणिज्ज) इसी तरह जाति-मातृवश, कुल-पितृवश, रूप-
 सौन्दर्य, व्याधि-चिरस्थायी कुष्ठादि, तथा शीघ्रघातक ज्वरादि रोग, इन

'न तसि दानवई' तमे दाता नहीं, 'न तसि मरो' तमे पराक्रमी
 नहीं "न तसि पटिरुवो" तमे सुन्दर नहीं "न तसि लट्टो" तमे लट्ट
 सौभाग्यशाली नहीं, "न पडिओ" तमे पण्डित नहीं, "न बहुस्सुओ" तमे
 बहुश्रुत-अनेक विद्याओंवाला बहुज्ञ नहीं, अने "न वि य त सि तवस्सी"
 तमे तपस्वी नहीं, अने "न यावि परलोपणिच्छिमईसि" तमे परलोकने
 विषे सशयरहित भविष्याणा नहीं " ये प्रज्ञाना वथेना भाणुसेओ जालवा
 नेओ नही जणु के ते प्रकारना वथेनाभा तेमनी " श्रोतानी निदा थाय
 थाय के " सर्व काल जाइकुल रुववाहिरोगेण ज होइ वज्जणिज्ज " ये व
 प्रकारे जाति मातृवश, कुल-पितृवश रूप-सौन्दर्य, व्याधि-आयभी कोइ वगेरे
 तथा शीघ्रघातक ज्वरादि रोग ओ अधा जणुओने लईने पणु उही ओवा

सर्वकाल=सर्वदा 'वज्रनिज्ज' 'रजनीय=त्याज्य' ओके 'होइ' भरति, 'एवं विह' एवविह 'दुहओ' उभयाः=लोकतः आगतश्च, 'उभयारमइकत' उपचार मतिक्रान्त=व्यवहारविरुद्ध 'मच्चपि' सत्यमपि 'न रत्तव' न वक्तव्यम्।

'अह' अथ 'केरिसय' कीदृश तु 'पुणाइ' पुनः 'सच्च भासियव्व' सत्य भाषितव्यम् ? आह—'ज त' यत्तु 'दव्वेहि' द्रव्यैः=त्रिकालवर्तिभिः पुद्गलादिभिः 'पज्जवेहि' पर्यायैः नवपुराणादिभिः क्रमवर्तिभिर्ममैः, न=पुनः 'गुणेहि' गुणैः=महभूतैर्वर्णादिभिः, 'कम्महि' कर्मभिः=कृत्यादि व्यापारैः,

सय कारणों को लेकर भी कभी ऐसे वचन नहीं कहना चाहिये कि तुम्हारा मातृवश अच्छा नहीं है, पितृवश तुम्हारा शुद्ध नहीं है, तुममें सौंदर्य नहीं है, तुम व्याधि सपन्न हो-कुप्री आदि हो। तात्पर्य-इसका यही है कि मातृवशादि से विहीन तथा कृष्ठादि सपन्न व्यक्तियों से ऐसे वचन नहीं कहना चाहिये। यथो कि इस प्रकार के वचनों से उन्हें दुःख होता है। (दुहओ उभयारमइकत) इसी तरह जो वचन लोक तथा आगम, ऐसे दोनों की अपेक्षा व्यवहार विरुद्ध हो (एवविह सच्च पि-न वत्तव्व) ऐसे वचन सत्य होने पर भी नहीं बोलना चाहिये। (अह-केरिसय पुणाइ सच्च तु भासियव्व) अत्र सूत्रकार यह कहते हैं कि साधुजनों को-महाव्रतारामक समयमी जनों को-किस प्रकार के सत्य-वचन बोलना चाहिये-(ज त) जो वचन (दव्वेहि) त्रिकालवर्ती पुद्गलादि द्रव्यों से (पज्जवेहि) नवीन पुरानी आदि क्रमवर्ती पर्यायों से (गुणेहि) द्रव्य के साथ अविनाभाव रूप संबंध रखने वाले वर्णादि गुणों

वचन न बोलना चाहिये कि "तुम्हारा मातृवश सारा नहीं, तुम्हारा पितृवश शुद्ध नहीं, तुम्हारा सौंदर्य नहीं, तुम व्याधियुक्त हो वगैरे शैव्ययुक्त-हो" तेनु तात्पर्य के है कि जेना मातृवश आदि डीन होय, होइ आदि शैव्ययुक्त के युक्त होय तेने तेना वचनो बोलना चाहिये नहीं, वरन् के तेना वचनोधी तेने इ भ थाय छे-"दुहओ उभयारमइकत" के न प्रमाण के वचन लोक तथा आगम, जेनेनी अपेक्षा के व्यवहार विरुद्ध होय "एव विह सच्चपि न वत्तव्व" जेना वचन सत्य होय तो पण बोलना चाहिये नहीं "अह-केरिसय पुणाइ सच्च तु भासियव्व" हवे सूत्रकार के बतावे छे के साधुजनो-महाव्रतागधक समयमी जेना केना प्रकारना सत्यवचन बोलना चाहिये "ज त" के वचन "दव्वेहि" त्रिकालवर्ती पुद्गलादि द्रव्योधी "पज्जवेहि" नवी जूनी आदि क्रमवर्ती पर्यायोधी "गुणेहि" द्रव्यनी साथे अविनाभाव-संबंध रखनार वर्णादि शुष्योधी "कम्महि" कृत्यादि व्यापार इ

તથા-‘વહુવિહેર્હિં સિપ્પેર્હિં’ વહુવિધૈઃ શિલ્પૈઃ= આચાર્યાધિગતૈઃ ચિત્રકર્માદિભિઃ ક્રિયાતિશેષૈ, ‘આગમેર્હિં’ આગમૈઃ=સિદ્ધાન્તૈશ્ચ યુક્ત સત્ય વક્તવ્યમ્ । પુનઃ કીદશ સત્ય વક્તવ્યમ્ ? इत्याह—‘नामकत्राय निवाय उपसंगतद्वियसमामसधि पयहेउजोगियउणाइकिरियाविहाणघाउसरविभत्तिजुत्त ’ नामारयातनिपातो - पसर्गतद्वितसमाससन्धिपदहेतुयौगिकोणादिक्रियाविधानघातुस्वरविभक्तियुक्त --- तत्र-नाम-व्युत्पन्नमव्युत्पन्न च द्विविध, तत्र-व्युत्पन्न-जिनदत्तजिनदासादि, अव्युत्पन्न-डित्थडवित्थादि, आख्यातम्=क्रियापद भूतभविष्यद्वर्तमानरूपम्,

સે (કમ્મેર્હિં) કૃપ્યાદિ વ્યાપારરૂપ કર્મો સે (વહુવિહેર્હિં સિપ્પેર્હિં) આચાર્યાધિગત ચિત્રકર્માદિરૂપ ક્રિયા વિશેષો સે, તથા (આગમેર્હિં) આગમ-સિદ્ધાન્તો-સે યુક્ત હાં જેસે સત્યવચન ચોલના ચાહિયે । (નામકત્રાયનિવાયઉપસંગતદ્વિયસમાસધિયહેઉજોગિયઉનાઈકિરિયા વિહાણઘાઉસરવિભત્તિજુત્ત) इसी तरह, नाम, आख्यात, निपात, उपसर्ग, तद्धित, समास, सन्धि, पद, हेतु, योग, उणादिप्रत्यय, क्रिया-विधान, घातु, स्वर, विभक्ति और वर्ण इनसे युक्त हो (तिरकल दसविह पिसच्च) त्रिकाल विषयवाला जनपद सत्य आदि दस प्रकार का भी सत्यवचन चोलना चाहिये । व्युत्पन्न और अव्युत्पन्न के भेद से नाम दो प्रकार का होता है । जिनदत्त, जिनदास आदि नाम व्युत्पन्न नाम हैं, और डित्थ, डवित्थ आदि नाम अव्युत्पन्न नाम हैं । आख्यात नाम क्रियापद का है । वह भूत भविष्यत् और वर्तमान के भेद से तीन प्रकार का होता है, जैसे-अभवत्, भविष्यति और भवति । अर्थ में

કર્મેર્થી, ‘વહુવિહેર્હિં સિપ્પેર્હિં’ આચાર્યાધિગત ચિત્રકર્માદિરૂપ ક્રિયાવિશેષોથી, તથા ‘આગમેર્હિં’ આગમ-સિદ્ધાન્તોથી યુક્ત હોય એવા સત્યવચન બોલવા બેઠે એ “નામકત્રાયનિવાય—ઉપસંગતદ્વિય—સમાસસધિયહેઉજોગિય—ઉનાઈ કિરિયાવિહાણઘાઉસરવિભત્તિજુત્ત” એ જ પ્રમાણે નામ, આખ્યાત, નિપાત, ઉપસર્ગ, તદ્ધિત, સમાસ, સન્ધિ, પદ, હેતુ, યોગ, ઉણાદિ, પ્રત્યય, ક્રિયાવિધાન, ઘાતુ, સ્વર, વિભક્તિ, અને વર્ણ એ બધાથી યુક્ત હોય “તિરકલ દસ વિહ પિ સચ્ચ” ત્રિકાળ વિષયવાળા જનપદ સત્ય આદિ દશ પ્રકારના પણ સત્યવચન બોલવા બેઠે એ વ્યુત્પન્ન અને અવ્યુત્પન્ન ભેદથી નામ બે પ્રકારના હોય છે જિનદત્ત, જિનદાસ આદિ વ્યુત્પન્ન નામ છે, અને ડિત્થ, ડવિત્થ આદિ અવ્યુત્પન્ન નામ છે આખ્યાત નામ ક્રિયાપદનું છે તે ભૂત ભવિષ્ય અને વર્તમાનના ભેદથી ત્રણ પ્રકારના છે, જેમકે અભવત્ (થયો) ભવિષ્યતિ (થશે)

નિપાતાઃ=અર્થઘોતકાઃ સ્વલુપાદય, ઉપસર્ગાઃ=પ્રપરાદયઃ, તદ્વિતાઃ=અપત્યાઘ
 થાભિધાયકપ્રત્યયાન્તાઃ જ-દાઃ, યથા-નાભેરપત્યનાભેયઃ વ્રુપમઃ, સિદ્ધાર્થસ્યા
 પત્ય સૈદ્ધાર્થો મહાયોરઃ ' ઇતિ । સમાસઃ=અનેકપદાનામેકીકરણમ્, સ ચાવ્યયી
 માનાદિભેદાદનેકવિધા, સન્નિઃ=ચર્ણાન્ત સર્ગાં નામ્, ચયા 'શ્રાપકોડ્રે' -ત્યાદિ,

વિશેષતા કે ઘોતક જો હોતે તેં વે નિપાત હે જૈસે ચ્વલુપ દય આદિ શબ્દ,
 પ્ર, પરા આદિ ઉપસર્ગ કહલાતે હે । ઇન્કે સમય સે ઇક હી ધાતુકે અર્થ
 મેં ભિન્નતા આ જાતી હે, જૈસે 'જ' ધાતુ કે સાથ જય 'પ્ર' ઉપસર્ગ કા
 સવધ હોતા હૈ-તપ્ત ઉસકા અર્થ પ્રતાર હો જાના હૈ, ઓર જય 'આ'
 કા સવધ હોતા હૈ તપ આતાર હો જાના હે, ઇત્યાદિ । અપત્ય આદિ
 અર્થ કે અભિધાયક જો પ્રત્યય હૈ વે પ્રત્યય વાલે શબ્દ યહાં તદ્વિત શબ્દ
 સે ગૃહીત હુવ હૈ જૈસે--" નામે અપત્ય પુમાન્ નામેયઃ " યદા નામિ
 શબ્દ સે તદ્વિત પ્રત્યય હોને પર નામેય યન્તા હૈ તથા સિદ્ધાર્થ શબ્દસે
 અણ્ પ્રત્યય હોને પર 'સૈદ્ધાર્થ' યન્તા હૈ, ચે તદ્વિત શબ્દ હૈ । ઇસી પ્રકાર
 ઓર બી તદ્વિત શબ્દ જાન લેનાવાલે । પરસ્પર સવધ રચને વાલેં દો વા
 દો સે અધિક પદોંકી યોગ કી વિભક્તિ કા લોપ કરકેમિલે હુવ અનેક
 પદોંકા નામસમાસ હૈ । સમાસ અવ્યયી માવ આદિ કે ભેદ સે અનેક
 પ્રકાર કાહોતા હૈ । સધિ શબ્દ કા અર્થ મેલ હોતા હૈ-અર્થાત્-વર્ણોં કી

અને ભવતિ (છે) જે શબ્દો અર્થમા વિશેષતાને દર્શાવે છે તેમને નિપાત
 કહે છે જેમ કે " જલુ " " જન " આદિ શબ્દ " પ્ર " " પરા " આદિ
 ઉપસર્ગો છે. તેમના ઉપયોગથી એક જ ધાતુના અર્થમા ફેર પડી જાય છે,
 જેમકે " જ " ધાતુ સાથે જ્યારે " પ્ર " ઉપસર્ગ મૂકવામા આવે છે ત્યારે
 તેનો અર્થ " પ્રહાર " થઈ જાય છે, અને જ્યારે તેની આગળ " આ " ઉપ
 સર્ગ મૂકવામા આવે ત્યારે તેનો અર્થ " આહાર " થઈ જાય છે, અપ્રત્ય આદિ
 અર્થને દર્શાવનાર જે પ્રત્યયો છે તે પ્રત્યયવાળા શબ્દોને અહીં " તદ્વિત "
 શબ્દથી કહેલ છે, જેમ કે--" નામે અપત્ય પુમાન્ નામેય " " નામિ " શબ્દને
 તદ્વિત પ્રત્યય લાગવાથી " નામેય " શબ્દ બન્યો છે, તથા ' સિદ્ધાર્થ '
 શબ્દને ' અણ્ ' પ્રત્યય લાગતા " સૈદ્ધાર્થ " બને છે, તે તદ્વિત શબ્દો છે
 આ પ્રકારે જ બીજા તદ્વિત શબ્દો પણ સમજી લેવા પરસ્પર સવધ રાખ
 નાર છે કે જેથી વધારે પડેલી વચ્ચેની વિભક્તિનો લોપ કરીને ભેડાયેલા
 અનેક પદોને સમાસ કહે છે અવ્યયી ભાવ આદિ ભેદથી સમાસ અનેક પ્રકાર
 રના છે ' સધિ ' શબ્દનો અર્થ ' ભેડાણુ ' થાય છે-એટલે કે વર્ણોંની અતિ

પદં=સુગ્ધંત તિગ્ધંત ચ-પદા-‘ જિનઃ ભવતિ ’ ઇત્યાદિ, હેતુઃ=સાધ્યઽવિનાશ્ચૂત-
ત્વલક્ષણ, યથા-‘ પર્વતોઽય ઋદ્ધિમાન વૃમા ’ ઇત્યાદિ, યૌગિક=યોગનિષ્પન્ન
પદ ‘ પદ્મનાભો નીલકાન્તઃ ’ ઇત્યાદિ-ઊનાદિઃ ઊનાદિપ્રત્યયનિષ્પન્ન પદમ્,
‘ કરોતિ ચિત્રકાર્યમિતિ કારુઃ ’ સાધ્નો તિસ્ત્રપર-કાર્યમિતિ સાધુ ’ ઇત્યાદિ.
ક્રિયાવિગ્રાહન = કૃદન્તપ્રત્યયનિષ્પન્ન ‘ પાઠકઃ, પાચકઃ, પાકઃ ’ ઇત્યાદિ-
રૂપ પદમ્, ધાતુઃ=ક્રિયામાચિનો શ્વાદયઃ, સ્વરાઃ= ઋકારાદયઃ પદ્મજાદયઃ,

અતિ સમીપતા હોને પર ડનકે મેલ સે જો ધ્વનિ મેં ચિકાર હોતા હૈં ઉસકા
નામ સધિ હૈં-જૈસે ‘ શ્રાવકઃ અત્ર ’ ઁસી સ્થિતિ મેં ‘ શ્રાવકોઽત્ર ’ ઁસી
સધિ હોતી હૈ, ઇસ સધિ કા નામ પૂર્વરૂપ સધિ હૈ. સુગ્ધંત ઔર તિગ્ધંત
કો પદ કહતે હૈ, જૈસે-‘ જિનઃ ’ યહ સુગ્ધંત પદ હૈ ઔર ‘ ભવતિ ’
યહ તિગ્ધંત પદ હૈ. જો સાધ્ય કે સાધ અવિનાશાવ સવધ સે ઘથા
હોતા હૈં ઉસકા નામ હેતુ હૈ, જેસે ધૂમવાળા હોને સે યહ પર્વત અગ્નિ-
વાળા હૈ, ઘથા પર સાધ્ય-અગ્નિ હૈ ઔર ડમકે વિના નહીં હોને વાળા
ધૂમ હૈ. યોગ સે જો શબ્દ નિષ્પન્ન હોતે હૈં વે યૌગિક શબ્દ હૈ, જૈસે
પદ્મનાભ, નીલકાન્ત આદિ શબ્દ. ઊનાદિ પ્રત્યય સે જો શબ્દ ઘનતે હૈં વે
ઊનાદિ હૈ, જૈસે-કારુ (શિલ્પી) સાધુ આદિ શબ્દ. ધાતુ કે અન્ત મેં
પ્રત્યય લગાકર જો શબ્દ ઘનતે હૈં વે કૃદન્ત હૈ, જૈસે-પાઠક, પાચક, પાક
આદિ શબ્દ. ક્રિયા કે વાચક જો શ્રૂ આદિ શબ્દ હૈં વે ધાતુ કહલાતે
હૈં. ડસરે ઘર્ણો કી સહાયતા કે વિના જિનકા ઉચ્ચારણ હોતા હૈં ઁસે

મમીપતા હોય ત્યારે તેમના બેઝાણથી ધ્વનિમા જે નિદાર ઉત્પન્ન થાય છે
તેને સન્ધિ કહે છે, જેમ કે “ શ્રાવક અત્ર ” ની “ શ્રાવકોઽત્ર ” એ પ્રકા
રની સન્ધિ થાય છે, આ સન્ધિને પૂર્વરૂપ સન્ધિ કહે છે સુગ્ધંત અને તિગ્ધંત
ને પદ કહે છે, જેમ કે-‘ જિન ’ તે સુગ્ધંત પદ છે અને “ ભવતિ ” તે
તિગ્ધંત પદ છે, જે સાધ્યની માથે અવિનાશાવ અબધથી બધાયેલ હોય છે
તેને હેતુ કહે છે જેમ કે ધૂમવાળો હોવાથી આ પર્વત અગ્નિવાળો છે,
અહીં માથે અગ્નિ છે, અને તેના વિના ન પેદા થનાર ધુમાડો છે યોગની
જે રાખેલ બને છે તેમને યૌગિક રાખ કહે છે જેમ કે પદ્મનાભ, નીલકા
ન્ત, આદિ યૌગિક શબ્દો છે “ ઊનાદિ ” પ્રત્યયથી જે શબ્દો બને છે તે
“ ઊનાદિ ” કહેવાય છે, જેમ કે કારુ (શિલ્પી) સાધુ આદિ શબ્દ ધાતુને
અન્તે પ્રત્યય લગાડીને જે શબ્દ બને છે તેને કૃદન્ત કહે છે, જેમકે પાઠક,
પાચક પાક આદિ શબ્દ ક્રિયાના વાચક “ શ્રૂ ” આદિ જે શબ્દો છે તેમને
ધાતુ કહે છે બીજા ઘર્ણોની મદદ વિના જેનું ઉચ્ચારણ થાય છે એવા ‘ક’

વા, વિભક્તયઃ=સ્યાદયસ્તિયાદયથ, વર્ણાઃ = કાર્ગાદિયઃ, ણમિયુક્ત 'તિકલ્લ' ત્રિકાલ્ય=ત્રિકાલવિષય 'દસત્તિહ પિ' દશવિધમપિ જનપદાદિરૂપ 'સત્ત્વ' સત્ય=વક્તવ્યમ્ । તથા યત્સત્ય 'જહ' તથા=યેન પ્રકારેણ 'મણિય' મણિતમ્ ઉચ્ચારિત 'તહ ય' તથા ચ=તેનેન પ્રકારેણ 'કમ્મુણા' કર્મણાપિ-કાર્યેણાપિ પરિણત 'હોહ' ભવતિ, તત્સત્ય વક્તવ્યમિતિ માયઃ, તથા- 'દુવાલસત્તિહા' દ્વાદશવિધા=પ્રાકૃત સસ્કૃતમાગધપિશાચસૌરસેનોપપ્ત્રગમેદાત્ પદ્ધિયા, સા પુનઃ ગદ્યપદ્યભેદાદ્ ઢિવિધેતિ દ્વાદશવિધા 'માસા' ભાષા 'હોહ' ભવતિ, તથા- 'વયણ પિ ય' વચનમપિ ચ 'હોહ' ભવતિ 'સોલસત્તિહ' પોડશવિધત્વમેવ વિજ્ઞેયમ્-

અકાર આદિ શબ્દ, અથવા પઢજ આદિ સ્વર સ્વર કહલાતે હૈં । 'સુ, ઔ, જસ, આદિ વિભક્તિયા તથા 'તિપ્, તમ્, જી' આદિ પ્રત્યય યે સઘ વિભક્તિયા કહલાતી હૈં, ઔર કાર્ગ આદિ વર્ગ કહલાતે હૈં । (જહ મણિય તહ ય કમ્મુણા હોહ) તથા જો સત્ય જિસ પ્રકાર સે કહા ગયા હૈ વહ સત્ય ડસી પ્રકાર સે કાર્ય સે ખી પરિણત હો જાતા હૈ ંસા સત્ય યોલના ચાહિયે । તાત્પર્ય ઇસકા યહ હૈ કિ જિસ સત્ય જો, યોલને વાલા વ્યક્તિ કાર્ય રૂપ મે પરિણત કર સકે ંસા સત્ય યોલના ચાહિયે । (દુવાલસત્તિહા હોહ માસા) ભાષા વારહ પ્રકાર કી હોતા હૈ-વહ ઇસ પ્રકાર સે-પ્રાકૃત, સસ્કૃત, માગધી, પૈશાચી, સૌરસેની ઔર અપભ્રશ । યહ ડહોં પ્રકાર કી ભાષા ગદ્ય ઔર પદ્ય કે ભેદ સે વારહ પ્રકાર કી હો જાતી હૈ । (વયણ પિય હોહ સોલસત્તિહ) વચન કે સોલહ પ્રકાર હોતે હૈં, ંે ઇસ પ્રકાર સે હૈ-

કાર આદિ શબ્દ અથવા પઢજ આદિ સ્વરને સ્વર ડહે છે, "સુ, ઔ, જસ" આદિ વિભક્તિયો તથા "તિપ્ તસ જી" આદિ પ્રત્યય ંે સૌને વિભક્તિયો ડહે છે, (શુજરાતીમા ંે, ને, થી, નો, ની, તુ, ના, મા આદિ વિભક્તિના પ્રત્યયો છે) ંેને 'ક ઁ' આદિ વર્ણો ડહેવાય છે "જહમણિય તહય કમ્મુણા હોહ" તથા ંે સત્ય ંે પ્રકારે ડહેવાયુ ડોય તે સત્ય તે જ પ્રકારે કાર્યમા પશુ પરિણમતુ ડોય તેવુ સત્ય જોલવુ જોઈં, તેવુ તાત્પર્ય ંે છે કે ંે સ યને જોલનાર વ્યક્તિ કાર્ય ડપે અમલમા મૂકી યકે તેવુ સત્ય જોલવુ જોઈં, "દુવાલસત્તિહા હોહ માસા" ભાષા જાર પ્રકારની ડોય છે તે આ પ્રમાણે છે-પ્રાકૃત, સસ્કૃત, માગધી, પૈશાચી, સૌરસેની, ંેને અપભ્રશ આ ડ પ્રકારની ભાષા ગદ્ય ંેને પદ્યના લેદથી જાર પ્રકારની થઈ જાય છે, "વયણ પિય હોહ સોલસત્તિહ" વચનના સોળ પ્રકાર ડોય છે તે નીચે પ્રમાણે છે

નકાલિકમિન્દ્રિયગોચરમ્-યથા-‘મુનિરય શાસ્ત્ર પઠતીત્યાદિ । તથા-ઉપનીતાદિ
 ચતુષ્ક વચનમ્, તત્ર-ઉપનીતવચનમ્=ગુણારોપણવચનમ્, યથા-‘રૂપવાનય મન
 સ્વી’ ત્યાદિ । અપનીતવચન=ગુણાપનયનવચનમ્, યથા-‘દુઃશીલોઽય દુઃચનો
 ઽય’ મિત્યાદિ । ઉપનીતાપનીતવચનમ્=ઋચિદ્ ગુણમારોપ્ય કોઽપિ ગુણોઽપની
 યતે યેન વચનેન તદુપનીતાપનીતવચનમ્, યથા-‘રૂપવાનય કિન્તુ દુઃશીલઃ’
 इत्यादि । एतद्विपर्ययेण अपनीतोपनीतवचनमपि भवति । येन वचनेन पूर्वं कमपि
 गुणमपनीय पश्चादपर कोऽपि गुण उपनीयते तदपनीतोपनीतवचनम्, यथा-
 ‘दुःशीलोऽय क्तिन्तुरूपवा’ नित्यादि । तथा-षोडश वचनम्-‘अञ्जत्थ’ अध्या

है, जैसे “कपभो बभूव” यह वाक्य परोक्ष अर्थ को विपर्य करनेवाला
 होने से परोक्ष माना जाता है १० । जो वाक्य वर्तमान काल को विषय
 करता है वह प्रत्यक्ष वाक्य माना जाता है जैसे “मुनिरय शास्त्र पठति”
 यह प्रत्यक्ष वाक्य है ११ । उपनीतवचन १२, अपनीतवचन १३,
 उपनीतापनीतवचन १४ और अपनीतोपनीतवचन १५, इस प्रकार ये
 उपनीतादि चार हैं । इनमें जो वचन गुणों का आरोपण करता है वह
 उपनीत वचन है-जैसे “यह मनस्वी अच्छे रूप वाला है १ । जो वचन
 गुणों का अपनयन करता है वह अपनीत वचन है-जैसे यह दुःशील
 है २ । जो वचन किसीगुणको आरोपित करके किसी गुण का अपनयन
 करता है वह उपनीतापनीतवचन है, जैसे यह रूपवाला तो है परन्तु
 दुःशील है ३ । इसी तरह जो किसी गुण का अपनयन करके गुण का
 आरोपक होता है वह वह अपनीतोपनीतवचन है, जैसे यह दुःशील

હોય છે, જેમકે “ઋષભા વબૂવ” “ઋષભ થઈ ગયો” આ વાક્ય પરોક્ષ
 અર્થને વિષય કરનાર હોવાથી પરોક્ષ મનાય છે ૧૦ જે વાક્ય વર્તમાન
 કાળને વિષય કરે છે તે પ્રત્યક્ષ મનાય છે “મુનિ આ શાસ્ત્ર વાંચે છે ૧૧
 (૧૨) ઉપનીતવચન, (૧૩) અપનીતવચન, (૧૪) ઉપનીતાપનીતવચન અને
 (૧૫) અપનીતોપનીતવચન એ રીતે ઉપનીતાદિ ચાર વચન છે (૧) તેમા
 શુભ્રાણુ આરોપણ કરનાર વચનને ઉપનીત વચન કહે છે જેમ કે “આ
 મનસ્વી સારા રૂપવાળો છે” (૨) જે વચન શુભ્રાણુ અપનયન કરે છે તે
 અપનીત વચન છે, જેમ કે “આ દુશીલ છે” (૩) જે વચન કોઈ શુભ્રાણુ
 આરોપણ કરીને કોઈ શુભ્રાણુ અપનયન કરે છે તે ઉપનીતાપનીત વચન છે,
 જેમકે “તે રૂપવાળો છે પણ દુશીલ છે” એ જ રીતે જે વાક્ય કોઈ શુભ્રાણુ
 અપનયન કરીને કોઈ શુભ્રાણુ આરોપણ કરતું હોય તે અપનીતોપનીત વચન છે

ત્તમ્=આત્માનમધિકૃત્ય ચદ્વચન તદધ્યાત્મચનમ્ યથા - જ્ઞાનસ્વરૂપોડયમાત્મે
ત્યાદિ । ઇતિ પોહગચિથ ચનમ્ । એમ્=ઉક્તત્પ સત્યમ્ ‘અરહન્તમણુણાય’
અર્હન્તુજ્ઞાતમ્=તીર્થદ્ગોપદિષ્ટ ‘સમિન્નિચય’ મમીક્ષિત=પર્યાલોચિત સદેવ
‘સજણ’ સયતેન=સાધુના ‘કાલે ચ, કાલે ચ અવસરે સમાગતે એવ ‘વત્તવ્વ’
વત્તવ્યમ્ । ભગવદાત્માવદ્ધિત સ્વયમપર્યાલોચિત વચન સાધુનાડવસર વિના ન
વત્તવ્યમિતિ શાસ્રઃ । યયોપસત્તારમાદ્=‘ઈમં ચ’ ઇત્યાદિ—

‘ઈમં ચ’ ઇત્ત ચ=પૂર્વેનન્તતીર્થકરણધરેઃ પ્રોક્તમિદ્=પ્રત્યક્ષ ‘પાવયણ’
પ્રવચનમ્, ‘અલિય-પિસુણ-ફરુસ-કહુય-ચવલચયણપરિરક્ષણદ્વયાપ’ અલીકપિ-
શુન-પરુપ-કહુય-ચવલચયણપરિરક્ષણાર્થ-તત્ર અલીકમ્ અસદ્ભૂતાર્થ પિશુન=પર-
તો હૈ પરન્તુ અચ્છે રૂપ દ્વાલા હૈ ૪ । વચન કા સોલહર્વા ભેદ વહ હૈ,
જો અખ્યાત્મ હોના હૈ, જો આત્મા કો અધિકૃત કરકે ઘોલા જાતા હૈ
જૈસે “યદ્ આત્મા જ્ઞાન સ્વરૂપ હૈ” ઇત્યાદિ ૧૬ । (એવ અરહત મણુણાય)
ઇમ પ્રકાર ઇન સોલહ તરહ કે વચનોં કો ઘોલને મેં તીર્થકર પ્રશુ કી
આજ્ઞા હૈ । ઔર જો વચન (સમિન્નિચય) પર્યાલોચિત હૈ અર્થાત્ અચ્છી
તરહ સે વિચાર કરકે નિકાલે ગયેહો એસે વચન (સજણ) સાધુ કો
(કાલમ્મિ) અવસર આને પર (વત્તવ્વ) ઘોલને ચાહિયે, પરન્તુ જિન
વચનોં કો ઘોલને કી પ્રશુ કી આજ્ઞા નહી હૈ ઔર જો અપર્યાલોચિત
હો તેસે વચન સાધુ કો નહીં ઘોલના ચાહિયે । અચ્છ ઇસકા ઉપસહાર
કરતે હુવ સૂત્રકાર કહતે હે—(ઈમચ પાવયણ) પૂર્વાકાલિક અનત તીર્થ-
કરોં કે દ્વારા કહા હુઆ યદ્ પ્રત્યક્ષીભૂત પ્રવચન (અલિય-પિસુણ-
ફરુસ-કહુય-ચવલચયણપરિરક્ષણદ્વયાપ) અલીક, પિશુન, પરુપ,

જેમ કે ‘આ હુ શીલ તો છે પણ મુદ્-રૂપવાળો છે’ (૧૬) વચનને
સોળમો ભેદ તે છે કે જે આત્મા હોય છે, જે આત્માને ઉદ્દેશીને બોલાય
છે જેમ કે “આ આત્મા જ્ઞાનસ્વરૂપ છે” ઇત્યાદિ, “એવ અરહત મણુણાય”
આ રીતે તે સોળ પ્રકારના વચનો બોલવાની તીર્થ કર પ્રશુની આજ્ઞા છે અને
જે વચન ‘સમિન્નિચય’ પર્યાલોચિત છે—માત્રી ગીતે વિચાર કરીને ઉચ્ચ-
સાધા હોય, એવા વચન “સજણ” સાધુએ “કાલમ્મિ” અવસર આવતા
“વત્તવ્વ” બોલના બેઠાં, પણ જે વચનો બોલવાની ભગવાનની આજ્ઞા
નથી અને જે અપર્યાલોચિત હોય તેવા વચનો સાધુએ બોલવા બેઠાં નહીં
હવે તેનો ઉપસહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે—“ઈમચ પાવયણ” પૂર્વાકાલીન
અનત તીર્થ કરો દ્વારા કહેવાયેલ આ પ્રત્યક્ષીભૂત પ્રવચન, “અલિય-પિસુણ-
ફરુસ-કહુય-ચવલ-ચયણ-પરિરક્ષણદ્વયાપ” અલીક-અત્ય, પિશુન, પરુપ-

દોષસૂચક, પરુપ=પરમર્ષોદ્ઘાટક, કટુરુપ=ઉદ્દેગજનરુપ, ચપલરુપ=અમમીક્ષ્ય પ્રોક્ત
 યદ્ વચન તસ્માત્-મુનીના પરિરક્ષણા મ્, અર્થાત્-મુનિભિરીદ્ય 'વચન ન વાચ્ય
 મિતિ હેતોઃ ' ભગવયા ' ભગવતા ' સુકલ્પિયં ' સુકલ્પિતમ્ । કથમ્ભૂત પ્રવચન
 સુકલ્પિતમ્ ? इत्याह- ' अत्तहिय ' आत्महितम्-आत्मनो हितकारकम्, ' पेच्चा-
 भाविय ' प्रेत्य भाविक=नन्मान्तरेऽपि शुभफलदायकम्, अतएव ' आगमेसिभइ '
 आगमिष्यद् भद्रम्=भविष्यत्कल्याणकारकम्, तथा- ' शुद्ध ' शुद्ध=निर्दोषत्वात्,
 पुनः ' नेयाउय ' नैयायिक=न्याययुक्तम्, वीतरागभाषितत्वात्, तथा- ' अकु-
 ङिल ' अकुटिलम्=रज्जुभावनरुक्त्वात्, ' अणुत्तर ' अनुत्तरम्=सर्वश्रेष्ठत्वात्,
 तथा-सर्वदुःखलपाराण ' सर्वदुःखपापानां=सकरुण्डुःगजनरुक्तानां रणीयाद्यष्टविध
 कर्मणा ' विउसमण' व्युपशमनम्=सर्वथाप्रशमनकारकम् । एतादृश प्रवचन भगवता
 कथितमित्यर्थः ॥ सू-३ ॥

કટુક, ચપલ, વચનો સે મુનિજર્જો કી રક્ષા હોતી રહે હસ અભિપ્રાય સે
 (ભગવયા) ભગવાન્ ને (સુકલ્પિય) અઠગી તરફ સે પ્રતિપાદિત કિયા હૈ ।
 અસદ્ભૂત અર્થ કો કહને ચાલા વચન અલીક, પર દોષ સૂચકવચન-
 વિશુન. પર કે મર્મકા ઉદ્ઘાટક વચન પરુપ, ઉદ્દેગ કો પૈદા કરને
 ચાલા વચન કટુરુ, ઓર વિના વિચારે ચોલા ગયા વચન ચપલ કહ-
 લાતા હૈ । યહ પ્રવચન (અત્તહિય) આત્મા કા હિતકારક હૈ તથા (પેચ્ચા
 ભાવિય) જન્માન્તર મે ભી શુભફલ કા દેનેવાલા હૈ । (આગમેસિભઇ)
 હસીલિયે હસે ભવિષ્યત્ મેં કલ્યાણકારક કહા ગયા હૈ । (શુદ્ધ)
 હસ પ્રવચન મેં કિસી ભી પ્રકાર કા પૂર્વાપરવિરોધરુપ દોષ નહીં હોને
 સે યે શુદ્ધ હૈ । (નેયાઉય) યહ વીતરાગ દ્વારા ભાષિત હોને કે કારણ
 ન્યાયયુક્ત હૈ । તથા (અકુઙિલ) હસસે રજ્જુભાવ ઉત્પન્ન હો જાતા હૈ
 હસલિયે યહ અકુટિલ હૈ । (અણુત્તર) હસ કે જૈસા ઉત્તમ ઓર કોઈ

કઠોર, કડવા, ચપલ વચનોથી મુનિજનોનિ રક્ષા થયા કરે તે ઉદ્દેશથી
 ' ભગવયા ' ભગવાને " સુકલ્પિય " સારી રીતે પ્રતિપાદન કર્યું છે અસદ્ભૂત
 અર્થને કહેનાર વચન અલીક, પરદોષ સૂચક વચન વિશુન, ખીજના મર્મને
 ખુલ્લો પાડતું વચન પરુપ, ઉદ્દેગ પેદા કરનાર વચન કટુરુ અને વિચાર્યા વિના
 ઘોલાયેલ વચન ચપલ કહેવાય છે આ પ્રવચન " અત્તહિય " આત્માને માટે
 હિતકારક છે તથા " પેચ્ચાભાવિય " જન્માતરમા પણ શુભ ફળ દેનાર છે
 " આગમેસિભઇ " તે ગરજે તેને ભવિષ્યમા ડયાણુકારક નિર્ધાર્યુ છે " શુદ્ધ "
 આ પ્રવચનમા ગેઈ પણ પ્રકારે પૂર્વાપરવિરોધરુપ દોષ નહીં હોવાથી તે
 શુદ્ધ જે " નેયાઉય " તે વીતરાગ દ્વારા કહેવાયેલ હોવાથી ન્યાયયુક્ત છે
 તથા " અકુઙિલ " તેનાથી રજ્જુભાવ સરળતા ઉત્પન્ન થાય છે તેથી તે અકુટિલ
 છે, " અણુત્તર " તેનાજેવુ શ્રેષ્ઠ ખીજુ કઈ પણ નથી તેથી તે અનુત્તર છે

નહીં હૈં इसलिये यह अनुत्तर है। और यह (सर्वदुष्कृतपापाण विवस-
मण) अनेक विध दुःखां के देने वाले ज्ञानावरणीयादि अष्टप्रकार के
कर्मों का सर्वथा उपशम करने वाला है। ऐसे विशेषणों से विशिष्ट
इस प्रवचन को भगवान् ने कहा है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा यह प्रकट किया है कि सत्य
होने पर भी किस प्रकार के वचन नहीं बोलना चाहिये और किस
प्रकार के वचन बोलना चाहिये। उन्होंने कहा है कि जिन सत्यवचनों
से समय में पाप आवेंवे वचन कभी नहीं कहना चाहिये, क्योंकि ऐसे
वचन सत्य होने पर भी असत्य के जैसे होने से हेय त्याज्य हैं। जिन
सत्य वचनों से हिंसा हो जावे, पाप में जीवों की प्रवृत्ति हो जावे,
चारित्र्य से भ्रष्ट हो जावे, अथवा अपने चारित्र्य में किसीप्रकार की
बाधा उपस्थित हो जावे, राजकथा आदिका प्रसंग जिनमें होवे, जो
प्रयोजन शून्य हो, जिनसे कलह उत्पन्न हो जावे, न्यायानुकूल जो न हो,
अपवाद विवाद से जो युक्त हो, पर की विडम्बनाकारक हो, जिनके
बोलने में अपनी आत्मप्रशंसा भरी हो, अथवा किसी प्रकार का आवेश
भाव झलकता हो, सुनने वालों को जिनमें अपनी घृष्टता प्रकाशित

અને તે “સર્વદુષ્કૃતપાપાણ વિવસમણ” અનેક પ્રકારના દુષ્ણે દેનાર
જ્ઞાનાવરણી આદિ આઠ પ્રકારના કર્મોના સર્વથા ઉપશમ કરનાર છે, એવા
વિશેષણોથી યુક્ત આ પ્રવચન ભગવાન મહાવીર દ્વારા ંથિત છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા એ સ્પષ્ટ કર્યું છે કે સત્ય હોય તો
પણ એવા પ્રકારના વચન બોલવા નેઈએ, તેમણે એ બતાવ્યું છે કે જે સત્ય-
વચનોથી મયમમા બાધા નડે, તેવા વચનો કદી પણ ન બોલવા નેઈએ,
કારણ કે તેવા વચનો સત્ય હોય તો પણ અસત્ય જેવા હોવાથી હેય કે
જે સત્યવચનોથી હિંસા વર્ધ નથ, જીવોની પાપમા પ્રવૃત્તિ થાય, ચારિત્રમા
ભ્રષ્ટતા આવે, અથવા પોતાના ચારિત્રમા ડોડ પ્રકારની બાધા ઉપન્થિત થાય,
જેમા રાજકથા આદિનુ વર્ણન આવે, જે પ્રયોજન વિનાનુ હોય, જેનાથી કલહ
પેદા થાય, જે ન્યાયાનુકૂળ ન હોય, જે અપવાદ વિવાદથી યુક્ત, પારકાની
વિડબના કરનાર હોય, જે બોલવામા આત્મશ્લોધા થતી હોય, અથવા ડોષ
પ્રકારનો આવેરા ભાવ બજીતો હોય, જેમા સાલજનાર આગળ પોતાની

હોતી હો, જિનકે ગોલને મે લજ્ઞા કી મી લાજ જાની હો, લોક મેં જો નિન્દિત માને જાતે હોં, પર કે મર્મ કો જો છેદતે હોં, દુર્ઘટ, દુઃશ્રુત એવ જો અજ્ઞાત હો એસે સત્યવચન મી નહીં ગોલના ચાહિયે । તથા ભાષાસમિતિ કે વિરોધી રોને સે એસે વચન મી નહીં કરના ચાહિયે કિ જો દુસરોં કી નિંદા કારક હોં, કર્ણકટુ તથા દુઃશ્રવણ હોં, જેસે-તૂ મહામૂર્ખ હૈ, મેઘાવી નહીં હૈ, ધર્મપ્રિય નહીં હૈ ઇત્યાદિ । તથા જો દ્રવ્ય જેસા હૈ, જેસે આકાર કા હૈ, જિસ ક્ષેત્ર કાલ આદિ સે સબધ રહતા હૈ, એસા હી ઉમકા પ્રતિપાદન કરનેગાલા અવિસવાદી વચન જો હોતા હૈ વહ વચન દ્રવ્ય સે યુક્ત કહલાતા હૈ, ઇસી પ્રકાર ઉસ દ્રવ્ય મેં જો પર્યાયે હો રહી હો, અથવા- જિસ પર્યાય સે વહ યુક્ત હો-ઉસ પર્યાય કા પ્રદર્શક વચન પર્યાય સે યુક્ત વચન કહલાતા હૈ । ગુણોં કી અપેક્ષા કો લેકર જો વચન બોલા જાતા હૈ વહ ગુણ સે યુક્ત વચન કહલાતા હૈ । કૃપ્યાદિ વ્યાપારોં કો લેકર જો વચન કહે જાતે હૈં વે કર્મયુક્ત વચન કહલાતે હૈ । “યે શિલ્પી હૈ યે ચિત્રકાર હૈ” ઇત્યાદિ જો ક્રિયાવિશેષોં કો લેકર જો વચન કહે જાતે હૈં વે બહુવિધશિલ્પયુક્ત વચન કહલાતે હૈ । તથા સિદ્ધાન્ત કે અનુસાર જો વચન કહે જાતે હૈં વે સિદ્ધાન્તયુક્ત વચન કહલાતે હૈં । ઇસી તરહ નામ આદિ સે યુક્ત જો

ધૃષ્ટતાનુ પ્રદર્શન થતુ હોય, જે ગોલવામા લાજ લોપાતી હોય, જગનમા જે નિન્દાપાત્ર મનાતા હોય, ખીજના મર્મને જે છેદતા હોય, દુર્ઘટ, દુઃશ્રુત, અને જે અજ્ઞાત હોય એવા સત્યવચન પણ ગોલવા ભેદએ નહીં તથા ભાષાસમિતિના વિરોધી હોવાથી એવા વચનો પણ ન ગોલવા ભેદએ કે જે ખીજની નિન્દાકારક હોય, કર્ણકટુ તથા દુઃશ્રવણ હોય એમ કે “તુ મહા-મૂર્ખ છે, મેઘાવી નથી, ધર્મપ્રિય નથી” ઇત્યાદિ, તથા જે દ્રવ્ય જેવું છે એવા આકારનું છે, ક્ષેત્ર કાળ આદિ સાથે સબધ રાખે છે, એવું જ તેનું પ્રતિપાદન કરનારા અવિસવાદી જે વચનો હોય છે તે વચનો દ્રવ્યયુક્ત કહેવાય છે એ જ પ્રમાણે તે દ્રવ્યમા જે પર્યાયો થઈ રહી છે, અથવા જે પર્યાયથી તે યુક્ત હોય, તે પર્યાયને દર્શાવનારું વચન પર્યાયયુક્ત વચન કહેવાય છે શુભોની અપેક્ષાએ જે વચન ગોલાય છે ને શુભયુક્ત વચન કહેવાય છે કૃપ્યાદિ વ્યાપારોની અપેક્ષાએ જે વચન ગોલાય છે તે કર્મયુક્ત વચન કહેવાય છે “તેઓ શિલ્પી છે, તેઓ ચિત્રકાર છે” ઇત્યાદિ ક્રિયા-વિશેષોની અપેક્ષાએ જે વચન કહેવાય છે તે બહુવિધ શિલ્પયુક્ત વચન કહેવાય છે એ જ પ્રમાણે નામ આદિથી યુક્ત જે વચન કહેવાય છે તે

સમતિ સત્યવચનસ્ય પચ્ચ ભાવના. પ્રતિપાત્યન્ પૂર્વ સમિતિયોગલક્ષણાં
પ્રથમા ભાવનામાદ-‘ તસ્મ ઇમા ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—તસ્મ ઇમા પચ્ચ ભાવનાઓ વીચસ્સ વચસ્સ
અલિયવચણ-વેરમણ-પરિરક્ખણદ્વયાએ । પદમ સોઝણ
સંવરદ્ધ પરમદ્ધ સુદ્ધ જાણિઝણ ન વેગિય, ન તુરિય, ન ચવલં
ન કડુયં, ન ફરુસ, ન સાહસ, ન ય પરસ્સ પીલાકર
સાવજ્જ સચ્ચ ચ મિય ચ ગાહગ ચ સુદ્ધ સગયમકાહલં
ચ સમીક્ખિય સજણેણ કાલમ્મિય વત્તઠ્ઠવ । એવ અણુર્વાદિ-
સમિદ્ધજોગેણ ભાવિઓ ભવદ્ધ અતરપ્પા સજયકરચરણનયણ-
વચણો સૂરો સચ્ચજ્જવસંપ્પગો ॥ સૂ૦૪ ॥

ટીકા— તસ્મ ’ તસ્ય પ્રતિદ્વસ્ય ’ વીચસ્સ વચસ્સ ’ દ્વિતીયસ્ય વ્રતસ્ય
ઈમાઃ=વક્ષ્યમાણાઃ પ્રથમ ’ ભાવનાઓ ’ ભાવનાઃ ’ અલિયવચણવેરમણપરિરક્ખણ-

વચન કહેજાતે હૈં વે નામાદિયુક્ત વચન કહલાતે હૈં । હસ પ્રકાર કે યે
સત્યવચન સયમ આદિ કે વાક્ય નહીં હોતે હૈં । એસે વચન સવ્યવ્રતી
બોલ સકતા હૈં । તથા વહ પ્રાકૃત આદિ ભેદ સે ચારહ પ્રકાર કી ભાષા
ઔર એકવચન આદિ કે ભેદ સે સોલહ પ્રકાર કા વચન ભી બોલ
સકતા હૈં । હસ પ્રકાર કે વચન બોલને મૈં પ્રભુ કી આજ્ઞા હૈં । એસે
વચન બોલને મૈં કિસી ભી જીવ કો વાધા નહીં પહુંચતી હૈં ॥ સૂ૦૩ ॥

અથ સૂત્રકાર સત્યવચન કી પાચ ભાવનાઓ કો કહને કે
અભિપ્રાય સે સર્વપ્રથમ વે અનુવિચિન્ત્ય સમિતિ નામ કી પ્રથમ ભાવના

નામાદિયુક્ત વચન કહેવાય છે, આ પ્રકારના તે સત્યવચનો સયમ આદિમા
બાધક થતા નથી એવા વચન સત્યવ્રતી બોલી શકે છે તથા તે પ્રાકૃત આદિ
લેદથી બાર પ્રકારની ભાષા અને એક વચન આદિ લેદથી બોળ પ્રકારના વચન
પણ બોલી શકે છે, આ પ્રકારના વચન બોલવાની પ્રભુની આજ્ઞા છે એવા
વચનો બોલવાથી કોઈપણ જીવને બાધા પહોંચતી નથી ॥ સૂ ૩ ॥

હવે સૂત્રકાર સત્યવચનની પાચ ભાવનાઓ દર્શાવવાને માટે સૌથી
પહેલા તેઓ અનુવિચિન્ત્ય સમિતિ નામની પહેલી ભાવનાનું વર્ણન કરે છે-

દ્વયા ' અલીકચનચિરમણપરિરક્ષણાર્થમ્-મૃપાવાદચિરમણતતપરિરક્ષણાર્થ સન્તિ । તાસુ ' પદમં ' પ્રથમા સમિતિયોગલક્ષણાં ભાવનામાદ- ' સોઝન ' શ્રુત્વા=સુગુરુ સમીપે સમારુપ્ય, તથા- ' પરમદ્વ ' પરમાર્થ-પરમતત્ત્વ પ્રથમભાવનારહસ્ય ' સંવરદ્વ ' સવરાર્થ-સવરસ્ય-મૃપાવાદચિરતિલ્લક્ષણમ્ય અર્થ=પ્રયોજન-મોક્ષલક્ષણમ્, અથવા સવરઃ=કર્મનિરોધણ્ય અર્થઃ પ્રયોજન યસ્ય સ ત તથોક્તમ્, યદ્વા-સવરસ્ય= પ્રસ્તુતસંવરાધ્યયનસ્ય અર્થ=ચાચ્ય ' સુદ્વ ' સુદ્વ-સમ્યક્ ' જાણિઝન ' જ્ઞાત્વા ન=નૈવ ' વેગિય ' વેગિત=નદીપ્રવાહ યદ્વેગયુક્ત વચન વચ્ચમિત્યગ્રેણ સમ્બન્ધઃ, તથા-ન નૈવ ' તુરિય ' સ્થિતિ-ચાત્યાયત્ત્વ ત્વરાયુક્ત વચનચાશ્ચર્યાત્, ન=નૈવ

કહતે હૈં- ' તસ્સ ઇમા ' इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(તસ્સ ત્રીયસ્સ વચસ્સ ઇમા પચ ભાવનાઓ) ઉસ પ્રસિદ્ધ દ્વિતીય મહાવ્રત કી યે વક્ષ્યમાણ પાંચ ભાવનાઓ (અલિયવચણવેરમણ પરિરક્ષણદ્વયાઈ) ઉસ અલીકચન ચિરમણરૂપ સત્યવ્રત કી રક્ષા કે લિયે હૈં । ઉનમૈં (પદમ) પ્રથમ ભાવના ઇસ પ્રકાર હૈં- (પરમદ્વ સવરદ્વ સોઝન) સુગુરુ કે સમીપ પ્રથમ ભાવના કે રહસ્ય કો કિ જો રહસ્ય મૃપાવાદ ચિરતિરૂપ પ્રયોજન ગાલા હૈં, અથવા કર્મનિરોધરૂપ સવર હી જિસકા પ્રયોજન હૈં, અથવા ઇસ પ્રસ્તુત સવરાધ્યયન કે વાચ્યાર્થ કો સુનકરકે (સુદ્વ જાણિઝન) અઠ્ઠી તરહ જાન કરકે (ન વેગિય) નદી કે પ્રવાહ કી તરહ વેગયુક્ત વચન સાધુ કો નહીં ચોલના ચાહિયે ઇસ પ્રકાર "વચ્ચમ્ય" શબ્દ કા સમઘ સવ કે સાથ લગા લેના ચાહિયે । (ન તુરિય) ચાત્યા-વધુરે-કી તરહ ત્વરાયુક્ત વચન ચચલતા સે યુક્ત

" તસ્સ ઇમા " इत्यादि—

ટીકાર્થ—" તસ્સ ત્રીયસ્સ વચસ્સ ઇમા પચ ભાવનાઓ " તે પ્રસિદ્ધ ખીલ મહાવ્રતની આ વક્ષ્યમાણ પાચ ભાવનાઓ " અલિયવચણવેરમણપરિરક્ષણ-દ્વયાઈ " તે અલીક-અસત્ય-ચિરમણરૂપ સત્યવ્રતની પરિરક્ષાને માટે છે તેમા " પદમ " પહેલી ભાવના આ પ્રમાણે છે- " પરમદ્વ સવરદ્વ સોઝન " સદ્ગુરુ પાસે પહેલી ભાવનાનું રહસ્ય કે જે મૃપાવાદ ચિરતિરૂપ પ્રયોજનવાળું છે, અથવા કર્મ નિરોધરૂપ સવર જે પ્રયોજન છે, અથવા આ પ્રસ્તુત સવરાધ્યયનનો વાચ્યાર્થ સામગ્રીને " સુદ્વજાણિઝન " સારી રીતે બાણીને " ન વેગિય " નદીના પ્રવાહની જેમ વેગયુક્ત વચન સાધુએ બોલવા જેઠાં નહીં આ રીતે " વચ્ચમ્ય " શબ્દનો સમઘ બધા સાથે બોલી લેવો " ન તુરિય " ચાત્યા-વધુરા-ની જેમ ત્વરાયુક્ત " ન ચચલ " ઘોડાની ગતિ

‘चपल’ चपल=हयगमनवच्चपलभावमन्वितम्, न=नैव ‘कडुय’ निम्नवत्
कडुकम् अर्थतः, न=नैव ‘फरुस’ परुष-कठोर-पापाण्यत्कठोरभावयुक्त, तथा
न=नैव ‘साहसम्’- उन्मत्तवत् अविचारित, तथा-‘न य’ न च ‘परस्स’
परस्य पीडाकर=दुःखजनक ‘सावज्ज’ सावध=सपाप वचन उक्तव्यम् । उक्त-
दोषदुष्ट वचन न वक्तव्यमित्यर्थः । तर्हि कीदृश वचन वक्तव्यम् ? इत्याह-‘सच्च
च=मद्भूतार्थत्वात् ‘हिय च=परिणामसुखजनकत्वात्, ‘मिय’ मितं च, परि-
मिताक्षरत्वात्, तथा-‘गाहग’ ग्राह्य=श्रोतुरर्थप्रतीतिजनकत्वात्, प्रीतिजनक-
त्वात्, ‘सुद्ध’ शुद्ध-वेगितत्वादोपरहितत्वात्, तथा-‘सगय’ सगतम्=
युक्तियुक्तत्वात्, ‘अकाहल’ अकाहल=मन्मनाक्षररहितत्वात्, च=पुनः ‘समि-
क्खिय’ समीक्षित=पूर्वं बुद्ध्या पर्यालोचितत्वात्, एतादृश वचन ‘सजएण’

(न चवले) धोडे के गमन की तरह चपलभाव से युक्त (न कडुय)
नीम की तरह अर्धतः कडुक, इसी तरह (फरुस) पापाण की तरह
कठोर (न साहस) उन्मत्त के वचन की तरह अविचारित, और
(न य परस्स पीलाकर) पर को पीडाजनक (सावज्जा) सावध-
पापयुक्त ऐसे वचन नहीं घोलना चाहिये । किन्तु जो वचन (सच्च च)
सद्भूत अर्थ को विषय करने वाले होने से मत्थ हो, (हिय च)
परिणाम में सुखजनक होने से हितकारक हों, (मिय च) परिमित
अक्षरों से युक्त होने से जो मित हों, (गाहग च) श्रोता को अर्थ की
प्रतीति एव प्रीति के कराने वाले होने से ग्राह्य हों, (सुद्ध) वेगित्वादि
दोषों से रहित होने से शुद्ध हों, तथा (सगय) सगतयुक्ति युक्त हों,
(अकाहल) अकाहल हो मन्मन अक्षर से रहित हों, (समिक्खिय)
समीक्षित हों-बुद्धि से पहिले जिनका विचार अच्छी तरह कर लिया

जेवु अपगल्लव युक्त वचन, “न कडुय” नीमना जेवु ओटले के कडुक,
ओ न रीते “फरुस” पथर जेवु कठोर “न साहस,” उन्मत्तना वचन
जेवु अविचागी, अने “न य परस्स पीलाकर” जीलने पीडाजनक “सावज्जा”
सावध-पापयुक्त वचन घोलवा जेधजे नहीं पणु जे वचन “सच्च च”
यथार्थ अर्थने विषय जनार होवाथी मत्थ होय, “हिय च” परिणामे
सुखजनक होवाथी हितकारक होय “मिय च” परिमित अक्षरोवाणु होवाथी
जे मित होय, “गाहग च” श्रोताने अर्थनी प्रतीति अने प्रीति करानार
होवाथी ग्राह्य होय, “सुद्ध” वेगित्व आदि दोपरहित होवाथी शुद्ध होय,
तथा “सगय” सगत-युक्तियुक्त होय, “अकाहल” अकाहल होय-मन्मन
अक्षरो विनानु होय, “समिक्खिय” समीक्षित होय-बुद्धिथी जेने पडेला

દ્વયાદ્ય ' અલીકચચનવિરમણપરિરક્ષણાર્થમ્-મૃપાવાદવિરમણતતપરિરક્ષણાર્થ સન્તિ । તાસુ ' પદમે ' પ્રથમા સમિતિયોગલક્ષણાં માયનામાદ- ' સોઝળ ' શ્રુત્વા-સુગુરુ સમીપે સમાકર્ણ્ય, તથા- ' પરમટ્ટ ' પરમાર્થ-પરમતત્ત્વ પ્રથમમાયનારહસ્ય ' સવરહ ' સવરાર્થ-સવરસ્ય-મૃપાવાદવિરતિલક્ષણસ્ય અર્થ-પ્રયોજન-મોક્ષલક્ષણમ્, અથવા સવરઃ=કર્મનિરોધણ અર્થઃ પ્રયોજન યસ્ય સ ત તથોક્તમ્, યદ્વા-સવરસ્ય= પ્રસ્તુતસવરાધ્યયનસ્ય અર્થ-ગાન્ય ' સુદ્દુ ' સુદ્દુ-સમ્યક્ ' જાણિઝળ ' જ્ઞાત્વા ન=નૈવ ' વેગિય ' વેગિત=નદીમગાહ યદ્વેગયુક્ત વચન વક્તવ્યમિત્યગ્રેણ સમ્બન્ધઃ, તથા-ન નૈવ ' તુરિય ' તરિત-વાત્યાયત્ત્વ ત્વરાયુક્ત વચનચાશ્ચલ્યાત્, ન=નૈવ

કરતે હે- ' તસ્સ ઇમા ' ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(તસ્સ વીયસ્સ વયસ્સ ઇમા પચ ભાવનાઓ) ઉસ પ્રસિદ્ધ દ્વિતીય મહાવ્રત કી યે વક્ષ્યમાણ પાચ ભાવનાઓ (અલિયવચ્ચણવેરમણ પરિરક્ષણદ્વયાદ્ય) ઉસ અલીકચચન વિરમણરૂપ સત્યવ્રત કી રક્ષા કે લિયે હૈં । ઉનમેં (પદમ) પ્રથમ ભાવના ઇમ પ્રકાર હૈં-(પરમટ્ટ સવરહ સોઝળ) સુગુરુ કે સમીપ પ્રથમ ભાવના કે રહસ્ય કો કિ જો રહસ્ય મૃપાવાદ વિરતિરૂપ પ્રયોજન ગાલા હૈં, અથવા કર્મનિરોધરૂપ સવર હી જિસકા પ્રયોજન હૈં, અથવા ઇસ પ્રસ્તુત સવરાધ્યયન કે વાચ્યાર્થ કો સુનકરકે (સુદ્દુ જાણિઝળ) અઠ્ઠી તરહ જાન કરકે (ન વેગિય) નદી કે પ્રવાહ કી તરહ વેગયુક્ત વચન સાધુ કો નહીં ઘોલના ચાહિયે ઇસ પ્રકાર "વક્તવ્ય" શબ્દ કા સબધ સન કે સાથ લગા લેના ચાહિયે । (ન તુરિય) વાત્યા-વધૂરે-કી તરહ ત્વરાયુક્ત વચન ચલતા સે યુક્ત

" તસ્સ ઇમા " ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—" તસ્સ વીયસ્સ વયસ્સ ઇમા પચ ભાવનાઓ " તે પ્રસિદ્ધ બીજી મહાવ્રતની આ વક્ષ્યમાણ પાચ ભાવનાઓ " અલિયવચ્ચણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાદ્ય " તે અલીક-અસત્ય-વિરમણરૂપ સત્યવ્રતની પરિરક્ષાને માટે છે તેમા " પદમ " પહેલી ભાવના આ પ્રમાણે છે— " પરમટ્ટ સવરહ સોઝળ " સદ્ગુરુ પાસે પહેલી ભાવના રહસ્ય કે જે મૃપાવાદ વિરતિરૂપ પ્રયોજનવાળું છે, અથવા કર્મ નિરોધરૂપ સવર જે પ્રયોજન છે, અથવા આ પ્રસ્તુત સવરાધ્યયનનો વાચ્યાર્થ સાક્ષીને " સુદ્દુજાણિઝળ " સારી રીતે જાણીને " ન વેગિય " નદીના પ્રવાહની જેમ વેગયુક્ત વચન સાધુએ બોલવા જોઈએ નહીં આ રીતે " વક્તવ્ય " શબ્દનો સબધ બધા માથે જોડી લેવો " ન તુરિય " વાત્યા-વધૂરા-ની જેમ ત્વરાયુક્ત " ન ચલ " ઘોડાની ગતિ

અથ ક્રોધનિગ્રહરૂપા દ્વિતીયા ભાગનામાહ--‘ યીય કોહો ’ ઇત્યાદિ

મૂલમ્—ત્રીય કોહો ણસેવિયઠ્ઠો, કુદ્ધો ચડિક્કિઓ માણુસો
અલિય મળેજ, પિસુણં મળેજ, ફરુસ મળેજ, અલિય પિસુણં
ફરુસં મળેજ, કલહ કરેજ, વેર કરેજ, વિગહ કરેજ, કલહ
વેર વિગહ કરેજ, સચ્ચં હળેજ, સીલ હળેજ, વિણય હળેજ
સચ્ચ સીલ વિણય હળેજ, વેનો મળેજ, વત્થું મળેજ, ગમ્મો
મળેજ, વેસો વત્થું ગમ્મો મળેજ, એવ અદ્દં ચ એવમાઇયં

પૂર્વક બોલના ઇસકા નામ ઝણુવિચિન્ત્ય ભાષણ છે । यह भाषा समिति-
रूप है । सत्य में और भाषा समिति में कुछ भेद कहा गया है वह
यह है कि हरएक के साथ सभाषण व्यवहार में विवेक रखना तो भाषा
समिति है । आर अपने समशील साथु पुरुषों के साथ सभाषण
व्यवहार में हित मित और यथार्थवचन का उपयोग करना सत्यव्रतरूप
यतिवर्म है । उस भाषणा से इस सत्यव्रत की स्थिरता होती है । बोलते
समय साथु को वेग से, त्वग से और चपलता से नहीं बोलना चाहिये ।
और न बिना विचारे ही बोलना चाहिये । बोलने का जब समय आवे
तब ही सत्य, हित, मित वचन बोलना चाहिये । अविचारित और
अस्पष्ट वचन नहीं बोलना चाहिये । उस तरह की वचन प्रवृत्ति में
सावधान घना हुआ साथु सत्यव्रत को सुशोभित करता हुआ प्रत्येक
अपनी कर चरण आदि की प्रवृत्ति को यतनापूर्वक करता रहता है ॥ सू० ४॥

વિચિન્ત્ય ભાષણ ઠહે છે તે ભાષાસમિતિરૂપ છે સત્યમા અને ભાષાસમિતિમા
કેટલાક ભેદ બતાવવાના આવ્યા છે તે એવા પ્રકારના છે કે દરેકની માથે
વાતચીતમા વિવેક રાખવો એ તો ભાષાસમિતિ છે અને પોતાના મનશીલ
સાધુઓ માથે વાતચીતમા હિત, મિત અને યથાર્થ વચનનો ઉપયોગ કરવો
તે સત્યવ્રતરૂપ યતિવર્મ છે આ ભાષનાથી તે સત્યવ્રત દૃઢ વાય છે બોલતી
વખતે સાધુએ વેગથી ત્વગથી અને ચપલતાથી બોલવું બેઠુંએ નહીં વિના
વિચારે પણ બોલવું બેઠુંએ નહીં બ્યારે બોલવાનો અવસર આવે ત્યારે
જ સત્ય, હિત, મિત વચન બોલવા બેઠુંએ અવિચારિત અને અસ્પષ્ટ વચન
બોલવા બેઠુંએ નહીં આ પ્રકારની વચન પ્રવૃત્તિમા સાવધાન બનેલ સાધુ
સત્ય મતને સુશોભિત કરતા, પોતાની ડગણ ચગણ આગિની પ્રત્યેક પ્રવૃત્તિને
યતનાપૂર્વક કરતા રહે છે । સૂ० ૪ ॥

સયતેન=સાધુના 'કાલમિત્ર ય' કાલે ચ=અગરે 'ધન-૩' યત્-યમ્ । ધવમ્=અનેન પ્રકારેણ 'અણુવીડ સમિદ્ધજોગેણ' અનુવિચિત્યમિતિયોગેન અનુવિચિત્ય=યયો લોચ્ય યા સમિતિયોગેન=ભાષારૂપાસમિતિઃ, તમ્યા યોગેન 'ભાવિઓ' ભાવિતઃ=અતરૂપા 'અન્તરાત્મા=જીવઃ—' સજયકરચરણનયણયયણો 'સયતકરચરણનયનવદન સયત = સમ્યગ્ગતનાયુક્ત કરચરણનયનવદન યસ્ય સ તયોક્ત-સન્ સમાહિતેન્દ્રિયઃ સન્નિત્યર્થઃ, 'સૂરો' ગુરુઃ=પરાક્રમગાત્રી, 'સન્નચ્ચજ્જવસપન્નો' સત્તા-ર્જવસપન્ન-સત્યમ્=અમૃતા આર્જવમ્=ઋજુતા, તામ્યા સપન્નો-યુક્તો ભવતિ । હત્યેષાપ્રથમા ભાવના ॥ મૂ-૪ ॥

ગયા હો એસે હોં, એસે હી વચન સાધુ કો અગર આને પર-જય તથ નહીં કિન્તુ ઘોલને કા જય સમય ઉપસ્થિત હો તવ ઘોલના ચાહિયે । (ઇવ) હસ પ્રકાર (અણુવીડ સમિદ્ધ જોગેણ) અનુવિચિત્ય ભાષાસમિતિ કે યોગ સે-વિચાર કર ઘોલને રૂપ ભાષાસમિતિ કે સયત સે (ભાવિઓ અતરૂપા) ભાવિત હુઆ જીવ (સજયકરચરણનયણયયણો) અછી તરહ યતના સે યુક્ત કર-દાય, ચરણ-પૈર, નયન-નેત્ર ઇવ વદન-મુલ્લાલા ધનકર, અર્થાત્ સમાહિત ઇન્દ્રિયોં લાલા હોકર (સૂરો) પરાક્રમ-શાલી ધન જાતા હૈ, અર્થાત્ સત્યમહાવ્રત કી આરાધના મે આપે હુપ ઉપસર્ગોં ઔર પરીપર્હોં કો જીતને મેં શક્તિશાલી હો જાતા હૈ । તથા (સન્નચ્ચજ્જવસપન્નો ભવહ) સત્ય ઔર ઋજુતા સે સપન્ન ધન જાતા હૈ ।

ભાવાર્થ—અહિંસા વ્રત કી તરહ સત્યવ્રત કી બી પાંચ ભાવનાઈ હૈં । ઊનમે પહિલી ભાવના અનુવિચિત્ય ભાષા સમિતિ હૈ । વિચાર-

સારી રીતે વિચાર કરી લીધો હોય, એવા વચનો જ સાધુએ અવસરે-ગમે ત્યારે નહીં, પણ બોલવાનો સમય ઉપસ્થિત થાય ત્યારે બોલવા બોધએ “ ઇવ ” આ પ્રકારે “ અણુવીડ સમિદ્ધ જોગેણ ” અનુવિચિત્ય ભાષા સમિતિના યોગથી - વિચાર કરીને બોલવારૂપ ભાષા સમિતિના સબધથી “ ભાવિઓ અતરૂપા ” ભાવિત બનેલ ઇવ “ સજયકરચરણનયણયયણો ” સારી રીતે યતનાયુક્ત હોય, પગ, નેત્ર અને મુખવાળા થઈને, અથવા સમાહિત ઇન્દ્રિયોવાળા થઈને “ સૂરો ” પરાક્રમગાત્રી બની જાય છે એટલે કે સત્ય મહા વ્રતની આરાધનામાં નહેલ ઉપસર્ગોં અને પરીપરોંને છતવાને સમર્થ બની જાય છે, તથા “ સન્નચ્ચજ્જવસપન્નો ભવહ ” સત્ય અને ઋજુતાથી યુક્ત બની જાય છે

ભાવાર્થ—અહિંસાવ્રતની જેમ સત્યવ્રતની પણ પાંચ ભાવનાઓ છે તેમાં પહેલી ભાવના અનુવિચિત્ય ભાષાસમિતિ છે વિચારપૂર્વક - તેને અનુ

મળેજ્જ, કોહગિસપલિત્તો, તમ્હા કોહો ન સેવિયવ્વો ।
 એવ યંતીઙ્ઘ ભાવિઓ મવઙ્ઘ અંતરપ્પા સજયવરચરણનયણ-
 વયણો સૂરો સચ્ચજ્જવસંપન્નો ॥ સૂ. ૫ ॥

ટીકા—‘વીય’ દ્વિતીયા ભાવનામદ્—‘કોહો’ ક્રોધ=તમાદિઅશાન્તિ=
 અશાન્તિપરિણતિરૂપો ‘ન સેવિયવ્વો’ ન સેવિતવ્ય । કથ ન સેવિતવ્ય? इत्याह
 —‘કુદ્ધો’ કુદ્ધ=ક્રોધયુક્ત; ‘ચઢિયિઓ’ ચાણ્ડિનિયત=ચાણ્ડિય=રૌદ્રરૂપત્વ
 સજાતમસ્ય ચાણ્ડિનિયત.=રૌદ્રરૂપયુક્ત ‘માણુમો માણુપ’ અલિય ‘અલીકમ્’
 અસત્ય ‘મળેજ્જ’ મળેત્=ભાષેત, તથા—‘પિમુણ’ પિમુન=પરદોષમૂલક વચન
 મળેત્, ‘ફરુસ’ પરુપ=પરમમોહાટક મળેત્, તથા—‘અલિય પિમુણ ફરુસ’
 અલીક પિમુન પરુપમેતત્રિતયમપિ મળેત્ । તથા—‘કરેજ્જ’ વાગ્યુદ્ધ ‘કરેજ્જ’
 કુર્વાત્, ‘વેર’ વૈર=શત્રુતા ‘કરેજ્જ’ કુર્વાત્, ‘વિગહ’ વિમથા=વિગતાર્થ

અવ સૂત્રકાર ક્રોધનિગ્રહરૂપ દ્વિતીયભાવના ક્રો પ્રકટ કરતે છે—
 ‘વીય કોહો’ इत्यादि,

ટીકાર્થ—ક્રોધ નિગ્રહરૂપ જો દ્વિતીય ભાવના હૈ ત્તમે (કોહો ન
 સેવિયવ્વો) ક્રો ય કા સેવન નહીં કિયા જાતા હૈ । ય્યોં કિ જો (કુદ્ધો
 મણુમો) ક્રોધયુક્ત પુરુષ હોતા હૈ ત્તહ (ચઢકિઓ) રૌદ્રરૂપ સે યુક્ત
 બન જાતા હૈ । એસા મનુષ્ય (અલિય મળેજ્જ) ઝૂઠ ચોલ દેતા હૈ (પિ
 મુણ મળેજ્જ) પર કે દોષો કે સ્વચક્રવચન ચોલ દેતા હૈ (ફરુસ મળેજ્જ)
 દૂસરોં કે મર્મકો છેદને વાલે વચનોં કો કહ દેતા હૈ, તથા (અલિય
 પિમુણ ફરુસ મળેજ્જ) અલીક, પિમુન ઓર પરુપ, ઇન ત્રીનોં તરહ કે
 વચનોં કા ભી પ્રયોગ કર દેતા હૈ । (કરેજ્જ કરેજ્જ) પરસ્પર મે વાગ્યુદ્ધ

હવે સૂત્રકાર ક્રોધનિગ્રહરૂપ બીજી ભાવનાનુ સ્પષ્ટીકરણ કરે છે
 “વીય કોહો” इत्यादि—

ટીકાર્થ—ક્રોધનિગ્રહરૂપ જે બીજી ભાવના છે તેમા “કોહો ન સેવિય
 વ્વો” ક્રોધનુ સેવન ન કરવુ બોધ્યે આરણ કે જે “કુદ્ધો મણુમો” ક્રોધી પુરુષો
 હોય છે તેઓ “ચઢકિઓ” રૌદ્રરૂપવાળા બની જાય છે એવો મનુષ્ય
 “અલિય મળેજ્જ” જૂઠું બોલી નાખે કે “પિમુણ મળેજ્જ” બીજાના દોષ
 દર્શાવચનો બોલી નાખે છે “ફરુસ મળેજ્જ” બીજા લોકોના મર્મને છેદ
 નારા વચનો બોલી જાય છે, તથા “અલિય પિમુણ ફરુસ મળેજ્જ” અસત્ય
 પિમુન અને પરુપ, જે ત્રણે પ્રકારના વચનોના પ્રયોગ કરી નાખે કે “કરેજ્જ

अथ तृतीया लोभनिग्रहरूपा भावनामाह—‘तइय लोहो’ इत्यादि ।

मूलम्—तइयं लोहो न सेत्रियव्वो, लुद्धो लोलो भणेज्ज
अलियं । खेत्तस्स वेत्थुस्स वा कएण लुद्धो लोलो भणेज्ज

भान नहीं रहता है कि इन हमारे वचनों से हमारे प्राणियों के प्राणों पर क्या बीतेगी । झूठ बोलने में उसे योडा सा भी सकोच नहीं होता । दूसरे की चुगली करने से वह नहीं चुकता—पर के ऊपर असत्यदोषा-रोप करने से वह पीछे नहीं हटता । हर किसी के साथ कलह करता रहता है । शत्रुता करने में वह बड़ा निपुण होता है । शास्त्र विन्दु पोलने की इसे योड़ी मी भी चिन्ता नहीं होती । जो पदार्थ जिस रूप में होता है उसे उस रूप में कहने में इसे शर्म आती है । विनीतभाव की इसकी दृष्टि में कोई कीमत नहीं होती है । जब यह क्रोधरूपी अग्नि से सतस हो उठता है—तब इसकी परीस्थिति पूर्वोक्त प्रकार से तो होती है परन्तु इससे अधिक भी कभी घन जाती है । ऐसी स्थिति में इसका कोई हितैषी नहीं रहता है । सब ही इसका अनादर करने लगते हैं । इसलिये इस क्रोध का परिहार करना चाहिये । इस प्रकार विचार कर जो मुनिजन क्षान्ति परिणति से इस क्रोध को जीतते हैं अर्थात् क्रोध नहीं करते हैं वे ही इस द्वितीयभावना से अपने अन्तःकरण को वासित कर सत्यव्रत को स्थिर बना लेते हैं ॥ सू० ५ ॥

ओलवा लागे छे तेने ते वाततु पणु लान रहेतु नथी ठे भारा वथनेथी
भीला प्राणीओना एवने केटलु दुण थाय छे असत्य ओलवामा तेने जरा
पणु सकोथ थतो नथी भीलानी निंदा करता पणु ते अटठतो नथी—अन्यनी
ऊपर असत्य दोषारोप करता ते पाओ छठतो नथी हुरजोर्ध साथे ते कलह
करतो रहि छे हुरभनावट करवामा ते निपुणु होय छे शास्त्रविद्ध ओलवामा
तेने जरा पणु दुण थतु नथी जे पदार्थ जे इंचे होय छे ते इंचे तेने
ठोवामा तेने शम्भ लागे छे तेनी दृष्टिजे विनीत लावनी कोध कीमत होती
नथी ज्यारे कोधरूपी अग्निथी सतस थछ जय छे त्यारे तेनी डालत पूर्वोक्त
प्रकारनी तो थाय ज छे पणु तेनाथी अधिद पणु जोध जोध वार जने ठे ओवी
स्थितिमा तेना जोध हितैषी रहेतो नथी सौ तेना अनादर करवा माडे ठे
तेथी ते कोधने त्याग करवे ओधजे आ गीते पियारीने जे मुनिजन क्षान्ति
परिणतिथी जे कोधने एते ठे, ओटवे के कोध करता नथी, तेओ ज आ भील
लावनाथी पोताना अत करणुने लावित करीने सत्यव्रतने स्थिर करी दे ओसूण्या

एव जातीय वचन 'कोहग्निमपलितो' क्रोधाग्निमपदीप्तो नरो 'भणञ्ज' भणेत=कथयेत्, 'तम्हा' तस्मात् शरणात् 'कोहो न सेविष्यो' क्रोधो न सेवितव्यः। एवम्=अनेन प्रसारेण 'स्वतीइ' क्षान्त्या=उपशमनेन 'भाविओ' भावितः 'अतरप्पा' अतरात्मा=जीव सयतकरचरणनयनवदन. सूरः सत्या जवसंपन्नो भवति ॥ ५ ॥ इति द्वितीया भावना ॥ २ ॥

घचनों को (कोहग्निसपलितो भवेज्ज) क्रोधाग्नि से सतप्त हुआ मनुष्य कह दिया करता है। (तम्हा कोहो न सेविष्यो) इसलिये क्रोध का कभी भी समयभीजन को सेचन नहीं करना चाहिये। (एव-स्वतीइ भाविओ अतरप्पा) उस प्रकार क्षान्तिपरिणति से चासित हुआ जीव (सजयकरचरणनयनवयणो) सयत कर, चरण, नयन बदन वाला हो जाता है और (सूरो) अपने सत्यव्रत की आराधना में परा-क्रमशाली होता हुआ (सच्चज्जवसपन्नो भवइ) सत्य और आर्जव इन दोनों से सपन्न धन जाता है।

भावार्थ—सूत्रकार ने इस सूत्र द्वारा सत्यव्रत की दूसरी भावना का वर्णन किया है। वह भावना क्रोध निग्रह रूप है। क्षान्तिपरिणति क्रोध की होती है। मनुष्य पर जब इसका आवेश आ जाता है तो उसकी आकृति बदलजाती है उसका रूप रौद्र हो जाता है। इस स्थिति में उस का वचन व्यवहार सत्यधर्म से प्रतिकूल हो जाता है। वह इसके आवेश में घड़ा तद्वा बोलने लग जाता है। उसको इस बात का

एवमाइय” એજ પ્રકારના બીજા પણ અસત્ય વચનો “કોહગ્નિસપલિતો મવેજ્જ” ક્રોધાગ્નિયુક્ત મનુષ્ય બોલી બાય છે “તમ્હા કોહો ન સેવિષ્યો” તે કારણે સયમી લોકોએ કદી પણ ક્રોધ કરવો બોધે નહીં “એવ સ્વતીઈ ભાવિઓ અતરપ્પા” આ રીતે ક્ષાન્તિપરિણુતિથી ભાવિત થયેલ એવ “સજય કરચરણનયણવયણો” સયત, હાથ, પગ, નયન, વદનવાળો થઈ બાય છે અને “સૂરો” પોતાના સત્યવ્રતની આરાધનામાં પ્રાક્રમ “સચ્ચજ્જવસપન્નો મવઈ” સત્ય અને આર્જવ, એ બંનેથી યુક્ત બની બાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકરે આ સૂત્રદ્વારા સત્યવ્રતની બીજી ભાવનાનું વર્ણન કર્યું છે તે ભાવના ક્રોધનિગ્રહરૂપ છે ક્ષાન્તિપરિણુતિથી ઉલટી પરિણુતિ ક્રોધની હોય છે, મનુષ્ય પર બ્યારે તેનો આવેશ આવે છે ત્યારે તેની આકૃતિ બદલાઈ બાય છે, તે રૌદ્રરૂપ ધારણ કરે છે, આ પરિસ્થિતિમાં તેના વચનો તથા વ્યવહાર સત્ય ધર્મથી પ્રતિકૂળ થઈ બાય છે તે તેના આવેશમાં ગમે તેવું

‘वत्थुस्स’ वास्तुनः=वासभूमे वा ‘कएण’ कृतेन-कृते इत्यर्थः, अत्र हेत्वर्थे तृतीया, एव सर्वत्र ज्ञेयम् । लुब्धो लोलोऽलीक भणेत् ॥ १॥ तथा-‘कित्तीए’ कीर्त्ते: ‘लामस्स’ लामस्य वा कृते लुब्धो लोलोऽलीक भणेत् ॥ २ ॥ ‘इड्डीए’ ऋद्धे: सपत्ते: ‘सौक्खस्स’ सौख्यस्य वा कृते लुब्धो लोलोऽलीक भणेत् ॥ ३ ॥ भक्तस्य पानस्य वा कृते लुब्धो लोलोऽलीक भणेत् ॥ ४ ॥ ‘पीढस्स’ पीडस्य ‘फलगस्स’ फलरस्य वा कृते लुब्धो लोलोऽलीक भणेत् ॥ ५ ॥ तथा—‘सज्जाए’ शय्याया: ‘सयारगस्स’ सस्ताररस्य वा कृते लुब्धो लोलोऽलीक भणेत् । ६ ॥ ‘वत्थस्स’ वत्थस्य=चोलपट्टदे ‘पत्तस्य’ पात्रस्य वा कृते लुब्धो

कृट वचन बोल सकता है (खेत्तस्स वत्थुस्स वा कएण लुब्धो लोलो अलिय भणेज्ज) कृटवचन-झूठवचन बोलने के निमित्त ये उसे होते हैं-वह लोभी मनुष्य चञ्चलचित्त होता हुआ खेत अथवा निवासभूमि-गृह के निमित्त झूठवचन कह सकता है (कित्तीए लामस्स वा कएण लुब्धो लोलो अलिय भणेज्ज) अपनी कीर्ति अथवा लाम के निमित्त असत्य-भाषण कर सकता है (इड्डीए सोक्खस्स वा कएण लुब्धो लोलो अलिय भणेज्ज) ऋद्धि-सपत्ति अथवा सौख्यके निमित्त असत्यवचन बोल सकता है । (भक्तस्स पाणस्स वा कएण लुब्धो लोलो अलिय भणेज्ज) आहार अथवा पानी के निमित्त असत्यवचन कह सकता है (पीढस्स फलगस्स वा कएण लुब्धो लोलो अलिय भणेज्ज) पाट अथवा बाजोठ के निमित्त असत्यवचन कह सकता है, (सज्जाए सयारगस्स वा कएण लुब्धो लोलो अलिय भणेज्ज) शय्या अथवा सस्तारक के लिये वह लोभ चञ्चलचित्त होकर असत्य बोल सकता है (वत्थस्स पत्तस्स वा कएण

वा कएण लुब्धो लोलो अलिय भणेज्ज ” तेने कृट वचन-असत्य वचन बोलवाना निमित्त आवा डोय छे-ते बोली मनुष्य यथल चित्त थता भेतर अथवा निवासभूमि-घरने निमित्त असत्य वचन कही शके छे “कित्तीए लामस्स वा कएण लुब्धो लोलो अलिय भणेज्ज ” ते पोतानी कीर्ति अथवा लालने भाटे असत्य बोली शके छे “इड्डीए साक्खस्स वा कएण लुब्धो लोलो अलिय भणेज्ज ” ऋद्धि सपत्ति अथवा सुखने भाटे ते असत्य वचन बोली शके छे “भक्तस्स पाणस्स वा कएण लुब्धो लोलो अलिय भणेज्ज ” आहार अथवा पाणीने भाटे ते असत्य वचन कही शके छे ‘पीढस्स फलगस्स वा कएण लुब्धो लोलो अलिय भणेज्ज ” पाट अथवा झलने निमित्त ते असत्य वचन बोली शके छे “सज्जाए सयारगस्स वा कएण लुब्धो लोलो अलिय भणेज्ज ” शय्या अथवा सस्तार भाटे ते बोली यथल चित्त थता असत्य बोली शके छे “वत्थस्स

અલિય ૧, કિત્તીય લાભસ્સ વા કણ લુદ્ધો લોલો ભણેજ્જ
 અલિય ૨, ઇદ્ધીય સોક્કસસ્સ વા કણ, લુદ્ધો લોલો ભ-
 ણેજ્જ અલિયં ૩, ભત્તસ્સ પાણસ્સ વા કણ, લુદ્ધો લોલો
 ભણેજ્જ અલિયં ૪, પીઠસ્સ ફલગસ્સ વા કણ, લુદ્ધો
 લોલો ભણેજ્જ અલિય ૫, સેઙ્ગાણ સધારગસ્સ વા કણ,
 લુદ્ધો લોલો ભણેજ્જ અલિયં ૬, વત્થસ્સ પત્તસ્સ વા કણ,
 લુદ્ધો લોલો ભણેજ્જ અલિયં ૭, કવલસ્સ પાયપુંછણસ્સ
 વા કણ, લુદ્ધો લોલો ભણેજ્જ અલિય ૮, સીસસ્સ સીસ-
 ણીય વા કણ, લુદ્ધો લોલો ભણેજ્જ અલિયં ૯, અન્નેસુ
 એવમાઇસુ વહુસુ કારણસણસુ લુદ્ધો લોલો ભણેજ્જ અલિયં ૧૦
 તમ્હા લોહો ન સેવિયન્વો, એવ મુત્તીય ભાવિઓ ભવઈ અ-
 તરપ્પા સંજયકરચરણનયણવયણો સૂરો સચ્ચજ્જવસંપન્નો ॥૬॥

ટાકા—‘તદ્ય’ તૃતીયા ભાવનામાહ—‘લોહો ન સેવિયન્વો’ લોમો ન
 સેવિતવ્ય । લોભસેવનેન કિં ભવેત્ ? इत्याह—‘લુદ્ધો’ લુદ્ધો=લોભયુક્તો નરો
 ‘લોલો’ લોલ=વચ્ચલ=પન્ ‘અલિય’ અલીક=ફટાવન ‘ભણેજ્જ’ ભણેજ્જ=
 કયયેત્ । કેન નિમિત્તેન લુદ્ધોઽલીક ભણેત્ ? इत्याह—‘સેત્તસ્સ’ ક્ષેત્રસ્ય

અથ સૂત્રકાર તૃતીય ભાવના જો લોભનિગ્રહ રૂપ હૈં ઉસે પ્રકટ
 કરતે હૈં—‘તદ્ય લોહો’ इत्यादि ० ।

ટીકાર્થ—(તદ્ય) લોભ નિગ્રહરૂપ તૃતીય ભાવના હસ પ્રકાર સે હૈં—
 (લોહો ન સેવિયન્વો) લોભ સેવન કરને યોગ્ય નહીં હૈં । કયો કિં
 (લુદ્ધો લોલો અલિય ભણેજ્જ) લોભ કે સેવન કરને સે પ્રાણી લુદ્ધ
 કહલાતા હૈં, ઓર વહ લોભ યુક્ત વના હુઆ મનુષ્ય ચચ્ચલ ચિત્ત હોકર

હવે સૂત્રકાર લોભનિગ્રહ નામની ત્રીજી ભાવનાનુ વર્ણન કરે છે “તદ્ય લોહો” ઈ

ટીકાર્થ—“તદ્ય” લોભનિગ્રહરૂપ ત્રીજી ભાવના આ પ્રમાણે છે—“લોહો
 ન સેવિયન્વો” લોભ સેવન કરવાને યોગ્ય નથી કારણ કે “લુદ્ધો લોલો અલિય
 ભણેજ્જ” લોભનું સેવન કરવાથી પ્રાણી લુપ્થ કહેવાય છે, અને તે લોભયુક્ત
 મનુષ્ય ચચ્ચલ ચિત્તવાળો થઈને ફટ વચન બોલી નાંડે કે, “સેત્તસ્સ વલ્લુસ્સ

અથ ચતુર્થી ધૈર્યમાયનામદ્-‘ ચતુર્થ ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—ચતુર્થ ન મીડયવ્વ, મીય ચુ મયા અહિતિ લહુઅ,
મીઓ અવિતિજ્જઓ મણ્સો, મીઓ મૂણ્હિ ધિપ્પહ, મીઓ
અન્ન પિ હુ મેસેજ્જા, મીઓ તવસજમ પિ હુ મુણ્જ્જા, મીઓ ય
કર લેતા હૈં ઓર (સુરો) અપને સત્યવ્રત કે પાલન મેં પરાક્રમશાલી
બન કર (સ્વચ્છજ્જવસપ્પો મવહ) મત્ય ઓર આજ્ઞવ વર્મ સે સપન્ન
હો જાતા હૈં ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને હસ સૂત્ર દ્વારા સત્યવ્રત કી તૃતીય ભાવના
કો કહા હૈં । હસ તૃતીય ભાવના કા નામ લોભનિગ્રહ હૈં । લોભ
કે નિગ્રહ કરને કે લિયે વિચારધારા હસમે પ્રકટ કી હૈં । ‘ લોભ હી
પાપ કા વાપ હૈં ’ એસા જ્વાલ કર લોભકે ફદેમેં નહીં ફસનાવાહિયે ।
જો લોભી હોતા હૈં વહ લુબ્ધક કહલાતા હૈં । લોભી કા ચિત્ત હરપક
વસ્તુ કી પ્રાપ્તિ કે નિમિત્ત ચલ હો ઉઠતા હૈં । લોભી વ્યક્તિ અપની
સ્વાર્થસિદ્ધિ કે નિમિત્ત છૂટ ચોલ સકતા હૈં । જોત, મકાન, ઋદ્ધિ, સુખ,
ભક્ત, પાન આદિ કો નિમિત્ત લેકર અસત્ય ભાષણ કરતા હૈં ।
અતઃલોભ કા નિગ્રહ કરના હી ઉચિત હૈં હસ પ્રકાર ભાવના ભા કર
જો હસ લોભ કો પરિત્યાગ સે અપની આત્મા કો વાસિત બનાતા હૈં
વહ અપને સત્યમહાવ્રત કો સ્થિર કર લેતા હૈં । હસકી પ્રત્યેક પ્રવૃત્તિ
સયમિત હોતી હૈં ॥ સુ = ૬ ॥

પરાક્રમગાળી બનીને ‘ સ્વચ્છજ્જવસપ્પો મવહ ’ મત્ય અને આજ્ઞવ ધર્મથી
યુક્ત થઈ જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રમા સત્યવ્રતની ત્રીજી ભાવનાનું વર્ણન કર્યું
છે આ ત્રીજી ભાવનાનું નામ લોભનિગ્રહ છે લોભનો નિગ્રહ કરવાને માટે
વિચારધારા આમા પ્રગટ કરી છે “ લોભ જ પાપનો વાપ છે ” આવો
વિચાર કરીને લોભની બળમા ફસાવું જોઈએ નહીં, જે લોભી હોય છે તે
લુબ્ધક કહેવાય છે લોભીનું ચિત્ત દરેક વસ્તુની પ્રાપ્તિ માટે ચચલ થઈ જાય
છે લોભી વ્યક્તિ પોતાનો સ્વાર્થ માધવાને માટે અસત્ય બોલી શકે છે ખેતર,
મકાન, સપત્તિ સુખ આદિ પાણી આદિને નિમિત્તે પણ તે અસત્યવચનો
બોલે છે તેથી લોભનો નિગ્રહ કરવો તે જ યોગ્ય છે જોવા પ્રકારની ભાવના
સેવાને જે આ લોભના પરિત્યાગથી પોતાના આત્માને વાસિત બનાવે છે,
તેઓ પોતાના સત્ય મહાવ્રતને સ્થિર કરી લે તેમની દરેક પ્રવૃત્તિ
સયમિત હોય છે ॥ સુ ૬ ॥

લોલોડ્લીક મણેત્ ॥૭॥ 'કચલસ્મ' કમ્બલસ્ય 'પાયપુછણસ્ત' પાદપ્રોઠ્ઠનસ્ય
 વા કૃતે લુઘ્વો લોલોડ્લીક મણેત્ ॥૮॥ તથા 'સીસમ્મા' શિવમ્ય 'સીમણી' શિપ્યાયા
 વા કૃતે લુઘ્વો લોલોડ્લીક મણેત્ ॥૯॥ 'અન્નેસુ' અન્યેતુ 'એવમાઇસુ'
 એવમાદિકેષુ=એવ પ્રકારેષુ વહુષુ કારણગતેષુ પ્રાપ્તેષુ લુઘ્વો લોલોડ્લીક મણેત્
 ॥ ૧૦ ॥ 'તમ્હા' તમ્માત્ કારણાત્ લોભો ન સેવિતવ્યઃ । એવમ્-અમુના પ્રકારેણ
 'મુત્તી' મુત્તયા=નિર્લોભતારૂપયા ભાવિત 'અતરપ્પા' અન્તરાત્મા=જીવઃ
 સયતકરચરણનયનવદનઃ શૂરઃ મત્યાર્જયસપત્નો મતિ ॥ ૧૦૬ ॥

॥ ઇતિ ત્તીયા ભાગના ॥

લુદ્ધો લોલો અલિય મણેજ્જ) ઇતી તરહ વગ્ગ અથવા પાત્ર કે લિયે
 ચચલ ચિત્ત યના હુઆ વહ લોભી જૂઠ વચન ગોલ મઝ્ઝના હૈ (કચલસ્સ
 પાયપુછણસ્સ વા કણ્ણ લુદ્ધો લોલો અલિય મણેજ્જ) કમ્બલ અથવા
 પાદપ્રોઠ્ઠન કે નિમિત્ત કો હેરુર વહ ચચલ ચિત્ત યના હુઆ લોભી મૃષા-
 વાદિ કહ સકના હૈ (સીસમ્મા સીસણી' વા કણ્ણ લુદ્ધો લોલો અલિય
 મણેજ્જ) શિવ્ય અથવા શિપ્યા કે નિમિત્ત લુઘ્વ વહ ચચલચિત્ત હોકર
 મૃષામાપણ કરતા હૈ (અન્નેસુ એવમાઇસુ વહુસુ કારણસણસુ લુદ્ધો
 લોલો અલિય મણેજ્જ) ઇતી તરહ ઓર ભી ઇનસે સૈકઠો કારણો કો
 નિમિત્ત કરકે વહ લોભી ચચલ ચિત્ત હોકર જૂઠ ગોલ સકતા હૈ
 (તમ્હા લોહો ન સેવિયવ્વો) ઇસલિયે લોભ સેવન કરને યોગ્ય નહીં હૈ ।
 (એવ મુત્તી' ભાવિઓ અતરપ્પા) ઇસ પ્રકાર નિર્લોભતારૂપ તૃતીય
 ભાવના સે વાસિત હુઆ અતરાત્મા-જીવ (સજયકરચરણનયનવયણો)
 અપને કર, ચરણ, નયન ઓર મુલકી પ્રવૃત્તિ કો યતનાચાર સે સયમિત

પત્તસ્સ વા કણ્ણ લુદ્ધો લોલો અલિય મણેજ્જ ” એ બ પ્રમાણે વક્ષ કે પાત્રને
 માટે ચચલ ચિત્ત થયેલ તે લોભી અમત્ય વચન બોલી શકે છે “ કચલસ્સ
 પાયપુછણસ્સ વા કણ્ણ લુદ્ધો લોલો અલિય મણેજ્જ ” કમ્બલ કે પગલૂગણીયા
 માટે તે ચચલ ચિત્ત બનેલ લોભી મૃષાવાદ કહી શકે છે “ સીસસ્સ સીસણી'
 વા કણ્ણ લુદ્ધો લોલો અલિય મણેજ્જ ” શિવ્ય અથવા શિપ્યાને નિમિત્તે લુઘ્વ
 તે ચચલ ચિત્ત મૃષાભાષણ કરી શકે તે “ અન્નેસુ એવમાઇસુ વહુસુ કારણ
 સણસુ લુદ્ધો લોલો અલિય મણેજ્જ ” આ રીતે આ સિવાયના સેઠો કારણોને
 નિમિત્તે તે લોભી ચચલચિત્ત થઈને અમત્ય બોલી શકે છે “ તમ્હા લોહો ન
 સેવિયવ્વો ” તેથી લોભ સેવન ઠરવાયોગ્ય નથી “ એવ મુત્તી' ભાવિઓ અત
 રપ્પા ” આ રીતે નિર્લોભતારૂપ ત્રીજી ભાવનાથી ભાવિત બનેલ અતરાત્મા-જીવ
 “ સજયકરચરણનયનવયણો ” પોતાના હાથ, પગ, નયન અને મુખની પ્રવૃત્તિને
 યતનાપૂર્વક સયમિત કરી લે છે અને “ સૂરો ” પોતાના સત્યવ્રતના પાલનમાં

तपः सयम चापि 'मुण्डजा' मुञ्चति=परित्यजति। तथा-भीतः 'भर' भारम्
=कार्यभार 'न नित्यरेज्जा' न निस्तारयति=न निर्गहयति। तथा-'सप्पुरिस-
निसेविय' सत्पुरुषनिषेवित च 'मग्ग' मार्गं भीतो न 'समत्थो' समर्थः=
पर्याप्तः 'अणुचरिड' अनुचरितुम्, सत्पुरुषासेवित मार्गं भयत्रस्तो न गन्तु
शक्नोतीति भावः। 'तम्हा' तस्माद् हेतोः 'भयस्स वा' भयस्य=भीते वा
'वाहिस्स' व्याधेः=रुमेण प्राणापहारिणः कुष्ठादे वा, 'रोगस्स' रोगस्य=
शीघ्रतया प्राणापहारिणो ज्वरादे वा 'जराए' जरायाः वा मच्चुस्स 'मृत्यो
वा' 'अन्नस्स' अन्यस्य=एभ्य इतरस्य वा 'एवमाइयस्स' एवमादिकस्य-एव

वना देता है, तथा (भीओ तवसजम पिहुमुण्डजा) वह तप सयम का
भी परित्याग कर देता हैं। (भीओ य भर न तित्वरेज्जा) भीत मनुष्य
शक्ति से इतना अधिक विहीन बन जाता है, अर्थात् उसमें इतनी
अधिक मानसिक दुर्बलता आ जाती है कि जिसकी वजह से वह किसी
भी कार्यभार को वहन नहीं कर सकता, अर्थात् किसी भी काम को
वह पूरा नहीं कर सकता। (सप्पुरिमनिसेविय च मग्ग भीओ न
समत्थो अणुचरिड) सत्पुरुष जिस मार्ग का सेवन करते आये हैं उस
मार्ग पर चलने के लिये भी वह विचारा समर्थ नहीं हो सकता हैं।
(तम्हा न भीइयव्व भयस्स वा वाहिस्स वा रोगस्स वा जराए वा
मच्चुस्स वा अन्नस्स वा एवमाइयस्स) इसलिये किसी भी प्रकार के
भय के, क्रम २ से प्राणों को अपहरण करनेवाली व्याधि के, अथवा
कुष्ठादिके, शीघ्रता से प्राणों का अपहरण करनेवाले ज्वर आदि रोग
के, वृद्धावस्था के, तथा मृत्यु के अथवा इन्हीं जैसी अन्य और कोई

तवसजम पिहुमुण्डजा" ते तप सयमने पणु परित्याग करी दे छे "भीओ य भर न
तित्वरेज्जा" अथभीत भाणुने ओटला णधा शक्तिहीन थध णय छे, ओटले छे तेनाभा
ओटली णधी माननिड दुर्णजता आवी णय छे डे जेना डारखे ते ओध पणु कार्यने
ओले उडावी गतेो नथी ओटले डे ओध पणु जमने ते पूरु डगी शक्ती नथी
"सप्पुरिसनिसेविय च मग्ग भीओ न समत्थो अणुचरिड" सत्पुरुषो जे मार्गनु सेवन
करता आव्या छे, ते मार्गे चालवाने पणु ते समर्थ णनी शक्ती नथी
"तम्हा न भीइयव्व भयस्स वा वाहिस्स वा रोगस्स वा जराए वा मच्चुस्स वा
अन्नस्स वा एवमाइयस्स" तेथी ओध पणु प्रकारना अथवा, कमे कमे प्राणुने
डरी लेनार व्याधिना, अथवा कुष्ठादिना, शीघ्रताथी प्राणु डगी लेनार ज्वर
आदि रोगना, वृद्धावस्थाना तथा मृत्युना अथवा तेमना जेवी ओर पणु प्रक्ष

મરં ન નિત્થરેજ્જા, સપ્પુરિસનિસેવિય ચમગં મીઓ ન સમત્થો
અણુચરિડં । તમ્હા ન મીઙ્ગયન્વ મયસ્સ વા વાહિસ્સ વા
રોગસ્સ વા જરાણ વા મચ્છુસ્સ વા અન્નસ્સ વા એવમાઙ્ગયસ્સ ।
એવ ધિજ્જેણ માવિઓ અતરપ્પા સજયકરચરણનયણવયણો સૂરો
સચ્ચજ્જવસપત્તો ॥ સૂ. ૭ ॥

ટીકા—‘ચડ્ઠ’ ચતુર્થી પ્રાનામાઃ—‘ન મીઙ્ગયન્વ’ ન મેતવ્ય=મય
ન કર્તવ્યમ્ । કથ મય ન કર્તવ્યમ્ ? इत्याह—‘મીય’ મીત મયયુક્ત પ્રાણિન
લહુ ‘મયા’ મયાનિ ‘લહુય’ લહુક=મીઘમ્ ‘અડિતિ’ આયન્તિ=પ્રાપ્તુવન્તિ,
તથા ‘મીઓ’ મીતઃ ‘મણુમો’ મનુપ્પયઃ ‘અવિતિજ્જઓ’ અદ્વિતીય=અસ-
હાયો મરતિ, અય પ્રાઃ—મીતો મનુપ્પયો ન કમ્પ્યાપિ સહાયકો મરતિ, ન કોઽપિ
તસ્ય સહાયકો યા મરતિ । તથા—‘મીઓ’ મીતો મનુપ્પયઃ ‘મૂર્હિ’ મૂતૈઃ
પ્રેતૈઃ ‘ધિપ્પઙ્’ ગૃહ્યતે, મૂતારિષ્ઠો મરતીત્યર્થઃ । તથા—મીતઃ ‘અન્ન પિ’
અન્યમપિ ‘મેસેજ્જા’ મીપયતે । તથા—મીતઃ ‘તવસનમ પિ’ તપઃ સયમમપિ=

અવ સૂત્રકાર ચૌથી ભાવના જો ધૈર્ય ભાવના છે તેને કહે છે—
‘ચડ્ઠ’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(ચડ્ઠ) વહ ચૌથી ધૈર્ય ભાવના ઠસ પ્રકાર સે છે (ન
મીઙ્ગયન્વ) મય નહી કરના ચાહિયે । જ્યો કિ (મીયલુ મયા અડિતિ
લહુઅ) જો મયયુક્ત હોતા છે તે પ્રાણી કે પાસ નિશ્ચય સે મય શીઘ્ર
આતે છે । (મીઓ અવિતિજ્જઓ મણુમો) તથા જો મય સે ડરતા છે
એસા મનુપ્પય અદ્વિતીય હોતા છે—વહ ન કિસી કી સહાયતા કર સકતા
છે ઓર ન કોઈ દૂસરા મનુપ્પય તેસકા હી સહાયક હોતા છે । (મીઓ
મૂર્હિ ધિપ્પઙ્) મીત મનુપ્પય કો મૂત પકડ લેતે છે । (મીઓ અન્ન
પિ હુ મેસેજ્જા) મય સે મીત હુઆ મનુપ્પય દૂસરો કો મી મયયુક્ત

હવે સૂત્રકાર ચોથી ધૈર્યભાવના નામની ભાવના વિષે કહે છે—“ચડ્ઠ” इत्यादि

ટીકાર્થ—‘ચડ્ઠ’ તે ચોથી ધૈર્યભાવના આ પ્રમાણે છે—“ન મીઙ્ગયન્વ” ભય
પામવો ભેદને નહીં કારણ કે “મીય લુ મયા અડિતિ લહુઅ” જે બીકણ હોય
છે તે વ્યક્તિ પાસે ચોક્કસ ભય શીઘ્ર આવે છે “મીઓ અવિતિજ્જઓ
મણુમો” તથા જે ભયથી ડરે તે એવો મનુષ્ય અદ્વિતીય હોય છે—તે કોઈને
મદદ કરી શકતો નથી અને કોઈ બીજો મનુષ્ય તેનો સહાયક થતો નથી
“મીઓ મૂર્હિ ધિપ્પઙ્” ભયભીત મનુષ્યને ભૂત પકડી લે છે “મીઓ અન્ન
પિ હુ મેસેજ્જા” ભયભીત મનુષ્ય બીજા લોકોને પણ ભયભીત કરે છે, તથા “મીઓ

હાસં, અળ્લાળજણિય ચ હોજ્જ હાસં, અળ્ણોળ્ણગમણં ચ
હોજ્જ મમ્મ, અળ્ણોળ્ણગમણં ચ હોજ્જ કમ્મ કદપ્પભિઓગ-
ગમણ ચ હોજ્જ હાસં, આસુરિય કિલ્લિસત્તળ ચ જળેજ્જ
હાસ, તમ્હા હાસ ન સેવિયવ્વ । એવ મોળેણ ય ભાવિઓ
ભવઈ, અતરપ્પા સજયકરેચરણનયણવયળો સૂરો
સચ્ચજ્જવસપત્તો ॥ સૂ ૮ ॥

ટીકા—‘ પચમ ’ પચ્ચમી ભાવનામાહ—‘ હાસ ’ હાસ્ય નોકપાયમોહોદયા-
ત્સનિમિત્તમનિમિત્ત યા વિદ્યુતવર્ણપુરસ્સર મુલવ્યાદાન હાસ્યમ્, ન ‘ સેવિયવ્વ ’ સેવિ-
તવ્યમ્ । કિમર્થ ન સેવિતવ્યમ્ ? ઇત્યાહ—‘ હાસઈત્તા ’ હાસયિતાર.—પરિહાસકારિણ
‘ અલિયાઈ ’ અલિકાનિ=સદ્ભૂતાર્થગોપનરૂપાણિ ‘ અસતગાઈ ’ અસત્કાનિ=

અથ સૂત્રકાર પચમી મૌન ભાવના કો કહતે હે—‘ પચમ ,
ઈત્યાદિ ૦ ।

ટીકાર્થ—(પચમ) પાચવી મૌન ભાવના ઇસ પ્રકાર હૈ । (હાસ
ન સેવિયવ્વ) ઇસ ભાવના મૈં હાસ્ય કે સેવન કા પરિત્યાગ કર દિયા
જાતા હૈ । જવ જીવ કો હાસ્યનો કપાક મોહ કા ઉદય હોતા હૈ તવ
વહ હાસ્ય કા નિમિત્ત મિલે અથવા ન મી મિલે તો મી વહ હી-
હી ધરતા હુઆ હૈસને લગ જાતા હૈ । હૈસતે સમય ઉસકા મુલ્લ ખુલ
જાતા હૈં દાત સ્પષ્ટ દિલ્લકાઈ દેને લગતે હૈ । સયમી જન કો ઇસ હાસ્ય
કા સેવન નહી કરના ચાહિયે । ક્યો કિ (હાસઈત્તા) જો પરિહાસ
કરને વાલે વ્યક્તિ હોતે હૈં વે (અલિઅઈ અસતગાઈ જપતિ) સદ્મૂત

હવે સૂત્રકાર પાચમી મૌનભાવના બતાવે છે—“ પચમ ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—“ પચમ ” પાચમી મૌનભાવના આ પ્રમાણે છે—“ હાસ ન
સેવિયવ્વ ” આ ભાવનામા હાસ્યનો પરિત્યાગ કરાય છે બ્યારે જીવને ‘ હાસ્ય
નોકપાય ’ મોહનો ઉદય થાય છે ત્યારે તે હાસ્યનું નિમિત્ત મળે કે ન મળે
છતા પણ તે ‘ હી-હી ’ કરતો હમવા મઠી બંધ છે હમતી વખતે તેનું મુખ
ઉઘડી બંધ છે અને દાત સ્પષ્ટ રીતે દેખાય છે સયમી જને આ હાસ્યનું
સેવન કરવું જોઈએ નહીં કારણ કે “ હાસઈત્તા ” જે પરિહાસ કરનાર વ્યક્તિ
હોય છે તે “ અલિઅઈ અસતગાઈ જપતિ ” યવાર્થ અર્થને ધ્રુપાવનાર અને

ધિસ્ય ભયજનકસ્ય વસ્તુનો યશાત ન ' મોહયજ્ઞ ' મેતલ્પમ્ પગમ્=અનેન પ્રકારે
 રેણ ' ધિજ્જેજ ' ધૈર્યેણ ' ભાવિઓ ' ભાવિતઃ ' અતરપ્પા ' અન્તરાત્મા=જીવઃ
 સયતકરચરણનયવદનઃ શૂરઃ સત્યાર્જયસપત્નો ભવતિ ॥ ૭ ॥

॥ इति चतुर्थी भाषणा ॥

अथ पञ्चमी मौनभाषणामाह—' पचम ' इत्यादि—

मूलम्—पचमं हासं न सेवियन्व । अलियाइ असंतगाइ
 जंपंति हासइत्ता परपरिभवकारणं च हास, परपरिवाय-
 प्पियं च हासं, परपीलाकारणं च हासं, भेयविमुत्तिकारणं

ભયજનક વસ્તુ કે વશ સે નહીં ટરના ચાહિયે । (એવ ધેજ્જેજ ભાવિઓ અતરપ્પા સજય કરચરણનયવવયણો સૂરો સચ્ચજ્જવસપત્નો ભવઈ) હસ પ્રકાર ધૈર્ય સે ભાવિત હુઆ જીવ અપને કર, ચરણ, નયન એવ વદન કી પ્રવૃત્તિ કો સયમિત રાખતા હુઆ સત્યવ્રત કે પાલનમેં પરાક્રમશાલી બન જાતા હૈં ઓર સત્ય એવ આર્જય ભાગ સે મપન્ન હો જાતા હૈં ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને હસ સૂત્ર દ્વારા સત્યવ્રત કી ચૌથી ભાવના કહા હૈં । હસ ભાવના કા નામ ધૈર્યભાવના હૈં । હસ ભાવના મેં ધૈર્ય કે અભાવ મેં ક્યા ૨ હાનિ હોતી હૈં ઓર ધૈર્ય રાખને સે ક્યા ૨ લાભ હોતે હૈં, इन सब बातोंका विचार किया जाता है । इन विचारों से आत्मा जब धैर्य शाली बन जाती है तो वह अपने द्वारा गृहीत सत्य-व्रत को पूर्णरूप से सुरक्षित रखति हुई स्थिर बना लेती है ॥ ૭ ॥

રની ભયજનક વસ્તુના ભયથી ડરવુ બેઈએ નહીં, “ એવ ધેજ્જેજ ભાવિઓ અતરપ્પા સજયકરચરણનયવવયણો સૂરો સચ્ચજ્જવસપત્નો ભવઈ ” આ પ્રકારે ધૈર્યથી ભાવિત થયેલ એવ પોતાના ડર, ચરણ, નયન, અને વદનની પ્રવૃત્તિને સયમિત રાખીને સત્યવ્રતના પાલનમા પરાક્રમશાળી બની બચ છે અને સત્ય તથા આત્માના ભાવયુક્ત બની બચ છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ વ્રતદ્વારા સત્યવ્રતની ચૌથી ભાવના બતાવી છે તે ભાવનાનું નામ ધૈર્યભાવના છે આ ભાવનાનું વર્ણન કરતા ધૈર્યના અભાવે ક્યી ક્યી હાનિ થાય છે અને ધૈર્ય રાખવાથી ક્યા ક્યા લાભ થાય છે તે બધાનો વિચાર કરાયો છે આ વિચારથી આત્મા ન્યારે ધૈર્યવાન બને છે ત્યારે તે પોતે ગ્રહણ કરેલ સત્યવ્રતને સંપૂર્ણ રીતે સુરક્ષિત અને સ્થિર બનાવી લે છે ॥ ૭ ॥

જનિત=પરસ્પરકૃત ચ ભવતિ હાસ્યમ્, તથા હાસ્યે ‘અળ્લોળગમણ’ અન્યોન્ય-
ગમન=પરસ્પરાધિગમનીય ચ ‘મમ્મ’ મર્મ=પ્રચ્છન્નપારદાર્યાદિદુશ્ચેષ્ટિત્ ભવતિ ।
તથા-‘અળ્લોળગમણ’ અન્યોન્યગમન=પરસ્પરવિજેય ચ ‘કમ્મ’ કર્મ=લોક-
નિન્દાદિરૂપ ‘હોજ્જ’ ભવતિ । હાસ્યેન પ્રચ્છન્નમપિ કર્મ પ્રકાશિત ભવતીતિ ભાવઃ ।
તથા-‘કદ્વપ્પાભિઓગગમણ’ કન્દર્પાભિઓગગમનમ્=કન્દર્પાઃ=કાન્દર્પિકા દેવ-
વિશેષા હાસ્યકારિણો મળ્લપ્રાયા, અભિઓગા=આજ્ઞાકારિણો દેવાઃ, તેષુ ગમન=
ગમનકારણમ્=તત્તદ્દેવવિશેષેષૂત્પત્તિકારણ ચ ભવતિ હાસ્યમ્ । હાસ્યકારી સાધુશ્ચા-
રિત્લેશાદેવત્વ પ્રાપ્તોઽપિ તત્ત કાન્દર્પિકેષુ આભિઓગિકેષુ દેવેષૂત્પદ્યતે ન તુ
મહર્દિકેષુ इत्यर्थः । તથા-‘આસુરિય’ અસુરત્વ ‘કિલ્લિવસત્તણ’ કિલ્લિવપત્ત્વ=
ચાળ્લપ્રાયદેવવિશેષત્વ ચ ‘જળેજ્જ’ જનયેત્ ‘હાસ’ હાસ્યમ્ । યતો હાસ્યા
દીદૃશો ગતિર્ગતિત્તિ જીવસ્ય, ‘તમ્હા’ તસ્માત્ ‘હાસ’ હાસ્ય ન સેવિતવ્યમ્ ।

आपस में दो आदि जन मिलने से होता है । (अण्णोण्णगमण च होज्ज मम्म) इस हसी में परदाररमण आदि दुश्चेष्टाये प्रच्छन्न रहा करती हैं । तथा (अण्णोण्ण गमण च होज्ज कम्म) इसी हसी में परस्पर में होनेवाले दुष्कृत्यो से उनकी लोक में निंदा होती है उसे चाट्ट वे अपने मुख यद्यपि नहीं कहा करते हैं फिर भी आपस की हँसी से ही उनका दुष्कृत्य लोको के समक्ष प्रकाशित हो जाता है । (कदप्पाभिओग-गमण) तथा हास्यकारी साधू चारित्र के लेश से यदि देवगति में उत्पन्न होवे तो भी वह भाँट जैसे कान्दर्पिक तथा आज्ञाकारी आभियोगिक देवों में उत्पन्न होता है महर्दिक देवों में नहीं । (आसुरिय किल्विसत्तणं चजणेज्ज हास) यह हास्य चाडालप्राय असुरदेवों में किल्विषजाति के देवों में उत्पत्ति का कारण होता है । (तम्हा हास न सेवियव्व) इस-

વાથી થાય છે “અળ્લોળગમણ ચ હોજ્જ મમ્મ” એ હાસ્યમા પરદારરમણ આદિ દુશ્ચેષ્ટાઓ પ્રચ્છન્ન રહેતી હોય છે તથા “અળ્લોળગમણ ચ હોજ્જ કમ્મ” આ હાસ્યમા અન્યોન્ય તથા દુષ્કૃત્યોને લીધે તેની બેઠકમા નિંદા થાય છે, તેને તેઓ પોતાના મુખથી બહાર જણા કરતા નથી તો પણ અન્યોન્યની હસી-મજાડથી જ તેમનું દુષ્કૃત્ય લોકો સમક્ષ બહાર થઈ જાય છે “કદ્વપ્પાભિ ઓગગમણ” તથા હાસ્યકારી સાધુ બે દેવગતિમા ઉત્પન્ન થાય તો પણ ચારિત્રતાની ન્યૂનતાને કારણે તેઓ ભાડ જેવા કાન્દર્પિક તથા આજ્ઞાકારી આભિ યોગિક દેવોમા ઉત્પન્ન થાય છે, મહર્દિક દેવોમા નહીં “આસુરિય કિલ્લિ વસત્તણ ચ જળેજ્જ હાસ” તે હાસ્ય ચાડાલ આદિ જાતિમા અસુરદેવોમા કિલ્લિ વસતિના દેવોમા ઉત્પત્તિનું કારણ બને છે “તમ્હા હાસ ન સેવિયવ્વ” તે

અસદ્ભૂતાર્થાનિ વચનાનિ 'જપંતિ' જત્પન્નિ=નુયતે । હાસ્યકામિણી દ્વિતીયમહા
વ્રતનાશકા મચન્તીત્યર્થઃ । ક્રીડશ હામ્યમ્ ? इत्याह—' પરપરિભવકારણ=પરાપ-
માનહેતુક ચ હાસ્ય ભવતિ । તથા—'પરપરિવાયપ્પિય' પરપરિવાદપ્રિય=પરપરિવાદઃ
=અન્યદૂષણાપિધાન પ્રિય ઇષ્ટો યસ્મિન્સ્તચાન્દ્રશ ચ હાસ્ય ભવતિ । તથા—'પરપી-
લાકારગ ' પરપીલાકારક ચ હાસ્ય ભવતિ । તથા—'ભેયવિમુક્તિકારગ ' ભેદ-
વિમૂર્ત્તિકારક=ભેદઃ=ચારિત્રમદ્ગ્નઃ । વિમૂર્ત્તિ=વિકૃતનયનવદનાદિત્વેન વિકૃતશ-
રીરાકૃતિસ્તયોઃ કારક ચ હાસ્યમ્ । 'અણ્ણોણજણિય ચ હોજ્જ હાસ' અન્યોન્ય

અર્થનો ગોપન કરને વાળે ત્વ અસદ્ભૂત અર્થ નો પ્રકટ કરને વાળે
વચનો નો બોલા કરતે હે । સત્યમહાવ્રત મેં સદ્ભૂત અર્થના પ્રકાશન
ઔર અસદ્ભૂત અર્થ ના પ્રકટ કરના હેય કહા હે, અતઃહાસ્ય
મે જબ હસ પ્રકાર ની પરિસ્થિતિ રહતી હેં કિ ઉમમેં અસદ્ભૂત અર્થ
ના પ્રકટન ઔર સદ્ભૂત અર્થ ના ગોપન હોતા હે, તો દ્વિતીય મહાવ્રત
ના સરક્ષણ હસ અવસ્થા મેં કેસે હો સકના હેં નહોં હો સકના, હસલિયે
હાસ્ય ના ત્યાગ કહા ગયા હે । (પરપરિભવકારણ ચ હાસ) હાસ્ય
પર ને અપમાન ના કારણ હોતા હે । (પરપરિવાયપ્પિય ચ હાસ) હાસ્ય
મેં પર ને દૂષણ ના કથન કરના પ્રીય લગતા હે । (પરપીલાકારગ ચ
હાસ) હાસ્ય મેં હસ વાતના મી ધ્યાન નહી રહતા હેં કિ હસ હાસ્ય ને
અન્ય નો કષ્ટ હો રહા હે । (ભેયવિમુક્તિકારગ ચ હાસ) હાસ્ય
ચારિત્ર ને ભગ ના હેતુ હો જાતા હે । હસમેં નયન વદન આદિ શારીરિક
અવયવ વિકૃત બન જાતે હેં । (અણ્ણોણજણિય ચ હોજ્જ હાસ) હાસ્ય

અસદ્ભૂત અર્થને પ્રગટ કરનારા વચનો બોલ્યા કરે છે સત્યમહાવ્રતમા સદ્ભૂત
અર્થનું ગોપન તથા અસદ્ભૂત અર્થનું પ્રકાશન હેય ગણાવેલ છે તો હાસ્યમા
બીજાં એવા પ્રકારની પરિસ્થિતિ રહે છે કે તેમા અસદ્ભૂત અર્થ પ્રગટ કરાય
છે અને સદ્ભૂત અર્થનું ગોપન કરાય છે, તો એ પરિસ્થિતિમા દ્વિતીય મહા
વ્રતનું રક્ષણ કેવી રીતે થઈ શકે ? થઈ શકે જ નહીં માટે હાસ્યનો પરિત્યાગ
કરવો જોઈએ એમ સૂત્રકારે બતાવ્યું છે “ પરપરિભવકારણ ચ હાસ ” હાસ્ય
અન્યના અપમાનનું કારણ બને છે “ પરપરિવાયપ્પિય ચ હાસ ” હાસ્યમા
અન્યના દૂષણોનું કથન કરવું પ્રિય લાગે છે “ પરપીલાકારગ ચ હાસ ”
હાસ્યમા તે વાતનું પણ જ્ઞાન રહેતું નથી કે તે હાસ્યથી કોઈ ખીજાને કષ્ટ
થઈ રહ્યું છે “ ભેયવિમુક્તિકારગ ચ હાસ ” હાસ્યને લીધે ચારિત્રનો લોપ
થાય છે તેમા નયન, વદન આદિ શરીરના અવયવો વિકૃત થઈ જાય છે
“ અણ્ણોણજણિય ચ હોજ્જ હાસ ” હાસ્ય એ કે વધારે માણસ અન્યોન્ય મળ

જનિત=પરસ્પરકૃત ચ ભવતિ હામ્યમ્, તથા હાસ્યે ‘અળ્લોગ્ગગમણ’ અન્યોન્ય-
ગમન=પરસ્પરાગ્રિગમનીય ચ ‘મમ્મ’ મર્મ=પ્રચ્છન્નપારદાર્યાદિદુશ્ચેષ્ટિત ભવતિ ।
તથા-‘અળ્લોગ્ગગમણ’ અન્યોન્યગમન=પરસ્પરગ્રિજ્ઞેય ચ ‘કમ્મ’ કર્મ=લોક-
નિન્દાદિરૂપ ‘હોજ્જ’ ભવતિ । હાસ્યેન પ્રચ્છન્નમપિ કર્મ પ્રકાશિત ભવતીતિ ભાવઃ ।
તથા-‘કદપ્પાભિઓગગમણ’ કન્દર્પાભિઓગગમનમ્=કન્દર્પાઃ=કાન્દર્પિકા દેવ-
વિશેષા હાસ્યકારિણો મળ્લપ્રાયા, અભિયોગાઃ=આજ્ઞાકારિણો દેવાઃ, તેષુ ગમન=
ગમનકારણમ્=તત્તદ્દેવવિશેષેષૂત્પત્તિકારણ ચ ભવતિ હાસ્યમ્ । હાસ્યકારી સાધુશ્ચા-
રિત્ત્રલેશદ્વેષત્ત્વ પ્રાપ્નોઽપિ તત્ત્વ કાન્દર્પિકેષુ આભિયોગિકેષુ દેવેષૂત્પદ્યતે ન તુ
મહર્દિકેષુ ઇત્યર્થઃ । તથા-‘આસુરિય’ અસુરત્વ ‘કિલ્લિસત્તળ’ કિલ્લિપત્ત્વ=
ચાળ્લપ્રાયદેવવિશેષત્વ ચ ‘જળેજ્જ’ જનયેત્ ‘હાસ’ હાસ્યમ્ । યતો હાસ્યા
દીદૃશો ગતિર્ભવતિ જીવસ્ય, ‘તમ્હા’ તસ્માત્ ‘હાસ’ હાસ્ય ન સેવિત્તવ્યમ્ ।

આપસ મેં દો આદિ જન મિલને સે હોતા હૈ । (અળ્લોગ્ગગમણ ચ હોજ્જ
મમ્મ) ઇસ હસી મે પરદારમણ આદિ દુશ્ચેષ્ટાચે પ્રચ્છન્ન રહા કરતી
હૈં । તથા (અળ્લોગ્ગ ગમણ ચ હોજ્જ કમ્મ) ઇસી હસી મે પરસ્પર મેં
હોનેવાલે દુષ્કૃત્યો સે ડનકી લોક મે નિંદા હોતી હૈ ઉસે બાહર બે અપને
મુલ્લ યદ્યપિ નહીં કહા કરતે હૈ ફિર બી આપસ કી હસી સે હી ડનકા
દુષ્કૃત્ય લોકોં કે સમક્ષ પ્રકાશિત હો જાતા હૈ । (કદપ્પાભિઓગ-
ગમણ) તથા હાસ્યકારી સાધુ ચારિત્ર કે લેશ સે યદિ દેવગતિ મેં ઉત્પન્ન
હોવે તો બી વહ ભાંડ જૈસે કાન્દર્પિક તથા આજ્ઞાકારી આભિયોગિક
દેવોં મેં ઉત્પન્ન હોતા હૈ મહર્દિક દેવો મે નહીં । (આસુરિય કિલ્લિસત્તળ
ચજળેજ્જ હામ) યહ હાસ્ય ચાળ્લપ્રાય અસુરદેવોં મેં કિલ્લિપજાતિ કે
દેવોં મેં ઉત્પત્તિ કા કારણ હોતા હૈ । (તમ્હા હાસ ન સેવિયવ્વ) ઇસ-

વાથી થાય છે “અળ્લોગ્ગગમણ ચ હોજ્જ મમ્મ” એ હાન્યમા પરદારમણ
આદિ દુશ્ચેષ્ટાઓ પ્રચ્છન્ન રહેતી હોય છે તથા “અળ્લોગ્ગગમણ ચ હોજ્જ
કમ્મ” આ હાન્યમા અન્યોન્ય તથા દુષ્કૃત્યોને લીધે તેની બેઠકમા નિંદા થાય
છે, તેને તેઓ પોતાના યુગથી બહાર કઢ્યા કરતા નથી તો પણ અન્યોન્યની
હસી-મજાકથી જ તેમનું દુષ્કૃત્ય લોકો સમક્ષ બહાર થઈ જાય છે “કદપ્પાભિ
ઓગગમણ” તથા હાસ્યકારી સાધુ એ દેવગતિમા ઉત્પન્ન થાય તો પણ
ચારિત્રતાની ન્યૂનતાને કારણે તેઓ ભાડ બેવા કાન્દર્પિક તથા આજ્ઞાકારી આભિ
યોગિક દેવોમા ઉત્પન્ન થાય છે, મહર્દિક દેવોમા નહીં “આસુરિય કિલ્લિ
સત્તળ ચ જળેજ્જ હાસ” તે હાન્ય ચાળ્લ આદિ બલિમા અસુરદેવોમા કિલ્લિ
પજાતિમા દેવોમા ઉત્પત્તિનું કારણ બને છે “તમ્હા હાસ ન સેવિયવ્વ” તે

एवम्=अनेन प्रकारेण हास्यवर्जनरूपेण, 'मोक्षेण' मौनेन=वचनसमयेन 'भाविभो' भावितः 'अतरप्पा' अन्तरात्मा=जीव सयतमरचरणनयनवदनः गूर सत्यार्ज वसपन्नो भवति ॥ सू ० ८ ॥

લિપે જણ હાસ્ય સે જીવ કી જેમી ગતી પોતી છે ફિ વદ્દ હમ હાસ્ય કા સેવન નરી કરે । (એવ) હમ પ્રકાર (મોક્ષેણ ય ભાવિઓ અતરપ્પા સજય કરચરણનયણવયણો સૂરો સચ્ચજ્ઞવસપન્નો ભવદ્) હાસ્યવર્જનરૂપ મૌન સે-વચન સયમ સે-ભાવિત દુઆ જાવ અપને કર, ચરણ, નયણ ઓર વદન-મુગ્ધ કી પ્રવૃત્તિ કો સયમિત ઘનાતા હુઆ સત્યવ્રત કે પાલન મેં પરાક્રમશાલી ઘન જાતા હૈ ઓર સત્ય એવ આર્જવભાવ સે સપન્ન હો જાતા હૈ ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને હસ સૂત્ર ઠોરા પાંચવી મૌન ભાવના કા સ્વરૂપ કહ્તા હૈ । મૌન ભાવના કા તાત્પર્ય હાસ્ય કા પરિત્યાગ કરના હૈ । હાંસી કરને ચાલા પ્રાણી જૂઠ વચન કા પ્રયોગ મી પ્રસંગવશ કરતા હૈ । તથા હસ કૃત્ય સે દુસરોં કા અપમાન મી હોતા હૈ । હાસ્ય મનો-વિનોદ કા કારણ હોતા હૈ સહી પરન્તુ સયમી કે લિપે હાસ્ય સે મનો-વિનોદ કરને કી ક્યા આવશ્યકતા હૈ । હાસ્ય સે દુસરોં કે મનો મેં ઘોટ પહુંચે હસસે ઓર અધિક અશોભનીય યાત ક્યા હો સકતી હૈ । અધ્યાત્મ કે માર્ગ મેં હૈસી મજા કરને કા સર્વથા પરિત્યાગ કહ્તા હૈ । હાસ્ય મેં પર કે દુષણોં કા કથન પ્રિય લગતા હૈ । યહ હાસ્ય નો

કારણ-હાસ્યથી જીવની એવી ગતિ થાય છે તેથી જીવનુ તે કર્તવ્ય છે કે તે હાસ્યનુ સેવન ન કરે “ એવ ” આ પ્રકારે “ મોક્ષેણ ય ભાવિઓ અતરપ્પા સજયકર-ચરણનયણવયણો સૂરો સચ્ચજ્ઞવસપન્નો ભવદ્ ” હાસ્ય ત્યાગરૂપ મૌનથી વચન સયમથી ભાવિત થયેલ જીવ પોતાના કર, ચરણ, નયન અને વદનની પ્રવૃત્તિને સયમિત કરીને સત્યવ્રતના પાલનમા પરાક્રમશાળી બની જાય છે અને સત્ય તથા આર્જવ ભાવથી યુક્ત બની જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા પાંચમી મૌન ભાવનાનુ સ્વરૂપ બતાવ્યું છે મૌન ભાવનાનુ તાત્પર્ય હાસ્યનો પરિત્યાગ છે હાંસી કરનાર માણસ પ્રસંગ વશાત્ અસત્ય વચનનો પ્રયોગ પણ કરે છે, તથા તે કૃત્યથી બીજાનુ અપમાન પણ થાય છે હાસ્ય-મનોવિનોદને માટે કારણ જરૂર હોય છે પણ સયમીને હાસ્યની મદદથી મનોવિનોદ કરવાની થી આવશ્યકતા છે ? હાસ્યને કારણે અન્યના દિલમા ચો' લાગે તેનાથી વધારે ખરાબ વાત બીજી કંઈ હોઈ શકે ? અધ્યાત્મ માર્ગમા હાંસી મળકનો સર્વથા ત્યાગ બતાવ્યો છે હાસ્યમા બીજાના

દ્વિતીય સરદારમુપસહરનાદ-‘ એવમિણ ’ ઇત્યાદિ—

મૂલ્મ-એવમિણ સવરસ્સ દાર સમ્મ સચરિય હોઈ સુપ્પ-
ણિહિય ઇમેહિ પંચહિ વિ કારણેહિ મળવયણકાયપરિરક્ખિ-
ણહિ નિચ્ચ આમરણંત ચ એસ જોગો ણેયવ્વો ધિડમયા મઙ્ગમયા
અણામવો અકલ્લસો અચ્છિદ્ધો અપરિસ્સાવી અસંકિલિદ્ધો સવ્વ-
જિણમણુત્તાઓ । એવ વીયિ સંવરદાર ફાસિય પાલિય સોહિય
તીરિય કિદ્ધિય અણુપાલિય આણાણ આરાહિય ભવ્વ, એવ

રૂપાય કે ઉદય સે હોતા હૈ । જિસસે ચારિત્ર કા ભગ હોતા હૈ । દૂસરે
વ્યક્તિયો ની ગુણ ચેષ્ટાઈ ભી ટસ હાસ્ય કે દ્વારા પ્રકટ હો જાયા કરતી
હૈ । યદ્યપિ ચારિત્ર કા ડમસે પૂર્ણરૂપ સે ભગ નહી ભી હોતા હૈ-તો ભી
સાધુ ડસકે પ્રમાવ સે મહર્દ્ધિક દેવો મેં ઉત્પન્ન નહી હોતા હૈ । કાન્દર્પિક
આભિયોગિક આદિ દેવો મેં હી ઉત્પન્ન હોતા હૈ, અતઃ હાસ્ય કા સેવન
કરના સત્યવ્રતી કે લિયે સર્વથા ત્યાજ્ય હૈ, જેસા સમઘ્ન કર જાં ડસકા
પરિત્યાગ કર દેતા હૈ વત સત્યવ્રતી અપને વ્રત કો પૂર્ણરૂપ સે સ્થિર કર
પાલન કરતા હૈ । ડસ પ્રકાર હાસ્ય જન્ય દોષોં કા વિચાર કર હાસ્યવ-
ર્જનરૂપ વચનસમય સે અપની આત્મા કો ભાવિત કરકે સાધુ અપને
વ્રતારાધન મેં પરાક્રમશાલી બન જાતા હૈ ઓર ગૃહીત સત્યવ્રત કો પૂર્ણ-
રૂપ સે સુરક્ષિત કર સ્થિર બના લેતા હૈ ॥ સૂ ૮ ॥

દ્વપણે બાહે દરવા તે પ્રિય લાગે છે તે હાસ્ય નોકપયના ઉદયથી થાય છે,
જેના કારણે ચારિત્રનો ભગ થાય છે, બીજી વ્યક્તિઓની ગુણ ચેષ્ટાઓ પણ
તે હાસ્ય દ્વારા પ્રગટ થયા કરે છે બલે તેનાથી ચારિત્રનો પૂર્ણત ભગ થતો
ન હોય, તે છતા પણ સાધુ તેના કારણે મહર્દ્ધિક દેવોમા ઉત્પન્ન થતો નથી
કાન્દર્પિક, અભિયોગિક આદિ દેવોમા જ ઉત્પન્ન થાય છે તેથી હાસ્યનું સેવન
કરવું તે સત્યવ્રતીને માટે સર્વથા ત્યાજ્ય છે, એવું સમજીને જે તેના પરિ-
ત્યાગ કરે છે, તે સત્યવ્રતી પોતાના વ્રતને સંપૂર્ણ રીતે સ્થિર કરે છે અને
તેનું પાલન કરે છે આ રીતે હાસ્યમાથી ઉદ્ભવતા દોષોનો વિચાર કરી હાસ્ય
વર્જનરૂપ વચનસમયથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરીને સાધુ પોતાના વ્રતની
આરાધનામા સમર્થ બની જાય છે અને અહણુ કરેલ સત્યવ્રતનું સંપૂર્ણ રીતે
સુરક્ષિત કરીને સ્થિર બનાવી લે છે ॥ સૂ ૮ ॥

નાયમુણિના ભગવયા પદ્મવિય પરુવિયં પસિચ્છ સિદ્ધવરસાસનમિણં
આઘવિય સુદેસિય પસત્થ । વીચ સવરદારસમત્તંતિ વેમિ ॥ સ્ ૦ ૧ ॥

॥ ઇય પપ્પહાવાગરણે વીચં સંવરદાર સમત્ત ॥

ટીકા—‘ એવ ’ પૂર્વોક્તપ્રકારે ‘ ઇણ ’ ઇદ ‘ સવરસ્સ ’ સવરસ્ય ‘ દાર ’
દ્વાર=સત્યવચન નામ દ્વિતીય દારમિત્યર્થ, ‘ સમ્મ ’ સમ્યક્ ‘ સચરિય ’ સચ
રિત સત્ ‘ હોદ ’ મરતિ, ‘ સુપ્પણિહિય ’ ‘ સુપ્પણિહિત=સમારામિતમ્ । તથા—‘ ઇમેહિં
એમિઃ ‘ પચહિં તિ ’ પદ્મમિરપિ ‘ કારણેહિં ’ કારણૈઃ=ભાવનામિ, કીદશૈઃ કા
રણૈઃ ? इत्याह—‘ મળવચનકાયપરિરક્ષિણહિં ’ મનોવચનકાયપરિરક્ષિતૈઃ=મનોવા
કાયપરિરક્ષિતપદ્મભાવનામિરિત્યર્થ, ‘ નિચ્ચ ’ નિત્યમ્ ‘ આમરણત ચ ’ આમર
ણાન્ત=મરણપર્યન્ત ચ ‘ એસ જોગો ’ એપ યોગઃ=મત્યવચનરૂપો યોગ ‘ જેયવ્વો’

इस प्रकार सत्यव्रत की स्थिरता के निमित्त पांच भावनाओं को
कहकर अब सूत्रकार इस द्वितीय सवरद्वार का उपसंहार करते हुए
कहते हैं—‘ एवमिण , इत्यादि ।

टीकार्थ—(एव) पूर्वोक्त प्रकार से (इण) यह (सवरदार) सत्यवचन
नामक द्वितीय सवरद्वार (सम्म-सचरियं) अच्छी तरह से पाले जाने
पर (सुप्पणिहिय) सुरक्षित (होइ) हो जाता है । (इमेहिं पचहिं वि
कारणेहिं मणवचनकायपरिरक्षिणहिं) इसलिये मन वचन और काय
इन तीन योगों से अच्छी तरह सुरक्षित किये गये इन पांचभावनारूप
कारणों से (निच्च) सदा (आमरणत च) जीवनभरतक (एसजोगो)
यह सत्यवचनरूप योग (धिइमया मइमया) स्वस्थचित्त से एव हेयो

આ રીતે સત્યવ્રતની સ્થિરતાને માટેની પાંચ ભાવનાઓ વર્ણવીને હવે
સૂત્રકાર આ બીજા સવરદ્વારનો ઉપસંહાર કરતા કહે છે—“ એવમિણ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ એવ ” પૂર્વોક્ત પ્રકારે “ ઇણ ” આ “ સવરસ્સદાર ” સત્ય
વચન નામનું બીજું સવરદ્વાર “ સમ્મ-સચરિય ” સારી રીતે પળાય તે
“ સુપ્પણિહિય ” સુરક્ષિત “ હોઈ ” થઈ બાંધે છે “ ઇમેહિ પચહિ વિ કારણેહિ
મળવચનકાયપરિરક્ષિણહિ ” તે ત્રણે મન, વચન અને કાય એ ત્રણે યોગોથી
સારી રીતે સુરક્ષિત કરાયેલ આ પાંચ ભાવનારૂપ કારણોથી “ નિચ્ચ ” મદા
“ આમરણ ત ચ ” જીવન પર્યન્ત “ એસજોગો ” આ સત્યવચનરૂપ યોગ
“ ધિઈમયા મઈમયા ” સ્વસ્થ ચિત્તે અને હેયોપાદેયતા વિવેકથી યુક્ત થયેલ
મુનિજનોએ “ જેયવ્વો ” પાલન કરવા યોગ્ય છે ત્રણે કે આ મત્યમહાવ્રત

નેતવ્યઃ=પાલનીયઃ ‘ ધિઙ્મયા ’ ધૃતિમતા ‘ મઙ્મયા ’ મતિમતા-મેધાવિના કય
 ભૂતોઽય યોગ ? ઇત્યાહ-‘ અણાસવો ’ અનાસ્રવઃ ‘ અકલુસો ’ અકલુપ ‘ અ-
 ચ્છિદ્ધો ’ અચ્છિદ્રઃ ‘ અપરિસ્સાવી ’ અપરિસ્ત્રાવી ‘ અસકિલિદ્ધો ’ અસકિલ્લપ્તઃ ‘ સ-
 વ્વજિણમણુણાઓ ’ સર્વજિનાનુજ્ઞાતશ્ચ । એવમ્=એતાદૃશમિદ ‘ વીય ’ દ્વિતીય
 ‘ સવરદાર ’ સવરદ્વાર ‘ ફામિય ’ સ્પૃષ્ટ ‘ પાલિય ’ પાલિત ‘ ‘ સોહિય ’ શોધિત
 ‘ તીરિય ’ તીરિત ‘ કિટ્ટિય ’ કીર્તિતમ્ ‘ આરાહિય ’ આરાધિતમ્ ‘ આણા’ આ-
 જ્ઞયા યથાવત્ ‘ અણુપાલિય ’ અનુપાલિત ‘ ભવતિ । એવમ્=અમુના પ્રકારેણ ‘ ણા-
 પાદેય કે વિવેકુ સે યુક્ત હુમ્ મુનિજન કો (ણેયવ્વો) પાલન કરને
 યોગ્ય હૈ, ત્ર્યોં કિ યહ સત્ય મહાવ્રતરૂપ યોગ (અણામવોં) નૂતનકર્મો
 કે આસ્રવ કો રોકને વાલા હોને સે અનાસ્રવ રૂપ હૈ, (અકલુસો)
 અશુભ અધ્યવસાય સે રહિત હોને કે કારણ અકલુપરૂપ હૈ (અચ્છિદ્ધો)
 પાપ કા સ્રોત હસસે વદ હો જાતા હૈ હસલિયે અચ્છિદ્રરૂપ હૈ, (અપરિ-
 સ્સાવી) એક પિન્દુમાત્ર મી કર્મરૂપ જલ હસમે પ્રવિષ્ટ નરી હો સકતા
 હૈ હસલિયે યહ અપરિસ્ત્રાવી હૈ, (અસકિલિદ્ધો) અસમાધિરૂપ ભાવસે યહ
 વર્જિત હોતા હૈ હસલિયે અસક્લિષ્ટ હૈ । (સવ્વજિણમણુણાઓ)
 હસીલિયે યહ સમસ્ત ભૂત, ભવિષ્યત્, ઓર વર્તમાન કાલ કે તીર્થકરોં
 કો માન્ય હુઆ હૈ । (એવ) હસ ઉક્ત પ્રકાર સે (વીય) દ્વિતીય સવર
 દ્વાર કો જો મુનિજન (ફાસિય) અપને શરીર સે સ્પર્શ કરતે હૈ, (પા-
 લિય) નિરન્તર ધ્યાનપૂર્વક હસકા સેવન કરતે હૈ, (સોહિય) અતિચારોં
 સે હસે રહિત બનાતે હૈ, (તીરિય) પૂર્ણરૂપ સે હસે અપને જીવન મેં ઉ-
 તારતે હૈ, (કિટ્ટિય) દૂસરોં કો હસે ધારણ કરને કા ઉપદેશ દેતે

૩૫ યોગ “ અણાસવો ” નવા કર્મોના આસ્રવને રોડનાર હોવાથી અનાસ્રવરૂપ
 “ અકલુસો ” અશુભ અધ્યવસાયરહિત હોવાથી અકલુપરૂપ “ અચ્છિદ્ધો ” પાપનો
 સ્રોત તેનાથી બધ થઈ બધ છે તેથી અચ્છિદ્રરૂપ છે, “ અપરિસ્સાવી ” એક
 પિન્દુ પણ કર્મરૂપી જળ તેમા પ્રવેશી શકતુ નથી, તેથી તે અપરિસ્ત્રાવી છે,
 “ અસકિલિદ્ધો ” અસમાધિરૂપ ભાવથી તે રહિત હોય છે તેથી તે અસક્લિષ્ટ
 છે “ સવ્વજિણમણુણાઓ ” તેથી તે સમસ્ત ભૂત, ભવિષ્ય અને વર્તમાન-
 કાળના તીર્થ કરેએ માન્ય કરેલ છે “ એવ ” આ બધુ દેતે પ્રકારે “ વીય ”
 બીજા સવરદ્વારને જે મુનિજન “ ફાસિય ” પોતાના શરીરથી સ્પર્શે છે,
 “ પાલિય ” નિરન્તર ધ્યાનપૂર્વક તેનુ સેવન કરે છે, “ સોહિય ” અતિચારથી
 રહિત બનાવે છે, “ તીરિય ” પૂર્ણ રીતે તેને પોતાના જીવનમા ઉતારે છે
 “ કિટ્ટિય ” અન્યને તેનુ સેવન કરવાનો ઉપદેશ આપે છે, તથા “ અણુપા

યમુણિણા ' જ્ઞાતમુનિના મનપ્રતા મહાવીરણ ' પળ્ળવિય ' પ્રજાપિત ' પરુવિય ' પ્રરુપિત ' પસિદ્ધ ' પ્રસિદ્ધમ્ ' મિદ્ધવરસાસણમિણ ' સિદ્ધવરસામનમિદમ્ ' આયવિય ' આગ્વ્યાત ' સુદેસિય ' સુદેશિત ' પસત્થ ' મગમ્ત ' વીય સવરદાર ' દ્વિતીય સવરદાર ' સમત્ત ' સમાપ્તમ્ । એવા સર્વેવા પદાના વ્યાખ્યા પ્રથમસવર દ્વારોપસદ્ધારે દ્રષ્ટવ્યા । ' ત્તિવેમિ ' ઇતિ વ્રતીમિ-અસ્યાર્થઃ પૂર્વમુક્તઃ ॥૬-૧॥

॥ ઇતિ શ્રી ત્રિશ્વવિરચ્યાત-જગદ્વદ્ધમ - પ્રસિદ્ધવાપરુપચ્ચદગ્ધમાપરુલિ-તલલ્લિત્તરુલાપાલાપરુ-પ્રવિશુદ્ધગદ્ધપદ્ધનેરુપ્પન્થનિર્માપરુ-સાદિમાનમર્દરુ-શ્રીશાહુ છત્રપતિરુલ્લાહુરરાજપ્રદત્ત ' જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય ' પદભૂપિત-કોલ્લાહુરરાજગુરુ-ચાલત્રાચારિ જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિવારુપૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલત્રિતિરિચિતાયા શ્રી પ્રશ્નવ્યાકરણમુત્રસ્ય સુદર્શન્યા રૂપાયા વ્યાખ્યાયા સવરાત્માકે દ્વિતીયે-ભાગે સત્પચનનામરુ દ્વિતીય સવરદાર સમાપ્તમ્ ॥ ૨ ॥

હું તથા (અણુપાલિય) ત્રિકરણ ત્રિયોગોં સે જો હસકા અચ્છી તરહ સે આચરણ કરતે હું વે (અણાદ આરાહિય મવહ) હમકી આરાધના સર્વજ્ઞ ભગવાન કે વચનોં સે હી કરતે હું એસા જાનના ચાહિયે । (એવ) હસ પ્રકાર સે યહ ઉત્તરુપ સવરદાર (ણાયમુણિણ) પ્રસિદ્ધક્ષત્રિયવશ મેં ઉત્પન્ન હુદ મુનિ ભગવાન મહાવીર ને (પળ્ળવિય) પ્રજાપિત કિયા હૈ શિષ્યો કે લિયે સામાન્ય રુપ સે કહા હૈ । (પરુવિય) પ્રરુપિત કિયા હૈ-ભેદાનુભેદપ્રદર્શન પૂર્વક કથિત ક્રિયા હૈ । હસલિયે યહ (પસિદ્ધ) પ્રસિદ્ધ હૈ-આચાર્યાદિપરપરા સે હમકા પાલન હસી રુપ સે ચલા આ રહા હૈ અતઃ નિર્દોષ હૈ । તથા (સિદ્ધવરસાસણમિણ) ભૂતકાલ મે જિતને મી સિદ્ધ હો ચુકે હૈ ડનકા યહ ઉત્કૃષ્ટ શાસનરુપ હૈ સો (આઘવિય)

લિય " ત્રિજરણુ યોગેથી જેઓ તેમનુ સારી રીતે આચરણુ કરે છે તેઓ " અણાદ આરાહિય મવહ " તેની આરાધના સર્વજ્ઞ ભગવાનના વચનોથીજ કરે છે એમ સમજવુ, " એવ " આ પ્રકારે આ (વર્ણવ્યા પ્રમાણેતુ) સવર દ્વાર " ણાયમુણિણ " પ્રસિદ્ધ ક્ષત્રિય વશમા જન્મેલા મહાવીર ભગવાને " પળ્ળવિય " પ્રજાપિત કર્યું છે શિષ્યોને માટે સામાન્ય રૂપે કહ્યું છે ' પરુ પવિય " પ્રરૂપિત કર્યું છે ભેદાનુભેદ દર્શાવીને વર્ણવ્યું છે તેથી તે " સિદ્ધ " પ્રસિદ્ધ છે આચાર્યાદિ પરપરાથી તેનુ આ રૂપેજ પાલન થતુ આવ્યું છે, તેથી તે નિર્દોષ છે તથા " સિદ્ધવરસાસણમિય " ભૂતકાળમા જેટલા સિદ્ધો થઈ ગયા છે તેમના ઉત્કૃષ્ટ શાસનરૂપ વળી " આઘવિય " તેનુ -

ઠસી કા કથન મગવાન મહાવીર પ્રમુને ક્રિયા હૈ ઓર (સુદેસિય) એસા હી ઉપદેશ ઠસકા ઉન્હોને દેવ, મનુજ એવ અસુરો સહિત પરિપદા મેં દિયા હૈ । (પસત્ય) યહ દ્વિતીય સવરદ્વાર સમસ્ત પ્રાણિયોં કા હિતકારક હોને સે પ્રશસ્ત-મગલમય હૈ । (ત્રીય સવરદાર સમસ્ત) હસ તરહ કા યહ દ્વિતીય સવરદ્વાર સમાપ્ત હુઆ । (ત્તિવેમિ) હે જબૂ મેંને જૈસા યહ શ્રી મહાવીર પ્રમુ કે મુખ સે સુના હૈ ઈસી તરહ કા યહ તુમસે કહા હૈ । અપની તરફ સે ઈસમેં કુઝ બી કલ્પિત કરકે નહી કહા હૈ ॥

ભાવાર્થ—દૂસરે સવર દ્વાર કા ઉપસંહાર કરતે હુએ સૂત્રકાર કહ રહે હૈ કિ હસ દ્વિતીય સવરદ્વાર કો કિ જિસકા નામ સત્યમહાવ્રત હૈ જો મુનિજન હન કથિત પચ ભાવનાઓં કી દૃઢતા પૂર્વક પાલતે હૈ—જીવન મરતક—હસકે અનુસાર અપની કર, ચરણ આદિ કી પ્રવૃત્તિ કો કરતે રહતે હૈ ઉન્કે અશુભ અધ્યવસાય રુક જાતે હૈ, નવીન કર્મોં કા બધ હોતા નહી હૈ । પાપોં કા સ્રોત હસકે પ્રભાવ સે, ઉન્કા રુક જાતા હૈ યહ અપરિસ્ત્રાવી આદિ વિશેષણોં વાલા હૈ । ત્રિકાલવર્તી સમસ્ત અરિહત ભગવતોં ને હસકા સ્વય પાલન કિયા હૈ, ઓર જીવો કો હસકે પાલને કા ઉપદેશ આદેશ ઉન્હો ને પરિપદા મેં દિયા હૈ । મગવાન મહાવીર ને

મહાવારે કહેલ છે અને “સુદેસિય” તેમણે તેના આ પ્રમાણે જ ઉપદેશ દેવ, મનુષ્ય અને અસુરો સહિતની પરિપદોમા આપ્યો છે “પસત્ય” આ દ્વિતીય સવરદ્વાર સઘળા પ્રાણીઓનું હિત કરનાર હોવાથી પ્રશસ્ત-મગલમય છે “ત્રીય સવરદાર સમસ્ત” આ ત્રીજી સવરદ્વાર સમાપ્ત થયું “ત્તિવેમિ” હે જબૂ! મેં જેવું મહાવીર પ્રભુના મુખથી સાંભળ્યું છે, મારી તરફથી તેમા વલ્પિત વાંધ પણ ઉમેરીને તે કહેવાયું નથી

ભાવાર્થ—ત્રીજા સવરદ્વારનો ઉપસંહાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે—સત્ય મહાવ્રત નામના ત્રીજા સવરદ્વારનું જે મુનિજન ઉપરોક્ત પાંચ ભાવનાઓનું જીવન પર્યંત દૃઢતાપૂર્વક પાલન કરે છે, તેના પ્રમાણે પોતાની કર ચરણ આદિની પ્રવૃત્તિ ઠર્યા કરે છે તેમના અશુભ અધ્યવસાય અટકી જાય છે, તેમને નવા કર્મોના બધ બધાતો નથી, તેના પ્રભાવથી તેમનો પાપોનો સ્રોત અટકી જાય છે, તેથી તે અપરિસ્ત્રાવી આદિ વિશેષણોવાળું જે ત્રિકાલવર્તી સમસ્ત અરિહત ભગવાનોએ તેનું પોતે પાલન કર્યું છે, અને તેના પાલનનો પરિપદોમા જીવોને ઉપદેશ આપ્યો છે ભગવાન મહાવીરે પણ તેમના પ્રમાણે જ

भी वहीं के अनुसार इस द्वितीय सवरदार की प्रशंसा की है स्वामी
भी इसका पालन किया है । अतः यह भगलमय है । निर्दोष है । बाधा
वर्जित है । इसे धारण कर प्रत्येक सज्ञी पर्याप्त पचेन्द्रिय मनुष्य के
अपना जीवन सफल बनाना चाहिये । इस प्रकार जब स्वामी से श्री
सुधर्मा स्वामी ने कहा ॥ सू-९ ।

॥ द्वितीय सवरदार समाप्त ॥

આ બીજા સવરદારની પ્રશંસા કરી છે અને જાતે પણ તેનું પાલન કર્યું છે
તેથી તે ભગલમય છે, નિર્દોષ છે, બાધાવહિત છે, તેને ધારણ કરીને પ્રત્યેક
સજ્ઞી પર્યાપ્ત પચેન્દ્રિય મનુષ્યે પોતાનું જીવન સફળ બનાવવું જોઈએ આ
પ્રમાણે શ્રી સુધર્માસ્વામીએ જણાવ્યું છે ॥ સૂ. ૯ ॥

॥ બીજો સવરદાર સમાપ્ત ॥

अथ तृतीय संवरद्वारं प्रारभ्यते

पूर्वस्मिन्मध्ययरे मृषावादविरमण नामक द्वितीय संवरद्वार प्रोक्तम्, तच्चादत्तादानविरमणं विना न समवतीत्यतः क्रमप्राप्ते तृतीयेऽध्ययनेऽदत्तादानविरमणनामक तृतीय संवरद्वारमभिधीयते—‘जबू’ इत्यादि—

मूलम्—जबू । दत्तमणुन्नायसंवरो नाम होइ तइयं सुव्वय । महव्वय गुणव्वय परदव्वहरणपडिविरइकरणजुत्तं अपरिमिय-मणंततण्हाणुगय—महिच्छमणवयणकलुस—आयाणसुनिग्गहिय, सुसंजमियमणहत्थयायनिहुयं निहुयं निग्गथ, णोट्टियं, निरुत्तं, निरासव, निव्वभयं, विमुत्त उत्तमनरवसभ—पवर—वलवग—सुविहियजणसंमयं—परमसाहुधम्मचरणं, जत्थ य गामागर—नगर—निगम—खेड—कव्वड—मडव—दोणमुह—सवाह—पट्टणा समगय च किञ्चि दव्व मणि—मुत्त-सिलप्पवाल कस दूस-रयय वरकणग-रयणमाइं पडियं पम्हट्ट विप्पणट्ठं न कप्पइ कस्सइ कहेउ वा गेण्हेउ वा अहिग्ग सुवण्णाएणं समलेट्टु कचणेणं अपरिग्गहसबुडेणं लोगम्मि विहरियव्व ॥ सू० १ ॥

टीका—‘सुव्वय’ सु=शोभन प्रत=चारित्र्यपालनरूप यस्य तत्सबुद्धौ हे सुव्रत ! =शोभनप्रतशालिन् ! ‘जबू’ हे जम्बू ! इदं प्रारभ्यमाण ‘तइयं’ तृती-

तृतीय संवरद्वार प्रारभ

पूर्व अ चयनमें मृषावाद विरमण नाम का जो दूसरा संवरद्वार कहा गया है, अदत्तादानविरमण के विना नहीं हो सकता है, इसलिये सूत्रकार क्रमप्राप्त इस तृतीय अध्यय में अदत्तादानविरमण नाम का

शील संवरद्वारना प्रारभ

आगणना अध्ययनमा मृषावाद विरमणु नामना शील संवरद्वार विषे ने ठडेवाभा आन्धु तेतु पालन अदत्तादान विरमणु विना थधं शकतु नथी तेथी सूत्रकार अनुक्रमे आवता आ तृतीय अध्ययनमा अदत्तादान विरमणु

યમધ્યયનં 'દત્તમણુનાયસવરો' દત્તાનુજાતસવર. = દત્ત = ડાઘકૈવિતીર્ણમ્ અન્નપાના
 દિક્મ્, અનુજાત = પ્રાતિદારકપીઠફલકાદિકં ચ ગ્રામમિત્યેવમ્ : મસરો-દત્તા
 નુજાતસવરો નામ 'હોડ' ભવતિ । 'મહવ્ય' મહાવ્રતમિદમ્, તથા-'ગુણવ્યય'
 ગુણવ્રતં=ગુણાનામ્ પેદ્ધિરુપારલૌકિકોપકારાણા કારણભૂત વ્રત-ગુણવ્રતમ્ । કો
 શમિદમ્ ? इत्याह—'परद्व्यहरणपडिविरडकरणजुत्त' परद्व्यहरणमतिजितिकर
 णयुक्तं=परेपां यद् द्रव्य=धन तस्य यद् हरणम्=आदान, तत्प्रति या विरति'=विर-
 मण तस्या कारणम्=आचरण, तेन युक्तं=सहितम्, परद्रव्यादानमिमुषकारकमि
 त्यर्थः, तथा—'अपरिमियमणततण्हाणुगयमहिच्छमणवयणकलुसआयाणसुनिग्ग
 हिय' अपरिमितानन्तवण्णानुगतमहेच्छमनोयचनरुपादानमृनिगृहीतम्=अपरि
 तीसरा सवरद्वार कहते हैं—'जवू' इत्यादि ।

टीकार्थ—(सुव्यय) हे शोभन व्रत शालिन जवू ! (तड्य) यह
 प्रारभ्यमाण तृतीय अभ्ययन (दत्तमणुनायसवरो) दत्तानुज्ञान सवर
 नामका है । इस दत्तानुज्ञात (दिया हुआ) में दाता के द्वारा वितीर्ण
 अन्नपान का तथा अनुज्ञात पीठफलक आदि के लेने का विधान किया
 गया है । यह (महव्य) दत्तानुज्ञानसवर महाव्रत है । (गुणव्यय)
 तथा गुणव्रत है—इह लोक मध्वी तथा परलोकसमधी गुणों का यह कार-
 णभूत व्रत है । अथवा समस्तव्रतों का यह उपकारक है इसलिये गुण-
 व्रत है (परद्व्यहरणपडिविरडकरणजुत्त) इस व्रत के आराधन से जीव
 का आचरण दूसरों के द्रव्य को ग्रहण करने की प्रवृत्ति से सर्वथा
 विरक्त होता है (अपरिमियमणततण्हाणुगयमहिच्छमणवयणकलुस-
 आयाणसुनिग्गहिय) तथा इस महाव्रत की आराधना से, विद्यमान-

નામના ત્રીજા સવરદ્વારનું વર્ણન કરે છે—“ જવૂ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ સુવ્યય ” હે શોભનવ્રતશાળી જવૂ ! “ તડ્ય ” આ શરૂ કરેલ
 ત્રીજું અધ્યયન “ દત્તમણુનાયસવરો ” દત્તાનુજ્ઞાન સવર નામનું છે દત્તાનુજ્ઞાત
 (દીધેલું) આ દાતાદ્વારા વિતીર્ણ અન્નપાન તથા અનુજ્ઞાત પીઠફલક આદિલેવાનું
 વિધાન કરેલ છે તે “ મહવ્ય ” દત્તાનુજ્ઞાન સવર મહાવ્રત કહેવાય છે
 “ ગુણવ્યય ” તથા ગુણવ્રત છે—આલોક અને પરલોક સમધી ગુણોનું કારણ
 ભૂત આ વ્રત છે, અથવા સમસ્ત વ્રતોને માટે તે ઉપકારક હોવાથી તેને
 ગુણવ્રત કહ્યું છે “ પરદ્વ્યહરણપડિવિરડકરણજુત્ત ” આ વ્રતની આરાધના
 કરવાથી અન્યનું દ્રવ્ય ગ્રહણ કરવાની પ્રવૃત્તિથી જીવે સર્વથા વિરક્ત રહે છે
 “ અપરિમિયમણત તણ્હાણુગયમહિચ્છ મણવયણકલુસ-આયાણસુનિગ્ગહય ” નજરે
 અડતા દ્રવ્યને પ્રાપ્ત કરવાની જે અસીમ તથા અક્ષય અપૂહા-લાલસા થાય છે

મિતા=પરિમાણરહિતા, અનન્તા=અત્યાયા તુલા=સ્પૃહા=ચિંતામાનદ્રવ્યાવ્યયેન્દ્રિયા, તયાજ્જુગતે ચે મહેચ્છે=અપ્રિયમાનદ્રવ્યલાભવિષયે મહેચ્છાપુક્તે મનોવચને=મનોવાળી ચ, તાભ્યાં યત્ કલુષં=પરધનગિપયત્વેન પાપસ્વપ્નમ્ આદાન=ગ્રહણ તત્સુનિગૃહીત =સુનિયન્ત્રિત યત્ર તમ્, તયા-‘સુસજમિયમણહત્યપાયનિદ્રુય’ સુસયમિતમનોહસ્તપાદનિશ્ચુત-સુસયમિતેન સમ્યગ્નિયન્ત્રિતેન મનમા હસ્તો પાદો ચ પરદ્રવ્યાદા-નવ્યાભાગાત્ નિગૃતો=ઉપરતો યત્ર તત્ । ઉક્તવિશેષણદ્વયેન પરદ્રવ્યાદાને મનોવાક્યાયનિગેધઃ પ્રદર્શિત । પુનઃ સ્થભૂતગિ,મ્ ? इत्याह-‘निगम्य’ निर्ग्रन्थ=निर्गतो ग्राह्याभ्यन्तरो ग्रन्थो तस्मात्तत्, ग्राह्याभ्यन्तरग्रन्थिरहितमित्यर्थः, तथा-‘णेद्विगं’

દ્રવ્ય કે અવ્યય હોને કી જો અપરિમિત એવ અક્ષય સ્પૃહાલાલસા હોતી હૈ વહ, તયા इस स्पर्हा-लालसा-से जो यही २ और अविद्यमान द्रव्य के लाभ विषयक इच्छाओं की परपरा चलनी है कि जिससे मनवचन की पर धन को लेने-ग्रहण करने की जो कलुषित प्रवृत्ति होती रहती है वह सुनियन्त्रित हो जाती है । तथा जब मन की परधन को हरण करने की कलुषित विचारधारा सुनियन्त्रित हो जाती है फिर (सुस-जमियमणहत्यपयानिद्रुय) उम मन के नियन्त्रित होते ही परद्रव्य के ग्रहण करने के निमित्त जो राशियों का व्यापार होता है वह भी उप-रत-वद हो जाता है । इस तरह इन दोनों विशेषणों से यह कहा है कि इस महाव्रत के सेवन करने से, परद्रव्यहरण करने के लिये जो मनवचन और काय का व्यापार पहिले होता था वह सर्वथा वद हो जाता है । (अदत्तादानविरमणसवर) एतदत्तानुज्ञात सवर कैसा है की कहते हैं-(निर्गम्य) इस महाव्रत की आराधना से बाह्य और

તથા તે લાલસાથી ધીન અવિદ્યમાન દ્રવ્યની પ્રાપ્તિ માટેની મોટી મોટી ઇચ્છાઓની જે પરપરા આવે એ જે બની મન વચનની પાશ્વરુધન લેવાની જે દોષપૂર્ણ પ્રવૃત્તિ ચાલુ રહે છે તેનું આ મહાવ્રતની આરાધનાથી નિયન્ત્રણ થાય છે, તથા બ્યારે પાશ્વરુધન હરી લેવાની મનની કલુષિત વિચારધારા સુનિયન્ત્રિત થઈ જાય છે ત્યારે ‘સુસજમિયમણહત્યપાયનિદ્રુય’ તે મનનું નિયમન થતા ૪ પાશ્વરુધન દ્રવ્ય ગ્રહણ કરવા માટે હાથ-પગની જે પ્રવૃત્તિ ચાલે છે તે પણ બંધ પડી જાય છે આ રીતે એ બંને વિશેષણોથી એ દર્શાવવામાં આવ્યું છે કે આ મહાવ્રતનું મેવન કરવાથી પરદ્રવ્ય લેવાને માટે મન, વચન અને કાયાની જે પ્રવૃત્તિ પહેલાં ચાલતી હતી તે તદ્દન બંધ પડી જાય છે “અદત્તાદાનવિરમણસવર” આ દત્તાનુજ્ઞાત સવર કેવું છે તે હવે જાણે છે— “નિગમ્ય” આ મહાવ્રતની આરાધનાથી બાહ્ય અને આંતર્યન્તર પરિગ્રહ દૂર

નેષ્ટિક=સર્વધર્મપ્રકર્ષપર્યન્તર્ણિ, ' નિરુત્ત ' નિરુત્ત-મર્ગરૂપાદેયત્વેન નિરુત્તમ્,
 અન્યભિચરિત તા નયા-નિરાસવ ' નિરાસવ=કર્માદાનગતિમ્, ' નિભય ' નિ
 ભય=નૃપાદિભયરહિત ' વિમુત્ત ' વિમુત્ત=લોભદોષાન્તિરિત્તમ્, તથા- ' ઉત્તમન-
 રવસમ-પવરવલગ-સુવિદિયજણમમય ' ઉત્તમનરવૃષભ-પવરવલગસુવિદિતજનમ-
 મ્મતમ-ઉત્તમા=ઉત્કૃષ્ટા યે નરવૃષભાઃ-નરથેષ્ઠાઃ=જિનો તથા-પવરવલગન્તઃ=
 ચક્રવર્તિસામુદેવાદયઃ, સુવિદિતજનાઃ=સાધુલોકાસ્તેષા સમતમ્=અભિમત યત્તત્થા
 તથા- ' પરમમાહુધમ્મચરણ ' પરમસાધુધર્મચરણ=પરમસાધુધર્માન્તમ્=ઉત્કૃષ્ટપત્તિસ્વિના
 ધર્મચરણ=ધર્મપાલનમ્ યત્તત્થા, પતાદગમિદ દત્તાનુજાતમચરણમ્ । અતઃ તૃતીયે

આભ્યન્તર પરિગ્રહ દૂર હો જાતા હૈ, અર્ગત ૪૮ વ્રત ત્રાયઃ ઓર આભ્ય
 ન્તર કી ગ્રન્થિ સે રહિત હોતા હૈ તથા (જેટ્ટિય) સમસ્તધર્મોં કૈ પ્રકર્ષ
 પર્યન્ત ચહ રહતા હૈ, ણવ (નિરુત્ત) નર્વજ પ્રભુને હસે ઉપાદેયરૂપ સે
 કહાહૈ, અથવા ચહ અન્યભિચરિત હૈ, અર્થાત્ જિતના મી સકલ
 સયમી કા ધર્મ હૈ ઉમકે સાવ ચહ અવિનામાવી હૈ । (નીરાસવ) હસમેં
 નવીન કર્મોં કા આદાન નહીં હોતા હૈ । (નિભય) નૃપાદિ કા ભય
 હસકે આચરણ મેં સાધુ કો નહીં રહતા હૈ હસલિયે ચહ નિર્ભય હૈ ।
 (વિમુત્ત) લોભ દોષ આદિ સે ચહ રહિત હોતા હૈ । (ઉત્તમનરવસમ,
 પવરવલગ-સુવિદિયજણસમય) ઉત્કૃષ્ટ જો નરવૃષભ-જિનદેવ હૈ
 તથા ચલદેવ વાસુદેવ આદિ જો પવરવલગત વ્યક્તિ હૈ, તથા સુવિદિત-
 જન જો સાધુ લોક હૈ, હન સત્ર કૈ લિયે ચહ માન્ય હૈ । તથા (પરમસા
 હુધમ્મચરણ) પરમસાધુજનો-ઉત્કૃષ્ટપત્તિસ્વિજનોં કા ચહ ધર્માચરણરૂપ
 હૈ । (અદત્તાદાનવિરમણ) ણેસા ચહ દત્તાનુજાતસચરણ હૈ । હસ

થઈ બધ છે એટલે કે આ વાત બાહ્ય અને આભ્યન્તરની ગ્રન્થિથી રહિત
 હોય છે, તથા “ જેટ્ટિય ” તે સમસ્ત ધર્મોનું પ્રકર્ષપર્યન્ત છે, અને “ નિરુત્ત ”
 સર્વજ પ્રભુએ તેને ઉપાદેયરૂપે બતાવ્યું છે, અથવા તે અન્યભિચરિત છે, એટલે
 કે સયમીના જેટલા કર્મો છે તેની સાથે તે સુચરિત છે ‘ નિરાસવ ’
 તેનાથી નવીન કર્મો બધાતા નથી “ નિભય ” તેને આચરવામાં સાધુને નૃપા
 દિનો ભય રહેતો નથી તેથી તે નિર્ભય છે “ વિમુત્ત ” લોભ, દોષ આદિથી
 તે રહિત હોય છે “ ઉત્તમનરવસમ, પવરવલગ-સુવિદિય જણસમય ” જે શ્રેષ્ઠ
 નરવૃષભ-જિનદેવ છે, તથા બળદેવ વાસુદેવ આદિ જે પ્રબળ બળવાન પુરુષો
 છે, તથા સુવિદિત જન જે સાધુલોક છે, તે સૌને માટે તે માન્ય છે તથા
 “ પરમસાહુધમ્મચરણ ” જે પરમ સાધુજનો ઉત્કૃષ્ટ તપસ્વીજનોને માટે તે
 ધર્માચરણરૂપ છે, એવું આ અદત્તાદાન વિરમણ-દત્તાનુજાત સચરણ છે આ

सवरे साधुभि किं कर्तव्यम् ? इत्याह—‘ जत्थ य ’ यत्र च—तृतीयसवरद्वारे
 ‘ गामागर-नगर-निगम-खेड-कवड-मडव-दोणमुख-सवाह-पट्टणासमगय च
 = ग्रामाकर-नगरनिगम-खेट-कर्णट-मडम्भ-द्रोणमुख-सवाह-पत्तनाश्रमगत च—
 ग्रामाकरनगरनिगमखेटकर्णटमडम्भद्रोणमुखमवाहपट्टनाश्रमाणा व्याख्या पूर्वमुक्ताः,
 तद् गत च ‘ किंचिदव्य ’ किंचिद्रव्य - किमपिद्रव्यम्, तदेवाह—‘ मणिमुत्त-
 सिलप्पवालकस - दूम-रयक - वरकणग - रयणमाह ’ मणिमुक्ताशिला-प्रवाल
 कास्य-दूप्य-रजत-वरकनक-रत्नादि- मणिः-पद्मरागादिः, मुक्ता=मुक्ताफल,
 ‘ शिला ’ बहुमूल्यपाषाणपण्डम्, प्रवाल=विद्रुमः ‘ मूगा ’ इति भाषाप्रसिद्ध,
 ‘ कस ’ कास्य-‘ कामा ’ इति प्रसिद्धम् ‘ दूप्य ’ वस्त्रविशेषः, रजत=‘ चान्दी ’
 इति भाषाप्रसिद्धावरकनक = ग्रात्वन्तरापेक्षया श्रेष्ठ सुवर्ण, रत्न=कर्कतनादिकम्
 आदि यस्य तत्तथाभूत द्रव्य ‘ पडिय ’ पतित-वस्त्राश्चलादेः, ‘ पम्हट्ट ’ प्रस्मृत=कुत्रापि
 विस्मृत ‘ विप्पणट्ट ’ विप्रणट्ट=गवेषकद्विरपि न प्राप्तम्, तथाभूत मणिमुक्तादिकम्

तृतीय सवरद्वार में साधुजनो को क्या करना चाहिये इसके लिये सूत्र
 फार कहते हैं—(जत्थ य) इस तृतीय सवरद्वार में (गामागरनगर-
 निगमखेडकवड मडव दोणमुखसवाहपट्टणासमगय च) साधुजनों को
 ग्राम, आकर, नगर, निगम, खेट, कर्णट, मडम्भ, द्रोणमुख, सवाह,
 पट्टन, आश्रम, इन स्थानों में, रही हुई (किंचि दव्य) कुछ भी वस्तु
 (मणिमुत्तसिलप्पवालकसदूसरयकवरकणगरयणमाह) मणि, मुक्ता,
 शिला, प्रवाल, कास्य, दूप्य-वस्त्रविशेष, रजत-चांदी, सुवर्ण, रत्न आदि
 वस्तु (पडिय) किसी की गिर गई हो, (पम्हट्ट) भूली हुई हो, (वि-
 प्पणट्ट) ढूढ़ने पर भी नहीं मिली हो, (न कप्पह कस्सइ कहेउ वा गे-

तृतीय सवरद्वारभासाधुजनोअथे शु उरवु ओधअे ते अताववाने भाटे सूत्रकार
 उहे छे—“ जत्थ य ” आ श्रील सवरद्वारभा ‘ गामागारनगरनिगम खेडकवड
 मडवदोणामुहसवाहपट्टणसमगय च ” साधुजनोअथे ग्राम, नगर, आकर
 निगम, खेट, कर्णट, मडम्भ, द्रोणमुख, सवाह, पट्टन, आश्रम, अे स्थानोभा
 रहेथी ‘ किंचि दव्य ” कोउ पणु वस्तु “ मणिमुत्तसिलप्पवालकसदूसरयकवर
 कणगरयणमाह ” मणि, मुक्ता, शिला, प्रवाल, कास्य, दूप्य अेउ प्रकारु
 वस्त्र, रजत-आदि, सुवर्ण रत्न आदि वस्तुअे “ पडिय ” कोधनी पडी गध
 डोय, “ पम्हट्ट ” कोध भूली गयु डोय, “ विप्पणट्ट ” शोधवा छता पणु नडी
 न डोय, “ न कप्पइ कस्सइ कहेउवा गेणहेउवा ” तेने लेवानु सयत दे अस-

દ્રવ્ય ન ' કસ્યઈ ' કસ્યાપિ મયામ્યાઽમયતમ્ય યા ' કહેડ ' કથયિતુ યા, ' ને
 પહેડ ' સ્વય ગ્રહીતુ પરેણ ગ્રાહયિતુ યા ' ન કપ્યઈ ' ન કન્યતે, મા'યોર્નિવૃત્તિચ્ચાત્ ।
 પરદ્રવ્ય દૃષ્ટ્વા સાધુના કિં કર્તવ્યમ્, ? ડત્યાદ- ' અહિરણ્મસુવ્વણ્ણ ' અહિરણ
 સુવર્ણકેન=હિરણ્યસુવર્ણર્જકેન ' સમલેટ્ટુકાણે ' સમલેટ્ટુકાગ્નેન=મમ.=
 તુલ્યઃ લેટ્ટુ =મૃત્વણ્ડં કાશ્ચન=સુવર્ણં ચ ઉપેક્ષણીયતયા યમ્ય તેન તથોક્તેન=
 મૃત્વણ્ડે સુવર્ણે ચ સમભાવતેત્યર્થઃ, ' અપરિગ્રહમસુવેણ ' અપરિગ્રહસતૃતેન=
 નાસ્તિ પરગ્રહો यस્ય સોઽપરિગ્રહઃ, અત્ એવ સતૃત =મમત્વભાવોર્જિતસ્તેન તથો-
 ક્તેન સાધુના ' લોગમ્મિ ' લોકે મર્ત્યલોકે ' વિહરિયન્ત ' વિહર્તવ્યમ્, સાધુ-
 મિરુક્કરીત્થા વિહરણીયમિતિ ભાવઃ ॥ ૪૦ ૧ ॥

પહેડ વા)ઔર ન રચય લેના ચાહિયે ડમકો સયન અવયા અસયન સે લેને
 કે લિયે નટી કહના ચાહિયે । ક્યોંકિ ડસ પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિ મુનિનાર્ગ મેં
 કલ્પિત નહીં કરી હૈ । કારણ કિ સાધુ (અહિરણ્ણસુવ્વણ્ણે) હિરણ્ય ઔર
 સુવર્ણ ઇન સવ સે નિવૃત્તિવાલા હોના હૈ સાધુ કો ન હિરણ્ય કી ચાહના
 હોતી હૈ ઔર ન સુવર્ણ કી । (સમલેટ્ટુકચણે) ડમકી દૃષ્ટિ મેં તો
 ઉપેક્ષણીય હોને કે કારણ મૃત્વણ્ડ મિટ્ટી કા ઢેલા ઔર કાચન દોનોં
 ચરાચર હોતે હ । અર્થાત્ વત્ ઇન દોનો મે સમભાવ ચાલા હોતા હૈ ।
 (અપરિગ્રહસવુડેણ) ઇમ તરાર મમત્વભાવ સે વર્જિત હોને કે કારણ
 અપરિગ્રહ સે યુક્ત હોતે હ સાધુ કો ઇસ પ્રકાર કા હોકર ઇસ લોક
 મેં વિચરના ચારિયે ।

ભાવાર્થ—સસાર મેં નિર્ભય્ હોકર વિચરણ કરને કે લિયે સવ સે
 ઉત્કૃષ્ટ સાધન યદિ કોઈ હૈ કિ જિસસે લોગોં કી દૃષ્ટિ કા આકર્ષણ હો

યતને કહેલુ ન જોઈએ, અને પોતે લેવી જોઈએ નહીં કારણ કે એવા
 પ્રકારની પ્રવૃત્તિ મુનીમાર્ગમા ઉચિત ગણાવી નથી કારણ કે સાધુ “ અહિરણ્ણ
 સુવ્વણ્ણે ” હિરણ્ય અને સુવર્ણ એ બધાની નિવૃત્તિ હોય છે સાધુને હિર
 ણ્યની ઇચ્છા હોતી નથી કે સુવર્ણની ઇચ્છા હોતી નથી “ સમલેટ્ટુકચણે ”
 તેની દૃષ્ટિએ ઉપેક્ષા પાત્ર હોવાથી માટીનુ ઢેકુ અને ડાચન અને સમાન
 છે એટલે કે બન્નેમા તે સમભાવવાળો હોય છે “ અપરિગ્રહસવુડેણ ” આ
 રીતે મમત્વભાવથી રહિત હોવાથી તે અપરિગ્રહી હોય છે સાધુએ એ પ્રકારે
 અપરિગ્રહમત યુક્ત બનીને આ લોકમા વિચરવુ જોઈએ

ભાવાર્થ—સસારમા નિર્ભય થઈને ફરવાને માટે જો કોઈ સર્વશ્રેષ્ઠ સાધન
 હોય કે જેનાથી લોકોની દૃષ્ટિ આકર્ષાય અને સાધુત્વ પર વિશ્વાસ બંધાય તે

और साधुत्व पर चि वाम-श्रद्धा जमे-तो वह एक अपरिग्रहत्व का ही सिद्धान्त है । इसमें अन्तरंग और बहिरंग, इन दोनों प्रकार के परिग्रह का सैधान्तिक दृष्टि से परित्याग होता है । साधु के पास निर्ग्रन्थ मुनि के पास इन दोनों प्रकार के परिग्रह का अभाव होता है । बाहिरि दृष्टि में जो कुछ उसके पास में है वह सब समयधर्मोपकरण है, परिग्रह नहीं है । सूत्रकार ने यही बात साधु के लिये इस तृतीय स्वरद्वार में समझाई है । पूर्व अध्ययन में-द्वितीय अध्ययन में मृषावाद का नौकोटियों से साधु को जो त्याग करना कहा है वह तबतक पूर्णरूप से पालित नहीं हो सकता कि जबतक अन्तरंग और बहिरंग का त्याग नहीं हो जाता । अपरिमित अनंत तृष्णाओं पर अकुश करने वाली यही एक अपरिग्रहता है । मन, वचन और काय की परके द्रव्य को आदान (गृहण) करने की प्रवृत्ति पर रोक लगा देने वाली यही अपरिग्रहता है । इस अपरिग्रहता की छत्रच्छाया में पलने वाला साधु नवीन कर्मों के बंध से रहित हो जाता है, तथा सबका विश्वासपात्र बन जाता है । उसे किसी भी प्रकार का किसी का भय नहीं रहता है । ग्राम आकर आदि किसी भी स्थान में भूली हुई, पड़ी हुई, रखी हुई, किसी भी तरह की वस्तु वह न स्वयं लेना है और न दूसरो से उसे लेने को कहता है ।

તે એક માત્ર અપરિગ્રહત્વનો મિદ્ધાત જ છે તેમા આત્મિક તથા બાહ્ય એ બન્ને પ્રકારના પરિગ્રહનો સૈદ્ધાન્તિક દૃષ્ટિએ પરિત્યાગ થાય છે સાધુની પાસે નિર્ગ્રન્થ મુનિની પાસે આ બન્ને પ્રકારના પરિગ્રહનો અભાવ હોય છે બાહ્ય રીતે જોતા તેમની પાસે જે કંઈ હોય છે તે બધું સયમ ધર્મોપકરણ છે, પરિગ્રહ નથી, સૂત્રકારે એ જ વાત સાધુને માટે આ ત્રીજા સ્વરદ્વારમા સમજાવી છે આગળના અધ્યયનમા ખીજા અધ્યયનમા મૃષાવાદનો નવ પ્રકારે ત્યાગ કરવાનું સાધુઓને જે ઠહેવામા આવ્યું છે તેનું અંતરંગ તથા બહિરંગ પરિગ્રહનો ત્યાગ ન થાય ત્યાં મુખી પાલન થઈ શકતું નથી અપરિમિત-અનંત તૃષ્ણાઓ પર અકુશ રાખનાર આ એક અપરિગ્રહતા જ છે આ અપરિગ્રહતા જ, મન, વચન અને કાયાથી અન્યનું દ્રવ્ય પકાવી લેવાની પ્રવૃત્તિ પર એક (અકુશ) નું કામ કરે છે આ અપરિગ્રહતાની છત્રછાયામા રહેતો સાધુ નવા કર્મોના બંધથી રહિત બની જાય છે તથા સૌને માટે વિશ્વાસપાત્ર બની જાય છે તેને કોઈનો પણ કોઈ પણ પ્રકારનો ભય રહેતો નથી ગ્રામ, આડર આદિ કોઈ પણ સ્થાનમા ભૂલથી રહેલી, પડી રહેલી, મૂડી રાખેલી કોઈ પણ પ્રકારની વસ્તુ તે ખોતે લેતો નથી કે લેવાનું ખીજાને કહેતો નથી. આ તત્ત્વને લીધે

પુનર્નુનિકર્તવ્યમાદ—‘ જપિય ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—જં પિ ય હોજ્ઞા હિ દઘ્વજાયં સ્વલગયં સ્વેત્તગયં રત્ન-
મતરગય વા કિંચિ પુષ્પફલતયપ્પવાલકદંમૂલતણકટ્ટસક-
રાઈ અપ્પ વા વહું વા અણુ વા શૂલ વા ન કપ્પઈ ઉગ્ગહે
અદિપ્પણમ્મિ ગેપ્પહેડ । જે હણિ હણિ ઉગ્ગહે અણુપ્પણાવિય
ગેપ્પિહયઘ્વ વજ્જેયઘ્વો ય સઘ્વકાલ અચિયત્તઘરપ્પવેસો
અચિયત્તભત્તપાણં અચિયત્તપીઢફલગસેજ્ઞાસથારગવરથપા-
યકવલ દંડગ-રયહરણ-નિસેજ્જ ચોલપટ્ટગ મુહમોત્તિયપાય-
પુછ્છણાઈમાયણમંડોવહિડવગરણ । પરપરિવાઓ પરસ્સ દોસો
પરવવણ્ણેણ જ ચ ગેપ્પહેતિ, પરસ્સ નાસેઈ જ ચ સુકય દાણસ્સ
ય અતરાઈય, દાણવિપ્પણાસો પેસુપ્પણ ચેવ મચ્છરિય ચ ॥૨॥

ટીકા—‘ જ પિ ય ’ યદપિ ચ ‘ હોજ્ઞા ’ ભવેત્, દિ=નિશ્ચિત ‘ દઘ્વજાય’
દ્રવ્યજાત, તદેવાઈ= ‘ સ્વલગય ’ સ્વલગતં=સ્વલ ધાન્યરાશીકરણભૂમિસ્ત્ર ગત=
સ્થિત, તથા—‘ સ્વેત્તગય ’ ક્ષેત્રગતમ્=ક્ષેત્રસ્થિત ‘ રત્નમતરગય ’ અરણ્યાન્તર્ગત=
વનાન્તઃ સ્થિત વા ‘ કિંચિ ’ કિંચિત્=કિમપિ ‘ પુષ્પફલતયપ્પવાલકદમૂલ-

ઈસ વ્રત સે સાધુ કી આત્મા સમસ્ત વસ્તુઓં મેં અસારતા કે દર્શન કર
લેને સે ઢેલા ઔર કાચન મેં સમાન બુદ્ધિ વાલા બન જાતા હૈ ॥ સૂ-૧ ॥

સૂત્રકાર પુનઃ મુનિજન કે હી કર્તવ્ય કો કહતે હૈ—‘ જપિ ય ’ ૬૦

ટીકાર્થ—(જપિ ય હોજ્ઞા હિ દઘ્વજાય) જો કુછ મી દ્રવ્ય હો
ચાહે વ (સ્વલગય) સ્વલિહાન મે પડા હો ચાહે (સ્વેત્તગય) સ્વેત મેં
પડા હો, યા (રત્નમતરગય વા) જલગ મેં પડા હો (કિંચિ)

સાધુનેા આત્મા સમસ્ત વસ્તુઓમા અસારતાનુ દર્શન ડરી લેવાથી સોનુ અને
માટીના ઢેકાને સમાન લાવે બેનાર બની બીય છે ॥ સૂ૦ ૧ ॥

સૂત્રકાર ફરીથી મુનિજનના ડર્તાવ્યે જ દર્શાવે ડે—“ જપિ ય ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ જપિ ય હોજ્ઞા હિ દઘ્વજાય ” જે કોઈ પણ દ્રવ્ય હોય, ભલે
તે “ સ્વલગય ” બળામા પડ્યુ હોય ભલે “ સ્વેત્તગય ” તે ખેતરમા પડ્યુ
હોય, “ રત્નમતરગય વા ” જ ગલની અંદર પડ્યુ હોય “ કિંચિ ” ગમે તે

તળકટ્ટસક્રારાઢ ' પુષ્પફલત્વક્ર પ્રવાલકન્દમૂલતળકાષ્ઠશર્કરાદિ, તત્ર-પુષ્પ-
ફલે પ્રતીતે, ત્વક્ર=ત્વચા, પ્રવાલોડકુરઃ, કન્દઃ=મૂરણાદિઃ, મૂલમ્=મૂલકાદિ,
તળ કાષ્ઠં ચ પ્રતીતમ્, શર્કરાઃ='કર' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા, એતાન્યાદૌ યસ્ય
તત્તથોક્ત દ્રવ્યમ્ અપ્પ ' અલ્પ=સ્તોક યા ' વહુ ' વહુ=મચુર વા ' અણુ ' અણુ=
આકારેણ સૂક્ષ્મ વા ' થૂલ ' થૂલમ્-આકારેણ વૃહદ્ વા, તત્ ' ન કપ્પઈ ' ન
કલ્પતે ' ઉગ્ગહે ' અવગ્રહે ' અદિણ્ણે ' અદત્તે તત્તદ્વસ્તુસ્વામિનિદેશમપ્રાપ્ત્યેત્યર્થઃ,
' ગેળ્હેડ ' ગ્રહીતુમ્, કિન્તુ ' જે ' યદ્ ગ્રાહ્ય મવેત્, તત્ ' હ્ણિ હ્ણિ ' અહન્ય-
હ્ણિ=પ્રતિદિનમ્ ' ઉગ્ગહ ' અવગ્રહ-તત્સ્વામિનિદેશમ્, ' અણુણ્ણિ ય ' અણુ-
જ્ઞાપ્ય=પ્રાપ્ય ' ગેળ્હિયવ્વ ' ગ્રહીતવ્યમ્ । તથા ' સવ્વકાલ ' સર્વકાલ=સર્વદા
' અચિયત્તપરપ્પવેસો ' અપ્રીતિકારકગૃહપ્રવેશ ' વજ્જેયવ્વો ' વર્જિતવ્ય' તથા-

કુછ મી હો જૈસે (પુષ્પફલતયપ્પગાલકદમૂલતળકટ્ટસક્રારાઢ) ચાહે વહ
વસ્તુ પુષ્પરૂપ મેં હો, ફલરૂપ મેં હો, છાલરૂપ મેં હો, પ્રવાલ-કોંપલ રૂપ
મેં હો, સૂરણ આદિ કદ રૂપ મેં હો, મૂલક આદિ રૂપ મેં હો, તળ કાષ્ઠ
આદિ કે રૂપ હો ચાહે કર આદિ કે રૂપ મેં મી ક્યોં ન હો । યે સબ
વસ્તુએં વહા (અપ્પ વા) ધોડી હો યા (વહુ વા) વહુત હો (અણુ વા)
આકાર સે છોટી હો યા (થૂલ વા) વડી હો, કિસી મી તરહ સે વહ
इन वस्तुओ को (न कप्पइ उगगहे अदिण्णम्मि गेण्हेड) बिना उनके
मालिक की आज्ञाप्राप्त किये किसी भी रूप में लेना नहीं कल्पता है ।
तथा (जे) जो वस्तुएँ साधु के लिये ग्राह्य है वे भी (ह्णि ह्णि)
प्रतिदिन (उगगहे अणुणावि य) उनके स्वामी की आज्ञा प्राप्त कर ही
(गेण्हियव्व) ग्रहण करने योग्य हैं । तथा (वज्जेयव्वो य सव्वकाल

દ્રવ્ય હોય, “ પુષ્પફલતવ્યગાલકદમૂલતળકટ્ટસક્રારાઢ ” ભલે તે વસ્તુ પુષ્પરૂપે
હોય, ફલરૂપે હોય, છાલરૂપે હોય, પ્રવાલ-કુપળના રૂપમાં હોય, સૂરણ આદિ
કદરૂપે હોય, મૂળ આદિ રૂપમાં હોય, તળ કાષ્ઠ આદિરૂપે હોય, ભલે કાકરા
આદિરૂપે હોય, તે બધી વસ્તુઓ ત્યાં “ અપ્પ વા ” થોડી હોય કે “ વહુ વા ”
વધારે હોય, “ અણુ વા ” કદમાં નાની હોય કે “ થૂલ વા ” મોટી હોય,
કોઈ પણ રીતે એ વસ્તુઓને “ ન કપ્પઈ ઉગ્ગહે અદિણ્ણમ્મિ ગેળ્હેડ ” તેના
માલિકની આજ્ઞા લીધા વિના કોઈ પણ રીતે તેને ગ્રહણ કરવાનું મુનિને
કલ્પતું નથી તથા “ જે ” વસ્તુઓ સાધુઓને ગ્રહણ કરવા યોગ્ય છે તે પણ
“ હ્ણિહ્ણિ ” પ્રતિદિન “ ઉગ્ગહે અણુણા વિ ય ” તેમના માલિકની આજ્ઞા
લઈને જ “ ગેળ્હિયવ્વ ” ગ્રહણ કરવા યોગ્ય છે તથા “ વજ્જેયવ્વો ય સવ્વ

‘अचियत्तभत्तपाण’ अप्रतीतिकारकभक्तपान वर्जितव्यम्, अविश्वासभाजनस्य भक्तपान न ग्राह्यमित्यर्थः, तथा—‘अचियत्तपीढफल्गसेज्जासथारगवत्थपायकम्बलदडगरओहरणनिसेज्जचोल्पट्टगमुहपोत्तियपायपुठणाभायणभटोवडिउवगरण’ अप्रतीतिकाररूपीढफल्गसेज्जासथारगवत्थपायकम्बलदडगरओहरणनिषधाचोल्पट्टगमुहपोत्तियपायपुठणाभायणभटोवडिउवगरण वर्जितव्यम्, अविश्वासभाजनस्य पीढफल्गसेज्जासथारगवत्थपायकम्बलदडगरओहरणनिषधाचोल्पट्टगमुहपोत्तियपायपुठणाभायणभटोवडिउवगरण न ग्राह्यमित्यर्थः, तथा ‘परपरिवाओ’ परपरिवादः—कास्या परदोषप्रकटनम्, वर्जितव्य, ‘परस्स’ परस्य ‘दोसो’ दोषश्च वर्जनीय, परोक्षे निन्दा, प्रत्यक्षे दोषप्रकटनम्, इत्युभय च

अचियत्तघरप्पवेसो) जो अपनी प्रतीति-विश्वाम-नहीं करता हो उसके घर पर साधु को सर्वदा नहीं जाना चाहिये, तथा (अचियत्तभत्तपाण) जो अपनी प्रतीति नहीं करता हो उसके गृह से साधु को भक्तपान नहीं लेना चाहिये। इसी तरह (अचियत्तपीढफल्गसेज्जासथारगवत्थपायकम्बल दडगरओहरणनिसेज्जचोल्पट्टगमुहपोत्तियपायपुठणाह) जो व्यक्ति अपने ऊपर विश्वास नहीं रखता हो उसके द्वारा प्रदत्त—(दिया हुआ) पीठ, फलक, शय्या, सम्तारक, वस्त्र, पात्र, कम्बल, दण्डक, रजोहरण, निषण्ण, चोल्पट्टक, सदोरकमुज्जवन्निका, पादप्रोज्जन आदि, तथा (भायणभटोवडिउवगरण) भाजन, भाड, उपाधि, ये सब उपकरण नहीं लेना चाहिये। (परपरिवाओ) तथा काङ्कुरूप से साधु को पर के दोषों को प्रकट नहीं करना चाहिये। तथा (परस्स-दोसो) परोक्ष में निन्दा करना और साम्ने दोषों को कहना ये दोनों

काल अचियत्तघरप्पवेसो” ने पोतानो विश्वास न करतो होय, तेना धरे साधुओ कही जेवुं जेधओ नही, तथा “अचियत्तभत्तपाण” ने पोताना पर विश्वास न भूकतो होय तेने त्याही साधुओ आहार पाणी स्वीकारवा जेधओ नही ओ जे रीते “अचियत्तपीढफल्गसेज्जासथारगवत्थपायकम्बलदडगरओहरणनिसेज्जचोल्पट्टगमुहपोत्तियपायपुठणाह” ने व्यक्त पोताना पर विश्वास न राखती होय तेना द्वारा अपायेल पीठ, इलक, शय्या, सम्तारक, वस्त्र, पात्र उभण, दण्डक, रजोहरण निषण्ण, चोल्पट्टक, दोरावडित मुहपत्ति, पाद प्रोज्जन आदि तथा “भायणभटोवडिउवगरण” भाजन, (पात्रा लाड, उपाधि, ओ पधा साधने लेवा जेधओ नही “परपरिवाओ” तथा काङ्कुरूप से साधु ओओ भीजना दोषो प्रकट करवा जेधओ नही तथा “परस्सदोसो” परोक्ष रीते निन्दा करवानी तथा साम्ने दोषो कहेवानी प्रवृत्ति साधुओ छोडवी

वर्जनीयम्। तथा-‘परवचसेण’ परव्यपदेशेन बालग्लानादीना निमित्तेन ‘ज च’ यच्च=अशनादिक, ‘गेण्हेइ’ गृह्णाति=वैयावृत्यकारक, तदन्येर्नोपभोक्तव्यम्। बालग्लानादिनिमित्तमानीतं वस्तु यथाशिष्टं भवेत्, तथा तद् वस्तु स्वामिनि-देशेन सभोक्तव्यमित्यर्थः, ‘परस्स’ परस्य तथा ‘ज च’ यच्च ‘सुक्य’ सुकृत=पुण्यादिक ‘नासेइ’ नाशयति, अपहनुते, येन उचनादिना परकृतपुण्यादेरपह्नुति-र्भवति, तद् वस्तु निमित्तमित्यर्थः, तथा-‘दाणस्स य’ दानस्य च ‘अतराइय’ अन्तरायिकम्=येन उचनादिना दानान्तर्गतो भवेत्तद् वर्जनीयम्, तथा-‘दाण-विप्पणासो’ दानविप्पणाशः=येन उचनादिना दानस्य विनाशो भवति, तद् वर्जनीयम्, तथा-‘पेसुन्न चेव’ पैशुन्य=परोक्षे परदोषाविष्करण ‘चुगली’ इति भाषा प्रमिद चेव ‘मत्तरिच च’ मात्सर्यम्=ईर्ष्यां च वर्जनीयम् ॥ सू०२ ॥

घातें श्री साधु को मोह देने की चाहिये। तथा-(परवचसेण ज च गेण्हति) बाल ग्लान आदि के निमित्त से जो अशन आदि वैयावृत्यकारक साधु लाया होवे वह दूसरे साधुओं को अपने उपयोग में नहीं लेना चाहिये। तात्पर्य इसका यह है कि बाल ग्लान आदि अवस्थापन्न साधुजन के लिये जो वस्तु लाई गई हो वह उनके उपयोग से यदि बच जाय तो वह उस वस्तु के स्वामी की आज्ञा लेकर ही दूसरे साधुओं को अपने उपयोग में लानी चाहिये। तथा (परस्म ज च सुक्य) जिस वचन से दूसरे के सुकृत आदि पुण्यकर्मा का अपहनुव होता हो ऐसा वचन साधु को त्याग कर देना चाहिये। तथा (दाणस्स अतराइय) जिस वचन से दान में अतराय हो जावे तो ऐसा वचन भी नहीं कहना चाहिये। तथा (दाणविप्पणासो) जिस वचन से दान का विनाश होता हो ऐसा वचन भी नहीं बोलना चाहिये। तथा (पेसुण्ण) साधु को

नेहंओ तथा “परवचसेण ज च गेण्हति” आल ग्लान आदिने निमित्ते जे आहार आदि वैयावृत्यकारक साधु लाव्वा होय ते भील साधुओओ पोताना उपयोगमा लेवे नेहंओ नही तेनु तात्पर्य ओ छे के आल ग्लान आदि अवस्थापन्न साधुजनने भाटे जे वस्तु लाववामा आवी होय ते तेओओ वापर्या पछी ववे तो ते वस्तुना भालिअनी आज्ञा लधने ज भील साधुओओ तेने पोताना उपयोगमा लेवी नेहंओ तथा “परस्स ज च सुक्य” जे वय मोथी भीलना सुकृत आदि पुण्यभेनि ना यतो होय तेवा वयनो साधुओ भालवा नेहंओ नही, ओटवे ज तेवा वयनो भालवानु साधुओ भ ध करवु न्ओओ तथा “दाणस्स अतराइय” जे वयनथी दानमा अतराक नडे ओवा वयनो पणु कडेवा नेहंओ नही तथा “दाणविप्पणासो” जे वयनोथी दाननो विनाश यतो होय ते वयनो पणु भालवा नेहंओ नही तथा “पेसु

कीदृशो मुनिरिदं व्रतं नाराधयती ? त्याह—‘जे वि य’ इत्यादि—

मूलम्—जे वि य पीठफलगसेजामंथारगपत्थपायकंवल
दडगरयहरणानिसेज चोलपट्टगमुहपोत्तिगपाय पुंउणाइ भायण
भडोवहिउवगरणं असविभागी असगहरुई, तनतेणे य वइतेणे
य रूवतेणे य आयारतेणे य भावतेणे य सवकरे झंझकरे
कलहकरे वेरकरे चिकहनरे असमाहिकरे सया अप्पमाणभोई
सयय अणुवडवेरे य निच्चरोसी से तारिसण नाराहण
वयमिण ॥ सू० ३ ॥

टीका—‘जे वि य’ योऽपि च मुनिः ‘पीठफलगनेज्जासथारगपत्थपाय-
कवलचोलपट्टगरयहरणमुहपोत्तिगपायपूउणाइभायणभडोवहिउवगरण’ पीठ-
फलगशय्यासस्तारकसत्तपात्ररम्यलचोलपट्टरजोहरणपुत्तवस्त्रिकापादप्रोञ्जनादि-
भाजनभाण्डोपधुपकरणम्=एषणागुणानि शुद्धिलब्ध पीठकलकादिक लब्ध्वेति
गम्यते, तस्य असविभागी=अविभागकारी-आचार्यगलानादिभ्यः पीठफलकादीन्
अविभज्यैव स्वार्थजुद्धया स्वयमुक्तो भवति स इदं व्रतं नाराधयतीत्यग्रेण

किसीकी जुगली नहीं करना चाहिये। तथा (मच्छरिय) साधु को इर्ष्या-
भाव का भी परित्याग कर देना चाहिये ॥ सू-२ ॥

किस प्रकार का मुनि इस व्रत की आराधना नहीं कर सकता है
इस बात को कहते हैं—‘जे वि य’ इत्यादि० ।

टीकार्थ—(जे वि य) जो मुनि एषणागुण की विशुद्धि से
प्राप्त पीठ, फलक, शय्या, सस्तारक, वस्त्र, पात्र, कणल, दड, रजोहरण,
निषद्या, चोलपट्टक, सदोरकमुखवस्त्रिका, पादप्रोञ्जन आदि, तथा
भाजन, भाड, उपधि, इन सब उपकरणों को प्राप्त करके उनका विभाग

ण” साधुओं के। धनी आदी करवी जेधं जे नही तथा “मच्छरिय” साधुओं
ईर्ष्याभावने। पण परित्याग करेवो जेधं जे ॥ सू-२ ॥

केवा मुनि आ मतनी आराधना करी शकता नथी ते वान हवे सूत्र
कार कहे छे—“जे वि य” इत्यादि

टीकार्थ—“जे वि य” जे मुनि ओपक्षा गुणनी विशुद्धिसे प्राप्त थयेव पीठ इलक,
शय्या सस्तारक, वस्त्र, पात्र, कणल, दड रजोहरण, निषद्या, चोलपट्ट, दोरा
सहितनी मुहपत्ति, पादप्रोञ्जन आदि तथा भाजन, भाड, उपधि जे अधा

સમ્યન્ધઃ । તથા-‘અસગરહૃદ્’ અસગરહૃદિઃ-ન સગ્રહે રુચિર્યસ્ય સ તથોક્તઃ-
ગચ્છોપગ્રહકરસ્ય ઇષ્ણાદોષરહિતસ્ય લભ્યમાનસ્ય વ્રતપાતાદિકસ્ય સ્વાર્થ-
પરાયણત્વેન-‘મમ પ્રચુર વસ્ત્રપાત્રાદિક ણિધતે ક્લિમન્યેષા ચિન્તયા’ ઇતિ ત્રિ-
ચિન્ત્ય સગ્રહશુદ્ધિર્જિત इत्यर्थः । અત્ર મૂર્ઝયા સગ્રહકરણ નિપિઢમ્ । તથા ‘તવ-
તેજે’ તપઃ સ્તેનઃ-નપશ્ચૌર-યથા સ્વભાવતઃ કૃશશરીરકશ્ચિદનગાર દષ્ટ્વા
કથિત્પૃચ્છતિ-‘ઓ મુને ! યો માસક્ષપણકો મુનિઃ શ્રૂયતે સ મયાનેવ’ તદા સ
સ્વમાનાધર્થમાહ-‘સાધવઃ ક્ષપકા એવ મયન્તિ’ અથવા તૂળીમાસ્તે, સ તપઃ-

નહીં કરતા હું-અર્થાત્ આચાર્ય, ગ્લાન આદિ મુનિજનોં કો ઇન પીઠ,
ફલક આદિ કા વિભાગ ન કરકે સ્વાર્થશુદ્ધિ સે જો સ્વયં ઇનકા ઉપ-
ભોક્તા હોતા હૈ, વહ સાધુ ઇમ વ્રત કી આરખના નહીં કર સકતા હૈ ।
તથા (અસગરહૃદ્) જિસકી સગ્રહ મેં રુચિ નહીં હોતી હૈ, અર્થાત્ જો
સાધુ સ્વાર્થ મેં પરાયણ હોને કે કારણ ઇન પીઠ ફલક, વસ્ત્ર, પાત્ર
આદિ ઉપકરણોં કો કિ જો અપને ગચ્છ કે ઉપકારક ઔર ઇષ્ણાદોષ
સે વિશુદ્ધ હૈ મિલતે હુગ મી ઠસ ભાવના સે કિ મેરે પામ તો યે વસ્ત્ર
પાત્રાદિ ઉપકરણ હૈં મુઝે દૂસરો કી ચિન્તા સે કયા કામ હૈ” ઇસ
વિચાર સે સગ્રહ કરને કી શુદ્ધિ સે વર્જિત હોતા હૈ વહ સાધુ ઇસ વ્રત
કા આરાધક નહીં હો સકતા હૈ । મૂર્ઝાં માવ સે હી સગ્રહ કરને કા
નિષેધ હૈ । તથા જો સાધુ (તવતેજે ય) ઇસી તરહ જો તપઃ સ્તેન હૈ,
અર્થાત્ જૈસે કોઈ સાધુ સ્વભાવતઃ કૃશ શરીર હો ઔર કોઈ દૂસરા ઇસ
પ્રકાર પૂછે કિ હૈ મુને ! જો માસ ક્ષપણ આદિ કરને વાળે તપસ્વી મુનિ-

ઉપદરશ્વેને પ્રાપ્ત કરીને તેના વિભાગ કરતા નથી એટલે કે આચાર્ય, ગ્લાન
આદિ મુનિજનોને માટે એ પીઠ, ફલક આદિના વિભાગ થયા વિના સ્વાર્થ
શુદ્ધિથી પોતે જ તેના ઉપભોગ કર્યા કરે છે, તે સાધુ આ વ્રતની આરાધના
કરી શકતો નથી તથા ‘અસગરહૃદ્’ જેની મગ્ગહમા રુચિ હોતી નથી,
એટલે કે જે સાધુ સ્વાર્થ પરાયણ હોવાથી એ વસ્ત્ર, ફલક, પાત્ર, વસ્ત્ર, આદિ
ઉપદરશ્વે, કે જે પોતાના ગચ્છના ઉપકારક અને ઇષ્ણાદોષથી રહિત છે
તેની પ્રાપ્તિ થવા છતાં પણ “મારી પામે તો આ વસ્ત્ર પાત્રાદિ ઉપદરશ્વ છે
મારે ખીજની ચિન્તા શા માટે કરવી નેઈએ ?” એવી ભાવનાથી મગ્ગહ
કરવાની શુદ્ધિથી રહિત થઈ જાય છે, તેવા સાધુ પણ આ વ્રતનો આરાધક
થઈ શકતો નથી મૂર્ઝાભાવથી જ મગ્ગહ કરવાનો નિષેધ છે તથા જે સાધુ
“તવતેજે” એ જ રીતે તપચોર છે, દાખલા તરીકે કોઈ સાધુ આભાવિક
રીતે જ હુણગા શરીર વાળો હોય અને તેને જોઈને ખીજી કોઈ એમ પૂછે
કે-“હે મુનિ ! માસખમણ આદિ કરના મુનિજન વિષે સાલજવામા આવ્યું

સ્તેનઃ પ્રાચ્યતે, 'વૃત્તેણે' યત્ સ્તેનઃ=ચાચોરઃ-યવા-કૃતિત્ વ્યાખ્યાતાર સાધુમવલોક્ય કથિત્ પૃચ્છતિ—'વ્યાખ્યાનવાચસ્પતિર્ય શ્રુતઃ સ મવાનેવ' इति पृष्टः स हृते—'मुनयस्तादृशा भवन्त्येव' यद्वा मौनमास्ते, इत्येव यः परस्य ख्यातिं स्वात्मनि स्थापयति स वाचस्तेन, 'रुचतेणे य' रूपस्तेनश्च=एतद्विषयेऽपि पूर्वप्रयोजना कर्तव्या । तथा 'आयारे चैव' आगारे=साधुममावायादि

રાજ સુને જાતે હું વે આપ હી હું ત્યા ? इस प्रकार सुनकर वह अपने मान के निमित्त ऐसा कहे कि साधु तो तपस्वी ही होते हैं, अथवा सुनकर चुप रहे, इस प्रकार से चर्चन करने वाला वह मुनि तपश्चोर- (तप का चोर) कहा जाता है । (तप का चोर) तपश्चोर-मुनि इस व्रत की आराधना करनेवाला नहीं होता है । इसी तरह (वृत्तेणे) व्याख्यान करते हुए किसी मुनिराज को देखकर कोई उससे इस प्रकार पूछे कि जो व्याख्यानवाचस्पति मुनिराज सुने जाते हैं वे आप ही हैं क्या ? इस प्रकार सुनकर वह मुनिराज उसके समाधान निमित्त यह कह दे कि महानुभाव ! मुनिजन तो व्याख्यानवाचस्पति ही होते हैं, अथवा कुठन कह कर चुप रहे इस प्रकार का व्यवहार करनेसे वह मुनि वचन का चोर वचस्तेन माना जाता है, क्योंकि उसने पर की ख्यातिको अपनेमें स्थापित किया है, इस तरहसे पद कि ख्यातिको अपनेमें स्थापित करने वाला साधु वाक् चोर कहा जाता है । इसी तरह (रुचतेणे) रूपस्तेन की भी व्याख्या जान लेनी चाहिये, अर्थात्-विशिष्ट रूप

છે તે શુ આપ જ છે ? ” આ પ્રકારનો પ્રશ્ન સાલગીને તે પોતાના માનને માટે એવું કહે કે “ સાધુ તો તપસ્વી હોય જ છે ” અથવા તે વાત સાલગીને મૌન રહે, એ પ્રકારનું વર્તન કરનાર મુનિને તપચોર કહે છે તપચોર મુનિ આ વ્રતની આરાધના કરી શકતો નથી એ જ રીતે “વૃત્તેણે” વ્યાખ્યાન કરતા કોઈ મુનિરાજને બોધને બોધ તેમને આ પ્રમાણે પૂછે કે વ્યાખ્યાન વાચસ્પતિ જે મુનિરાજ ગણાય છે તે શુ આપ જ છે ? આ પ્રમાણે સાલગતા તેના સમાધાનને માટે એમ કહે છે કે “ હે મહાનુભાવ ! મુનિજન તો વ્યાખ્યાન વાચસ્પતિ જ હોય છે ” અથવા તેને કઈ પણ જવાબ ન આપતા ચૂપ રહે, એવા પ્રકારના મુનિને વચસ્તેન-વચનચોર કહેવાય છે, કારણ કે તેણે બીજાની ખ્યાતિનું પોતાનામાં આરોપણ કર્યું છે- આ રીતે પારકાની ખ્યાતિનું પોતાનામાં આરોપણ કરનાર સાધુને વચનચોર કહેવાય છે, એ જ પ્રમાણે “રુચતેણે” રૂપસ્તેન-રૂપચોરની વ્યાખ્યા પણ સમજવી એટલે કે વિશિષ્ટ રૂપયુક્ત કોઈ સાધુની ખ્યાતિ સાલગીને કોઈ

વિષયે સ્તેનઃ=ચૌર,યથા=સ યઃ ‘ ઉત્કૃષ્ટાચારવાન્ સાધુઃ શ્રૂયતે, સ ભવાનેન ?’ તદા વક્તિ ‘ સાધુસ્તુ-ઉત્કૃષ્ટાચારવાન્ ભવન્ત્યેવ ’ મૌન યા સમાલમ્બતે इत्येन स्वात्मनि अविद्यमानामुत्कृष्टाचारवता स्यापयन्साधुराचारस्तेनो भवति, तथा- ‘ भावतेणे य ’ भावस्तेनश्च=भावस्य=श्रुतज्ञानादि विशेषस्य स्तेनः=चौरो भाव-

સપન્ન કિસી સાધુ કી ય્યાતિ સુનકર કોઈ રૂપવાન્ મુનિ સે એસા પૂછે કિ મહારાજ ! જિનકી રૂપ મેં ય્યાતિ હમ સુન રહે હૈં વે આપ હી હૈ ક્યા ? તો હસ પ્રકાર કી ઘાત સુનકર વહ એસા કહે કિ સાધુજન તો વિશિષ્ટરૂપ શાલી હોતે હી હૈં, અથવા કુછ ન રહે-ચુપચાપ રહ જાવે, તો “ મૌન સમ્મતિલક્ષણ ” કે હિસાબ સે પર કે વિશિષ્ટ રૂપશાલિત્વ કા અપને મેં આરોપ કરને કી ભાવના સે વહ રૂપસ્તેન કહલાવેગા । હમ તરહ જો સાધુ રૂપસ્તેન હોતા હૈ વહ હસ વ્રત કો નહી પાલ સકતા હૈ । ડસી તરહ (આચારતેણે) જો સાધુ સમાચારી આદિકે વિષયમેં સ્તેન હોતા હૈ વહ આચારસ્તેન કહા જાતા હૈ, જૈસે કિસી સાધુકી આચાર વિષય મેં ઉત્કૃષ્ટ ય્યાતિ સુનકર દૂમરા કોઈ એસા પૂછે કિ ભોમુને ! જિન સાધુ-રાજકી આચાર મેં વિશેષ ય્યાતિ સુની જાતી હૈ ક્યા વે આપહી હૈ ? , હસ પ્રકાર સુનકર વહ સાધુ પ્રત્યુત્તર રૂપ મેં એસા કહે કિ મહાનુભાવ । સાધુ તો ઉત્કૃષ્ટ આચાર વાલે હોતે હી હૈં, હસ પ્રકાર કહને વાલા સાધુ આચારસ્તેન કહલાતા હૈ, ક્યોં કિ હસ તરહ કી સ્થિતિ સે ડસને

માણસ ડોઈ રૂપવાન મુનિને એવુ પૂછે કે “ મહારાજ ! અમે ડપને વિષે જેની ખ્યાતિ સાલળી છે તે મુનિ શુ આપ જ છો ? ” આ પ્રકારની વાત સાલળીને તે એવુ કહે છે કે સાધુજન તો વિશિષ્ટ રૂપયુક્ત હોય જ છે ” અથવા ડઈ પણ જવાબ ન આપે તો “ મૌનને સમતિનુ લક્ષણ ’ માનીને ખીલના વિગિષ્ટ રૂપનુ પોતાની અદર આરોપણ કરવાની ભાવનાથી તે રૂપચોર કહેવાય છે આ રીતે જે સાધુ રૂપચોર હોય છે તે આ વ્રતને પાળી શકતા નથી આ રીતે “આચારતેણે” જે સાધુ અમાચારી આદિ બાબતમા ચોર હોય છે તે આચાર ચોર કહેવાય છે જેમ કે ડોઈ સાધુની આચારની બાબતમા ઉત્કૃષ્ટ ખ્યાતિ સાલળીને ખીલુ ડોઈ વ્યક્તિ તેને એવુ પૂછે કે “હું મુનિ । જે મુનિરાજની આચારમા ખાસ ખ્યાતિ સલળાય છે, તે શુ આપ પોતે જ છો ? ” આ પ્રમાણે સાલળીને જે મુનિ એવો પ્રત્યુત્તર વાળે કે મહાનુભાવ । સાધુઓ તો ઉત્કૃષ્ટ આચારવાળા જ હોય છે” આમ કહેનાર સાધુને આચારચોર કહેવાય છે ડારણ કે આ પ્રકારની પરિસ્થિતિમા તેણે પોતાનામા જે

સ્તેનઃ, કસ્યાપિ શ્રુતશિષેષસ્યાર્પા વ્યાખ્યાન કન્યાપિ મુખ્યાદુપશ્રુત્ય જનસમઘે
 સ્વકીયત્વેન ત વ્યાપયન્ સાધુર્ભાવસ્તેન ઉચ્યતે । તથા યઃ સાધુ 'સદ્કરે'
 શબ્દકરઃ=મહરરાત્રિગમનાનન્તર યો મહતા મહતા શબ્દેન ભાગતે સ શબ્દકર
 ઉચ્યતે । 'જ્ઞકરે' જ્ઞકારઃ=યેન કાર્યેણ ગણસ્ય મદો મયતિ તત્કાર્યકારી
 'કલહકરે' કલહકરઃ=વાચિકમળ્લનકારી 'વૈરકરે' વૈરકર=પરસ્પરશત્રુભાવો
 ત્પાદક, તથા-'વિક્રહકરે' વિક્રયાકરઃ=સ્ત્યાદિસ્થાકારી, 'અસમાહિકારો'
 અસમાધિકારકઃ=સ્વપરચિત્તોદ્વેગકારકઃ, તથા-'સયા' સદા 'અપ્પમાણમોઃ'

અપને મેં અચિન્નમાન ઉત્કૃષ્ટ આચારવત્તા સ્થાપિત કી હૈ અતઃ જો
 એસે આચારસ્તેન હોતે હૈ ઉનસે હસ મહાવ્રત કી આરાધના નહીં હો
 સકતી હૈ, (ભાવતેણે) જો શ્રુતજ્ઞાન આદિ માત્ર કી ચોરી કરતા હૈ વહ
 ભાવસ્તેન ફરલાતા હૈ, જૈસે કિસી કે મુલ સે કિસી સાધુ કા શ્રુત
 વિશેષસયથી અપૂર્વ વ્યાખ્યાન સુનકર કહતા હૈ કિ યહ વ્યાખ્યાન તો
 મૈરા હી દિયા હુઆ હૈ, હસ પ્રકાર કા ભાવસ્તેન સાધુ મી હસ મહા-
 વ્રતકી આરાધના નહીં કર સકના હૈ । હસી તરહ (સદ્કરે) જો સાધુ એક
 પ્રહર રાત્રિ કે ચલે જાને કે વાદ પહે જોર ૨ સે ચોલતા હૈં ઉસકા નામ
 શબ્દકર હૈ । (જ્ઞકરે) જિસ કાર્ય સે ગણ મેં ભેદ હો જાય ઉસ
 કામ કો કરને ચાલા સાધુ જ્ઞકાર હૈ । (કલહકરે) આપસ મેં જો
 વાક્કલહ કર પેઠતા હૈ ઉસકા નામ કલહકર હૈ, (વૈરકરે) પરસ્પર મેં
 જો શત્રુતા કા ઉત્પાદક હોતા હૈ વહ વૈરકર હૈ, (વિક્રહકરે) સ્ત્રી
 આદિ વિકથાઓં કો કરનેવાલા સાધુ વિક્રયાકર હૈ, (અસમાહિકરે)

અવિધમાન છે તે ઉત્કૃષ્ટ આચારવત્તાનું આરોપણ કર્યું છે તેથી જે સાધુઓ
 એવા આચાર ચોર હોય છે તેમનાથી આ મહાવ્રતની આરાધના થઈ શકતી
 નથી “ભાવતેણે” જે શ્રુતજ્ઞાન આદિ ભાવની ચોરી કરે છે તે ભાવચોર કહેવાય
 છે જેમ કે કોઈના મોઢે કોઈ સાધુનું કોઈ શાસ્ત્ર સુખથી અપૂર્વ વ્યાખ્યાન સાંભળીને
 જે સાધુ એમકહે કે આ વ્યાખ્યાન તો મેં જ આપેલું છે” આ પ્રકારનો ભાવચોર
 સાધુ પણ આનંદની આરાધના કરી શકતો નથી એ જ પ્રમાણે “સદ્કરે” શબ્દકર-
 જે સાધુ એક પ્રહર રાત્રિ પ્રસાર થયા પછી ઘણા ભેરથી બોલે છે તેને શબ્દકર
 કહે છે, “જ્ઞકરે” જે કાર્યથી સમૂહમાં ભેદભાવ થાય તે કાર્ય કરનાર સાધુ
 જાકર કહેવાય છે, “કલહકરે” આપસમાં જે વાક્કલહ કરી એસે છે તેને
 કલહકર કહે છે, “વૈરકરે” આપસમાં જે વેર પેદા કરાવનાર હોય તે વેર
 કર કહે છે, “વિક્રહકરે” સ્ત્રી આદિ વિકથાઓ કરનાર સાધુને વિક્રયાકર કહે

અપ્રમાણભોજી=દ્વાર્તિશત્રુલાધિકાદારી, 'સયય' સતત=નિરન્તરમ્ 'અણુવદ્ધ-
વૈરે' અણુવદ્ધૈર=અવ્યાચ્છિન્નૈરભાવ, ચ=પુનઃ 'નિચ્ચરોસી' નીત્યરોપી=
સદાકોપગીલઃ, 'સે તારિસણ' સ તાદૃશઃ સાધુઃ 'નારાહણ' નારાધયતિ 'ઈણ'
ઇદમ્=પૂર્વોક્ત, પ્રતમ્=દત્તાદાનવિરતિસ્વરૂપમ્ ॥ સૂ. ૩ ॥

ક પુનરિદ પ્રતમારાધયિતુ સમર્થઃ ? इत्याह—'अह केरिसण' इत्यादि-

મૂલમ્—અહ કેરિસણ પુણાઈ આરાહણ વયમિણં ? જે સે
ઉવહિ ભત્તપાણસગહણદાણકુસલે અચ્ચંત વાલ દુવ્વલ
ગિલાણ બુઢુલ્લવગપવત્તયઆયરિય ઉવજ્ઞાણ સેહે સાહમ્મિણ
તવસ્સિકુલગણસઘે ય ચેઇયટ્ટે નિજ્જરટ્ઠી વેયાવચ્ચ અણિ-
સ્સિય દત્તવિહ વહુવિહં કરેઇ, નય અવિયત્તસ્સ ઘરં પવિ-
સઇ, ન ય અચિયત્તસ્સ ભત્તપાણ ગિણહઇ, ન ય અચિયત્તસ્સ
સેવઇ પઠિફલગ--સેઝ્ઝા- સથારગ- વત્થપાય-કલ્લ--દ્ડગર-
ઓહરણ-નિત્તઝ્ઝચ્ચેલપટ્ટગમુહપોત્તિયપાયપુલ્લણાઇ -- ભાયણ

અપને ઔર પર કે ચિત્ત મેં ઉદ્વેગભાવ પેદા કર દેને વાલા સાધુ અસ-
માધિકારક હૈ, (સયા અપ્પમાણભોઈ) સદા વત્તીસગ્રાસ સે અધિક
ભોજન કરને વાલા સાધુ અપ્રમાણભોજી કહલાતા હૈ (સયય અણુવદ્ધ-
વૈરે ય) જિસકા વૈર ભાવ કમી મી શાન ન હો વહ સાધુ સનતાનુ-
વદ્ધ વૈર કહલાતા હૈ, (નિચ્ચરોસી) જો નિત્ય હી ક્રુપિન સ્થિતિ મેં
રહતા હૈ વહ નિત્યરોપી કહલાતા હૈ । (સે તારિસણ) હસ પ્રકાર તપ-
સ્તેન આદિ વિશેષણવાલા સાધુ (ઈણ વયનારાહણ) હસ મહાવ્રત કી
આરાધના નહી કર સકતા હૈ ॥ ૩ ॥

છે, “અસમાધિકારે” પોતાના તથા અન્યના ચિત્તમા ઉદ્વેગ પેદા કરનાર સાધુને
અસમાધિકારક કહે છે, “સયા અપ્પમાણભોઈ” સદા બત્તીસ કોળિયા ઋતા
વધારે આહાર લેનાર સાધુને અપ્રમાણ લોભ કહે છે, “સયય અણુવદ્ધવૈરેય”
જેની વેર ભાવના કદી પણ શાન્ત ન થાય તે સાધુને સતતાનુબદ્ધ વૈર કહે-
વાય છે, “નિચ્ચરોસી” જે હંમેશા ક્રોધમા જ રહે છે તેને નિત્યરોપી કહે
છે, “સે તારિસણ” આ રીતે તપચાર આદિ વિશેષણો વાળો સાધુ “ઈણવય
નારાહણ” આ મહાવ્રતની આરાધના કરી શકતો નથી ॥ ૩ ॥

અંડોવહિતગરણ, નય પરિમાય પરસ્ત જંપડ, ન યાત્રિ દોસે
પરસ્ત ગેળહડ, પર વવણસેળ ત્રિ ન કિર્ચિ ગેળહડ, ણ ય ત્રિ
પરિમાણડ કાંચિજણ, ણ યાત્રિ ણાસેડ દિળ્ણમુનય, ટાઝળ
ય કાઝળ ય ણ હોડ, પચ્ચાતાવિળ, સત્તિભાગ-મીલે, સગહો
વગ્ગહકુસલે, સે તારિસળ આરાહેડ વયમિણં ॥ સૂ. ૪ ॥

ટીકા—‘અહ’ એવેતિ પ્રશ્ને, ‘કેરિણ’ કીટગઃ માયુઃ ‘પુણા’
‘વયમિણ’ વ્રતમિદમ્=અદત્તાદાનવિરમણરૂપમિદ વ્રતમ્, ‘આરાહણ’ આરાધ
યતિ? इति પ્રશ્ને સત્તિ પ્રાહ—‘જે સે’ યઃ સઃ ‘ઉત્તરિમત્તપાણસગહણદાણકુસલે’
ઉપધિમત્તપાણસગહણદાણકુસલઃ=તત્ર ઉપધિ.=ચત્રપાત્રાદિઃ, મત્તપાણે પ્રમિદ્ધે તેષા
સગહણે=આદાને સાધર્મિકેભ્યો દાને ચ કુસલો વિધિજ્ઞો મુનિઃ । ‘અન્નતવાલ
દુન્નલગિલાગબુદ્ધુ સ્વગપવત્તય આયરિય ઉવ્જ્ઞાણ સેહે સાહમ્મિણ તયસ્સિ કુલ
ગણ સધે ય’ અત્યન્ત ચાલદુર્બલગ્લાનગ્રદમામસપકપ્રવર્તતાચાર્યોવાચ્યાયે શ્લેષે—

અય સૂત્રકાર હસ મહાવ્રત કી આરાધના કરને કે લિયે કૈસા
સાધુ સમર્થ હો મરુતા હૈ? યહ કહતે હિ—‘અહ કેરિસણ’ इत्यादि० ।

ટીકા—(અહ કેરિસણ પુણાઈ વયમિણ આરાહણ?) કૈસા સાધુ
હમ અદત્તાદાનવિરમણરૂપ મહાવ્રત કી આરાધના કર સકતા હૈ? હમકે
ઉત્તર મેં કહતે હિ (જે સે) જો સાધુ (ઉત્તરિમત્તપાણ સગહણદાણ
કુસલે) ઉપધિ ચત્ર પાત્ર આદિ, એવ મત્તપાણ, હનકો અપને સાધર્મિક
સાધુઓં કે લિયે લેને મેં ઓર ઉન્હેં હન વસ્તુઓં કે દેને મેં કુસલ-
વિધિજ્ઞ-હોતા હૈ, તથા (અન્નતવાલદુન્નલગિલાગબુદ્ધુસ્વગપવત્તય
આયરિયઉવ્જ્ઞાણ) જો મત્ર મેં અયત ચાલ હૈ—આઠ વર્ષ કે

હમે આ મહાવ્રતની આરાધના કરવાને માટે ડેવો સાધુ સમર્થ હોઈ
શકે છે તે સૂત્રકાર બતાવે છે “અહ કેરિસણ” इत्यादि

ટીકા—“અહ કેરિસણ પુણાઈવયમિણ આરાહણ?” કેવો સાધુ આ અદત્તાદાન
વિરમણરૂપ મહાવ્રતની આરાધના કરી શકે છે? તેના બવાબમાં સૂત્રકાર કહે
છે—“જે સે” એ સાધુ “ઉત્તરિમત્તપાણસગહણદાણકુસલે” ઉપધિ, વસ્ત્ર,
પાત્ર આદિ અને આહાર પાણી, પોતાના સાધર્મિક સાધુઓને માટે દેવામાં
અને તેમને તે વસ્તુઓ દેવામાં કુશળ-વિધિજ્ઞ-હોય છે, તથા “અન્નતવાલ
દુન્નલગિલાગબુદ્ધુસ્વગપવત્તયઆયરિયઉવ્જ્ઞાણ” એ એ સધમાં અત્યંત
બાળ છે—આઠ વર્ષના બાળ સાધુ છે, તથા એ દુર્બલ છે—કમજોર હોવાથી

साधर्मिके तपस्त्रिकुट्टगणसङ्घे, तत्र अन्यन्तत्रालः=वष्टुषीयोमालः, अत्यन्त दुर्बलः=कृशात्त्वेन स्वकार्यररणाक्षमः, 'गिज्ञान' ग्लान=व्यायादिना भिक्षा टनादावसमर्थ, 'बुद्ध' वृद्धः=स्थविर ज्ञानवृद्धः, पर्यायवृद्ध, वयोवृद्धश्च, 'स्ववग' क्षपकः=मासक्षपणाग्रनप.कारित्वेन प्रवचनप्रभावकः, 'प्रवचय' प्रवर्तकः=प्रशस्तयोगेषु यथायोग्यतया साधून् प्रवर्तयतीति प्रवर्तक, आचार्यः=गणनेता-यो हि शान्दानुसारेण स्वयमाचरति, अन्याश्चाचारयति स आचार्य, तदुक्तम्-

“आचिनोति च शास्त्राणि, आचार ग्राहयत्यपि।

स्वयमाचरते यस्मात्तस्मादाचार्य उच्यते” इति।

उपाध्याय'-उप-समीपे आगतान्=शिष्यान् सूत्रार्थमध्यापयति यः स उपाध्याय', एतेषा समाहारवृद्धः, तस्मिन्, तथोक्ते, तथा 'सेहे' शैक्षे=नव-दीक्षिते साधु, तथा-'साहम्मि' साधर्मिके=श्रुतलिङ्गप्रवचनैः समानश्रद्धावान् पालक साधु हैं तथा जो दुर्बल हैं—कम जोर होने से जो अपने कार्य करने में अक्षम हैं, जो ग्लान हैं—व्याधि आदि के निमित्त को लेकर जो भिक्षावृत्ति आदि करने में असमर्थ हैं, जो वृद्ध हैं—स्थविर—जरा से जर्जरित शरीर वाले ह ज्ञान की अपेक्षा दीक्षापर्याय की अपेक्षा और आयु की अपेक्षा जो वृद्ध-बड़े हैं, जो क्षपक हैं मासक्षपक आदि उग्र तपस्या करनेवाले हैं, जो प्रवर्तक हैं—प्रशस्त-योगोंमें साधुजनो को उनकी योग्यता के अनुसार प्रवृत्ति कराने वाले हैं,—जो आचार्य हैं—गण के नेता हैं—अर्थात्—साधु सबकी आचार को जो स्वयं पालते हैं, और दूसरे साधुओं से पलाते हैं, जो उपाध्याय हैं—अपने पासमें आये हुए साधुओं को—शिष्यजनो को जो सूत्र पढ़ाते हैं, जो (सेहे) शिष्य हैं—नव दीक्षित साधुजन हैं, जो (साहम्मि) साधर्मिक हैं—श्रुत लिङ्ग और प्रवचन-प्ररूपणा इनको लेकर जिनकीश्रद्धा समान है जो

ने पोताना काम करवाने असमर्थ है, ने ग्लान है व्याधि आदि ने कारणे ने भिक्षावृत्ति आदि करवाने असमर्थ है, ने वृद्ध है—स्थविर—जरा ने कारणे जर्जरित शरीरवाला है, ज्ञानकी अपेक्षा, दीक्षा पर्यायकी अपेक्षा, अने आयुकी अपेक्षा, ने वृद्ध होता है, ने क्षपक है मासक्षण आदि उग्र तपस्या करनेवाले है, ने प्रवर्तक है—अतः योगोभा साधुजनो ने तेमनी योग्यता अनुसार प्रवृत्ति करानेवाले है, ने आचार्य है—गणना नेता है ओटले है साधुना आचारने ने करते पाणे है अने नीला साधुओ पास पणावे है, ने उपाध्याय है—पोतानी पास आवेला साधुओ—शिष्यजनो ने ओला सूत्रो लखावे है, ने “सेहे” शिष्यो है—नवदीक्षित साधुओ है, ने “सा-

સાધર્મિક ઉચ્ચતે, તસ્મિન્. ત યા-‘તપસ્વિ કુલગણસથે ચ’ તપસ્વિકુલગણસથે ચ, તપ-તપસ્વી=વિકૃતિ ર્જક, ચતુર્વર્ત્તકાદિસારી યા, વૃત્ત્ = વૃત્તગુરુરુચિવ્ય-સમુદાયરૂપમ્, ગણ=કુલસમુદાય, ગથઃ=ગણગણાયરૂપઃ, એના તમાહારદ્વંદ્વઃ, તસ્મિન્સ્તથોક્તે ચ, અત્ર સર્વત્ર વિપર્યયે સપ્તમી, તેન તત્તદિગતમ્ મિત્યર્થ, ‘ચેદ્યદ્વે’ ચૈત્યાર્ય-ચૈત્ય=જ્ઞાન ‘મિતીમજ્ઞાને’ ઇત્યસ્માત્ માદાદિત્વાદ્ ભાવે કિપિ ‘ચિત્’ સજ્ઞાન સમ્યગ્જ્ઞાન, ચિદો ચૈત્ય, સ્વાર્થ વ્યય, તમેઽર્થઃ-પ્રયોજન યસ્ય સ તથોક્ત. સમ્યગ્ જ્ઞાનાશિ ણીત્યર્થઃ તથા-‘નિઙ્જરટ્ટી’ નિર્જરાર્યી-

(તવસ્તિકુલગણસથે ચ) તપસ્વી છે-વિકૃતિ (વિગય) કે ત્યાગી છે અથવા ચતુર્થ ભક્ત આદિ તપસ્યાઓ કે કાને પાલે છે, તથા જો એક હી ગુરુ કે શિષ્યોં કા સમુદાય છે વત્ કુલ છે, કુલ કે સમુદાય કા નામ ગણ છે, ગણસમુદાય કો મત્ર કહતે છે સો જન સવકી (ચેદ્યદ્વે) સમ્યક્ જ્ઞાન કી પ્રાપ્તિ કા અભિલાષી તથા (નિઙ્જરટ્ટી) કર્મોં કી નિર્જરા કા ઇચ્છુક મુનિ (અણિસ્મિય) ઇલ્લોક ઓર પરલોક સવધી આકાક્ષા રહિત હોકર (દસવિહ) દશ પ્રકાર કી (બહુવિહ) ભક્ત-પાન આદિ વિવિધ પ્રકાર સે (વેયાવચ કરેહ) વૈયાવૃત્ય કરતા છે-ઉનકી સહાયતા કરતા છે વત્ જસ મહોવનકો પાલ સકતા છે ।

યહા જો ‘ચેદ્યદ્વે’ પદ આયા છે ઉસકી છાયા ‘ચૈત્યાર્ય’ એસી છે । સજ્ઞાનાર્થક ચિત્ ધાતુ સે “સપદાદિત્વાત્” ઉસ સૂત્ર ધારા ભાવ મેં કિવપ્’ પ્રત્યય હોને પર ચિત્ એસા શબ્દ ઘન જાતા છે, જસ કા અર્થ સજ્ઞાન-સમ્યગ્જ્ઞાન-હોતા છે । ફિર સ્વાર્થ મેં ‘વ્યય’ પ્રત્યય હોને પર

હસ્મિ” સાધર્મિક છે, જે “તપસ્વિ કુલગણસથે ચ” તપસ્વી છે, વિકૃતિ-“વિગય” ના ત્યાગી છે, અથવા ચતુર્થભક્ત આદિ તપસ્યા કરનાર છે, તથા જે એક જ ગુરુનો શિષ્ય સમુદાય “કુલ” છે, કુલના સમુદાયને ગણ કહે છે, ગણના સમુદાયને સથ કહે છે તો એ મીની “ચેદ્યદ્વે” સમ્યગ્જ્ઞાનની પ્રાપ્તિના અભિલાષી તથા “નિઙ્જરટ્ટી” કર્મોંની નિર્જરા માટે ઉત્સુક મુનિ ‘અણિસ્મિય’ આલોક અને પરલોક સવધી આકાક્ષા રહિત થઈને “દસવિહ” દસ પ્રકારની “બહુવિય” આહાર પાણી આદિ વિવિધ પ્રકારે “વેયાવચ કરેહ” વૈયાવૃત્ય કરે છે-તેમની જે સાધુ સહાયતા કરે છે તે આ મહામત પાળી શકે છે અહીં જે “ચેદ્યદ્વે” પદ આવ્યું છે તેની છાયા ‘ચૈત્યાર્ય’ છે સજ્ઞાનાર્થક ‘ચિત્’ ધાતુથી “કિવપ્” પ્રત્યય લાગતા ‘ચિત્’ એવો શબ્દ બની જાય છે, તેનો અર્થ સજ્ઞાન-સમ્યગ્ જ્ઞાન-ધાય છે છતાં સ્વાર્થમાં ‘વ્યય’ પ્રત્યય લાગતા ચૈત્ય શબ્દ બિદ્ધ થઈ જાય છે તો ચિત્ જ ચૈત્ય છે એવો

મુક્તત્વાદ્ દશમિથં વૈયાધૃત્યમિતિ કથન યથ ન ચિચ્ચતે ? અત્રોચ્ય વૈયાધૃત્યસ્ય
સ્થાન દશમિથં વ્યાખ્યાપ્રગ્નસિ (શ ૨૫ ડ. ૭) વ્યવહારસૂત્ર, ડ. ૧૦)
પ્રાગમેષુ સર્વત્ર પ્રસિદ્ધ, તત્રૈવ તદ્વર્તિભૂતાનામન્તર્માત્ર, તથાદિ-અત્યન્તવાદ્ય દુર્ણ
અયોગ્યર્થાનેસમાવેશઃ, તયોસ્તત્સંનિદિતત્ત્વેનોક્તત્વાદ્ ચક્તવાનાનયનાદાયમ્ત્વેન
તરસાદ્યવાચ્ચ । ક્ષપક-પ્રવર્તકયોરાચાર્યે સનિવેશ, તયોસ્તત્સંનિદિતત્ત્વેનોક્તત્વાત્
એકર સઘ તક યૌદદ વૈયાધૃત્ય કે સ્થાન હોતે હે અતઃ વૈયાધૃત્ય કે
સ્થાન હોને સે વૈયાધૃત્ય મ્મી યૌદદ પ્રકાર કા લી હોના ચાહિયે ફિર
પહાં જો ડસમેં દશ ચિચ્ચતા પ્રકૃટ કી હૈ સો યત કથન પરસ્પર મેં કયા
ચિચ્ચદ નહોં હૈ ? અવશ્ય ચિચ્ચદ હૈ ।

ઉત્તર—દોકા ઠીક હૈ, પરન્તુ વિચાર કરને પર ડસકા સમાધાન
અચ્છી તરહ સે હો જાતા હૈ-વૈયાધૃત્ય કે ચે દશપકાર કે લી સ્થાન
વ્યાખ્યાપ્રગ્નસિ (શ. ૨૫ ડ. ૭) વ્યવહારસૂત્ર (ડ ૧૦) આદિ આગમોં
મેં સર્વત્ર પ્રસિદ્ધ હૈ । ઇનમેં લી ઇનસે વર્તિભૂત મેદોં કા અન્તર્માત્ર હો
જાતા હૈ । જૈસે જો સાધુ અત્યન્તવાલ પચ દુર્બલ હૈ ઇન દોનોં કા સમા
વેશ ગ્લાન સાધુઓ મેં હો જાતા હૈ ચ્યોં ફિ ચે ડન્ત્રીં જૈસે હોતે હૈ
હસીલિયે ડનકા પાઠ ડનકે સાથ રખા હૈ । જિસ પ્રકાર ગ્લાન સાધુ
મ્મક્તવાન આદિ કે લાને મેં અસમર્થ હોના હૈ ડસી પ્રકાર સે ચે મ્મી હૈ ।
હસ તરહ ઇનમેં પરસ્પર મે મ્મદ્દશતા આને સે ઇન દોનોં કા સમાવેશ
ગ્લાન મેં હો જાતા હૈ । હસી તરહ સે જો ક્ષપક ઓર પ્રવર્તક હૈ ડનકા

સુધી વૈયાધૃત્યના ચૌદ સ્થાનો થાય છે, તો તે બધા વૈયાધૃત્યના સ્થાન હોવાથી
વૈયાધૃત્ય પણ ચૌદ પ્રકારના થવા બેધએ છતાં અહીં તેના દસ પ્રકાર ખતા
વ્યા છે તો તે કથન શુ પરસ્પરમા વિરોધાભાસ દર્શાવતું નથી ? અવશ્ય
વિરોધાભાસ દર્શાવે છે

ઉત્તર—શબ્દ બરાબર છે પણ વિચાર કરતા તેનું સારી રીતે સમાધાન
થઈ જાય છે વૈયાધૃત્યના એ દશ પ્રકારના જ સ્થાન વ્યાખ્યાપ્રગ્નસિ (શ ૨૫
ઉ-૭) વ્યવહારસૂત્ર (ઉ-૧૦) આદિ આગમોમા સર્વત્ર પ્રસિદ્ધ છે તેમના-
માજ તેમનાથી બાહ્ય લેહેનો સમાવેશ થઈ જાય છે જેમ કે જે સાધુ અત્યંત
બાલ અને દુર્બલ છે તે બનેનો સમાવેશ ગ્લાન સાધુઓમા થઈ જાય છે,
કારણ કે તેઓ તેમના જેવા જ હોય છે તેથી તેમનો પાઠ તેમની સાથે
રાખ્યો છે જેમ ગ્લાન સાધુ આહાર પાણી આદિ લાવવાને અસમર્થ હોય છે
તેમ તેઓ પણ અસમર્થ છે એજ રીતે તેઓની વચ્ચે પરસ્પરમા મમાનતા
આવવાથી તે બનેનો સમાવેશ ‘ગ્લાન’ મા થઈ જાય છે, એ જ રીતે જે

પ્રવચનપ્રભાવકરત્વેન તત્સાદૃશ્યાન્વ. એવ ચૈયાવૃત્ત્યસ્ય-આચાર્યાદિ સ્થાનભેદેન દશવિધત્વકથનમવિરુદ્ધમ્ ।

યતુ-‘ ચેદ્યદ્વે ’ ઇત્યસ્ય વ્યાખ્યાનમ્-“ ચૈત્યાનિ=જિનપ્રતિમા, એતાસાં યોડર્થઃ=પ્રયોજન યસ્ય સ તથા, તત્ર ” ઇતિ ટીકાન્તરે લખ્યતે તદ્બ્રાન્તિમૂલ-
પમ્, વૈયાવૃત્ત્યસ્ય જિન પ્રતિમા પ્રતિ વિધાનાભાગાત્ । જિનપ્રતિમાયા અપિ વૈયા-
વૃત્ત્ય સ્વીકારે વ્યાખ્યાપ્રજ્ઞપ્યાધ્યાગમેષુ વૈયા વૃત્ત્યસ્ય દશવિધત્વપરૂપણ વિરુદ્ધ્યતે-
તદ્ગ્રહણેન વૈયાવૃત્ત્યસ્યૈકાદશસંખ્યાઽતિ પ્રસન્નાત્ ।

અન્તર્ભાવ આચાર્ય મેં કર દિયા જાતા હૈ । જિસ પ્રકાર આચાર્ય પ્રવચન
કે પ્રભાવક હોતે હૈ ઉસી પ્રકાર સે યે દોનો ભી હોતે હૈ, અતઃ ઉનકે
જૈસે ઇન્હે પ્રભાવક હોને સે પરસ્પર મેં ઇનમે સદગતા આ જાતી હૈ
યહી ઘાત પ્રકટ કરને કે લિયે સૂત્રકાર ને ઇન દોનોં કા પાઠ આચાર્ય
કે પાસ રખા હૈ । ઇસ તરફ સે વિચાર કરને સે વૈયાવૃત્ત્ય કે સ્થાન દસ
હી પ્રકાર કે સિદ્ધ હોતે હૈ, ઇસલિયે ઇનકે ભેદ સે વૈયાવૃત્ત્ય મેં દશ-
વિધત્વ કથન વિરુદ્ધ નહીં હૈ એસા જાનના ચાહિયે ।

તથા-જો “ ચેદ્યદ્વે ” ઇસ પદકા વ્યાખ્યાન-“ ચૈત્યાના અર્થઃ પ્રયો-
જનમ્ યસ્ય સઃ ચૈત્યાર્થઃ ” ચૈત્ય જિન પ્રતિમા હૈ પ્રયોજન જિસકો એસા
સાધુ ” એસાં કહતે હૈ-ઉનકા યહ વ્યાખ્યાન બ્રાન્તિ મૂલક હૈ । કારણ
જિન પ્રતિમા કે પ્રતિ વૈયાવૃત્ત્ય કરને કા વિધાન નહીં હૈ । યદિ યહ
વિધાન માના જાવે તો ફિર વ્યાખ્યાપ્રજ્ઞસિ આદિ આગમો મેં જો વૈયા-
વૃત્ત્ય કે યે પૂર્વોક્ત દશ ભેદ માને ગયે હૈ ઉનમેં વિરોધ આતા હૈ, ક્યોં

ક્ષપઃ અને પ્રવર્તઃ છે તેમનો સમાવેશ આચાર્યમા ડરી દેવાય છે જેમ
આચાર્ય પ્રવચનના પ્રભાવક હોય છે તેમ તેઓ બને પણ હોય છે, તથા
તેમના જેવા તેઓ પ્રભાવક હોવાથી પરસ્પરમા તે બાળતની સમાનતા આવી
જાય છે એ જ વાત પ્રગટ કરવાને માટે સૂત્રકારે તે બંનેનો પાઠ આચાર્ય
સાથે કર્યા છે આ ગીતે વિચાર કરતા વૈયાવૃત્ત્યના દસ પ્રકારના જ સ્થાન મિદ્ધ
થાય છે, તેથી તેમના ભેદને કરણે વૈયાવૃત્ત્યમા દગ વિધતાનુ કથન વિરુદ્ધ
પડતુ નથી એમ સમજવુ ભેદ્ય છે

તથા- જે “ ચેદ્યદ્વે ” આ પદનુ વ્યાખ્યાન “ ચૈત્યાના અર્થઃ પ્રયોજનમ્
યસ્ય સ ચૈત્યાર્થઃ ” ચૈત્ય જિન પ્રતિમા છે તેનુ પ્રયોજન જેને છે એવો સાધુ ”
એવુ જે કહે છે તેમનુ તે કથન બ્રાન્તિમૂલક છે કારણ કે જિન પ્રતિમાનુ
વૈયાવૃત્ત્ય કરવાનુ વિધાન નથી જો આ વિધાન માની લેવામા આવે તો વ્યા-
ખ્યાપ્રજ્ઞસિ આદિ આગમોમા વૈયાવૃત્ત્યના જે પૂર્વોક્ત દસ ભેદ બતાવ્યા છે

ફિશ્ર—જ્ઞાનાદિગુણરહિતાયા જડાત્મિકાયા જિનપ્રતિમાયામક્તપાનાદિ સાદાગ્યાનપેક્ષાનાસ્તિ વૈયાટ્યમ્યાનપ્રાપ્તિયોગ્યતા, અતઃ પર-વૈયાટ્યયદશચિત્ત્વપ્રતિપાદકાગમવિરોધનારણ્યમાચાર્યે જિનપ્રતિમાયા સમાવેશનમપિ ભ્રાન્તિ-મૂલકમેવ ।

इह चैत्यशब्दस्य ज्ञानार्थस्त्वमागमानुक्कलम्, वैयाट्येन श्रुतादिज्ञानं जायते लभ्यते वर्धते च, तथा तीर्थंकरनामगोत्रकर्मोपाजितं भवति । तीर्थंकरत्वं च केवलज्ञानानान्तरीयरूपम्, अतः ज्ञानार्थी वैयाट्यं करोतीत्यर्थः सम्यगेव, उक्त-

किं जिन प्रतिमा वैयाट्य नामका एक और ग्यारहवा भेद उत्पन्न हो जाता है । दूसरी बात एक यह भी है कि जो जिन प्रतिमा होती है उसमें वैयाट्य के स्थान प्राप्ति की योग्यता हो नहीं है, क्योंकि उसमें ज्ञानादिगुण तो कोई है ही नहीं यह तो जड़ पत्थरकी बनी हुई होती है, उसे भक्तपान आदि द्वारा सहायता पहुँचाने रूप वैयाट्य की क्या आवश्यकता है ? । तथा जो वैयाट्य में दशचिह्न का प्रतिपादन करने वाला आगम है उसमें विरोध न आवे इस अभिप्राय से प्रेरित होकर जो आचार्य ने जिन प्रतिमा का समावेश करते हैं उनका ऐसा करना भी भ्रान्तिमूलक ही है । चैत्य शब्द में ज्ञानार्थकताकी यह हमारी मान्यता आगमनुकूल है, क्योंकि वैयाट्य से श्रुतज्ञान की प्राप्ति होती है, और उसकी वृद्धि होती है । तीर्थंकर नामगोत्र कर्मका उपाजन होता है तीर्थंकर प्रकृति का वध जिस जिव के हो जाता है वह अवश्य ही केवलज्ञान का अधिकारी बन जायगा । क्योंकि यह प्रकृति केवल

તેમા વિશેષ આવી બાય છે, કારણ કે જિન પ્રતિમા વૈયાટ્ય નામનો એક અગ્યારમો લેક ઉત્પન્ન થઈ બાય છે અને બીજી એક એ પણ વાત છે કે જે જિન પ્રતિમા હોય છે તેમા વૈયાટ્યના સ્થાન પ્રાપ્તિની યોગ્યતા જ નથી, કારણ કે તેમા જ્ઞાનાદિ કોઈ શુભ તો છે જ નહીં—તેતો જડ પથ્થરની બનેલી છે, તો આહાર પાણી દ્વારા તેને સહાયતા પહોંચાડવાની શી આવશ્યકતા છે? તથા વૈયાટ્યમા દશવિધાતાનુ પ્રતિપાદન કરનાર જે આગમ છે તેમા વિશેષાભાસ ન લાગે તે અભિપ્રાયથી પ્રેરણાને જે આચાર્યમા જિન પ્રતિમાનો સમાવેશ કરે છે, તેમનુ તે પ્રમાણે કરવુ તે પણ ભ્રાન્તિમૂલક જ છે એવું ચાન્દમા જ્ઞાનાર્થકતાની અમારી આ માન્યતા આગમનુકૂલ છે, કારણ કે વૈયાટ્યથી શ્રુતજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ થાય છે, અને તેની વૃદ્ધિ થાય છે તથા તીર્થંકર નામગોત્ર કર્મનુ ઉપાર્જન થાય છે તીર્થંકર પ્રકૃતિનો બધ જે જીવને બધાય છે તે અવશ્ય કેવળ જ્ઞાનને-અધિકારી બનશે કારણ કે તે કેવળજ્ઞ

શ્રોત્તરાધ્યયનમૂત્રે—“ વેયાવચ્ચેણ ભતે ! જીવે કિં જળયઈ ? વેયાવચ્ચેણ તિત્થયર નામગોય કમ્મ નિવંધઈ ॥ ” (ઉત્તર. અધ્ય, ૨૯)

ટીકાર્થ—‘ ન ય ’ ન ચ ‘ અચિયત્તસ્સ ’ અપ્રીતિસ્સ=પ્રીતિરહિતસ્ય પ્રતીતિ રહિતસ્ય યા સાધ્વાગમનમનિચ્છત્ત ઇત્યર્થઃ, ‘ ઘર ’ ગૃહ ‘ પવિસઈ ’ પ્રવિશતિ, ન ચ અપ્રતીતિકસ્ય ‘ ભત્તપાણ ’ ભક્તપાન ‘ ગિણ્હઈ ’ ગૃહ્ણતિ, ન ચ અપ્રીતિકસ્ય અપ્રતીતિકસ્ય યા પીઠફલકગચ્ચાસસ્તારકવસ્ત્રપાદકમ્પલદ્વંડકમ્પલરજોહરણ- નિપદ્યાચોલપટ્ટકમ્પલરજમુગવસ્ત્રિકા પાદમોઢનાદિ ભાજનમાળ્હોપધ્યુપકરણ,

જ્ઞાન કી અવિનાભાવિની હૈ। તીર્થકર પ્રકૃતિ નિયમતઃ કેવલજ્ઞાન કો ઉત્પન્ન કરનેવાલી હોતી હૈ, ઇસલિયે જ્ઞાનાર્થી હોકર વૈયાધૃત્ય કરતા હૈ એસા અર્થ હમારા નિર્દોષ હી હૈ। ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર મેં યહી વાત કહી હૈ—“ વેયાવચ્ચેણ ભતે ! જીવે કિં જળયઈ ? વેયાવચ્ચેણ તિત્થયર નામગોય કમ્મ નિવંધઈ ” (ઉત્તરાધ્ય અ ૨૯ ચોલ ૪૩)

તથા જો સાધુ (ન ય અચિયત્તસ્સ ઘર પવિસઈ) સાધુ કે અપને ઘર પર આને સે અપ્રીતિ અથવા અપ્રતીતિ-અવિશ્વાસ ચાલા હોતા હૈ વહ અચિયત્ત કહલાતા હૈ—એસે વ્યક્તિ કે ઘર મેં સાધુ પ્રવેશ નહીં કરતા હૈ, તથા (ન ય અચિયત્તસ્સ ભત્તપાણ ગિણ્હઈ) ડસ અપ્રીતિ ઔર અપ્રતીતિ-અવિશ્વાસ ચાલે કે ઘર સે ભક્ત પાન નહીં લેતા હૈ, ઔર (ન ય અચિયત્તસ્સ પીઠ ફલગસેજ્જાસયારગવત્થપાયકલ્લ દ્વંડગ રજો- હરણ નિસેજ્જ ચોલપટ્ટગમુહપોત્તિયપાયપુલ્લનાઈભાયણભઢોવહિ હવગ- રણ સેવઈ) ન ડસ અપ્રીતિ ઔર અપ્રતીતિ ચાલે કે પીઠ, ફલક, શચ્ચા,

નની અવિનાભાવિની પ્રકૃતિ છે તીર્થ કર પ્રકૃતિ સ્વાભાવિક રીતે જ કેવળજ્ઞાનને ઉત્પન્ન કરનારી હોય છે, તેથી જ્ઞાનાર્થી થઈને વૈયાધૃત્ય કરે છે એવો અમે દર્શાવેલો અર્થ નિર્દોષ જ છે ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમાં એ જ વાત કરી છે—‘ વેયાવચ્ચેણ ભતે ! જીવે કિં જળયઈ ? વેયાવચ્ચેણ તિત્થયરનામગોય કમ્મ નિવંધઈ ’ (ઉત્તરાધ્ય અ ૨૯ ચોલ ૪૩) તથા જે સાધુ “ ન ય અચિયત્ત-સ્સ પર પવિસઈ ” સાધુ પોતાને ઘર આવવાથી જે વ્યક્તિ અપ્રીતિ અથવા અવિશ્વાસ વાળો થાય છે તે અચિયત્ત કહેવાય છે—એવી વ્યક્તિના ઘરમાં સાધુ પ્રવેશ કરતા નથી, તથા “ ન ય અચિયત્તસ્સ ભત્તપાણ ગિણ્હઈ ” તે અપ્રીતિ અને અવિશ્વાસવાળાના ઘરેથી આહારપાણી લેતા નથી, અને “ ન ય અચિયત્તસ્સ પીઠફલગ સેજ્જાસયારગવત્થપાયકલ્લદ્વંડગરજોહરણનિસેજ્જચોલપટ્ટગમુહપોત્તિય પાયપુલ્લનાઈભાયણભઢોવહિહવગરણ સેવઈ ” તે અપ્રીતિ અને અવિશ્વાસ-વાળાના

કિન્ન—જ્ઞાનાદિગુણરહિતાયા જહાત્મિકાયા જિનપ્રતિમાયામક્તપાનાદિ સાહાય્યાનપેક્ષણાન્નાસ્તિ વૈયાવૃત્યસ્થાનપ્રાપ્તિયોગ્યતા, અતઃ—વૈયાવૃત્યદશવિધ ત્વપ્રતિપાદકાગમવિરોધવારણાર્થમાચાર્યે જિનપ્રતિમાયા સમાવેશનમપિ ભ્રાન્તિ-મૂલકમેવ ।

इह चैत्यशब्दस्य ज्ञानार्थकत्वमागमानुकूलम्, वैयावृत्येन श्रुतादिज्ञान जायते लभ्यते वर्धते च, तथा तीर्थंकरनामगोत्रकर्मोपाजित भवति । तीर्थंकरत्वं च केवलज्ञानानान्तरीयकम्, अतः ज्ञानार्थी वैयावृत्यं करोतीत्यर्थः सम्यगेव, उक्त-

किं जिन प्रतिमा वैयावृत्य नामका एक और ग्यारहवा भेद उत्पन्न हो जाता है । दूसरी बात एक यह भी है कि जो जिन प्रतिमा होती है उसमें वैयावृत्य के स्थान प्राप्ति की योग्यता हो नहीं है, क्यों कि उसमें ज्ञानादिगुण तो कोई हैं ही नहीं वह तो जड़ पत्थरकी रानी हुई होती है, उसे भक्तपान आदि द्वारा सहायता पहुँचाने रूप वैयावृत्य की क्या आवश्यकता है ? । तथा जो वैयावृत्य में दशविधत्व का प्रतिपादन करने वाला आगम है उसमें विरोध न आवे इस अभिप्राय से प्रेरित होकर जो आचार्य ने जिन प्रतिमा का समावेश करते हैं उनका ऐसा करना भी भ्रान्तिमूलक ही है । चैत्य शब्द में ज्ञानार्थकताकी यह हमारी मान्यता आगमनुकूल है, क्यों कि वैयावृत्य से श्रुतज्ञान की प्राप्ति होती है, और उसकी वृद्धि होती है । तीर्थंकर नामगोत्र कर्मका उपाजन होता है तीर्थंकर प्रकृति का वध जिस जिव के हो जाता है वह अवश्य ही केवलज्ञान का अधिकारी बन जायगा । क्यों कि यह प्रकृति केवल

તેમા વિશેષ આવી બંધ છે, કારણ કે જિન પ્રતિમા વૈયાવૃત્ય નામનો એક અગ્યારમો ભેદ ઉત્પન્ન થઈ બંધ છે અને બીજી એક એ પણ વાત છે કે જે જિન પ્રતિમા હોય છે તેમા વૈયાવૃત્યના સ્થાન પ્રાપ્તિની યોગ્યતા જ નથી, કારણ કે તેમા જ્ઞાનાદિ કોઈ શુષ્ઠી તે છે જ નહીં—તેતા જડ પથ્થરની બનેલી છે, તેા આહાર પાણી દ્વારા તેને સહાયતા પહોંચાડવાની શી આવશ્યકતા છે? તથા વૈયાવૃત્યમા દશવિધાતાનુ પ્રતિપાદન કરનાર જે આગમ છે તેમા વિશેષાભાસ ન લાગે તે અભિપ્રાયથી પ્રેરાઈને જે આચાર્યમા જિન પ્રતિ માનો સમાવેશ કરે છે, તેમનુ તે પ્રમાણે કરવુ તે પણ ભ્રાન્તિમૂલક જ છે ચૈત્ય શબ્દમા જ્ઞાનાર્થકતાની અમારી આ માન્યતા આગમનુકૂલ છે, કારણ કે વૈયાવૃત્યથી શ્રુતજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ થાય છે, અને તેની વૃદ્ધિ થાય છે તથા તીર્થં કર નામગોત્ર કર્મનુ ઉપાર્જન થાય છે તીર્થં કર પ્રકૃતિનો બધ જે જીવને બંધાય છે તે અવશ્ય કેવળ જ્ઞાનનેા અધિકારી બનશે કારણ કે તે કેવળજ્ઞા

વૈયાવૃત્ત્યાદિકાર્યં, 'ળ હોડ' ન ભવતિ 'પન્નાતાવિળ' પશ્ચાત્તાપિક્રુઃ=પશ્ચાત્તા-
પકારી । તથા- 'સવિભાગસીલે' સવિભાગસીલ -લઘ્વમક્તાદે. સવિભાગકારી
'સગ્રહોવગ્ગહકુસલે' સગ્રહોવગ્ગહકુસલ, તત્ર-સગ્રહઃ=શિષ્યાદિપરિવર્દનમ્,
ઉપગ્રહઃ=તેષામેવ ભક્તશ્રુતાદિદાનપૂર્વમ્પ્રપટ્નમનમ્, તા કુશલો દક્ષો ભવતિ,
'સે તારિસે' સ તારિસે સાધુ. 'ઇળ' ઇદમ્ = અદત્તાદાનવિરમણરૂપ 'વય'
વ્રતમ્ 'આરાહેડ' આરાધયતિ. નાન્યઃ ॥ મું ૪ ॥

ધિળ હોડ) દેયધન્તુ કો દેકર ઇવ વૈયાવૃત્ત્ય આદિ કાર્ય કો કરકે જો
પશ્ચાત્તાપ નહીં કરતા હૈ, (સવિભાગસીલે) લઘ્વ મક્તાદિક કા જો
સવિભાગકારી હોતા હૈ, ઓર (સગ્રહોવગ્ગહકુસલે) શિષ્યાદિ કે
પરિવર્દન ને ઓર ડનકે ભક્ત શ્રુત આદિ દાનપૂર્વક ઉપપટ્નમન મે દક્ષ
હોતા હૈ, (સે તારિસે) ણેસા યદ સાધુ (ઇળ વય આરાહેડ) ઇસ અદ-
ત્તાદાનવિરમણરૂપ વ્રત કો આરાધિત કરતા હૈ, દૂસરા નહીં ॥

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને ઇસ સૂત્ર દ્વારા યદ સમઘાયા હૈ કિ કિસ
પ્રકાર કા કાર્ય કરને ચાલો સાધુ ઇસ મહાવ્રત કા આરાધક હોતા હૈ ।
ડનકા કહના હૈ કિ જો સાધુ પીલે કે દૂસરે સૂત્ર મેં કહી ગઈ યાતોં
કે અનુસાર આચરણ કરતા હૈ વહી સાધુ ઇસ મહાવ્રત કા આરાધક
બનતા હૈ, વે યાતે ઇસ પ્રકાર સે હૈ—જો સાધુ ઉપધિ ઓર ભક્તપાન કે
સગ્રહણ ઇવ દાન કરને મેં દક્ષ હોતા હૈ, અત્યંત ચાલ, દુર્બલ, ગ્લાન,
વૃદ્ધ, ક્ષયક, પ્રવર્તક, આચાર્ય, ઉપાધ્યાય આદિ કા વૈયાવૃત્ત્ય કરતા હૈ ।

વયાવૃત્ત્ય આદિ કાર્ય કરીને જે પશ્ચાત્તાપ કરતા નથી, “સવિભાગસીલે” પ્રાપ્ત
આહારાદિના જે સવિભાગકારી હોય છે, અને “સગ્રહોવગ્ગહકુસલે” શિષ્યાદિના
પરિવર્ધનમા અને તેમના ભક્ત શ્રુત આદિ દાન પૂર્વક ઉપપટ્નનમા દક્ષ
હોય છે “સે તારિસે” એવો તે સાધુ “ઇળ વય આરાહેડ” આ અદત્તાદાન
વિરમણરૂપ વ્રતનુ આરાધન કરી ગય છે, બીજા કરી શકતા નથી,

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા સમજાવ્યું છે કે કેવું કાર્ય કરનાર
સાધુ આ મહાવ્રતનો આરાધક થાય છે તેમનું એવું કથન છે કે જે સાધુ
આગળ બીજા સૂત્રમા બતાવેલ વાત અનુસાર આચરણ કરે છે તે જ સાધુ
આ મહાવ્રતનો આરાધક બને તે વાતો આ પ્રમાણે છે—જે સાધુ ઉપધિ
અને ભક્તપાન (આહારપાણી) નો સંગ્રહ અને દાન કરવામા દક્ષ હોય છે,
અત્યંત ચાલ, દુર્બલ, ગ્લાન, વૃદ્ધ, ક્ષયક, પ્રવર્તક, અચાર્ય ઉપાધ્યાય આદિની
વૈયાવૃત્ત્ય-વૈયાવૃત્ત્ય હો છે, અપ્રીતિડ જનને ત્યા ગોચરીને માટે જતો નથી, તેના દ્વારા

‘સેવઈ’ સેવતે, ન ચ ‘પરસ્સ’ પરસ્ય ‘પરિચાય’ પરિચાદ=નિન્દા ‘જપહ’ જલ્પતિ, ‘ન યાવિ’ ન ચાપિ પરસ્ય ‘દોસે’ દોપાન્ ‘ગેણ્હ’ ગૃહ્ણતિ, પરદોષદર્શી ન ભવતીત્યર્થઃ, તથા-‘ પરવચસેણ વિ’ પરવચપદેણાપિ=ચાલગ્ગાનાદિનિમિત્તે નાપિ સ્વાર્થમન્યાર્થ ગા ‘ન કિંચિ’ ન કિંચિદ્ ઔપધમૈપજ્યાધપિ, ‘ગેણ્હ’ ગૃહ્ણતિ, તથા ‘ળ ય’ ન ચ ‘વિપરિણામેઈ’ વિપરિણમયતિ=ધર્માદ્ ગુણાદિ-ભ્યશ્ચ વિમુક્તી કરોતી ‘કચિ જળ’ કચ્ચિદપિ જન શિષ્યાદિકમ્ । ‘ન યાવિ’ ન ચાપિ ‘ળાસેઈ નાશયતિ’ ‘દિણ્ણસુકય’ દત્તસુકૃતમ્, દત્તમ્=અભયદાનાદિક, સુકૃત=વ્રતપ્રત્યાખ્યાનાદિક અપિ તુ તદ્વિમોદયતીત્યર્થઃ, પરકૃત શુભકૃત્ય ન પ્રચ્છાદયન્તિ, તથા-‘ દાઝળ ય’ દત્તયા ચ દેય વસ્તુ, ‘કાઝળ ય’ કૃતયા ચ

સસ્તારક, વસ્ત્ર, પાદકબલ, દડક, રજોહરણ, નિપઘા, ચોલપટ્ટક, સદો રકમુલવસ્ત્રિકા, પાદપ્રોઠ્ઠન આદિ તથા ભ્રાજન, ભાણ્ડ, ઉપધિ, ઉપ-કરણ, ફનકા સેવન કરતા હૈ, (ન ય પરિચાયપરસ્સ જપહ) દૂસરોં કી નિંદા નહી કરતા હૈ, (ન યાવિ પરસ્સ ડોસે ગેણ્હ) દૂસરોં કે દોષો કો નહીં દેખતા હૈ, (પર વચસેણવિ ન કિંચિ ગેણ્હ) ચાલ, ગ્લાન આદિ કે નિમિત્ત સે લાયે દુષ્ઠ ઔપધ, મૈપજ્ય આદિ કુછ ભી વસ્તુ અપને અથવા દૂસરે કે કામ મેં નહીં લેતા હૈ, (ળ ય વિપરિ-ણામેઈ કચિ જળ) ધર્મ સે તથા અપને ગુરુજનોં સે જો શિષ્યાદિકોં કો વિમુક્ત નહીં કરતા હૈ, (ળ યાવિ ળાસેઈ દિણ્ણ સુકય) દત્ત-અભય દાનાદિક કા, સુકૃત-વ્રત પ્રત્યાખ્યાન આદિ કા જો નાશ નહીં કરતા હૈ કિન્તુ ઉનકી અનુમોદના હી કરતા હૈ, અર્થાત્ પરકૃત શુભકૃત્યોં કો જો આચ્છાદિત નહીં કરતા હૈ (દાઝળ ય કાઝળ ય ળ ય પચ્છાત્તા

પીઠ, શ્વક, શય્યા સસ્તારક, વસ્ત્ર, પાદકબલ, દડક, રજોહરણ, ચોલપટ્ટક, દોરા સાથેની મુકપત્તિ, પાદપ્રોઠ્ઠન આદિ તથા ભ્રાજન, ભાંડ, ઉપધિ આદિ ઉપકરણનું સેવન કરતો નથી, “ન ય વિ પરિચાયપરસ્સ જપહ” બીબાની નિંદા કરતો નથી, “ન યા વિ પરસ્સ દોસે ગેણ્હ” બીબાના દોષોને બેતો નથી, “ પરવચસેણ વિ ન કિંચિ ગેણ્હ” બાળ, ગ્લાન આદિને નિમિત્તે લાવેલા ઔપધ, મૈપજ્ય, આદિ કોઈ પણ વસ્તુ પોતાના અથવા બીબાના ઉપ યોગમાં લેતો નથી “ ળ ય વિપરિણામેઈ કિંચિ જળ ” જે શિષ્યાદિને ધર્મથી કે ગુરુજનોથી વિમુક્ત કરતો નથી, “ ળ યાવિ ળાસેઈ દિણ્ણ સુકય ” દત્ત-અભયદાનાદિકનું સુકૃત-વ્રત પ્રત્યાખ્યાન આદિને જે નાશ કરતો નથી-પણ તેની અનુમોદના જ કરે છે, એટલે કે અન્ય વડે કરાયેલ શુભકૃત્યોને જે ઢાકતો નથી “ દાઝળય કાઝળય ળ ય પચ્છાત્તાવિપ હાઈ ” હેય વસ્તુને હાઈ

વૈયાધૃત્યાદિકાર્ય, ' જ હોડ ' ન ભરતિ ' પન્નગ્નાત્રિણ ' પશ્ચાત્તાપિકા: = પશ્ચાત્તા-
પકારી । તથા- ' સચિભાગસીલે ' સચિભાગસીલ- = સચિભક્તાદે. સચિભાગકારી
' સગ્રહોવગ્ગદ્કુસલે ' સગ્રહોવગ્ગદ્કુસલ, તત્ર-સગ્રહ: = શિષ્યાદિપરિવર્દનમ્,
ઉપગ્રહ: = તેપામેવ ભક્તશ્રુતાન્નિદાનપૂર્વકમુપપ્લબ્ધનમ્, તત્ર કુશલો દક્ષો ભવતિ,
' સે તારિસે ' સ તારિસે: સાધુ: ' ણ ' इदम् = અદત્તાદાનચિરમણરૂપ ' વય '
વ્રતમ્ ' આરાહેડ ' આરાધયતિ, નાન્ય: ॥ મૂં ૪ ॥

ધિણ હોડ) દેયધન્તુ કો દેહર પન્ન વૈયાધૃત્ય આદિ કાર્ય કો કરકે જો
પશ્ચાત્તાપ નહીં કરતા હૈ, (સચિભાગસીલે) લગ્ય ભક્તાદિક કા જો
સચિભાગકારી હોતા હૈ, ઓર (સગ્રહોવગ્ગદ્કુસલે) શિષ્યાદિ કે
પરિવર્દન મેં ઓર ડનકે ભક્ત શ્રુત આદિ દાનપૂર્વક ઉપપ્લબ્ધન મેં દક્ષ
હોતા હૈ, (સે તારિસે) તેસા ત્રહ સાધુ (ણ વય આરાહેડ) હસ અદ-
ત્તાદાનચિરમણરૂપ વ્રત કો આરાધિત કરતા હૈ, દૂસરા નહીં ॥

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને હસ સૂત્ર ઠારા યર સમજાયા હૈ કિ કિસ
પ્રકાર કા કાર્ય કરને વાલા સાધુ હસ મહાવ્રત કા આરાધક હોતા હૈ ।
ડનકા કહના હૈ કિ જો સાધુ પીછે કે દૂસરે સૂત્ર મેં કહી ગઈ યાતોં
કે અનુસાર આચરણ કરતા હૈ વરી સાધુ હસ મહાવ્રત કા આરાધક
બનતા હૈ, વે યાતે હસ પ્રકાર સે હે—જો સાધુ ઉપધિ ઓર ભક્તપાન કે
સગ્રહણ ંધ દાન કરને મેં દક્ષ હોતા હૈ, અત્યત ઘાલ, ડુર્બલ, ગ્લાન,
વૃદ્ધ, ક્ષપક, પ્રવર્ત્તક, આચાર્ય, ઉપાધ્યાય આદિ કા વૈયાધૃત્ય કરતા હૈ ।

વૈયાધૃત્ય આદિ કાર્ય કડીને જે પશ્ચાત્તાપ કરતા નથી, “ સચિભાગસીલે ” પ્રાપ્ત
આહારાદિના જે સચિભાગકારી હોય છે, અને “ સગ્રહોવગ્ગદ્કુસલે ” શિષ્યાદિના
પરિવર્ધનમા અને તેમના લક્ષ્ત શ્રુત આદિ દાન પૂર્વક ઉપપ્લબ્ધનમા દક્ષ
હોય છે “ સે તારિસે ” એવો તે સાધુ “ ણ વય આરાહેડ ’ આ અદત્તાદાન
ચિરમણરૂપ વ્રતનુ આરાધન કરી રહે છે, બીજા કરી શકતા નથી,

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા સમજાવ્યું છે કે કેવું કાર્ય કરનાર
સાધુ આ મહાવ્રતનો આરાધક થાય છે તેમનું એવું કથન છે કે જે સાધુ
આગળ બીજા સૂત્રમા બતાવેલ વાત અનુસાર આચરણ કરે છે તે જ સાધુ
આ મહાવ્રતનો આરાધક બને છે તે વાતો આ પ્રમાણે છે—જે સાધુ ઉપધિ
અને લક્ષ્તપાન (આહારપાણી) નો સચ્ચંદ્ર અને દાન કરવામા દક્ષ હોય છે,
અત્યત બાળ, ડુર્બલ, ગ્લાન, વૃદ્ધ ક્ષપક, પ્રવર્ત્તક, અર્થ ઉપાધ્યાય આદિની
વૈયાધૃત્ય—વૈયાધૃત્ય રહે છે, અપ્રીતિકર્મનને ત્યાં જોયરીને માટે જતો નથી, તેના દ્વારા

અપ્રીતીકરુન કે ઘર પર ગોચરી કે લિયે નહીં જાતા હૈ, ઉનકે દ્વારા પ્રદત્ત પીઠ ફલક આદિ કા ઉપયોગ નહીં કરતા હૈ' દૂસરોં કિ નિંદા નહીં કરતા હ, પર કે દોપોં કી તરફ દષ્ટિપાન નહીં કરતા હૈ, પર કે વ્યપદેશ સે અપને લિયે તથા દૂસરોં કે લિયે કુછ મી વસ્તુ નહીં લેતા હૈ, શુર્વાદિક સે ઉનકે શિષ્યાદિકોં કા મેદ નહીં કરાતા હૈ, અભયદાના દિક કો દે કરકે, વૈયાવૃત્ય કો કરકે જો પીછે સે પછતાતા નહીં હૈ, સગ્રહશીલ હોના હૈ-સવિભાગદારી હોતા હૈ, શિષ્યાદિ સપત્તિ વધાને મેં કુશલ હોતા હૈ એસા સાધુ હી મહાવ્રત કા આગમક હોતા હૈ । વૈયા-વૃત્ય જો આચાર્ય આદિ કી કરતા હૈ-ઉસમેં ઉસકા અભિપ્રાય અપને મેં જ્ઞાનવૃદ્ધિ ઓર કર્મોં કી નિર્જરા હોનેકા હોતા હૈ । વૈયાવૃત્ય આચાર્ય આદિ દસ પ્રકાર કે સ્થાન સેવ્ય હોને કે કારણ દસ પ્રકાર કા હૈ । સૂત્ર મેં યદ્યપિ ચૌદહ પ્રકાર કે વૈયાવૃત્ય કે સ્થાન પ્રકટ કિયે હૈ પર અત્યંત ઘાલ ઓર દુર્બલ જન સાધુઓં કા અન્તર્ભાવ જ્ઞાન મેં એક ક્ષપક ઓર પ્રભાવક સાધુઓં કા અન્તર્ભાવ આચાર્ય મેં કર દિયા જાતા હૈ, હસલિયે હસ પ્રકાર સે યે દસ હી હોતે હૈ । મુરુચ રુપ સે જિસકા કાર્ય આચાર ઓર વ્રત ગ્રહણ કરાને કા હોતા હૈ વહ આચાર્ય હૈ, મુરુચરુપ સે જિમકા કાર્ય મૂલ સૂત્ર કા અભ્યાસ કરાને કા હોતા

અપાયેલ પીઠ, ફલક આદિનો ઉપયોગ કરતો નથી અન્યની નિંદા કરતો નથી અન્ય ના દોષો તરફ નજર નાખતો નથી બીજાનું નિમિત્ત બતાવીને પોતાને માટે તથા અન્યને માટે હોઈ પણ વસ્તુ લેતો નથી, શુર્વાદિક સાથે તેમના શિષ્યાદિકોના ભેદભાવ પડાવતો નથી, અભયદાન આદિ દધને, વૈયાવૃત્ય કરીને જે પાછળથી પસ્તાતો નથી, મગ્રહશીલ હોય છે-સવિભાગદારી હોય છે, શિષ્યાદિક સપત્તિ વધારવામાં કુશળ હોય છે, એવો સાધુ જ આ મહાવ્રતોનો આરાધક થઈ શકે છે તે આચાર્ય આદિની જે વૈયાવૃત્ય કરે છે તેમાં તેનો હેતુ પોતાના જ્ઞાનની વૃદ્ધિ તથા કર્મોની નિર્જરા કરવાનો જ હોય છે વૈયાવૃત્ય આચાર્ય આદિ દસ પ્રકારના સેવાને પાત્ર સ્થાન હોવાથી દસ પ્રકારનું છે સૂત્રમાં જે કે ચૌદ પ્રકારના વૈયાવૃત્યના સ્થાન બતાવ્યા છે પણ અત્યંત બળ અને દુર્બળ સાધુઓનો સમાવેશ જ્ઞાનમાં અને ક્ષપક અને પ્રભાવક સાધુ ઓનો સમાવેશ આચાર્યમાં કરી દેવામાં આવેલ છે, તેથી આ ગીતે તેના દસ પ્રકાર જ થાય છે અુખ્યત્વે જેનું કાર્ય આચાર અને વ્રત ગ્રહણ કરાવવાનું હોય છે તે આચાર્ય કહેવાય છે અુખ્યત્વે જેનું કાર્ય મૂળ સૂત્રનો અભ્યાસ

અધોપસહારમાહ—‘ હમ ચ ’ ઇત્યાદિ ।

મૂળ—હમં ચ પરદ્રવ્યહરણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાં પાવયણં
ભગવયા સુકહિયં અત્તહિય પેચ્ચાભાવિયં આગમેસિભદં સુદ્ધં
નેયાઉયં અકુહિલ અણુત્તરમવ્યદુક્ષ પાવાણ વિડસમણં ॥ સૂ. ૫ ॥

ટીકા—‘ હમ ચ ’ દ્વ ચ-પૂર્વેનન્તતીર્થકરગણધરૈઃ પ્રોક્તમિદ પ્રત્યક્ષ
‘ પાવયણં ’ પ્રવચન ‘ પરદ્રવ્યહરણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાં ’ પરદ્રવ્યહરણવિર-
મણપરિરક્ષણાર્થ=પરદ્રવ્યહરણવિરમણસ્ય=અદત્તાદાનવિરમણવ્રતસ્ય પરિરક્ષણાર્થ =

હૈ વહ ઉપાયાય હૈ, જો વિગય આદિ કે ત્યાગરૂપ તપોં કો તપતા હૈ
વહ તપસ્વી હૈ, જો નવદીક્ષિત હોકર શિક્ષણ પ્રાપ્ત થરને કા ઉમ્મીદવાર
હોતા હૈ વહ શૈક્ષ હૈ, રોગ આદિ સે જિસકા શરીર ક્ષીણ હો ગયા હો
વહ ગ્લાન હૈ, એક હી દીક્ષાચાર્ય કા શિષ્યપરિવાર કુલ હૈ, જુદે ૨
આચાર્યોં કે શિષ્યરૂપ સાધુ યદિ પરસ્પર સહાધ્યાયી હોને સે સમાન-
વાચના થાલે હો તો ઉનકા સમુદાય ગણ હૈ, ગણ કા સમુદાય સઘ
કહલાતા હૈ । જો પ્રવ્રજ્યાધારી હોતા હૈ વહ સાધુ હૈ । શ્રુતલિંગ ઓર
પ્રવચન મેં જો સમાન હોં વે સાધર્મિક હૈ ॥ સૂ. ૪ ॥

અતઃ સૂત્રકાર ડસ પ્રકરણ કા ઉપસંહાર કરતે હુએ કહતે હૈ—
‘ હમ ચ ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—(હમ ચ પરદ્રવ્યહરણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાં પાવયણ
ભગવયા સુકહિય) પૂર્વ મેં અનત તીર્થકરોં એવ ગણધર દેવોં દ્વારા કહા

કરાવવાનુ હોય છે તે ઉપાધ્યાય કહેવાય છે જે વિગય આદિના ત્યાગરૂપ તપો
ઢરે છે તે તપસ્વી કહેવાય છે, જે નવદીક્ષિત થઈને શિક્ષણ પ્રાપ્ત કરવાને
માટે ઉમેદવાર હોય છે તેને શૈક્ષ કહે છે રોગ આદિથી જેનુ શરીર ક્ષીણ થઈ
ગયુ હોય તેને ગ્લાન કહે છે એક જ દીક્ષાચાર્યના શિષ્ય પરિવારને કુલ કહે
છે, બુદ્ધા બુદ્ધા આચાર્યોના શિષ્યરૂપ સાધુ ને પરસ્પર સહાધ્યાયી હોવાથી
સમાન વાચનાવાળા હોય તો તેમના સમુદાયને ગણ કહે છે ગણના સમુદાયને
સઘ કહે છે જે પ્રવ્રજ્યા (દીક્ષા) ધારી હોય તે સાધુ કહેવાય છે શ્રુતલિંગ
અને પ્રવચનમા જે સમાન હોય તે સાધર્મિક કહેવાય છે ॥ સૂ. ૪ ॥

હવે સૂત્રકાર આ પ્રકરણનો ઉપસંહાર કરતા કહે છે—“ હમ ચ ” ઇત્યાદિ
ટીકાર્થ—“ હમ ચ પરદ્રવ્યહરણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાં પાવયણ ભગવયા
સુકહિય ” પૂર્વે અનત તીર્થકરો અને ગણધરો દ્વારા કહેવાયેલ આ પ્રત્યક્ષી

રક્ષણનિમિત્ત 'ભગવતા' ભગવતા 'સુરુદ્ધિય' સુરુદ્ધિય=ગમિસ્તાર પ્રરૂપિતમ્ ।
 કથં ભૂતં પ્રવચનભગવતા સુરુદ્ધિયમ્ ? इत्याह—'अत्तहिय' आत्महितम्=आत्मनो
 हितकारकम्, तथा—'पेच्चाभायिय' भेत्यभायिक=जन्मान्तरेऽपि शुभफलदायकम्,
 अत एव—'आगमेसिभद्' आगमिष्यद् भद्र=भविष्यत्काले-कल्याणकारकम्,
 तथा 'सुद्ध' शुद्ध=निर्दोषत्वात्, पुनः—'नेयाउय' नैयायिकम्, वीतरागभाषि
 तत्वात्-तथा—'अकुडिल' अकुटिलम्=ऋजुभावजनकत्वात् 'अणुत्तर' अनुत्तरम्-सर्व
 श्रेष्ठत्वात्, तथा 'सव्वदुक्खपावाण' सर्वदुःखपापानां=सकलदुःखजनकज्ञानावर-
 णीयाद्यष्टविधकर्मणा 'विउसमण' व्युपशमन=सर्वथा प्रशमनकारकम् । एतादृशं
 प्रवचनं भगवता सुरुचितमित्यर्थः ॥ सू० ५ ॥

अस्य तृतीयव्रतस्य पञ्चभावनाः प्रतिपादयन् सम्प्रति पित्रिक्तयसत्तिरासाभिर्भा
 प्रथमा भावनामाह—'तस्स इमा' इत्यादि ।

मूलम्—तस्स इमा पचभावणाओ तइयस्स वयस्स हुंति,
 परदच्चहरणवेरमणपरिरक्खणदुयाए । पढम देवकुलसभाप्पवा-

गया यह प्रत्यक्षीभूत प्रवचन, परद्रव्यविरमणरूप महाव्रत की परिरक्षा
 के निमित्त भगवान् ने विस्तारपूर्वक प्ररूपित किया है । यह प्रवचन
 (अत्तहिय) आत्मा का हितकारक है, (पेच्चाभायिय) जन्मान्तर में
 भी शुभफल का प्रदाता है, इसीलिये यह (आगमेसिभद्) भविष्यत्
 काल में कल्याण कारक कहा गया है । (सुद्ध) यह निर्दोष होने से
 शुद्ध है, (नेयाउय) वीतराग प्रभु द्वारा भाषित होने से न्यायसपन्न है,
 (अकुडिल) ऋजुभावका जनक होनेसे अकुटिल है, (अणुत्तर) सर्वश्रेष्ठ
 होनेसे अणुत्तर है तथा (सव्वदुक्खपावाण विउसमण) सकल दुःखजनक
 ज्ञानावरणीय आदि अष्टविध कर्मोंका सर्वथा प्रशमनकारक है ॥ सू० ५ ॥

ભૂત પ્રવચન પરદ્રવ્ય વિરમણરૂપ મહાવ્રતની પરિરક્ષાને નિમિત્તે ભગવાને
 વિસ્તારપૂર્વક પ્રરૂપિત કરેલ છે આ પ્રવચન “અત્તહિય” આત્માનું હિતકારક
 છે, “પેચ્ચાભાયિય” જન્માન્તરમાં પણ શુભ ફળનું દેનારૂં છે, તેથી તે
 “આગમેસિભદ્” ભવિષ્યકાળમાં કલ્યાણકારક બતાવવામાં આવ્યું છે “સુદ્ધ”,
 તે નિર્દોષ હોવાથી શુદ્ધ છે, “નેયાઉય” વીતરાગ પ્રભુદ્વારા કથિત હોવાથી
 ન્યાયયુક્ત છે, “અકુટિલ” ઋજુભાવનું જનક હોવાથી અકુટિલ છે, “અણુત્તર”
 સર્વશ્રેષ્ઠ હોવાથી અનુત્તર છે તથા “સવ્વદુક્ખપાવાણ વિસમણ” સકળ
 દુષ્કર્મજનક જ્ઞાનાવરણીય આદિ આઠ પ્રકારના કર્મોનું સર્વથા પ્રશમનકારક છે સૂ. ૫

વસહસ્ત્રમૂલ-આરામ-કંદરાઽઽગર-ગિરિગુહા-કમ્મતુજ્ઞાણ જાણ-
સાલા-કુવિયસાલા-મડવ-સુન્નઘર-સુસાણલેણ આવળે અન્નમ્મિ
ય એવમાઙ્ગયન્મિ દગ-મદ્વિય-વીય-હરિય-તત્તપાણ અસંસત્તે
અહાકડે ફાસુણ વિવિત્તે પસત્થે ઉવસ્મણ હોઙ્ગ વિહરિયવ્વ ।
આહાકમ્મવહુલે ચ જેસે આસિ ચ સંમજ્ઞિઓસિત્તસોહિય છાણ
દુમણલિપણ અણુલિપણ જલણમહચાલણં અંતોવાહિ મઙ્ગલે ચ
અસજમો જત્થ વટ્ઠઙ્ગ, સજયાણં અટ્ટા વઙ્ગેયવ્વે હુ ઉવસ્સણ
સે તારિસે સુત્તપરિકુટ્ટે । એવ વિવિક્ત વાસવસહિ સમિઙ્ગ જોગેણ
ભાવિઓ ભવઙ્ગ અંતરપ્પા, નિચ્ચ અહિગરણકરણકારાવણ પાવ-
કમ્મ વિરણ દત્તમણુપ્પણાય ઉગ્ગહરુઙ્ગ ॥ સૂ. ૬ ॥

ટીકા-‘ તસ્સ ’ તસ્ય=પ્રસિદ્ધસ્ય ‘ તદ્વ્યસ્સ વયસ્સ ’ તૃતીયસ્ય ત્રતસ્ય=
અદત્તાદાનવિરમણનામકતૃતીયવ્રતસ્ય ‘ ઇમા ’ ઇમા:-વક્ષ્યમાણાઃ ‘ પચ ભાવ-
નાઓ ’ પચ્ચભાવનાઃ ‘ પરદવ્વહરણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાણ ’ પરદ્રવ્યહરણવિરમણ-
પરિરક્ષણાર્થાય અદત્તાદાનવિરમણવ્રતસ્ય રક્ષાનિમિત્ત ‘ હ્રુતિ ’ ભવન્તિ । તાસુ
‘ પદમ ’ પ્રથમા=ત્રિવિક્તવસતિવાસલક્ષણા ભાવનામાહ-સાધુભિઃ, ક્વચિદ્દર્શનમિત્તિ,

અથ સૂત્રકાર ટસ તૃતીય વ્રત કી પાચ ભાવનાઓં કો સમજ્ઞાને કી
હચ્છાસે સ્વ સે પ્રથમ વિવિક્તવસતિવાસ નામ કી પહિલી ભાવના
કો પ્રકટ કરતે હે--‘ તસ્સ ઇમા ’ ઇત્યાદિ ૦ ।

ટીકાર્થ—(તસ્સ) ડસ પ્રસિદ્ધ (તદ્વ્યસ્સ વયસ્સ) તૃતીય અદત્તા-
દાન વિરમણ વ્રત કી (ઇમા) યે વક્ષ્યમાણ (પચ ભાવનાઓ હ્રુતિ) પાંચ
ભાવનાઈ હે । યે ભાવનાઈ (પરદવ્વહરણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાણ) હસ

હવે સૂત્રકાર આ ત્રીજા વ્રતની પાચ ભાવનાઓ સમજાવવાને માટે સૌથી
પ્રથમ વિવિક્તવસતિવાસ નામની પહેલી ભાવનાને પ્રગટ કરે છે--‘ તસ્સ ઇમા ’ ઈ
ટીકાર્થ--‘ તસ્સ ’ તે પ્રસિદ્ધ ‘ તદ્વ્યસ્સ વયસ્સ ’ ત્રીજા અદત્તાદાન
વિરમણ વ્રતની ‘ ઇમા ’ આ પ્રમાણે “ ‘ પચ ભાવનાઓ તિ ’ પાચ ભાવ
નાઓ છે એ ભાવનાઓ ‘ પરદવ્વહરણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાણ ’ આ અદત્તા

રસાનિમિત્ત ' મગરતા ' મગરતા ' મુરદિયં ' મુરદિયા=મરિચ્ચાર પ્રકૃતિય્ ।
 પપ મૂર્તિ મરતા મગરતા મુરદિયામ ? કન્વાઈ—' અત્તદિય ' આત્મરિત્તમ્=આત્મનો
 રિત્તકારસ્મ, તથા—' પેન્નામાનિય ' મેન્નામાનિય=તન્માનરેડિય મુમકન્વાયક્મ,
 અત્ત એ—' આગમેસિમદ ' આગમિન્વાય્ ગત્ર=ગમિન્વાયે=જન્માગકારકમ્,
 તથા ' સુદ ' સુદ=નિર્દોષવાન્, પુત્ર—' નેયાડય ' નેયાગિયમ્, વીતરાગમાયિ
 તત્વાન્-તથા—' અકુદિલ ' અકુદિયમ્=વ. સુમાગનરન્વાય્ ' અણુત્તર ' અણુત્તરમ્-સર્વ
 શ્રેષ્ઠત્વાત્, તથા ' મન્વદુઃસ્વપાવાળ ' મન્વદુઃસ્વપાવાળાં=મન્વદુઃસ્વજનકજ્ઞાનાત્
 ણીયાયવિધકર્મણા ' વિડસમળ ' અણુપ્રમન=મર્થા પ્રમનકારકમ્ । પતાલમ્
 પ્રવચન મગરતા મુરદિયમિત્યર્થે ॥ સૂ. ૭ ॥

અસ્ય દ્વિતીયમ્ તસ્ય પદમાયનાઃ પ્રતિપાદયન્ સમ્પ્રતિ નિમિત્તવ્રતિવાસામિતિ
 પ્રથમા ભાવનામાદ—' તસ્મ ઇમા ' ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—તસ્મ ઇમા પચ્ચભાવનાઓ તદ્વચસ્સ વચસ્સ ક્રુતિ,
 પરદ્રવ્યહરણવિરમણપરિરમ્ભણદ્રુયાય । પદસ દેવકુલસમા પ્પવા

મયા યદ્ પ્રત્યક્ષીયૂત પ્રવચન, પરદ્રવ્યવિરમણરૂપ મહાવ્રત કી પરિરક્ષા
 કે નિમિત્ત મગવાન્ ને વિસ્તારપૂર્વક પ્રરૂપિત કિયા હૈ । યદ્ પ્રવચન
 (અત્તદિય) આત્મા કા રિત્તકારક હૈ, (પેન્નામાનિય) જન્માન્તર મેં
 મી શુભફલ કા પ્રદાતા હૈ, હસીન્નિયે યદ્ (આગમેસિમદ) ભવિષ્ય
 કાલ મેં કલ્યાણ કારક કહા ગયા હૈ । (સુદ) યદ્ નિર્દોષ હોને સે
 શુદ્ધ હૈ, (નેયાડય) વીતરાગ પ્રભુ દ્વારા ભાષિત હોને સે ન્યાયસપ્ત હૈ,
 (અકુદિલ) મજ્જુભાવકા જનક હોનેસે અકુદિલ હૈ, (અણુત્તર) સર્વશ્રેષ્ઠ
 હોનેસે અણુત્તર હૈ તથા (સન્વદુઃસ્વપાવાળ વિડસમળ) સકલ દુઃસ્વજનક
 જ્ઞાનાચરણીય આદિ અષ્ટવિધ કર્મો કા સર્વથા પ્રશમનકારક હૈ ॥ સૂ. ૫ ॥

ભૂત પ્રવચન પરદ્રવ્ય વિરમણરૂપ મહાવ્રતની પરિરક્ષાને નિમિત્તે લગવાને
 વિસ્તારપૂર્વક પ્રરૂપિત કરેલ છે આ પ્રવચન “ અત્તદિય ” આત્માનું હિતકારક
 છે, “ પેન્નામાનિય ” જન્માન્તરમા પણ શુભ ફળનું દેતારૂ છે તેથી તે
 “ આગમેસિમદ ” ભવિષ્યકાળમા કલ્યાણકારક બતાવવામા આવ્યું છે “ સુદ ”
 તે નિર્દોષ હોવાથી શુદ્ધ છે, “ નેયાડય ” વીતરાગ પ્રભુદ્વારા યથિત હોવાથી
 ન્યાયયુક્ત છે, “ અકુદિલ ” મજ્જુભાવનું જનક હોવાથી અકુદિલ છે, “ અણુત્તર ”
 સર્વશ્રેષ્ઠ હોવાથી અણુત્તર છે તથા “ સન્વદુઃસ્વપાવાળ વિસમર્ણ ” સકળ
 દુઃસ્વજનક જ્ઞાનાચરણીય આદિ આઠ પ્રકારના કર્મોનું સર્વથા પ્રશમનકારક છે સૂ. ૫

વસહરુન્નમૂલ-આરામ-કંદરાઽઽગર-ગિરિગુહા-કમ્મતુજાણ જાણ-
સાલા-કુવિયસાલા-મડવ-સુન્નઘર-સુસાણલેણ આવળે અન્નમ્મિ
ય એવમાઇયમ્મિ દગ-મદ્દિય--ત્રીય-હરિય--તત્તપાણ અસંસત્તે
અહારુડે પાસુએ ત્રિવિત્તે પસત્તયે ઉવસ્મએ હોડ વિહરિયવ્વં ।
આહારુમ્મવહુલે ચ જેસે આસિ ચ સમજિઓસિત્તસોહિય છાણ
દુમણલિંપણ અણુલિપણ જલણમ્મહચાલણં અતોવાહિ મજ્ઞે ચ
અસજમો જત્થ વદ્દહ, સજયાણ અટ્ટા વજ્જેયવ્વે હુ ઉવસ્સએ
સે તારિસે સુત્તપારિકુટ્ટે । એવ વિવિક્ત વાસવસહિ સમિદ્ધ જોગેણ
ભાવિઓ ભવદ્ અંતરપ્પા, નિચ્ચ અહિગરણકરણકારાવળ પાવ-
કમ્મ વિરએ દત્તમણુણાય ઉગ્ગહરુદ્ધ ॥ સૂ. ૬ ॥

ટીકા—‘તસ્સ’ તસ્ય=પ્રસિદ્ધસ્ય ‘તદ્વયસ્સ વયસ્સ’ તૃતીયસ્ય ત્રતસ્ય=
અદત્તાદાનવિરમણનામકતૃતીયવ્રતસ્ય ‘ઇમા’ ઇમાઃ-વક્ષ્યમાણા ‘પચ ભાવ-
નાઓ’ પચ્ચભાવનાઃ ‘પરદવ્વહરણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાએ’ પરદવ્વહરણવિરમણ-
પરિરક્ષણાર્થાય અદત્તાદાનવિરમણવ્રતસ્ય રક્ષાનિમિત્ત ‘હુંતિ’ ભવન્તિ । તાસુ
‘પદ્મ’ પ્રથમા=વિવિક્તવસતિવાસલક્ષણા ભાવનામાહ-સાધુભિઃ ક્વચિદર્થવ્યમિતિ,

અથ સૂત્રકાર ડસ તૃતીય વ્રત કી પાંચ ભાવનાઓં કો સમજાને કી
હજ્જાસે સબ સે પ્રથમ વિવિક્તવસતિવાસ નામ કી પદ્ધિલી ભાવના
કો પ્રકટ કરતે હે—‘તસ્સ ઇમા’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(તસ્સ) ડસ પ્રસિદ્ધ (તદ્વયસ્સ વયસ્સ) તૃતીય અદત્તા-
દાન વિરમણ વ્રત કી (ઇમા) યે વક્ષ્યમાણ (પચ ભાવનાઓ હુંતિ) પાંચ
ભાવનાએ હે । યે ભાવનાએ (પરદવ્વહરણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાએ) ડસ

હવે સૂત્રકાર આ ત્રીજા વ્રતની પાંચ ભાવનાઓ સમજાવવાને માટે સૌથી
પ્રથમ વિવિક્તવસતિવાસ નામની પહેલી ભાવનાને પ્રગટ કરે છે—‘તસ્સ ઇમા’ ઇ
ટીકાર્થ—‘તસ્સ’ તે પ્રસિદ્ધ ‘તદ્વયસ્સ વયસ્સ’ ત્રીજા અદત્તાદાન
વિરમણ વ્રતની ‘ઇમા’ આ પ્રમાણે “ ‘પચ ભાવનાઓ તિ’ પાંચ ભાવ-
નાઓ છે એ ભાવનાઓ ‘પરદવ્વહરણવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાએ’ આ અદત્તા

તદેવ સ્પષ્ટયતિ-‘ દેવકુલ-સમા-પ્પવા-વસહ-રુઝ્ઘમૂલ-આરામકદરાડગર-
ગિરિગુહા-કમ્મતુ-જ્ઞાણ-જાણસાલા-કુવિયમાલા-મહવ-સુન્નવર-સુસાણ-લેણ
આવળે ’ દેવકુલસમાપ્પવાડગમવટ્ઠમૂલારામકન્દરાડગરગિરિગુહાકર્માન્તોઘા-
નયાનશાલા કુપ્પયશાલામણ્ડપરુણ્યટ્ઠદશમશાનલયનાપળે-તત્ર-દેવકુલમ્-વ્યન્તરાદિ
દેવવૃક્ષમ્, સમા=સમાગૃહ યત્ર સમયે સમયે મન્ત્રણાર્થે જના આગત્ય સમિલન્ટિ
તત્, પ્રપા=પાનીયશાલા, આવસથઃ=પરિવ્રાજકગૃહમ્, વૃક્ષમૂલ-પ્રસિદ્ધમ્, આરામઃ
માધવીલતાદિપરિમણ્ડિતોરમણીયો રત્નવિશેષઃ, કન્દરા=દરી, આકરો=લોહાણુ
ત્પત્તિસ્થાનમ્, ગિરિગુહા-પર્વતો, કર્માન્તઃ=લોહાકારાદિશાલા ‘ કારખાના ’
‘ મીલ ’ ‘ જીળ ’ इत्यादि नाम्ना प्रसिद्ध स्थानम् । उद्यानम्=उपवनम्, यान

અદત્તાદાન ચિરમણ વ્રત કી પરિરક્ષા કે નિમિત્ત કરી ગઈ હૈં (પદ્મ)
તનમૈં પ્રથમ ભાવનો હસ પ્રકાર હૈ-હસ પ્રથમ ભાવના કા નામ વિવિક્ત-
વસતિવાસ હૈ ! હસમૈં સાધુઓં કો કહા નિવાસ કરના ચાહિયે યહ પ્રકટ
કિયા ગયા હૈ, (દેવકુલસમા-પ્પવા-વસહ-રુઝ્ઘમૂલ-આરામ-કદરાગાર-
ગિરિગુહા-કમ્મતુ-જ્ઞાણ-જાણસાલા-કુવિયમાલા-મહવ-સુન્નવર-સુસા-
ણ-લેણ-આવળે) દેવકુલ મે-વ્યન્તર આદિ દેવોં કે સ્થાન મૈં, સમા
મૈં-જહા પર મન્ત્રણા કે લિયે આકર સમય ૨ પર મનુષ્ય એકત્રિત હોતે
હૈં એસે સ્થાન મે, પ્રપા મે-પાનીયશાલા મૈં, આવમથ મૈં-પરિવ્રાજકોં કે
ઘરોં મૈં, વૃક્ષમૂલ મે-તરુ કે નીચે મૈં, આરામ મૈં-માધવીલતા આદિ સે
પરિમણ્ડિત રમ્યવન મૈં, કન્દરા મૈં-ગુફા મૈં, આકર મૈં-લોહાદિક ધાતુ-
ઓં કે ઉત્પત્તિ સ્થાન મૈં, ગિરિગુહા મૈં-પર્વત કી ગુફા મૈં, કર્માન્ત મૈં-
લોહકાર આદિ કી શાલા મૈં, કારખાના-મીલ-इत्यादि नाम से प्रसिद्ध

દાન વિરમણુ વ્રતની પરિરક્ષાને માટે બતાવવામા આપી છે “ પદ્મ ” તેમાની
પહેલી ભાવનાનુ નામ ‘ વિવિક્તવસતિવાસ ’ તેમા સાધુઓએ યથા વાસ કરવો
તે બતાવ્યું છે “ દેવકુલ સમા-પ્પવા-વસહ-રુઝ્ઘમૂલ-આરામ-કદરાગાર-ગિરિ-
ગુહા-કમ્મતુ-જ્ઞાણ-જાણસાલા-કુવિયમાલા-મહવ-સુન્નવર-સુસાણ-લેણ-આવળે ”
દેવકુલમા-વ્યન્તર આદિ દેવોના સ્થાનમા, સભામા બન્યા મન્ત્રણુને માટે આવીને
વખતોવખત માણસો એકઠા થાય છે એવા સ્થાનમા, પ્રપામા-પાનીયશાળમા
આવસથમા-પરિવ્રાજકોના ઘરોમા, વૃક્ષમૂળમા-ઝાડની નીચે, આરામમા-માધવી
લતા આદિથી આચ્છાદિત રમ્યવનમા, કન્દરામા-ગુફામા, આકરમા-લોહુ આદિ
ધાતુઓની ખાણુમા, ગિરિગુહામા-પર્વતની ગુફામા કર્માન્તમા-લુહાર આદિની
શાલામા, કારખાના-મીલ આદિ નામે પ્રસિદ્ધ સ્થાનોમા, ઉદ્યાનમા-બાગમા,

शाला=रथादिगृहम्, कुप्यशाला=गृहोपकरणशाला, मण्डपः=विश्रामस्थानम्, शून्य-
गृह=प्रसिद्ध, इमशानम्=प्रसिद्धम्, लयन=गृहम्, आपणः=पण्यस्थानम्, 'हाट'
इति भाषा प्रसिद्धम्, एषा समाहार द्वन्द्वस्तस्मिन् च यो मते, अर्थात्-देवकुलादिरूपे-
ऽष्टादशविधे, तथा- 'अन्नमि य एवमाइयमि' एवमादिके=एव
विधे कथं भूते ? इत्याह- 'दगमद्विय-वीय-हरिय-तस पाण अससत्ते' दक-
मृत्तिका बीजहरितत्रसप्राणसमक्ते=दकम्=जलम्, मृत्तिका=प्रतीता, बीजानि=
शाल्यादीनि, हरितानि=दूर्वादीनि त्रसपाणाः=द्वीन्द्रियादयः, तैरससक्ते=रहिते,
पुनः कीदृशे ? 'आहाकडे' यथाकृते=गृहस्थेन स्वार्थं निर्मिते 'फासुए' प्राप्तुके
=निर्दोषे 'विविक्ते=स्त्रीपशुपण्डकरहिते, अत एव- 'पसत्ये' प्रशस्ते=श्रेष्ठे
साधुनिवासयोग्ये 'उवस्सए' उपाश्रये-साधुभिः 'विहरियव्व' विहर्तव्य=
आश्रयितव्य 'होइ' भवति । एतादृशे उपाश्रये साधुभिर्निवासः कर्तव्य इत्यर्थः ।

स्थान में, उद्यान में-उपवन में, यानशाला में-रथादि गृह में, कुप्यशाला
में-गृहोपकरण रखने के स्थान में, मण्डप में-विश्राम स्थान में-शून्य गृह
में-खुले घर में, इमशान में-मरघट में, लवन में-पर्वत की तलहटी में
निर्मित पापण घर में, आपण में-हाट में (अन्नमि य एवमाइयमि) तथा
इसी तरह के दूसरे स्थान में कि जो (दगमद्विय-वीय-हरिय-तसपाण
अससत्ते) जल, मृत्तिका, बीज, दुर्वा, द्वीन्द्रियादिक त्रस, इन से रहित
हो, तथा (आहाकडे) जिस गृहस्थ ने अपने निमित्त बनवाया हो, एव
जो (फासुए) निर्दोष हो, तथा (विविक्त) स्त्री, पशु, पंडक से रहित
हो और (पसत्ये) प्रशस्त-साधुजनों के निवास योग्य हो (उवस्सए)
ऐसे उपाश्रय में (होइविहरियव्व) साधुओं को रहना चाहिये । (अहा

यानशालाभा-रथादि गृहभा, कुप्यशालाभा-गृहोपकरण राश्वानी जग्याभा,
मण्डपभा-विश्राम स्थानभा, शून्यगृहभा-खुला घरभा, इमशानभा (मरघरभा),
लयनभा-पर्वतनी तलेटीभा स्थेल पाषाणधरभा, आपणभा-हाटभा, "अन्नमि
य एवमाइयमि" तथा ओज प्रकारना अन्य स्थानोभा के ओ "दगमद्विय-वीय
-हरिय-तसपाणअससत्ते" जण, भाटी, जीज इर्वा, द्वि-द्वीयादिक त्रस ओ
पधाथी रहित होय, तथा "आहाकड" ओ गृहस्थे पोताने भाटे जनाव
राज्य होय, अने ओ "फासुए" निर्दोष होय, तथा "विविक्त" स्त्री, पशु,
पंडकथी रहित होय, अने "पसत्ये" प्रशस्त-साधुजनोना निवासने भाटे
योग्य होय "उवस्सए" ओवा उपाश्रयभा "होइ विहरियव्व" साधुओओ
रहेवु ओधओ "अहाकम्मगुळे य जेसे" अने ओ उपाश्रय आधाकर्म बहुल होय

અથ કથમ્ભૂતે ઉપાશ્રયે સાધુભિર્ન વસ્તવ્યમ્ ? इत्याह—‘आहाकम्मवहुले’ आधा कर्मवहुलः=आधोनम्-आधातया, अर्थात् साधये यत्पदमायोपमर्दनरूप कर्म तेन बहुलो व्याप्तो ‘जे’ यः अत्र त्रिषु उपाश्रयो ‘से’ स र्जयितव्य । अनेन अदत्तादानविरमणलक्षणमूलगुणाशुद्धेः परिहारः उक्तः । स दोषप्रत्युपभोगेन मूलगुणहानिर्भवतीति भावः । तथा ‘जत्य’ यत्र-‘अतो’ अन्तर्भागे ‘वहिं’ बहिर्भागे, ‘मज्झे य’ मध्ये च ‘आसियसम्मज्जि ओसित्त सोहियछाणदुमण लिपण अणुलिपण जलगभडचालण’ आसक्ति समार्जितोत्तिसक्तगोधितछाण-धवलनलेपनानुलेपनजलनभाण्डचालनम्-तत्र-आसिक्तम्=आसेचनम्=उदकादि-च्छोटनमित्यर्थः, सम्मार्जितम्=शालाया इस्तेन=मार्जन्येत्यर्थः, कचरसशोधनम्, गोधित=भित्त्यादि सल्मजालाद्यपनयनेन शुद्धीकृत ‘छाण’ छाण=छागन-गोमयेन, सस्करणम्, दुमण’ धवलन-सेटिकादिना भित्त्यादेरुज्ज्वलीकरणम्,

कम्मवहुले य जे से) और जो उपाश्रय आधाकर्म वहुल हो-साधु के निमित्त पट्कायमर्दनरूप कर्म से न्याप्त हो-उसमें साधु को नहीं बसना चाहिये । क्यों कि ऐसे उपाश्रय में रहने से साधु के इस अदत्तादान-विरमणरूपमूलगुण की शुद्धि नहीं रहती है । और नहीं रहने से इस मूलगुण की शुद्धि रहती है । तात्पर्य इसका यह है कि सदोपवसति के उपभोग से साधु के मूलगुणों की हानि होती है यही बात “अहाकम्म-वहुले य जे से” इस सूत्राश द्वारा प्रदर्शित की गई है । तथा (जस्य अतो वहिं मज्झे य) जो उपाश्रय भीतर में बाहर से और मध्यभाग में (आसियसम्मज्जि ओसित्तसोहिय-छाण-दुमणलिपण अणुलिपण-जलगभडचालण) पानी से छिड़का हुआ हो, बुहार समार्जनी से जहा का कूड़ा कचरा साफ कर दिया गया हो, भीत आदि पर लगे हुए-जाले-जहाँ उतार दिये गये हो, जो गाय के गोबर से लीपा गया हो, चुने आदि से

સાધુને નિમિત્તે છકાય મર્દનરૂપ કર્મથી વ્યાપ્ત હોય, તેમા સાધુએ રહેવું બેઠાએ નહીં કારણ કે એવા ઉપાશ્રયમા રહેવાથી સાધુના આ અદત્તાદાન વિરમણરૂપ મૂળ ગુણોને હાનિ થાય છે, એ જ વાત “અહાકમ્મ-વહુલે ય જેસે” આ સૂત્રાશ દ્વારા પ્રગટ કરેલ છે તથા “જત્ય અતો વહિં મજ્ઝે ય” જે ઉપાશ્રય અદર, બહાર અને મધ્ય ભાગમા “આસિયસમ્મજ્જિઓસિત્તસોહિયછાણ દુમણલિપણઅણુલિપણજલનમ્ ઢચાલણ” પાણી છાટેલ હોય, સાવરણીથી ન્યાનો કચરો સાફ કર્યો હોય, દીવાલ આદિ પર લાગેલા બાળા ન્યાથી ઉતારી લીધા હોય, જે ગાયના છાણથી લંપિલ હોય, ચુના વગેરેથી જેની દીવાલો

‘લિપ્ણ’ લેપનમ્=મૃત્તિકામિશ્રિતગોમયાદિના રત્નાદિપૂરણેન સકલ્લેપનમ્,
 ‘અણુલિપ્ણ’ અણુલેપનમ્=શોભા ૨ પુનઃ પુનર્લેપનમ્, જ્વલન=શીતાપનોદનાય વહે:
 પ્રજ્વલીકરણમ્, માળ્ડચાલનમ્=ગૃહસ્થિતમાળ્ડાનામપરત્ર સ્થાપનમ્, ઉપલક્ષણમેત-
 દન્યવસ્તૂનામપિ, એતેષા સમાહાત્તદ્વન્દઃ, એતદ્વપ્-‘અમજમો’ અસજમ=જીવ
 વિરાધનારૂપ સાધુનિમિત્ત ‘વટ્ટ’ વર્તે ‘સે તારિસે’ ન તાદૃશઃ ‘સુત્તપરિ-
 કુટ્ટે’ સૂત્રપરિકુટ્ટઃ-આગમનિષિદ્ધ, ‘હુ’ નિશ્ચયેન ‘ઉવસ્સણ’ ઉપાશ્રયઃ
 ‘સજયાણ સપનાનામ્’ અટ્ટા’ અર્થાત્ર ‘વજ્જેયવ્વો’ વર્જિતવ્યઃ । સયમિ
 મિરેતાદૃશે જીવવિરાધનાયુગ્તે ઉપાશ્રયે ન કદાપિ વસ્તવ્યગિતિ ભાવઃ । પ્રથમભા-
 વનાનુપસંહારાદ્-‘એવ’ એવમ્-ઉક્તરૂપેણ ‘વિવિત્તવાસવસહિસમિદ્ધજોગેણ’
 વિવિત્તવાસવસતિસમિતિયાગેન-વિચ્છા=સ્ત્રીપશુપટ્કરહિતા જનરહિતા વા યા

જિસકી ખીતે પોતકર ઉજ્જ્વલ કર દી गई हों, जिममें छेद वगैरह
 गोबरमिश्रित मिट्टी से प्रर दिये गये हों, तथा जो बार २ सुन्दर दिखाने
 के निमित्त गोमयादि मिश्रित मृत्तिका से लीपा गया हो, जहा शीत को
 दूर करने के लिये अग्नि जल रही हो और जहा से रखे हुए गृहस्थ-
 जनों के वर्तन उठा २ कर दूसरी जगह रखे जा रहे हो इस प्रकार का
 (असजमो वट्ट) जीवविराधना रूप अमयम जहा साधु के निमित्त
 हो रहा हो (से तारिसे) इस प्रकार का जो (सुत्तपरिकुट्टे) आगम से
 निषिद्ध है (उवस्सण) वह उपाश्रय (सजयाण अट्टा) साधुओं के लिये
 (वज्जेयव्वो) वर्जनीय है, अर्थात् इस प्रकार के उपाश्रय में साधु को
 नहीं बसना चाहिये । अब सूत्रकार प्रथम भावना का उपसंहार करते
 हुए कहते हैं—(एव) उक्तरूप से इस (विवित्तवासवसहिसमिद-
 जोगेण) विवित्तवासवसतिसमिति के योग से - स्त्री पशु पट्क से

ઉત્પળ બનાવવામા આવી હોય, જેમાના છિદ્રો આદિ છાણુમિશ્રિત માટીથી
 પૂરી દીધા હોય, તથા જે સુદર દેખાય તે માટે વારવાર છાણુ આદિ મિશ્રિત
 માટીથી લીપવામા આવેલ હોય, ન્યા શીત દૂર કરવાને માટે અગ્નિ બળતો
 હોય, અને ન્યાથી ગૃહસ્થાના વાસણુ ઉપાડી ઉપાડીને બીજી જગ્યાએ મૂકવામા
 આવતા હોય, આ પ્રકારનો “અસજમોવટ્ટ” એવ વિરાધનારૂપ અસયમ
 ન્યા સાધુને નિમિત્તે થઈ રહ્યો હોય, ‘સે તારિસે’ આ પ્રકારતુ જે “સુત્ત
 પરિકુટ્ટે” આગમદ્વારા નિષિદ્ધ છે, ‘ઉવસ્સણ’ તે ઉપાશ્રય “સજયાણ અટ્ટા”
 સાધુઓને માટે ‘વજ્જેયવ્વો’ વર્જનીય છે એટલે કે તે પ્રકારના ઉપાશ્રયમા
 સાધુએ રહેવું બોધ્યું નહીં હવે સૂત્રકાર પહેલી ભાનાનો ઉપસંહાર કરતા
 કહે છે—“એવ” ઉપર ઝહા પ્રમાણે આ “વિવિત્તવાસવસહિસમિદ્ધજોગેણ”

વાસવસતિ = નિવાસસ્થાન તદ્વિપયા યા સમિતિઃ = મમ્યર્ક પ્રવૃત્તિસ્તયા યો યોગઃ =
 સમ્બન્ધસ્તેન 'ભાવિઓ' ભાવિતઃ - રાસિતઃ 'અતરપ્પા' અન્તરામા = જીવઃ
 'નિચ્ચ' નિત્ય = સદા 'અદિગરણકરણકારાવગણપાવક્રમ્મવિરણ' અધિકરણકરણ
 કારણપાપકર્મવિરતઃ - અધિક્રિયતે = અધિકારી ક્રિયતે દુર્ગતાત્મા યેન તદવિકર-
 ણમ્ = આસિચ્ચનાદિરુપ સાવધાનુષ્ઠાનમ્, તસ્ય યત્સયકરણમન્યતો ના કારણમ્
 - ઉપલક્ષણાદનુમોદન ચ તદેવ પાપકર્મ = તસ્માદ્ વિરતો = નિવૃત્તો યઃ સઃ ત ગોક્તઃ,
 તથા - 'દત્તમણુણાય ઉગ્ગહરુઈ' દત્તાનુજ્ઞાતોદગ્ગહરચિઃ 'તત્ર - દત્તસ્ય = દાત્રા
 વિતીર્ણસ્ય ઇપ્પણીયસ્ય અનુજ્ઞાતસ્ય = તીર્થકરણધર્મદત્તાણસ્ય દેવકુળાદેઃ ઉદગ્રહે =
 ગ્રહણે રુચિઃ = પ્રીતિર્યસ્ય સ તયોક્ત અદત્તાનનુજ્ઞાતયમતેરપરિમોક્તેત્યર્થ,
 'મવહ' મવતિ ॥ મૂ. ૦૬ ॥

રહિત એસે एकान्त નિવાસ સ્થાન મેં વસને રૂપ સમિતિ કે સબધ સે
 (ભાવિઓ અતરપ્પા) મવિત જીવ (નિચ્ચ) સદા (અદિગરણકરણ
 કારાવગણપાવક્રમ્મવિરણ) આસિચ્ચનાદિ સાવધાનુષ્ઠાન કે કરને, કરાને
 ઓર ડસકી અનુમોદનારૂપ પાપકર્મ સે નિવૃત્ત થના રહતા હૈં । તથા
 (દત્તમણુણાય ઉગ્ગહરુઈ) દાતા સે વિતીર્ણ, ઇવ તીર્થકર ગણપર આદિ
 દેવોં દ્વારા વસને કે લિયે અનુજ્ઞાત રૂપ છેસે દેવકુલ આદિ સ્થાન કે
 ગ્રહણ મેં પ્રીતિવાલા હોને સે વહ દત્તાનુજ્ઞાત વસતિ કે ગ્રહણ કી રુચિ
 વાલા અર્થાત્ અદત્ત અનનુજ્ઞાત વસતિ કા અપરિમોક્તા હોતા હૈં ।

ભાવાર્થ—અદત્તાદાનવિરમણવ્રત કી રક્ષા ઓર સુસ્થિરતા કે નિમિત્ત
 સૂત્રકાર હસ સૂત્ર દ્વારા હસકી પાચ ભાવનાઓં મેં સે વિવિક્તવાસ-
 વસતિ નામ કી પ્રથમ ભાવના કા સ્વરૂપ પ્રકટ કરતે હુવ કહતે હૈં

વિવિક્તવાસવસતિ સમિતિના યોગથી સ્ત્રી, પશુ, પડકથી રહિત એવા એકાન્ત
 નિવાસ સ્થાનમા વસવાડુપ સમિતિના સબધથી “ભાવિઓ અતરપ્પા” ભાવિત
 ઇવ “નિચ્ચ” સદા “અદિગરણકરણકારાવગણપાવક્રમ્મવિરણ” આસિચ્ચનાદિ
 સાવધ અનુષ્ઠાન કરવાથી, ડસવવાથી અને તેની અનુમોદનારૂપ પાપકર્મથી નિવૃત્ત
 થઈ જાય છે તથા “દત્તમણુણાય ઉગ્ગહરુઈ” દાતાની વિતીર્ણ, અને તીર્થકર
 ગણધર આદિ દેવોંદ્વારા વસવાને માટે અનુજ્ઞા મળેલ એવા દેવકુલ આદિ
 સ્થાન ગ્રહણ કરવામા પ્રીતિયુક્ત હોવાથી તે દત્તાનુજ્ઞાત વસતિને ગ્રહણ કરવાની
 રુચિવાળો એટલે અદત્ત અનનુજ્ઞાત વસતિનો ઉપલોગ કરનાર અને છે

ભાવાર્થ—અદત્તાદાન વિરમણ વ્રતની રક્ષા અને સુસ્થિરતાને નિમિત્ત
 સૂત્રકાર આ સૂત્રદ્વારા તેની પાચ ભાવનાઓમાથી “વિવિક્તવાસવસતિ” નામની
 પહેલી ભાવનાનુ સ્વરૂપ પ્રગટ કરતા જતાવે છેડે સાધુઓએ દેવકુલ આદિ

કિ સાધુ કો દેવકુલ આદિ સ્થાનો મે જો કિ ઉસકે નિમત્ત કો લેકર નહીં ઝને હુળ હોતે હે ઠહરના ચાહિયે યા કિસી ઉપાશ્રય મેં। યહ ઉપાશ્રય સાધુ કે નિમિત્ત ઘના નહીં હોના ચાહિયે, ગૃહસ્થ ને હસે અપને નિમિત્ત ઘનાયા હો ંસા હોના ચાહિયે। સાધુ કે નિમિત્ત ઘનાને મેં સાધુ કો સાવગ્યાનુગ્રાન કરાને રૂપ અસયમ કા દોષ લગતા હૈ। સ્ત્રી પશુ પ૦ટક સે હસ સ્થાન કો વર્જિત હોના ચાહિયે। તથા 'સાધુ મહારાજ આ રહે હેં' હસ રવાલ સે સાધુ કા નિમિત્ત લેકર વહ પાની સે ઝિઢકા હુઆ નહીં હોના ચાહિયે, વહા કે જાલે વગરહ ઉતારે હુળ નહીં હોના ચાહિયે। ગોમર આદિ સે લીપ પોત કર ઉસે સાફ સુધરા કિયા ગયા નહીં હોના ચાહિયે। ઉસમેં કી શીત કો દૂર કરને કે લિયે વહા અગ્નિ વગરહ જલાકર ઝસે ગરમ કિયા હુઆ નહીં હોના ચાહિયે, હત્યાદિ જિસ રૂપ સે આગમ મેં સાધુ કે લિયે નિવાસ યોગ્ય વમતિ રહને કે લાયક કહી ગઈ હૈ વહ ઉસ રૂપ કા હોના ચાહિયે। તમ્હી જાકર યહ પ્રથમ ભાવના પલ સકની હૈ। ઔર હસ તરહ કી પ્રવૃત્તિ કરને વાલા સાધુ અપને અદત્તાદાનવિરમણવ્રત કી રક્ષા ઔર સુસ્થિરતા કર સકતા હૈ। સૂત્ર મેં જો અધિકરણ શબ્દ આયા હૈ ઉસકા વ્યુત્પત્તિ-કમ્બ્ય અર્થ "દુર્ગતિ મેં જાને યોગ્ય આત્મા જિસકે વલ પર ઝનતા હૈ"

સ્થાનો, ઢે જે તેમને નિમિત્તે ંનાવ્યા હોતા નથી, તેમા વસણુ જોઈએ અથવા તેા કોઈ ઉપાશ્રયમા વસણુ જોઈએ તે ઉપાશ્રય સાધુને નિમિત્તે ંનાવેલ હોવા જોઈએ નહીં, પણુ જૃહમ્બે પોતાને નિમિત્તે જે તે ંધાવેલા હોવા જોઈએ સાધુને નિમિત્તે ંનાવવામા સાધુને સાવધ અનુષ્ઠાન ડરાવવા રૂપ અસયમનેા દોષ લાગે છે સ્ત્રી, પશુ પૃહટથી તે સ્થાન રહિત હોણુ જોઈએ તથા "સાધુ મહારાજ પધારવાના છે" એવા ખ્યાલથી સાધુને નિમિત્તે તેના પૃ પાણી છટાવ્યુ હોણુ જોઈએ નહી, ત્યાના બળા વગેરે ઉતારેલ હોવા જોઈએ નહીં છાણુ આદિથી લીપીને તેને સ્વચ્છ અને સુધડ ંનાવ્યો હોવો જોઈએ નહી ત્યાની રીતને દૂર કરવા માટે ત્યા અગ્નિ વગેરે સળગાવીને તેને ગરમ કરેલ હોવો જોઈએ નહી, ઇત્યાદિ પ્રકારે જે રીતે આગમમા સાધુને માટે યોગ્ય નિવાસ ંતવવામા આવેલ છે તે પ્રકારણુ તે નિવાસસ્થાન હોણુ જોઈએ ત્યારે આ પહેલી ભાવના સફળ થાય છે અને તે પ્રકારની આ પ્રવૃત્તિ કરનાર સાધુ પોતાના અદત્તાદાન વિરમણુનતની રક્ષા અને સુસ્થિરતા રાખી શકે છે સૂત્રમા જે અધિકરણુ શબ્દ આવ્યો છે તેનો વ્યુત્પત્તિ પ્રમાણુ મળતો અર્થ "જેના પાતાવશી આવ્યા હર્ગનિયા બળાવે ંના માટે તે" તે અર્થે થાય છે આ

દ્વિતીયાં ભાવનામાહ—‘ વીય ’ ઇત્યાદિ .

મૂલમ્—વીયં આરામુજ્જાણકાણવણપ્પદેસભાગે જં કિંચિ
 ઇક્કહ વા કઢિણગ વા જતુગ વા પરમેરકુચ્ચકુસડઢમ્પલ્લ-
 ભૂયગવહ્લયપુપ્ફફલતયપ્પવાલકંદમૂલતણકટ્ટસકરાઈ ગેપ્પહઈ
 સેજ્જોવહિસ્સ અટ્ટા, ન કપ્પઈ ઉગ્ગહે અદિણ્ણમ્મિ ગેપ્પિહં,
 જે હણિ હણિ ઉગ્ગહં અણુણવિય ગેપ્પિહયવ્વં । એવં ઉગ્ગહસ-
 મિહજોગેણ ભાવિઓ ભવઈ અતરપ્પા ણિચ્ચ અહિકરણકરણ-
 કારાવણપાવકમ્મવિરેદ દત્તમણુણાય ઉગ્ગહર્મઠ્ઠં ॥ સૂ. ૭ ॥

ટીકા—વીય દ્વિતીયામ્ અનુજ્ઞાતસસ્તારકગ્રહણરૂપા ભાવનામાહ તત્ર—‘ આરા-
 મુજ્જાણકાણવણપ્પદેસભાગે ’ આરામોગ્ધાનકાનનપ્રવેશભાગે—તત્ર—આરામઃ =

હસ પ્રકાર છે । આસિચ્ચનાદિકર્મ એસે હી છે, ત્યો કી યે સાવધાનુષ્ઠાન
 હૈં । કરના, કરાના ઓર અનુમોદના કરના इनका व्रतादि के विचार में
 સમાનકોટિ કા સ્થાન કહા ગયા છે, અતઃ સાધુ કે લિયે આસિચ્ચ-
 નાદિ કર્મ યદિ સાધુ કે નિમિત્ત કો લેકર કિયે જા રહે હે તો વહ બી
 સાવધાનુષ્ઠાનરૂપ અસયમ કા ભાગી થનતા હૈં ! અતઃ સાધુ કો એસે
 સાવધાનુષ્ઠાનરૂપ અસયમભાવસે દૂર રહનેકા પ્રભુકા આદેશ હૈં ॥ સૂ. ૬ ॥

અથ સૂત્રકાર દ્વિતીયભાવના કો પ્રકટ કરતે હૈં—‘ વીય આરામુ-
 જ્ઞાણં ’ ઇત્યાદિ ૦ ।

ટીકાર્થ—(વીય) હસ વ્રત કી દૂસરી ભાવના અનુજ્ઞાતસસ્તારક-
 ગ્રહણ રૂપ હૈં । વહ હસ પ્રકાર હૈં—(આરામુજ્જાણકાણવણપ્પદેસભાગે)

સિચ્ચનાદિ કર્મ એવા જ છે ઠારણ કે તે સાવધ અનુષ્ઠાન છે કરવુ, કરાવણ
 અને અનુમોદના આપવી એ ત્રણેનુ વ્રતાદિકના વિચારમા સમાન કોટિનુ સ્થાન
 આપ્યુ છે, આસિચ્ચનાદિ કર્મ એ સાધુને નિમિત્તે કરવામા આવતા હોય તો
 તે સાધુને માટે પણ સાવધાનુષ્ઠાનરૂપ અસયમના લાગીદાર અને છે તેથી
 પ્રભુનો એવો આદેશ છે કે સાધુઓએ તેવા સાવધાનુષ્ઠાનરૂપ અસયમ લાવથી
 દૂર રહેવુ જોઈએ ॥ સૂ. ૬ ॥

હવે સૂત્રકાર બીજી ભાવનાને પ્રગટ કરે છે—‘ વીય આરામુજ્જાણ ’ ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ વીય ” આ વ્રતની બીજી ભાવના “અનુજ્ઞાત સસ્તારક ગ્રહણ
 રૂપ છે, તે આ પ્રમાણે છે—‘ આરામુજ્જાણકાણવણપ્પદેસભાગે ’ આરામ-

माधवीलतादिपरिमण्डितवनविशेषः, उद्यानम्=उपवनम्, कानन=सामान्यवृक्षोपेत
वनम्, वनम्=नगरदूरवर्तिनम्, एतेषां यः प्रदेशः=स्थानं तस्य यो भागः=एक
देशस्तत्र स्थित 'इक्क' 'ढाट्टण' इति भाषा प्रसिद्धतृणविशेषवा=अथवा 'क-
ठिणग' कठिनम्='रोड्स' इति भाषा प्रसिद्धतृणविशेषः वा, यद्वा-'जतुग'
जंतुक=जलाशयोत्पन्नतृणविशेषम्, वा=अथवा 'परमेरकुचकुसडम्भपलालमूयग
वल्लयपुष्पफलतयप्पवालकदमूलतणकट्टसक्कराड्' परमेरकुचकुशदर्भपलालमूयकव-
ल्वजपुष्पफलत्वक्प्रवालरुन्दमूलतणकाष्ठशर्करादि, तत्र-पराः=तृणविशेषः, मेराः=
मुञ्जसरिका, कूर्चानि यैस्तृणविशेषैः भित्तौ सेटिकावलेपनार्थं कूर्चा (कूची)
निर्मयन्ते ते तृणविशेषाः कुशाः=इस्वाकारास्तृणविशेषाः, दर्भाः=दीर्घाकाराः
कुशाएव दर्भा उच्यन्ते, पलालः='पुआल' इति भाषाप्रसिद्धः, मूयकः='मोति-
गा' इति भाषा प्रसिद्धस्तृणविशेषः, वल्वजः=दर्भजातीयतृणविशेषः, पुष्पफल
त्वक्प्रवालरुन्दमूलतृणकाष्ठशर्कराः प्रतीताः, एता आदौ यस्य तत्तथोक्त 'ज

आराम-माधवीलता आदि से परिमण्डित वनविशेष में, उद्यान-उपवन
में, कानन-सामान्य वृक्षों से युक्त वन में, वन-नगर से दूरवर्ती
जंगल में, अर्थात् इन स्थानों के प्रदेशों के एकदेश में, स्थित (ज किंचि)
जो कुछ (इक्क वा) ढाट्टण-तृणविशेष, अथवा (कठिणग वा) कठि-
न-रोड्स नामक तृणविशेष, अथवा (जतुग वा) जंतुक-जलाशय में-
उत्पन्न हुए जंतुक नाम के तृणविशेष, (पर-मेर-कुच-कुस-डम्भ-
पलाल-मूयग-वल्लय-पुष्प-फल-तय-प्पवाल-कद-मूल-तण-कट्ट-
सक्कराड्) पर नाम के तृणविशेष, कुश नामक तृणविशेष, दर्भनामक
तृणविशेष, पलाल नामक तृणविशेष, मोर्तिग नामक तृणविशेष,
वल्वज-दर्भ-जाति का तृणविशेष, पुष्प, फल, त्वक्-छाल, प्रवाल-

माधवीलता आदिथी आच्छादित वनमा, उद्यान-भागमा, कानन-सामान्य वृक्षोथी
युक्त वनमा, वन-नगरथी दूर आवेला जंगलमा, ओटले के ते स्थानाना
प्रदेशोभाना ओड देशमा, स्थित "ज किंचि" जे कोछ "इक्क वा" ढाट्टण-
ओक प्रकारनु धास, अथवा "कठिणग वा" कठिनक-रोड्स नामनु ओक प्रकारनु
धाम अथवा "जतुग वा" जंतुक-जलाशयमा चेदा थयेल जंतुक नामनु धास
"पर, मेर, कुच, कुस, डम्भ, पलाल, मूयग, वल्लय, पुष्प, फल, तय,
प्पवाल, कद, मूल, तण, कट्ट सक्कराड्" पर नामनु धास, मेर-मुञ्ज नामनु
धास, कुश नामनु धास, दर्भ नामनु धास पलाल नामनु धास, मोर्तिग नामनु
धास, वल्वज-दर्भ-जातिनु धास, पुष्प, फल, त्वक्-छाल, प्रवाल-कुपण,

કિંચિ 'યત્કિંચિત્' 'સેજ્જોવહિસ્સ' શય્યોપધેઃ=શય્યોપકરણસ્ય 'અદ્વા' અર્થા
ય=હેતવે 'ગેણ્હ' ગૃહ્ણતિ, તત્ 'ઉગ્ગહે' અગ્રહે=આશ્વાયામ્ 'અદિણ્ણે' અ
દત્તે=અદત્તાયામ્, અર્થાત્ તત્તદ્વસ્તુ સ્વામિન આશ્વાયામપ્રાપ્તયા સત્યા 'ગેણ્હિત્ત'
ગ્રહીતુ સાધૂના 'ન કપ્પહ' ન કલ્પતે, 'જે' યત્=યસ્માત્ કારણાત્ 'હણિહમિ'
અહન્યહનિ પ્રતિદિનમ્ 'ઉગ્ગહે' અગ્રહમ્ 'અણુણવિય' અણુણવિય=પાપ્ય તત્તદ્વ-
સ્તુ સાધુભિઃ 'ગેણ્હિયવ્ય' ગ્રહીતવ્ય મયતિ । ઉપસહેરન્નાહ-પયમ્=અનેન પ્રકારેણ
'ઉગ્ગહસમિદ્ધજોગેણ' અવગ્રહસમિતિયોગેન-અગ્રહઃ=શય્યોપધેર્થ તૃણાદ્યાદા
નસ્ય તત્તત્સ્વામિન આજ્ઞા તત્ર યા સમિતિઃ=સમ્યક્પ્રવૃત્તિસ્તયા યો યોગ=સવ-
ન્ધસ્તેન ભાવિતો=પાસિતઃ 'અતરપ્પા' અન્તરાત્મા=જીરો નિત્યમ્, 'અઠ્ઠિર

કોપલ, કન્દ, મૂલ, તૃણ-સામાન્ય તૃણવિશેષ, કાષ્ઠ-લકડી, શર્કરા-
કકડ, इनमें से जिस किसी पदार्थ को जो (सेज्जोवहिस्स अद्वાण
गेण्ह) शय्योपकरण के निमित्त लेता है, परन्तु (उगगहे अदिण्णम्मि
गेण्हिउ न कप्पह) इन २ वस्तुओं के स्वामी यदि उन २ वस्तुओंको लेने
की आज्ञा नहीं देते हैं तो साधुको इन वस्तुओंका लेना नहीं कल्पता है
(जे) इसलिये जो (हणि हणि उगगह अणुण वि य गेण्हियव्व) प्रतिदिन उन
२ वस्तुओं को लेनेके लिये उन २ वस्तुओंके स्वामी की आज्ञा साधु को
लेनी चाहिये, और आज्ञा प्राप्त हो जाने पर ही उन २ वस्तुओं को लेना
चाहिये । (एव उगगहसमिद्वजोगेण भाविओ अतरपपा निच्च अहिकरण,
करण कारावणपावकम्मविरण दत्तमणुण्णाय उगगहरुई भवइ) इस प्रकार
से अवग्रहसमितिके योग से-शय्योपधिके निमित्त तत्तद्वस्तुओं के स्वामी
की आज्ञा प्राप्तकर तृणादि को के लेने में सम्यक् प्रवृत्ति के साथ सब

કદ, મૂળ, તૃણ-સામાન્ય ધાસ, કાષ્ઠ-લાકડા, શર્કરા-કકડ, તે બધામાથી કોઈ
પણ પદાર્થને જે "સેજ્જોવહિસ્સ અદ્વાણ ગેણ્હ" શય્યા બનાવવાના સાધન
તરીકે લે છે, પણ "ઉગ્ગહે અદિણ્ણમ્મિ ગેણ્હિત્ત ન કપ્પહ" તે તે વસ્તુઓના
માલિકે જે તે તે વસ્તુઓ લેવાની રજા ન આપે તો સાધુઓને તે વસ્તુઓ
લેવી કલ્પતી નથી "જે" તેથી જે "હણિ હણિ ઉગ્ગહ અણુણવિય ગેણ્હિયવ્વ" પ્રતિ
દિન તે તે વસ્તુઓ લેવાને માટે તે તે વસ્તુઓના માલિકની મજૂરી સાધુએ
લેવી જોઈએ, અને મજૂરી મળ્યા પછી જ તે તે વસ્તુઓ લેવી જોઈએ "એવ
ઉગ્ગહ સમિદ્ધજોગેણ ભાવિઓ અતરપ્પા નિચ્ચ અહિકરણ, કરણકારાવરણપાવકમ્મ
વિરણ દત્તમણુણાય ઉગ્ગહરુઈ મવઈ" આ પ્રમાણે અવગ્રહ સમિતિના યોગથી-
શય્યોપધિને નિમિત્તે તે તે વસ્તુઓના માલિકની આજ્ઞા મેળવીને તૃણાદિકોને

ગણકારણકારણપાવકર્મપરિણ 'અધિકરણકરણકારણપાવકર્મપરિણ' = તત્ર અધિકરણમ્ = અનુજ્ઞાતેકઢાદીનામાદાનરૂપ સાધકર્મ તસ્ય યત્સ્ય કરણમ્ અન્યતથ્ કારણમ્ ઉપલક્ષ્યાદનુમોદન ચ, એતદ્ધૂપ યત્પાપકર્મતસ્પ્રાદ્ પરિણ = નિટ્તો યઃ સ તથોક્તઃ, તથા—'દત્તમણુગાયત્ગ્રહરુઢ્' દત્તાનુજ્ઞાતાવગ્રહરુચિઃ = દત્તસ્ય = વસ્તુ સ્વામિના વિતીર્ણસ્ય, અનુજ્ઞાતસ્ય = ગ્રહણાયં કથિતસ્ય તીર્થકરણધરૈરાજ્ઞસ્ય વા તૃણાદિવસ્તુનઃ ઉદગ્રહઃ = ગ્રહણ, તસ્મિન્ રુચિઃ અભિપ્રાયો, યસ્ય સ તથોક્તઃ, 'મનહ' મવતિ ॥ સૂ૦ ૭ ॥

સે, ભાવિત દુઆ જીવ સદા સાવધાનુષ્ઠાન કે કરને, કરાને ઔર ઉસકી અનુમોદનાજન્ય પાપકર્મ સે નિવૃત્ત બના રહ્તા હૈ । તથા દાતા સે વિતીર્ણ એવ તીર્થકર ગણધર આદિ દેવોં દ્વારા ગ્રહણ કરને કે લિયે કથિત હ્કઢ આદિ વસ્તુ કે ગ્રહણ કરને કે અભિપ્રાય ચાલા હોતા હૈ । ઇમ તરહ ઉસકી અનુજ્ઞાત સસ્તારક ગ્રહણરૂપ દ્વિતીય ભાવના લઘ જાતી હૈ ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને હસસૂત્ર દ્વારા હસ વ્રત કી અનુજ્ઞાત સસ્તારક ગ્રહણ નામક દૂસરી ભાવના કા ઉલ્લેખ કિયા હૈ । હસમેં યહ સ્પષ્ટ કિયા ગયા હૈ કિ સાધુ કા કર્તવ્ય હૈ કિ વહ શય્યોપકરણ કે નિમિત્ત આરામ આદિ સ્થાનોં કે કિસી મી ભાગ સે જો હ્કઢ આદિ વસ્તુ લેવે વહ ઉનકે સ્વામિયોં કી આજ્ઞા પ્રાપ્ત કર હી લેવે । અન્યથા ઉસે અદત્તાદાન ગ્રહણ કરને કા દોષ લગેગા જો હસ મૂલગુણ કી અશુદ્ધિ કા કારણ બનેગા । અતઃ જો શય્યા સસ્તારક કે નિમિત્ત હ્કઢ આદિ તૃણવિશેષો

લેવાની સમ્યક્ પ્રવૃત્તિના યોગથી, ભાવિત થયેલ એવ સદા ભાવધાનુષ્ઠાન કરાવવાના અને તેની અનુમોદના કરવાના પાપકર્મથી નિવૃત્ત રહ્યા કરે છે તથા દાતા વડે વિતીર્ણ અને તીર્થકર ગણધર આદિ દેવો દ્વારા ગ્રહણ કરવાને યોગ્ય કહેલ હ્કઢ આદિ વસ્તુ ગ્રહણ કરવાના અભિપ્રાયવાળા થાય છે, આ રીતે તેની અનુજ્ઞાત સસ્તારક ગ્રહણરૂપ, ખીલ ભાવના સાધ્ય બને છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા આ વ્રતની 'અનુજ્ઞાત સસ્તારક ગ્રહણ' નામની ખીલ ભાવનાનું સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તેમા એ સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યું છે કે સાધુને તે કર્તવ્ય છે કે તે શય્યાના સાધન નિમિત્તે આરામ આદિ સ્થાનોના ડોઢ પણ ભાગમાથી હ્કઢ આદિ જે વસ્તુઓ લે તે તેના માલિકની રજા મેળવીને જ લે નહીં તેા તેમને અદત્તાદાન ગ્રહણ કરવાનો દોષ લાગે છે, જે આ મૂલગુણની અશુદ્ધિનું કારણ બનશે તેથી શય્યા સસ્તારકને નિમિત્તે હ્કઢ આદિ પ્રકારના તૃણ વિશેષને પ્રાપ્ત કરવાને માટે જે સાધુઓ તેના માલિકની

અથ તૃતીયા ભાવનામાહ—‘તદ્ય’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—તદ્ય પીઠફલગસેજ્જાસથારગદ્વ્યાપ રુમ્પા ન છિદિ-
યન્વા, ન ય હેયણ ભેયણેણ ય સેજ્જા કારિયન્વા જસેવ ઉવ-
સ્સપ વસેજ્જા, સેજ્જ તત્થેવ ગવેસેજ્જા, ન ય વિસમ સમ
કરેજ્જા, ન ય નિવાયપવાયઉસ્સુગત્ત, ન હસમસગેસુ સુખિયન્વં,
અગ્ગીધૂમો ય ન કાયન્વો । एवं सज्जमबहुले सवरबहुले संबुड-
बहुले समाहिवहुले धीरे काएण फासयते सययं अज्झाणजुत्ते
समिए एगे चरेज्ज धम्म, एव समिइजोगेण भाविओ भवइ
अंतरप्पा निच्च अहिकरणकरणकारावणपावकम्मविरए दत्त-
मणुन्नाय उग्गहरुई ॥ सू० ८ ॥

ટીકા—‘તદ્ય’ તૃતીયા શર્યાપરિકર્મવર્જનરૂપા ભાવનામાહ—તત્ર—‘પીઠફલગ
સેજ્જાસથારગદ્વ્યાપ’ પીઠફલગશર્યાસસ્તારકાર્યતાયૈ—તત્ર—પીઠ=‘વાજોટ’

को प्राप्त करने के लिये उनके स्वामीयो की आज्ञा प्राप्तकर उन २ वस्तु
ओं को लेता है वह इस द्वितीय भावना का पालक होता है । इस
तरह के विचार से जो साधु अपनी प्रवृत्ति करता है वह अधिकरण
करण कारण पापकर्म से निवृत्त बनकर इस व्रत को उस भावना द्वारा
स्थिर करने वाला हो जाता है ॥ सू० ७ ॥

અથ સૂત્રકાર इस व्रत की तृतीय भावना को कहते हैं—‘तद्व्य
पीठफलग०’ इत्यादि० ।

टीकार्थ—(तद्व्य) इस व्रत की तीसरी भावना शर्यापरिकर्म-
वर्जनरूप है । वह इस प्रकार से है—(पीठफलगसेज्ज सथारगद्व्याप)

આજ્ઞા લઇને તે વસ્તુઓ ગ્રહણ કરે છે તેઓ આ બીજી ભાવનાના પાલક
હોય છે આ પ્રકારના વિચારથી જે સાધુ પોતાની પ્રવૃત્તિ કરે છે તે અધિકરણ
કરણકારણ પાપકર્મથી નિવૃત્ત થઇને આ વ્રતને આ ભાવના દ્વારા સ્થિર
કરનાર બની જાય છે ॥ સૂ० ૭ ॥

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની ત્રીજી ભાવના બતાવે છે—“તદ્વ્ય પીઠફલગ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ તદ્વ્ય ” આ વ્રતની ત્રીજી ભાવના “ શર્યાપરિકર્મવર્જન ”
નામની છે તે આ પ્રમાણે છે—“ પીઠફલગસેજ્જાસથારગદ્વ્યાપ ” પીઠ—માજોટ,

इति भाषा प्रसिद्ध, फलरु= 'पाट' इति भाषा प्रसिद्ध, शय्या=शरीरप्रमाण, सस्तारकाः=सार्द्धहस्तद्वयप्रमाण आमनविशेषः, तदर्थ 'रक्खा' वृक्षाः 'छिदियव्या' चेत्तत्र । 'न य' न च 'छेयणभेयणेण' छेदनभेदनेन=छेदन=वदभू म्याश्रितवृक्षाणा कर्तनम्, भेदन=पाषाणादीना द्विधाकरणम्, अनयो समाहारः तेन तयोस्तेन च 'सेज्जा' शय्या 'न कारियव्या' न कारयितव्या परः । तथा 'जस्सेव' यस्यैव गृहपतेः 'उवस्सए' उपाश्रये=यसतो 'वसेज्जा' वसेत्, 'तत्थेव' तथैव 'सेज्ज' शय्यां—शयनीय 'गवेसेज्जा' गवेपयेत्=कुर्यादित्यर्थः । च=पुनः 'नय वि विसम सम करेज्जा' विषमा भूमिं समां कुर्यात् । 'न य' न च 'निवाय पवाय उस्सुगत्त' निवातप्रवातोत्सुक्यम्-निवात=निर्वा-तस्थानम्, प्रवात=प्रवृत्तवायुस्थानम्, ता-उत्सुक्यम्=उत्सुकता 'न करेज्जा'

पीठ-प्राजोट, फलरु-पाट, शय्या-शरीरप्रमाण, सस्तारक-ढाई हाथ-प्रमाण आमनविशेष, आधु तत्रधी इन वस्तुओं को बनवाने के निमित्त (रुक्खा न छिदियव्या) वृक्षों को नहीं काटना चाहिये। और (न य छेयण-भेयणेण सेज्जा कारियव्या) न उनके छेदन, भेदन से शय्या करवानी चाहिये। वृक्षों का कटवाना इसका नाम छेदन है और उनका फटवाना इसका ना भेदन है। तथा (जस्सेव उवस्सए वसेज्जा सेज्ज-तथेव गवेसेज्जा) जिस गृहपति के (उवस्सए) उपाश्रय में-वसति-स्थान में साधु (वसेज्जा) वसे-रहे, (तत्थेव) वही पर अर्थात्-उसी मकान मालिक से अवया उसी वस्ती से (सेज्ज गवेसेज्जा) शय्या की गवेपणा करे न य विसम सम करेज्जा) वहा की भूमि को यदि वह विषम-ऊँची नीची होवे तो उसे सम-एकसी न करे, और (न य निवाय पवाय उस्सुगत्त) न वह निर्वात स्थान की तथा प्रवात स्थान की

इहाक-पाट, शय्या-शरीरप्रमाण, सस्तारक-आधी हाथना भाषणु ओक आमन, आदि साधुने उपयोगी थीने बनाववाने भटे "रक्खा न छिदियव्या" वृक्षोने कापवा लेछथे नही, अने "न य छेयण भेयणेण सेज्जा कारियव्या" तेभने छेदावी लेदावीने शय्या कराववी नेछथे नही वृक्षोने कपाववा ओटले तेभनु छेदन अने तेभने वेशववा तेनु नाम लेदन छे, तथा "जस्सेव उवस्सए वसेज्जा सेज्ज तत्थेव गवेसेज्जा" ने गृहपतिना "उवस्सए" उपाश्रयभा वसतिस्थानमा साधु 'वसेज्जा' वसे रहे, "तथेव" त्या न ओटले के ते न भकानमाविठ पासेथी अथवा ते न वस्तीमाथी "सेज्ज गवेसेज्जा" शय्यानी गवेपणु करे 'न य विसम सम करेज्जा' ने त्यानी नमीन विषम-छी थी नीची होय तो तेने ओउसरणी न करे अने "न य निवाय पवाय उस्सुगत्त"

न कुर्यात् । अयं भावः—शीतर्तौ निर्वातस्थानस्य ग्रीष्मर्तौ मृदातस्थानस्य प्राञ्छौ न कुर्यात् । इति । 'न य' न च 'दशमसगेसु' दशमसगेसु मत्सु 'सुमियन्व' क्षोभितव्यम्, दशमशकादीनामुपद्रवे सत्यपि शीतो न कर्तव्य इति भावः । तथा—'अग्नीधूमो य' अग्निधूमश्च=दशमशकादीनां निवारणार्थमग्निधूमो या 'न कायव्वो' न कर्तव्यः । एवम्=उक्तस्त्वेण 'सजमबहुले' सजमबहुलः=सयमः=पट्टकायरक्षणलक्षण, स बहुल=प्रचुरो यस्य मतथोक्तः, तथा—'सवरबहुले' सवर बहुल=सवरः=प्राणातिपाताद्यास्रपद्वारनिरोधः, स बहुल=प्रचुरो यस्य मतथोक्तः, तथा—'संयुडबहुले' संयुटबहुल=संयुट=स्वायन्न्द्रियजन्यः, तद् बहुल प्रचुर यस्य मतथोक्तः, तथा—'समाधिबहुले' समाधिबहुलः=ममाग्निः=वित्तस्वास्थ्य, स बहुल प्रचुरो यस्य मतथोक्तः, एतादृशो 'धीरे' धीरः=अज्ञोभ्य' 'काण' कायेन 'कासयते' स्पृशन्=परीपहान् गहमानइत्यर्थः, तथा—'सयय'

उत्सुकता-भावना रखे अर्थात् शीतऋतु में निर्वातस्थान की ओर ग्रीष्म ऋतुमें हवादार स्थान की इच्छा न करे । तथा—(न दशमसगेसु-सुमियन्व) ठहरे हुए स्थान में दशमशक आदि का उपद्रव होवे तो उससे उसको क्षुभित नहीं होना चाहिये । और (अग्नीधूमो न कायव्वो) न उल्ल स्थान पर उन दशमशक आदि को भगाने के निमित्त अग्नि वा धूँओं करवाना चाहिये । (एव) इस प्रकार की प्रवृत्ति रखने से (सजमबहुले) घटकाय रक्षणरूप सयम की प्रचुर मात्रा से युक्त सयम बहुल, तथा (सवरबहुले) प्राणातिपात आदि आस्रव द्वार के निरोध रूप सवर की प्रचुर मात्रा से रहित होने के कारण सवर बहुल, तथा (संयुडबहुले) कपाय और इन्द्रियों के जीतने रूप सवृत की प्रचुर मात्रा से रहित होने के कारण सवृतबहुले, तथा

ते निर्वात स्थाननी के प्रजातस्थाननी उत्सुकता राखे नहीं, ओटले के शियाणामा पवन विनाश स्थाननी अने उताणामा डवा आवे तेरा स्थाननी तेछे ध्वंसा करवी नहीं तथा "न दशमसगेसु सुमियन्व" तेमने शैलवाना स्थानमा डस, भन्छर आदिनो उपद्रव डाय तो तेथी तेछे क्षोभ पाववो नहीं अने "अग्नीधूमो न कायव्वो" तेमछे ते डस, भन्छर आदिने नसाडवा माटे ते स्थानमा अग्नि के धुमाडो कराववो नोछे अने नहीं "एव" आ प्रजारनी प्रवृत्ति राखवाथी "सजम बहुले" छकाय रक्षणरूप सयमनी अत्यंत मात्राथी युक्त सयमबहुल तथा "सवरबहुले" प्राणातिपात आदि आस्रवद्वारना निरोधरूप सवरनी घड़ी मात्राथी युक्त डोवाने गरछे सवरबहुल, तथा "संयुडबहुले" कपाय अने इन्द्रियोने जीतना सवृतनी अति अधिक मात्राथी युक्त डोवाने

સતતમ્=નિરન્તરમ્, 'અજ્ઞપ્પજ્ઞાણજુત્તે' અધ્યાત્મધ્યાનયુક્તઃ=આત્માનમધિકૃત્ય
અધ્યાત્મમ્=આત્માલમ્બનરૂપ યદ્ધ્યાન તેન યુક્ત =સમન્વિતઃ, તથા-'સમિણ'
સમિતઃ=સમિતિભિર્યુક્ત 'એગે' એક. = એકાકી રાગદ્વેપરહિત, 'ધમ્મ' ધર્મ=
શ્રુતચારિત્રલક્ષણ 'ચરેજ્જ' ચરેત્=આચરેત્ । ઉપસહરન્નાદ-'એવમ્' પ્રકારેણ
'સિજ્જાસમિહજોગેણ' શય્યાસમિતિયોગેન ભાવિતોઽન્તરાત્માનિત્યમ્, 'અહિક
રણ કરણકરાણપાવકમ્મવિરણ' અધિકરણકરણકારણપાવકર્મવિરત -અધિકરણ=
શય્યાપરિકલ્પનાર્થ વૃક્ષાદીના છેદનભેદનરૂપ યત્સાવધ કર્મ, તસ્ય યત્સ્વય કર-
ણમ્, અન્યતથ કારણ ઉપલક્ષણત્યાદનુમોદન ચ તદ્દૂપ યત્પાપકર્મ તતો વિરતો=
નિવૃત્તો યઃ સ તથોક્ત, તથા-દત્તાનુજ્ઞાતાનગ્રહરુચિઃ=દત્તાનુજ્ઞાતૈવનીયપીઠફલ-
કાદેરૂપભોગકારી ભવતિ ॥ છ-૮ ॥

(સમાહિતહુલે) ચિત્તની સ્વસ્થતારૂપ સમાધિની પ્રચુર માત્રા સે સહિત હોને કે કારણ સમાધિ વહુલ, વનાહુઆ વહ સાધુ (કાસયતે-કાણ્ણધીરે) પરીપત્તો કો સહતે હુણ શરીર સે ધીર-અક્ષોમ્ય વના રહતા હૈ । તથા (સયય અજ્ઞપ્પજ્ઞાણજુત્તે) નિરન્તર આત્માવલમ્બન રૂપ ધ્યાન સે યુક્ત વના હુઆ વહ સાધુ (સમિણ) પાવ સમિતિ કે પાલન સે (એગે) અકેલા રાગદ્વેપ રહિત હોકર (ધમ્મ ચરેજ્જ) શ્રુત-ચારિત્રરૂપ ધર્મ કા આચરણ કરતા રહતા હૈ (એવ) હસ પ્રકાર સે (સેજ્જાસમિહજોગેણ) શય્યાસમિતિ કે યોગ સે (ભાવિઓ અતરપ્પા) ભાવિત હુઆ જીવ (નિચ્ચ) નિત્ય (અહિકરણકરણકારણપાવકમ્મ-વિરણ) શય્યાપરિકલ્પનાર્થ વૃક્ષાદિકોં કે છેદન ભેદન રૂપ સાવધ અનુ-ઘાન કે કરને દૂસરોં દ્વારા કરાને તથા અનુમોદના રૂપ પાપકર્મ સે નિવૃત્ત

કારણે સવૃત્તબહુલ, તથા “સમાહિતહુલે” ચિત્તની સ્વસ્થતારૂપ સમાધિથી અત્યંત પ્રમાણુમા યુક્ત હોવાને કારણે સમાધિબહુલ, બનેલ તે સાધુ “કાસયતે કાણ્ણધીરે” પરીપત્તોને મહન કરતા કરતા શરીરથી ધીર-ક્ષોભરહિત રહે છે તથા “સયય અજ્ઞપ્પજ્ઞાણજુત્તે” નિરન્તર આત્માવલમ્બનરૂપ ધ્યાનથી યુક્ત બનેલ તે સાધુ “સમિણ” પાવ સમિતિના પાલનથી “એગે” એકલો રાગદ્વેપ રહિત થઈને “ધમ્મ ચરેજ્જ” શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મનું આચરણ કર્યા કરે છે “એવ” આ રીતે “સેજ્જા સમિહ જોગેણ” શય્યાસમિતિના યોગથી “ભાવિઓ અતરપ્પા” ભાવિત થયેલ છ-૪ “નિચ્ચ” નિત્ય “અહિકરણકરણકારણપાવકમ્મવિરણ” શય્યા પરિકલ્પનાર્થ વૃક્ષાદિના છેદન ભેદનરૂપ સાવધ અનુઘાન કરતા, બીજા પાસે કરાવતા તથા અનુમોદનારૂપ પાપકર્મથી નિવૃત્ત થઈ બચે છે તથા “દત્તમ-

न कुर्यात् । अयं भावः—शीतर्त्तौ निर्वातस्थानस्य ग्रीष्मर्त्तौ मृदातस्थानस्य गच्छो
 न कुर्यात् । इति । ' न य ' न च ' दसमगेसु ' दशमगात्रेषु गच्छु ' शुभियञ्च '
 क्षोभितव्यम्, दशमशकादीनामुपद्रवे सत्यपि क्षोभो न कर्तव्य इति भावः । तथा-
 ' अग्नीधूमो य ' अग्निधूमश्च=दशमशकादीनां निवारणार्थमग्निधूमो वा ' न का
 यव्वो ' न कर्तव्यः । एवम्=उत्तररूपेण ' सजमबहुले ' सयमबहुलः=सयमः=पट्ट
 कायरक्षणलक्षण, स बहुलः=प्रचुरो यस्य स तथोक्तः, तथा-' सजमबहुले ' सज
 बहुलः=सजरः=प्राणातिपाताद्यास्रमद्वारनिरोधः, स बहुलः=प्रचुरो यस्य स त
 थोक्तः, तथा-' सजुडबहुले ' सजुडबहुलः=सजुड=रूपायेन्द्रियजयः, तद् बहुल
 प्रचुर यस्य स तथोक्तः, तथा-' समाहिबहुले ' समाहिबहुलः=समाहिः=चित्त
 स्वास्थ्य, स बहुलः प्रचुरो यस्य स तथोक्तः, एतादृशो ' धीरे ' धीरः=ज्ञोऽस्यः
 ' कायण ' कायेन ' फासयते ' स्पृशन्=परीपहान् तद्विमानइत्यर्थः, तथा-' सयय'

उत्सुकता-भावना रखे अर्थात् शीतऋतु में निर्वातस्थान की ओर
 ग्रीष्म ऋतुमें हवादार स्थान की इच्छा न करे । तथा-(न दसमसगेसु-
 खुभियञ्च) ठहरे हुए स्थान में दशमशक आदि का उपद्रव होवे तो
 उससे उसको क्षुभित नहीं होना चाहिये । और (अग्नीधूमो न
 कायव्वो) न उन् स्थान पर उन दशमशक आदि को भगाने के निमित्त
 अग्नि वा धूआँ करवाना चाहिये । (एव) इस प्रकार की प्रवृत्ति
 रखने से (सजमबहुले) घटकाय रक्षणरूप सयम की प्रचुर मात्रा से
 युक्त सयम बहुल, तथा (सजरबहुले) प्राणात्तिपात आदि आलव
 द्वार के निरोध रूप सजर की प्रचुर मात्रा से सहित होने के कारण
 सजर बहुल, तथा (सजुडबहुले) कपाय और इन्द्रियों के जीतने रूप
 सजुड की प्रचुर मात्रा से रहित होने के कारण सजुडबहुले, तथा

ते निर्वात स्थानानी के प्रजातस्थानानी उत्सुकता शोभे नही, अतः के शिवाणामा
 पवन विनाना स्थानानी अने उताणामा हुवा आवे तेना स्थानानी तेछे धर्खा
 करवी नही तथा "न दसमसगेसु खुभियञ्च" तेभने थोलेवाना स्थानमा आस,
 भन्धर आदिने उपद्रव होय तो तेथी तेछे क्षोभ पाववो नही अने "अग्नी
 धूमो न कायव्वो" तेभने ते आस, भन्धर आदिने नसाउवा भाटे ते स्थानमा
 अग्नि के धुमाडो कराववो जेठ अने नही "एव" आ प्रजातनी प्रवृत्ति
 राखवाथी "सजम बहुले" छकाय रक्षणरूप सयमनी अत्यत मात्राथी युक्त
 सयमबहुल तथा "सजरबहुले" प्राणातिपात आदि आलवद्वारना निरोधरूप
 सजरनी धर्षी मात्राथी युक्त होवाने कारणे सजरबहुल, तथा "सजुडबहुले"
 कपाय अने इन्द्रियोने जीतनार सवृतनी अनि अधिक मात्राथी युक्त होवाने

ચતુર્થી ભાવનામાહ—‘ ચૃત્ત્ય ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—ચૃત્ત્ય સાહારણપિંડવાયલાભે સહ મોત્તવ્વ, સંજણ સમિય, ન સાગસૂવાહિય, ન સ્વદ્ધ, ન વેગિય, ન તુરિયં, ન પ્વલ, ન સાહસ, ન ય પરસ્સ પીલાકરંસાવજ્જં । તહ મોત્તવ્વં જહ્સે તહ્ય વય ન સીયહ સાહારણપિંડવાયલાભે સુહુમં અદિપ્પનાદાણવિરમણવયનિયમણ, એવ સાહારણપિંડવાયલાભે સમિહજોગેણ ભાવિઓ ભવહ અતરપ્પા ણિચ્ચં અહિકરણકર-
ણકારાવણપાવકમ્મવિરેદ દત્તમણુન્નાય ઉગ્ગહરુહ્ ॥સૂ૦૧॥

ટીકા—‘ ચૃત્ત્ય ’ ચતુર્થીમ્ અનુજ્ઞાતભક્તાદિમોક્ષનલક્ષણા ભાવનામાહ—
તત્ર—‘ સાહારણપિંડવાયલાભે ’ સાધારણપિંડવાતલાભે સાધારણઃ=રૂપનીય ઉ-
સાધુ સયન વહુલ આદિ હોકર પરીપદ્ધત્ત ઓર ઉપસર્ગો સે અહોલ વનતા
હુઆ શ્રુત ચારિત્ર રૂપ ધર્મ કી આરાધના મેં સાવધાન વન જાતા હૈ ।
હસ તરહ શય્યાપરિકર્મવર્જન રૂપ શય્યાસમિતિ કે યોગ સે ભાવિત
આત્મા શય્યાપરિકલ્પનાર્થ વૃક્ષાદિકોં કે હેદન ભેદન આદિ રૂપ સાવધ
કર્મ કે કરને કરાને ઓર અનુમોદનાજન્ય પાપકર્મ સે વચ જાતા હૈ ।
ઓર હસ તૃતીયભાવના કા પાલક હો જાતા હૈ ॥ સૂ૦ ૮ ॥

અવ સૂત્રકાર ચૌથી ભાવના કો પ્રદર્શિત કરતે હૈ—‘ ચૃત્ત્ય સાહાર-
ણ૦ ’ ઇત્યાદિ ૦ ।

ટીકાર્થ—(ચૃત્ત્ય) ચૌથી ભાવના અનુજ્ઞાતભક્તાદિ મોક્ષરૂપ હૈ
જો હસ પ્રકાર હૈ—(સાહારણપિંડવાયલાભે સહ) ઉચ્ચ નીચ કુલ સે

નહી આ ગીતે તે સાધુ સયમણકુલ, મવરણકુલ આદિ ધર્મને પરીપદ્ધત્ત તથા
ઉપસર્ગો સામે અચળ બનીને શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મની આરાધનામા સાવધાન બની
જાય છે આ ગીતે શય્યાપરિકર્મવર્જનરૂપ શય્યાસમિતિના યોગથી ભાવિત
આત્મા શય્યા પરિકલ્પનાર્થ વૃક્ષાદિના હેદન ભેદન આદિરૂપ સાવધ કર્મ કરા
વવાથી અને અનુમોદનાજન્ય પાપકર્મથી બચી જાય છે અને આ ભાવનાનો
પાલક ધર્મ જાય છે ॥ સૂ૦ ૮ ॥

હવે સૂત્રકાર ચૌથી ભાવના બતાવે છે—“ ચૃત્ત્ય સાહારણ ” ઇત્યાદિ
“ ચૃત્ત્ય ” ચૌથી ભાવના અનુજ્ઞાત ભક્તાદિ ભોજનરૂપ છે તે આ પ્રમાણે
છે “ સાહારણપિંડવાયલાભે સહ ” ઉચ્ચ નીચ કુળમાંથી કહેવે તેવી ભિક્ષા તથા

હો જાતા હૈં । તથા (દત્તામણુણાય ડગઠઠ્ઠ મયઢ) દત્તાનુજ્ઞાતાવમ્રઢ રુચિવાલા-દત્તાનુજ્ઞાતૈષ્ણીય પીઢ ફલક આદિકા ડપમોગકારી હોતા હૈ ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને ઢસ સૂત્ર ઢ્વારા શય્યાપરિકર્મવર્જન નામક ત્રીસરી ભાવના કા સ્પષ્ટી કરણ ક્રિયા હૈ । ડન્ઢોં ને ઢસ મેં યઢ મમ-જ્ઞાયા હૈ કિ જો સાધુ ઢસ માયના કો માના હૈ-સેવન કરતા હૈ-ડસકા કર્તવ્ય હૈ કિ વહ અપને નિમિત્ત કાઢે ગયે ઘૃક્ષ સે ઘને ઢુણ પીઢ ફલક આદિ કે ડપમોગ કરને કા પરિત્યાગ કર ઢેવે । તથા જિસ ગૃહપતિ કે યહા વહ ઢઠરે વહી પર અર્યાત્ ડસી મકાન માલિક સે અથવા વસ્તી સે વહ અપની શય્યા કી ગવેષણા કરે । ડદિ વહા કી મૃમિ નીચી ડંચી હોવે તો વહ ડસે સમ ન કરે । ડદિ ગર્મી કે સમય મેં કિસી ગૃહપતિ કી વસતી મેં ઢઠરને કા અવસર પ્રાપ્ત હુઆ હો ઓર વહા હવા આને કા સાધન ન હો તો વહ સવાત સ્થાન કી ઑહના ન કરે તથા ડદિ શીતઠ્ઠતુ મેં કિસી ગૃહપતિ કે યહા યા કિસી ડપાશ્રય આદિ મેં ઢઠરને કા મોકા આ ગયા હોવે ઓર વહ સ્થાન સવાત હો તો ડસે નિર્વાત-સ્થાન કી કામના નહીં કરની ઑહિયે । ઢશમશક પીઢિત કરે ઓ-તો ઓ ડસે ક્ષુભિતચિત્ત નહીં હોના ઑહિયે-ઓર ન ડન્ઢેં મગાને કા ડસે કોઈ ડપાય હી વિઑારના યા કરના ઑહિયે । ઢસ તરહ સે વહ

પુણાયડગઠઠ્ઠ મયઢ ” દત્તાનુજ્ઞાતાવમ્રઢ રુચિવાળો-દત્તાનુજ્ઞાતૈષ્ણીય પીઢ, ફલક આદિકો ડપલોગઢર્તા ઘને છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રઢ્વારા શય્યાપરિકર્મવર્જન નામની ત્રીણ ભાવનાનુ સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તેમણે તેમા એ સમજાવ્યું છે કે જે સાધુ આ ભાવનાનુ સેવન કરે છે, તેનુ કર્તવ્ય એ છે કે તે પોતાને નિમિત્તો કપાયેલ ઘૃક્ષમાથી ખનાવેલ પીઢ, ફલક આદિકો ડપલોગ કરવાનો પરિત્યાગ કરે તથા જે ગૃહપતિને ત્યા તે ડતરે ત્યા જ ઓટલે કે એ જ મકાનમાલિક પાસેથી અથવા વસ્તીમાથી તે પોતાની શય્યાની ગવેષણા કરે જો ત્યાની જમીન ઊંચી નીચી હોય તો તેને મમતલ ન કરે જો ડનાણાની ઠતુમા કોઈ ગૃહપતિના આવાસમા થોલવાની જરૂર પડી હોય અને ત્યા હવા આવવાની વ્યવસ્થા ન હોય તો તે હવા આવે તેવા સ્થાનની ઇચ્છા ન કરે તથા જો શિયાળામા કોઈ ગૃહપતિને ત્યા અથવા કોઈ ડપાશ્રય આદિમા ડતરવાનો અવસર આવે અને તે સ્થાનમા પવન આવતો હોય તો તેણે પવન ન આવે એવા સ્થળની ઇચ્છા જોઈએ નહીં ડાસ, મચ્છર આદિ સતાવે તો પણ તેણે ચિત્તમા ક્ષોભ પામવો જોઈએ નહીં અને તેને નસાડવાનો તેણે વિચાર કે ડપાય કરવો જોઈએ

चालनरूपचापल्ययुक्त भोक्तव्यम् । न साहमम्-अप्रतिलेखित भोक्तव्यम्, तथा-
'न य' न च 'परस्स' परस्य एकेन्द्रियादेः 'पीडाकर' पीडाकर 'सावज्ज' 'सावध'-सचित्त भोक्तव्यम्, एवमुपश्रवणादुपस्रवणादिपरिभोगोऽपि ग्राह्यः । तर्हि-
कथं भोक्तव्यम् ? इत्याह । 'तह भोक्तव्व' तथा भोक्तव्य 'जह' यथा 'से'
तस्य=सयतस्य 'तइय' तृतीय 'वय' अत अदत्तादानविरमणरूप 'नसीयइ'
न सीदति=न नश्यति यथा-अदत्तादानविरमणरूप व्रत न विनश्येत्तथा भोक्तव्य-
मित्यर्थः, 'साहारणपिंडवायलाभे' साधारणपिंडपातलामे सति 'सुहुम' सूक्ष्म=
दुर्निरीक्षम्, -पूर्णरूपेणेत्यर्थ, 'अदिण्णादाणविरमणवयनियमण' अदत्तादानविर

शीघ्रता करके भोजन नहीं करना चाहिये । तथा (न चवल) हाथ,
गर्दन आदि अवयवों को चलाते हुए भोजन नहीं करना चाहिये ।
तथा (न साहस) अप्रतिलेखित भोजन नहीं करना चाहिये । और
(न य परस्स पीलाकर सावज्ज एकेन्द्रियादिक जीवो को पीडा कारक
सावध-सचित्त-भोजन न करना चाहिये । इसी तरहसे वस्त्र पात्रादिकके
परिभोग में भी यही बात समझ लेनी चाहिये । तो फिर कैसे भोजन
करना चाहिये ? इस बात को अब सूत्रकार प्रकट करते हैं, वे कहते हैं
कि (से) उस सयत को (तह भोक्तव्व) इस प्रकार से भोजन करना
चाहिये कि (जह) जिससे (तइय वय) अनत्तादानविरमणरूप तीसरा
व्रत (न सीयइ) नष्ट न होवे (साहारणपिंडवायलाभे) इस तरह पूर्वोक्त
साधारण कल्पनीय-पिंडपात-भिक्षा की प्राप्ति होने पर (सुहुम) सूक्ष्म
रूप से अर्थात्-पूर्णरूप से (अदिण्णादाणविरमणवयनियमण) इस

लोभ्ये तथा "नचवल" हाथ, डोके आदि अवयवोंने डोलावता डोलावता पशु
लोभन करवु लोभ्ये नहीं तथा "नसाहस" अप्रति लेखित लोभन न करवु
लोभ्ये नहीं अने "न य परस्स पीलाकर सावज्ज" ऐकेन्द्रिय आदि लोभने
पीडा करके सावध-सचित्त-लोभन न करवु लोभ्ये ऐ न रीते वस्त्र, पात्र
आदिना परिभोगमा पशु ऐ न वात ममलु लेवी तो पछी डेवु लोभन
करवु लोभ्ये ? ते वातने प्रगट करता सूत्रकार कहे छे के "से" ते सयते
"तह भोक्तव्व" आ प्रमाळु लोभन करवु लोभ्ये "जह" जेथी "तइय
वय" अदत्तादान विरमणु इप त्रीणु अत "न सीयइ" नष्ट न
थाय "साहारणपिंडवायलाभे" आ रीते पूर्वोक्त साधारण कल्पनीय
पिंडपात-भिक्षानी प्राप्ति थता "सुहुम" सूक्ष्मइये ऐटवे के पूणुइये "अदि-
ण्णादाणविरमणवयनियमण" अदत्तादान विरमणु अत पर नियत्रणु-अधिकांश

આવચકુલગ્રાહો ય પિષ્ઠપાતઃ મિક્ષા, ઉપલક્ષણાદુ રસપાત્રાદન્યાપથિરપિગૃહ્ણતે,
તસ્ય લાભઃ = દાયકાત્પ્રાપ્તિસ્તસ્મિન્ ' સદ્ ' સતિ ' સજ્જણ ' સયતેન=
સાધુના ' મોત્તવ્ય મોક્તવ્યમ્ = પરિમોક્તવ્ય । ' મોક્તવ્યમ્ ' इत्यग्रेऽपि सर्वत्र
યોજ્યમ્, કથ મોક્તવ્યમ્ ? इत्याह-' समिध ' सम्यक् = अदत्तादान यथा न
भवति तथेत्यर्थः । सम्यक्प्रमेवाह-' न सागसूत्रद्विय ' न शाकसूपाधिकम्=मोक्त
व्यम् । शाकसूपाधिके भोजने कृते सति प्रमाणादधिकाहारो भवति, तेनादत्तादा
नदोषापत्तिर्भवति, तथा ' खद्ग ' प्रचुर મોક્તવ્યમ્ । ' ન વેગિય ' ન વેગિત=
વેગયુક્ત વેગેન ગ્રાસ મુસે પ્રક્ષિપ્ય મોક્તવ્યમ્, ' ન તુરિય ' ત્વરિત=ત્વરાયુક્ત ગ્રાસસ્ય
ગિલને શીઘ્રતા કૃત્વા મોક્તવ્યમ્ । તથા-ન ' ચપલ ' ચપલ=હસ્તગ્રીમાદિકાય,

કલ્પનીય મિક્ષા તથા વ્રતપાત્ર આદિ ઉપધિ કા લાભ હોને પર (સજ-
જ્ઞ મોત્તવ્ય) મુનિ કો ડસે અપને લાને આદિ કે ઉપયોગ મેં લેના
ચાહિયે । સાધુ કો આહાર કિસ પ્રકાર સે કેસા લેના ચાહિયે સૂત્રકાર
અત્ર ઇસ ઘાત કો કહતે હૈં-(સમિધ) અદત્તાદાન કા દોષ ન લગે
ઇસ પ્રકાર સે ઘતના રખતે હુએ ન સાગ સૂવાહિય) શાક ઓર દાલ
કો અધિકતા કે સાથ મોજન નહીં કરના ચાહિયે-અર્થાત્-શાક ઓર
દાલ કો અધિકતા લાલા મોજન પ્રમાણ સે અધિક લા લિયા જાતા હૈ,
ઇસલિયે ઘત્તીસ ગ્રાસ લેને કો અપેક્ષા મોજન મેં અધિકતા આને સે
સાધુ કો અદત્તાદાન દોષ કો આપત્તિ આતી હૈ । (ન ખદ્ગ) ડચિત
માત્રા મેં મી દાલ શાક કે સાથ પ્રચુર માત્રા મેં આહાર નહીં કરના
ચાહિયે । તથા (ન વેગિય) જલ્દીર ઉતાવલી કે સાથ મી મોજન નહીં
કરના ચાહિયે । તથા (ન તુરિય) ત્વગયુક્ત હોકર ગ્રાસ કે ગિલને મેં

વસ્ત્ર પાત્ર આદિ ઉપધિનો લાભ થતા “સજ્જણ મોત્તવ્ય” મુનિએ તે પોતાને
માટે ખાવા આદિના ઉપયોગમાં લેવું જોઈએ હવે સૂત્રકાર એ વાત બતાવે
છે કે મુનિએ ભોજન કેવી રીતે ખાવું જોઈએ અને કેવું ન ખાવું જોઈએ
“સમિધ” અદત્તાદાનનો દોષ ન લાગે તે પ્રમાણે યતના પૂર્વક “ન સાગસૂત્રદ્વિય”
શાક અને દાળની અધિકતા વાળું ભોજન કરવું નહીં, એટલે કે શાક અને
દાળની અધિકતા વાળું ભોજન પ્રમાણમાં વધારે ખવાય છે, તે ડારણે બત્રીશ
ગ્રાસ કરતા ભોજન વધારે લેવાથી સાધુને અદત્તાદાન દોષ નડે છે “ન ખદ્ગ”
પ્રમાણમાં દાળ શાકની સાથે વધારે પ્રમાણમાં પણ આહાર લેવો જોઈએ નહીં, તથા
“ન વેગિયવ્” જલ્દી જલ્દી ઝડપથી પણ ભોજન કરવું જોઈએ નહીં, તથા “ન તુ
રિય” ત્વરા સહિત કોળિયો ગળે ઉતારવામાં ઝડપ કરીને પણ ભોજન નહીં કરવું

પશ્ચમી મારનાગાદ—'પશ્ચમ' સ્ત્યાદિ

મૂલમ્—પંચમ સાહસ્મિનિસુ વિળઓ પડજિયવ્વો । ઉવગરણ
પારણાસુ વિળઓ પડજિયવ્વો, વાયળપરિયટ્ટણાસુ વિળઓ
પડંજિયવ્વો । દાળગ્ગહ્ણપુચ્છણાસુ વિળઓ પડજિયવ્વો ।
નિક્કલમળપવેસણાસુ વિળઓ પડજિયવ્વો । અળ્લેસુ ય ઇવ-
માઇસુ વહુસુ કારણસેસુ વિળઓ પડજિયવ્વો । વિળઓ
વિ તવો, તવો વિ વમ્મો, તન્હા વિળઓ પડંજિયવ્વો ગુરુસુ
સાહુસુ તવલ્લિસુ ય । ઇવ વિળણેણ ભાવિઓ ભવઈ અંતરપ્પા
નિચ્ચં અહિક્કળકરળકારાવળપાપકમ્મવિરણ દત્તમણ્ણા ય
ઉગ્ગહરૂઈ ॥ સૂ ૧૦ ॥

હૈ, ક્યોં કિ એસા આહાર પ્રમાણ સે અધિક નર લિયા જાતા હૈ, જિસસે
અદત્તાદાન કા દોષ આતા હૈ । આહાર કરતે સમય ઇસ યાત કા વિશેષ
ધ્યાન રખના યોગ્ય હૈ કિ હાથ, પૈર, ગર્દન આદિ અવયવ અનાવશ્યક
રૂપ સે ન ચલે । આહાર કરતે સમય આહાર જરૂરી ૨ સે ન કિયા જાવે ।
ગ્રાસ જલ્દી ૨ સે ન મિલા જાવે । એકેન્દ્રિયાદિનુ જીવોં કો વાવાકારી
આહાર-સચ્ચિત્ત આહાર ન લિયા જાવે । તાત્પર્ય કરને કા યહ હૈ કિ
અદત્તાદાનવિરજળજ્ઞત નષ્ટ ન હો ઇસ પ્રકાર સે સાધુ કો આહાર કરના
ચારિયે । ઇસ તરફ કી પ્રવૃત્તિ સે ઇસ વ્રત પર પૂર્ણ રૂપ સે નિયંત્રણ-
કાવૂ હો જાતા હૈ । વહ માધુ અનનુજ્ઞાત ભક્તાદિ ભોજન રૂપ સાવધકર્મ
કે કરને, કરાન ઔર અનુમોદનારૂપ પાપકર્મ સે વિરત થન જાતા હૈ ॥ સૂ ૧૧ ॥

ત્યાગ ડરવુ ભેધએ એવુ તેમા દર્શાવ્યુ છે, ડરણુ કે તેવો આહાર વધારે
પ્રમાણમા લેવાય છે તેથી સાધુને અદત્તાદાનનો દોષ લાગે છે આહાર ડરતી
વખતે એ વાતનુ ખાસ વ્ય ન રાખવુ ભેધએ કે હાથ, પગ ડાઢ આદિ અવયવો
ખીન જરૂરી રીતે હાલે ચાલે નહી આહાર ડરતી વખતે અડપથી આહાર લેવો
ભેધએ નહી, ડેળિયો જલ્દી ગળાની નીચે ઉતરવો નહી એકેન્દ્રિયાદિલેવોને
પીડાકારી આહાર-અચિત્ત આહાર લેવો ભેધએ નહી એ કહેવાનુ તાત્પર્ય
એ છે કે અદત્તાદાન વિરમણ રૂપ નષ્ટ ન થાય તે પ્રકારે સાધુએ આહાર
કરવો ભેધએ આ પ્રકારની પ્રવૃત્તિથી આ નન પર સંપૂર્ણ રીતે અકુશ
આવી જાય છે તે સાધુ અનનુજ્ઞાન ભક્તાદિ ભોજનરૂપ સાવધ કર્મ કરતા,
કરાવતા અને અનુમોદના થતા પાપકર્મથી મુક્ત થઈ જાય છે ॥ સૂ ૬ ॥

મગ્નતનિયમનમ્=અદત્તાદાનવિરમણવ્રતસ્ય યદ્નિયમન=નિયન્ત્રણ તદ્ ભવતિ ।
 एवम्=अनेन प्रकारेण 'साधारणपिण्डवायलाभमभिज्ञोगेण' साधारणपिण्डपात
 लाभसमितियोगेन=साधारणपिण्डपातलाभे या समिति.=सम्यक्प्रवृत्तिः तस्या
 योगेन=सम्यग्धेन भावितोऽन्तरात्मानित्य=सदा अधिकरणकरणकारणपापकर्मविरतः
 =अधिकरणस्य=अननुज्ञातभक्तादिभोजनलक्षणमायधकर्मणोयत्करण कारणमुपलक्ष
 णत्वादनुमोदनं च तदेव यत्पापकर्म ततो विरतो=निवृत्तः, दत्तानुज्ञातावग्रहं वि
 र्भवति । एतद् व्याख्या पूर्वमद्विज्ञेया ॥ सू ९ ॥

અદત્તાદાનવિરમણ વ્રત પર નિયન્ત્રણ-અધિકાર હો જાતા હૈ । (एव)
 इस प्रकार से (साधारणपिण्डवायलाभे) साधारणपिण्डपातलाभ में
 (समिज्ञोगेण) सम्यक् प्रवृत्ति के साथ से (भावितो अतरण्या)
 भावित अन्तरात्मा (निच्च) नित्य-सदा (अधिकरणकरणकारण-
 पापकर्मविरत) अननुज्ञात भक्तादि भोजनरूप सावधकर्मके करने, कराने
 और उसकी अनुमोदनारूप पापकर्मसे विरत हो जाता है । और (दत्तम
 गुण्णाय उग्रहं भवद्) दत्तानुज्ञात अवग्रह में रुचिशाली हो जाता है ।

भावार्थ—સૂત્રકાર ને હસ સૂત્ર દ્વારા અદત્તાદાનવિરમણ વ્રત કી
 चौथी भावना को कहते हैं । इस का नाम अनुज्ञातभक्तादि भोजन
 है । साधु के लिये दाना द्वारा कल्पनीय भिक्षा अथवा उपधि की प्राप्ति
 हो जाने पर उसे किस तरह से अपने उपयोग में लाना चाहिये इसका
 इसमें विचार किया गया है । आहार के विचार में साधु को दाल
 शाक की अधिकता के साथ में आहार करने का त्याग कहा गया

થઈ જાય છે “एव” આ પ્રકારે “साधारण पिण्डवायलाभे” साधारण लिक्षानी
 प्राप्ति तथा “समिज्ञोगेण” सम्यक् प्रवृत्तिना योगशी, “ भावितो अ
 तरण्या” भावित अतरात्मा “ निच्च ” नित्य “ अधिकरणकरणकारावपाव
 कर्मविरत ” अननुज्ञात भक्तादि भोजन रूप सावधकर्म करवाथी, કરાવવાથી,
 અને તેની અનુમોદના રૂપ પાપકર્મથી મુક્ત થઈ જાય છે અને “દત્તમગુણાય
 ઉગ્રહં ભવદ્” દત્તાનુજ્ઞાત અવગ્રહમાં રુચિવાળો થઈ જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા અદત્તાદાન વિરમણ વ્રતની ચોથી
 भावनानु स्पर्ष्टीकरणं उर्युं છે તે ભાવના અનુજ્ઞાત ભક્તાદિ ભોજન નામની છે
 દાતા દ્વારા સાધુને કૃત્યે તેવી ભિક્ષા અથવા ઉપધિની પ્રાપ્તિ થઈ જાય ત્યારે
 તેણે કેવી રીતે તે પોતાના ઉપયોગમાં લેવી જોઈએ તે જાણતો આ ભાવનામાં
 વિચાર કરવામાં આવ્યો છે વધારે દાળ શાક સાથેના આહાર લેવાનો સાધુએ

क्षण प्रयोक्तव्यः । तथा—' दाणग्ग्रहणपुच्छणासु ' दानग्रहणमच्छनासु=दान=रुच्य-
स्थापनादे ग्लानादिभ्यो वितरणत्, ग्रहणम्-परेण दीयमानस्यैवान्नादेर्ग्रहणम्,
मच्छना=विस्मृतसूत्रार्थविषये प्रक्षः, एतासु ' विणओ ' विनय =दानग्रहणयोर्गुर्वा
शालक्षण, मच्छनाया वन्दनादिरूप प्रयोक्तव्यः ।

तथा—' निष्क्रमणपवेशनासु ' निष्क्रमणपवेशनयोः = गमनागमनयोः
विनयः = गमने आवश्यकीरूपः, आगमने नैपेधिकीरूपः प्रयोक्तव्यः, किं
बहुना ' अण्णोसु य ' अन्वेषु च ' एवमाइएसु ' एवमादिकेषु=एवविधेषु
बहुषु ' कारणसएसु ' कारणशतेषु विनयः प्रयोक्तव्यः । कस्मात्कारणाद् विनय
प्रयोक्तव्यः ? इत्याह—' विणओपि ' विनयोऽपि तपः=न केवलमनशनादिकमेव
करने में साधु को (विणओ पउजियव्वो) वन्दनादिरूप विनय करना
चाहिये । तथा (दाणग्ग्रहणपुच्छणासु विणओ पउजियव्वो) दान मे-
दाता द्वारा दिये हुए अन्नादि को का ग्लान आदि साधुओ के लिये
वितरण करने में-दाता द्वारा दिये गये अन्नादिक के लेने में गुरु की
आज्ञा प्राप्त करना रूप विनय, प्रच्छना मे-विस्मृत हुए सूत्रार्थ को
गुर्वादिकों से पूछने मे-वन्दनादि रूप विनय भाव रखना चाहिये । तथा
(निष्क्रमणपवेशनासु) निष्क्रमण और प्रवेशन में-गमन और आग-
मन में-(विणओ पउजियव्वो) आवश्यकी रूप और नैपेधिकी रूप
विनय करना चाहिये अर्थात्-गमन में आवश्यकीरूप और आगमन
मे नैपेधिकीरूप विनय भाव साधु को रखना चाहिये । (अण्णोसु एव-
माइएसु सुबहुसु कारणेसु इसी तरह के और भी बहुत से सैकड़ों
कारणों में (विणओ पउजियव्वो) विनय भाव का आचरण करते

आदि ढरीने विनय दर्शाववे । जेधंओ तथा " दाणग्ग्रहणपुच्छणासु विणओ
पउजियव्वो " दानभा-दाता द्वारा अपायेल अन्नादितु ग्लान आदि साधुओभा
वितरण करवाभा विनय राखवे । जेधंओ ग्रहण करवाभा-दाता द्वारा अपायेल
अन्न आदि लेवा भाटे गुरुनी आज्ञा प्राप्त करवा रूप विनय पाणवे । जेधंओ
प्रच्छनाभा-बुलाई गयेल सूत्रार्थ गुरु आदिने पछती वण्णते वट्ठु आदि रूप
विनय लाव राखवे । जेधंओ तथा " निष्क्रमणपवेशनासु " निष्क्रमण अने
प्रवेशना-गमन अने आगमनभा " विणओ पउजियव्वो " आवश्यकी रूप
नैपेधिकी रूप विनय लाव साधुओ राखवे । जेधंओ, जेट्ठे के गमनभा आवश्यकी
रूप अने आगमनभा नैपेधिकी रूप विनय लाव साधुओ राखवे । जेधंओ
" अण्णोसु एवमाइएसु बहुसु कारणेसु " आ प्रक्षानी अन्य से कडो आश्रतोभा
पुणु " विणओ पउजियव्वो " विनय लाव आचरवे । जेधंओ जरणु ते " विणओ

ટીકા--‘ પચમ ’ પચમી વિનયભાવનામાદ--‘ સાહમિણસુ ’ સાધ્મિકેષુ પર્યોપજ્યેષ્ઠ ‘ વિણઓ ’ વિનયઃ ‘ પઝજિયવ્વો ’ પ્રયોક્તવ્યઃ=કરણીયઃ । તથા- ‘ ઉચ્ચારણપારણાસુ ’ ઉપકારણપારણયોત્તર-ઉપકારણ=સ્વપરયોરુપકારકરણ, તત્ર-સ્વસ્ય સયમપાલનેન, પરસ્ય ગ્લાનાધવસ્યાયા વૈયાટ્યદિ કરણેન, પારણા= તપસઃ પારણા શ્રુતસ્ય પારગમન યા પારણા. તયોઃવિનયઃ પ્રયોક્તવ્યઃ=દ્વયોરપિ મૃદુસ્વાભાવતયા સ્થાતવ્યમિત્યર્થઃ, તથા-‘ વાયળપરિયટ્ટણાસુ ’ વાચનાપરિવર્તનયોઃ=વાચના સૂત્રગ્રહણમ્, પરિવર્તના=તસ્યૈવગુણનમ્, તયો વિનયઃ=ચન્દનાદિચ-

અવ સૂત્રકાર પાચવી ભાવના કો કહે છે--‘ પચમ સાહમિણસુ ’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ--(પચમ) હસ વ્રત કી પાચવી ભાવના વિનય હૈ-જિમકા સ્વરૂપ હસ પ્રકાર સે હૈ-(સાહમિણસુ વિણઓ પઝજિયવ્વો) અપને સન્માન ધર્મવાલો મે જો દીક્ષા પર્યાય કી અપેક્ષા હ્યેઠ હૈ ઉનમેં વિનય વૃત્તિ રચની ચાહિયે । તથા (ઉચ્ચારણપારણાસુ વિણઓ પઝજિયવ્વો) સ્વ ઓર પર કે ઉપકાર કરને મેં ઓર પારણા કરને મેં વિનય રચના ચાહિયે, સયમ કી આરાધના કરના યહ નિજ કા ઉપકાર કરના હૈ ઓર ગ્લાન આદિ અવસ્થા મેં અન્ય સાધુ કા વૈયાટ્ય આદિ કરના યહ પર કા ઉપકાર કરના હૈ, તપસ્યા કા પારણા કરના અથવા શ્રુત કે પાર પહુંચના યહ પારણા હૈ હન દોનોં સ્થિતિયો મેં મૃદુ સ્વભાવ સે રહના યહી ઉપકારણ પારણા કા વિનય કરના હૈ । હસી તરહ (વાયળપરિયટ્ટણાસુ) સૂત્ર કી વાચના મેં ઓર ઉસકે પરિવર્તન કરને મેં-સ્વાધ્યાય

હવે સૂત્રકાર પાચમી ભાવના બતાવે છે--“ પચમ સાહમિણસુ ” इत्यादि-

ટીકા--“ પચમ ” આ વ્રતની પાચમી ભાવના વિનય છે, જેનું સ્વરૂપ આ પ્રમાણે છે --“ સાહમિણસુ વિણઓ પઝજિયવ્વો ” પોતાના સાધ્મીઓમા જે દીક્ષા પર્યાયની અપેક્ષા એ મોટા હોય તેમના પર વિનયવૃત્તિ રાખવી જોઈએ તથા “ ઉચ્ચારણપારણાસુ વિણઓ ઉપ જિયવ્વો ” સ્વ અને પરને ઉપકાર કરવામા અને પારણા કરવામા વિનય રાખવો જોઈએ સયમની આરાધના કરવી તે પોતાના ઉપર ઉપકાર કર્યો ગણાય છે અને ગ્લાન આદિ અવસ્થામા અન્ય સાધુઓનું વૈયાટ્ય-વૈયાવચ-કરવી તે પરના ઉપરનો ઉપકાર છે તપનું પારણ કરવું અથવા શ્રુતને પાર પહોંચવું તે પણ પારણ છે એ બંને સ્થિતિમા મૃદુ સ્વાભાવથી રહેવું તે જ પારણાનો વિનય કરવાની રીત છે એ જ રીતે “ વાયળપરિયટ્ટણાસુ ” સૂત્રની વાચનામા અને તેનું પરિવર્તન કરવામા-સ્વાધ્યાય કરવામા સાધુએ “ વિણઓ પઝજિયવ્વો ” વાંચ્યા

અધ્યયનમુપસદ્ધરતિ-‘ એમિણ ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-એવમિણં સવરસ્સદારં સમ્મ ચરિયં હોઈ સુપણિહિય,
 ઇમેહિ પચહિં વિ કારણેહિ મણવયણકાયપરિરક્ખિણહિ નિચ્ચ
 આમરણંતચ્ચ એસો જોગો નેયઠ્ઠો ધિદ્ધમયા મદ્ધમયા અણાસવો
 અકલ્લસો અચ્છિદ્ધો અપરિરસાવી અસકિલિદ્ધો સુદ્ધો સવ્વજિણ-
 મણુણ્ણાઓ । એવ તદ્ધયં સવરદાર ફાસિય પાલિય સોહિય
 તીરિય કિદ્ધિય સમ્મં આરાહિય આણાણ અણુપાલિય ભવઈ ।
 એવ નાયમુણિણા ભગવયા પળ્ણવિય પરુવિય પસિદ્ધં સિદ્ધિ

ભાવના હૈં । અપને સે જો દીક્ષા પર્યાય મેં જ્યેષ્ઠ હૈં, ડન સાધુઓં મેં
 વિનય ધર્મ કા પાલન કરના તથા સ્વય સયમ કે પાલન કરને મેં ઔર
 પારણા મે મૃદુ સ્વભાવ રખના, ઇત્યાદિ વિનય સબધી જિતની ઓ
 ક્રિયાળ હૈં ડન્હેં મોક્ષમાર્ગ કે સાધનોં મેં યથાયોગ્યરૂપ સે પાલન કરતે
 રહના ડનકે પ્રતિ અવિનયરૂપતા કા ભાવ ચિત્ત મેં નહીં આને દેના
 યહ વિનય ભાવના હૈં । તાત્પર્ય યહ હૈં કિ જ્ઞાનાદિ મોક્ષમાર્ગ ઔર
 ડસકે સા ડનોં કે પ્રતિ યોગ્યરીતિ સે યટ્માન રખના યહ વિનયધર્મ
 હૈં । ઇસ ધર્મ સે ભાવિત હુઆ અતરાત્મા અવિનય રૂપ માવઘ કર્મ કે
 કરને કરાને, ઔર ડમકી અનુમોદના જન્ય પાપક્રિયા સે વિરક્ત હો
 જાતા હૈં ઔર ઇસ ભાવના કા પાલક ઘન જાતા હૈં ॥ સુ ૧૦ ॥

પર્યાયમા જે પોતાના કરતા મોટા હોય તેમના પ્રત્યે વિનયધર્મનું પાલન કરવું, તથા
 નિજ સયમનું પાલન ડગ્વામા તથા પારણામા મૃદુ સ્વભાવ રાખવો, ઇત્યાદિ
 વિનય સબધી જેટલી ક્રિયાઓ છે તેમનું મોક્ષમાર્ગના સાધનોમા યોગ્ય રીતે
 પાલન કરતા રહેવું, તેમના પ્રત્યે અવિનય ભાવને ચિત્તમા પ્રવેશવા ન દેવો
 તે વિનય ભાવના ગણાય છે તેનું તાત્પર્ય એ છે કે જ્ઞાનાદિ મોક્ષમાર્ગ અને
 તેના સાધનો પ્રત્યે યોગ્ય રીતે બહુમાન રાખવું તે વિનય ધર્મ છે આ ધર્મથી
 ભાવિત વયેલ આત્મા અવિનયરૂપ માવઘ કર્મ કરતા, કરાવતા અને તેની
 અનુમોદનાથી પરિણમતી પાપ ક્રિયાથી બચી જાય છે, અને આ ભાવનાને
 પાલક બની જાય છે, ॥ સુ ૧૦ ॥

તપઃ અપિ તુ વિનયોઽપિ આભ્યાન્તરતપોભેદેષુ પઠિતઃ, તથા— તવો વિ ' તપોઽપિ ' ધમ્મો ' ધર્મઃ=ન કેવલ સયમપ્રધર્મઃ, કિન્તુ તપોઽપિ ધર્મઃ, તસ્ય ચારિત્રાશત્તાત્, ' તમ્હા ' તસ્માત્ ' ગુરુસુ ' ગુરુપુ ' સાદુસુ ' સાધુપુ ' તવસ્તિ સુ ય ' તપસ્વિપુ ચ વિનયઃ પ્રયોક્તવ્ય. । એવ વિનયેન ભાવિતોઽન્તરાત્મા નિત્ય મધિકરણકરણકારણપાપકર્મવિરતોઽધિકરણસ્ય = અવિનયરૂપસાધ્યકર્મણો યત્ક રણ કારણમુપલક્ષણત્વાદનુમોદન ચ, એતદ્વેપ યત્યાપકર્મ, તતોવિરતો=નિવૃત્તો દત્તા નુતાતાવગ્રહરુચિ ભવતિ । એતદ્ વ્યારયાપ્તમુક્તા ॥ સૂ૦૧૦ ॥

રહના ચાહિયે । કયોં કિ (વિળજો ત્રિ તજો) યહ વિનય મી આમ્યતર તપ હૈ—કેવલ અનશન આદિ હી તપ નહી હૈ । તથા (તપો વિ ધમ્મો) ચારિત્ર કા અશ હોને સે તપ મી ધર્મ હૈ, કેવલ સયમ હી ધર્મ નહોં હૈ । (તમ્હો વિળજો પઞ્જિયવ્વો ગુરુસુ સાદુસુ તવમ્મિસુ ય) હસલિયે ગુરુજનો કે વિષય મેં, સાધુજનોં કે વિષય મેં આગ તપસ્વી જનોં કે વિષય મેં વિનય ધર્મ કા વ્યવહાર અવશ્ય હી કરના ચાહિયે । (એવ- વિળણ ભાવિઓ અન્તરપ્પા નિચ્ચ અહિકરણકરણકારાવળપાવ- કમ્મવિરણ દત્તમણુણાય ડગ્ગહરુઈ ભવહ) હસ પ્રકાર વિનય ધર્મ સે ભાવિત જીવ નિત્ય અવિનયરૂપ સાધ્યકર્મ કે કરને, કરાને ઓર લસકી અનુમોદનારૂપ પાપકર્મ સે નિવૃત્ત હો જાના હૈ ઓર દત્તાનુજ્ઞાત અવગ્રહ મે રુચિવાલા વન જાતા હૈ ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને હસ સૂત્ર દ્વારા અદત્તાદાનવિરમણ રૂપ કી પાચવી ભાવના કા સ્વરૂપ પ્રદર્શિત કિયા હૈ હસ ભાવના કા નામ વિનય

વિ તવો ” આ વિનય પશુ અલ્પતર તપ છે, ઉપવાસ આદિ જ તપ નથી “ તવો વિ ધમ્મો ” ચારિત્રનો અર્થ હોવાથી તપ પશુ ધર્મ છે, ફક્ત સયમ જ ધર્મ નથી “ તમ્હા વિળજો પઞ્જિયવ્વો ગુરુસુ તવસ્મિસુ ય ” તે ડારણે ગુરુ જનો પ્રત્યે, સાધુજનો પ્રત્યે, અને તપસ્વીજનો પ્રત્યે વિનય ધર્મનો વહેવાર અવશ્ય રાખવો જોઈએ “ એવ વિળણ ભાવિઓ અન્તરપ્પા નિચ્ચ અહિકરણ કરણકારાવળપાવકમ્મવિરણ દત્તમણુણાય ડગ્ગહરુઈ ભવહ ” આ પ્રકારે વિનય ધર્મથી ભાવિત એવ નિત્ય અવિનયરૂપ સાધ્ય કર્મ કરતા, ડરાવતા અને તેની અનુમોદનારૂપ પાપકર્મથી નિવૃત્ત થઈ જાય છે અને દત્તાનુજ્ઞાત અવગ્રહમા રુચિવાળો બની જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા અદત્તાદાનવિરમણ પ્રતની પાચવી ભાવનાનું સ્વરૂપ દર્શાવ્યું છે તે ભાવનાનું નામ “ વિનય ભાવના ” છે ડીક્ષા

અધ્યયનમુપસદ્ધરતિ-‘ એવમિણ ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-એવમિણ સંવરસ્સદારં સમ્મ ચરિયં હોઈ સુપણિહિયં, ઇમેહિ પચહિ વિ કારણેહિ મળવયણકાયપરિરિખણહિ નિચ્ચં આમરણતચ્ચ એસો જોગો નેયવ્વો ધિદ્ધમયા મદ્ધમયા અણાસવો અકલ્હસો અંચ્છિદ્ધો અપરિરિસાવી અસંકિલિદ્ધો સુદ્ધો સવ્વજિણ-મણુણ્ણાઓ । એવ તદ્ધયં સવરદાર ફાલિય પાલિય સોહિય તીરિય કિદ્ધિય સમ્મં આરાહિય આણાણ્ણ અણુપાલિય ભવઈ । એવ નાયમુણિણા ભગવયા પળ્ણવિયં પરૂવિયં પસિદ્ધં સિદ્ધિ

ભાવના હ । અપને સે જો દીક્ષા પર્યાય મેં જ્યેષ્ઠ હે, ડન સાધુઓં મેં વિનય ધર્મ કા પાલન કરના તથા સ્વય મયમ કે પાલન કરને મેં ઓર પારણા મેં મૃદુ સ્વભાવ રલ્લના, ઇત્યાદિ વિનય સાધધી જિતની મી ક્રિયાણ હ ડન્હેં મોક્ષમાર્ગ કે સા ડનોં મેં યથાયોગ્યરૂપ સે પાલન કરતે રહના ડનકે પ્રતિ અવિનયરૂપતા કા ભાવ ચિત્ત મેં નહીં આને દેના યહ વિનય ભાવના હે । તાત્પર્ય યહ હે કિ જ્ઞાનાદિ મોક્ષમાર્ગ ઓર ડસકે સાધનોં કે પ્રતિ યોગ્યરીતિ સે ઘટ્ઠમાન રલ્લના યહ વિનયધર્મ હે । ઇસ ધર્મ સે ભાવિત હુઆ અતરાત્મા અવિનય રૂપ સાવધ કર્મ કે કરને કરાને, ઓર ડમકી અનુમોદના જન્ય પાપક્રિયા સે વિરક્ત હો જાતા હે ઓર ઇસ ભાવના કા પાલક ડન જાતા હે ॥ સુ ૧૦ ॥

પર્યાયમા જે પોતાના કરતા મોટા હોય તેમના પ્રત્યે વિનયધર્મનું પાલન કરવું, તથા નિજ મયમનું પાલન કરવામા તથા પારણામા મૃદુ સ્વભાવ રાખવો, ઇત્યાદિ વિનય સાધધી જેટલી ક્રિયાઓ છે તેમનું મોક્ષમાર્ગના સાધનોમા યોગ્ય રીતે પાલન કરતા રહેવું, તેમના પ્રત્યે અવિનય લાવને ચિત્તમા પ્રવેશવા ન દેવો તે વિનય લાવના ગણાય છે તેનું તાત્પર્ય એ છે કે જ્ઞાનાદિ મોક્ષમાર્ગ અને તેના સાધનો પ્રત્યે યોગ્ય રીતે બહુમાન રાખવું તે વિનય ધર્મ છે આ ધર્મથી લાવિત થયેલ આત્મા અવિનયરૂપ સાવધ કર્મ કરતા, કરાવતા અને તેની અનુમોદનાથી પરિણમતી પાપ ક્રિયાથી બચી બચ છે, અને આ લાવનાનો પાલક બની બચ છે, ॥ સુ. ૧૦ ॥

તપઃ અપિ તુ વિનયોઽપિ આધ્યાન્તરતપોભગ્નેષુ પઠિતઃ, તથા— તવો વિ ' તપોઽપિ ' ધમ્મો ' ધર્મઃ=ન કેવલ સયમપ્ર ધર્મઃ, કિન્તુ તપોઽપિ ધર્મઃ, તસ્ય ચારિત્રાશત્વાત્, ' તમ્હા ' તસ્માત્ ' ગુરુસુ ' ગુરુષુ ' સાદ્રુસુ ' સાધુષુ ' તવસ્મિ સુ ય ' તપસ્વિષુ ચ વિનયઃ પ્રયોક્તવ્યઃ । એવ વિનયેન ભાવિતોઽન્તરાત્મા નિત્ય મધિકરણકરણકારણપાપકર્મપ્રિતો-અધિકરણસ્ય = અવિનયરૂપસાવકર્મણો યત્કરણ કારણમુપલક્ષણત્વાદનુમોદન ચ, એનરૂપ યત્યાપકર્મ, તતોપ્રિતો=નિવૃત્તો દક્ષા શ્રુતાતાવગ્રહરુચિ ભવતિ । એતદ્ વ્યાખ્યાપૂર્વમુક્ત્તા ॥ સૂ.૦૧૦ ॥

રહના ચાહિયે । કયોં કિ (વિળઓ વિ તવો) યહ વિનય મી આમ્યતર તપ હૈ—કેવલ અનશન આદિ હી તપ નહી હૈ । તથા (તવો વિ ધમ્મો) ચારિત્ર કા અશ હોને સે તપ મી ધર્મ હૈ, કેવલ સયમ હી ધર્મ નહીં હૈ । (તમ્હા વિળઓ પઝજિયવ્વો ગુરુસુ સાદ્રુસુ તવમ્મિસુ ય) ફસલિયે ગુરુજનોં કે વિષય મેં, સાધુજનોં કે વિષય મેં ઓર તપસ્વી જનોં કે વિષય મેં વિનય ધર્મ કા વ્યવહાર અવશ્ય હી કરના ચાહિયે । (એવ-વિળણ ભાવિઓ અન્તરપ્પા નિચ્ચ અદિકરણકરણકારાવળપાવ-કમ્મવિરણ દત્તમણુણાય ડગ્ગહરુઈ મવઈ) ફસ પ્રકાર વિનય ધર્મ સે ભાવિત જીવ નિત્ય અવિનયરૂપ સાવચકર્મ કે કરને, કરાને ઓર લસકી અનુમોદનારૂપ પાપકર્મ સે નિવૃત્ત હો જાતા હૈ ઓર દત્તાનુજ્ઞાત અથગ્રહ મેં રુચિવાલા વન જાતા હૈ ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને ફસ સૂત્ર દ્વારા અદત્તાદાનવિરમણ રૂપ કી પાંચવી ભાવના કા સ્વરૂપ પ્રદર્શિત કિયા હૈ ફસ ભાવના કા નામ વિનય

વિ તવો ” આ વિનય પણ અલ્પતર તપ છે, ઉપવાસ આદિ જ તપ નથી “ તવો વિ ધમ્મો ” ચારિત્રનો અર્થ હોવાથી તપ પણ ધર્મ છે, ફક્ત સયમ જ ધર્મ નથી “ તમ્હા વિળઓ પઝજિયવ્વો ગુરુસુ તવસ્મિસુ ય ” તે કારણે ગુરુ જનો પ્રત્યે, સાધુજનો પ્રત્યે, અને તપસ્વીજનો પ્રત્યે વિનય ધર્મનો વહેવાર અવશ્ય રાખવો જોઈએ “ એવ વિળણ ભાવિઓ અન્તરપ્પા નિચ્ચ અદિકરણ કરણકારાવળપાવકમ્મવિરણ દત્તમણુણાય ડગ્ગહરુઈ મવઈ ” આ પ્રકારે વિનય ધર્મથી ભાવિત જીવ નિત્ય અવિનયરૂપ સાવચકર્મ કરતા, કરાવતા અને તેની અનુમોદનારૂપ પાપકર્મથી નિવૃત્ત થઈ જાય છે અને દત્તાનુજ્ઞાત અવગ્રહમાં રુચિવાળો બની જાય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા અદત્તાદાનવિરમણ વ્રતની પાંચમી ભાવનાનું સ્વરૂપ દર્શાવ્યું છે તે ભાવનાનું નામ “ વિનય ભાવના ” છે ફક્ત

અધ્યયનમુપસદ્ધરતિ-‘ એમિણ ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-એવમિણ સવરસ્સદારં સમ્મ ચરિયં હોઈ સુપણિહિયં,
 ઇમેહિ પચહિ વિ કારણેહિ મણવયણકાયપરિરક્ષિણહિ નિચ્ચ
 આમરણતચ્ચ એસો જોગો નેયવ્વો ધિડમયા મડમયા અણાસવો
 અકલ્હસો અચ્છિદ્ધો અપરિરસાવી અસંકિલિદ્ધો સુદ્ધો સવ્વજિણ-
 મણુણ્ણાઓ । એવ તદ્દયં સવરદાર ફાસિય પાલિય સોહિયં
 તીરિય કિટ્ઠિય સમ્મ આરાહિય આણાણ અણુપાલિય ભવઈ ।
 એવ નાયમુણિણા ભગવયા પળ્ણવિય પરુવિયં પસિદ્ધં સિદ્ધિ

ભાવના છે । અપને સે જો દીક્ષા પર્યાંત્ર મેં જ્વેષ્ઠ છે, ડન સાધુઓં મેં
 વિનય ધર્મ કા પાલન કરના તથા સ્વયં સયમ કે પાલન કરને મેં ઔર
 પારણા મેં મૃદુ સ્વભાવ રાખના, ઇત્યાદિ વિનય સવધી જિતની ખી
 ક્રિયા છે ઉન્હે મોક્ષમાર્ગ કે સાધનોં મેં યથાયોગ્યરૂપ સે પાલન કરતે
 રહના ડનકે પ્રતિ અવિનયરૂપતા કા ભાવ ચિત્ત મેં નહીં આને દેના
 યહ વિનય ભાવના છે । તાત્પર્ય યહ છે કિ જ્ઞાનાદિ મોક્ષમાર્ગ ઔર
 ડસકે સાધનો કે પ્રતિ યોગ્યરીતિ સે વહુમાન રાખના યહ વિનયધર્મ
 છે । ઇસ ધર્મ સે ભાવિત હુઆ અતરાત્મા અવિનય રૂપ માવઘ કર્મ કે
 કરને કરાને, ઔર ડમકી અનુમોદના જન્ય પાપક્રિયા સે વિરક્ત હો
 જાતા છે ઔર ઇસ ભાવના કા પાલક ઘન જાતા છે ॥ સુ. ૧૦ ॥

પર્યાયમા જે પોતાના કરતા મોટા હોય તેમના પ્રત્યે વિનયધર્મનું પાલન કરવું, તથા
 નિજ સયમનું પાલન કરવામા તથા પારણામા મૃદુ સ્વભાવ રાખવો, ઇત્યાદિ
 વિનય સવધી જેટલી ક્રિયાઓ છે તેમનું મોક્ષમાર્ગના સાધનોમા યોગ્ય રીતે
 પાલન કરતા રહેવું, તેમના પ્રત્યે અવિનય લાવને ચિત્તમા પ્રવેશવા ન દેવો
 તે વિનય લાવના ગણાય છે તેનું તાત્પર્ય એ છે કે જ્ઞાનાદિ મોક્ષમાર્ગ અને
 તેના સાધનો પ્રત્યે યોગ્ય રીતે બહુમાન રાખવું તે વિનય ધર્મ છે આ ધર્મથી
 ભાવિત થયેલ આત્મા અવિનયરૂપ સાવઘ કર્મ કરતા, કરાવતા અને તેની
 અનુમોદનાથી પરિણમતી પાપ ક્રિયાથી બચી બચ છે, અને આ ભાવનાનો
 પાલક બની બચ છે, ॥ સુ. ૧૦ ॥

वरसासणमिणं आघविय सुदेसियपसत्थ तइय सवरदारं
समत्त त्तिवेमि ॥ सू० ११ ॥

॥इय पणहावागरणे तइयं संवरदार समत्त॥

टीका—एव पूर्वोक्तप्रकारेण ' इण ' इद ' सवरस्स ' सवरस्य ' दार ' द्वारम् अदत्तादानविरमणनामक तृतीय द्वारमित्यर्थः, ' सम्म ' सम्पत् ' चरिय ' चरित सत् ' होइ ' भवति ' सुपणिहिय ' सुपणिहित=समाराधितम् । तथा—' इमेहि ' एभि ' पचहि ' वि=पञ्चभिरपि ' कारणेहि ' कारणैः=भावनाभिः, कीदृशैः कारणैः ? इत्याह—' मणवयणकायपरिरक्खिणहि ' मनोवचनकायपरिरक्षितैः=मनोवाक्यायैः परिरक्षितैः, मनोवाक्याययोगयुक्ताभिः पञ्चभावनाभिरित्यर्थः, ' निच्च ' नित्यम् ' आमरणत्त च ' आमरणान्त=मरणपर्यन्त च ' एस जोगो ' एष योगः=अदत्तादानविरमणरूपो योग ' णेयव्यो ' नेतव्यः=पालनीय. ' धिइमया ' धृतिमता ' मइमया ' मतिमता । कथं भूतोऽयं योगः ? इत्याह—' अणासवो ' अना-

अथ सूत्रकार इह अध्ययन का उपसंहार करते हुए कहते हैं—
' एवमिण ' इत्यादि० ।

टीकार्थ—(एव) पूर्वोक्त प्रकार से (इण) यह (सवरस्स दार) अदत्तादानविरमण नाम का तृतीय सवरद्वार (सम्म चरिय) अच्छी तरह से पाले जाने पर (सुपणिहिय) सुरक्षित (होइ) हो जाता है । इसलिये (मणवयणकायपरिरक्खिणहि) मन, वचन, काय इन तीन योगों से अच्छी तरह सुरक्षित कीये गये (इमेहि) इन (पचहि वि-कारणेहि) पांच भावना रूप कारणों से (निच्च) सदा (आमरणत्त च) जीवन भर तक (एस जोगो) यह अदत्तादानविरमण रूप योग (धिइमया मइमया) चित्त स्वस्थता से तथा हेयोपादेय की विवेकता से

इसे सूत्रकार आ अध्ययनको उपसंहार करते कहे छे—“ एवमिण ” इत्यादि—

टीकार्थ—“ एव ” पूर्वोक्त प्रकारे “ इण ” आ “ सवरस्सदार ” अदत्तादान विरमण नामक तृतीय सवरद्वार “ सम्म चरिय ” सांगी रीते पाणवामा आवे तो “ सुपणिहिय ” सुरक्षित थछ जाय छे तेथी “ मणवयणकाय परिरक्खिणहि ” मन, वचन अने जायाना योगेथी सारी रीते सुरक्षित करायेछ “ इमेहि ” आ “ पचहि वि कारणेहि ” पांच भावनारूप कारणेथी “ निच्च ” सदा “ आमरणत्त च ” जीवन पर्यंत “ एसजोगो ” आ अदत्तादान विरमणरूप योग “ धिइमया मइमया ” चित्तनी स्वस्था तथा हेयोपादेयना विवेकथी

સ્રવઃ=નૂતનકર્માગમનરહિતત્વાત્, 'અકલુસો' અકલુપઃ = અશુભાન્યવસાયરહિતત્વાદ્, 'અચ્છિદ્ધો' અચ્છિદ્રઃ = છિન્નપાપસ્રોતસ્ત્વાત્ 'અપરિસ્સાવી' અપરિસ્સાવી = વિન્દુરૂપેણાપિ કર્મજલપ્રવેશરહિતત્વાત્, 'અસક્લિદ્ધો' અસક્લિદ્ધા = અસમાધિભાવવર્જિતત્વાત્, 'સુદ્ધો' શુદ્ધઃ = કર્મમલવર્જિતત્વાત્, 'સવ્વજિનમણુણાઓ' સર્વજિનાનુજ્ઞાતઃ = સકલપ્રાણિદિતકારકત્વાત્ સર્વેષામર્હતામનુમતત્વાસ્તિ । એવમ્ = એતાદશમિદ 'તદય' તૃતીય સવરદ્વારમ્ 'ફાસિય' સ્પૃષ્ટ કાયેનાચરિત, 'પાલિય' પાલિત-સતતમુપયોગેન સેવિત 'સોહિય' શોધિત = અતિચારવર્જનેન શુદ્ધી

યુક્ત હુણ મુનિજન કો (નેયવ્વો) પાલન કરને યોગ્ય હૈ । ક્યોં કિ યહ અદત્તાદાનચિરમણ રૂપ યોગ (અણાસવો) નૂતનકર્મો કે આગમન સે રહિત હોને કે કારણ અનાસવરૂપ હૈ, (અકલુસો) અશુભ અધ્યવસાય સે વર્જિત હોને કે કારણ અકલુપ હૈ, (અચ્છિદ્ધો) પાપ કા સ્રોત હસસે છિન્ન હો જાતા હૈ અતઃ અચ્છિદ્ર હૈ (અપરિસ્સાવી) વિન્દુરૂપ સે ભી કર્મરૂપજલ હસમેં પ્રવેશ નહીં કર સકતા હૈ હમલિયે યહ અપરિસ્સાવી હૈ । (અસક્લિદ્ધો) અસમાધિભાવ સે વર્જિત હોને કે કારણ યહ અસક્લિદ્ધ હૈ । (સુદ્ધો) કર્મમલ સે રહિત હોને કે કારણ શુદ્ધ હૈ (સવ્વજિનમણુણાઓ સમસ્ત પ્રાણિયો કા હસસે હિત હોતા હૈ હસલિયે સમસ્ત અરહત ભગવતો કો યહ માન્ય હુઆ હૈ । (એવ) એસા યહ (તદય) તૃતીય સવર દ્વાર હૈ । હસ સવરદ્વાર કો જો (ફાસિય) અપને શરીર સે આચરિત કરતે હૈ, (પાલિય) નિરન્તર ઉપયોગ પૂર્વક હસે સેવિત કરતે હૈ (સોહિય) અતિચારોં સે હસે રહિત કરતે હૈ

યુક્ત મુનિજનોને "નેયવ્વો" પાલન કરવા યોગ્ય છે આ અદત્તાદાન વિરમણુ રૂપ યોગ "અણાસવો" નવા કર્મોના આગમનથી રહિત હોવાને કારણે અનાસવરૂપ છે, "અકલુસો" અશુભ અધ્યવસાયથી રહિત હોવાને કારણે અકલુપ છે, "અચ્છિદ્ધો" પાપનો સ્રોતોતેનાથી છિન્ન થઈ બચ છે તેથી અચ્છિદ્ર છે, "અપરિસ્સાવી" કર્મ રૂપ જળનુ જિહ્વ પણુ તેમા પ્રવેશી શકતુ નથી તેથી તે અપરિસ્સાવી છે, "અસક્લિદ્ધો" અસમાધિ ભાવ રહિત હોવાને કારણે તે અસક્લિદ્ધ છે, "સુદ્ધો" કર્મ માળથી રહિત હોવાને કારણે તે શુદ્ધ છે, "સવ્વજિનમણુણાઓ" સમસ્ત પ્રાણીઓનુ તેનાથી કર્યાણુ થાય છે, તે કારણે સમસ્ત અર્હત ભગવાનોને તે માન્ય થયેલ છે, "એવ" એવુ "તદય" આ તૃતીય સવરદ્વાર છે આ સવરદ્વારને જે "ફાસિય" પોતાના શરીરથી આચરે છે, "પાલિય" નિરન્તર ઉપયોગ પૂર્વક તેનુ સેવન કરે છે, "સોહિય" અતિચારોથી છે "કિદ્ધિય" તેનુ

વરસાસનમિણં આઘવિય સુદેસિયપસત્વ તદ્વય સવરદારં
સમત્ત ત્તિવેમિ ॥ સૂ. ૧૧ ॥

॥ઈય પપ્પહાવાગરણે તદ્વયં સંવરદારં સમત્ત॥

ટીકા—એ પૂર્વોક્તપ્રકારે ‘ ઇણ ’ એ ‘ સવરસ્સ ’ સવરસ્ય ‘ દાર ’
દ્વારમ્ અદત્તાદાનવિરમણનામક તૃતીય દ્વારમિત્યર્થઃ, ‘ સમ્મ ’ સમ્પર્ક ‘ ચરિય ’
ચરિત સત્ ‘ હોઙ ’ ભવતિ ‘ સુપ્પણિહિય ’ સુપ્પણિહિત=સમારાધિતમ્ । તથા—‘ હ-
મેહિં ’ એમિ ‘ પચ્છિં ’ ત્રિ=પચ્છમિરપિ ‘ કારણેહિં ’ કારણેઃ=ભાવનાભિઃ, કી
દ્વૈઃ કારણેઃ ? इत्याह—‘ મળવચ્છનકાયપરિરક્ખિણ્ણિં ’ મનોવચ્છનકાયપરિરક્ષિતૈઃ=
મનોવાક્યાયૈઃ પરિરક્ષિતૈઃ, મનોવાક્યાયયોગયુક્તાભિઃ પચ્છભાવનાભિરિત્યર્થઃ, ‘ નિચ્ચ ’
નિત્યમ્ ‘ આમરણત્ત ચ ’ આમરણાન્ત=મરણપર્યન્ત ચ ‘ એસ જોગો ’ એપ યોગ.=
અદત્તાદાનવિરમણરૂપો યોગ ‘ ણેયવ્વો ’ નેતવ્યઃ=પાલનીયઃ ‘ ધિમ્મયા ’ ધૃતિ
મતા ‘ મહ્મયા ’ મતિમતા । કથં ભૂતોડય યોગ. ? इत्याह—‘ અણાસવો ’ અના-

અથ સૂત્રકારે હસ અધ્યયનના ઉપસહાર કરતે જુગ કહતે હૈ—
‘ એવમિણ ’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(એ) પૂર્વોક્ત પ્રકારે (ઇણ) યહ (સવરસ્સ દાર
અદત્તાદાનવિરમણ નામના તૃતીય સવરદ્વાર (સમ્મ ચરિય) અચ્છી તરહ
સે પાછે જાને પર (સુપ્પણિહિય) સુરક્ષિત (હોઙ) હો જાતા હૈ । હસ-
લિયે (મળવચ્છનકાયપરિ રક્ખિણ્ણિં) મન, વચ્છન, કાય હન ત્રીન
યોગોં સે અચ્છી તરહ સુરક્ષિત રીયે ગયે (હમેહિં) હન (પચ્છિં વિ-
કારણેહિં) પાચ ભાવના રૂપ કારણોં સે (નિચ્ચ) સદા (આમરણત્ત ચ)
જીવન ભર તક (એસ જોગો) યહ અદત્તાદાનવિરમણ રૂપ યોગ (ધિ
મ્મયા મહ્મયા) ચિત્ત સ્વસ્થતા સે તથા હેયોપાદેય કી વિવેકતા સે

હવે સૂત્રકાર આ અધ્યયનના ઉપસહાર કરતા કહે છે—“ એવમિણ ”
इत्यादि—

ટીકાર્થ—“ એ ” પૂર્વોક્ત પ્રકારે “ ઇણ ” આ “ સવરસ્સદાર ” અદત્તા
દાન વિરમણ નામનું ત્રીજું સવરદ્વાર “ સમ ચારિય ” સારી રીતે પાળવામાં
આવે તો “ સુપ્પણિહિય ” સુરક્ષિત થઈ જાય છે તેથી “ મળવચ્છનકાય
પરિરક્ખિણ્ણિં ” મન, વચ્છન અને કાયાના યોગોથી સારી રીતે સુરક્ષિત કરાયેલ
“ હમેહિં ” આ “ પચ્છિં વિ કારણેહિં ” પાચ ભાવનારૂપ કારણોથી “ નિચ્ચ ”
સદા “ આમરણ ત્ત ચ ’ જીવન પર્યંત “ એસજોગો ” આ અદત્તાદાન વિરમ
ણરૂપ યોગ “ ધિમ્મયા મહ્મયા ” ચિત્તની સ્વસ્થતા તથા હેયોપાદેયના વિવેકથી

‘સુદેસિય’ સુદેગિત=સદેવમનુનામુરાયા પર્યદિ મુદ્ધપદિષ્ટમ્ ‘પસત્થ’ મગસ્ત=સર્વપ્રાણિહિતકરત્વાન્મદ્ગ્લમય ‘તદ્ય સવરદાર’ તૃતીય સવરદાર ‘સમત્ત’ સમાપ્તમ્ । ‘ત્તિવેમિ’ इति व्रजोमि । अम्यार्थ पूर्वमुक्त ॥ सु. ११ ॥

इति श्रीमिश्वग्निपात-जगद्गुरु-प्रसिद्धवावरूपश्चदशभाषाकलितललितकला
पात्रावरु-प्रविशुद्धगगनग्रनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दन-श्रीशाहूउप
तिरोल्हापुरगगपदत्त-‘जैनशास्त्राचार्य’ पदभूषित-लोल्हापुरराज-
गुरु-गालगलचारि-जैनाचार्य-जैगर्भदिगारुपूज्यश्री-वासीला-
प्रतिविरचिताया दगमाज्ञस्य श्री मश्वग्याकरणसूत्राय सुदर्शन्या
रदाया व्याख्याया सवरात्माके द्वितीयेभागेऽदत्तादान-
प्रिमगनामक तृतीय सवरद्वार समाप्तम् ॥

सर्व भाव से इनके विषय में कहा है और (सुदेसिय) देवो, मनुजों तथा असुरों से युक्त परिपदा में इसका उपदेश दिया है । (पसत्थ) सर्वप्राणीयो का हिनकारक होने से मगलमय है (तदय सवरदार समत्त) यह तृतीय सवर द्वार समाप्त हुआ (त्ति वेमि) ऐसा मैं कहता हूँ । अर्थात् हे जग ! इस तृतीय सवर द्वार का जैसा कथन मैंने साक्षात् भगवान् महावीर के मुख से सुना है वैसा ही मैंने तुम से कहा है- अपनी तरफ से इसमें मैंने कुछ भी मिश्रित नहीं किया है ।

भावार्थ—इस तृतीय सवर द्वार का उपसंहार करते हुए सूत्रकार समझा रहे हैं कि इस तृतीय सवर द्वार का जो मुनिजन तीन करण तीनयोग से सुरक्षित की गई पांच भावनाओं से जीवन भर पालते हैं-

વિષે કહ્યું છે અને ‘સુદેસિય’ દેવો, મનુજો અને અસુરોનાં યુક્ત પરિપદામાં તેનો ઉપદેશ દીધો છે “પસત્થ” મને પ્રાણીઓનું હિતઝરનાર હોવાથી તે મગલમય છે, “તદય સવરદારસમત્ત” આ તૃતીય સવરદાર સમાપ્ત થયું, ત્તિવેમિ” એવું હું કહું છું એટલે કે હે જગૃ ! આ તૃતીયસવરદારનું ધ્યન બે પ્રમાણે સાક્ષાત્ લગત મહાવીરનાં મુખે સાંભળ્યું હતું તે જ પ્રમાણે તમને કહું છું-માગ તરફથી તમા કંઈ પણ ઉમેરવા આવ્યું નથી

ભાવાર્થ —આ ત્રીજા સવરદારનો ઉપસંહાર કરતાં સૂત્રકાર સમજાવે છે કે આ ત્રીજા સવરદારનું બે મુનિજન ત્રણ ઝરણ ત્રણ યોગથી સુરક્ષિત કરવામાં આવેલ પાંચ ભાવનાઓ સહિત પાલન કરે છે-તે પ્રમાણે પોતાની દરેક

કૃત ' ' તીરિય ' તીરિત=તીર પ્રાપિત પૂર્ણરૂપેણ સેવિત, ' નિદિય ' કીર્તિતમ્-
અન્યેષામુપદિષ્ટમ્, ' આરાહિય ' આરાધિતમ્ ત્રિફરણત્રિગોર્ગ-સમ્યગાચરિતમ્,
' આણાપ ' આજ્ઞયા=સર્વજ્ઞચનાનુમારેણ ' અણુપાલિય ' અનુપાલિત ભવતિ ।
અવમ્=અમુના પ્રકારેણ ' નાયમુણિણા ' જ્ઞાતમુનિના=જ્ઞાતાગ્ન્યપ્રસિદ્ધક્ષત્રિયવશોદ્ર-
વેન મુનિના ભગવતા મહાવીરેણ ' પણ્ણવિય ' પ્રજ્ઞાપિત=શિષ્યેભ્યઃ સામાન્યતયા
કથિત, ' પરુવિય ' પ્રરૂપિત-ભેદાનુભેદપ્રદર્શનપૂર્વક કથિત, ' પસિદ્ધ ' પ્રસિદ્ધ=
જિનવચને પ્રરૂપ્યાત, ' સિદ્ધવરસાસનમિણ ' સિદ્ધવરશાસનમિદ, સિદ્ધાના=નિષ્ઠિ-
તાર્થાના વરશાસન-પ્રધાનાજ્ઞારૂપમ્, ' આઘવિય ' આર્યાત=પર્યતોભાવેન કથિત,

(તીરિય) પૂર્ણરૂપ સેવે ઇસકા સેવન કરતે હું (નિદિય) દુસરો કો
ઇસકે પાલન કરને કા ઉપદેશ દેતે હું, (સમ્મ) ત્રીન કાળ ત્રીન યોગો
સે ઇસ કી ખલી પ્રકાર સે (આરાહિય) અનુપાલના કરતે હું (આણાપ
અણુપાલિય ભવહ) ડન કે દ્વારા યહ યોગ તીર્થકર પ્રશુ કી આજ્ઞાનુ-
સાર હી પાલિત હોતા માના જાતા હૈ । (અવ) ઇસ પ્રકાર સે (નાય-
મુણિણા ભગવચા) જ્ઞાતનામક પ્રસિદ્ધ ક્ષત્રિયવશ મેં ઉત્પન્ન હુઅ મુનિ-
રાજ ભગવાન મહાવીર ને (પણ્ણવિય) શિષ્યોં કે લિયે ઇસ વિષય કા
સામાન્યરૂપ સે સમજાયા હૈ । (પરુવિય) વાદ મેં ભેદ પ્રભેદ પૂર્વક
ઉત્તકા કથન કિયા હૈ । ઇસીલિયે (પસિદ્ધે) જિનવચન મેં યહ પ્રરૂપ્યાત
હુવા હૈ અર્થાત્ જિનવચન કે અનુસાર હી આચાર્ય પરપરા સે ઇસકા
પાલન કરના ઇસી રૂપ સે ચલા આ રહ્યા હૈ । તથા (સિદ્ધવરસાસન-
મિણ) ભૂતકાલ મેં જિતને ખી સિદ્ધ હો ચુકે હૈ ડનકા યહ પ્રધાન
આજ્ઞારૂપ શાસન હૈ । (આઘવિય) એસા ભગવાન મહાવીર પ્રશુ ને

પાલન કરવાનો અન્યને ઉપદેશ આપે છે “ સમ્મ ” ત્રણ કરણ ત્રણ યોગાર્થી
તેનું સારી રીતે “ આરાહિય ” અનુપાલન કરે છે, “ આણાપ અણુપાલિય ભવહ ”
તેમના દ્વારા આ યોગનું, તીર્થ કર પ્રભુની આજ્ઞા અનુસાર પાલન થાય છે
એમ માનવામાં આવે છે ” “ અવ ” આ પ્રકારે “ નાયમુણિણા ભગવચા ”
જ્ઞાત નામના પ્રસિદ્ધ ક્ષત્રિય વશમાં ઉત્પન્ન થયેલ મુનિરાજ ભગવાન મહાવીરે
“ પણ્ણવિય ” શિષ્યોને માટે આ વિષય સામાન્ય રૂપે સમજાવ્યો છે, “ પરુવિય ”
ત્યાર બાદ ભેદ પ્રભેદ સહિત તેનું કથન કર્યું છે તેથી “ પસિદ્ધે ” જિનવ-
ચનમાં તે પ્રખ્યાત થયેલ છે એટલે કે જિનવચન અનુસાર જ આચાર્ય પર-
પરાથી તેનું આ રીતે પાલન કરવાનું આવડ્યું આવે છે તેથી “ સિદ્ધવરસા-
સનમિણ ” ભૂતકાળમાં જેટલા સિદ્ધો થઈ ગયા છે તેમનું આ મુખ્ય આજ્ઞા
રૂપ શાસન છે “ આઘવિય ” એવું ભગવાન મહાવીરે સર્વે આપથી તેને

॥ अथ चतुर्थ सवरद्वारं प्रारभ्यते ॥

व्याख्यात तृतीयमदत्तादानविरमणनामक सवरद्वारम् । अथ ब्रह्मचर्य नामक क्रमप्राप्त चतुर्थं सवरद्वारमभिधीयते । अस्य पूर्वेण सहायमभिसम्बन्ध-पूर्वत्रादत्ता दानविरमणमुक्तं तच्च मैथुनविरमणमन्तरेण न समप्रतीत्यनेन सम्बन्धेनायातमिदं चतुर्थं सवरद्वारम् । तस्येदमादिमं सूत्रम्—‘जवू’ इत्यादि ।

मूलम्—जवू । एत्तो य वभचेर उत्तमतवनियमनाणदसण-
चरित्तसमंतविणयमूल जम नियमगुणप्पहाणजुत्तं हिमवतमह-
ततेयमत पसत्थगभीरयिमियमज्झं अज्जवसाहुजणाचरिय मो-
क्खग्ग विसुद्धसिद्धगइनिलय सासयमव्वावाहमपुणवभवं पसत्थं
सोम्मं सुह सिवमचलमक्खयकर जइवरसारक्खिय सुचरियं
सुभासिय नवरि मुणिवरेहि महापुरिसधीरसूरधम्मियधिइमताण
य सया विसुद्ध भव भव्वजणाणुचरिय निस्सकियं निब्भय
नित्तुसं निरायास निरुवलेव निव्वुइघर नियमनिप्पकंप तव-

चतुर्थ सवर द्वार प्रारभ—

तृतीय अदत्तादान विरमण नामक सवरद्वार का व्याख्यान हो चुका, अब क्रम प्राप्त चतुर्थ ब्रह्मचर्य नामका सवरद्वार का व्याख्यान प्रारभ किया जाता है । इसका पूर्व सवरद्वार के साथ इस प्रकार से संबंध है—जयतक मैथुन विरमण नहीं होगा तब तक तृतीय सवरद्वार की संभवता नहीं हो सकती, इसलिये उसके अनन्तर सूत्रकार अब इस चतुर्थ सवरद्वार को प्रारभ कर रहे हैं । उसका यह सर्व प्रथम सूत्र है—‘जवू’ इत्यादि ० ।

थोथा सवरद्वारनो प्रारभ

त्रीण अदत्तादाननो विरमणु नामना सवरद्वारनु वल्लुन पूरु थयु, हुवे अनुडंभे आवता थोथा ब्रह्मचर्य नामना सवरद्वारनु वल्लुन शरु उरवाभा आवे छे तेनो आगणना सवरद्वार साथे आ प्रभाणु स भध छे—ज्या सुधी मैथुन विरमणु थाय नही ला सुधी त्रीणु सवरद्वार सलपित थध राक्षु नथी, तेथी तेनु ज्थन ज्या पछी हुवे सूत्रकार आ थोथा सवरद्वारनी शरुआत उरे छे तेनु सौथी पछेछु सूत्र आ प्रभाणु छे—“जवू” इत्यादि—

इसके अनुसार अपनी प्रत्येक प्रवृत्ति पर अकुशल रखते हैं उनके अशुभ अध्यवसाय रुक जाते हैं, नवीन कर्मों का उनको यथ नहीं होता है और सचित्त कर्मों की निर्जरा होती रहती है। पापों का स्रोत इसके प्रभावसे यथ हो जाता है। यह अपरिस्त्रायी आदि पिशेषणोंवाला है। त्रिकालवर्ती समस्त अरिहत भगवन्तोंने इसका पालन किया है। उन्हीं के अनुसार भगवान् महावीर प्रभु ने भी इसका उन्हीं की मान्यतानुसार स्वरूपादि प्रदर्शन द्वारा कथन किया है। अपनी परिपदा में आये हुए समस्त जीवों को इसी प्रकार से इसका विवेचन किया है, अतः यह भगलभय है इसे धारण कर प्रत्येक जीव को-समस्त सद्गी पवेन्द्रिय पर्याप्त मनुष्यों को-अपना जन्म सफल बना लेना चाहिये। इस प्रकार जब स्वामी को इस तृतीय सवर द्वार के विषय में सुधर्मास्वामी ने समझाया है ॥ सू० ११ ॥

॥ तृतीय सवरद्वार समाप्त ॥

પ્રવૃત્તિ પર અકુશલ મૂકે છે, તેમના અશુભ અધ્યવસાય અટકી જાય છે, તેમને નવા કર્મોનો બધ બધાતો નથી, અને સચિત્ત કર્મોની નિર્જરા થતી રહે છે તેના પ્રભાવથી પાપોનો સ્રોત બધ પડી જાય છે તે અપરિસ્ત્રાયી આદિ વિશેષણોથી યુક્ત છે ત્રિકાલવર્તી સમસ્ત અરિહતોએ તેનું પાલન 'દેહ' છે તેમના પ્રમાણે જ ભગવાન મહાવીરે તેનું તેમની માન્યતા અનુસાર સ્વરૂપાદિ પ્રદર્શન દ્વારા કથન કર્યું છે પોતાની પરિપદામાં આવેલ સમસ્ત જીવો સ્ત્રીય એ જ પ્રકારે તેનું વિવેચન કર્યું છે, તેથી તે ભગલભય છે તેને ધારણ કરીને પ્રત્યેક જીવે-સમસ્ત પવેન્દ્રિય પર્યાપ્ત મનુષ્યોએ-પોતાનો જન્મ સફળ કરવો જોઈએ આ પ્રમાણે સુધર્મા સ્વામીએ જ બૂસ્વામીને આ ત્રીજા સવર દ્વાર વિષે સમજાવ્યું છે ॥ સૂ ૧૧ ॥

॥ તૃતીય સવરદ્વાર સમાપ્ત

તથા-‘ જમનિયમગુણપ્પદાણજુત્ત ’ યમનિયમગુણપ્રાપ્તિયુક્તમ્=તત્ર-યમાઃ=પ્રાણાતિ
પાતવિરમણાદય, નિયમાઃ=અભિગ્રહાદયસ્તે ચ તે ગુણપ્રવાના. = ગુણમુખ્યાઃ-
ગુણાના મધ્યે યમા નિયમાશ્ચ મર્વત શ્રેષ્ઠ इत्यर्थ, તર્થયુક્તમ્, તથા-‘ હિમવતમહત્તેય-
મત ’ હિમવત્મહત્તેજસ્વિ=હિમવાનિત=પર્વતવિશેષ इय महद्=વિશાલ તેજસ્વિ ચ
યત્તત્તથોક્ત, યમ મત્ર-યથા હિમવાન્ સકલપર્વતાપેક્ષયા મહાન્ તેજસ્વી ચ
વર્તેતે, તથેવેદ વ્રત્તચ સકલવ્રતાપેક્ષયા વિશાલ તેજસ્વિવેતિ । ઉક્ત ચ—

“ વ્રતાના વ્રહ્મચર્યંદિ, નિર્દિષ્ટ ગુરુક વ્રતમ્ ।

તજ્જન્યપુણ્યસમાર, સયોગાદ્ ગુરુ રુચ્યતે ॥ ૧ ॥” ઇતિ ।

તથા— ‘ પસત્યગમીરથિમિયમજ્ઞ ’ પ્રશસ્તગમીરસ્તિમિતમખ્ય પ્રશસ્ત=શુભ
ગમ્મીરમ્=અગાધમ્, સ્તિમિતં=સ્થિર ચ મત્યમ્=અન્ત. કરણ યસ્મિન્ સતિ તત્તથો

(જમનિયમગુણપ્પદાણજુત્ત) યદ્ પ્રાણાતિપાત વિરમણ આદિ યમોં સે
એવ અભિગ્રહ આદિ નિયમોં સે કિ જો સમસ્તગુણો મેં શ્રેષ્ઠ માને ગયે
હેં યુક્ત હૈ, તથા (હિમવતમહત્તેયમત) જો હિમવાન્ પર્વત કી તરહ
વિશાલ ઓર તેજસ્વી હૈ, અર્થાત્ જિસ પ્રકાર હિમવાન્ પર્વત સકલ
પર્વતોં કી અપેક્ષા મહાન્ ઓર તેજસ્વી માના જાતા હૈ, ડસી પ્રકાર યહ
વ્રહ્મચર્ય વ્રત મી સકલવ્રતોં કી અપેક્ષા વિશાલ તેજસ્વી વ્રત માના ગયા
હૈ । કહા મી હૈ—

“ વ્રતાના વ્રહ્મચર્યંદિ, નિર્દિષ્ટ ગુરુક વ્રતમ્ ।

તજ્જન્ય પુણ્યસમાર, -સયોગાદ્ ગુરુરુચ્યતે ॥ ૧ ॥

વ્રતાં મે સપ સે વહા વ્રત વ્રહ્મચર્ય હૈ । કયોં કિ વ્રહ્મચર્ય કે પાલન
કરને સે જો પુણ્યસમૂહ પ્રાપ્ત હોતા હૈ—ડસી કે સબધ સે ગુરુ માના જાતા
હૈ । અર્થાત્— ડસી વ્રહ્મચર્ય કા પાલક હી સચ્ચા ગુરુ કહલાતા હૈ ।
તથા—(પસત્યગમીરથિમિયમજ્ઞ) હસ વ્રહ્મચર્ય કે સદ્ગતિ સે પાલન

“ જમનિયમગુણપ્પદાણજુત્ત ” પ્રાણાતિપાત વિરમણ આદિ યમોથી અને અભિ-
ગ્રહ આદિ નિયમોમાથી, ડે જે સવે શુભોમા શ્રેષ્ઠ મનાય છે યુક્ત છે તથા
“ હિમવતમહત્તેયમત ” જે હિમાલય પર્વતની જેમ વિશાળ અને તેજસ્વી
છે, એટલે જે જેમ હિમાલય પર્વત સઘળા પર્વતો કરતા મહાન અને તેજસ્વી
મનાય છે તેમ આ વ્રહ્મચર્ય વ્રતને પણ સઘળા વ્રતોના કરતા વિશાળ તેજસ્વી
વ્રત માનવામા આવે છે ડહુ પણ છે—

“ વ્રતાના વ્રહ્મચર્યંદિ, નિર્દિષ્ટ ગુરુક વ્રતમ્ ।

તજ્જન્યપુણ્યસમાર, -સયોગાદ્ ગુરુરુચ્યતે ॥ ૧ ॥

વ્રતોમા સૌથી મોટું વ્રત વ્રહ્મચર્ય છે કારણ જે વ્રહ્મચર્યના પાલનથી
જે પુન્ય સમૂહ પ્રાપ્ત થાય છે—તેના કારણે તેને ગુરુ મનાય છે એટલે જે
આ વ્રહ્મચર્યના પાલક જે સાચો ગુરુ ડહવાય છે તથા “ પસત્યગમીરથિ

સંજમમૂલદલિયણિમ પંચમહવ્યયમુરવિણય સમિદ્ગુત્તિગુત્ત
 જ્ઞાણવરકવાડસુકયરવલ્લખમઙ્ગપ્પદિણ્ણફલિહ સત્તદ્ધવઢોચ્છદ્ધય
 દુગ્ગદ્ધપહં સુગદ્ધપહદેસગ ચ લોગુત્તમ ચ વયમિણ પડમસરતલા-
 ગપાલિભૂય મહાસગડઅરગતુવમૂયં મહાવિડિમરુસલ્લમ્મધમૂયં
 મહાનગરપાગારકવાડફલિહમૂયં રજ્જુપિણ્ણોવ્વદ્ધકેહ વિસુ-
 ણેગગુણસંપિણ્ણદ્ધં ॥ સૂ. ૧ ॥

ટીકા—‘જવૂ’ હે જમ્વૂ । ‘एत्तो य’ इत्य=अदत्तादानविरमणसरद्वार-
 समाप्त्यनन्तर च ‘वमचेर’ ब्रह्मचर्यं नाम चतुर्थं सारद्वारमभिधीयते । तर्हि
 स्वरूपमित्याह—‘उत्तमतवनियमनाणदसणचरित्तविणयमूल’ उत्तमतपोनियमज्ञानद-
 र्शनचारित्रियनियमूलम्=तत्र उत्तमा=प्रधानाः ये तपो नियमज्ञानदर्शनचारित्रविनया
 तत्र-तपः=अनशनादिक द्वादशविधम्, नियमा=अभिग्रहादय, ज्ञान=पदार्थानां
 विशिष्टबोधः, दर्शनम्=तत्त्वश्रद्धानरूपम्, चारित्र=सावधयोगविरतिलक्षणम्, वि-
 नयः=अभ्युत्थानादिलक्षणः, एतेषां द्वन्द्वः, तेषां मूलमिवमूल कारण यत्तत्तथोक्तम्,

ટીકાર્થ—(જવૂ) હે જમ્વૂ ! (एत्तो य) अदत्तादानविरमण नामक
 सारद्वार की समाप्ति के अनन्तर अब मैं (वमचेर) ब्रह्मचर्य नामक
 चतुर्थ सार द्वार को कहता हू । उसका स्वरूप इस प्रकार है—(उत्तम-
 तवनियमनाणदसणचरित्तविणयमूल) अनशन आदि बारह प्रकार के
 उत्तमतपो का, उत्तम अभिग्रह आदि रूप नियमों का, पदार्थों का
 विशिष्टबोध रूप उत्तमज्ञान का, पदार्थों का श्रद्धानरूप उत्तमदर्शन का
 सावधयोग विरतिरूप उत्तम चारित्र का, और अभ्युत्थान आदि रूप
 उत्तम विनय का, मूल की तरह यह ब्रह्मचर्य मूल कारण है, तथा-

ટીકાર્થ—“જવૂ” હે જમ્વૂ ! “एत्तो य” अदत्तादान विरमण नामना
 सारद्वारની समाप्ति पश्चीं હવે હું “वमचेर” ब्रह्मचर्य नामना योथा सार
 द्वारनु वर्युंन કરે તેनु સ્વરૂપ આ પ્રમાણે છે “उत्तमतवनियमनाणदसणचरित्त
 विणयमूल” अनशन आदि बारह प्रकारना उत्तम तपनु, उत्तम अभिग्रह आदि
 रूप नियमोनु, पदार्थोना विशिष्ट बोधरूप उत्तम ज्ञाननु, पदार्थोना श्रद्धान
 रूप उत्तम दर्शननु सावधयोग विरतिरूप उत्तम चारित्रनु, अने अभ्युत्थान
 आदि रूप उत्तम विनयनु, भूषणी जेम आ ब्रह्मचर्य भूषणरनु છે तथा

તથા-‘ સુહ ’ સુખ-સુખસ્વરૂપત્વાત્, ‘ સિવ ’ શિવમ્=નિરુપદ્રવત્વાત્, તથા-
‘ અચલ ’ અચલમ્=સ્પન્દનાદિર્જિતત્વાત્, તથા ‘ અક્ષયકર ’ અક્ષયકરમ્=અક્ષ-
યો મોક્ષસ્તત્કરમ્=ભવગીજાકુરાજનનાત્, તથા-‘ જઙ્ગરસારસ્થિય ’ યતિવરસં-
રક્ષિતમ્=યતિવરૈઃ= મુનિપ્રધાનૈઃ તીર્થઙ્ગરગણધરાદિભિઃ સરક્ષિત=પરિપાલિતમ્,
તથા ‘ સુચરિય ’ સુચરિતમ્=શોભનાનુષ્ઠાનમ્, તથા-‘ મુનિવરેહિં ’ મુનિવરૈઃ=
તીર્થકરાદિભિઃ ‘ નવરિં ’ કેવલ ‘ સુભાસિય ’ સુભાપિત=મૃદ્ધ પ્રતિપાદિતમ્, ચ
=પુનઃ-ઇદં બ્રહ્મચર્યં ‘ મહાપુરિસવીરસૂરધમ્મિયધિહમતાળ ’ મહાપુરુષધીર શરધા-
ર્મિકધૃતિમતામ્=મહાપુરુષાઃ=પુરુષથ્રેષ્ઠા, ધીરશૂરાઃ=ધીગર્ણા મધ્યે શૂરા =અત્ય
ન્તસાદસસપન્નાઃ, ધાર્મિકા =ધર્મપરાયણાઃ, ધૃતિમન્તો=ધૈર્યવન્તઃ, એવા કર્મધાર-
યઃ, તેવા તયોક્તાનામ્ ‘ સયા ’ સદા=કુમારાદિસર્ગાસ્થાસુ ‘ સુવિસુદ્ધ ’ સુ-

હોને સે યહ પ્રશસ્ત હૈ । (સોમ્મ) સમસ્ત મનુષ્યોં કે મન કો પ્રફુલ્લિત
કરને ચાલા હોને સે યહ મૌમ્ય હૈ । (સુહ) સુખસ્વરૂપ હોને સે યહ
અક સુખ હૈ । (સિવમચલમઅચલકર) ઉપદ્રવ રહિત હોને સે યહ
શિવરૂપ હૈ । સ્પન્દનાદિ ક્રિયા સે વર્જિત હોને કે કારણ યહ અચલ હૈ ।
અવરૂપ બીજ કે અકુરકા ઉત્પાદક નહીં હોને સે અક્ષય-મોક્ષ વા કારક
હૈ અતઃ યહ અક્ષયકર હૈ-। (જઙ્ગરસારસ્થિય) મુનિપ્રધાન-તીર્થકર
એવ ગણધર આદિ દેવોં દ્વારા પાલા ગયા હોને સે યહ યતિવર સરક્ષિત
હૈ । (સુચરિય) શોભન આચાર રૂપ હોને સે યહ સુચરિત હૈ । (નવરિં
મુનિવરેહિં સુભાસિય કેવલ મુનિવરોં-તીર્થકરોં દ્વારા હી યહ અચ્છી
તરહ સે પ્રતિપાદિત કિયા ગયા હૈ । તથા યહ બ્રહ્મચર્ય મહાપુરિસ-
ધીર-સૂર- ધમ્મિય-ધિહમતાળ ય સયા વિસુદ્ધ) મહાપુરુષોં કા, ધીરોં કે

“ પસત્થ ” નિર્ભંજ હોવાથી તે પ્રશસ્ત છે “ સોમ્મ ” સમસ્ત મનુષ્યોના
મનને પ્રફુલ્લિત કરનાર હોવાથી તે મૌમ્ય છે “ સુહ ” સુખસ્વરૂપ હોવાથી તે
એક સુખ છે “ સિવમચલમઅચલકર ” ઉપદ્રવ રહિત હોવાથી તે શિવ-
રૂપ છે સ્પન્દનાદિ ક્રિયાથી રહિત હોવાથી તે અચળ છે ભવરૂપ બીજના
અકુરતુ ઉત્પાદક નહીં હોવાથી તે અક્ષય-મોક્ષકારક છે, તેથી તે અક્ષયકર
“ જઙ્ગરસારસ્થિય ” મુનિપ્રધાન-તીર્થકર અને ગણધરો આદિ દેવો દ્વારા
પાળાયેલા હોવાથી તે યતિવર સરક્ષિત છે “ સુચરિય ” સુદર આચારરૂપ
તે સુચરિત છે “ નવરિં મુનિવરેહિં સુભાસિય ” એવા મુનિવરો-તીર્થકરો
દ્વારા જ તેનું સારી રીતે પ્રતિપાદન કરાયું છે તથા “ મહાપુરિસ-ધીર-સૂર-
ધમ્મિય-ધિહમતાળ ય સયા વિસુદ્ધ ” મહાપુરુષો, ધીરોની વચ્ચે પણ ધીર

ક્તમ્, બ્રહ્મચારિણોઽન્તઃકરણ પ્રશસ્તતાગામ્ભીર્યસ્થેર્યયુક્ત મયતીતિ માનઃ । તથા
 - ‘ અજ્ઞવસાહુજનાચરિય ’ આર્જવમાપુજનાચરિતમ્=આર્જવે=સરલભાવે સલગના યે
 સાધુજનાસ્તૈરાચરિતમ્ । તથા ‘ મોક્ષમગ્ને ’ મોક્ષમાર્ગઃ=મોક્ષસ્થાનપ્રાપક ઇત્યર્થ
 તથા ‘ વિશુદ્ધસિદ્ધિગઙ્ગાનિલયે ’ વિશુદ્ધસિદ્ધિગતિનિલય =વિશુદ્ધા=રાગાદિદોષ
 જિતત્વાન્નિર્મલાયા સિદ્ધિઃ=કૃતકૃત્યતા, સૈવ ગમ્યમાનત્યાદ્ ગતિમ્તસ્યા નિલયો-
 ગ્રહમ્=સિદ્ધિગતિપ્રાપકત્વાત્સિદ્ધિસ્થાનમિત્યર્થ, તથા ‘ સાસય ’ શાશ્વત=માધ-
 પર્યવસિતશિવસુખજનકત્વાત્, ‘ અવ્યાવાહ ’ અવ્યાવાધ=શારીરિકમાનસિન્દુઃ
 સ્વર્જિતત્વાત્ ‘ અપુણ્નમય ’ અપુનર્ભવમ્=પુનર્જન્મપ્રતિરોધકત્વાત્, ‘ પમત્થ ’
 પ્રશસ્તમ્-નિર્મલત્વાત્, તથા-‘ સૌમ્ય ’ સૌમ્યમ્—સમગ્રજનમનોમોહજનકત્વાત્,

કર્તા કા અતઃકરણ શુભ, ગમીર-અગાધ, એ સ્થિર હો જાતા હૈ । તથા
 (અજ્ઞવસાહુજનાચરિય) યહ બ્રહ્મચર્ય, આર્જવ મેં-સરલભાવ મેં-સલગ
 બને હુએ સાધુજનોં કે દ્વારા આચરિત ક્રિયા જાતા હૈ । તથા-(મોક્ષ
 મગ્ને) યહ બ્રહ્મચર્ય અપને પાલનકર્તા કો મોક્ષ સ્થાન કો પ્રાપ્તિ કરાને
 બાલા હોતા હૈ તથા (વિશુદ્ધસિદ્ધિગઙ્ગા નિલયે) યહ બ્રહ્મચર્ય વિશુદ્ધ-
 રાગાદિ દોષો સે વર્જિત હોને કે કારણ નિર્મલ-જો કૃતકૃત્યતા રૂપ
 ગતિ હૈ ઉસકા ઘર હૈ-સિદ્ધિ ગતિ કા પ્રાપ્તિ હોને સે સિદ્ધિ કા સ્થાન
 હૈ તથા (સાસય) સાધ્યપર્યવસિત શિવ સુખ કા જનક હોને સે યહ
 બ્રહ્મચર્ય શાશ્વત હૈ (અવ્યાવાહ) શારીરિક એવ માનસિક દુઃખોં સે
 રહિત હોને કે કારણ યહ બ્રહ્મચર્ય અવ્યાવાધ-બાધા સે રહિત હૈ ।
 (અપુણ્નમય) ઇસકે પ્રભાવ સે સસાર મે જીવ કા પુનર્જન્મ નહીં હોતા,
 ઉસકા યહ પ્રતિરોધક હૈ ઇસલિયે યહ અપુનર્ભવરૂપ હૈ । (પમત્થ/નિર્મલ

મિયમજ્ઞ ” તે બ્રહ્મચર્યના પાલનથી તેનું પાલન કરનારનું અતઃકરણ શુભ,
 ગમીર, અગાધ, અને સ્થિર થઈ જાય છે તથા “ અજ્ઞવસાહુજનાચરિય ”
 આ બ્રહ્મચર્ય, આર્જવ, સરલ ભાવમા લીન થયેલ સાધુજનો દ્વારા આચરવામા
 આવે છે તથા “ મોક્ષમગ્ને ” આ બ્રહ્મચર્ય, તેનું પાલન કરનારને મોક્ષની
 પ્રાપ્તિ કરાવનાર હોય છે તથા “ વિશુદ્ધસિદ્ધિગઙ્ગાનિલયે ” આ બ્રહ્મચર્ય વિશુદ્ધ
 રાગાદિ દોષોથી રહિત હોવાને લીધે નિર્મળ-કે કૃતકૃત્યતા રૂપ ગતિ છે તેનું
 ઘર છે-સિદ્ધિગતિ પ્રાપ્ત કરાવનાર હોવાથી સિદ્ધિનું સ્થાન છે, તથા “ સાસય ”
 કાયમી શિવ સુખનું જનક હોવાથી આ બ્રહ્મચર્ય શાશ્વત છે “ અવ્યાવાહ ”
 શારીરિક અને માનસિક દુઃખોથી રહિત હોવાને કારણે આ બ્રહ્મચર્ય અવ્યા-
 વાધ-આધાથી રહિત છે, “ અપુણ્નમય ” તેના પ્રભાવથી સસારમા જીવને
 પુનર્જન્મ લેવો પડતો નથી તેનું તે પ્રતિરોધક છે તેથી તે અપુનર્ભવરૂપ છે .

તયવેદ બ્રહ્મચર્યમપિ શુભ્રમિતિ ભાર., તથા-‘ નિરાયાસ ’ નિરાયાસ=તેરાજન કમ્, ‘ નિસ્વલેવ ’ નિરૂપલેપમ્-વિપયસ્નેહવર્જિતમ્, તથા-‘ નિન્દુહર ’ નિર્વૃત્તિગૃહમ્=નિવૃત્તેઃ=ચિત્તસમાયેઃ ગૃહ=સ્થાનમ્, ‘ નિયમનિષ્પ્રકમ્પ ’ નિયમનિષ્પ્રકમ્પ=નિયમેન=નિશ્ચયેન, નિષ્પ્રકમ્પ=અવિચલમ્-નિરતિચારત્યાત્, તથા-‘ તવ

રૂપ તુપ સે વિહીન હોને કે કારણ તિલકુલ શુભ્ર-પવિત્ર છે । (નિરાયાસ) હમ્કે પાલન કરને સે કિસી ખી પ્રકાર કા પાલનકર્તા કો આયાસ-અર્થાત્-કષ્ટ નહીં ઉઠાના પડતા હૈં ડસલિયે સ્નેહ કા અજનક હોને સે યહ નિરાયાસરૂપ હૈં । (નિસ્વલેવ) વૈપયિક પદાર્થો કો ઓર બ્રહ્મ-ચારી કે ચિત્ત મે થોડા સા ખી સ્નેહ-રાગભાવ નહીં હોતા હૈં, અતઃ વિપય સ્નેહવર્જિત હોને સે યહ બ્રહ્મચર્ય નિરૂપલેપ હૈં । (નિન્દુહર) બ્રહ્મચારી કે હિ ચિત્ત કી સ્વસ્થતા રહતી હૈં, ક્યોં કિ વિપયોં કી ઓર ડસકી લાલસા નહીં જાતી હૈં, અત ડસ સવધ કો લેકર ડસકે ચિત્ત મેં અસમાધિરૂપ આકુલ વ્યાકુલ પરિણતિ નહીં રહતી હૈં ઇસલિયે યહ બ્રહ્મચર્ય ચિત્ત સમાધિ કા ણક ઘર હૈં । (નિયમનિષ્પ્રકમ્પ) અતિચારોં સે વિહીન હોને કે કારણ યહ બ્રહ્મચર્ય નિયમ સે-નિશ્ચય સે નિષ્પ્રકમ્પ-અવિચલિત હોતા હૈં । તાત્પર્ય યહ હૈં કિ ગૃહસ્થોં કે બ્રહ્મચર્ય વ્રત મેં અતિચાર લગ સકને કે કારણ ડનકા વહ બ્રહ્મચર્ય વિચલિત નહીં હોતા હૈં પરંતુ સગલ સયમી જનોં કા બ્રહ્મચર્ય અતિચારોં સે વિહીન હોતા હૈં, ઇમલિયે યહ યહા અવિચલિત કહા ગયા હૈં । (તવસજમ-

હોવાથી ત’ન શુભ્ર પવિત્ર ડે “ નિરાયાસ ” તેનુ પાલન ઠરવાથી પાલન ક્ષતિને ઘોઈ પણ પ્રકારને આયાસ-ખેદ એટલે ડે ઘટ ઉઠાવેલો પરંતુ નથી તેથી ખેદનુ જનક ન હોવાને કારણે તે નિરાયાસરૂપ છે “ નિસ્વલેવ ” વૈપયિક પદાર્થોની તરફ બ્રહ્મચારીના ચિત્તમા જરી પણ સ્નેહ-રાગભાવ થતો નથી, તેથી વિષયસ્નેહ રહિત હોવાથી બ્રહ્મચર્યને નિરૂપલેપ છે “ નિન્દુહર ” બ્રહ્મચારીના ચિત્તની સ્વ-ચતા ગ્હે છે, કારણ વિષયોની પ્રત્યે તેને લાલસા થતી નથી તે અબધને લીધે તેના ચિત્તમા અસમાધિરૂપ આકુળ વ્યાકુળતાના રૂપ પરિણતિ રહેતી નથી તેથી આ બ્રહ્મચર્ય ચિત્ત સમાધિનુ એક ઘર છે “ નિયમનિષ્પ્રકમ્પ ” અતિચારોથી રહિત હોવાને કારણે આ બ્રહ્મચર્ય અવશ્ય નિષ્પ્રકમ્પ-અવિચલિત હોય છે તેનુ તાત્પર્ય એ છે કે ગૃહસ્થોના બ્રહ્મચર્ય વ્રતમા અતિચાર લાગી શકે છે તે કારણે તેમનુ બ્રહ્મચર્ય અવિચલિત હોતુ નથી, પણ મક્કળ સયમીજનોનુ બ્રહ્મચર્ય અતિચારોથી રહિત હોય છે, તે

विशुद्ध=निर्दोषम्, एषामेव प्रत्यक्षचर्यं तिर्दोषं भवतीति भावः, तथा-‘ भव्य
भव्य=कल्याणरूपम्, ‘ भव्यगुणानुचरितं ’ भव्यजनानुचरितम्=भव्यजनसमारा
धितम्, तथा-‘ निम्नक्रिय ’ नि शङ्कित, प्रत्यक्षचारी हि विषयस्मृदाशून्यत्वाच्च
नाना मध्ये निःशङ्कनीयो भवतीति प्रत्यक्षचर्यमपि निश्शङ्कितम्, तथा ‘ निम्नय ’
निर्भय, ब्रह्मचारिणो हि निर्भया भवन्ति, निर्भयताकारणत्वात् प्रत्यक्षचर्यमपि निर्भ
यम् तथा-‘ निनुम ’ निस्तुप-विशुद्धमित्यर्थः, यथा-तुपनिर्गतं तण्डुल शुभ्र भवति

भी बीच में धीरे रहे जाने वाले शूरों का अत्यन्त मात्स्यपन्न न्यक्तियों के, धार्मिक पुरुषों के, और धैर्यशाली पुरुषों को यह सदा-कुमार आदि अवस्थाओं में भी सुविशुद्ध-निर्दोष रहता है। (भग्न) यह ब्रह्मचर्य कल्याणरूप है। (भग्नजणाणुचरिय) भग्नपुरुषों द्वारा यह आराधित किया हुआ है। (निस्सक्रिय) यह ब्रह्मचर्य निश्शक्ति होता है। क्यों कि ब्रह्मचारी विषयलालसा से शून्य होने के कारण मनुष्यों के भीतर किसी भी तरह से शकास्पद नहीं होता है अतः यह प्रभाव उसके ब्रह्मचर्य का ही है इसीलिये यहाँ पर सूत्रकार ने निश्शक्ति वृत्ति का कारण होने से ब्रह्मचर्य को भी निश्शक्ति कहा है। इसी तरह यह ब्रह्मचर्य (निर्भय) निर्भय होता है। क्यों कि ब्रह्मचर्य को पालन करने वाले पुरुष रत्न सर्वत्र निर्भय रहा करते हैं, अतः निर्भयता का कारण होने से ब्रह्मचर्य को निर्भय विशेषण से सूत्रकार ने विशिष्ट किया है। तथा यह ब्रह्मचर्य (निस्तुष) निस्तुष है—तुषविहीन तण्डुल जिस प्रकार शुभ्र होता है उसी प्रकार यह ब्रह्मचर्य भी विषय लालसा

તરીકે ઓળખાતા શૂરો, અત્યંત સાહસયુક્ત વ્યક્તિઓ, ધાર્મિક પુરુષો, અને ધૈર્યશાળી પુરુષોને તે સદા કુમાર આદિ અવસ્થાઓમાં પણ સુવિશુદ્ધ નિર્દોષ રહે છે “ મન્વ ” આ બ્રહ્મચર્ય વ્યાખ્યાન છે “ મન્વજ્ઞાનુચરિય ” લબ્ય પુરુષો દ્વારા તેનું અરાધન થાય છે “ નિસ્સક્રિય ” આ બ્રહ્મચર્ય નિશ્ચિત હોય છે, કારણ કે બ્રહ્મચારી વિષય લાલસા રહિત હોવાથી મનુષ્યોમાં કોઈ પણ પ્રકારે શકાને પાત્ર થતો નથી આ તેના બ્રહ્મચર્યનો જ પ્રભાવ હોવાથી અહીં સૂત્રકારે નિશ્ચિત વૃત્તિનું ધારણ હોવાથી બ્રહ્મચર્યને પણ નિશ્ચિત કહ્યું છે એ જ પ્રમાણે આ બ્રહ્મચર્ય “ નિઃસ્વપ્ન ” નિર્ભય હોય છે કારણ કે બ્રહ્મચર્યનું પાલન કરનાર પુરુષો સર્વત્ર નિર્ભય રહી શકે છે તેથી નિર્ભયતાનું કારણ હોવાથી બ્રહ્મચર્યને સૂત્રકારે નિર્ભય વિશેષણ લગાડ્યું છે તથા આ બ્રહ્મચર્ય “ નિઃક્રુષ ” નિસ્તુષ-તુષ વિહીન (ક્ષેતરા વિનાના) ઓળખા જેમ શુષ્ક હોય છે તેમ આ બ્રહ્મચર્ય પણ વિષય લાલસા રૂપે તુષ વિહીન

હૃદયેસગ ચ ' સુગતિપથદેશક ચ=સુગતે =સ્વર્ગાપવર્ગમ્ પન્થા'—સુગતિપથસ્તસ્ય
દેશક=દર્શક યત્તત્ તથા—' લોગુત્તમ ચ ' લોકોત્તમ ચ=લોકપ્રવેષ્ટશ્ચ 'વયમિણ'
ત્રતમિદમ્—ઇદં વ્રત્તચર્યરૂપ ત્રત 'પદમસરતલાગપાલિભૂય' પદ્મસરસ્વતીલાગપાલિભૂતમ્
—પદ્મપ્રધાન: સરસ્વતીલાગ:—પદ્મસરસ્વતીલાગ, પદ્મસરસ્વતીલાગઐવ સુખ-ત્વેન પ્રમોદ-કત્વેન
હરત્વેન ચ સમુપાદેયત્વાદ્ ધર્મોઽપિ પદ્મસરસ્વતીલાગ:, તસ્ય પાલિભૂત=રક્ષકત્વેન
પાલિકરૂપ યત્તત્, તથા ' મહામગ્ધઅગર તુમ્ભૂય' મહાશકટારકતુમ્ભૂતમ્—મહા-
શકટસ્ય=અરકાઐવ=અરાઠા અરકા* જ્ઞાન્તાદયોગુણાસ્તેપાતુમ્ભૂતમ્, આધાર ભૂતમ્
તથા 'મહાવિહિમરુક્ષસ્વધભૂય' મહાવિટપદ્મસરસ્વતીભૂતમ્—મહાન્તો વિટપા: શાખા

પદેસગ ચ) ઓર હસે સ્વર્ગ ઓર અપવર્ગરૂપ સુગતિ કે માર્ગ કો દિશ-
લાતા રહતા હૈ । ઇસીલિયે (વયમિણ) યહ ત્રત (લોગુત્તમ ચ) લોક-
પ્રય મેં શ્રેષ્ઠ હૈ । તથા યહ વ્રત (પદમસરતલાગ પાલિભૂય) પદ્મપ્રધાન
સરોવર ઓર તટાગ કી પાલિ જૈસા હૈ, અર્થાત્ સુખદ હોને કે કારણ,
પ્રમોદ કારક હોને કે કારણ, ઓર મન કો હરણ કરને ચાલા હોને કે
કારણ જૈસે પદ્મપ્રધાન સરોવર ઓર તટાગ સમુપાદય હોતે હૈં હસી
પ્રકાર સુખદાતા પ્રમોદક ઓર મનોહર હોને કે નાતે ધર્મ સી સમુપાદેય
હોતા હૈ—અતઃ ધર્મ સી પદ્મપ્રધાન સરોવર ઓર તટાગ જૈસા હૈ । હસ
ધર્મ રૂપ સરોવર ઓર તટાગ કા યહ રક્ષક હોને કે કારણ પાલિ—પાલ
જૈસા હૈ । તથા (મહામગ્ધઅગરતુમ્ભૂય) મહાશકટ કે આરોં કે
સમાન જ્ઞાન્ત્યાદિક ગુણો કા યહ તુમ્ભૂત—આધારભૂત હૈ । તથા (મ-
હાવિહિમરુક્ષસ્વધભૂય) મહાશાખા ચાલી વૃક્ષ કે સમાન આશ્રિતોં

સદતઃ રોહી હે છે “સુગતિપદેસગચ” અને તેને સ્વર્ગ અને અપવર્ગો રૂપ સુગતિને
માર્ગ દર્શાવતું રહે છે તેથી “વયમિણ” આ ત્રત “લોગુત્તમચ” ત્રણે લોકમાં
શ્રેષ્ઠ છે તથા આ ત્રત “પદમસરતલાગપાલિભૂય” કમળોથી યુક્ત સરોવર
અને તળાવની પાળ જેવું છે એટલે કે સુખદ હોવાને કારણે, પ્રમોદકારક
હોવાને કારણે, અને મનોહર હોવાને કારણે જેમ પદ્મપ્રધાન સરોવર અને
તળાવ સમુપાદેય હોય તે જ પ્રકાર સુખદાતા, પ્રમોદક અને મનોહર
હોવાને કારણે ધર્મ પણ સમુપાદેય હોય છે તેથી ધર્મ પણ યુક્ત સરોવર
અને તળાવ જેવો છે તે ધર્મરૂપ સરોવર અને તળાવનું તે (પ્રધાન્યર્થ) રક્ષક
હોવાથી પાળ જેવું છે તથા “મહામગ્ધઅગરતુમ્ભૂય” મહા શકટ-ગાડા-ની
ધરીના સમાન જ્ઞાન્ત્યાદિ ગુણોનું તે તુમ્ભૂત છે તથા “મહાવિહિમરુક્ષ-
સ્વધભૂય” મહા ચાખાવાળા વૃક્ષની જેમ આશ્રિતોનું પરમ સુખકારી હોવાથી

મજનમૂલદલિયણિમ ' તપઃ-સયમમ્મૂલદલિકનિમમ્=તપઃ સયમયો મૂલદલિક=મૂલદ્રવ્યમ્=મૂલધનમિત્યર્થઃ, તસ્ય નિમ=પટ્ટથ યત્તત્થા, તથા- ' પચમહવ્વયસુર-ક્ષિય ' પચમહાવ્રતસુરક્ષિત=પચમહાવ્રતાનાં મધ્યસ્થિતત્ત્વેન સુદુરક્ષિતમિવ યત્તત્થોક્તમ્, તથા ' સમિદ્ગુત્તિગુત્ત ' સમિતિગુપ્તિગુપ્તમ્-મમિતિમિઃ=ઈર્યાસમિત્યાદિમિઃ, ગુપ્તિમિઃ=મનોગુપ્ત્યાદિમિશ્ચ ગુપ્તમ્=રક્ષિતમ્, તથા- ' જ્ઞાનવરકગાડસુકય-રક્ષણ ' ધ્યાનવરમેય=ધમ યાનમેય રૂપાટમ્-તેન સુદુર=શોભનતયા કૃત રક્ષણયસ્ય તત્, તથા- ' અજ્ઞપ્પટિણ્ણફલિહ ' અયાત્મદત્તપરિપમ્=અધ્યાત્મમેય=સદ્ગાવણ વણ રૂપાટદહીરુણાર્થ દત્તઃ પરિધ-અર્ગલા રક્ષાયં યસ્ય તત્, તથા- ' સનદ્વદ્ધોચ્છદ્યદુગ્ગહપહ ' સનદ્વદ્ધાચ્છદિતદર્ગતિપથમ્-સનદ્વોચ્છદ્યાચ્છદિતશ્ચ અર્થાત્ સર્વતો નિરુદ્ધો દુર્ગતિપથો=દુર્ગતિમાર્ગો યેન તત્ત યોક્તમ્, તથા- ' સુગહ-મૂલદલિયણિમ) તપ ઓર સયમ કા યહ વ્રતચર્ય મૂલ ધન જેસા હૈ । (પચમહવ્વયસુરક્ષિય) જિસ પ્રકાર પાન પુરુષોં કે ધીચ મેં રહા હુઆ પુરુષ સુરક્ષિત રહતા હૈ ડસી પ્રકાર યહ વ્રતચર્ય બી પાચ મહાવ્રતોં કે યાચ મેં સ્થિત હોને કે કારણ સુરક્ષિત કે જેસા હૈ । (સમિદ્ગુત્તિગુત્ત) ઈર્યાસમિતિ આદિ પાંચ સમિતિયોં સે એવ મનોગુપ્તિ આદિ ત્રીન ગુપ્તિયોં સે બી ડસકી મદા રક્ષા હોતી રહતી હૈ ડસલિયે યહ સમિતિ ઓર ગુપ્તિયોં સે બી ગુપ્ત-સુરક્ષિત કહા ગયા હૈ । તથા (જ્ઞાનવરકવાડ સુકયરક્ષણ) ડસકી રક્ષા સદા ધર્મ યાન રૂપ મજનૂત કિવાડોં સે બી વહૂત અચ્છી તરહ હોતી રહતી હૈ (અજ્ઞપ્પટિણ્ણફલિહ ડસકી રક્ષા કે નિમિત્ત ઇન કિવાડોં મેં મજનૂતી લાને ચાલા અર્ગલા જેસા અધ્યાત્મ-સદ્ગાવ વહા કામ કરતા હૈ । (સનદ્વદ્ધોચ્છદ્યદુગ્ગહપહ) યહ વ્રતચર્ય અપને પાલક કે દુર્ગતિમાર્ગ કો સર્વથા રોકુ દેતા હૈ, (સુગહ-

કારણુ તેને અહી અવિચલિત દર્શાવ્યુ છે " તપસજનમૂલદલિયણિમ " તપ અને સયમનુ આ બ્રહ્મચર્ય મૂળધન સમાન છે " પચમહવ્વયસુરક્ષિય " જે રીતે પાચ પુરુષોની વચ્ચે રહેતો પુરુષ સુરક્ષિત રહે છે, તે જ પ્રમાણે આ બ્રહ્મચર્ય પણ પાચ મહાવ્રતોની વચ્ચે રહેલ હોવાથી સુરક્ષિત છે " સમિદ્ગુત્તિગુત્ત " જ્ઞા ઈર્યા સમિતિ આદિ પાચ સમિતિઓથી અને મનોગુપ્તિ આદિ-ત્રણ ગુપ્તિથી પણ તેનુ સદા રક્ષણ થતુ રહે છે, તે કારણે તે અમિતિ અને ગુપ્તિયોથી પણ ગુપ્ત-સુરક્ષિત કહેવાયુ છે તથા " જ્ઞાનવરકગાડસુકય રક્ષણ " તેનુ રક્ષણ હ શા ધર્મ ધ્યાનરૂપે મજનૂત કમાડોથી પણ ધણુ સારી રીતે રીતે થયા કરે છે " અજ્ઞપ્પટિણ્ણફલિહ " તેની રક્ષાને નિમિત્ત ત કમાડોમા મજનૂતી લાવનાર આગળીયા જેવુ અધ્યાત્મ-અદ્ભાવ ત્યા કામ આપે છે " સનદ્વદ્ધોચ્છદ્યદુગ્ગહપહ " આ બ્રહ્મચર્ય તેનુ એવન ડરનારના દુર્ગતિમાર્ગને

પુનરપિ બ્રહ્મચર્યમાહાત્મ્યમાહ—‘ જમ્મિય મગ્ગે ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—જમ્મિ ય મગ્ગે હોઈ સહસા સઠ્ઠ સેમગ્ગમહિયચુ-
 ણિયકુસલ્લિયપહ્લટ્ઠપડિય-લ્લહિયપરિસડિયવિનાસિય વિણયસીલ-
 તવનિયમગુણસમૂહં ત વંભ મગ્ગવત ગહગણણલ્લત્તારગાણં
 ચ જહા ઉડુવર્ડ મણિમુત્તસિલપ્પવાલરત્તરયણાગરણં ચ જહા
 સમુદ્ધો, વેસલિઓ ચેવ જહા મણીણં, જહ મડ્ઢો ચેવ મૂસણાણં
 વત્થાણં ચેવ વલ્લોમજુયલ અરવિદ ચેવ પુપ્ફજેટ્ટુ ગોસીસ ચેવ
 પ્પદ્ધણાણં હિમવત્તો ચેવ ઓસહીણં સીતોદા ચેવ નિન્નગાણં
 ઉદહીસુ જહા સયમ્મૂરમણોરુયગવરો ચેવ મહલિગપઠ્ઠવયાણપવરે

ભાવાર્થ—ઇસ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકાર ચતુર્થ સવરદ્વારે વા વિવેચન કર
 રહે છે । ઇસમેં નૌ કોટિ સે અબ્રહ્મ કા પૂર્ણ ત્યાગ હો જાતા હૈ, ઇસ-
 લિયે યહ બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રત કહલાતા હૈ । વ્રત કા તાત્પર્ય યહી હૈ કિ
 દોષોં કો સમક્ષ કર ઉનકે ત્યાગ કા નિયમ કરને કે વાદ ફિર સે
 ઉનકા સેવન નહીં કરના । બ્રહ્મચર્ય વ્રત કો પરિપાલન કરને કે લિયે
 અતિશય ઉપકારક કિતને હી ગુણ હૈ, જૈસે આકર્ષક સ્પર્શ, રસ, ગંધ,
 રૂપ, શબ્દ ઔર શરીરસસ્કાર આદિ મેં ન પેસના, ઝુટિયો કો હટાને
 કે લિયે જ્ઞાનાદિ સદ્ગુણોં કા અભ્યાસ કરના, એવ ગુરુકી આધીનતા કે
 લિયે ગુરુકુલ મે વાસ કરના । ઇસ સૂત્ર મે ઇસી બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રત કે
 ગુણ ગૌરવ કા વ્યાખ્યાન સૂત્રકાર ને કિયા હૈ ॥ સુ ૧ ॥

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકાર ચોથા સવરદ્વારનું વિવેચન કરે છે
 તેમાં નવ પ્રકારે અબ્રહ્મનો સંપૂર્ણ ત્યાગ થઈ જાય છે તેથી તે બ્રહ્મચર્ય મહા-
 વ્રત કહેવાય છે । તત્તુ તાત્પર્ય એ છે કે દોષોને સમક્ષને તેમના ત્યાગનો નિયમ
 કર્યા પછી ફરીથી તેનું સેવન ન કરવું । બ્રહ્મચર્ય વ્રતનું પરિપાલન કરવાને માટે
 અતિશય ઉપકારક કેટલાક ગુણો છે, જેમાં કે આકર્ષક સ્પર્શ, રસ, ગંધ, રૂપ
 શબ્દ અને શરીર સસ્કાર આદિમાં ફસાવું નહીં, ઝુટિયોને દૂર કરવા માટે
 જ્ઞાનાદિ સદ્ગુણોનો અભ્યાસ કરવો, અને ગુરુની આધીનતાના સેવનને માટે
 ગુરુકુલમાં વાસ કરવો । આ સૂત્રમાં એ જ બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રતના ગુણ ગૌરવનું
 વર્ણન સૂત્રકારે કર્યું છે ॥ ૧ ॥

યસ્ય સ મહાવિટપઃ, સ ચાસી વૃક્ષઃ જાશ્રિતાના પરમોપકારસ્ત્યસા યમ્યાદ્ ધર્મસ્તસ્ય
 સ્કન્ધભૂત યત્તત્તથોક્તમ્, અય મારઃ-યથા સ્કન્ધોટ્સગામ્યાઽધારભૂતસ્તથેવબ્રહ્મ
 ચર્ય ધર્મશાખાઽધારભૂતમ્ । તથા-‘ મહાનગરપાગારકવાડફલિદ્ભૂય ’ મહાનગર-
 માકારરૂપાટપરિઘભૂતમ્-મહાનગરમિત મહાનગર વિવિધમુખહેતુ સાધમ્યાદ્ ધર્મઃ,
 તસ્ય રક્ષકતાત્ પ્રાકારરૂપ, કપાટરૂપ પશ્ચિભૂતમ્ = અર્ગલરૂપમ્, યત્તત્તથો
 ક્તમ્ તથા-‘ રજ્જુપિણ્દોઽન્વદ્ધકેઝ ’ રજ્જુપિણ્દઽય ઇન્દ્રકેતુઃ=યથા-રજ્જુવદ્ધ
 ંદ્રધ્વજો મહોત્સવે સર્વોપરિ વર્તમાનઃ પરમશોભા જનયતિ, તથૈવેદં સર્વવ્રતશ્રેષ્ઠ
 બ્રહ્મચર્યમ્ । તથા-‘ વિસુદ્ધણેગુણસપિણ્દ = વિશુદ્ધાનેકગુણસપિણ્દ વિશુદ્ધા
 યેઽ નેકગુણાસ્તૈઃ સપિણ્દ સગ્રથિતમિદં બ્રહ્મચર્યમસ્તિ ॥ સૂ૦૧ ॥

કા પરમ ઉપકારી હોને સે ધર્મ કા યદ્ સ્કધ જૈસા હૈ । અર્થાત્ જિસ
 પ્રકાર સ્કધ વૃક્ષ કી શાખાઓ કા આધારભૂત હોતા હૈ ડસી પ્રકાર
 યદ્ બ્રહ્મચર્ય મી ધર્મ કી શાખાઓ કા આધારભૂત હૈ । તથા (મહા-
 નગરપાગારકવાડફલિદ્ભૂય) મહાનગર કે સમાન વિવિધ મુખો કા
 હેતુભૂત હોને કે કારણ ધર્મરૂપ નગર કા યદ્ રક્ષક હોને સે પ્રકાર
 જૈસા, કપાટ જૈસા ઓર અર્ગલા જૈસા હૈ । તથા (રજ્જુપિણ્દોઽન્વદ્ધકે-
 ઝ) જિસ પ્રકાર રજ્જુ વદ્ધ ઇન્દ્રધ્વજ મહોત્સવ મેં સર્વોપરિ વર્તમાન
 હોતા હુઆ પરમ શોભા કો વિસ્તારતા હૈ ડસી તરહ યદ્ બ્રહ્મચર્યવ્રત
 મી સર્વવ્રતોં મેં શ્રેષ્ઠ હૈ ઓર પરમ શોભા કા જનક હોતા હૈ । તથા
 (વિસુદ્ધણેગુણસપિણ્દ) વિશુદ્ધ અનેક ગુણોં સે યદ્ બ્રહ્મચર્ય અન્ગી
 રીતિ સે (સપિણ્દ) ગ્રથિત-યુક્ત હૈ ।

તે ધર્મના સ્કધ જેવુ છે એટલે કે જેમ થક વૃક્ષની શાખાઓને માટે
 આધાર રૂપ હોય છે એ જ પ્રકારે બ્રહ્મચર્ય પણ ધર્મની શાખાઓના આધાર
 રૂપ છે તથા “ મહાનગર પાગાર કવાડ ફલિદ્ભૂય ” મહાનગરના સમાન વિવિધ
 મુખોનું હેતુભૂત હોવાને કારણે ધર્મનગરનું તે રક્ષક હોવાના પ્રકાર જેવું,
 કપાટ જેવું અને અર્ગલા જેવું છે તથા “ રજ્જુપિણ્દોઽન્વદ્ધકેઝ ” જેમ રજ્જુ
 (દોરડું) બદ્ધ ઇન્દ્રધ્વજ મહોત્સવમાં સર્વોપરિ દેખાતો પરમ શોભાને વિસ્તારે
 છે તે જ પ્રમાણે આ બ્રહ્મચર્ય વ્રત પણ સર્વવ્રતોમાં શ્રેષ્ઠ છે અને પરમ
 શોભાનું જનક હોય છે તથા ‘ વિસુદ્ધણેગુણસપિણ્દ ’ વિશુદ્ધ અનેક ગુણોથી
 આ બ્રહ્મચર્ય સારી રીતે “ સપિણ્દ ” ગ્રથિત-યુક્ત છે

पुनरपि ब्रह्मचर्यमाहात्म्यमाह—‘ जम्मिय भगो ’ इत्यादि ।

मूलम्—जम्मि य भगो होइ सहसा सव्व सेभग्गमहियचु-
णिणयकुसल्लियपल्लट्टपडिय-खडियपरिसडियविणासिय विणयसील-
तवनियमगुणसमूहं तं वंभ भगवंत गहगणणक्खत्ततारगाणं
च जहा उडुवई मणिमुत्तसिलप्पवालरत्तरयणागरण च जहा
समुदो, वेरुलिओ चेव जहा मणीण, जह मउडो चेव भूसणाणं
वत्थाणं चेव क्खोमजुयल अरविद चेव पुप्फजेट्ट गोसीसं चेव
चंदणाण हिमवतो चेव ओसहीणं सीतोदा चेव निन्नगाणं
उदहीसु जहा सयभूरमणोरुयगवरो चेव मडलिंगपव्वयाणपवरे

भावार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार चतुर्थ सवरद्वार का विवेचन कर रहे हैं । इसमें नौ कोटि से अब्रह्म का पूर्ण त्याग हो जाता है, इस-
लिये यह ब्रह्मचर्य महाव्रत कहलाता है । व्रत का तात्पर्य यही है कि
दोषों को समझ कर उनके त्याग का नियम करने के बाद फिर से
उनका सेवन नहीं करना । ब्रह्मचर्य व्रत को परिपालन करने के लिये
अतिशय उपकारक कितने ही गुण हैं, जैसे आकर्षक स्पर्श, रस, गंध,
रूप, शब्द और शरीरसंस्कार आदि में न फैसना, वृद्धियों को हटाने
के लिये ज्ञानादि सद्गुणों का अभ्यास करना, एवं गुरुमी आधीनता के
लिये गुरुकुल में वास करना । इस सूत्र में इसी ब्रह्मचर्य महाव्रत के
गुण गौरव का व्याख्यान सूत्रकार ने किया है ॥ सू० १ ॥

भावार्थ—आ सूत्र द्वारा सूत्रकार बोधा सवरद्वारतु विवेचन करेछे
तेभा नव प्रजारे अब्रह्मनो संपूर्ण त्याग थछ जाय छे तेथी ते अब्रह्मचर्य भडा
व्रत उडेवाय छे व्रततु तात्पर्य ओ छे उ दोषोने समझने तेमना त्यागनो नियम
ज्या पछी इरीथी तेतु सेवन न करवु अब्रह्मचर्य व्रततु परिपालन जव्वाने भाटे
अतिशय उपकारक उटवाक गुणो छे, जेभा के आकर्षक स्पर्श, रस, गंध, रूप
शब्द अने शरीर संस्कार आदिमा इभावु नही, वृद्धियोने दूर करवा भाटे
ज्ञानादि सद्गुणोने अभ्यास करवो, अने गुरुमी आधीनताना सेवनने भाटे
गुरुकुलमा वास करवो आ सूत्रमा ओ ओ अब्रह्मचर्य भडाव्रताना गुण गौरवतु
पणुन सूत्रकारे कथुं छे ॥ १ ॥

સ્ય સ મહાવિટપઃ, સ ચાસૌ વૃક્ષશ્ર આશ્રિતાના પરમોપકારમ્ભસામ્ય્યાદ્ ધર્મસ્તસ્ય
સ્કન્ધભૂત યત્તત્તથોક્તમ્, અય માયઃ-પથા સ્કન્ધોટ્કસગાલાઽધારભૂતસ્તથૈવબ્રહ્મ
ચર્ય ધર્મશાલાઽધારભૂતમ્ । તથા-‘ મહાનગરપાગારકવાડફલિહ્મૂય ’ મહાનગર-
પાકારરૂપાટપરિઘભૂતમ્-મહાનગરમિત મહાનગર ત્રિવિધમુલ્કહેતુ સાધમ્યાદ્ ધર્મઃ,
તસ્ય રક્ષકતાત્ પ્રાકારરૂપ, કપાટરૂપ પઘ્નિભૂતમ્ = અર્ગશરૂપમ્, યત્તત્તથો
ક્તમ્ તથા-‘ રજ્જુપિણદ્વોઽવ્વહ્દકેઝ ’ રજ્જુપિણદ્વ ઇન્દ્રફેતુઃ=યથા-રજ્જુવદ્ધ
ન્દ્રધ્વજો મહોત્સવે સર્વોપરિ વર્તમાનઃ પરમશોભા જનયતિ, તથૈવેદ સર્વવ્રતશ્રેષ્ઠ
બ્રહ્મચર્યમ્ । તથા-‘ વિસુદ્ધણેગગુણસપિણદ્ધ = વિશુદ્ધાનેકગુણસપિણદ્ધ વિશુદ્ધા
યેઽ નેકગુણાસ્તૈઃ સપિણદ્ધ સપ્રથિતમિદં વ્રત્તચર્યમસ્તિ ॥ મુ.૦૧ ॥

કા પરમ ઉપકારી હોને સે ધર્મ કા યદ સ્કન્ધ જૈસા હૈ । અર્થાત્ જિસ
પ્રકાર સ્કન્ધ વૃક્ષ કી શાખાઓ કા આધારભૂત હોતા હૈ ડસી પ્રકાર
યદ બ્રહ્મચર્ય મી ધર્મ કી શાખાઓ કા આધારભૂત હૈ । તથા (મહા-
નગરપાગારકવાડફલિહ્મૂય) મહાનગર કે સમાન વિવિધ મુલ્કો કા
હેતુભૂત હોને કે કારણ ધર્મરૂપ નગર કા યદ રક્ષક હોને સે પ્રાકાર
જૈસા, કપાટ જૈસા ઓર અર્ગલા જૈસા હૈ । તથા (રજ્જુપિણદ્વોઽવ્વહ્દ-
કેઝ) જિસ પ્રકાર રજ્જુ વદ્ધ ઇન્દ્રધ્વજ મહોત્સવ મેં સર્વોપરિ વર્તમાન
હોતા હુઆ પરમ શોભા કો વિસ્તારતા હૈ ડસી તરહ યદ બ્રહ્મચર્યવ્રત
મી સર્વવ્રતોં મેં શ્રેષ્ઠ હૈ ઓર પરમ શોભા કા જનક હોતા હૈ । તથા
(વિસુદ્ધણેગગુણસપિણદ્ધ) વિશુદ્ધ અનેક ગુણો સે યદ બ્રહ્મચર્ય અઙ્ગી
રીતિ સે (સપિણદ્ધ) પ્રથિત-યુક્ત હૈ ।

તે ધર્મના સ્કન્ધ જેવુ છે એટલે કે જેમ થક વૃક્ષની શાખાઓને માટે
આધાર રૂપ હોય છે એ જ પ્રકારે બ્રહ્મચર્ય પણ ધર્મની શાખાઓના આધાર
રૂપ છે તથા “ મહાનગર પાગાર કવાડ ફલિહ્મૂય ” મહાનગરના સમાન વિવિધ
મુલ્કોનું હેતુભૂત હોવાને કારણે ધર્મનગરનું તે રક્ષક હોવાના પ્રકાર જેવું,
કપાટ જેવું અને અર્ગલા જેવું છે તથા “ રજ્જુપિણદ્વોઽવ્વહ્દકેઝ ” જેમ રજ્જુ
(દોરડું) બદ્ધ ઇન્દ્રધ્વજ મહોત્સવમાં સર્વોપરિ દેખાતો પરમ શોભાને વિસ્તારે
છે તે જ પ્રમાણે આ બ્રહ્મચર્ય વ્રત પણ સર્વવ્રતોમાં શ્રેષ્ઠ છે અને પરમ
શોભાનું જનક હોય છે તથા ‘ વિસુદ્ધણેગગુણસપિણદ્ધ ’ વિશુદ્ધ અનેક ગુણોથી
આ બ્રહ્મચર્ય સારી રીતે “ સપિણદ્ધ ” પ્રથિત-યુક્ત છે

ગ્નમયિતચૂર્ણિતકુશલિયતપર્યસ્તપતિતખ્વણ્ડિત-પરિગટિતવિનાશિતમ્=તત્ર 'સમગ્ન' સમગ્ન=નષ્ટ ઇત્, 'મહિય' મયિત=દગીવ વિલોડિત 'ચુણિય' ચૂર્ણિત=ચળક- વત્ પિપ્લમ્ 'કુસલિય' કુશલિયતમ્=કુ=કુત્સિતમ્-અન્તઃ પ્રવિષ્ટતોમરાદિ શલ્ય- મિવ શલ્ય, યત્ પ્રવિષ્ટ સત્, કેનાપ્યુપાયેન ન નિઃસરતિ તત્કુશલ્યં, તત્સજાત યસ્યેતિ કુશલિયત દૃષ્ટગ્નલ્પયુક્ત, યથા વક્રતયા પ્રવિષ્ટેન શલ્યેન શરીર વિદારિત ભવતિ, તથૈવ પિનયાદિક વિદારિત ભવતિ, 'પલ્લટ' પર્યસ્ત=પર્વતશિખરાદ્ સ્થૂલપાપાણખણ્ડ ઇવ સ્વસ્થાનાચલિતમ્, 'પહિય' પતિતમ્=પ્રામાદગિશ્વરાત્કલશ ઇત્યાદિનિપતિતમ્ 'સહિય' સ્વણ્ડિતમ્=ઢણ્ડ ઇવ પ્રિભાગેન નિઃક્રમ્, 'પરિસહિય' પરિગટિત = કુષ્ઠાનુપહતાન્નમિત્રિગલિતમ્, 'વિનાસિય' વિનાશિત=વિનષ્ટમ્, 'હોઃ' ભવતિ । અયોપમયા બ્રહ્મચર્યસ્ય માહાત્મ્ય ંર્ણયે- 'ત વમ ભગવત' ઇત્યાદિ । 'ત' =તત્-પ્રસિદ્ધ 'ભગવત' મગવત્=સર્વોત્કૃષ્ટૈશ્વર્યશાલિ 'વમ' બ્રહ્મ=બ્રહ્મચર્ય 'ગૃહગણનસ્વત્તારગાણ ચ' ગૃહગણનક્ષત્રતારકાણા ચ, પ્રહગણઃ =મંદલાદિ, નક્ષત્રાણિ=અશ્વિન્યાદયઃ, તારકા =પરિહાઃ, આમા મધ્યે 'જહા'

હિય વિનાસિય હોઃ) ઘટકી તરફ સમગ્ન ટુકડે ૨ હો જાતે હૈ- નષ્ટ હો જાતે હૈ, દધિ કી તરફ વિલોડિત-અસ્તવ્યસ્ત હો જાતે હૈ, ચના આદિ કી તરફ-ચૂર્ણિત-પિસે જાતે હૈ, કુશલ્ય-ટેટે-વક્ર વાળ સે વિદારિત હુઈ શરીર કી તરફ વિદારિત હો જાતે હે, 'પર્વત' કી ચોટી સે પતિત પાપાણખણ્ડ કી તરફ અપને સ્થાન સે ચ્યુત હો જાતે હૈ, પતિત પ્રાસાદ કી છત સે ગિરે નુઈ કલશ કી તરફ અધોનિપતિત હો જાતે હૈ, ફાડે ગયે દહ કી તરફ સ્વલિત હોતે જાતે હૈ, પરિગટિત-કુષ્ઠાદિ સે ઉપહત અગ કી તરફ ગલિત હો જાતે હૈ, ઓર વિનાશિત-વિનષ્ટ-હો જાતે હે । (ત વમ ભગવત) સર્વોત્કૃષ્ટ ઐશ્વર્યશાલી પ્રસિદ્ધ યહ બ્રહ્મચર્ય (ગૃહગણનસ્વત્તારગાણ ચ જહા ઉદ્ભવઈ) મગલ આદિ

જેમ ટુકડે ટુકડા થઈ બાય છે, નષ્ટ થઈ બાય છે, ઢહીની જેમ વિલોડિત-અન્તઃવ્યસ્ત થઈ બાય છે, અણા આદિની જેમ ચૂરે ચૂરા થઈ બાય છે, કુશલ્ય-વક્રખાણથી વીધાયેલ શરીરની જેમ વિદારિત થઈ બાય છે પર્વતના શિખર પરથી પાષાણખણ્ડની જેમ પોતાને સ્થાનેથી બ્રષ્ટ થઈ બાય છે, પતિત-મહેલની છત ઉપરથી પડેલા ઝલશની જેમ અધોનિપતિત થઈ બાય છે ચીરાયેલ લાક ડીની જેમ ખડિત થઈ બાય છે, પરિગટિત-કોઠ આદિથી ઉપહત અગની જેમ ગલિત થઈ બાય છે અને વિનષ્ટ થઈ બાય છે "ત વમ ભગવત" સર્વોત્કૃષ્ટ ઐશ્વર્યશાળી પ્રસિદ્ધ છે બ્રહ્મચર્ય "ગૃહગણનસ્વત્તારગાણ ચ જહા ઉદ્ભવઈ"

પરાવણ ઇવકુજરાણં સીહો જહા મિગાણ પવરો સુપન્નગાણં ચ
 વેણુદેવ ધરેણ જહા પળ્લગ ઇદરાયા કપ્પાણ ચેવ વંમલોષ,
 સભાસુ ય જહા ભવે સુહમ્મા ઠિર્ઠિસુ લવસત્તમવ્વપવરા દાણાણં
 ચેવ અભઓ દાણં કિમિરાઓ ચેવ કંવલાણ સઘયણે ચેવ
 વજ્જરિસભે સઠાણે ચેવ સમચરસે જ્ઞાણેસુ ય પર સુક્કજ્ઞાણ
 નાણેસુ ય પરમકેવલ તુ સિદ્ધ લેસાસુ ય પરમસુક્કલેસા તિત્થ-
 કરો ચેવ જહા મુણીણ વાસેસુ જહા વિદેહે ગિરિરાયા ચેવ
 મદરવરે વણેસુ જહા ણંટણવણ પવરંદુમેસુ જહા જત્તુ સુદસણા
 વીસુયજસા જીયાનામેણ અય દીવો, તુરગવર્ઘ ગયવર્ઘ રહ-
 વર્ઘ નરવર્ઘ જહ વીસુણ ચેવ રાયા રહિણ ચેવ જહા મહારહગણ
 ઇવમણેગગુણા અહીણા ભવતિ ઇગમ્મિ વમચેરે ॥ સૂ. ૩ ॥

ટીકા—‘જમ્મિય’ ઇત્યાદિ । ‘જમ્મિય’ યમ્મિશ્ચ બ્રહ્મચર્યે ‘ભગ્ગે’
 ભગ્ને=વિરાધિતે સત્તિ ‘સવ્વ’ સર્વ ‘વિણયસીલતવનિયમગુણસમૂહ’ વિનયશીલ-
 તપોનિયમગુણસમૂહઃ—વિનયો=ગુરુપ્રતિપત્તિલક્ષણ, શીલ=સદાચારઃ, તપઃ=અન-
 શનાદિક દ્વાદશવિધ, નિયમઃ=અભિગ્રહ, ગુણસમૂહઃ=નાનાદિગુણસમુદાય, ઇયા
 સમાહારે વિનયશીલતપોનિયમગુણસમૂહ ક્રિયાજ્ઞાન ચેતિદ્વયમપીત્યર્થઃ, સહસા=
 શ્વેતિ ‘સમગ્ગમહિયચુણિયકુસલ્લિયપલ્લટ્ટપડિયચ્ચડિયપરિસડિયવિણાસિય’સંભ-

ફિર બ્રહ્મચર્ય કા માહત્મ્ય કહતે હૈ—‘જમ્મિય ભગ્ગે’ ઇત્યાદિ. ।

ટીકાર્થ—(જમ્મિય ભગ્ગે) જિસ બ્રહ્મચર્ય કે વિરાધિત હોને પર-
 (સવ્વ વિણયસીલતવનિયમગુણસમૂહ) સમસ્ત વિનય, શીલ, તપ,
 નિયમ-ઔર ગુણ સમૂહ-અર્થાત્-ક્રિયા ઔર જ્ઞાન યે દોનો હી (સહસા)
 ઇકદમ (સમગ્ગમહિય-ચુણિય-કુસલ્લિય-પલ્લટ્ટ-પડિય-ચ્ચડિય-પરિસ

હવે સૂત્રકાર બ્રહ્મચર્યનું મહાત્મ્ય કહે છે—“ જમ્મિય ભગ્ગે ” ઇ. ૦.

ટીકાર્થ—“જમ્મિય ભગ્ગે” એ બ્રહ્મચર્ય વિરાધના થતા “સવ્વ વિણય
 સીલતવનિયમગુણસમૂહ” સમસ્ત વિનય, શીલ, તપ, નિયમ અને ગુણસમૂહ
 એટલે કે ક્રિયા અને જ્ઞાન એ બે બને “સહસા” અર્થાત્ “સમગ્ગમહિયચુ
 ણિયકુસલિય-પલ્લટ્ટ-પડિય ચ્ચડિય-પરિસડિય-વિણાસિય હોઈ” કહેલા ધર્માની

દિષ્ણ 'ઓપધીનામ્=ઓપ યુત્પત્તિસ્થાનાના મ યે હિમવાન પર્વત इव । 'સીતોદા
 ચેવ 'સીતોદેવ=પ્વનામરયાતા મદાનદીવ 'નિન્નગાના 'નિન્નગાનામ્=નદીના
 મધ્યે । 'ઉદહીસુ 'ઉદધિપુ=સમુદ્રેષુ 'સયભૂરમણો' સયભૂરમણ સમુદ્રઃ 'સય
 ગવરો ચેવ 'રચમ્વર इव-યથા રુચકવરઃ=રુચકાભિધાનસ્વયોદશદ્વીપવર્તીપર્વત-
 વિશેષઃ, 'મહલિગપન્વયાણ 'માહલિકપર્વતાના માનુષોત્તરકુણ્ડ~પ્રસ્ચન્વરા
 મિગાના મ પે 'પવરે' પ્રવર શ્રેષ્ઠ । 'એરાવણ इव 'એરાવણ इव 'કુજરાણ '
 કુજરાણા મ ય, યથા હસ્તિના મધ્ય એરાવત પ્રવર इत्यर्थ. । 'જહા 'વયા
 'સીહો' સિંહ 'મિગાણ 'મૃગાણામ્=અરણ્યપરના મધ્યે 'પવરો' પ્રવરઃ યથા-
 'સુપન્નગાણ ન 'સુપર્ણકાના=સુપર્ણકુમારાણા મધ્યે 'વેણુદેવે' વેણુદેવઃ પ્રવરઃ
 યથા ચ 'પન્નગ इदરાયા 'પન્નગેન્દ્રરાજ, 'ધરણે' ધરણો=ધરણેન્દ્રો નાગકુમા-
 રાણા મધ્યે પ્રવરઃ, તથેવેદ વ્રાહ્મયજ્ઞ વ્રતાના મધ્યે પ્રવરમ્ । તથા-'રૂપ્પાણ '
 વરૂપાના=દેવલોકાના મધ્યે 'વમલોણ ચેવ' વ્રહ્મલોક इव=પશ્ચમો દેવલોકઃ
 પર્વત, (નિન્નગાણ સીતોદા ચેવ) નદિયોં મે જૈસે સીતોદા નદી, (ઉદ-
 હીસુ જહા સયભૂરમણો) સમુદ્રોં મે જૈસે સ્વયભૂરમણસમુદ્ર, (મહલિગ-
 પન્વયાણ સયગવરો ચેવ) માહલિક પર્વતોં મેં જૈસે રુચક વરપર્વત,
 (પવરે) શ્રેષ્ઠ માના જાતાં હૈ, ઉસી પ્રકાર સમસ્તવતોં મેં યહ વત શ્રેષ્ઠ
 માના ગયા હૈ । તથા (કુજરાણ એરાવણ इव) હાથીઓ મે જૈસે એરાવત
 હાથી શ્રેષ્ઠ હોતા હૈ (મિગાણ જહા સીહો પવરો) મૃગોં કે ધીચ મેં-
 જગલી જાનવરોં મે-જૈસે સિંહ શ્રેષ્ઠ હોતા હૈ (સુપન્નગાણ ન વેણુદેવે
 સુપર્ણકુમારોં મેં જૈસે વેણુદેવ શ્રેષ્ઠ હોતા હૈ, (જહા પન્નગ इदરાયા-
 ધરણે) પન્નગોં કા ઇન્દ્રરાજ ધરણેન્દ્ર જૈસે નાગકુમારોં મેં શ્રેષ્ઠ હોતા હૈ,
 (રૂપ્પાણ ચેવ વમલોણ) મત્તપોં મેં જૈસે પાંચવા વ્રહ્મલોક પ્રવર હોતા હૈ,

“ઓપધીના હિમવતો ચેવ” ઓપધિઓના ઉત્પત્તિ સ્થાનોના જેમ હિમાલય
 પર્વત, “નિન્નગાણ સીતોદા ચેવ” નદીઓના જેમ સીતોદા નદી “ઉદહી સુજહા
 સયભૂરમણો” સમુદ્રોના જેમ સ્વયભૂરમણ સમુદ્ર “મહલિગપન્વયાણસયગવરો
 ચેવ” માહલિક પર્વતોના જેમ રુચકવર પર્વત, “પવરે” શ્રેષ્ઠ મનાય છે,
 તે જ પ્રકારે સધળા વ્રતોના આ પ્રાણચર્યવ્રત શ્રેષ્ઠ મનાય છે તથા “કુજ-
 રાણ એરાવણ इव” હાથીઓના જેમ એરાવત હાથી શ્રેષ્ઠ હોય છે, “મિગાણ
 જહા સીહો પવરો” મૃગોના વચ્ચે-જગલી જાનવરોની વચ્ચે-જેમ સિંહ શ્રેષ્ઠ
 હોય તે, “સુપન્નગાણ ન વેણુદેવે” સુપર્ણકુમારોના જેમ વેણુદેવ શ્રેષ્ઠ હોય
 છે, “જહા પન્નગ इदરાયા ધરણે” પન્નગોના ઇન્દ્રરાજ ધરણેન્દ્ર જેમ નાગકુ-
 મારોના શ્રેષ્ઠ હોય છે, “રૂપ્પાણ ચેવ વમલોણ” મત્તપોના જેમ પાંચમા

યથા 'ઉદ્ઘર્ષ' ઉદ્ઘપતિઃ=ચન્દ્રઃ સર્વશ્રેષ્ઠસ્તથૈવ પ્રતાના માધ્યે સર્વશ્રેષ્ઠમસ્તિ । તથા-
 'મણિમુત્તસિલપ્પાલરત્તરયણાગરાણ' મણિમુક્તાશિલામવાલરત્તરત્નાકરાણા=મણય
 =ચન્દ્રકાન્તાવાઃ, મુક્તાફલાનિ=શિલામવાલાનિ ત્રિદ્રુમાણિ, રત્તરત્નાનિ=પદ્મરાગા
 દીનિ તેષામાકરા ઉત્પત્તિભૂમયઃ, યે તે તથા, તેષા મધ્યે 'જહા' યથા 'સમુદ્ધો' સમુદ્રઃ,
 શ્રેષ્ઠસ્તથૈવેદ પ્રતાના મધ્યે શ્રેષ્ઠમ્, એવ મર્ગત્રસયોજ્યમ્ । તથા- 'જહ ચેવ' યથા
 ચેવ 'મળીણ' મળીના મધ્યે 'વેરુલિઓ' વૈદૂર્ય=વૈદૂર્યમણિઃ । 'જહ ચેવ' યથા
 ચેવ 'આભૂમણાણ' આભૂમણાના મધ્યે 'મઝહો' મુકુટ । 'વત્થાણ' વલ્લ્યાણા
 માધ્યે 'લોમજુયલ ચેવ' લોમયુગમિત્ર । 'અરવિંદ ચેવ' અરવિન્દમિત્ર=કમલમિત્ર
 'પુષ્પજેટ્ટ' પુષ્પજ્યેષ્ઠમ્-પુષ્પેષુ અરવિન્દ શ્રેષ્ઠમિત્યર્થઃ । 'ગોસીસ ચેવ' ગોશીર્ષ
 હરિચન્દનમિત્ર 'ચદણાણ' ચન્દનાના મધ્યે 'હિમવતો ચેવ' હિમવાનિવ 'ઓસ

પ્રહો મેં, અશ્વિની આદિ નક્ષત્રોં મેં, ઓર તારાઓં મેં જૈસે ચન્દ્રમા સર્વ
 શ્રેષ્ઠ માના જાતા હૈ ઉસી તરહ સર્વ વર્તોં મેં શ્રેષ્ઠ માના ગય. હૈ । તથા
 (મણિમુત્તસિલપ્પવાલરત્તરયણાગરાણ ચ જહા સમુદ્ધો) ચન્દ્રકાન્ત
 આદિ મણિયો કી, મુક્તાફલોં કી, મૂર્ગોં કી ઓર પદ્મરાગ આદિ રત્ત-
 રત્નોં કી ઉત્પત્તિ સ્થાનો મેં જૈસે સમુદ્ર શ્રેષ્ઠ હોતા હૈ ઉસી તરહ યહ
 વત્ત મી સર્વવર્તોં મેં શ્રેષ્ઠ માના ગયા હૈ । તથા- (જહ ચેવ મળીણ વેરુ-
 લિઓ) જૈસે મણિયોં મેં વૈદૂર્યમણિ, (જહ ચેવ આભૂમણાણ મઝહો)
 આભૂમણો મેં જૈસે મુકુટ, (વત્થાણ લોમજુયલ ચેવ) વલ્લોં મેં જૈસે
 લોમ યુગલ, (અરવિંદચેવ પુષ્પજેટ્ટ) પુષ્પોં મેં જૈસે અરવિંદ
 (કમલ) (ચદણાણ ગોસીસ ચેવ) ચદનો મેં જૈસે હરિચન્દન, (ઓસ
 હીર્ણ હિમવતો ચેવ) ઔષધિયોં કી ઉત્પત્તિ કે સ્થાનો મેં જૈસે હિમવાન

મળાણ આદિ શ્રહોમા, અશ્વિની આદિ નક્ષત્રોમા, અને તારાઓમા જેમ ચ
 ન્દ્રમા સર્વશ્રેષ્ઠ મનાય છે એજ પ્રમાણે સર્વવર્તોમા શ્રેષ્ઠ માનવામા આવ્યું છે
 તથા “ મણિમુત્તસિલપ્પવાલરત્તરયણાગરાણ ચ જહા સમુદ્ધો ” ચન્દ્રકાન્ત આદિ
 મણિઓની, મોતીની, મૂળોની અને પદ્મરાગ આદિ રત્નરત્નોની ઉત્પત્તિ
 કરવાના સ્થાનોમા જેમ સમુદ્ર શ્રેષ્ઠ મનાય છે એજ પ્રમાણે આ વત્ત
 પશ્ચુ સર્વ વર્તોમા શ્રેષ્ઠ મનાય છે તથા “ જહચેવ મળીણ વેરુલિઓ ” જેમ
 મણિઓમા વૈદૂર્યમણી, “ જહ ચેવ આભૂમણાણ મઝહો ” આભૂમણોમા જેમ મુકુટ
 “ વત્થાણ લોમજુયલ ચેવ ” વલ્લોમા જેમ લોમયુગલ “ અરવિંદ ચેવ પુષ્પજેટ્ટ ”
 પુષ્પોમા જેમ અરવિંદ, “ ચદણાણ ગોસીસ ચેવ ” ચદનોમા જેમ હરિચન્દન

પ્રવર તથૈવ વ્રતાના મધ્યે ૩૬ વ્રહ્મચર્ય પ્રવરમ્ । તથા—‘ જ્ઞાણેસુ ય ’ ધ્યાનેષુ ચ—
ધ્યાનમધ્યે યથા ‘ પરમસુક્લજ્ઞાણ ’ પરમશુક્લધ્યાન—શુક્લધ્યાનસ્ય ચતુર્થપાદરૂપં
પ્રવરમ્, તથા—નાણેસુ ય ’ જ્ઞાણેષુ ચ યથા પરમકેવલ તુ પરિપૂર્ણવિશુદ્ધકેવલ-
જ્ઞાન અર્થાત્-ક્ષાયિકજ્ઞાન સિદ્ધ=પ્રવસ્ત્વેન પ્રસિદ્ધમ્, તથૈવેદ વ્રહ્મચર્ય વ્રતાના-
મધ્યે પ્રસિદ્ધમ્—તથા—‘ લેસાસુ ય ’ લેશ્યાસુ=કૃષ્ણાધ્યાસુ ચ યથા, ‘ પરમસુક્લ
લેસા ’ પરમશુક્લલેશ્યા—શુક્લધ્યાનસ્ય તૃતીયભેદવર્તિની પ્રવરા । ‘ તિત્થકરો
ચૈવ ’ તીર્થકરૈશ્ચૈવ ‘ જહા ’ યથા ‘ મુણીણ ’ મુનીના મધ્યે પ્રવર ‘ વાસેસુ ’ વર્ષેષુ
ક્ષેત્રેષુ ‘ જહા ’ યથા ‘ વિદેહે ’ વિદેહ—મહાવિદેહક્ષેત્ર પ્રવરમ્, તથૈવેદ વ્રત=
વ્રતાના મધ્યે પ્રવરમ્ । યથા જમ્બૂદ્વીપે ‘ મદરવરે ’ મન્દરવરો ‘ ગિરિરાયા ’
ગિરિરાજો=મેરુપર્વતૈશ્ચૈવ પર્વતાના મધ્યે પ્રવરઃ, ‘ વણેસુ ’ વણેષુ ‘ જહા ’ યથા—

સ્વસ્થાન પ્રવર માના જાતા હૈ—उसी प्रकार यह ब्रह्मचर्य व्रतों में प्रधान
व्रत माना जाता है । इसी तरह (ज्ञाणेषु वर सुक्लज्ज्ञाण) चार ध्यानों
में जैसे परम शुक्ल ध्यान शुक्लध्यानका चौथा भेद, उत्तम होता है और
(नाणेषु य परमकेवल सिद्ध) आभिनिवोधिक आदि पाँच ज्ञानों में जैसा
केवलज्ञान उत्तम होता है (लेसासु य परमसुक्लेसा) कृष्ण आदि छह
लेश्याओं में जैसे परमशुक्ललेश्या—शुक्लध्यान के तीसरे (पाये) पादमें
होनेवाली लेश्या—उत्तम होती है (जहा मुणीण तित्थयरो) मुनियों के
बीच में जैसे तीर्थकर सर्वोत्तम होते हैं, तथा (वासेसु जहा विदेहे)
क्षेत्रों में जैसे विदेहक्षेत्र सत्र से उत्तम क्षेत्र होता है, उसी तरह व्रतों
में यह ब्रह्मचर्य व्रत सबसे प्रधान व्रत है । तथा—(मदरवरे गिरि-
राया) जैसे जम्बूद्वीप में पर्वतों के मध्य में मंदर वर गिरिराज श्रेष्ठ है,

સસ્થાન જેમ શ્રેષ્ઠ મનાય છે તેમ આ બ્રહ્મચર્ય વ્રત પણ સઘળા વ્રતોમા
મુખ્ય મનાય છે એ જ પ્રમાણે “ જ્ઞાણેસુ વર સુક્લજ્ઞાણ ” ચાર ધ્યાનોમા
જેમ પરમ શુક્લધ્યાનનો ચોથો ભેદ ઉત્તમ હોય છે, અને “ નાણેસુ ય પરમ
કેવલ સિદ્ધ ” આભિનિવોધિક આદિ પાંચ જ્ઞાનોમા જેમ કેવળજ્ઞાન ઉત્તમ
હોય છે, “ લેસાસુ ય પરમસુક્લેસા ” કૃષ્ણ આદિ છ લેશ્યાઓમા જેમ શુક્લ
લેશ્યા—શુક્લધ્યાનના ત્રીજા પદમા—પાયામા થનારી લેશ્યા—ઉત્તમ હોય છે “ જહા
મુણીણ તિત્થયરો ” મુનિઓની વચ્ચે જેમ તીર્થ કર સર્વોત્તમ હોય છે, “ વાસેસુ
જહા વિદેહે ” ક્ષેત્રોમા જેમ વિદેહ ક્ષેત્ર સર્વોત્તમ છે, એ જ પ્રમાણે આ
બ્રહ્મચર્ય વ્રત સઘળા વ્રતોમા પ્રધાન વ્રત છે તથા “ મદરવરે ગિરિરાયા ”
જેમ જ જમ્બૂદ્વીપમા પર્વતોમા ગિરિરાજ મદરવર શ્રેષ્ઠ છે, “ વણેસુ જહા વણ

શન્તીત્વર્થઃ । અયમાશયઃ—વ્રતાના મધ્યે બ્રહ્મચર્ય વ્રત સર્વત શ્રેષ્ઠમ્ । અતસ્ત-
દારાધકાઃ સર્વત શ્રેષ્ઠા મયન્તીતિ ॥ સુ ૨ ॥

મૂલમ્—જમ્મિ ય આહિય વયમિણ સચ્ચ સીલં તવો ય
વિણયો ય સજમો ય ચત્તી ગુત્તી મુત્તી, તહેવ ઇહલોહ્ય
પરલોહ્યજસો ય કિત્તી ય પચ્ચાઓ ય, તમ્હા નિહુણં વમ-
ચેરં ચરિયવ્વં સવ્વઓ વિસુદ્ધ જાવજ્જીવાણ જાવસેયઠ્ઠી
સંજઓત્તિ, એવ મણિયં વય મગવયા । તં ચ ઇમ—“પચમ-
હવ્વયસુવ્વયમૂલ સમણમણાઇલસાહુસુચિણ્ણ । વેરવિરામ-
ણપજ્જવસાણ સવ્વસમુદ્દમહોદહિતિત્થં ॥ ૧ ॥ તિત્થગરેહિ
સુદેસિયમગ્ગં નરગતિરિચ્છવિવજ્જિયમગ્ગં । સવ્વપવિત્તસુનિ-
મ્મિયસારં સિદ્ધિવિમાણઅવગુયદારા ॥ ૨ ॥ દેવનરિદનમસિ-
યપુજ્જ સવ્વજગુત્તમમગલમગ્ગ । દુદ્ધરિસ ગુણનાયગમેક્કં
મોક્કલ્લપહસ્સ વહિસગમ્ભૂયં” ॥ ૩ ॥ જેણ સુદ્ધચરિણં ભવઙ્
સુવમ્મણો સુસમણો સુસાહૂ સુહસી સુમુણી સુસજણ સ એવ
મિલ્લૂ, જો સુદ્ધ ચરઙ્ વમ્મચેર ॥ ૩ ॥

જાતે હૈ । इसलिये व्रतों के बीच में यह ब्रह्मचर्यव्रत सर्व श्रेष्ठ व्रत है,
अतः इसके आराधकजन भी सर्वतःश्रेष्ठ होते हैं ।

भावार्थ—इस एक ब्रह्मचर्य महाव्रत के आराधित होने पर समस्त
सद्गुण स्वयं आराधित हो जाते हैं और इसके विनष्ट होनेपर वे समस्त
सद्गुण नष्ट हो जाते हैं । अतः समस्त व्रतोमे यह व्रत सर्वश्रेष्ठ है । सू० २ ॥

અતને આચરવાથી સમસ્ત શુભ તે પુરુષમા આવી જાય છે તે કારણે વ્રતો મધ્યે આ
બ્રહ્મચર્યવ્રત સર્વ શ્રેષ્ઠ વ્રત છે, તેથી તેની આરાધના કરનાર વ્યક્તિ સર્વ શ્રેષ્ઠ હોય છે

ભાવાર્થ—આ એક બ્રહ્મચર્ય વ્રતની આરાધના કરવામા આવે તો સમસ્ત
સદ્ગુણ તેની જાતે જ આરાધિત થઈ જાય છે અને તેનો નાશ થતા તે સમસ્ત
સદ્ગુણોનો નાશ થઈ જાય છે તેથી સઘળા વ્રતોમા આ વ્રત સર્વશ્રેષ્ઠ છે ॥ સુ. ૨ ॥

‘જનદણવણ’ નન્દનવન ‘પવર’ પવર ‘દુમેસુ’ દુમેસુ-ટુક્ષેણ ‘જહા’ યથા-
 ‘સુદસણા’ સુદર્શના-સુદર્શનાશ્યા ‘જવૂ’ જમ્બૂ=શ્વીરિક્ષ: રક્ષાપિણેપ:, મા
 ‘વિસ્મયજસા’ વિશ્રુતયજસા:-યજસા પ્રિચ્યાતા । જમ્બુ કિં નામ યજસ: ? ઇત્યાદિ
 —‘જીય યસ્યા:’ નામેણ નામ્ના અય ‘દીવે’ દ્વીપો=જસ્યુદ્વીપોઽસ્તિ,
 તથૈવેદ વ્રહ્મચર્ય વ્રતાનાં મધ્યે પ્રિચ્યાતમ્ । તથા—‘જહા ચૈવ’ યથા ચૈવ ‘તુર
 ગવર્હ’ તુરગપતિ:=અશ્વસેનાયુક્ત. ‘ગયર્હ’ ગજપતિ:=ગજસેનાયુક્ત ‘રહર્હ’
 રથપતિ:=રથસેનાયુક્ત. ‘નરર્હ’ નરપતિ:=નરસેનાયુક્તો ‘રાયા’ રાજા વિશ્રુત:,
 ‘જહા ચૈવ’ યથા ચૈવ ‘રહિણ’ રથિકે=રથારોહિમધ્યે ‘મહારહગણ’ મહાર
 થગત =મહારથારોહી વિશ્રુત’ । તથૈવ વ્રતાના મધ્યે ઇદં વ્રત વિશ્રુતમ્=પ્રસિદ્ધમ્
 એવમ્=એવમ્પ્રકારા: ‘અણેગગુણા’ અણેકગુણા:=પવરત્વવિશ્રુતત્વાદયોઽણેકેગુણા
 ‘એગમ્મિ વમચેરે’ એકસ્મિન્ વ્રહ્મચર્યે ‘અહીણા’ અધીના=સ્ત્રાધીના. ભવન્તિ,
 એકસ્મિન્ વ્રહ્મચર્યે સમારાધિતે સતિ સર્વે ગુણા: સમાગત્ય તસ્મિન્ પુરુષે સમાવિ

(વણેસુ જહા જનદણવણ પવર) વનો મેં જૈસે નદનવન શ્રેષ્ઠ છે, (દુમે
 સુ જહા સુદસણા જવૂવિસ્મયજસા) ઘૃક્ષો મેં જૈસે જવૂ ઘૃક્ષ પ્રસિદ્ધયજ
 સપન્ન છે કિ (જીયનામેણ અય દીવો) જિસકે નામ સે યહ દ્વીપ જહુ
 દ્વીપ કહલાતા છે, ડસી પ્રકાર વ્રતો મેં વ્રહ્મચર્ય વ્રતશ્રેષ્ઠ છે । તથા (તુર-
 ગવર્હ, ગયર્હ, રહર્હ, નરર્હ, રાયા જહાચૈવ રહિણ મહારહગણ, એવ-
 મણેગગુણા એગમ્મિ વમચેરે અહીણા ભવન્તિ) જૈસે અશ્વસેનાયુક્ત, ગજ
 સેનાયુક્ત, રથસેનાયુક્ત, નરસેનાયુક્ત, રાજા પ્રસિદ્ધ હોતા છે, તથા
 રથારોહિયોં કે ઘીચ મે મહારથારોહી પ્રચ્યાત હોતા છે, ડસી તરહ
 વ્રતો મેં યહ વ્રહ્મચર્યવ્રત પ્રચ્યાત છે । ડમ તરહ પવરત્વ, વિશ્રુતત્વ આદિ
 અણેક ગુણ એક ઇસ વ્રહ્મચર્ય મેં અધીન હોતે હેં, અર્થાત્ એક વ્રહ્મચર્ય
 કે આરાધિત કર લેને પર સમસ્તગુણ આકાર ડસ પુરુષ મેં આશ્રિત હો

વણ પવર ” વનોમા જેમ નદનવન શ્રેષ્ઠ છે, “ દુમેસુ જહા સુદસણા જવૂ વિ
 સ્મયજસા ” ઘૃક્ષોમા જેમ જળુઘૃક્ષ પ્રસિદ્ધ યજ સપન્ન છે, કે “ જિય નામેણ
 અય દીવો ” જેના નામથી આ દ્વીપ જળુદ્વીપ કહેવાય છે, એ જ પ્રમાણે
 મતોમા બ્રહ્મચર્ય વ્રત શ્રેષ્ઠ છે તથા “ તુરગવર્હ, ગયર્હ, રહર્હ, નરર્હ રાયા,
 જહા ચૈવ રહિણ મહારહગણ, એવમણેગગુણા એગમ્મિ વમચેરે અહીણા ભવન્તિ ” જેમ
 હ્યદળવાળો, ગજદળવાળો, રથદળવાળો અને પાયદળવાળો રાજા પ્રસિદ્ધ હોય
 છે તથા રથારોહિયોની વચ્ચે મહારથારોહી પ્રખ્યાત હોય છે, એ જ પ્રમાણે
 મતોમા પણ બ્રહ્મચર્ય વ્રત પ્રખ્યાત છે આ પ્રમાણે શ્રેષ્ઠતા, વિશ્રુતત્વ, આદિ
 અણેક ગુણ આ એક બ્રહ્મચર્યને આધીન હોય છે, એટલે કે એક બ્રહ્મચર્ય

યવ્વ ' ચરિતવ્યમ્=આસેવિતવ્યમ્ ક્રીદશ વ્રહ્મચર્યમાસેવિતવ્યમ્ ?' ઇત્યાહ—
' સન્વઓ ત્રિસુદ્ધ ' સર્વતો વિશુદ્ધમ્ ? મનઃ પ્રભૃતિ ત્રિકરણત્રિયોગનિર્મલ, ક્રિય-
ત્કાલમાસેવિતવ્યમ્ ?' ઇત્યાહ—' જાવજ્જીવાણ ' યાવજ્જીવયા પ્રતિજ્ઞયા યાવજ્જી-
વતયા ત્રા જીવનપર્યન્તમિત્યર્થઃ, તથા—' જાવસેયદ્વિ સજઓત્તિ ' યાવત્ શ્વેતાસ્થિ
સયત, ઇતિ, શ્વેતાસ્થિ=દુષ્કર તપ' કરણાદુષ્ટિરાભાવેન શુક્લાસ્થિ અસ્થીનિ
યસ્મિન્મત્-શ્વેતાસ્થિ=અસ્થિપજ્જરપ્રાય શરીર તત્ર સયતઃ પ્રતિપદ્ધો જીવો યાવદ્
ભવેત્, મરણપર્યન્તમિત્યર્થઃ । અય મ્હાત્રઃ—સાધુના દુશ્વર તપશ્ચરણાદિના સ્વશરીર
રુધિર ત્રિશોષ્ય મરણાદિ વ્રહ્મચર્ય પાલનીયમિતિ । અથવા યાવન્ત્રેયોર્ધિ સયત '
ઇતિચ્છાયા, ત્રેયો મોક્ષસ્તદર્થયિતુ શીલ યસ્ય સ ત્રેયોર્ધિ, સ ચાસૌ સયતશ્ચેતિ
કર્મધારયઃ અય મ્હાત્રઃ—સાધુર્યાત્કાલ મોક્ષ ન પ્રાપ્નોતિ, તાત્કાલ તેન વ્રહ્મચર્ય
પાલનીયમિતિ । ' એવ ' ઇત્યેવ ' મ્હાનિય ' મ્હાનિત ' મ્હાવયા ' મ્હાવતા મ્હા-

પણ) નિશ્ચલભાવ સે (વમ્હેર) હસ વ્રહ્મચર્ય મ્હાત્રત કા (જાવજ્જી-
વાણ) જીવનપર્યન્ત (ચરિયવ્વ) પાલન કરના ચાહિયે । (જાવ સેયદ્વિ-
સજઓત્તિ) યાવત્ શ્વેતાસ્થિ સયતઃ અર્થાત્ ચાહે મ્હે હીદુશ્વર તપશ્ચરણ
આદિ દ્વારા અપને શરીર કા રૂન સૂક જાને સે શ્વેત દ્વિર્યા હી ઉસમેં
અવશેષ રહ ગઈ હો તત્કલ । અથવા યાવત્ ત્રેયોર્ધિ સયત—અર્થાત્—
સાધુ કો જવતક મુક્તિ કી પ્રાપ્તિ ન હો જાવે, તત્કલ હસ મ્હાત્રત કા
અવશ્ય પાલન કરતે રહના ચાહિયે । “ જાવ સેયદ્વિ સજઓ ” હસકી
અક તો શ્વેતાસ્થિસયતઃ ” એસી સસ્કૃત છાયા હોતી હૈ ઓર દૂસરી—
“ ત્રેયોર્ધિસયત. ” એસી મ્હી હોતી હૈ । (એવ મ્હાનિય વય મ્હાવયા)
હસ પ્રકાર સે હસ ત્રત કા મ્હાવાન મ્હાવીર ને જો કિ અન્તિમ તીર્થ-

નિશ્ચલ ભાવથી “ વમ્હેર ” આ વ્રહ્મચર્ય મ્હાત્રતનું “ જાવજ્જીવાણ ” જીવન
પર્યન્ત ચરિયવ્વ ” પાલન કરવું જોઈએ જાવ સેયદ્વિસજઓત્તિ ” ‘ યાવત્
શ્વેતાસ્થિસયત ’ એટલે કે કઠોર તપશ્ચરણ આદિ દ્વારા પોતાના શરીરનું લોહી
સૂકાઈ જવાથી સફેદ હાડકા જ તેમા બાકી રહ્યા હોય એવી સ્થિતિમા પણ
આ ત્રતનું પાલન કરવું જોઈએ અથવા યાવત્ ત્રેયોર્ધિ સયત—એટલે કે જ્યા
સુધી સાધુને મોક્ષની પ્રાપ્તિ ન થાય ત્યા સુધી આ મ્હાત્રતનું પાલન કરતા
રહેવું જોઈએ “ જાવ સેયદ્વિસજઓ ” તેની એક સસ્કૃત છાયા “ શ્વેતાસ્થિસયત ”
થાય છે, અને બીજી “ ત્રેયોર્ધિસયત ” એવી પણ છાયા થાય છે “ એવ
મ્હાનિય વય મ્હાવયા ” આ પ્રમાણે અન્તિમ તીર્થ કે મ્હાવાન મ્હાવીર આ ત્રતનું

ટીકા—‘ જમ્મિય ’ ઇત્યાદિ—

‘ જમ્મિય ’ યસ્મિન્નર્થે બ્રહ્મચર્યે આરાધિતે ‘ ઇણ ’ ઇદં પ્રવ્રજ્યા—ઉક્ષણ
‘ વય ’ વ્રતમ્ ‘ આરાહિય ’ આરાધિત ભવતિ । તથા પુનરપિ યદારાધિત ભવતિ,
તદાહ—‘ સચ્ચ ’ સત્ય ‘ સીલ ’ શીલ=સાધ્યાચારઃ—‘ તપો ય ’ તપશ્ચ ‘ વિણઓ
ય ’ વિનયશ્ચ ‘ સજમો ય ’ સયમશ્ચ, તથા—‘ સ્વતી ’ ક્ષાન્તિઃ ‘ ગુત્તી ’ ગુપ્તિઃ—
મનોગુપ્ત્યાદિકા, ‘ મુત્તી ’ મુક્તિઃ—નિર્લોભતા ‘ તહેય ’ તથેય ‘ ઇહલોહ્ય પરલો
હ્ય ’ એહલૌકિકપારલૌકિક ‘ જમો ય ’ યશશ્ચ—યશઃ=એકદિગ્ગામિનીરયાતિઃ
‘ કિત્તીય ’ કીર્તિશ્ચ=સર્વદિગ્ગામિનીપ્રસિદ્ધિ, ‘ પચ્ચઓ ય ’ પ્રત્યયશ્ચ=‘ સાધુર-
યમ્ ’ એવ રૂપો વિશ્વાસઃ, એતત્સર્વં બ્રહ્મચર્યે સમારાધિતે ભવતીતિ ભાવઃ । ‘ તમ્હા ’
તસ્માદ્ હેતોઃ ‘ નિહુણ ’ નિમૃત્તેન=નિશ્ચલભાવેન ‘ વખચેર ’ બ્રહ્મચર્યે ‘ ચરિ-

‘ જમ્મિય ’ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(જમ્મિય આરાહિય) જિસ બ્રહ્મચર્ય વ્રત કે આરાધિત
કર છેને પર (ઇણ વય આરાહિય) યહ પ્રવ્રજ્યારૂપવ્રત આરાધિત હો
જાતા હૈ તથા—(સચ્ચ સીલતવો ય વિણયો ય સજમો ય સ્વતિ, ગુત્તી,
મુત્તી, તહેવ ઇહલોહ્ય, પરલોહ્ય, જસો ય કિત્તી ય પચ્ચઓ ય) સત્ય,
શીલ—સદાચાર, (મુનિ કા આચાર) તપ, વિનય, સયમ, ક્ષાન્તિ મનો-
ગુપ્તિ આદિ ત્રીન ગુપ્તિયા, નિર્લોભનારૂપ મુક્તિ, તથા ઇહલોક સવધી,
ઔર પરલોક સવધી યશ—એક દિશામે ફેલાનેવાલી પ્રસિદ્ધિ, કીર્તિ-
સર્વ દિશા મેં ફેલાને વાલી પ્રસિદ્ધિ, તથા—પ્રત્યય—“ યહ સાધુ હૈ ”
ઇસ રૂપ વિશ્વાસ, યે સર્વ આરાધિત હો જાતે હૈ । (તમ્હા) ઇસલિયે
(સર્વઓ વિસુદ્ધ) નૌ કોટિ—ત્રિકરણ ત્રિયોગ સે નિર્મલ બનાકર (નિહુ

“ જમ્મિય ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—“ જમ્મિય આરાહિય ” એ બ્રહ્મચર્ય વ્રતનું સેવન કરવાથી “ ઇણ
વય આરાહિય ” આ પ્રશ્નશ્વરજ્ઞાન નવ આરાધિત થઈ જાય છે, તથા “ સચ્ચ
સીલ તવો ય વિણયો ય સજમો ય સ્વતી, ગુત્તી, મુત્તી ઇહલોહ્ય પરલોહ્ય જસો ય
કિત્તી ય પચ્ચઓ ય ” સત્ય, શીલ, સદાચાર, (મુનિનો આચાર) તપ, વિનય,
સયમ, ક્ષાન્તિ, મનોગુપ્તિ અદિ ત્રણ ગુપ્તિ, નિર્લોભતારૂપ મુક્તિ, તથા આલોક
સબધી તથા પરલોક સબધી યશ—એક દિશામાં ફેલાનાર પ્રસિદ્ધિ, કીર્તિ-
સર્વજની દિશાઓમાં ફેલાનાર પ્રસિદ્ધિ, તથા પ્રત્યય—“ આ સાધુ છે ” એ પ્રકારનો
વિશ્વાસ, એ બધા આરાધિત થઈ જાય છે ‘ તમ્હા ’ તેથી “ સર્વઓ
વિસુદ્ધ ” નવ પ્રકારે—ત્રિકરણ ત્રિયોગથી નિર્મળ બનાવીને “ નિહુણ ”

તથા—' સત્ત્વમુદ્દમહોદહિતિત્થ ' સર્વમુદ્દમહોદધિતીર્થમ્-સર્વે ચ તે સમુદ્રાઃ સર્પ સમુદ્રાસ્તેષુ મહાન ઉદ્ધિઃ=સ્વયમ્ભૂરમણ મમુદ્દસાત્તુલ્ય વિશાલત્વાત્સ-સારોઽપિ મહોદધિસ્તસ્ય તીર્થમિત્થ=પારગમનાય નૌકેચ ચત્તત્થાઽતિ ॥ ૧ ॥

' તિત્થગરેહિં ' इत्यादि—' तित्थगरेहिं ' तीर्थकरै=जिनै ' सुदेसियमग्गं ' सुदेशितमार्गम्=सुदेशितः=सुदर्शितः मार्गः=गुप्त्यादि तत्पालनोपायो यस्मिंस्त-
त्तथा, तथा—' नरगतिरिच्छविज्जियमग्ग ' नरकतिर्यग्विज्जितमार्ग-नरकस्य=
नरकगते, तिरश्च=तिर्यग्गतेश्च विज्जित=प्रतिरोधितो मार्गो गतिर्येन तादृशम्।
तथा—' सव्वपवित्तसुनिम्मियसार ' सर्वपत्रिसुनिर्मितसार=पर्वपवित्राणि=सर्वाणि
पावनानि सुनिर्मितानि=सुविहितानि साराणि=प्रधानानि येन तत्तथा, सकलव्रत-

નર્પ ઉસકે લિયે દાર જેમા યન જાતા હૈ ઓર વિપ બી સુસાધુ જૈસા
હો જાતા હૈ-જો નૌ કોટિ સે શુદ્ધ બ્રહ્મચર્ય વ્રત કા પાલક હોતા હૈ ।
યહ બ્રહ્મચર્ય કા હી પ્રભાવ હૈ જો શત્રુ બી મિત્ર યન જાતા હૈ ।

(સવ્વસમુદ્દમહોદહિતિત્થ) સમસ્ત સમુદ્રોં મેં અતિમ સ્વયમ્ભૂર-
મણસમુદ્ર એક વહત વિશાલ સમુદ્ર હૈ-હસકે જૈસે વિશાલ હોને સે
સસાર બી એક મહોદધિ જૈમા હૈ, ઉસસે પાર હોને કે લિયે યહ બ્રહ્મ-
ચર્ય એક નૌકા કે સમાન હૈ ॥ ૧ ॥ (તિત્થગરેહિં સુદેસિયમગ્ગ)
તીર્થકર ભગવતો ને હસકે પાલને કા શુભિ આદિ રૂપ ઉપાય કહ્યા
હૈ । (નરગતિરિચ્છવિવિજ્જિયમગ્ગ) હસકે પ્રભાવ સે નરકગતિ ઓર
તિર્યગ્ગતિ કા માર્ગ રુક જાતા હૈ (સવ્વપવિત્તસુનિમ્મિયસાર) તથા

જે નવ પ્રકારે શુદ્ધ બ્રહ્મચર્ય વ્રતને આરાધન હોય છે તેને માટે
માપ હાર જેવો બની બાય છે અને વિષ પણ અમૃત જેવું થઈ બાય છે
બ્રહ્મચર્યનો જ આ પ્રભાવ છે કે શત્રુ પણ મિત્ર બની બાય છે, “ સવ્વસમુદ્દ-
મહોદહિતિત્થ ” સઘળા સમુદ્રોમા અતિમ સ્વયમ્ભૂરમણ સમુદ્ર એક ધણો વિશાળ
સમુદ્ર છે-નેના જેવો વિશાળ હોવાથી સસાર પણ એક મહાસાગર જેવો
છે, તેને પાર જવાને માટે આ બ્રહ્મચર્ય એ એક નૌકા જેવું છે ॥ ૧ ॥
“ તિત્થગરેહિં સુદેસિયમગ્ગ ” તીર્થ કર લગવાનોએ તેના પાલન માટે શુભિ
આદિ ઉપાય બતાવ્યા છે “ નરગતિરિચ્છવિવિજ્જિયમગ્ગ ” તેના પ્રભાવથી
નરકગતિ અને તિર્યગ્ગતિનો માર્ગ અટકી બાય છે “ સવ્વપવિત્ત સુનિ-
મ્મિયસાર ” અને તેનો જ પ્રભાવ સૌને પ્રવિત્ર અને સારભૂત બનાવી દે છે,
એટલે કે આ વ્રત સઘળા વ્રતોને પવિત્ર દેહ કરનાર છે “ સિદ્ધવિમાણઅ
વગુણદાર ” તથા મોક્ષ ગતિનું અને અનુત્તર વિમાનોનું ડાંગ તેનાથી ઉધડી બાય

વીરેણ ચરમતીર્થહૃરેણ । ‘ ત ચ ’ તદ્વ્રતમ્ ‘ ઇમ ’ ઇદમ્=અગ્રે-વક્ત્ર્યમાણસ્વરૂ-
પમસ્તિ । તદાદૃ તિસૃભિર્ગાથામિઃ—

‘ પચમહવ્યય • ’ હત્યાદિ ।

‘ પચમહવ્યયસુવ્યયમૂલ ’ પચમહાવ્રતસુવ્રતમૂલમ્=પચ્ચ=પચ્ચસરયકાનિ યાનિ
મહાવ્રતાનિ=પ્રાણાત્તિપાતવિરમણાદિ લક્ષણાનિ, તાન્યેવ સુવ્રતાનિ તૈષા મૂલમ્=
કારણમ્ ઇદં બ્રહ્મચર્યવ્રતમસ્તિ । તથા—ઇદં બ્રહ્મચર્યવ્રત, ‘ સમણ ’ શમન=ચિત્ત
સમાધિજનક, તથા—‘ અનાગિલમાધુસુચીર્ણમ્=અનાગિલ. = અગ્નિપાઃ—નિર્મલ
ચારિત્રા યૈ સાધવસ્તૈઃ સુચીર્ણ=સમારાધિતમ્, તથા—‘ વૈરવિરામણપઙ્ગવસાણ
વૈરધિમ્મણપર્યગ્ગસાનમ્=વૈર=શત્રુભાવસ્તસ્ય વિરમણ=નિવૃત્તિઃ પર્યવસાનેઽન્તે યસ્ય
તદ્, બ્રહ્મચર્યં હિ વૈર વિનિગ્રાયં પરમપ્રીતિમુપજનયતીતિ માયઃ ।

ઉક્ત ચ—

સપ્પો હારાયણ તસ્સ, વિસ ચાવિ સુહાયણ ।

બમ્બેરણ્ણમાવેણ, રિઝ મિત્તાયણ સયા ॥ ૧ ॥

છાયા —સર્પો હારાયતે તસ્ય વિપ ચાપિ સુધાયતે ।

બ્રહ્મચર્યપ્રભાવેણ રિપુર્મિત્રાયતે સદા ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

કર હુણ હૈ કથન ક્રિયા હૈ । (ત ચ ઇમ) હસ મહાવ્રત કા સ્વરૂપ ત્રીન
ગાથાઓ સે કહતે હૈ—

(પચમહવ્યયસુવ્યયમૂલ) યહ બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રતરૂપ સુવ્રતોં કા મૂલ-
કારણ હૈ, (સમણ) ચિત્તસમાધિ કા જનક હૈ, (અનાગિલસાધુસુચિણ)
નિર્મલ ચારિત્રધારી સાધુઓં દ્વારા અગ્નિ તરહ આરાધિત ક્રિયા હુઆ
હૈ (વૈરવિરામણપઙ્ગવસાણ) વૈરવિરોધ કા યહ અત કરકે પરમ પ્રીતી
કા જનક હોતા હૈ । કહા બી હૈ—

“ સપ્પો હારાયણ તસ્સ, વિસ ચાવિ સુહાયણ ।

બમ્બેરણ્ણમાવેણ, રિઝ મિત્તાયણ સયા ॥ ૧ ॥

કથન કર્યું છે “તચ્ચ ઇમ” આ મહા વ્રતનુ સ્વરૂપ ત્રણ ગાથાઓ દ્વારા કહે છે

“ પચમહવ્યયસુવ્યયમૂલ ” આ બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રત પ્રાણાત્તિપાત
વિરમણ આદિ પાંચ મહાવ્રતરૂપ સુવ્રતોનું મૂળકારણ છે “ સમણ ” ચિત્ત
સમાધિનું જનક છે, “ અનાગિલ સાધુ સુચિણ ” નિર્મળ ચરિત્રધારી સાધુઓ
દ્વારા સારી રીતે આરાધિત થયેલ છે, “ વૈરવિરામણપઙ્ગવસાણ ” વૈર વિરોધનો
અન્ત લાવીને તે પરમ પ્રીતિનું જનક થાય છે કહ્યું પણ છે—

“ સપ્પો હારાયણ તસ્સ વિસ ચાવિ સુહાયણ ।

બમ્બેરણ્ણમાવેણ, રિઝ મિત્તાયણ સયા ॥ ૧ ॥

તથા—‘ સન્ન્યમમુદમહોદહિતિત્થ ’ સર્વમુદ્રમહોદપ્રતીત્યમ્-રૂર્વે ચ તે સમુદ્રાઃ સર્વ સમુદ્રાસ્તેષુ મહાન ઉદધિઃ=સ્વયમ્ભૂરમણ સમુદ્રસાતુલ્ય વિશાલત્વાત્સ-સારોઽપિ મહોદધિસ્તસ્ય તીર્થમિવ=પારગમનાય નોત્તેવ યત્તત્થાઽતિ ॥ ૧ ॥

‘ તિત્થગરેહિ ’ इत्यादि-‘ તિત્થગરેહિ ’ તીર્થસ્તૈઃ=જિને ‘ સુદેસિયમગ્ગ ’ સુદેશિતમાર્ગમ્=સુદેશિતઃ=સુદર્શિત માર્ગઃ=ગુપ્ત્યાદિ તત્પાલનોપાયો યસ્મિન્સ્ત-ત્થા, તથા-‘ નરગતિરિચ્છવિવજ્જિયમગ્ગ ’ નરકતિર્યગ્વિવર્જિતમાર્ગ નરકસ્ય=નરકગતે, તિસ્થ=તિર્યગ્ગતેશ્ચ વિવર્જિત=પ્રતિરોધિતો માર્ગો ગતિયેન તાદૃશમ્ । તથા-‘ સવ્વપવિત્તસુનિમ્મિયસારં ’ સર્વપવિત્તસુનિર્મિતસાર=પર્વપવિત્રાણિ=સર્વાણિ પાવનાનિ નુનિર્મિતાનિ=સુપ્રિદ્ધિતાનિ સારાણિ=પ્રધાનાનિ યેન તત્તથા, સકલવ્રત-

ગર્વ ઉસકે લિયે દાર જૈમા ઘન જાતા હૈ ઓર વિષ ખી સુસાધુ જૈમા હો જાતા હૈ-જો નૌ કોટિ સે શુદ્ધ બ્રહ્મચર્ય વ્રત કા પાલક હોતા હૈ । યહ બ્રહ્મચર્ય કા હી પ્રભાવ હૈ જો જાગ્ર ખી મિથ્ર ઘન જાતા હૈ ।

(મન્વસમુદ્રમહોદહિતિત્થ) સમસ્ત સમુદ્રોં મેં અતિમ સ્વયમ્ભૂર-મણમુદ્ર એક વહત વિશાલ સમુદ્ર હૈ-હસકે જૈસે વિશાલ હોને સે સસાર ખી એક મહોદધિ જૈમા હૈ, ઉસસે પાર હોને કે લિયે યહ બ્રહ્મ-ચર્ય એક નૌકા કે સમાન હૈ ॥ ૧ ॥ (તિત્થગરેહિ સુદેસિયમગ્ગ) તીર્થકર ભગવતો ને હસકે પાલને કા શુષ્ઠિ આદિ રૂપ ઉપાય કહા હૈ । (નરગતિરિચ્છવિવજ્જિયમગ્ગ) હસકે પ્રભાવ સે નરકગતિ ઓર તિર્યચ્ચગતિ કા માર્ગ રુક જાતા હૈ (સવ્વપવિત્તસુનિમ્મિયસાર) તથા

જે નવ પ્રકારે શુદ્ધ બ્રહ્મચર્ય વ્રતને આગધડ હોય છે તેને માટે સાપ હાર જેવો બની જાય છે અને વિષ પણ અમૃત જેવું થઈ જાય છે બ્રહ્મચર્યનો જ આ પ્રભાવ છે કે શત્રુ પણ મિત્ર બની જાય છે, “ સવ્વસમુદ્ર-મહોદહિતિત્થ ” સંધળા મમુદ્રોમા અતિમ સ્વયમ્ભૂરમણ મમુદ્ર એક ધણો વિશાળ સમુદ્ર છે-નેના જેવો વિશાળ હોવાથી સસાર પણ એક મહાસાગર જેવો છે, તેને પાર જવાને માટે આ બ્રહ્મચર્ય એ એક નૌકા જેવું છે ॥ ૧ ॥ “ તિત્થગરેહિ સુદેસિયમગ્ગ ” તીર્થકર ભગવાનોએ તેના પાલન માટે શુષ્ઠિ આદિ ઉપાય બતાવ્યા છે “ નરગતિરિચ્છવિવજ્જિયમગ્ગ ” તેના પ્રભાવથી નરકગતિ અને તિર્યચ્ચ ગતિનો માર્ગ અટકી જાય છે “ સવ્વપવિત્ત સુનિ-મ્મિયસાર ” અને તેનો જ પ્રભાવ સૌને પવિત્ર અને સારભૂત બનાવી દે છે, એટલે કે આ વ્રત સંધળા વ્રતોને પવિત્ર દેહ ડરનાર છે “ સિદ્ધિવિમાળઅ-વનુયદાર ” તથા મોક્ષ ગતિનું અને અનુત્તર વિમાનોનું કાંત તેનાથી ઉધડી જાય

પવિત્રદ્વકારીત્યર્થઃ, તથા-‘ સિદ્ધિવિમાણઞ્ચંચુદારં ’ સિદ્ધિવિમાનાપાશ્વતઢા
 રમ્=સિદ્ધેઃ-મોક્ષગતે, વિમાનોનામ્=અનુત્તરવિમાનાનામ્ ચ, અપાટતમ્=ઉદ્ઘાટિત
 દ્વાર=પ્રવેશમુલ્લ યેન તત્તથા, સ્વર્ગાપિર્ગદ્વારોદ્ગાટકમિત્યર્થઃ ॥ ૨ ॥ પુનઃ ક્રીદશ્ચ
 બ્રહ્મચર્યમ્ ? ઇત્યાદ-‘ દેવનરિદ ’ ઇત્યાદિ । ‘ દેવનરિદનમસિય પુજ્જ ’ દેવનરેન્દ્ર
 નમસ્થિતપૂજ્યમ્-દેવાઃ=ભવનપત્યાદયઃ, નરેન્દ્રા =ચક્રચર્ત્વાદયમ્તેઃ નમસ્થિતા =
 નમસ્કૃતા યે મહાપુરુષાસ્તેષા પૂજ્યમ્=આદરણીયમ્ । તથા-‘ સત્ત્વજગુત્તમમગલ-
 મગ્ગ ’ સર્વજગદુત્તમમગલમાર્ગઃ=સર્વજગત્સુ=ત્રિપુ લોકેષુ ઉત્તમો મદ્ગ્લત્ર યો માર્ગઃ
 વપાય, સોઽસ્તિ । તથા-‘ દુદ્ધરિસ ’ દુર્ધર્મમ્=દેવદાનવૈરણ્યપરિભયનીયમ્, ‘ ગુણ
 નાયગ ’ ગુણનાયક=ગુણાન=જ્ઞાનાદિરૂપાન નયતિ=પ્રાપયતિ યત્તત્તાદશમ્=ગુણધા-
 યકમિત્યર્થઃ, તથા-‘ ઇવક ’ ઇવક-પ્રધાનમ્=નિરૂપમમ્ ઇત્યર્થઃ, તથા ‘ મોક્ષ
 પહસ્સ ’ મોક્ષપથસ્ય=મોક્ષમાર્ગસ્ય ‘ વડિસગમ્ભૂય ’ ઞત્તમકમ્ભૂતમ્=શિરોભૂષણ-
 સદશમિદ બ્રહ્મચર્યમસ્તિ ॥ ૩ ॥

હસકા હી પ્રભાવ સય કો પવિત્ર ઓર સારમ્ભૂત યના દેતા હૈ । અર્થાત્
 યહ વ્રત સમસ્ત વ્રતોં કો પવિત્ર ઓર દ્વઢ કરને વાળા હૈ । (સિદ્ધિવિ-
 માણઅવગુચદાર) તથા મોક્ષગતિ કા ઓર અનુત્તર વિમાનો કા ઢાર
 હસસે રુલ જાતા હૈ, અર્થાત્ સ્વર્ગ ઓર અપવર્ગ (મોક્ષ) કે દ્વારકા યહ
 ઉદ્ઘાટક હૈ-ઁલોલનેવાલા હૈ ॥ ૨ ॥ (દેવનરિંદનમસિયપુજ્જ) ભવનપતિ
 આદિ દેવોં દ્વારા ચક્રવર્તીં આદિ નરેન્દ્રોં દ્વારા, નમસ્કૃત હુવ ંસે મહા-
 પુરુષોં કે યહ પૂજનીય-આદરણીય હૈ । તથા-(સત્ત્વજગુત્તમમગલમગ્ગ)
 યહ તીનો લોકોં મે ઉત્તમ ઓર મગલકારી માર્ગ હૈ । તથા (દુદ્ધરિસ)
 દેવ ઓર દાનવોસે ઓ યહ પરાજિત હોનેવાલા નહીં હૈ (ગુણનાયગ)જ્ઞાનાદિ
 સદ્ગુણો કો યહ પ્રાપ્ત કરાને વાલા હૈ । (ઇવક) યહ પ્રધાનનિરૂપમ હૈ
 (મોક્ષપહસ્સ વડિસગમ્ભૂય) ઓર મોક્ષ માર્ગકા યહ શિરોભૂષણરૂપ હૈ ॥ ૩ ॥

છે ઁટલે સ્વર્ગ અને અપવર્ગના દ્વારતુ તે ઉદ્ઘાટન કરનાર છે-ઉદ્ઘાટનાર છે ॥૨॥
 “ દેવનરિંદનમ સિયપુજ્જ ” ભવનપતિ આદિ દેવો અને ચક્રવર્તી આદિ નરેન્દ્રો પણ
 જેમને નમન કરે છે એવા મહાપુરુષોને તે પૂજનીય અને આદરણીય છે તથા
 “ સત્ત્વ જગુત્તમમગલમગ્ગ ” તે ત્રણે લોકમા ઉત્તમ અને મગલકારી માર્ગ છે,
 તથા “ દુદ્ધરિસ ” દેવો અને દાનવો દ્વારા પણ તે પરાજિત થાય એવુ નથી
 “ ગુણનાયગ ” જ્ઞાનાદિ સદ્ગુણોને તે પ્રાપ્ત કરાવનાર છે “ ઇવક ” તે પ્રધાન
 -શ્રેષ્ઠ-અનુપમ છે “ મોક્ષપહસ્સ વડિસગમ્ભૂય ” અને મોક્ષમાર્ગતુ તે શિરો
 ભૂષણ રૂપ છે ॥ ૩ ॥

તથા—‘ સુદ્ધચરિણ ’ શુદ્ધચરિતેન=સમ્યગ્ચરિતેન ‘ જેન ’ યેન=બ્રહ્મ
ચર્યેન, ‘ ભગ્ન ’ ભગતિ ‘ સુશ્રમણો ’ સુશ્રાક્ષણઃ=આત્મજ્ઞાનતત્પરઃ, ‘ સુસમણો ’
સુશ્રમણ=સુતપસ્વી ‘ સુસાહ ’ સુસાધુઃ=નિર્વાણસાધકઃ ‘ સુદૈસી ’ સુઠપિઃ,
યથાદસ્તુદર્શકઃ, ‘ સુમુણી ’ સુમુનિઃ=જિનાજ્ઞાધારકઃ, ‘ સુસજ્જ ’ સુસયતઃ=
પરમયતનાપરાયણઃ । તથા સ એવ ‘ ભિક્ષુ ’ ભિક્ષુઃ=સર્વત્યાગી પરમપુરુષાર્થ-
સાધકો વા, ‘ જો ’ યઃ ‘ સુદ્ધ ’ શુદ્ધ ‘ વમચેર ’ બ્રહ્મચર્ય ‘ ચરઙ્ગ ’ ચરતિ=પાલયતિ ॥૬૩॥

(સુદ્ધચરિણ જેન સુશ્રમણો ભગ્ન) અચ્છત્રી તરહ આચરિત દુષ્ટ
હસ બ્રહ્મચર્ય સે હી મનુષ્ય સુશ્રાક્ષણ-આત્મ જ્ઞાન મેં તત્પર-હોતા હૈ,
(સુસમણો) સુશ્રમણ-સુતપસ્વી, (સુસાહ) સુસાધુ-નિર્વાણ સાધક,
(સુદૈસી) સુઠપિ-યથાવત્ વસ્તુદર્શક (સુમુણી) સુમુનિ-જિનાજ્ઞા કા
આરાધક, આર (સુસજ્જ) સુસયન પરમ યતના મેં પરાયણ હોતા હૈ ।
તથા (સ એવ ભિક્ષુ) વહી સચ્ચા ભિક્ષુ હૈ-સર્વ ત્યાગી-અયવા-
પરમ પુરુષાર્થ સાધક હૈ, (જો સુદ્ધ વમચેર ચરઙ્ગ) જો હસ બ્રહ્મચર્ય કો
શુદ્ધ રીતિ સે પાલના હૈ ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને હસ સૂત્ર દ્વારા હસ બ્રહ્મચર્ય કી ગુણગરિમા
(મહિમા) કા હી કથન કિયા હૈ । વે કહતે હૈ કિ હસ ઇક બ્રહ્મચર્ય વ્રતકે
પૂર્ણરૂપસે આરાધિક હોનેપર સત્ય, શીલ આદિ જિતને ભી સદ્ગુણ હૈં વે
સબ આરાધિત હો જાતે હૈં । યહ બ્રહ્મચર્ય પચમહાવ્રતોં કા મૂલકારણ
હૈ । અતઃયાવજ્જીવ સાધુ કો ઇમમા સેવન કરતે રહના ચાહિયે । જિસ

“ સુદ્ધચરિણ જેન સુશ્રમણો ભગ્ન ’ સારી રીતે આચરવામા આવેલ
આ બ્રહ્મચર્યથીજ મનુષ્ય સુશ્રાક્ષણ-આત્મ જ્ઞાનમા તત્પર થાય છે, “ સુસમણો ”
સુશ્રમણ-સુતપસ્વી-“ સુસાહ ” સુસાધુ-નિર્વાણ સાધક, “ સુદૈસી ” સુઠપિ-યથાવત્
વસ્તુ દર્શક, “ સુમુણી ” જિન આજ્ઞાનો આરાધક, અને “ સુસજ્જ ” સુસયત-
પરમ યતનામા પરાયણ થાય છે, તથા “ સ એવ ભિક્ષુ ” તે જ સાચા ભિક્ષુ
છે-સર્વત્યાગી અથવા પરમ પુરુષાર્થ સાધક છે, “ જો સુદ્ધ વમચેર ચરઙ્ગ ” જે
આ બ્રહ્મચર્યને શુદ્ધ રીતે પાળે છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા બ્રહ્મચર્યના ગુણ ગૌરવનું જ વર્ણન કર્યું
છે તેઓ કહે છે કે આ એક બ્રહ્મચર્ય વ્રતનું પૂર્ણ સ્વરૂપે આરાધના કરવામા
આવે તો સત્ય, શીલ આદિ બેટલા સદ્ગુણો છે તેમનું આરાધન આપોઆપ થઈ
જાય છે આ બ્રહ્મચર્ય પાત્ર મહાનતોનું મૂળ કારણ છે તેથી સાધુઓ જીવન-
પર્યંત તેનું સેવન કરવું બોધ્યું છે જે રીતે મૂળ વિના કોઈ પણ વસ્તુની

ब्रह्मचारिणां किं शिमाचरणीयम् ? किं किं चाचरणीयम् ? इति दर्शयति-
' इमं च ' इत्यादि ।

मूलम्—इमं च रश्मिगदोसमोहपवङ्गुणकरं किं मज्झिम्पमाय
दोसपासत्थसीलकरण अवभंगणाणि य तेहमज्झणाणि य
अभिक्षणं कक्खसीसकरचरणवयणधोवणसंवाहणगायकम्मप-
रिमदणाणुलेवणचुण्णवासधूवणसरीरपरिमडणवाउसि य हसिय-
भणिय-नट्ट-गीय-वाइयनडनट्टग-जल्लमल्ल-पेच्छणवेलवगजाणिय
सिगारागाणि अण्णाणि य एवमाइयाणि तवसंजमवभचेर-
घाओवघाइयाइ अणुचरमाणेण वभचेर वज्जेयव्वाइ सव्वकालं ।
भावेयव्वो भवइ अतरप्पा इमेहि तवनियमसीलजोगेहि णिच्च-
काल, किं ते, अण्हाणक अदंतधोवणसेयमल्लधारणमूणवयकेस-
लोयखमदमअचेलगखुप्पिवासलाघवसीतोसिणकट्टसेज्जाभूमिनि-
सेज्जपरघरप्पवेसलद्धावलद्धमाणावमाणनिदण-दसमसकफास-
नियमतवगुणविणयमाइएहि जहा से थिरतरग होइ वभचेर॥सू ४॥

टीका—‘ इमं च ’ इत्यादि । ‘ इमं च ’ इदं च रश्मिगदोस-अवसन्नपार्श्व
स्यादीनामाचरणीयमाचारजातम्, ‘ रश्मिगदोसमोहपवङ्गुणकर ’ रतिरागद्वेषमो

प्रकार मूल के बिना किसी भी वस्तु की स्थिरता नहीं होती है—उसी
प्रकार इम एक व्रत के अभाव में किसी भी व्रत की किसी भी सद्गुण
की स्थिरता और शोभा नहीं होती है । इत्यादि रूप से इस सूत्र में
इसकी महत्ता का प्रदर्शन किया गया है ॥ सू० ३ ॥

अथ सूत्रकार ब्रह्मचारी को किस किस बात का आचरण करना

। स्थिरતા સહવી શકતી નથી, એ જ રીતે આ એક વ્રતનો અભાવ હોય તો
બીજા કોઈ વ્રત કે સદ્ગુણની સ્થિરતા અને શોભા સહવતી નથી ઇત્યાદિ
રીતે આ સૂત્રમાં પ્રશ્નાર્થ વ્રતનું મહત્વ બતાવવામાં આવ્યું છે ॥ સૂ ૩ ॥

હવે પ્રશ્નચારીએ કેવા પ્રકારનું આચરણ કરવું જોઈએ અને કેવા

હમવર્દનકર, તત્ર-રતિ' = વિપચાનુરાગઃ, રાગઃ = સ્વજનેષુ સ્નેહઃ, દ્વેષઃ = શત્રુભાવઃ, મોહઃ = અજ્ઞાનમ્, एषा यत्प्रवर्द्धन = પ્રવૃદ્ધિસ્તસ્ય કર = કારકમ્, પુનઃ 'કિમજ્ઞ-પમાયદોસ-પાસત્યસીલ-કરણ' કિમધ્યપ્રમાદદોષપાર્શ્વસ્થશીલકરણમ્-તત્ર-કિમધ્ય = કિં = કુત્સિત મ યે યસ્ય તત્તથોક્તમ્-અસારમિત્યર્થઃ, તથા-પ્રમાદદોષઃ, પ્રમાદોઽસાવધાનતા, સપ્ચ દોષઃ = પ્રમાદદોષઃ, પાર્શ્વસ્થશીલ = પાર્શ્વસ્થાના = જ્ઞાનાચારાદિ વર્તિર્વર્તિના સાધ્યામામાના શીલમ્ = અનુષ્ઠાન નિષ્કારણનિત્યપિણ્ડપરિભોગાદિ, એતેષા કરણમ્ = કારક ભવતિ । સમ્પ્રતિ તદેવ ત્રિશદ્યતિ- 'અભ્યગ્નાણિય' અભ્યગ્નનાનિ ચ = ઘૃતનવનીતાદિના શરીરમર્દનાનિ 'તેલમજ્જનાણિય' અભ્યગ્નનાનિ ચ = તૈલાભ્યદ્વપૂર્વકસ્નાનાનિ, તથા-તથા- 'અભિમગ્ન' અભીક્ષ્ણમ્

ચાહિયે ઔર किस किस का नहीं ? इस बात को प्रदर्शित करते हैं—
' इम च इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(ઇમ ચ) યહ વક્ષ્યમાણ અવસન્ન, પાર્શ્વસ્થ, કુશીલ, સસક્ત, યથાછદ સાધુઓં કા આચાર (રહરાગદોસમોહપવર્દનકર) રતિ-વિપર્યાં મે અનુરાગ, રાગ-સ્વજનોં મે સ્નેહ, દ્વેષ-શત્રુતા, ઔર મોહ-અજ્ઞાન, इनकी वृद्धिकरने वाला होता है और (किमज्ज्ञ-पमाय-दोस-पासत्य-सील-करण) किं मध्य-असार प्रमाददोषअसावधानता-रूप दोष का, पार्श्वस्थ शील-ज्ञानाचारादि से ग्रहिर्भूत शिथिलाचारियो के अनुष्ठान का-निष्कारण नित्य पिण्डपरिभोगादिरूप स्वभाव का, जनक होता है । अब सूत्रकार इसी पार्श्वस्थ आदि के आचार को विशद रूप से समझाते हैं—(अभ्यगणाणिय) अभ्यग्न-घृत नवनीत आदिसे शरीर का मर्दन करना (तेलमज्जणाणिय) तेलका मालीस करना तथा

પ્રકારનુ ન કરવુ ભેદ એ તે સૂત્રકાર બતાવે છે- ' ઇમ ચ " ઇત્યાદિ-

ટીકાર્થ—“ ઇમ ચ ” આ પ્રમાણે ભેવામા આવતા અવસન્ન, પાર્શ્વસ્થ, કુશીલ, સસક્ત, સ્વછદી માધુઓના આચાર “ રહરાગદોસમોહપવર્દનકર ” રતિ-વિપર્યામા આસક્તિ, રાગ-સ્વજનો પર સ્નેહ, દ્વેષ-શત્રુતા અને મોહ-અજ્ઞાન, એ સૌની વૃદ્ધિ કરનાર હોય છે અને ‘ કિમજ્ઞ-પમાયદોસ-પાસત્ય-સીલકરણ ” ડિ મધ્ય-અસાર, પ્રમાદદોષ, -અસાવધાનતાએ દોષનુ પાર્શ્વસ્થશીલ-જ્ઞાનાચારાદિથી બાધ શિથિલતા ચારીઓના અનુષ્ઠાનનુ, નિષ્કારણ નિત્ય પરિભોગાદિ રૂપ સ્વભાવનુ જનક થાય છે હવે સૂત્રકાર આ પાર્શ્વસ્થ આદિના આચારને વિસ્તારપૂર્વક સમજાવે છે—“ અભ્યગ્નાણિય ” અભ્ય જન-ધી, માખણ આદિથી શરીરને માલીસ કરવુ, “ તેલમજ્જનાણિય ” તેલનુ માલીસ કરીને

=वारवारम्, 'कम्बुमीसकरचरणयणधोवणसवाहणगायकम्मपरिमहणाणुलेवेण चुण्णवासधूवणसरीरपरिमडणवाउसियहसियभणिय नट्टगीयवाइयनड नट्टगजजुम छपेच्छणवेलवग' कक्षाशीर्षकरचरणयदनयावनमवाहनगात्रकर्मपरिमर्दनानुलेपनचूर्णवासधूपनशरीरपरिमण्डनवाकुशितहसितभणितनायगीतयादितनटनर्त्तकजजुमल्ल-प्रेक्षणविडम्भक तत्र-कक्षा=वाहुडयमूलाधोवर्त्तिस्थानम्, शीर्ष=शिरः, करचरण=प्रसिद्धम्, यदन=मुख, तेपा यद् धारनं=पश्चात्, सवाधन=हस्ताभ्यां पादपीडन गात्रकर्म=शरीरपरिकर्म=समर्दनादि कर्मपरिमर्दन=सर्पतः शरीरमर्दनम्, तथा अनुलेपनचूर्णवासधूपनशरीरपरिमण्डनम्, तत्र अनुलेपनम्=शरीरे चन्दनानुलेपनम्, चूर्णवास=सुगन्धिद्रव्यचूर्णम्, धूपनम्=अगुरुधूपादि करणम्, शरीरपरिमण्डनम्=स्नानादिभिः शरीरशृङ्गारकरणम्, तथा-वाकुशिक नखस्त्रकेशसमारचनम्=यकुश=चरुचरित्र तदेवप्रयोजन यस्य तद् वाकुशिक शृङ्गारप्रयोजनक नखकेशस्त्रसमारचनादिक, हसित=हासः, भणित=स्त्रीणां प्रकृतभगनम्, नाट्य=नटकम्, गीत=गानम्, वादि

(अभिरुच्य कम्बुमीस कर-चरण यण-धोवण सवाहण गायकम्मपरिमहणाणुलेवेण चुण्णवासधूवणसरीरपरिमडणवाउसियहसियभणिय नट्ट-गीय वाइय नड नट्टग जल्ल मल्ल पेच्छण वेलवग) वारवार काख मस्तक-हाथ-पैर और मुहका योना, दोनो हाथोंसे शरीरका दावना, गात्रकर्म-शरीरकी सफाई पर विशेष ध्यान रखना परिमर्दक-दूसरो से शरीरको रातदिन दबवाना, अनुलेपन शरीर पर चदन का चार २ लेप करना, चूर्णवास सुगन्धित द्रव्यो के चूर्ण से, धूपन अगुरु आदि के धूप से शरीर को अलंकृत करना, तथा वाकुशिक-शृङ्गार के प्रयोजन को लेकर नख, वस्त्र और-केशों को समारना तथा हसित-हासका हँसी मजाक-मश्करी आदि का करना, भणित-स्त्रियों के जैसा गाली आदि भाण्डवचनों का बोलना

ज्ञान करवु, तथा "अभिरुच्य कम्बुमीस, कर, चरणनयण-धोवण-सवाहण गायकम्मपरिमहणाणुलेवण-चुण्ण-वासधूपन-सरीर-परिमडणवाउसियहसिय-भणिय-नट्ट-गीय-वाइय-नड-नट्टग-जल्ल-मल्ल-पेच्छण-वेलवग" वारवार भगल, माथु, हाथ-पग अने भोने धोवु, अने हाथथी शरीरने दबाववु, गात्रकर्म-शरीरनी स्वच्छता पर वधारे ध्यान आपवु, परिमर्दन-णीअ पासे शरीरने रातदिवस दबाववु, अनुलेपन-वारवार शरीरे चदनने लेप करवे, चूर्णवास-सुगन्धित द्रव्योना चूर्णथी, धूपन अगुरु आदिना धूपथी शरीरने अलंकृत करवु, तथा वाकुशिक-शृङ्गारने भाटे नण, वस्त्र अने डेगने समारवा तथा हसित-ठ्ठ्ठ मश्करी आदि करवु, भणित-स्त्रीयोना जेवी गाजो आदि अशिष्ट वचनो

तम्-पटहादिवादनम् तथा-नटाः-नाटयितार, नर्तकाः-नृत्यकारिणः, जल्ला = चर्ममयरज्जूपरिन्त्यकारकाः, मल्ला-मल्लयुद्धकारिणः, तेषां प्रेक्षणम्-अवलोकनम् तथा-विडम्बकाः-चिद्रूपकाः, एषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, वर्जयितव्या इति योगः । तथा-‘जाणि य सिंगारागाराणि य’ यानि च शृङ्गारागाणि च-शृङ्गारागारभूतानि अङ्गवेष्टादीनि तानि तथा-‘अण्णाणि य’ अन्यानि च-एभ्य इतराणि च ‘एवमाड्याणि’ एवमाडिकानि-एव प्रकाराणि यानि ‘तवसजमवभचेरघाओवघाइयाइ’ तपः सयमब्रह्मचर्यघातोपपातिकानि, तत्र तपः सयमब्रह्मचर्याणां घातो देशतः, उपघातं सर्वतो जायते यद्दशात् तानि तथोक्तानि ‘वभचेर’ ब्रह्मचर्यम्, ‘अणुचरमाणेण’ अनुचरता-पालयता ‘सव्वकाल’ सर्वकाल-सर्वदा ‘वज्जेयव्वाइ’ वर्जितव्यानि-त्याज्यानि भवन्ति, वर्जितव्यानीत्यस्यैकवचनविपरिणामेनान्यत्राप्यन्ययो बोध्यः । तथा-‘भावेयव्वो य’ भावितव्यश्च भवति ‘अतरप्पा’ अन्तरात्मा-जीवः । कैर्भावितव्यो भवति ? इत्याह-‘इमेहि’ एभिः ‘तवणियमसील-

नाटय-नाटक का देखना, गीत-गान का, वादित-पटह आदि पजते हुए पाजों का सुनना, नट-नटों का, नर्तक-नृत्यकारी जनों का जल्ल-जल्लों का-चर्ममयरज्जु के ऊपर नाचने वाले का, मल्ल-मल्लों के-बाहु युद्ध का प्रेक्षण-रुचिपूर्वक अवलोकन करना, तथा-विडम्बकों-चिद्रूपकों को देखना यह सब वर्जना चाहिये तथा ‘जाणिय’ जो भी (सिंगारागाराणि) शृंगार के आधारभूत ऐसे, तथा (एवमाड्याणि अण्णाणि य) इसी तरह के और भी जो (तव सजमवभचेरघाओवघाइयाइ) तपः, सयम एव ब्रह्मचर्य में एक देश से दूषण लगाने वाले हो अथवा सर्व-देश से उनका घात करने वाले हों, इन सब को (वभचेर अणुचरमाणेण) जो इस ब्रह्मचर्य महाव्रत के पालन करने वाले सयमी जन हैं उन्हें (सव्वकाल वज्जेयव्वाइ) सदा के लिये जोड़ देना चाहिये ।

जालवा, नाटको जेवा, गीत तथा पटह आदि वाजिनेनो अवाज साधणवे, नटोना, नृत्य करनारना, यर्भभय होरओओ प० नाचनाराओना, मल्लोना द्दद्युद्धु निरीक्षणु करवानु तथा विदूषणेने जेवानु ओ अधानो त्याग करवे जेधओ तथा “जाणिय” जे ओध “सिंगारागाराणि” शृंगारना साधनरूप जेवा तथा “एवमाड्याणि अण्णाणिय” जेवा प्रकारनु जीवु पणु जे ओध “तवसजमवभचेरघाओवघाइयाइ” तप सयम अने ब्रह्मचर्यभा ओक देशथी रूपणु लगाउनार होय अथवा सर्व देशनी तेभनो घात करनार होय, ते अधानो “वभचेरअणुचरमाणेण” जे आ ब्रह्मचर्य महाव्रतनु पालन करनार सयमी जेनो छे तेभणु “सव्वकाल वज्जेयव्वाइ” महाने भाटे त्याग करवे ।

જોગેહિ' તપોનિયમશીલયોગે = તપઃ પ્રભૃતિવ્યાપારૈઃ ' નિચ્ચકાલ' નિત્યકાલ = સર્વદાન્તરાત્મા ભાવિતવ્ય' । 'કિંતે' કે તે = ક્યમ્ભૂતાસ્તે તપોનિયમશીલયોગાઃ? इत्याह—' अण्हाणग अदतधोवणसेयमलजल्लधारणमृणवयकेसलोयनमदम अचेलग खुप्पिवासलाघवसीतोसिणकट्ट-सेज्जाभूमिनिसेज्जापरघरप्पवेस-लद्धावलद्धमाणावमाण-निदणदसमसगफासनियमतगुणविणयमाइएहि' 'अस्नानकादन्तधावनस्वेदमलत्र ललधारणमौनव्रतकेशलोच क्षमादमाचेलक-मुत्तिपासालाघवसीतोष्णकाष्ठगयाभूमि-निपद्यापरगृहप्रवेशल-धापलब्धमानापमाननिन्दनदशमशरुस्पर्शनियमतपोगुणविनया-दिकैः-तत्र-अस्नानक=स्नानवर्जनम्, अदन्तधावन=दन्तधावनवर्जनम्, तथा-स्वे-दमलजलधारण, तत्र-स्वेद = प्रस्वेद', मल=स्वेदरजः ससर्गात्समुत्पन्न प्रतीभूतम्

તથા (હમેહિં તવણિયમસીલજોગે હિં) હન તપ, નિયમ ઓર શીલ-સદાચાર, હન સયસે ઉસ વ્રહ્મચર્ય મહાવ્રતધારી કો (અતરપ્પા) અપની અન્તરાત્મા (નિચ્ચકાલ) સર્વદા (ભાવિયવ્વો મવ્વહ) ભાવિત કરના ચાહિયે । (કિંતે) વે તપ નિયમ-શીલ યોગ કૌન હૈં ? ઉન્હેં દિશ્વલાતે હૈં- અણ્હાણગ-અદતધોવણસેય-મલ્હ-જલ્હ-ધારણ-મૃણવય-કેસલોય-અચેલગ-અચેલગ-ખુપ્પિવાસલાઘવસીતોસિણકટ્ટ સેજ્જા ભૂમિનિસેજ્જ પરઘરપ્પવેસ-લદ્ધાવલદ્ધ-માણાવમાણ-નિદણદસમસગફાસનિયમતવ ગુણવિણયમાઈએહિં) ઉસ સાધુકે તપ, નિયમ ઓર શીલ હસ પ્રકારકે હોના ચાહિયે-વહે સાધુ યાવજ્જીવ સ્નાન ન કરે, અર્થાત્ ઉસ મહાવ્રતી કો જીવન ભર તક સ્નાન કરને કા ત્યાગ કર દેના ચાહિયે, કમી મી દેતૌન નહીં કરના ચાહિયે, શરીર મેં પ્રસ્વેદ-પસીના આતા હો, તો ઉસે વાયુ આદિ કરકે નહીં સુશ્વાના ચાહિયે । હસ પસીને મેં આકર

જોઈએ તથા 'હમેહિં તવણિયમ સીલજોગેહિં' એ તપ, નિયમ, અને શીલ-સદાચાર એ બધાથી તે પ્રશ્નચર્ય મહાવ્રતધારીએ "અતરપ્પા" પોતાનો અન્તરાત્મા "નિચ્ચકાલ" સદા "ભાવિયવ્વો મવ્વહ" ભાવિત કરવો જોઈએ "કિંતે" તે તપ નિયમ-શીલયોગ કેવો હોય છે તે બતાવે છે- "અણ્હાણગ-અદતધોવણ-સેય-મલ્હ-જલ્હ-ધારણ-મૃણવય-કેસલોય-અચેલગ-અચેલગ-ખુપ્પિવાસ-લાઘવ-સીતોસિણકટ્ટ-સેજ્જા-ભૂમિ-નિસેજ્જા-પરઘરપ્પવેસ-લદ્ધાવલદ્ધામાણાવમાણ નિદણદસમ સગફાસનિયમતવગુણવિણયમાઈએહિં" તે સાધનતુ તપ, નિયમ અને શીલ આ પ્રકારતુ હોય જોઈએ-તે સાધુ જીવન પર્યન્ત સ્નાન ન કરે એટલે કે આ મહાવ્રતધારીએ જીવે ત્યા સુધી સ્નાન કરવાનો ત્યાગ કરવો જોઈએ, કદી પણ દાતાજી કરવું જોઈએ નહીં, શરીરે પરસેવો વળતો હોય તો પવન નાખીને તેને સૂકવવો જોઈએ નહીં, તે પરસેવામા રજડજોડા ચોટી ગયા હોય તો તેને શરીર પરથી દૂર કરવા જોઈએ નહીં કાન, નાક આદિ ધ્રુવિયોમા

जल्ल=कर्णनासिकादि मृत्त्यु मलम्, तेषा धारणम्, तथा-मानत्रतम्, केश-
लोचः, एतौ प्रसिद्धौ, क्षमा=क्रोधनिग्रह, दम.=इन्द्रियनिग्रह., अचेलरुम्=धर्मोप-
करणातिरिक्तवद्भाव, क्षुत्पिपासे प्रसिद्धे, लाघवम्=अल्पोपापित्वम्, शीतोष्णे
प्रसिद्धे, काष्ठशय्या=काष्ठफलकशयनम्, भूमिनिषा=भूमाग्रावेशनम्, तथा-पर
गृहप्रवेशल-वाप-व्यमानापमाननिन्दनानि, भिक्षार्थ परगृहप्रवेशः, तत्रापि लब्धा-
पत्न्यौ=लाभालाभो, मानः=सम्मान, अपमानः=अवमानना, निन्दन=कुत्सितव-
चन च, तथा-'दशमशरुस्पर्शः=दशमशरुशनम्, तथा-नियमः=द्रव्याद्यभिग्रहः,

यदि रजःकण ससक्त हो गये हों तो उन्हें शरीर से नहीं छुड़ाना
चाहिये । कर्ण, नासिका आदि इन्द्रियो में लगे हुए मैल को भी दूर नहीं
करना चाहिये । मौनव्रत रखना चाहिये तथा अपने केशों का लौच
करना चाहिये । क्षमा-क्रोध का निग्रह करना दम-इन्द्रियों का निग्रह
करना चाहिये । अचेलरु-धर्मोपकरणों के सिवाय अतिरिक्त वस्त्र नहीं
रखना चाहिये क्षुधा और पिपासा कि वाधा को सहना चाहिये । अल्प
उपधिरखना चाहिये, शीत और उष्ण जग्य परीपह को सहन करना
चाहिये । काष्ठ के फलक पर शयन करना चाहिये । जमीन पर बैठना
चाहिये । भिक्षा के निमित्त पर घर जाना चाहिये । भिक्षा का लाभ
हो अथवा न हो दोनों अवस्थाओं में समताभाव रखना चाहिये । मान
और अपमान में समवृत्ति रहना चाहिये । कीर्ति अपनी निंदा करता
हो तो उसमें अक्षमता नहीं आनी चाहिये । दशमशकों को दशन-
रूपवाधा से उद्विग्न नहीं होना चाहिये । द्रव्यादि का अभिग्रह रूप
नियम का, अनशन आदि तपस्याओं का मूलगुणों का और अभ्युत्था

लागेला भेलने उणेउवे। न लेधजे मौनमत राणवु लेधजे तथा पोताना
केशने लाय उवे। लेधजे क्षमा-क्रोधने निग्रह उवे। लेधजे, दम-इन्द्रि-
योने निग्रह उवे। लेधजे अचेलरु-धर्मना उपकरणे सिवाय वधाशाना वस्त्रादि
राणवा लेधजे नही, लूण अते तरसनी मुखेली महन उरवी लेधजे,
योडा ज उपधि राणवा लेधजे, शीत अने उष्णता अन्य परिषडे। सहन
करवा लेधजे लाडानी पाट पण सूवु लेधजे, जमीन पर भेगवु लेधजे
भिक्षाने निमित्ते पर घर जवु लेधजे भिक्षाने लास भणे डे न भणे छता
पण आ अन्ने परिस्थितिमा समभाव राणवे। लेधजे मान अने अपमानमा
समवृत्तिथी रडेवु लेधजे के। पोतानी निंदा उरतु होय तो तेथी अक्षमता
थवी लेधजे नही। अस, मग्नरना उसउप मुखेलीथी उद्विग्न थवु लेधजे
नही। द्रव्यादिना अलिग्रह रूप नियमनु अनशन आदि तपस्याओंना भूण

મૂલમ્—ઇમ ચ અવભચેરવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાદ પાવયણં
ભગવયા સુકહિય અત્તહિય પેચ્ચાભાવિય આગમેસિમદ્ધ સુદ્ધનેયા-
ઉય અકુદિલ અણુત્તર સન્નવદુક્ખપાવાણ વિઉસમણ ॥સૂ૦૫॥

ટીકા—‘ ઇમ ચ ’ ઇત્યાદિ—

‘ ઇમ ચ ’ ‘ ઇદ ચ ’ ‘ પાવયણ ’ પ્રવચનમ્ ‘ અવભચેરવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાદ ’
અવ્રહ્મચર્યવિરમણપરિરક્ષણાર્થ=ચતુર્થમદ્વાત્રતરક્ષણનિમિત્ત ભગવતા સ્મરુથિતમ્ આત્મ-
હિત, આત્મહિતકારકમ્, આગમિષ્યદ્ મદ્ શુદ્ધ નેયાયિકમ્ અકુદિલમ્ અનુત્તર
સર્વદુઃખપાપાના વ્યુપશમનમ્ । એપામર્થ પૂર્વ તૃતીયસવરદ્વારે પ્રોક્તઃ ॥સૂ૦ ૫॥

કે ઘાતક હૈં, અતઃ સાધુ કો અપને મૂલ ગુણોં કી રક્ષા કરતે હુએ તપ
સયમ એવ બ્રહ્મચર્ય સે અપની જાત્મા કો ભાવિત કરતે રહના ચાહિયે ।
હસ તરહ સે ઉસકા બ્રહ્મચર્ય વ્રત દૃઢતર હો જાતા હૈ ॥ સૂ૦ ૪ ॥

ફિર કહતે હૈં—‘ ઇમ ચ ’ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(ઇમ ચ પાવયણ) યહ પ્રવચન (અવભચેર વેરમણપરિ
રક્ષણદ્વયાદ ભગવયા સુકહિય) અવ્રહ્મચર્ય વિરમણ કી પરિરક્ષા કે
નિમિત્ત ભગવાન્ ને કહા હૈ । (અત્તહિય) યહ આત્મા કા હિતકારક હૈ,
(પેચ્ચાભાવિય) પરલોક મેં ભી શુભફલ કા દાતા હૈ । (આગમેસિ-
મદ્) હસી કારણ યહ ભવિષ્યત્ કાલ મે કલ્યાણપ્રદ કહા ગયા હૈ ।
(સુદ્ધ) નિર્દોષ હોને સે યહ શુદ્ધ હૈ । (નેયાઉય) વીતરાગ, સર્વજ્ઞ ઓર
હિતોપદેશક પ્રભુ દ્વારા ભાષિત હોને સે ન્યાયસપન્ન હૈ । (અકુદિલ)

ન ગણુબુ, એ ગધુ બ્રહ્મચર્ય વ્રતનુ ધાતક થાય છે તેા સાધુએ પોતાના મૂળ શુણ્ણાની
રક્ષા કરતા કરતા તપ, સયમ અને બ્રહ્મચર્યવ્રતથી આત્માને ભાવિત કરતા રહેવુ
નેઈ એ આ પ્રમાણે કરવાથી તેનુ બ્રહ્મચર્યવ્રત વધારે દૃઢ થતુ બન્ય છે ॥સૂ ૪ ॥

વળી સૂત્રકાર કહે છે— “ ઇમ ચ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ ઇમ ચ પાવયણ ” આ પ્રવચન “ અવભચેરવિરમણપરિ-
રક્ષણદ્વયાદ ભગવયા સુકહિય ” આ બ્રહ્મચર્ય વિરમણની પરિરક્ષાને નિમિત્તે
ભગવાને કહેવ છે “ અત્તહિય ” તે આત્માને માટે હિતકારક છે, “ પેચ્ચાભા
વિય ” પરલોકમાં પણ શુભ ફળ દેનાર છે “ આગમેસિમદ્ ” તે કારણે તે
ભવિષ્યકાળમાં કલ્યાણ કાયક બતાવવમાં આવ્યું છે “ સુદ્ધ ” નિર્દોષ હોવાથી
તે શુદ્ધ છે “ નેયાઉય ” વીતરાગ, સર્વજ્ઞ અને હિતોપદેશક પ્રભુ દ્વારા કથિત
હોવાથી ન્યાય યુક્ત છે, “ અકુદિલ ” ઝળુભાવનુ બનક હોવાથી અકુદિલ છે,

અથ ચતુર્થવ્રતસ્ય પञ्चभावनाः प्रतिपादयन् तत्र पूर्वमसक्तवासवसति नाम्नां
प्रथमा भावनामाह—‘ एयस्म ’ इत्यादि—

મૂલમ્—एयस्स इमा पचभावणा चउत्थवयस्स हुति
अवभचेरचेरमणपरिरक्खणट्टयाए । पढम सयणासणघरदुवार
अंगणआगासगवक्खसाला अहिलोयणपच्छवत्थुरुपसाहण
गणहाणिकावगासा अधगासा जे य वेसियाण अत्थतिट्ठति य
जत्थ इत्थियाओ अभिक्खण मोहदोसरइरागवद्वुणाओ कहिति
य कहाओ बहुविहाओ ते हु वज्जणिज्जा इत्थिससत्तसकिलिट्ठ ।
अण्णे वि य एवमाई य अवगासा ते हु वज्जणिज्जा, जत्थ
मणोविब्भमो वा भंगो वा भंसणा वा अट्ठ रुद्ध च होज्जा झाणं
त त च वज्जेज्जवज्जाभीरू अणायतणअतपतवासी । एवमसंस-
त्तवासवसहीसमिज्जगेण भाविओ भवइ अतरप्पा आरयमणा
विरयगामधम्मे जिइदिए वभचेरगुत्ते ॥ सू० ६ ॥

टीका—‘ एयस्स ’ एतस्य ‘ चउत्थवयस्स ’ चतुર્थव્રતસ્ય વ્રત્તવર્ચામિત્યેસ્ય

ઋજુભાવ કા જનક હોને સે અકુટિલ હૈ । (અણુત્તર) સર્વશ્રેષ્ઠ હોનેસે
અનુત્તર હૈ । તથા (સર્વદુઃખપાવાણ વિડસમણ) સમસ્ત દુઃખોંકે જનક
જ્ઞાનાવરણીય આદિ અષ્ટવિધ કર્મોં કા યહ ઉપશમકારક હૈ ॥સૂ૦ ૫ ॥

અવ સૂત્રકાર હસ ચતુર્થ મહાવ્રત કી પાંચ ભાવનાઓં કો પ્રતિ-
પાદન કરને કૈ અભિપ્રાય સે સર્વપ્રથમ અસસક્તવાસવસતિ નામ કી
પહિલી ભાવના કો પ્રકટ કરતે હૈ—‘ एयस्स ’ इत्यादि० ।

टीकार्थ—(एयस्स चउत्थवयस्स इमा पच भावणा हुति) इस

“अणुत्तर” सर्व श्रेष्ठ होवाથી अनुत्तर છે, તથા ‘સર્વદુઃખપાવાણ વિડસમણ’ સમસ્ત
દુ ખોના જનક જ્ઞાનાવરણીય આદિ આઠ પ્રકારના કર્મોંનુ તેઉપશમ કરનાર છે સૂ ૫

હવે સૂત્રકાર આ ચોથા મહા વ્રતની પાંચ ભાવનાઓનુ પ્રતિપાદન કર
વાને માટે સૌથી પહેલા “ અસસક્તવાસવસતિ ” નામની પહેલી ભાવનાનુ
સ્પષ્ટીકરણ કરે છે— “ एयस्स ” इत्यादि—

टीकार्थ—“ एयस्स चउत्थवयस्स इमा पच भावणा हुति ” આ પ્રકારથી

इमाः=वक्ष्यमाणाः पञ्चभावनाः, 'अवभचेरविरमणपरिरक्खणद्वयाए' अवब्रह्मचर्य-
विरमणपरिरक्षणार्थ=चतुर्थव्रतरक्षणनिमित्त, 'हुति' भवन्ति । तत्र- 'पदम'
प्रथमा=स्त्रीपशुपण्डकससक्ताश्रयवर्जनलक्षणा भावनामाह-'सयणासणघरदुवारअगण
आगामगवक्खसाला अहिलोयणपच्छवत्थुगपसाहणगण्ढाणिकावगासा' शयनासन-
गृहद्वाराङ्गनाकाशगवाक्षशालाऽभिलोकनपश्चाद् वास्तुकप्रसाधनकस्नानिकावकाशाः
तत्र-शयन=शय्या, आसन=प्रसिद्धम्, गृह=गेहम्, द्वारम्=गृहद्वारम्, अङ्गणं=
गृहाङ्गणम्, आकाशः=अनावृत स्थानम्, गवाक्षो=वातायनम्, शालाः=माण्ड-
शालादयः, अभिलोकनम्=अभिलोक्यते दूरस्थित वस्तु यदास्थाय तद् अभिलोक
नम्=उन्नत स्थानम्, तथा-पश्चाद्-वास्तुक=पृष्ठभागवर्त्तिगृह, तथा-प्रसाधनकस्य
मण्डनस्य स्नानिकायाः=स्नानक्रियायाश्च येऽवकाशाः=गृहाः, एषा द्वन्द्वः, एते
स्त्रीसप्तकेन सखिलप्टा वर्जनीयाः । तथा-'जे य' ये च 'अवकासा' अवकाशा

ब्रह्मचर्य नामक चतुर्थव्रत की ये वक्ष्यमाण पांच भावनाएँ हैं । इनसे
(अवभचेरविरमणपरिरक्खणद्वयाए) अवब्रह्मचर्य विरमण रूप ब्रह्मचर्य-
व्रत की अच्छी तरह से रक्षा होती है । (पदम) इनमें स्त्री, पशु पण्डक
से ससक्त वसति का वर्जन करने रूप प्रथम भावना है । वह इस
प्रकार है— (सयणासणघरदुवारअगणआगासगवक्खसाला अहि-
लोयणपच्छवत्थुग) शयन-शय्या, आसन, गृह द्वार, आगन, खुला,
हुआ स्थान, झरोखा, शाला, अभिलोकन-वह स्थान कि जिसके
सहारे से दूर की वस्तु देखी जा सके ऐसी ऊँची जगह पश्चाद् वास्तुक-
पीछे के भाग में रहा हुआ घर, तथा (पसाहणग-ण्ढाणीकावासा)
मण्डन घर और नहाने के घर, ये सब यदि स्त्रियों से ससक्त हों तो
साधु का कर्तव्य है कि वह इनका परित्याग करे । तथा-(जे य अव-

नामना येथा व्रतानी आ प्रभाणु पाथ लावनाओ उ तेमनाथी " अवभचेर
विरमणपरिरक्खणद्वयाए " आ अद्वयर्थ विरमणु इप अद्वयर्थ व्रतानी सारी
रीते रक्षा थाय छे " पदम " तेमा स्त्री, पशु, पण्डना ससर्गथी युक्ता
वसवाटने। त्याग करवा उप पड़ेखी लावना उ ते आ प्रभाणु छे-" सयणा
सणघरदुवारअगणआगासगवक्खसाला अहिलोयणपच्छवत्थुग " शयन-शय्या,
आसन, गृह, द्वार, आगणु, खुली जग्या, अरुणे, शाला, अभिलोकन-येवी
उ ये जग्या उ जग्याथी दूरनी वस्तुओ देखी शक्य, पश्चाद्वास्तुक-पाछणना
लागमा आवेलु घर, तथा " पसाहणग-ण्ढाणिकावासा " मण्डन घर अने
नडावाना घर, ये अथा स्थानो जे स्त्रीओथी युक्ता होय तो तेमनो परि-
त्याग करयो ते साधुनु कर्तव्य छे तथा " जे य अवगासा " जे स्थान

गृहा = स्थानानीत्यर्थ, 'वेसियाणं' वेश्यानाम् 'अट्ट' अर्थ = निमित्त 'तिट्ठति' तिष्ठन्ति = सन्ति, तथा—'जत्थ' यत्र 'इत्थियाओ' स्त्रियो हि 'अभिक्षण' अभीक्षण = मुहुर्मुहु 'मोहदोसरइरागगद्धणाओ' मोहदोपरतिरागगर्धनाः = मोहदोष रहरागान् वर्द्धयन्ति यास्ताः = मोहादिवृद्धिकारिण्य इत्यर्थः, 'बहुविहाओ' बहु-विधाः—जातिकुलरूपनेपथ्यनिपयाः 'कहाओ' कथाः 'कहेंति' कथयन्ति, 'ते खलु' इत्थी ससत्त सकिलिद्धा' स्त्रीससत्तसविलप्ताः = स्त्रीससर्गयुक्ता गृहाः, 'वज्जणिज्जा' र्जनीया भवन्ति । तथा—'अण्णे पिय' अयेऽपि च 'एवमाई' एवमादय—एव प्रकारा येऽवगासा भवन्ति, 'ते हु' ते खलु 'वज्जणिज्जा' वर्जनीया भवन्ति । किं बहुना—'जत्थ' यत्र यत्र—उत्तरत्र 'त त' इति वीप्सा-प्रयोगादत्रापि वीप्सा घोद्धव्या, ज्ञायते, 'मणो विन्ममो वा' मनो विभ्रमो वा = श्रृङ्गाररससमुत्पन्न चित्तस्याऽस्थिरत्नम्, 'भगो वा' ब्रह्मचर्यस्य सर्वभङ्गः,

गासा) जो स्थान (वेसियाण अट्ट—तिट्ठति) वेश्याओ के निमित्त बने हुए हों तथा (जत्थ) जिन स्थानों पर बैठ कर (इत्थियाओ) स्त्रिया (अभिक्षण) बार बार (मोहदोसरइराग गद्धणाओ) मोह दोषरति और रागको बढ़ानेवाली (बहुविहाओ) विविध प्रकारकी (कहाओ) कथाओंको (कहेंति) कहती हों, (ते हु) वे स्थान (इत्थी ससत्त सकिलिद्धा) स्त्रीयोंसे ससत्त होनेके कारण साधुको उनका परित्याग कर देना चाहिये । तथा (अण्णे वि) और भी कोई (एवमाई य अवगासा) ऐसे स्थान हों तो (ते हु) उनका भी साधु को (वज्जणिज्जा) परित्याग कर देना चाहिये । अधिक और क्या कहा जाय (जत्थ जत्थ) जिस २ स्थान पर साधु का (मणोविन्ममो) मन विभ्रम युक्त बन जावे (वा) अथवा (भगो) उसके ब्रह्मचर्य व्रत का भंग होने की सम्भावना (वा) अथवा

“ वेसियाणअट्ट—तिट्ठति ” वेश्याओने निमित्त बनेला डोय, तथा “ जत्थ ” जे स्थाने पर जेसीने “ इत्थियाओ ” स्त्रीओ “ अभिक्षण ” बार बार “ मोहदोसरइरागगद्धणाओ ” मोह, दोष, रति आने रागरे पधावनारी “ बहुविहाओ ” विविध प्रकारनी “ कहाओ ” कथाओ “ कहेंति ” कहेती डोय “ ते हु ” ते स्थाने “ इत्थी ससत्त सकिलिद्धा ” स्त्रीओथी युक्त होवाने कारणे साधुओओ तेभने परित्याग करवे लेछे तथा “ अण्णे वि ” ओवा भीला पछु केछे “ एव माईय अवगासा ” स्थान डोय तो “ ते हु ” तेभने पछु साधुओ “ वज्जणिज्जा ” परित्याग करी देवे लेछे पछु थु कहु । “ जत्थ जत्थ ” जे जे स्थान पर साधुनु “ मणोविन्ममो ” मन विभ्रमयुक्त भनी जाय “ वा ” अथवा “ भगो ” तेना ब्रह्मचर्य व्रतना भंगनी शक्यता

‘મસળા વા’ ભ્રગના વા=પ્રત્યર્ચ્યસ્ય દેશતો મજ્ઞો વા, તથા-‘અટ્ટ’ આર્તમ્=
 ઇષ્ટ સયોગામિલાપરૂપમ્, ‘રુદ્ધ’ રૌદ્ર તદુપાયભૂતર્હિમાઽનૃતાદ્દાદાનગ્રહણાનુ-
 વન્ધરૂપમ્, ‘ઝાણ’ ધ્યાન ‘હોજ્જા’ ભવેત્ ‘ત ત ચ’ તતત્ત્વ ‘વજ્જેજ્જ’
 વર્જયેત્, કઃ ? ઇત્યાહ-ય ‘વજ્જમીરુઃ’ અવઘમીરુઃ=સાવઘવમતિવાસજન્ય-
 પાપમીરુઃ, અત એ-‘અણાયતણઅતપતવાસી’ અનાયતનાન્તમાન્તવાસી ન આય-
 તન સ્ત્રીપશુપણ્ડકાનામિત્યનાયતનમ્, સ્ત્રીપશુપણ્ડકરહિતમિત્યર્થઃ, અન્તમ્=અન્દ્રિયા
 નનુકૂલ, પર્ણકુટયાદિ, પ્રાન્ત=તદેવ પ્રકૃષ્ટ ક્ષમશાન-ગૂંચગૃહવૃક્ષમૂલાદિક વા સ્થાન
 તત્ર વસ્તુ શીલ યસ્યાસૌ-નિર્દોષ વસતિવાસીત્યર્થઃ, સ તાદૃશ સ્થાન વર્જયેદિતિ
 ભાવ । ઉપસહરન્નાહ-‘એવ’ એવમ્=અનેન પ્રકારેણ ‘અસસક્તવાસવસતિસમિદ્-
 જોગેણ’ અસસક્તવાસવસતિસમિતિયોગેન=અસસક્તઃ=સ્ત્રીપશુપણ્ડકાસર્ગરહિતો યો

(મસળા) એક દેશ સે વહ ભગ હોને કી સંભાવના હો તથા (અટ્ટ
 રુદ્ધ ચ ઝાણ હોજ્જા) ઇષ્ટ સયોગામિલાપરૂપ આર્તધ્યાન, હિંસા, ઝૂઠ,
 ચોરી આદિ મે આનદ માનને રૂપ રૌદ્રધ્યાન, હસકે ચિત્ત મેં જગ જાને
 કી સંભાવના હો, તો સાધુ કો (ત ત ચ) હસ સ્થાન કા (વજ્જેજ્જ)
 પરિત્યાગ કર દેના વાલિયે । ક્યોં કિ સાધુ (અવજ્જમીરુ) સાવઘ-
 વસતિ વાસ જન્ય પાપ સે સદા મીરુ-હરને વાલા હોના હે । (અણાય-
 તણઅંતપતવાસી) આર વહ ણેસે હી નિર્દોષ સ્થાન મેં ઠહરતા હૈં કિ
 જહા સ્ત્રી, પશુ, પઢક નહીં રહતે હો, તથા જો અપનીં અન્દ્રિયોં કે અનુ-
 કૂલ ન હો, કિન્તુ ક્ષમશાન, ગૂંચગૃહ, વૃક્ષમૂલ આદિરૂપ હો । હસલિયે
 જહા સિદ્ધાંત મેં નિર્દોષ વસતિ મે ઠહરને કી આજ્ઞા પ્રભુ કી હૈં તો યહ
 વાતનિશ્ચિત હૈં કિ વહ સદોપવસતિ મે ન ઠહરે । (એવ અસસક્તવાસ-

“વા” અથવા “મસળા” એક દેશથી તેમા લગ થવાની સંભવિતતા હોય
 તથા “અટ્ટ રુદ્ધ ચ ઝાણ હોજ્જા” ઇષ્ટ સયોગામિલાપ રૂપ આર્તધ્યાન,
 હિંસા, ઝૂઠ, ચોરી આદિમા આનદ માનવારૂપ રૌદ્રધ્યાન, તેના ચિત્તમા ઉત્પન્ન
 થવાની શક્યતા હોય તો સાધુએ “ત ત ચ” તે તે સ્થાનનો “વજ્જેજ્જ”
 પરિત્યાગ કરી દેવો જોઈએ કારણ કે સાધુ “અવજ્જ-મીરુ” સાવધ વસતિ
 વાસ જન્ય પાપોથી મદા કરનાર હોય છે “અણાયતણ અતપતવાસી” અને
 તે એવા નિર્દોષ સ્થાનમા રહે છે કે જ્યાં સ્ત્રી, પશુ, પડક પડેતા હોય નહીં
 તથા જે પોતાની અન્દ્રિયોને અનુકૂળ ન હોય, પશુ-અશાન, ખાલી મકાન,
 વૃક્ષમૂળ આદિ રૂપે હોય તેથી નિર્દોષ વસતિ (વસવાટ) મા રહેવાની
 સિદ્ધાંતમા પ્રભુએ આજ્ઞા આપેલી છે તો એ વાત નિશ્ચય જ છે કે તેમણે
 સદોષ વસતિમા રહેવું જોઈએ નહીં “એવ અસસક્તવાસવસતિસમિદ્જોગેણ”

વાસ.=સ્થાનમ્ તત્ર યા વસતિ:=નિવાસસ્તદ્વપો યઃ સમિતિયોગસ્તેન 'ભાવિઓ' ભાવિતઃ=ગસિતઃ 'અતરપ્પા' અન્તરાત્મા=જીવઃ 'આરયમણા' આરતમના-આ=સમન્તાત્ રત=વ્રત્તચર્યે સમવત મનો यस્ય સ તથા, પુનઃ-વિરયગામધમ્મો' વિરતગ્રામધર્મઃ=નિવૃત્તો ગ્રામધર્માત્=મૈથુનાદ્ ય ત્થ તથા, અત એવ- 'જિહ્દિય' જિતેન્દ્રિય =વશીકૃતેન્દ્રિયઃ, 'વમ્બેરગુત્તે' વ્રહ્મચર્યગુત્તઃ=નગરિત્ર વ્રહ્મચર્યમહિતઃ દશવિધવ્રહ્મચર્ય-સગાધિસ્થાનયુક્તો ગા 'મગ્' મગ્ગતિ ॥મ્ ૬ ॥

વસતિ સમિદ્વજોગેણ) હસ પ્રકાર સ્ત્રી, પશુ, પડક કે સમર્ગ સે રહિત સ્થાન મેં ઠહરને રૂપ સમિતિ કે યોગ સે (ભાવિઓ અતરપ્પા) ભાવિત અતરાત્મા-મુનિ (આરયમણા) સર્વ પ્રકાર સે વ્રહ્મચર્ય વ્રત મેં સસક્ત મન વાલા હો જાતા હેં ઓર—(વિરયગામધમ્મો) ગ્રામધર્મ-મૈથુન સે વિરત હો જાતા હેં । અતએવ-વહ (જિહ્દિય વમ્બેરગુત્તેભવહ) જિતેન્દ્રિય ઘનકર નવવિધવ્રહ્મચર્ય કી ગુપ્તિ સે અથવા દશવિધ વ્રહ્મચર્ય સમાધી સ્થાન સે યુક્ત વન જાતા હેં ।

ભાવાર્થ—હસ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકાર ને વ્રહ્મચર્ય વ્રત કો સ્થિર રક્ષને વાલી પાચ ભાવનાઓ મેં સે પ્રથમ સ્ત્રીપશુ પડક સેવિત શયનાસન વર્જન રૂપ ભાવના ગા સ્વરૂપ સ્પષ્ટ કિયા હેં । સાધુજન કો એસી હી વસતિ-સ્થાન મેં નિવાસ કરને કો પ્રભુ કી આજ્ઞા હેં કિ જો નિર્દોષ હો । સ્ત્રી પશુ પડક આદિ કે સમર્ગ સે રહિત હો । ક્યો કિ એસે સ્થાન મેં નિવાસ કરને સે માનુ કે વ્રહ્મચર્ય વ્રત કા દેશ સે ભગ અથવા સર્વથા ભગ હો સકતા હેં । તથા જિસ સ્થાન પર બેઠકર સ્ત્રિયા વિવિધ

આ રીતે સ્ત્રી, પશુ, અને પડકના સસર્ગથી રહિત સ્થાનમાં રહેવા રૂપ સમિતિના યોગથી “ભાવિઓ અતરપ્પા” ભાવિત અતરાત્મા-મુનિ “આરયમણા” દરેક પ્રકારે બ્રહ્મચર્ય વ્રતમાં દૃઢ મનવાળા થઈ બળ્ય છે અને “વિરયગામધમ્મો” ગ્રામધર્મ-મૈથુનથી મુક્ત થઈ બળ્ય છે તેથી તે “જિહ્દિયવમ્બેરગુત્તે ભવહ” જિતેન્દ્રિય થઈને નવ વિધ બ્રહ્મચર્યની ગુપ્તિથી અથવા દશવિધ બ્રહ્મચર્યસમાધિ સ્થાનથી મુક્ત બની બળ્ય છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે બ્રહ્મચર્ય વ્રતને સ્થિર રાખવાની પાચ ભાવનાઓમાંથી સૌથી પહેલી સ્ત્રી, પશુ, પડક સેવિત શયનાસન વર્જનરૂપ ભાવનાનું સ્વરૂપ સ્પષ્ટ કર્યું છે સાધુજનોને એવા સ્થાનમાં વસવાની પ્રભુની આજ્ઞા છે કે જે નિર્દોષ હોય, સ્ત્રી, પશુ, પડક આદિના સસર્ગથી રહિત હોય કારણ કે એવા સ્થાનમાં વસવાથી સાધુના બ્રહ્મચર્ય વ્રતને અશત ભગ થાય છે અથવા સર્વથા ભગ થઈ શકે છે, તથા જે સ્થાને બેસીને

द्वितीया स्त्रीकथाविरतिनाम्नी भावनामाह—'वीय' इत्यादि—

मृत्म्—वीय नारीजणरस मज्जे न कहेयव्वा कहा विचित्ता विव्वोकविलाससपउत्ता हास सिगार लोइयकहव्व मोहजणणी न आवाहवरकहाविय इत्थीणं वा सुभगदुब्भ-
गकहाचउसट्ठि महिलागुणाणं च न देसजातिकुलरूवणाम-
नेवत्थपरिजणकहाओ इत्थियाण अण्णावि य एवमाइयाओ
कहाओ सिगारकलुणाओ तवसंजमवभचेरघाओ वघाडयाओ
अणुचरसाणेण वंभचेर न कहंयव्वा न सुणेयव्वा न चित्ति-
यव्वा । एवं इत्थीकहा विरइजोणेण भाविओ भवइ अतरप्पा
आरयमणा विरयगामधम्मे जितिदिए वभचेरगुत्ते ॥सू०७॥

प्रकार की शृंगार आदि वर्धक कथाएँ किया करती हों, जो स्थान
वेष्ट्याओं के लिये निर्मित हुए हो, जो मनःक्षोभ कारक हो, आर्त्तशै-
व्रध्यान के प्रवर्त्तक हों, ऐसे भी स्थानों में साधु को नहीं टहरना
चाहिये, किन्तु जो स्त्री आदि के ससर्ग से रहित हों, इन्द्रियों में क्षोभ
कारक न हो ऐसे उमशान, गृन्थ गृह आदि स्थानों में ही साधु को
निवास करना चाहिये । इस प्रकार इस अससक्तवासवसति नामक
प्रथम भावना से भावित भूआ जीव ब्रह्मचर्य व्रत की सर्वप्रकार से
रक्षा करता हुआ मैथुन से विरक्त होकर उसकी नौ कोटि से पूर्ण-
पालना करने में सावधान रहना है ॥ सू०६ ॥

श्रीश्री विविध प्रकारनी शृंगार आदि वर्धक कथाओ कहेती होय, ले स्थान
वेश्याओ माटेअ बनाव्या होय, ले मनभा क्षोभ करना होय, आर्त्त शैव
ध्यान तरइ होरनार होय, ओवा स्थानोभा पणु माधुओओ वसवु नेधओ
नही, पणु ले स्थान श्री आदिना असर्गथी रहित होय, धन्द्रियोभा क्षोभ
करनार न होय ओवा उमशान, आली घर आदि स्थानोभा माधुओ निवास
करवा नेधओ आ प्रकारे आ “असमकृत वाम वसती” नामनी लावनाथी
लावित थयेअ एव ब्रह्मचर्य व्रतनी द्वरेक गीते रक्षा कउतो मैथुनथी रहित
अनीने तेनु नव प्रकारे पालन करवाभा सावधान रहे छे ॥ सू ६ ॥

ટીકા—‘વીય’ દ્વિતીયા સ્ત્રીકથાવિરતિલક્ષણા ભાવનામાહ—

‘નારીજણસ્સ’ નારીજનસ્ય=સ્ત્રીર્પર્ણદો ‘મજ્ઞે’ મધ્યેऽન્તરાલે ન=નૈવ ‘કહેયવ્વા’ કથયિતવ્યા ‘કહા’ કથા=પ્રાપ્ત્યપ્રગ્નધરૂપા । કથામેવ વિશિનટ્ટિ-
‘વિચિત્તા’ વિચિત્રા=વિચિત્રવૃત્તાન્તસમન્વિતા, તથા—‘વિવ્વોકવિલાસસપપ્પત્તા’
‘વિવ્વોકવિલાસસપ્પુક્કા’—‘વિવ્વોક’=અત્યભિમાનવશાદિપ્ટેऽપિ વસ્તુન્યનાદર-
કરણમ્, તદુક્તમ્—‘વિવ્વોકસ્ત્વતિર્ગેણ વસ્તુનીપ્ટેऽપ્યનાદરઃ, ઇતિ । વિલાસ’=
સ્થાનાસનગમનનાં હસ્તભ્રૂનેત્રકર્મણા ચૈવ યો વિશેષઃ સઃ, તદુક્તમ્—“સ્થાનાસન-
ગમનનાં હસ્તભ્રૂનેત્રકર્મણા ચૈવ ।

ઉત્પદ્યતે વિશેષો યઃ શ્રુષ્ટઃ સ તુ વિલાસ’ સ્યાત્ ॥ ” ઇતિ । વિવ્વોકવિ-

અવ સૂત્રકાર સ્ત્રીકથાવિરતિ નામકી દ્વિતીય ભાવના કો પ્રદર્શિત કરતે હૈ—‘વીય નારીજણસ્સ’ ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(વીય દ્વસરી સ્ત્રીકથાવિરતિ નામકી ભાવના હસ પ્રકાર સે હૈ— (નારીજણસ્સ મજ્ઞે) સ્ત્રીયોં કૈ વીચ મૈં બૈઠકર સાધુ કો (કહા) કથાઈ કિ જો (વિચિત્તા) વિચિત્ર વૃત્તાન્તો સે યુક્ત હોં (વિવ્વોકવિલાસસપપ્પત્તા) ઇપ્પ વસ્તુ મૈં મી અનાદર કરાને વાલી હોં તથા વિલાસભાવ વઢાનેવાલી હોં (ન કહેયવ્વા) નહીં કરના વાહિયે । અતિ અભિમાન કૈ વશ સે ઇપ્પ વસ્તુ મૈં મી અનાદર કરના હસકા નામ વિવ્વોક હૈ, તથા સ્થાન, આસન, ગમન મૈં ઇય હસ્ત, મ્રૂ, નેત્ર હન કી ક્રિયાઓં મૈ વિશેષતા આના હસકા નામ વિલાસ હૈ । યે દોનોં પ્રકાર કી વિશેષ ચૈષ્ટાઈ સ્ત્રીયોં મૈ શ્રુગારભાવજનિત હુઆ કરતી હૈં । વિવ્વોક ઓર વિલાસ હન દોનોં સે જો કથાઈ યુક્ત હો વૈ સાધુ કો

હવે સૂત્રકાર “સ્ત્રીકથાવિરતિ” નામની બીજી ભાવના બતાવે છે—
“વીય નારી જણસ્સ” ઇત્ય દિ—

ટીકાર્થ—‘વીય’ સ્ત્રી કથા નામની ભાવના આ પ્રમાણે છે—“નારીજણસ્સ મજ્ઞે” સ્ત્રીઓની વચ્ચે બેસીને સાધુએ એવી “કહા” કથાઓ કે જે “વિચિત્તા” વિચિત્ર વર્ણનો વાળી હોય “વિવ્વોકવિલાસસપ્પત્તા” ઇપ્પવસ્તુમા પણ અનાદર કરાવનારી હોય તથા વિલાસભાવ વધાવનારી હોય “ન કહેયવ્વા” તે કહેવી બેઠાએ નહીં અતિ અભિમાનને વશ થઈને ઇપ્પ વસ્તુનો પણ અનાદર કરવો તેને વિવ્વોક કહે છે, તથા સ્થાન, આસન, ગમનમા અને, હાથ, મ્રૂ નેત્ર વગેરેની ક્રિયામા વિશેષતા આવે તે વિલાસ ગણાય છે એ બન્ને પ્રકારની વિશેષ ચૈષ્ટાઓથી સ્ત્રીઓમા શ્રુગાર ભાવ પેદા થાય છે વિવ્વોક અને વિલાસ એ બન્નેથી

લાસી=સ્ત્રીના શ્રુદ્ધારભાવજનિતાં ચેષ્ટાત્રિશેષી, તામ્યા સમયુક્તાઃ, તથા—'હાસસિંગારલોહ્યકહા' તત્ર હાસશ્રુદ્ધારલૌકિકકથા=હાસ્યઃ=હાસ્યસ્થાયિભાગો રસવિશેષઃ, શ્રુદ્ધારઃ=રતિસ્થાયિભાગોરસવિશેષ, એતત્પ્રધાના યા લૌકિકીકથા સા તથા, 'મોહજનણી' મોહજનની=મોહોદીરિકા કથા ન વક્તવ્યા । તથા—'આવાહવિવાહવરકહાવિ ય' આવાહવિવાહવરકથાપિ ચ=આવાહઃ=અભિનવપરિણીતસ્ય યધૂવરસ્ય આનયનમ્, વિવાહઃ=પાણિગ્રહણમ્, તત્પ્રધાના યા વરકથા=પરિણેતૃકથા સાઽપિ ચ ન વક્તવ્યા । તથા—'ઈત્થીણ' સ્ત્રીના 'સુભગદુઃખગકહા' સુભગદુર્ભગકથા="ઈદ્-ગ્નેત્રનાસિકાકપાલાદિયુક્તા ચ સ્ત્રી દુર્ભગા ભવતિ" ઇત્યાદિરૂપા કથા વા ન

સ્ત્રીયોં કે વીચ બેઠકર કમ્બો નહીં કહનાં ચાહિયે, ક્યોં કિ એસી કથાઓં કે કહને મેં રાગભાવ કી સયુક્તતા સાધુ કે જાની જાતી હૈ । ઇસસે ઉસકે વ્રહ્મચર્યવ્રન મેં દોષ આના હૈ । ઇસી તરહ (હાસસિંગારલોહ્યકહા) જો લૌકિક કથા હાસ્ય ઓર શ્રુગારરસ પ્રધાન હો, તથા (મોહજનણી) મોહ કી જનક હો વહ બી નહીં કહનાં ચાહિયે । તથા (આવાહવિવાહ-વરકહાવિય) જો કથા નવ દપતિયોં કે આગમન સે સબધ રલ્લતી હોં, અર્થાત્—જિસ કથા કા વિષય નવ પરિણિત વધૂ ઓર વર કે સબધ કો લિયે હુણ તથા જિસ કથા મેં વિવાહ સબધી ચર્ચા હો, એસી આવાહ ઓર વિવાહ પ્રધાન વાલી વરકથા બી સાધુ કો નહીં કહની ચાહિયે । ઇસી તરહ (ઈત્થીણ વા સુભગદુઃખગકહા) સ્ત્રીયોં સબધી સુભગ દુર્ભગ કથા બી નહીં કહનાં ચાહિયે, અર્થાત્—'ઇસ પ્રકારકે નેત્ર, નાસિકા ઓર કપાલ આદિવાલી સ્ત્રી સુભગ હોતી હૈ ઓર ઇસ પ્રકારકે નેત્ર નાસિકા,

યુક્ત હોય તેવી ડથાઓ સાધુએ સ્ત્રીઓની વચ્ચે જોસીને કહી પણ ડહેવી બોધએ નહી, કારણ કે એવી ડથાઓ કહેવામા રાગ ભાવની સયુક્તતા આવી બંધ છે તેથી બ્રહ્મચર્ય નતમા દોષ આવી બંધ છે એ જ રીતે "હાસ સિંગારલોહ્યકહા" જે લૌકિક કથા હાસ્ય અને શ્રુગાર રસ પ્રધાન હોય, તથા "મોહજનણી" મોહ પેદા કરનાર હોય, તે પણ ડહેવી બોધએ નહી તથો "આવાહવિવાહવરકહાવિય" જે ડથા નવ દપતિઓના આગમન સાથે સબધ ધરાવતી હોય, એટલે કે જે ડથાનો વિષય નવ પરિણિત વધૂ અને વરના સબધમા હોય, તથા જે ડથામા વિવાહ સબધી ચર્ચા આવતી હોય, એવી આવાહ અને વિવાહ પ્રધાન વર કથા પણ સાધુએ કહેવી બોધએ નહી એ જ પ્રમાણે "ઈત્થીણ વા સુભગદુઃખગકહા" સ્ત્રીઓ સબધી સુભગ, વિરગ કથાઓ પણ કહેવી બોધએ નહી, એટલે કે "આ પ્રકારના નેત્ર, નાક અને કપાળવાળી સ્ત્રી સુભગ હોય છે અને આ પ્રકારના નેત્ર, નાક અને

વક્તવ્યા । તથા-‘ચૃસદ્વિમહિલાગુણ’ ચતુષ્પદ્વિમહિલાગુણ = આલિંગનાદીનામદાનાં
પ્રત્યેકસ્યાષ્ટિધત્વેન ચે ચતુષ્પદ્વિસરપકા મહિલાગુણાસ્તેઽપિ ચ ન વક્તવ્યાઃ ।
તથા-‘દેસજાતિકુલરૂપનામનેવત્થપરિજનકહાઓ’ દેશજાતિકુલરૂપનામનેવત્થ
પરિજનકથાઃ તત્ર-દેશકથા=આદિદેશમમ્યનિષ્પોષા ચર્ણનમ્, યથા-‘લાટઘઃ

और कपाल आदि से युक्त स्त्री दुर्भग होती है, इन् प्रकार ये स्त्रियों की
सुभगता और दुर्भगता से मयः रखने वाली कथा भी साधु को नहीं
कहना चाहिये । तथा (चउसद्वि महिलागुणाण च) जिस ऋग में
स्त्रियों के चौसठ गुणों से सयध हो, अर्थात् स्त्रियों के चौसठ गुणों को
लेखरजो कथा चलती हो वह भी साधु को नहीं कहनी चाहिये । आलि-
ङ्गन आदि आठ गुण प्रत्येक आठ २ प्रकार के होते हैं, उस तरह
८×८=६४ प्रकार के महिलाओं के गुण कहे गये हैं । सो ये चौसठ
६४ प्रकार के महिलाओं के गुण भी कथामें चर्चनीय नहीं होनी चाहिये ।
तथा (देसजाति कुलरूपनामनेवतत्थपरिजणकहाओ इत्थियाग अण्णावि य
एवमाइयाओ सिंगारकलुणाओ सजमवमचेर वाओवघाइयाओ बभचेर
अणुचरमाणेण न कहेयन्वा न सुणेयन्वा न चित्थियन्वा) देश,जाति, कुल,
रूप, नाम, नेपथ्य, परिजन, इनसे सयध रखनेवाली स्त्रियोंकी कथाएँ भी
नहीं कहनी चाहिये-लाटादि-देश सम्बन्धी स्त्रियों का चर्चन जिस कथामें
होता है वह देश कथा है, जैसे-लाट देश की स्त्रिया बहुत ही कोमल-

કપાળ વાળી સ્ત્રી વિરલ હોય છે ” આ રીતે સ્ત્રીઓની સુભગતા કે વિરલતા
સાથે સમઘ રાખતી કથા પણ સાધુએ કહેવી નેઈ એ નહીં “ચૃસદ્વિ
મહિલા ગુણાણ ચ” જે કથાનો સ્ત્રીઓના ચોસઠ ગુણો સાથે સમઘ હોય
એટલે કે સ્ત્રીઓના ચોસઠ ગુણોને અનુલક્ષીને જે કથા ચાલતા હોય તે પણ
સાધુએ કહેવી નેઈ એ નહીં આલિંગન આદિ આઠ ગુણોમાંનો પ્રત્યેક ગુણ
આઠ આઠ પ્રકારનો હોય છે, આ રીતે ૮×૮=૬૪ પ્રકારના સ્ત્રીઓના ગુણ
ખતાવ્યા છે તો તે ચોસઠ પ્રકારના સ્ત્રીઓના ગુણ પણ કથામાં ચર્ચવાને
યોગ્ય નથી તથા “દેસજાતિકુલરૂપનામ-નેવત્થ-પરિજન-કહાઓ” આલિંગના અણ્ણા
વિ ઇવમાઈયાઓ કહાઓ સિંગારકલુણાઓ સજમવમચેરવાઓવઘાઈયાઓ બમચેરઅણુ
ચરમાણેણ ન કહેયન્વા ન સુણેયન્વા નચિત્થિયન્વા” દેશ, જાતિ કુળ, રૂપ, નામ, નેપથ્ય,
પરિજન, વગેરે સાથે સમઘ રાખનારી સ્ત્રીઓની કથાઓ પણ કહેવી નેઈ એ
નહીં લાટાદિ દેશની સ્ત્રીઓના ચર્ણન જે કથામાં હોય તે દેશ કથા છે,
જેમકે “લાટ દેશની સ્ત્રીઓ ખહુ જ મૃદુ વચન વાળી અને નિપુણ હોય

કોમલવચનાઃ ઇતિ નિપુણા યા મયન્તી ” ત્યાદિ । જાતિકયા=બ્રાહ્મણાદિજાતિ સમન્ધિકયા, યયા-“ ધિગૂત્રાન્નગીર્ધયામાયે યા જીવન્તિમૃતા ઇવ । ધન્યામન્યે સૂત્રીઃ પતિલક્ષેડપ્યનિન્દિતાઃ ॥

કુલકયા, યયા-અહો ચૌલુચ્યપુત્રીણા સાહસ જગતોડધિકૃમ્ ।
પત્યા ગૃતે સિગ્નત્યર્ગિનિ યાઃ પ્રેમરહિતા અપિ” ઇતિ । રૂપકયા-
યયા-ચન્દ્રવન્ત્રા સરોજાક્ષી, સહીઃ પીનધનસ્તની ।

કિંચાદીનો મતા સા સ્યા, દેવાનામપિ દુર્લભા ॥ ૧ ॥ ” ઇતિ ।

વચનવાદી ઔર નિપુણતા યુક્ત હુઆ કરતી હે બ્રાહ્મણ આદિ જાતિ સે સવધ રખતેવાલી સ્ત્રિયો કી કથા કહના ડસકા નામ જાતિ કયા હૈ । જૈસે પતિ કે અમાવ મે જીવન વ્યતીત કરને વાલી બ્રાહ્મણિયોં કો ધિકાર હે-ચ્યોં કિ યે જીતી હુઈં ખી ઇક તરહ સે મરી હુઈં જૈસી હેં । ઔર વે સૂદ જાતિ કી સ્ત્રિયા ધન્ય હે જો લાલ પતિવાલી હોને પર ખી નિન્દિત નહીં હોતી હ । કુલ સે સવધ રખતેવાલી સ્ત્રી સવધી કથા કુલ કયા હૈ-જૈસે-અહો ! ચૌલુચ્યવશ કી સ્ત્રિયો યા સાહસ જગત મે સવસે અધિકૃ હોતા હૈ-ચ્યોં કિ યે પતિ કે મર જાને પર પ્રેમ સે વિહીન હોતી હુઈં જીતી ૨ અગ્નિ મેં જલ જાતી હેં । સ્ત્રિયોં કે રૂપ સે સવધ રખતે વાલી કથા રૂપ કયા હૈ-જૈસે લાટદેશ કી સ્ત્રિયા ચન્દ્રમા કે જૈસી મુલવાલી હોતી હેં કમલ જૈસી આંલો વાલી હોતી હેં વાળી મેં ઇનકે મિઠાસ રહતા હૈ, ડનકે ડોનો કૂચ પુટ ઔર સ્થૂલ હોતે હેં । ખલા ણેસી સુન્દર સ્ત્રી કિસકો નહીં અઘીં લગેમી ? ણેસી સ્ત્રીતો દેવો કો ખી દુર્લભ હુઆ કરતી

છે ” બ્રાહ્મણુ આદિ જાતિ સાથે મળધ રાખનાર સ્ત્રિઓની કથા કહેવી તે જાતિ તથા કહેવાય છે ‘ જેમ કે ’ પતિ વિના જીવન વ્યતીત કરનારબ્રાહ્મણીઓને ધિક્કાર છે, કાળુ કે તેઓ જીવતી હોવા છતાં પણ એક રીતે તો મૃત જેવીજ છે ” “ તે શૂદ્ર જાતિની સ્ત્રિઓને ધન્ય છે કે જે લાખપતિ હોવા છતાં પણ નિર્દિત થતાં નથી ” આ ખીજી જાતિ કથાના દષ્ટાંતો છે જે કુળ સાથે મળધ રાખનારી સ્ત્રી વિષેની કથાને કુળ કથા કહે છે જેમ કે “ અહો ! ચાલુક્ય વશની સ્ત્રીઓના સાહસ જગતમા મૌથી વધારે હોય છે, કરણુ કે પતિનુ મૃત્યુ તથા તે પ્રેમભગ્ન થવાથી જીવતી અગ્નિમા પ્રવેશ કરી ખળી મરે છે ” સ્ત્રીઓના રૂપ સાથે મળધ રાખનારી કથાઓને રૂપકથા કહે છે જેમ કે લાટ દેશની સ્ત્રિઓ ચન્દ્રમુખી હોય છે, કમળનયની હોય છે, તેમની વાણીમા મીઠાશ હોય છે, તેમના બન્ને કુચ પુટ અને સ્થૂળ હોય છે એવી સુદર સ્ત્રી ડોને ન ગમે ? એવી સ્ત્રીઓ તો દેવોને પણ

વક્તવ્યા । તથા—‘ચત્સદ્વિમહિલાગુણા’ ચતુષ્પદ્વિમહિલાગુણા = આલિંગનાદીનામઘ્નાનાં
પ્રત્યેકસ્યાષ્ટવિધત્વેન ચે ચતુષ્પદ્વિસરપકા મહિલાગુણાસ્તેઽપિ ચ ન વક્તવ્યાઃ ।
તથા—‘દેસજાતિકુલરૂપનામનેવત્યપરિજનરૂપાઓ’ દેશજાતિકુલરૂપનામનેવત્ય
પરિજનરૂપાઃ તત્ર-દેશકથા=લાટાદિદેશસમ્યન્વિસ્ત્રીણા વર્ણનમ્, યથા—‘લાટઘઃ

और कपाल आदि से युक्त स्त्री दुर्भग होती है, इस प्रकार ये स्त्रियों की
सुभगता और दुर्भगता से सब प्ररूपने वाली कथा भी भाषा को नहीं
कहना चाहिये । तथा (चउसद्वि महिलागुणाण च) जिस कथा में
स्त्रियों के चौसठ गुणों से सबध हो, अर्थात् स्त्रियों के चौसठ गुणों को
लेकर जो कथा चलनी हो वह भी साधु को नहीं कहनी चाहिये । आलि
ङ्गन आदि आठ गुण प्रत्येक आठ २ प्रकार के होते हैं, इस तरह
८×८=६४ प्रकार के महिलाओं के गुण कहे गये हैं । सो ये चौसठ
६४ प्रकार के महिलाओं के गुण भी कथामें चर्चनीय नहीं होनी चाहिये ।
तथा (देसजाति कुलरूपनामनेवत्यपरिजनरूपाओ इत्थियाग अण्णाधि य
एवमाइयाओ सिंगारकलुणाओ सजमवभचेर याओवघाट्याओ वभचेर
अणुचरमाणेण न कहेयव्वा न सुणेयव्वा न चित्थियव्वा) देश,जाति, कुल,
रूप, नाम, नेपथ्य, परिजन, इनसे सबध रखनेवाली स्त्रियोंकी कथाएँ भी
नहीं कहनी चाहिये—लाटादि—देश समधी स्त्रियों का वर्णन जिस कथामें
होता है वह देश कथा है, जैसे—लाट देश की स्त्रिया बहुत ही कौमल-

કપાળ વાળી સ્ત્રી વિરલ હોય છે ” આ રીતે સ્ત્રીઓની સુભગતા કે વિરલતા
સાથે સબધ રાખતી કથા પણ સાધુએ કહેવી ભેદ એ નહીં “ચત્સદ્વિ
મહિલા ગુણાણ ચ ” જે કથાનો સ્ત્રીઓના ચોમઠ ગુણો સાથે સબધ હોય
એટલે કે સ્ત્રીઓના ચોસઠ ગુણોને અનુલક્ષીને જે કથા ચાલતી હોય તે પણ
સાધુએ કહેવી ભેદ એ નહીં આલિંગન આદિ આઠ ગુણોમાનો પ્રત્યેક ગુણ
આઠ આઠ પ્રકારનો હોય છે, આ રીતે ૮×૮=૬૪ પ્રકારના સ્ત્રીઓના ગુણ
ખતાવ્યા છે તો તે ચોમઠ પ્રકારના સ્ત્રીઓના ગુણ પણ કથામાં ચર્ચવાને
યોગ્ય નથી તથા “દેસજાતિકુલરૂપનામ-નેપથ્ય-પરિજન-રૂપાઓ” રૂપિયાગ અણ્ણા
વિ ય એવમાઈયાઓ કહાઓ સિંગારકલુણાઓ સજમવમ્બચેરવા યોવઝાઈયાઓ વમ્બચેરમણુ
ચરમાણેણ ન કહેયવ્વા ન સુણેયવ્વા ન ચિત્થિયવ્વા” દેશ, જાતિ, કુળ, રૂપ, નામ, નેપથ્ય,
પરિજન, વગેરે સાથે સબધ રાખનારી સ્ત્રીઓની કથાઓ પણ કહેવી ભેદ એ
નહીં લાટાદિ દેશની સ્ત્રીઓના વર્ણન જે કથામાં હોય તે દેશ કથા છે,
જેમકે “ લાટ દેશની સ્ત્રીઓ ખુબ જ મૃદુ વચન વાળી અને નિપુણ હોય

કોમલવચનાઃ ઇતિ નિપુણા યા મનન્તો ” ત્યાદિ । જાતિકયા=બ્રાહ્મણાદિજાતિ સમન્વિધયા, યથા-“ પ્રિયજ્ઞાત્રણીર્ધન્યાભાવે યા જીવન્તિમૃતા ઇવ । ધન્યામન્યે રૂઢીઃ પતિલક્ષેડ્વ્યનિન્દિતાઃ ॥

કુલકયા, યથા-અહો ચોલુચ્ચપુત્રીણા સાહસ જગતોડવિક્રમ્ ।

પત્યા મૃતે વિગન્ત્યર્ગિનિ યાઃ પ્રેમરહિતા અપિ” ઇતિ । રૂપકયા-

યથા-ચન્દ્રવચ્ચા સરોજાક્ષી, સજ્જીઃ પીનધનસ્તની ।

કિંઝાદીનો મતા સા સ્યા, દેવાનામપિ દુર્લભા ॥ ૧ ॥ ” ઇતિ ।

વચનવાલી ઔર નિપુણતા યુક્ત હુઆ કરતી હે બ્રાહ્મણ આદિ જાતિ સે સમઘ રખનેવાલી સ્ત્રિયોં કી કથા કહના ટસકા નામ જાતિ કથા હૈ । જૈસે પતિ કે અભાવ મે જીવન વ્યતીત કરને વાલી બ્રાહ્મણિયોં કો ધિક્કાર હૈ-કયોં કિ યે જીતી હુઈ ભી એક તરફ સે મરી હુઈ જૈસી હૈ । ઔર વે રૂઢ જાતિ કી સ્ત્રિયા ધન્ય હૈ જો લાખ પતિવાલી હોને પર ભી નિન્દિત નહીં હોતી હૈ । કુલ સે સમઘ રખતેવાઝી સ્ત્રી સવધી કથા કુલ કથા હૈ-જૈસે-અહો ! ચોલુચ્ચવજ કી સ્ત્રિયોં કા સાહસ જગત મે સવસે અધિક્કાર હોતા હૈ-કયોં કિ યે પતિ કે મર જાને પર પ્રેમ સે વિહીન હોતી હુઈ જીતી ૨ અગ્નિ મેં જલ જાતી હૈ । સ્ત્રિયોં કે રૂપ સે સમઘ રખને વાલી કથા રૂપ કથા હૈ-જૈસે લાટદેશ કી સ્ત્રિયા ચન્દ્રમા કે જૈસી મુલવાલી હોતી હૈ કમલ જૈસી આંચો વાલી હોતી હૈ વાળી મેં ઇનકે મિઠાસ રહતા હૈ, ડનકે દોનો કૂચ પુષ્પ ઔર સ્થૂલ હોતે હૈ । ખલા એસી સુન્દર સ્ત્રી કિસકો નહીં અઢીલગેગી ? એસી સ્ત્રીતો દેવો કો ભી દુર્લભ હુઆ કરતી

છે ” બ્રાહ્મણ આદિ જાતિ સાથે સમઘ રાખનાર સ્ત્રિઓની કથા કહેવી તે જાતિ કથા કહેવાય છે ‘ જેમ કે ’ પતિ વિના જીવન વ્યતીત કરનાર બ્રાહ્મણીઓને ધિક્કાર છે, કાળુ કે તેઓ જીવતી હોવા છતાં પણ એક રીતે તો મૃત જેવી જ છે ” “ તે શૂદ્ર જાતિની સ્ત્રિઓને ધન્ય છે કે જે લાખપતિ હોવા છતાં પણ નિન્દિત થતી નથી ” આ બીજી જાતિ કથાના દષ્ટાંતો છે જે કુળ માથે સમઘ રાખનારી બી વિધેની કથાને કુળ કથા કહે છે જેમ કે “ અહો ! ચાલુચ્ચ વચની સ્ત્રીઓના સાહસ જગતમા મોઢી વધારે હોય છે, કશુ કે પતિનું મૃત્યુ તથા તે પ્રેમભગ્ન થવાથી જીવતી અગ્નિમા પ્રવેશ કરી બળી મરે છે ” સ્ત્રીઓના રૂપ સાથે સમઘ રાખનારી કથાઓને રૂપકથા કહે છે જેમ કે લાટ દેશની સ્ત્રિઓ ચન્દ્રમુખી હોય છે, કમળનયની હોય છે, તેમની વાણીમા મીઠાશ હોય છે, તેમના બન્ને કુચ પુષ્પ અને સ્થૂળ હોય છે એવી સુદર સ્ત્રી કોને ન ગમે ? એવી સ્ત્રીઓ તો દેવોને પણ

નામરૂપા-યથા-ઇય યથા નામના મુદરી, તથા-સ્વગુણામ્યામપિ । નેપવ્ય
કથા, યથા-“ ધિરનારીરોદીચ્યા વહુસનાઝાદિતાદ્ગલતિકત્ત્વાત્ । યત્રોપન ન
યૂનાં ચકુર્મેદાય સમવતિ ॥ ” ઇતિ ।

પરિજનરૂપા-યથા-“ ચેદિત્તાપરિજારોઽપિ તસ્યાઃ કાન્તો વિચક્ષણઃ ।
ભાવજ્ઞાઃ સ્નેહ્યાન્ દક્ષો વિનીતઃ મુકુટસ્તથા ॥ ” ઇતિ ।

एताः कथा न कर्तव्याः । तथा-‘ इत्यियाण’ स्त्रीणाम् ‘अणानि य’ अया
अचि च ‘ एवमाहयाओ रुहाओ ’ एमादिका कथाः या हि ‘ मिगारकुल
णाओ ’ शृङ्गाररूपाः=शृङ्गाररसरूपासयुक्ताः, तथा ‘ सज्जनमचेरघाओव-

हैं । नाम कोलेकर जिस कथा में स्त्री सबधी सौन्दर्य का वर्णन किया जाता है
वह नाम कथा है, जैसे-यह स्त्री जैसे नाम से सुन्दर है वैसे ही यह रूप
और गुणों से भी सुन्दर है, स्त्री सबधी वेशभूषा आदी की चर्चा-
जिस कथा में रहती है वह नेपव्य कथा है, जैसे-उत्तरदिशा की स्त्रियों
को धिक्कार है-जो अनेक वस्त्रों से आच्छादित रहा करती है, क्यों कि
इसतरह रहने से इनका यौवन युवापुरुषों की आंखों को आनंदप्रदान
नहीं करता है । स्त्रियों के परिजनों को लेकर जो कथाएँ कही जाती हैं
वे परिजन कथाएँ हैं, जैसे-उस स्त्री का चेदिका जन-दासी जन रूप
परि वार-भी बड़ा सुन्दर, निपुण, भावज्ञ, स्नेहयुक्त, दक्ष-व्यवहार-
कुशल, विनीत एवं कुलीन है । साधु को ऐसी स्त्री सबधी देशादि
कथाएँ रागभाव से युक्त होकर नहीं करना चाहिये । तथा इसी तरह की
और भी स्त्रियों से सबध रखने वाली शृङ्गार रस एवं करुण रस

હુંલંલ છે નામને અનુલક્ષીને જે ઢથામા સ્ત્રી મળધી સૌંદર્યનુ વણુ ન કરાચુ
હોય છે તે નામ ઢથા કહેવાય છે કે “ આ સ્ત્રીનુ નામ જેટલુ સુદર છે
એટલી જ તે રૂપ અને ગુણમા પણ સુદર છે સ્ત્રીની વેશભૂષા આદિની ચર્ચા
જે ઢથામા હોય છે તે નેપવ્ય કથા કહેવાય છે જેમ કે “ ઉત્તરની સ્ત્રી
ઓને ધિક્કાર છે, જે અનેક વસ્ત્રોથી આચ્છાદિત રહે છે, કારણ કે તે પ્રમાણે
રહેવાથી તેમનુ યૌવન યુવાનોની આંખોને આનંદ પ્રદાન કરતુ નથી ” સ્ત્રી
ઓના પરિજનોને અનુલક્ષીને જે કથા કહેવાય છે તે પરિજન કથાઓ છે
જેમ કે તે સ્ત્રીના દાસિજન રૂપ પરિવાર પણ ઘણો સુદર, નિપુણ, ભાવજ્ઞ,
સ્નેહાળ, દક્ષ-વ્યવહાર કુશળ, વિનીત અને કુલીન છે ” સાધુઓ એવી સ્ત્રી
સબધી દેશાદિ કથાઓ રાગ ભાવથી યુક્ત થઈને કહેતી બેઠેલો નહીં તથા
એ જ પ્રકારની સ્ત્રીઓ સાથે સબધ રાખનારી શૃંગાર રસ અને કરુણ રસ

પાડ્યાઓ ' સયમવ્રત્ત્વચર્યાઘાતોપપાતિકાસ્તાઃ કથાઃ, ' વમચેર ' વ્રત્ત્વચર્યમ્, 'અણુચરમાણેણ' અણુચરતા ન કહેયન્ત્રા ' સ્વય કથિતવ્યાઃ, ન=નાપિ ચ ' સુણે યન્ત્રા ' અન્યસ્ય કથયતઃ શ્રોતવ્યા ન ' ચિતિયન્ત્રા' ચિન્તિતવ્યા, ન ચિન્તા-વિપયીકર્તવ્યા' । એમ્ ' ઇત્યીકઠાવિરિસમિહજોગેણ ' સ્ત્રીકથાવિરતિસમિતિયો-ગેન=સ્ત્રીણા યા કથાસ્તતો યા વિરિતિસ્તદ્રૂપો યઃ સમિતિયોગસ્તેન ભાવિતોઽન્ત-રાત્મા આરતમના વ્રત્ત્વચર્યાસક્તમના', વિરતગ્રામધર્મ =નિવૃત્તમૈથુનભાવઃ । જિતેન્દ્રિય=વગીકૃતેન્દ્રિય', વ્રત્ત્વચર્યગુણઃ=નવવિધવ્રત્ત્વચર્યગુણિસહિતઃ, ઉત્તરાધ્યયનસૂ-ત્રપોડશાધ્યયનોક્ત દશવિધવ્રત્ત્વચર્ય સમાધિસ્થાનયુક્તો વા ભવતિ ॥ મૂ. ૭ ॥

પ્રધાનકથાઓં કો નહીં કહનાં ચાહિયે । તથા જિન કથાઓં સે સયમ ઓર વ્રત્ત્વચર્ય કા ઘાત ઓર ઉપધાત હોના હો એસી કથાએં મી વ્રત્ત્વચર્ય કો પાલન કરને વાલે સાધુ કો ન સ્વય કહનાં ચાહિયે, ન સુનનાં ચાહિયે ઓર ન એસી કથાઓં કા વિચાર હી કરનાં ચાહિયે । (પવ ઇત્યી કથાવિરિ સમિહજોગેણ ભાવિઓં અતરપ્પા વિરયગામધર્મે જિહિદિય વમચેર ગુત્તે મવઙ્) ઇસ પ્રકાર સે સ્ત્રીકથાવિરતિરૂપ સમિતિ કે સવધ સે ભાવિ ત હુઆ જીવ વ્રત્ત્વચર્ય મે આસક્ત મનવાલા હો જાતા હૈ ઓર ગ્રામધર્મ-મૈથુન ક્રિયા સે નિવૃત્ત હો જાના હૈ, અતઃપવ વહ જીવ જિતેન્દ્રિય બનકર નવવિધ વ્રત્ત્વચર્ય કી ગુણિ સે અથવા ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર કે મોઢહવે અધ્યયન મેં કહે હુપ દશવિધ વ્રત્ત્વચર્ય સમાધિ સ્થાન સે યુક્ત બન જાતા હૈ ।

ભાવાર્થ—ઇસ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકાર ને વ્રત્ત્વચર્ય વ્રત કી દ્વિતીય-ભાવના કા સ્વરૂપ પ્રકટ ક્રિયા હૈ । ઇસમેં ઉન્હો ને રાગભાવ સે સ્ત્રીમાત્ર

પ્રધાન કથાઓ પણ ડહેવી જોઈએ નહીં તથા જે કથાઓથી સયમ અને વ્રત્ત્વચર્યના ઘાત અને ઉપધાત થતો હોય એવી કથાઓ પણ વ્રત્ત્વચર્યનું પાલન કરનાર સાધુએ કહેવાં ન જોઈએ, સાધુજીવી ન જોઈએ અને એવી કથાઓનો વિચાર પણ કરો જોઈએ નહિ “ એવ ઇત્યીકથાવિરિસમિહજોગેણ ભાવિઓ અતરપ્પા વિરયગામધર્મે જિ દિય વમચેરગુત્તે મવઙ્ ” આ પ્રમાણે સ્ત્રી કથા વિરતિરૂપ સમિતિના યોગથી ભાવિત થયેલ જીવ વ્રત્ત્વચર્યમા આસક્ત મનવાળો બની બીજ છે અને ગ્રામધર્મ-મૈથુનક્રિયાથી નિવૃત્ત થઈ બીજ છે તેથી તે જીવ જિતેન્દ્રિય બનીને નવવિધ વ્રત્ત્વચર્યની ગુણિથી અથવા ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રના સોળમા અધ્યયનમા ડહેલ દશવિધ વ્રત્ત્વચર્ય સમાધિ સ્થાનથી યુક્ત બની બીજ છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે વ્રત્ત્વચર્ય વ્રતની બીજી ભાવનાનું સ્વરૂપ પ્રગટ કર્યું છે તેમા તેમણે રાગભાવથી સ્ત્રી માત્રની કથાઓ ડહેવાનો

તૃતીયા ભાવનામાહ—‘ તદ્ય ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—તદ્યં નારીણં હસિય- ભણિય ચિદ્ધિય વિપ્પેન્નિલ્લય
ગદ્ધિલાસકીલિયં વિવ્વોદ્ધ ય નદ્ધીયવાદ્ય સરીર સઠાણ
વળ્લકરચરણનયણલાવળ્લરૂવજોવળ્લપયોધરાધરવત્થાલ્લકાર-
ભૂસળાણિ ય ગુજ્જોવકાસિયાદ્ અળ્લણાણિ ય એવમાદ્યાણિ
તવ સંજમવભચેરઘાઓવઘાદ્યાદ્ અળ્લુચરમાળેણં વભચેર
ન ચક્કલુસા ન મળસા ન વયસા પત્થેયવ્વાદ્ પાવકમ્માદ્
એવ દ્ધત્થીરૂવ ઘિરદ્ધ સમિદ્ધજોગેણ ભાવિઓ ભવદ્ધ અતરપ્પા
આરયમળા વિરયગામધમ્મે જિદ્ધંદિપ્પ વભચેરગુત્તે ॥ સૂ ૮ ॥

ટીકા—‘તદ્ય’ તૃતીયા સ્ત્રીરૂપનિરીક્ષણવર્જનરૂપા ભાવનામાહ—‘નારીણ’ નારીણાં
‘હસિયભણિયચિદ્ધિયવિપ્પેન્નિલ્લયગદ્ધિલાસકીલિય’ દ્વિસિતભણિતવેષ્ટિતવિપ્રેક્ષિત

કો કયા કહેને કા નિપેવ કિયા હે, ત્યોં કિ એસી વાતે કામવર્ધક
હુઆ કરતી હે, અતઃ બ્રહ્મચારી કો અપને બ્રહ્મચર્ય વ્રત મેં એકદેશ
અથવા સર્વદેશ સે વાવક એસી કોઈ બી વાત ક્વિયો કે વીચ મેં વૈઠકર
નહીં કાનીં વાલિયે । હસ પ્રકાસ વસ બ્રહ્મચારી કા વ્રત હર સમય
સુરક્ષિત વના રહતા હૈ ॥ સૂ. ૭ ॥

અવ સૂત્રકાર હસ વ્રત કી તૃતીય ભાવના કો કહેતે હૈ—‘ તદ્ય
નારીણ ’ ઇત્યાદિ. ।

ટીકાર્થ—(તદ્ય) હસ વ્રત કી રક્ષા કરને વાલી તૃતીય ભાવના
સ્ત્રી રૂપ નિરીક્ષણવર્જન કરને રૂપ હૈ । હસ મે (નારીણ) સ્ત્રીયોં કે

નિષેધ કર્યોં છે, ઝરણુ ઠે એવી વાત કામ વર્ધક હોય છે, તેથી બ્રહ્મચારીએ
પોતાના બ્રહ્મચર્ય વ્રતમા એક દેશથી અથવા સર્વદેશથી બાધક એવી કોઈ
પણ વાત બીજોની વચ્ચે બેઠીને કહેવી બેઠીને નહીં આમ ઝરવાથી તે
બ્રહ્મચારીનું વ્રત સદાકાળ સુરક્ષિત બની જાય છે ॥ સૂ. ૭ ॥

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની ત્રીજી ભાવના બતાવે છે “ તદ્ય નારીણ ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—“ તદ્ય ” આ વ્રતનું રક્ષણ ઝરનારી ત્રીજી ભાવના સ્ત્રીના
રૂપનું નિરીક્ષણ કરવાનો પરિત્યાગ કરવાની છે તેમા “ નારીણ ” સ્ત્રીઓના

गतिविलासक्रीडितम्, तत्र हमित=हास्यम्, भणित=जल्पितम्, चेष्टितम्=हस्तपा-
दन्यासादि, विप्रेक्षितम्=निरीक्षितम्, गतिः=गमनम्, विलास=नेत्रजनितचेष्टा-
विशेषः, क्रीडित=स्वसङ्गीभिः सह खेलनम्, एषा समादरद्वन्द्वः, तथा--
'विज्योइयनदृगीयवाइयसरीरसठाणवण्णकरचरणनयणलावण्णरूपजोवणपयोधराधर
वत्थालंकारभूमणाणि य' विज्योक्तिनाटयगीतवादित्रशरीरसस्थानवर्णकरचरण-
नयनलावण्यरूपयौवनपयोधराधरवस्त्रालङ्कारभूपणानि च, तत्र-विज्योक्ति=पूर्वो-
क्तलक्षणोविज्योक्तः, नृत्य=नर्तनम्, गीत=गानम्, वादित=वीणादिवादनम्, श-
रीरसस्थान=ह्रस्वदीर्घादिशरीराकृतिः, वर्ण=गौरत्वादिलक्षण, तथा-करचरणनय
नलावण्यम्=करचरणनयनाना लावण्य=सौन्दर्यम्, रूप=स्वरूपम्, यौवन=तारुण्यम्
पयोधरो=स्तनौ, अवरः=अधरोष्ठः, उखाणि=प्रसिद्धानि, अलङ्कारः = हारादय,
भूपणानि=मण्डनानि, एतेषा द्वन्द्व, तानि । तथा-गुञ्जोवकासियाइ 'गुह्यावका-
सिकानि=गुह्यभूतालज्जनीयत्वान् स्मरणीया अवकाशा=शरीरानयना इत्यर्थः, त

(हसियभणियचिट्ठियविप्पेक्खियगइविलासकीलिय) हास्य का, भणित
चोलने का, उनकी चेष्टाओं का, वितवन का, चाल का, नेत्र जनितचे-
ष्टाविशेषरूप विलास का, अपनीसखियों के साथ उनके खेल खेलने
का, तथा उनके (विज्योइ य नटगीइ वाइय सरीर-सठाणवण्णकरचरण-
नयण लावण्णरूपजोवणपयोधराधरवत्थालंकारभूमणाणि य) विज्योक्त
का, नृत्य का, उनके द्वारा गाये गये गीतों का उनके वीणादिवादन का,
उनके ह्रस्व, दीर्घ आदि शारीरिक सस्थान का उनके गौर आदि वर्ण
का, कर-हाथ, चरण-पैर, नयन-नेत्र इनके लावण्य-सौंदर्य का, रूप
का, यौवन का, उनके स्तनों का, उनके अधरो का, उनके द्वारा पहरे
हुए वस्त्रों का हार आदि अलंकारों का, भूपणों का तथा (गुञ्जोव-
कासियाइ) उनके कामोद्दीपक गुप्त अंगों का, तथा (एवमाइयाणि

“ हसियभणियचिट्ठियविप्पेक्खियगइविलासकीलिय ” हास्यतु, ललित-मोदीतु,
तेमना हावलावतु, चितवनतु चालतु, आपोना धराराउप विलासतु, पोतानी
सण्णियो साथेनी तेनी डंडातु, तथा तेमना “ विज्योइय नटगीइवाइय
सरीर-सठाणवण्णकरचरणनयणलावण्णरूपजोवणपयोधराधरवत्थालंकारभूमणाणि य ”
विज्योक्तु, नृत्यतु तेमना द्वारा गवाता गीतोतु, तेमना वीणादि
वादनतु, तेमना ह्रस्व, दीर्घ आदि शरीर माधारणुतु, तेमना गौर आदि
वर्णुतु, उ-हाथ, अणु नेत्र, आदिना सौंदर्यतु, रूपतु, यौवनतु तेमना
स्तनोतु, तेमने पहरेल वस्त्रतु, हार आदि अलंकारोतु, आभूषणोतु तथा
“ गुञ्जोवकासियाइ ” तेमना कामोत्तेज्युतु अंगोतु, तथा “ एवमाइयाणि

एव गुह्यावकाशिकानि स्त्रीणा गुप्ताङ्गानीत्यर्थः । तथा-‘अण्णाणि च एजमाइयाणि’
 अन्यामि च एजमादिकानि हमितादिसट्शान्यन्यान्यपि, ‘तवसजममभचेरघाओव-
 घाइयाइ’ तपः सयमब्रह्मचर्यघातोपघातकानि, ‘पापकम्माइ’ पापकर्माणि ‘ब-
 भचेर’ ब्रह्मचर्यम् ‘अणुचरमाणेण’ अनुचरता ‘न चक्खुसा’ न चक्षुषा ‘न
 मणसा’ न मनसा ‘न उयसा’ न वचसा ‘पत्थेयग्गाइ’ प्रार्थयितव्यानि=न
 चक्षुषा द्रष्टव्यानि, न मनसा चिन्तयितव्यानि, न उचसा प्रार्थयितव्यानीत्यर्थः ।
 एवम्=अनेन प्रकारेण ‘इत्थीरूपविरइसमिइजोगेण’ स्त्रीरूपविरतिममितियोगेन=
 स्त्रीणा यद् रूप ततो या विरतिस्तद्रूपो यः समितियोगस्तेन भावितीज्ज्तरात्मा=
 जीवः ‘आरयमणा’ आरतमनाः=ब्रह्मचर्यासत्तचित्तो विरतग्रामधर्मो जितेन्द्रियो
 ब्रह्मचर्यगुप्तश्च भवति ॥सू०८॥

पावकम्माइ तवसजममभचेरघाओवघाइयाइ) इसी प्रकार की और
 भी पाप कर्मरूप घातों का कि जो तप, सजम एवं ब्रह्मचर्य व्रत को
 एकदेश से अथवा सर्वदेश से घात करने वाली हों (बभचेर अणुचर-
 माणेण) ब्रह्मचर्य व्रत की आराधना करने वाले साधु को (न चक्खुसा)
 राग संयुक्त होकर न आँखों से निरीक्षण करना चाहिये, (न मणसा)
 न मन से विचार करना चाहिये, और (न उयसा) न वचन से
 (पत्थेयग्गाइ) प्रार्थना करना चाहिये । (एव इत्थीरूपविरइसमिइ
 जोगेण भाविओ अतरप्पा आरयमणा विरयगामधम्मं जिइदि ए बभचेर-
 गुत्ते भवइ) इस तरह से स्त्रीरूप निरीक्षण विरतिरूप समिति के योग
 से संयुक्त जीव ब्रह्मचर्य व्रत में आसक्त मनवाला हों जाता है और
 ग्रामधर्म-मैथुन सेवन से निवृत्त हो जाता है । अत एव वह जीव-
 जितेन्द्रिय बनकर नव विध ब्रह्मचर्य की गुप्ति से अथवा दशविध ब्रह्म-

पावकम्माइ तवसजममभचेरघाओवघाइयाइ ” એ પ્રકારની બીજી પણ પાપ
 કર્મરૂપ ઘાતો કે જે તપ, સયમ અને બ્રહ્મચર્યવ્રતનો એક દેશથી અથવા
 સર્વદેશથી ઘાત કરનારી હોય “બભચેરઅણુચરમાણેણ” બ્રહ્મચર્યવ્રતનું પાલન કરનાર
 સાધુએ “ ન ચક્કુસા ” રાગ યુક્ત થઈને તેમનું નિરીક્ષણ કરવું બેઠાંએ નહીં,
 “ ન મણસા ” મનથી વિચાર કરવો બેઠાંએ નહીં અને “ ન ઉયસા ” વચનથી ન
 “ પત્થેયગ્ગાઈ ” પ્રાર્થના કરવી બેઠાંએ “ એવ ઇત્થીરૂપ વિરિસમિજોગેણ ભાવિઓ
 અતરપ્પા આરયમણા વિરયગામધમ્મે જિઈદિ એ બભચેરગુત્તે ભવઈ ” આ પ્રમાણે સ્ત્રીરૂપ
 નિરીક્ષણ વિરતિરૂપ સમિતિના યોગથી લાવિત જીવ બ્રહ્મચર્યવ્રતમાં આસક્ત
 મનવાળો થઈ જાય છે, અને ગામધર્મ મૈથુનના સેવનથી નિવૃત્ત થઈ જાય છે
 તેથી તે જીવ જિતેન્દ્રિય બનીને નવવિધ બ્રહ્મચર્યની ગુપ્તિથી અથવા દશવિધ

ચતુર્થભાવનામાહ—'ચઉત્યં' રૂપાદિ ।

મૂલમ્—ચઉત્ય પુઞ્વરય—પુઞ્વકીલિયપુઞ્વસગથસથુયા જે તે આવાહવિવાહચોલકેસુ ય તિહિસુ જણેસુ ઉસ્સવેસુ ય સિગારાગારચારુવેસાહિ હાવભાવલલિયવિક્ષેવવિલાસ સાલિણીહિ અણુકૂલપેમિયાહિ સદ્ધિ અણુભૂયા સયણસંપ-
ઓગા ઉ ઉ મુહવરકુસુમસુરભિચદણસુગધવરવાસધૂવસુહફ-
રિસવત્થમૂસણગુણોવવેયા રમણિજ્ઞા ઉજ્જગેજ્જપડરણડણટ્ટગ-
જહમહ્મુદ્ધિયત્તેલવગકહગપવગલાસગઆઙ્કલલલ્લખમંલ્લતૂ-
ણહલ્લતુંવવીણિયતાલાયરપકરણાણિ ય વહૂણિ મહુર—સર-
ગીય—સુસ્સરાઙ્ અણ્ણાણિ ય ઇવમાઙ્ગયાણિ તવ—સંજમવંભ-
ચેરઘાઓવઘાઙ્ગાઙ્ અણુચરમાણેણ વંભચેર ન તાઙ્ સંમણેણ
લભા દટ્ટ ન કહેઉ ન વિ ય સુમરેઉં જે, ઇવં પુઞ્વરય પુઞ્વ-
કીલિય વિરઙ્ગસમિઙ્ગજોગેણ ભાવિઓ ભવઙ્ અંતરપ્પા આર-
યસણા વિરયગામધમ્મે જિઙ્ગદિઙ્ગ વમ્ભચેરગુત્તે ॥ સૂ૦ ૧ ॥

ટીકા—'ચઉત્ય' ચતુર્થી—પૂર્વરતપૂર્વક્રોડિતસ્મરણવિરતિરૂપાં ભાવનામાહ—'પુઞ્વ-
રયપુઞ્વકીલિયપુઞ્વસગથસથુયા' પૂર્વરતપૂર્વક્રોડિતપૂર્વસગ્રન્થસસ્તુતાઃ, તત્ર—પૂર્વ તત્ત્વ-

ચર્ય સમાધિ સ્થાન સે યુક્ત બન જાતા હૈ ।

ભાવાર્થ—ઇસ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકાર ને બ્રહ્મચર્ય વ્રત કી તૃતીય ભાવના કા કથન કિયા હૈ । ઇસ મે રાગભાવ સે યુક્ત બનકર સાધુ કો સ્ત્રી કે રૂપાદિ નિરીક્ષણ કરને કા સર્વથા ત્યાગ કરના કહાગયા હૈ ॥સૂ૦ ૮॥

સમાધિસ્થાનથી યુક્ત બની બધ છે

ભાવાર્થ—આ નવદ્વાગ સૂત્રકારે બ્રહ્મચર્ય વ્રતની ત્રીજી ભાવનાનું વર્ણન કર્યું છે તેમા ગગ ભાવથી યુક્ત થાને સ્ત્રીના રૂપાદિનું નિરીક્ષણ કરવાનો સાધુએ પરિત્યાગ કરવો બોધ્યો તે બતાવ્યું છે ॥ સૂ. ૮ ॥

=ગૃહસ્થાવસ્થાકાલિકી કામગતિ, પૂર્વક્રીડિતમ્=ગૃહસ્થાવસ્થાશ્રિતં નીમિ. સદ્
ક્રોડનમ્, પૂર્વસગ્રન્થસસ્તુતા.=પૂર્વ=ગૃહસ્થાવસ્થાયા યે સગ્રન્થા =શ્વસુરકુટમન્ય
સવદ્ધા શ્યાલકશ્યાલિકાદયઃ શ્યાલકમાર્ગાદયથ, તથા-સસ્તુતા દર્શનભાષ-
ણાદિભિઃ પરિચિતાઃ, एषा इन्द्र', एते श्रमणेन न द्रष्टुं न कथयितुं न शक्नुमि लभ्याः
इति परेण सग्नः । तथा-‘ जे ते ’ ये ते ‘ आवाहविवाहचोउकेमु’ आवाहवि
वाहचूलकेपु, तत्र-आवाहो-उ-आवरगृहानयनम्, विवाहः=गणिग्रहण, चूलक

અવ હસ વ્રત કી ચૌથી ભાવના કો કરતે હૈ—‘ ચત્ત્ય પુવ્વરય૦’
હત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(ચત્ત્ય) બ્રહ્મચર્ય વ્રત કી પૂર્વરત પૂર્વક્રીડિત સ્મરણ-
વિરતિનામ કી ચૌથી ભાવના હસ પ્રકાર હૈ—(જે તે) જો વે (પુવ્વરય
પુવ્વકીલિયપુવ્વસગથસથુરા) પૂર્વરત ગૃહસ્થાવસ્થા મેં જો કામકેલિ
કી ગઈ હો વહ પૂર્વરત હૈ । ગૃહસ્થાવસ્થા મેં જો મિત્રિયોં કે સાથક્રીડા કી
ગઈ હો વહ પૂર્વક્રીડિત હૈ । તથા-ગૃહસ્થાવસ્થા મેં જિનકે સાથ શ્વસુર,
સાલે, સાલી, આદિ કો સબધ રહા હો, વે પૂર્વ સગ્રન્થ હૈ ઓર જિનકે
સાથ દર્શન ભાષણ આદિ સે અધિક પરિચય રહા હો વે પૂર્વસસ્તુત હૈ ।
હન સબ કા બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રત ધારણ કરને વાદ સાધુ કો ન સ્મરણ
કરના ચાહિયે, ન ઊનકા કથન કરના ચાહિયે ઓર ન સબધી આદિ
જનોં કો દેલને કી લાલસા હી રલ્લની ચાહિયે । તથા (આવાહવિવાહ

હવે આ નતની ચોથી ભાવનાનુકથન કરે છે “ ચત્ત્ય પુવ્વરય ” હત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ ચત્ત્ય ” બ્રહ્મચર્ય નતની ચોથી ભાવના “ પૂર્વરતપૂર્વક્રીડિત
સ્મરણવિરતિ ’ નામની છે તે આ પ્રમાણે છે--“ જે તે પુવ્વરયપુવ્વકીલિય
પુવ્વસગથસથુરા ” પૂર્વરત-ગૃહસ્થાવસ્થામા જે કામક્રીડા કરાડ હોય તે પૂર્વરત
કહેવાય છે ગૃહસ્થાવસ્થામા સ્ત્રીઓની સાથે જે ક્રીડા કરાઈ હોય તે પૂર્વક્રીડિત
કહેવાય છે તથા ગૃહસ્થાવસ્થામા જેમની સાથે સસગ, સાળા, સાળી આદિનો
સબધ રહ્યો હોય ને પૂર્વ સગ્રન્થ કહેવાય છે અને જેમની સાથે દર્શન,
ભાષણ આદિથી વધારે પરિચય રહ્યો હોય તેઓ પૂર્વ સસ્તુત કહેવાય છે
બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રત ધારણ કર્યા પછી સાધુએ એ બધાનુ સ્મરણ કરવું જોઈએ
નહી, તેમની વાત કરવી જોઈએ નહીં અને સબધી આદિ જનોને જોવાની
લાલસા રાખવી જોઈએ નહીં તથા આવાહવિવાહચોરુકેમુય’ આવાહ--પ્રધૂને વરના
ઘર ભાવતાં વખતે, વિવાહ પ્રસંગે, તથા બાળકોના ચૂડકર્મ સંસ્કારના

=चूडारुम=गालाना शिखागारणम्, एषा द्वन्द्व, तेषु तथोक्तेषु च=पुनः 'तिहिंसु'
तिथिषु=मदनत्रयोदशीपञ्चतिषु, तथा-'जण्णेषु' यज्ञेषु = नागादिपूजाप्रकरणेषु,
तथा 'उत्सवेषु' उत्सवेषु=इन्द्रोत्सवादिषु च 'सिंगारागारचारुवेसाहि' शृङ्गा
रागारचारुवेसाभिः=शृङ्गारस्य = शृङ्गाररसस्य आगारभूता याश्चारुवेसाः=शोभन
नेपथ्यसपद्मास्ताभिः, तथा-'हावभावललितविक्रियविकल्पमालिणीर्हि' हावभावल
लितविक्षेपविलासगालिनीभिः-तत्र हाव = कामजनितो मुखविकारः, भावः=काम-
जनिताःचित्तसमुन्नतिः, तदुक्तम् 'हावो मुखविकारः स्याद् भावश्चित्तसमुन्नतिः' इति
ललितम्=चेष्टाविशेषः, तदुक्तम्—

“ हस्तपादाङ्गविन्यासो भ्रूनेत्रौष्ठयोजितः ।

सुकुमारो विधानेन ललित तत्परीरितम् ॥ १ ॥ ” इति ।

विक्षेपः—चेष्टाविशेषः, तल्लक्षणं त्विदम्—

अप्रयत्नेन रचितो, धम्मिल्लः श्लथग्न्यनः ।

एकाशदेशधरणैस्ताम्बूलपलाञ्छनम् ॥ १ ॥

ललाटैकान्तलिखिता, विपमा पालेखिकाम् ।

असमञ्जसविन्यस्त मज्जन नयनाञ्जयो ॥ २ ॥

तथा—अनादरपद्धत्याद् ग्रन्थेर्जघनवासस ।

वसुगालम्बितः प्रान्तः, स्कन्धात्सस्तस्तयाऽशुक्र ॥ ३ ॥

जघने हारविन्यासो रशनायास्तथोरसि ।

इत्यवज्ञाकृत यत्स्यादज्ञानादिमण्डनम् ॥ ४ ॥

वितनोति परा शोभा स विक्षेप इति स्मृतः ॥ ”

विलासः—चेष्टाविशेषः, सतु—“ स्थानासनगमनानां हस्तभ्रूनेत्रकर्मणा चैव ।

उत्पद्यते विशेषो यः श्लिष्टः स तु विलासः स्यात् ॥ १ ॥ ” इति ।

चोलकेसु ३) आवाह-बधू की वर के घर पर लाने के समय में, विवाह
के अवसर में, बालकी के चूड़ा (चोटी) वर्म संस्कार के प्रसंग में, तथा
(तिहिंसु) मदनत्रयोदशी आदि तिथियों में, तथा (जण्णेषु) नागा
दिकों की पूजा के अवसर रूप यज्ञों में, तथा (उत्सवेषु य) इन्द्रोत्सव आदि
उत्सवों में, (सिंगारागारचारुवेसाहि) शृङ्गाररस की घरभूतयनी
हुई तथा सुन्दर वेषभूषा से सज्जित हुई ऐसी तथा (हावभावललित-

प्रसंगमा तथा “तिहिंसु” मदन त्रयोदशी आदि तिथिओमा, तथा “जण्णेषु”
नागादि डोनी पूजना अवसररूप यज्ञोमा तथा “उत्सवेषु य” इन्द्रोत्सव आदि
उत्सवोमा, “सिंगारागारचारुवेसाहि” शृङ्गार रसना आगाररूप भनेदी तथा
सुन्दर वेषभूषाथी सुसज्जित थयेदी तथा “हावभावललितविक्रियविलाससा

અમિઃ શાલન્તે શોભન્તે યાસ્તામિ', તથા- 'અણુકૂલપેમિયાદિ' અનુકૂલ
પ્રેમિકામિઃ=અનુકૂલ=મનોઽભિરુચિકર પ્રેમ=પ્રીતિર્યાગા તામિ', પન્તાદશીમિઃ
'સદ્ધિ' સાર્ધમ્, 'અણુભૂયા' અનુભૂનાઃ=અનુભવત્રિપયીકૃતા 'સયનમપજોગા'
શયનસપ્રયોગાઃ=શયનાનિ ચ સપ્રયોગા=સમ્પર્કશ્ચેતિ દ્વિતરેતરયોગદ્વન્દ્વ', શયન
સપ્રયોગા ? इत्याह- 'उ उ मुहुरकुसुमसुरभिचदनमुगधवरसामधूव सुहफरिस-
वत्थभूसण-गुणोववेया' कालोचितकुसुमो की सुगधि आदि रूप गुणों
पणगुणोपपेताः, तत्र-रुतुमुत्तानि=फलोचितानि यानि परकुसुमानि, तथा-सुगभि
चन्दनस्य सुगन्धो शोभनामोदयुक्तो परः=श्रेष्ठो यो पासः=गन्धः स', तथा-धूपः,
तथा-सुखस्पर्शानि यानि वस्त्राणि, तथा-भूषणानि च, तेषां ये गुणास्तेष्वपेता
स्ते श्रमणेन द्रष्टुं कथयितुं स्मर्तुं वा न योग्याः । तथा- 'रमणिज्जा उज्ज गेज्जप

विखेवविलाससालिणीहिं) हाव, भाव, ललित, विक्षेप और विलास
से सुहावना स्त्रियों के साथ तथा (अणुकूलपेमियादि) जिनकी प्रीति
मन को मुदित करने वाली होती है ऐसी (इति गीर्हिसद्धि) स्त्रीयों के साथ
भोगे गये शयन संधी और संपर्क संधी पूर्वकालिक भोगों का कि
जो (उ उमुहुरकुसुमसुरभिचदन मुगध-वर-वासधूव-सुहफरिस-
वत्थभूसण-गुणोववेया) कालोचित कुसुमों की सुगंध आदि रूप गुणों
से विशेष रूप में आकर्षक होते थे, सुरभिचदन की श्रेष्ठ गंध से जो
मनोमोहक बने रहते थे, कृष्णाशु आदि सुगंधित द्रव्यों की धूप के
ससर्ग से जिनमे से महक उड़ा करती थी तथा वस्त्र और आभूषणों
के आडम्बर की छटा से जिन्हे भोगने लिए चित्त परबस लालायित
घन जाया करता था, उन सब साधु को कभी भी स्मरण नहीं करना
चाहिये, किसी से ऐसे भोगों की बातें नहीं करना चाहिये और न ऐसे

લિનીર્હિ " હાવ, ભાવ, વિશેષ અને વિલાસથી શોભતી સ્ત્રીઓની સાથે તથા
" અણુકૂલપેમિયાદિ " જેની પ્રીતિ મનને આનંદિત કરનારી હોય છે એવી
" इत्यीहि सद्धि " સ્ત્રીઓની સાથે ભોગવેલ શયન સંબંધી કે સસર્ગ સંબંધી
પૂર્વ કાલિક ભોગોનું કે જે ' उ उमुहुर-कुसुमसुरभि-चदन-मुगध-वरसाधूवसुह
फरिसवत्थ-भूसण-गुणोववेया " કાલોચિત પુષ્પોના મુગધી આદિરૂપ ગુણોથી
વિશેષ આકર્ષક થતું હતું, સુગંધિ ચંદનની શ્રેષ્ઠ ગંધથી જે મનોહર બનતું
હતું, કૃષ્ણાશુ આદિ સુગંધિત દ્રવ્યોના ધૂપના સસર્ગથી જેનામા મહક ઉડ્યા
કરતી હતી તથા વસ્ત્ર અને આભૂષણોના આડમ્બરની છટાથી જેને ભોગવવાને
માટે મન લલચાઈ ગયા કરતું હતું, એ બધી વાતનું સાધુએ કદીપણુ સ્મરણુ
કરવું નોંધએ નહીં, કોઈની સાથે એવા ભોગોની વાત કરવી નોંધએ નહીં,

મોર્ગાં કી ઓર લક્ષ્ય હી રલ્લના ચાલ્લિયે। કામ સે જો મુલ્ક પર ંક પ્રકાર કી વિકૃતિ આ જાતી હૈ ઁસકા નામ હાવ હૈ। કામ સે ઉદ્ભવન જો ચિત્ત મૈં ંક પ્રકાર કી ઉન્નતિ આ જાતી હૈ ઁસકા નામ ભાવ હૈ। ંક વિશેષ પ્રકાર કી ચેષ્ટા કા નામ લલિન હૈ। યહ ચેષ્ટા સ્ત્રિયૌં કે હસ્ત, પાદ, શરીર, શ્રુ, નેત્ર ંર ંષ્ટ આદિ મેં હોતી હૈ। વિલ્લેષ નામ ચિત્ત કી અસાવધાની કા હૈ। જય લલના જનોં કા ચિત્ત ઁસ વિલ્લેષનામ કી ચેષ્ટાવિશેષ સે યુક્ત હો જાતા હૈ તો ઁનમે વિશેષ પ્રકાર કી ચેષ્ટાઁ જાગ્રત હોને લગતી હૈં જૈસે વે અગ્ની ચોટી કો ઢીલી વાંધ હેતી હેં। નીચી ઁનકી શિથિલ યથ વાલી હો જાતી હૈ। મસ્તક પર સિન્દુર વિન્દુ કી જગહ કજ્જલ કી રેલા ંર આલો મેં સિન્દુર કી રેલા લગાલી જાતી હૈ। અવગા ંર્ણવૌં મૈં જો ંજન લગાની હ વહ ભી અસ્ત વ્યસ્ત રૂપ મૈં લગા હેતૌં હૈ। હલ્લાદિ સવ પ્રકાર કી ઁનકી મળ્લન વિધિ અવજ્ઞાકૃત હોતી હૈ। ફિર ભી હસ સ્થિતિ મેં ઁનકી શોભા મેં ન્યૂનતા નહીં આતી હૈ। સ્થાન, આસન, ગમન આદિ મૈં જો ંક પ્રકાર કી વિશેષતા આ જાતી હૈ વહ વિલાસ હૈ। ઁસી તરહ (રમણિજ્ઞા 'ઉલ્લજગેલ્લજપરણહ્લગ્લગ્લ જહ્લમહ્લ્લુલ્લિક્લવેલ્લગ-કહ્લગપ્લગ-લામ્લગ-ંઢ્લગ્લગ્લ-લલ્લમલ્લ-ત્તૂળહ્લ્લ

અને એવા ભોગોની તગ્લ લક્ષ્ય પણ ગળ્લુ ભેધ્લે નહીં કામ લાવથી મૂળ પર જે એક પ્રકારની વિૃતિ આવી જાય છે તેને 'હાવ' કહે છે કામાતુર ચિત્તમા જે એક પ્રકારની ઉન્નતિ આવી જાય છે તેને 'લાવ' કહે છે એક વિશેષ પ્રકારની ચેષ્ટાનુ નામ લલિત છે તે ચેષ્ટા સ્ત્રિઓના હાથ, પગ, શરીર શ્રુ, નેત્ર અને ંષ્ટ આદિમા થાય છે ચિત્તની અસાવધાનીને વિલ્લેષ કહે છે જ્યારે સ્ત્રિઓનુ ચિત્ત આ વિલ્લેષ નામની વિગિષ્ટ ચેષ્ટાથી યુક્ત થઈ જાય છે ત્યારે તેમનામા વિશેષ પ્રકારની ચેષ્ટાઓ જાગ્રત થવા માટે જે મેં કે તેઓ પોતાના ચોટલાને ઢીલી બાધી લે છે તેની નાડીનુ બધન શિથિલ થઈ જાય છે મસ્તક પર સિન્દુરના બિન્દુની જગ્યાએ કાજળની રેખા અને આખોમા કાજળને બદલે સિન્દુરની રેખા લાગી જાય છે અથવા આખોમા જે આજળુ આજવામા આવે તે પણ અસ્તવ્યસ્ત રીતે અજાઈ જાય છે ંત્યાદિ બધા પ્રકારની તેમની મળ્લનવિધિ અવગળ્લવાને પાત્ર છે છતાં પણ એવી પરિસ્થિતિમા પણ તેમના રૂપમા ન્યૂનતા આવતી નથી સ્થાન, આસન, ગમન આિમા જે એક પ્રકારની વિશિષ્ટતા આવી જાય છે તેનુ નામ વિલાસ છે એ જ રીતે “ રમણિજ્ઞા — વલ્લજગેલ્લ — પરણહ્લગ્લગ્લજન્મલ્લ — મુલ્લિક્લવેલ્લગ — કહ્લગપ્લગ લામ્લગ આહ્લમ્લગ લલ્લમલ્લ — ત્તૂળહ્લ્લ — ત્તુવ વીણિય તાલાયર — પકરણાણિય ” સુદર વાધ અને

અભિઃ જાલન્તે શોભન્તે યાસ્તામિ', તથા- 'અણુકૂલપેમિયાદિ' અણુકૂલ
પ્રેમિકામિઃ=અણુકૂલ=મનોહરચિત્ર પ્રેમ=પ્રીતિર્યામા તામિઃ, ણનાદ્દશીમિઃ
'સદ્ધિ' સાર્ધમ્, 'અણુભૂયા' અણુભૂયાઃ=અણુભૂયણીયુક્તા 'સચ્ચાનુભવજોગા'
શયનસપ્રયોગા=શયનાનિ ચ મપ્રયોગા=સમ્પર્કશ્રેતિ દ્વિતરેતરયોગદ્વન્દ્વઃ, શયન
સપ્રયોગા ? ક્વપાદ- 'ઉ ઉ મુહારકુસુમસુરભિચ્છન્નસુગધ-વરસાધૂનસુહ
કરિસવથ-ભૂસણ-ગુણોવવેયા' કત્તુમુસવરકુસુમસુરભિચ્છન્નસુગન્ધ-વરસાધૂનસુહ
પણગુણોવવેતા', તત્ર-નુતુમુલાનિ=કાલોચિતાનિ યાનિ વરકુસુમાનિ, તથા-સુગધિ
ચન્દનસ્ય સુગન્ધો શોભનામોદયુક્તો વરઃ=શ્રેષ્ઠો યો વાસ=ગન્ધઃ સઃ, તથા-ધૂપ',
તથા-સુલક્ષણાનિ યાનિ વસ્ત્રાણિ, તથા-ભૂષણાનિ ચ, તેષાં ચે ગુણાસ્તૈરુપવેતા
સ્તે શ્રમણેન દ્રવ્યં રૂપયિતુ સ્મર્તુ વા ન યોગ્યા । તથા- 'રમણિજ્ઞા ઉજ્જ-ગેજવ

ચિત્તચેત્તિલાસસાલિનીર્હિ) દાવ, ભાવ, લલિત, વિશેષ ઓર વિલાસ
સે સુહાવના સ્ત્રિયોં કે સાચ ત્રા (અણુકૂલપેમિયાદિ) જિનકી પ્રીતિ
મન કો સુદિત કરને વાલી હોતી હૈ એસી (ક્રીડીર્હિસદ્ધિ) સ્ત્રીયોં કેસા ધ
ભોગે ગયે શયન સવધી ઓર સપર્ક સંયધો પૂર્વકાલિક ભોગોં કા કિ
જો (ઉ ઉમુહારકુસુમસુરભિચ્છન્નસુગધ-વર-વાસધૂન-સુહકરિસ-
વથ-ભૂસણ-ગુણોવવેયા) કાલોચિત કુસુમોં કી સુગધિ આદિ રૂપ ગુણોં
સે વિશેષ રૂપ મેં આકર્ષક હોતે થે, સુરભિચ્છન્ન કી શ્રેષ્ઠ ગધ સે જો
મનોમોહક મને રહતે થે, કૃષ્ણાગુર આદિ સુગધિત દ્રવ્યોં કી ધૂપ કે
સસર્ગ સે જિનમે સે મહક ઉડા કરતી થી તથા વસ્ત્ર ઓર આભૂષણોં
કે આહમ્બર કી છટા સે જિન્હે ભોગને લિપ્ત પરિવસ લાલાયિત
બન જાયા કરતા થા, ઉન સમ સાધુ કો કમી મી સ્મરણ નહી કરના
ચાહિયે, કિસી સે એસે ભોગોં કી વાતે નહી કરના ચાહિયે ઓર ન એસે

લિનીર્હિ " હાવ, ભાવ, વિશેષ અને વિલાસથી શોભતી સ્ત્રીઓની સાથે તથા
"અણુકૂલપેમિયાદિ" જેની પ્રીતિ મનને આનંદિત કરનારી હોય છે એવી
"ક્રીડીર્હિસદ્ધિ" સ્ત્રીઓની સાથે ભોગવેલ શયન સવધી કે સસર્ગ સવધી
પૂર્વ કાલિક ભોગોતુ કે જે 'ઉ ઉમુહારકુસુમસુરભિચ્છન્નસુગધ-વરસાધૂનસુહ
કરિસવથ-ભૂસણ-ગુણોવવેયા" કાલોચિત પુષ્પોના સુગધી આદિરૂપ સુભોધી
વિશેષ આકર્ષક થતુ હતુ, સુરભિચ્છન્નની શ્રેષ્ઠ ગધથી જે મનોહર બનતુ
હતુ, કૃષ્ણાગુર આદિ સુગધિત દ્રવ્યોના ધૂપના સસર્ગથી જેનામા મહક ઉડ્યા
કરતી હતી તથા વસ્ત્ર અને આભૂષણોના આહમ્બરની છટાથી જેને ભોગવવાને
માટે મન લલચાઈ ગયા કરતુ હતુ, એ બધી વાતતુ સાધુએ વ્રતીપણુ સ્મરણ
કરતુ ભોધએ નહી, કોઈની સાથે એવા ભોગોની વાત કરવી ભોધએ નહી,

भवइ अंतरप्पा आरयमणा विरयगामवम्मे जिइदिण
वंभचेरगुत्ते ॥ सू० १० ॥

टीका—‘ पचम ’ पञ्चमीं प्रणीतभोजनवर्जनरूपा भावनामाह—‘ आहारप-
णीयनिद्धभोयणविज्जए ’ आहारप्रणीतस्निग्धभोजनविवर्जनः—आहारः = अन्न-
नादिः, स च प्रणीतः=प्रगल्भस्नेहमिन्द्रिय, तथा—स्निग्ध=चिक्कण च तद् भोजन
च=स्निग्धभोजनम्, अनयो द्वन्द्वः, तस्य विवर्जनः=परित्यक्ता, तथा ‘ सजए ’
सयतः=सयमवान् ‘ सुसाहू ’ सुसाधु =निर्वाणसाधक योगसाधनतत्परः, तथा—
‘ ववगयखीरदहिसप्पिनवणीयतेलगुडखडमच्छडियखज्जगविगइपरिचत्तकयाहारो ’
व्यपगतक्षीरदधिसर्पिनवनीततैलगुडखण्डमत्स्यण्डिरुमधुखाद्यरुविकृतिपरित्यक्तकृता
हारः—तत्र—व्यपगताः=परिहृताः क्षीर=दुग्ध, दधि=प्रसिद्धम्, सर्पिः=घृतम्,
नवनीत=‘मक्खन’ इति भाषाप्रसिद्धम्, तैल प्रसिद्धम्, गुडः=प्रसिद्धं खण्ड =शर्करा,

अथ सूत्रकार इस व्रत की पाचवी भावना को कहते हैं—‘ पचम-
आहारपणीय ’ इत्यादि०।

टीकार्थ—(पचम) पाचवी भावना इस व्रत की प्रणीत भोजन
वर्जन रूप है, वह इस प्रकार से है—(आहारपणीयनिद्धभोयणविवज्जए)
जो आहार प्रणीत—जिसमें से घृत की मिन्दुएँ नीचे टपक रही हो ऐसे
कामोद्दीपक तथा स्निग्ध—रसयुक्त हो साधु को वह नहीं खाना चाहिये।
क्यों कि वह (सजए) वह सयमवाला होता है और (सुसाहू) निर्वाण
साधक मनोवाक्योप योग के साधन करने में तत्पर रहता है,
इसलिये उसको (ववगयखीरदहिसप्पिनवणीयतेलगुडखडमच्छडिय
महुखज्जगविगइपरिचत्तकयाहारो) दूध, दही, घृत, मक्खन, तैल, गुड,

હવે સુત્રકાર આ ત્રતની પાચમી ભાવના બતાવે છે—“પચમ આહારપણીય”ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ પચમ ” આ ત્રતની પાચમી ભાવના “ પ્રણીતભોજન ” ત્યાગ
નામની છે તે આ પ્રમાણે છે—“આહારપણીયનિદ્ધભોયણવિવજ્જણ” જે પ્રણીત, એટલે
કે જેમાથી ધીના ટીપા નીચે ટપકતા હોય એવો કમોદીપક તથા સ્નિગ્ધઅ
યુક્ત આહાર સાધુએ ખાવો જોઈ એ નહીં કારણ કે તે ‘ સજણ ’ સયમી હોય
છે અને “સુસાહુ” નિવાણુનામાધક મનો વાક્યય યોગ સાધવાને તત્પર હોય છે
તેથી તેમણે “ વવગય લીરદહિસપ્પિ—નગ્ગણીયતેલગુડસડમચ્છડિયમહુલજ્જગવિગઈ
પરિચત્તકયાહારો ” દૂધ, દહીં, ધી, માખણ, તેલ, ગોળ, સાકર, ખાડ વગેરેથી

અથ પચ્ચમી ભાવનામાહ—‘ પચમ ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—પચમ આહારપણીયણિહ્મયણવિવજ્ઞાણ સંજ્ઞાણ
સુસાહુ વવગયલ્લીરદહિસપ્પિનવણીયતેલગુહલ્લહમચ્છંડિય-
મહુલ્લજ્ઞગવિગહ્પરિચત્તકયાહારો ન દપ્પણં નવહુસો
ન નિહ્ગં ન સાયસૂવાધિયં ન લ્લહ તહા ભોત્તલ્લ
જહા સે જાયામાયાણ ભવહ્, ન ય ભવહ્ વિલ્લભમો ય મંસણા
ય ધમ્મસલ્લ, ંવ પણીયાહારવિરહ્સમિહ્જોગેણં ભાવિઓ

વિરયગામધમ્મે જિહ્દિય ધમ્મેરગુત્તે ભવહ્) હસ પ્રકાર સે પૂર્વરત, પૂર્વક્રીડીતોં મેં વિરતિરૂપ સમિતિ કે યોગ સે ભાવિત અતરાત્મા-જીવ-
બ્રહ્મચર્ય મેં સ્થિર મન લાલા બન જાતા હે ઓર ગ્રામધર્મ સે મૈથુન-
કૃત્ય સે-વિરક્ત હો જાતા હે । ંસા લ્લ મહાત્મા અપની હ્દિયોં કો
જીત કર નવવિધ બ્રહ્મચર્ય કી ગુપ્તિ સે અથવા દશવિધ બ્રહ્મચર્ય કે
સમાધિસ્થાન સે યુક્ત બન જાતા હે ।

ભાવાર્થ—હસ સૂત્રદ્વારા સૂત્રકાર ને બ્રહ્મચર્ય વ્રત કી ચોથી ભાવના
પ્રકટ કી હે । હસ મે યહ કહા ગયા હે કિ બ્રહ્મચર્ય વ્રત કા પાલન
કરને લાલે સાધુ કો પ્રવ્રજ્યા લેને કે પહિલે ગૃહસ્થાશ્રમ મેં ભોગે ગયે
વિવિધ પ્રકાર કે ભોગોં કી યાદ નહીં કરની લાલિયે । હમ ભાવના કા
નામ પૂર્વરત પૂર્વક્રીડીત સ્મરણવિરતિ હે । હસી વિષય કા વિદોષ વર્ણન
હસ સૂત્ર મેં કિયા ગયા હે ॥ સૂ. ૧ ॥

યમણા વિરયગામધમ્મે જિહ્દિય ધમ્મેરગુત્તે ભવહ્ ” આ પ્રકારે પૂર્વરત, પૂર્વ-
ક્રીડીતોમા વિરતિરૂપ સમિતિના યોગથી લાવિત થયેલ અતરાત્મા-જીવ બ્રહ્મ
ચર્યમા આસક્ત મનવાળો બની જાય છે અને ગ્રામધર્મથી-મૈથુન ક્રિયાથી
વિરક્ત થઈ જાય છે ઓર તે મહાત્મા પોતાની હ્દિયોને જીતીને બ્રહ્મચર્યની
ગુપ્તિથી અથવા દશવિધ બ્રહ્મચર્યના સમાધિસ્થાનથી યુક્ત થઈ જાય છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે બ્રહ્મચર્ય મૂતની ચોથી લાવના પ્રગટ
કરી છે તેમા જો બતાવવામા આવ્યું છે કે બ્રહ્મચર્ય વ્રતનું પાલન કરનાર
સાધુએ દીક્ષા લીધા પછી પહેલા ગૃહસ્થાશ્રમમા લોગવેલ વિવિધ પ્રકારના
લોગોને યાદ કરવા બોધ્યો નહીં આ લાવનાનું નામ “ પૂર્વરત પૂર્વક્રીડીત
સ્મરણ વિરતિ ” છે આ જ વિષયનું વધુ વર્ણન આ અત્રમા કર્યું છે ॥ સૂ. ૬ ॥

भवइ अतरप्पा आरयमणा विरयगामधम्मे जिइंदिए
वभचेरगुत्ते ॥ सू० १० ॥

टीका—‘पचम’ पञ्चमी प्रणीतभोजनवर्जनरूपा भावनामाह—‘आहारप-
णीयनिद्धभोयणविज्जए’ आहारप्रणीतस्निग्धभोजनविज्जनः—आहार = अश-
नादिः, स च प्रणीतः=प्रगलत्स्नेहत्रिन्दुश्च, तथा—स्निग्ध=चिम्ण च तद् भोजन
च=स्निग्धभोजनम्, अनयो द्वन्द्वः, तस्य विज्जरुः=परित्यक्ता, तथा ‘सजए’
सयतः=सयमवान् ‘सुसाहू’ सुसाधु=निर्वाणमावक योगसाधनतत्परः, तथा—
‘ववगयखीरदहिसप्पिनवणीयतेलगुडखडमच्छडियखज्जगविगइपरचित्तकयाहारो’
व्यपगतक्षीरदधिसर्पिनवनीततैलगुडखण्डमत्स्यण्डिकमधुखाद्यरुचिकृतिपरित्यक्तकृता
हारः—तत्र—व्यपगताः=परिहृताः क्षीर=दुग्ध, दधि=प्रसिद्धम्, सर्पिः=घृतम्,
नवनीत=‘मन्खन’ इति भाषाप्रसिद्धम्, तैल प्रसिद्धम्, गुडः=पसिद्धः खण्ड =शर्करा,

अय सूत्रकार इस व्रत की पाचवी भावना को कहते हैं—‘पचम-
आहारपणीय’ इत्यादि०।

टीकार्थ—(पचम) पाचवी भावना इस व्रत की प्रणीत भोजन
वर्जन रूप है, वह इस प्रकार से है—(आहारपणीयनिद्धभोयणविज्जए)
जो आहार प्रणीत—जिसमें से घृत की त्रिन्दुएँ नीचे टपक रही हो ऐसे
कामोद्दीपक तथा स्निग्ध-रसयुक्त हो साधु को वह नहीं खाना चाहिये।
क्यों कि वह (सजए) वह सयमवाला होता है और (सुसाहू) निर्वाण
साधक मनोवाक्य योग के साधन करने में तत्पर रहता है,
इसलिये उसको (ववगयखीरदहिसप्पिनवणीयतेलगुडखडमच्छडिय
मदुखज्जगविगइपरचित्तकयाहारो) दूध, दही, घृत, मन्खन, तैल, गुड,

હવે સુત્રકાર આ વ્રતની પાચમી ભાવના બતાવે છે—“પચમ આહારપણીય”ઈત્યાદિ

ટીકાર્થ—“પચમ” આ વ્રતની પાચમી ભાવના “પ્રણીતભોજન” ત્યાગ
નામની છે તે આ પ્રમાણે છે—“આહારપણીયનિદ્ધભોયણવિવજ્જણ” જે પ્રણીત, એટલે
કે જેમાંથી ધીના ટીપા નીચે ટપકતા હોય એવો કામોદીપક તથા સ્નિગ્ધગમ્ય
યુક્ત આહાર સાધુએ ખાવો જોઈ એ નહીં કાગ્ણુ કે તે ‘સજણ’ સયમી હોય
છે અને “સુસાહુ” નિવાર્ણના સાધક મનો વાક્ય યોગ સાધવાને તત્પર હોય છે
તેથી તેમણે “વવગય લીરદહિસપ્પિ-નવણીયતેલગુડખડમચ્છડિયમદુલ્લજ્જગવિગઈ
પરચિત્તકયાહારો” દૂધ, દહી, ધી, માખણ, તેલ, ગોળ, સાકર, ખાડ વગેરેથી

મત્સ્યપિંડકા=‘મિશ્રી’તિ પ્રસિદ્ધા ચ યસ્માત્સઃ, તથા-મધુપમિદ્ધમ્, તાપ્તક=‘સાજા’
 इति प्रसिद्धम्, इत्यादि लक्षणाभि विवृतिभिः परित्यक्तो यः सः, अनयोः
 कर्मधारयः, एतदूषो यः आहारः स ऋतो येन स तथोक्तः, अन्त=प्रान्तभोजीत्यर्थः
 निष्ठान्तस्य पूर्वनिघातः, एतादृशः साधु ‘न’ नैव ‘दप्पण’ दर्पण=दर्पकारक
 भोजन भुञ्जीत । तथा-न ‘बहुसो’ बहुशः=दिनमध्येऽनेकरात्र भोजन कुर्वीत ।
 तथा-‘न निडग’ नैत्यिक-नित्यपिण्ड भुञ्जीत, तथा-न ‘सायसूपाहिय’
 शाकसूपाधिकभोजन भुञ्जीत । तथा-‘खद’ प्रचुर भुञ्जीत । कथं तर्हि भो-
 क्तव्यम्? इत्याह-‘तद्वा’ तथा भोक्तव्य’ भोक्तव्यम्, ‘जहा’ यथा—तद्
 भोजन ‘से’ तस्य ब्रह्मचारिणः, ‘जायमायाए’ यात्रोमात्राय, यात्रायै=मय-
 मयात्रानिर्वाहार्थं या मात्रा=आहारपरिमाणरूपा भगवन्निर्दिष्टा ना यात्रामात्रा तस्यै,

શર્કરા, મિશ્રી, इनसे रहित तथा मधु साजा, इत्यादिरूप विवृतियोंसे
 रहित आहार करना चाहिये । अर्थात् साधुको अन्त प्रान्तभोजी होना
 चाहिये । जो साधु इस प्रकार का आहार लेता है वह युक्त नहीं हैं—उसे
 (न दप्पण) दर्पकारक भोजन नहीं करना चाहिये (न बहुसो) न दिन
 में अनेक बार भोजन करना चाहिये (न निडग) न उसे नित्य पिंड
 भोजी ही होना चाहिये और (न सायसूपाहिय) न उसे शाक और
 दाल की अधिकातावाला भोजन ही करना चाहिये (न खद) न उसको
 प्रचुरमात्रा में भोजन करना चाहिये । किन्तु इस प्रकार से भोजन
 करना चाहिये कि (जहा) जिससे वह भोजन (से) उस ब्रह्मचारी की
 (जायमायाए भवइ) यात्रा मात्रा के लिये हो अर्थात् सयम के निर्वाह
 के लिये हो । यात्रामात्रा को तात्पर्य है कि सयमनिर्वाह रूप यात्रा के
 लिये आहार का परिमाण जितना प्रभु ने निर्दिष्ट किया है वह आहार

રહિત તથા મધ, ખાલ ઇત્યાદિ વિવૃતિઓથી રહિત આહાર કરવો જોઈ એ
 એટલે કે સાધુએ અન્ત પ્રાન્તભોજી થવું જોઈ એ જે માધુ આ પ્રકારનો આહાર
 લે છે તેણે “ન દપ્પણ” દર્પકારક ભોજન લેવું જોઈ એ નહીં “ન બહુસો”
 દિવસમાં અનેક વાર ભોજન લેવું જોઈ એ નહીં “ન નિડગ” તેણે નિત્યપિંડ
 ભોજી થવું જોઈ એ નહીં, અને “ન સાયસૂવાહિય” તેણે વધારે દાળશાક
 યુક્ત ભોજન લેવું નહીં “ન खद” તેણે વધારે પ્રમાણમાં ભોજન કરવું
 જોઈ એ નહીં પણ એવી રીતે ભોજન કરવું જોઈ એ કે “जहा” જેથી તે
 ભોજન “से” તે બ્રહ્મચારીની “जायमायाए भवइ” यात्रામાત્રાને માટે જ
 હોય, એટલે કે સયમના નિર્વાહને માટે જ હોય यात्रामात्रાનું तात्पर्य એવું
 છે કે સયમ નિર્વાહરૂપ यात्रાને માટે ભગવાને આહારનું જેટલું પ્રમાણ દર્શાવ્યું

સયમયાત્રાર્થમિત્યર્થઃ, 'ભગ્ન' ભવતિ । એવં સર્તિ ' ઝમ્મસ્સ ' ઝર્મસ્ય વિષયે,
' વિઘ્નમો વા ' વિઘ્નમો=ધાતુપચયેન મનસોઽસ્થિરત્વાદ્ અતન્તિશ્ચ ન ભવતિ,
તથા—ધર્મસ્ય ' ભગ્ના ' ધ્વજાના નાશશ્ચ ન ભવતિ । એવમ્=અનેન પ્રકારેણ 'પ-
ણીયાહારવિરહસમિદ્ધજોગેણ ' પ્રણીતાહારવિરતિસમિતિયોગેન=પ્રણીતો ય આહાર-
સ્તસ્માદ્ યા વિરતિસ્તદ્ભૂપો યઃ સમિતિયોગસ્તેન ભાવિતોઽન્તરાત્મા આરતમના
વિસ્તગ્રામધર્મો જિતેન્દ્રિયો વ્રત્તચર્યગુપ્તશ્ચ ભવતિ ॥ સૂ.૧૦ ॥

ઉત્તના હી હોના ચાહિયે । જેસા હોને પર (ધમ્મસ્સ વિઘ્નમો વા મસણા
ય ન ય ભવહ) ધર્મ કે વિષય મે, ધાતુ કે ઉપચય સે માનસિક અસ્થિ
રતા હોને કે કારણ જો આન્તિ હોતી હૈં વહ નહીં હો સકતી હૈં, ઔર
ન ઉસકે ઝર્મ કા ઘરસ (નાશ) હી હો સકતા હૈં । (એવ પળીયાહાર-
વિરહસમિદ્ધજોગેણ ભાવિથો અતરપ્પા આરયમણા વિરયગામધમ્મે
જિહ્વિદિદિ વમચેરગુત્તે ભવહ) હસ પ્રકાર પ્રણીતાહારવિરતિરૂપ સમિતિ
કે યોગ સે ભાવિત બના હુઆ મુનિ અપને દ્વારા ગ્રહીત વ્રહ્મચર્ય મે
સલગ્ન મનવાલા બન જાતા હૈં ઔર ગ્રામધર્મ-મૈથુન સે-વિરત હો જાતા
હૈં । હસ પ્રકાર અપની હન્દિયોંકો જીત કર વહ મહાત્મા નવવિધ વ્રહ્મચર્ય
કી ગુસિસે અથવા દશવિધ વ્રહ્મચર્યકે સમાવિસ્થાનસે યુક્ત બન જાતા હૈં ।

ભાવાર્થ—હસ સૂત્રદ્વારા સૂત્રકાર ને વ્રહ્મચર્ય વ્રત કી પાંચવી ભાવના
પ્રકટ કી હૈં । હસ ભાવના કા નામ પ્રણીતાહાર વર્જન હૈં । વ્રહ્મચર્ય
વ્રત ધારણ કરને વાલે સાધુ કો જેસા ભોજન નહીં કરના ચાહિયે જો

છે તેટલા પ્રમાણુમા જ તે આહાર હોને બેઈએ એવુ થતા “ ઝમ્મસ્સ વિઘ્ન
મો વા મસણા ય ન ય ભવહ ” ધર્મના વિષયમા, ધાતુને સંગ્રહ થવાને
કારણે માનસિક અસ્થિરતા થવાથી જે આન્તિ થાય છે, તે થઈ શકતી નથી,
“ એવં પળીયાહારવિરહસમિદ્ધજોગેણ ભાવિથો અતરપ્પા આરયમણા વિરયગામધમ્મે જિહ્
વિદિ વમચેરગુત્તે ભવહ ” આ પ્રકારે પ્રણીતાહાર વિરતિરૂપ સમિતિના યોગથી
ભાવિત વચેલ મુનિ પોતે ગ્રહણ કરેલ બ્રહ્મચર્ય વ્રતમા આસક્ત મનવાળો થઈ
બીય છે અને ગ્રામધર્મ-મૈથુનથી વિરક્ત થઈ બીય છે આ ગીતે પોતાની
ઈન્દ્રિયોને છતાંને તે મહાત્મા નવવિધ બ્રહ્મચર્યની ગુપ્તિથી અથવા દશવિધ
બ્રહ્મચર્યના સમાવિસ્થાનથી યુક્ત બની બીય છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્રદ્વારા નૂતનકારે બ્રહ્મચર્યવ્રતથી પાંચમી ભાવનાનુ સ્પષ્ટીકરણ
કર્યું છે આ ભાવનાનુ નામ પ્રણીતાહાર વર્જન ” છે બ્રહ્મચર્યવ્રત ધારણ
કરનાર સાધુએ એવુ ભોજન લેવુ ન બેઈએ કે જે કામોદીપક રસ યુક્ત

અવોપમદરજ્ઞાહ—‘ એવમિણ ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્—એવમિણ સવરસ્સ દાર સમ્મં સચરિય હોઈ સુપ્પ-
ણિહિય ડમેહિ પંચહિં વિ કારણેહિં મળવચ્છણકાયપરિરમ્મિ-
ણ્ણિયં આસરણંતં એસો જોગો ણેયવ્વો પિદ્ધમયા
મદ્ધમયા અણાસવો અઠ્ઠસો અચ્છિદ્ધો અપરિસ્સાઈ અસકિ-
લિદ્ધો સુદ્ધો સવ્વજિણમણુણ્ણાઓ । એવ ચઉત્થ સવરદાર
ફાસિય પાલિયં સોહિય તીરિય કિટ્ઠિય સમ્મ આરાહિય
આણાણ અણુપાલિયં ભવઈ । એવ નાયમુણિણા ભગવયા
પણ્ણવિયં પરુવિય પસિદ્ધં સિદ્ધવરસાસણમિણ આઘવિય
સુદેસિયં પસત્થ ચઉત્થં સંવરદાર સમત્ત ત્તિવેમિ ॥સૂ.૦૧૧॥

॥ ઇય પળ્હાવાગરણાણં ચઉત્થ સવરદાર સમત્ત ॥

ટીકા—‘ એવ ’ એવમ્=પૂર્વોક્તપ્રકારેણ ‘ ણ ’ ઇદમ્ ‘ સવરસ્સ ’ સવર-
સ્ય=ચતુર્થસ્ય વ્રહ્મચર્યનામરૂપ્ય સવરસ્ય ‘ દાર ’ દ્વાર ‘ સમ્મ ’ સમ્મઋ ‘ સચરિય ’

કામોદીપક રસયુક્ત હો । સાધુ તો અન્ત પ્રાન્ત ભોજી હોતા હૈ અતઃ
ઉસકો દર્પકારક ભોજન કા પરિત્યાગ કરતે હુએ દિન મેં અનેક વાર
ભી ભોજન નહી કરના ચાહિયે ઔર ન ઉસે નિત્યપિંડ ભોજી હી હોના
ચાહિયે । અધિક ભોજન સયમાચાર મેં પ્રમાદ ઔર પ્રણીત રસવાલા
ભોજન માનસિક અસ્થિરતાકા કારણ બનતા હૈ ઇસલિયે ઉસે નિત્ય ઇસ
પ્રણીતાદાર ચિરતિરૂપ સમિતિકે યોગસે અવશ્ય ભાવિત રહનાચાહિયે ॥૧૦॥

અથ સૂત્રકાર ઇસ વિષય કા ઉપસહાર કરતે હુએ કહતે હૈ—‘ એવ

હોય માધુ તો અન્તપ્રાન્ત ભોજી હોય છે તેથી તેણે દર્પકારક ભોજનનો
પરિત્યાગ કરવો જોઈએ દિવસમા અનેક વાર ભોજન લેવું જોઈએ નહી અને
તેણે નિત્ય પિંડ ભોજી પણ થવું જોઈએ નહી અધિક ભોજન સયમાચારમા
પ્રમાદ અને પ્રણીત રસવાળું ભોજન માનસિક અસ્થિરતાનું કારણ બને છે
તેથી તેણે હ મેશા આ પ્રણીતાદાર ચિરતિરૂપ સમિતિના યોગથી અવશ્ય
ભાવિત રહેવું જોઈએ ॥ સૂ. ૧૦ ॥

સંચરિત=સમ્યગાચરિત, ' સુપ્પણિહિય ' સુપ્પણિહિતમ્— એકાગ્રતયા સમારણિત
' હોઈ ' ભવતિ । ' ઇમેહિં પચહિં વિ ' ણમિઃ=અનુપદ પ્રોક્તૈર્પદ્ધભિરપિ 'કારણેહિં'
કારણૈઃ=ભાવનારૂપે, કીદૃશ કારણૈરિત્યાહ— ' મળવયણકાયપરિરક્ખિવણ્હિં '
મનોવચનકાયપરિરક્ષિતૈ. મનોવાક્યૈ. સમ્યક્ સમારણિતૈઃ । ક્રિયત્કાલમ્ ?
ઇત્યાહ— ' નિચ્ચ ' નિત્ય=સર્વદા ' આમરણત્ ' આમરણાન્ત=મરણપર્યન્તમ્ ' એસો '
એપ =પૂર્વોક્તો ' જોગો ' યોગ =બ્રહ્મચર્યરૂપો ' ણેયવ્વો ' નેતવ્વ =પાલનીય,
કેન ? ઇત્યાહ— ' યિમયા મમ્મયા ' હૃતિમતા મતિમતા, કીદ્વજોડય યોગઃ ?
ઇત્યાહ— ' અણાસવો ' અનાશ્રયઃ ' અકલુસો ' અકલુપઃ ' અચ્છિદ્ધો ' અચ્છિદ્ધઃ
' અપરિસ્સાઈ ' અપરિસ્તારી ' અસક્કિલ્લિદ્ધો ' અમક્કિલ્લ. ' સુદ્ધો ' શુદ્ધઃ ' સવ્વ—

મિણ ' ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(એવમિણ) ઇસ પ્રકાર સે યહ (સવરસ્સ દાર) ચૌથા
બ્રહ્મચર્ય નામકા સવરદ્વાર (સમ્મ સચરિય) અચ્છી તરહ સે પાણે જાને
પર (સુપ્પણિહિય ભવઙ) સ્થિર હો જાતા હૈ । ઇસલિયે (ઇમેહિં
પચહિં વિ કારણેહિં મળવયણકાયપરિરક્ખિવણ્હિં) મન, વચન ઓર
કાય, ઇન ત્રીનો યોગો સે અચ્છી તરહ સુરક્ષિત કિયે ગયે ઇન પાંચ—
ભાવનારૂપ કારણો સે (નિચ્ચ) સદા (આમરણત) જીવનભરતક
(એસોજોગો) ચહ બ્રહ્મચર્યરૂપ યોગ (ણેયવ્વો) ચિત્ત કી સ્વસ્થતા એવ
હેયોપાદેય ત્રી વિવેકતા સે યુક્ત હુણ સુનિજન નો પાલન કરના ચાહિયે ।
કયોં કિ ચહ બ્રહ્મચર્યરૂપ યોગ (અણાસવો) નૂતનકર્મો કે આગમન
સે રહિત હોને કે કારણ અનાશ્રવરૂપ હૈ, (અકલુસો) અશુભ અધ્યવ-
સાય સે વર્જિત હોનેકે કારણ અકલુપ હૈ, (અચ્છિદ્ધો) પાપ કા સ્રોત

હવે સૂત્રદાર આ વિષયનો ઉપસહાર કરતા કહે છે—“ એવમિણ ” ઇત્યાદિ
ટીકાર્થ—“ એવમિણ ” આ પ્રકારે આ “ સવરસ્સ દાર ” ચોથુ પ્રહ્લથર્થ નામનુ
સવરદ્વાર “ સમ્મ સચરિય ” સાગી રીતે પાળવામા આવે તો “ સુપ્પણિહિય
ભવઙ ” સ્થિર થઈ જાય છે “ ઇમેહિં પચહિં વિ કારણેહિં મળવયણકાય પ
રિરક્ખિવણ્હિં ” મન, વચન અને કાય, એ ત્રણે યોગથી સારી રીતે સુરક્ષિત
કરાયેલ એ પાંચ ભાવના રૂપ કારણોથી “ નિચ્ચ ” મહા આમરણત ” જીવન
પર્યન્તના “ એસો જોગો ” આ પ્રહ્લથર્થ રૂપ યોગ “ ણેયવ્વો ” ચિત્તની સ્વસ્થતા અને
હેયોપાદેયની વિવેકતાપૂર્વક સુનિ બેનોએ પાળનો જોઈએ જગણ કે આ પ્રહ્લ-
થર્થ રૂપ યોગ “ અણાસવો ” નૂતન કર્મોના આગમન રહિત હોવાને કારણે
અનાશ્રવ છે “ અકલુસો ” અશુભ અધ્યવસાયથી રહિત હોવાથી અકલુપ છે,
“ અચ્છિદ્ધો ” પાપનો સ્રોત તેનાથી ઊભ થવાને કારણે અચ્છિદ્ધ છે “ અપરિસ્સાઈ ”

જિણમણુણાઓ ' સર્વજિનાનુગતઃ । એમ-એને પ્રકારે ' ચતુર્થ ' ચતુર્થ ' સ
 સરદાર ' સવરદાર ' સરદાર ' ફાસિય ' સ્પૃષ્ટ ' પાલિય ' પાલિત ' સોહિય'
 સોહિત ' તીરિય ' તીરિત ' ક્રિટિય ' કીર્તિતમ્, ' સમ્મ ' સમ્યક્ ' આરાહિય'
 આરાધિતમ્ આણા ' આજ્ઞા ' અનુપાલિય ' અનુપાલિત ' ભવઃ ' ભવતિ ।
 એમ-એને પ્રકારે ' નાયમુણિણા ' જ્ઞાતમુનિના=જ્ઞાતવશોદ્ધતેન મુનિના ' ભગ-
 વયા ' ભગવતા મહાવીરેણ ' પળગિય ' પ્રજ્ઞાપિત ' પરિણિય પ્રરૂપિત ' પસિદ્ધ'

હસસે ઊભા થી જાને કે કારણ અચ્છિદ્ર છે । (અપરિમ્માઈ) ચિન્દુરૂપ
 સે ખી કર્મરૂપ જલ હસમેં પ્રવેશ નહીં કર સક્તા છે હસલિયે યહ અપ
 રિત્તાવી છે (અસકિલિદ્ધો) અસમાધિમાય સે વર્જિન થોને સે યહ
 અસક્ષિપ્ત છે, (સુદ્ધો) કર્મમલ સે રહિત થોને કે કારણ શુદ્ધ છે, (સ-
 વ્વજિણમણુણાઓ) સમસ્ત પ્રાણિયો કા હસસે રિત થોને કે કારણ
 સમસ્ત અરહત ભગવનોં કા યહ માન્ય હુઆ છે, (એવ) હસ પ્રકાર સે
 જો હસ (ચતુર્થ સવરદાર) ચતુર્થ સર દ્વાર કો (ફાસિય) અપને
 શરીર સે સ્પૃષ્ટ કરતે હૈં, (પાલિય) નિરન્તર ઉપયોગપૂર્વક ડસ કા સેવન
 કરતે હૈં (સોહિય) અતિચારોં સે હસકો રહિત કરતે હૈં, (તીરિય)
 પૂર્ણરૂપ સે હસકા સેવન કરતે હૈં, (ક્રિટિય) દુમરોં કો ડસકે પાલન
 કરને કા ઉપદેશ દેતે હૈં (સમ્મ) ત્રીન કરણ ત્રીન યોગોં સે હસકી
 ખલીપ્રકાર સે (આરાહિય) અનુપાલના કરતે હૈં સો ડનકે દ્વારા યહ
 યોગ (આણા અનુપાલિય ભવઃ) તીર્થકર પ્રમુક્તિ આજ્ઞાનુસાર થી
 પાલિત હોતા છે । (એવ) હસ પ્રકાર સે (નાયમુણિણા ભગવયા મહા

કર્મરૂપ જાણુ ણિદુ પણુ તેમા પ્રવેશ કરી શકતુ નથી તેથા તે અપગ્મિઆવી છે
 “ અસકિલિદ્ધો ” અસમાધિ ભાવથી રહિત હોવાથી તે અસક્ષિપ્ત છે, “ સુદ્ધો ”
 કર્મભગથી રહિત હોવાને કારણે શુદ્ધ છે ‘ સવ્વજિણમણુણાઓ ’ સમસ્ત
 જીવોતુ તેનાથી હિત થવાને કારણે સમસ્ત અર્હત ભગવાનો દ્વારા તે માન્ય
 થયેલ છે, “ એવ ” આ પ્રકારે જે આ “ ચતુર્થ સવરદાર ” એથા સવરદારનો
 “ ફાસિય ” પોતાના ચારીગ્યા સ્પર્શ કરે છે, “ પાલિય ” નિરન્તર ઉપયોગ
 પૂર્વક તેનું સેવન કરે છે, “ સોહિય ” અતિચારથી તેનું રક્ષણ કરે છે, “ તીરિય ”
 પૂર્ણ રીતે તેનું સેવન કરે છે, “ ક્રિટિય ” બીજાને તેનું પાલન કરવાનો ઉપદેશ
 આપે છે, “ સમ્મ ” ત્રણ કરણ ત્રણ યોગથી તેનું સારી રીતે “ આરાહિય ”
 અનુપાલન કરે છે, તેમના દ્વારા આ યોગનું “ આણા અનુપાલિય ભવઃ ”
 તીર્થ કર ભગવાનની આજ્ઞાનુસાર પાલન થાય છે “ એવ ” આ પ્રકારે “ નાય
 મુણિણા ભગવયા મહાવીરેણ ” જ્ઞાત વચ્ચા ઉત્પન્ન થયેલ મુનિ ભગવાન મહા

પ્રસિદ્ધ ' ' સિદ્ધવરસામણમિગ ' સિદ્ધવરસામણમિદમ્, ' આઘરિય ' આઘર્યાત
' સુદેસિય ' સુદેગિત ' પસત્ય ' પ્રગસ્ત ' ચઝત્ય સરદાર ' ચતુર્થ સવરદાર
' સમત્ત ' સમાપ્તમ્ । ' ત્તિવેમિ ' ઇતિ વ્રવીમિ । અસ્વ સ્ત્રાસ્ય વ્યારયાઽ
પૂર્વવદ્ મો'યા ॥ સુ૦૧૧ ॥

॥ ઇતિ શ્રી ત્રિશ્વવિરચ્યાત-જગદ્ગુહ્ય - પ્રસિદ્ધવાચકપદ્મદશભાષાકલિ-
તલલિતકાપાલાપક-પ્રવિશુદ્ધગથપદ્યનેકગ્રન્થનિર્માપક- ગાદિમાનમર્દક-
શ્રીગાહ છત્રપતિકોલ્હાપુરરાજપ્રદત્ત ' જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય ' પદભૂષિત-
કોલ્હાપુરરાજગુરુ-ગાઝરજાવારિ જૈનાચાર્ય જૈનધર્મદિગ્ગામપૂજ્યશ્રી
ધાસીલાલત્રિવિરચિનાયા શ્રી પ્રશ્નવ્યાખ્યાનમુત્રસ્ય સુદર્શન્યા
રયાયા વ્યાખ્યાયા સરાત્માકે દ્વીતીયે-ભાગે વ્રહ્મચર્યનામક
ચતુર્થ સરદાર સમાપ્તમ્ ॥ ૪ ॥

વીરેણ) જ્ઞાતવશ મેં ઉત્પન્ન જુર મુનિ મગવાન્ મહાવીર ને (પણ્ણવિય)
હસ ચતુર્થ સવરદાર કો જિપ્યોં કેલિયે મામાન્યરૂપ સે સમજાયા હૈ ।
(પરુવિય) વા' મેં ભેદ-પ્રભેદ પૂર્વક હસકા કથન કિયા હૈ । (પસિદ્ધ)
હમીલિયે જિનવચન મેં યહ પ્રસિદ્ધ જુઆ હૈ । તથા (સિદ્ધવરસામણ-
મિગ) ભૂતકાલ મેં જિતને મો સિદ્ધ હો ચુકે હે, ઝનકા યહ પ્રધાન
આજ્ઞારૂપ શાસન હૈ । (આઘરિય) જેમા મગવાન્ મહાવીર પ્રમુને
હસકે વિષય મેં સર્વનાથ સે રહા હૈ ઓર (સુદેસિય) દર્બો મનુજોં
તથા અસુરોં સે યુક્ત પરિપદા મેં હસકા ઉપદેશ દિયા હૈ । (પસત્ય)
સમસ્ત પ્રાણિયોં કા હિતકારક હોને સે પ્રગસ્ત-મગલમય હૈ (ચઝત્ય
સરદાર સમત્ત) યહ ચતુર્થ સવરદાર સમાપ્ત જુઆ (ત્તિવેમિ) હે
જબૂ ! જૈસા મેંને મગવાન સે સુના હૈ વૈસા હી મેં કહતા જુ ।

વીરે " પણ્ણવિય " આ ચોથા દ્વારને શિષ્યોને માટે સામાન્ય રૂપે સમજાવ્યું
છે " પરુવિય " ત્યાર બાદ ભેદ પ્રભેદ પૂર્વક તેનું કથન કર્યું છે " પસિદ્ધ "
તે ઝરણે જિનવચનમા તે પ્રસિદ્ધ થયેલ છે તથા " સિદ્ધવરસામણમિગ "
ભૂતકાળમા જેટલા સિદ્ધ થઈ ગયા છે તેમનું આ મુખ્ય આજ્ઞા રૂપ શાસન
છે " આઘરિય " એવું ભગવાન મહાવીરે તેને વિષે મર્વે ભાવથી કહ્યું છે
અને " સુદેસિય " દેવો, માણસો તથા અસુરોથી યુક્ત પરિપદામા તેનો
ઉપદેશ આપ્યો છે " પસત્ય " સમસ્ત પ્રાણીઓને માટે હિતકારક હોવાથી પ્રગસ્ત
મગલમય છે " ચઝત્ય સવરદાર સમત્ત " આ ચોથું સવરદાર સમાપ્ત થયું " ત્તિવેમિ "
હે જબૂ ! જેવું ભગવાનને મુખે સાંભળ્યું હતું તેવું જ તેનું કથન કરૂં છું

ભાવાર્થ—હસ ચતુર્થ સવરદ્વાર કા ઉપસદ્ધાર કરતે હુળ સૂત્રકાર કહતે હે કિ જો મુનિજન હસ ચતુર્થ સવરદ્વાર કો મન વચન ઓર કાય, હન તીન યોગોં સે શુદ્ધિપૂર્વક પાચ ભાવનાઓં સહિત મરણપર્યંત પાલતે હે ઉનકે અશુભ અધ્યવસાય રુક જાતે હેં । નવીન કર્મોં કા થધ થદ હો જાતા હે । સચિત કર્મોં કી નિર્જરા હોને લગતી હે । પાપોં કા સ્રોત રુક જાતા હે । યહ અપરિસ્થાવી આદિ વિશેષણોં વાલા હે ત્રિકાલ-સમસ્ત અરહત ભગવતોં ને હસકા પાલન કિયા હે । ઉન્હોં કે કથનાનુ-સાર ભગવાન મહાવીર પ્રભુને ખી હસકા સ્વરૂપાદિ પ્રદર્શન પૂર્વકકથન કિયા હે । હસ પ્રકાર શ્રી સુધર્માસ્વામી ને અપને શિષ્ય અતિમ કેવલી શ્રી જબુ સ્વામી કો સમક્ષાયા હે ॥ સૂ. ૧૧ ॥

॥ ચતુર્થ સવરદ્વાર સમાપ્ત ॥ ૪ ॥

ભાવાર્થ—આ ચોથા સવરદ્વારનો ઉપસદ્ધાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે કે જે મુનિજન આ ચોથા સવરદ્વારનો મન, વચન અને કાય એ ત્રણે યોગોની શુદ્ધિ પૂર્વક પાચ ભાવનાઓ સહિત મરણ સુધી પાળે છે તેમના અશુભ અધ્યવસાય થધ થદ નાથ છે નવીન કર્મોના થધ પણ અટકી નાથ છે મચિત કર્મોની નિર્જરા થવા માટે છે, પાપોનો સ્રોત અટકી નાથ છે તે અપરિસ્થાવી આદિ વિશેષણો વાળું છે ત્રિકાળવર્તી મમસ્ત અર્હત ભગવાનોએ તેનું પાલન કરેલ છે તેમના ડથનાનુસાર ભગવાન મહાવીરે પણ તેના સ્વ-રૂપ આદિ દર્શાવીને તેનું કથન કર્યું છે આ પ્રમાણે શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ પોતાના શિષ્ય અતિમ કેવલી શ્રી જબુસ્વામીને સમજાવ્યું છે ॥ સૂ. ૧૧ ॥

॥ ચોથું સવરદ્વાર સમાપ્ત ॥ ૪ ॥

॥ अथ पञ्चमं संवरद्वार प्रारभ्यते ॥

व्याख्यात ब्रह्मचर्य नामक चतुर्थ संवरद्वारम्, तद्धि सर्वथा परिग्रहविरत
स्यैव समप्रतीति क्रमप्राप्त परिग्रहविरमणनामक पञ्चम संवरद्वारमभिधीयते ।
तस्येदमादिम सूत्रम्—‘ जवू ’ इत्यादि ।

मूलम्—जंवू । अपरिग्रहसबुडे य समणे आरभपरिग्रह-
हाओ विरए कोहमाणमायालोभा, एगे असजमे, दोचेव
रागदोसा, तिणिण य दंडा, गारवाय गुत्तीओ तिणिण,
तिणिण य विराहणाओ, चत्तारि कसाया, झाणसण्णा,
विगहा तथा य हुति चउरो, पच—किरियाओ, समिइ, इदिय,
महव्वयाइं य ५, छज्जीवनिकाय, छच्चलेसाओ, सत्तभया,
अट्टमया, नवचेव य वभचेरगुत्ती, दसप्पकारे य समणधम्ममे
एक्कारस उवासगाणं, वारस य भिक्खूणं पडिमा, तेरस
किरियाट्ठाणाइ, चउदस भूयगामा, पन्नरस परमाहम्मिया,
सोलस गाहा सोलस य, असजम १७, अवभ १८, णाय १९,
असमाहिट्ठाणा २०, सवला २१, य पेरीसहा २२ य, सूयगड-
ज्जयणा २३, देव २४, भावणा २५, उद्देस २६, गुण २७, कप्प २८,
पावसुय २९, मोहणिज्ज ३०, सिद्धाइगुणा ३१, य जोगसंगह
३२, सुरिणा ३३, तिच्चीसासायणा । आदि एक्काइय करेत्ता
एगुत्तरियाए बुद्धीए वड्ढिएसु तीसाओ जाव य भवेतिगाहिया ।
विरइपणिहिसु अविरईसु य अण्णेसु य एवमाइसु वहुसु ट्ठा-
णेसु जिणप्पसत्थेसु अवितहेसु सासयभावेसु अवट्ठिएसु सकं
कंख निराकरित्ता सदहइ सासणं भगवओ अणिआणे अगारवे

ભાવાર્થ—હસ ચતુર્થ સવરદ્વાર કા ઉપસદ્ધાર કરતે હુણ સૂત્રકાર કહતે હેં કિ જો મુનિજન હસ ચતુર્થ સવરદ્વાર કો મન વચન ઓર કાય, હન ત્રીન યોગોં સે શુદ્ધિપૂર્વક પાચ ભાવનાઓં સહિત મરણપર્યંત પાલતે હેં ઉનકે અશુભ અધ્યવસાય રુક જાતે હેં । નવીન કર્મોં કા બધ થદ હો જાતા હૈ । સચિત કર્મોં કી નિર્જરા રોને લગની હૈ । પાપોં કા સ્રોત રુક જાતા હૈ । યદ અપરિસ્ત્રાગી આદિ વિશેષણોં વાલા હૈ ત્રિકાલ સમસ્ત અરહત ભગવતોં ને હસકા પાલન કિયા હૈ । ઉન્હોં કે કથનાનુસાર ભગવાન મહાવીર પ્રભુને બી હસકા સ્વરૂપાદિ પ્રદર્શન પૂર્વક કથન કિયા હૈ । હસ પ્રકાર શ્રી સુધર્માસ્વામી ને અપને શિષ્ય અતિમ કેવલી શ્રી જયુ સ્વામી કો સમજાયા હૈ ॥ ૨૦૧૧ ॥

॥ ચતુર્થ સવરદ્વાર સમાપ્ત ॥ ૪ ॥

ભાવાર્થ—આ ચોથા સવરદ્વારનો ઉપસદ્ધાર કરતા સૂત્રકાર કહે છે કે જે મુનિજન આ ચોથા સવરદ્વારનો મન, વચન અને કાય એ ત્રણે યોગોની શુદ્ધિ પૂર્વક પાચ ભાવનાઓ સહિત મરણ મુખી પાળે છે તેમના અશુભ અધ્યવસાય બધ થઈ જાય છે નવીન કર્મોના બધ પણ અટકી જાય છે અચિત કર્મોની નિર્જરા થવા માટે છે, પાપોના સ્રોત અટકી જાય છે તે અપરિસ્ત્રાવી આદિ વિશેષણો વાળુ છે ત્રિગુણવર્તી મમસ્ત અર્હત ભગવાનોએ તેનું પાલન કરેલ છે તેમના કથનાનુસાર ભગવાન મહાવીરે પણ તેના સ્વરૂપ આદિ દર્શાવીને તેનું કથન કર્યું છે આ પ્રમાણે શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ ચોતાના શિષ્ય અતિમ કેવલી શ્રી જયુસ્વામીને સમજાવ્યું છે ॥ સૂ. ૧૧ ॥

॥ ચોથું સવરદ્વાર સમાપ્ત ॥ ૪ ॥

॥ अथ पञ्चमं संवरद्वारं प्रारभ्यते ॥

व्याख्यात ब्रह्मचर्य नामक चतुर्थ संवरद्वारम्, तद्धि सर्वथा परिग्रहविरत
स्यैव समवतीति क्रमप्राप्त परिग्रहविरमणनामक पञ्चम संवरद्वारमभिधीयते ।
तस्येदमादिमं सूत्रम्—‘ जवू ’ इत्यादि ।

मूलम्—जवू । अपरिग्रहसंबुद्धे य समणे आरभपरिग्रह-
हाओ विरए कोहमाणमायालोभा, एगे असजमे, दोचेव
रागदोसा, तिणिण य दडा, गारवाय गुत्तीओ तिणिण,
तिणिण य विराहणाओ, चत्तारि कसाया, ज्ञाणसण्णा,
विगहा तथा य हुंति चउरो, पंच—किरियाओ, समिइ, इदिय,
महव्वयाइ य ५, छज्जीवनिकाय, छच्चलेसाओ, सत्तभया,
अट्टमया, नवचेव य वभचेरगुत्ती, दसप्पकारे य समणधम्ममे
एक्कारस उवासगाणं, वारस य भिक्खूणं पडिमा, तेरस
किरियाट्ठाणाइ, चउदस भूयगामा, पन्नरस परमाहम्मिया,
सोलस गाहा सोलस य, असजम १७, अवभ १८, णाय १९,
असमाहिट्ठाणा २०, सबला २१, य पेरीसहा २२ य, सूयगड-
ज्जयणा २३, देव २४, भावणा २५, उद्वेस २६, गुण २७, कप्प २८,
पावसुय २९, मोहणिज्जं ३०, सिद्धाइगुणा ३१, य जोगसंगह
३२, सुरिणा ३३, तित्तीसासायणा । आदि एक्काइयं करेत्ता
एगुत्तरियाए बुद्धीए वड्ढिएसु तीसाओ जाव य भवेत्तिगाहिया ।
विरइपणिहिसु अविरईसु य अण्णेसु य एवसाइसु बहुसु ट्ठा-
णेषु जिणप्पसत्थेषु अवितहेसु सासयभावेसु अवाट्ठिएसु संकं
कंख निराकरित्ता सदहइ सासणं भगवओ अणिआणे अगारवे

અલુછે અમૂઢે મળવયળકાયગુત્તે જો સો વીર-વરવયળ-વિરહ
 પવિત્થર વહુવિહપગારો સમત્તવિસુદ્ધવદ્ધમૂલો ધિદ્ધકદો વિળય
 વેદો નિગ્ગયતેલોક્ક વિઝલજસનિચિયપીળપીવર-સુજાય-
 યંધો પચમહવ્વયવિસાલસાલો ભાવળાતયંતજ્ઞાણસુભગ
 જોગનાળપહ્લવવરકુરધરો વહુગુણકુસુમસમિદ્ધો સીલસુગંધો
 અળળહયફલો પુળો ય મોઝ્ઝારવીયસારો મંદરગિરિસિહર-
 ચૂલિયા ઇવ ઇમસ્સ મોઝ્ઝવરનુત્તિમગ્ગસ્સ સિહરમૂઝો સવર-
 પાયવો ચરિમ સવરદાર ॥ ૧ ॥

ટીકા—‘જનૂ’ હે જન્મૂ ! ‘અપરિગ્ગહસવુઢે’ અપરિગ્ગહસવૃત્તઃ=પરિગ્રહઃ=
 ધર્મોપરુણાતિરિક્ત વસ્તુગ્રહણમ્, ધર્મોપરુણે મૂર્છાં ચ, તદ્વિન્નોઽપરિગ્રહાઃ,
 તન્ન-સવૃત્ત-સલગ્ગો યઃ સ ચકારાદ્ બ્રહ્મચર્યંદિ ગુણયુક્તથ યઃ સ, ‘સમણે’

પાચવા સવરદાર પ્રારભ

બ્રહ્મચર્ય નામ કા ચતુર્થ સવરદાર સમાપ્ત હો જુઝા । યહ બ્રહ્મચર્ય
 નામકા ચતુર્થ સવર ઉસી વ્પત્તિ કે હોના હૈ જો પરિગ્રહ સે સર્વથા
 વિરત હોતા હૈ । ઇસલિયે ક્રમ પ્રાપ્ત પરિગ્રહ વિરમણ નામ કા પાચવા
 સવર દાર કહા જાતા હૈ, ઉસકા યહ પ્રથમ સૂત્ર હૈ—‘જનૂ’ ઇત્યાદિ ।
 ધર્મોપકરણો સે અતિરિક્ત વસ્તુઓ કા ગ્રહણ કરના ઓર ધર્મોપકરણો
 મેં મૂર્છાભાવ કા રાખના ઇસકા નામ પરિગ્રહ હૈ । ઇસ પરિગ્રહ સે જો
 મિત્ત હૈ વહ અપરિગ્રહ હૈ । (જનૂ) હે જનૂ ! (અપરિગ્ગહસવુઢે ય
 સમણે) જો ઇસ અપરિગ્રહ મે સલગ્ગચિત્ત હોતા હૈ એવ બ્રહ્મચર્ય આદિ

પાચમા સવરદારનો પ્રારભ

બ્રહ્મચર્ય નામનુ ચોથુ સવરદાર સમાપ્ત થયુ તે બ્રહ્મચર્ય નામનો
 ચતુર્થ સવર એ જ વ્યક્તિને થાય છે જે પરિગ્રહથી સર્વથા વિરક્ત અને
 છે તે કારણે અનુક્રમે આવતા પરિગ્રહ વિરમણ નામના પાચમા સવરદારનું
 વર્ણન કરવામા આવે છે, તેનુ આ પહેલુ સૂત્ર છે—‘જનૂ’ ઇત્યાદિ—

ધર્મોપકરણો કરતા વધારે વસ્તુઓ ગ્રહણ કરવી અને ધર્મોપકરણોમા
 મૂર્છાભાવ રાખવો તેને પરિગ્રહ કહે છે આ પરિગ્રહથી જે ઉલટુ છે તે
 અપરિગ્રહ કહેવાય છે ‘જનૂ’ । ‘અપરિગ્ગહસવુઢેય સમણે’ જે આ અપરિ
 ગ્રહમા આસક્ત ચિત્તવાળા હોય છે અને બ્રહ્મચર્ય આદિ ગુણોથી યુક્ત હોય

શ્રમણો ભવતિ । એતદેવ વ્યર્થતે-‘આરમ્ભ પરિગ્રહાઓ’ આરમ્ભપરિગ્રહાત્-આરમ્ભઃ
=પૃથિવ્યાદ્યુપમર્દઃ, પરિગ્રહઃ=ગાહ્યાભ્યન્તરભેદાદ્ દ્વિવિયઃ, તત્ર-ગાહ્ય પરિગ્રહઃ
ધર્મોપકરણાતિરિક્તમિન્નચસ્તુગ્રહણ, ધર્મોપકરણેષુ મૂર્છા ચ । આન્તર’ પરિગ્રહ
સ્તુ-મિથ્યાદિરતિરિક્તપાપપ્રમાદાશુભયોગસ્પ’, ઝનયોઃ સમાઠારહન્દ, તસ્માદ્
‘વિરણ’ મિત્તો યઃ સ શ્રમણો ભવતિ । તથા યઃ ‘ક્રોધમાણમાયાલોભા’ ક્રોધ-
માનમાયાલોભાત્, અત્ર-સમાઠારત્યાદેસ્ત્વમ્ ‘વિરણ’ મિત્તઃ સ શ્રમણો ભવતિ ।
અયેનાદિ સત્યયા મિથ્યાત્વાદિ લક્ષણાઽઽભ્યન્તરપરિગ્રહવિગતિ વિગદ્યન્નાદ-
‘એમે’ इत्यादि, ‘એમે અસજમે’ एमेऽसयमः-अभिरतिलक्षणः, ‘દો ચત્ર રાગ-
દોસા’ दो चैव रागद्वेषौ । तथा-‘તિણિ ય’ ययश्च ‘દડા’ दडा, તથા-त्रीणि
‘ગારવા ય’ गौरवाणि च, ‘ગુત્તીઓ’ गुत्तीयो, ‘તિણિ ય’ त्रिष्वथ । तथा-

શુણો સે યુક્ત હોતા હૈ વહી શ્રમણ હૈ । યહ શ્રમણ (આરમ્ભપરિગ્રહા
ઓ વિરણ) આરમ્ભ ઓર પરિગ્રહ સે સર્વથા વિરત હોતા હૈ । પૃથિવી
આદિ જીવોં કા ઉપમર્દન જિન ક્રિયાઓં સે હોતા હૈ વે સવ આરમ્ભ હૈ ।
પરિગ્રહ ઘાહ્ય ઓર આભ્યન્તર કે ભેદ સે દો પ્રકાર કા હોતા હૈ । ધર્મો
પકરણો સે મિન વસ્તુઓં કા અપનાના-પાસ મેં રખના-તથા ધર્મોપક-
રણોં પર મૂર્છાભાવ-મમત્વભાવ રખના યહ વાહ્યપરિગ્રહ હૈ । મિથ્યાત્વ,
અવિરતિ, કપાય, પ્રમાદ ઓર અશુભયોગ, વે સત્ર અભ્યન્તર પરિગ્રહ હૈ ।
શ્રમણ વહી હો સક્તા હૈ જો આરમ્ભ ઓર ઘાહ્યાભ્યન્તર પરિગ્રહ સે
સર્વથા વિરત હોતા હૈ । (વિરણ ક્રોધમાણલોભા) હસી તરહ જો ક્રોધ,
માન, માયા ઓર લોભ, હનસે વિરત હોતા હૈ વહી શ્રમણ કહલાતા હૈ ।
(એમે અસજમે, દો ચેવ રાગદોસા, તિણિ ય દડા-ગારવાય, ગુત્તીઓ
તિણિ, તિણિ ય વિરાહનાઓં, વત્તારિકસાયા, જ્ઞાણસપ્પના, વિગદા તદા

છે એ જ શ્રમણ છે તે શ્રમણ “ આરમ્ભપરિગ્રહાઓ વિરણ ” આરમ્ભ અને
પરિગ્રહથી તદ્દન વિરત હોય છે પૃથિવી આદિ જીવોના ઉપમર્દન જે ક્રિયા
ઓથી થાય છે તે સવળાને આરમ્ભ કહે છે પરિગ્રહના બે ભેદ છે-ગાહ્ય પરિ-
ગ્રહ અને અભ્યાન્તર પરિગ્રહ ધર્મોપકરણો મિવાયની વસ્તુઓ પાને રાખવી
તથા ધર્મોપકરણો ઉપર મૂર્છાભાવ મમત્વભાવ ગળવો તે ગાહ્યપરિગ્રહ છે
મિથ્યાત્વ, અવિરતિ, કપાય, પ્રમાદ અને અશુભ યોગ એ બધા અભ્યાન્તર
પરિગ્રહ છે જે ગાહ્ય અને અભ્યાન્તર પરિગ્રહથી સર્વથા વિગ્રત હોય છે તે
શ્રમણ થઈ શકે છે “વિરણ ક્રોધમાણમાયાલોભા” એ જ પ્રમાણે જ ક્રોધ, માન,
માયા અને લોભથી ગ્રહિત હોય છે તે જ શ્રમણ કહેવાય છે “ એમે અસજમે,
દોચેવ રાગદોસા, તિણિયદડા-ગારવાય, ગુત્તીઓ તિણિ, તિણિ ય વિરાહનાઓ,

‘તિણિ ચ’ તિસ્રથ ‘વિરાઢ્ણાઞો’ વિરાધનાઃ । તથા-‘ચત્તારિ’ ચત્તારઃ
 ‘કસાયા’ કપાયા । તથા-ચત્તારિ ‘દ્યાણા’ ધ્યાનાનિ, ‘તદ્દા ય’ તથા ચ
 ‘ચરો’ ચતસ્રઃ ‘ત્રિગદ્ધા’ ત્રિગદ્ધા, ‘હુતિ’ ભવન્તિ । તથા-‘પચ’ પચ્ચ
 ‘કિરિયાઞો’ ક્રિયાઃ, તથા-પચ્ચ ‘સમિદ્ધિયમહવ્વયાઙ ય’ સમિતીન્દ્રિયમદ્ધા
 વ્રતાનિ ચ । પચ્ચ સમિતયઃ, પચ્ચેન્દ્રિયાણિ, પચ્ચ મદ્ધાવ્રતાનિ ચ । તથા-‘છજ્જી-
 ચનિકાયા’ પહ્જીવનિકાયા । છન્નચલેસાઞો’ પટ્ટ ચ લેશ્યાઃ । તથા-‘સત્ત
 મયા’ સત્ત મયાનિ । તથા-‘અટ્ટમયા’ અટ્ટમદ્ધા’ । ‘નવ ચેવ ય’ નવ ચેવ ચ
 ‘વમ્ભવેરગુત્તીઞો’ વ્રમ્ભવચર્યગુત્તયઃ । ‘દસપ્પકારે ય’ દશપકારશ્ચ = દશગિયઃ,
 ‘સમણધમ્મે’ શ્રમણ ધર્મઃ । તથા-‘एकारस’ एकादश ‘उवासगाण’ उपास
 કાના ‘વારસ ય’ દ્વાદશ ચ ‘મિક્કૂણ’ મિક્કુણા ‘પડિમા’ પ્રતિમાઃ । ‘તેરસ’
 ત્રયોદશ ‘કિરિયાઢ્ણાઙ’ ક્રિયાસ્થાનાનિ । ‘ચડ્ડસ’ ચતુર્દશ ‘ભૂયગામા’
 ભૂતગ્રામાઃ । ‘‘પન્નરસ’ પરમાહમ્મિયા’ પચ્ચદશ પરમાધર્મિકા’ । ‘સોલસગાહા

ય હુતિ ચરો) તથા યે જો અસયમાદિક એક સે લેકર તેત્રીસ થોલ
 હૈ, જૈસે-અવિરતિરૂપ એક અસયમ, દો રાગ ઓર દ્વેષ ત્રીન દણ્ડ, ત્રીન
 ગૌરવ, ત્રીન ગુણિ, ત્રીન વિરાધના, ચાર કપાય, ચાર ધ્યાન, ચાર સજ્ઞો,
 ચાર વિકથા, (પચકિરિયાઞો) પાચ ક્રિયા, (સમિદ્ધિયમહવ્વયાઙ)
 પાચ સમિતિ, પાચ હિન્દ્રિય પાચ મદ્ધાવ્રત, (છજ્જીવનિકાયાછન્નચલેસા-
 ઞો સત્તમયાઅટ્ટમયા નવ ચેવ ય વમ્ભવેરગુત્તી, દસપ્પકારે ય સમણ
 ધમ્મે, એકારસ ઉવાસગાણ વારસય મિક્કૂણ પડિમા) છહજીવનિકાયા
 છહ લેશ્યા, સાત મય, આઠ મદ, નૌ વ્રમ્ભવચર્ય ગુણિ, દશ પ્રકાર કા
 શ્રમણધર્મ, ચારહશ્રાવકો કી, ચારહ મિક્કુઓ કી પ્રતિમા, (તેરસ
 કિરિયાઢ્ણાઙ, ચડ્ડસભૂયગામા, પન્નપરસરમાહમ્મિયા, સોલસગાહા

ચત્તારિ કસાયા, દ્યાણસણ્ણા ત્રિગદ્ધાતદ્દા ય હુતિ ચરો ” તથા આ જે અમય
 માદિક એકથી લઈને તેત્રીસ થોલ છે, જેવા કે-અવિરતિરૂપ એક અસયમ,
 જે રાગ અને દ્વેષ, ત્રણ દડ, ત્રણ ગૌરવ, ત્રણ ગુણિ, ત્રણ વિરાધના, ચાર
 કપાય, ચાર ધ્યાન, ચાર સજ્ઞા, ચાર વિકથા, “પચ કિરિયાઞો” પાચ ક્રિયા
 “સમિદ્ધિયમહવ્વયાઙ” પાચ સમિતિ પાચ હિન્દ્રિય, પાચ મદ્ધાવ્રત,
 છજ્જીવનિકાયા છન્નચલેસાઞો સત્તમયા અટ્ટમયા નવચેવ ય વમ્ભવેરગુત્તી, દસપ્પકારે
 ય સમણધમ્મે, એકારસ, ઉવાસગાણ વારસયમિક્કૂણ પડિમા ” છ જીવનિકાયા,
 છ લેશ્યા, સાત મય આઠ મદ, નવ વ્રમ્ભવચર્ય ગુણિ, દશ પ્રકારનો શ્રમણ
 ધર્મ, અગિયાર શ્રાવકોની, ચાર ભિક્ષુઓની પ્રતિમાઓ, “તેરસ કિરિયાઢ્ણાઙ,
 ચડ્ડસ-ભૂયગામા પન્નપરસરમાહમ્મિયા, સોલસગાહા સોરસા ચ અસજમ ૧૭,

य' पोटशगाग पोटशमानि च=गायेनि पोटशमभ्ययन येना तानि गाथापोड
 शमानि सूत्रकृताङ्गम्य प्रथमश्रुतस्कन्धाभ्ययनानि, तानि च पोटशमरयकानि । तथा
 -सप्तदशविधः 'असजमे' असयम' । अष्टादशविधम्, 'अवभ' अवब्रह्मचर्यम् ।
 तथा-एधोनविंशति सयमानि, 'णाय' ज्ञानानि=ज्ञाताभ्ययनानि । विंशति
 'असमाहिद्विणा' असमाधिस्थानानि, एकविंशतिः 'सत्रला य' सत्रलाथ ।
 द्वाविंशति 'परीसहा य' परीपहाथ । तथा-त्रयोविंशति सरयकानि, 'सूयग-
 ड्जयणा' सूत्रकृता ययनानि । चतुर्विंशतिः 'देवा' देवाः । पञ्चविंशति
 'भावणा' भावनाः षट्विंशतिः 'उद्देश' उद्देशाः । सप्तविंशति 'गुण'
 गुणाः=अनगारगुणा । अष्टविंशति 'कप्पा' कल्पाः-आचारप्रकल्पा ।
 एकोनविंशतिः 'पावसुय' पापश्रुतानि । त्रिंशत्-'मोहणिज्ज' मोहनीयानि=
 मोहनीयस्थानानि । एकाविंशत्-'सिद्धाङ्गुणा य' सिद्धाङ्गुणाश्च सिद्धसहभा-
 विगुणाः । द्वाविंशत्-'जोगसग्रह' योगसग्रहाः, तथा-द्वाविंशत्-'सुरिंदा'

सोलसा य असजम १७, अवभ १८, णाय १९, असमाहिद्विणा २०,
 सत्रला २१, य परीसहा २२ य, सूयगड्जयणा २३) १३ क्रियास्थान,
 १४ भूतग्राम, १५ परमाधार्मिक, १६ सूत्रकृताङ्गके प्रथम श्रुतस्कन्धके अ ययन,
 १७ प्रकारका असयम, १८ प्रकारका अवब्रह्मचर्य, १९ ज्ञाताके अभ्ययन,
 २० प्रकारके असमाधिस्थान, २१ प्रकारके शबल, २२ परीपह, २३ सूत्र-
 कृताङ्गके अभ्ययन (देव २४, भावणा २५, उद्देश २६, गुण २७, कप्प
 २८ पावसुय २९, मोहणिज्ज ३०, सिद्धाङ्गुणा ३१, य जोगसग्रह ३२,
 सुरिंदा ३३, तिसीसासायणा) २४ देव, २५ भावना, २६ उद्देश, २७
 अनगार गुण, २८ आचारप्रकल्प, २९ पापश्रुत, ३० मोहनीयस्थान, ३१
 सिद्धसहभाविगुण, ३२ योगसग्रह, ३३ सुरेन्द्र-भवनपतिर्योमे २०,

अवभ १८, णाय १९, असमाहिद्विणा २०, सत्रला २१, य परीसहा २२ य,
 सूयगड्जयणा २३ " क्रियास्थान, १४ भूतग्राम, १५ परमाधार्मिक, १६
 सूत्रकृताङ्गना प्रथम श्रुतस्कन्धना अभ्ययन, १७ प्रकारका असयम, १८ प्रकारका
 अवब्रह्मचर्य, १९ ज्ञाताका अभ्ययन, २० प्रकारका असमाधि स्थान, २१ प्रका
 रना शबल, २२ परीपह, २३ सूत्रकृताङ्गना अभ्ययन, " देव २४, भावणा
 २५, उद्देश २६, गुण २७, कप्प २८, पाव सुय २९, मोहणिज्ज ३०, सिद्धा
 ङ्गुणा ३१, य जोगसग्रह ३२, सुरिंदा ३३ तिसीसासायणा " २४ देव, २५
 भावना, २६ उद्देश, २७ अनगार गुण, २८ आचार प्रकल्प, २९ पापश्रुत,
 ३० मोहनीय स्थान, ३१ सिद्ध सहभावि गुण ३२ योग सग्रह, ३३ सुरेन्द्र,

‘તિણિય’ તિસથ ‘વિરાઢ્ણાજો’ વિરાધનાઃ । તથા-‘ચત્તારિ’ ચત્તારઃ
 ‘કસાયા’ કપાયા । તથા-ચત્તારિ ‘ઘાણા’ ધ્યાનાનિ, ‘તહા ય’ તથા ચ
 ‘ચડરો’ ચતસ્રઃ ‘વિગઘા’ વિગ્ધયા, ‘દુનિ’ મરન્તિ । તથા-‘પચ’ પચ્ચ
 ‘કિરિયાઓ’ ક્રિયાઃ, તથા-પચ ‘સમિહ્દિયમહન્વયાઈ’ સમિતીન્દ્રિયમહા
 વ્રતાનિ ચ । પચ્ચ સમિતયઃ, પચ્ચેન્દ્રિયાણિ, પચ્ચ મહાવ્રતાનિ ચ । તથા-‘છજ્જી-
 યનિકાયા’ પદ્ધત્તીવનિકાયા । છન્નલેસાજો’ પટ્ઠ ચ લેશ્યાઃ । તથા-‘સત્ત
 મયા’ સત્ત મયાનિ । તથા-‘અટ્ટમયા’ અટ્ટમદાઃ । ‘નવ ચેવ ય’ નવ ચેવ ચ
 ‘વમ્બેરગુત્તીઓ’ વ્રહ્મચર્યગુણયઃ । ‘દસપ્પકારે ય’ દશપ્રકારશ્ચ = દશવિધઃ,
 ‘સમણધમ્મે’ શ્રમણ ધર્મઃ । તથા-‘एकारस’ एकादश ‘उवासगाण’ उपास
 काना ‘वारस य’ द्वादश च ‘भिक्षूण’ भिक्षुणा ‘पडिमा’ प्रतिमा । ‘तेरस’
 त्रयोदश ‘किरियाठाणाइ’ क्रियास्थानानि । ‘चउदस’ चतुर्दश ‘भूयगामा’
 भूतग्रामाः । ‘‘पन्नरस’ परमाहम्मिया’ पञ्चदश परमाधार्मिकाः । ‘सोलसगाहा

ય હુતિ ચડરો) તથા યે જો અસયમાદિક એક સે લેકર તેત્રીસ થોલ
 હૈ, જૈસે-અવિરતિરૂપ એક અસયમ, દો રાગ ઓર દેષ ત્રીન દણ્ડ, ત્રીન
 ગૌરવ, ત્રીન શુભિ, ત્રીન વિરાધના, ચાર કપાય, ચાર ધ્યાન, ચાર સજ્ઞો,
 ચાર વિકથા, (પચકિરિયાઓ) પાચ ક્રિયા, (સમિહ્દિયમહન્વયાઈ)
 પાંચ સમિતિ, પાચ ઇન્દ્રિય પાચ મહાવ્રત, (છજ્જીવનિકાયછન્નલેસા
 ઓ સત્તમયાઅટ્ટમયા નવ ચેવ ય વમ્બેરગુત્તી, દસપ્પકારે ય સમણ
 ધમ્મે, એકારસ ઉવાસગાણ વારસય ભિક્ષૂણ પડિમા) છજ્જીવનિકાય
 છહ લેશ્યા, સાત મય, આઠ મદ, નૌ વ્રહ્મચર્ય શુભિ, દશ પ્રકાર કા
 શ્રમણધર્મ, ગ્યારહશ્રાવકો જી, વારહ ભિક્ષુઓ કી પ્રતિમાઈ, (તેરસ
 કિરિયાઢાણાઈ, ચઉદસભૂયગામા, પન્નપરસરમાહમ્મિયા, સોલસગાહા

ચત્તારિ કસાયા, ઘાણસણ્ણા વિગઘાતહા ય હુતિ ચડરો ” તથા આ જે અસય
 માહિત એકથી લઈને તેત્રીસ થોલ છે, જેવા કે-અવિરતિઉપ એક અસયમ,
 બે રાગ અને દેષ, ત્રણ દડ, ત્રણ ગૌરવ, ત્રણ શુભિ, ત્રણ વિરાધના, ચાર
 કપાય, ચાર ધ્યાન, ચાર સજ્ઞા, ચાર વિકથા, “પચ કિરિયાઓ” પાચ ક્રિયા
 “ સમિહ્દિયમહન્વયાઈ ” પાચ સમિતિ પાચ ઇન્દ્રિય, પાચ મહાવ્રત,
 છજ્જીવનિકાય છન્નલેસાઓ સત્તમયા અટ્ટમયા નવચેવ ય વમ્બેરગુત્તી, દસપ્પકારે
 ચ સમણધમ્મે, એકારસ, ઉવાસગાણ વારસયભિક્ષૂણ પડિમા ” છ જીવનિકાય,
 છ લેશ્યા, આઠ ભય આઠ મદ, નવ બ્રહ્મચર્ય શુભિ, દશ પ્રકારનો શ્રમણ
 ધર્મ, અગિયાર શ્રાવકોની, બાર ભિક્ષુઓની પ્રતિમાઓ, “ તેરસ કિરિયાઢાણાઈ,
 ચઉદસ-ભૂયગામા પન્નપરસરમાહમ્મિયા, સોલસગાહા સોઠસા ય અસજ્ઞમ ૧૭,

અવિરતિપુ=અવિરતિરૂપેણ ભગવતા કથિતેષુ પ્રાણાતિપાતાદિપુ ચ, તથા-‘અળ્લેસુ
ય’ અળ્લેસુ ચ ‘અવમાહણસુ’ અવમાદિકેષુ=અવ પ્રિયેષુ ‘વહુસુ દ્વાળેસુ’ વહુસુ
સ્થાનેષુ=અનેક વિધેષુ પદાર્થેષુ સગ્યામ્યાનેષુ વા ચતુર્થિગદાદિપુ, કીદશેષ્વેષુ ?
‘જિણપસત્તેસુ’ જિનપ્રગસ્તેષુ=જિનકથિતેષુ, અતથા—‘અવિતહેસુ’ અવિત-
યેષુ=સત્તેષુ, પુનઃ—‘સાસયમાવેસુ’ શાશ્વતભાવેષુ=ઓઘતોઽક્ષયસ્વભાવેષુ, અત-
થા—‘અવટ્ટિણ્ણુ’ આસિરિતેષુ=સર્વદા ભાવિષુ ‘સક’ શક્તા=સન્દેહ, ‘કલ’
કાલ્પા=પરમતવાચ્છા ‘નિરાકરિત્તા’ નિરાકૃત્ય=દૂરીકૃત્ય શ્રમણે, ‘સદ્ધતિ’
શ્રદ્ધાતિ ‘ભગવથો’ ભગવતો જિનમ્ય ‘સાસણ’ શાસનમ્ કીદશ
સન્ શ્રમણો જિનસ્ય શાસન શ્રદ્ધાતીત્યાહ — ‘અનિયાણે’ અનિદાન
=દેવદુર્ગાદિવાચ્છારહિતઃ, ‘અગારવે’ અગારવ= ઋદ્ધયાદિગૌરવવર્જિતઃ,
‘અલુદ્ધે’ અલુદ્ધ=ત્રિપચેપ્પલ્લપટ’ ‘અમૂદે’ અમૂદઃ, તથા—‘મળોવયણકાય

एकाप्रतारूप प्रणिधानो में (अद्विरइसु) भगवान् के द्वारा अविरतरूपसे
कथित प्राणातिपात आदिको में तथा (अण्णेषु य एवमाहणसु) और
भी उसी तरहके दूसरे (वहुसु द्वाणेषु) अनेक पदार्थों में अथवा (जिण
पसत्तयेसु) चौतीस आदि मर्यादामें जो कि जिनकथिन हैं और
उसी कारण (अवितहेसु) जिन में असत्यता का थोड़ा साभी स्थान
नहीं, अर्थात् सर्वथा सत्य हैं, तथा (सासयभावेसु) सामान्यकी अपेक्षा
जिनका अक्षय स्वभाव है, और इसीसे (अवट्टिणसु) जिनकी मत्ता
सदा रहती है उनमें (सक) शक्ता-सन्देहो (कल) काला-परमतवाञ्छा
को (निराकरित्ता) दूर करके जो श्रमण (अनियाणे) निदान-देव-
दुर्गादि प्राप्तिकी इच्छा से विहीन बन कर (अगारवे) ऋद्धयादि गौरव
से रहित हो कर (अलुद्धे) त्रिपर्यों में लपटतासे रिक्त होकर और

“अविरइसु” भगवान् द्वारा अविवर्तये उचित प्राणातिपात आदि तथा
“अण्णेषु य एवमाहणसु” भील पण्णे अथवा प्रचारना ‘वहुसु द्वाणेषु’
अनेक पदार्थोंमा अथवा “जिणपसत्तयेसु” चौतीस आदि अण्णा स्थानोंमा
उं जे जिन उचित उं अने अथवा वाञ्छे “अवितहेसु” जेमनामा असत्य-
तानु जरा पण्ण स्थान नथी अट्टवे उं जे सर्वथा सत्य उं, तथा “सासय
भावेसु” सामान्यनी अपेक्षाअे जिनने अक्षय स्वभाव उं, अने तेथी ज
“अवट्टिणसु” जेनी मत्ता सदा रहि छे, तेमनामा “सक” शक्ता-सन्देहने
“कल” काला-परमत वाचनाने ‘निराकरित्ता’ दूर उगीने जे श्रमण
“अनियाणे” निदान-देवदुर्गादि प्राप्तिनी उच्छिन्नाथी उचित जनीने “अगारवे”
ऋद्धयादि गौरवथी रहित थर्धने “अलुद्धे” विषयोंनी लाक्षमाथी उचित

સુરેન્દ્રાઃ, ત્રિંશતિર્ભગવતિપુ, દ્વાદશસુ કલ્પેષુ દશ, તત્ર-અષ્ટસુ સ્તપેષ્વર્ગો, નવમ
 દશમયોરેક, એકાદશ દ્વાદશયોર્થેક ઇતિ, ટ્રી જ્યોતિર્ગ્રંથેષુ, ચન્દ્રમૂર્યાનામમયા
 તત્ત્વેઽપિ જાતિગણાદ્ દ્વામેન, અપ્પ ડાત્રિંશદિન્દ્રાઃ । ‘તિત્તીમાપાયાના’ ત્રય
 ત્રિંશદાશાતનાઃ, અસયમાધાશાતનાન્તોનામેષા વ્યાખ્યાઽઽવશ્યમ્નસ્યામત્કૃત
 મુનિતોપણ્યાનયાયા વ્યારયાયા દ્રષ્ટ્યા । એતે ટિ ‘આદિ પદ્માઙ્ય’ જાત્રેકા
 દિન્નમ્=આદેઃ=પ્રથમતઃ એકાદિન્નમ્=અદિત્ર્યાદિકં ‘યરેત્તા’ કૃત્વા=આશ્રિત્ય
 ‘એગુત્તરિયા’ ‘અગુત્તરિકૃત્વા=અગુ ઉત્તરે યમ્યાઃ સા તયા ‘બુદ્ધિ’ ‘બુદ્ધિ’
 ક્રમશઃ એકેક બુદ્ધ્યેત્યર્થ, ‘બુદ્ધિ’ ‘વૃદ્ધિ’ ‘વૃદ્ધિ’ ‘વૃદ્ધિ’ ‘વૃદ્ધિ’ ‘વૃદ્ધિ’ ‘વૃદ્ધિ’
 યાવદ્ ‘તિગાદિયા’ ત્રિકાદિયાઃ=ત્ર્યધિકાઃ ‘ત્રીસ’ ત્રિન્નમ્=ત્ર્યસિન્નમ્ ‘ભવે’
 ભવતિ । અત્ર ‘અગુ’ ઇતિ ગમ્યમ્, એતેષ્વનુપદમુસ્તેષુ અસયમાદિપુ, તયા—
 ‘વિરિપણિહિસુ’ વિરિતિપણિધિપુ=વિરિતયઃ=પ્રાણાતિપાતવિરમણાનિ, પ્રણિધય=
 પ્રણિયાનાનિ ચિત્તૈકાગ્રતારૂપાણિ, આયોર્દ્વન્દ્રઃ, તેષુ તથોક્તેષુ, તયા ‘અવિરિસુ’

ચારહક્તર્પો મેં ૧૦=૮ આઠ કલ્પો મેં ૮, નવમેં દસમેં અન્પમેં ૧ ચારહવે
 ચારહવે ૧) જ્યોતિષિયોં મેં જાતિ કી અપેક્ષા ચદ્ર ઓર સૂર્ય ૨ હમ ૬ કાર
 ૩૨ । ઓર આજ્ઞાતના ૩૩ । इन सत्रकी व्याख्या आचर्यक सूत्र की
 पूज्यश्री घासीलालजी महाराजद्वारा की गई मुनि-तोपणी नामकी टीका
 में की गई है-अतः जिज्ञासुजन इरा विषयको बहा से देखलें । (आदि
 पद्माङ्ग्य करेत्ता) इस प्रकार ये प्रथम एकादि सरयाको लेकर के क्रमशः
 (एगुत्तरियाण बुद्धिण बुद्धिणसु) एकर की वृद्धिसे वर्द्धित होते २ (ती
 साओ जाव य भवे तिगादिया) तीन अधिक तीस अर्थात् तेतीस हो
 जाते हैं । इन असयमादि तेतीस प्रकार तक के सरया स्थानों में तथा
 (विरिपणिहिसु) प्राणातिपात विरमणरूप विरतियों में, चित्त की

ભવનપતિઓમા ૨૦, બાર કલ્પોમા ૧૦ (આઠ કલ્પોમા ૮, નવમા અને દશમા ૮૫મા
 ૧ અને અગિયાર તથા બારમા ૮૫મા એક) જ્યોતિષિયોમા ભતિની અપેક્ષાએ
 સૂર્ય અને ચદ્ર એમ બે સુરેન્દ્ર એ રીતે કુલ ૩૨ સુરેન્દ્રો થયા અને
 અજ્ઞાતના ૩૩ આ બધાની વ્યાખ્યા આવશ્યક સૂત્રની પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી
 મહારાજ દ્વારા કરાયેલ મુનિતોપણી નામની ટીકામા આપેલ છે તેા જિજ્ઞાસુ
 જન તે વિષયને તેમાથી બેાડ લે “આદિ એકાઙ્ય કરેત્તા” આ રીતે પહેલેથી
 એકાદિ સખ્યાને લઇને ક્રમશઃ “એગુત્તરિયાણ બુદ્ધિણ બુદ્ધિગ્નસુ” એક એક
 વધારતા જતા “ત્રીસાઓ જાવ ય ભવેતિગાદિયા” તેત્રીસ થઈ બપ છે એ
 અસયમાદિ તેત્રીસમા પ્રકાર સુધીના સખ્યા સ્થાનોમા તથા “વિરિપણિહિસુ”
 પ્રાણાતિપાત વિરમણરૂપ વિરતિઓમા, ચિત્તની એકાગ્રતારૂપ પ્રણિધાનોમા

સઃ, તથા-‘ ધિદ્કદો ’ ધૃત્તિકન્દ.=ઘૃત્તિઃ=ચિત્તસ્થાસ્થ્ય સૈવ કન્દો મૂલાધોભાગ
રૂપો યસ્ય સ’, તથા-‘ વિણયવેદઞો ’ વિનયવેદિકાઃ=વિનય એવ વેદિકા=વેદિ-
ર્યસ્ય સ, તથા-‘ નિગ્ગયતેલોક્કવિપુલજસનિચિયપીળપીરસુજાયસધો ’ નિર્ગત-
ત્રૈલોક્યવિપુલયશોનિચિત્તપીનપીરસુજાતસ્કન્ધ.=નત્ર નિર્ગત=વ્યાપ્ત ત્રૈલોક્યે યત્ત-
નિર્ગતત્રૈલોક્ય લોકત્રયવ્યાપ્તમિત્યર્થઃ, એતાદશ યદ્ વિપુલ=વિશાલ ગશ.=સ્થા-
તિસ્તદેવ નિચિત્તો=નિવિદ. પીનો=મહાન્ પીવર =પુષ્ટઃ સુજાત.=સુનિષ્પન્નઃ સ્કન્ધો
યસ્ય સઃ, તથા-‘ પચમહવ્યવિસાલસાલો ’ પચ્ચમદાત્રત્રિશાલશાલઃ=પચ્ચમહા-
ત્રતાન્યેવ વિશાલાઃ=વિસ્તૃતાઃ શાલાઃ=શાલા યસ્ય સઃ, તથા-‘ ભાવનાતયતઙ્જા-
ણસુભગજોગનાણપલ્લવવરકુરધરો ’ ભાવનાત્તગન્ત યાનસુભગયોગજ્ઞાનપલ્લવવરાહુ-
રધર, તત્ર-ભાવનૈય=અનિત્યત્પાદિચિન્નનલક્ષણૈય ત્તગન્ત=ત્તગ્રૂપોડયયો યસ્ય
સ, ભાવનારૂપત્તવાસપન્નઇત્યર્થ, તથા-‘ યાનમ્=ર્મ-યાનાદિ, શુભયોગા’=શુભ-
મનોવાક્યાવ્યાપારાઃ, જ્ઞાન=ગોઘ્ય’ તાન્યેય પલ્લવાવરાહુરાશ્વ’તેપા ધરો ય’ સઃ,
અનયો કર્મવારય, તથા-‘ વહુગુણકુસુમસમિદ્ધો ’ વહુગુણકુસુમસમૃદ્ધઃ=વહ્વો યે

વિશુદ્ધ મૂલ સમ્યગ્દર્શન છે. (ધિદ્કદો) ચિત્તસ્વાસ્થ્યરૂપ ધૈર્યે હી ઇસ
કા કદ્ છે, (વિણયવેદઞો) વિનય હી ઇસકી વેદિકા-ઉત્પત્તિ ભૂમિ
છે. (નિગ્ગય-તેલોક્કવિપુલજસનિચિયપીળપીવરસુજાયસધો) ત્રૈલોક્ય
મેં વ્યાપ્ત યશ્ હી ઇસકા નિવિદ, પીન-બડા-પીવર-પુષ્ટ ઓર સુજાત-
સુદાવના-સ્કન્ધ છે. (પચમહવ્યવિસાલસાલો) પાંચ મહાવ્રત હી ઇસકી
વિશાલ શાલાઈ છે. (ભાવનાતયતઙ્જાણસુભગજોગનાણપલ્લવવરકુર-
ધરો) અનિત્ય આદિ ભાવનાઈ હી ઇસકી સ્વચા-છાલ છે, ધર્મ-ધ્યાન
આદિ ધ્યાન, મન, વચન ઓર કાય કી શુભ પ્રવૃત્તિરૂપ, વ્યાપાર એવ
સમ્યક્જ્ઞાન, યે સર્વ હી ઇસકે પત્તે ઓર ઉત્તમ પલ્લવાહુર છે, (વહુગુણ
કુસુમસમિદ્ધો) ક્ષાન્ત્યાદિ અનેક ગુણોરૂપી પુણ્ય સે યહ સદા સમૃદ્ધ

મૂળ છે “ ધિદ્કદો ” ચિત્ત સ્વસ્થતારૂપ ધૈર્ય જ તેનું કદ છે “ વિણય વેદઞો ”
વિનય જ તેની વેદિકા ઉત્પત્તિની ભૂમિકા છે “ નિગ્ગયતેલોક્કવિપુલજસ
નિચિયપીવરસુજાયસધો ” ત્રિલોક્યા આપ્ત યશ્ જ તેનું નિવિદ, પીન-મોટું-
પીવર-મજબૂત અને સુખાત-સુદર થક છે “ પચમહવ્યવિસાલસાલો ” પાંચ
મહાવ્રત જ તેની વિશાળ શાખાઓ છે “ ભાવનાતયતઙ્જાણસુભગજોગનાણ
પલ્લવવરકુરધરો ” અનિત્ય આદિ ભાવના જ તેની છાલ છે, ધર્મ-ધ્યાન આદિ
ધ્યાન, મન, વચન અને કાયની ગુણ પ્રવૃત્તિરૂપ વ્યાપાર, અને જ્ઞાન, એ મો
તેના પત્તા, અને ઉત્તમ પલ્લવાહુર છે “ વહુગુણકુસુમસમિદ્ધો ” ક્ષાન્ત્યાદિ

ગુત્તે' મનોવચનકાયગુપ્તશ્ચ શ્રમણો ભવતિ । યઃપરિગ્રહમચર વૃક્ષોપમયા વર્ણયન્નાદ-
 -' જો સો ' યઃ સઃ=સચરપાદપો યઃ સઃ સ ચરમ સપરિગ્રહમિતિ યોગ કીદશઃ
 સચરપાદપઃ ઇત્યાદિ—'વીરવચનવિરહપવિત્થરવહુવિહૃત્પગારો' વીરવચન
 વિરતિપ્રવિસ્તરવહુવિધપગારઃ=વીરવચન=મગવતો મહાવીરસ્ય ચત્રવચનમ્=આજ્ઞા,
 તત્ સકાજાદ યા વિરતિ' =પરિગ્રહાન્નિવૃત્તિ સૈવ પ્રવિસ્તરો વિસ્તરયુક્તો વહુ-
 વિધ' =અનેકવિધઃ—વિચિત્રવિષયાપેક્ષયા ક્ષાયોપગમાધપેક્ષયા ચ પાદપપક્ષે મૂલક-
 ન્દાદ્યપેક્ષયા અનેકવિધ પ્રકારઃ ભેદો यस્ય સ', તથા—'સમત્તવિમુદ્ધવદ્મૂલો'
 સમ્યક્તવિશુદ્ધવદ્મૂલઃ=સમ્યક્તગેય=સમ્યક્દર્શનમેવ વિશુદ્ધ =વદ્ મૂલ યસ્ય

(અમૂઢે) મૂઢતા સે વર્જિત હોકર તથા (મળવચનકાયગુત્તે) મન,
 વચન ઓર કાય કી સરલતા સે સપન્ન વચનકર (મગવઓ) મગવાન
 જિનેન્દ્ર કે (સાસણ) શાસન કા (સદ્દહૃદ) શ્રદ્ધાન કરતા હૈ વહી
 શ્રમણ સત્ત્વા શ્રમણ હૈ । અવ સૂત્રકાર હસ અપરિગ્રહસવર કા વૃક્ષ
 કી ઉપમા ઢેકર વર્ણન કરતે હૈ—(જો સો) જો યહ અન્તિમ સવરદ્વાર
 રૂપ સવરવૃક્ષ હૈ વહ (વીરવચનવિરહપવિત્થરવહુવિહૃત્પગારો)
 અન્તિમ તીર્થકર મગવાન મહાવીર કી આજ્ઞા સે જો પરિગ્રહ સે જીવ
 કી નિવૃત્તિ હોતી હૈ ઉમ રૂપ હૈ । યહ પરિગ્રહ સે નિવૃત્તિ હી હસ વૃક્ષ
 કે વિસ્તૃત અનેક પ્રકાર-ભેદ હૈ । તાત્પર્ય હસ કા યહ હૈ કિ જિસ પ્રકાર
 મૂલ કન્દ આદિ કી અપેક્ષા કો લેન્દર ંક હી વૃક્ષ વિવિધ પ્રકારો
 વાલા માના જાતા હૈ ઉસી પ્રકાર યહ પરિત્યાગરૂપ અપરિગ્રહ મી વિચિત્ર
 વિષયો કે ત્યાગ કી અપેક્ષા ઓર કર્મો કે ક્ષયોપગમ આદિ કી અપેક્ષા
 સે અનેક પ્રકાર કા હોતા હૈ । (સમત્તવિમુદ્ધવદ્મૂલો) હસ વૃક્ષ કા-

બનીને અને “અમૂઢે” મૂઢતાથી રહિત થઇને તથા “મળવચનકાયગુત્તે”
 મન, વચન અને કાયની સરળતાથી યુક્ત બનીને ‘મગવઓ’ મગવાન જિને
 ન્દ્રના “સામણ” શાસનનું “સદ્દહૃદ” શ્રદ્ધાન કરે છે તે શ્રમણ જ સાચોશ્રમણ છે
 હવે સૂત્રકાર આ અપરિગ્રહ સવરને વૃક્ષની ઉપમા આપીને તેનું વર્ણન
 કરે છે—“જો સો” જે આ દેવના પરિગ્રહદ્વાર રૂપ અપરિગ્રહ સવર વૃક્ષ
 છે તે “વીરવચનવિરહપવિત્થરવહુવિહૃત્પગારો” અતિમ તીર્થકર મગવાન
 મહાવીરની આજ્ઞાથી જે પરિગ્રહથી છુટી નિવૃત્તિ થાય છે તે રૂપ છે તે
 પરિગ્રહથી નિવૃત્તિ લેવી એ જ આ વૃક્ષના વિસ્તૃત અનેક પ્રકાર-ભેદ છે તેનું
 તાત્પર્ય એ છે કે જેમ મૂળ, કંદ આદિની અપેક્ષાએ એક જ વૃક્ષ જેમ અનેક
 પ્રકારો વાળું મનાય છે તેમ આ પરિત્યાગરૂપ અપરિગ્રહ પણ વિચિત્ર વિષ
 યોના ત્યાગની અપેક્ષાએ તથા કર્મોના ક્ષયોપગમ આદિની અપેક્ષાએ અનેક
 પ્રકારનું હોય છે “સમત્તવિમુદ્ધવદ્મૂલો” સમ્યક્દર્શન આ વૃક્ષનું વિશુદ્ધ

भाचार्य—चतुर्थ सवर द्वार के प्ररूपण के बाद अब सूत्रकार पंचम सवर द्वारका वर्णन कर रहे हैं। इसके वर्णन करने का प्रयोजन उन्होंने इस प्रकार कहा है कि जब तक जीव की मायाभ्यन्तर रूप परिग्रहसे निवृत्ति नहीं होती तब तक वह चतुर्थ सवरद्वारका पूर्ण रूप से आराधक नहीं बनता है। धर्मोपकरणों के सिवाय अन्य पदार्थों का ग्रहण करना जयवा धर्मोपकरणों में मूर्च्छाभाव रखना उसका नाम परिग्रह है। मूर्च्छा का नाम आसक्ति है। वस्तु छोटी हो, बड़ी हो, चेतन हो चाहे अचेतन हो प्राय हो या आन्तरिक हो कैसी ही हो, चाहे न भी हो, तो भी उसमें आसक्तिसे बंधे रहना—उसकी लगन में विवेक रखो बैठना परिग्रह है। इस परिग्रहसे युक्त हुआ प्राणी क्रोध, मान, माया और लोभ कपायों से बंधा रहता है। राग द्वेष उसकी आत्मा में हिलोरे छेते रहते हैं। समयके महत्त्व की गणना उसके चित्त में नहीं होती है। प्रभु द्वारा प्रतिपादित अपरिग्रह के सिद्धान्त की प्रतिष्ठा वह विचार नहीं कर सरता है, अतः सच्चे अर्थ में श्रमण वही है जो इस परिग्रह से दूर है—विरक्त है। अपरिग्रही जीवके लिये प्रभुका आदेश है कि वह प्रभु द्वारा प्रतिपादित शासन में न शका करे न काक्षा करे—

भाचार्य—गोथा भवद्वागु वरुन कर्था पत्री डरे सूत्रगत पाथभा सवरद्वागु वरुन ढरे छे तेनु वरुन करवानो डेतु वेमल्ले अवे। अताव्ये छे डे व्या सुधी भाह्य अने आस्थन्तः पग्निडुथी एव निवृत्त थतो नथी त्या सुधी ते गोथा भवद्वागुने पूरु गीते आगधगनी राडतो नवी धर्मो पकरल्ले। निवायना अन्य पदार्थोंने अपनाववा अथवा धर्मोपकरणोभा (मूर्च्छा-भाव) भभतरभाव गणवो तेनु नाम परिग्रह डे मूर्च्छा अटले आमक्ति वन्तु नानी डोय डे मोटी डोय, जड डोय डे चेतन डोय, भाह्य डोय डे आन्तरिक डोय, लले गमे तेवी डोय, लले न पणु डोय, तो पणु तेभा असजितथी पधार रडेवु—तेनी लगनभा विवेकने शुभावी गेमवो ते परिग्रह गल्लाय छे आ परिग्रह वागो माणुम क्रोध, मान, माया, अने लोल जपाये। वडे पधायेलो रडे छे रागद्वेष तेना आत्माभा तोक्षान भयावे छे समयभु भडहन तेना चित्तभा नही जेवु डोय छे प्रभु द्वारा प्रतिपादित अपरिग्रहना सिद्धान्तनी प्रतिष्ठावो ते विचार ढरी शकतो नवी, तेथी मायो श्रमण तो अे न छे डे जे आ पग्निडुथी विरक्त डे अपग्निडुथी एवने माटे प्रभुनो आदेश छे डे ते प्रभु द्वारा प्रतिपादित शासनभा शका न डे न काक्षा न

ગુણાઃ ક્ષાન્ત્યાદિસ્પાસ્ત એવ કુસુમાનિ=પુષ્પાણિ તઃ સમૃદ્ધઃ, તથા 'સીલસુગમો' શીલસુગન્ધઃ, શીલ સદાચારો ગ્રામચર્ય યા, તદેવ શોભનો ગન્ધો યસ્મિન્ સઃ, તથા- 'અગણ્ઢવફલો' અનાશ્રવફલ = આશ્રવો = નવકર્મોદયઃ, ન આશ્રવોનાશ્રવ, સ એવ ફલ યસ્ય સઃ, આશ્રવનિરોધસ્વફલસમ્પન્ન इत्यર્થઃ, 'પુણો ય' પુનશ્ચ 'મોક્ષવરવીયસારો' મોક્ષવરવીજમારઃ = મોક્ષાર = વરમોક્ષઃ - અગ્ન્યાગ્રાધ મુલ્ક રૂપઃ, તસ્ય વીજસારઃ - શ્રેષ્ઠ વીજરૂપઃ, તથા - 'મન્દરગિરિસિંહરચૂલિયા ઇવ' મન્દરગિરિશિખરચૂલિકેવ મન્દગિરિઃ = મેરુપત્તરય યત્તુ ગિવર તસ્ય યા ચૂલિકા = ચૂડા સેવ, તથા 'ઇમસ્સ' અમ્ય-મમિદસ્ય 'મોક્ષવરમુત્તિમગ્ગસ' મોક્ષવર મુક્તિમાર્ગસ્ય = મોક્ષઃ = સકલ કર્મક્ષયભૂત, તદર્થો વરઃ = શ્રેષ્ઠો મુક્તિરૂપો = નિર્લોભતા રૂપેવ માર્ગઃ = પન્થાન્તસ્ય 'સિંહરમૂઓ' શિખરમૂતઃ एतादृશ 'સવરવરપાયવો' સવરવરપાદપ = સવરઃ = આશ્રવનિરોધઃ, સ એવ વરપાદપ = શ્રેષ્ઠસ્ત્રોડસ્તિ । एता दृशमिद 'चरिम' चरमम् = पञ्चमुत्तरद्वारेष्वन्तिमम्, 'सवरदार' सवरद्वारम्, अस्ति ॥ ६० १ ॥

ચના રહતા હૈ । (સીલસુગમો) સદાચાર અથવા ગ્રામચર્ય ઇસકી સુજાવની ગથ હૈ, અગણ્ઢવફલો) આશ્રવ-નવીન કર્મો કે આગમન કા જો રુકના હોતા હૈ વહી ઇસકા ફલ હૈ—ઇન ફલો સે હી યહ યુક્ત ચના ટુઆ હૈ । (પુણો ય) ફિર (મોક્ષવરવીયસારો) અગ્ન્યાગ્રાધ મુલ્કવાળે મોક્ષ કા યહ એક શ્રેષ્ઠ વીજ હૈ । (મન્દરગિરિસિંહ ચૂલિયા ઇવ) સુમેરુ પર્વત કે શિખર કી ચૂલિકા કે સમાન હૈ (ઇમસ્સ મોક્ષવરમુત્તિમગ્ગસ સિંહરમૂઓ) ઇસ પ્રસિદ્ધ સકલ કર્મક્ષય મોક્ષ કા જો નિર્લોભતારૂપ માર્ગ હૈ ઇસકા શિખરમૂત હૈ । (સવરવરપાયવો) ઇમ તરહ કા યહ સવરરૂપ શ્રેષ્ઠ વૃક્ષ હૈ । ઇસ પ્રકાર (ચરિમ સવરદાર) પાંચ સવર દ્વારોમેં યહ અન્તિમ સવર દ્વાર કહા ગયા હૈ ।

અનેક શુભો રૂપી પુષ્પોથા તે સદા સમૃદ્ધ રહે છે “સીલસુગમો” સદાચાર અથવા ગ્રામચર્ય જે તેની સુદર ગથ છે, “અગણ્ઢવફલો” આશ્રવ-નવા કર્મોના આગમનનું અટકવું-એજ તેના ફળ છે એ ફળોથી જ તે સુદ્રા હોય છે “પુણોય” વળી “મોક્ષવરવીયસારો” અગ્ન્યાગ્રાધ મુળવાળા મોક્ષનું તે એક શ્રેષ્ઠ વીજ છે “મન્દરગિરિસિંહરચૂલિયા ઇવ” સુમેરુ પર્વતના શિખરની ટોચ સમાન છે, “ઇમસ્સ મોક્ષવરમુત્તિમગ્ગસ સિંહરમૂઓ” એ પ્રસિદ્ધ મકળ કર્મક્ષય મોક્ષને જે નિર્લોભતા, ૩૫ માર્ગ છે તે તેના શિખર સમાન છે “સવરવરપાયવો” આ પ્રકારનું આ સવરરૂપ વૃક્ષ છે આ પ્રકારે “ચરિમ સવરદાર” પાંચ સવરદ્વારમાનું આ અન્તિમ સવરદ્વાર કહેવાયું છે

સજમનાયગેહિ તિત્થંકરેહિ સઘ્વજગજીવવચ્છલેહિ તિલોય-
મહિણહિ જિણવરિદંહિ એમ જોણી જગાણં દિઢા, ન કપ્પડ
જોણી સમુચ્છિદોત્તિ । તેણ હિ વજ્જેતિ સમણસીહા ॥સૂ૦૨॥

ટીકા—‘ જત્ય ’ યત્ત=પરિગ્રહવિરમણરૂપે ચરમસવરદ્વારે ‘ ગામાગરણગ
રહેડકવ્વહમહવદોણમુહપટ્ટણાસમગય ’ ગ્રામાકરનગરચેટકવ્વહમહવદોણમુહવપ-
ત્તનાશ્રમગત ચ, ગ્રામાગીના વ્યારયા પૂર્વવદ્ વો યા, તેપુ ગત=સ્થિત ચ ‘ કિંચિ’
કિચ્ચિત્=રિમપિ વસ્તુ ‘ અપ્પ વા ’ અપ્પ વા=સ્વલ્પમૂલ્યરૂપદિંનાદિક વા ‘ વહુ
વા ’ વહુ વ=વહુમૂલ્ય રત્નાદિક વા ‘ અણુ વા ’ અણુ વા=પ્રમાણતો લઘુ મુક્તા
ફલાદિક વા, ‘ થૂલ વા ’ થૂલ વા=પ્રમાણત થૂલ ઝાણાદિક વા, અત્ર સર્વત્ર
ચ શબ્દો વાચ્યરૂઃ, ‘ તસથાવરકાયદઘ્વજાય ’ ત્રયસ્થાવરકાયદ્રવ્યજાત=ત્રય-
ત્રસકાય=શિષ્યાદિક ત્રસાવરકાય=રત્નાદિક, તદ્વપ દ્રવ્યજાત ‘ મણસા પિ ’ મન

અવ મૂત્રકાર ત્રય સ્થાવરત્રિવચક અપરિગ્રહ કા વર્ણન કરતે હૈં—
‘ જત્ય ન કપ્પડ ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(જત્ય) જિમ પરિગ્રહવિરમણરૂપ અતિમચરમસવરદ્વારમે સ્થિત
સાધુ કો (ગામાગરનગરચેટકવ્વહમહવદોણમુહપટ્ટણાસમગય ચ) ગ્રામ,
આકર, નગર, ચેટ, કર્વટ, મહવ, દોણમુલ, પત્તન ઓર આશ્રમ, ડનમે
રવલો હુઈ, ખૂલી હુઈ, પઢી હુઈ (કિંચિ ચિ) કુલ્લ ખી ચીજ (અપ્પ વા)
ચાહે વજ કોઢી આદિ જૈસી અલ્પમૂલ્યવાલી હો (વહુ વા) ચાહે રત્ના-
દિક જૈસી વહુમૂલ્યવાલી હો (અણુ વા) ચાહે છોટી હો (થૂલ વા)
ચાહે વઢી હો, (તસથાવરકાયદઘ્વજાય) ચાહે ત્રય, સ્થાવરકાયરૂપ
દ્રવ્ય જાત હો—શિષ્યાદિક ત્રસકાય હૈ, રત્નાદિક સ્થાવરકાય હૈં’ ઉન્હે

હવે મૂત્રકાર ત્રય સ્થાવર સખધી અપરિગ્રહતુ વર્ણન કરે છે—

‘ જત્ય ન કપ્પડ ’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—‘ જત્ય ’ જે પરિગ્રહ વિરમણરૂપ અતિમ સવરદ્વારતુ આરાધન
ગત સાધુને “ ગામાગરનગરચેટકવ્વહમહવદોણમુહપટ્ટણાસમગય ચ ” ગ્રામ,
આકર નગર, ચેટ, કર્વટ, મહવ, દોણમુલ, પત્તન અને આશ્રમ, તેમા
રાખેલી, ભૂલથી પડી રહેલી, પડી રહેલી “ કિંચિ પિ ” ડોઢ પણ ચીજ
“ અપ્પ વા ” ભલે તે ડોઢી આદિ જેવી નણી કીમતની હોય, “ વહુવા ”
ભલે તે રત્નાદિ બહુ મૂલ્યવાન હોય, “ અણુ વા ” ભલે નાની હોય,
“ થૂલ વા ” તે મોટી હોય, ‘ તસથાવરકાયદઘ્વજાય ” ભલે ત્રય, સ્થાવરકાય
રૂપ દ્રવ્ય જાત હોય—શિષ્યાદિક ત્રયકાય ગણાય છે, રત્નાદિક સ્થાવરકાય ગણાય

‘તસસ્થાસાદિ વિષયકાપરિગ્રહ ધર્મયતિ—‘ઉત્થ ન ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલ—જત્થ ન કપ્પઈ ગામાગરણગર—સેડકઢ્વડમડવ-
 દોળમુહપટ્ટણાસમગય ચ કિંચિ અપ્પ વા વહુ વા અણુ વા
 થૂલ વા તસથાવરકાયદઢ્વજાયં મણસા વિ પરિઘેત્તુ ન
 ધનહિરણસુવણ્ણસેત્તવત્થુ, ન દાસીદાસ—ભયક —પેસહય
 ગયગવેલગ વા, ન જાણજુગસયણાસણાઈ, ન છત્તક,
 ન કોડિક, નોવાણહ, ન પેહુણવીયણતાલિયટગા, ણ યાપિ
 અયતત્તયતવસીસગકસરયય—જાયરૂવમાણિમુત્તાહરિપુડંગ-
 સઘદતમણિસિગસેલકાયવરચેલચમ્મપત્તાઈ મહારિહાઈ પર-
 સ્મ અજ્ઞોવવાયલોભજણાઈ પરિકઢ્ઠિઉ ગુણવઓ, ન યાવિ
 પુપ્ફફલકદમૂલાદિકાઈ સણસત્તરસાઈ સઘ્વધણાઈ તીર્હિ
 વિ જોગેહિ પરિઘેત્તુ ઓસહમેસજ્ઞભોયણદ્વયાણ સજયાણં
 કિ કારણ અપરિમિયણાણદસણધરેહિ સીલગુણવિગયતવ-

કેવલ હનસે વિહીન હોકર વહુ ઉનકે દ્વારા પ્રતિપાદિત તત્ત્વોંમેં અપની પૂર્ણ અડિગ શ્રદ્ધા રહે । પ્રભુને જો યહા પર એક આદિસે લેકર તેતીસ તક કે સહ્યાસ્થાન કહે હૈ, ઉનમેં તથા અવિરતિ આદિ જો ઓર બી સ્થાન કહે હૈ ઉનમેં નિ શક્તિ ભાવસે શ્રદ્ધા કરની ચાહિય, તમી જા કર વહ સચ્ચા શ્રમણ કહલા સકતા હૈ । હત્યાદિ વિષય કો પ્રતિપાદન કરતે હુય સૂત્રકારને હમ અપરિગ્રહરૂપ સવર દ્વારકી વિવેચના વૃક્ષકી ઉપમા સમતા લેકર કી હૈ ॥ સૂ૦ ૧ ॥

કરે કહત તેનાથી રહિત થઈ ને તે તેમના દ્વારા પ્રતિપ્રાદિત તત્ત્વોમા પોતાની પૂર્ણ તથા અડગ શ્રદ્ધા રાખે પ્રભુએ આહી જે એક આદિથી લઈને તેત્રીસ સુધીના સંખ્યાસ્થાન બતાવ્યા છે તેમનામા, તથા અવિરતિ આદિ જે બીજા પશુ સ્થાન બતાવ્યા છે તેમા નિ ગણિત ભાવથી શ્રદ્ધા રાખવી જોઈએ, ત્યારેજ તેને સાચો શ્રમણ કહી યજાય છે ઇત્યાદિ વિષયનુ પ્રતિપાદન કરતા સૂત્ર-૧૨ આ અપરિગ્રહ રૂપ સવરદ્વારને વૃક્ષની ઉપમા આપીને તેનુ વિવેચન કર્યું છે ॥ સૂ૦ ૧

सोऽपि परिग्रहीतु कल्पते । तथा न 'उपाणह' उपानहम्-उपलक्षणत्वात्पादुका-
मोजादिक चाऽपि परिग्रहीतु न कल्पते, तथा-न 'पेहुणवीयणतालियटगा' पेहुण
व्यजनतालवृन्तरूपाणि, पेहुण=मयूरपिच्छम्, व्यजन=यज्ञादि निर्मितम्, ताल
वृन्तरू=तालपानिर्मित व्यजनम्, एतानि 'पग्गा' इति भाषाप्रसिद्धानि, एषामि
तरेतरयोगद्वन्द्वः तानि मनसापि परिग्रहीतु न कल्पन्ते, तथा-'ण यावि' न
चापि 'अयतउयतयसीस-रययजायस्समणिमुत्ताहारपुटगसव्वदत्तमणिसिगसेल-
कायवरचेलचम्मपत्ताड' अयत्तपुताससीसकास्यरजतजातरूपमणिमुत्ताहारपुटक-
शद्वदत्तमणिशृङ्गशैलकाचरचेलचर्मपात्राणि, तत्र = अयो = लोहः, त्रपु=त्रयम्,
'कथीर' 'रागा' प्रति प्रसिद्धम्, ताम्र=प्रसिद्धम्, सीस='सीसा' इति प्र-
सिद्धम्, कास्यम्=त्रपुताम्रसयोगज द्रव्यम्, रजतम्='चान्दी' प्रसिद्धम्, जात-
रूपम्=सुवर्णम्, मणयः=इन्द्रनीलाद्याः, मुक्ताः=मुक्ताफलानि, हारपुटक=लोह-
विशेषः, शङ्ख=प्रसिद्धः, दन्तमणिः=गजमस्तकसमुत्पन्नोमणि, शृङ्ग=हरिणप्रभृतीना

कमण्डलु भी वह नहीं रखता है । (नोवाणह) जूते, खडाऊँ आदि भी
वह रखने की इच्छातक नहीं करता है । (न पेहुण वीयण तालियटगा)
पेहुणमयूरपिच्छ, वरुण शलाकादिनिर्मित वीजना, तालपत्र निर्मित व्यजन
-पखा, उन्हें भी वह रखने की मन से भी चाहन नहीं करता है । (ण
यावि अय-तउय-तवसीस-कस-रयय-जायरूव-मणि-मुत्ता-हार-पु-
टग-सव-दत्त-मणि-सिग-सेल-कायवर-चेल-चम्म-पत्ताड गुणवओ
परिकङ्खिड) लोहे का पात्र, त्रपु-रागा या पात्र, तावे का पात्र, सीसा
का पात्र, कासे का पात्र, चादी का पात्र, सुवर्ण का पात्र, इन्द्रनील आदि
मणि का पात्र, मुक्ताफल-मोती का पात्र, हारपुटक-लोहविशेष का
पात्र, शङ्ख का पात्र, गजमोती का पात्र, हरिण आदि पशुओं के शृंग

पाणी आदि गणवा भाटे कम उजने पणु ते राणी रास्ता नथी "नो वाणह"
जडा, आदि राभवानी ते छ्छा पणु उता नथी "न पेहुणवीयणतालि
यटगा" पेहुण-मयूरपिच्छ, वरुण शलाकादि निर्मित विजण्णो, तालपत्र निर्मित
पणो, तेमने राभवानी ते मनथी पणु ते छ्छा करता नथी "ण यावि अय-
तउय-तव-सीस-कस-रयय-जायरूव-मणि-मुत्ता-हार पुटग-सव-दत्त-मणि-सिग-
सेल-कायवर-चेलचम्म-पत्ताड गुणवओ परिकङ्खिड" बोढानु पात्र, त्रपु-रागानु
पात्र, ताणानु पात्र, मीणानु पात्र, ज्ञाणानु पात्र, आदीनु पात्र, मोनानु पात्र,
इन्द्रनील आदि मण्डितु पात्र, मोतीनु पात्र, हारपुटक-लोहविशेषनु पात्र,
गजमोतीनु पात्र, गणनु पात्र, हरिण आदि पशुमोना शिगडानु पात्र,

સાડપિ પરિવેત્તુ ' પરિગ્રહીતુ ' ન કપ્પઃ ' ન વલ્પતે ઇમમેવાર્થે ત્રિગદયતિ, ' ત્રિ
 પ્ણસુવર્ણસેત્તવત્તુ ' ત્રિવર્ણસુવર્ણક્ષેત્રવસ્તુ મનસાડપિ પરિગ્રહીતુ ન વલ્પતે, તથા-
 ' દાસીદાસભયરૂપેસહયગયગવેલગ તા ' દામીદાસમૃતરૂપેન્યત્યગજગવેલક તા,
 દામીદાસ=પ્રસિદ્ધમ્, મૃતકાઃ=વેતન ટૂટીત્વા કાર્યસ્ત્રાઃ, પ્રેવ્યા-પ્રાર્યે સમુપ
 સ્થિતે ગ્રામાતરે પ્રેવણીય મૃત્યા, હયાઃ=અશ્વાઃ, ગજાઃ પ્રસિદ્ધાઃ, ગવેલકાઃ=
 મેવાઃ પથા સમાદાર ડન્દ, મનસાડપિ પરિગ્રહીતુ ન વલ્પતે, તથા- ' જાણજુગ
 સયણામણાડ ' યાન યુગ્યશયનાસનાનિ, યાન=સ્વાદિશ્ચ, યુગ્ય=વાહનમાત્રમ્,
 શયન=શય્યા, આસન=પ્રસિદ્ધમ્, ણ્તાનિ મનસાપિ પરિગ્રહીતુ ન વલ્પતે । તથા-
 ' ન છત્તક ' ન છત્રમ્=ન ડનમ્, ' ન કોઢિકા ' ન કુઢિકા=રમણ્ડલ. મન

(મનસા વિ પરિવેત્તુ ન કપ્પઃ) સાધુ કો મન સે બી ગ્રહણ કરના
 યોગ્ય નથી છે । અત્ર ઇમ્નો વિષયકો સૂત્રકાર વિષદષ્ટ્વ સે સમજાવે છે-
 જો અપરિગ્રહી સાધુ છે તો (ન ધનત્રિવર્ણસુવર્ણસેત્તવત્તુ) ત્રિ
 વર્ણ, સુવર્ણ, ક્ષેત્ર, વસ્તુ તથા (ન દાસીદાસ ભયરૂ-પેસ-હય-ગય-ગ
 વેલગત) દાસી, દાસ, મૃતક, પ્રેવ્ય, હય, ગજ, ગવેલક તથા- (ન જાણ
 જુગસયણામણાડ) યાન, યુગ્ય, શયન, આસન, એ ત્રય વસ્તુનું મન
 સે બી ધારણે યોગ્ય નથી થોતી છે । ગ્રામાદિક શબ્દો બી વ્યાખ્યા
 પછિ સ્વર દ્વારો મેં કી જા ચુકી છે । વેતન લેકર જો કામ કરતે હૈં
 વે મૃતક કહલાતે હૈ । તથા કાર્ય આને પર જો ડસકે નિમિત્ત વાહર
 ગાંવ મેજે જાતે તે વે પ્રેવ્ય કહલાતે હે । ગવેલક નામ મેવ કા હૈ । રથ
 આદિ યાન ઓર વાહનમાત્ર યુગ્ય હૈ । ઇસી તરહ (ન છત્તક) વૃષ્ટિવા
 રણ કરને કે લિયે છત્ર કો, (ન કોઢિક) પાની આદિ રાખને કે લિયે

છે, તેમને “મનસા વિ પરિવેત્તુ ન કપ્પઃ” મનથી ગ્રહણ કરવાનું સાધુને માટે
 યોગ્ય નથી હવે એ જ વિષયને સૂત્રકાર વિસ્તારથી સમજાવે છે-જે સાધુ અપ
 રિગ્રહી છે તેણે “ ન ધનત્રિવર્ણસુવર્ણસેત્તવત્તુ ” ત્રિવર્ણ, સુવર્ણ, ક્ષેત્ર, વસ્તુ
 તથા “ ન દાસીદાસ ભયરૂ-પેસ-હય-ગય-ગવેલગત ” દાસ, દાસી, મૃતક, પ્રેવ્ય
 હય, ગજ, ગવેલક તથા “ ન જાણજુગસયણામણાડ ” યાન, યુગ્ય શયન,
 આસન, એ બધી વસ્તુઓ મનથી પણ ધારણે યોગ્ય હોતી નથી ગ્રામાદિક
 શબ્દોની વ્યાખ્યા આગળના સ્વરદ્વારોમા આપવામા આવી છે પણાર લઈને
 કામ કરનારને “મૃતક” નોકર હો છે તથા કામ પડતા જેમને કાર્યને
 નિમિત્તે બહાર ગામ ચોડલાય છે તેમને, ‘પ્રેવ્ય’ (હય) કહે છે થોડાને
 ગવેલક કહે છે રથ આદિ યાન અથવા દરેક વાહનને “યુગ્ય” કહે છે એ
 જ પ્રકારે “ ન છત્તક ” તડકાથી અથવા માટે છત્રને તથા “ ન કોઢિક ”

पुनरप्यल्पनीयानि प्रदर्शयति—‘ जपि य ’ इत्यादि ।

मूलम्—जपि च ओदाणकुम्मासगंजतप्पण-मथु-भज्जिय-
पलल-सूपसकुलि वेढिम वरिसोलग-चुण्णकोसग-पिड सिंह-
रिणीवट्ठग-मोयक-खीर-दहि-सप्पि नवणीय-तिह-गुड-खड-
मच्छंडिय-मधु-खज्जक-वज्जण-विहिमाडय पणीय उवस्सए
परघरे रण्णे वा न कप्पइ तपि सनिहीकाउ सुवि-
हियाण, ज पिय उद्धिट्ठविय रडयग पज्जवजायपकिण्णपा-

अपने मूलगुणों की रक्षा करना चाहता है तो ग्राम आदि स्थानों में पड़ी हुई, भूली हुई, रसी हुई, किसी भी वस्तु को चाहे वह थोड़ी हो, बहुत हो, कीमती हो या कीमती न भी हो, उठाने का विचार तक भी नहीं करे । इसी तरह वह धातु की किसी भी वस्तु को ग्रहण करने की भी इच्छा न करे । दासीदास आदि रूप किसी भी प्रकार का वह परिग्रह रखने का विचार तक भी न करे । न वह औषध भैषज्य और आहार आदि के निमित्त फल पुष्पादिकों को अपने उपयोग में लावे । समस्त प्रकार के सचित्तपदार्थों का उसको तीनकरण तीनयोगों से परित्याग कर देना चाहिये । क्यों कि ऐसे पदार्थ ज्ञानियों ने जीवों की उत्पत्ति के योनि भूत कहे हैं । मयूरपिच्छ आदि का भी उसे रखने का प्रभु का आदेश नहीं है । लोहे वस्त्र आदि के पात्र को भी उसको रखना साधु-चर्या में कल्पित नहीं है ॥ सू-२ ॥

छोनी रक्षा करवा भागतो होय तो ग्राम आदि स्थानोभा पडेवी, लूथवी रही गयेली, भूडेली जाध पणु वन्तुने-लखे ते नानी होय डे भोटी होय, कीमती होय डे कीमती पणु न होय, उपाडी देवानो विचार पणु करवो लेछ्छे नही छे न प्रभाछे तेछे धातुनी डोछ्छे पणु वन्तुने अडछ्छे कवानी पणु धिछ्छा करवी लेछ्छे नही दासदासी आदि डोछ्छे पणु प्रकारनो पग्ग्रिअ गणवानो तेछे विचार पणु करवो लेछ्छे नही तेछे औषध, भैषज्य अने आहार आदिने निमित्त इण, पुष्प आदिने पोताना उपयोगमा लेवा लेछ्छे नही समस्त प्रकारना सचित्त पदार्थोने तेछे त्रछे योगथी पग्ग्रियाग करवो लेछ्छे करणु डे ओवा प ओनो ज्ञानीओछे छेपानी उत्पत्तिनो स्वानइय-योनीउप गताव्या छे मयूरपिच्छ आदि राणवानो पणु प्रभुनो आदेश नथी लोडु, -वस्त्र आदिना पात्र गणवा ते पात्र साधुने उच्यतु नथी ॥ सू २ ॥

માન્યૈઃ, એતાદૃશૈઃ 'જિણવરેદિદિ' જિણવરેન્દ્રે = જિનાઃ = અધિજ્ઞાનમનઃ પર્યય-
જ્ઞાનધરાશ્ચક્રસ્યજિના, તેષુ યરાઃ = શ્રેષ્ઠાઃ કેવલિનસ્તેપામિન્દ્રાસ્તીર્યકર નામ
કર્મોદયવર્તિત્વાદ્યેતે તૈ 'એસ' એવા = પુષ્પફલકન્દમૂળાદિસર્વમાન્યરૂપા 'જોણી'
યોનિરૂપત્તિસ્થાનમ્, 'જણાણ' જગતામ્ = પ્રાણિના 'દિટ્ઠા' દૃષ્ટા કેવલજ્ઞા
નેન, તસ્માત્-કારણત્વેર્પા પ્રાણિના 'ન કપ્પઈ' ન કપ્પતે 'જોણીયમુચ્છિદોત્તિ'
યોનિસમુચ્છેદઃ ઇતિ = યોનિમ્મમ્ ઋર્જુમિતિ, 'દિ' ગત્- 'તેણ' ન હેતુના
એતાનિ પુષ્પફલાદિ સર્વમાન્યાનિ 'સમણસોઘા' શ્રમણસિંહા શ્રમણેષુ સિંહાઃ
મુનિશ્રેષ્ઠાઃ 'વજ્જેતિ' વર્જયન્તિ-ન સઘટ્ટયન્તિ ॥ ૪૦ ૨ ॥

લોચમહિર્ણિ) ત્રીનો લોકોં મેં માન્ય નેસે (જિણવરેદિ જિણવરેન્દ્રોને-
અધિજ્ઞાની ઓર મન. પર્યયજ્ઞાનીરૂપ ડ્રાસ્યજિનોં મેં શ્રેષ્ઠ જો કેવલી
ભગવાન હે, ડનકે મી તીર્થકર નામકર્મ કે ઉદય સે યુક્ત હોને કે કારણ જો
હન્દ્ર વને હુળ હૈ એસે જિણવરેન્દ્રોં ને (અમ) ચે પુષ્પ, ફલ, કન્દ, મુલ, આદિ
સર્વધાન્ય (જણાણ જોણીદિટ્ઠા) જીવોં કી ઉત્પત્તિસ્થાન હોને સે યોનિ
રૂપ દેસે હ. ડસલિચે સકલ સયમી જન કો (ન કપ્પઈજોણી સમુચ્છિ
દોત્તિ) જીવોં કી યોનિરૂપ પુષ્પફલાદિકોં કા ધ્વસ કરના કપિત નહીં
હૈ. (તેણ હિ) ડસલિચે ચે પુષ્પફલાદિ સમસ્ત ધાન્ય (સમણસિંહા)
મુનિસિંહોં કે લિચે (વજ્જેતિ) વર્જનીય હૈ અતઃ ડસી કારણ વે ડનકી
સઘટ્ટના નહીં કરતે હૈ.

માર્થ—ઇસ પરિગ્રહવિરમણરૂપ અન્તિમ મયરદ્વાર મે સૂત્રકાર ને
સકલ સયમી અપરિગ્રહી શ્રમણ કે લિચે યહ કહા હૈ કિ વહ યદિ

દેદિ " જિણવરેન્દ્રોએ-અધિજ્ઞાની અને મન પર્યયજ્ઞાનીરૂપ છત્રસ્થ જિનોમા
શ્રેષ્ઠ જે ઉપલી ભગવાન છે, તેમના પશુ તીર્થકર નામકર્મના ઉદયથી યુક્ત
હોવાને કારણે જેઓ ધન્દ્ર બન્યા છે એવા જિણવરેન્દ્રોએ " એસ " તે પુષ્પ,
ફળ, કન્દ, મૂળ આદિ સર્વ ધાન્યને " જણાણ જોણી દિટ્ઠા " એવાનું ઉત્પત્તિ
સ્થાન હોવાથી યોનિરૂપે દેખ્યા છે તે કારણે સકલ સયમી જને " ન કપ્પઈ
જોણીસમુચ્છિદોત્તિ " એવાની યોની રૂપ પુષ્પ, ફળ/આદિનો ધ્વસ કરવો
હત્પતો નથી " તેણ હિ " તે જ કારણે પુષ્પ, ફળ આદિ સમસ્ત ધાન્ય
" સમણ સિંહા " ગ્રિહ સમાન મુનિઓને માટે " વજ્જેતિ " ત્યાગ કરવાને
ચોગ્ય બતાવ્યા છે, તો તે જ કારણે તેઓ તેમને ગ્રહણ કરતા નથી.

ભાવાર્થ—આ પરિગ્રહ વિરમણરૂપ અન્તિમ મયરદ્વારમાં સૂત્રકારે સકલ
સયમી અપરિગ્રહી સાધુને માટે તે બતાવ્યું છે કે જે તે ચોતાના મૂળથી

पुनरप्यक्षरपनीयानि प्रदर्शयति—‘ जपि य ’ इत्यादि ।

मूलम्—जपि च ओदाणकुम्मासगंजतप्पण-मथु-भज्जिय-
पलल-सूपसकुलि वेढिम-वरिसोलग-चुण्णकोसग-पिड सिह-
रिणीवट्ठग-मोयक-खीर-दहि-सप्पि नवणीय-तिह-गुड-खड-
मच्छडिय--मधु--खज्जक--वज्जण--विहिमाडय पणीय उवस्सए
परघरे रण्णे वा न कप्पड तपि सनिहीकाउ सुवि-
हियाणं, ज पिय उद्धिट्ठविय रइयग पज्जवजायपाकिण्णपा-

अपने मलगुणों की रक्षा करना चाहता है तो ग्राम आदि स्थानों में पड़ी हुई, भूली हुई, रखी हुई, किसी भी वस्तु को चाहे वह थोड़ी हो, बहुत हो, कीमती हो या कीमती न भी हो, उठाने का विचार तक भी नहीं करे । इसी तरह वह धातु की किसी भी वस्तु को ग्रहण करने की भी इच्छा न करे । दासीदास आदि रूप किसी भी प्रकार का वह परिग्रह रखने का विचार तक भी न करे । न वह औषध भेषज्य और आहार आदि के निमित्त फल पुष्पादिकों को अपने उपयोग में लावे । समस्त प्रकार के सच्चित्तपदार्थों का उसको तीनकरण तीनयोगों से परित्याग कर देना चाहिये । क्यों कि ऐसे पदार्थ जानियो ने जीवों की उत्पत्ति के योनि भूत कहे हैं । मयूरपिच्छ आदि का भी उसे रखने का प्रभु का आदेश नहीं है । लोहे वस्त्र आदि के पात्र को भी उसको रखना साधु चर्या में कल्पित नहीं है ॥ सू-२ ॥

छोनी रक्षा करवा भागतो होय तो ग्राम आदि स्थानोंमा पड़ेयी, भूलधी रह्यी गयेली, भूदेली डोछ पणु वस्तुने-लवे ते नानी होय के मोटी होय, कीमती होय के कीमती पणु न होय, उपाडी लेवानो विचार पणु करवो जेधजे नही जे न प्रभाजे तेजे धातुनी डोछ पणु वस्तुने अडणु करवानी पणु धिच्छा करवी जेधजे नही दामदानी आदि डोछ पणु प्रकाशो परिअड राखवानो तेजे विचार पणु करवो जेधजे नही तेजे औषध, भेषज्य जेने आहार आदिने निमित्त इण, पुष्प आदिने पोताना उपयोगमा लेवा जेधजे नही समस्त प्रकारना सच्चित्त पदार्थोने तेजे त्रेजे योगथी परित्याग करवो जेधजे करणु के जेवा पदार्थोना जानीओजे ओपानी उत्पत्तिना स्थानइय-थोनीउप पाताव्या छे मयूरपिच्छ आदि राखवानो पणु प्रभुनो आदेश नथी दोहु, -वस्त्र आदिना पात्र राखवा ते पणु साधुने उटपतु नथी ॥ सू २ ॥

માન્યૈઃ, એતાદૃશે ' જિણવરિંદેહિં ' જિણવરેન્દ્રે = જિનાઃ = અધિજ્ઞાનમનઃ પર્યય-
જ્ઞાનધરાશ્ચન્નસ્થજિનાઃ, તેષુ યસાં = શ્રેષ્ઠાઃ કેવલિનસ્તેષામિન્દ્રાસ્તીર્યકર નામ
કર્મોદયવર્તિત્વાદ્યેતે તૈ ' ંસ ' ંસા = પુષ્પફલકન્દમૂળાદિર્મયગ્રાન્યરૂપા ' જોણી '
યોનિરૂપત્તિસ્થાનમ્, ' જણાણ ' જગતામ્ = પ્રાણિના ' દિટ્ઠા ' દૃષ્ટા કેવલજ્ઞા
નેન, તસ્માત્-કારણત્તેષાં પ્રાણિના ' ન કપ્પઈ ' ન ક્વપતે ' જોણીમમુચ્છિદોત્તિ '
યોનિસમુન્દેદ' ઇતિ = યોનિશ્ચયસંસ્કૃતિમિતિ, ' હિ ' યત્- ' તેણ ' ન હેતુના
એતાનિ પુષ્પફલાદિ સર્વધાન્યાનિ ' સમણસોઠા ' શ્રમણમિદ્ધા શ્રમણેષુ સિદ્ધાઃ
મુનિશ્રેષ્ઠાઃ ' વજ્જેતિ ' વર્જયન્તિ-ન સઘટ્ટયન્તિ ॥ મ્ ૨ ॥

લોયમહિર્ણિ) ત્રીનો લોકોં મેં માન્ય જેસે (જિણવરેન્દ્રે જિણવરેન્દ્રોને-
અવધિજ્ઞાની ઓર મન. પર્યયજ્ઞાનીરૂપ ડગ્ગરજિનોં મેં શ્રેષ્ઠ જો કેવલી
ભગવાન હૈ, વનકે મી તીર્થકર નામકર્મ કે ઉદય સે યુક્ત હોને કે કારણ જો
હન્દ્ર વને હુગ હૈ જેસે જિણવરેન્દ્રોં ને (ંસ) યે પુષ્પ, ફલ, કન્દ, મુલ, આદિ
સર્વધાન્ય (જણાણ જોણીદિટ્ઠા) જીવોં કી ઉત્પત્તિસ્થાન હોને સે યોનિ
રૂપ દેસે હૈ । ઇસલિયે સકલ સયમી જન કો (ન કપ્પઈજોણી સમુચ્છિ
દોત્તિ) જીવોં કી યોનિરૂપ પુષ્પફલાદિકોં કા ધ્વસ કરના કલ્પિત નહીં
હૈ । (તેણ હિ) ઇસલિયે યે પુષ્પફલાદિ સમસ્ત ધાન્ય (સમણસિદ્ધા)
મુનિસિદ્ધોં કે લિયે (વજ્જેતિ) વર્જનીય હ અત ઇસી કારણ વે ઇનકી
સઘટ્ટના નહીં કરતે હૈ ।

ભાવર્થ—ઇસ પરિગ્રહવિરમણરૂપ અન્તિમ સવરદ્વાર મેં સુત્રકાર ને
સકલ સયમી અપરિગ્રહી શ્રમણ કે લિયે યહ કહા હૈ કિ વહ યદિ

દેહિં " જિણવરેન્દ્રોએ-અવધિજ્ઞાની અને મન પર્યયજ્ઞાનીરૂપ છત્રસ્થ જિનોમા
શ્રેષ્ઠ જે કવલી ભગવાન છે, તેમના પશુ તીર્થકર નામકર્મના ઉદયથી યુક્ત
હોવાને કારણે જેઓ ઈન્દ્ર ધન્યા છે એવા જિણવરેન્દ્રોએ " એસ " તે પુષ્પ,
ફળ, કદ, મૂળ આદિ સર્વ ધાન્યને " જણાણ જોણી દિટ્ઠા " જીવોતુ ઉત્પત્તિ
સ્થાન હોવાથી યોનિરૂપે દેખ્યા છે તે કારણે મક્કલ સયમી જને " ન કપ્પઈ
જોણીસમુચ્છિદોત્તિ " જીવોની યોની રૂપ પુષ્પ, જળ / આદિનો વ્યસ કરવો
હવ્વતો નથી " તેણ હિ " તેજ કારણે પુષ્પ, ફળ આદિ સમસ્ત ધાન્ય
" સમણ સિદ્ધા " મિહ સમાન મુનિઓને માટે " વજ્જેતિ " ત્યાગ કરવાને
યોગ્ય બતાવ્યા છે, તો તેજ કારણે તેઓ તેમને ગ્રહણ કરતા નથી

ભાવાર્થ—આ પરિગ્રહ વિરમણરૂપ અન્તિમ સવરદ્વારમા સૂત્રકારે સકલ
સયમી અપરિગ્રહી સાધુને માટે તે બતાવ્યું છે કે જો તે પોતાના મૂળથી

શક્તુલી='પુઢી' રૂતિ પ્રસિદ્ધા, વેષ્ટિમા='વેઢિમી' રૂતિ પ્રસિદ્ધા, વર્પોલકા='
 શ્વાધવિશેષા', ચૂર્ણકોશકાનિ=ચૂર્ણમૃતાઃ સોપનાકૃતિકા મલ્યભેદાઃ 'ગૂજા'
 'કચોરી' રૂતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા, પિષ્ટ='ગુહાદિપિષ્ટ', શિશ્વરિણી='શ્રીશ્વર
 રૂતિ પ્રસિદ્ધા, વર્તક='વઢા' રૂતિ ભાષા પ્રસિદ્ધમ્, મોદકા='મમિદ્ધા', ક્ષીર=
 દુગ્ધમ્, દધિ=પ્રસિદ્ધમ્, સર્પિ='ધૃતમ્', નવનીતમ્='મમલન' રૂતિ પ્રસિદ્ધમ્,
 તેલગુહ પ્રસિદ્ધમ્, શ્વડમ્='શ્વાડ' રૂતિ પ્રસિદ્ધમ્, મત્સ્યપિટકા='મિશ્રી' રૂતિ
 પ્રસિદ્ધા, મધુ=પ્રસિદ્ધમ્, એતે પદાર્થા આગરુર્માદિ દોષદૂષિતા સાધુભિર્વર્જનીયા ।
 તથા—શ્વાધકાઃ='શ્વાજા' રૂતિ ભાષા પ્રસિદ્ધા, વ્યજ્જનાનિ=તકાદોનિ-રસયુક્ત-
 શાસ્પદાર્થા ગા કઢી' આદિ ભાષા પ્રસિદ્ધાઃ, તેષાં યે વિધય-પ્રકારાઃ, એતેઽપિ
 સદોષા વર્જનીયા' । એપા ઢ્વન્ઢ, એને આદો યસ્ય તત્તથોક્તમ્, એવ ધિવ 'પળીય'
 પળીત=સ્નિગ્ધમગન ચ કારણ યિના ર્જનીયમ્ । એતસર્વ નિર્દોષમાપ-'ઉચ્ચસપ'

ભર્જિત—અગ્નિ મેં મુજેટુ જો મેટુ આદિ ધાન્ય—તિલપિષ્ટ, સુપ-
 મૂગ આદિ કી દાલ, શક્તુલી-પુઢી, વેષ્ટિમ-વેઢમી, વર્પોલકા-અક પ્ર-
 કાર કા શ્વાધવિશેષ, ચૂર્ણકોશક-કચોરી, ગૂજા, પિષ્ટ-ગુહ આદિ,
 શિશ્વરિણી-શ્રીશ્વર, વર્તક વઢા, મોદક લઢ્ઢ, ક્ષીર-દૂધ, સર્પિ-ધૃત, નવ-
 નીત-મમલન, તિલ, ગુહ, શ્વડ-શ્વાડ, મત્સ્યપિટકા-મિશ્રી, મધુ-શરદ
 યે પદાર્થ યદિ આધારુર્માદિ દોષસે દૂષિત હોં તો સાધુપુરુષોદ્વારા સદા
 વર્જનીયહોં શ્વાજા, તક આદિ વ્યજન, અથવા રસયુક્ત માક પદાર્થ જૈસે
 કઢીઆદિ, ત ગાદન મલ્ય પદાર્થોકે જો ઓર મી ભેદ હોતે હે વે સપ મી
 યદિ સદોષ હોં તો સાધુ કો વર્જનીય હે । તથા મોજ્ય યે ઓદનાદિ રૂપ
 સ્નિગ્ધ પદાર્થ નિર્દોષ મી હોં તો મી સાધુ વિના કારણ કે અપને ઉપ-
 યોગ મે ઢ્વન્ઢ નહીં લેના ચાહિયે ઓર ઢન સઘ નિર્દોષ મોજ્યપદાર્થો કા

શેઢેલ જવ, ઘઉં આદિ ધાન્ય, પલ્લ-ખાડેલ તલ, સુપ-મગ આદિની દાળ,
 શક્તુલી-યુગી, વેષ્ટિમ-વેઢમી, વર્પોલકા-એક પ્રકારનું ખાદ્ય, ચૂર્ણકોશક-કચોરી
 ગૂજા, પિષ્ટ-ગોળ આદિ શિશ્વરિણી=શિશ્વર, વર્તક-વઢા, મોદક લઢ્ઢ, ક્ષીર-
 દૂધ, ઢહી સાંપ-ધાં નવનીત-માખણ, તલ, ગોળ, શ્વડ-ખાડ, મત્સ્યપિટકા-
 મિશ્રી, સાંડ મધુ-મધ એ પદાર્થોને અધારુર્માદિ દોષથી દૂષિત હોય તો
 સાધુઓએ તેમને ત્યાગ કરવા યોગ્ય છે તથા દાઝ અને માસતો સર્વથા
 ત્યાગ્ય છે ખાત્ર, તક આદિ વ્યજન, અથવા રસયુક્ત શાક, ઢહી વગેરે
 પદાર્થ, તથા એ ભક્ષ્યપદાર્થોના ખીત્ર પણ્યે જે ભેદ હોય છે, તે પદાર્થો પણ્ય
 જે તે મદોષ હોય તો સાધુએ ત્યાગ કરવો જોઈએ તથા ભોજનને યોગ્ય તે
 ઓદનાદિ સ્નિગ્ધ પદાર્થ નિર્દોષ હોય તો પણ્ય સાધુએ કારણ વિના તેમને

ઓકરણપામિદ્વ મીસગકોયગડ પાહુડ વા દાળટ પુળળટપ-
ગડ સમળવળીમિગટ્ટ્યાપ વા વય પચ્છાકમ્મ પુરેકમ્મ
નિતિગમુદગમન્નિચયં અરિત્ત મોહર સયગાહ આહડ મટ્ટિ
ઓવલિત્તં અચ્છેજ્જ ચેવ અણિસિદ્ધ, જ ત તિહિમુ જળ્લેસુ
ઉસ્સવેસુ ય અતો વા વહિં વા હોજ સમળટ્ટ્યાપ ઠવિય
ઠવિય હિંસામાવજ્જસપઉત્તે ન કપ્પઈ તપિ ય પરિધેત્તું ॥સૂ.૩॥

ટીકા—‘જપિ ય’ ઇત્યાદિ ।

‘જપિ ય’ યદપિ ચ ‘ઓદળ-કુમ્માસ-ગજ-તપ્પણ-મથુ-ભજ્જિય-પલ્લ-મથુ-સ-
કુલિવેદિમ-વરિસોલગ-ચુળ્લ-કોસગ-પિંડ-સિહરિણી-વટ્ટ-ગ-મોયગ-સીર-દહિ-સપ્પિ-નવણીય-તિલ-
ગુડ-સંઢ-મન્ન-ઢિય-મથુ-ગજ-વજ્જ-વિહિમાદિય’ ઓદન-કુલ્માપ-ગ-અતર્પણ-મન્થુ-
-ભજિત-પ-પલ્લ-મથુ-પશ-કુલિવેદિમ-રોપ-આ-ચૂર્ણ-કોસ-ગ-પિંડ-સિહરિણી-વટ્ટ-ગ-મોદ-સીર-
-દહિ-સપ્પિ-નવણીય-તિલ-ગુડ-સંઢ-મન્ન-ઢિય-કામ-પુ-આ-અ-વજ્જ-ન-વિહિ-માદિ-કમ્, ત-
ઓદના-પ્રસિદ્ધા, કુલ્માપાઃ = માપાઈ-પત્તિ-સ્ત્રા મુદાદયો વા, ગજ્જઃ =
મોજ્યવિશેષ, તર્પણાઃ = સક્ત, મન્થુ = રદરાદિ-ચૂર્ણ, ભજિત = કેવળ-
ગ્નિ-પક્વ-ય-ગોધૂમ-ધાનાદિ-કમ્, પલ્લમ્ = તિલ-પિષ્ટમ્, સૂપ = મુદાદિ-દાલિ,

ફિર મો અકલ્પનીય વસ્તુઓ કો કહતે હૈ—‘જપિય’ ઇ.

ટીકાર્થ—(જપિ ય-ઓદળ-કુમ્માસ-ગજ-તપ્પણ-મથુ-ભજ્જિય-પલ્લ-સૂચ-સ-કુલિ-વેદિમ-વરિસોલગ-ચુળ્લ-કોસગ-પિંડ-સિહરિણી
વટ્ટ-ગ-મોયગ-સીર-દહિ-સપ્પિ-નવણીય-તિલ-ગુડ-સંઢ-મન્ન-ઢિય-
મથુ-ગજ-વજ્જ-ક-વજ્જ-વિહિમાદિય-પણીય) જો મી ઓદન-
માત, કુલ્માપ-માપ-સંઢ અથવા કુછ ૨ પકે હુણ મૂગ આદિ અન્ન
ગજ-મોજ્યવિશેષ તર્પણ-સત્ત, મથુ-વટ્ટ (વેર) આદિ કા ચૂર્ણ,

વળી બીજી પણ અડ-પનીય વસ્તુઓ સૂત્રકાર બતાવે છે—‘જપિય’ ઇત્યાદિ-

ટીકાર્થ—‘જપિય-ઓદળ-કુમ્માસ-ગજ-તપ્પણ-મથુ-ભજ્જિય-પલ્લ-મથુ-સ-
કુલિવેદિમ-વરિસોલગ-પિંડ-સિહરિણી વટ્ટ-ગ-મોયગ-સીર-દહિ-સપ્પિ-નવણીય-તિલ-
-ગુડ-મન્ન-ઢિય-મથુ-ગજ-વજ્જ-વજ્જ-વિહિમાદિય-પણીય ’ જે ઓદન-ભાત,
કુલ્માપ-માપ-સંઢ અથવા થોડું થોડું પડાવેલું મગ આદિ અન્ન, ગજ-
એક પ્રકારનું ભોજન, તપ્પણ-સૂત, મથુ-બોર આદિનું ચૂણ, ભજિત અગ્નિ-મા

स्वहस्तेनाशनादेर्ग्रहणमित्यर्थः, अयमपरिणताभिधानदोषोक्तः । दायकस्यदानेऽपरिणतत्वात् । तथा-आहट् 'आहृतम्=स्वपरग्रामादेः साध्वर्थमानीतमशनादिक्रमाहृतमुच्यते । तदुक्तम्—'सगामपरगामा आणिय आहट्ट होइ' ठाया—स्वग्रामपरग्रामादानीतमाहृत भवति । इति । तथा—'मट्टिओवलित्त' मृत्तिकोपलिप्तम्=मृत्तिकया, उपलक्षणत्वाज्जतुगोमयादिना चोपलिप्तं सद्यद्भृष्टिद्यदीयते तत्, उद्भिन्नमित्यर्थः । तथा 'अच्छेज्ज' आच्छेद्य, यदशनादिक स्वामी भृत्यादिभ्य आच्छिद्य साधुभ्यो ददाति तदशनादिक्रमाच्छेद्यम् । 'चेव' चैव-चकार पुनरर्थकः एवकारो निश्चयार्थः । 'अणिसिद्ध' अनुसृष्टम्=अनेकस्वामिक यदशनादिकम् एक एव ददाति तदनसृष्टम्, तथा—'ज त' यत्तदशनादिकम्, 'तिहिसु' तिथिषु=शरत्पूर्णिमादि तिथिषु 'जण्णेषु' यज्ञेषु=नागपूजादिषु 'उत्सवेसु य' उत्सवेषु च=इन्द्रोत्सवेषु च 'अतो व' अन्तर्वा=उपाश्रयस्याभ्यन्तरे वा, 'वहि

गाह) स्वयंग्राह हो-दाता ने जिसे न दिया हो किन्तु अपने ही हाथ से जो उठाकर ले लिया गया हो, (आहट) आहृत हो-स्व और पर के ग्राम आदि से जो साधु के निमित्त लाया गया हो, (मट्टिओवलित्त) मृत्तिकोपलिप्त हो जो आहार किसी कुम्भ आदि में रखकर मिट्टी से, गोबर से, तथा लाख आदि से बंद किया हुआ हो और देते समय उस मिट्टी आदि को हटाकर बाहर किया गया हो, (अच्छेज्ज चैव) अच्छेज्ज हो-भृत्यादिकों से छीनकर दाता जिसे साधु के लिये दे रहा हो-जिस आहार के अनेक स्वामी हो परन्तु एक ही व्यक्ति उसको साधु के लिये दे रहा हो, ऐसा आहार भी साधु को लेना कर्पता नहीं है । तथा (ज त) जो वह आहार (तिहिसु) शरत्पूर्णिमा आदि तिथियों के समय में (जण्णेषु) नागपूजादिक यज्ञों के समय में और

दीधो डाय पणु पोताने ज हाथे जे उठावी बीधो डाय, " आहट्ट " आहृत डाय-स्व अने पाण्डे ग्राम आदिभाथी जे साधुने निमित्ते लाववामा आओथो डाय, " मट्टिओवलित्त " मृत्तिकोपलिप्त डाय,-जे आहार कोछ पात्र आदिमा भूकीने भाटीथी, गोमयथी तथा लाख आदिथी गंध ढरेल डाय अने आपती वणते ते भाटी अदिने उण्णी गहार जढेल डाय, " अच्छेज्ज चैव " आच्छेद्य डाय-नोउर आदिजे पासेथी छीनवीने दाता जे साधुने माटे आपतो डाय जे आहारना भादिक अनेउ डाय पणु ओक ज व्यक्ति ते साधुने माटे आपी रही डाय, जेरो आहार पणु देवानु साधुने जपतु नथी तथा " जत " जे ते आहार " तिहिसु " शरत्पूर्णिमा आदि तिथिओना समये तथा " जण्णेषु "

પ્રાદિત્તમિત્યર્થ ' પચ્છાકમ્મ ' પશ્ચાત્કર્મ, પશ્ચાત્-દાનાન્તર કર્મ=ભાજનપ્રસા
 લનાદિ યત્નાશનાદૌ તત્, તથા ' પુરેકમ્મ ' પૂરાકર્મ = પૂરા = દાનાત્પૂર્વ કર્મ=
 હસ્તલાઘરાદિ યત્ન તથા-' નિતિગ ' નૈત્યિકમ્ = નિત્યપિંડ, દાતૃપોષણપ્રમા
 ણ વાડવસ્થિતમ્, ' ઉદગમક્ષિય ' ઉદકમ્પસિતમ્=ઉદકાદિના, આદિગચ્છાત્-
 સચિત્તપૃથિવીકાયાદિભિરચ્છુઘિતમ્, ઉક્તચ્છ " મક્ષિત્યમુદગાઙ્ગાઉજ્જુન્ન "
 ઇતિ । ' અરિત્ત ' અતિરિક્તમ્=દારિશ્ચ, કાલા આહારઃ પુરુષસ્ય કુસિપૂરકો
 ભવતિ, સ્ત્રિયશ્ચાપ્દારિશ્ચિતિ કમઠા, નપુસકસ્ય ચતુર્વિંશતિ કમઠા આહારઃ । તતો
 ડધિક આહારોડતિરિક્તમુચ્યતે । તથા-' મોહર ' મૌલરમ્=પૂર્વસસ્તવમાતાપિતાદિ
 પશ્ચાત્સસ્તવશ્વશુરશ્યાઢમાદિના સહ મૌલર્યેણ=મદુમાપિત્તેન ચલ્લભ્યતે, નડ્ડશના-
 દિક મૌલરમુચ્યતે । તથા ' સયગાહ ' સય ગ્રાહમ્=દાયકેનાદત્ત યદ્દુગ્ધતે તત્

યાચક જનો કો દેને કે પ્રયોજન સે યનાયા ગયા હો, ણેસા આહાર સાધુ
 કો છેના નહીં કલ્પતા હૈ । ડસી પ્રકાર જો આહાર (પચ્છાકમ્મ) પશ્ચાત્
 કર્મ સે યુક્ત હો, ઔર (પરેકમ્મ) પરાકર્મ સે યુક્ત હો, તથા (નિતિ
 ગમુદગમક્ષિય) નૈત્યિક-નિત્યપિંડ હો, અવવા-દાતા ને જિસે અપને
 યાને કે જિતના હી યનાયા હો, ઉદક મુક્ષિત હો-સચિત્ત ઉદક સે
 સચિત્ત પૃથિવીકાયા આદિ સે અચ્છુઘિત હો (અરિત્ત) અતિરિક્ત હો-
 પુરુષો કી અપેક્ષા સે વત્તીસ ગ્રાસ સે, ત્રિયોં કી અપેક્ષા અદ્દાર્ઠસ ગ્રાસ
 સે ઔર નપુસક કી અપેક્ષા ચોઈસ ગ્રાસ સે જો અધિક હો, વહ આહાર
 મી મુનિયોં કે લિયે કલ્પિત નહી હૈ । ડસી તરહ (મોહર) જો આહાર
 મૌલર હો-પૂર્વસસ્તવ માતાપિતા આદિ કે સાથ તથા પશ્ચાત્સસ્તવશ્વશુર
 શ્યાલક આદિ કે સાથ અધિક ઘાતચીત કરને સે પ્રાપ્ત હોતા હો, (સય

અથવા યાચકજનોને દેવાને માટે બનાવાયો હોય, એવો આહાર લેવો સાધુને
 કલ્પતો નથી એ જ પ્રમાણે જે આહાર " પચ્છાકમ્મ " પશ્ચાત્કર્મથી યુક્ત
 હોય અને " પુરેકમ્મ " પુરા કર્મથી યુક્ત હોય તથા ' નિતિગમુદગમક્ષિય "
 નૈત્યિક નિત્ય પિંડ હોય, અથવા દાતાએ જે પોતાને ખાતા જેટલો જ ખા
 વ્યો હોય, ઉદક મુક્ષિત હોય-અચિત્ત પાણીથી, મચિત્ત પૃથ્વીકાયા આદિથી
 અવાચુકિત હોય, " અરિત્ત " અતિરિક્ત હોય-પુરુષોની અપેક્ષાએ બત્રીસ
 ગ્રાસથી, સ્ત્રીઓની અપેક્ષાએ અઠ્ઠાવીસ ગ્રાસથી, અને નપુસકની અપેક્ષાએ
 ચોવીસ ગ્રાસથી જે વધારે હોય તો તે આહાર પણ મુનિઓને કલ્પતો નથી
 એ જ પ્રમાણે " મોહર " જે આહાર મૌલર હોય પૂર્વસસ્તવ માતા પિતા
 આદિની સાથે તથા પશ્ચાત્ સસ્તવ સસરા, સાળા આદિની સાથે અધિક વાત
 ચીત કરવાથી પ્રાપ્ત થતો હોય, " સયગાહ " સ્વયંગ્રાહ હોય-દાતાએ જે ન

વ ઓસહભેસજ્ઞભક્તપાણ ચ,ત પિ સણિહિકૃય । જં પિ
ય સમણસ્સ સુવિહિયસ્સ તુ પડિગ્ગહધારિસ્સ ભવ્ઙ, માયણ
મહોવહિ — ઉવગરણ—પરિગ્ગહો—પાયવધણ — પાયકેસરિયા
પાયટ્ટવણ ચ પડલાઙ્ગ તિણિ વરયત્તાણ ગોચ્છાઓ તિન્નિ ય
પચ્છાગા રઓહરણત્તોલેપટ્ટક મુલ્લણતગમાદીય ઇય પિ ય
સજમસ્સ ઉપવૂહણટ્ટયાએ વાવાચવદસમસગસીયપરિવલ્લણટ્ટ-
યાએ ઉવગરણ રાગદોસરાહિય પરિવહિયઠ્ઠ સજણ ણિચ્ચ
પહિલેહણપ્પફોહણપમજ્જણાએ અહો ય રાઓ ય અપ્પમત્તેણં
હોઙ્ગ સયયં નિલિલ્લવિયઠ્ઠ ચ ગિણિહિયઠ્ઠં ચ માયણમહોવહિ
ઉવકરણં ॥ સૂ૦ ૪ ॥

ટીકા—સપ્રતિ કીટશમશનાદિક કલ્પતે ? इत्याह—‘अह केरिसय ’ इत्यादि ।
‘अह ’ अयेति प्रमरणान्तरद्योतकः, अथ अकल्पनीयाहारकथनानन्तर
‘ केरिसय ’ कीटश ‘ त ’ तत्=अशनादिक ‘ कप्पइ ’ कल्पते परिग्रहीतुम् ? इत्याह
‘ ज त ’ यत्तत् ‘ एगारसपिंडवायसुद्ध ’ एकादशपिण्डपातशुद्धम्, एकादशमि
पिण्डपातै = आचाराद्द्वितीयश्रुतस्कन्धस्थितपिण्डैषणानामकप्रथमाभ्ययनस्य
विधिप्रतिपादकैरेकादशभिरुद्देशैः तत्रोक्तविधानैरित्यथ शुद्ध तत्रोक्तदोषवर्जितमि-

अथ सूत्रकार साधु को कैसा अशनादि कल्पता है ? सो कहते
हैं—‘अह केरिसय ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(અહ) પૂર્વોક્ત આહાર અકલ્પનીય હૈ તો (કેરિસય)
કિમ પ્રકાર કા આહાર સાધુ કો (કપ્પઈ) કલ્પતા હૈ ઇસ પર કહતે
હૈ (એગારમ્પિંડવાયસુદ્ધ જ ત) જો અશન ગ્યારહ પિણ્ડપાતોં સે શુદ્ધ
હો—અર્થાત્ આચારાદ્ધ કે દ્વિતીય શ્રુતસ્કન્ધ કે પિણ્ડૈષણા નામક પ્રથમ
અભ્યયન મેં વિધિપ્રતિપાદક જો ગ્યારહ ઉદ્દેશ હે ઇન સે જો આહાર

હવે સાધુને કેવા અનશનાદિ કલ્પે છે તે સૂત્રકાર કહે છે—“અહ કેરિસય” इत्यादि—

ટીકાર્થ—“अह” पूर्वोक्त आहार अकल्पनीय ८ तो “ केरिसय ” कथा
प्रकारનો આહાર સાધુને “ कप्पइ ” કલ્પે છે ? તો તે વિષે સૂત્રકાર કહે છે કે—
“ एगारसपिंडवायसुद्ध ज त ” ने आहार अगियार पिंडपातोथी शुद्ध होय
એટલે કે આચારાગના દ્વિતીય શ્રુતસ્કન્ધના પિંડૈષણા નામના પહેલા અભ્ય
યનમા વિધિ પ્રતિપાદક ને અગિયાર ઉદ્દેશ છે તેમના વડે ને આહાર શુદ્ધ

वा ' बहिर्वा = उपाश्रयाद् बहिर्वा ' समणद्वयाण ' श्रमणार्थतया = श्रमणनिमित्तमित्यर्थः, ' ठविय ' स्थापित ' होज्ज ' भवेत्, " हिंसासावज्जसपउत्त ' हिंसासावद्यसमयुक्तम् = हिंसया = पट्कायोपमर्दनं मायधेन = सदोषेण कर्मणा च समयुक्त ' तपि य ' तदपि च अशनादिक ' परिचेत्तु ' परिगृहीतुं ' न कप्पइ ' न कल्पते ॥ सू० ३ ॥

कोदशमशनादि कल्पते ? इत्याह—' अह केरिसय ' इत्यादि ।

मूलम्—अह केरिसय पुणो त कप्पइ ? जं त एगारसपिण्डवायसुद्ध किण्णणहणण-पयण-कयकारियाणुमोयण--नव-कोडीहि सुपरिसुद्ध दसहि य दोसेहि विप्पमुक्क उगम उप्पायणेसणाहि सुद्ध ववगयच्चुचवियच्चत्तदेह च फासुयं च ववगयसजोगमणिगालं विगयधूम छट्ठाणनिमित्त छक्कायपरिरक्खणट्ट हणि हणि फासुएण भिक्खेण वट्टियव्वं । ज पि य समणस्स सुविहियस्स रोगायके बहुप्पगारम्मि समुपन्ने वायाहिग — पित्तसिंभाइरित्तकुवियतहसणिवाए जाए तह उदयप्पत्ते उज्जलवलविउलकक्खडपगाढदुक्खे असुभक्कुडय फरुसचडफलविवागमहव्वभए जीवियतकरणे सब्बसरीर परितावणकरणे न कप्पइ । तारित्ते वि तह अप्पणो परस्स

(उस्सवेसु) इन्द्रोत्सवों के समय में तथा (अतो वा बहिं वा) उपाश्रय के भीतर अथवा उपाश्रय से बाहिर (होज्जसमणद्वयाए ठविय) भुनियो के निमित्त स्थापित कर रखा हो ऐसा वह (हिंसासावज्जसपउत्त) पट्कायोपमर्दनरूप हिंसा से एवं सदोष कर्म से समयुक्त अशनादि (न कप्पइ तपि य परिचेत्तु) वह भी आहार साधु को लेना नहीं कल्पता है । सू० ३ ।

नागपूजदिक यशोना समये अने " उस्सवेसु " इन्द्रोत्सवाने समये तथा " अतो वा बहिं वा " उपाश्रयनी अदर अथवा उपाश्रयनी गडार " होज्ज समणद्वयाए ठविय " भुनियोने भाटे शणी भूडेवा छाय ओवा ते " हिंसासावज्जसपउत्त " छक्काय उपमर्दनरूप हिंसाथी तथा सदोष कर्मथा युक्त अशनादि " न कप्पइ तपि य परिचेत्तु " ते आधार पण साधुने लेवा उटपतो नथी ॥ सू० ३ ॥

દિપોડશવિધા, ણપણા=દશવિધા, ણપામિતરેતરયોગદ્વન્દ્ તામિઃ, 'શુદ્ધ' શુદ્ધમ્, તથા-‘વવગયચુચચવિચચત્તદેહ ચ’ વ્યપગતચ્યુતચ્યાવિતત્યક્તદેહ ચ, તત્ર -વ્યપગતમ્=ઓષતશ્ચેતનાપર્યાનાદચેતનતત્ત્વ પ્રાપ્તમ્, ચ્યુતમ્=જીવનાદિક્રિયાભ્યો વિનિર્ગતમ્, ચ્યાવિતમ્ = ચેતનાપર્યાયેભ્યો પૃથક્કારિતમ્, તથા-ત્યક્તદેહમ્=ત્યક્તઃ=પરિત્યક્તો જીવેન દેહો यस્ય તત્ જીવસમ્પન્ધરહિતમિત્યર્થઃ, ણપા સમાહાર દ્વન્દ્ઃ, તદ્, ઉક્તાર્થ સ્પષ્ટયતિ-‘પ્રાસુચ ચ’ પ્રાસુક ચ=પ્રગતા અસવઃ પ્રાણા યસ્માત્તત્થોક્તમ્, તથા ‘વવગયસજોગ’ વ્યપગત-સયોગમ્=સયોજનાદોષવર્જિતમ્, ‘અર્ણિગાલ’ અનદ્ધારમ્=અદ્ધારદોષવર્જિતમ્, તથા-‘પ્રિગયમ્’ વિગત

ઉત્પાદન દોષો સે, તથા દગવિચ ણપણા દોષો સે જો શુદ્ધ હો, તથા- (વવગય ચુચચવિચચત્તદેહ ચ) જો આહાર વ્યપગત હો, ચ્યુત હો, ચ્યાવિત હો ઓર ત્યક્ત દેહ હો, અર્થાત્ વ્યપગત-સામાન્યરૂપ મેં જો ચેતના પર્યાય સે રહિત હોકર અચેતનત્વ અવસ્થા કો પ્રાપ્ત હુઆ હો-સચિત્ત ન હો કિન્તુ અચિત્ત હો, ચ્યુત-જીવનાદિ ક્રિયાઓ સે જો સર્વથા રહિત હો, ચ્યાવિત-ભૂત્યાદિ દ્વારા ચેતના પર્યાયોંસે પૃથક્ક કરાયા ગયા હો ઓર ત્યક્તદેહ-જીવ કે સમ્પન્ધ સે વિત્રીન હો । ડસી નાત કો સૂત્રકાર સ્પષ્ટ કરતે હૈં-(પ્રાસુચ) જિસ આહાર કો માધુ અપને ઉપયોગ મેં લેવે વહ પ્રાસુક હોના ચાહિયે । પ્રાસુક મેં “પ્ર” રહિત અર્થ ના યોધક હૈ, અસુ પ્રાણ ના વાચક હૈ-અર્થાત્-જો આહાર પ્રાણોં સે-જીવોં સે રહિત હોતા હૈ વહ પ્રાસુક હૈ । તથા (વવગયસજોગ) સયોજનાદોષ સે વહ આહાર રહિત હોના ચાહિયે । (અર્ણિગાલ) અગાર

સોજ પ્રકારના ઉત્પાદન દોષોથી, તથા દ્વા પ્રકારના એપણા દોષોથી જે શુદ્ધ હોય, તથા “વવગયચુચ-ચવિચચત્તદેહ ચ” જે આહાર વ્યપગત હોય, ચ્યુત હોય, ચ્યાવિત હોય, અને ત્યક્ત દેહ હોય, વ્યપગત એટલે સામાન્ય રીતે જે ચેતના પર્યાયથી રહિત થાને અચેતનત્વ અવસ્થા પામ્યો હોય-સચિત્ત ન હોય, ચ્યુત એટલે જીવનાદિ ક્રિયાઓથી સર્વથા ગહિત હોય તેવો, ચ્યાવિત એટલે નોડર આદિ દ્વારા ચેતના પર્યાયથી અલગ કરાવેલ હોય, ત્યક્ત દેહ-જીવના સમ્પન્ધથી ગહિત હોય, એવો આહાર માધુએ લેવો જોડએ એ જ વાતને સૂત્રકાર સ્પષ્ટ કરે છે-“પ્રાસુચ” જે આહાર માધુ પોતાના ઉપયોગ મા લે તે પ્રાસુક હોવો જોઈએ પ્રાસુકમા “પ્ર” ગહિત અર્થનો યોધક છે, “અસુ” પ્રાણનો યોધક છે, એટલે કે જે આહાર પ્રાણોથી-જીવોથી રહિત હોય છે તે પ્રાસુક આહાર કહેવાય છે તથા “વવગયસજોગ” સયોજનાદોષથી તે આહાર રહિત હોવો જોઈએ “અર્ણિગાલ” અગાર દોષથી રહિત

ત્યર્થઃ, ચત્તત્થા, તથા=કિણ્ણ હ્ણણપયણકયકારિયાણુમોયણાનવકોડીહિં 'કયણ
 હનનપચનકૃતકારિતાનુમોદનનવકોટિમિઃ, તત્ર-ત્રયણ=મૂલ્યેન ગ્રહણમ્, દનન=
 પ્રાણવિયોજનમ્, પચનમ્=અગ્નિના, ણ્ણા યાનિ કૃતકારિતાનુમોદનાનિ=સ્વય
 કરણ પરેણ કારણ દુર્વતોડનુમોદનમ્, તાન્યેવ નવકોટય = નવવિભાગાસ્તામિઃ
 'સુપરિસુદ્ધ' સુપરિશુદ્ધ=નિર્દોષમ્, તથા-'દસહિં ય દોસેહિ' દશમિથ દોષ
 શક્તિતાદિમિઃ, 'વિપ્પમુક્ક' વિપ્પમુક્ત=રહિતમ્, તથા-'ઉગ્ગમ-ઉપ્પાયણેમણાહિં'
 ઉદ્ગમોત્પાદનૈવણામિઃ તત્ર-ઉદ્ગમ =આધાર્કર્માદિઃ-પોહશત્તિઃ, ઉત્પાદના=ગત્યા-

શુદ્ધ હો, उन उद्गमों में जो आहार के दोष कहे गये हैं उनसे वर्जित
 हो, तथा (किण्ण-ह्णणपयणकय-कारियाणुमोयण-नवकोडीहिं सुप-
 रिसुद्ध) जो आहार कयण, हनन और पचन, की कृत्, कारित और
 अनुमोदनरूप नवकोटियों से परिशुद्ध हो, अर्थात् जो आहार स्वयं मूल्य
 देकर न खरीदा गया हो, दूसरो से मूल्य देकर न खरीदाया गया हो
 और न उसकी अनुमोदना की गई हो, ३ इसी प्रकार जिस आहार के
 निमित्त हनन-प्राणियों के प्राणों का विगोजन स्वयं न किया हो, दूसरों
 से न कराया हो और न इसकी अनुमोदना की गई हो ४, इसी तरह
 जो आहार अग्नि से स्वयं न पकाया गया हो, दूसरों से न पकाया
 गया हो और न इसकी अनुमोदना की गई हो ५, इन नव कोटियों
 से निर्दोष हो, तथा (दसहिं दोसेहिं विपपमुक्क) शक्ति आदि दश
 दोषों से जो रहित हो, तथा-(उगम-उपपायणेषणाहिं सुद्ध) आधा
 कर्म आदि सोलह प्रकार के उद्गम दोषों से-वाद्योदि सोलह प्रकार के

હોય, તે ઉદ્દેશોમા આહારના જે દોષો મતાવ્યા છે તેમનાથી રહિત હોય,
 તથા “ કિણ્ણ-હ્ણણપયણ-કયકારિયાણુમોયણનવકોડીહિં સુપરિસુદ્ધ ” જે
 આહાર કયણ, હનન અને પચનની કૃત, કારિત અને અનુમોદકરૂપ નવ પ્રકારે
 પરિશુદ્ધ હોય, એટલે કે જે આહાર જાતે કીમત આપીને ખરીદો ન હોય,
 બીજાએ મારફત મૂલ્ય આપીને ખરીદ કરાવાયો ન હોય, અને તેની અનુમોદના
 પણ ન કરાઈ હોય, એ જ પ્રમાણે જે આહારને નિમિત્તે હનન-પ્રાણીઓના
 પ્રાણોની હત્યા પોતે ન કરી હોય, બીજાની પાસે કરાવી ન હોય, અને તેની
 અનુમોદના પણ ન કરાઈ હોય, એ જ પ્રમાણે જે આહાર અગ્નિ વડે પોતે
 રાંધ્યો ન હોય, બીજા પાસે રાંધાવ્યો ન હોય અને તેની અનુમોદના પણ ન
 કરાઈ હોય, એ નવ પ્રકારે જે આહાર નિર્દોષ હોય, તથા “ દસહિં દોસેહિં
 વિપ્પમુક્ક ” શક્તિ આદિ દશ દોષોથી જે રહિત હોય, તથા “ ઉગ્ગમ-ઉપ્પા-
 યણેસણાહિં સુદ્ધ ” આધાર્કર્મ આદિ એણ પ્રકારના ઉદ્ગમ દોષોથી, ધાત્યાદિ

च औषधादि तदपि सनिधीकृत न कल्पते इत्येवमन्वयः कर्तव्यः, कस्य न कल्पते? इत्याह—‘समणस्स’ श्रमणस्य=साधोः, कीदृशस्य तु श्रमणस्य न कल्पते इत्याह—‘सुविहियस्स’ उ’ सुविहितस्य तु = शोभनानुष्ठानसम्पन्नस्य, कस्मिन् सति? इत्याह—‘बहुपगारम्मि’ बहुप्रकारे=अनेकप्रकारे ‘रोगायके’ रोगातङ्के=रोगो ज्वरादिः, आतङ्कः = सद्योघातीहृदयशूलदिः, अनयोः कर्मधारयः, तस्मिन् समुत्पन्ने’ समुत्पन्ने, रोगातङ्कानां बहुप्रकारत्वेन स्पष्टयति—‘वायाहियपित्तसिंभाहरित्तकुवियतहसणिवाए’ गताधिम्य पित्तश्लेष्मातिरिक्तकुपिततथासन्निपाते तत्र-वातधिम्य=वातस्याधिक्य=माचुर्यम्, तथा-पित्तश्लेष्मातिरिक्त-पित्तश्लेष्मणोरतिरेक=आधिक्य, तत् कुपितम्=कोपावस्था प्राप्तम्-कुपितवातपित्तकफानामाधिक्यमित्यर्थः, तयेति तत्राभूतः=एतन्नित्यरूपः सन्निपातस्तस्मिन्, जाते=समुत्पन्ने सति ‘तह’ तथा—‘उदयपत्ते’ उदयप्राप्ते=उदयावस्था प्राप्ते सति,

इन पूर्वोक्त छह स्थानरूप कारणों के ध्यान से पट्टकायके जीवों की रक्षा करते हुए साधु को भिक्षा वृत्ति करना चाहिये । तथा-(जपि य) जो औषध आदि है उनका भी सनिधि-संग्रह नहीं करना चाहिये सो कहते हैं-(समणस्स सुविहियस्स) सुविहित श्रमण के (बहुपगारम्मि रोगायके समुत्पन्ने) बहुत प्रकार के रोगातङ्क उत्पन्न होने पर, जैसे-(वायाहियपित्तसिंभाहरित्तकुवियतहसणिवाए) कुपितवात की अधिकता, कुपितपित्त और कुपितकफ की अधिकता हो तथा इन दोषों से अन्य उसे सन्निपात भी (जाए) हो गया हो, तथा ऐसा दुःख कि जो (उज्जललविउल कक्खड पगाददुस्खे) उज्ज्वल-सुख के लेशसे वर्जित हो, बल-बलवान् महाकष्टकारक हो, विपुल-आत्मा के प्रतिप्रदेश में नदी वेग की तरह प्रवर्द्धमान हो कर्कश-कठोर हो और प्रगाढ-प्रतिक्षण असमाधिजनक हो (तह) तथा ऐसे रोगातङ्क (उदयपत्ते)

माधुमे भिक्षावृत्ति करनी जेई ओ तथा “जपिय” जे औषध आदि गाधाय छे तेनो पणु सअइ न करवो जेई ओ ते भावतभा सूत्रज्जर उडे छे डे—
“समणस्स सुविहियस्स” सुविहित श्रमणने “बहुपगारम्मि रोगायके समुत्पन्ने” अनेक प्रकारना रोगो उत्पन्न थता, जेवा डे “वायाहियपित्तसिंभाहरित्तकुवियतहसणिवाए” कुपित वायुनी अधिकता, कुपित पित्त अने कुपित कफनी अधिकता होय तथा ओ दोषोथी, तेने सन्निपात पणु “जाए” थइ गये होय, तथा ओषु हुण डे जे “उज्जललविउलकक्खडपगाददुस्खे” उज्ज्वल-बल-लेश पणु सुख विनानु होय, अतिशय उष्टज्जर होय, विपुल-आत्माना प्रति प्रदेशमा नदीना वेगनी जेभ वधतु जतु होय, कर्कश-कठोर होय अने प्रगाढ-प्रतिक्षण असमाधि जनक होय “तह” तथा जेवा रोगातङ्क “उद

ધૂમ=ધૂમદોષપ્રજિતમ્, પતાદશમ્ ઝશનાદિક ગ્રહીતુ ચલ્પતે । સાધુભિઃ-૪૫ વર્તિ
તત્ત્વમ્ ? इत्याह—‘ उद्घाणनिमित्त ’ पट्टग्याननिमित्तम्=पट्टस्थानानि=आहार
कारणस्य पट्टकारणानि, तेषा निमित्त=पट्टकारणार्थमित्यर्थः । पट्टकारणानि=वेदन
=क्षुद्देदन वयादृश्य=शुश्रूषा, ईर्या=गमनम्, रायमरक्षा, प्राणधारण, धर्मचिन्तन
च उक्तञ्च—

“ वेयण वेयावच्चे, इरियद्वाए य सजमद्वाए ।

तह पाणवत्तियाए, छट्ट पुण धम्मचिन्ताए ॥ ” ॥ इति ॥

तथा—‘ उक्तायपरिरक्षणदृष्ट पट्टायपरिरक्षणार्थम्, ‘ हणि हणि ’ अह्न्य
हनि=प्रतिदिनम् ‘ फासुएण ’ प्रासुक्येन ‘ भिरयेण ’ भिक्षेण=मायुदानिकभिक्षया,
‘ वट्टियच्च ’ वर्तितव्यम्, प्राणधारण वर्तव्यमित्यर्थः । तथा—‘ जपि य ’ यदपि

દોષોં સે રહિત હોનાં । ચાહિયે ઓર (ઘિગયધૂમ) ધૂમદોષ સે ઓ રહિત
હોનાં ચાહિયે । તમીં જાકર વહ માયુઓં કે લિયે કરિપન હો સકતા
હૈ । (ઉદ્ઘાણનિમિત્ત) ઉહ કારણોં સે સાયુ આહાર ગ્રહણ કરતે હૈ—વે
છહ સ્થાનરૂપ કારણ યહ હૈ—ક્ષુ ગાદેના ૧, વૈયાવૃત્ય ૨, ઈર્યા-ગમન ૩,
સયમરક્ષા ૪, પ્રાણધારણા ૫, ઓર ધર્મચિન્તન ૬ । કરા ઓ હૈ—

“ वेयण १, वेयावच्चे २, इरियद्वाए ३ य सजमद्वाए ४ ।

तह पाणवत्तियाए ५, छट्ट पुणधम्मचिन्ताए ६ ॥ १ ॥ ”

તથા (ઉક્તાયપરિરક્ષણદૃષ્ટ) આહારગ્રહણ કરને સે ઉક્તાય જીવોં કી
રક્ષા હોતી હૈ । ઇસલિયે સાયુ કો (હણિહણિ) પ્રતિદિન (ફાસુણ બિ
ક્ષેણ) પ્રાસુક ભિક્ષા સે (વટ્ટિયચ્ચ) પ્રાણધારણ કરનાં ચાહિયે—અર્થાત્

હોવોં જોડોં અને “ ઘિગયધૂમ ” ધૂમ દોષથી રહિત હોવોં જોડોં ત્યાદે જ
તે સાધુઓને કહેવે તેવોં અને છે “ ઉદ્ઘાણનિમિત્ત ” છ કારણોથી સાધુ
આહાર ગ્રહણ કરે છે—તે છ સ્થાનરૂપ કારણ આ પ્રમાણે છે—(૧) ક્ષુધા વેદના
(૨) વૈયાવૃત્ય, (૩) ઈર્યા-ગમન, (૪) સયમ રક્ષા (૫) પ્રાણધારણ અને (૬)
ધર્મ ચિન્તન ઝહુ પણ છે—

“ वेयण १ वेयावच्चे २ इरियद्वाए ३ य सजमद्वाए ४ ।

तह पाणवत्तियाए ५, छट्ट पुणधम्मचिन्ताए ६ ॥ १ ॥ ”

તથા “ ઉક્તાયપરિરક્ષણદૃષ્ટ ” આહાર ગ્રહણ કરવાથી છઠાયનાં જીવોની પણ
રક્ષા થાય છે તેથી સાધુને “ હણિ હણિ ” પ્રતિદિન “ ફાસુણ ભિક્ષેણ ”
પ્રાસુક ભિક્ષાથી “ વટ્ટિયચ્ચ ” પ્રાણધારણ કરવો જોડોં જોડોં છે તે પૂર્વેક્ષિત
છ સ્થાનરૂપ કારણોને ધ્યાનમાં લઈને છઠાયનાં જીવોની રક્ષા કરતા થકા

‘सनिहित्य’ सनिहीकृत ‘न कप्पड’ न कल्पते-परिग्रहविरतत्वात्तस्य। अथ यत्कल्पते तदाह-‘जपि य’ यदपि च किञ्चित् ‘समणस्स’ श्रमणस्य ‘सुवि-
हित्यस्स तु’ सुनिहितस्य=शोभनाचारस्तत्, ‘पडिग्गहधारिस्स’ पतद्ग्रहधारिणः
=पात्रधारकस्य ‘भायणभडोवहि उवगरण पडिग्गहो’ भाजनभाण्डोपध्युपकरण
पतद्ग्रहः, तत्र-भाजनम्=उन्दकम्, भाण्ड=जलपात्रम्, उपधिःवस्त्रादिः, तद्रूप
यत् उपकरणम्=सामग्री, तथा-‘पडिग्गहो’ पतद्ग्रहः=भोजनपात्र ‘भग्ग’
भवति। तथा-‘पायवधणपायकेसरियापायद्ववण च’ पात्रवधनपात्रकेसरिका
पात्रस्थापन च, तत्र-पात्रवधन=‘झोली’ इति भाषा प्रसिद्धम्, पात्रकेसरिका=
पात्रप्रमार्जिका, पात्रस्थापन=पत्र वस्त्रखण्डे पात्र स्थाप्यते तत्, एषा समाहार
द्वन्द्व, ‘तिण्णि य’ त्रीणि च ‘पडलाइ’ पटलानि=उपर्युपरिपात्ररक्षणमयमे पात्र-
परिरक्षणार्थं पात्राभ्यन्तररक्षणीयानि वस्त्रखण्डानि, तथा-‘रयत्ताण’ रजत्ताण=

परिग्रह विरत साधु को (सनिहित्य) सग्रह के रूप में अपने पास रखना (न कप्पड) नहीं कल्पता है। उस परिग्रहविरत साधु के लिये अपने पास क्या २ वस्तुएँ रखना कल्पता है ? सो सूत्रकार उन्हें बताते हैं—(समणस्स सुविहित्यस्स उ पडिग्गहधारिस्स) पात्रधारी उस सुवि-
हित शोभनाचारसंपन्नश्रमण-साधुके पास (जपि य) जो भी (भाय
णभडोवहि उवगरणपडिग्गहो भवह) भाजनउन्दक, भाण्ड-जलपात्र,
उपधि-वस्त्रादिरूप उपकरण, तथा पतद्ग्रह भोजन पात्र हैं ये, तथा-
(पायवधणपायकेसरिया पायद्ववण च) पात्रवधन—झोली, पात्रकेस-
रिका—पात्रप्रमार्जिका, पात्रस्थापनवस्त्र, तथा (तिण्णियपडलाइ) तीनप-
टल—ऊपर ऊपर पात्रों को रखने के समय उन पात्रों की रक्षा के लिये
पात्रों के भीतर रखे हुए तीन वस्त्र खण्ड, (रयत्ताण) जलपात्र ढकने

संश्रुतना इयमा पोतानी पासे राखवा “न कप्पड” कल्पता नहीं ते परिग्रह
विरत साधुने भाटे पोतानी पासे ठीकी थीकी राखनी कटपे छे ? तो ते
सूत्रकार उछे छे के—“समणस्स सुविहित्यस्स उ पडिग्गहधारिस्स” पात्रधारी ते
सुनिहित सदाचारयुक्त साधुनी पासे “जपिय” जे बोध “भायण भडोवहि
उवगरणपडिग्गहो भवह” भाजन-उन्दक, भाण्ड-जलपात्र, उपधि-वस्त्रादिउप
उपकरण, तथा पतद्ग्रह-भोजन पात्र बोध ते तथा “पायवधण पायकेसरिया
पायद्ववण च” पात्रवधन-झोली, पात्रकेसरिका पात्र प्रमार्जिका, पात्रस्थापन
वस्त्र तथा “तिण्णियपडलाइ” त्रयपटल-पात्रोने ओठ पीछेनी उपर भूडवाने
पधते ते पात्रोनी रक्षाने भाटे पात्रोनी वन्धे राखेल त्रय वस्त्रपड, “रयत्ताण”

कस्मिन् ? इत्याह—‘ उज्ज्वलपलविउलकमखडपगाढदुःखे ’ उज्ज्वलपलविपुल-
 कर्कशमगाढदुःखे, तत्र-उज्ज्वल=मुखलेशवर्जितम्, पल=पलपत्र=महाकाटजनकम्
 विपुलम्=आत्मप्रतिप्रदेशे नदीवेगमत्पर्यमानम्, कर्कश=मृदोरम्, दुःसहत्वात्,
 मगाढ=मकृष्ट प्रतिक्षणमसमाधिजनकत्वात् यदुग्य तस्मिन्, कथम्भूते दुःखे ?
 ‘ असुभरुडुयफरुसचडफलविवागे ’ अशुभरुडुमपरुपचण्डफलविपाके, अशुभः=
 अशुभरूपः, कडुकरुनिम्बरस इवानिष्टः, परुपः=परुपस्पर्शद्रव्यमिमानिष्टः, तथा-
 चण्डो=दारुणो यः फलविपाकस्तादृशे, पुनः—‘ महभये ’ महाभये = महद्भय
 यस्मात्तस्मिन्, महाभयजनके इत्यर्थः, पुनः—‘ जीवियतकरणे ’ जीवितान्तकरणे=
 जीवितस्य=जीवनस्य अन्तरुण=नाशो यस्मात्तस्मिन्, प्राणनाशसमर्थे इत्यर्थः,
 पुनः कीदृशे ? ‘ सव्वसरीरपरितावणकरणे ’ सर्वशरीरपरितापनकरणे=अन्नप्रत्यग्न
 सन्तापजनके, ‘ तह ’ तथा ‘ तारिसेवि ’ तादृशेऽपि=यादृशः सोढु न शक्यते
 तादृशेऽपि रोगातङ्कादौ ‘ अप्पणो परस्स व ’ आत्मनः परस्य या निमित्त यदपि
 ‘ ओसहभेसज्जभत्तपाण ’ औषधभैषज्यभक्तपानम् ‘ त पि य ’ तदपि च

उदय प्राप्त हो रहे हो (असुभरुडुयफरुसचडफलविवागे) कि जिसका
 फलरूपविपाक अशुभरूप ही हो, निम्बरस के जैसा कडुका अनिष्ट हो,
 परुस-परुप स्पर्श द्रव्य की तरह जो अरुचिकारक हो, और चड-दारुण
 हो तथा (महभये) महाभयकर हो (जीवियतकरे) जिसमें जीवन के
 नाश होने की भी सम्भावना हो रही हो, (सव्वसरीरपरितावणकरे)
 अग, प्रत्यग्न में जिसके कारण असह्य सताप बढ़ रहा हो (तह तारिसे
 वि) ऐसे पूर्वोक्त प्रकार के रोगातको के समय में भी (अण्णोपरस्सव)
 चाहे ये रोगातक अपने लिये हो रहे हों चाहे दूसरे साधु के लिये हो
 रहे हों उस समय अपने और पर के निमित्त जो (ओसहभेसज्ज-
 भत्तपाण) औषध, भैषज्य एवं भक्तपान हो (तपि य) वह भी उस

यपत्ते” उदय पाग्या डोय ‘ असुभरुडुयफरुसचडफलविवागे ” के जेना इण
 इय विपाक अशुभ इय जे डोय, बीयु जेवे उडुक् अनिष्ट डोय, परुप-उठोर
 म्पशर्द्रव्यता जेवे जे अरुचि कारक डोय, अने यड-दारुणु डोय तथा
 “ महभये ” अति लयकर डोय, “ जीवियतकरे ” जेमा जवनने अत आव
 वानी पणु शक्यता डोय “ सव्वसरीर-परितावणकरे ” अग, प्रत्यग्नमा जेने
 कारणु असह्य सताप वधतो जेतो डोय “ तह तारिसे वि ” लवे ते रोगातक
 पोताने भाटे थता डोय के लवे णीळ माधुने भाटे थर रखा डोय, ते भयमे
 पोताने के अन्यने निमित्त जे “ ओसहभेसज्जभत्तपाण ” औषध, लैषज्य
 अने लक्तपान डोय “ तपि य ” ते पणु ते पण्डित विरक्त साधुने “ मनिहिक्य ”

‘सणिहिरय’ सनिधीकृत ‘न कप्पइ’ न कल्पते-परिग्रहविरतत्वात्तस्य । अथ यत्कल्पते तदाह-‘जपि य’ यदपि च किञ्चित् ‘समणस्स’ श्रमणस्य ‘सुविहियस्स तु’ सुविहितस्य=शोभनाचारयत्तस्य, ‘पडिग्गहधारिस्स’ पतद्ग्रहधारिणः=पात्रधारकस्य ‘भायणभडोवहि उवगरण पडिग्गहो’ भाजनभाण्डोपध्युपकरण पतद्ग्रहः, तत्र-भाजनम्=उन्दकम्, भाण्ड=जलपात्रम्, उपधि=वस्त्रादिः, तद्रूप यत् उपकरणम्=सामग्री, तथा-‘पडिग्गहो’ पतद्ग्रहः=भोजनपात्र ‘भवइ’ भवति । तथा-‘पायवधणपायकेसरियापायट्टवण च’ पात्रवधनपात्रकेसरिका पात्रस्थापन च, तत्र-पात्रवधनं=‘झोली’ इति भाषा प्रसिद्धम्, पात्रकेसरिका=पात्रप्रमार्जिका, पात्रस्थापनं=यत्र वस्त्रखण्डे पात्र स्थाप्यते तत्, एषा समाहार द्वन्द्व, ‘तिण्णि य’ त्रीणि च ‘पडलाइ’ पटलानि=उपर्युपरिपात्ररक्षणममये पात्र-परिरक्षणार्थं पात्राभ्यन्तररक्षणीयानि वस्त्रखण्डानि, तथा-‘रयत्ताण’ रजस्तानाण=

परिग्रह विरत साधु को (सनिहिरय) सग्रह के रूप में अपने पास रखना (न कप्पइ) नहीं कल्पता है । उस परिग्रहविरत साधु के लिये अपने पास क्या २ वस्तुएँ रखना कल्पता है ? सो सूत्रकार उन्हें बताते हैं—(समणस्स सुविहियस्स उ पडिग्गहधारिस्स) पात्रधारी उस सुविहित शोभनाचारसंपन्नश्रमण-साधुके पास (जपि य) जो भी (भायणभडोवहि उवगरणपडिग्गहो भवइ) भाजनउन्दक, भाण्ड-जलपात्र, उपधि-वस्त्रादिरूप उपकरण, तथा पतद्ग्रह भोजन पात्र हैं ये, तथा- (पायवधणपायकेसरिया पायट्टवण च) पात्रवधन—झोली, पात्रकेसरिका-पात्रप्रमार्जिका, पात्रस्थापनवस्त्र, तथा (तिण्णियपडलाइ) तीनपटल-ऊपर ऊपर पात्रों को रखने के समय उन पात्रों की रक्षा के लिये पात्रों के भीतर रखे हुए तीन वस्त्र खंड, (रयत्ताण) जलपात्र ढकने

मथर्हना इषमा पोतानी पाने राणवा “ न कप्पइ ” कल्पता नथी ते परिग्रह विरत साधुने भाटे पोतानी पाने उथी उथी थिजे गणवी कट्ठे छे ? तो ते सूत्रकार उहे छे के—“ समणस्स सुविहियस्स उ पडिग्गहधारिस्स ” पात्रधारी ते सुविहित सदाचारयुक्त साधुनी पाने “ जपिय ” के जोर “ भायण भडोवहि उवगरणपडिग्गहो भवइ ” भाजन-उन्दक, भाण्ड-जलपात्र, उपधि-वस्त्रादिउपकरण, तथा पतद्ग्रह-भोजन पात्र होय ते तथा “ पायवधण पायकेसरिया पायट्टवण च ” पात्रवधन-झोली, पात्रकेसरिका पात्र प्रमार्जिका, पात्रस्थापन वस्त्र तथा “ तिण्णियपडलाइ ” त्रयुपटल-पात्रोने ओउ पीलनी उपर भूडवाने वथे ते पात्रोनी रक्षाने भाटे पात्रोनी वथे गजेव त्रयु वस्त्रखंड, “ रयत्ताण ”

जलादिपात्राच्छादनसूत्रखण्डम्, 'गोच्छओ' गोच्छकः=प्रमार्जिका, तथा—'तिष्णि य पच्छागा' त्रयश्च प्रच्छादकाः, 'चादर' प्रसिद्धाः, तत्र—द्वौ गृहनिर्मिता, एक ऊर्णनिर्मितः, तथा—'रओहरणचोलपट्टकमुहणतक्रमार्डय' रजोहरणचोलपट्टकमुखानन्तकादिकम्, तत्र—रजोहरण प्रसिद्धम्, चोलपट्टक परिधानसूत्रम्, मुग्नानन्तक=सदोरकमुखवस्त्रिका, एतान्यादौ यस्य तच्चा, 'एयपि य एतदपि च 'उवगरण' उपकरणम् 'सजमस्स' सयमस्य=सायद्योगरितिलक्षणसप्तदशविधस्य 'उववृह हणद्वयाए' उपवृहणार्थतायै, वृद्धिर्नमित्तार्थः, अत्र स्वार्थे तत्प्रत्ययः । तथा—'वायायवदसमसगसीयपरिरक्खणद्वयाए' वातातपदशमशकशीतपरिरक्षणार्थतायै, तत्र वातातपादि सरक्षणार्थं, रागदोसरहिय 'रागद्वेपरहित यथा भयति तथा 'णिच्च' नित्य 'परिवहियच्च' परियोढव्यम्=परिधर्तव्य, 'सजएण' सयतेन । 'पडिलेहणपप्फोडणपमज्जणाए' प्रतिलेखनप्रस्फोटनप्रमार्जनायाम्, तत्र—प्रतिलेखन=

का वस्त्र, (गोच्छओ) गोच्छक—प्रमार्जिका, तथा (तिष्णि य पच्छागा) तीन प्रच्छादक—चादर (इनमें २ सूतके चादर और १ ऊनका कषल रहता है) (रओहरणचोलपट्टक—मुहणतक्रमार्डय) रजोहरण, चोलपट्टक, मुखानन्तक,—सदोरकमुखवस्त्रिका आदि ये उपकरण रहते हैं सो (एयपि य) ये उपकरण भी (सजमस्स उववृहणद्वयाए) उस साधु के सप्रह प्रकार के सयम की रक्षा के निमित्त एव वृद्धिके निमित्त ही होते हैं तथा—(वायायवदसमसगसीयपरिरक्खणद्वयाए) वात, आतप—धूप दशमशक, और शीत से रक्षा करने के लिये है । इसलिये (सज एण) सयत को (रागदोसरहिय) रागद्वेष से विहीन होकर (णिच्च) सर्वदा ये धर्मेपकरण (परिवहियच्च) धारण करना चाहिये अर्थात् अपने पास रखना चाहिये । और इनकी (पडिलेहणपप्फोडणपमज्ज

णपात्र ढाँकवानु वस्त्र, " गोच्छओ " गोच्छक—प्रमार्जिका तथा " तिष्णि य पच्छागा " त्रयश्च प्रच्छादक—चादर (तेभा ये सूतराड् अने ओड् उननी जामल होय छे) ' रओहरण—चोलपट्टक—मुहण—तक्रमार्डय ' रजोहरण, चोलपट्टक, मुग्नानन्तक—दोरा सङ्कितनी मुहणत्ता, आदि उपकरणों-रहे छे, वणी " एयपि " ते उपकरण पणु " सजमस्स उववृहणद्वयाए " ते साधुना सत्तर प्रकारना सयं भनी रक्षाने भाटे अने वृद्धिने भाटे ल होय छे तथा " वायायवदसमसग सीयपरिरक्खणद्वयाए " वात, तडके, दश मशक अने शीतथी रक्षण करवाने भाटे छे तेथी " सजएण " सयतने " रागदोसरहिय " रागद्वेषथी रङ्कित थईने " णिच्च " सर्वदा ते धर्मेपकरण " परिवहियच्च " धारण करवा लेईछे, ओरछे के पोतानी पाये राखवा लेईछे अने तेभनी " पडिलेहण

प्रत्युपेक्षणम्=चक्षुषा निरीक्षणमित्यर्थ, प्रस्फोटनम्=यतनापूर्वकमास्फालनम्, आभ्यासहिता या प्रमार्जना तस्या कृताया सत्याम् 'सयय' सतत 'अहो य राओ य' अहि च रात्रो च, 'भायणभटोवहि उवगरण' भाजनभाण्डोपयुपकरणम्, 'अप्पमत्तेण' अप्रमत्तेन=प्रमादवर्जितेन सयतेन 'निम्बियव्व' निक्षेपव्य=यतनया स्थापयितव्य च, 'गिण्हियव्व च' यतनया ग्रहोत्तन्य च 'होइ' भवति । एपाचतुर्थसमित्याराधना विज्ञेया ॥ सू० ४ ॥

णाए) प्रतिलेखनाचक्षु द्वारा अच्छी तरह अवलोकन क्रिया और प्रस्फोटन-यतना पूर्वक छटकारना रूप क्रिया तथा प्रमार्जना कर लेने पर (अहो य राओ य) दिन में तथा रात्रि में जब कभी रखने और लेने काम पड़े तो इन (भायणभटोवहिउवगरण) भाजन, भाड और चन्नादि रूप उपधि को (अप्पमत्तेण) अप्रमत्त होकर साधु को (सयय) नित्य (निम्बियव्व) यतनासे धरना चाहिये और (गिण्हियव्व च होइ) यतना से उठाना चाहिये ।

भावार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने कैसा आहार मुनि को लेना चाहिये और क्या २ सामग्री अपने पास रखना चाहिये—यह सब प्रकट किया है । आचाराङ्ग के द्वितीय श्रुतम्क २ में जो पिण्डैषणा नामका प्रथम अध्ययन है उसमें ग्यारह उद्देशों में आहार के जो दोष प्रतिपादित किये गये हैं उन दोषों से जो आहार वर्जित हो, कषण आदि की कृत आदि रूप नौकोटियों से जो शुद्ध हो, उद्गम, उत्पादना और एषणा से जो शुद्ध हो, व्यपगत आदि विशेषणों वाला हो, प्राप्त हो, संयोजनादोष

पक्कोडणपमज्जणाए ” प्रतिक्षेपना - आभ वडे सांगी रीते अवलोकन अने प्रस्फोटन-यतनापूर्वक छटकारवाइय क्रिया तथा प्रमार्जन कर्या पछी “ अहोय राओय ” दिवने के रात्रे न्नारे पणु लेवा के भूकवाणी न्जर पडे त्यारे ते “ भायणभटोवहिउवगरण ” भाजन भाड अने पन्नादिउपधिने “ अप्प मत्तेण ” अप्रमत्त धर्धने साधुअे “ सयय ” सदा “ निम्बियव्व ” यतना पूर्वक भूकवा लेधअे अने “ गिण्हियव्व च होइ ” यतनापूर्वक उठाववा लेधअे भावार्थ—आ सूत्र द्वारा सूत्रकारे केवे आहार मुनिअे लेवे लेधअे अने ज्यी ज्यी सामग्री पोतानी पासे राखवी लेधअे ते पधु पताव्यु छे आचारागना पील श्रुतन्क धमा ले पिण्डैषणा नामनु पडेलु अध्ययन छे तेना अगियाउ उद्देशोभा आहारना ने दोषोनु प्रतिपादन ज्वाभा आव्यु छे ते दोषोथी ने आहार गदित होय, कथण आदिना कृत आदिइय नव प्रकारे ने शुद्ध होय, उद्गम, उत्पादना अने एषणाथी ने शुद्ध होय, व्यपगत आदि विशेषणो वाणो होय, प्राप्त होय, संयोजना दोष विनानो होय, अगार

સે હીન હો, અગાર ધૂમ દોષ સે વિગત હો ગેસા હી આહાર મુનિ
 કો ક્ષુધા વેદના આદિ ઠાકારણો કે નિમિત્ત કો લેકર છત્રકાય કે
 જીવોં કી રક્ષા કે અભિપ્રાય સે લેના ચાહિયે । તથા ઇમ પરિગ્રહ વિરત
 સાધુ કે લિયે કબી મી ચાહે કિસી મી પ્રકાર કા કેસા હી રોગાતક
 ઉદય મે આ રહા હો અપને નિમિત્ત ણવ પર કે નિમિત્ત ઔષધિ આદિ
 કા સગ્રહ નહી કરના ચાહિયે । મુનિ કે લિયે આગમ મેં જિન ૨ ધર્મો
 પકરણોં કો રખને કા વિધાન હૈ-વે ૨ પ્રમોપકરણ ઉસે શીત આતપ
 આદિ જન્ય વાધા કી નિવૃત્તિ કે લિયે ઔર સાવન્યયોગવિરતિરૂપ સત્ર
 પ્રકાર કે સયમ મી રક્ષા કરને કે લિયે વિના કિસી રાગદ્વેષપરિણતિ કે
 અપને પાસ રખના ચાહિયે । ઊની પ્રતિદિનયતના પૂર્વક પ્રમાર્જના આદિ
 કરકે દિન યા રાત્રિ મેં ઊન્હેં યતનાપૂર્વક વરનો ઔર ઉઠાના ચાહિયે ।
 સૂત્ર મેં જો “વવગયચુય ચવિવચ્ચત્તદેહ” યહ પદ આયા હૈ ઊસકા
 શબ્દાર્થ હસ પ્રકાર હૈ-સામાન્યરૂપ મેં જો આહાર ચેતન પર્યાય સે
 રહિત છોકર અચેતન બન જાતા હૈ । વહ વ્યપગત કહલાના હૈ । વિશેષ
 રૂપ મેં જીવન આદિ ક્રિયા સે જો વિનિર્ગત હોતા હૈ વહ વ્યુત કહલાતા
 હૈ । ચેતના પર્યાય સે જો મૃત્યાદિ દ્વારા રહિત કરાયા જાના હૈ વહ
 વ્યાવિત કહા જાતા હૈ । ણવ જો જીવોં કે સત્રધ સે રહિત હોતા હૈ વહ

અને ધૂમ દોષથી રહિત હોના, એનો જ આહાર મુનિએ ક્ષુધાવેદના આદિ છ
 કારણોને નિમિત્તે છડાવના જીવોની રક્ષાના અભિપ્રાયથી લેવો જોઈએ તથા
 એ પરિગ્રહ વિરત સાધુએ ગમે તે પ્રકારનો રોગાતકનો ઉદય થયો હોય તે
 પણ પોતાને માટે કે અન્યને માટે કદી પણ ઔષધિ આદિનો સંગ્રહ કરવો
 જોઈએ નહીં મુનિને માટે જે જે ઉપકરણો રાખવાનું આગમમાં વિધાન છે,
 તે તે ઉપકરણ તેણે શીત, તડકે આદિથી નહીં મુશ્કેલીઓથી બચવા માટે અને
 સાવધયોગ વિરતિરૂપ સત્ર પ્રકારના સયમની રક્ષાને માટે કેઈ રાગદ્વેષ પરિણતિ
 વિના પોતાની પાસે રાખવા જોઈએ તેની દરરોજ યતનાપૂર્વક પ્રમાર્જના
 આદિ કરીને રાત્રે કે દિવસે તેમને યતનાપૂર્વક મૂકવા તથા લેવા જોઈએ સૂત્રમાં
 જે “વવગયચુયચવિવચ્ચત્તદેહ” આ પદ આવે છે તેનો અર્થ આ પ્રમાણે થાય
 છે-સામાન્ય રીતે જે આહાર ચેતન પર્યાયથી રહિત થઈને અચેતન બની જાય
 છે તેને વ્યપગત આહાર કહે છે વિશેષ રૂપે જીવન આદિ ક્રિયાથી જે વિનિ
 ર્ગત થાય છે તે વ્યુત આહાર કહેવાય છે ભૃત્યાદિ દ્વારા જે ચેતના પર્યા
 યથી રહિય થાય છે તે વ્યાવિત કહેવાય છે અને જે જીવોના સબધથી

મૂલમ્—એવં સે સજા વિમુક્તે નિસ્સંગો નિષ્પરિગ્ગહરુડં
 નિમ્મમે નિસ્સિણેહવધ્ધે સઠ્ઠપાવવિરણ વાસીચદણસમા-
 ણકપ્પે સમતિણમણિમુત્તલેટ્ટકચણસમે સમે ય માણાવમા-
 ણણાણ સમિયરણ સમિયરાગદોસે સમિણ સમિહસુ સમ્મ-
 દિટ્ઠી સમે ય જે સઠ્ઠપાણમૂણસુ સે હુ સમણે સુયધારણ
 ઉજ્જુણ સજાણ સુમાહુ સરણ સઠ્ઠમૂયાણ સઠ્ઠજગવચ્છલે
 સચ્ચમાસણ સંસારતે ઠિણ્યસસારસમુચ્છિન્ને સયયં સરણાણ
 પારણ પારણ ય સઠ્ઠેસિ સમયાણ પવયણમયાહિ અટ્ટહિ
 અટ્ટકમ્મગંઠી વિમોયગે અટ્ટમયમહણે સસમયકુસલે ય ભવડ,
 સુહટ્ટહનિવિસેસે આઘિતરવાહિરમ્મિ સયા તવોવહાણમ્મિ
 ય સુટ્ટજ્જુણ સ્વંતે દત્તે ય હિયનિરણ ઇરિયાસમિણ ભાસા-
 સમિણ ઇસણાસમિણ આયાણભડમત્તનિક્કલેવણાસમિણ ઉચ્ચા-
 રપાસવણસેલ -જલ્લસિધાણપરિટ્ઠાવણાસમિણ મણગુત્તે વડ્ડગુત્તે
 કાયગુત્તે ગુત્તિદિણ ગુત્તવભયારી ચાર્ડ લજ્જુધવ્વણો તવસ્સી
 સ્વંતીસમે જિહંદિણ સોહિણ અણિયાણે અવહિલેસ્સે અમમે
 અકિચ્છણે છિન્નગથે નિરુલેલે સુવિમલવરકસભાયણ ચેવ
 મુક્કતોણ સલ્લે વિવ નિરજણે વિગયરાગદોસમોહે કુમ્મોહવ
 હિદિયસુગુત્તે, અચ્ચકળગ વ જાયરુલે, પુક્કલરપત્ત વ નિરુલ-

ત્યક્ત કહા જાતા હૈ । ઇસ તરહ ઇસ સૂત્ર દ્વારા ચૌથી સમિતિ કી આરા-
 ધના પ્રકટ કી ગઈ હૈ એસા જાનના ચાહિયે ॥ સૂ-૪ ॥

રહિત થાય છે તે ત્યક્ત આહાર ડહેવાય છે, આ ગીતે આ સૂત્ર દ્વારા ચૌથી
 સમિતિની આરાધના પ્રગટ કરવામા આવી છે તેમ સમજવુ જોઈએ ॥ સૂ ૪ ॥

लेवे, चदो इव सोमयाए सूरौव्व दित्ततेये, अचले जहमदरे
 गिरिवरे, अक्खोभो सागरेव्व थिमिय पुढवी विय सव्व-
 फासविसहे तवसावि य भासरासिच्छन्नेव जायतेए जलि-
 यहुयासणो विव तेयसा जलते गोसीसचंदणं पिव सीयले
 सुगंधीय हरओ विव, समियभावे उग्घोसियसुनिम्मलं आय-
 समडलतल व पागडभावेण सुद्धभावे, सौंडीरो कुजरो व,
 वसभो व जायथामे, सीहोव्व जहा मिगाहिवे होइ दुप्प-
 धरिसे, सारयसलिल व सुद्धहियए भारडे चेव अप्पमत्ते
 खग्गिविसाणं एगजाए खाणू व उड्डकाए सुण्णागारेव्व अप्प-
 डिकम्मे सुण्णागारा वणस्सतो निवायसरणप्पडवज्झामणमिव
 निप्पकपे जहा खुरोचेव एगधारे जहा अहीचेव एगदिट्ठी
 आगास चेव निरालवे विहगे विव सव्वओ विप्पमुक्के कय-
 परानिलए जहा चेव उरए, अप्पडिवद्धो अनिलोव्व, जीवोव्व
 अप्पडिहयगई, गामे गामे य एगराय णगरे णगरे पचराय
 दूइज्जते य जित्तिदिए जियपरिसहे य निब्भए विऊसचि
 ताचित्तमीसएहि दव्वेहि विरागयगए सचयओ विरए मुत्ते
 लहुगे निरवकखे जीवियमरणासविप्पमुक्के निस्सथ निव्वण
 चरित्त धीरे काएण फासयते सयय अज्झप्पज्झाणजुत्ते
 निहुए एगे चरेज्ज धम्म ॥ सू० ५ ॥

‘ एव ’ इत्यादि—

टीका—‘ एव ’ एवम् = उक्तप्रकारेण सायुधर्मनिरत ‘ से सजए ’ स स
 यतः=सयमी ‘ विमुत्ते ’ विमुक्त सग्रहकरणाद् विमुक्त ‘ निस्सगो ’ नि सङ्ग =

આસક્તિવર્જિતઃ ‘ નિપ્પરિગ્ગહરુઈ ’ નિપ્પરિગ્ગહરુચિઃ—પરિગ્ગહરુચિરહિત ઇત્યર્થઃ, ‘ નિમ્મમે ’ નિર્મમ =મમત્વભાવવર્જિતઃ ‘ નિસ્સિનેહવધ્ધને ’ નિ સ્નેહવન્ધન.= નિર્ગત સ્નેહવન્ધન યસ્માત્સઃ—સ્નેહવન્ધનરહિત ઇત્યર્થઃ, ‘ સવ્વપાવવિરણ ’ સર્વ-પાપવિરતઃ—કાયિકવાચિકમાનસિકસર્વવિધપાપવર્જિત ઇત્યર્થ, તથા—‘ વાસીચ-દળસમાણરૂપે ’ વાસીચન્દનસમાનરૂપઃ, વાસી=‘ વસુલા ’ ઇતિ ભાષાપ્રસિદ્ધા, સેવ-વાસી=તક્ષકત્વેન અપકારી, તસ્મિન્ તથા ચન્દનમિત્રોપકારકત્વેન ચન્દનમ્=ઉપકારી, તસ્મિન્નપકારકે ઉપકારકે દ્વયોરપિ સમાનઃ=સદૃશઃ કલ્પઃ=આચારો યસ્ય સ તથોક્તઃ । યથોક્તમ્—

“ યો મામપકરોત્યેપ, તત્ત્વેનોપકરોત્યસૌ ।

શિરામોક્ષાદ્યુપાયેન, કુર્વાણ ઇવ નીરુજમ્ ॥ ૧ ॥ ”

‘ એવ સે ’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—(૧૪) હસ પ્રકાર સાધુ ધર્મ મેં લવલીન બના હુઆ (સે સજણ) વહ સયમીસાધુ (વિમુક્તે) સગ્રહ કરને સે વિમુક્ત બન જાતા હૈ (નિસ્સગો) આસક્તિ સે વર્જિત હો જાતા હૈ (નિપ્પરિગ્ગહરુઈ) પરિગ્રહ કી રુચિ સે રહિત હો જાતા હૈ (નિમ્મમે) મમત્વભાવ સે વિ-હીન હો જાતા હૈ (નિસ્સિનેહવધ્ધને) સ્નેહરૂપવધ્ધન સે મુક્ત બન જાતા હૈ (સવ્વપાવવિરણ) કાયિક, વાચિક એવ માનસિક સર્વપ્રકાર કે પાપોં સે વિરત હો જાતા હૈ (વાસીચદળસમાણરૂપે) તથા વાસી (વસુલા) કે જૈસે અપકારક મેં ઓર ચદન કે જૈસે ઉપકારક મેં એકસા આચાર વાલા બન જાતા હૈ । જૈસે કહા હૈ—

“ યો મામપકરોત્યેપ, તત્ત્વેનોપકરોત્યસૌ ।

શિરામોક્ષાદ્યુપાયેન, કુર્વાણ ઇવ નીરુજમ્ ॥૧॥ ”

ટીકાર્થ—આ પ્રકારે સાધુ ધર્મમાં લીન બનેલ “ સે સજણ ” તે સયમી સાધુ “ વિમુક્તે ” સગ્રહ કરવાના કાર્યથી વિમુક્ત થઈ બાકી છે, “ નિસ્સગો ” આસક્તિથી રહિત બની બાકી છે, “ નિપ્પરિગ્ગહરુઈ ” પરિગ્રહની રુચિથી રહિત થઈ બાકી છે, “ નિમ્મમે ” મમત્વ ભાવ વિનાનો બની બાકી છે, “ નિસ્સિનેહ વધ્ધને ” સ્નેહરૂપ વધ્ધનથી મુક્ત થઈ બાકી છે, “ સવ્વપાવવિરણ ” કાયિક, વાચિક અને માનસિક એ સર્વ પ્રકારના પાપોથી વિરત થઈ બાકી છે “ વાસી ચદળસમાણરૂપે ” તથા વાસલા “ વસુલા ” ના જેવા અપકારક પ્રત્યે તથા ચદનના જેવા ઉપકારક પ્રત્યે એક સરખા બની બાકી છે જેમકે કહ્યું છે—

“ યો મામપકરોત્યેપ, તત્ત્વેનોપકરોત્યસૌ ।

શિરામોક્ષાદ્યુપાયેન, કુર્વાણ ઇવ નીરુજમ્ ॥ ૧ ॥

‘સરણ’ શરણમ્ ‘સન્વજગવચ્છલે’ સર્વજગદ્ગત્મલ - સર્વજીવયોનિષુ કરુણાભાવયુક્તઃ, ‘સચ્ચભાસણ’ ય ‘સત્યભાષકથ’, સત્યભાષાપ્રિવેશતત્પર તથા-‘સસારતે ઠિયે ય’ સસારાન્તે સ્થિતાથ-ભાવિજન્મરહિતત્વાત્, શ્મશાનાર્થે શબ્દાચેન્તરેણાઠ ‘સસારસમુચ્છિન્ને’ સસારસમુચ્છિન્નઃ=સસાર=ચતુર્ગતિલક્ષણઃ સમુચ્છિન્નો યેન સઃ, અતઃપ્ર ‘સયય’ સતતમ્ ‘મરણાણ’ મરણાના ‘પારણ’ પારગઃ=મુક્તસ્યોત્પત્યભાવેન મરણાભાગાન્મરણપારગત્ય ગોખ્યમ્ । તથા-‘પારગે ય’ પારગશ્ચ ‘સન્વેસિં સસયાણ’ સર્વેષા સશયાનામ્=સર્વસશયોચ્છેદક इत्यर्थ, તથા ‘પવયણ માયાહિં અદ્વિહિં પ્રવચનમાતૃભિરપ્તાભિ =પશ્ચસમિતિત્રિગુણિ રૂપાભિઃ=સાધનભૂતાભિઃ

કરનેમેં તત્પર-બન જાતા હૈ । તથા(સરણ સન્વજગદ્ગત્મલ) મમસ્ત્ ભૂતો કારક્ષક બના હુઆ વહ સાધુ (સન્વજગદ્ગત્મલ) સર્વ પ્રકારની જીવ યોનિયોં કે ઉપર અપાર કરુણાભાવ સે સહિત હો જાતા હૈ । (સચ્ચભાસણ) ઉસકી ભાષા મેં મત્યવાદિતા કી છાપ લગ જાતી હૈ ઓર વહ (સસારતે ઠિયે) આગામી જન્મસે રહિત હોનેકે કારણ સસાર કે અંત મેં સ્થિત હો જાતા હૈ । હસી વાતકો સૂત્રકાર શબ્દાન્તરસે સમજાતે હૈ- (સસારસમુચ્છિન્ને) ઉસ સાધુકા ચતુર્ગતિરૂપ સસાર સમુચ્છિન્ન હો જાતા હૈ । અતઃ એવ (સયય મરણાણપારણ) વહ સતત મરણ કા પારગામી બન જાતા હૈ । કયો કિ મુક્ત જીવ કી ફિર સસાર મે ઉત્પત્તિ નહીં હોતી હૈ, હસલિયે ઉસકા મરણ ભી નહીં હોતા હૈ, અતઃ હસી ભાવ કો લેકર ‘વહ મરણ કા પારગામી બન જાતા હૈ’ એસા કહા ગયા હૈ । (સન્વેસિં સસયાણ પારણ) વહ સમસ્ત પ્રકારકે સશયો કા ઉચ્છેદક

નિર્વાણ સાધવાને તત્પર બની બધ છે તથા “સરણ સન્વજગદ્ગત્મલ” સમસ્ત જીવોનો રક્ષક બનેલ તે સાધુ “સન્વજગદ્ગત્મલ” સર્વ પ્રકારની જીવ યોનિયો પર અપાર કરુણાભાવથી સુદત બની બધ છે “સચ્ચ ભાસણ” તેની વાણીમાં સત્યવાદિતાની છાપ લાગી બધ છે અને તે “સસારતે ઠિયે” આવતા જન્મથી રહિત હોવાને કારણે સસારના અન્તમાં સ્થિત થઈ બધ છે એ જ વાતને સૂત્રકાર બીજી રીતે શબ્દાદિક દ્રેશકથી સમજાવે છે-“સસારસમુચ્છિન્ને” તે સાધુને આરગતિરૂપ સસાર સમુચ્છિન્ન થઈ બધ છે તેથી “સયય મરણાણપારણ” તે કાયમને માટે મરણનો પારગામી બની બધ છે, કારણ કે મુક્ત જીવની સસારમાં ફરીથી ઉત્પત્તિ થતી નથી, તેથી તેનું મરણ પણ થતું નથી તેથી એ જાણને કારણે “તે મરણનો પારગામી બની બધ છે” એવું કહ્યું છે “સન્વેસિં સસયાણ પારણ” તે સમસ્ત પ્રકારના સશયોનો ઉચ્છેદ-નિવારક થઈ બધ છે

‘ અટ્ટકમ્મગઠીવિમોચને ’ અટ્ટકર્મગ્રન્થિવિમોચક = અટ્ટી = અટ્ટસખ્યકા યે કર્મગ્રન્થયસ્તેપા વિમોચકઃ, તથા- ‘ અટ્ટમયમહણે ’ અટ્ટમદમયનઃ = અટ્ટમદસ્થાનનાશકઃ ‘ સસમયકુસલેય ’ સસમયકુશલશ્રવ = સ્વસિદ્ધાન્તનિપુણશ્રવ, ચકારાત્ પરસમયકુશલ ‘ ભવદ્ ’ ભવતિ । તથા- ‘ સુહદુક્ખનિવિવિસેસે ’ સુખદુઃખનિર્વિશેષઃ = સુખદુઃખયોર્દર્પશોકાદિરહિત ઇત્યર્થઃ, ‘ અર્ઘિમતરવાહિરમ્મિ તવોવહાણમ્મિ ’ આભ્યન્તરવાહ્યે તપઉપધાને, તત્ર-ચિત્તનિરોધપ્રાધાન્યેન કર્મક્ષપણહેતુત્વાત્પ્રાયશ્ચિત્તાદિપટ્કરુમ્-આભ્યન્તરમ્ । વાહ્યશરીરસ્ય પરિશોષણેન કર્મક્ષપણહેતુત્વાદનશનાદિપટ્ક વાહ્યમ્, અનયોર્દ્વન્દઃ, તસ્મિન્, તપ ઉપધાને = તપએવ મોક્ષમાર્ગસ્યોપનિષ્ટમ્મકૃત્વાદુપધાન તસ્મિન્, ‘ સયા ’ સદા ‘ સુદ્દુજ્જણ ’ સુદુદ્યત = સમ્યક્તયા તદારાધને તત્પર હો જાતા હૈ । તથા (પાવયણમાયાહિ અટ્ટિહિ) પાવસમિતિ, ત્રીન ગુણિ રૂપ અટ્ટ પ્રવચન માતાઓ કે તલ પર વહ (અટ્ટકમ્મગઠીવિમોચણે) આઠ પ્રકારકે કર્મોની કી ગ્રન્થિયો કો છોડાનેવાલા યન જાતા હૈ । (અટ્ટમયમહણે) શુદ્ધ સમ્યગ્દર્શન કા પાલનકર્તા હોનેકે કારણ વહ આઠ મદો કા વિનાશક હોતા હૈ । (સસમયકુસલેય) સ્વસમયમેં પૂર્ણ નિષ્ણાત યન જાતા હૈ તથા ચકારસે પરસમયકા જાતા મો યન જાતા હૈ । (સુહદુક્ખ નિવિવિસેસે) સુખ ઓર દુઃખ ઉસે ઇકસે પ્રતીત હોને લગજાતે હે । વહ ઉનમેં દર્પ ઓર વિપાદ નહી કરતા હૈ । (અર્ઘિમતરવાહિરમ્મિ તવોવહાણમ્મિ) ચિત્તનિરોધકી પ્રધાનતાસે કર્મક્ષપણ કે હેતુભૂત હોને કે કારણ પ્રાયશ્ચિત્ત આદિ છઠ પ્રકાર કે આભ્યન્તર તપ રૂપ ઉપધાન મેં તથા વાહ્ય મેં શરીર કે પરિશોષણ સે કર્મક્ષપણ કે હેતુ હોને સે અનશન આદિ ચારહ પ્રકાર કે વાહ્ય તપરૂપ ઉપધાન મે સદા (સુદ્દુજ્જણ) અછી તરહ

“ પવયણમાયાહિ અટ્ટિહિ ” પાવ સમિતિ ત્રણગુણિથી આઠ પ્રવચન માતાઓના બળથી તે “ અટ્ટકમ્મગઠીવિમોચણે ” આઠ પ્રકારના કર્મોની ગાંઠોને છોડાવનાર બની જાય છે “ અટ્ટમયમહણે ” શુદ્ધ સમ્યગ્દર્શનનો પાલનકર્તા હોવાને કારણે તે આઠ મદનો વિનાશક હોય છે “ સસમયકુસલેય ” સ્વસમયમાં પૂર્ણ નિષ્ણાત બની જાય છે તથા ચકારથી પર સમયનો બાણકાર બની જાય છે “ સુહદુક્ખનિવિવિસેસે ” સુખ અને દુઃખ તેને સરખા લાગવા માટે છે તે તેમાં હર્ષ કે વિશાદ કરતો નથી “ અર્ઘિમતરવાહિરમ્મિ તવોવહાણમ્મિ ” ચિત્તનિરોધની પ્રધાનતાથી કર્મક્ષયના હેતુભૂત હોવાને કારણે પ્રાયશ્ચિત્ત આદિ છ પ્રકારના આભ્યન્તર તપરૂપ હોવાને ઉપધાનમાં તથા વાહ્યમાં શરીરના પરિશોષણથી કર્મક્ષયના હેતુભૂત હોવાને કારણે અનશન આદિ ચાર પ્રકારના વાહ્ય તપરૂપ ઉપધાનમાં સદા “ સુદ્દુજ્જણ ” ચારી રીતે તે તત્પર થઈ જાય છે, એટલે

इत्यर्थः, तथा 'स्वते' क्षान्तः=क्षमायान् 'दत्ते य' दान्तश्च=इन्द्रियदमनकारी च, तथा-'हियनिरए' हितनिरतः=आत्मकल्याणपरायण इत्यर्थः, तथा-'इरियासमिए' ईर्यासमितः, 'भासासमिए' भाषासमित 'एसणासमिए' एषणासमितः 'आयाणभडमत्तनिम्खेयणासमिए' आदानभाण्डामत्रनिक्षेपणासमितः 'उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपरिष्ठावणियासमिए' उच्चारपासवणखेल सिंघाणसमिए 'उच्चारप्रसवणखेलसिंघाणपरिष्ठावणियासमिए' 'मणगुत्ते' मनोगुप्त - 'वयगुत्ते' वचोगुप्तः, 'कायगुत्ते' कायगुप्तः 'गुत्तिदिए' गुप्तेन्द्रियः, 'गुप्तभयारी' गुप्तब्रह्मचारी, एषामर्थाः पूर्वं व्याख्याताः । तथा

वह तत्पर हो जाता है अर्थात् वाला और आभ्यन्तर तपो की आराधना वह बहुत अच्छी तरह से किया करता है। (स्वते) सब जीवों पर वह क्षमाभाव रखता हुआ (दत्ते) और अपनी इन्द्रियों का दमन करता हुआ (हियनिरए) आत्मकल्याण करने में परायण बन जाता है। तथा (इरियासमिए) ईर्यासमिति से युक्त (भासासमिए) भाषासमिति से युक्त, (एसणासमिए) एषणासमिति से युक्त (आयाणभडमत्तनिम्खेयणासमिए) आदानभाण्डमत्रनिक्षेपणासमिति से युक्त तथा (उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपरिष्ठावणियासमिए) उच्चारप्रसवणखेलसिंघाणजल्लपरिष्ठावणिकासमिति से युक्त (मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते) मनोगुप्ति, वचनगुप्ति कायगुप्ति इन तीन गुप्तिों से गुप्त-रक्षित आत्मप्रवृत्ति वाला बना हुआ (गुत्तिदिए) अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण अकुश रखने वाला बन जाता है (गुप्तभयारी) ब्रह्मचर्यव्रत की नौ कोटि से सदा रक्षा करने वाला होता है। तथा फिर

કે બાહ્ય અને અંધ્ય તર તપોની આરાધના તે બહુ સારી રીતે કર્યા હશે છે “સ્વતે” દરેક જીવો પર તે સમાનભાવ રાખતો “દત્તે” અને પોતાની ઇન્દ્રિયોત્તુ દમન કરતો “હિયનિરએ” આત્મકલ્યાણ કરવામાં પરાયણ બની બચે છે તથા “ઈરિયાસમિએ” ઈર્યા સમિતિથી યુક્ત “ભાસાસમિએ” ભાષા સમિતિથી યુક્ત, “એસણાસમિએ” એષણા સમિતિથી યુક્ત, “આયાણ-મહ મત્તનિસ્ખેયણાસમિએ” આદાન ભાંડ મત્ર નિસ્ખેયણા સમિતિથી યુક્ત તથા ઉચ્ચારપાસવણખેલજલ્લસિંઘાણપરિષ્ઠાવણિયાસમિએ ” ઉચ્ચાર પ્રસવણ એલજલ્લ સિંઘાણ પરિષ્ઠાવણિકા સમિતિથી યુક્ત મણગુત્તે વયગુત્તે કાયગુત્તે ” મનોગુપ્તિ વચન-ગુપ્તિ અને કાયગુપ્તિ, એ ત્રણે ગુપ્તિઓથી ગુપ્ત-રક્ષિત આત્મ પ્રવૃત્તિ પાળો બનીને “ગુપ્તિદિએ” પોતાની ઇન્દ્રિયોત્તર પૂર્ણ અકુશ રાખનાર બની બચે છે “ગુપ્તભયારી” બ્રહ્મચર્ય વ્રતની નવ કોટિએ સદા રક્ષા કરનાર

‘ ચાઈ ’ ત્યાગી મર્વસદ્ગત્યાગાત્, ‘ લજ્જુ ’ લજ્જાવાન=મયમી ‘ ધણો ’ ધન્યઃ — સમ્યગ્જ્ઞાન સમ્યગ્દર્શનસમ્યક્ચારિત્રરૂપધનશામયોગ્યત્વાત્, ‘ તવસ્સી ’ તપસ્વી=પ્રશસ્તતપોયુક્તત્વાત્, ‘ સતિઋમે ’ ક્ષાન્તિક્ષમ=ચત્ત્યાદિ સામર્થ્યે સત્યપિ ક્ષાન્ત્યા-ક્ષમાગુણેન ક્ષમતે=સહતે યઃ સ તથોક્તઃ, તથા-‘ જિહ્દિપ ’ જિતેન્દ્રિયઃ, ‘ સોહિપ ’ શોધિત=શુદ્ધઃ — ક્ષાલિતમિથ્યાત્વાદિકર્મમલ-ત્વાત્, ‘ અણિયાણે ’ અનિદાનઃ-નિદાનવર્જિતઃ, ‘ અપહિલેસ્સે ’ અપહિલેશ્ય-‘ અ ’ અવિદ્યમાના ગ્રહિઃ=સયમાદ્ ગ્રહિ છેડ્યા=અન્તઃ કરુણવૃત્તિઃ, યમ્ય સોડપ-હિલેશ્યઃ, સયમાન્ત કરુણ इत्यर्थः, તથા ‘ અમમે ’ અમમ-મમત્વવર્જિત, ‘ અર્કિ-

(ચાઈ) સર્વ સગ કા પરિત્યાગ કર દેને સે વહ ત્યાગી કહલાને લગતા હૈ । (લજ્જુ) લજ્જાવાન્ પન જાતા હૈ-વહ સદા ઇસ વાન કા ધ્યાન રવતા હૈ કિ રહીં ણેસી પ્રવૃત્તિ મુઝસે ન વન જાવે જો સયમ માર્ગ કે વિરુદ્ધ હોકર મુઝે લજાને વાલી હો । ણેસા વહ સયમી (ધણો) સમ્યક્ જ્ઞાન, સમ્યક્ દર્શન ઓર સમ્યક્ ચારિત્ર રૂપ વન લાભ કે યોગ્ય હો જાને કે કારણ ધન્ય માના જાતા હૈ । તથા (તવસ્સી) પ્રશસ્ત-તપોં કો આચરિત કરને વાલા હોને સે તપસ્વી કહલાને લગતા હૈ, તથા (સતિઋમે) લવિષ આદિ રૂપ સામર્થ્યસપન્ન હોને પર મી વઝ ક્ષમાગુણ સે સવ કુઝ સહને વાલા સ્વભાવ વન જાતા હૈ । ઇસ તરહ (જિહ્દિપ) જિતેન્દ્રિય, (શુદ્ધ) મિથ્યાત્વાદિ કર્મમલક્ષાલિત હોને સે શુદ્ધ (અણિયાણે) નિદાન સે રહિત, (અપહિલેસ્સો) અપહિલેશ્ય-સયમયુક્ત અન્તઃ કરુણ વાલા (અમમે) મમતા સે રહિત (અર્કિચણે)

થાય છે તથા ‘ ચાઈ ’ સર્વ સગનો ત્યાગ ડગી દેવાથી તે ત્યાગી કહેવાવા લાગે છે “ લજ્જુ ” તે અદરથી તથા બહારથી દોડીના જેવો સરળ થઈ બાંધ છે અથવા લગ્નવાન બની બાંધ છે તે હંમેશા તે વાતની ઝાણી રાખે છે કે મારાથી વધારે એવી પ્રવૃત્તિ થઈ ન બાંધ કે જે મયમ માર્ગની વિરુદ્ધ હોવાને કારણે મારે લાભ પડે એવા તે સયમી “ ધણો ” સમ્યક્જ્ઞાન, સમ્યક્ દર્શન, અને સમ્યક્ ચારિત્રરૂપ ધનલાભને યોગ્ય થઈ જવાને કારણે ધન્ય મનાય છે તથા “ તવસ્સી ” પ્રશસ્ત તપો ડરનાર હોવાથી તપસ્વી કહેવાવા લાગે છે, તથા “ સતિઋમે ” લવિષ આદિરૂપ સામર્થ્ય યુક્ત હોવા છતાં પણ તે ક્ષમાગુણથી બધું મહન ડરવાની વૃત્તિવાળો થઈ બાંધ છે આ રીતે “ જિહ્દિપ ” જિતેન્દ્રિય, “ શુદ્ધ ” મિથ્યાત્વાદિ કર્મમળનો દાય થવાને કારણે શુદ્ધ, “ અણિયાણે ” નિદાનથી ગરહિત, “ અપહિલેસ્સો ” અપહિલેશ્ય-સયમી અત ડરણવાળો “ અમમે ” મમતાથી રહિત, “ અર્કિચણે ” અકિંચન

ચણે 'અકિચ્ચન:-નિર્દ્રવ્ય:', 'છિન્નગયે' છિન્નગ્રન્ય:-ચાલ્યામ્પન્તરપગ્નિહરહિત:, તથા-'નિરુચ્છેવે' નિરુપલેપ:=રાગદ્વેપવર્જિત:, તથા-'સુચિમલવરકમભાવણ ચેવ' સુચિમલવરકાંસ્યમાજનમિત્ત=સુચિમન્=નિર્મલ યદ્વરકાસ્યમાજન તદિવ 'વિમુક્તતોણ' વિમુક્તતોય:=જલલેપરહિત, શ્રમણપક્ષે સમ્બન્ધહેતુસ્નેહવર્જિત ઇત્યર્થ: તથા-'સલ્લે ચિવ નિરજ્જણે' શલ્લે ચિવ નિરજ્જન:, અય મ્ભાવ:-યથા શલ્લો નિર-જ્જનોડર્થાન્છુલ્લો મ્ભવતિ, તથા સાધુરપિ નિરજ્જન:=રાગાદિકૃષ્ણતારહિતો મ્ભવતિ। અત એવ 'વિગયરાગદોસમોહે' વિગતરાગદ્વેપમોહ, વિગતાનપ્પટ્ટા રાગદ્વેપ મોહા: યસ્માત્ સ: તથા 'કુમ્મો ચ' કૂર્મ ચ્ચ ઇદિય સુગુત્તે' ઇન્દ્રિયેષુ ગુસ્થ -યથા કચ્છપો મીવાદિ સ્વાઙ્ગાનિ સગોપ્ય ગુસ્થો મ્ભવતિ તથેવ સાધુરપિ વિષયેભ્ય ઇન્દ્રિયાણિ સગોપ્ય ગુસ્થો મ્ભવતિ। તથા-'જન્નવકળગ વ' જાત્યકનકમિત્ત=શુદ્ધકાચ્ચનમિત્ત 'જાય રુવે' જાતરૂપ:=રાગાદિક્ષારરહિતત્વાત્, સ્વસ્વરૂપસમ્પન્ન:, તથા 'પુન્નસરપત્ત વ'

અર્કિચ્ચન ભાવ સે યુક્ત, (છિન્નગયે) યાદ્ય ઓર આમ્યન્તર પરિગ્રહ સે વર્જિત, યના હુઆ વહ સાધુ (નિરુચ્છેવે) રાગ ઓર દ્વેપ સે નિર્લિસ યન જાના હૈ ઓર (સુચિમલવરકસભાવણ ચેવ વિમુક્તતોણ) નિર્મલ કાંસ્યવાત્ર કી તરહ જલ સે સુનિપક્ષ મેં સમ્બન્ધ કે હેતુમૂત સ્નેહ સે રહિત હોતા હુઆ (સલ્લેચિવ નિરજ્જણે) શલ્લ કી તરહ નિરજન-શુલ્લ અર્થાત રાગાદિક કી કૃષ્ણતા સે રહિત હો જાતા હૈ। ઇસિલિયે વહ (વિગયરાગદોસમોહે) રાગ દ્વેપ એવ મોહ સે રહિત હો જાતા હૈ તથા (કુમ્મો ચ્ચ ઇદિય સુગુત્તે) કૂર્મ-કચ્છપ કી તરહ ઇન્દ્રિયગુસ્થ કહલાતા હૈ અર્થાત્ જિસ પ્રકાર કચ્છપગ્રીવાદિક અવને અવયવોં કો છુપાકર શરીર મેં ગુસ્થ હો જાતા હૈ ડસી પ્રકાર વહ સાધુ બી વિષયોં સે ઇન્દ્રિયોં કો હટાકર સુરક્ષિત યન જાતા હૈ। તથા (જન્નવકળગ વ જાયરુવે)

ભાવથી યુક્ત, "છિન્નગયે" યાદ્ય અને આમ્યન્તર પરિગ્રહથી રહિત અનેક તે સાધુ "નિરુચ્છેવે" રાગ અને દ્વેષથી અલિપ્ત બની બાંધ છે, અને "સુચિમલવર-કસભાવણ ચેવ વિમુક્તતોણ" નિર્માળ ઝાસાના પાત્રથી જેમ બળથી રહિત-સુનિપક્ષે બસ ધના હેતુમૂત સ્નેહથી રહિત-થઈને "સલ્લેચિવ નિરજ્જણે" શ બના જેવો નિરજન-સંકેદ એટલે કે "વિગયરાગદોસમોહે" રાગાદિકની કાળાશથી રહિત થઈ બાંધ છે, તથા "કુમ્મો ચ્ચ ઇદિયસુગુત્તે" કાચબાના જેવો ઇન્દ્રિયગુસ્થ કહેવાય છે એટલે કે જેમ બાંધબો પ્રાતાના ગ્રીવાદિક અવયવોને શરીરમાં છુપાવીને ગુસ્થ થઈ બાંધ છે તેમ સાધુ પણ વિષયોમાંથી ઇન્દ્રિયોને હટાવીને સુરક્ષિત બની બાંધ છે તથા "જન્નવકળગ વ જાયરુવે" શુદ્ધ સુવર્ણની જેમ

પુન્કરપત્રમિવ—કમલપત્રમિવ ‘ નિરુવલેવે ’ નિરુપલેપ—ભોગગૃહિલેપાપેક્ષયા, તથા ‘ સોમાયાણ ’ સૌમ્યતયા=સૌમ્યપરિણામેન ‘ચદો ડવ’ ચન્દ્ર ડવ, તથા—‘ સૂરોવ્વ ’ સૂર ડવ ‘ દિત્તતેણ, દીપ્તતેજાઃ = દીપ્ત તેજો यस્ય સ, તથા—‘ ગિરિવરે મદરે ’ ગિરિવરો મન્દરઃ ‘ જહ ’ યથા — ડવ સકલપર્વતશ્રેષ્ઠમેરુરિવ ‘ અચલે ’ અચલ =પરીપહાદૌ સત્યપિ નિશ્ચલઃ, તથા—‘ અસ્થોમો ’ અસ્થોમઃ=ક્ષોભવર્જિતઃ—નિસ્તરદ્ગ, ‘ સાગરોવ્વ ’ સાગર ડવ ‘ યિમિણ ’ સ્તિમિતઃ=કપાયતરદ્ગવર્જિનઃ, તથા—‘ પુઢવી વિવ ’ પૃથિવીય ‘ સવ્વકામવિસહે ’ સર્વસ્પર્શવિપહઃ—શુભાશુભસ્પર્શેષુ સમચિત્ત ઇત્યર્થઃ? તથા—‘ તવસા વિ ય ’ તપસાઽપિ ચ હેતુભૂતેન ‘ ભાસરાસિચ્છન્નેવ ’ જાતતેણ ‘ ભસ્મરાશિચ્છન્ન ઇવ જાતતેજા, યથા—ભસ્માચ્છન્નો ગ્હિરુપરિ-

શુદ્ધ મૃચર્ણાની તરફ વહ રાગાદિકરૂપ ક્ષાર સે રહિત હોને કે કારણ અપને નિજરૂપ સે સમ્પન્ન હો જાના હૈ। (પુન્કરપત્ર વ નિરુવલેવે) કમલ પત્ર કી તરફ ભોગોં મેં ગૃહિરૂપ લેપ સે વહ રહિત બન જાતા હૈ। (સો-માયાણ ચદોડવ) સૌમ્યતા સે વહ ચદ્ર કી તરફ (સૂરોવ્વદિત્તતેણ) સૂર્ય કી તરફ વહ દીપ્ત તેજ ચમકુને વાલા હો જાતા હૈ। તથા (ગિરિ-વરે મદરે જહ અચલે) ગિરિ વર મુમેરુ પર્વત કી તરફ વહ પરિપહ આદિ કે આને પર અચલ સુસ્થિર બના રહતા હૈ। ઓર (અસ્થોમો સાગરોવ્વ) નિસ્તરગ સાગર કી તરફ અસ્થોમ-ક્ષોભ સે રહિત બન જાતા હૈ (યિમિણ) સ્તિમિત-કપાયરૂપતરદ્ગો સે રહિત બન જાતા હૈ। તથા (પુઢવીવિય સવ્વકાસવિસહે) જિસ પ્રકાર પૃથ્વી સમસ્ત પ્રકાર કે સ્પર્શોં કો સહન કરતી હૈ ઉસી પ્રકાર વહ ભી શુભ ઓર અશુભ સ્પર્શોં મેં સમવિત્ત હો જાતા હૈ। (તવસા વિ ય ભાસરાસિચ્છન્નેવ

તે રાગાદિક રૂપ ક્ષારથી રહિત હોવાને કારણે પોતાના નિરૂપથી સ પત્ર થઈ બાંધ છે ‘ પુન્કરપત્ર નિરુવલેવે ’ કમળ પત્ર જેમ પાણીથી અલિપ્ત રહે છે તેમ તે ભોગોથી અલિપ્ત થઈ બાંધ છે “ સોમાયાણ ચદો ડવ ” સૌમ્યતામા તે ચન્દના જેવો “ સૂરોવ્વ દિત્તતેણ ” સૂર્યની જેમ તે દીપ્ત તેજ-તેજસ્વી થઈ બાંધ છે તથા ‘ ગિરિવરે મદરે જહ અચલે ’ ગિરિવર મુમેરુની જેમ તે પરી-પહ આદિ નહે તે। પણ અચલ, સુસ્થિર રહે છે અને “ અસ્થોમો સાગરોવ્વ ” તરગરૂપી સાગરના જેવો તે અસ્થોભ-ક્ષોભ રહિત બની બાંધ છે “ યિમિણ ” સ્તિમિત-કપાયરૂપ તરગોથી રહિત બની બાંધ છે તથા “ પુઢવીવિય સવ્વ કાસવિસહે ” જેમ પૃથ્વી બધા પ્રકારના સ્પર્શોંને સહન કરે છે તેમ તે પણ શુભ અને અશુભ સ્પર્શોંમા સમભાવવાળો થઈ બાંધ છે “ તવસા વિ ય ભાસ-

હકત્વમપ્રકાશયન્નપ્યન્તર્જાગ્રહ્યમાનો ભવતિ, તથૈવ શ્રમણો બહિઃ શુષ્કો રુક્ષઃ
 કાન્તિરહિતોઽપ્યન્તઃ સ્તપોજનિતદીપ્ત્યાદેદીપ્યમાનો ભવતીતિ ભાવ । તથા-
 જલિયહુયાસણો વિવ ' જ્વલિતહુતાશનઃ=પ્રદીપ્તાનિવ ' તેયસા ' તેજસા=
 જ્ઞાનરૂપતેજસા ' જલતે ' જ્વલન્=દીપ્યમાનઃ, ભાવતમોવિનાશકૃત્યાત્ ' ગોસીસ
 ચદળપિવ ' ગોશીર્ષચન્દનમિવ ' સીયલે ' શીતલઃ=મનસ્તાપોપશમનાત્ ' સુગધી
 ' સુગન્ધિના, સુરભિગન્ધેન શીલમોગન્ધ્યાત્ ' હરઓ વિવ ' દ્વદરુ ઇવ=જલા-
 ય ઇવ ' સમિયભાવે ' સમિક્રમાયઃ=સમ એવ સમિક્રઃ, સ ભાગો यस્ય સઃ, અવ
 ભાવ -યથા દ્વદો વાતાભાવે તરદ્વાભાવેન નિમ્નોન્નતરાહિત્યેન સમાકારતયા પરિ

જાયતે) અસ્મ રાશિ સે છન્ન અગ્નિ જિસ પ્રકાર ઊપર સે અપને દાહ-
 કૃત્વ પરિણામકો પ્રકાશિત નહીં કરતી હૃદ્દી ઓ ભીતરમેં જાગ્વત્યમાન
 રહા કરતી હૈ ઉસી તરહસે બહ સાધુ ઓ બાહિરસે શુષ્કકાય, રુક્ષ ઓર
 કાન્તિરહિત હોતા હુઆ ઓ ભીતરમેં તપજનિત દીપ્તિસે દેદીપ્યમાન હોતા
 હૈ । તથા-(જલિય હુયાસણોવિવતેયસા જલતે) પ્રદીપ્તબહિઃ જિસ પ્રકાર
 અપની પ્રભા સે ચમકતી રહતી હૈ ઉસી પ્રકાર યહ ઓ ભાવતમ કા
 વિનાશક હોને સે જ્ઞાનરૂપ તેજ સે ચમકતા રહતા હૈ । (ગોસીસચદળ-
 પિવ સીયલે) ગોશીર્ષ ચદન જિસ પ્રકાર શીતલ ઓર સુગંધિત હોતા
 હૈ ઉસી પ્રકાર યહ સાધુ ઓ મનસ્તાપ કે ઉપશમન સે શીતલ હોતા હૈ
 ઓર (સુગંધીય હરઓવિવ સમિયભાવે) શીલ કી સુગંધી સે દ્વદ કી
 તરહ સમભાવવાલા અર્થાત્ જિસ પ્રકાર જલાશય વાયુ કે અભાવ સે
 તરંગો કે ઉત્થાન પતન સે રહિત હોને કે કારણ ઊંચા નીચા નહીં

રાશિચ્છન્નેવ જાયતે' રાખના ઢગલા નીચે ગહેલી અગ્નિ જેમ ઉપરથી પોતાની
 ઢાહકતા પ્રગટ કરતી નથી છતાં અદર સળગતી પ્રકાશિત રહે છે, તેમ તે
 સાધુ પણ ખહારથી શુષ્ક શરીર વાળો, રુક્ષ અને કાન્તિ રહિત હોવા છતાં
 પણ અદરથી તપ જનિત તેજથી દેદીપ્યમાન હોય છે " જલિય હુયાસણોવિવ
 તેયસા જલતે " પ્રદીપ્ત અગ્નિ જેમ પોતાના તેજથી ચળકતી રહે છે તેમ તે
 પણ ભાવતમનો વિનાશક હોવાથી જ્ઞાન રૂપ તેજથી ચમકતો રહે છે " ગો
 સીસચદળપિવ સીયલે ' જેમ ગોશીર્ષ ચદન શીતલ અને સુગંધિત હોય છે
 તેજ પ્રકારે મનના તાપનું ઉપશમન થવાને કારણે શીતલ હોય છે અને " સુગ
 ધિયહરઓવિવ સમિયભાવે " શીલની સુગંધથી સરોવરના સમાન સમભાવ
 વાળો હોય છે, એટલે કે જેમ વાયુના અભાવે તરંગોના ઉત્થાન તથા પત
 નથી રહિત હોવાને કારણે સરોવરની અપાટી ઊંચીનીચી લાગતી નથી પણ

લક્ષ્યતે, તયૈવ શ્રમણોઽપિ માનાપમાનયોરનનુભવાત્ હર્ષગ્લાન્યોરમાનાત્મર્થદૈકરૂપ
 एव भवतीति । तथा-उग्धोसियसुनिम्मल 'मार्जितसुनिर्मलम्=मार्जित=तलोपरि-
 स्थितमलापनयनेन, अतएव-सुनिर्मल=सुप्रसन्नम्, 'आयममडलतल व' आद-
 र्शमण्डलतलमित्र=आदर्श:=दर्पणस्तस्य यन्मण्डलतल=मण्डलाकार तल तदिव 'पाग-
 ढभावेण' प्रकटभावेन=अमायित्वादिनिगूहितभावेन 'सुद्धभावे' शुद्धभावः=शुद्धः
 भावः स्वरूपो यस्य स, तथा-'कुजरो व' कुञ्जर इव 'सौंडीरो' शौण्डीरः=
 परीपहसैन्यनिर्दलनसमर्थः, 'वसभो व' वृषभ इव 'जायथामे' जातस्थामा=
 यथा वृषभो भारोद्धहने सामर्थ्ययुक्तो भवति, तथैव स्वीकृतमहाव्रतभारोद्धहने साम-
 र्थ्यसंपन्न इत्यर्थः । तथा-'सीहो व' सिंह इव श्रमणः, अमुमेवार्थं स्पष्टयति—
 'जहा' यथा सिंह 'मिगाहिवे', मृगाधिप-अथ च तैः 'दुप्पधरिसे' दुप्पधृ-

दिखता है किन्तु एकसा आकार वाला परिलक्षित होता है उसी प्रकार
 यह साधु भी मान और अपमान के अनुभव से रहित होने के कारण
 हर्ष और ग्लानि, इन दोनों प्रकार के भावों से रहित बन जाता है,
 अतः वह सर्वदा एक रूप में ही रहा करता है। (उग्धोसिय मडल
 आयसमडलतल व पागडभावेण सुद्धभावे) माजने से-ऊपर के मैल
 के हटा देने से-निर्मल बने हुए दर्पणमडल की तरह इस का स्वरूप
 अमायी होने के कारण प्रकट रूप से शुद्ध रहता है। (सौंडीरो कुजरो
 व) कुजर के जैसा यह शौ डीर-परीपहरूपी सैन्य के निर्दलन करने में
 समर्थ-होता है। (वसभोव जायथामे) वृषभ की तरह जातस्थाम-
 स्वीकृत महाव्रतरूप भार के वहन करने में शक्तिशाली होता है।
 (सीहोव जहा मिगाहिवे होइ दुप्पधरिसे) सिंह जैसे मृगों का अधि-
 पति और उनके द्वारा अपराभयनीय होता है उसी तरह वह साधु भी

એક સરખી લાગે છે એ જ પ્રમાણે માધુ પણ માન અને અને અપમાનના
 અનુભવથી રહિત હોવાને કારણે હર્ષ અને શોક એ બંને પ્રકારના લાવોથી
 રહિર બની જાય છે તેથી તે હમેશા સમભાવથી જ રહે છે “ઉગ્ધોસિયમડલ
 આયસમડલતલવ પાગડભાવેણ સુદ્ધભાવે” માનવાથી - ઉપરનો મેલ દૂર કરી
 નાખવાથી નિર્મળ બનેલ દર્પણની જેમ તેનું સ્વરૂપ અમાયી હોવાને કારણે પ્રગટ
 રૂપે શુદ્ધ રહે છે “સોડીરો કુજરોવ” હાથીની જેમ તે શૌ ડીર-પરીપહરૂપી સૈન્યનો
 અન્યરધાણ કાઢી નાખવાને સમર્થ હોય છે “વસમોવ જાયથામે” વૃષભની જેમ
 તે સ્વીકૃત મહાનતરૂપ બોળનું વહન કરવાને શક્તિશાળી હોય છે “સીહોવ
 જહા મિગાહિવે હોઈ દુપ્પધરિસે” જેમ સિંહ મૃગોનો અધિપતિ તથા તેમનાથી

વ્યઃ-અપરિભવનીયો ' હોડ ' ભવતિ, તથૈવ સાધુઃ પરીપદ્શરપગજિતો ભવતિ । તથા 'સારયસલિલ વ' શારદસલિલમિત્ત=શરદ્દતુમમ્વન્નિજન્મિત્ત 'મુદ્દહિયળ' મુદ્દહિયઃ =સ્વચ્છાન્તઃ કરણ ઇત્યર્થઃ, તથા 'મારઢે ચેવ' મારઢડ ઇત્ત=મારઢડપક્ષીવ ' અપ્પ-મત્તે ' અપ્પમત્તઃ=પ્રમાદવર્જિત 'લ્લગ્ગિવિમાણ વ' સલ્લિવિપાણમિત્તગ્ધ્વી=' મેં ઢા' ઇતિપ્રસિદ્ધો જન્યશ્વતુષ્પદવિશેષઃ, તસ્ય વિપાણ=શ્વતુષ્પદમિત્ત ' ળગ જાળ' ઇકજાતઃ-અથા-લ્લગ્ગિનઃ શ્વતુષ્પદમેક ભવતિ, તથૈવ સાધુરપિ રાગદ્વેપરહિત ઇકાકી ભવતિ । તથા-' લ્લાણૂવ ' સ્થાણુરિપ ' ઢઢૂકાણ ' ડર્વકાયઃ કાયોત્સર્ગકાલે, તથા ' સુણ્ણાગારેવ્વ' સૂન્યાગારમિત્ત અપતિર્મા=શરીરસસ્કારવર્જિત ઇત્યર્થઃ, તથા 'સુણ્ણાગારાવણસસતો' સૂન્યાગારાવણસ્યાન્તઃ=સૂન્યસ્યાગારસ્યાવણસ્ય ચ અન્તઃ=મન્થે ' નિવાયસરણપ્પદીવજ્ઞામણમિત્ત ' નિર્વાતિશરણપ્રદીપધ્યાપનમિત્ત-નિર્વાતો=વાતર-હિતો યઃ શરણપ્રદીપઃ=ગૃહપ્રદીપસ્તસ્ય ધ્યાપનમિત્ત=મંડ્યગ્રિતશિલેવ ' નિપ્પકપે '

દેશવિરતિ શ્રાવકો કી અપેક્ષા સકલસયમ કા અધિપતિ ઓર પરિ-પહોં સે અપરાજિત હોતા હૈ । (સારયમલિલ વ મુદ્દહિયળ) વહ શરદ્ ઋતુ સવધી જલ કે સમાન સ્વચ્છ અન્તઃ કરણ વાલા હોતા હૈ, (મારઢે ચેવ અપ્પમત્તે) મારઢડપક્ષી કે સમાન વહ પ્રમાદ સે વર્જિત હોતા હૈ, (લ્લગ્ગિવિમાણ વ ળગજાળ) મેં ઢાં કે સીંગ કે સમાન વહ ઇક જાત હોતા હૈ-અર્થાત્ જૈસે મેં ઢાં કા શ્રૂંગ ઇક હી હોતા હૈ ઁસી તરહ સાધુ ધી રાગદ્વેષ રહિત હોને સે ઇકાકી હી હોતા હૈ । (લ્લાણૂવ ઢઢૂકાણ) સ્થાણુ જિસ પ્રકાર ડર્વકાય હોના હૈ ઁસી પ્રકાર સાધુ ધી કાયોત્સર્ગ કે સમય ડર્વકાય હોતા હૈ । (સુણ્ણાગારેવ્વ અપહિકમ્મે) સૂન્ય ગૃહ જૈસે સસ્કાર વિહીન હોતા હૈ ઁસી પ્રકાર નાધુ ધી શારીરિક સસ્કાર સે વર્જિત હોતા હૈ । (સુણ્ણાગારાવણસસતો નિવાયસરણપ્પદીવજ્ઞામણમિત્ત

અન્યેય હોય છે તેમ સાધુ પણ દેશ વિરતિ શ્રાવકોની અપેક્ષાએ સજ્જ સય મનો અધિપતિ અને પતિવહોથી અપરાજિત હોય છે "સારયસલિલ વ મુદ્દહિયળ" તે શરદ ઋતુના જળની સમાન સ્વચ્છ અન્તઃકરણવાળો હોય છે "મારઢે ચેવ અપ્પમત્તે" મારઢડ પક્ષીના જેવો તે પ્રમાદ રહિત હોય છે લ્લગ્ગિવિમાણ વ ળગજાળ" મેં ઢાંના શિંગડાની જેમ તે એકાકી હોય છે એટલે કે જેમ મેં ઢાંને એક જ શિંગડો હોય છે તે પ્રમાણે સાધુ પણ રાગદ્વેષ રહિત હોવાથી એકાકી જ હોય છે "લ્લાણૂવ ઢઢૂકાણ" સ્થાણુ જેમ ડર્વકાય છે તેમ સાધુ પણ કાયોત્સર્ગના સમયે ડર્વકાય હોય છે "સુણ્ણાગારેવ્વ અપહિકમ્મે" ખાલી મકાન જેમ સસ્કાર વિહીન હોય છે તેમ સાધુ પણ શારીરિક સસ્કાર રહિત હોય છે, "સુણ્ણાગારાવણસસતો નિવાયસરણપ્પદી

નિષ્પ્રકમ્પઃ=દિવ્યાનુપસર્ગસર્ગેઽપિ વર્મવ્યાનાદો નિશ્ચલ इत्यर्थ, जहा सुरो ' यथा क्षुर' = क्षुर इव ' एगधारे चेव ' एगधारश्चैव, यथा क्षुरण्णधारस्तथैव साधुक्तसर्ग-
रूपैरुधारो भवति, वर्द्धमानपरिणामधारइत्यर्थ, जहा अही' यथाऽहिः=अहिरिय-
सर्प इव ' एगदिद्वी चेव ' एरुदृष्टिश्चैव=मोक्षे वद्वलक्ष्य इत्यर्थः, तथा—' आगास
चेव निरालवे ' आकाशमिव निरालम्ब' । यथाऽकाशआलम्बनगर्जितस्तथैव श्रम-
णोऽपि ग्रामदेशकुलाधालम्बनरहित इत्यर्थ, तथा—' विहगे विव' विहग इव पक्षीव
' सव्वओ ' सर्वतः ' विप्पमुक्के विप्पमुक्तः निष्परिग्रह इत्यर्थः, तथा—' उरए

નિષ્પ્રકપે) શૂન્ય ઘર ઓર શૂન્ય આપણ-ટુકાનકે મીતર નિર્વાન (વાયુરહિત)
પ્રદેશ મેં રચે હુણ દીપકની પ્રજ્વલિત લૌ જેસે નિષ્પ્રકપ હોતી હૈ
ઉસી પ્રકાર સાધુ મી દેવાદિકૃત ઉપમણીં કે આને પર મી ધર્મધ્યાન
આદિ મેં નિષ્પ્રકપ નિશ્ચલ બના રહતા હૈ । (જહાસુરો ચેવ એગધારે)
જેસે ક્ષુરા ઝસ્તરા-એક ધાર વાલા હોતા હૈ ઉસી પ્રકાર સાધુ મી
ઉત્સર્ગરૂપ એક ધાર વાલા હોતા હૈ । અર્થાત્-સાધુ કે પરિણામ પ્રકૃષ્ટ
વિશુદ્ધિ કો લિયે વઢતે હી રહતે હૈ, વે પ્રતિપાતી પરિણામોં વાલે
નહીં હોતે હૈ । (જહા અહી ચેવ એગદિદ્વીં) સર્પ જિસ પ્રકાર એક દૃષ્ટિ-
વાલા હોતા હૈ ઉસી પ્રકાર સાધુ મી અપને લક્ષ્યરૂપ એક મોક્ષ મેં
નિયદ્દ દૃષ્ટિવાલા હોતા હૈ । (આગાસ ચે વ નિરાલવે) આકાશકી તરહ
વહ આલબન-સહારા સે રહિત હોતા હૈ અર્થાત્ સાધુ કો ગ્રામ
દેશ, કુલ આદી કા આલબન નહીં હોતા હૈ । વહ ઇન સવ ગ્રામાદિ સે
સર્વથા રહિત હી હોતા હૈ । (વિહગે વિવ સવ્વઓ વિપ્પમુક્કે) વિહગ-
પક્ષી કી તરહ વહ સર્વતઃ વિપ્રમુક્ત હોતા હૈ પરિગ્રહ સે વર્જિત હોતા

વ જ્ઞામણમિવ નિષ્પ્રકપે ” ખાલી ઘર અને ખાલી દુકાનની અદર વાયુની અસર
રહિત ધ્યાનમાં રાખેલ દીવાની મળગતી બનાવો જેમ નિષ્પ્રકપ (સ્થિર)
હોય છે તેમ સાધુ પણ દેવાદિદૃત ઉપસર્ગો નડતા છતા પણ ધર્મધ્યાન આદિમાં
અચલ રહે છે “ જહા સુરો ચેવ એગધારે ” જેમ ક્ષુરા-અસ્રો એક ધારવાળો
હોય છે તેમ સાધુ પણ ઉત્સર્ગરૂપી એક ધારવાળો હોય છે-એટલે કે સાધુની
મનોવૃત્તિ પ્રકૃષ્ટ વિશુદ્ધિઓને માટે વધતી જ રહે છે, તે પ્રતિપાતિ પરિણા-
મવાળો હોતો નથી “ જહા અહીચેવ એગદિદ્વી ” જેમ સાપ એક દૃષ્ટિવાળો
હોય છે તેમ સાધુ પણ પોતાના લક્ષ્યરૂપ એક મોક્ષમાં જ લીન દૃષ્ટિવાળો હોય
છે “ આગાસ ચેવ નિરાલવે ” આકાશની જેમ તે નિરાવલળી હોય છે એટલે
કે સાધુને ગામ, દેશ, કુળ આદિનું અવલબન હોતું નથી તે ગ્રામાદિ સમસ્ત
અવલબનોથી રહિત હોય છે “ વિહગે વિવ સવ્વઓ વિપ્પમુક્કે ” વિહગ-
પક્ષીની જેમ તે સર્વ પ્રકારે મુક્ત હોય છે-પરિગ્રહ રહિત હોય છે “ કય.

જહા ' ઊરગો યથા-સર્પ ઇવ ' કયપરનિલય ચેવ' કૃતપરનિલયઐવ=કૃત =આશ્ર
 યીકૃત: પરનિલયો યેન સઃ, અય ભાવઃ-યથા સર્પોઽન્યકૃતવિલે તિષ્ઠતિ, તથૈવ
 શ્રમણઃ પરકૃતગૃહે તિષ્ઠતિ । તથા-' અનિલોન્વ ' અનિલ ઇવ=પવન ઇવ 'અપ્પહિ-
 વદ્ધો ' અપ્રતિવદ્ધઃ-અપ્રતિવન્ધવિહારીત્યર્થઃ, તથા ' જીવોન્વ ' જીવ ઇવ 'અપ્પ
 હિહ્યગર્હ' અપ્રતિહતગતિઃ= સર્પદેશવિહારીત્યર્થઃ । અત્ર સર્વત્ર ' ચેવ ' શબ્દઃ
 સમુચ્ચયાર્થઃ, ' ગામે ગામે ય ' ગ્રામે ગ્રામે ચ ' ઇગરાય' ઇગરાત્ર 'જગરે જગરે'
 નગરે નગરે ' પચરાય' પચરાત્ર, ' વૃહજ્જતો ' વ્રજન્=વિહરન્, નિવાસ કુર્વન્નિ-
 ત્યર્થઃ, તથા ' જિહ્દિય ' જિતેન્દ્રિયઃ, ' જિયપરીસહે ' જિતપરિપહ, અતएव
 ' નિબ્બણ ' નિર્ભયઃ ' વિઝુ ' વિદ્વાન=તત્ત્વજ્ઞ ઇત્યર્થઃ, ' સચિત્તાવિત્તમીસર્પર્હિ '

હૈ (કયપરનિલય જહા ચેવ ઊરગ) સર્પ કી તરહ વહ દૂસરે ને અપને
 નિમિત્ત યનાયે હુણ ઘર મે રહતા હૈ, અર્થાત્ જિસ પ્રકાર સર્પ અન્ય
 ચૂહે આદિ સે યનાયે ગયે યિલ મેં રહતા હૈ ડસી પ્રકાર સાધુ મી ગૃહસ્થ
 કે યનાયે હુણ ઘર મે રહતા હૈ । (અપ્પહિવદ્ધો અનિલોન્વ) અનિલ
 પવન-કી તરહ વહ અપ્રતિવદ્ધ -પ્રતિવન્ધ સે રહિત હોતા હૈ અર્થાત્
 વહ સાધુ અપ્રતિવન્ધ વિહારી હોતા હૈ । તથા (જીવોન્વ અપ્પહિહ્ય-
 ગર્હ) જીવ કી તરહ વહ અપ્રતિહત ગતિવાલા હોતા હૈ-ડસકા વિચરણ
 સર્વત્ર હોતા હૈ-ડસે કીસી મી દેશ મેં વિચરણ કરને કા નિવેધ નહીં
 હોતા હૈ । (ગામે ગામે ય ઇગરાય) વહ હર ઇક ગ્રામ મેં ઇક રાત્રી
 તથા (જગરે જગરે ય પચરાય) તથા પ્રત્યેક નગર મેં પાચ રાત્રિ તક
 (વૃહજ્જતે) ઠહરતા હૈ । તથા (જિહ્દિય) જિતેન્દ્રિય (જિયપરિસહેય)
 જિતપરીષદ્ અત एव (નિબ્બણ) નિર્ભય (વિઝુ) વિદ્વાન-તત્ત્વજ્ઞ, વહ

પરનિલય જહા ચેવ ઊરગ " સર્પની જેમ તે ખીબાએ પોતાના માટે યનાવેલા
 ઘરમા રહે છે, એટલે કે જેમ સર્પ ઉદર આદિએ યનાવેલા ઘરમા રહે છે
 તેમ સાધુ પણ ગૃહસ્થે યનાવેલા ઘરમા રહે છે " અપ્પહિવદ્ધો અનિલોન્વ "
 અનિલ-પવનની જેમ તે અપ્રતિવદ્ધ-પ્રતિવન્ધથી રહિત હોય છે-એટલે કે તે
 અપ્રતિવન્ધવિહારી હોય છે " જીવોન્વ અપ્પહિહ્યગર્હ " જીવની જેમ તે અપ્ર
 તિહત ગતિવાળો હોય છે તેનું વિચરણ સર્વત્ર હોય છે તેને કોઈ પણ પ્રકે
 શમા વિચરવાનો વિષેધ હોતો નથી " ગામે ગામે ય ઇગરાય " તે દરેક ગામમા
 એક રાત્રી તથા " જગરે જગરે ચ પચરાય " તથા પ્રત્યેક નગરમા પાચ
 રાત્રિ સુધી " વૃહજ્જતે " રોકાય છે તથા " જિહ્દિય " જિતેન્દ્રિય " જિયપરિ-
 સહેય " પરીપહોને જીતનાર હોવાથી " નિબ્બણ " નિર્ભય " વિઝુ " વિદ્વાન-

सचित्ताचित्तमिश्रकेषु 'दब्धेहि' द्रव्येषु 'विरागयगण' विरागतां गतः=मूर्च्छा-
राहित्यं प्राप्त, 'सचयओ' सचयतः-सचयकरणात् 'विरए' विरतः 'मुत्ते'
मुक्तः=आद्याभ्यन्तरपरिग्रहरहितः, 'लहुए' लघुकः-गौरवत्रयत्यागात्, 'निरक्खे'
निरक्काहूक्षः=आकाङ्क्षा वर्जितत्वात्, 'जीवियमरणासविप्पमुत्ते' जीवितमरणाभा-
विप्रमुक्तः=जीविताशामरणानाभ्या रहितः, 'धीरे' धीरः=बुद्धिमान्, 'निस्सघ'
सन्धिरहित=चारित्र्यपरिणाम-यवच्छेदाभावात्, 'निव्वण' निर्त्रण=निरतिचारम्
'चरित्त' चारित्र्य=सयम 'कायेण' कायेन=सायव्यापारेण न तु मनोरथमात्रेण
'फासयते' स्पृशन्, तथा- 'सयय' सततम् 'अज्झप्पज्झाणजुत्ते' अज्यात्मध्या-
नयुक्त 'निहुए' निभृत=उपशान्तः 'एगे' एगः=रागादिसहायवर्जितः 'धम्म'
धर्म=श्रुतचारित्र्यक्षण 'चरेज्ज' चरेत्=अनुपालयेत् ॥सू०५॥

साधु (सचित्ताचित्तमीसर्हि दब्धेहि विरागयगण) सचित्त, अचित्त
और मिश्र द्रव्यों में मूर्च्छा रहितपने को प्राप्त होकर (सचयओ विरए)
सचय करने से विरक्त हो जाता है और (मुत्ते) आद्या और आभ्यन्तर
परिग्रह से रहित हो जाता है। इस तरह (लहुए) गौरव त्रय के त्याग
से लघु बना हुआ श्रमण (निरक्खे) आकाङ्क्षा से वर्जित होने के
कारण (जीवियमरणासविप्पमुत्ते) जीवन की आशा और मरण की
भयसे रहित हो जाता है। इस प्रकार (धीरे) इन समस्त पूर्वोक्त
विशेषणों से विशिष्ट बना हुआ तत्त्वज्ञ श्रमण (निस्सघ) चारित्र्य-
परिणाम की सवि-व्यवच्छेद के अभाव से (निव्वण) निरतिचार
(चरित्त) चारित्र्यसयम को (काएण) काय के व्यापार से, नहीं की
मनोरथ मात्र से (फासयते) धारण कर (अज्झप्पज्झाणजुत्ते) अज्या-
त्मध्यान में लवलीन बनता हुआ (निहुए) उपशान्त भाव से सपन्न

तत्त्वज्ञ ज्ञेयो ते साधु "सचित्ताचित्तमीसर्हि दब्धेहि विरागयगण" सचित्त,
अचित्त અને मिश्र द्रव्योभा भभत्व रहितताने प्राप्त करीने "सचयओ विरए"
सअह करवाथी विरक्त થઈ જાય છે અને "मुत्त" आद्या અને आभ्यन्तर
परिग्रहથી रहित થઈ જાય છે આ રીતે "लहुए" गौरवत्रयना त्यागથી लघु
जनेल श्रमण "निरक्खे" अकाङ्क्षाથી रहित होवाने कारणे "जीवियमरणा
सविप्पमुत्ते" जीवनની आशा અને मरणની आशाથી रहित થઈ જાય છે આ
રીતે "धीरे" ते सधणा विशेषणोથી युक्त जनेव तत्त्वज्ञ श्रमण "निस्सघ"
आरित्र परिणामनी सवि-व्यवच्छेदने अलावे "निव्वण" निरतिचार "चरित्त"
आरित्र-सयमने "काएण" कायना व्यापारથી-मनोरथથી न नही- "फासयते"
धारण करीने "अज्झप्पज्झाणजुत्ते" अज्यात्मध्यान दीन जनीने "निहुए"

મૂળ—ઈમં પરિગ્રહવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાય પાવયણં
 ભગવયા સુકહિયં અત્તહિયં પેચ્ચાભાવિયં આગમેસિમ્મદ સુદ્ધ
 નેયાઉય અકુહિલં અણુત્તરં સવ્વદુક્ખપાવાણં તિઉસમણં,
 તસ્સ ઇમા પંચભાવણાઓ ચરિમસ્સ વયસ્સ હુતિ, પરિગ્ર-
 હવેરમણરક્ષણદ્વયાય ॥ સૂ. ૬ ॥

ટીકા—‘ ઇમ ચ ’ इत्यादि—

‘ ઇમ ચ ’ શ્વેદ ચાપરિગ્રહનામક પન્નમ સવરદ્વાર ‘ પરિગ્રહવેરમણપરિરક્ષણ
 દ્વયાય ’ પરિગ્રહવિરમણપરિરક્ષણાર્થતયા પરિગ્રહવિરમણસ્ય પરિરક્ષણમેવ અર્થઃ પ્રયો-
 જન ચસ્ય તત્, તદેવ તત્તા, તયા અત્ર સ્વાર્થે તલ્, પરિગ્રહવિરતિપરિત્રાણાયેત્યર્થઃ,

હોકર (ઇમે) રાગાદિક ભાગોંસે વર્જિત હોનેસે છક, એસા જો જાતા હૈ
 વહી (ધમ્મ) ચારિત્રરૂપ ધર્મકો (ચરેજ્ઞ) પાલન કરનેચાલા હો સકતા હૈ ।

માવાર્થ—સૂત્રકારને હમ સૂત્ર દ્વારા યહ સ્પષ્ટ ક્રિયા હૈ કિ પરિગ્રહ-
 વિરત રૂપ સાધુ ધર્મ મેં લવલીન બને જુન મનુષ્ય કી સ્થિતિ કેસી હો
 જાતી હૈ । તથા જન વહ ઇસ સ્થિતિ સે સપત્ર બનેગા તવ હી પૂર્ણરૂપ સે
 વહ શ્રમણ ધર્મ કે પાલન કરને કા અધિકારી બન સકતા હૈ અન્યથા
 નહી । સૂત્ર મેં યહી વિષય શબ્દાન્તરો સે સમજાયા ગયા હૈ ॥ સૂ. ૫ ॥

ફિર બી કહતે હૈ— ‘ ઇમ ચ ’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(ઇમ ચ) યહ અપરિગ્રહ નામ કા પાચવાં સવર દ્વારરૂપ
 (પાવયણ) પ્રવચન (પરિગ્રહવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાય) પરિગ્રહવિરમણ

ઉપશાન્ત ભાવથી યુક્ત થઈ ને ‘ ઇમે ’ રાગાદિક ભાવોથી રહિત હોવાથી એક,
 એવો જો થાય છે તે જ “ ધમ્મ ” ચારિત્રરૂપ ધર્મનું “ ચરેજ્ઞ ” પાલન કરનાર
 થઈ શકે છે

ભવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રમા એ સ્પષ્ટ કર્યું છે કે પરિગ્રહથી વિરક્ત
 થવા રૂપ ધર્મમા લીન બનેલ મનુષ્યની સ્થિતિ કેવી થઈ જાય છે તથા બ્યારે
 તે આ સ્થિતિએ પહોંચે ત્યારે જ તે સ પૂર્ણ રીતે શ્રમણ ધર્મનું પાલન કરવાને
 પાત્ર બની શકે છે બીજી કોઈ પણ રીતે નહી સૂત્રમા એ જ વિષય જુદા જુદા
 શબ્દો દ્વારા સમજાવવામા આવ્યો છે ॥ સૂ. ૫

વળી કહે છે—“ ઇમ ચ ” इत्यादि

ટીકાર્થ—“ ઇમ ચ ” આ પરિગ્રહ નામના પાચમા સવરદ્વારનું “ પાવયણ ” પ્રવચન
 “ પરિગ્રહવેરમણપરિરક્ષણદ્વયાય ” પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની રક્ષાને માટે “ ભગ

‘પાપયણ’ પ્રપચન ‘ભગવતા’ ભગવતા ‘સુકૃદિય’ સુકૃદિતમ્, ‘અત્તહિય’ આત્મહિતમ્, ‘પેચાભાવિય’ પ્રેત્યભાવિકમ્ ‘આગમેમિમદ્’ આગમિષ્યદ્ભદ્રં ‘સુદ્ધ’ શુદ્ધ ‘નેયાડય’ નેયાયિમ્ ‘અકુટિલ’ અકુટિલમ્ ‘અણુત્તર’ અનુત્તર ‘સવ્વદુક્ખપાપાણ’ સર્વદુઃખપાપાના ‘વિડસમણ’ વ્યુપશમનમ્ । એવા વ્યાख्या પૂર્વ ગતા । ‘તસ્સ’ તસ્ય-અપરિગ્રહનામકસ્ય ‘ચરિમસ્સ’ ચરમસ્ય=અન્તિમસ્ય ‘સચરદારસ્સ’ સચરદારસ્ય ‘इमा पच भावणाओ’ इमाः=वक्ष्यमाणाः पञ्च भावना ‘હુતિ’ ભવન્તિ । કિમર્થં ભવન્તિ ? इत्याह-‘परिगृहवेरमणरक्खणट्टयाए’ परिग्रहविरमणरक्षणार्थतायै-अपरिग्रहपरिरक्षणार्थमित्यर्थः ॥ सू० ६ ॥

વ્રત કી રક્ષા કે લિયે (ભગવતા સુકૃદિય) ભગવાન ને કહા હૈ । यह (अत्तहिय) आत्मा का हितकारक है । (पेचाभाविय) परलोक में भी शुभ फल का दाता है । इसी निमित्त से यह (आगमेसि भद्) भविष्यत् काल में कल्याण प्रद है यह (सुद्ध) सर्वथा निर्दोष है । (नेयाडय) वीतराग सर्वज्ञ एव हितोपदेशक प्रभु द्वारा भाषित होने से न्याय संपन्न है । (अकुटिल) ऋजुभाव का जनक होने से अकुटिल है । (अणुत्तर) सर्व श्रेष्ठ होने से अनुत्तर है । तथा (सव्वदुक्खपावाण) समस्त प्रकार के दुःख जनक ज्ञानावरणीय आदि अष्टविध कर्मों का (विडसमण) उपशमक है । (तस्स चरिमस्स सचरदारस्स) उस अन्तिम सचरदार की (इमा पचभावणाओ) ये वक्ष्यमाण पांच भावनाएँ हैं जो (परिगृहवेरमणरक्खणट्टयाए हूति) परिग्रह विरमण व्रत की रक्षा करने वाली होती हैं ॥ सू० ६ ॥

વ્યા સુકૃદિય ” ભગવાને કહેલ છે “ અત્તહિય ” આત્માનુ હિતકારક છે “ પેચા ભાવિય ” પરલોકમા પશુ શુભ ફળ દેનાર છે એ જ કારણે તે “ આગમેસિ ભદ્ ” ભવિષ્યકાળમા કલ્યાણકારી છે, તે “ સુદ્ધ ” તદ્દન નિર્દોષ છે “ નેયાડય ” વીતરાગ સર્વજ્ઞ અને હિતોપદેશક પ્રભુ દ્વારા કથિત હોવાથી તે ન્યાયયુક્ત છે “ અકુટિલ ” ઋજુભાવનુ જનક હોવાથી તે અકુટિલ છે “ અણુત્તર ” સર્વ-શ્રેષ્ઠ હોવાથી તે અનુત્તર છે તથા “ સવ્વદુક્ખપાપાણ ” સમસ્ત પ્રકારના દુઃખજનક જ્ઞાનાવરણીય આદિ આ. પ્રકારના કર્મોનુ “ વિડસમણ ” ઉપશમન કરનાર છે ‘ તસ્સ ચરિમસ્સ સચરદારસ્સ ’ તે અન્તિમ સચરદારની “ इमा पचभावणाओ ” આ પ્રમાણે પાંચ ભાવનાઓ છે જે “ परिगृहवेरमणरक्खणट्टयाए हूति ” પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની રક્ષા કરનારી હોય છે ॥ સુ. ૬ ॥

सम्प्राति पञ्च भावना अभिधातुमामः प्रथमा भावनामाह—‘पचम’ इत्यादि—

मूलम्—पढम सोइदिएण सोच्चा सदाइं मणुण्णभइगाइं,
 किंते, वरमुरेयमुंइंगपणवददुरकच्छभीवीणं—विपंभिवल्लईवद्धीं
 सक सुघोस-णंदि-सूअर-परिवादिणि वसतूणग पव्वय तती-
 तलंताल-तुंडिय-निग्घोस- गीयवाइयाइ णडणट्टगजल्लमल्लमु-
 ट्ठिगवेलवंग-कहगपवगलासग-आइक्खग- लंख- मख-तुणइल्ल
 तुवंवीणिय-तोल्लायर-पकरणाणि य वहुणि मंहुरंसगीयसुस्स-
 राइ कची मेहलाकलावगपतरक- पतरेकपाय — जालकघटिय
 खिखिणि रयणोरुजालय लुद्धियनेउरचलणमालियकणगनिग
 डंजालकभूसणसंदाणि लीलचकम्ममाणाणुदीरियाइ तरुणीजं
 णहसिय भणिय कलरिभियमजुलाइ गुणवयणाणि य वहुणि
 मंहुरजणभासियाइ अण्णेषु य एवमाइएसु सदेसु मणुण्णभइ-
 एसु न तेसु समणेण सज्जियव्व न रज्जियव्व न गिज्झियव्वं
 न मुज्झियव्व न विनिघाय आवज्जियव्व न लुभियव्वं न
 तुसियव्व न हसियव्व न सइ च मइ च तत्थ कुजा । पुण-
 रंवि य सोइदिएण सोच्चा सदाइ अमणुण्णपावगाइ किंते,
 अक्कोसफरुसखिसण अवमाणण तज्जणनिब्भच्छण दित्तवयण
 तासण उक्कूजिय रुण्णरडियकंदिय विग्घुट्टरसियकलुणविल-
 वियाइ अण्णेषु य एवमाइएसु सदेसु अमणुण्णपावएसु-
 न तेसु समणेण रुसियव्व न हीलियव्व न निदियव्व, न
 खिसियव्व, न छिदियव्व न भिदियव्व, न वहेयव्व, न दु
 गुल्लवत्तिया विं लब्भा उप्पाएउ । एव सोइदियभावणाभाविओ

ભવદ્ અંતરપ્પા મણુપ્પામણુપ્પા સુવિભદુવિભરાગદોસે
પણિહિયપ્પા સાહુ મણવયણકાયગુત્તે સવુડે પણિહિદ્દિણ
ચરેજ્જ ધમ્મ ॥ સૂ૦ ૭ ॥

ટીકા-‘પદમ’ પ્રથમા નિઃસ્પૃહતામિધેયા ભાવનામાદ-‘સોડદિણ’ શ્રોત્રેન્દ્રિ-
યેણ=કર્ણેન ‘સોચા’ શ્રુત્વા ‘સદાઈ’ શબ્દાન્, કીદશાન્ ? ‘મણુપ્પમહગાઈ’ મનો-
જમદ્રકાન્=મનોજ્ઞાઃ=મનોહરા અતएव મદ્રકાઃ=કર્ણેન્દ્રિય સુવજનકાસ્તાન્ ‘કિં તે’
કાસ્તાન્=કથમ્ભૂતાસ્તાન્ ? इत्याદ-‘વરસુરયમુદ્દગપણવદ્દુરકચ્છમી વીણવિપચિવ-
લ્લહ્-પદ્મીસક-સુગોસ-ણદિ-ત્તસર-પરિવાદિણિવસત્તૂળક-

અવ સૂત્રકાર હમ વ્રત કી પાંચ ભાવનાઓ કો પ્રકટ કરને કે
અભિપ્રાય સે સર્વ પ્રથમ ઉસકી પ્રથમ ભાવના કો કહતે હૈ--‘પદમ’
इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(પદમ) હસ વ્રત કી પહિલી ભાવના કા નામ નિસ્પૃહતા
હૈ, વહ ભાવના હસ પ્રકાર સે હૈ—(સોડદિણ) શ્રોત્રેન્દ્રિય સે, (મણુ-
પ્પમહગાઈ) મનોજ્ઞ અતएव મસુર ઈસે (સદાઈ) શબ્દોં કો (સોચા)
સુન કરકે સાધુ કા કર્તવ્ય હૈ કિ વહ કમી મી ઉનમૈ આસક્તિ ન
કરે રાગભાવ સે ઉનમૈ ન વધે, ઉનમૈ વહ ગૃદ્ધિભાવ ન કરે ઓર
મોહિત ન હો તથા જો દ્વેષ પૈદા કરને વાલે હોં ઉનમૈ વહ રુદ્ધ ન હો ।
હસી વિષય કો સૂત્રકાર હન નીચે કી પઢ્ડિયોં દ્વારા સ્પષ્ટ કરતે હૈ—(કિં
તે) વે કૌન ૨ સે હૈ—હસ પ્રકાર કી શકા કરને વાલે કે પ્રતિ વે કહતે
‘હૈ કિ સુનો વે હસ પ્રકાર સે હૈ (વરસુરયમુદ્દગપણવદ્દુરકચ્છમી વીણ
વિપચિ-વલ્લહ-પદ્મીસક-સુગોસ-ણદિ-ત્તસર-પરિવાદિણિવસત્તૂળક-

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની પાચ ભાવનાઓ પ્રગટ કરવાના ઉદ્દેશથી સૌથી
પહેલા તેની પ્રથમ ભાવના વિષે કહે છે—“ પદમ ” इत्यादि—

ટીકાર્થ—“પદમ” આ વ્રતની પહેલી ભાવનાનું નામ નિસ્પૃહતા છે, તે ભાવના
આ પ્રમાણે છે—“સોડદિણ” શ્રોત્રેન્દ્રિયથી, “મણુપ્પમહગાઈ” મનોજ્ઞ હોવાથી
મધુર લાગે છે “સદાઈ” શબ્દો “સોચા” સાંભળીને તેમા આસક્ત થઈ
લેઈએ નહીં એ સાધુનું કર્તવ્ય છે, તેમા રાગભાવ ન રાખે, તેમનામા તેણે
ગૃદ્ધિભાવ ઋયો લેઈએ નહીં, મોહિત થવું લેઈએ નહીં એ જ વિષયને
સૂત્રકાર નિચેની ઢીંટીઓ દ્વારા સ્પષ્ટ કરે છે—“કિં તે” તે શબ્દો કયા કયા
કયા છે એ પ્રગટની શકા કરનાર તે કહે છે કે સાંભળો તે આ પ્રમાણે છે—“વર-
સુરય-મુદ્દગ-પાણવ-દ્દુરકચ્છમી-વીણ-વિપચિ-વલ્લહ-પદ્મીસક-સુગોસ-ણદિ-ત્તસર

गीयवाइयाह ' वरमुरजमृदगपणवददुर्कचलपी वीणाविपञ्चीरत्नकी बद्धीशकसुयो
पनन्दीसुस्वरपरिवादीनोवशतूणकपर्वजतन्त्रीतलतालतुट्टिनिघोषगोतगादितानि,
तत्र-वरमुरजाः=श्रेष्ठमृदङ्गाः, मृदङ्गाः=प्रसिद्धा, पणवाः=अधुपट्टा, ददुराः=चर्म
वनद्वमुखा कलशाः कञ्चपी=कञ्चपाकारी वाद्यविशेषः, वीणाविपञ्चीवल्लभ ए
तास्तिस्रो वीणामेदाः, उद्धीशक वाद्यविशेषः, सुयोपा ण्टाविशेषः, नन्दिः=द्वाद
शतूर्यसमुदायः, द्वादशविधतूर्याणि यथा—

“ भभा १ मुकुद २ मद्दल ३ कडव ४ झलर ५ हुड्डक ६ कसाल ७ ।

कलह ८ तलिमा ९ वस १० शख ११ पणव १२ यारसमो ॥१॥ ” इति ।

सुस्वरपरिवादिनी=वीणाविशेषः, वश=वेणुः, तूणको वाद्यविशेषः, पर्वजो-
वशपर्वनिर्मितो वाद्यविशेषः, तन्त्री=वीणाविशेषः, तालहस्ता, ताला=कासिकाः,

पञ्चयततीतल ताल-तुट्टिय निगोसगीयवाइयाह) वरमुरजउत्तम एक
जात का मृदग, मृदग-सामान्य मृदग, पणव-ग्रेटाढोल, ददुरचमडे से
मडे हुए मुखवाले कलश, कञ्चपी-कञ्चपाकार वाद्यविशेष, वीणा,
विपञ्ची, वल्लकी-ये तीनों वीणा के ही भेद हैं, बद्धीशक-वाद्यविशेष,
सुयोपा-एक प्रकार का वाद्यविशेष घट, नन्दि-यार प्रकार के बाजों का
समूह वे इस प्रकार है-भभा १, मुकुद २, मद्दल ३, कडव ४, झलर ५,
हुड्डक ६, कसाल ७, कलह ८, तलिमा ९, वस १०, शख ११, पणव
१२, सुस्वरपरिवादिनी एक विशेष प्रकार की वीणा वश-बांसुरी,
तूणक-एक प्रकार का वाद्यविशेष जिसे हिन्दी भाषा में रमतूला कहते
हैं, पर्वज-वश के पर्वों से निर्मित किया हुआ एक प्रकार का विशेष
वाद्य, तन्त्री-वीणा विशेष-जिसे हिन्दी में सारंगी कहते हैं, तल-

-परिवादिण-वसतूणक-पञ्चय-ततीतलताल-तुट्टिय-निगोस-गीय वाइयाह ” वर
मुरज-एक जातना उत्तम मृदग, मृदग-सामान्य मृदग, पणव-नानो ढोल,
ददुर-आमडाथी मडेव मुखवालो कलश, कञ्चपी-कायाना आठारतु एक
वाजित्र, वीणा, विपञ्ची, वल्लकी-ये त्रये वीणाना प्रकारे छे, बद्धीशक-एक
प्रकारतु वाद्य, सुयोपा-एक प्रकारना भास घट, नन्दि-यार प्रकारना वाजि
त्रोना समूह ते आ प्रमाणे छे-(१) लला (२) मुकुद, (३) मद्दल, (४)
कडव, (५) झलर, (६) हुड्डक, (७) कसाल (८) कलह, (९) तलिमा,
(१०) वस (११) शख, अने (१२) पणव सुस्वरपरिवादिनी-एक प्रकारनी
वीणा, वश-भंसरी, तूणक-एक प्रकारतु भास वाद्य अने छिही बाधभा
रमतूला कहें छे, पर्वज-वासमाथी अनावेल एक प्रकारतु भास वाद्य, तन्त्री-
सारंगी, तल-छाय, ताल-मल्लरा, अथवा तलताल-छायाथी पडाती ताली,

सुदर्शनी टीका अ०५ सू० ७ 'निस्पृहता' नामकप्रथमभावतानिरूपणम् ८९३

अथवा-तलतालः=हस्ततालः, त्रुटित=वाद्यविशेष, एषा यो निर्घोषो निनादः,
तथा-गीत=गानम्, गदित=सामान्यवाद्यम्, एषा द्वन्द्वः, तानि तथोक्तानि, तथा
' नडनट्टगजल्लमल्लमुट्टिगवेलवग-रुहगपवगलासग-आइक्खगलखमख तूणइल्ल-
तुवचीणियतालायरपकरणाणि य ' नटनर्तकजल्लमल्लमोष्टिकविडम्भक-कथक
प्लवकलासकारुपायक-मल्लमुट्टिगवेलवग-रुहगपवगलासग-आइक्खगलखमख तूणइल्ल-
तुवचीणियतालायरपकरणाणि च, नट-नटाः
=नाट्यकारिणः, नर्तकाः=नृत्यकारिणः, जल्लः=चर्मरज्जुमलम्ब्य क्रीडाकार-
काः, मल्लः=मल्लयुद्धकारिणः, मोष्टिकाः=मुष्टियुद्धकारकाः, विडम्भकाः=विदू-
षकाः, कथका = 'कथक' इतिप्रसिद्धा गान्यर्वविद्याविशारदा, प्लवकाः=कूदन-
कारिणः, लासकाः='लास्य' इति नाटक विशेषकारिण, अट्ठायकाःकथाकारकाः,
लङ्काः=महावशाग्रभागमधिरुह क्रीडाकारिण, मङ्गाः=चित्रफलकइस्ताः क्रीडाकाः,

हाथ, ताल-कसिका-झाजे, अथवा तलताल-हाथो की ताल, त्रुटित-
वाद्यविशेष, ईन सय के निर्घोषो-शब्दों को तथा गीतों को एव सामा-
न्य वाजों की आवाजों को तथा (नड-नट्टगजल्लमल्ल-मुट्टिग-वेलवग-
कहगपवगलासग-आइक्खग-लखमखतूणइल्ल तुवचीणियतालायर पकर-
णाणि) नट-नाटक करने वाले नटों के, नर्तकों-नृत्य करने वालों के,
जल्ल चर्म रज्जु का अवलम्बन कर के क्रीडा करने वालों के, मल्ल-
मल्ल युद्ध करने वालों के, मोष्टिक-मुष्टि से युद्ध करने वालों के, विड-
म्भक-विदूषकों के, कथन-गाधर्वविद्या विशारदों के, प्लवक-उछल-
कूद करने वाले मनुष्या के, लासक-लास्य नामकनाटक विशेष को करने
वालों के, आख्यायक-कथा कहने वालों के, लङ्का-घडे २ वंश के अग्र-
भाग पर चढ़कर विविध प्रकार के खेल करने वालों के, मख चित्र
फलकों को हाथ में लेकर खेल तमासा करने वालों के तूणिक-तूण

त्रुटित-ओड नतनु वाद्य, ओ नधाना अवाजने तथा गीताने तथा सामान्य
वाजि त्राना अवाजने तथा " नडनट्टगजल्लमल्लमुट्टिगवेल वगरुहगपवगलासग
आइक्खग-लखमखतूण-इल्लतुवचीणिय-तालायरपकरणाणि " नट-नाटक के नटार
नटोना, नर्तको-नृत्यकरनारना, जल्ल-आमडानी होगे पर क्रीडा करनारना, मल्ल-
मल्लयुद्ध करनारना, मोष्टिक-मुष्टियुद्ध करनारना, विडम्भक-विदूषकोना, कथक-
गाधर्वविद्या विशारदोना, प्लवक-कूडका करनार भाखसोना, लासक-लास्यनामना
ओड भास प्रकरना नाटक करनारना, आख्यायक कथा करनारना लख
उथा उथा वासनी टोये यकीने विविध प्रकारना खेल करनारना, मख-चित्रना
कुलको डायभा लधने खेल तमासा करनारना, तूणिक-तूणनामनु वाजि त्र पगा

तृणिकाः=तृणाभिधानमाद्यविशेषादकाः, तुम्बरीणिकाः=तुम्बरीणावादका, ताला-
चराः=ताल=हस्ताघातरूपमाचरन्ति ये ते तथोक्ताः-तात्रादिन इत्यर्थः, एषा
द्वन्द्व, तेषा यानि प्रकरणानि=प्रकरणेण करणानि तानि तथोक्तानि, कानि तानी?
त्याह— बहूणि ' बहूनि=अनेकरूपकाराणि, ' मधुरसरगीयसुस्तराणि ' मधुरस्व-
राणि=मधुरस्वराणा गायमाना गीतानि=गानानि च तानि सुस्तराणि । तथा-
' कचीमेहलाकलावगपतरकपयरेकपायजालकघटियखिलिणिरयणोरुजालयछुदिय
नेउयचलणमालियकणगनिगडजालकभूषणसहाणि ' काञ्चीमेखलाकलापकप्रतरक
प्रतरेकपादजालकघटिकाकिङ्किणी-रत्नोरु-जालक-धुद्रिका-नूपुर-चरणमालिका
कनकनिगड-जालकभूषणशब्दान् । तत्र-काञ्ची=कटिभूषणम्, मेखलाऽपि कटिभू-
षणभेदः, कलापको ग्रीवाऽभरणम्, प्रतरकाणि प्रतरेकाश्च आभरणविशेषाः, पाद-
जालक=चरणाभरणम्, घटिका = प्रसिद्धा, किङ्किण्यः = छुद्रघटिकाः, रत्नोरु
जालकम् रत्ननिर्मित जहाभरणम्, धुद्रिका आभरणविशेषाः, नूपुर=पादभूषणम्,
चरणमालिका-पादाभरणविशेषाः, कनकनिगडास्वर्णभूषणविशेषाः, जालक चाप्या

नामक वाद्यविशेष को बजाने वालों के, तुम्बरीणिक-तुम्बरीणा को
बजाने वालों के, तालाचर-ताली बजाने वालों के द्वारा अच्छी तरह
से किये गये (बहूणि) अनेक प्रकार के (मधुरसरगीयसु-
स्तराइ) मधुर स्वरगर्भित गीतरूप स्वरों को, तथा- (कची
मेहलाकलावग-पतर-रूपय-रेक-पाय-जालक-घटिय-खिलिणि —
रयणोरुजालयछुदिय-नेउयचलणमालियकणगनिगड-जालक-भूषणस-
हाणि) काञ्ची-कटिभूषण, मेखला, कलापक-ग्रीवाभरण-प्रतरक, प्रतरे-
क ये दोनों एक प्रकार के आभरण विशेष होते हैं, पादजालक-चरणा-
भरण, घटिका, किङ्किणी-छोटी २ घटिकाएँ, रत्नोरुजालक-रत्ननिर्मित
जहाभरण, धुद्रिका-आभरणविशेष, नूपुर-पादभूषण-विछिया, चरण-
मालिका-पादाभरणविशेष, कनकनिगड-स्वर्णनिर्मितभूषणविशेष, और

३ नार द्वारा सारी नीते करवामा आवेल " बहूणि " अनेक प्रकारना " मधुर-
सरगीयसुस्तराइ " मधुर स्वरयुक्त गीतरूप स्वराने तथा " कची मेहलाक-
लावग-पतरक-पयरेक-पायजालक-घटिय-खिलिणिरयणोरुजालय-छुदियनेउय
चलण-मालिय-कणग-निगड-जालक-भूषणसहाणि " काञ्ची-कटिलूपाय, मेखला-
पसर, कलापक-डोकनु धरेलु-प्रतरक, प्रतरेक ओ अने ओक प्रकारना भास आलु
। धलु। छे, पादजालक-पगनु आभूषण, घटिका, धूधरी, किङ्किणी-नानी नानी
धूधरीओ, नूपुर-अजर, विछिया, यरलुभाविज, ओअधा आभूषणाना अवाअने

भूषणविशेष', एवमितरेतयो गद्वन्दः, एतान्येव भूषणानि, तेषां शब्दास्तौ स्तथो-
क्तान्, तथा—'लीलचक्रममाणुदीरियाड' लीलाचक्रममाणुदीरितान्=लीलया
चक्रममाणानां=मलील गच्छन्तीनाम्, उदीरितान्=भूषणजनितान् शब्दान्,
तथा—'तरुणीजणहसियभणियकलरिभियमजुलाइ' तरुणीजनहसितभणितकलरिभि-
तमज्जुलानि=तरुणीजनस्य यानि हसितानि भणितानि, कलरिभितानि=मधुररण-
नानि=मज्जुलानि=मनोहराणि च तानि तयोक्तानि, तथा—'गुणवयणाणि य'
गुणवचनानि च=कामगुणवर्धकवचनानि च 'वहूणि' वहूनि-अनेकविधानि तथा
'महुरजणभासियाड' मधुरजनभाषितानि=मधुराणि यानि जनभाषितानि=ताल
स्वरत्युक्तानि गायकजनगानानि तानि श्रुत्वा, 'समणेण' श्रमणेन - साधुना
'तेसु' तेषु मणुणमहएसु 'मनोज्ञभट्टकेषु' सद्देशु शब्देषु तथा 'अण्णेषु
य' अन्येषु च 'एवमाइएसु' एवमादिकेषु शब्देषु न 'सज्जियव्व' न
सक्तव्यम्-आसक्तिर्न कर्तव्येत्यर्थः, तथा—'न रज्जियव्व' न रक्तव्य-रागो न
कर्तव्यः, 'न गिज्जियव्व' न गर्हितव्यम्-गृद्धिभावो न कर्तव्यः, तथा—'न मुज्जि-

जालक-एक प्रकार का आभूषण विशेष, इन सब शब्दों को तथा
(लीलचक्रममाणु दीरियाड) लीलासहित जाती हुई स्त्रीयों के भूषणों
के शब्दों को, तथा (तरुणीजणहसियभणियकलरिभियमजुलाइ) तरु-
णियों के हसित, भणित, कलरिभिक और मनोहर, ऐसे (वहूणि गु-
णवयणाणि) अनेक प्रकार के कामगुणवर्धक वचनों को तथा (महुरजण
भासियाड) तालस्वरयुक्त गायकजनो के गानों को सुनकर के साधुको
(तेसु मणुणमहएसु) उन मनोज्ञ एव मधुर (सद्देशु) शब्दों में तथा
(अण्णेषु य एवमाइएसु) इसी प्रकार के और भी दूसरे शब्दों में (न
सज्जियव्व) आसक्ति नहीं करना चाहिये, (न रज्जियव्व) राग नहीं
करना चाहिये, (न गिज्जियव्व) गृद्धिभाव नहीं करना चाहिये, अर्थात्

तथा "लीलचक्रममाणुदीरियाड" लीलासहित जाती स्त्रीयोना आभूषणानां
अवाञ्छने तथा "तरुणीजण-हसिय-भणिय-कलरिभिय-मजुलाइ" तरुणीयोना
हसित, भणित, कलरिभित अने मनोहर, एवा "वहूणि गुणवयणाणि"
अनेक प्रकारना काम वर्धक शब्दोने तथा "महुरजणभासियाड" गायकोना
ताल स्वरयुक्त गीतोने साधुनीने साधुओ "तेसु मणुणमहएसु" ते मनोज्ञ
अने मधुर "सद्देशु" शब्दोभा तथा "अण्णेषु य एवमाइएसु" एवा
प्रकारना भील शब्दोभा येषु "न सज्जियव्व" आसक्ति करवी नोर्थ ओ नही
"न रज्जियव्व" राग करवी नोर्थओ नही, "न गिज्जियव्व" गृद्धिभाव न

યવ્વ ' ન મોહિતવ્યમ્—તત્ર મોહો ન કર્તવ્ય ઇત્યર્થઃ, તથા—'વિણિઘાય' વિનિઘાતઃ
 =તદર્થ ચારિત્રશઃ, આવજ્જિયન્વ 'આપત્તવ્યઃ=કર્તવ્યઃ=કર્તવ્યઃ, તથા—' ન લુભિ-
 યવ્વ ' ન લોભ્યવ્યમ્=લોભો ન કર્તવ્ય ઇત્યર્થ, ' ન તુમિયન્વ ' ન તોષ્ટવ્યમ્—
 મનોહ્નશબ્દાદિપુ પ્રસન્નમનસા ન માન્યમિત્યર્થઃ, તથા—' ન હસિયવ્વ ' ન હસિ-
 તવ્યમ્=વિસ્મયેન હાસો ન કર્તવ્યઃ, તથા—શ્રમણઃ 'તત્ત્વ' તત્ર—મનોહ્નમત્રકચન્દ
 વિપયે ' સહ ' સ્મૃતિ—સ્મરણ ચ ' મહ ' મર્તિ=બુદ્ધિનિવેશ ચ ' ન કુજ્જા ' ન
 કુર્યાત્ । ' પુનરવિ ય ' પુનરપિ ચામનોનાદિ શબ્દવિપયે પ્રોચ્યતે—' સોહિદિણ'
 શ્રોત્રેન્દ્રિયેણ ' સોચ્ચા ' શ્રુત્વા ' સદ્દાહ ' શબ્દાન્ કીદશાન્ ? ' અમણુણપાવગાહ '
 અમનોહ્નપાપકાન્=અમનોહ્ન,=અમનોહરા અતएव-પાપકા =અશુભાસ્તાન્ ' કિં તે '

લલચાના નહીં ચાહિયે, (ન મુજ્ઝિયવ્વ) ઉનમે મોહ નહીં કરના
 ચાહિયે, (ન વિણિઘાય આવજ્જિયવ્વ) ઉનકે નિમિત્ત અપને ચારિત્ર
 કો ભ્રષ્ટ નહીં કરના ચાહિયે, (ન લુભિયન્વ) ઉનમે લુભાના નહીં
 ચાહિયે, (ન તુમિયવ્વ) ઉનસે પ્રસન્નમન નહીં બનાના ચાહિયે, (ન હ
 સિયવ્વ) હસના નહીં ચાહિયે, ઓર (ન સહ ચ તત્ત્વકુજ્જા) ન ઉન
 મનોહ્નશબ્દાદિકોં કી ઘાદ કરના ચાહિયે ઓર ન ઉનમે અપની બુદ્ધિ
 કો હી લગાના ચાહિયે ।

હસી પ્રકાર (પુનરવિ ય) ફિર (સોહિદિણ) શ્રોત્ર ઇન્દ્રિય સે
 (અમણુણપાવગાહ) અમનોહ્ન અતएव અરુચિ કારક અશુભ (સદ્દાહ)
 શબ્દોં કો (સોચ્ચા) સુનકર સાધુ કા કર્તવ્ય હૈ કિ વહ ઉન પર દ્રેષ
 મી ન કરે—નાક મુંદ ન સિકોડે, હસી વિપય કો અથ સૂત્રકાર હન
 પક્તિયો દ્વારા સ્પષ્ટ કરતે હૈ—વે કૌન સે હૈ હસ શંકા કે સમાધાન

કરવેા બેઠ્ઠે એ એટલે કે લલચાણુ બેઠ્ઠે નહીં “ ન મુજ્ઝિયવ્વ ” તેમનામા
 મોહ કરવેા બેઠ્ઠે નહીં “ ન વિણિઘાય આવજ્જિયવ્વ ” તેમના નિમિત્તે પોતાના
 ચારિત્રને ભ્રષ્ટ કરવુ બેઠ્ઠે નહીં, “ ન લુભિયવ્વ ” તેમા લલચાણુ બેઠ્ઠે
 નહીં “ ન તુમિયવ્વ ” તેમા મનને પ્રસન્ન રાખવુ બેઠ્ઠે નહીં “ ન હસિ
 યવ્વ ” હસવુ બેઠ્ઠે નહીં, અને “ ન સહ ચ મહ જ તત્ત્વ કુજ્જા ” તે
 મનોહ્ન શબ્દાદિજોને યાદ કરવા બેઠ્ઠે નહીં અને તેમા પોતાના મનને
 બેચાવા દેવુ નહીં એજ પ્રમાણે ‘ પુનરવિ ય ’ વળી ‘ સોહિદિણ ’ શ્રોત્રે
 ન્દ્રિયથી “ અમણુણપાવગાહ ” અમનોહ્ન અને તે કારણે અરુચિકારક અશુભ
 “ સદ્દાહ ” શબ્દોને “ સોચ્ચા ” સાભળીને તેના પ્રત્યે દ્રેષ પણ ન કરવેા
 બેઠ્ઠે તે સાધુનુ કર્તવ્ય છે—તેના તરફના તિરસ્કારથી નાક કે મોહ સંકેતવુ
 બગાડવુ બેઠ્ઠે નહીં, એજ વિષયને સૂત્રકાર આ પક્તિઓ દ્વારા સ્પષ્ટ
 કરે છે—તે કયા કયા પ્રકારના છે તે શકાના નિવારણના માટે તેઓ તે અમ

कांस्तान्=कथम्भूतास्तान् शब्दान् इत्याह— 'अक्रोशपरुसखिसणअवमानण-
तज्जणनिव्वमल्लणदित्तवयणतासणउक्कजियरुणरडियकदियणिग्घुद्वरसियकलुणवि-
लवियाइ ' आक्रोशपरुसखिसनावमाननतर्जननिर्भर्त्सनदीप्तवचनत्रासनोत्कृजितरु-
दितरदितरुन्दितनिर्घुण्टरसितरुणविलपितानि—तत्र—आक्रोश = ' रे दुष्ट !
त्रियस्से ' त्यादिवचनम्, परुष—रे मूर्ख ! रे चौर ! इत्यादि, खिसनम्=निन्दान-
चन 'कुशीलोऽसि, निर्लज्जोऽमी' त्यादिरूपम्, अवमाननम्=अपमानजनकवचन,
त्वङ्कारादिरूपम्, तर्जनम्='ज्ञास्यसि रे दुष्ट ! ममाववायाः फल्म् ' इत्यादिरूपम्=
निर्भर्त्सनम्='असर रे निर्दय ? मम दृष्टिपथादित्यादिरूपम्, दीप्तवचनम्=कुपि-
तवचनम्=त्रासनम्=अन्यकारादौ फेत्कारादिरूपः भृगालादिशब्दः, उत्कृजितम्=

निमित्त वे उन अमनोज पापक शब्दों को कहते हैं—(अक्रोश-
परुस-खिसण-अवमानण- तज्जण-निव्वमल्लण-दित्तवयण-तासण-
उक्कजिय-रुण-रडिय-कदिय--णिग्घुद्व-रसिय-कलुण-विलवियाइ)
' रे दुष्ट ! मर जा ' इत्यादि प्रकार के जो शब्द होते हैं—वे आक्रोश
शब्द हैं, कठोर शब्दों का नाम परुष है—जैसे—' ओ मूर्ख ! अरे
ओ चौर ! ' आदि । निंदात्मक शब्दों का नाम खिसन है, जैसे—' तु
बड़े छोटे स्वभाव का है, तू बड़ा वे शरम है ' इत्यादि । ' तू '
आदि शब्द अपमान जनक शब्द हैं । जिन शब्दों से दूसरों को
ढाटना होता है वे तर्जना शब्द हैं, जैसे—' ओ दुष्ट ! अवज्ञा करने का
फल मैं तुझे बताऊंगा । तथा ' ओ निर्दय ! मेरे सामने से हट जा '
इत्यादि प्रकार के वाक्य निर्भर्त्सन वाक्य कहलाते हैं । कुपित वचनों
का नाम दीप्तवचन है । अधिकार आदि में फुत्कार आदि रूप शब्दों का

नेत्र पापक शब्दोंने भत्तावे छे " अक्रोश-परुस-खिसण-अवमानण-तज्जण-
निव्वमल्लण-दित्तवयण-तासण-उक्कजिय-रुण-रडिय-कदिय-णिग्घुद्व-रसिय-कलुण
-विलवियाइ " " रे दुष्ट ! मरी जा " इत्यादि प्रकारना शब्दोंने आक्रोश शब्द
कहे छे, कठोर शब्दोंने परुष शब्दों कहे छे, जेवा के " ओ मूर्ख ! अरे ओ
चौर " आदि परुष शब्दों छे ' तु घण्टा भराण भवभाववाणो छे, तु घण्टो
भेसरम छे " आदि निंदात्मक शब्दोंने खिसन कहे छे " तु " आदि अप-
मानजनक शब्दों छे जे शब्दों द्वारा जीतने धमकी अपाय छे ते शब्दोंने
तर्जना शब्दों कहे छे, जेवा के " रे दुष्ट भारी अवज्ञा करवानु इण हु तने
अणाडीश " तथा " अरे निर्दय ! भारी नजरथी हूँ या " इत्यादि प्रकारना
वाक्योंने निर्भर्त्सन वाक्य कहे छे बोधयुक्त वचनोंने दीप्त वचन कहे छे

અવ્યક્તમહાધ્વનિકરણમ્, રુદિતમ્=સાશુરોગ્નમ્, રટિત=કલહાધિત-કલહવાક્ય
 મિત્યર્થઃ ક્રન્દિતમ્=ઇષ્ટવિયોગાદો ક્રન્દમ્, નિર્ઘુષ્ટમ્=ઉન્નૈર્નાદકરણમ્, રસિતમ્
 =સૂકરાદિવત્ શબ્દકરણમ્, કરુણવિલપિતમ્=પુત્રાદિમૃત્યા સકુળવિગપકરણમ્,
 एतेषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, तानि श्रुत्वा श्रमणेन 'तेसु' तेषु 'अमणुष्णपावएसु'
 अमनोज्ञपापकेषु=અમનોજ્ઞાપાપકેષુ, 'સદેસુ' શબ્દેષુ તથા- 'અણેસુ ય એવમાણસુ'
 अन्येषु च एवमादिकेषु समुपस्थितेषु शब्देषु 'न रुसियन्' न रोषितव्यम्-રોષો
 ન કર્તવ્ય, 'ન હીલિયન્' ન હીલિતવ્યમ્=અપ્રજ્ઞા ન કર્તવ્યેત્યર્થ, 'ન નિન્દિ
 यन्' न निन्दितव्यम्=નિન્દા ન કર્તવ્યા, 'न विमियन्' न विस्मितव्यम्=

નામ ગ્રાસન છે । જિસ પ્રકાર શૃગાલ આદિ કે શબ્દ રોતે છે । અસ્પષ્ટ
 જોર ૨ સે ઘોલને કા નામ ઉત્ક્રાન્તિત છે । આન્ નિકાલ = કર રોને કા
 નામ રુદિત છે । કલહવર્ધક વાક્યો કા નામ રટિત છે । ઇષ્ટ કે વિયોગ
 આદિ હોને પર જો ન્દન કરતે સમય વચન નિકલતે છે વે રુદિત વચન
 છે । ઝંચે સ્વર સે જો ઘોલને મે આતે છે વે નિર્ઘુષ્ટ શબ્દ છે । સૂઅર
 આદિ કે જૈસે શબ્દો કા ઘોલના ઇસકા નામ રસિત છે । પુત્ર આદિ કે
 મર જાને પર જો કરુણ વિલાપ કિયા જાતા છે । ઓર ઉસ સમય-જો
 શબ્દ મુઠ્ઠ સે નિકલતે છે વે કરુણ વિલપિત છે । જેસે શબ્દો મે તથા
 (અણેસુ ય એવમાણસુ સદેસુ) ઇસી પ્રકાર કે ઓર મી શબ્દ જો
 (અમણુણપાવેસુ) અમનોજ્ઞ અશુભ હોં ઉન શબ્દો મેં (સમણેન)
 શ્રમણ કા કર્તવ્ય છે કિ વત્ ઉનમેં (ન રુસિયન્) રોષ ન કરે ।

અધિકાર આદિમા કુલ્કાર આદિકેપ શબ્દોનુ નામ ગ્રાસન છે, શિયાળ આદિના
 અવાજ તે પ્રકારનો હોય છે જેર જેરથી અસ્પષ્ટ બોલણુ તેને ઉત્ક્રાન્તિત શબ્દો
 કહે છે આસુ પાડી પાડીને રડવાના અવાજને રુદિત શબ્દ કહે છે ઢલક
 વર્ધક વાક્યોને રટિત વાક્ય કહે છે ઇષ્ટનો વિયોગ આદિ થતા રુદનની સાથે
 જે વચન નીકળે છે તેને કદિતવચન કહે છે જો આ અવાજથી બોલતા વચનને
 નિર્ઘુષ્ટ શબ્દ કહે છે સૂઅર આદિ જેવા શબ્દો બોલવા તે રસિત શબ્દ
 કહેવાય છે પુત્ર આદિનુ મત્યુ થતા જે કરુણ વિલાપ કરાય છે અને ત્યારે
 જે શબ્દો મોઢામાથી નીકળે છે તે કરુણ વિલપિત કહેવાય છે એવા શબ્દો
 પ્રત્યે તથા “અણેસુય એવમાણસુ સદેસુ” એવા જ પ્રકારના બીજા શબ્દો કે
 જે “અમણુણપાવેસુ” અમનોજ્ઞ અને અશુભ હોય તે શબ્દોથી “ન
 રુસિયન્” રોષ ન કરવો “સમણેન” તે શ્રમણનુ કર્તવ્ય છે “ન હીલિય
 વ્વ” તેમની અવજા કરવી નહી, “ન નિન્દિયન્” નિન્દા ન કરવી, “ન

परसमक्ष च निन्दा न कर्तव्या, 'न छिदियव्व' न छेत्तव्वम्=अमनोज्ञ शब्दकर्तु-
र्द्रव्यस्य छेदो न कार्यः, तथा—'न मिदियव्व' न भेत्तव्वम्, तस्यैव न भेदः
कर्तव्यः, 'न वहेयव्व' न हन्तव्वम्=तस्यानिष्ट शब्दकर्तृत्वो न कर्तव्य, तथा—
'दुगुछावत्तियावि' जुगुप्सावृत्तिः अपि शब्दविषये स्वस्य परस्य वा घृणावृत्ति-
रपि, 'उप्पाएउ' उत्पादयितु 'न लब्भा' न लभ्या—नोचिता, यथा—स्वस्य परस्य
वा हृदि शब्दविषया जुगुप्सा प्रादुर्भवेत् तथा कर्तव्यमिति भावः। अथ प्रथमभा-
वनानिगमनार्थमाह—एवम्=उक्तरीत्या 'सोडदियभावणाभाविओ' श्रोत्रेन्द्रिय-
भावनाभावित श्रोत्रेन्द्रिय निरोद्धव्यम्, अन्यथा—महदनर्थमभवः, इत्येव रूपया
भावनया भावित, 'अतरप्पा' अन्तरात्मा=जीवो 'भयड' भवति, ततश्च 'मणु-
ण्णामणुण्णसुम्भिदुम्भिरागदोसे' मनोज्ञमनोज्ञमुरभिदुरभिरागद्वेपो=मनोज्ञमनोज्ञा

(न हीलियव्व) उनकी अपज्ञा न करे, (न निदियव्व) निंदा
न करे (न खिसियव्व) उन पर खिसियावे नहीं—दूसरों के समक्ष
उनकी निंदा न करे (न छिदियव्व) जो अमनोज्ञ शब्दों करने
वाला विषादि द्रव्य है उसका वह न छेदन करे और (न मिदियव्व)
न भेदन करे (न वहेयव्व) अनिष्ट शब्द करने वाले मनुष्य आदि का
वध न करे। और (न दुगुछा वत्तिया विलब्भा उप्पाएउ) न उन
अनिष्ट शब्दों के विषय में अपने एव पर के घृणावृत्ति उत्पन्न करने की
कोशिश ही करे। अब सूत्रकार इस प्रथम भावना का उपसंहार करने
के लिये कहते हैं—(एव) इस प्रकार (सोडदियभावणाभाविओ)
श्रोत्रेन्द्रिय की भावना से भावित हुआ 'मुझे श्रोत्रेन्द्रिय का निरोध
करना चाहिये नहीं तो बड़ा भारी अनर्थ होगा' इस प्रकार की विच्चा-
रधारा से वासित हुआ (अतरप्पा) अन्तरात्मा मुनि (मणुण्णामणुण्ण-
सुम्भिदुम्भि रागदोसे पणिहिप्पा) मनोज्ञ रूप शुभ और अमनोज्ञ—

खिसियव्व" तेना पर खिसियावे नही—भील पासे तेनी निंदा उरवी जेधजे
नही, "न छिदियव्व" अमनो-न अवाज उरनार वीष्ठादि जे वस्तु होय तेनु
ते छेदन न करे, "न मिदियव्व" तेनु वेदन न करे "न वहेयव्व" अनिष्ट
शब्द उरनार मनुष्य आदिनो ते वध न करे, अने "न दुगुछावत्तिया विलब्भा
उप्पाएउ" ते अनिष्ट शब्द प्रत्ये पोते तृष्ठा न करे ने भीलओमा तृष्ठा
वृत्ति पेदा उरवानी डेरिश न करे हवे सूत्रकार आ पड़ेली लावनानो उप-
संहार करता ठडे छे—"एव" आ रीते "सोडदियभावणाभाविओ" श्रोत्रे
न्द्रियनी लावनाथी लावित थयेल "भारे श्रोत्रेन्द्रिय पर अदृश राखवे
जेधजे नही तो धरो। भारे अनर्थ थये" जे प्रकारनी विचारधाराथी प्रभावित
थयेल "अतरप्पा" अन्तरात्मा—मुनि "मणुण्णामणुण्णसुम्भिदुम्भिरागदोसे पणिहि

ये सुरभिदुरभयः=शुभा शुभाः शब्दास्तेषु यद्वागद्वेष तत्र, 'पणित्रियप्पा' मणिहि
तात्मा=सदृतात्मा 'साह' साधु 'मणयणकागुत्ते' मनोयचनकायगुप्तः, 'सबुडे'
सदृतः-सवरान् 'पणिहिइदिए' मणिहितेन्द्रियः-मणिहितः=वशीकृतः इन्द्रियो
येन तथाभूतः सन् 'धम्म' धर्म 'चरेज्ज' चरेत् ॥ सू० ७ ॥

द्वितीयां भाषनामाह—'वीय' इत्यादि—

मूलम्—वीय चक्खु इदिएण पासिय रुवाणि मणुण्णभद-
गाइं सचित्ताचित्तमोसगाइं कट्ठे पोत्थे य चित्तकम्मे लेप्पकम्मे

रूप अशुभ शब्दों में रागद्वेष करने की परिणति से रहित हो जाता है ।
इस प्रकार की स्थिति से सपन्न हुआ (साह) साधु (मणवयकायगुत्ते)
अपने मन, वचन और काय को शुभाशुभ के व्यापार से सुरक्षित कर
छेता है । और (सबुडे) सवर से युक्त वनत्तर (पणिहिइदिए) अपनी
श्रोत इन्द्रिय को वश में करके (धम्म) चारित्र्यरूप धर्म को (चरेज्ज)
पालन करने वाला बन जाता है ।

भावार्थ—इस सूत्र द्वारा सूत्रकार ने परिग्रह विरमणव्रत की प्रथम
भावना का विवेचन किया है । इसमें उन्होंने यह कहा है कि साधुको इष्ट
श्रोत्रेन्द्रिय के विषय में ललचाना नहीं चाहिये और अनिष्ट विषय में
द्वेष नहीं करना चाहिये । इस प्रकार से इस भाषनासे भावितमुनि अपने
व्रत की रक्षा और उसकी सुस्थिरता करता हुआ सवर से युक्त बन जाता है
और चारित्र्यरूप धर्म की परिपालना अच्छी तरह से करसकता है ॥ सू० ७ ॥

અવ્વા " મનેશરૂપ શુભ અને અશુભ શબ્દોમા રાગદ્વેષની પરિણતિથી રહિત થઈ
જાય છે આ પ્રકારની સ્થિતિથી યુક્ત બનેલ " સાહ " સાધુ " મણવયકાયગુત્તે "
પોતાના મન, વચન અને કાયને શુભાશુભ પ્રવૃત્તિથી સુરક્ષિત કરી નાખે છે
અને " સબુડે " સવરથી યુક્ત બનીને " પણિહિંદિય " પોતાની શ્રોત્રેન્દ્રિયને વશ
કરીને " ધમ્મ " ચારિત્રરૂપ ધર્મનું " ચરેજ્જ " પાલન કરનાર થઈ જાય છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્રદ્વારા પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની પહેલી ભાવનાનું વિવેચન
કયું છે તેમા તેમણે એ બતાવ્યું છે કે સાધુએ શ્રોત્રેન્દ્રિયના ઈષ્ટ વિષયમા
લલચાવું જોઈ એ નહીં અને અનિષ્ટ વિષય પ્રત્યે દ્વેષ કરવો જોઈ એ નહીં
આ રીતે આ ભાવનાથી ભાવિત થયેલ મુનિ પોતાના વ્રતની રક્ષા તથા સુસ્થિ
રતા કરતો કરતો સવરથી યુક્ત થઈ જાય છે, અને ચારિત્રરૂપ ધર્મનું સારી
રીતે પાલન કરી શકે છે ॥ સૂ० ૭ ॥

सेले य दतकम्मे य, पचहि वण्णेहि अणेगसठाणसठियाइ
गंधिमवेढिमपूरिमसघाइमणि य मल्लाइ बहुविहाणि य नय-
णमणसुहकराइ वणसडे पव्वए य गामागरनगराणि य
खुड्डियपुक्खरिणी वावीदीहिय-गुजालिय सरसरपतिय सागर-
विलपतिय खाइय-नई-सर-तलाग-वप्पिणो फुल्लप्पलपउम-
परिमंडियाभिरामे, अणेगसउणगणमिहुणत्रियरिए, वरमडव-
विविह भवण-तोरण-चेइय-देवकुल-सभप्पवावसह-सुकय-
सयणासण-सीयरह-सगडजाणजुग्गय-सदणे नरनारिगणे य
सोमपडिरूवदरिसणिजे, अलंकिय विभूसिय, पुव्वकय तवप्प-
भावसोहग्गसंपउत्ते, नड-नट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-चेलंवग-
कहग-पवग-लासग-आइक्खग लख मख तूणइल्ल तुंववी-
णिय-तालायर पकरणाणि य वहूणि सुकरणाणि अण्णेसु य
एवमाइएसु रूवेसु मणुन्नभइएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं,
न रज्जियव्व, जाव न सइ च मड च तत्थ कुज्जा, पुणरवि-
चक्खुइदिणपासिय रूवाइ अमणुन्नपावगाइ, किं ते ? गडि-
कोढि-कुणि-उदरि-कच्छुल्ल-पइल्ल-कुज्ज-पगुल-वामण-
अधिल्लग-एगचक्खु विणिहय सप्पिसल्लगवाहिरोगपीलिय
विगयाणि य मयककलेवराणि सकिमिणकुहिय च दव्वरासि
अन्नेसु य एवमाइएसु अमणुन्नपावगेसु न तेसु समणेण
रूसियव्व, जाव न दुगुल्लावत्तियावि लब्भा उप्पाएउ, एवं
चक्खुइंदियभावणाभाविओ भवइ अतरप्पा मणुण्णामणुण्ण-

સુવિભદુવિભરાગદોસે પણિહિયપ્પા સાહૂમળવયળકાયગુત્તે સંવુડે
પણિહિંદિણ ચરેજ્જ ધમ્મં ॥ સૂ૦ ૮ ॥

ટીકા—‘ વીય ’ ઇત્યાદિ—

‘ વીય ’ દ્વિતીયા ચક્ષુરિન્દ્રિયસવરામિત્રેયા ભાવનામાદ— ‘ ચક્ષુહિદિણ ’
ચક્ષુરિન્દ્રિયેણ ‘ પાસિય ’ દૃષ્ટા ‘ રૂપાણિ ’ રૂપાણિ=આકારાન્ કોદૃશાનિ ?
‘ મણુણભદ્દગાઈ ’ મનોજ્ઞભદ્રકાણિ—મનોજ્ઞાનિ=મનોહરાણિ ચ તાનિ ભદ્રકાણિ=
સુન્દરાણિ ચેતિ કર્મધારયઃ, તથા—‘ સચિત્તાચિત્તમીસગાઈ ’ સચિત્તાચિત્તમિશ્રકા-
ણિ, તત્ર—સચિત્તાનિ=નરયુગ્માદીનિ, અચિત્તાનિ=તત્પ્રતિકૃતિરૂપાણિ, મિશ્રકાણિ
=વસ્ત્રાભરણભૂપિતાનિ તાન્યેય, કાષ્ઠપાપાણાદીનિ યા દૃષ્ટ્વા તેષુ શ્રમણેન ન
સક્તવ્યમિત્યાદ્યગ્રેણ સમ્યગ્ન્ય । કસ્મિન્ સ્થાને દૃષ્ટ્વા ઇત્યાદિ—‘ કટ્ટે ’ કાષ્ઠે=કાષ્ઠ-
ફલકે ‘ પોત્થે ય ’ પુસ્તકે ચ=પુસ્તકે ચ ‘ ચિત્તકમ્મે ’ ચિત્તકર્મણિ ‘ હેપ્પક

ઇસ વ્રત કી દ્વિતીય ભાવના કો કર્તે હું—‘ વીય ઇત્યાદિ૦ ।

ટીકાર્થ—(વીય) દ્વસરી ચક્ષુરિન્દ્રિય સવર નામ કી ભાવના હૈ
વહ ઇસ પ્રકાર સે હૈ—(ચક્ષુહિદિણ) ચક્ષુરિન્દ્રિય સે (મણુણભદ્દગાઈ)
મનોજ્ઞ અતઃ સુન્દર એસે (રૂપાઈ) રૂપો કો કિ જો (સચિત્તાચિત્ત
મીસગાઈ) સચિત્ત, અચિત્ત ઓર મિશ્રદ્રવ્ય સે આશ્રિત હો ઊન્હે (પાસિય)
દેખ કરકે સાધુ કો ચારિયે કિ વહ ઊનમે આસક્તચિત્ત ન થન, યહ
આગે સે સબન્ધ હૈ । નર નારી આદિ સચિત્ત દ્રવ્ય હૈ, ઇત્ત કે પ્રતિકૃતિ-
ફોટો અચિત્તદ્રવ્ય હૈ । વસ્ત્ર આભૂષણ આદિ સે વિમૂષિત
નર નારી આદિ મિશ્રદ્રવ્ય હૈ । ઇનકે આશ્રિત જો મનોહર આકાર
હોતા હૈ વહ મનોજ્ઞ ભદ્રકરૂપ હૈ । ઇન સચ કા આકાર (કટ્ટે) કાષ્ઠ કે

હવે સૂત્રકાર આ મતની બીજી ભાવના બતાવે છે—“ વીય ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—“ વીય ” બીજી ચક્ષુરિન્દ્રિય સવર નામની ભાવના છે તે આ
પ્રમાણે છે—“ ચક્ષુહિદિણ ” ચક્ષુરિન્દ્રિયથી “ મણુણભદ્દગાઈ ” મનોજ્ઞ અને
સુન્દર એવા “ રૂપાઈ ” રૂપોને છે જે “ સચિત્તાચિત્તમીસગાઈ ” સચિત્ત,
અચિત્ત અને મિશ્ર દ્રવ્યને આશ્રિત હોય, તેમને “ પાસિય ” જોઈને તેમાં
સાધુએ આમંત્રણ થયું જોઈએ નહીં નર, નારી આદિ સચિત્ત દ્રવ્ય છે તેમની
પ્રતિકૃતિ-ફોટો અચિત્ત દ્રવ્ય છે વસ્ત્ર, આભૂષણ આદિથી વિમૂષિત નર-નારી
આદિ મિશ્ર દ્રવ્ય છે તેમના પર આધાર રાખનાર જે મનોહર આકાર હોય
છે તે મનોજ્ઞ ભદ્રકરૂપ છે તે બધાનો આકાર “ કટ્ટે ” લાકડાના પાટીયા પર

મ્મે 'લેપ્પકર્મણિ મિત્યાદૌ, 'સેલે ય ક્ષેલે=પાપાણે ચ 'દત્તકર્મ્મે' દન્તકર્મણિ=ઠસ્તિદન્તાદિપુ યન્નરયુગાદીનામાકૃતિસ્તદ્ગુપ્તે તદ્દન્તકર્મ તસ્મિન્થ 'પચ્છિ વ્ણેહિ' પચ્છમિર્ષણૈર્યુક્તાનિ, 'અણેગસઠાણસઠિયાહ' અનેક સસ્થાનસસ્થિતાનિ' અનેકાનિ=અનેકપ્રકારાણિ યાનિ સસ્થાનાનિ=આકૃતયસ્તૈ સસ્થિતાનિ=યુક્તાનિ, તથા-'ગંધિમવેદિમપૂરિમસઘાઈમાણિ ય' ગ્રન્થિમવેદિમપૂરિમસઘાતિમાણિ ચ, તત્ર-ગ્રન્થિમ=ગ્રન્થસ્તેન નિર્વૃત્ત માલાવત્, વેદિમમ્=વેદિનેન નિર્વૃત્તમ્ પુષ્પગેન્દુ-રુવત્, પૂરિમ=પૂરણેન નિર્વૃત્ત, યન્ત્રે પિત્તલાદિ રમપૂરણેન નિષ્પાદિત પુત્તલિકા-દિકમ્, સઘાતિમમ્=સઘાતેન નિર્વૃત્તમ્, રુપર્દિકાદિસઘાતેન નિષ્પાદિત કુવકુટા-પદિર્ગો પર ઉકેરા જાતા હૈ (પોત્યે ય) પુસ્તકો સે છાપા જાતા હૈ, (ચિત્ત-કર્મ્મે ય) કાગજ આદિ પર ચિત્રિત ક્રિયા જાતા હૈ મૃત્તિકા આદિ મેં નનાયા જાતા હૈ (લેપ્પકર્મ્મે) રંગ આદિ સે મિત્તિ આદિ પર લિખા જાતા હૈ (સેલે ય) પાપણ કે ઝપર અકિત ક્રિયા જાતા હૈ (દત્તકર્મ્મે ય) હાથી દાત પર લોદા જાતા હૈ । इन सच पदार्थों के ऊपर उकेरे गये उन २ आकारों को (पचहि वण्णेहि) पाँच वर्णों से भरा जाकर बहुत ही सुन्दर रूप से आकर्षक बनाया जाता है । (अणैगसठाणसठियाह) मित्र २ रूप में उन चित्रों को सजाया जाता है । इसी प्रकार (गंधिम वेदिमपूरिमसघाइमाणि य) माला की तरह गूँथ २ कर जो चित्र बनाये जाते हैं वे ग्रन्थिम, पुष्पगेद की तरह जो वेष्टित करके चित्र बनाये जाते हैं वे वेष्टिम, किसी पदार्थ पर जो पुत्तलिकादि की तरह रंग से भरकर चित्र बन जाते हैं वे पूरिम, तथा कौड़ी आदि के परस्पर जोड़ने से कुक्कुट आदि के जैसा जो रूप बनाया जाता है वह सघातिम है । इन सच

ચિતરાય છે, “ પોત્યેય ” પુસ્તકોમા છપાય છે ચિત્તકર્મ્મેય ” કાગળ આદિ પર ચિતરવામા આવે છે, માટી આદિથી બનાવવામા આવે છે, “ લેપ્પકર્મ્મે ” રંગ આદિથી દિવાલ આદિ પર આલેખાય છે, “ સેલેય ” પથ્થર પર કોતરાય છે, “ દત્તકર્મ્મેય ” હાથીદાત પર કોતરવામા આવે છે, તે સઘળા પદાર્થો ઉપર અકિત કરેલ તે આકારોને “ પચ્છિ વ્ણેહિ ” પાંચ રંગો લગાડીને બહુજ સુદૃઢ અને આકર્ષક બનાવાય છે “ અણેગસઠાણસઠિયાહ ” મિત્ર મિત્ર રીતે તેની સજાવટ કરાય છે એ જ રીતે “ ગંધિમવેદિમપૂરિમસઘાઈમાણિ ય ” માળાની જેમ ગૂંથી ગૂંથીને જે ચિત્રો બનાવવામા આવે છે તે ગ્રન્થિમ, પુષ્પના દડાની જેમ જે ચિત્ર વેષ્ટિત કરીને બનાવાય છે વેષ્ટિમ, કોઈ પદાર્થ પર પુતળી આદિની જેમ રંગથી ભરીને જે ચિત્ર બનાવાય છે તે પૂરિમ, તથા કોડી આદિને એક બીજામા પડેલીને કૂકડા આદિ જેવો જે આકાર બનાવાય છે તે

દિસ્યરૂપમ્, એપાં દ્વઢઃ, તાનિ તયોક્તાનિ દૃષ્ટ્વા, તથા—‘ વહુવિધાનિ=અનેકપ
કારાણિ ચ=પુનઃ ‘ અદિય ’ અધિકમ્-અત્યર્થે યથા સ્થાત્તથા ‘ નયનમણસુદકરાઈ’
નયનમન સુલકરાણિ = નયનયોર્મનસથ સુલકરાણિ=મુગ્ધોત્પાદકાનિ ‘ મહાઈ’
માલ્યાનિ ‘ માલા ’ ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધાનિ તથા—‘ વળસઢે ’ ઘનવળ્ડાન્=અકજા
તીયાનામનેકજાતીયાના ચ વૃક્ષાણા સમૂહાન્, ‘ પવ્વણ ય ’ પર્વતોંશ્ચ ‘ ગામા-
ગરનગરાણિ ય ’ ગ્રામાઋનગરાણિ ચ દૃષ્ટ્વા, તથા—‘ સુદિયપુસ્વરિણી-વાવી-
દીહિય=ગુજાલિય-સરસરપતિય-સાગર-વિલપતિય-લાઈય-નઈ-સર-તલાગ-વિ
વિળો ’ ક્ષુદ્રિકા પુષ્કરિણી ગાપી દીર્ઘિકા ગુજ્જાલિકા સરઃ સર. પદ્ધિક્તકા સાગર
-વિલપદ્ધિક્તકા-લાતિકા-નદી-સરસ્વટાગમ્યાન્, તત્ર-પુદ્રિકા=લઘુજલાશયવિ
શેષઃ, પુષ્કરિણી=કમલવતી તુલાકારા ગાપી=ચતુષ્કોણા, દીર્ઘિકા=ઠમ્બાકાર-
વાપી, ગુજ્જાલિકા=ચક્રાકારગાપી, સરઃ સર પદ્ધિક્તકા=યેષા મયે અસ્માત્કઢા
ગાદપરસ્મિંસ્તઢાગે જલ સમાયાતિ, એતાદૃશજઢાશયસમૂહઃ સરસર. પદ્ધિક્તકે-

યો નિહાર કર, (દેલ્લકર) તથા (વહુવિહાણિ) અનેક પ્રકાર કી (મહાઈ)
માલાઓં કો કિ જો (અદિય નયનમણસુદકરાઈ) અધિક સે અધિક
રૂપ મેં નેત્ર એવ મન કો આહાદકારક હોતી હોં દેલ્લકર (વળસઢે) અક
જાતીય ઔર અનેક જાતીય વૃક્ષોં કે સમૂહોં કો (પવ્વણ ય) પર્વતોં કો
(ગામાગરનગરાણિ) ગ્રામ, આકર, નગરોં કો (સુદિય પુસ્વરિણી-વાવી
-દીહિય-ગુજાલિય-સરસર-પતિ ય-સાગર-વિલપતિ ય-લાઈય-નઈ-
સર-તલાગ-વિવિળો) ક્ષુદ્રિકા-લઘુ-જલાશય, પુષ્કરિણી-કમલોં સે
યુક્ત ગોલ આકારવાલી વાવઢી, વાપી-ચાર કોનો વાલી વાવઢી, દીર્ઘિકા
-લમ્બે આકાર વાલી વાવઢી, ગુજ્જાલિકા-ચક્ર આકારવાલી વાવઢી,
સરઃ સરઃ પદ્ધિક્ત-અક તાલાય સે દૂસરે તાલાવોં મે જલ જાને વાલે તાલાય
કે સમૂહ, સાગર-સમુદ્ર વિલપદ્ધિક્ત-વિલોંકે જૈસે આકાર વાલે કૂઓં કી,

અ ઘાતિમ કહેવાય છે તે બધાને જોધને તથા “વહુવિહાણિ” અનેક પ્રકારની “મહાઈ”
માળાઓ છે જે “અદિય નયનમણસુદકરાઈ” આખ અને મનને વધારેમા વધારે
આનંદદાયક હોય છે, તેમને જોધને “વળસઢે” એક જાતના છે અનેક જાતના
વૃક્ષના સમૂહોને “પવ્વણ” પર્વતોને, “ગામાગરનગરાણિ” ગામ, આકર, નગરોને
“સુદિય પુસ્વરિણી ગાપી-દીહિય ગુજાલિય સરસર પતિય-સાગર વિલપતિય લાઈય નઈ
-સર-તલાગ-વિવિળો” ક્ષુદ્રિકા-નાનું જળાશય, પુષ્કરિણી-કમળોથી યુક્ત ગોળા
કારની વાવ, વાપી-ચાર ખૂણાવાળી વાવ સર સર પદ્ધિક્ત-એક તળાવમાથી બીજા
તળાવોમા ખાણી જતું હોય તેવા તળાવોનો સમૂહ, સાગર, વિલપદ્ધિક્ત-દરના

ત્યુલ્યતે, સાગર:=સમુદ્ર:, ત્રિલપલ્લિકા.=ત્રિલાનીવલિલાનિ=કૃપાસ્તેષા ત્રિલ્લિકા
=કૃપશ્રેણિરિત્યર્થ:, શ્વાતિકા=પરિશ્લાઃ, નદી=પ્રસિદ્ધા, સર:=સ્વાભાવિકસ્તડાગ:,
તડાગ:=કૃત્રિમ: સરોવર, વપ્રા:=ધાન્યક્ષેત્રાણિ, ઇપામિત્તરેતરયોગદ્વન્દ્વ:, તાંસ્ત-
થોક્તાન્, દૃષ્ટ્વા, ત્રીદશાનેતાન્ ? इत्याह-‘ફુલ્લુપ્પલ્પડમપરિમહિયાભિરામે’ ફુલ્લો
ત્પલ્પડમપરિમહિતાભિરામાન્ તત્ત્વ ફુલ્લાનિ=વિકાસિતાનિ યાનિ ઉત્પલાનિ=ચન્દ્ર
વિકાશિકમલાનિ, પદ્માનિ=સૂર્યવિકાસિકમલાનિ ચ તૈઃ પરિતઃ=સમન્તાન્મહિતા
અતઃ-અભિરામાઃ=મનોહરાસ્તાંસ્તથોક્તાન્, પુનઃ કથમ્ભૂતાન્ ? ‘અણેગસડગ-
ગણમિહુણવિચરિણ’ અનેકશકુનગણમિથુનવિચરિતાન્=અનેકાનિ-વહુવિધાનિ યાનિ
શકુનગણમિથુનાનિ-પક્ષિગણયુગલાનિ, વિચરિતાનિ-સચરિતાનિ યત્ર તાન્, ફુલ્લો-
ત્પલાદિપદાનિ શુદ્ધિકાદિવપ્રાન્તવિશેષાણિ । તથા-‘વરમહવ-વિવિહ-ભવણ-
તોરણ-ચેદ્ય-દેવકુલ-સમપ્પ-પ્ર-સહ-સુક્રમયણાસણ-સીયરહ-સગહ-જાણ-
જુગ-સદણે’ વરમહવપરિવિધભવનતોરણ ચૈત્ય દેવકુલસમાપવાસયસુકૃતશયના-
સનશિવિકારથશકૃતયાનયુગ્યસ્યન્દનાન્, તત્ત્વ-વરમહવપ્રાઃ=શ્રેષ્ઠમહવપ્રાઃ, વિવિધ
ભવનાનિ, તોરણાનિ પ્રસિદ્ધાનિ, ચૈત્યાનિ=ઉદ્યાનાનિ, દેવકુલાનિ પ્રસિદ્ધાનિ,

શ્રેણિ, શ્વાતિકા-પરિશ્લાઃ નદી-નદિયા, સર-સામાન્યતાલાઃ તડાગ-
કૃત્રિમ સરોવર, વપ્ર-ધાન્ય કે જેત જો (ફુલ્લુપ્પલ્પડમપરિમહિયાભિ-
રામે) વિકાસિત-ઉત્પલોં સે, ચન્દ્રવિકાશિકમલો સે સવ ઓર મહિત
હો રહે હો, ઓર હસી કારણ જિનસે મન મેં વિશેષ પ્રફુલ્લિતા આતી,
હો, તથા જો (અણેગસડગગણમિહુણવિચરિણ) અનેક પક્ષીયોં કે યુગલ
જહા વિચરણ કર રહે હોં જન સવ કોં દેવકુલ સાધુ જનમેં આસક્તિ ન
કરે । તથા (વરમહવવિવિહભવણતોરણચેદ્યદેવકુલસમપ્પવાસમહસુ-
ક્રમયણાસણસીયરહસગહજાણજુગસદણે) વરમહવ-શ્રેષ્ઠમહવ, વિ-
વિધભવન, તોરણ, ચૈત્ય-ઉદ્યાન, દેવકુલ, સમા, પ્રપા-પાનીયશાલા,

જેવા આકારના જવાબોની હાર, શ્વાતિકા-ફરતી આવેની બાઈઓ, નદીઓ,
સર-સામાન્ય તળાવો, તડાગ-કૃત્રિમ સરોવર, વપ્ર-ધાન્યના જેતરો જે “ફુલ્લુ
પ્પલ્પડમપરિમહિયાભિરામે” વિરચિત ઉત્પલોથી ચન્દ્રવિકાસી કમળોથી બધી
તરફ ઘેરાયેલા હોય, અને એ જ કારણે મનને વધારે પ્રફુલ્લિત બનાવતા
હોય, તથા “અણેગસડગગણમિહુણવિચરિણ” અનેક પક્ષીઓના યુગલ બંધા
વિચરતા હોય, તે બધું જોઈને સાધુએ તેથી આસક્તિ કરવી જોઈએ નહીં તથા
‘વરમહવ-વિવિહભવણ-તોરણ-ચેદ્ય-દેવકુલ-સમપ્પ-વાસમહ-સયણાસણ-સીયરહ
મહગહજાણજુગસદણે” વરમહવ શ્રેષ્ઠમહવ, વિવિધભવન, તોરણ, ચૈત્ય, ઉદ્યાન,
દેવકુલ, સમા, પ્રપા પરબ, આવસથ પગિનાજોના સ્થાન, સારી રીતે સજાવ-

સમા=પ્રસિદ્ધા, પ્રપા=પાનીયશાકા, આસયઃ=પરિવ્રાજકસતિ, ગુરુતશયનાસનાનિ
 =સુકૃતાનિ=મુષ્ટકૃતાનિ=પિઠિતાનિ યાનિ શયનાનિ=શય્યાઃ, આમનાનિ=સિંહાસ-
 નાનિ ચ તાનિ તથોક્તાનિ, શિરિકા=' પાઠકી ' તિ પ્રસિદ્ધા, રયઃ=પ્રસિદ્ધઃ,
 શકટમ્=' ગાડા ' ઇતિ ભાષા પ્રસિદ્ધમ્, યાનમ્=ગમનસાધન રથાદિકમ્, યુ-
 ગ્યમ્=અશ્વાદિવાહનમ્, સ્યન્દનો=રયવિશેષઃ, અપામિતરેતરયોગદ્વન્દ્વ, તાસ્તયો-
 ક્તમ્, તથા ' નરનારિગણેય ' નરનારિગણાશ્ચ=સ્ત્રીપુરુષપ્રમુદાયાશ્ચ, દૃષ્ટ્વા, કયમ્બુ-
 તાનેતાન્ ? इत्याह—' सोमपण्डितदरिसणिज्जे ' सोमप्रतिरूपदर्शनोयान्-सोमं
 वत् सौम्यतया चन्द्रान् प्रतिरूपा =सुन्दराः, अतएव-दर्शनीयाः=द्रष्टु योग्यस्तान्
 पुनः कथभूतान् ? ' अलकियविभूसिए ' अद्रुतविभूषितान्=अलङ्कृताः=मुकुटाद्य-
 ळङ्कारै विभूषिताः वस्त्रादिभिः सज्जिताः ये तान्, पुनः कथभूतान् ? ' पुंवक-
 यैतवप्पभावसोद्गमसपउत्ते ' पूर्वकृततपः प्रभावसोभाग्यसप्रयुक्तान् पूर्वकृततपः प्र-
 भावेण प्राप्त यस्तौभाग्य तेन सप्रयुक्ता ये ते तथा तान् दृष्ट्वा, तथा—' नड-नट्ट-
 जल्ल-मुट्ठिय-वेलवग-कहग-पवग-लासग-आइस्खग-लख-मख-तूण-इल-तुव-
 वीणिय-तालायर-पकरणाणि ' नट-नेर्त्तक-जल्ल-मल्ल-मोष्टिक-विडम्बक-कथक-

આવસથ-પરિવ્રાજકોં કે મ્યાન, સુકૃત-અઢી તરહ સે સજાયે ગયે
 શયન, આસન, પાલકી, રથ, ગાડા, યાન-ગમન કે સાધનમૂલે વાહન,
 યુગ્ય-અશ્વાદિકવાહન, સ્યદન-રથવિશેષ, ઇન સંવકો, તથા (નરનારિ-
 ગણેય) નર ઓર નારી કે વૃન્દ કો કિં જો (સોમપણ્ડિતદરિસણિજ્જે)
 ચન્દ્રમા કે જૈસા સુન્દર આકાર વાલા હૈ ઓર હસી સે જો દર્શનીય બના
 હુઆ હૈ (અલકિયવિભૂસિય) મુકુટ ઓદિ વિવિધ અલકારોં સે એ
 વસ્ત્રાદિકો સે સુસજ્જિત હૈ, (પુવ્વકય તવપ્પભાવસોદ્ગમ સપઉત્તે)
 પૂર્વકૃત તપ કે પ્રભાવ સે પ્રાપ્ત સૌભાગ્ય સે જો યુક્ત હૈ ઇન સંવ કો
 દેખેકર કે તથા (નડ-નટ્ટ-જલ્લ-મુટ્ઠિય-વેલવગ-કહગ-પવગ-લાસ-
 ગ-ઓઈસ્વગ-લખ-મલ-તૂણ-ઇલ-તુવવીણિય-તાલાયર-પકરણાણિ)

ટવાળા શયનસ્થાન, આસન, પાલખી, રથ ગાડા, યાન મુસાફરીના સાધનરૂપ
 વાહન, યુગ્ય અશ્વાદિ વાહન, સ્યદન ખાસ પ્રકારના રથ, એ બધાને તથા
 “ નરનારિગણેય ” નર અને નારીના સમૂહને કે જે “ સોમપણ્ડિતદરિસણિજ્જે ”
 ચન્દ્રમા જેવા સુદર આકારવાળા છે અને તેથી જ જે જેવા ગમે તેવા છે,
 “ અલકિયવિભૂસિય ” મુગટ આદિ વિવિધ અલકારો તથા વસ્ત્રોથી વિભૂષિત
 છે, “ પુવ્વકયતવપ્પભાવસોદ્ગમસપઉત્તે ” પૂર્વકૃત તપના પ્રભાવથી પ્રાપ્ત થયેલ
 સૌભાગ્યથી જેઓ યુક્ત છે, એ સૌને બોધને તથા “ નડ-નટ્ટ-જલ્લ-મલ-
 મુટ્ઠિય-વેલવગ-કહગ-પવગ-લાસગ આઈસ્વગ-લલ-મલ-તૂણ-ઇલ-તુવ-વીણિય-તાલાયર-પકરણાણિ ” -તો

પલ્લવક-લાસકારયાયક-લહ-મહ તૂણિક તુમ્મગીણિક તાલાચર પ્રકરણાણિ જુ, નટનર્તકાદિપદાના વ્યાખ્યાસ્યૈવમ્પ્રથમભાષનાતોઞ્વગન્તવ્યાઃ, 'વહૂણિ' વહૂનિ-અનેકવિધાનિ 'સુકરણાણિ' સુકરણાણિ=શોભનક્રિયાયુક્તાનિ દૃષ્ટા, નટનર્તકા-દીના વહુવિધાન્ મનોહરવ્યાપારાન્ દૃષ્ટેત્યર્થઃ, તેષુ તથા 'અણેસુ ય' અન્યેષુ ચૈતદ્વિન્નેષુ 'અમાદ્દણ્ણુ' અમાદિકેષુ=અગ્રિયેષુ 'મણુભદ્દણ્ણુ' મનોહ્રભદ્રકેષુ 'રૂવેસુ' રૂપેષુ=ચક્ષુર્ગ્રાધિવિષયેષુ 'સમણેણ' શ્રમણેન=સાધુના 'ન સજ્જિયન્વ' ન સત્કવ્યમ્, ન રજ્જિયન્વ' ન રક્તવ્યમ્ 'જાપ' યાવત્=ચાપત્કરણાત્ 'ન ગિજ્જિયન્વ' ન ગર્થિતવ્યમ્ 'ન મુજ્જિયન્વ ન મોહિતવ્યમ્, 'ન વિણિયાયમાવજ્જિયન્વ' ન વિનિ-ધાતઆપત્તવ્ય, તથા-'ન લુભિયન્વ ન લોબ્યવ્યમ્, 'ન હસિયન્વ' ન તોષ્યવ્યમ્,

નટ,-નર્તક, જહ્ણ, મહ્ણ, મૌટ્ટિક, વેલવક, કચક, પૂલવક, લાસક, આખ્યાયિક, લલ્લ, મલ્લ, તૂણિક, તુમ્મગીણિક, તાલાચાર, જન સબ કે મનોહર વ્યાપારોં કો જોં (વહૂણિ) અનેક પ્રકાર કે હોતે હૈં, ઓર (સુકરણિ) શોભન ક્રિયા સપન્ન રહા કરતે હૈં ડનકો દેખ કરકે, તથા (અણેસુ અમાદ્દણ્ણુ રૂવેસુ મણુભદ્દણ્ણુ) ઓર મી જો હસી પ્રકાર કે મનોહ્રભદ્રક રૂપ હૈં ડન્હે દેખ કરકે (સમણેણ) સાધુ કો (તેસુ) ડનમેં (ન સજ્જિયન્વ) આસક્ત નહીં ઘનનાં ચાહિયે । (ન રજ્જિયન્વ) રાગ નહીં કરનાં ચાહિયે । યહા યાવત્ શબ્દ સે (ન ગિજ્જિયન્વ) ગૃહિભાવ નહીં કરનાં ચાહિયે-અર્થાત્-ડનમેં લલ્લચાના નહીં ચાહિયે । (ન મુજ્જિયન્વ) ન મોહ કરનાં ચાહિયે, (ન વિણિયાય આવજ્જિ-યન્વ) ડનકે લિયે ચારિત્ર કા ભગ ન કરે, (ન લુભિયન્વ) લોભ ન કરે, (ન હસિયન્વ) પ્રસન્ન મન નહીં હોનાં ચાહિયે, (ન હસિયન્વ)

હાચર-પ્રકરણાણિ" નટ, નર્તક, જહ્ણ, મૌટ્ટિક, વેલવક, કચક, પૂલવક, લાસક આખ્યાયિક, લલ્લ, મલ્લ, તૂણિક, તુમ્મગીણિક, તાલાચાર, એ બધાના મનોહર વ્યાપારો ડે જે 'વહૂણિ' અનેક પ્રકારના હોય છે, અને "સુકરણિ" સુકર ક્રિયા યુક્ત હોય છે, તેમને જોધને તથા "અણેસુ અમાદ્દણ્ણુ રૂવેસુ મણુભદ્દણ્ણુ" એ જ પ્રકારના બીજા પણ જે મનોહ્ર ભદ્રકરૂપ હોય તેમને જોધને "સમણેણ" સાધુએ "તેસુ" તેમનામા "ન સજ્જિયન્વ" આસક્ત થવું જોધએ નહીં, "ન રજ્જિયન્વ" રાગ ડવેા જોધએ નહીં, "ન ગિજ્જિયન્વ" તેમા લલ્લચાવું જોધએ નહીં, "ન મુજ્જિયન્વ" તેને માટે મોહ કરવેા જોધએ નહીં, "ન વિણિયાય આવજ્જિયન્વ" તેને માટે ચારિત્રનેા ભગ ન કરવેા જોધએ "ન લુભિયન્વ" લોભ કરવેા જોધએ નહીં, "ન હસિયન્વ"

‘ન હસિયવ્વ’ ન હસિતવ્યમ્, તથા-શ્રમણસ્તત્ર ‘ન સહ ચ મહ ચ’ ન સ્મૃતિ ચ મતિ ચ ‘કુજ્ઞા’ કુર્યાત્ । એતત્સર્ગમસ્યૈવ પ્રથમમાત્રનાયા વ્યાખ્યાતમ્ । ‘પુનરવિ’ પુનરપ્યુચ્યતેશ્રમણઃ ‘ચક્ષુઃપ્રદિવ્ય’ ચક્ષુરિન્દ્રિયેણ ‘અમણુણપાવગાઈ’ અમનોજ્ઞપાપકાનિ ‘રૂપાણિ’ રૂપાણિ ‘પાસિય’ દૃષ્ટ્વા ‘કિં તે’ કાનિ તાનિ-કથમ્ભૂતાનિ તાનિ રૂપાણિ ? इत्याह-‘गडि-कोटि-कुणि-उदरि-कच्छुल्ल-पडल-कुज्ज-पंगुल-वामण-अधिष्ठग-एगचक्खु-विणिहय सपिसल्लग-वाहिरोगपीलिय’ गण्डिकुण्डिकुण्डरि-कच्छुल्ल-श्लीपदकु-ज पङ्गुल-वामणान्नि-एगचक्खु-विनिहय सपिशा चरुव्याधिरोगपीडित-तत्र-गण्डी-गण्डो-हि कण्ठरोगविशेषः, स च वातपित्त श्लेष्मसन्निपातैर्जायमानत्वाच्चतुर्विधः, स यस्यास्ति स गण्डी, गण्डमालावानित्यर्थः, कुण्ठी-कुण्ठमस्यास्तीति कुण्ठी-कुण्ठरोगवान्, कुण्ठमप्यादश्चिन्नात्, तत्र महाकु

આશ્ચર્ય સે હસના નહીં ચાહિયે, તથા (ન સહ ચ મહ ચ તત્થકુજ્ઞા) ઔર ન ઉનકી યાદ કરના ચાહિયે ઔર ન ઉનમેં અપની બુદ્ધિ કો હી લગાના ચાહિયે । (પુનરવિ) હસી તરહ (અમણુણપાવગાઈ) અમ-નોજ્ઞ અશુભ (રૂપાઈ) રૂપોં કો (ચક્ષુઃપ્રદિવ્ય) ચક્ષુ હદ્રિય સે (પાસિય) દેખકર સાધુ કો ઉનમેં રોપ-દ્રેષ નહીં કરના ચાહિયે । (કિં તે !) વે અમનોજ્ઞ અશુભ રૂપ કૌન ૨ સે હૈં હસ પ્રકાર કો શકા કા સમાધાન કરતે હુએ સૂત્રકાર અવ ઉન્હે ડન નિમ્નલિખિત પદો દ્વારા પ્રકાશિત કરતે હૈં-(ગડિ-કોટિ-કુણિ-ઉદરિ કચ્છુલ્લ-પડલ-કુજ્જ-પંગુલ-વામણ-અધિષ્ઠગ-એગચક્કુ-વિણિહય સપિસલ્લગ-વાહી-રોગ-પીલિય) ગંડી-ગડમાલ-રોગવાલે, કુણ્ઠી-કુણ્ઠરોગવાલે, કુણિ-કુણ્ઠરોગી, ઉદરરોગી, કચ્છુલ્લરોગી, શ્લીપદરોગી, કુજ્જ-કુબડા, પંગુલ,

તેનાથી મનમા આનંદ પામવો નહી, “ ન હસિયવ્વ ” તેને જોઈને આશ્ચર્યથી હસવું ન જોઈએ, તથા “ ન સહ ચ મહ ચ તત્થકુજ્ઞા ” તેને યાદ કરવું જોઈએ નહીં કે તેમા ધ્યાન પડેાવવું જોઈ એ નહીં

“ પુનરવિ ” એ જ પ્રમાણે “ અમણુણપાવગાઈ ” અમનોજ્ઞ અશુભ “ રૂપાઈ ” રૂપોને ‘ ચક્ષુઃપ્રદિવ્ય ’ ચક્ષુરિન્દ્રિયથી “ પાસિય ” જોઈને તેના પ્રત્યે રોષ-દ્રેષ કરવો જોઈએ નહી, “ કિં તે ? ” તે અશુભ રૂપ કયા કયા છે તે શકાતું સમાધાન કરવાને માટે સૂત્ર ૨ નીચેના પદો દ્વારા તેમને જાહેર કરે છે—“ ગડિ-કોટિ-કુણિ-ઉદરિ-કચ્છુલ્લ- પડલ-કુજ્જ-પંગુલ-વામણ-અધિષ્ઠગ-એગચક્કુ-વિવિહય-સપિસલ્લગ-વાહિરોગ-પીલિય ” ગંડી-ગડમાલના રોગવાળા, કુણ્ઠરોગી, કુણિ-કુણ્ઠરોગવાળા, ઉદરરોગી, કચ્છુલ્લરોગી, શ્લીપદરોગી, કુબડા,

પ્થસ્ય સપ્તભેદાઃ । તથવા અરુગ-દુઝ્મર-સ્પર્શજિહ્વ-કરકપાલ-કાકન-પૌંડરીક
દદ્રણિ । ઇતિ, મહત્ત્વ ચૈવામસાધ્યત્વાત્ । સામાન્યકુષ્ઠસ્યૈકાદશ ભેદાઃ, સ્થૂલામા-
રુક્ ૧ મહાકુષ્ઠ ૨ ઝકુષ્ઠ ૩ ચર્મદલ ૪ વિસર્પ ૫ પરીસર્પ ૬ ત્રિચર્ચિકા ૭
સિધ્ધ ૮ કટિમ ૯ પામા ૧૦ શતારુપ્ક ૧૧ સજ્જાઃ । એવ સર્ગાણિ કુષ્ઠાન્યપ્તા
દશ । યદ્યપિ સર્ગ કુષ્ઠ સન્નિપાતજમેવ જાયતે, તથાપિ-વાતાદિદોષોત્કટતયા
વામન, અધિહ્ન-જન્માન્ધ, અરુચક્ષુ-કાના, વિનિહતચક્ષુ-જન્મ કે
યાદ હોને ચાલા અધા, સપિસલ્લક-સપિશાચ-ભૂતાદિ આવેશ ચાલા,
અથવા સર્પિશાલ્યક-ઘસીતે હ્રુષ્ણ ચલને ચાલા હૃદયરોગી, વ્યાધિ-
પીડિત, ઇન સય કો દેશ્વકર ઇનમેં દ્રેષ તથા ઘૃણા નહીં કરની ચાહ્યે ।

પૂર્વોક્ત પદોં કા અલગ-અલગ અર્થે ઇસ પ્રકાર હૈં-ગડી-વાતપિત્ત
ઔર સન્નિપાત-વાતાદિ ત્રિદોષ મિશ્રિત વિકાર સે ઉત્પન્ન હોને કે કારણ
ચાર પ્રકાર કે કઠ રોગચાલા, કુષ્ઠી-કુષ્ઠ અઢારહ પ્રકાર કા હોતા હૈં,
જિસમે સાત પ્રકાર કે મહાકુષ્ઠ હોતે હૈં ઔર ગ્યારહ પ્રકાર કે સામા-
ન્યકુષ્ઠ હોતે હૈં । (૧) અરુગ ૨ દુઝ્મર ૩ સ્પર્શજિહ્વ ૪ કરકપાલ ૫
કાકન ૬ પૌંડરિક ઔર ૭ દદ્ર । યે અસાધ્ય હોને સે મહાકુષ્ઠ માને
ગયે હૈં । સામાન્ય કુષ્ઠ ગ્યારહ પ્રકારકે યે હૈં-૧ સ્થૂલામારુક્ ૨ મહાકુષ્ઠ
૩ ઝકુષ્ઠ ૪ ચર્મદલ ૫ વિસર્પ ૬ પરીસર્પ ૭ ત્રિચર્ચિકા ૮ સિ મ ૯ કિટિમ
૧૦ પામા શતારુપ્ક ૧૧ । યદ્યપિ સર્ગ હી કુષ્ઠ સન્નિપાત સે હી ઉત્પન્ન
હોતે હૈં તથાપિ વાતાદિક દોષોં ની ઉત્કટતા સે ઇસમે ભેદ માના ગયા

લૂલા, વામન, જન્માન્ધ, ડાણીયા જન્મ પછી આધળા બનેલા, સપિસલ્લક-
સપિશાચ-ભૂતાદિ વળગાડવાળા, અથવા સપિશાલ્યક-ઢસડાતા ચાલના હૃદયરોગી,
વ્યાધિપીડિત અને રોગ પીડિત એ બધાને ભેદને તેમના પ્રત્યે દ્રેષ અથવા
ઘૃણા કરવી ભેદએ નહીં પૂર્વોક્ત પદોના અલગ અલગ અર્થ આ પ્રમાણે
છે—“ગડી”-વાત પિત્ત અને સન્નિપાત-વાતાદિ ત્રિદોષ મિશ્રિત વિકારથી
ઉત્પન્ન થવાને ડારણે ચાર પ્રકારના ડરોગવાળા, “કુષ્ઠી”-કુષ્ઠ અઢાર પ્રકારના
હોય છે, જેમા સાત પ્રકારના મહાકુષ્ઠ હોય છે અને અગિયાર પ્રકારના
સામાન્ય કુષ્ઠ હોય છે (૧) અરુણ, (૨) દુઝ્મર, (૩) સ્પર્શજિહ્વ, (૪) કર
કપાલ, (૫) કાકન, (૬) પૌંડરીક અને (૭) દદ્ર એ સાતે અસાધ્ય હોવાથી
મહાકુષ્ઠ ગણાય છે અગિયાર પ્રકારના સામાન્ય કુષ્ઠ આ પ્રમાણે છે—(૧) સ્થૂલા-
મારુક્, (૨) મહાકુષ્ઠ, (૩) ઝેડ કુષ્ઠ (૪) ચર્મદલ, (૫) વિસર્પ (૬) પરીસર્પ (૭)
ત્રિચર્ચિકા, (૮) મિધ્મ (૯) કિટિમ (૧૦) પામા, (૧૧) શતારુપ્ક એ કે બધા જ
કુષ્ઠ સન્નિપાતથી જ ઉત્પન્ન થાય છે છતાં પણ વાતાદિકે દોષોની પ્રબળતાને

મેદભાગ્ભયતીતિ વિજ્ઞેયમ્ । તથા-કુણિઃ=કુણ્ટ., અપ દિ ગર્ભાધાનાદિ દોષાદ્ હસ્તે
કપાદો ન્યૂનૈરુપાણિર્માત્રમગતિ । તથા - ઉદરી=ઉદરરોગયાન, ઉદરરોગા અપ્ત-
પ્રકારા તદુક્તમ્—

પૃથક્ સમસ્તૈરપિચાનિલૌઘૈઃ પ્લીહોદરં વદ્વગૃદ તથૈવ ।

આગન્તુક વેસરમષ્ટમ તુ જલોદરં ચેતિ ભવન્તિ તાનિ ॥ ૧ ॥

એતેષુ જલોદરમસાધ્ય શેષાણિ તુ સાધ્યાનિ । તથા-કચ્છુલ્લ=કચ્છુલ્લિમાન્,
શ્લીપદઃ=શ્લીપદરોગયુક્તઃ, શ્લીપદલક્ષણમેત્યુક્તમ્—“ પ્રકૃપિતા વાતપિત્તશ્લેષ્મા
ણોઽધોઽધઃ પ્રપન્ના વક્ષસ્થલોરુજઙ્ઘા-સ્વવતિષ્ઠમાના કાલાન્તરે પાદમાશ્રિત્ય શ્નૈઃ
શ્નૈઃ શોથમુપજનયન્તિ ” તદેવશ્લીપદમુચ્યતે । અન્યદપ્યુક્તમ્—

હૈં ઇન અઠારહ પ્રકાર કે કુણ્ટરોગવાલા, કુણી-કુાઠરોગી (૨) यह
रोग गर्भाधानादि के दोष से होता है । इसमें एक पैर छोटा हो जाता
है या एक हाथ छोटा हो जाता है । उदररोगी-उदररोग आठ प्रकार
का होता है, कहा भी है—

“ પૃથક્ ૧ સમસ્તૈ ૨ રપિ ચાનિલૌઘૈઃ ૩, પ્લીહોદર ૪ વદ્વગૃદ ૫
તથૈવ । આગન્તુક ૬ વેસર ૭-મષ્ટમ તુ જલોદર ૮ ચેતિ ભવન્તિ
તાનિ ॥ ૧ ॥ ”

પૃથક્ ૧, સમસ્ત ૨, અનિલૌઘ ૩ પ્લીહોદર ૪ વદ્વગૃદ ૫ આગન્તુક
૬ વેસર ૭ જલોદર ૮ ઉદરરોગ કે વે ૮ પ્રકાર હૈં । इनमें जलोदर रोग
असाध्य है, बाकी सब साध्य हैं । कच्छुल्ल-खुजली रोगवाला, श्लीप-
दरोगी-इस रोग के लक्षण इस प्रकार कहे हैं—

“ કુપિ તાવાતપિત્તશ્લેષ્માણોઽધોધ પ્રપન્ના વક્ષસ્થલોરુજઙ્ઘા
સ્વવતિષ્ઠમાના કાલાન્તરે પાદમાશ્રિત્ય શ્નૈ શ્નૈઃ શોથમુપજનયન્તિ ॥ ”

કારણે તેમા લેહ માનવામા આવ્યા છે આ રીતે અઠાર પ્રકારના કુણ્ટરોગી,
કુણિ-કુણ્ટરોગી-આ રોગ ગર્ભાધાનાદિ દોષથી થાય છે । તે રોગમા એક હાથ
કે એક પગ ટૂંકો થઈ જાય છે ઉદરરોગી-ઉદરરોગ આઠ પ્રકારના હોય છે કહ્યું પણ છે કે—

“ પૃથક્ ૧ સમસ્તૈ ૨ રપિ ચાનિલૌઘૈઃ ૩ પ્લીહોદર ૪ વદ્વગૃદ ૫ તથૈવ ।
આગન્તુક ૬ વેસર ૭ મષ્ટમ તુ જલોદર ૮ ચેતિ ભવન્તિ તાનિ ॥ ૧ ॥ ”

(૧) પૃથક્, (૨) સમસ્ત, (૩) અનિલૌઘ, (૪) પ્લીહોદર (૫) વદ્વગૃદ
(૬) આગન્તુક, (૭) વેસર અને (૮) જલોદર, એ આઠ પ્રકારના ઉદરરોગ
હોય છે તેમા જલોદર અસાધ્ય રોગ છે, બાકીના બધા સાધ્ય છે “, કચ્છુલ્લ ”
હાદર, ખરજુ, ખસ, વગેરે ખુજલીરોગો, શ્લીપદરોગી-(હાથીપગાનો રોગી)
આ રોગના લક્ષણો નીચે પ્રમાણે કહેલ છે—

“ કુપિતા વાતપિત્તશ્લેષ્માણોઽધોધ પ્રપન્ના વક્ષસ્થલોરુજઙ્ઘાસ્વવતિષ્ઠ
માના કાલાન્તરે પાદમાશ્રિત્ય શ્નૈ શ્નૈઃ શોથમુપજનયન્તિ ”

‘પુરાણોદકભૂયિષ્ઠાઃ સર્વર્તુષુ ચ શીતલાઃ ।

યે દેશાસ્તેષુ જાયન્તે શ્લીપદાનિ વિશેષતઃ ॥ ૧ ॥’

પાદયો હસ્તયોર્વાંડપિ જાયતે શ્લીપદ નૃણામ્ ।

ઋણૌષ્ઠનાસાસ્વપિ ચ, ક્વચિદિચ્છન્તિ તદ્વિદઃ ॥ ૨ ॥ ઇતિ ।

હદ ચ ‘ફીલ પાંચ’ હાથી પગા’ ઇત્યાદિ નામભિર્લોકે પ્રસિદ્ધમ્ । તથા—
કુઞ્જઃ=ગડુલઃ કુગડા’ ઇતિ ભાષાપ્રસિદ્ધઃ । પદુલઃ=પદુઃ=ગમનાસમર્થઃ, વામન =
સ્વર્વઃ—હસ્તગરીર ઇત્યર્થઃ । एते કુઞ્જરામનાદયો માતાપિતૃશુક્રશોણિતદોષેણ
ભવન્તિ । તદુક્તમ્—

यह रोग प्रकुपित होकर जय वात पित्त और कफ नीचे नीचे
शारीरिक भागों में पहुँच जाते हैं और वक्षस्थल, उरु, जघा, इनमें
प्रवेश कर जाते हैं तब वे कालान्तर में पैर में पहुँच कर धीरे २ उसमें
शोथ-सूजन को उत्पन्न कर देते हैं इसी का नाम श्लीपद रोग है, इस
रोग का नाम फिलपाच हाथीपगा आदि भी हैं । इसके और भी
लक्षण कहे हैं—

“પુરાણોદકભૂયિષ્ઠા’, સર્વર્તુષુ ચ શીતલાઃ ।

યેદેશાસ્તેષુ જાયન્તે, શ્લીપદાનિ વિશેષતઃ ॥ ૧ ॥

પાદયો હસ્તયોર્વાંડપિ, જાયતેશ્લીપદનૃણામ્ ।

ઋણૌષ્ઠનાસાસ્વપિ ચ, ક્વચિદિચ્છન્તિ તદ્વિદઃ ॥ ૨ ॥

यह रोग उन देशों में विशेष कर होता है जिनदेशों में पुराना
पानि अधिक रूप में भरा रहता है तथा जो सर्व ऋतुओं में शीतल रहा
करते हैं, कितनेक यह भी कहते हैं कि यह रोग हाथ, पैर, कान,

ન્યાયે વાત, પિત્ત અને ડક પ્રકુપિત થઈ ને શરીરના નીચેના ભાગોમા
પહોચી જાય છે અને વક્ષસ્થળ, ઉરુ જઘા આદિમા પ્રવેશ કરે છે ત્યારે
સમય જતા પગમા પહોચીને ધીમે ધીમે તેમા સોજો ઉત્પન્ન કરે છે તે રોગનુ
નામ શ્લીપદરોગ છે આ રોગના બીજા નામો ફિલપગા હાથીપગા આદિ
પણ છે તેના બીજા લક્ષણો પણ કહેલ છે—

“પુરાણોદકભૂયિષ્ઠાઃ, સર્વર્તુષુ ચ શીતલાઃ

યેદેશાસ્તેષુ જાયન્તે, શ્લીપદાનિ વિશેષતઃ ॥ ૧ ॥

પાદયો હસ્તયોર્વાંડપિ જાયતે શ્લીપદ નૃણામ્ ।

ઋણૌષ્ઠનાસાસ્વપિ ચ ક્વચિદિચ્છન્તિ તદ્વિદઃ ॥ ૨ ॥

જે દેશોમા પ્રાચીન પાણી વિશેષ પ્રમાણમા ભરાઈ રહે છે તે દેશોમા
આ રોગ વધુ પ્રમાણમા થાય છે વળી જે પ્રદેશ બધી ઋતુઓમા શીતળ
રહે છે ત્યા પગ આ રોગ વધારે પ્રમાણમા થાય છે કેટલાક એમ પણ કહે

ગર્ભે વાતપ્રકોપેણ, દોહદે વાગ્યમાનિતે ।

ભવેત્કુન્નઃ કુણિઃ પદ્મર્મુકો મમન ણ્વ ચ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

તથા—અનિલ્લઠ્ઠઃ=જાત્યન્ધઃ, એકચક્ષુઃ=કાણઃ, એતદ્ દોષદ્વય ચ ગર્ભગતસ્ય જાતસ્ય ચાપિ ભવતિ । ગર્ભગતો યયૈતદોષદ્વયમાગમ્યતિ, તદેવ વિજ્ઞાતયમ્—યદા હિ ગર્ભસ્થજીવસ્ય નેત્રદ્વય તેજો ન પ્રતિપદ્યતે તદા સ ગર્ભસ્યો જાત્યન્ધો ભવતિ । યદા ચૈક નેત્ર પ્રતિપદ્યતે નાપર, તદા સ કાણો ભવતિ । તદેવ ઓઠ ઓર નાસિકા મેં મીં હોતા હૈ । કુન્ન પશુ ઓર વામન, યે માતા પિતા કે શુક્ર શોણિત કે દોષ સે ઉત્પન્ન હોતે હૈં, કહા મીં હૈ—

“ ગર્ભે વાતપ્રકોપેણ, દોહદે વાગ્યમાનિતે ।

ભવેત્કુન્નઃ કુણિઃ પદ્મર્મુકો મમન ણ્વ ચ ॥ ૧ ॥

અર્થાત્—ગર્ભ મેં વાત કે પ્રકોપ હોને સે તથા દોહદ—ગર્ભિણી મનોરથ કી તર્ફ ધ્યાન નહીં દેને સે અર્થાત્ ઉસકા અપમાન કરને સે કુન્નક, કુણિ—કુણ્ઠ—પદ્મુ ઓર છૂલે તથા તુતલાને વાલે વાલક ઉત્પન્ન હોતે હૈ । અધિલ જન્માન્ન, કાના યે દોનો પ્રકાર કે વ્યક્તિ જબ ગર્ભ અવસ્થા સપન્ન હોતે હૈં તબ ઉસ સમય યદિ દોનોં નેત્ર ઇનમૈં સે કિસી એક કે તેજ કો પ્રાપ્ત નહીં કર પાતે હૈં તો વહ ગર્ભ જન્માન્ધ હોકર ઉત્પન્ન હોતા હૈ—યદિ એક હી નેત્ર તેજ કો પ્રાપ્ત કર લેતા હૈ દુસરા નહીં કર પાતા તો વહ ઉસ સમય કાના ઉત્પન્ન હોતા હૈ । વહી તેજ યદિ રક્તાનુગત હો જાતા હૈ તો શિશુ રક્તાક્ષ ઉત્પન્ન હોતા હૈ, પિત્તાનુગત હોતા હૈ તો શિશુ પિત્તાક્ષ હોતા હૈ ઓર યદિ શ્લેષ્માનુગત હોતા

છે કે આ રોગ હાથ, પાંચ, કાન, હોઠ અને નાકમા પાંચ થાય છે કુન્ન—પાગળાપાંચ અને વામનતા માતાપિતાના શુક્ર તથા રક્તનાદોષથી થાય છે એ પાંચ છે

“ ગર્ભે વાતપ્રકોપેણ, દોહદે વાગ્યમાનિતે ।

ભવેત્કુન્નઃ કુણિઃ પદ્મર્મુકો મમન ણ્વ ચ ॥ ૧ ॥ ”

એટલે કે ગર્ભમા વાયુનો પ્રકોપ થવાથી તથા ગર્ભિણીનો દોહદ—મનોરથ પૂરો નહીં કરવાથી, તેના દોહદની અવગણના કરવાથી કુંબો કુણિ—કુંબ, ક્ષો, મૂળો અથવા તોતડો બાળક જન્મે છે અધિલ—જન્માધ, કાણો, એ એ બન્ને પ્રકારના બાળકો બ્યારે ગર્ભમા હોય ત્યારે જો બન્ને આખો તેજ પ્રાપ્ત કરી લેતી નથી તો તે બાળક જન્મથી જ અધ પેદા થાય છે જો એક જ આખ તેજ પ્રાપ્ત કરી લે છે પણ બીજી આખ તેજ પ્રાપ્ત કરી લેતી નથી તો તે જન્મથી જ કાણો હોય છે એ જ તેજ જો રક્તાનુગત થઈ જાય તો બાળક રક્તાક્ષ—લાલ નેત્રવાળુ થાય છે, પિત્તાનુગત થઈ જાય તો બાળક પિત્તાક્ષ પીળી આંખવાળો જન્મે તે, અને જો શ્લેષ્માનુગત થાય તો તે શુક્રાક્ષ પેદા

તેજો યદિ રક્તાનુગત પિત્તાનુગત શ્લેષ્માનુગત ચ ભવતિ, તદા જાતકઃ ક્રમેણ રક્તાક્ષઃ પિત્તાક્ષઃ શ્લેષ્માક્ષઃ ભવતિ । તથા—ગિનિહતઃ=વિનિહતચક્ષુઃક ઇત્યર્થઃ, ઉત્પત્ત્યનન્તર યસ્ય નેત્રદ્વય નષ્ટ સ વિનિહત ઉચ્યતે । તથા 'સપ્તિસહ્જ' સપિશાચક્રઃ = પિશાચગૃહીત ઇત્યર્થ । અગ્રા—સર્પિશલ્યકઃ, ઇતિચ્છાયા । તત્ર—સર્પી—સર્પતીતિ સર્પી, સર્પણગ્રીલ ઇત્યર્થઃ । અય દિ પીઠે સમુગમિશ્ય તત્ જહ્વાયોઃ કટગ્રા ચ દૃઢ પદ્ધ્યા હસ્તયોઃ પાદુકે આદાય, તદાત્રયણેન સર્પતિ=સરતિ, અત્ર ઇગ્રાય સર્પીત્યુચ્યતે । અય ક્લિલ ગર્ભદોષાત્કર્મદોષાન્ચ ભવતિ । શલ્યકઃ=હૃદયશલ્યાદિ રોગયાન્ । ઉમયો કર્મધારય । તથા—વ્યાધિરોગપીડિતઃ=વ્યાપિના—ચિરસ્થાયિપીડયા, રોગેણ-સગ્રોધાતિપીડયા ચ પીડિતો યઃ સતથોક્ત ઇપા સમાહારદ્વન્દ્વસ્તત્તથોક્તમ્, તથા—'વિગયાણિ ય મયકલેવરાણિ' વિકૃતાનિ ચ મૃતકલેવરાણિ તથા—'સકિમિણકુહિય ચ' સક્રુમિકુથિત ચ—સહ ક્રુમિમિઃ, હૈ તો વહ શુક્લાક્ષ ઉત્પન્ન હોતા હૈ । વિનિહત—વિનિહતચક્ષુઃક ઉત્પત્તિ કે વાદ જિસકે નેત્ર ફૂટ જાતે હૈ વર વિનિહતચક્ષુક કહલાતા હૈ એસે પ્રાણી નપિસહ્જ—પિશાચગૃહીત અથવા સર્પિશલ્યક—સર્પી—પીઠ પર બેઠ કર જો ઉસે દોનો જઘાઓં સે કટિ પર મજબૂતી કે સાથ વાંધકર ઓર દોનો મેં દો કાણ્ઠ આદિ કી પાદુકાઓં કો લેકર ઉસકે સહારે સે સરકના હૈ ઉસકા નામ સર્પી હૈ એસે મરકને વાલે વ્યક્તિ કો કિ જો ગર્ભદોષ સે ઓર અપને કર્મકે દોષ સે—અશુભ કર્મ કે ઉદય સે ઉત્પન્ન હોતા હૈ, એસા શલ્યક—હૃદય શલ્યાદિ રોગવાલા, વ્યાધિરોગ પીડિત—વ્યાધિરોગ સે પીડિત પ્રાણી, અર્થાત્—ચિરસ્થાયી પીડારૂપ વ્યાધિસે તથા સગ્રોધાતિ રોગરૂપ પીડા સે જો કણ્ઠ પા રહા હૈ એસે દુઃખિત જીવ, ઇન સબ કો દેખ કર ઇનમે દેષ તગ ઘૃણા નહી કરની ચાહિયે । (વિગયાણિય મયકલેવરાણિ) વિકૃત હુપ મૃતક કલેવરોં કો, (સકિમિણ

થાય છે વિનિહત—વિનિહતચક્ષુઃ—જન્મ પછી જેની આંખો ફૂટી બાક છે તે વિનિહતચક્ષુ કહેવાય છે સપ્તિસહ્જ—પિશાચગૃહીત અથવા સર્પિશલ્યક—સર્પી—પીઠ પર બેઠાને અથવા બંને બાંધને કટિ પર મજબૂત રીતે બાંધીને અને બંને હાથમાં બે લાડકા આદિની ઘોડી લઈને તેની મદદથી જે જમીન પર સરકે છે તેને સર્પી કહે છે એ રીતે સરકનાર વ્યક્તિ કે જે ગર્ભદોષથી અશુભ કર્મના ઉદયથી ઉત્પન્ન થાય છે, “શલ્યક”—હૃદયશલ્ય આદિ રોગવાળા, વ્યાધિ રોગપીડિત—વ્યાધિ રોગથી પીડાતા પ્રાણી એટલે કે દીર્ઘજીવતી આદ્યા આપતા પીડારૂપ વ્યાધિથી તથા હંમેશા રોગરૂપ પીડાથી પીડાતા હુબી છુવે એ બાંધને બેઠેને તેમના પ્રત્યે દ્રેષ કે ઘૃણા કરવી બેઠેને નહી “વિગયાણિય મયકલેવરાણિ” વિકૃત થયેલ મૃત શરી-

कुथितो दुर्गन्धयुक्तो यः स तथोक्तस्ते 'दन्वरासि' द्रव्यराशि-पुरीषादिद्रव्यसमूहं च दृष्ट्वा 'एवमाइएसु' एवमादिकेषु=एव प्रकारेषु 'अमणुण्णपावणसु' अमनोत्रपाप-केषु, तथा-एभ्यः 'अन्नेसु' अन्येषु च 'तेसु' तेषु अमनोत्रपापकेषु समुपस्थितेषु 'समणेण' श्रमणेन-साधुना 'न रुसियव्व' न रोष्टव्यम्, 'जाय' यावत्पदात् 'न हीलियव्व' न निन्दितव्यम्, न रिसितव्यम्, न त्रेत्तव्यम्, न भेत्तव्यम् न हन्तव्यम्, इति । पट्पदानि सग्राह्याणि । तथा-श्रमणेन, दुग्गुत्तावत्तियावि 'जुगुप्सावृत्तिरुत्ति' 'न' 'लम्मा' लम्भा 'उप्पाणउ' उत्पादयितुम् । एवम्=श्र-

कुथिय च दन्वरासि) कृमिसहित सड़े दृष्ट दुर्गन्धित पदार्थ को और पुरीष आदि द्रव्य समूह को देख कर के इनमें तथा (अन्नेसु य एवमाइएसु) इनसे भिन्न और जो इसी तरह के (अमणुण्णपावणसु तेसु) अमनोत्र अशुभ पदार्थ समक्ष उपस्थित हो उनके ऊपर (समणेण) साधुको (न रुसियव्व) रोष नहीं करना चाहिये । यावत् पद से (न हीलियव्व) अवज्ञा नहीं करनी चाहिये, उनकी (न निन्दियव्व) निंदा नहीं करना चाहिये, (न रिसियव्व) उनकी दूसरे के सामने निंदा नहीं करनी चाहिये । इसी तरह (न त्रिदियव्व) अमनोत्ररूप आकृति का छेदन नहीं करना चाहिये । (न भिदियव्व) न भेदन करना चाहिये । (न वहेयव्व) न अनिष्ट रूपवाले व्यक्तिका वध करना चाहिये । इसी प्रकार से इन पदार्थों के ऊपर साधु को (न दुग्गुत्ता वत्तियावि लम्मा उप्पाणउ) जुगुप्सावृत्ति भी उत्पन्न करना उचित नहीं है । (एव) इस

शब्दने "सकिमिणकुथिय च दन्वरासि" कृमिसहित सड़ता दुर्गन्ध युक्त पदार्थोंने अपने पुरीष आदि द्रव्य समूहने जोधने तेभा तथा "अन्नेसुय एवमाइएसु" ओ उपरात ओ ४ प्रकारना भील "अमणुण्णपावणसु तेसु" अभनोत्र, अशुभ पदार्थ भासे भोजूद डोय तेभना पर "समणेण" साधुओ "न रुसियव्व" दोष न करवो जोधओ, "न हीलियव्व" तेनी अवज्ञा न करवी जोधओ, "न निन्दियव्व" तेभनी निंदा न करवी जोधओ, "न रिसियव्व" भीलानी आगण निंदा न करवी जोधओ, ओ ४ प्रभाओ "न त्रिदियव्व" अभनोत्र देभावनी वस्तुत छेदन कराववु नही, "न भिदियव्व" छेदन उराववु नही, 'न वहेयव्व' अनिष्ट रूपवाणी व्यक्तियने वध कराववो जोधओ नही ओ ४ प्रभाओ ओ पदार्थो प्रत्ये साधुओ "न दुग्गुत्ता--वत्तिया वि लम्मा उप्पाणउ" जुगुप्सा वृत्ति पणु राखवी ते योग्य नथी "एव" आ गीते "बन्धुइदिय

નેન પ્રકારેણ 'ચક્ષુઃકાન્દિયમાવનાભાવિઓ' ચક્ષુરિન્દ્રિયમાવનાભાવિઓ 'ભવઈ' ભવતિ 'અતરપ્પા' અન્તરાત્મા=જીવઃ। તતથ 'મણુગામણુણસુન્નિદુન્નિરાગદોસે' મનોજ્ઞામનોજ્ઞસુરમિદુરભિગદ્દેપે, 'પણિહિયપ્પા' પ્ણિહિતાત્મા 'સાહુ' સાધુઃ 'મણવયણકાયગુત્તે' મનોવચનકાયગુણ, 'સવુડે' સવૃત્ત. 'પણિહિદ્દિદિ' પ્ણિ-હિતેન્દ્રિયો 'ધમ્મ' ધર્મ 'ચરેજ્જ' ચરેત્ । ણ્પા પદાનાં વ્યાખ્યાસ્યૈવ પ્રથમ ભાવનાયા દ્રષ્ટવ્યા।।। સૂ૦ ૮ ॥

પ્રકાર સે (ચક્ષુ ડકિય માવનાભાવિઓ અતરપ્પા) જય ચક્ષુ ઇન્દ્રિય કી ભાવના સે ભાવિત અતરાત્મા હોતા હે તય વહ (મણુગામણુણ-સુન્નિદુન્નિરાગદોસે પ્ણિહિયપ્પા) મનોજ્ઞરૂપ ચક્ષુઃકાન્દિય કે અશુભ વિ-પયમે રાગદ્વેષ સે રહિત હોને સે વ્યવસ્થિત આત્માવાળા (સાહુ) સાધુ(મ-ણવયણકાયગુત્તે) અપને મન, વચન ઓર કાયરૂપ યોગોકો શુભ અશુભકે વ્યાપાર સે સુરક્ષિત કર લેતા હે ઓર (સવુડે) સવર સે યુક્ત બન કર (પ્ણિહિદ્દિદિ) અપની ચક્ષુઃકાન્દિય કો વશમેં કર કે (ધમ્મ) ચારિત્ર રૂપ ધર્મ કા (ચરેજ્જ) પાલક બન જાતા હે ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને હસ સૂત્રદ્વારા પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતકી દ્વિતીય ભાવના જો ચક્ષુ ઇન્દ્રિય સવર નામકી હૈ વહ કહી હૈ । હસ ભાવનામેં સાધુ કો ઁસા િચાર કરના મરજાયા ગયા હૈ કિ વહ હસ પ્રકાર સે અપની ચક્ષુરિન્દ્રિય કી પરિણતિ કો ઁસી વિચારધારા સે સુદૃઢરૂપ મેં બાધ કર રલ્લે કિ જિસસે વહ ચક્ષુરિન્દ્રિય કે વિષયભૂત મનોજ્ઞ રૂપમે

માવના ભાવિઓ અન્તરપ્પા ” બ્ધારે અતરાત્મા ચક્ષુ ઇન્દ્રિયની ભાવનાથી ભાવિત થાય છે ભારે તે “ મણુગામણુણસુન્નિદુન્નિરાગદોસેપણહ્યપ્પા ” મનોજ્ઞરૂપ ચક્ષુ ઇન્દ્રિયના શુભ વિષયમા અને અમનોજ્ઞરૂપ ચક્ષુ ઇન્દ્રિયના અશુભ વિષયમા રાગદ્વેષથી રહિત થવાથી વ્યવસ્થિત આત્માવાળો “સાહુ” સાધુ “ મણવયણકા યગુત્તે ” પોતાના મન, વચન અને કાયરૂપ યોગોને શુભ અશુભ પ્રવૃત્તિથી સુરક્ષિત બનાવી લે છે અને “ સવુડે ” સવરથી યુક્ત બનીને “ પ્ણિહિદ્દિદિ ” પોતાની ચક્ષુ ઇન્દ્રિયને કામરૂપ રાગીને “ ધમ્મ ” ચારિત્ર્યરૂપ ધર્મ નો “ ચરેજ્જ ” પાલક બને છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા પચ્ચિહ વિરમણ વ્રતની ચક્ષુઃકાન્દિય સવર નામની બીજી ભાવના બતાવી છે આ ભાવના દ્વારા સાધુને એ વિષય સમન્તવવામા આવ્યો છે કે તે એવી પોતાની ચક્ષુઃકાન્દિયની પ્રવૃત્તિને એવા પ્રકારની વિચાર ધારાથી બાધી રાખે કે જેથી ચક્ષુઃકાન્દિય વડે દ્રષ્ટિગત થતા

તતીયાં ભાવનામાહ—‘ તડય ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—તડયં ઘાણિદિણ અઘ્ઘાડય ગધાઈ મણુન્નમ્મદ્-
ગાઈ, કિં તે ? જલચર- થલચર-સરસ- પુષ્પલ-પાણભોયણ-
કુદ્ધ--તગર--પત્ત--ચોય- દમણગ--મરુચ- પ્પલારસ -પક્કમસિ-
ગોસીસ- સરસચંદણ-કપ્પૂરલવગ-અગુરુકુકુમકકોલ ઉસીર
સેસચંદણ સુગંધસારગજુત્તિવરધૂવવાસે ઉડયપિડિમણિહારિ-
મગંધિણસુ અન્નેસુ ચ એવમાઈણસુ ગધેસુ મણુન્નમ્મદ્ણસુ ન
તેસુ સમણેન સજ્જિયવ્વ જાવ ન સઈં ચ મઈ ચ તત્થ કુજ્ઞા,
પુણરવિ ઘાણિદિણ અઘ્ઘાડય ગંધાણિ અમણુન્નપાવગાઈ,
કિં તે? અહિમડ--અસ્સમડ--હત્થિમડ--ગોમડ--વિગ--સુણગ
સિયાલ--મણુચ-મજ્જાર--સીહ--દીવિચ- મય-કુહિચ-વિણઢ-

તથા અમનોજ્ઞરૂપમેં રાગદ્વેષ ન કર સકે । મનોજ્ઞરૂપ સમક્ષ ઉપસ્થિત હો
તો ઉસે દેલ્લ કર ઉસમે રાગાદિ પરિણતિસે ઉસે વધ નહીં જાના ચાહિયે
ઔર અશુભ રૂપ હો તો ઉસમે દ્વેષ પરિણતિ સે અપને આપકો દુઃખિત
નહી કરના ચાહિયે । દોનો પ્રકારકી વિષય સનિધાનતા મેં ઉસકો સમ-
ભાવી રહના ચાહિયે । જો પેસા નહીં કરતાહે વદ મહાન્ અનર્થકા ભાગી
બનતા હૈ । હસ પ્રકાર ચક્ષુરિન્દ્રિય કી ભાવના સે ભાવિત હુઆ વદ
સાધુ અપને ત્રિયોગોં કો શુભાશુભ રૂપ વ્યાપાર સે સુરક્ષિત રખતા હુઆ
ચક્ષુ ઇન્દ્રિય કો વશમેં કર લેતા હૈ ઔર ચારિત્રરૂપ ધર્મકા પાલક બન
કર અપને પરિગ્રહ વિરમણરૂપ વ્રતકો સુસ્થિર બના લેતા હૈ ॥ સૂ.૦૮ ॥

મનોજ્ઞ તથા અમનોજ્ઞ રૂપમા તેને રાગદ્વેષ ન થાય જો તેની સમક્ષ મનોજ્ઞ
પદાર્થ હાજર થાય તો તેમનામા રાગાદિ પરિણતિથી બધાવુ જોઈએ નહી
અને જો અશુભ ઉપ હોય તો તેના પ્રત્યે દ્વેષ વૃત્તિ દાખવીને પોતાની જાતને
દુઃખી કરવી જોઈ એ નહી અને પ્રકારના વિષયો સમક્ષ તેને તો સમભાવ
યુક્ત રહેવુ જોઈએ જે તે પ્રમાણે કરતો નથી તે મહા અનર્થને પાત્ર થાય છે
આ પ્રમાણે ચક્ષુન્દ્રિયની ભાવનાથી ભાવિતબનેલ તે સાધુ પોતાના ત્રણે યોગને
શુભાશુભ પ્રવૃત્તિઓથી સુરક્ષિત રાખીને અશુ ઇન્દ્રિય પર ગાળુ જમાવે છે અનેચારિ
ત્રરૂપ ધર્મનું પાલન કરીને પોતાના પરિગ્રહ વિરમણવ્રતને સુસ્થિર બનાવે છે ॥સૂ. ૮॥

કિમિણ વહુદુરભિગંધાઈ, અન્નેસુ ય એવમાડેસુ ગધેસુ અમ-
ણુન્નપાવેસુ ન તેસુ સમણેણ રૂસિયવ્વં ન હીલિયવ્વ જાવ
પણિહિંદિણ ચરેજ્જ ધમ્મ ॥ સૂ. ૯ ॥

ટીકા—‘તદ્ય’ તૃતીયા ઘ્રાણેન્દ્રિયસવરણાભિવેયાં ભાવનામાહ—
‘ઘાણિદિણ’ ઘ્રાણેન્દ્રિય ‘મણુન્નમદગાઈ’ મનોજ્ઞ મદ્રકાન્ ‘મગાઈ’ ગન્ધાન્
‘અગ્ગાઈય’ અત્રાય ‘ફિંતે’ કાન્ તાન્=રુચમ્ભૂતાંસ્તાન્ ગન્ધાન્ ? इत्याह—
‘જલચર-થલચર-સરસ-પુષ્પફલભોયણ-કુટ્ટ-તગર-પત્ત-ચોય-દમણક-મરુચ-
-एलारस पत्रमसि - गोसीस-सरस-चदण-कप्पूर-लवग-अगर-कुकुम-ककोल-
उसीर-सेस-चदण-सुगधसारग-जुत्तिवरधूववासे’ જલચર-સ્થલચર-સરસ-પુષ્પ-
ફલ-પાનભોજન-કુણ્ઠ-તગરપત્રત્વચા-દમનક-મરુકૈલારસ-પક્કમાંસી-ગોશીર્ષ-

અત્ર સૂત્રકાર પરિગ્રહ વિરમણ વ્રત કી તીસરી ભાવના કો સમગ્રાતે
હૈ—‘તદ્ય’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(તદ્ય) હસ વ્રતકી તીસરી ભાવનાકા નામ ઘ્રાણેન્દ્રિય સંવરણ
હૈ । હસ ભાવનાવાળે સાધુ કો ઘ્રાણેન્દ્રિયકે મનોજ્ઞ મદ્રક ગંધ કો સૂઘ
કરકે રાગ નહીં કરના ચાહિયે ઓર અમનોજ્ઞ પાપક અશુભગધો કો
સુઘકર ટેપ નહીં કરના ચાહિયે । હસ સૂત્રમેં હસી વિષય કો સૂત્રકાર
વિશેષરૂપ સે સ્પષ્ટ કરતે હૈ (કિંતે) વહ મનોજ્ઞ મદ્રક ગધ કૌન હૈ
હસ પ્રકાર કી આજ્ઞાકા કા ઉત્તર દેતે હુણ સૂત્રકાર કહતે હૈ—(જલચર-
થલચર-સરસ-પુષ્પફલ-પાણભોયણ-કુટ્ટ-તગર-પત્ત-ચોય-દમણક-
મરુચ-एलारस-पक्कवमभिगोसीस-सरसचदण - कप्पूर-लवग - अगुरु
कुकुम-ककोल-उसीर-सेसचदण-सुगध-सारग-जुत्तिवर-धूववासे)

હવે સૂત્રકાર પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની ત્રીજી ભાવના સમજાવે
છે—“તદ્ય” इत्यादि—

ટીકાર્થ—“તદ્ય” આ વ્રતની ત્રીજી ભાવનાનું નામ ઘ્રાણેન્દ્રિય
સંવરણ છે આ ભાવનાવાળા સાધુએ ઘ્રાણેન્દ્રિયને માટે મનોજ્ઞ ભદ્રક ગંધને
સૂધીને તેમા રાગ કેવો બેઠ્યો નહીં અને અમનોજ્ઞ પાપક અશુભ ગંધોને
સૂધીને તેમના પ્રત્યે દ્વેષ કેવો બેઠ્યો નહીં એ બે વિષયનું સૂત્રકાર વિસ્તારથી
સ્પષ્ટીકરણ કરે છે “કિંતે” તે મનોજ્ઞ ભદ્રક ગંધ શેની શેની હોય છે તે
પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા સૂત્રકાર કહે છે કે—“જલચર-થલચર-સરસ-પુષ્પફલ-
પાણભોયણ-કુટ્ટ-તગર-પત્ત-ચોય-દમણક-મરુચ-एलारसपत्रमसि-गोसीस-सरसचद-
ण-कप्पूर-लवग-अगुरु-कुकुम-ककोल-उसीर-सेसचदण-सुगध सारग जुत्तिवर

सरसचन्दन-कर्पूर-लज्जागरकुङ्कुम-मङ्गोलीर-श्वेतचन्दन-सुगन्धसारद्रव्य-युक्ति-रधूप-
 वासान्-तत्र-जलचराणि=जले समुत्पन्नानि पुष्पादीनि, स्थलचराणि=स्थले समु-
 त्पन्नानि सुगन्धिपुष्पादीनि, सरसानि-रमयुक्तानि पुष्पफलपानभोजनानि, कुण्ड-
 सुगन्धिद्रव्यविशेषः, तगरः, धूपविशेषः, पत्रम्=तमालपत्रम्, 'चोय' त्वचा=
 सुगन्धिद्रव्यत्वात्, दमनकः=पुष्पजातिविशेषः, मरुः='मरुआ' इति भाषाप्रसिद्धो
 वनस्पतिविशेषः, एलारसः=एलायाः 'इलायची' इति प्रसिद्धाया रसः, 'पिकमसी'
 पक्कमासी-परिपक्वगन्धद्रव्यविशेषः, गोशीर्षम्=एतन्नामक चन्दनम्=सरसचन्दनम्
 =श्रीवृक्षचन्दनम्, कर्पूर-प्रसिद्धः, लज्जानि-प्रसिद्धानि, अगुरु=धूपविशेषः,
 कुङ्कुमम्='केशर' इति प्रसिद्धम्, ककोलः=फलविशेषः, उशीरम्=नीरामूल 'खश'
 इतिप्रसिद्धम्, श्वेतचन्दन प्रसिद्धम्, सुगन्धसारद्रव्ययुक्तिवरधूपग्रामः=सुगन्धानां=शो-
 भनगन्धवता सारद्रवाणां=कमलपत्राणां युक्तिर्योजनं यत्रैतादृशो यो वरधूपग्रामः=
 धूपद्रव्यविशेषः, एतेषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, तांस्तयोक्तानामात्राय 'समणेण' श्रम-
 णेन-साधुना 'उडयपिण्डिमणिहारिमगधिणसु' क्रतुनपिण्डिमनिर्हारिमगन्धिकेषु=

जलचर-जल में उत्पन्न हुए सुगन्धित पुष्पों की, स्थलचर-स्थल में उत्पन्न
 हुए खुशबूदार फूलों की, सरस-रस युक्त पुष्प, फल, पान, भोजनों की,
 कुण्ड-सुगन्धित द्रव्यकी, तगर-धूपविशेष की, पत्र-तमालपत्र की, चोय-
 सुगन्धित वृक्ष की छाल की, दमनक-पुष्पजाति विशेष की, मरु-मरुआ
 की, इलायची के रस की, पक्कमसी-परिपक्वगन्धद्रव्य विशेष की, गोशीर्ष
 चन्दन की, श्रीवृक्षचन्दन की, कर्पूर की, लज्जा-लोगो की, अगुरुधूप की,
 कुङ्कुम-केशर की, ककोल नामक फलविशेष की, उशीर-खश की,
 श्वेतचन्दन की, तथा जिसमें शोभन गन्धवाले कमल पत्रों का योजन-
 समिश्रण-हुआ हो ऐसे उत्तम धूपविशेष की, सुगन्ध को सूँघ करके,
 तथा (उडयपिण्डिमणिहारिमगधिणसु) ऐसी सुगन्ध से युक्त द्रव्यों के

धूँवाँसे " जलचर-जलमा उत्पन्न थयेला सुगन्धित पुष्पानी, स्थलचर-जमीन
 पर उत्पन्न थयेला सुगन्धित फूलानी, सरस-रमदा कुँव, कुँव, पान, भोजनानी
 कुण्ड-सुगन्धित द्रव्यनी, तगर-जेक जलतना धूपनी, पत्र-तमालपत्रनी, चोय-
 सुगन्धित वृक्षनी छालनी, दमनक-जेक जलतना फूलनी, मरु-डमरानी, इलाय-
 चीना रसनी, पक्कमसी-जेक जलतनु सुगन्धि द्रव्यना, गोशीर्ष चन्दननी, श्री
 भाड चन्दननी, कर्पूरनी, लजीनी, अगुरु धूपनी, कुङ्कुम-केशरनी, ककोल
 नामना जेठ जलतना फूलनी, उशीर-सुगन्धिवाणानी श्वेतचन्दननी, तथा जेभा
 सुंदर गन्धवाणा जमण पत्रेनु मिश्रण थयु होय जेवा उत्तम प्रकारना धूपनी
 सुगन्ध सूँधीने तथा " उडय पिण्डिमणिहारिमगधिणसु " जे द्रव्येभा क्रतुने

ઋતુજઃ=કાલોચિતઃ પિણ્ડમઃ=પિણ્ડભૂતો=ચઢુલો નિર્હાસિમો દૂરતરપ્રદેશગામી યો ગન્ધઃ, સ પ્રિધતે યેષુ તેષુ દ્રવ્યેષુ, તથા—' અળ્લેસુ ય ઇમાહણસુ ગવેસુ 'અન્યેષુ ચૈવમાદિકેષુ ગન્ધેષુ, ઋતુમ્ભૂતેષુ ? ઇત્યાહ ' મળુળ્લમદ્દણસુ' મનોજ્ઞમદ્દ્રકેષુ 'તેસુ' તેષુ ગન્ધેષુ ' ન સઙ્ગિયવ્વ ' ન સત્ત્વવ્યમ્ ' જાવ ' યાવત્—યાવત્કરણાત્—ન રક્ત-વ્યમ્, ન ગદ્ધિતવ્યમ્, ન મોહિતવ્યમ્, ન ચિનિયાતઆપત્તવ્યઃ, ન લોઘ્વમ્, ન તોષ્ટવ્યમ્, ન હસિતવ્યમ્, ઇતિસગ્રાહ્યમ્ । તથા—અમળઃ ' તત્થ ' તત્ર ગન્ધવિષયે 'સઙ્ગ ચ મઙ્ગ ચ' સ્મૃતિં ચ મતિં ચ 'ન કુઙ્ગા' ન કુર્યાત્ । ' પુણરવિ ' પુનરપ્યુ-ચ્યતે—' ધ્રાણિદિણ ' ધ્રાણેન્દ્રિયેણ ' અમળુળ્લપાપગાહ ' અમનોજ્ઞપાપકાન્,

કિ જિનમેં સુગન્ધ ઋતુ કે અનુકૂલ પિણ્ડીભૂત હોઠ્ઠર રહ રહી હો ઓર દૂર પ્રદેશતક જિન કી વહ સુગન્ધ ફૈલ રહી હો ઉપસ્થિત હોને પર ઉન મેં તથા (અળ્લેસુ ઇમાહણસુ મળુળ્લમદ્દણસુ) ઇન સે મિત્ર ઇસી પ્રકાર કે ઓર બી જો મનોજ્ઞ મદ્દ્રક ગધયુક્ત પદાર્થ હોં ઉનકે સમક્ષ મે આને પર (સમળેણ) સાધુ કો ઉનકી (તેસુ) ઉન મનોજ્ઞ મદ્દ્રક ગંધો મે (ન સઙ્ગિયવ્વ જાવ ન સઙ્ગ ચ મઙ્ગ ચ તત્થ કુઙ્ગા) આમત્ત નહી હોના ચાહિયે—યાવત્ ઉનમેં સ્મૃતિ કો ઓર અપની મતિ કો નહી લગાના ચાહિયે । યહ યાવત્ શબ્દ સે " નરઙ્ગિયવ્વ ન ગિઙ્ગિયવ્વ, ન સુઙ્ગિયવ્વ, ન ચિણિયાય આવઙ્ગિયવ્વ, ન લુભિયવ્વ, ન તુસિયવ્વ ન હસિ-યવ્વ " ઇન પદોં કા સગ્રહ ક્રિયા ગયા હૈ । ઇનહા અર્થ પરલે કર દિયા ગયા હૈ વહા સે સમઙ્ગ લેના ચાહિયે ।

ઇસી તરહ અમનોજ્ઞ પાપ ગય મેં રોપ આદિ ન કરના ચાહિયે ઇસી વાત કો કહતે હૈં—(પુણરવિ) ઇસી તરહ સે (ધ્રાણિદિણ) ધ્રાણેન્દ્રિય

અનુકૂળ સુગંધ ભરેલી હોય અને તેમની તે સુગંધ દૂર દૂરના પ્રદેશ સુધી ફેલાતી હોય, એવા સુગંધિત દ્રવ્યો મોજૂદ હોય તો તેમા તથા " અળ્લેસુ ઇમાહણસુ મળુળ્લમદ્દણસુ " ઉપરાત તેમના જેવા જ મનોજ્ઞ ભદ્રક ગધવાળા જે પદાર્થો હોય તે પાસે હોય તો પણ " સમળેણ " સાધુએ તેમની " તેસુ " તે તે મનોજ્ઞ ગધોમા " ન સઙ્ગિયવ્વ જાવ ન સઙ્ગ ચ મઙ્ગ ચ તત્થકુઙ્ગા " આમત્ત થયુ ભેદ એ નહી ત્યાથી શરૂ કરીને તેને યાદ કરવી નહી કે તેનો વિચાર પણ કરવો નહી ત્યા સુધી સમલ્લ લેવાનુ છે અહી યાવત્ શબ્દથી " નરઙ્ગિયવ્વ, ન ગિઙ્ગિયવ્વ, ન સુઙ્ગિયવ્વ, ન ચિણિયાય આવઙ્ગિયવ્વ, ન લુભિ-યવ્વ, ન તુસિયવ્વ, ન હસિયવ્વ " એ પદોનો અર્થ ગ્રહણ કરવાનો, છે તેમના અર્થ આગળ આવી ગયા છે તો ત્યાથી સમલ્લ લેવા

એ જ પ્રમાણે અમનોજ્ઞ પાપક ગધ પ્રત્યે રોપ આદિ કરવા ભેદ એ નહીં એ વાત સૂત્રકાર કહે છે—"પુણરવિ " આ રીતે ' ધ્રાણિદિણ ' ધ્રાણે

ગુપ્તઃ સદૃતઃ, ' इत्येतेषा सग्रहः, तथा—' पणिहिदृदिण्' प्रणिहितपञ्चेन्द्रियः—प्रणि-
हितानि=वशीकृतानि इन्द्रियाणि येन स तथोक्तः सन् ' धम्म ' धर्म ' चरेज्ज '
चरेत्=अनुतिष्ठेत् ॥ सू० ९ ॥

રૂપ ઘ્રાણેન્દ્રિય કે શુભ ઓર અમનોહ્ન કે અશુભ વિષય મેં રાગદ્વેષ
કરને સે રહિત હો જાના હૈ । ઇસ પ્રકાર કી સ્થિતિ સે યુક્ત બના હુઆ
સાધુ અપને મન વચન ઓર કાયરૂપ યોગોં કો શુભ અશુભ વ્યાપાર સે
સુરક્ષિત કર લેતા હૈ ઓર ઘ્રાણેન્દ્રિય કે શુભાશુભ પ્રિય મેં શુભાશુભ-
પરિણતિ જન્ય કર્મરૂઢન કી નિવૃત્તિરૂપ સવર સે યુક્ત હો જાતા હૈ ઓર
(પણિહિદિણ ચરેજ્ઞ ધમ્મ) વશીકૃત ઇન્દ્રિયોં વાલા હોકર ચારિત્રરૂપ
ધર્મ કા પાલક બન જાતા હૈ ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને ઇસ સૂત્ર દ્વારા પરિગ્રહ-વિરમણ વ્રત કી
તીસરી ભાવના કા ઉલ્લેખ કિયા હૈ । ઇસ ભાવનાકા નામ ઘ્રાણેન્દ્રિય
સંવરણ હૈ । ઇસમેં સાધુ અપની ઘ્રાણેન્દ્રિયકો સુગંધ ઓર દુર્ગંધકે સંબંધ
હોને પર પક્ષપાતિની નહીં બનતા હૈ । યદિ વહ એસા કરતા હૈ તો મહાન
અનર્થ કા પાત્ર હોતા હૈ । ઉસે નવીન કર્મોં કા વધક માના જાતા હૈ ।
સુગંધ ઓર દુર્ગંધ કે વિષયભૂત કિતનેક પદાર્થોં કો સૂત્રકાર ને ઇસ
સૂત્ર દ્વારા સમજાયા હૈ । અતઃ ચરિત્રધર્મ કો પૂર્ણરૂપ સે પાલન કરનેકે
લિયે સાધુ કા કર્તવ્ય હૈ કિ વહ ઇસ પ્રકાર કી જરૂર સ્થિતિ ઉસકે
સમક્ષ હો તો વહ સમભાવી બના રહે ॥ સૂ० ૯ ॥

યના શુભ અને અમનોહ્નશ્ચ અશુભ વિષયોમા રાગ અને દ્વેષથી રહિત થઈ
જાય છે આ પ્રકારની સ્થિતિથી યુક્ત થયેલ સાધુ પોતાના મન, વચન અને
કાયશ્ચ યોગેને શુભ અશુભ વ્યાપારથી સુરક્ષિત કરી નાખે છે, અને ઘ્રાણે
ન્દ્રિયના શુભાશુભ વિષયમા શુભાશુભ પરિણતિજન્ય કર્મબંધનની નિવૃત્તિશ્ચ
સવરથી યુક્ત થઈ જાય છે અને “ પણિહિદિણ ચરેજ્ઞ ધમ્મ ” સંયમી
ઇન્દ્રિયવાળો થઈને ચારિત્રશ્ચ ધર્મનું પાલન કરનાર બને છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્રદ્વારા પરિગ્રહ વિરમણવ્રતની ત્રીજી ભાવ
નાનું સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તે ભાવનાનું નામ ઘ્રાણેન્દ્રિય સંવરણ છે તેમા એ
બતાવ્યું છે કે સુગંધ અને દુર્ગંધનો સંબંધ થતા સાધુ પોતાની ઘ્રાણેન્દ્રિયને
પક્ષપાતી બનાવતો નથી એ તે એણે કરે તો મહાન અનર્થને પાત્ર થાય છે,
તેને નવીન કર્મનો બાંધનાર માનવામા આવે છે સુગંધ અને દુર્ગંધયુક્ત
કેટલાક પદાર્થો સૂત્રકારે આ સૂત્રમા દર્શાવ્યા છે તેથી ચારિત્રધર્મનું સંપૂર્ણ
રીતે પાલન કરવાને માટે સાધુનું કર્તવ્ય છે કે તેણે ઘ્રાણેન્દ્રિયના વિષયભૂત
સુગંધ તથા દુર્ગંધયુક્ત પદાર્થો પ્રત્યે સમભાવ રાખવો જોઈએ ॥ સૂ० ૯ ॥

ચતુર્થી ભાવનામાહ—‘ ચત્તથ ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—ચત્તથં જિવિભદિણ સાઙ્ગય રસાણિઽ મણુણ્ણ
 ભદ્દગાઙ્ગં, કિં તે ? ઉગ્ગાહિમવિવિહપાણભોયણ ગુલકય સ્વહ-
 કય તેલ્લઘયકયભક્ષેસુ વહુવિહેસુ લવણરસસંજુત્તેસુ, વહુ-
 પ્પકારમજ્જિયનિટ્ટાણગદાલિયવ સેહંવ દુહ્હદહિ--સરયમજ્જ-
 વરવારુણી સીહુકાવિસાયણ સાગટ્ટારસવહુપ્પગારેસુ ય ભોયણેસુ
 ય મણુણ્ણવણ્ણગન્ધરસપાસવહુદઘ્વસંભિણ્ણેસુ અણ્ણેસુ ય
 ઇવમાઙ્ગેસુ રસેસુ મણુણ્ણભદ્દેસુ ન તેસુ સમણેણ સજ્જિ-
 યઘ્વં જાવ ન સઙ્ગં ચ મઙ્ગં ચ તત્થ કુજ્ઞા । પુનરવિ જિવિભ-
 દિણ સાઙ્ગયરસાઙ્ગં અમણુણ્ણપાવગાઙ્ગં, કિં તે ? અરસવિ-
 વિરસસીયલ્લઘણિજ્જપ્પમાણભોયણાઙ્ગં દોસી વાવણ્ણકુહિય
 પૂઙ્ગય અમણુણ્ણવિણટ્ટપ્પસૂય વહુદુઘ્ભિગધિયાઙ્ગં તિત્તકહુય-
 કસાય અવિલરસલિદનરિસાઙ્ગં અણ્ણેસુ ય ઇવમાઙ્ગેસુ રસેસુ
 અમણુણ્ણપાવેસુ ન તેસુ સમણેણં રુચિયવઘ્વં જાવ ચરેજ્જ
 ધમ્મ ॥ સૂ૦૧૦॥

ટીકા—‘ ચત્તથ ’ ચતુર્થી જિહ્વેન્દ્રિય સવરણલક્ષણા ભાવનામાહ—‘જિવિભ-
 દિણ ’ જિહ્વેન્દ્રિયેણ ‘ મણુણ્ણભદ્દગાઙ્ગં ’ મનોજભદ્રકાન્ ‘ રસાણિ ઽ ’ રસાંસ્તુ

અવ સૂત્રકાર હસ વ્રત કી ચૌથી ભાવના કો કહતે હૈ—

‘ ચત્તથ ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(ચત્તથ) ચૌથી ભાવના કા નામ જિહ્વેન્દ્રિયસવરણ હૈ । હસ
 ભાવનાકે વશવર્તી હુણ સાધુકો જિહ્વા ઈન્દ્રિયકે મનોજભદ્રક વિષયમે ઔર
 અમનોજ અભદ્રક વિષય મેં રાગદ્વેષ નહીં કરના ચાહિયે—પ્રત્યુત સમભાવ

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની ચૌથી ભાવના બતાવે છે—“ ચત્તથ ” ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ—“ ચત્તથ ” ચૌથી ભાવનાનું નામ જિહ્વેન્દ્રિય સવરણ છે
 આ ભાવનાનું પાલન કરનાર સાધુએ જિહ્વા ઈન્દ્રિયના મનોજભદ્રક વિષયોમા
 અને અમનોજ અભદ્રક વિષયોમા રાગ દ્વેષ રાખવો બોધ્યો નહીં, પણ સમ

=વધ્યમાણપદાર્થેષુ સ્થિતાનં'સાદ્ય' સ્વાદયિત્વા=અગ્નિગૃહસ્થાપ્તિયામાસ્યાઘ,
 'કિં તે' કાંસ્તાનં=કેષુ કેષુ પદાર્થેષુ સ્થિતાંસ્તાનં ? ઇત્યાદિ-‘ઉગ્ગાદિમવિવિહ-
 પાણમોયણગુલકચત્વલકચ તૈલઘયકચમચ્ચેષુ’ અગ્નિગૃહમવિવિધપાનમોજનગુડક-
 તલ્પકૃતતૈલઘૃતકૃતમચ્ચેષુ-તત્ર અગ્નિગૃહમાનિ અગ્નિગૃહેન=ઘૃતતૈલગૃહિયુ મોજનેન
 પાકતો નિષ્પન્નાનિ યાનિ તાનિ પકાન્નાનિ ચ્વલ્પકૃતપ્રાદીનિ ‘અગ્નિગૃહમાનિ’
 કથ્યન્તે, તથા-વિવિધાનિ=ગુડવિધાનિ પાનમોજનાનિ, તથા-ગુડકૃતાનિ=ગુડેન
 નિષ્પાદિતાનિ, ચ્વલ્પકૃતાનિ=ચ્વલ્પકૃતેન નિષ્પાદિતાનિ, તૈલઘૃતાનિ=તૈલેન ઘૃતેન ચ

હી વારણ કરના चाहिये, इसी विषय को सूत्रकार विशेषरूप से इस
 सूत्र द्वारा समझाते हैं-(जिनिमदिण) साधु जिहा इन्द्रिय से (मणुण्ण
 भद्गाइ रसाणिउ) मनोज्ञ-भद्रक रसको (सादय) अस्वादित करके
 उसमें राग आदि न करे इस प्रकार का यहा सवय लगा लेना चाहिये,
 (किं ते) यह मनोज्ञ रस किन २ पदार्थों के सहारे रहता है, इस
 प्रकार की आशका का उत्तर देने के निमित्त सूत्रकार यहाँ उन कितनेक
 पदार्थों के नाम निर्दिष्ट करते हैं (उगगाहिमविविहपाणमोयणगुलकच
 त्वलकचतैल्लघयकचमच्चेषु) घृत, तैल आदिका जिनमें पहिले भोजन
 (तला जाता) दिया जाता है और फिर बादमें जो उनमें ही चुरोये जाकर
 पकाये जाते है ऐसे खाजा आदि पञ्चवान्न अवगाहिम कहलाते हैं तथा
 अनेक प्रकारका जो पान भोजन होता है वह विविध पान भोजन कहलाता
 है गुड मिला कर बनाया गया ' एव खान्न मिश्रित कर बनाया गया
 विशेष भोजन गुडकृत भोजन और खडकृत भोजन कहलाता है । तैल

ભાવ જ રાખવો બોધ્ય છે એ જ વિષયને સૂત્રકાર વિસ્તારપૂર્વક આ સૂત્રદ્વારા
 સમજાવે છે “ જિનિમદિણ ” સાધુએ જીભથી “ મણુણ્ણભદ્ગાઈ રસાણિઉ ”
 મનોજ્ઞ-ભદ્રક રસનો “ સાદય ” આસ્વાદ કરીને તેમાં રાગ આદિ કરવા બોધ્ય
 નહીં “ કિં તે ” એ મનોજ્ઞ રસ કયા કયા પદાર્થોમાં હોય છે, તે પ્રશ્નનો
 ઉત્તર આપતા સૂત્રકાર અહીં એવા કેટલાક પદાર્થોના નામનો ઉલ્લેખ કરે છે
 , “ ઉગ્ગાહિમ-વિવિહપાણ-મોયણ-ગુલકચ-ત્વલકચ-તૈલ-ઘયકચ-મચ્ચેષુ ” ધી, તૈલ
 આદિનું જેમાં પહેલા જેમાં મોણુ દેવાય છે અને પછી તેમાં જ તળીને પક
 વવામાં આવે છે એવા ખાન્ન આદિ પંચવાનને અવગાહિમ કહે છે તથા અનેક
 પ્રકારના જે પાન (પી શકાય તેના) લોજન હોય છે તેમને વિવિધ પાન
 લોજન કહે છે, ગોળ નાખીને બનાવેલા લોજનને ગુડકૃત અને ખાડ નાખીને
 બનાવેલા લોજનને ખાડકૃત લોજન કહે છે તેલ અને ધીમાં બનાવેલ લાડુ

નિષ્પાદિતાનિ યાનિ ભક્ષ્યાણિ=મોદકાદીનિ તાનિ, एषा द्वन्द्वरतेषु ત ચોક્તેષુ તથા 'बहुविहेसु' बहुविहेषુ-विभि रप्रकारेषु 'लवणरससजुत्तेसु' लवणरससजुत्तेषુ ભક્ષ્યેષુ=શાકપટાકાદિષુ તથા-' बहुपगारमज्जिय-निष्ठाणगदालियवसेहवदुद्धदहि सरय-मज्जवरवारुणी सीधुकापिशायनशाकाष्टादशबहुप्रका-रेषु-तत्र-एतदास्यादन गृह्ण गत्यस्यासु बोध्यम्, સયમાપ્ત્યાસુ સર્વથા તદ્વર્જનાત્ , बहुप्रकारा=बहुविधा, मार्जिता=रसाला=दधिशर्करादिनिष्पादितसुगन्धद्रव्यवासित खाद्यविशेष , श्रीखण्डेतिभाषापसिद्ध', निष्ठानक=प्रकृतमूल्यनिष्पादितो भक्ष्यविशेषः तदुक्तम्-'निष्ठाणति जा सयसहस्य' इति, अय भावः-यत्क्षमुद्राभिर्निष्पाद्यते तद् भक्ष्यविशेषो निष्ठानमुच्यते । यद्वा-भक्ताद्यन्नोपसेचनेन सपादिते दध्यादिव्यञ्जने 'करना' इतिभाषापसिद्धे, तथा दालिकाम्लम्=मरीचराजिकादि संस्कृतोद्विदलनि-

और घृतमें बनाया गया मोदकादि भोजनीय पदार्थ तैलकृत और घृतकृत भोजन कहलाता है । इन खाद्य पदार्थों में तथा और भी (बहुविहेसु) अनेक प्रकारके (लवणरससजुत्तेसु) लवणरसमिश्रित शाक, वड़ा आदि खाद्यपदार्थ विशेष है उनमें तथा (बहुपगार-मज्जिय-निष्ठाणग-दालियव-सेहव-दुद्ध-दहि-सरय-मज्ज-वरवारुणी-सीधु-का विसा यण-सागद्वारस बहुपगारेसु भोज्येसु य) पहिले गृहस्थावस्था में उपयो गमें लाये गये बहुविध भोजनीयपदार्थ जैसा मार्जिता रसाला-दधि शर्करा आदिसे निष्पादित तथा सुगन्धित द्रव्यसे वासित खाद्यविशेष कि जिसे श्रीखण्ड कहते हैं, उनमें निष्ठानक-एक लार रूपसे लगा कर निष्पादित किये गये भक्ष्य विशेषमें अथवा मेहरी-रावडी में, दालिकाम्लमें-मरीच राई में संस्कृत हुए तथा द्विदल चना आदि के आटे-बेसन आदिसे

આદિ ખાદ્ય પદાર્થને તૈલકૃત અને ઘૃતકૃત ભોજન કહે છે એ ખાદ્ય પદાર્થોમાં તથા ખીન પણ એ " बहुविहेसु " અનેક પ્રકારના " लवणरससजुत्तेसु " લવણરસ મિશ્રિત શાક, વડા આદિ ખાદ્ય પદાર્થો છે તેમાં તથા " बहुपगार-मज्जिय-निष्ठाणग-दालियव-सेहव-दुद्ध-दहि-सरय-मज्ज-वरवारुणी-सीधु-कावि-सायण-सागद्वारस बहुपगारेसु भोज्येसु य " પહેલા ગૃહસ્થાવસ્થામાં ઉપયોગમાં લીધેલ અનેક પ્રકારના ખાદ્યો જેવા કે દહી, ખાંડ આદિમાંથી તૈયાર જેલ તથા સુગન્ધિત દ્રવ્યથીયુક્ત એક ખાસ ભોજન જેને સિખડ કહે છે તેમાં નિષ્ઠાનક-એક લાખ રૂપિયા ખર્ચીને તૈયાર કરાવેલ ખાસ ભોજનમાં અથવા મેહરી-દૂધપાકમાં, દાલિકામ્લમાં-મરચા, રાઈ, મેથી, છૂંડ આદિનો વધાર કરેલ તથા ચણા અદિના

पुष्पादितोऽन्यजनविशेषः 'कढ' इति मापाप्रसिद्धो, सेधाम्लम्=खाद्यविशेषः, पक्व सद् यदस्लेन सस्क्रियते तत्खाद्य सेधाम्लमुच्यते । दुग्धदधि च प्रमिदम्, सरकः=गुड धातकीपुष्पादिना सिद्धः 'सरकाः' इति मापाप्रसिद्धाः, मद्य-पैष्ट गो मूमादिचूर्ण-निष्पन्नम्, वरवारणी=श्रेष्ठमदिरा, सीधुः=आमयः-इत्यादिजनितमयम्, कापिशा-यनम्=कापिशी नाम नगरी तस्या जात द्राक्षानिर्मित विशिष्टमद्यम्, एतान्यपि मद्यानि गृहस्थानस्थानु समास्यादितानि न तु समयमाख्यायामिति योग्यम्, तथा शाका अष्टादश-अष्टादशसंख्याकाः शाका, एषा बहुव्रीहिसमासे तानि तथो-क्तानि, तानि च बहुप्रकाराणीति कर्मधारयः, तेषु तथोक्तेषु 'मणुब्रवन्नगधरसफा सवहुद्व्यसभिपसु' मनोजवर्णगन्धरसस्पर्शबहुद्व्यसमृतेषु=मनोहरवर्णगन्धरसस्पर्श-वद् बहुविधद्रव्यसंस्कृतेषु 'भोयणेषु' भोजनेषु च स्थितान् रसां गृहस्थानस्था

बनाये गये " कढी " रूप व्यजनमे, सेधाम्लमें पका कर के जो खटाई से संस्कृत किया गया हो, ऐसे खाद्यविशेष में, दुग्ध, दधिमें गुड, धातकी पुष्प-महुआ-इन दोनों के मेल से बनाये गये सरका में, गोधूम-गेहूँके आटेसे निष्पन्न किये गये मद्य-पैष्ट मद्य में, वरवारणी-उत्तम मदिरा में मुनि अवस्था में नहीं, किन्तु गृहस्थावस्थामें उपयोग में लाई गई श्रेष्ठ मदिरा वराण्डी में, सीधु-आसव इधु आदिके रससे बनाये गये मद्यमें; कापिशायन-कापिशी नामकी नगरी में द्राक्षाओ से बनाये विशिष्ट मद्यमें तथा अठारह प्रकार के शाकों में, इत्यादि अनेक प्रकार के भक्ष्य पदार्थों में तथा (मणुब्रवन्नगधरसफासबहुद्व्यसभिपसु भोयणेषु य) मनोज वर्ण गंध, रस और स्पर्शवाले अनेकविध द्रव्यों से निष्पन्न हुए भोजनों में स्थित रसों को गृहस्थावस्थामें आस्वादित करके उनमें, तथा

लोहमाधी बनावे। ' कढी ' नामका व्यजनमा, सेधाम्लमा-पञ्चमीने अष्टाश उमेरवामा आवी होय ओवा पाद्योमा, दूध, दहीमा गोण, धातकी पुष्प-महुआ ओ अन्नेना मिश्रणुधी बनावे। सरकामा, गोधूम-घटना लोहमाधी तैयार करे। मद्य-पैष्टमद्यमा, वरवारणी उत्तम मदिरामा, मुनि अवस्थामा नहीं पण गृह-स्थावस्थामा उपयोगमा लीधेल श्रेष्ठ मदिरा-वराडीमा, सीधु-आसव-शेरडी आदिना रसमाधी बनावे। मदिरामा, कापिशायन-कापिशी नामकी नगरीमा द्राक्षमाधी बनावे। ओउ विशिष्ट मद्यमा, तथा अठार प्रकारना शाकमा इत्यादि अनेक प्रकारना पाद्य पदार्थोमा तथा " मणुब्रवन्नगधरसफासबहुद्व्यसभिपसु भोयणेषु य " मनोहर वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शवाला अनेक प्रकारना द्रव्योमाधी तैयार करावे। लोहनीमा रहेल रसोना गृहस्थावस्थामा स्वाद

યામાસ્વાદ્ય તેષુ તથા—‘ અન્નેસુ ય ’ અયેષુ ચ = ઇતદ્વિન્નેષુ ‘ ઇવમાદ્દેસુ ’
 ઇવમાદિકેષુ = પૂર્વોક્તસદૃશેષુ—‘ મણુણભદ્દેસુ ’ મનોજ્ઞભદ્દકેષુ રસેષુ કથ
 મ્ભૂતેષુ રસેષુ ? તેષુ=યે રસા અવિરતગૃહસ્થાવસ્થાયામાસ્વાદિતાસ્તેષુ ‘ સમણેણ ’
 શ્રમણેન=શ્રમણાવસ્થામ્થિતેન મુનિના ‘ ન સજ્જિયવ્વ ’ ન સક્તવ્યમ્ ‘ જાવ ’ યાવત્=
 યાવત્કરણાત્-ન રક્તવ્યમ્, ન ગર્હિતવ્યમ્, ન મોહિતવ્યમ્, ન વિનિગ્રાત આપ-
 ત્તવ્યઃ, ન લોબ્ધવ્યમ્, ન તોષ્ટવ્યમ્, ન હમિતવ્યમ્, એવામર્થ પ્રથમભાવનાયા-
 મુક્તઃ । ન ચ શ્રમણઃ ‘ તત્થ ’ તા-ગૃહસ્થાવસ્થોપશુક્તરસેષુ ‘ સદ્ધ ચ ’ સ્મૃતિ
 ચ=સ્મરણમપિ, ‘ મદ્ધ ચ ’ મર્તિ ચ=શ્રમણાવસ્થાયા તદુપભોગવુદ્ધિમપિ ‘ કુજ્જા ’
 કુર્યાત્ । ‘ પુણરવિ ’ પુણરપ્પુન્યતે—‘ જિન્નિમિદિણ ’ જિહ્વેન્દ્રિયેણ ‘ અમણુન્નપા

(અન્નેસુ ઇવમાદ્દેસુ મણુણભદ્દેસુ) દ્વિતરે ઓર ડસી પ્રકારકે મનોજ્ઞ
 ભદ્દક રસોં મેં કિ જો અવિરત નિત્ય ગૃહસ્થાવસ્થામે આસ્વાદિત કિયે
 હુપ થે (સમણેણ) શ્રમણ અવસ્થામેં સ્થિત હુપ મુનિ કો (ન સજ્જિ-
 યવ્વ જાવ ન સદ્ધ ચ મદ્ધ ચ તત્થ કુજ્જા) ઓસક્તચિત્ત નહીં વનના
 ચાહિયે યાવત્ ઉસે ઉનકી સ્મૃતિ નહીં કરના ચાહિયે ઓર ઉનમેં અપની
 કિ મેં શ્રમણાવસ્થામેં ડનકા ભોગ કરુ ડસ પ્રકાર વુદ્ધિ કો ની નહીં
 લગાના ચાહિયે । યહા યાવત્ શબ્દ સે “ ન રજ્જિયવ્વ, ન ગિજ્જિયવ્વ,
 ન મુજ્જિયવ્વ, ન વિણિધાય આવજ્જિયવ્વ, ન લુભિયવ્વ, ન તુસિયવ્વ,
 ન હસિયવ્વ ” ડન પૂર્વોક્ત પદો કા ગ્રહણ કિયા ગયા હૈ । ડન સવરા
 અર્થ પ્રથમ ભાવના મેં ઢિલા જા ચુકા હૈ । (પુણરવિ) ડસી તરહ ફિર
 (જિન્નિમિદિણ) જિહ્વા ડન્દ્રિય સે (અમણુન્નપાવગાડ રસાડ) અરુચિકા-

લઈને તેમનામા તથા “ અન્નેસુ ઇવમાદ્દેસુ મણુણભદ્દેસુ ” એ જ પ્રકારના
 ખીલા ભદ્દક મનોજ્ઞ રસોમા કે જેનો ગૃહસ્થાવસ્થામા સદા સ્વાદ લેવાતો હતો
 તેમા “ સમણેણ ” સાધુ અવસ્થામા રહેલ મુનિએ “ ન સજ્જિયવ્વ જાવ ન
 સદ્ધ ચ મદ્ધ ચ તત્થ કુજ્જા ” “ આમક્રત થણુ બોધએ નહી ” ત્યાથી શરૂ
 કરીને “ તેણે તેમને યાદ કરવા બોધએ નહી અને હું શ્રમણુ - અવસ્થામા
 તેમને ઉપભોગ કરે એવો વિચાર પણ કરવો બોધએ નહી ” ત્યાં સુધીનો
 અર્થ ગ્રહણ કરવાનો છે

અહીં ‘ યાવત્ ’ શબ્દથી “ ન રજ્જિયવ્વ, ન ગિજ્જિયવ્વ, ન મુજ્જિયવ્વ,
 ન વિણિધાય આવજ્જિયવ્વ, ન લુભિયવ્વ, ન તુસિયવ્વ ન હસિયવ્વ ” એ પૂર્વોક્ત
 પદો ગ્રહણ કરાયેલ છે એ બધાનો અર્થ પહેલી ભાવનામા અપાઈ ગયો છે
 “ પુણરવિ ” એ રીતે “ જિન્નિમિદિણ ” શબ્દથી “ અમણુન્નપાવગાડ રસાડ ”

वगाइ" अमनोज्ञपायकान्=अरुचिकारान्, ' रगाइ ' रसान् 'साइय' स्वादयित्वा,
 ' किं ते ' कांस्तान्=रूपभूतांस्तान् रसान् । इत्याइ-' अरमविरमसीयल्लव
 णिज्जप्पपाणभोयणाइ' अरसविरसशीतल्लक्षनिर्वाप्यपानगोजनानि, तत्र-अरसानि
 =रसरहितानि=हिङ्ग्यादिसंस्कारवर्जितानि, विरसानि=विगतविरसानि=पर्युषितानि,
 शीतानि=शीतलानि रूक्षाणि=घृतादिलेशवर्जितानि, निर्वाप्याणि=वल्लर्द्धनशक्ति
 रहितानि यानि पानगोजनानि तानि तथोक्तानि, तथा-' दोसीणवावन्नकुट्टिय-
 पूइय-अमणुन्नविणट्ट-पसूय-बहुदुब्भिमगवियाइ ' दोषन्नग्यापन्नकुथितपूतिममनोन्न
 विनष्टप्रसूतबहुदुरभिगन्धितानि, तत्र-' दोसीग ' चि-दोपान्न=दोषा-रात्रिस्तत्र
 पक्व यदन्न, रात्रिपर्युषितमित्यर्थः, व्यापन्न=विनिष्टवर्णम्, कुथित=कोथयुक्तम्,
 शठितमित्यर्थः, पूतिकम्=गन्धयुक्तम्, अत एव-अमनोन्नम्=असुन्दरम्, विनष्टम्=
 अत्यन्तप्रिकृतायस्थागातम्, ततः प्रसूतम्=मादुर्भूतो यो बहु दुरभिगन्धः=अतिदुर्गन्धः
 स जातो येषु तानि तथोक्तानि, तथा-' तित्तरुडुयकसायअविलरमलिंदनीरसाइ '

रक रसों का (साइय) आस्वादन करके उनमें साधु को राग द्वेषभाव
 वारण नहीं करना चाहिये । (किं ते ?) अरुचिकारक रस कौन २ से
 हैं इस प्रश्न का समाधान करने के निमित्त सूत्रकार कहते हैं—(अर-
 सविरससीयल्लवणिज्जपाणभोयणाइ) अरस-हिङ्गु आदिके वधार से
 वर्जित, विरस—रस से विहीन-पर्युषित, शीत-शीतल-ठंडे, रूक्ष-
 घृतादि के लेश से रहित, निर्वाप्य-वल्ल घटाने की शक्ति से रहित, तथा
 (दोसीणवावन्नकुट्टिय पूइय अमणुन्नविणट्टपसूयबहुदुब्भिमगवियाइ) दोसी
 णरात्रिमें पकाये गये व्यापन्न-विनष्ट वर्णवाले, कुथित-सड़े हुए पूतिक
 दुर्गन्धयुक्त, अतएव मनोज्ञ-असुन्दर तथा विनष्ट-अत्यंत विकृत अवस्था
 वाले और इसी कारण जिनमें से अत्यंत दुर्गन्ध निकल रही हो ऐसे तथा
 जो (तित्तरुडुयकसायअविलरमलिंदनीरसाइ) मरीच-मिर्च के जैसा

अरुचिहर रसेल्लु "साइय" आस्वादन करीने तेमनाभा साधुओ द्वेषभाव राखवो
 लेछओ नही " किं ते ? " अरुचिहरर रस क्या क्या छे ओ प्रश्नलु समा
 धान करवाने भाटे सूत्रकार ठंडे छे—“ अरसविरससीयल्लवणिज्जप्पपाणभोय
 णाइ ” अरस-हिङ्गु आदिना वधारथी रहित, विरस-रसरहित-पर्युषित, शीत
 -शीतल-ठंडा, रूक्ष-घी विनालु, निर्वाप्य-वल्ल वधारवानी शक्तिथी रहित,
 तथा “ दोसीणवावन्नकुट्टियपूइयअमणुन्नविणट्टपसूयबहुदुब्भिमगवियाइ ” दोसीण
 -रात्रे राधेल, व्यापन्न-विनष्ट वर्णवाणु-कुथित-सड़े, पूतिक-दुर्गन्धवाणा, तेथी
 अभनोन्न-असुन्दर तथा विनष्ट-अत्यंत विकृत अवस्थावाणा अने ओ करछे
 जेभाथी अत्यंत दुर्गन्ध नीकणती छाय तेवा, तथा ओ " तित्तरुडुयकसायअविल

वित्तकटुककपायाम्लरसलिङ्गनीरमानि = तत्र वित्त-मरीचवत्, कटुक-निम्बवत्, कपायम्=आमलफलवत्, आम्लरसम्=अम्लिष्ठ 'इमली' कावत्, लिङ्ग=सशैवाल-पुराणजलवत्, नीरस=विगतरसम् एषा द्वन्द्वस्तानि तथोक्तानि' आस्वाद्य-उपर्युक्तारसविरसादि पानभोजनस्थितानमनोज्ञपापकान् रमानास्वाद्येत्यर्थः, 'समणेण' श्रमणेन-साधुना 'तेसु' तेसु=उत्तेषु 'अमणुन्नपावएसु' अमनोज्ञपापकेषु 'रसेसु' रसेषु तथा-एभ्यः 'अन्नेसु' अन्येषु 'एवमाइएसु' एवमादिकेषु=एव प्रकारेषु च-अमनोज्ञपापकेषु रसेषु 'न रसियव्व' न रोष्यव्यम्, 'जाव' यावत्करणात्-न हीलितव्यम्, 'न निंदियव्व, न खिसियव्व, न छेतियव्व, न

वित्त री-चरपरा हो, कटुक-नीम के जैसा कटुवा हो, आमले के जैसा कपाय रसवाला हो, कूची पैरी-अमिघा के जैसा जो खटा हो, लिङ्ग-शैवालसहित पुराने जलके समान हो, विगतरस हो ऐसे इन उपर्युक्त अरस विरस आदि पान भोजनमें स्थित अमनोज्ञ पापक-अरुचिकारक रसों को आस्वादित करके (समणेण) मुनि को (तेसु) उन (अमणुन्नपावएसु) अमनोज्ञ पापक-अरुचिकारक-रसोंमें तथा (अण्णेषु एवमाइएसु रसेसु) इसी प्रकार के और भी इनसे भिन्न रसों में (न रसियव्व जाव चरेज्ज धम्म) रोष नहीं करना चाहिये। "न हीलियव्व, न निंदियव्व, न खिसियव्व, न छिंदियव्व, न भिंदियव्व, न वहेयव्व, न दुग्गुठावत्तियावि लब्भा उप्पाएउ" उनकी अवज्ञा नहीं करनी चाहिये, उन्हें देखकर उनपर ग्विसयाना-परोक्ष में निंदा नहीं करनी चाहिये। तथा अमनोज्ञ रसस्थित द्रव्यका छेदन नहीं करना चाहिये, भेदन एव

रसलिङ्गनीरसाइ 'भगीय-भक्ष्या जेवा तीणा डोय, अण्णरा डोय, कटु-लीमडा जेवा कडवा डोय, आमणा जेवा लुरा डोय, काची केरी जेवा पाटा डोय, लिङ्ग-जे शैवाणयुक्त पुराणा पाणी जेवा डोय, विगत रस डोय, जेवा उपर कडेला अरस विरस आदि लोअनेमा रहेल अमनोज्ञ पापक-अरुचिकर रसेसु आस्वादन उगीने 'समणेण' मुनिजे "तेसु" ते "अमणुन्नपावएसु" अमनोज्ञ पापक-अरुचिकर रसेसु तथा "अण्णेषु एवमाइएसु रसेसु" जे अ प्रकारना भीन रसेसु पाणु "न रसियव्व जाव चरेज्जधम्म" रोष करवे जेधजे नही "न हीलियव्व, न निंदियव्व, न खिसियव्व, न छिंदियव्व, न भिंदियव्व, न वहेयव्व, न दुग्गुठावत्तियावि लब्भा उप्पाएउ" तेमनी अवज्ञा न करवी जेधजे, तेमने जेधने तेमनी परोक्ष गीते निंदा न करवी जेधजे, तथा अरुचिकर रसवाणा द्रव्यसु छेदन न करवु जेधजे, छेदन अने नाश न करवे

મેત્તવ્યમ્ ન હન્તવ્યમ્ ન જુગુપ્સાટ્તિકાઽપિ લભ્યા ઉત્પાદયિતમ્ । एव जिह्वे-
ન્દ્રિયભાવનાભાગિતો ભવતિ અન્તરાત્મા=જીવઃ મુનિઃ । તતથ=મનોજ્ઞામનોઞ્ચસુરભિ
દુરભિરાગદ્વેપે પ્રણિહિતાત્મા સાધુર્મનોઞ્ચનકાયણ્ણઃ સંશૃતઃ પ્રણિહિતેન્દ્રિયઃ-एगं
સંગ્રહો ગોચ્ય 'ધમ્મ' ધર્મ 'ચરેજ્જ' ચરેત્=અનુતિષ્ઠેત્ ॥ મૂ. ૧૦ ॥

નાશ નહીં કરના ચાહિયે । ઓર ન અપને મનમેં ખી ઉસ પર જુગુપ્સા
વૃત્તિ જગે એસી ચેપ્ટા હી કરની ચાહિયે । ઇસ પ્રકાર સે 'જિહ્વાઙ્દ્રિય
મુદ્ધે વશમેં કરની ચાહિયે અન્યથા મહાન્ અનર્થ કા ભાગી મુદ્ધે હોના
પડેગા ' ઇસ પ્રકારકી જિહ્વા ઙ્દ્રિયહી ભાવના સે ભાગિત જબ મુનિ હો
જાતા હૈ તબ વહ મનોજ્ઞરૂપ એવ અમનોજ્ઞરૂપ સુરભિદુરભિ ઇસ મેં રાગ
દ્વેષ કરને સે રહિત થન જાતા હે । ઇસ પ્રકારકી સ્થિતિ સે સપન્ન બના
હુઆ સાધુ અપને મન, વચન, ઓર કાયરૂપ ત્રીન યોગાં કો શુભ ઓર
અશુભ કે વ્યાપાર સે રહિત કર લેતા હૈ ઓર ઇસ ઙ્દ્રિય કે સવરણસે
યુક્ત થન જાતા હૈ । ઇસ તરહ રસનેન્દ્રિય કે સવરણસે યુક્ત હોકર વહ
ચારિત્રરૂપ ધર્મકા પાલન કરને મેં સર્વ પ્રકારસે દૃઢ હો જાતા હૈ ।

ભાવાર્થ—ઇસ સૂત્રદ્વારા સૂત્રકારને ઇસ વ્રત કી ચૌથી ભાવના કા
સ્વરૂપ પ્રદર્શિત ક્રિયા હૈ । ઉસમે ઉન્હોને વહ સમજાયા હૈ કિ સાધુકો
અપની રસના ઇન્દ્રિય કો રુચિકારક એવ અરુચિકારક રસો કે
આસ્વાદજન્ય રાગદ્વેષકે પક્ષપાત સે રહિત કર લેની ચાહિયે, તખી જા
કર વહ રસનેન્દ્રિય વિજયી હો સકતા હે । એસા નહીં હોના ચાહિયે કિ

જોઇએ પોતાના મનમા કે પારગના મનમા તેના પ્રત્યે જુગુપ્સાવૃત્તિ થાય તેહુ
વર્તન કરવુ જોઇએ નહીં, આ રીતે “ મારે જિહ્વા ઇન્દ્રિયને વશ રાખવી
જોઇએ નહીં તો મારે મહાન અનર્થને પાત્ર બનવુ પડશે ” આ પ્રકારની
જિહ્વા ઇન્દ્રિયની ભાવનાથી બચારે મુનિ ભાવિત થાય છે ત્યારે તે મનોજ્ઞરૂપ
અને અમનોજ્ઞરૂપ, સુદર અને અસુદર દ્રવ્યો પ્રત્યે રાગ દ્વેષથી રહિત બની
જાય છે આ પ્રકારની ભાવનાથી યુક્ત બનેલ સાધુ મન, વચન અને કાય,
એ ત્રણે યોગોને શુભ અને અશુભ વ્યાપારથી રહિત કરી લે છે અને આ
ઇન્દ્રિયના સવરણથી યુક્ત બની જાય છે આ રીતે રમના ઇન્દ્રિયના સવરણથી
યુક્ત થઈને તે ચારિત્રરૂપ ધર્મનું પાલન કરવામા બધી રીતે દૃઢ બની જાય છે

ભાવાર્થ—આ સૂત્ર દ્વારા સૂત્રકારે આ વ્રતની ચોથી ભાવનાનું સ્વરૂપ
પ્રગટ કર્યું છે તેમા તેમણે સમજાવ્યું છે કે સાધુએ પોતાની રસના ઇન્દ્રિયને
રુચિકર અને અરુચિકર રસોના આસ્વાદનને ઝારણે ઉત્પન્ન થતા રાગદ્વેષને પક્ષ
પાતથી રહિત કરવી જોઇએ, ત્યારે જ તે રસનેન્દ્રિય પર વિજય મેળવી શકે

પશ્ચમીં ભાવનામાહ—‘ પચમ ’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—પંચમં પુણ ફાસિદિણ ફાસિય ફાસાઈં મણુન્નમ-
દકાઈં, ફિ તે ? દગ મંડવ—હાર-સેયચદણ-સીયલ-વિમલ-જલ-
વિવિહ-કુસુમસત્થર-ઓસીરમુત્તિય-મુણાલદોસિણા પેહુણ
ઉક્કલેવગ-તાલિયટવીયણગ-જણિય-સુહસીયલે ય પવણે
ગિમ્હકાલે, સુહફાસાણિ ય ઘટ્ટુણિ સયણાણિ ય આસ
ણાણિ ણે ય પાડરણગુણે ય સિસિરકાલે, અગારપ્પવાવણા

રુચિકારક રસ મિલ જાવે તો ચિત્તમે ઉસકે પ્રતિ રાગભાવ ઉદ્ભૂત હો
જાવે ઔર અરુચિકારક રસ મિલ જાવે તો ઉસમેં દ્વેષભાવ ઉત્પન્ન હો
જાવે । દોનોં પ્રકારકે રસોં મેં સમતાભાવ ધારણ કરના સાધુ ફા સર્વ
પ્રથમ કર્નવ્ય હે । ઇસી વિષયકો લેકર ઇસ સૂત્રમે રુચિકારક રસકે
આશ્રયભૂત ઉગાદિમ આદિ કિતનેક પદાર્થોં કો તથા અરુચિકારક રસ
કે આશ્રયભૂત અરસવિરસ આદિ પદાર્થોં કો કહા ગયા હૈ । તથા સાથર
મેં યહ સમજાયા ગયા હૈ ફિ ગૃહસ્થાવસ્થા મેં જિન રુચિકારક રસોં ફા
આસ્વાદ લિયા યા વે રસ સાધુ અવસ્થા મેં સ્મરણ કરને યોગ્ય નહીં હે ।
કારણ ફિ ઉનકી સ્થિતિ સે જિહ્વા ઇન્દ્રિય મેં રસકે પ્રતિ લોલુપતા વઢતી
હૈ । ઇસ પ્રકાર સે રસના ઇન્દ્રિય કે વિષય મેં સમભાવ રાખનેવાલા સાધુ
ચારિત્ર ધર્મકા નિર્વાહ અચ્છી તરહ સે કરનેવાલા હો જાતા હૈ ॥સૂ૦ ૧૦॥

છે એવુ ન બનવુ જોડે કે રૂચિકર રસ મળે તો તેના પ્રત્યે ચિત્તમા રાગભાવ
પેદા થઇ જાય છે, અને અરૂચિકર રસ મળે તો દ્વેષભાવ પેદા થાય અને
પ્રકારના રસો પ્રત્યે સમભાવ રાખવો તે સાધુનું પહેલું કર્તવ્ય છે એ વિષયનું
વર્ણન કરતા આ સૂત્રમા રૂચિકર રસયુક્ત ઉગ્ગાદિમ આદિ કેટલાક પદાર્થોને
તથા અરૂચિકર રસયુક્ત અરસવિરસ આદિ પદાર્થોને બતાવ્યા છે તથા સાથે
સાથે એ સમજાવ્યું છે કે ગૃહસ્થાવસ્થામા જે રૂચિકારક રસોનો સ્વાદ લીધો
હોતો તે રસોનું સાધુ અવસ્થામા અમુલ્ય કરવું તે પણ યોગ્ય નથી કારણ કે
તેને યાદ કરવાની જિહ્વા ઇન્દ્રિયમા રસના પ્રત્યે લાલસા વધે છે આ રીતે
રસના ઇન્દ્રિયની બાબતમા સમભાવ રાખનાર સાધુ ચરિત્ર ધર્મનું સારી રીતે
પાલન કરનાર બની જાય છે ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

य आयवनिद्धमउय-सीय उसिणलहुया य जे उउसुहफासा
 अंगसुहनिव्वुइकरा ते, अन्नेसु य एवमाइएसु फासेसु मणुन्न-
 भवएसु न तेसु समणेण सज्जियव्व, न रज्जियव्व, न गिज्जि-
 यव्वं, न मुज्जियव्वं, न विणिघाय आवज्जियव्वं, न लुभि-
 यव्व, न अज्झोववज्जियव्व, न तूसियव्वं, न हसियव्व, न
 सइं च मइ च तत्थकुज्जा । पुणरवि फासिदिएण फासिय
 फासाइ अमणुन्नपावगाइ, किं ते ? अणेगवहवंध-तालणं-
 कण-अइभारारोवण-अंगभजण-सुईनखप्पवेस-गायपच्छण-
 लक्खारसखारतेल्लकलकलत-- तउसीसककाललोह- -सिंचण-
 हडिवधण रज्जुनिगल-सकलन हत्थडुयकुभिपाकदहण सीह-
 पुच्छण सूलभेय--गयचलणमलण-करचरणकन्ननासोद्वसीसछे-
 यण-जिबभच्छेयण वसणनयण हिययदतभजण जोत्तलयकस-
 प्पहारपादपणिहजाणुपत्थरनिवायपीलणक -- विकच्छुअगणि
 विच्छुयडक्कवायायवदसमसगनिवाए दुट्ठणिसज्जदुन्निहिया
 कक्खड-गुरुसीयउसिणलुक्खेसु बहुविहेसु अन्नेसु य एवमाइएसु
 फासेसु अमणुन्न पावगेसु न तेसु समणेण रूसियव्व, न हीलि-
 यव्व, न निदियव्व, न गरहियव्व, न खिसियव्व, न छिदियव्वं,
 न भिदियव्व, न वहेयव्व, न दुगुल्लावत्तियाविलब्भा उप्पाएउं
 एव फासिदियभावणाभाविओ भवइ अतरप्पा मणुन्नामणु-
 न्नसुब्भिदुब्भिरागदोसपणिहियप्पा साहू मयवयणकायगुत्ते
 संवुडे पणिहिइदिए चरेज्ज धम्मं ॥ सू० ११ ॥

ટીકા—‘પુન’ પુનઃ ‘પચમ’ પચમી સ્પર્શેન્દ્રિયસત્વરણાભિપ્રેયા ભાવના-
માહ—‘ફાસિદિણ’ સ્પર્શેન્દ્રિયેણ ‘મણુણમહગાઈ’ મનોહમદ્રકાન્ ‘ફાસાઈ’
સ્પર્શાન્ ‘ફાસિય’ સ્પૃષ્ટા ‘કિં તે’ કાંસ્તન્-રુધમ્ભૂતાંસ્તાન્? इत्याह—‘દગમડવ
-દાર-સેય ચદણસીયલવિમલજલવિનિહકુમુમસત્થર ઉમીર મુત્તિયમુણાલદોસિણા’
દકમળપહારથેતચન્દનશીતલવિમલજલવિનિધકુમુમસસ્તરોશીરમૌક્તિકમૃણાલજ્યો-
ત્સનાઃ, તત્ર-દકમળપા = ઉદકમળપાઃ, જલયન્ત્રસ્થાનાનીત્યર્થઃ, હારાઃ પ્રતીતાઃ,
શ્વેતચન્દનાનિ = શ્રીલ્લહચન્દનાનિ, શીતલવિમલજલાનિ = શીતલાનિ = વિમલાનિ

અવ સૂત્રકાર હસ વ્રતની પાંચવી ભાવના કહતે હૈ—‘પચમ પુન’ હ૦
ટીકાર્થ—(પચમ પુન) પાંચવી ભાવના સ્પર્શનેન્દ્રિય સવર નામ કી
હૈ । વહ હસ પ્રકાર સે હૈ—(ફાસિદિણ) સ્પર્શન ઇન્દ્રિય સે (મણુણ-
મહગાઈ ફાસાઈ) મનોહ મદ્રક-સ્પર્શન ઇન્દ્રિય કો સુખ-કારક-સ્પર્શ
કો (ફાસિય) સ્પર્શ કર કે સાધુ કો ઉન મેં રુચિભાવ-રાગપરિણતિ
નહી કરના ચાહિયે, હસ પ્રકાર સે યહ સવધ લગા લેના ચાહિયે—
(કિં તે ?) રુચિકારક સ્પર્શ કે વિષયભૂત કૌન ૨ સે પદાર્થ હૈ, હસ
પ્રકાર કે પ્રશ્નકા ઉત્તર દેતે હુણ સૂત્રકાર ઉન કિતનેક પદાર્થો કો નામ
નિર્દેશપૂર્વક કહતે હૈ—(ગિમ્હકાલે દગમડવ-દાર-સેયચદણ-સીયલ
વિમલ-જલવિનિહકુમુમસત્થ-ઓસીર-મુત્તિય-મુણાલ-દોસિણા-પેહુણ-
ઉક્લેવગ-તલિયટ-વીયણગ-જણિય સુહસીયલે ય પવણે) ગ્રીષ્મકાલમેં
દકમળ-જલ કે ફુઆરે જહા જલ વરસાકર સ્થાન કો ઠંડા રખતે
હૈ,—એસા જલ યત્ર સ્થાન, હાર શ્વેતચદન-શ્રીલ્લહચદન, શીતલ, નિર્મલ

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની પાંચમી ભાવના બતાવે છે—

“પચમ પુન” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—‘પચમ પુન’ પાંચમી ભાવના સ્પર્શેન્દ્રિય સવર નામની છે
તે આ પ્રમાણે છે “ફાસિદિણ” સ્પર્શેન્દ્રિયથી “મણુણમહગાઈ ફાસાઈ”
મનોહમદ્રક સ્પર્શેન્દ્રિય મુખગારક સ્પર્શેનો “ફાસિય” સ્પર્શ કરીને સાધુએ
તેમના પ્રત્યે રુચિભાવ-રાગપરિણતિ કરવી નોંધ્યો નહી

“કિં તે ?” રુચિગારક સ્પર્શવાળા યા યા પદાર્થો છે તે પ્રશ્નનો
ઉત્તર આપતા સૂત્રકાર એવા ડેટલાડ પદાર્થોનો ઉલ્લેખ કરીને કહે છે કે—

“ગિમ્હકાલે દગમડવ-દાર સેયચદણ સીયલવિમલજલ વિનિહકુમુમસત્થર -
ઓસીર મુત્તિય મુણાલ-દોસિણા-પેહુણ-ઉક્લેવગ તલિયટ વીયણગ-જણિય સુહસી
યલે ય પવણે” ગ્રીષ્મ ઋતુમાં ઇકમ ડપ બંધા પાણીના ડુવારા પાણીને ઉડાડીને

य आयवनिद्धमउय-सीय उसिणलहुया य जे उउसुहफासा
 अंगसुहनिव्वुइकरा ते, अत्तेसु य एवमाइएसु फासेसु मणुन्न-
 भइएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं, न रज्जियव्वं, न गिज्जि-
 यव्वं, न मुज्जियव्वं, न विणिघाय आवज्जियव्वं, न लुभि-
 यव्वं, न अज्झोववज्जियव्वं, न तूसियव्वं, न हसियव्वं, न
 सइं च मइ च तत्थकुज्जा । पुणरवि फासिदिण्ण फासिय
 फासाइ अमणुन्नपावगाइं, किं ते ? अणेगवहवध-तालणं-
 कण-अइभारारोवण-अगभजण-सुईनखप्पवेस-गायपच्छण-
 लक्खारसखारतेल्लकलकलत-- तउसीसककाललोह- -सिंचण-
 हडिवधण रज्जुनिगल-संकलन हत्थंडुयकुभिपाकदहण सीह-
 पुच्छण-सूलभेय--गयचलणमलण-करचरणकन्ननासोद्वसीसछे-
 यण-जिबभच्छेयण वसणनयण हिययदतभजण जोत्तलयकस-
 प्पहारपादपणिहजाणुपत्थरनिवायपीलणक -- विकच्छुअगणि
 विच्छुयडक्कवायायवदसमसगनिवाए दुट्ठणिसज्जदुन्निहिया
 कक्खड गुरुसीयउसिणल्लक्खेसु बहुविहेसु अन्नेसु य एवमाइएसु
 फासेसु अमणुन्न पावगेसु न तेसु समणेण रूसियव्वं, न हीलि-
 यव्वं, न निदियव्वं, न गरहियव्वं, न खिसियव्वं, न छिदियव्वं,
 न भिदियव्वं, न वहेयव्वं, न दुगुंछावत्तियाविलब्भा उप्पाएउं
 एव फासिदियभावणाभाविओ भवइ अतरप्पा मणुन्नामणु-
 न्नसुब्भिदुब्भिरागदोसपणिहियप्पा साहू मयवयणकायगुत्ते
 संवुडे पणिहिइंदिए चरेज्ज धम्म ॥ सू० ११ ॥

ટીકા—‘ પુણ ’ પુનઃ ‘ પચમ ’ પञ્ચમી સ્પર્શેન્દ્રિયમવરણાભિપ્રેયા ભાવના-
માહ—‘ ફાસિદિણ ’ સ્પર્શેન્દ્રિયેણ ‘ મણુણમદગાઢ ’ મનોજ્ઞમદ્રકાન્ ‘ ફાસાઈ ’
સ્પર્શાન્ ‘ ફાસિય ’ સ્પૃષ્ટા ‘ કિં તે ’ કાંસ્તન્-કથમ્ભૂતાંસ્તાન્? इत्याह—‘દગમડવ
-હાર-સેય ચદણસીયલ્વિમલજલવિવિદ્કુસુમસત્થર’ ઓસીર મુત્તિયમુણાલદોસિણા ‘
દકમળ્ડપહારશ્વેતચન્દનશીતલવિમલ્જલવિવિદ્કુસુમસસ્તરોશીરમોક્તિકમૃણાલજ્યો-
ત્સનાઃ, તત્ર-દકમળ્ડપા = ઉદકમળ્ડપાઃ, જલ યન્ત્રસ્થાનાનીત્યર્થઃ, હારા. પ્રવોતાઃ,
શ્વેતચન્દનાનિ = શ્રીલ્ખન્ડચન્દનાનિ, શીતલવિમલજલાનિ = શીતલાનિ = વિમલાનિ

અતઃ સૂત્રકાર હસ વ્રતકી પાંચવી ભાવના કહતે હૈ—‘પચમ પુણ’ ૬૦
ટીકાર્થ—(પચમ પુણ) પાંચવી ભાવના સ્પર્શનેન્દ્રિય સવર નામ કી
હૈ । વહ હસ પ્રકાર સે હૈ—(ફાસિદિણ) સ્પર્શન ઇન્દ્રિય સે (મણુણ-
મદગાઢ ફાસાઈ) મનોજ્ઞ મદ્રક-સ્પર્શન ઇન્દ્રિય કો સુખકારક-સ્પર્શ
કો (ફાસિય) સ્પર્શ કર કે સાધુ કો ઊન મેં રુચિભાવ-રાગપરિણતિ
નહી કરના ચાહિયે, હસ પ્રકાર સે યહ સવધ લગા લેના ચાહિયે—
(કિં તે ?) રુચિકારક સ્પર્શ કે વિષયભૂત કૌન ૨ સે પદાર્થ હૈ, હસ
પ્રકાર કે પ્રશ્નકા ઉત્તર દેતે હુએ સૂત્રકાર ઊન કિતનેક પદાર્થો કો નામ
નિર્દેશપૂર્વક કહતે હૈ—(ગિમ્હકાલે દગમડવ-હાર-સેયચદણ-સીયલ
વિમલ-જલવિવિદ્કુસુમસત્થ-ઓસીર-મુત્તિય-મુણાલ-દોસિણા-પેહુણ-
ઉચ્ચેચગ-તલિયટ-વીયણગ-જણિય સુહસીયલે ય પવણે) પ્રીત્મકાલમેં
દકમળ્ડપ-જલ કે ફુઆરે જહા જલ વરસાકર સ્વાન કો ઠંડા રખતે
હૌં,—એસા જલ યત્ર સ્વાન, હાર શ્વેતચદન-શ્રીલ્ખન્ડચદન, શીતલ, નિર્મલ

હવે સૂત્રકાર આ વ્રતની પાંચમી ભાવના બતાવે છે—

“ પચમ પુણ ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—‘ પચમ પુણ ’ પાંચમી ભાવના સ્પર્શેન્દ્રિય સવર નામની છે
તે આ પ્રમાણે છે “ ફાસિદિણ ” સ્પર્શેન્દ્રિયથી “ મણુણમદગાઢ ફાસાઈ ”
મનોજ્ઞમદ્રક સ્પર્શેન્દ્રિય સુખકારક સ્પર્શેના “ ફાસિય ” સ્પર્શ કરીને સાધુએ
તેમના પ્રત્યે રુચિભાવ-રાગપરિણતિ કરવી બેઠી નહી

“ કિં તે ? ” રુચિકારક સ્પર્શવાળા ડયા ડયા પદાર્થો છે તે પ્રશ્નનો
ઉત્તર આપતા સૂત્રકાર એવા ડેટલાડ પદાર્થોનો ઉલ્લેખ કરીને કહે છે કે—

“ ગિમ્હકાલે દગમડવ-હાર સેયચદણ સીયલવિમલજલ વિવિદ્કુસુમસત્થર -
ઓસીર મુત્તિય મુણાલ દોસિણા-પેહુણ-ઉચ્ચેચગ તલિયટ વીયણગ-જણિય સુહસી
યલે ય પવણે ” પ્રીત્મ ઋતુમા હઝમડપ ન્યા પાણીના કુવારા પાણીને ઉડાડીને

य आयवनिद्धमउय-सीय उसिणलहुया य जे उउसुहफासा
 अंगसुहनिव्वुइकरा ते, अन्नेसु य एवमाइएसु फासेसु मणुन्न-
 भदएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं, न रज्जियव्वं, न गिज्जि-
 यव्वं, न मुज्जियव्वं, न विणिघाय आवज्जियव्वं, न लुभि-
 यव्वं, न अज्झोववज्जियव्वं, न तूसियव्वं, न हसियव्वं, न
 सइं च मइं च तत्थकुज्जा । पुणरत्रि फासिदिएण फासिय
 फासाइं अमणुन्नपावगाइ, किं ते ? अणेगवहवध-तालणं-
 कण-अइभारारोवण-अगभजण-सुईनखप्पवेस-गायपच्छण-
 लक्खारसखारतेल्लकलकलंत-- तउसीसककाललोह- -सिंचण-
 हडिवधण रज्जुनिगल-संकलन हत्थंडुयकुभिपाकदहण सीह-
 पुच्छण सूलभेय--गयचलणमलण-करचरणकन्ननासोट्टसीसछे-
 यण-जिब्भच्छेयण वसणनयण हिययदतभजण-जोत्तलयकस-
 प्पहारपादपणिहजाणुपत्थरनिवायपीलणक -- विकिच्छुअगणि
 विच्छुयडक्कवायायवदसमसगनिवाए दुट्ठणिसज्जदुन्निहिया
 कक्खड गुरुसीयउसिणल्लक्खेसु बहुविहेसु अन्नेसु य एवमाइएसु
 फासेसु अमणुन्न पावगेसु न तेसु समणेण रूसियव्वं, न हीलि-
 यव्वं, न निदियव्वं, न गरहियव्वं, न खिसियव्वं, न छिदियव्वं,
 न भिदियव्वं, न वहेयव्वं, न दुगुछावत्तियाविलब्भा उप्पाएउं
 एव फासिदियभावणाभाविओ भवइ अतरप्पा मणुन्नामणु-
 न्नसुब्भिदुब्भिरागदोसपणिहियप्पा साहू मयवयणकायगुत्ते
 संवुडे पणिहिइदिए चरेज्ज धम्म ॥ सू० ११ ॥

यायणा य ' शरीरस्य अङ्गारपतापनाश्र=यद्विनिपेक्षानि च, ' आयवनिद्धमउपमी-
यउसिणलहुया य ' आतपस्निग्धमृदुऋशीतोष्णलघुर्काश्च, तत्र-आतपः=सूर्यतापः,
स्निग्धाः=चिकणा, मृदुकाः=कोमलाः, उष्णा उष्णयुक्ताः, लघुकाः=मनोज्ञाः,
एषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, ' जे ' चे ' उउसुहफामा ' ऋतुसुखस्पर्शाः-ऋतुपु=हेम-
न्तादिषु मुखः=मुखकरः स्पर्शो येषां ते तथोक्ताः, ' अगसुहनिव्वुडकरा ' अङ्ग-
सुखनिर्वृतिकराः=अङ्गसुख=शरीरसुख, निर्वृतिः=मनः स्वास्थ्यं च कुर्वन्ति ये ते
तथोक्ताः, ' ते ' तान् स्पृष्ट्वा, ' समणेण ' समणेन=साधुना ' तेसु ' तेषु-पूर्वो-
क्तेषु ' मणुन्नमहणसु फासेसु ' मनोज्ञमद्रकेषु स्पर्शेषु, तथा-एभ्यः ' अन्नेसु य '
अन्येषु च ' एवमाइणसु ' एवमाद्रिकेषु ' फासेसु ' स्पर्शेषु ' न सज्जियव्व ' न
सक्तव्यम्=आसक्तिनैव कर्तव्या, तथा—' न रज्जियव्व ' न रक्तव्यम्-रागो
न कर्तव्यः, ' न गिज्जियव्व ' न गर्हितव्यम्-गृद्धिभावो न कर्तव्यः, ' न मुज्जिय-
व्व ' न मोहितव्यम्-तथा मोहो न कर्तव्यः, तथा-न ' विणिघाय ' विनिर्घात =
तदर्थं चारित्रभ्रशः, ' आवज्जियव्व ' आपत्तव्यः-ऋतव्य इत्यर्थः, ' न लुमियव्व '
न लोभव्यम्-लोभो न कर्तव्यः, ' अज्झोववज्जियव्व ' न अध्युपपत्तव्यम्=तत्प्रा-

(आयवनिद्धमउपसीय उसिणलहुया य) सूर्य के ताप से, चिकणपदार्थ
को, कोमलपदार्थ को उष्ण पदार्थ को, हल्के पदार्थ को, कि (जे) जो उ
उ सुहफासा) ऋतु के अनुसार जिनका स्पर्श मुखजनक होता है और
(अगसुहनिव्वुडकरा) शरीर को एव मन को आनन्द प्रदान करता है,
उनको शरीर से स्पर्श करके (समणेण) साधु को (तेसु) उन २ (मणु-
न्नमहणसु फासेसु) मनोज्ञमद्रक-रुचिकारक-स्पर्शों में तथा (अण्णे-
सु य एवमाइणसु फासेसु) इन से अतिरिक्त और भी स्पर्शों में (न
सज्जियव्व, न रज्जियव्व, न गिज्जियव्व, न मुज्जियव्व, न विणिघाय
आवज्जियव्व, न लुमियव्व, न अज्झोववज्जियव्व, न तुसियव्व, न

यसीय-उसिण-लहुया य " सूर्यना तापनो, सुखायम पदार्थनो, कोमल पदा-
र्थनो, उष्ण पदार्थनो, हलका पदार्थनो, के " जे " के " उउसुहफासा " के
ऋतु प्रमाणे केनो केनो स्पर्श सुखदायक लागे छे अने " अगसुहनिव्वु-
डकरा " शरीरने तथा मनने आनन्द आपे छे, तेभनो शरीरस्थी स्पर्श करीने
" समणेण " साधुके " तेसु " ते दरेके " मणुन्नमहणसु फासेसु " तनोसल्लस-
रुचिकारक स्पर्शोभा तथा " अण्णेसु एवमाइणसु फासेसु " ते निवाय ॥ ११॥
पणु स्पर्शोभा " न सज्जियव्व, न रज्जियव्व, न गिज्जियव्व, न मुज्जियव्व,
न विणिघाय आवज्जियव्व, न लुमियव्व, न अज्झोववज्जियव्व, न तुसियव्व,

=निर्मलानि च यानि जलानि तानि, तथा-त्रिविधकृष्णमसन्नरा=त्रिविधा-
 नाम्=अनेकप्रकाराणां कुसुमानां=पुष्पाणां ये सस्तराः=शय्यामन्ते, तथा-उशीराणि
 =सुगन्धितानि, 'खश' इति प्रमिद्धानि, मात्तिकानि=मृत्ताफलाणि, मृणालानि=पद्मनालानि, ज्योत्स्नाः=चन्द्रिकाः, एषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, ताः, तथा-
 'पेहुणउक्खे'गताल्लियट्ठीयगगजणियमुहसीयले' पिच्छोत्क्षेपकताल्लट्ठव्यजन
 फज्जनितमुखशीतलान्, तत्र-पिच्छोत्क्षेपकाः=पिच्छानां=मयूरपिच्छकानां ये उत्क्षे-
 पकाः=व्यजनानि, ताडट्ठानि=ताडपत्रव्यजनानि, व्यजनानि=वर्णदलनिर्मित
 व्यजनानि तज्जनिताः सुग्वाः=सुखकराः शीतलास्तांस्तथोक्तान् 'पण्णे य' पव-
 नांश्च 'गिम्हकाले' ग्रीष्मकाले । तथा-'मुहफासाणि य' सुखदायकानि च सुखः
 =सुखकरः स्पर्शो येषां तानि-स्पर्शसुखान्वहानीत्यर्थः, 'उह्णि-अनेकप्रकाराणि
 'सयणाणि आसणाणि य' शयनान्यामनानि च, पाउरणगुणांश्च=मृदुस्पर्शान् शीतां
 पहारकानुत्तरीयांश्च 'सिसिरकाले' शिशिरकाले=शीतकाले, तथा-'अगारप्प

जल, विविध प्रकार के पुष्पो से रचित शय्या, उशीर-शूल, मुक्ताफल,
 मृणाल-कमलनाल, और दोसिगाचद्रिका-चादनी को, तथा पेहुणउक्खे
 घग-मयूर के पिच्छों के बने हुए पत्तों की, ताडपत्र के बने हुए पत्तों
 की और वास की शलाकाओं से बने हुए पत्तों की, सुखदायक शीतल
 वायु को तथा-सुखप्रद स्पर्शवाले अनेक प्रकार के शयन और आस-
 नों को, (सिसिरकाले) शीतकाल में तथा (मुहफासाणि य) नरम
 स्पर्शवाले शीतपहारक (उह्णि सयणाणि आसणाणि य) अनेक
 प्रकार के शयन और आसनो को, तथा (पाउरणगुणे य) ओढने के
 चदर आदि वस्त्रों को (अगारप्पयावणा य) अग्नि के उष्णस्पर्श को,

जलाने ढंडी राखना डेय, जेवा जलयत्रवाणा स्थान, डार, श्वेत अदन,
 शीतल निर्भण जण, विविध प्रकारना पुष्पो वडे अनावेली राख्या, उशीर
 भश, मुक्ताफल, मृणाल कमलनाण, अने दोसिगा-चद्रिका-चादनीनी, तथा
 पेहुणउक्खेवग-भोरना पीछाना अनावेल पणाना, ताडपत्रभाथी अनावेल
 पणाना अने वासनी सणीआभाथी अनावेल पणाना, सुखदायक शीतल वायुनी
 तथा सुखप्रद स्पर्शवाणा अनेक प्रकारना शयन अने आसनोनो स्पर्श करवे
 जेधजे नही तथा "सिसिरकाले" शियाणाना "मुहफासाणि य" नरम
 स्पर्शवाणा शीत दूर कराना "उह्णि सयणाणि आसणाणि य" अनेक प्रकारना
 शयनो अने आसनोनो, तथा "पाउरणगुणे य" ओढवाना आदर आदि
 वस्त्रोनो, "अगारप्पयावणा य" अग्निना उष्ण स्पर्शोनो, "आयवनिद्धम-

यायणा य 'शरीरस्य अद्धारमतापनाश्च=रुद्धिनिषेणानि च, 'आयचनिद्धमउयसी-
यउसिणलहुया य 'आतपस्निग्धमृदुऋगीतोष्णलघुकांश्च, तत्र-जातपः=सूर्यतापः,
स्निग्धाः=चिकणा, मृदुकाः=कोमलाः, उष्णा उष्मयुक्ताः, लघुकाः=मनोज्ञाः,
एषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, 'जे' ये 'उउसुहफासा' ऋतुसुखस्पर्शाः-ऋतुषु=हेम-
न्तादिषु सुरः=सुखकरः स्पर्शो येषां ते तथोक्ताः, 'अगसुहनिव्बुइकरा' अद्धार-
सुखनिर्वृत्तिकरा=अद्धारसुख=शरीरसुख, निर्वृतिः=मनः स्वास्थ्यं च कुर्वन्ति ये ते
तथोक्ताः, 'ते' तान् स्पष्ट्वा, 'समणेण' श्रमणेन=साधुना 'तेसु' तेषु-पूर्वो-
क्तेषु 'मणुन्नमहएसु फासेसु' मनोज्ञमद्भकेषु स्पर्शेषु, तथा-एभ्यः 'अन्नेसु य'
अन्येषु च 'एवमाइएसु' एवमाद्भिकेषु 'फासेसु' स्पर्शेषु 'न सज्जियव्व' न
सक्तव्यम्=आसक्तिनैव कर्तव्या, तथा--'न रज्जियव्व' न रक्तव्यम्-रागो
न कर्तव्यः, 'न गिज्जियव्व' न गर्दितव्यम्-गृद्धिभावो न कर्तव्यः, 'न मुज्जिय-
व्व' न मोहितव्यम्-ता मोहो न कर्तव्यः, तथा-न 'विणिघाय' विनिर्घात =
तदर्थं चारित्रभ्रशः, 'आवज्जियव्व' आपत्तव्य-कर्तव्य इत्यर्थः, 'न लुभियव्व'
न लोभव्यम्-लोभो न कर्तव्यः, 'अज्झोववज्जियव्व' न अध्युपपत्तव्यम्=तत्प्रा-

(आयचनिद्धमउयसीय उसिणलहुया य) सूर्य के ताप को, चिकणपदार्थ
को, कोमलपदार्थ को उष्ण पदार्थ को, हल्के पदार्थ को, कि (जे) जो उ
उ सुहफासा) ऋतु के अनुसार जिनका स्पर्श सुखजनक होता है और
(अगसुहनिव्बुइकरा) शरीर को एव मन को आनंद प्रदान करना है,
उनको शरीर से स्पर्श करके (समणेण) साधु को (तेसु) उन २ (मणु
न्नमहएसु फासेसु) मनोज्ञमद्भक-रुचिकारक-स्पर्शों में तथा (अण्णे-
सु य एवमाइएसु फासेसु) इन से अतिरिक्त और भी स्पर्शों में (न
सज्जियव्व, न रज्जियव्व, न गिज्जियव्व, न मुज्जियव्व, न विणिघाय
आवज्जियव्व, न लुभियव्व, न अज्झोववज्जियव्व, न तुसियव्व, न

यसीय-उसिण-लहुया य" सूर्यना तापनो, सुखायभ पदार्थनो, डोमण पदा-
र्थनो, उष्ण पदार्थनो, हलका पदार्थनो, ते "जे" ने "उउसुहफासा" ने
ऋतु प्रमाणे नेने स्पर्श सुखदायक लागे छे अने "अगसुहनिव्बु
इकरा" शरीरने तथा मनने आनंद आपे छे, तेमने शरीरस्थी स्पर्श करीने
"समणेण" साधुने "तेसु" ते दरेक "मणुन्नमहएसु फासेसु" तनोऽलक्ष-
रुचिकारक स्पर्शों भा तथा "अण्णेसु एवमाइएसु फासेसु" ते सिवाय ॥ पीण
पणु स्पर्शों भा "न सज्जियव्व, न रज्जियव्व, न गिज्जियव्व, न मुज्जियव्व,
न विणिघाय आवज्जियव्व, न लुभियव्व, न अज्झोववज्जियव्व, न तुसियव्व,

=નિર્મલાનિ ચ યાનિ જ્વાલનિ તાનિ, તથા-ત્રિવિધકૃમ્મસન્નરા = ત્રિવિધા-
નામ્ = અનેકપ્રકારાણાં હુસુમાના = પુષ્પાણાં યે સસ્તરાઃ = શય્યામ્ને, તથા-ઉશીરાણિ
= સુગન્ધિતૃણાનિ, ' સ્વશ ' इति પ્રમિદ્ધાનિ, માત્તિકાનિ = મૃત્તાફળાનિ, મૃણા-
લાનિ = પદ્મનાલાનિ, જ્યોત્સ્નાઃ = ચન્દ્રિકાઃ, ઇવામિતરેતરયોગદ્વન્દ્વઃ, તાઃ, તથા-
' પેદુળઉક્લેશગતાલિયટીયગગજણિયમુહસીયલે ' પિન્દ્રોત્ક્ષેપકૃતાઠટ્ઠન્તવ્યજન
રૂજનિતમુલશીતલાન્, તત્ર-પિન્દ્રોત્ક્ષેપનાઃ = પિન્દ્રાના = મયૂરપિન્દ્રાના યે ઉત્ક્ષે
પનાઃ = વ્યજનાનિ, તાલટ્ઠન્તાનિ = તામ્પત્રવ્યજનાનિ, વ્યજનનાનિ = રશ્મિદલનિર્મિત
વ્યજનાનિ તજ્જનિતાઃ સુલાઃ = સુલકારાઃ શીતલાસ્તાંસ્તથોક્તાન્ ' પવ્વણે ય ' પવ-
નાંશ્ચ ' ગિન્દ્રકાલે ' ગ્રીષ્મકાલે । તથા-'મુહ્વાસાણિ ય ' સુરભ્યર્શાનિ ચ સુલઃ
= સુલકારઃ સ્પર્શો યેષાં તાનિ-સ્પર્શસુલાપહાનીત્યર્થઃ, ' વહ્નિ-અનેકપ્રકારાણિ
' સયનાણિ આમનાણિ ય ' શયનાન્યામનાનિ ચ, પ્રાવરણગુણાંશ્ચ = મૃદુસ્પર્શાનિ શીતા
પહારકાનુત્તરીયાંશ્ચ ' સિસિરકાલે ' શિશિરકાલે = શીતકાલે, તથા-' અગાર્પ

જલ, વિવિધ પ્રકાર કે પુષ્પો સે રચિત શય્યા, ઉશીર-શલ, મુક્તાફલ,
મૃણાલ-કમલનાલ, ઓર દોસિણાચદ્રિકા-ચાદની કો, તથા પેદુળઉક્લે
શગ-મયૂર કે પિન્દ્રોં કે વને હુણ પર્વોં કી, તાલપત્ર કે વને હુણ પર્વોં
કી ઓર વાસ કી શલાકાઓં સે વને હુણ પર્વોં કી, સુલદાયક શીતલ
વાયુ કો તથા-સુલપ્રદ સ્પર્શવાલે અનેક પ્રકાર કે શયન ઓર આસ
નોં કો, (સિસિરકાલે) શીતલકાલ મેં તથા (મુહ્વાસાણિ ય) નરમ
સ્પર્શવાલે શીતાપહારક (વહ્નિ સયનાણિ આસનાણિ ય) અનેક
પ્રકાર કે શયન ઓર આસનોં કો, તથા (પ્રાવરણગુણે ય) ઓઢને કે
ચદર આદિ વસ્ત્રોં કો (અગાર્પયાવળા ય) અગ્નિ કે ઉષ્ણસ્પર્શ કો,

જગ્યાને ઠંડી રાખના હેય, એવા જલયત્રવાળા સ્થાન, હાર, શ્વેત ચક્રન,
શીતલ નિર્મળ જળ, વિવિધ પ્રકારના પુષ્પો વડે બનાવેલી શય્યા, ઉશીર
ખશ, મુક્તાફળ, મૃણાલ કમળનાળ, અને દોનિણા-ચ દ્રિકા-ચાદનીની, તથા
પેદુળ ઉક્લેશગ-મોરના પીછાના બનાવેલ પખાના, તાલપત્રમાથી બનાવેલ
પખાના અને વાસની સળીઓમાથી બનાવેલ પખાના, સુખદાયક શીતળ વાયુનો
તથા સુખપ્રદ સ્પર્શવાળા અનેક પ્રકારના શયન અને આસનોનો સ્પર્શ કરવો
જોઈએ નહીં તથા " સિસિરકાલે " શિયાળાના " મુહ્વાસાણિ ય " નરમ
સ્પર્શવાળા શીત હર કરનારા " વહ્નિ સયનાણિ આસનાણિ ય " અનેક પ્રકારના
શયનો અને આસનોનો, તથા " પ્રાવરણગુણે ય " ઓઢવાના ચાદર આદિ
વસ્ત્રોનો, " અગાર્પયાવળા ય " અગ્નિના ઉષ્ણ સ્પર્શનો, " આવવતિદમશ્ચ

યાવળા ય ' શરીરસ્ય અદ્ધારપતાપનાશ્ચ=ચક્તિનિષેઘાનિ ચ, ' આયવનિદ્વમડયસી-
યડસિળલહુયા ય ' આતપસ્નિગ્ધમૃદુકશીતોષ્ણલઘુક્રાંશ્ચ, તત્ર-જાતપઃ=સૂર્યતાપઃ,
સ્નિગ્ધાઃ=ચિક્ષણા, મૃદુકાઃ=કોમલાઃ, ઉષ્ણા ઝપ્પયુક્તાઃ, લઘુકાઃ=મનોજ્ઞાઃ,
પ્રપામિતરેતરયોગદ્વન્દ્વઃ, ' જે ' એ ' ઉડસુહ્રફાસા ' ઋતુસુખસ્પર્શાઃ-ઋતુપુ=દેહ-
ન્તાદિપુ સુખઃ=મુલકરઃ સ્પર્શો યેષા તે તથોક્તા, ' અગસુહનિન્દુહ્રકરા ' અદ્ધ-
સુખનિર્ઘૃતિકરા'=અદ્ધસુખ=શરીરસુખ, નિર્ઘૃતિઃ=મનઃ સ્વાસ્થ્ય ચ કુર્વન્તિ એ તે
તથોક્તાઃ, ' તે ' તાન્ સ્પૃષ્ટ્વા, ' સમણેણ ' શ્રમણેન=સાધુના ' તેસુ ' તેપુ-પૂર્વો-
ક્તેષુ ' મણુન્નમહણસુ ફાસેસુ ' મનોજ્ઞમદ્રકેષુ સ્પર્શેષુ, તથા-અન્યઃ ' અન્નેસુ ય '
અન્યેષુ ચ ' એવમાહણસુ ' એવમાદિકેષુ ' ફાસેસુ ' સ્પર્શેષુ ' ન સજ્જિયન્વ ' ન
સક્તવ્યમ્=આસક્તિનૈવ કર્તવ્યા, તથા—' ન રજ્જિયન્વ ' ન રક્તવ્યમ્-રાગો
ન કર્તવ્ય, ' ન ગિજ્જિયન્વ ' ન ગર્હિતવ્યમ્-ગૃહિતમાત્રો ન કર્તવ્યઃ, ' ન મુજ્જિ
યન્વ ' ન મોહિતવ્યમ્-તા મોહો ન કર્તવ્ય, તથા-ન ' વિણિયાય' વિનિર્ધાત =
તદર્થ ચારિત્રશ્ચ, ' આવજ્જિયન્વ ' આપત્તવ્યઃ-રક્તવ્યમ્ ઇત્યર્થઃ, ' ન લુમિયન્વ '
ન લોભવ્યમ્-લોભો ન કર્તવ્યઃ, ' અજ્ઞોવવજ્જિયન્વ ' ન અધુપપત્તવ્યમ્=તત્પ્રા-

(આયવનિદ્વમડયસીય ડસિળલહુયા ય) સૂર્ય કે તાપ કો, ચિક્ષણપદાર્થ
કો, કોમલપદાર્થ કો ઉષ્ણ પદાર્થ કો, હલકે પદાર્થ કો, ક્રિ (જે) જો ઉ
ડ સુહ્રફાસા) ઋતુ કે અનુસાર જિનકા સ્પર્શ સુખજનક હોતા હૈ ઓર
(અગસુહનિન્દુહ્રકરા) શરીર કો એવ મન કો આનંદ પ્રદાન કરતા હૈ,
ઉનકો શરીર સે સ્પર્શ કરકે (સમણેણ) સાધુ કો (તેસુ) ઉન ૨ (મણુ
ન્નમહણસુ ફાસેસુ) મનોજ્ઞમદ્રક-રુચિકારક-સ્પર્શો મે તથા (અણ્ણે
સુ ય એવમાહણસુ ફાસેસુ) ઉન સે અતિરિક્ત ઓર ખી સ્પર્શો મે (ન
સજ્જિયન્વ, ન રજ્જિયન્વ, ન ગિજ્જિયન્વ, ન મુજ્જિયન્વ, ન વિણિયાય
આવજ્જિયન્વ, ન લુમિયન્વ, ન અજ્ઞોવવજ્જિયન્વ, ન તુસિયન્વ, ન

યસીય-ડસિળ-લહુયા ય " સૂર્યના તાપનો, મુલાયમ પદાર્થનો, ડોમળ પદાર્થ-
નો, ઉષ્ણ પદાર્થનો, હલકા પદાર્થનો, ડે " જે " એ " ઉડસુહ્રફાસા " એ
ઋતુ પ્રમાણે જેનો જેનો સ્પર્શ સુખદાયક લાગે છે અને " અગસુહનિન્દુ
હ્રકરા " શરીરને તથા મનને આનંદ આપે છે, તેમનો શરીરથી સ્પર્શ કરીને
" સમણેણ " સાધુએ " તેસુ " તે દરેક " મણુન્નમહણસુ ફાસેસુ " તેનોશલદ્રક-
રુચિકારક સ્પર્શોમા તથા " અણ્ણેસુ એવમાહણસુ ફાસેસુ " તે સિવાય ૧૧ બીજા
૫૫ સ્પર્શોમા " ન સજ્જિયન્વ, ન રજ્જિયન્વ, ન ગિજ્જિયન્વ, ન મુજ્જિયન્વ,
ન વિણિયાય આવજ્જિયન્વ, ન લુમિયન્વ, ન અજ્ઞોવવજ્જિયન્વ, ન તુસિયન્વ,

त्यर्थं नैवाधिको यत्नो विद्येयः, 'न हसियव्य' न तोष्टव्य-तत्प्राप्ती परितोषो न कर्तव्य, 'न हसियव्य न हसितव्यम्-प्राप्ती विस्मयेन हासो न कर्तव्यः। तथा श्रमण 'तत्थ' तत्र=पूर्वोक्तश्रुततद्विषये 'सइ च' स्मृति=स्मरण च 'मत्ति=बुद्धिनिवेश च 'न कुज्जा' न कुर्यात्। 'पुणरवि' पुनरपि उच्यते-'फासि-दिण' स्पर्शेन्द्रियेण 'अमणुणपावगाइ' अमनोज्ञपापमान्=अरुचिकरानित्यर्थः, 'फासाइ' स्पर्शान् 'फासिय' स्पृष्ट्वा 'चित्ते' काँस्तान्=अथभूतान्स्तान्? इत्याह—'अणेगवह-वध-तालण-कण-अइभारारोवण-अग-भजण-मृत्तनवप्पवेस

हसियव्य, न सइ च मइ च तत्थ कुज्जा) कभी भी आसक्ति से अपने चित्त को नहीं बाधना चाहिये, उनमें रागभाव नहीं करना चाहिये। गृद्धिभाव नहीं करना चाहिये। उनमें मुग्ध नहीं होना चाहिये-उनके निमित्त अपने चारित्र्य का परित्याग नहीं कर देना चाहिये। उनमें लुभाना नहीं चाहिये। और न उनकी प्राप्ति के निमित्त प्रयत्न ही करना चाहिये। यदि ये अनायास प्राप्त हो भी जायें तो उनकी प्राप्ति में परि-तोष नहीं मानना चाहिये। और प्राप्ति में कोई विस्मय आश्चर्य ही नहीं करना चाहिये। तथा श्रमण को इन पूर्वोक्त अनुभवित स्पर्शों में अपनी स्मृति को एव बुद्धि को भी नहीं लगाना चाहिये। (पुणरवि) इसी तरह फिर (फासिदिण) स्पर्शान् इन्द्रिय से (अमणुणपावगाइ) अमनोज्ञपापक-अरुचिकारक-स्पर्शों को स्पर्श करके उनमें साधु को द्वेष नहीं करना चाहिये। (किं ते?) वे अमनोज्ञ पापक स्पर्श किन २ पदार्थों में रहते हैं, इस प्रकार के प्रश्न का उत्तर देने के लिये सूत्रकार कहते हैं कि (अणेगवहवध-तालणकण-अइभारारोवण-

न हसियव्व, न सइ च मइ च तत्थ कुज्जा) कभी कभी आसक्तिभी घातना चित्तने बाधवु नहीं, तेभनामा रागभाव करवो नहीं तेनी लालसा रागवी नहीं तेमा मुग्ध थवु नहीं, -तेने भातर घातना चारित्र्यने परित्याग न करवो जेधजे तेमा बोलावु न जेधजे अने तेनी प्राप्तिने भाटे वधु प्रयत्न पण करवो जेधजे नहीं जे ते अनायासे भणी जाय तो तेनी प्राप्तिथी परितोष मानवो जेधजे नहीं तेनी प्राप्तिमा विस्मय पण जताववु जेधजे नहीं अने साधुजे जे पूर्वोक्त अनुभवेल स्पर्शानु स्मरण करवु जेधजे नहीं अने तेभनो विचार पण करवो जेधजे नहीं "पुणरवि" जे ४ रीते 'फासि दिण' स्पर्शेन्द्रियथी "अमणुणपावगाइ" अमनोज्ञ पापक-अरुचिकारक स्पर्शानो स्पर्श करीने तेभना प्रत्ये साधुजे द्वेष करवो जेधजे नहीं "किं ते?" अमनोज्ञ पापक-अरुचिकारक स्पर्शवाणा क्या क्या पदार्थों में, ते प्रश्ननो उत्तर आपता सूत्रकार कहे छे छे "अणेगवहवध तालणकण-अइभारारोवण

-गायपच्छण लखारस-ग्यारतेह कल्ललत तउअसीसरुकाळलोहसिंचण हडिधधण
रज्जुनिगल-सकलन हत्थहुय-कुभिपाकदहन-सीहपुच्छण-उच्चधण-सूलभेय-गय
चलणमलण-करचणकन्ननामोदसीसछेयण-जिम्भछेयणवसणनयणहिययदतभजण-
जोत्तलयकसप्पहार-पादपण्हि जाणु-पत्थर-निवाय-पीलण कविरुच्छुअगणि-विच्छुय
डक्कायायव-दसमसग-निवाए 'अनेअधपन्धताडनाङ्गनातिभारारोपणाङ्गभञ्जन-
सूचीनखप्रवेश-गात्रप्रतक्षण-लाधारस खारतैलकलक गायमानत्रपुक सीसरुकाळलो-
हसेचनहडिपन्धनरज्जुनिगडसकलहस्तान्दुरु कुम्भीपाकदहनसिंहपुच्छोद्धन्धन शूल
भेद-गजचरणमर्दन-ररचरणमर्णनासाष्ट शीर्ष-छेदनवृषणनयन हृदयदन्तभञ्जनयो-
त्रलत्ताअशाप्रहारपादपण्हिजाणुप्रस्तरनिपातपीडनकविरुच्छुवग्नि-वृश्चिक-दशवाता-
तपदशमशकनिपातान्, तन-अनेको उट्टुरिधो यो उधः=यष्टयाद्याघातः, रज्ज्वा-
दिभिर्मन्धः, ताडनम्=चपेटादिताडनम्, अङ्कनम्=तप्ताय* शलाकादिना गात्रे चिह्नक-
रणम्, अतिभारारोपणम्=प्रमाणाधिरभारारोपणम्, अङ्गभञ्जनम्=शरीरावयव-
त्रोटनम्, 'सूर्धनसप्पवेस' सूचीनखप्रवेश*='सूचीना नखेषु प्रवेश =प्रवेशकरणम्,

अगभजणसूर्धनसप्पवेस-गायपच्छण-लखारस खारतैलकलकलत-तउ
सीसरुकाळलोहसिंचण-हडिधधण-रज्जुनिगल-सकलन हत्थहुय कुभि-
पाकदहन-सीहपुच्छण-उच्चधण-सूलभेय-गयचलणमलण- करचरणकन्न
नासोदसीसछेयणजिम्भछेयण-वसण-नयणहियय-दतभजण-जोत्तल-
यकसप्पहार - पादपण्हिजाणुपत्थरनिवायपीलणकविरुच्छुअगणिविच्छु-
यडक्कायायवदसमसगनिवाए) वह अनेक प्रकार से यष्टयादि द्वारा
आघात करने रूप वध, वधण-रज्ज्वादि द्वारा बाधनेरूप वधन, तालण-
चपेटा-यप्पड आदि मारने रूप ताडन, अकण-तपी हुई लोहे की सलाई
से शरीर में चिह्न करने रूप अकन, (अईभारारोवण) प्रमाण से अधिक
भार का लादना, (अगभजण) शारीरिक अवयव को तोड़ना (सूर्धन-

अगभजण-सूर्धनसप्पवेस-गायपच्छण-लखारस खारतैलकलकलत-तउसीसरुकाळ
लोहसिंचण-हडिधधण रज्जुनिगल सकलन हत्थहुयकुभिपाकदहनसीहपुच्छणउच्च-
धण-सूलभेय गयचलणमलण करचरणकन्ननासोद सीसछेयण जिम्भछेयण-वसण
नयण हिययदतभजण-जोत्तलयकसप्पहार पादपण्हि जाणुपत्थर निवाय पालणकवि
कच्छु-अगणिविच्छुय-डक्कायायवदसमसगनिवाए" ते अनेअ प्रहारनी लाडडी
आदिना प्रहारइय वध, वधण-दोरेडा आदि बाधवाइय वधन तालण-थप्पड
आदिना भार इय ताडन, अकण-तपावेला लोढाणा सणीया वडे शरीर पर
उभ देवाइय निशान, अईभारारोवण-वधादे प्रमाणमा भार लादवे, अगभजण-
शरीरना अगनु छेदन सूर्धनसप्पवेस-नेथने नथमा बोडी डेवी, गायपच्छण-

પર્યં નૈવાધિકો યત્નો વિરેયઃ, ' ન હસિયવ્ય ' ન તોષ્ટવ્યં-તત્પ્રાપ્તો પરિતોષો ન કર્તવ્ય, ' ન હસિયવ્ય ન હસિતવ્યમ્-પ્રાપ્તો વિસ્મયેન હાતો ન કર્તવ્યઃ । તથા શ્રમણ ' તત્થ ' તત્ર=પૂર્વોક્તશુક્તતદ્વિપયે ' સઙ્ગ ચ ' સ્મૃતિ=સ્મરણ ચ ' મર્તિ=બુદ્ધિનિવેશ ચ ' ન કુજ્જા ' ન કુર્યાત્ । ' પુનરવિ ' પુનરપિ ઉચ્યતે- ' ફાસિ-દિણ ' સ્પર્શેન્દ્રિયેણ ' અમણુણપાવગાહ ' અમનોજ્ઞપાપકાનુ=અરુચિકરાનિત્યર્થઃ, ' ફાસાહ ' સ્પર્શાનુ ' ફાસિય ' સ્પૃષ્ટ્વા ' કિંતે ' કાંસ્તાન=સ્થમ્ભૂર્નાંસ્તાન ? इत्याह—'अणोगवह-वध-तालण-कण-अहमारारोवण-अग-भजण-मूर्तनवप्वेस

હસિયવ્ય, ન સઙ્ગ ચ મહ્ગ ચ તત્થ કુજ્જા) કમ્મી સી આસક્તિ સે અપને ચિત્તા કો નહીં બાધના ચાહિયે, ઉનમેં રાગભાવ નહીં કરના ચાહિયે । મુદ્ધિભાવ નહીં કરના ચાહિયે । ઉન મેં મુગ્ધ નહીં હોના ચાહિયે-ઉનકે નિમિત્ત અપને ચારિત્ર કા પરિત્યાગ નહીં કર દેના ચાહિયે । ઉનમેં લુભાના નહીં ચાહિયે । ઓર ન ઉનકી પ્રાપ્તિ કે નિમિત્ત પ્રયત્ન હી કરના ચાહિયે । યદિ ચે અનાયાસ પ્રાપ્ત હો ભી જાવેં તો ઉનકી પ્રાપ્તિ મે પરિ-તોષ નહીં માનના ચાહિયે । ઓર પ્રાપ્તિ મેં કોઈ વિસ્મય આશ્ચર્ય હી નહીં કરના ચાહિયે । તથા અજ્ઞાન કો ઇન પ્રવૃત્ત અનુભવિત સ્પર્શો મેં અપની સ્મૃતિ કો એક બુદ્ધિ કો ભી નહીં લગાના ચાહિયે । (પુનરવિ) હસી તરહ ફિર (ફાસિદિણ) સ્પર્શન ઇન્દ્રિય સે (અમણુણપાવગાહ) અમનોજ્ઞપાપક-અરુચિકારક-સ્પર્શો કો સ્પર્શ કરકે ઉનમે સાધુ કો દ્વેષ નહીં કરના ચાહિયે । (કિંતે ?) ચે અમનોજ્ઞ પાપક સ્પર્શ કિન ૨ પદાર્થો મે રહતે હૈ, હસ પ્રકાર કે પ્રશ્ન કા ઉત્તર દેને કે લિયે સૂત્રકાર કહતે હૈ કિ (અણેગવહ-વધ-તાલણ-કણ-અહમારારોવણ-

ન હસિયવ્ય, ન સઙ્ગ ચ મહ્ગ ચ તત્થ કુજ્જા " કહી પણ આસક્તિથી પોતાના ચિત્તને બાધવું નહીં, તેમનામાં રાગભાવ કરવો નહીં તેની લાલસા રાખવી નહીં તેમાં મુગ્ધ થવું નહીં, -તેને ખાતર પોતાના ચારિત્રનો પરિત્યાગ ન કરવો જોઈએ તેમાં લોભાવું ન જોઈએ અને તેની પ્રાપ્તિને માટે વધુ પ્રયત્ન પણ કરવો જોઈએ નહીં જો તે અનાયાસે મળી જાય તો તેની પ્રાપ્તિથી પરિતોષ માનવો જોઈએ નહીં તેની પ્રાપ્તિમાં વિસ્મય પણ બતાવવું જોઈએ નહીં અને સાધુએ એ પૂર્વોક્ત અનુભવેલ સ્પર્શોનું સ્મરણ કરવું જોઈએ નહીં અને તેમનો વિચાર પણ કરવો જોઈએ નહીં " પુનરવિ " એ જ રીતે ' ફાસિ દિણ " સ્પર્શેન્દ્રિયથી " અમણુણપાવગાહ " અમનોજ્ઞ પાપક-અરુચિકારક સ્પર્શોનો સ્પર્શ કરીને તેમના પ્રત્યે સાધુએ દ્વેષ કરવો જોઈએ નહીં " કિંતે ? " અમનોજ્ઞ પાપક-અરુચિકારક સ્પર્શવાળા કયા કયા પદાર્થો છે, તે પ્રશ્નનો ઉત્તર આપતા સૂત્રકાર કહે છે કે " અણેગવહ-વધ-તાલણ-કણ-અહમારારોવણ

-गायपच्छण लखारस-गारतेल कलकलत तउसीसककाललोहसिंचण हडिवधण
रज्जुनिगल-सकलन हत्यहुय-कुमिपाकदहन-सीहपुच्छण-उच्चधण-सूलभेय-गय
चलणमलण-करचणकननामोद्वमीसछेयण-जिम्भछेयणवसणनयणहियदतभजण-
जोत्तलयकसप्पहार-पादपण्हि जाणु-पत्थर-निवाय-पीलण कविरुच्छुअगणि-विच्छुय
डक्कायायव-दसमसग-निवाए 'अनेकप्रकार से यष्टयादि द्वारा
सूचीनखप्रवेश-गात्रप्रतक्षण-लखारस खारतेलकलकलत-तउ
सीसककाललोहसिंचण-हडिवधण-रज्जुनिगल-सकलन हत्यहुय कुमि-
पाकदहन-सीहपुच्छण-उच्चधण-सूलभेय-गयचलणमलण- करचरणकन
नासोद्वसीसछेयणजिम्भछेयण-वसण- नयणहियय-दतभजण- जोत्तल-
यकसप्पहार - पादपण्हिजाणुपत्थरनिवायपीलणकविरुच्छुअगणिविच्छु-
यडक्कायायवदसमसगनिवाए) वह अनेक प्रकार से यष्टयादि द्वारा
आघात करने रूप वध, वधण-रज्ज्वादि द्वारा बाधनेरूप वधन, तालण-
चपेटा-यप्पड आदि मारने रूप ताडन, अकण-तपी हुई लोहे की सलाई
से शरीर में चिह्न करने रूप अकन, (अईभारारोवण) प्रमाण से अधिक
भार का लादना, (अगभजण) शारीरिक अवयव को तोड़ना (सूईन-

अगभजण-सूईनखप्पवेस-गायपच्छण-लखारस खारतेलकलकलत-तउसीसककाल
लोहसिंचण-हडिवधण रज्जुनिगल सकलन हत्यहुयकुमिपाकदहनसीहपुच्छणउ-
च्चधण-सूलभेय गयचलणमलण करचरणकननासोद्व सीसछेयण जिम्भछेयण-वसण
नयण हिययदतभजण-जोत्तलयकसप्पहार-पादपण्हि जाणुपत्थर निवाय पीलणकवि
रुच्छु-अगणिविच्छुय-डक्कायायवदसमसगनिवाए " ते अनेक प्रकारनी लाङ्डी
आदिना प्रहारइय वध, वधण-दोराडा आदि बाधवाइय वधन, तालण-थप्पड
आदिना मार इय ताडन, अकण-तपावेला लाढाना सणीथा पडे रागीर पर
डाभ देवाइय निशान, अईभारारोवण-पवादे प्रमाणभा लार लादवो, अगभजण-
शरीरना अगनु छेदन सूईनखप्पवेस-बाधने नणभा बोडी डेवी, गायपच्छण-

पत्यर्थ नैराधिको यत्नो विधेयः, 'न हसियव्य' न तोष्टव्य-तत्प्राप्तिं परितोषो न कर्तव्य, 'न हसियव्य न हसितव्यम्-प्राप्तिं विस्मयेन हासो न कर्तव्यः। तथा श्रमण 'तत्थ' तत्र=पूर्वोक्तशुक्ततद्विषये 'सइ च' स्मृति=स्मरण च 'मति=बुद्धिनिवेश च 'न कुज्जा' न कुर्यात्। 'पुणरपि' पुनरपि उच्यते-'फासि-दिण्ण' स्पर्शेन्द्रियेण 'अमणुण्णपायगाइ' अमनोज्ञपापमानु=अरुचिकरानित्यर्थः, 'फासाइ' स्पर्शान 'फासिय' स्पृष्ट्वा 'किते' कौस्तान्=नयम्भूतौस्तान्? इत्याह—'अणेगवह-यध-तालण-कण-अइभारारोवण-अग-भजण-मउंनखण्वेस

हसियव्य, न सइ च मइ च तत्थ कुज्जा) कभी भी आसक्ति से अपने चित्त को नहीं बाधना चाहिये, उनमें रागभाव नहीं करना चाहिये। गृद्धिभाव नहीं करना चाहिये। उन में सुग्ध नहीं होना चाहिये-उनके निमित्त अपने चारित्र्य का परित्याग नहीं कर देना चाहिये। उनमें लुभाना नहीं चाहिये। और न उनकी प्राप्ति के निमित्त प्रयत्न ही करना चाहिये। यदि वे अनायास प्राप्त हो भी जायें तो उनकी प्राप्ति में परि-तोष नहीं मानना चाहिये। और प्राप्ति में कोई विस्मय आश्चर्य ही नहीं करना चाहिये। तथा श्रमण को इन पूर्वोक्त अनुभवित स्पर्शों में अपनी स्मृति को एवं बुद्धि को भी नहीं लगाना चाहिये। (पुणरपि) इसी तरह फिर (फासिदिण्ण) स्पर्शान इन्द्रिय से (अमणुण्णपायगाइ) अमनोज्ञपापक-अरुचिकारक-स्पर्शों को स्पर्श करके उनमें साधु को द्वेष नहीं करना चाहिये। (किते?) वे अमनोज्ञ पापक स्पर्श किन २ पदार्थों में रहते हैं, इस प्रकार के प्रश्न का उत्तर देने के लिये सूत्रकार कहते हैं कि (अणेगवहयध-तालणकण-अइभारारोवण-

न हसियव्य, न सइ च मइ च तत्थ कुज्जा" कही पणु आसक्तिथी पोताना चित्तने बाधवु नही, तेभनाभा रागभाव करवो नही तेनी लालसा रागधी नही तेभा सुग्ध थवु नही, -तेने भातर पोताना चारित्र्येनो परित्याग न करवो जेधजे तेभा बोलावु न जेधजे अने तेनी प्राप्तिने भाटे वधु प्रयत्न पणु करवो जेधजे नही जे ते अनायासे भणी जाय तो तेनी प्राप्तिथी परितोष मानवो जेधजे नही तेनी प्राप्तिभा विस्मय पणु भताववु जेधजे नही अने साधुजे जे पूर्वोक्त अनुभवेल स्पर्शोनु स्मरण करवु जेधजे नही अने तेभना विचार पणु करवो जेधजे नही "पुणरपि" जे ७ रीते 'फासि दिण्ण' स्पर्शेन्द्रियथी "अमणुण्णपायगाइ" अमनोज्ञ पापक-अरुचिकारक स्पर्शोना स्पर्श करीने तेभना प्रत्ये साधुजे द्वेष करवो जेधजे नही "किते" अमनोज्ञ पापक-अरुचिकारक स्पर्श वाणा उया कया पदार्थो छे, ते प्रश्नने उत्तर आपता सूत्रकार कहे छे के "अणेगवहयध तालणकण-अइभारारोवण

पृथीर्षच्छेदनम् = ' जिम्बच्छेयण ' जिह्वाच्छेदनम् , ' वसणनयणहिययदतभजण ' वृषणनयनहृदयदन्तभञ्जनम् = वृषणम्य = अण्डकोशस्य, नयनयोः, हृदयस्य दन्ताना च भञ्जनम् = विनाशनम् , ' जोत्तलयकसप्पहार ' योक्त्रलताकशाप्रहारः - योक्त्रेण = रज्जुविशेषेण, लतया = वेगादिलतया कशया च यः प्रहार, प्रहारः, ' पादपण्हिजाणुपत्थरनिवाय ' पादपार्णिजानुप्रस्तरनिपातः = पादयोः = चरणयोः, पाण्योः = पादपश्चाद्भागयो, जानुनोः = ' घुटना ' इतिभाषा प्रसिद्धोश्च प्रस्तरनिपातः = पापाणपातः, ' पीलण ' पीडन = यत्र पीडनम् , ' कक्किडु ' कपिकच्छु = तीव्रकण्टिकारकवनस्पतिविशेषः, ' अगणि ' अग्निः, ' विच्छुयडक् ' वृश्चिकदंश ' वायायवदसमसगनिवाए ' वातातपदगमशकनिपातः = वातस्य आतस्य दशाना मशकाना च निपतेनम्, एतेषा द्वन्द्व, ताँस्सथोक्तान् स्पृष्ट्वा, तथा - ' दुट्ठणिसिज्जदुन्निसीहिया ' दुष्टनिपद्यादुर्नैपेधिक्यः = दुष्टनिपद्याः क्षुद्रामनानि, दुर्नैपेधिकस्य = कष्टरुस्वाध्यायभूमयस्ताश्चस्पृष्ट्वा, ' तेसु तेसु - उक्तेषु ' अमणुजपावगेसु ' अमनोज्ञपापकेषु

नासिका, होठ और मस्तक का छेदन करना, ' जिम्बच्छेयण ' जीभ का छेदन करना ' वसण-नयग-हियय-दत-भजण ' अण्डकोष, नेत्र, हृदय और दातोंका भागना, ' जोत्तलय कस प्पहार ' चमड़े की रस्सी से, वेत्रादिलता से, तथा चानुक से प्रहार करना, ' पादपण्हिजाणुपत्थरनिवाय ' पाव, पड़ी, घुटना, इन पर पत्थर का गिरना, ' पीलण ' यत्र में पीलना, ' कक्किडु-अगणि-विच्छुय-डक् ' करेंच की फली, अग्नि और विच्छू का डक-स्पर्श, ' वायायवदसमसगनिवाए ' गीतकाल में ठंडे पवन का लगाना उष्णकाल में धूप का लगाना, तथा डाँस और मच्छरों का शरीर पर गिरना इन सबके स्पर्श का अनुभव करके (दुट्ठणिसिज्जदुन्निसीहिया) कष्टकारक आसन और स्वाध्याय की भूमि के स्पर्श को अनुभव करके (तेसु

वसु, " जिम्बच्छेयण " छेदन करने, " वसण-नयण-हियय-दत-भजण " अण्डकोष, नेत्र, हृदय और दात तोड़ना, " जोत्त-लय-कस प्पहार " आभङ्गनी होटीथी नेतर-आदि लताथी तथा आणुथी इत्यादि, " पादपण्हिजाणुपत्थर-निवाय " पग, ओडी और धूटल पर पत्थरनु पडु, " पीलण " - यत्र भा पीलवु, " कक्किडु-अगणि-विच्छुय डक् " - उरेयनी इणी, अग्नि और विछीने। उअ, " वायायवदसमसगनिवाए " शियाणाभा ठडे पवन लागवे, उनाणाभा तडडे लागवे, तथा डास और मच्छरोंनु शरीर पर पडु, ओ अथा स्पर्शने शरीर पर अनुभव करीने " दुट्ठणिसिज्जदुन्निसीहिया " उट्ठडारु आसन और स्वाध्यायनी भूमिना स्पर्शने अनुभवीने " तेसु अमणुजपावगेसु " ते

‘ ગાયપચ્છણ ’ ગાયપતક્ષણ=ગાસ્યાદિના શરીરચ્છોલનમ્, ‘ લક્ષ્મ્યારસવારતેલ્લ ’ કલ્પલતતતુઅ-સીસકાલ્લોહસિચ્છણ’ લાક્ષારસક્ષારતૈલચ્છલ્પાચમાનત્રપુકસી સચ્ચકાલ્લોહસેચનમ્, લાક્ષારસેન=લાક્ષા=ત્રુત તસ્યા રસેન=તપ્તેન દ્રવેણ ક્ષાર તૈલેન=ક્ષારપદાર્થમિશ્રિતતૈલેન, કલ્પલ્પાચમાનેન=અતિતપ્તતયા શબ્દાયમાનેન ત્રપુ કેણ=રક્તેણ સીસકેન=‘ સીસા ’ ઇતિમસિદ્ધદ્રવ્યેણ, કાલ્લોહેન=કૃષ્ણલોહેન ચ યત્સેચનમ્ ‘ હૃદિવધ્વણ ’ હૃદિવન્ધનમ્=ગ્લોહચ્છેપ, ‘ રજ્જુનિગલ્પકલ્પન ’ રજ્જુ-નિગલ્પસકલ્પનમ્=રજ્જવા નિગદેન ચ સચ્ચન્ન=ચન્ધનમ્ ‘ હૃત્યદ્યુય ’ હસ્તાન્દુરમ્= કાષ્ઠાદિનિર્મિતહસ્તચન્ધનસાધનેન યદ્યન્ધન તદ્વસ્તાન્દુરમુચ્યતે, ‘ કુમ્ભીપાક ’ કુમ્ભીપાકઃ=કુમ્ભા=પાત્રપિશેપે પાકઃ=પચનમ્ ‘ દહ્વણ ’ દહનમ્=અગ્નિના દાહકરણમ્, ‘ સીહપુચ્છણ ’ સિંહપુચ્છન=લિંગ્ગતોટનમ્, ‘ ઉચ્ચવધ્વણ ’ ઉચ્ચવન્ધન=પાશો-લ્લચ્ચનમ્, ‘ સૂલભેય ’ સૂલભેદઃ, ગૂલેનભેદઃ=ભેદનમ્, ‘ ગયચ્ચલ્પણમલ્પણ ’ ગજ ચરણમર્દકમ્=ગજચરણૈર્મર્દનમ્, ‘ કરચરણકન્નનાસોટ્ઠસીસછેયણ ’ કરચરણકર્ણનાસો

લ્પવેસ) સૂર્યોં કો નગ્વો મે ભોક્તા, (ગાયપચ્છણ) ચમૂલા આદિ સે શરીર કે અચયવો કો ઓલના, ‘ લક્ષ્મ્યારસ ’ તપે હુણ લાગ્વકે રસસે, (લારતેલ્લ) ક્ષારપદાર્થ મિશ્રિત તપે હુણ તૈલ સે તયા (કલ્પકલ્પ) અત્યત ઉકલને સે પિઘલે હુણ (તત) ત્રપુ-કધીર સે, (સીસક) સીસે સે (કાલ્લોહ) કાલે લોહે સે, (સિચ્છણ) શરીર કો સીંચના-શરીર પર ઝિડકના (હૃદિવધ્વણ) રોડે મે ઢાલના, ‘ રજ્જુનિગલ્પકલ્પન ’ રસી ઓર વેડી વાધના, ‘ હૃત્યદ્યુય ’ હૃથકડી મેં વાધના ‘ કુમ્ભીપાક ’ કુમ્ભી મેં પકાના, ‘ દહ્વણ ’ અગ્નિ મેં જલાના, ‘ સીહપુચ્છણ ’ લિંગ્ગ કો તોડના, ‘ ઉચ્ચવધ્વણ ’ ફાસી મેં લટકાના, ‘ સૂલભેય ’ સૂલીપર ચઢાના, ‘ ગયચ્ચલ્પણ ’-હાથી કે પૈરો સે કુચલના, ‘ કરચરણકન્નનાસોટ્ઠસીસછેયણ ’ હાથ-પૈર, કાન,

વાસલા આદિથી શરીરના અવયવોને ઘોલવાની ક્રિયા, લક્ષ્મ્યારસ-ગરમ લાખના રસથી ચારતેલ-ક્ષારયુક્ત પદાર્થથી તપાવેલા તેલથી, તયા કલ્પકલ્પ-અત્યત ગરમ કરવાથી ઓગળેલા “ તત ” કધીરથી, “ સીસક ”-સીસાથી “ કાલ્લોહ ”-કાળા લોહાથી, “ સિચ્છણ ”-શરીર પર રોડવાની ક્રિયા, “ હૃદિવધ્વણ ”-હેડમા પૂરવું, “ રજ્જુનિગલ્પકલ્પન ”-દોરડા અને ઘેડી વડે બાધવું, “ હૃત્યદ્યુય ”-હૃથકડીમા બાધવું, “ કુમ્ભીપાક ” કુમ્ભીમા પકાવવું, “ દહ્વણ ”-અગ્નિમા બાળવું “ સીહપુચ્છણ ”-લિંગને તોડવું, “ ઉચ્ચવધ્વણ ” કામીએ લટકાવવું, “ સૂલભેય ”-સૂળી પર ચડાવવું, “ ગયચ્ચલ્પણ ”-હાથીના પગ તળે ચગદાવવું “ કરચરણ-કર્ણનાસોટ્ઠસીસછેયણ ” હાથ, પગ, કાન, નાક, દોઢ અને મસ્તકનું છેદન કરી

पृथीर्षन्नेदनम् = 'जिह्वच्छेयण' जिह्वान्नेदनम्, 'वसणनयणहिययदतभजण' वृषणनयनहृदयदन्तभजनम् = वृषणस्य = अण्डकोशस्य, नयनयोः, हृदयस्य दन्तानां च भजनम् = विनाशनम्, 'जोत्तलयकसप्पहार' योऽत्रलताकशाप्रहारः - योऽत्रेण = रज्जुविशेषेण, लतया = वेगादिलतया, रुश्या च यः प्रहारः, प्रहारः, 'पादपण्हिजाणुपत्थरनिवाय' पादपार्णिजानुप्रस्तरनिपातः = पादयोः = चरणयोः, पाण्योः = पादपश्चाद्भागयोः, जानुनोः = घुटना 'इतिभाषा प्रसिद्धोऽत्र प्रस्तरनिपातः = पापाणपातः', 'पीलण' पीडन = यन्ने पीडनम्, 'कविकड्डु' कपिकण्डुः = तीव्रकण्टकिकारकवनस्पतिविशेषः, 'अगणि' अग्निः, 'विच्छुयडक्' वृश्चिकदंश 'वायायवदसमसगनिवाए' वातातपदगमशक्तिपातः = वातस्य आतस्य दशानां मशकानां च निपतेनम्, एतेषां द्वन्द्वः, तौस्तथोक्तान् स्पृष्ट्वा, तथा - 'दुट्टणिसिज्जदुन्निसीहिया' दुष्टनिपद्यादुर्नैपेधिक्यः = दुष्टनिपद्याः क्षुद्रामनानि, दुर्नैपेधिकस्य = कष्टकरस्वाध्यायभूमयस्ताश्चस्पृष्ट्वा, 'तेसु' तेषु - उक्तेषु 'अमणुजपावगेषु' अमनोज्ञपापकेषु

नासिका, होठ और मस्तक का छेदन करना, 'जिह्वच्छेयण' जीभ का छेदन करना 'वसण-नयण-हियय-दत-भजण' अण्डकोष, नेत्र, हृदय और दातोंका भागना, 'जोत्तलयकसप्पहार' चमड़े की रस्ती से, बेत्रा दिलाता से, तथा चानुक से प्रहार करना, 'पादपण्हिजाणुपत्थरनिवाय' पाव, एडी, घुटना, इन पर पत्थर हागिरना, 'पीलण' यत्र में पीलना, 'कविकड्डु-अगणि-विच्छुय-डक्' करेंच की फली, अग्नि और विच्छू का डक-स्पर्श, 'वायायवदसमसगनिवाए' जीतकाल में ठंडे पवन का लगाना उष्णकाल में धूप का लगाना, तथा डांस और मच्छरों का शरीर पर गिरना इन सबके स्पर्श का अनुभव करके (दुट्टणिसिज्जदुन्निसीहिया) कष्टकारक आसन और स्वाध्याय की भूमि के स्पर्श को अनुभव करके (तेसु

वसु, "जिह्वच्छेयण" शृणु छेदन करे, "वसण-नयण-हियय-दत-भजण" अण्डकोष, नेत्र, हृदय अने दात तोडा, "जोत्त-लय-कसप्पहार" आभङ्गानी होरीथी नेतर-आदि लताथा तथा आणुडथी इटकारे, "पादपण्हिजाणुपत्थर-निवाय" पग, ओडी अने घुटणु पर पत्थरनु पडु, "पीलण" - यत्रमा पीलु, "कविकड्डु-अगणि-विच्छुय डक्" - उरे अनी इणी, अग्नि अने विछीने उअ, "वायायवदसमसगनिवाए" शियाणाभा ठडे पवन लागवो, उनाणाभा तडके लागवो, तथा डास अने मच्छरानु शरीर पर पडु, ओ पधा स्पर्शने शरीर पर अनुभव करीने "दुट्टणिसिज्जदुन्निसीहिया" उटकारे आसन अने स्वाध्यायनी भूमिना स्पर्शने अनुभवने "तेसु अमणुजपावगेषु" ते

अरुचिकरेणित्यर्थः, 'फामेसु' 'स्पर्शेषु' अर्थः, 'अन्नेसु' अन्नेषु च 'बहुविहेसु' बहुविधेषु 'एवमाहसु' एवमादिकेषु—परमकारेषु 'रक्तवडगुरुसीय' उसिणलुस्खेसु' कर्कशगुरुशीतोष्णरुक्षेषु कर्कशाः=कठिनाः, गुरवः=भाराः, शीताः=शीतलाः, उष्णाः=तापनाः, रुक्षाः=परुषाः एषा उन्मत्तस्थेषु तयोक्तेषु स्पर्शेषु च 'समणेण' श्रमणेन-साधुना 'न रुसियञ्च' न रोष्टय्यम्=रोषो न कर्तव्य इत्यर्थः, 'न हीलियञ्च' न हीलितव्यम्=भ्रमा न स्तब्ध्या, 'न निदियञ्च' न निन्दितव्यम्, स्वमनसि निन्दा न कर्तव्या, 'न गिरियञ्च' न गिरितव्यम्=परममङ्गे च निन्दा न कर्तव्या, 'न छिदियञ्च' न छेदितव्यम्=छेदन न कर्तव्यम्। 'न भिदियञ्च' न भेदितव्यम्=भेदन न कर्तव्यम्, 'न वहेयञ्च' न हन्तव्यम्=विनाशो न कर्तव्यः, तथा-तद्विषये 'जुगुप्सावत्तिपावि' जुगुप्सावृत्तिरूपि स्वस्य परस्य वा हृदि 'उप्पाएउ' उत्पादयि तु 'न लम्भा' न लम्बा-नोचिता यया पूर्वोक्तस्पर्शा-श्रयविषये स्वस्य परस्य वा हृदि जुगुप्सा प्रादुर्भवेत् तथा कर्तव्यमिति भावः।

अमणुजपावगेसु) उन अमनोजपापर-अरुचिकारक-स्पर्शा में, तथा (एवमाहसु बहुविहेसु कर्कशगुरुसीय उसिणलुस्खेसु) इन से भिन्न और जो कर्कश, गुरु, शीत, उष्ण, रुक्ष स्पर्श हैं उनमें (समणेण न रुसियञ्च, न हीलियञ्च, न निदियञ्च, न गरहियञ्च, न गिरियञ्च, न छिदियञ्च, न भिदियञ्च, न वहेयञ्च, न जुगुप्सावत्तिपावि लम्भाउप्पाएउ साधु को रुष्ट नहीं होना चाहिये, उनकी अवहेलना नहीं करनी चाहिये। निन्दा नहीं करनी चाहिये। गर्ह नहीं करनी चाहिये। उन पर खिस-याना नहीं चाहिये। उस अमनोज स्पर्श के आश्रयभूत द्रव्य का छेदन नहीं करना चाहिये। भेदन नहीं करना चाहिये। नाश नहीं करना चाहिये। और न अपने तथा परके मन में उनपर ग्लानि उत्पन्न करने

अमनोज पापक-अरुचिकारक स्पर्शाभा, तथा 'एवमाहसु बहुविहेसु कर्कशगुरुसीयउसिणलुस्खेसु' ते उपगत भीन पक्ष वे कर्कश, गुरु, शीत, उष्ण, रुक्ष छे तेभना प्रत्ये "समणेण न रुसियञ्च, न हीलियञ्च न निदियञ्च, न गरहियञ्च, न गिरियञ्च, न छिदियञ्च, न भिदियञ्च, न वहेयञ्च, न जुगुप्सावत्तिपा वि लम्भा उप्पाएउ" साधुछे रुष्ट थपु-लोभछे नही, तेभनी ओवहेलना न करपी लोभछे निहा न करपी लोभछे गर्हा न करपी लोभछे तेभना पर भिजियापु लोभछे नही ते अमनोज स्पर्शावाणा द्रव्यपु छेदन करपु लोभछे नही, छेदन करपु लोभछे नही नाश करपी लोभछे नही अने पोताना के अन्यना भनभा तेभना प्रत्ये ग्लानि उत्पन्न करवानी प्रवृत्ति न

સમ્પત્તિ પञ્ચમીં માયનામુપસહરજ્ઞાહ—एवम्=अनेन प्रकारेण 'फासिदियभावणा-
भाविओ' स्पर्शेन्द्रियभायनाभाविता. 'अतरप्पा' अन्तरात्मा-जीवो जीवः 'भवइ'
भवति । ततश्च 'मणुन्नामणुन्नसुन्निदुन्निभरागद्वेपपणिहितात्मा=मनोवाऽमनोज्ञा ये
सुरभिदुरभय.=शुभाशुभम्पर्गास्तेषु यद्वागद्वेष तत्र पणिहितात्मा=समृतात्मा, 'साहु'
साधु. 'मणयणकायगुत्ते' मनोवचनकायगुप्तः 'समुडे' समृत.=सवरवान् 'पणि
हिडिदिण' पणिहितेन्द्रियः, पणिहित=अशोकृत इन्द्रियो येन तथाभूतः सन् 'धम्म'
धर्म=श्रुतचारित्र्यलक्षण धर्म 'चरेज्ज' चरेत्=अनुतिष्ठेत् ॥ सू० ११ ॥

કી ચેષ્ટા હી કરના ચાહિયે । અવ સૂત્રકાર ઇસ પાંચવીં ભાવના કા ઉપ-
સહાર કરતે હુવ કહતે હૈ (एव फासिदियभावणाभाविओ अतरप्पाभ
वइ मणुन्नसुन्निदुन्निभरागदोसे पणिहियप्पा साहु मणयणकायगुत्ते समुडे
पणिहिडिदिण धम्म चरेज्ज) इस प्रकार से स्पर्श इन्द्रिय की भावना से
भावित जय मुनि हो जाता है तब वह मनोज्ञ रूप शुभ स्पर्श में और
अमनोज्ञरूप अशुभ स्पर्श में रागद्वेष करने से रहित बन जाता है । इस
तरह उनमें रागद्वेष करने से समृतात्मा बना हुआ साधु अपने मन,
वचन और कायरूप त्रिषोंगों को स्पर्श सबी शुभ अशुभ के व्यापार
से रहित कर लेता है तथा इस स्पर्शन इन्द्रिय के सवरण से युक्त बन
जाता है । इस प्रकार इस इन्द्रिय के सवरण से युक्त बना हुआ वह साधु
चारित्र्यरूप धर्म की आराधना अच्छी तरह से करने लगता है ।

भावार्थ—સૂત્રકાર ને ઇસ સૂત્ર દ્વારા ઇસ પરિગ્રહ વિરમણવ્રત કી
પાંચવીં ભાવના કા સ્વરૂપ પ્રગટ કિયા હૈ । ઇસ પાંચવીં ભાવના કા

કરવી ભેઠએ હવે સૂત્રકાર આ પાંચમી ભાવનાનો ઉપસહાર કરતા કહે છે
“ एव फासिदियभावणाभाविओ अतरप्पा भवइ मणुन्नामणुन्नसुन्निदुन्निभ राग-
दोसे पणिहियप्पा साहु मणयणकायगुत्ते समुडे पणिहिडिदिण धम्म चरेज्ज ” આ
ગીતે વ્યાપારે મુનિ સ્પર્શેન્દ્રિયની ભાવનાથી ભાવિત થઈ બન્ય છે ત્યારે તે મનો-
જ્ઞરૂપ શુભ સ્પર્શ પ્રત્યે તથા અમનોજ્ઞરૂપ અશુભ સ્પર્શ પ્રત્યે રાગદ્વેષથી રહિત
બની બન્ય છે આ ગીતે તેમના પ્રત્યે ગગદ્વેષ કરવાથી નિવૃત્ત થયેલ સાધુ
પોતાના મન, વચન અને કાયરૂપ ત્રણે યોગોને સ્પર્ગ મળેથી શુભ અશુભ
વ્યાપારથી રહિત કરી લે છે, અને આ સ્પર્શેન્દ્રિય સવરથી યુક્ત થઈ બન્ય
છે આ રીતે આ ઈન્દ્રિયના સવરથી યુક્ત બનેલ તે સાધુ ચારિત્રરૂપ ધર્મની
સારી ગીતે આગધના કરવા લાગી બન્ય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા આ પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની પાંચમી
ભાવનાનું સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તે પાંચમી ભાવનાનું નામ સ્પર્શેન્દ્રિય સવરણ

अरुचिकरेष्वित्यर्थः, 'फामेसु' 'स्पर्शेषु' अभ्यः, 'अन्नेसु' अन्येषु च 'बहुविहेसु' बहुविधेषु 'एवमाइएसु' एवमादिकेषु—एषा प्रकारेषु 'कम्पडगुरुसीय उसिणलुखेसु' कर्कशगुरुशीतोष्णरसेषु कर्कशाः=कठिनाः, गुरवः=भाराः, शीताः=शीतलाः, उष्णाः=तापनाः, रुक्षाः=पक्काः, एषा उन्मत्तस्थेषु तयोक्तेषु स्पर्शेषु च 'समणेण' समणेन-साधुना 'न रुसियन्व' न रोएज्यम्=रोपो न कर्तव्य इत्यर्थः, 'न हीलियन्व' न हीलितव्यम्=अपत्ता न कर्तव्या, 'न निदियन्व' न निन्दितव्यम्, 'समनसि निन्दा न कर्तव्या', 'न खिसियन्व' न खिसितव्यम्=परसमक्षे च निन्दा न कर्तव्या, 'न छिदियन्व' न छेत्तव्यम्=द्वेष्टन न कर्तव्यम् । 'न भिदियन्व' न भेत्तव्यम्=भेदन न कर्तव्यम्, 'न वहेयन्व' न हन्तव्यम्=विनाशो न कर्तव्यः, तथा-तद्विषये 'जुगुत्तावत्तियावि' जुगुप्सावृत्तिक्राडपि स्वस्य परस्य वा हृदि 'उप्पाएउ' उत्पादयि तु 'न लभा' न लभ्या-नोचिता यथा पूर्वोक्तस्पर्शा-अवधिष्वे स्वस्य परस्य वा हृदि जुगुप्सा प्रादुर्भवेत्तथा कर्तव्यमिति भावः ।

अमणुजपावगेसु) उन अमनोजपापक-अरुचिकारक-स्पर्शा में, तथा (एवमाइएसु बहुविहेसु कम्पडगुरुसीय उसिणलुखेसु) इन से भिन्न और जो कर्कश, गुरु, शीत, उष्ण, रुक्ष स्पर्श हैं उनमें (समणेण न रुसियन्व, न हीलियन्व, न निदियन्व, न गरहियन्व, न खिसियन्व, न छिदियन्व, न भिदियन्व, न वहेयन्व, न जुगुत्तावत्तियावि लब्भाउप्पाएउ साधु को रुष्ट नहीं होना चाहिये, उनकी अवहेलना नहीं करनी चाहिये । निन्दा नहीं करनी चाहिये । गद्दी नहीं करनी चाहिये । उन पर खिस घाना नहीं चाहिये । उस अमनोज्ञ स्पर्श के आश्रयभूत द्रव्य का छेदन नहीं करना चाहिये । भेदन नहीं करना चाहिये । नाश नहीं करना चाहिये । और न अपने तथा परके मन में उनपर ग्लानि उत्पन्न करने

अमनोज्ञ पापक-अरुचिकारक स्पर्शाभा, तथा ' एवमाइएसु बहुविहेसु कम्पडगुरुसीयउसिणलुखेसु " ते उपरात धीन्ना पणु के उर्क्या, गुरु, शीत, उष्ण, स्पर्श छे तेमना प्रत्ये " समणेण न रुसियन्व, न हीलियन्व न निदियन्व, न गरहियन्व, न खिसियन्व, न छिदियन्व, न भिदियन्व, न, वहेयन्व, न जुगुत्तावत्तिया वि लब्भा उप्पाएउ " साधुके रुष्ट यधु-लोभके नहीं, तेमनी ओवहेलना न करवी लोभके निन्दा न करवी लोभके गद्दी न करवी लोभके तेमना पर भिस्रियाधु लोभके नहीं ते अमनोज्ञ स्पर्शवाणा द्रव्यके छेदन करधु लोभके नहीं, छेदन करधु लोभके नहीं नाश करवी लोभके नहीं अने पोताना के अन्यना मनभा तेमना प्रत्ये ग्लानि उत्पन्न करवाना प्रवृत्ति न

સમ્પત્તિ પञ્ચમીં ભાવનામુપસત્તરન્નાહ—એવમ્=અનેન પ્રકારેણ 'ફાસિંદિયભાવના-
ભાવિઓ' સ્પર્શેન્દ્રિયભાવનામાચિત્ત. 'અતરપ્પા' અન્તરાત્મા-જીવો જીવઃ 'મવઈ'
મવતિ । તત્તત્ર 'મણુન્નામણુન્નમુન્નિદુન્નિરાગદ્વેપપણિહિતાત્મા=મનોનાડમનોજ્ઞા યે
સુરમિદુરમયઃ=શુભાશુભસ્પર્શસ્તેષુ યદ્રાગદ્વેપ તત્રપણિહિતાત્મા=સવૃતાત્મા, 'સાહુ'
સાધુ. 'મળવયળકાયગુત્તે' મનોવચનકાયગુત્તઃ 'સવુડે' સવૃત્ત.=સવરનાન્ 'પણિ
હિડિદિ' પણિહિતેન્દ્રિયઃ, પણિહિત્ત.=ચશીકૃત્ત ઇન્દ્રિયો યેન તથાભૂત. સન્ 'ધમ્મ'
ધર્મ=શ્રુતચારિત્રલક્ષણ ધર્મ 'ચરેજ્જ' ચરેત્ત=અનુતિઠેન્ ॥ મૃ૦ ૧૧ ॥

કી ચેષ્ટા હી કરના ચાહિયે । અત્ર સૂત્રકાર ઇસ પાવર્થી ભાવના કા ઉપ-
સત્તાર કરતે હુઁ કહતે હે (ણ્ય ફાસિંદિયભાવનાભાવિઓ અતરપ્પામ
વહ મણુન્નમુન્નિદુન્નિરાગદોસે પણિહિયપ્પા સાહુ મળવયળકાયગુત્તે સવુડે
પણિહિટ્ઠિદિ ધમ્મ ચરેજ્જ) ઇસ પ્રકાર સે સ્પર્શ ઇન્દ્રિય કી ભાવના સે
ભાવિત જય મુનિ હો જાતા હે તત્ર વહ મનોજ્ઞ રૂપ શુભ સ્પર્શ મેં ઔર
અમનોજ્ઞરૂપ અશુભ સ્પર્શ મે રાગદ્વેપ કરને સે રહિત બન જાતા હે । ઇસ
તરફ ડનમેં રાગદ્વેપ કરને સે સવૃતાત્મા બના હુઆ સાધુ અપને મન,
વચન ઔર કાયરૂપ ત્રિગોંઘોં કો સ્પર્શ સવધી શુભ અશુભ કે વ્યાપાર
સે રહિત કર લેતા હૈં તથા ઇસ સ્પર્શન ઇન્દ્રિય કે સવરણ સે યુક્ત બન
જાતા હે । ઇસ પ્રકાર ટસ ઇન્દ્રિય કે સવરણ સે યુક્ત બના હુઆ વહ સાધુ
ચારિત્રમ્પ ધર્મ કી આરાધના અચ્છી તરફ સે કરને લગતા હૈં ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને ઇસ સૂત્ર દ્વારા ઇસ પરિગ્રહ વિરમણવ્રત કી
પાવર્થી ભાવના કા સ્વરૂપ પ્રગટ કિયા હૈં । ઇસ પાવર્થી ભાવના કા

કરવી નેઈએ હુને સૂત્રગાર આ પાચમી ભાવનાનો ઉપસહાર કરતા કહે છે
“ એવ ફાસિંદિયભાવનાભાવિઓ અતરપ્પા મવઈ મણુન્નામણુન્નમુન્નિદુન્નિરાગ-
દોસે પણિહિયપ્પા સાહુ મળવયળકાયગુત્તે સવુડે પણિહિડિદિ ધમ્મ ચરેજ્જ ” આ
રીતે બ્યારે મુનિ સ્પર્શેન્દ્રિયની ભાવનાથી ભાવિત થઈ બન્ય છે ત્યારે તે મનો-
સૂચક શુભ સ્પર્શ પ્રત્યે તથા અમનોસૂચક અશુભ સ્પર્શ પ્રત્યે રાગદ્વેપથી રહિત
બની બન્ય છે આ રીતે તેમના પ્રત્યે રાગદ્વેપ કરવાથી નિવૃત્ત થયેલ સાધુ
પોતાના મન, વચન અને કાયરૂપ ત્રણે યોગોને સ્પર્શ મળધી શુભ અશુભ
વ્યાપારથી રહિત ડગી લે છે, અને આ સ્પર્શેન્દ્રિય સવરથી યુક્ત થઈ બન્ય
છે આ રીતે આ ઇન્દ્રિયના સવરથી યુક્ત બનેલ તે સાધુ ચારિત્રરૂપ ધર્મની
સારી રીતે આગધના કરવા લાગી બન્ય છે

ભાવાર્થ—સૂત્રગારે આ સૂત્ર દ્વારા આ પરિગ્રહ વિરમણ વ્રતની પાચમી
ભાવનાનું સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તે પાચમી ભાવનાનું નામ સ્પર્શેન્દ્રિય સવરણ

અરુચિકરેપિત્યર્થઃ, 'ફામેસુ' 'સ્પર્શપુ ણમ્', 'જન્નેસુ' અન્યેષુ ચ 'બહુવિ
 હેસુ' બહુવિધેષુ 'એવમાહણસુ' એવમાદિકેષુ—પર પ્રકારેષુ 'કચ્ચલ્લગુરુમીય
 ઉસિણલુલ્લેસુ' કર્કશગુરુશીતોષ્ણસ્થેષુ કર્કશઃ=રુઢિનાઃ, ગુરવઃ=મારાઃ, શીતાઃ
 =શીતલાઃ, ઉષ્ણાઃ=તાપનાઃ, રુક્ષાઃ=પરુગાઃ, એવા દ્વન્દ્વસ્તેષુ તથોક્તેષુ સ્પર્શેષુ ચ
 'સમણેણ' શ્રમણેન-સાધુના 'ન રુસિયન્વ' ન રોષ્ટવ્યમ્=રોષો ન કર્તવ્ય ઇત્યર્થ,
 'ન હીલિયન્વ' ન હીલિતવ્યમ્=અગ્નિ ન કર્તવ્ય, 'ન નિદિયન્વ' ન નિન્દિ
 તવ્યમ્, સ્વમનસિ નિન્દા ન કર્તવ્ય, 'ન ત્વિસિયન્વ' ન ત્વિસિતવ્યમ્=પરસમક્ષે
 ચ નિન્દા ન કર્તવ્ય, 'ન છિદિયન્વ' ન છેદતવ્યમ્=છેદન ન કર્તવ્યમ્ । 'ન
 મિદિયન્વ' ન મેદતવ્યમ્=મેદન ન કર્તવ્યમ્, 'ન વહેયન્વ' ન હન્તવ્યમ્=વિનાશો
 ન કર્તવ્યઃ, તથા-તદ્વિષયે 'જુગુઘ્રાવત્તિયાવિ' જુગુપ્સાટત્તિકાઽપિ સ્વસ્ય પરસ્ય
 વા હૃદિ 'ઉપ્પાણ' ઉત્પાદયિતુ 'ન લભા' ન લભ્યા-નોચિતા યથા પૂર્વોક્તસ્પર્શ
 -શ્રવણિષયે સ્વસ્ય પરસ્ય વા હૃદિ જુગુપ્સા પ્રાદુર્ભવેન્ન તથા કર્તવ્યમિતિ ભાવઃ ।

અમણુન્નપાવગેસુ) એન અમનોજ્ઞપાપક-અરુચિકારક-સ્પર્શો મેં, તથા
 (એવમાહણસુ બહુવિહેસુ કચ્ચલ્લગુરુમીય ઉસિણલુલ્લેસુ) એન સે મિત્ત
 ઓર જો કર્કશ, ગુરુ, શીત, ઉષ્ણ, રુક્ષ સ્પર્શ હેં એનમેં (સમણેણ ન
 રુસિયન્વ, ન હીલિયન્વ, ન નિદિયન્વ, ન ગરહિયન્વ, ન ત્વિસિયન્વ, ન
 છિદિયન્વ, ન મિદિયન્વ, ન વહેયન્વ, ન જુગુઘ્રાવત્તિયાવિ લભ્યાઉપ્પાણ
 સાધુ કો રુઢ નહીં હોના ચાહિયે, એનકી અવહેલના નહીં કરની ચાહિયે ।
 નિંદા નહીં કરની ચાહિયે । ગર્હાં નહીં કરની ચાહિયે । એન પર ત્વિસ
 યાના નહીં ચાહિયે । એસ અમનોજ્ઞ સ્પર્શ કે આશ્રયભૂત દ્રવ્ય કા છેદન
 નહીં કરના ચાહિયે । મેદન નહીં કરના ચાહિયે । નાશ નહીં કરના
 ચાહિયે । ઓર ન એપને તથા પરકે મન મેં એનપર ગ્લાનિ ઉત્પન્ન કરને

અમનોજ્ઞ પાપક-અરુચિકારક સ્પર્શોમા, તથા ' એવમાહણસુ બહુવિહેસુ કચ્ચલ્લ-
 ગુરુમીયઉસિણલુલ્લેસુ " તે ઉપરાત ધીબ્બ પણ્ણે કર્કશ, ગુરુ, શીત, ઉષ્ણ,
 સ્પર્શ છે તેમના પ્રત્યે " સમણેણ ન રુસિયન્વ, ન હીલિયન્વ ન નિદિયન્વ,
 ન ગરહિયન્વ, ન ત્વિસિયન્વ, ન છિદિયન્વ, ન મિદિયન્વ, ન, વહેયન્વ, ન
 જુગુઘ્રાવત્તિયા વિ લભ્યા ઉપ્પાણ " સાધુએ રુઢ થયું નેધએ નહીં, તેમની
 એવહેલના ન કરવી નેધએ નિદા ન કરવી નેધએ ગર્હાં ન કરવી નેધએ
 તેમના પર ત્વિસિયાયુ નેધએ નહીં તે અમનોજ્ઞ સ્પર્શવાળા દ્રવ્યનું છેદન
 કરવું નેધએ નહીં, મેદન કરવું નેધએ નહીં નાશ કરવો નેધએ નહીં અને
 ધોતાના કે અન્યના મનમા તેમના પ્રત્યે ગ્લાનિ ઉત્પન્ન કરવાની પ્રવૃત્તિ ન

સમ્પત્તિ પञ્ચમીં ભાવનામુપસદ્ધરજ્ઞાહ—एवम्=अनेन प्रकारेण 'फासिदियभावणा-
भाविओ' स्पर्शेन्द्रियभावनामावित. 'अतरण्या' अन्तरात्मा-जीवो जीवः 'भवइ'
भवति । ततश्च 'मणुष्मामणुन्नमुन्निभदुन्निभरागद्वेषमणिद्वितात्मा=मनोनाऽमनोज्ञा ये
सुरमिदुरभय =शुभाशुभस्पर्शास्तेषु यद्वागद्वेष तत्र मणिद्वितात्मा=सदृतात्मा, 'साहु'
सायु. 'मणयणकायगुत्ते' मनोवचनकायगुप्तः 'सवुडे' सदृत.=सवरवान् 'पणि
हिडदिण्' मणिद्वितेन्द्रियः, मणिहित.=यगीकृत इन्द्रियो येन तथाभूत. सन 'धम्म'
धर्म=श्रुतचारित्र्यलक्षण धर्म 'चरेज्ज' चरेत्=अनुतिष्ठेत् ॥ सू० ११ ॥

કી ચેષ્ટા હી કરના ચાહિયે । અવ સૂત્રકાર ઇસ પાવર્થી ભાવના કા ઉપ-
સદ્ધાર કરતે હુળ કહતે હે (एव फासिदियभावणाभाविओ अतरण्याभ
वइ मणुन्नमुन्निभदुन्निभरागदोसे पणिद्वियप्पा साहु मणयणकायगुत्ते सवुडे
पणिहिडदिण धम्म चरेज्ज) ઇસ પ્રકાર સે સ્પર્શ ઇન્દ્રિય કી ભાવના સે
ભાવિત જવ મુનિ હો જાના હૈ તવ વહ મનોજ્ઞ રૂપ શુભ સ્પર્શ મેં ઔર
અમનોજ્ઞરૂપ અશુભ સ્પર્શ મે રાગદ્વેષ કરને સે રહિત બન જાતા હૈ । ઇસ
તરફ ડનમેં રાગદ્વેષ કરને સે સદૃતાત્મા બના હુઆ સાયુ અપને મન,
વચન ઔર કાયરૂપ ત્રિષોગોં કો સ્પર્શ સવરી શુભ અશુભ કે વ્યાપાર
સે રહિત કર લેતા હૈ તથા ઇસ સ્પર્શન ઇન્દ્રિય કે સવરણ સે યુક્ત બન
જાતા હૈ । ઇસ પ્રકાર ઇસ ઇન્દ્રિય કે સવરણ સે યુક્ત બના હુઆ વહ સાયુ
ચારિત્રરૂપ ધર્મ કી આરાધના અઠ્ઠી તરફ સે કરને લગતા હૈ ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને ઇસ સૂત્ર દ્વારા ઇસ પરિગ્રહ વિરમણવ્રત કી
પાવર્થી ભાવના કા સ્વરૂપ પ્રગટ કિયા હૈ । ઇસ પાવર્થી ભાવના કા

કરવી જોઈએ હવે સૂત્રકાર આ પાચમી ભાવનાનો ઉપસહાર કરતા બહે છે
“ एव फासिदियभावणाभाविओ अतरण्या भवइ मणुष्मामणुन्नमुन्निभदुन्निभ राग
दोसे पणिद्वियप्पा साहु मणयणकायगुत्ते सवुडे पणिहिडदिण धम्म चरेज्ज ” આ
રીતે ત્યારે મુનિ સ્પર્શેન્દ્રિયની ભાવનાથી ભાવિત થઈ બાધ છે ત્યારે તે મનો-
મરૂપ શુભ સ્પર્શ પ્રત્યે તથા અમનોજ્ઞરૂપ અશુભ સ્પર્શ પ્રત્યે રાગદ્વેષથી રહિત
બની બાધ છે આ ગીતે તેમના પ્રત્યે રાગદ્વેષ કરવાથી નિવૃત્ત થયેલ સાધુ
પોતાના મન, વચન અને કાયરૂપ ત્રણે યોગોને સ્પર્શ મળથી શુભ અશુભ
વ્યાપારથી રહિત કરી લે છે, અને આ સ્પર્શેન્દ્રિય સવરથી યુક્ત થઈ બાધ
છે આ રીતે આ ઇન્દ્રિયના સવરથી યુક્ત બનેલ તે સાધુ આગ્રિરૂપ ધર્મની
સારી ગીતે આગમના કૃપા લાગી બાધ છે

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા આ પરિગ્રહ વિરમણ નતાની પાચમી
ભાવનાનું સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે તે પાચમી ભાવનાનું નામ સ્પર્શેન્દ્રિય સવરણ

भवति । एतम्=उक्तरूप पचम सवरद्वार, 'णायमुणिणा' ज्ञातमुनिना-प्रसिद्ध-
त्रियवंशोद्भवेन मुनिना भगवता महावीरेण 'पण्णविय' प्रज्ञापितम्=शिष्येभ्य
सामान्यतया कथितम् 'परुविय' प्ररूपितम्=भेदानुभेदप्रदर्शनपूर्वक कथितम्,
'पसिद्ध' प्रसिद्धम्=प्रख्यातम्, प्रमाणप्रतिष्ठितत्वात् 'सिद्धवरसासण' सिद्धवर-
शासनम्=सिद्धाना-निष्ठितार्थाना=कृतकृत्यानामितियायत् वरशासन=प्रधानाज्ञारू-
पम्, 'इण' इदम् 'आयविय' आख्यात=सर्वतोभावेन कथितम्, 'सुदेसिय'
सुदेशितम्=सदेवमनुजामुराया सभाया सुष्टूपदिष्ट 'पसत्थ' प्रशस्त 'पचम
सवरदार' पचम सवरद्वार 'समत्त' समाप्तम् 'त्तिमेमि' इति ब्रवीमि, अस्या
र्थः पूर्वमुक्तः ॥ सु-१२ ॥

हुआ माना जाता है । (एव) इस प्रकार से (नायमुणिणा भगवया)
ज्ञात नामक क्षत्रियवश में उत्पन्न हुए मुनिराज भगवान् महावीर ने
(पण्णविय) शिष्यों के लिये इस पचम सवर द्वार को सामान्यरूप से
समझाया, (परुविय) भेद प्रभेदपूर्वक उसका कथन किया है । (पसिद्ध)
प्रमाणप्रतिष्ठित होने से जिन वचन में यह प्रख्यात हुआ है, अर्थात्
जिनवचन के अनुसार ही आचार्यपरंपरा से इसका पालन करना इसी
रूप से चला आ रहा है । तथा (सिद्धवरसासणमिण) भूतकाल में
जितने भी सिद्ध हो चुके हैं उनका यह प्रधान आज्ञारूपशासन है ।
(आयविय) ऐसा भगवान् महावीर प्रभुने सर्वभाव से इसके विषय
में कहा है और (सुदेसिय) देवो, मनुजों तथा असुरों से युक्त परि-
पदा में इसका उपदेश दिया है । (पसत्थ) सर्व प्राणियों का हितका-
रक होने से मंगलमय है, इस प्रकार यह (पचम सवरदार समत्त)
पचमसवरद्वार समाप्त हुआ, (त्तिमेमि) ऐसा मैं कहता हूँ । अर्थात्

આજ્ઞા પ્રમાણે જ પાલન થયું ગણાય છે “ એવ ” આ રીતે “ નાયમુણિણા
ભગવયા ” જ્ઞાત કુળ નામના ક્ષત્રિય વંશમાં ઉત્પન્ન થયેલ મુનિરાજ ભગવાન
મહાવીરે “ પણ્ણવિય ” શિષ્યોને માટે આ પાંચમા સવરદ્વારને સામાન્યરૂપે
સમજાવ્યું છે, “ પરુવિય ” ભેદ પ્રભેદ પૂર્વક તેનું વિવેચન કર્યું છે, “ પસિદ્ધ ”
પ્રમાણ પ્રતિષ્ઠિત હોવાથી જિનવચનમાં તે પ્રખ્યાત થયું છે, એટલે કે જિન
વચન પ્રમાણે જ આચાર્ય પરંપરાથી તેનું આ રીતે પાલન થતું આવ્યું છે,
તથા “ સિદ્ધવરસાસણમિણ ” ભૂતકાળમાં જેટલા સિદ્ધો થઈ ગયા તેમનું આ
પ્રધાન આજ્ઞારૂપ શાસન છે, “ અયવિય ” એવું ભગવાન મહાવીરે સર્વ
સ્થાવથી તેને વિષે કહ્યું છે, અને “ સુદેસિય ” દેવો મનુષ્યો અને અસુરોની
પરિપક્ષમાં તેનો ઉપદેશ દીધો છે “ પસત્થ ” તે એવું પ્રાણીઓનું હિત કર-
નાર હોવાથી મંગલમય છે, આ રીતે આ “ પચમ ” પાંચમું “ સવરદાર
સમત્ત ” સવરદ્વાર સમાપ્ત થયું “ ત્તિમેમિ ” એમ હું કહું છું. એટલે કે

અપરિસ્વાવી=કર્મજલપવેશરહિતત્વાત્, 'અસકિલિટ્થો' અસંમિલિતઃ=અસમાધિમા
વર્જિતત્વાત્ 'શુદ્ધો' શુદ્ધઃ=કર્મમળવર્જિતત્વાત્, 'સંવ્યજિનમણુણાઓ' સર્વ
જિનાનુજ્ઞાતઃ-સકલપ્રાણિહિતકામકત્વાત્સર્વે રહિત્વિરક્તીકૃતશ્રાસ્તિ । ણ્યમ્=ઉક્તપ-
ચારેણ 'પચમે સવરદાર' પચમ સવરદાર 'ફાસિય' સ્પૃષ્ટ ક્રામેન, 'પાલિયં'
પાલિત-સતતપ્રુપયોગેન સેવિતમ્ 'સોદિય' ગોધિતમ્-અતિચારવર્જનેન 'તીરિય'
તીર્ણ-તીર પ્રાપિત સમ્યક્પાલનાત્, 'કિટ્ટિય' કીર્તિતમ્-સ્તુતમ્=શ્રદ્ધાપાળકા
રમ્ભત્વાત્, 'આરાહિય' આરાધિતમ્-ત્રિકરણત્રિયોગે, મમ્પગારરિતત્વાત્,
'આણાપ' આજ્ઞા-સર્વજ્ઞચક્રેન 'અણુપાલિય' અણુપાલિત=દદમનસ્કત્યાન્વ

હૈ, (અપરિસ્વાઈ) ચિન્દુમાત્ર મી કર્મજલ ઇસમેં પ્રવિષ્ટ નહીં હો પાતા હૈ
इसलिये यह अपरिस्वावी है । (असकिलिट्थो) असमाधिमात्र से रहित
होने के कारण यह असंमिलित है, और (शुद्धो) कर्ममल से वर्जित
होने के कारण यह शुद्ध है । (संव्यजिनमणुणाओ) इससे समस्त
प्राणियों का हित हुआ है और आगे भी हित होगा ऐसा जानकर ही
समस्त अरिहत भगवतो ने इसे अंगीकृत किया है । (एव पचम सवर-
दार) इस उक्त प्रकार से जो इस सवरद्वार को (फासिय) अपने
शरीर से आचरित करते हैं (पालिय) निरन्तर उपयोगपूर्वक
इसका सेवन करते हैं, (सोदिय) अतिचारों से इसे रहित करते
हैं, (तीरिय) पूर्णरूप से इसका सेवन करते हैं, (किट्टिय) दूसरों
को इसके पालन करने का उपदेश देते हैं (आराहिय) तीनकरण तीन
योग से इसकी भली प्रकार से अनुपालना करते हैं, (अणाए अणुपालिय
भवइ) उनके द्वारा यह योग तीर्थकर प्रभु की आज्ञा अनुसार ही पालित

તેનાથી પાપનો ભોત છિન્ન થઈ બચ છે તેથી તે અચિદ્ર છે, “અપરિસ્વાઈ”
ખિન્દુ બેટલુ પણ કર્મબળ તેમા પ્રવેશ પામી નહી, તે અપરિસ્વાવી
છે, “અસકિલિટ્થો” અસમાધિભાવથી રહિત હોવાને કારણે તે અસંમિલિત છે
અને “શુદ્ધો” કર્મબળ વિનાનુ હોવાથી તે શુદ્ધ છે “સંવ્યજિનમણુણાઓ”
તેનાથી સમસ્ત પ્રાણીઓનુ હિત થયુ છે અને ભવિષ્યમા પણ હિત થશે
એવુ બાણીને જ સમસ્ત અરિહત ભગવાનોએ તેને માન્ય કરેલ છે “એવ
પચમ સવરદાર” આ સૂત્રમા કહ્યા પ્રમાણે જે આ પાપમા સવરદારનુ “ફા
સિય” પોતાના શરીરથી આચરણુ કરે છે, “પાલિય” નિરન્તર ઉપયોગ પૂર્વક
તેનુ સેવન કરે છે, “સોદિય” અતિચારોથી તેને રહિત કરે છે, “તીરિય”
પૂર્ણ રીતે તેનુ સેવન કરે છે “કિટ્ટિય” અન્યને તેના પાલનનો ઉપદેશ આપે
છે “આરાહિય” ત્રણ કરણુ અને ત્રણ યોગથી સાગી રીતે તેની આરાધના કરે
છે, “આણાપ અણુપાલિય ભવइ” તેમના દ્વારા તે યોગનુ તાર્થકર પ્રભુની

અપિ ' વયાઈ ' પ્રતાનિ-અર્હિમાદીનિ ' મહવ્યયાઈ ' મહાપ્રતાનિ ' હેઽસયવિવિત્ત-
પુષ્પલાઈ ' હેતુશતવિવિત્તપુષ્પલાનિ=હેતુશતૈઃ= ઉપપત્તિશતૈઃ વિવિત્તૈઃ=નિર્દોષૈઃ
કૃત્વા પુષ્પલાનિ=વિતીર્ણાનિ ' કહિયાઈ ' કથિતાનિ 'અરિહતસામણે' અર્હચ્છા-
સને-જિનપ્રવચને । તે ચ ' સવરા. ' સમાસેણ ' સમાસેન સક્ષેપેણ ' પચ' પચ્ચ-
પચ્ચસરપકાઃ, ' વિત્થરેણ ડ ' વિસ્તરેણ તુ ' પળ્ણવીસઈ ' પચ્ચવિંશતિઃ-પ્રતિસવ-
રદ્વાર પચ્ચપચ્ચભાવનામત્તેન પચ્ચવિંશતિમરપકાઃ ભવન્તિ । અથ સવરધારિણા
ભાગિની દશા ણ્ણવતે- ' સજણ ' સયત -સાતુ' ' સમિણ ' સમિતઃ-ઈર્યાસમિત્યા-
દિભિઃ પ્રચ્ચવિંશતિભાવનાભિર્યુક્ત, ' સહિણ ' સહિતઃ-જ્ઞાનાદર્શનાભ્યા યુક્ત,
' સઘુડે ' સઘટતઃ=કપાયેન્દ્રિયસવરણયુક્તઃ ' સયા ' સદા ' જયળઘડળસુવિસુદ્ધ-

અવ સૂત્રકાર પાચો સવરોં કા ઉપસંહાર કરતે હુણ કરતે હૈ-
' વયાઈ ' ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ-(સુવચ્ય !) શોભનવ્રત સપન્ન હે જમ્મૂ ! (વયાઈ પચવિ મહ
વ્યયાઈ) યે પાચોં હી અર્હિસા આદિક મહાવ્રત (અરિહતસાસણે હેઽસયવિ-
વિત્તપુષ્પલાઈ કહિયાઈ) અર્હત પ્રભુ કે શાસન મેં સૈકડો નિર્દોષ યુક્તિયોં
સે વિસ્તૃત કરકે કહે ગયે હૈં । (સવરા સમાસેણ પચ) વે સવર સક્ષેપ
સે પાચ હૈં પરન્તુ (વિત્થરેણ ડ પળ્ણવીસઈ) વિસ્તાર સે પાચ ૨ અપની ૨
ભાવનાઓ સે સહિત હોને કે કારણ યે પચીસ હો જાતે હૈં । (સજણ)
इन सवरदारों का पालन करने वाला सयत (समिण) ईर्यासमिति
आदि पच्चीस भावनाओं से युक्त (सहिण) ज्ञानदर्शन से सहित और
(सघुडे) कपाय एव इन्द्रियो के सवरण से युक्त होता हुआ (सया)
सदा (जयणघडण सुविसुद्धसणे) अपने तत्त्वार्थ श्रद्धानरूप दर्शन को

હવે સૂત્રગર પાચે સવરોના ઉપસંહાર કરતા હો છે “ વયાઈ ” ઇત્યાદિ
ટીકાર્થ-“ સુવચ્ય ! ” શોભનવ્રત યુક્ત હે જમ્મૂ ! “ વયાઈ પચવિ મહ
વ્યયાઈ ” અર્હિમા આદિ તે પાચે મહાવ્રત “અરિહત સાસણે હેઽસયવિવિત્ત
પુષ્પલાઈ કહિયાઈ ” અર્હત પ્રભુના શાસનના સેકડો નિર્દોષ યુક્તિયોથી વિસ્તાર
રથી હોવામા આવ્યા છે “ સવરા સમાસેણ પચ ” તે સવર અક્ષિપ્તમા પાચ
છે પણ “ વિત્થરેણ ડ પળ્ણવીસઈ ” વિસ્તારથી પોત પોતાની પાચ પાચ ભાવ
નાઓ સહિત હોવાને કારણે પચીસ થાય છે “સજણ” એ સવરદારનું પાલન
કરનાર સયત “સમિણ” ઈર્યામિતિ આદિ પચીસ ભાવનાઓથી યુક્ત “સહિણ”
જ્ઞાનદર્શનથી યુક્ત અને “ સઘુડે ” કપાય અને ઇન્દ્રિયોના સવરણથી યુક્ત
થઈને “ સયા ” સદા “ જયળઘડળસુવિસુદ્ધસણે ” પોતાના તત્ત્વાર્થશ્રદ્ધાન

અથ સવરપચ્ચક્રપ્રસહરત્નાઃ—' ઇયાઙ ' ઇત્યાદિ ।

મૂલ્મ—ઇયાઙં વયાઙ પંચવિ સુઘ્વય મહાઘ્વયાઙ હેઽસય
વિવિત્તપુલ્લલાઙ કહિયાઙં અરિહંતમાસણે પચ સમાસેણ સવરા
ત્રિત્થરેણ ડ પળવીસઙં સમિણ સહિણ સંબુઢે સયા જયણ ઘઢણ
સુવિસુદ્ધદસણે ઇણ અણુચરિય સજણ ચરમસરીરધરે ભવિસ્સ
તીતિ ॥ સૂ૦ ॥ ૧૩ ॥

॥ ઇય પંચમ સવરદાર સમત્ત ॥

ટીકા—' ઇયાઙ ' ઇત્યાદિ—

' સુઘ્વય ' સુત્રત-હે શોભનત્રત જન્મૂઃ । ' ઇયાઙ ' ઇતાનિ ' પચવિ ' પ-

હે જન્મૂ ! હસ પચમ સવરદ્વાર કા જૈસા કથન મેં ને સાક્ષાત્ ભગવાન્
મહાવીર કે મુલ્લ સે સુના હે વૈસા હી યહ મેં ને તુમસે કહા હૈ । અપની
તરફ સે હસમે મેંને કુછ બી મિશ્રિત કર નહીં કહા હૈ ।

ભાવાર્થ—હન પૂર્વોક્ત પાચ ભાવનાઓ સે અઢ્ઢી તરફ સેવિત રોને
પર યહ અપરિગ્રહ નામક પાચવા સવરદ્વાર સ્થિર હો જાતા હૈ । હસ-
લિયે મુનિજન કો હસકા પાલન હસ રૂપ સે કરના અવશ્ય હૈ ।
સમત્ત તીર્થકરોં ને હસે સર્વપ્રાણિયોં કા હિતકારક જાનકર પાલિત
કિયા હૈ । યહ અનાશ્રવ આદિ વિશેષણોં વાલા હૈ । ભગવાન્ મહાવીર
પ્રભુ ને બી હસકે પાલન કરને કા ઉપદેશ પરિપદા મેં જીવોં કો દિયા
હૈ । એસા મગલમય યહ પાચવા સવરદ્વાર સમાપ્ત હુઆ ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥

“ હે જન્મૂ ! આ પાચમા સવરદ્વારનુ ડથન જે પ્રમાણે મેં સાક્ષાત્ મહાવીર
પ્રભુને મુખે સાંભળ્યું હતું, એ જ પ્રમાણે તે હું તમને કહું છું ભારી તર
ફથી તેમા કંઈ પણ ઉમેરવામા આવ્યું નથી

ભાવાર્થ—પૂર્વેક્ત પાચ ભાવનાઓનુ સારી રીતે સેવન કરવામા આવે
તો અપરિગ્રહ નામનુ પાચમુ સવરદ્વાર સ્થિર થઈ જાય છે તેથી મુનિજને
તેનુ તે રીતે પાલન કરવુ અતિ આવશ્યક છે બધા તીર્થ કરેાએ તેને સઘળા
પ્રાણીઓનુ હિતકારક સમજીને તેનુ પાલન કરેલ છે તે અનાશ્રવ આદિ વિશે
ષણો વાળુ છે ભગવાન મહાવીરે પણ પરિપદાઓમા તેનુ પાલન કરવાનો
ઉપદેશ જીવોને આપ્યો છે એવુ મગલમય આ પાચમા સવરદ્વાર સમાપ્ત થયુ ॥ ૧૨

વિલેસુ નિરુદ્ધેસુ આઉત્તમત્તપાણણ અગ જહા આચારસ્સ ॥સૂં ૧૪॥

॥ ઇય પળ્હાવાગરણં સંમત્તં ॥

ટીકા—‘પળ્હાવાગરણે’ ઇત્યાદિ—

પ્રશ્નવ્યાકરણે સ્વલુ એકઃ શ્રુતસ્કંધઃ દશ અધ્યયનાનિ, એતાનિ કીદશાનિ ?
એસરકાણિ=ઉદ્દેશવિભાગાદિરહિતાનિ । એતાન્યધ્યયનાનિ દશસ્વેવ દિવસેપ્દિ-
શ્યન્તે । તથા—એકાન્તરેપુ આચામ્લેપુ નિરુદ્ધેપુ=સ્વીકૃતેપુ સત્સુ આયુક્તમત્તપા-
નેન=મત્તપાને આયુક્ત-આયુક્તમત્તપાનસ્તેન તથા, અશનાદીં દત્તોપયોગેનેત્યર્થ ,
ઇદમદ્વસુન્દિયતે । અસ્યાવશિષ્ટ સર્વં યથા આચારસ્ય=આચારાન્નસ્ય તથૈવ વિજ્ઞેયમ્ ૧૪

॥ ઇતિપ્રશ્નવ્યાકરણ નામ દશમાદ્વ સંપૂર્ણમ્ ॥

અથ સૂત્રકાર ઇસ દશવે અગ મે કિતને શ્રુતસ્કંધ આદિ હૈ યહ દિ-
સ્લાતે હૈ—‘પળ્હાવાગરણે’ ઇત્યાદિં ।

ટીકાર્થ—(પળ્હાવાગરણે) ઇન પ્રશ્નવ્યાકરણ મેં (એગો સુયસ્ત્વધો)
એક શ્રુતસ્કંધ હૈ । (દસ અઝ્ઞયણા) દશ અધ્યયન હૈ । યે દશોં હી
અધ્યયન (એક્ક સરગા) ઉદ્દેશ વિભાગ આદિ સે રહિત હૈ । (દસસુ ચેવ
દિવસેસુ ઉદ્દિસિજ્જતિ) ઓર દશ હી દિનોં મેં ઇનકી વાચના કી જાતી
હૈ । (એગતરેસુ આયવિલેસુ નિરુદ્ધેસુ આઉત્તમત્તપાણણ) સભા મેં ઇસકી
વાચના કરને વાલે સાધુ કો દશદિન તક એકાન્તર સે આયવિલ કરના
ચાહિયે । આચામ્લવ્રત કરને મે અશનાદિ સામગ્રી પર એપણાદિ શુદ્ધિ
કા વિશેષ ધ્યાન રખના ચાહિયે । ઇસ સૂત્ર કા અવશિષ્ટ અશ જૈસા
આચારાગ સૂત્ર કા હૈ વૈસા હી જાનના ચાહિયે ॥ સૂ-૧૫ ॥

॥ ઇસ તરહ પ્રશ્નવ્યાકરણ નામકા યહ દશવાં અગ સમાપ્ત હુઆ ॥

હવે આ દરામા અગમા કેટલા શ્રુતસ્કંધ આદિ છે તે સૂત્રકાર બતાવે
છે—“ પળ્હાવાગરણે ” ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—“ પળ્હાવાગરણે ” આ પ્રશ્નવ્યાકરણમા “એગો સુયસ્ત્વધો” એક
શ્રુતસ્કંધ છે “દસ અઝ્ઞયણા” દસ અધ્યયન છે તે દસે અધ્યયન “એક્કસરગા”
ઉદ્દેશ વિભાગ આદિથી રહિત છે “દસસુ ચેવ દિવસેસુ ઉદ્દિસિજ્જતિ” અને દસ
દિવસમા જ તેનું વાચક ડરી શકાય છે “એગતરેસુ આયવિલેસુ નિરુદ્ધેસુ આઉત્ત મત્તપા
ણણ” સભામા તેનું વાચન કરનાર સાધુએ દસ દિવસ સુધી એકાન્તરે આય બિલ
કરવા બેઠ્યો આય બિલવ્રત કરતા અશનાદિ સામગ્રી પર એપણાદિ શુદ્ધિનું
ધ્યાન રાખવું બેઠ્યો આ સૂત્રનો અવશિષ્ટ અગ જેવો આચારાગ
સૂત્રનો છે તેવો જ સમજી લેવો બેઠ્યો ॥ સૂ ૧૫ ॥

॥ આ રીતે પ્રશ્નવ્યાકરણ નામનું આ દશમું અગ સમાપ્ત થયું ॥

‘દંસણે’ યતનઘટનમુચિશુદ્ધદર્શનઃ, યતનેન=પ્રાપ્તસયમસયોગેષુ પ્રયત્નેન, ઘટનેન=અપ્રાપ્તસયમસયોગપ્રાપ્ત્યર્થઘટનયા ચ મુચિશુદ્ધ દર્શન=શ્રદ્ધાનરૂપ યસ્ય, સ તથા, ‘एए’ एतान् उक्तरूपान् सगरान् अणुचरिय ‘अनुचर्य आसेव्य ‘चरिमसरीरधरे’ चरमशरीरधरः=અન્તિમશરીરધારી મવિસ્સતીતિ-મવિગ્ન્યતીતિવિગ્નેયમ્ ॥સૂ૦ ૧૩॥

इति पञ्चम सगरद्वार समाप्तम् ॥

સામ્પ્રતં દશમાદ્વેઽસ્મિન્ કિયન્દ્રુતસ્કન્ધાદિ તદ્દર્શયતિ ‘પળ્હાવાગર-
ણેણ’ इत्यादि—

મૂલમ્—પળ્હાવાગરણેણં एगो सुयम्बंधो दस अङ्गयणा
एकंसरगा दससु चैव दिवसेसु अदिसिज्जति, एगंतरेसु आयं-

યતન સે-પ્રાપ્તસયમ કે સરક્ષણરૂપ પ્રયત્ન સે તથા ઘટન સે-અપ્રાપ્તસયમ
કી પ્રાપ્તિ કરને કી ઘટના સે મુચિશુદ્ધ રાખતા હૈ । (एए अणुचरिए)
इन पूर्वोक्तरूप सवरों को पालन करके (चरिमसरीरधरे) अन्तिमशरी
रधारी (भविस्सइ) होवेगा । ऐसा जान लेना चाहिये ।

ભાવાર્થ—સૂત્રકાર ને હસ સૂત્ર દ્વારા સમજાયા હૈ કિ જો મુનિ इन
पांचों सवरद्वारों का शास्त्रमर्यादा के अनुसार पालन करेगा और
पञ्चीस भावनाओंसे इन्हें स्थिर रखेगा, वह चरमशरीरी होगा, अर्थात्
उसका पुन. जन्म ससार में नहीं होगा, वह अवश्य ही मोक्ष प्राप्त
करने वाला होगा । ये सक्षेपतः सवरद्वार पांच ही हैं-परन्तु विस्तार की
अपेक्षा अपनी २ पांच भावनाओं से सहित होने के कारण ये पञ्चीस
भी हो जाते हैं ॥ सू० १३ ॥

॥ पाचर्वा सवरद्वार समाप्त ॥

इय दर्शनने प्रयत्नपूर्वक-प्राप्त सयमना सरक्षणीइय प्रयत्नથી તથા ઘટનથી
અપ્રાપ્ત સયમની પ્રાપ્તિ કરવાની ઘટનાથી અત્યંત વિશુદ્ધ રાખે છે “ ए ए
अणुचरिए ” એ પૂર્વોક્ત સવરોનુ પાલન કરીને “ चरिमसरीरधरे ” अन्तिम
शरीरधारी “ भविस्सइ ” થશે એ પ્રમાણે સમજી લેવું

ભાવાર્થ—સૂત્રકારે આ સૂત્ર દ્વારા એ સમજાવ્યું છે કે જે મુનિ આ
પાંચે સવરદ્વારોનુ શાસ્ત્રમર્યાદા અનુસાર પાલન કરશે અને પચીસ ભાવનાઓ
વડે તેમને સ્થિર રાખશે, તે ચરમ શરીરી થશે, એટલે કે તેને સસારમા
ફરી જન્મ લેવો પડશે નહીં, તે અવશ્ય મોક્ષ પ્રાપ્ત કરશે સક્ષિપ્તમા પાંચ
જ સવરદ્વાર છે, પણ વિસ્તારની અપેક્ષાએ પોત પોતાની પાંચ પાંચ ભાવ
નાઓ સહિત હોવાને કારણે તે પચીસ પણ કહી શકાય છે ॥ સૂ૦ ૧૩ ॥

॥ પાચમુ સવરદ્વાર સમાપ્ત ॥

વિલેસુ નિરુદ્ધેસુ આઉત્તમત્તપાણણં અંગ જહા આયારસ્સ ॥સૂ ૦૧૪॥

॥ ઇય પળ્હાવાગરણં સંમત્ત ॥

ટીકા—‘ પળ્હાવાગરણેણ ’ इत्यादि—

પ્રશ્નવ્યાકરણે સ્વલુ એકઃ શ્રુતસ્કન્ધ. દશ અધ્યયનાનિ, એતાનિ કીદશાનિ ?
 એકસરગાણિ=ઉદ્દેશવિભાગાદિરહિતાનિ । એતાન્યધ્યયનાનિ દશસ્વેવ દિવસેષ્વદિ-
 શ્યન્તે । તથા—એકાન્તરેષુ આચામ્લેષુ નિરુદ્ધેષુ=સ્વીકૃતેષુ સત્સુ આયુક્તમત્તપા-
 નેન=મત્તપાને આયુક્ત -આયુક્તમત્તપાનસ્તેન તથા, અશનાદી દત્તોપયોગેનેત્યર્થ ,
 હિમદ્રમુદિશ્યતે । અસ્યાવશિષ્ટ સર્વે યથા આચારસ્ય=આચારાદ્ગસ્ય તથૈવ વિજ્ઞેયમ્ ૧૪

॥ इतिप्रश्नव्याकरण नाम दशमाद्वा संपूर्णम् ॥

અચ સૂત્રકાર ઇસ દશવે અંગ મે કિતને શ્રુતસ્કન્ધ આદિ હૈ યહ દિ-
 સ્વલાતે હૈ—‘ પળ્હાવાગરણેણ ’ इत्यादि० ।

ટીકાર્થ—(પળ્હાવાગરણેણ) इन प्रश्नव्याकरण में (एगो सुयक्त्वधो)
 એક શ્રુતસ્કન્ધ હૈ । (દસ અઙ્ગ્યયના) દશ અધ્યયન હૈ । યે દશો હી
 અધ્યયન (એક સરગા) ઉદ્દેશ વિભાગ આદિ સે રહિત હૈ । (દસસુ ચેવ
 દિવસેસુ ઉદિસિજ્જતિ) ઔર દશ હી દિનો મેં इनकी वाचना की जाती
 હૈ । (એગતરેસુ આયવિલેસુ નિરુદ્ધેસુ આઉત્તમત્તપાણણ) સભા મેં ઇસકી
 વાચના કરને વાલે સાધુ કો દશદિન તક એકાન્તર સે આયવિલ કરના
 વાહિયે । આચામ્લવ્રત કરને મેં અશનાદિ સામગ્રી પર એપણાદિ શુદ્ધિ
 કા વિશેષ ધ્યાન રાખના વાહિયે । ઇસ સૂત્ર કા અવશિષ્ટ અશ જૈસા
 આચારાગ સૂત્ર કા હૈ વૈસા હી જાનના વાહિયે ॥ સૂ-૧૫ ॥

॥ इस तरह प्रश्नव्याकरण नामका यह दशवा अंग समाप्त हुआ ॥

હવે આ દશમા અંગમા કેટલા શ્રુતસ્કન્ધ આદિ છે તે સૂત્રકાર બતાવે
 છે—“ પળ્હાવાગરણેણ ” इत्यादि—

ટીકાર્થ—“ પળ્હાવાગરણેણ ” આ પ્રશ્નવ્યાકરણમા “એગો સુયક્ત્વધો” એક
 શ્રુતસ્કન્ધ છે “દસ અઙ્ગ્યયના” દસ અધ્યયન છે તે દસે અધ્યયન “એકસરગા”
 ઉદ્દેશ વિભાગ આદિથી રહિત છે “દસસુ ચેવ દિવસેસુ ઉદિસિજ્જતિ” અને દસ
 દિવસમા જ તેનુ વાચક કરી શકાય છે “એગતરેસુ આયવિલેસુ નિરુદ્ધેસુ આઉત્ત મત્તપા
 નણ્ણ” સભામા તેનુ વાચન કરનાર સાધુએ દસ દિવસ સુધી એકાન્તરે આય બિલ
 કરવા બોધએ આય બિલવત કરતા અશનાદિ સામગ્રી પર એપણાદિ શુદ્ધિનુ
 ખાત્ર ધ્યાન રાખવુ બોધએ આ સૂત્રનો અવશિષ્ટ અંગ જેવો આચારાગ
 સૂત્રનો છે તેવો જ સમજી લેવો બોધએ ॥ સૂ ૧૫ ॥

॥ આ રીતે પ્રશ્નવ્યાકરણ નામનુ આ દશમુ અંગ સમાપ્ત થયુ ॥

॥ અય શાસ્ત્રમગ્નસ્તિઃ ॥

સૌરાષ્ટ્રે મુનિભિ સાઠ, વિહાર કર્યતા મયા ।
 ચાતુર્માસ્ય, સુરેનૈવ, નીતં જેતપુરે પુરે ॥ ૧ ॥
 તતો વિહરમાણોઃ, ધોરાજીનામ ત્રિશ્રુતે ।
 પુરે સમાગતઃ શેષ, -કાલે તૈર્મુનિભિઃ સહ ॥ ૨ ॥
 સપ્તાધિકે વૈવમાન્દે, સદ્મદ્વયસંરચકે ।
 પોપે પુણ્યે પૌર્ણમાસ્યા, શુભદ મૌમનાસરે ॥ ૩ ॥
 પ્રશ્નવ્યાકરણસ્યેય, વૃત્તિર્નામ્ના સુદર્શનો ।
 રચિતા ઘાસિલાલેન, શ્રોસથેન સમાદ્યતા ॥ ૪ ॥
 લિમડી સઘસ્થાપિત-પૌષધશાલા ચ વિદ્યતે તત્ર ।
 પ્રવચનરહસ્યપૂર્ણા, સેય શિવસૌર્યદા પૂર્ણા ॥ ૫ ॥

ટીકાકાર કી પ્રશસ્તિ

સૌરાષ્ટ્રદેશ મે મુનિજનો કે સાથ વિહાર કરતે હુણ મેં ને જેતપુર મેં
 આનદપૂર્વક ચૌમાસા કિયા । વહા સે વિહાર કર મેં ઉન મુનિજનોં કે
 સાથ ધોરાજી નામ સે પ્રસિદ્ધ શહર મેં આયા । શેષ કાલ વર્હા રહકર
 વિક્રમ સવત્ ૨૦૦૭ કે પૌષ માસ, પૌર્ણમાસી નિધિ મંગલવાર ઔર
 પુણ્યનક્ષત્રકે દિન પ્રશ્નવ્યાકરણકી યદ્ વૃત્તિ જિસકા નામ સુદર્શિની હૈ
 મેં ને-ઘાસીલાલ ને-રચી હૈ । વહા કે શ્રોસથ ને હસકા અઠઠા આદર
 કિયા । ઉસ શહર મેં લિમડી સઘ કે દ્વારા સ્થાપિત કી હુઈ એક પૌષધ
 શાલા હૈ । ઉસમેં ઠહર કર પ્રવચન કે રહસ્ય સે પરિપૂર્ણ ઔર શિવ કે
 સુખ કી દાતા યદ્ વૃત્તિ પૂર્ણ હુઈ હૈ ॥

॥ ટીકાકારની પ્રશસ્તિ ॥

સૌરાષ્ટ્રમા મુનિજનોની સાથે વિહાર કરતા એ જેતપુરમા, આનદપૂર્વક
 ચૌમાસુ વ્યતીત કર્યું, ત્યાથી વિહાર કરીને હું મુનિઓ સાથે ધોરાજી નામના
 પ્રસિદ્ધ શહેરમા આવ્યો । શેષ ઝાળમા ત્યા રહીને વિક્રમ સવત ૨૦૦૭ના પૌષ
 માસની પૂર્ણિમાની તિથિને મંગળવાર અને પુણ્ય નક્ષત્રના દિવસે પ્રશ્નવ્યાકર
 ણની આ વૃત્તિ જેતુ નામ સુદર્શિની છે, તે એ-ઘાસીલાલે રચી છે ત્યાની
 શ્રી સઘે તેનો ઘણો આદર કર્યો । તે શહેરમા લિમડી સઘ દ્વારા સ્થપાયેલ
 એક પૌષધશાળા છે ત્યા રહીને પ્રવચનના રહસ્યથી પરિપૂર્ણ અને મોક્ષના
 સુખની દાતા આ વૃત્તિ એ પૂરી કરી છે ॥ ૫ ॥

सचमहिमा-

धोराजी नगरस्य एष परमोदारो महाधार्मिकः,

शुद्धस्थानकवासिधर्मनिरतः सम्यक्त्वभाषान्वितः ।

तच्चातन्त्रपयोविवेचनविधौ हसायमानः सदा,

सर्वेषामुपकारको विजयते श्री जैनसंगमहान् ॥ ६ ॥

देवे गुरौ धर्मपथे च भक्ति र्येषा सदाचारस्त्विति नित्यम् ।

ते श्रावका धर्मरता उदारा, सुश्राविकाः सन्ति गृहे गृहेऽत्र ॥ ७ ॥

मङ्गल भगवान् गीरो मङ्गल गौतमः प्रभुः ।

सुधर्मा मङ्गल जम्बू-जैनधर्मश्च भगलम् ।

॥ इति श्री विश्वविख्यात-जगद्गुरु-प्रसिद्धाचकपञ्चदशभाषाकलि-

तललितकलापालापरु-प्रसिद्धगद्यपद्यनैरुग्रन्यनिर्माणरु-वादिमानमर्दक-

श्रीशाह छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त ' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-

कोल्हापुरराजगुरु-पालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री

घासीलालप्रतिविरचिता दशमाङ्गस्य श्री प्रश्रव्यकरणसूत्रस्य

सुदर्शन्याख्या व्याख्या समाप्ताः

॥ शुभ भूयात् ॥

॥ श्रीरस्तु ॥

સઘમહિમા—

ધોરાજી શહેર કા યહ મહાન્ શ્રી જૈનસઘ અત્યન્ત ઉદાર હૈ, પર-
મધાર્મિક હૈ, શુદ્ધસ્થાનકવાસી ધર્મ મેં લવલીન હૈ, સમ્યક્ત્વ ભાવ સે
યુક્ત હૈ, તત્ત્વ અતત્ત્વ કા ક્ષીર નીર કી તરહ વિવેક કરને મેં હસ
કે જૈસા હૈ । સમસ્ત પ્રાણિયોં કા ઉપકારક હૈ, અતઃ યહ સદા જયવતા
વર્તો ॥ ૬ ॥ જિનકી દેવ ગુરુ ઔર ધર્મ મેં નિત્ય ભક્તિ હૈ । તથા સદા-
ચાર મેં જિનકી રુચિ હૈ એસે ધર્મરત ઉદાર શ્રાવક ઔર સુશ્રાવિકાઈ
યહાં ઘર ૨ મેં હૈ ॥ ૭ ॥

અતિમ મગલાચરણ

અતિમ તીર્થંકર ભગવાન્ મહાવીર મગલરૂપ હૈં, ગૌતમપ્રભુ મગલ
રૂપ હૈં, સુધર્માસ્વામી મગલરૂપ હૈ અન્તિમ કેવલી જંબૂસ્વામી મગલરૂપ
હૈં ઔર યહ જૈનધર્મ મગલરૂપ હૈ ॥ ૮ ॥

॥ શ્રીસ્તુ-શુભ ભૂયાત્ ॥

સઘમહિમા

ધોરાજી શહેરનો તે મહાન શ્રીસઘ અત્યન્ત ઉદાર છે, ધણો જ ધાર્મિક
છે, શુદ્ધ સ્થાનકવાસી ધર્મમા દઢ રીતે માનનાર છે, સમ્યક્ત્વ લાવથી યુક્ત
છે, તત્ત્વ અતત્ત્વનો દૂધ અને પાણીની જેમ વિવેક કરવામા હસ સમાન છે
સઘના પ્રાણીઓનો ઉપકાર કરનાર છે, તેથી તેનો મહા જય જયકાર હો ॥૬॥

જેમનો દેવ, ગુરુ અને ધર્મ પ્રત્યે નિત્ય ભક્તિભાવ છે, તથા સદાચાર
પ્રત્યે જેમની અભિરૂચિ છે એવા ધર્મરત ઉદાર શ્રાવક અને સુશ્રાવિકાઓ
અહીં દરેક ઘરમા છે ॥ ૭ ॥

અતિમ મગલાચરણ

અન્તિમ તીર્થંકર ભગવાન મહાવીર મગળરૂપ છે, ગૌતમપ્રભુ મગલરૂપ
છે સુધર્માસ્વામી મગળરૂપ છે અન્તિમ કેવળી જંબૂસ્વામી મગળરૂપ છે, અને
આ જૈન ધર્મ મગળરૂપ છે ॥ ૮ ॥

॥ શ્રીસ્તુ-શુભ ભૂયાત્ ॥

